

Barcode : 99999990312094
Title - Shri Prashnavyakarana Sutram
Author - Maharaj, Ghasilalji
Language - sanskrit
Pages - 1111
Publication Year - 1962
Barcode EAN.UCC-13



जैनाचार्य-जैनधर्मदिवानर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-
प्रितचितया घुदगिन्याग्यया व्याख्यया समलङ्कृतं
हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

॥ प्रश्न व्याकरण-सूत्रम् ॥

PRASHNAVYĀKARANA
SŪTRAM

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराज

प्रकाशक

पालि(मरवाड)निवासि-श्रेष्ठन. श्रीमतः सुकनचन्दजी बालिया
महाशय तथा अ.सौ. तद्धर्मपत्नी सुकनबाई-प्रदत्त द्रव्यसाहा-
य्येन अ० भा० श्वे० स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः
श्रेष्ठि-श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः
मु० राजकोट

प्रथमा-भावृत्ति
प्रति १०००

बीर-सखत्
२४८८

विक्रम-सखत्
२०१८

ईसवीसन
१९६२

मूल्यम्-रु० २०-०-०

મળવાનું ઠેકાણું
શ્રી અ. ભા. ધર્મે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કુવા રોડ, શ્રીન લોન
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by •
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

×

પ્રથમ આવૃત્તિ	પ્રત ૧૦૦૦
વીર સવત્	૨૪૮૮
વિક્રમ સવત્	૨૦૧૮
ઈસવી સન	૧૯૬૨

×

મુદ્રક
મણિલાલ ઇમનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
ધીકાદા રોડ . અમદાવાદ

प्रश्नव्याकरणसूत्रकी विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१	मङ्गलाचरण	१—२
२	अवतरणिका	३—१३
प्रथम अध्ययन-प्रथम भाग		
३	आस्रव और स्रव के लक्षणों का निरूपण	१३—१८
४	पहला अधर्मद्वार का निरूपण	१९—२६
५	“ मृषानादरूप ” दूसरा अधर्मद्वार का निरूपण	२७—३५
६	“ यथाकृत् ” नामके तीसरा अधर्मद्वार का निरूपण	३६—३९
७	स्थलचर चतुष्पद प्राणीयों का निरूपण	४०—४२
८	“ उरः परिसर्प ” के भेदों का निरूपण	४३—४४
९	भुजपरिसर्प के भेदों का निरूपण	४५—४६
१०	खेचर जीवों का निरूपण	४७—५०
११	प्राणियों के वधके प्रकार का निरूपण	४१—५३
१२	चतुरिन्द्रिय जीवोंकी हिंसा करने वालोंके प्रयोजनका निरूपण	५४—६२
१३	पृथिवीकाय जीवों के हिंसा के कारण का निरूपण	६३—६७
१४	अक्काय जीवों की हिंसा करने के प्रयोजन का निरूपण	६८—
१५	‘ वायुकाय ’ जीवों की हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	६९—७०
१६	‘ वनस्पतिकाय ’ जीवोंकी हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	७०—७४
१७	स्थावरादि जीवों को कैसे २ भावों से युक्त होकर हिंसक जन मारते हैं उनका निरूपण	७४—८४
१८	जातिनिर्देशपूर्वक मदबुद्धि वाले लोक कौन २ जीवों को मारते हैं उनका निरूपण	८५—८६
१९	कौन २ जीव पाप करते हैं उनका निरूपण	८७—९०
२०	जैसे २ कर्म करते हैं वैसा ही फल प्राप्त होनेका निरूपण	९१—९६
२१	नरक में उत्पत्ति के अनन्तर वहा के दुःखानुभवका निरूपण	९७—१०४
२२	पापि जीव नरकों में कैसी २ वेदना को कितने काल भोगते हैं उनका निरूपण	१०५—१०६

२३	नारकीय जीव क्या २ कहते हैं वह वर्णन	१०६-१०८
२४	परमाधार्मिक नारकीय जीवों के प्रति क्या करते हैं उनका कथन	१०९-११०
२५	वेदनाओं से पीड़ित नारक जीवों के आक्रंद का निरूपण	१११-११७
२६	परमाधार्मिकों के द्वारा की गई यातनाओं के प्रकार का निरूपण	११७-११८
२७	यातना के विषय में आयुधों (शस्त्रों) के प्रकारों का निरूपण	११९-१२१
२८	परस्पर में वेदना को उत्पन्न करते हुए नारकीयों की दशा का वर्णन	१२१-१२७
२९	नारक जीवों के पश्चात्ताप का निरूपण	१२८-१३०
३०	तिर्यग्गति जीवों के दुःखों का निरूपण	१३१-१३६
३१	चतुरिन्द्रिय जीवों के दुःख का निरूपण	१३७-१३८
३२	त्रिन्द्रिय जीवों के दुःख का निरूपण	१३८-१३९
३३	द्विन्द्रिय जीवों के दुःख का वर्णन	१४०-
३४	एकेन्द्रिय जीवों के दुःख का वर्णन	१४१-१४४
३५	दुःखों के प्रकार का वर्णन	१४५-१५१
३६	मनुष्यभवं में दुःखों के प्रकार का निरूपण	१५२-१६३

दूसरा अध्ययन

३७	अलीकवचन का निरूपण	१६४-१६८
३८	अलीकवचन के नाम का निरूपण	१६८-१७४
३९	जिस भाव से अलीक वचन कहा जाता है उसका निरूपण	१७४-१७९
४०	नास्तिकवादियों के मत का निरूपण	१८०-२०५
४१	अन्य मनुष्यों के मृषाभाषण का निरूपण	२०६-२१४
४२	मृषावादियों के जीव पातक वचन का निरूपण	२१५-२४१
४३	मृषावादियों को नरक प्राप्तिरूप फलप्राप्ति का वर्णन	२४२-२६२
४४	अलीक वचन का फलितार्थ निरूपण	२५३-२५६

तीसरा अध्ययन

४५	अदत्तादान के स्वरूप का निरूपण	२५७-२६१
----	-------------------------------	---------

४६ अदत्तादान के तीस नामों का निरूपण	२६४-२६९
४७ पञ्चम अन्तर्द्वारगत तस्करों (चोरों) का वर्णन	२७०-२७५
४८ परधनलुब्ध राजाओं के स्वरूप का निरूपण	२७६-२८२
४९ परधन में लुब्ध राजाओं के संग्राम का वर्णन	२८३-२९६
५० अदत्तादान (चोरी) के प्रकार का निरूपण	२९७-३०१
५१ सागर के स्वरूप का निरूपण	३०२-३०६
५२ तस्कर के कार्य का निरूपण	३०७-३१७
५३ अदत्तादान के फल का निरूपण	३१७-३२२
५४ चोर लोक क्या फल पाते हैं उनका निरूपण	३२२-३३०
५५ अदत्तग्राही चोर कैसे होकर कैसे फल को पाते हैं उनका निरूपण	३३०-३४६
५६ अदत्तग्राही चोर जिस फल को पाते हैं उसका निरूपण	३४७-३५४
५७ अदत्तग्राही चोर की परलोक में कौन गति होती है उनका निरूपण	३५४-३६०
५८ जीव ज्ञानावरण आदि अष्टविध कर्मों से बध्दशाको प्राप्तकर ससारसागर में रहते हैं इस प्रकार का ससारसागर के स्वरूप का निरूपण	३६०-३७७
५९ किस प्रकार के अदत्तग्राही चोरों को किस प्रकार का फल मिलते हैं उनका निरूपण	३७८-३८६
६० तीसरे अध्ययन का उपसंहार	३८७-३९०

चौथा अध्ययन

६१ अब्रह्म के स्वरूप का निरूपण	३९१-३९५
६२ अब्रह्म के नामों का और उसके लक्षणों का निरूपण	३९५-४००
६३ मोह से मोहित बुद्धिवालों से अब्रह्म के सेवन के प्रकारों का निरूपण	४००-४०३
६४ चक्रवर्त्यादिकों का और उनके लक्षणों का वर्णन	४०३-४१९
६५ बलदेव और वासुदेव के स्वरूप का निरूपण	४१९-४४३
६६ अब्रह्मसेवी कौन होते हैं ? उनका निरूपण	४४३-४४४

६७ युगलिकों के स्वरूप का निरूपण	४४५-४६७
६८ युगलिनीयों के स्वरूप का निरूपण	४६७-४८६
६९ चौथे अन्तर्द्वार का निरूपण	४८६-४९४
७० चौथा अध्ययन का उपसंहार	४९४-४९८

पांचवा अध्ययन

७१ परिग्रह के स्वरूप का निरूपण	४९९-५०६
७२ परिग्रह के तीस नामों का निरूपण	५०७-५१२
७३ जिस प्रकार से जो जीव परिग्रह करते हैं उनका निरूपण	५१२-५२७
७४ मनुष्य के परिग्रह का निरूपण	५२८-५३९
७५ परिग्रह से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है उनका निरूपण	५४०-५४६
७६ पांचवा अध्ययन का उपसंहार	५४७-५५०

दूसरा भाग-पहला अध्ययन

७७ पाचसवर द्वारों के नाम और उनके लक्षणों का निरूपण	५५१-५५८
७८ प्रथमसवरद्वार का निरूपण	५५९-५६९
७९ अहिंसा के महात्म्य का निरूपण	५७०-५७२
८० अहिंसा धारण करने वाले महापुरुष के स्वरूप का निरूपण	५७३-६०१
८१ अहिंसा को पालन करने को उद्यत होने वालों के कर्त्तव्य का निरूपण	६०२-६१६
८२ अहिंसाव्रत की 'ईर्यासमिति' नाम की प्रथम भावना का निरूपण	६१७-६२२
८३ 'मनोगुप्ति' नाम की दूसरी भावना का निरूपण	६२३-६२५
८४ 'वचनसमिति' नाम की तीसरी भावना के स्वरूप का निरूपण	६२६-६२८
८५ 'एषणासमिति' नाम की चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण	६२९-६३९
८६ 'निक्षेप' नाम की पांचवी भावना का निरूपण	६४०-६४२
८७ प्रथम अध्ययन का उपसंहार	६४३-६४८

दूसरा अध्ययन

८८ सत्य के स्वरूप का निरूपण	६४९-६८४
८९ 'अनुवचिन्त्य समिति' नाम की प्रथम भावना के	

स्वरूप का निरूपण	६८५-६८८
९० ' क्रोधनिग्रहरूप ' दूसरी भावना का निरूपण	६८९-६९२
९१ ' क्रोभनिग्रहरूप ' तीसरी भावना का निरूपण	६९३-६९६
९२ ' धैर्य ' नाम की चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण	६९७-७००
९३ पांचवी ' मौन ' भावना के स्वरूप का निरूपण	७००-७०४
९४ अध्ययन का उपसंहार	७०५-७१०

तीसरा अध्ययन

९५ अदत्तदानविरमण के स्वरूप का निरूपण	७११-७२१
९६ कैसा मुनि अदत्तादानादि व्रत का आराधन नहीं करते उसका निरूपण	७२२-७२७
९७ कैसा मुनि इस व्रत का पालन कर सकते हैं उसका निरूपण	७२७-७४०
९८ ' विविक्तवसतिवास ' नाम की प्रथम भावना का निरूपण	७४१-७४७
९९ ' अनुज्ञातसस्तारक ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	७४८-७५१
१०० ' शय्यापरिकर्म वर्जन ' रूप तीसरी भावना का निरूपण	७५२-७५६
१०१ ' अनुज्ञातभक्त ' नामकी चौथी भावना का निरूपण	७५७-७६०
१०२ ' विनय ' नामकी पांचवी भावना का निरूपण	७६१-७६४
१०३ अध्ययन का उपसंहार	७६५-७७०

चौथा अध्ययन

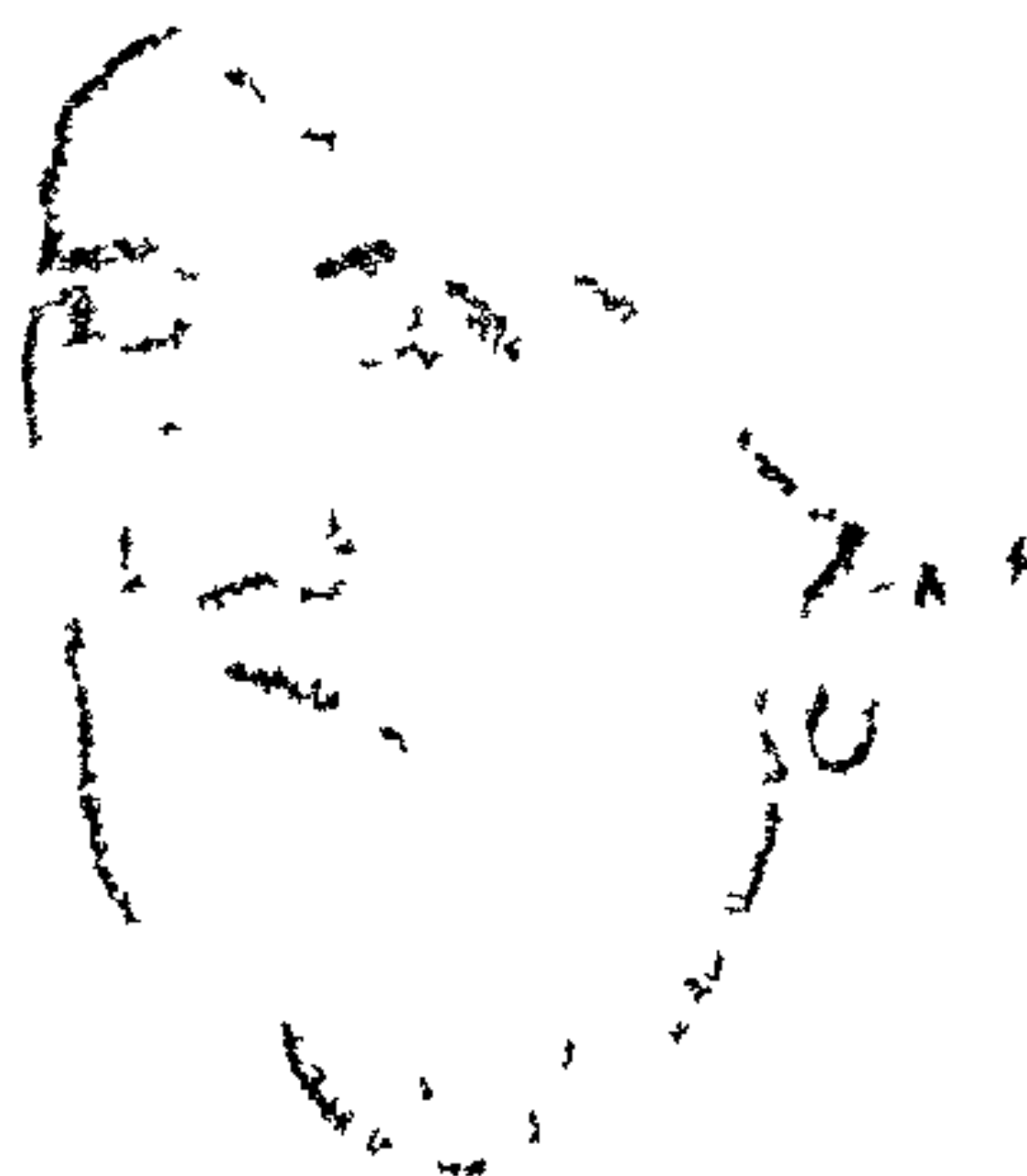
१०४ ब्रह्मचर्यके स्वरूप का निरूपण	७७१-७८८
१०५ ब्रह्मचर्य आराधन का फल	७८९-७९५
१०६ ब्रह्मचारी को आचरणीय और अनाचणीय आदिका निरूपण	७९६-८०३
१०७ ' अससक्त वासवसति ' नामकी प्रथम भावना का निरूपण	८०४-८०८
१०८ ' स्त्रीकथा विरति ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	८०९-८१५
१०९ ' स्त्रीरूप निरीक्षण ' वर्जन नामकी तीसरी भावना का निरूपण	८१६-८१८
११० ' पूर्वव्रत पूर्वक्रीडितादि ' विरति नामकी चौथी भावना का निरूपण	८१९-८२५
१११ ' मणीतभोजनवर्जन ' नामकी पांचवी भावना का निरूपण	८२६-८२९
११२ चतुर्थ अध्ययन का उपसंहार	८३०-८३४

पाँचवा अध्यायन

११३ परिग्रहविरमण का निरूपण	८३५-८४५
११४ त्रसस्थावर विषयक अपरिग्रह का वर्णन	८४६-८५२
११५ अकल्पनीय वस्तु का निरूपण	८५३-८६०
११६ कल्पनीय अशनादिक का निरूपण	८६०-८७०
११७ सयताचार पालक की स्थिति का निरूपण	८७१-८८९
११८ ' निस्पृहा ' नामकी पहली भावना का निरूपण	८९०-९००
११९ चक्षुरिन्द्रिय सवर ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	९०२-९१५
१२० ' घ्राणेन्द्रियसवर ' नामकी तीसरी भावना का निरूपण	९१६-९२२
१२१ जिह्वेन्द्रियसवर ' नामकी चौथी भावना का निरूपण	९२३-९२९
१२२ ' स्पर्शेन्द्रियसवर ' नामकी पाचवी भावना का निरूपण	९३०-९४१
१२३ अध्ययन का उपसहार	९४२-९४८
१२४ दशमाङ्ग में श्रुतस्कधादि का निरूपण	९४९-
१२५ शास्त्रप्रशस्ति	९५०-९५३

—समाप्त:—

૩૧. ૫૦૮૧) આપનાર આદ્ય મુગ્ધાશ્રી



સ્વ. રોઠ મુકુન્દચંદ્ર બાલીયા (પાલીવાળા)

અમદાવાદ.

श्रीमान् सेठसाहेब श्री मुकनचन्दजी वालियाजीका

संक्षेपमें जीवनचरित्र

श्रीमान् सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी साहब पाली (मारवाड़) के निवासी थे । आपका शुभ जन्म सन् १९४० फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३ रविवारको हुआ था । आपका पवित्र वंश सदा धर्मशील, विद्याप्रेमी और उदारचरित रहा है । आपके परम पूज्य पितामह श्रीमान् सेठ सा श्रीपूनमचन्दजी साहब वालिया थे । सेठ सा. श्रीपूनमचन्दजी साहब वालिया के दो पुत्र थे, एक श्री राजारामजी साहब और दूसरे श्रीअगरचन्दजी साहब । आगे चलकर श्रीमान् सेठसा, श्री राजारामजी सा के श्री ताराचन्दजी साहब और श्रीमुकनचन्दजी साहब करके दो पुत्र थे, किंतु अगरचन्दजी सा के पुत्र नहीं था । इसी लिए श्रीमान् अगरचन्दजीसाहबने अपने भाईके ही पुत्र श्रीमुकनचन्दजी साहबको दत्तक (गोद) ले लिया । श्रीमान् सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी शुरू से ही रहे होनहार, धर्मशील और उदार थे । सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी श्रीमती श्री सुगनकुवर घाईजी भी धर्मशीलता एवं उदार व्यवहार में आपके ही समान थी । श्रीमती श्री सुगनकुवर घाईजी की धर्मश्रद्धा का सु प्रभाव आज भी आपके कुटुम्ब पर अच्छी तरह दिखाई देता है । आप दोनों ने धर्म के दीपक से न केवल अपने परिवार को ही प्रकाशित किया है, किंतु जीवन में अपने स्पर्क में आनेवाले सभी धर्म प्रेमी जिज्ञासुओं को धर्म श्रद्धालु बना ने का पवित्रकार्य किया है । यों सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी सा बड़ी सरल प्रकृतिके मञ्जन थे । व्यापार आपका समुद्रपार अनेक देशों में फैला हुआ था । आपकी जमींदारी भी खूब थी । आपके रहन-सहन और व्यवहार से सदा सादगी टपकनी थी । जितने आप



શ્રી શામજી વેવજી વીંગણી
રાજકોટ.

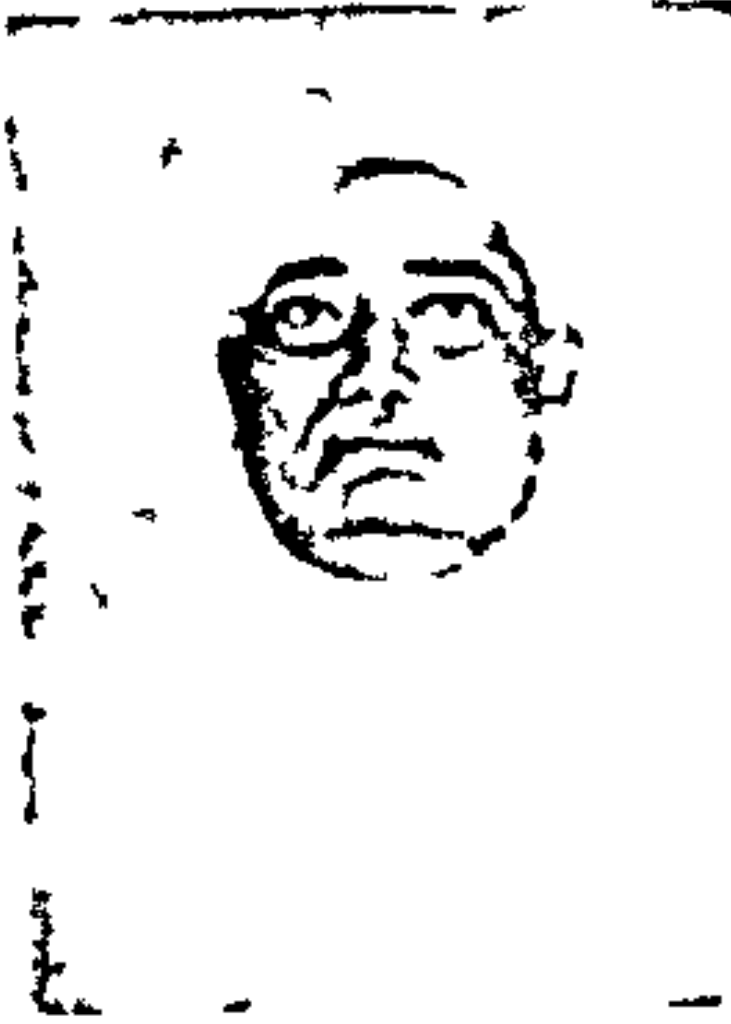


શ્રી નમજી નામજી વીંગણી
રાજકોટ.



શ્રી ભીશ્રીલાલજી અને જીવનલાલજી દુહીયા
અમદાવાદ

આવમુરખીશ્રીઓ



(૨૫) શ્રી દરખચદ કાદીદાસ વાગીઆ
ભાણુવડ.

શ્રી કાઠારી દરગોવિદભાઈ જેયદ
ગજેદાર.



શ્રી નાતિવાલ ભગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(૨૬) શ્રી ધારગીભાઈ હવણભાઈ
સોલાપર

(૨૭) શ્રી આત્માગમ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

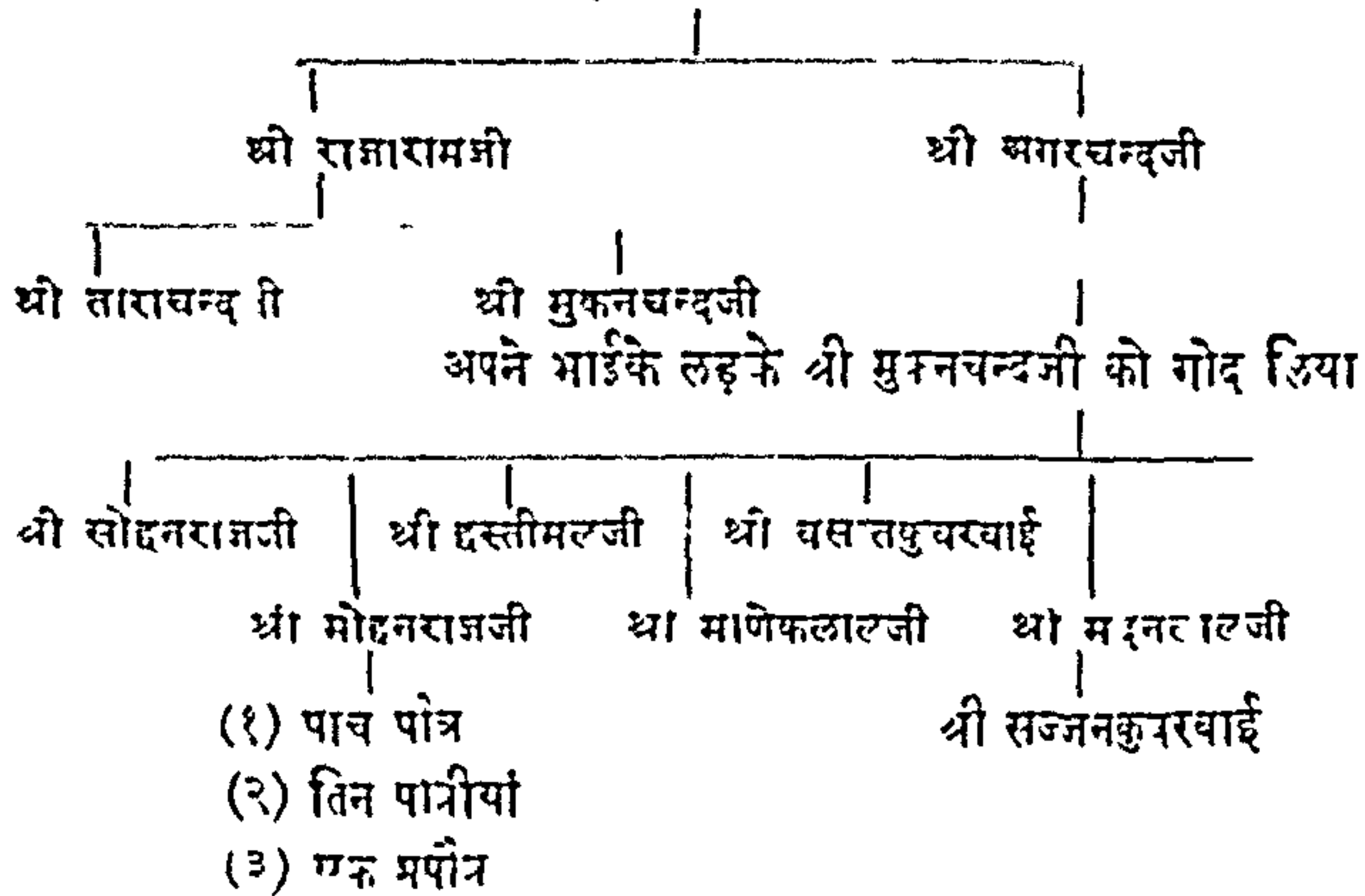
उदार-चरित थे, उतने ही आप शास्त्रों के ज्ञाना भी थे। गाय करके धर्मशास्त्रमें आपका अच्छा प्रवेश था। ज्योतिषशास्त्र के भी आप मर्मज्ञ थे कहने का तात्पर्य यह है कि मोने में सुगम की तरह आप पर भगवती, सरस्वती और देवी लक्ष्मी दोनों का समान रूपसे आशीर्वाद का हाथ रहा। पाली के आगलवृद्ध सभी आपके गुणों को आज भी भूले नहीं हैं। आपकी तरफ से पालीमें कन्याशाला, हाईस्कूल आदि शैक्षणिक संस्थाएँ चल रही हैं, जिनमें प्रति वर्ष कई विद्यार्थी विद्यालाम प्राप्त कर रहे हैं। गरीब, अपंग और अनाथों के लिए भी आपकी तरफ से सदाव्रत अनाथालय और प्याउण चल रही हैं। आयविल खाता भी आपकी तरफ से पाली में चल रहा है। आपका म्वर्गवास सवत् २०१८ कार्तिक शुक्ल द्वितीया शुकवारको हुआ।

श्रीमात् सेठ श्री सुकुनचन्दजी सा. के श्री हस्तिमलजी श्री मोहनराजजी श्री माणिकलालजी श्री मदनलालजी ये चार पुत्र और एक पुत्री श्री वसंतकुवर मौजूद है, एवं सबसे बड़े पुत्र श्री सोहनराजजी सा. एवं सबसे छोटी पुत्री श्री सजनकुवरबाई स्वर्गस्थ हुए हैं। सेठ साहब के पांच पौत्र हैं, तीन पौत्रियाँ हैं और एक प्रपौत्र है इस तरह सेठ साहबने अपने सामने चार पीढ़ियों को फलते फुलते देखा है।

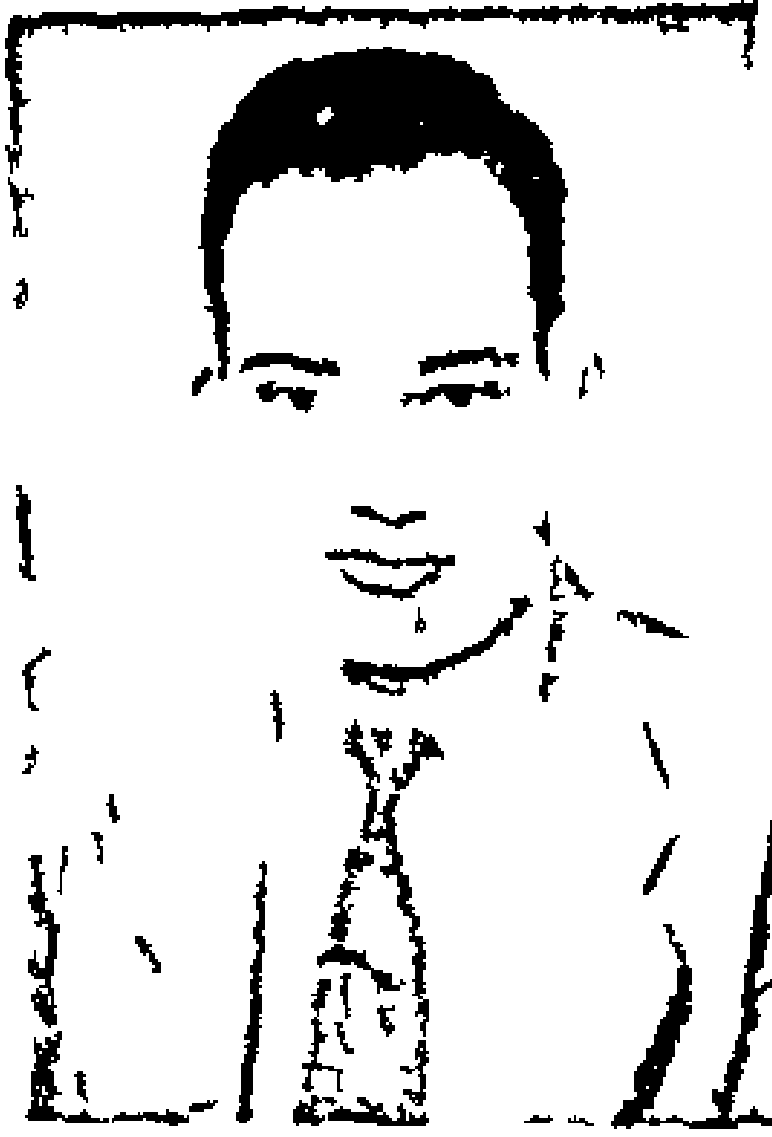
पूज्य आचार्य श्री जैनधर्मदिवाकर आगमोद्धारक श्री महाराज साहब श्रीघासीलालजीकी देखरेखमें वर्षोंसे कई शास्त्र ग्रन्थोंका लेखन, प्रकाशन और संपादन हो रहा है। समस्त जैनागमोंका आप भारतकी अव्यतन भाषा में संस्कृत-प्राकृत हिन्दी गुजरातीमें-सरल व्याख्या करके जैन धर्मकी अभिवृद्धि कर रहे हैं। श्रीमान सेठसाहब के सुपुत्रोंने अपने पिताश्रीके पुण्यस्मरणार्थ शास्त्र प्रकाशनमें उदार सहायता की है।

श्रीमान् सेठ सा की पाली-जोधपुर-व्यावर-अहमदाबाद-मुंबई में अनेक पेढ़िया हैं। इश्वर कृपा से बालियाजीके परिवार सुखसंपत्ति का सदा अनुभव करते रहे।

सेठ श्री पूनमचन्दजी गालिया



આચમુરખીશ્રીઓ



(રૂ.૧.) શ્રી દિનેશભાઈ કાન્તિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



(રૂ.૧.) શ્રી ઇગનલાલ શામળદાસ ભાવસા
અમદાવાદ



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી-રાજકોટ
(દીક્ષા લીધા પહેલાં શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



ગૃહ શ્રી જગિશભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ



(રૂ.૧) શ્રી રગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

✽

ગરેડીયાકુવા રોડ—ગ્રીન લોજ પાસે,
રાજકોટ

✽

દાતાઓની નામાવલી

✽

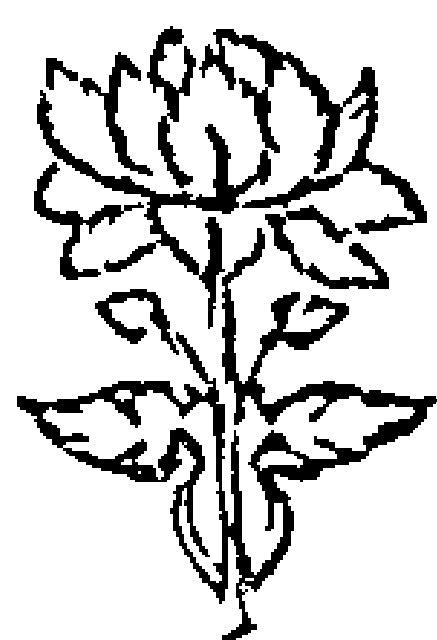
ગરૂઆત તા. ૧૮-૧૦-૪૪થી તા ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીના
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના સુખારક નામો.

✽

લાઈફ મેમ્બરોનું ગામવાર કકાવારી લિસ્ટ

✽

(નાની લેટની રકમો આપનારનું, તથા રૂ. ૨૫૦થી
ઓછી રકમ ભરનારનું નામ આ યાદીમાં સામેલ કરેલ નથી)



- ૧૬ શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી લૂણીયા ચડાવતવાળા અમદાવાદ ૫૫૦૨
- ૧૭ શેઠ રામજીભાઈ ગામજી વિરાણી એન્ડ સમરતળેન
રામજી વિરાણી ટ્રસ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૧
- ૧૮ એક ભૈન ગૃહસ્થ અમદાવાદ ૫૪૦૫
- નોટ - ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફથી અમદાવાદમાં પાલડી બમ સ્ટેન્ડ પામે પ્લોટ નં ૨૫૦ વાળી ૬૬૮ ચો વાર જમીન મમિતિને ભેટ મળેલ છે અને જેનું રજીસ્ટર તા ૨૩-૩-૬૦ ના રોજ થઈ ગયેલ છે

મુરખખીશ્રીઓ-૨૫

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનહાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૬૧૧-૧૧
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતાબરદાસ ગુલાબચંદ	ભામનગર	૩૧૦૧
૬	લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલટ્રસ્ટ હા શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઈ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૮	શેઠ દહેરચંદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચંદ દહેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભાઈ	મુબઈ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ હા શેઠ ચન્દ્રકાંત વીકમચંદ	મોરબી	૧૬૬૩
૧૧	મહેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨	મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	ભામનેધપુર	૧૫૦૨
૧૩	દોશી કપુરચંદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	ભામનેધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ માણેકલાલ ભાણુજીભાઈ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૬	શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા (રેલ્વે મેનેજર)	કલકત્તા	૧૦૦૧

આદ્યમુરખખીશ્રીઓ-૧૮

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ની ગરૂઆ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતીલાલ મગજદાસભાઈ જાણીતા મીત્રમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ વૃજલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	લાણુવડ	૬૦૦૦
૩	કેઠારી જેચંદ અજરમર હા હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઈ	ગજકેડ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવનભાઈ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામલદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જેશીંગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હા શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતીલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીબાઈ વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોચાલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ દુર્લભજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૩	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રીમતિ મણીકુ વરબેનદુર્લભજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીબાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ અને કુટુંબજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

૧૫ શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	,,	૫૦૦
૧૬ શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	,,	૫૦૧
૧૭ સ્વ પિતાશ્રી નદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચંદ શાંતિલાલ (જાળુઆવાળા) મેઘનગર		૫૦૧
૧૮ શ્રી જૈનસ્થા સઘ હા શેઠ ઠાકરજી કરગનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૧૯ શેઠ તારાચંદ પુળગજી	ઔરગાળાદ	૫૦૦
૨૦ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	,	૫૦૦
૨૧ મહેતા મુળચંદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ પ્રાક્ષા		૭૫૦
૨૨ શેઠ હરખચંદ પુરૂષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૩ ,, કેશરીમલજી વરતીમલજી ગુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા, બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઈ બાબીજીયા		૫૦૧
૨૫ શ્રી ખીમજીભાઈ બાવાભાઈ કુલચંદભાઈ શુભાખચંદભાઈ, નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઈ મુળઈ		૫૦૧
૨૬ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુળઈ		૫૦૧
૨૭ સ્વ કાતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાલચંદ માકરચંદ	,,	૫૦૧
૨૮ કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	,,	૫૦૧
૨૯ શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૩૦ વેરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,,	૫૦૧
૩૧ શેઠ શુભાખચંદ ભુદરભાઈ તથા હસ્તુરજેન હા ભાઈ અનોપચંદ બારરોડ		૫૦૧
૩૨ મહાન ત્યાગી જેન ધીરજીકુવર ચુનીલાલ મહેતા	પ્રાક્ષા	૫૦૧
૩૩ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	પ્રાક્ષા	૫૦૧
૩૪ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૫ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નંદકુવરજેન	જામનગર	૫૦૩
૩૬ શેઠ દેવચંદ અમરજી (જેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણવડ		૫૦૧
૩૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ (જેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણવડ		૫૦૧
૩૮ વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૯ મહેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા કમળાજેન મહેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૪૦ શ્રીયુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીસાજેન	,,	૫૦૧
૪૧ શેઠ મોહનરાજજી મુકુનચંદજી બાલીયા	,,	૫૦૧
૪૨ સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીલોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નીલક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાજેન તથા મગુજેન		અમદાવાદ ૫૦૧

૧૭	મહેતા સોમચંદ નેણુમીભાઈ (કરાચીવાળા)	ગોરખી	૧૦૦૧
૧૮	શાહ હરિલાલ અનોપચંદ	ખાભાત	૧૦૦૧
૧૯	મોદી કેશવલાલ હરીચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	મુળઈ	૧૦૦૦
૨૧	કોઠારી ર ગીલદામ હરખચંદ	ભાવનગર	૧૦૦૦
૨૨	શાહ પ્રેમચંદ માલુકચંદ તથા અ સૌ સમગ્રજન	અમદાવાદ	૧૦૦૩
૨૩	શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમયા હા અ સૌ માકરજન	મુળઈ	૧૦૦૦
૨૪	શેઠ પોપટલાલ ચત્રભૂજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫	શ્રી સ્થા, જૈન લીમડી મ પ્રદાયતા દ્વામાગુણ નીધી પુન્ય શ્રી લાધાણ સ્વામીના શીષ્ય પ્રજાર પડીત રત્ન શ્રી ઉત્તમચંદણ મહારાજના સ્મરણાર્થે પુન્ય લાધાણ સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હ શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો-૧૨૫

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૫૦૦ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ જુઝાભાઈ વેલશીલાઈ	વઢવાણશહેર	૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	જેરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા ગોરધનભાઈ	જામજોધપુર	૫૫૫
૪	બાટવીયા ગીરધર પરમાણુદ હા અમીચંદભાઈ	ખાખીનળીયા	૫૨૭
૫	મોરખીવાળા સઘવી દેવચંદ નેણુશીલાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ મણીભાઈ તરફથી હા મુળચંદ દેવચંદ સઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચ પાળેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ મનહરલાલ પ્રાણુજીવનદાસ	મુળઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શાહ શાંતિલાલ માલુકલાલ	,,	૫૦૧
૧૨	શેઠ શીવલાલ ડમગભાઈ (કરાચીવાળા)	લીમડી	૫૦૧
૧૩	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૦
૧૪	મહેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,,	૫૦૦

- ૬૨ અ સૌ લીલાવતીબેન ઇશ્વરલાલ , ૫૦૨
- ૬૩ હેમાણી પ્રભુદાસ બાણુજી કલકતા ૫૫૧
- ૬૪ શેઠ લક્ષ્મણદાસ મેજરામ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૫ શ્રી સ્વા નૈન મોટા સધ રાજકોટ ૫૦૧
- ૬૬ શેઠ ચાદમલ બીરધીચદ નામિક મીટી ૫૦૧
- ૬૭ ઝવેરી માણેકચદજી પન્નાલાલ છજલાણી
હ ધનવતીબેન તથા કિરણબેન દિલ્હી ૫૦૧
- ૬૮ શેઠ હ સરાજજી પૂર્ણમલજી કાકરીયા ગોગોળાવ ૫૦૧
- ૬૯ શ્રી શ્રે સ્વા નૈન મલા કલકતા ૫૦૧
- ૭૦ શેઠ તેજમિહજી કુતેલાલજી છાજેડ ઉદેપુર ૫૦૧
- ૭૧ શેઠ રતનચદ લક્ષ્મીચદ મુબઈ ૫૦૦
- ૭૨ શાહ ઉમરગી બીમગીભાઈ (સ્વ પિતાશ્રી બીમશીભાઈ
તથા માતુશ્રી પાલાબાઈ તથા ધર્મપત્ની પાનબાઈના સ્મરણાર્થે) મુબઈ ૫૫૨
- ૭૩ શાહ શામલભાઈ અમરસીભાઈ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૭૪ મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નીતમલાલ મુબઈ ૫૦૧
- ૭૫ શેઠ બીખચદ્ર લાલચદ્ર પીપલગામ ૫૦૧
- ૭૬ બેન મોહનીબેન મહેતા મુબઈ ૫૦૧
- ૭૭ શ્રીમતી મોઘીબેન નવલચદ શાહ
હ મોતીબેન લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર) ૫૦૧
- ૭૮ શ્રીમતી વિમલાજી સૂરજમલ મહેતા બેલગામ ૫૦૧
- ૭૯ ઉદાણી નિહાલચદ્ર હાકેમચન્દ્ર વકીલ
બી એ એલ એલ બી, રાજકોટ ૫૦૧
- ૮૦ સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના
સ્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન સતારા ૭૫૧
- ૮૧ શેઠ મોહનલાલજી મછાલાલજી હ રમણીકલાલ
(પૂ મુનિશ્રી કુતેચદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી
કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી) જયપુર ૫૦૧
- ૮૨ શેઠ કનૈયાલાલજી મોહનલાલજી કાવેડિયા ધારડી ૫૦૧
- ૮૩ શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચદજી સાહેરાવવાળા (પૂજ્ય
કુતેચદજી મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ
ના શિષ્ય ચાદમલજી મ ના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧

- ૪૩ પારેખ જયંતીલાલ મનમુખલાલ રાજકોટવાળા હા વિનુભાઈ ,, ૫૦૧
વાઘાનેર ૫૦૧
- ૪૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ બોટાદ ૫૦૧
- ૪૫ શ્રી સ્થા નૈન સઘ (બરાર) ખીપજગાંવ ૫૦૧
- ૪૬ શેઠ ગુદડમલજી શેખમલજી નેવર
૪૭ સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમના
ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા બાઈ
જયંતીલાલ તથા પૂનમચંદભાઈ વડોદરા ૫૦૧
- ૪૮ શાહ અચ્યુતદાસ શુકનરાજજી હા શુકનરાજજી અમદાવાદ ૫૦૧
- ૪૯ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ધધુકા ૫૦૧
- ૫૦ અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા ધાટકોપર ૫૦૧
- ૫૧ મહેતા શાંતીલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદમાવતી
શાંતિલાલ મહેતા અમદાવાદ ૫૦૦
- ૫૨ શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કઠારીયા દુબલી ૫૦૧
- ૫૩ શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુબઈ ૫૦૧
- ૫૪ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના
પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
ધર્મપત્ની અ સૌ વસંત બહેનના અઠાઈતપ નિમિત્તે
હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
- ૫૫ સ્વ શાહ ત્રીલોચનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
શીવકુવરબાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીલોચનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૬ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ મુબઈ (માટુગા) ૫૦૧
- ૫૭ શ્રી લીમડી સપ્રદાયના ગચ્છાધીપતિ પૂ આચાર્ય
મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા
શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજ શ્રી
છોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૮ સ્વ શ્રી વિનયમૂર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ (મહારાજશ્રી છોટાલાલજી
સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૯ બા બ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જૈનવાલા તરફથી
તેમની દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
- ૬૦ શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયગંદ હા છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૧ શેઠ પોપટલાલ હસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૯૮	શ્રી વર્ધમાન સ્વા નૈન શ્રાવડ મધ હ પ્રમુખ બમીલાલ કટારીયા	હિંગણધાટ	૫૦૧
૯૯	લાલાજી ગમલાલજી રોગનલાલજી અનેક ગુણાલકૃત મહામતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી)	દીલ્હી	૫૦૧
૧૦૦	સ્વ મહેતા મગજજી મણીલાલજીના ન્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની ગુણવતીબહેન મહેતા	પોરબેરી	૫૦૧
૧૦૧	ખાટવીયા વનેચદ અમીચદ (મહાવીર ટેક્સટાઇલ નેટર્મ) બેગલોર	પપટ	
૧૦૨	શ્રીયુત તાગચદ ગેલડા ટ્રસ્ટ	મદ્રાસ	૫૦૧
૧૦૩	ગે. ગુલરાજજી પુનમચદજી મહેતા	કીમનગઢ	૫૫૧
૧૦૪	ગે. અગમ્મલજી ત્રીકમચદજી	ઇદોર મીટી	૫૫૧
૧૦૫	ઠાનુગા ધીગડમલજી મુલતાનમલજી ડવાડ ગઢમીયાણા વાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૬	લાલાજી નવગતનચદજી ચોગડીયાના ધર્મપત્ની શ્રીમતી રાજકુમારીબેન	દીલ્હી	૫૦૧
૧૦૭	ગેઠ ચીમનલાલ કપલચદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૮	ગેઠ ડાનજી પાનાચદ ભીમાણી ટ્રસ્ટ	કલકત્તા	૫૦૧
૧૦૯	ગેઠ ગીરધરલાલ હમગજ કામાણી	,,	૫૦૧
૧૧૦	અનેક ગુણાલકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી ન્વધર્મા બધુઓ તરફથી	દીલ્હી	૫૦૧
૧૧૧	સ્વ વિનયચદજી પારેખના ન્મરણાર્થે લાલા પૂર્ણચદજી રતનચદજી પારેખની વતી હ શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાત ન્વભાવી મહામતીજી કુલકુવગ્નાઇના ઉપદેશથી)	દીલ્હી	૫૦૧
૧૧૨	શ્રીમતી બદામબાઇ મીશ્રીલાલજી લૂણીયા ચડાવતવાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૩	શેઠ ભગતકુમાર મણીલાલ દલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૪	શાહ હરખચદ અમરચદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૫	શાહ જગજીવનદાસ વન્ડાવનદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૬	ગેઠ હમરાજ લક્ષ્મીચદ કામાણી જૈનભૂવન	કલકત્તા	૫૦૧

૮૪ શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી મમન્દરલાલજી

બટોલ ૫૦૧

હ મોતીલાલજી

૮૫ શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચદજી સાકરિયા (પૂ મ શ્રી
સ્વામીદાસજીના સપ્રદાય પૂ મ શ્રી કૃતેચદજી મ ના
શિષ્ય પ મુની શ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી

સાદરાવ ૫૦૧

૮૬ સ્વ ગોરીશકર કાળીદાસ દેમાઈના સ્મરણાર્થે હ
ભૂપતલાલ ગોરીશકર

ઈદાર ૫૦૧

૮૭ શેઠ સાહેબ શ્રી નર્સિંરામભાઈ હ સરાજભાઈ કમાળી

નમચેડપુર ૫૦૧

૮૮ સ્વ મહાસજી શ્રી ધનદેવીજી મ મા ના સ્મરણાર્થે
સ્વ ખૂબચદજી સખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જય-
દેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા
કુલમતીજીના ઉપદેશથી

દિલ્હી ૫૦૧

૮૯ શ્રીમાન લાલાજી કપૂરચદજી બોધરાના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી વસંતદેવી હા લાલા રાજમલજી હેમચદજી
તરફથી (મહાસતી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા કુલમ
તિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૯૦ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે
શ્રી અસ અસ જૈન મહિલા સઘ તરફથી (અનેક ગુણાલ કૃત
મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ સા ની પ્રેરણાથી)

દિલ્હી ૫૦૧

૯૧ સ્વ લક્ષ્મીચદજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી હસ્તે
સઘવી હેમતકુમાર જૈન

દિલ્હી ૫૦૧

૯૨ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘત્નોમલજી સુજતી ના સ્મરણાર્થે
હસ્તે શ્રીમતી નગીના દેવી

દિલ્હી ૫૦૧

૯૩ લાલાજી કસ્તુરચન્દજી ખુશાલચન્દજી સચેતી હ જ્ઞાનચદજી અલવર ૫૦૧

૯૪ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી હર્ષલજી સોમચદ દક્ષતરી
હ ગોરીશકર હર્ષલજી દક્ષતરી

મુંબઈ ૫૦૦

૯૫ શેઠ સોમચદ જેઠાલાલ ઘોલાણી હ
ચુનીલાલભાઈ જોડીયાવાળા

મુંબઈ ૫૦૬

૯૬ શેઠ ક્રાન્નમલજી સુલતાનમીહજી બોરહીયા

અમદાવાદ ૫૦૧

૯૭ શેઠ છગનલાલ શામજીવિરાણી તથા

શ્રીમતી વૃન્કુવરબેન છગનલાલ વિરાણી દૂસ્તદ્દ
તરફથી શેઠ છગનલાલ ભાઈના સ્મરણાર્થે

રાજકોટ ૫૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ હરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા નૈન સઘ	
હા શેઠ ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪ શાહ ચીનુભાઈ ખાલાભાઈ C/O શાહ ખાલાભાઈ મહામુશલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉન્નમશી	૨૫૧
૧૬ શ્રી મુખલાલ ડી શેઠ હા ડા કુ સમ્બતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી મૌરાપ્ટ સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ કાતિલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદામ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી મ્થા નૈન સઘ હા શેઠ પોચાલાલ પિતાબદામ	૨૫૧
૨૧ દેગાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખગય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આરાસામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ માકરચદ	૨૫૧
૨૫ શાહ વરજીવનદામ ઉમેદચદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાંત કસ્તુરચદ	૨૫૧
૨૭ સઘવી જીવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાગધ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સો બેન ગ્નનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચપાલાલજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી મરસપુર હરીયાપુરી આઠ કોટી મ્થા નૈન ઉપાશ્રય	
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા માઢડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હંજરીમલજી	
ખરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચદ જવાહરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બખાભાઈ (મગજદાસ) પાનાચદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા કકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચદ બખડાવાળા હા પાવતીબેન	૨૫૧

૧૧૭ પૂ દાદાજી સ્વ કપુરચંદજી તથા દાદીજી કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે હ લાલા ફલચંદજી અને શ્રીમતી વીમલકુવરી જવેરી નીવતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી કૂલમતીજીના ઉપદેશથી)	દીઠહી ૫૦૧
૧૧૮ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૧૯ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શેઠ ગણેશમદલ ગુલાબચંદ	બરોરા ૫૦૧
૧૨૦ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	ભદેસર ૫૦૧
૧૨૧ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય	કુમારડી ૫૦૧
૧૨૨ ગાધી ભુરાલાલ નાનચંદ	મુબઈ ૫૦૧
૧૨૩ શ્રીમાન હિમતસિંહજી સાહેબ ગલૂડીયા એડીસનલ કમીશનર અજમેર ડીવીઝનવાળાના ધર્મપત્ની અ સૌ માણેકકુવરબેન તરફથી હ ખશાલસિંહજી ગલૂડીયા	જયપુર ૫૫૧

૫૮૪—લાઈફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ		૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા ફકીરચંદભાઈ		૨૫૧
૩	શાહ કાતિલાલ ત્રીલોવનદાસ		૨૫૧
૪	શાહ પોપ્પલાલ મોહનલાલ		૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ		૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મગજદાસ		૨૫૧
૮	સ્વ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેશાધરિપ૧		
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ		૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીલોવનદાસ		૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચંદ તથા ઉમાકાત ચુનીલાલ ગોપાણી		૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈન ઉપાચાર્ય હા વહીવટ કર્તા શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ		૨૫૧

૬૩ અ સૌ બેન લાભુબેન મગનલાલ હ શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ	
વઢવાણ શહેરવાળા	૩૦૧
૬૪ અ સૌ બેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૬૫ દોશી કુલચંદ મુળલાલભાઈ બોટાદવાળાનાં અમરણાર્થે	
હ દોશી છબીલદાસ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૬૬ લાલાજી ગમકુવરજી નૈન	૨૫૧
૬૭ શેઠ ઇંટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા	૨૫૧
૬૮ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ	૨૫૧
૬૯ સઘવી સૂર્યકાંત ચુનીલાલના અમરણાર્થે	
હ સઘવી હવણલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૭૦ ભાવમાર મોહનલાલ અમુલખરાય	૨૫૧
૭૧ મહેતા મૂળચંદ મગનલાલ	૨૫૧
૭૨ વૈદ્ય નરસિંહદાસ માકરચંદના ધર્મપત્ની દેવાબાઈના અમરણાર્થે	
હ હરીલાલ નરસિંહદાસ	૨૫૧
૭૩ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હ હસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ	૨૫૧
૭૪ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ગરડીયા	૨૫૧
૭૫ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ જશવંતલાલ લલ્લુભાઈ	૩૦૧
૭૬ કુમારી પુષ્પાબેન હીંગલાલ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૭ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા	
(ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૭૮ કુમારી નલીનીબેન જયતીલાલ	૨૫૧
૭૯ અ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઈના અમરણાર્થે	
હા રાતિલાલ ઉમેદરામ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૦ અ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દિવાળીબાઈના	
અમરણાર્થે હ રતીલાલ માણેકલાલ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૮૧ મહેતા દેવીચંદજી ખુબચંદજી ધોકા ગઢસીયાણાવાળાના અમરણાર્થે	
હ મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ	૨૫૧
૮૨ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કેઠારી કેઠ લક્ષ્મી પુસ્તક લડાર	૨૫૧
૮૩ સ્વ૦ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ માફતીયાના અમરણાર્થે	
પુનાબેન તરફથી હ ડરશનભાઈ (ચાદમુનિના ઉપદેશથી)	૨૫૧

૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાહીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર ઘોટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ ચી ચ પાબેન તથા વસંતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચંદ દેસાઈ વર્ષીતપ તથા અઠાઈ પ્રસંગે હા ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેસાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ અ સૌ મરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ	૩૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની)	૩૦૬
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૧ અ સૌ સુનદાબેન (રમણલાલ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૨ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૩ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઈ	૨૫૧
૫૪ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા	૩૦૧
૫૫ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે હા રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૫૬ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી	૩૦૧
૫૭ શ્રી સારંગપુર દે આ કો સ્થા જૈન સઘ હા શાહ રમણલાલ ભગુભાઈ	૨૫૧
૫૮ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઈ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે હા દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા	૨૫૧
૫૯ શાહ પુનમચંદ કૃતેહચંદ	૨૫૧
૬૦ શ્રીયુત ચતુરભાઈ નદલાલ	૨૫૧
૬૧ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઇશ્વરલાલ મહેતા	૨૫૧

૧૦૫ શાહ મહામુખલાલ ભાઈલાલ (મદાનદી પડિત મુનિશ્રી છોટાલ મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૦૬ અ સૌ કાતાબેન કાળીદાસ ઠે કુમાર બુક બાઈડીંગ વર્ક્સ	૨૫૧
૧૦૭ અ હીમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના સુપુત્રો મેમર્સ દારકાદાસ એન્ડ પ્રધર્મ તરફવી	૩૦૧
૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૧૦૯ શ્રી ઉમેદચંદ ઠાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાણી એન્ડ સન્સ	૩૫૧
૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૧૧૧ શાહ ગાતીલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૧૧૨ સરસ્વતી પુસ્તકલઠાર હા પ્રભુદાસ મહેતા	૨૫૧
૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક ભઠાર હા ગહ જુરાલાલ કાળીદાસ	૨૫૧
૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલદેવના સ્મરણાર્થે હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરમીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના સ્મરણાર્થે તથા અ મૌ મવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે હા શેઠ મોમચંદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા)	૩૦૧
૧૧૬ શ્રીમાન ભેરાવરમલજી ધર્મચંદ્રજી હુગરવાલ રાજજી કાઠેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૧૭ ડા ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભઠાર	૩૫૧
૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક ભઠાર	૩૫૧
૧૨૦ સરસ્વતી ભઠાર	૩૫૧
૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા	૨૫૨
૧૨૩ ડામદાર વાડીલાલ દત્તીલાલ (સાળરમતી)	૨૫૨
૧૨૪ કુમારી અ પાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર	૨૮૦
૧૨૫ કુમારી ઉપાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૬ કુમારી અ દ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૪૧
૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણુલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અ બાલાલ	૩૫૧

૮૪ શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૫ ભાવસાર જ્યતીલાલ લોગીલાલ	૨૫૧
૮૬ ભાવસાર દિનુભાઈ લોગીલાલ	૨૫૧
૮૭ ભાવસાર રમણુલાલ લોગીલાલ	૨૫૧
૮૮ ભાવસાર કનુભાઈ સાકરચદ	૨૫૧
૮૯ શેઠ લેરૂમલજી સાહેબ નેધપુરવાળા	૨૫૧
૯૦ સ્વ ઘેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુદણીવાળાના સ્મરણાર્થે	
હ શાંતિલાલ વર્ધમાન	૨૫૧
૯૧ સ્વ કચરાભાઈ લહેરાભાઈના સ્મરણાર્થે	
હ શાંતિભાઈ કચગલાઈ	૨૫૧
૯૨ એક સ્વધર્મી બધુ હ શાહ રીખલદાસજી જ્યતિલાલજી	૨૫૧
૯૩ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ	
(સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૯૪ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (રરીયાપુરી સ પ્રદાયના પૂઠ તપસ્વી	
મહારાજશ્રી માણેકચદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી	
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૯૫ બેન જેકુવર ઝજલાલ પારેખ	૨૫૧
૯૬ શેઠ પુનમચદજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૯૭ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા	
હે ડા ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા	૩૦૧
૯૮ શેઠ રાજમલજી ઘાસીલાલજી કેઠારી કેશીથલવાળા	૨૫૧
૯૯ શેઠ ચુનીલાલ લગવાનજી કે રતીલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૧૦૦ ભાગ્યવતી અરવીદકુમાર કે અરવીદકુમાર સકરાભાઈ ભાવસાર	૨૫૧
૧૦૧ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ	
હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા	૨૫૧
૧૦૨ સ્વ આસીબાઈ તથા વસ્તીમલજી ભોમાજીના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચદજી ચોસવાલ કેરુવાળા	૨૫૧
૧૦૩ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે	
હા શીરેમલજી કીશનમલજી સોજતવાલા	૨૫૧
૧૦૪ સ્વ શેઠ વકતાવરમલજીના સ્મરણાર્થે	
હા શેઠ ધીમ્નાલાલજી મુન્નરાજજી શીખરીયા (નેધપુરવાલા)	૨૫૧

૧૦૫ શાહ મહામુખલાલ લાઈલાલ (મદાનદી પડિત મુનિશ્રી છોટાલ મહાગજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૦૬ અ મૌ કાતાબેન કાળીદાસ ઠે કુમાર બુક બાઈડિંગ વર્ક્સ	૨૫૧
૧૦૭ સ્વ હિંમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના સુપુત્રો મેમર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ પ્રધર્મ તરફવી	૩૦૧
૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર નાગરદાસ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૧૦૯ શ્રી ઉમેશ્વરદાસ ઠાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાળી એન્ડ મન્સ	૩૫૧
૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૧૧૧ શાહ શાતીલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૧૧૨ સરસ્વતી પુસ્તકભંડાર હા પ્રભુદાસ મહેતા	૨૫૧
૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા ગહ ભુરાલાલ કાળીદાસ	૨૫૧
૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરગીના ધર્મપત્ની સ્વ કુમુદબેનના સ્મરણાર્થે તથા અ મૌ મવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે હા શેઠ મોમચંદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ સુદાનવાળા)	૩૦૧
૧૧૬ શ્રીમાન જોરાવરભલજી ધર્મચંદ્રજી કુગરવાલ રાજજી કાંડેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૧૭ ડા. ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર	૩૫૧
૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર	૩૫૧
૧૨૦ સરસ્વતી ભંડાર	૩૫૧
૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા	૨૫૨
૧૨૩ કામદાર વાડીલાલ દત્તીલાલ (સાબરમતી)	૨૫૨
૧૨૪ કુમારી અ પાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર	૨૮૦
૧૨૫ કુમારી ઉપાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૬ કુમારી અ દ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૪૧
૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અ બાલાલ	૩૫૧

૧૨૯ ખરડિયા ચાદમદલજી અવાહીર લાલજી	૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમદીર પોષધશાળા	૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચદ અવેરચદ સારંગપુર ઉપાશ્રય દ્રુષ્ટ હુ વકીલ બાબુભાઈ હીમતલાલ	૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા નૈન સદા હા ગાડાલાલ ભીખાલાલ	૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ હુગરવાલ	૨૫૧
-------------------------------	-----

અટવર

૧ શ્રીમતી ચપાદેવી કે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી	૨૫૧
૨ શેઠ ચાદમદલજી મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત	૨૫૧
૩ શ્રીચુત રૂપભકુમાર સુમતિકુમાર નૈન	૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની મણીભાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વીનોદરાય	૨૫૧
--	-----

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ	૩૦૧
-------------------------	-----

આણંદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઈ	૨૫૧
-------------------------------------	-----

આકોલા

શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા કે મેસર્સ અજમેરા બ્રપર્સ એન્ડ કુા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
---	-----

ઇગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચદ નૈન	૨૫૧
--------------------------	-----

ઈન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે) હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨ શ્રીચુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧

ઉદયપુર

૧ શેઠ રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૨ શ્રીમતી મોહીનીબાઈ ઠે રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૩ અ મૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહુના	
ધર્મપત્ની, હા શેઠ રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ	૨૫૧
૪ શેઠ હગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા	૨૫૧
૬ અ શેઠ ડાળુલાલજી લોઢાના અમરણાર્થે	
હા શેઠ દોલતમિહજી લોઢા	૨૫૧
૭ અ શેઠ પ્રતાપમલજી માળલાના અમરણાર્થે	
હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ માળલા	૨૫૧
૮ શેઠ ભીમરાજજી યાવચ્ચદજી બાદશા	૨૫૧
૯ શ્રીગુત માહેળલાલજી મહેતા	૨૫૧
૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેરાલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૧૧ શેઠ દીપચદજી પન્નાલાલજી લોઢા	૨૫૧
૧૨ શેઠ ડન્તૂરચદજી નાડમલજી	૨૫૧
૧૩ શ્રી યૂ એલ ડોલની	૩૦૧
૧૪ બાળૂ પશુરામ હગનલાલજી શેઠ	૨૫૦
૧૫ શેઠ ડનીયાલાલજી ડાડલાલજી નૈન	૨૫૧
૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન શ્રાવક સઘ આમડ	૩૫૧

ઉપલેટા

૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદામ	૨૫૧
૨ અ બેન સતોડબેન કચરા હા આતમચદલાઈ, છોટાલાલલાઈ	
મથા અમૃતલાલલાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા)	૨૫૧
૩ શેઠ ખુશાલચદ કાનજીલાઈ હા પ્રતાપલાઈ	૨૫૧
૪ દોશી વીઠ્ઠલજી હુગ્ગચદ	૨૫૧
૫ મધાણી મુળશંકર હરજીવનલાઈના અમરણાર્થે હા તેમના પુત્રો	
જયતીલાલ રમણીડલાલ	૨૫૧

૧૨૯ બરડિયા ચાહમલલ જવાહીર લાલજી	૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમદીર પોષધશાળા	૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચંદ અવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રમ દૂરદ	
હુ વકીલ બાબુભાઈ હીમતલાલ	૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા ગાડાલાલ ભીખાલાલ	૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુગરવાલ	૨૫૧
-------------------------------	-----

અટવર

૧ શ્રીમતી ચ પાદેવી કે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી	૨૫૧
૨ શેઠ ચાહમલલ મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત	૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂપલકુમાર સુમતિકુમાર જૈન	૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની	
મણીભાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વીનોદરાય	૨૫૧

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ	૩૦૧
-------------------------	-----

આણંદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઈ	૨૫૧
-------------------------------------	-----

આકોલા

શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા કે મેસર્સ અજમેરા પ્રપર્સ એન્ડ	
હા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧

ધંગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ જૈન	૨૫૧
---------------------------	-----

ઈન્દોર

૧ અ સૌ જૈન દયાજૈન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા	
(અ સૌ જૈન વિદ્યાજૈનના વર્ષોત્તમ નિમિત્તે)	
હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨ શ્રીયુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧

કનકમગડ

૧ શ્રી શ્વે સ્વા લીન મધ હ શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સધવી ઠાકરજીભાઈ મધજીના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હીમતવાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુદણી-(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરજી ૨૫૧

કોલકાટી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જોઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધ્રાક્ષવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, ગતીલાલ નાનચંદ શેઠ ધ્રાક્ષવાળા ૨૫૧

કુગાળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીજળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ સૌ બેન જમકુખાઈ તથા લીલાખાઈના
સ્મરણાર્થે હ નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ સ્વ શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હ ભાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

' ઉમરગાવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

ઝોડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરુષોત્તમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકુળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન સ્થે સ્થા (ગુજરાતી) સઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જોઠાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ હા મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા હા રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા મારક્ટીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
૬ શીહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી-સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન કે જેસીગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

કરજણુ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ મીયાયામ કરજણુ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સઘ હા જેસીગભાઈ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હા કાકોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

કન્યામગ્ન

૧ શ્રી શ્રવે સ્વા લેન મધ હ ગેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ ૨૫૧

કલ્યાણ

૧ સધવી ઠાકરજીભાઈ મધણના ન્મરણાર્થે
હ શાહ હીમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુદણી-(આટકોટ)

૧ દોચી ગ્તીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના ન્મ સુપુત્ર રામજીભાઈના ન્મરણાર્થે) ૩૦૨

કમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ ધ્રાક્ષવાળાના ન્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, ગ્તીલાલ નાનચંદ શેઠ ધ્રાક્ષવાળા ૨૫૧

કુગળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીલખીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ સૌ બેન જમકુખાઈ તથા લીલાખાઈના
ન્મરણાર્થે હ નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ ન્મ શેઠ ઓઘરવાલ લક્ષ્મીચંદના ન્મરણાર્થે હ ભાઈચંદ ઓઘડભાઈ ૨૫૧

ઉમરગાંવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

ઝોડન કેમ્પ

૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરુષોત્તમદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન સ્થા (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જોઠાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડા મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડા રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વ શ્રીચુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
૭ શ્રી સ્થા જૈન સંઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલોલભાઈ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સંઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઈશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
૨ પાર્વતીબેન કે જેસીગભાઈ ઈશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ મીયાયામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

૧ સ્થા જૈન સંઘ હ જેસીગભાઈ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હા કાકોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

૩ કામદાજી જુહાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા હુનીલાલ જુહાલાલ કામદાજી	૩૦૧
૪ સ્વ કોઠાની દૃપાશંકર માળેડચંદના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરજેન	૨૫૧
૫ કોઠાની શુભાળચંદ રાયચંદ ૨ ગુનવાળા	૨૫૧
૬ જમાણી રૂગનાથભાઈ નાનજી હા ચુનીલાલભાઈ	૨૫૧
૭ માન્તર હુકીમચંદ દીપચંદ શેઠ	૨૫૧

ગોદીયા

૧ સ્વા જૈન મધ હા ગાહુ પ્રેમચંદ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી)	૨૫૧
---	-----

ગોધરા

૧ શાહુ ત્રીલોચનદાસ હગનલાલ	૩૦૧
૨ સ્વ પ્રેમચંદ લડગીના સ્મરણાર્થે હા ગાહુ ચુનીલાલ પ્રેમચંદ	૩૦૧

ઘટકણુ

૧ ગાહુ ચંદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
------------------------	-----

ઘોલવડ (થાણા)

૧ મહેતા શુભાળચંદ ગભીરમલજી	૩૦૦
---------------------------	-----

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચંદ્રલાલ શોભાચંદ ગાદીયા	૨૫૧
-------------------------------	-----

ચુડા

૧ શ્રી સ્વા જૈન મધ હા ગ્તીલાલ મગનલાલ ગાધી	૨૫૧
---	-----

ચોટીલા

૧ શાહુ વનેચંદ જેઠાલાલ શ્રી સ્વા, જૈન મધને ભેટ	૩૦૧
---	-----

ચારભુજરોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચંદજી ખાળેલ	૩૦૧
---------------------------------	-----

જમશેદપુર

૧ દોશી ઝવેરચંદ વલભજી	૨૫૧
----------------------	-----

જલેસર (ખાલામોર)

૧ સઘવી નાનચંદ પોપટભાઈ ચાનગઢવાળા	૨૫૧
---------------------------------	-----

ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ ૩૫૨

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા ૩૦૦

૨ શેઠ નરમિહદાસ શાંતિલાલજી લોગલાવાળા
(મુનિશ્રી ચાદમલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

ખાલાત

૧ શેઠ માણેકલાલ લગવાનદાસ ૨૫૧

૨ શેઠ ત્રીલોચનદાસ મગળદાસ ૨૫૧

૩ શ્રી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૧

૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ ૨૫૧

૫ શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ ૨૫૧

૬ શાહ શકરાભાઈ દેવચંદ ૨૫૧

૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ ૨૫૧

૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ ૨૫૧

૯ જૈન લલિતા માણેકલાલ ૨૫૧

ગાધીગામ

૧ શાહ મોરારજી નગજી એન્ડ કંપની ૨૫૧

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ ૨૫૧

ગુલાબપુરા-

૧ શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સઘ

હા માગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા ૨૫૧

૨ શ્રી એસવાલ પચાયત હા ગુલાબચંદજી ચોરડીયા ૨૫૧

ગોડલ

૧ સ્વ લાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપત્ની જમલબાઈ
તરકથી હા માણેકચંદભાઈ તથા કપુરચંદભાઈ ૨૫૧

૨ પીપગીયા લીલાધર દામોદર તરકથી તેમના ધર્મપત્ની અ મૌ

૩ ગેઠ અમતલાલ હીંગ્લભાઈ હે નગ્મેગમભાઈ (૧૪સાપુગ્વાળા)	૨૫૧
૪ દોગી દોટાલાલ વનેચદ	૨૫૧

જેતલમગ

૧ શાહ લક્ષ્મીચદ કપુચ્ચદ	૨૫૧
૨ કાદાગ લીલાધર જીવગજના અમરજીયે તેમના ધર્મપત્ની જળકબેન તરફવી હે શાતિલાલભાઈ ગોરલવાળા	૨૫૧

જેધપુગ

૧ શેઠ નવરતમલજી ધનવતમિહજી	૨૫૦
૨ ગેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપલજી મામસુળા	૨૫૧
૩ શેઠ પુળરાજજી પદમરાજજી લડાગી	૨૫૧
૪ ગેઠ વસ્તીમલજી આનદમલજી મામસુળા	૨૫૧

જેરાવરનગર

૧ શ્રી સ્વા જૈન સઘ હે શેઠ ચપકલાલ ધનજીભાઈ	૨૫૧
--	-----

ઝંઝીયા

૧ શ્રી સ્વા જૈન સઘ હે ગેઠ કનેયાલાલ બી મોદી	૨૫૧
--	-----

ડોડાયચા

૧ શ્રી સ્વા જૈન સઘ	૨૫૦
--------------------	-----

ઢસા

૧ ઢસાગામ સ્વા જૈન સઘ હે એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્વા જૈન સઘ હે બગડિયા નરભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જ કશન)	૨૫૧

તાસગાવ

૧ સ્વ સુનીલાલજી હુગડના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની ઢોહુબાઈના તરફથી હે શેઠ રામચંદજી	૩૫૧
--	-----

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી	૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હે સુખલાલભાઈ	૨૫૧
૪ હેસાબેન અરવીદ હે ભાઈ રવીચદ માણેકચદ	૩૦૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલજી નવલખાના ધર્મપત્ની અ મૌ પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવન્તગઢ

૧ શ્રીમાન સુન્દરલાલજી નેમીચંદજી તકેસગ ૩૫૧

જામખ ભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારણજી ૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણુછોડદાસ પરમાણુનંદ ૨૫૧

૩ સઘવી પ્રાણુલાલ લવજીભાઈ ૨૫૧

જામન ૨

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી ૨૫૧

૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧

૩ હા સાહેબ પી પી શેઠ ૨૫૦

૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ ૨૫૧

૫ વકીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ પુનાતર ૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ ૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હ હરિલાલભાઈ (હાટીનામાળીયાવાળા) ૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ ૩૮૭

૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા ૨૫૧

૩ દોશી માણિકચંદ ભવાન ૨૫૧

૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ બાવનજી જોઠાભાઈ ૨૫૧

૬ શેઠ વ્રજલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧

જેત ૨

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ ૨૫૧

૨ અ સૌ જૈન સુવ્રજકુવર વેણીલાલ કોઠારી ૨૫૧

૩ શેઠ અમતલાલ હીંગ્લબાઈ હે નગ્ભેગમભાઈ (જસાપુગ્વાળા)	૨૫૧
૪ દોગી છોટાલાલ વનેચદ	૨૫૧

જેતલમ

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુચંદ	૨૫૧
૨ કાદાગ લીલાધર જીવગજના નમગ્ણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની જળકબેન તરફથી હે શાંતિલાલભાઈ ગોહલવાળા	૨૫૧

જેધપુર

૧ શેઠ નવગતમલજી ધનવત્તમિહજી	૨૫૦
૨ શેઠ હન્તીમલજી મનરૂપલજી મામશ્રુખા	૨૫૧
૩ શેઠ પુખરાજજી પદમરાજજી લડાગી	૨૫૧
૪ શેઠ વન્તીમલજી આનંદમલજી મામશ્રુખા	૨૫૧

જોરાવરનગર

૧ શ્રી સ્વા જૈન સઘ હે શેઠ ચપકલાલ ધનજીભાઈ	૨૫૧
--	-----

ઝરીયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે શેઠ કનેયાલાલ જી મોદી	૨૫૧
--	-----

ડોહાયયા

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૨૫૦
--------------------	-----

ઢમા

૧ ઢસાગામ સ્થા જૈન સઘ હે એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે જગડિયા નગ્ભેરામ જેઠાલાલ (ઢસા જ કશન)	૨૫૧

તાસગાવ

૧ સ્વ ચુનીલાલજી હુગડના સ્મગ્ણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની ઢોહુબાઈના તરફથી હે શેઠ રામચંદજી	૩૫૧
---	-----

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાઠરશીભાઈ કરશનજી	૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીલોચનદાસ	૨૫૧
૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હે સુખલાલભાઈ	૨૫૧
૪ હંસાબેન અરવીદ હે ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ	૩૦૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ ખંધાર (કગચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેગારજી ૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલાજી પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્દ્રલ બેકવાળા) ૩૫૧

૨ શ્રીયુત ક્રીશનચંદજી મહેતાબચંદજી ચોરડીયા

હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાબચંદ જૈન ૨૫૧

૩ અ સૌ સજ્જનબેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧

૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧

૫ લાલાજી ગુલશનલાલજી જૈન એન્ડ સન્મ ૩૦૧

૬ બેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે મહેતાબચંદ જૈન

(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીજી મહાસતિજીની ગ્રેરણાથી) ૨૫૧

૭ શ્રીમાન લાલાજી રતનચંદજી જૈન ઠે આઈ સી હોઝીયરી ૨૫૧

૮ સ્વ લાલાશ્રીચંદજી ડુગરીયાના સ્મરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી
હુકમચંદજી જૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર
તરફથી લેટ હુ વિનયકુમારી ૩૫૧

૯ સ્વ લાલા ચંપાલાલજી ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાલચંદજી
તથા હીરાલાલજી તરફથી હુ સાતાદેવી ૩૫૧

૧૦ એક સદ્ગુણસ્થ તરફથી હુ મહેતાબચંદજી જૈન ૩૦૧

૧૧ એક સ્વધર્મી બધુ તરફથી હુતે વિજિયાકુમારી બેન ૩૦૧

૧૨ બાણુ નિરજન સિંહજી જૈન ૨૫૧

ધ્રાફા

૧ શેઠ મણીલાલ જેચંદભાઈ ૨૫૧

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

ધાગધા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીબેન હિમતલાલ સઘવીની તપશ્ચર્યાથી
સઘવી ચીમનલાલ પુરસોતમદાસ સઘવી તરફથી ૩૦૫

૨ મધવી નરમિહદામ વખતચદ	૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા નૈન મોગ મધ હ મગળજી હવરાજ	૨૫૧
૪ ઠકર નારણદામ હરગોવિદદામ	૨૫૧
૫ ઠોઠારી કપુચદ મગળજી	૨૫૧

ધોગજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૩૫૧
૨ અ સૌ બચીબેન બાણુભાઈ	૨૫૧
૩ ધી નવસૌગઢ જોઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ ગયચદ પાનાચદના સ્મરણાર્થે હ ચીમનલાલ રાયચદ શાહ	૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જોચદભાઈ	૨૫૦
૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાના ધર્મપત્ની દિવાળીબેન તરફથી હ કુમારી હસુમતી	૨૫૧
૭ એક મદ્રજહુચ હ મહેતા પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ	૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વમનજી મહેતા	૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હ પટેલ દલીચદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચદ કાળીદાસ જામજાભાણીયાવાળા	૨૫૧

ધ ધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨ સ્વ ગુલાબચદભાઈના સ્મરણાર્થે હ વોરા પોપટલાલ નાનચદ	૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ નૈન જ્ઞાનાલય હ શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ	૨૫૧
---	-----

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧
-----------------------	-----

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧
---	-----

ન દુરબાર

૧ શ્રી સ્થા નૈન સધ હ શેઠ પ્રેમચદ ભગવાનલાલ	૨૫૧
---	-----

નાગોર

- ૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કુ સાગરમલ્લુ લુકડ ડેરવાળા તરફથી ૨૫૧

પાલનપુર

- ૧ બેન લક્ષ્મીભાઈ હ મહેતા હરીવાલ પીતાબરદાસ ૨૫૧
૨ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હ દેશવલાલ છ શાહ ૨૫૧

પાણમણા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શાહ છોટાલાલ પૂનભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

- ૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સઘવીના સ્મરણાર્થે
હ ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

ગ્રાતીજ

- ૧ સ્થા જૈન સઘ હ શ્રીયુત અબાલાલ મહાસુખરામ
પૂના ૨૫૦

- ૧ શેઠ ઉત્તમચંદ્ર કેવળચંદ્ર ધોડા ૨૫૧

ફાલના

- ૧ મહેતા પુષ્પરાજલ્લ હસ્તીમલ્લ સાદડીવાલા ૩૦૧
૨ મહેતા કુદનમલ્લ અમરચંદ્ર સાદડીવાલા ૨૫૧

બગસરા

- ૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા
હ નાનચંદ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧
૨ સ્વ માતુશ્રી જ્ઞાનકબાઈના સ્મરણાર્થે
હ દેશાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા-ઘેલાશા

- ૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હ તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બદનાવર

- ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હ મિશ્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ નેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદામજી લણુમારી
બીદડા ૨૫૧

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ લેકડાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બેંગાળ

૧ શેઠ ગાગજી દેશવજી (જ્ઞાનભગાર માટે) ૨૫૧

બેલાગી

૧ શ્રી ન્યા નૈન સઘ હ શેઠ હનુમતીમલજી હસ્તીમલજી રાકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો ન્યા નૈન સઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગલોર

૧ શેઠ દીગનલાલજી કુલચંદજી માહેગ ૨૫૧

૨ અજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદામ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છળલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા ૨૫૧

૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧

૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧

૪ શેઠ રામજી જીણાભાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફાફરીયા ૨૫૧

૬ ફાફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ મૌ શાતાબેન વસનજી ૨૫૧

૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ગુદાવાળા) ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લઉંચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરજી

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

ભીમ

૧ ચપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ ઇગામલજી માગીલાલજી ૨૫૧

ભુસાવત્ર

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોળાય

૧ જ્ઞાન મહિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

મનફેરા

૧ સ્થા છકોટી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતગઢવાળા

હા. પૂનમચદજી શેરમલજી બોદયા ૨૫૧

માનકુશ

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચદ (માનકુશ સ્થા જૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા

- ૧ શ્રી માડવા રધા લેન મધ
હ અ મી કચનગીરી રતીલાલ ગોમલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાવ

- ૧ શ્રી સ્વા લેન સધ હ કતેલાલ માલુ લેન ૨૫૧

માગરોલ

- ૧ ગાહ ત્રીભોવનદાસ નાનછ ૨૫૦
૨ દોશી ગીરવરલાલ જોઠાલાલ ૨૫૦

સુખર્ષ તથા પરાઓ

- ૧ ન્વ શ્રી પિતાશ્રી કુદનમલછ મોતીલાલછ મુયાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલછ જુળમલછ (અકુમદનગરવાળા) ૨૫૧
- ૨ વર્ધમાન ન્થા લેન સધ હ કામદાર ઉપચદ ગીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
- ૩ અ મી કમળાબેન કામદાર હ કામદાર ઉપચદ ગીવલાલ (અધેરી) ૨૫૧
- ૪ સ્વ માતૃશ્રી ડડવીબાઈના સ્મરણાર્થે હ તેમના પૌત્ર
હડમીચદ તારાચદ દોશી (અધેરી) ૨૫૧
- ૫ શાહ હરજીવન ડેગવછ ૨૫૧
- ૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
- ૭ મધવી હિમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
- ૮ વોગ પાનાચદ સધજના સ્મરણાર્થે
હ ત્રણકલાલ પાનાચદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
- ૯ શાહ રામજી કરગનજી ચાનગઢવાળા ૨૫૧
- ૧૦ સ્વ જટાગ કર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે
હ રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાગ કર દોશી ૩૦૧
- ૧૧ ઘેલાણી વલ્લભજી નરભેરામ હ નરસીંહદાસ વલ્લભજી ૨૫૧
- ૧૨ ડપામી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૩ ત્રીભોવનદાસ માનસિંચભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હ ગાહ હરખચદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
- ૧૪ ખેતાણી મણીલાલ ડેગવછ (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧
- ૧૫ ન્વ પિતાશ્રી શામજીજી ડયાણુજી ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે
હા વૃજલાલ શામજીજી બાવીસી ૩૦૧
- ૧૬ શાહ રવિચદ સુખલાલભાઈ (દાદર) ૩૫૧

૧૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા શાતિલાલ	
આશારામ વતી જશવતલાલ શાતિલાલ	૨૫૧
૧૮ ગાધી કાતીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુ (ઝાદીવલી)	૨૫૧
૨૦ અ સૌ લાહુજેન હ રલજીભાઈ ગામજી	૨૫૧
૨૧ સ્વ માતુશ્રી માણેકભાઈના સ્મરણાર્થે હ શેઠ વલભદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨ એક સદ્ગૃહસ્થ હ શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઈ જે ગારભાઈ	૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫ સ્વ માતુશ્રી ગોમતીભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૨૬ ડોટેચા જયતીલાલ રણછોડદાસ મૈલાગચંદ બુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭ વેરા ઠાકરશી જસરાજ	૨૫૧
૨૮ ડોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારરોડ) ૨૫૧
૨૯ અ સૌ જેન કુદનગૌગી મનહરલાલ સ ધવી	૨૫૧
૩૦ ડોઠારી રમણીજીલાલ કસ્તુરચંદભાઈ	૨૫૧
૩૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે	
હ દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૩૨ સ્વ ત્રીલોવનદાસ મજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા હરગોવિંદદાસ ત્રિલોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩ તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાળા)	૨૫૧
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખલાતવાળા હ ભાઈ જેઠાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૩૬ શાહ કૈરશીભાઈ હીરજીભાઈ	૩૦૧
૩૭ શ્રીમતી મણીમાઈ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ ફંડ	
હ વૃજલાલ દુર્લાલજી પારેખ	૨૫૧
૩૮ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર) ૨૫૧
૩૯ દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	૪૦૧
૪૦ દોશી જુગલકિશોર ચત્રભુજ	૪૦૧
૪૧ દોશી પ્રવિણચંદ ચત્રભુજ	૩૮૧
૪૨ શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા અટકાયા નરભેરામ મોરારજી	૨૫૧
૪૩ શાહ કાતિલાલ મગનલાલ	૨૫૧

૪૪ શેઠ મણીલાલ શુભાળચંદ	ઘાટકોપર ૨૫૯
૪૫ શેઠ હગનલાલ નાનજીભાઈ	૨૫૧
૪૬ ગાહુ શીવજી માલોકભાઈ	૨૫૧
૪૭ મેચમ્મ મવાલી દ્રામપાર્ટ કુા હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૪૮ શાહ નગીનદાસ કદલાજી (વેરાવળવાળા)	૨૫૧
૪૯ મહેતા ગ્તીલાલ ભાઈચંદ	૨૫૧
૫૦ શાહ પ્રેમજી હીંગજી ગાલા	૨૫૧
૫૧ બેન દેગગ્ગાઈ ચંદુલાલ જેઠીંગભાઈ ગાહુ	૨૫૧
૫૨ પારેજી ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ મૌ ચંચળખાઈના સ્મરણાર્થે હા માગલાઈ ચીમનલાલ	૨૫૧
૫૩ ધી મગીના મોડન હાઈન્ડલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા ગાહુ મણીલાલ હાડગી	૨૫૧
૫૪ મહેતા મોટર સ્ટોર્મ હા અનોપચંદ હી મહેતા	૨૫૧
૫૫ શેઠ ગ્મીકલાલ પ્રભાગકર મોગ્ગીવાળા તરફવી તેમના માતૃશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૫૬ શ્રીયુત જમવતલાલ ચુનીલાલ વોરા	૨૫૦
૫૭ ગાહુ કુવજી હુમરાજ	૨૫૧
૫૮ દડીયા જેમીંગલાલ ત્રીકમજી	૨૫૧
૫૯ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજડોન્વાળા હા ડેમાલાલ અભેચંદ	૨૫૧
૬૦ શાહ જેઠાલાલ ડામગી ધ્રાગધ્રાવાળા હા ગાહુ વાડીલાલ જેઠાલાલ	૨૫૦
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી લગવાનજી હીરાચંદ જમાણીના સ્મરણાર્થે હા લક્ષ્મીચંદલાઈ તવા કેશવલાલભાઈ	૩૫૧
૬૨ સ્વ પિતાશ્રી ગાહુ અળાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે હા શાહ બાપાલાલ અળાલાલ	૨૫૧
૬૩ સ્વ કસ્તુરચંદ અમરગીના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયતીલાલ ડસ્તુરચંદ મરઝાગીયા (ચુડાવાળા)	૨૫૧
૬૪ શેઠ ડુગરગી હુમરાજ વીસરીયા	૨૫૧
૬૫ શાહ રતનશી મોણુશીની કુા	૧૫૧
૬૬ શેઠ શીવલાલ શુભાળચંદ મેવાવાળા	૨૫૧
૬૭ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
૬૮ સ્વ પિતાશ્રી વીરચંદ જેમીંગ શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે હા કેશવલાલ વીગચંદ	૨૫૧
૬૯ ચંદુલાલ ઝાનજી મહેતા	૨૫૧

- ૭૦ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન સંધ
હા કેશરીમલ્લ અનોપચદ્ધ શુગલીયા (મલાદ) ૨૫૧
- ૭૧ સ્વ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા શાહ કાનજી પતુભાઈ „ ૨૫૧
- ૭૨ અ સૌ પાનળાઈ હા, શેઠ પદમશી નરમિહુભાઈ „ ૨૫૧
- ૭૩ સ્વ નાગશીભાઈ સેજપાલના સ્મરણાર્થે રામજી નાગશી „ ૩૦૧
- ૭૪ સ્વ ગોડા વણારશી ત્રીભોવનદાસ સરસધવાળાના સ્મરણાર્થે
હા જગજીવન વણારશી ગોડા „ ૨૫૧
- ૭૫ સ્વ કાનજી સુજળના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીખાઈના
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા ન્યતિલાલ કાનજી ૨૫૧
- ૭૬ શાહ પ્રેમજી માલશી ગગર „ ૨૫૧
- ૭૭ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
સ્વ નાનખાઈના સ્મરણાર્થે „ ૩૦૧
- ૭૮ સ્વ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના સ્મરણાર્થે
હા શાહ દામજી રાયશીભાઈ „ ૩૦૧
- ૭૯ શાહ વરજગભાઈ શીવજીભાઈ „ ૨૫૧
- ૮૦ શાહ ખીમજી મુળજી પુજા „ ૨૫૧
- ૮૧ અ સૌ સમતાએન શાતિલ લ છે શાતીલાલ ઉજમશી શાહ „ ૨૫૧
- ૮૨ સ્વ કેશવલાલ વછરાજ કાઠારીના સ્મરણાર્થે સૂરજએન તરફથી
હા તનસુખલાલભાઈ „ ૨૫૧
- ૮૩ સ્વ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે
હા દેવશી હસરાજ કચ્છ ખીદડાવાળા „ ૨૫૧
- ૮૪ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી) ૨૫૨
- ૮૫ શેઠ ત્રણકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર શામળ હાગને ભેટ (માટુ ગા) ૨૫૧
- ૮૬ અ સૌ એન રજનગૌરી છે શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ „ ૨૫૧
- ૮૭ શાહ નટવરલાર દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સુશીલાએનના વર્ષાતપની ખુશાલીમા , ૨૫૧
- ૮૮ દોશી ભીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા „ ૨૫૧
- ૮૯ શાહ ગોપાળજી માનમગ „ ૨૫૧

૬૦ દોશી કુલચંદ માણેકચંદ	”	૨૫૦
૬૧ ગેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદાવાળા	”	૨૫૧
૬૨ શ્રી વર્ધમાન તથા લેન શ્રાવક મધ હ ગાંધ ગવિચંદ મુળલાલ	(દાદર)	૨૫૧
૬૩ ગાંધિલાલ હુગગી અદાણી	”	૨૫૧
૬૪ શાહ કરગન લધુભાઈ	”	૨૫૧
૬૫ દીસનલાલ સી મહેતા	શીવ	૨૫૧
૬૬ માતુશ્રી છવીભાઈના સ્મરણાર્થે હ ગામજી શીવજી કચ્છ ગુદાળાવાળા	ગોરગાવ	૨૫૧
૬૭ નવ શાહ ગયગી કચ્છગલાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની નેણુભાઈ વતી હ જેઠાલાલ રાયશી	”	૨૫૧
૬૮ શુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે નવીનચંદ વસંતલાલ ગાંધ વિલેપાર્થે		૨૫૧
૬૯ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિવા		૨૫૧
૧૦૦ નવ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા)		૩૦૧
૧૦૧ શાહ ત્રીલોચન ગોપાળજી તથા અ સી. બેન કસુબા ત્રીલોચન (થાનગઢવાળા)	શીવ	૨૫૧

મુળી

૧ શેઠ ઉત્તમશી વીરપાળ હ. શેઠ ડેશવલાલ ઉત્તમશી	૩૦૧
---	-----

મોરબી

૧ દોશી માણેકચંદ સુદરજી	૩૫૧
------------------------	-----

મોરબાઆ

૧ શ્રીચુત નાથાલાલ ડી મહેતા	૨૫૧
૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ	૨૫૦

મહેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદમશી	૨૫૧
--	-----

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી બેકસ	૨૫૦
------------------------------	-----

રતલામ

- ૧ અનેક ભક્તજનો તરફથી હ શ્રીમાન કેશરીમલજી ડક
(શ્રી કેવળચંદ મુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

- ૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતળાઈના સ્મરણાર્થે
હ ડા નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧
- ૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હ શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઈ વસાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

- ૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા ખાણુ રીખળચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

- ૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાર્થે
હ શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
- ૨ કાળુરામજી ચાદમલજી સ ચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

- ૧ વાડીલાલ ડાઈગિ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦
- ૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીતલીયા ૨૫૧
- ૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧
- ૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષીતપ પ્રસંગે ૨૫૧
- ૫ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
- ૬ બેન સચુખાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષીતપની ખુશાલી) ૨૫૧
- ૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
- ૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
સમરતળેનના વર્ષીતપ નિમિત્તે ૨૫૧

- ૯ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એકઝીક્યુટીવ એન્જનીયર) ૨૫૧
- ૧૦ કામદાર ચંદુલાલ હવરાજ (ધાગધાવાળા) ૨૫૦
- ૧૧ હેમાણી વેલાભાઈ મનચંદ ૨૫૧
- ૧૨ દક્ષતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૨
- ૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુત્રપોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
હેમકુવરણાઈ તરફથી હ. જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
- ૧૪ પારેખ શીવલાલ ઝુઝાભાઈ મોરખામાવાળા હ. અ. મી. કચનબેન ૨૫૨

રાપર

- ૧ પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદભાઈ ૨૫૧

ગમપુરા

- ૧ શેઠ તેન્મલજી મનોહરલાલજી બેકર ૩૫૧

રાવટી

- ૧ શેઠ મિયાચંદજી જુહાપ્પલજી કટારિયા ૩૫૧

લખતર

- ૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧

- ૨ ભાવમાજ હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે
હ. ત્રીલોચનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

- ૩ શાહ તલકશી હીંગચંદના સ્મરણાર્થે
હ. ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧

- ૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧

- ૫ શાહ જીવજી ઓઘડભાઈના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ જીવજી ૨૫૧

- ૬ દોશી ઠાકરશી શુભાષચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
સમરત બહેન તરફથી હ. જયતિલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

- ૧ નેમચંદ સવજી મોદી હ. ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧

- ૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા. મણીલાલ તથા જેરીંગભાઈ ૨૫૧

લાખેડી

- ૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ હ. અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧

લાકડીયા

- ૧ શ્રી લાકડીલા સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

લીબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચક્રભાઈ વખતચંદ ૨૫૧

લીમડી (પચમહાલ)

૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧

૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧

૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ ૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે શાહ શાતીલાલ ગુલાબચંદ ૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા ૨૫૧

લુધયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જૈન દિલ્હીવાળા ૨૫૧

વઢવાણુ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઈલાલ ઠે. શાહ સવાઈલાલ ત્ર બકલાલ ૨૫૧

૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હે રતીલાલ મગનલાલ ૨૫૧

૩ સઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હે જીવણલાલ ગફલદાસ ૨૫૧

૪ શેઠ કાતિલાલ નાગરદાસ ૨૫૧

૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧

૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ ૨૫૧

૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરણુ ૨૫૧

૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા જૈન સઘ

હે વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧

૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા જૈન સઘ

હે વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ ૨૫૧

૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧

૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ તથા વોરા ચત્રભુજ મણીલાલ ૨૫૧

૧૨ શાહ વાઠીલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧

૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની

અ સૌ કમળાબેન રગુનવાલા ૨૫૧

૧૫ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર ૨૫૧

૨ વડીલ મણીલાલ કેગવલાલ શાહ	૨૫૧
૩ સ્વ પિતામ્ની કૃષ્ણચંદ પુલ્તભાઈના સમરણાર્થે	૨૫૧
હા શાહ ગમણલાલ કૃષ્ણચંદ	૨૫૧
વડીયા	
૪ શેઠ ભવાનભાઈ ઢાળાભાઈ પચમીયા	૨૫૧
વલ્લભાઈ	
૧ શાહ ખીમચંદ મુલજીભાઈ	૨૫૧
વણી	
૧ મહેતા નાનાલાલ હગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચચળજેન તથા પુરીજેનના સમરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા	૨૫૧
વટામણ	
૧ શ્રી સ્થા નેન સઘ હા પટેલ ડાયાભાઈ હલુભાઈ	૨૫૧
વાંકગાવ	
૧ શેઠ માણેકચંદ જાગમલજી બાફળા	૨૫૧
વાકાનેર	
૧ ખઠારીયા કાતીલાલ ત્રબકલાલ	૨૫૧
૨ દક્તરી ચુનીલાલ પોપટભાઈ મોરખીવાળા	
હા પ્રાણુલાલ ચુનીલાલ દક્તરી	૨૫૧
વીછીયા	
૧ શ્રી સ્થા નેન સઘ હા અજમેરા રાયચંદ મજપાળ	૨૫૧
વીરમગામ	
૧ માસ્તર વીઠલભાઈ મોદી	૨૫૧
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ	૨૫૧
૩ શાહ મણીલાલ જીધણુલાલ શાહપુરવાળા	૨૫૧
૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ જેન લીલાવતીના વર્ષાતપ નિમિત્તે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ	૩૦૦
૫ સ્વ શેઠ ઉજ્જમશી નાનચંદના સમરણાર્થે હા ચુનીલાલ નાનચંદ	૨૫૧
૬ સ્વ શેઠ મણિલાલ લક્ષ્મીચંદ ખારાઘોડાવાળાના સમરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા ખીમચંદભાઈ	૨૫૧
૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સમરણાર્થે હા અનુભાઈ	૨૫૧

૩ સ્વ કેશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતળાઈના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ	
૪ શાહ ન્યાલચદ હરખચદ	૨૫૧
૫ શાહ વાડીલાલ હરખચદ	૨૫૧
૬ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા જૈન સઘ જ્ઞાનભારને લે	૨૫૧
---	-----

સજેલી

૧ શાહ લુણાજી ગુલાબચદભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચદ દલીચદ	૨૫૧

સોજત

૧ અ સૌ ધીસીબેન લાલચદજી મહેતા (ફતેહનગર સચને લેટ)	૩૫૧
---	-----

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાગચદ્ર અમુલખભાઈ	૩૦૧
૨ સ્વ બેન ચન્દ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ	૩૦૧

હાટીના માળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ	૨૫૦
૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે હા તેમના નાનાબેન અ સૌ મજુલાબેન ભગવાનદાસ ગાધી	૨૫૧

*

તા. ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૧૭ આઘ મુરખીશ્રી
૨૫ મુરખીશ્રી
૧૨૩ સહાયક મેમ્બરો
૫૮૪ લાઇફ મેમ્બરો
૫૪ બીજા ક્લાસના જુનો મેમ્બરો

૮૦૩

દરેક દાતાઓનો સમિતિ તરફથી આભાર માનુ છું

રાજકોટ તા ૩૧-૧૨-૬૧

લી સેવક,
સાકરચદ ભાઈચદ શેઠ
મંત્રી,

॥ श्रीगीतरागाय नमः ॥

जैनाचार्य-जैनधर्मदिशकर-पूज्यश्री-घासीलाल-प्रति-विरचितया
सुदर्शन्यायया व्याख्यया समलङ्कित

श्री-प्रश्नव्याकरणसूत्रम्

(मङ्गलाचरणम्)

(इन्द्रप्रज्ञाभेद-बुद्धिवृत्तम्)

श्रीसिद्धराज स्थिरसिद्धिराज्य-
प्रद गत सिद्धिगतिं विशुद्धम् ।
निरञ्जन शाश्वतमोक्षमध्ये,
विराजमान सतत नमामि ॥१॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

नानालङ्घ्यधर सुरासुरनुत सन्देहमोहच्छिद्र-
दीप्त शासनभास्कर गणधर शुद्ध विपद्धारकम् ।
ज्ञाताशेषविशेषस्तुनिचय तेजस्विन मुक्तिग,
वन्दे त सतत विशुद्धचरितं श्री गौतम सर्वथा ॥२॥

“ प्रश्नव्याकरणसूत्रका हिन्दी अनुवाद ”

मङ्गलाचरण—

मैं उन सिद्ध भगवन्तको नित्य नमस्कार करता हूँ कि जो निरञ्जन-
अष्टकर्ममल रूप अजन से सर्वथा विहीन-हो चुके हैं और इसी कारण
जो मुक्तिरूप सोधके मध्य में विराजमान हो रहे हैं । जिनके सन्मार्गपर
चलने से जीवोंको स्थिर सिद्धरूपी राज्यकी प्राप्ति हो जाती है । जो स्वयं
अत्यन्त विशुद्ध बन चुके हैं । और सिद्धि नामक गति प्राप्तकर चुके हैं ॥१॥

प्रश्नव्याकरणसूत्रनो गुजराती अनुवाद

भगणायरण—

હુ તે સિદ્ધ ભગવાનોને હુ મેળા નમસ્કાર કરું છું કે જે નિરંજન અષ્ટ
કર્મભણરૂપ અજનથી તદ્દન રહિત થઈ ગયા છે, અને એ જ કારણે જે મુક્તિરૂપ
ભવનની મધ્યમા વિરાજમાન થયેલ છે, જેમને ખતાવેલ સન્માર્ગે ચાલવાથી
જીવોને સ્થિર સિદ્ધિરૂપી રાજ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે જેઓ પોતે અત્યંત વિશુદ્ધ
બની ગયેલ છે, અને સિદ્ધિ નામની ગતિને પ્રાપ્ત કરી ચૂકયા છે ॥ ૧ ॥

(દ્રુતચિલમ્બિતપૃત્તામ્)

કમલકોમલમઠ્ઠુપદામ્બુજ-

વિમલબોધિદબોધવિબોધકમ્ ।

મુખસુશોભિસદોરકમ્બલિક

ગુરુવર સદય પ્રણમામ્યહમ્ ॥૩૧॥

(અનુષ્ટુપ્ઘૃત્તામ્)

જૈર્નો સરસ્વર્તીં નત્વા, વૃત્તિરેષા મુદર્શિની ।

પ્રશ્નવ્યાકરણે સૂત્રે, ઘાસિલાલેન તન્યતે ॥૪૧॥

મેં ઉન ગૌતમ ગણધર કો મન, વચ્ચન ઔર કાવ્ય સે નિત્ય નમસ્કાર કરતા હૂં કિ જિન્હો ને તપસ્યા કે પ્રભાવ સે અનેક લઙ્ઘિયો કો પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ । જિન્હે સુર ઔર અસુર આકર નમસ્કાર કરતે હૈ, જીવો કેસદેહ ઔર મોહ જિનકે પ્રભાવ સે નષ્ટ હો જાતે હૈ, જો શરીર કી કાન્તિ સે દીપ્ત બને રહતે હૈ, જો શાસન કે ભાસ્કર હૈ ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ કે જો અન્તિમ ગણધર હુએ હૈ, રાગાદિક દોષો સે સર્વથા વિશુદ્ધ થન ચુકે હૈ, જીવો કી વિપત્તિ કો જો નાશ કરને વાલે હૈ, કેવલજ્ઞાન કે પ્રભાવ સે જિન્હો ને સમસ્ત જીવાદિક વસ્તુઓ કો અચ્છી તરહ સે જાન લિયા હૈ, જો તેજસ્વી હૈ તથા જો મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ॥૨॥

મેં ઉન દયાળુ ગુરુવર કો નમસ્કાર કરતા હૂં કિ જિનકે મનોહર ચરણકમલ કમલ કે જૈસે કોમલ હૈ ઔર જો વિમલ બોધિકો દેને વાલે બોધ કે દાતા હૈ તથા જિનકા મુખ સદા સદોરકમુખવલ્લિકા સે ચિરાજિત રહતા હૈ ॥૩॥

હું તે ગૌતમ ગણધરને મન, વચ્ચન અને ડાયાથી નમસ્કાર કરું છું કે જેમણે તપસ્યાના પ્રભાવથી અનેક લઙ્ઘિયોને પ્રાપ્ત કરી છે, સુર અને અસુરો આવીને જેમને નમન કરે છે, જેમના પ્રભાવથી ભ્રુવોના અદેહ તથા મોહનો નાશ થઈ જાય છે, જે શરીરની કાન્તિથી જાળવવામાં રહે છે, જે શાસનના દિવાકર સમાન છે, જે ભગવાન મહાવીરના અન્તિમ ગણધર છે, રાગાદિ દોષોથી જે તદ્દન વિશુદ્ધ બની ચૂક્યા છે, ભ્રુવોની મુશ્કેલીઓને જે દૂર કરનારા છે, કેવલજ્ઞાનના પ્રભાવથી જેમણે સમસ્ત ભ્રુવાદિ વસ્તુઓને સારી રીતે જાણી લીધી છે, જે તેજસ્વી છે તથા જેમણે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી લીધેલ છે ॥ ૨ ॥

હું તે દયાળુ ગુરુવરને નમસ્કાર કરું છું કે જેમના મનોહર ચરણ, કમળના સમાન કોમળ છે, અને જે વિમળજ્ઞાન દેનાર બોધના દાતા છે, તથા જેમનું મુખ મદા દોરા મહિતની મુદપત્તિથી ગોભે છે ॥ ૩ ॥

इह खल्वतिविचित्राकारेऽपारेऽसारे समारे धनादिभिर्विविधोपायैः सुखार्थं प्रयतमाना अपि जना न केऽपि वास्तविक सुखमनुभवन्ति किमत्र परिहारनिदानमिति, सति विचारसनारे मांश्च एव निरतिशयरूपसाधनमिति सिद्ध्यति । आभूत्सैकेन्द्रियः सकलोऽपि लोकः सुखाभिग्राही दुःखत्रिमुखश्च दृष्टोऽतस्तस्य

तीर्थंकर प्रभुकी वाणीको नमन कर में घासीलाल इस प्रश्नव्याकरण सूत्र पर यह सुदर्शिनी नाम की टीका बनाता हूँ ॥४॥

इस अतिविचित्रताकार अनियत स्वभाववाले अपार असार ससार में धन आदि विविध उपायों से सुखप्राप्ति के निमित्त समस्त ससारी जीव प्रयत्न करते रहते हैं फिर भी यहा ससार में कोई भी जीव वास्तविक सुख का अनुभव नहीं कर पाता है तो इसका कारण क्या है जब यह विचार किया जाता है तो मालूम देता है कि यहां पर जितना भी सुख है वह वास्तविक सुख नहीं है—सुग्वामास है कारण वह इन्द्रिय और मनसे उत्पन्न होता है । वास्तविक सुख तो मोक्षमें ही है, क्योंकि वह सुख निरतिशयरूप आत्यंतिक है। त्रैकालिक दुःखके अत्यन्ताभावसे प्रशिष्ट जो परमानन्द सद्भावउपता है वही निरतिशयता है । इस प्रकार का निरतिशयरूप जो सुख है वह ससार में नहीं है । क्योंकि सासारिक सुख दुःखानुपक्त है । और मोक्ष का सुख ऐसा नहीं है । इसलिये सूक्ष्म एकेन्द्रिय से लेकर समस्त पंचेन्द्रियतक के प्राणी सुख के अमि-

તીર્થંકર પ્રભુની વાણીને નમન કરીને હું, 'ઘાસિલાલમુનિ' આ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્ર પર આ 'સુદર્શિની' નામની ટીકા બનાવું છું ॥ ૪ ॥

આ અતિ વિચિત્રાકાર, અનિયત સ્વભાવવાળા, અપાર, અમાર સ સારમા ધન આદિ વિવિધ ઉપાયોથી સુખ પ્રાપ્ત કરવા માટે સમસ્ત સ સારી જીવો પ્રયત્ન કરતા રહે છે, છતાં પણ આ નમાગમા ડોઢપિણુ જીવ વાસ્તવિક સુખનો અનુભવ કરી શકતા નથી તેનું શું કારણ છે, એવો વિચાર ત્યારે કરવામાં આવે છે ત્યારે એવું લાગે છે કે આ સ સારના જેટલા સુખ છે તે વાસ્તવિક સુખ નથી, પણ સુખનો આભાસ જ છે કારણકે તે ઇન્દ્રિય અને મનથી ઉત્પન્ન થાય છે વાસ્તવિક સુખ તો મોક્ષમાં જ છે કારણકે તે સુખ નિરતિશયરૂપ છે ત્રૈકાલિક હું બના અત્યંત અભાવવાળી જે પરમાનંદ સદ્ભાવઉપતા છે, તેને જ નિરતિશયતા કહે છે એવા પ્રકારનું નિરતિશયરૂપ જે સુખ છે તે અસારમા મળતું નથી કારણકે સાસારિક સુખ હું બાનુપક્ત છે મોક્ષનું સુખ તેવું નથી તેથી જ સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિયથી લઈને પંચેન્દ્રિય સુધીના સમસ્ત પ્રાણી સુખની

નિરતિશયસુખસાધન નિર્ણેતવ્યમ્ । નિરતિશય ચ સુખ ત્રૈકાલિકદુઃસાત્વ્યન્તાભાવ-
વિશિષ્ટપરમાનન્દસદ્ભાવરૂપ પારમાર્થિકમેવ ન ત્વૈદિક, તસ્યેન્દ્રિયનોદ્દન્દ્રિયસયો-
ગજન્યતયોત્પત્તિવિનાશયોરવિનાભાવનિયમાદુઃસ્વાનુપક્તત્વાત્, મરુમરીચિચયો-
ઘાવચજલતરંગભદ્રવિભ્રમવદસારત્વાચ્ચેતિ મોક્ષસ્યૈવ પ્રાધાન્યમામનન્તિ મહામુ-
નયઃ, તસ્માદાત્યન્તિકસુખમધિજિગમિપુણા મોક્ષાર્થે યતિતવ્યમ્ । મોક્ષશ્ચ જ્ઞાન-
ક્રિયાસેવનેનૈવ ભવતીતિ જ્ઞાનક્રિયે એવ તત્કારણ સિપાધયિષિતવ્યમ્, અન્યથા

લાવિ ઓર દુઃખ સે વિમુખ હોતે હુણ દિલ્લાર્દ પઢતે હૈ । અતઃ યહ
નિર્ણય કરના આવશ્યક હો જાતા હૈ કિ ઉસ નિરતિશય સુખ કા
સાધન ક્યા હૈ ? જય ઇસ પ્રકાર કા વિચાર ગહરાઈ કે સાથ ક્રિયા
જાતા હૈ તો યહી નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ ઉસ સુખ કા સાધન કેવલ એક
મોક્ષ હી હૈ । સસાર નહીં હૈ—ક્યોં કિ સસાર જન્ય જો સુખ હોતા હૈ
વહ ઇન્દ્રિય ઓર મન કે સયોગ સે જન્ય હોને કે કારણ ઉત્પત્તિ ઓર
વિનાશ કા અવિનાભાવી હોતા હૈ ઓર ઇસલિયે વહ દુઃખ સે બીચ ર
મેં મિશ્રિત રહા કરતા હૈ । અતઃ મૃગતૃણા મેં ઝૂંચી નીચી જલ તરંગો
કે વિભ્રમકી તરહ યહ અસાર હોતા હૈ । ઇસલિયે નિરતિશય સુખ કા
સાધન સસાર નહીં હો સકતા હૈ—કેવલ એક મોક્ષ હી હો સકતા હૈ ।
એસી હી મહામુનિયોકી માન્યતા હૈ । ઇસલિયે જો પ્રાણી ઇસ નિરતિશય
સુખકો પ્રાપ્ત કરનેકે અભિલાષી હૈં ઉન્હેં મોક્ષ પ્રાપ્તિમેં હી પ્રયત્ન કરના
ચાહિયે, મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ જીવોંકો જ્ઞાન ઓર ક્રિયા કે સેવન કરનેસે હી
હોતી હૈ । અતઃ જ્ઞાન ઓર ક્રિયા યે દોનો હી ઉસકે કારણરૂપસે સાધનકે

ધરુણવાળા અને દુઃખથી વિમુખ થતા દેખાય છે તેથી તે નિર્ણય કરવો જરૂરી
થઈ પડે છે કે તે નિરતિશય સુખનું સાધન કયું છે? જ્યારે તે પ્રકારનો ઊંડો
વિચાર કરવામાં આવે છે ત્યારે એ જ નિશ્ચય પર અવાય છે કે તે સુખનું
સાધન કેવળ મોક્ષ જ છે, સસાર નથી કારણકે જે સુખ સસારજન્ય હોય છે
તે ઇન્દ્રિય અને મનના સયોગથી પેદા થયેલ હોવાથી ઉત્પત્તિ અને નાશને
પ્રાપ્ત કરનાર હોય છે, અને તેથી તે વચ્ચે વચ્ચે દુઃખથી મિશ્રિત રહ્યા કરે છે
તેથી તે મૃગજળના ઊંચા નીચા જળતરંગોના વિભ્રમના જેવું અસાર હોય છે
તે કારણે નિરતિશય સુખનું સાધન સસાર થઈ રાહતો નથી પણ એક માત્ર
મોક્ષ જ તેનું સાધન બની શકે છે એવી જ મહામુનિયોની માન્યતા છે તેથી
જે પ્રાણીને તે નિરતિશય સુખ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા હોય તેમણે મોક્ષ
પ્રાપ્તિ માટે જ પ્રયત્નો કરવા જોઈએ એવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ જ્ઞાન અને ક્રિયાના
સેવનથી જ થાય છે તેથી જ્ઞાન અને ક્રિયા એ બંને તેના કારણરૂપ હોવાથી

મોક્ષસ્વાપ્યભાગાત્ મુગ્ધાગ્રાસેર્દૂરમયાણ સ્થાત્ । સત્યેવ હિ જ્ઞાને ડૃશાનિષ્ઠોપાદાન
હાનોપાયવિચારસન્ધારો ભવતિ । તદ્ભાવે પ્રાણિનામાસ્રવેષ્વેવ નિત્ય પ્રવૃત્તિઃ
સ્થાત્ તસ્માત્ જ્ઞાન પરમાદરણીયમ્ । તન્નાત્ર શ્રુતમ્પ ગૃહ્યતે સ્વપરોપકારિત્વાત્ ।
તદત્ર પ્રશ્નવ્યાકરણમેવ ।

નનુ શાસ્ત્રસ્પાદો મ ચેડન્તે ચ કૃત મદ્ગલ નિર્વિઘ્નપરિમમાપ્ત્યર્થ ભવતિ,
અધ્યેતાસ્થ શાસ્ત્રધારણાવન્તઃ પ્રથન્તે, શાસ્ત્ર ચ શિષ્યોપશિષ્યપરમ્પરાગામિ જાયતે-
શિષ્ટાચારવિપયત્વાન્ચ મગલ કુતો ન કૃતમિતિ ચેદુચ્યતે-

અત્ર ભગવદુક્તમાક્ષાન્દ્રેયોભૂતશાસ્ત્રસ્થવ મદ્ગલમ્પત્ત્યાત્ મદ્ગલમાચરિતમેવ
તથાપિ શ્રુણુ-અમ્મિન્ શાસ્ત્રે આદિમદ્ગલ “જન્મુ ઇણમો” ઇતિ ભગવદામન્ત્રણેન,
લિયે ઇષ્ટ હૈ । અન્યથા મોક્ષકા અભાવનો જાવેગા ઓર ઇસ તરહ સે ફિર સુખ
કી પ્રાપ્તિ હોના વહુત કઠિન ગાન હો જાવેગી । જ્ઞાનકે હોને પર હી ઇષ્ટ
ઓર અનિષ્ટ પદાર્થોંકે ઉપાદાન (ગ્રહણ) ઓર ત્યાગ કરનેમે જીવોંકી બુદ્ધિ
લગતી હૈ । જ્ઞાન કે અભાવમે નહીં ઉસ રામય તો કેવલ આસ્રવોંમેં હી વે
રોકડોંક પ્રવૃત્તિ હોતી રહતી હૈ । હસીલિયે જ્ઞાનકો પરમ આદરણીય કહા
ગયા હૈ । એમા વહ જ્ઞાન સ્વ ઓર પર કા ઉપકારક હોને કે કારણ યહા
શ્રુતરૂપ ગ્રહણ ક્રિયા ગયા હૈ । વહ શ્રુતરૂપ જ્ઞાન યહા પ્રશ્ન વ્યાકરણ હી હૈ ।

શકા—શાસ્ત્રની આદિ મેં, મધ્ય મેં, ઓર અંત મેં ક્રિયા ગયા
મગલાચરણ નિર્વિઘ્નરૂપ સે ઉસકી પરિસમાપ્તિ કે લિયે હોતા હૈ—તથા
જો ઉસ શાસ્ત્ર કે અધ્યેતા હોતે હૈં વે ઉસ શાસ્ત્રની ધારણા સે સુશોભિત
રહા કરતે હ ઓર ઇસ તરહ સે વહ શાસ્ત્ર શિષ્યોપશિષ્ય પરપરાગામી
બન જાતા હૈ । તથા શાસ્ત્રની આદિ મેં, મધ્ય મેં ંવ અંત મેં મગલા-

આધન તરીકે યોગ્ય છે નહીં તો મોક્ષની પ્રાપ્તિ થશે નહીં અને એમ થવાથી
મુખની પ્રાપ્તિ ઘણી મુશ્કેલ બની જશે જ્ઞાન હોય તો જ ઇષ્ટ અને અનિષ્ટ
પદાર્થોના ઉપાદાન-(ગ્રહણ) અને ત્યાગ કરવા બાબતમાં જીવોની બુદ્ધિ કામ કરી
ગકે છે, જ્ઞાન ન હોય તો નહીં ત્યાગે તો (તે જ્ઞાનના અભાવે) ફક્ત આસ્ર-
વોમાં જ મોડટોડ વિના પ્રવૃત્તિ ચાલ્યા કરે છે તે કારણે જ્ઞાનને અત્યંત
આદરણીય બતાવ્યું છે એવું તે જ્ઞાન સ્વ અને પરનું ઉપકારક હોવાથી અહીં
શ્રુતરૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે અહીં પ્રશ્નવ્યાકરણ જ તે શ્રુતજ્ઞાન છે

ગા-શાસ્ત્રની શરૂઆતમાં, મધ્યમાં, અને અંતે કરવામાં આવેલ મ ગણાયરણ
નિર્વિઘ્ને તેની પરિસમાપ્તિને માટે હોય છે તથા જેઓ તે શાસ્ત્રનું અધ્યયન કરનાર
હોય છે તેઓ તે શાસ્ત્રની ધારણાથી સુશોભિત રહ્યા કરે છે, અને એ રીતે તે
શાસ્ત્ર શિષ્યોપશિષ્યની પરપરા સુધી પહોંચે છે તથા શાસ્ત્રના આરભમાં,

મધ્યમગ્ગલ પ્રથમસવરદ્વારે અહિંસા ભગવતીવર્ણનેન અન્ત્યમગ્ગલ ચ “નાયપુત્તેજ વીરેણ ભગવયા પયાસિય” ઇત્યાલાપકેન ચ વિજ્ઞેયમ્, ઇત્યલ વિસ્તરેણ ।

અથ પ્રશ્નવ્યાકરણમિત્યસ્ય કઃ શબ્દાર્થઃ ? ઉચ્યતે પ્રશ્ના = અટ્ટગુણ્ટાદિવિદ્યાઃ, તે વ્યાક્રિયન્તે = પ્રતિપાદ્યન્તે યસ્મિન્નિતિ પ્રશ્નવ્યાકરણમ્, અન-અષ્ટોત્તર પ્રશ્નશતમ્ । અષ્ટોત્તરમપ્રશ્નશતમ્ । અષ્ટોત્તર પ્રશ્નાઽપ્રશ્નશતમ્ । યા વિદ્યાઃ, મન્ત્રા યા પૃષ્ઠા એવ

ચરણ કરના એસા શિષ્ટ પુરુષો કા આચાર મી હૈ-તો ફિર શાસ્ત્રકાર ને હસ સૂત્ર મે મગલાચરણ ક્યોં નહી ક્રિયા હૈ ?

ઉત્તર—હસ પ્રકાર કી આશકા ઠીક નહી હૈ, ક્યોં કિ ભગવાન્ દ્વારા કહા ગયા યહ શાસ્ત્ર સાક્ષાત્ મગલ સ્વરૂપ હૈ અતઃ યહ સ્વય હી મગલરૂપ હૈ અત સ્વય મગલરૂપ બને હુણ શાસ્ત્ર મેં મગલરૂપતા હોને સે શાસ્ત્રકાર ને ઉસે નિબદ્ધ કરને કી અપેક્ષા મગલાચરણ ક્રિયા હી હૈ । ફિર મી સુનો-શાસ્ત્રકાર ને હસ શાસ્ત્ર મે “જનૂ ઇળમો” હસ ભગવાન્ કે આમત્રણ સે આદિ મગલ, પ્રથમ સવર દ્વાર મે ભગવતી અહિંસા કા વર્ણન રૂપ મધ્યમગલ, ઓર “નાયપુત્તેજ વીરેણ ભગવયા પયાસિય” અન્તમેં હસ પ્રકાર કે કથન સે અન્ત્યમગલ ક્રિયા હૈ, એસા જાનના ચાહિયે । અવ હસ વિષય મે ઓર અધિક કહનેસે કયા લાભ ।

શકા—“પ્રશ્નવ્યાકરણ” હસકા શબ્દાર્થ કયા હૈ ?

ઉત્તર—અગુણ્ટ આદિ વિદ્યાઓં કા નામ પ્રશ્ન હૈ । યે પ્રશ્ન હસમેં વિસ્તાર પૂર્વક પ્રતિપાદિત કિયે ગયે હે । હસલિયે હસસૂત્રકા નામ

મધ્યમા અને અન્તે મગલાચરણ કરવુ તેવો શિષ્ટ પુરુષોનો આચાર પણ છે છતા પણ સૂત્રકારે આ સૂત્રમા મગલાચરણ કેમ કયું નથી ?

ઉત્તર—આ પ્રકારની આરાકા યોગ્ય નથી, કારણકે ભગવાન દ્વારા કહેવામા આવેલ આ શાસ્ત્ર જ સાક્ષાત્ મગલસ્વરૂપ છે, તેથી તે યોગ્ય જ મગલરૂપ છે તેથી સ્વય મગલરૂપ બનેલ શાસ્ત્રમા મગલરૂપતા હોવાથી શાસ્ત્રકારે તેને સૂત્રરૂપે બાધવાની અપેક્ષાએ મગલાચરણ કયું જ છે વળી સામળો શાસ્ત્રકારે આ શાસ્ત્રમા “જનૂ ઇળમો” આ પ્રમાણે ભગવાનના આમત્રણથી આદિ મગલ, પ્રથમ સવરદ્વારમા ભગવતી અહિંસાના વર્ણનરૂપ મધ્યમગલ, અને “નાયપુત્તેજ વીરેણ ભગવયા પયાસિય” અન્તમા એ પ્રકારના કથનથી અન્ત્યમગલ કયું છે, એમ સમજી લેવુ હવે આ વિષયમા વધુ કહેવાથી શો લાભ ?

શકા—“પ્રશ્નવ્યાકરણ”નો શબ્દાર્થ શુ છે ?

ઉત્તર—અગુણ્ટ આદિ વિદ્યાઓનુ નામ પ્રશ્ન છે તે પ્રશ્નોનુ આ સૂત્રમા વિસ્તારથી પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યુ છે તેથી તેનુ નામ પ્રશ્ન-વાકરણ પડ્યુ છે

शुभाशुभ प्रतिपादयन्ति ते प्रश्नाः । एव ये अपृष्टा एव शुभाऽशुभ वदन्ति ते अप्रश्नाः । ये पृष्टा अपृष्टाश्च कथयन्ति ते प्रश्नाऽप्रश्नाः । तथा अन्येऽपि अतिशयाः, नागकुमारैः सुवर्णकुमारैः अन्यैश्च भवनपतिभि मद् साधूनां सवादाः, इत्यादयः सन्ति ।

नन्दीसूत्रवाचनामाले प्रश्नव्याकरणे पञ्चचत्वारिंशदध्ययननिबन्धः समुपलब्ध आसीत् । तदुक्त नन्दीसूत्रे—“से किं त पण्ढावागरणाड? पण्ढावागरणेषु ण अट्ठत्तर पसिणमय, अट्ठत्तर अपसिगमय, अट्ठत्तर पसिणाऽपसिणमय । त जहा—अगुठपमिणाड, राहुपमिणाड, अदागपमिणाड, अन्नेनि विचित्ता टिक्का विज्जाऽमया, नागसुवर्णेहिं सल्लि टिक्का सयाया आपविज्जति५ । पण्ढावागरणाण परिता यायणा, सखिज्जा अणुओगदारा सखिज्जा वेढा, सखिज्जा मिलेगा सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिक्कीओ, से ण जगह्याए दसमे अगे एगे सुयक्कवे, पणयालीस अज्जसयणा, पणयालीस उज्जसणकाला, पणयालीस समुदेसणकाला, सखिज्जाड पयसहस्साड पयग्गेण, सखेज्जा अक्कपरा, अणतागमा, अणता पज्जा, परिता तसा, अणता यापरा, सासयकडनिवड्ढनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आपविज्जति, पन्नविज्जति, पस्सविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एवं आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपस्सवणा से त आघविज्जइ । पण्ढा वागरणाइ ” ॥

प्रश्नव्याकरण हुआ है । इनमें १०८ प्रश्न, १०८ अप्रश्न, और १०८ ही प्रश्नाप्रश्न हैं । जो बिना अथवा मत्र, पृष्ठने पर शुभ और अशुभ का कथन करते हैं वे प्रश्न हैं । जो बिना पूछे ही शुभ और अशुभ कहते हैं वे अप्रश्न हैं । तथा जो मिश्ररूप में पृष्ठने पर—शुभ और अशुभ दोनों का प्रगट करते हैं । वे प्रश्नाप्रश्न हैं । इसी तरह और भी अनिशय एव नागकुमार, सुवर्णकुमार तथा अन्य भवनपतियों के साथ, साधुओं के सवाद इसमें प्रदर्शित किये गये हैं ।

नदीसूत्र के वाचनामाल में प्रश्नव्याकरण में पैंतालीस अध्ययनरूप

तेमा १०८ प्रश्न, १०८ अप्रश्न, अने १०८ प्रश्नाप्रश्न छे जे विधाओ अथवा मत्र, पूछवामा आवता शुभ अने अशुभनु कथन करे छे, तेमने प्रश्न कडे छे पूछ्या विना न शुभ अने अशुभ जतावनारने अप्रश्न कडे छे तथा जे मित्रउपे—पूछवामा आवता शुभ अने अशुभ जन्नेने प्रगट करे छे ते प्रश्नाप्रश्न कडेवाय छे जे रीते जीन्त पणु नागकुमार, सुवर्णकुमार तथा अन्य भवनपतियोनी आये, साधुओना धया सवाद आ सूत्रमा जताववामा आव्या छे

नदीसूत्रना वाचनकाणमा प्रश्नव्याकरणमा पिस्ताणीश अध्ययन समुपलब्ध

તદનન્તર સ્થાનાઙ્ગસૂત્રપાચનાવેલાયા પશ્ચચત્વારિંશદધ્યયનેષુ દશા યયનાન્યે-
વોપલઘ્યાન્યાસન્-તદુક્ત સ્થાનાઙ્ગે—

“પળ્હા વાગરણદસાણ દસઅઙ્ગયણા પળ્હાત્તા । ત જહા—ઉપમા , સખા ,
ઈસિભાસિયાઈ , આયરિયભાસિયા , મહાવીરભાસિયાઈ , સોમગપસિણાડ , કોમ-
લપસિણાઈ , અદાગપસિણાઈ , અગુટ્ટપસિણાઈ , નાદુપસિણાઈ” ॥ સ્થા ૦ ૧૦ઠા ।

ઈદાની તુ પૂર્વોક્તાનિ અધ્યયનાનિ વિચ્છેદ ગતાનીતિ હેતો—પશ્ચાત્ત્રપશ્ચસત્ર
સાત્મકદશાધ્યયનાનિ સમુપલભ્યન્તે ।

તપઃ સયમારાધકાઃ સૌધર્માદિદેવલોકેષુ સમુત્પદ્યન્તે, ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારા
ધકાસ્તસ્મિન્નેવ ભવે મોક્ષમાપ્નુવન્તિ કિન્તુ યેપામાયુષ્ય સપ્તઋપરિમિત હીન તે
કર્મક્ષયાઽભાવાત્ વિજયાદિ વિમાનેષુ સમુત્પદ્યન્તે, इति નચમાઙ્ગે અનુત્તરોપપાતિ-
કસૂત્રે વર્ણિતમ્ ।

નિવધ સમુપલઘ્ધ થા । યહ વાત “સે કિં ત પળ્હાવાગરણાઈ ? સે લેકર
“સે ત પળ્હાવાગરણાઈ” તક્ર કે હસ નદીસૂત્ર કે પાઠ સે પુટ્ટહોતી હૈ ।
હસકે વાદ સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર કે વાચનાકાલ મેં પૈંતાલીસ અધ્યયનોં મે સે
કેવલ ૧૦ હી અધ્યયન ઉપલઘ્ધ રહ ગયે । જૈસા કિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર કે હસ
પાઠ સે પ્રમાણિત હોતા હૈ કિ “પળ્હાવાગરણદસાણ દસ અઙ્ગયણા
પળ્હાત્તા તજહા” ઇત્યાદિ । પર અત્ર તો હસ સમય વે ઉપમા, સખ્યા,
ઋષિભાસિત આચાર્યભાસિત, મહાવીરભાસિત આદિ દશ અધ્યયન મી
ઉપલઘ્ધ નહી હૈ, કયોં કિ હનકા વિચ્છેદ હો ચુકા હૈ । હસલિયે પાંચ
આસ્રવ ઓર પાચ સવર સબધી યે દશ અધ્યયન હી ઉપલઘ્ધ હૈં ।

નૌમા અગ જો અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર હૈં ઉસમેં ંસા વર્ણન કિયા
કિ તપ સયમકે આરાધક જીવ સૌધર્મ આદિ દેવલોકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં ।

(પ્રાખ્ય) હતા તે વાત ‘સે કિં ત પળ્હાવાગરણાઈ? થી લઈને “સે ત પળ્હાવાગરણાઈ”
સુધીના આ નદીસૂત્રના પાઠથી સિદ્ધ થાય છે ત્યારબાદ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રના વાચન-
કાળમા પિસ્તાળીશ અધ્યયનોમાથી ફક્ત દસ જ ઉપલબ્ધ હતા તે વાતનુ
સ્થાનાઙ્ગસૂત્રના આ પાઠથી પ્રતિપાદન થાય છે—“પળ્હાવાગરણદસાણ દસ અઙ્ગયણા
પળ્હાત્તા તજહા” ઇત્યાદિ પણ અત્યારે તો ઉપમા, સખ્યા, ઋષિભાસિત, આચાર્ય
ભાસિત, મહાવીરભાસિત આદિ દશ અધ્યયન પણ ઉપલબ્ધ નથી, કારણકે તેનો
વિચ્છેદ થઈ ગયો છે તેથી પાચ આસ્રવ અને પાચ સવર સબધી આ દશ
અધ્યયનો જ ઉપલબ્ધ છે

અનુત્તરોપપાતિકસૂત્ર નામનુ જે નવમુ અગ છે તેમા એવુ વર્ણન
કરવામા આવેલ છે કે તપ સયમની આરાધના કરનાર જીવ સૌધર્મ આદિ—

ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારાધનેન સયમતામકુષ્ઠઃર્ષણવિદ્યાદિસસિદ્ધય સમુત્પદ્યન્તે,
તામિસ્તે પ્રતિજ્ઞાદિપ્રશ્નાનુત્તરન્તિ । તદુપગ્નિઃ સમ્પ્રતિ નાન્તિ, વિચ્છેદ
ગતત્વાત્ । ઇદાની તુ પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરપ્રતિપાદનપર પ્રશ્નવ્યાકરણમુપલભ્યતે ।

ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારાધન દિ પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરજ્ઞાન વિના ન મપ્રતિ-ઇતિ-
આસ્રપસંવરસ્વરૂપનિરૂપકમિદ પ્રશ્નવ્યાકરણ નિરૂપ્યત ઇતિ નવમાદ્વેન સહાસ્ય સવધ ।

અસ્મિન્ પ્રશ્નવ્યાકરણે પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરાત્મકાનિ દશાગ્ન્યયનાનિ નન્તિ,
તસ્યાસ્રપસવરભેદાભ્યા દ્વી ભાગો તયોરાસ્રપસ્ય વચ્ચકારણત્વેન પૂર્વ નિરૂપણ,

તથા જો ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કી આરાધના કરતે હે વે उसी भव में
मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु जिनकी आयु सातलव परिमित है हीन
है वे कर्मक्षय नहीं कर सकते हैं इसलिये कर्मक्षय के अभाव से वे
विजयादिक विमानों में उत्पन्न हो जाते हैं ।

ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કે આરાધના સે સયમશાલી જીવો કો અગુષ્ઠ-
વિદ્યા દર્પણવિદ્યા આદિ વિદ્યાઓ મિદ્ધ હો જાની હે । ડનસે વે પ્રતિજ્ઞાદિયો
કે પ્રશ્નો કા ઉત્તર દેતે રહતે હે । ડનકી ઉપલબ્ધિ ડમ સમય ડનકે વિચ્છેદ
હો જાને કે કારણ નહી હોતી હે । ડસ સમય તો પાંચ આસ્રવ ઓર પાચ
સવર કે પ્રતિપાદન કરને મેં તત્પર માત્ર યહ પ્રશ્નવ્યાકરણ ઉપલબ્ધ હો
રહા હે । ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કી આરાધના પાચ આસ્રવ ઓર પાચ સવર
ડનકે જ્ઞાન હુજ વિના નહીં હો સકતી હે । ડસલિયે આસ્રવ ઓર સવર
કે સ્વરૂપ કો નિરૂપણ કરને ચાલા યહ પ્રશ્નવ્યાકરણ નિરૂપિત કિયા
જાતા હે । યહી નૌવે અગ કે સાચ ડસકા સવર હે ।

તેવલોકોમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા જે ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમની આરાધના કરે છે
તેઓ એ જ ભવમા મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે, પણ જેનુ આયુષ્ય સાતલવ પરિમિત
છે, હીન છે, તેઓ કોઈના ક્ષય કરી શકતા નથી તેથી કર્મક્ષયને અભાવે તેઓ
વિજયાદિક વિમાનોમા ઉત્પન્ન થાય છે

ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમની આરાધનાથી સયમગાળી છોડેને અગુષ્ઠ વિદ્યા,
દર્પણ વિદ્યા આદિ વિદ્યાઓ પ્રાપ્ત થાય છે તેમની મદદથી તે પ્રતિવાદીઓના
પ્રશ્નોના ઉત્તરો આપે છે તેમની ઉપલબ્ધિ (પ્રાપ્તિ) આ સમયમા તેમનો વિચ્છેદ
થઈ જવાથી થઈ શકતી નથી હાલમા તો પાચ આસ્રવ અને પાચ સવરનુ
પ્રતિપાદન કરનાર શક્તિ આ પ્રશ્નવ્યાકરણુ જ ઉપલબ્ધ થઈ શકે છે પાચ આસ્રવ
અને પાચ સવરનુ જ્ઞાન થયા વિના ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમની આરાધના થઈ શકતી
નથી તેકારણુ આસ્રવ અને સવરના અવગણનુ નિરૂપણુ કરનાર આ પ્રશ્નવ્યાકરણુનુ
નિરૂપણુ કરવામા આવે છે એ જ ભવમા અગ માથે તેનો સબધ છે

તતસ્તત્પરિહારોપાયભૂતસંવરણન ભગવતા કૃતમ્ । નહિ કોઽપિ મેધાવી દુઃસ્વરૂ-
પસ્યાઽપરિજ્ઞાને તત્પરિહારોપાયપરિમાર્ગે ત્રિધત્તે, નાસસિદ્ધે ડવરાદિરોગે
તત્ત્વિકિત્સાઽઽવશ્યકત્વમુપપદ્યતે, અતઃ પૂર્વમાસત્ત્વપશ્ચરુદેશક્રમપ્રાપ્ત નામત પ્રદ-
શ્યતિ । આસ્રવેષ્વપિ પૂર્વે હિંસાનિરૂપણ કૃતમ્, અસત્યાદિભિરપિ હિંસાયા એવ
જાયમાનત્વેન હિંસાયાઃ પ્રધાનભૂતત્વાત્, અતઃ પ્રથમમાસ્રવદ્વારમાહ—“ જન્ન-
હણમો ” ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રશ્નવ્યાકરણ મેં પાચ આસ્રવ ઓર પાચ સવર કે સવધ કો
લેકર દસ અધ્યયન હેં હસલિયે હસે દો ભાગોંમે વિભક્ત ક્રિયા ગયા હૈ ।
આસ્રવ કા વર્ણન વધ કા કારણ હોને સે પ્રથમ ભાગ મેં ક્રિયા ગયા હૈ
ઓર સવર કા વર્ણન આસ્રવ કે પરિહાર કા ઉપાયભૂત હોને કે કારણ
ઉસકે વાદ મેં દ્વિતીય ભાગ મેં ક્રિયા ગયા હૈ । કેસા ભી બુદ્ધિમાન્ પુરુષ
ક્યોં ન હો જવતક વહ દુઃસ્વ કે સ્વરૂપ સે અપરિજ્ઞાત રહતા હૈ તો
વહ ઉસકે પરિહાર કરને કે ઉપાયભૂત માર્ગ કી ગવેપણા નહીં કરતા હૈ,
તથા જૈસે ડવરાદિરોગ કી સસિદ્ધિ કે અભાવ મે અર્થાત્ ઉસકે પૂર્ણ
નિદાન કે અભાવ મે ઉસકે શમન કે ઉપાય કી ગવેપણા નહીં હોતી હૈ,
ઉસી તરહ જવતક આસ્રવતત્ત્વ કા પરિજ્ઞાન જીવ કો નહીં હો જાતા હૈ,
તવતક સંવરરૂપ ઉસકે નિરોધકભૂત માર્ગ કો જાનને કી ભી જિજ્ઞાસા
ઉસકો ઉત્પન્ન નહીં હો સકતી હૈ । હસલિયે સત્ર સે પહિલે ઉદ્દેશક પ્રાપ્ત
પાંચ આસ્રવોં કો ઉનકે સ્વરૂપ કો આગે વિશેષ સ્પષ્ટ કરને કે અભિપ્રાય
સે સૂત્રકાર નામ લેકર પ્રદર્શિત કરતે હૈ । ડન પાચ આસ્રવોં મેં ભી સૂત્ર-

આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા પાચ આસ્રવ અને પાચ સવર વિષેના દસ અધ્યયન
છે, તેથી તેના બે ભાગ પાડવામા આવ્યા છે આસ્રવો બધના ડગણુડપ હોવાથી
આસ્રવોનુ વર્ણન પહેલા ભાગમા કરવામા આવ્યુ છે, અને સવર આસ્રવના
પરિત્યાગને માટે ઉપાયરૂપ હોવાથી તેમનુ વર્ણન આશ્રવન વર્ણન પછી બીજા
ભાગમા કરેલ છે ગમે તેવો બુદ્ધિશાળી માણસ હોય પણ જો તે દુખના
સ્વરૂપથી અજાણુ રહે તો તેનો પરિહાર કરવાના ઉપાયરૂપ માર્ગની પ્રાપ્તિ તે
કરી શકતો નથી તથા જેમ જ્વર આદિ રોગોમા તેનુ પૂર્ણ નિદાન કર્યા વિના
તેનુ શમન કરવાનો ઉપાય જડતો નથી તેમ આસ્રવતત્ત્વનુ પરિજ્ઞાન બ્યાસુધા
હવને થાય નહીં, ત્યાસુધી તેમને રોકનાર-તેમના નિરોધક-સવરરૂપ માર્ગને
જાણવાની જિજ્ઞાસા તેનામા ઉત્પન્ન થઈ શકતી નથી તેથી સૌથી પહેલા ઉદ્દેશ
પ્રાપ્ત પાચ આસ્રવોના નામ સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે તેમનુ સ્વરૂપ આગળ જતા
વિસ્તારથી સ્પષ્ટ કરવામા આવશે તે પાચ આસ્રવોમા પણ સૂત્રકારે સૌથી

અત્ર “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉત્કેષક વાક્ય ચાચ્યમ્ । ચમ્પાનગર્યા સુધર્મ-
સ્વામિનઃ સમસ્રણ, તત્ર કોણિયો નામ રાજા, ધારિણી નામ દેવી’ત્યાદિ વર્ણન
ઔપપાતિકમૂલાદવસેયમ્ । સુધર્મસ્વામિનો જમ્બૂસ્વામિનશ્ચ વર્ણન જ્ઞાતામૂત્રસ્ય
પ્રથમાધ્યયનતો વિદેયમ્ । જમ્બૂસ્વામિનઃ સુધર્મસ્વામિનશ્ચ પ્રશ્નોત્તરવાક્ય પ્રદર્શયતે-
કાર ને પહિલે હિંસારૂપ આશ્રવ કા જો નિરૂપણ ક્રિયા હૈ ઉસકા કારણ
યહ હૈ કિ હિંસા સે અતિરિક્ત જો મૃપાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહ
યે આશ્રવ દાર હૈ ઉનસે હિંસા હી ઉત્પન્ન હોતી હૈ । ઇમલિયે ઉમ હિંસા
મેં પ્રમાનતા આને સે અત્ર મૂત્રકાર સર્વ પ્રથમ ઉસી હિંસા રૂપ આશ્રવ
દાર કા નિરૂપણ કરતે હૈ-“જમ્બૂ ઇણમો” ઇત્યાદિ ।

હસ સૂત્ર કી સગતિ કે લિયે ઇમ મેં “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉત્કે-
ષક વાક્ય સંબંધિત કરલેના ચાહિયે-અર્થાત્ ઉસકાલ મેં ઓર ઉસ
સમય મેં ચમ્પા નામ કી નગરી થી । ઉસકે શાસક કોણિક રાજા થે ।
ઉનકી રાની કા નામ ધારિણી દેવી થા । તીર્થંકર પરમ્પરાનુસાર
વિહાર કરતે હુજ વહા સુધર્માસ્વામી કા આગમન હુઆ-ઇત્યાદિ પ્રકાર
કા સમસ્ત વર્ણન જૈસા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં ક્રિયા ગયા હૈ વૈસા હી જાન
લેના ચાહિયે ઓર ઉસે “જમ્બૂ ઇણ મો” ઇસ સૂત્ર કી સગતિ નિમિત્ત
યહા લગા લેના ચાહિયે । સુધર્માસ્વામી ઓર જમ્બૂ સ્વામી કા વર્ણન જ્ઞાતા
સૂત્ર કે પ્રથમ અધ્યયન મેં ક્રિયા હુઆ હૈ । સો ય’ મી વહા સે હી જાન
લેના ચાહિયે । અત્ર જમ્બૂસ્વામી ઓર સુધર્માસ્વામી કી ઇસ પ્રશ્નવ્યાકરણ

પહેલા હિંસારૂપ આશ્રવનુ નિરૂપણ કર્યું છે તેનુ કારણ એ છે કે હિંસા મિવાય
મૃપાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન અને પરિગ્રહ, એ જે આશ્રવ દાર છે, તેમના વડે
હિંસા જ ઉત્પન્ન થાય છે તે કારણે તે હિંસામા પ્રમાનતા આવવાથી, સૂત્રકાર
સૌથી પહેલા એજ હિંસારૂપ આશ્રવદ્વારનુ નિરૂપણ કરે છે-“જમ્બૂ ઇણમો” ઇત્યાદિ

આ મૂત્રના સંબંધને માટે તેમા “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉત્કેષક વાક્યનો
સંબંધ જોડી દેવો જોઈએ એટલે કે તે કાળે અને તે સમયે ચમ્પા નામની
એક નગરી હતી એણિજ રાત્ર ત્યાના રાત્ર હતા તેમની ગણીનુ નામ ધારિણી
દેવી હતુ તીર્થંકર પંચપગનુઆર વિહાર કરતા કરતા ત્યા સુધર્માસ્વામીનુ આગમન
થયુ ઇત્યાદિ પ્રકારનુ આખુ વર્ણન જેમ ઔપપાતિક મૂત્રમા કરાયુ છે તે
પ્રમાણે સમજી લેવુ અને તેને “જમ્બૂ ઇણમો” આ મૂત્રના સંબંધને માટે
અહીં જોડી દેવુ જોઈએ સુધર્માસ્વામી અને જમ્બૂસ્વામીનુ વર્ણન જ્ઞાતામૂત્રના
પહેલા અધ્યયનમા કરેલ છે તેા તે પણ ત્યાથી સમજી લેવુ જોઈએ હવે
જમ્બૂસ્વામી અને સુધર્માસ્વામી વચ્ચે આ પ્રશ્નવ્યાકરણમૂત્રને વિષે જે પ્રશ્નોત્તરરૂપે

મૂલમ્—“જહ્ણ ભતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણ જાત સપત્તેણ નવમસ્સ અગસ્સ અણુત્તરોવવાહ્યદસાણ અયમદ્દે પન્નત્તે । દસમસ્સ ણ ભતે અગસ્સ પઞ્ઠા વાગરણાણ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? જત્તુ ! દસમસ્સ અગસ્સ સમણેણ જાત સપત્તેણ દો દારા પળ્લત્તા । આસવદારા ય સવરદારા ય । પદ્દમસ્સ ણ ભતે ! દારસ્સ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કદ્દ અજ્ઞયણા પળ્લત્તા ? જત્તુ ! પદ્દમસ્સ ણ દારસ્સ સમણેણ જાત સપત્તેણ પચ અજ્ઞયણા પળ્લત્તા । દોચ્ચસ્સ ણ ભતે ! એવ ચેવ ! એસિં ણ ભતે ! અજ્ઞયણાણ અપ્પહય સવરાણ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? । તણ્ણ અજ્ઞસુહમ્મે યેરે જત્તુ નામેણ અણગારેણ એવ વુત્તે સમાણે જત્તુ અણગાર એવ વયાસી ”—

છાયા—યદિ સ્વલ્પ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્સપ્રાપ્તેન નવમસ્યાગ્નસ્ય અનુત્તરોપપાતિકદશાનામયમર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ । દશમસ્ય સ્વલ્પ ભદન્ત ! અગ્નસ્ય પ્રશ્નવ્યાકરણનાં શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્સપ્રાપ્તેન કોઽર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? જન્મુ ! દશમસ્ય—અગ્નસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્સપ્રાપ્તેન દ્વે દ્વારે પ્રજ્ઞપ્તે—આસ-સૂત્ર કે સ્વલ્પ મે જો પ્રશ્નોત્તર રૂપ વાતચીત હુઈ હે ઉસકો પ્રકટ કરતે હૈં—‘ જહ્ણ ભતે ’ ઇત્યાદિ ।

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો યાવત્ સિદ્ધિ-ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં અનુત્તરોપપાતિક દશાગ્ન નામકે નવમે અગ કા જબ હસ પ્રકાર સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ—તો ઉન્હી યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને પ્રશ્નવ્યાકરણ નામક દશવેં અગ કા વયા અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ ? હમ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મે સુધર્માસ્વામી ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—હે જન્મુ ! તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર સે હૈ—યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ દશવેં અગ કે દો દ્વાર પ્રરૂપિત કિયે હૈ ઉસમે પહિલા આસવ દ્વાર હૈ ઓર

વાતચીત થઈ છે તેને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—“જહ્ણ ભતે ! ” ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર, કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી લીધું છે, તેમણે અનુત્તરોપપાતિક દશાગ્ન નામના નવમા અગનો જે આ પ્રમાણે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે, તે તે સિદ્ધિ ગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામના હસમા અગનો કયો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સુધર્મા સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—હે જન્મુ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે આ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ હસમા અગના જે દ્વાર પ્રરૂપિત કર્યો છે, તેમા પહેલું

વદાર ચ સચરદાર ચ । પ્રથમસ્ય ચલુ ભદન્ત ! દ્વારસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ
યાત્સપ્રાપ્તેન કતિ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ ? । જમ્બૂ ! પ્રથમસ્ય ચલુ દ્વારસ્ય
શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્સપ્રાપ્તેન પશ્ચ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ । દ્વિતી-
યસ્ય ચલુ ભદન્ત ! ૦ એવમેવ । એતેષા ચલુ ભદન્ત ! અ યયનાનામ્ આસ્રવસચરાણા
શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્સપ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞાનઃ ? । તતઃ ચલુ આર્ય
સુધર્મા સ્વવિર જમ્બૂનામ્ના અનગારેણ એવમુક્તઃ સન્ જમ્બૂમનગારમેવમનાદીત્—
'જન્નુ ઇણમો' ઇત્યાદિ ।

મૂળમ્—“જન્નુ ઇણમો અપહય સંવર,—વિણિચ્છિય પવયણસ્સ-
ણિસ્સદ । વોચ્છામિ નિચ્છયત્વ સુભાસિયત્થ મહેસીહિ ॥સૂ૦૧॥

ટીકા—‘હે જન્નુ !’ ઇત્યામન્ત્રણેન જમ્બૂસ્વામિન પ્રતિ સુધર્માસ્વામી યાદ—
'હે જન્નુ ! ઇણમો' ઇદમ્—અનુપદ વક્ષ્યમાણ પ્રશ્નવ્યાકરણશાસ્ત્ર 'વોચ્છામિ'

દસરા સચર દાર છે । હે ભદન્ત ! પ્રથમ દાર કે શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર
ને કિ જો યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હ કિતને
અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હે ? હસ પ્રકાર જન્નુસ્વામી કે પૂછને પર શ્રી સુધ
ર્માસ્વામી ને ઉનસે કહા—હે જન્નુ ! યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનકો પ્રાપ્ત
હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને પ્રથમ દારકે પાચ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હે ।

પ્રશ્ન—દ્વિતીય દાર કે હે ભદન્ત ! કિતને અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હે ।

ઉત્તર—જન્નુ ! કિતને હી અધ્યયન દ્વિતીય દાર કે પ્રરૂપિત કિયે હે ।
જન્નુસ્વામી ને પુનઃ સુધર્માસ્વામી સે પૂછા કિ—હે ભદન્ત ! કિન આસ્રવ
ણ્વ સચર સચધી અધ્યયનો કા અર્થ યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનો કો
પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કૈમા પ્રરૂપિત કિયા હે ? હસ પ્રકાર
અનગાર જન્નુ સ્વામી સે પૂછે ગયે સ્વવિર આર્ય સુધર્માને ઉન જન્નુ અનગાર

આસ્રવ દાર છે અને બીજી અવર દાર છે “હે ભદન્ત ! સિદ્ધિગતિને પ્રાપ્ત
કરેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ?” આ પ્રમાણે
જન્નુસ્વામી વડે પૂછવામા આવતા સુધર્માસ્વામીએ તેમને કહ્યું—‘હે જન્નુ !
સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પામેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રથમ દારના પાચ
અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ”

પ્રશ્ન—“બીજા દારના કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ?”

ઉત્તર—“કેટલા જ અધ્યયન બીજા દારના પણ પ્રરૂપિત કર્યા છે ”
જન્નુસ્વામીએ ફરીથી સુધર્માસ્વામીને પૂછ્યું કે—હે ભદન્ત ! સિદ્ધિગતિ નામના
સ્થાનને પામેલ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે તે આશ્રવો અને સચર સચધી
અધ્યયનોનો અર્થ કેવો પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે અનુગાર જન્નુસ્વામી

વક્ષ્યામિ=ત્વા પ્રતિ પ્રરૂપયિષ્યામિ । તત્ કીદશમિત્યાહ—‘અણ્દયે’ત્યાદિ—
‘અણ્દયસવરવિણિચ્છિય’ આસ્રવસંમરવિનિશ્ચિત, આસ્રવન્તિ=આગચ્છન્તિ
કર્મજલાનિ આત્મસરસિ યૈસ્તે આસ્રવાઃ=કર્મવન્ધહેતુભૂતાઃ પ્રાણાતિપાતાદયઃ,
યદ્વા-આસ્રવણમ્-આસ્રવઃ-આગમનમ્ । સ દ્વિવિધઃ-દ્રવ્યતો ભાવતશ્ચ, તત્ર દ્રવ્યતો
યજ્જલ્લાન્તર્ગતનાવાદો ઊદ્વૈર્જલાગમનમ્ । ભાવતસ્તુ-પ્રાણાતિપાતાદિભિરાત્મનિ
કર્માગમનમ્ । સસારસાગરાન્તર્ગતાત્મનોકાયા પ્રાણાતિપાતાદિચ્છિદ્રે, કર્મજલાગ
મનમિતિ ભાવઃ । સ પ્રાણાતિપાતાદિરૂપઃ પશ્ચવિધઃ । સત્રિયન્તે=પ્રતિમ્દુહ્યન્તે

સે ઁસા કહા—‘જબૂ ઇણમો’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—ઈસ સૂત્રમેં “જબૂ” યહ પદ સવોધોન અર્થમેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ । ઇસસે
યહ લક્ષિત હોતા હૈ કિ સુધર્માસ્વામી જબૂ સ્વામી સે કહતે હૈ કિ (જબૂ
ઈણમો) હે જબૂ ! મૈં અનુપદ વક્ષ્યમાણ પ્રશ્ન વ્યાકરણરૂપ શાસ્ત્ર (વોચ્છામિ)
તુમકો કહૂંગા । (અણ્દયસવરવિણિચ્છિય) ઇસ શાસ્ત્ર મૈં આસ્રવ
ઁવ સવર કા નિર્ણય ઉનકે લક્ષણો ઁવ ભેદાદિકોં કે કથન પૂર્વક કિયા
ગયા હૈ । “વિણિચ્છિય” પદ કા અર્થ હૈ વિશેષરૂપ સે નિર્ધારિત કરના ।
તથા આસ્રવકા અર્થ હૈ કર્મવધકે હેતુભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક । ઇનકે દ્વારા
હી આત્મરૂપી તાલાવમે જલતુલ્ય કર્મોં કા આગમન હોતા રહતાહૈ । જિસ
પ્રકાર તડાગ મે જલ કે આને કે લિયે નાલે હુઆ કરતે હૈ ઉસી પ્રકાર
આત્મા મૈં ભી પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ નાલા દ્વારા જ્ઞાનાવરણીય આદિ
કર્મરૂપ જલ કા આના હોતા રહતા હૈ । અથવા-આના યહ-આસ્રવ હૈ
યહ આસ્રવ દ્રવ્ય ઔર ભાવ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ ।

વડે પૂછાતા સ્થવિર આર્યસુધર્માએ તે જ બૂ આશુગારને કહ્યું—“જબૂ ઇણમો” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ સૂત્રમા “જબૂ” પદ સ ળોધન અર્થમા વપરાયુ છે તેથી
એ લક્ષિત થાય છે કે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે કે “જબૂ
ઈણમો” હે જબૂ ! હું આ નીચે પ્રમાણેનુ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ શાસ્ત્ર
“વોચ્છામિ” તમને કહાશ “અણ્દયસવરવિણિચ્છિય” આ શાસ્ત્રમા આસ્રવ
અને સવરદ્વારનો નિર્ણય તેમના લક્ષણો અને ભેદાદિના ડથનપૂર્વક કરવામા
આવ્યો છે “વિણિચ્છિય” પદનો અર્થ વિશેષરૂપે નિર્ણિત કરવો, તથા આસ્ર
વનો અર્થ કર્મબધના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાતાદિક થાય છે તેમના દ્વારા જ
આત્મારૂપી તાલાવમા જળ સમાન કર્મોંનુ આગમન થયા કરે છે જેમ તાલાવમા
પાણી આવવા માટે નાળા હોય છે, તે જ પ્રમાણે આત્મામા પણ પ્રાણાતિપાત
આદિરૂપ નાળા દ્વારા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મરૂપ જળનુ આગમન થતુ રહે છે
અથવા આવવું તે આસ્રવ છે તે આસ્રવ દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી બે પ્રકારનો

પ્રવિશત્કર્મજલानि आत्मसरसि यस्ते सवरा - कर्मनिरोधहेतुभूताः प्राणातिपात
विरमणादयः । यद्वा-सवरण सवर'-स्थगनम् । अयमपि द्विविधः द्रव्यतो भावतश्च ।
तत्र द्रव्यतस्तथाविधचिकणमृत्तिकादिभिः सलिशोपरि तरत्तरण्यादेरनारतप्रविशन्ती-
राणा विवराणा पिधानम् । भावत प्राणातिपातविरमणादिभिरात्मनि प्रविशत्कर्मणां
निरोधः । असायपि प्राणातिपातविरमणादिरूपः पञ्चविधः । ते विनिश्चीयन्ते=

જલ કે भीतर પડી દુર્દ નૌકા મેં છિદ્રો દ્વારા જો જલ કા આના હોતા
હે વહ દ્રવ્યાસ્રવ હે । પ્રાણાતિપાત આદિ અશુભ ક્રિયાઓ દ્વારા આત્મા
મેં જો કર્મો કા આના હોતા હે વહ ભાવાસ્રવ હે । તાત્પર્ય કેવલ ઇસકા
યહ હે કિ સસાર રૂપ સાગર કે અન્તર્ગત ઇમ આત્મ રૂપ નાવ મેં પ્રાણા-
તિપાત આદિ છિદ્રો દ્વારા કર્મરૂપ જલ કા આગમન હોતા રહતા હે વહ
આસ્રવ હે । કર્માગમન હેતુભૂત યહ પ્રાણાતિપાતરૂપ આસ્રવ પાચ પ્રકાર
કા હે । આત્મારૂપ સરોવર મેં પ્રવેશ હોને સે કર્મરૂપ જલ જિન ક્રિયાઓ
સે રુકતા હે ડનકા નામ સવર હે । પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ ક્રિયાઓ સે
વિરમણ હોના યહી કર્મો કે રોકડેના કા ઉપાય ભૂત સવર હે । અથવા
રુકના ઇસકા નામ સવર હે, યહ સવર મી દ્રવ્ય ઔર ભાવ કી અપેક્ષા
દો પ્રકાર કા હે-ચિકની મૃત્તિકા આદિ સે જલ કે ડપર તૈરતી દુર્દ
નૌકા આદિ કા છેદો કે કિ જિનસે નિરન્તર ડસમેં જલ આ રહા હો
પડ કર દેના યહ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સવર હે, તથા પ્રાણાતિપાતવિરમણ
આદિ ઉપાયો સે આત્મા મેં પ્રવિષ્ટ હોતે હુણ કર્મો કા રોકડેના યહ ભાવ
કી અપેક્ષા સવર હે । યહ સવર મી પ્રાણાતિપાત આદિઓ કે વિરમણ

ખતાવ્યો છે પાણીમા પડેલી નૌકામા છિદ્રો દ્વારા જે જળનુ આગમન થાય છે
તે દ્રવ્યાસ્રવ છે પ્રાણાતિપાત આદિ અશુભ ક્રિયાઓ દ્વારા આત્મામા જે કર્મોનુ
આગમન થાય છે તે ભાવાસ્રવ છે તેનુ તાત્પર્ય એટલુ જ છે કે મમાગ્રૂપી
માગરની અદર આ આત્માગ્રૂપી નાવમા પ્રાણાતિપાત આદિ છિદ્રો દ્વારા કર્મગ્રૂપી
જળનુ જે આગમન થયા કરે છે તેને આસ્રવ કહે છે કર્માગમનના ડારણરૂપ
તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાચ પ્રકારના આસ્રવ છે કર્મગ્રૂપ જળ જે ક્રિયાઓથી
આત્માગ્રૂપ મગેવરમા પ્રવેશ પામતુ અટકે છે તે ક્રિયાઓને સવર કહે છે
પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓનુ વિરમણ થવુ એ જ કર્મોને રોકવાના ઉપાયભૂત
સવર છે, અથવા સવર એટલે રોકવુ તે સવર પણ દ્રવ્ય અને ભાવની અપે
ક્ષાએ જે પ્રકારનો છે પાણીમા તરતી નૌકાના જે છિદ્રોમાથી પાણી પ્રવેશ કરતુ
હોય તે છિદ્રોને ચીજણી માટિ આદિથી બાધ કરી દેવા તે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ
સવર છે, તથા પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ ઉપાયોથી આત્મામા પ્રવેશ કરતા
કર્મોને રોકી લેવા તે ભાવની અપેક્ષાએ સવર છે તે સવર પણ પ્રાણાતિપાત

હૈ કિ યહ પ્રશ્નવ્યાકરણશાસ્ત્ર પ્રવચનરૂપ પ્રફુલ્લિત પુષ્પ કે રસ જેસા સાર ભૂત હૈ । હસમે આસ્રવ ઓર સવર તત્વકા સુન્દર નિર્દોષ વિવેચન હુઆ હૈ । ઓર યહ વિવેચન તીર્થકર પરપરા કે અનુસાર જેમા હોતા આયા હૈ વૈસા હી હુઆ હૈ ।

ભાવાર્થ—ટીકાકાર ને “ આસ્રવતિ-આગચ્છતિ, કર્મજલ્લાનિ યૈસ્તે આસ્રવાઃ, યદ્વા-આસ્રવણમ્ આસ્રવઃ । સન્નિયન્તે-પ્રતિરુદ્ધયન્તે પ્રવિશત્કર્મ-જલ્લાનિ યૈસ્તે સવરા, યદ્વા સવરણ સવરઃ ” હસ પ્રકાર સે આસ્રવ ઓર સવર કી વ્યુત્પત્તિ કી હૈ, ડસસે પ્રથમ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર કર્મ-વધ કે કારણભૂત પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓં કો આમ્રવ કહા ગયા હૈ કારણ કિ હન્દી કે દ્વારા જીવ નવીનર કર્મોંકા વધ કરતા રહતા હૈ । દૂસરી વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર આને માત્ર કા નામ આમ્રવ કહા ગયા હૈ સો યહ, દ્રવ્ય ઓર ભાવ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ । દ્રવ્યાસ્રવ કર્મ-વધ કા કારણ નહી હૈ । કર્મવધ કા કારણ તો ભાવાસ્રવ હી હૈ, ક્યોં કિ પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ ભાવોં સે હી કર્મોં કા આગમન હોતા હૈ । હસી તરહ સવર કે વિષય સે ભી જાનના ચાહિયે । સવર, આસ્રવ કા નિરોધક હોતા હૈ । છિદ્રોં કે દ્વારા નૌકા સે જલ કા આના યહ આસ્રવ કે સ્થાનાપન્ન હૈ ઓર ડન છિદ્રોં કો બદ કર દેના યહ સવરકે સ્થાનાપન્ન હૈ ।

અર્થ છે કે આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્ર પ્રવચનરૂપ વિદ્યમિત પુષ્પતા રસ જેવું સારભૂત છે અને આ વિવેચન તીર્થકર પરપરા પ્રમાણે જે પ્રમાણે થતું આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ થયું છે

ભાવાર્થ—ટીકાકારે આ રીતે આસ્રવ અને સવરની વ્યુત્પત્તિ કી છે—
“ આસ્રવતિ-આગચ્છતિ, કર્મજલ્લાનિ યૈસ્તે આસ્રવા ” (જેના દ્વારા કર્મજળ આવે છે તે આમ્રવો કહેવાય છે) અથવા “ આસ્રવણમ્ આસ્રવ ” (આવવું એટલે આસ્રવ) “ સન્નિયન્તે-પ્રતિરુદ્ધયન્તે પ્રવિશત્કર્મજલ્લાનિ યૈસ્તે સવરા ” (જેના વડે કર્મજળ પ્રવેશ પામતું એટલે છે તે સવર છે) અથવા “ સવરણ સવર ” (સવર એટલે જવું) તેમાથી પહેલી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે કર્મબંધના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓને આસ્રવ બતાવ્યા છે બીજી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આગમન માત્રનું નામ આસ્રવ બતાવ્યું છે તો તે દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી જે પ્રકારના કહેલ છે દ્રવ્યાસ્રવ કર્મબંધનું કારણ નથી કર્મબંધનું કારણ તો ભાવાસ્રવ જ છે, કારણકે પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ ભાવોથી જ કર્મનું આગમન થાય છે એ જ પ્રમાણે સવરને વિષે પણ સમજવું સવર આસ્રવનો નિરોધક (રોકનાર) હોય છે, છિદ્રો દ્વારા નૌકામા જળનું પ્રવેશવું તે આસ્રવના સ્થાન સમાન છે અને તે છિદ્રોને બંધ કરી દેવા તે સવરના સ્થાન

‘યથોદ્દેશ નિર્દેશ, ઇતિ ન્યાયેન ફલ્લતો નામતથાસ્રવપ્રકારાનાહ—
‘પચવિહો’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પંચવિહો પણ્ણત્તો જિણેહિં ઇહ અણ્હઓ અણાદીઓ ।

હિસા ૧ મોસ ૨ મદત્ત ૩ અવમ ૪ પરિગ્ગહ ૫ ચેવ ॥સૂ૦૨॥

ટીકા—‘જિણેહિં’ જિનેન્દ્ર=રાગાદ્યન્તરદ્વરિપુવિજેતૃભિરર્હદ્ધિઃ ઇહ=જિન
શાસને સસારે વા, ‘અણ્હઓ’ આસ્રવ ‘અણાદીઓ’ અનાદિક -નાસ્યાદિઃ
પ્રથમોત્પત્તિર્મિચ્છતે ઇત્યનાદિકઃ । ઉપલ્ભાવણત્યાદસ્ય ‘અપર્યવસિતઃ’ ઇત્યપિ દૃશ્યમ્,

પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ ભાવ, પ્રાણાતિપાત આદિ વિરમણરૂપ ભાવસવર સે
પ્રતિનિદ્ધ હોતે હૈ । ઓર ણેસા હોને સે હી કર્મો ના આગમન રુકના હૈ ।
“નિશ્ચયાર્થ”મેં ‘નિઃ’ શબ્દકા અર્થ દૂર હોના હૈ । તથા ચયકા અર્થ જ્ઞાના-
વરણીયાદિ કર્મપુજ હૈ । વહ કર્મપુજ જિમ સ્થાનસે દૂર હો ચુકા હૈ ણેસા વહ
સ્થાન મોક્ષ હૈ, ઓર વહ મોક્ષ જિમકા પ્રયોજન હૈ વહ નિશ્ચયાર્થ શાસ્ત્ર
હૈ । અથવા નિશ્ચય કા અર્થ મોક્ષ હૈ । ઇસ મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ કે લિયે હી
ઇસ શાસ્ત્ર કા પ્રણયન હુઆ હૈ ॥સૂ૦૧॥

ઉદ્દેશકે અનુસાર હી નિર્દેશ હુઆ કરતા હૈ ઇસ ન્યાય કો લેકર
સૂત્રકાર ફલ્લ ઓર નામ કી અપેક્ષા અવ આસ્રવ કે પ્રકારોં કો પ્રકટ
કરતે હૈ—‘પચવિહો પણ્ણત્તો’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જિણેહિં) જિનેન્દ્ર દેવને (ઇહ) અર્હન્ત પ્રભુકે શાસનમે અથવા
ઇસ સસારમેં (અણ્હઓ) આસ્રવ (અણાદીઓ) અનાદિ (પણ્ણત્તો)

સમાન છે પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ ભાવ, પ્રાણાતિપાત આદિ વિરમણરૂપ ભાવસવરથી
અટકે છે અને એમ થવાથી જ નવીન ડર્મેનું આગમન રોકાય છે
“નિશ્ચયાર્થ” મા “નિ” શબ્દનો અર્થ ‘દૂર થવું’ થાય છે તથા ‘ચય’નો
અર્થ જ્ઞાનાવરણાયાદિ કર્મપુજ છે તે કર્મપુજ જે સ્થાનથી દૂર થઈ ગયો છે
તેવું સ્થાન મોક્ષ છે અને તે મોક્ષ જેવું પ્રયોજન છે તે નિશ્ચયાર્થ શાસ્ત્ર
છે અથવા નિશ્ચયનો અર્થ મોક્ષ પણ થાય છે એ મોક્ષની પ્રાપ્તિને માટે જ
આ શાસ્ત્રની રચના કરવામા આવી છે ॥ સૂ. ૧ ॥

ઉદ્દેશ પ્રમાણે જ નિર્દેશ થયા કરે છે તે ન્યાયે સૂત્રકાર ક્ષણ અને નામની
અપેક્ષાએ હવે આસ્રવોના પ્રકારોને પ્રગટ કરે છે—“પચવિહો પણ્ણત્તો” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“જિણેહિં” જિનેન્દ્ર દેવે “ઇહ” અર્હન્ત પ્રભુના શાસનમા, એટલે કે અ
સસારમા “અણ્હઓ” આસ્રવોને “અણાદીઓ” અનાદિ “પણ્ણત્તો” પ્રણય

પ્રવાહાપેક્ષયા નાનાજીવાપેક્ષયા ચ સસારસ્યાનાપર્યવસિતત્વાત્ । આસ્રવસ્ય સાદિત્વે સપર્યવસિતત્વે ચ સ્વતઃ એવં વિરમણે સિદ્ધાનામિત્ સસારિણામપિ કર્મવન્ધા-ભાવ પ્રસન્નઃ સ્યાત્ । કે તે પ-આસ્રવાઃ ? इत्याह-‘हिंसा’ इत्यादि, हिंसा=जीव-प्रज्ञप्त किया है । (हिंसामोसमदत्त अवम परिग्रह पचवितो चेव) यह हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह, इस प्रकार से पांच तरह का ही है । रागादिक अन्तरंग रिपुओं को जो विजित कर लेते हैं उनका नाम जिन है । जिन प्रभु ने जो आस्रव को अनादि कहा है उसका कारण यह है कि यह ससार अनादि और अपर्यवसित है । यद्यपि भव्य-जीवों की अपेक्षा ससार में अनादिता होने पर भी अपर्यवसिता नहीं बनती है फिर भी नाना जीवों की अपेक्षा यह बन जाती है । आस्रव ससारी जीवों के ही होता है, मुक्त जीवों के नहीं । ससार में रहने वाले जीव ही ससारी जीव है । यह ससार प्रवाह एव नानाजीवों की अपेक्षा जब अनादि अनन्त है तो यह बात बन जाती है कि आस्रव भी अनादि अनन्त है । अथवा यदि यों भी कह दिया जावे कि आस्रव ही ससार है और ससार ही आस्रव है । तो इस पक्षमें भी आस्रवमें अनादि अनन्तता सुघटित हो जाती है । कारण इसकी प्रथमोत्पत्ति तो बनती नहीं है । यदि आस्रवको एकान्ततः सादि और सपर्यवसित ही माना जावे तो इस स्थिति में वह आस्रव जबतक ससारी जीवमें नहीं हुआ-तबतक वह जीव सिद्धों

(ખતાવ્યા) ક્યાર્થી છે “હિંસામોસમદત્ત અવમ” પરિગ્રહ પચવિતો ચેવ” તે હિંસા, અસત્ય, ચોરી, કુશીલ અને પરિગ્રહ એમ પાંચ પ્રકારના છે રાગાદિ આત્મિક દુશ્મનોને જે હોતે છે તેને જિન કહે છે જિન પ્રભુએ આસ્રવોને અનાદિ ખતાવ્યા છે તેનું કારણ એ છે કે આ સસાર અનાદિ અને અપર્યવસિત અનન્ત છે જે કે ભવ્યજીવોની અપેક્ષાએ સસારમાં અનાદિતા હોવા છતાં પણ અપર્યવસિતા બનતી નથી, છતાં પણ નાના જીવોની અપેક્ષાએ તે બને છે આસ્રવ સસારી જીવોને જ થાય છે, મુક્ત જીવોને થતા નથી સસારમાં રહેનાર જીવો જ સસારી જીવ છે આ સસાર પ્રવાહ અને નાના જીવોની અપેક્ષાએ જે અનાદિ અનન્ત છે તે એ વાત પણ નક્કી થઈ જાય છે કે આસ્રવ પણ અનાદિ અનન્ત છે અથવા જે એમ પણ કહેવામાં આવે કે આસ્રવ જ સસાર છે અને સસાર જ આસ્રવ છે, તે એ રીતે પણ આસ્રવમાં અનાદિ અનન્તતા સુઘટિત થઈ જાય છે કારણકે તેની પ્રથમ ઉત્પત્તિ તો સંભવી શકતી નથી જે આસ્રવને એકાન્તતઃ સાદિ અને સપર્યવસિત (સાન્ત) જ માનવામાં આવે તો તે પરિસ્થિતિમાં તે આસ્રવ જ્યાં સુધી સસારીજીવમાં

ઘાતઃ ૧ । 'મોસ' મૃપા-અસત્યભાષણમ્ ૨ । 'અદત્ત' નદત્તમદત્ત=પરદ્રવ્યગ્રહણમ્
૩ । 'અબ્રહ્મ' અબ્રહ્મ-બ્રહ્મ=કામસેવનત્યાગ' ન બ્રહ્મ અબ્રહ્મ-અકુશ્લાનુષ્ઠાન
સ્ત્રી પુત્ર સન્નો મૈથુનમિત્યર્થઃ ૪ । 'પરિગ્રહ' પરિગ્રહઃ-પરિગૃહ્યતે=આદીયતે इति
પરિગ્રહઃ સ ચ નવવિધઃ—'ધન૧, ધાન્ય૨, ક્ષેત્ર૩, વાસ્તુક૪, રૂપ્ય૫, સુવર્ણ ૬,
કુપ્ય૭, દ્વિપદઃ૮, ચતુષ્પદશ્ચેતિ૯ । 'ચેવ' ચેવ ચેતિ સમુચ્ચયાર્થઃ, એવ શબ્દોઽ-

કી તરહ કર્મવધનસે મુક્ત હી રહેગા । તથા સપર્યવસિત માનનેમેં મી યહી
આપત્તિ રહેગી । ઇસ તરહ સસારી જીવો કે મી કર્મવધન કે અભાવ કા
પ્રસંગ આકર પ્રાપ્ત હોગા । ઇસલિયે યહી માનના ચોલિયે કિ યહ આસ્રવ-
પ્રવાહ નાના જીવોં લી અપેક્ષા અનાદિ અનત હૈ । અપર્યવસિત યહ
પદ મૂલ ગાથા મેં નહીં હૈ । ફિર મી અનાદિ પદ સે હસકા ઉપલક્ષણ
કિયા ગયા હૈ । પ્રમાદ કે યોગ સે જીવ કા ઘાત હોના યહ હિંસા હૈ ।
પ્રમાદ કે યોગ સે અસત્ય ભાષણ કરના ઇસકા નામ શૂઠ-મોસ હૈ ।
પ્રમાદ કે યોગ સે પર કે દ્રવ્ય કા ગ્રહણ કરના અદત્તાદાન ચોરી હૈ ।
કામ સેવન કરને કા પરિત્યાગ કરના ઇસકા નામ બ્રહ્મ હૈ । ઇસ બ્રહ્મકા
નહી હોના અબ્રહ્મ હૈ । અર્થાત્ મૈથુન સેવન કરને રૂપ અકુશ્લાનુષ્ઠાનમેં
પ્રવૃત્ત રહના સો અબ્રહ્મ હૈ । જો ગ્રહણ કિયા જાવે હસકા નામ પરિગ્રહ હૈ,
યહ પરિગ્રહ નો પ્રકારકા હૈ-ધન૧, ધાન્ય૨, ક્ષેત્ર ૩, વાસ્તુ ૪, રૂપ્ય ૫,
સુવર્ણ ૬, કુપ્ય ૭, દ્વિપદ ૮ ઓર ચતુષ્પદ ૯ । “ચ” યહ શબ્દ યહાં

ન થાય ત્યા સુધી તે હવ સિદ્ધોની જેમ કર્મણધનથી મુક્ત જ રહેશે તથા
સપર્યવસિત માનવામા પણ તે જ મુશ્કેલી નહીં એ રીતે સસારી હવેમા
પણ કર્મણધનના અભાવની નિયતિ આવી જશે તેથી એમ જ માનવું જોઈએ
કે તે આસ્રવ પ્રવાહ નાના હવેની અપેક્ષાએ અનાદિ અનત છે 'અપર્ય
વસિત' પદ મૂળ ગાથામા નથી છતાં પણ અનાદિ પદથી તેનું ઉપલક્ષણ
કરવામા આવ્યું છે પ્રમાદના યોગથી હવની હત્યા થવી તે હિંસા ગણાય છે
પ્રમાદના યોગથી અમય બોલવું તેનું નામ શૂઠ-મોસ છે પ્રમાદના યોગથી
પારકાનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવું તેને અદત્તાદાન-ચોરી કહેવાય છે કામ સેવન
કરવાનો પરિત્યાગ કરવો તેનું નામ બ્રહ્મ છે આ બ્રહ્મનો અભાવ હોવો તે
અબ્રહ્મ છે એટલે કે મૈથુન સેવન કરવા રૂપ અશુભ અનુષ્ઠાનમા પ્રવૃત્ત રહેવું
તે અબ્રહ્મ કહેવાય છે પરિગ્રહ એટલે ગ્રહણ કરવું તે પરિગ્રહ નવ પ્રકારનો
છે—(૧) ધન, (૨) ધાન્ય, (૩) ક્ષેત્ર, (૪) વાસ્તુ, (૫) આદી, (૬) સુવર્ણ,
(૭) કુપ્ય, (૮) દ્વિપદ અને (૯) ચતુષ્પદ “ચ” શબ્દ અહીં સમુચ્ચયાર્થક છે

વધારણાર્થઃ । હિંસાદિભેદતઃ પञ्चविधा एव आस्रवाः सन्तीत्यर्थः । अनेन दशाध्ययनस्य प्रश्नव्याकरणसूत्रस्याद्यानि पञ्चाध्ययनानि सूचितानि ॥सू० २॥

अथ प्रथमाध्ययने कतिद्वाराणि ? इति द्वारनिरूपणार्थं श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिन प्रत्याह—‘जारिसओ’ इत्यादि ।

मूलम्—जारिसओ१, जंनामा२, जहयकओ३, जारिसं फल देइ४ ।

जेवि य करेंति पाव ५, पाणवह त निसामेह ॥सू० ३॥

टीका—स प्राणिवधरूप आस्रव ‘जारिसओ’ यादृशकः=यत्स्वरूपः, यादृशं तस्य स्वरूपमस्ति, ‘ज नामा’ यन्नामा यानि=यत्स्वरूपकानि नामानि सन्ति यस्येति स यन्नामा भवति । ‘जहयकओ’ यथा च कृतः=प्राणिभिः यथा येन मन्दतीव्रादिपरिणामेन कृतः=समाचरित-आचरणविषयीकृतः । आचरितः सन् ‘जारिस’ यादृशनरकर्मनादिक फल ‘देइ’ ददाति । ‘जेवि य’ येऽपि च ‘पावा’

સમુચ્ચયાર્થક છે ઓર “ એવ ” શબ્દ અવધારણાર્થક છે । ઇસસે યહ પુષ્ટ હોતા છે ફિ આસ્રવ, હિંસા આદિ કે ભેદ સે પાચ હી પ્રકાર કા છે । કમતી વઢતી નહીં છે । ઇસ કથન સે સૂત્રકાર ને દસ અધ્યયનાત્મક ઇસ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્ર કે ઓદિકે પાચ અ યયન સૂચિત કિયે હૈં ॥સૂ ૨॥

અવ સુધર્માસ્વામી “ પ્રથમ અધ્યયન મે કિતને દ્વાર હૈં ” ઇસ જમ્બૂસ્વામી કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે દ્વાર નિરૂપણ કે નિમિત્ત કહતે હૈં ‘ જારિસઓ જ નામા ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—યહ પ્રાણિવધરૂપ આસ્રવ (જારિસઓ) જૈસા હૈ (જ નામા) જિતને ઇસકે નામ હૈ (જહયકઓ) પ્રાણિયોદ્ધારા યહ જિન મન્દ તીવ્ર આદિ પરિણામો સે કિયા જાને પર (જારિસ ફલ દેઈ) જિસ પ્રકાર કા ઉન્હે

છે, અને “ એવ ” શબ્દ અવધારણાર્થક છે તેનાથી એ વાતને પુષ્ટિ મળે છે કે આસ્રવ, હિંસા આદિના લેખી પાચ જ પ્રકારના છે વધારે કે ઓછા નથી આ કથનથી સૂત્રકારે દસ અધ્યયનવાળા આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્રના ગરૂઆતના પાચ અધ્યયન સૂચિત કર્યા છે ॥ સૂ ૨ ॥

હવે સુધર્માસ્વામી “ પ્રથમ અધ્યયનમા કેટલા દ્વાર છે ” એ પ્રકારના જમ્બૂસ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર દેવાને માટે દ્વાનિરૂપણને નિમિત્તે કહે છે— “ જારિસઓ જ નામા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ “જારિસઓ” જેવો છે, “જ નામા” જેટલા તેના નામ છે, “જહયકઓ” પ્રાણીઓ દ્વારા તે મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી કરતા “જારિસ ફલ દેઈ” જે પ્રકારનું તેમને નરકાદિરૂપ ફળ આપે છે, તથા

પાપા:-પાપકર્મશીલા: 'પાણવહ' પ્રાણવધ-પ્રાણા: નન્તિ ચેવામિતિ તે પ્રાણા:=
પ્રાણિન: 'અર્શ આદિત્યાદ ચ, તેષા ત્રયો=દિસા પ્રાણવયસ્ત્ર જીવવાત 'કરંતિ'
કુર્વન્તિ 'ત' તત્=પ્રથમાન્ત્રદ્વાર વક્ત્ર્યમાણ 'નિસામેત્' નિશામયત=નૃણુત । હે
જન્મૂ: ! મમ કવચત: શ્રુણુ इत्यर्थः, अनार्पत्वाद् बहुवचनम् ॥મૃ૦૩॥

સમ્પ્રતિ 'જારિસઓ' યાદશઃ, ઇતિ દ્વાર વિઠ્ઠવન્ પ્રાણવધસ્વરૂપમાદ—
'પાણવહો' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પાણવહો નામ એસો જિણેહિં ભણિઓ—પાવો૧,
ષંડો૨, રુદ્ધો૩, સુદ્ધો૪, સાહસિઓ૫, અણારિઓ૬, ણિગ્ધિઓ૭,
ણિસ્સંસો૮, મહન્નઓ૯, પદ્મઓ૧૦ અદ્ધઓ૧૧, ત્રીહણઓ
૧૨, તાસણઓ૧૩, અણજઓ૧૪, ઉવ્વેચણઓ ચ, ણિરવચચ્ચો
૧૬, ણિદ્ધમો૧૭, ણિપ્પિવાસો૧૮, ણિક્કલુણો૧૯, નિરચવાસ
નિધણગમણો૨૦, મોહમહન્નચપ્પદઓ૨૧, મરણન્નેમણસ્સો૨૨,
પઠમ અહમ્મં અવ્વચસ્સ ॥ સૂ૦૪ ॥

નરકાદિરૂપ ફલ દેતા હૈ, તથા (જે વિ ચ પાણવહ કરેતિ) જો પાપી
હસ પ્રાણવધ કો કરતે હૈં યહ સવ વિષય હસ પ્રથમ આસ્રવદ્વાર મેં કહા
જાવેગા । સો (ત નિસામેત્) હે જન્મ ! તુમ ઉસકો સુનો ।

ભાવર્થ—સુધર્મી સ્વામી હસ ગાથા દ્વારા યહ સમજા રહે હૈં કિ હે
જન્મ ! અવ હમ હિંસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વાર કા સ્વરૂપ, નામ ઓર ફલ
હન ત્રીન દ્વારાંસે હસ હિંસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વારકા નિરૂપણ ક્રિયા
જાયગા । તથા સાથ ૨ મેં યહ ભી સ્પષ્ટ કહા જાયગા કિ હસ પ્રાણવધ
કો કૌન જીવ કરતે હૈં । હસ ગાથા મેં “પાણવહ” હસ પદ સે પ્રાણ
જિનકે હોતે હૈં એસે પ્રાણી એકેન્દ્રિયાદિક ગૃહીત હુએ હૈં । ઉનકા જો વધ
હૈ વહ પ્રાણવધ હૈ ॥ સૂ ૩ ॥

“જે વિચ પાપા પાણવહ કરંતિ” જે પાપી આ પ્રાણવધ કરે છે, તે મમસ્ત
વિષય આ પહેલા આસ્રવદ્વારમા કહેવામા આવશે તે “સો ત નિસામેત્” હે
જન્મ ! તુ તે સાભળ

ભાવાર્થ—સુધર્મીશ્રી આ ગાથા દ્વારા એ સમજાવે છે કે હે જન્મ !
આ હિંસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વારનું સ્વરૂપ, નામ અને ફળ એ ત્રણેનું દ્વારો
પડે નિરૂપણ કરવામા આવશે તથા તેની સાથે એ પણ અપ્પટ કરવામા આવશે
કે એ પ્રાણવધ કયો (પાપી) જીવ કરે છે આ ગાથામા “પાણવહ” એ પદથી જેને
પ્રાણ હોય છે તેવા એકેન્દ્રિયાદિક પ્રાણી ગ્રહણ કરાયેલ છે તેમનો જે વધ છે
તેને પ્રાણવધ કહે છે ॥ સૂ ૩ ॥

ટીકા—‘પાણવહો’ પ્રાણવધો નામ ‘ઁસો’ ંપઃ=વક્ષ્યમાણઃ ‘જિણેહિં’ જિનૈઃ ‘મણિઓ’ મણિતઃ=કથિતઃ । સ ચાયમ્—‘પાવો’ પાપ—પાપપ્રકૃતીના વન્ધકારણત્વાત્ । ‘ચહો’ ચહ્ઢઃ—ક્રોધજનકત્વાત્ ‘રુહો’ રૌદ્રઃ—રૌદ્રરસપ્રવર્તિત-ત્વાત્, ‘સુહો’ ક્ષુદ્રઃ—ક્ષુદ્રજનાચરિતત્વાત્, ‘સાહસિઓ’ સાહસિકઃ—અમમી-ક્ષયકારિ જનપ્રવર્તિતત્વાત્ । ‘અણારિઓ’ અનાર્ય—અનાર્યપુરુષૈરાચરિતત્વાત્ । ‘ણિગ્ધિણો’ નિર્ઘ્ણઃ—ન વિધતે ઘ્ઢ્ઢા=પાપજુગુપ્સા યેષા તે નિઘ્ઢ્ઢાઃ=નિર્દયાઃ, તૈરાચરિતત્વાત્ । ‘ણિસ્સસો’ ન્ઢ્ઢસઃ—કૂરકર્માચરિતત્વાત્, ‘મહ્ઢ્ઢમઓ’ મહાભયઃ—મહાભયજનકત્વાત્, ‘પહ્ઢમઓ’ પ્રતિભયઃ—સકલપ્રાણિનાં ભયહેતુત્વાત્,

અવ સૂત્રકાર ‘જારિસઓ’ ઢસ ઢાર કા વિચરણ કરતે હુઁ પ્રાણવધ કૈ સ્વરૂપ કો કહતે હૈ—‘પાણવહો નામ ંસો’ ઢત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ંસો પાણવહો નામ) ઢહ પ્રાણવધ (જિણેહિં) જિનેન્દ્ર દેવને (પાવો) પાપ પ્રકૃતિયો કૈ વધ કા કારણ હોને સૈ પાપરૂપ ૧, (ચહો) ક્રોધ કા જનક હોને સૈ, ચહરૂપ ૨, (રુહો) રૌદ્ર રસ સૈ પ્રવર્તિત હોને કૈ કારણ રૌદ્રરૂપ ૬, (સુહો) ક્ષુદ્ર જનો ઢ્ઢારા આચરિત હોને કૈ કારણ ક્ષુદ્રરૂપ ૪, (સાહસિઓ) અવિચાર શીલ મનુષ્યો ઢ્ઢારા ક્રિયા હુઆ હોને કૈ કારણ સાહસિક રૂપ ૫, (અણારિઓ) અનાર્ય જનો ઢ્ઢારા વિહિત હોને કૈ કારણ અનાર્યરૂપ ૫, (ણિગ્ધિણો) દયા વિહીન હૃદયવાલે મનુષ્યો ઢ્ઢારા સૈવિત હોને કૈ કારણ નિર્ઘ્ણરૂપ ૭, (ણિસ્સસો) કૂર કર્મવાલે જનો ઢ્ઢારા ક્રિયા હુઆ હોને કૈ કારણ ન્ઢ્ઢસરૂપ ૮, (મહ્ઢ્ઢમઓ) મહાન્ ભયકા જનક હોને કૈ કારણ મહા ભય રૂપ ૯, (પહ્ઢમઓ) સમસ્ત પ્રાણિયોકો ભયકા હૈતુ—

હવે સૂત્રકાર “જારિસઓ” આ ઢ્ઢારનુ વર્ણન ઢરતા પ્રાણવધનુ સ્વરૂપ કહે ઢે—“પાણવહો નામ ંસો” ઢત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ંસો પાણવહો નામ” આ પ્રાણવધ “જિણેહિં” જિનેન્દ્ર દેવે (૧) “પાવો” પાપ પ્રકૃતિયોના અધનુ કારણ હોવાથી પાપરૂપ, (૨) “ચહો” ક્રોધને પેઢા કરનાર હોવાથી અરૂપ, (૩) “રુહો” રૌદ્ર રસથી પ્રવર્તિત હોવાને કારણે રૌદ્રરૂપ, (૪) “સુહો” ક્ષુદ્રજનો ઢ્ઢારા આચરિત હોવાથી ક્ષુદ્રરૂપ, (૫) “સાહસિઓ” અવિચારી મનુષ્યો ઢ્ઢારા ઢરાતો હોવાને કારણે સાહસિકરૂપ, (૬) “અણારિઓ” અનાર્ય લોકો ઢ્ઢારા ઢરાતો હોવાને કારણે અનાર્યરૂપ, (૭) “ણિગ્ધિણો” દયારહિત હૃદયવાળા લોકો ઢ્ઢારા ઢરાતો હોવાથી નિર્ઘ્ણરૂપ, (૮) “ણિસ્સસો” કૂર કર્મવાળા લોકો ઢ્ઢારા ઢરાતો હોવાને કારણે ન્ઢ્ઢસરૂપ, (૯) “મહ્ઢ્ઢમઓ” મહાન્ ભયનો જનક હોવાથી મહાભયરૂપ, (૧૦) “પહ્ઢમઓ” સમસ્ત પ્રાણીઓને ભયને હૈતુભૂત હોવાને કારણે પ્રતિભયરૂપ, (૧૧) “અહ્ઢમઓ”

‘અઢમઓ’ અતિભયઃ-મરણાન્તભયજનકત્વાત્, ‘વીહ્ણઓ’ મયાનકઃ ભયોત્પા-
દકત્વાત્ ‘તામ્ણઓ’ ત્રામનક ઝકસ્માત્ક્ષોભજનકત્વાત્, ‘અણજ્જઓ’ અન્યા-
ગ્ય-ન્યાયાદનપેત’=યુક્ત ન્યાગ્ય, ન ન્યાગ્યઃ-અન્યાગ્યઃ ન્યાયાર્જિતત્વાત્ ।
‘ઉન્વેયણઓ’ ય’ ઉદ્વેજનક’=ઉદ્વેગક’-હૃદયોદ્વેગજનકત્વાત્ । ચકારઃ સમુચ્ચ-
યાર્થ’ । ‘નિરવયકમ્પો’ નિરપેક્ષઃ-નિર્ગતા અપેક્ષા પરદિનવિષયા यस્ય સ તથા
પરપ્રાણત્રાણચાઙ્છાર્જિતત્વાત્, ‘ણિદ્ધમ્મો’ નિર્વર્મ-શ્રુતચારિત્રધર્મવર્જિતત્વાત્,
‘ણિપ્પિવાસો’ નિપ્પિવાસઃ-પ્રાણિસ્નેહરહિતત્વાત્, ‘ણિક્કલુણો’ નિષ્કલુણઃ-
દયાભાવવર્જિતત્વાત્, ‘નિરયવાસનિધનગમણો’ નિરયવાસનિયનગમનઃ, નિર-
યવાસઃ=નરકાવાસઃ, તત્ર ગમનમેવ નિયન=પર્યવ્રમાન અન્તિમફલ યસ્ય મ નિરય-
વાસનિધનગમનઃ નરકપ્રાપ્તત્વાત્ ।

ભૂત હોને કે કારણ પ્રતિભયરૂપ ૧૦, (અઢમઓ) મરણાન્તભયજનક
હોને સે અતિભયરૂપ ૧૧, (વીહ્ણઓ) ભય કે ઉત્પાદક હોને સે ભય-
કારકરૂપ ૧૨, (તામ્ણઓ) ઝકસ્માત્ ક્ષોભ કા કારણ હોને સે ત્રાસ-
નકરૂપ ૧૩, (અણજ્જઓ) અવેધ હોને કે કારણ-અનીતિ રૂપ હોને કે
કારણ અન્યાયરૂપ ૧૪, (ઉન્વેયણઓ) હૃદયમેં ઉદ્વેગ કા જનક હોને સે
ઉદ્વેગકર્તૃરૂપ ૧૫, (નિરવયકમ્પો) પરપ્રાણી કે પ્રાણીં કી રક્ષા કરને કી
ચાઙ્છા સે રહિત હોને કે કારણ નિરપેક્ષરૂપ ૧૬ (ણિદ્ધમ્મો) શ્રુતચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સે વર્જિત હોને કે કારણ નિર્વર્મરૂપ ૧૭, (ણિપ્પિવાસો) પ્રાણિયોં
કે પ્રાણીં કે પ્રતિ મમતાભાવ સે રહિત હોને કે કારણ નિપ્પિવાસારૂપ ૧૮,
(ણિક્કલુણો) દયાભાવ સે રહિત હોને કે કારણ નિષ્કલુણારૂપ ૧૯, (નિરય-
વાસનિધનગમણો) તથા નરકગમન હી જિસકા અન્તિમ ફલ હૈ એસા હોને
કે કારણ નિરયવાસ-નિધનગમનરૂપ ૨૦, (ઓહમહ્વભયવયદઓ) યહ

બનના બેળમરૂપ હોવાથી અતિભયરૂપ, (૧૦) “વીહ્ણઓ” ભયને ઉત્પન્ન
કરનાર હોવાથી ભયકારકરૂપ, (૧૧) “તામ્ણઓ” અચાનક ક્ષોભના કારણરૂપ
હોવાથી ત્રાસનકરૂપ, (૧૨) “અણજ્જઓ” અવેધ હોવાથી-અનીતિરૂપ હોવાને
કારણે અન્યાયરૂપ, (૧૩) “ઉન્વેદણઓ” હૃદયમાં ઉદ્વેગ પેદા કરનાર હોવાથી
ઉદ્વેગકારક, (૧૪) “નિરવયકમ્પો” યગ્ર પ્રાણીના પ્રાણીની રક્ષા કરવાની ઇચ્છાથી
રહિત હોવાને કારણે નિરપેક્ષરૂપ, (૧૫) “ણિદ્ધમ્મો” શ્રુત-ચારિત્રરૂપ ધર્મથી
રહિત હોવાને કારણે નિર્વર્મરૂપ, (૧૬) “ણિપ્પિવાસો” પ્રાણીઓના પ્રાણી તરફ
મમતા ભાવથી રહિત હોવાને કારણે નિપ્પિવાસારૂપ, (૧૭) “ણિક્કલુણો” દયા-
ભાવથી રહિત હોવાથી નિષ્કલુણરૂપ, (૧૮) “નિરયવાસનિધનગમણો” તથા નરક
ગમનનું જેનું અતિમ ફળ છે, એવો હોવાને કારણે નિરયવાસ નિધનગમનરૂપ,

‘મોહમહાભયપયદઓ’ મોહમહાભયપવર્તક’, મોહઃ=અજ્ઞાનમ્ સ एव
મહાભયહેતુત્યાત્ મહાભય તસ્ય પવર્તકો ય સ મોહમહાભયપવર્તકઃ । ‘મરણ-
વૈમણસ્સો’ મરણવૈમનસ્યઃ-મરણેન=મૃત્યુરૂપકારણેન પ્રાણિના વૈમનસ્ય=દૈન્ય
યસ્માત્ સ મરણવૈમનસ્ય દીનમનઃ કારિત્વાત્ । ‘પદમ અહમ્મ’=પ્રથમમધર્મમ્
અધર્મદ્વારમ્ ‘અવ્યયસ્સ’ અત્રતસ્ય=ત્રતરહિતસ્ય ॥ સૂ. ૪ ॥

પ્રાણવધ મોહ-અજ્ઞાન રૂપ મહાભય કા પ્રવર્તક હૈ ૨૧, ઓર (મરણવૈમ-
ણસ્સો) હસ સે પ્રાણિયોં મે મૃત્યુરૂપ કારણ કો લેકર કે દીનતા આતી
અતઃ યહ મરણ વૈમનસ્યરૂપ હૈ ૨૨, ણેસા (મણિઓ) ભગવાન ને કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર દ્વારા પ્રાણિહિંસારૂપ આસ્રવ કેસા હૈ યહ વાત
સૂત્રકાર ને સ્પષ્ટ કી હૈ, વે કહતે હે કિ યહ પ્રાણિહિંસારૂપ આસ્રવ પાપ-
પ્રકૃતિયોં કે ઘઘ કા કારણ હૈ । કારણ હિંસા કરનેવાલા જીવ પ્રમાદ કે
યોગ સે પ્રાણોં કા વ્યપરોપણ કર્તા હોને સે પાપપ્રકૃતિયોં કા હી ઘઘક
હોતા હૈ. અતઃ યહ પ્રાણિહિંસા પાપરૂપ હૈ । પર કી હિંસા કરતે સમય
આત્મા મેં ક્રોધ પરિણતિ તીવ્રરૂપ સે રહતી હૈ, કર્યા કિ હિંસક જીવ
હિંસ્ય જીવ જૈસી ૨ અપની રક્ષા આદિ કે કારણકલાપ જુટાતા હૈ
અહે ક્રોધ કે આવેશ મેં તન્મય હોકર નષ્ટ કરતા હૈ—હસલિયે યહ
પ્રાણિહિંસા ચડરૂપ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ । હસી તરહ રોદ્ર આદિ રૂપતા મી
હસ મે અપને ૨ અન ૨ ભિન્ન ૨ કારણોં કો લેકર ઘટિત કર લેના
ચાહિયે । હસ પ્રકાર સે યે પ્રથમ આસ્રવરૂપ અધર્મ દ્વાર હૈ । હસમેં
પ્રાણિહિંસા કા કયા સ્વરૂપ હૈ યહ સ્પષ્ટ કિયા ગયા હૈ ॥સૂ. ૪॥

(૨૧) “મોહમહાભયપયદઓ” તે પ્રાણુવધ, મોહ-અજ્ઞાનરૂપ મહાભયનો પ્રવર્તક છે,
અને (૨૨) “મરણવૈમણસ્સો” તેનાથી પ્રાણીઓમા મૃત્યુરૂપ કારણને લીધે દીનતા
આવે છે, તેથી તે મરણવૈમનસ્યરૂપ છે, એવું “મણિઓ” ભગવાને ભાષેલ છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ કેવો છે તે વાતનું સૂત્રકારે
સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેઓ કહે છે કે તે પ્રાણીવધરૂપ આસ્રવ પાપ પ્રકૃતિયોના
બધનું કારણ છે કારણ કે હિંસા કરનાર જીવ પ્રમાદના યોગથી પ્રાણોનો
નાશ કરતા હોવાથી પાપપ્રકૃતિયોનો બધક હોય છે, તેથી તે પ્રાણુવધ પાપરૂપ
છે પરની હિંસા કરતી વખતે આત્મામા ક્રોધપરિણતિ તીવ્રરૂપે રહે છે, કારણ
કે હિંસ્યજીવ જેમ જેમ પોતાના રક્ષણ માટે પ્રયત્ન કરે છે તેમ તેમ હિંસક
જીવ ક્રોધના આવેશમા તલ્લીન થઈને તેનો નાશ કરે છે, તે કારણે પ્રાણુવધને
અડરૂપ કહેલ છે એ જ રીતે રોદ્રરૂપતા આદિ તેના લક્ષણો પણ ભિન્ન ભિન્ન
કારણોને લઈને ઘટાવી શકાય છે આ રીતે તે પ્રથમ આસ્રવરૂપ અધર્મદ્વાર
છે તેમા પ્રાણીવધનું એવું સ્વરૂપ છે તે સમજાવવામા આવ્યું છે ॥ સૂ. ૪ ॥

પૂર્વ પ્રાણિવધસ્ય સ્વરૂપમુક્તમ્, ઇદાની યન્નામેતિ પ્રતિનાતાનિ તસ્ય નામા-
ન્યાહ—‘તસ્સે’ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તસ્સ ય ઇમાણિ નામાણિ ગોણાણિ હુતિ ત જહા—
પાણવહ૧, ઉન્મૂલના સરીરઓ૨, અત્રીસમો૩, હિસવિહિંસા૪,
તહા અકિચ્ચં ચ૫, ઘાયનાય૬, મારનાય૭, વહના૮, ઉદ્વના૯,
નિવાયના ચ૧૦, આરમસમારમો૧૧, આઝયકમ્મસુવદ્વો મેયાણિ-
દ્વવનાગાલના ય સવદ્વગસલ્લેવો૧૨, મચ્ચૂ૧૩, અસજમો૧૪, કડ
ગમદ્વ૧૫, વોરમણં૧૬, પરમવ સકામકારઓ૧૭, દુગ્ગતિપ્પવાઓ
૧૮, પાવકોવો ચ૧૯, પાવલોમો ચ૨૦, છવિલ્લેઓ૨૧, જીવિયતકરણો
૨૨, મયકરો૨૩, અણકરો૨૫, વજ્જો૨૫, પરિતાવણ અપહઓ૨૬,
વિનાસો૨૭, નિજ્જવણો૨૮, છુપણા૨૯, ગુણાણ વિરાહણ૩૦ તિ
વિ ય તસ્સ એવમાદીણિ પામધેજ્જાણિ હુતિ તીસ પાણવહસ્સ
કલ્હસસ્સ કલ્હયફલદેસગાહ ॥ સૂ ૫ ॥

ટીકા—‘તસ્મ ય’ તસ્ય ચ પ્રાણવધસ્ય ‘ઇમાણિ’ ઇમાણિ અનુપદ વક્ષ્ય-
માણાણિ ‘નામાણિ’ નામાણિ ‘ગોણાણિ’ ગોણાણિ—ગુણનિપ્પન્નાણિ ‘હુતિ’
મયન્તિ ‘તીસ’ ત્રિંશત્, ‘ત જહા’ તદ્યથા—‘પાણવહ’ પ્રાણવધ = જીવવાત.૧,
‘ઉન્મૂલના સરીરાઓ’ ઉન્મૂલના શરીરતઃ = વૃક્ષોત્પાટનમિત્ર ઉન્મૂલના જીવસ્ય

પ્રાણિહિંસાકા હસ પ્રકાર સ્વરૂપ કહકર અત્ર સૂત્રકાર હસકે કિતને
નામ હૈ યહ પ્રકટ કરતે હૈ—‘તસ્સ ય ઇમાણિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ગોણાણિ ઇમાણિ નામાણિ તીસ હુતી) ડસ પ્રાણિહિંસાકે
યે ગુણનિપ્પન્નતીસ નામ હૈ (ત જહા) વે ડસ પ્રકારસેહૈ (પાણવહ) જીવવાત૧,
(ઉન્મૂલના સરીરાઓ) શરીરસે વૃક્ષકો ઉગ્વાડનેકી તરહ જીવકી ઉન્મૂલના૨,

પ્રાણીવધનુ આ પ્રજાનુ સ્વરૂપ સમન્તવીને હવે સૂત્રકાર તેના કેટલા
નામ છે તે પ્રગટ કરે છે—“તસ્સ ય ઇમાણિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તસ્સ ગોણાણિ ઇમાણિ નામાણિ તીસ હુતિ” તે પ્રાણીવધના શુભ પ્રમાણે
ત્રીસ નામ છે “ત જહા” તે લેહ આ પ્રમાણે છે—(૧) “પાણવહ” એવડત્યા,
(૨) “ઉન્મૂલના સરીરાઓ” વૃક્ષને ઉખાડવાની જેમ શરીરમાથા એવની ઉન્મૂલના, (૩)

शरीरादिति २ । 'अवीसभो' अविश्रम्भः-अविश्वास'-प्राणप्रकारकेषु जीवानां विश्वासो नैव भवति इति हिंसाया अविश्रम्भकारणत्वादविश्रम्भव्यवहारः ३, 'हिंसविहिंसा' हिंस्यविहिंसा हिंस्याना=जीवाना विहिंसा प्राणप्रयोगः अजीवाना हिंसाया अभावात् 'हिंस्याना' मितिकथितम् ४ । ननु अरूपिणः हिंसेय न सम्भवति इति हिंसविहिंसेत्युक्तावपि क्रिमायातमिति चेन्न स्वरूपत एव प्राणप्रयोग रूपहिंसायागृह्यमाणत्वात् । उक्तञ्च—

“पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उन्त्रासनिन्त्रासमद्यान्यदायुः ।

प्राणादशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥ १ ॥”

‘तद्वा अकिञ्च च’ तथा अकृत्य च-तथा तेनप्रकारेण अकृत्यम्-अकरणीयं भगवता निषिद्धत्वात् ५ । ‘घायणा य’ घातना च-हननं ६ । ‘मारणा य’ मारणा च प्राणपीडनम् ७ । ‘वाहणा’ हननम् ८ । ‘उद्ववणा’ उपद्रवणम् ९, ‘निवायणा’ निपातना-यस्य यावन्त प्राणाः सन्ति तस्य तेभ्यः निपातन=दूरीकरणम्, यद्वा-‘निवायणा’ इति पाठे त्रिपातना-त्रयाणा मनोयाकायानां पातना=वसना १०, ‘आरभसमारभो’ आरभ्यन्ते=विनाश्यन्ते इति आरम्भाः=प्राणिनः तेषां समारम्भ=परिताप-“परितावकरो भवे समारभो” इति वचनात् । आरम्भो वा कृष्यादि व्यापारः तेन समारम्भः=प्राणिपीडनम् ११ । ‘आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिठ्वण गालणा य सवद्वगसखेवोत्ति’ आयुःकर्मण उपद्रवः भेद निष्ठापन गालना च सप्रवर्तकः सक्षेपः, आयुः कर्मण उपद्रवः=समुच्छेदः, भेद=विनाशः, निष्ठापन=समापनम्, गालना=निस्सारणम् । सवर्तकः-सर्वबलसामर्थ्यादीनां सकोचनम्, सक्षेपः-अभावकरणम् १२ । ‘मच्चू’ मृत्युः=मरणम् १३, ‘असजमो’ असयम-न

(अवीसभो) अविश्रम्भः, (हिंसविहिंसा) हिंस्यविहिंसा ४, तथा (अकिञ्च) अकृत्य ५, (घायणा) घातना ६, (मारणा) मारण ७, (वाहणा) हनन ८, (उद्ववणा) उपद्रवणा ९, (निवायणा) निपातना १०, (आरभसमारभो) आरभ समारम्भ ११, (आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिठ्वण गालणा य सवद्वगसखेवो) आयुःकर्म का उपद्रव, भेद, निष्ठापन, गालना, सप्रवर्तक, सक्षेप १२, (मच्चू) मृत्यु १३, (असजमो) असजम १४, (कडगमद्वण)

“अवीसभो” अविश्रम्भः, (४) “हिंसविहिंसा” हिंस्यविहिंसा, (५) “अकिञ्च” अकृत्य, (६) “घायणा” घातना, (७) “मारणा” मारण, (८) “वाहणा” हनन, (९) “उद्ववणा” उपद्रवणा, (१०) “निवायणा” निपातना, (११) “आरभसमारभो” आरभसमारम्भ, (१२) “आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिठ्वण गालणा य सवद्वगसखेवो” आयुःकर्मनो उपद्रव, भेद, निष्ठापन, गालना, सप्रवर्तक, सक्षेप, (१३) “मच्चू” मृत्यु, (१४) “असजमो” असजम, (१५) “कडगमद्वण” ३८३

सयमोऽसयमः सावधानुष्ठानम् १४ । 'कृडगमण' कटकमर्दन-कटकेन=सैन्येन किलिञ्जेन वा आक्रम्य मर्दनं, प्राणवधकारणत्यादोपचारिकः प्राणवधे कटकमर्दन व्यवहारः १५ । 'वोरमण' व्युपरमण नीरस्य प्राणतो वियोजीकरणम् १६ । 'पर भवसकामकारओ' परभवसक्रमकारक =नरकनिगोदादि चतुर्गतिससार पुनः पुन परिभ्रमणहेतुत्वात् १७ । 'दुग्गडप्पवाओ' दुर्गतिप्रपातः-दुर्गती नरकादि दुष्टगती प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः=नरकनिगोदादि कुगति दायकः १८ । 'पावकोवो य' पापकोपश्च=पाप कोपयति=प्रवर्धयति इति पापकोप, मन्त्रपापोत्पादकत्वात्, यद्वा-पापस्य कोपकार्यत्वात्पापकोपः क्रोधस्वरूप इत्यर्थः १९, 'पावलोभो य' पापलोभश्च-पाप लुभयति=धातुनामनेकार्थत्वात् सश्मियति यस्मात् स पापलोभः= पापागमनद्वारलक्षणः २० । 'छविच्छेओ' छविच्छेदः-छवि=शरीर तस्य छेदः= कर्तनमिति छविच्छेद =शरीरकर्तनम् । यद्वा-शरीरावयवच्छेदनम् २१ ।

'जीवियतकरणो' जीवितान्तकरण =प्राणोच्छेदकर २२ । 'भयकरो=भयदा यकः २३ । 'अणकरो' ऋणकर'-ऋण=अनेकेष्वपि भवेषु नानाविधदुःखभोगैरपि दुरपनेयस्वरूप करोतीति ऋणकरः २४ । 'वज्जो' वर्ज्य =त्याज्यः । अथवा वज्र-मिव गुरुत्वात्, तत्कारि प्राणिनामयःपातकत्वाद् वा वज्रम् २५ । 'परितावण अण्हओ' परितापनाश्रवः=परितापनारूप आश्रयः । भय भव सन्तापकत्वात् २६, 'विणासो' विनाशः-प्राणविध्वंसनरूपः २७ । 'निज्जवणो' निर्यापना=निर्यापयति= निर्गमयति प्राणिनः-प्राणानिति निर्यापना=प्राणनिस्सारणम् २८ । 'लुपणा' लोपना-प्राणिप्राणविगमनम् २९ । 'गुणाण विराहणा' गुणाना विराधना=श्रुत-

कटकमर्दन १५, (वोरमण) व्युपरमण १६, (पर भवसकामकारओ) पराभव-सक्रमकारक १७, (दुग्गडप्पवाओ) दुर्गतिप्रपात १८, (पावकोवो) पापकोप १९, (पावलोभो) पापलोभ २०, (छविच्छेओ) शरीरका नाश २१, (जीवियतकरणो) जीवितान्तकरण २२, (भयकरो) भयकर २३, (अणकरो) ऋणकर २४, (वज्जो) वर्ज्य २५, (परितावण अण्हओ) परितापनाश्रव २६, (विणासो) विनाश २७, (निज्जवणो) निर्यापना २८, (लुपणा) लोपना २९, (गुणाण विराहणा)

मर्दन, (१६) "वोरमण" व्युपरमण, (१७) "परभवसकामकारओ" पराभव सक्रमकारक, (१८) "दुग्गडप्पवाओ" दुर्गति प्रपात, (१९) "पावकोवो" पापकोप, (२०) "पावलोभो" पापलोभ, (२१) "छविच्छेओ" छविच्छेद, (२२) "जीवि यतकरणो" जीवितान्तकरण, (२३) "भयकरो" भयकर, (२४) "अणकरो" ऋणकर, (२५) "वज्जो" वर्ज्य, (२६) "परितावण अण्हओ" परितापनाश्रव, (२७) "विणासो" विनाश, (२८) "निज्जवणो" निर्यापना, (२९) "लुपणा" लोपना,

ચારિત્રગુણાનાં મજ્જના ૩૦ । ‘તિ વિ ય’ ઇત્યપિ ચ= ‘ઇતિ’ શબ્દઃ સમાપ્તિશ્રુચકઃ
અપિ ચેતિ સમુચ્ચયાર્થઃ । ‘તસ્સ’ તસ્ય-પ્રાણિવધસ્ય ‘એવમાદીણિ’ એવમાદીણિ=
ઉક્તરૂપાણિ ‘ત્રીસ’ ત્રિંશત્ ‘નામધેજ્જાણિ’ નામધેયાણિ ‘પાણવહસ્સ’ પ્રાણવધસ્ય,
‘કલુસસ્સ’ કલુપસ્ય=પાપરૂપસ્ય ‘કહુયફલદેસગાહ’ કહુરૂફલદેશકાણિ=અશોભન
પરિણામવોધકાણિ ‘હુતિ’ ભવન્તિ । એતાવતા ‘જ નામા’ યન્નામેતિ, દ્વિતીય
પ્રાણવધનામદ્વારમુક્તમ્ ॥સૂ૦૫॥

ગુણોંકી વિરાધના ૩૦, । (એવમાદીણિ) ઇત્યાદિક યે (ત્રીસ) ત્રીસ, (નામધે-
જ્જાહ) નામ પ્રાણિહિંસાકે (હુતિ) હૈ । યહ પ્રાણિહિંસા (કલુસસ્સ) પાપરૂપ હૈ ।
ઉસકે યે ત્રીસ નામ (કહુયફલદેસગાહ) અશુભ પરિણામ કે હી વોધક
હૈ । હસ તરહ યહ ‘જ નામા’ હસ નામકા દ્વિતીય પ્રાણિહિંસા દ્વાર કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્રદ્વારા પ્રાણિહિંસાકે ગુણાનુસાર કિતને
નામ હૈ અથવા હો સકતે હૈ યહ કહા હૈ । હસ પ્રાણિહિંસાકા પ્રથમ નામ
પ્રાણિહિંસા હૈ, પ્રાણિહિંસા કા અર્થ પાંચ ઇન્દ્રિય, ત્રીનગ્ન, આયુ ઓર
શ્વાસોચ્છ્વાસ હન સંભવિત દશ પ્રાણો કા વિયોગ કરના । એકેન્દ્રિય
જીવકે ૪ ચાર પ્રાણ, દો ઇન્દ્રિય જીવકે ૬ છ પ્રાણ, ત્રીન ઇન્દ્રિયવાલે જીવકે ૭
સાત પ્રાણ, ચૌ ઇન્દ્રિય જીવકે ૮ આઠ પ્રાણ, અસજીપચેન્દ્રિય જીવકે ૯ નવ
પ્રાણ ઓર સજીપચેન્દ્રિય જીવકે ૧૦ દસ પ્રાણ હોતે હૈ । હસ તરહ મિત્ર ૨
જીવોંમેં સંભવિત હન પ્રાણોંકા પ્રમાદકે યોગસે વિયોગ કરના હસકા નામ
પ્રાણિહિંસા હૈ, યહ પ્રથમ ભેદ હુઆ । પ્રાણિહિંસાકા યહ પર્યાયવાચી શબ્દ હૈ ।

અને (૩૦) “ગુણાણ વિરાદ્ધના” ગુણોની વિરાધના, “એવમાદીણિ” ઇત્યાદિ,
“ત્રીસ” ત્રીસ “નામધેજ્જાહ” નામ પ્રાણવધના “હુતિ” છે તે પ્રાણવધ “કલુ
સસ્સ” પાપરૂપ છે તેના આ ત્રીસ નામ “કહુયફલદેસગાહ” અશુભ પરિણા
મના જે વોધક છે આ પ્રકારનું આ “જનામા” એ નામનું દ્વિતીય પ્રાણવધ
દ્વાર લાખેલ છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણવધના ગુણાનુસાર કેટલા નામ છે
અથવા હોઈ શકે છે તે બતાવ્યું છે તે પ્રાણવધનું પહેલું નામ પ્રાણવધ છે
પ્રાણવધનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—પાંચ ઇન્દ્રિય, ત્રણ બળ, આયુ અને શ્વાસ
અથવા સંભવિત દશ પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તેને પ્રાણવધ કહે છે એકે
ન્દ્રિય જીવને ચાર પ્રાણ, દ્વિઇન્દ્રિય જીવને છ પ્રાણ, ત્રિઇન્દ્રિય જીવને સાત
પ્રાણ, ચતુરિન્દ્રિય જીવને આઠ પ્રાણ, અસજી પચેન્દ્રિય જીવને નવ પ્રાણ અને
સજી પચેન્દ્રિય જીવને દસ પ્રાણ હોય છે આ રીતે જુદા જુદા જીવોમાં
સંભવિત એ પ્રાણોનો પ્રમાદના યોગથી વિયોગ કરવો તેને પ્રાણવધ કહે છે
આ પહેલાં ભેદ થયો પ્રાણવધનો તે પર્યાયવાચી શબ્દ છે પ્રથમ પ્રાણવધ તે

પ્રથમ પ્રાણિહિંસા, યદ સામાન્ય અર્થકા વાધક હોનેસે સામાન્ય શબ્દ હૈ ઓર ઇસકા પર્યાયવાંચીરૂપ પ્રાણિહિંસા વિશેષ અર્થકા વાધકહોને સે વિશેષ શબ્દ હૈ । ઇસ તરફ સે ગુણ નિપ્પત્તના ઇન સન નામોં મેં જાનના ઘાલિયે । ઇસકા ઘુલાસા ઇસ પ્રકાર સે હૈ—જમીન સે જૈસા વૃક્ષ ઉગ્વાઢ દેતે હૈ ઁસી તરફસે શરીર સે જીવકા નિકાલ દેના યદ જીવકી શરીરસે ઉન્મૂલના (ઉગાડના)હૈ । ઇસ ઉન્મૂલનામે જીવકી પર્યાયકા વિનાશ હોના હૈ, ઓર જીવ કો કષ્ટ હોતા હૈ અતઃ યદ પ્રાણિહિંસા હૈ । યદ દૂસરા ભેદર । જો જીવ હિંસક, નિર્દયી, હત્યારે હોતે હૈં ઁનમેં જીવો કા વિશ્વાસ નહોં હોના હૈ ઇસલિયે હિંસાકો અવિશ્વાસ કા કારણ હોને સે ઁસમેં અવિશ્વાસ કા વ્યવહાર કરદિયા ગયા હૈ । યદ તીસરા ભેદ ૩ । હિંસ્ય વિહિંસા-અજીવોં કી હિંસા નહોં હોતી હૈ—હિંસા તો જીવોંકી હોતી હૈ ઇસલિયે યદાં પર હિંસ્ય પદ સે જિન જીવોં કી હિંસા હોતી હૈ વે ગ્રહણ ક્રિયે ગયે હૈં । ઇન હિંસ્ય જીવોં કે પ્રાણોંકા વિયોગ ઇસ પ્રાણિહિંસા મેં હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસે હિંસ્યવિહિંસા કહા ગયા હૈ । યદ ચૌથા ભેદ ૪ ।

પ્રશ્ન—જીવ તો અરૂપી હૈ—જો અરૂપી હોતા હૈ ઁસકી હિંસા હોતી નહોં હૈ ફિર હિંસ્યવિહિંસાકા વ્યપદેશ પ્રાણિ હિંસામેં કર્યોં કિયા ?

સામાન્ય અર્થનો વાધક હોવાથી સામાન્ય શબ્દ છે અને તેનો પર્યાયવાંચી પ્રાણુવધ શબ્દ વિશેષ અર્થનો વાધક હોવાથી વિશેષ શબ્દ છે આ રીતે એ વાધા નામોમા ગુણયુક્તતા સમજી લેવી તેનું અપેક્ષીકરણ આ પ્રમાણે છે—જમીનમાથી જેમ વૃક્ષને ઉગાડી નાખવામા આવે છે એ જ પ્રમાણે શરીરમાથી જીવને કાઢી નાખવો તે જીવની શરીરથી ઉન્મૂલના કરી ડાલવાય છે તે ઉન્મૂલનામા જીવની પર્યાયનો વિનાશ થાય છે, અને જીવને કષ્ટ થાય છે, તેથી તે પ્રાણુવધ ગણાય છે આ બીજો ભેદ થયો જે જીવ હિંસક, નિર્દય, હત્યારા હોય છે, તેમનામા જીવોને વિશ્વાસ હોતો નથી, તે કારણે હિંસાને અવિશ્વાસનું કારણ ગણીને તેમા અવિશ્વાસનો વ્યવહાર કર્યો છે આ ત્રીજો ભેદ થયો હિંસ્ય-વિહિંસા—અજીવોની હિંસા થતી નથી હિંસા તો જીવોની જ થાય છે, તેથી અહીં હિંસ્ય એટલે જે જીવોની હિંસા થાય છે તે જીવો એ પ્રમાણેનો અર્થ ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે તે હિંસ્ય જીવોના પ્રાણોનો વિયોગ તે પ્રાણુવધમા થાય છે તેથી તેને હિંસ્યવિહિંસા કહેવામા આવેલ છે આ ચોથો ભેદ થયો

પ્રશ્ન—જીવ તો અરૂપી છે—જે અરૂપી હોય છે તેની હિંસા થતી નથી તો પછી હિંસ્યવિહિંસાનું આરોપણ પ્રાણુવધમા કેમ કર્યું છે ?

ઉત્તર—શંકા ઠીક છે. યદ તો હમ મી કહતે હૈ કિ જીવરૂપ અરૂપી પદાર્થ કી હિંસા નહીં હોતી હૈ, પરંતુ યદા હિંસા સે તાત્પર્ય મનવિત પ્રાણોં કા વિયોગ કરના લિયા ગયા હૈ । પાચ ઇન્દ્રિય—કર્ણ, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસના, સ્પર્શન, રે વલ-મનવલ, વચનવલ, કાયવલ, આયુ ંચ શ્વાસો-ચ્છ્વાસ, ઇન પ્રાણોં કા જિસ પ્રવૃત્તિ સે વિયોગ હોતા હો ઉસકા નામ હિંસા હૈ ૪ । તથા—અકૃત્ય—સિદ્ધાન્તોં મે જીવોં કી હિંસા કરને કા પ્રમુ ને નિષેધ કિયા હૈ, ક્યોં કિ યદ કૃત્ય, અકૃત્ય—અકરુણીય હૈ, ઇસલિયે ઉસ રૂપ સે યદ અકૃત્ય હોને કે કારક પ્રાણિહિંસાકો અકૃત્ય કહા હૈ યદ પાચવા ભેદ હૈ ૫ । ઘાતના—અર્થાત્—વાત કરના ડઠા ભેદ હૈ ૬ । પ્રાણોં કા વિયોગ કરના કેવલ યદી હિંસા નહીં હૈ કિન્તુ જિન કૃત્યોં સે પ્રાણિયોં કે પ્રાણોંકો પીડા પહુંચતી હો ગેસે કૃત્ય મી હિંસા હી હૈ, ‘યદ વાત મારણા પદ સે સૂત્રકાર ને પ્રદર્શિત કી હૈ । સાતમા ભેદ ૭ । હનન—વધ કરના, યદ આઠવા ભેદ ૮ । ઉપદ્રવણ—વિનાશ કરના, યદ નૌવા ભેદ ૯ । નિપાતના—જિસ નીચ કે જિતને પ્રાણ હોતે હૈ ડન જીવ કે ઉતને પ્રાણોં કા વિનાશ ઇસ પ્રાણવધ દ્વારા હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસે નિપાતના શબ્દ સે વ્યવહૃત્ત કિયા ગયા હૈ । અથવા ઇસ પદ કી જગદ

ઉત્તર—શંકા ખરાબર છે એ તો અમે પણ ડહીએ છીએ કે અરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિંસા થતી નથી પણ અહીં સભવિત પ્રાણોનો વિયોગ કરવો, એવું હિંસાનું તાત્પર્ય લેવામાં આવ્યું છે પાચ ઇન્દ્રિય—કર્ણ, નેત્ર, નાસિકા, રસના અને સ્પર્શેન્દ્રિય, ત્રણ બળ—મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ પ્રાણોનો જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનું નામ હિંસા છે

તથા અકૃત્ય—મિદ્ધાતોમાં પ્રભુએ જીવોની હિંસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરવા ચોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણવધને અકૃત્ય ડહો છે આ પાચમો ભેદ થયો

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છટકો ભેદ છે પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તે જ કેવળ હિંસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે એવા કૃત્યો પણ હિંસા જ છે તે વાત ‘મારણા’ પદથી સૂત્રકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો હનન—વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપ દ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના—જે જીવોને જેટલા પ્રાણ હોય છે તેટલા પ્રાણોનો વિનાશ આ પ્રાણવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ “તિવાચના” પદ

“ત્રિપાવણા” એમા પદ જય માના જાવેગા તથા દસકી ડાયા ત્રિપાતના હોગી ઓર દસકા અર્થ તવ મન વચન ઓર કાય, ઇનકા ધસ કરના એમા હોગા, દશમા ભેદ ૧૦ । આરમ સમારમ-આરમ શબ્દ સે જિનકા વિનાશ ક્રિયા જાવે એસે, અર્થાત્ વિનાશ ક્રિયા જાતા હૈ જિનકા વે હૈ આરમ અર્થાત પ્રાણી ડનકા જો સમારમ-પરિતાપ વહ હૈ આરમ સમારમ । પ્રાણિહિમામેં જીવોંકો પરિતાપ હોતા હૈ યહ વાત સ્પષ્ટ ઓર અનુભવગમ્ય હૈ । અથવા-કૃષ્ણાદિ કર્મ કા નામ આરમ હૈ, ઇસ આરમ સે જીવોંકે પ્રાણોંકા પીડન હોતાહૈ । યહ ચારહવા ભેદ ૧૧ । ઇસી તરહ જીવકી આયુકા ઉપદ્રવ સમુચ્છેદ, ભેદ વિનાશ, નિષ્ઠાપન-સમાપ્તકરના, ગાલના-નિકાલના, સવર્તક-સમસ્તવલ, સામર્થ્ય આદિ કા સકોચ કરના, સક્ષેપ ઇનકા અભાવ કરના, યહ ચારહવા ભેદ ૧૨ । મૃત્યુ-મરણ તેરહવા ભેદ હૈ ૧૩ । ઇન્દ્રિયમયમ ઓર પ્રાણમયમ ધારણ કરને સે પ્રાણીયોં કી રક્ષા હોતી રહતી હૈ । અમયમી જીવ સે યહ રક્ષા વનતી નહોં હૈ, અતઃ અસયમ કો પ્રાણિહિમાકા અગ કહા ગયા હૈ । ઇસી અભિપ્રાય સે યહાં ઉસે ઉસકા પર્યાયવાચી નામ કહા હૈ । સાવત્ર અનુષ્ઠાન કા નામ હી તો અસયમ હૈ । યહ ચૌદહવાં ભેદ ૧૪ । કટક મર્દન કા અર્થ હૈ-કટક-

માની હેવોંગા આવે તો તેની છાયા “ત્રિપાતના” થશે અને ત્યારે તેનો અર્થ મન, વચન અને કાયનો દાસ કવો, એ પ્રમાણે થશે આ દસમો ભેદ છે આગલમમારલ-આરલ ગણવાં જેમનો વિનાશ કરાય એવા અથવા વિનાશ ઢગાય છે જેમનો તેવા પ્રાણી એવો અર્થ થાય છે તેમનો જે મમારલ પરિતાપ તેને આરલ મમારલ ડહે છે પ્રાણુવધમા જીવોને પરિતાપ થાય છે, તે વાત સ્પષ્ટ તથા અનુભવગમ્ય છે અથવા જેતી આદિ કર્મનુ નામ પણ આરલ છે તે આરલથી જીવોના પ્રાણોને પીડા પડોયે છે આ અગિયારમો ભેદ છે એજ પ્રમાણે જીવના આયુનો ઉપદ્રવ-સમુચ્છેદ, ભેદ-વિનાશ, નિષ્ઠાપન-અત, ગાલના-નિકાલવુ, સવર્તક-સમસ્ત જાળ સામર્થ્ય આદિનો સકોચ કરવો, સક્ષેપ તેમનો અભાવ કરવો, તે બાગ્મો ભેદ છે મૃત્યુ-મરણ તેરમો ભેદ છે ઇન્દ્રિયમયમ અને પ્રાણમયમ ધારણ કરવાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થયા કરે છે અમયમી જીવથી તે રક્ષા થઈ શકતી નથી, તેથી અમયમને પ્રાણુવધનુ અગ કહેલ છે તે કારણે જ તેને અહીં પર્યાયવાચી નામ ગણેલ છે સાવત્રઅનુષ્ઠાનનુ નામ જ અમયમ છે આ ચૌદમો ભેદ છે કટકમર્દન ગણેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કટક-મૈન્ય દ્વારા હિસાના

ઉત્તર—શકા ઠીક છે. યહ તો હમ મી કહતે હૈ કિ જીવરૂપ અરૂપી પદાર્થ કી હિંસા નહીં હોતી હૈ, પરંતુ યહા હિંસા સે તાત્પર્ય સમવિત પ્રાણોં કા વિયોગ કરના લિયા ગયા હૈ । પાચ ઇન્દ્રિય—કર્ણ, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસના, સ્પર્શન, ૩ બલ—મનબલ, વચનબલ, કાયબલ, આયુ ંચ શ્વામો—ચૂવામ, इन प्राणों का जिस प्रवृत्ति से वियोग होता हो उसका नाम हिंसा है ४ । तथा—अकृत्य—सिद्धान्तों में जीवों की हिंसा करने का प्रभु ने निषेध किया है, क्योंकि यह कृत्य, अकृत्य—अकरणीय है, इसलिये उस रूप से यह अकृत्य होने के कारक प्राणिहिंसाको अकृत्य कहा है यह पाचवा भेद है ५ । घातना—अर्थात्—घात करना उठा भेद है ६ । प्राणों का वियोग करना केवल यही हिंसा नहीं है किन्तु जिन कृत्यों से प्राणियों के प्राणोंको पीडा पहुँचती हो ऐसे कृत्य भी हिंसा ही हैं, ‘यह वात मारणा’ पद से सूत्रकार ने प्रदर्शित की है । सातमा भेद ७ । हनन—वध करना, यह आठवा भेद ८ । उपद्रवण—विनाश करना, यह नौवा भेद ९ । निपातना—जिस जीव के जितने प्राण होते हैं उन जीव के उतने प्राणों का विनाश इस प्राणवध द्वारा होता है इसलिये इसे निपातना शब्द से व्यवहृत किया गया है । अथवा इस पद की जगह

ઉત્તર—શકા ધરાણર છે એ તો અમે પણ ડહીએ છીએ કે અવરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિંસા થતી નથી પણ અહીં સભવિત પ્રાણોનો વિયોગ કરવો, એવું હિંસાનું તાત્પર્ય લેવામા આવ્યું છે પાચ ઇન્દ્રિય—કર્ણ, નેત્ર, નામિકા, રસના અને સ્પર્શેન્દ્રિય, ત્રણ બળ—મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છવાય એ પ્રાણોનો જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનું નામ હિંસા છે

તથા અકૃત્ય—સિદ્ધાંતોમા પ્રભુએ એવોની હિંસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરના યોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણુવધને અકૃત્ય કહ્યો છે આ પાચમો ભેદ થયો

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છટકો ભેદ છે પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તે ૪ કેવળ હિંસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે એવા કૃત્યો પણ હિંસા જ છે ત વાત ‘મારણા’ પદથી સૂત્રકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો હનન—વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપ દ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના—જે એવોને જેટલા પ્રાણુ હોય છે તેટલા પ્રાણોનો વિનાશ આ પ્રાણુવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ “તિવાચના” પદ

અવિચ્છેદરૂપ કહા છે । યદ દષીસવા ભેદ ૨૧ । પ્રાણવધ જીવન કા અત-
 કર-વિનાશક હોને સે જીવિતાન્તકરણરૂપ કહા ગયા છે । યદ-ચાવીસવા
 ભેદ ૨૨ । પ્રાણવધ કે અત્સમ ઉપસ્થિત હોને પર જીવોં કો ભય
 હોના છે અત્ત હમ્મ ભય કા કારક હોને સે પ્રાણવધ ભયકર છે, જેસા કહા
 ગયા છે । યદ તેવીસવા ભેદ ૨૩ । હમ્મ પ્રાણવધ કો કરને વાલા પ્રાણી
 અનેક મર્વોં મેં ભી નાના પ્રકાર કે દુઃખોં કો મોગતા રહતા છે ફિર ભી
 હમ્મ સે ઉદ્ભૂત પાપરૂપ ક્રણ કા વજ્ર ઝોધન નહીં કર પાતા છે, હમ્મલિયે
 હમ્મ ક્રણકરૂપ કહા ગયા છે । યદ ચૌવીસવા ભેદ ૨૪ । વિવેકી જા
 ન્યક્તિ હોતે છે વે હમ્મ પ્રાણવધ સે મદા દૂર રહતે છે હમ્મલિયે હમ્મ વર્જ્ય-
 છોડને યોગ્ય-કહા છે । અત્ત 'વજ્ર' કી મસ્કૂત જાયા 'વજ્ર' ભી હો
 સકતી છે । વજ્ર ઝિમ્મ પ્રકાર ગુરુ (મારી) હોના છે ડસી પ્રકાર યદ પ્રાણવધ
 ભી અપન કો-જાનગિત કરને વાલે પ્રાણી કો અધઃપાત નરક નિગોદ
 આદિ મેં પતન કા કારણ હોને સે વજ્ર કે જેસા મારી હોતા છે । યદ
 પચ્ચીસવા ભેદ ૨૫ । મત્ત મત્ત મેં પ્રાણી હમ્મકે કરને સે સન્તાપરૂપ
 પરિતાપના કો પાતા છે હમ્મલિયે હમ્મ પરિતાપનારૂપ આસ્રવ કહા ગયા છે ।
 યદ છવીસવા ભેદ ૨૬ । વિનાશ પ્રાણ કા વિવસન કરના । યદ સત્તા-
 હમ્મવાં ભેદ ૨૭ । નિર્યાપના પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કો નિકાલના । યદ અઠ્ઠાઈ-
 સવા ભેદ ૨૮ । લોપના-પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કા લોપ કરના-દૂર કરના ।

અત્ત-વિનાશ હોવાથી અવિતાન્તકરણરૂપ બતાવ્યો છે આ જાવીસમો ભેદ
 છે પ્રાણવધનો પ્રમગ ઉપસ્થિત થતા હોવોને લય થાય છે, તેથી તે લયકારક
 હોવાથી તેને લયકર કહેલ છે આ તેવીસમો ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર
 પ્રાણી અનેક લયોમા અનેક પ્રકારના દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે, છતાં પણ તેના
 કારણે ઉત્પાદિત પાપરૂપ કણને તે દેહી શકતું નથી તે કારણે તેને કણકર
 નામ આપ્યું છે આ ચૌવીસમો ભેદ છે વિવેકી વ્યક્તિ એ પ્રાણવધથી મદા
 દૂર રહે છે, તેથી તેને વર્જ્ય-છોડવા લાયક કહેલ છે અથવા 'વજ્ર'ની
 સંસ્કૃત ધાયા "વજ્ર" પણ થઈ શકે છે વજ્ર જે ગીતે મોટું હોય છે તે
 પ્રકારે પ્રાણવધ પણ, તે કરનાર પ્રાણીને અધઃપાત-નરક નિગોદ આદિમા પતન
 થવાનું કારણ હોવાથી વજ્રના જેવો ભારે હોય છે આ પચીસમો ભેદ થયો
 જે કરવાથી વ્યક્તિને દરેક લવમા મતાપરૂપ પરિતાપના-પીડા સહન કરવી પડે
 છે, તેથી તેને પરિતાપનારૂપ આસ્રવ કહેલ છે આ છવીસમો ભેદ છે વિનાશ-
 પ્રાણનો વિધ્વસ કરવો, તે અત્યાવીસમો ભેદ છે નિર્યાપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને
 નિકાલવા, તે અઠ્યાવીસમો ભેદ છે લોપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને લોપવા-દૂર

સૈન્ય દ્વારા દૂસરોં પર હિંસા કે અભિપ્રાય સે આક્રમણ કાના । યદ્ સૈન્યમર્દનપ્રાણિહિંસાકા કારણ હોતા હૈ કિર મી હસે જો પ્રાણિહિંસા રૂપ કહા હૈ તદ્ ઉપચાર સે હી કહા ગયા જાનના ચાહિયે, યદ્ પન્દ્રહવાં ભેદ ૧૫ । જીવ કા પ્રાણ સે વિયુક્ત કરના યદ્ વ્યુપરમણ હૈ । યદ્ સોલહવાં ભેદ ૧૬ । પ્રાણિહિંસાકો જો પરમત્ત સક્તમ કારક કહા હૈ ઉસકા ભાવ યદ્ હૈ કિ યદ્ પ્રાણિહિંસા નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગનિરૂપ મસારમે પરિભ્રમણ કા કારણ બનતા હૈ । યદ્ સત્તરહવાં ભેદ હુઆ ૧૭ । હસ પ્રાણિહિંસા કે પ્રભાવ સે જીવ નરકાદિ દુર્ગતિયોં મેં હી જાકર જન્મ લેના હૈ હસલિયે યદ્ દુર્ગતિ પ્રપાતરૂપ કહા હૈ, યદ્ અઠારનાં ભેદ ૧૮ । સકલ પાપોંકા યદ્ કોપક-ઉત્પાદક હૈ, હસલિયે હસે પાપકોપ કહા ગયા હૈ । અથવા પાપ, કોપ કા કાર્ય હોતા હૈ હસ અભિપ્રાય સે યદ્ પ્રાણિહિંસા ક્રોધ સ્વરૂપ હૈ એસા મી કહા જા સકતા હૈ । યદ્ ત્રીમવાં ભેદ ૧૯ । હસ પ્રાણિહિંસા કો કરને વાલા વ્યક્તિ કેવલ પાપ કા હી આલિંગન કરતા હૈ-પાપકર્મ કો બાંધતા હૈ, હસલિયે પ્રાણવધ પાપલોભરૂપ હૈ । યદ્ વીસવાં ભેદ ૨૦ । છવિચ્છેદ-છવિ કા અર્થ શરીર હૈ, હસકા છેદના છવિચ્છેદ હૈ । પ્રાણવધ મેં શરીર અથવા શરીર કે અવયવો કા છેદન હોતા હી હૈ, હસલિયે હસે

ઉદ્દેશથી બીજા ઉપર આક્રમણ કરવું આ સૈન્યમર્દન પ્રાણિવધના કારણરૂપ હોય છે છતાં પણ તેને જે પ્રાણવધરૂપ કહેલ છે તે ઔપચારિક રીતે જ કહેલ છે એમ સમજી લેવું આ પરદમો ભેદ થયો.

જીવને પ્રાણથી વિયુક્ત—રહિત કરવો તેને વ્યુપરમણ કહે છે, આ સોળમો ભેદ છે પ્રાણવધને જે પરભવ સક્તમકારક કહેલ છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે તે પ્રાણવધ નરકનિગોદાદિ ચાર ગતિરૂપ સમારમ્મા પરિભ્રમણ કરાવનાર છે આ સત્તરમો ભેદ છે આ પ્રાણવધના પ્રભાવથી જીવ નરકાદિ દુર્ગતિયોમા જ બંધને જન્મ લે છે, તેથી તેને દુર્ગતિ પ્રપાતરૂપ કહેલ છે આ અઠારમો ભેદ છે સકળ પાપોનો તે કોપક-ઉત્પાદક છે, તે કારણે તેને પાપકોપરૂપે દર્શાવ્યો છે અથવા પાપ, કોપનું કાર્ય હોય છે તે કારણે આ પ્રાણવધ કોપસ્વરૂપ છે, એમ પણ કહી શકાય છે આ ત્રીમીસમો ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર વ્યક્તિ કેવળ પાપનું જ આલિંગન કરે છે-પાપકર્મો બાધે છે, તે કારણે તે પ્રાણવધ પાપલોભરૂપ છે આ વીસમો ભેદ છે છવિચ્છેદ-છવિ એટલે શરીર, તેનું છેદન તે છવિચ્છેદ કહેવાય છે પ્રાણવધમા શરીર અથવા શરીરના અવયવોનું છેદન થાય છે તેથી તેને છવિચ્છેદરૂપ કહેલ છે આ એવીસમો ભેદ છે પ્રાણવધ જીવનનો

દુઃખોત્પાદનપ્રવક્તા = પરપીડાકરણપરાયણા. 'ઈમેદિ' એતેપુ = પ્રત્યક્ષ લક્ષ્યમાણેપુ
'તસયાવરેદિ' ત્રમસ્થાવરેપુ 'નીવેદિ' જીવેપુ 'પઢિણિવિદ્ધા' પ્રતિનિવિદ્ધા = તેપા
રક્ષણાદ્ દેપયુક્તાઃ 'વહુવિદ્ધ' વહુવિધ 'વહુપ્પગાર' વહુપ્રકારમ્ = અનેકભેદપ્રભેદ-
સહિત, 'ભયકર' ભયજનક 'પાણવદ્ધ' પ્રાણવધ = જીવહિંસા 'કરેતિ' કુર્વન્તિ । 'કિ
તે' તે = ત્રમસ્થાવરેપુ દેપવન્તઃ 'કિ' કિ કુર્વન્તિ ? પાઠીનાદિ જીવાન્ 'દ્દણતિ'
પ્લન્તિ, ઇતિ લક્ષ્યમાણેન સમ્પન્ન । તાનેવ દર્શયતિ - 'પાઠીણે'ત્યાદિ । 'પાઠીણ-
તિમિ-તિમિગિલ-અણેગ-ચમવિવિદ્ધજાદમ્મદુક-દુવિદ્ધકચ્છમ-ગક્ક-મગર-દુવિદ્ધ-
ગાહ-દિલિવેદ્ધય-મદુય-સીમાગારપુલ્લય-સુસુમાર વહુપ્પગારા' પાઠીન-તિમિ-
તિમિગિલા-અનેકક્ષપ-વિવિધજાતિમદ્દક-દ્ધિવિધ-ચ્છપ-નક-મગર-દ્ધિવિધ-
ગ્રાહ-દિલિવેદ્ધક-મન્દુક-સીમાગાર-પુલ્લક-સુસુમાર-પ્રકારા, તત્ર-પાઠીનાઃ =
તન્નામકા મત્સ્યવિશેષા, તિમય મત્સ્યવિશેષા, તિમિગિઠિતિ ઇતિ તિમિગિલાથ્વ,
મહામત્સ્યાઃ ।

“અસ્તિમત્સ્યમ્તિમિર્નામ શતયોજનવિસ્તર” ।

તિમિદ્ધિલગિલોપ્યમ્તિ તદ્ધિલોપ્યમ્તિ રાત્રઃ ॥૧॥” ઇતિચનાત્ ।

અનેકક્ષપાઃ = વિવિધાઃ ક્ષુદ્રમત્સ્યાઃ, વિવિધજાતયો મળ્લકાઃ = નાનાજા-

એસે જીવ (ત ચ પુણ) ઇસ (ભયકર) ભયપ્રદ, (વહુવિદ્ધ) વહુવિધ
ઔર (વહુપ્પગાર) અનેક ભેદ પ્રભેદ સહિત (પાણવદ્ધ) પ્રાણવધ કો
(કરેતિ) કરતે હૈ । (ઇમેદિ તસયાવરેદિ જીવેદિ) इन प्रत्यक्षीभूत
त्रस और स्थावर जीवा की रक्षा करने के विषय में (पडिणिविद्धा)
देषयुक्त होते हुए प्राणवध करते हैं, (कि ते) वे क्या २ करते हैं इस
बात को अवसरप्रकार “पाठीण” इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं-
(पाठीण-तिमि-तिमि-गिल-अणोगअस-विविदजादमदुक्क-दुविदक-
चछ म णक्क-मगर-दुविदगाह-दिलिवेदय मदुय-सीमागार पुल्लय सुसुमार-

આ “ભયકર” ભયપ્રદ, “વહુવિદ્ધ” બહુ વિધ અને “વહુપ્પગાર” અનેક ભેદ
પ્રભેદ સહિત, “પાણવદ્ધ” પ્રાણવધ કરે છે, “ઈમેદિ તસયાવરેદિ જીવેદિ”
એ પ્રત્યક્ષીભૂત ત્રમ અને સ્થાવર જીવોની રક્ષા કરવાની બાબતમાં “પઢિણિવિદ્ધા”
દેપયુક્ત થઈને પ્રાણવધ કરે છે, “કિતે” તેઓ શુ શુ કરે છે એ વાતને હવે
સૂત્રકાર “પાઠીણ” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે- “પાઠીણ-તિમિ-તિમિગિલ-
અણેગઅસવિવિદ્ધજાદ-મદુક-દુવિદ્ધકચ્છમ-ગક્ક-મગર-દુવિદ્ધગાહ-દિલિવેદ્ધય-મદુય-
સીમાગાર-પુલ્લય-સુસુમાર-વહુપ્પગારા” એવા જીવો નીચે પ્રમાણે છે- પાઠીન,
તિમિ, તિમિગિલ, અનેકક્ષપ, અનેક જાતના દેડકા, બન્ને પ્રકારના કાચબા, નક,

અથેદાની 'જહયકઓ' યથાકૃતઃ ઇતિ તૃતીય દ્વારમાચપ્ટે 'ત ચ પુણે'ત્યાદિ ।

મૂલમ્—ત ચ પુણ કરેતિ કેદ્ પાવા અસજયા અવિરયા અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા પાણવહં ભયકરં વહુવિહં વહુષ્પગારં પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા ઇમેહિ તસથાવરેહિ જીવેહિ પઢિણિવિટ્ઠા કિ તે? પાઠીણ-તિમિ-તિમિગિલ-અણેગદ્દસ-વિવિહજાઇમદુક્ક-દુવિહ-કચ્છમ-ળક્ક-મગરદુવિહ-ગાહ-દિલિ વેઢય-મદુય-સીમાગાર-પુલ્હય-સુંસુમાર વહુષ્પગારા જલયરવિહાણા કણ્ય એવમાઈ ॥સૂ૦૬॥

ટીકા—ત ચ=પ્રાણિવધ 'પુણ' પુનઃ 'કેદ્' કેડપિ કેચિદેવેત્યાશયઃ 'પાવા' પાપાઃ=પાપપ્રકૃતયઃ 'અસજયા' અસયતાઃ=અસમાહિતેન્દ્રિયા 'અવિરયા' અવિરતા =પાપકર્મનિવૃત્તિરહિતા, 'અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા' અનિમૃતપરિણામદુષ્પયોગા =અનિમૃતઃ=ઉપશમવર્જિતઃ પરિણામઃ=અવ્યવસાયો યેવા તે અનિમૃતપરિણામાઃ, દુષ્ટા પ્રયોગાઃ=ઇન્દ્રિયનોઇન્દ્રિયવ્યાપારાઃ યેવા તે દુષ્પ્રયોગાઃ, અનિમૃતપરિણામાશ્ચ તે દુષ્પ્રયોગા ઇતિ અનિમૃત્ પરિણામદુષ્પ્રયોગાઃ, 'પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા' પર-યહ વન્તીસવા ભેદ હૈ ૨૯ ઓર ગુણવિરાધના-શ્રતચારિત્રગુણોં કા મદ્ગ કરના યહ તીસવાં ભેદ હૈ ૩૦ ઇસ તરહ યે પ્રાણવધ કે ૩૦ પર્યાયવાચી શબ્દ ગુણનિષ્પન્ન પ્રકટ કિયે ગયે હૈ ॥સૂ૦-૫॥

અથ સૂત્રકાર "જહ ય કઓ" ઇસ તૃતીય દ્વાર કે વિષય મેં કહતે હૈ—'ત ચ પુણ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(કેદ્ પાવા) કિતનેક પાપપ્રકૃતિવાલે (અસજયા) અસમાહિત ઇન્દ્રિયવાલે, (અવિરયા) અવિરતિસપન્ન, (અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા) ઉપશમ રહિત પરિણામો વાલે, ઓર ઇન્દ્રિય ત્વ મન કે દુષ્ટવ્યાપાર વાલે (પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા) પર પ્રાણી કે લિયે દુઃસ્વોત્પાદન મેં પરાયણ

કરવા, તે ઓગણત્રીસમે ભેદ છે અને ગુણવિરાધના-શ્રુતચારિત્ર ગુણોનો ભગ કરવો, તે ત્રીસમે ભેદ છે આ રીતે પ્રાણવધના ૩૦ પર્યાયવાચી શબ્દ તેમના ગુણ સહિત પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે ॥ સૂ ૫ ॥

હવે સૂત્રકાર "જહ ય કઓ" એ તૃતીય દ્વારનુ વર્ણન કરે છે—"ત ચ પુણ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"કેદ્ પાવા" કેટલાક પાપપ્રકૃતિવાળા "અસજયા" અસમાહિત ઇન્દ્રિય-વાળા, "અવિરયા" અવિરતિ યુક્ત, "અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા" ઉપશમ રહિત પરિણામોવાળા, અને ઇન્દ્રિય અને મનના દુષ્ટ વ્યાપારવાળા "પરદુક્ષુ પ્પાયણપસત્તા" પર પ્રાણીને માટે દુઃસ્વોત્પાદનમા પરાયણ એવા હોવો "ત ચ પુણ"

શશકાઃ પ્રસિદ્ધાઃ । ‘પસર’ પ્રશરાઃ ઢિસુરા વન્યપશુવિશેષાઃ, ‘ગોળા’ ગાવઃ
 ‘રોહિય’ રોહિતા=ચતુષ્પદપશુવિશેષાઃ, ‘હયગયગ્વર’ હયા ગજાઃ સ્વરાશ્ર
 પ્રસિદ્ધા । કરમા=ઉપ્દ્રા ‘સ્વગ’ ગદ્ગા=પચ્છગ્ના આટવ્યાશ્રતુષ્પદવિશેષાઃ
 ‘ગેંડા’ ઇતિ ત્લોકે રચ્યાતાઃ યેષા ગમનકાલે ઉભયોરપિ પાર્શ્વયો પદ્મતુલ્યાનિ
 ચર્માણિ લમ્બતે, ‘વાનર’ વાનરાઃ=પ્રનિદ્રા, ગમ્યાઃ=પ્રતુલકુળા ગો સદૃશા
 ‘રોક્ષ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ । ‘વિગ’ વૃક્ષાઃ=શ્વાપદજન્તુવિશેષા ‘મેઢિયા’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા,
 ‘સિયાલ’ શૃંગાગા પ્રસિદ્ધા, ‘કોલા’ શૂકરાઃ ‘મજ્જાર’ માર્જારાઃ=વિઢાલા
 ‘કોલ્લુણહ’ કોલ્લુણ્ડા=પ્રાટવ્યમદાશૂકરાઃ ‘સિરિક્કલ્લગાવત્ત’ શ્રીકન્દલ્કા-

અનેક ઔરશૃંગજૈમી જાગ્યાળે ફૂટતી હે । ઇનકે સીંગોંની જો મસ્મ વનતી
 હે ઉસે વિશાળ મસ્મ કહતે હે । ઇનકે દો શુર હોતે હે । ઔર યે જગલ
 મેં હી રહતે હે । (ઉરબ્ધ) ઉરબ્ર નામ મેંદે કા હે । (સસય) રાશક નામ
 ગ્વરગોળ કા હે । (પસર) પ્રશર ણક જાનિ કા જાનવર હોતા હે, ઇસકે
 દો શુર હુઆ કરતે હે । યહ જગલ મેં હી રહતા હે । (રોહિય) “રોહિત”
 યહ બી ચાર પૈરોંવાલા ણક જાનવર વિશેષ હોતા હે । (હય) હય-નામ
 ઘોડે કા હે, (ગય) ગય-ગજ નામ હાથી કા હે । (ગ્વર) ગ્વર નામ ગધે કા
 હે । (કરમ) કરમ ઝૂટકા નામ હે । (સ્વગ) ગ્વહ્નીકો હિન્દી ભાષા મેં ગેંડા
 કહતે હે । ઇસકે ણક હી સીંગ હોતા હે, યહ જગલ મેં હી રહતા હે, ઇસ
 કે પૈર ચાર હોતે હે, જય યહ ચલતા હે તો ઉસ સમય ઇસકી દોનોં
 તરફ પર્વોં જૈસા ચમડા લટકને લગતા હે । (વાનર) વાનર નામ ઘદર
 કા હે । (ગવય) ગવય રોક્ષકા નામ હે, યહ ગાયકે જૈસા હોતા હે । ઔર
 ઇસકા કઠ ગોલ હોતા હે । (વિગ) વૃક્ષ યહ હિંસક જતુ હોતા હે ઔર
 ઇસે હિન્દી ભાષામેં મેઢિયા કહતે હે । (સિયાલ) “શૃંગાલ” યહ જગલી

અનેક ઉપરાખાઓ ફૂટે છે તેમના શીંગડાઓની જે ભસ્મ બને છે તેને વિષાણુ
 ભસ્મ કહે છે તેમને જે ખરી હોય છે, અને તેઓ જગલમાં જ રહે છે
 “સરબ્ધ” ઉરબ્ર નામ ઘેટાનું છે “સસય” રાશક નામ સસલાનું છે “પસર”
 પ્રશર એક જાતનું જાનવર છે, તેને જે ખરી હોય છે અને તે જગલમાં રહે છે
 “રોહિય” ‘રોહિત’ પણ એક ચોપણુ પ્રાણી છે “હય” હય એટલે ઘોડો,
 “ગય” ગય એટલે હાથી, “ગ્વર” ગ્વર એટલે ગધેડો, “કરમ” કરમ એટલે ઊંટ,
 “સ્વગ” ગ્વહ્ની એટલે ગેંડો, તેને એક જ શીંગડું હોય છે, તે જગલમાં જ
 રહે છે, તેને ચાર પગ હોય છે જ્યારે તે ચાલે છે ત્યારે તેની બંને તરફ
 પાળો જેવી ચામડી લટકતી રહે છે “વાનર” વાનર કપીને કહે છે “ગવય”
 ગવય એટલે રોક્ષ, તે ગાયના જેવું હોય છે અને તેની એક ગોળ હોય છે
 “વિગ” વૃક્ષ એક જગલી પ્રાણી છે તેને રીંછ કહેવામાં આવે છે “સિયાલ”

અથ સ્થલચરેષુ ચતુષ્પદપ્રકારાનાહ—‘કુરગ૦’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—કુરંગ રુરુ સરભ ચમર સવર ડરઘ્મ સસય-પસર-ગોળ
રોહિય-હય-ગય સ્વર-કરભ-સ્વગ્ગ વાનર, ગવય-વિગ-સિયાલ કોલ-
મઝાર-કોલસુળહ-સિરિકદલગાવત્ત-કોકતિય--ગોકળ્લ-મિય-
મહિસ વિયગ્ધ-છગલ-દીવિય-સાળ-તરચ્છ અચ્છમલ્લ-સૂલ-સીહ-
-ચિલ્લ-ચુપ્પય-વિહાળાકણ ય એવમાઈ ॥સૂ૦૭ ॥

ટીકા—કુરગા = હરિણાઃ, રુરુ = મૃગવિશેષાઃ, સરભાઃ = વન્યપશુવિશેષા. વિશા
લકાયાઃ, અષ્ટાપદાઃ ‘પરાસરે’તિ રચાતાઃ યે મહાગજાનપિ પૃષ્ઠે સ્થાપયન્તિ,
ચમરાઃ = વન્યગાવઃ યેષાં કેશાના ચામરાણિ ભવન્તિ, સવરાઃ અનેકશાસ્ત્રજ્ઞાઃ
દ્વિચુરા આરણ્યપશવઃ ‘સામર’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ ‘ડરઘ્મ’ ડરઘ્રા = મેષાઃ, ‘સમય’

ક્રિયા કરતે હૈં, તથા इनके सिवाय और भी जो जलचर जीव होते हैं—
उन्हें भी मार कर ये आनंद मग्न बनते हैं ॥ सू. ६ ॥

અવ સૂત્રકાર સ્થલચર તિર્યચ્ચો મેં જો ચતુષ્પદોં કે પ્રકાર હૈં ઉન્હેં
इस सूत्र द्वारा प्रकट करते हैं—‘कुरगरु’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(કુરગ) કુરગ હિરણકો કહતે હૈં. (રુરુ) રુરુ નામ મી મૃગકા હૈં,
પરન્તુ यह सामान्य मृगसे विशेष प्रकार का होता है । (सरभ) सरभ
નામ અષ્ટાપદ કા હૈં । यह शरीर में विशाल होता है । परासर भी इस
का दूसरा नाम है । ये महागजों को भी अपनी पीठ पर बैठा लेता है ।
(चमर) चमरी गावों का नाम चमर है । इनके बालों के चामर बनते हैं ।
(सवर) सवर को हिन्दी भाषा में साभर कहते हैं । इनके सींगों में

હિસા ડ્યાં કરે છે, અને તે નિવાયના બીજા જે જળચર જીવો હોય છે, તેમની
પણ હાથા કરવામા તેમને મગ્ન આવે છે ॥ સૂ. - ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર સ્થળચર તિર્યચ્ચોમા જે જાનવશેના પ્રકારો છે તેમને આ
સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરે છે—“કુરગરુ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કુરગ” કુરણને કુરગ કહે છે, “રુરુ” રુરુ પણ મૃગનો એક ખાસ પ્રકાર
છે “સરભ” સરભ અષ્ટાપદ નામના પ્રાણીને કહે છે તે શરીરે વિશાળ હોય છે
તેનું બીજું નામ પરાસર પણ છે તે મોટા હાથીઓને પણ ચોતની પીઠ પર
બેસાડી શેઠે છે “ચમર” ચમરી ગાયોને ચમર કહે છે તેમના વાળમાથી
ચામર બને છે “સવર” સળરને આળર કહે છે તેના શીંગડામાથી બીજી

સામ્પ્રતપુર:પરિસર્પપ્રકારાનાહ—‘અયગર’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—અયગર—ગોણસ—વરાહિ—માઝલિ—કાકોદર—દર્ભ
પુષ્પા-આસાલિય-મહોરગા ઉરગ વિહાણા કણ્ય ઇવમાઈ ॥સૂ૦૮॥

ટીકા—અજગર—ગોણશ વરાહિ મુકુલિ—કાકોદર—દર્ભપુષ્પ—આસાલિક મહો-
રગોરગવિધાના કૃતાશ્ર ણ્યમાદીન્ । અજગરા:—પ્રસિદ્ધા:, ગોણશા:—ફળરહિત-
દ્વિમુલસર્પવિશેષા: ‘વરાહ્ય.’ દષ્ટિવિપમર્સા: ચેષા દષ્ટ્યા વિપાવેશો ભવતિ । મુકુ-
લ્લિન:—ઈપત્ત્વકારકા:, કાકોદરા =મામાન્યસર્પા:, દર્ભપુષ્પા:—સામાન્યફળ-

નામ હૈ । (સદ્દલ) શાર્દૂલ, (સીહ) સિંહ ણ્વ (ચિલ્લલ) ચિત્રક ચે સય
માસમક્ષી જગલી જાનચર હૈ ઔર સ્થલચર હૈ ॥ સૂ ૭ ॥

અય સૂત્રકાર ઉર:પરિસર્પકે મેઢોં કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘અયગર
ગોણસ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(અયગર) અજગર યહ ઘટુત અધિક મોટા સર્પ હોતા હૈ, ધીરે
રસરકતા હૈ, જિસ પ્રકાર સામાન્ય સર્પ આહટ પાતે હી વહુત શીઘ્ર ભગ
જાતા હૈ વૈસે યહ નહીં ભગ સકતા હૈ । (ગોણસ) ગોણશ યહ મી એક
પ્રકાર કા સર્પ હી હોતા હૈ, પરન્તુ ઇસકે ફળા નહીં હોતી હૈ, વ્યવહાર
મેં લોગ એસા કહતે હૈ કિ ઇસકે દો મુલ્વ હોતે હૈ, ઇસકા દૂસરા નામ
દુમુહી મી હોતા હૈ । (વરાહી) વરાહિ—યહ વહ સર્પ હૈ કિ જિસકી દષ્ટિ
મેં વિપ રહતા હૈ, જિસે યહ દેખ લેતા હૈ ઉસકે વિપ કા આવેશ હો
જાતા હૈ, ઇસકા દૂસરા નામ દષ્ટિવિપ સર્પ મી હૈ । (માઝલિ) મુકુલી-
યહ વહ સર્પ હૈ જો અપને ફળ કો ધોડા હી વિસ્તારતા હૈ, ઝ્યાદા નહી,

મહ્ન” તરક્ષ, અઞ્ચ લક્ષ, તે રી છોના જ નામ છે “સદ્દલ” શાર્દૂલ, “સીહ” સિંહ
અને “ચિલ્લલ” ચિત્રક એ સઘળા મામલક્ષી જનવરો છે, અને સ્થળચર છે ॥સૂ ૭॥

હવે સૂત્રકાર “ઉર:પરિસર્પ” પેટે ચાલનારા સર્પોના લેહ બતાવે છે—

“અયગર-ગોણસ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અયગર” અજગર—તે બહુજ વધારે મોટો સાપ છે, તે ધીમે
ધીમે સરકે છે જે રીતે સામાન્ય સાપો મહેજ પણ આવાજ થતા તરતજ
ભાગી જાય છે તેમ તેઓ ભાગી શકતા નથી “ગોણસ” ગોણુરા—તે પણ એક
પ્રકારનો સાપ જ હોય છે, પણ તેને દેણ હોતી નથી વ્યવહારમા લોડો એવું
કહે છે કે તેને જે મુખ હોય તે, તેનું બીજું નામ ‘દુમુહી’ પણ છે “વરાહિ”
વરાહિ—તે એવો સર્પ છે કે જેની દષ્ટિમા જ વિપ રહે છે, જેને તે જુવે છે
તેને તેનું ઝેર ચહે છે, તેનું બીજું નામ દષ્ટિવિપ સર્પ પણ છે “માઝલી” મુકુલી
તે એવી જાતનો સર્પ છે કે જે પોતાની ફેણને થોડા પ્રમાણમા જ ફેલાવે છે,

વર્ત્તીઃ=શ્રીકન્દલકાઃ આવર્ત્તશ્ચ ઉભે સજાતીયા એકસુરજીવવિશેષાઃ, 'કોકતિય' કોકતિકાઃ=લોમટકાઃ 'લોમટ્ટી' ઇતિ ભાષાયામ્, 'ગોકર્ણ' ગોકર્ણાઃ=દ્વિસુર ચતુષ્પદજન્તુવિશેષાઃ, 'મિય' મૃગાઃ, 'મહિસ' મહિષા, 'વિયગ્ધ' વ્યાગ્રાઃ, 'છગલા' અજા 'દીવિય' દ્વીપિકાઃ 'દીપટા' ઇતિ ભાષાયામ્, 'સાળ' શ્વાન = આટવ્યા. કુવકુરાઃ 'તરચ્છ' તરક્ષાઃ, અચ્છમહાઃ-મહાકુજાતિવિશેષાઃ 'સદૂલ' શાર્દૂલાઃ='સીહ' સિંહાઃ, 'ચિલ્લ' ચિત્રકાઃ-શ્વાપદજન્તુવિશેષાઃ । એવાં દ્વન્દ્વ સમાસઃ । 'ચતુષ્પદવિદાનાકર્ણ ય એવાર્ધ' ચતુષ્પદવિદાનાઃ કૃતાઃ તાંશ્ચ એવા-દીન=ચતુષ્પદવિશેષાન્ કુરજ્ઞાદીન્ ન્નન્તીતિ પરેણ યોજના ॥મુ.૦૭॥

જાનવર હૈ-જો રાત કો “ હુઆ હુઆ ” ઘોલા કરતા હૈ । (કોલ) કોલ-શૂકર એવ (મજાર) માર્જાર યે હિંસક જાનવર હૈ । (કોલસુળહ) “ કોલ શૂકર ” યે શૂકર કે હી ભેદ હૈ ઓર સામાન્ય શૂકર કી અપેક્ષા શરીર મેં વિશાલ હોતા હૈ । (સિરિકદલગાવત્ત) શ્રીકન્દલક ઓર આવર્ત્ત યે બી જાનવર હૈ ઓર इनके एक खुर होता हॆ । इन दोनों की जाति समान होती है । (કોકતિય) કોકતિકા નામ લોમટ્ટી કા હૈ, યહી ઘટ્ટી ચાલાક હોતી હૈ । (ગોકર્ણ) ગોકર્ણ એક પ્રકાર કા જાનવર હોતા હૈ, इसके दो खुर होते हैं, और पैर चार होते हैं । (મિય) મૃગ, (મહિસ) મહિષ, (વિયગ્ધ) વ્યાગ્ર યહ હિંસક જીવ હૈ ઓર સિંહ જૈસા હી હોતા હૈ । (છગલ) બકરા બકરી કા નામ અજ હૈ । (દીવિય) દ્વીપિકા યહ બી માંસ ભક્ષી શિકારી જાનવર હૈ, इसे तेंदुआ कहते हैं । (સાળ) જગલી જો કુત્તે હૈ જિન્હેં શુની-કુત્તા કહા જાતા હૈ યે યદા “ સાળ ” શબ્દ સે ગૃહીત હુએ હૈ । (તરચ્છ) તરક્ષ, (અચ્છમહા) અચ્છમહા, યહ રીછોં કા હી

‘ શ્રુગાલ ’ એક જ ગલી પ્રાણી છે, જે રાત્રે “ હુઆ હુઆ ” બોલે છે તેને શુનરાત્રીમા શિયાળ કહે છે “ કોલસુળહ ” કોલ-શૂકર અને “ મજાર ” માર્જાર હિંસક જાનવરો છે “ કોલ શૂકર ” તે શૂકરનો જ ભેદ છે, અને તે સામાન્ય શૂકર કરતા શરીરે મોટું હોય છે, “ સિરિકદલગાવત્ત ” શ્રીકન્દલક અને આવર્ત્ત એ પણ જાનવરો છે અને તેમને એક ખરી હોય છે તે બંને સમાન જાતિના છે “ કોકતિય ” લોમટ્ટીને કોકતિક કહે છે, તે ઘણી ચાલાક હોય છે “ ગોકર્ણ ” ગોકર્ણ એક પ્રકારનું પશુ છે “ મિય ” મૃગ “ મહિસ ” મહિષ અને “ વિયગ્ધ, ” વ્યાગ્ર હિંસક પ્રાણીઓ છે અને તે સિંહ જેવા જ હોય છે “ છગલ ” બકરા બકરીને અજ કહે છે “ દીવિય ” દ્વીપિકા માંસાહારી શિકારી પશુ છે તેને તેંદુઆ કહે છે તે ચિત્તા જેવું હોય છે જ ગલી કૂતરાઓને શુની-કુત્તા કહે છે, “ સાળ ” શબ્દથી અહીં તે જ ગલી કૂતરાઓ સમજવાના છે “ તરચ્છ અચ્છ

પ્રમાણગરીરા મનુષ્યક્ષેત્રવહિર્માત્રિનરઃપરિમર્પવિશેષા', એવાં દ્વન્દ્વ. । ઊરગવિધા-
નાઃ=ઊરગપ્રકારા કૃતાઃ । તાન્ ચ એવમાદીન્ 'દ્વન્તિ' ઇત્યનેન સમ્બન્ધઃ ॥સૂ૦૮॥

અથ ભુજપરિસર્પભેદાનાહ—'છીરલ૦' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—છીરલ—સરવ—સેહ—સેહગ—ગોધા—ઝંદુર—ળઝલ—
સરહ—જાહક—મંગુસ—લાહિલા—ચાઝપ્પઙ્ગ—ઘરોલિયા—સરી-
સિવ ગળે ય એવમાઈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—ક્ષીરલાઃ, શરમ્ભાઃ, 'સેહા,' તીક્ષ્ણકુટ્થાકુલ્કાયા, ગૈલ્યલાઃ, એતે
સર્વે ભુજપરિસર્પવિશેષાઃ । ગોધાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ, ઝંદુરા =મૂપલાઃ, નકુલાઃ પ્રસિદ્ધાઃ
હે । (મહોરગા) મહોરગ યે વે સર્પ હિં કિજિનકા શરીર ઇક હજાર યોજન
કા હોતા હૈ, તથા યે મનુષ્ય ક્ષેત્ર સે વાહિરી ક્ષેત્રોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ ।
(ઊરગવિદ્યાણાકણ્ય) યે સર્વ ભેદ ઊર.પરિસર્પોં કે હૈ પાપી જીવ ઇન્હે
મારતે હૈ ॥ સૂ ૮ ॥

અથ ભુજપરિસર્પ કે ભેદોં કો સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હૈ—'છીરલ-
સરવ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(છીરલ—સરવ—સેહ ગોધા—ઝંદુર—ળઝલ સરહ—જાહક મંગુસ લાહ-
હિલા—ચાઝપ્પઙ્ગ—ઘરોલિયા—સરીસિવ ગળે ય'એવમાઈ) ક્ષીરલ, શરમ્ભ
સેહ યે વે જીવ હૈ કિ જિનકા શરીર ક,ટોં સે યુક્ત રહતા હૈ । સેહ કો
હિન્દી ભાષા મે " સેહી " કહતે હૈ, ઇસકા આકાર શ્રુગાલ જૈસા હોતા
હૈ, ઇસકે શરીર પર તીલ્લે નુકીલે કાલે ઓર સફેદ રંગ વાલે કાટે હોતે
હૈ । યે ભેદ ભુજપરિસર્પોં કે હૈ । ગોધા—ગુહેરેકી માકો કહતે હૈ યહ ભિત્તિ
પર ઇતની મજબૂતી કે સાથ ચિપક જાતી હૈ કિ ઇસે પકડ કર ચોર

મહોરગ, તે એવા સર્પ હોય છે કે જેમનું શરીર એક હજાર યોજનનું હોય
છે, તથા તે મનુષ્ય ક્ષેત્રથી બહારના ક્ષેત્રોમાં ઉત્પન્ન થાય છે "ઊરગવિદ્યાણાકણ્ય"
આ બધા ઊરપરિસર્પોના ભેદ છે પાપી જીવો તેમની હત્યા કરે છે ॥સૂ ૮॥

હવે ભુજપરિસર્પના ભેદોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—“છીરલસરવ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“છીરલ, સરવ, સેહ, સેહગ ગોધા ઝંદુર, ળઝલ, સરહ, જાહક, મંગુસ,
લાહિલા, ચાઝપ્પઙ્ગ, ઘરોલિયા, સરીસિવ, ગળે ય એવમાઈ” ક્ષીરલ, શરમ્ભ,
સેહ, તે જીવો જાતા થી યુક્ત શરીરવાળા હોય છે સેહને ગૂંચરાતી ભાષામાં
સાહુડી કહે છે તેના દેખાવ શિયાળા જેવો હોય છે, તેના શરીર પર તીક્ષ્ણ,
અણીદાર, ગાળા અને સફેદ રંગના ઝાટા હોય છે તે ભુજપરિસર્પોના ભેદ છે
“ગોધા” પાટલા ઘોળે કહે છે તે દિવાલ પર એટલી સજ્જડ ચોટી બાય છે,

ધારિણઃ । આશાલિકાઃ, ઉરઃપરિસર્પવિશેષા । एते च चक्रवर्त्तिवासुदेववलदेवा
 दीनां स्कन्धावारमध्ये ग्रामनगरादिषु वा एतेषां विनाशकाले सामुદાનિક
 કર્મોદયાત્-અસજ્જિનો મિથ્યાદૃષ્ટ્યઃ સમૂર્ઞિમપઞ્ચેન્દ્રિયા અન્તર્મુહૂર્ત્તચિુક્તાઃ જઘ-
 ન્યેનાઽગુલસ્યાસરયેયભાગપરિમિતયાઽવગાહનયા, ઉત્કર્ષેણ દ્વાદશયોજનપરિમિતયા
 ઽવગાહનયા વિપ્કમ્ભવાહલ્યેન તથાનુરૂપા ભૂમિમિદાર્ય સમુત્પન્નન્તે । અન્તર્મુહૂર્ત્ત-
 નન્તર તન્મરણે-સ્કન્ધાવારાદીના સહસ્રા વિનાશો ભવતિ । ‘મહોરગા’ યોજનસહસ્ર-

વયો કિં ફળ કો અધિક વિસ્તાર કરને કી હસમેં શક્તિ નહીં હોતી હૈ ।
 (કાકોદર) કાકોદર સામાન્ય સર્પકા નામહૈ । હસી તરહ (દઘ્મપુષ્પ) દર્ભપુષ્પ
 બી વહ સર્પ હોતા હૈ જો સામાન્ય રૂપસે ફળા સે યુક્ત હોતા હૈ, પરન્તુ
 યહ અપને ફળા કો તાનતા નહીં હૈ, બીન વજાને પર બી યહ પ્રકૃતિસ્થ
 બના રહતા હૈ । (આસાલિય) આશાલિક બી સર્પોં કી એક વિશેષ જાતી
 હૈ । યે ચક્રવર્તી, વાસુદેવ, વલદેવ, આદિકોં કે સૈન્ય કે નિવાસસ્થાનમેં
 અથવા ગ્રામ નગર આદિકોં મેં ભૂમિ કે નીચે ઉત્પન્ન હોતે હૈ, હનકે વિના-
 શકાલમેં સામુદાનિક કર્મકા ઉદય હોતા હૈ, સ્કન્ધાવાર-છાવનો તથા ગામ
 નગરાદિ જમીન મેં ઉતર જાતે હૈં પ્રાયઃ મર જાતે હૈં યે અસજી મિથ્યા
 દૃષ્ટિ હોતે હૈં, હનકા જન્મ સમૂર્ઞિમ હોતા હૈ, હનકે પાંચો હન્દ્રિયા હોતી
 હૈ । હનકી આયુ અન્તર્મુહૂર્ત્તપ્રમાણ હોતી હૈ હનકે શરીર કી અવગાહના
 જઘન્ય સે અગુલ કે અસખ્યાતવેં ભાગ પ્રમાણ હોતી હૈ તથા ઉત્કૃષ્ટ સે
 દ્વાદશ યોજનપ્રમાણ હોતી હૈ, અન્તર્મુહૂર્ત્ત કે વાદ હનકા મરણ હો જાતા

કારણકે વધારે પ્રમાણમા દેવાવધાની રાક્ષિ તેનામા હોતી નથી “કાકોદર” કાકોદર
 સામાન્ય સર્પનું નામ છે એજ પ્રમાણે “દઘ્મપુષ્પ” દર્ભપુષ્પ પણ એક એવા
 પ્રકારનો સર્પ છે કે જે સામાન્ય રીતે ક્ષણથી યુક્ત હોય છે, પણ તે પોતાની
 ક્ષણને ફેલાવતો નથી, મોરલી બળવવામા આવે તો પણ તે ક્ષણને વિસ્તાર્યા
 વિના મૃણ સ્થિતિમા જ રહે છે “આસાલિય” આશાલિક, પણ સર્પોની એક
 ખાસ જાતિ છે તે ચક્રવર્તી, વાસુદેવ, વલદેવ આદિના સૈન્યના નિવાસસ્થાનમા
 અથવા ગામ નગર આદિમા ભૂમિની નીચે ઉત્પન્ન થાય છે, તેમના વિનાશ કાળે
 સામુદાયિક કર્મનો ઉદય થાય છે સ્કન્ધાવાર-છાવણી તથા ગામ નગર આદિ
 જમીનમા ઉતરી જાય છે સામાન્ય રીતે મરી જાય છે તેઓ અસજી મિથ્યા-
 દૃષ્ટિ હોય છે તેમનો જન્મ સમૂર્ઞિમ થાય છે, તેમને પાંચે હન્દ્રિયો હોય
 છે તેમનું આયુષ્ય અન્તર્મુહૂર્ત્ત પ્રમાણ છે, તેમના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી
 અગુલના અસખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ હોય છે, તથા ઉત્કૃષ્ટે ખાર યોજન
 પ્રમાણ હોય છે અન્તર્મુહૂર્ત્ત પછી તેમનું મરણ થઈ જાય છે “મહોરગા”

કોસ-કુચ-દગતુડ-ઢેણિયાલગ-સૂઈમુહ-કવિલ-પિંગલવલગ-
કારંડ-વક્ત્રવાગ-ઉક્કોસ-ગરુલ-પિંગલ-સુચ-વરહિણ-મયણ-
સાલ-નદીમુહ-નંદમાળગ-કોરંગ-ભિગારગ-કોળાલગ-જીવં
જીવક-તિત્તિર-વટ્ટગ-લાવગ-કપિજલગ-કવોતગ-પારેવગ-ચડગ
ઢિક-કુક્કુડ-મેસર-મઝર-ચઓરગ-હયપોંડરીય-કરક-ચીરહ
-સેણ-વાયસવિહાણ-સિયચાસ-વગ્ગુલિ-ચમ્મઢિલ-વિતતપક્ષિ
સમુગ્ગપક્ષિ-લ્હયર વિહાળાકલ ય ઇવમાઈ જલ થલ લ્હા-
રિળો ય પલ્હિદિલ પસુગળે વિયતિ ય લ્હરિદિલ ય વિવિહે
જીવે પિય જીવિલ મરળદુલ્હપઢિકૂલે લ્હાલ હળંતિ લ્હુસકિ-
લિઢ કમ્મા ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

ટીકા—કાદમ્બાઃ=કલ્હસાઃ, કક્કાઃ=પક્ષિવિશેષા લલાકાઃ=‘લગલા’ ઇતિ
ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ, સારસાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ ‘આડા’ જલચર પક્ષિવિશેષાઃ ‘આડા’ ઇતિ
ભાષાયામ્ । ‘સેડી’ સેટી, કુલ્લાઃ, લ્હજુલાઃ, ‘પારિપ્પલ’ પારિપ્પલાઃ=પક્ષિ-
વિશેષાઃ કીરાઃ=શુક્રાઃ, ‘સઝળ’ શકુના ‘શકુનપક્ષિવિશેષાઃ, ‘દીવિયા’ દીપિકા

અલ લેચર જો તિયંલ હેં ડનકે ભેદોં કો સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હેં—
‘કાદલ કલ લલાકા’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(કાદલ) કાદમ્બ-કલ્હસ (કલ) કલ-પક્ષિવિશેષ
(લલાકા) લલાકા-લગલા (સારસ) સારસ-હસો નામકા પ્રસિદ્ધ પક્ષી
હેં (આડા) આડા-જલ મેં તૈરને લાલા પક્ષી જિસે ભાષામેં ‘આડ’ કહતે
હેં (સેડી) સેટી (કુલલ) કુલલ (લ્હજુલ) લ્હજુલ (પારિપ્પલ) પારિ-
પ્પલ પક્ષિવિશેષ (કીર) કીર-તોતા (સઝળ) શકુન-પક્ષિવિશેષ,

હવે જે જેચર-નલચર તિયંલો છે તેમના લેહોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે-
“કાદલ, કલલલાકા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કાદલ” કાદમ્બ-કલ્હસ “કલ” કલ-એક જાતનુ પક્ષી,
“લલાકા” લલાકા-લગલા “સારસ” સારસ-એ નામનુ પ્રસિદ્ધ પક્ષી “આડા”
આડા-જળમા તરનાર એક પક્ષી જેને સંસ્કૃતમા “આડા” કહે છે “સેડી”
સેટી “કુલલ” કુલલ “લ્હજુલ” લ્હજુલ “પારિપ્પલ” પારિપ્પલ એ પક્ષીઓની
ખાસ જાતો છે “કીર” કીર-પોપટ “સઝળ” શકુન-પક્ષીની એક જાત “દીવિય”

શરટા=કુકલાશા, જાહકાઃ=કણ્ઠકવ્યાસાઙ્ગાઃ, મગુસા=ભુજપરિસર્પવિશેષાઃ, શ્વાહિલાઃ=શ્વેતકૃષ્ણરેખાઙ્ગિતવેદાઃ ભુજપરિસર્પવિશેષાઃ । ચાતુષ્પદિકાઃ=ચતુષ્પદ-
રણા ભુજપરિસર્પવિશેષા । ‘ઘરોલિયા’ ગૃહગોધિકાઃ ‘છિપકલી-ઘરોલી’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ । એતેષા દ્વન્દ્વઃ । એવમાદીન્ સરીસૃપગણાન્ ‘ઘનન્તી’તિ સમ્યન્ધઃ ॥સૂ.૦૧॥

અથ સ્વેચરભેદાનાદ—‘કાદવ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—કાદંવ—કક—વલાકા—સારસ આહા—સેડી—કુલલ-
વજુલ—પારિપ્પવ—કીર-સડળ—દીવિય—હંસ—ધત્તરટ્ટ—ભાસ—કુલી-

રાત્રિ મે ચોરી કરને કો ઝપર ટુમજિલે આદિ મકાન પર ચઢ જાતે હૈં યહ કમન્દ કી તરહ મિત્તી પર લટક જાતી હૈ । ઉન્દુર નામ મૃપક કા હૈ । નકુલ નૌલાં કો કહતે હૈ । શરટ નામ કુકલાશ કા હૈ, યહ ગલે મેં લાલ હોતા હૈ ઓર બૈઠા હુઆ અપના મસ્તક હિલાયા કરતા હૈ, છિપ-
કલી જૈસા હસકા આકાર હોતા હૈ, મારવાડ આદિ રાજસ્થાન મેં “કર ગેટયા” કહતે હૈ । જાહક વે ભુજપરિસર્પવિશેષ હૈ કિ જિનકે શરીર પર કાદે રહતે હૈ । મગુસ બી હસી પ્રકાર કે ભુજપરિસર્પ વિશેષ હૈ । શ્વાહિ-
લ કો હિન્દી મેં ગિલહરી કહતે હૈ, હસકે શરીર પર જો રોમરાજી હોતી હૈ વહ સફેદ ઓર કાલી રેખા સે યુક્ત હોતી હૈ, યહ વૃક્ષો પર રહતી હૈ । ચાતુષ્પદિક ચાર પૈરોં વાલા ભુજપરિસર્પ વિશેષ હોતા હૈ । ઘરોલિયા કો હિન્દી મેં છિપકલી કહતે હૈ, યહ મકાનોં કે ખીતર ખીત પર છત પર ચિપકી રહતી હૈ । નિર્દયી હિંસક જીવ હન્ને તથા હનસે મિત્ર જો ઓર બી ભુજપરિસર્પ વિશેષ હૈ હન્ને મારતે હૈ ॥સૂ. ૧ ॥

કે તેને પકડીને રાત્રે ચોર ચોરી કરવાને માટે જે ત્રણ માળના મકાનપર ચડી જાય છે, તે કળન્ધની જેમ ભીંતપર લટકી જાય છે “ઉદુર” એટલે ઉદર “જલ્લ” એટલે નાળીયો, “સરહ” એટલે ગરબો તેનું ગળુ લાલ હોય છે અને તે જેઠા જેઠા પોતાનું શિર હલાવ્યા કરે છે, ગરોળી જેવો તેનો આકાર હોય છે માર-
વાડ આદિ રાજસ્થાનમાં તેને “કરગેટયા” કહે છે, બહુક, એ એક જાતના ભુજપરિસર્પનો લેહ છે તેમના શરીર પર કાટા હોય છે મગુસ પણ એજ પ્રકારે ભુજપરિસર્પ છે, “શ્વાહિલ” એટલે ખિસકોલી તેના શરીરપર જે રૂવાટી હોય છે તે સફેદ અને કાળી રેખાથી યુક્ત હોય છે, તે વૃક્ષો પર રહે છે તે ચાતુ-
ષ્પદિક, ચાર પગ વાળું ભુજપરિસર્પ વિશેષ છે ‘ઘરોલિયા’ તેમને ગૂંજ-
રાત્રીમાં ગરોળી કહે છે તે મકાનોની અંદર ભીંત તથા છત પર ચોટી રહે છે નિર્દય હિંસક લોકો તેમની તથા તેમના સિવાયના ખીબા પણ જે ભુજપરિસર્પ વિશેષ છે તેમની હત્યા કરે છે ॥ સૂ. ૬ ॥

‘भिगोडी’ इति प्रसिद्धाः, ‘कोणालग’ कोणालकाः=जलचरपक्षिविशेषा, जीवजीवकाः=चातकाः, तित्तिरा=‘तीतर’ इति लोके प्रसिद्धा, ‘वट्टग’ वर्तकाः=पक्षिविशेषाः ‘वटेर’ इति भाषायाम् । ‘लावग’ लावकाः=प्रसिद्धाः, ‘कर्पिजलग’ कर्पिजलकाः=तन्नामरूपक्षिणः ‘कपोतग’ कपोतकाः=‘कन्नूतर’ इति प्रसिद्धाः, ‘पारेवग’ पारावतकाः=तज्जातीया एव ‘चडग’ चटकाः=‘चिडी’ इति प्रसिद्धाः, ‘ढिक’ ढिङ्काः=ढिङ्कपक्षिणः, ‘कुक्कुड’ कुक्कुटाः=प्रसिद्धाः, मेसरा=पक्षिविशेषाः, ‘मऊर’ मयूराः=प्रसिद्धाः, ‘चओरग’ चकोरकाः=प्रसिद्धा एव ‘हय-पोंडरीय’ हृदपुण्डरीकाः=जलचरपक्षिविशेषा, ‘करग’ करकाः ‘चीरल्ल’ चीरल्लाश्च पक्षिविशेषाः ‘चील’ इति प्रसिद्धाः ‘सेण’ श्येनाः ‘वाज’ इति भाषाया ‘वायसवि-हाण’ वायसविमानाः कारूपक्षिभेदाः, ‘सियाचास’ सितचापाः=श्वेतचापपक्षिणः, ‘वग्गुलि’ वलगुल्य –‘वागल’ इति प्रसिद्धा, ‘चम्मट्टिल’ चर्मास्थिलाः चर्मचटका इति भाषाया, ‘विततपक्खि’ विततपक्षिणः ‘समुग्गपक्खि’ समुद्रपक्षिणः, एते

पक्षी (भिगारग) भृङ्गारक-भिगोडी (कोणालग) कोणालक-जलचर पक्षि-विशेष (जीवजीवक) जीवजीवक-चातक (तित्तिर) तित्तिर-तीतर (चट्टग) वर्तक-वटेर (लावग) लावक-लावा (कर्पिजलग) कर्पिजलक इस नाम का पक्षी (कपोतग) कपोतक-कन्नूतर (पारेवग) पारावतक कन्नूतर के जातिविशेष (चडग) चटक-चिड़िया (ढिक) ढिकपक्षी (कुक्कुड) कुक्कुट-मुर्गा (मेसर) मेसर (मऊर) मयूर और (चओरग) चकोर ये सब पक्षिविशेष हैं (हयपोंडरीय) हृदपुण्डरीक-जलपक्षि-विशेष (करक) करक-पक्षिविशेष (चीरल्ल) चीरल्ल-चील, (सेण) श्येन वाज (वायसविहाण) वायसविधान-कौवा पक्षी के भेद (सियाचास) श्वेतचाप पक्षी (वग्गुलि) वलगुली-वागल (चम्मट्टिल) चर्मास्थिल-चम-गादड (विततपक्खि) विततपक्षी (समुग्गपक्खि) समुद्रपक्षी, खहयर-

भिगोडी “कोणालग” कोणालक એક જાતનું જળચર પક્ષી “जीवजीवक” जीव-जीवक-चातक “तित्तिर” तित्तिर-तेतरपक्षी “वट्टग” वर्तक-वटेर “लावग” लावक-लावा “कर्पिजलग” कर्पिजलक-એ નામનું પક્ષી “कपोतग” कपोतक-कन्नूतर “पारेवग” पारावतक-पारेवु कन्नूतरनी ज्ञातनु पक्षी “चडग” चटक-चिड़िया “ढिक” ढिङ्क पक्षी “कुक्कुड” कुक्कुट-कुकुडा “मेसर” मेसर “मऊर” मयूर અને “चओरग” चकोर એ બધા જુદી જુદી જાતના પક્ષીઓ છે “हय पोंडरीय” हृदपुण्डरीक-ते नामनु जलचर पक्षी “करक” करक-पक्षिविशेष “चीरल्ल” चीरल्ल-समडी “सेण” श्येन-બાજ “वायसविहाण” वायस विधान जगडानी એક જાત “सियाचास” श्वेतचाप पक्षी “वग्गुलि” वलगुली-वागल “चम्मट्टिल” चर्मास्थिल-चमगादड “विततपक्खि” विततपक्षी “समुग्गपक्खि” समुद्रपक्षी

=કૃષ્ણચટકાઃ, હસાઃ=નીરક્ષીરવિવેચકા પક્ષિણઃ 'ધત્તરટ્ટ' ધાર્તરાષ્ટ્રાઃ=શ્યામચરણચન્ચુ હંસાઃ, 'ભાસ' ભાસાઃ 'કુલીકોસ' કુલીકોશ =પક્ષિવિશેષા 'કુચ' કૌશ્ઠાઃ=કૌશ્ઠપક્ષિણઃ ये शरदि ऋतौ माघन्ति मधुरं च कुर्वन्ति, 'दगतुड' दगतुण्डाः, 'ढेणियालग' ढेणिकालकाः, 'सूर्दमुह' सूचीमुख 'कविल' कपिला = पक्षिविशेषाः, 'पिंगलक्खग' पिङ्गलाक्षाः=पिङ्गले अक्षिणी येपा ते पिङ्गलाक्षाः=पीतलोचनपक्षिणः 'कारड' कारण्डकाः=वतक इति लोके प्रसिद्धाः, 'चक्रवाग' चक्रवाकाः=प्रसिद्धाः, 'उक्कोस' उक्कोशाः=कुरराः कुरज पक्षिविशेषाः, 'गरुल' गरुडाः=प्रसिद्धाः 'पिंगल' पिङ्गलाः=रक्तशुका 'सुय' शुकाः=रक्तमुखशुकाः, 'वरहिण' वह्निणः=पिच्छधारिमयूराः 'मयणसाल' मदनशलाकाः='मेना' इति भाषायाम्, 'नंदीमुह' नन्दीमुखाः, 'नदमाणग' नन्दमानकाश्च पक्षिविशेषा, 'कोरग' कोरङ्गाः=तन्नामकाः पक्षिणः 'भिगारग' भृङ्गारिकाः

(દીવિય) દીપિકા-કાલીચિઢિયા (હસ) હસ-નીરક્ષીર કો જુદા કરને વાળા પક્ષી (ધત્તરટ્ટ) ધાર્તરાષ્ટ્રક-જિનકે ચરણ ઓર ચોંચ દોનોં કાઠે હોતે હેં એસે હસ (ભાસ) ભાસ ઓર (કુલી-કોસ) કુલીકોશ પક્ષિ-વિશેષ હૈ (કુચ) કૌંચપક્ષી-જો શરદ ઋતુ મેં મદોન્મત્ત હોતે હેં એવ મધુર ધ્વનિ કિયા કરતે હેં (દગતુડ) દગતુડ (ઢેણિયાલગ) ઢેણિકાલક (સૂર્દમુહ) સૂચીમુખ (કવિલ) કપિલ, યે બી પક્ષિ વિશેષ હૈ । (પિંગલ ક્વગ) પિંગ્ગલાક્ષ-પીલેનેત્રવાળા એક જાન કા પક્ષી (કારડ) કારણડક-વતક (ચક્કવાગ) ચક્રવાક-ચક્રવા (ઉક્કોસ) ઉક્કોશ-કુરર, (ગરુલ) ગરુડ (પિંગલસૂય) પિંગલનોતે, (સૂય) શુક-લાલચાંચ વાળે તોતે (વર-હિણ) વર્હિ-પિત્રોવાળે મયૂર (મયણસાલ) મદનશાલ-મૈના (નદીમુહ) નદીમુખ (નદમાણગ) નન્દામાનક, ઓર (કોરગ) કોરક હન નામ કે

દીપિકા-દેવચકલી “હસ” હસ-નીરક્ષીરને જુદા કરનાર પક્ષી “ધત્તરટ્ટ” ધાર્તરાષ્ટ્રક-જેમના ચરણ અને ચાચ કાળા હોય છે તેવા હસ “ભાસ” ભાસ અને “કુલીકોસ” કુલીકોશ-પક્ષીની ખાસ બતો “કુચ” કૌચપક્ષી-જે શરદઋતુમાં મદોન્મત્ત થાય છે અને મધુર ધ્વનિ કર્યા કરે છે “દગતુડ” દગતુડ, “ઢેણિયાલગ” ઢેણિકાલક “સૂર્દમુહ” સૂચીમુખ “કવિલ” કપિલ એ પક્ષીની ખાસ બતો છે “પિંગલક્વગ” પિંગલાક્ષ-પીળા નેત્રવાળુ એક બતનુ પક્ષી “કારડ” કારડક-બતક “ચક્કવાગ” ચક્રવાક-ચક્રવા “ઉક્કોસ” ઉક્કોશ-કુરર “ગરુલ” ગરુડ “પિંગલ” પિંગલ-લાલ પોપટ “સૂય” શુક-લાલ ચાચવાળા પોપટ “વરહિણ” વર્હિ-પીછા વાળો મોર “મયણસાલ” મદનશાલ-મૈના “નદીમુહ” નદીમુખ “નદમાણગ” નન્દમાનક અને “કોરગ” કોરક નામના પક્ષીઓ “ભિગારગ” ભૃંગારક-

ટીકા—‘હમેહિ’ એમિઃ વક્ષ્યમાણૈઃ ‘વિવિદેહિ’ વિવિધૈઃ=નાનાપ્રકારૈઃ ‘કારણેહિ’ કારણૈઃ=વક્ષ્યમાણપ્રયોજનૈઃ પ્રમાન્ પ્રાણાન્ મનન્તિ અનુધા જનાઃ ઇત્યગ્રેણ સમ્વન્ધઃ । ‘કિં તે’ કાનિ તાનિ પ્રયોજનાનિ ? ઇત્યાદિ—‘ચમ્મે’ ત્યાદિ । ‘ચમ્મ’ ચર્મ=શરીરત્વચા, તદર્થં યથા ‘ચર્મણિ દ્વીપિન ઇન્તિ’ ઇત્યાદિ । ‘વસા’ વસા=શરીરસ્થધાતુવિશેષઃ, ‘ચર્વી’ ઇતિ ભાષા, ‘મમ’ માસ, મેદો=દેહસ્થ ચતુર્થધાતુ-

હસ પ્રકાર પ્રાણિવધ કે પ્રકારોં કો કહ્કર અથ સૂત્રકાર ઉસકે પ્રયોજન કે પ્રકારોં કો કહ્તે હે-‘હમેહિ વિવિદેહિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-જો અનુધ-અજ્ઞાની મનુષ્ય હૈં વે (હમેહિ) હન વક્ષ્યમાણ (વિવિદેહિ) નાનાપ્રકાર કે (કારણેહિ) પ્રયોજનોં કે વચાવર્તી હોકર (હિસતિ તસે પાણે) ઘસ જીવોં કી ઘાત કરતે હૈં । હસ પ્રકાર કાં સવધ ૧૩વેં સૂત્ર મેં કથિત “અનુદા ઇહ હિસતિ તસે પાણે” ડન પદોં કો લેકર યહા લગા છેના ચાહિયે । (કિં તે) જિન પ્રયોજનોં કો લેકર અજ્ઞાની-પ્રાણી ઘસ જીવોં કી હિસા કરતે હૈં વે પ્રયોજન કયા ૨ હૈં-હસી વિષય કો સૂત્રકાર “ચમ્મ-વસા-મસ-મેય” ઇત્યાદિ પદોં દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈં, વે કહ્તે હૈં કિ (ચમ્મ-વસા-મસ-મેય-સોણિય-જગ-ફિપ્ફિસ-મત્યુલિંગ-હિયે-અંતં-પિત્ત-ફોફસ-દત્તદ્વા) અનુધજન જો હન પ્રાણિયો કી ઘાત કરતે હૈં ઉસમે કિતનેક પ્રાણિયો કા ઉનક્ષી (ચમ્મ) ત્વચા પ્રાપ્ત કરને કા પ્રયોજન રહતા હૈં ઇસલિયે વે ઉનકા ઘાત કરતે હૈં, કિતનેક પ્રાણિયોં કા ઉનકી (વસા) ચર્વી પ્રાપ્ત કરને કા ઉદ્દેશ્ય હોતા હૈં, કિતનેક

આ પ્રમાણે પ્રાણીવધના પ્રકારો વિષે વાત કરીને હવે સૂત્રકાર તેના કયા કયા હેતુઓ હોય છે તે બતાવે છે-“હમેહિ વિવિદેહિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-જે અનુધ-અજ્ઞાની મનુષ્યો છે તેઓ “હમેહિ” આ પ્રમાણે “વિવિદેહિ” વિવિધ પ્રકારના “કારણેહિ” પ્રયોજનને વરા થઇને “હિસતિ તસે પાણે” ઘસ જીવોનો ઘાત કરે છે આ પ્રકારનો અવધ ૧૩ માં સૂત્રમાં કહેલ “અનુદા ઇહ હિસતિ તસે પાણે” આ પદોની સાથે ત્યાં જોડ્યો જોઇએ “ફક્તે” જે હેતુને ખાતર અજ્ઞાની-જીવ ત્રય જીવોની હિસા કરે છે તે હેતુઓ કયા કયા છે-જે વિષયને સૂત્રકાર “ચમ્મ-વસા-મસ-મેય” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે તેઓ કહે છે કે “ચમ્મ, વસા, મસ, મેય, સોણિય, જગ, ફિપ્ફિસ, મત્યુલિંગ હિય, અંત, પિત્તફોફસ, દત્તદ્વા” અનુધ લોકો તે પ્રાણીઓની જે હિસા કરે છે તેનો હેતુ કેટલાક પ્રાણીઓની બાબતમાં તેમનું “ચમ્મ” આમડું પ્રાપ્ત કરવાનો હોય છે, કેટલાક પ્રાણીઓની “વસા” ચરબી પ્રાપ્ત કરવા માટે તેમનો વધ કરાવે છે,

મનુષ્યક્ષેત્રવહિર્માવિપક્ષિણ = 'સ્વયંહરવિહાણકણ ય એવમાઈ' સ્વચર વિધાના કૃતાઃ, તાનેવમાદીનુક્તપ્રકારાન્ । તથા 'જલથલસ્વચારિણો ય-પચિદિણ પશુગણે' જલસ્થલસ્વચારિણશ્ચ પશ્ચેન્દ્રિયાન્ પશુગણાન્ 'ત્રિયતિય ચતુરિદિણ' દ્વિત્રિચતુરિન્દ્રિયાન્ 'વિવિહે જીવે' ત્રિવિધાન્ જીવાન્ 'પ્રિયજીવિણ' પ્રિયજીવિતાન્ 'મરણદુઃખપડિકૂલે' મરણદુઃખપ્રતિકૂલાન્ 'વરાણ' વરાકાન=દીનાન્ 'બહુસક્લિલ્લિક્ષ્મા' બહુસક્લિલ્લિક્ષ્માણઃ=સમધિક્ષ્મદુષ્ટાચરણાઃ જનાઃ 'હણંતિ' ઘ્નન્તિ=મારયન્તિ॥સૂ.૧૦॥

एव प्राणिवधस्य प्रकाराण्यभिधाय सम्पति तत्प्रयोजनप्रकाराण्याह—
'इमेहि' इत्यादि ।

મૂલમ્—इमेहि विविहेहिं कारणेहिं, किं ते ? चर्म-वसा-मंस-
मेय-सोणिय जग-फिप्फिस -मत्थुलिग हिय -अत-पित्त फोफस-
दंतट्टा अट्टि-मिज-नह-नयण- कण्ण पहारुणि- नक्क- धमणि-सिग-
दाढि-पिच्छ विस-विसाण-वालहेउ ॥ सू० ११ ॥

વિહાણાકણ ય) એ મનુષ્ય સે ઘાહિર રહને વાલે પક્ષી ।
એ સવ સ્વચર જાતિકે પ્રકાર હૈ । ઇન્હે તથા (એવમાઈ) ઓર
મો ઇનસે મિત્ર જો (જલથલ સ્વચારિણો ય પચિદિણ પશુગણે) જલ-
ચર, સ્થલચર, એવ સ્વચર પશ્ચેન્દ્રિય પશુ હૈ ડનકો ઇસી પ્રકાર (ત્રિયતિ
ય ચતુરિદિણ ય) દ્વીન્દ્રિય, તેન્દ્રિય, ઓર ચતુરિન્દ્રિય એસે (વિવિહે જીવે)
નાનાપ્રકાર કે જીવો કો કિ જિન્હે (પ્રિયજીવિણ) અપને પ્રાણ પ્રિય હૈ
ઓર (મરણ દુઃખપડિકૂલે) મરણ જન્ય દુઃખો સે જો સદા ડરતે રહે
હૈ, એ દુઃખ જિન્હે પ્રતિકૂલ હૈ, એવ જો (વરાણ) દીન હૈ ડન્હે (બહુસક્લિ
લ્લિક્ષ્મા) અત્યન્ત દુષ્ટ ઓચરણ વાલે મનુષ્ય (હણનિ) મારતે હૈ ॥સૂ. ૧૦॥

સહયર, વિહાણાકણ ય” તે મનુષ્યથી દૂર રહેનાર પક્ષી છે એ બધા એચર
જાતિના પ્રજારો છે તેમને તથા “એવમાઈ” તે સિવાયના બીજા પશુ જે “જલ
થલ સ્વચારિણો ય પચિદિણ પશુગણે” જળચર, સ્થળચર અને એચર પશ્ચેન્દ્રિય
પશુઓ છે તેમને તથા એજ પ્રમાણે “ત્રિયતિય ચતુરિદિણ ય” દ્વીન્દ્રિય, ત્રિ-
ન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય એવા “વિવિહે જીવે” વિવિધ પ્રકારના જીવો કે જેમને
“પ્રિયજીવિણ” પોતાના પ્રાણ પ્રિય છે અને ‘મરણ દુઃખપડિકૂલે’ મરણજન્ય
દુઃખથી જે સદા ડરતા રહે છે, તે દુઃખો જેમને પ્રતિકૂળ છે, અને જે “વરાણ”
દીન છે તેમને “બહુસક્લિલ્લિક્ષ્મા” અત્યંત દુષ્ટ આચરણ વાળા મનુષ્યો
“હણતિ” હણે છે ॥ સૂ-૧૦॥

“रसाष्टमासमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः” इति ‘नह’ नखाः, ‘नयण’ नयनानि=नेत्राणि ‘कण्ण’ कर्णाः ‘ण्हारु’ स्नायुः=अङ्गप्रत्यङ्गवन्धननाडीविशेषः ‘नक्क’ नासिका=‘धमणि’ धमन्यो=नाड्यः, ‘सिंग’ शृङ्गाणि प्रसिद्धानि, ‘दादि’ दंष्ट्रा ‘पिच्छ’ पिच्छ=मयूरादिपिच्छ, ‘विस’ विपं=कालकूटादि ‘विसाण’ विपाणानि=गजदन्ता, बाला=केशाः, एषा ‘हेउ’ हेतु हेतुमाश्रित्य अस्थिमज्जादि-हेतोरित्यर्थः, ‘हिंसति’ इति पूर्वण सम्बन्धः ॥ सू० ११ ॥

मज्जा नामक छठवीं धातु विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नह) नखों का प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नयण) नयन-नेत्रों को प्राप्त करने का, कितनेक का (कण्ण) कान प्राप्त करने का कितनेक का (ण्हारुणि) स्नायुयों को अंग प्रत्यगों को बाधने वाली नाडी विशेषों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (नक्क) नासिका प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (धमणि) धमनियाँ-नाडियाँ प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (सिंग) शृंगों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (दादि) दाढ़ों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (पिच्छ) पिच्छों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (विस) कालकूट आदि विष प्राप्त करने का, कितनेक का उनके विपाण-गज दन्तों को प्राप्त करने का और कितनेक का उनके (बाल) बालों को प्राप्त करने का, उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अवधजन इनकी हिंसा करते हैं ॥ सू-११ ॥

वध तेमनी “मिंज” मज्जा नामनी छठी धातुने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने।
वध तेमना “नह” नखोंने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “नयण” नेत्र प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “कण्ण” कान प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध “ण्हारुणि” स्नायुओंने अंग प्रत्यगोंने बाधनारी डोह नस प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “नक्क” नास प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध तेमनी “धमणि” धमनीओं-नाडीओं, प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “सिंग” शिगडा प्राप्त करवा भाटे, डेटलाकने। वध तेमनी “दादि” दाढ़ा प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “पिच्छ” पीछा प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “विस” कालकूट आदि विष प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना विपाणु छापी दातने प्राप्त करवा भाटे, अने डेटलाकने। वध तेमना “बाल” बाल प्राप्त करवाने भाटे अथ छे ते छेडेंगे-अथे।

વિશેષ, 'સોણિય' શોણિત=દ્વિતીયધાતુવિશેષઃ, 'જગ' યઠુત્-ઉદરદક્ષિણભાગ
સ્થ માસગ્રન્થિ, 'ફિપ્પિસ' ફિપ્પિસ-અન્નસ્થિતમાસવિશેષઃ, 'ફેફડા' इति
भापाया, 'મત્યુલિંગ' મસ્તુલિન્=મસ્તક મેજક 'હિય' હૃદય=હૃદયમાસપિંડ
'કલેજા' इति પ્રસિદ્ધ, 'અત' અન્ન 'આત' इति भापा, 'પિત્ત' પિત્ત=પિત્તાશયઃ,
ફોફસ=શરીરાવયવવિશેષઃ 'દત્તઢા' दन्तार्थ=दन्ताः=प्रसिद्धाः, एतेषामर्थाय ।
પુનઃ-‘અટ્ટિ’ અસ્થિ પ્રસિદ્ધ, ‘મિંજ’ મઝ્જા=વીર્યજનકપઠ્યાતુવિશેષ । ઉક્તચ્ચ—

પ્રાણિયોં કા ઉનકે (મસ) મોસ પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયો કા
ઉનકી (મેય) મેદ જો દેહ કી ચતુર્થ ધાતુ હૈ ઉસકે પ્રાપ્ત કરને કા, કિત
નેક પ્રાણિયોં કા ઉનકે (સોણિય) શોણિત પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક
પ્રાણિયો કા ઉનકે (જગ) યઠુત્ કો-ઉદર કે દક્ષિણભાગ મેં રહી હુઈ
માંસગ્રન્થિ કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયોં કા ઉન કે “ફિપ્પિસ”
ફિપ્પિસ કો આતો મે સ્થિતિ માસ વિશેષ કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક
પ્રાણિયોં કા ઉનકે (મત્યુલિંગ) મસ્તક કે મેજે કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક
કા ઉનકે (હિય) હૃદયમાસપિંડ કો જિસે કલેજા કહતે હૈ પ્રાપ્ત કરને કા
(અત) આંતોં કો પ્રાપ્ત કરને કા (પિત્ત) પિત્તાશય પ્રાપ્ત કરને કા,
કિતનેક કા ફોફસ શરીરાવયવ વિશેષ-પ્રાપ્ત કરનેકા, કિતનેક કા ઉનકે
દાતો કો પ્રાપ્ત કરને કા પ્રયોજન હોતા હૈ તથા (અટ્ટિ-મિંજનહ-નયણ-
કણ્ણ-ખ્હારુણિ-નક્ક-ધમણિ-સિંગ-દાઢિ-પિચ્છ-વિસાળ-બાલ હેડ)
કિતને કા ઉનકી (અટ્ટિ) અસ્થિ હઢી પ્રાપ્ત કરનેકા કિતનેક કા ઉનકી (મિંજ)

કેટલાક પ્રાણિયોનુ “મસ” માસ પ્રાપ્ત કરવાના ઉદ્દેશથી તેમને વધ કરાય છે
કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમની “મેય” મેદ જે દેહની ચતુર્થ ધાતુ છે તેને
પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના “જગ” યઠુતને-પેટના
જમણા ભાગમા આવેલા માસ ગ્રંથિને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો
વધ તેમના આંતરડામા રહેલ માસ વિશેષને પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટ-
લાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના “મત્યુલિંગ” માથામાના મગજને પ્રાપ્ત કરવા માટે
કરાય છે, કેટલાક પ્રાણિઓનો વધ તેમના “હિય” હૃદય માસ પિંડ કે જેને
કાળજી કહે છે તેને પ્રાપ્ત કરવાને માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ
તેમના “અત” આંતરડા પ્રાપ્ત કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ
તેમનાં “પિત્ત” પિત્તાશય પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના
“ફોફસ” શરીરનુ એક ખાસ અવયવ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, અને કેટલાક
પ્રાણીઓનો વધ તેમના દાંત પ્રાપ્ત કરવાને માટે થાય છે તથા “અટ્ટિ, મિંજનહ
નયણ, કણ્ણ, ખ્હારુણિ, નક્ક, ધમણિ, સિંગ, દાઢિ, પિચ્છ, વિસાળ, બાલહેડ”
કેટલાકનો વધ તેમના “અટ્ટિ” અસ્થિ-હાડકા પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો

“રમાણ્ડમાસમેદોઽસ્થિમજ્જાશુક્રાણિ ધાતવઃ” ઇતિ ‘નહ’ નચ્વાઃ, ‘નયણ’ નયનાનિ=નેત્રાણિ ‘કણ્ણ’ કર્ણાઃ ‘ઞ્હારુ’ સ્નાયુઃ=મજ્જપત્યજ્જનન્ધનનાડીવિશેષઃ ‘નક્ક’ નાસિકા=‘ધમણિ’ ધમન્યો=નાડ્યઃ, ‘સિંગ’ શૃંગાણિ પ્રસિદ્ધાનિ, ‘દાદિ’ દપ્પા ‘પિચ્છ’ પિચ્છ=મયૂરાદિપિચ્છ, ‘વિસ’ વિપં=કાલકૂટાદિ ‘વિસાણ’ વિપાણાનિ=ગજદન્તા, વાલો=કેશાઃ, ણ્પા ‘હેઝ’ હેતુ હેતુમાશ્રિત્ય ઽસ્થિમજ્જાદિ-હેતોરિત્યર્થઃ, ‘દિગંતિ’ ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્ધઃ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

મજ્જા નામક છઠ્ઠી ધાતુ વિશેષ કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (નહ) નચ્વો કા પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (નયણ) નયન-નેત્રો કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા (કણ્ણ) કાન પ્રાપ્ત કરને કા કિત-નેક કા (ઞ્હારુણિ) સ્નાયુઓ કો અગ પ્રત્યગો કો વાધને વાલી નાડિ વિશેષો કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (નક્ક) નાસિકા પ્રાપ્ત કર-નેકા, કિતનેક કા અનેક (ધમણિ) ધમનિયા-નાડિયા પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (સિંગ) શૃંગો કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (દાદિ) દાદો કો પ્રાપ્ત કરનેકા, કિતનેક કા અનેક (પિચ્છ) પિચ્છો કો પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક (વિસ) કાલકૂટ આદિ વિપ પ્રાપ્ત કરને કા, કિતનેક કા અનેક વિપાણ-ગજ દન્તો કો પ્રાપ્ત કરને કા ઓર કિતનેક કા અનેક (વાલ) વાલો કો પ્રાપ્ત કરને કા, ઉદ્દેશ્ય હોતા હૈ । इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अवुधजन इनकी हिंसा करते हैं ॥ सू-११ ॥

વધ તેમની “મિંજ” મજ્જા નામની છઠી ધાતુને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના “નહ” નચ્વોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના “નયણ” નેત્ર પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના “કણ્ણ” કાન પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ “ઞ્હારુણિ” સ્નાયુઓને અગ પ્રત્યગોને વાધનારી નાડિ નસ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનું “નક્ક” નાક પ્રાપ્ત કરવાને માટે કેટલાકનો વધ તેમની “ધમણિ” ધમનીઓ-નાડીઓ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટ-લાકનો વધ તેમના “સિંગ” શિંગડા પ્રાપ્ત કરવા માટે, કેટલાકનો વધ તેમની “દાદિ” દાદો પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના “પિચ્છ” પીંછા પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમનું “વિસ” કાલકૂટ આદિ વિપ પ્રાપ્ત કરવાને માટે, કેટલાકનો વધ તેમના વિપાણ હાથી દાતને પ્રાપ્ત કરવા માટે, અને કેટ-લાકનો વધ તેમના “વાલ” વાળ પ્રાપ્ત કરવાને માટે કરાય છે તે ઉદ્દેશો-પ્રયો-જનોને માટે અવુધ-જનો તેમની હિંસા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

અથ ચતુરિન્દ્રિયાદીના હિંસાપયોજનમાહ—‘હિંસંતિ ય’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે રસેસુ ગિદ્ધા, તદેવ તેદંદિષ સરીરોવકરણદ્વ્યાપ કિવણે, વેદંદિષ વહવે વત્થોહર પરિમંડળદ્વા ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

ટીકા—‘યે’ ચ-પુનઃ ‘રસેસુ’ રસેષુ=મધ્વાદિષુ ‘ગિદ્ધા’=ગૃદ્ધા=તદ્રસ લોલુપાઃ હિંસકાઃ જના મધ્વાદિ ગ્રહણાર્થ ‘ભમરમહુકરિગણે’ ભ્રમરમધુકરીગણાન્ ભ્રમરાઃ=કૃષ્ણવર્ણાઃ લોકભાપયા પુસ્ત્ત્રવિશિષ્ટાઃ, મધુકર્યઃ=ઋધુમધુમક્ષિકાઃ લોક ભાપયા સ્ત્રીત્વવિશિષ્ટાઃ, તેષા ગણાન્=સમૂહાન્ હિંસન્તિ । ‘તદેવ’ તથૈવ ‘તેદંદિષ’ ત્રીન્દ્રિયાન્=પૂરુષામત્કુળાદીન્ ‘સરીરોવકરણદ્વ્યાપ’ શરીરોપકરણાર્થ=શરીરસ્યોપ કારાર્થ શયનકાલે મત્કુળાદિકૃતદુઃખનિવારણાર્થ હિંસન્તિ । તથા ‘કિવણે’ કૃષ

અથ સૂત્રકાર ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવોં કી હિંસા કરને ચાલોં કા કયા પ્રયોજન હોતા હૈ—ઇસ ઘાત કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(રસેસુ ગિદ્ધા) જો અધુધ-અજ્ઞાની જન મધુ (શહદ) આદિ રસોં મે લોલુપ હોતે હૈં વે ડન મધુ આદિ રસોં કો પ્રાપ્ત કરને કે અભિપ્રાયે સે (ભમરમહુકરિગણે હિંસંતિ) ભ્રમર ભ્રમરિયોં કે સમૂહ મારતે હૈં । ભ્રમરિયોં સે, મધુકો એકત્રિત કરને ચાલી મધુ મક્ષિકોં કા યહા ગ્રહણ કરના ચાહિયે । (તદેવ) હસી તરહ (કિવણે) દીન એસે (તેદંદિષ) જૂ સ્વદમલ આદિ તેદંદ્રિય જીવોં કી (સરીરોવકરણદ્વ્યાપ) અપને શરીર કે ઉપકાર કે લિયે અર્થાત્ શયનકાલ મેં જો સ્વદમલ આદિ દ્વારા ડનકે શરીર મેં કાટને જન્ય દુઃખ હોતા હૈં ડસ દુઃખ કો નિવારણ કરને

હવે ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવોંની હિંસા કરનારનુ શુ પ્રયોજન હોય છે, તે સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—“હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘રસેસુ ગિદ્ધે’ જે અધુધ-અજ્ઞાની લોકો મધુ-મધ આદિ રસોમા લોલુપ થાય છે તેઓ તે મધ આદિ રસોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે “ભમરમહુકરિગણે હિંસંતિ” ભ્રમરો તથા ભ્રમરીઓના સમૂહની હત્યા કરે છે ભ્રમરીઓ એટલે અહીં મધ એકત્ર કરનારી મધમાખીઓ સમજવી “તદેવ” એજ પ્રમાણે “કિવણે” બિચારા “તેદંદિષ” જૂ, માકડ આદિ તેદંદ્રિય જીવોંની હત્યા “સરીરોવકરણદ્વ્યાપ” પોતાના શરીરના ઉપકારને માટે એટલે કે સૂતી વખતે માકડ આદિ જે જીવોં કરડે છે અને ઉધમા ખલેલ પડેઆડે છે

ણાન્=દીનાન્ 'વહવે' ગૂહન્ 'વેદિણ' દ્વિન્દ્રિયાન્ 'વત્યોદરપરિમહ્ણદ્વા' વસ્ત્રોપગૃ-
હપરિમહ્ણનાર્થમ્, 'વત્ય' વસ્ત્રાણિ 'ઓદર' ઉપગૃહાઃ=લઘુગૃહા તેષા 'પરિમહ્ણદ્વા'
પરિમહ્ણનાર્થ=શોભાર્થમ્, તત્ર વસ્ત્રાણા પરિમહ્ણન કૃમિરાગેણ રક્તનમ્, ઉપગૃહાણા
પરિમહ્ણન શક્તિચૂર્ણેનાવલેપનમ્ । યદ્વા-અર્થશબ્દસ્ય પ્રત્યેકમભિસમ્બન્ધે-
વસ્ત્રાર્થમ્, ઉપગૃહાર્થ, મહ્ણનાર્થ ચેતિ । તત્ર પટસૂત્રાદિ વસ્ત્રનિર્માણે કૃમ્યાદ્યુપ-
ધાતઃ, ઉપગૃહનિર્માણે મૃજ્જલાદિપુ પુત્રકાશુપમર્દનમ્, હારાદિપરિમહ્ણનનિર્માણે
શુક્ત્યાદ્યુપહનન મત્યેવ ॥સુ. ૧૨॥

કે અભિપ્રાય સે વે ઉનકી હિસા કરતે હૈ । હસી તરહ (વેદિણ) શંખ
શુક્તિકા આદિ જો વિચારે દો ઇન્દ્રિય જીવ હૈ ઉન વહુત સે દીન જીવો
કી ભી (વત્યોદર પરિમહ્ણદ્વા) વસ્ત્ર, ઉપગૃહ-લઘુગૃહ કી શોભાનિમિત્ત
હિસા કરતે હૈ । કૃમિરાગ સે વસ્ત્રો કા રગનો યહ વસ્ત્રો કા પરિમહ્ણન હૈ ।
શક્તિ, શુક્તિકા કે ચૂને સે છોટે ર ઘરો કા પોતના યહ ઉપગૃહો કા
પરિમહ્ણન હૈ । અથવા અર્થ શબ્દ કા પ્રત્યેક કે સાથ સવધ કરને પર એસા
ભી હસ પદ કો અર્થ હોતા હૈ કિ વસ્ત્ર કે નિમિત્ત, ઉપગૃહ કે નિમિત્ત
ઔર મહ્ણન-હાર આદિ ભૂષણ કે નિમિત્ત પટસૂત્ર આદિ વસ્ત્ર કે નિર્માણ
મેં કૃમ્યાદિ જીવો કા ઉપધાત હોતા હૈ, ઉપગૃહો કે નિર્માણ મેં મિટ્ટી
ગલ આદિ મે રહે છુપ લટ આદિ દો ઇન્દ્રિય જીવો કા ઉપમર્દન હોતા હૈ,
તથા હાર આદિ આભૂષણો કે નિર્માણ કરને મેં શુક્તિ આદિ જીવો કા
હનન હોતા હૈ ।

ભાવાર્થ—અમર, મધુકરી આદિ જો ચાર ઇન્દ્રિય વાલે જીવ હૈ, તથા

૨૫ માટે તેઓ તેમની હિંમ્મ કરે છે એ જ ગીતે “વેદિણ” શંખ શુક્તિકા
આદિ જે વિચારા દ્વિન્દ્રિય જીવોની પણ “વત્યોદરપરિમહ્ણદ્વા” વસ્ત્ર ઉપગૃહ
લઘુગૃહની શોભાને નિમિત્તે હિંસા કરે છે કૃમિરાગથી વસ્ત્રોને રગવા તે વસ્ત્રોનું
પરિમહ્ણન કહેવાય છે તથા, શુક્તિકાના ચૂનાથી નાના નાના ઘરોને લીપવા તે
ઉપગૃહ પરિમહ્ણન કહેવાય છે અથવા ‘અર્થ’ શબ્દનો દરેકની સાથે
સબધ જોડવાથી આ પદનો એવો પણ અર્થ થઈ શકે છે કે વસ્ત્રને માટે,
ઉપગૃહને માટે અને મહ્ણન-હાર આદિ ભૂષણને માટે પટસૂત્ર આદિ વસ્ત્ર
ખનાવવામા કૃમ્યાદિ જીવોનો ઉપધાત થાય છે, ઉપગૃહોની રચનામા માટી, જળ
આદિમા રહેલ લટ આદિ દ્વિન્દ્રિય જીવોને ધાત થાય છે, તથા હાર આદિ
આભૂષણો ખનાવવામા શુક્તિ આદિ જીવોની હત્યા થાય છે

ભાવાર્થ—અમર, મધુમાખી આદિ જે ચાર ઇન્દ્રિય વાળા જીવો છે, તથા

પુનરપ્યાહ—‘અળેહિય’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—અળેહિ ય એવમાહ્ણહિ વહુહિં કારણેહિં અબુહા
 ઇહ હિસાતિ તસે પાળે, ઇમે ય—અર્ગિંદિએ વહવે વરાએ, તસે ય
 અળે તદસિસએ ચેવ તણુસરીરે સમારભંતિ । અત્તાળે, અસરળે,
 અળાહે, અવધવે, કમ્મનિગડવઢ્ઢે, અકુસલ-પરિણામ મદબુદ્ધિ-
 જળદુઠ્ઠિજાળએ, પુઢવિમએ, પુઢવિસંસિએ, જલમએ, જલગએ,
 અળલાળિલતળવળસસઙ્ગળનિસિસએ ય, તમ્મય તજ્જીએ ચેવ,
 તદાહારે તપ્પરિણયવળ્લગંધરસફાસવોંદિરુવે અચચ્ચસુસે ય
 ચચ્ચસુસે ય તસકાહ્ણ અસંચે થાવરકાએ ય સુહુમવાયરપત્તે
 ય સરીરનામસાધારળે અળંતે હળંતિ અવિજાળઓ ય પરિજા-
 ળઓ ય જાવ ઇમેહિ વિવિહેહિ કારણેહિ કિં તે ? ॥સૂ. ૧૩॥

જૂ, યદમલ આદિ જો ત્રીન ઇન્દ્રિય વાલે જીવ હૈ, એ શાખ શુક્તિ આદિ
 જો દો ઇન્દ્રિયવાલે જીવ હૈ, ઇનકી હિંસા કરને કા ઉદેશ્યજીવોં કા કયા
 હોતા હૈ યહ વાત સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કી હૈ । જો પ્રાણી રસ
 મે ગૃહ્થ બને હુએ હૈ વે બ્રમર મધુકરી આદિ જો રસ કો એકત્રિત કરને
 વાલે જીવ હૈ ઇનકી તથા જો પ્રાણી અપને શરીર આદિ કે ઉપકાર-કરને
 કે અભિલાષી હૈ વે લોક જૂ, યદમલ આદિ જીવોં કી એવ જો વસ્ત્ર ઉપ-
 ગૃહ્થ આદિ કે નિર્માણ કરને કે અભિલાષી હૈ વે શાખ શુક્તિ આદિ દો
 ઇન્દ્રિય જીવોં કી હિંસા કરતે હુએ બિલકુલ વિચાર નહીં કરતે હૈ ॥સૂ. ૧૨॥

જૂ, માકડ આદિ જે ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવો છે, અને શખ છીપ આદિ જે
 બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવો છે, તેમની હિંસા કરવા પાછળ લોકોનો શો હેતુ હોય
 છે તે સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કર્યું છે જે માણસ રસમાં ગૃહ્થ-લોભ
 બનેલ છે તેઓ બ્રમર આદિ રસ એકત્ર કરનારા જે જીવો છે તેમની તથા જે
 લોકો પોતાના શરીર આદિના સુખનો જ વિચાર કરનારા છે તેઓ જૂ, માકડ
 આદિ જીવોની અને જે લોકો વસ્ત્ર, ઉપગૃહ્થ આદિના નિર્માણની અભિલાષાવાળા
 છે તેઓ શખ, છીપ આદિ દ્વિન્દ્રિય જીવોની હિંસા કરતા બિલકુલ વિચાર
 કરતા નથી ॥ સૂ. ૧૨ ॥

ટીકા — ‘અણ્ણેહિ ય’ અન્યૈશ્વ ‘અવમાઙ્ગહિ’ અવમાદિકૈઃ=પૂર્વોક્તસદૃશૈઃ ‘વહુહિ’ વહુભિઃ=નાનાવિધૈઃ ‘કારણસઅહિ’ કારણશતૈઃ ‘અબુહા’ અબુધાઃ=અજ્ઞાનિનો જનાઃ इह=અસ્મિન્ જીવલોકે ‘તસે પાણે’ ત્રસાન્ પ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્ ‘હિંસતિ’ હિંસન્તિ=પ્નન્તિ । તવા—‘इमेय’ इमाश्च=અગ્રે વક્ષ્યમાણાન્ ‘અગિંદિઅ’ એકેન્દ્રિયાન્ પૃથિવ્યપ્તેજોવાયુવનસ્પતિલક્ષણાન્ ‘વહવે’ વહૂન્=અનેકાન્ ‘વરાઅ’ વરાકાન્=દીનાન્ , તવા—‘तदस्सिए चेव’ તદાશ્રિતાન્ ચૈવ=પૃથિવ્યા કેન્દ્રિયાશ્રયસ્થિતાનપિ ‘અણ્ણે’ અન્યાન્ ‘તણુસરીરે’ તનુશરીરાન્=સૂક્ષ્મશરીરાન્ ‘તસે ય’ ત્રસાશ્ચ ‘સમારમતિ’ સમારમન્તે=ઉપમર્દયન્તિ । કીદશાન્ તાન્ ? इत्याह—‘अत्ताणे’ અત્રાણાન્=ત્રાણરહિતાન્ રક્ષકાભાવાત્ , ‘અસરણે’ અશરણાન્=શરણદાતુરભાવાત્ ,

ફિર મી કહતે હૈ—‘અણ્ણેહિ ય’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અણ્ણેહિ ય અવમાઙ્ગહિ વહુહિ કારણસઅહિ અબુહા इह હિંસતિ પાણે) इत्यादि और भी नानाविध इसी प्रकार के सैकड़ों कारणों से अज्ञानी जीव इस लोक में द्वीन्द्रियादिक त्रस जीवों की हिंसा करते हैं । तथा (इमेय) वक्ष्यमाण इन (वहवे) अनेक प्रकार के (वराए) दीन (अगि-दिअ) पृथिवीकाय, अपूकाय तेजःकाय, वायुकाय, वनस्पति कायरूप एकेन्द्रिय जीवों को और (तदस्सिए चेव) इनके आश्रित रहे हुए (अण्णे) दूसरे पूर्वोक्त त्रस जीवों से अतिरिक्त (तणुसरीरे) छोटे शरीर वाले (तसे य) त्रस जीवों की (समारमति) हिंसा करते हैं । इनकी हिंसा करते हुए जो इन अज्ञानी प्राणियों को सकोच नहीं होता है उसाफ कारण यह है कि ये (अत्ताणे) इन एकेन्द्रियादिक जीवों का कोई रक्षक नहीं है इसलिये रक्षक के अभाव से ये सब त्राण रहित हैं । (असरणे)

હજી પણ સૂત્રકાર કહે છે—“અણ્ણેહિય ’ ઇત્યાદિ

‘અણ્ણેહિય અવમાઙ્ગહિ વહુહિ કારણસઅહિ અબુહા इह હિંસતિ તસે પાણે” ઇત્યાદિ ખીન્ન પણ એવા જ પ્રકારના સેકડો વિવિધ કારણોથી અજ્ઞાની જીવ આલોડમા દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ જીવોની હિંસા કરે છે તથા “इमेय” આ પ્રમાણે તે “वहवे” અનેક પ્રકારના “वराए” ગિયારા “अगि दिअ” પૃથિવીકાય, અપૂકાય, તેજ કાય, વાયુકાય, વનસ્પતિકાયરૂપ એકેન્દ્રિય જીવોની અને “तदस्सिए-चेव” તેમના આશ્રયે રહેલા “अण्णे” ખીન્ન પૂર્વોક્ત ત્રસજીવો ઉપરાંતના “तणुसरीरे” નાના શરીરવાળા “तसेय” ત્રસજીવોની “समारमति” હિંસા કરે છે તેમની હિંસા કરતા તે અજ્ઞાની જીવોને સડોચ થતો નથી કારણ કે “अत्ताणे” તે એકેન્દ્રિયાદિક જીવોનું રક્ષક કોઈ નથી તેથી રક્ષકને અભાવે તે બધા ત્રાણહીન—(નિરાધાર) છે “असरणे” તે પૃથિવ્યાદિ જીવો ભાગી જઈ

‘અળાહે’ અનાથાન્=સ્વામ્યભાવાત્, ‘અવધવે’ અવાન્વયાન્-સહાયકાભાવાત્,
 ‘કમ્મનિગહવદ્ધે’ કર્મનિગહવદ્ધાન્-કર્મણ્યેવ નિગહાનિ વન્ધસ્ત્વાત્ તૈર્વદ્ધાન્
 કર્મરાહિત્યાભાવાત્, ‘અકુસલપરિણામમદ્બુદ્ધિજણદુર્વિજાણણ’ અકુસલપરિ-
 ણામમદ્બુદ્ધિજનદુર્વિજ્ઞેયાન્-કુશલ:=તત્ત્વાતત્ત્વવિવેકસમ્પન્નઃ, પરિણામ:=અન્ત
 કરણ યેષા તે કુશલપરિણામાઃ, ન કુશલપરિણામા = જરુગટપરિણામા:=
 આત્મૌપમ્યદૃષ્ટિવિકલા इत्यर्थः मन्दा=हिंसाजनितनरकनिगोदाद्यनन्तभवभ्रमण-
 कटुकफलविवेचनशून्या-बुद्धिर्येषां ते मन्दबुद्ध्यस्ते च जना इति अकुशलपरि-

ચે પૃથિવ્યાદિ જીવ ભગકર જા નહીં સકતે, ઇનકે આશ્રિત શ્રમ જીવ
 યદિ ભગકર કરી જાવેં મીતો કોઈ એસા નહીં હૈ જો ઇન્હેં શરણ પ્રદાન
 કરે અતઃશરણદાતા કે અભાવ સે યે અશરણ હૈં । (અળાહે) કોઈ ઇનકા
 સ્વામી નહીં હૈ ઇમલિયે અપને સ્વામી કે અભાવ સે યે વિચારે અનાથ હૈં ।
 (અવધવે) ઇનકી કણ્ટ મેં કોઈ સહાયતા કરને વાલા નહીં હૈ ઇસલિયે
 સહાયક કે અભાવ સે યે અવાન્ધવ હૈં । (કમ્મનિગહવદ્ધે) ઉસ પ્રકાર કે
 કર્મોં કા સંજ્ઞાવ હોને કે કારણ કર્મરૂપ નિગહ-વેડી સે યે બધે હુળ્હેં ।
 (અકુસલ-પરિણામ-મદ્બુદ્ધિજણદુર્વિજાણણ) અકુશલ પરિણામ વાલે
 મદ્બુદ્ધિ જનોં દ્વારા યે દુર્વિજ્ઞેય હૈ । તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ કા વિવેક જિનકે
 અન્તઃકરણ મેં જગતા હૈ વે કુશલ પરિણામ વાલે જીવ હૈં । ઇસ તરહ કા
 કુશલ પરિણામ જિનકા નહીં હૈ અર્થાત્ સર્વ જીવોં કે ઉપર જિનકી દૃષ્ટિ
 આત્મૌપમ્યવાલી નહીં હૈ ઓર જો ઇસ વાત કો મી નહીં જાનતે હૈં કિ હિંસા
 કરને સે નરક નિગોદ આદિ અનન્ત ભવો મેં ભ્રમણ કરને રૂપ કટુકફલ કો

શકતા નથી, તેમને આશ્રિત ત્રસણુવ જે ભાગીને કોઈપણ જગ્યાએ જાય તે
 પણ કોઈ એવું નથી કે જે તેને શરણ આપે, તેથી શરણદાતાને અભાવે તેઓ
 અશરણુ છે “અળાહે” કોઈ તેમનો સ્વામી નથી, તેથી સ્વામીને અભાવે
 તેઓ બિચારા અનાથ છે “અવધવે” કદમા તેમને સહાય કરનાર કોઈ નથી,
 તેથી સહાયકને અભાવે તેઓ અવાધવ છે “કમ્મનિગહવદ્ધે” તે પ્રકારના
 કર્મોના સંજ્ઞાવ થવાને કારણે ઈર્મરૂપી બેડી વડે તેઓ બધાયેલ છે “અકુસલ-
 પરિણામ-મદ્બુદ્ધિજણદુર્વિજાણણ” અકુશલ પરિણામવાળા મદ્બુદ્ધિયુક્ત લોકો
 દ્વારા તે દુર્વિજ્ઞેય-સમજવું-મુસ્કેલ છે જેમના અત કરણુમા તત્ત્વ અને અતત્ત્વનો
 વિવેક જાગૃત થાય છે તે કુશલ પરિણામવાળા જીવ છે આ પ્રકારનું કુશલ
 પરિણામ જેમનું હોતું નથી, એટલે કે મધળા જીવો ઉપર જેમની દૃષ્ટિ આત્મ
 વત્ નથી, અને જે એ વાતને પણ જાણતા નથી કે હિંસા કરવાથી નરક,
 નિગોદ આદિ અનન્ત ભવોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ કટુક ફળો ભોગવવા પડે છે,

નામમન્દબુદ્ધિજનાઃ તૈ મિથ્યાત્વોદયેન 'દુર્જિજ્ઞેયા' 'એતે હીનદીનાઃ પ્રાણિનો રક્ષ-
નીયાઃ', इति ज्ञातुमशक्यान्तान्, 'पुढविमए' पृथिवीमयान्=पृथिवीकायिकान्,
'पुढवि ससिए' पृथिवीसथितान्=अलसप्रभृति द्वीन्द्रियान् 'जलमए' जलमयान्-
अप्कायिकान् 'जलगए' जलगतान् पूतरमादि त्रसान्, अणलाणिलतणवणस्मइ
गणनिस्सिए य 'अनलाऽनिलतृणवनस्पतिगणनिथिताश्च=अनलः=अग्निः, अनिलो
= वायुः, तृणानि = दर्भादीनि वनस्पतयः=वनस्पतिकायभेदा अग्रजीवादयः,-
तृण वनस्पतिकायिकमेव पुनर्वनस्पतिग्रहण स्वगत भक्षमादिसकलभेदरूपापनार्थम्,
तेषां गण =समूहस्तस्य निथितान् अनलाद्याथितान् च शब्दात्-तेजस्कायिकादींश्च,
तथा-'तम्मयतज्जीए' तन्मय तज्जीयान्=तत्र तन्मयान् पृथिवी कायिकादीन्

મોગના પડતા હૈ, ટસ તરહ કે જ્ઞાન કે અભાવ વાલે મદબુદ્ધિ હૈ, ઉન જનોં
દ્વારા મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે "યે હીન દીન પ્રાણી રક્ષા કરને યોગ્ય હૈ હિંસા
કરને યોગ્ય નહીં હૈ" યહ વાત જાની નહીં જા સકતી હૈ હસલિયે એસે
પ્રાણિયોં દ્વારા યે જીવ નહીં જાને જા સકતે અતઃ યે અજ્ઞાની જીવ (પુઢ-
વિમણ) પૃથ્વીકાયિક જીવોં કો તથા (પુઢવિસસિણ) પૃથિવી કે આશ્રય
રહે હુણ અલસ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોં કો હસી તરહ (જલમણ) જલ
કાયિક જીવોં કો તથા (જલગણ) જલકાયિક જીવોં કે સહારે રહે હુણ
પૂતરકાદિ ત્રસ જીવોં કો, તથા (અણલાણિલતણ વણસ્સહગણનિસ્સિણ)
અગ્નિકાયિક જીવોં કો ઓર અગ્નિકાય કે સહારે રહે હુણ ત્રસ જીવોં
કો ઓર વાયુકાયિક જીવોં કે સહારે રહે હુણ ત્રસ જીવોં કો, તણરૂપ-
વનસ્પતિકાયિક જીવોં કો, ણવ વનસ્પતિકાય કે ભેદ પ્રભેદો કે સહારે
રહે હુણ ત્રસ જીવોં કો બી મારતે હૈ । યહી વાત "તમ્મયતજ્જીવણ"

આ પ્રકારના જ્ઞાન વિનાના જીવો મદબુદ્ધિ છે તે લોકો દ્વારા મિથ્યાત્વના
ઉદયથી "આ હીન દીન પ્રાણીઓ રક્ષા કરવાને યોગ્ય છે હિંસાને યોગ્ય નથી"
એ વાત પણ મમજી ગણતી નથી તે ગણે એવા જીવો દ્વારા તે જીવોને
બાણી શકાતા નથી, તેથી તે અજ્ઞાની જીવ "પુઢવિમણ" પૃથ્વીકાય જીવોની
તથા "પુઢવિસસિણ" પૃથ્વીને આશ્રયે રહેલ અણમિયા આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોની,
એ જ પ્રમાણે "જલમણ" જલકાયિક જીવોની તથા "જલગણ" જલકાયિક
જીવોને આશ્રયે રહેલ પૂતરકાદિ ત્રસજીવોની, તથા "અણલાણિલ તણવણસ્સહગણ
નિસ્સિણ" અગ્નિકાય જીવોની અને અગ્નિકાયને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની,
વાયુકાય જીવોની અને તેમને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની, તણરૂપ વનસ્પતિકાય
જીવોની અને વનસ્પતિકાયના ભેદ પ્રભેદોના આશ્રયે રહેલ ત્રસજીવોની હિંસા
કરે છે એ જ વાત "તમ્મય તજ્જીવણ" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા કહેવામાં આવે

તજ્જીયાન્ પૃથિવ્યાદિ નિશ્ચિતાથૈન, 'તદાહારે' તદાધારાન્=તે પૃથિવ્યાદયઃ
 આધારો યેષા તે તાન્ તદાધારાન્=પૃથિવ્યાદ્યાશ્રયાન્ અથવા 'તદાહારે'
 તદાહારાન્ તે પૃથિવ્યપ્તેજોગાયત્રાદય ણ્ય આધારો યેષા તે તાન્ તદાહારાન્
 'તપ્પરિણયવર્ણગધરસફાસર્ગોદિરુવે' તપ્પરિણતર્ણગન્ધરસસ્પર્શર્ગોદિ (શરીર)
 રૂપાન્=તેષામેવ પૃથિવ્યાદીના પરિણતા વર્ણગન્ધરસસ્પર્શ યાં વૌદિઃ=શરીર સૈવ
 રૂપ=સ્વભાવો યેષા તે તથા તાન્, 'અચક્ષુસે ય' અચાક્ષુપાન્=ચક્ષુરગોચરાન્
 'ચક્ષુસે ય' ચાક્ષુપાથ ચક્ષુરિન્દ્રિયવિષયાન્ 'તમકાઈએ' ત્રસકાયિકાન્ ત્રસન્તિ
 ઉષ્ણાદ્યભિતસાઃ સન્તઃ વિવક્ષિતસ્થાનાદુદ્વિજન્તે=ગન્ઙન્તિ છાયાદ્યાસેવનાર્થ
 સ્થાનાન્તરમિતિ ત્રસાઃ, યદ્વા-ત્રમ નામકર્મોદગ્નાત્ ત્રસ્યન્તિ इति ત્રસાઃ=ત્રસનામ-
 કર્મોદયવર્તિનિત્યર્થઃ, તેષાં કાયોરાશિસ્તત્ર ભવાત્ત્રસકાયિકા., તાન્, ક્રિયતઃ ?
 इत्याह-'असखे' इत्यादि-'असखे' असख्यान् 'थावरकाए' स्थावरकायान्, तिष्ठ-

इत्यादि पदों द्वारा कही जाती है—(तम्मयतज्जीवण) पृथिवी कायिक
 आदि जीवों को तथा पृथिवी आदि के सहारे रहे हुए जीवों को, (तदा-
 हारे) जिन जीवों के वे पृथिवी आदिक आधारभूत हैं ऐसे जीवों को
 अथवा पृथिवी आदिक ही जिनका आहार है ऐसे जीवों को (तपपरिणय
 वर्णगधरसफासर्गोदिरुवे) तथा पृथिव्यादिकों के वर्ण, गध, रस, स्पर्शों
 से जिनका शरीररूप स्वभाव परिणत हो रहा है, तथा (अचक्खुसे य)
 जो चक्षु इन्द्रिय विषयभूत नहीं है, और (चक्खुसे य) जो चक्षु इन्द्रिय
 के विषयभूत भी हैं ऐसे त्रस जीवों को—उष्णादिक से सतप्त होकर जो
 छाया आदि के सेवन के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं,
 अथवा त्रस नामकर्म के उदय से जो युक्त है वे त्रस हैं, ऐसे त्रस जीवों
 को, तथा—(असखए थावरकाए य) असख्यात स्थावर कार्यों को, स्था-

છે—“ તમ્મયતજ્જીવણ ” પૃથિવી કાયિક જીવોને તથા પૃથિવી આદિને આશ્રયે
 રહેલ જીવોને ‘તદાહારે’ જે જીવોને તે પૃથિવી આદિ આધારભૂત છે એવા
 જીવોને અથવા પૃથિવી આદિ જ જેમનો આહાર છે એવા જીવોને “ તપ્પરિણય
 વર્ણગધરસફાસર્ગોદિરુવે ” તથા પૃથિવી આદિકોના વર્ણ ગધ, રસ, સ્પર્શોથી
 જેમનો શરીરરૂપ સ્વભાવ પરિણત થઈ રહ્યો છે, તથા “અચક્ષુસે ય” જે ચક્ષુ
 ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ નથી, અને “ચક્ષુસે ય” જે ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ પણ
 છે એવા ત્રસ જીવોને ઉષ્ણતા આદિથી હુખ પામીને જે છાયા આદિના સેવન
 માટે એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ જાય છે, અથવા ત્રસ નામકર્મના ઉદયથી
 જે યુક્ત છે, તેઓ ત્રસ ગણાય છે એવા ત્રસ જીવોને, તથા “અસખए थावर
 काएय” असख्यात स्थावरजीवોને—સ્થાવર નામકર્મનો ઉદય જેમને છે તે સ્થાવર

તીતિ સ્થાવરઃ, સ એવ કાય = શરીર ચેપાં તે સ્થાવરકોયાઃ = પૃથ્વીતગીતા ડતપ
સન્તાપાદ્યપેતત્ત્વેડપિ અન્યત્ર ગન્તુમશક્તાઃ સ્થાવરનામકર્મોદયવર્તિનઃ પૃથિવ્યત્તેજો-
વાયુવનસ્પતય, તાન્ ' સુદુમ-વાયર-પત્તેય-સરીરનામસાહારણે ' સૂક્ષ્મ-વાદર-
પ્રત્યેકશરીરનામસાધારણાન્, સૂક્ષ્મ ચ વાદર ચ પ્રત્યેકશરીર ચ-સૂક્ષ્મવાદર-
પ્રત્યેકશરીરાણિ, તાનિ નામાનિ = નામકર્માણિ ચેપા તે સૂક્ષ્મવાદરપ્રત્યેકશરીર-
નામાનઃ, તે ચ તે સાધારણાથ સૂક્ષ્મવાદરપ્રત્યેકશરીરનામમાધારણાઃ, તાન્ ।
તત્ર સૂક્ષ્માઃ = ચર્મચક્ષુગ્રાહ્યાઃ પૃથિવ્યાત્રેકેન્દ્રિયાઃ, વાદરા = તત્ત્વ ચર્મચક્ષુગ્રાહ્યાઃ,
પ્રત્યેકશરીરાઃ = ચેપામેકમેક જીવ પ્રતિભિન્ન ભિન્ન શરીરમુપજાયતે તે પૃથિવ્યાદયઃ ।
સાધારણાઃ - ચેપામનન્તાના જીવાના સાધારણમેક શરીર ભવતિ તે કન્દમૂલાદય,

વર નામ કર્મ કા ઉદય જિનકે હં વે સ્થાવર હં અથવા જો શીત આતપ
આદિ વાધા કો સહતે હુણ્મી અન્યત્ર ગમન કરને મેં અશક્ત હં અપની
ઠ્ઠા સે ચલ ફિર નહીં સકતે હં - યે સ્થાવર હં એસે ચે સ્થાવર પૃથિવી, અપૂ,
તેજ વાયુ વનસ્પતિ જીવ હં, ઇત જીવોં કો તથા (સુદુમ-વાયર-પત્તેય-સરીર
નામ સાહારણે) સૂક્ષ્મ, વાદર, પ્રત્યેક શરીરરૂપ નામ કર્મ કે ઉદય વાલે જીવો
કો, તથા સાધારણ શરીર નામકર્મ કે ઉદયવાલે જીવો કો, ચર્મચક્ષુઓં
સે જો દેખને મેં નહીં આતે હં વે સૂક્ષ્મ જીવ હં, તથા જો ધર્મચક્ષુઓં
દ્વારા દેખે જાતે હં વે વાદર હં, ચે સૂક્ષ્મ ઓર વાદર ભેદ પૃથિવી આદિ
એકેન્દ્રિય જીવોં કે હોતે હં, પ્રત્યેક વે જીવ હં કિ જિનકા ભિન્ન ૨ શરીર
હોતા હં, એસે પૃથિવ્યાદિક જીવ હોતે હં ક્યોં કિ ઇનકા અપના ૨ ભિન્ન
૨ શરીર હોતા હં ઇન જીવોં કો, તથા સાધારણ વે જીવ હં કિ જિન
અનત જીવોં કા ઁક હી શરીર હોતા હં, એસે વે જીવ કન્દમૂલ આદિ વન-

કહેવાય છે અથવા જે શીત, તાપ આદિની મુશ્કેલીઓ પડવા છતાં પણ
અન્યત્ર ગમન કરવાને અશક્ત છે, પોતાની ઇચ્છાથી હલનચલન કરી શકતા
નથી તે સ્થાવર છે એવા જે સ્થાવર પૃથિવી, અપૂ, તેજ, વાયુ અને વનસ્પતિ
જીવો છે તે જીવોને, તથા "સુદુમ, વાયર, પત્તેય, સરીર નામસાહારણે" સૂક્ષ્મ,
વાદર, પ્રત્યેક શરીરરૂપ નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, તથા સાધારણ શરીર
નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, ચર્મચક્ષુઓ વડે જે દેખી શકાતા નથી તે સૂક્ષ્મ
જીવો છે, તથા જે ચર્મચક્ષુઓ દ્વારા જોઈ શકાય છે તે વાદર જીવો છે તે
સૂક્ષ્મ અને વાદર પૃથિવી આદિ એકેન્દ્રિય જીવોના હોય છે 'પ્રત્યેક જીવ'
એ જીવો છે જે જેમના અલગ અલગ શરીર હોય છે, પૃથિવ્યાદિક જીવ એવા
હોય છે કારણકે તેમને પોતા પોતાનું ભિન્ન ભિન્ન શરીર હોય છે તે જીવોને,
તથા સાધારણ જીવો એ છે જે અનત જીવોનું એક જ શરીર હોય છે,
એવા જીવો કન્દમૂલ આદિ વનસ્પતિવાદિ હોય છે તે જીવો તે પ્રકારના કર્મો-

તે અનન્તા અપિ જીવાસ્તથાવિધકર્મોદયસામર્થ્યાત્ સમક્રમેયોત્પત્તિદેશમધિવસન્તિ,
સમક્રમેય તચ્છરીરમાશ્રિતાઃ પર્યાપ્તિ સમારભન્તે, સમક્રમેય પર્યાપ્તાઃ ભવન્તિ । સમ-
ક્રમેવ ચ પ્રાણાપાનાદિ યોગ્યપુદ્ગલાન્ ગૃહ્ણન્તિ । યદ્વ-એકસ્ય જીવસ્યાદ્વારયોગ્ય-
પુદ્ગલોપાદાન તદેવાન્યેષામનન્તાનામપિ ભવતીતિ । ‘અણતે’ અનન્તાન્ ‘અવિજાણઓ’
અવિજાનતઃ=‘એતે ઘાતકા અસ્માન્ હનિષ્યન્તિ’ इति જ્ઞાનવિકલ્પાન્ એકેન્દ્રિયાન્
‘પરિજાણઓ ય’ પરિજાનતથ્ સ્વવધદુઃસ્વમનુભવતથ્ દ્વીન્દ્રિયાદીન્ ‘જીવે’ જીવાન્
‘इमेहि’ એમિઃ=અનુપદ વક્ષ્યમાણેઃ ‘વિવિહેहि’ વિવિધેઃ=નાનાપ્રકારેઃ ‘કારણેहि’
કારણેઃ=પ્રયોજનૈઃ ‘હણતિ’ ઘનન્તિ=યેષાં ઘાત કુર્વન્તીત્યર્થઃ । કિં તે ? કાનિ
તાનિ પૃથિવ્યાદિ-હિંસાયાઃ કારણાનિ ? इत्याह-‘કરિસણે’ત્યાદિના ॥મૂ૦ ૧૩॥

સ્પતિ કાર્યિક હોતે હૈ । યે જીવ તથાવિધ કર્મોદયો કે વશ સે એક
સાથ હી ઉત્પત્તિ દેશ મે રહતે હ, એકસાથ હી હનકી શરીર પર્યાપ્તિ પૂર્ણ
હોતી હૈ । હસ તરહ એક હી સાથ પર્યાપ્તિ હોકર અનત જીવ એક હી સાથ
પ્રાણાપાનાદિ યોગ્ય પુદ્ગલોં કો ગ્રહણ કરતે હૈ । હનમે જો એક જીવ કા
આહાર હોતા હૈ વહી અન્ય અનત જીવોં કા મી હોતા હૈ । હસ તરહ કે
(અણતે) અનત સાધારણ જીવોં કો કિ-(અવિજાણઓ) “જો ઘહ નહીં
જાનતે હૈં કિ યે ઘાતક જન હમે મારે મે” હસ પ્રકાર કે જ્ઞાન સે વિકલ્પ
હો રહે હૈં એસે એકેન્દ્રિય જીવો કો, તથા (પરિજાણઓ ય જીવે) જો
અપને વધાદિ સબધી દુઃસ્વોં કો જાનતે હૈં, એસે દ્વીન્દ્રિયાદિક જીવોં કો,
(इमेहि) હન અનુપદ વક્ષ્યમાણ (વિવિહેहि) નાના પ્રકાર કે (કારણેहि)
પ્રયોજનો સે (હણતિ) મારતે હૈં । (કિંતે) વે પૃથિવ્યાદિ કો હિંસા કે
કારણ કોનર હૈ ? વહ ‘કરિસણ’ इत्यादि અગલે સૂત્ર સે કહતે હૈ ॥

હયને કારણે એક સાથે જ ઉત્પત્તિ દેશમા રહે છે, એક સાથે જ તેમની
શરીર-પર્યાપ્તિ પૂર્ણ થાય છે એ રીતે એક સાથે જ પર્યાપ્તિ થઈને તે અનત
જીવ એક સાથે જ પ્રાણાપાનાદિ પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે તેઓમા એક જીવનો
જે આહાર હોય છે તે જ આહાર અન્ય અનત જીવોનો પણ હોય છે આ
પ્રકારના “અણતે” અનત સાધારણ જીવોને કે-“અવિજાણઓ” “જો તે નથી
જાણતા કે એ ઘાતક લોકો અમને મારી નાખશે” એ પ્રકારના જ્ઞાનથી જે
રહિત છે એવા એકેન્દ્રિય જીવોને, તથા “પરિજાણઓ ય જીવે” જે યોગ્યતાના
વધાદિ સબધી હો જોને જાણે છે એવા દ્વીન્દ્રિય આદિક જીવોને, “इमेहि”
આ હવે પછીના પદોમા દર્શાવેલ “વિવિહેहि” વિવિધ પ્રકારના “કારણેहि”
પ્રયોજનોથી “હણતિ” મારે છે “કિંતે ?” તે પૃથ્વીકાય આદિની હિંસાના કયા કયા
કારણો છે, તે “કરિસણ” इत्यादि હવે પછીના સૂત્ર દ્વારા કહેવામા આવે છે

અથ પૂર્વે પૃથિવીકાયહિંસાકારણાન્યાદ—‘કરિસણ’ ઇત્યાદિ૦ ।

મૂલ્મ્—કરિસણ પોક્કલરણી વાવિ-વેપ્પિણ કૂવ સર-તલાગ-ચિદ્
વેદ્ય -સ્વાદ્ય-આરામ-વિહાર-થૂમ પાગાર-દાર- ગોડર અટ્ટાલગ-
ચરિયા સેડ-સંકમ પાસાય-વિકપ્પ-ભવણ-ઘર સરણ લયણ આવણ-
વેદ્ય-દેવકુલ-ચિત્ત સમા પવા-આયયણ આવસહ-ભૂમિઘર-મંડવા-
પાકુણ-ભાયણમહોવગરણસ્સ ય વિવિહસ્સ ય અટ્ટાણ પુઢવિ
હિંસતિ મંદબુદ્ધિયા ॥ સૂ૦ ૧૪ ॥

ટીકા—‘કરિસણ’ ઇત્યાદિ । ‘કરિસણ’ કર્પણ=કૃપિઃ ‘પોક્કલરણી’ પુક્કલરણી
=સમચતુષ્કોણા કમલકાનનકાન્તિકમનિયા પય.પૂરપૂરિતપાતાલકુક્ષિતજા
નાનામિધચિત્રવિચિત્રપતત્તિકુલકૃજિતપુષ્પિતપૃલિનમણ્ડલમણ્ડનસુરમ્પા, ‘વાવિ’

૧ ‘કેયારો વપ્પિણ વપ્પો’ ઇતિ ‘પાઈઅલચ્છીનામમાલા’ ।

ભાવાર્થ—જો આત્મબોધ સે ચિકલ પ્રાણી હૈ વે સ્થાવર ઔર ઘસ
જીવોં કી નાના પ્રકાર કે પ્રયોજનોં કે વશવર્તીં હોકર વિરાધના કરતે
હૈ । પૃથિવીકાય આદિ સ્થાવર જીવ હૈ, ક્યોં કિ इनके स्थावर नामकर्म
का उदय है । द्वीन्द्रियादिक घस जीव हॆं, क्यों कि इनके घस नामकर्म
का उदय है । इसी कारण से स्थावर जीव अपनी इच्छानुसार एक स्थान
से दूसरे स्थान पर चल फिर नहीं सकते हैं । घस जीव अपनी इच्छा-
नुसार चल फिर सकते हैं ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

અથ સૂત્રકારે ઉન કારણોં કો કહતે હુણ પ્રથમ પૃથિવીકાય કી
હિંસા કે કારણોં કો કહતે હૈ—‘ કરિસણપોક્કલરણી ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(કરિસણ) કૃપિ-લેતી કે નિમિત્ત, (પોક્કલરણી) પોક્કલ

ભાવાર્થ—જે પ્રાણીઓ આત્મબોધથી રહિત છે તેઓ સ્થાવર અને ઘસ
જીવોની અનેક પ્રકારના પ્રયોજનથી દોરાઈને હિંસા કરે છે - પૃથિવીકાય આદિ
સ્થાવર જીવ છે, કારણકે તેમના સ્થાવર નામકર્મનો ઉદય થયો હોય છે
દ્વીન્દ્રિયાદિક ઘસ જીવ છે, કારણકે તેમના ઘસ નામકર્મનો ઉદય થયો હોય
છે એ જ પ્રમાણે સ્થાવર જીવ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે એક જગ્યાએથી બીજી
જગ્યાએ જઈ શકતા નથી ઘસજીવ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે હરીફરી રાડે છે ॥સૂ ૧૩॥

હવે સૂત્રકારે તે કારણોને બતાવતા પ્રથમ પૃથિવીકાયની હિંસાના કારણો
આપે છે—‘ કરિસણપોક્કલરણી ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કરિસણ” કૃપિ-લેતીને નિમિત્તે “પોક્કલરણી” પોક્કલરણી-

वापी = दीर्घायामा 'वप्पिण' वप्पाणि = क्षेत्राणि, 'कूव' कूपा 'सर' सरः—
 कृत्रिमजलाशयः 'तलाग' तड़ागस्तदितरः प्रसिद्ध एव, 'चिह' चिति, मृतकदह-
 नार्थे काष्ठचयनम्, 'चेइय' चैत्यम्—मृतकोपरिस्मारकचिह्नम्, 'खाइय' खातिका=
 परिखा, आरामः गृहसमीपोपवनम्, विहारः=विह्रियतेऽत्रेति विहारः क्रीडास्थान-
 विशेषः, 'धूम' स्तूपः=स्मारकस्तम्भः 'पागार' प्राकारः 'गढ़' इति भाषाप्रसिद्धः,
 'दार' द्वारं प्रसिद्धम्, गोउर' गोपुर=पुरद्वारम्, 'अट्टालग' अट्टालकः='छत' 'अटारी'
 इति प्रसिद्धः, 'चरिया' चरिका=दुर्गनगरयोर्मध्यस्थितः अष्टहस्तप्रमाणः हस्त्यादि
 सचारमार्गः, 'सेउ' सेतु = 'पुल' इति प्रसिद्ध, 'सक्रम' सक्रमः=सक्रम्यते येन स
 सक्रम = जलगर्तपारकरणाय पाषाण काष्ठरचित मार्ग, 'पासाय' प्रासाद = नृपगृहम्
 विकल्प' विकल्पाः=तद्भेदाः 'भवण' भवनानि, भवनमायामापेक्षया किञ्चिदल्पमु-
 च्छ्रायमान भवति, प्रासादस्तु आयामद्विगुणोच्छ्रायः, इति प्रासादभवनयोर्विशेषः,

रिणी-पुष्करिणी के निमित्त (वावि) वापी-वाव के निमित्त (वप्पिण)
 वावडी के निमित्त (कूव) कूप कुवा-के निमित्त (सर) सर-कृत्रिम
 जलाशय के निमित्त (तलाग) तलाग-तड़ाग के निमित्त (चिह) चिति
 के निमित्त (चेइय) चैत्य के निमित्त (खाइय) खातिका के निमित्त
 (आराम) आराम का निमित्त (विहार) विहार के निमित्त (धूम)
 स्तूप के निमित्त (पागार) प्राकार के निमित्त (दार) द्वार के निमित्त
 (गोउर) गोपुर के निमित्त (अट्टालग) अट्टालिका अटारी के निमित्त
 (चरिया) चरिका के निमित्त (सेउ) सेतु-पुल के निमित्त (सक्रम)
 सक्रम के निमित्त (पासाय) प्रासाद-राजमहल के निमित्त (विकल्प)
 विकल्प-विकल्प के निमित्त (भवण) राजमहल विशेष-उनके लिये

पुष्करिणीने निमित्ते "वावि" वापी-वावने निमित्ते "वप्पिण" वावडीने
 निमित्ते "कूव" कूप-कूवाने निमित्ते "सर" सर-कृत्रिम जलाशयने निमित्ते
 "तलाग" तलाग-तड़ागने निमित्ते "चिह" चितिने निमित्ते "चेइय" चैत्यने
 निमित्ते "खाइय" खातिका-आधने निमित्ते "आराम" आराम-ग्रीष्मस्थान
 निमित्ते "विहार" विहारने निमित्ते "धूम" स्तूपने निमित्ते "पागार" प्राकार
 द्वारने निमित्ते "दार" द्वारने निमित्ते "गोउर" गोपुरने निमित्ते "अट्टालग"
 अट्टालिकाने निमित्ते "चरिया" चरिकाने निमित्ते "सेउ" सेतु-पुलने निमित्ते
 "सक्रम" सक्रमने निमित्ते "पासाय" प्रासाद-राजमहलने निमित्ते "विकल्प"
 विकल्प-विकल्पने निमित्ते "भवण" भवन के भेद प्रकारना राजमहल भाटे,

‘ઘર’ ગૃહા = પ્રસિદ્ધા, ‘સરણ’ શરણાનિ = સામાન્યગૃહાણિ, ‘લયણ’ લયનાનિ પર્વતવર્તિ પાપાણગૃહાણિ, ‘આવણ’ આપણાઃ = હટ્ટાઃ, ‘વેદ્ય’ વેદિકા = પરિચ્છતા ભૂમિઃ, ‘દેવકુલાનિ’ = યક્ષગૃહાણિ, ‘ચિત્તસભા’ ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્તસમાસ્થાનમ્, ‘પવા’ પ્રપા = પાનીયશાલા ‘પ્યાઝ’ इति भाषा प्रसिद्धा, ‘આયયણ’ આયતન = યજ્ઞ-શાલા, ‘આવસહ’ આવસથઃ = તાપસાશ્રમઃ, ‘ભૂમિઘર’ ભૂમિગૃહ = ગૃહારૂપ પૃથિવીગૃહમ્, ‘મહવાણ’ મહાવાણઃ = પટનિર્મિતગૃહાસ્તેષા, ‘કળ’ કૃતે-એતન્નિમિત્તમિત્યર્થઃ । તથા ‘ભાયણ મહોવગરણસ્સ’ ભાજનમાણ્ડોપકરણસ્ય ભાજનાનિ = સૌવર્ણરાજતાદીનિ, માણ્ડાનિ = મૃન્મયાનિ શરાગ્રાદીનિ, ઉપકરણાનિ = ઉદ્ગલ મુસલાદીનિ એતેષાં સમા-હારદ્વન્દે-ભાજનમાણ્ડોપકરણમ્, તસ્ય ચ ‘વિવિહસ્સ ય’ વિવિધસ્ય ચ = અનેક પ્રકારસ્ય ‘અટ્ટાણ’ અર્થાય = પ્રયોજનાય ‘મદબુદ્ધિયા’ મન્દબુદ્ધિકાઃ = સ્વપરહિતા-હિતવિવેકનિકલાજનાઃ, ‘પુઢવી’ પૃથિવી ‘હિસતિ’ ઘ્નન્તિ ॥મૂ૦૧૪॥

(ઘર) ઘર કે નિમિત્ત (સરણ) શરણ-સામાન્યગૃહ કે નિમિત્ત (લયણ) લયન-પર્વતવર્તિ પાપાણ ઘર કે નિમિત્ત (આવણ)આપણ-હાટ કે નિમિત્ત (વેદ્ય) વેદિકા-ચોતરે કે નિમિત્ત (દેવકુલ) દેવકુલ-યક્ષાયતન કે નિમિત્ત (ચિત્તસભા) ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્ત સભા કે નિમિત્ત (પવા) પ્રપા-પ્યાઝ કે નિમિત્ત “આયયણ” આયતન-યજ્ઞશાલા કે નિમિત્ત (આવસહ) અવસથ-તાપસોં કે આશ્રમ કે નિમિત્ત (ભૂમિઘર) ભૂમિગૃહ કે નિમિત્ત (મહવાણકળ) મહાવાણ કે નિમિત્ત તથા (ભાયણ મહોવગરણસ્સ-ય-વિવિહસ્સ ય અટ્ટાણ પુઢવિ હિસતિ મદબુદ્ધિયા) નાના પ્રકારકે ભાજન માણ્ડોપકરણકે નિમિત્ત મન્દબુદ્ધિજન પૃથિવીકાય જીવોની હિંસા કરતેહૈં ।

ભાવાર્થ—પૃથિવી કાયિક એકેન્દ્રિય જીવ હૈં । હસ એકેન્દ્રિય જીવ ની હિંસા કરને કા નિમિત્ત-પ્રયોજન કયા હોતા હૈં-હસ વિષય કો સૂત્ર

“ઘર” ઘરને નિમિત્તે “સરણ” શરણ સામાન્ય ગૃહને નિમિત્તે “લયણ” લયન પર્વતવર્તિ પાપાણ ઘરને નિમિત્તે “આવણ” આપણ-હટ્ટાને નિમિત્તે “વેદ્ય” વેદિકા-ચોતરાને નિમિત્તે “દેવકુલ” દેવકુલ-યક્ષાયતનને નિમિત્તે “ચિત્તસભા” ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્ત સભાને નિમિત્તે “ પવા ” પ્રપા-પરખ નિમિત્તે “આયયણ” આયતન યજ્ઞશાલાને નિમિત્તે “આવસહ” આવસથ-તાપસોના અશ્રમોને નિમિત્તે “ભૂમિઘર” ભૂમિગૃહને નિમિત્તે ‘મહવાણકળ’ મહાવાણને નિમિત્તે, તથા “ભાયણ મહોવગરણસ્સ ય વિવિહસ્સ ય અટ્ટાણ પુઢવિ હિસતિ મદબુદ્ધિયા” અનેક પ્રકારના ભાજન, ભાડોપકરણને નિમિત્તે મદ બુદ્ધિવાળા લોકો પૃથ્વીકાય જીવોની હિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—પૃથ્વીકાયિક જીવો એક ઇન્દ્રિયવાળા હોય છે, એ એકેન્દ્રિય જીવની હિંસા કરવાના નિમિત્તો પ્રયોજનો કયા કયા હોય છે, તે વિષે સૂત્ર

કાર ને યહા નિર્દિષ્ટ કિયા હૈ । મદધુદ્ધિજનોં સે યહા તાત્પર્ય સ્વપર હિત
કે વિવેક સે વિકલ જનોં સે હૈ । જિન્હે સ્વ ઓર પર કા વિવેક નહીં હૈ
એસે પ્રાણી હી કૃષી આદિ હન ઉપર્યુક્ત કારણોં કે વશવર્તી હોકર પૃથિવી
કાયિક જીવ કી હિંસા કિયા કરતે હૈ । કૃષીકર્મ પ્રસિદ્ધ હૈ । જિસકે
ચારો કોણ સમાન હોં, કમલ જિસમેં વિકસિત હો રહે હોં, અગાધ-
જલ જિસમે ભરા હો, નાના પ્રકાર કે કલરવ સે જિમકે તટ મણિહત હો
એસે સુરમ્ય જલાશય કા નામ પુષ્કરિણી હૈ । જિસકા વિસ્તાર દીર્ઘ હો
ઉસકા નામ વાપી હૈ । હિન્દી મેં ઇસે વાવડી કહતે હૈ । અનાજ કે બોને
કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઇસે ક્ષેત્ર-ચેન કહતે હૈ । કૃત્રિમ જલાશય કા નામ
સર હૈ । સ્વાભાવિક જલાશય કા નામ તડાગ હૈ, ઇસે હિન્દી મેં તાલાવ
કહતે હૈ । ચિતા કા નામ ચિત્તિ હૈ, જો મૃતક કે દાહ સસ્કાર કે નિમિત્ત
શ્મશાન મેં લકડિયોં કે ઢેર કે રૂપ મેં ચિની જાતી હૈ । કિસી મૃતક કી
યાદગાર મેં જો ઉસકા સ્મૃતિ ચિહ્ન સ્વરૂપ ભવન આદિ બના દિયા જાતા
હૈ ઉસકા નામ ચૈત્ય હૈ । કિલે કે પરકોટે કે ચારોં ઓર જો ગહરી खाई
હોતી હૈ કિ જિસમેં જલ ભી ભરા રહતા હૈ ઉસકા નામ खातिका-खाई
હૈ । ઘર કે પાસ કે ઘગીચે કા નામ આરામ હૈ, નગર સે કુછ દુર પર
જો જનોં કા ક્રીડા સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ વિહાર હૈ । જો સ્મારક

કાર આ સૂત્રમા સ્પષ્ટીકરણ કરે છે અહીં મદધુદ્ધિજનોનો અર્થ, પોતાનું
અને પારકાનું હિત ન જાણનાર લોકો થાય છે જેમને સ્વ અને પરનો વિવેક
હોતો નથી એવા જીવોજ કૃષિ આદિ ઉપર કહેલ કારણોને વશ થઈને પૃથિવી
કાયિક જીવની હિંસા કરી કરે છે કૃષિકર્મ પ્રસિદ્ધ છે એટલે તેને વિષે સ્પ
ષ્ટીકરણની જરૂર નથી જેના ચારે ખૂણા સમાન હોય, જેમા કમળો વિકસ્યા
હોય, જેણા બહુ પાણી ભરેલું હોય વિવિધ પ્રકારના કલરવથી જેનો તટ મણિહત
હોય એવા સુદર જળાશયને પુષ્કરિણી કહે છે જેનો વિસ્તાર લાંબો હોય
તેવી વાવને વાપી કહે છે હિંદીમા તેને વાવડી કહે છે, અનાજ વાવવાનું જે
સ્થાન હોય છે તેને ક્ષેત્ર ખેતર કહે છે કૃત્રિમ જળાશયને સર કહે છે ચિતાને
ચિત્તિ કહે છે, જે મૃત શરીરને અગ્નિદાહ દેવાને માટે લાકડાના ઢગલા રૂપે
ખડકવામા આવે છે કોઈ મૃત વ્યક્તિના સ્મરણાર્થે જે ભવન આદિ બનાવાય
છે તેને ચૈત્ય કહે છે કિલ્લાની દિવાલની ચારે તરફ જે જાડી ખાઈ હોય છે, અને
જેમા પાણી પણ ભરેલું રહે છે તે ખાઈને ખાતિકા ખાઈ કહે છે ઘર પાસેના
ખાગને આરામ કહે છે નગરથી દુર જે લોકોનું ક્રીડા સ્થાન હોય છે

સભ ઘનાયા જાતા હૈ વહ સ્તૂપ હૈ । પ્રાકાર-જિસે હિન્દી ભાષા મે ગઢ
કહતે હૈ । નગર મે પ્રવેશ કરને કા જો પ્રધાન દ્વાર હોતા હૈ ઉસકા
નામ ગોપુર હૈ । ડુમજિલે આદિ મકાનોં કે છત કો અટારી કહતે હૈ ।
દુર્ગ ઓર નગર કે વીચ મેં જો આઠ હાથ પ્રમાણ કા માર્ગ હોતા હૈ કિ
જિસસે હોકર હાથી આદિ આતે જાતે રહતે હૈ ઉસકા નામ ચરિકા હૈ ।
જલ કી ધારા પ્રવાહ કો પાર કરને કે લિયે જો પાપાણ અથવા કાષ્ઠ કા
ઉસ પર માર્ગ બના દિયા જાતા હૈ ઉસકા નામ સક્રમ હૈ । એસે સ્થાન
નદી નાલોં આદિ જલાગય પ્રદેશોં પર બને હુણ રહતે હૈ । રાજમહલ
પ્રસિદ્ધ હૈ, હસે સસ્કૃત ભાષા મેં પ્રાસાદ કહતે હૈ । ભવન-લમ્બાઈ કી
અપેક્ષા કુછ થોડી કમ ડુંચાઈ ચાલા હોતા હૈ । તથા જો પ્રાસાદ હોતા હૈ
વહ ભવન કી અપેક્ષા દ્વિગુણિત ડુંચાઈ ચાલા હોતા હૈ । સામાન્યઘર કા
નામ શરણ હૈ । પર્વત કે પાસ જો પથરોં કે ઘર બને હુણ હોતે હૈ ઉનકા
નામ લયન હૈ । દુકાન કા નામ હટ્ટ યા હાટ હૈ । પરિષ્કૃત ભૂમિ કા નામ
વેદિકા હૈ । દેવકુલ-યક્ષાઘતન-યક્ષ કે સ્થાન કો કહતે હૈ । જિસ સભા-
સ્થાન મેં ચિત્ર હોતે હૈ ઉસકા નામ ચિત્રસભા હૈ । જરા લોગોં કો પાની
પિલાયા જાતા હૈ ઉસકા નામ પ્યાઝ હૈ । યજ્ઞશાલા કા નામ આયતન,
તાપસાશ્રમ કા નામ આવસય, પૃથ્વી કે નીચે બને હુણ ઘર કા નામ

વિહાર કહે છે સ્મારક ન્તાલને સ્તૂપ કહે છે કિલ્લાને પ્રાકાર કહે છે નગરમા
પ્રવેશ કરવાનું જે મુખ્યદ્વાર હોય છે તેને ગોપુર કહે છે જે માળના આદિ
મકાનોની અગાળીને અટારી કહે છે દુર્ગ અને નગરની વચ્ચે જે આઠ હાથ
પહોળો માર્ગ હોય છે, કે જ્યાં થઈ હાથી આદિ આવે જાય છે, તે માર્ગને
ચરિકા કહે છે પાણીના પ્રવાહને ઓળંગવાને માટે તેના પર પથ્થર અથવા
લાકડાનો જે માર્ગ બનાવવામા આવે છે તેને સક્રમ (પુલ) કહે છે એવા સ્થાનો
નદી, નાળા, આદિ જળાગચો પર બનાવેલા હોય છે રાજમહેલ શબ્દ જાણીતો
છે તેને સસ્કૃત ભાષામા પ્રાસાદ કહે છે ભવનની બિચાર પ્રાસાદ કરતા ઓછી
હોય છે ભવન કરતા પ્રાસાદની બિચાર જમણી હોય છે સામાન્ય ઘરને શરણ
કહે છે પર્વતની પાસે પથ્થરોના જે ઘરો હોય છે તેમને લયન કહે છે દુકા-
નને હટ્ટ અથવા હાટ કહે છે ચોતરાને વેદિકા કહે છે દેવકુલ યક્ષાતન યક્ષના
સ્થાનને કહે છે જે સભાસ્થાનમા ચિત્રા હોય છે, તે સભાસ્થાનને ચિત્રસભા કહે
છે જ્યાં લોકોને પાણી પાવામા આવે છે તે જગ્યાને પ્યાઝ-પરણ કહે છે
યજ્ઞશાળાને આયતન, તાપસના આશ્રમને આવસય, જમીનની અદર બનાવેલ

અથાઅપ્કાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘જલ ચ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્— જલં ચ મજ્જણય-પાણ-ભોયણ-વત્થ ધોવણ-
સોયમાદૃષ્ઠિ ॥સૂ૦૧૫॥

ટીકા—‘મજ્જણય’ મજ્જનક=સ્નાન ‘પાણ’ પાન ‘ભોયણ’ ભોજન ‘વત્થધોવ-
ણ’ વસ્ત્રધોવન=વસ્ત્રપ્રક્ષાલન ‘સોય’ શૌચમ્ ‘આદૃષ્ઠિ’ આદિભિઃ=મજ્જનાયનેક
કારણૈઃ ‘જલ ચ’=અપ્કાય હિંસન્તિ ॥સૂ૦૧૫॥

અથાગ્નિકાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘પયણ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પયણ-પયાવણ-જલણ-જલાવણ-વિદસણેર્હિ અ-
ગર્ણિ ॥સૂ૦૧૬॥

ટીકા—‘પયણ’ પચન-સ્વય, ‘પયાવણ’ પાચનમન્યૈઃ ‘જલણ’ જ્વલન=સ્વહ
સ્તેન પ્રદીપનમ્, ‘જલાવણ’ ઝ્વાલનમ્=અન્યૈઃ, ‘વિદસણ’ વિદર્શન=પ્રકાશકરણમ્,
અર્થિઃ કારણૈઃ=પ્રયોજનૈઃ ‘અગર્ણિ’ અગ્નિ હિંસન્તિ ॥સૂ૦૧૬॥

ભૂમિઘર યા તલઘર, તલૂં કા નામ પટ્ટઘર, અથવા મડપ છે । ચાદી સોને
કે બને હુણ વર્તનો કા નામ યહા ભાજન એવ મિટ્ટી કે બને હુણ વર્તનો કા
નામ ભાડ છે । ઉદ્દલ (ઓલ્લી) તથા મુસલ આદિ કો યહા ઉપકરણ
સે ગ્રહણ કિયા છે ॥સૂ૦ ૧૪॥

અથ અપ્કાય કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હૈ—
‘ જલ ચ મજ્જણ ય ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(મજ્જણય) સ્નાન, (પાણ) પાન, (ભોયણ) ભોજન,
(વત્થધોવણ) વસ્ત્રપ્રક્ષાલન, (સોય) શૌચ, ઇત્યાદિ કારણોં કો લેકર
(જલ ચ) અપ્કાય-જલકાય કી હિંસા કરતે હૈ ॥ સૂ૦૧૫ ॥

અથ અગ્નિકાય કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કરતે

ઘરને ભૂમિઘર અથવા તલઘર અને તલૂંને પટ્ટઘર અથવા મડપ કહે છે ત્યાહી
સોનામાથી બનાવેલા વાસણોને ભાજન અને માટીમાથી બનાવેલા વાસણોનેભાડ કહે
છે આડણિયો તથા સાબેલા આદિને અહીં ઉપકરણથી ગ્રહણ કરેલા છે ॥ સૂ ૧૪ ॥

હવે અપ્કાય (જળકાય)ની હિંસા કરવાના પ્રયોજનને સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે
“ જલ ચ મજ્જણ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ મજ્જણય ” સ્નાન, “ પાણ ” પાન “ ભોયણ ” ભોજન,
“ વત્થધોવણ ” વસ્ત્રધોવા, “ સોયા ” શૌચ ઇત્યાદિ કારણોને લીધે અપ્કાય
જળકાયની હિંસા થાય છે ॥સૂ૦ ૧૫॥

હવે અગ્નિકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર બતાવે છે—

અથ વાયુકાયદિસાકારણાન્યાદ—‘ સુપ્પ ’ રૂપાદિ ।

મૂળમ્—સુપ્પ-વિયળ-તાલિયંટ-પેહુળ-મુહ-કરયલ સગ્ગપત્ત-
વત્થ ઇવમાદ્દિહિ અણિલં ॥ સૂ ૧૭ ॥

ટીકા—‘ સુપ્પ ’ રૂપઃ=અન્નશોધનોપકરણવિશેષ, ‘ છાજ ’ ‘ સૂપડા ’ રૂપે
ભાષાપ્રમિદ્ધઃ ‘ વિયળ ’ વ્યજન=વજ્રગ્લાકાદિનિર્મિતમ્, ‘ તાલિયંટ ’ તાલવૃન્ત ‘ તા-
લપત્તા ’ રૂપે પ્રસિદ્ધમ્, ‘ પેહુળમ્ ’ પેહુળક=મયૂરપિચ્છકૃતવ્યજનં ‘ મુહ ’ મુખ

હૈ—‘ પયળપયાવળ ’ રૂપાદિ ।

ટીકાર્થ—(પયળ-પયાવળ-જલળ-જલાવળ-વિદસળેહિ અગ્નિ) સ્વય
ભોજનચનાના, દૂસરોંસે ભોજન વનવાના, સ્વય અગ્નિ જલાના, દૂસરોંસે
અગ્નિ જલવાના, તથા દીપક જલાકર પ્રકાશ કરના, રૂપાદિ પ્રયોજનો
કો લેકર અગ્નિકાય કી હિસા કરતે હૈ ॥ સૂ ૧૬ ॥

વાયુકાય કી હિસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કહતે હૈ—
‘ સુપ્પવિયળ ’ રૂપાદિ ।

ટીકાર્થ—(સુપ્પ વિયળ-તાલીઘટ પેહુળ મુહ-કરયલ સગ્ગપત્તવત્થઇવમા-
દ્દિહિ અણિલ) સૂપસે જવ પછાડર કર અન્ન આદિ શોધન કરતે હૈ તવ,
વજ્રગ્લાકા આદિસે નિર્મિત પલ્લેસે જવ હવા કી જાતી હે તવ, તાલ-
વૃક્ષ કે પત્તેસે વને હુપ્ પલ્લેસે જવ હવા કી જાતી હૈ તવ, મયૂર કે
પિચ્છોંસે નિર્મિત પલ્લેસે જવ હવા કી જાતી હૈ તવ, મુખ

“ પયળપયાવળ ” રૂપાદિ

ટીકાર્થ—“પયળ, પયાવળ, જલળ, જલાવળ, વિદસળેહિ અગ્નિ” જાતે ભોજન
ખનાવવાને, ખીજ પામે ભોજન ખનાવરાવવાને, પોતે અગ્નિ સળગાવવાને, અન્ય
પામે અગ્નિ સળગાવરાવવાને, તથા દીવો સળગાવીને પ્રકાશ કરવા, રૂપાદિ પ્રયો-
જનોને માટે અગ્નિકાયની હિસા કરે છે ॥ સૂ ૧૬ ॥

હવે વાયુકાયની હિસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—

“ સુપ્પ વિયળ ” રૂપાદિ

ટીકાર્થ—“સુપ્પ, વિયળ, તાલિયંટ, પેહુળ, મુહ, કરયલ સગ્ગપત્ત વત્થ ઇવમાદ્દિહિ
અણિલ” જ્યારે સૂપડા વડે ઓટકીને અનાજ સાફ કરાય છે ત્યારે, વાસની
સળીઓ આદિમાથી ખનાવેલા પાણી વડે જ્યારે હવા ખવાય છે ત્યારે, તાડના
પાનામાથી ખનાવેલ પાણી વડે જ્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, મોરના પીછામાથી
ખનાવેલ પાણી વડે જ્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, જ્યારે કોઈ નિમિત્તે મુખથી

‘કરયલ’ કરતલ=હસ્તતલ ‘સગ્ગપત્ત’ સાગપત્ર=ઘૃક્ષવિશેષપત્ર ‘વત્થ’ ઘસ્ટમ્, ‘એવ-માઇપ્પહિ’ એવમાદિમિઃ=શ્યાદિમિર્યાયૂદીરકપ્રિધુઘ્નજનાદિસાધનૈઃ ‘અણિલ’ અનિલ=વાયુ હિસન્તિ ॥સૂ૦ ૧૭॥

અથ વનસ્પતિકાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘અગારે’ત્યાદિ ।

મૂલમ્—અગાર- પરિયાર-ભવલ-ભોયણ--સયણાસણ-ફલગ-મુસલ-ઉલલ-તત-વિતતાતોજ-વહણ-વાહણ-મંડગ-વિવિહભવણ-તોરણ-વિટંગ-દેવકુલ-જાલયદ્ધચદ-નિજ્જૂહગ-ચંદ-સાલિય-વેદ્ય-ણિસ્સે-ણિદોણિ-ચંગેરી-સ્વીલ-મંડવ સમા-પવા-SSવસહ-ગધમહાણુ-લેવણં-વર-જુય-નગલ-મેદ્ય-કુલિય-સદણસીયા રહ-સગડ-જાણ-જોગ-અટ્ટાલગ-ચરિઅદાર-ગોપુર-ફલિહા-જંત-સૂલિયા લુડ-મુસંઢિ-સયગ્ધી-વહુપહરણા-વરણુવલ્લરાણ કણ અણેહિ એવમા-ઇપ્પહિં વહુહિ કારણસણ્ણહિ હિસતિ તરુગણે મણિપ્પ અમણિપ્પ ય એવમાઈ ॥ સૂ૦ ૧૮ ॥

સે જબ કિસી નિમિત્ત ફૂક મારી જાતી હૈ તબ, ઓર છુલે મુહ બોલતે હૈં તબ, જબ હાથોં સે તાલી બજાઈ જાતી હૈ તબ, જબ પત્ર શાક કે પત્તોં કો સાફ કરને કે લિયે ઉન્હેં હાથ પર ઘટકારા જાતા હૈ તબ, ઓર જબ ઘસ્ટ કે અચલ સે હવા કી જાતી હૈ તબ, તથા બિજલી આદિ કે પલ્લોં સે જબ હવા કી જાતી હૈ તબ વાયુકાય કે જીવોં કી હિંસા હોતી હૈ । તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ જિતને મી વાયૂદીરક સાધન હૈ ઉન સે વાયુ કાય કે જીવોં કી હિંસા હોતી હૈ ॥સૂ-૧૭॥

અવ વનસ્પતિ કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કહતે હૈ—

કુક મારવામા આવે છે ત્યારે, ન્યારે ખુદ્દે મોઢે ખોલવામા આવે છે ત્યારે ન્યારે હાથો વડે તાળી વગાડવામા આવે છે ત્યારે, ન્યારે શાકના પાનને સાફ કરવાને માટે હાથથી ઘાટડવામા આવે છે ત્યારે તથા વીજળી આદિના પખા વડે ન્યારે હવા ખાવામા આવે છે ત્યારે વાયુકાય જીવોની હિંસા થાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે હવા ખાવાના જેટલા સાધનો છે તેમનાથી વાયુકાય જીવોની હિંસા થાય છે ॥સૂ ૧૭॥

હવે વનસ્પતિકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે.

टीका—‘अगार’ अगार=गृह ‘परियार’ परिचारः=जीविकाः, खद्गादि कोशो
 वा ‘भक्ख’ भक्ष्याणि=मोदकादीनि ‘भोयण’ भोजनानि=ओदनादीनि, ‘सयणासण’
 शयनासनानि-शयनानि=मञ्च पर्यङ्गादिशय्याः; आसनानि-भद्रासनादीनि ‘फलग’
 ‘फलकानि=काष्ठनिर्मितवस्तुविशेषाः ‘तख्ता’ इति भाषा प्रसिद्धानि ‘मुसलमुदूखल’
 च प्रसिद्धम्, ततानि=वीणादीनि-वित्तानि=मुरजभेर्यादीनि, ‘आतोज्ज’
 आतोद्यानि=वाद्यविशेषाः, ‘वहण’ वहनानि=पोतनौकादीनि यानपात्राणि ‘वाहण’
 वाहनानि=शिचिकादीनि ‘भडग’ भाण्डानि=गृहोपकरणानि, ‘विचिहभवण’ विविध
 भवनानि=सर्वतोभद्रादिभवनानि, तोरणानि=द्वारशोभाकारिवन्दनमालादीनि,
 ‘विटग’ विटङ्काः=कपोतपालेयः ‘छज्जा’ इति भाषा प्रसिद्धाः, देवकुलानि=यक्ष
 गृहाः, ‘जालय’ जालकानि=गवाक्षविशेषाः, ‘अद्धचंद’ अर्धचन्द्राः=अर्धचन्द्राकार-
 ‘अगार-परियार-भक्ख’ इत्यादि।

टीकार्थ—(अगार) अगार-गृह, (परियार) परिचार-जीविका अथवा
 खद्गादिकोश-म्यान, (भक्ख) भक्ष्य-मोदक आदि खाने योग्य द्रव्य,
 (भोयण) भोजन-ओदनादि द्रव्य, (सायणासण) शयनासन-मञ्च पर्यङ्क
 आदि शय्या, भद्रासन आदि आसन, (फलग) फलक-काष्ठनिर्मित
 वस्तुविशेष-तख्ता, (मुसल) मुसल, उदूखल-ओखली (तत) तत-वीणा
 आदि वाद्य (वित्तत) वितत-मुरज भेरी आदि वाजे, (आतोज्ज) आतोद्य
 वाद्यविशेष, (वहण) वहन-पोत, नौका आदि यान पात्र, (वाहण) वाहण
 शिचिका आदि, (भडग) भडक-गृहके उपकरण, (विचिहभवण) विविध
 भवन-सर्वतोभद्र आदि मकान, (तोरण) तोरण-द्वार की शोभा वर्धक
 वदन-माला आदि, (विटग) विटक-कपोतपाली-छज्जा, (देवकुल)
 देवकुल यक्षगृह, (जालय) जालकगवाक्ष-खिडकी, (अद्धचंद) अर्धचन्द्राकार

“अगार, परियार-भक्ख” इत्यादि

टीकार्थ—“अगार”अगार-गृह “परियार” परिचार-जीविका अथवा तलवार
 आदिनु म्यान “भक्ख” लक्ष्य-लाडु आदि भावा लायक द्रव्य “भोयण” भोजन-
 लात आदिद्रव्य “सयणासण” शयनासन-आटलो पलंग आदि शय्याना साधने,
 भद्रासन आदि आसन “फलग” इलक लाकडानी पाट, पाटियु “मुसल” साजेनु,
 छद्मफल-आडणियो “तत” तत वीणा आदि वाद्य “वित्तत” वितत-मुरज भेरी
 आदि वाद्यो “आतोज्ज” आतोद्य-एक प्रकारनु वाद्य विशेष “वहण” वहन
 पोत नौका आदि, वहन-पालणी आदि “भडग” लडक गृहना उपकरणो,
 “विचिहभवण” विविध भवन-सर्वतोभद्र आदि मकान “तोरण” द्वारनी शोभा
 वर्धनार वहनमाला आदि “विटग” विटक-छण्डु “देवकुल” यक्षगृह “जालय”
 जालक-गवाक्ष गारी “निज्जहग” गारी “अद्धचंद” अर्धचन्द्र अर्धचन्द्राकार सोपान

સોપાનવિશેષ, 'નિજ્જૂહગ' નિર્યૂહકાણિ=દ્વારોર્ધ્વમાગપદિર્નિર્ગતાઃ ઘોટકાપા-
કારાઃ કાઠવિશેષાઃ, 'ચદસાલિય' ચન્દ્રશાલિકાઃ=પ્રાસાદોપરિતનશાલાઃ 'વેદ્ય'
વેદિકા=માઙ્ગળે કૃતોપવેશનસ્થાનમ્, 'નિસ્સેણિ' નિશ્રેણિઃ 'સીદી' ઇતિ પ્રસિદ્ધા
'દોણિ' દ્રોણિઃ=લઘુનૌકા, 'ચગેરી' તૃણાદિનિર્મિતપાત્રવિશેષઃ 'ટોકરી' ઇતિ
ભાષા પ્રસિદ્ધા દેશીશબ્દોઽયમ્, 'સ્વીલ' કીલા =પ્રસિદ્ધા, 'મડવ' મણ્ડપાઃ=પટ-
ગૃહાઃ, દ્રાક્ષાદિમણ્ડપા વા, સમાઃ=જનોપવેશનસ્થાનાનિ, 'પવા' પ્રવાઃ પાનીય-
શાલાઃ, 'આવસહ' આવસથાઃ=તાપસાશ્રમાઃ 'ગધ' ગન્ધાઃ=ગન્ધદ્રવ્યાણિ, 'મલ્લ'
માલ્યાનિ=કુસુમાનિ=માલ્ય=કુસુમસંગ્રહા, 'અણુલેવણ' અણુલેપનં=ચન્દન,
'અવર' અમ્બરાણિ=વસ્ત્રાણિ, 'જુય' યુગાનિ 'જૂસરા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ,
'નગલ' લાઙ્ગલાનિ હલાનિ, 'મેદ્ય' મેતિકાનિ યૈઃ કૃષ્ણક્ષેત્ર મૃદ્યતે, 'કુલિય' કુલિ-
કાનિ હલભેદા 'સદણ' સ્યન્દનો રથવિશેષાઃ, 'સીયા' શિવિકાઃ- 'પાલ્ખી' ઇતિ

સોપાનવિશેષ, (નિજ્જૂહગ) નિર્યૂહક-દ્વારકે ઉર્ધ્વભાગમેં ત્રાહર કી ઓર
લગે હુએ ઘોડા આદિ કે આકાર વાલે કાઠ વિશેષ, (ચદસાલિય)
ચદ્રશાલિકા-પ્રાસાદ કે ઊપરની શાલા, (વેદ્ય) વેદિકા-આગનમેં બેઠને
કે લિયે બના હુઆ સ્થાન, (નિસ્સેણિ) નિઃશ્રેણી-નસેની-સીદી, (દોણિ)
દ્રોણી-લઘુનૌકા હોડી, (ચગેરી) ચગેરી-તૃણાદિસે બના હુઆ પાત્ર વિશેષ,
જિસે ચગેર ખી કહતે હૈ, (સ્વીલ) કીલા, (મડવ) મડપ-પટગૃહ અથવા
દ્રાક્ષાદિ મડપ, (સમા) સમા-મનુષ્યોંકે બેઠને કા સ્થાન, (પવા) પ્રપા-
પ્યાજ, (આવસહ) આવસથ-તાપસાશ્રમ, (ગધ) ગધ-સુગંધિ દ્રવ્ય,
(મલ્લ) માલ્યકુસુમ આદિ માલા-કુસુમોં કી ગુથી હુઈ પુષ્પમાલા, (અનુ-
લેવણ) અણુલેપન-ચદન, અમ્બર-વસ્ત્ર, (જુય) યુગ-જૂસરા-જુવારી,
(નગલ) લાગલ-હલ, (મેદ્ય) મેતિક-વસ્ત્ર, જિસસે જુતા હુઆ સ્વેત

વિશેષ, નિર્યૂહક-ખારણાની ઉપર બહારની બાબુએ લગાડેલ ઘોડા આદિના
આકારના કાઠ વિશેષ "ચદસાલિય" ચદ્રશાલિકા-પ્રાસાદના ઉપરની શાળા
"વેદ્ય" વેદિકા-આગળામા બેસવા માટેનો ચોતરો, "નિસ્સેણિ" નિશ્રેણી
નિસરણી, "દોણિ" દ્રોણી નાની નૌકા 'ચગેરી' ચગેરી તૃણાદિમાથી બનાવેલ પાત્ર
વિશેષ જેને ચગેર પણ કહે છે "સ્વીલ" ખૂટો "મડવ" મડપ-તખ્ત અથવા
દ્રાક્ષાદિનો મડપ "સમા" સભા-માણસોને બેસવાનું સ્થાન "પવા" પ્રપા પરબ
"આવસહ" આવસથ-તાપસોનો આશ્રમ "ગધ" ગધ-સુગંધિ દ્રવ્ય "મલ્લાણુલેવણ,
મડલ-માલ્ય કુસુમ આદિની માળા, અણુલેપન ચદન, અમ્બર વસ્ત્ર "યુગ" જૂસરા
ખૂસરી "નગલ" લાગલ હળ "મેદ્ય" મેતિક વસ્ત્ર જેનાથી બેઠેલુ બેતર એક

પ્રસિદ્ધાઃ, 'રહ' રથાઃ-પ્રસિદ્ધાઃ, 'સગડ' શકટાનિ=પ્રસિદ્ધાનિ, 'જાણ' યાનાનિ=શકટવિશેષાઃ, 'જોગ' યુગ્યાનિ=જમ્પાનવિશેષાઃ, 'અટાલગ' અટ્ટાલકા=પ્રાકારોપસ્થિતિ સ્થાનવિશેષાઃ 'ચરિઅ' ચરિકા=નગરપ્રાકારમધ્યસ્થાપ્તપ્રમાણમાર્ગાઃ 'દાર' દ્વારાણિ=પ્રસિદ્ધાનિ, 'ગોપુર' પુરદ્વારાણિ, 'ફલિહ' પરિઘા અર્ગલાઃ 'યત્તા' યન્ત્રાણિ=પ્રસિદ્ધાનિ 'સૂલિયા' શૂલિકાઃ=શૂલારોપણકાષ્ઠાનિ, 'લુડ' લકુટાઃ=યટ્થઃ, 'મુસદ્દિ' શસ્ત્રવિશેષાઃ, 'સયમ્ધી' શતઘ્ન્ય=શસ્ત્ર વિશેષા, મહાશિલાસુ યા ઉપરિષ્ઠાત્ પાતિતા સત્યઃ શતાનિ ધનન્તિ, એવ 'વહુ' ગહ્નિ=અનેકાનિ 'પહરણ' મહરણાનિ=શસ્ત્રાણિ સ્વદ્ગતોમરતીરાદીનિ 'આવરણ' આવરણાનિ=સ્ફુરકાણિ 'છરપલા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ ઉચ્ચસ્વરાણ 'ઉપસ્કરાણિ=ગૃહોપકરણાનિ, કપાટાદીનિ, તેષા 'વપ' કૃતે=એતદર્થે, તથા 'અળ્લેહિય' અન્યેથ, 'એમાહ્એહિ' એમાદિકૈઃ

એકસા ક્રિયા જાતા હૈ, (કુલિય) કૂલિક-રહવિશેષ, સ્યદન-રથવિશેષ, (સીયા) શિકા-પાલગ્વી, (રહ) રથ-સામન્ય રથ (સગડ) શકટ-ગાડા, (જાણ) યાન-વાહન વિશેષ, (જોગ) યુગ્ય-જમ્પાન વિશેષ, (અટાલગ) અટ્ટાલક-પ્રાકાર કે ઉપર કા સ્થાન વિશેષ (ચરિકા) ચરિકા-નગર ઓર કોટ કે મધ્ય કા આઠ હાથ પ્રમાણ કા માર્ગવિશેષ, (દાર) દ્વાર, (ગોપુર) ગોપુર-પુરદ્વાર (ફલિહ) પરિઘા-અર્ગલા વેંડા, (યત્તા) યત્ર, (સૂલિયા) શૂલિકા - શૂલારોપણ કાષ્ઠ (લુડ) લકુટ-યટ્થિ-ઝડી, (મુસદ્દિ) મુસદ્દી શસ્ત્રવિશેષ, (સયમ્ધી) શતઘ્ની-શસ્ત્રવિશેષ જિસસે એક હી વારમે સૌ મનુષ્ય માર દિસ જાતે હૈ તથા (વહુપહરણ) અનેક પ્રહરણ-શસ્ત્રસ્વદ્ગતોમર,તીર આદિ, આવરણ-છરપલા,(વરણુસ્વરાણકણ) ઉપસ્કર-કપાટ આદિ ગૃહકે ઉપકરણ હન સત્રકે લિયે તથા (અળ્લેહિ એમાહ્એહિ)

સરખુ કરવામા આવે છે "કુલિય" કુલિક એક પ્રકારનુ હથ "સદન" સ્યદન એક જાતનો રથ "સીયા" શિકા પાલગ્વી "રહ" રથ "સગડ, શકટ ગાડુ 'જાણ" યાન વાહન વિશેષ "જોગ" યુગ્ય જે પ્રાણીથી જે ચાતા વાહનો "અટાલગ" અટ્ટાલક કિલ્લાની ઉપરનુ ખાસ પ્રકારનુ સ્થાન "ચરિય" ચરિકા નગર ડોટની વચ્ચેનો આઠ હાથની પહોળાઈનો માર્ગ વિશેષ "દાર" દ્વાર "ગોપુર" ગોપુર શહેરનુ મુખ્ય દ્વાર "ફલિહા" પરિઘા આગળિયો "જત" યત્ર શૂલિકા "સૂલિયા" શૂળીએ ચડાવવા માટેનુ કાષ્ઠ "લુડ" લકુટ યટ્થિ છડી "મુસદ્દિ" મુસદ્દી શસ્ત્રવિશેષ "સયમ્ધી" શતઘ્ની એકજાતનુ શસ્ત્ર જેનાથી એક જ વારમા સૌ માણસો મારી શકાય છે, તથા "વહુપહરણ" અનેક પ્રહરણ શસ્ત્ર ખડગ તોમર તીર આદિ "વરણુસ્વરાણકણ" આવરણુ ઉપસ્કર કપાટ આદિ ધરમાના ઉપકરણો એ બધાને માટે તથા

एव प्रकारैः 'बहुहि' बहुभिः 'कारणसएहि' कारणगतैः=प्रयोजनगतैः 'भणिए' भणितान् उक्तान् 'अभणिए य' अभणिताश्च=अनुक्ताश्च, एवमादीनुक्तप्रकारान् 'तरुगणे' तरुगणान्=वनस्पतिसमूहान् 'हिंसति'=विनाशयन्ति ॥सू० १८॥

કીદશાન્ જીવાન્ કીદશા હિંસકાઃ કિમર્થ ધનન્તિ ? इत्याह—‘सत्ते’ इत्यादि।

मूलम्—सत्ते सत्तपरिवज्जिए उवहणंति दढमूढा दारुण-
मई कोहा साणा माया लोभा हासा रती अरती सोय वेदत्थ
जीय धम्मत्थ कामहेऊ सवसा अवसा अट्टाए अणट्टाए य तस-
पाणे थावरे य हिंसति ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘दढमूढा’ दढमूढाः=सातिशयविवेकविकलाः, ‘दारुणमई’ दारु-
णमतयः=क्रूराशयाः जना, ‘सत्तपरिवज्जिए’ सत्तपरिवर्जितान्=बलहीनान्

और भी इनसे अतिरिक्त (बहुहिं कारणसएहिं) अनेक प्रयोजनों के
लिये (भणिए अभणिए य) जो यहाँ पर कहे गये और जो नहीं कहे गये
हैं, (एवमाई) उन सब तरुगण वनस्पति समूहकी हिंसा करते हैं। ससारी
अधुधजन इन पूर्वोक्त वस्तुओं के निर्माण के लिये वृक्षों को काटते हैं।
वृक्षों को काटना ही वनस्पति जीवों की हिंसा करना है। इन उपर्युक्त
वस्तुओं का निर्माण वृक्षों के काष्ठ से होता है। ॥ सू० १८ ॥

પ્રસ સ્થાવર જીવોં કો કૈસે ૨ ભાવોં સે યુક્ત હોકર હિંસક જન
મારતે હૈં સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈં—‘સત્તે સત્તપરિ-
વજ્જિએ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(दढमूला) जो सातिशय विवेक से विकल हैं—जिनेके विवेक

“અણેહિં એવમાઈણિ” તે સિવાયના “બહુહિં કારણસએહિં” બીજા પણ
અનેક પ્રયોજનોને માટે “ભણિએ અભણિએ ચ” કે જે અહીં કહેવાયા છે કે
નથી કહેવાયા “એવમાઈ” તે બધા તરુગણ વનસ્પતિ સમૂહની લોકો હિંસા
કરે છે સસારી અધુધ લોકો પૂર્વોક્ત વસ્તુઓ બનાવવાને નિમિત્તે વૃક્ષોને કાપે
છે વૃક્ષોને કાપવા એ જ વનસ્પતિ જીવોની હિંસા છે ઉપર કહેલી વસ્તુઓ
વૃક્ષોના કાષ્ઠમાથી થાય છે ॥ સૂ. ૧૮ ॥

પ્રસ સ્થાવર જીવોને કેવા કેવા ભાવોથી યુક્ત થઈને હિંસક જન મારે છે
તેનું આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—“સત્તે સત્તપરિવજ્જિએ” इत्यादि

टीकार्थ—“दढमूला” જે અતિશય વિવેકથી વિકલ છે જેમના વિવેકરૂપ અંગઓ

દીનાનુ 'સત્તે' સત્તાનુ=પૃથિવ્યાદીનુ 'ઉવહ્ણતિ' ઉવહ્ણન્તિ=માસ્યન્તિ, કસ્માદિ-
ત્યાહ—'કોદા' ક્રોધાત્, 'માણા' માનાત્ 'માયા' માયાયા =રૂપટાત્ 'લોભા'
લોભાત્ 'હાસા' હાસ્યાત્ 'રહ' રત્તે =રાગાત્ 'અરહ' અરત્તે:=દ્વેષાત્ 'સોય' શોકાત્
'ઉવહ્ણન્તિ' इति सम्बन्धः । निमर्थम् ? इत्याह—'वेयत्यजीयधम्मत्थकामहेऊ'
वेदार्थजीवधर्मार्थकामहेतोः, अत्र हेतुशब्दस्य प्रत्येकमभिसम्बन्धः । 'वेयत्य'
वेदोक्तानुष्ठान, 'जीयः' जीवः=जीवन, 'धम्म' धर्मः=कुलजात्यादिलक्षणः,
'अत्य' अर्थः=धन, 'काम' कामाः=शब्दादयः इत्येतेषा हेतोः=कारणात् 'सवसा'
स्ववशाः=स्वाधीनाः सन्तः, 'अवसा' अवशाः=पराधीनाः-परनिर्देशवर्तिनः,
'अट्ठाए' अर्थाय=प्रयोजनाय 'अणट्ठाए' अनर्थाय-अप्रयोजनाय-निरर्थकमित्यर्थः

રૂપ ચક્ષુઓ પર અજ્ઞાન કા પર્દા પડ્યા હતા હૈ । ઓર (દારુણમર્દ) જિનકે
પરિણામ અત્યંત ક્રૂર ઘન થુકે હુ એસે પ્રાણી (સત્તપરિવર્જિત) થલ
હીન દીન (સત્તે) પૃથિવ્યાદિક જીવોં કી (ઉવહ્ણતિ) વિરાધના કરતે
હૈ-વહ વિરાધના કિમ્ કારણ સે કરતે હૈ સો કહતે હૈ (કોદા, માણા,
માયા, લોભા, હાસા, રતિ, અરતિ, સોય) ક્રોધ, માન, માયા, લોભ,
હાસ્ય, રતિ, અરતિ, શોક સે કરતે હૈ । અર્થાત્ ડન પરિણામો સે
યુક્ત હોકર હિંસક પૃથિવી આદિક જીવોં કી હિંસા કરતે હૈ ।
કિસલિયે કરતે હૈ ? (વેયત્ય જીયધમ્મત્થકામહેऊ) વેદાર્થ, જીવન, ધર્મા-
ર્થકામ કે લિયે કરતે હૈ, યહાં હેતુ શબ્દ કા સત્ત્વ પ્રત્યેક કે સાથ મેં
કર લેના ચાહિયે-વેદાર્થ વેદોક્ત અનુષ્ઠાન કે લિયે, જીવન કે લિયે, ધર્મ
કે લિયે, અર્થ-ધન-કે લિયે, કામ-શબ્દાદિક પાચોં ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં
કે લિયે, ઇન્હી સત્ત્વ કારણ કલાર્પોં કો લેકર (સવસા) સ્વાધીન અથવા
(અવસા) પરાધીન હોકર (અટ્ઠાણ) પ્રયોજન કે લિયે અથવા (અણટ્ઠાણ ય)

પર અજ્ઞાનનેા પર્દા પડેલ છે, અને “દારુણમર્દ” જેમની વૃત્તિઓ અત્યંત ક્રૂર
બની ગઈ છે એવા હોયો “સત્તપરિવર્જિત” બલહીન, દીન “સત્તે” પૃથ્વીકાય
આદિ હોયોની “ઉવહ્ણતિ” હત્યા કરે છે તે હિંમા કયા કયા કારણે કરે છે તે સૂત્ર-
કારકહે છે—“કોદા, માણા, માયા, લોભા, હાસા, રતિ, અરતિ, સોય” ક્રોધ, માન,
માયા, લોભ, હાન્ય, રતિ, અરતિ, શોક આદિ વૃત્તિઓથી યુક્ત થઈને હિંસક
હોયો પૃથિવીકાય આદિ હોયોની હિંમા કરે છે શા માટે તેમ કરે છે? “વેયત્ય
જીય ધમ્મત્થકામહેऊ” વેદાર્થ, જીવન, ધર્માર્થકામને માટે તેમ કરે છે વેદાર્થ-
વેદોક્ત ધર્મ ક્રિયાઓને માટે, જીવનને માટે, ધર્મને માટે, અર્થ-ધનને માટે,
કામ-પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયને માટે, એ બધા કારણ સમૂહોને લીધે “સવસા”
સ્વાધીન અથવા “અવસા” પરાધીન હોવામા હોવાથી “અટ્ઠાણ” પ્રયોજનને

‘તસપાણે’ ત્રસપ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્ જીવાન્ ‘થાવરે ચ’ સ્થાવરાંશ્ચ પૃથિવીકાયા-
દીન્ હિંસન્તિ=ઘ્નન્તિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

ઉક્તાર્થમેવ વિશદયન્નાહ—‘મદબુદ્ધિયા’ इत्यादि ।

મૂળમ્—મંદબુદ્ધિયા સહસા હળંતિ, અવસા હળંતિ, સવસા
અવસાદુહઓ હળંતિ, અટ્ટા હળંતિ, અણટ્ટા હળંતિ, અટ્ટા અણટ્ટા-
દુહઓ હળંતિ, હસ્સા હળંતિ, વેરા હળંતિ, રતી હળંતિ હસ્સા
વેરા રતી હળંતિ । કુદ્ધા હળંતિ, લુદ્ધા હળંતિ, મુદ્ધા હળંતિ, કુદ્ધા-
લુદ્ધા મુદ્ધા હળંતિ, અત્થા હળંતિ, ધમ્મા હળંતિ, કામા હળંતિ,
અત્થા ધમ્મા કામા હળંતિ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘મદબુદ્ધિયા’ મન્દબુદ્ધિકાઃ=મિથ્યાત્વોદયાત્તત્ત્વાત્તત્ત્વવિવેકરહિ-
તમતયઃ, ‘સવસા’ સ્વવશાઃ=સ્વતન્ત્રાઃ સન્તઃ, સ્વેચ્છયા ‘હળંતિ’ ઘ્નન્તિ, ‘અવસા’
અવશાઃ=પરાધીના સન્તઃ ઘ્નન્તિ, ‘સવસા અવસા’ સ્વવશા અવશા ‘દુહઓ’ ઉભયતો

અનર્થ—વિના પ્રયોજન કે લિયે (તસપાણે) દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ
પ્રાણિયોં કી એવ (થાવરે ચ) પૃથિવીકાયાદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર-પ્રાણિયોં
કી (હિંસતિ) હિંસા કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૯ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार
कहते हैं—‘मद बुद्धिया सवसा हणति’ इत्यादि ।

ટીકર્થ—(મદબુદ્ધિયા) મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ કે
વિવેક સે જિનકી બુદ્ધિ શૂન્ય હો રહી હૈ એસે પ્રાણી (સવસા) સ્વતન્ત્ર બનકર
અપની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોં કી (હળંતિ) હિંસા કરતે હૈં ।
इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

‘આતર અથવા “અણટ્ટા” વિના પ્રયોજને “તસપાણે” દ્વીન્દ્રિય આદિ ત્રસ જીવોની
અને “થાવરે ચ” પૃથિવીકાયા આદિ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની “હિંસતિ”
હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમજાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—
“મદબુદ્ધિયા સવસા હળંતિ” इत्यादि

ટીકર્થ—“મદબુદ્ધિયા” મિથ્યાત્વના ઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના
વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા જીવો “સવસા” સ્વતન્ત્ર હોવા છતાં પણ
પોતાની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોની “હળંતિ” હિંસા કરે છે એ જ
પ્રમાણે જે માણસ “અવસા હળંતિ” નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન તે એના.

મન્તિ, અર્થાય, અનર્થાય, તદુભયતો ત્રવિ । હાસ્યાત્ વૈરાત્ રતર્ગ્ગન્તિ, હાસ્યવૈર-
રતિભ્યો મન્તિ । કિંભૂતાઃ સન્તો મન્તી? ત્યાહ 'કુદ્ધા' ઇત્યાદિ । 'કુદ્ધા' કુદ્ધાઃ
=ક્રોધયુક્તાઃ, 'લુદ્ધાઃ' લુદ્ધાન્=વિપયગૃદ્ધાઃ । 'મુદ્ધા' મુદ્ધા =મોહયશાઃ મન્તિ ।

હૈ-વે મી ઇન ત્રસ સ્થાવર જીવોં કી હિંસા કરતે હૈ । (સવસા અવસા
દુહઓ હ્ણન્તિ) તથા સ્વતત્ર ઓર પરતત્ર દોનોં પ્રકાર સે હોકર મી ઇન
જીવોં કી હિંસા કરતે હૈ । તથા (અટ્ટા હ્ણન્તિ) યે જીવ જીવોં
કી હિંસા પ્રયોજન સે કરતે હૈ ઓર (અણટ્ટા હ્ણન્તિ) અનર્થ-વિના પ્રયોજન
કે નિર્થક મી કરતે હૈ (અટ્ટા અણટ્ટા દુહઓ હ્ણન્તિ) કોઈ ૨ ંસે મી
જીવ હૈ । જો કુઝ જીવોં કી હિંસા અપને સ્વાર્થ સે કરતે હૈ । ઓર
કિતનેક જીવોં કી હિંસા સ્વાર્થ ન મી હો તો મી કરતે હૈ । (હસ્સા
હ્ણન્તિ) સસાર મેં ંસે મી હિંસક જીવ હૈ જો જીવોં કી હિંસા હાસ્ય
કે કારણ હી કર ઢાલતે હૈ, (વૈરા હ્ણન્તિ) કિતનેક ંસે મી હૈ જો
જીવોં કી હિંસા વૈર કે નિમિત્ત કો લેકર કરતે હૈ । (રઈ હ્ણન્તિ)
કિતનેક ંસે મી હૈ જો રતિ-આમોદ પ્રમોદકે નિમિત્ત કો લેકર જીવોં
કી હિંસા કરતે હૈ । (હસ્સા વૈરા રતિ હ્ણન્તિ) કિતનેક જીવ ંસે મી
હૈ જો ંક હી સાથ હાસ્ય વૈર ઓર રતિ-આમોદ પ્રમોદ કે નિમિત્ત કો
લેકર જીવોં કી હિંસા કરતે હૈ । વે કૈસે હોકર હિંસા કરતે હૈ-(કુદ્ધા-
હ્ણન્તિ) કિતનેક જીવ ંસે મી હૈ જો ક્રોધી હોકર જીવોં કી હિંસા

પણ એ ત્રસ સ્થાવર જીવોની હિંસા કરે છે “સવસા અવસા દુહઓ હ્ણન્તિ”
તથા સ્વતત્ર અને પરતત્ર, બંને પ્રકારથી યુક્ત થઈને પણ જીવોની હિંસા કરે
છે તથા “અટ્ટાહ્ણન્તિ” તે જીવોની હિંસા તેઓ અર્થ સારણ કરે છે અને
“અણટ્ટાહ્ણન્તિ” અનર્થ-અકારણ-નિર્થક પણ કરે છે “અટ્ટા અણટ્ટા દુહઓ
હ્ણન્તિ” કેઈ એવા પણ જીવો હોય છે કે જેઓ કેટલાક જીવોની હિંસા પોતાના
સ્વાર્થને કારણે કરે છે અને કેટલાક જીવોની હિંસા સ્વાર્થ ન હોવા છતાં પણ
કરે છે “હસ્સા હ્ણન્તિ” સસારમાં એવા કેટલાક હિંસક જીવો પણ છે કે
જેઓ જીવોની હિંસા હાન્ય-આનંદને ખાતર જ કરે છે “વૈરા હ્ણન્તિ” કેટ-
લાક એવા પણ જીવો છે કે જે જીવોની હિંસા વેરને નિમિત્તે કરે છે “રઈ
હ્ણન્તિ” કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે રતિઆમોદ પ્રમોદને ખાતર જીવોના
હિંસા કરે છે “હસ્સા વૈરા રતિ હ્ણન્તિ” કેટલાક જીવો એવા પણ છે કે જેઓ
એક સાથે હાસ્ય, વૈર અને રતિ-આમોદ પ્રમોદને નિમિત્તે જીવોની હિંસા કરે
છે તેઓ કેવી વૃત્તિથી જીવોની હિંસા કરે છે? “કુદ્ધા હ્ણન્તિ” કેટલાક જીવો

‘તસપાણે’ ત્રસપ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્ જીવાન્ ‘થાવરે ય’ સ્થાવરાંશ્ચ પૃથિવીકાયા
દીન્ હિંસન્તિ=ઘનન્તિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

ઉક્તાર્થમેવ વિશદયન્નાહ—‘મદબુદ્ધિયા’ इत्यादि ।

મૂલમ્-મદબુદ્ધિયા સહસા હળંતિ, અવસા હળંતિ, સવસા
અવસા દુહઓ હળંતિ, અટ્ટા હળતિ, અણટ્ટા હળતિ, અટ્ટા અણટ્ટા-
દુહઓ હળંતિ, હસ્સા હળંતિ, વેરા હળતિ, રત્તી હળતિ હસ્સા
વેરા રત્તી હળતિ । કુદ્ધા હળતિ, લુદ્ધા હળંતિ, મુદ્ધા હળંતિ, કુદ્ધા-
લુદ્ધા મુદ્ધા હળતિ, અત્થા હળતિ, ધમ્મા હળંતિ, કામા હળંતિ,
અત્થા ધમ્મા કામા હળંતિ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘મદબુદ્ધિયા’ મન્દબુદ્ધિકાઃ=મિથ્યાત્વોદયાત્તત્ત્વાઽત્તત્ત્વવિવેકરહિ-
તમતયઃ, ‘સવસા’ સ્વપ્પશાઃ=સ્વતન્ત્રાઃ સન્તઃ, સ્વેચ્છયા ‘હળતિ’ ઘનન્તિ, ‘અવસા’
અવશાઃ=પરાધીના સન્તઃ ધ્રન્તિ, ‘સવસા અવસા’ સ્વપ્પશા અવશા ‘દુહઓ’ ઉભયતો
અનર્થ—વિના પ્રયોજન કે લિયે (તસપાણે) દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ
પ્રાણિયોં કી એવ (થાવરે ય) પૃથિવીકાયાદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર-પ્રાણિયોં
કી (હિંસતિ) હિંસા કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૯ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार
कहते हैं—‘मद बुद्धिया सवसा हणति’ इत्यादि ।

ટીકર્થ—(મદબુદ્ધિયા) મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ કે
‘વિવેક’ સે જિનકી બુદ્ધિ શૂન્ય હો રહી હૈ એસે પ્રાણી (સવસા) સ્વતન્ત્ર બનકર
અપની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોં કી (હળતિ) હિંસા કરતે હૈં ।
इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

બાતર અથવા “અણટ્ટાણ” વિના પ્રયોજને “તસપાણે” દ્વાન્દ્રિય આદિ ત્રસ જીવોની
અને “થાવરે ય” પૃથિવીકાયા આદિ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની “હિંસતિ”
હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમજાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—
“મદબુદ્ધિયા સવસા હળતિ” इत्यादि

ટીકર્થ—“મદબુદ્ધિયા” મિથ્યાત્વના ઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના
વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા જીવો “સવસા” સ્વતન્ત્ર હોવા છતાં પણ
જોતાની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોની “હળતિ” હિંસા કરે છે એ જ
પ્રમાણે જે માણસ “અવસા હળતિ” નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન છે તેઓ

અથ યદ્યપિ—ઉદ્દેશક્રમાનુસારેણ 'જારિસ ફલ દેઢ' ઇતિ ચતુર્થ ફલદ્વાર પૂર્વ વક્તવ્ય, તથાપિ ફલસ્ય કર્ત્રધીનત્વેન કર્તુ પ્રાધાન્યાત્, અલ્પવક્તવ્યત્વેન મૂર્ચી-કટાહન્યાયાચ પૂર્વ 'જેવિય કરેતિ પાયા પાણગ્રહ' ઇતિ પ્રથમપ્રાણગ્રહદ્વારસ્ય

કરતે હૈં જો સ્વાધીન હોને પર હિંસા કર્મ મેં રત હો જાતે હૈં । કિતનેક જીવ એસે મી હોતે હૈં કિ જો હિંસક જીવોં કી સગતિ આદિ કે પરાધિન હોકર હિંસા કરને લગ જાતે હૈં । વહુત સે એસે મી પ્રાણી હૈં જો અપને લિયે હિંસા કરતે હૈં ઓર વહુત સે જીવ એસે મી હોતે હૈં કિ ડઠતે વૈઠતે ચલતે ફિરતે વિના કિસી પ્રયોજન કે મી જીવોં કી હિંસા કરતે હૈં । વહુત સે જીવ એસે મી હૈં કિ વે ચાહે સ્વતત્ર રહે યા પરતત્ર રહે કિસી મી સ્થિતિ મેં રહે પર ફિર મી હિંસા કરને સે નહીં ચૂકતે હૈં । કોઈ જીવ કિસી દૂસરે જીવ કો વૈર કે કારણ માર ડાલતે હૈં, કોઈ અપની હંસી કરને કે કારણ માર ડાલતે હૈં । ઓર કોઈ ૨ એસે મી પ્રાણી હૈં જો રતિ કે કારણ—ચિત્ત યુગી મેં રહને કે કારણ—જીવોં કી હિંસા—શિકાર કરતે હૈં । હત્યાદિ ઓર મી હસી તરહ કે કારણ સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કિયે હૈં જો ડપર અર્થ મેં કહદિયે હૈં । હનકે સિવાય દૂસરે કારણોં સે મી હિંસા કરતે હૈં ॥સૂઁ ૨૦॥

અથ સૂત્રકાર યદ્યપિ પ્રકટ કરતે હૈં કિ ઉદ્દેશક્રમ કે અનુસાર યદ્યપિ "જારિસ ફલ દેઢ" યદ્ય ચતુર્થ ફલદ્વાર પહિલે કહના ચાહિયે થા તો

હોવા છતાં પણ હિંસા કર્મમા લીન રહે છે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે હિંસક જીવોની સગતિ આદિ વડે પરાધીન હોવાને કારણે હિંસા કરવા લાગે છે કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે સ્વાર્થને ખાતર હિંસા કરે છે, અને ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે જે ડઠતા, બેસતા, હાલતા, ચાલતા, કોઈપણ પ્રયોજન વિના જીવોની હિંસા કરે છે ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે તેઓ સ્વતત્ર હોય કે પરતત્ર હોય કોઈપણ સ્થિતિમા હોવા છતાં પણ હિંસા કરતા અટકતા નથી કોઈ જીવ બીજા જીવોને વેરને કારણે મારી નાખે છે, કોઈ હસી—મનકને ખાતર મારી નાખે છે, અને કોઈ કોઈ જીવો એવા પણ હોય છે કે જે રતિને કારણે—મનના આનંદને ખાતર જીવોની હિંસા (શિકાર) કરે છે ઇત્યાદિ બીજા પણ એ જ પ્રકારના કારણો સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કર્યા છે, જે ઉપર બતાવી દેવામા આવ્યા છે તે સિવાય બીજા કારણોથી પણ તેઓ હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૨૦ ॥

હવે સૂત્રકાર એ ન્યાય કરે છે કે ઉદ્દેશોના ક્રમ પ્રમાણે જોડે 'જારિસ

एव 'कुद्धा लुद्धा मुद्धा' कुद्धाः लुब्धाः मृग्धाः-क्रोधलोभमोहयन्तः घ्नन्ति ।
 'अत्या' अर्थाः=धनार्थिनः, 'धम्मा' धर्माः=धर्मार्थिनः-जाति कुलधर्माभिमानयन्तः
 'कामा' कामाः=कामार्थिनो घ्नन्ति । एव 'अत्या धम्मा कामा' अर्थे धर्मकामा
 र्थिनो घ्नन्ति ॥सू० २०॥

करते हैं, (लुद्धा हणति) कितनेक ऐसे हैं जो केवल लोभ के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं, और (मुद्धा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो केवल मोहाधीन वृत्ति होकर जीवों की हिंसा करते हैं । (कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो क्रोध, लोभ, मोह इन तीनों के वशवर्ती बनकर जीवों की हिंसा करते हैं । (अत्या हणति) कितनेक ऐसे भी जीव हैं जो केवल धन के अर्थी होकर ही जीवों की हिंसा करते हैं, (धम्मा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो धर्मार्थी-जाति धर्म और कुलधर्म के अभिमानी होकर जीवों की हिंसा करते हैं । (कामा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो कामार्थी इन्द्रियों के विषयों को भोगने की लालसा के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं और (अत्या धम्मा कामा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो अर्थ, धर्म और काम, इन तीनों के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं ।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने हिंसा करने की विचारधारा वाले जीवों को कहा है, वे कहते हैं कि कितनेक जीव ऐसे भी हुआ

ક્રોધમા આવીને જીવોની હિંસા કરે છે 'લુદ્ધા હણતિ' કેટલાક કેવળ લોભને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે, 'મુદ્ધા હણતિ' કેટલાક એવા પણ લોકો હોય છે કે જે કેવળ મોહાધીન થઈને જીવોની હિંસા કરે છે 'કુદ્ધા લુદ્ધા મુદ્ધા હણતિ' કેટલાક લોકો એવા પણ છે કે જેઓ ક્રોધ લોભ, મોહ એ ત્રણને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે 'અત્યા હણતિ' કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે ધનને માટે જ જીવોની હિંસા કરે છે 'ધમ્મા હણતિ' કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે ધર્માર્થી-જાતિધર્મ અને કુળધર્મના અભિમાનને કારણે જીવોની હિંસા કરે છે 'કામા હણતિ' કેટલાક એવા પણ જીવો હોય છે કે જે કામાર્થી-ઇન્દ્રિયોની વિષય લાલસાને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે, અને 'અત્યા ધમ્મા કામા હણતિ' કેટલાક એવા પણ જીવો હોય છે કે જે અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણને વશ થઈને જીવોની હિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રમા સૂત્રકારે હિંસા કરવાની વિચારધારાવાળા જીવો બતાવ્યા છે તેઓ કહે છે કે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે

‘વાહા’ વ્યાધા=મૃગપ્રાતકાઃ, ‘કૂરકમ્મા’ કૂરકર્મણિ - દુષ્ટકર્મકારિણઃ,-
‘વાઝરિયા’ વાગુરિકાઃ=વાગુરા=મૃગવન્ધન તથા ચગન્તિ યે તે વાગુરિકાઃ=
જાલેન મૃગવન્ધકાઃ, ‘દીવિય-વધણપ્પઓગ-તપ્પગલ્લજાલ-ચીરહ્લગાયસદન્મ
વગુરા-કૂડ હલિયા હત્થા’ દ્વીપિકા વન્ધનપ્રયોગતત્પ્રગલ્લજાલ-ચીરહ્લગાયસીદર્ભવા
ગુરા કૂટહેલિસાહસ્તા -‘દીવિય’ દ્વીપિકા=વ્યાધમ્ય કૃત્રિમા હરિણી યા મૃગાક-
ર્પણાર્થે રધાપ્યતે ‘વધણપ્પઓગ’ વન્ધનપ્રયોગઃ=મૃગાદિ વન્ધનોપકરણ, ‘તપ્પ’ તપ્પઃ
=મત્સ્યગ્રહણી-ઘુનોકા, ‘ગલ’ ગલ્લિશ=મત્સ્યવેધન કણ્ઠકુ ઇત્યર્થઃ, ‘જાલ’ પ્રસિદ્ધ,

વાલે મનુષ્ય, (મન્દુદિયા) મત્સ્યવધ-મઝલિયો કો મારને વાલે ધીવર
(સાઝણિયા) શાકુનિક-પક્ષિયોંની શિકાર કરને વાલે ચીઢીમાર,
(વાહા) વ્યાધ-મૃગની શિકાર કરને વાલે વહેલિયાજન, (કૂરકમ્મા)
કૂર કર્મા-દુષ્ટકર્મ કરને વાલે મનુષ્ય, (વાઝરિયા) વાગુરિકા-જાલ સે
મૃગ કો વાધને વાલે વાધરી લોગ, (દીવિય-વધણપ્પઓગતપ્પ-ગલ-જાલ
ચીરહ્લગાયસ દન્મ-વગુરા-કૂડહલિયા હત્થા) દ્વીપિકા-વ્યાધ દ્વારા
મૃગોં કો લુભાને કે લિયે વનાઈ ગઈ કૃત્રિમ હરિણી, વધન પ્રયોગ-
મૃગાદિ જીવોં કો વાધને કે ઉપકરણ, તપ્પ મઝલી પકડકર જિસમેં
ધીવર રખતે જાતે હેં એસી ટોકરી, અથવા મઝલી જિસ પર વેઠકર
પકડી જાતી હેં એસી લઘુ નૌકા, ગલ-ગલ્લિશ, વરી જિસકે અગ્રભાગ
મેં આટા યા જીવ કા કલેવર આદિ લગાકર મઝલીમાર ઉસે પાની મેં
હાલ દેતે હેં મઝલી જૈસે હી ઉસે રાતી હેં તો ઉસકા વહ નુકીલા અગ્ર-
ભાગ ઉસકે કઠ મેં વિંધ જાતા હેં, વમ મઝલીમાર ફિર હોરે સે વંધી

કૂરકમ્માવાઝરિયા” “સોયરિયા” સૌંઠરિક-મુવરનો ગિઝાર કરનારા મનુષ્યો, “મઝ્ઝવધા”
મત્સ્યવધ-માછલિયોને માગનાર માછીમારો, “સાઝણિયા” શકુનિક-પક્ષીઓને
શિકાર કરનાર પારધિઓ “વાહા” વ્યાધ-મૃગને શિકાર કરનાર શિકારીઓ,
“કૂરકમ્મા” કૂરકર્મા-દુષ્ટ કર્મ કરનારા મનુષ્યો, “વાઝરિયા” વાગુરિકા-
જાળમા મૃગને કમાવનારા વાધગી લોકો, “દીવિય, વધણપ્પઓગે તપ્પ, હાલ,
જાલ, ચીરહ્લગાયસ, દન્મ’ વગુરા, કૂડહલિયા હત્થા” દ્વીપિકા-વ્યાધ દ્વારા
મૃગને લલચાવવાને માટે બનાવેલી કૃત્રિમ હરિણી, વધનપ્રયોગ-મૃગાદિ
જીવોને વાધવાના સાધનો, તપ્પ-મઝલીને પકડીને માછીમાર જેમા મૂકે
છે તે ટોપલી, અથવા જેમા જેમીને માછલા પકડવામા આવે છે તે નાની
નૌકા, ગલ-ગલ્લિશ, વરી-જેના અગ્રભાગ પર લોટની ઢોલક કે અળમિયા આદિ
જીવોના કલેવર લગાડીને માછીમાર તેને પાણીમા નાખે છે, માછલી જેવું તે ખાવા
જાય છે કે તત્કાલ તેનો અણીદાર અગ્રભાગ તેના કઠમા પડેવાઈ જાય છે

પશ્ચમપદ્ધારમાદ-‘કયરેતે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-કયરે તે ? જે તે સોયરિયા મચ્છવંધા સાઉણિય વાહા કૂરકમ્મા વાઉરિયા દીવિય-વધળપ્પઓગ-તપ્પગલ-જાલ-વીરહ્થ-ગાયસદઘ્મ વગ્ગુરા-કૂડછલિયાહત્થા હરિણસા ઉણિયા યવિદંસ ગપાસહત્થા વળચરગા લુદ્ધગા મહુઘાયા પોયઘાયા ણીયારા પણીયારા સરદહ-દીહિય-તલાગ-પહ્લગ-પરિગાલળ-મલળ સોતવં-ધળ સલિલાસય સોસગા વિસગરસ્સ ય દાયગા ઉત્તળવહ્લરદવ-ગ્ગિણિદ્વયપલીવકા કૂરકમ્મકારી ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

ટીકા-‘કયરે તે’ કતરે તે પ્રાણવધકર્તાર : ? ઇતિ પ્રશ્ને સત્યુત્તરમાદ-‘સોયરિયા’ ઇત્યાદિ-‘જે તે’ એ તે ‘સોયરિયા’ સૌકરિકા = સૂકરઘાતકા : ‘મચ્છવંધા’ મત્સ્ય-વન્ધા = મત્સ્યઘાતકા વીવરા ઇત્યર્થ , ‘સાઉણિયા’ શાકુનિકા : = પક્ષિવધોપજીવિન : ,

મી ફલદ્વાર ન કહ કર જો પ્રથમપ્રાણવધ દ્વાર કા પચમ ઉપદ્વાર કહા જા રહા હૈ ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ ફલ, કર્તા કે આધીન હોને સે પહિલે કર્તા કો પ્રધાનતા રહતી હૈ, દૂસરે કર્તા કે વિષય મેં વક્તવ્ય મી અલ્પ હૈ તો સૂચી કટાહન્યાય સે પહિલે “ સ વિ ય કરેંતિ પાવા પાણવહ ” ઇસ પ્રથમપ્રાણવધ દ્વાર કા યહ પચમ ઉપદ્વાર હી કહા જા રહા હૈ ‘ કયરે તે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-પ્રશ્ન (કયરે તે) પ્રાણવધ કરનેવાલે લે કૌન ૨ સે પ્રાણી હૈ ? ઉત્તર-(જે તે) લે ય ૨ હૈ-(સોયરિયા, મચ્છવંધા, સાઉણિયા વાહાકર કમ્મા વાઉરિયા) (સોયરિયા) સૌકારિક-સુઅર કો શિકાર કરને

ફલ લેહ ” એ ચોથુ ફલ દ્વાર પહેલા કહેવુ જોઈતું હતું, છતાં પણ ફલ દ્વારનું વર્ણન ન કરતા પહેલાં પ્રાણવધદ્વારનું પાચમું ઉપદ્વાર વર્ણવવામાં આવ્યું છે, તેનું કારણ એ છે કે ફળ, કર્તાને અધીન હોવાથી પહેલાં કર્તાની પ્રધાનતા રહે છે અને બીજું કારણ એ છે કે કર્તાની બાબતમાં વક્તવ્ય-કહેવાનું પણ થોડું છે, તેથી સૂચી કટાહન્યાયે પહેલાં “ જે વિ ય કરેંતિ પાવા પાણવહ ” આ પ્રથમ પ્રાણવધ દ્વારનું આ પાચમું ઉપદ્વાર જ વર્ણવવામાં આવી રહ્યું છે-

“ કયરે તે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-પ્રશ્ન-“ કયરે તે ? ” પ્રાણવધ કરનારા તે કયા કયા પ્રાણીઓ છે ?

ઉત્તર-“જે તે” તેઓ નીચે પ્રમાણે છે-“સોયરિયા, મચ્છવંધા સાઉણિયા

મધુઘાતાઃ=‘મધુ’ ગ્રહણેન તન્મક્ષિકા ઘાતકાઃ ‘પોયઘાયા’ પોતઘાતા=પક્ષિશિથુ-
હિંસકાઃ ‘एणीयारा’ एणीचारा-एणी=हरिणीं चारयन्ति=पालयन्ति अन्यान्
मृगान् गृहीतु ये ते एणीचाराः, ‘पएणीयारा’ प्रैणीचाराश्च व्याधविशेषा एव ।
‘सरदहदीहियतलागपल्लवपरिगालणमलणसोत्तवधणसलिलासयसोसगा ’ सरोद्रह
दीर्घिका तडाग पल्लव परिगालन मलन स्रोतोमन्थन सलिलाशयशोपका , तत्र-
सरः=सामान्यजलाशयः, दहः=अगाधजलाशयः, दीर्घिका=वापी, तडाग =प्रसिद्धः,
पल्लव=अल्पसरः, एतेषा परिगालनेन=मत्स्यादि ग्रहणात् जलनिस्सारणेन, मल-
नेन=मन्थनेन, स्रोतोमन्थनेन=जलप्रवाहनिरोधेन च ‘सलिलाशयान्=जलाशयान्
शोषयन्ति ये ते तथाभूता , विसगरस्सय ’ विपगरस्य च-विप=प्रसिद्ध, गरः=
सयोगजनित विप, तयोः समाहारे तस्य ‘दायगा’ दायकाः जीवोपघातार्थं विप-

મધુ-શહદ કો લેને કે લિયે જો મધુમક્ષિયોં કા ઘાત કર દેતે હૈં વે,
(પોયઘાયા) પોતઘાતક-પક્ષિયોં કે પચ્ચોં કો મારને વાલે, તથા (एणी-
यारा) જો મૃગોં કો પકડને કે અભિપ્રાય સે મૃગી-હરિણી કો પાલતે હૈં
વે, તથા (पएणीयारा) જો પ્રૈણીચાર-વ્યાધવિશેષ હોતે હૈં વે, તથા-
(सर-दह-दीहिय-तलाग-पल्लव-परिगालण-मलण-सोत्तवधण-सलि-
लासयसोसगा) જો સર સામાન્ય જલાશય, દ્રહ-અગાધજલાશય,
દીર્ઘિકા-વાપી, તડાગ, પલ્લવ-ઓટાજલાશય, इनके जल को मत्स्यादि
ग्रहण करने के अभिप्राय से जो निकाल देते हैं, तथा इनके जल का जो
मन्थन-चिलोडन करते हैं, अथवा इनमे जिन स्रोतों से जल आता है
उन्हें बंद कर देते हैं, इस तरह से जो सलिलाशयों को सुखा देते हैं वे,
तथा (विसगरस्स य दायगा) विप-हलाहल जहर, गर-सयोग जनित

મધમાળીઓની હિંસા કરે છે તે, “ પોયઘાયા ” પોત ઘાતક-પક્ષીઓના ઘચ્યાને
મારનારા તથા- “ एणीयारा ” જે મૃગોને પકડવાને માટે મૃગી-હરિણીને પાળે
છે તે લોકો, તથા “ पइणीयारा ” જે પૈણીચાર-એક પ્રકારના વ્યાધ-હોય છે
તે, તથા “ सर, दह, दीहिय, तलाग, पल्लव, परिगालण, मलण, सोत्तवधण,
सलिलासयसोसगा ” જે સર-સામાન્ય જળાશય દહ-અગાધ જળાશય, દીર્ઘિકા-
વાવ, તડાવ, પલ્લવ-નાનુ જળાશય, वगेरेना पाणीने माछला वगेरे अडणु
કરવાના હેતુથી બહાર ઝાલી નાખે છે તથા તેના જળનુ ને મન્થન કરે છે
અથવા તેમા જે સ્રોતો દ્વારા પાણી આવતુ હોય તે સ્રોતોને બંધ કરી દે છે
આ રીતે જે લોકો જળાશયોને સૂકવી નાખે છે તે લોકો તથા “ विसगरस्स य
दायगा ” विप-હળાહળ એર, गर-સયોગ-જનિત વિપ આદિ જીવોને મારી

‘ચીરહ્રુગ’ ચીરહ્રુક:-શ્યેનાભિધો હિંસકપક્ષિવિશેષ:-યોડન્યપક્ષિવધાર્ય પાલ્યતે,
 ‘આયસ’ લોહનિર્મિતવન્ધનવિશેષ:, ‘દંભ’ દર્ભ:=દર્ભમયવન્ધનવિશેષ:, ‘વાગુરા’
 વાગુરા=પાશ:, કૂટછેલિકા=કૂટાજા, સિંહાદિ પ્રલીભનાર્થ ચિત્રલેખ્યાદિમયી
 છગલિકા एते हस्ते येषां ते तथाभूताः । ‘हरिण्सा’ हरिकेश:=मातङ्गाश्चाण्डला
 इत्यर्थ:, ‘उणिया य’ कुणिकाश्च तत्सेवकाः ‘वीदसगपासहत्था’ वीतसकपाशहस्ताः
 =वीतसका:=मृगपक्षिवन्धनसाधनानि, पाशाश्च, ते हस्ते येषां ते वीतसकपाशह-
 स्ताः, ‘वणचरगा’ वनचरका:=किराताः, ‘लुद्धगा’ लुब्धका:=व्याधाः, ‘मधुघाया’

હુઈ હસ વશી કો તાન લેતે હે, વિંધી હુઈ મઝલી હસી કે સાથ બાહર નિકલ આતી હૈ ઓર મઝીમાર હસે પકડ છેતે હૈ । જાહ-મઝલી આદિ પકડને કી ઇક પ્રકાર કી જાલ, ચીરહ્રુક-હિંસકપક્ષિવિશેષ યહ પક્ષી અન્ય પક્ષિયોં કો મારને કે લિધે શિકારિયો દ્વારા પાલા જાતા હૈ, આયસ લોહ કા બના હુઆ વધન વિશેષ, દંભ-દર્ભમય વધન વિશેષ, વાગુરા-પાશ, કૂટ છલિકા-બનાવટી વકરી જો સિંહાદિ જાનવરો કો લુભાને કે લિધે બનાકર રખી જાતી હૈ, યે સવ જિનકે હાથો મેં હૈ એસે પ્રાણી । હસ સવ પ્રાણીવધ કે કર્ત્તા જાનના ચાહિયે । તથા (હરિણ્સા) હરિ-કેશ-ચાણ્ડાલ, (ઉણિયા) કુણિક-ચાણ્ડાલ કે સેવકજન, (વીદગપાસ-હત્થા) વીતસક-મૃગ એવ પક્ષિયોં કે બાંધને કા સાધન ઓર પાશ જિનકે હાથ મેં હૈ એસે (વણચરગા) કિરાત । યે બી પ્રાણવધ કે કરને વાલે માને ગયે હૈ । (લુદ્ધગા) લુબ્ધક-વ્યાધ, (મધુઘાયા) મધુઘાતક-

ત્યાજ્યાદ માછીમાર દોરીથી બાંધેલી તે જાળને એવી લે છે, તેમા થોડી ગયેલી માછલીઓ તેની સાથે જ બહાર નીકળી આવે છે અને માછીમાર તેને પકડી લે છે જાળ-માછલા આદિ પકડવાની એક પ્રકારની જાળ, ચીરહ્રુક-એક હિંસક પક્ષીનું નામ, તે પક્ષી બીજા પક્ષીઓને મારવાને માટે શિકારીઓ વડે પળાય છે આયસ-લોહાનું બનાવેલું એક જાતનું બંધન, “દંભ” દર્ભનું એક જાતનું બંધન, વાગુરા-પાશ, કૂટછલિકા-નકલી બકરી કે જે મિંહુ આદિ જાનવરોને લલચાવવા માટે બનાવીને રાખવામા આવે છે, એ સઘળી ચીજો જેમના હાથમા છે તેવા સઘળા જીવો પ્રાણુવધ કરનારા હોય છે તથા “ હરિણ્સા ” હરિકેશ-ચાણ્ડાળ, “ ઉણિયા ” કુણિક-ચાણ્ડાળના સેવકો, “ વીદસગપાસહત્થા ” વીતસક-મૃગ અને પક્ષીઓને બાંધવાનું એક સાધન અને પાશ જેના હાથમા છે એવા “ વણચરગા ” કિરાત વગેરે પ્રાણુવધ કરનારા મનાય છે “ લુદ્ધગા ” લુબ્ધક-વ્યાધ, “ મધુઘાયા ” મધુ ઘાતક-મધુ લેવાને જે

સુવર્ણીનીટીકા ષ ૧૬ ૨૨ જાતિનિર્દેશપૂર્વકમ્ મદગુરુયા કાનર જીવાન્ જનન્તિ? ૮૫

‘સક’ શકા: = શકદેશોત્પન્ના:, ‘જવળ’ યવના: = પ્રસિદ્ધા:, ‘સગર’ શગરા: = શગર-
દેશોત્પન્ના મિહલા: ‘ચગર’ ચગરા: = ચગરોડનાર્યદેશવિશેષસ્ત્ર મગાચગરા ‘કાય’
કાયા: = કાયદેશવિશેષોદ્ધવા: ‘મરુડ’ મુરુડા: = મુરુડદેશીયા:, ‘ઉદા:’ અના
ર્યવિશેષા: ‘મહગ’ મટકા: = મટકદેશવાસિન: ‘તિત્તિય’ તિત્તિકા: = તિત્તિક-
દેશજાતા:, ‘પકળિય’ પકળિકા: = તદ્દેશજાતા:, ‘કુલસ્વ’ કુલક્ષા: = અનાર્ય-
દેશોદ્ધવા:, ‘ગોડ’ ગોડા: = ગોડદેશોત્પન્ના:, ‘સિંહલ’ મિંહલા = સિંહલદ્વીપો-
ત્પન્ના:, ‘પારમ’ પારસા: = પારમદેશજાતા, ‘કોંચ’ કોંચા: = કૌંચદેશોદ્ધવા:, ‘અધ’
આન્ધ્રા = અન્ધ્રદેશોત્પન્ના:, ‘દવિલ’ દ્રાવિડા = દ્રવિડદેશજાતા:, ‘વિછલ’ વિલ્વલા:

‘હમે ય ગ્રહે મિલક્ષુજાઈયા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(હમે ય) અનુપદ વક્ષ્યમાણ યે (ગ્રહે) ગ્રહત સે (મિલક્ષુ
જાઈયા) મ્લેચ્છ-જાતીય-અનાર્ય હે । (કિંતે ?) વે કૌન ૨ હે

ઉત્તર—(સક) શક-શક દેશવાસી, (જવળ) યવન-પ્રસિદ્ધ હૈ,
(સગર) શગર-શગર દેશોત્પન્ન મીલ, (ચગર) ચગર-ચગર નામ કે
અનાર્યદેશ મેં ઉત્પન્ન હુળ મનુષ્ય, (કાય) કાય-ઇસ નામ કે દેશ વિશેષ
મેં જન્મે મનુષ્ય, (મરુડ) મુરુડ-મુરુડદેશ મેં પૈદા હુળ મનુષ્ય, (ઉદ)
ઉદ-ઇસ જાતિ કે અનાર્ય મનુષ્ય, (મહગ) મટક-મટક દેશાનિવાસી
મનુષ્ય, (તિત્તિય) તિત્તિય-તિત્તિક દેશ કે મનુષ્ય, (પકળિય) પકળિક-
દેશ કે મનુષ્ય, (કુલસ્વ) કુલસ્વ-કુલક્ષનામ કે અનાર્યદેશ મેં ઉત્પન્ન
હુળ મનુષ્ય, (ગોડ) ગોડ-ઇસ જાતિ કે મનુષ્ય, (સિંહલ) સિંહલ-સિંહલ
દ્વીપ મેં ઉત્પન્ન હુળ મનુષ્ય, (પારસ) પારસ-પારસ દેશ મેં ઉત્પન્ન હુળ

ગ્રહે મિલક્ષુજાઈયા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“હમેય” નીચે પ્રમાણેની “ગ્રહે ” ઘણીખરી “મિલક્ષુ જાઈયા”
મ્લેચ્છ જાતો-અનાર્ય છે “ કિંતે ? ” તે અનાર્ય જાતિ કયી કયી છે ?

ઉત્તર—“સક” શક-શકદેશના રહેવાસી “જવળ” યવન, “સગર” શગર
-શગરદેશના વતની ભીલ, “ચગર” ચગર નામના અનાર્ય દેશના વતનીઓ,
“કાય” એ નામના દેશના જન્મેલા મનુષ્ય, “મરુડ” મુરુડ-દેશના જન્મેલા
લોકો, “ઉ” એ જાતિના અનાર્ય લોકો, “ મહગ ” મટક દેશના રહેવાસી,
“તિત્તિય” તિત્તિક દેશના વતની, “પકળિક” પકળિક દેશના લોકો, “કુલસ્વ”
કુલક્ષ નામના અનાર્ય દેશના લોકો, “ગોડ” ગોડ જાતિના લોકો, “ સિંહલ ”
સિંહલ-સિંહલદ્વીપના લોકો, “ પારસ ” પારસ-પારસ (ઇરાન)ના જન્મેલા લોકો,

પ્રયોગકર્તાર્થઃ । ‘ઉત્તણચલ્લરદવગ્ગિણિદયપલીવગા’ ઉત્તણચલ્લરદવાગ્નિ-
નિર્દયપ્રદીપકાઃ—ઉત્તણાના=વર્ધિતતૃણાના વનાના, ચલ્લરાણા=ગહનવનાનામરણ્યક્ષે-
ત્રાણા વા, દવાગ્નિના=દાવાનલેન નિર્દયં=દવારહિત યવાસ્યાત્તથા પ્રદીપકાઃ=
પ્રજ્વાલકાઃ, ‘કૂરકમ્મકારી’ કૂરકર્મકારિણઃ=કઠોરકર્મકર્તાર્થઃ ઘાતકાઃ ઘનન્તિ=
પ્રાણવધ કર્મન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ ॥સૂ.૨૧॥

તાનેય જાતિનિર્દેશપૂર્વક વર્ણયતિ—‘ઇમેય વહવે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ઇમેય વહવે મિલકલુજાઈયા, કે તે ?, સક-જવણ-
સવર-વઘવર-કાય મરુડો-દ-મહગ-તિત્તિય પક્કણિય-કુલલલ-ગોડ-
સિહલ-પારસ કોચંધ-દવિલ-વિલ્લલ-પુલિદ-અરોસ-ડોવ-પક્કણ-ગંધ
હારગ-વહલિય-જલ્લ-રોમ-માસ-વડસ-મલયા-ચુંચુયા-ય ચૂલિયગ-
કોકળગ-કળગ-સેય-મેયા-પપહવ માલવ-મહુર-આભાસિય-અળલલ
ચીળ-લાસિય-લસ-લાસિયા-નેહુર-મરહટ્ટ-મુટ્ટિઅ-આરવ-ડોવિલગ
કુહળ-કેકય-ટૂળ-રોમગ-રુ-મરુયા-ચિલાયવિસયવાસી ય
પાવમડળો ॥ સૂ. ૨૨ ॥

ટીકા—‘ઇમેય’ ઇમે ચ-અનુપદ વક્ષ્યમાણાઃ ‘વહવે’ વહવઃ ‘મિલકલુજાઈયા’
મ્લેચ્છજાતીયાઃ=અનાયાઃ સન્તિ । ‘કિં તે ?’ કે તે ? ઇત્યાહ—‘સકે’ ત્યાદિ ।

વિષ, इन्हें जो जीवो को मारने के अभिप्राय देते हैं वे, तथा (उत्तण-
चल्लर-दवग्गि-णिदय-पलीवगा) जो निर्दय होकर उत्तणो को-वर्धित-
तृणवाले वनों को चल्लरों को गहनवनों को अथवा अरण्य के खेतों को
दावानल से जला देते हैं वे सब (कूरकम्मकारी) कूरकर्मकारी माने
गये हैं और ऐसे प्राणी ही प्राणवध के करनेवाले होते हैं ॥सू.२१॥

સૂત્રકાર ઇન્હી પ્રાણિયોં કો જાતિ નિર્દેશ પૂર્વક વર્ણન કરતે હૈં—

નાખવાને માટે જેઓ તેમને ખવરાવે છે તેઓ તથા ‘ઉત્તણ-ચલ્લર, દવગ્ગિ,
ણિદય પલીવગા’ જે નિર્દય થઈને ઉત્તણોને વર્ધિત તૃણવાળા વનોને, વલ્લ-
રોમ,—ગહન વનોને, અથવા વનના ક્ષેત્રોને દાવાનળ લગાડીને સળગાવે છે તે
ખધાને ‘કૂરકમ્મકારી’ કૂરકર્મ કરનારા માનવામાં આવે છે અને તેવા જીવોજ
પ્રાણવધ કરનાર છે ॥ સૂ. ૨૧ ॥

સૂત્રકાર એજ પ્રાણીઓનુ જાતિના નિર્દેશ સહિત વર્ણન કરે છે “ ઇમેય

વિસયવાસી ય ' ચિત્રાત વિષયવાસિનશ્ચ, ચિત્રાતદેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ' પાવમ-
ઇણો ' પાવમતયઃ=પાવચુદ્ધયઃ સન્તિ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ—'જલચર' इत्यादि।

મૂળ—જલચર—થલચર—સળખચર—ઓરગ—સ્વચર—સંડાસ-
તોડ—જીવોવધાયજીવી સળખી ય અસળખી પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ય—અસુખલેસ્સ પરિણમે એ અળખે ય એવમાઈ કરેતિ પાણ-
વેવાયકરણં । પાવાપાવાભિગમાઃ પાવમઈ પાવરૂઈ પાણવહકચરઈ
પાણવહરૂવાણુટ્ટાણા પાણવહકહાસુ અભિરમતા તુટ્ટા પાવ
કરેતુ હુતિય વહુપ્પગારં ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

ટીકા—' જલચર—થલચર—સળખઓરગ—સ્વચર—સંડાસતોડ જીવોવધાય-
જીવી ' જલચર સ્થલચર સનસ્વપદોરગ—સ્વચર સંદશતુણ્ડ જીવોવધાતજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા =ચતુષ્પદાઃ, સનસ્વપદા =નસ્વયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

વિસયવાસી ય) ચિત્રાત દેશવાસી મનુષ્ય, એ સવ અનાર્ય હૈ (પાવમ-
ઇણો) ઇનકી બુદ્ધિ પાપકર્મ મે રત્ત રહતી હૈ । એ જિતને મી નામ કે
કહે હૈ એ સવ પાપકર્મ મે રત્તમતિવાલે હૈ ઓર એ પ્રાણવધ કે
કરને વાલે હૈ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

અવ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈ કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈ—
' જલચર થલચર ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુષ્પદ—ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ વાલે સ્થલચર જીવ, (સળખચર) નસ્વયુક્ત પૈરોવાલે

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સળખી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " પાવમઇણો "
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમાં લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ જતાવી છે
તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમાં રત-લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ જતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે
" જલચર થલચર " इत्यादि

ટીકાર્થ—"જલચર" ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, "થલચર" ચતુષ્પદ—ગાય, મૈસ
આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, " સળખચર " નહોતર યુક્ત પગવાળા વાધ આદિ

विल्वलदेशोद्भवाः, ' पुलिंद ' पुलिन्दाः-पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, ' अरोस ' अरोपा = अरोपदेशजा, ' डोंव ' डोंवाः=डोम्बदेशोद्भवाः, ' पोक्कण ' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, ' गंधहारग ' गन्धहारका=गन्धारदेशजाताः, ' वहलिय ' वहलिकाः =वहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः-रोमा मासाः ' यउस ' यकुशाः मलयाः ' चुचुयाय ' चुञ्चुकाश्च, ' चूलियग ' चूलिकाः ' कौक्कणग ' कौक्कणकाः ' कणग ' कनका ' सेय ' सयाः ' मेया ' मेदाः, ' पण्हव ' पद्धवाः, ' मालव ' मान्द्राः ' मधुरा ' मधुराः, ' आमासिय ' आभाषिकाः, ' अणक्क' अनक्षाः ' चीण ' चीनाः ' लासिय ' लासिकाः खसाः ' खासिय ' खासिकाः ' नेट्टुर ' निट्टुरा ' मरट्ट' महाराष्ट्राः ' मुट्टिअ ' मौष्टिकाः, ' भारवाः ' ' डोविलग ' ' डोविलका, कुण्हा केकया, हणाः, ' रोमग ' ' रोमकाः ' रुरु ' रुरुः ' मरुया ' मरुकाः, ' जल्लाः ' इत्यारभ्य मरुकपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्तन्नामक म्लेच्छदेशविशेषोद्भवाः, ' चिलाय

मनुष्य, (कोंच) कौच-कौच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (विल्लल) विल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिंद) पुलिंद-पुलिंददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोप-अरोपदेशज (डोंव) डोंव-डोम्ब देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (वहलिय) वहलिय-वहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ला) रोम, मास यकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कौक्कणक, कनक, सेय, मेद, पद्धव, मालव, मधुर, आभाषिक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निट्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुणह, केकय, हण, रोमक, रुरु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के म्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं । तथा (चिलाय-

“ कौच ” कौच-कौच देशमा जन्मेला लोक, “ अध ” आध्र-आध्र देशमा जन्मेला लोक, “ दविल ” द्राविड-द्राविड देशमा जन्मेला लोक, “ विल्लल ” विल्वल ते नामना देशमा जन्मेला लोक, “ पुलिंद ” पुलिंद-पुलिंद देशना लोक, “ अरोस ” आरोप-आरोप देशमा जन्मेला, “ डोंव ” डोम्ब-डोम्ब देशमा जन्मेला, “ पोक्कण ” पोक्कण- देशना लोक, “ गध ” -गन्धार देशमा जन्मेला लोक, “ वहलिय ” वहलिक-वहली देशमा उत्पन्न थयेला लोक, अज रीते “ जल्ला ” रोम, मास, यकुश, मलय, चुचुक, कौक्कण, कनक, सेय, मेद, पद्धव, मालव, मधुर, आभाषिक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निट्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुण्हा, केकय, हण, रोमक, रुरु, अने मरुक ते जथा ते ते देशमा जन्मेला लोक छे तथा, “ चिलाय वि सयवासो य ” चिलाय

વિસયવાસી ય ’ ચિલાત વિષયવાસિનશ્ચ, ચિલાતદેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ‘ પાવમ-
શ્ણો ’ પાવમતયઃ=પાવબુદ્ધયઃ સન્તિ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ—‘જલચર’ इत्यादि।

મૂલમ્—જલચર—થલચર—સળપ્ફચ—ઓરગ—સ્વહચર—સંડાસ-
તોડ—જીવોવધાયજીવી સળળી ય અસળળળળો પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ય—અસુભલેસ્સ પરિણમે ણ્ણ અળળે ય ણ્ણમાઈ કરોતિ પાળા-
ઈવાયકરણં । પાવા પાવાભિગમા પાવમઈ પાવરૂઈ પાળવહકચરઈ
પાળવહરૂવાણુટ્ટાળા પાળવહકહાસુ અભિરમંતા તુટ્ટા પાવ
કરેત્તુ હુતિય વહુપ્પગારં ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

ટીકા—‘ જલચર—થલચર—સળપ્ફઓરગ—સ્વહચર—સંડાસતોડ જીવોવધાય-
જીવી ’ જલચર સ્થલચર સનત્તપ્પદોરગ—સ્વચ્ચ સંદંશતુટ્ટા જીવોવધાતજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા=ચતુપ્પદાઃ, સનત્તપ્પદા =નત્તયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

વિસયવાસી ય) ચિલાત દેશવાસી મનુષ્ય, યે સવ અનાર્ય હૈ (પાવમ-
શ્ણો) ઇનકી બુદ્ધિ પાપકર્મ મેં રત રહતી હૈ । યે જિતને મી નામ કે
કહે હૈ વે સવ પાપકર્મ મેં રતમતિચાલે હૈ ઓર યે પ્રાળવધ કે
કરને વાલે હૈ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

અવ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈ કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈ—
‘જલચર થલચર’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુપ્પદ—ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ વાલે સ્થલચર જીવ, (સળપ્ફચ) નત્તયુક્ત પૈરોંવાલે

દેશવામી મનુષ્ય, એ સળળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને “ પાવમશ્ણો ”
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ જાતાવી છે
તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમા રત—લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણુવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ જાતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે
“જલચર થલચર” इत्यादि

ટીકાર્થ—“જલચર” ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, “થલચર” ચતુપ્પદ—ગાય, ભેંસ
આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, “ સળપ્ફચ ” નહોતર યુક્ત પગવાળા વાધ આદિ

विल्वलदेशोद्भवाः, ' पुलिद ' पुलिन्दाः-पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, ' अरोस ' अरोषा = अरोषदेशजा, ' डोंव ' डोंगाः=डोम्बदेशोद्भवाः, ' पोक्कण ' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, ' गंधहारग ' गन्धहारकाः=गन्धारदेशजाताः, ' वहलिय ' वहलिकाः =वहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः-रोमा मासाः ' वउस ' वकुशाः मलयाः ' चुचुया य ' चुञ्चुकाश्च, ' चूलियग ' चूलिकाः ' कौक्कणग ' कौक्कणकाः ' कणग ' कनका ' सेय ' सयाः ' मेया ' मेदाः, ' पण्डव ' पण्डवाः, ' मालय ' मान्द्राः ' मधुरा ' मधुराः, ' आमासिय ' आमापिकाः, ' अणवत्त ' अनक्षाः ' चीण ' चीनाः ' लासिय ' लासिकाः खसाः ' खामिय ' खासिकाः ' नेट्टुर ' निण्डुरा ' मरहट्ट ' महाराष्ट्राः ' मुट्टिअ ' मौष्टिकाः, ' थारयाः ' 'डोविलग ' 'डोविलका, कुहणा केकया, हणाः, ' रोमग ' 'रोमकाः ' रुरु ' रुरवः ' मरुया ' मरुकाः, ' जल्लाः ' इत्यारभ्य मरुकपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्तन्नामक म्लेच्छदेशविशेषोद्भवाः, ' चिलाय

मनुष्य, (कोंच) क्रौच-क्रौच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (विल्लल) विल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिद) पुलिद-पुलिददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोष-अरोषदेशज (डोंव) डोंव-डोम्ब देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (वहलिय) वहलिय-वहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ला) रोम, मास वकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कौक्कणक, कनक, सेय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आभिषक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निण्डुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुणह, केकय, हण, रोमक, रुरु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के म्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं । तथा (चिलाय-

“ कोंच ” कौच-कौच देशमा जन्मेला लोके, “ अध ” आध्र-आध्र देशमा जन्मेला लोके, “ दविल ” द्राविड-द्राविड देशमा जन्मेला लोके, “ विल्लल ” विल्वल ते नामना देशमा जन्मेला लोके, “ पुलिद ” पुलिद-पुलिद देशना लोके, “ अरोस ” अरोष-अरोष देशमा जन्मेला, “ डोंव ” डोम्ब-डोम्ब देशमा जन्मेला, “ पोक्कण ” पोक्कण-पोक्कण देशना लोके, “ गध ” -गन्धार देशमा जन्मेला लोके, “ वहलिय ” वहलिक-वहली देशमा उत्पन्न थयेला लोके, जेज रीते “ जल्ला ” रोम, मास, वकुश, मलय, चुञ्चुक, कुञ्चुक, कनक, सय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आभाषिक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निण्डुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुहण, केकय, हण, रोमक, रुरु, अने मरुक ते जेध ते ते देशमा जन्मेला लोके छे तथा, “ चिलाय वि सयवासो य ” चिलाय

વિસયવાસી ય ’ ચિત્રાત વિપયવાસિનશ્ચ, ચિલાતદેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ‘ પાવમ-
ઇણો ’ પાવમતયઃ=પાવપુદ્ગલઃ સન્તિ ॥ સૂ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ-‘જલચર’ ઇત્યાદિ।

મૂલમ્-જલચર-થલચર-સળપ્ફય-ઓરગ-સ્વહચર-સંડાસ-
તોડ-જીવોવધાયજીવી સળળી ય અસળળિણ્ણો પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ય-અસુભલેસ્સ પરિણમે એએ અળ્ણે ય એવમાઈ કરોતિ પાળા-
ઈવાયકરણં । પાવા પાવાભિગમા પાવમઈ પાવરુઈ પાળવહકચરઈ
પાળવહરુવાણુટ્ટાળા પાળવહકહાસુ અભિરમતા તુટ્ટા પાવ
કરેત્તુ હુતિય વહુપ્પગાર ॥ સૂ ૨૩ ॥

ટીકા—‘ જલચર-થલચર-સળપ્ફઓરગ-સ્વહચર-સંડાસતોડ જીવોવધાય-
જીવી ’ જલચર સ્થલચર સનગ્વપદોરગ-સ્વચર સદશતુળ્લ જીવોવધાત્તજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા =ચતુષ્પદાઃ, સનગ્વપદા =નચયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

વિસયવાસી ય) ચિલાત દેશવાસી મનુષ્ય, યે સચ અનાર્ય હૈ (પાવમ-
ઇણો) ઇનકી બુદ્ધિ પાપકર્મ મેં રત રહતી હૈ । યે જિતને મી નામ કે
કહે હૈં વે સચ પાપકર્મ મેં રતમતિચાલે હૈં ઓર યે પ્રાણવધ કે
કરને ચાલે હૈં ॥ સૂ ૨૨ ॥

અતઃ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈં કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈં—
‘જલચર થલચર’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુષ્પદ-ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ ચાલે સ્થલચર જીવ, (સળપ્ફય) નચયુક્ત પૈરોંચાલે

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સધળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને “ પાવમઇણો ”
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ જાતાવી છે
તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમા રત-લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ જાતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે
“જલચર થલચર” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“જલચર” ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, “થલચર” ચતુષ્પદ-ગાય, ભેસ
આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, “ સળપ્ફય ” નહોતર યુક્ત પગવાળા વાધ આદિ

પ્રાદયઃ, ઉરગાઃ=સર્પા, સ્વચરાઃ-પક્ષિણઃ શ્યેનાદય, સદશતુણ્ડાઃ=સદશમિથ તુણ્ડો યેષા તે સદશતુણ્ડાઃ=ઢઢકઢઢાદિ પક્ષિણ, એવા દ્વન્દ્વસ્વતઃ તે ચ તે 'જીવો પઘાતેન=જીવહિંસયા જીવન્તિ - ઇતિ, જીવોપઘાતમીપિનશ્ચેતિ તથોક્તાઃ । 'સપ્તણીય' સક્ષિનશ્ચ 'અસપ્તણીયો' અસક્ષિન 'પજ્જત્ત અપજ્જત્તે ય' પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાશ્ચ=સર્વે જીવા-પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાશ્ચેતિ દ્વિવિધા ભવન્તિ તત્ર પર્યાપ્તયો વિદ્યન્તે યેષા તે પર્યાપ્તાઃ પર્યાપ્તનામકર્મોદયાત્ પર્યાપ્તિયુક્તા જીવાઃ, તે દ્વિવિધા લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, કરણપર્યાપ્તાશ્ચ । યે સર્ગા અપિ પર્યાપ્તીઃ પૂરયિત્વા મ્રિયન્તે ન તતઃ પ્રોક્તે તે લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, યે પુનઃ શરીરેન્દ્રિયાદોનિ કરણાનિ

વ્યાધ આદિ જીવ (ઓરગ) ઉરગ-છાતી કે સહારે ચલને વાળે સાંપ, (સ્વહચર) શ્યન આદિ પક્ષી સ્વચર જીવ (સદસતોડ) સદશ-સડાસી કે જેસે મુખવાલે ઢક કઢ આદિ પક્ષી (જીવોવધાયજીવી) યે સબ જીવોં કો હિંસા કરકે અપના જીવન નિર્વાહ કરને વાળે હૈં । તથા (સપ્તણીય) જિનકે મન હૈં એસે સજી પચેન્દ્રિય જીવ ઓર (અસપ્તણીયો) જિનકે મન નહીં હૈં એસે અસજી પચેન્દ્રિય જીવ, યે સબ પાપ કરકે પ્રસન્ન હોતે હૈં । જલચર સે લેકર અસજી પર્યન્ત કે જિનને મી જીવ હૈં સબ (પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય) પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત હોતે હૈં । પર્યાપ્ત નામકર્મ કે ઉદય સે જિનકી અપનીર યોગ્ય પર્યાપ્તિયા પૂર્ણ હો જાતી હૈં વે પર્યાપ્ત જીવ હૈં, ઓર જિનકી પર્યાપ્તિયા પૂર્ણ નહીં હોતી હૈં વે અપર્યાપ્ત જીવ હૈં । યે પર્યાપ્ત જીવ લઘ્વિપર્યાપ્ત ઓર કરણપર્યાપ્ત કે ભેદ સે દો પ્રાકાર કે હોતે હૈં । જો સમસ્ત પર્યાપ્તિયોં કો પૂરણ કરકે હી મરતે હૈં

જીવો, “ઓરગ” ઉરગ-પેટે ચાલનારા સાપ, “સ્વહચર” બાજ આદિ નભ ચર પક્ષી, “સદસતોડ” સદશ-સાણસીના જેવા મુખવાળા ઢક, કઢ આદિ પક્ષીઓ, “જીવોવધાયજીવી” એ બધા જીવોની હિંસા કરીને ચોતાનો જીવન નિર્વાહ કરનાર જીવો છે તથા “સપ્તણીય” જેમને મન છે એવા સજી પચેન્દ્રિય જીવ, અને “અસપ્તણીયો” જેમને મન નથી એવા અસજી પચેન્દ્રિય જીવ, એ બધા પાપ કરીને પ્રસન્ન થાય છે જળચરથી લઈને અસજી મુખીના આ જેટલા જીવ છે તે બધા “પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય” પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત હોય છે પર્યાપ્ત નામકર્મના ઉદયથી જેમની ચોત ચોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થઈ જાય છે તેમને પર્યાપ્ત જીવો કહે છે અને જેમની પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થતી નથી તે જીવોને અપર્યાપ્ત જીવો કહે છે પર્યાપ્ત જીવોના બે ભેદ છે (૧) લઘ્વિ પ્રર્યાપ્ત (૨) કરણપર્યાપ્ત જે જીવો સમસ્ત પર્યાપ્તિયો પૂરી કરીને

નિર્વર્તિતવન્તસ્તે કરણપર્યાપ્તાઃ । તદિતરે-અપર્યાપ્તાઃ । ‘ અસુમલેસ્સપરિણામે ’
અસુમલેશ્ય પરિણામાઃ=અસુમલેશ્યાઃ=સમિલિટલેશ્યાયુક્તાઃ પરિણામાઃ=અધ્યવસાય
યેષાં તે, એતે પૂર્વોક્તાઃ ‘ અણ્ણે ય ’ અન્યે ચ=અન્યેઽપિ ‘ એવમાઈ ’ એવમાદયઃ=
એતાદશા પ્રાણિનઃ, ‘ પાણાહવાયકરણ ’ પ્રાણાતિપાતકરણ=પ્રાણાતિપાતાનુષ્ઠાન
‘ કરેતિ ’ કુર્ષ્ણિ, પુનરપિ તદેવાહ-‘ પાવા ’ इत्यादि-‘ પાવા ’ પાપાઃ=પાપકર્મ-
તત્પરાઃ, ‘ પાવાભિગમા ’ પાપાભિગમાઃ=પાપમેય અભિગમઃ=સ્વીકારો યેષા તે તથા
‘ પાવમઈ ’ પાપમતયઃ=પાપબુદ્ધયઃ, ‘ પાવરુઈ ’ પાપરુચયઃ=પાપે એવ રુચિ=રત્ન-
રાગો યેષા તે તથા, ‘ પાણવહકયરુઈ ’ પ્રાણવધકૃતરતયઃ=પ્રાણવધે કૃતા-રતિઃ=
પ્રીતિર્યસ્તે તથા, ‘ પાણવહરૂવાણુઠાણા ’ પ્રાણવધરૂપાનુષ્ઠાના=પ્રાણવધરૂપમનુષ્ઠાન

હસકે પહિલે નહીવે લબ્ધિપર્યાપ્ત જીવ હેં । તથા જો જીવ શરીર ઇન્દ્રિય
આદિ કરણોં કી રચના કો પૂર્ણ કર ચુકતે હેં યે કરણપર્યાપ્ત હૈ ।
હનસે ભિન્ન જો જીવ હેં વે અપર્યાપ્ત હેં તથા (અસુમલેસ્સપરિણામે)
જિન જીવોં કે અધ્યવસાય-પરિણામ-સક્લિષ્ટ લેશ્યાયુક્ત હેં (એ ‘
યે તથા (અણ્ણે ય એવમાઈ) હનસે ભિન્ન ઓર ભી એસે હી પ્રાણી
(કરેતિપાણાહવાય કરણ) પ્રાણાતિપાતરૂપ પાપ કે કરને વાલે હોતે હેં ।
હસી વાત કો સુઘ્રકાર “ પાવા ” इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं (पावा)
જો પાપકર્મ કરને મેં તત્પર હૈ, (પાવાભિગમા) પાપ પ્રવૃત્તિ હી જિન્હે
સ્વીકૃત હૈ, (પાવમઈ) જિનકી બુદ્ધિ પાપમય હો રહી હૈ, (પાવરુઈ)
પાપકર્મ મેં જિનકી રુચિ અધિક સે અધિક રૂપ મેં સજગ રહતી હૈ,
(પાણાવહકયરુઈ) પ્રાણવધ મેં જિન્હે આનંદ આતા હૈ (પાણાવહરૂવાણુ-

મરે છે-તે પહેલા મરતા નથી, તેમને લબ્ધિ પર્યાપ્ત હોયો કહે છે તથા જે
હોયો શરીર ઇન્દ્રિય આદિ કરણોની રચના પૂર્ણ કરી નાખે છે, તે હોવાને
કરણ પર્યાપ્ત કહે છે તેમનાથી જે ભિન્ન પ્રકારના હોયો છે તેઓ અપર્યાપ્ત છે,
તથા “ અસુમલેસ્સપરિણામે ” જે હોવાના અધ્યવસાય-પરિણામ-સક્લિષ્ટ
લેશ્યા યુક્ત હોય છે “ એ એ ” તેઓ તથા “ અણ્ણેય એવમાઈ ” તે સિવાયના
બીજા પણ એવા જ પ્રાણીઓ “ કરેતિ પાણાહ વાયકરણ ” પ્રાણાતિપાત રૂપ
પાપ કરનારા હોય છે એજ વાતને સૂત્રકાર “ પાવા ” इत्यादि पदों द्वारा
પ્રગટ કરે છે “ પાવા ” જે પાપકર્મ કરવાને તત્પર હોય છે, “ પાવાભિગમા ”
પાપ પ્રવૃત્તિ જ જમણે સ્વીકારેલી છે “ પાવમઈ ” જેમની બુદ્ધિ પાપમય થઈ
ગઈ છે, “ પાવરુઈ ” પાપકર્મમા જ જેમની વૃત્તિ વધારેમા વધારે જાગૃત રહે
છે, “ પાણવહ કયરુઈ ” પ્રાણવધમા જેમને મળ આવે છે, “ પાણવહરૂવાણુ

મહોસિણ સયાપતત્ત-દુગ્ગધધિસ્સ-ઉઠ્ઠેયજળગેસુ વીભચ્છદરિ-
સણિજ્ઞેસુ ય નિચ્ચં હિમપડલસીયલેસુ કાલોભાસેસુ ય भीम
ગંभीર લોસહરિસણેસુ ણિરભિરામેસુ નિપ્પડિયાર વાહિરોગજરા-
પાલિણેસુ અર્હવ નિચ્ચધયારતમિસ્સેસુ પડ્ધમ્મણેસુ વવગયગહ-
ચંદ-સૂર-ળક્કવત્ત-જોડ્ધસેસુ મેયવસામસપડલ-પોચ્ચડ-પૂય-
રુહિરુવિક્કણ વિલીળ-ચિવ્વકળરસિયા વાવળળકુહિય ચિવ્વલ્લક-
દમેસુ કુકૂલાનલ-પલિત્તજાલમુમ્મુર અસિક્કલુરકરવત્તધારસુ
નિસિય વિચ્છુયડક નિવાતોવમ-ફરિસ અતિદુસ્સહેસુ ય અત્તાળા
અસરળા કહુયદુક્ખપરિતાવળેસુ અણુવદ્ધ નિરતરવેયળેસુ
જમપુરિસસકુલેસુ ॥ સૂ૦ ૨૪ ॥

ટીકા—‘તસ્સ ય પાવસ્સ’ તસ્ય ચ પાપસ્ય=પ્રાણવધસ્વરૂપસ્ય પાપ
વૃક્ષસ્ય ‘ફલવિવાગ’ ફલવિપાક=“પ્રાણાતિપાતસ્ય નરકનિગોદાદિ દુઃસ્વરૂપ
કટુફલ ભવિષ્યતી”તિ પાપપરિણામ, ‘અચળમાળા’ અજાનન્ત પાપકર્મણઃ
‘નરકતિર્યગ્યોનિં વર્ધયન્તિ’ इत्यग्रेण सम्बन्ध, वेदनामेव वर्णयति—‘મહાભય’

इस प्रकार “जे वि य करेति पावा पाणवह” यह प्रतिज्ञात पांचवां
प्राणवधकर्तृद्वार कह दिया—अब सूत्रकार “जह य कओ जारिस फल
देइ” यह चतुर्थ फल द्वार कहते हैं—‘तस्स य पावस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स य पावस्स) इस प्राणवधरूप पाप वृक्षका (फलविवाग)
नरक निगोद आदि दुःस्वरूप कटुक फल भोगना होगा इस बात को
(अचाल माणा) नहीं जानते हुए पापीष्ट जीव (नरयतिरिक्खजोणिं

આ રીતે “જે વિ ય કરેતિ પાવા પાણવહ” તે પ્રતિજ્ઞાત પાપમા
પ્રાણવધકર્તૃદ્વારનું વિવેચન સંપૂર્ણ થયું હોવે સૂત્રકાર “જહ ય કઓ જારિસ
ફલ દેઈ” આ ચતુર્થ ફલદ્વારનું વિવેચન કરે છે “તસ્સ ય પાવસ્સ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તસ્સ ય પાવસ્સ” આ પ્રાણવધરૂપ પાપવૃક્ષનું “ફલવિવાગ” નરક
નિગોદ આદિ દુઃખરૂપ કટુ ફળ ભોગવવું પડશે, તે વાતને “અચળમાળા”

કાર્યં યેષાં તે તથા, 'પાણવહકહાસુ' પ્રાણવધકથાનુ=પ્રાણિહિસાવાર્તાસુ=અભિરમતા । અભિરમતઃ પ્રસીદન્ત સન્તસ્તે 'વહુષ્પગાર' વહુષ્પગાર નાનાવિધં 'પાવ' પાપ 'કરેતુ' કૃત્વા 'તુદ્ધા' તુષ્ટાઃ =પ્રમત્ના 'હુતિ' મયન્તિ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

પૂર્વ 'જેવિય કરેતિ પાપાપાણવહ્નિ'તિ પ્રતિજ્ઞાત પશ્ચમ પ્રાણવધકર્તૃદ્વારં નિરૂપિત, સમ્પતિ 'જહ્યક્રઓ જારિસ-ફલ દેહ' યથા ચ કૃતઃ પ્રાણવધો યાદશ ફલ દદાતિ'તિ ચતુર્થ ફલદ્વાર પ્રતિપાદયન્નાહ-'તસ્સે' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-તસ્સ ય પાવસ્સ ફલવિવાગ અયાણમાણાવઙ્ગિતિ મહબ્ભયં અવિસ્સામવેયણ દીહકાલવહુદુક્ખસંકડ નરયતિરિ-ક્ખજોણિં । ઇઓ આઉક્ખણ્ણ ચુયા અસુભકમ્મવહુલા ઉવવજ્જંતિ નરણ્ણસુ હુલિય મહાલણ્ણસુ વયરામય કુહુ-રુદનિસ્સધિ-દાર વિરહિય-નિમ્મદ્વ-ભૂમિતલ-સ્વરામરિસ-વિસમણિ રયઘર ચારણ્ણસુ

ઢાળા) પ્રાણવધરૂપ કાર્ય કરના હી જિનકા એક અનુષ્ઠાન હૈ ઓર (પાણાવહ કહાસુ અભિરમતા) પ્રાણિયોં કી હિંસાત્મક વાર્તાઓં મેં જિન્હેં રસ મિલતા હૈ, એસે જીવ (વહુષ્પગાર) નાનાવિધ (પાવ કરેતુ) પાપ કરકે (તુદ્ધા) સતુષ્ટ (હુતિ) હોતે હૈં ।

ભાવાર્થ—જલચર, થલચર આદિ જિતને મી તિર્યચ હૈં, એવ પક્ષી આદિ જિતને મી સ્થેચર જીવ હૈ—ચાહે વે સજી હો ચાહે અસજી હો પર્યાપ્ત હો ચાહે અપર્યાપ્ત હો યદિ યે જીવ ઘાત કરકે અપના નિર્વાહ કરતે હૈં તો પાપી હૈ—પાપકર્મ મે રત હૈ । જિન જીવો કે પરિણામોં મેં અશુભલેશ્યા વર્તતી રહતી હૈ, જો પાપમય કૃત્યોં મે આનન્દ માનતે હૈં ઇત્યાદિ પ્રકાર કે જીવ મી પાપી ઓર પાપકર્મ રત હૈ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

ઢાળા ” પ્રાણવધનુ કાર્યં જ જેમનુ એક અનુષ્ઠાન છે, અને “ પાણવહકહાસુ અભિરમતા ” પ્રાણીઓની હિસાત્મક વાર્તાઓમા જેમને રમ પડે છે, એવા હોવે. “ વહુષ્પગાર ” વિવિધ “ પાવકરેતુ ” પાપો કરીને “ તુદ્ધા ” સતોષ “ હુતિ ” પામે છે

ભાવાર્થ—જળચર, સ્થળચર આદિ જે જે તિર્યચ છે, અને પક્ષી આદિ જેટલા સ્થેચર (નલચર) હોવે છે તેઓ સજી હોય કે અસજી હોય, પર્યાપ્ત હોય કે અપર્યાપ્ત હોય પણ જે તેઓ હોવાની હત્યા કરીને પોતાનો નિર્વાહ ચલાવતા હોય તો તેઓ પાપી છે—પાપકર્મમા રત છે જે હોવાના પરિણા-મોમા અશુભલેશ્યા પ્રવર્તતિ હોય છે જેઓ પાપમય કૃત્યોમા આનન્દ માનતા હોય તે, ઇત્યાદિ પ્રકારના હોવા પણ પાપી અને પાપકર્મમા રત હોય છે ॥ સૂ. ૨૩ ॥

રત્નપ્રભાદિષુ 'હુલિય' શીઘ્રમ્ 'ઉવચ્ચજતિ' ઉત્પદ્યન્તે । કથમ્ભૂતેષુ નરકેષુ ?—
 इत्याह—'महालयेसु' महालयेषु=क्षेत्रस्थितिभ्या महत्सु 'वयरामयकुडुरुद
 निस्संधिदारविरहियनिम्मद्वभूमितलखरामरिसविसमणिरयघरचारणसु' उच्चमयकु-
 डय-रुन्द-निस्सन्धिदारविरहितनिर्माद्वभूमितलखराऽमर्शविषमनरकघरचारकेषु
 =वज्रमयकुडयानि=वज्रभित्तयः, रुन्दाः=विस्तीर्णाः, देशी-शब्दोऽयम्, पिस्तीर्ण-
 वाचकः निस्सन्धयः=सन्धिरहिताः, दारविरहिताः=गमनागमनद्वारवर्जिता, निर्माद्व-
 वभूमितलाः=कठोरतरभूमिभागाः, तथा खरामर्गा =कठिनस्पर्शा, पिपमाः=उच्चा
 रचा, नरकगृहा =नरकवासा एव चारका =चन्द्रिगृहाः येषु नरकेषु ते तथा तेषु,
 'महोसिण-सयापतत्त-दुग्गन्ध-विस्स-उव्वेयजणगेसु' महोष्णसदाप्रतप्त-दुर्गन्ध

(असुभ कम्मवहुला) प्राणीवधजन्य पाप्मकर्म के भार से अत्यंत दबे
 हुए होकर (नरएसु) रत्नप्रभा आदि पृथिवी में (हुलिय) शीघ्र ही
 (उवचजति) उत्पन्न हो जाते हैं । ये नरक (महालयेसु) क्षेत्र तथा
 स्थिति की अपेक्षा महान् हैं तथा (वयरामयकुडुरुदनिस्सधिदारविरहिय
 निम्मद्वव भूमितल खरामरिसविसमणिरयघरचारणसु) (निरयघर-
 चारणसु) नरकावासरूपचन्द्रिगृह (वयरामयकुडुरु) वज्रभित्तिवाले हैं ।
 (रुद) अत्यंत विस्तृत हैं (निस्सधि) सन्धि रहित हैं । (दारविरहिय)
 गमनागमन के साधनभूत द्वार से हीन और (निम्मद्वव) मृदुता रहित
 (खरामरिस) कठोरतर (विसम) ऊंचे नीचे भूमिभागवाले हैं । (महो-
 सिण सयापतत्त-दुग्गन्धविस्स-उव्वेयजणगेसु) (महोसिण) इनमें सदा
 उष्णजन्य वेदना रहा करती है । (सयापतत्त) ये निरन्तर तापसे व्याप्त

જીવ મનુષ્ય લવમાથી ભરીને “ અસુભ કમ્મવહુલા ” પ્રાણીવધને કારણે ઉત્પન્ન થયેલા પાપકર્મના ભારથી અત્યંત દબાયેલ એવા તે જીવો “ નરણસુ ” રત્ન પ્રભા આદિ પૃથ્વીઓમાં ‘ હુલિય ’ તરત જ “ ઉવચ્ચજતિ ” ઉત્પન્ન થઈ જાય છે તે નરક “ મહાલયેસુ ” ક્ષેત્ર અને સ્થિતિની અપેક્ષાએ મહાન છે તથા “ વયરામય કુડુ રુદ નિસ્સધિદાર વિરહિય નિમ્મદ્વવ ભૂમિતલ ધરામરિસવિસમ ણિરયધર ચારણસુ ” “ નિરયધરચારણસુ ” નરકાવાસરૂપ અન્ધિગૃહ “ વયરામય કુડુ ” વજ્રની દિવાલોવાળા છે, ‘ રુદ ’ અત્યંત વિસ્તૃત છે, “ નિસ્સધિ ” સન્ધિરહિત છે ‘ દારવિરહિય ’ અવગ જવર માટેના દ્વારોથી રહિત છે, અને “ નિમ્મદ્વવ ” મૃદુતાથી રહિત “ ધરામરિસ ” કઠોરમાં કઠોર “ વિસમ ” ઊંચા નીચા ભૂમિ ભાગવાળા છે “ મહોસિણ સયાપતત્ત-દુગ્ગન્ધવિસ્સ-ઉવ્વેયજણગેસુ ” “ મહોસિણ ” તેમાં સદા ઉષ્ણતા જન્ય વેદના રહ્યા કરે છે, ‘ સયાપતત્ત ’

इत्यादि—‘महब्भय’ महाभया ‘अविस्सामवेयण’ अधिश्रामवेदनां=प्रतिसमयम-
नुभूयमानाऽशातवेदना, ‘दीहकालवहुदुक्खसकड’ दीर्घकालवहुदुःखसकटां=
दीर्घकालमभिव्याप्यवर्तमानैः बहुभिर्नानाविधैः शरीरमानसैर्दुःखैः सकटा=सकुला,
तादृशीं ‘नरयतिरक्खजोणि’ नरकतिर्यग्योनिं=नरकेषु तिर्यक्षु च या योनि=
उत्पत्तिस्थान ता ‘वडुति’ वर्धयन्ति=तासु तासु नानाविधासु योनित्पूत्पद्य च
महावेदनामनुभवन्तीत्यर्थः । ते प्राणवधकारकाः नरकतिर्यगादि कुयोनिषु परि-
भ्रमण कुर्वन्तो जन्म मरणाद्यविच्छिन्नपरम्परया यथा घोरातिघोरदुःखमनु-
भवन्ति तथोच्यते—‘इओ’ इत्यादि—ते प्राणवधकारकाः ‘आउक्खए’ आयुः
क्षये ‘इओ’ इतः=मनुष्य भवात् ‘चुया’ च्युताः—गृताः सन्तः ‘असुभकम्मव-
हुला’ अशुभकर्मवहुलाः=प्राणिवधपापकर्मप्रचुरा सन्तः ‘नरएसु’ नरकेषु=

वडुति) नरक तिर्यच योनि को बढाते हैं जो योनि (महब्भय) अत्यंत-
भयप्रमद, एव (अविस्सामवेयण) प्रतिसमय अनुभूयमान अशातवेदना
सम्पन्न है—तथा (दीहकाल वहुदुक्खसकड) जिसमें दीर्घकालतक जीव
नाना प्रकार के शारीरिक एव मानसिक दुःखों को भोगा करता है ।
ऐसी उस विविध शारीरिक मानसिक दुःखों से सकुल नरक तिर्यच
योनि को बढाते हैं । तात्पर्य इसका यह है कि जो प्राणवध करनेवाले
जीव हैं वे उन २ नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होकर महान् वेदना
ओंका अनुभव करते रहते हैं । इस प्रकार नरक तिर्यच आदि कुयोनियों
में परिभ्रमण करते हुए वे प्राणवधकारी जीव जन्म मरण आदि की
अविच्छिन्न परम्परा से जिस प्रकार घोरातिघोर दुःखों को भोगते हैं,
अब सूत्रकार इसी विषय को यद्वा स्पष्ट करते हैं (इओ आउक्खए चुया)
आयु के क्षय होने पर मनुष्यभव से मरकर प्राणवध कारक जीव

યોનિને વધારે છે, જે યોનિ “મહબ્ભય” અત્યંત ભયપ્રદ, અને “અવિસ્સામ
વેયણ” પ્રતિકાળે અનુભવાતી આશાના વેદનાથી યુક્ત છે, તથા “દીહકાલ
વહુદુક્ખસકડ” જેમાં દીર્ઘકાળ સુધી જીવ વિવિધ પ્રકારના શારીરિક અને
માનસિક દુઃખોને ભોગવ્યા કરે છે એવી વિવિધ શારીરિક અને માનસિક
દુઃખોથી યુક્ત, તે નરક તિર્યચ યોનિને તેઓ વધારે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે
કે પ્રાણવધ કરનાર જીવો ઉપરોક્ત વિવિધ યોનિયોમાં ઉત્પન્ન થઈને મહાન
વેદનાઓ અનુભવે છે આ રીતે નરક તિર્યચ આદિ કુયોનિયોમાં પરિભ્રમણ
કરતા તે પ્રાણવધ કરનારા જીવો જન્મ મરણ આદિની અતૂટ પરપરા પૂર્વક
જે જે પ્રકારના ભયકરમાં ભયકર દુઃખો ભોગવે છે, તે વિષયનું હવે સૂત્રકાર
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે “इओ आउक्खए चुया” आयुष्यનો क्षય થતા પ્રાણવધकारी

મસ્તકશૂલાદય, જરા=વાર્ધક્ય ચ, તૈઃ પીડિતેષુ=વ્યાપ્તેષુ, 'અર્દ્યનિચ્ચયાર-
તમિસ્સેસુ' અતીવનિત્યાન્ધકારતમિસ્સેષુ=અતીવ=અત્યન્ત નિત્યાન્ધકારેણ તમિ-
સ્સેષુ=ધોરાન્ધકારસ્વરૂપ-પ્રાપ્તેષુ, અતएव 'પહમણ્સુ' પ્રતિભયેષુ=પ્રતિવસ્તુભય-
યુક્તેષુ, 'વવગયગહચદમૂરણવલ્લજોડસેસુ' વ્યપગતગ્રહચન્દ્રમૂરનક્ષત્રજ્યોતિષ્કેષુ
=ગ્રહચન્દ્રસૂર્યનક્ષત્રજ્યોતિષ્કર્જિતેષુ, 'મેયવસામસપટલ પોચ્ચડપૂયરુહિરુક્ષિણ-
વિલીણચિક્કણરસિયાવાવણ્ણકુહિયચિચ્ચલ્લકદમેસુ' મેદોવસામાસપટલપોચ્ચ-
ડપૂયરુધિરોત્કીર્ણવિલીનચિક્કણરસિચ્ચાપન્નકુધિતચિક્કલ્લકદમેષુ=મેદઃ=શરીર-
સ્નેહવિશેષ, વસા=ચર્વી ઇતિ માપા, માસ=પ્રસિદ્ધ તેષાં યત્પટલ=રાગિઃ
'પોચ્ચડ' ગિલગિલાયમાન પૂય='પીપ' 'પરુ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ, રુધિર=શોણિત
તેન ઉત્કીર્ણ=વ્યાપ્ત વિલીન=સમૃત, ચિક્કણ=ગુન્દ્રવત્, 'રસિકા' વિકૃતરુધિર
વ્યાપન્ન=વિનષ્ટસ્વરૂપમ્ અતएव-કુધિત=દુર્ગન્ધિત 'ચિચ્ચલ' શિથિલકદમઃ,
કદમઃ=ઘનકદમથ ચેષુ તે તથા તેષુ । 'કુકૂલાનલપલિત્તજાલમ્મુરઅસિક્કુર

અવસ્થા હૈં इनकी पीडा यहा प्रतिकार-उपाय रहित होती है । (अर्द्व
णिचधयारतमिस्सेसु) यहां पर सर्वदा घोरान्तिघोर अधिकार रहता है ।
(पहमण्सु) यहां की प्रत्येक वस्तु भय से भरपूर रहती है । (ववगय
गहचदमूरणवखत्तजोडण्सु) न यहां पर कोई ग्रह हैं न कोई चन्द्र है,
न सूर्य है, न नक्षत्र हैं । (मेयवसामसपटल-पोचड-पूय-रुहिरुक्खिण्ण
विलीण-चिक्कण-रसिया वावण्णकुहियचिचल्लकदमेसु) मेद, वसा-
चर्वी और मास का ढेर इन स्थानों में सदा लगा रहता है । तथा पोचड
गिलगिलायमान पूय-पीप, एव रुधिर से व्याप्त, गौंद के समान चिकने
भरे हुए व्यापन्न दुर्गंधित ऐसे विकृत खून, से तथा चिकने घनकदम
से ये स्थान सदा व्याप्त रहते हैं । (कुकूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-

માથાનો હુ ખાવો આદિ જે રોગો છે વૃદ્ધાવસ્થા આદિ જે અવસ્થા છે,
તેમની પીડાનો ત્યા કોઈ પણ ઇલાજ હોતો નથી તે પ્રતિકાર રહિત હોય
છે, "અર્દ્વ નિચ્ચયારતમિસ્સેસુ" અહીં કાયમ ઘોરમા ઘોર અધિકાર રહે છે
"પહમણ્સુ" અહીંની દરેક વસ્તુ ભયજનક હોય છે "વવગયગહચદમૂરણમ્
જોડસેસુ" અહીં કોઈ ગ્રહ નથી, ચન્દ્ર નથી, સૂર્ય નથી કે નક્ષત્ર પણ નથી
"મેયવસા મસપટલ-પોચ્ચડ-પૂય-રુહિ રુક્ષિણ-વિલીણ-ચિક્કણ, રસિયાવાવણ્ણકુહિય
ચિક્કલ્લકદમેસુ" મેદ, વસા ચર્વી અને માસના ઢગલા તે સ્થાનોમાં સદા
પડેલા હોય છે તથા પોચ્ચડ-ડિચ્ચડ અને પૂય પીણ તથા રક્તથી વ્યાપ્ત,
ગુદરના જેવા ચીકણા, ભરેલા દુર્ગંધમય વિકૃત લોહીથી, તથા ચીકણા કાદવથી
તે સ્થાનો સદા છવાયેલા રહે છે "કુકૂલાનલ-પલિત્તજાલ-મમ્મુર-અસિક્કુર

-વિશ્રોદ્ધેગજનકેષુ તત્ર મહોષ્ણાઃ=અત્યન્તોષ્ણાઃ, સદા પ્રવત્તાઃ=નિરન્તરતાપયુક્તાઃ, દુર્ગન્ધા=અનિષ્ટગન્ધયુક્તાઃ, વિશ્રા=અપવમાસત્પૂર્તિગન્ધાઃ, અતए-ઉદ્ધેગ-જનકા=ઉદ્ધેગોત્પાદકાઃ, તેષુ 'વીમચ્છદરિસણિજ્જેસુ' વીમત્સદર્શનીયેષુ=ઘૃણિ-તદર્શનેષુ 'નિચ્ચ' નિત્ય 'હિમપટલસીયલેસુ' હિમપટલશીતલેષુ=હિમપટલ મિવ શીતલા યે તે તથા તેષુ 'કાલોભાસેસુ' કાલાવભાસેષુ, કાલ.=શ્યામલોઽવ-ભાસઃ=કાન્તિર્યેષા તે તથા તેષુ કૃષ્ણવર્ણેષુ 'ભીમગમ્भीરલોમહરિસણેસુ' ભીમગ મ્भीરલોમહર્ષણેષુ-તત્ર, ભીમાઃ=ભયજનકા ગમ્भीરાઃ-અતલસ્પર્શા અતए ક્રોમહર્ષણા =રોમાશ્ચકારિણસ્તેષુ=તત્સ્વરૂપશ્રવણમાત્રેણ-રોમાશ્ચોત્પાદકેષુ 'ણિરભિરામેસુ' નિરભિરામેષુ = અશોભનેષુ 'નિપ્પડિયારવાહિરોગજરાપીલિણસુ' નિપ્પતિકાર વ્યાધિરોગજરાપીડિતેષુ=નિપ્પતિકારાઃ=પ્રતિકારરહિતા વ્યાધયઃ=કુષ્ઠાદયઃ રોગા

રહતે હૈં । (દુર્ગધ વિસ્સઙ્ગવેયજણગેસુ) અનિષ્ટતર દુર્ગધ સે ભરપૂર રહતે હૈં । વિસ્સ-કચ્ચેમાસ કે જૈસી યહા સદા દુર્ગધ આતી રહતી હૈં, હસલિયે નારકિયો કો યે સદા ઉદ્ધેગ કે ઉત્પાદક હોતે રહતે હૈં । (વીમ ચ્છદરિસણિજ્જેસુ ય) દેખને મેં યે વડે અસુહાવને ઘૃણિત પ્રતીત હોતે હૈં । (નિચ્ચ હિમપટલસીયલેસુ) સદા યે હીમપટલ કે જૈસે શીતલ હોતે હૈં (કાલોભાસેસુ) હનકી કાતિ કાલી હોતી હૈં । (ભીમગમ્भीરલોમહરિ-સણેસુ) હન નરકાવાસોં મે જીવ કો સદા ભય હી ભય રહતા હૈં । યે આવાસ કિતને ગહરે હૈં હનકા પતા નહી પડતા હૈં । હનકે સ્વરૂપ શ્રવણ માત્ર સે હી જીવોં કે શરીર મેં રોમાચ યહા હો આતે હૈં । (ણિરભિરામેસુ) યે સદા અશોભન હૈં । (નિપ્પડિયાર વાહિરોગજરાપીલિણસુ) યહા કો જો કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિયા હૈં, મસ્તકશૂલ આદિ જો રોગ હૈં, વાર્ધક્ય જો

તેઓ નિરન્તર તાપથી બ્યાપ્ત કરે છે, “દુર્ગધવિસ્સઙ્ગવેયજણગેસુ” સૌથી ખરાબ દુર્ગધથી ભરપૂર રહે છે વિસ્સ-કચ્ચેમાસના જેવી દુર્ગધ ત્યા સદા આવ્યા કરે છે, તેથી નારકીઓને તેઓ સદા સતોષ પેદા કરનારા હોય છે વીમચ્છદરિસણિજ્જેસુ ય” જેવામા તે ઘણા જ બેડોળ-ધૂણા થાય તેવા હોય છે “નિચ્ચ હિમપટલસીયલેસુ” તેઓ સદા હિમના થરે જેવા શીતળ હોય છે ‘કાલો ભાસેસુ’ તેઓ દેખાવે કાળા હોય છે “ભીમગમ્भीરલોમહરિસણેસુ” તે નરકવાસોમા જીવોને સદા ભય જ રહે છે તે આવાસો કેટલા બિડા છે તેની ખબર પડતી નથી તેના સ્વરૂપનુ વર્ણન સાબળતાજ જીવોના શરીરના શમાય હલા થઈ જાય છે “ણિરભિરામેસુ” તે યહા શેષલા વિનાના છે “નિપ્પડિયારવાહિરોગજરાપીલિણસુ” અહીંની કુષ્ઠ આદિ જે વ્યાધિયો

કરવત્તધારસુનિસિયવિચ્છુયડકનિયાતોયમફરિસઅતિદુસ્સહેસુ ' કુકૂઝાનલ
 પ્રદીપ્તજ્વાલમર્મુરાસિધુરકરપત્રધારસુનિશિતવૃથિરુદ્ધશનિપાતાંપમાતિદુસ્સહેપુ, કુકૂ
 ઝાનલ:=કરિપાગ્નિ:, સ્વદિરાગ્નિર્ગ, પ્રદીપ્તા ચ ઝગાલેતિ પ્રદીપ્તજ્વાલા=પ્રવૃદ્ધ-
 વહ્નિશિલા ચ, મુર્મુર:=મસ્મમિશ્રોઽગ્નિમળ:, અસિ:=તલ્લઃ, ધુર:=નાપિતોપકરણ,
 કરપત્ર=કાષ્ઠભેદમ્શસ્ત્રવિશેષ: તેષા ધારેતિ અસિધુરકરપત્રધારા, સુનિશિતવૃથિ-
 કદશનિપાત:=સુનિશિતાસ્તીક્ષ્ણા યે વૃથિરુદ્ધા =તત્પુન્ડ્રમ્કાસ્તેષા નિપાત-
 ષ્ચેતિ દ્વદ્વ એમિરુપમા=સાદૃશ્ય યસ્ય સ તવાવિધ: સ્પર્શ યેષા તે તથા અતપ્ત-
 તે ચ તે અતિ દુસ્સહા:=અત્યન્તદુઃસ્વેન સહનયોગ્યાસ્તેષુ, ' કદુયદુઃસ્વપરિતા-
 વણેસુ ' કદુકદુઃસ્વપરિતાપનેષુ = કદુકૈ: =દારુણૈર્દુઃસ્વૈર્દશનિધક્ષેત્રવેદનારૂપૈ:
 પરિતાપન યેષુ તેષુ ' અણુવદ્ધનિરતરવેયણેસુ ' અણુવદ્ધનિરન્તરવેદનેષુ=અણુ-
 વદ્ધા=અનુક્ષણ વ્યાપ્તા નિરન્તરા=અવિચ્છિન્નવેદના=પીડા યેષુ તથા તેષુ ' જમ-
 પુરિસસકુલેસુ ' યમપુરુષસકુલેષુ, યમસ્ય-દક્ષિણદિર્લુ લોકપાલસ્ય પુરુષા:-

અસિધુર-કરવત્તધાર સુનિસિયવિચ્છુયડકનિયાતોયમ-ફરિસઅતિદુ-
 સ્સહેસુ) હનકા સ્પર્શકુકૂઝાનલ-કરીપાગ્નિ અથવા સ્વદિરાગ્નિ કે જેસા,
 પ્રવૃદ્ધ-વહ્નિ કી જ્વાલા કે જેસા, મુર્મુર-મસ્મમિશ્રિત અગ્નિકળ કે જેસા
 અસિ-તલવાર કી ધાર કે જેસા, ધુર-ધુરા કી ધાર કે જેસા, કરવત-
 કરોંતિ કી ધાર જેસા, એવ અત્યત્ત સીક્ષણવૃથિરુદ્ધ કે ઢક કે દ્વારા કાટને
 જેસા હૈ, હસી કારણ યે સ્થાન અત્યત્ત દુસ્સહ વન રહે હૈં (કદુયદુઃસ્વ
 પરિતાવણેસુ) દશવિધક્ષેત્ર વેદનારૂપ દારુણ દુઃખોં દ્વારા જહાં જીવોં
 કો સદા સતાપ હી સતાપ ભોગના પદ્ધતા હૈ તથા (અણુવદ્ધ નિરતરવેય
 ણેસુ) યહા પ્રતિક્ષણ અવિચ્છિન્ન અસહ્ય પીડા હોતી હૈ. એવ (જમપુરિસ
 સકુલેસુ) યમ-દક્ષિણ દિશાસવધી લોકપાલ કે અમ્બ અમ્બરીષાદિક

કરવત-ધારસુનિસિયવિચ્છુયડકનિયાતોયમ-ફરિસ અતિદુસ્સહેસુ " તેમનેા સ્પર્શ
 કુકૂઝાનલ-કરિપાગ્નિ અથવા સ્વદિરાગ્નિ જેવો, પ્રવૃદ્ધ-અગ્નિની જ્વાળા જેવો,
 મુર્મુર-ભસ્મ-મિશ્રિત અગ્નિકણો જેવો, અસિ-તલવારની ધારના જેવો ધુર-
 ધરીની ધાર જેવો, કરવતની ધાર જેવો, અને અત્યત્ત સીક્ષણ વીછીના ડખ
 જેવો છે તે કારણ તે સ્થાનેા અત્યત્ત દુઃખદાયી હોય છે " કદુયદુઃસ્વ
 પારતાવણેસુ " દશ પ્રકારના ક્ષેત્ર વેદનારૂપ દારુણ દુઃખો દ્વારા જ્યાં જીવોને
 સદા સતાપ જ ભોગવવો પડે છે, તથા અણુવદ્ધનિરતરવેયણેસુ " ત્યાં દરેક
 ક્ષણે અવિચ્છિન્ન અસહ્ય પીડા ભોગવવી પડે છે અને " જમપુરિસસકુલેસુ "
 યમ દેવોથી તે અદા ઘેરાયેલા હોય છે યમ-દક્ષિણ દિશાના લોકપાલના અમ્બ,

અમ્યામ્મરીપાદયઃ પરમાધાર્મિકા અસુરકુમારદેવાસ્તૈ સકુલેષુ=વ્યાપ્તેષુ-પતા-
દશેષુ નરકેષુ તે પ્રાણવધકર્તારિ 'અત્તાણા' અત્રાણા=ત્રાણરહિતાઃ દુઃસ્વનિવારકા
ભાવાત્, અતएव 'અસરણા' અશરણા =શરણરહિતાઃ રક્ષકાભાવાત્, 'ઉવવજ્જતિ
ઉત્પદ્યન્તે' इति सम्बन्धः ॥મૂ૦ ૨૪॥

મૂલમ્—તત્થ ય અંતોમુહુત્તલલ્લિભવપચ્ચણ્ણં નિવ્વર્તેતિ
ઉ તે સરીર હુહં વીમચ્છદરિસણિજ્જ વીહણગં અટ્ટિણહારુણહ
રોમવજ્જિય અસુભગં દુક્કલવિસય, તઓ ય પજ્જાતિમુવગયા
इदिएहि पचहि वेदेति वेदणं असुहाए वेयणाए उज्जलवल
विउल—कमखडखरफरुसपगाढपयंडघोरवीहणगदारुणाए, किते २५॥

ટીકા—'તત્થ ય' તત્ર ચ નરકેષુ ઉત્પત્ત્યનન્તર તે પાપકર્માણઃ 'અતો
મુહુત્તલ્લિભવપચ્ચણ્ણ' અન્તર્મુહૂર્ત્તન્નિભવપત્ત્યયેન=અન્તર્મુહૂર્ત્તસ્ય વૈક્રિયલઙ્ઘ્યા
પરમાધાર્મિક અસુરકુમાર જાતિ કે દેવોં સે યે સદા સકુલ રહતે હૈં ।
એસે इन नरकोमा प्राणवध के करने वाले जीव (अत्ताणा) दुःस्वनिवा-
रक के अभाव से त्राण रहित एव (असरणा) रक्षक कोई न होने से
अशरण चन (उववज्जति) उत्पन्न होते हैं ।

ભાવાર્થ—પ્રાણવધ કરનેવાલે જીવ જો પાપપુજ કા સચય કરતે હૈં ।
ઉસકે પ્રભાવ સે વે યહાં સે મરકર શીઘ્ર હી નરક મે જમ લેતે હૈં ।
નરકોં મેં જીવ કી કૈસી હાલત હોતી હૈ એવ વહાં કી કયા સ્થિતિ હૈ યહી
થાત સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા સમજાઈ હૈ ॥ સૂ ૨૪ ॥

“ટીકાર્થ—(તત્થ ય) ઉન નરકોં મે ઉત્પત્તિ કે અનન્તર (તે) વે પાપકર્મ
વાલે જીવ, (અતોમુહુત્તલલ્લિ ભવપચ્ચણ્ણ) અન્તર્મુહૂર્ત્ત મે પ્રાપ્ત વૈક્રિયલ-

અમ્યારીપ આદિ પરમ અધાર્મિક અસુર કુમાર જાતિના દેવો છે પ્રાણવધ
કરનારા તે જીવો એથી તે નરકોમા “અત્તાણા” દુખ નિવારકને અભાવે ત્રાણ
રહિત અને “અસરણા” કોઈ રક્ષક નહીં હોવાથી અશરણ દશામા “ઉવવ-
જ્જતિ” ઉત્પન્ન થાય છે

ભાવાર્થ—પ્રાણવધ કરનારા જીવ જે પાપપુજનો અચય કરે છે તેના
પ્રભાવે અહીંથી મરીને તરત જ નરકમા ઉત્પન્ન થાય છે નરકોમા જીવોની
કેવી હાલત થાય છે અને ત્યાની કેવી પરિસ્થિતિ છે, એ વાત સૂત્રકારે આ
સૂત્રદ્વારા સમજાવી છે ॥સૂ ૨૪॥

ટીકાર્થ—“તત્થ ય” ઇત્યાદિ, “તત્થ ય”તે નરકોમા ઉત્પત્તિ થયા પછી “ત્તે”
તે પાપકર્મ કરનારા જીવ “અતોમુહુત્તલલ્લિભવપચ્ચણ્ણ” અન્તર્મુહૂર્ત્તમા પ્રાપ્ત વૈક્રિય
પૃ૦ ૧૩

ભવપ્રત્યયેન ચ, = ભવપ્રત્યયઃ = ભવન્તિ કર્મવશાઃ જીવાઃ અસ્મિન્નિતિ ભવઃ = નરકાદિજન્મ, ભવ એવ પ્રત્યયઃ = કારણ યસ્ય તત્ ભવપ્રત્યય = તેન-નરકજન્મકારણેન 'સરીર = શરીર નરકભવસમ્બન્ધિદેહ, 'નિવર્ત્તેતિ' નિર્વર્ત્તયન્તિ = રચયન્તિ । કોદશ શરીરમ્ ? इत्याह—'हुड' अस्फुट्रावय, वीमच्छदरिसणिज्ज 'वीभत्स दर्शनीय = विकृतस्वरूप 'वीहणग' भापक भयजनरुम्, 'अट्टिण्हारुणहरोमवज्जिय' अस्थिस्नायुनखरोमवर्जित = स्पष्ट, असुभगम् = असुन्दरम्, दुक्खविसय 'दु' खविपय = क्लेशबहुल शरीर निर्वर्तयन्तीति सम्बन्धः । 'तओ य' ततश्च = शरीरनिर्वर्तनानन्तर 'पज्जत्ति' पर्याप्ति = आहारशरीरेन्द्रिय-प्राणापानभाषामनःपर्याप्ति

બિધ સે ઔર ભવપ્રત્યય સે-નરક જન્મ કે કારણ સે વે (સરીર) શરીર કો નરકભવ સવધી શરીર કો (નિવર્ત્તિ) વના લેતે હૈ । તાત્પર્ય કહને કા ઘહ હૈ કિ નરકો મે જો જીવ નારકી જીવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ હસકા અન્તર્મુહૂર્ત્ત મે હી નારકી કા શરીર વન જાતા હૈ, કયોં કિ હસ શરીર કે વનને કા કારણ વહા પર જન્મ લેના હૈ । હસ શરીર કે અવયવ અસ્ફુટ રહતે હૈં હસલિયે હસે (હુડ) હુડ કહા હૈ ઔર (વીમ છદરિસણિજ્જ) ઘહ શરીર-વિકૃત સ્વરૂપવાળા હોતા હૈ હસલિયે વીમત્સ દર્શનીય કહા હૈ । (વીહણગ) ઘહ શરીર ભયજનક હોતા હૈ ઔર (અટ્ટિણહારુણહરોમવજ્જિય) અસ્થિ-હડ્ડિયોં સે, સ્નાયુ-નસોં સે તથા નખ ઔર રોમ સે રહિત (અસુભગ) અસુન્દર ઔર (દુક્ખવિસય) ક્લેશ બહુલ હોતા હૈ । (તઓ ય) હસ પ્રકાર શરીર કી રચના

લખિધથી અને ભવપ્રત્યયથી-નરકમા જન્મ થવાને કારણે તેઓ “ સરીર ” શરીરને-નરકભવ સવધી શરીરને “ નિવર્ત્તિ ” બનાવી લે છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે નરકમા જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમનું અન્તર્મુહૂર્ત્તમા જ નારકીનું શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યાં જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાનું કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને “ હુડ ” હુડ કહ્યા છે અને “ વીમચ્છદરિસણિજ્જ ” તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળું હોય છે તેથી તેને વીમત્સ દર્શનીય કહેલ છે “ વીહણગ ” તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને “ અટ્ટિણહારુણહરોમવજ્જિય ” અસ્થિ-હાડકાઓથી સ્નાયુ-નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, “ અસુભગ ” અસુન્દર અને “ દુક્ખવિસય ” ક્લેશ યુક્ત હોય છે, “ તઓ ય ” આ પ્રકારની શરીરની

‘उवगया’ उपगताः=प्राप्ताः-सन्तः ‘पचहि’ पञ्चभिः ‘इदिएहि’ इन्द्रियै = श्रोत्रादिभि ‘अमुहाए’ अशुभया=अशातरूपया, ‘वेयणाए’ वेदनया-अशात-वेदनीयकर्मोदयजनितया ‘वेयणं’ वेदन=कुम्भीपचनानि दुःख ‘वेदेति’ वेद-यन्ति=अनुभवन्ति । कीदृशया वेदनया ? इत्याह—‘उज्जलत्रलविउलकवखडखर फरुसपगाढपयडघोरवीहणगदाहणाए’ उज्जलत्रलविपुलकर्कशखरपरुपप्रचण्डघोर मीषणदारुणया=उज्जला=तीव्रानुभावात्प्रकर्षत्वात्, वला=वलवती अनियार्यत्वात्, विपुला=विशाला परिमाणरहितत्वात्, कर्कशा = कठोरा प्रत्यद्गदुःखजनकत्वात्, खरा=तीक्ष्णा-अन्त करणभेदकत्वात्, परुपा=निष्ठुरा-सुखलेशरहितत्वात् प्रगाढा-प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात्, प्रचण्डा=भयानका-आत्मनः-प्रतिप्रदेशव्यापित्वात्

हो जाने के अनन्तर (पञ्जत्तिमुचगया) आहार, शरीर, इन्द्रिय, प्राणा-पान, भाषा और मन, इन पर्याप्तियों को प्राप्त हुए वे नारकी जीव (इदिएहिं पचहिं) श्रोत्रादिक पाच इन्द्रियों द्वारा (असुहाण वेयणाए) असाता वेदनीय कर्म के उदय से जनित अशुभ अशातरूपवेदना से (वेयण) कुभी पचनादि दुःखों का (वेदेति) अनुभव करते हैं। यह अशातरूपवेदना उन नारकी जीवों की (उज्जलल विउल-कक्खड खरफरुसपगाढपयडघोरचीहणगदारुणाए) उज्ज्वल-तीव्रानुभावशाली होती है, बल-अनिवार्य होने से बलिष्ठ होती है, विपुल परिमाण रहित होने से विशाल होती है, (कक्खड) प्रत्येक अंग दुःख जनक होने से कर्कश-कठोर होती है। स्तर अतरंग की भेदक होने से तीक्ष्ण होती है। (फरुस) सुख के लेश से रहित होने के कारण निष्ठुर होती है। (पगाढ) प्रतिक्षण असमाधि की उत्पादक होने से प्रगाढ है (पयड) आत्मा के

રચના થઈ ગયા પછી “ પજ્જત્તિમુવગયા ” આહાર, શરીર, ઈન્દ્રિય, પ્રાણાપાન, ભાષા અને મન એ પર્યાપ્તિઓને પ્રાપ્ત કરીને નારકી જીવ “ હિદિર્હિ પચર્હિ ” શ્રોત્રાદિક પાત્ર ઈન્દ્રિયો દ્વારા “ અસુહાણ વેયણાઠ ” અસાતા વેદનીય કર્મના ઉદયથી જનિત અશુભ અશાતારૂપ વેદનાથી “ વેયણ ” કુલમા રધાવા આદિ દુષ્ક્રિયાઓ “ વેદેત્તિ ” અનુભવ કરે છે તે નારકી જીવોની તે આશાતારૂપ વેદના “ ઉજ્જલપલ્લવિઉવ-કક્કસડ-સર-ફહસપગાઢ પયડઘોરવીહણગદારુણાણ ” ઉજ્જવળ-તીક્ષ્ણ અનુભવવાળી હોય છે બલ-અનિવાર્ય હોવાથી પ્રબળ હોય છે, ત્રિપુલ-પરિમાણુ રહિત હોવાથી વિરાળ હોય છે “ કક્કસડ ” પ્રત્યેક અગમા દુષ્ક્રિયા જનક હોવાથી કઠોર હોય છે, સર-હૃદય ભેદક હોવાથી તીક્ષ્ણ હોય છે, ફહસ-સહેજ પણ સુખથી રહિત હોવાને કારણે નિષ્કુર હોય છે, પગાઢ-ઘરેડ પણ અસમાધિની ઉત્પાદક હોવાથી પ્રગાઢ હોય છે, પયડ

ભવપ્રત્યયેન ચ, = ભવપ્રત્યયઃ = ભવન્તિ કર્મવશાઃ જીવાઃ અસ્મિન્નિતિ ભવઃ = નરકાદિજન્મ, ભવ એ પ્રત્યયઃ = કારણ યસ્ય તત્ ભવપ્રત્યય = તેન-નરકજન્મકારણેન 'સરીર = શરીર નરકભવસમ્પન્નિદેહ, 'નિવત્તેતિ' નિર્વર્તયન્તિ = રચયન્તિ । કોદૃશ શરીરમ્ ? ક્ત્યાહ—'હુહ' અસ્ફુટાવય, વીમચ્છદરિસણિજ્જ 'વીમત્સ દર્શનીય = વિકૃતસ્વરૂપ 'વીહણગ' ભાષક ભયજનકમ્, 'અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય' અસ્થિસ્નાયુનસ્વરોમવર્જિત = સ્પષ્ટ, અસુભગમ્ = અસુન્દરમ્, દુક્ખવિસય 'દુક્ખવિસય = ક્લેશબહુલ શરીર નિર્વર્તયન્તીતિ સમ્પન્નઃ । 'તઓ ય' તતથ્વ = શરીરનિર્વર્તનાનન્તર 'પજ્જતિ' પર્યાપ્તિ = આહારશરીરેદ્રિય-પ્રાણાપાનભાષામનઃપર્યાપ્તિ

વિધિ સે ઔર ભવપ્રત્યય સે-નરક જન્મ કે કારણ સે વે (સરીર) શરીર કો-નરકભવ સવધી શરીર કો (નિવત્તેતિ) વના લેતે હૈ । તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ નરકો મે જો જીવ નારકી જીવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઉસકા અન્તર્મુદ્દર્ત મે હી નારકી કા શરીર વન જાતા હૈ, ક્યોં કિ હસ શરીર કે વનને કા કારણ વહા પર જન્મ લેના હૈ । હસ શરીર કે અવયવ અસ્ફુટ રહતે હૈં હસલિયે હસે (હુહ) હુહ કહા હૈ ઔર (વીમ ચ્છદરિસણિજ્જ) યહ શરીર-વિકૃત સ્વરૂપવાલા હોતા હૈ હસલિયે વીમત્સ દર્શનીય કહા હૈ । (વીહણગ) યહ શરીર ભયજનક હોતા હૈ ઔર (અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય) અસ્થિ-હડ્ડિયોં સે, સ્નાયુ-નસોં સે તથા નસ્ત્ર ઔર રોમ સે રહિત (અસુભગ) અસુન્દર ઔર (દુક્ખવિસય) ક્લેશ બહુલ હોતા હૈ । (તઓ ય) હસ પ્રકાર શરીર કી રચના

લઙ્ઘિથી અને ભવપ્રત્યયથી-નરકમા જન્મ થવાને કારણે તેઓ “સરીર” શરીરને-નરકભવ સવધી શરીરને “નિવત્તેતિ” બનાવી લે છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે નરકમા જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમનું અન્તર્મુદ્દર્તમા જ નારકીનું શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યાં જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાનું કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને “હુહ” હુહ કહ્યા છે અને “વીમચ્છદરિસણિજ્જ” તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળું હોય છે તેથી તેને વીમત્સ દર્શનીય કહેલ છે “વીહણગ” તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને “અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય” અસ્થિ-હાડકાઓથી સ્નાયુ-નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, “અસુભગ” અસુન્દર અને “દુક્ખવિસય” ક્લેશ યુક્ત હોય છે, “તઓ ય” આ પ્રકારની શરીરની

વિશેષઃ, મહાકુમ્ભી=પટાકૃતિપાત્રવિશેષસ્તયોર્મયે, સૂત્રે જાતિત્વાદેકવચનમ્ ।
 ‘પયણ’ પવચન-મોદનાદેરિવ ‘પડલગ’ પ્રકુલનમ્=સીસકવદ્વાલનમ્, ‘તવગ
 તલણ’ તપકતલન=નપકો લોહપાત્રવિશેષ ‘તવા’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધઃ, તસ્મિન્ તૈલા-
 દિભિરપ્પવત્તલનમ્, ‘મટ્ટમજ્જગ’ આપ્દ્ર્મર્જન ચ-આપ્દ્ર્મર્જનપાત્ર-‘માડ’ ઇતિ
 પ્રસિદ્ધઃ, તત્ર મર્જન ચણકાદેરિવ, इत्येषा द्वन्द्वस्तानि च ‘લોહકડાહુક્કડૂણાણિ ય’
 લોહકટાહોત્કચનનાનિ ચ=લોહકટાહઃ=‘કઢાઈ’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધઃ, તત્ર ઉત્કચ
 નાનિ=ઓષધિચતુત્કાલનાનિ ‘કોટ્ઠવલિકરણકોટ્ઠનાણિ’ કોટ્ઠવલિકરણકોટ્ઠનાનિ=
 કુદેર=ક્રીડયા વલિકરણાય, કુટ્ઠનાનિ=કરચરણાચવયવત્રોટનાનિ-શરીર ‘સ્વખંડશઃ’
 કૃત્વા કાકાદિભ્યોઽર્પણાનીત્યર્થઃ, ‘સામલિતિવચ્ચગ્લોહકટગભિમારણાપસારે-
 ‘કદુમહાકુમ્ભી’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-નારકીજીવ નરકોંમે (કદુમહાકુમ્ભી) કદુ-લોહમય વિશાલ
 પાત્રાવિશેષ મેં તથા ઘટાકૃતિ જૈસે મહાકુમ્ભી મેં ઓદનાદિક કી तरह,
 (પયણ-પડલણ-તવગ-તલણ-મટ્ટમજ્જણાણિ ય) (પયણ) પકાયે જાને
 કે (પડલણ) સીમક-રાગ કી तरह ગલાયે જાને કે, (તવગતલણ)
 ગર્મ લોહ કે તવા પર તૈલાદિક મેં તલે ગયે પૂઆ આદિ કી तरह તલે
 જાને કે (મટ્ટમજ્જણાણિ ય) માંડ મેં મુજે ગયે ચના આદિ કી तरह
 મુજે જાને કે દુઃખોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ । તથા (લોહકડાહુક્કડૂણાણિ ય)
 જૈસે લોહે કી કઢાઈ મેં ઔષધિયાં ઉવાલી જાતી હૈ ઉસી तरह વહા પર
 વે મી વહે ૨ કડાહો મેં ઉવાલે જાતે હૈ । (કોટ્ઠવલિકરણકોટ્ઠનાણિ ય)
 ઘલિ દેને કે લિયે અનાયાસ હી ઉનકે કર, ચરણ આદિ અવયવોં કો વહા
 તોડ દિયા જાતા હૈ-શરીર કો ક્ષડ ૨ કરકે વહા કાકાદિકોં કે િયે

મહાકુમ્ભી ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-નરકી જીવ નરકોંમા “કદુમહાકુમ્ભી” “કદુ” લોહના વિશાળ
 પાત્ર-વિશેષમા, તથા ઘડાના આકારના મરકુલીમા ઓદનાદિકની જેમ “પયણ-
 પડલણ, તવગ, તલણ, મટ્ટમજ્જણાણિ ય” “પયણ” રધાવાના, “પડલણ”
 સીસાની જેમ ઓગળવાના, “તવગતલણ” લોહના ગરમ તૈલના તાવડામા
 તૈલના માલપૂવા આદિની જેમ તળાવના, “મટ્ટમજ્જણાણિ ય” તાવડામા
 શેકાતા ચણા આદિની જેમ શેકવાના હોયો અનુભવે છે તથા “લોહકડા
 હુક્કડૂણાણિ ય” જેવી રીતે લોહની તવીઓમા ઔષધિયો ઉડાળાય છે એજ
 રીતે ત્યા તેમને પણ મોટા તાવડાઓમા ઉડાળવામા આવે છે, “કોટ્ઠવલિ
 કરણકોટ્ઠનાણિ ય” ઘલિ દેવાને માટે અચાનક તેમના હાથ પગ આદિ અવયવોના
 ત્યા છેદન કરવામા આવે છે શરીરના ફેકડે ફેકડા કરી ત્યા કાગડા આદિને

ધોરા=વિકટા-શ્રવણેऽપિ દુઃસ્વજનકત્વાત્, ભીષણા=ભયોત્પાદિકા-પ્રતિપ્રાણિ-
ભયજનકત્વાત્ દારુણા=હૃદયસંસોભકારિણી પ્રતિકારરહિતત્વાત્, તથા-ભૂતયા
વેદનયા પાપિનો દુઃસ્વમનુભવન્તીતિ સમ્પન્ધઃ ‘ કિં તે ’ કાનિ તાનિ દુઃસ્વાનિ?
તાન્યગ્રેऽનુપદે વર્ણયિષ્યતે ॥ સૂ. ૨૫ ॥

અથ તાન્યેય દુઃસ્વાનિ વર્ણયતિ-‘ કદુ મહાકુમ્ભીએ ’ इत्यादि ।

મૂલમ્-કદુમહાકુમ્ભીએ પયણ-પડલણ-તવગ-તલણ-ભટ્ટુ મં-
જણાણિ ય લોહકડાહુક્કડૂણાણિ ય કોટ્ટવલિકરણકોટ્ટણાણિ ય
સામલિ તિવલ્લગ્ગ-લોહકટગ-અભિસારણા પસારણાણિ, ફાલણ
વિદારણાણિ ય અવકોડકવધણાણિ, લટ્ઠિસયતાલણાણિ ય, ગલ્લગ
વલ્લુલ્લંઘણાણિ ય સૂલ્લગ્ગભેયણાણિ ય, આણસપવચ્છણાણિ ય સિંસ-
ણાવમાણણાણિ ય વિઘુટ્ટપણિજ્ઞણાણિ ય વજ્જસયમાઙ્ગયાણિ ય ॥ ૨૬ ॥

ટીકા—‘ કદુમહાકુમ્ભીએ ’ કન્દુમહાકુમ્ભ્યોઃ=કન્દુઃ=ઓહમયવિશાલપાત્ર

પ્રતિ પ્રદેશ મેં વ્યાપક હોને સે પ્રચળ્લ-ભયાનક હોતી હૈ, ઘોર-સુનને મેં
મી દુઃસ્વજનક હોને સે વિકટ હોતી હૈ, (વીહણગ) દરણક પ્રાણી મેં ભય
કી સચારક હોને સે ભીષણ-ભયોત્પાદિકા હોતી હૈ, (દારુણાએ) હસકો
વહા કોઈ હલાજ નહી હોતા હૈ હસલિયે યહ હૃદય કો સંસોભકારિણી
હોને સે દારુણ હોતી હૈ । હસ પ્રકારકી વેદના સે પાપી જીવ નરકોં મેં
દુઃસ્વોં કા અનુભવ કરતે હૈં । (કિંતે) વે દુઃસ્વ કોન કોન સે હૈં વહ હસી
કે અગલે સુત્ર મેં કહેંગે ॥ સૂ. ૨૫ ॥

અથ સૂત્રકાર “ કિંતે ” હન પદો દ્વારા સૂચિત દુઃસ્વોં કો કહતે હૈ—

આત્માના દરેક પ્રદેશોમા વ્યાપેલી હોવાથી પ્રથમ લેખાનં હોય છે, ઘોર-
સાલગતા પણ દુઃખજનક હોવાથી વિકટ હોય છે, “ વીહણગ ” દરેક પ્રાણીમા
લેખનો સચાર કરનાર હોવાથી ભીષણ-ભયકર હોય છે, “ દારુણાએ ” તેનો
ત્યા કોઈ ઇલાજ હોતો નથી, તેથી તે હૃદયમા ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી
દારુણ હોય છે આ પ્રકારની વેદનાથી પાપી જીવ નરકોમા દુઃખોનો અનુભવ
કરે છે “ કિંતે ” તે દુઃખો કયા જ્યા છે તે હવે પછીના સૂત્રમા બતાવ-
વામા આવશે ॥ સૂ. ૨૫ ॥

હવે સૂત્રકાર “ કિંતે ” દ્વારા સૂચિત દુઃખોનું વર્ણન કરે,

પ્રવચ્ચનાનિ=પ્રતારણાનિ પ્રવરોણસન્તસ્રવાલુકા નિકરાનેરુક્ષણપરિક્રમણોપતાપ
પ્રદીપિતપાનીય પાનાતિવૃષ્ણસ્ય સમુદચ્ચજ્જલવીચિરુચિમરીચિનિચય જ્જાશ
દિશ્ય તત્ર પાનાય પ્રેષણ, 'ગચ્છ તત્ર તે પિતા 'સમાગતઃ' ઇત્યાદ્યનેરુવિધઃ
પ્રવચ્ચના ઇતિ ભાવઃ, 'લિસણ વિમાણણાણિ' લિસનવિમાનનાનિ=લિસનાનિ=
જાતિકુળાદિનામનિર્દેશપૂર્વક નિન્દનાનિ, અત એવ વિમાનનાનિ તિરસ્કરણાનિ
'વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ' વિઘુટ્ટ પ્રણયનાનિ=વિઘુટ્ટાના=“સ્વકૃતપાપકર્મણા ફલ્લાનિ
શુદ્ધસ્વ” ઇત્યાદિભિર્નિષ્ઠુરવચોર્નિર્ભર્તિસતાના પ્રણયનાનિ=વધ્યસ્થાનનયનાનિ ।
એતાનિ કિં હેતુકાનિ ? ઇત્યાહ—‘વજ્જસયમાહ્યાણિ’ અવઘગતમાતૃકાણિ—
અવઘગતમાતૃકાણિ—અવઘગતાનિ=મન્દતીત્રાદિપરિણામેન કૃતાનિ પાપશતાનિ,

સપવચણાણિ ય અસત્ય વસ્તુવિષયક આદેશરૂપ આજ્ઞા સે ઝન્હે પ્રતારિત
(ઠગના) કિયા જાતા હૈ—વહા પર નારકીજન પહિલે ડસ નવીન નારકી
કો પ્રવર ડણ સે સન્તસ્ર વાલુકા પુજ કી ડપર અનેકવાર ઘૂમાતે હૈ ।
ઠસસે ડસકી ગર્મી સે ડસકી પ્યાસ અધિક સે અધિક માત્રા મૈ જવ
પ્રદીપિત હો જાતી હૈ તત્ર ડસે વનાવટી જલાશય દિલ્લાકર વહા વે મેજ
વેતે હૈ ઇમ તરહ ડસે વહાં વાર ૨ પ્રતારિત કિયા જાતા હૈ “જાઓ વહાં
તુમ્હારા પિતા આયા હૈ” ઇત્યાદિ અનેકવિધ વચનોં દ્વારા વે ડસકી
પ્રવચ્ચના કિયા કરતે હૈ । (લિસણવિમાણાણિ ય) જાતિ, કુલ આદિકે
નામનિર્દેશપૂર્વક ડસકી વહા નિંદા કી જાતી હૈ । તિરસ્કાર કિયા જાતા
હૈ । (વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ ય) “અપને કિયે હુણ પાપકર્મોં કા તુમ ફલ
મોગો” ઇત્યાદિ નિષ્ઠુર વચનોં સે ડસે નિર્ભર્તિસતકરકે વધ્ય સ્થાનોં પર
લાયા જાતા હૈ । (વજ્જસયમાહ્યાણિ ય) ઠસ તરહ નાના પ્રકાર કે
ઇન દુઃખોં કો નરકોં મૈ મન્દ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કિયે ગયે

શુળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે “આણસપવચણાણિ ય” અસત્ય વસ્તુ
વિશેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે
નવીન નારકી જીવોને પ્રચડ ઉચ્છ્વાસથી સાગી રીતે તપેલી રેતી પર અનેકવાર
ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃપા બ્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણમા
પ્રદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જ્જાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે
છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે—ઠગવામા આવે છે ‘જાઓ,
ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે’ ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચનો દ્વારા તેઓ તેની
હાસી ડર્યા કરે છે “લિસણવિમાણાણિ ય” જાતિ, કુળ આદિના નામનો
નિર્દેશ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે “વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ
ય” “તે કરેલા કર્મોંનુ ફળ તુ ભોગવ” એવા નિષ્ઠુર વચનોથી તેમને ધમ-
કાવીને વધસ્થાનો પર લઈ જવામા આવે છે “વજ્જસયમાહ્યાણિ ય” આ
રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલા સે કડો પાપોને કારણે

णाणि ' शालमलि तीक्ष्णाग्रलोहकण्टकाभिसारणापसारणानि=शालमलिः=' सेमल' इति ख्यातो वृक्षविशेषस्तस्य ये तीक्ष्णाग्रा लोहकण्टका इव कण्टकाः, तेषु अभिसारणापसारणानि च = कर्पणापकर्पणानि ' फालगविदारणाणि ' फालनानि=वस्त्रवत्स्फाटनानि, विदारणानि=कक्रुचादिना काष्ठवद् द्वैधीकरणानि ' अवकोडगवधणाणि' अवकोटकरन्धनानि=ग्रीवाया हस्तयोश्च पश्चाद्भागानयनेन बन्धनानि, ' लट्टिसयताडणाणि ' यष्टिशतताडनानि=यष्टिशतैस्ताडनानि, ' गलगवल्लुवणाणि ' गलकवल्लोल्लम्बनानि=गल एव गलकः=कण्ठः, तस्मिन् बलात् =बलपूर्वकम् उल्लम्बनानि=वृक्षशाखादौ उद्ध्वननानि, ' सूलग्ग भेयणाणि य ' शूलाग्रभेदनानि च=शूलाग्रेण=शूलाग्रभागेन भेदनानि, शूलारोपणानि वा, ' आप्स पवचणाणि ' आदेशप्रवचनानि=आदेशेन=भाषया असत्यवस्तु विषयया

उनका वह शरीर अर्पित किया जाता है, (सामलितिक्रवग्गा-लोहकंटक अभिसारणा-पसारणाणि) सेमर वृक्ष के लोहकण्टक के समान चुकीले काटा के ऊपर उनका कर्पणापकर्पण किया जाता है उन्हें आगे पीछे खेंचा जाता है, (फालग विदारणाणि य) फालन-वस्त्र के समान फाड़ना और करोँति आदि के द्वारा काष्ठ को तरह चीरना भी उनका वहा किया जाता है। (अवकोडगवधणाणि) उनको ग्रीवा और दोनों हाथ पीछे के भाग की तरफ करके बांधे जाते हैं। (लट्टिसयताडणाणि य) सैकड़ों लाठियों की उन पर वहा मार पड़ती है। (गलगवल्लुवणाणि य) जबर्दस्ती उनके गलों को वृक्ष की शाखा पर बांधकर लटकाया जाता है। (सूलग्गभेयणाणि य) शूल के अग्रभाग से उनके शरीर का भेदन किया जाता है। अथवा शूली के ऊपर उन्हें लटकाया जाता है। (आए

તેમના તે શરીર અર્પણ કરાય છે “સામલિતિક્રવગ્ગલોહકટક-અભિસારણા-પસારણાણિ ય” સેમર વૃક્ષના લોહકટકના સમાન અણીદાર કાટાઓ ઉપર તેમનું કર્પણાપકર્પણ કરાય છે-તેમને આગળ પાછળ ખેંચવામા આવે છે “ફાલગવિદારણાણિ ય” ત્યાં તેમને વસ્ત્રની જેમ ફાડવામા આવે છે અને કશ્વત આદિ દ્વારા જેમ લાકડાને ચીરવામા આવે છે તેમ તેમને પણ ચીરવામા આવે છે “અવકોડગવધણાણિ” તેમની ડોડ અને બંને હાથ પાછળના ભાગમા રખાવીને બાંધવામા આવે છે “લટ્ટિસયતાડણાણિ ય” ત્યાં તેમને સેકડો લાઠીઓનો માર પડે છે “ગલગવલ્લુવણાણિ ય” જોર બુલ્લભથી તેમના ગળા બાંધીને વૃક્ષોની ડાળિયો પર તેમને લટકાવવામા આવે છે, “સૂલગ્ગ ભેયણાણિ ય” શૂળની અણીથી તેમના શરીરનું ભેદન કરવામા આવે

પ્રવચ્ચનાનિ=પ્રતારણાનિ પરોપાસન્તસ્યાલુકા નિકરાનેક્ષણપરિક્રમણોપતાપ
પ્રદીપિતપાનીય પાનાતિવૃષ્ણસ્ય સમુદચ્ચજ્જલવીચિરુચિમરીચિનિચય જલાશ
દિશ્ય તત્ર પાનાય પ્રેષણ, 'ગચ્છ તત્ર તે પિતા 'સમાગતઃ' ઇત્યાદ્યનેકવિધઃ
પ્રવચ્ચના ઇતિ ભાવઃ, 'લિસણ વિમાણણાણિ' લિસનવિમાનનાનિ=લિસનાનિ=
જાતિકુળાદિનામનિર્દેશપૂર્વક નિન્દનાનિ, અત એવ વિમાનનાનિ તિરસ્કરણાનિ
'વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ' વિઘુટ્ટ પ્રણયનાનિ=વિઘુટ્ટાના="સ્વકૃતપાપકર્મણા ફળાનિ
શ્રુત્સ્વ" ઇત્યાદિભિર્નિપ્તુરવચોર્નિર્ભર્તિસતાના પ્રણયનાનિ=વ્યવસ્થાનનયનાનિ ।
એતાનિ કિં દેતુકાનિ ? ઇત્યાદિ—'વજ્જસયમાહયાણિ' અવઘશતમાતૃકાણિ—
અવઘશતમાતૃકાણિ—અવઘગતાનિ=મન્દતીત્રાદિપરિણામેન કૃતાનિ પાપશતાનિ,

સપવંચણાણિ ય અસત્ય વસ્તુવિષયક આદેશરૂપ આજ્ઞા સે ઝન્હે પ્રતારિત
(ઠગના) કિયા જાતા હૈ—વહા પર નારકીજન પહિલે ડસ નવીન નારકી
કો પ્રસ્વર ડણ સે સન્તસ ચાલુકા પુજ કી ડપર અનેકચાર ધૂમાતે હૈ ।
હસસે ડસકી ગર્મી સે ડસકી પ્યાસ અધિક સે અધિક માત્રા મૈ જવ
પ્રદીપિત હો જાતી હૈ તવ ડસે વનાચટી જલાશય દિશ્વલાકર વહા વે મેજ
વેતે હૈ હમ તરહ ડસે વહાં વાર ૨ પ્રતારિત કિયા જાતા હૈ "જાઓ વહાં
તુમ્હારા પિતા આયા હૈ" ઇત્યાદિ અનેકવિધ વચનોં દ્વારા વે ડસકી
પ્રવચ્ચના કિયા કરતે હૈ । (લિસણવિમાણાણિ ય) જાતિ, કુલ આદિકે
નામનિર્દેશપૂર્વક ડસકી વહા નિંદા કી જાતી હૈ । તિરસ્કાર કિયા જાતા
હૈ । (વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ ય) "અપને કિયે હુણ પાપકર્મોં કા તુમ ફલ
મોગો" ઇત્યાદિ નિપ્તુર વચનોં સે ડસે નિર્ભર્તિસતકરકે વ્યવસ્થાનોં પર
લાયા જાતા હૈ । (વજ્જસયમાહયાણિ ય) હસ તરહ નાના પ્રકાર કે
હન દુઃખોં કો નરકોં મૈ મન્દ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કિયે ગયે

શૂળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે "આસપવચણાણિ ય" અસત્ય વસ્તુ
વિશેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે
નવીન નારકી જીવોને પ્રચડ ઉણુતાથી સાગી રીતે તપેલી રેતી પર અનેક વાર
ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃષ્ણા જ્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણુમા
પ્રદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જળાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે
છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે—ઠગવામા આવે છે 'જાઓ,
ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે" ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચનો દ્વારા તેઓ તેની
હાસી કર્યા કરે છે "લિસણવિમાણાણિ ય" જાતિ, કુળ આદિના નામનો
નિર્દેશ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે "વિઘુટ્ટપણિજ્જણાણિ
ય" "તે કરેલા કર્મોંનુ ફળ તુ ભોગવ" એવા નિપ્તુર વચનોથી તેમને ધમ-
કાવીને વધસ્થાનો પર લઈ જવામા આવે છે "વજ્જસયમાહયાણિ ય" આ
રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલા સેકડો પાપોને કારણે

તાન્યેવ માતૃકાણિ=ઉત્પત્તિસ્થાનાનિ યેષા તાનિ તથા-પાપશતદેતુકાનીત્યર્થઃ ।
 દુઃસ્વાનિ વેદયન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્યન્નયઃ ' વચ ' इत्यत्र प्राकृतत्वादकारण्योपः ॥ ૨૬ ॥

एते पापकारिणः ' कीदृशीं ' वेदना कियत्कालमनुभवन्ति ? इत्याह—
 ' एवं ते ' इत्यादि ।

मूलम्—एव ते पुंस्त्वकम्मकयंसचओवतत्ता निरयग्गि-
 महग्गि सपलित्ता गाढदुग्गखमहवभयं ककसं असाय सारीर
 माणस च दुविह तिठ्व वेदेंति वेयणं पावकम्मकारी । वहूणि
 पलिओवमसागरोवमाणि कल्लुणं पालेंति ॥ सू० २७ ॥

સૈકડો પાપોં કે કારણ પાપી જીવ ઉત્પન્ન હોકર ભોગા કરતે હેં “માતૃક”
 પદ ઘઘા પર ઉત્પત્તિ સ્થાન કા વાચક હૈ । અર્થાત્ હન દુર્વોં કે ઉત્પત્તિ-
 સ્થાન અવધશત મેકડો ઘોર પાપ કરનેવાલે પાપી હો જાતે હૈ ।

ભાવાર્થ-પાપી જીવ નરકો મે જન્મ લેકર નાના પ્રકાર કી વેદના
 ભોગા કરતે હેં યહી વાત સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા પ્રદર્શિત કી હૈ । વહા
 પર ઉન્હેં પકાયા જાતા હૈ, ડબાલા જાતા હૈ, ગલાયા જાતા હૈ, તલા
 જાતા હૈ, ઝુજા જાતા હૈ અનેકે શરીર કે તિલે ૨ કે વરાવર યહ ૨ મો
 કરદિયા જાતા હૈ । સેમર જાતિકે વૃક્ષોં કે નુક્તીલે કાટોંપર ઉન્હેં ઘસીડા
 સી જાતા હેં इत्यादि भयकर से भी भयकर कष्ट बहा दिये जाते हैं,
 तात्पर्य यह है कि वेदना के जितने भी प्रकार हो सकते हैं वे सब प्रकार
 नरकों में होते हैं और उन सब प्रकारों से होने वाले दु खों को मृन्द तीव्र
 आदि परिणामोंसे किये गये पापोंके कारण पापी जीव भोगा करते हैं ॥

નરકમા ઉત્પન્ન થઈને વિવિધ દુ ખોને ભોગવે છે “માતૃક” પદ અહીં ઉત્પત્તિસ્થાનનુ
 વાચક છે એટલે કે તે દુ ખોનુ ઉત્પત્તિસ્થાન સેકડો પાપો અવધશત છે

ભાવાર્થ—પાપી જીવો નરકોમા જન્મ લઈને અનેક પ્રકારની વેદના ભોગ
 વ્યા કરે છે એજ વાત સૂત્રકારે સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરી છે ત્યા તેને પકાવવામા
 આવે છે, ઉકાળવામા આવે છે, ઓગાળવામા આવે છે, તળવામા આવે છે,
 શેકવામા આવે છે તેમના શરીરના રાઈ રાઈ જેવડા દૂકડા કરવામા આવે છે
 સેમર વૃક્ષોના અણીદાર કાટા ઉપર તેમને ઘસડવામા પણ આવે છે, વગેરે
 લય કરમા લય કર કદો તેમને ત્યા અપિવામા આવે છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે
 વેદનાના જેટલા પ્રકારો હોઈ શકે તે બધા પ્રકારો નરકોમા હોય છે અને તે
 બધા પ્રકારોથી થતા દુ ખોને મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી ડરાયેલ પાપોને
 કારણે પાપી જીવ ભોગવ્યા કરે છે ॥ સૂ. ૨૬ ॥

ટીકા—અયમ્=ઉક્તરીત્યા તે=પાપકારિણઃ, ‘પુવ્વકમ્મકયસચઓવતત્તા’
 પૂર્વકર્મકૃતસચ્ચયોપતપ્તાઃ=પૂર્વકૃતાનાં કર્મણા સચ્ચયેન=સમુપાર્જનેન ઉપતપ્તા =
 સન્તાપ પ્રાપ્તાઃ ‘નિરયગ્ગિમહગ્ગિસપલિત્તા’ નરકાગ્નિમહાગ્નિસપ્રદીપ્તાઃ=
 નરકાગ્નિઃ સન્તાપકારસ્ત્યાદ્ નરકાગ્નિ, સ મહાગ્નિરિવ અત્યુત્કટત્વાત્ તેન
 સપ્રદીપ્તાઃ=સતપ્તા ‘પાવકમ્મકારી’ પાપકર્મકારિણઃ, ‘ગાઢદુક્ખમહબ્બય’
 ગાઢદુઃખમહાભયા=ગાઢેન=નિવિઢેન દુઃખેન મહાભયા=ત્રિશાલભયયુક્તા ‘કક્કસ’
 વર્કશાં=કઠોરામ્ ‘અસાય’ અમાતામ્=અસાતનામવેદનીયકર્મોદ્ભવા, ‘સારીર’
 શારીરિ ‘માનસ’ માનસી ચ દુવિહ=દ્વિવિધા ‘તિવ્વ’ તીવ્રામ્=અતિશયા
 ‘વેયણ’ વેદના=પીડા વેદયન્તિ=અનુભવન્તિ । કિયત્કાલમ્ ? इत्याह—‘વહ્ણિ’
 વહ્ણિ ‘પલિઓવમસાગરોવમાણિ’ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ=પલ્યોપમાણા કાલ,

અવ સૂત્રકાર યદ્ પ્રકટ કરતે હૈં કિ પાપી જીવ નરકોં મેં કેસી ૨
 વેદના કો કિતને કાલતક ભોગતે હૈ—‘અવ તે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(અવ) હસ પ્રકાર (તે પાવકમ્મકારી) વે પાપકારી જીવ (પુવ્વ
 -કમ્મકયસચઓવતત્તા) પૂર્વકર્મ કે લિયે હુણ સચય સે અત્યત સતસ
 હોકર તથા સતાપકારી હોને સે મહાગ્નિ જૈસી નરકરૂપ અગ્નિ સે સપ્ર-
 દીપ્ત હોકર (પાવકારી) પાપકારી જીવ (ગાઢ દુક્ખમહબ્બય) નિવિઢ-
 દુઃખ સે અતિશ દુઃખવાલી જેસી (કક્કસ) કઠોરાતિકઠોર (સારીર)
 શારીરિક, અવ (માણસ) માનસિક, (દુવિહ) દોનો પ્રકાર કી
 (અસાય વેયણ) અમાતા વેદનીય કર્મ કે ઉદય સે જનિત (તિવ્વ વેયણ)
 તીવ્ર વેદના કો (વેદેતિ) ભોગતે હૈ જેસી વેદના કો વે કિતને કાલ તક
 ભોગતે હૈ વદ્ કહતે હૈં (વહ્ણિ પલિઓવમસાગરોવમાણિ) હસ તરહ

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે પાપી જીવ નરકોમાં કેવી કેવી વેદનાને
 કેટલા સમય સુધી ભોગવે છે “અવ તે” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવ” આ પ્રમાણે “તે પાવકમ્મકારી” તે પાપકારી જીવ “પુવ્વકમ્મક-
 યસચઓવતત્તા” પૂર્વે કરેલા કર્મોના સચયથી અતિશય સતપ્ત થઈને તથા
 સતાપકારી હોવાથી મહા અગ્નિથી સપ્રદીપ્ત થઈને, “પાવકારી” પાપી જીવ
 “ગાઢદુક્ખમહબ્બય” લાયકર હુ ખોથી અતિશય દુઃખવાળી, “કક્કસ”
 અતિશય કઠોર, “સારીર” શારીરિક અને “માણસ” માનસિક “દુવિહ”
 બંને પ્રકારની “અસાય વેયણ” અસાતા વેદનીય કર્મોના ઉદયથી ઉત્પન્ન થયેલ
 “તિવ્વ વેયણ” તીવ્ર વેદનાને “વેદેતિ” ભોગવે છે એવી વેદનાને તેઓ કેટલા
 સમય સુધી ભોગવે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે “વહ્ણિ પલિઓવમસાગરોવમાણિ”
 એ રીતે અનેક પ્રકારની વેદનાને તેઓ ઘણા જ પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ

‘ કલુણ ’ કરુણ-યથાસ્વાત્તથા દીનદશમાશ્રિત્યેત્યર્થઃ, ‘ પાલેતિ ’ પાલયન્તિ= પ્રતીક્ષન્તે ‘ વદા મમાય દુઃસ્વકાલઃ પૂર્ણો મયિન્યતી ’તિ પ્રતીક્ષમાણા નરકજીવાઃ કાલ યાપયન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

તે પુનઃ કિં કુર્વન્તી ? ત્યાહ—

મૂલમ્—તે અહાઉય જમકાઙ્ગયતાસિયા યસદ્ કરેતિ ભીયા, કિંતે ? અવિ-ભાય । સામિ । ભાય । વપ્પ । તાવ । જિતવ । મુય મે મરામિ દુવ્વલો વાહિપીલિઓ હ કિં ઇદાણિ અસિ, एवं દારુણો ણિદ્ધઓ ય મા દેહિ મે પહારે, અસ્સાસેઽ મુહુત્ત મે દેહિ, પસાયં કરેહ, મા રુસહ વીસમામિ ગેવિજ્ઞ મુયહ મે, મરામિ, ગાઢં તણ્હાઙ્ગઓ અહ, દેહિ પાણિય ॥ સૂ. ૨૮ ॥

ટીકા—તે પૂર્વોક્તાઃ પાપકર્માણ ‘ અહાઉય ’ યથાયુષ્ક=યથાવદ્ધાયુષ્ક= પૂર્વભવ યાવત્કાલપરિમિતમાયુર્નદ્વમાસીત્તાવત્પરિમિત ન તુ ન્યુનાધિક દેવનારકા-

કી વેદના વે વહુત્ત સે પલ્લોપમ તથા સાગરોપમપ્રમાણ કાલનક (કલુણ) કરુણદશા સે, (પાલેતિ) ભોગતે હૈ । ઉસ સમય ઉનકી વડી દીનદશા રહતી હૈ । ઓર વે હસ વાત કી પ્રતીક્ષા મેં ઉસ અસહ્ય પીડા કો ભોગતે હુણ કહા કરતે હૈ કિ “ કવ યહ હમારા દુઃસ્વકાલ સમાપ્ત હો ” । હસ તરહ વિચારે વે પાપી જીવ વહા સે નિકલને કે સમય કી પ્રતીક્ષા કરતે હુણ કાલ કો વ્યતીત કરતે રહતે હૈ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

ઓર વે કયા કરતે હૈ ? સો સૂત્રકાર કહતે હૈ—‘ તે અહાઉય ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—દેવ ઓર નારકીયોં આદિકી આયુ નિરુપક્રમ હોતી હૈ—બીચમેં છિદતી મિદતી નહીં હૈ, તીવ્ર શસ્ત્ર, તીવ્ર વિષ, તીવ્ર અગ્નિ આદિ જિન

પ્રમાણુ કાળ સુધી “ કલુણ ” કરુણાજનક દશામા “ પાલેતિ ” ભોગવે છે તે સમયે તેમની ઘણી દીનદશા હોય છે અને “ ઉચારે અમારો આ દુખનો સમય પૂરો થાય ” એ વાતની રાહ એ અસહ્ય પીડા ભોગવતા ભોગવતા તેઓ જોયા કરે છે આ રીતે બિચારા પાપી જીવો ત્યાથી નીકળવાના સમયની રાહ જોતા જોતા સમય પસાર કરે છે ॥ સૂ. ૨૭ ॥

અને તેઓ શું કરે છે ? તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘ તે અહાઉય ’ ઇત્યાદિ દેવ અને નારકીઓ આદિનુ આયુષ્ય નિરુપક્રમ હોય છે—તે વચ્ચે અકસ્માતોથી છેદાતું ભેદાતું નથી, તીવ્ર શસ્ત્ર, તીવ્ર વિષ, તીવ્ર અગ્નિ આદિ જે કારણોથી

દીના નિરુપક્રમાયુક્તવાત્, ઉક્તઞ્ચ—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસ્રવાસાઝયા તિરિયમણુયા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુવક્કમતી ॥ ૧ ”

નિમિત્તોસે અકાલમૃત્યુ હતી છે અને નિમિત્તોંકા પ્રાપ્તિ હોના ઉપક્રમ છે। યહ ઉપક્રમ દેવ ઓર નારકિયોં કે તથા ચરમદેહધારી એવ ઉત્તમ દેહવાલોં કે પ્રાપ્તિ નહીં હોતા છે । ચરમદેહ ઓર ઉત્તમપુરુષોં કે યહ ઉપક્રમ કદાચ પ્રાપ્તિ હોં મી જાવે તો વહં અને કી આયુ અનપવર્તનીય હી હોતી છે, હસં નિયમ કે અનુસાર (તે) વે પાપકારી જીવ (અહાઝય) ઇતને પ્રકાર કી પ્રાણાન્તક વેદના કો મોગને પર ચીચ મે મરતે નહીં હે—અર્થાત્—અનેકી અકાલ મેં મૃત્યુ નહીં હોતી છે ક્યોં કિ પૂર્વભવ મેં જિતની આયુ યહાં કી અહેં ને વાધલી થી ઉત્તની આયુતક વે વહા રહતે હેં કમ યા જ્યાદા સમય તક નહીં રહતે । કહા મી છે—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસ્રવાસાઝયા તિરિયમણુયા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુવક્કમતી ” ॥૧॥

હસં ગાથા કે અર્થકી સૂચના યદ્યપિ કુઝ રૂપ મેં ડપર કર દી ગઈ છે ફિર મી સ્પષ્ટરૂપ મેં હસં પ્રકાર છે—દેવ, નારકી, અસ્રવાસવર્ષ કી આયુવાલે, તિર્યચ ઓર મનુષ્ય—ત્રીસ અકર્મ ભૂમિયોં, છપ્પન અન્તર્દીપોં ઓર ભરતાદિક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન યુગલિક તથા ઢાઈદીપ કે વાહર કે દ્વીપ

અકાળ મૃત્યુ થાય છે તે કારણોનુ પ્રાપ્તિ થવુ તે ઉપક્રમ કહેવાય છે તે ઉપક્રમ દેવ અને નારકીઓને તથા ચરમ દેહધારી અને ઉત્તમદેહધારીને પ્રાપ્તિ થતો નથી ચરમ દેહધારી અને ઉત્તમપુરુષોને કહાય તે ઉપક્રમ પ્રાપ્તિ થાય તો પણ તેનુ આયુષ્ય અનપવર્તનીય—નિશ્ચિત ડાળનુ જ હોય છે તે નિયમ પ્રમાણે “તે” તે પાપકારી હોવો “અહાઝય” આટલા, પ્રકારની પ્રાણાતક વેદના ભોગવવા છતાં પણ વચ્ચે મૃત્યુ પામતા નથી, એટલે કે તેમનુ અકાળ મૃત્યુ થતુ નથી કારણ કે પૂર્વભવમા તેમણે અહીંનુ જેટલુ આયુષ્ય ખાધુ છે તેટલુ આયુષ્ય પૂર થાય ત્યાં સુધી તેઓ અહીં જ નરકાદિમા—રહે છે, વધારે કે ઓછો સમય રહેતો નથી કહુ પણ છે—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસ્રવાસાઝયા તિરિયમણુયા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુવક્કમતી ” ॥ ૧ ॥

આ ગાથાના અર્થનુ સૂચન યોડા પ્રમાણમા કહેવામા આવ્યુ છે તેનો સ્પષ્ટ અર્થ આ પ્રમાણે છે દેવ, નારકી, અસ્રવાસ વર્ષના આયુષ્યવાળા તિર્યચ અને મનુષ્ય—ત્રીસ અકર્મ ભૂમિયો, છપ્પન અન્તર્દીપો અને ભરતાદિ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થયેલ યુગલિક તથા અહીં દ્વીપની ખડારના દ્વીપ સમહોમા રહેતા

‘ જમકાઠ્ય તાસિયા ’ યમકાઠ્યિક ગ્રાસિતા:-યમકાઠ્યિકૈઃ પચ્ચદશવિધૈઃ
પરમાધાર્મિકૈઃ અમ્પ્રામ્પરીપાદિભિર્ગ્રાસિતા = ગ્રાસ ગ્રાપિતા: ‘ ભીયા ’ ભીતા: =
ભયવ્યાકુલા: સન્ત: ‘ સદ્ ’ શબ્દ = રક્ષ્યમાણપ્રકારમાર્ત્તનાદ ‘ કરેતિ ’ કુર્વન્તિ ।
‘ કિં તે ’ કે તે આર્ત્તશબ્દા: ? इत्याह-‘ અવિભાયે ’ત્યાદિ ‘ અપિ ’ અપિ-
વાક્યાલઙ્કારે ‘ ભાય ’ ભાગ-હે મહાભાગ = સામર્થ્યવત્ત્વાત્, ‘ સામિ ’ હે સ્વા-
મિન્ ! અધિપતિત્વાત્, ‘ ભાય ’ હે ભ્રાત ! - સહાયકત્વાત્, ‘ વપ્પ ’ હે
પિત: ! - પાલકત્વાત્, ‘ તાય ’ હે તાત ! - ગ્રાયકત્વાત્, ‘ જિતવ ’ હે
જિતવન્ ! = હે વિજયિન્ ! - વિજયશાલિત્વાત્, ‘ મુય મે ’ મુચ્ચ મા ‘ મરામિ ’
મ્રિયે, અહ ‘ દુવ્વલો ’ દુર્વલ: = બલહીન: ‘ વાહિ પીલિઓ ’ વ્યાધિ પીડિત:, ‘ કિં
કિમર્થ ત્વમ્ ’ ‘ ઇદાણિ ’ ‘ ઇદાનીમ્ = અસ્મિન્-સમયે ‘ દારુણો ’ કટોર., ‘ નિદ્દઓ ’

સમુદ્રોં મેં ભી પાયે જાને વાલે તિર્યંચ-ઉત્તમપુરુષ-તીર્થંકર, ચક્રવર્તી,
બલદેવ, વાસુદેવ, આદિ, એવં ચરમશરીરી-ઉસી ભવ સે મોક્ષ જાને
વાલે જીવ, યે સબ નિરુપક્રમ આયુવાલે હોતે હૈં ॥૧॥

પાપી જીવ વહા (જમકાઠ્યતાસિયા) યમકાઠ્યિક-પન્દ્રહ પ્રકાર કે
પરમાધાર્મિક અમ્બ ઓર અમ્પરીપ આદિ દેવો કે દ્વારા ગ્રાસ કો પ્રાપ્ત
કરાયે જાતે હૈં । (ભીયા) ઇસલિયે ભય સે સદા વ્યાકુલ બને હુણ વે વહા
પર (સદ્) આર્ત્તનાદ (કરેતિ) ક્રિયા કરતે હૈં (કિં તે ?) વે કૌન ૨ શબ્દ
કરતે હૈં ? વહી કહતે હૈં-(અવિભાય) હેમહાભાગ ! (સામિ) હે સ્વામિન્ !
(ભાય) હે ભાઈ ! (વપ્પ) હે પિતા ! (તાય) હે તાત ! (જિતવ) હે વિજયન્ !
(મુય મે) તૂ મુજે છોડ દે, (મરામિ) મૈં મર રહા હૂ, (દુવ્વલો) મેં બલહીન
હૂ, (વાહિપીલિઓહ) વ્યાધિ સે પીડિત હો રહા હૂ, (કિં ઇયાણિ) ક્યોં
હસ સમય તુમ મેરે ઉપર (એવ) હસ પ્રકાર સે (દારુણો નિદ્દઓ ય અસિ)

તિર્યંચ, ઉત્તમ પુરુષ-તીર્થંકર, ચક્રવર્તી, બળદેવ, વાસુદેવ આદિ, અને ચરમ
શરીરી-એજ ભવમા મોક્ષે જનારા જીવો, એ સઘળા નિરુપક્રમ આયુષ્યવાળા
હોય છે ॥૧॥ ત્યાં પાપી જીવો “ જમકાઠ્ય તાસિય ” યમકાઠ્યિક-પન્દ્રહ પ્રકારના
પરમાધાર્મિક અમ્બ અને અમ્પરીપ આદિ જીવો દ્વારા ગ્રાસ પામે છે, “ભીયા”
તેથી ભયથી વ્યાકુળ બનેલા તે જીવો ત્યાં “ સદ્ ” આર્ત્તનાદ “ કરેતિ ” કરે
છે “ કિં તે ? ” તેઓ કેવા કેવા શબ્દો બોલે છે ? તે હવે કહેવામા આવે છે
“ અવિભાય ” હે મહાભાગ ! “ સામિ ” હે સ્વામિન્ ! “ ભાય ” હે ભાઈ !
“ વપ્પ ” હે પિતાજી ! “ હે તાય ” હે તાત ! “ જિતવ ” હે વિજયી ! “ મુય મે ”
તુ મને છોડી દે, “ મરામિ ” હું મરી રહ્યો છું, “ દુવ્વલો ” હું નિર્બળ છું,
“ વાહિપીલિઓહ ” વ્યાધિથી પીડાઈ રહ્યો છું, “ કિં ઇયાણિ ” અત્યારે તમે
મારા પ્રત્યે “ એવ ” આ રીતે “ દારુણો નિદ્દઓ ય અસિ ” કટોર

निर्दयः—दयारहित, 'असि' भयसि?, मा देहि 'मे' मद्य 'पहारे' प्रहारान् मा
मा ताडयेत्यर्थः । 'अस्सासेउ' उ-इत्यसितु=वासमात्र ग्रहीतु 'मे' मद्य 'मुहुत्त'
मुहुत्त=क्षणमात्र देहि, येन श्वासमात्रमपि सुखमनुभवामीति भावः, 'पसाय'
प्रसादम्-अनुग्रह 'करेह' कुरुत 'मा रुसह' मा रूप्यत=क्रोध मा कुरुत । 'वीस-
मामि' विश्रमामि=किञ्चित्काल विश्राम करोमि अतः 'मे' मम 'गेविज्ज'
ग्रेवेयक=ग्रीवाग्रन्धन 'मुयह' मुञ्चत=त्यजत यतो हि-अह 'मरामि' म्रिये,
गाढ=अत्यधिक 'तण्हाइओ' तृष्णादितः पिपासाकुलितोऽस्मि मे=मद्य 'पाणिय'
पानीय=जल देहि ॥ सू० २८ ॥

एव नारकैः कथिते सति यमपुरुषाः यत् कुर्वन्ति तदाह—'ताहे त' इत्यादि ।

मूलम्—ताहे त पिय इम जलं विमल सीयलति घेत्तूण य
नरयपाला तवियं तउयं से दिति कलसेण अंजलीसु दहूण य
त पवेवियगोवगा अंसुपगल तपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा इयम्ह
कलुणाणि जपमाणा विप्पेक्खता दिसोदिसि अत्ताणा असरणा
अणाहा अवंधवा वधुविप्पहीणा विपलायति य मियविववेगेण
भउन्विग्गा, घेत्तण वला पलायमाणाणं निरणुकपामुह विहाडेउं
लोहदंडेहि कलकलण्हवयणंसि लुभति केइ जमकाइया हसता ॥२९॥

कठोर और निर्दय हो रहे हो, (मा देहि मे पहारे) मुझ पर प्रहार मत
करो (अस्सासेउ मुहुत्त मे देहि) मुझे कम से कम मुहुत्त-क्षण मात्र
श्वास तो लेने दो, (पसाय करेह) मेरे ऊपर दया करो, (मा रुसह) मुझ
पर क्रोध मत करो, (वीसमामि) मैं कुछ कालतक विश्राम करना चाहता
हूँ-अतः (गेविज्ज मुयह मे) मेरी ग्रीवा के बधन को तुम छोड़ दो,
देखो (गाढ तण्हाइओ अह) गहरी प्यास से व्याकुल होकर मैं मर रहा
हूँ अतः मेरे लिये (देहि पाणिय) पीने को जल दो ॥सू० २८॥

जैम जनी रह्या छै ? 'मा देहि मे पहारे' भारा प० प्रहार न करे "अस्सा-
सेउ मुहुत्त मे देहि" भने ओछामा ओछी ओक क्षणु भाटे तो श्वास लेवा हो
"पसाय करेह" भारा उपर दया करे, "मा रुसह" भारा उपर क्रोध न करे,
"वीसमामि" हु थोडा समय विश्राम करवा भाशु छु तो "गेविज्ज मुयह मे"
भारी डोकमानु जधन तमे छोडी हो, जुवे "गाढ तण्हाइओ अह" लारे
तृपाथी व्याकुल थधने हु भगी रह्यो छु तो भने "देहि पाणिय" पीवाने
भाटे जल आये ॥ सू० २८ ॥

ટીકા—યદિ ત્વ પિપાસિતઃ ‘તાહે’ તદા ‘ત’ ત્વ ‘ઇમ’ ઇદં ‘વિમલં’ નિર્મલ ‘સીયલ’ શીતલ જલ ‘પિય’ પિત્ર, ઇતિ કથયિતા ‘નરયપાલા’ નરકપાલાઃ=પરમાધાર્મિકા ‘તવિય’ તાપિતમ્=ઉત્કાલિત ‘તઝય’ ત્રપુક=‘કથીર’ ઇતિ પ્રસિદ્ધ સીસક વા, ‘કલસેણ’ કલશેન=ઘટેન ‘સે’ તસ્મૈ નારકાય ‘અજલીસુ ય’ અજ્જલિપુ ચ ‘દિતિ’ દદતિ । ‘ત’ તત્=તાપિત ત્રપુ ‘દટ્ટૂણ’ દટ્ટા=અવલોક્ય ‘પવેવિયગોવગા’ પ્રવેપિતાદ્રોપાઙ્ગા =પ્રકર્ષેણ વેપિતાનિ=કમ્પિતાનિ અઙ્ગાનિ ઉપાઙ્ગાનિ ચ યેષા તે તથા=કમ્પિતસર્વશરીરાઃ ‘અમુ-પગલ-ત-પપ્પુચ્છા’ પ્રગલ્દશ્રુપ્પ્લુતાક્ષાઃ=પગલદ્વિઃ અશ્રુભિઃ પ્રપ્લુતે=વ્યાપ્તે અક્ષિણી=નયને યેષા તે તથા, પ્રક્ષરત્પ્રવલાશ્રુધારાઃ સન્ત ‘અમ્હ’ અસ્માક ‘તળ્હા’ તૃણા ‘છિળ્હા’ છિન્ના=નષ્ટા ‘ઇય’ ઇતિ=એવમુક્ત્યા ‘કલુણાણિ’ કરુણાનિ

इस प्रकार नारक जीवों के कहने पर परमाधार्मिक जो कुछ उनके साथ करते हैं वह सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—‘ताहे’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તાહે ત) યદિ તુમ પિપાસિત હો તો (ઇમ) ઇસ (વિમલ) નિર્મલ (સીયલ) શીતલ (જલ) જલ કો (પિય) પિઓ એસા કહ કર (નરયપાલા) વે નરકપાલ પરમાધાર્મિક દેવ (તવિય) ઉવાલે હુએ કથીર કો અથવા સીસે કો (કલસેણ) કલશ મે ભરકર (સે) ઉસ નારકી કે લિયે (અજલીસુ) અજલિ મેં (દિતિ) દેતે હૈં । (ત) ઉસ તપે-હુએ-ત્રપુ-સીસે-કો (દટ્ટૂણ ય) દેવકર (પવેવિયગોવગા-) ઉન-નારકિયો કા સમસ્ત શરીર-અગ-ઉપાગ વહુત અધિક રૂપ મે કપને લગતે હૈં । ઓર (અમુપગલતપપ્પુચ્છા) ઉસી સ્થિતિ મે વે નિકલતે હુએ આસુઓં સે અપની આંખો કો વ્યાપ્ત કરકે ઉનસે કહતે હૈં કિ (છિળ્હા તળ્હા અમ્હ) અવ હમારી વ્યાસ શાત હો ગઈ હૈં (ઈય)-ઇસ

નારકી જીવોના એ પ્રકારના શબ્દો સાંભળીને પરમાધર્મી તેમની સાથે કેવો વર્તવિ કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘તાહે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તાહે ત” એ તમને તરમ લાગી હોય તો “ઇમ” આ “વિમલ” નિર્મળ, “સીયલ” શીતળ “જલ” પાણી “પિય” પીવો એમ કહીને “નર-યપાલા” તે નરકપાલ પરમાધાર્મિક દેવો “તવિય” ઓગાળેલ ગરમ કથીર અથવા સીસાને “કલસેણ” કળશમાં ભરીને ‘સે’ તે નારકીને “અજલીસુ” અજલિમાં “દિતિ” આપે છે “ત” તે ગરમ ગરમ ત્રપુ-સીસાને દટ્ટૂણ ય” એમને “પવેવિયગોવગા” તે નારકીઓના અગ ઉપાગ અત્યંત કપવા લાગે છે “અમુપગલત પપ્પુચ્છા” તે સ્થિતિમાં આસુભરી આપે તેઓ તેમને કહે છે કે “છિળ્હા તળ્હા અમ્હ” હવે હમારી તૃષ્ણા શાત થઈ ગઈ છે ‘

वचनानि 'जपमाणा' जल्पमानाः=प्रल्पन्तः 'दिसोदिसि' दिशोदिश=एकस्या
दिशोऽन्यां दिशमितस्तत इत्यर्थः 'विप्पेक्खत्ता' विप्रेक्षमाणाः=समन्तात् पश्यन्तः
'अत्ताणा' अत्राणाः=रक्षाहीना, अतएव 'असरणा' अशरणाः=शरणरहिताः,
अतएव 'अणाहा' अनाथाः=दीनाः, 'अवधवा' अवान्धवाः=यान्धयरहिताः,
'बधुविप्पहीणा' बन्धुविप्रहीणाः=विधमानसम्बन्धिविप्रयुक्ताः, 'मियविव'
मृगा इव 'भउव्विग्गा' भयोद्विग्नाः=भयव्याकुलाः 'वेगेण' वेगेन 'विपला-
यति' विपलायन्ते=प्रधावन्ति, ततः प्रधावमानान् तान् नारकान् 'बला'
बलात् 'घेत्तूण' गृहीत्वा 'निरणुकपा' निरनुकम्पाः=दयारहिताः 'केइ' केऽपि
'जमकाइया' यमकायिकाः=परमाधार्मिकाः, हसता' हसन्त 'पलायमाणाण'
पलायमानाना च तेषा 'मुह' मुख 'लोहदण्डेहि' लोहदण्डैः, 'विहाडेउ'
विघाटय=उद्घाटय 'कलकल' अतितप्तत्वात् कल-कल शब्दयुक्त पूर्वोक्त त्रपुक्

प्रकार कहकर वे (कलुणाणि जपमाणा) कम्पना वचनोंका उच्चारण करते
हुए (दिसोदिसि विप्पेक्खत्ता) वहाँ से दूसरी दिशा में इधर उधर
देखते हुए (अत्ताणा) रक्षक रहित (असरणा) शरण रहित (अणाहा)
विनानाथ के (अवधवा) दीनदशा सपन्न (बधुविप्पहीणा) बांधवों से
रहित-रक्षक जनों से रहित, अतः (भउव्विग्गा) भय से व्याकुल बन
कर वे (मियविव) मृगों की तरह वहाँ से (वेगेण) वेगपूर्वक (विप्प-
लायति) भागते हैं । इसके बाद भागते हुए उन नारकियों को (बला-
घेत्तूण) जबरदस्ती से पकड़कर (निरणुकपा) दयारहित बने हुए (केइ)
कितनेक (जमकाइया) यमकायिक परमाधार्मिक देव (हसता) हँस
हँसकर (पलायमाणाण) पलायन करते हुए उनके (मुह) मुख को
(लोहदण्डेहि) लोहदण्डों से (विहाडेउ) फाड़कर फिर उसमें (कलक-

प्रमाणे उड़ीने "कलुणाणि जपमाणा" कइणुअनक वचनेो जोलता, "दिसो दिसि
विप्पेक्खत्ता" त्याथी जीए दिशाभा आभ तेभ जेता, "अत्ताणा" रक्षक विनाना
"असरणा", शरण विनाना, "अणाहा" अनाथ, "अवधवा" दीनदशाभा भूझयेला,
"बधुविप्पहीणा" बाधवो विनाना-रक्षण उरनार विनाना, जेवा ते नारकी एवो
"भउव्विग्गा" लयथी व्याकुण जनीने "मियविव" मृगोनी जेम त्याथी 'वेगेण'
वेगथी "विप्पलायति" लागे छे त्यारणाह लागता जेवा ते नारकी एवोने
"बलाघेत्तूण" जेर जुलभथी पउडीने "निरणुकपा" दया रहित जनेला "केइ"
केटलाइ "जमकाइया" यमकायिक, परमाधार्मिक देवो "हसता" इसी इसीने
"पलायमाणाण" नासता जेवा तेभना "मुह" मुखने "लोहदण्डेहि" लोहाना

સ કીદશો નિર્ણયઃ ? इत्याह—‘ रसिये ’ त्यादि ।

મૂલમ—રસિય—ભણિય—કુવિય—ઉક્કૂહય—નિરયપાલતજિય—
ગેળહ કમ પહર છિદ ભિદ ઉપાડેહુક્ષણાહિ કત્તાહિ વિકત્તાહિ
ય મંજહણ વિહણ વિચ્છુભોચ્છુભ આકઙ્કુ વિકઙ્કુ કિં ણજપસિ?
સરાહિ પાવકમ્માઈ કિયાઈ દુક્કયાઈ એવ વયણમહપ્પગઘ્ભો
સપહિ સુયસદસકુલો ઉત્તાસઓ સયા નિરયગોયરાણ મહાણ-
ગરહજ્ઞમાણસરિસો નિગ્ધોસો સુવ્વણ અણિટ્ટો તહિયં નેરહ-
યાણ જાહજતાણં જાયણાહિ ॥ સૂ૦૩૧ ॥

ટીકા—‘ રસિય—ભણિય — કૂહય — ઉક્કૂહયનિરયપાલતજિય ’ રસિત-
ભણિત—કુપિતોત્કૂજિત—નરકપાલ—તર્જિત—તત્ર—‘ રસિય ’ રસિતા = યૂક્તસ્વદ્ ધોર-
શબ્દકારકાઃ, ‘ ભણિય ’ ‘ ભણિતા = ઉચ્ચૈઃ શબ્દકારકાઃ, ‘ કૂહય ’ કૂજિતા = અવ્યક્ત-
ધ્વનિકારકાઃ, ‘ ઉક્કૂહય ’ ઉત્કૂજિતાઃ = ભયજનકાવ્યક્તશબ્દકારકાઃ; યે ‘ નિરય
(ણીસિટ્ટો) પ્રવલ દુઃસ્વજનિત મહા શબ્દ વહા ‘ સુના જાતા હૈ ’ (યહ
આગે સે સમ્બન્ધ હૈ) ॥ સૂ ૩૦ ॥

ઉસ સમય પરમાધાર્મિક પરસ્પર મેં કિસ પ્રકાર કી બાતચીત કરતે
હૈ ? યહ સૂત્રકાર કહતે હૈ—‘ રસિય—ભણિય ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—નરકો મેં નારકિયોં કો દરેક પ્રકારસે વ્યથા પહુંચાનેવાલે
વે પરમાધાર્મિક નારકિયોં કો ફિર અધિક કષ્ટ પહુંચાને કે અભિપ્રાયસે
(રસિય ભણિય—કૂહય ઉક્કૂહય—નિરયપાલતજિય) (રસિય) સૂઅરકે જૈસે
ભયકર ધોર શબ્દોં કો (ભણિય) ઉચ્ચસ્વર સે કરતે હૈ ! ઉસ મે વે
(કૂહય) અવ્યક્ત ધ્વનિ કરતે હૈ (ઉક્કૂહય) હસ સે નારકિયોં કો ઓર

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ‘ ણીસિટ્ટો ’ પ્રણા હુ ખ-
નિત ચિત્કાર ત્યા સંભળાય છે ’ (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે
સંબધ છે) ॥ સૂ ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે— ‘ રસિય—ભણિય ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—નરકોમા નારકીઓને દરેક રીતે વ્યથા પહોચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો,
નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે “રસિય—ભણિય—કૂહય, ઉક્કૂહય
—નિરયપાલતજિય ” “રસિય” સૂઅરના જેવા ભયકર ધોર ધ્વનિ “ભણિય”
ઉચ્ચે સ્વરે કરે છે તેઓ “કૂહય” અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે “ઉક્કૂહય” તે

પાલ' નિરયપાલાઃ=પરમાધાર્મિકાઃ, તેણા 'તર્જિય' તર્જિત=નારકજીનાન્ લક્ષી-
કૃત્ય પરસ્પર તર્જનાજ્ઞાવાક્ય વક્ષ્યમાણપ્રકારમસ્તિ, તથાહિ-અમ્બાભિધ પરમાધા-
ર્મિકોઽમ્બરીપ કથયતિ-હે અમ્બરીપ ! એન પલાયમાન પાપિન નારક 'ગેળ્હ'
ગૃહાણ । એવ પરસ્પરમેક પરમાધાર્મિકો દ્વિતીય કથયતિ-એન નારક 'કમ' ક્રમ=
પાદમહારૈઃ પીડય 'પહર' પ્રહર-એન નારક દણ્ડાદિભિસ્તાડય 'હિંદ' હિન્ધિ
=લદ્ધાદિભિઃ સ્વપ્ડશઃ કુરુ 'મિંદ' મિન્ધિ-મહાકાદિભિર્ભેદય 'ઉપ્પાડેહ'
ઉત્પાટય=શરીરાત્વચાદિક પૃથક્કુરુ 'ઉચ્ચવણાહિ' ઉત્ત્વન=નિષ્કાસય અધિગો-
લાદિકમ્ 'કત્તાહિ' કૃન્ત=હેદય-હુરિકાદિભિર્નાસિકાદિક, તથા-'વિકત્તાહિ'
વિકૃન્ત=કર્ણનાસિકાદિક મૂલતદ્દહેદય, 'મજ' મજ્જ=દસ્તપાદાદિક ત્રોટય, 'હણ'
જહિ=શતઘ્ન્યાદિભિર્મરિય, 'વિહણ' વિજહિ-મહાશિલાદિ પાતનાદિભિરનેકપ્રકારૈઃ

અધિક ભય ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ । ઇસ પ્રકાર રસિત, મળિત, કૂજિત
એવ ઉત્કૂજિત શબ્દ કરને વાલે ડન પરમાધાર્મિકોં કી તર્જિત-નારકિયોં
કો લક્ષ્ય કરકે જો પરસ્પર મે કષ્ટાદિ પહુંચાનેવાલી વાતચીત હોતી હૈ
વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-(ગેળ્હ) અમ્બ નામ કા પરમાધાર્મિક અમ્બરીપ સે
કહતા હૈ-હે અમ્બરીપ ! તુ ઇસ ભાગતે હુએ પાપી નારકી કો પકડ લો
ઔર (કમ) ઇસ કો લાતોં સે મારોં । વાદ મેં (પહર) ઇસે દડોં સે સ્ત્રૂવ
પીયો । (હિંદ) જ્યાદા ઔર વધા કહ-તલવાર આદિ સે ઇસકે શરીર
કે સ્વડ ર કર ઢાલો । (મિંદ) મારા આદિ સે ઇસકે શરીર કો ભેદ
ઢાલો (ઉપ્પાડેહ) ઇસકી સ્વાલ ઉતારલો, (ઉચ્ચવણાહિ) ઇસકી આંસે
નિકાલ લો, (કત્તાહિ) ઇસકા નાક કાટ ઢાલો (વિકત્તાહિ) કર્ણ
નાસિક આદિ ઇન્દ્રિયોં કો મૂલ સે વિલકુલ સાફ કર ઢાલો । (મજ)
હાથ પૈર આદિ કો મરોડ ઢાલો । (હણ) શતઘ્ની આદિ સે ઇસકો
ધુરી તરહ સે મારો । (વિહણ) મહાશિલા આદિ કે ઉપર ઇસે
પછાર ઢાલો । (વિચ્છુમ) કુએ આદિ મેં ઇસે પટક દો । (ઉચ્છુમ)

કારણે નારકીઓને વળી વધારે ભય લાગે છે એ ગીતે રસીત, લખિત, કૂજિત,
અને ઉત્કૂજિત શબ્દ કરનારા તે પરમાધાર્મિકોથી તર્જિત-નારકીઓને ચીધીને,
તેમને કષ્ટ દેનારી પરસ્પરમા જે વાતચીત થાય છે તે આ પ્રકારની હોય છે-
“ગેળ્હ” અમ્બ નામનો પરમાધાર્મિક અમ્બરીપને ડહે છે-“ હે અમ્બરીપ !
તું આ નાસી જતા પાપી નારકીને પકડી લે અને “કમ” તેને લાતો માર
પછી “પહર” તેને દડા વડે ખૂબ ફટકાર “હિંદ” વધારે શુ ડહુ ! તલવાર
આદિથી તેના શરીરના ટૂકડે ટૂકડા કરી નાખ “મિંદ” ભાલા આદિ વડે તેના
શરીરને વીધી નાખ “ઉપ્પાડેહ” તેની આમડી ઉતારી નાખ, “વિકત્તાહિ” ડાન,
નાડ આદિ ઇન્દ્રિયોને મૂળમાથી કાપી નાખો, “મજ” હાથ પગ આદિને મરડી
નાખ, “હણ” શતઘ્ની આદિ વડે તેને ખરાબમા ખરાબ રીતે મારો, “વિહણ”

સ કીદશો નિર્વોપઃ ? इत्याह—‘ रसिये ’ त्यादि ।

मूलम्—रसिय—भणिय—कुविय—उक्कूइय—निरयपालतज्जियं—
गेण्ह कम पहर छिंद भिद उपाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि
य भंजहण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकड्डु विकड्डु किं ण जपसि?
सराहि पावकम्माइं कियाइ दुक्कयाइं एव वयणमहप्पगव्भो
संपडि सुयसदसंकुलो उत्तासओ सया निरयगोयराणं महाण-
गरडज्झमाणसरिसो निग्घोसो सुव्वए अणिट्ठो तहिय नेरइ-
याण जाइज्जताणं जायणाहिं ॥ सू० ३१ ॥

टीका—‘ रसिय-भणिय - कूइय - उक्कूइयनिरयपालतज्जिय ’ रसित-
भणित-कुपितोत्कृजित-नरकपाल-तर्जित-तत्र-‘ रसिय ’ रसिता = गूकरवद् घोर-
शब्दकारकाः, ‘ भणिय ’ ‘ भणिता = उच्चैः शब्दकारकाः, ‘ कूइय ’ कूजिता = अव्यक्त-
ध्वनिकारकाः, ‘ उक्कूइय ’ उत्कृजिताः = भयजनकाव्यक्तशब्दकारकाः ये ‘ निरय
(णीसिट्ठो) प्रबल दुःखजनित महा शब्द वहां ‘ सुना जाता है ’ (यह
आगे से सम्बन्ध है) ॥ सू ३० ॥

उस समय परमाधार्मिक परस्पर में किस प्रकार की बातचीत करते
हैं ? यह सूत्रकार कहते हैं—‘ रसिय-भणिय ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—नरकों में नारकियों को हरणक प्रकारसे व्यथा पहुँचानेवाले
वे परमाधार्मिक नारकियों को फिर अविक कष्ट पहुँचाने के अभिप्रायसे
(रसिय भणिय—कूइय उक्कूइय—निरयपालतज्जिय) (रसिय) सूअरके जैसे
भयकर घोर शब्दों को (भणिय) उच्चस्वर से करते हैं । उस में वे
(कूइय) अव्यक्त ध्वनि करते हैं (उक्कूइय) इस से नारकियों को और

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ‘ ણીસિટ્ઠો ’ પ્રબળ દુઃખ-
જનિત ચિત્કાર ત્યા સંભળાય છે ’ (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે
સંબંધ છે) ॥ સૂ ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે— ‘ રસિય-ભજિય ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—નરકોમા નારકીઓને દરેક રીતે વ્યથા પહોંચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો,
નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે “રસિય-ભણિય-કૂઈય, ઉક્કૂઈય
—નિરયપાલતજ્જિય ” “ રસિય ” સૂવરના જેવા લય કર ઘોર ધ્વનિ “ ભણિય ”
હવે સ્વરે કરે છે તેઓ “ કૂઈય ” અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે “ ઉક્કૂઈય ” તે

‘जायणार्हि’ यातनाभि=रुदयनाभिः ‘जाडज्जताण’ यात्यमानाना=दण्डय-
मानाना ‘नेरइयाण’ नैरचिकाणा=नारकजीवानां च उभयेपामित्यर्थः, ‘अणिट्ठो’
अनिष्टः—अपीतिकारकः ‘णिग्घोसो’ निर्घोषः—महानादः ‘सुव्वए’ श्रूयते॥सू० ३१॥

कास्ता यातना ? इति यातना प्रकारमाह—‘किं ते’ इत्यादि—
मूळम्—किं ते? असिवण—दम्भवण—जतपत्थर—सूइतलक्खा-
रवावि—कलकलतवेयरणि—कलववालुया—जलियगुहनिरुम्भणं
उसिणोसिण—कटइल्ल—दुग्गमरहजोयण—तत्तलोहमग्गमण
वाहणाणि ॥ सू० ३२॥

टीका—‘किं ते’ कास्ता यातनाः ? उच्यते—‘असिवण’ असिवनं=
खट्वाकारपत्रवन, ‘दम्भवण’ दम्भवन=दर्भाः—तीक्ष्णमुग्धातृणविशेषास्तेषां वन,
यगोयराण) परमाधार्मिकों का तथा (तहिय) वहा (जायणार्हि) यात-
नाओं द्वारा (जाडज्जताण) दण्डयमान (नेरइयाण) नारकियों का
(अणिट्ठो) अनिष्ट (णिग्घोसो) निर्घोष—शब्द उन नरकों में (सुव्वए)
सुना जाता है ॥सू० ३१॥

अब सूत्रकार पूर्वोक्त यातनाओं के प्रकारों को प्रकट करते हैं—
‘किं ते’ इत्यादि ।

टीकार्थ—प्रश्न—(किं ते) वे यातनायें कौन २ हैं ?

उत्तर—वे यातनाएँ इस प्रकार हैं (असिवण—दम्भवण—जतपत्थर
सूइतल—क्खारवावि—कलकलतवेयरणि—कलव वालुया — जलियगुह-
निरुम्भण) अम्भ और अम्भरीप परमाधार्मिक उन नारकियों को (असि-
वण) तलवार की धार के आकार वाले पत्रों के वन में (दम्भवण)

अथवा, “निरयगोयराण” परमाधार्मिकोंने तथा “तहिय” तथा “जायणार्हि”
यातनाओं वडे “जाडज्जताण” शिक्षा सहन करता “नेरइयाण” नारकीओंने
“अणिट्ठो” अनिष्ट निर्घोष—शब्द, ते नरकोंमा “सुव्वए” सुलगाय छे ॥सू० ३१॥

इसे सूत्रकार पूर्वोक्त यातनाओंना प्रकार बतावे छे—“किं ते ?” इत्यादि

टीकार्थ—प्रश्न “ किं ते ? ” ते यातनाओं कथी कथी छे ?

उत्तर—ते यातनाओं आ प्रमाणे छाय छे

“ असिवण, दम्भवण, जतपत्थर, सूइतल, क्खारवावि, कलकलतवेयरणि,
कलव वालुया, जलियगुह, निरुम्भण ” अम्भ अने अम्भरीप नामना परमा-
धार्मिके ते नारकी अथेने “असिवण” तलवारनी धार जेवा आकारना पत्रोंना
वनमा, “दम्भवण” तीक्ष्ण अण्णुवाणा दल विशेषेना वनमा “जत पत्थर” यत्र

मारय, 'विच्छुभ' विक्षिप=रूपादौ भक्षिप, 'उच्छुभ' उद् क्षिप=उर्वेक्षिप
 'आकड्ड' आकर्ष=रूचादिक गृहीत्वाकर्षय=कण्टकाकीर्ण भूमा धर्षयेत्यर्थ, 'विकड्ड'
 विकर्ष=अधो मुख कृत्वा धर्षय । एतादृशीं वेदना दत्त्वा नारकान् प्रति वदति,
 'किं ण जपसि' किं न जल्पसि=कथं न उदसि हे पापिन् 'सराहि' स्मर स्मरण
 कुरु 'कियाइ' कृतानि = पूर्वभवसमाचरितानि, 'दुक्कयाइ' दुष्कृतानि=
 प्राणातिपातादीनि 'पावकम्माइ' पापकर्माणि । एव=अनेन प्रकारेण 'वयणमह-
 प्पगम्भो' वचनमहाप्रगल्भः=वचनैः=नरकपालवाग्भिः महाप्रगल्भः=अतिदुर्धर्षः
 भयावह-इत्यर्थ 'सपडिसुयसदसकुलो' सप्रतिश्रुतशब्दसकुलः=सप्रतिश्रुतः=
 प्रतिध्वनितः यः शब्दः, तेन सकुलः=व्याप्तः । 'सया' सदा=सर्वदा 'उत्तासओ'
 उत्तासकः=परमत्रासजनकः 'महाणगरडज्जमाणसरिसो' महानगरदह्यमानसदृशः
 =दह्यमानस्य=प्रज्वल्यमानस्य महानगरस्य य शब्दस्तेन तुल्यः, एतादृशः 'तदिय'
 तत्र नरके-'निरयगोयराण' निरयगोचराणा-निरयगोः=नरकभूमिः, तत्र चरन्ति
 =नारकत्रासार्थं विचरन्ति ये ते निरयगोचराः=परमाधार्मिकास्तेषाम्, तथा-

ऊपर इसको उछाल दो । (आकड्ड) चाल आदि पकड़ कर इसे कण्टका-
 कीर्ण भूमि में खूब खेंचों । (विकड्ड) इसे ओंघा मुख करके जमीन
 पर खूब रगड़ो । इस प्रकार की वेदना देने की बात कहकर फिर वह उन
 नारकियों से कहता है-(किं ण जपसि) हे पापी । तू बोलता क्यों नहीं
 है (सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ) पूर्वभव में समाचरित प्राणा-
 तिपात आदि अपने पापकर्मों को अब तू याद कर ले । (एव) इस
 प्रकार का (वयणमहप्पगम्भो नरकपाल की वाणियों द्वारा अतिदुर्धर्ष
 भयकर बना हुआ, (सपडिसुयसदसकुलो) प्रतिध्वनि से व्याप्त हुआ,
 (सया उत्तासओ) सर्वदा दूसरों को त्रास जनक एव (महाणगरडज्ज
 माणसरिसो) दह्यमान महानगर के शब्द के जैसा उद्भूत हुआ (निर-

भडाशिला आदि पर तेने पछाडो "विच्छुभ" कृवा वगेरेभा तेने डेडो,
 "उच्छुभ" तेने उथे उछाणो, "आकड्ड" तेने वाण आदिने पकडीने डाटाणी
 जमीनभा धसडो, "विकड्ड" तेने उधा मोढे जमीन पर जूण रगडोणो आ
 प्रमाणे वेदना पडोआडवानी बात करीने ते नारकी लोवोने उडे छे "किं ण
 जपसि" छे पापी ! तु जेवतो केम नथी ? "सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ"
 पूर्वभवभा आचरेल प्राणातिपात आदि पापकमेनि तु याद करी ले "एव" आ
 प्रकारेण "वयणमहप्पगम्भो" नरकपालनी वाणी वडे अतिदुर्धर्ष-लयकर लागतो,
 "सपडिसुयसदसकुलो" पडधाथी व्याप्त थतो, "सया उत्तासओ" सर्वदा जीवने
 त्रासजनक, अने "महाणगरडज्जमाणसरिसो" जणता भडानगरभाथी ड्

યાતનાવિષયે આયુધપ્રકારાહ—‘ હમેહિ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—હમેહિં વિવિહેહિ આઝહેહિ કિં તે ? મુગ્ગરમુસુંદિ-
કરકચ-સત્તિ-હલ-ગચ મુસલ-ચક્ક-કોંત તોમર સૂલ-લઝલ ભિહિ-
પાલ સઘલ પટિસ-ચમ્મેટ્ટ-દુહણ મુટ્ટિય-અસિ ચેટગ ચગ્ગ-ચાવ-
નારાય કળક-કપ્પિણિ વાસિપરસુ-ટક-તિક્ક-નિમ્મલેહિ અણ્ણેહિ
ય એવમાદ્દેહિ અસુહેહિં વેઝઠ્ઠિયેહિ પહરણસણ્ણેહિ અણુવદ્ધતિ-
ઘ્ઘવેરા પરોપ્પરં વેચણ ઝડ્ઝરતિ અભિહણંતા ॥ સૂ ૩૩ ॥

ટીકા—‘ હમેહિ ’ એમિઃ વક્ષ્યમાણેઃ ‘ વિવિહેહિ ’ વિવિધેઃ=અનેકપ્રકારેઃ
‘ આઝહેહિ ’ આયુધેઃ=શસ્ત્રેઃ પરસ્પર યાતનામ્ ઝડીરયન્તીત્યગ્રેણ સમ્વન્ધઃ । ‘ કિં તે ’
કાનિ તાનિ આયુધાનિ ? ઇત્યાહ—‘ મુગ્ગર ’ મુદ્રરઃ પ્રસિદ્ધઃ ‘ મુસુંદિ ’ શસ્ત્ર

લોહમય માર્ગ કે ઝપર ઝન્હે ચલાતે હેં ઓર ફિર (વાહનાણિ) ઝનસે
શક્તિ સે ભી અધિક ભાર કો વહન કરાતે હેં ॥ સૂ. ૩૨ ॥

અવ સૂત્રકાર યાતના કે વિષય મેં આયુધોં કે પ્રકારોં કો કહતે
હેં—‘ હમેહિં વિવિહેહિં ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(હમેહિં) ઝન વક્ષ્યમાણ (વિવિહેહિં) અનેક પ્રકારકે (આઝહેહિં)
આયુધોં-શસ્ત્રો સે વે નારકી પરસ્પર મેં યાતના (વેદના) કો ઝત્પન્ન
કરતે હેં । હસ પ્રકાર સે યહાં સવધ ઘટિત કર લેના ચાહિયે—(કિં તે) ,
વે આયુધ કોન ૨ સે હે ? સો ઝન્હે પ્રકટ કરતે હેં—(મુગ્ગર) મુદ્રર
(મુસુંદિ) મુસુંદિ-શસ્ત્ર વિશેષ (કરકચ) ક્કચ-કોંત (સત્તિ)

તપાવેલા લોહના માર્ગ ઝપર તેમને ચલાવે છે અને વળી “વાહનાણિ” તેમની
શક્તિ કરતા પણ વધારે બોલે તેમની પાસે ઝપડાવે છે ॥ સૂ ૩૨ ॥

હવે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઝપયોગમા લેવાતા આયુધોનુ
વર્ણન કરે છે—“હમેહિં વિવિહેહિં” ઇત્યાદિ

“હમેહિં વિવિહેહિં” નીચે દર્શાવવામા આવેલા અનેક પ્રકારના “આઝહેહિ”
આયુધો-શાસ્ત્રો વડે તે નારકીઓ પરસ્પરમા યાતના “વેદના” ઝત્પન્ન કરે છે,
એ પ્રકારનો સબધ અહીં સમજી લેવાનો છે

“કિં તે ? ” તે આયુધો કયા કયા છે ? તે સૂત્રકાર તે આયુધો બતાવે છે—
“મગ્ગર” મગદળ, “મુસુંદિ” મુસડી નામનુ શસ્ત્ર, “કરકચ” કડચ-કરવત,

‘ જત પત્થર ’ યન્ત્ર પ્રસ્તરા = ઘરદાદયઃ ‘ સૂઢતલ ’ સૂચીતલ = ઝર્મમુગ્ધસૂચીમય
 ભૂમિભાગઃ, ‘ સ્વારવાવિ ’ ક્ષારાપ્ય = ક્ષારજલસમૃત્તપાપિકાઃ, ‘ કલકલતવેય-
 રણિ ’ કલકલોયમાનવૈતરણી = કલકલશબ્દાદયમાનપ્રતપ્તપુસીસમાદિપૂર્ણ
 વૈતરણી નામધેયા નદી, ‘ કલવવાલુયા ’ કદમ્બવાલુકા = અસિસન્તપ્તત્વાત્કદમ્બ-
 પુષ્પપદ્ રક્તવાલુકામયી નદી, ‘ જલિયગુહ ’ જ્વલિતગુહા = પ્રજ્વલિતાગ્નિમયી-
 કન્દરા, ઇત્યેતેપા દ્વન્દ્વઃ, તેપુ અસિવનાદિપુ ‘ નિરુમણ ’ નિરોધનમ્, તથા—
 ઉસિણોસિણકટહલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગગમણવાહનાણિ ‘ ઉષ્ણોષ્ણકણ્ઠકા-
 કીર્ણદુર્ગમરથયોજન તત્તલોહમાર્ગગમનવાહનાનિ = ઉષ્ણાદપ્યુષ્ણ ઇત્યુષ્ણોષ્ણઃ = અત્યુષ્ણ
 કણ્ઠકૈઃ = સુતીક્ષ્ણકીલકૈરાકીર્ણો = વ્યાપ્તો દુર્ગમઃ = દુઃસ્થેણ ગમઃ = ગમન યસ્ય સ
 તથા, દુર્ગમશ્ચ યો રથઃ તસ્મિન્ યોજન = સયોજન વલીવર્દાનામેવેતિ તત્તથા,
 તચ્ચ, તત્તલોહમયમાર્ગે ગમન = નયન વાહન = ભારોદ્વાહન ચેતિ તથા તાનિ ॥મૂ. ૩૨॥

તીક્ષ્ણ અગ્રભાગવાલે દર્મ વિશેષોં કે વન મેં (જતપત્થર) યત્ર પ્રસ્તરોં મેં
 (સૂઢતલ) ઉર્ધ્વ મુખવાલી સૂઢયોં સે યુક્ત ભૂમિભાગ મેં, (સ્વારવાવિ)
 સ્વારે જલ સે પરિપૂર્ણ હુઈ વાવડિયોં મેં, (કલકલતવેયરણિ) કલકલ
 શબ્દ સે યુક્ત ઁસે દ્રવીભૂત હુઅ રાંગ ઔર સીસે આદિ સે ભરી હુઈ વૈત-
 રણી નામ કી નદી મે, (કલવવાલુયા) અત્યતતસ હોને કે કારણ કદ-
 મ્બપુષ્પ કે સમાન રક્ત વર્ણવાલી વાલુકા સે યુક્ત નદી મેં, (જલિયગુહ)
 પ્રજ્વલિત અગ્નિમયી કન્દરાઓં મેં, (નિરુમણ) રોક દેતે હૈં । (ઉસિ-
 ણોસિણકટહલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગગમણવાહનાણિ) (ઉસિ-
 ણોસિણ) અત્યત ઉષ્ણ, (કટહલ્લુ) સુતીક્ષ્ણકટકોં સે આકીર્ણ, તથા
 (દુગ્ગમ) દુર્ગમ-સુઢિકલ સ્વીચા જા સકે ઁસે (રહજોયણ) રથ મેં ડન
 નારકિયોં કો વૈલોં કી તરહ જોત દેતે હૈં । (તત્તલોહમગ્ગગમણ) તસ

પ્રસ્તરોમા, “સૂઢતલ” અણીવાળો ભાગ ઉર્ધ્વ સ્થિતિમા હોય એવી સોયોથી
 યુક્ત ભૂમિ પર, “સ્વારવાવિ” ખારા જળથી ભરેલી વાવોમા, “કલકલતવેયરણિ”
 ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા ડથીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ
 વૈતરણી નામની નદીમા, “કલવવાલુયા” અતિશય તપેલી હોવાથી ડદળ પુષ્પના
 સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, “જલિયગુહ” પ્રજ્વલિત અગ્નિવાળી કદ-
 શઓમા “નિરુમણ” રોકી દે છે “ ઉસિણોસિણકટહલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહ
 મગ્ગગમણવાહનાણિ” “ ઉસિણોસિણ” અતિશય ઉષ્ણ “કટહલ્લુ” અતિ તીક્ષ્ણ
 કાટાથી ઢવાયેલ, તથા “દુગ્ગમ” દુર્ગમ-સુઢકેલીથી ખેચી રાડાય તેવા “રહજો
 યણ” રથ સાથે તે નારકીઓને ખળદોની જેમ જોડે છે “ તત્તલોહમગ્ગગમણ ”

યાતનાવિષયે આયુધપ્રકારાઢ—‘ હમેહિં ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—હમેહિં વિવિહેહિં આઝહેહિ કિ તે ? મુગ્ગરમુસુંઢિ-
કરકય-સત્તિં-હલ-ગય મુસલ-ચક્ક-કોત તોમર સૂલ-લઝલ-ભિઢિ-
પાલ સઘ્વલ પઢિસ-ચમ્મેટ્ટ-દુહણ મુટ્ટિય-અસિ લેટગ લગ્ગ-ચાવ-
નારાય કળક-કપ્પિણિ વાસિપરસુ-ટંક તિલ્લ-નિમ્મલેહિ અળ્ળેહિ
ય ઇવમાઢ્ઠિ અસુહેહિ લેઝઢિલ્લેહિ પહરણસલ્લેહિ અળ્ણવલ્લ-
લ્લેલેરા પરોપ્પરં લેયળ ઝડ્ઢિંતિ અભિહળંતા ॥ સૂ ૩૩ ॥

ટીકા—‘ હમેહિં ’ ઇમિઃ વક્ષ્યમાણૈઃ ‘ વિવિહેહિં ’ વિવિધૈઃ=અનેકપ્રકારૈઃ
‘ આઝહેહિં ’ આયુધૈઃ=શસ્ત્રૈઃ પરસ્પર યાતનામ્ ઝડીરયન્તીત્યગ્રેણ સમ્વન્નઃ । ‘ કિ તે ’
કાનિ તાનિ આયુધાનિ ? ઇત્યાઢ—‘ મુગ્ગર ’ મુદ્ધરઃ પ્રસિદ્ધઃ ‘ મુસુંઢિ ’ શસ્ત્ર

લોહમય માર્ગ કે ઝપર ઝન્હે ચલાતે હેં ઓર ફિર (વાહ્ણાણિ) ઝનસે
શક્તિ સે ભી અધિક ભાર કો વહન કરાતે હેં ॥ સૂ. ૩૨ ॥

અવ સૂત્રકાર યાતના કે વિષય મેં આયુધોં કે પ્રકારોં કો કહતે
હેં—‘ હમેહિં વિવિહેહિં ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(હમેહિં) ઇન વક્ષ્યમાણ (વિવિહેહિં) અનેક પ્રકારકે (આઝહેહિં)
આયુધોં-શસ્ત્રોં સે લે નારકી પરસ્પર મેં યાતના (લેદના) કો ઝલ્પન્ન
કરતે હેં । ઇસ પ્રકાર સે યહાં સંલ્લઘ ઘટિત કર લેના ચાહિયે—(કિ તે) ,
લે આયુધ કોન ૨ સે હેં ? સો ઝન્હે પ્રકટ કરતે હેં—(મુગ્ગર) મુદ્ધર
(મુસુંઢિ) મુસુંઢિ-શસ્ત્ર વિશેષ (કરકય) ક્રકચ-કરોત (સત્તિ)

તપાલેલા લોઢાના માર્ગ ઝપર લેમને ચલાલે છે અને વળી “વાહ્ણાણિ” લેમની
શક્તિ કરતા પણ વધારે ઝોળે લેમની પાસે ઝપડાલે છે ॥ સૂ ૩૨ ॥

હલે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઝપયોગમા લેવાતા આયુધોનુ
વર્ણન કરે છે—“હમેહિં વિવિહેહિં” ઇત્યાદિ

“હમેહિં વિવિહેહિં” નીચે દર્શાવવામા આવેલા અનેક પ્રકારના “આઝહેહિં”
આયુધો-શસ્ત્રો વડે લે નારકીઓ પરસ્પરમા યાતના “લેદના” ઝલ્પન્ન કરે છે,
ઝે પ્રકારનો સંલ્લઘ ઝહી સમજી લેવાનો છે

“કિ તે ? ” લે આયુધો કયા કયા છે ? લે સૂત્રકાર લે આયુધો ઝતાલે છે—
“મુગ્ગર” મુદ્ધળ, “મુસુંઢિ” મુસડી નામનુ શસ્ત્ર, “કરકય” કંઝ-કંઝલ,

‘જત પથર’ યન્ત્ર પ્રસ્તરા = ધરદ્વાદયઃ ‘સૂહતલ’ સૂચીતલ = ઝર્વમુસસૂચીમય
 ભૂમિભાગઃ, ‘સ્વારવાવિ’ સ્વારવાપ્ય = સ્વારજલસમૃત્તપાપિકાઃ, ‘કલકલતવેય-
 રણિ’ કલકલાયમાનવૈતરણી = કલકલશદાયમાનમત્તપ્રપ્તસીસકાદિપૂર્ણ
 વૈતરણી નામધેયા નદી, ‘કલપવાલુયા’ કદમ્બવાલુકા = અસિસન્તપ્તત્વાત્કદમ્બ
 પુષ્પપદ્મ રક્તવાલુકામયી નદી, ‘જલિયગુહ’ જ્વલિતગુહા = પ્રજ્વલિતાગ્નિમયી
 કન્દરા, इत्येतेषा द्वन्द्वः, તેપુ અસિવનાદિપુ ‘નિરુભણ’ નિરોધનમ્, તથા—
 ઉસિણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગગમણવાહણાણિ’ ઉષ્ણોષ્ણકણ્ટકા-
 કીર્ણદુર્ગમરથયોજન તત્તલોહમાર્ગગમનવાહનાનિ = ઉષ્ણાદપ્યુષ્ણાદિત્યુષ્ણોષ્ણઃ = અત્યુષ્ણ
 કણ્ટકૈઃ = સુતીક્ષ્ણકીલકૈરાકીર્ણો = વ્યાપ્તો દુર્ગમઃ = દુઃસ્થેણ ગમઃ = ગમન યસ્ય સ
 તથા, દુર્ગમશ્ચ યો રથઃ તસ્મિન્ યોજન = સયોજન વલીપદાનામેવેતિ તત્તથા,
 તચ્ચ, તત્તલોહમયમાર્ગે ગમન = નયન વાહન = ભારોદ્વાહન ચેતિ તથા તાનિ ॥મૂ. ૩૨॥

તીક્ષ્ણ અગ્રભાગવાળે દર્મ વિશેષોં કે વન મેં (જતપથર) યત્ર પ્રસ્તરોં મેં
 (સૂહતલ) ઉર્ધ્વ સુખવાલી સૂહયોં સે યુક્ત ભૂમિભાગ મેં, (સ્વારવાવિ)
 સ્વારે જલ સે પરિપૂર્ણ હુઈ વાવડિયોં મે, (કલકલતવેયરણિ) કલકલ
 શબ્દ સે યુક્ત એસે દ્રવીભૂત હુઈ રાગ ઓર સીસે આદિ સે ભરી હુઈ વૈત-
 રણી નામ કી નદી મે, (કલપવાલુયા) અત્યતત્ત હોને કે કારણ કદ-
 મ્બપુષ્પ કે સમાન રક્ત વર્ણવાલી વાલુકા સે યુક્ત નદી મેં, (જલિયગુહ)
 પ્રજ્વલિત અગ્નિમયી કન્દરાઓં મે, (નિરુભણ) રોક દેતે હેં । (ઉસિ-
 ણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગગમણવાહણાણિ) (ઉસિ-
 ણોસિણ) અત્યત ઉષ્ણ, (કટફલ્લુ) સુતીક્ષ્ણકટકોં સે આકીર્ણ, તથા
 (દુગ્ગમ) દુર્ગમ-સુશ્કિલ સ્વીચા જા સકે એસે (રહજોયણ) રથ મેં ઉન
 નારકિયો કો વૈલો કી તરહ જોત દેતે હે । (તત્તલોહમગ્ગગમણ) તત્ત

પ્રસ્તરોમા, “સૂહતલ” અણીવાળો ભાગ ઉર્ધ્વ સ્થિતિમા હોય એવી સોયોથી
 યુક્ત ભૂમિ પર, “સ્વારવાવિ” ખારા જળથી ભરેલી વાવોમા, “કલકલતવેયરણિ”
 ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા કથીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ
 વૈતરણી નામની નદીમા, “કલપવાલુયા” અતિશય તપેલી હોવાથી કદમ્બ પુષ્પના
 સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, “જલિયગુહ” પ્રજ્વલિત અગ્નિવાળી કદ-
 શઓમા “નિરુભણ” રોકી દે છે “ઉસિણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહ
 મગ્ગગમણવાહણાણિ” “ઉસિણોસિણ” અતિશય ઉષ્ણ, “કટફલ્લુ” અતિ તીક્ષ્ણ
 કાટાથી છવાયેલ, તથા “દુગ્ગમ” દુર્ગમ-સુશ્કેલીથી એવી શકાય તેવા “રહજો
 યણ” રથ સાથે તે નારકીઓને ખળદોની જેમ ભેડે છે “તત્તલોહમગ્ગગમણ”

ટક્કતીક્ષ્ણાઃ=અગ્રતીક્ષ્ણાઃ લાળોત્તેજિતત્વાન્, ' નિમ્મલ ' નિર્મલાશ્ર-જાજ્વલ્ય-
માનઃ, इत्येभिः । ' अण्णेहि य ' अन्यથ ' एवमाइएहि ' एवमादिभिः ' असु-
हेहि ' असुसैः=परमदुःखोत्पादकैः ' वेउच्चिएहि ' वैक्रियकैः=वैक्रियशक्तिमम्पा-
दितैः ' पहरणसएहि ' प्रहरणगतेः=अनेकगत्तैः ' परोप्पर ' परस्परम्=अन्योन्यम्,
' अभिहणता ' अभि-नन्तः ' अणुवद्धतिव्वेरा ' अनुवद्धतीव्रैरा =पूर्वभवे हिंसा-
दिभिरनुवद्ध तीव्र वैरैस्ते तथा=उद्धवैरानुवन्धिरुमाण नारकाः, ' वेयण ' वेदना
=पीडाम् ' उईरति ' उदीरयन्ति=समुत्पादयन्ति ॥ सू० ३३ ॥

परस्परं वेदनामुदीरयन्तो नारकाः कीदृशा भवन्ति ? इत्याह—' तत्थय
मोग्गर ' इत्यादि ।

मृत्म्—तत्थ य मोग्गर पहार चुण्णिय-मुसढि संभग्गमहित-
देहा जंतोवपीलणफुरत्तकप्पिया केइत्थ सचम्मगा विगत्ता
णिम्मूलुल्लूणियकण्णोट्ट णासिया छिण्हत्थपाया ॥सू०३४॥

ટીકા—' તત્થ ય ' તત્ત્વ ચ નરકે ' મોગ્ગરપહારચુણ્ણિય મુસઢિ-સંભગ્ગ-
મહિયદેહા ' મુદ્દરપ્રહારચૂર્ણિત-મુમણ્ઠિ સંભગ્ગમથિત-દેહાઃ = મુદ્દરાણા પ્રહારૈઃ=

કુઠાર-કુલ્હાડી (ટકતિક્ષ્ણ) જે સવ શાળ પર ઉત્તેજિત ક્રિયે હુણ
હોને સે વહુત અધિક અગ્રભાગ મે તીક્ષ્ણ હોતે હૈ, ઔર (નિમ્મલા)
ચરચમાતે હૈ સો ઢન શસ્ત્રોં સે, તથા (અણ્ણેહિં એવમાઢ્ણહિં) હનસે
ભિન્ન ઔર મી (અસુહેહિં) પર હુ સ્વોત્પાદક તથા (વેઉચ્ચિણ્ણહિં) વૈક્રિય
શક્તિ સે સમ્પાદિત (પહરણસણ્ણિં) સૈકડોં શસ્ત્રોં સે (પરોપ્પર) પર-
સ્પર મે એક દૂસરે કો (અભિહણતા) મારતે હુણ વે (અણુવદ્ધતિવ્વેરા)
પૂર્વભવ મેં હિંસાદિ પાપો દ્વારા અણુવદ્ધ તીવ્ર વૈર વાલે નારકી (વેયણ)
વેદના-પીડા કો (ઉઈરતિ) ઉત્પન્ન કરતે હૈ ॥ સૂ ૩૩ ॥

પરસ્પર મે તીવ્ર વેદના કો ઉત્પન્ન કરતે હુણ વે નારકી કૈસે હો જાતે

“પરસુ” કુહાડી, “ટકતિક્ષ્ણ” એ બધા શસ્ત્રો સરાણુ પર સબવેલા હોવાને
કારણે તેમની ધાર તથા અણુ ધણી તીક્ષ્ણ હોય છે, અને તે “ નિમ્મલા ”
ચળકતા હોય છે એ પ્રકારના શસ્ત્રોથી તથા “ અણ્ણેહિં એવ માઢ્ણહિં ” તે
ઉપરાત બીજા પણ “ અસુહેહિં ” અન્યને હુ બદાયડ તથા “ વેઉચ્ચિણ્ણહિં ”
વૈક્રિય શક્તિથી યુક્ત “ પહરણસણ્ણિં ” સડો ગણોથી “ પરોપ્પર ” એકબીજાને
“અભિહણતા” મારતા, “ અણુવદ્ધતિવ્વેરા ” પૂર્વભવમા હિંસાદી પાપો દ્વારા તીવ્ર
વેરથી યુક્ત, નારકી હોવો “વેયણ,, પરસ્પરમા વેદના “ ઉઈરતિ ” ઉત્પન્ન કરે છે
પરસ્પર વેદના તીવ્ર વેદના ઉત્પન્ન કરતા કરતા તે નારકી હોવો કેવા થઈ

વિશેષ: ' કરકય ' કરકચં=પરપત્ર ' કરરત ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, ' સત્તિ ' શક્તિ: =ત્રિશૂલં ' હલ ' પ્રસિદ્ધ, ' ગય ' ગદા=પ્રસિદ્ધા, ' મુસલ ' પ્રસિદ્ધમેવ ' ચક્ક ' ચક્ર=શસ્ત્રવિશેષો રથાગ્રકાર: ' કોત ' કુન્ત: ' ખાલા ' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધ:, ' તોમર ' તોમર: ' ગુરજર ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ: ' સૂલ ' શુલ સુતીક્ષ્ણલોહકણ્ટકમય શસ્ત્રવિશેષ પ્રસિદ્ધ:, ' લલલ ' લલુટ: - ચપ્ટિ:, ' ભિંડિપાલ ' ભિંડિપાલ: ' ગોફળ ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ:, ' સવ્વલ ' શર્વલ:-' વરછી ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ:, ' પટ્ઠિસ ' પટ્ઠિશ શસ્ત્રવિશેષ:, ' ચમ્મેટ્ટ ' ચર્મેષ્ટ: =ચર્મવેષ્ટિતપાપાણમયશસ્ત્રવિશેષ, ' દુહળ ' દુઘળ: = મુદ્રરવિશેષ: ' મુટ્ઠિય ' મુષ્ટિક:-' ઘળ ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ:, ' અસિ ' લઘુ-સ્વદ્ગ:, ' સેડગ ' સેટક: =શસ્ત્રપ્રહારરોધકશસ્ત્રવિશેષ:, ' ઢાલ ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ:, ' સ્વદ્ગ ' સ્વદ્ગ: =સુતીક્ષ્ણદીર્ઘાકારોઽસિરેવ ' ચાવ ' ચાપ: =ધનુ: ' નારાય ' નારાચ: =લોહમયગાળ:, ' કળક ' કળક: =ગાળવિશેષ: ' કલ્પિણિ ' કલ્પની =કર્ત્તરિકા ' કૈંચી ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, ' વાસિ ' વાસી =તક્ષણશસ્ત્રવિશેષ: ' વસુલા ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, ' પરસુ ' પરશુ: =કુઠાર:, એવા દ્વન્દ્વ:, તે ચ તે ' ટક તિલ્લ ' શક્તિ-ત્રિશૂલ, (હલ) હલ (ગય) ગદા (મુસલ) મુસલ, (ચક્ક) ચક્ર-રથાગ્ર કે આકાર શસ્ત્ર વિશેષ, (કોત) ખાલા, (તોમર) તોમર-ગુરજર, (સૂલ) અત્યંતતીક્ષ્ણ ધારવાળે લોહે કે કાંઠો વાળા શસ્ત્રવિશેષ, (લલલ) લલકડી-લાઠી (ભિંડિપાલ) ગોફળ, (સવ્વલ) વરછી, (પટ્ઠિસ) પટ્ઠિશ, આ નામ કા શસ્ત્રવિશેષ, (ચમ્મેટ્ટ) ચર્મવેષ્ટિતપાપા-ગમયશસ્ત્રવિશેષ, (દુહળ) દુઘળ-એક જાતિ કા મુદ્રરવિશેષ, (મુટ્ઠિય) મુષ્ટિક-ઘળ-જિસ પર રસ્ત્રકર લોહાર લોહે કો કૂટલે હૈં, (અસિ) તલ-વાર (સેટક) ઢાલ, (સ્વદ્ગ) સુતીક્ષ્ણ એવ દીર્ઘ આકાર યુક્ત તલવાર બઢી તલવાર, (ચાવ) ધનુષ, (નારાય) લોહમય ગાળ, (કળક) એક પ્રકાર કા ગાળ, (કલ્પિણિ) કર્ત્તરિકા-કૈંચી, (વાસિ) વસુલા (પરસુ)

“સત્તિ” શક્તિ-ત્રિશૂલ, “હલ” હળ, “ગય” ગદા, “મુસલ” મુસળ-સાળેલુ, “ચક્ક” ચક્ર, -રથના પેડાના આઠારનુ એકે શસ્ત્ર, “કોત” લાલો, “તોમર” તોમર-ગુરજર, “સૂલ” અત્યંત તીક્ષ્ણ ધારવાળા લોહાના કાટા વાળુ એક શસ્ત્ર, “લલલ” લાકડી-લાઠી “ભિંડિપાલ” ગોફળ, “સવ્વલ” વરછી, “પટ્ઠિસ” પટ્ઠિશ નામનુ એક શસ્ત્ર, “ચમ્મેટ્ટ” ચામડાથી મઢેલુ પથ્થરનુ એક પ્રકારનુ શસ્ત્ર, “દુહળ” દુઘળ-એક જાતનુ મગદળ, “મુટ્ઠિય” મુષ્ટિક-ઘળ, જેના પર મૂડીને લૂંટાર લોહાને ટીપે છે, “અસિ” તલવાર, -“સેટક” ઢાલ, “સ્વદ્ગ” અત્યંત તીક્ષ્ણ અતે લાખી તલવાર-મોટી તલવાર, “ચાવ” ધનુષ, “નારાય” લોહાનુ ગાળુ, “કળક” એક વિશિષ્ટ પ્રકારનુ ગાળ “કલ્પિણિ” કાતર “વાસિ” વાસલો.

હજ્જતગત્તકુતગ્ગભિષ્ણ-જજ્જરિયસવ્વદેહા વિલોલંતિ મહીતલે
વિસૂણિયંગમંગા ॥ સૂ૦ ૩૫ ॥

ટીકા—‘તત્થ ય’ તત્ર ચ ‘અમિરકયતિક્વકોતપરસુપ્પહારફાલિય-
વાસીતચ્છિયગમગા’ અસિક્રકચતીક્ષ્ણકુન્ત પરશુપ્રહારપાટિત-વાસીસન્તક્ષિતાદ્ધો-
પાદ્ધા=તત્ર-અસિ:=લઙ્ગ, ક્રકચ:=કરપત્ર ‘કરવત’ इति પ્રસિદ્ધઃ, તીક્ષ્ણકુન્ત:=
તીક્ષ્ણમહ્ત, પરશુથ - કુઠારઃ, એતેષા પ્રહારૈ પાટિતાનિ = વિદારિતાનિ, તથા
વાસીભિ સન્તક્ષિતાનિ=તનૂકૃતાન્યદ્ધોપાદ્ધાનિ યેષાં તે તથા, ‘કલકલમાણસ્વાર-
પરિસિત્તગાઢહજ્જતગત્ત-કુતગ્ગભિષ્ણજજ્જરિયસવ્વદેહા’ કલકલાયમાનક્ષાર-
પરિપિક્તગાઢદહમાનગાત્રકુન્તાગ્રભિન્નજર્જરિતસર્વદેહાઃ = અત્યુત્કાલિતત્વાત્કલ-
કલાયમાનેન=ક્ષારેણ=મર્જિક્ષારાદિજલેન પરિપિક્તમ્, અતએવ-ગાઢમ્-અત્યન્ત
દહમાન ગાત્ર યેષાં તે, તથા કુન્તાનામગ્રૈઃ-નિશિતપારાભિર્ભિન્નોઽત એવ જર્જરિતો

और भी—‘तत्थय असि इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તત્થ ય) उन नरकों में (असि-करकय-तिक्खकोत-परसु-
प्पहारफालिय वासीतच्छियगमगा) असि-तलवार, क्रकच-करोत, तीक्ष्ण
कुन्त-तीक्ष्णधार वाले भाले और परशु-कुठार उनके प्रहारों से विदा-
रित किये गये तथा घाद में वासी-वमूलों से छोल २ कर पतले किये
गये हैं अग उपाग जिन्हों के ऐसे (कलकलमाणस्वारपरिसित्तगाढ
हज्जत गत्त-कुतगगभिषणजज्जरियसव्वदेहा) तथा अत्यत डकला
हुआ होने से कलकलायमान सर्जिक्षार आदि के जल से सिञ्चित किये
गये होने से जिनका शरीर अत्यत दह्यमान हो रहा है ऐसे, भालों के
अग्रभाग से भिन्न होने के कारण जिनका सकल शरीर बिलकुल जर्ज-

વળી સૂત્રકાર કહે છે કે—“તત્થ ય અસિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તત્થ ય” તે નરકોમાં “અસિ, કરકચ, તિક્વકોત, પરસુ, પ્પહાર
ફાલિય વાસી તચ્છિયગમગા” અમિ-તલવાર, ક્રકચ-કરવત, તીક્ષ્ણકુન્ત-તીક્ષ્ણ
આણીવાળા ભાલા અને પરશુ-ફરશીના પ્રહારોથી ચીરવામાં આવેલ અને ત્યાર-
બાદ વાસલા વડે છોલી છોલીને જેમના અગ્ર ઉપાગો પાતળા કરવામાં આવ્યા
છે તેવા, તથા “કલકલમાણસ્વારપરિસિત્તગાઢ હજ્જત ગત્ત-કુતિગ્ગભિષ્ણજર્જરિય-
સવ્વદેહા” અત્યત ઉકળેલ હોવાને કારણે ડળકળતા સાજીબાર આદિના પાણીનું
સિંચન કરવાના કારણે જેમના શરીર અત્યત જળી રહ્યા છે તેવા, અને
ભાલાની આણીથી વીધવાને કારણે જેમના શરીર બિલકુલ જર્જરિત થઈ ગયા છે
એવા “વિસૂણિયગમગા” તથા વિવિધ પ્રકારના પ્રહારોથી જેના શરીર સૂઝી ગયા

પ્રઘાતૈઃ ચૂર્ણિતઃ=કુટ્ટિતઃ, મુસઙ્ઘિર્ભિઃ=શસ્ત્રવિશેષૈઃ સમગ્નઃ=નર્જરીકૃતઃ, મથિ-
તશ્ચ=કુમ્ભ્યાદૌ-દધિવદ્ વિલોલિતઃ દેહો યેષાં તે તથા, ' જતોવપીલણકુરંત-
કપ્પિયા ' યન્ત્રોપપીડન સ્ફુરત્કલ્પિતાઃ=યન્ત્રેષુ ઉપપીડનેન=સમ્મર્દનેન સ્ફુરન્તઃ
ઘેપમાના કલ્પિતાઃ=કર્તિતા યે તે તથા ' કેઙ્ઠ્ય ' કેચિદન-કેચિત્ નારકાઃ
અન્ન=નરકેષુ ' સચમ્મગા ' સચર્મકા=ચર્મસહિતાઃ ' વિગત્તા ' વિકૃત્તાઃ=ઢેદિતાઃ
મૃત-પશુવદ્ ઉત્પાટિતચર્મશરીરાઃ, ણિમ્મૂલુલ્લૂણિયકણ્ણોટ્ટણાસિયા ' નિર્મૂલોલ્લૂ-
નકર્ણોષ્ઠનાસિકાઃ=નિર્મૂલ=મૂલતઃ ઉલ્લૂનાઃ=કર્તિતાઃ કર્ણો ઓષ્ઠો નાસિકા ચ
યેષાં તે તથા, ' છિન્નહત્થપાયા ' છિન્નહસ્તપાદાઃ=છિન્ના દસ્તાઃ પાદા યેષાં તે
તથા ભૂતા નારકા ભવન્તિ ॥ સૂ. ૩૪ ॥

અપિ ચ—' તત્થ ય અસિ ' इत्यादि—

મૂલમ્—તત્થ ય અસિ કરકય તિવ્રલ્લકોત-પરસ્સુપ્પહાર
ફાલિય-વાસીસિત્તિચ્છિયગમગા કલકલમાણચારપરિસિત્તગાઢ-

હેં ? इस बात को सूत्रकार कहते हैं—' तत्थ य मोग्गर इत्यादि । '

ટીકાર્થ—(મોગ્ગરપહારચુણિય-મુસઙ્ઘિ સમગ્ન-મહિય દેહા) ઉન નરકોમેં
મુદ્રરોં કે પ્રહારોં સે ચૂર્ણિત, મુસઙ્ઘિ જાતિ કે શસ્ત્રવિશેષોં સે જર્જરીકૃત
એવ કુમ્ભી આદિ મેં દહીં કી તરહ મથિત હૈ દેહ જિન્હોં કી એસે (કેઙ્ઠ્ય)
કિતનેક નારકી નરકો મે (જતોવપીલણ કુરંતકપ્પિયા) યન્ત્રોં મેં સમ-
ર્દન સે કપિત હોતે હુએ કાટ દિયે જાતે હેં । (સચમ્મગાવિગત્તા) इनके
શરીર કે ઉપર કી ચમડી મૃતપશુ કી ચમડી કી તરહ ઉસાડ લી જાતી હૈ ।
(ણિમ્મૂલુલ્લૂણિયકણ્ણોટ્ટણાસિયા) मूलतः इनके ओष्ठ और नाक
કાટ લી જાતી હેં । (છિન્ન હત્થપાયા) हाथ पैर छिन्न भिन्न कर दिये
જાતે હેં ॥ સૂ. ૩૪ ॥

જાથ છે, તે વાત સૂત્રકાર હવે બતાવે છે— “તત્થ મોગ્ગર ” इत्यादि
“ મોગ્ગર પહાર ચુણિય, મુસઙ્ઘિ સમગ્ન-મહિય દેહા ” તે નરકોમા મગદ્ધોના
પ્રહારોથી ચૂર્ણિત, મુસઙ્ઘિ નામના શસ્ત્રથી જર્જરિત કરેલ અને કુલી આદિમા
દહીંની જેમ જેમના શરીર વલોવાય છે તેવા “ કેઙ્ઠ્ય ” ડેટલાક નારકીઓને
નરકોમા “ જતોવપીલણકુરંતકપ્પિયા ” યન્ત્રોમા પીલવાની યીકે કપતા હોય
તેવી હાલતમા કાપી નાખવામા આવે છે “ સચમ્મગા વિગત્તા ” તેમના શરીર
ઉપરની ચામડી મૃતપશુની ચામડીની જેમ ઉતારી લેવામા આવે છે “ ણિમ્મૂલુ
લ્લૂણિય કણ્ણોટ્ટણાસિયા ” તેમના હોઠ, નાક અને કાન મૂળમાથી કાપી લેવામા
આવે છે “ છિન્નહત્થપાયા ” હાથ અને પગ છિન્નભિન્ન કરવામા આવે છે ॥ સૂ. ૩૪ ॥

‘સુળગ’ શ્વાનઃ ‘મિયાલ’ શૃગાલાઃ, કાકાઃ=પ્રસિદ્ધા ‘મજાર’ માર્જારા =
પિટાલાઃ, શરમાઃ=અષ્ટાપદા ‘દીવિય’ દ્વીપિકાઃ=ચિત્રકાઃ ‘વિયગ્ધ’ વ્યાગ્રાઃ
પ્રસિદ્ધાઃ, ‘સહૂલ’ શાર્દૂલાઃ=વ્યાગ્રવિશેષાઃ, ‘સીહ’ મિહાઃ=કેસરિણઃ, તે ચ
વૃક્ષાદયઃ કીદશાઃ? ‘દપ્પિય’ દર્પિતા =ગર્વિતાઃ, તથા ‘સુહાભિભૂયા’ શુધા-
ભિભૂતા =શુધાપિપાસાવ્યાકુલાસ્તૈઃ ‘ણિચ્ચકાલ’ નિત્યકાલ=સર્વદા ‘અણમિ-
ઈ’ અનગિતૈઃ=અશ્રુતઃ ‘ઘોરાસમાણ ભીમરૂપેહિ ઘોરાઽસમાણભીમરૂપૈઃ=
ઘોરા =ભયકરકર્મણિ પારસમાનાઃ=અતીવાક્રોશન્તોભીમરૂપાઃ=ભયાનકાકૃતયથ
યે તે તથા તૈઃ ‘અકમિત્તા’ આક્રમ્ય=આક્રમણ કૃત્વા ‘દઢદાઢાગાઢઢક-કઢ્ઢિય-
સુતિવલ્લનહફાલિય ઉદ્ધદેહા’ દઢદંડ્રા ગાઢદંડ્રકર્પિત-મુતીસ્થનલપાદિતોર્ધ્વ

સરભ-દીવિય-વિયગ્ધ-મહૂલ-મીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂઈ) (દપ્પિય)
દર્પિત-ગર્વિત તથા (સુહાભિભૂઈ) ભૂખ પ્યાસ સે અત્યત વ્યાકુલ તથા
(ણિચ્ચકાલમણસિઈ) ઉસ સમય જિન્હો ને નિલકુલ કુછ મી નહીં
લાયા હોતા હૈ એસે, ઓર હસી કારણ જો (ઘોરાસમાણભીમરૂપેહિ)
ઘોર-કૂર કર્મ કરને કે લિયે તત્પર બન ચુકે હૈ, અતઃ ચીત્કાર કરને સે
ભીમરૂપ જિનકા રૂપ ભયકર બન રહા હૈ એસે (વિગ) વૃક્ષ-ભેડિયા,
(સુળગ) શ્વાન-કુત્તે, (સિયાલ) શૃગાલ-ગીદઢ (કાક) કૌવે,
(મજાર) માર્જાર-વિલાપ, (સરભ) અષ્ટાપદ, (દીવિય) દ્વીપિક-ચિત્તા,
(વિયગ્ધ) વ્યાગ્ર, (સહૂલ) શાર્દૂલ-વ્યાગ્ર વિશેષ, ઓર, સિંહ इनके
ઢારા (અકમિત્તા) આક્રમણ કરકે (દઢદાઢા-ગાઢઢક-કઢ્ઢિય-સુતિવલ્લ
નહફાલિય ઉદ્ધદેહા) પહિલે દઢદંડ્રાઓં સે હસે જાતે હૈ, પશ્ચાત્ પૃથ્વી-

વિયગ્ધ-સહૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂઈ ” “ દપ્પિય ” દર્પિત-ગર્વિત તથા
“ સુહાભિભૂઈ ” ભૂખ પ્યાસથી-અત્યત વ્યાકુળ તથા “ ણિચ્ચકાલમણસિ-
ઈ ” તે ડાળે જેમને બિલકુલ ધોરાક મળ્યો હોતો નથી એવા અને એજ
કાળે જે “ ઘોરાસમાણભીમરૂપેહિ ” ઘોર-કૂર ડર્મ કરવાને માટે આતુર થયેલ
છે, તે ડાળે ચિત્કાર કરવાથી જેમનો દેખાવ અતિ ભયકર બની ગયો છે
એવા “ વિગ ” વૃક્ષ-વન, ‘સુળગ’ શ્વાન-દૂતરા, ‘સિયાલ’ શિયાળ, ‘કાક’
કાગડા, ‘મજાર’ માર્જાર બિલાડા, સરભ અષ્ટાપદ, ‘દીવિય’ દ્વીપિક-
ચિત્તા, ‘વિયગ્ધ’ વાઘ, ‘સહૂલ’ શાર્દૂલ-વિગિષ્ટ પ્રકારના વાઘ અને સિંહ
વગેરે પ્રાણિઓ “ અકમિત્તા ” આક્રમણ કરીને “ દઢદાઢા-ગાઢઢક-કઢ્ઢિય-સુતિ
વલ્લ-નહફાલિય ઉદ્ધદેહા ” પહેલા મળખૂત ડાઢો વડે તેમને બટકા ભરે છે,

સર્વદેહઃ=સકલશરીર યેવા તે તથા, ' વિમૂળિયગમગા ' વિશૂનિતાદ્વોપાદ્ધા = વિશૂનિતાનિ=નાનાવિધપ્રહારૈઃ સજાતશોથાનિ, કલ્પકલાયમાનજલસેચનેન સમૃત્પન્નસ્ફોટકાનિ વા અદ્વોપાદ્ધાનિ યેવા તે તથા, એવ પરમાધાર્મિકૈઃ કદર્થિતાઃ સન્તો નરકજીવા મહીતલે=કઠોરનરકભૂમૌ તિલોલતિ' વિલુલન્તિ=વિલુલન્તિ ॥૪૦૩૫॥

તતઃ કિં ભવતી ? ત્યાહ—' તત્થ ય વિગ ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તત્થ ય વિગ સુળગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-સરભ-
દોવિય-વિયગ્ધ સૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂણ્હિ ણિચ્ચકાલમ-
ણસિણ્હિ ઘોરારસમાળભીમરૂંઘેહિ અકમિત્તા દઢદાઢા'ગાઢ-
હક્ક-કઢ્ઢિય સુતિકલ્લનહફાલિયઉદ્ધદેહા વિચ્છિપ્પ તે સમંતઓ
વિમુક્કસધિવધળા વિયંગમગા કકકુરરગિદ્ધઘોરકટ્ટવાયસગળેહિ
ય પુળો સ્વરથિરદઢળવલ્લ-લોહતુડેહિ ઓવડ્ડત્તા પલ્લવાહયતિ-
વલ્લળવલ્લવિકિન્નજિલ્લભલ્લિયનયળનિદ્ધઓલુગ્ગવિગતવધળા ઉક્કો-
સતા ય ઉપ્પયત્તા નિયડંતા ભમતા ॥ સૂ.૩૬॥

ટીકા—તત્ર ચ ' વિગ ' વૃક્ષાઃ=ઈહામૃગા ' ભેડિયા ' ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ

રિત હો ચુકા હૈ એસે (વિસૂળિયગમગા) તથા નાના પ્રકાર કે પ્રહારો
સે જિનમે સૂજન આગઈ હૈ, અથવા કલકલાયમાન ક્ષાર જલ કે સિંચન
સે જિન પર ફપોલે પડ ગયે હૈ એસે અગ ઉપાગ વાલે વે નારકી જીવ
પરમાધાર્મિકોં દ્વારા કદર્થિત હોકર (મહીતલે) નરક કી કઠોર ભૂમિ
પર (વિલોલંતિ) લોટતે હૈ ॥ સૂ. ૩૫ ॥

હસકે બાદ કયા હોતા હૈ ? હસ વાત કો સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે
હૈ—' તત્થ ય વિગ-સુળગ ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તત્થ ય) ડન નરકોંમેં (વિગ-સુળગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-

છે તેવા, અથવા કળકળતા ક્ષારયુક્ત જળના સિંચનથી જેમના અગ ઉપાગો
પર ફેલવા પડી ગયા છે એવા નારકી જીવો પરમાધાર્મિકોં દ્વારા ચાતનાઓ
પામીને “ મહીતલે ” નરકની કઠોર ભૂમિ પર “ વિલોલતિ ” પડી જાય છે ॥સૂ. ૩૫॥

ત્યારબાદ શુ વાચ છે તે વાત સૂત્રકાર બતાવે છે—“ તત્થ ય વિગ-
સુળગ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તત્થ ય” તે નરકોંમા “ વિગ-સુળગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-સ”

‘ सुणग ’ श्वानः ‘ सियाल ’ शृगालाः, काकाः=प्रसिद्धा ‘ मज्जार ’ मार्जार =
मिडालाः, गरभाः=अष्टापदा ‘ दीविय ’ द्वीपिकाः=चिताः ‘ वियग्घ ’ व्याघ्रः
प्रसिद्धाः, ‘ सहूल ’ शार्दूलः=व्याघ्रविशेषः, ‘ सीह ’ सिंहः=केसरिणः, ते च
वृकादयः कीदृशाः ? ‘ दप्पिय ’ दर्पिता =गर्विताः, तथा ‘ खुहाभिभूया ’ क्षुधा
भिभूता =क्षुधापिपासाव्याकुलास्तैः ‘ णिच्चकाल ’ नित्यकाल=सर्वदा ‘ अणमि-
एहि ’ अनगितैः=अभुक्तेः ‘ घोरासमाण भीमरूवेहि ’ घोराऽऽसमानभीमरूपैः=
घोरा =भयकरकर्मणि आसमानाः=अतीवाक्रोशन्तोभीमरूपाः=भयानकाकृतयश्च
ये ते तथा तैः ‘ अक्कमित्ता ’ आक्रम्य=आक्रमणं कृत्वा ‘ दढदाढागाढडक्कड्डिय-
सुतिक्खनहफालिय उद्धदेहा ’ दढदण्डा गाढदण्डरूपित-सुतीक्ष्णनखपाटितोर्ध्व

सरभ-दीविय-वियग्घ-सहूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहि) (दप्पिय)
दर्पित-गर्वित तथा (खुहाभिभूएहि) भूख प्यास से अत्यंत व्याकुल तथा
(णिच्चकालमणसिएहि) उस समय जिनहों ने निलकुल कुछ भी नहीं
खाया होता है ऐसे, और इसी कारण जो (घोरासमाणभीमरूवेहि)
घोर-भूर कर्म करने के लिये तत्पर बन चुके हैं, अतः चीत्कार करने से
भीमरूप जिनका रूप भयकर बन रहा है ऐसे (विग) वृक-भेडिया,
(सुणग) श्वान-कुत्ते, (सियाल) शृगाल-गीदड़ (काक) कौवे,
(मज्जार) मार्जार-विलान, (सरभ) अष्टापद, (दीविय) द्वीपिक-चिता,
(वियग्घ) व्याघ्र, (सहूल) शार्दूल-व्याघ्र विशेष, और, सिंह इनके
द्वारा (अक्कमित्ता) आक्रमण करके (दढदाढा-गाढडक्क-कड्डिय-सुतिक्ख
नहफालिय उद्धदेहा) पहिले दढदण्डाओ से डसे जाते हैं, पश्चात् पृथ्वी-

वियग्घ-सहूल-सीह-दप्पिय-खुहाभिभूएहि ” “ दप्पिय ” दर्पित-गर्वित तथा
“ खुहाभिभूएहि ” भूख प्यास-अत्यंत व्याकुल तथा “णिच्चकालमणसि-
एहि” ते क्षणों में गले में गिलकुल घोराऽऽसमानों को नष्ट करने के लिये
आतुर थयेले, ते आतुर चीत्कार करने के लिये भयानक बन गये।
ऐसे “ विग ” वृक-वृक, “ सुणग ” श्वान-कुत्ता, “ सियाल ” शिवाल, “ काक ”
काक, “ मज्जार ” मार्जार गिलाडा, सरल अष्टापद, “ दीविय ” द्वीपिक-
चिता, “ वियग्घ ” व्याघ्र, “ सहूल ” शार्दूल-विशिष्ट प्रजाति का व्याघ्र, अने सिंह
वगैरे प्राणियों “ अक्कमित्ता ” आक्रमण करने “ दढदाढा-गाढडक्क-कड्डिय-सुति
क्ख-नहफालिय उद्धदेहा ” पहिले दढदण्डाओं से डसे जाते हैं, पश्चात् पृथ्वी-

દેહાઃ=દૃઢાભિર્દંટ્રાભિઃ ગાઢમ્=અત્યન્ત ' હઘ ' દૃષ્ટાઃ, કર્ષિતા =પૃથ્વીતલે સ્તતઃ સમાકૃષ્ટાશ્ચ યે તે, તથા સુતીક્ષ્ણનૈઃ પાટિતાઃ=દ્વિધા કૃતાઃ ઊર્વદેહાઃ ઊર્વશરીરાણિ યેષા તે તથા, અત એવ- ' વિમુક્તસન્ધિવન્ધનાઃ ' વિમુક્તસન્ધિવન્ધનાઃ =વિમુક્તાનિ=શિથિલીકૃતાનિ સન્ધીના=અદ્વસધાનસ્થાનાનાં વન્ધનાનિ યેષા તે તથા, ' વિયગમગા ' વ્યગ્નાદ્વાઃ=વ્યગ્નાનિ=સ્વણ્ડિતાનિ અગ્નાનિ=કરચરણકર્ણ-નાસિકાદીનિ યેષા તે તથા, એવમ્ભૂતા નરકજીવાઃ પરમાધાર્મિકૈઃ ' સમતઓ ' સમન્તતઃ=ચતુર્દિશુ ગગને ' વિચ્છિપ્પતે ' વિશ્લિપ્યન્તે = કાકવલિપ્રત્પશ્લિપ્યન્તે, ' પુણો ય ' પુનશ્ચ-પ્રક્ષેપણાનન્તર તે નારકાઃ ' કક-કુરર-ગિદ્ધઘોરકઢવાયસ ગણેહિ ' કઢકુરરગિદ્ધઘોરકઢવાયસગણૈઃ = કઢ્ઢાઃ-કુરરાઃ પશ્તિવિશેષાઃ ગૃધ્રાઃ= પ્રસિદ્ધાઃ, ઘોરકઢવાયસા =ઘોરકઢા =અસહ્યક્લેશકારકા યે વાયસાઃ=કાકાસ્તે તથા તેષા ગણૈઃ=સમૂહૈઃ, કીદૃશૈસ્તૈઃ ? इत्याह—' સ્વરથિરદઢ્ઢણવલોહતુંડેહિ ' સ્વરસ્થિરદઢ્ઢણવલોહતુંડૈઃ=સ્વરાઃ=તીક્ષ્ણાઃ સ્થિરાઃ-નિશ્ચલાઃ દૃઢાઃ=કઠોરવસ્તુ-

તલપર ઇધર સે ઊધર સેંચે જાતે હૈ-યસીટે જાતે હૈ, તથા સુતીક્ષ્ણ નર્કોં કે પ્રહારોંસે ઊનકે ઊર્વ શરીર કો દો ઢુકડેં કર દિયે જાતે હૈં । ઇસ કારણ (વિમુક્તસન્ધિવધના) ઊનકે સન્ધિયોં કે વધન વલકુલ ઢીલે હો જાતે હૈં । (વિયગમગા) વહા નારકિયોં કે કર, ચરણ, કર્ણ, નાસિકા આદિ અર્ગોં કો સ્પર્શિત કર દિયા જાતા હૈં ઓર (સમતઓ વિચ્છિપ્પતે) જિસ પ્રકાર કાકવલિ દિશાઓં મેં ફેંક દી જાતી હૈં વે વિચારે નારકીં બીં ઇસીં તરહ સે આકાશ મેં ઇધર ઊધર દિશાઓં મેં ફેંક દિયે જાતે હૈં । (પુણોય) ફિર પશ્ચાત્ (કકકુરરગિદ્ધઘોરકઢવાયસગણેહિ) કક, કુરર, ગૃધ્ર ઓર અસહ્ય કલેશ કારક વાયસોં-કૌઓં કા સમૂહ કિ (સ્વરથિરદઢ્ઢણવલોહતુંડેહિ) જિનકે નર્કતીક્ષ્ણ, સ્થિર કઠોર વસ્તુ કે વિદારણ

પછી જમીન ઉપર તેમને આમ તેમ ખેંચે છે-ધસડે છે, તથા અતિશય તીક્ષ્ણ નર્ક ભરાવીને તેમના ઊર્વ શરીરના બે ઢુકડા ડરી નાખે છે તે કારણે “ વિમુક્તસન્ધિવધના ” તેમના સાધાઓના બધન તદ્દન ઢીલા થઈ જાય છે “ વિયગમગા ” ત્યાં નારકીઓના હાથ, પગ, કાન, નાક આદિ અંગોનું બંધન કરવામાં આવે છે અને “ સમતઓ વિચ્છિપ્પતે ” જેમ કાકબલિને ચારે દિશામાં ફેંકવામાં આવે છે તેમ તે બિચારા નારકીઓને પણ આકાશમાં આમ તેમ ફેંકવામાં આવે છે “ પુણોય ” ત્યાર બાદ ‘ કકકુરરગિદ્ધઘોરકઢવાયસગણેહિ ’ કક, કુરર ગૃધ્ર, અને અસહ્ય યાતનાઓ દેનારા કાકડાઓનો સમૂહ, “ સ્વરથિરદઢ્ઢણવલોહતુંડેહિ ” કે જેમના તીક્ષ્ણ નર્ક કઠણ વસ્તુઓને

છેદનેડપિ અભગ્નાઃ નચા ચેપા તે તથા તે ચ તે લોહતુણ્ડાઃ=લોહવત્કઠોરચઠ્ચુ-
કાથ, તૈઃ ' ઓવડ્તા ' અપત્ય=અન્તરાલ એ આક્રમ્ય ' પક્ષ્વાહયતિક્ષ્ણક્ષ
વિકિન્ન જિવ્મચ્છિત્તનયણનિદ્વોલુગ્ગવિગયવયણા ' પક્ષાદતતીક્ષ્ણનચનિશ્ચિત્ત
જિહ્વાક્ષિત્તનયનનિર્દયામગ્નવિકૃતવદનાઃ=' પક્ષ્વાહય ' પક્ષાહતાઃ-પક્ષૈરાહતાઃ=
તાહિતાઃ તીર્ણેર્નચેવિશિષ્ઠાઃ=આકૃષ્ટા મુલાદ્દહિર્નિષ્કાશિતા જિહ્વાઃ ચેપા તે તથા,
આશિષ્તે=ચ્છિન્નતે નયને ચેપા તે તથા, અતએવ નિર્દય યથાસ્યાત્તથા અવરગ્ન=ભગ્ન
વિકૃત વિરૂપી કૃત ચ વદન ચેપા તે તથા, તતઃ સર્વેષાં કર્મધારયઃ, ઉક્કોસતા '
ઉત્કોશન્તઃ=હા હા શબ્દૈરાક્રન્દ કુર્વન્ત ' ઉપ્પયતા ' ઉત્પતન્તઃ=પરમવેદનાભિર્ટ-
થિરુદદૃકપિચ્છ ગગને ઉચ્છલન્તઃ ' નિવડતા ' નિપતન્તઃ=પૃથિવ્યા લુઠન્તઃ,
' ભમતા ' ભ્રમન્ત =ઉતસ્તતઃ પલાયમાનાઃ દુઃખમનુભવન્તિ ॥ ૩૬ ॥

કરને પર મી-વૈસે હી ઘને રહતે હૈ-નહી ટૂટતે હૈ તથા ચોંચે જિનકી
લોહ કે જૈસી કઠોર હોતી હૈ, ચે ઉન્હે (ઓવડ્તા) ઝીચ હી મેં પકડકર
(પક્ષ્વાહય - તિક્ષ્ણક્ષવિકિન્નજિવ્મચ્છિયનયણનિદ્વોલુગ્ગવિગત-
વયણા) અપની પાલ્લોં સે આહત કરતે હૈ, તીક્ષ્ણ નલ્લોં સે ડનકી જીમ
કો ડનકે મુલ્લ સે ચાહિર નિકાલ લેતે હૈ ઓર ડોનોં આલ્લોં કો મી ચાહિર
કાઢ લેતે હૈ । હસ તરહ નિર્દયતાપૂર્વક વિરૂપરૂપ વાલે બનાચે ગયે ચે પાપ-
કારી નારકજીવ (ઉક્કોસતા ય) હાય હાય શબ્દ કરતે હુએ (ઉપ્પયતો)
વિચ્છુ સે કાટે ગયે વદર કી તરહ અત્યત વેદનાઓં સે આકાશ મે ડપર
કો ઉચ્છલતે હૈ ઓર ફિર (નિવડતા) નીચે ગિરતે હૈ । (ભમતા) ગિર
કર ફિર ઇધર ડધર માગતે હુએ દુઃલ્લોં કા અનુભવ કરતે હૈ ॥સૂ ૩૬ ॥

પણ એવાને એવા જ રહે છે-ટૂટતા નથી તથા જેમની ચાચ લોઢાના જેવી
કઠણ હોય છે, એવા તે પક્ષીઓ તેમને “ ઓવડ્તા ” વચ્ચે જ પકડીને
“ પક્ષ્વાહય-તિક્ષ્ણક્ષવિકિન્નજિવ્મચ્છિયનયણનિદ્વોલુગ્ગવિગતવયણા ” પોતાની
પાખો વરે મારે છે, તીક્ષ્ણ નખોની મદદથી તેમની જીભને તેમના
મુખમાથી ખડાર ખેચી કાઢે છે અને બન્ને આખોને પણ ખડાર કાઢી નાખે છે આ
રીતે નિર્દયતાથી બેડાળ બનાવવામા આવેલા તે પાપકારી નારકી જીવો “ ઉક્કો-
સતા ય ” હાય ! હાય ! કરતા “ ઉપ્પયતો ” વીંછીએ ડખ માર્યો હોય ત્યારે
ફૂદાફૂદ કરતા વાનરાની જેમ, અત્યત વેદનાથી વ્યાકુળ થઈને આકાશમા ઉપ
રની ખાબુ ઉછળે છે, અને “ નિવડતા ” વળી પાછા નીચે પડે છે “ ભમતા ”
નીચે પડીને વળી આમ તેમ નાસ-લાગ કરતા તેઓ હુ ખો અનુભવે છે ॥સૂ ૩૬॥

‘આઉક્ષ્વણ’ ‘આયુઃ ક્ષયેણ=નરકભયાયુષ્યક્ષયેણ ‘ઉઽવ્વટ્ટિયા સમાણા’ ઉદ્વૃક્તા નિસ્સૃતાઃ સન્તઃ ‘બહવે’ વહવઃ કતિપયા નરકજીવાઃ ‘તિરિયવસહિં’ તિર્ય-
ગ્વસર્તિ=તિર્યગ્યોનિ ગચ્છન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ, યતો નરકાન્નિઃસૃતા અલ્પા એવ મનુ-
જ્યેષ્ઠૃત્પદ્યન્તે । કીદૃશી તિર્યગ્યોનિમ્ ? इत्याह — ‘દુક્ખુત્તર’ દુઃખોત્તરાં=દુઃખ-
પ્રકર્ષામ્ અનન્તોત્સર્પિણ્યવસર્પિણી કાયસ્થિતિત્વાત્તસ્યાઃ, અત એવ ‘સુદારુણ’
સુદારુણા=ભીષણા નાનાદુઃખનિધાનત્વાત્, ‘જન્મણમરણજરાવાહિપરિયટ્ટનારહટ્ટ’
જન્મમરણજરાવ્યાધિપરિવર્તનારઘટ્ટા=જન્મ-મરણ જરા વ્યાધીના પરિવર્તનૈઃ=પુનઃ
પ્રાપ્તૈ અરઘટ્ટ ઇવ=જલચન્દ્ર વિશેષ इव या सा तथा ता ‘જલથલગ્વહયરપરો-
પ્પરવિહિંસણપવચ’ જલ સ્થલ સ્વચર પરસ્પર વિહિંસનમપચ્ચા=જલચર-સ્થલચર

અશાતાવેદનીયરૂપ દુઃખોં કો (અણુભવિત્તા) ભોગકર (તઓ ય) જણ
ઉસ નરક સે (આઉક્ષ્વણ) નરકભવસયધી આયુ કે ક્ષય હોને પર
(ઉઽવ્વટ્ટિયાસમાણા) વાહર નિકલતે હે તવ (બહવે) ઉન મેં સે બહુત
સે નારક જીવ (તિરિયવસહિં) તિર્યચ્ચ યોનિ કો (ગચ્છતિ) પ્રાપ્ત કરતે
હે, ક્યોં કિ નરકો સે નિકલે હુવ વહુત થોડે જીવ હી મનુષ્યગતિ મેં
ઉદ્વૃક્ત હોતે હે । વહ તિર્યચ્ચ યોનિ કેસી હૈ હસ વાત કો સૂત્રકાર કહતે
હે કિ વહ યોનિ (દુક્ખુત્તર) અનન્ત ઉત્સર્પિણી પ્રમાણ કાય-
સ્થિતિવાલી હોને સે દુઃખોં કે પ્રકર્ષ સે યુક્ત હૈ । (સુદારુણ) નાના દુઃખોં
કો નિધાન હોને સે સુદારુણ-ભયકર હૈ । (જન્મણ-મરણ-જરા-વાહિ
પરિયટ્ટનારહટ્ટ) જન્મ, મરણ, જરા એવ વ્યાધિયોં કો પુનઃપુનઃ પ્રાપ્તિ
હોને સે અરહટ્ટ જૈસી હૈ । તથા (જલથલ સ્વહયરપરોપ્પરવિહિંસણપવચ)

“દુક્ખાહ” અશાતા વેદનીય રૂપ હુ ખો “અણુભવિત્તા” ભોગવીને “તઓ ય”
બ્યારે તે નરકમાથી “આઉક્ષ્વણ” આયુષ્યનો ક્ષય થાય છે ત્યારે “ઉઽવ
ટ્ટિયાસમાણા” બહાર નીકળે છે ત્યારબાદ “બહવે” તેમનામાથી ઘણા ખરા
નારકી એવ “તિરિયવસહિં” તિર્યચ્ચ યોનિમા “ગચ્છતિ” જાય છે, કારણ
કે નરકોમાથી નીકળેલા બહુ થોડા એવો જ મનુષ્ય ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે તે
તિર્યચ્ચયોનિ કેવી છે તે વાત સૂત્રકાર દર્શાવે છે-તે યોનિ “દુક્ખુત્તર” અન-
ન્ત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી પ્રમાણ કાળ સ્થિતિવાળી હોવાને લીધે હુ ખોના
પ્રકર્ષવાળી છે “સુદારુણ” વિવિધ હુ ખોનુ ધામ હોવાથી ઘણી જ દારૂણ-
ભયકર છે “જન્મણ-મરણ-જરા-વાહિ પરિયટ્ટનારહટ્ટ” જન્મ, મરણ, જરા
અને વ્યાધિઓની ફરી ફરીને પ્રાપ્તિ થવાને કારણે રહેટ જેવી છે તથા
“જલથલસ્વહયરપરોપ્પરવિહિંસણપવચ” જેમા પરસ્પર જળચર, સ્થળ

સ્વચરાણાં પરસ્પરં તિર્હિસનસ્ય=અનેકપ્રકારવધસ્ય પ્રપન્નો=વિસ્તારો યસ્યા સા
તા તથા, સમ્ભૂતા તિર્યગ્યોર્નિ ગન્ઠન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધ ॥ સૂ. ૩૭ ॥

અથ તિર્યગ્ગતિ દુઃખ વર્ણયન્નાહ—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-ઇમ ચ જગપાગડ વરાગા દુઃખ પાવેતિ દીહકાલ ।
કિં તે ? સીઝળહ-તળહા છુહ-વેયળ - અપ્પર્ડ્યાર-અડવિ-
જમ્મળ-ળિચ્ચભડ઼િવિગ્ગવાસ-જમ્મળ--વહ-વધળ--તાડળ-
કળ નિવાયળ-અટ્ઠિ ભજળ-નાસા-ભેય-પ્પહાર દમળ-છવિચ્છયળ
અભિઓગપાવળ-ફસકુસારાનિવાય-દમળાળિ વાહળાળિ ય ॥ સૂ. ૩૮ ॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ ઇદ ચ = અનુપદવક્ષ્યમાણ ‘ જગપાગડ ’ જગત્પ્રકટ =
સકલલોકપ્રત્યક્ષ, દુઃખમ્ = અશાતવેદનીય - લક્ષણ ‘ દીહકાલ ’ દીર્ઘકાલમ્ =
અસંખ્યાતકાલપર્યન્ત ‘ પાવેતિ ’ પ્રાપ્નુવન્તિ, ‘ કિં તે ’ કાનિ તાનિ દુઃખાનિ?,
તદાહ—‘ સીઝળહ ’ ઇત્યાદિ—‘ સીઝળહતળહાછુહવેયળ ’ શીતોષ્ણતૃષ્ણા ક્ષુધા
વેદના = શીતોષ્ણતૃષ્ણા ક્ષુધાજનિત દુઃખ, તથા ‘ અપ્પર્ડ્યારઅડવિજમ્મળ ’
જિસ મેં પરસ્પર જલચર, સ્થલચર ઓર સ્વેચરોં કે વિવિધ પ્રકાર કે વધ
કા પ્રપન્ન-વિસ્તાર હૈ, એમી તિર્યગ્ગતિ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ. ૩૭ ॥
અથ સૂત્રકાર તિર્યગ્ગતિ કે દુઃખોંકા વર્ણન કરતે હૈ—‘ ઇમચજગપાગડ ’ ઇત્યા.

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ જગપાગડ) (ઇમ) અનુપદ વક્ષ્યમાણ યહ (જગપાગડ)
સકલ લોકોં કે પ્રત્યક્ષ એસે (દુઃખ) દુઃખ કો (વરાગા) વે તિર્યગ્-
ગતિ કે જીવ (દીહકાલ) અનતકાલપર્યન્ત (પાવેતિ) ભોગતે હૈ
(કિં તે) વે દુઃખોં કે પ્રકાર કૌન ૨ સે હૈ ? સો કહતે હૈ-ઉસ ગતિ મેં
દુઃખોં કે ચે ૨ પ્રકાર હે—(સીઝળહ) શીત-જનિત દુઃખ, ઊષ્ણજનિત
દુઃખ, (તળહા) પિપાસાજનિતદુઃખ ઓર (છુહ) ક્ષુધાજનિતદુઃખ, તથા

અર, અને નલચરોના વિવિધ પ્રકારના વધના પ્રપન્ન-વિસ્તાર છે એવી તિર્યગ્
ગતિને તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ-૩૭ ॥

હવે સૂત્રકાર તિર્યગ્ ગતિના હુ ખોતુ વર્ણન કરે છે “ઇમ ચ જગપાગડ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ઇમ ચ જગપાગડ ” “ઇમ” નીચે પ્રમાણેના “જગપાગડ ” સઘળા
લોકોની નજરે પડે તેવા “ દુઃખ ” હુ ખો “વરાગા ” તે બિચારા તિર્યગ્
ગતિના હવે “દીહકાલ ” અનતકાળ સુધી “ પાવેતિ ” ભોગવે છે “કિં તે?”,
તે હુ ખોના પ્રકાર કયા કયા છે ? સૂત્રકાર તેનો જવાબ આપતા કહે છે તે
ગતિમા નીચે પ્રમાણે હુ ખો હોય છે “ સીઝળહ ” શીત જનિત હુ ખ, ઊષ્ણ-
જનિત હુ ખ “ — ” પિપાસાજનિત હુ ખ અને “ છુહ ” ક્ષુધાજનિત

अप्रतीकार=प्रतीकाररहित-उद्धायुष्मत्तात् यद् अटव्या=महारण्ये जन्म तत् तथा,
 तत्र 'णिच्चभउच्चिगवास' नित्यभयोद्विग्नवासः = नित्य = प्रतिक्षण भयेन=
 व्याधादिकर्तृरुवधनिग्रहादिरूपेण उद्विग्नः=उद्वेगसहित वासः=निवासः अतएव
 'जग्गण' जागरण=निद्राक्षय 'वह' वध=मारण, 'वधण' वन्धन=रज्ज्वादिना
 नियमन, 'ताडण' ताडन=दण्डादिना हननम्, 'अकण' अक्कन=प्रतप्तशूलादिना
 शरीरे चिन्हविशेषकरणं, 'निवायण' निपातनम्=उत्थाप्य गर्त्तादौ प्रक्षेपणम्
 'अट्ठिभजण' अस्थिभञ्जनम्=मुद्गरादिनाऽस्थना श्रोतन 'नासाभेय' नासामेदः=
 नासिकायां रज्जुयोजनार्थं छिद्रकरण 'प्पहारदमण' प्रहारदमन=प्रहारैः=यष्ट्या
 दिताडनैः दमन = स्वायत्तीकरण, 'छविच्छेयण' छविच्छेदन = अवयवकर्तन
 'अभिओगपावण' अभियोगप्रापणम् = अनिच्छतोऽपि शम्भादौ नियोजन,

(वेयण अप्पडियार) प्रतिकार रहित दुःख, (अडविजम्मण) अटवी
 में जन्म होने का दुःख, (णिच्चभउच्चिगवास) प्रतिक्षण व्याध आदि
 के वध-निग्रह आदि के भय से उद्विग्न चित्त होकर निवास करने का
 दुःख, (जग्गण) इच्छानुसार निद्रा नहीं ले सकने का दुःख, (वह)
 वधजन्य दुःख, (वधण) रस्सी आदि द्वारा बाधे जाने का दुःख (ताडण)
 दण्ड आदि से मर्मस्थानों में ताडित किये जाने का दुःख, (कण) प्रतप्त
 शूल आदि द्वारा शरीर में दाग दिये जाने का दुःख, (निवायण) उठा
 कर गर्त्त आदि में पटक दिये जाने का दुःख, (अट्ठिभजण) मुद्गर आदि
 से हड्डियों को तोड़ दिये जाने का दुःख, (नासाभेय) नासिका के
 छेदन करने का दुःख, (प्पहारदमण) लकड़ी चाबुक आदि के प्रहारों से
 वशीभूत होने का दुःख (छवि-च्छेयण) शारीरिक अवयव काट दिये
 जाने का दुःख, (अभिओगपावण) नहीं इच्छा होने पर भी जब गाड़ी आदि

हुं भू अने "वेयण अप्पडियार" प्रतिकाररहित हुं भू "अडविजम्मण" वनभा
 जन्म थवानु हुं भू, "णिच्चभउच्चिगवास" प्रत्येक क्षण व्याध आदि द्वारा
 वध, निग्रह आदिना लयथी उद्विग्न चित्ते रहैवानु हुं भू "जग्गण" उच्छा
 प्रमाणे निद्रा न लई शकैवानु हुं भू "वह" वध जन्य हुं भू, "वधण"
 होरडा आदि वडे बाधवानु हुं भू, "ताडण" लाकडी आदिथी मर्मस्थानो पर
 भार पडवानु हुं भू "कण" तपावेल शूल आदि द्वारा शरीरे डाम देवायानु
 हुं भू "निवायण" उपाडीने भाडा आदिमा डेकवानु हुं भू "अट्ठिभजण" भग
 दण आदिथी डाडडा तोडावानु हुं भू, "नासाभेय" नाक छेदावानु हुं भू "प्पहा
 रदमण" लाकडी आधुड आदिना प्रहारैथी ताणे थवानु हुं भू, "छविच्छेयण"
 शरीरना अवयवो कपावानु हुं भू "अभिओगपावण" उच्छा न डे।

‘કસકુસારનિવાય’ કસાકુશાઽરનિપાતઃ = કસા = ચર્મયટ્ટિઃ ‘ચાબુક’ इति પ્રસિદ્ધા, અકુશઃ=પ્રસિદ્ધઃ, આરા=દણ્ડાન્તર્વર્તિનીતીક્ષ્ણલોહશલાકા ‘પરાણી’ इति પ્રસિદ્ધા, તેષા નિપાતઃ=શરીરોપરિમહારઃ ‘દમણ’ દમન=શિક્ષાગ્રાહણમ્, एतेषा द्वन्द्वः, તાનિ તથા, ‘વાહણાણિ ય’ વાહનાનિ ચ=ભારોદ્વાહનાનિ, इत्येव रूपाणि दुःखानि प्राप्नुवन्तीति सम्वन्धः ॥ સૂ૦ ૩૮ ॥

પુનરપિ તાન્યેવાહ—‘માયાપિઙ્’ इत्यादि ।

મૂલમ્—માયા-પિઙ્-વિપ્પઓગ-સોયપરિપીલણાણિ ય સત્થ-
ગ્ગિ-વિસામ્ભિધાય ગલગવલાવલણમારણાણિ ય ગલજાલુચ્છિ-
પ્પણાણિ ય-પટલણ વિકપ્પણાણિ ય—જાયઙ્ગીવગવધણાણિ ય
પંજરનિરોહણાણિ ય સજૂહ નિદ્ધાઉણાણિ ય ધમણાણિ ય
દોહણાણિ ય કુદ્ધગલવધણાણિ ય વાહગ પરિવારણાણિ ય
પંકજલનિમજ્જણાણિ ય વારિપ્પવેસણાણિ ય ઓવાય નિભંગવિસ-
માણિ ય વડણ દવગ્ગિજાલ દહણાઙ્ગયાઙ્ગ ય ॥ ૩૯ ॥

ટીકા—‘માયાપિઙ્ વિપ્પઓગ’ માતાપિતૃવિપ્રયોગ = માતા ચ પિતા ચ

મેં જોત દિયે જાનેકા દુઃખ, (કસકુસારનિવા ય) કસા-ચાબુક અકુશ એવ
આરા-દહે કે અગ્રભાગમે લગી હુઈ લોહ કી કીલ-સે પીટે જાને કા તથા
ચુમો દેને કા દુઃખ, (દમણાણિ) દમન-અન્ઝી ચાલ આદિ કો ચલાને
કે લિયે શિક્ષા કા દુઃખ, તથા (વાહણાણિ ય) ભારો કો વહન કરને
કા દુઃખ, એ સબ દુઃખ હૈ ઓર ઉન્હેં તિર્યચગતિ મે રહે હુએ જીવ પ્રાપ્ત
કરતે હૈ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

તિર્યચગતિ કે ઓર મો એ દુઃખ હૈ—‘માયા-પિય-વિપ્પઓગ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(માયા-પિય-વિપ્પઓગ સોયપરિપીલણાણિ ય) માતા પિતાકા

માલિક આહે ત્યારે ગાડી આદિએ ભેડાવાનુ હુ ખ, “કસકુસારનિવાય” કસા
આબુક, અકુશ અને આ-લાડીને છેડે ચોડેલી આણીદાર ખીલી વડે માર
ખાવાનુ હુ ખ, તથા તે ચીજોની આણી શરીરમા ભેડાવાથી હુ ખ થતુ “દમણાણિ”
દમન-સારી આલ આલાવવા ડે ગતિ વધારાવવા માટે થતી શિક્ષાનુ હુ ખ તથા
“વાહણાણિ ય” ભાર ઉપાડવાનુ હુ ખ, એ બધા હુ ખના વિવિધ પ્રકાર છે, અને
તિર્યચ ગતિમા જન્મેલા જીવો તે હુ ખો ભોગવે છે ॥ સૂ-૩૮ ॥

તિર્યચ ગતિના ખીજ હુ ખો આ પ્રમાણે છે—‘માયા-પિય-વિપ્પઓગ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—“માયા-પિય-વિપ્પઓગસોયપરિપીલણાણિ ય” માતા પિતાનો જન્મતા

તયોર્વિમયોગ = વિયોગઃ, તયોર્જન્મતો મરણે વધે વ્યાધાદિમિનિર્ગ્રહે વા સ્વસ્ય નિર્ગ્રહે વેતિ ભાવઃ 'સોયપરિપીલણાણિ ય' શોકપરિપીડનાનિ=માતાપિતૃવિયો-ગજનિતશોકદુઃસ્વાનિ, અથવા-સ્રોતઃ પરિપીડનાનિ=સ્રોતસાં=નામિકાદિચિદ્રાગા રજ્જુવન્ધનાદિભિઃ પરિપીડનાનિ=સ્વેદોત્પાદનાનિ । 'સત્યગ્નિવિસામિધાયગલગ વલાવલણમારણાણિ ય' શસ્ત્રાગ્નિવિપામિધાતગલગવલાવલનમારણાણિ ચ, તત્ર-શસ્ત્ર ચ અગ્નિશ્ચ વિપ ચ તૈરમિધાતઃ=નાશ, તથા ગલસ્ય = કણ્ઠસ્ય ગવલસ્ય=શુદ્ધસ્ય ચ આવલનેન=મોટનેન મારણાણિ 'ગલજાલુચ્છિષ્પણાણિ' ગલજાલો ત્ક્ષેપણાણિ=ગલેન=ચડિશેન જાલેન ચ ઉત્ક્ષેપણાણિ = મહત્સ્યાદીના જલાદ્યહિર્નિ-સ્સારણાણિ । પડલણ-વિકૃપ્પણાણિ' પઞ્ચન વિકૃપ્પનાનિ='પડલણ' પવન વિકૃપ્પન ચ=અદ્ભુતકર્તૃત્વ તાનિ । જાવજ્જીવગમયણાણિ' જાવજ્જીવગમયણાણિ=ભાજીવન રજ્જુશૂઘ્ણાદિ વન્ધનાનિ । 'પજરનિરોહણાણિ' પઞ્ચરનિરોધનાનિ પઞ્ચર=લોહપશશલા કાદિનિર્મિત પક્ષિનિયન્ત્રણગૃહ, તત્ર નિરોધનાનિ પ્રતિરોધનાનિ 'સજૂહનિદ્ઘાડણાણિ' સ્વયૂથ નિસ્સારણાણિ=સ્વયૂથાત્=સ્વસાર્થાત્=નિસ્સાણાણિ-પુનઃ પુનઃ પરિવારતઃ

જન્મતે હી વિયોગ હો જાને સે દુઃખ સહન કરના, અથવા-નાસિકા આદિ કે છિદ્રો કા રજ્જુ આદિ કે દ્વારા વધન હોને પર ઉસકા કણ્ઠ સહના, (સત્યગ્નિવિસામિધાયગલગવલાવલણ મારણાણિ ય) શસ્ત્ર સે, અગ્નિ સે તથા વિષ સે મરણ હો જાના, ગલા ઓર સીંગ કે મુઢ જાના ઓર ઉસસે મરણ હો જાના, (ગલજાલુચ્છિષ્પણાણિ ય) ચડિશ-મછલી મારને કા કાટા એવ જાલ સે અપને સ્થાન સે અલગ કિયા જાના, (પડ-લણવિકૃપ્પણાણિ ય) અગ્નિ મે પકાયા જાના અગ અગ કા કાટા જાના (જાવજ્જીવગમયણાણિ ય) જીવનપર્યન્ત રજ્જુ અથવા સાકલ આદિ સે વાધા જાના, (પજરનિરોહણાણિ ય) પીજરે મે વદ કિયા જાના, (સજૂ-હનિદ્ઘાડણાણિ ય) વાર ૨ અપને જુડ મેં સે વાહર નિકાલ દિયા જાના

જ વિયોગ થવાથી હુ ખ સહન કરવું પડે છે નાક આદિના છિદ્રોનું દોરડા આદિ દ્વારા બધન થવાથી તેનું હુ ખ સહન કરવું પડે છે "સત્યગ્નિવિસામિ-ધાયગલગવલાવલણમારણાણિ ય" શસ્ત્રથી, અગ્નિથી તથા વિષથી મૃત્યુ થઈ જવાનું, ગળું અને સીંગડા મરડાઈ જવાને કારણે મરણ થવાનું, "ગલજાલુ-ચ્છિષ્પણાણિ ય" ગલ (માછલી મારવાનો કાટો) અને જાળથી પોતાના સ્થા-નેથી અલગ કરવાનું, "પડલણવિકૃપ્પણાણિ ય" અગ્નિમાં રધાવાનું, દરેક અગના છેદાવાનું, "જાવજ્જીવગમયણાણિ ય" એવે ત્યાં સુધી દોરડા કે સાકળ વડે બાધાવાનું, "પજરનિરોહણાણિ ય" પિંજરામાં પૂરાવાનું, "સજૂહનિદ્ઘાડ-ણાણિ ય" વારવાર પોતાના સમૂહમાંથી બહાર નીકળવાનું, "સજૂહનિદ્ઘાડ-ણાણિ ય" વારવાર પોતાના સમૂહમાંથી બહાર નીકળવાનું, "સજૂહનિદ્ઘાડ-ણાણિ ય"

पृथक्करणानीत्यर्थः, 'नि' पूर्वस्य 'स' धातो 'धाट' आदेशेकृतेऽपि पुनर्निरूपसर्गपूर्वकनिर्देशः पोनः पुन्यार्थमुच्यते, 'धमणाणि' अग्नीं प्रक्षिप्य भस्त्रादिभिर्धगनानि । दोहणाणि' दोहनानि 'कुदडगलवधणाणि' कुदण्डगलवन्धनानि=कुदण्डस्य=वक्रकाष्ठस्य गले=कण्ठे वन्धनानि 'वाडगपरिवारणाणि य' वाटकपरिवारणानि=वाटके निरोधनानि 'पक्कजलनिमज्जणाणि' पङ्कजलनिमज्जनानि=पङ्कमयजले निमज्जनानि घोडनानि 'वारिप्पवेसणाणि' वारिप्रवेशनानि=जलप्रक्षेपणानि 'ओवायणिभगविसमणिवडणदवग्गिजालदहणाइयाइ य' अवपातनिभस्त्रिपमनिपतनदवाग्निज्वालादहनादिकानि च-अवपातेन=गर्तादिषु निपातेन योनिभस्त्रः=अद्भोपाद्भः भञ्जनम्, अपि च-त्रिपमेभ्यः=त्रिपमप्रदेशेभ्यो गिरिवृक्षादिभ्यो निपतन, तथा दवाग्निज्वालाभिर्दहन चेति द्वन्द्वः, तानि आदिर्येषां तानि=स्वस्वजातियरोगातदादीनि तान्येवम्प्रकाराणि दुःखानि प्राप्नुवन्ति ॥सू० ३९॥

(धमणाणि य) अग्नि में प्रक्षिप्त करके भस्त्रा आदि से धोका जाना, (दोहणाणि य) स्तनों का दोहन होना, (कुदड गलवधणाणि य) कोढ़े वक्र-काष्ठ का गले में बाधा जाना-लटकाया जाना, (वाडगपरिवारणाणि य) फाटों आदि की बाड़ लगाकर किसी स्थानपर रोका जाना, (पक्कजलनिमज्जणाणि य) पक्क युक्त जल में फँस जाना, (वारिप्पवेसणाणि य) वारिप्रवेशन-बरसते हुए पानी में खड़े रहना अथवा तलाव वगैरह के पानी में हठात् प्रविष्ट कराया जाना, अथवा पानी में डूब कर मर जाना, (ओवायणिभगविसमणिवडण-दवग्गिजाल दहणाइयाइ य) किसी गर्त खड्डा आदि में गिर जाने से अग उपागों का दूट जाना, पर्वत आदि के ऊँचे स्थानों से गिर जाना, दवाग्नि में जल जाना, इत्यादि नाना प्रकार के दुःखों को तिर्यञ्च गति के जीव भोगते हैं ॥सू. ३९॥

अग्निमा नाभीने अण्णीहार सणिया आदि वडे वीधावानु, "दोहणाणि य" आचणोभाथी द्वध दोध लेवानु, "कुदडगलवधणाणि य" गणामा आडा लटकाववानु, "वाडगपरिवारणाणि य" डाहणवाणा जणमा भूथी जवानु "वारिप्पवेसणाणि य" वारि प्रवेशन-वरमता वरसाहमा उला रडेवानु अथवा तलाव वगेरेना पाणीमा जण जणरीथी प्रवेश करवानु "ओवायणिभगविसमणिवडण-दवग्गिजालदहणाइयाइ य" डोध आडा आदिमा पडी जवाथी अग उपागे तूटी जवानु, पर्वत आदि उंचा स्थानो परथी पडी जवानु, दवाग्निमा जणी जवानु, इत्यादि विविध प्रकारना दुःखो तिर्यञ्च गतिना एवो लोगवे छेसु उहा

ઉપસહરન્નાહ—‘ એવ તે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવ તે દુઃખસયસંપલિત્તા નરગાઓ આગયા ઇહં
સાવસેસકમ્મા તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ પાવેતિ પાવકારી
કમ્માહં, પમાયરાગદોસવહુસંચિયાહ અહ્વ અસાયક
ક્કસાહં ॥ સૂ૦ ૪૦ ॥

ટીકા—એવમ્=ઉક્તપ્રકારૈઃ તે = જીવા પ્રાણાતિપાતકારકાઃ ‘ દુઃખસય-
સપલિત્તા ’ દુઃખશતસમ્પ્રદીપ્તાઃ=દુઃખશતૈઃ સમ્પ્રદીપ્તાઃસન્તપ્તાઃ ‘ નરગાઓ ’ નરકાત્
-ઇહ=તિર્યગ્લોકે ‘ આગયા ’ જાગતાઃ=ઉત્પન્નાઃ ‘ સાવસેસકમ્મા ’ સાવશેષક-
ર્માણઃ=અવશિષ્ટપાપકર્માણઃ ‘ પાવકારી ’ પાપકારિણ ‘ તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ ’
તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયેષુ ‘ પમાય-રાગદોસવહુસંચિયાહં ’ પ્રમાદરાગદ્વેષવહુસંચિતાનિ-
પ્રમાદઃ=વિષયાદ્યભિષ્વદ્વલક્ષણઃ, રાગઃ=માયાલોભલક્ષણઃ, દ્વેષઃક્રોધમાનલક્ષણઃ,
તૈઃ વહૂનિ સંચિતાનિ=ઉપાર્જિતાનિ ‘ અહ્વ ’ અતીવ=અત્યન્તમ્ ‘ અસાયકક્કસાહં ’
અશાતકર્કશાનિ = અશાતેષુ=અશાતવેદનીયકર્મોદયપ્રભવેષુ દુઃખેષુ કર્કશાનિ=
કઠોરાણિ ‘ કમ્માણિ, ’ કર્માણિ=કર્મજન્યાનિ દુઃખાનિ ‘ પાવેતિ ’ પ્રાપ્નુવન્તિ,

અવ ઉપસહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈ—‘ એવ તે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવ) હવ પ્રકાર સે (તે) વે પ્રાણાતિપાતકારક જીવ (દુઃખસ
યસપલિત્તા) સૈકઢોં દુઃખોં સે સન્તપ્ત હોકર (નરગાઓ) નરક સે
(ઇહ) હવ તિર્યગ્લોક મેં (આગયા) ઉત્પન્ન હોતે હૈ ઓર (સાવસેસ-
કમ્મા) પાપકર્મ ઉત્તર અવશેષ રહને કે કારણ વે (તિરિક્ખ પંચિદિ-
ણ્ણુ) તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયોં મે (પમાય - રાગદોસવહુસંચિયાહ) વિષયા
દ્યભિષ્વદ્વરૂપ પ્રમાદ સે માયાલોભરૂપ રાગ સે ઓર ક્રોધમાનરૂપ દ્વેષ સે
ઉપાર્જિત કિયે ગયે (અહ્વ અસાય કક્કસાહ કમ્માહ) અશાત કર્કશ કર્મો

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“ એવ તે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એવ ” આ પ્રમાણે “ તે ” તે પ્રાણુવધ કરનાર એવ “ દુઃખસયસપ-
લિત્તા ” સેકડો હ ખોથી હ ખી થઈને “ નરગાઓ ” નરકમાથી “ ઇહ ” આ
તિર્યગ્લોકમા “ આગયા ” ઉત્પન્ન થાય છે અને “ સાવસેસકમ્મા ” તેમના પાપકર્મ
ખાકી રહેલ હોવાથી તેઓ “ તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ ” તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયોમા “ પમાય
રાગદોસવહુસંચિયાહ ” વિષયાદિની અભિલાષા રૂપ પ્રમાદથી, માયા લોભ રૂપ
રાગથી, અને ક્રોધમાન રૂપ દ્વેષથી ઉપાર્જિત કરેલ “ અહ્વ અસાય કક્કસાહ
કમ્માહ ” અશાતા કર્કશ કર્મોને અશાતા વેદનીય કર્મોદયને કારણે ઉપાર્જિત

પ્રાણિવધકારકાઃ નરકાત્પત્યાગતાસ્તિર્યક્પચ્ચેન્દ્રિયયોનિષુ સમુત્પન્નાઃ કઠોરત-
રાણિ દુઃખાન્યનુમયન્તીતિ સદ્ગલિતોઽર્થઃ ॥ સૂ૦ ૪૦ ॥

તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયદુઃખાનિ વર્ણયિત્યા સામ્પ્રત ચતુરિન્દ્રિયદુઃખાનિ વર્ણ-
યન્નાહ—‘ભમર’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ભમર-મસગ-મચ્છિયાદૈસુ ય જાડકુલકોડિસય-
સહસ્સેહિં નવહિ ચતુરિદિયાણ તહિં તહિ ચેવ જમ્મણ
મરણાણિ અણુહવંતા કાલ સંખિજ્ઞં ભમતિ નેરઙ્ગયસમાણ
તિવ્વદુક્ખાફરિસરસણઘાણચક્ખુસહિયા ॥ સૂ૦ ૪૧ ॥

ટીકા—‘ભમર-મસગ-મચ્છિયાદૈસુ’ ભ્રમરમશકમક્ષિકાદિકેષુ =
પ્રસિદ્ધેષુ ‘ચતુરિદિયાણ’ ચતુરિન્દ્રિયાણા ‘નવહિં’ નવસુ=નવસંખ્યકેષુ ‘જાડ-
કુલકોડિસયસહસ્સેહિં’ જાતિકુલકોટિશતસહસ્સેષુ = જાતૌ = ચતુરિન્દ્રિયજાતૌ
યાનિ કુલાનિ=ભ્રમરાદિનેકાકારાણિ, તેષાં કોટયઃ=ત્રિભાગા=અન્તર્ભેદાઃ તેષા
શતસહસ્સેષુ=લક્ષેષુ=નવલક્ષચતુરિન્દ્રિયજાતિકુલકોટિષુ ઇત્યર્થઃ, ‘તહિં તહિં ચેવ’
કો અજ્ઞાતવેદનીયકર્મોદયસે ઉદ્ભૂત દુઃખ દુઃખોં મેં મી કઠોતર કર્મજન્ય-
દુઃખોં કો (પાવેતિ) ભોગતે હે—અર્થાત્—વે પ્રાણિવધકારક જીવ નરકસે
નિકલકર તિર્યક્પચ્ચેન્દ્રિયોં મે ઉત્પન્ન હોતે હેં ઓર વહા કઠોર .ખોં કો
પ્રાપ્ત કરતે હે ॥સૂ ૪૦ ॥

વે પાપી જીવ ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મે ઉત્પન્ન હોકર કિસ પ્રકાર કે
દુઃખોં કો ભોગતે હેં જિસકા વર્ણન કરતે હ—‘ભમર-મસગ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ભમર-મસગ-મચ્છિયાદૈસુ ચતુરિદિયાણ નવહિં જાડકુલકો-
ડિસયસહસ્સેહિં) ભ્રમર, મશક, મક્ષિકા આદિ ચતુરિન્દ્રિય જીવોં કે નૌ
લાખ જાતિકુલ કોટિયોં મે (તહિં તહિં ચેવ જમ્મણમરણાણિ) વહી વહીં

હુ ખો કરતા પણ વધારે કઠોર કર્મજન્ય હુ ખોને “પાવેતિ” ભોગવે છે એટલે
કે પ્રાણીવધ કરનાર હવે નરકમાથી નીકળીને તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયોમા ઉત્પન્ન
થાય છે અને ત્યાં વધારેમા વધારે આડરા હુ ખો પ્રાપ્ત કરે છે ॥સૂ ૪૦॥

તે પાપી હવે ચતુરિન્દ્રિય હવેમા ઉત્પન્ન થઈને કેવા પ્રકારના હુ ખો
ભોગવે છે તેનું વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“ભમરમસગ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ભમર, મસગ, મચ્છિયાદૈસુ ચતુરિદિયાણ નવહિં જાડકુલકોડિસયસહ-
સ્સેહિં” ભ્રમર, મશક, માખી આદિ ચૌદન્દ્રિય હવેની નવલાખ પ્રકારની જાતિ-
ઓમા “તહિં તહિં ચેવ જમ્મણમરણાણિ” તે તે યોગિયોમા ચતુરિન્દ્રિય હવેમા

તત્ર તત્રૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષ્વેવ ' જન્મમરણાણિ ' જન્મમરણાણિ ' અણુહવતા ' અનુ
 ભવન્તઃ=કુર્વન્તઃ ' નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા ' નેરયિકસમાનતીઘ્રદુઃખાઃ=નારકૈઃ
 સમાનાનિ=નરકે નારકાઃ યાદશાણિ દુઃખાણિ અનુભવન્તિ તત્તુલ્યાન્યેવ
 તીવ્રાણિ=ઠોરાણિ અસહ્યાનીત્યર્થઃ દુઃખાણિ ચેષા તે તથા નારકદુઃખતુલ્યા
 સઘ્વેદનાવન્તઃ, ' ફરિસ-રસણ-ઘાણ-ચક્ષુસહિયા ' સ્પર્શ-રસન-ઘ્રાણ-ચક્ષુઃ
 સહિતા =સ્પર્શાદીન્દ્રિયચતુષ્ટયયુક્તાઃ ' સલ્લિજ્જ કાલ ' મર્યાત કાલ=મર્યાતવર્ષ
 સદસ્ર કાલ યાવત્ ' ભમતિ ' ભ્રમન્તિ=પુનઃ પુનર્યોનિતો યોનિ પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થઃ ॥૪૧॥

અથ ત્રીન્દ્રિયદુઃખાણિ વર્ણયતિ ' તદેવે ' ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તદેવ તેદ્દિણ્ણસુ કુથુ-પિવીલિયા-ઉદ્દેહિયાઈણ્ણસુ
 ય જાઙ્ગુલકોઢિસયસહસ્સેહિ અદ્દહિ અણૂણગેહિં તેદ્દિ-
 દિયાણ તહિ તહિ ચેવ જન્મણ મરણાણિ અણુહવતા કાલં
 સંલ્લેજ્જગં ભમતિ નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા ફરિસ-રસણ
 -ઘાણ-સંપઉત્તા ॥ સૂ. ૪૨ ॥

ટીકા—' તદેવ ' તથૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષુ યથા દુઃખાન્યનુભવન્તિ તથૈવ ' તે
 ઈદિણ્ણસુ ' ત્રીન્દ્રિયેષુ ' કુથુ-પિવીલિયા ઉદ્દેહિયાઈણ્ણસુ ' કુન્થુ પિપીલિકોપદેહિ

પર-ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મેં હી-જન્મ મરણોં કો (અણુહવતા) કરતે હુણ
 વે પાપી જીવ (નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા) નરકગતિ જૈસે અસહ્ય
 દુઃખોં કો ભોગતે હુણ (ફરિસ-રસણ-ઘણચક્ષુસહિયા) સ્પર્શન,
 રસના, ઘ્રાણ ઓર ચક્ષુ હન ઈન્દ્રિયો સે યુક્ત હુણ ચે ચતુરિન્દ્રિય જીવ
 (સલ્લિજ્જ કાલ) સહ્યાતા હજાર વર્ષતક (ભમતિ) ઉસી યોનિ મેં જન્મ
 મરણ કરતે રહતે હૈં ॥ સૂ. ૪૧ ॥

અવ ત્રીન્દ્રિય જીવોં કે દુઃખોં કો વે ભોગતે હૈં એસા વર્ણન સૂત્રકાર

જ જન્મ મરણ "અણુહવતા" અનુભવતા તે પાપી જીવો " નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વ
 દુક્ખા " નરક ગતિ જેવા અસહ્ય હુ જો ભોગવે છે અને "ફરિસ-રસણ-ઘાણ
 -ચક્ષુસહિયા" સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઈન્દ્રિયોથી યુક્ત
 તે ચતુરિન્દ્રિય જીવો " સલ્લિજ્જ કાલ " સહ્યાત હજાર વર્ષ સુધી "ભમતિ"
 તે યોનિમા જન્મ મરણ અનુભવ્યા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય જીવો જે હુ જો ભોગવે છે તેનું સૂત્રકાર વર્ણન કરે

कादिकेषु=कुन्धुः=शुद्रजन्तुविशेषः, पिपीलिका=प्रसिद्धा, 'उद्देहिया' उपदेहिका
 ='उदेही' इति भाषा प्रसिद्धा, इत्यादिकेषु 'तेहदियाण' त्रीन्द्रियाणा,
 'अणूणगेहि' अन्यूनकेषु=पूर्णेणु 'अट्टहि' अष्टसु 'जाइकुलकोटिसयसहस्सेहि'
 जातिकुलकोटिशतसहस्रेषु-जातो=त्रीन्द्रियजातो यानि कुलानि = कुन्धुपिपीलि-
 काद्याकाराणि, तेषा कोटयः=विभागाः=अन्तर्भेदाः, तेषा शतसहस्रेषु लक्षेषु परि-
 पूर्णाष्टलक्षत्रीन्द्रियजातिकुलकोटिषु-इत्यर्थः, 'तहिं तहिं चेव' तत्र तत्रैव त्रीन्द्रि-
 येषु 'जम्मणमरणाणि' जन्ममरणानि 'अणुहवता' अनुभवन्तः, 'नेरइयसमा-
 णतिव्वदुक्खा' नैरयिकममानतीन्द्रियदुःखा=नरकमददुःखयुक्ताः 'फरिस-रसण-
 घाण-सपउत्ता' स्पर्श रसनघ्राणसम्प्रयुक्ता=स्पर्शादिभिस्त्रिभिरिन्द्रियैर्युक्ताः 'सखे-
 ज्जग' सख्यातक=मख्यातवर्षसहस्र काल यावत् 'भमति' भ्रमन्ति ॥सू०४२॥

करते हैं—'तहेव' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तहेव) जिस तरह पापी जीव चतुरिन्द्रिय जीवों में जन्म मरण
 करके दुःखों को भोगते हैं उसी तरह वे (कुन्धु पिपीलिया उद्देहियाइएसु)
 कुन्धु, पिपीलिका, उदेही आदिक त्रीन्द्रिय जीवों में कि जिन (तेहदि-
 याण) तेन्द्रिय जीवों की (अणूणगेहि अट्टहि जाइकुलकोटिसयसह-
 स्सेहि) उन पूर्ण आठ लाख जातिकुल कोटियों में (तहिं तहिं चेव
 जम्ममरणाणि अणुहवता) बार बार वही पर जन्म मरणों को करते हुए
 (नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा) नरकगति जैसे असह्य दुःखों को भोगते
 हुए इनके (फरिस-रसण-घाण सपउत्ता) स्पर्शन, रसना और घ्राण
 इन तीन इन्द्रिय युक्त हुए ये तेन्द्रिय जीव (सखेज्ज काल) सख्यात
 हजार वर्षों तक (भमति) उसी पर्याय में परिभ्रमण करते हैं ॥सू०४२॥

छे—“तहेव” इत्यादि

टीकार्थ—“तहेव” जेभ पापी जेवे। चतुरिन्द्रि जेवेभा जन्म मरण पाभीने
 हु भो लोगवे छे तेभ तेओ। “कुन्धुपिपीलियाउद्देहियाइएसु” कुन्धु, डीडी, उधध आदि
 त्रिन्द्रिय जेवेभा जन्म ले छे अने “तेहदियाण” तेन्द्रिय जेवानी “अणूणगेहि
 अट्टहि जाइकुलकोटिसयसहस्सेहि” आठलाख प्रचारनी जतियोनिभा। “तहिं
 तहिं चेव जम्ममरणाणि अणुहवता” बारबार जन्म मरण अनुभवता “नेरइ-
 यसमाणतिव्वदुक्खा” नरक गति जेवा असह्य हु भो लोगवे छे जेभने
 “फरिस-रसण-घाण सपउत्ता” स्पर्शन, रसना अने घ्राण जे त्रिन्द्रियेज्ज
 छाय छे जेवा ते तेन्द्रिय जेवे। “सखेज्जकाल” मख्यात हजार वर्षो सुधी
 “भमति” ते जे योनिभा परिभ्रमण कर्या करे छे ॥ सू-४२ ॥

તત્ર તત્રૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષ્વેત્ર ' જન્મણમરણાણિ ' જન્મમરણાણિ ' અણુહવતા ' અનુ
 ભવન્તઃ=કુર્વન્તઃ ' નેરઙ્ગયસમાણતિવ્વદુક્ખા ' નૈરયિકસમાનતીવ્વદુઃખાઃ=નારકૈઃ
 સમાનાનિ=નરકે નારકાઃ યાદૃશાણિ દુગ્ધાણિ અનુભવન્તિ તત્તુલ્યાન્યેવ
 તીવ્રાણિ=ઠોરાણિ અસહ્યાનીત્યર્થઃ દુઃખાણિ યેષા તે તથા નારકદુઃખતુલ્યા
 સહ્યવેદનાવન્તઃ, ' ફરિસ-રસણ-ઘાણ-ચક્ષુસહિયા ' સ્પર્શ-રસન-ગ્રાણ-ચક્ષુઃ
 સહિતા =સ્પર્શાદીન્દ્રિયચતુષ્ટયયુક્તાઃ ' સલ્લિજ્જ કાલ ' સરયાત કાલ=સરયાતવર્ષ
 સદસ્ર કાલ યાવત્ ' ભમતિ ' ભ્રમન્તિ=પુનઃ પુનર્યોનિતો યોનિ પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થઃ ॥૪૧॥

અથ ત્રીન્દ્રિયદુઃખાણિ વર્ણયતિ ' તદેવે ' ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તદેવ તેદ્દિણ્ણસુ કુથુ-પિપીલિયા-ઉદેહિયાદ્દિણ્ણસુ
 ય જાદ્દકુલકોડિસયસહસ્સેહિ અદ્દહિ અણૂળાગેહિ તેદ્દિ-
 ણિયાણ તહિ તહિ ચેવ જન્મણ મરણાણિ અણુહવતા કાલં
 સલ્લેજ્જગં ભમતિ નેરઙ્ગયસમાણતિવ્વદુક્ખા ફરિસ-રસણ
 -ઘાણ-સંપડતા ॥ સૂ. ૪૨ ॥

ટીકા—' તદેવ ' તથૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષુ યથા દુઃખાન્યનુભવન્તિ તથૈવ ' તે
 દ્દિણ્ણસુ ' ત્રીન્દ્રિયેષુ ' કુથુ-પિપીલિયા ઉદેહિયાદ્દિણ્ણસુ ' કુન્થુ પિપીલિકોપદેહિ

પર-ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મેં હી-જન્મ મરણોં કો (અણુહવતા) કરતે હુણ
 વે પાપી જીવ (નેરઙ્ગયસમાણતિવ્વદુક્ખા) નરકગતિ જૈસે અસહ્ય
 દુઃખોં કો ભોગતે હુણ (ફરિસ-રસણ-ઘણચક્ષુસહિયા) સ્પર્શન,
 રસના, ગ્રાણ ઓર ચક્ષુ ઇન ઇન્દ્રિયો સે યુક્ત હુણ ચે ચતુરિન્દ્રિય જીવ
 (સલ્લિજ્જ કાલ) સહ્યાતા હજાર વર્ષતક (ભમતિ) ડસી યોનિ મેં જન્મ
 મરણ કરતે રહતે હેં ॥ સૂ. ૪૧ ॥

અથ ત્રીન્દ્રિય જીવોં કે દુઃખોં કો વે ભોગતે હેં એસા વર્ણન સૂત્રકાર

જ જન્મ મરણુ “અણુહવતા” અનુભવતા તે પાપી હોવો “ નેરઙ્ગયસમાણતિવ્વ
 દુક્ખા ” નરક ગતિ જેવા અસહ્ય હુ ખો ભોગવે છે અને “ફરિસ-રસણ-ઘાણ
 -ચક્ષુસહિયા” સ્પર્શન, રસના, ગ્રાણુ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત
 તે ચતુરિન્દ્રિય હોવો “ સલ્લિજ્જ કાલ ” સહ્યાત હજાર વર્ષ સુધી “ભમતિ”
 તે યોનિમા જન્મ મરણુ અનુભવ્યા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય હોવો જે હુ ખો ભોગવે છે તેનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે

એવમેવ એકેન્દ્રિયત્વમપિ તે પ્રાપ્તાઃ યાસુ યાસુ યોનિષુ યથા ભ્રમન્તિ તદાહ—‘ પત્તા ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પત્તા એગિદિયત્તણપિ ચ પુઠ્ઠવિ જલ જલણ મારુય વણપ્પફહસુહુમવાયર ચ પઙ્ગજત્તમપઙ્ગજત્ત પત્તેય સરીરણામ સાહારણ ચ પત્તેયસરીરજીવેસુ ચ તત્થ વિ કાલમસલ્લેજ્જં ભમંતિ અઠાંતકાલં ચ અણતકાણ, પાસિંદિયભાવસંપ-
ઉત્તા દુસ્સલસમુદય ઇમ અણિદ્ધ પાવંતિ પુણો પુણો તર્હિ તર્હિ ચેવ પરભવતરુગણગહણે ॥ સૂ ૪૪ ॥

ટીકા—‘ એગિદિયત્તણપિ ચ ’ એકેન્દ્રિયત્વમપિ ચ=‘ અપિ ચે ’ તિ સમુ-
ચ્ચયાર્થઃ । એવ ચ ન કેવલ પચ્ચેન્દ્રિયચતુરિન્દ્રિયાદિત્વમેવ પ્રાપ્તા, અપિ તુ
એકેન્દ્રિયત્વમપિ ‘ પત્તા ’ પ્રાપ્તાઃ સન્તાઃ દુઃસ્વસમુદય પ્રાપ્નુવન્તીત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ ।

શન ઓર રસના હંન દો ઇન્દ્રિયોં સે યુક્તવાલે ચે દ્વીન્દ્રિય જીવ (સલ્લેજ્જ-
કાલ) સલ્લ્યાત હજાર વર્ષ પ્રમાણ કાલતક (ભમતિ) હસી દ્વીન્દ્રિય કી
પર્યાય મેં ભ્રમણ કરતે હેં ॥ સૂ-૪૩ ॥

હસી તરફ એકેન્દ્રિય કી પર્યાય કો ભી પ્રાપ્ત હુણ ચે પાપી જીવ જિન ૨
યોનિયોં મેં જિસ ૨ તરફ સે પરિભ્રમણ કરતે હેં અત્ર સૂત્રકાર હસ યાત
કો પ્રકટ કરતે હે—‘ પત્તા એગિદિયત્તણપિ ચ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એગિદિયત્તણપિ ચ પત્તા) ચે પાપી જીવ કેવલ પચ્ચેન્દ્રિય,
ચતુરિન્દ્રિય આદિ પર્યાયોંકો હી પ્રાપ્ત નહોં કરતે હેં કિન્તુ એકેન્દ્રિય પર્યાયકો
પ્રાપ્ત કરતે હેં ઓર વહાં ચે (દુસ્સલસમુદય પાવતિ) દુઃસ્વ સમૂહ કો ભોગતે

થોથી યુક્ત તે દ્વીન્દ્રિય હોવો. “ સલ્લેજ્જકાલ ” અર્થ્યાત હજાર વર્ષ સુધી
“ ભમતિ ” એ-૪ દ્વીન્દ્રિય યોનિમા ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ-૪૩ ॥

એજ પ્રમાણે એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈને તે પાપી હોવો જે
જે યોનિમા જે જે રીતે પરિભ્રમણ કરે છે, તે વાતનુ સૂત્રકાર હવે વર્ણન કરે
છે—“ એગિદિયત્તણપિ ચ ” ઇત્યાદિ

“ એગિદિયત્તણપિ ચ પત્તા ” તે પાપી હોવો ક્ષત પચ્ચેન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય
પર્યાયોંને જ પ્રાપ્ત કરતા નથી પણ એકેન્દ્રિય પર્યાયોંને પણ પ્રાપ્ત કરે છે, અને
ત્યા તેઓ “ દુસ્સલસમુદય પાવતિ ” હુ જોના સમૂહને ભોગવ્યા કરે છે, તે

અથ દ્વીન્દ્રિયદુ સ્થાનિ વર્ણયન્નાહ—‘ ગઢૂલય ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ગઢૂલય—જલૂય—કિમિય—ચદળગ—માહણસુ ય
જાહકુલકોહિસયસહસ્સેહિ સત્તર્હિં અણૂળગેહિં વેહિદિયાણ
તર્હિ તર્હિ ચેવ જમ્મણમરણાણિ અણુહવતા કાલં સંચિજ્જગં
ભમંતિ નેરહય સમાણતિવ્વ દુક્ખા ફરિસ-રસણ-સંપડત્તા ॥ સૂ. ૦૪૩ ॥

ટીકા—ત્રીન્દ્રિયાત્ મમાગતાઃ દ્વીન્દ્રિયેષ્વપિ ‘ ગઢૂલય—જલૂય કિમિય—
ચદળગમાહણસુ ’ ગઢ્ડોલક—જલૂક—કૃમિ—ચન્દન—માદિકેષુ—ગઢ્ડોલાઃ=ગોમ
યાદિષુ સમુત્પન્નાઃ કીટવિશેષાઃ, જલૂકાઃ=જલજન્તુકાઃ ‘ જોક ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ
કૃમયઃ=‘ લટ ’ ‘ ચૂરણિયા ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ, ચન્દનકાઃ=શદ્ધજાતિવિશેષાઃ, તે
આદિર્યેષા તે તથા તેષુ ‘ વેહિદિયાણ ’ દ્વીન્દ્રિયાણા ‘ સત્તર્હિં ’ ‘ સપ્પસુ જાતિકુલ
કોટિશતસહસ્સેષુ અન્યૂનેષુ જન્મમરણાણિ અનુભવન્તો નારકસમાનતીવ્રદુઃખાઃ
સ્પર્શરસનેત્રીન્દ્રિયદ્વય સમ્પયુક્તા સંખ્યાતવર્ષસહસ્રલક્ષણ કાલ યાવત્ અમન્તિ ॥ ૪૩ ॥

અવ દ્વીન્દ્રિય જીવોં મે ઉત્પન્ન હોકર કે વે કિન કિન દુઃખોં કો
ભોગતે હૈં હસકા મુત્રકાર વર્ણન કરતે હૈં—‘ ગઢૂલ ય ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—તેન્દ્રિય યોનિસે નિકલ કર વે પાપી જીવ દ્વીન્દ્રિય જીવોં મેં (ગઢૂ-
લય—જલૂય—કિમિય—ચદળગ—માહણસુ) ગઢ્ડોલક, જલૂક, કૃમિ, ઓર
શાખ આદિકોં મેં મો કિ જિનકી (સત્તર્હિં જાહકુલકોહિ સયસસ્સેહિં)
સાતલાખ જાતિકુલ કોટિ હૈં (તર્હિં ૨) વહી વહી વાર ૨ (જમ્મમર-
ણાણિ અણુહવતા) જન્મ મરણ કરતે હુણ (નેરહય સમાણતિવ્વદુક્ખા)
નારકિયોં જૈસા તીવ્ર દુઃખ ભોગતે હુણ (ફરિસ-રસણ સપડત્તા) સ્પ-

હવે દ્વીન્દ્રિય જીવોમા ઉત્પન્ન થઈને તેઓ કયા કયા હુ ખો ભોગવે છે,
તેનુ સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે—“ ગઢૂલય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તેન્દ્રિય યોનિમાની નીકળીને તે પાપી જીવો “ ગઢૂલય—જલૂય—
કિમિય—ચદળગ—માહણસુ ” ગઢ્ડોલક, જલૂક, કૃમિ, શાખ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોમા જન્મ
લે છે તે દ્વીન્દ્રિય જીવોના પણ “ સત્તર્હિં જાહકુલકોહિસયસહસ્સેહિં ” બહુ પ્રમાણે સાત
લાખ પ્રકારો છે “ તર્હિં તર્હિં ” તે દરેક બહુમા વાર વાર ‘ જમ્મમરણાણિ અણુહવતા ’
જન્મ મરણ અનુભવતા “ નેરહયસમાણતિવ્વદુક્ખા ” તેઓ નારકીઓ જેવા
આકાર હુ ખો ભોગવે છે “ ફરિસરસણસપડત્તા ” સ્પર્શન અને રસના ઇન્દ્રિ-

પૃ ૧ અ ૨ તે ૩ વા ૪ વ ૫

છાયા—એકેન્દ્રિયેષુ પચ્ચસુ, દ્વાદશ-મત્ત-ત્રિક-સત્ત-અષ્ટવિંશતિશ્ચ ।

૨૬ ૩૬ ૪૬

વિમ્લેસુ સત્ત-અષ્ટ-નય, જઞ્ઞ-સ્વ-ચતુષ્પદ-ઉરોગ-ભુજગેસુ ॥૧॥

અર્ધત્રયોદશ [૧૨॥] દ્વાદશ, દશદશનયક નરામરયોર્નરકે ।

દ્વાદશ પદ્વિંશતિઃ પચ્ચવિંશતિ, —ભવન્તિ કુલકોટિલક્ષાણિ ॥૨॥” ॥૪૪॥

અથ દુઃસ્વપ્નમુદયમાહ—‘કોદાલે’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—કોદાલ-કુલિય દાલણ-સલિલ-મલણ-સુંભણ-રુંભણ-
અળાગિલ-વિહિસત્થઘટ્ટણ પરોપ્પરાભિહણણ-મારણ-વિરાહણાણિ
ય અકામગાઢ પરપ્પઓગોદીરણાહિય કઙ્ગપ્પઓયણેહિ ય પેસ્સ
પસુ નિમિત્ત ઓસહાહારમાઢિણ્હિ ઉવ્વલ્લણ-ઉક્કત્થણ-પયણ-
કોટ્ટણ પીસણ-પિટ્ટણ--ભઙ્ગણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-
ભજણ-હેયણ-તચ્છણ વિલુચણ-પતઙ્ગોહણ-અગ્ગિદહણાઢ્યાઢં,

દ્વીન્દ્રિય જીવોં કે સાત લાખ, તેન્દ્રિય જીવોં કે આઠ લાખ, ચોદ્વિન્દ્રિય
જીવોં કે નૌ લાખ, જલચરોં કે સાઢા ચારહલાખ, સ્થેચરોં કે ચારહલાખ,
ચતુષ્પદોં-ચલચરોં કે દશ લાખ, ઉરગોં કે દશલાખ, ભુજગોં કે નૌ લાખ,
મનુષ્યોં કે ચારહ લાખ, દેવોં કે ષઠ્ઠવીસ લાખ ઓર નરકોં કે પચ્ચીસ
લાખ કુલ કોટિ હૈં । કુલકોટિ કી વ્યુત્પત્તિ “કુલાના કોટિઃ” ઇસ
પ્રકાર હૈં । ઇસકા તાત્પર્ય અપની ૭ જાતિ મે આકાર આદિ કો લેકર
વિભાગ સે હૈં, અર્થાત્-પૃથિવીકાય આદિ જીવોં કે જો આકાર હૈં ઊન
આકારોં કે જો ઓર અન્તર્ભેદ હૈં વે કુલકોટિ શબ્દ કે વાચ્યાર્થ હૈં ॥સૂ-૪૪॥

સાત લાખ, તેન્દ્રિય જીવોના આઠ લાખ, ચતુરિન્દ્રિય જીવોના નવ લાખ, જળ-
ચરોના સાઢા ચાર લાખ, સ્થેચરોના ચાર લાખ,, ચતુષ્પદોચ્ચલચરોના દશ
લાખ, ઉરગોના દશ લાખ ભુજગોના નવ લાખ, મનુષ્યોના ચાર લાખ, દેવોના
છવીસ લાખ, અને નારડીઓના પચ્ચીસ લાખ કુલકોટિ (પ્રકાર) છે કુલ-
કોટિની વ્યુત્પત્તિ “કુલાના કોટિ” થાય છે તેનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે-પોતા
પોતાની જાતિમા આઠાર આદિ પ્રમાણે પાડેલા વિભાગોને ‘કુલકોટિ’ કહે છે
એટલે કે પૃથિવીકાય આદિ જીવોના જે આકારો છે તે આકારોના જીવો જે
અન્તર્ભેદ છે તે કુલકોટિ શબ્દના વાચ્યાર્થ છે ॥ સૂ-૪૪॥

કીદશાઃ સન્તો ભ્રમન્તિ ? इत्याह—‘फासिंदियभावसंपउत्ता’ स्प
 र्शेन्द्रियभावसम्प्रयुक्ता=स्पर्शमात्रैकेन्द्रियत्व प्राप्ताः, ‘तर्हि तर्हि चेव’ तत्र तत्रैव
 =वनस्पतिकाय एव, कीदृशे ? इत्याह—‘परभवतरुगणगहणे’ परभवतरु-
 गणगहने=पराः=प्रकृष्टाः, सर्वोत्कृष्टकायस्थितित्वात् भवाः=उत्पत्तिस्थानानि येषु
 ते तादृशा तरुगणाः=वृक्षगुच्छगुल्मादिसमूहास्तैर्गहने=गम्भीरे ‘पुणो पुणो’
 पुनः पुनः=बहुर्बहुः ‘इम’ वक्ष्यमाणम् ‘अणिट्’ अनिट्=प्रतिकूल दुःखसमुदय
 =दुःखसमूह=नानाविधमशातवेदनीयरूप ‘पावति’ प्राप्नुवन्ति । सर्वासा जातीनां
 कुलकोटयो यथा —

“एगिंदिएसु पचसु, वारस-सत्त-तिग-सत्त-अट्ठीसा य ।

विगलेसु सत्त अड नव, जल-खह-चउप्पय-उरग-भुयगेसु ॥ १ ॥

अद्धत्तेरस वारस, दस दस नवग नरामरे नरए ।

वारस छवीस पणवीस हुति कुलकोडिलखाइ ॥ २ ॥ ” इति ।

(फાસિંદિય ભાવસંપડત્તા) જે સવ જીવ ઇક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય વાળે

હી હોતે હૈં । ઓર (તર્હિ તર્હિ ચેવ) ડસી વનસ્પતિકાય મેં કિ જહાં
 (પરભવતરુગણગહણે) વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ આદિ સમૂહરૂપ ભવ સર્વોત્કૃષ્ટ
 હૈં ઓર ડનસે જો ગહન બના હુઆ હૈં (પુણો પુણો) વાર ૨ (ઇમ) ઇન
 વક્ષ્યમાણ (અણિટ્) અનિટ્-પ્રતિકૂલ (દુઃખસમુદય) દુઃખોં કો-નાના
 વિધ અશાત વેદનીય રૂપ કષ્ટોં કો (પાવતિ) પાતે હૈં । સમસ્ત જાતિયોં
 કે કુલ કોટિયોં કી સંખ્યા ઇસ પ્રકાર હૈં—

પૃથ્વીકાય કે બારહ લાખ, અપ્કાય કે સાત લાખ, તેડકાય કે
 ત્રીન લાખ, વાયુકાય કે સાત લાખ, વનસ્પતિકાય કે અઢાઈસ લાખ,

“ફાસિંદિય ભાવસંપડત્તા” તે બધા જીવો એકલી સ્પર્શન ઇન્દ્રિયથી
 જ યુક્ત હોય છે, અને “તર્હિ તર્હિ ચેવ” તે જ વનસ્પતિકાયના કે બધા
 “પરભવ તરુગણ ગહણે” વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ આદિ સમૂહરૂપ ભવ સર્વોત્કૃષ્ટ
 છે અને તેમનાથી જે ગહન બનેલ છે “પુણો પુણો” વારવાર “ઇમ” આ
 પ્રમાણે “અણિટ્” અનિટ્-પ્રતિકૂળ “દુઃખસમુદય” હુ જોને વિવિધ અશાતા
 વેદનીય રૂપ કષ્ટોને “પાવતિ” અનુભવે છે સઘળી જાતિયોની જોનિયોના
 પ્રકારોની સંખ્યા નીચે પ્રમાણે છે—

પૃથ્વીકાયના બાર લાખ, અપ્કાયના સાત લાખ, તેડકાયના ત્રણ લાખ,
 વાયુકાયના સાત લાખ, વનસ્પતિકાયના અઠાવીસ લાખ, દ્વિઇન્દ્રિય જીવોના

અનલથ અનિલથેત્યનલાનિલો તયોઃ=અગ્નિમાગ્નોઃ વિવિધૈઃ શસ્ત્રૈઃ સ્વકાયપરકા-
યોભયકાયલક્ષણેઃ ઘટ્ટનમ્=ઉપહનનમ્, અનેન-અગ્નિમાગ્નોર્વેદના દર્શિતા । તન્ન-
અગ્નેઃ સ્વકાયશસ્ત્ર વરીમાગ્નેઃ કાષ્ઠાગ્નિઃ, પરકાયશસ્ત્ર ધૂલિજલાદિકમ્ । ઉભય-
કાયશસ્ત્રમ્=પ્રજ્વલત્કરીપાદિકમ્ । વાયોઃ સ્વકાયશસ્ત્ર=પૂર્વદિગ્વાયો પશ્ચિમદિ-
ગ્વાયુઃ, इत्यादि रूपम्, પરમાયશસ્ત્રમ્ અગ્ન્યાદિકમ્, ઉભયકાયશસ્ત્રમ્=અગ્નિસ-
ન્તસ્રવાયુ-દતિગતમિશ્રવાયુથ, इत्यादिरूपम् । અચિત્તમુખવાતમૃતઃ સન્ દવરકેણ
ગાઢમદ્ધમુલો નદ્યાદિજલે પ્લાવ્યમાનો દતિર્યાવત્ ક્ષેત્રતઃ પ્રથમ હસ્તશત ગચ્છતિ
તદવધિ તદ્વતો વાયુરચિત્ત एव, તત ऊर्ध्वं द्वितीयहस्तशतपर्यन्त मिथो भवति,

જો ક્રિયા છે ઇસકા નામ ચલાના છે । પાની કો એકઘ્રિત કરકે કુए,
તડાગ આદિ મેં રોક દેના ઇસકા નામ રોધન છે । એસી ક્રિયાઓં સે
અપ્કાય કો વેદના હોતી છે । (અણલાનિલ વિવિહ સત્થઘટ્ટણ) અગ્નિ-
કાય ઓર વાયુકાય કે વેદના કે કારણ સ્વકાય, પરકાય ઓર ઉભયકાય
વિવિધશસ્ત્ર છે । ઇનસે ઇનકી વિરાધના હોતી છે । અગ્નિ કા-કરીપ કી
અગ્નિ કા કાષ્ઠ કી અગ્નિ સ્વકાયરૂપ શસ્ત્ર છે ધૂલિ એવ જલ આદિ પર-
કાયરૂપ શસ્ત્ર છે, એવ પ્રજ્વલિત કરીપ આદિક ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્ર છે ।
વાયુકા-પૂર્વદિશા સઘધી વાયુ કા પશ્ચિમદિશા સઘધી વાયુ સ્વકાય શસ્ત્ર
છે, અગ્નિ આદિક પરકાયશસ્ત્ર છે તથા અગ્નિ સનસ વાયુ ઓર મશક
કે મીતર રહી હુઈ વાયુ યે ઉભયકાયશસ્ત્ર છે । અચિત્ત મુખ કી વાયુ સે
ભરા હુઆ તથા ડોરે સે જિસકા મુખવદ કર દિયા ગયા છે એસી દતિ
(મશક) જિસ સ્થાનસે નદી કે જલ મેં છોડી જાતી છે વહા સે લેકર તૈરતી

છે પાણીને એકઘ્રિત કરીને ફવા, તળાવ આદિમા રોડી લેવાની ક્રિયાનુ નામ
'રોધન' છે તેવી ક્રિયાઓથી અપૂઝાયને વેદના થાય છે " અણલાનિલ-વિવિહ
સત્થઘટ્ટણ " અગ્નિકાય અને વાયુકાયને વેદનાના ડારણો સ્વકાય, પરકાય અને
ઉભયકાય વિવિધ શસ્ત્રો છે તેમના વડે તેમની વિરાધના થાય છે અગ્નિનુ-
કરીપની અગ્નિનુ ડાઘટની અગ્નિ સ્વકાયરૂપ શસ્ત્ર છે, ધૂળ અને જળ આદિ
પરકાયરૂપ શસ્ત્ર છે, અને પ્રજ્વલિત કરીપ આદિ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્ર છે વાયુનુ
પૂર્વદિશાના વાયુનુ પશ્ચિમ દિશાનો વાયુ સ્વકાય શસ્ત્ર છે, અગ્નિ આદિ પર-
કાય શસ્ત્ર છે, તથા અગ્નિથી અતમ વાયુ અને મરાડની અદર રહેલ હવા
તે ઉભયકાય શસ્ત્ર છે અચિત્ત વાયુથી ભરેલ તથા દોડીથી જેનુ મુખ બધ
કરી દેવામા આવ્યુ છે એવી મશક જે જગ્યાએથી નદીના પાણીમા છૂટી મૂક
વામા આવે છે ત્યાથી શરૂ કરીને તરતી તરતી બ્યારે સો હાથ આગળ નીકળી

एव ते भवपरंपरादुक्खसमणुवन्ता अडति ससारवाहणकरे जीवा
पाणाइवायनिरया अणंतकालं ॥सू० ४५॥

टीका—‘कोदाल-कुलिय-दालण-सलिल-मलण-खुभण-रुभण अणलाणिल
विविह सत्थघट्टण परोप्पराभिहणण मारण विराहणाणि’ कुदालकुलिग्दालण
सलिल मलन क्षोभण रोधनानलानिल विरिध शस्त्रघट्टनपरस्परामिहननमारण-
विराधनानि, तत्र—‘ कोदाल ’ कुदाल =भूमिदारक शस्त्रविशेषः ‘ कुलिय ’ कुलिक
च हलविशेषस्ताभ्या ‘ दालण ’ दारण-खननम्, एतद् द्वय पृथिवी वनस्पत्योर्वेदना
कारणम् सलिलस्य=जलस्य मलन क्षोभणरोधनानि, तत्र-मलन-मर्दन, क्षोभण=
सञ्चालन, ‘ रुभण ’ रोधन=निरोधन तडागादौ, अनेनाप्तायवेदना व्यक्तीकृता,

पृथिवी आदि जीवों में वेदना के कारण क्या २ हैं ? सूत्रकार अब
इस विषय को स्पष्ट करते हैं—‘ कोदाल-कुलिय ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(कोदाल-कुलिय दालण सलिलमलण-खुभण रुभण-अणला-
णिल विविह-सत्थघट्टण परोप्पराभिहणणमारणविराहणाणि य) (कोदाल)
कुदाल-कुदाली और (कुलिय) कुलिक-हल विशेष, (दालण) इनसे
भूमिका विदारण करना-खोदना, ये दो पृथिवी और वनस्पति जीवों के
वेदना के कारण हैं (सलिलमलण) पानी का मर्दन करना, (खुभण)
चलाना, और (रुभण) तडाग आदि में रोकना ये चारों अप्काय के
जीवों के लिये वेदना के कारण हैं । चुल्ली आदि में पानी डालता आदि
रूप जो क्रियाएँ की जाती हैं इसका नाम मर्दन है । क्षोभण शब्द का
अर्थ चलाना है । कहीं पर भरे हुए पानी को बाहिर निकालने आदिरूप

હવે સૂત્રકાર ને વિષયને સ્પષ્ટ કરે છે કે પૃથિવી આદિ જીવોમાં વેદ-
નાના કારણો કયા કયા છે—“ કોદાલ-કુલિય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ કોદાલ-કુલિય-દાલણ-સલિલ-મલણ-ખુ ભણ-રુભણ-અણલાણિલ-
વિવિહ-સત્થ ઘટ્ટણ-પરોપ્પરાભિહણણ મારણ વિરાહણાણિ ય ” “કોદાલ” ડોદાળી અને
“કુલિય” કુલિક-હળ વિશેષ વડે, “દાલણ” ભૂમિને ખોદવી તે પૃથિવી અને વનસ્પતિ
જીવોને વેદનાના કારણો છે “સલિલ મલણ” પાણીનું મર્દન કરવું “ ખુભણ ”
ચલાવવું અને “રુભણ” તથાવ આદિમાં રોકવું તે અપ્કાયના જીવો માટે
વેદનાનું કારણ છે ચૂલ આદિમાં પાણી નાખવા વગેરેની જે ક્રિયાઓ થાય
છે તેને મર્દન કહે છે ક્ષોભણ નો અર્થ ચલાવવું થાય છે કોઈ જગ્યાએ
ભરાઈ રહેલા પાણીને બહાર કાઢવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને ચલાવવું કહે

ત્રીજલતેજોવાયુમાયદુઃસ્વાનિ 'અકામગાહ' અકામકાનિ=અવાઙ્મનીયાનિ ભવન્તિ ।
પુનસ્તાન્યેવ વિશદયતિ—' પરપ્પઓગોદીરણાહિ ચ ' પરમયોગોદીરણામિથ્વ=પરેવા
=સ્વભિન્નાના જનાના ચ પ્રયોગઃ=વ્યાપારમ્તેન ઉદીરણા =દુઃસ્વોત્પાદનપ્રેરણા
સ્તામિઃ—સ્વપયોજનવિરહેડપિ પરકથનૈઃ નિપ્પયોજનૈરિત્યર્થઃ, તથા—' કજ્જપ્પ-
ઓયણેહિ ચ ' કાર્યપયોજનૈધ=આવશ્યકપ્રયોજનૈશ્ચ । કથમ્ભૂતૈરિત્યાહ—' પેસ્સપ-
સુનિમિત્તઓસહાહારમાહણ્હિ ' પ્રેપ્પપશુનિમિત્તોપધાદારાદિકૈઃ=પ્રેપ્પયા — ભૂત્યા
પશવઃ=ગમાદયસ્તન્નિમિત્તાનિ રોગપુશુક્ષાદિ નિવૃત્તિ હેતુમાનિ યાનિ ઔપધાદારાદીનિ
તૈ પૃથિવ્યાદીના હિંમાપકારાનાહ—ઉક્ષણ્ણ-ઉક્કથ્થણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
પિટ્ટણ-ભજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-ભજ્જણ-છેયણ-તચ્છણ વિલુચ્છણ
પતજ્જોહણ — અગ્ગિદહ્ણાદ્યાહ ' ઉત્તપ્પનનોત્કથનપચ્ચનકુટ્ટનપેપણપિટ્ટનભર્જન
ગાલના મોટનશટનસ્ફુટનભજ્જનચ્છેદનતક્ષગવિલુચ્છનપાત્તઓટનાગ્નિદહ્ણાદીનિ—તત્ર

જલ, તેજ, વાયુમાયોં કો જો ડસ પ્રકાર કે દુઃસ્વાં હોતે હેં વે (અકામ-
ગાહ) ઉન્હેં અવાઙ્મનીય હોતે હેં । પાપ જીવ પાપ વર્ષોં કરતે હે—(પર-
પ્પઓગોદીરણાહિ ચ) અપના પ્રયોજન હો તો ભી દૂસરો સે કહને સે, તથા
(કજ્જપ્પઓયણેહિ ચ) અપના આવશ્યક કાર્ય સે, વે કાર્ય કૌન હે ?
સો કહતે હેં (પેસ્મપસુનિમિત્તઓસહાહારમાહણ્હિ) પ્રેપ્પ-ભૂત્ય, પશુ-
માય ભેંસ આદિ જાનવરોં કે રોગ, વુશુક્ષ અ,દિ કો નિવૃત્તિ કે હેતુ-
ભૂત ઔપધ, આહાર આદિ કે નિમિત્ત સે કરતે હેં । હિંસા કે પ્રકારોં
કો કહતે હેં (ઉક્ષણ્ણ-ઉક્કથ્થણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-પિટ્ટણ-ભજ્જણ
ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-ભજ્જણ=છેયણ-તચ્છણ-વિલુચ્છણ-પત
જ્જોહણ-અગ્ગિદહ્ણાદ્યાહ) ઉત્તપ્પનન આદિ દુઃસ્વોં કો એકેન્દ્રિય કો
પર્યાય મેં પ્રાપ્ત હોકર પૃથિવ્યાદિ જીવ વનકર ભોગતે હેં । કુદાલ આદિ

તેજ અને વાયુમાયોંને આ પ્રકારે જે દુઃખો ભોગવવા પડે છે તે 'અકામગાહ'
તેમને અવાઙ્મનીય-અપ્રિય હોય છે પાપી જીવ પાપ શા માટે કરે છે ? "પરપ્પ
ઓગોદીરણાહિ ચ" પોતાને માટે કંઈ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ ખીજના
કહેવાથી, તથા "કજ્જપ્પઓયણેહિ ચ" પોતાના આવશ્યક કાર્યોને કારણે તેઓ
પાપ કરે છે તે કાર્યો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર કહે છે—"પેસ્મપસુનિમિત્ત
ઓસહાહારમાહણ્હિ" પ્રેપ્પ-નોકર, પશુ-માય, ભેંસ આદિ જાનવરોના રોગ,
ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔપધ, આહાર આદિને નિમિત્તો તે કાર્ય કરે
છે હવે હિંમાના પ્રકારો કહે છે—"ઉક્ષણ્ણ-ઉક્કથ્થણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
પિટ્ટણ-ભજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-ભજ્જણ-છેયણ-તચ્છણ-વિલુચ્છણ-પ-
તજ્જોહણ-અગ્ગિદહ્ણાદ્યાહ" તે પાપી જીવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા પૃથિવ્યાદિ

અસૌ મિશ્રવાયુરુભયકાયશસ્ત્ર સમવતિ । અતઃ દસ્તગતગમનકાલ પરિમાદ્યૈકસ્મિ
 ન્નપિ સ્થાને જલમધ્યગતસ્યોક્ત ક્રમેણાચિત્તત્વાદિક સૂક્ષ્મેક્ષિકયા ત્રિભાવનીયમ્ ।
 તથા પરસ્પરાભિદ્વનનમ્=તેજસા જલતાપન જલેનાગ્નિતાપનમિત્યેવ રૂપઃ સર્વેષા
 પૃથિવ્યાદીના પરસ્પરમભિગ્રાતઃ, મારણ=વિહિસન, વિરાધન=પીડન, તાનિ પૃથિ

હુઈ જવ વહ સૌ હાથ આગે નિરુલ જાતિ હૈ વહાતક તદ્વત ગાયુ અચિત્ત
 હી રહતી હૈ, ઘાદ મેં ઢસકે જવ વહ દૂસરે સૌ હાથ ક્ષેત્ર પર્યન્ત વહા સે
 આગે કો વહતી હુઈ જાતી હૈ તથ વહાં તક વહી વાયુ મિશ્રવાયુ રૂપ હોતી
 હૈ । યહી મિશ્રવાયુ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્ર મેં પરિગણિત છુઆ હૈ । યહા
 દતિગતિ (મશક મેં રહી હુઈ) વાયુ કો જો અચિત્ત, મિશ્ર આદિ રૂપ
 કહા ગયા હૈ વહ કાલ કી અપેક્ષા સમજ્ઞાના ચાહિયે, પ્રથમ સૌ હાથ
 ચલને મેં જિતના સમય લગતા હૈ ઉસ સમય કો લેકર વહ વાયુ જો દતિ
 (મશક) મેં ભરી હુઈ અચિત્ત રહતી હૈ, ઘાદ મેં દૂસરે સૌ હાથ ચલને મેં
 જિતના સમય લગતા હૈ ઉસકો લેકર વહ વાયુ સચિત્તાચિત્તરૂપ મિશ્ર
 હો જાતી હૈ । ઇસ તરહ સૂક્ષ્મરીતિ સે વિચાર કરને પર વાયુમે અચિત્તા
 સચિત્તાચિત્તા સધ જાતો હૈ “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” કાતાત્પર્ય હૈ અગ્નિ
 સે જલ કા તપાના, જલ સે અગ્નિ કા વુદ્ધાના, ઇત્યાદિ રૂપ સે જો
 પૃથિવ્યાદિકાય કા પરસ્પર મેં અભિગ્રાત કરના હોના હૈ વહ ‘ પરોપ્પરા-
 ભિદ્વનન ’ હૈ । (મારણ) મારણ શબ્દકા અર્થ હૈ ઇનકા વિહિસન કરના ।
 (વિરાદ્વનાણિ) વિરાધના કા અર્થ હૈ ઇન્હેં પીડા પહુંચાના । ઇન પૃથિવી

જાય ત્યા સુધી તેની અદર રહેલી હવા અચિત્ત રહે છે, ત્યાર પછી ત્યાથી
 પણ તરતી તરતી સો હાથ આગળ નીકળી જાય ત્યા સુધીમા તે હવા મિશ્ર
 વાયુરૂપ થઈ જાય છે એજ મિશ્રવાયુ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્રમા ગણાયેલા છે અહીં
 મશકમા રહેલ હવાને અચિત્ત મિશ્ર આદિરૂપ બતાવવામા આવેલ છે, તે કાળની
 અપેક્ષાએ સમજવાનુ છે, પહેલા સો હાથ ચાલવામા જેટલો સમય લાગે છે
 તે સમય સુધી તે મશકમા ભરેલ હવા અચિત્ત રહે છે ત્યાર
 બાદ બીજા સો હાથનુ અતર ચાલવામા જેટલો સમય લાગે છે તેટલા સમય
 સુધીમા તે વાયુ સચિત્તાચિત્ત રૂપ મિશ્ર થઈ જાય છે આ રીત સૂક્ષ્મ રીતે
 વિચાર કરતા હવામા અચિત્તતા તથા સચિત્તાચિત્તતા ને સમજી શકાય છે
 “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” એટલે અગ્નિ વડે જળને ગરમ કરવુ, જળથી અગ્નિને
 ખુઆવવી, ઇત્યાદિ રીતે પૃથિવ્યાદિ કાયનો પરસ્પરમા ઘાત થવાની જે ક્રિયા
 થાય છે તે “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” છે મારણ “મારણ” એટલે તેમની હત્યા કરવી
 “વિરાદ્વનાણિ” વિરાધના કરવી એટલે તેમને પીડા પહોચાડવી તે પૃથિવી જળ,

વીજલતેજોવાયુકાયદુઃસ્વાનિ 'અકામગાહ' અકામકાનિ=અવાઙ્ઙનીયાનિ ભવન્તિ ।
 પુનસ્તાન્યેય વિશદયતિ—' પરપ્પઓગોદીરણાહિ ચ ' પરપ્પઓગોદીરણાભિશ્ચ=પરેપા
 =સ્વભિનાના જનાના ચ પ્રયોગઃ=વ્યાપારમ્તેન ઉદીરણા =દુઃસ્વોત્પાદનપ્રેરણા
 સ્તામિઃ—સ્વપયોજનવિરહેડપિ પરકથનૈ. નિપયોજનૈરિત્યર્થ, તથા—' કઙ્કજપ્પ-
 ઓયણેહિ ચ ' કાર્યપયોજનૈશ્ચ=આવશ્યકપયોજનૈશ્ચ । કથમ્ભૂતૈરિત્યાહ—' પેસ્સપ-
 સુનિમિત્તઓસહાહારમાહર્હિ ' પ્રેપ્પપશુનિમિત્તોપધાદારાદિકૈઃ=પ્રેપ્પયા - ભૂત્યા
 પશવઃ=ગવાદયસ્તન્નિમિત્તાનિ રોગતુમ્હુક્ષાદિ નિવૃત્તિ હેતુકાનિ યાનિ ઔપધાદારાદીનિ
 તૈ પૃથિવ્યાદીના હિંમાપકારાનાદ—ઉત્તરણણ-ઉત્તર્યણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીમણ-
 પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ વિલુચણ
 પતજ્જોહણ - અગ્ગિદહણાદ્યાહ ' ઉત્તરણનોત્કથનપચનકુટ્ટનપેપણપિટ્ટનમર્જન
 ગાલના મોટનગટનસ્ફુટનમજ્જનનઢેદનતક્ષણવિલુચ્છનપાત્રઓટનાગ્નિદહનાદીનિ—તત્ર

જલ, તેજ, વાયુમાયોં કો જો ઇસ પ્રકાર કે દુઃખાં હોતે હૈં પે (અકામ-
 ગાહ) ઉન્હેં અવાઙ્ઙનીય હોતે હૈં । પાપ જીવ પાપ કર્યોં કરતે હૈં—(પર-
 પ્પઓગોદીરણાહિ ચ) અપના પ્રયોજન હો તો બી દૂસરો સે કહને સે, તથા
 (કઙ્કજપ્પઓયણેહિ ચ) અપના આવશ્યક કાર્ય સે, વે કાર્ય કૌન હૈં ?
 સો કહતે હૈં (પેસ્મપસુનિમિત્તઓસહાહારમાહર્હિ) પ્રેપ્પ-ભૂત્ય, પશુ-
 ગાય ભૈંસ આદિ જાનવરોં કે રોગ, વુમ્હુક્ષ અ,દિ કી નિવૃત્તિ કે હેતુ-
 મૂત ઔપધ, આહાર આદિ કે નિમિત્ત સે કરતે હૈં । હિંસા કે પ્રકારોં
 કો કહતે હૈં (ઉત્તરણણ-ઉત્તર્યણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-પિટ્ટણ-મજ્જણ
 ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ-વિલુચણ-પત
 જ્જોહણ-અગ્ગિદહણાદ્યાહ) ઉત્તરણ આદિ દુઃખો કો એકેન્દ્રિય કી
 પર્યાય મે પ્રાપ્ત હોકર પૃથિવ્યાદિ જીવ ઘનકર ભોગતે હૈં । કુદાલ આદિ

તેજ અને વાયુકાયોને આ પ્રકારે જે દુઃખો ભોગવવા પડે છે તે 'અકામગાહ'
 તેમને અવાઙ્ઙનીય-અપ્રિય હોય છે પાપી જીવ પાપ શા માટે કરે છે ? "પરપ્પ
 ઓગોદીરણાહિ ચ" પોતાને માટે ડોઢ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ બીજાના
 કહેવાથી, તથા "કઙ્કજપ્પઓયણેહિ ચ" પોતાના આવશ્યક કાર્યોને કારણે તેઓ
 પાપ કરે છે તે કાર્યો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર કહે છે—"પેસ્સપસુનિમિત્ત
 ઓસહાહારમાહર્હિ" પ્રેપ્પ-નોઠર, પશુ-ગાય, ભૈંસ આદિ જાનવરોના રોગ,
 ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔપધ, આહાર આદિને નિમિત્તે તે કાર્ય કરે
 છે હવે હિંમાના પ્રકારો કહે છે—"ઉત્તરણણ-ઉત્તર્યણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
 પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ-વિલુચણ-પ-
 તજ્જોહણ-અગ્ગિદહણાદ્યાહ" તે પાપી જીવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા પૃથિવ્યાદિ

‘ઉત્ખણ’ ઉત્ખનન—કુદાલાદિમિ પૃથિવ્યાદીના વિદારણમ્, ‘ઉત્કથણ’ ઉત્કથન=ઘૃક્ષાદીના દયચાપનયન, ‘પયણ’ પચન ‘કોટ્ટણ’ કુટ્ટન=મસિદ્ધ, ‘પીસણ’ પેપણ=ઘરદાદી ચૂર્ણન, ‘પિટ્ટણ’ પિટ્ટન=તાડન, ‘મજ્જણ’ મર્જન=ખ્રાપ્ટે પવન, ‘ગાલણ’ ગાલન=લતાગુલ્માદિ રસ નિગારણમ્, ‘આમોડણ’ આમોટનમ્=શાખાદીના મોટન, ‘સડણ’ શટન=દયમેવ વિકૃતભવન, ‘ફુડણ’ સ્ફુટન=સ્વય દ્વિધાભવન, ‘ભજણ’ ભજન=તુટન-ત્રોટન યા, ‘છેયણ’ છેદન=કુઠારાદિના દ્વિધાકરણ, ‘તચ્છણ’ તક્ષણ=વાસ્યાદિમિશ્ચોચ્ચન, ‘વિલુચણ’ વિલુચ્ચન=લોમાદેરિવ

સે પૃથિવી આદિ કા વિદારણ કરના-રોદના, હસકા નામ (ઉત્ખણ) ઉત્ખનન હૈ । ઘૃક્ષાદિકોં કી ઝાલ નિકાલના હસકા નામ (ઉત્કથણ) ઉત્કથન હૈ । પકાનેકા નામ (પયણ) પચન હૈ । કૂટ્ટને કા નામ (કોટ્ટણ) કુટ્ટન હૈ । ઘરદ આદિ મેં ગેદ આદિ કા પીસના હસકા નામ (પીસણ) પેપણ હૈ । તાડક કરના હસકા નામ (પિટ્ટણ) પિટ્ટન હૈ । માડ મેં મૂજના હસકા નામ (મજ્જણ) મર્જન હૈ । લતા ગુલ્મ આદિ કા રસ નિકાલના હસકા નામ (ગાલણ) ગાલન હૈ । શાખાદિક કા મરોડના હસકા નામ (આમોડણ) આમોટન હૈ । અપને આપ વિકૃત હો જાના હસકા નામ (સડણ) શટન હૈ । સ્વતઃ દો ટુકડે હો જાના (ફુડણ) સ્ફુટન હૈ । તૂટના યા કિસી સે તોડ લિયા જાના હસકા નામ (ભજણ) ભજન હૈ । કુઠાર આદિ સે કાટ દિયા જાના, હસકા નામ (છેયણ) છેદન હૈ । વસલા આદિ સે છોલના હસકા નામ (તચ્છણ) તક્ષણ હૈ । રોમ આદિ કી તરહ પત્રાદિક કા દૂર કરના હસકા નામ (વિલુચણ)

જીવે તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્ખનન આદિ હુ ખો ભોગવે છે કોદાળી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની કિયાને “ઉત્ખણ” ઉત્ખનન કહે છે ઘૃક્ષાદિની ઝાલ ઉતારવી તે કિયાને “ઉત્કથણ” ઉત્કથન કહે છે રાધવાની કિયાને “પયણ” પચન કહે છે કૂટવાની-ખાડવાની કિયાને “કોટ્ટણ” કુટ્ટન કહે છે ઘટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની કિયાને “પીસણ” પેપણ કહે છે માર મારવાની કિયાને “પિટ્ટણ” પિટ્ટન કહે છે ભઠ્ઠીમા શેકવાની કિયાને “મજ્જણ” મર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ ડાઢવાની કિયાને “ગાલણ” ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની કિયાને “આમોડણ” આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની કિયાને “સડણ” શટન કહે છે જાતે જ બે ટુકડા થઈ જવાની કિયાને “ફુડણ” સ્ફુટન કહે છે જાતે તૂટવાની કે ખીન વડે તોડવાની કિયાને “ભજણ” કહે છે કુહાડી આદિથી કાપવાની કિયાને “છેયણ” છેદન કહે છે વાસલા આદિથી “તચ્છણ” તક્ષણ

પત્રાદીનામપનયન, 'પતજ્ઞોહણ' પ્રાન્તજ્ઞોટન=પત્રપુષ્પફળાદિપાતનમ્, 'અગ્નિ
દહણ' અગ્નિદહન=અગ્નિ પ્રજ્વાલન ચેતાન્યાદિર્યેષા તાનિ એવમ્પ્રકારાણિ દુઃખાનિ
એકેન્દ્રિયસમ્બન્ધીનિ એકેન્દ્રિયત્વ પ્રાપ્તાઃ પૃથિવ્યાદિજીવાઃ પ્રાપ્નુવન્તીતિ પૂર્વેણ
સમ્બન્ધઃ । તદેવ નિગમયતિ-એવમ્=ઉક્તરીત્યા તે=નરકાત્ પ્રત્યાગતાઃ જીવાઃ
'ભવ પરપરાદુઃખસમણુગદ્ધા' ભવપરમ્પરાદુઃખસમણુગદ્ધા=પચ્ચેન્દ્રિયાદિ યોનિષુ
જન્મપરમ્પરૈવ દુઃખ તેન સમણુગદ્ધા =સયુક્તા 'પાણાહવાય-નિરયા' પ્રાણાતિ-
પાતનિરતાઃ=પ્રાણિવધપરાયણાઃ જીવાઃ સસારે=ચતુર્ગતિરૂપે કીદૃશે ? 'વીહણકરે'
ભયકરે=ભયકારણે 'અગતકાલ' અનન્તકાલમ્ 'અહતિ' અટન્તિ=સતત
ભ્રમન્તિ ॥ સૂ. ૪૫ ॥

પૂર્વ નરકાત્પ્રત્યાગૃત્તાનાં તિર્યગ્યોનિષુ જન્મભવતીતિ વર્ણિતમ્ । અથ યદિ તે કથ-
વિલુચ્ચન હૈ । પત્ર, પુષ્પ, ફલ આદિ કા ગિરાના ઇસકા નામ (પતજ્ઞો-
હણ) પ્રાન્તજ્ઞોટન હૈ । અગ્નિ કા જલાના-ઇસકા નામ અગ્નિદહન હૈ ।
હત્યાદિ દુઃખોં કો એકેન્દ્રિય પર્યાય કો પ્રાપ્ત હુણ પૃથિવ્યાદિ જીવ ભોગતે
હૈ । અથ ઇસકા ઉપસંહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હ-(એવ તે) ઇસ
પ્રકાર નરક સે નિકલે હુણ વે જીવ (ભવપરપરાદુઃખ સમણુગદ્ધા) ઉક્ત
રીતિ સે પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોં મેં જન્મપરમ્પરામ્બ દુઃખોં સે યુક્ત જીવ
(પાણાહવાયનિરયા) પ્રાણિવધ કરને મે તત્પર હોકર (વીહણકરે) ભય-
કર ભય કે કારણભૂત ઇસ (સસારે) ચતુર્ગતિરૂપ સસાર મેં (અણત-
કાલ) અનન્ત કાલતક (અહતિ) ભ્રમણ કરતે હૈ ॥ સૂ. ૪૫ ॥

ઇસ પ્રકાર યદાનક યદ સમજાયા ગયા હૈ કિ નરક સે નિકલે હુણ
વે જીવ તિર્યચ યોનિ મેં જન્મ લેતે હૈ । યદિ વે કથચિત્ મનુષ્ય પર્યાય

“તચ્છણ” તક્ષણ કહે છે રુવાટી આદિ જે રીતે દૂર કરાય છે તે રીતે પત્રા-
દિકને દૂર કરવાની ક્રિયાને “વિલુચ્ચણ” વિલુચ્ચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ
આદિને પાડવાની ક્રિયાને ‘પતજ્ઞોહણ’ પ્રાન્તજ્ઞોટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની
ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે હત્યાદિ પ્રકારના દુઃખો એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉત્પન્ન
થયેલ પૃથિવ્યાદિ જીવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે

‘એવ તે’ આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા જીવો “ભવપરપરાદુઃખસમણુગદ્ધા”
ઉપરોક્ત પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપરપરામ્બ દુઃખોમા યુક્ત થાય છે,
અને “પાણાહવાયનિરયા” પ્રાણિવધ કરવાને તત્પર થઈને “વીહણકરે”
ભયકર-ભયના કારણભૂત આ “સસારે” ચતુર્ગતિરૂપ સસારમા “અણતકાલ”
અનન્તકાળ સુધી “અહતિ” ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ. ૪૫ ॥

આ રીતે અહીં સૂચીમા સમજાવવામા આવ્યું છે કે નરકમાથી નીકળેલા
તે જીવો તિર્યચ યોનિમા જન્મ લે છે જે ઉદાય તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉત્પન્ન

‘ઉત્ખણ્ણ’ ઉત્ખનન—કુદાલાદિમિ પૃથિવ્યાદીનાં વિદારણમ્, ‘ઉત્કથ્ણ’ ઉત્કથન=વૃક્ષાદીના ત્વચાપનયન, ‘પયણ’ પચન ‘કોટ્ટણ’ કુટ્ટન=પ્રસિદ્ધ, ‘પીસણ’ પેષણ=ઘરદ્વાદી ચૂર્ણન, ‘પિટ્ટણ’ પિટ્ટન=તાડન, ‘મજ્જણ’ મર્જન=ખ્રાપ્ટે પચન, ‘ગાલણ’ ગાલન=લતાગુલ્માદિ રસ નિગારણમ્, ‘આમોહણ’ આમોટનમ્=શાખાદીના મોટન, ‘સહણ’ શટન=સ્વયમેવ વિકૃતમયન, ‘ફુહણ’ સ્ફુટન=સ્વય દ્વિધા મયન, ‘મજ્જણ’ મજ્જન=તુટન-ત્રોટન યા, ‘છેયણ’ છેદન=કુઠારાદિના દ્વિધા કરણ, ‘તચ્છણ’ તક્ષણ=ગાસ્યાદિમિષ્ઠોન્ન, ‘વિલુચણ’ વિલુચ્ચન=લોમાદેરિવ

સે પૃથિવી આદિ કા વિદારણ કરના-રોદના, હસકા નામ (ઉત્ખણ્ણ) ઉત્ખનન હૈ । વૃક્ષાદિકોં કી છાલ નિકાલના હસકા નામ (ઉત્કથ્ણ) ઉત્કથન હૈ । પકાનેકા નામ (પયણ) પચન હૈ । કૂટને કા નામ (કોટ્ટણ) કુટ્ટન હૈ । ઘરદ આદિ મેં ગેદ આદિ કા પીસના હસકા નામ (પીસણ) પેષણ હૈ । તાડક કરના હસકા નામ (પિટ્ટણ) પિટ્ટન હૈ । ખાડ મેં ખૂજના હસકા નામ (મજ્જણ) મર્જન હૈ । લતા ગુલ્મ આદિ કા રસ નિકાલના હસકા નામ (ગાલણ) ગાલન હૈ । શાખાદિક કા મરોડના હસકા નામ (આમોહણ) આમોટન હૈ । અપને આપ વિકૃત હો જાના હસકા નામ (સહણ) શટન હૈ । સ્વતઃ દો ટુકડે હો જાના (ફુહણ) સ્ફુટન હૈ । તૂટના યા કિસી સે તોડ લિયા જાના હસકા નામ (મજ્જણ) મજ્જન હૈ । કુઠાર આદિ સે કાટ દિયા જાના, હસકા નામ (છેયણ) છેદન હૈ । વસૂલા આદિ સે છોલના હસકા નામ (તચ્છણ) તક્ષણ હૈ । રોમ આદિ કી તરહ પત્રાદિક કા દૂર કરના હસકા નામ (વિલુચણ)

જીવે તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્પનન આદિ દુ ખો ભોગવે છે ઝેદાણી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની ક્રિયાને “ઉત્ખણ્ણ” ઉત્ખનન કહે છે વૃક્ષાદિની છાલ ઉતારવી તે ક્રિયાને “ઉત્કથ્ણ” ઉત્કથન કહે છે રાધવાની ક્રિયાને “પયણ” પચન કહે છે કૂટવાની-ખાડવાની ક્રિયાને “કોટ્ટણ” કુટ્ટન કહે છે ઘટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની ક્રિયાને “પીસણ” પેષણ કહે છે માર મારવાની ક્રિયાને “પિટ્ટણ” પિટ્ટન કહે છે લઢીમા શેકવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” મર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ ડાઢવાની ક્રિયાને “ગાલણ” ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની ક્રિયાને “આમોહણ” આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની ક્રિયાને “સહણ” શટન કહે છે જાતે જ ખે દૂકડા થઈ જવાની ક્રિયાને “ફુહણ” સ્ફુટન કહે છે જાતે તૂટવાની કે ખીજ વડે તોડવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” કહે છે કુહાડી આદિથી કાપવાની ક્રિયાને “છેયણ” છેદન કહે છે વાસલા આદિથી છોલવાની ક્રિયાને

પત્રાદીનામપનયન, 'પતજ્ઞોહણ' પ્રાન્તજ્ઞોટન=પત્રપુષ્પફળાદિપાતનમ્, 'અગ્નિ
દહણ' અગ્નિદહન=અગ્નિ પ્રજ્વાલન ચેતાન્યાદિર્યેષા તાનિ એવમ્પ્રકારાણિ દુઃખાનિ
એકેન્દ્રિયસમ્બન્ધીનિ એકેન્દ્રિયત્વ પ્રાપ્તાઃ પૃથિવ્યાદિજીવાઃ પ્રાપ્નુવન્તીતિ પૂર્વેણ
સમ્બન્ધઃ । તદેવ નિગમયતિ-એવમ્=ઉક્તરીત્યા તે=નરકાત્ પ્રત્યાગતાઃ જીવાઃ
'ભવ પરપરાદુઃખસમણુગદ્ધા' ભવપરમ્પરાદુઃખસમણુગદ્ધા=પચ્ચેન્દ્રિયાદિ યોનિષુ
જન્મપરમ્પરૈવ દુઃખ તેન સમણુગદ્ધા=સયુક્તા 'પાણાઢવાય-નિરયા' પ્રાણાતિ-
પાતનિરતાઃ=પ્રાણિવધપરાયણાઃ જીવાઃ સસારે=ચતુર્ગતિરૂપે સીદ્યે ? 'વીહણકરે'
ભયકરે=ભયકારણે 'અણતકાલ' અનન્તકાલમ્ 'અહતિ' અટન્તિ=સતત
ભ્રમન્તિ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

પૂર્વ નરકાત્પ્રત્યાવૃત્તાના તિર્યગ્યોનિષુ જન્મભવતીતિ વર્ણિતમ્ । અથ યદિ તે કથ-

વિલુચ્ચન છે । પત્ર, પુષ્પ, ફળ આદિ કા ગિરાના હસકા નામ (પતજ્ઞો-
હણ) પ્રાન્તજ્ઞોટન છે । અગ્નિ કા જલાના-હસકા નામ અગ્નિદહન છે ।
હત્યાદિ દુઃખોં કો એકેન્દ્રિય પર્યાય કો પ્રાપ્ત હુણ પૃથિવ્યાદિ જીવ ભોગતે
છે । અથ હસકા ઉપસંહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે છે-(એવ તે) હસ
પ્રકાર નરક સે નિકલે હુણ વે જીવ (ભવપરપરાદુઃખ સમણુગદ્ધા) ઉક્ત
રીતિ સે પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોં મેં જન્મપરમ્પરામ્બ દુઃખોં સે યુક્ત જીવ
(પાણાઢવાયનિરયા) પ્રાણિવધ કરને મેં તત્પર હોકર (વીહણકરે) ભય-
કર ભય કે કારણભૂત હસ (સસારે) ચતુર્ગતિરૂપ સસાર મેં (અણત-
કાલ) અનન્ત કાલતક (અહતિ) ભ્રમણ કરતે છે ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

હસ પ્રકાર યદાનક ચત્ સમજાયા ગયા છે કિ નરક સે નિકલે હુણ
વે જીવ તિર્યચ્ચ યોનિ મેં જન્મ લેતે છે । યદિ વે કથચિત્ મનુષ્ય પર્યાય

“તચ્છણ” તક્ષણ કહે છે રુવાટી આદિ જે ગીતે દૂર કરાય છે તે ગીતે પત્રા-
દિકને દૂર કરવાના ક્રિયાને “વિલુચ્ચણ” વિલુચ્ચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ
આદિને પાડવાની ક્રિયાને ‘પતજ્ઞોહણ’ પ્રાન્તજ્ઞોટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની
ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે હત્યાદિ પ્રકારના દુઃખોં એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉત્પન્ન
થયેલ પૃથિવ્યાદિ જીવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે

‘એવ તે’ આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા જીવો “ભવપરપરાદુઃખસમણુગદ્ધા”
ઉપરોક્ત પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપરપરાદુઃખ દુઃખોંથી યુક્ત થાય છે,
અને “પાણાઢવાયનિરયા” પ્રાણિવધ કરવાને તત્પર થઈને “વીહણકરે”
ભય કર-ભયના કારણભૂત આ “સસારે” ચતુર્ગતિરૂપ સસારમા “અણતકાલ”
અનન્તકાળ સુધી “અહતિ” ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

આ ગીતે અહીં સૂધીમા સમજાવવામા આવ્યું છે કે નરકમાથી નીકળેલા
તે જીવો તિર્યચ્ચ યોનિમા જન્મ લે છે જો કદાચ તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉત્પન્ન

શ્ચિન્મનુષ્યત્વમપિ ચેત્પ્રાપ્તુંયુસ્તથાપ્પધન્યા એવ જાયન્તે इत्येतदाह—‘जे वि ये’ इत्यादि।

મૂલમ્—જે વિય ઇહ માણુસત્તણં આગયા કહ વિ નરગા ઉઠ્ઠવટ્ટિયા અધન્ના તે વિ ય દીસતિ પાયસો વિક્રયવિગલરૂવા લુજ્ઞા વડમા ય વામણા ય વહિરા કાળા કુટા પગુલા વિગલ ય મૂયા ય મમ્મણા ય અધયગા ય ચમ્મલુવિણિહયા સંચિહયા વાહિરોગપીલિય અપ્પાઉય-સત્થવજ્ઞવાલા કુલવલ્લણુકિન્નદેહા દુવ્વલ કુસઘયણ-કુપ્પમાણ કુસંઠિયા કુરૂવા કિવિણા ય હીણા હીણસત્તા નિચ્ચં સોવલ્લપરિવલ્લિયા અસુહદુમ્મલભાગી ધરગાઓ ઇહ સાવસેસકમ્મા ઉઠ્ઠવટ્ટિયા સમાણા ॥ સૂ. ૪૬ ॥

ટીકા—‘જેવિ ય’ યેડપિ ચ-યે કેચિત્ પ્રાણિન ‘નરગા’ નરકાત્ ‘ઉઠ્ઠવટ્ટિયા’ ઉદ્ધર્તિતા. = પ્રત્યાઘૃત્તાઃ નિસ્સૃતા इत्यर्थ. ‘કહિં વિ’ કથમપિ = મહ-તારુપ્તેન અનન્તજન્મમરણાનામનન્તદુ સ્વમનુભૂયેત્યર્થ., મનુષ્યલોકે ‘માણુસત્તણં’ મનુષ્યત્વ ‘આગયા’ આગતા = પ્રાપ્તા. ‘તેવિ ય’ તેડપિ ચ ‘અધન્ના’ અપન્ન્યાઃ = નિન્દનીયાઃ ‘પાયસો’ પ્રાયશો = ગ્રાહુલ્યેન, પ્રાયશો ગ્રહણ તીર્થઙ્કરાદિ-વ્યાવૃત્ત્ય

કો ભી પ્રાપ્ત કર લેં તો વહા ભી વે સ્વરામ અવસ્થા મે હી રહતે હૈં, ઇસ વાત કો સમજાતે હ—(જે વિ ય) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જે વિ ય) જો કિતનેક પ્રાણી (નરગા) નરક સે (ઉઠ્ઠવટ્ટિયા) નિકલકર (કહિં વિ) કથમપિ—કુઝ, પુણ્ય કે ઉદય સે (ઇહ) ઇસ મનુષ્યલોક મે (માણુસત્તણ) મનુષ્ય પર્યાય કો (આગયા) પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં (તે વિ પાયસો અધન્ના) પ્રાયઃ કરકે વે ચર્હા (પાયસો) શબ્દ તીર્થંકર આદિ કો નિવૃત્તિ કે ઝિયે આયા હૈ । (અધન્ના) નિન્દનીય હોતે

થાય તો ત્યા તે પણ તેઓ ખરાબ હાલતમા જ રહે છે, તે વાત હવે સૂચ-કાર સમજાવે છે—“ જે વિ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ— ‘ જે વિ ય ’ જે કેટલાક પ્રાણીઓ “ નરગા ” નરકમાથી “ ઉઠ્ઠવટ્ટિયા ” નીકળીને “ કહિં વિ ” થોડા પુણ્યના ઉદયથી “ ઇહ ” આ મનુષ્ય લોકમા “ માણુસત્તણ ” મનુષ્ય પર્યાય “ આગયા ” પ્રાપ્ત કરે છે “ તે વિ પાયસો ” પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા “ અધન્ના ” નિન્દનીય હોય છે “ પાયસો ” શબ્દ તીર્થંકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂક્યો છે “—વિક્રય

ર્થમ્, 'વિકૃયવિગલસ્ત્વા' વિકૃત વિકૃત્સ્વપાઃ = વિકૃત-ગીમત્સ વિકલ=હીન
 ચ સ્વપ્ન=આકારો ચેપા તે તથા ભૂતા 'દીમતિ' દૃશ્યન્તે=દૃષ્ટિગોચરા ભવન્તિ ।
 તદેવ વર્ણ્યતે- 'ચુજ્જા' કુન્નાઃ 'કુચ્ઢા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ, 'ચડમા' એક
 પાર્શ્વહીનાઃ = પ્રકોપરિમાયાઃ, યદ્વા-વિકૃતરૂપેણ ગૃહિર્નિસ્સૃતહૃદયોદરમાગાઃ,
 'વામણા' વામનાઃ=સ્વપ્નાયાઃ 'વહિરા' વપિરાઃ=શ્રવણશક્તિહીનાઃ 'કાણા'
 કાણા=આકાશાઃ 'કુટા' કુટ્ટાઃ=વિકૃતહસ્તાઃ 'ટૂટા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ 'પગુલા'
 'પગ્ગલાઃ=જઘ્ઘાહીના 'પાગલા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ, 'વિગલા' વિગલાઃ = હીનાઙ્ગો-
 પાદાઃ 'મૂયા' મૂઠાઃ=વચનશક્તિહીનાઃ, 'મમણા' મન્મનાઃ=સ્વલલ્લચનાઃ, 'અધ-
 યગા' અન્ધકાઃ=જન્માન્ધા, 'ચક્ષુવિણિહયા' ચક્ષુર્વિનિહતા =વિનિહતચક્ષુષઃ=

હૈં (વિકૃય વિગલસ્ત્વા દીસતિ) ઉનકા રૂપ વિકૃત ઓર વિકલ-હીન
 હોતા હૈં । ડસી યાત કો વિશેષરૂપ સે સૂત્રકાર સમજાતે હૈં (ચુજ્જા)
 ઉનકે શરીર મેં પીઠ પર કુચ્ઢ નિકલી રહની હૈં । (ચડમા) વે એક
 પાર્શ્વસે હીન હોતે હૈં, અથવા ઉનકે હૃદય ઓર ઉદરકા ભાગ વિકૃતરૂપ
 સે બાહિર નિકલા દુઆ રહતા હૈં । (વામણા) શરીર ઉનકા વોના હોતા
 હૈં । (વહિરા) ઉનકી શ્રવણશક્તિ નષ્ટ હો જાતી હૈં (કાણા) વે આંખે
 સે કાને હોતે હૈં । (કુટા) હાથ ઉનકા એક ઠીક રહતા હૈં દૂસરા ટૂટ
 જાતા હૈં ઇસસે વે ટૂટા કહલાતે હૈં, (પગુલા) પાગલે-જઘાહીન (વિગ-
 લા ય) અંગ ઓર ઉપાંગો સે વે વિહીન હોતે હૈં, (મૂયા) મૂઠે હોતે હૈં-
 વચનશક્તિ સે વીહીન હોતે હૈં, (મમ્મણા) મમ્મણ હોતે હૈં-બોલતે
 સમય વે અટકતે હૈં (અધયગા) જન્માધ હોતે હૈં-ઉનકી જન્મતઃ દોનો
 આંખે ફટી રહતી હૈં, (ચક્ષુવિણિહયા) ચક્ષુવિનિહત હોતે હૈં-ઉનકી

વિગલસ્ત્વા દીસતિ ” તેમનુ ૩૫ વિકૃત અને વિકલ-હીન હોય છે એજ વાતને
 સૂત્રકાર વિન્તારથી સમજાવે છે—“ ચુજ્જા ” તેમના શરીરે પીઠ પર ખૂધ
 નીકળી હોય છે, “ ચડમા ” તેઓ એક પડખે ખોડવાળા હોય છે, અથવા
 તેમના હૃદય અને પેટનો ભાગ વિકૃત રીતે બહાર પડતો હોય છે “ વામણા ”
 તેઓ વામનરૂપ ઠીંગણા હોય છે, “ વહિરા ” તેમની શ્રવણ શક્તિ નાશ પામે
 છે-તેઓ બહેરા થાય છે “ કાણા ” તેઓ આંખે ડાણા હોય છે “ કુટા ”
 તેમનો એક હાથ સારો હોય છે પણ બીજો હાથ તૂટી જવાને કારણે તેઓ
 ટૂટા કહેવાય છે “ પગુલા ” પાગલા-પગે લૂલા “ વિગલા ય ” અંગ અને ઉપા-
 ગોની ખોડવાળા હોય છે, “ મૂયા ” મૂઠા હોય છે-બોલવાની શક્તિ વિનાના
 હોય છે “ મમ્મણા ” તોતડા હોય છે-બોલતા છલ અટકે તેવા હોય છે

શ્ચિન્મનુષ્યત્વમપિ ચેત્માપ્નુયુસ્વથાપ્યધન્યા एव जायन्ते इत्येतद्वाद-‘जे वि ये’त्यादि।

મૂલમ્—જે વિય ઇહ માણુસત્તણં આગયા કહ વિ નરગા ઉઠ્ઠવટ્ટિયા અધન્ના તે વિ ય દીસતિ પાયસો વિક્રયવિગલરુવા યુજ્ઞા વડમા ય વામણા ય વહિરા કાળા કુટા પગુલા વિગલ ય મૂયા ય મમ્મણા ય અધયગા ય ચત્રલુવિણિહયા સંચિહયા વાહિરોગપીલિય અપ્પાઉય-સત્થવજ્ઞવાલા કુલકલ્લણુક્કિન્નદેહા દુવ્વલ કુસલ્લયણ-કુપ્પમાણ કુસઠિયા કુરુવા કિવિણા ય હીણા હીણસત્તા નિચ્ચં સોમ્મપરિવલ્લિયા અસુહદુક્ખભાગી ધરગાઓ ઇહ સાવસેસકમ્મા ઉઠ્ઠવટ્ટિયા સમાણા ॥ સૂ. ૪૬ ॥

ટીકા—‘જેવિ ય’ એવપિ ચ-એ કેચિત્ પ્રાણિન ‘નરગા’ નરકાત્ ‘ઉઠ્ઠવટ્ટિયા’ ઉદ્વર્તિતા.=પત્યાટ્ટાઃ નિસ્સૃતા इत्यर्थः ‘કહિં વિ’ કથમપિ=મહ-તારુષ્ટેન અનન્તજન્મમરણાનામનન્તદુ સ્વમનુભૂયેત્યર્થ., મનુષ્યલોકે ‘માણુસત્તણ’ મનુષ્યત્વ ‘આગયા’ આગતા.=પ્રાપ્તાઃ ‘તેવિ ય’ તેવપિ ચ ‘અધન્ના’ અન્યાઃ =નિન્દનીયાઃ ‘પાયસો’ પ્રાયશો=ગ્રાહુન્યેન, પ્રાયશો ગ્રહણ તીર્થદ્વરાદિ-વ્યાવૃત્ત્ય

કો ખી પ્રાપ્ત કર લેં તો વહા ખી વે સ્વરાગ અવસ્થા મે હી રહતે હેં, ઇસ વાત કો સમજાતે હે—(જે વિ ય) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જે વિ ય) જો કિતનેક પ્રાણી (નરગા) નરક સે (ઉઠ્ઠવટ્ટિયા) નિકલકર (કહિં વિ) કથમપિ—કુછ, પુણ્ય કે ઉદય સે (ઇહ) ઇસ મનુષ્યલોક મેં (માણુસત્તણ) મનુષ્ય પર્યાય કો (આગયા) પ્રાપ્ત કર લેતે હેં (તે વિ પાયસો અધન્ના) પ્રાયઃ કરકે વે યહાં (પાયસો) શબ્દ તીર્થકર આદિ કો નિવૃત્તિ કે ત્રિયે આયા હૈ । (અધન્ના) નિંદનીય હોતે

થાય તો ત્યા તે પણ તેઓ ધરાળ હાલતમા જ રહે છે, તે વાત હવે સૂત્ર કાર સમજાવે છે—“જે વિ ય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘જે વિ ય’ જે કેટલાક પ્રાણીઓ ‘નરગા’ નરકમાંથી ‘ઉઠ્ઠવટ્ટિયા’ નીડળીને ‘કહિં વિ’ થોડા પુન્યના ઉદયથી ‘ઇહ’ આ મનુષ્ય લોકમાં ‘માણુસત્તણ’ મનુષ્ય પર્યાય ‘આગયા’ પ્રાપ્ત કરે છે ‘તે વિ પાયસો’ પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા ‘અધન્ના’ નિંદનીય હોય છે ‘પાયસો’ શબ્દ તીર્થકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂક્યો છે ‘વિક્રય

વર્જિતા વા, ' હીણા ' હીના:=નીચજાતિકુલા ' હીણસત્તા ' હીનસત્ત્વા:=ઉત્સાહ
વર્જિતા:, ભીરવો વા, ' નિચ્ચ સોમ્મવપરિવજ્જિયા ' નિત્યસૌખ્યપરિવર્જિતા:=
સતતદુઃસ્વાકુલા:, ' અસુહદુઃખમાગી ' અશુભદુઃખમાગિન:=અશુભાનુવન્નિદુઃખ
સમ્પન્ના: પ્રાન્તે દશ્યન્તે इति योगः, એવમ્ભૂતા કે ? इत्याह—ये 'नरगाओ' नरकात्
'इह' इह—मर्त्यलोके 'उव्वट्ठा समाणा' उद्भूता:=आगता: सन्त: 'सावसेस-
कम्मा' सावशेषकर्माण =अवशिष्टाशुभकर्माणस्ते ॥ सू० ४६ ॥

અધોપસહરન્નાહ—' એવ ' દત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવ ણરગ તિરક્કજોણિ કુમાણુસત્ત ય હિડમાણા
પાવંતિ અણંતાઈં દુવ્વલાઈ પાવકારી । एसो सो पाणवहस्स
फलविवागो इहलोइयो पारलोइयो अप्पसुहो बहुदुक्खो मह-
व्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि
मुच्चई णय अवेदइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति एवमाहसु नायकुल
नदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसीय पाणवहस्स

અભાવ રહતા હૈ । (હીણા) હનકા કુલ એવ જાતિ યે દોનોં હી હીન
હોતે હૈ । (હીણસત્તા) ઉત્સાહ શક્તિ સે યે વર્જિત હોતે હૈ અથવા ભીરુ
-હરપોક-પ્રકૃતિ કે હોતે હૈ । (નિચ્ચ સોમ્મવપરિવજ્જિયા) સુખોં સે
નિત્ય વર્જિત-નિરન્તર દુઃખી રહતે હૈ । (અસુહદુઃખમાગી) હસ પ્રકાર
હન અશુભાનુવધી દુઃખોં સે વે સમ્પન્ન (દીસતિ) દેખે જાતે હૈ । જો
પાપી જીવ (નરગાઓ) નરક સે (ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા) નિકલ કર (હંહ)
હસ મનુષ્ય લોક મે (સાવસેસકમ્મા) પાપ કર્મોં કે ભોગને પર ભી અવ
શિષ્ટ અશુભ કર્મ વાલે હો કર આતે હૈ ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

હોય છે, અથવા તેમનામા દાન દેવાની શક્તિ હોતી નથી “ હીણા ” તેમનુ
કુળ અને જાતિ બન્ને હીન હોય છે “ હીણસત્તા ” તેઓ ઉત્સાહ વિનાના
હોય છે અથવા ભીરુ હરપોક સ્વભાવના હોય છે ‘ નિચ્ચ સોમ્મવપરિવજ્જિયા ’
હમેશા સુખથી રહિત હુ બી હોય છે “ અસુહદુઃખમાગી ” આ ગીતે તેઓ
અશુભાનુવધી હુ બોધી યુક્ત “ દીસતિ ” દેખાય છે પાપી એવ “ નરગાઓ ”
નરકમાધી “ ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા ” નીકળીને “ હંહ ” આ મનુષ્યલોકમા “ સાવ-
સેસકમ્મા ” પાપ કર્મોના અશુભ ફળો ભોગવવા છતા પણ બાકી રહેલ અશુભ
કર્મ સાથે લઈને આવે છે ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

રોગાદિભિર્વિકૃતનેત્રાઃ, 'સચિહ્વયા' સચ્ચિહ્વકાઃ=વિર્પટનેત્રાઃ 'વાહિરોગપીલિય' વ્યાધિરોગપીડિતાઃ=વ્યાધિભિઃ=કુષ્ઠાદિભિઃ, રોગૈશ્વ=કાસશ્વાસાદિભિઃ પીડિતાઃ 'અપ્પાઝય' અલ્પાયુષ્કાઃ 'સત્થવજ્ઞ' શસ્ત્રવધ્યાઃ=શસ્ત્રપ્રયોગેણ મરણશીલાઃ, ઘાલાઃ=બુદ્ધિરહિતાઃ, 'કુલ્લક્ષણુકિન્નદેહા' કુલક્ષણોત્કીર્ણદેહાઃ=કુત્સિતલક્ષણે વ્યાપ્તશરીરા.-શુભરેત્વાદિવર્જિતા इत्यर्थ, 'દુબ્બલ' દુર્બલાઃ=ચલહીના'. 'કુસઘયણકુપ્પમાણકુસઠિયા' કુસહનનકુપમાણકુસરિથિતાઃ - કુસહનનાઃ = કુત્સિત સહનન=અસ્થિરચનાવિશેષો યેષાં તે તથા, કુપમાણાઃ=કુત્સિત શરીરસ્ય પ્રમાણમ-તિશ્ચમ્યાતિહ્રસ્વાદિલક્ષણ યેષાં તે તથા, કુસસ્થિતાશ્ચ=કુત્સિતસસ્થાનાઃ एतेषां દ્વન્દ્વઃ 'કુલ્લવા' કુલ્લવા=રૂપવર્જિતાઃ 'કિરિણા' કૃપણાઃ=દરિદ્રાઃ, દાનશક્તિ-

આલો મેં કોઈ ન કોઈ સ્વરામી રહતી હૈ, (સચિહ્વયા) સચિહ્વક હોતે હૈ અનેક નેત્ર ચપટે હોતે હૈ, (વાહિરોગપીલિય) વ્યાધિ ઓર રોગ સે પીડિત રહતે હૈ-વે કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિયોં સે, કાસ શ્વાસ આદિ રોગોં સે સદા પીડિત રહતે હૈ, (અપ્પાઝય) અલ્પાયુવાલે હોતે હૈ, (સત્થ-વજ્ઞ) શસ્ત્ર પ્રયોગ સે અનેકી મૃત્યુ હોતી હૈ, (ઘાલા) બુદ્ધિ રહિત હોતે હૈ, (કુલ્લક્ષણુકિન્નદેહા) સોટા ૨ લક્ષણોં વાલે હોતે હૈ, અર્થાત્-શુભ રેત્વાઓં સે વર્જિત હોતે હૈ, (દુબ્બલ) દુર્બલ-ચલ હીન હોતે હૈ, (કુસઘયણ) અનેકા સહનન-અસ્થિયોં કી રચના ઠીક ઠીક નહીં હોતા હૈ, (કુપ્પમાણ) શરીર કા પ્રમાણ મી યોગ્ય નહીં હોતા હૈ, યા તો વહ અત્યંત લઘા હોતા હૈ યા અતિ હ્રસ્વ હોતા હૈ । (કુસઠિયા) સસ્થાન-આકાર મી કુત્સિત હોતા હૈ । (કુલ્લવા) સુન્દર રૂપ સે રહિત હોતે હૈ । (કિરિણા) દરિદ્ર હોતે હૈ, અથવા-દાન દેને કી શક્તિ કા અનેકે ઘર્યાં

“અધયગા” જન્માધ હોય છે જન્મથી જ તેમની આખો કૂટી ગઈ હોય છે, “ચક્ષુવિણિહયા” ચક્ષુ વિનિહત હોય છે, તેમની આખોમા કોઈ ને કોઈ ખામી રહે છે, “સચ્ચિહ્વયા” સચ્ચિહ્વક હોય છે તેમના નેત્ર ચપટા હોય છે, “વાહિરોગપીલિય” વ્યાધિ અને રોગથી પીડાયા કરે છે-તેઓ કોઈ આદિ વ્યાધિયોથી, ખાસી, દમ આદિ રોગોથી પીડાયા કરે છે “અપ્પાઝય” ટૂંકા આયુષ્યવાળા હોય છે, “સત્થવજ્ઞ” શસ્ત્રપ્રયોગથી તેમનું મૃત્યુ થાય છે “ઘાલા” બુદ્ધિ વિનાના હોય છે, “કુલ્લક્ષણુકિન્નદેહા” ખરાબ લક્ષણોવાળા હોય છે, એટલે કે સારી રેખાઓથી રહિત હોય છે, “દુબ્બલ” દુર્બલ-ખળ હીન હોય છે, “કુસઘયણ” તેમનું સહનન-અસ્થિયોની રચના-ખરાબર હોતી નથી, “કુપ્પમાણ” શરીર પ્રમાણસરનું હોતું નથી-કા તો તે અતિશય લાખા હોય છે કે અતિ નીચા હોય છે “કુસઠિયા” સસ્થાન-આકાર દેખાવ પણ ખેડાળ હોય છે “કુલ્લવા” સુદર રૂપથી રહિત હોય છે “~”

સ કીદશ ? इत्याह—‘इहलोइओ’ ऐहलौकिकः=मनुष्यलोकमाश्रित्य, ‘पारलोइओ’ पारलौकिकः—नरकनिगोदादिकगत्याद्याश्रित्य ‘अप्पसुहो’ कुत्तिसतेन्द्रियभोगे सुखजनकत्वाद् अल्पसुखः, या ‘बहुदुक्खो’ बहुदुःखः=नरकादिदुःखकारणत्वाद् दुःखबहुलः, ‘महम्मओ’ महाभयः=महाभयस्वरूपः, तथा ‘बहुरयप्पगाढो’ बहु-
रजः प्रगाढः=अशुभकर्मबहुलः, दारुणो’ दारुणः=भीषणः नरकादिभयजनकत्वात्
‘कक्कसो’ कर्कशः=कठोरः=दुर्भेद्यत्वात् ‘असाओ’ अमातः=असातवेदनीयरूप
त्वात्, इत्येवविधः फलविपाकः, ‘वाससहस्सेहिं’ वर्षसहस्रैः=अनेक सहस्रवर्ष-
भोगैः=पत्योपमसागरोपमादिलक्षणैः ‘मुच्चई’ मुच्यते=क्षीयते । तदेवव्यतिरेक
मुखेनाह—‘नये’ ति—‘अवेयइत्ता’ अवेदयित्वा=त फलविपाकमनुपभुज्य ‘नय’

विपाक-परिणाम (इहलोइओ) ऐहलौकिक-मनुष्यलोककी अपेक्षा से
(अप्पसुहो) कुत्तिसत इन्द्रियों के भोग जनित सुख का उत्पादक होने से
अल्पसुख वाला, तथा (पारलोइओ) पारलौकिक-नरकादि गति की
अपेक्षासे (बहुदुक्खो) नरकादि गति कारण होनेसे बहुत दुःख वाला,
(महम्मओ) महाभयवाला, तथा (बहुरयप्पगाढो) बहुत अशुभकर्मों
वाला है । यह (दारुणो) नरकादिगति का भयजनक होने से भयकर
(कक्कसो) दुर्भेद्य होने से कर्कश-कठोर है । (असाओ) अशाता वेद-
नीय रूप होने से स्वयं अशातारूप है । ऐसा यह प्राणवधपरिणाम (वास-
सहस्सेहिं मुच्चई) पत्योपम तथा सागरोपमादिरूप वर्षसहस्रों में भोगते
२ यह छूटता है-नष्ट होता है । इसी बात को अब व्यतिरेक से कहते
हैं कि—(अवेयइत्ता न य ह मोक्खो अत्ति) (अवेयइत्ता) इसका फल

ફળવિપાક પરિણામ “ इહલોइओ ” આ લોકની મનુષ્યલોકની અપેક્ષાએ
“ અપ્પસુહો ” કુત્તિસત ઇન્દ્રિયોના ભોગજનિત સુખનુ ઉત્પાદક હોવાથી અલ્પ
સુખવાળું, તથા “ પારલોइओ ” પરલોકની-નરકાદિ ગતિની અપેક્ષાએ “ બહુ-
દુક્ખો ” નરકાદિ ગતિના કારણરૂપ હોવાથી બહુ જ દુઃખદાયી, “ મહન્મઓ ”
મહા ભયવાળું તથા “ બહુરયપ્પગાઠો ” અત્યંત અશુભ કર્મોવાળું છે તે “ દારુણો ”
નરકાદિ ગતિનો ભય પેદા કરનાર હોવાથી ભયકર છે “ કક્કમો ” દુર્ભેદ્ય
હોવાને કારણે કર્કશ કઠોર છે “ અસાઓ ” અશાતા-વેદનીય રૂપ હોવાથી
પોતે અશાતારૂપ છે એવું તે પ્રાણવધ પરિણામ “ વાસસહસ્સેહિં મુચ્ચઈ ”
પત્યોપમ તથા સાગરોપમ આદિરૂપ હજારો વર્ષ સુધા ભોગવતા ભોગવતા છૂટે
છે-નષ્ટ થાય છે એ જ વાતને હવે બીજી રીતે પ્રગટ કરે છે—“ અવેયइत्ता न
येने ફલવિપાક ભોગવ્યા વિના શુભને

ફલવિવાગં । एसो सो पाणवहो चंडो रुदो खुद्रो साहसिओ
अणारिओ, निग्धिणो, निस्ससो महवभओ, पइभओ अइभओ,
वीहणओ, तासणओ, अणज्जओ, उव्वेयणओ य-णिरवयक्खो,
णिद्धम्मो, णिप्पिवासो, निक्कल्लुणो निरयवासगमणनिधणो
मोहमहवभयपवड्डओ मरणवेमणस्सो तिवेमि ॥ सू० ४७ ॥

॥ पढम अहम्मदारं समत्त ॥ १ ॥

टीका—‘ एव ’ उक्तप्रकारेण ‘ णरग ’ ‘ नरक, मनुष्यलोके ‘ तिरिक्ख
जोणि ’ तिर्यग्योनि=पञ्चेन्द्रियादिभ्य ‘ कुमाणुसत्त ’ कुमाणुपत्त=कुञ्जवामनादि
विकृताङ्गोपाङ्गरूपा मनुष्ययोनि च ‘ हिंढमाणा ’ हिण्डमाना=भ्रमन्तः ‘ पावकारी ’
पापकारिणः=प्राणातिपातकारकाः जीवाः ‘ अणताइ ’ अनन्तानि ‘ दुक्खाइ ’
दुःखानि ‘ पावेति ’ प्राप्नुवन्ति । ‘ एसो सो ’ एष सः प्रत्यक्ष दृश्यमानः ‘ पाण
वहस्स ’ प्राणवधस्य=प्राणातिपातस्य ‘ फलविवागो ’ फलविपाकः=परिणामः भवति ।

अब उपसहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं—‘ एव णरग तिरिक्ख
जोणि ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एव) इस उक्त प्रकार से जो (णरग) नरक में, वहा
से मनुष्यलोक में आने पर (तिरिक्खजोणि) तिर्यश्च योनि में एवं (कुमा-
णुसत्त) कुञ्ज, वामन आदि रूप से विकृत अगोपांगवाली मनुष्ययोनिमें
(हिंढमाणा) भ्रमण करते हुए (पावकारी) प्राणातिपातरूप पाप को
करने वाले जीव (अणताइ दुक्खाइ) अनन्त दुःखों को (पावेति) पाते
हैं । (एसो सो) प्रत्यक्ष में दृष्टिभूत बना हुआ यह (पाणवहस्स) प्राण
वधरूप हिंसा का (फलविवागो) परिणाम है । प्राणवध का यह (फल-

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“ એવ ણરગ તિરિક્કજોણિ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એવ ” ઉપરોક્ત પ્રકારે “ ણરગ ” નરકમાં, ત્યાંથી મનુષ્યલોકમાં
આવતા “ તિરિક્કજોણિ ” તિર્યગ યોનિમાં અને “ કુમાણુસત્ત ” કુજ, વામન
આદિ રૂપે વિકૃત અગોપાંગવાળી મનુષ્ય યોનિમાં “ હિંદમાણા ” ભ્રમણ કરતા
“ પાવકારી ” પ્રાણાતિપાતરૂપ પાપ કરનાર જીવો “ અણતાઈ દુક્ખાઈ ” અનન્ત
દુઃખો “ પાવેતિ ” ભોગવે છે “ એસો સો ” પ્રત્યક્ષ દૃષ્ટિગોચર થતું “ પાણવ
વહસ્સ ” પ્રાણવધરૂપ હિંસાનું “ ફલવિવાગો ” તે પરિણામ છે પ્રાણવધનો આ

નિરૂપણેનૈવ તદન્તર્ગતફલ વિપાકમ્યાપિ તદુક્તત્વસિદ્ધો પુનઃ પૃથક્ તસ્ય મહા
વીરોક્તત્વાભિધાન પ્રાણિવધસ્યૈકાન્તિકા શુભફલદાયકત્વાત્તસ્યાત્યન્તહેયત્વઘોત-
નાર્થમ્ । ‘ एसो सो ’ एष स.=पूर्वोपदर्शित स्वरूपः ‘ पाणवहो ’ प्राणवध. ‘ चडो ’
चण्डः=क्रोधजनकत्वात्, ‘ रुदो ’ रौद्र =रौद्ररसप्रवर्तितत्वात्, ‘ खुद ’ क्षुद्रः=
अधमजनाचरितत्वात् ‘ साहसिओ ’ साहसिकः=भयभीक्ष्यकारिजनप्रवर्तितत्वात्,
अहम्भओ घीहणओ तासणओ अणज्जओ गिरवयक्खो, निद्धम्मो,
निप्पिवासो, निक्कलुणो, निरयवासगमणनिधणो, मोहमहब्भयपयट्ठओ
मरणवेमणस्सो, त्ति वेमि)

શકા—જય સૂત્રકાર ને ઈસ અભ્યયન મેં મહાવિરોક્તના નિરૂપિત
કી હૈ તય यह बात तो स्वतः सिद्ध हो ही जानी है कि तदन्तर्गत फल
विपाक भी उन्हीं द्वारा कहा गया है, फिर क्या बात है जो इसमें पृथक्
रूप से महावीरोक्तता प्रतिपादित की जा रही है ?

उत्तर—शंका ठीक है, परंतु इसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि
पुनः इसमें जो तदुक्तता प्रतिपादित की है उससे उसमें—प्राणिवध में—
ऐकान्तिक अशुभफलदायकता होने से अत्यन्त हेयता प्रकट की गई है।
यही बात सूत्रकार इन आगे के पदों द्वारा स्पष्ट करते हैं—(एसो सो)
पूर्वोपदर्शित स्वरूप वाला यह (पाणवहो) प्राणवध—(चडो) क्रोधजनक
होने से चण्ड है, (रुदो) रौद्र रस द्वारा प्रवर्तित होने से रौद्र है,
(खुदो) अधमजनों द्वारा आचरित होने से क्षुद्र है, (साहसिओ)

ઘીહણઓ તાસણઓ અણજ્જઓ ગિરવયક્કો, નિદ્દમ્મો, નિપ્પિવાસો, નિક્કલુણો નિર
યવાસગમણનિધણો, મોહમહબ્ભયપયટ્ઠઓ મરણવેમણસો ત્તિવેમિ ”

શકા—ત્યારે સૂત્રકારે આ અભ્યયનમા મહાવીરોક્તતાનું નિરૂપણ કર્યું
છે ત્યારે તે વાત તો આપોઆપ નિદ્ધ થઈ જ નાથ છે કે તેમા આવતો ફલ-
વિપાક પણ તેમના દ્વારા કહેવાયેલ છે, તો શા કારણે તેમા અલગ રીતે
મહાવીરોક્તતાનું પ્રતિપાદન કરવામા આવેલ છે ?

ઉત્તર—શકા ધરાવે છે પણ તેનો ઉદ્દેશ કેવળ એટલો જ છે કે ફરીથી
તેમા જે તેમના દ્વારા કથિત હોવાનું પ્રતિપાદન કર્યું છે તેથી તેમા પ્રાણી
વધમા એકાન્તિક અશુભ ફલદાયકતા હોવાથી અત્યંત હેયતા પ્રગટ કરાઈ છે
એ જ વાત સૂત્રકાર આગળ આવતા આ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે—“एसो सो”
આગળ દર્શાવવામા આવેલ સ્વરૂપવાળો તે “पाणवहो” પ્રાણવધ “चण्डो”
ક્રોધ-जनक હોવાથી ચડ છે, “रुदो” રૌદ્રરસ દ્વારા પ્રવર્તિત હોવાથી રૌદ્ર છે,
“खुदो” અધમ લોકો દ્વારા આચરિત હોવાને કારણે ક્ષુદ્ર છે, “साहसिओ”

ન ચ-નૈવ 'હુ' નિશ્ચયેન 'મોક્ષો' મોક્ષ 'અતિથિ' અસ્તિ, 'તિ' ઇતિ સમાપ્તિ સૂચકઃ । તસ્ય ફલવિપાકસ્યોપભોગ વિના જીવસ્ય મોક્ષો ન ભવતીત્યર્થઃ ।

અથ ન હિ યેન કેનાપિ પ્રતિપાદિતોઽર્થ શ્રદ્ધેયવચનો ભવતિ પ્રામાણ્યસન્દે-
હાદિત્યાશંકાનિવર્તિયિતુમસ્ય સાક્ષાત્પ્રમાણભૂતપરમાત્મપ્રતિપાદિતત્વેન પ્રામાણ્ય
નિરૂપણાય પ્રમાણયન્નાહ-‘એવમાહસુ’ ઇત્યાદિ, એમ્=ઉક્તરીત્યા ‘આહસુ’
ઉચ્ચુઃ-અતીતાસ્તીર્થકુલગણધરાદયઃ । તથા ‘નાયકુલનદગ્નો’ જ્ઞાતકુલનન્દનઃ=
જ્ઞાતકુલ=સિદ્ધાર્થકુલ, તસ્ય નન્દનઃ=આનન્દકારક ‘મહાપ્પા’ મહાત્મા=પરમા
ત્મરૂપ, ‘જિણો’ જિનઃ=રાગાદ્યન્તરદ્વશત્રુજેતા, વીરવરણામધેજ્જો ‘વીરવરનામ
ધેય’=પ્રશસ્તનામા ભગવાન્ મહાવીરઃ, ‘પાણવહસ્સ’ પ્રાણવધસ્ય ‘ફલવિવાગ’
ફલવિપાક ‘કહેસીય’ કથિતવાન્=યદાઽતીતા જિનાઃ કથિતવન્તસ્તયૈવાય
ભગવાન્ મહાવીરોઽપિ પ્રતિપાદયતિસ્મેત્યર્થઃ । અસ્યાધ્યયનસ્ય મહાવીરોક્તત્વ

વિપાક ભોગે વિના જીવકા (ન ચ હુ મોક્ષોઅતિથિ) કમી મી છુટકારા
નહીં હો સકતા હૈ । હસ કથન કો પ્રમાણભૂત સિદ્ધ કરને કે લિય સૂત્ર-
કાર હસમેં સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિતતા સિદ્ધ કરને
કે લિયે કહતે હૈં કિ એસા જો મૈને કહા હૈ વહ અપની ઓર સે નહીં
કહા હૈ, કિન્તુ (એવમાહસુ) અતીત તીર્થકર એ ગણધર આદિ દેવોં ને
એસા કહા હૈ તથા (નાયકુલનદગ્નો મહાપ્પા જિણો ડ વીરવર ણામધેજ્જો
પાણવહસ્સ ફલવિવાગ કહેસીય) જ્ઞાતકુલનદન-સિદ્ધાર્થ કે કુલ કો
આનદ દેને વાલે-પરમાત્મરૂપ, જિન-રાગાદિક અતરગ શત્રુ કે વિજેતા
પ્રશસ્તનામ વાલે શ્રી ભગવાન્ મહાવીર ને મી પ્રાણવધ કો ફલ એસા હી
અતીત તીર્થકરોં કે કથનાનુસાર કહા હૈ । (એસો સો પાણવહો વઢો રુહો
રુહો સાહસિઓ અણારિઓ નિગ્ધિણો નિસ્સસો મહાવ્મઓ પદ્મઓ

“ ન ચ હુ મોક્ષો અતિથિ ” કહી પણ છુટકારો થઈ શકતો નથી, આ કથનને
પ્રમાણભૂત સિદ્ધ કરવાને માટે સૂત્રકાર તેના સાક્ષાત્ પ્રમાણરૂપ પરમાત્માદ્વારા
તેની પ્રતિપાદિતતા સિદ્ધ કરવાને માટે કહે છે કે—એવુ મેં જે કહ્યું છે તે
મારી તરફથી કહ્યું નથી પણ “ એવમાહસુ ” અતીત તીર્થકર અને ગણધર
આદિ દેવે એ એવુ કહેલ છે, તથા “ નાયકુલનન્દગ્નો મહાપ્પા જિણો ડ વીરવર
ણામધેજ્જો પાણવહસ્સ ફલવિવાગ કહેસીય ” જ્ઞાતકુલનદન-સિદ્ધાર્થના કુળને
આનદ દેનાર પરમાત્મારૂપ, જિન-રાગ આદિ આતરિક શત્રુઓ પર વિજય
મેળવનાર પ્રશસ્ત નામવાળા શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ પ્રાણવધનું ફળ એવુ
જે અતીત તીર્થકરોના કથનાનુસાર જે કહેલ છે—“ એસો સો પાણવહો વઢો
રુહો રુહો સાહસિઓ અણારિઓ નિગ્ધિણો નિસ્સસો મહાવ્મઓ પદ્મઓ

નિષ્પિપાસઃ=પરજીવનસ્નેહવર્જિતત્વાત્, 'નિક્કલુણો' નિષ્કલુણઃ=દયાભાવવર્જિતત્વાત્
'નિરયવાસગમણનિધનો' નિરયવાસગમનનિધનઃ-નિરયાવાસઃ=નરકાવાસઃ, તત્ર
ગમનમેવ નિધન=પર્યવસાનમ્-અન્તિમફલ યસ્ય સ તથા, નરકપાપકૃત્વાત્, 'મોહ-
મહાભયપયટ્ઠો' મોહમહાભયપ્રવર્તક =મોહઃ=અજ્ઞાન સ એવ મહાભય=મહાભય-
હેતુત્વાત્, તસ્ય પ્રવર્તકઃ, 'મરણવૈમણસો' મરણવૈમનસ્યઃ = મરણેન=મૃત્યુરૂપ
કારણેન પ્રાણિનાં વૈમનસ્ય = દૈન્ય યસ્માત્સ તથા દીનમનઃ કારિત્વાત્, इत्येव
लक्षणः प्राणवधः=ज्ञपरिज्ञया तत्स्वरूप विज्ञाय प्रत्याख्यानपरिज्ञया सर्वथा परि-
त्याज्य इति भावः । श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिन कथयति—'त्तिवेमि'

સે રહિત હોને કે કારણ યદ્ નિરપેક્ષરૂપ છે । (નિદ્વમ્મો) શ્રુતાચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સે રહિત હોને કે કારણ યદ્ નિર્ધર્મરૂપ છે । (નિષ્પિવાસો) હસ
મેં દૂસરોં કે જીવન કે પ્રતિ સ્નેહભાવ નહીં રહતા છે ઇસલિયે યદ્ નિષ્પિ-
પાસરૂપ છે । (નિક્કલુણો) દયાભાવ કા સર્વથા હસમેં અભાવ રહતા છે
ઇસલિયે યદ્ નિષ્કલુણરૂપ છે । (નિરયવાસગમણનિધનો) નરક ગમન હી
હસકા અન્તિમફલ છે, ઇસલિયે યદ્ નિરયવાસગમનનિધનરૂપ છે । (મોહ
મહાભયપયટ્ઠો) મોહરૂપ-મહાભય કા યદ્ પ્રવર્તક છે ઇસલિયે યદ્
મોહ મહાભય પ્રવર્તકરૂપ છે । (મરણવૈમણસો) મૃત્યુરૂપ કારણ સે
પ્રાણિયો કો હસસે દૈન્યભાવ હોતા છે ઇસ લિયે યદ્ મરણવૈમનસ્યરૂપ છે ।
ઇસલિયે હસ પ્રાણવધ કા જ્ઞ પરિજ્ઞા સે સ્વરૂપ જાનકર પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞા
સે સર્વથા પરિત્યાગ કર દેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર કહ કર અવ સુધર્મા-

હોવાને કારણે તે નિરપેક્ષરૂપ છે “નિદ્વમ્મો” શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મથી રહિત હોવાને
કારણે નિર્ધર્મરૂપ છે “ નિષ્પિવાસો ” તેમા અન્યના જીવન પ્રત્યે સ્નેહભાવ
રહેતો નથી તેથી તે નિષ્પિપાસરૂપ છે “ નિક્કલુણો ” તેમા દયાભાવનો તદ્દન
અભાવ રહે છે તેથી તે નિષ્કલુણરૂપ છે “ નિરયવાસગમણનિધનો ” નરક ગમન
જ તેનું અતિમ ફળ હોય છે, તે કારણે તે નિરયવાસગમનનિધનરૂપ છે
“મોહમહાભયપયટ્ઠો” મોહરૂપ મહાભયનો તે પ્રવર્તક છે, તે કારણે તે મોહ
મહાભય પ્રવર્તકરૂપ છે “ મરણવૈમણસો ” મરણરૂપ કારણથી પ્રાણિઓમા
તેનાથી દૈન્યભાવ ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તે મરણવૈમનસ્ય રૂપ છે તે કારણે તે
પ્રાણવધનું જ્ઞ પરિજ્ઞાથી સ્વરૂપ જાણીને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાથી તેનો સર્વથા
પરિત્યાગ કરવો જોઈએ આ પ્રમાણે કહીને હવે સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામીને

‘અણારિઓ’ અનાર્યઃ=મ્લેચ્છજનસમાચારિત્વાત્, ‘નિર્ગિઓ’ નિર્ગઃ=અવિધમાના ઘૃગા=પાત્રુગુપ્સા યસ્મિન્ સ તથા વિધોજનમ્નદાચરિત્વાત્પ્રાણવધોઽપિ તથા, ‘નિસ્સસો’ નૃશમ=કૂરજનાચરિત્વાત્ ‘મહઞ્મઓ’ મહાભયઃ=મહાભયોત્પાદકત્વાત્, પદ્મઓ’ પ્રતિભયઃ=સમસ્તપ્રાણિના ભયહેતુત્વાત્, ‘અદ્મઓ’ અતિભયઃ=મરણાન્તભયજનકત્વાત્ । ‘વીહળઓ’ ભાપનકઃ=ભયોત્પાદકત્વાત્, ‘તાસળઓ’ તાસનક=અકસ્માત્-હૃદયોદ્દેગજનકત્વાન્, ‘અગજ્જઓ’ અન્યાગ્યઃ=ન્યાયાદનપેતઃ=યુક્તઃ ન્યાયઃ, ન ન્યાય્યઃ અન્યાગ્યઃ, ન્યાયવર્જિતત્વાત્, ‘ઉવ્વેયળઓ’ ઉદ્દેગજનક. મર્મપીડાકારકત્વાત્ ‘ગિરવચ્ચલો’ નિરપેક્ષ=નિર્ગતા અપેક્ષા=પરપ્રાણરક્ષા વિષયા યત્ર સ તથા, ‘નિદ્દમ્મો’ નિર્ધર્મ=શ્રુતચારિત્ર ધર્મરહિતત્વાત્, ‘નિપ્પિયાસો’

અસમીક્ષ્યકારી જનો દ્વારા ક્રિયા ગયા હોને સે સાહસિક છે, (અણારિઓ) મ્લેચ્છજનો દ્વારા સમાચરિત હોને કે કારણ અનાર્ય છે । (નિર્ગિઓ) હસે કરને વાલે મનુષ્ય કો પાપ કે પ્રતિ ઘૃણા નહીં રહતી છે અતઃ યહ પ્રાણવધ મી નિર્ધળરૂપ છે (નિસ્સસો) કૂરજન હસે કરતે રહતે હૈં હસ લિયે યહ નૃશમરૂપ છે । (મહઞ્મઓ) હસે કરતે સમય કરનેવાલેકો મહાન્ ભયકા કારણ હોતા છે હસલિયે યહ મહાભયરૂપ છે । (પદ્મઓ) સમસ્ત પ્રાણિયોં કો ભય કા હેતુ હોને સે યહ પ્રતિભયરૂપ છે । (અદ્મઓ) મરણાન્તભય કા જનક હોને સે યહ અતિભયરૂપ છે । (વીહળઓ) ભયકા ઉત્પાદક હોને સે યહ ભયાનક છે । (તાસળઓ) અકસ્માત્ હૃદય મેં ઉદ્દેગ કા જનક હોને સે ત્રામનકરૂપ છે (અગજ્જઓ) ન્યાયવર્જિત હોને સે યહ અન્યાયરૂપ છે । (ઉવ્વેયળઓ) જીવોં કો ઉદ્દેગ જનક હોને સે યહ ઉદ્દેગકરૂપ છે (ગિરવચ્ચલો) પર પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કી અપેક્ષા

અસમીક્ષ્યકારી લોકો દ્વારા કરાતો હોવાથી સાહસિક છે, “અણારિઓ” મ્લેચ્છ લોકો દ્વારા આચરિત હોવાથી અનાર્ય છે “નિર્ગિઓ” પ્રાણવધ કરનાર મનુષ્યને પાપ પ્રત્યે ઘૃણા થતી નથી, તેથી તે પ્રાણવધ પણ નિર્ધણુરૂપ છે, “નિસ્સસો” કૂર લોકો તેનું સેવન કરે છે તેથી તે નૃશમરૂપ છે, “મહઞ્મઓ” તે કરતી વખતે કરનારને મહાન્ ભયનું કારણ તે બને છે તેથી તે મહા ભયરૂપ છે “પદ્મઓ” સઘળા પ્રાણીઓને તે ભયના કારણરૂપ હોવાથી પ્રતિભયરૂપ છે ‘અદ્મઓ’ મૃત્યુના ભયનો જનક હોવાથી તે અતિ ભયરૂપ છે “વીહળઓ” ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી તે ભયાનક છે “તાસળઓ” હૃદયમાં અકસ્માત ઉદ્દેગનો જનક હોવાથી તે ત્રામનકરૂપ છે, “અગજ્જઓ” ન્યાયરહિત હોવાથી તે અન્યાય રૂપ છે, “ઉવ્વેયળઓ” જીવોમાં ઉદ્દેગ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી તે ઉદ્દેગકરૂપ રૂપ છે “ગિરવચ્ચલો” પર પ્રાણીઓનું રક્ષણ કરવાની અપેક્ષાથી—રહિત

“ सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं ।

उउमत्थाण दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सुइय इइणा ॥१॥ ” इति ।

जो सुखाभिलाषी प्राणी हैं उनका कर्त्तव्य है कि वे श्रुतज्ञान का अविनय छोड़ें । छद्मस्थों की दृष्टि अपूर्ण रहती है यही बात यहा ‘इति’ इस पद से सूचित की है ॥१॥ ॥सू०४७॥

॥ प्रथम आस्रव—‘अधर्म’ द्वार समाप्त ॥

“ सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं ।

उउमत्थाणं दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सुइय इइणा ॥१॥ इति ॥

सुखाभिलाषी जीवोनु कर्त्तव्य छे के तेमणे श्रुतज्ञानने अविनय करवानु छोडी देवु नेधजे छद्मस्थोनी दृष्टि अपूर्ण रहै छे, जेन बात ‘इति’ पद द्वारा अर्द्धी सूचित करवामा आवी छे ॥ सू ४७ ॥

आ रीते हिमादि पञ्चाभ्रव द्वारमा प्राणुवध नामनु

प्रथम द्वार समाप्त थयुं.

इति ब्रवीमि-हे जम्बू ! इति=पूर्वोक्तं प्राणिवधस्वरूपनिरूपण, तत्फलचतुर्गति-
भ्रमणलक्षणमर्थं चेति तीर्थङ्करस्य भगवतो महावीरस्य सकाशान्मया साक्षात् श्रुत
ब्रवीमि=कथयामि न तु स्वबुद्धिपरिकल्पितम् । यतः स्वबुद्ध्या कथने श्रुतज्ञान
स्याविनयो भवति, किञ्च-छद्मस्थाना दृष्टयोऽप्यपूर्णा भवन्ति तस्माद् यथा भगव-
त्प्रतिपादितमेव त्वां ब्रवीमि=उपदिशामीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च—

“ सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहादिलासीहि ।

छउमत्थाण दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सुइय इहणा ॥१॥ ” इति । सू ४९॥

इतिश्री-जैनाचार्य-जैनधर्मद्विराकर-पूज्य श्री' घासीलालप्रतिविरचिताया

प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया

हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु प्राणवधाख्य प्रथमम्—

अधर्मद्वार समाप्तम् ॥ १ ॥

स्वामी श्री जंबूस्वामी से कहते हैं- (त्तिबेमि) हे जंबू ! प्राणवध का यह
पूर्वोक्त स्वरूप निरूपण तथा चतुर्गति भ्रमणरूप उसका फल मैंने साक्षात्
तीर्थंकर भगवान् महावीर के पास सुना है सो उसी के अनुसार यह
तुमसे कहा है । इसमें मैंने अपनी ओर से कल्पित कर कुछ भी
नहीं कहा है, क्यों कि अपनी बुद्धिसे कल्पित कर कथन करने में
श्रुतज्ञान का अविनय होता है । तथा जबतक छद्मस्थावस्था रहती है
तबतक ज्ञानकी मात्रा भी अपूर्ण रहती है अतः अपनी ओर से प्रतिपा-
दित वस्तु का स्वरूप यथावत् प्रतिपादित नहीं हो सकता है, इसलिये मैंने
जो यह प्रवचन स्वरूप कहा है वह भगवान् द्वारा प्ररूपित ही
कहा है । कहा भी है—

કહે છે—“ ત્તિબેમિ ” હે જમ્બૂ ! પ્રાણવધનુ આ પૂર્વકથિત સ્વરૂપ નિરૂપણ
તથા ચાર ગતિમા ભ્રમણરૂપ તેનુ ફળ મેં સાક્ષાત્ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર
પાસે સાંભળેલ છે, અને તેમણે કહ્યા પ્રમાણે જ તે તમને કહ્યું છે તેની અદર
મેં મારી પોતાની કલ્પનાનુ કાંઈ પણ ઉમેર્યું નથી, ડારણ કે પોતાની બુદ્ધિથી
કલ્પના કરીને કહેવાથી શ્રુતજ્ઞાનનો અવિનય થાય છે તથા જ્યાં સુધી છદ્મસ્થ
રહે છે ત્યાં સુધી જ્ઞાનનુ પ્રમાણ પણ અપૂર્ણ હોય છે, તેથી પોતાનાથી પ્રતિ
પાદિત વસ્તુનુ સ્વરૂપ યથાવત્ (જેવુ હોય તેવુ જ) પ્રતિપાદિત થઈ શકતુ
નથી, તેથી મેં આ જે પ્રવચનસ્વરૂપ કહ્યું છે તે ભગવાનદ્વારા જે પ્રમાણે
પ્રરૂપિત છે તે પ્રમાણે જ કહ્યું છે કહ્યું પણ છે—

પરપીલાકારગં પરમકિણ્હલેસ્સસહિય દુગ્ગઈ વિણિવાયવિવઙ્ગુણં
ભવપુણઞ્ભવકરં ચિરપરિચિયમણુગતં દુરત કિત્તિયં વિત્તિયં
અધમ્મદારં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—હે જમ્બૂ ! ઇહ=અસ્મિન્ જિનશાસને ‘સ્વલ્લિતિ’ નિશ્ચયેન ‘વિદ્ય
ચ’ દ્વિતીય ચ આસ્રવદ્વારમ્ ‘અલિયવચણ’ અલીકવચનમ્=અસત્યભાષણ નામ ।
અસ્યાપિ “યાદશો ૧, યન્નામ ૨, યથાકૃતો ૩, યાદશ ફલ દદાતિ ૪, યેઽપિ
ચ કુર્વન્તિ પાપાઃ ૫,” ઇતિ પશ્ચભિરન્તર્દારૈઃ પૂર્વયત્ નિરૂપણ ક્રિયતે । તત્ર ચ
યથાક્રમ ‘યાદશ’ ઇતિ દ્વારમાશ્રિત્યાલીકવચનસ્વરૂપમાહ—‘લહુ’ ઇત્યાદિ—
‘લહુસગ લહુચવલ ભણિય’ લઘુસ્વકલઘુચપલભણિત, લઘુઃ=તુચ્છો ગૌરવવર્જિત
સ્વઃ=સ્વભાવો યેપા તે લઘુસ્વકાઃ, તેભ્યોઽપિ લઘવશ્ચપલાશ્ચ=ચશ્ચલકાયા ચે તૈ

ટીકાર્થ—(જમ્બૂ) હે જમ્બૂ ! (ઇહ) હન જિન શાસનમે (સ્વલુ) નિશ્ચયસે
(વિદ્ય ચ અલિયવચણ) દ્વિતીયઆસ્રવ અલીક(અસત્ય)વચન અસત્યભાષણ
નામકા હૈ । હસકા મી યહ “અલીકવચનરૂપ આસ્રવદ્વારજૈસા હૈ ૧, જિતને
હસકે નામહૈ ૨, પ્રાણિયોં દ્વારા યહ જિન મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોં સે
કિયા જાતા હૈ ૩, જિસ પ્રકાર કા ઉન્હે નરકાદિરૂપફલ દેતા હૈ ૪,
તથા જો પાપી જીવ હસ અસત્યભાષણ કો કરતે હૈ ૫” હન પાચ અન્ત-
ર્દારોં દ્વારા પૂર્વ કી તરહ નિરૂપણ કિયા જાવેગા । અવ સૂત્રકાર ક્રમા-
નુસાર “યાદશઃ” હસ દ્વાર કો આશ્રિત કરકે અલીક(અસત્ય)વચનકે
સ્વરૂપકો કહતે હૈ—(લહુસગલહુચવલભણિય) જિનકા સ્વભાવ ગૌરવ
વર્જિત હૈ તેસે જીવોં સે મી જો હીન હૈ લઘુ હૈ, વે લઘુસ્વક લઘુ હૈ તથા

ટીકાર્થ—“જમ્બૂ” હે જમ્બૂ ! “ઇહ” આ જૈનશાસનમા “સ્વલુ”
ખરેખર, “વિદ્ય ચ અલિયવચણ” ખીજો આસ્રવ અલીક વચન—અસત્ય ભાષણ
નામનો છે તેનુ પણ નીચે પ્રમાણેના પાચ અતદ્વારો દ્વારા, આગળના આસ્રવ
દ્વારની જેમ જ, નિરૂપણ કરવામા આવશે (૧) આ અસત્ય વચનરૂપ આસ્રવ-
દ્વાર કેણુ છે ? (૨) તેના કેટલા નામ છે ? (૩) પ્રાણીઓ દ્વારા તે કયા કયા
મદ, તીવ્ર આદિ પ્રિણામોથી સેવાય છે ? (૪) કેવા પ્રકારના નરકાદિરૂપ ફળ
તેને આપે છે ? (૫) તથા કયા કયા પાપી જીવ અસત્ય બોલે છે ?

હવે સૂત્રકાર અનુક્રમે “યાદશ” આ દ્વારનો આધાર લઈને અસત્ય
વચનનુ સ્વરૂપ દર્શાવે છે—“લહુસગલહુચવલભણિય” ગૌરવહીન સ્વભા-
વના જીવોથી પણ જે હીન છે—લઘુ છે, તેઓ ‘લઘુસ્વક લઘુ’ હીનમા હીન
ગણાય છે એવા લઘુસ્વતક લઘુ દ્વારા તથા અચળ મનવાળા દ્વારા બોલવામા આવત

અથ દ્વિતીયમધ્યયનમ્ ।

વ્યાખ્યાત પ્રથમમાસ્રવદ્વાર, સામ્પ્રત દ્વિતીયમારમ્બ્યતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સદ્વા
યમભિસમ્બન્ધઃ પૂર્વ યાદશ નામ-કર્તુ-ફલાદિનિરૂપણપૂર્વક પ્રથમાસ્રવદ્વારરૂપ
પ્રાણવધસ્વરૂપમુક્તમ્ । તસ્ય હેતુત્યાત્ ‘યથોદ્દેશ નિર્દેશઃ’ ઇતિ ન્યાયપ્રાપ્તવાન્વે-
ત્યસ્મિન્ દ્વિતીયાધ્યયનેડલીકવચન સ્વરૂપાદિનિરૂપણપૂર્વક પ્રદર્શયતે, તસ્યેદમાદિ
સૂત્રમ્-‘ઇહ ચલુ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-ઇહ ચલુ જવૂ વિદ્ય ચ અલિયવયણં લહુસગ-લહુ
ચવલ ભણિયં, ભયકરં, દુહકર, અજસકર, વેરકારગં, રતિ-અરતિ
-રાગદોસમણસંકિલેસવિચરણં અલિય નિયહિસાતિ જોગવહુલં
નીયજણનિસેવિયં નિસ્સંસ અપ્પચ્ચયકારગ પરમસાહુગરહણિજ્ઞ

દ્વિતીય દ્વાર પ્રારમ્ભ

પ્રથમ આસ્રવ દ્વાર કા અર્થ કહ દિયા ગયા હૈ, અવ દ્વિતીય આસ્રવ
દ્વાર પ્રારમ્ભ હોતા હૈ । અવ આસ્રવદ્વાર કા પૂર્વ આસ્રવદ્વાર કૈ સાથ હસ
પ્રકાર સૈ સવધ હૈ-પૂર્વ આસ્રવદ્વાર મૈ સ્વરૂપ, નામ કર્તા ઔર ફલ
આદિ કૈ નિરૂપણ પૂર્વક પ્રથમ આસ્રવદ્વારરૂપ પ્રાણવધ કા સ્વરૂપ કહા
હૈ અવ ડસકા હેતુ હોને સૈ તયા “યથોદ્દેશ નિર્દેશઃ” ઉદ્દેશ કૈ અનુ
સાર હી નિર્દેશ હોતા હૈ હસ નિયમ કૈ અનુસાર ન્યાયપ્રાપ્ત હોને સૈ હસ
દ્વિતીય આસ્રવદ્વાર મૈં અલીક વચન કા ડસકૈ સ્વરૂપ આદિ કા નિરૂપણ
પૂર્વક કથન કિયા જાતા હૈ । હસ આસ્રવદ્વાર કા આદિમ સૂત્ર યદ હૈ-
‘ઇહ ચલુ જવૂ’ ઇત્યાદિ ।

ખીજ દ્વારનો પ્રારમ્ભ

પહેલા આસ્રવદ્વારનો અર્થ ડહેવાઈ ગયો, હવે ખીજા આસ્રવદ્વારનુ
વિવેચન શરૂ થાય છે આ આસ્રવદ્વારનો આગળના આસ્રવદ્વાર સાથે આ પ્રકાર-
નો સબધ છે-આગળના આસ્રવદ્વારમા સ્વરૂપ, નામ, કર્તા, ફળ આદિનુ
નિરૂપણ કરીને આસ્રવદ્વારરૂપ પ્રાણવધનુ સ્વરૂપ બતાવ્યુ છે હવે તેના હેતુરૂપ
હોવાથી, તયા “યથોદ્દેશ નિર્દેશ” ઉદ્દેશાનુસાર જ નિર્દેશ થાય છે તે નિય
માનુસાર ન્યાયયુક્ત હોવાથી આ ખીજા આસ્રવદ્વારમા અસત્ય વચનનુ-તેના સ્વ
રૂપાદિના નિરૂપણ સહિત વિવેચન કરવામા આવે છે આ આસ્રવદ્વારનુ પહેલુ
સૂત્ર આ છે-“ઇહ ચલુ જવૂ” ઇત્યાદિ

ટીકા—‘તસ્મ ય’ તસ્ય ચ મૃપાવાદસ્ય દ્વિતીયાસ્રવદારસ્ય ‘ગોણાણિ’ ગોણાણિ=ગુણનિષ્પન્નાણિ ‘તીસ’ ત્રિંશત્ ‘ણામાણિ’ નામાણિ ‘હુતિ’ ભવન્તિ ત જહા’ તદ્યથા—(૧) ‘અલિય’ અગ્રીક=નિષ્ફલ શુભફલવર્જિતત્વાત્, (૨) ‘સઢ’ ગઠ=રૂપટિજનસમાચરિતત્વાત્, (૩) ‘અણજ્જ’ અનાર્યમ્=અનાર્યજનોક્ત-

“જારિસઓ” ઇસે પ્રથમ દ્વાર મેં મૃપાવાદ કા સ્વરૂપ કહા ગયા હૈ, અથ સૂત્રકાર ‘જ નામા’ ઇસ દ્વિતીય દ્વાર મેં ઇમકે કૌન ૨ સે નામ હૈં વહ કહતે હૈ—‘તસ્મ ય ણામાણિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મ) ઇસ દ્વિતીય આસ્રવદાર રૂપ મૃપાવાદ કે (ગોણાણિ) ગુણ નિષ્પન્ન (તીમ) તીસ (ણામાણિ) નામ (હુતિ) હૈ (તજહા) વે ઇમ પ્રકાર હૈ—(અલિય ૧, સઢ ૨, અણજ્જ ૩, માયામોસો ૪, અસતક ૫, કઢકવડમવત્થુગ ૬, ચ નિરત્થયમવત્થય ૭ ચ, વિદેસગરહણિજ્જ ૮, અણજ્જુક ૯, કક્કણા ૧૦ ચ, વચ્ચણા ૧૧ ચ, મિચ્છાપચ્છાકઢ ૧૨ ચ, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉચ્ચૂલ ૧૫ ચ, અદ્ધ ૧૬, અઘ્મચ્ચણ ૧૭ ચ, કિચ્ચિસ ૧૮, વલ્લય ૧૯, ગહણ ૨૦ ચ, મમ્મણ ૨૧ ચ, નૂમ ૨૨, નિયર્દ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસયમઓ ૨૫, અસચ્ચસઘત્તણ ૨૬, વિવિચ્ચો ૨૭, ઉવહિય ૨૮, ઉવહિ અસુદ્ધ ૨૯, અવલો ૩૦ ત્તિ) ચહ અસત્ય-ભાષણ શુભફલો સે રહિત હોને કે કારણ અલીકફલ રહિત હોતા હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ અલીક હૈ ૧। રૂપટીજનોં કે દ્વારા ચહ અપના કામ

“જારિસઓ” આ પ્રથમ દ્વારમા મૃપાવાદ-અસત્ય વચન-નુ સ્વરૂપ કહે વામા આબ્ધુ છે હવે સૂત્રકાર “જનામા” એ પદોથી શરૂ થતા ખીન્ન દ્વારમા તેના કયા કયા નામો છે તે બતાવે છે—“તસ્મ ય ણામાણિ” ઇત્યાદિ ટીકાર્થ—“તસ્” આ ખીન્ન આસ્રવદારરૂપ મૃપાવાદના “ગોણાણિ” ગુણાનુમાર “તીસ” ત્રીસ “ણામાણિ” નામ “હુતિ” છે “ત જહા” તે આ પ્રમાણે છે

“અલિય ૧ સઢ ૨, અણજ્જ ૩, માયામોમો ૪, અસતક ૫, કઢકવડમ-વત્થુગ ૬, ચ, નિરત્થયમવત્થય ૭, ચ વિદેસગરહણિજ્જ ૮, અણજ્જુક ૯, કક્કણા ૧૦ ચ, વચ્ચણા ૧૧ ચ, મિચ્છાપચ્છાકઢ ૧૨ ચ, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉચ્ચૂલ ૧૫ ચ, અદ્ધ ૧૬, અઘ્મચ્ચણ ૧૭ ચ। કિચ્ચિસ ૧૮, વલ્લય ૧૯, ગહણ ૨૦ ચ, મમ્મણ ૨૧ ચ, નૂમ ૨૨, નિર્દ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસયમઓ ૨૫, અસચ્ચસઘયણ ૨૬, વિવિચ્ચો ૨૭, ઉવહિય ૨૮, ઉવહિઅસુદ્ધ ૨૯, અવલો ૩૦ ત્તિ” (૧) તે અસત્ય ભાષણ શુભ ફળોથી રહિત હોવાને કારણે “અલીક” ફળરહિત હોય છે તેથી તેનું નામ “અલીક” પડ્યું છે (૨)

મ્પરાડનુગત સમ્યગ્જ્ઞાનાભાગાત્, દુરન્ત=વિપાકદામ્ણત્વાત્ ' વિદ્ય ' દ્વિતીયમ્
'અધર્મદાર' અધર્મદ્વાર 'કિત્તિય' કીર્તિત=રુધિતમ્ ॥ સૂ. ૧ ॥

एतेन यादृश मृषायादस्वरूपमस्ति तत्प्रथमान्तद्वारे प्रोक्तम् । साम्प्रतं
'यन्नामे'ति द्वितीयान्तद्वारे तन्नामान्याह—'तस्स' इत्यादिना—

મૂલમ્--તસ્સ ય ણામાણિ ગોણાણિ હંતિ તીસં ત જહા-
અલિયં ૧, સઢં ૨, અણજ્જં ૩, માયામોસો ૪, અસંતકં ૫,
કૂડકવડમવત્થુગ ચ ૬, નિરત્થયમવત્થયંચ ૭, વિદેસગરહણિજ્જં
૮, અણુજ્જુક ૯, કક્કણા ચ ૧૦, વચ્ચણા ચ ૧૧, મિચ્છાપચ્છાકડ
ચ ૧૨, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉવ્વકૂલ ચ ૧૫, અટ્ટ ૧૬, અઠ્ઠ
વચ્ચાણં ચ ૧૭, કિવ્વિસ ૧૮, વલયં ૧૯, ગહણ ચ ૨૦ મમ્મણં
ચ ૨૧, નૂમ ૨૨, નિયઈ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસમઓ ૨૫,
અસચ્ચસઘત્તણ ૨૬, વિવચ્ચો ૨૭, ઉવહિયં ૨૮, ઉવહિ અસુદ્ધ
૨૯, અવલોવોત્તિ ૩૦, વિદ્યસ્સ ઇમાણિ એવમાદ્યાણિ નામ-
ધેજ્જાણિ હોતિ તીસ સાવજ્જસ્સ અલિયસ્સ વયજોગસ્સ
અણેગાહ ॥ સૂ. ૨ ॥

हुए मिथ्यात्व, अविरति के प्रवाह का विच्छेद नहीं होता है। (अणुगय)
सम्यग्ज्ञानका अभाव होने से यह जीव के साथ भवपरम्परानुगत होता
है। (दुरत) विपाक इसका बहुत ही अधिक दारुण होता है इसलिये
यह जीव के लिये दुरन्त कहा गया है। इस तरह से (विद्य) आ
इस द्वितीय अधर्म द्वार का (कित्तिय) सूत्रकार ने तीर्थकर परपरा के
वर्णन अनुसार वर्णन किया है ॥सू. १॥

હોવાને કારણે અનાદિ કાળથી લાગેલ મિથ્યાત્વ અવિરતિ આદિનો પ્રવાહ
તૂટતો નથી “અણુગય” સમ્યગ્ જ્ઞાનનો અભાવ હોવાથી તે જીવની સાથે
ભવપરંપરાનુગત હોય છે “દુરત” તેનો વિપાક “પરિણામ” ધણે જ દારુણ
હોય છે, તેથી તે જીવને માટે દુરન્ત દર્શાવાયું છે આ રીતે “વિદ્ય” આ
બીજા અધર્મદ્વારનું ‘કિત્તિય’ સૂત્રકારે તીર્થકર પરપરાએ કરેલ વર્ણન પ્રમા
ણેનું વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂ-૧ ॥

વિદ્વેષગર્હણીય=વિદ્વેષાત્=વિદ્વેષસમૃતત્વાદ્ દ્વમલીકવચન ગર્હણીય=નિન્ધ મહા-
પુરુષૈઃ, (૯) 'અણુજુક' અનુજુકમ્ =અમરલ-સરલભાવવર્જિતમિત્યર્થઃ, (૧૦)
'કલ્કના ય' કલ્કના ચ=પાપ પ્રાણાતિપાતાદિરૂપમ્, (૧૧) 'વચના ય' વચ્ચના
=પ્રતારણા, (૧૨) 'મિથ્યાપચ્છાદ્ ચ' મિથ્યાપચ્છાત્ કૃત=મિથ્યેતિતુદ્ધ્યા
સાધુભિઃ પચ્છાત્ કૃત = પૃષ્ઠે કૃત તિરસ્કૃતમિત્યર્થ, (૧૩) 'સાતિ' સાતિ =
અવિશ્વાસ, (૧૪) 'ઉત્સુત્ત' ઉત્સૂત્રમ્-વિરુદ્ધાર્થ-નિરૂપણમ્, (૧૫) 'ઉત્કૂલ'
ઉત્કૂલ=સન્માર્ગતટાત્ પરિભ્રષ્ટકારકમ્, (૧૬) 'અટ્ટ' આર્તમ્, આર્તધ્યાનહેતુ-

લિયે હસકા નામ અપાર્થ છે ૭। યદ વિદ્વેષ સે ભરા રહને કે કારણ ગર્હ-
ણીય હોતા હૈ-મહાપુરુષો દ્વારા નિન્ધ હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ
વિદ્વેષ ગર્હણીય હૈ ૮। હસમેં ભાવોં કી સરલતા નહીં હોતી હૈ, અર્થાત્-
યદ સરલ સ્વભાવ સે વર્જિત રહતા હૈ હસલિયે હસકા નામ અનુજુક
હૈ ૯। કલ્કના શબ્દ કા અર્થ પાપ હૈ, યદ મૃપાવચન પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ
હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ કલ્કના હૈ ૧૦। હસમેં દૂસરોં કી પ્રતા
રણા હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ વચના હૈ ૧૧। મિથ્યા સમજ્ઞકર
સાધુ પુરુષ હસકા તિરસ્કાર કરતે હૈ હસલિયે હસકા નામ મિથ્યાપચ્છા-
ત્કૃત હૈ ૧૨। સાતિ શબ્દ કા અર્થ અવિશ્વાસ હૈ, મિથ્યાભાષણ વિશ્વાસ
રહિત હોતા હૈ। હસલિયે હસકા નામ સાતિ હૈ ૧૩। વિરુદ્ધ અર્થ વા
હસમે નિરૂપણ હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ ઉત્સૂત્ર હૈ ૧૪। જીવ કો
યદ સન્માર્ગ રૂપ તટ સે ભ્રષ્ટકર દેતા હૈ હસલિયે હસકા નામ ઉત્કૂલ
હૈ ૧૫। યદ આર્તધ્યાન કા હેતુ હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ આર્ત હૈ

નામ 'અપાર્થ' છે (૮) તે વિદ્વેષથી પૂર્ણ હોવાથી ગર્હણીય-મહાપુરુષો
દ્વારા નિન્ધ-હોય છે, તેથી તેનું નામ "વિદ્વેષ ગર્હણીય" છે (૯) તેમાં ભાવોની
સરલતા હોતી નથી, એટલે કે તે મરણ સ્વભાવથી રહિત હોય છે, તેથી તેનું
નામ "અનુજુક" છે "કલ્કના" શબ્દનો અર્થ પાપ થાય છે (૧૦) તે
મૃપાવચન પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ હોય છે, તેથી તેનું નામ "કલ્કના" છે (૧૧)
તે અસત્ય વચન વડે અન્યની પ્રતારણા થાય છે, તેથી તેનું નામ "વચના"
છે (૧૨) મિથ્યા સમજીને સાધુ પુરુષ તેનો તિરસ્કાર કરે છે, તેથી તેનું
નામ "મિથ્યાપચ્છાત્કૃત" છે (૧૩) "સાતિ" શબ્દનો અર્થ 'અવિશ્વાસ' થાય
છે, તેથી તેનું નામ "સાતિ" છે (૧૪) વિરુદ્ધ અર્થનું તેમાં નિરૂપણ થાય
છે, તેથી તેનું નામ "ઉત્સૂત્ર" છે (૧૫) જીવને તે સન્માર્ગરૂપ ઝિનારેથી
ભ્રષ્ટ કરે છે માટે તેનું નામ "ઉત્કૂલ" છે (૧૬) તે આર્તધ્યાનના હેતુરૂપ
હોય છે, તેથી તેનું નામ "આર્ત" છે (૧૭) તેના દ્વારા અમત્-અવિદ્યમાન

ત્વાત્, (૪) 'માયામૃષો' માયામૃષા=માયાપૂર્વકસ્થાપ્યભાષણસ્ય માયામૃષેતિ
 નામ, (૫) 'અસંતક' અસત્ક=અવિધમાન-સત્ યસ્મિન્સ્તદસત્કમ્=અસત્યમ્, (૬)
 'કૂટકપટાવસ્તુક' કૂટકપટાવસ્તુક=તત્ર કૂટં=પરવચ્ચનાર્થ ન્યૂનાધિકભાષણં કપટં
 ભાષાવિપર્યયકરણમ્ અવસ્તુ=અવિધમાનવસ્તુ કથનમ્=યથા- 'જગતઃ કર્તા ઇશ્વરઃ'
 इत्यादि कथनम् कृटादीना त्रयाणां समानार्थत्वादेकतमत्वे नैव गणनादिदमेक
 नाम, (૭) નિરર્થકમવર્થક ચ 'નિર્ર્થકમપાર્થક ચ = નિર્ગતોડર્યોયસ્મિન્સ્તત્ =
 सत्यार्थ हीनम्, अपार्थम्=अपगतार्थमसम्प्रदार्थमित्यर्थः, (૮) 'ત્રિદેસગરહણિજ્ઞં'

ધનાને કે લિયે પ્રયોગ સે લાયા જાતા હૈ ઇસલિયે ઇમકા દૂસરા નામ
 શઠ હૈ ૨ । અનાર્થજનો દ્વારા યદ્ બોલા જાતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ
 અનાર્થ હૈ ૩ । યદ્ અસત્યભાષણ માયા પૂર્વક હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા
 નામ માયામૃષા હૈ ૪ । અસત્યભાષણ મેં જો વિષય કહા જાતા હૈ વદ્
 ઉસરૂપ મેં નહીં હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અસત્ય હૈ ૫ । પરવચન
 કે લિયે ઇસમેં ન્યૂનાધિક બોલના પડતા હૈ, તથા ઇસમેં બોલને કી ભાષા
 કી શૈલી ભી ભિન્ન પ્રકાર કી હોતી હૈ, ઓર જો વસ્તુ ઇસમેં કહી જાતી
 હૈ વદ્ અવિદ્યમાન હોતી હૈ, જૈસે યોં કહના કિ જગત કા કર્તા ઇશ્વર
 હૈ સો યદ્ કૂટકપટાવસ્તુક નામ કા અસત્ય હૈ । યદ્ કૂટ કપટ અવ-
 સ્તુક, ઇન ત્રીનોં કી સમાનાર્થકતા હોને કે કારણ એક પદ રૂપ સે
 ગિનતી કરલી ગઈ હૈ ૬ । યદ્ ભાષણ સત્યાર્થ સે હીન હોતા હૈ ઇસલિયે
 ઇસકા નામ નિર્ર્થક હૈ । ઇસમેં વાચ્ય અર્થ, સવધ વિહીન રહતા હૈ ઇસ-

કપટી લોકો દ્વારા પોતનુ કાર્ય સાધવા માટે તેનો પ્રયોગ કરાય છે, તેથી તેનુ
 બીજુ નામ “શઠ” છે, (૩) અનાર્થજન દ્વારા તે બોલાય જે તેથી તેનુ
 ત્રીજુ નામ “અનાર્થ” છે (૪) તે અસત્ય ભાષણ માયા પૂર્વક થાય છે તેથી
 તેનુ ચોથુ નામ “માયામૃષા” છે (૫) અસત્ય ભાષણમા જે વિષયનુ કથન
 કરાય છે તે યથાર્થ-સાચા સ્વરૂપે-ડરાતુ નથી તેથી તેનુ પાંચમુ નામ ‘અસત્ય’
 છે (૬) અન્યની વચનાને માટે તેમા ન્યૂનાધિક બોલવુ પડે છે, અને તે બોલ
 વાની શૈલી પણ જુદા જ પ્રકારની હોય છે, અને જે વસ્તુ તેમા કહેવાય છે
 તે અવિદ્યમાન હોય છે, જેમ કે “જગતનો કર્તા ઇશ્વર છે” તે પ્રમાણે કહેવુ
 તે આ પ્રકારના આ પ્રકારના અસત્યને ‘કૂટકપટાવસ્તુક અસત્ય’ કહે છે
 અહીં કૂટ, કપટ અને અવસ્તુક એ ત્રણે પદોથી સમાનાર્થકતા હોવાથી એક જ
 પદ રૂપે ગણવામા આવેલ છે (૭) તે ભાષણ સત્યાર્થ રહિત હોય છે તેથી
 તેનુ નામ નિર્ર્થક છે તેમા વાચ્ય અર્થ, સવધ રહિત હોય છે તેથી તેનુ

મઓ ' અસમ્મતઃ=ન્યાયજ્ઞેરનાચરિતઃ, (૨૬) ' અસન્નચસપ્તણ ' અસત્યસન્નધત્વમ્=અસત્ય-સન્નધાતિ=સમ્મિશ્રયતિ સતત ય' સોડસત્યસન્નસ્તસ્ય ભાવોડમત્યસન્નધત્વ=મૃપાભાપિ ધર્મઃ, (૨૭) ' વિપક્ષો ' વિપક્ષ=મત્ય પ્રતિકૂલત્વાત્ (૨૮) ઉપહિ ય ' ઔપધિક=માયામયમ્=રૂપટગૃહમિત્યર્થઃ, (૨૯) ઉપહિ અસુદ્ધ ' ઉપ'યથુદ્ધમ્=ઉપધિઃ=સાવધકર્મ તેનાશુદ્ધમ્, (૩૦) ' અપ્લોપ્તોત્તિ ' અપલોપ ઇતિ=કુર્યાણોડપિ ' નાહ કરોમિ કિચ્ચિ 'દિત્યાદિભિર્વસ્તુ પ્રચ્છાદનમ્ ' વિદ્યસ્સ ' દ્વિતીયસ્યાધર્મ દ્વારસ્ય ' ઇમાણિ ' ઇમાણિ=પૂર્વોક્તાણિ ' એવામાડયાણિ ' એવામાદિકાણિ-અલીકા-દીણિ ' સાવજ્જસ્સ ' સાવજ્જસ્ય પાપસન્નિત્તસ્ય ' અલિયસ્સ ' અલીકસ્ય=મૃપાવા-

ન્યાયજ્ઞ પુરુષો દ્વારા યદ્ અસમત હૈ-વે પુરુષ ઇસકા કમી મી સેવન નહીં કરતે હૈ ઇસલિયે યદ્ અસમત હૈ ૨૫ । યદ્ મૃપાભાપિયો કા ધર્મ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અમત્યસઘાત હૈ ૨૬ । સત્યભાષણ કા યદ્ વિપક્ષી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ વિપક્ષ હૈ । કપડો કા યદ્ ઘર હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ ઔપધિક હૈ ૨૮ । સાવધકર્મો સે યદ્ સતત અપ-વિત્ર ઘના રહતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ ઉપધ્યશુદ્ધ હૈ ૨૯ । ઉપધિ શબ્દ કા અર્થ સાવધકર્મ હૈ । કાર્ય કરતા હુઆ મી વ્યક્તિ ઇસકે પ્રભાવ સે પ્રભાવિત હોકર કહદિયા કરતા હૈ કિ મે કુછ મી નહીં કર રહા હૈ । ઇસ તરહ ઇમકે દ્વારા વસ્તુ કા પ્રચ્છાદન હોતા હૈ-અતઃ ઇસકા નામ અપલોપ હૈ ૩૦ । (વિદ્યસ્સ) ઇસ તરહ દ્વિતીય અર્ધધર્મદ્વાર કે (ઇમાણિ) યે પૂર્વોક્ત અલીક આદિ (ત્રીસ નામધેજ્ઞાણિ) ગુણનિષ્પન્ન ત્રીસ નામ હૈ । તથા (એવામાડયાણિ) ઇનસે અતિરિક્ત ઔર મી ઇમી

તેને માન્ય કરતા નથી-તેઓ તેનુ ડહી પણ એવન કુગ્તા નથી, તેનુ નામ ' અસમત " (૨૬) તે અમત્ય વચન મૃપાવાદીઓનો ધર્મ છે, તેથી તેનુ નામ " અસત્યસઘાત " ૨ (૨૭) સત્ય ભાષણનુ તે વિપક્ષી-વિરુદ્ધનુ છે, તેથી તેનુ નામ " વિપક્ષ " છે (૨૮) ઉપદેશનુ તે ધામ છે, તેથી તેનુ નામ " ઔપધિક " છે (૨૯) સાવધ કર્મથી તે સતત અપવિત્ર રહે છે, તેથી તેનુ નામ, ' ઉપ-ધ્યશુદ્ધ " છે ' ઉપધિ ' ગ્રંથનો અર્થ સાવધ કર્મ છે, (૩૦) કાર્ય કરતી વ્ય-ક્તિ પણ તેના પ્રભાવની અમર નીચે આવી જઈને ડહી દે છે કે " હુ કંઈ કરતો નથી " આ રીતે તેના દ્વારા વસ્તુનુ પ્રચ્છાદન થાય છે, તેથી તેનુ નામ " અપલોપ " છે " વિદ્યસ્સ " આ રીતે બીજા અર્ધધર્મદ્વારના " ઇમાણિ " પૂર્વોક્ત અલીક આદિ " ત્રીસ નામ ધેજ્ઞાણિ " ગુણાનુસાર ત્રીસ નામ છે તથા " એવામાડયાણિ " તે ઉપરાન્ત બીજા પણ તે ૪ પ્રકારના " સાવજ્જસ્સ " પાપ

ત્યાત્ (૧૭) 'અભ્યર્ચણ' અભ્યાસ્યાનમ્=અસંવોદારોપણમ્, (૧૮) 'કિલ્વિષં' કિલ્વિષ=પાપ-પ્રાણાતિપાતાદિહેતુત્યાત્, (૧૯) 'વલય' વલયમિત્ર વક્રત્વાદ્ કુટિલમિત્યર્થઃ, (૨૦) 'ગહન' ગહન=ગહનમિત્ર ગહન-યનમિત્ર દુરવગાહમિત્યર્થઃ, (૨૧) 'મમ્મણ' મન્મનમ્ = મન્મનમિત્ર મન્મનમ્ અસ્ફુટત્યાત્ । (૨૨) 'નૂમ' છાદન=પરગુણાચ્છાદને પિધાનમિત્ર, (૨૩) 'નિયર્દ' નિકૃતિઃ=માયાચ્છાદનાર્થ વચન વિપ્રલમ્બન વા, (૨૪) 'અપ્રત્યયો' અપ્રત્યયઃ=અવિશ્વાસઃ (૨૫) 'અસ

૧૬ । इसके द्वारा असत्-अचिद्यमान दोषों का आरोपण किया जाता है इसलिये इसका नाम अभ्याख्यान है १७ । यह प्राणातिपात आदि पापों का हेतु होता है इसलिये इसका नाम किल्बिष है १८ । वलय के जैसा यह कुटिल रहा करता है इसलिये इसका नाम वलय है १९ । वन के समान यह दुरा वगाह होता है इसलिए इसका नाम गहन है २० । जिस प्रकार तोतली बोली में शब्दस्फुट नहीं हों पाते हैं उसी प्रकार इसमें भी वस्तु का वास्तविक भान अस्फुट रहा करता है इसलिये इसका नाम मम्मण है २१ । जिस तरह ढक्कन वस्तु को ढाक देता है उसी प्रकार यह भी पर के गुणों को आच्छादन कर देता है इसलिए इसका नाम नूम है । नूम नाम छादनका है २२, इसमें बोलनेवाला अपनी मायाको ढकने का प्रयास करता है, अथवा दूसरों को ढकने का उपाय रचता है इसलिये इसका नाम निकृति है २३ । कोई भी सज्जन पुरुष झूठ वचन का विश्वास नहीं करते हैं इसलिये इसका नाम अप्रत्यय-अविश्वास है २४ ।

દોષોનુ આરોપણ કરાય છે તેથી તેનુ નામ “અભ્યાસ્યાન” છે (૧૮) તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાપોનુ કારણ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “કિલ્વિષ” છે (૧૯) વલયના જેવુ તે કુટિલ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “વલય” છે (૨૦) વનના જેવુ તે ગહન હોય છે, તેથી તેનુ નામ “ગહન” છે (૨૧) જેમ તોતડા વચનો બરાબર અમલ શકાતા નથી એજ પ્રમાણે અસત્ય ભાષણુમા પણ વાસ્તવિકભાવ અસ્ફુટ-અસ્પષ્ટ રહ્યા કરે છે, તેથી તેનુ નામ “મમ્મણ” છે (૨૨) જેમ ઢાકણા વડે વસ્તુને ઢાકી દેવાય છે, એ જ રીતે અસત્ય વચન પણ શુણોને ઢાકી દેનાર હોવાથી તેનુ નામ ‘નૂમ’ છે ‘નૂમ’ એટલે આચ્છાદન-આવરણ (૨૩) અસત્ય ભાષણુમા બોલનાર પોતાની માયાને ઢાકવાનો પ્રયાસ કરે છે, અથવા બીજાને ઢાકી દેવાના ઉપાય રચે છે, તેથી તેનુ નામ “નિકૃતિ” છે (૨૪) ડોઘ પણ સજ્જન પુરુષ અસત્ય વચન પર વિશ્વાસ મૂકતા નથી, તેથી તેનુ નામ અપ્રત્યય “અવિશ્વાસ” છે, (૨૫) ન્યાયજ્ઞ પુરુષો

‘ સ્વરક્ષા ’ સ્વરક્ષાઃ=શુરપાલાઃ-રાજગ્રાહ્યદ્રવ્યસગ્રાહકા इत्यर्थः, ‘ જિયજૂય-
કરા ’ જિતઘૂતકરા=તત્ર જિતાઃ=પ્રતિસ્પર્ધિતૃતરૈ પરાજય પ્રાપ્તાઃ, ઘૂતકરાઃ=
ઘૂતક્રીડકાઃ ‘ ગદિયગદ્દના ’ ગૃહીતગ્રહણાઃ = ગૃહીતાનિ=સ્થાપિતાનિ ગ્રહણાનિ
= વન્ધક દ્રવ્યાણિ ચૈસ્તે ‘ કક્કગુરુગકારગા ’ કલ્કગુરુકકારકા = કલ્કગુરુક
=માયા સમાસમૃત ગ્રામ્ય તત્કારકાઃ=કપટિન इत्यर्थः, કુલિંગી ’ કુલિન્નિનઃ=
કુત્સિતા લિન્નિનઃ કુલિન્નિનઃ=કુતીર્થિકાઃ ‘ ઉવહિયા ’ ઔપધિકાઃ=માયાચારિણઃ
કપટિન इत्यर्थः ‘ ગાણિયગા ’ ગાણિજકાઃ=વ્યાપારકારિણઃ, ‘ કૂડતુલકૂડમાણી ’
કૂડતુલાકૂડમાનિનઃ=કૂટા=કપટયુક્તા-ન્યૂનાધિકા તુલા યેષા તે કૂટતુલાઃ કૂટ-
માનિનઃ=કૂટ=ત્રૈપમ્યયુક્ત યન્માન=તોલન તદસ્તિ યેષા તે તથા ‘ કૂડકાહાવણોવ
જીવયા ’ કૂટકાર્પાવણોવજીવિતાઃ=કૂટકાર્પાવણેન ઉપજીવન્તિ ચે તે તથા-કૂટ
મુદ્રોપજીવિન इत्यर्थः, ‘ પડકારગા ’ પટકારકાઃ-તન્તુવાયાઃ-વસ્ત્રનિર્માપકા इत्यर्थः,

इसी तरह (चारभडा) जो चार गुप्तचर-सी. आई. डी होते हैं, भट-
योधा होते हैं, (स्वरक्षणा) स्वरक्ष-राजग्राह्यद्रव्य के सग्राहक होते
हैं, (जियजूयकरा) जितघूतकर-प्रतिस्पर्धि जुआरियों द्वारा पराजित
हुए जुआरी होते हैं, (गदियगदहणा) गृहीतग्रहण-गदना रखकर जो
दूसरों को व्याज पर रूप्या देने वाले होते हैं (कक्कगुरुगकारगा) कल्क
गुरुक कारक-मायाचारी से भरे हुए वचनों को बोलने वाले होते हैं,
अर्थात् कपटी होते हैं, (कुलिंगी) कुतूर्थिक होते हैं, (उवहिया) औप-
धिक-मायाचारी होते हैं, (गाणियगा) गाणिजनक-व्यापारी होते हैं,
असत्यभाषण करते हैं । (कूडतूलतूलमाणी) जो न्यूनाधिक तराजू
रखते हैं, नापने तौलने के बाट कमती बढ़ती रहते हैं (कूडकाहावणो-
वजीविया) बनावटी रूप्या पैसा बनाकर जो अपना निर्वाह करते हैं,

એજ પ્રમાણે “ચારમઢા” જે ગુપ્તચરો-સી આઈ ડી હોય છે, ભટ-યોદ્ધા હોય છે,
જે “સ્વરક્ષના” અડરક્ષ-રામ્ય ભાગના દ્રવ્યનો સગ્રહ કરનાર હોય છે, જે
“જિયજૂયકરા” જિતઘૂતકર-પ્રતિસ્પર્ધિ જુગારી દ્વારા પરાજિત થયેલા જુગારી
હોય છે, “ગદિયગદ્દના” ગૃહીત ગ્રહણ-ગદના રાખીને જે બીજા લોકોને
વ્યાજે નાણા ધીરનાર હોય છે, “કક્કગુરુગકારગા” કલ્ક ગુરુક કારક જે
માયાચારી વચનો બોલનારા હોય છે-કપટી હોય છે, “ગાણિયગા” જે વ્યા-
પારી હોય છે, જે “કુલિંગી” કુતીર્થિક હોય છે, “ઉવહિયા” જે ઔપધિક
માયાચારી હોય છે, તે અસત્ય બોલે છે “કૂડતૂલતૂલમાણી” જે ખોટા
ત્રાજવા રાખે છે, માપવા તથા ભેખવાના માપ વધારે કે ઓછા રાખે છે,
“કૂડકાહાવણોવજીવિયા” નકલી રૂપીઆ, પૈસા આદિ બનાવીને જે લોકો

સગ્રાહ્યાઃ । ‘ભયાય=અન્યેષા ભયોત્પાદનાય’ વ્યાઘ્ર સમાગતઃ’ ઇતિરીત્યા મૃશ-
વાદઃ અથવા ભયાન્ચ ‘હસ્સદ્વિયા ય’ હાસ્યાર્થિકાઃ, અથવા હાસ્યાર્થાય ચ=
હાસ્ય વર્તુમપિ તથા વદન્તિ ‘સક્ષી’ સાક્ષિણઃસાક્ષિભૂતાન્યાયાલ્યાદો ‘ચોરા’
ચૌરા-નિગ્રહાદૌ ‘ચારમટા’ ચારમટાઃ=તત્ર ચારાઃ ગૂઢપુરુષાઃ, મટાઃ=યોગાઃ,

પણ કરતે હે । ઇસી તરફ મુગાદિક જો જીવ હોતે હે કિ જિन्हે પ્રાણ-
વધ કે પ્રકરણ મેં ૨૦ વેં મુત્ર મેં કટા ગયા હે વેં મી અસત્યભાષણ
કરતે હેં । કોઈ ધન કે લિયે, કોઈ ધર્મ કે લિયે, કોઈ ઇન્દ્રિયોં કે મોગોં
કે નિમિત્ત કામ કે લિયે, ઓર કોઈ ૨ અર્થ, ધર્મ ઓર કામ ઇન ત્રીનોં
કે લિયે અસત્યભાષણ કરતે હેં । (ભયાય) કિતનેક કિતનેક જીવ
એસે મી હોતે હેં જો દૂસરોં કો ભય ઉત્પન્ન કરને કે અભિપ્રાય સે અસ-
ત્યભાષણ કર દિયા કરતે હેં । “ ભયાય ” કી સસ્કૃત ડ્રાયા “ મયાચ્ચ ”
એસી મી હોતી હેં-ઇસકા તાત્પર્ય તવ એસા હોગા કિ કિતનેક જીવ ભય
સે મી અસત્યભાષણ કર દિયા કરતે હેં । (હસ્સદ્વિયાય) કિતનેક જીવ
એસે મી હોતે હેં જો હંસી મજાક મેં અસત્યભાષણ કર દેતે હેં, અથવા
દૂસરો કી હંસી ઉડાને કે અભિપ્રાય સે અસત્યભાષણ કરને લગતે હેં ।
(સક્ષી) જો ન્યાયાલય-ઠાકુરી આદિ મેં દૂસરોં કી સાક્ષી દેતે હેં વે
મી અસત્યભાષણ કરતે હેં । (ચોરા) ચોરી કરને વાલે જો પુરુષ હોતે
હેં વે નિગ્રહ આદિ અવસ્થાં કે ઉપસ્થિત હોને પર અસત્યભાષણ કરતે હેં ।

જે જીવો હોય છે, જેમનું પ્રાણવધના ૨૦મા પ્રકરણમાં વર્ણન કરવામાં આવ્યું
છે, તે જીવો પણ અસત્ય બોલે છે એટલે કે કેટલાક મુઘ-મોહાધીન વૃત્તિ
વાળા અસત્ય બોલે છે કેટલાક ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ ત્રણેને વશ થઈને
અસત્ય બોલે છે કેટલાક લોકો ધનને માટે, કેટલાક ધર્મને માટે, કેઈ ઇન્દ્રિ-
યાના ભોગોને નિમિત્તે, અને કેઈ કેઈ લોકો અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણેને
નિમિત્તે અસત્ય બોલે છે “ભયાય” કેટલાક એવા જીવો પણ હોય છે કે જે
ખીજને લય પમાડવાને માટે અસત્ય બોલે છે “ મયાય ” ની સસ્કૃત ડ્રાયા
“ મયાચ્ચ ” પણ થાય છે ત્યારે તેનો અર્થ એવો થાય છે કે કેટલાક જીવો
લયને કારણે પણ અસત્ય બોલે છે “ હસ્સદ્વિયા ય ” કેટલાક લોકો એવા
પણ હોય છે કે જેઓ મજાક-મશકરીમાં પણ અસત્ય બોલી નાખે છે, અથવા
ખીજની મજાક કરવાને નિમિત્તે અસત્ય બોલવા માટે છે “સક્ષી” ન્યાયા-
લય આદિમાં ખીજની સાક્ષી આપનારા લોકો પણ અસત્ય બોલે છે “ ચોરા ”
ચોરી કરનારા લોકો, જેલમાં જવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થતા અસત્ય બોલે છે

લઘુસ્વકાઃ=પુચ્છાત્માનઃ, 'અસચ્ચા' અસત્યાઃ=સત્યવિમુક્ત્વા 'ગારવિયા' ગૌર-
વિકાઃ=ઋદ્ધ્યાદિ ગૌરવયુક્તાઃ, 'અસચ્ચદ્વાવણાહિચિત્તા' અસત્યસ્થાપનાધિચિત્તાઃ=
અસત્યાનામ્=અસદર્થાના સ્થાપનાયાં પ્રરૂપણાયામધિચિત્ત યેષા તે તથા અસત્યાર્થ-
મण्डनपरा इत्यर्थः, 'उच्चच्छदा' उच्चो=મહાન્ સ્માત્માપશસાપરઃ ઉન્દઃ=અભિ-
પ્રાયો યેષા તે તથા સ્વાત્મપ્રશસાપરાયણ इत्यर्थः, 'अणिग्गहा' अनिग्रहाः=
अवशेन्द्रियाः 'अणियता' अनियताः=अनियमन्तः उन्देन=स्वाभिप्रायेण 'मुक्क
वाया' मुक्तवाचः=यथा तथा भाषिणः अथवा 'वयमेव सिद्धवादिन' इति
वदन्ति, के वदन्ति? 'जे' ये 'अलियाहिं' अलीकेभ्योऽसत्येभ्यः 'अविरया'
अविरताः=अनिवृत्ताः भवन्ति ॥ सू-३ ॥

તથા—'અવરે નત્થિગવાઇળો' इत्यादि—

મૂલમ્—અવરે નત્થિગવાઇળો વામલોગવાદી ભળંતિ, નત્થિ
જીવો, ન જાઈ ઇહ પરે વા લોણ, નય કિંચિ વિ ફુસડ પુન્ન-
પાવ, નત્થિફલં સુકયદુક્કયાણ । પંચમહામૂઢયં સરીર ભાસંતિ

આપકો તુચ્છ માનને વાલે મનુષ્ય, (અસચ્ચા) સત્ય સે વિમુક્ત રહને
વાલે મનુષ્ય, (ગારવિયા) ઋદ્ધ્યાદિ કે ગૌરવ સે યુક્ત બને હુણ મનુષ્ય,
(અસચ્ચદ્વાવણાહિચિત્તા) અસત્યપદાર્થ કી પ્રરૂપણા કરને વાલે મનુષ્ય,
(ઉચ્ચચ્છદા) અપને આપકી પ્રશસા કરને વાલે મનુષ્ય, (અણિગ્ગહા)
જિનકી ઇન્દ્રિયાં વશ મેં નહીં હૈં એસે મનુષ્ય, (અણિયયાઊદેણ) નિયમ
સે રહિત મનુષ્ય, (મુક્કવાયા) યથાતથા વોલને વાલે મનુષ્ય, ઔર (જે ય)
જો મનુષ્ય (અલિયાહિં) અસત્યભાષણ સે (અવિરયા) વિરતિ રહિત
(ભવતિ) હોતે હૈં વે જો મન મેં આતા હૈં સો વોલ દિયા કરતે હૈં ।
ઇસ પ્રકાર કે વોલને મેં અલીક ભાષણ કા દોષ લગા કરતા હૈં ॥સૂ ૩ ॥

મનુષ્યો, “અસચ્ચા” સત્યથી વિમુક્ત રહેનાર મનુષ્યો, “ગારવિયા” ઋદ્ધિ
આદિના અભિમાનથી યુક્ત બનેલા મનુષ્યો, “અસચ્ચદ્વાવણા હિ ચિત્તા” અસ-
ત્ય પદાર્થની જ પ્રરૂપણા કરનાર મનુષ્યો, “ઉચ્ચચ્છદા” આપ વડાઈ કરનાર
લોકો, “અણિગ્ગહા” જેમની ઇન્દ્રિયો કાબૂમાં નથી તેવા લોકો, “અણિયયા-
છદેણ” નિયમ વિનાના મનુષ્યો—અનિયમિત લોકો, “મુક્કવાયા” જેમ તેમ
બોલનારા લોકો, અને “જે ય” જે મનુષ્ય “અલિયાહિં” અસત્ય ભાષણથી
“અવિરયા” વિરતિ રહિત “ભવતિ” હોય છે, તે લોકો મનમાં આવે તેમ
બોલી નાખે છે તે રીતે બોલવાથી અસત્યભાષણનો દોષ લાગ્યા કરે છે ॥સૂ ૩॥

‘ કલાયા ’ કલાદાઃ=સુવર્ણકારાઃ ‘ કારુહજ્જા ’ કારુકીયાઃ=શિલ્પિનઃ ‘ વચ્ચણપરા ’ વચ્ચનપરાઃ=પ્રતારણાપરા ‘ ઠગ ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ ‘ ચારિયચાદુયારનગરગોત્તિય પરિયારગા, ચારિકચાદુકારનગર ગુપ્તિકપરિચારકાઃ=તત્ર-ચારિકા=ગુપ્તચરાઃ, ચાદુકારાઃ=સુખમાદ્ગલિકાઃ, નગરગુપ્તિકાઃ=કોટપાલાઃ, ‘ કોતવાલ ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ, પરિચારકાઃ=સેવકાઃ, વિષયભોગતત્પરાશ્ચ, ‘ દુઢવાઈમૂયકમળત્રમણિયા ’ દુષ્ટવાદિ સૂચકશ્રુતિચલમણિતા, તત્ર દુષ્ટવાદિનઃ=અસત્પક્ષગ્રાહિણઃ સૂચકા-પિથુનાઃ, ક્રુણવલમણિતાઃ=ક્રુણે=ક્રુણગ્રહણે યલાઃ=ચત્રવન્તસ્તૈર્મણિતાઃ=ઉક્તાઃ ‘ દેદિ મે ક્રુણ ’ મિત્યુત્તમર્ણેનોક્તા અઘમર્ણા ઇતિ ભાવઃ ‘ પુવ્વકાલિયવચ્ચણદચ્છા ’ પૂર્વકાલિકવચ્ચનદક્ષાઃ=વન્તુકામસ્યાભિપ્રાયમાલક્ષ્ય પૂર્વમેવ ધ્રુવન્તિ યે તે પૂર્વકાલિકવચ્ચનદક્ષાઃ, ‘ સાહસિકા ’ સહસા-અવિચાર્ય ભાવન્તે યે તે સાહસિકાઃ, ‘ લહુસ્સગા ’

(પહકારગા) જો તન્તુ વાય-જુલાહે હોતે હૈં (કલાયા) કલાદ-સુવર્ણકાર-સુનાર હોતે હૈં, (કારુહજ્જા) કારુકીય-શિલ્પી-કારીગર હોતે હૈં, (વચ્ચણપરા) જો ઠગ હોતે હૈં, (ચારિય) ગુપ્તચર હોતે હૈં, (ચાદુયાર) ચાદુકાર-ખુશામદી હોતે હૈં, (નગરગોત્તિય) નગરગુપ્તિક-કોતવાલ હોતે હૈં, (પરિયારગ) પરિચારક-સેવક તથા વિષયભાગોં મે તત્પર હોતે હૈં, (દુઢવાઈ) જો અસત્પક્ષ કો ગ્રહણ કરને વાલે હોતે હૈં, (સૂચક) સૂચક-ચુગલ ચોરહોતે હૈં, (અણવલમણિયા) મેરા ક્રુણ અદા કરોં હસ પ્રકાર જિસ દેનદાર સે સાહકાર કહતા હૈં વે ક્રુણ ચલમણિત કર્જ દાર વ્યક્તિ કહને વાલે કે અભિપ્રાય કો લક્ષિત કરકે પહિલે સે હી ઘોલને વાલે (પુવ્વકાલિયવચ્ચણદચ્છા) પૂર્વકાલિક વચ્ચનદક્ષ મનુષ્ય, (સાહસિયા) વિના વિચારે બોલને વાલે મનુષ્ય, (લહુસ્સગા) અપને

પોતાનુ ગુજરાન ચલાવે છે, “ પહકારગા ” જે વણુડર હોય છે, “ કલાયા ” સોની હોય છે, “ કારુહજ્જા ” કારીગર હોય છે, “ વચ્ચણપરા ” ઠગ હોય છે, “ ચારિય ” ગુપ્તચર હોય છે “ ચાદુયાર ” ચાદુકાર-ખુશામતીયો હોય છે “ નગરગોત્તિય ” નગરગુપ્તિક-કોટવાળ હોય છે, “ પરિયારગ ” પરિચારક-સેવક તથા વિષય ભાગોના ગુલામ હોય છે, જે અસત્ય પક્ષને શ્રદ્ધા કરનાર હોય છે, “ દુઢવાઈ ” જે અસત્યપક્ષને શ્રદ્ધા કરનાર હોય છે, “ સૂચક ” સૂચક-ચુગલીખોર હોય છે, “ અણવલમણિયા ” ‘ માડ ક્રુણ ભરપાઈ કરો ’ તે પ્રમાણે જે દેણદારને શાહુકાર કહે છે તે ક્રુણવલ ભણિત દેણદાર વ્યક્તિ, કહે નારના અભિપ્રાયને લક્ષિત કરીને પહેલેથીજ ખોલી જનાર હોય છે, “ પુવ્વકાલિય વચ્ચણદચ્છા ” પૂર્વે આપેલ વચ્ચનથી બધાયેલો મનુષ્ય, “ સાહસિયા ” વિચાર્યા વિના બોલનાર મનુષ્ય, “ લહુસ્સગા ” પોતાની જાતને તુચ્છ માનનાર

પ્રત્યક્ષાભાવે વ્યાસિગ્રહસ્યાપ્યભાવાત્ મહાનસાદૌ સત્યેય પર્વતાદૌ વહ્નિરનુમીયતે ।
વહ્નિધૂમયો પ્રત્યક્ષેણ સાદ્વચર્યગ્રદે પ્રત્યક્ષપ્રમાણાદિભિરનુમાનમ્યાનદ્વીકૃતત્વાન્ચ ।
નાપ્યાગમગાત્રસ્તસ્ય પરસ્પરવિરુદ્ધત્વેનાપ્રામાણ્યાત્ । નાપ્યુપમાનમત્રપમજ્યતે, અસ-
ત્પદાર્થે કેનોપમીયતે । ઇતિ । એવ ચ જીવમ્યાસિદ્ધત્વાત્ કોઽપિ ઇદમનુપ્યલોકે
પરે વા 'લોણ' લોકે=દેવાદિલોકે વા 'ન જાઙ' ન યાતિ=ન ગન્ઝતિ, 'ન ય'
ન ચ 'કિંચિન્નિ' કિંચિદપિ 'પુણ્નપાવ', પુણ્યપાપ=પુણ્યપાપરૂપ કર્મ 'ફુસઙ'

ધર્મતા આદિ કા ગ્રહણ હોના આવડ્યકીય હોતા હૈ ડસકે વિના અનુ-
માન નહી હોતા હૈ । જવ ડસ વિષય મે પ્રત્યક્ષપ્રમાણ હી પ્રવૃત્ત નહીં
હોતા હૈ તવ સાધ્ય સાધન કી વ્યાસિ કા ગ્રાહક વહા વહ કૈસે હો
સકતા હૈ । મહાનસ આદિ મે સાય સાયન કી વ્યાસિ પહિલે પ્રત્યક્ષ સે
ગ્રહણ કર લેને પર હી તો અનુમાતા પર્વત આદિ મે વહ્નિ કા અનુમાન
કરતા હૈ । આગમ પ્રમાણ સે મી "જીવ હૈ" યહ વાત નહીં કહી જાતિ
હૈ, કારણ આગમોં મેં ટક્રમતતા નહીં હૈ । પરસ્પર વિરુદ્ધાર્થ કા-એક
દૂસરે આગમ સે વિરોધી તત્ત્વ કા-યે પ્રણયન કરતે હૈ, ડસલિયે ડનમેં
પ્રમાણતા હી નહીં હૈ । ઉપમાન પ્રમાણ કી યહ પ્રવૃત્તિ ડસલિયે નહીં હો
સકતી હૈ કિ જવ 'જીવ' પદાર્થ હી અસત્ હૈ તવ વહ ઉપમેય કૈસે હો
સકતા હૈ । ડસ તરહ જીવ નામક પદાર્થ કી અસિદ્ધિ હોને પર (ન જાઙ
ઈહ પરે વા લોણ) કોઈ મી ડમ મનુપ્યલોક મેં અથવા દૂસરે દેવાદિલોક
મેં નહીં જાતા હૈ, ઓર (ન ય કિંચિ વિ ફુસઙ પુણ્નપાવ) ન વહ પુણ્ય
અવ પાપરૂપ કર્મ કો છૂતા હૈ, અર્થાત્-જવ જીવ નામ કા કોઈ પદાર્થ હી

આધનની વ્યાસિનુ અને પદ્ધધર્મતા આદિનુ ગ્રહણ થયું આવશ્યક હોય છે,
તેના વગર અનુમાન થતું નથી જો તે વિષયમા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ જ પ્રવૃત્ત હોતું
નથી તો સાધ્ય આધનની વ્યાસિનો આહક ત્યા તે ડેવી રીતે થઈ ગડે । મહા-
નસ આદિમા આધ્ય આધનની વ્યાસિ પહેલા પ્રત્યક્ષ રીતે ગ્રહણ ડગી લીધા
પછી તો અનુમાન ડરનાર પર્વત આદિમા અગ્નિનુ અનુમાન ડરે છે આગ-
મોનુ પ્રમાણ આપીને પણ "જીવ છે" તે વાત ડહી ગડાય તેમ નથી, ડારણ
ડે આગમોમા એડ મતતા નથી પરન્પરથી વિરુદ્ધ અર્થનુ-એક બીજાથી વિરોધી
તત્ત્વનુ-તેઓ વર્ણન-પ્રતિપાદન ડરે છે, તે ડારણે તેમનામા પ્રમાણભૂતતા નથી
ઉપમાન પ્રમાણની અહીં પ્રવૃત્તિ તે ડારણે થઈ રાઝતી નથી ડે જો "જીવ"
પદાર્થ જ અસત્ હોય તો તે ઉપમેય ડેવી રીતે થઈ રાઝે । આ રીતે જીવ
નામના પદાર્થની અસિદ્ધિ થતા "ન જાઙ ઇહ પરે વા લોણ" ડોઈ પણ આ
મનુષ્ય લોકમા અથવા બીજા દેવાદિ લોકમા જતુ નથી, અને "નય કિંચિ વિ
ફુસઙ પુણ્નપાવ" તે પુણ્ય અને પાપ રૂપ કર્મોને અપરાંતો નથી, એટલે ડે-

હે વાયજોગજુત્તં, પચ ય સ્વંધે ભણંતિ કેડ, મણં મળ જીવિકા
વદંતિ, વાઝજીવો તિ એવમાહંસુ સરીર સાદ્યં સનિધણં હહ
ભવે એગભવે, તસ્સ વિપ્પણાસંમિ સઘ્વનાસો તિ એવ જપંતિ
મુસાવાઈ ॥ સૂ૦ ૪ ॥

ટીકા—‘ અવરે’ અવરે=ઉક્તેભ્યોઽન્યે ‘ નત્થિગવાહ્ણો ’ નાસ્તિકવાદિનઃ=
‘ નાસ્તિ પરલોકઃ ’ इति मतिर्येषा ते नास्तिका स्ते च ते वादिनः प्रत्यक्षप्रमाण
વાદિનશ્ચાર્વાકાઃ, તથા ‘ વામલોગવાઈ ’ તથા -વામલોકવાદિનઃ, વામ=વિરુદ્ધ
લોક-વદન્તિ યે તે તથા સત્તામપિ લોકસ્તૂનામસત્ત્વ પ્રતિપાદકા શૂન્ય વાદિનઃ
इत्यर्थः, તે હિ ‘ ભણન્તિ=વદન્તિ યત્ ‘ નત્થિ જીવો’ નાસ્તિ જીવઃ સુખદુઃખાદિ
ભોક્તા તત્સાધક પ્રમાણભાગાત્, યતો હિ ન તત્ર પ્રત્યક્ષ પ્રમાણમુપક્રમતે ચક્ષુરાદી
ન્દ્રિયવિષયત્વાત્, નાપ્યનુમાનત્ર પ્રમાણમ્, તસ્ય વ્યાપ્તિપક્ષધર્મતાજ્ઞાનાદ્યધીનતયા

તથા—‘ અવરે નત્થિગવાહ્ણો ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(અવરે) હન પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોં સે ભિન્ન (નત્થિગવાહ્ણો) જો
નાસ્તિકવાદી હૈં—‘ પરલોક નહીં હૈં ’ ઇસ પ્રકાર કી જિનકી બુદ્ધિ હૈં એસે
કેવલ એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ માનને વાલે ચાર્વાક, તથા (વામલોગવાઈ)
વામલોકવાદી-શૂન્યવાદી, યે લોક મેં રહી હુઈ વસ્તુઓ કો અસત્ રૂપ સે
પ્રતિપાદિત કરતે હૈં વે (ભણતિ) કહતે હૈં કિ (નત્થિજીવ) સુખ, દુઃખ
આદિ અવસ્થાઓં કા ભોક્તા જીવ નામ કા કોઈ પદાર્થ નહીં હૈં, કારણ
કિ ઇસકે સાધક પ્રમાણોં કા અભાવ હૈં પ્રત્યક્ષપ્રમાણ ઇસકા સાધક
હસલિયે નહીં હોતા હૈં કિ ચક્ષુરાદિક જો ઇન્દ્રિયા હૈં વે ઉસે અપના
વિષયભૂત નહીં બનાતી હૈં । અનુમાન સે બી ઉસકા ગ્રહણ નહીં હોતા
હૈં, ક્યોં કિ અનુમાન સે સાધ્ય ઓર સાધન કી વ્યાપ્તિ કા એવ પક્ષ

તથા—“ અવરે નત્થિગવાહ્ણો ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ અવરે ” તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોથી જુદાજ પ્રકારના ‘ નત્થિગવાહ્ણો’
જે નાસ્તિકવાદી છે—“ પરલોક નથી ” એ પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા,
ફક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા “ વામલોગવાઈ ”
વામલોકવાદી-વામમાર્ગી, તેઓ સૃષ્ટિમાં રહેલા વસ્તુઓને અસત્ રૂપે પ્રતિપા
દિત કરે છે તેઓ ‘ ભણતિ ’ કહે છે કે “ નત્થિ જીવો ” સુખ દુઃખ આદિ
અવસ્થાઓનો ભોક્તા એવ નામનો કોઈ પદાર્થ નથી, કારણ કે તે સિદ્ધ
કરવા માટેના પ્રમાણોનો અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનું સાધક તે કારણે હોતું
નથી કે ચક્ષુ આદિ જે ઇન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી
નથી અનુમાનથી તેને ચક્રણ કરી શકાતું નથી કારણ કે અનુમાનમાં સાધ્ય

પ્રત્યક્ષાભાવે વ્યાપ્તિગ્રહસ્યાપ્યભાવાત્ મહાનસાદૌ સત્યેય પર્વતાદૌ વહ્નિસ્તુમીયતે ।
વહ્નિધૂમયો પ્રત્યક્ષેણ સાદ્વર્ચ્યગ્રહે પ્રત્યક્ષપ્રમાણાદિભિરનુમાનસ્યાનગ્નીકૃતત્વાન્ચ ।
નાપ્યાગમગાદ્યસ્તસ્ય પરસ્પરવિરુદ્ધત્વેનાપ્રામાણ્યાત્ । નાપ્યુપમાનમત્રપ્રમજ્યતે, અસ-
ત્પદાર્થે કેનોપમીયતે । इति । एव च जीवस्याऽसिद्धत्वात् कोऽपि इह=मनुष्यलोके
परे वा ' लोए ' लोके=देवादिलोके वा ' न जाइ ' न याति=न गच्छति, ' न य '
न च ' किंचिपि ' किञ्चिदपि ' पुण्णपाव , पुण्यपाप=पुण्यपापरूप कर्म ' फुसइ '

ધર્મતા આદિ કા ગ્રહણ હોના આવશ્યકીય હોતા હૈં ડસકે વિના અનુ-
માન નહીં હોતા હૈં । જવ ડસ વિષય મેં પ્રત્યક્ષપ્રમાણ હી પ્રવૃત્ત નહીં
હોતા હૈં તવ સાધ્ય સાધન કી વ્યાપ્તિ કા ગ્રાહક વહા વહ કૈસે હો
સકતા હૈં । મહાનસ આદિ મેં સાધ્ય સાધન કી વ્યાપ્તિ પહિલે પ્રત્યક્ષ સે
ગ્રહણ કર લેને પર હી તો અનુમાતા પર્વત આદિ મેં વહિ કા અનુમાન
કરતા હૈં । આગમ પ્રમાણ સે ખી “ જીવ હૈં ” યહ વાત નહીં કહી જાતિ
હૈં, કારણ આગમોં મેં એકમતતા નહીં હૈં । પરસ્પર વિરુદ્ધાર્થ કા-એક
દૂસરે આગમ સે વિરોધી તત્ત્વ કા-યે પ્રણયન કરતે હૈં, ડસલિયે ડનમેં
પ્રમાણતા હી નહીં હૈં । ઉપમાન પ્રમાણ કી યહ પ્રવૃત્તિ ડસલિયે નહીં હો
સકતી હૈં કિ જવ ‘ જીવ ’ પદાર્થ હી અસત્ હૈં તવ વહ ઉપમેય કૈસે હો
સકતા હૈં । ડસ તરહ જીવ નામક પદાર્થ કી અસિદ્ધિ હોને પર (ન જાઈ
ઈહ પરે વા લોણ) કોઈ ખી ડસ મનુષ્યલોક મેં અથવા દૂસરે દેવાદિલોક
મેં નહીં જાતા હૈં, ઓર (ન ય કિંચિ વિ ફુસઈ પુણ્ણપાવ) ન વહ પુણ્ય
અવ પાપરૂપ કર્મ કો છૂતા હૈં, અર્થાત્-જવ જીવ નામ કા કોઈ પદાર્થ હી

સાધનની વ્યાપ્તિનુ અને પક્ષધર્મતા આદિનુ ગ્રહણ થતુ આવશ્યક હોય છે,
તેના વગર અનુમાન થતુ નથી જો તે વિષયમા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ જ પ્રવૃત્ત હોતુ
નથી તો સાધ્ય સાધનની વ્યાપ્તિનો ગ્રાહક ત્યા તે ડેવી ગીતે થઇ ગડે ! મહા-
નમ આદિમા સાધ્ય સાધનની વ્યાપ્તિ પહેલા પ્રત્યક્ષ રીતે ગ્રહણ કરી લીધા
પછી તો અનુમાન ડરનાર પર્વત આદિમા અગ્નિનુ અનુમાન કરે છે આગ-
મોનુ પ્રમાણ આપીને પણ “ જીવ છે ” તે વાત ડહી શકાય તેમ નથી, કારણ
કે આગમોમા એક મતતા નથી પરસ્પરથી વિરુદ્ધ અર્થનુ-એક બીજાથી વિરોધી
તત્ત્વનુ-તેઓ વર્ણન-પ્રતિપાદન કરે છે, તે કારણે તેમનામા પ્રમાણભૂતતા નથી
ઉપમાન પ્રમાણની અહીં પ્રવૃત્તિ તે કારણે થઇ શકતી નથી કે જો “ જીવ ”
પદાર્થ જ અસત્ હોય તો તે ઉપમેય ડેવી રીતે થઇ શકે ! આ રીતે જીવ
નામના પદાર્થની અસિદ્ધિ થતા “ ન જાઈ ઇહ પરે વા લોણ ” ડોઈ પણ આ
મનુષ્ય લોકમા અથવા બીજા દેવાદિ લોકમા જતુ નથી, અને “ નય કિંચિ વિ
ફુસઈ પુણ્ણપાવ ” તે પુણ્ય અને પાપ રૂપ કર્મોને અપર્શતો નથી, એટલે કે-

હે વાયજોગજુત્તં, પંચ ય સ્વંધે મળંતિ કેદ્ર, મળં મળ જીવિકા
વદંતિ, વાઝજીવો તિ એવમાહસુ સરીર સાદ્યં સનિધર્ણં રૂઢ
મવે એગમવે, તસ્સ વિપ્પણાસંમિ સઠ્ઠનાસો તિ એવ જપંતિ
મુસાવાઈ ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘અવરે’ અવરે=ઉવતે-યોડન્યે ‘નત્થિગવાહ્ણો’ નાસ્તિકવાદિનઃ= ‘નાસ્તિ પરલોકઃ’ ઇતિ મતિર્યેપા તે નાસ્તિકા સ્તે ચ તે ગાદિનઃ પ્રત્યક્ષપ્રમાણ
વાદિનશ્ચાર્વાકાઃ, તથા ‘વામલોગવાઈ’ તથા -વામલોકવાદિનઃ, વામ=વિરુદ્ધ
લોક-વદન્તિ યે તે તથા સતામપિ લોકચમ્તૂનામસત્ત્વ પ્રતિપાદકા ચૂન્ય ગાદિનઃ
ઇત્યર્થઃ, તે હિ ‘મળન્તિ=વદન્તિ યત્ ‘નત્થિ જીવો’ નાસ્તિ જીવઃ સુખદુઃખાદિ
મોક્તા તત્સાધક પ્રમાણાભાવાત્, યતો હિ ન તત્ત્વ પ્રત્યક્ષ પ્રમાણમુપક્રમતે ચક્ષુરાદી
ન્દ્રિયવિષયત્વાત્, નાપ્યનુમાનં તત્ત્વ પ્રમાણમ્, તસ્ય વ્યાપ્તિપક્ષધર્મતાજ્ઞાનાદ્યધીનતયા

તથા—‘અવરે નત્થિગવાહ્ણો’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(અવરે) રૂન પૂર્વોક્ત વ્યક્તિચો સે મિત્ત (નત્થિગવાહ્ણો) જો
નાસ્તિકવાદી હૈ—‘પરલોક નહી હૈ’ રૂસ પ્રકાર કી જિનકી વુદ્ધિ હૈ એસે
કેવલ એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ માનને વાલે ચાર્વાક, તથા (વામલોગવાઈ)
વામલોકવાદી-ચૂન્યવાદી, યે લોક મે રહી હુઈ વસ્તુઓં કો અસત્ત્વ સે
પ્રતિપાદિત કરતે હૈ વે (મળન્તિ) કહતે હૈ કિ (નત્થિજીવ) સુખ, દુઃખ
આદિ અવસ્થાઓં કા મોક્તા જીવ નામ કા કોઈ પદાર્થ નહી હૈ, કારણ
કિ રૂસકે સાધક પ્રમાણોં કા અભાવ હૈ પ્રત્યક્ષપ્રમાણ રૂસકા સાધક
રૂસલિયે નહી હોતા હૈ કિ ચક્ષુરાદિક જો રૂન્દ્રિયા હૈ વે રૂસે અપના
વિષયમૂત નહી વનાતી હૈ । અનુમાન સે મી રૂસકા ગ્રહણ નહીં હોતા
હૈ, ક્યો કિ અનુમાન સે સાધ્ય ઓર સાધન કી વ્યાપ્તિ કા એવ પક્ષ

તથા—“અવરે નત્થિગવાહ્ણો” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવરે” તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિચોથી જુદાજ પ્રકારના ‘નત્થિગવાહ્ણો’
જે નાસ્તિકવાદી છે—“પરલોક નથી” એ પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા,
રૂક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા “વામલોગવાઈ”
વામલોકવાદી-વામમાર્ગી, તેઓ સુષ્ટિમા રહેલ વસ્તુઓને અસત્ત્વ રૂપે પ્રતિપા
દિત કરે છે તેઓ ‘મળન્તિ’ કહે છે ં “નત્થિ જીવો” સુખ દુઃખ આદિ
અવસ્થાઓને ભોક્તા એવ નામને કોઈ પદાર્થ નથી, કારણ કે તે સિદ્ધ
કરવા માટેના પ્રમાણોને અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનુ સાધક તે ંરણે હોતું
નથી કે ચક્ષુ આદિ જે રૂન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી
નથી અનુમાનથી તેને ગ્રહણ કરી શકાતું નથી કારણ કે અનુમાનમા સાધ્ય

સુખા ૧ દુઃખા ૨ અદુ સ્વમુખા ૩ ચેતિ ત્રિવિધવેદનાસ્પમાત્ર ૨, વિજ્ઞાનસ્કન્ધઃ—
રૂપાદિવિજ્ઞાનલક્ષણઃ ૩, સજ્ઞાસ્કન્ધઃ—સાનિમિત્તોઽવગ્રહણાત્મકમત્યયઃ ૪,
સંસ્કારસ્કન્ધઃ—પુણ્યાપુણ્યાદિધર્મસમુદાયથેતિ ૫ સ્કન્ધાઃ, એતે પચ્ચૈવ સ્કન્ધાઃ
સન્તિ, નાન્યઃ કશ્ચિત્તદ્યતિરિક્ત આત્માઽઽસ્ત્ય પદાર્થોઽસ્તિ, ઇતિ તેષા મતમ્ ।
નાન્ય આત્માભિધાનઇતિ વૌદ્ધાઃ, 'મણચ' મનશ્ચ મન એવ જીવો યેષા તે તથા
મનોજીવિકાઃ=મન આત્મવાદિનો વદન્તિ-ઇતિ મન આત્મવાદિનો મતમ્ । તથા
'વાઙજીવોત્તિ' વાયુર્જીવ ઇતિ 'આહમુ' આહુઃ=કેચિત્, ઉચ્છ્વાસાદિરૂપ એવ
જીવ ઇતિ વદન્તિ । પ્રાણવાયુના સર્વક્રિયાસુ પ્રવર્તન જાયતે, અતએ પ્રાણવાયુરેવ
જીવ ઇત્યર્થઃ । અથ તજ્જીવતન્તરીર્યાદિમતગ્રાહ, તવાદિ—'સરીર સાહ્ય સનિધણ'

और संस्कार ५, ये पांच स्कंध हैं । पृथिव्यादिक एव रूपादिक ये रूप
स्कंध हैं १ । सुख १, दुःख, २ और सुख दुःख ३ इन त्रिविधरूप वेदना
स्कंध, हैं २ । रूपादिकों का विज्ञान स्वरूप, विज्ञानस्कंध है ३ । यह
अमुक है—यह देवदत्त है, इत्यादि—रूप से जो सजाओं का ग्रहण होता
है वह सज्ञास्कंध है ४ । पुण्य अपुण्य आदि रूप जोसमुदाय
है वह संस्कार स्कंध है । ये पांच स्कंध ही हैं, इनसे भिन्न
आत्मा नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं है इस प्रकार का
मतव्य बौद्धों का है । (मण च मणजीविद्या वयति) जो मन को ही
आत्मा मानते हैं वे मनोजीविक है तथा (वाङ् जीवोत्ति एवमाहसु)
कोई २ उच्छ्वास आदि रूप वायु ही जीव है ऐसा मानते हैं, इनका
कहना है कि प्राण नामकवायु से ही समस्त क्रियाओं में प्रवर्तन होता है
इसके बिना नहीं, अतः प्राणवायु ही जीव है (सरीर साह्य सनिधण)

અને (૫) સંસ્કાર એ પાંચ સ્કંધ છે (૧) પૃથિવ્યાદિક અને રૂપાદિક
તે ઉપસ્કંધ છે, (૨) સુખ, દુઃખ અને સુખદુઃખ એ ત્રણ પ્રકારનો વેદના
સ્કંધ છે (૩) ઉપાદિગોના વિજ્ઞાન સ્વરૂપ વિજ્ઞાનસ્કંધ છે (૪) આ અમુક
છે—આ દેવદત્ત છે, ઇત્યાદિ રીતે જે સજ્ઞાઓનું ગ્રહણ થાય છે તે સજ્ઞાસ્કંધ
છે (૫) પુણ્ય અપુણ્ય આદિ રૂપ જે ધર્મસમુદાય છે તે સંસ્કારસ્કંધ છે એ
પાંચ સ્કંધ જ છે, તે ભિન્ન આત્મા નામનો કોઈ સ્વતંત્ર પદાર્થ જ નથી,
એ પ્રકારનું બૌદ્ધોનું મતવ્ય છે “મણ ચ મણજીવિયા વયતિ” જે મનને જ
આત્મા માને છે તે મનોજીવિક કહેવાય છે તથા “વાઙ્ જીવોત્તિ એવમાહસુ”
કોઈ કોઈ ઉચ્છ્વાસ આદિ રૂપ વાયુ જ જીવ છે તેમ માને છે, તેમનું કહેવું
એવું છે કે પ્રાણવાયુથી જ સમસ્ત ક્રિયાઓ ચાલ્યા કરે છે, તેના વિના ચલતી
નથી, તેથી પ્રાણવાયુ જ જીવે છે “સરીર સાહ્ય સનિધણ” શરીરને જ જે

સ્પૃશતિ । જીવસ્યાઽમદ્ભાગાદેવ ન શુભાશુભકર્મવ્યવનમિતિ ભાવઃ । અત एव
 ‘સુકયદુઃકયાણ’ સુકૃતં દુઃકૃતાના=પુણ્યપાપાનાં ફલમપિ ‘નત્યિ’ નાસ્તિ
 જીવાસત્ત્વેન તત્ફલસ્યાઽપ્યસત્ત્વાત્ । તથા ‘સરીર’ પચમહાભૂઙ્ય’ પચ્ચમહા
 ભૌતિક=પૃથિવ્યપ્તેજોગાન્ધાકાશમય, ‘ભાસતિ’ ભાવન્તે । તત્ કીદૃશ ભાવન્તે
 હત્યાહ-‘હેવાગજોગજુત્ત’ હેવાકયોગયુક્તમ્, હેવાકઃ-સ્વભાવસ્તેન યોગઃ-પરસ્પર
 સયોગસ્તેન યુક્તમ્, પચ્ચભૂતાના પરસ્પર સયોગો ત્રિયોગથ સ્વભાગાદ્ ભવતિ, ન
 તત્ર કિંચિદન્યત્ કર્માદિ આત્મા વા કારણમસ્તીતિ ભાવઃ । ‘કેઈ’ કેઽપિ બુદ્ધ
 મતાનુસારિણઃ ‘પચસ્વધે’ પચ્ચસ્કન્ધાન્=રૂપવેદનાવિજ્ઞાનસજ્ઞામસ્કારરૂપાન્
 ભવન્તિ=રૂપયન્તિ, તત્ર-રૂપસ્કન્ધ, -પૃથિવ્યાદયો રૂપાદયથ ૧, વેદનાસ્કન્ધઃ-

નહી હૈ તો મર કર વહી પુનઃ અપને પુણ્ય પાપકર્મો કે અનુસાર મનુષ્ય
 લોક મે અથવા દેવાદિલોક મેં જન્મતા હૈ, યહ કથન અસત્ય હૈ । તાત્પર્ય
 હસકા યહી હૈ જીવ કા અસ્તિત્વ ન હોને સે ઉસકે (નત્યિફલ
 સુકયદુઃકયાણ) શુભ ઓર અશુભ કર્મો કા વધ નહીં હોતા હૈ । જઘ
 શુભ અશુભ કર્મો કા વધ હી નહીં હોતા હૈ તવ ઉનકે ફલ કા મી
 અભાવ હી હૈ । તથા (પચમહાભૂઙ્ય સરીર ભાસતિ) યહ જો શરીર હૈ
 વહ વૃથિવી, અપ્, તેજ વાયુ ઓર આકાશ, હન પાચભૂત સ્વરૂપ હૈ ।
 (હેવાગ જોગજુત્ત) પાચ ભૂતોં કા યહ પારસ્પરિક સયોગ અથવા વિયોગ
 સ્વભાવ સે હી હોતા રહતા હૈ । હસમે ન તો કોઈ કર્મ હી કારણ હૈ ઓર
 ન આત્મા હી । (કેઈ પચ ય સ્વધે ભવતિ) કિતનેક વાદી બૌદ્ધ-સિદ્ધાન્ત
 મતાનુયાયી-એસા કહતે હૈ કિ રૂપ ૧, વેદના ૨, વિજ્ઞાન ૩, સજ્ઞા ૪,

જો એવ નામનો ડોઈ પદાર્થ જ ન હોય તો તે મગીને પોતાના પુન્ય પાપ
 કર્મો પ્રમાણે મનુષ્ય લોકમા અથવા દેવાદિ લોકમા જન્મે છે તે કથન અસત્ય
 કરે છે કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે જો એવનુ અસ્તિત્વ ન હોય તો તેના
 “નત્યિ ફલ સુકયદુઃકયાણ” શુભ અને અશુભ કર્મોનો બધ બધાતો નથી
 જો શુભાશુભ કર્મોનો બધ જ બધાતો ન હોય તો તેના ફળનો પણ અભાવ
 જ હોય તથા “પચમહાભૂઙ્ય સરીર ભાસતિ” આ જે સરીર છે તે
 પૃથિવી, અપ્ (જળ), તેજ, વાયુ અને આકાશ, એ પાચ ભૂત સ્વરૂપ છે
 “હેવાગજોગજુત્ત” પાચ ભૂતોનો આ પારસ્પરિક સબધ અથવા વિયોગ
 સ્વભાવથી જ થયા કરે છે તેમા આત્મા કે કર્મ કારણરૂપ નથી

“કેઈ પચેય સ્વધે ભવતિ” કેટલાક વાદમા માનનારા-બૌદ્ધ સિદ્ધાન્ત
 મતાનુયાયી એવું કહે છે કે (૧) રૂપ, (૨) વેદના, (૩) વિજ્ઞાન, (૪) સજ્ઞા

नत्थि किं च न नेरइयतिरिक्खमणुयजोणी, न देवलोगो वा
अत्थि सिद्धिगमणं, अस्मापियरो नत्थि, नविअत्थि पुरिसकारो,
पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू य, अरिहंता
चक्खवट्ठी वलदेवा वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइरिसओ, धम्माध-
म्मफलं वि न अत्थि किं चि बहुय वा थोवं वा तम्हा एवं
जाणिऊणं जहा सुवहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्ठेह
नत्थिकाइ किरिया वा एवं भणंति नत्थिकवाइणो
वामलोगवाइ ॥ सू० ॥५॥

टीका—यस्मात् आत्माऽपि नास्ति, शुभाशुभकर्माणि तत्फलान्यपि च न
सन्ति 'तम्हा' तस्मात् 'दाणवयपोसहाण' दानव्रतपोषवानां=तत्र दानम्=
अभयदानसुपात्रदानादिकम्, 'वय' व्रतानि = स्थूलप्राणातिपातविरमणादीनि
पोषधः=पोष=वर्मस्य पुष्टिं धत्ते=करोतीति पोषधः=अष्टमीचतुर्दशीपूर्णिमाऽमावा-
स्यापर्वदिनाऽनुष्ठेय आहारादिपरित्याग पूर्वकोव्रतविशेषः, उक्तं च—

आहार तनुसत्काराऽव्रह्मसावधकर्मणाम् ।

त्यागः पर्वचतुष्टया तद्विदुः पौषधव्रतम् ॥

फिर भी—'तम्हा दाणवयपोसहाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—आत्मा शुभाशुभकर्म और इनके फल ये सब कुछ भी नहीं
हैं (तम्हा) इसलिये (दाणवयपोसहाण) दान-अभयदान, सुपात्रदान
आदि, व्रत-स्थूलप्राणातिपात विरमण आदि, (पोसह) पोषध-अष्टमी
चतुर्दशी, पूर्णिमा एव अमावस्या इन पर्व दिनों में आहार आदि को
परित्याग पूर्वक अनुष्ठेयव्रत विशेष, कहा भी है—

यणी—“तम्हा दाणवयपोसहाण” इत्यादि

टीकार्थ—आत्मा शुभाशुभ कर्म अने तेमना इण ते णधुय नथी “तम्हा”
तेथी “दाणवयपोसहाण” दान-अभयदान, सुपात्रदान आदि, व्रत-प्राणाति-
पात विरमण आदि “पोसह” पौषध-आठम, चौदश, पूनम, अमावस्या आदि
आहार आदिना परित्याग पूर्वक अनुष्ठेय अथ अनुष्ठान कहु छे उ—

“आहार, तनुसत्कारा-ऽव्रह्म-सावधकर्मणाम् ।

त्यागः पर्वचतुष्टया, तद्विदुः पौषधव्रतम् ॥ १”

શરીર સાદિક સનિધનમ્, શરીરમ્ આદિસહિતમ્ ઉત્પત્તિમત્ત્યાત્, સનિધન-સન્નિ-
નાશમ્ અન્તવત્ત્યાત્, 'ઇહ ભવે' અસ્મિન્ ભવે પ્રત્યક્ષ જન્મ, તસ્માત્ 'એગે ભવે'
એક એવ ભવઃ=જન્મ નાન્યો લોકઃ, 'તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ' તસ્ય વિપ્પણાગે સત્તિ=
તસ્ય શરીરસ્ય વિનાશે સત્તિ 'સન્વનાસોત્તિ' સર્વનાશદિતિ નાઽત્માઽગ્નિપ્પત્તે નાઽ
પિ ચ શુભાશુભરૂપંકર્મ । એવ=ઉક્તગીત્યા 'જપતિ' જત્પન્તિ=કથયન્તિ તજ્જી-
વતચ્છરીરવાદિનઃ । નાસ્તિકાદારમ્બ્ય તજ્જીવતચ્છરીરયાદિપર્યન્તાઃ સર્વે 'મુસા-
વાઈ' મૃપાયાદિનઃ સન્તિ ॥ સૂ-૪ ॥

પુનરપ્યાહ—'તમ્હા' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તમ્હા દાણવયપોસહાણં તવસંજમવંભચેરકલ્લા-
ણમાઈયાણ નત્થિફલ, નવિ ચ પાણવહે અલિયવયણં ન ચેવ
ચોરક્કરણં પરદારસેવુણ વા સપરિગ્ગહપાવકમ્મકરણં પિ

શરીર કો હી જો જીવ માનને વાલે હૈં ઉનકા એસા કહના હૈ કિ યહ
ઉત્પત્તિમાન્ હોને સે સાદિ હૈ ઓર અન્તવાલા હોને સે વિનાશસહિત હૈ ।
(ઇહ ભવે એગે ભવે) ડસ ભવ મે જો હસકા જન્મ હૈ વહી હસકા ભવ
હૈ, હસકે અતિરિક્ત ઓર કોઈ દૂસરા હસકા ભવ-જન્મ નહીં હૈ, ક્યો
કિ (તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ સન્વનાસોત્તિ) જવ હસ શરીર કા વિનાશ
હો જાતા હૈ તવ હસ જીવ કા સર્વનાશ હો જાતા હૈ ફિર હસકા અસ્તિ-
ત્વ હી નહી રહતા હૈ, શુભ ઓર અશુભ કર્મ કુછ મી નહીં રહતે હૈ,
(એવ) હસ તરહ નાસ્તિક વાદી સે લેકર શરીર કો હી જીવ માનને
વાલે યે સબ હી (મુસાવાઈ) મૃપાવાદી (જપતિ) કહતે હૈ । અર્થાત્ યે
સબ મૃપાવાદી હૈ ॥ સૂ-૪ ॥

જીવ માનનારા છે તેમનું એવું ડહેવું છે કે તે ઉત્પત્તિવાળું હોવાથી સાદિ
(આદિ સહિતનું) છે અને અન્તવાળું હોવાથી વિનાશ યુક્ત (સાન્ત) છે
“ ઇહ ભવે એગે ભવે ” આ જન્મમા જે તેનો જન્મ છે, તે જ તેનો
ભવ છે, તે ઉપરાત ખીલે કોઈ પણ તેનો ભવ—જન્મ નથી, કારણ કે
“ તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ સન્વનાસોત્તિ ” જ્યારે આ શરીરનો નાશ થાય છે ત્યારે
આ જીવનો પણ સર્વનાશ થઈ જાય છે—પછી તેનું અસ્તિત્વ જ રહેતું નથી,
શુભ અને અશુભ કર્મ જેવું કંઈ પણ રહેતું નથી “ એવ ” આ રીતે નાસ્તિક
વાદીથી લઈને શરીરને જ જીવમાનનાર તે બધાને “ મુસાવાઈ ” મૃપાવાદી
“ જપતિ ” કહે છે એટલે કે તે બધા અસત્ય વદનાર છે ॥ સૂ-૪ ॥

યુક્તા । યતો हि स्वभावत एव कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यते, न तत्र कारणविशेष नियम
माहात्म्यमन्यथा कथं चेतनान्मनुष्यादेश्चेतनं य૫કામત્કુણાદિક ચેતનાદચેતન મૃત્ર-
પુરોપાદિકમ્, અચેતનાત્ કાષ્ઠાચેતન ઘુણકોટાદિકમ્, અચેતનાત્કાષ્ઠાદચેતન ચૂર્ણા-
દિક ચ જાયતે । નહિ અચેતનસ્ય ચેતનકારણતા ચેતનસ્ય ચાચેતન કારણતા યુક્તા !
તસ્માજ્જન્યજનક માત્રમાત્રમેવોત્પદ્યમાના નામર્થાનામન્તિ નાન્યો માતાપિતૃપુત્રાદિ
વિશેષ इति । મૃપાવાદિતા તુ જન્યજનકભાવસ્ય સર્વેષુ તુલ્યત્વેઽપિ માતાપિત્રોરત્ય-

સ્થાન મેં ગમન કરના નહીં હૈ, (અમ્મા પિયરો નતિય) માતા પિતા મી
નહીં હૈ-ઉત્પત્તિ માત્ર કારણતા કો લેકર માતૃત્વ પિતૃત્વ કી કલ્પના
યુક્ત નહીં હૈ ક્યોં કિ સ્વભાવ સે હી ચાહે જિસસે ચાહે જો ઉત્પન્ન હો
જાના હસમેં કારણવિશેષ કે નિયમ કી કોઈ મહત્તા નહીં હૈ । યદિ ઈસી
વાત માની જાવે નો ફિર જો ચેતન મનુષ્યાદિ સે ચેતન ય૫કા મત્કુણ આદિ
ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ ચેતન સે અચેતન મત્ર પુત્ર પુરિષ આદિ ઉત્પન્ન
હોતે દેખે જાતે હૈ, અચેતન ઘુણ કોટ આદિ ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ,
અચેતન કાષ્ઠ સે અચેતન ચૂર્ણ આદિ હોતે દેખે જાતે હૈ સો યે સબ
કૈસે ઉત્પન્ન હો સકેંગે, ક્યોં કિ અચેતન ચેતન કો ચેતન કે પ્રતિકાર
ણતા નહીં હોતી હૈ ઔર ચેતન કો અચેતન કે પ્રતિકાણતા નહીં હોતી
હૈ. હસલિયે ઉત્પન્નમાન પદાર્થોં મેં કેવલ જન્ય જનક સબધ માત્ર હી
સાપેક્ષ હોતા હૈ-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ સબધ વિશેષ નહીં । ઈસ પ્રકાર
કે કથન મેં મી મૃપાવાદિતા ઈસ પ્રકાર સે આતી હૈ યદ્યપિ જન્ય જનક

સિદ્ધિસ્થાનમા ગમન કરવાનુ નથી, “ અમ્માપિયરો નતિય ” માતા પિતા પણ
નથી,-ઉત્પત્તિમાત્ર કારણતાને લઈને માતૃત્વ પિતૃત્વની ઉદ્ધપના થોગ્ય નથી
કારણ કે સ્વભાવથી જ જે ઈચ્છે છે તે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે-તેમા કોઈ કારણ
વિશેષના નિયમનુ મહત્ત્વ નથી જે એવી વાત માની લેવામા આવે તો પછી
ચેતન મનુષ્ય આદિથી ચેતન જૂ માડડ આદિ ઉત્પન્ન થતા જેવામા આવે છે,
ચેતનથી અચેતન મૃત્ર, મળ આદિ ઉત્પન્ન થતા જેવામા આવે છે, અચેતન
કાષ્ઠમાથી ચેતન કીડા આદિઉત્પન્ન થતા જેવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી
અચેતન લાડડાનો વહેર આદિ થતા જેવામા આવે છે તે બધુ કેરી રીતે
ઉત્પન્ન થાય ? કારણ કે અચેતનને ચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી અને
ચેતનને અચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી, તેથી ઉત્પન્ન થતા પદાર્થોમા
કેવળ જન્ય જનક સબધ જ સાપેક્ષ થાય છે-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ વિશિષ્ટ
સબધ નહીં તે પ્રકારના કથનમા પણ મૃપાવાદિતા એ રીતે આવે છે જે કે જન્ય

રૂપત્વે જીવરૂપત્વમપિ સ્પષ્ટમેવ સ્યાત્, સ્વભાવત્ત્વેન સર્વેષામેક-યાન્ તથા ચ
 એકસ્મિન્ કાર્યકારણભાવસ્ય નિરૂપણાઽસમ્ભવાન્નરકાદિવિચિત્રતા નિષ્કારણા
 સ્યાત્ ન ચ કિમપિ નિષ્કારણ ભવતિ, તથા સતિ ઘટપટાદેરપિ નિષ્કારણતા
 સ્યાદિત્યેતેષા મૃપાપાદિત્વ સુવ્યક્તમેવ । ‘ન દેવલોગો વા અત્યિ’ ન દેવલોકો
 વાઽસ્તિ । ‘નય અત્યિ સિદ્ધિગમણ’ ન ચાસ્તિ સિદ્ધિગમનમ્ । ‘અમ્માપિયસો
 નત્યિ’ અમ્માપિતસો ન સ્તઃ, ઉત્પત્તિમાત્રકારણત્વેન માતાપિતૃત્વ કલ્પના ન

એક રૂપ હી હૈં, તથા પ્રાણાતિપાત આદિ સે જનિત કર્મ યે બી મથ સ્વ
 ભાવરૂપ હૈં । હસ પ્રકાર સત્ર મેં એક સ્વભાવરૂપતા માનને પર ઢન પ્રાણા-
 તિપાત આદિકોં મે જીવરૂપતા કી પ્રશક્તિ આ જાતી હૈ, ક્યોં કિ
 સત્ર મેં બી એક સ્વભાવરૂપતા કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । હસ તરહ
 હોને પર કિસી એક મે બી કાર્યકારણ ભાવ કા નિરૂપણ અસમ્ભવ બન
 જાતા હૈ, અતઃ નરકાદિરૂપ વિચિત્રતા નિષ્કારણક ઠહરતી હૈ, પરન્તુ
 વિચાર કરને પર યહ વિચિત્રતા નિષ્કારણક તો હૈ નહીં । યદિ હસે
 નિષ્કારણક માના જાવે તો ઘટ પટ આદિ રૂપ જો યહ પદાર્થોં મે વિવિ
 વ્રતા હૈ ઉસે બી અથવા ઘટ પટ આદિ જો પદાર્થ હૈ ઉન્હેં બી નિષ્કાર
 ણક હી માનના પડેગા પરન્તુ યે સત્ર નિષ્કારણક નહીં હૈ, -સકારણક હૈં,
 હસ તરહ સકારણક હોને પર બી હન્હેં નિષ્કારણક કહના, અસત્યમા
 ણ હી હૈ, ઓર યહ હનકા હસ રૂપ સે સ્પષ્ટ હી હૈ । હસી તરહ (ન
 દેવલોગો વા અત્યિ) દેવલોક નહીં હૈ, (ન ય અત્યિ સિદ્ધિગમણ) સિદ્ધિ

રૂપ જ છે, તથા પ્રાણાતિપાત આદિ અને પ્રાણાતિપાત આદિ વડે ઉપાર્જિત
 કર્મ એ બધુ સ્વભાવરૂપ છે આ રીતે બધામા સ્વભાવરૂપતા માની લેવામા
 આવે તો તે પ્રાણાતિપાત આદિમા જીવરૂપતાની પ્રસક્તિ આવી જાય છે, કારણ
 કે સૌમા એક સ્વભાવરૂપતાનો સદ્ભાવ જણાય છે આમ હોય તો કોઈ એકમા
 પણ કાર્યકારણ ભાવનું નિરૂપણ અસંભવિત બની જાય છે, એ રીતે તો નરકા
 દિરૂપ વિચિત્રતા નકામી ઠરે છે, પણ વિચાર કરવામા આવે તો તે વિચિત્રતા
 નકામી તો નથી જો તેને નકામી માનવામા આવે તો પદાર્થોમા ઘટ-ઘડો,
 પટ આદિરૂપ જે વિચિત્રતા છે તેને પણ અથવા ઘટ પટ આદિ જે પદાર્થો છે
 તેમને પણ નકામા માનવા પડશે, પણ તે બધા નિષ્કારણ-નકામા-નથી, સકા
 રણક છે આ રીતે સકારણક હોવા છતાં પણ તેને નિષ્કારણક કહેવી તે અસ
 ત્યભાવજી જ છે અને તે વાત ઉપર સમજાવ્યા પ્રમાણે સ્પષ્ટ જ છે એ જ
 પ્રમાણે “ ન દેવલોગો વા અત્યિ ” દેવલોક નથી, “ ન ય અત્યિ સિદ્ધિગમણ ”

युक्ता । यतो हि स्वभावत एव कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यते, न तत्र कारणविशेष नियम माहात्म्यमन्यथा कथं चेतनान्मनुष्यादेवेतन् युकामत्कुणादिक चेतनादचेतन मूत्र-पुत्रीपादिकम्, अचेतनात् काष्ठाचेतन घुणकीटादिकम्, अचेतनात्काष्ठादचेतन चूर्णादिकं च जायते । नहि अचेतनस्य चेतनकारणता चेतनस्य चाचेतन कारणता युक्ता । तस्माज्जन्यजनक भावमात्रमेवोत्पद्यमाना नामर्यानामस्ति नान्यो मातापितृपुत्रादि विशेष इति । मृपावादिता तु जन्यजनकभावस्य सर्वेषु तुल्यत्वेऽपि मातापित्रोरत्य-

स्थान में गमन करना नहीं है, (अम्मा पिघरो नत्थि) माता पिता भी नहीं हैं-उत्पत्ति मात्र कारणता को लेकर मातृत्व पितृत्व की कल्पना युक्त नहीं है क्योंकि स्वभाव से ही चाहे जिससे चाहे जो उत्पन्न हो जाता इसमें कारणविशेष के नियम की कोई महत्ता नहीं है । यदि ऐसी बात मानी जावे तो फिर जो चेतन मनुष्यादि से चेतन युकामत्कुण आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं चेतन से अचेतन मूत्र पुत्र पुत्रि आदि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन घुण कीटादि उत्पन्न होते देखे जाते हैं, अचेतन काष्ठ से अचेतन चूर्ण आदि होते देखे जाते हैं सो ये सब कैसे उत्पन्न हो सकेंगे, क्योंकि अचेतन चेतन को चेतन के प्रतिकारणता नहीं होती है और चेतन को अचेतन के प्रतिकारणता नहीं होती है । इसलिये उत्पन्नमान पदार्थों में केवल जन्य जनक संबंध मात्र ही सापेक्ष होता है-मातृत्व पितृत्व आदि संबंध विशेष नहीं । इस प्रकार के कथन में भी मृपावादिता इस प्रकार से आती है यद्यपि जन्य जनक

सिद्धिस्थानमा गमनं करवानु नथी, “ अम्मापिघरो नत्थि ” माता पिता पशु नथी, -उत्पत्तिमात्र कारणताने लधने मातृत्वं पितृत्वं उदयना योग्य नथी कारणं ते स्वभावधी न न्ने धिउं छे ते उत्पन्नं थधं जय छे-तेमा डोअं कारण विशेषना नियमनु भडत्वं नथी जे अेवी बात मानी लेवामा आवे तो पछी चेतन मनुष्य आदिथी चेतन नू भाउड आदि उत्पन्न थता जेवामा आवे छे, चेतनथी अचेतन मूत्र, मण आदि उत्पन्न थता जेवामा आवे छे, अचेतन काष्ठमाथी चेतन कीटा आदि उत्पन्न थता जेवामा आवे छे, अचेतन काष्ठमाथी अचेतन लाउडानो वडेर आदि थता जेवामा आवे छे ते पधु डेरी रीते उत्पन्न थथ ? कारणं ते अचेतनने चेतनना प्रत्ये कारणता डोती नथी अने चेतनने अचेतनना प्रत्ये कारणता डोती नथी, तेथी उत्पन्न थता पदार्थांमा डेवण जन्य जनक संबंध न सापेक्ष थथ छे-मातृत्व पितृत्व आदि विशिष्ट संबंध नही ते प्रकारना कथनमा पशु मृपावादिता अे रीते आवे छे जे डे जन्य

ન્તહિતસાધનત્વેન વિશેષત્વાત્ । સ્વમાનસાદ નિરૂપ્ય નિયતિવાદમાદ—નાપિ 'પુરિસકારો' પુરુષકાર ઉદ્યોગો નાસ્તિ, ભાગ્યાધીનમકરગ્રાથસિદ્ધેઃ, ઉદ્યોગસ્ય સુખાદિસાધનત્વે સતિ કોઽપિ જગતીતલે દુઃખી સ્થાન, દૃશ્યન્તે હિ ઉદ્યોગિનો દુઃખિનો ગ્રહ્યતિત્ત્વમિતિ માત્રઃ ।

અસ્ય મૃષાત્વ તુ મિદ્ધમેત્ત લોકે અગ્રે સમુપસ્થિતસ્યાપિ ભોજ્યસ્ય નદિ દસ્તો- ધોગમન્તરા ભોજન સમ્પદ્યતે અતઃપચ કીટૈષ્વપિ ભોજ્યાનયનાદી પ્રવૃત્તિર્દૃશ્યતે ઇત્યાકીટપ્રસિદ્ધસ્ય પુરુષકારસ્થાપલાપેન પ્રમાણાતીત નિયતિમતસ્વીકારાત્ । 'પચ્ચ-

ભાવ સમસ્ત પદાર્થો મેં તુત્ત્વરૂપ મેં હૈ ફિર મી માતૃત્વ પિતૃત્વ સયધ માતા પિતા મે અત્યન્ત દિન કે સાધકકર્તા રોને સે ણકુ ચિગેપ સયપ હૈ ।

અવ સૂત્રકાર સ્વમાનસાદકા નિરૂપણ કર નિયતિવાદ કા નિરૂપણ કરતે હૈ—(ન વિ અત્થિ પુરિસકારો) સકલ કાર્યોની સિદ્ધિ ણક ભાગ્ય કે હી આધીન હોતી હે ઇસલિયે ઉદ્યોગ નામની કોઈ વસ્તુ નહીં હૈ । યદિ ઉદ્યોગ કો સુખાદિ કાર્ય સાધક માના જાવે તો દુનિયા મે કોઈ વ્યક્તિ દુઃખી નહીં હોના ચાહિયે પરન્તુ એસા નહીં હૈ—અનેક ઉદ્યોગી દુઃખી દેખે જાતે હૈ, ઇસલિયે પુરુષાર્થ—અર્થ સાધક નહીં હોતા હૈ । ભાગ્ય હી અર્થ સાધક હૈ એસા નિયતિવાદ મી મૃષાવાદરૂપ ઇમલિયે હૈ કિ હમ લોક મેં યહ પ્રત્યક્ષ મેં દેખતે હે કિ આગે રહ્યા હુઆ મી ભોજન જયતક દસ્તોદ્યોગરૂપ પુરુષાર્થ સે સવધિત નહીં ક્રિયા જાતા હૈ તથતક વહ મુંહ મેં નહીં આતા હૈ । ઇસલિયે કીટ આદિ મેં મી અપને ભોજ્ય પદાર્થ કે પદાર્થ કો લાને રૂપ પુરુષાર્થની પ્રવૃત્તિ દેખી જાતી હૈ । ઇસ

જનક ભાવ જો કે સમસ્ત પદાર્થોમા તૂત્ત્વરૂપે છે છતાં પણ માતૃત્વ પિતૃત્વ સબધ માતા પિતામા અત્યંત હિતનો સાધક—કર્તા હોવાથી એક વિશિષ્ટ સબધ છે સ્વભાવવાદનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર નિયતિવાદનું નિરૂપણ કરે છે—“ન વિ અત્થિ પુરિસકારો” સધના કર્મોની સફળતા એક માત્ર ભાગ્યને જ આધીન હોય છે, તેથી ઉદ્યોગ નામની કોઈ વસ્તુ નથી જો ઉદ્યોગને સુખાદિની પ્રાપ્તિ સુધાધન માનવામા આવે તો દુનિયામા કોઈ જીવ હુ ખી હોવો જોઈએ નહીં, પણ એવી પરિસ્થિતિ હોતી નથી—અનેક ઉદ્યોગી જીવો પણ હુ ખી દેખાય છે, તેથી પુરુષાર્થ, અર્થસાધક નથી ભાગ્ય જ અર્થસાધક છે એવો મત ધરાવતો નિયતિવાદ પણ એ ગરજો મૃષાવાદ છે કે આપણી નજર સમક્ષ મૂકેલું ભોજન પણ જ્યાં સુધી હાથ વડે ઉદ્યોગ—પુરુષાર્થ ન કરવામા આવે ત્યાં સુધી મોમા જતુ નથી તે કાળે જ તૂઓમા પણ ચોતાના ભોજન માટેના પદાર્થો ભાવવાના પુરુષાર્થની પ્રવૃત્તિ જોવા મળે છે આ પ્રમાણે ૧મા

पखाणरवि नत्थि ' प्रत्याख्यान साधकर्मनिवृत्तिलक्षणमपि नास्ति धर्मस्याभावे
तत्साधनस्य प्रत्याख्यानस्याप्यभावः । अस्य मृपात्व, सर्वज्ञ वचनविरोधात् । ' न
वि अत्थि ' नापि च स्तः ' कालमच्च ' कालमृत्यु=काल=भूतभविष्यद् वर्तमान
लक्षणः कालः मृत्यु=मरण च । अथवा नापि चास्ति कालमृत्युः=काले=आयु-
ष्यकर्मदलिकक्षयाऽनसरे मृत्युर्मरणम् । 'अरिहता' तथा अर्हन्तस्तीर्थकराः 'चक्रवट्टी'
चक्रवर्तिनः=वलदेवा वासुदेवा या न सन्ति प्रमाणाभावात् । नापि सन्ति ' केइ '
केऽपि-गौतमादय, ' रिसओ ' ऋषयः=शमदमसयमाधनुष्ठानपरायणाः ऋषयो

तरह कीटतक मे प्रसिद्ध पुरुषार्थ का अपलाप कर केवल प्रमाणातीत
नियतिवाद स्वीकारार्ह कैसे हो सकता है । पुरुषार्थ का त्यागकर इसकी
स्वीकृति से तो मृपावादिता ही इसमें आती है । (पञ्चपखाणमवि
नत्थि) सावधकर्मों से निवृत्ति होनी इसका नाम प्रत्याख्यान है । यह
कहना कि धर्म के अभाव में धर्म के साधनभूत प्रत्याख्यान का भी
अभाव है । सो यह कथन भी मृपावाटरूप इसलिये है कि इसमें सर्वज्ञ
के वचन से विरोध आता है । तथा (न वि अत्थि कालमच्च य) इस
प्रकारकी मान्यता कि-भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल नहीं है, मरण
भी नहीं है, अथवा आयुर्कर्म के दलिकों के क्षय होने के अवसर में
भी मरण नहीं होता है, (अरिहता चक्रवट्टी, वलदेवा वासुदेवा नत्थि)
अर्हन्त-तीर्थकर, चक्रवर्ती, वलदेव, वासुदेव ये सब प्रमाण के अभाव
से कोई भी नहीं हुए हैं और (नेवत्थि के इरिसओ) न गौतम आदि
ऋषि ही हुए हैं, क्यों कि-शम, दम, सयम आदि अनुष्ठानों में पराय-

पण प्रसिद्ध पुरुषार्थनु आरोपण उर्या पछी प्रमाणातीत नियतिवाद उंची रीते
स्वीकार्य ठानी राके ? पुरुषार्थनो त्याग करीने तेनी स्वीकृति उरवाभा तो मृपा
वादिता न रडेले छे " पञ्चपखाणमवि नत्थि " सावध उर्मा-पापउर्माथी निवृत्त
थवु तेनु नाम प्रत्याख्यान छे ओम उडेवु के धर्मना अभावे धर्मना साध
नइप प्रत्याख्याननो पणु अभाव छे ओवु कथन पणु ते डारले मृपावाटरूप
छे उ तेमा सर्वज्ञना वचननो विरोध थाय छे तथा " न वि अत्थि काल
मच्चू य " आ प्रडारनी मान्यता के भूत, भविष्य अने वर्तमानकाल नथी, मरण
पणु नथी, अथवा आयु उर्माना समूहने क्षय थवानो अवसर आवे तो पणु
मरण थतु नथी, " अरिहता चक्रवट्टी, वलदेवा वासुदेवा नत्थि " प्रमाणना
अभावे, अर्हन्त-तीर्थकर, चक्रवर्ती वलदेव, वासुदेव वगेरे केअ पणु थया
नथी अने " नेवत्थि के इरिसओ " गौतम आदि ऋषि थया नथी, डारणु के-
शम, दम सयम आदि अनुष्ठानोमा परायणु डाय ते न व्यक्तिने ऋषि

વિવક્ષિતાઃ કિન્તુ શમદમાદેર્વસ્તુત્વાભાગાન્ન તસ્યાનુઘ્ઠાનયતા ઋપિત્વમિદિઃ ।
 નેદ સત્ય, શાસ્ત્રાધ્યયનશિષ્યશિક્ષાપરમ્પરાઽનાદિપ્રવાહસ્યાઈદાઘભાવે ઉચ્છેદ
 પ્રસદ્ભાત્ । ‘ ધમ્માધમ્મફલ વિ ’ ધર્માધર્મફલમપિ = દેવગ્રોહનરકાદિપ્રાપ્તિલક્ષણં
 કિન્ચિત્ ‘ વહુય ’ વહુન્મ્=અધિક ‘ થોવ વા ’ સ્તોત્રમલ્પ નાસ્તિ, ધર્માધર્મયો
 રપ્રત્યક્ષત્વેન વસ્તુત્વાભાગાત્ ‘ તમ્હા ’ તસ્માત્ ન કિમપિ યુક્તવાદિકમિતિ એવ
 ‘ જાણિક્કણ ’ જ્ઞાત્વા ‘ જહા ’ યથા=યેન કેનાપિ પ્રકારેણ સુવહુ=અત્યન્તમ્ ‘ ઇદિ-
 યાણુકૂલેસુ ’ ઇન્દ્રિયાનુકૂલેષુ=શ્રોત્રાદીન્દ્રિયમિયેષુ ‘ સવ્વવિસણ્ણુસુ ’ સર્વવિષયેષુ=

ળભૂત વ્યક્તિ હી ઋપિ કહલાતે હેં, કિન્તુ શમ, દમ આદિ હી જય વસ્તુ
 ભૂત-વાસ્તવિક-નહીં હે તો ફિર ઇનકે અનુઘ્ઠાન કરને વલો મેં ઋપિત્વ
 કી સિદ્ધિ કૈસે હો સકની હૈ-મૃષાવાદરૂપ હી હૈ-સત્ય નહીં હૈ, કારણ-
 શાસ્ત્રાધ્યયન, શિષ્યશિક્ષા આદિ કા જો યહ અનાદિકાલ સે પરમ્પરારૂપ
 સે પ્રવાહ ચલા આ રહા હૈ યહ યદિ તીર્થેકર આદિ ન હુળ હોતે તો
 ઉચ્છેદ કો પ્રાપ્ત હો જાતા । ઇસી તરહ સે (ધમ્માધમ્મ ફલ વિ ન
 અત્થિ કિન્ચિવહુય વા થોવ વા) જો ઓર યહ કિ-“ ધર્મકા ફલ સ્વર્ગાદિ
 કી પ્રાપ્તિ ઓર અધર્મ કા ફલ નરક આદિ કી પ્રાપ્તિ હોના યહ ન થોડે
 રૂપ મેં હૈ ઓર ન વહુત રૂપ મેં હૈ, ક્યોં કિ ધર્મ ઓર અધર્મ યે અપ્રત્ય-
 ક્ષભૂત હૈ અતઃ ઇનમેં વસ્તુત્વઃ-અર્થે ક્રિયા કારિત્વ કા અભાવ હૈ । (તમ્હા)
 ઇસલિયે જય પુણ્યપાપ આદિ કોઈ વસ્તુભૂત પદાર્થ હૈ હી તય (એવ
 જાણિક્કણ) એસા સમજકર (જહા) જિસ કિસી ભી તરહ સે (સુવહુ
 ઇંદિયાણુકૂલેસુ) ઇન્દ્રિયો કો અત્યન્ત પ્રિય લગને વામે (સવ્વવિસણ્ણુસુ)

કહેવાય છે, પણ શમ, દમ આદિ જ ને વાસ્તવિક ન હોય તો તેનું અનુ
 ઘ્ઠાન કરનારમા ઋપિત્વની સિદ્ધિ કેવી રીતે સંભવી શકે છે-એ તો મૃષાવાદ
 રૂપ જ છે-સત્ય નથી, કારણ કે શાસ્ત્રાધ્યયન, શિષ્યશિક્ષા આદિનો જે પ્રવાહ
 અનાદિકાળથી પરપરા રૂપે ચાલ્યો આવે છે તે ને તીર્થેકર આદિ થયા ન
 હોત તો ઉચ્છેદ-નાશ પામ્યો હોત એ જ પ્રમાણે “ ધમ્માધમ્મફલ વિ ન
 અત્થિ કિન્ચિ-વહુય વા થોવ વા ” બીજી આ પ્રકારની માન્યતા કે “ ધર્મનું
 ફળ સ્વર્ગાદિની પ્રાપ્તિ અને અધર્મનું ફળ નરકાદિથી પ્રાપ્તિ તે થોડા કે વધારે
 પ્રમાણમા અસ્તિત્વ ધરાવતું નથી, કારણ કે ધર્મ અને અધર્મ અપ્રત્યક્ષભૂત
 છે તેથી તેમનામા વસ્તુત્વ-અર્થે ક્રિયા કારિત્વનો અભાવ છે “ તમ્હા ” તેથી
 ને પુન્યપાપ આદિ કોઈ વસ્તુભૂત પદાર્થ છે જ નહીં “ એવ જાણિક્કણ ”
 એવું સમજીને ‘ જહા ’ જે કોઈ પણ પ્રકારે “ સુવહુ ઇંદિયાણુકૂલેસુ ” ઇન્દ્રિ-
 યોને અત્યન્ત પ્રિય લાગે તેવા “ સવ્વવિસણ્ણુસુ ” શબ્દાદિ સઘળા વિષયોમા

શબ્દાદિષુ 'વદ્દેહ' વર્તધ્વ ગઢાદીન્ સર્વવિષયાન્ યથેન્દ્રિયપ્રમુદ્ધધ્વમ્, 'નત્થિ' નાસ્તિ 'કાઙ્' કાચિદપિ 'કિરિયા અકિરિયા વા' ક્રિયા = તત્ર - સત્ક્રિયા શાસ્ત્રોક્તાનુષ્ઠાનરૂપા । અક્રિયા=અમત્ક્રિયા સાવધકર્માનુષ્ઠાનરૂપા, આસ્તિક કલ્પિતેનાપ્રમાણત્વાત્, એવ 'નત્થિયવાદિણો' નાસ્તિકવાદિનઃ 'વામલોગવાદી' વામલોકવાદિનશ્ચ મળન્તિ=કથયન્તિ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

પુનરપિ તાનેવાદ—'ઇમપિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ઇમંપિ વિદ્વ્ય કુદસણં અસઘ્ભાવવાદિણો પળ્લવેતિ મૂઢા સંભૂઓ અઢકાઓ લોગો સયમુળા સય ચ નિમ્મિઓ એવં એય અલિય પય પતિ. ॥ સૂ૦ ૬ ॥

ટીકા—ઇમનુપદવક્ત્રમાણમપિ 'વિદ્વ્ય' દ્વિતીય 'કુદસણ' કુદર્શન = કુત્સિત દર્શન=અસત્યસિદ્ધાન્તમ્ 'અસઘ્ભાવવાદિણો' અસદ્ભાવવાદિનઃ = અમન્તો ભાવાઃ=યેવા તે તથા તે ચ તે વાદિનસ્તથા મૂઢા 'પળ્લવેતિ' પ્રજ્ઞાપયન્તિ યત્

શબ્દાદિ સઘ વિષયો મેં (વદ્દેહ) ઇચ્છાનુસાર પ્રવૃત્તિ કરતે રહના ધાતિયે । (નત્થિ કાઙ્ કિરિયા અકિરિયા વા) શાસ્ત્રોક્તઅનુષ્ઠાન રૂપ ન કોઈ ક્રિયા-સત્ક્રિયા હૈ ઓર ન સાવધકર્માનુષ્ઠાન રૂપ કોઈ અક્રિયા-અસત્ક્રિયા હૈ તો કેવલ આસ્તિકવાદિયોં કી કોરી કલ્પનાઈ હૈ । इनमें वास्तविकता कुछ भी नहीं है । (नत्थियवादिणो वामलोगवाई) नास्तिकवादी और वामलोकवादी (एव भणति) इस प्रकार कहते हैं वह सय कथन मृषावादरूप है ॥सू. ५॥

ફિર કહતે હૈ—'ઇમ પિ વિદ્વ્ય' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—અનુપદ વક્ત્રમાણ (ઇમપિ વિદ્વ્ય) યહ દૂસરા કુદર્શન મો કિ જિસે (અસઘ્ભાવવાદિણો) અસદ્ભાવવાદી તથા (મૂઢા) મૂઢજન

“વદ્દેહ” ઇન્દ્રિયનુસાર પ્રવૃત્તિ કર્યા કરવી જોઈએ “નત્થિ કાઙ્કિરિયા અકિરિયા વા” શાસ્ત્રોક્ત અનુષ્ઠાનરૂપ કોઈ ક્રિયા અતઃ ક્રિયા નથી, કે સાવધકર્માનુષ્ઠાનરૂપ કોઈ અક્રિયા અમત્ક્રિયા નથી, તે તો કેવળ આસ્તિકવાદીઓની ખાલી કલ્પનાઓ જ છે તેમા કોઈ પણ વાસ્તવિકતા નથી ” “નત્થિયવાદિણો વામલોગવાઈ” નાસ્તિકવાદી અને વામલોકવાદી “એવ મળતિ” તે આ પ્રમાણે કહે છે, તે તેમનુ કથન મૃષાવાદ છે ॥ સૂ-૫ ॥

વળી કહે છે—“ઇમ પિ વિદ્વ્ય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—નીચે પ્રમાણેનુ “ઇમ પિ વિદ્વ્ય” બીજુ કુદર્શન કે જે “અસઘ્ભાવવાદિણો” અસદ્ભાવવાદી તથા “મૂઢા” મૂઢ લોકો “પળ્લવેતિ” પ્રજ્ઞાપિત કરે

(पण्णवेति) प्ररूपित करते हैं, मृपाचारूप यह दर्शन यह है—(लोगो अङ्काओ समूओ) यह पृथिवी अप्र, तेज, वायु वनस्पति, तिर्यच, मनुष्य, देव, नारकरूप लोक अडे से उत्पन्न हुआ है। अडे से लोक को उत्पन्न हुआ मानने वालों का मत इस प्रकार है यह लोक पहले पृथिवी आदि पाँचभूतों से रहित था, और केवल जलमय ही था। इसमें एक चिरकाल से गीला अडा पड़ा हुआ था, जब वह फटा तो इसके दो टुकड़े हुए—एक टुकड़ा पृथिवीरूप हुआ और दूसरा टुकड़ा आकाशरूप हुआ—पृथिवी रूप टुकड़े में मनुष्य, तिर्यच, नारक आदिरूप तथा आकाशरूप टुकड़े में सुर असुर आदिरूप समस्त जगत् उत्पन्न हो गया। इस तरह अडे से यह सृष्टि हुई वे कहते हैं। (सयभूणा सय च निम्मिओ) कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि यह जो दृश्यमान जगत् है वह उत्पत्ति से पहिले पहिले पृथिवी आदि पंचभूतों से रहित था। इसमें स्थावर, जगम, अमर,

છે તે મૃધાવાદરૂપ દર્શન આ પ્રમાણેનું છે—“લોગો અઢકાઓ સમૂઓ” આ પૃથ્વી, અપ્, તેજ વાયુ, વનસ્પતિ, તિર્યચ, મનુષ્ય, દેવ અને નારકરૂપ લોકો ઇંડામાથી ઉત્પન્ન થયા છે ઇંડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયેલા માનનાગ્ની આ પ્રજા રની માન્યતા છે—આ લોકો પહેલા, પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતો અને ક્રૂર જળમય જ હતો તેમા એક ચિરંજીવી ભીનું ઇંડું પડેલું હતું જ્યારે તે ફાટ્યું ત્યારે તેના બે ટુકડા થયા—એક ટુકડો તે પૃથિવીરૂપ થયો અને બીજો ટુકડો આકાશરૂપ થયો. પૃથિવીરૂપ ટુકડામા મનુષ્ય, તિર્યચ, નારક આદિ રૂપ તથા આકાશ રૂપ ટુકડામા સુર અસુર આદિ રૂપ સમસ્ત સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થઈ ગઈ આ રીતે ઇંડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયાનું તેઓ દર્શાવે છે ‘સચ્ચિદાનંદ સયં ચ નિમ્મિત્તમ્’ કોઈ કોઈ એવું પણ કહે છે કે આ જે જગત નજરે પડે છે તે ઉત્પત્તિ પહેલા પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતું તેમા

भेद केवलमर्णवस्वरूप तमोभूतमासीत्, तत्र-तपस्तप्यमानस्य शयानस्य विभो-
र्भगवतो नाभेः कमलमुदपद्यत, तत्र ब्रह्मा समुत्पन्नस्तस्मात् सुरासुरमनुजतिर्यक्
स्थावरजङ्गमभूतपभूतभेदविशेषविशिष्टं जगदुत्पन्नम् । इति एवमुक्तरीत्या
'अलिय' अलीकम्=असत्य 'पयपति' प्रजल्पन्ति । एतेषामलीकृत्य भ्रान्तज्ञा
निभिर्निरूपितत्वात् ॥ सू० ६ ॥

पुनरप्याह—'पयावडणा' इत्यादि ।

मूलम्—पयावडणा इस्सरेण य कयत्तिकेइ । एव विण्हुमयं
कसिणमेव य जगति केइ । एवमेके वदति मोस—एगो आया
अकारगो वेदगो य सुकयस्स य दुक्कयस्स य करणाणि कार-
णाणि य सव्वहा सव्वहि च णिच्चो य णिक्किओ निग्गुणो य
अणुवलेवओ त्ति ॥ सू० ७ ॥

टीका—'पयावडणा' प्रजापतिना=कृतमिदं जगदिति केचित् । एतदलीकृता
प्रमाणवादितत्वात् । तथा 'इस्सरेण' इश्वरेण च 'कयत्ति' कृतमिति 'केइ'

नर, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गरुड, महोरग आदि समस्त विविध
भेद नष्ट थे—यह तो केवल अधिकाराच्छादित अर्णव स्वरूप था ।
इसमें तपस्या करते हुए विष्णु भगवान् की नाभि से एक कमल उत्पन्न
हुआ । उस कमल में ब्रह्माजीने जन्म लिया । उनसे फिर सुर, असुर,
मनुज, तिर्यच, स्थावर आदि अनेक जीवों के भेद प्रभेद वाला यह जगत्
उत्पन्न हुआ । इस प्रकार असद्भाववादियों की ये दोनों प्रकारकी मान्यताएँ
भ्रान्त ज्ञानियों द्वारा निरूपित होने के कारण मृषावादरूप ही हैं ॥सू०५॥

फिरभी इन्हीं को कहते हैं—'पयावडणा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(पयावडणा इस्सरेण य कयत्ति केइ) कितनेक व्यक्ति

जगत् अमर, नर, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर गरुड, महोरग, आदि सम-
स्त विविध लोकेषु अस्तित्व न हेतु ते तो केवल अधिकारधी छवायेल भागर
स्वरूप हेतु तेभा तपस्या कृता विष्णु भगवाननी नाभिमाथी ओठ कमल
पेदा थयु ते कमलभा ब्रह्माओले जन्म लीधा, तेमले सुर, असुर, मनुष्य,
तिर्यच, स्थावर आदि अनेक लोकोना लोह प्रलेहथी युक्त आ जगत रच्यु
आ प्रकारनी असद्भाववादीओनी ते जने प्रकारनी मान्यताओ भ्रान्तज्ञानीओ
द्वारा निरूपित थयेल छवाथी मृषावाद उप न ठे ॥ सू-५ ॥

કેચિત્ નૈયાયિકા इत्यर्थः, तद् यथा क्षित्यदुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घट-
वदिति । जलद्वन्द्वदादौ हेतौनैकान्तिकत्वेनास्यालीकता । एव 'कसिणमेव'
कृत्स्नमेव=सकलमेव 'जग' जगत् 'विष्णुमय' विष्णुमय = विष्णुस्वरूपमिति
'केइ' केचित् उदन्ति तन्मतानुयायिनः, यथा—

“जले विष्णु स्थले विष्णु,—विष्णुः पर्वतमस्तके ।

ज्वालामालाकुले विष्णु, सर्वं विष्णुमय जगत् ॥ १ ॥ ” इति ।

ऐसा मानते हैं कि यह जगत् प्रजापति-ब्रह्माने बनाया है । किन्तु
कहते हैं कि यह जगत् ईश्वरने बनाया है सो इस प्रकार की मान्यता में
अलीकता प्रमाणवाधित होने के कारण आती है । तथा जो नैयायिक
जन ऐसा कहते हैं कि यह जगत् ईश्वर ने बनाया है, क्यों कि यह
घटादिकी तरह कार्य है “ क्षित्यदुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घटवत् ”
सो कार्यत्वरूप हेतु में जल बुद्बुद आदि द्वारा अनैकान्तिक दोष आता है,
इसलिये यह उनका कथन असत्यरूप प्रमाणित हो जाता है । (एव विष्णु-
मय कसिणमेव य जगति केइ) इसी तरह यह सकल जगत् विष्णुमय
है ऐसा भी कोई २ कहते हैं, क्यों कि उनकी ऐसी मान्यता है कि—

“ जले विष्णुः स्थले विष्णु—विष्णुः पर्वतमस्तके ।

ज्वालामाला कुले विष्णुः सर्वं विष्णुमय जगत् ॥ १ ॥ ”

जल में विष्णु हैं, थल में विष्णु हैं, पर्वत की चोटी ऊपर विष्णु हैं,

હજી પણ એ વિષે જે કહે છે — ‘ પચાવટ્ટના ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ પચાવટ્ટના ઇત્યરેણ ચ કયત્તિ કેइ ” કેટલાક લોકો એવું માને
છે કે આ જગત પ્રજાપતિ-બ્રહ્માએ બનાવ્યું છે કેટલાક કહે છે કે આ જગત ઈશ્વરે
બનાવ્યું છે, તો તે પ્રકારની માન્યતામાં મૃધાવાદ-અસત્ય દોષ પ્રમાણબાધિત
હોવાને કારણે આવે છે તથા જે નૈયાયિકો એવું કહે છે કે આ જગત ઈશ્વરે
બનાવ્યું છે કારણ કે તે ઘટાદિના જેવું કાર્ય છે, “ ક્ષિત્યદકુરાદિક કર્તૃજન્ય
કાર્યત્વાત્ ઘટવત્ ” તો કાર્યત્વરૂપ હેતુમાં બુદ્બુદ આદિ દ્વારા અનૈકાન્તિક દોષ
આવે છે, તેથી તેમનું તે કથન અસત્ય રૂપ સિદ્ધ થાય છે “ એવ વિષ્ણુમય
કસિણમેવ ચ જગતિ કેइ ” એ જ પ્રમાણે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય છે
એવું પણ કેટલાક લોકો કહે છે, કારણ કે તેમની એવી માન્યતા છે કે—

“ જલે વિષ્ણુ સ્થલે વિષ્ણુ, વિષ્ણુ, પર્વતમસ્તકે ।

જ્વાલમાલાકુલે વિષ્ણુ, સર્વં વિષ્ણુમય જગત્ ॥ ૧ ॥

જળમાં વિષ્ણુ છે, સ્થળમાં વિષ્ણુ છે, પર્વતના શિખરપર વિષ્ણુ છે,

एतदलीकृता प्रमाणाभावात् मातापित्रादि सकलव्यवहारविच्छेदकत्वाच्च ।
अथ वेदान्तिमतमाह—एव=अमुना प्रकारेण ऐके=अद्वैतब्रह्मणादिन वदन्ति यत्
' एगो आया ' एक एव आत्मा ' मोस ' मृषा=जगत् मिथ्या तदुक्त " ब्रह्मसत्य
जगन्मिथ्या " इति, उक्तञ्च—

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थित ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ ” इति ।

तदलीकृता च — सकललोकप्रत्यक्षभेदमूलकसुखदुःखधर्माधिर्मादिजगद्
व्यवहारोच्छेदप्रसङ्गात् । अथात्माऽऽर्तुत्वमतमाह—‘ अकारगो ’ अकारकः=

अग्नि में विष्णु है, तात्पर्य यह कि यह सब जगत् विष्णुमय है ॥१॥

यह मान्यता भी अलीकस्वरूप ही है, क्योंकि इस मान्यता को
सत्यरूप में प्रमाणित करने वाला कोई भी प्रमाण नहीं है । यदि सब
जगत् को केवल विष्णुमय ही माना जावे तो फिर यह जो उसमें माता
पिता आदि रूप समस्त व्यवहार है उसका उच्छेद प्राप्त होता है ।
(एवमेवे वदति मोस एगो आया) इसी तरह वेदान्तियों का जो यह
कथन है कि एक ही आत्मा है—जगत् मिथ्या है—“ ब्रह्म सत्य जगन्मि-
थ्या । ” कहा भी है—

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥१॥ ” इति ।

प्रत्येक प्राणी में एक ही भूतात्मा व्यवस्थित है । वही जलचन्द्र की
तरह एकरूप व अनेकरूप दिखलाई देता है ॥१॥

અગ્નિમા વિષ્ણુ છે મતલબ એ કે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય ॥૧॥

આ માન્યતા પણ અસત્ય છે કારણ કે આ માન્યતાને સત્યરૂપે સિદ્ધ
કરવાને માટે કોઈ પણ પ્રમાણ નથી જે સમસ્ત જગતને કેવળ વિષ્ણુમય જ
માની લેવામા આવે તો તેમા માતા પિતા આદિ રૂપ જે વ્યવહાર છે તેનું
ખડન થાય છે “ એવમેવે વદતિ મોસ એગો આયા ” એ જ પ્રમાણે વેદાન્તી-
ઓનું આ પ્રકારનું જે કથન છે કે “ આત્મા એક જ જે-જગત મિથ્યા છે—
“ બ્રહ્મસત્ય જગન્મિથ્યા ” કહ્યું પણ છે—

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ” ॥ १ ॥ इति ।

પ્રત્યેક પ્રાણીમા એક જ ભૂતાત્મા રહેલ છે તે જ જલચન્દ્રની જેમ એક
રૂપે કે અનેકરૂપે દેખાય છે ॥૧॥

અયમાત્મા અકર્તા-પુણ્યપાપાદોનામ્ । વેદકઃ=ભોક્તા પુણ્યપાપકર્મફલસ્ય પ્રતિ
 વિમ્બોદયન્યાયાદિતિ ભાવ , તથા-‘ સુકયસ્સ ’ સુકૃતમ્ય-પુણ્યસ્ય ‘ દુકયસ્મ ’
 દુષ્કૃતસ્ય પાપસ્ય ચ ‘ સઞ્ઘહા ’ સર્વથા ‘ સઞ્ઘર્હિ ’ સર્વત્ર સર્વસ્મિન્ કાલે
 ‘ કારણાણિ ’ કારણાણિ=નિમિત્તભૂતાણિ ‘ કરણાણિ ’ કરણાણિ=વશુરાદીનીન્દ્રિયાણિ,
 નાયમાત્મા । અલીકતાચાસ્ય સસાર્યાત્મનો મૂર્તત્વેન પરિણામિત્વેન કર્તૃત્વોપપત્તેઃ
 તથા ‘ ણિચ્ચો ’ નિત્ય ઇતિ=કેચિત્ , તદપિ ન યુક્તમ્ , ઇકાન્તનિત્યત્વે સુખ

યહ કથન મી મિથ્યારૂપ હી હૈ, ક્યોં કિ હસે મત્ય માનને પર જો
 સકલલોક કે પ્રત્યક્ષભૂત ભેદમૂલક ધર્મ અધર્મ આદિકા વ્યવહાર હોતા
 હૈ ઉસકે ઉચ્છેદ કા પ્રસંગ પ્રાપ્ત હોતા હૈ । ઇસી તરહ જો આત્મા કો
 ઇકાન્તરૂપ સે અકર્તા માનતે હૈ એસે સાર્થો કી વહ માન્યતા હૈ કિ
 (અકારગો વેદગોય) યહ આત્મા પુણ્યપાપ આદિકા અકર્તા હૈ, ઓર
 ઉનકે ફલ ભૂત સુખ દુઃખ આદિકા (૧) ‘ પ્રતિવિમ્બોદયન્યાયસે ભોક્તા
 હૈ । તથા કોઈ કહતે હૈં કિ (સુકયસ્સ દુકયસ્સ ય સઞ્ઘહા સઞ્ઘર્હિ
 કારણાણિ ય કરણાણિ) પુણ્ય ઓર પાપ કે સર્વ પ્રકાર સે સર્વકાલ મેં
 કર્તા નિમિત્તભૂતવશુરાદિ ઇન્દ્રિયા હૈં । આત્મા નહીં હૈ, યહ ઉનકી
 માન્યતા અસત્ય હૈ, ક્યોં કિ સસારી આત્મા કથચિત્ મૂર્તિક હૈ ઓર
 પરિણામી હૈ ઇસલિયે કર્તૃત્વ ઓર ભોક્તૃત્વ વન જાતા હૈ । સર્વથા અમૂ

તે કથન પણ મિથ્યારૂપ જ છે, કારણ કે તેને સત્ય માનવામા આવે તો
 સમસ્ત જગતમા નજરે પડતો મૂળભૂત લેહવાળો ધર્મ અધર્મ આદિનો જે વ્ય
 વહાર થાય છે તેનું જાડન થવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થાય છે એ જ રીતે
 આત્માને એકાન્તરૂપે અકર્તા માનનાર સાખ્ય મતવાદીઓની એવી માન્યતા છે
 કે “ અકારગો વેદગોય ” આ આત્મા પુણ્ય પાપ આદિનો કર્તા નથી, અને
 તેમના રૂપ સુખ દુઃખ આદિનો “ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાયથી ” ભોક્તા છે તથા
 કેઈ કેઈ લોકો કહે છે કે “ સુકયસ્સ દુકયસ્સ ય સઞ્ઘહા સઞ્ઘર્હિ કારણાણિ ય
 કરણાણિ ” પુણ્ય અને પાપના સર્વ પ્રકારનો કર્તા સર્વકાળે આત્મા નહીં પણ
 વશુ આદિ ઇન્દ્રિયો છે તેમની તે માન્યતા અસત્ય છે, કારણ કે સસારી
 આત્મા કેટલાક પ્રમાણમા મૂર્તિક છે અને પરિણામી છે, તેથી તેમા કર્તૃત્વ અને

૧ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાય કા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જિસ પ્રકાર સ્ફટિકમણિ કે સાથ જિસ
 વર્ણકા સયોગ હોગા સ્ફટિક મણિ વૈમા હી વર્ણકા લેખને લગ જાતા હૈ ।

૧ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાયનું તાત્પર્ય એ છે કે જેમ સ્ફટિક મણીની સાથે જે
 રંગનો સયોગ થશે, એવા જ રંગનો સ્ફટિક મણી દેખાશે

दुःखबन्धमोक्षाद्यभावात्सद्भावात् । निष्क्रियो ' निष्क्रिय' गमनागमनादिक्रियावर्जितः सर्वव्यापित्वेनावकाशाभावात्, एतदप्यसत्, देहमात्रोपलभ्यमानत्वात् । ' निगुणो ' निर्गुणः=सत्त्वरजस्तमोगुणरहितः, ' अणुवलेवओ ' अनुपलेपकः= निर्लेपः सङ्गवर्जितः आत्मेति कापिलाः, उक्तं च—“ अकर्त्ता निर्गुणोभोक्ता, आत्मा कपिलदर्शने ” इति । सत्त्वरजस्तमोगुणानां साम्यावस्था प्रकृतिः, सैव कर्त्री, पुरुषस्तु पुष्करपलाशवत् निर्लेपश्चेतनोऽकर्त्ता, इति सादृख्याना मतम् । कुदर्शनत्व

र्तिक आत्मा में ये नहीं घनते हैं । (निश्चयो) कोई २ आत्मा को सर्वथा नित्य मानते हैं, सो आत्मा की यह नित्य मान्यता सत्य नहीं है, क्यों कि आत्मा को सर्वथा नित्य मानने पर सुख दुःख एव वध, मोक्ष आदि के अभाव का प्रसंग प्राप्त होता है । (निष्क्रियो) आत्मा को निष्क्रिय मानना इस अभिप्राय से, कि आत्मा व्यापक है और जो व्यापक होता है उसमें अवकाश के अभाव से गमनागमन रूप क्रियाएँ बन नहीं सकती हैं सो ऐसी मान्यता भी मृषावादरूप ही है, कारण कि-आत्मा शरीर में ही उपलब्ध होती है अन्यत्र नहीं । (निगुणो) तथा ऐसा कहना कि “ यह आत्मा सत्त्व, रज और तमोगुण से रहित है और (अणुवलेवओ) पुष्करपलाशवत् निर्लेप-सगवर्जित है । सांख्यों का यही कहना है कि सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है । यह प्रकृति ही करनेवाली होनेसे कर्त्री है, चेतयिता-प्रकृति द्वारा किये गये कार्यों का जानने वाला पुरुषआत्मा तो कमलपत्र के

लोकतृत्व आधी ज्ञाय छे सर्वथा अभूर्त्तिऽ आत्माभा ते जनतु नथी, “ निश्चयो ” केछ केछ मतवाणा आत्माने सर्वथा नित्य माने छे आत्माने अेरीते नित्य मानवु ते सत्य नथी, कारण छे आत्माने सर्वथा नित्य मानवामा आवे तो सुख दुःख अने वध मोक्ष आदिनो अभाव होवानो प्रसंग उपस्थित थशे- “ निष्क्रियो ” केछ केछ लोडो आत्माने अे कारणे निष्क्रिय माने छे छे आत्मा व्यापक छे अने जे व्यापक होय तेमा अवकाशनो अभाव होवाथी गमनागमनरूप क्रियाओ थर्ध शकती नथी ते मान्यता पण मृषावादरूप न छे कारण छे आत्मा शरीरमा न होय छे अन्यत्र होतो नथी “ निगुणो ” तथा “ आ आत्मा सत्त्व, रज अने तमोगुणथी रहित छे ” अेवी मान्यता “ अणुवलेवओ ” तथा कमल पत्र पर रहैला पाणीना जिंदुथी कमल पत्र जेम अलिप्त रहै छे, तेम आत्मा पण ते तत्त्वोथी निर्लेप रहै छे ते मान्यता पण मृषावाद छे आख्येनी अेवी मान्यता छे छे सत्त्व, रज अने तमोगुणनी साम्यावस्थानु नाम प्रकृति छे अे प्रकृति न करनार होवाथी कर्त्री छे-प्रकृति द्वारा करयेल कार्येनि जणुनार पुरुष

अयमात्मा अकर्ता-पुण्यपापादोनाम् । वेदकः=भोक्ता पुण्यपापकर्मफलस्य प्रति
विम्बोदयन्यायादिति भावः, तथा-‘सुक्यस्स’ सुकृतस्य-पुण्यस्य ‘दुक्यस्स’
दुष्कृतस्य पापस्य च ‘सव्वहा’ सर्वथा ‘सव्वहि’ सर्वत्र सर्वस्मिन् काले
‘कारणाणि’ कारणानि=निमित्तभूतानि ‘करणाणि’ करणानि=चक्षुरादीनीन्द्रियाणि,
नायमात्मा । अलीकताचास्य ससार्यात्मनो मूर्तत्वेन परिणामित्वेन कर्तृत्वोपपत्तेः
तथा ‘णिच्चो’ नित्य इति=केचित्, तदपि न युक्तम्, एकान्तनित्यत्वे सुख

यह कथन भी मिथ्यारूप ही है, क्योंकि कि इसे सत्य मानने पर जो
सकललोक के प्रत्यक्षभूत भेदमूलक धर्म अधर्म आदिका व्यवहार होता
है उसके उच्छेद का प्रसंग प्राप्त होता है । इसी तरह जो आत्मा को
एकान्तरूप से अकर्ता मानते हैं ऐसे सांख्यो की यह मान्यता है कि
(अकारणो वेदगोय) यह आत्मा पुण्यपाप आदिका अकर्ता है, और
उनके फल भूत सुख दुःख आदिका (१) ‘प्रतिविम्बोदयन्याय’से भोक्ता
है । तथा कोई कहते हैं कि (सुक्यस्स दुक्यस्स य सव्वहा सव्वहि
कारणाणि य करणाणि) पुण्य और पाप के सर्व प्रकार से सर्वकाल में
कर्ता निमित्तभूतचक्षुरादि इन्द्रिया हैं । आत्मा नहीं है, यह उनकी
मान्यता असत्य है, क्योंकि ससारी आत्मा कथंचित् मूर्तिक है और
परिणामी है इसलिये कर्तृत्व और भोक्तृत्व बन जाता है । सर्वथा अमूर्त

ते कथन પણ મિથ્યારૂપ જ છે, કારણ કે તેને સત્ય માનવામાં આવે તો
‘સમસ્ત જગતમાં નજરે પડતો મૂળભૂત ભેદવાળો ધર્મ અધર્મ’ આદિનો જે વ્ય-
વહાર થાય છે તેનું જાડન થવાનો પ્રમગ ઉપસ્થિત થાય છે એ જ રીતે
આત્માને એકાન્તરૂપે અકર્તા માનનાર સાખ્ય મતવાદીઓની એવી માન્યતા છે
કે “ અકારણો વેદગોય ” આ આત્મા પુન્ય પાપ આદિનો કર્તા નથી, અને
તેમના કૃણરૂપ સુખ દુઃખ આદિનો “ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાયથી ” ભોક્તા છે તથા
કેઈ કેઈ લોકો કહે છે કે “ સુક્યસ્સ દુક્યસ્સ ય સવ્વહા સવ્વહિ કારણાણિ ય
કરણાણિ ” પુન્ય અને પાપના સર્વ પ્રકારનો કર્તા સર્વકાળે આત્મા નહીં પણ
ચક્ષુ આદિ ઈન્દ્રિયો છે તેમની તે માન્યતા અસત્ય છે, કારણ કે સસારી
આત્મા કેટલાક પ્રમાણમાં મૂર્તિક છે અને પરિણામી છે, તેથી તેમાં કર્તૃત્વ અને

૧ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાય કા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જિસ પ્રકાર સ્ફટિકમણિ ક સાથ જિસ
વર્ણકા સયોગ હોગા સ્ફટિક મણિ વૈમાં હી વર્ણકા દોઢને લગ જાતા હૈ ।

૧ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાયનું તાત્પર્ય એ છે કે જેમ સ્ફટિક મણીની સાથે જે
રંગનો સયોગ થશે, એવા જ રંગનો સ્ફટિક મણી દેખાશે

इह जीवलोके 'सुक्य वा' सुकृत वा=सुकृतफल-सुखमास्तिरुमतेन 'दुक्य वा' दुष्कृत=दुष्कर्मफल दुःख वा 'दीर्घ' दृश्यते 'जडच्छाए' यदृच्छया=अकस्मात् काकतालीयन्यायेन अवितर्कितमेव सर्वं समुत्पद्यते । यथा काकागमनसमये अबुद्धिपूर्वक काकोपरिताल्पतन नहि काकस्यैव बुद्धिरस्तियन्मदुपरिताल निपतिष्यति, तथा तालस्यापि नायमभिप्रायो यदह काकोपरि पतिष्यामि, एवमेव सर्वं सुख-दुःखादिजातमतर्कितोपस्थितमेव न कर्तृविशेषबुद्धिपूर्वकम् । तदसत् इदमस्य कारणमिदमस्य कार्यमिति सकलशोकप्रसिद्ध व्यवस्था विच्छेदापत्तेः अन्यथा कथं

झाव कहा गया है कि (जपि किंचि एहिं जीव लोके सुक्य वा दुक्क्य वा दीसई) जो कुछ भी इस जीवलोक में सुकृत अथवा सुकृत का फलरूप सुख-दुष्कृत अथवा दुष्कृत का फलरूप दुःख दिग्बलाई देता है वह सब (जडच्छाए वा) अकस्मात् काकतालीय न्याय से अवितर्कित ही उत्पन्न हो जाता है. जिस प्रकार उड़ता हुआ कौवा तालवृक्ष के नीचे आया और आते ही उस पर ताड़ का फल गिर पड़ा तो उसके इस पतन में न तो काकने ही ऐसा विचार किया कि मेरे ऊपर ताड़ का फल गिर पड़े, और न ताड़फल ने ही ऐसा सोचा कि मैं काक के आते ही उस पर गिर पड़ूँ किन्तु यह उसका पतन अवितर्कित ही हुआ इसी तरह सुख दुःख आदि जो कुछ भी होता है वह सब अतर्कित ही उपस्थित होता रहता है इसमें कर्ता कि विशेष बुद्धि पूर्वकता नहीं है । सो ऐसी मान्यता भी असत्य ही है कारण कि लोक में जो यह व्यवस्था बन रही है कि “ यह इसका कारण है यह इसका कार्य है ” वह सब इस प्रकार की मान्यता में विच्छेद को प्राप्त हो जावेगा । देखो जो

છે કે ' જપિ કિંચિ એહિં જીવલોકે સુક્ય વા દુક્ય વા દીસઈ ' આ જીવલોકમાં જે ડોઈ પણ સુકૃત અથવા સુકૃતના ફળરૂપ સુખ, દુષ્કૃત અથવા દુષ્કૃતના ફળરૂપ દુઃખ નજરે પડે છે તે બધા “ જડછાણ વા ” અકસ્માત્ કાકતાલીય ન્યાયે અવિતર્કિત જ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે જેમ ઉડતો ડાગડો તાડના ઝાડની નીચે આવે અને આવતા જ તેના ઉપર તાડનું ફળ પડ્યું, તો તેના તે પતનમાં ડાગડાએ એવો વિચાર કર્યો ન હતો કે મારા ઉપર તાડનું ફળ પડે અને તાડના ફળે પણ એવો વિચાર કર્યો ન હતો કે ડાગડો આવતા જ હું તેના ઉપર પડું પણ તેનું તે પતન અવિતર્કિત જ થયું હોય છે, એ જ પ્રકારે સુખ દુઃખ આદિ જે કંઈ થાય છે તે બધું અવિતર્કિત જ થયા કરે છે તેમાં કર્તાની વિશેષબુદ્ધિ કારણરૂપ નથી તો એવી માન્યતા પણ અસત્ય જ છે કારણ કે સૃષ્ટિમાં એવી જે વ્યવસ્થા ચાલી ચલી છે કે “ તે આનું કારણ છે, તે આનું કાર્ય છે ” એ બધાનું તે માન્યતાથી બંધન થઈ જશે જુવો જેને તેણે

ચાસ્ય તથાહિ—ન તાવન્નિર્ગુણત્વ ચેતનાસ્વરૂપતાભ્યુપગમાત્ । અનુપલેપકત્વમપિ ન
બદ્ધમુક્તાવસ્થા વ્યવસ્થાવિચ્છેદમસદ્ગાત્ ॥ સૂ. ૭ ॥

પુનરપ્યાહ—‘ અવિ ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—અવિ ય એવમાહંસુ અસત્ત્વભાવ જપિ એહિં કિંચિ
જીવલોગે દોસઈ સુકય વા દુક્કયં વા, એવ જઈચ્છાએ વા
સહાવેણ વાવિ દયિવયપ્પભાવઓ વાવિ ભવઈ, નતિથ તત્થ
કિંચિકયક તત્ત લક્ખણં વિહાણ નિયઈ કારિયા એવ કેઈ
જંપતિ ઇઠ્ઠિરસસાયગારવપરાવહવે કરણાલસા પરુવેતિ
ધમ્મવીમસણં મોસ ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘ અવિ ય ’ અપિ ચ એ=રક્ષ્યમાણરીત્યા ‘ અસત્ત્વભાવ ’ અસદ્ભાવ
‘ આહ સુ ’ આહુઃ=કથયન્તિ કથમિત્યાહ—‘ જપિ ’ યદપિ કિંચિ ‘ કિંચિત્ ’ ‘ એહિં ’

સમાન નિર્લિપ્ત છે । અતઃ કહા છે “ અકર્તા નિર્ગુણો ભોક્તા ” આત્મા
કપિલ દર્શને ” યદ્દામી યુક્તિ યુક્ત નહીં છે કારણ આત્માનો સર્વથા
નિર્ગુણ માનને પર ઉસમે ચેતનત્વ ગુણ કા મી અભાવ હોને સે અચેત
નત્વ કા પ્રસંગ પ્રાપ્ત હોગા, પરંતુ એસી ઘાત તો વહા માની નહીં ગઈ છે,
કર્પો કિ આત્મા કો ચેતના ગુણ સ્વરૂપ સ્વીકાર ક્રિયા ગયા છે । તથા
પુનઃકર પલાશવત્ સર્વથા નિર્લિપ્ત માનને પર ઉસકી જો બદ્ધ-સસારી-
ઔર મુક્ત યે જો દો અવસ્થાઈ હોતી હેં ઉનકી વ્યવસ્થા કા વિચ્છેદ પ્રાપ્ત
હોતા છે ॥ સૂ-૬ ॥

તથા—‘ અવિ ય ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(અવિ ય એવ અસત્ત્વભાવ આહસુ) હસ પ્રકાર સે જો અસ

આત્માતો કમળપત્ર સમાન નિર્લિપ્ત છે તેથી જ કહ્યું છે કે “ અકર્તા નિર્ગુણો
ભોક્તા આત્મા કપિલદર્શને ” તે પણ યુક્તિયુક્ત નથી, કારણ કે આત્માને સર્વથા
નિર્ગુણ માનવામા આવે તો તેમા ચેતનત્વ ગુણનો પણ અભાવ હોવાથી અચે
તનત્વનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે, પણ એમ તો ત્યા માનેલ નથી, કારણ કે
આત્માને ચેતનગુણ સ્વરૂપ સ્વીકાર્યો છે તથા કમળપત્ર પર રહેલ જળાગિન્દુથી
અલિપ્ત કમળ જેવો તેને માનવામા આવે તો તેની બદ્ધ-સસારી અને મુક્ત
એ બે અવસ્થાઓ જે હોય છે તેની વ્યાવસ્થાતુ ખડન થશે ॥ સૂ-૬ ॥

તથા—“ અવિ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ અવિ ય એવ અસત્ત્વભાવ આહસુ ” આ પ્રમાણે જ

યો

તથા દૈવગાદિનઃ—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્ય”, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિતત્પરેપામ્ ॥”

તથા ‘નત્યિ’ નાસ્તિ ‘તત્ય’ તત્ર મર્ત્યલોકે ‘કિંચિ’ કિંચિત્ ‘કચક’ કૃતક=કર્મનિષ્પન્ન ‘તત્ત’ તત્ત્વ=વસ્તુ । તથા ‘લક્ષણવિદ્વાન’ લક્ષણવિદ્યાના =પદાર્થસ્વરૂપપ્રકારાણા નિયતિઃ=માગ્યમેવ ‘કારિયા’ કારિકા=કર્ત્રી, તથા યન્ન કાર્યકારણભાવ કા વિચ્છેદ પ્રાપ્ત હોતા હૈ ।

અય દૈવવાદિયોં કા સ્વરૂપ કહતે હૈ—‘દવિચ્છેદભાવઓવાવિ ભવદ્’ ઇત્યાદિ । દૈવવાદિયોં કિં ણેસી માન્યતા હૈ—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્ય”, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિતત્પરેપામ્ ॥૧॥”

જો કુઝ પ્રાપ્ત હોને યોગ્ય વસ્તુ હૈ ત્હ હમે ભાગ્ય કી કૃપા સે હી પ્રાપ્ત હોતી હૈ । યહ ભાગ્ય અલઘનીય હૈ । અતઃ ણેસા સમઘ્નકર કિં જો હમારી હૈ ત્હ દુસરોં કી કબી નહોં હો સકની હૈ કબી ભી કિસી પ્રાણી કો ઝોક ફિકર ઓર ઓશ્વર્ય આદિ નહોં કરના ચાહિયે ॥૧॥

અતઃ હે ભાદ્યો ! તુમ ઇક માત્ર દૈવ-ભાગ્ય પર હી ભરોસા રલ્લો । (નત્યિ તસ્સ કિંચિ કચક તત્ત) લોકમેં કોઈ ણેસી વસ્તુ નહોં હૈ જો કૃતક હો પરુપાર્ય રૂપ કર્મ સે પ્રાપ્ત કી જા સકે-ણેસી હો । ઇમી પ્રકાર (લક્ષણવિદ્વાન) પદાર્થોં કા જિતના ભી કુઝ અપના રૂપ હૈ તથા ડનકે જિતને ભી પ્રકાર-ભેદ હૈ ડન સત્કી (કારિયા) કારિકા કરને

હવે દૈવવાદીઓનુ સ્વરૂપ ડહે છે—“દવિચ્છેદભાવઓવાવિ ભવદ્” ઇત્યાદિ દૈવવાદીઓની માન્યતા છે કે—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્ય”, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિતત્પરેપામ્” ॥૧॥

પ્રાપ્ત થવા લાયક જે ડોડ વસ્તુ હોય છે તે આપણને લાગ્યની કૃપાથી જ મળે છે તે લાગ્ય અલઘનીય-અકુર છે જે અમારી ચીજ છે તે ખીલની ડહી પણ થઈ શકતી નથી, એવુ અમણને ડહીપણ ડોઘ પ્રાણીએ શોડ, ચિન્તા આશ્ચર્ય આદિ ડગવા નેધએ નહોં ॥૧॥

તો હે લાગ્યો ! તમે એડ માત્ર લાગ્ય ઉપર જ વિશ્વાસ રાખો

“નત્યિ તસ્સ કિંચિ કચક તત્ત” જગતમા એવી ડોડ વસ્તુ નથી કે જે કૃતક હોય-પુરુષાર્થથી પ્રાપ્ત ડગી શકાય તેવી હોય એ જ ગીતે “લક્ષણ-વિદ્વાન” પદાર્થોનુ જે ડોઘ પોતાનુ ડપ છે તથા તેમના જેટલા પ્રકાર-ભેદ છે, તે બધાની “કારિયા” ડાગીડા-ડગનારી “નિયદ્” આ નિયતિ-લાગ્ય-જ

તૈલાર્થી તિલમેવોપાદદ્યાત્ દધ્યર્થી ચ દુગ્ધ, દુગ્ધાર્થી ચ ગામ્ । અથ સ્વભાવવાદીપ્રાહ-

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય,

વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં,

ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ ॥ ૧ ॥”

તદપ્યસત્—અત્રાપિ કાર્યકારણવ્યવસ્થા વિચિત્રતાત્ ।

તૈલાર્થી હોતા હૈ વહ તિલોં કો હી તો ગ્રહણ કરતા હૈ, દધ્યર્થી દુગ્ધ કો ઓર દુગ્ધાર્થી ગાય કો । યહ જેસા કર્યો હોતા હૈ હસલિયે કિ યે તિલા દિક અપને ૨ કાર્ય કે કારણ હૈ ।

અથ સ્વભાવવાદી કા સ્વરૂપ કહતે હૈ—‘સહાવેણ વાવિ’ ઇત્યાદિ ।

સ્વભાવવાદી કા એસા કહના હૈ કિ જગત્ મેં જો કુછ હોતા હૈ વહ સ્વભાવ સે હી હોતા હૈ, કહા ભી હૈ—

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય, વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં, ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ ॥ ૧ ॥”

કાટોં મેં તીક્ષ્ણતા કૌન કરતા હૈ ? મૃગોં મેં પક્ષિયોં મેં વિચિત્રતા કૌન ઉત્પન્ન કરતા હૈ ? તો હસકા કેવલ ઉત્તર યહી હૈ કિ સ્વભાવ સે હી યહ સબ કુછ હોતા હૈ, હસમેં કામચાર-ચદ્ધા-કારણ નહી હૈ ઓર ન કોઈ પ્રયત્ન હી કારણ હૈ ॥ ૧ ॥

યહ સ્વભાવવાદી કા કથન ભી ઠીક નહોં હૈ । કારણ હસમેં ભી

જોઈતુ હોય તે તલને જ ગ્રહણ કરશે, દહીની ઇચ્છાવાળો દૂધને અને દૂધની ઇચ્છાવાળો ગાયને ગ્રહણ કરશે તે પ્રમાણે થવાનું કારણ શું છે ? કારણ એ જ છે કે તલ આદિ પોત પોતાના કાર્યને માટે કારણરૂપ-ઉપયોગી છે

હવે સ્વભાવવાદીનું સ્વરૂપ કહે છે—“સહાવેણ વાવિ” ઇત્યાદિ

સ્વભાવવાદીનું એવું કહેવું છે કે જગતમા જે કંઈ થાય છે તે સ્વભાવથી જ થાય છે, કંઈ પણ છે—

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય, વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં, ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ” ॥ ૧ ॥

કાટામા તીક્ષ્ણતા કોણે કરે છે ? મૃગોમા તથા પક્ષીઓમા વિચિત્રતા કોણે ઉત્પન્ન કરે છે ? તેનો કેવળ એક જ ઉત્તર છે કે સ્વભાવથી જ તે બધું થાય છે, તેમા કામચાર-તેની ઇચ્છા-કારણરૂપ નથી કે કોઈ પ્રયત્ન કારણરૂપ નથી ॥ ૧ ॥

સ્વભાવવાદીનું તે કથન પણ બરાબર નથી કારણ કે તેમા પણ કાર્ય કારણ કે તેમા પણ કાર્ય-કારણભાવનું ખડન થાય છે

તદસત્-કાલમ્યેવ કર્તૃત્વે કાલપ્રાપ્તો સ્ત્રીશ્મશ્રુવન્ધ્યા પુત્રસ્તતલ્લલ્લેશાદીના-
મપિ મદ્ધાત્ર સ્યાત્, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति । तथा 'इड्डिरस-
सायगारवपरा' इड्डिरससातगौरवपरा, 'वहवे' वहवः=अनेके करणालसाः=
कर्तव्याचरणालसाः अनुयोगिनः 'वम्मवीमसण' वर्मविमर्शनेन=वर्मविचारेण
'मोस' मृषा-असत्य तस्तु अयमपि धर्ममेव 'परुवेति' प्ररूपयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

અન્યેઽપિ જના તથા મૃપા ભાષણપરા ભવન્તિ તત્પરુપયતિ 'અવરે' इत्यादि-

मूलम्-अवरे अहम्माओ रायटुट्ट अवभवखाण भणति
अलियचोरोत्ति अचोरिय करेत्त । डामरिओ त्ति वि य एमेव
उदासीण । दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलित्ति
सीलकलिय । अयपि गुरुत्तप्पओ त्ति । अण्णे एमेव भणति

કાલવાદિયોં કી યહ માન્યતા અસત્યરૂપ ઇસલિયે હૈ કિ કાલ કો
હી કર્તા માનને પર સ્ત્રી જન્મ તન્મ અવસ્થા સપન્ન હો જાની હૈ તો પુરુષ
કી તરહ ઉસકે ભી દાઢી મૃદ્ધ કા આના, તથા વધ્યા કે પુત્ર હોના,
હથેલી મેં ચાલ ઉગના આદિ ભી હોના ચાહિયે-પરન્તુ યહ સર્વ કુઝ
નહીં હોતા હૈ । ઇસલિયે યે પૂર્વોક્ત સર્વ હી યાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરતે
હૈ એસા જાનના ચાહિયે । (૧૪) ઇસ પ્રકાર (કેઢ) કિતનેક (કર-
ણાલસા) અપને કર્તવ્ય કરને પર યોગ્ય આચરણ ને આલસી બને હુણ,
ઔર (ઇડ્ડિરસસાયગારવપરા) ઈડ્ડિ, રમ, સાતગૌરવ મેં તત્પર રહે
હુણ, (વહવે) અનેક અનુયોગી વ્યક્તિ (વમ્મ વીમસણ) વર્મ કે
વિચાર સે (મોસ) મૃપા-અસત્ય-અધર્મ કો ભી ધર્મરૂપ સે (પરુવેતિ)
પ્રરૂપિત કરતે હૈ ॥ સૂ-૭ ॥

શાશ્વત છે ડાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે ડાળે છે કે ડાળને જ
ને કર્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી બ્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોચે ત્યારે તેને
પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૃદ્ધ આવવી નેહએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો નેહએ,
હથેલીમા ખાલ ઉગવા નેહએ, પણ તેમાનુ ડઈ પણ બનતુ ડથી તેથી પૂર્વોક્ત
એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરે છે એમ માનવુ નેહએ, “ ૧૪ ” એ જ
પ્રમાણે “ કેઢ ” કેટલાક “ કરણાલસા ” પોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આજસુ
થડને અને “ ઇડ્ડિરસસાયગારવપરા ” ઈડ્ડિ, રમ અને સાત અભિમાનમા રત
થડને “ વહવે ” અનેક અનુયોગી લોકો “ વમ્મવીમસણ ” વર્મના ખ્યાલથી
“ મોસ ” મૃપા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે “ પરુવેતિ ” પ્રરૂપિત કરે છે ॥ સૂ-૭ ॥

ભાવ્ય તત્ કોટિ યત્નૈરપિ ન ભવતિ યદ્ ભાવ્ય તદ્ વિનાપિ યત્નેન ભવતિ, તદસત્-સકલપ્રત્યક્ષોદ્યમાદીના વ્યર્થત્વાપત્તેઃ । વા શબ્દેન-કાલવાદાદયોઽપિ વિવ્રેયાઃ ।

તથાહિ-“ કાલઃ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલઃ સહરતે પ્રજાઃ ।

કાલઃ સુપ્તેષુ જાગર્તિ કાલો હિ દુરતિક્રમઃ ॥ ૧ ॥ ”

વાલી (નિયર્હ) યદ્ નિયતિ-ભાગ્ય હી છે । તથા જો હોને યોગ્ય નહીં છે વદ્ કરોડ યત્નોં સે મી નહીં હો સકતા છે, ઓર જો હોને યોગ્ય છે વદ્ વિના યત્ન કે મી હો જાતા છે । સો હસ પ્રકાર કી દૈવ (ભાગ્ય) વાદિયોં કી યદ્ માન્યતા કેવલ કત્પનામાત્ર છે કારણ-હસકા હસ પ્રકાર કી એકાન્તતઃ કત્પના માનને પર સકલ પ્રાણીયોં કે પ્રત્યક્ષ ભૂત ઉદ્યમાદિકોં મેં વ્યર્થતા કી આપત્તિ આતી છે ।

‘ વા ’ શબ્દ સે કાલવાદિયોં કા સ્વરૂપ કહતે હેં-યહાં “ વા ” શબ્દ સે કાલવાદ આદિ મી મૃપારૂપ હેં એસા જાનના ચાહિયે । કાલ-વાદિયોં કી એસી માન્યતા છે કિ-

“ કાલઃ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલઃ સહરતે પ્રજાઃ ।

કાલઃ સુપ્તેષુ જાગર્તિ, કાલો હિ દુરતિક્રમઃ ॥૧॥ ”

કાલ હી ભૂતોં કો-જીવોં કો-વનાતા છે ઓર નષ્ટ કરતા છે । કાલ હી સોયે હુઓં મેં જગાતા છે હસલિયે કાલ દુરતિક્રમ-અલઘનીય છે । અર્થાત્-યદ્ અવિનશ્વર છે ।

છે તથા જે થવા લાયક નથી તે કરોડ પ્રયત્નો કરવા છતાં પણ થઈ શકતું નથી, તથા જે થવા લાયક છે તે વિના પ્રયત્ને પણ થાય છે તે આ પ્રકારની દૈવ “ ભાગ્ય ” વાદીઓની માન્યતા કેવળ ઉત્પન્ના જ છે, કારણ કે તેમની તે પ્રકારની એકાન્તતઃ ઉત્પન્નાને માની લેવામાં આવે તો સમસ્ત પ્રાણીઓના પ્રત્યક્ષભૂત ઉદ્યમાદિમા વ્યર્થતા હોવાની આપત્તિ ઉપસ્થિત થાય છે

“ વા ” શબ્દથી કાલેવાદીઓનું સ્વરૂપ કહે છે—અહીં “ વા ” શબ્દથી કાલવાદ આદિ પણ મૃપા-અસત્ય રૂપ છે, એમ સમજી લેવાનું છે કાલવાદીઓની એવી માન્યતા છે કે-

“ કાલ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલ સહરતે પ્રજા ।

કાલ સુપ્તેષુ જાગર્તિ, કાલો હિ દુરતિક્રમ ” ॥ ૧ ॥

કાળ જ ભૂતોને-જીવોને બનાવે છે અને તેમનો નાશ કરે છે કાળ જ સૂતેલાઓમાં જાગૃત હોય છે તેથી કાળ દુરતિક્રમ-અલઘનીય છે એટલે કે

તદસત્-કાલસ્યૈવ કર્તૃત્વે કાલપ્રાપ્તૌ સ્ત્રીશ્મશ્રુવન્ધ્યા પુત્રહસ્તતલ્કેશાદીના-
મપિ સદ્ભાવ સ્યાત્, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति । तथा 'इड्विरस-
सायगारवपरा' ऋद्विरससातगौरवपरा, 'बहवे' बहवः=अनेके करणालसाः=
कर्तव्याचरणालसा. अनुयोगिनः 'धम्मवीमसएण' धर्मविमर्शनेन=धर्मविचारेण
'मोस' मृपा-असत्य तस्तु अधर्ममपि धर्ममेव 'परुवेति' प्ररूपयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

अन्येऽपि जना यथा मृपा भाषणपरा भवन्ति तत्प्ररूपयति 'अवरे' इत्यादि-
मूलम्-अवरे अहम्माओ रायटुट्ट अवभवखाण भणति
अलियंचोरोत्ति अचोरिय करेत्त । डामरिओ त्ति वि य एमेव
उदासीण । दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलिति
सीलकलिय । अयपि गुरुतप्पओ त्ति । अण्णे एमेव भणंति

કાલવાદિયોં કી યહ માન્યતા અસત્યરૂપ ઇસલિયે હૈ કિ કાલ કો
હી કર્તા માનને પર સ્ત્રી જન્ન તરુણ અવસ્થા સપન્ન હો જાની હૈ તો પુરુષ
કી તરહ ઉસકે ભી દાઢી મૃઝ કા આના, તથા વધ્યા કે પુત્ર હોના,
હથેલી મેં ચાલ ઉગના આદિ ભી હોના ચાહિયે-પરન્તુ યહ સબ કુઝ
નહોં હોતા હૈ । ઇસલિયે યે પૂર્વોક્ત સર્વ હી વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરતે
હેં એસા જાનના ચાહિયે । (એવ) ઇસ પ્રકાર (કેડ) કિતનેક (કર-
ણાલસા) અપને કર્તવ્ય કરને પર યોગ્ય આચરણ મેં આલસી બને હુણ,
ઔર (ઇડ્વિરસસાયગારવપરા) ઋદ્ધિ, રસ, સાતગૌરવ મેં તત્પર રહે
હુણ, (બહવે) અનેક અનુયોગી વ્યક્તિ (ધમ્મ વીમસણ) ધર્મ કે
વિચાર સે (મોસ) મૃપા-અસત્ય-અધર્મ કો ભી ધર્મરૂપ સે (પરુવેતિ)
પ્રરૂપિત કરતે હેં ॥ સૂ-૭ ॥

શાશ્વત છે ડાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે ડારણે છે કે ડાળને જ
જો કર્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી બ્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોચે ત્યારે તેને
પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૂઝ આવવી જોઈએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો જોઈએ,
હથેલીમા ખાલ ઉગવા જોઈએ, પણ તેમાનુ ડઈ પણ બનતુ ડથી તેથી પૂર્વોક્ત
એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરે છે એમ માનવુ જોઈએ, “ એવ ” એ જ
પ્રમાણે “ કેડ ” કેટલાક “ કરણાલસા ” પોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આજસુ
થઈને અને “ ઇડ્વિરસસાયગારવપરા ” ઋદ્ધિ, રસ અને સાત અભિમાનમા રત
થઈને “ બહવે ” અનેક અનુયોગી લોકો “ ધમ્મવીમસણ ” ધર્મના ખ્યાલથી
“ મોસ ” મૃપા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે “ પ્રરૂવેતિ ” પ્રરૂપિત કરે છે ॥ સૂ-૭ ॥

उवहणंता—मित्तकलत्ताइ सेवइ । अयपि लुत्तधम्मो । इमो
वि वीसंभघायओ, पापकम्मकारी अगम्मगामी । अयं
दुरप्पा बहुएसु य पातगेषु जुत्तो त्ति । एव जंपंति मच्छरी
भदगे वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा । एव एए अलि-
यवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेति अक्खइय वीएणं
अप्पाणं कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सू०॥८॥

टीका—अवरे=अपरे अन्ये केचित् ‘अहम्माओ’ अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्म
मेव स्वीकृत्य ‘ रायदुट्ठ ’ राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, ‘ अव्वक्खाण ’ अभ्याख्या
नम्=असत्यदोषारोपण ‘ अलिय ’ अलीक ‘ भणति ’=अकृतमपि कार्यकल्पयित्वा
जनसमक्षे कथयन्ति । कथमित्याह—‘ चोरोत्ति ’ इत्यादिना—‘ अचोरियं करेत ’
औचार्यं कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति ‘ चोरोत्ति ’ चोर इति कथयन्ति । ‘ एमेव ’

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते हैं उसीको दिख
लाते हैं—‘ अवरे अहम्माओ ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(अवरे) किननेक मनुष्य (अहम्माओ) असत्य वचन-
रूप अधर्म को ही स्वीकार करके (रायदुट्ठ) नीति विरुद्ध (अव्वक्खाण)
असत्य दोषारोपणरूप (अलिय) अलीक वचन को (भणति) कहते
हैं, नहीं किये गये भी कार्य को उसमें कल्पित कर जन समक्ष में कह
दिया करते हैं कि (अचोरिय करेत चोरोत्ति) चोरी नहीं करने वाले
को भी ‘ यह चोर है ’ ऐसा कह देते हैं, अर्थात् जिसने कभी भी चोरी
नहीं की है—ऐसे पुरुष को भी चोर देते हैं, कह तथा (एमेव) इसी

બીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય બોલે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—
“ અવરે અહમ્માઓ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવરે” કેટલાક માણસો “અહમ્માઓ” અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો
જે સ્વીકાર કરીને “રાયદુટ્ઠ” નીતિવિરુદ્ધ “અવ્વક્ખાણ” અસત્ય દોષારોપણ
રૂપ “અલિય” અલીક વચનો “ભણતિ” કહે છે, ન કરાયેલ કાર્યની પણ
કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ કહ્યા કરે છે જેમકે—“અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ”
ચોરી ન કરનારને પણ “આ ચોર છે” એવું કહે છે એટલે કે જેણે કદિ
પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે ઓળખાવે છે, તથા “એમેવ”

एवमेव 'उदासीण' उदासीन=अविग्रहकारक तटस्थ प्रति 'डामरिउत्ति वि य' डामरिकः=विग्रहकारी-इत्यपि च भणन्ति । तथा-'दुस्सीलोत्ति' दुश्शील इति=दुष्टाचरणोऽय जन इति, 'परदार गच्छति' परदारान् गच्छति=परस्त्रीगमन करोति, इति च असत्यदूषणवचनेन 'सीयकलिय' शीलकलित=सदाचारयुक्त जन 'मडलिति' मलिनयन्ति=लोके कलङ्कयन्ति, 'अयपि' अयमपि अपिना पूर्णोक्तोऽपि 'गुरुतप्पओ' गुरुतल्पगः कलाचार्यस्त्रीगामि इति भणन्ति । 'अण्णे' अन्ये मृपावादिनः 'उवाहणता' उपनन्तः=परस्य वृत्ति कीर्त्ति च नाशयन्तः 'एमेव' एवमेव भणन्ति-अय 'मित्तकत्ताइ' मित्रकलत्राणि=सुहृद्वारान् 'सेवइ' सेवते । 'अयपि' अयमपि 'लुत्तधम्मा' लुप्तधर्मा=लुप्तो धर्मो यस्य स तथा=धर्मविहीनः अस्ति । तथा 'इमो वि' अयमपि 'विस्समवायओ' विम्वम्भवातकः=विश्वास-

तरह (उदासीण) उदासीन-तटस्थ होता है उसको (डामरिओत्तिवि य) अर्थात्-झगड़ा नहीं करने वाला 'यह डामरिक-विग्रहकारी-झगड़ा करने वाला है' ऐसा कह दिया करते हैं । (दुस्मीलोत्ति) यह दुःशील-दुष्ट आचरण वाला है ' और (परदार गच्छइ) यह परस्त्री गामी है ' इस तरह के असत्यदोषारोपक वचनो से (सीलकलिय) सदाचारी पुम्प को (मडलिति) कलङ्कित कर देते हैं । और (अयपि गुरुतप्पओ) यह और वह भी गुरुपत्नी के साथ सहवास करने वाला है । (अन्ने) कितनेक मृपावादीजन (उवाहणता) परकी आजीविका एव कीर्त्ति का नाश करते हुए (एमेव) इसी तरह बोलते हैं कि यह (मित्तकलत्ताइ सेवेइ) अपने मित्र की स्त्री को सेवन करने वाला है तथा (अयपि) यह (लुत्तधम्मा) धर्म विहीन है । तथा (इमो वि)

એ જ ગીતે “ઉદાસીણ” ઉદાસીન-જે તટસ્થ હોય તેને “ડામરિઓત્તિવિ ય” એટલે કે ઝગડો ન કરનારને “આ ઝગડો કરનાર છે” એવું કહે છે તથા “દુસ્સિલોત્તિ” “આ દુષ્ટ આચરણવાળો છે” અને “પરદાર ગચ્છઈ” “આ પરસ્ત્રીગામી છે” આ પ્રકારના અસત્ય દોષારોપણ યુક્ત વચનોથી “સીલકલિય” સદાચારી પુરુષને “મડલિતિ” તે કલંકિત કરે છે અને અય પિ ગુરુતપ્પઓ” “તે પણ ગુરુપત્ની સાથે સહવાસ કરનારો છે” એવું ખોટું દોષારોપણ કરે છે “અન્ને” કેટલાક મૃપાવાદી લોકો “ઉવાહણતા” અન્યની આજીવિકા અને કીર્તિનો નાશ કરવાને માટે “એમેવ” આ પ્રમાણે બોલે છે- “મિત્તકલત્તાઈ સેવઈ” “તે પોતાની મિત્રપત્નીનું સેવન કરનાર છે” તથા “અય પિ” તે “લુત્તધમ્મા” ધર્મરહિત છે તથા “ઇમો

उवहणंता—मिच्छकलत्ताइ सेवइ । अयंपि लुत्तधम्मो । इमो
वि वीसभघायओ, पापकम्मकारी अगम्मगामी । अय
दुरप्पा बहुएसु य पातगेषु जुत्तो त्ति । एव जंपति मच्छरी
भद्दगे वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा । एव एए अलि-
यवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेति अक्खड्डय वीएणं
अप्पाण कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सू०॥८॥

टीका—अवरे=अपरे अन्ये केचित् ‘अहम्माओ’ अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्म
मेव स्वीकृत्य ‘ रायदुट्ट ’ राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, ‘ अम्भक्खाण ’ अभ्याख्या
नम्=असत्यदोषारोपण ‘ अलिय ’ अलीक ‘ भणति ’=अकृतमपि कार्यकल्पयित्वा
जनसमक्षे कथयन्ति । कथमित्याह—‘ चोरोत्ति ’ इत्यादिना—‘ अचोरिय करेत ’
औचार्य कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति ‘ चोरोत्ति ’ चोर इति कथयन्ति । ‘ एमेव’

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते हैं उसीको दिख
लाते हैं—‘ अवरे अहम्माओ ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(अवरे) कितनेक मनुष्य (अहम्माओ) असत्य वचन-
रूप अधर्म को ही स्वीकार करके (रायदुट्ट) नीति विरुद्ध (अम्भक्खाण)
असत्य दोषारोपणरूप (अलिय) अलीक वचन को (भणति) कहते
हैं, नहीं किये गये भी कार्य को उसमें कल्पित कर जन समक्ष में कह
दिखा करते हैं कि (अचोरिय करेत चोरोत्ति) चोरी नहीं करने वाले
को भी ‘ यह चोर है ’ ऐसा कह देते हैं, अर्थात् जिसने कभी भी चोरी
नहीं की है—ऐसे पुरुष को भी चोर देते हैं, कह तथा (एमेव) इसी

ખીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય બોલે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—
“ અવરે અહમ્માઓ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવરે” કેટલાક માણસો “અહમ્માઓ” અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો
જે સ્વીકાર કરીને “રાયદુટ્ટ” નીતિવિરુદ્ધ “અમ્ભક્ખાણ” અસત્ય દોષારોપણ
રૂપ “અલિય” અલીક વચનો “ભણતિ” કહે છે, ન કરાયેલ કાર્યની પણ
કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ ડહાં કરે છે જેમકે—“અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ”
ચોરી ન કરનારને પણ “આ ચોર છે” એવું કહે છે એટલે કે જેણે કદિ
પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે ઓળખાવે છે, તથા “એમેવ”

તદ્ ય વીણ ' અક્ષતિકૃત્રીજેન = અથ દુઃસમારણેન ' કમ્મવધણેણ ' કર્મ-
ત્ત ' અપ્પાણ ' આત્માન ' વેદેતિ ' વેદ્યન્તિ, નરકાગિગોદાગ્રનન્તદુઃસ્વદાયક
ગે સમુપાર્જયન્તીત્યર્થઃ । કે તે ? इत्याह—'मुहरी' मुखारयः=मुखमेव अरि
—शत्रुत्वजनकरचनभाषित्याद् येषा ते तथा । ' असमिक्खियप्पलावी '
क्षિતप्रलापिनः=अविचारितानर्थप्रकार इति ॥ सू० ८ ॥

પુનસ્તે કિં કુર્વન્તિ ? તદાહ—નિક્કલેવે ' ક્ષ્ણાદિ ।

મૂળ—નિક્કલેવે અવહગતિ પરસ્સ અત્થમ્મિન ગઢિય ગિદ્ધા
ભિજુજંતિ ય પર અસત્તણ્હિ લુદ્ધા ય કરેતિ કૂડ સક્કિ-
ણ, અસચ્ચા અત્થાલિય ચ કન્નાલિય ચ, મોમાલિયં ચ
હા ગવાલિય ચ, ગરુય ભણતિ, અહરગઢ ગમ્મણં અપણં
। ય જાહકુલરુવસીલપચ્ચયમાયા નિગુણ ચવલા પિસુણં
રમટ્ટભેદગમસંતક વિદેસમણત્થકારગ પાવકમ્મમૂલ
દિટ્ઠ દુસ્સુય અમુણિય નિલ્લજ્જ લોગગરહણિજ્જ વહવધ
રિકિલેસવહુલ જરામરણદુક્ખસોગનેસ અસુદ્ધ પરિણામ
ફિલિટ્ઠં ભણતિ ॥ સૂ ૯ ॥

। મે હી લગે દુષ્ટ મૃપાવાદી પુરુષ (અક્ષતિકૃત્રીજેણ) અક્ષતિક વીજ
અથ દુઃસ્વ કે કારણભૂત (કમ્મવધણેણ) કર્મવધન સે (અપ્પાણ)
તે આપકો (વેદેતિ) પરિવેદિત કરતે હેં, અર્થાત્—નરકાગિગોદ
દે કે અનન્ત) દુઃસ્વો કો દેનેવાલે કર્મોં કો ઉપાર્જિત કરતે હેં । વૈસે
કે હોતે હે ?—(મુહરી) જિનકા મુખ હી ઝનુ હોતા હે, (અસમિ-
ક્કયપ્પલાવી) જો વિના વિચાર કિયે હી અનર્થક પ્રલાપ કરનેવાલે
કે હે । વે હી પૂર્વોક્ત પ્રકાર કા અસત્યભાષણ કરતે હે ॥ સૂ-૮ ॥

— ૧ “ અક્ષતિકૃત્રીજેણ ” અક્ષતિકૃત્રીજેણ હવ—અક્ષય દુઃખને માટે કારણ રૂપ
ગ ” કર્મવધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની જાતને “ વેદેતિ ” પરિવેદિત
નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુઃખો દેનાર કર્મોંનુ ઉપજન
કેય છે ?—“ મુહરી ” જેમનું મુખજ તેમનો શત્રુ હોય છે,
પલાવી ” જે વિના વિચારે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય
તેનું અસત્ય ભાષણ કરે છે ॥ સૂ-૮ ॥

ઘાતી 'પાપકર્મકારી' પાપકર્મકારી=દુષ્કર્મચરણગીઃ 'અકર્મકારી' અકર્મકારી=અનુચિતકર્મકારી 'અગમ્યગામી' અગમ્યગામી=ભગિનીયાદિગમનકારી, ચાસ્તિ । અય 'દુરપ્પા' દુરાત્મા=દુષ્ટાત્મા 'વહુણ્ણુ ય' વહુણ્ણુઃ ચ = અનેકે 'પાતમેસુ' પાતમેસુ=પાપકર્મસુ 'જુત્તો' યુક્તઃ=સલ્ગ્ન ઇતિ । ણ્ણ 'મહમે' મહમે=નિર્દોષે 'મચ્છરી' મત્સરિણઃ = પરગુણદ્વેષિણ. 'જપતિ' જલ્પન્તિ=વ્રુવન્તિ । કીદશાસ્તે મૃપાયાદિનઃ ? ઇત્યાહ—'ગુણકિત્તિનેહપરલોગનિપ્પિવાસા' ગુણકીર્તિસ્નેહપરલોકનિપ્પિવાસાઃ=ગુણાઃ = વિનયાર્જવાદયઃ, કીર્તિઃ=યશઃ સ્નેહઃ=મૃતેષુ પ્રીતિઃ, પરલોક = જન્માન્તર તેષુ નિપ્પિવાસા = નિરાકાદક્ષાઃ એવમુક્તપ્રકારેણ ણ્ણે 'અલિયવયણદક્ષ્ણા' અલીકવચનદક્ષાઃ=મૃપાભાષણનિપુણાઃ, 'પરદોસુપ્પાયણસસત્તા' પરદોષોત્પાદનસસત્તાઃ = પરદોષાનિષ્કરણતત્પરાઃ

યહ (વિસ્સમઘાયઓ) વિશ્વાસઘાતી હૈ (પાવકર્મકારી) પાપકર્મકારી હૈ, (અકર્મકારી) અનુચિત કામોં કો કરતા રહતા હૈ, તવા (અગમ્યગામી) અગમ્યગામી હૈ—ભગિની આદિકા સેવન કરને ચાલા હૈ । (અય દુરપ્પા) યહ દુરાત્મા (વહુણ્ણુ ય પાતમેસુ જુત્તો) અનેક પાપકર્મોં મે લગા રહતા હૈ । (મહમે) નિર્દોષ પુરુષ મે (મચ્છરી) દૂસરોં કે ગુણોં સે દ્વેષ કરને ચાલે, તવા (ગુણકિત્તિનેહપરલોગનિપ્પિવાસા) વિનય આર્જવ આદિ ગુણોં મે, કીર્તિ મે તથા સ્નેહ—જીગોં કે ઉપર પ્રીતિ રખને મે ઓર પરલોક મેં આકાંક્ષા વિહીન પુરુષ (એવ જપતિ) હસ પ્રકાર બોલતે હૈ । ઇન્હેં અપને પરલોકકે સુધાર કી ખી કોઈ ચિંતા નહીં હોતી હૈ । (એવ ણ્ણ) હસ પ્રકાર યે (અલિયવયણદક્ષ્ણા) અસત્ય બોલને મેં બડે ચતુર, તવા (પરદોસુપ્પાયણસસત્તા) દૂસરોં કે દોષોં કો પ્રકટ

વિ વિસ્સમઘાયઓ ” તે વિશ્વાસઘાતી છે, “ પાવકર્મકારી ” પાપકૃત્યો કરે છે, “ અકર્મકારી ” અનુચિત કૃત્યો કરનારો છે, “ અગમ્યગામી ” અગમ્યગામી છે—ભગિની આદિનું સેવન કરનાર છે, “ અય દુરપ્પા ” આ દુરાત્મા “ વહુણ્ણુ ય પાતમેસુ જુત્તો ” અનેક પાપકર્મોંમાં લીન રહે છે ” “ મહમે ” નિર્દોષપુરુષોના “ મચ્છરી ” તથા અન્યના ગુણોંનો દ્વેષ કરનાર, તથા “ ગુણકિત્તિ નેહ પરલોક નિપ્પિવાસા ” વિનય આર્જવ આદિ ગુણોંથી રહિત, કીર્તિ તથા સ્નેહથી રહિત, અને પરલોકની આકાંક્ષા રહિત “ એવ જપતિ ” ઉપર પ્રમાણે બોલે છે તેને યોતાનો પરલોક સુધારવાની પણ ચિન્તા હોતી નથી “ એવ ણ્ણ ” આ રીતે તે “ અલિયવયણદક્ષ્ણા ” અસત્ય બોલવામાં ઘણો નિપુણ, તથા “ પરદોસુપ્પાયણસસત્તા ” અન્યના દોષોંને બહાર કરવામાં જ લીન એવો તે મૃપા

‘અસ્વદ્ ય વીણ’ અક્ષતિક્રવીજેન=અક્ષય દુઃસ્વકારણેન ‘કમ્મવચ્છેણ’ કર્મ-
વન્ધનેન ‘અપ્પાણ’ આત્માન ‘વેદેતિ’ વેદ્યન્તિ, નરકનિગોદાગ્રનન્તદુઃસ્વદાયક
કર્માણિ સમુપાર્જયન્તીત્યર્થ. । કે તે ? इत्याह-‘મુદ્દરો’ મુલારય=મુલમેવ અરિ
=શત્રુ-ગતુત્વજનકવચનભાષિત્યાદ્ યેષા તે તથા । ‘અસમિપ્પિવયપ્પલાવી’
અમમીક્ષિતપ્રત્યાપિનઃ=અવિચારિતાનર્થવક્તાર ઇતિ ॥ સૂ. ૮ ॥

પુનસ્તે કિં કુર્વન્તિ ? તદાહ-નિવ્વેચે’ ઇત્યાદિ ।

મૂર્ખ-નિવ્વેચે અવહરાંતિ પરસ્સ અત્યમ્મિન ગઢિય ગિદ્ધા
અભિજુજતિ ય પર અસત્તણ્હિ લુદ્ધા ય કરેતિ કૂડ સક્કિવ-
ત્તણ, અસચ્ચા અત્યાલિય ચ કન્ઝાલિયં ચ, મોમાલિયં ચ
તહા ગવાલિય ચ, ગરુય મળતિ, અહરગદ્ ગમ્મણ અપ્પણં
પિ ય જાદ્કુલરૂવસીલપચ્ચયમાયા નિગુણ ચવલા પિસુણં
પરમદુભેદગમસતક વિદેસમણતથકારગ પાવકમ્મમૂલં
દુદ્ધિદ્ધ દુસ્સુય અમુણિયં નિહ્લજ્જ લોગગરહણિજ્જં વહવધ
પરિકિલેસવહુલ જરામરણદુક્ખસોગનેસ અસુદ્ધ પરિણામ
સકિલિદ્ધ મળતિ ॥ સૂ. ૯ ॥

કરને મેં હી લગે દુગ મૃપાવાદી પુરુષ (અક્ષવદ્ધયવીણ) અક્ષતિક્રવીજ
અક્ષય દુઃસ્વ કે કારણભૂત (કમ્મવચ્છેણ) કર્મવધન સે (અપ્પાણ)
અપને આપકો (વેદેતિ) પરિવેદિત કરતે હે, અર્થાત્-નરકનિગોદ
આદિ કે અનન્ત) દુઃખોં કો દેનેવાલે કર્મોં કો ઉપાર્જિત કરતે હે । વૈસે
કૌન હોતે હે ?—(મુદ્દરી) જિનકા મુલ્લ હી ઝત્તુ હોતા હે, (અસમિ-
પ્પિવયપ્પલાવી) જો વિના વિચાર કિયે હી અનર્થક પ્રલાપ કરનેવાલે
હોતે હે । લે હી પૂર્વોક્ત પ્રકાર કા અમત્તમાપણ કરતે હે ॥ સૂ-૮ ॥

વાદી પુરુષ “ અક્ષવદ્ધયવીણ ” અક્ષતિક્રવીજ-અક્ષય દુઃસ્વને માટે કારણ ઉપ
“ કમ્મવચ્છેણ ” કર્મવધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની બાંધને “ વેદેતિ ” પરિવેદિત
કરે છે, એટલે કે નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુઃખો દેનાર કર્મોનુ ઉપજન
કરે છે એવા કોણ હોય છે ?—“ મુદ્દરી ” જેમનુ મુળજ તેમનો શત્રુ હોય છે,
અને “ અસમિપ્પિવયપ્પલાવી ” જે વિના વિચારે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય
છે તેઓ જ પૂર્વોક્ત પ્રકારનુ અસત્ય ભાષણ કરે છે ॥ સૂ-૮ ॥

ટીકા—‘પરસ્સ’ પરસ્ય=અન્ય સમ્પન્નિનિ ‘અત્યમ્મિ’ અર્થે=ધને ‘ગદિયગિદ્ધા’ ગ્રથિતગૃદ્ધા:=અત્યન્તલોલુપાઃ ‘નિસ્સેવે’ નિક્ષેપાન્=ન્યાસાન્ ‘ધરોહર’ તથા ‘થાપન’ इति भाषामसिद्धम्, ‘અવહરતિ’ અવહરન્તિ ‘ન હિ તયા મત્પાર્થે સ્થાપિત’ મિત્યુક્તવા સર્વથા અપઞ્વન્તિ । ‘અભિજુજતિ ય’ અભિયોજયન્તિ ચ=પરમ્ ‘અમં તર્હિ’ અસદ્ધિઃ=અવિદ્યમાનેર્દોષઃ । તથા ‘લુદ્ધા ય’ લુઙ્ગાશ્ચ=પરધનલોલુપા ધનલોભેન ‘કૂડસક્ષિત્તણ’ કૂટસાક્ષિત્વ ‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ । ચચારાદ્ ગ્રન્થિમો-ચકૃત્વપશ્યતો હરત્વાદિક્રમપિ વિજ્ઞેયમ્ । ‘અસન્ચા’ અસત્યાઃ = અમત્યવાદિનઃ ‘અત્થાલિય’ અર્થાલીક=અર્થાય=ધનાદિ પ્રયોજનાય અલીક, તથા ‘કન્નાલિય’ કન્યાલીક-કુમારી વિષયકમલીક, યથા-સુશીલા કન્યા દુઃશીલાં, દુશીલા ચ સુશીલા મિત્યાદિ કથયન્તિ । इदं लोकेऽतिगर्हिततयाऽपात्तं तेन उपलक्षणमेतत्-मनुष्यजातिविषयकमस्तालोकस्य । ‘ભોમાલીય’ ભૂમ્યલીક=પૃથિવીનિમિત્ત-મસત્ય-’ તથા ‘ગવાલિય’ ગવાલીક=ગોસમ્વન્ધિકમસત્ય ‘ગરુય’ ગુરુક

फिर वे क्या करते हैं सो कहते हैं—‘ निस्सेवे ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(પરસ્સ અત્યમ્મિ ગદિયગિદ્ધા) દૂસરોં કે ધન મેં અત્યત લોલુપ બને હુએ યે (નિસ્સેવે અવહરતિ) ધરોહર કો—“ તુમને મેરે પાસ નહી રહી હૈ ” એસા કહકર દવા લેતે હૈ । તથા (અભિજુજતિ ય પર અસતર્હિ) દૂસરોં કો અવિદ્યમાન દોષોં સે દૂષિત કર દેતે હૈ । (લુદ્ધા ય કૂડસક્ષિત્તણ કરેતિ) પરધન કે લોભ સે લુઙ્ધ બને હુએ યે છૂઠી ગવાહી દેતે હૈ તથા (ચ) શબ્દ સે દૂસરોં કી ગાઠ કતર લેતે હૈ તથા દેખતે દેખતે ધન ભી ચુરા લેતે હૈ । (અસન્ચા) યે અસત્યવાદી (અત્થાલિય) અર્થાલીક, (કન્નાલીય) કન્યાલીક, (ભોમાલિય) ભૂમ્ય

વળી તેઓ શુ કરે છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“ નિસ્સેવે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પરસ્સ અત્યમ્મિ ગદિયગિદ્ધા” બીજાના ધનને માટે લોલુપ બનેલા તે “ નિસ્સેવે અવહરતિ ” ધરોહરને—અનામત થાપણને ચચાવી પાડવા માટે આ પ્રમાણે કહે છે—“ તમે મારે ત્યા તમારી થાપણ મૂકી જ નથી ” તથા ‘ અભિ જુજતિ ય પર અસતર્હિ ” બીજા લોકોમા-તેમનામા ન હોય તેવા દોષોનુ આરોપણ કરીને તેમને કલકિત કરે છે

“ લુદ્ધા ય કૂડસક્ષિત્તણ, કરેતિ ” પારકાના ધનને લોભે તેઓ ખોટી સાક્ષી આપે છે તથા “ચ” શબ્દથી બીજાના ખીસ્સા કાપે છે અને જોત જોતામા ધન પણ ચોરી લે છે “ અસન્ચા ” તે અસત્યવાદી લોકો ‘ અત્થા લિય ” અર્થાલીક, “ કન્નાલિય ” કન્યાલીક, “ ભોમાલિય ” ભૂમ્યલીક, “

=મહદસત્ય ભગન્તિ યેન ત્રિહાઝેદનાદિક ભવતીત્યર્થઃ । ' અહરગર્હગમન=અધર-
ગતિગમન=અધરગતૌ ગમન યેન તત્ તવા=નરકાદ્યધોગતિગમનકારણમ્ । ' અણ્ણપિ
ય ' અન્યદપિ ચ અસત્ય દ્યુવન્તિ, તદેવાહ—' જાઙ્કુલરૂવસીલપચ્ચયમાયાનિગુણ
જાતિકુલરૂપસીલપત્યયમાયાનિગુણ=તત્ર જાતિઃ=માતૃપક્ષઃ, કુલ=પિતૃપક્ષ, રૂપમ્=
લીક, (તદા) તવા (ગવાલિય) ગવાલીક, (ગરુય) વહુત્ત અધિકરૂપ
મેં (ભગન્તિ) વોલતે હૈ । ધનાદિ પ્રયોજન કે લિયે જો છૂઠ વચન વોલે
જાતે હૈ । વહ અર્થાલીક હૈ, ધનાદિ પ્રયોજન કે લિયે જો છૂઠ કહના હોતા
હૈ વહ કન્યાલીક હૈ—જેસે—સુશીલા કહના, ઓર દુઃશીલા કો સુશીલા
કહના આદિ । પૃથિવી નિમિત્ત જો છૂઠ વોલા જાતા— વહ ભૂમ્યલીક
હૈ જેસે—અનુર્વરા ભૂમિકો ઉર્વરા કહના આદિ । ગાય કે વિષય મેં જો
અસત્ય વોલા જાતા હૈ ઉસકા નામ ગવાલીક હૈ, જેસે—નહીં દૂધ દેનેવાલી
ગાય કો દૂધ દેનેવાલી કહના, કમ દૂધ દેનેવાલી ગાય કો વહુત્ત દૂધ
દેનેવાલી કહના આદિ । હસ અસત્ય મેં ત્રિહાઝેદ આદિ દડ હોતા હૈ
હસલિયે ઉસકો ગુરુકવડા અસત્ય કહા હૈ, તથા (અહરગર્હગમણ) નરક
આદિ અધોગતિયોં મેં ગમન કરાને વાલે એસે (અણ્ણપિ) ઓર ભી
વિવિધ પ્રકાર કે (જાઙ્કુલરૂવસીલપચ્ચયમાયાનિગુણ) અપની જાતિ,
કુલ, રૂપ, સ્વભાવ યે હૈં કારણ જિનકે એસે તથા માયાનિગુણ અપ્રશનીય
કીં પ્રશસા-પ્રશસનીયજન કી નિન્દારૂપમાયા વાલા હોને સે નિગુણ—

તથા “ ગવાલિય ” ગવાલીક “ ગુરુય ” બહુ જ વધારે પ્રમાણુમા “ ભગન્તિ ”
બોલે છે ધન આદિને ખાતર જેજૂઠા વચનો બોલાય છે તે અર્થાલીક કહેવાય
છે કન્યાની બાળતમા જે અસત્ય કહેવામા આવે છે તે કન્યાલીક કહેવાય છે,
જેમ કે સુશીલ કન્યાને દુશીલ કહેવી અને દુશીલને સુશીલ કહેવી જમીન
આદિને નિમિત્તે જે જૂઠા વચનો બોલાય છે તે ભૂમ્યલીક છે જેમ કે અનુપ-
બહુ જમીનને ઉપજાઉ બતાવી આદિ ગાયને વિષે જે અસત્ય બોલાય છે તેને ગવા-
લીક કહે છે, જેમ કે દૂધ ન દેનારી ગાયને દૂધ દેનારી કહેવી, ઓછુ દૂધ દેનારી
ગાયને વધુ દૂધ દેનારી કહેવી આદિ ગવાલિકના દષ્ટાંતો છે આ અસત્યમા
અહાતુ દેહન આદિ શિક્ષા થાય છે તેથી તેને ગુરુક-મોટુ અસત્ય કહેલ છે
તથા “ અહરગર્હગમણ ” નરક આદિ અધોગતિયોમા ગમન કરાવનાર એવા
“ અણ્ણપિ ” બીજા પણ વિવિધ પ્રકારના “ જાઙ્કુલરૂવસીલપચ્ચયમાયા
નિગુણ ” પોતાની જાતિ, કુળ રૂપ, સ્વભાવ આદિ જેના કારણો છે એવા,
તથા માયાનિગુણ-અપ્રશસનીયની પ્રશસા અને પ્રશસનીય જનની નિંદારૂપ-
માયાવાળા હોવાથી નિગુણ-સ્વપરહિત, એવા વચનોને બોલ્યા કરે છે માતૃ

આકૃતિઃ, શીલ ચ=સ્વભાવ, એતાનિ પ્રત્યય =કારણ યસ્ય તત્ માયાનિગુણ ચ= નિન્દનીયસ્ય પ્રશસા પ્રશસનીયસ્ય નિન્દા માયા તત્સચ્ચાદેય નિગુણ=ગુણરહિતે સ્વપરહિતાદિવર્જિત 'ચવલા' ચપલાઃ=અસ્થિરાન્તઃકરણા મૃપાગાદિનો ભળન્તિ । પુનઃ કથ ભૂતમલીકમિત્યાદ- 'પિસુણ' પિશુન=પરદોષાવિષ્કરણરૂપ 'પરમદ્વભેદગ' પરમાર્થભેદક=પરમાર્થો=મોક્ષઃ, તત્પ્રતિપાતકમ્ 'અસતક' અસત્કમ્=પરમાર્થ વર્જિત 'વિદેસ' વિદેષ્યમ્=અપ્રિયમ્ 'અણત્યકારગ' અનર્થકારક=વર્માદિપુરુષાર્થ વિઘાતેન નરકગમનજનનમરણાદ્યનર્થજનક 'પાવકમ્મમૂલ=પાપકર્મમૂલ પાપ જ્ઞાના ચરણાદિકર્મ તત્કારણ 'દુદ્ધિદ્ધ' દુર્દૃષ્ટ=દુષ્ટ દષ્ટ યત્ર તત્ દુર્દૃષ્ટ=કુત્સિતદર્શન 'દુસ્સુય' દુઃશ્રુત=દુષ્ટ શ્રુત યત્ર તત્તથા દુશ્રુત=દુષ્ટશ્રવણમ્ 'અમુણિય' અજ્ઞાન=અજ્ઞાનરૂપ

સ્વપરહિતવર્જિત એસે વચનોં કો યોલા કરતે હૈ । માતૃ પક્ષ કા નામ જાતિ, પિતૃપક્ષ કા નામ કુલ, રૂપ કા નામ આકૃતિ ઓર શીલ કા નામ સ્વભાવ હૈ । તથા (ચવલા) જો અસ્થિર અન્તઃ કરણવાલે મૃપાવાદી જન હોતે હૈ વે પિશુનાદિ વિશેષણોં વાલે અસત્ય વચન યોલતે હૈ । વે હસ પ્રકાર જો વચન (પિસુણ) પર કે દોષોં કે પ્રકટ કરને વાલે હોતે હૈ । (પરમદ્વભેદગ) પરમાર્થ-મોક્ષ કે ભેદક હોતે હૈ । (અસતક) અસત્ક પરમાર્થ સે રહિત હોતે હૈ । (વિદેસ) વિદેષ્ય-અપ્રિય હોતે હૈ । (અણ-ત્યકારગ) અનર્થકારક-વર્માદિક પુરુષાર્થ કે વિઘાતક હોને સે નરક ગમન જનન મરણાદિરૂપ અનર્થ કે ઉત્પાદક હોતે હૈ । (પાવકમ્મમૂલ) પાપકર્મ કે મૂલ-જ્ઞાનાચરણાદિરૂપ કર્મ કે કારણ-હોતે હૈ । (દુદ્ધિદ્ધ) દુર્દૃષ્ટ-દુષ્ટ દર્શનવાલે હૈ-અર્થાત્-इन वचनों द्वारा जो दर्शन प्रतिपादित किया जाता है वह कुत्सित-सदोष होता है । (दुस्सुय) दुःश्रुत होते हैं-

પક્ષને જાતિ, પિતૃ પક્ષને કુળ, રૂપને આકૃતિ અને શીલને સ્વભાવ કહે છે તથા “ ચવલા ” અન્યથા મનવાળા મૃપાવાદી લોકો પિશુનાદિ વિશેષણવાળા અસત્ય વચનો યોલે છે તે આ પ્રમાણે છે જે વચન “ પિસુણ ” અન્યથા દોષોને પ્રગટ કરનારા હોય છે, “ પરમદ્વભેદગ ” પરમાર્થ-મોક્ષને ભેદનાર હોય છે “ અસતક ” અસત્ક-પરમાર્થ રહિત હોય છે, “ વિદેસ ” વિદેષ્ય-અપ્રિય હોય છે, “ અણત્યકારગ ” અનર્થકારક-વર્માદિ પુરુષાર્થના વિઘાતક હોવાથી નરક ગમન જનક મરણાદિરૂપ અનર્થના ઉત્પાદક હોય છે, “ પાવકમ્મમૂલ ” પાપ કર્મનું મૂળ-જ્ઞાનાચરણીય આદિ કર્મનું-કારણ હોય છે, “ દુદ્ધિદ્ધ ” દુર્દૃષ્ટ-દુષ્ટ-દર્શનવાળા છે, એટલે કે ને વચનો દ્વારા જે દર્શનનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવે છે તે કુત્સિત-સદોષ હોય છે, “ દુસ્સુય ” દુઃશ્રુત-જેને સાંભળવાનું પણ કોઈ

‘ નિલ્લજ્જ ’ નિર્લજ્જ=લજ્જાવર્જિત ‘ લોગગરહણિજ્જ ’ લોકગર્હણીય = સર્વજન નિન્દનીય ‘ વહનપરિકિલેસવહુલ ’ વધનપરિકલેશવહુલ=તત્ર વધઃ=મારણ વન્ધ =રજ્જાદિના વન્ધન પરિકલેશઃ=દુઃસ્વસન્તાપસ્તે વહુલા વધિકાઃ યસ્મિન્નલીકે તત્તથા મૃપાભાવણેન હિ એતે મવન્ત્યેવ મૃપા ભાવિણા ‘ જરામરણદુઃસ્વસોગનેમ ’ જરામરણદુઃસ્વશોકાના નેમમ્=અવધિભૂતમ્ ‘ અસુદ્ધપરિણામસકિલિટ્ઠ ’ અશુદ્ધ પરિણામમકિલિટ્ઠ = અશુદ્ધેન=અશુભેન પરિણામેન મકિલિટ્ઠ=વ્યાપ્તમલીક ભણન્તિ ચપલા इति पूर्वण सम्बन्धः ॥ सू ९ ॥

કીદૃશાસ્તે ? इत्याह—‘ अलिपा हि ’ इत्यादि ।

મૂલ્મ—અલિયાહિ સધિસંનિવિટ્ઠા અસતગુણુદીરગા ય સંતગુણ નાસકા ય હિસા મૂઓવ ઘાઈય અલિયં સપઉત્તાવચણ

इनका सुनना भी कोई भी सत्यवादी पसंद नहीं करता है । (अमुणिय) ये अमनोज होते हैं । अ यवा अज्ञानरूप होते हैं—इनसे वास्तविक वस्तु का बोध नहीं होता है । (निल्लज्ज) निर्लज्ज—लज्जावर्जित होते हैं—अर्थात् ऐसे वचन बोलने वालों को किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं आती है । (लोगगरहणिज्ज) जिन वचनों की समस्तजन निन्दा किया करते हैं । (वहवधपरिकिलेसवहुल) जो इन वचनों को बोलते हैं वे व्यक्ति इन वचनों के कारण बहुत अधिक वध, वधन और परिकलेश को पाते हैं । (जरामरणदुःस्वसोगनेम) ये वचन जरा, मरण, दुःस्व एव शोक के हेतुभूत होते हैं । (असुद्धपरिणामसकिलिट्ठ) इनके बोलने वालों के परिणाम अशुभहोते हैं । इस प्रकार के असत्य वचनों को चपल पुरुष बोलते हैं ॥सू-९ ॥

સત્યવાદી પસંદ કરતો નથી. “અમણુય” તે અમનોજ હોય છે—અજ્ઞાનરૂપ હોય છે—તેમનાથી વાસ્તવિક વસ્તુનો બોધ થતો નથી, “ નિલ્લજ્જ ” નિર્લજ્જ લજ્જાવર્જિત હોય છે, એટલે કે એવા વચનો બોલનારને કોઈ પ્રકારની શરમ આવતી નથી, “ લોગગરહણિજ્જ ” જે વચનોની મધળા લોકો નિન્દા કરે છે, “ વહવધપરિકિલેસવહુલ ” એવા વચનો બોલનાર માણસ તે વચનોને કારણે ઘણો વધારે વધ, બધન અને પરિકલેશ પામે છે “ જરામરણદુઃસ્વ સોગનેમ ” તે વચનો જરા, મરણ, દુઃખ અને શોકના હેતુભૂત હોય છે “ અસુદ્ધ પરિણામસકિલિટ્ઠ ” તેવા વચનો બોલનારના પરિણામ—મનોભાવ—અશુભ હોય છે આ પ્રકારના અસત્ય વચનો અચળ વૃત્તિના માણસો બોલે છે ॥ સૂ-૯ ॥

સાવજ્જમકુસલ સાહુગરહણિજ્જં અધમ્મજણં મળતિ અણહિગય-
પુણપાવા પુણો વિ અહિકરણ કિરિયપાવત્તગા વહુવિહં અનત્થ
અવમદ્ અપ્પણો પરસ્સ કરેતિ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘અલિયાહિ સધિ સનિવિટ્ઠા’ અલીકામિ સન્નિસન્નિવિટ્ઠાઃ=અલી
કવાદે યોઽભિસન્ધિઃ=અભિપ્રાયસ્તત્ત્વ સન્નિવિટ્ઠાઃ=સસ્થિતાઃ ‘અસતગુણુદીરગા’
અસદ્ગુણોદીરકાઃ=અવિદ્યમાનગુણકથકાઃ ‘સતગુણનાસગા ય’ સદ્ગુણનાશકાશ્ચ
=વિદ્યમાનગુણાપલાપકાઃ ‘અલિયસપઉત્તા’ અલીકસમ્પયુક્તા = અસત્યભાષણત
ત્પરા ‘હિંસા મ્હોવઘાહ્ય’ હિંસામ્હોતોપગ્રાતિક = યસ્ય કથનેન જાયમાનયા
હિંસયા મ્હૂતાના=પ્રાણિનામ્=ઉપઘાતઃ=વિનાશો યેન મરતિ તત્તાદૃશ ‘સાવજ્જ’
સાવઘ=સપાપમ્ ‘અકુસલ’ અકુશલમ્=સર્વપ્રાણિનામહિતકર ‘સાહુગરહણિજ્જ’
સાધુગર્હણીયમ્=મહાપુરુષૈસ્તીર્થકરગણધરૈર્નિન્દિત ‘અધમ્મજણ’ અધર્મજનનમ્=
પાપોત્પાદકમ્ એતાદૃશ ‘વચણ’ વચન મળન્તિ । પુનઃ કથ મ્હૂતાસ્તે ? इत्याह—

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘अलियाहि’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અલિયાહિ સધિસનિવિટ્ઠા) અલીકવાદ કે અભિપ્રાય મેં
સસ્થિત મૃપાવાદી (અસતગુણુદીરગા) અવિદ્યમાનગુણો કે કહને વાલે
ઔર (સતગુણનાસગા ય) વિદ્યમાન ગુણો કે લોપ કરને વાલે હોતે હૈં
(અલિય સપઉત્તા) ઇસી તરહ અસત્યભાષણ કરને મેં તત્પર બને હુए
વે (હિંસામ્હોવઘાહ્ય) જિનવચનોં કે કહને સે પ્રાણિયોં કા હિંસા
દ્વારા વિનાશ હો જાતો હૈં એસે (સાવજ્જ, સાવઘ, (અકુસલ) સર્વ-
પ્રાણિયોં કે અહિતકારક, (સાહુગરહણિજ્જ) સાધુ પુરુષોં દ્વારા ગર્હણીય,
एव (અધમ્મજણગ) અધર્મજનક (વચણ) વચનોં કે કહને સે (મળતિ)

वणी ते केवा डोय छे ते सूत्रकार कहे छे—“अलियाहि” इत्यादि

ટીકાર્થ—“અલિયાહિ સધિસનિવિટ્ઠા” અલીકવાદના અભિપ્રાયમા રહેલ મૃપાવાદી
“અસતગુણુદીરગા” અવિદ્યમાન—અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોનુ કથન કરનાર અને
“સતગુણનાસગા ય” વિદ્યમાન ગુણોને છુપાવનાર હોય છે, “અલિયસપઉત્તા”
આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ “હિંસામ્હોવઘાહ્ય” પ્રાણી
ઓની હિંસા થાય તેવા “સાવજ્જ” સાવઘ, “અકુસલ” સમસ્ત પ્રાણીઓનુ
અહિત કરનારા “સાહુગરહણિજ્જ” સાધુ પુરુષો દ્વારા નિંદ્ય અને “અધમ્મજણગ”
અધર્મજનક “વચણ” વચનો “મળતિ” બોલે છે “અણહિગયપુણપાવા”

‘અણહિગયપુણ્ણપાપાઃ’ અનધિગતપુણ્યપાપાઃ = પુણ્યપાપજનિતફલજ્ઞાનનિકલાઃ,
‘પુણો વિ’ પુનરપિ ‘અહિરુણકિરિયાપવત્તગા’ અધિરુણક્રિયાપવર્ત્તકાઃ—અધિરુણ
પાપારમ્ભઃ તસ્ય ક્રિયા=વ્યાપારઃ તસ્ય પ્રવર્ત્તકાઃ, ‘અપ્પણો પરસ્સ ય’ આત્મન
પરસ્ય ચ ‘વહુવિહ’ વહુવિધમ્ ‘અણત્થ’ અનર્થ ‘અવમદ્’ અવમદ્ = વિનાશ
‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ ॥ સુ. ૧૦ ॥

પુનઃ કિં કુર્વન્તી ? ત્યાહ—‘એવમેવે’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવમેવ જંપમાણા મહિસે સૂચકરે ય સાહેતિ ઘાય
ગાણં, સસપસયરોહિસે ય સાહેતિ વાગુરાણ, તિત્તિરવટ્ટકલાવે
ય કવિજલ—કવોયગે, ય સાહેતિ સડણીણં, ઇસમગરકચ્છમે
ય સાહેતિ મચ્છિયાણં, સંઘકે સુહુણ્ણ ય સાહેતિ મગરાણ, અય-
ગર—ગોણસ—મડલિ દઢ્વીકર મડલી ય સાહેતિ વાલિયાણ,
ગોહા સેહા ય સહુગ સરહુણ્ણ ય સાહેતિ હુદ્દગાણ, ગયકુલ
વાનરકુલે ય સાહેતિ પાસિયાણ, સુકવરહિણમયણસાલકોદ્દલ
હસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ, વધવધજાયણ ચ સાહેતિ
ગોમ્મિયાણં, ધણધન્નગવેલણ્ણ ય સાહેતિ તક્કરાણ, ગામનગર
પટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણ પારઘાયગ પથઘાયગે સાહેતિ ગથિ
મેયાણ, કય ચ ચોરિય ણગરગુત્તિયાણં સાહેતિ લહુણનિહુણ-

ચોલતે હૈં । (અણહિગયપુણ્ણપાવા) તથા જો પુણ્ય ઓર પાપ કે ફલ
જ્ઞાન સે રહિત હોતે હૈં । તથા (પુણો વિ અહિગરણકિરિયાપવત્તગા)
ધાર ૨ પાપારમ્ભ કી ક્રિયાઓં કે પ્રવર્ત્તક હોતે હૈં વે (અપ્પણો પરસ્સ ય)
અપના ઓર પર કા (વહુવિહ) અનેકવિધ (અણત્થ) અનર્થ ઓર
(અવમદ્) વિનાશ (વિરાધના) (કરેતિ) કરતે હૈં ॥સૂ. ૧૦॥

તથા જે પુણ્ય અને પાપના જ્ઞાનથી રહિત હોય છે, તથા “ પુણો વિ
અહિગરણ કિરિયાપવત્તગા ” વારવાર પાપારભની ક્રિયાઓના પ્રવર્ત્તક હોય છે,
તે “ અપ્પણો પરસ્સ ય ” પોતાનું અને પારકાનું “ વહુવિહ ” અનેક પ્રકારે
“અણત્થ” અહિત અને “અવમદ્” વિનાશ “વિરાધના” “કરેતિ” કરે છે ॥સૂ-૧૦॥

સાવજ્જમકુસલ સાહુગરહણિજ્જ અધમ્મજણ મળંતિ અણહિગય-
પુણપાવા પુણો વિ અહિકરણ કિરિયપાવત્તગા વહુવિહં અનત્થ
અવમદં અપ્પણો પરસ્સ કરેતિ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘અલિયાહિ સધિ સનિવિટ્ઠા’ અલીકાભિ સન્નિસન્નિવિટ્ઠાઃ=અલી
કવાદે યોઽભિસન્નિઃ=અભિપ્રાયસ્ત્ર સન્નિવિટ્ઠાઃ=સન્નિવિટ્ઠાઃ ‘અસતગુણુદીરગા’
અસદ્ગુણોદીરકાઃ=અવિદ્યમાનગુણકથકાઃ ‘સતગુણનાસગા ય’ સદ્ગુણનાશકાશ્ચ
=વિદ્યમાનગુણાપલાપકાઃ ‘અલિયમપઉત્તા’ અલીકસમ્પયુક્તા = અસત્યભાષણત
ત્પરા ‘હિંસા ભૂઓવઘાહ્ય’ હિંસાભૂતોપઘાતિક = યસ્ય કથનેન જાયમાનયા
હિંસયા ભૂતાના=પ્રાણિનામ્=ઉપઘાતઃ=વિનાશો યેન મત્તિ તત્તાદૃશ ‘સાવજ્જ’
સાવઘ=સપાપમ્ ‘અકુસલ’ અકુશલમ્=સર્વપ્રાણિનામહિતકર ‘સાહુગરહણિજ્જ’
સાધુગર્હણીયમ્=મહાપુરુષૈસ્તીર્યકરગણધરૈર્નિન્દિત ‘અધમ્મજણ’ અધર્મજનનમ્=
પાપોત્પાદકમ્ એતાદૃશ ‘વચણ’ વચન મળન્તિ । પુનઃ કથ ભૂતાસ્તે ? इत्याह—

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘अलियाहि’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અલિયાહિ સધિસનિવિટ્ઠા) અલીકવાદ કે અભિપ્રાય મેં
સન્નિવિટ્ઠા મૃપાવાદી (અસતગુણુદીરગા) અવિદ્યમાનગુણોં કે કહને વાલે
ઔર (સતગુણનાસગા ય) વિદ્યમાન ગુણોં કે લોપ કરને વાલે હોતે હૈં
(અલિય સપઉત્તા) હસી તરહ અસત્યભાષણ કરને મેં તત્પર બને હુએ
વે (હિંસાભૂઓવઘાહ્ય) જિનવચનોં કે કહને સે પ્રાણિયોં કા હિંસા
દ્વારા વિનાશ હો જાતો હૈં એસે (સાવજ્જ, સાવઘ, (અકુસલ) સર્વ-
પ્રાણિયોં કે અહિતકારક, (સાહુગરહણિજ્જ) સાધુ પુરુષો દ્વારા ગર્હણીય,
એવ (અધમ્મજણ) અધર્મજનક (વચણ) વચનોં કે કહને સે (મળન્તિ)

વળી તે કેવા હોય છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“અલિયાહિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અલિયાહિ સધિસનિવિટ્ઠા” અલીકવાદના અભિપ્રાયમાં રહેલ મૃપાવાદી
“અસતગુણુદીરગા” અવિદ્યમાન-અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોનું કથન કરનાર અને
“સતગુણનાસગા ય” વિદ્યમાન ગુણોને છુપાવનાર હોય છે, “અલિયસપઉત્તા”
આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ “હિંસાભૂઓવઘાહ્ય” પ્રાણી
ઓની હિંસા યાચ તેવા “સાવજ્જ” સાવઘ, “અકુસલ” સમસ્ત પ્રાણીઓનું
અહિત કરનારા “સાહુગરહણિજ્જ” સાધુ પુરુષો દ્વારા નિંદ્ય અને “અધમ્મજણ”
અધર્મજનક “વચણ” વચનો “મળન્તિ” બોલે છે “અણહિગયપુણપાવા”

કચોયણ ય સાહેતિ સડળીણ ' તિત્તિરવર્તકગાવમાથ કપિજ્વલકપોતકાથ સાધય
ન્તિ શાકુનિકાના, તિત્તિરા:-પ્રમિદ્ધા', વર્તકા = 'વટેર' હિતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા:
લોપકા:=અગ્રા ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા: કપિજ્વલા'=તન્નામરપક્ષિવિશેષા: 'કુરજ્જ'
ઇતિ પ્રસિદ્ધા, કાપોતકા:=પારાપતકા: 'કચૂતર' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા: એતાન્
શાકુનિકાના=પક્ષિવાતકાન્ પ્રતિ દર્શયન્તિ 'અગ્રમગરકચ્છમે ય સાહેતિ મચ્છિ
યાણ' અગ્રમકરકચ્છપાથ સાધયન્તિ મત્તિકાના=ઘ્રપા: મત્સ્યા: મકરકચ્છપાથ
=પ્રસિદ્ધાસ્તાન્ દન્નુ મત્તિકાના=મત્સ્યા: પણ્ય ચેપા તે માત્તિકા ધીરાસ્તાન્
પ્રતિ જલ્પગયાદિક દર્શયન્તિ 'સસકેસુલ્લગે ય સાહેતિ મગરાણ' ગદ્ગદ્ધાન્ કુલ્લ
કાથ સાધયન્તિ મકરાણા શદ્ધા:=પ્રસિદ્ધા અદ્ધા:=તજ્જાતીયા: કુલ્લકા: 'કોડી'
ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા એતાન્ મકરતુલ્યજલવિહારિ ધીરાન્ વચયન્તિ 'અયગર=
ગોણસમડલિદબ્વીકરમડલીય સાહેતિ વાલિયાણ' અજગર ગોનસમડલિ દર્વી-
કર મુકુલિનશ્ચ સાધયન્તિ વ્યલ્પાના=તત્ર અજગરા =પ્રતીતા: સર્પવિશેષા:, ગોનસા:
ફળરહિતા: દ્વિમુલસર્પા:, મડલિન'=સર્પવિશેષા, દર્વીકરા'=ફળકારકા: સર્પા:,
મુકુલિન:=દૈપત્ ફળકારકાસ્તાન્ વ્યાલ્પાના=ત્યાગ્રાહકાન્ પ્રતિ સર્પસ્થલાનિ
હં (તિત્તિર વટગ લાગમે ય કપિજ્વલકચોયણ ય સાહેતિ સડળીણ) તયા
તીતરોં કો, વટેરોં કો લાવાપવિયોં કો, કપિંજલોં કો ઓર કચૂતરોં કો
શાકુનિકોં-ઇનકે મારને વાલોં કે લિયે રતલા દેતે હં (અસમગરકચ્છમે
ય સાહેતિ મચ્છિયાણ) તયા ધીવરોં-મચ્છીમારોં કે લિયે મચ્છિયોં, મગરોં
અવ કચ્છપોં કે જલાશયોં કો દિગ્વલા દેતે હં । (સસકે સુલ્લગે ય
સાહેતિ મગરાણ) તયા (મગરાણ) જલ મેં ફિરને વાલે ધીવરોં કે
લિયે યે શાલોં કે, અકોંકે-વિશેષ પ્રકાર કે શાયોં કે, કુલ્લકોં કે-કોડિયોં
કે સ્થાનોં કો રતલા દેતે હં । (અયગર-ગોણસ-મડલિ-દબ્વીકર-
મડલી ય સાહેતિ વાલિયાણ) તયા જો વ્યાલિક મપેરે-સાપ પકડને
વાલે હોતે હં ઉર્હે અજગર કે, ગોનસ દુમુટ્ટી કે, મડલી કે, દર્વીકર-
ફળા ફેલાને વાલે સાપ કે, મુકુલી-યોડે રૂપ મેં ફળા તાનને વાલે

રવટગલાવમે ય કપિંજલકચોયણ ય સાહેતિ સડળીણ " તથા તેતર, બટેરપક્ષીઓ
લાવા પક્ષીઓ, કપિંજલો અને કચૂતર આદિ પક્ષીઓ શાકુનિકો (પારધીઓ)
ને બતાવી દે છે " અસમગરકચ્છમે ય સાહેતિ મચ્છિયાણ " તથા માછીમારોને
માછલીઓ, મગરો અને કાચળા જે જળારાયોમા હોય તે જળારાયો બતાવી દે છે
" સસકે સુલ્લગે ય સાહેતિ મગરાણ " તથા " મગરાણ " જળમા કચ્છમા ધીવરોને
રાખોના, અડોના વિશેષ પ્રકારના રાખડા અને કુલ્લકોના-કોડીઓના સ્થાનો બતાવી
દે છે " અયગર-ગોણસ-મડલિ-દબ્વીકર મડલીય સાહેતિ વાલિયાણ " તથા વ્યાલિ-
કરે સાપ પકડનારને અજગરના, જે મુખવાળા ગોનમના, મડલીના, દર્વીકરના

ધમળદુહળપોસળવળળદુવળવાહળાદિયાઈં સાહેતિ વઢૂળિ
ગોમિયાળ, ધાડ-મળિ-સિલ-પ્પવાલ-ચળાગરે ચ સાહેતિ
આગરીળ, પુપ્ફવિહિ ચ ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિયાળં
અત્થમહુકોસણ ચ સાહેતિ વળચરાળં ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા—‘એમજ જપમાળા’ એમજ જલ્પન્તઃ=પૂર્વોક્તરીત્યા સાવધમનુદ્ધિ
પૂર્વક વક્ષ્યમાળં ભાષમાળા, ‘મહિસે સૂકરે ચ સાહેતિ ઘાયગાળ’ મહિષાન
સૂકરાશ્ચ સાધયન્તિ ઘાતકાના=‘તસ્મિન્ વને યદ્યો મહિષામૂકરાશ્ચ સન્તિ ગચ્છ
તત્રે’ ત્યાદિ તેષા ઘાતકાન્ પ્રતિ ચયન્તિ તથા ‘સસપમયરોહિસે ચ સાહેતિ
વાગુરીળ’ શશપસયરોહિષાશ્ચ સાધયન્તિ વાગુરિળાં=તત્ર શશાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ પસય=
દેશી શન્દોઽય મૃગચાક્ર, રોહિષાઃ=મૃગવિશેષા એવ, તાન્ જાલેન મૃગઘાતકાન્
પ્રતિ ‘તત્ર મૃગા-સન્તી’તિ સાધયતિ=ચયન્તિ, તિત્તિરવટ્ટગલાગમે ચ કર્વિજજ-

ફિર વધા કરતે હેં સો કરતે હેં-‘એવમેવ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવમેવ) પૂર્વોક્ત રીતિ સે અનુદ્ધિપૂર્વક (જપમાળા) વક્ષ્ય
માળ આગે કહે જાને વાલે સાવચ વચનોં કો કરતે હુણ વે મહિષાદિ
પ્રાણિયોં કો શિકારી કે લિયે વતલા દેતે હ વે હસ પ્રકાર—(મહિસે સૂકરે
ચ ઘાયગાળ સાહેતિ) મહિષોં ઓર સૂકરોં કો મરવાને કે અભિપ્રાય
સે ઘાતકોં કે પ્રતિ “ઉસ વન મે જાઓ વહા અનેક મહિષ ઓર સૂકર
હે” હસ પ્રકાર કરતે હેં । તથા (સસપમયરોહિસે ચ સાહેતિ વાગુરીળ)
શશ-ચ્ચરગોશ, પસય-મૃગ એવ રોહિષ-મૃગ વિશેષ, ઇન્હે વાગુરિકોં-
જાલ સે પકડને વાલે મૃગ ઘાતકોં સે અર્થાત્ અહેરિયોં સે-જાઓ ઉસ
વન મેં વહુત સે મૃગ આદિ જાનવર હેં ઉન્હે મારો” હસ પ્રકાર કરતે

વળી તે મૃષાવાદી શુ કહે છે તે કહે છે—“એવમેવ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“એવમેવ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે અનુદ્ધિપૂર્વક “જપમાળા” આગળ કહેવામા
આવનાર સાવચ (પાપયુક્ત) વચનો કહીને તેઓ મહિષાદિ પ્રાણીઓ શિકારીને
બતાવી દે છે તે આ પ્રમાણે છે

“મહિસે સૂકરે ચ ઘાયગાળ સાહેતિ” પાડા અને સૂવરની ઉત્થા કરવાને
માટે શિકારીઓને તે કહે છે કે “આ વનમા જાઓ ત્યા અનેક પાડા અને
સૂવર છે” તથા “સસપસયરોહિસે ચ સાહેતિ વાગુરીળ” તથા સસલા, મૃગ
અને રોહિષ-મૃગ વિશેષ-ને જાણથી પકડનાર વાઘરી આદિ મૃગઘાતકોને તે
છે કે “જાઓ, આ વનમા ઘણા મૃગાદિ જાનવરો છે, તેમને મારો”

સાધયન્તિ ગૌલ્મિકાના-વધયન્ત્યાતન-વધઃ=મારણ વન્ધઃ=વન્ધન રજ્જ્વાદિના
યાતન=દમન ક્રશાદિભિરિત્યેતાનિ ગૌલ્મિકાનાં=કોટપાલાન્ કથયન્તિ, અપરાધા-
દિક કથયિત્વા કોટપાલાદિભિઃ યથાદિક કારયન્તીત્યર્થઃ, ધનધન્યગવેલણ ય
સાહેતિ તક્કરાણ ' ધનધાન્યગવેલકાશ્ચ સાધયન્તિ તસ્કરાણા=ધનધાન્યગવેલકાશ્ચ=
ધન ચ ધાન્ય ચ ગાયશ્ચ એલકા'=મેપાશ્ચ તાન્ ચોરયિતુ તસ્કરાન્ પ્રતિ કથયન્તિ,
' ગામનગરપટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણં ' ગ્રામનગરપત્તનાનિ સાગ્રયન્તિ ચારકાણા
=ગ્રામાદીનિ ગુપ્તપુરુષાન્ પ્રતિ ભેદાઘર્થં કથયન્તિ, 'પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ સાહેતિ
ગથિભેયાણં ' પારઘાતિક પથઘાતકાન્ સાધયન્તિ ગ્રન્થિભેદકાના, પારઘાતિકા
પારે=ગ્રામનગરાદિ સીમાન્તે ઘાતકાઃ - પારઘાતિકાઃ, પથિ=માર્ગે ઘાતિકા =
માર્ગઘાતકાસ્તાન્ લુપ્તિતુ ગ્રન્થિભેદકાન્=ચોરવિશેષાન્ પ્રતિ કથયન્તિ । 'કથ
ચોરિયં નગરગુત્તિયાણ સાહેતિ ' કૃતા ચ ચોરિકા ચૌર્યં નગરગુત્તિકાના=કોટપા-
લાન્ સાધયન્તિ । તથા 'લઙ્ગણ નિહ્લઙ્ગણ ધમણ દુહણ પોસણવણવણદુવણગાહણાદિ-

અપરાધોં કો પ્રકાશિત કરકે જીવોં કા કોનવાલ સે વગ્નધન, યાતના
કરવાતે હૈં । (ધન યત્ત ગવેલણ ય સાહેતિ તક્કરાણ) જો ચોર હોતે હૈં
ઉનસે મિલકર ધન, ધાન્ય, ગાય ઓર એલક-મેપોં કી ચોરી કરને કો
કહતે હૈં (ગામનગરપટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણં) જો ગુપ્તચર હોતે હૈં-
ઉન્હે ગ્રામ આદિ કા ભેદ લાને કે લિયે પ્રેરિત કરતે હૈ, અથવા ઉન્હે ગ્રામ
આદિ કા ભેદ કહતે હૈં । (પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ સાહેતિ ગથિભેયાણં)
જો ગ્રન્થિભેદક ચોર વિશેષ-અર્થાત્-ચોરી કા સાલ સ્થાને ચાલે હોતે
હૈં ઉનસે પારઘાતિકોં-ગામ કી સીમાપર ઘાત કરને વાલો કો માર્ગઘા-
તકો માર્ગમેં લૂટને વાલોંકો લૂટનેકે લિયે કહતે હૈં (કથ ય ચોરિય
નગરગુત્તિયાણ સાહેતિ) કોટપાલોં કે લિયે નગર આદિ મેં હુઈ ચોરી
કા પતા કહતે હૈં (લઙ્ગણ-નિહ્લઙ્ગણ-ધમણ-દુહણ-પોસણ-વણણ-

ઠરીને કોટવાલ પાસે જીવોનો વધ કરાવે છે, ય ધનમા નખાવે છે અને પીડા
પડોઆડે છે “ ધનધન્યગવેલણ ય સાહેતિ તક્કરાણ ” ચોરોને મળી તેમને
ધન, ધાન્ય, ગાય અને ઘેટાઓની ચોરી કરવાનું કહે છે “ ગામનગરપટ્ટણે ય
સાહેતિ ચારગાણ ” ગુપ્તચરોને ગ્રામ આદિનો ભેદ સોધી લાવવા પ્રેરે છે,
અથવા તેમને ગ્રામ આદિનો ભેદ બતાવે છે “ પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ-
સાહેતિ ગથિભેયાણ ” જે ગ્રન્થિભેદક હોય--એટલે કે ચોરીનો માલ
ખાનાર હોય છે તેમને, તથા પારઘાતિકો-ગામની સીમા પર ઘાત કર-
નારાને તથા માર્ગમા લૂટી લેનારને “ કથ ય ચોરિય નગરગુત્તિયાણ સાહેતિ ”
કોટવાળોને નગર આદિમા થયેલ ચોરી કરનારને બતાવવામા મદદ કરે છે

કથયન્તિ, 'ગોદાસેદાયસલ્લગસરડગે ય સાહેતિ લુદ્ધગાણ' ગોધાઃ સેદાંશ્ચ શલ્યક શરટકાશ્ચ સાધયન્તિ લુધગાના ગોધાઃ=શુજપરિસર્પનિશેષાઃ 'ગોદાઃ' इति भाषा प्रसिद्धाः, સેદાશ્ચ=શુજપરિસર્પનિશેષા એર 'સહસહેલી' इति भाषा प्रसिद्धास्तान्, શલ્યક શરટકાશ્ચ-શલ્યકાઃ 'સીસોલિયા' इति प्रसिद्धाः, શરટકાશ્ચ=કૃકલા-સાથ 'ગિરગિટ' કરગેટિયા इति भाषा प्रसिद्धास्तान्, લુધગાના=પાપર્થિકાન્ 'શિવરી' इति प्रसिद्धान् प्रति कथयन्ति । 'ગયકુલવાનરકુલે ય સાહેતિ પાસિયાણ' ગજકુલવાનરકુલાનિ ચ સાધયન્તિ પાશિકાના=ગજકુલાનિ વાનરકુલાનિ ચ પાશિકાના પાશેન=ગજવન્ધ વિશેષેણ ચરન્તિ ये ते पाशिकाः गजादिवन्धनमारकास्तान् कथयन्ति । 'સુકવરહિણમયણસાલકોહલહસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ' શુકવર્હિમદનશાલકોફિલહસકુલાનિ સારસાશ્ચ સાધયન્તિ પોપગાણા=તત્ર શુકાઃ પ્રસિદ્ધા, વર્હિણો મયૂરાઃ મદનશાલા=સારિકા, કોકિલા, હસાશ્ચ પ્રતીતા તેષા યાનિ કુલાનિ=વૃન્દાનિ તાનિ તથા સારસાશ્ચ, પોપગાણા=પક્ષિપાલકાન્ પ્રતિ કથયતિ । 'વધવધજાયણ ચ સાહેતિ ગોમ્મિયાણ' વધવન્ધયાતન ચ

સર્પ કે નિવાસસ્થાનોં કો વતલા દેતે હેં । (ગોદા સેદા ય સલ્લગ સર-ડગે ય સાહેતિ લુદ્ધગાણ) ગોધા-ગોદ-સેદ-સહેલી, શલ્યક-સીસોલિયા, શરટક-કૃકલાસ ગિરગિટ-ગિરદીલા, ઇન જીવોં કો જો શિકારી હોતેહેં । ઉન્હેં વતલા દેતે (ગયકુલ વાનરકુલે ય સાહેતિ પાસિયાણ) તથા પાશિક જો ગજ આદિકોં કો પકડને વાલે હોતે હેં ઉન્હેં હાથિયોં કો વદરો કો દિગ્વલા દેતે હેં, અર્થાત્ ઇનકે રહને કે સ્થાનોં કો કહ દેતે હેં । (સુક વરહિણ મયણસાલકોહલહસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ) તથા-જો પક્ષિપોષક હોતે હેં ઉનસે તોતા, મયૂર, મૈના, કોકિલ, હૈસ ઇનકે વિષય મેં “ ઇનકો તુમ પાલો ” એસા કહતે હેં ઓર “ સારસપક્ષિયોં કો મી પાલો ” એસી સલાહ દેતે હેં । (વધવધજાયણ ચ સાહેતિ ગોમ્મિયાણ)

ક્રણા ક્રેલાવનાર સાપના, મુકુલીના-થોડા પ્રમાણુમા ક્રણા ક્રેલાવનારા સાપના નિવાસ સ્થાનો બતાવી દે છે “ ગોદા સેદા ય સલ્લગ સરડગે ય સાહેતિ લુદ્ધ ગાણ ” ગોધા-ધો, સેહ-સહેલી, શલ્યક-સીસોલીયા, ત શરટક-કૃકલાસ ગિરગિટ-કાશ્ચ ડા વગેરે જીવો શિકારીઓને બતાવી દે છે “ ગયકુલવાનરકુલેય સાહેતિ પાસિયાણ ” તથા પાશિકોને-ગજ આદિને પકડનારાને હાથીઓ તથા વાનરોના નિવાસસ્થાન બતાવી દે છે “ સુકવરહિણમયણસાલકોહલહસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ ” તથા પક્ષીઓને પાળનારને તે પોપટ, મોર, મૈના કોયલ, હસ વગેરે પાળવાનું કહે છે અને સારસ પક્ષીઓને પણ પાળવાની સલાહ આપે છે “ વધવધજાયણ ચ સાહેતિ ગોમ્મિયાણ ” અપરા ~ ~ ~

સ્વનિપતીન્ કથયન્તિ । તથા ‘ પુષ્પવિર્હિ ફલવિર્હિ ચ સાહેતિ માલિયાણ ’
પુષ્પવિર્હિ ફલવિર્હિ ચ=પુષ્પજાતિ ફલજાતિ ચ સાધયન્તિ માલિકાના=વનપાલ
કાનામ્, ‘ અગ્ધમદુરોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ ’ અર્ધમધુકોશકાશ્ર સાધયન્તિ
વનચરાણા=અર્ધથ=મૂલ્યપ્રમાણ મધુકોશકાશ્ર=મનુષ્યત્તિસ્થાનાનીત્યર્થમધુકોશકા-
સ્તાન્ વનચરાણાં=મિલ્હાન્ પ્રતિ કથયન્તિ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

પુનરપ્યાહ—‘ જતાઙ ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જંતાઙ વિસાઙ, મૂલકમ્મ આહેવણ-આવિધણ આભિ-
ઓગ-મંતોસહિપ્પઓગે ચોરિય પરદારગમણવહુપાવકમ્મકરણં
અવક્કલદેગામધાયણં, વણદહણતટાગભેયણણ વુદ્ધિવિસય વસી-
કરણમાઙ્યાઙ ભયમરણ કિલેસુવ્વેગજણ્યાઙ ભાવવહુસકિલિટ્ઠ-

કે ઉત્પત્તિસ્થાનોં કો કહતે હૈં । તથા (પુષ્પવિર્હિ ફલવિર્હિ ચ સાહેતિ માલિયાણ) જો માલી હોતે હૈં ઉન્હેં યે પુષ્પજાતિ, ફલજાતિ સમજાતેહૈં-
અર્થાત્—‘ વાગમેં અમુક જાતિકા ફુલ લગાઓ, અમુક જાતિ કે ફલ
ઉત્પન્ન કરો ’ હસ પ્રકાર સે કહા કરતે હૈં । (અગ્ધમદુરોસણ ય સાહેતિ
વણચરાણ) તથા જો વનચરમીલ હૈં ઉનસે યે હસ પ્રકાર કહતે હૈં કિ
તુમ ગહદ યા ગહદ કા છાતા હી લે આયા કરો અમુક મૂલ્ય તુમ્હેં મિલ
જાવેગા—બૈઠે ૨ વધા કરતે રહતે હો । મૃપાવાદ પાપ કરને વાલે જીવ જીવોં
કો વાધા આદિ પહુંચે હસકા થોડા સા મી ધ્યાન નહીં રખતે હૈં, તથા
જો જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને વાલે મનુષ્ય હૈં ઉન્હેં દર ઁક પ્રકાર સે જીવોં
કો કષ્ટ પહુંચાને મે ઉકમાયા કરતે હૈં ॥ સૂ ૧૧ ॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો જતાવે છે તથા “ પુષ્પવિર્હિ ફલવિર્હિ ચ સાહેતિ માલિ-
યાણ ” માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ જતાવે છે, એટલે કે “ વાગમા
અમુક જાતિમા ફુલ ઉગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો ” એ પ્રકારની
સલાહ આપે છે “ અગ્ધમદુરોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ ” તથા વનમા ફરનારા
ભીલોને તે આ પ્રમાણે કહે છે “ તમે મવ અથવા મવપુડો લાવ્યા કરો
તમને અમુક ડિંમત મળશે—અમન્તા જેસી ગ્હે શુ વળશે ? ” મૃપાવાદ પાપ
કરનાર વ્યક્તિ જીવોને કષ્ટ આદિ પહોચાશે તેનું સહેજ પણ ધ્યાન રાખતી
નથી, તથા જીવોને કષ્ટ પહોચાડનાર જે માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે
જીવોને કષ્ટ પહોચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

યાઙ સાહતિ વહૂણિ ગોમિયાણ ' લાઙ્ઘનનિર્લાઙ્ઘનધ્માનદોહનપોષણવનનદુવનવા-
હનાદિકાનિ સાધયતિ વહૂનિ ગોમિના, લાઙ્ઘન=ગવાદીના દેહે તપ્તગેદાદિભિશ્ચિન્દ્ર
વિશેષકરણ, નિર્લાઙ્ઘન=વધિત્કરણ ધ્માન=ગવાદીના શરીરે વાયુપૂરણ દોહન
=પ્રસિદ્ધપોષણ=યવચણકાદિદાનેન પુષ્ટિકરણ વનન=અન્યમાતરિ રત્નાદિ સયોજન
દાવનમ્=ઉપતાપન=રજ્જ્યાદિનાપાદવન્ધનમ્ । વાહન=શરટાદિપુ યોજનમિત્યાદિ-
કાનિ ' વહૂણિ ' વહૂનિ ગોમતા=ગોપાલાદીન પ્રતિ વધયન્તિ, ' ધાતુમણિસિલ્પ
વાલ રચનાગરે ય સાહેતિ આગરીણ ' ધાતુમણિશિલાપ્રવાલરત્નાકરાન્ સાધયન્તિ
આકરિણા=ઘાતયઃ=લૌહાદયો મણયઃ=ચન્દ્રકાન્તાદયઃ, શિલાઃ=પાપાણા, પ્રવાલા
=પ્રસિદ્ધાઃ, રત્નાનિ=મરુતાદીનિ, તેપામાકરા=ઉત્પત્તિસ્થાનાનિ, આકરિણા=

દુવણ-વાહણા-દિયાઙ સાહેતિ વહૂણિ ગોમિયાણ) જો ગોપાલકુજન-
ગ્વાલે હોતે હૈં-અને તે (લઙ્ઘણ) ગાય આદિ જાનવરોં કે શરીર મેં
હાથ દેને કે લિયે, (નિલ્લઙ્ઘણ) અન્ને નિર્લાઙ્ઘણ-વધિયા કરને કે લિયે,
(ધમણ) અન્ને શરીર મેં વાયુ ભરને કે લિયે, (દુહણ) દોહન કે લિયે,
(પોસણ) પોષણ કરને કે લિયે, જવ ચના આદિ દેકર પુષ્ટ વનાને કે
લિયે, (વણણ) વનન-મૃતવત્સા ગાય કો દોહન કરનેકે અભિપ્રાય સે
અસકે સાથ દૂસરી ગાયકા વચ્ચા ચુલાને કે લિયે, (દુવણ) દાવન-
દુહતે સમય દોરી સે પૈર આદિ કો વાધને કે લિયે ઓર (વાહણ) ગાડી
આદિ મેં જોતને કે લિયે વાર ૨ કહા કરતે હૈં (ધાતુમણિસિલ્પવાલર-
ચણાગરે ય સાહેતિ આગરીણ) જો ત્રિપતિ હોતે હૈં અન્ને લિયે લૌહા
દિક ધાતુઓં, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિયોં પથરોં, પ્રવાલોં ંવ રત્નાદિકોં

“ લઙ્ઘણ-નિલ્લઙ્ઘણ-ધમ્મણ-દુહણ-પોસણ-વણણ-દુવણ-વાહણાદિયાઙ સાહેતિ વહૂણિ
ગોમિયાણ ” ગોવાળોને તેઓ ગાય આદિના શરીર પર હાથ દેવાને, “ નિલ્લઙ્ઘણ ”
તેમને નિર્લાઙ્ઘન-વધ્યા કરવાને માટે “ ધમણ ” તેમના શરીરમાં હવા ભર-
વાને માટે “ દુહણ ” દોહવાને માટે “ પોસણ ” પોષણ કરવાને માટે જવ,
ચણા આદિ આપીને પુષ્ટ બનાવવાને માટે “ વણણ ” વનન-જે ગાયનું વાછ
રડું ભરી ગયું હોય તે ગાયને દોહવાને નિમિત્તે તેને બીજી ગાયનું બચ્ચુ
ધવરાવવા માટે, “ દુવણ ” દાવણ-દેવાને વખતે દોરડા વડે પગ આદિ બાધ
વાને માટે અને “ વાહણ ” ગાડી આદિ વાડને બેડવાને માટે વારવાર કહ્યા
કરે છે “ ધાતુ મણિસિલ્પવાલરચણાગરે ય સાહેતિ આગરીણ ” આણેના માલિ
કોને લોખંડ આદિ ધાતુઓ, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણીઓ, પથરો, પ્રવાલો અને રત્ન

સ્વનિપતીન્ કથયન્તિ । તથા ‘ પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિયાણ ’
પુષ્પવિધિં ફલવિધિં ચ=પુષ્પજાતિં ફલજાતિં ચ સાધયન્તિ માલિકાના=વનપાલ-
કાનામ્, ‘ અઘમદુકોસણ ચ સાહેતિ વણચરાણ ’ અર્ધમધુકોશકાશ્ર સાધયન્તિ
વનચરાણા=અર્ધશ્ર=મૂલ્યપ્રમાણ મધુકોશકાશ્ર=મધુત્પત્તિસ્થાનાનીત્યર્થમધુકોશકા-
સ્તાન્ વનચરાણા=મિથ્યાન્ પ્રતિ કથયન્તિ ॥ સૂ० ૧૧ ॥

પુનરપ્યાહ—‘ જતાઈ ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જંતાઈ વિસાઈ, મૂલકમ્મ આહેવણ-આવિધણ આભિ-
ઓગ-મંતોસહિપ્પઓગે ચોરિય પરદારગમણવહુપાવકમ્મકરણં
અવક્કલદેગામધાયણં, વણદહણતટાગભેયણણ વુદ્ધિવિસય વસી-
કરણમાઈયાઈ ભયમરણ કિલેસુવ્વેગજણયાઈ ભાવવહુસકિલિટ્ઠ-

કે ઉત્પત્તિસ્થાનોં કો કહતે હૈં । તથા (પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિયાણ) જો માલી હોતે હૈં ઉન્હેં યે પુષ્પજાતિ, ફલજાતિ સમજાતેહૈં-
અર્થાત્—‘ વાગમેં અમુક જાતિકા ફુલ લગાઓ, અમુક જાતિ કે ફલ ઉત્પન્ન કરો ’ હસ પ્રકાર સે કહા કરતે હૈં । (અઘમદુકોસણ ચ સાહેતિ વણચરાણ) તથા જો વનચરભીલ હૈં ઉનસે યે હસ પ્રકાર કહતે હૈં કિ તુમ શહદ યા શહદ કા ઝાતા હી લે આયા કરો અમુક મૂલ્ય તુમ્હેં મિલ જાવેગા—ચૈઠે ૨ કયા કરતે રહતે હો । મૃયાવાદ પાપ કરને વાલે જીવ જીવોં કો વાધા આદિ પહુંચે હસકા થોડા સા ભી ધ્યાન નહીં રખતે હૈં, તથા જો જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને વાલે મનુષ્ય હૈં ઉન્હેં દર દર પ્રકાર સે જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને મેં ઝકમાયા કરતે હે ॥ સૂ ૧૧ ॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો ળતાવે છે તથા “ પુષ્પવિહિ ફલવિહિ ચ સાહેતિ માલિ-
યાણ ” માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ ળતાવે છે, એટલે કે “ વાગમા
અમુક જાતિમા ફુલ ઉગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો ” એ પ્રકારની
મલાહ આપે છે “ અઘમદુકોસણ ચ સાહેતિ વણચરાણ ” તથા વનમા કરનારા
ભીલોને તે આ પ્રમાણે ટહે છે “ તમે મધ અથવા મધપુડો લાવ્યા કરો
તમને અમુક ડિંમત મળશે—અમમ્તા બેસી રહે શુ વળશે ? ” મૃયાવાદ પાપ
કરનાર બુદ્ધિ ળવોને કષ્ટ આદિ પહોચશે તેનુ મહેજ પણ ધ્યાન રાખતી
નથી, તથા ળવોને કષ્ટ પહોચાડનાર જે માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે
ળવોને કષ્ટ પહોચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

યાઃ સાહતિ વહૂણિ ગોમિયાણ ' લાઙ્ઘનનિર્લાઙ્ઘનધ્માનદોહનપોષણવનનદુવનવા-
હનાદિકાનિ સાધયન્તિ વહૂણિ ગોમિના, લાઙ્ઘન=ગયાદીના ઢેહે તપ્તગેદાદિભિશ્ચિન્દ
વિશેષકરણ, નિર્લાઙ્ઘન=વર્ધિત્કરણ ધ્માન=ગયાદીના શરીરે વાયુપૂરણં દોહન
=પ્રસિદ્ધપોષણ=યવચણકાદિદાનેન પુષ્ટિકરણ વનન=અન્યમાતરિ રત્સાદિ સયોજન
દાવનમ્=ઉપતાપન=રજ્જ્યાદિનાપાદવન્ધનમ્ । વાહન=શરટાદિષુ યોજનમિત્યાદિ
કાનિ ' વહૂણિ ' વહૂણિ ગોમતા=ગોપાલાદીર્ પ્રતિ વધયન્તિ, ' ધાતુમણિસિલ્પ
વાલ રચનાગરે ય સાહેતિ આગરીણ ' ધાતુમણિગિલાપમાલરત્નાકરાન્ સાધયન્તિ
આકરિણા=ઘાતયઃ=લૌહાદયો મણયઃ=ચન્દ્રકાન્તાદયઃ, શિયાઃ=પાપાણા, પ્રવાલા
=પ્રસિદ્ધાઃ, રત્નાનિ=મરુતાદીનિ, તેપામાકરા=અત્પત્તિસ્થાનાનિ, આકરિણા=

દુવણ-વાહણ-દિયાડ સાહેતિ વહૂણિ ગોમિયાણ) જો ગોપાલકુજન-
ગ્વાલે હોતે હૈં-અનેસે યે (લઙ્ઘણ) ગાય આદિ જાનવરોં કે શરીર મેં
ડામ દેને કે લિયે, (નિલ્લઙ્ઘણ) અન્હે નિર્લાઙ્ઘણ-વધિયા કરને કે લિયે,
(ધમ્મણ) અન્હે શરીર મેં વાયુ ભરને કે લિયે, (દુહણ) દોહન કે લિયે,
(પોસણ) પોષણ કરને કે લિયે, જવ ચના આદિ દેકર પુષ્ટ બનાને કે
લિયે, (વણણ) વનન-મૃતવત્સા ગાય કો દોહન કરનેકે અભિપ્રાય સે
અસકે સાથ દૂસરી ગાયકા વચ્ચા ચુસાને કે લિયે, (દુવણ) દાવન-
દુહતે સમય દોરી સે પૈર આદિ કો વાધને કે લિયે ઓર (વાહણ) ગાડી
આદિ મેં જોતને કે લિયે વાર ૨ કહા કરતે હૈં (ધાતુમણિસિલ્પવાલર-
ચનાગરે ય સાહેતિ આગરીણ) જો સ્વનિપત્તિ હોતે હૈં અન્હે લિયે લૌહા
દિક ધાતુઓં, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિયોં પત્થરોં, પ્રવાલોં ંવ રત્નાદિકોં

“ લઙ્ઘણ-નિલ્લઙ્ઘણ-ધમ્મણ-દુહણ-પોસણ-વણણ-દુવણ-વાહણાદિયાઃ સાહેતિ વહૂણિ
ગોમિયાણ ” ગોવાળોને તેઓ ગાય આદિના શરીર પર ડામ દેવાને, “ નિલ્લઙ્ઘણ ”
તેમને નિર્લાઙ્ઘન-વધ્યા કરવાને માટે “ ધમ્મણ ” તેમના શરીરમા હવા ભર-
વાને માટે “ દુહણ ” દોહવાને માટે “ પોસણ ” પોષણ કરવાને માટે જવ,
ચણા આદિ આપીને પુષ્ટ બનાવવાને માટે “ વણણ ” વનન-જે ગાયનુ વાછ
રડુ ભરી ગયુ હોય તે ગાયને દોહવાને નિમિત્તે તેને ખીજી ગાયનુ અન્ય
ધવરાવવા માટે, “ દુવણ ” દાવણ-દોવાને વખતે દોરડા વડે પગ આદિ બાધ
વાને માટે અને “ વાહણ ” ગાડી આદિ વાહને જોડવાને માટે વારવાર કહ્યા
કરે છે “ ધાતુ મણિસિલ્પવાલરચનાગરે ય સાહેતિ આગરીણ ” ખાણોના માલિ
કોને લોખંડ આદિ ધાતુઓ, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણીઓ, પથ્થરો, પ્રવાલો અને રત્ન

પાપકર્મસમાચરણમ્, તથા 'અવસ્થદે' અવસ્કન્દાન્=સૈન્યશિવિરાદિભિરાક્રમણેન-
પરત્વલમર્દનાનિ ધાટીકર્મકરણાનિ તથા 'ગામગાયણ' ગ્રામવાતન=ગ્રામાદિનાશન
'વણદહણતડાગભેયણ' વનદહન-તડાગ-ભેદનાનિ=વનજ્વાલનાનિ જલાશય
ધ્વસનાનિ ચ 'બુદ્ધિવિસયવસીકરણાદ્યાઈ' બુદ્ધિવિષયવસીકરણાદિકાનિ પરસ્ય
બુદ્ધેર્વિષયસ્ય ચ શબ્દાદેઃ વસીકરણાનિ=મન્ત્રાદિપ્રયોગેણ સ્વાયત્તીકરણાનિ 'ભય
મરણકિલેસુચ્ચેગજ્જણયાઈ' ભયમરણક્લેશોદ્દેગજનનાનિ ભય ચ મરણ ચ ક્લેશશ્ચ
શારીરિકઉદ્દેગશ્ચ=હાર્દિક દુઃસ્વમિત્યેતેષાં જનનાનિ તથા 'ભાવબહુસકિલિટ્ઠ-
ભાવમલિણાણિ' ભાવબહુસકિલિટ્ઠમલિનાનિ=ભાવેન=અધ્યવસાયેન બહુસકિલિટ્ઠેન=
અતિશયપરસન્તાપજનકેન મલિનાનિ=ફલુપિતાનિ તથા 'ભૂયઘાઓવઘાઈયાઈ'
ભૂતઘાતોપઘાતકાનિ=ભૂતાનાં પ્રાણિનાં ઘાતઃ=સાક્ષાત્ હનન ઉપઘાતશ્ચ=પરમ્પરયા-
હનન તૌં યેષુ તાનિ ભૂતઘાતોપઘાતકાનિ પૂર્વોક્તાનિ 'સત્ત્વાણિત્રિ' સત્યા-

કારને કો, તથા (અવસ્થદે) સૈન્ય શિવિર આદિકે દ્વારા આક્રમણ
કરકે પર કે વલકો મર્દન કરને રૂપ કર્મ કો અથવા ઘાડપાડને રૂપ
ફકૈનીકર્મ કો, (ગામગાયણ) ગ્રામવાતકરૂપકુકૃત્ય કો, (વણદહણત-
ડાગભેયણ) જગલો મે આગ લગાને રૂપ, તથા જલાશયોં કો ધ્વસ
કરને રૂપ કુકૃત્યોં કો, (બુદ્ધિવિસયવસીકરણમાઈયાઈ) મન્ત્રાદિકોં કે
પ્રયોગ સે પર કો બુદ્ધિ કો, એવ શબ્દાદિક પાંચોં હિન્દ્રિયોં કે વિષયોંકોં
સ્વવશ કરને રૂપ અકૃત્યોં કો કોઈ પૂછે અથવા ન પૂછે તો મીં વતાયા
કરતે હૈં, તથા (ભયમરણકિલેસુચ્ચેગજ્જણયાઈ) ભય, મરણ, ક્લેશ,
ઉદ્દેગ, હનકે ઉત્પાદક અસત્યવચનોં કો, તથા (ભાવબહુસકિલિટ્ઠમલિ-
ણાણિ) અત્યત સકિલિટ્ઠ અતિશયરૂપમે પર કો સન્તાપજનક, એસે અધ્ય-
વસાય સે મલિન હુઈ તથા (ભૂયઘાઓવઘાઈયાઈ) પ્રાણિયોં કે સાક્ષાત્

આદિ દ્વારા આક્રમણ કરીને અન્યનાં બાબતુ મર્દન કરવારૂપ કર્મ તથા ઘાડ
પાડવાનાં કાર્યને, "ગામગાયણ" ગામ ભાગવારૂપ કુકૃત્યને, "વણદહણતડાગ
ભેયણ" જગલોમાં આગ લગાડવાના તથા જલાશયોને તોડી પાડવાના કુકૃત્યોને,
"બુદ્ધિવિસયવસીકરણમાઈયાઈ" મન્ત્રાદિના પ્રયોગથી પારકાની બુદ્ધિને, અને,
શબ્દાદિક પાંચે હિન્દ્રિયોના વિષયોને પોતાને વશ કરી લેવા રૂપ કુકૃત્યોને કોઈ
પૂછે અથવા ન પૂછે તો પણ તે મૃપાવાદી બતાવ્યા કરે છે, તથા "ભય મરણ
કિલેસુચ્ચેગજ્જણયાઈ" ભય મરણ, ક્લેશ, ઉદ્દેગ આદિ ઉત્પન્ન કરનાર અસત્ય
વચનો, તથા "ભાવબહુસકિલિટ્ઠમલિણાણિ" અત્યત સકિલિટ્ઠ, અન્યને
અતિશય સન્તાપજનક એવા અધ્યવસાયથી મલિન થયેલ તથા "ભૂયઘાઓવ

મલિણાઈ મૂયઘાઓવઘાડ્યાઈ સન્ધાણિ વિ તાઈ હિંસગાઈ
વયળાઈ ઉચાહરતિ પુટ્ટા વા અપુટ્ટા વા ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

ટીકા—‘ જતાઈ ’ યન્ત્રાણિ તિલનિષ્પીડનાદિ યન્ત્રાણિ ઉદાહરન્તીતિ વક્ષ્ય-
માણેન સમ્પન્ધઃ । ‘ વિસાઈ ’ વિપાણિ=ક્ષણમાત્રપ્રાણહારક્તાઽપુટ્ટમર્પાંદીનિ સ્થા-
વરજઙ્ગમભેદાનિ । મૂલકર્મ્મઆદેવણઆવિધણઆભિઓગમતોસહિષ્પઓગે ’ મૂલ
કર્માક્ષેપણાર્ધનાભિયોગ્યમન્ત્રોપધિપ્રયોગાન્=મૂલકર્મ્મ=ગર્ભઘાતનાદિકમ્, અથવા
મૂલનક્ષત્રાદિ જાતસ્ય તદ્દોષશાન્ત્યર્થ સ્નાનકર્માદિકમ્, આક્ષેપણ=નગરાદિ ક્ષો-
ભોત્પાદનમ્, આર્ધન=ધનાદીના મન્ત્રપ્રયોગેણ હરણ આભિયોગ્ય ચ=વશીકરણાદિ
તચ દ્રવ્યતો દ્રવ્યસયોગજનિત ભાવતો વિદ્યામન્ત્રાદિસજાત વલાત્કારજનિત વા,
તથા મન્ત્રોપધિપ્રયોગાન્ મન્ત્રપ્રયોગાન્ ઔપધિપ્રયોગાશ્ચ, તથા ‘ ચોરિયપરદાર
ગમણવહુપાવકર્મ્મકરણ ’ ચોર્યપરદારગમનવહુપાવકર્મ્મકરણ = ચોર્યપરસ્ત્રોગમનાદિ

ફિર મી કહતે હૈ—‘ જતાઈ વિસાઈ ’ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જતાઈ) યત્રો કો-તિલ આદિ કે નિષ્પીડક કોલ્હ આદિ
પદાર્થો કો (વિસાઈ) ક્ષણમાત્ર મેં પ્રાણો કો નષ્ટ કરને વાલે તાલપુટ,
સર્પ આદિ સ્થાવર જગમ વિષોંકો (મૂલકર્મ્મ-આદેવણ-આવિધણ-
આભિઓગ-મતોસહિ પ્પઓગે) ગર્ભઘાતન આદિ રૂપ મૂલકર્મ્મ કો, અથવા
મૂલ નક્ષત્ર મેં ઉત્પન્ન હુઈ વાલક કે દોષશાનિ કે લિયે સ્નાન કર્મ આદિ
કો, નગરાદિક મે ક્ષોભોત્પાદનરૂપ આક્ષેપણ કો, મન્ત્ર કે પ્રયોગ સે
ધનાદિકોં કે હરણરૂપ આર્ધન કો, વશીકરણાદિરૂપ આભિયોગ્ય કર્મ
કો, તથા મન્ત્ર પ્રયોગોં કો, ઔષધિ કે પ્રયોગો કો તથા (ચોરિયપરદાર
ગમણવહુપાવકર્મ્મકરણ) ચોરી, પરદારગમન આદિ રૂપ પાપકર્મોં કે

હુણ પણ સૂત્રકાર કહે છે—“જતાઈ વિસાઈ ” ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ જતાઈ ” તેલ આદિ પીત્તવાના ઘાણી આદિ પદાર્થોને “ વિસાઈ ”
એક ક્ષણમાત્ર પ્રાણ હરી લેનાર તાલપુટ, સર્પ આદિ સ્થાવરજગમ વિષોને,
“ મૂલકર્મ્મ-આદેવણ આવિધણ-આભિઓગ-મતોસહિ-પ્પઓગે ” ગર્ભઘાતન આદિ
રૂપ મૂલકર્મને, અથવા મૂળનક્ષત્રમા જન્મેલા બાળકની દોષશાન્તિ માટે સ્નાન
કર્મ આદિને, નગરાદિમા ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરવારૂપ આક્ષેપણને, મન્ત્રપ્રયોગ વડે
ધનાદિના હરણરૂપ આર્ધનને, વશીકરણાદિરૂપ આભિયોગ્યકર્મને, તથા મન્ત્ર
પ્રયોગોને, ઔષધિ પ્રયોગોને તથા “ ચોરિયપરદારગમણવહુપાવકર્મ્મકરણ ”
ચોરી, પરદારગમન, આદિ પાપકર્મો કરવાને, તથા ‘ અવક્ષદે ’ શિબિર

पुनरप्याह—‘ परतत्ति ’ इत्यादि ।

मूलम्—परतत्तिवावडाय असमिस्सियभासिणो उवदिसंति
सहसाउट्ठा—गोणा—गवया दमत्तु, परिणयवया अस्सा हत्थीग-
वेलगकुक्कडा य किज्जत्तु किणावेह निक्केहय पच्चह सयणस्स देह
पीयह दात्तिदास—भयग—भाडल्लगा य सिस्सा य पेसकजणो
कम्मकरा किकरा य एए भयणपरिजणा य कीस अच्छति
भारिया भे करेतु कम्म, गहणाइ वणाइ खित्तखिलभूमिवल्ल-
राइ उत्तणवणसकडाइ डज्जत्तु सूडिज्जत्तु य रुक्खा भिज्जत्तु
जताइ भंडाडयस्स उवहिस्स कारणाए, बहुविहस्स अट्ठाए
उच्छू दुज्जत्तु पीलिज्जत्तु य तिला, पयावेह इट्ठयाओ मम घरट्ठ
याए खेत्ता य कसह कसावेह वा, लहु गामनगरखेडकव्वडे
सनिवेसेह, अडवीदेसेसु विउलसीमे, पुप्फाणि फलानि य कद-
मूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह, करेहसचय परिजणस्स अट्ठाए ॥ १३ ॥

भी पूछे तो भी बताया करते हैं । जिन वचनों से भय जरण आदि
उपद्रव पड़े हो जावें, दूसरोंको खुनकर जिन से चित्त में मलिनता आ
जावे, ऐसे वचन भी वे बोल दिया करते हैं । सत्य होने पर भी जो
प्राणिनों के प्राणों को राकट में डाल दते हों—प्राणियोंकी साक्षात् अथवा
परम्परा से हिंसा के जो सारनभूत बनने हों ऐसे सब ही वचन अस-
त्य ही हैं, और उन्हें ये असत्यवादीजन बोला करते हैं ॥ सू० १२ ॥

विषे मृषावादी भाग्यने डोर्छ पूछे डे न पूछे तो पणु ते भताव्या डरे छे
ने वचनोथी लय, भणु आदि उपद्रव पेदा थाय, ने वचनो मालणीने अन्यना
भनमा मलिनता उत्पन थाय, जेवा वचनो पणु तेओ भोत्था डरे छे मत्थ
डोवा छत्ता पणु ने वचनोथी प्राणीओना प्राण लयमा भूझाय—प्राणीओनी साक्षात्
हिंसाना अथवा परपराथी हिंसाना ने डण्णुइय भनता डोय जेवा भवा वचनो
असत्य न छे, अने ते असत्यवादी भाणुम तेवा वचनो भोत्था डरे छे ॥ सू० १३ ॥

ન્યપિ=સ્વરૂપતસ્તદ્યાન્યપિ. કિન્તુ-અપિ-નિશ્ચયેન ' હિંસગાઢ ' હિંસકાનિ=પરિ
ણામતઃ પ્રાણિપ્રાગોપધાતકાનિ તમ્માદસત્યસ્વરૂપાણિ, ' વચનાઢ ' વચનાનિ. ' પુઢ્ઠા
વા અપુઢ્ઠા વા ' પૃષ્ઠા વા કેનાપિ, અપૃષ્ઠા યાઢપિ-અલીકનાદિનઃ ' ઉપાદરતિ '
ઉદાદરન્તિ=રુથયન્તિ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

અથવા પરમ્પરા રૂપ સે ઘાત કરને વાલે એસે (સચ્ચાણિ ત્રિ) સ્વરૂપ સે
સત્ય ખી હો કિન્તુ નિશ્ચય મેં (હિંસગાઢ) પરિણામત. પ્રાણિયોં કે
પ્રાણોં કે ઉપધાતક હોને કે કારણ અસત્ય સ્વરૂપ હી હોતે હેં । એસે
(વચનાઢ) વચનોં કો (પુઢ્ઠા વા અપુઢ્ઠા વા) અસત્યવાદી જન વાહેં ઉનસે
કોઈ પૂછે અથવા ન પૂછે તો ખી (ઉપાદરતિ) કહ દિયા કરતે હેં ।

ભાવાર્થ—મૃષાવાદીજન અનેકવિધ પ્રાણિપીડક યત્રો કો બનાવે કે
લિયે, વિવિધ પ્રાકર કે વિષોં કા નિર્માણ કરને કે લિયે દૂસરોં કો
ઉપાય વતલાયા કરતે હેં । ગર્ભ કા પનન કેસે કિયા જાના હે, નગરા
દિકોં મેં ક્ષોભ ઉત્પન્ન કેસે હો સકના હે, દૂસરોં કો વશ મેં કેસે કિયા
જા સકતા હે, ચોરી કરને કે કયા ૨ સાધન હેં, પરસ્ત્રીગમન કરને કા
કયા ઉપાય હે, દૂસરોં કો સેના કો કેસે પરાસ્ત કિયા જાતા હે, ગ્રામ
આદિ મેં ઉપદ્રવ કેસે ઉત્પન્ન કિયા જાતા હે, જગલ આદિ મેં આગ
લગાના, તડાગ આદિ જલાશયો કો શુષ્ક કરના-સૂચના, ઇત્યાદિ સર્વ
પ્રકાર કે ઇષ્ટ પ્રયોગો કો મૃષાવાદી જન વાહેં ઉનસે કોઈ પૂછે અથવા ન

વાહ્યાઈ ” પ્રાણીઓને સાક્ષાત ઘાત કરનાર અથવા પરમ્પરા રૂપે ઘાત કરનાર
એવા “ સચ્ચાણિ ત્રિ ” સ્વરૂપ સત્ય હોય તો પણ અવશ્ય “ હિંસગાઢ ” પરિ
ણામ જોતા પ્રાણીઓના પ્રાણોની હત્યા કરનાર હોવાથી અસત્ય સ્વરૂપ જ હોય
છે એવા “ વચનાઢ ” વચનો “ પુઢ્ઠા વા અપુઢ્ઠા વા ” અસત્યવાદી માણસ
તેને કોઈ પૂછે કે ન પૂછે છતાં પણ “ ઉપાદરતિ ” બોલ્યા કરે છે

ભાવાર્થ—મૃષાવાદી માણસ અનેક પ્રકારના પ્રાણીપીડક યત્રો બનાવવાને
માટે તથા વિવિધ પ્રકારના વિષ બનાવવાને માટે બીજા લોકોને ઉપાયો બતા
વ્યા કરે છે ગલપાત કેવી રીતે કરાવાય છે, નગર આદિમા કેવી રીતે ક્ષોભ
ઉત્પન્ન કરી શકાય છે, બીજાને કેવી રીતે વશ કરી શકાય છે, ચોરી કરવાના
કયા કયા સાધનો છે, પરસ્ત્રીગમન કરવાના કયા કયા ઉપાય છે અન્યના સैन्यને
કેવી રીતે પરાજય આપી શકાય છે, ગ્રામ આદિમા કેવી રીતે ઉપદ્રવ પેદા
કરી શકાય છે, જગલ આદિમા કેવી રીતે આગ લગાડાય છે, તળાવ આદિ
જલાશયોને કેવી રીતે સૂકવી નખાય છે, ઇત્યાદિ સર્વ પ્રકારના યોગો

‘ પીયઠ ’ પિયત=મદિરાદિક ‘ દાસીદાસભયગભાઈછગા ’ દાસીદાસમૃતકમા
ગિકા:=દાસ્ય:=સેવિકા: દાસા:=પ્રસિદ્ધા:, મૃતકા:=મૃત્યા-મક્તદાનાદિના પો-
પિતા, ભાગિકા = યનાદેશ્વતુર્યાદિ ભાગગ્રાહકા. ‘ સિસ્મા ય ’ શિષ્યાશ્ચ=પ્રસિદ્ધા:
‘ પેસકજળો ’ પ્રેષ્યકજન = કાર્યપ્રયોજનેષુ પ્રેષણીયો જન ‘ કમ્મકરા ’ કર્મકરા=
નિયતકાલ કર્મકુર્વન્તિ યે તે કર્મકરા:, કિકરાશ્ચ=પ્રશ્નપૂર્વકકાર્યકારિણ: ‘ એ ’
એતે ‘ સયળપરિજળે ’ સ્વજનપરિજનાશ્ચ સ્વજના માતાપિતૃભ્રાતાદય:, પરિજના:
=સમ્પન્નિન: ‘ કીસ ’ કસ્માત્ કારણાત્ ‘ અચ્છતિ ’ આસતે=કાર્ય પરિત્યજ્યોપવિષ્ટા:
સન્તિ ‘ મે ’ મયતા ‘ મારિયા ’ મારિકા.=ભારવાહિન ‘ કમ્મ ’ કર્મ ‘ કરેતુ ’
કુર્વન્તુ, તથા ‘ ગઠ્ઠાઈ યળાઈ ’ ગઠ્ઠનાનિ યનાનિ ‘ રિત્તિલિખિત્તમિલ્લરાઈ ’ ક્ષેત્ર

દેહ) માતાદિકો અપને સ્વજન સવગિયોંકે લિયે દિયા કરો, (પીયઠ)
મદિરાદિ કા પાન ક્રિયા કરો, (દાસીદાસ ભયગભાઈછગા ય સિસ્મા ય
પેસકજળો કમ્મકરા કિકરા ય એ સયળપરિજળા ય કીસ અચ્છતિ)
ચે તુમ્હારે દાસી, દામ, મૃત્ય ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર
ઔર કિકર તથા સ્વજન પરિજન કિસ કારણ સે અપને ૨ કામ કો-
છોડ કર વૈઠે હુળ હૈ । ઇનમેં કઠિન શબ્દોકા અર્થ ઇસ પ્રકાર હૈ-અપને
ઘર પર હી જો ભોજનાદિ સે પુષ્ટ ક્રિયે જાતે હે વે મૃત્ય હૈ । કોઈ પ્રયો-
જન વશ જો કામકે લિયે મેજે જાતે હે વે પ્રેષ્યકજન હૈ । નિયત કાલતક
જો મજૂરી કરતે હે વે કર્મકર હૈ । પ્રશ્નપૂર્વક પ્રછકર કામ કરનેવાલે જન
કિકર હૈ । માતા પિતા બાઈ આદિ સ્વજન સમ્પન્નવીજન આદિ પરિજન હૈ ।
(મે ભારીયા કમ્મ કરેતુ) તુમ મારિક-અપને મારવોનેવાલે મનુષ્યો સે-

ખરીદ ડગવો, તથા “ ત્રિક્ષેદ્ય ” વેચો, અને “ પચહ ” ઓઢનાદિ (ભાત વિગેરે)
રાધો “ સયળસ્સ દેહ ” મામ આદિ તમારા મળા સજાધીને ભોજનમા ખીરસો
“ પીયઠ ” મદિગ (દારૂ) આદિ પાન કરો, “ દાસીદાસભયગભાઈછગા ય સિસ્મા ય
પેસકજળો કમ્મકરા કિકરા ય એ સયળપરિજળા ય કીસ અચ્છતિ ” એ તમારા
દાસી, દામ, ભૃત્ય, ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર ડર ડર અને સ્વજન
પરિજન તથા ડારણે પોત પોતાના ડામે ડોડીને બેઠા છે । ઉપરના સૂત્રમા
આવેલ કઠિન શબ્દના અર્થ આ પ્રમાણે છે-પોતાને ઘેર જ ભોજનાદિ આપીને
જેમનુ પોષણ કરાય છે, તે લોકોતે ભૃત્ય કહે છે ડોઈ પ્રયોજનથી જેમને ડોઈ
ડામે મોકલાય છે તેમને પ્રેષ્યજન કહે છે નક્કી કરેલા સમય સુધી જે મજૂરી કરે
છે તેમને કર્મકર-ડાગીગર કહે છે પૂછી પૂછીને ડામ કરનારા મેવડોને કિકર કહે
છે માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન ગણાય છે, સજાધીઓને પરિજન કહે છે
“ મે મારીયા કમ્મ કરેતુ ” તમે મારિડો-આપણો ભાર વહન કરનારા પાસે

ટીકા—‘ પરત્તિવાવડાય ’ પરત્તિવ્યાપ્તાથ = પરપ્રસન્નતાકરણતત્પરાઃ
અથવા પરત્તિવ્યાપ્તાઃ=પરચિન્તાપરાયણા તા ‘ અસમિચિત્તયમાસિણો ’ અમમી
ક્ષિતમાસિણઃ=અપર્યાલોચિતવક્તારઃ ‘ ઉવદિસતિ ’ ઉપચિન્તિ=જાણપયન્તિ સહસા
=અકસ્માત્ અકારણમેવેત્યર્થઃ તદેવાહ—યત્ ‘ ઉદ્ઘા ’ ઉદ્ઘાઃ=પ્રભિદ્ધાઃ ‘ ગોણા ’ ગાત્રઃ
પલીવર્દા, ગવયાઃ=ગોસદૃશા રન્યા ‘ રોણ ’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા પશુવિશેષા
‘ દમતુ ’ દમ્યતા=એતે શિક્ષ્યન્તામ્ । તથા ‘ પરિણયવયા ’ પરિણતવયમ=તરુણાઃ
‘ અસ્સા ’ ધશ્વાઃ ‘ હત્થી ’ દસ્તિન.=પ્રસિદ્ધા ગવેલકાઃ=મેષાઃ ‘ કુક્કુડા ’
કુક્કુટાશ્ચ=મતીતાઃ ‘ વિજ્જતુ ’ ક્રોયન્તા=મૂલ્યેન ગૃહ્યન્ના ‘ કિણાવેહય ’ ક્રાપયત=
પૂર્વોક્તાનામેવ ક્રયણ કારયત ‘ વિસ્ફેહ ’ વિત્રીણીય=વિત્રય કુરુત ‘ પચહ ’
પચત=પાક કુરુત તથા ‘ મયળસ્સ ’ સ્વજનાય ‘ દેહ ’ દત્ત=માસાદિક દીયતા

ફિર મી કહતે હે—‘ પરત્તિ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(પરત્તિવાવડાય) જો દૂસરો કો પ્રસન્ન કરને મેં તત્પર
રહતે હે, અથવા પર કો ચિન્તા મેં પરાયણ રહા કરતે હે વે (અસમિ
ચિત્તયમાસિણો) વિના વિચારે હી ગોલ દિયા કરતે હે, ટસ ઘાત કા વે
વિચાર નહી કરતે હે કિ હમારે હન વચનોં સે દૂસરે પ્રાણિયોં કો કહ
હોગા, (મહસા ઉવદિસતિ) વિના કારણ કે હી યો દૂસરો સે કહ દેતે
હે કિ તુમ લોગ (ઉદ્ઘાગોણાગવયા દમતુ) ઝંટોં કો, બેલોં કો ત યારોણોં
કો દમનકરો—અચ્છી ચાલ ચલના સિલ્લાઓ (પરિણયવયા અસ્સા
હત્થી ગવેલકા કુક્કુડા વિજ્જતુ) તરુણ, ઘોડે, હાથી, મેષ, કુક્કુટ, હન
જાનવરોં કો સ્વય સ્વરીદો ઓર (કિણાવેહ) દૂસરો કો પરીદવાઓ
તથા (વિસ્ફેહ ય) બેવો ઓર (પચહ) ઓડનાદિ પકાજો (મયળસ્સ

તે વિષે હજી પણ સૂત્રકાર કહે છે—“ પરત્તિ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ પરત્તિ વાવડાય ” જે બીજા લોકોને ખુશ કરવાને આતુર
હોય છે, અથવા પારખી ચિન્તામાં પરાયણ રહે છે, તેઓ ‘ અસમિચિત્ત
યમાસિણો ’ વિચાર કર્યા વિના બોલ્યા કરે છે તેઓ એવો વિચાર કરતા
નથી કે અમારા આ વચનોથી બીજા પ્રાણીઓને કંટ પડે અથવા “ સહસા
ઉવદિસતિ ” તેઓ વિના કારણ બીજા લોકોને કહે છે કે તમે “ ઉદ્ઘાગોણા
ગવયા દમતુ ” ઉડોતુ, બળદોતુ તથા રોઓતુ દમન કરો—મારી ચાલ ચાલતા
શિખવો “ પરિણયવયા અસ્સા હત્થી ગવેલકા કુક્કુડા વિજ્જતુ ” યુવાન, ઘોડા,
હાથી ઘેટા કુકડા, આદિ તમે જાતે ખરીદો અને “ કિણાવેહ ” બીજા પાસે

‘ પીચહ ’ પિવત=મદિરાદિક ‘ દાસીદાસમયગભાઙ્છગા ’ દાસીદાસમૃતકમા
ગિતા:=શસ્ય=સેવિકા. દાસા:=પ્રસિદ્ધા, મૃતમા:=મૃત્યા-મક્તદાનાદિના પો-
પિતા, માગિમા =યનાદેશતુર્યાદિ ભાગગ્રાહકાઃ ‘ સિસ્મા ય ’ શિષ્યાશ્ચ=પ્રસિદ્ધાઃ
‘ પેસકજળો ’ પ્રેષ્યકજન =કાર્યપ્રયોજનેષુ પ્રેષણીયો જન ‘ કમ્મકરા ’ કર્મકરા=
નિયતકાલ કર્મકુર્વન્તિ યે તે કર્મકરાઃ, કિંકરાશ્ચ=પ્રશ્નપૂર્વકકાર્યકારિણઃ ‘ એ ’
એતે ‘ સયળપરિજળે ’ વ્યજનપરિજનાશ્ચ મ્વજનાઃ માતાપિતૃભ્રાતાદયઃ, પરિજનાઃ
=સમ્વન્ધિનઃ ‘ કીસ ’ કમ્માત્ કારણાત્ ‘ અચ્છતિ ’ આસતે=કાર્ય પરિત્યજ્યોપવિષ્ટાઃ
સન્તિ ‘ મે ’ મયતા ‘ મારિયા ’ મારિકા.=ભારગ્રાહિન ‘ કમ્મ ’ કર્મ ‘ કરેતુ ’
કુર્વન્તુ, તથા ‘ ગઠ્ઠાઙ્ગ ણાઙ્ગ ’ ગઠ્ઠનાનિ ણનાનિ ‘ સિત્તસ્થિત્તભૂમિવલ્લરાઈ ’ ક્ષેત્ર
દેહ) માસાદિકો અપને સ્વજન સમ્વન્ધિયોંકે લિયે દિયા કરો, (પીચહ)
મદિરાદિ કા પાન ક્રિયા કરો, (દાસીદાસ મયગભાઙ્છગા ય સિસ્સા ય
પેસકજળો કમ્મકરા કિંકરા ય એ સયળપરિજળા ય કીસ અચ્છતિ)
ચે તુમ્હારે દાસી, દામ, મૃત્ય માગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર
ઔર કિંકર તથા સ્વજન પરિજન કિસ કારણ સે અપને ૨ કામ કો-
છોડ કર દેઠે હુએ હૈ । ઇનમેં કઠિન શબ્દોકા અર્થે હસ પ્રકાર હૈ-અપને
ઘર પર હી જો મોજનાદિ સે પુષ્ટ ક્રિયે જાતે હૈ ચે મૃત્ય હૈ । કોઈ પ્રયો
જન વશ જો કામકે લિયે મેજે જાતે હૈ ચે પ્રેષ્યકજન હૈ । નિયત કાલતક
જો મજૂરી કરતે હૈ ચે કર્મકર હૈ । પ્રશ્નપૂર્વક પૂછકર કામ કરનેવાલે જન
કિંકર હૈ । માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન સમ્વન્ધીજન આદિ પરિજન હૈ ।
(મે મારિયા કમ્મ કરેતુ) તુમ મારિક-અપને મારદોનેવાલે મનુષ્યો સે-

ખરીદ ડગવો, તથા “પિક્કેહ્ય” વેચો, અને “પચહ” ઓઢનાદિ (ભાત વિગેરે)
ગધો “ સયળસ્સ દેહ ” મામ આદિ તમારા મગા મળ ધીને લોજનમા પીરસો
“ પીચહ ” મદિગ (દાર) આદિ પાન કરો, “દાસીદાસમયગભાઙ્છગા ય સિસ્સા ય
પેસકજળો કમ્મકરા કિંકરા ય એ સયળપરિજળા ય કીસ અચ્છતિ ” એ તમારા
દામી, દામ, ભૃત્ય, ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેષ્યકજન, કર્મકર ડિ ડર અને સ્વજન
પરિજન ડયા કરો પોત પોતાના કામે ડોડીને યેલ છે । ઉપરના સૂત્રમા
આવેલ કઠિન શબ્દના અર્થ આ પ્રમાણે છે-પોતાને ઘેર જ લોજનાદિ આપીને
જેમનુ પોષણ કરાય છે, તે લોડોતે ભૃત્ય કહે છે ડોઈ પ્રયોજનથી જેમને ડોઈ
કામે મોડલાય છે તેમને પ્રેષ્યજન કહે છે નકી કરેલા મમય સુવીજે મજૂરી કરે
છે તેમને કર્મકર-કારીગર કહે છે પૂછી પૂછીને કામ કરનારા સેવકોને કિંકર કહે
છે માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન ગણાય છે, સળધીઓને પરિજન કહે છે
“ મે મારિયા કમ્મ કરેતુ ” તમે ભાગિદો-આપણો ભાર વહન કરનારા પાસે

खिलभूमिवहाराणि=क्षेत्राणि=प्रसिद्धानि खिलभूमयः=हलाङ्गभूमयः वहाराणि=
क्षेत्रविशेषाश्च तानि 'उत्तणघणसकडाड' उत्तणघनसकटानि=तत्रउत्तणे=उद्भूतः घामैः
घनम्=अतिशयं सकटानि=व्यापनियानि तानि 'डज्जतु' द्यन्ता=पस्मीभूतानि
क्रियताम् । रुक्खा 'वृक्षा' 'मडिज्जतु' मज्जन्ता = मृत्युत उन्मूल्यन्ताम् ।
'जताड' यन्त्राणि = तिलेशुसर्पपादिपीडनयन्त्राणि 'भिज्जतु' भिन्दन्तु । किम
र्थमित्याह—'भाडाइयस्स भाण्डाणिस्य=भाण्डपात्रादे 'उवहिस्स' उपधेः=
उपकरणस्य 'कारणाए' कारणाव=प्रयोजनाय । तथा 'बहुविहस्स' बहुविधस्य
'अनेकप्रकारस्य' 'अट्ठाए' अर्थाय=प्रत्यमाणप्रयोजनस्य 'मिद्ध' 'उच्छ' इक्ष्व
'दुज्जतु' द्यन्ता=उद्यन्ता 'तिलाय' तिलाश्च 'पीलिज्जतु' पीड्यन्ता=निष्पी
डयन्ता यन्त्रे । तथा मम 'घट्टए' गृहार्थाय=गृहनिर्माणप्रयोजनाय 'इट्ठयाओ'
इष्टकाः='ईंट' इति प्रसिद्धा. 'पचावेह' पाचयत । 'खेत्ताय कसह कसावेह'

नौकर चारुओं से काम कराओ वे (गण्णाइ वणाइ) गहन वनों को,
(खिलखिलभूमिवहाराइ) खेतों को, हलाङ्गभूमिको-वहरो-खेतविशेषों
को (उत्तणघणसकडाइ) घास आदिसे व्याप्त है, (डज्जतु) उनमें
आग लगाकर वहाकी भूमिको साफ करें (रुक्खा सूडिज्जतु) वहा
जितने भी वृक्ष खड़े हो उन्हें जड़मूल से उखाड़ डालें (जताइ भिज्जतु)
तिल इक्षु आदि के पीलनेके यन्त्रोंको ये चीर फाड़ डालें कि जिससे
(भांडाउडस्स उवहिस्स कारणाए) भांड पात्र आदि उपकरण बनाये जा
सकें । तथा (बहुविहस्स अट्ठाए उच्छ दुज्जतु) अनेक विध प्रयोजनों
की सिद्धि निमित्त ये इक्षु-गन्ना को काटे, (तिला य पीलिज्जतु घरट्ट
याए) तिलो को घानी में पिसे तथा (इट्ठयाओ पचावेह) गृह निर्माण
के लिये ये ईंटों को पकावे, (खेत्ता य कसह कसावेह) खेतों को
जोते व जुतवावें = हाकना और ढकवाना चोकना और चोकवाना

નોંધર આડરો પાસે કામ કરાવો, 'ગહ્ણાઈ વણાઈ' ગહન વનોને, "ચિત્તચિલભૂમિ
વહરાઈ" ખેતરો, વહરો (એક પ્રકારતુ ખેતર) કે જે "ઉત્તણઘણસકડાઈ"
ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, "ડજ્જતુ" તેમા આગ લગાડીને તે જમીનને
સાફ કરાવો, "રુક્ખા સૂડિજ્જતુ" ત્યા જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી
ઉખેડી નાખો, "જતાઈ ભિજ્જતુ" તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યન્ત્રોને તેઓ
તોડી ફેડી નાખે કે જેથી "ભાડાઈયસ્સ ઉવહિસ્સ કારણાએ" ભાડ, પાત્ર
આદિ સાધનો બનાવી રાકાય તથા "બહુવિહસ્સ અટ્ઠાએ ઉચ્છ દુજ્જતુ" અनेक
પ્રકારના પ્રયોજનની સહજતા માટે તેઓ શેરડીને કાપે "તિલાય પીલિજ્જતુ
ઘરટ્ટયાએ" તલને ઘાણીમા પીસે, તથા "ઈટ્ઠયાઓ પચાવેહ" ઘર બધાવવાને
માટે ઇંટો પકાવે, "ખેત્તાય કસહ કસાવેહ" ખેતરો ખેડે અને ખેડાવે, તથા

क्षेत्राणि च 'कस' कर्षत-कर्षयत वा । तथा 'अडवीदेसेसु' अटवीदेशेषु=वन प्रदेशेषु 'गामनगरखेटकवडे' ग्रामनगरखेटकर्षटानि=तत्र ग्रामश्च नगर च प्रसिद्ध खेट च=नद्यादिवेष्टित धलिप्राकाररहित कर्षट च=कुतिसतजननिवासस्थानम्, तानि कीटशानीत्याह-विउलसीमे 'पिपुलसीमानि'=रितीर्णसीमायुक्तानि 'लहु' लघु=सुन्दररीत्या शीघ्र वा 'सनिवेसेह' सन्निवेशयत=निरासयत तथा 'पुष्पाणि फलाणि य' पुष्पाणि फलानि च 'कदमूलाइ' कन्दमूलानि तत्र कन्दाः=स्वर्णकन्द-गर्कराकन्दलशुनादय मूलानि=वृक्षमूलकानि 'कालपत्ताइ' कालप्राप्तानि=उचित-समयलब्धानि 'गिण्ह' गृहीत=ग्रहण कुरुत, तथा 'परिजणस्म' परिजनस्य=कुटुम्बस्य, 'अट्टाय' अर्णय=प्रयोजनाय सञ्चय 'करेह' कुरुत ॥ सू० १३ ॥

तथा (अडवीदेसेसु गामनगरखेटकवडे विउलसीमे लहु सनिवेसेह) ग्राम, नगर, खेट, कर्षट आदि स्थानोक्तो विस्तृत सीमायुक्त कर के अटवी देशोंमें सुन्दर गीति से शीघ्र चमाव, (पुष्पाणि फलाणि य कद-मूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह) तुम लोग (कालपत्ताइ) कालप्राप्त फले हुए (पुष्पाइ) फलों को (फलाणि) पके हुए फलों को तथा (कदमूलाइ) पके हुए स्वर्णकन्द, गर्कराकद, लहसुन आदि कदों को और पिप्पलीमूल आदि मूलों को (गिण्ह) ले आया करो, तथा (करेह सचय परिजणस्स अट्टाय) कुटुम्ब के लिये धन आदि का सचय कर रख जाओ ।

भावार्थ—ये असत्यवादीजन दूसरे व्यक्ति हमसे प्रसन्न रहें इसलिये सुहाती बातें उनसे कहते रहते हैं । इनका परिणाम क्या होगा ? इसका वे जरा सा भी ध्यान नहीं रखते । जो ऊँट पालते हैं अथवा ऊँटसे जो

“ अडवीदेसेसु गामनगरखेटकवडे विउलसीमे लहु सनिवेसेह ” ग्राम, नगर, खेट, कर्षट, आदि स्थानोक्तो विस्तृत सीमावाला उनीने ऊँट प्रदेशोंमा सुन्दर रीति अडवी वसावे, “पुष्पाणि फलाणि य कदमूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह” तमे लोके “ कालपत्ताइ ” विउलसीमे अभय आवता विउसेला “ पुष्पाइ ” कुलेने “ फलाणि ” पाडेला कुलेने तथा “ कदमूलाइ ” पाडेला स्वर्णकन्द-राजगीया लसणु आदि उहोने तथा पिप्पली मूल आदि भूषोने “ गिण्ह ” लघु आव्या उरो, तथा “ करेह सचय परिजणस्स अट्टाय ” कुटुम्ब आदिने भाटे धन आदिने सचय कर्था उरो ” ओ प्रजारनी सदाह आया उरे ठे

भावार्थ—ते असत्यवादी लोको नीला लोकोने भुश करवाने भाटे तेमने अभे तेवी बातो तेमनी साथे उर्था करे छे पण तेनु शु परिशुभ आवशे ? तेआणतनो तेओ जरा पण विचार करता नथी उँट पाणनारने अथवा उँटनो

खिलभूमिबहुराणि=क्षेत्राणि=प्रसिद्धानि खिलभूमयः=हलाङ्कृष्टभूमयः बहुराणि=
क्षेत्रविशेषाश्च तानि 'उत्तणघणसकडाइ' उत्तणघनसकटानि=तत्रउत्तुणैः=उद्गैः घामैः
घनम्=अतिशय सकटानि=व्यापनियानि तानि 'उज्जतु' द्यन्ता=भस्मीभूतानि
क्रियताम् । रुखा 'वृक्षा' 'गडिज्जतु' मज्जन्ता = मृत्यु उन्मूलयन्ताम् ।
'जताइ' यन्त्राणि = तिलेशुतर्पपाटिपीडनयन्त्राणि 'भिज्जतु' मिन्दन्तु । किम-
र्थमित्याह—'भाडाइयस्स भाण्डाणिस्य=भाण्डपात्रादे 'उवहिस्स' उपघेः=
उपकरणस्य 'कारणाए' कारणाय=प्रयोजनाय । तथा 'बहुविहस्स' बहुविरस्य
'अनेकप्रकारस्य' 'अट्टाए' अर्थयि=रक्ष्यमाणप्रयोजनस्य 'मिद्धय' 'उच्छ' इक्ष्व
'दुज्जतु' द्यन्ता=उद्धन्ता 'तिलाय' तिलाय 'पीलिज्जतु' पीज्यन्ता=निष्पी-
डयन्ता यन्त्रे । तथा मम 'घरट्टाए' गृहार्थाय=गृहनिर्माणप्रयोजनाय 'इट्ठयाओ'
इष्टकाः='ईट' इति प्रसिद्धा 'पचावेह' पाचयत । 'खेत्ताय कसह कसावेह'

नौकर चाकरोँ से काम कराओ वे (गहणाइ वणाइ) गहन वनों को,
(खिलखिलभूमिबहुराइ) खेतों को, हलाङ्कृष्टभूमिको-बहुरों-खेतविशेषों
को (उत्तणघणसकडाइ) घास आदिसे व्याप्त है, (उज्जतु) उनमें
आग लगाकर बहाकी भूमिको साफ करें (रुखा सडिज्जतु) वहा
जितने भी वृक्ष खड़े हो उन्हें जड़मूल से उखाड़ डालें (जताइ भिज्जतु)
तिल इक्षु आदि के पीलनेके यंत्रोंको ये चीर फाड़ डालें कि जिससे
(भांडाउहस्स उवहिस्स कारणाए) भांड पात्र आदि उपकरण बनावे जा
सकें । तथा (बहुविहस्स अट्टाए उच्छ दुज्जतु) अनेक विध प्रयोजनों
की सिद्धि निमित्त ये इक्षु-गन्ना को काटे, (तिला य पीलिज्जतु घरट्ट
याए) तिलों को घानी में पिसे तथा (इट्ठयाओ पचावेह) गृह निर्माण
के लिये ये ईंटों को पकावे, (खेत्ता य कसह कसावेह) खेतों को
जोतें व जुतवावे = हाकना और हकवाना चोकना और चोकवाना

નોંકર ચાકરો પાસે કામ કરાવો, 'ગહણાઈ વણાઈ' ગહન વનોને, "લિલિલિલભૂમિ
વહરાઈ" ખેતરો, વૃક્ષરો (એક પ્રકારનું ખેતર) કે જે "ઉત્તણઘણસકડાઈ"
ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, "ઉજ્જતુ" તેમાં આગ લગાડીને તે જમીનને
સાફ કરાવો, "રુખા સૂડિજ્જતુ" ત્યાં જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી
ઉખેડી નાખો, "જતાઈ ભિજ્જતુ" તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યંત્રોને તેઓ
તોડી ફેડી નાખે કે જેથી "ભાડાઈયસ્સ ઉવહિસ્સ કારણાએ" ભાડ, પાત્ર
આદિ સાધનો બનાવી ગયાય તથા "બહુવિહસ્સ અટ્ટાએ ઉચ્છ દુજ્જતુ" અनेક
પ્રકારના પ્રયોજનની સફળતા માટે તેઓ શેરડીને કાપે "તિલાય પીલિજ્જતુ
ઘરટ્ટયાએ" તલને ઘાણીમાં પીસે, તથા "ઈટ્ઠયાઓ પચાવેહ" ઘર બધાવવાને
માટે ઈંટો પકાવે, "ખેત્તા ચ કસહ કસાવેહ" ખેતરો ખેડે અને ખેડાવે, તથા

હૈ ? કમ સે કમ ચના હી ભૂજકર વેચા કરો । તુમ તો પૈસે વાલે હો, તુમને હમ મનુષ્ય જન્મ કો પાકર ક્યા આનદ પાયા મદિરા આદિમેં જો આનદ હં વહ ઓર કહા હો સકતા હૈ, હસલિયે ઈન્હેં સૂન સ્વાઓ પીઓ ઓર વચને પર અપને મિત્ર દોસ્તોં કો મી સ્વિલાયા પિલાયા કરો । દેહો-તુમ્હારે યે નૌકર ચાકર ઠાસી ઠાસ આદિ જન વૈઠે ૨ ક્યા કરતે હૈ ? કમ સે કમ તુમ ઈનસે ગહન જગલોં કો હી સાફકરાકર ઈન્હેં સ્વેત આદિ કે યોગ્ય વનવાલો । વૃક્ષ આદિ કટ જાને પર વહા વહી અચ્છી તરહ સે સ્વેતી કે યોગ્ય ભૂમિ તૈયાર હો સકતી હૈ । તુમ્હારે પાસ જો યે યત્ર પડે હુએ હૈં વે અત્ર તો કુઝ કામ મેં તો નહીં આ રહે હેં પડે ૨ ઓર સ્વરાગ હો જાવેંગે, અતઃ ક્યોં નહીં ઈનકે ભાજન પાત્ર આદિ વનવા લેતે હો, તાકિ ઈનસે તુમ્હારા વહુત સા કામ સધ સકના હૈ । ગુડ કા વાજાર હસ સમય વહુત તેજ જા રહા હૈ, સ્વાંટ મી વહુત મેંદગી ચિક રહી હૈ, અતઃ ક્યોં નહીં તુમ સમગ્ર સે કામ લેતે હો ? જહાં તક હોસકે ઈન ઇધુઓ(સેલડી)કો જરદીસે જલ્દી પિલવાલો, તાકિ ગુડ આદિ તયાર હોકર તુમ્હેં વાજાર સે અચ્છા લાભ હો સકે । જરસોં કા તેલ મી વહુત તેજ વિક્ર રહા હૈ સો ઘાની મેં પિલવાકર હસમા તેલ નિરૂલવાલો ઓર વેચ

વાથી શો લાભ ? બીનુ કંઈ ન બની ગડે તો ચણા ગેડીને વેચ્યા ઠરો પેમા દારોને અનત્યવાદી ઠહે છે ડ-‘તમે તો પૈમાદાર છો, તમે આ મનુષ્ય અવ તાર પામીને શો આનદ લૂટ્યો છે । મદિરા આદિમા જે આનદ મળે છે તે બીજે ક્યા મળે તેમ છે ? તો જૂળ ખાઓ, પીઓ, તથા ખાતા પીતા વધે તો તમારા મિત્રોને પણ ખવરાવ્યા કંઈ પીવરાવ્યા કરો બુઓ । તમારા આ નોકર ચાકર, દામ, દામી આદિલોટો બેઠા બેઠા શુ ડામ કરે છે ? તો તેમની પામે ગડન જગલોને સાફ કાઢીને તે સ્વાનને ખેતી કરવાને લાયક બનાવગવો । વૃક્ષ આદિ ડખાવી નાખવામા આવે તો ત્યાં સારામા સારી ખેતી થાય એવી જમીન તૈયાર થઈ ગડે છે તમારી પાસે જે યત્રો છે તે હાલમા કોઈ ઉપયોગમા આવતા નથી, તો પડ્યા પડ્યા તે ખરાબ થઈ જશે, તો તેને તોડાવીને તેમાથી લાજન પાત્ર આદિ કેમ બનાવગવતા નથી ? તેમ કરવાથી તમારૂં ઘણું ડામ મળતું થશે હાલમા ગોખના બજાર ઘણું ચડી ગયા છે ખાડ પણ ઘણી મોટી વેચાય છે તો તમે બુદ્ધિ પૂર્વક કેમ ડામ લેતા નથી ? બની રહે એટલી ઝડપથી આ શેરડીને પીલાવી નાખો જેથી ગોળ આદિ તૈયાર કરીને વેચવાથી તમને વેપારમા મારો લાભ મળે અરમીયુ પણ ઘણું મોઘું વેચાય છે, તો અરમવને ઘણીમા પીલાવીને તેનું તેલ કઢાવો અને તે તેલ વેચીને સારી એવી

અપના વ્યાપાર આદિ કરતે હેં, અને એ યો કહ દિધા કરતે હેં, કે તુમ્હારા
 યહ ઝંટ દેખને મેં તો વડા સુઠાવના લગતા હેં, પરંતુ ઇસકી ચાલ તો કોઈ
 ઢગ કી હી નહીં હેં, ઇસે જૈસે બી હો સુન્દર ચાલ ચલના મિગ્લાઓ !
 ઇસી તરહ જો વેલોં કે માલિક રોતે હેં, અને બી એ સમય પર હી ઉપ
 દેશ ભરી ગાતે વનાયા કરતે હેં, અને કહતે હેં-તુમ્હારે વેલોં કી યહ
 જોડી દેખને મેં તો વડી સુન્દર માલુમ પડતી હેં, પરંતુ દેખો ઇસકી ચાલ
 કુછ બી નહીં હેં, અતઃ યહ ગાડી આદિમેં જોતને પર ચૂન તેજ ચાલ ચલે
 ઇસ તરહ કી ચાલ સીગ્યાઓ, જગલમેં ણકુ ગાય જેસા જાનવર હોતા હેં
 જિસે રોક્ષ કહતે હેં, યહ ચલનેમે વડા તેજ હોતા હેં । સો તુમ જૈસે બી હો
 સકે ઇસકો પકડવા કર મગાઓ, ઓર અપને ઘર પર રખ કર જસ રોક્ષકો
 જૈસે બી હો સકે પહિલે વશમેં લાઓ, વાઢમે ઇસકો જગલ કી ચાલ
 છુડાકર અચ્છી ચાલ ચલને મેં ઢાલો, ઇસસે તુમ્હેં આને જાનેમેં સમયકી
 વડી વચત હોતી રહેગી । ઇસી તરહ તુમ ઘેઢેર રખા કરતે રહતે હો ? ઘોડોં
 કે વહેડોંકો, હાથિયોં કે વઠ્ઠોંકો, મેપોં (મેંદે)કો, કુમ્કુટોં (મુર્ગો)કો,
 પૈસે દેકર સ્ત્રીદો, ઓર ચિલા પિલાકર જય એ ચૂન મસ્ત હો જાવે તબ
 ઇન્હેં વેચ દિયા કરો ઇસમે તુમ્હેં વહુત અધિક લાભ હોગા । તથા કુછ
 રુજગાર કહી ચલતા હો તો ઇસ પ્રકાર ઘેઢે રહને મે તુમ્હેં વધા લાભ

વ્યાપારની ચીજો લાવવા લઈ જવામાં ઉપયોગ કરનારને તે કહે છે કે તમારો
 આ ઊંટ દેખાવમાં તો ઘણો સુદર લાગે છે પણ તેની ચાલ કઠગી છે
 તેને ગમે તે પ્રકારે સારી ચાલ ચાલતા શીખવાડો એ જ રીતે બળદોના
 માલિકોને પણ તે વારંવાર ઉપદેશ સલાહ આપ્યા કરે છે કે તમારા બળદોની
 આ ભેડી દેખાવમાં તો ઘણી સુદર છે, પણ તેની ચાલ ઘણી ધીમી છે, તો તેને
 ગાડી આદિની સાથે ભેડવામાં આવે તો ઝડપથી ચાલે એવી ચાલ શીખવાડો
 જગલમાં ગાય જેવું એક પ્રાણી હોય છે, તેને રોઝ કહે છે, તે ચાલવામાં
 ઘણું ઝડપી હોય છે તમે ગમે તે રીતે તે રોઝને પકડી મગાવો, અને
 તમારે ઘેર રાખીને તેને ગમે તે રીતે પહેલા વશ કરો પછી તેને જગલી
 ચાલ છોડાવીને સારી ચાલ ચાલતા શીખવો, તેમ કરવાથી તમને અવર જવ
 રમાં સમયનો સારો બચાવ થશે એજ રીતે તે અમત્યવાદી લોકો બીજાને
 કહે છે કે-તમે ભેઠા બેઠા શું કરો છો ? ઘોડાના વઢેરાને, હાથીઓના બચ્ચાને
 ઘેટાઓને, ફૂંડાઓને પૈસા આપીને ખરીદ કરો, અને તેમને ખવરાવી પીવ
 રાવીને બ્યારે તેઓ સારી રીતે હુષ્ટ પુષ્ટ થાય ત્યારે વેચી દો, તેથી તમને
 સારો લાભ થશે તથા ડોઢ ધધો ન ચાલતો હોય તો આ રીતે બેસી રહે-

मित्याह—मुदित=हर्षसहित 'बहुखज्जपेज्जकलिय' बहुखाद्यपेयकलित=बहु=पचुर
खाद्य = भोज्य मोदकमायादिक पेय=मदिरादिक तेन कलित=युक्तम् । तथा
'कोउगविण्हावणसतिकम्माणि कुणह ससिरविगहोवरागविसमेसु सजणस्स परिजणस्स
य निययस्स य जीवियस्स य परिरक्खणट्ठाए' तत्र कौतुकविरनापनशान्तिकर्माणि
=कौतुक=सौभाग्यवृद्धयर्थं दृष्टिदोषनिवृत्त्यर्थं च रक्षापोटलिकादोरकादिवन्धन,
विस्नापन=त्रिभिधैर्मन्त्रौपधादिभिः समिलितजले, स्नापन शान्तिकर्म च=होमज-
पादिकमित्येतानि 'सजणस्स' स्वजनस्य=आत्मीयजनस्य पुत्रादेः 'परिजणस्स'
परिजनस्य च=दासदास्यादेश पुनः 'निययस्स य' निजकस्य च=स्वस्य 'जीवि-
यस्स' जीवितस्य 'परिरक्खणट्ठाए' परिरक्षणार्थाय कदा ? इत्याह—'ससि
रविगहोवरागविसमेसु' शशिरविग्रहोपरागविषमेसु=शशिरव्योः=तत्र चन्द्रसूर्ययोः
ग्रहेण=राहुलक्षणेनोपरागः=उपरजन ग्रहणमित्यर्थस्तेन विषमेसु=कष्टयुक्तेषु दिवसेषु
अथवा शशिरवि एव नग्रहेषु मन्त्रे ग्रहौ तयोरुपरागः=तनुयनादिमृष्टकरस्थानेषु-
हो, अथवा प्रसृतिका का स्नपन हो । (मुदिय बहुखज्जपेज्जकलिय) उसमे
बड़ा हर्ष मनाया जाये, अनेक प्रकारके खाद्य-मोदक मास आदि भोज्य,
एव मदिरा आदि पेय (पीनेयोग्य) पदार्थ रहें । तथा (कोउगविण्हावणस-
तिकम्माणि) सौभाग्यवृद्धिके निमित्त एव दृष्टिदोष की निवृत्ति के अर्थ
रक्षापोटलिका, दोरक आदिके बधनरूप कौतुकको, अनेक प्रकारके मन्त्रोंसे
औपध आदिकोसे मिश्रित जलसे स्नान करानेरूप विस्नापनको होमजपा-
दिरूप शान्ति कर्मको तुम (सजणस्स परिजणस्स य निययस्स य जीवियस्स
परिरक्खणट्ठाए) सब पुत्रादिरूप आत्मीयजन की, दासीदास आदिरूप
परिजनों की, तथा अपने जीवनकी रक्षाके अर्थ तथा जब (ससिरवि
गहोवरागविसमेसु कुणह) चन्द्र और सूर्य जिन दिनों में राहु ग्रसित हो
रहे हों उन दिनों में करो' अथवा इन कौतुक विस्नापन, एव शान्तिकर्मों

अथवा प्रसृतिजाने आज स्नान उरावपु लेधये " मुदिय बहुखज्जपेज्जकलिय "
ते प्रसंगे भूषण आनन्द मनावये लेधये-अनेक प्रकारना भाद्य-लाडु भाग्य आदि
लेधये, अने मदिरा आदि पेय पदार्थोनी व्यवस्था थवी लेधये तथा " कोउग
विण्हावणसतिकम्माणि " सौभाग्य वृद्धिने निमित्ते अने दृष्टिदोषना निवारणने
भाटे रक्षापोटलिका, दोरी आदिना बधनउप कौतुक, अने- प्रकारना मन्त्रोथी
औपधो आदिना मिश्रित जलथी स्नान कर्वाइय विस्नापन, होम जपादि उप
शान्ति कर्म, तमे " सजणस्स परिजणस्स य निययस्स य जीवियस्स परिरक्ख
णट्ठाए " पुत्रादि उप आत्मीय जननी, दास दासी आदि उप परिजनोनी तथा
पोताना उपननी रक्षाने भाटे ल्याये " ससिरविगहोवरागविसमेसु कुणहः "

ઉપદ્રવસ્થાનમ્ । ‘ ઘોરા સગામા વટતુ ’ ઘોગ સગામા વર્તન્તા=ભવન્તુ ‘ જયતુ ’
જયન્તુ=વિજય પ્રાપ્નુવન્તુ ચ । ‘ સગડવાહણાઈ ય પવહતુ ’ શરટવાહનાનિ ચ
પ્રવહન્તુ=શરટાનિ=ગન્ત્ર વાહનાનિ ચ=નૌકાદીનિ પ્રવહન્તુ=પ્રવાપ્યન્તુ । ઉવળયળ
ચોલગ વિવાહો જન્નો અમુગમ્મિહોડ દિવસે સુકરણે સુમુદ્ધત્તે સુનક્ષત્તે સુતિહિમ્મિ
ય ’ તત્ર ‘ ઉવળયળ ’ ઉપનયન=કલાગ્રહણ ‘ ચોલગ ’ ચોલક માલકાના પ્રથમ
શિરોમુડન, વિવાહ =પાણિગ્રહણ પ્રસિદ્ધ ‘ જન્નો ’ યજ્ઞઃ એતત્તર્કમ્ ‘ અમુગમિ ’ અમુકસ્મિન્
દિવસે સુકરણે=કરણાનિ એકાદશ તત્ર-વર-ચાલર-ફોલર-તૈત્તિલ-ગર-વણિજ
વિષ્ટયથૈતાનિ સપ્ત કરણાણિ, ગરુનિ ચતુષ્પદ નાગક્રિમ્તુત્રાનિ ચત્વારિ સ્થિરાણિ,
इत्येषामन्यतमकरणे शुभे ‘ સુમુદ્ધત્તે ’ સુમુદ્ધત્તે=શોભને રૌદ્રાદિત્રિશદન્યતમે ‘ સુન
ક્ષત્તે ’ સુનક્ષત્રે=અશ્વિન્યાદિષુ શોભને પુષ્પાદિકે ‘ સુતિહિમ્મિ ’ મુતિયો નન્દાદિષુ
અન્યતમે ‘ હોડ ’ ભવતુ । તથા ‘ અજ્જ ’ અથ અસ્મિન્નદ્ધનિ ‘ હોડવણ ’ ભવતુ
સ્નપન=સૌભાગ્યસન્તતિમમૃત્ત્વર્થ વધ્વાદે’ સ્નાન પ્રપૂતિકાસ્નાન ચ । કિંમૂત ?

હી પક્ષિ સમુદાય કો નષ્ટ કર દો । (સેનાણિજ્જાડ) સેના યહાસે નિકલે
ઔર નિકલ કર ઉપદ્રવગ્રસ્ત સ્થાન પર જાવે (ઘોરા સગામા વટતુ જયંતુ)
વહા ઘોર સગામા વહ કરે ઔર વિજયશ્રી કો પાવે (સગડવાહણાઈ ય
પવહતુ) શરટ-ગાડી ઔર વાહન-નૌકા આદિ લે ચલાવે, (ઉવળયળ
ચોલગ વિવાહો જન્નો અમુગમ્મિ હોડ દિવસે સુકરણે સુમુદ્ધત્તે સુનક્ષત્તે
સુતિહિમ્મિય) ઉપનયન(જનોહ)-કલાગ્રહણ, ચોલક-પ્રથમ શિરોમુડન,
વિવાહ, યજ્ઞ યે સવ અમુક દિવસમે, અમુક વવાદિ શુભકરણ મે, રૌદ્રાદિ
ત્રીસ ૩૦ મુદ્ધર્તો મે, અમુક અઢે મુદ્ધર્ત મે અશ્વિની આદિ સત્તાવીસ
નક્ષત્રો મે સે કિસી અમુક શુભ નક્ષત્ર મે નદા આદિ તિથિયો મે સે
કિસી અઢી તિથિ મે હોના ચાહિયે । તથા (અજ્જ હોડવણ) આજ
સૌભાગ્ય એવ સન્તતિ સમૃદ્ધિ કે નિમિત્ત વધૂ (વહુ) આદિ કા સ્નાન

નીડળે અને તોફાનવાળા વિન્તારમા જાય “ ઘોરા સગામા વટતુ જયતુ ” ત્યા
તે ભય ડર યુદ્ધ કરે અને વિજય પ્રાપ્ત કરે “ સગડવાહણાઈ ય પવહતુ ”
શરટ-ગાડા અને વાહન-નૌકા આદિ તે ચલાવે, ‘ ઉવળયળ ચોલગ વિવાહો
જન્નો અમુગમ્મિ હોડ દિવસે સુકરણે સુમુદ્ધત્ત સુનક્ષત્ત સુતિહિમ્મિય ” ઉપનયન
કલાગ્રહણ, ચોલક-પ્રથમ મોવાળા ઉતરવાની ડિયા, વિવાહ, યજ્ઞ એ સઘણ
અમુક દિવસે, અમુક વવાદિ શુભ કરણમા, રૌદ્રાદિ ત્રીસ (૩૦) મુદ્ધર્તોમાના
અશ્વિની આદિ સત્તાવીસ નક્ષત્રોમાના કોઈ શુભ નક્ષત્રમા, નદા આદિ તિથિ
યોમાની કોઈ શુભ તિથિએ થવુ જોઈએ તથા “ અજ્જ હોડવણ ” આજે
સૌભાગ્ય અને સતતિ સમૃદ્ધિને માટે વધૂ (વહુ) આદિને સ્નાન કરાવ- ” એ

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार=भद्वारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णानि शीर्षोपद्वाराश्च=पद्मादिगिरीमलीन् दत्त देवादिभ्यः । तथा 'पायच्छित्ते करेह पणाडवायकरणेण बहुविहेण विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत-विपरीतोत्पा तदु स्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरिताऽमगलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका वृमकेलादयः दुस्स्वप्नाद्य=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपा पापशकुनाः=प्रसिद्धा असौम्यग्रहचरित-क्रूरग्रहदशा, अमङ्गलनिमित्तानि-भङ्गस्फुरणादीनि तेषां प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्त बहुविधेन=नानाप्रकारेण प्रागातिपातकरणेन=प्राणिहिंसया प्रायश्चित्तानि कुरुत । ' वित्तिच्छेय करेह ' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, अति किमपि निमित्तादिकमुपादाय ब्रुवन्ति 'मादेह किञ्चिदाण'मादत्त किञ्चिदान 'मुट्टहओ २' मुट्टुत्तः सुट्टुहत्-सुट्टु=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगंध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एवं पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये । तथा (विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसो म्मगहचरियअमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक वृमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, खोटे २ शकुन, क्रूरग्रहदशारूप असौम्यग्रहचरित, अमगल के निमित्त-भूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाड-वायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा । (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो । (मा देह किञ्चिदाण) किसी को भी

अनुक्षेपनाथी, जलता तेजस्वी आग्नीना दीपडोथी तथा सुदृग्गंध वाणा गुग्गुल आदि धूपथी अने पुष्पो अने इणोथी परिपूर्ण ते पल्लिदान डोवु लेउअ तथा "विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्त पडिघायहेउ" अशुल सय्यड धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थि सञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, अशुल शकुन क्रूरग्रहदशाउप असौम्य ग्रहचरित अमगल यवाना निमित्तउप अगल इरउपु आदि अमगल याना दोना निवारणुने भाटे "बहुविहेण पाणाडवायकरणेण, पायच्छित्ते करेह" अनेक प्रकारे प्राणीहिंसा करो, तेथी ते पधा अमगलोनो निवारणु यशे "वित्ति छेय करेह" इहे व्यक्तिनी आणुविजानो विनाग उशे "मादेह किञ्चिदाण"

સ્થિતિઃ, તથા વિપમાણિ ચ દુઃસ્વપ્નાદીનિ, તેષુ શાન્ત્યર્થે 'કરેહ' કુરુત । તથા 'પડિસીસગાઈ ચ દેહ' પ્રીતિશીર્ષકાણિ ચ દત્ત=પિષ્ટનિર્મિતસ્વશ્નિરઃપ્રતિરૂપકાણિ ચ મહાકાલ્યાદિભ્યો દીયન્તા-પ્રુષ્પાભિરિતિ વદન્તિ । તથા 'દેહ ય સી સોવહારે વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમલાણુલેવણપર્દવજલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે' દત્ત ચ શીર્ષોપહારાન્ વિવિધોપધિમદ્યમાસમદ્યાન્નપાનમાલ્યાનુલેપનપ્રદીપજ્વલિતોજ્જ્વલસુગન્ધધૂવોપચારપુષ્પફલમમૃદ્ધાન્, તત્ર વિવિધાઃ ઔષધયથ મદ્યમાસાનિ ચ ભક્ષ્યાણિ ચ ઝનાનિ પાનાનિ ચ માલ્યાન્યનુલેપનાનિ ચ તાનિ, પ્રદીપાશ્ચ જ્વલિતોજ્જ્વલાશ્ચ=આરાતિત્રયાદ્યા, તથા-સુગન્ધાઃ=શોભનગન્ધ

કો સ્વજનાદિ કો રક્ષા કે લિયેં ઉસ સમય કરો જવ નવગ્રહોં મેં ચંદ્ર સૂર્ય ચે દો ગ્રહ તનુ ધન આદિ કષ્ટ કર સ્થાનોં મેં સ્થિતિ હોં, ઓર દુઃસ્વપ્ન આદિ વિષમ ચીજોં કા અવલોકન હુઆ હો । તથા (પડિસી સગાઈ ચ દેહ) તુમ લોગ પિષ્ટ નિર્મિત અપને ૨ પ્રતિનિધિરૂપ શિરોંકો મહાકાલી આદિ દેવિયોં કે લિયેં ચલિ રૂપ મેં દો, અર્થાત્ શાંતિ આદિ કે નિમિત્ત અપને શિર કે જેસા શિર આંઠે કા ઘનાકર કાલી આદિ દેવિયોં કે સમક્ષ ચલિરૂપ મેં ચઢાઓ, ઇસ પ્રકાર મૃયાગ્રાહીજન કહતે હેં । તથા (દેહ ય સીસોવહારે) પશુ આદિ કે શિરોં કો ચઢાઓ, જવ તુમ લોગ પશુ આદિ કે શિરોં કો કાલી દેવી કે લિયેં મેટ મેં પ્રદાન કરો ઉસ સમય (વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમલાણુલેવણપર્દવજલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે) વિવિધ પ્રકાર કી ઔષધિયોં સે, મદ્યમાસરૂપ ભક્ષ્યાન્નપાન સે, માલ્યો સે, અનુલેપનોં સે,

અન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ રાહુથી અસિત થાય તે દિવસોએ કરો અથવા તે કૌતુક, વિસ્નાપન, અને શાન્તિઝર્મોને સ્વજનાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરો કે બ્યારે નવગ્રહોમાના અન્દ્ર અને સૂર્ય એ જે ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કષ્ટકારી સ્થાનોમા રહેવ હોય અને દુસ્વપ્ન આદિ વિષમ ચીજોં જેવામા આવતી હોય તથા ' પડિસીસગાઈ ચ દેહ ' તમે લોડો પિષ્ટ નિર્મિત ખોત ખોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોનુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તો ખોતના મસ્તક જેવુ લોટનુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે મૃયાગ્રાહી લોકો કહે છે " દેહ ય સીસોવહારે " પશુ આદિના મસ્તકો અડાવો બ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે " વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમલાણુલેવણપર્દવજલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે " વિવિધ પ્રકારની ઔષધિયોથી, મદ્યમાસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણાથી, માળાઓથી

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार=मद्गारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णान् शीर्षोपहाराश्च=पद्मादिभिरोरलीन् दत्त देवादिभ्यः । तत्र 'पायच्छित्ते करेह पाणाइवायकरणेण बहुविहेण विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत-विपरीतोत्पातदु स्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरिताऽमगलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका धूमकेतुआदयः दुस्स्वप्नाश्च=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपाः पापशकुना =प्रसिद्धा असौम्यग्रहचरित-रूरग्रहदशा, अमगलनिमित्तानि-भद्रस्फुरणादीनि तेषां प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्त बहुविवेन=नानाप्रकारेण प्राणातिपातकरणेन=प्राणिहिंसया प्रायश्चित्तानि कुरुत । ' वित्तिच्छेय करेह ' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, इति किमपि निमित्तादिकमुपादाय ब्रुवन्ति 'मादेह किञ्चिदाण'मादत्त किञ्चिदान 'मुट्टुओ २' मुट्टुत्तः सुट्टुहत्-सुट्टु=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगंध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एवं पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये । तथा (विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, खोटे २ शकुन, रूरग्रहदशारूप असौम्यग्रहचरित, अमगल के निमित्तभूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा । (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो । (मा देह किञ्चिदाण) किसी को भी

अनुक्षेपनोथी, जलता तेजस्वी आरतीना दीपडोथी तथा सुदृग्ग व पाणा गुग्गु आदि धूपथी अने पुष्पो अने द्रव्योथी परिपूर्ण ते पालिदान डोवु लेधये तथा "विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउणअसोम्मगहचरियअमगलनिमित्त पडिघायहेउ" अगुल सूयउ धूमउेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थि सञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, अगुल शकुन रूरग्रहदशारूप असौम्य ग्रहचरित अमगल यवाना निमित्तउप अगण इरेवु आदि अमगल जनाना निवारणुने भाटे " बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह " अनेक प्रकारे प्राणीहिंसा करे, तेथी ते पधा अमगलोनु निवारणु थरे " वित्ति छेय करेह " हरेक व्यक्तिनी आणुविकानो विनारा करे " मादेह किञ्चिदाण "

સ્થિતિઃ, તથા વિપમાણિ ચ દુઃસ્વપ્નાદીનિ, તેષુ શાન્ત્યર્થ 'કરેહ' કુરુત । તથા 'પહિસીસગાઢ ચ દેહ' પ્રીતિર્શીર્ષકાણિ ચ દત્ત=પિષ્ટનિર્મિતમ્વશિરઃપ્રતિ રૂપકાણિ ચ મહાકાલ્યાદિભ્યો દીયન્તા-યુષ્માભિરિતિ યદ્વન્તિ । તથા 'દેહ ય સી સોવહારે વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમઝાણુલેવણપર્દૈરજલિઝ્જલસુગધધૂવોવ ચારપુષ્પફલસમિદ્ધે' દત્ત ચ શોર્ષોપહારાન વિવિધૌપધિમધમાસમધ્યાન્નપાનમાલ્યાનુલેપનપદીપજ્વલિતોજ્જ્વલસુગન્ધવૃષોપચારપુષ્પફલમૃદ્ધાન્, તત્ર વિવિધાઃ ઔષધયશ્ચ મધમાસાનિ ચ ભક્ષ્યાણિ ચ અન્નાનિ પાનાનિ ચ માલ્યાન્યનુલેપનાનિ ચ તાનિ, પદીપાશ્ચ જ્વલિતોજ્જ્વલાશ્ચ=આરાતિકયાદ્યાઃ, તથા-સુગન્ધાઃ=શોભનગન્ધ

કો સ્વજનાદિ કો રક્ષા કે લિયે ઉમ સમય કરો જય નવગ્રહોં મેં ચત્ર સૂર્ય ચે દો ગ્રહ તનુ ધન આદિ કપટ કર સ્થાનોં મેં સ્થિતિ હોં, ઓર દુઃસ્વપ્ન આદિ વિપમ ચીજોં કા અત્લોકન હુઆ હો । તથા (પહિસી સગાઢ ચ દેહ) તુમ લોગ પિષ્ટ નિર્મિત અપને ૨ પ્રતિનિધિરૂપ શિરોંકો મહાકાલી આદિ દેવિયોં કે લિયે વલિ રૂપ મેં દો, અર્થાત્ શાંતિ આદિ કે નિમિત્ત અપને શિર કે જૈસા શિર આટે કા બનાકર કાલી આદિ દેવિયોં કે સમક્ષ વલિરૂપ મેં ચઢાઓ, ઇસ પ્રકાર મૃપાવાદીજન કહતે હૈં । તથા (દેહ ય સીસોવહારે) પશુ આદિ કે શિરો કો ચઢાઓ, જય તુમ લોગ પશુ આદિ કે શિરો કો કાલી દેવી કે લિયે મેટ મેં પ્રદાન કરો ઉસ સમય (વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમઝાણુલેવણપર્દૈરજલિઝ્જલસુગધધૂવોવચારપુષ્પફલસમિદ્ધે) વિવિધ પ્રકાર કી ઔષધિયો સે, મધમાસરૂપ ભક્ષ્યાન્નપાન સે, માત્ર્યોં સે, અનુલેપનોં સે,

ચન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ શુક્રથી અસિત થાય તે દિવસોએ કરે । અથવા તે કૌતુક, વિસ્તાપન, અને શાન્તિઝમેનિ સ્વપ્નાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરે કે જ્યારે નવગ્રહોમાના ચન્દ્ર અને સૂર્ય એ એ ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કપટકારી સ્થાનોમા રહેવ હોય અને હુ સ્વપ્ન આદિ વિપમ ચીજો જોવામા આવતી હોય તથા ' પહિસીસગાઢ ચ દેહ ' તમે લોકો પિષ્ટ નિર્મિત ખોત ખોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોનુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તો ખોતાના મસ્તક જેવુ લોકોનુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે મૃપાવાદી લોકો કહે છે " દેહ ય સીસોવહારે " પશુ આદિના મસ્તકો ગ્રહાવો જ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે " વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમઝાણુલેવણપર્દૈરજલિઝ્જલસુગધધૂવોવચારપુષ્પફલસમિદ્ધે " વિવિધ પ્રકારની ઔષધિયોથી, મધમાસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણાથી, માળાઓથી

‘અલિયાણા’ અલીકાજ્ઞાઃ=અત્રીકા આજ્ઞા=આગમો યેપા તે તથા ‘અલિયધમ્મ-
નિરયા’ અત્રીકધર્મનિરતાઃ=અસદ્ધર્મપરાયણા ‘અલિયાસુ કહાસુ’ અલીકાસુ આત્મ-
ગુણહાનિકરાસુ કથાસુ અભિરમન્તઃ=પસીદન્તઃ ‘વહુપ્પગાર’ વહુપ્રકારમ્ ‘અલિયં
કરેડ’ અલીક કૃત્વા=ભાપિત્વા ‘તુટ્ટા’ તુપ્પટ્ટા=પસન્ના ભવન્તિ ॥મૂ ૦ ૧૪॥

માપા સમિતિ સે રહિત પ્રાણી હોતે હે તથા (અલિયાણા) જિનકા
આગમ મો અમત્ય હોતા હૈ જો (અલિયધમ્મનિરયા) અસત્ય વર્મ મેં
નિરત રહતે હૈ, તથા (અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા) આત્મગુણ હાનિ
કરાને વાલી કથાઓ મેં જિનકા મન મોદ પાતા હૈ એસે અનાર્યજન (વહુ-
પ્પગાર અલિય) ટન વિવિધ પ્રકારકે અલીક વચનોં કો (કરેડ તુટ્ટા)
બોલકર વે ભવિષ્યમેં પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતે હ પ્રત્યુત (ઉલટે)પસન્ન હોતે હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકારને ડસ સૂત્રદ્વારા યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ જો પ્રાણી
અસત્યભાષણ કરનેમ હી આનંદ માનતા હૈ વે કિસ પ્રકારસે વૈઠે વૈઠે
દૂસરે જનોંકો પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યોં મેં ડકસાયા કરતે હૈ, જય યે
ફિસીકી શાલિકી છેતીકો પકી હુડે દેખ લેતે હૈ તો ડસકે માલિકકો
ચાહે વહ માને યા ન માને સલાહ દેતે હૈ—તુમ્હારી યહ છેતી પક ચુકી
હૈ, તુમ વૈઠે ૨ કયા કરતે હો ? કયોં નહીં જલ્દી સે જલ્દી ડસે કાટકર
ઑર દાચ (ગાહટા) કરકે સાફસૂફ કર અપને ઘરમે ભરકર રખ દેતે
હો ? । ડસે તો મટાર મેં ભર કર રખનેમેં હી લાભ હૈ । યે વણિક જન
બડે સ્વાર્થી હોતે હૈ—બાહર પરદેશમેં નૌકાઓં સે યાત્રા કર સૂચ કમાઈ

યાણા ” જેમના આગમ પણ અમત્ય હોય છે જે “અલિય ધમ્મનિરયા”
અસત્ય ધર્મમા લીન ગડે છે, જથા “અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા” આત્મગુણ
હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમનુ મન આનંદ પામે છે એવા અનાર્યજન
“વહુપ્પગાર અલિય” એ વિવિધ પ્રકારના ઓલક વચનો “કરેડ તુટ્ટા”
બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ ગણ થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કર્યું છે કે જે જીવો
અમત્ય બોલવામા જ આનંદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કંઈ રીતે અન્ય જીવોને
પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે ડોઝના ખેતરમા શાલિ
ડાગરનો પાડ તૈયાર થયેલો જુવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન
માને છતા પણ તે મલાહ આપે છે કે આ ડાગર પાડી ગઈ છે તમે બેઠી
કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી ડાખીને, ખજી ડગીને, ઉપણીને શા માટે ઘરમા
ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા ડોઢારમા જ ભરી ગયેલી હિતાવહ છે આ
વેપારીઓ ભાગે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પગ્દેશની સફર કરીને તેઓ

નતયા હતો દુષ્ટઃ, અત્ર સમ્રમે દ્વિત્ય્' તથા 'સુદૃઢિત્તો મિત્તો' મુદ્દુ ઢિત્તો મિ
 નથ સ દુર્જનેન ઇતિ પૂર્વોક્તપ્રકારૈઃ 'ઉવદિસતા' ઉવદિશન્તઃ=અવ્યયન્તઃ 'એવ વિહ'
 એવવિય=સ્વરૂપતઃ સત્યમપિ પ્રાણિના હિંસાકારણત્વાત્ પરિણામતોડલીક 'મણેણ
 વાયાએ કમ્મુણા ય ' મનસા-વચના કર્મણા ચ ત્રિધા 'અલીય' અલીયમ્=
 અસત્ય 'કરેતિ' કુર્વન્તિ માપન્તે ઇત્યર્થ, કીટ્ટ્યાસ્તે અત્રીકમાપિણ ? ઇત્યાહ
 'અકુસલા' અકુશલાઃ=માપાસમિતિનિકલાઃ 'અણજ્ઞા' અનાર્યા=અઠેચ્છાઃ

કુછ મી દાન મત દો । (સુદૃહઓ સુદૃઢિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ) 'તુમને
 હસ દુષ્ટ કો અચ્છા મારા, વહુત અચ્છા ક્રિયા જો હસે છિન્ન મિન્ન કર
 હાલા । (ત્તિ) હસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઉવદિસતા) દૂસરોં કે પ્રતિ
 કહતે હુએ મૃષાવાદી જન (એવ વિહ) યચ્ચપિ સ્વરૂપ કી અપેક્ષા અપને
 વાચ્યાર્થ સે સવધિત હોને કે કારણ-સત્ય હોને પર મી પ્રાણિ હિંસા કે
 કારણ હોને સે અસત્યવાણી કો (મણેણ વાયાએ કમ્મુણા) મન સે, વચન
 સે ઓર કાય સે, (અલિય કરેતિ) અલીક-ઝૂઠ ગોલા કરતે હૈ । તાત્પર્ય
 હસકા યહ હૈ કિ અપને અભિધેય(વક્તવ્ય)સે અસવધિત વાણી હી મૃષા
 સ્વરૂપ નહી હૈ કિન્તુ જિસ સત્યવાણીસે પર પ્રાણિયોકો કષ્ટ હો આપત્તિમેં
 પડ જાના પડે અનેકે પ્રાણોં કી હિંસા આદિ હો જાવે વહ વાણી મી
 અસત્ય હી હૈ । એસી વાણી કેવલ વચનયોગ કી અપેક્ષા સે હી અસત્યરૂપ
 નહી માની જાતી હૈ કિન્તુ વહ મન ઓર કાય હન અગોકી અપેક્ષા મી
 અસત્ય માની જાતી હૈ । હસ તરહ કી અસત્યવાણી કા જો (અકુસલા)

કોઈ ને પણ કઈ પણ દાન ન આપો “ સુદૃહઓ સુદૃઢિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ ” “ તમે
 તે દુષ્ટને માર્યો તે ઠીક કયું, તેને છિન્ન ભિન્ન કરી નાખ્યો તે ઘણું સારું
 કયું ” “ ત્તિ ” આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઉવદિસતા ” બીજાને કહેતા તે અસત્ય
 બોલનારા લોકો “ એવ વિહ ” જો કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ
 સાથે સાથે સવધિત હોવાને કારણે-સત્ય હોવા છતાં પણ પ્રાણી હિંસાના
 કારણે રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને “ મણેણ વાયાએ કમ્મુણા ” મનથી, વચનથી
 અને કાર્યથી “ અલિય કરેતિ ” અલીક-અસત્ય બોલના કરે છે તેનું તાત્પર્ય
 એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસવધિત વાણી જે મૃષાવાદ રૂપ નથી પણ
 જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ થાય આપત્તિમા મૂકાવું પડે, તેમના
 પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ
 વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામા આવતી નથી પણ તે મન
 યોગ અને કાયયોગની અપેક્ષાએ પણ અસત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય
 વાણી કે જે “ અકુસલા ” ભાષા સમિતિથી રહિત જોવા હોય છે તથા “ અહિ

‘અલિયાણા’ અલીકાણાઃ=અલીકા આવા=આગમો ચેપા તે તથા ‘અલિયધમ્મ-નિરયા’ અલીધમ્મનિરતાઃ=અસદ્ધર્મપરાયણા ‘અલિયાસુ કહાસુ’ અલીકાસુ આત્મ-ગુણહાનિકરાસુ કયાસુ અભિરમન્તઃ=પ્રસીદન્તઃ ‘વહુપ્પગાર’ વહુપ્રકારમ્ ‘અલિયં કરેડ’ અલીક કૃત્વા=ભાપિત્વા ‘તુટ્ટા’ તુટ્ટા=પ્રસન્ના ભવન્તિ ॥સૂ ૧૪॥

માપા સમિતિ સે રહિત પ્રાણી હોતે હે તથા (અલિયાણા) જિનકા આગમ મો અસત્ય હોતા હૈ જો (અલિયધમ્મનિરયા) અસત્ય ધર્મ મેં નિરત રહતે હૈ, તથા (અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા) આત્મગુણ હાનિ કરાને વાલી કથાઓં મેં જિનમા મન મોદ પાતા હૈ એસે અનાર્યજન (વહુ-પ્પગાર અલિય) ટન વિવિધ પ્રકારકે અલીક વચનોં જો (કરેડ તુટ્ટા) ઘોલકર વે ભવિષ્યમેં પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતે હ પ્રત્યુત (ઉલટે)પ્રસન્ન હોતે હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકારને ઇસ સૂત્રદ્વારા યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ જો પ્રાણી અસત્યભાષણ કરનેમે હી આનંદ માનતા હૈ વે કિસ પ્રકારસે વૈઠે વૈઠે દૂસરે જનોંકો પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યોં મેં ડકસાયા કરતે હૈ, જય ચે કિસીકી શાલિકી खेतीકો પકી ફુડે દેખ લેતે હ તો ઉસકે માલિકકો વાહે વહ માને યા ન માને સલાહ દેતે હૈ—તુમ્હારી યહ खेती પક ચુકી હૈ, તુમ વૈઠે ૨ કયા કરતે હો ? કયોં નહી જલ્દી સે જલ્દી ઇસે કાટકર ઓર દાઘ (ગાહટા) કરકે સાફમૂફ કર અપને ઘરમે ભરકર રખ દેતે હો ? । ઇસે તો મટાર મેં ભર કર રખનેમેં હી લાભ હૈ । ચે વણિક્ક જન વડે સ્વાર્થી હોતે હૈ—વાહર પરદેશમેં નૌકાઓં સે યાત્રા કર खૂબ કમાઈ

ચાણા ” જેમના આગમ પણ અસત્ય હોય છે જે “અલિય ધમ્મનિરયા” અસત્ય ધર્મમા લીન ગડે છે, જથા “અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા” આત્મગુણ હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમનુ મન આનંદ પામે છે એવા અનાર્યજન “વહુપ્પગાર અલિય” એ વિવિધ પ્રકારના ઓલટ વચનો “કરેડ તુટ્ટા” બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ ગણ થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રકટ કર્યું છે કે જે જીવો અસત્ય બોલવામા જ આનંદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કંઈકીતે અન્ય જીવોને પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે ડોઝના ખેતરમા ચાલિ ડાગરનો પાડ તૈયાર થયેલો જીવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન માને છતા પણ તે મલાહ આપે છે કે આ ડાગર પાકી ગઈ છે તમે જેમી કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી કાપીને, ખજી કરીને, ઉપણીને શા માટે ઘરમા ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા ડોઢારમા જ ભરી રાખવી હિતાવહ છે આ વેપારીઓ ભારે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પરદેશની મરહર કરીને તેઓ

નતયા હતો દુષ્ટ', અત્ર સમ્રમે દ્વિત્વમ્' તથા 'સુદુ ટિન્નો મિન્નો' સુદુ ટિન્નો મિ
 નથ સ દુર્જનેન इति पूर्वोक्तप्रकारः 'उपदिसता' उपदिशन्तः=कथयन्तः 'एव विह'
 एवविह=स्वरूपतः सत्यमपि प्राणिना हिंसाकारणत्वात् परिणामतोऽलीक 'मणेण
 वायाए कम्मुणा य' मनसा-वचसा कर्मणा च त्रिधा 'अलीय' अलीयम्=
 असत्य 'करेति' कुर्वन्ति भाषन्ते इत्यर्थ, वीट्ठास्ते अलीकमापिण ? इत्याह
 'अकुसला' अकुशलाः=भाषाममितिप्रिक्रया 'अणजा' अनार्या =अच्छेच्छाः

કુછ મી દાન મત દો । (સુદુહઓ સુદુટિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ) 'તુમને
 ઉસ દુષ્ટ કો અચ્છા મારા, વહુત અચ્છા ક્રિયા જો ઉસે છિન્ન ભિન્ન કર
 ઢાલ્યા । (ત્તિ) હસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઉપદિસતા) દૂસરોં કે પ્રતિ
 કહતે હુણ મૃષાવાદી જન (એવ વિહ) યત્પિ સ્વરૂપ કી અપેક્ષા અપને
 વાચ્યાર્થ સે સવધિત હોને કે કારણ-સત્ય હોને પર મી પ્રાણિ હિંસા કે
 કારણ હોને સે અસત્યવાણી કો (મણેણ વાયાએ કમ્મુણા) મન સે, વચન
 સે ઓર કાય સે, (અલિય કરેતિ) અલીક-શૂઠ ચોલા કરતે હેં । તાત્પર્ય
 હસકા યહ હૈ કિ અપને અભિધેય(વક્તવ્ય)સે અસવધિત વાણી હી મૃષા
 સ્વરૂપ નહી હૈ કિન્તુ જિસ સત્યવાણીસે પર પ્રાણિયોકો કષ્ટ હો આપત્તિમેં
 પડ જાના પડે ઉનકે પ્રાણોં કી હિંસા આદિ હો જાવે વહ વાણી મી
 અસત્ય હી હૈ । એસી વાણી કેવલ વચનયોગ કી અપેક્ષા સે હી અસત્યરૂપ
 નહી માની જાતી હૈ કિન્તુ વહ મન ઓર કાય હન અગોકી અપેક્ષા મી
 અસત્ય માની જાતી હેં । હસ તરહ કી અસત્યવાણી કા જો (અકુસલા)

કોઈને પણ ઈ પણ દાન ન આપો “ સુદુહઓ સુદુટિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ ” “ તમે
 તે દુષ્ટને માર્યો તે ઠીક કર્યું, તેને છિન્ન ભિન્ન કરી નાખ્યો તે ઘણું માર
 કર્યું ” “ ત્તિ ” આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઉપદિસતા ” બીજાને કહેતા તે અસત્ય
 બોલનારા લોકો “ એવ વિહ ” જો કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ
 સાથે સાથે સંબધિત હોવાને કારણે-સત્ય હોવા છતાં પણ પ્રાણી હિંસાના
 કારણે રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને “ મણેણ વાયાએ કમ્મુણા ” મનથી, વચનથી
 અને કાર્યથી “ અલિય કરેતિ ” અલીક-અસત્ય બોલના ઠરે છે તેનું તાત્પર્ય
 એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસંબધિત વાણી જ મૃષાવાદ રૂપ નથી પણ
 જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ થાય, આપત્તિમા મૂકાય પડે, તેમના
 પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ
 વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામા આવતી નથી પણ તે મન
 યોગ અને કાયયોગની અપેક્ષાએ પણ અનત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય
 વાણી કે જે “ અકુસલા ” ભાષા સમિતિથી સંહિત હોવા હોય છે તથા “ અહિ

કરતે હૈં ઓર ફિર ચેટે = લાતે હૈં, એક અપનલોગ હૈં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે મી ઉદરપૂર્તિ કે લાયક સાધન મામત્રી નહીં જુટા પાતે હૈં, અતઃ અચ્છા હો ઇન સવકો જય યે નૌકાઓ ઠારા વાહર જાને લગે તથ ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમ્રાટ મી રેતી આદિકા ઘણુ નુકસાન કરતે હૈં અતઃ ઇન્હેં મી માર ઢાલો । અમુક જગત પર ઘડા ભારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈં, સેના વઘા જાવે ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર વહાસે વિજયત્રી પ્રાપ્તકર લૂંટ આવે તો વહુત અચ્છી વાત હૈં । ઇસ તરફ ફિર ઇગઢા કરનેવાલે લોગ અપના માયા ભવિષ્યમેં જુંચા નહીં ઉઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈં તો ગાડી વાહન આદિકો ખાડેપર ક્યોં નહીં ચલાતે હો ચલાઓ, ઇમસે હી તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન(જનોઈ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિતને મી યે શુભ કૃત્ય હૈં વે જેસે હી ઓઢે કિયે જાતે હૈં, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, વવાદિ ગ્યારહ કરણોં સે અમુક શુભ કરણ મેં ંવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈં, ઇમલિયે માર્ડ । તુમ્હે જેસા મોકા આવે તત તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમે કરના । દેવો ઘરમેં યહ નવીન વહુ

ખૂબ નાણા ડમાય છે, અને પછી ખેડા ખેડા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત્રિ પરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નોકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ સારુ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકસાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની ડતલ કરીને ત્યાંથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊંચકશે નહીં જે તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવડતુ કેઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે માધનો ભાડે ચલાવશે તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઈએ તો ભાઈ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જુવો!

आई है—प्रथम समय जत्र इसका स्नान करनेका हो तत्र वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इसका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धि की वृद्धि होगी। इसी तरह प्रभुतिका का जत्र स्नान कराना हो तत्र भी इन सब बातों का ज्ञान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ खयाल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाट्ठाटसे मन्त्र, मासादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन, तथा शांतिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जत्र २ राहुद्वारा आक्रमण हो तत्र २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बड़े आनन्दके साथ पिण्ड से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढ़ाया करो। तथा पशुबलि भी चढ़ाओ, बलि चढ़ाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औपधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का सूख उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ધરમા નવવધૂ આવી છે, તેને ત્યારે મૌઢી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે ત્યારે તે ગુણ ધડિ આદિમા ડગવવું જોઈએ તેમ ડરવાથી તેનું મૌભાગ્ય મતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રભૂતિકને પણ ત્યારે સ્નાન કરાવવાનું હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખવું જોઈએ શુભકૃત્યો ડરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા ડોષ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઈને જ સઘળા ડામો કર્યા ડરો ખૂબ ઠાઠ માઠથી મામ મદિરા આદિનો ઉપયોગ ડરો ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનું આક્રમણ વાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાંતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય ડરો કાવીકા આદિ દેવીને પ્રમન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટચી પોતાના મન્તક જેવો આઠાર બનાવાને તેમને બલિ આપ્યા ડરો, તથા પશુ જોનું બલિદાન પણ આપો, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવો તેમની આરતી ઉતારો, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔપધિયોનો, વાજીકરણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ ડરો માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મલે છે? ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમજેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ વ્યવ્તિ આવે, ખરાબ

કરતે હૈં ઓર ફિર વૈઠે = સ્વાતે હૈં, ઇક અપનલોગ હૈં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે મી હદરપૂર્તિ કે લાયક સાધન મામગ્રી નહીં જુટા પાતે હૈં, અતઃ અચ્છા હો ઇન સવકો જવ યે નૌકાઓ દ્વારા યાત્રા જાને લગે તથા ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમૂહ મી રેતી આદિકા યદુત નુકસાન કરતે હૈં અતઃ ઇન્હેં મી માર ઢાલો । અમુક જગહ પર થડા ભારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈં, સેના વહા જાવે ઓર ઉપદ્રવકા રિયોંકો નષ્ટ કર વહાસે ત્રિજયશ્રી પ્રાપ્તકર લૌટ આવે તો વદ્યુત અચ્છી વાત હૈં । ઇસ તરહ ફિર ઇગડા કરનેવાલે લોગ અપના માથા ભવિષ્યમેં ડુંચા નહીં ઉઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈં તો ગાડી વાતન આદિકો ખાડેપર ક્યોં નહીં ચલાતે હો ચન્દ્રાઓ, ઇમસે હી તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન(જનોઈ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને મી યે શુભ કૃત્ય હૈં વે તેસે હી યોડે કિયે જાતે હૈં, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, વવાદિ ગ્યારહ કરણોં સે અમુક શુભ કરણ મેં ણવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમે કિયા જાતા હૈં, ઇસલિયે માર્ઈ । તુમ્હેં એસા મૌકા આવે તવ તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમે કરના । દેવો ઘરમેં યદ નવીન વદ્યુ

ખૂબ નાણા ડમાય છે, અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત નિપરિશ્રમ કરવા જતાં પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા બ્યારે નોકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણું મારૂં થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુક-શાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર બંધ અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછું આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથું ઊંચડશે નહીં જે તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનું ડોઘ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ ગ્યારહ કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા બેઠાએ તો ભાઈ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જવો !

आई है—प्रथम समय जब इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इसका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धि की वृद्धि होगी। इसी तरह प्रभृतिका का जब स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा २ खयाल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो। खूब ठाटमाटसे मन्त्र, मासादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन, तथा शातिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जब २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बड़े आनन्दके साथ पिण्ड से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढ़ाया करो। तथा पशुबलि भी चढ़ाओ, बलि चढ़ाते समय खूब उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाईयोंका मक्ष्या-नपान माल्यानुलेपन आदि का खूब उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ધરમા નવવધુ આવી છે, તેને ત્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવવું જોડજો તેમ કરવાથી તેનું સૌભાગ્ય સતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રસૂતિડને પણ ત્યારે સ્નાન કરાવવાનું હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખવું જોડજો શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઈ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઈને જ મધળા ડામો કર્યા કરે ખૂબ ઠાઠ માઠથી મામ મહિરા આદિનો ઉપયોગ કરે ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનું આક્રમણ થાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ થાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરે કાલીકા આદિ દેવીને પ્રમન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી પોતાના મન્તડ જેવો આઠાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુ જોનું બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવે તેમની આરતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિઓનો, વાજીરણ આદિ દવાઓનો, લક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરે માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર યોડે જ મલે છે? ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખરાબ

કરતે હૈં ઓર ફિર ચૈટે ૨ સ્વાતે હૈં, એક અપનલોગ હૈં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે ભી હદરવૃત્તિ કે લાયક સાધન મામગ્રી નહીં જુટા પાતે હૈં, અતઃ અચ્છા હો ઇન સવકો જય યે નૌકાઓ ઢારા યાહર જાને લગે તથ ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમ્રાટ ભી રેતી આદિકા યહુત નુકસાન કરતે હૈં અતઃ ઇન્હેં ભી માર ઢાલો । અમુક જગહ પર યહા ભારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈં, સેના વહા જાવે ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર વહાંસે વિજયશ્રી પ્રાપ્તકર લૌટ આવે તો વહુત અચ્છી વાત હૈં । ઇસ તરહ ફિર ઇગઢા કરનેવાલે લોગ અપના માયા ભવિષ્યમેં ડુંચા નહીં ઉઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇમ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈં તો ગાઢી વાહન આદિકો ખાડેપર ક્યોં નહીં ચલાતે હો ચન્દાઓ, ઇમસે હી તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન(જનોહ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને ભી યે શુભ કૃત્ય હૈં વે એસે હી યોડે કિયે જાતે હૈં, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, વવાદિ ગ્યારહ કરણોંસે અમુક શુભ કરણ મેં ંવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈં, ઇસલિયે ખાઈ ! તુમ્હેં એસા મૌકા આવે તત તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમેં કરના । દેવો ઘરમેં યહ નવીન વહુ

પૂજા નાણા ઉમાય છે અને પછી ખેડા ખેડા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત્રિનિપશ્ચિમ કરવા જતાં પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુપ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા બ્યાગે નોકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમને નાશ કરવામા આવે તો ઘણું મારૂં થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુક-શાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછું આવે તો બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા ડહી પણ રાજ્ય સામે માથું ઊંચકશે નહીં જો તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવડતુ કોઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશે તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ અગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઈએ તો ભાઈ! તમારે ત્યાં પણ એવા અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જવો !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જય ઇસ્કા સ્નાન કરનેકા હો તવ વહ શુભ ઘડી આદિમેં હી કરાના, ઇમ્સે ઇન્કા સૌ માગ્ય સન્તતિ એવ સમૃદ્ધિકી વૃદ્ધિ હોગી । ઇસી તરફ પ્રવૃત્તિકા કા જય સ્નાન કરાનાં હો તવ મી ઇન સવ વાતોં કા યાન રાખના । શુભ કૃત્યોં નો કરતે સમય ઇસ વાત કા મી પૂરા ૨ રચાલ રખના ચાહિયે કિ ઉસ સમય ચિત્તમેં કિસી પ્રકારકી ગ્લાનિકા માવ ન જગને પાવે, હર્ષચિમ્બોર (હર્ષમગ્ન) વન કર હી સવ કામ કિયા કરો । મૃગ ઠાટપાટસે મન્ય, માસાદિકોં કા ઉપયોગ કરો । કૌતુક, વિસ્નાપન, તથા શાંતિકર્મ આદિ સત્કૃત્ય અપને જીવન આદિ કી રક્ષા કે લિયે જાશિ સૂર્યગ્રહોં પર જય ૨ રાહુદારા આક્રમણ હો તવ ૨ અવશ્ય કરો । કાલી આદિ દેવિયોં કી પ્રસન્નતા સપાદન કરનેકે લિયે વહે આનન્દકે સાર પિષ્ટ સે અપને મસ્તકકી આકૃતિ બના કર ઉન્કે સમક્ષ વલિ ચઢાયા કરો । તથા પશુવલિ મી ચઢાઓ, વલિ ચઢાતે સમય શૂન ઉત્સવ મનાઓ । ઉન્કી આરતી ઉતારો, ઉસ ઉત્સવમેં ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોંકા, વાજીકરણ આદિ દવાઈયોંકા ભક્ષ્યાન્નપાન માલ્યાનુલેપન આદિ કા સૂચ ઉપયોગ કરો । માનવજીવનકા યહ

ધરમા નવવધૂ આવી છે, તેને ત્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવણુ લેઈએ તેમ કરવાથી તેનું સૌભાગ્ય અતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે—એ જ પ્રમાણે પ્રવૃત્તિને પણ ત્યારે સ્નાન કરાવવાનું હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખણુ લેઈએ શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી ટાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઈ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન લાગે, હર્ષવિભોર થઈને જ સધળા કામો કર્યા કરે । ખૂબ ઠાઠ માંથી મામ મદિગ આદિનો ઉપયોગ કરે । ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનું આક્રમણ વાય—ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાંતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરે । કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી પોતાના મન્ત્ર લેવો આઠાર બનાવાને તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુઓનું બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવે તેમની આગતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુમાર વિવિધ ઔષધિયોનો, વાજીકરણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરે । માનવ જીવનનો આવો અમય વારંવાર યોડે જ મલે કે ? ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખરાબ

કરતે હૈં ઓર ફિર પૈટે = સ્વાતે હૈં, ઁક અપનલોગ હૈં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે મી ઉદરપૂર્તિ કે લાયક સાધન સામગ્રી નહીં જુટા પાતે હૈં, અતઃ અચ્છા હો ડન સમયો જય યે નૌકાઓ ઢારા ત્રાતર જાને લગે તય ડનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમ્રાટ મી સેતી આદિકા ઘટુત નુકસાન કરતે હૈં અતઃ ડન્હેં મી માર ઢાલો । અમુક જગત પર ઘડા મારી ઉપદ્રવ ડસ સમય હો રહા હૈં, સેના ઘટાં જાવે ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર ઘટાંસે વિજયશ્રી પ્રાપ્ત કર લીટ આવે તો ઘટુત અચ્છી ઘાત હૈં । ડસ તરહ ફિર ઇગઢા કરનેઘાલે લોગ અપના માયા મવિષ્યમેં ડંચા નહીં ડઠા મકેંગે । ઘદિ તુમ્હારે પાસ ઘ્યાપાર આદિસે ડસ સમય કોઈ આય (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈં તો ગાઢી ઘાતન આદિકો માઢેપર કયોં નહીં ઘલાતે હો ઘલામો, ડમસે હી તુમ્હેં લામ હોગા દેલ્લો ઉપનયન(જનોઈ), ઘોલક, વિઘાહ ઘજ આદિ જિતને મી યે શુભ કૃત્ય હૈં ઘે ઁસે હી ઘોઢે કિયે જાતે હૈં, ડન્હેં તો અમુક શુભ દિઘસમેં, અમુક તિથિમેં, ઘવાદિ ઘ્યારહ કરણોંસે અમુક શુભ કરણ મે ઁઘ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈં, ડસલિયે માર્ઢ । તુમ્હે ઁસા મૌકા આવે તઘ તુમ ડન કૃત્યોંકો શુભ દિઘસ આદિમે કરના । દેઘો ઘરમે ઘદ નઘીન ઘહ

ખૂણ નાણા કમાય છે અને પછી ઘેઢા ઘેઢા ખાય છે આપણે જ ઁવા છીએ કે જે રાત દિન પરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે ઘધા જ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમનો નાશ કરવામા આવે તો ઘણુ માર્ઢ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણુ જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યા લશ્કર જાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછુ આવે તે ઘડુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણુનો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથુ ઊચકશે નહીં જો તમારી પાસે ઘ્યાપાર આદિ આવડનુ કોઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાઢી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ઘોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની કિયા, વિવાહ, ઘજ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે ઁમને ઁમ ઘોઢા થાય છે ! જો શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિઘમોએ અમુક શુભ તિથિએ, ઘવાદિ ઘગ્યાર કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કઘ્વા જોઈએ તો ભાઈ ! તમારે ત્યા પણ ઁવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિઘસ આદિમા કરો, જુવો !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જવ ઇસ્કા સ્નાન કરનેકા હો તવ વહ શુભ
ઘડી આદિમેં હી કરાના, ઇમ્સે ઇન્કા સાંભાગ્ય સન્તતિ ઇવ સમૃદ્ધિકી
વૃદ્ધિ હોગી । ઇસી તરહ પ્રમૃતિકા કા જવ સ્નાન કરાનાં હો તવ ખી
ઇન સવ ઘાતોં કા ઘ્યાન રખના । શુભ કૃત્યોં નો કરતે સમય ઇસ વાત
કા ખી પૂરા ર રવાલ રખના ચાહિયે કિ ઇસ સમય ચિત્તમે કિસી
પ્રકારકી ગ્લાનિકા માવ ન જગને પાવે, હર્ષચિમ્બોર (હર્ષમગ્ન) વન કર
હી સવ કામ કિળા કરો । સૂત્ર ટાટવાડસે મન્ય, માસાદિકોં કા ઉપયોગ
કરો । કૌતુક, વિસ્નાપન, તથા જ્ઞાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્ય અપને જીવન આદિ
કી રક્ષા કે લિયે જશિ સૂર્યત્રયેં પર જવ ૨ રાહુદ્વારા આક્રમણ હો
તવ ૨ અવશ્ય કરો । કાલી આદિ દેવિયોં કી પ્રસન્નતા સપાદન કરનેકે
લિયે વહે આનન્દકે સાગ પિષ્ટ સે અપને મસ્તકકી આકૃતિ વના કર
જનકે સમક્ષ વલિ ચઢાયા કરો । તથા પશુચલિ ખી ચઢાઓ, વલિ ચઢાતે
સમય સૂત્ર ઉત્સવ મનાઓ । ડનકી આરતી ઉતારો, ઇસ ઉત્સવમેં
ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔપધિયોંકા, વાજીકરણ આદિ દવાઈયોંકા ભક્ષ્યા-
નપાન માલ્યાનુલેપન આદિ કા સૂત્ર ઉપયોગ કરો । માનવજીવનકા યહ

ધરમા નવવધુ આવી છે, તેને ત્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે
ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવવુ જોઇએ તેમ કરવાથી તેનું મૌલાગ્ય મતતિ
અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રમૃતિડને પણ ત્યારે સ્નાન કરાવવાનું
હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખવું જોઈએ શુભકૃત્યો કરતી
વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા ડોષ પણ
પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષચિમ્બોર થઈને જ સધળા કામો કર્યા કરે
ખૂબ ઠાઠ માઠથી માન્ય મદિરા આદિનો ઉપયોગ કરે ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર
પર રાહુનું આક્રમણ વાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના જીવન
આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, જ્ઞાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરે
કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી
પોતાના મસ્તક જેવો આઝાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુ-
ઓનું બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવે
તેમની આરતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔપધિયોનો, વાજીક
રણ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાનપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો
ખૂબ ઉપયોગ કરે માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મળે ?
ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય બરાબર સ્વપ્ના આવે, બગાળ

=નરકતિર્યગ્યોનિઃ સઘ્વાડસઘ્વકાલપમાણા, વનસ્પત્યપેક્ષયાડનન્તકાલપમાણા,
તત્રોત્પત્તિરૂપા ' વૃદ્ધિ ' વર્ધયન્તિ, ' તેણ ય અલિણ ' તેન ચાલીકેન=અસત્ય
ભાષણકર્મણા ' સમણુવદ્ધા ' સમણુવદ્ધાઃ=વન્ધ પ્રાપ્તા ' આદૃટ્ટા ' આવિષ્ટાઃ=
આશ્લિષ્ટાઃ ' પુણન્નમવધયારે ' પૂર્વમવાન્ધકારે = પુન' પુનર્નન્મવાન્ધકારસ્તસ્મિન્
ભીમે=ભયંકરે ' ભમતિ ' ભ્રમન્તિ-મૃષાભાષિણો જીવા જન્મજરામરણયોરનિવિદ્
દુઃસ્વાન્ધકારકાન્તારે નિપત્તિતાઃ સન્તો વિનિધાનિ કથાન્યનુભવતીત્યર્થઃ । તથા
કથંચિત્ શ્દ મનુષ્યલોકે સમુત્પન્ના અપિ ' દુર્ગદ્વસદ્દિમુવગયા ' દુર્ગતિપસતિ
મુપગતા=ક્લેશવહુલસ્થિતિ પ્રાપ્તા ' દીમતિ ' દૃશ્યન્તે । અથ ભાવઃ-મૃષાભાષિણો
નરકતિર્યગ્યોનિષુ સમુત્પન્નન્તે । અથ કવચિન્નરકાદિતો નિસ્સૃત્ય મનુષ્યશરીર

તથા તિર્યચ યોનિકો (વૃદ્ધિ) વદાતે હૈ । અર્થાત્ મૃષાવાદી જન મૃષા
ભાષણસે ઉત્પન્ન પાપોં કે ઉદયસે પલ્પપ્રમાણવાલી તિર્યચ યોનિકો તથા
ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગરોપમ પ્રમાણકાલવાલી નરકગતિકો અવની ઉત્પત્તિ
સ્થાન વનાતે હૈ । વદા વે સઘ્યાન કાલ, અસઘ્યાત કાલ એવ વનસ્પતિ
અપેક્ષા અનતકાલ તક રહતે હૈ । (તેણ ય અલિણ) ઉસ અલીક
ભાષણકર્મસે (સમણુવદ્ધા) વધ કો પ્રાપ્ત હુએ (આદૃટ્ટા) ક્ષીર નીરકી
તરહ પરસ્પર એક ક્ષેત્રાવગાદરૂપ સવધ સે વિશિષ્ટ હુએ વે જીવ (પુણન્ન
વધયારે ભીમે) પુનઃ પુનઃ જન્મરૂપ ભયકર અધકાર મેં (ભમતિ)
ભ્રમણ કરતે હૈ । અર્થાત્ જો મૃષાવાદી જન હોતે હૈં વે જન્મ, જરા, મરણ
રૂપ ઘોર ગાઢ અધકારમેં પતિત હો કર વિવિધ કષ્ટોં વો ભોગા કરતે
હૈ । તથા (દુર્ગદ્વસદ્દિમુવગયા તેય દીસતિ) યદિ વે કદાચ કિસીં મી
તરહસે ઇસ મનુષ્યલોકમે ઉત્પન્ન હો જાવે તો મી ક્લેશ વહુલ સ્થિતિ

વાળા " નિરયતિરિયજોનિ " નરક તથા તિર્યચ યોનિને " વૃદ્ધિ " વધારે
છે એટલે કે મૃષાવાદી લોકો અસત્ય વાણીથી જનિત પાપોના ઉદયથી પત્ય
પ્રમાણુવાળી તિર્યચ યોનિને તથા ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગરોપમ પ્રમાણુ વાળી
નરકગતિને પોતાની ઉત્પત્તિનુ મ્થાન ગનાવે છે ત્યાં તેઓ સઘ્યાતકાળ,
અસઘ્યાતકાળ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનતકાળ સુધી રહે છે " તેણ ય
અલિણ " તે અસત્યભાષણુ કર્મથી " સમણુવદ્ધા " બધાયેલા " આદૃટ્ટા " દૂધ
અને પાણીની જેમ પરસ્પર એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સભવી વિશિષ્ટ થયેલ તે હોવે
" પુણન્નમવધયારે ભીમે " ફરી ફરીને જન્મ લેવા ઉપ ભનડર અધકારમાં
" ભમતિ " ભ્રમણુ કરે છે, એટલે કે મૃષાવાદી લોકો જન્મ, જરા, અને
મરણરૂપ ગાઢ અધકારમાં પડીને વિવિધ કષ્ટોને ભોગવા કરે છે તથા " દુર્ગ
દ્વસદ્દિમુવગયા તેય દીસતિ " એ કદાચ તેઓ કોઈ પણ કારણે મનુષ્ય લોકમાં

પ્રાપ્તુમન્યપિચેત તર્હિ હીનદીનતુચ્છજાતિકુલાદિભિઃ અધન્યા એવ વક્ષ્યમાણરૂપેણ
 દુઃસ્વપ્નશરીર પ્રાપ્તા દૃશ્યન્તે । કથમ્ભૂતાઃ ? ક્ત્યાહ—‘ દુગ્ગયા ’ દુર્ગતાઃ=
 દુરવસ્થા પ્રાપ્તાઃ સર્વથા દરિદ્રા-સ્થર્થઃ, દુરન્તાઃ=દુઃસ્થેન અતઃ=નીવનસ્યાવ
 સાન યેષા તે તથા ‘ પરવસા ’ પરવશાઃ=પરાધીના ‘ અત્યભોગપરિવર્જિયા ’ અર્થ
 ભોગપરિવર્જિતાઃ=અર્થા =ધનાનિ ભોગાશ્ચ=શબ્દાદયો વિપયાસ્તૈ પરિવર્જિતા =
 રહિતાઃ । તથા ‘ અસુહિયા ’ અસુખિતાઃ=સુસરહિતા - નિરન્તરમાધિવ્યાધ્યાદિ

કો પ્રાપ્ત હુણ દ્રષ્ટિય થોતે હ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ કિ મૃપાવાદી જન
 નરક તિર્થંચ યોનિમેં જન્મતે હે । યદિ વે કિસી તરહ નરકાદિસે નિકલ
 કર મનુષ્ય ભવ કો પ્રાપ્ત કર ભી લેવે તો ભી વહા વે હીન, દીન, તુચ્છ
 જાતિ કુલ આદિ મેં હી જન્મ ધારણ કરતે હે ઓર અધન્ય હોકર દુઃસ્વ
 વહુલ શરીર કો ધારણ કરતે હુણ દિગ્વલાઈ દેતે હે । યહી વાત સૂત્રકાર
 (દુગ્ગયા) ક્ત્યાદિ પદોં દ્વારા પ્રગટ કર રહે હે, વે કહતે હે કિ યદિ
 વે કિસી પ્રકાર મનુષ્ય પર્યાય વારણ ભી કર લેવે તો ભી વહા ઉનકી
 પરિસ્થિતિ ઠીક નહી રહતી હૈ-વે સદા (દુગ્ગયા) દારિદ્ર્યદુઃસ્વ સે
 સન્તપ્ત રહતે હે (દુરતા) ઉનકે જીવન કા અન્ત દુઃસ્વો સે હોતા હૈ
 (પરવસા) જીવન ભર વે પરાધીન વને રહતે હે । (અત્યભોગપરિવ
 ર્જિયા) અર્થ સપત્તિ એવ શબ્દાદિક ભોગ પનસે, રહિત હોતે હે ।
 (અસુહિયા) નિરન્તર આધિ, વ્યાધિ, ઉપાધિયોં સે પીડિત રહને કે
 કારણ ઉન્હેં સુસ્વ કા અશ ભી પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ । અથવા “અસુહિયા”

ઉત્પન્ન થાય છે તો પણ અત્યંત દુખયુક્ત સ્થિતિમા નજરે પડે છે કહેવાનું
 તાત્પર્ય એ છે કે મૃપાવાદી લોકો નરક તિર્થંચ યોનિમા જન્મ લે છે, પણ
 તેઓ ડોઢ પણ પ્રકારે નરકાદિમાથી બહાર નીકળીને મનુષ્યભવને પ્રાપ્ત કે
 તો પણ ત્યાં તેઓ હીન, દીન, તુચ્છ જાતિ કુળ આદિમા જ જન્મ પામે છે
 અને અધન્ય-તિરસ્કૃત વધને અત્યંત દુખયુક્ત દશામા મનુષ્ય જીવન વ્યતીત
 કરે છે એ જ વાત સૂત્રકાર “ દુગ્ગયા ” ક્ત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે
 તેઓ કહે છે કે તેઓ ડોઢ પણ પ્રકારે મનુષ્ય યોનિમા જન્મ લે છે તો ત્યાં
 તેમની હાલત સાગી હોતી નથી—તેઓ સદા “ દુગ્ગયા ” દારિદ્ર્યના દુખોથી
 પીડાય છે, “ દુરતા ” તેમના જીવનનો અંત દુખોથી જ આવે છે, “ પર-
 વસા ” આખું જીવન તેઓ પરાધીનદશા ભોગવે છે, “ અત્યભોગપરિવર્જિયા ”
 અર્થ-સપત્તિ તથા શબ્દાદિ ભોગથી તેઓ રહિત હોય છે “ અસુહિયા ” નિર
 ન્તર આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિયોથી પીડાય છે અને તે કારણે તેમને સુખનો
 અશ પણ પ્રાપ્ત થતો નથી, અથવા “ અસુહિયા ” ની સંસ્કૃત છાયા “ અસુહૃદ ”

ણિસેવિણો ' નીચજનનિપેવિણઃ=જાતિગુણકર્મભિર્નીચા યે જનાસ્નેષા નિપેવિણઃ= ઉત્થાનોપવેશનશયનભોજનપાનાદિભિઃ સદ્નિયાસિન ' લોગગરહિણિજ્ઞા ' લોક ગર્હણીયા=સકલજનનિન્દનીયાઃ ' ભિચ્ચા ' મૃત્યાઃ=મરણીયા ગ્વાન્યે તથા ' અસ- રિસજણસ્સ પેસ્સા ' અસદ્ગતનસ્ય=અસમાનશીલમ્-મ્લેચ્છાચારલોકસ્ય ' પેસ્સા ' પ્રેવ્યાઃ=તદાજ્ઞાકારકાઃ ' દુમ્મેહા ' દુર્મેધાઃ=સદ્બુદ્ધિવર્જિતાઃ, ' લોગવેદઅજ્ઞ પ્પસમયસુહવજ્જિયા ' લોકવેદા યાત્મસમયશ્રુતિવર્જિતાઃ શ્રુતિશબ્દસ્ય પ્રત્યેક સમ્બન્ધાત્ લોકશ્રુતિઃ=લોકાભિમત શાસ્ત્રં ભારતાદિ, વેદશ્રુતિઃ=ઋગ્યજુ સામાયર્ચ વેદશાસ્ત્રમ્, અધ્યાત્મશ્રુતિઃ=આત્મસ્વરૂપનિર્ણાયક શાસ્ત્ર, સમયશ્રુતિઃ=અર્હત્પ્રવચન તામિર્વર્જિતાઃ=રહિતા યે તે તથા, ' ધમ્મવુદ્ધિવિયલા ' વર્મવુદ્ધિવિયલાઃ=શ્રુત ચારિત્રધર્મરહિતા નરાઃ=મનુષ્યાઃ ' દ્ઢયન્તે ' इति पूर्वण सम्बन्ध. । तथा ' तेण य ' तेन च=पूर्वोक्तप्रकारेण ' अलिण्ण ' अलीकेन=मृपायादेन ' असतण्ण '

(ણીયજણણિસેવિણો) નીચ જનોં કે સાથ હી યે ડઠા ઘેઠા કરતે હૈં ઓર ઇન્હોં કે સાથ યે સ્વાતે પીતે હૈં તથા ડન્હોં કે સાથ રહતે હૈં । (લોગ ગરહણિજ્ઞા) સમસ્ત જન ઇનકો નિંદા કરતે રહતે હૈં । (ભિચ્ચા) દૂસરોં કે દાસ હોકર રહતે હૈં (અસરિસજણસ્સ પેસ્સા) અસમાનશીલ વાલે-મ્લેચ્છાચાર વાલે-લોગો કે યે દાસ હોતે હૈં (દુમ્મેહા) સદ્બુદ્ધિ સે યે વર્જિત હોતે હૈં (લોગવેદઅજ્ઞપ્પસમયસુહવજ્જિયા) લોકશ્રુતિ વેદશ્રુતિ, અ યાત્મશ્રુતિ ઓર સમયશ્રુતિ સે યે રહિત હોતે હૈં । લોકાભિ મત ભારત આદિ શાસ્ત્રો કા નામ લોકશ્રુતિ હૈં । ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામ વેદ, અથર્વવેદ, ઇનકા નામ વેદશ્રુતિ હૈં । આત્મા કે સ્વરૂપ કે નિર્ણાયક શાસ્ત્ર અધ્યાત્મશાસ્ત્ર હૈં । અર્હત્પ્રવચન કા નામ સમયશ્રુતિ હૈં । (ધમ્મવુદ્ધિવિયલા) શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ સે વિમુક્ત રહતે હૈં । તથા (તેણ

અને ગોત્ર અધમ હોય છે, “ ણીયજણણિસેવિણો ” નીચ લોકો સાથે જ તે ઉઠે બેસે છે, તેમની સાથે જ તેઓ ખાય પીવે છે તથા તેમની જ સાથે રહે છે, “ લોગગરહણિજ્ઞા ” સધળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે “ ભિચ્ચા ” અન્યના દામ થઈને રહે છે, “ અસરિસજણસ્સ પેસ્સા ” અસમાન શીલવાળા-મ્લેચ્છા ચાર વાળા લોકોના તેઓ દાસ થાય છે “ દુમ્મેહા ” તેઓ સદ્બુદ્ધિ રહિત હોય છે, “ લોગવેદઅજ્ઞપ્પસમયસુહવજ્જિયા ” લોકશ્રુતિ, વેદશ્રુતિ અધ્યાત્મશ્રુતિ અને સમયશ્રુતિથી તેઓ રહિત હોય છે લોકાભિમત ભારત આદિ શાસ્ત્રોને લોકશ્રુતિ કહે છે, ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વવેદને વેદશ્રુતિ કહે છે આત્માના સ્વરૂપનું નિર્ણાયક શાસ્ત્ર અધ્યાત્મશાસ્ત્ર છે અર્હત્ પ્રવચનને સમયશ્રુતિ કહે છે “ ધમ્મવુદ્ધિવિયલા ” તેઓ શ્રુતચારિત્ર - — થી

અસત્કેન-અસદ્રૂપેણ અથવા અશાન્તકેન=અનુપશાન્તેન ' ટ્ઙ્ઙમાણા ' દત્તમાના:=
પ્રજ્વલ્યમાના ' અવમાણણા પિટ્થિમસાહિસ્સેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાવ-
ચાચારણાદિયાહ ' અપમાનનપુટ્ટિમાગાધિક્ષપપિશુનભેદનગુરુગાન્ધવ સ્વજનમિત્રાપક્ષા-
રણાદિકાનિ=તત્ર અપમાનનમ્=માનભદ્રઃ, પુટ્ટિમાસ=પરોક્ષે દોષમાપણ, અધિક્ષેપ.=
ધિક્કારપૂર્વકનિન્દન, પિશુનભેદન=પિશુનૈ = સ્વલૈ. ભેદન=પ્રેમસમ્યગ્વિચ્છેદન,
ગુરુગાન્ધવસ્વજનમિત્રાણામપક્ષારણ=સ્વસ્ત્રવચનૈસ્તર્જન, અથવા-મિત્રાદિભિર્વહિષ્કરણ
ચ એતાનિ આદિ યેષા તાનિ ત ગા ભૂતાનિ, ' અઞ્જમગ્ગાણાહ ' અભ્યારયાનાનિ=
અસત્યદોષારોપણવચનાનિ ' વહુવિહાહ ' વહુવિગાનિ=નાનાપ્રકારાણિ ' અમણોર-
માહ ' અમનોરમાણિ=મન'પ્રતિકૂલાનિ ' હિયયમણદૂમગાહ ' હૃદયમનોદાવકાનિ

ય અલિણ અસતણ) મૃપાવાદીજન ઇસ અસદ્રૂપ અથવા અનુપશાન્ત
મૃપાવાદ સે (ટ્ઙ્ઙમાણા) રાતદિન જલતે રહતે હૈં ઓર (અવમાણણ
પિટ્થિમસાહિસ્સેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાઽવચ્ચારણાદિયાહ)
(અવમાણણ) અપમાન સહન કરતે હૈં । (પિટ્થિમસ) દરેક
કોઈ જનની પીઠ પીછે નિંદા કરતે હ । (અહિસ્સેવ) પ્રત્યેક વ્યક્તિ જનને
ધિક્કારતા રહતા હે । (પિસુણ ભેયણ) દુષ્ટ લોગ જનને પ્રેમસમ્બધ કો
વિચ્છેદ કરા દેતે હે । (ગુરુવધવસયણમિત્તા) ગુરુજન, બધુજન, સ્વજન એવ
મિત્ર (અવચ્ચારણાદિયાહ) સ્વસ્ત્ર વચનાં ઠારા જનકા અનાદર કરતે હૈં-
હાલતે હપતે રહતે હૈં, અથવા યે સવ જનને અપને મે સે ગાહર નિકાલ
દેતે હૈં (અઞ્જમગ્ગાણાહ) વાહે જો મનુષ્ય જન પર અસત્ય દોષારોપણ
કર દિયા કરતા હૈં । ઇસ પ્રકાર યે લોગ અસત્યદોષારોપણ વચનોં કો
કિ જો (વહુવિહાહ) નાના પ્રકાર કે દોતે હૈં, (અમણોરમાહ) મન કો

વિમુખ રહે છે તથા “ તેણ ય અલિણ અસતણ ” મૃપાવાદીજન આ અસદ્રૂપ
અથવા અનુપશાન્ત મૃપાવાદથી “ ટ્ઙ્ઙમાણા ” રાતદિન જલતા રહે છે અને
“ અવમાણણપિટ્થિમસાહિસ્સેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાઽવચ્ચારણાદિયાહ ”
‘ અવમાણણ ’ અપમાન મહન કરે છે, “ પિટ્થિમસ ” દરેક વ્યક્તિ તેની
પી. પાછળ નિંદા કરે છે, “ અહિસ્સેવ ” દરેક વ્યક્તિ તેને ધિક્કારે છે
“ પિસુણ ભેયણ ” દુષ્ટ લોકો તેમના પ્રેમ સમ્બધમાં લગાણ પડાવે છે, “ ગુરુ
વધવસયણમિત્ત ” ગુરુજન, બધુજન, સ્વજન અને મિત્ર “ અવચ્ચારણાહ
યાહ ” ડોર વચનો દ્વારા તેમનો અનાદર કરે છે-ધાડ ધમકી આપતા રહે છે
અથવા તે બધા તેમને પોતાની વચ્ચેથી બહાર ડાઢી મૂકે છે “ અઞ્જમગ્ગાણાહ ”
તેમના ઉપર લોકો ગમે તે પ્રકારનું દોષારોપણ કર્યા કરે છે આ ગીતે તે લોકો
અસત્ય દોષારોપણ કરત વચનો, કે જે “ વહુવિહાહ ” વિવિધપ્રકારના હોય
છે, “ અમણોરમાહ ” મનને ન ગમે તેવા હોય છે, તથા “ હિયયમણદૂમગાહ ”

=હૃદયસ્ય મનમથ દાવકાનિ=નાપજનકાનિ 'જાવજીવં' ચાવનીવ=જીવન
પર્યન્ત 'દુરુદ્ધરાઙ્' દુરુદ્ધરાણિ=દુસ્તરાણિ 'પાવતિ' પ્રાપ્નુવન્તિ । પુનઃ કિ
મિત્યાહ—'અણિદ્વલ્લરફરુસવયણતજ્જણણિભ્મચ્છગ્ગીણવયણવિમણા' અમિદ્વલ્લર-
ફરુપવચનતર્જનનિર્ભર્ત્સનદીનવચનવિમનનઃ=તત્ર અનિપ્પેન=અપ્રિયેણ તરપરુપેણ=
અતિકઠોરેણ વચનેન ચાનિ તર્જનાનિ='રે નીચ ! કથમેવ કરોપિ' ઇત્યાદિ લક્ષ-
ણાનિ નિર્ભર્ત્સનાનિ='અરે દુષ્ટકર્મકારિન્=ગૃહાન્નિમ્સર દષ્ટિપથાદ્વા' ઇત્યાદિ
રૂપાણિ, વૈદીન વદન=મુલ્લ વિકૃત-વિપાક્તયુક્ત ચ મનો ચેવા તે તથા 'કુમ્ભોયણા'
કુમ્ભોજનાઃ=કુત્સિતમ્=અસપિરસ મોજન ચેવા તે તથા તુચ્છાન્નાહારિણઃ 'કુવાસસા'
કુવાસસઃ=કુચૈલિનઃ 'કુવસહીસુ' કુવસતિપુ-કુત્સિતસ્યાનેપુ 'કિલિસસતા'

નહી રુચને વાલે તથા (લિગ્ગમમણદૂમગાઠ) હૃદય ઔર ચિત્ત કો સતા
પજનક હોતે હૈં એસે વચન (જાવજીવ) જીવન પર્યન્ત (દુરુદ્ધરાઙ્)
જો ઇન્હે આગત પહુંચાને વાલે હોતે હૈં ઉનકો (પાવતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈં
અર્થાત્ સુના કરતે હૈં । ફિર કયા સો કહતે હૈં—(અણિદ્વલ્લરફરુસ વયણ
તજ્જણણિભ્મચ્છગ્ગીણવયણવિમણા) એસે ચે લોગ અપ્રિય, અતિક
ઠોર વચનો સે તથા—“ રે નીચ ! એસા કયો કરતા હૈ ” ઇત્યાદિરૂપ
તર્જના સે, “ ઓ દુષ્ટકર્મકારિન્ ! તુ મેરે ઘર સે વાહિર નિકલજા-
મેરે સામ્હને મત્ત આ-યહા સે દૂર હટજા ” ઇત્યાદિ હૃદય વિદારક
નિર્ભર્ત્સના સે અનાદત્ત હુણ ચે દીન વદન ઔર વિકૃત મન વાલે તથા
(કુમ્ભોયણા) અપની જિન્દગી ખર કમી અચ્છા મોજન નહીં પાને વાલે
તુચ્છાહારી તથા (કુવાસસા) મૈલે કુચૈલે વસ્ત્ર પહનને વાલે તથા (કુ
વસહીસુ) ગન્દી જગહો મેં રહ કર (કિલિસસતા) અનેક કષ્ટો કો

હૃદય અને ચિત્તમા સતાપ પેદા કરનાર હોય છે તથા “ દુરુદ્ધરાઙ્ ” જે તેમને
આઘાત લગાડનાર હોય છે એવા વચનો “ જાવજીવ ” એવે ત્યા સુધી તેઓ
“ પાવતિ ” પ્રાપ્ત કરે છે એટલે સાબળ્યા કરે છે વળી બીજુ શુ બને છે તે
કહે છે—“ અણિદ્વલ્લરફરુસવયણતજ્જણણિભ્મચ્છગ્ગીણવયણવિમણા ” તેવા
એ લોકો અપ્રિય, અતિ કઠોર વચનોથી તથા “ અરે નીચ ! આણુ કેમ કરે
છે ? ” ઇત્યાદિ પ્રકારની તર્જનાથી, “ હે દુષ્ટકર્મકારિન્ ! તુ મારા ઘરમાંથી
બહાર નીકળી જા-માત્રી સામે આવીશ મા-અહીંથી દૂર ચાલ્યો જા ” ઇત્યાદિ
હૃદય લેદકે નિર્ભર્ત્સનાથી અનાદર પામેલ તે દીન વદનવાળા તથા વિકૃત મન
વાળા તથા “ કુમ્ભોયણા ” તથા જીવન પર્યન્ત સાફ ભોજન પ્રાપ્ત નહીં કરનારા
હલકા પ્રકારનું ભોજન પ્રાપ્ત કરનારા તથા “ કુવાસસા ” મેલા તથા ફાટેલા
તૂટેલા વસ્ત્ર પહેરનારા તથા “ કુવસહીસુ ” ગંદી જગ્યાઓમાં રહી

‘વિલશ્યન્ત = સન્તપ્યમાના અતए ‘અન્વતવિઝલદુઃસ્વસયસપલિત્તા’ અત્યન્ત વિપુલદુઃસ્વશતસપ્રદીપ્તાઃ = મત્પન્ત વિપુલાનિ વિશાલાનિ યાનિ દુઃસ્વશતાનિ તૈઃ સમ્પ્રદીપ્તાઃ - પ્રતપ્તા = ‘ઉવલભતિ’ ઉવલભન્તે = માપ્નુવન્તિ ‘નેવસુહ’ નૈવસુખ ‘નેવનિવ્વુટ’ નૈવનિર્વૃત્તિ = મન સ્વાસ્થ્ય, મિન્તુ દુઃસ્વમેવાનુભવન્તીતિ ભાવઃ ।
 एव मृपावादफलमुक्तम् ॥ सु० १५ ॥

ઉઠાતે હુણ (અન્વતવિઝલદુઃસ્વસયસપલિત્તા) વટુત અધિક કઠિન સે કઠિન સૈરુઢો દુ સ્વો સે સન્તપ્ત યને હુણ યે લોગ (નેવસુહ) ન તો કમ્પી સુખ પાતે હ ઓર (નેવનિવ્વુટ) ન કમ્પી નિર્વૃત્તિ-મનઃ સ્વાસ્થ્ય-શાંતિ કો (ઉવલભતિ) પાતે હ અર્થાત્-રાતદિન દુઃસ્વ ભોગા કરતે હૈં । હસ પ્રકાર યહ મૃપાવાદ કા ફલ કહા હૈં ।

ભાવાર્થ—મૃપાવાદ કા ફલ સ્પષ્ટ કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ-મૃપવાદીજન કમ્પી મ્પી અપને જીવન મેં સચ્ચી સુખશાંતિ નહીં પા સકતે હૈં । યે મૃપાવાદ સે ઉપાર્જિત પાપકર્મ કે ઉદય સે મરકર તિર્યચ ંવ નરકગતિકે અત્યત કઠિન દુઃસ્વોક્ષો ભોગા કરતે હૈં । તિર્યચ યોનિમે રહને વાલે જીવો કી આયુ ઉત્કૃષ્ટ ત્રીન પલ્ક કી વનસ્પતિ કી અપેક્ષા અનતકાલ કી ઓર નરક મેં રહને વાલે જીવો કી ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણ હૈં । ઇતને કાલ તક વહા રહકર કષ્ટ પરમ્પરાઓ કા અનુભવ વે કરતે રહતે હે । ફિર મ્પી જો પાપ કર્મ ભોગને સે અવશિષ્ટ રહતા હૈં ઉસે વે વહા સે નિકાલકર કિસી તરહ મ્પી નિલી હુઈ મનુષ્ય પર્યાય મેં ભોગતે હૈં । યહા જો ઇન્હેં મનુષ્ય પર્યાય પ્રાપ્ત હોની હૈં વહ વિલકુલ જઘ-

સ્સતા ” અનેડ ડખેડો સહન કરતા “ અન્વતવિઝલદુઃસ્વસયસપલિત્તા ” ઘણાજ વધારે આકરામા આકરા સેકડો હુ ખોથી હુ ખી અનેલા તે લોડો “નેવ સુહ ” ડહી પણ સુખ પ્રાપ્ત કરતા નથી “ નેવ નિવ્વુટ ” ડે ડહી પણ નિવૃત્તિ મનની શાન્તિ “ ઉવલભતિ ” અનુભવતા નથી એટલે ડે દિનરાત હુ ખ લોગ-વ્યા કરે છે, આ પ્રકારનુ મૃપાવાદનુ ક્ષણ કહેલ છે

ભાવાર્થ—મૃપાવાદનુ ક્ષણ બતાવતા સૂત્રકાર ડહે છે કે-મૃપાવાદી વ્યક્તિ ખોતાના જીવનમા ડહી પણ માત્રા સુખ શાંતિ પામી શકતો નથી તેઓ મૃપા વાદથી ઉપાર્જિત પાપકર્મોના ઉદયથી મરીને તિર્યચ અને નરકગતિના અત્યત કઠિન હુ ખો લોગવ્યા કરે છે તિર્યચ યોનિમા જન્મ પામતા જીવોનુ આયુષ્ય ઉત્કૃષ્ટ ત્રણ પલ્કનુ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનતકાળનુ અને નરકની અપેક્ષાએ ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણનુ હોય છે એટલો સમય ત્યા રહીને તેઓ કષ્ટ પરપરાઓને સહન કરે છે, ત્યાર પછી પણ જે પાપકર્મો લોગવવાના

ન્યસ્થિતિ કી હોતી છે । उस सर्वथा जघन्य स्थिति की मनुष्य पर्याय में उत्पन्न होकर ये कभी भी थोड़ा आनंद भी नहीं प्राप्त कर सकते हैं । सदा पराधीनता की जर्जरी में जकड़ा जाकर इनका जीवन व्यवहार चलता है । इनकी शारीरिक आकृति दुर्दर्शनोग्य एवं उद्वेगजनक होती है । कोई भी इनसे मोह ममता नहीं रखता है । हर एक व्यक्ति इनका तिरस्कार करता रहता है । चेतनशक्ति इनकी अविकसित रहा करती है । लक्ष्मी नहीं रहने से ये सदा दुःखी घने रहते हैं । मागमृग करके ये जो भी लाते ह वट रस विरस होता है । भरपेट भोजन उन्हें मिलता नहीं है । चाणी भी इनकी इतनी अच्छी नहीं होती जो दूसरों के चित्त को अपनी ओर आकृष्ट कर सके । काक जैसा कटोर इनका स्वर होता है । गर्दभ जैसी इनकी घोली होती है । कोई २ तो जन्माध होते हैं । कोई २ बहिर और गूगे होते हैं । दुःख में भी इनका साथ देने वाला कोई नहीं होता है । इनकी मित्रता अपने जैसे नीचों से ही होती है । उन्हीं के पास ये उठा बैठा करते हैं । गन्दे स्थानों में उन्हें रहने को मिलता है । सब कोई इनकी निंदा करते हैं । दूसरों के हृदय विदारक शब्दों को सुनकर ये मनोमन दुःखित होकर रह जाते हैं । तात्पर्य यह है

ખાકી રહ્યા હોય તેમને ત્યાથી નીકળીને કોઈ પણ રીતે પ્રાપ્ત થયેલ મનુષ્ય થોનિમા તેઓ ભોગવે છે તેને જે માનવ પર્યાય પ્રાપ્ત થાય છે તે બિલકુલ જઘન્ય સ્થિતિની હોય છે તે તદ્દન જઘન્ય સ્થિતિની મનુષ્ય પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈને તેઓ કદી પણ થોડો મરજોએ આનંદ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી તેમનો જીવન વ્યવહાર સદા પરાધીનતાની બેડીમા જકડાઈને ચાલે છે તેમના શરીરનો દેખાવ બેડોળા અને ઉદ્વેગજનક હોય છે તેમના પ્રત્યે કોઈ પણ મોહ અથવા મમતા રાખતુ નથી, દરેક વ્યક્તિ તેનો તિરસ્કાર કર્યા કરે છે તેમની ચેતના શક્તિ અવિકસિત રહે છે લક્ષ્મી નહીં રહેવાયી તે સદા દુઃખી રહે છે માગી કરીને તે જે કંઈ લાવે છે તે વિરસ હોય છે તેને ધરાઈને ખાવા પણ મળતુ નથી બીજાના ચિત્તને પોતાની તરફ આકર્ષી શકે તેવી મીઠી વાણી પણ તેની હોતી નથી તેનો સ્વર કાગડા જેવો કડકશ હોય છે ગર્દભ જેવી તેની બોલી હોય છે, કોઈ કોઈ તો જન્માધ હોય છે કોઈ બહિરા અને મૂળા હોય છે હુ ખમા પણ તેને મદદ કરનાર કોઈ હોતુ નથી તેને પોતાના જેવા અધમ લોકો સાથે જ મિત્રતા થાય છે તેમની પામે જ તે ઉઠે બેસે છે તેમને ગંદા સ્થાનોમા જ રહેવુ પડે છે મો તેમની નિંદા કરે છે બીજા લોકો હૃદયવિદારક શબ્દો સાંભળીને તેઓ પોતાના મનમા જ હુ ખા અનુભવીને રાત રહે છે ન પર્યા

અથ પ્રકૃતદ્વાર સામ્યેન સકલમ્ય નિગમયતિ સૂત્રકાર 'એસો સો' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—'એસો સો અલિયવચનસ્ય ફલવિવાઓ ઇહલોહઓ પરલોહઓ અપ્પમુહો વહુદુક્ખો મહવ્મઓ વહુસ્યપ્પગાઠો દારુણો કક્કસો અસાઓ વાસસહસ્સેહિ મુચ્ચવ્વણય અવેદધિત્તા અતિથિ હુ મોક્ખોત્તિ, એવમાહસુ નાયકુલનદણો મહપ્પા જિણોહ વીરવર નામધેજ્ઞો કહેસીય અલિયવચનસ્ય ફલવિવાગ, એય ત ત્રિઇય પિ અલિયવચન લહુસ્સગ લહુચ્ચલભણિય ભયકર દુહકર અયસકર વેરકર અરતિરતિરાગદોસમણસકિલેસવિયરણ અલિય- નિયહિસાતિયોગવહુલ નાયજણનિસેવિય નિસંસ અપ્પચ્ચયકારગ પરમસાહુગરહણિજ પરપીઠાકારગં પરમકિણ્ણહલેસસહિય દુગ્ગહ- વિણિવાયવહુણ ભવપુણવ્ભવકર ચિરપરિચિયમણુગય દુરત્ત તિવેમિ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

॥ વિઇય અપ્પમ્મદાર સમત્ત ॥ ૨ ॥

ટીકા—'એસો સો' એપ સ અલિયવચનસ્ય 'ફલવિ- વાઓ' ફલવિપાકઃ 'ઇહલોહઓ' 'એહલોકિક' = મનુષ્યભગાપેક્ષયા 'પરલોહઓ'

કિ હુઃસો કે જિતને પ્રકાર હ વે સવ ભયકર સે અયકર ઇન્હે ભોગના પડતા હ । ડસ સ્થિતિ મેં ઇનકા કોઈ સાધી નહીં હોના હૈ ॥ સૂ-૧૫ ॥

અવ સૂત્રકાર ઇસ અલિકવચન દ્વાર કા સપૂર્ણરૂપ સે સકલનકરકે ફલિતાર્થ કહતે હૈ—'એસો સો' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એસો સો અલિયવચનસ્ય ફલ વિવાઓ) અલીક વચનકા યહ જો મનુષ્યગતિ કી અપેક્ષા ઇહલોક સવધી તથા નરક નિગોદગતિ કી

એ છે કે હુ જોના ભય ડગ્મા ભય ડર જે પ્રજાને છે, તે તેમને ભોગવવા પડે છે એ સ્થિતિમા તેમનુ કોઈ સાધીદાર હોતુ નથી ॥ સૂ-૧૫ ॥

હવે સૂત્રકાર આ દ્વારનુ સપૂર્ણ ગીતે સકલન ડગીને ફલિતાર્થ બતાવે છે—“એસો સો” ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ—“એસો સો અલિયવચનસ્ય ફલવિવાઓ” અલીક વચનનો મનુષ્યગતિની અપેક્ષાએ આલોહ સવધી તથા નરકગતિની અપેક્ષાએ પરલોહ સવધી આ જે ફલ-

પારલૌકિકઃ=નરકાદ્યપેક્ષયા 'અપ્પસુહો' અલ્પસુખ=સુખવર્જિતઃ 'વહુદુઃખો' દુઃખવહુલઃ 'મહઘ્મઓ' મહાભયઃ=મહાભયજનકઃ 'વહુરયપ્પગાઠો' વહુરજઃ પ્રગાઠ=પ્રચુરકર્મરજોભિઃ સમ્પ્રત દારુણ=ભીષણઃ 'કક્કસો' કર્કશઃ=કઠોર 'અસાઓ' અસાતઃ=અસુરમાઽસાતકર્મવેદનીયમ્પરપઃ इत्येवत्रिधः फलविपाकः 'वाससहस्सेहि' વર્ષસહસ્રે=પલ્યોપમસાગરોપમપ્રમાણકાલેઃ 'મુચ્ચઈ' મુચ્યતે=ક્ષીયતે । તદેવ્યતિરેકપુણેનાહ—'ળય' ન ચ ત ફલવિપાકમ્ 'અવેદયિત્તા' અવેદયિત્વા=અનુપશ્ય્ય ઉપભોગ વિનેત્યર્થઃ, 'હુ' નિશ્ચયેન 'મોક્કલો' મોક્ષઃ 'અત્થિ' અસ્તિ 'ત્તિ' ઇતિ શબ્દ . સમાસિસૂચકઃ । એતસ્યાર્થસ્ય સાક્ષાત્પ્રમાણભૂતપરમાત્મપ્રતિપાદિતત્વેન પ્રમાણ્યનિરૂપણાય પ્રમાણ્યનાહ—'એવમાહસુ' ઇત્યાદિ, એવમ્=

અપેક્ષાસે પરલોક સત્ત્વથી ફલરૂપ વિપાક કહા ગયા હૈ, ઉત્તસે યહ અચ્છી તરહ જ્ઞાત હો જાતા હૈ કિ યહ (અપ્પસુહો) સુખવર્જિત એવ (વહુદુઃખો) દુઃખ વહુલ હૈ । (મહઘ્મઓ) મહાભયજનક, ઓર (વહુરયપ્પગાઠો) પ્રચુર કર્મરૂપી રજ સે ભરા હુઆ હૈ । (દારુણો) દારુણ તથા (કક્કસો) કઠોર હૈ । ઓર (અસાઓ) અસાતા વેદનીય કર્મ સ્વરૂપ હૈ । (વાસસહસ્સેહિ મુચ્ચઈ) યહ ફલવિપાક જીવ પલ્યોપમ એવ સાગરોપમપ્રમાણ કાલતક ભોગા કરતા હૈ તમી જાકર ઉત્તસે યહ છૂટકારાપાતા હૈ, અર્થાત્ યહ ફલરૂપ વિપાક નષ્ટ હો પાતા હૈ । (ળય અવેદયિત્તા હુ મોક્કલો અત્થિ ત્તિ) ભોગે વિના જીવ હસસે મુક્ત નહીં હોતા હૈ । યહા (ત્તિ) યહ સમાસિ અર્થ કા સૂચક હૈ ।

અવ સૂત્રકાર હસ અર્થ મે સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિત હોનેકે કારણ પ્રમાણભૂતતા પ્રકટ કરને કે લિયે કહતે હૈ—(એવ-

इयं विपाकं ज्ञतावयामा आभ्यो छे तेनाथा ते सारी रीते जाणुवा भणे छे उ ते 'अप्प सुहो' सुखवर्जित अने "वहुदुःखो" अयत्त दुःखभय छे "महघ्मओ" महा भयजनक, अने "वहुरयपपगाढो" प्रचूर कर्मरूपी रज्यथी भरपूर छे "दारुणो" दारुण तथा "कक्कसो" कठोर छे अने "असाओ" असाता वेदनीय कर्म स्वरूप छे "वाससहस्सेहि मुच्चइ" ते इलविपाक पल्योपम अने सागरोपम प्रमाण जण सुधी एव लोगव्या करे छे, त्यारे न ते तेमाथी हटी शके छे, अटले छे ते इलइय विपाक अटला लाणा समये नष्ट वाय छे "ળય અવેદયિત્તા હુ મોક્કલો અત્થિ ત્તિ" તે ફલવિપાક લોગવ્યા વિના એવ તેનાથી મુક્ત થઈ શકતો નથી અહીં "ત્તિ" તે સમાસિ અર્થનો સૂચક છે

હવે સૂત્રકાર આ અર્થમા પ્રત્યક્ષ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને કારણે, પ્રમાણભૂતતા દર્શાવવાને માટે કહે છે—“એવમાહસુ” આ પૂર્વોક્ત રીતે તીર્થ કર્મ ગણધરાદિક દેવોએ તથા “નાયકુલનદણો મહત્ત્વા જિણો વીરવર

ઉક્તરીત્યા ' આહમ્ ' ઝચુસ્તીર્થઙ્કરગણધરાદયઃ । તથા તદનુસારેણૈવ ' નાયકુલનદણો ' જ્ઞાતકુલનન્દન = સિદ્ધાર્થકુલાનન્દકરઃ, ' મહાપ્પા ' મહાત્મા=પરમાત્મરૂપ. ' જિણો ' જિનઃ વીરવરનામધેજ્જો ' વીરવરનામધેયપરયાતનામા મયયાન્ મહાવીર ઇમમ્ ' અલિયવયણસ્સ ' અલીકવચનસ્ય ' ફલવિવાગ ' ફલવિપાક ' કહેસી ' કથિતવાન્ । એવ ' ત ' તત્ પૂર્વોપદર્શિતસ્વરૂપમ્ ' અલિયવયણ ' અલીકવચન ' લહુસમગ લહુ ચવલભણિય ' લઘુસ્વકલ્પુચપલભણિત=લઘુસ્વકાઃ= તુચ્છાત્માનથ તે લઘવ અતિનીચાશ્વપલાશ્વ તૈ ભણિત=જલ્પિત ' ભયકર ' ભયઙ્કર ' દુહકર ' દુઃસ્વકર ' અયસકર વૈરકર ' અયસ્કર વૈરકરમ્, ' અરતિરતિરાગદોસમણસકિલેસવિચરણ ' અરતિરતિરાગદ્વેષમનસમ્લેશવિતરણમ્, ' અલિયનિયહિસાતિજોગબહુલ ' અલીકનિકૃતિમાતિયોગવહુલ ' નીચજનનિસેતિય ' નીચજનનિપેતિત ' નિસસ ' નૃશસમ્ 'અપચયકારગ'

માત્રસુ) ઇમ પૂર્વોક્ત રીતિસે તિર્યેકર ગણધરાદિક ઢેવોને તથા (નાયકુલનદણો મહાપ્પા જિણો વીરવરનામધેજ્જો) ડન્હી કે અનુમાર જ્ઞાતકુલનદન સિદ્ધાર્થકુલકે આનદકારક-પરમાત્મસ્વરૂપ, જિન મહાવીરને કિ જિનકા " વીર " યહ ઉત્તમ નામ પ્રખ્યાત હૈ ડન્હોને (ઇમ અલિયવયણસ્સ ફલવિવાગ કહેસી) યહ મૃષાવાદકા ફલ વતલાયા હૈ । અવ ઉપસહાર કરતે હૈ—(એય ત વિતિય પિ અલિયવયણં) ઇમ દ્વિતીય અલીક વચન કો જો (લહુસમગલહુચવલભણિય) લઘુસ્વક-તુચ્છાત્મા હોતે હૈ અતિનીચ એવ ચપલ હોતે હૈ વે હી ચોલતે હૈ । (ભયકર) યહ અલીક વચન ભયકર, (દુહકર) દુઃસ્વકર, (અજસકર) અયસ્કારક, (વૈરકર) વૈરકારક, (અરતિરતિરાગદોસમણસકિલેસવિચરણ) અરતિ, રતિ, રાગ, દ્વેષ ઓર મન સમ્લેશ પ્રદાતા હૈ । (અલિયનિયહિસાજોગબહુલ) અલીક-

નામધેજ્જો " તેમના પ્રમાણે જ જ્ઞાતકુલનદન સિદ્ધાર્થના કુળને આનદદાયક પરમાત્માસ્વરૂપ, જિન મહાવીરે કે જેમનુ " વીર " એ ઉત્તમ નામ પ્રખ્યાત છે, તેમણે " ઇમ અલિયવયણસ્સ ફલવિવાગ કહેસી " આ મૃષાવાદનુ સ્વરૂપ બતાવ્યું છે હવે ચૂનકાગર ઉપસહાર કરે છે—" એય ત વિતિય પિ અલિયવયણ " આ દ્વિતીય દ્વાર રૂપ અધર્મ વચનને જે " લહુસમગલહુચવલભણિય " લઘુસ્વક-તુચ્છાત્મા હોય છે, જે અતિ નીચ અને ચપલ હોય છે તેઓ જ બોલે છે " ભયકર " તે અસત્યવચન બોલકારક, " દુહકર " દુઃખકર, " અજસકર " અપડીર્તિકારક, " વૈરકર " વૈરકારક, " અરતિરતિરાગદોસમણસકિલેસવિચરણ " અરતિ, રતિ, રાગ, દ્વેષ અને મનને ડલેરા કરનાર છે " અલિયનિયહિસાજોગબહુલ " અલીક—નિષ્કળ છે, નિકૃતિ, સાતિના પ્રયોગથી યુક્ત

અપ્રત્યયકારક, ' પરમસાદુગરહણિજ્જ પરમસાધુગર્હણીય પમ્પીડાકારક ' પર
મકિણ્હલેસસહિય ' પરમકિણ્હલેસ્યાસહિય ' દુગ્ગઙ્ગિણિવાયવહૂણ ' દુર્ગતિવિનિ
પાતરદ્ધન ' ભવપુણભવકર ' નિરપરિચિય ' ચિરપરિચિત્, ' અણુગય '
અનુગતમ્, ' દુરત ' દુરન્તમ્ । एतानि सर्वाणि पदानि पूर्वमस्यैव द्वारस्य प्रथमसूत्रे
व्याख्यातानि ततो विज्ञेयम् । ' तिचेमि ' पूर्वम् ॥सू० १६॥

इतिश्री-जैनाचार्य-जैनधर्मद्वारा-पूज्य श्री घासीलालप्रतिरिचिताया

प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शिन्याय्याया व्याख्याया

हिंसादि पञ्चासवद्वारेषु गृपायादान्य द्वितीयम्-

आसव (अधर्म) द्वार समाप्तम् ॥२॥

નિષ્કરુ છે નિકૃતિ, સાતિ કે પ્રયોગ સે વટુલ છે અર્થાત્ કપટ વટુલ
હૈ । (ણીયજણનિસેવિય) જાતિ, કુલ આદિ સે અધમ વને જુળ વ્ય-
ક્તિઓ દ્વારા નિષેવિત હૈ । (નિસસ) ક્રૂર-અથવા પ્રશસા સે રહિત
હૈ । અપ્રત્યય-અવિશ્વાસ કા કારક હૈ । (પરમસાદુગરહણિજ્જ) પરમ
સાધુ-તીર્થંકરો દ્વારા ગર્હણીય હૈ । (પરપીડાકરણ) દૂસરોં કો પીડા
પહુચાને વાલા હૈ । (પરમકિણ્હલેસસહિય) અત્યન્તમલિન આત્મ પરિ-
ણતિ સે યુક્ત હૈ (દુગ્ગઙ્ગિણિવાયવહૂણ) દુર્ગતિ કા વર્ધક હૈ । (ભવ
પુણભવકર) પુનઃ પુનઃ જન્મ પ્રદાતા હૈ । (ચિરપરિચય) ચિરપરિચિત્
યજીવોં કે સાથ અનેક ભવોં કી પરમ્પરા તક રહનેવાલા હૈ । (અણુ
ગય) ભવ ભવ મેં સાથ ચલને વાલા હૈ । (દુરત) ઇસકા ફલ દુરન્ત-
કટુફલકા દેને વાલા હૈ “તિ વેમિ” ઇસકી વ્યાખ્યા કી જા ચુકી હૈ ॥સૂ-૧૬॥

॥ द्वितीय आसव—‘ अधर्म ’ द्वार समाप्त ॥

છે એટલે કે કપટ મય છે “ ણીયજણનિસેવિય ” જાતિ, કુળ આદિથી અધમ
એવી વ્યક્તિઓ દ્વારા સેવાયેલ છે “ નિસસ ” ક્રૂર-એટલે કે પ્રશ સાથી રહિત
છે અપ્રત્યય-અવિશ્વાસ ઉપત્ત કરનાર છે “ પરમસાદુગરહણિજ્જ ” પરમસાધુ-
તીર્થંકરો દ્વારા નિધ છે “ પરપીડાકરણ ” ખીજાને પીડા પહોચાડનાર છે
“ પરમકિણ્હલેસસહિય ” અત્યંત મલિન આત્મ પરિણતિથી યુક્ત છે “ દુગ્ગઙ્ગ
વિણિવાયવહૂણ ” દુર્ગતિનું વધારનાર છે “ ભવપુણમ્ભવકર ” ફરી ફરીને
જન્મ લેવડાવનાર છે “ ચિરપરિચય ” ચિરપરિચિત્ એવું તે જીવોની સાથે
અનેક જીવોની પરપરા સુધી રહેનાર છે “ અણુગય ” દરેક જીવમા સાથે
ચાલનાર છે “ દુરત ” તેનું ફળ દુરન્ત છે-કટુ ફલ દેનાર છે “ તિવેમિ ”
આ વાક્યનો અર્થ આવી ગયો છે (સૂ-૧૬)

આ રીતે હિંસાદિ પચાસવ દ્વારમા પ્રાણવધ નામનું

ખીજું આસવ (અધર્મ) દ્વાર સમાપ્ત થયું

અથ તૃતીયમધ્યયનમ્ ।

વ્યાખ્યાત દ્વિતીયમધર્મદ્વાર સાપ્રત તૃતીયમારંભ્યતે-અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્વન્યઃ । દ્વિતીયાધર્મદ્વારે યાદ્યગનામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમલીકવચનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અગ્રીકવચન ચ અદત્તાઽઽદાયિનો વચ્ચન્તેવેતિહેતો, મૂત્રક્રમનિર્દેશાનુસારાચ્ચ
મૃપાયાદાનન્તરમુચિતપ્રાપ્તમદત્તાદાન સ્વરૂપનામાદિનિર્દેશપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે, તત્ર
પૂર્વયોરધર્મદ્વારયોરિવાસ્યાપિ ' યાદશ્ચ ૧, યન્નામ ૨, યયા ચ કૃત ૩, યત્ફલ
દદાતિ ૪, યે ચ કુર્વન્તિ ૫, ઇતિ પશ્ચભિરન્તર્ઘારૈર્નિરૂપણ ચિકીર્ષુરાદૌ ક્રમપ્રાપ્ત
' યાદશ ' ઇતિ દ્વાગ્માશ્રિત્ય અદત્તાદાનસ્વરૂપ નિરૂપ્યતે-'જનૂ તદ્ય ચ' ઇત્યાદિ

તૃતીય આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર પ્રારંભ-

દ્વિતીય આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર કહા ગયા, અત્ર તૃતીય આશ્રવ
દ્વાર કી વ્યાખ્યા પ્રારંભ હોતી હૈ । ઇસ અધર્મદ્વાર કા પૂર્વ અધર્મદ્વાર કૈ
સાથ ઇસ પ્રકાર સે સંબંધ હૈ કિ-દ્વિતીય આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર મૈ
(યાદ્યગનામાદિ નિર્દેશ પૂર્વક) અલીક (ઝૂઠ) વચન કા સ્વરૂપ કહા હૈ સૌ
ઇસ અલીક વચન કૌ જૌ અદત્ત કૌ લેને વાલે વ્યક્તિ હોતે હૈ, વૈ હી
બોલતે હૈ તથા સૂત્રક્રમ નિર્દેશ મી ઇસા હી હૈ, ઇસલિયે મૃપાવાદ કૈ
અનન્તર ઉચિતરૂપ સે પ્રાપ્ત અદત્તાદાન કા સ્વરૂપ નામાદિ નિર્દેશપૂર્વક
ઇસ અધ્યયન મૈ કહા જાવેગા । જિસ પ્રકાર પૂર્વ દૌ આશ્રવ (અધર્મ)
દ્વારૌ કા સૂત્રકાર ને (યાદશ યન્નામ) ઇત્યાદિ પાંચ અન્તર્ઘારૌ દ્વારા
નિરૂપણ કિયા હૈ ઊસી તરફ સે વૈ ઇસ તૃતીય આશ્રવ (અધર્મ) દ્વાર
કા મી નિરૂપણ કરના ચાહતે હૈ ઇસલિયે વૈ સર્વ પ્રથમ ઇસમૈ ક્રમ
પ્રાપ્ત અદત્તાદાન કા (યાદશ) ઇસ દ્વાર કૌ લેકર સ્વરૂપ કહતે હૈ—

ત્રીજા આશ્રવ-અધર્મ દ્વારનો પ્રારંભ

ત્રીજા આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વારનું કથન પૂરું થયું, હવે ત્રીજા આશ્રવ
દ્વારનું વર્ણન શરૂ થાય છે આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર માથે
આ રીતે સંબંધ છે—ત્રીજા આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વારમાં “ યાદ્યગનામાદિ નિર્દે-
શપૂર્વક ” અલીક વચનનું સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામાં આવ્યું છે પણ તે અલીક
વચનનો અદત્ત હીધેલું લેનારી વ્યક્તિ જ બોલે છે, તથા સૂત્રક્રમ નિર્દેશ
પણ એવો જ છે, તે દારણે મૃપાવાદનું નિરૂપણ કર્યા પછી ચોખ્ખી રીતે અદ-
ત્તાદાનનું સ્વરૂપ નામાદિ નિર્દેશ પૂર્વક આ અધ્યયનમાં બતાવવામાં આવશે
જેમ આગળના બે આશ્રવ-(અધર્મ) દ્વારોનું સૂત્રકારે “ યાદશ યન્નામ ” ઇત્યદિ
પાંચ અન્તર્ઘારો દ્વારા નિરૂપણ કર્યું છે, એજ પ્રમાણે તેઓ આ ત્રીજા આશ્રવ
(અધર્મ) દ્વારનું પણ નિરૂપણ કરવા માગે છે તેથી તેઓ સૌથી પહેલાં કેમ પ્રમાણે

—‘ હરદહ ’ત્યાદિ—

‘ હરદહમરણભયકલુપતાસગપરસતગગિજ્ઞલોભમૂલ ’ હરદહમરણભયકલુપતાસગ
પરસત્કલુપલોભમૂલ, તત્ હર=હરણ કુરુ, દહ=ગૃહાદિક પ્રજ્વાલય, ઇતિ વચન-
દ્વય હરણદાહત્રિપયે ચોરાણા પ્રવૃત્તિનારથમ્ । તથા મરણ મૃત્યુઃ ભય=ભીતિઃ
કલુપ ચ=પાપ તૈશ્વમય-મયજનનમ્પરૂપ યસ્ય તત્તથા, તત્ત્વ પરસત્કલુપલોભ
મૂલ ચ=પરસત્કે=પરકીયધને ગૃહ્ણિઃ=ગ્રામક્તિઃ તથા લોભશ્ચ-રૌદ્રયાનયુક્તા-
મૂર્છા મૂલ=કારણ યસ્ય તત્તથા ‘ કાલવિસમસસિય ’ કાલવિપ્પમમશ્રિત ચ=કાલઃ
અર્ધરાત્રાદિલક્ષણઃ, વિપમાણિ પર્વતાદિદુર્ગમસ્થાનાનિ તૈઃ સશ્રિતમ્ = આશ્રિત
યત્તત્તથા । एतादृशेषु निर्जनस्थानेषु चाराः प्रायो निवसन्ति । तथा ‘ अहोञ्छि

ત્તાદાન હૈ । यह कैसा होता है ? इस पर कहते हैं—यह अदत्तादान (हर-
दहमरणभयकलुप्ता तासणपरसगगिज्ज्ञलोभमूल) (हर) इसके द्रव्य का
हरण करलो, (दह) दह्मके गृहादिक को जलाडो, (मरण) इसे मार
डालो, इत्यादि रूपसे (भय) भय दिखाकर दूसरो के द्रव्यादि का हरण
करना, (कलुप्ता) एक दूसरों में कलुपभाव जगाकर उनके द्रव्यादिक
को ले लेना, (तासण) इत्यादि अनेक प्रकारसे त्रास पहुँचाना, तथा (पर-
सतग) दूसरो के वन म (गिज्ज्ञ) आराक्ति रखना तथा (लोभ)
रौद्रध्यानसे युक्त इसमें मूर्छाभाव रखना, ये सब (मूल) अदत्तादान
के मूल कारण हे । (कालविसमससिय) अर्धरात्र आदि काल तथा
विपम-पर्वतादि दुर्गमस्थान, इनके द्वारा यह अदत्तादान सश्रित-
आश्रित होता है—वनता है, तात्पर्य इसका यह है कि जो अदत्तादान-
चोरी-किया करते हैं, वे चोर प्रायः अर्धरात्रि के समय में निकलते हैं,
एव पर्वतादि दुर्गम स्थानों पर छिपे रहते हैं, इस अपेक्षा काल और

તો તેના જવાબમાં કહે છે—તે અદત્તાદાન “ હરદહમરણભયકલુપતાસગ
પરસતગગિજ્ઞલોભમૂલ ” “ હર ” “ આ વ્યક્તિનું દ્રવ્ય પડાવી દે ” “ દહ ”
તેના ઘર આદિને બળગાવી દે, “ મરણ ” તેને મારી નાખે ” ઇત્યાદિ રીતે
“ ભય ” ભય બતાવીને અન્યનું દ્રવ્ય વસ્ત્ર આદિ હરી લેવું, “ કલુપ ” એક બીજા
વચ્ચે કલેરા જગાડીને તેમના દ્રવ્ય આદિને લઈ લેવું, “ તાસણ ” ઇત્યાદિ રીતે
ત્રાસ પડેાચાડવો, તથા “ પરસતગ ” બીજાના ધનમાં “ ગિજ્ઞ ” આમંત્રિ
રાખવી તથા “ લોભ ” રૌદ્રધ્યાનથી યુક્ત મૂર્છાભાવ તેમાં રાખવો તે બધા
“ મૂલ ” અદત્તાદાનના મૂળ કારણો છે “ કાલવિસમસસિય ” અર્ધરાત્રી આદિ
કાળ તથા પર્વતાદિ દુર્ગમસ્થાન તે અદત્તાદાનના આશ્રય સ્થાનો છે, એટલે કે
જે અદત્તાદાનચોરી કરે છે તે ચોર સામાન્ય રીતે મધ્યરાત્રે ચોરી કરવા
નીકળે છે, અને પર્વતાદિ દુર્ગમ સ્થાનોમાં છુપાઈ રહે છે, તે અપેક્ષાએ કાળ

અતઃપત્યાણપત્યોદમદ્ય ' અધોઽચ્છિન્નતૃણપ્રસ્થાન-પ્રસ્તોત્પત્તિક = અયોગતી
 અચ્છિન્નતૃણાના=વિષયલોલુપાના યત્ ગસ્થાન=ગમન તત્ર પ્રસ્તોત્રી=પ્રવર્તિકા
 મતિઃ = બુદ્ધિરસ્તિ યસ્મિન્નદત્તાદાને તત્તથા નરકાયયોગતિકારણમિત્યર્થઃ,
 'અકિત્તિકર' અકીર્તિકરમ્=અયશસ્સરમ્ ' અણજ્ઞ=અનાર્યમ્ = અનાર્યોચરિત્વાત્
 અથવા અન્યાય=ન્યાયવર્જિત ન્યાયરહિતમિત્યર્થઃ ' ટિમતરવિધુરસત્તમગ્ગજ-
 ઉસ્સવમત્તપ્પમત્ત-પમુત્તવચ્છનાવિવચ્છ-ધાયણપરાણિદુય-પરિણામત્તવરજણવદ્દુમય'
 છિદ્રાન્તરવિધુરગ્ગ્યમનમાર્ગણોત્સવગત્તપ્રમત્તપ્રસુત્તવચ્છનાઽઽક્ષેપગધાતનપરાનિમૃતપરિ-
 ણામત્તસ્સરજણવદ્દુમત્ત=તત્ર ટિદ્ર = ' કેન માર્ગેણ ગન્તવ્ય ' મિત્થાદિકમ્,
 અન્તરમ્=અવસર જનાના નિદ્રાદિલક્ષણઃ, વિધુર = અપાયઃ કષ્ટપ્રાપ્ત્યાદિલક્ષણઃ,

વિષમસ્થાનોં કો અદત્તાદાન વા કારણ કહા ગયા હૈ । (અહો
 અચ્છિન્નતૃણપત્યાણપત્યોદમદ્ય) જિન વ્યક્તિયોં કી વિષય તૃણા
 ઊંચ નહીં હોતી હે એસે વ્યક્તિ હી અધોગતિ મેં પહુંચાને વાલી અપની
 બુદ્ધિ કે દ્વારાં હસ અદત્તાદાન મેં પ્રવૃત્તિ કરતે હે, અતઃ. અધોગતિ મેં
 ગમન કી કારણભૂત જો વિષય લોલુપોં કી મતિ હૈ વહ મીં હસ અદ
 ત્તાદાન કી ઇક કારણભૂત હૈ । યહ અદત્તાદાન (અકિત્તિકર) અયશ
 કારક હૈ । (અણજ્ઞ) અનાર્યો દ્વારા હી આચરિત ક્રિયા જાતા હૈ હસ
 લિયે અનાર્યરૂપ હૈ । અથવા નીતિમાર્ગ સે વિરુદ્ધ હોને કે કારણ અન્યાય
 હૈ । (છિદ્ર) હસ અદત્તાદાનકો કરને વાલે વ્યક્તિ હસ વાતકી ગવેષણામેં
 રહતે હૈં કિ હમે હસ કામકો કરનેકેલિયે કિસ માર્ગસે હોઝર જાના ચાહિયે
 તથા (અતર) અન્તર કી-કૌનસા અવસર હસ કામકો સિદ્ધ કરનેવાલા
 હોગા હસ તરહકે મનુષ્યોંકે નિદ્રાદિરૂપ સમયકી (વિધુર) વિધુરકી-કષ્ટ

અને હુર્ગમસ્થાનોને અદત્તાદાનના આશ્રયસ્થાનો બતાવ્યા છે ' અહો અચ્છિન્ન
 તૃણપત્યાણપત્યોદમદ્ય " જે લોકોની વિષય વાસના નષ્ટ થતી નથી એવા
 લોકો જ અધોગતિમા લઈ જનાર પોતાની બુદ્ધિ દ્વારા, આ અદત્તાદાનમા
 પ્રવૃત્ત રહે છે, તેથી અધોગતિમા ગમન કરવાના કારણરૂપ વિષય લોલુપોની જે
 મતિ છે તે પણ આ અદત્તાદાન માટે કારણરૂપ છે, ને અદત્તાદાન " અકિત્તિ
 કર " અપકીર્તિ અપાવનાર છે, " અણજ્ઞ " અનાર્યોદ્વારા સેવાતુ હોવાથી
 અનાર્યરૂપ છે, અથવા નીતિ માર્ગથી વિરુદ્ધ હોવાથી અન્યાયયુક્ત છે
 " છિદ્ર " આ અદત્તાદાન સેવનાર વ્યક્તિ એ વાતની શોધમા
 રહે છે કે આ કામ કરવા માટે આપણે કયા માર્ગે થઈને જવું જોઈએ
 તથા " અતર " અતરની-કયો વખત આ કામને સિદ્ધ કરવા માટે અનુકૂળ
 થશે તેની શોધમા રહે છે આ રીતે માણસના નિદ્રાદિરૂપ સમયની શોધમા

વ્યસન=રાજાદિ કૃતોપદ્રવઃ, इत्येतेषा मार्गणम्=गवेपणम्, तथा उत्सवेषु=विवा-
हादिलक्षणेषु मत्ताना=मद्यपानाद्यासक्ताना अत एव प्रमत्तानाम्=असावधानानां
प्रसुप्ताना=निद्रिताना च वचन=वनापहरण, तथा आक्षेपण=मन्त्रौष्यादिभिश्चित्त
विक्षेपकरण, प्रातन=प्राग्विवेकीकरण यस्यादिभिस्ताडन वा तेषु परा=
तथा अनिभृतः=अशान्त परिणाम = अन्तःकरणवृत्तिविशेष. येषा ते तथा, ते
च ते तस्कराजना. चारुणास्तैर्बहुमत=मातिशयमादृत स्वीकृत यत्तत्तयाभूतमद-
त्तादानम् 'अकलुग' अकलुण=द्वयारहित निर्दयजनप्रवर्तितत्वात् 'रायपुरिस

પ્રાપ્તિ આદિસ્વ આપત્તિ કી, (વસન) વ્યસન કી-રાજા આદિ દ્વારા
કૃત ઉપદ્રવ કી-મી (મગ્ગણ) ગવેપણા-તાક મેં તત્પર રહતે હે । તથા
(ઉત્સવ) વિવાહ આદિ ઉત્સવોં મેં (મત્તપ્પમત્ત) મદ્યપાન આદિ કે
કર લેને સે અમાવધાની મે પહે હુમ મસ્ત વ્યક્તિયોં કે તથા (પ્રસુત્ત)
નિદ્રા મેં પહે હુમ વ્યક્તિયોં કે (વચન) વનાપહરણ કરને મે (આશ્વિ-
વણ) આક્ષેપણમત્ર ઔષધિ આદિદ્વારા ચિત્ત કે વિક્ષેપ કરને મેં, તથા
(ઘાયણપર) પ્રાણોં કે અપહરણ કરને મે અથવા અપને મિત્રાદિકોં
દ્વારા તાડન કરવાને મેં તત્પર રહા કરતે હે । (અઙ્ગિહુયપરિણામ)
ઇસ અદત્તાદાનસ્વ કુકૃત્ય કો કરને વાલેં જીવોં કે પરિણામ-અન્તઃ
કરણ કી વૃત્તિ-અશાન્ત રહતી હે । (તસ્કરજનબહુમય) યહ અદત્તાદાન
ચોર વ્યક્તિયોં દ્વારા હી સાતિશયરૂપ મેં આદૃત હુઆ હે । અતઃ યહ
દુષ્કર્મ (અકલુણ) નિર્દયજનો દ્વારા પ્રવર્તિત હોને કે કારણ સ્વયં દયા
રહિતરૂપ હે ઇમીલિયે (રાયપુરિસરક્ષિય) રાજપુરુષોં દ્વારા યહ નિપિદ્ધ

રહે છે “વિધુર” વિધુરની-૩૪ પ્રાપ્તિ આદિ રૂપ આપત્તિની, “વસન” વ્યસ-
નની રાજાદિ દ્વારા ઉગાયેલ ઉપદ્રવની-પણ “મગ્ગણ” ગવેપણા-તપાસને માટે
તૈયાર રહે છે તથા “ઉત્સવ” વિવાહ આદિ ઉત્સવોમા, “મત્તપ્પમત્ત” મદ્ય-
પાન આદિ કરીને અમાવધાનીમા રહેલ મસ્ત વ્યક્તિઓના તથા “પ્રસુત્ત”
નિદ્રામા પડેલ વ્યક્તિઓના “વચન” ધનને હરી લેવાને “આશ્વિવણ”
આક્ષેપણ-મત્ર ઔષધિ આદિ દ્વારા ચિત્તમા વિક્ષેપન કરવાને તથા “ઘાયણ
પર” પ્રાણો હરી લેવાને અથવા પોતાના મિત્રાદિ દ્વારા માર મગવવાને તત્પર
રહે છે “અઙ્ગિહુયપરિણામ” તે અદત્તાદાનરૂપ કુકૃત્ય કરનાર જીવોની
મનોવૃત્તિ અશાન્ત રહે છે “તસ્કરજનબહુમય” આ અદત્તાદાન ચોર લોકો
દ્વારા જ વધારે પ્રમાણમા સેવવામા આવે છે તેથી તે દુષ્કર્મ “અકલુણ”
નિર્દય જનો દ્વારા આચરિત હોવાને કારણે દયારહિત હોય છે તેથી “રાય

અથ યન્નામેતિદ્વારમાશ્રિયાદત્તાદાનમ્પ નામાન્યાઃ 'તસ્સ ય' ઇત્યાદિ—
 મૂલ્ય—તસ્સ ય નામાણિ ગોણાણિ હુતિ તીસ । તં જહા-
 ચોરિકં ૧, પરહુડ ૨, અદત્ત ૩, કૂરિકંડ ૪, પરલાભો ૫, અસ-
 જમો ૬, પરધળમ્મિ મેહી ૭, લોલિકં ૮, તક્કરત્તણં તિય ૯,
 અવહારો ૧૦, હત્થલહુત્તણં ૧૧, પાવકમ્મકરણં ૧૨, તેણિસ્કં
 ૧૩, હરણવિપ્પણાસો ૧૪, આદ્યણા ૧૫, લુપ્પણા ધણાણં ૧૬,
 અપચ્ચઓ ૧૭, ઓવીલો ૧૮, ઓક્કલેવો ૧૯, વલ્લેવો ૨૦,
 વિકલ્લેવો ૨૧, કૂડયા ૨૨, કુલમસી ય ૨૩, કૂલા ૨૪, લાલ-
 પ્પણં પત્થણા ય ૨૫, આસસણા ય વસણં ૨૬, ઇચ્છામુચ્છાય
 ૨૭, તપ્પહામેહી ય ૨૮, નિયઢિકમ્મ ૨૯, અવરોચ્છ ત્તિ વિ ય
 ૩૦ । તસ્સ ઇયાણિ એવમાઈણિ નામધેજ્ઞાણિહુતિ તીસ અદિ-
 ણાદાણસ્સ પાવકલિકલુસકમ્મવહુલસ્સ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—'તસ્સ ય' તસ્ય ચ પૂર્વોપદર્શિતસ્વરૂપસ્યાદત્તાદાનસ્ય 'ગોણાણિ'
 ગોણાણિ=ગુણનિષ્પન્નાણિ નામાણિ વક્ષ્યમાણાણિ 'તીસ' ત્રિંશત્ 'હુતિ' ભવન્તિ

કરના સવ ચોરી છે । ઇસ ચોરી મેં જિતને મી નિમિત્ત કારણ પડતે છે
 વે મી કારણ મે કાર્ય કે ઉપચાર સે ચોરી રૂપ હી માને જાતે છે । દૂસરે
 કી મૂલી હુઈ, ચિસરી હુઈ, પડી હુઈ, ધરોહરરૂપ મેં રગ્વી હુઈ, વસ્તુ કા
 હરણ કરના ઓર દના લેના, યે સવ અદત્તાદાન કે હી પ્રકાર છે । યહ
 અદત્તાદાન હિંસાદિ પાપોં કી તરહ ચોરો કે લિયે નરકાદિ દુર્ગતિયોં મેં
 ગમન કા કારણ હોતા છે ॥સૂ. ૧॥

અવ સૂત્રકાર "યન્નામ" ઇસ દ્વાર કો લેકર અદત્તાદાન કે નામોં

ચોરી કહેવાય છે તે ચોરીના જેટલા નિમિત્તો હોય છે તેમને પણ કારણમા
 કાર્યના ઉપચારથી ચોરી રૂપ જ માનવામા આવે છે બીજાની ભૂલથી પડી
 રહેલી, ભૂલાઈ ગયેલી, પડી રહેલી, અને થાપણ રૂપે મૂકેલી વસ્તુનું હરણ કરવું
 કે તેમને પચાવી પાડવી તે બધા અદત્તાદાનના જ પ્રકાર છે તે અદત્તાદાન
 હિંસાદિ પાપોની જેમ ચોરોને નરકાદિ દુર્ગતિયોમા ગમન કરાવનાર હોય છે ॥સૂ. ૧॥

હવે સૂત્રકાર "યન્નામ" એ દ્વારને લઈને અદત્તાદાનના નામો પ્રગટ

‘ ત જહા ’ તાનિ યથા—‘ ચૌરિક્ય ’ ચૌરિક્ય=ચોરણ ચોરિમા સૈવેતિ ચૌરિક્ય ૧,
‘ પરહ્ડ ’ પરહત=પરસ્માત્=અન્યસ્માત્ હતમ્=અનુમતિ વિનૈવ ટહીતમ્ ૨, ‘ અદત્ત ’
કેનાપિ ન દત્તમદત્ત ૩, ‘ કૂરિક્ક ’ કૂરિક્કૃત-કૂરિભિ.=નિર્દયૈ. કૃત ૪, ‘ પર-
લાભો ’ પરદ્રવ્યસ્ય લાભ. ૫, ‘ અસજમો ’ અસયમ:=આસ્યાનુષ્ઠાન ૬, ‘ પરધનમ્મિ
મેહી ’ પરધને ટદ્ધિ:=પદ્ધવ્યાઽભિકાદ્ધ્યા ૭, ‘ લોલિક્ક ’ લાલ્ય=લોલુપત્વ ૮,
‘ તકરત્તણ ’ તસ્કરત્તમિતિ ચ ‘ અવહારો અપહાર =અપહરણ પરધનમ્ ૧૦, ‘ હત્થલહુત્તણ ’
હસ્તલાઘુન્વ હસ્તયાત્રવ-હસ્તચાપત્યમ્, અથવા હસ્તયો લઘુન્વ = પરદ્રવ્યાપઠ-
રણકુત્સિતત્વાત્ નોયત્વ ૧૧, ‘ પાવકમ્મકરણ ’ પાપકર્મકરણ=પાપાનુષ્ઠાન ૧૨,
‘ તેણિક્ક ’ સ્તૈન્ય=સ્તેનસ્ય=ચોરસ્ય કર્મ ચૌર્યમિત્યર્થ ૧૩, ‘ હરણવિપ્પણાસો ’
હરણવિપ્પણાશ =હરણેન પરદ્રવ્યહરણેન વિપ્પણાશ=નાશઙ્ગત્યર્થ. ૧૪, ‘ આહ્યણા ’
આદાનમ્=અનનુમતપરદ્રવ્યપ્રણ ૧૫, ‘ લુપણા ણણા ’ ણનાના લોપના=પરદ્રવ્ય

કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘ તસ્સ ય નામાણિ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ય) પૂર્વ મે ઉપદર્શિત સ્વરૂપવાલે ડસ અદત્તાદાન
કે (ગોણાણિ) ગુણનિપ્પન્ન (નામાણિ) નામ (તીસ હુતિ) ૩૦ તીસ
હોતે હૈ (તજહા) વે હમ પ્રકાર હૈ—(ચૌરિક્ક) ચૌરી ૧, (પરહ્ડ) પર-
હત-વિના અનુમતિ સે દૂસરે સે વસ્તુ લેના ૨, (અદત્ત) અદત્ત ૩,
(કૂરિક્ક) કૂરિક્કૃત ૪, (પરલાભો) પરલાભ ૫, (અસજમો) અસ-
યમ ૬, (પરધનમ્મિ મેહી) પરધનગૃદ્ધિ ૭ (લોલિક્ક) લોલુપતા ૮,
(તકરત્તણ) તસ્કરતા ૯ (અવહારો) અપહાર ૧૦, (હત્થલહુત્તણ)
હસ્તલાઘવ ૧૧, (પાવકમ્મકરણ) પાપકર્મકરણ ૧૨, (તેણિક્ક)
સ્તૈન્ય ૧૩, (હરણવિપ્પણાસો) હરણવિપ્પણાશ ૧૪, (આહ્યણા) આદાન ૧૫,

ડે ડે—“ તસ્સ ય નામાણિ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તસ્સ ય ” આગળ યતાવવામા આવેલ સ્વરૂપ વાળા અદ-
ત્તાદાનના ‘ ગોણાણિ ’ ગુણ પ્રમાણે ‘ નામાણિ ’ નામ “ તીસ હુતિ ” ત્રીસ
છે “ ત જહા ” તે આ પ્રમાણે ડે—(૧) “ ચૌરિક્ક ” ચૌરી (૨) “ પરહ્ડ ”
પરહત-અનુમતિ વિના ખીનની વસ્તુ લેવી, (૩) “ અદત્ત ” અદત્ત, (૪) “ કૂરિ-
ક્ક ” કૂરિક્કૃત, (૫) “ પરલાભો ” પરલાભ, (૬) “ અસજમો ” અસયમ,
(૭) “ પરધનમ્મિ મેહી ” પરધનગૃદ્ધિ-પરધનની લાલમા, (૮) “ લોલિક્ક ”
લોલુપતા, (૯) “ તકરત્તણ ” તસ્કરતા, (૧૦) “ અવહારો ” અપહાર, (૧૧)
“ હત્થલહુત્તણ ” હસ્તલાઘવ, (૧૨) “ પાવકમ્મકરણ ” પાપકર્મકરણ, (૧૩)
“ તેણિક્ક ” સ્તૈન્ય, (૧૪) “ હરણવિપ્પણાસો ” હરણવિપ્પણાશ, (૧૫) “ આહ્ય-
ણા ” આદાન

વિચ્છેદઃ ૧૬, ' અપ્પચ્ચઓ ' અપ્રત્યયઃ=અવિશ્વાસઃ-અવિશ્વાસોત્પાદકત્વાત્ ૧૭,
 ' ઓવીલો ' અવપીડ = પીડાજનક ૧૮, ' ઓક્ષેવો ' અવક્ષેપઃ=પદ્ધવ્યવિચ્છેદઃ
 ૧૯, ' ઉક્ષેવો ' ઉત્ક્ષેપઃ=પરહસ્તાત્ દ્રવ્યસ્ય નિર્ગમન ૨૦, વિક્ષેવો ' વિક્ષેપઃ=
 પરધનસ્ય પ્રક્ષેપણ ૨૧, ' કૂડયા ' કૂટતા=દ્રવ્યસ્ય કૂટ તુલાદિમિશ્રણાકરણ ૨૨,
 ' કુલમસી ' કુલમપી=કુલકલ્લજનક ચ ૨૩, ' કાયા ' કાક્ષા=પરદ્રવ્યતૃષ્ણા ૨૪,
 ' લાલપ્પણ પત્થણા ય ' લાલપન પ્રાર્થના ચ=ઝાઝન=ગર્હિતજલ્પન, પ્રાર્થના ચ
 ચૌર્યક્રતે તદપલાપકપચનવિન્યાસ, પ્રાર્થનારૂપાણિ રચનાનિ જલ્પન્તિ ચૌરાઃ ૨૫,
 ' આસસણા ય વસણ ' આશસનાચ વ્યસન-આશસના=વિનાશઃ-વિનાશહેતુત્વાત્,
 વ્યસન=સર્વાપતિકારણમ્ ૨૬, ' ઇચ્છામુચ્છા ય ' ઇચ્છામૂર્છા ચ=તત્રેચ્છા પર
 ધનાભિલાપઃ, મૂર્છા ચ=તત્રેય ગાઢાભિપ્રયજ્ઞસ્વા ૨૭, ' તળ્હાગેહી ય ' તૃષ્ણા
 ગૃદ્ધિશ્ચ, તત્ર તૃષ્ણા=અપ્રાપ્તદ્રવ્યસ્ય પ્રાપ્તિચ્છા, ગૃદ્ધિશ્ચ=પ્રાપ્તમ્વાડવિનાશેચ્છા અદ
 ત્તાદાનસ્ય હેતુકત્વાત્ તૃષ્ણાગૃદ્ધિત્યુચ્યતે ૨૮ ' નિયડિકમ્મ ' નિકૃતિકર્મ=
 નિકૃતિ = કપટ તત્કર્મ=કપટકાર્યમિત્યર્થઃ ૨૯, ' અવરોચ્છત્તિ વિ ય ' અપરોક્ષ
 મિતિ ચ=ન વિધન્તે પરેપામ્ અક્ષીણિ દ્રષ્ટવ્યતયા યત્ર ચૌરકર્મણિ તદપરોક્ષમ્=
 અપ્રત્યક્ષસમ્પાદ્યમિત્યર્થઃ ૩૦ । તસ્ય ' પાવકલિકલુસકમ્મવહુલસ્સ ' પાવકલિકલુપ

(ધનાણ લુપણા) ધનની લોપના ૧૬, (અપ્પચ્ચઓ) અપ્રત્યય (અવિશ્વાસ) ૧૭,
 (ઓવીલો) અવપીડ-દુઃસ્વરૂપ ૧૮, (ઓક્ષેવો) અવક્ષેપ ૧૯, (ઉક્ષેવો)
 ઉત્ક્ષેપ ૨૦, (વિક્ષેવો) વિક્ષેપ ૨૧, (કૂડયા) કૂટતા ૨૨, (કુલમસી
 ય) કુલમપી ૨૩, (કાયા) કાક્ષા ૨૪, (લાલપ્પણ પત્થણા ય) લાલ
 પન પ્રાર્થના ૨૫, (આસસણા ય વસણ) આશાસના વ્યસન ૨૬, (ઇચ્છા
 મુચ્છા ય) ઇચ્છામૂર્છા ૨૭, (તળ્હાગેહી ય) તૃષ્ણાગૃદ્ધી ૨૮, (નિયડિકમ્મ)
 નિકૃતિકર્મ (કપટકરણ) ૨૯, (અવરોચ્છત્તિ વિ ય) તથા અપરોક્ષ ૩૦ ।
 (તસ્સ) ઇસ તરહ હસ કિ જિસ મે (પાવકલિકલુસકમ્મવહુલસ્સ)

યણા ” આદાન, (૧૬) “ ધનાણ લુપણા ” ધનની લોપના, (૧૭) “ અપ્પચ્ચઓ ”
 અપ્રત્યય, (૧૮) “ ઓવીલો ” અવપીડ, (૧૯) “ ઓક્ષેવો ” અવક્ષેપ (૨૦)
 “ ઉક્ષેવો ” ઉત્ક્ષેપ, (૨૧) “ વિક્ષેવો ” વિક્ષેપ, (૨૨) “ કૂડયા ” કૂટતા (૨૩)
 “ કુલમસી ય ” કુલમપી, (૨૪) “ કાયા ” કાક્ષા (૨૫) “ લાલપ્પણ પત્થણા
 ય ” લાલપન પ્રાર્થના (૨૬) “ આસસણા ય વસણ ” આશાસના વ્યસન,
 (૨૭) “ ઇચ્છામુચ્છા ય ” ઇચ્છામૂર્છા, (૨૮) “ તળ્હાગેહી ય ” તૃષ્ણાગૃદ્ધિ, (૨૯)
 “ નિયડિકમ્મ ” નિકૃતિકર્મ, અને (૩૦) “ અવરોચ્છત્તિ વિ ય ” અપરોક્ષ
 “ તસ્સ ” આ પ્રમાણે કે જેમા “ પાવકલિકલુસકમ્મવહુલસ્સ ” પ્રાણાતિપાતાદિક
 પાપ, યુદ્ધ મિત્રદ્રોહ આદિરૂપ મલિન કર્મ વધારે પ્રમાણમા રહે છે

કર્મવહુલસ્ય=તત્ર પાપ=પ્રાણાતિપાતાદિક કલિ =યુદ્ધ કલુષાણિ=મલિનાનિ કર્માણિ=મિત્રદ્રોહાદિવ્યાપારરૂપાણિ વહુલાનિ=વહુનિ યત્ર તત્તથા તસ્ય ' આદિષ્ણાદાણસ્સ' અદત્તાદાનસ્ય 'અયાણિ' એતાનિ પૂર્વોક્તપ્રકારાણિ 'એવમાર્દણિ' એવમાદીનિ =ચૌરિકયાદીનિ 'તીસ' ત્રિંશત્ 'નામધેજ્જાણિ હુતિ' નામધેયાનિ ભવન્તિ ॥સૂ૦૨

પ્રાણાતિપાતાદિક પાપ, યુદ્ધ, મિત્રદ્રોહ આદિરૂપ મલિનકર્મ અધિકતા સે રહેતે હેં (અદિષ્ણાદાણસ્સ) અદત્તાદાન કે (અયાણિ એવમાર્દણિ) ચે ચોરી આદિ (તીસ) તીસ (નામધેજ્જાણિ) નામ (હુતિ) હૈ ।

ભાવાર્થ—ચોરી ચોરોં કા કર્મ હૈ ઇસલિયે અદત્તાદાન કા નામ ચૌરિક્ય હૈ ૧ । ચોરી કરને વાલા વિના પૂછે હી દસરોં કે દ્રવ્ય કા હરણ કરતે હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ પરહત હૈ ૨ । ચોરોં કો કોઈ બુલોંકર અપના દ્રવ્ય નહીં દેતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અદત્ત હૈ ૩ । નિર્દય બન-કર હી યહ કર્મ ક્રિયા જાતા હૈ સદય હોકર નહીં, ઇસલિયે ઇસકા નામ કૂરિકૃત હૈ ૪ । ઇસમેં દૂસરે કે દ્રવ્ય કા લાભ હોતા હૈ અતઃ યહ પર લાભ કહા જાતા હૈ ૫ । ઇસ કૃત્ય મે ન ઇન્દ્રિય સયમ રહતા હૈ ઔર ન પ્રાણિ સયમ હી, અત યહ અસયમ નામ સે કહા ગયા હૈ ૬ । ઇસમેં પરધન મે ગૃદ્ધિ હોતી હૈ અતઃ ઇસકા નામ પરધનગૃદ્ધિ હૈ ૭ । ઇસમેં પરિણામોં મેં લોલુપતા અધિક રહતી હૈ ઇસ લિયે ઇસકા નામ લૌલ્ય હૈ ૮ । તસ્કરો કા યહ ભાવ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ તસ્કરતા હૈ ૯ । ઇસમેં

દાણસ્સ ” અદત્તાદાનના “ અયાણિ એવમાર્દણિ ” તે ચોરી આદિ “ તીસ ” ત્રીસ “ નામધેજ્જાણિ ” નામ “ હુતિ ” છે,

ભાવર્થ—(૧) ચોરી કરવી તે ચોર લોકોનુ કાર્ય છે તેથી અદત્તાદાનનુ “ચૌરિક્ય” નામ છે (૨) ચોરી કરનારા પૂછ્યા વિના જ ખીંજના દ્રવ્યનુ હરણ કરે છે, તેથી તેનુ નામ “પરહત” છે (૩) ચોરોને ખોલાવીને કોઈ પોતાનુ દ્રવ્ય હેતુ નથી, તેથી તેનુ નામ “અદત્ત” છે (૪) નિર્દય બનીને જ ચોરી કરાય છે, સદય થઈને નહીં, માટે જ તેનુ નામ “કૂરિકૃત” (૫) તેમા ખીંજના દ્રવ્યનો લાભ (પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેથી તેને “લાભ” કહેવામા આવે છે (૬) આ કૃત્ય કરતી વખતે ઇન્દ્રિયોનો સયમ રહેતો નથી અને વાણી સયમ પણ રહેતો નથી તેથી તેનુ નામ “ અસયમ ” છે (૭) તે કરનારને પરધનમા ગૃદ્ધિ-લાલમા થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ પરધનગૃદ્ધિ ” છે (૮) તેનાથી પરિણામોમા-વૃત્તિમા લોલુપતા વધારે પ્રમાણમા રહે છે, તેથી તેનુ નામ “ લૌલ્ય ” છે (૯) તસ્કરોની તે વૃત્તિ લાવના હોય છે, તેથી તેનુ નામ

પરકે ધનકા અપહરણ હોતા હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ અપહરણ હૈ ૧૦ । પર દ્રવ્ય ચુરાનેમે હાથકી કુગલના કામ દેતી હૈ, અથવા પરદ્રવ્યકે ચુરાનેમે હાથમે લઘુતા-નીચતા આતી હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ હસ્તલઘુત્વ હૈ ૧૧ । યહ કૃત્ય પાપાનુષ્ઠાન સ્વરૂપ હૈ, ઇસલિયે ઇમકા નામ પાપકર્મકરણ હૈ ૧૨ । યહ ચોરોં કા કર્મ હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ સ્તેન્ય હૈ । ૧૩ । પર દ્રવ્યકે હરણ સે હરને વાલે કા નામ હી હો જાતા હૈ । ઇસલિયે ઇમકા નામ હરણ વિપ્રણાશ હૈ ૧૪ । દૂસરોં કી અનુમતિ વિના હી ધનાદિક કા ઇસમે ગ્રહણ હોતા હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ આદાન હૈ ૧૫ । દૂસરોં કે દ્રવ્ય કા હરણ કરના હી દ્રવ્ય કા વિનાશ કરના હૈ, ઇસલિયે ઇમકા નામ પરદ્રવ્યવિચ્છેદ હૈ ૧૬ । કોઈ બી પુરુષ ચોરોં કા વિશ્વાસ નહીં કરતા હૈ, અતઃ અવિશ્વાસ કા ઉત્પાદક હોને સે ઇમકા નામ અપ્રત્યય હૈ ૧૭ । દ્રવ્ય કા હરણ હો જાને સે દૂસરોં કો પીડા હોતી હૈ ઇસલિયે પર કો પીડા કા કારણ હોને સે ઇમકા નામ અવપીડ હૈ ૧૮ । પરદ્રવ્ય કા ઇસ ક્રિયા સે વિચ્છેદ હોતા હૈ, અર્થાત-ચોરે ગયે દ્રવ્ય કો ચોર યદ્યા તદ્યા સર્વ કર ડાલતે હૈ, યહી પરકે દ્રવ્ય કા વિચ્છેદ હૈ ઇસલિયે ઇમકા નામ પરદ્રવ્યવિચ્છેદ હૈ ૧૯ । સ્વામી કે હાથ સે યહ ચુરાયા હુઆ દ્રવ્ય નિકલ જાતા હૈ-ચોરોં કે હાથો મેં આ જાતા હૈ, ઇસલિયે ઇમકા

“તસ્કરતા” છે (૧૦) તેમા ધનનુ અપહરણ થાય છે, તેથી તેનુ નામ અપહરણ છે (૧૧) પરધન ચોગ્વામા હાથની કુશળતા ડામ આવે છે, અથવા પરધનની ચોરીથી હાથમા લઘુતા-નીચતા પ્રવેશે એ તેથી તેનુ નામ હસ્તલઘુત્વ છે (૧૨) તે કૃત્ય પાપકૃત્ય હોવાથી તેનુ નામ પાપકર્મકરણ છે (૧૩) પર ધનનુ અપહરણ કરવાથી હરનારનો નાશ થાય છે, તેથી તેનુ નામ હરણવિ પ્રણાશ છે (૧૪) બીજાની અનુમતિ વિના જ તેમા ધન આદિ ગ્રહણ કરાય છે, તેથી તેનુ નામ આદાન છે (૧૫) બીજાના દ્રવ્યનુ હરણ કરવુ એ જ દ્રવ્યનો વિનાશ ગણાય છે, તેથી તેનુ નામ પરદ્રવ્યવિચ્છેદ છે (૧૬) કોઈપણ માણસ ચોરાનો વિશ્વાસ કરતો નથી એ રીતે અવિશ્વાસ જનક હોવાથી તેનુ નામ “અપ્રત્યય” છે (૧૭) દ્રવ્યનુ અપહરણ થવાથી અન્યને પીડા થાય છે, તેથી ‘પીડાનુ કરણ હોવાથી તેનુ નામ “અવપીડ” છે (૧૮) પરધનનો આ ક્રિયાથી નાશ થાય છે, એટલે કે ચોર લોકો ગમે તે પ્રકારે તેને વેડફી નાખે છે આ પ્રમાણે તે દ્રવ્યનો વિચ્છેદ કરાવનાર હોવાથી તેનુ નામ “પરદ્રવ્ય વિચ્છેદ” છે (૨૦) તે ચોરાયેલુ દ્રવ્ય તેના માલિકના હાથમાથી આવ્યું-જઈને

નામ ઉત્ક્ષેપ છે ૨૦ । ચોર હસ દ્રવ્ય કો લે જાકર અસુરક્ષિત અવસ્થા મે
 ડધર ડધર રગ દેતે હે-ડાલ દેતે હે, હસલિયે હસના નામ વિક્ષેપ છે ૨૧ ।
 ચોર ચુરાકર જવ હસ દ્રવ્ય કો વિભાગ કરતે હ, તવ તુલાદિક સે કમતી
 વદતી તૌલતે હે-અકમા હિસ્સા નહી કરતે હે, હસલિયે હસના નામ
 કૂટતા હે ૨૨ । યદ્ કર્મ કરનેવાલોં કે કુલો કો કલક નગતા હે હસ-
 લિયે હસના નામ કુલમપી હે ૨૩ । અદત્તાદાનમે પરકે દ્રવ્યકો હરણ કરને
 મેં તૃષ્ણા રહતી હે હસલિયે હસના નામ કાક્ષા હે ૨૪ । ચોર ગર્હિત
 જલ્પના કરતે હ, અર્થાત્ ચોરી કરલેને પર મી “ મેંને ચોરી કી હે ” હસ
 વાત કો સ્વીકાર નહી કરતે પ્રત્યુત્તર ઉસે છુપાને કી હી ચેષ્ટા કરતે હે,
 તથા જિસ સમય યે ચોરી કરને કે લિયે ચલતે હે તો કિસી અપને દષ્ટ
 કી પ્રાર્થના કરકે હી ચલતે હે, હસલિયે હસના નામ લાલપન ઓર પ્રાર્થના
 હે ૨૫ । યદ્ કૃત્ય વિનાશ કા હેતુ હોને સે વિનાશરૂપ એવ સમસ્ત
 આપત્તિયોં કા કારણ હોને સે વ્યસનરૂપ હે હસલિયે હસના નામ આશ-
 સના એવ વ્યસન હે ૨૬ । પરધન કે હરણ કરને કી અભિલાષા હસમે
 વની રહતી હે હસલિયે હસના નામ ઇચ્છા, તથા પર કે વન કો હરણ
 કરને કે લિયે હસમે અત્યંત મૂર્છાભાવ હોતા હે હસલિયે હસના નામ
 મૂર્છા હે ૨૭ । અપ્રાપ્ત દ્રવ્ય કી પ્રાપ્તિ કી વાઙ્મતિ તથા પ્રાપ્ત દ્રવ્ય કી
 અવિનાશેચ્છા, યે દોનોં અદત્તાદાન કા હેતુ હ-હસલિયે હસના નામ

ચોરીના હાથમા બંધ છે, તેથી તેનું નામ ઉત્ક્ષેપ છે (૨૧) ચોર તે દ્રવ્યને
 ચોરી જઈને અસુરક્ષિત હાલતમા ગમે ત્યાં મૂકી દે છે તેથી તેનું નામ વિક્ષેપ
 છે (૨૨) ચોર ચોરી કર્યા પછી જ્યારે તેના ભાગ પાડે છે ત્યારે ત્રાજવા
 આદિથી વવારે કે ચોર તોલે છે-એક મગ્યા ભાગ પાડતા નથી, તેથી તેનું
 નામ કૂટતા છે (૨૩) આ કૃત્ય કરનારના કુળને કલક લાગે છે, તેથી તેનું
 નામ કુલમપી છે (૨૪) અદત્તાદાન મહણ કરવામા ખીજનું દ્રવ્ય હરી લેવાની
 તૃષ્ણા રહે છે, તેથી તેનું નામ કાક્ષા છે (૨૫) ચોર ગાહિત જલ્પના કરે છે
 એટલે કે ચોરી કર્યા પછી પણ પોતે ચોરી કરી છે, તે વાતનો સ્વીકાર કરતો
 નથી, પણ તેને શપાવવાનો પ્રયત્ન કરે છે, તથા જ્યારે તેઓ ચોરી કરવા
 ઉપડે છે ત્યારે પોતાના ડોલ ઇષ્ટ દેવની પ્રાર્થના કરીને જ બંધ છે તેથી તેનું
 નામ લાલપન અને પ્રાર્થના છે (૨૬) તે કૃત્ય વિનાશનું કારણ હોવાથી વિના-
 શનુરૂપ અને સઘળાં આપત્તિયોનું કારણ હોવાથી વ્યસનરૂપ છે, તેથી તેનું નામ
 આશસના અને વ્યસન છે (૨૭) તે કૃત્ય કરનારને પરધનનું હણ કરવાની
 અભિલાષા રહે છે, તેથી તેનું નામ ઇચ્છા તથા પારડાનું ધન મહણ કરવાની

‘ અહિમરા ’ અભિમરાઃ=ધનાદિલોભેન મરણાભિમુગ્ધા, મરણભયરહિતા ઇત્યર્થ, અથવા ચૌર્યાભિમુગ્ધાઃ સન્ત. પરાન્ મારયન્તિ એ તે તથા ઇદાન્તર્ભાવિત્ત્વપર્ય, ‘ અણમજગા ’ ઋણમજગા=ઋણ મજન્તિ=ન દદતિ એ તે તથા ‘ મગ્ગસન્ધિયા ’ મગ્ગસન્ધિકાઃ=મગ્નઃ સન્ધિઃ=મિત્રાદિસ્નેહો યસ્મે તથા ઇદ્વજનમેમવર્જિતા ‘ રાયદુઢ્ઢગારી ’ રાજદુષ્ટકાગ્નિઃ=રાજનીતિતિલ્લિધાચરણાઃ ‘ વિસયનિચ્છલોગવજ્ઞા ’ વિસયનિસિપ્તલોકવાયા =વિપયાત્=જનપદાત્ નિસિપ્તા =નિઃકામિનાં અત એવ લોકવાયાઃ=જનવહિર્ભૂતા ‘ ઉદ્દહગગામઘાયગપુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વમેયગા ’ ઉદ્દોહક ગ્રામઘાતક-પુરઘાતક-પથિઘાતક-ડડ્ડીપકતીર્થમેદકા =તત્ર ઉદ્દોહકાથ=હિંસકા ગ્રામઘાતકા.=ગ્રામનાશકા, પુરઘાતકા=નગરવિધ્વસકાઃ પથિ

એ પરદ્રવ્ય મેં વિશેષ લોલુપ હોતે હેં । (અહિમરા) ધનાદિક કે લોભ મેં પડકર એ મરણ કે બી અભિમુગ્ધ રહતે હે-ઠન્હેં મરણ કા ભય નહીં હોતા હે । અથવા ચૌર્ય કર્મ મેં પ્રવૃત્તિ કરને પર દુશ્મનોં કો બી ઉમ્મ સમય વાધા ઢાલને પર માર ઢાલતે હેં । (અણમજગા) હનકે ઝપર કિસી કા કર્જા હો તો બી એ ઉસે નહીં દેતે હેં । (મગ્ગસન્ધિયા) એ અપને ઇષ્ટ મિત્રાદિકોં સે બી પ્રેમ નહીં કરતે હેં । ઉન પર સ્નેહ કરને સે અથવા ઉનકે સ્નેહ સે એ વર્જિત રહતે હેં । (રાયદુઢ્ઢગારી) રાજનીતિ કે વિરુદ્ધ હનકા સદા આચરણ રહતા હેં । (વિસયનિચ્છલોગવજ્ઞા) જનપદ સે એ નિકાલ દિયે જાતે હેં, ડસલિયે એ લોકવાદ્ય હોતે હેં । (ઉદ્દહગગામઘાયગપુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વમેયગા) (ઉદ્દહગ) એ વઢે ભારી દ્રોહી હોતે હેં જિનપર હનકી વક્તવ્ય પડ જાતી હેં ઉસકી ફિર કુશલ નહીં । (ગામઘાયગ) ગાવોં કે ગાવ નષ્ટ કર ઢાલતે હેં । (પુરઘાયગ) નગરોં

તેઓ પરદ્રવ્યમા અતિગ્રીવ લોલુપ હોય છે “અહિમરા” ધનાદિના લોભમા પડીને તેઓ મરણની પણ મનુષ્ય ગહે છે-તેમને મોતની ઘીક લાગતી નથી અથવા ચોરી કરવા જતા તેમા આડખીલી રૂપ થનારને ભારી નાખે છે “અણમજગા” તેમની પામે ડોડી લેણુ હોય તો તેઓ તે ચુડવતા નથી “મગ્ગસન્ધિયા” તેઓ પોતાના ઇષ્ટ મિત્રાદિ તરફ પણ પ્રેમ રાખતા નથી, તેમના પર સ્નેહ રાખવાથી અથવા તેમનો સ્નેહ પ્રાપ્ત કરવાથી તેઓ રહિત હોય છે “રાયદુઢ્ઢગારી” રાજનીતિથી વિરુદ્ધ તેણુ આચરણ હમેશા રહે છે “વિસયનિચ્છલોગવજ્ઞા” રાજ્યમાથી તેમને હાડી કાઢવામા આવે છે તેથી તેઓ લોડખાદ્ય હોય છે “ઉદ્દહગગામઘાયગપુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વમેયગા” “ઉદ્દહગ” તેઓ ભારે દ્રોહી હોય છે, જેમના ઉપર તેમની વક્તવ્ય પડે છે તેમની સલામતી રહેતી નથી “ગામઘાયગ” તેઓ ગામોના ગામો નષ્ટ કરી નાખે છે “પુરઘાયગ” નગરોના નાશ

घातका = पयि = मार्गे जनानां घातकाः = द्रव्यलुण्ठनार्थं प्रहारकाः आदीपकाश्च =
गृहादिदाहकाः तीर्थभेदकाश्च = यात्रिजनयनापहारकाश्च 'लङ्घुहृत्यसपउत्ता' लघु-
हस्तमग्नयुक्ता लघु = परद्रव्यहरणे निपुणो हस्त = हस्तव्यापारपरायणाः, 'ज्य-
गरा' घृतकरा, 'खड्गरज्ज्वलीचोरपुरिमचोरसन्धिच्छेयया य' खण्डरक्षस्त्रीचौर
पुरुषचौरसन्धिच्छेदका = तत्र खण्डरक्षा = शुल्कपालाः उत्कोचग्राहिकाश्चौराः,
स्त्रीचौरा = स्त्रियचोरका. स्त्रीसमाशाचौरका = स्त्रियमेव चोरयतीति स्त्रीचोरकाः,
तथा स्त्री वेशेन चोरका या । तथैव पुरुषचौराश्च सन्धिच्छेदकाः = सन्धि = भित्त्यादौ
विपर 'संध' 'स्मात्' इति भाषा प्रसिद्धाऽन्ति = तनन्ति ये ते सन्धिच्छेदका
'गठिभेयगा' ग्रन्थिभेदका = प्रसिद्धाः 'परयणहरणलोमापहारअक्खेयी' पर-

को विध्वंस कर देते हैं । (पथयायग) द्रव्य हरण करने के अभिप्राय
से मार्ग में चलने वाले मनुष्यों को ये देखते २ मार डालते हैं । (आदी
वग) गृहादिको में जाग लगा देने हैं । (तित्वभेयगा) यात्रिजनों के
भी द्रव्य लूट लिया करते हैं । (लङ्घुहृत्यसपउत्ता) हाथकी सफाई इनकी
इतनी जवर्दस्त होती है कि ये देखते २ ही दूसरों के वन को चुरा लेते
हैं । (खड्गरज्ज्वलीचोरपुरिमचोरसन्धिच्छेयया य) इसी तरह जो खड
रक्ष-शुल्कपाल होते हैं ये जो घूमखोरी करने वाले होते हैं वे चोर माने
जाते हैं वे गृहा लिये गये हैं स्त्रीचोर-स्त्रियों के पास से द्रव्यादि चुराने
वाले, अथवा स्त्रियों को उठाकर ले जाने वाले, अथवा स्त्री के वेश में
रहकर चोरी करने वाले होते हैं, इसी प्रकार पुरुषचोर भी होते हैं-
पुरुषों के पास से द्रव्यादिक चुराने वाले होते हैं, अथवा पुरुषों को
घोखा देकर डधर उबर ले जाने वाले होते हैं अथवा पुरुष के वेश में

छुपी नाणे छे, " पथयायगा " द्रव्य छुरीदेवाने भाटे तेओ प्रचामीओने नेत
नेताभा भागी नाणे छे " आदीवग " धर वगेरेभा आग लगाडे छे " तित्व-
भेयगा " यात्राणुना द्रव्यने पशु लूटी ले छे, " लङ्घुहृत्यसपउत्ता " चोरी उर
वाभा तेभने हाथ ओटले छुराण डोय छे छे तेओ नेत नेताभा अन्यनु
धन ओगी ले छे " खड्गरज्ज्वलीचोरपुरिमचोरसन्धिच्छेयया य " ओ न
प्रमाणे ओ न उरक्ष-शुल्कपाल डोय छे-ओ घूसओगी उरनारा (लाय लेना)
डोय छे तेभने ओ गणवाभा आवे छे स्त्रीओ-स्त्रीओनी पासैथी द्रव्य ओगनारा,
अथवा स्त्रीओने उपाडी ननाग अथवा स्त्रीना वेशमा नधने ओगी उरनारा
डोय छे, ओ न प्रमाणे पुरुषओर पशु डोय छे- पुरुषोनी पामेथी द्रव्यादिउने
ओरनारा, अथवा पुरुषोने हगो हधने गमे त्या लध ननाग, अथवा पुरुषना

ધનહરણઝોમાપહારાડ્ઝક્ષેપિણઃ=તત્ર પમ્ધર્ન દરન્તિ ચે તે પરધનહરણાઃ, ઝોમાન્વ-
વહરન્તિ ચે તે લોમાપહગઃ=યધપૂર્વમ્લુષ્ટનકારિણ ઝાક્ષેપિણઃ=ચશીમરણાન્ના
ચોર્યકારિણ ‘ હઢકારગનિમ્મદ્ગગૂઢચોરગોચોરઅસ્સચોરદાસીચોરા ય ’ હઢકા
રકનિર્મર્દકગૂઢચોરગોચોરાશ્વચોરદામીચોગથ તત્ર હટ=ચલાત્કાર કુર્વન્તીતિ
હઢકારકાઃ, નિર્મર્દકાથ=નિરનિશયેન મર્દનકારિણઃ યુદ્ધેન ધનાપહારિણ, ગૂઢચોરાઃ=
શુભચોરા, ગો ચોરા અશ્વચોરા દાસીચોરાશ્વ=મલ્લયાતાઃ=ત પચ ‘ એગચોરા ’ એક
ચોરાઃ=એકાકિન એચ ચોરયન્તિ ચે તે ‘ ઓકડૂગમપદાયગા ઓઢિપગસત્થવાયગ,
ચિલકોલીકારગા ય ’ અપકર્ષક મમ્પદાયમાચ્છિપક સાર્થવાતકચિલકોલીમાર-

રહકર ચોરી કરતે હૈં, સધિચ્છેદક-ખિત્યાદિક મેં મેંધ કરકે ચોરી
કરતે હૈ, (ગઠિમેયગા) ગ્રન્થિમેદક - ગાંઠ કનરતે હૈ (પરધન
હરણલોમાવહારઅસ્સેવી) પરધનહરણઝોમાપહારાક્ષેવી હોતે હૈ
પરકે ધન કો હરણ કરને વાલે, વધ કરકે વનકો હરણ કરને વાલે વશી
કરણ મત્ર સે વશ કરકે ધન કો હરણ કરને વાલે હોતે હૈ (હઢકારગ-
નિમ્મદ્ગગૂઢચોરગોચોરઅસ્સચોરદાસીચોરા ય) (હઢકારગ) ચલાત્કાર
સે ધન કો હરણ કરને વાલે, (નિમ્મદ્ગ) નિર્મર્દક-યુદ્ધ કરકે ધન કો
હરણ કરને વાલે, (ગૂઢચોર) શુભરૂપ મેં રહકર પર કે ધન કો હરણ
કરને વાલે, (ગોચોર) ગાયકો હરણ કરને વાલે, (અસ્સચોર) અશ્વ
કો હરણ કરને વાલે, (દામીચોર) દાસી કો હરણ કરને વાલે,
(એગચોરા ય) અકેલે રહકર પર કે ધન કો હરણ કરને વાલે, (ઓક
ડૂગસપદાયગા ઓઢિપગસત્થવાયગચિલકોલીકારગા ય) (ઓકડૂગ)

વેરામા જીધને ચોરી કરનારા હોય છે, અધિચ્છેદક-દિવાત આદિમા કાણુ પાડીને
ચોરી કરનારા હોય છે, “ ગઠિમેયગા ” ગ્રન્થિમેદક-ખિસ્મા કાતરે છે, “ પર
ધનહરણલોમાવહારઅસ્સેવી ” પરધનહરણુ લોમાપહારાક્ષેવી હોય છે-પરધ
નનુ હરણુ કરનારા, હત્યાકરીને ધનનુ હરણુ કરનારા વશીકરણુ મ તથા વશ
કરીને ધનનુ અપહરણુ કરનારા હોય છે, “ હઢકારગ નિમ્મદ્ગ ગૂઢચોરગોચોર
અસ્સચોરદાસીચોરા ય ” “ હઢકારગ ” બળાત્કારથી વનને હની લેનારા, ‘ નિમ્મ
દ્ગ ’ નિર્મર્દક-યુદ્ધ કરીને ધનને હની લેનારા “ ગૂઢચોર ” શુભરીતે રહીને
પરનુ ધન હરી લેનારા, “ ગોચર ” ગાયનુ અપહરણુ કરનારા, “ અસ્સચોર ”
ઘોડાની ચોરી કરનારા, “ દાસીચોર ” દામીની ચોરી કરનારા, “ એગચોરાય ”
એકલો જીધને પારકાના ધનનુ હરણુ કરનારા “ ઓકડૂગસપદાયગા ઓઢિપગ
સત્થવાયગચિલકોલીકારગા ય ” “ ઓકડૂગ ” આકર્ષક-બીજના ધરમાથી

કાથ તત્ર અપર્કર્પકાઃ=અપર્કર્પયન્તિ પરગૃહેષુ ચોરયિતુ ચોરાનાદ્યન્તિ ચે તેઽપર્ક-
ર્પકા, યદ્વા-ચોરિત વનમપનીયાઽન્યસ્થાને નમન્તિ ચે તે તથા, તથા ગરીરાદિતો
ભૂષણાદિ નિષ્કામકા ચા, સમ્પ્રદાયકાઃ=ચોરાન્ સ્વગૃહે સંસ્થાપ્ય ભોજનાદિ
દાયકા, અગ્નિઊપકા=ચોરગિરેષા સાર્થઘાતકા=પ્રસિદ્ધાઃ પિલકોલીકારકાશ્ચ=
પરવ્યામોહર્થ વિશ્વામયનવાદિન, દેશીશબ્દોઽયમ્ । 'નિગ્રહવિપ્પલુપગા' નિગ્રહ-
વિપ્પલુપકાઃ=તત્ર નિગ્રહેણ=વશીકરણેન શસ્ત્રાદિભયમર્દશનપૂર્વક પર નિરુત્થેત્યર્થ-
વિપ્પલુપકાઃ-લુપ્તનકારિણઃ, 'વદુવિહતેણિક્કહરણબુદ્ધી' વદુવિધસ્તૈન્યહરણબુદ્ધયઃ=
વદુવિધેન સ્તૈન્યેન=ચાર્યેણ હરણે=પરદ્રવ્યાપહરણે બુદ્ધિર્યેષા તે તથા પરદ્રવ્યહ-
રણબુદ્ધિશાલિન. एते=पूर्वोक्ताः 'अण्णे य' अन्ये च 'एवमादी जे' एवमादयो
ये=एवम्प्रकाराः ये ' परस्स दव्वाहि अविरया ' परस्स द्रव्येषु अविरताः, सूत्रे
तृतीया सप्तम्यर्थे परस्स धनगान्यादि ग्रहणे अनिट्ता' परद्रव्यग्रहणासक्ता इत्यर्थः
सन्ति ते चौर्यं कुर्वन्तीति पूर्वेण सम्बन्ध ॥सू० ३॥

અપર્કર્પક-પર કે ઘર સે દ્રવ્યાદિકોં કો ચુરાને કે લિયે સાથ મેં દૂસરે
ચોરોં કો બુલાકર ચોરી કરને વાલે, અથવા ચુરાયે હુણ ધન કો દૂસરે
સ્થાન મે લે જાને વાલે, અથવા ગરીર આદિ સે ભૂષણ નિકાલને વાલે,
(સપ્રદાયક) સપ્રદાયક-ચોરોં કો અપને ઘર મે રાખકર ઉન્હેં ભોજન
આદિ દેને વાલે, અગ્નિઊપક-યે ભી ચોર હોતે હેં સાર્થઘાતક જનસમૂહકા
ઘાત કરને વાલે, પિલકોલીકારક-પર કો વ્યામોહ કરને કે લિયે વિશ્વાસ
વચન બોલને વાલે (નિગ્રહવિપ્પલુપગા) શસ્ત્રાદિક કા ભય દિશ્વલા
કરકે દૂસરોં કો રોક કર લૂટ કરને વાલે (વદુવિહતેણિક્કહરણબુદ્ધી)
તથા અનેકવિધચોર્યકર્મ કરને મે નિપુણ બુદ્ધિવાલે હોતે હેં એસે (एते
अण्णे य एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया) ये सब व्यक्तितया इनसे

દ્રવ્યાદિની ચોરી કરવાને માટે ખીલ ચોરોનો માય લડને ચોરી કરનારા, અથવા
ચોરેલા ધનને ખીલ જગ્યાએ લડ જનારા અથવા રાગીઆદિ પરથી આ
ભૂષણો હુડી લેનારા, 'સપ્રદાયક' સપ્રદાયક-ચોરોને પોતાના ઘરમા આરાસે
આપીને લોજન આદિ દેનાગ, અવર્ણિપક-તે પણ ચોર જ હોય છે, સાર્થઘા-
તક-જનસમૂહના હત્યા કરનાગ, પિલકોલીકારક-ખીલને ફસાવવાને માટે વિશ્વાસ
ઉત્પન્ન કરે તેવા વચનો બોલનાગ, 'નિગ્રહવિપ્પલુપગા' શસ્ત્રાદિનો ભય
ખતાવી ખીલને અટકાવીને લૂટી લેનારા, 'વદુવિહતેણિક્કહરણબુદ્ધી' તથા
અનેક પ્રકારની ચોરી કરવામા કુશળ બુદ્ધિવાળા હોય છે એના " एते अण्णे य
एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया " એ બધા લોકો તથા તે નિવાયના ખીલ

एव 'येऽपि च कुर्वन्त्यन्तादान' मिति पञ्चमान्तर्द्वारं निरूप्य 'यथा च कृतम्' इत्यन्तादानस्य तृतीयान्तर्द्वारमाह—'विपुलबले'त्यादि

મૂલ્ય—વિપુલબલપરિગ્રહા ચ વહ્નો રાયાણો પરધનમ્મિ ગિદ્ધા સપ્ દંબે અસતુદ્ધા પરવિસપ્ અત્તિહણતિ લુદ્ધા પરધન સ્સ કપ્, ચતુરગ્ગ સમત્તવલસમગ્ગા નિચ્છિય વરજોહજુદ્ધસદ્ધા ચ અહમહમિતિદપ્પિણ્ણહિ સેન્નેહિ સંપરિવુડા પપ્પમસગલ્લસૂઢ્ઠ-ચવ્વકસાગરગલ્લવ્વહાદિણ્ણહિ અણીણ્ણહિ ઉચ્છરતા અહિમૂય્ય હરતિ પરધણાહ્ ॥ સૂ. ૪ ॥

टीका—‘विपुलबलपरिग्रहा य’ विपुलबलपरिग्रहाय=ता विपुलम्=विशाल बल=सामर्थ्य सैन्य या परिग्रहा =परिवारी येषां ते तथा, वह्न =अनेके ‘रायाणो’ राजानः ‘परधनमि गिद्धा’ परधने गृद्धा=पटव्यासक्ता ‘सप दंबे’ स्वके द्रव्ये =निजधने ‘असतुद्धा’ असन्तुष्टाः ‘लुद्धा’ लोभवन्तः सन्तः ‘परविसप’ परविषयान्

भिन्न इसी तरह से और भी व्यक्ति जो दूसरों के द्रव्यहरण करने रूप कार्य में विरति भाव से रहित होते ह, इन सबको चोरो की श्रेणि में ही परिगणित जानना चाहिये ॥ सू. ३ ॥

इस तरह “ जो अदत्तादान को करते हैं ” इस रूप यह पचम अन्तर्द्वार कहकर अब सूत्रकार “ यथा च कृतम् ” इस तृतीय अन्तर्द्वार को कहते हैं—‘ विपुलबलपरिग्रहा ’ इत्यादि ।

टीકાર્થ—(વિપુલબલપરિગ્રહા) વિપુલ સૈન્ય ણ્ણવ પરિવારવાળે (વહ્નો રાયાણો) અનેક રાજા લોગ (પરધનમ્મિ ગિદ્ધા) પરધન મેં આસક્ત તથા (સપ્ દંબે અસતુદ્ધા) અપને પાસ કે દ્રવ્ય મેં અસતુષ્ટ ઓર

લોહો કે જે બીજાના દ્રવ્યનુ અપહરણ કરવાના કાર્યમા વિરતિભાવથી ગહિત હોય છે—તે કાર્યમા લીન હોય છે—તે બધાને ચોરોની શ્રેણીમાજ મૂકવા જોઇએ ॥ સૂ. ૩ ॥

આ રીતે “ જે અદત્તાદાનનુ સેવન કરે છે ” તે પ્રકારના આ પાત્રમા અન્તર્દ્વારનુ ઢથન કરીને હવે સૂત્રકાર “ યથા ચ કૃતમ્ ” તે ત્રીજા અન્તર્દ્વારનુ ઢથન કરે છે—“ વિપુલબલપરિગ્રહા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“વિપુલબલપરિગ્રહા” વિપુલ સૈન્ય અને પરિવાર વાળા “વહ્નો રાયાણો” અનેક રાજાઓ “પરધનમ્મિ ગિદ્ધા” પરધનમા આસક્ત તથા “સપ્ દંબે અસતુદ્ધા” પોતાની પાનેના દ્રવ્યથી અસતુષ્ટ અને “લુદ્ધા” લોભયુક્ત

=અન્યજનપદાન દેશાનિત્યર્થઃ 'પરવણસ્સ કણ' પરધનસ્ય કૃતે=પરદ્રવ્યગ્રહણાર્થમ્ 'અહિ-
હણતિ' અગ્નિન્નન્તિ=આક્રમન્તિ આક્રમણ કુર્વન્તિ ઇત્યર્થઃ । તથા 'ચાતુરગમસત્તવલ
સમગ્ગા' ચતુરદ્વસમસાવલસમગ્ગાઃ=ચતુર્ભિરદ્વૈ = ગજરથાન્વપદાતિસ્વપૈઃ સેનાઽ-
વયયૈઃ મમસ્ત=સમ્પૂર્ણ રલ=સૈન્ય તેન સમગ્ગા =યુક્તાઃ ચતુરદ્વસેનાયુક્તાઃ 'નિચ્છિ-
યવરજોહજુદ્ધમદ્દા ય' નિચ્છિતવરયોયુદ્ધશ્રદ્ધાશ્ર=તત્ર નિશ્ચિતૈઃ=નિર્ધારિતૈઃ સ્થાયિ-
રૂપેણ નિયુક્તૈર્નિશ્ચયપદ્ધિર્વા રૈઃ=પ્રગસ્તૈ યોયૈ=ભટૈર્યદ્ યુદ્ધ તત્ર શ્રદ્ધા=પ્રેમાદરો
યેષા તે તથા 'અહમહ મિતિ દપ્પિણ્હિ' અહમહમિતિદર્પિતૈ= 'અહમેવકવીરઃ'
અન્યેવ દર્પિતૈ=ગણિત 'સેન્નેહિ' સૈન્યેઃ 'સપરિવુડા' સમ્પરિવૃતા=સન્નદ્ધાઃ
સાજ્જીભૂતા 'પડમસગડઘટચક્કસાગરગમ્લવૃદ્ધાદિણ્હિ' પદ્મગકટપ્પચીચક્રસાગર-
ગરુડવ્યૂહાદિકૈ = પદ્માકારવ્યૂહગકટવ્યૂહનૃચીવ્યૂહચક્રવ્યૂહસાગરવ્યૂહગરુડવ્યૂહા-
દિકા સૈન્યરવનાગિગેગાન્તે ત્રિધન્તે યેષુ તૈસ્તથાભૂતૈ, 'અણીણ્હિ' અનીકૈ=

(લુદ્ધા) લુધ્ધ તોરુર (પરવણસ્સ કણ) દૂમરોં કા વન લેને કે લિયે
(પરવિસણ) દૂસરે રાજાઓં કે દેશોં કે ડપર (અહિહણતિ) આક્રમણ
કરતે હે, તથા (ચાતુરગસમસાવલસમગ્ગા) ગજ, રથ, અથ્થ એવ પદાતિ
રૂપ ચાર અગોં વાલી સેના સે યુક્ત એવ (નિચ્છિયવરજોહજુદ્ધસદ્દા
ય) સ્થાયી રૂપ સે નિયુક્ત કિયે હુણ અથવા અટલ નિશ્ચય સે યુક્ત હુણ
એસે પ્રગસ્ત યોદ્ધાઓંકે સાથ યુદ્ધ કરને મે આદરભાવ વાલે ઔર
(અહમહમિતિ દપ્પિણ્હિ) “ મ હી એક વીર હુ ” ડસ પ્રકાર કે ગર્વ
વાલે (સેન્નેહિ) સૈન્ય સે (સપરિવુડા) પરિવૃત-યુક્ત હોકર (પડમ-
સગડઘટચક્કસાગરગમ્લવૃદ્ધાદિણ્હિ) પદ્માકાર વ્યૂહવાલે, ગકટવ્યૂહ-
વાલે, સૂચીવ્યૂહવાલે, ચક્રવ્યૂહવાલે, સાગરવ્યૂહવાલે, એવ ગરુડવ્યૂહ
આદિ વાલે (અણીણ્હિ) સૈન્ય સે પ્રતિપક્ષી કે સૈન્ય કો (ડચ્છરતા)

થઈને “ પરવણસ્સ કણ ” બીજાનુ ધન પ્રાપ્ત કરવાને માટે “પરવિસણ” બીજા
રાજાના પ્રદેશો ઉપર “ અહિહણતિ ” આક્રમણ કરે છે, તથા ‘ ચાતુરગ સમસ-
-વલસમગ્ગા ’ હાથા, રથ, અથ્થ અને પાયાદળ એ ચતુરગી મેના અહિત અને
“ નિચ્છિયવરજોહજુદ્ધસદ્દા ય ’ સ્થાયી રીતે કરેલ અથ્થવા હુઠ નિશ્ચયવાળા
અને યુદ્ધ કરવામા આદરભાવ રાખનાગ પ્રગન્ત યોદ્ધાઓની સાથે અને
“ અહમહમિતિ દપ્પિણ્હિ ” “ હુ જ એક વીર હુ ” એ પ્રકારના ગર્વવાળા
“સેન્નેહિ” સૈન્યથી “ સપરિવુડા ” પરિવૃત-યુક્ત થઈને “ પડમસગડઘટચક્કસાગર-
ગરુડવ્યૂહાદિણ્હિ ” પદ્માકાર વ્યૂહવાળા, ગકટવ્યૂહવાળા, સૂચીવ્યૂહવાળા, ચક્રવ્યૂહ
વાળા, સાગર વ્યૂહવાળા અને ગરુડ આદિ વ્યૂહવાળા, “ અણીણ્હિ ” સૈન્યથી

સૈન્યે, 'ઉચ્છરતા' આસ્ત્રપ્રયન્ત = પ્રતિપક્ષસેનામાઝાન્યન્તઃ, 'અહિભૂય' અમિ
ભૂય=આક્રમણેન સત્રુમેન્ય પરાજિત્ય દટાત્ 'પરધનાડ' પરવનાનિ હરન્તિ ॥સૂ.૦૪॥
તથા યે રાજાદયો યથા પરવનાદીન્યપઠરન્તિ તદાહ—'અવરે' इत्यादि—

મૂલમ્—અવરે રણસીસલદ્વલક્રવા સગામ અડવચતિ,
સપ્પણદ્વવલ્લપરિયરઉપ્પાલિયચિધપટ્ટગહિયાઉહપહરણા માઢી-
વરવમ્મગુડિયા, આવિદ્ધજાલિયા કવચકુડગિયા, ઊર
સિરમુહવદ્ધકઠતોળા, પાસિયવરફલગરડચપહકરસરમસ
સ્વરચાવકરકરચિયસુનિસિયસરવરિમવડકરગમુચતઘણચ-
ડવેગધારાનિવાચમગ્ગે, અળેગવળુમડલગ્ગતધિયઉચ્છલિય
સત્તિ—કળગ—વામકર—ગહિય—લેડગ—નિમ્મલ-
નિક્કિદ્ધ—લગ્ગ—પહરંત-કુત—તોમર-ચક્ર—ગયા—પરસુ—મુસલ
—લગલ—સૂલ—લડડ—ભિંડિપાલ—સવ્વલ—પટ્ઠિસ—ચમ્મેટ્ટુ-
ઘણ—મોટ્ટિય—મોગ્ગરવર—ફલિહ—જંત પત્થર—દુહળ—તોળ
કુવેળી—પીઢાકલિણ ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—'અવરે' અવરે=કેચિત્ નૃપા 'રણસીસલદ્વલક્રવા' રણશીર્ષલઘ્વલક્ષ્યા.=
રણશીર્ષે=સપ્રામશિરસિ લઘ્વલક્ષ્યા.=વૈરીવેધને—સિદ્ધહસ્તા સન્તઃ સ્વયમેવ 'સગામ'
આચ્છાદિત કરતે હુણ (અહિભૂય) અપને આક્રમણોં સે ઉસે પરાજિત
કરકે (પરધનાડ) પરવન કો (હરતિ) હરણ કરતે હૈ ॥સૂ.૦૪॥

જો અન્ય રાજાદિક પર કે ધન આદિ હરણ કરતે હૈ ઉનકો કહતે
હૈ—'અવરે' इत्यादि

ટીકાર્થ—(અવરે) કિતનેક રાજા (રણસીસલદ્વલક્રવા) જો રણ
શીર્ષલઘ્વ લક્ષ્યવાલે હોતે હૈ—વૈરી કો મારને મેં સિદ્ધ હસ્તે હોતે હૈ

પ્રતિપક્ષીના સૈન્યને “ઉચ્છરતા” ઘેરી લઇને “અહિભૂય” પોતાના હુમલાથી
તેને હરાવીને “પરધનાડ” પરધનનું “હરતિ” હરણ કરે છે ॥ સૂ. ૪ ॥

જે બીજા રાજાદિકો પરધન આદિનું હરણ કરે છે તેમનું વર્ણન કરતા
સૂત્રકાર કહે છે—“અવરે” इत्यादि

ટીકાર્થ—“અવરે” બીજા કેટલાક રાજાઓ “રણસીસલદ્વલક્રવા” જે રણશી-
ર્ષલઘ્વલક્ષ્યવાળા હોય છે હુશ્મનની હત્યા કરવામા નિપુણ હોય છે “સગામ-

સગ્રામે 'અશ્વયતિ' અતિપતન્તિ=યુદ્ધ કરતું પ્રવર્તન્તે । કય ભૂતાઃ ? ઇત્યાહ—
'સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયર-ઉપ્પાડિયચિંધપટ્ટગહિયાઝહપહરણા' સળ્લદ્ધવદ્ધપરિન્નરોત્પાટિ-
તચિન્હપટ્ટગૃહીતાયુધપહરણા.=તત્ર મન્નદ્ધા=યુદ્ધસામગ્રીભિઃ સજ્જીભૂતાસ્તથા, વદ્ધ
પરિન્નર=કવચો યૈસ્તે વદ્ધપરિન્નરાઃ=વદ્ધકવચાઃ તયોત્પાટિતઃ=દ્ઢ વદ્ધો મસ્તકે
ચિન્હપટ્ટઃ રક્તપટ્ટાદિ સ્વચિન્હત્રિશેષો યૈસ્તે તથા, ગૃહીતાનિ=પરિધૃતાનિ રિપુહનના
ર્થમાયુધાનિ-ત્રાણાદીનિ પ્રહરણાનિ=સજ્જાદીનિ યૈસ્તે ચ તથા પદનયસ્ય વર્મધા-
રયઃ । 'માઢીવરવમ્મગુડિયા' માઢીવરવર્મગુણ્ડિતાઃ=તત્ર-માઢી=શરીરત્રાણવિશેષાઃ
દેશીશબ્દોઽય વરવર્માણિ=મયાનકવચાનિ તૈર્ગુણ્ડિતાઃ=આન્ઝાદિતશરીરા, આચિ-
દ્ધજાલિકાઃ=નિવદ્ધલોહકઠ્ઠચુકાઃ 'કવચકઢગિયા' કવચકઠ્ઠકિતાઃ=સકઠ્ઠક
કવચેન કઠ્ઠકિતા, 'ઉરસિરમુહવદ્ધકઠ્ઠતોણા' ઉર શિરોમુલમવદ્ધકઠ્ઠતોણાઃ=તત્ર

(સગ્રામ અઢવયનિ) જે સ્વયમેવ સગ્રામ મેં ઉતર આતે હૈં-યુદ્ધ કરને મેં
પ્રવૃત્તિ વાલે હો જાતે હૈં તેસે જે રાજા લોગ (સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયર ઉપ્પા
ડિયચિંધપટ્ટગહિયાઝહપહરણા) (સળ્લદ્ધ) પહિઝે તો યુદ્ધસામગ્રી સે
મજ્જીભૂત હોતે હૈં, (વદ્ધપડિયર) કવચ સે વાચકર અપને શરીર કો
સુરક્ષિત રાખતે હૈં, (ઉપ્પાડિયચિંધપટ્ટ) મસ્તક પર રક્તપટ્ટાદિરૂપ ચિહ્ન-
વિશેષ કો દ્ઢતરરૂપ મેં વાંધતે હૈં, (ગહિયાઝહપહરણા) રિપુ કો નષ્ટ
કરને કે લિયે ત્રાણ આદિ આયુધો કો ઓર સજ્જા આદિ પ્રહરણોં કો
અપને પામમેં રાખતે હૈં (માઢીવરવમ્મગુડિયા) માઢી-શરીર ત્રાણવિ-
શેષ ણવ ઉત્તમ કવચ સે ઇનકા શરીર આન્ઝાદિત રહતા હૈં, (આચિદ્ધ-
જાલિકા) ઇનકે શરીર પર લોહનિર્મિત કવચ વધા રહતા હૈં (કવચ-
કઢગિયા) કાંઠે વાલે કવચ સે જે યુક્ત હોતે હૈં, (ઉરસિરમુહવદ્ધ

અશ્વયતિ ” તેઓ જાતે જ રણસામગ્રી ઉતરી પડે છે-યુદ્ધ કરવાને તૈયાર થઈ
જાય છે, એવા તે રાજાઓ “ સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયરઉપ્પાડિય-ચિંધપટ્ટગહિયા
ઝહપહરણા ” “ સળ્લદ્ધા ” પડેલા તો યુદ્ધની સામગ્રી સજ્જ કરાવે છે,
“ વદ્ધપડિયર ” બાબતર પહેરીને પોતાના શરીરને સુરક્ષિતબનાવે છે “ ઉપ્પા-
ડિય ચિંધપટ્ટ ” મસ્તક પર લાલ પટ્ટિ આદિ ખામ ચિહ્નને મજબૂત રીતે બાંધે
“ ગહિયાઝહપહરણા ” હુશ્મનનો નાશ કરવાને માટે બાણ આદિ આયુધો અને
તલવાર આદિ શસ્ત્રો પોતાની પાસે રાખે છે “ માઢીવરવમ્મગુડિયા ” માઢી-
શરીરના રક્ષણ માટેનું એક સાધન, અને ઉત્તમ બાબતરથી પોતાના શરીરને
આન્ઝાદિત કરે છે, “ આચિદ્ધજાલિકા ” તેમના શરીર પર લોહાનું બાબતર
બાંધેલું હોય છે, “ કવચકઢગિયા ” તેઓ ડાઠાળા કવચથી યુક્ત હોય છે,

ઉરસા=રક્તઃસ્થલેન સઠ શિરોમુખાઃ=ઉર્ધ્વમુખા વદ્ધાઃ ધ્રુવે=ગ્રીવાયા તોળાઃ=તૂળીરાઃ
 'તરકસ' ઇતિ 'તીરભાસા' ઇતિ વા મપાપતીતા યૈસ્તે તથા પતાદગ્ના તૃપાઃ
 ગજ્ઞન્તિ સગ્રામે ઇત્યાદ — 'પાસિયવરફલગરહ્યપહકમ્મરભસાગ્વરચાપકર
 કરચિયમુનિસિયસરપરિસપદ્ધકરકમુયાપગચડવેગપારાનિપાયમગ્ને' પાશિત
 વરફલકરચિતપ્રકરસરભસાગ્વરચાપકરકમગ્નિતતુનિગિતગરપર્પટ્ઢકરકમુન્યમાનપન
 ચણ્ડવેગપારાનિપાતમાર્ગે=તત્ર 'પાસિય' ઇતિ સ્પૃશ્તાનિ = હસ્ત ધ્રુતાનિ
 વરફલકાનિ=પરશસ્ત્રપ્રહારપ્રતિરોધશસ્ત્રાણિ 'ઢાલ' ઇતિપ્રસિદ્ધાનિ યૈસ્તે,
 તથા રચિતઃ=કૃતો રિપુશસ્ત્રપ્રતિઘાતાય 'પહકર' ઇતિ પ્રકરઃ = રચનાપ્રિયેવેગ
 સૈન્યસમૂહો યૈસ્તે, તથા મરભમા.=મહર્ષા સવેગા વા સ્વચાપકરાઃ=નિપટુરધનુ

કઠતોળા) इनके वक्षस्थल पर तूलीर-तरकस-बाधा जाता है, उनमें
 उर्ध्वमुख करके पाणग्रीवा के पास भरे रहते हैं। इस प्रकार से पहिले
 सज्जित होकर कितनेक राजा सग्रामभूमि में युद्ध करने के लिये (अइ
 वयति) उतरते हैं। इस प्रकार से वहा सत्रय लगा लेना चाहिये। जिस
 युद्ध में राजा उतरते हैं वह युद्ध किस प्रकारका होना है? सो कहते हैं—
 जिस सग्रामभूमिमें (पासियवरफलग) निपटुर धनुर्धारीजन अपने ऊपरसे
 परके शस्त्रप्रहारोंको रोकनेके लिये ढालोंको हाथोंमें लिये होतेहैं, (रइयप
 कर) शत्रु के शस्त्रों का प्रतिघात करने के लिये वे अपनी २ सेना को
 एक विशेष प्रकार की रचना में स्थापित किये हुए रहते हैं तथा (सर
 भस) परस्पर में युद्ध करने का चाव जहा आपसमें खूब चढ़ा बढ़ा होता
 है—हर्ष अथवा वेग से जो युक्त होते हैं ऐसे (चावकर) धनुर्धारियों

“उरसिरમુહવદ્ધકઠતોળા” તેમના વક્ષસ્થળ પર તૂળીર—ભાથા બાધેલા હોય છે
 તે ભાથામા બાળો ઉર્ધ્વમુખ રહે તેમ, ડોકની પાસે ભરેલા રહે છે આ રીતે
 પહેલા સજ્જ થઈને કેટલાક રાજાઓ યુદ્ધ કરવાને માટે રણમેદાનમા “અइ
 વયતિ” ઉતરી પડે છે, એ પ્રકારનો સબધ અહીં સમજી લેવાનો છે જે
 યુદ્ધમા રાજા ઉતરે છે તે યુદ્ધ કેવું હોય છે? તેના જવાબમા કહે છે—
 જે રણમેદાનમા “પાસિયવરફલગ” નિર્દય ધનુર્ધારીઓ દુશ્મનોના શસ્ત્ર પ્રહારોને
 રોકવાને માટે પોતાના હાથમા ઢાલ રાખે છે, તથા “રइयपहकर” શત્રુના શસ્ત્રોના
 મુકાબલો કરવાને માટે તેઓ પોતપોતાની સેનાને એક વિશિષ્ટ પ્રકારની બૂંડ રચ
 નામા ગોઠવે છે, તથા “सरभस” અન્યોન્ય લડવાનો શોખ બધા ખૂબ રહે છે હર્ષ
 અથવા વેગથી જે યુક્ત હોય છે એવા “चावकर” ધનુર્ધારીઓ દ્વારા બધા “करचि

धारिणः तैः कराश्रिताः=कराकृष्टा ये सुनिशिता=अतितीक्ष्णा शरा=शरणास्तेषा
यो वर्षः=वर्षण स वृद्धकरकमुञ्चद् घनचण्डवेगधारानिपात इव यत्र, स तथा, यथा
मेघस्य प्रचण्डवेगयुक्तः स्थूलोपलधारानिपातो भवति तद्वत् शरवर्षण यत्रेत्यर्थः
तस्य मार्गद्वारभूतस्तस्मिन् सग्रामे पुनः कीदृशे ? इत्याह—‘अणेगधणुम-
डल्लगसधियउच्छलियसत्तिकणगवामकरगहियखेडगनिम्मलनिक्किट्ठखग्गपहरतकुत
तोमरचक्कगयापरसुमुसल्लगलमुल्लउडभिडिपालसञ्चलपट्टिमचम्मेट्टवणमोद्धिमो-
ग्गरवरफलिहजतपत्थरट्टणतोणकुवेणीपीढाकलिए’ तत्र ‘अणेगधणुमडल्लग’
अनेकधनुर्मण्डलाग्राः = अनेकानि धनूपि मण्डलाग्रानि = खड्गविशेषाश्च
तथा ‘सधियउच्छलियसत्तिकणग’ सन्धितोच्छलितशक्तिकनकाः = सन्धिताः=
सन्धानीकृताः=सज्जीकृता इत्यर्थः उच्छलिताः=उपगताश्च शक्तयः=शस्त्रविशेषा
कनका=शरणाश्च तथा ‘वामकरगहियखेडगनिम्मलनिक्किट्ठखग्ग’ वामकरगृहीत
खेटकनिर्मलनिकृष्टगद्गा=तत्र वामकरे गृहीतानि गेटकानि = परप्रहारप्रतिरोधक
शस्त्राणि ‘ढाल’ इति प्रसिद्धानि निर्मलाः=उज्ज्वलीकृता तीक्ष्णीकृता खड्गाः

द्वारा जहाँ पर (करचियसुनिसियसरवरिस) अति तीक्ष्ण चाणों की
वर्षा मेघों के द्वारा (वड्डकरकमुञ्चतघणचण्डवेगधारानिवायमग्गे) प्रच-
ण्डवेगवाली स्थूल ओलों की वर्षा जैसी की जाती है। तथा जो सग्राम
(अणेगधणुमडल्लग) अनेक धनुषों से एवं मण्डलाग्रो-तलवार विशेषों
से (सधियउच्छलियसत्ति) सज्जीकृत उच्छलित शक्तियों से—इस
नाम के शस्त्र विशेषों से, (कणग) कनकों से—चाणों से (वामकर
गहिय खेडग) वामकर में गृहीत ढालों से, (निम्मलनिक्किट्ठखग्ग)
तीक्ष्णीकृत खड्गों से, (पहरत) प्रहार करनेमें व्याप्रियमाण ऐसे (कुत)

यसुनिसियसरवरिस” अतिशय तीक्ष्ण आण्डोनी वृष्टि वादणाओ द्वारा “वड्डकरकमु
ञ्चतघणचण्डवेगधारानिवायमग्गे” अथ उ वेगवाणा मोटा करानी वृष्टिनी जेभ उगय छे
तथा जे स ग्राम “अणेगधणुमडल्लग” अनेक धनुषोथी अने भ उलाथो (तलावारथी-
विशेषो)थी “सधिय-उच्छलिय सत्ति” सञ्चल करेव उच्छलित शक्तियोथी
(जे नामना शस्त्र विशेषोथी) “कणग” कनकोथी आणोथी, “वामकरगहिय
खेडग” उणा छायभा गणेल ढालोथी, “निम्मल निक्किट्ठखग्ग” तीक्ष्ण जनावेल
करवाभा वधराता “कुत” लालाओथी “तोमर”

તથા 'પહરત' પ્રતિયમાણાઃ=પહારે વ્યાપ્રિયમાણા યે કુન્તાઃ=મલ્લા તોમરાશ્ચ= 'સુરજ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ 'ચક્ર' ચક્રાણિ 'ગયા' ગદાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ 'પરસુ' પરશ્વઃ =કુઠારા તથા મુસલાઃ=પ્રસિદ્ધા 'લગલ' લાઙ્ગલાનિ=શૂલાનિ શૂલાનિ= લીહાશ્વવિશેષા 'લુડ' લુગુડા =ચપ્ટયઃ 'મિહિપાઝ' મિન્દિપાલાઃ=ગોફળ' ઇતિ રૂપાતાઃ 'સવ્વલ' ઇતિશસ્ત્રવિશેષાઃ 'પટ્ટિમ' પટ્ટિશાઃ=મટ્ટપ્રમેદાઃ 'ચર્મેટ્ટ' ચર્મેષ્ટાઃ=ચર્મવદ્ધપાપાણમયાશ્ત્રવિશેષાઃ 'ઘણ' ઘનાઃ=અયોવનાઃ 'ઘણ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા 'મોટ્ટિયા' મૌટ્ટિકા=મુષ્ટિપ્રમાણાશ્ત્રવિશેષાઃ મોગ્ગર' મુદ્ગરાશ્ચ =પ્રતીતાઃ 'વરફલિહ' વરપરિધા=લોહવદ્ધલગુડાઃ 'જતપત્થર' યન્ત્ર પ્રસ્તરા= ગોફળાદિ ચન્ત્રપાપાણાઃ 'દુઘણ' દુઘણા મુદ્ગરવિશેષાઃ, તોણાઃ=તૂળીરા-

કુન્તોં સે-ભાલોં સે, (તોમર) તોમરોં સે-મુરજોં સે (ચક્ર)ચક્રોંસે (ગયા) ગદાઓં સે, (પરસુ) પરશુઓં સે-કુઠારોં સે (મુસલ) મુસલોં સે, (હલ) હલોં સે, (સૂલ) શૂલોં સે, (લુડ) લકુડોં-(લાઠિયોં) સે (મિહિપાલ) મિદિપાલોં સે-ગોફળોં સે, (સવ્વલ) સવ્વલોં સે (સવ્વલ) યહ શસ્ત્ર વિશેષ હે જો અગ્રભાગ મેં તીક્ષ્ણ એસા લોહે કા ડહા હોતા હૈ, (હિન્દી મેં ભી હસે સવ્વલ હી કહતે હૈં) (પટ્ટિસ) પટ્ટિશો સે-ભાલે કે આકાર જૈસે ઇક પ્રકાર કે શસ્ત્રોં સે, ચર્મેષ્ટોં સે-ચર્મવદ્ધપાપાણમય અશ્ત્રવિશેષોં સે (ઘણ) ઘણ-લોહપિંડ, હસે ભાષા મેં ભી ઘણ કહતે હૈં ઘણોં સે, (મોટ્ટિય) મૌટ્ટિકોં સે-મુષ્ટિપ્રમાણ અશ્ત્રવિશેષોં સે, (મોગ્ગર) મુદ્ગરોં સે, (વરફલિહ) વરપરિધોં સે-લોહવદ્ધ લાઠિયોં સે, (જતપત્થર) યન્ત્ર પ્રસ્તરોં સે, ગોફળ આદિ યન્ત્રોં સે, ફેકે ગયે પત્થરોં સે, (દુઘણ) દુઘણો સે ઇક પ્રકાર કે મુદ્ગર વિશેષો સે, (તોણ)

તોમરથી-શુરજેથી, "ચક્ર" ચક્રોથી, "ગયા" ગદાઓથી, "પરસુ" પરશુ ઓથી, "મુસલ" મુસળોથી, "હલ" હળોથી, "સૂલ" ત્રિશૂળોથી, "લુડ" લાઠીઓથી, "મિહિપાલ" મિદિપાલો (ગોફળ)થી, "સવ્વલ" ચપ્પલોથી, (તે એક શસ્ત્ર છે તે લોહના દડા જેવું હોય છે અને તીક્ષ્ણ અણીવાળું હોય છે તેને ગુજરાતીમાં કોશ કહે છે) "પટ્ટિસ" પટ્ટિશોથી (પટ્ટિશ લાલના આકારનું શસ્ત્ર હોય છે) ચર્મેષ્ટોથી (ચર્મ વદ્ધ પાપાણ મહા અશ્ત્ર વિશેષોથી) "ઘણ" ઘણથી, "મોટ્ટિય" મૌટ્ટિકોથી (મુષ્ટિ પ્રમાણ અશ્ત્ર વિશેષોથી) "મોગ્ગર" મગદળોથી, "વરફલિહ" વર પરિધોથી-(લોહવદ્ધ લાઠીઓથી) "જતપત્થર" યન્ત્ર પ્રસ્તરોથી (ગોફળ આદિ સાધનોથી ફેકાયેલા પથ્થરોથી) "દુઘણ" ઘણોથી (એક પ્રકારના મગદળોથી) "તોણ" તોળીરા

‘ भाता ’ इति प्रसिद्धाः कुवेण्य = शस्त्रविशेषाः. पीठा ’ पीठानि = यन्त्ररूपास्त्रविशेषाश्च, इत्येतैश्च विशेषैः ‘ कलिए ’ कलिते = युक्ते संग्रामे अतिपतन्ती. यन्त्रयः । मू० ५। पुनरपि सङ्ग्राम वर्णयति—‘ इली ’ इत्यादि ।

मूलम्—इलीपहरणमिलिमिलितं खिप्पंतविज्जुज्जलविरचिय-
समप्पहनहतलफुडपहरणे, महारणसखभेरी वरतूरपउरपडुपडहा-
हयनिनायगभीरणंदियपमलुभिय विउलघोसे, हयगयरहजोहतु-
रियपसरियरयुद्धयतमधयारवहुले, कायरनरनयणहिययवाउलकरे,
विलुलियउकडवरमउडकिरीडकुडलोडुदामाडोविए, पडगपडाग
उच्छियधयवेजयतीचामरचलंतछत्तंधयारगभीरे, हयहेसियहत्थि-
गुलगुलाइयरहघणघणाइयपाइक्कहरहराइयअप्फोडियसीहनाय
छिलियविधुट्टुविकट्टकठकयसदभोमगजिए सयरहहसतरुसत-
कलकलरवे, आसूणिय वयणरुद्धभीमदसणाधरोट्टगाढदढसप्प-
हारकरणुज्जयकरे, अमरिसवसतिव्वरत्तनिदारितच्छे, वेरदिट्ठि-
कुद्धचेट्ठियतिवलीकुडिलभिउडीकयललाडे वह परिणयनरसहस्स-
विककमवियभियवले ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘ इलीपहरणमिलिमिलितं खिप्पंतविज्जुज्जलविरचियसमप्पह-
नहतले ’ इलीपहरणमिडिमिलिन्तस्त्रिप्यमाणविधुदुज्ज्वलविरचितसमप्रमनभस्सले

तृणीरों से—भाताओं से, (कुवेणी) कुवेणियों से—एक प्रकार के शस्त्रों
से, (पीठ) पीठों से—यन्त्ररूप अस्त्रविशेषों से (आकलिए) युक्त रहते
हैं । ऐसे उस भयकर संग्राम में कितनेक राजा लोक परधन को हरण
करने के लिये ही उतरते हैं ॥ सू० ५ ॥

श्री ५। “ कुवेणी ” कुवेणीश्री ५। (एक प्रकारका शस्त्र) “ पीठ ” पीठेश्री
(—यन्त्ररूप अस्त्र विशेषेश्री) “ आकलिए ” युक्त रहते हैं श्रेया ते लयकर
मश्राभमा डेटलाड राजश्री परधननु डरथु डरवाने भाटे ५ उतरे ५ ॥ सू० ५ ॥

=ત્ર શ્લીભી. =દ્વિધારારે ચ્વડગપિશેને: મહરણે=ગદ્યેશ્વાને કરિયે: 'મિલિમિલિત'
 इति चाकचिवययुक्तःस्निग्धमाणैः भटैर्निपात्यमानैः प्रद्वियमाणैरित्यर्थः, पुन
 कीदृशैः खड्गादिशस्त्रैः ? विद्युज्ज्वलैः=विद्युद्वद्वિद्योतमानैः. विरचित=कृत समप्रभ=
 स्वदृशप्रकाशयुक्त नभस्तल यत्र स तथा तस्मिन्, तथा 'फुडपहरणे' स्फुटप्रहरणे
 स्फुटानि=स्पष्टानि प्रहरणानि=शस्त्राणि यस्मिन् स तथा तस्मिन् । 'महारणसम्ब
 भेरिवरतूरपउरपडुपडहाहयनिनायगभीरणदियपरतुभियपिउल्लयोमे' महार
 णशङ्खभेरिवरतूर्यप्रचुरपडुपडहाहतनिनादगम्भीरनन्दितमधुभितपिपुल्योपे = तत्र
 महारणे=महायुद्धे ये शङ्खाः=प्रतीता भेर्यः=रणभेर्यः वरतूर्याणि=प्रयानवादित्राणि
 तानि च प्रचुराणि=प्रभूतानि पटूनि=स्पष्टध्वनीनि च पटहाश्च='ढोल' इति प्रसि
 द्वास्तेषामाहताना=वादिताना निनादेन=शब्देन गम्भीरेण नन्दिताः=हर्षिताः वीराः

फिर भी संग्राम का वर्णन करते हैं—' इली पहरण ' इत्यादि ।

टीકાર્થ—(इली) दोनों तरफ जिनपर धार निकल रहि है ऐसे
 दुधारे (पहरण) खड्गादि अनेक शस्त्र जो (मिलिमिलित) अत्यन्त
 चमकीले हैं और (स्निग्ध) शत्रुओं पर फेंके जाते समय (विज्जु
 ज्जल) विजली जैसे चमकते हैं, ऐसे शस्त्रों ने (विरडयसमप्पहनह
 तले) नभस्तल को अपने सामान प्रकाश वाला बना दिया है अर्थात्
 जो लपलपाते हुए अति तीक्ष्ण चमकीले शस्त्रों से आकाशमण्डल चम
 कीला बन रहा है ऐसे संग्राम में (फुडपहरणे) तथा जिसमें शस्त्र
 दिखलाई दे रहे हैं तथा जो (महारणे) महासंग्राम में बजने
 वाले (मख) शस्त्रों से, (भेरी) रणभेरियों से (वरतूरपउरे)
 स्पष्ट ध्वनिसमप्रयान २ तूर्य-वादित्रों से, (पडुपडहाहयनिनायगभीर)
 बजते हुए ढोलों के गभीर शब्दों से (णदिय) हर्षित बने हुए जोशीले

હજી પણ સૂત્રકાર સંગ્રામનું વર્ણન કરે છે—“ ઇલી પહરણ ” ઇત્યાદિ

टीकार्थ—“इली”अन्ने तरङ्गेने धार छे तेवा जेधारा ‘पहरण’ अउग वगेरे अनेउ
 शस्त्रो जे “ मिलिमिलित ” अतिशय अणकता छे, अने “स्निग्ध” सत्तुओ तरङ्ग
 छे कवाभा आवे त्यारे “ विज्जुज्जल ” विज्जणी जेवा अभडे छे, जेवा शस्त्रो
 “ विरडयसमप्पहनहतले ” आकाशने पोताना जेवु प्रकाशित जनावी दीधु
 छे, जेटले डे जे अकयजित अति तीक्ष्ण अणकता शस्त्रोथी आकाश मउण अण
 कतु जनी रह्यु छे जेवा संग्रामभा “ फुडपहरणे ” तथा जेभा शस्त्रो
 नजरे पडे छे तथा जे “ महारण ” महासंग्रामभा वागता “ मख ”
 शजोथी, “ भेरी ” रणभेरीओथी “ वरतूरपउर ” स्पष्ट ध्वनिवाजा सुप्प सुप्प
 तूर्य - वादित्रोथी, “ पडुपडहाहयनिनायगभीरे ” वागता ढोलोना गभीर

પ્રભુમિતાઃ=ક્ષોભમાપન્નાશ્ચ યે કાતરા જનાસ્તેષા વિપુલઃ=પ્રિશાલ ઘોષો -નિર્યસ્મિન્
સ તથા તસ્મિન્ ' હ્યગયરહજોઽતુરિયપસરિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે ' હ્યગજ-
રથયોધત્વરિતપસ્રતરજઉદ્ધતતમાઽન્ધકારબહુલે=તત્ર હ્યાઃ = અશ્વાઃ, ગજાઃ-
પ્રસિદ્ધા, રથાઃ-સ્યન્દનાઃ, યોધા-સુભટાસ્તેષા પાદાભિઘાતેન ત્વરિત=શીઘ્ર
પસ્રત-વિસ્તારમુપગત રજઃ-ધૂલી, તદ્ ઉદ્ધતતમમ્-નિશયેનોદ્ગૃતમુઢીયમાન
તેનાઽન્ધકારબહુલે । તથા “ કાયરનરનયણદ્વિયયવાઝલકરે ” કાતરનયન-
હૃદયવ્યાકુલકરે, તત્ર = કાતરાઃ-અધીરા. યુદ્ધે પલાયનસ્વભાવા યે નરાસ્તેષા
નયનહૃદયયોઃ વ્યાકુલકરે=ક્ષોભજનકે તથા ' વિલુલિયઉકડવરમઝડકિરિડ-
કુડલોડુદામાઢોવિષ્ ' વિલુલિતોત્કટગરમુકુટકિરિટકુણ્ડલોડુદામાટોપિતે=તત્ર
વિલુલિતાનિ=ઇતસ્તતશ્ચલિતાનિ ઉત્કટવરાણિ=ઉત્તમપ્રકૃષ્ટાનિ યાનિ મુકુટાનિ=
પ્રસિદ્ધાનિ કિરીટાનિ=ત્રિશિખરશિરોભૂષણાનિ કુણ્ડલાનિ=મર્ણાભરણાનિ ઝડુદા-
માનિ=નક્ષત્રમાલાકારભૂષણાનિ ચ તૈરાટોપિત=વિસ્તારિતો ય' સ તથા તસ્મિન્

વીરોં કે પચ (પક્ષુભિય) ધ્રુમિત હુષ કાયર જનોં કે (વિઝલઘોસે)
વિપુલ ઘોષો સે વ્યાસ હો રહા હૈ, તથા (હ્યગયરહજોઽતુરિયપસ-
રિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે) (હ્ય) ઘોડોં કે, (ગય) ગજોં કે, (રહ)
રથોં કે, (જોહ) યોદ્ધાઓં કે, (ઉદ્ધયતમ) પૈરોં કે અત્યન્ત આઘાત સે
ઝડકર (તુરિયપસરિય) શીઘ્ર ફૈલી હુઈ (રય) ધૂલી સે જહા પર
(અધયારબહુલે) અધકાર હી અધકાર હો રહા હૈ (કાયરનરનયણદ્વિયય
વાઝલકરે) કાયરજનોં કે નયન ઓર હૃદયકો જો વ્યાકુલ બનારહા હૈ ।
(વિલુલિય) હધર ઢધર લટકતે હુષ (ઉકડવર) ઉત્તમોત્તમ ંસે
(મઝડ) મુકુટોં સે, (કિરીડ) કિરીટોં સે-ત્રીનશિખર વાલે શિરો
ભૂષણોં સે (કુડલ) કુણ્ડલોં સે, (ઝડુદામ) નક્ષત્ર માલાકાર ભૂષણોં

નાદથી, “ ણદીય ” આનદિત બનેલા બેગીલા વીરોના અને “ પક્ષુભિય ”
ક્ષોભ પામેલ કાયર જનોના “ વિઝલઘોસે ” વિપુલ આવાજથી વ્યાસ થઈ ગયું
છે તથા ‘ હ્યગયરહજોઽતુરિયપસરિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે ’ “ હ્ય ”
ઘોડાના, “ ગય ” હાથીઓના, “ રહ ” રથોના “ જોહ ” યોદ્ધાઓના “ ઉદ્ધય
તમ ” પગના અત્યંત આઘાતથી ઉડીને “ તુરિયપસરિય ” ઝડપથી ફેલાયલી “ રય ”
ધૂળથી બન્યા “ અધયારબહુલે ” અતિરાય અધકાર થઈ ગયો છે, “ કાયરનરનયણ
દ્વિયયવાઝલકરે ” કાયર લોડોના નયન અને હૃદયને જે વ્યાકુળ કરી ગેલ છે,
‘ વિલુલિય ’ અહીં તહીં લટકતા “ ઉકડવર ” ઉત્તમોત્તમ ‘ મઝડ ’ મુગટોથી,
‘ કિરીડ ’ કિરીટોથી-ત્રણ શિખરવાળા શિરોભૂષણોથી, “ કુડલ ” કુડળોથી “ ઝડુદામ ”
નક્ષત્ર માલાકાર ભૂષણોથી, “ આઢોવિષ્ ” જે આડળર યુક્ત બનેલ છે ‘ પગહ ’

‘ પગડપડાગઁન્નિઝયધયેજયતીચામરચલતત્તચારગમીરે ’ પ્રકટપતાકોન્નિઝત
 વ્રજવૈજયન્તીચામરચલત્તત્રાન્ધકારગમ્મીરે=તત્ર પ્રકટાઃ=દૂરસ્થા અપિ દૃશ્યમાના
 યાઃ પતાકાઃ=વિશાલપતાકાઃ ઉન્નિઝતાઃ=અત્યુચ્ચસ્થિતા* યે ઘગ્નાઃ=લઘુપતાકાઃ
 વૈજયન્ત્યશ્ચ=વિજયપતાકા તથા ચામરાણિ ચન્તિ ડગાણિ ચ તૈ* ક્રુતેનાચમારેણ
 ગમ્મીરે=ગહને તથા ‘ હયહેસિયહત્થિગુલગુલાઇયરહગગગાઇયપાઙ્કઠરહરાઇય
 આફોડિયસીહનાયઞ્ઠિલિય વિષુદ્ધિન્દ્રકુટકયમમ્મીમગગિના ’ તત્ર ‘ હયહેસિય ’
 હયહેપિત=હયાનામ્=શ્વાના હોપત=શબ્દિત ‘ હત્થિગુલગુલાઇય ’ હસ્તિગુલગુલાયિત
 હસ્તિના=ગજાના ગુલગુલાયિત=ગુલગુલગુલ્લઃ ‘ રહઘગગાઇય ’ રથગગગનાયિત=
 ધાવતા રથાના ઘનવનેતિ શબ્દ તથા ‘ પાઙ્કઠરહરાઇય ’ પદાતિ હરહરાયિત=
 પદાતોના સૈનિકાના હરહરેતિ ગદ્યિત ‘ આફોડિય ’ આસ્ફોટિત=વાહુપરિસ્ફોટન
 ‘ સીહનાય ’ સિંહનાદઃ=સિંહમ્યેવ શબ્દકરણ ‘ ઞ્ઠિલિય ’ સઙ્ઠિત=સીત્કારકરણ

સે (આડોવિણ) જો આડધર યુક્ત વના દુઆ હૈ । (પગડ) દૂર રહને પર
 મી દૃશ્યમાન એસી (પડાગ) વિશાલ પતાકાઓ સે, (ઉન્નિઝ) ઝંચી
 કી હુઈ એસી (ઘગ) લઘુપતાકાઓ સે, (વૈજયતી) વૈજયન્તી-વિજય
 સૂચક એસી ઋજાઓ સે, તથા (ચામર) ચામરોં સે ણવ (ચલતછત)
 ચલતછત્રોંસે કિયે ગધે (અધધાર) અધકારસે જો (ગમીરે) ગહન હો રહાહૈ,
 તથા જહાં (હયહેસિય) ઘોડો કી હિનહિનાદકે શબ્દ હો રહે હૈ, (હત્થિગુ
 લગુલાઇય) હાથિયોં કી ગુલગુલાહટ હો રહી હૈ, (રહઘગગાઇય) રથ
 ડધર દોડતે હુણ રથોં કા જહા ઘનવનાદ શબ્દ હો રહા હૈ, (પાઙ્કઠર
 હરાઇય) પદાતિયોં કી જહા હર હરાટ-‘ હરહર ’ હસ પ્રકાર કો તુમુલ
 ધ્વનિ હો રહી હૈ, (આફોડિય) વીર અપનો ૨ સુજાઓં કા જહા
 આસ્ફોટન-કર રહે હૈ-ફટકાર રહે હૈ, (સીહનાય) સિંહ કે જૈસી જહા

દૂર દૂર હોવા છતાં પણ નજરે પડતી એવી “ પડાગ ” વિશાળ પતાકાઓથી,
 “ ઉન્નિઝ ” ઉચી રાખેલી એવી “ ઘગ ” લઘુપતાકાઓથી, “ વૈજયતી ”
 વિજય સૂચક ધ્વજોથી, તથા “ ચામર ” ચામરોથી અને “ ચલતછત ” ચળણ છત્રોથી
 કરાયેલ “ અધધાર ” અધકારથી જે “ ગમીરે ” ગહન થઈ ગયું છે, તથા જ્યા
 “ હયહેસિય ” ઘોડાઓની હુણ હુણાટીનો આવજ થઈ રહ્યા છે, “ હત્થિગુલગુલાઇય ”
 હાથીઓની ગુલગુલાહટ થઈ ગહા છે, “ રહઘગગાઇય ” આમ તેમ દોડતા
 રથોનો ધણધણાટ જ્યા ચાલી રહ્યો છે “ પાઙ્કઠ હરહરાઇય ” પદાતી-પાયદળનો
 જ્યા હર હરાટ “ હર હર ” એ પ્રકારનો ભયજનક ધ્વનિ ચાલી રહ્યો છે,
 “ આફોડિય ” જ્યા વીરો પોત પોતાની ભુજાઓનું આસ્ફોટન કરી રહ્યા છે-
 ફટકારી રહ્યા છે “ સીહનાય ” સિંહના જેવી ગર્જના જ્યા થઈ રહી છે,

‘ વિષુદ્ધ ’ વિષુદ્ધ=વિરૂપધોપકરણમ્ ‘ ઉક્ષિદ્ધકઠકયસદ્ ’ ઉત્કૃષ્ટકઠકૃતશબ્દः=
 હર્ષાત્ ઉત્કૃષ્ટ -અતિગયિતઃ કઠ્ઠેન કૃતઃ શબ્દઃ ગલ્ગલાટરૂપઃ સ ઇવ ‘ ભીમગ-
 જ્જિય ’ ભીમગર્જિત-મેઘપનિથ, इत्येतानि ह्यहेपितादीनि सन्ति यत्र स तथा
 તસ્મિન્ । પુનઃ કીદશે ? તદાહ—‘ સયરાહસતરુસતકલકલરવે ’ સયરાહસત્
 રુપ્યત્ કલકલરવે=‘ મયરાહ ’ ઇતિ યુગપત્ હમતા રુપ્યતા=રુદ્ધ્યતા સૈનિકાના
 કલ્કલરવઃ=કોલાહલો યત્ર સ તથા તત્ર । તથા—‘ આસૂણિયવચણરુદ્ધીમદસણા-
 ધરોદ્દગાઢદદ્દમપ્પહારકરણુજ્જયકરે ’ આશૂનિતવદનરૌદ્રીમદગનાવરોદ્દગાઢદદ્દસત્પ-
 હારકરણોદ્યતકરે=તત્ર આશૂનિતેન=ઈપત્સ્થલીકૃતેન વદનેન=મુસેન યે રૌદ્રા =ક્રોધ-
 ચણ્ડાસ્તે તથા, તથા-ભીમ-ક્રોધાવેશાદ્ ભયદ્ભૂર યયામ્યાત્તથા દશનૈ =દન્તૈર-
 ધરોદ્દગાઢ દદ્દ યસ્તે તથા પરસુભટાસ્તેષા સત્પહારકરણૈ = શોભનતયા શસ્ત્ર

ગર્જના હો રહી છે (ઝિલિય) ‘ સી સી ’ હમ પ્રકાર કા જહા સીત્કાર
 શબ્દ હો રહા છે, (વિષુદ્ધ) યોદ્ધાઓ દ્વારા વિરૂપધોપ જહા ક્રિયા જા
 રહા છે, (ઉક્ષિદ્ધકઠકયસદ્) હર્ષ સે ફાલે હુઈ જહા અપને ૨ કઠો સે
 ઉત્કૃષ્ટ ગલ્ગલાટ રૂપ શબ્દ કર રહે છે (ભીમગજ્જિય) હસ કારણ
 ણેસા વહા જાત હોતા છે કિ માનો મેઘ હી યહા ગર્જ રહા છે । (સય-
 રાહસતરુસતકલકલરવે) (હસત) હસતે તથા (રુસત) ક્રોધ સે
 રુદ્ધ હુઈ સૈનિક જનો કા (મયરાહ) ણક માય જહા પર (કલકલરવે)
 કલકલ શબ્દ હો રહા છે, તથા જહા સૈનિકજન (આસૂણિયવચણ)
 અપનાર મુંદ યોદ્ધે સે રૂપમેં ફુલાકર (રુદ્ધ) ક્રોધ સે ચણ્ડ વન રહે છે
 તથા (ભીમ) ક્રોધ કે આવેશ સે ભયદ્ભૂરરૂપ મેં જહાં વે (દસણાધરો-
 દ્દગાઢદદ્દ) અપને ૨ અધરોદ્ધો કો દદ્દતા પૂર્વક હસ રહે છે, તથા (સપ્પ

“ ઝિલિય ” ‘ સીસી ’ એવો જ્યા મિલ્યા ગાંધો થઈ રહ્યા છે તથા “વિષુદ્ધ”
 યોદ્ધાઓ દ્વારા વિરૂપ ધોપ ન્યા ડગાઈ રહ્યો છે, “ ઉક્ષિદ્ધકઠકયસદ્ ” આનદથી
 ફુલાઈ ગયેલા મૈનિડો ન્યા પોત પોતાના ડઠમાયો ઉત્કૃષ્ટ ગર્જના જેવા શબ્દો
 કાઢી રહ્યા છે, “ ભીમગજ્જિય ” તે કાનણે ત્યા મેઘ ૪ ગર્જના કરી રહ્યો
 હોય તેવું લાગે છે “ સયરાહસતરુસતકલ્કલરવે ” “ હસત ” હમતા
 તથા “ રુસત ” ડોપાયમાન થયેલ મૈનિડોનો ‘ મયરાહ ’ એડ સાથે ન્યા
 “ કલ્કલરવે ” ડલ ડલ શબ્દ-વ્વનિ થઈ ગયો છે, તથા ન્યા મૈનિડો “ આસૂણિ
 ય વચણ ” પોત પોતાનું મુખ થોડા પ્રમાણમા ફુલાવીને ‘ રુદ્ધ ’ ક્રોધથી ઉગ્ર
 બની ગયેલ છે તથા “ ભીમ ” ક્રોધના આવેશમા ભયકર ગીતે ન્યા તેઓ
 “ દસણાધરોદ્દગાઢદદ્દ ” પોતપોતાના અધરોદ્ધોને દદ્દતાધા કરી રહેલ

‘ પગડપડાગઁચ્છિયધયજયતીચામચલતત્તપ્રયારગમ્મીરે ’ પ્રસ્ટપતાકોન્ઠિત
 વ્રજવૈજયન્તીચામચલત્તપ્રાન્ધકારગમ્મીરે=તત્ર પ્રકટાઃ=દૂરસ્થા અપિ દ્રવ્યમાના
 યાઃ પતાકાઃ=વિશાલપતાકાઃ ઉન્ઠિતાઃ=અત્યુન્નમ્થિતા યે ધ્વજાઃ=લઘુપતાકાઃ
 વૈજયન્ત્યશ્ર=વિજયપતાકા તથા ચામરાણિ ચગ્નન્તિ ડગ્રાણિ ચ તેઃ ક્રતેનાન્વમારણ
 ગમ્મીરે=ગદને તથા ‘ હ્યહેસિયહત્વિગુલગુગાઙ્ગરદ્વગગગાઙ્ગપાઙ્ગદ્વરદ્વરાઙ્ગ
 આફોડિયસીદ્ધનાયઞ્છિલિય વિઘુદ્વિન્દ્રકટકયસમ્મોમગઙ્ગિન ’ તત્ર ‘ હ્યહેસિય ’
 હ્યહેપિત=દયાનામ્=અથાના દોષત=શબ્દિત ‘ હત્વિગુગુગાઙ્ગ ’ હસ્તિગુલગુલાયિત
 હસ્તિના=ગજાના ગુલગુલાયિત=ગુલગુલગ્ગ-દ્વ ‘ રદ્વગગગાઙ્ગ ’ રથગગગનાયિત=
 ધાવતા રથાના ધનઘનેતિ શબ્દ. તથા ‘ પાઙ્ગદ્વરદ્વરાઙ્ગ ’ પદાતિ દ્વરદ્વરાયિત=
 પદાતોના સૈનિકાના દ્વરદ્વરેતિ શબ્દિત ‘ આફોડિય ’ આમ્ફોટિત=વાદુપરિસ્ફોટન
 ‘ સીદ્ધનાય ’ સિદ્ધનાદઃ=સિદ્ધસ્યેવ શબ્દકરણ ‘ ઞ્છિલિય ’ સઙ્ગિત=સીત્કારકરણ

સે (આડોવિણ) જો આડધર યુક્ત ઘના હુઆ હૈ । (પગડ) દૂર રહને પર
 મી દ્રવ્યમાન એસી (પડાગ) વિશાલ પતાકાઓ સે, (ઉન્ઠિત) ઝંઝી
 કી હુઈ એસી (ધય) લઘુપતાકાઓ સે, (વૈજયતી) વૈજયન્તી-વિજય
 સૂચક એસી ધ્વજાઓ સે, તથા (ચામર) ચામરો સે ણવ (ચલતછત્ત)
 ચચલછત્રોસે કિયે ગયે (અધયાર) અધકારસે જો (ગમ્મીરે) ગદન હો રહાહૈ,
 તથા જહાં (હ્યહેસિય) ઘોડો કી હિનહિનાટકે શબ્દ હો રહે હૈ, (હત્વિગુ
 લગુલાઙ્ગ) હાથિયોં કી ગુલગુલાહટ હો રહી હૈ, (રદ્વગગગાઙ્ગ) હધર
 ઉધર દોડતે હુણ રયોં કા જહા ધનઘનાટ શબ્દ હો રહા હૈ, (પાઙ્ગદ્વર
 દ્વરાઙ્ગ) પદાતિયોં કી જહા હર દ્વરાટ-‘ હરદ્વર ’ હસ પ્રકાર કો લુમુલ
 ધ્વનિ હો રહી હૈ, (આફોડિય) વીર અવની ૨ ધુજાઓં કા જહા
 આસ્ફાલન-કર રહે હૈ-ફટકાર રહે હૈ, (સીદ્ધનાય) સિદ્ધ કે જૈસી જહા

દૂર દૂર હોવા છતા પણ નજરે પડતી એવી “ પડાગ ” વિશાળ પતાકાઓથી,
 “ ઉન્ઠિય ” ઉંચી રાખેલી એવી “ ધય ” લઘુપતાકાઓથી, “ વૈજયતી ”
 વિજય સૂચક ધ્વજાઓથી, તથા “ ચામર ” ચામરોથી અને “ ચલતછત્ત ” ચચળ છત્રોથી
 કરાયેલ “ અધયાર ” અધકારથી જે “ ગમ્મીરે ” ગદન થઈ ગયું છે, તથા જ્યા
 “ હ્યહેસિય ” ઘોડાઓની હણ હણાટોનો આવાજ થઈ રહ્યો છે, “ હત્વિગુલગુલાઙ્ગ ”
 હાથીઓની ગુલગુલાહટ થઈ રહી છે, “ રદ્વગગગાઙ્ગ ” આમ તેમ દોડતા
 રથોનો ધણધણાટ જ્યા આલી રહ્યો છે “ પાઙ્ગદ્વરદ્વરાઙ્ગ ” પાતા-પાયદળનો
 જ્યા હર હરાટ “ હર હર ” એ પ્રકારનો ભયંકર વ્વનિ આલી રહ્યો છે,
 “ આફોડિય ” જ્યા વારો પોત પોતાની ભુજાઓનું આસ્ફાલન કરી રહ્યા છે-
 ફટકારી રહ્યા છે “ સીદ્ધનાય ” સિદ્ધના જેવી ગર્જના જ્યા થઈ રહી છે,

પુનઃ કીદશો સગ્રામે ? શ્લોક ' વગ્ગંત ' શ્લોકાદિ ।

મૂલમ્—વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે આવાડિયછેયલાઘવ-
પહારસાહિય સમૂસિયવાહુજુયલે મુક્કટ્ટહાસપુક્કતવોલવહુલે,
ફુરફલગાવરણગાહિયગયવરપત્થતદરિયસ્થલમહપરોપ્પરપલગ-
જુહગાવિયવિમ્કોસિયવરાસિરોસતુરિયઅભિમુહપહરંતછિળ્લકરિ-
કરિવિઅગિયકરે, અવદ્ધનિસુદ્ધિમિન્નપાલિયપગલિયરુહિરકયમૂ-
મિકદ્ધમચિલિચિહ્વપહે કુચ્છિદાલિયગલિયનિવ્ભેલિયંતફુરફુર-
તત્તિગલમમ્મહયવિગયગાઢદિળ્લપ્પહારમુચ્છિયસ્થલંતવિવ્ભલવિ-
લાવકલ્લણે, હયજોહમમતતુરગઉદ્ધામમત્તકુજરપરિસકિય જળ-
ણિવ્વુક્કછિળ્લજ્ઞયમગ્ગરહવરનદ્ધસિરકરિકલેવરાકિળ્લપડિયપ-
હરણવિકિન્નાભરણમૂમિભાગે નચ્ચતકવધપપરે, મયકરવાયસપ-
રિલિત્તિગિહ્વમંડલમમંતછાયંધયારગંભીરે ॥ સૂં ૭ ॥

ટીકા—“ વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે ’ વલાતુરગરથપ્રધાવિતસમરમહે
=તત્ર વલાન્તઃ=પ્રેપમાણા. યે તુરગાઃ=અશ્વાઃ સ્વા’ તૈ પ્રધાવિતા = વેગેન નીતા

કિયા જા રહા હૈ એસે સગ્રામ મે કિતનેક રાજા ઉતરતે હૈ એસા સવધ
યહા લગા લેના ચાહિયે ॥ સૂં ૬ ॥

ફિર કૈસે સગ્રામ મેં ઉતરતે હૈં સો કહતે હૈ—‘ વગ્ગત તુરગ ’ શ્લોકાદિ ।

ટીકાર્થ— (વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે) ટુણટુણાટ કરતે હુણ
ઘોડો સે એવ રયો સે જહા પર જલ્દી ૨ મટ પહુંચાયે જા રહે હૈં, તથા

હીન ડરવામા આવી રહ્યુ છે, એવા સગ્રામમા ડેટલાડ રાજાઓ ઉતરે છે, એવા
સળધ અમળ લેવાનો છે ॥ સૂં ૬ ॥

તેઓ તેવા અગ્રામમા ઉતરે છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે— “ વગ્ગત
તુરગ ” શ્લોકાદિ

ટીકાર્થ—“ વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે ” હુણહુણાટી કરતા ઘોડા
ઓથી અને રથોની મદદથી બધા જલ્દીથી એનિકોને મોડલાઈ રહ્યા છે, તથા

‘ગયત્રપત્યત’ ગજત્રપાર્યમાના = ગજત્રપાન્=શત્રુકુલ્લરાન્ હન્તુમારોહુ વા
પાર્યમાનાઃ=અભિલપમાણા યે તે તથા ‘દરિયલ્લભટ’ દક્ષલ્લભટાઃ=દક્ષાઃ
સ્વલ્લગર્વિતાઃ, લ્લભાઃ=દુષ્ટા-ભટાઃ=યોગાસ્તે, તથા ‘પરોપ્પરપલગ્ગ’ પરસ્પર
પલગ્ગાઃ=પરસ્પર શત્રુમભિહન્તુ પ્રવૃત્તાઃ ‘જુદ્ધગલ્લિય’ યુદ્ધગર્વિતાશ્ચ=યુદ્ધકૌશલાઃ-
હક્કારપૂર્ણાઃ, ‘વિકોસિયવરાસિ’ વિકોશિતવગમયઃ-વિકોશિતાઃ=કોશાન્નિષ્કા
સિતાઃ અસયઃ=લ્લભાઃ યૈસ્તે તથા, ‘રોસ’ રોપેગ=ક્રોધેન ‘તુરિય’ ત્વરિત=
શીઘ્રમ્, ‘અભિમુહ’ અભિમુલ્લ ‘પહરત’ પ્રહરન્નસ્તે ળિન્નકરિકરાઃ-ળિન્નાઃ
કરિકરાઃ=ઠસ્તિશુન્ડા યૈસ્તે તથા, વિયગિયકરે’ વ્યઙ્ગિતાઃ=વિકર્તિતા. કરા’ યેષા
તે તથા, એતે વિદ્યન્તે યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્-પરસ્પરાભિહનનભેદનઠેદનપહરણ
તત્પરૈર્યોધૈઃ ળિન્નમિન્નૈ.-‘ હયગજરથપદાતીના પરિભ્રષ્ટશુન્ડમુન્ડહસ્તપાદાદિભિ
વ્યાપ્ત સ્થલ યત્રૈવ ભૂતે સગ્રામે હત્યર્થઃ. અવશ્વનિસુદ્ધિભિન્નફાલિયપગલિયરુઠિરકય-

એક યોધા દૂસરે યોધા કે હાથીનો મારનેકે લિયે અથવા ઉસ પર સવાર
હોનેકે લિયે ઉત્સુક રહતા હૈ, તથા જિસમેં (દરિયલ્લભટ) દુષ્ટ યોધા
ગણ અપને લલ સે અધિક ગર્વિત બને રહતે હૈ, (પરોપ્પરપલગ્ગ) એક
દૂસરો નો મારને કે લિયે જહા વીર પ્રયત્નશીલ રહતે હૈ, અથવા પ્રવૃત્ત
હોતે હૈ, (જુદ્ધગલ્લિય) યુદ્ધ કરને કા કૌશલ યોદ્ધાઓ મેં વિશેષરૂપ સે
જગકર ઉન્હેં જહા ગર્વિત બના દિયા હૈ, તથા (વિકોસિયવરાસિ) જહા
પર યોદ્ધા અપની ૨ શ્રેષ્ઠ તલવારો નો મ્યાન સે બાહિર કિયે હુન્ હી રહતે
હૈ, ઓર જહા (રોસતુરિયઅભિમુહપહરતળિન્નકરિકર) ક્રોધ સે ભર-
કર એક યોધા દૂસરે યોધાકે ઉપર પ્રહાર કર ઉસકે હાથી કે શુન્ડાદણ્ડ
નો મગ્ન કર દેતા હૈ, તથા (વિયગિયકરે) પરસ્પરમે જહા યોદ્ધાઓ-

રપત્યત” જેમા એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના હાથાને મારી નાખવાને માટે,
અથવા તેના પર સવાર થવાને માટે આતુર રહે છે, તથા જેમા “દરિયલ્લ-
ભટ” દુષ્ટ યોદ્ધાઓ પોતાના બળને લીધે વધારે ગર્વિષ્ટ બનેલા રહે છે,
“પરોપ્પરપલગ્ગ” જ્યાં એક બીજાને મારવાને માટે વીર પુરુષો પ્રયત્નશીલ
રહે છે, અથવા પ્રવૃત્ત હોય છે, “જુદ્ધગલ્લિય” જ્યાં યોદ્ધાઓનું યુદ્ધ કૌશલ્ય
વધારે પ્રમાણુમા બળવૃત્ત થયું છે, અને તે કારણે તેઓ વધારે ગર્વિષ્ટ બન્યા
છે, તથા “વિકોસિયવરાસિ” જ્યાં યોદ્ધાઓ પોતા પોતાના શ્રેષ્ઠ તલવારોને
મ્યાનમાથી બહાર કાઢાને લડવાને તૈયાર હોય છે, અને જ્યાં “રોસતુરિય
અભિમુહપહરતળિન્નકરિકર” ક્રોધાયમાન થઈને એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના
ઉપર પ્રહાર કરીને તેના હાથીની સૂઢને કાપી નાખે છે, તથા “વિયગિયકરે” જ્યાં

સમરે મટા યત ત તથા તત્ર “ આહવિયછેયલાઘવપહારગામિણિ ” આપતિતલેક
 લાઘવપહારસાધિતે=તત્ર આપતિતાઃ=યોગુઘ્ઘતા યે ‘ત્રેકા’=નિપુણાઃ મટાઃ, તેણાં
 તત્કર્તૃકા इत्यर्थः, યે લાઘવપહારાઃ=ચાતુર્યપૂર્ણમહારાસ્તૈઃ સાધિતો=નિર્મિતઃ ય
 સ તથા તસ્મિન્ । તથા ‘ સમૂસિયત્રાહુજુયલે ’ સમુન્નિ, તત્રાહુયુગલે=સમુન્નિતૂતાનિ
 =હર્પાધિકયાદ્યર્થોક્તાનિ ત્રાહુયુગલાનિ મટૈર્યત્ર સ તથા તત્ર, તથા ‘ મુક્કટ્ટહાસપુક
 તવોલવહુલે ’ મુક્કાટ્ટહાસપૂત્કુર્વન્તો વહુલે = મુક્કાટ્ટહાસઃ=કૃતમહાહાસનયઃ,
 પૂત્કુર્વન્તઃ=નામનિર્દેશપૂર્વક પરમાદ્યન્તો યે સુમટાસ્તેષા યોલા=કોલાહલઃ, સ
 વહુલો યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્ । ‘ ફુરફલગાવરણગહિયગયવરપત્યતદરિયમહ
 સ્વલપરોપ્પરપલગગજુદ્ધગવિયત્રિકોસિયવરામિરોસતુરિયજમિમુદ્ધપદરતછિણ્ણકરિક
 રવિઅગિયકરે ’ સ્ફુરફલગાવરણગૃહીતગજવરપ્રાર્થયમાનદમ્પમટગ્ગલ-પરસ્પરમન્ન
 યુદ્ધગર્વિતત્રિકોશિતવરાસિ-રોપત્વરિતામિમુલ્લપદર-ચિઠ્ઠન્ન-કરિકર-વ્યઙ્ગિત-કરે
 તત્ર ‘ ફુરફલગાવરણગહિય ’ સ્ફુરફલગાવરણા=સ્ફુરા=અસ્ત્રપ્રતિઘાતનિવારકચ
 ર્મમયપટ્ટવિશેષા, ફલકાનિ=‘ ઢાલ ’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ આવરણાનિ ચ=
 કવચાનિ, તાનિ ગૃહીતાનિ=ધૃતાનિ યૈસ્તે તથા સ્ફુરકાદિ શસ્ત્રધારિણ, તથા

(આહવિયછેયલાઘવપહારસાહિય) જો યુદ્ધ કરને કે લિયે ઉદ્યત હુય
 ઇસે નિપુણ મટો કે ચાતુર્ય પૂર્ણ પ્રહારો સે નિર્મિત કિયા ગયા હૈ, (સમૂ
 સિયત્રાહુજુયલે) તથા જિસમે ત્રપિત વને હુય મટ હર્પ કી અધિકતા
 સે અપને ૨ ત્રાહુયુગલો કો ડપર ડઠા રહે હૈ (મુક્કટ્ટહાસપુક્તવોલવહુલે)
 તથા જિસમે સુમટજનો કી મહાહાસ્યધ્વનિ દ્વારા ઇવ દૂસરો કો નામ
 નિર્દેશપૂર્વક બુલાને કે શબ્દો દ્વારા વહુત કોલાહલ મચા રહતા હૈ
 તથા જિસમે યોદ્ધાગણ (ફુરફલગાવરણગહિય) અસ્ત્રપ્રતિઘાતકો નિવારણ
 કરનેવાલે ચર્મમય પટ્ટવિશેષોંકો, ફલકોંકો ઢાલોંકો લિયે રહતે હૈ, તથા
 કવચ આદિ આવરણોંસે સજ્જિત રહાકરતે હૈ, તથા (ગયવરપત્યત) જિસમે

“ આહવિયછેયલાઘવપહારસાહિય ” જે યુદ્ધ કરવાને તૈયાર થવેલા એવા
 નિપુણ સુભટોના ચાતુર્યપૂર્ણ પ્રહારોથી યુક્ત છે “ સમૂસિયત્રાહુજુયલે ” તથા
 જેમા આનદિત બનેલા સુભટો આનદની અધિકતાથી પોત પોતાની બુલ્લઓ
 ઉચી કરી રહેલ છે “ મુક્કટ્ટહાસપુક્તવોલવહુલે ” તથા જેમા સુભટોના
 યુક્ત હાસ્યનો ધ્વનિ તથા બીજાને નામ દઈને બોલાવવાના શબ્દો દ્વારા ભારે
 કોલાહલ મચી રહ્યો છે, તથા જેમા યોદ્ધાઓનો સમૂહ “ ફુરફલગાવરણ
 ગહિય ” શસ્ત્રોના ધારને રોકવાને માટે ચર્મમય પટ્ટ વિશેષોને, ફલકોને-ઢાલોને
 ધારણ કરે છે તથા બખતર આદિ આવરણોથી સજ્જ રહે છે તથા “ ગયવ

વિકૃતઃ=ઝોધાવેશેન વિચિત્રરૂપઃ ગાઢઃ=મર્મભેદી દત્તઃ શત્રુભિઃ પ્રહારો યેવા તે તથા, અત એવ મૂર્ચ્છિતાઃ=મૂર્છા પ્રાપ્તાઃ, લુઠન્તઃ = ભૂમૌ વિલુઠન્ત, વિદ્વલાઃ= વ્યાકુલાશ્ચ તેવા વિલાપાઃ=' હા હતાવયમિ'-ત્યાધાક્રન્દશબ્દાઃ, તૈઃ કરુણો= દયાજનકો યઃ સ તથા તત્ર, પુનઃ કીદૃશે ? इत्याह-' हयजोह-भमत तुरग-उदाममत्तकुजरपरिसक्रियजण-णिबुक्छिणज्झय-भग्ग-रहवर - नट्टसिरकरिकले वराकिण्ण-पडियपहरण-विकिन्नाभरणभूमिभागे ' हतयोधभ्रमतुरङ्गोदाममत्तकुञ्जर-परिशङ्कितजननिर्मूलछिन्न-वज्रभग्नस्थवरनष्टगिरः करिकलेवराकीर्णपतितप्रहरणवि-कीर्णभरणभूमिभागे' तत्र-'हयजोहभमततुरग'-हतयोधभ्राम्यत्तुरगः-हताः=मृता योधाः=अश्वारोहा सवार इति भाषा प्रसिद्धाः येषां, तथाभूता भ्राम्यन्तः=इतस्ततो धावन्तः तुरगाः=अश्वा यस्मिन् स तथा, ' उदाममत्तकुजरपरिसक्रियजण'-उदाम-मत्तकुञ्जरपरिशङ्कितजन.-उदाममत्तकुञ्जरेभ्यो=निरङ्कुशमदोन्मत्तहस्तिभ्यः. परिशङ्किता =वयशङ्काकुला. जना यस्मिन् स तथा, ' णिबुक्छिणज्झयभग्गरहवर '-निर्मूलछिन्न वज्रभग्नस्थवराः-तत्र निर्मूला =मूलरहिताः=वज्रदण्डेभ्यो निस्सृताः

સે વિચિત્રરૂપ ગાઢ મર્મ ભેદી પ્રહાર શત્રુઓ દ્વારા દિયા ગયા હૈ ઓર હસીસે જો (મુર્ચ્છિય) મૂર્છા કો પ્રાપ્ત હોકર (લુઠત) ભૂમિ પર ઇધર સે ઊધર લોટ રહે હૈં એવ (વિદ્વલ) વ્યાકુલ હોકર (વિલાવ) “ હા મૈં મારા ગયા ” इत्यादिरूप से विलाप कर रहे हैं ऐसे योद्धाओं के विलापो से जो (करुणे) दयाजनक बना हुआ है तथा जो (हयजोह-भमततुरग) अपने सवारों के मर जाने से इच्छानुसार इधर उधर घूमते हुए घोड़ों से युक्त हो रहा है, तथा जहां (उदाममत्तकुजरपरि-सक्रियजणे) उत्कट मदवाले हाथियों से, वध की शका के भय से मनु-ष्य व्याकुल हो रहे हैं (णिबुक्छिणज्झयभग्गरहवरे) जहां निर्मूल दंडा रहित और छिन्न-फटी हुई ध्वजाएँ और भग्न हुए श्रेष्ठ रथ पड़े हैं

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે લયઠર મર્મભેદી પ્રહાર કરાયો છે અને તે ડારણે બેઓ “ મુર્ચ્છિય ” મૂર્છાવળ થઈને “ લુઠત ” જમીન ઉપર આમ તેમ આળોટે છે અને ‘ વિદ્વલ ’ દયાજનક બનેલા છે, ‘ વિલાવ ’ અરે ! મને મારી નાખ્યો ” इत्यादि प्रकारे विलाप करे છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી બે “ કરુણે ” દયાજનક બનેલા છે, તથા બે “ હયજોહભમતતુરગ ” પોતાના સવારો મરી જવાથી ઇચ્છાનુમાર આમ તેમ ધૂમતા ઘોડાઓથી બે યુક્ત છે, તથા જ્યાં “ ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજણ ” મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા ઉચ્ચરાઈ જવાના લયથી માણુઓ વ્યાકુળ બનેલા છે, “ ણિબુક્કછિણજ્ઝયભગ્ગરહવર ” જ્યાં નિર્મૂળ દંડા રહિત

ભૂમિકદમચિચિલ્લપદે ' અપરિદ્ધનિસુદ્ધમિત્રકાલિતપ્રગટિતરુપિરકૃતભૂમિકદમચિ
ચિલ્લપદે તત્ર અપરિદ્ધા = ગાણાદિભિ, નિસુદ્ધા = નિપાતિતાઃ ગઢસ્તાદિભિ, મિત્રાઃ
ત્રિશૂલાદિભિઃ ફલિતાઃ = સ્ફાટિતા = વિદારિતાઃ કુઠારાદિભિર્થ, તેભ્યઃ પ્રગલિતેન
= ક્ષરિતેન રુધિરેણ કૃતઃ = જાતો યો ભૂમૌ = પૃથિવ્યા કર્મસ્તેન ચિલિચિટ્ટાઃ = આર્દ્રાઃ
પન્થાનઃ = માર્ગાઃ યત્ર સ તથા તત્ર, ' કુચ્છિદાલિયગલિયનિમ્મેલિયતફુરફુર
તવિગલમમ્મહયવિગયગાઢદિણપ્પહારમુચ્છિત્થયરુલતવિગ્મલવિગ્મલકલુણે ' કુચ્છિ
દારિતગલિતનિર્ગ્મલિતાન્ત્રફુરફુરાયમાણવિગલમર્મહતવિહનગાઢદત્તપહારપ્ચ્છિત્તલુ
ઠ્ઠવિદલવિલાપકરુણે = દારિતાત્ = વિદારિતાત્ કુચ્છેઃ ઉદરાત્ ગલિત રુધિર
નિર્ગ્મલિતાનિ = ઉદરાદ્રહિર્નિગલિતાનિ ચ અન્નાણિ = ' આંતરિયાં ' इति
માષા પ્રસિદ્ધાનિ યેષાં તે તથા, અતएव-ફુરફુરાયમાણાઃ = કમ્પમાનાઃ
વિકલાઃ = નિરુદ્ધેન્દ્રિયવૃત્તિત્વેન વ્યાકુલાઃ, મર્મહતાઃ = કુઠાદિમર્મસ્થાને હતાસ્તથા

ઓંકે હાથોં કો કાટ દિયા કરતે હેં તથા (અવહદ્ધ) ઘાણા સે વેધે ગયે,
(નિસુદ્ધ) ગલે મેં હાથ ડાલકર હઠાત્ જમીન પર પટક દિયે ગયે, (મિત્ર)
ત્રિશૂલ આદિ કે દ્વારા ભેદે ગયે ઇવ (ફાલિય) કુઠાર આદિ દ્વારા ફાડ
દિયે ગયે-વિદારિત કિયે ગયે એસે યોદ્ધાઓં કે શરીર સે (પગલિય)
ક્ષરતે છુણ (રુદિર) રક્તસે (કયભૂમિકદમચિચિલ્લપદે) જહા કી ભૂમિમેં
કીચડ મચ રહી હૈ ઓર હસી સે જહાકે માર્ગ ચિકને હો રહે હેં તથા
(કુચ્છિદાલિય) વિદારિત છુણ ઉદરસે જિનકે (ગલિય) રૂન વહરહા હૈ ઓર
(નિમ્મેલિયત) આતેં મી જિનકી પેટસે વાહિર નિકલ આઈ હેં, હસી કારણ
જો (ફુરફુરત) કપ રહે હૈ ઓર (વિગલ) વિકલ હો રહે હેં એસે
યોધા કિ જિન પર (મમ્મહયવિગયગાઢદિણપ્પહાર) ક્રોધ કે આવેશ

યોદ્ધાઓં એક બાબના હાથ ઘેલી નાખે છે, તથા “અવહદ્ધ” બાણોથી વીધાયેલા
“નિસુદ્ધ” ગાળામા હાથ લગવીને બળપૂર્વક જમીન પર પટકાયેલ, “મિત્ર” ત્રિશૂળ
આદિ દ્વારા ભેદાયેલા, અને “ફાલિય” ફરથી આદિ દ્વારા ચીરી નાખેલ, યોદ્ધાઓના
શરીરમા “પગલિય” વહેતા “રુદિર” લોહીથી “કયભૂમિકદમચિચિલ્લપદે” બધા
જમીનમા કીચડ થઈ ગયો છે, અને તે કારણે બધા માર્ગ લપસણો થઈ ગયો છે, તથા
“કુચ્છિદાલિય” જેમના વિદારિત થયેલા ઉદરમાથી “ગલિય” લોહી વહી રહ્યું છે
અને “નિમ્મેલિયતે” જેમના આતરડા પણ પેટમાથી બહાર નીકળી પડ્યા છે
એ જ કારણે જે “ફુરફુરત” કંપી રહ્યા છે, અને “વિગલ” વ્યાકુળ થઈ
ગયા છે, જેમના પર “મમ્મહયવિગયગાઢદિણપ્પહાર” ક્રોધના આવેશમા

વિકૃતઃ=ક્રોધાવેગેન વિચિત્રરૂપઃ ગાઢ=મર્મભેદી ઢત્તઃ શત્રુભિઃ પ્રહારો યેવા તે તથા, અત એ મૂર્ચ્છિતાઃ=મૂર્છા પ્રાપ્તા, લુઠન્ત= ભૂમી વિલુઠન્ત, વિહ્વલાઃ= વ્યાકુલાથ તેવા વિલાપા= ' હા હતાવયમિ' -ત્યાધાક્રન્દશબ્દાઃ, તૈઃ કરુણો= દયાજનકો યઃ સ તથા તત્ર, પુનઃ ક્રીદ્યે ? ઇત્યાહ- ' હયજોહ-ભમત તુરગ- ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજળ-ગિન્વુક્કઞ્ચિણ્ણજ્ઞય-ભગ્ગ-રહવર - નઠ્ઠસિરફરિક્કલે વરામિણ્ણ-પહિયપહરણ-વિકિન્નામરણભૂમિભાગે ' હતયોધમ્મતુરગ્ગોદામમત્તકુજ્જર- પરિશદ્ધિતજનનિર્મૂલઞ્ચિન્ન-વજ્રમગ્ગરથવરનપ્પટિગિરઃ કુરિક્કલેવરાકીર્ણપતિતપ્રહરણવિ- કીર્ણામરણભૂમિભાગે' તત્ર- 'હયજોહમમતતુરગ' -હતયોધમ્મામ્મતુરગઃ-હતાઃ=મૃતા યોધાઃ=અશ્વારોહા સવાર ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા યેવા, તથામૃતા આમ્યન્તઃ=ઇતસ્તતો ધાવન્તઃ તુરગાઃ=અશ્વા યસ્મિન્ સ તથા, ' ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજળ' -ઉદામ- મત્તકુજરપરિશદ્ધિતજન-ઉદામમત્તકુજરેભ્યો=નિરઙ્ગુલમદોન્મત્તદસ્તિભ્યઃ પરિશ દ્ધિતા =વયગદ્ધાકુલા જના યસ્મિન્ સ તથા, ' ગિન્વુક્કઞ્ચિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવર ' - નિર્મૂલઞ્ચિન્ન વજ્રમગ્ગરથવરા-તત્ર નિર્મૂલા =મૂલરહિતાઃ=વજ્રદંડેભ્યો નિસ્સૃતા

સે વિચિત્રરૂપ ગાઢ મર્મ ભેદી પ્રહાર શત્રુઓ દ્વારા દિયા ગયા હૈ ઓર ડસીસે જો (મુર્ચ્છિય) મૂર્ચ્છા કો પ્રાપ્ત હોકર (લુઠત) ભૂમિ પર ઇધર સે ઉધર લોટ રહે હૈં એવ (વિહ્વલ) વ્યાકુલ હોકર (વિલાવ) “ હા મૈં મારા ગયા ” ઇત્યાદિરૂપ સે વિલાપ કર રહે હૈં એસે યોદ્ધાઓં કે વિલાપોં સે જો (કરુણે) દયાજનક બના હુઆ હૈ તથા જો (હયજોહ- ભમતતુરગ) અપને સવારો કે મર જાને સે ઇચ્છાનુસાર ઇધર ઉધર ઘૂમતે હુએ ઘોડોં સે યુક્ત હો રહા હૈ, તથા જહાં (ઉદામમત્તકુજરપરિ- સક્રિયજળે) ઉત્કટ મદવાલે હાથિયોં સે, વધ કી શકા કે ભય સે મનુ ષ્ય વ્યાકુલ હો રહે હૈં (ગિન્વુક્કઞ્ચિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવરે) જહા નિર્મૂલ દડા રહિત ઓર ઞ્ચિન્ન-ફટી હુઈ ધ્વજાઈ ઓર મગ્ગ હુએ શ્રેષ્ઠ રથ પડે હૈ

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે લયડર મર્મભેદી પ્રહાર કરાવેલ છે અને તે ઝારણે બેસે “ મુર્ચ્છિય ” મૂર્ચ્છાવળ થઈને “ લુઠત ” જમીન ઉપર આમ તેમ આજોડે છે અને ‘ વિહ્વલ ’ દયાજનક બનેલ છે, ‘ વિલાવ ’ અરે ! મને મારી નાખ્યો ” ઇત્યાદિ પ્રકારે વિલાપ કરે છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી જે “ કરુણે ” દયાજનક બનેલ છે, તથા જે “ હયજોહમમતતુરગ ” પોતાના સવારો મરી જવાથી ઇચ્છાનુમાર આમ તેમ ઘૂમતા ઘોડાઓથી જે યુક્ત છે, તથા વ્યા “ ઉદામમ ત્તકુજરપરિસક્રિયજળ ” મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા ઉચરાઈ જવાના લયથી માણુઓ વ્યાકુળ બનેલા છે, “ ગિન્વુક્કઞ્ચિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવર ” વ્યા નિર્મળ દડા રહિત

ભૂમિકદમચિવિલ્લપહે ' અપરિહનિસુદ્રમિત્તકાલિતપ્રગટિતરુપિરકૃતભૂમિકદમચિ
વિલ્લપયે તત્ર અપરિહા = ગાણાદિભિ, નિસુદ્રા = નિપાતિતાઃ ગચ્છસ્તાદિભિઃ, મિત્તઃ
ત્રિશૂલાદિભિઃ ફલિતાઃ = સ્ફાટિતા = વિદારિતાથ કુઠારાદિભિર્પે, તેભ્યઃ. પ્રગલિતન
= ક્ષરિતેન રુધિરેણ કૃતઃ = જાતો યો ભૂમો = પૃથિવ્યા કર્દમસ્તેન ચિલિચિટ્તાઃ = આર્દ્રાઃ
પન્થાનઃ = માર્ગાઃ યત્ર સ તથા તત્ર, ' કુચ્છિદાલિયગલિયનિમ્મેલિયતફુરફુર
તવિગલમમ્મહયવિગયગાઢદિણ્ણપ્પહારમુચ્છિત્થયુલ્લતવિગ્મલવિગયકલ્લણે ' કુચ્છિ
દારિતગલિતનિર્ગ્મલિતાન્નફુરફુરાયમાણવિગયમર્મહતવિકૃતગાઢદત્તપહારમુચ્છિત્થલ
ઠ્ઠવિલ્લવિલાપકરુણે = દારિતાત્ = વિદારિતાત્ કુત્તેઃ ઉદરાત્ ગલિત રુપિર
નિર્ગ્મલિતાનિ = ઉદરાદ્વહિર્નિગલિતાનિ ચ અન્નાણિ = ' આંતરિક્ષ્યાં ' इति
માપા પ્રસિદ્ધાનિ ચેષાં તે તથા, અતएय-ફુરફુરાયમાણાઃ = કમ્પમાનાઃ
વિકલાઃ = નિરુદ્ધેન્દ્રિયવૃત્તિત્વેન વ્યાકુલાઃ, મર્મહતાઃ = કણ્ઠાદિમર્મસ્થાને હતાસ્તથા

ઓંકે હાથોં કો કાટ દિયા કરતે હૈ તથા (અવહદ્વ) ઘાણા સે વેધે ગયે,
(નિસુદ્ર) ગલે મેં હાથ ડાલકર દઠાત્ જમીન પર પટક દિયે ગયે, (મિત્ત)
ત્રિશૂલ આદિ કે દ્વારા ભેદે ગયે ઇવ (ફાલિય) કુઠાર આદિ દ્વારા ફાડ
દિયે ગયે-વિદારિત કિયે ગયે એસે યોદ્ધાઓં કે શરીર સે (પગલિય)
ક્ષરતે હુए (રુહિર) રક્તસે (કયભૂમિકદમચિવિલ્લપહે) જહા સી ભૂમિમેં
કીચડ મચ રહી હૈ ઓર હસી સે જહાકે માર્ગ ચિકને હો રહે હૈં તથા
(કુચ્છિદાલિય) વિદારિત હુए ઉદરસે જિનકે (ગલિય) રૂન બહરહા હૈ ઓર
(નિમ્મેલિયત) આતેં સી જિનકી પેટસે બાહિર નિકલ આઈ હૈ, હસી કારણ
જો (ફુરફુરત) કપ રહે હૈ ઓર (વિગલ) વિકલ હો રહે હૈં એસે
યોધા કિ જિન પર (મમ્મહયવિગયગાઢદિણ્ણપ્પહાર) ક્રોધ કે આવેશ

યોદ્ધાઓ એક બાબના હાથ ઘેલી નાખે છે, તથા “અવહદ્વ” બાણોથી વીધાયેલા
“નિસુદ્ર” ગાળામા હાથ ભરાવીને બળપૂર્વક જમીન પર પટકાયેલ, “મિત્ત” ત્રિશૂળ
આદિ દ્વારા ભેદાયેલા, અને “ફાલિય” ફરમી આદિ દ્વારા ચીરી નાખેલ, યોદ્ધાઓના
શરીરમા “પગલિય” વહેતા “રુહિર” લોહીથી ‘કયભૂમિકદમચિવિલ્લપહે’ બધા
જમીનમા કીચડ થઈ ગયો છે, અને તે કારણે બધા માર્ગ લપસણો થઈ ગયો છે, તથા
“કુચ્છિદાલિય” જેમના વિદારિત થયેલા ઉદરમાથી “ગલિય” લોહી વહી રહ્યું છે
અને “નિમ્મેલિયતે” જેમના આતરડા પણ પેટમાથી બહાર નીકળી પડ્યા છે
એ જ કારણે જે “ફુરફુરત” ડપી રહ્યા છે, અને “વિગલ” વ્યાકુળ થઈ
ગયા છે, જેમના પર “મમ્મહયવિગયગાઢદિણ્ણપ્પહાર” ક્રોધના આવેશમા

पूर्वोदितमेव सक्षेपेण प्रतिपादयन्नाह—‘ वसु ’ इत्यादि ।

मूलम्—वसुवसुहविक्रपियव्व—पञ्चखलपिउवणं परमरुद्ध-
वीहणगं दुप्पवेसतरग—अभिवडिति—सगामसंकडं, परधणं
महता । अवरे पाडक्कचोरसघा सेणावड्चोरवंद—पागड्डियाय
अडविदेसदुग्गवासी काल-हरिय-रत्त पयि सुक्खिह-अणेगसयचिध-
पट्टवधा परविसए अभिहणति लुट्ठा धणस्स कजे ॥ सू० ८॥

टीका—‘ वसुवसुहविक्रपियव्व ’ वसुवसुग्राविक्रम्पिता इव=तत्र वसव=देवा
वसुधा=पृथ्वी च विक्रम्पिताः—त्रासिता यैस्ते तथा तथैवापरे राजानः ‘ परवण ’
परधनं ‘ महता ’ काङ्क्षन्तः परद्वन्यलुब्धा सन्तः ‘ पञ्चखलपिउवण ’ प्रत्यक्षपि-
तृवन=साक्षात् श्मशानमिव ‘ परमरुद्धवीहणग ’ परमरुद्रभयानक=अत्यन्तप्रचण्डभ-
यजनक ‘ दुप्पवेसतरग ’ दुप्पवेशतरङ्ग=अत्यन्तदुर्गम वीराणामपि, का कथा कात-
राणामित्येवपिवमपि ‘ सगामसंकड ’ सग्रामसंकट=गहनयुद्ध ‘ अभिवडिति ’
अभिपतन्ति=प्रविगन्ति । तथा ‘ अवरे ’ अपरे ‘ पाडक्कचोरसघा ’ पदातिकचोर

फिर इसी बात को संक्षेप से कहते हैं—‘ वसुवसुह ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(वसुवसुहविक्रपियव्व) जिन्होंने देवोंको एवं पृथ्वीमंडलको
भी कपित जैसा कर दिया है ऐसे और भी अनेक राजा (परधणमहता) दूसरों
के धनमें लुब्ध होकर (पञ्चखलपिउवण) साक्षात् पितृवन जैसे—प्रत्यक्ष
में श्मशान सरीखे प्रतीत होने वाले तथा (परमरुद्धवीहणग) जो अत्यंत
प्रचंड एवं भयजनक हो रहा हो, तथा (दुप्पवेसतरग) वीरों के लिये भी
जो अत्यंत दुर्गम बना हुआ हो ऐसे (सगामसंकड) गहनयुद्ध में
(अभिवडिति) प्रवेश कर जाते हैं । तथा (अवरे) दूसरे भी (पाडक्क

હવે એ જ વાતને સંક્ષિપ્તમાં કહે છે—“ વસુવસુહ ” ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ વસુવસુહવિક્રપિયવ્વ ” જેમણે દેવોને તથા પૃથ્વીમંડળને પણ
જાણે કપાયમાન કરી દીધા છે એવા ખીન્ત પણ અનેક ગણતરે “ પરવણ
મહતા ” ખીન્તના ધનમાં લુબ્ધ થઈને “ પચ્ચક્ખપિઉવણ ” પ્રત્યક્ષ પિતૃવન જેવા—
પ્રત્યક્ષ શ્મશાન જેવા લાગતા, તથા “ પરમરુદ્ધવીહણગ ” જે અત્યંત પ્રચંડ
અને ભયંકર ભયજનક હોય, તથા “ દુપ્પવેસતરગ ” વીરોને માટે પણ જે
અતિગંધ દુર્ગમ હોય એવા “ સગામસંકટ ” ગહન યુદ્ધમાં “ અભિવડતિ ”
પ્રવેશ કરે છે તથા “ અવરે ” ખીન્ત પણ “ પાડક્કચોરસઘા ” પદાતિકચ

છિન્નાધ્વજાઃ, મળનાથવરાથ યસ્મિન્ સ તથા, 'નદ્વસિરકરિકલેવરાકિણ્ણ'—નદ્વસિરઃ
 કરિકલેવરાકીર્ણઃ—નદ્વાનિ શિરાસિ ચેપામેતાદૃશા ચે કરિણઃ=દસ્તિનઃ, તેવા યાનિ
 કલેવરાણિ=શરીરાણિ તૈઃ આકીર્ણઃ=વ્યાપ્ત, 'પહિયપહરણ'—પતિતગહરણઃ—
 પતિતાનિ પ્રહરણાનિ=શસ્ત્રાસ્ત્રાણિ યસ્મિન્ સ તથા, 'વિકિણ્ણાભરણ'—વિકીર્ણા-
 ભરણ.—વિકીર્ણાનિ=ઉત્તમ્તતો વિક્ષિપ્તાનિ આભરણાનિ=મૃતયોધાનામ્ ઝલઙ્કરણાનિ
 યસ્મિન્ સ તથા, એતાદૃશો ભૂમિભાગો યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્, 'નચ્ચતકવધ
 પડરે' નૃત્યત્કવન્ધપ્રચુરે=નૃત્યન્તઃ કવન્ધાઃ=મસ્તકરહિતકલેવરાણિ, પ્રચુરા યત્ર
 સ તથા તત્ર, 'ભયકરવાયસપરિલિત્તગિદ્ધમડલભમતઝાયધયારગમ્भीરે' ભયઙ્કરવા
 યસપરિલીયમાનગૃધ્રમઙ્ડલભ્રમન્ઝાયાન્વકારગમ્भीરે=તત્ર ભ્રમતામ્=આકાશે પર્ય
 ટતા ભયઙ્કરવાયસાના—ભયકરકાકાના તથા પરલીયમાનાના=ગતિવિશેષૈરુદ્ધીયમા
 નાના ટૂંકાના ચ યન્મઙ્ડલ=મમૂઢઃ, તસ્ય છાયયા યોડન્વકારસ્તેન ગમ્भीરે=ગ્નીભૂતે
 ઘનાન્વકારયુક્તે સગ્રામે અતિપતન્તિ રાજાનં પરધનલુપ્થા ઇતિ પ્રવેણ સમ્પન્નઃ॥૭॥

(નદ્વસિરકરિકલેવરાકિણ્ણે) તથા જો ઊંચમસ્તકવાળે હાથિયોં કે કલે
 વરોં સે વ્યાપ્ત હૈ, (પહિયપહરણ) જહા પ્રહરણ—અસ્ત્રશસ્ત્રાદિક ઇધર
 ડધર પડે હુએ હૈ, તથા (વિકિણ્ણાભરણ) મારેગયે દૂસરે કિતનેક
 યોધાઓં કે પડે હુએ આભરણોં સે વ્યાપ્ત એસે (ભૂમિભાગે) ભૂમિભાગ
 વાલે સગ્રામ મેં (નચ્ચતકવધપડરે) તથા જહાં પર યોદ્ધાઓં કે કવધ
 (ધડ) પ્રચુરરૂપ મેં નૃત્ય કરરહે હૈ, (ભયકરવાયસપરિલિત્તગિદ્ધમડલ
 ભમતઝાયધયારગમ્भीરે) તથા જો આકાશ મેં ડડતે હુએ ભયકર કોવો
 કો, એવ પરિલીયમાન—ગતિવિશેષો સે ડહીયમાન—ગિદ્ધોં કો છાયાજન્ય
 અધકાર સે ગમ્भीર બન રહા હૈ એસે સગ્રામ મેં પરધનલુપ્થ બને હુએ
 રાજા લોક ડતરતે હૈ ॥ સૂ.૭ ॥

અને ફાટેલી ધ્વજા તથા ભાગેલા શ્રેષ્ઠ રથો પડ્યા છે “ નદ્વસિરકરિકલેવરા
 કિણ્ણ ” તથા જે છેઢાયેલા મન્તકવાળા હાથીઓના કલેવરોથી છવાયેલ છે,
 “ પહિયપહરણ ” જ્યાં અસ્ત્ર-શસ્ત્રાદિ અહીં તહીં પડેલા છે, તથા “ વિકિણ્ણા
 ભરણ ” મરી ગયેલા ડેટલાક યોદ્ધાઓના આલૂપણોથી જે છવાયેલ છે, “ ભૂમિ
 ભાગે ” એવા ભૂમિભાગ વાળા અગ્રામમાં “ નચ્ચતકવધપડરે ” તથા જ્યાં
 યોદ્ધાઓના ધડ અતિરાય નૃત્ય કરી રહેલ છે, “ ભયકરવાયસપરિલિત્ત ગિદ્ધ
 મડલભમતઝાયધયારગમ્भीરે ” તથા જે આકાશમાં ઉડતા ભયકર કાગડાઓની
 તથા પરિલીયમાન—વિશિષ્ટ ગતિથી ઉડતા ગીધોની છાયાને કારણે ઉત્પન્ન થયેલ
 અધકારથી ગભીર દેખાય છે, એવા સગ્રામમાં પરધન પ્રાપ્ત કરવાની લાલશ
 વાળા રાજાઓ ઉતરે છે ॥ સૂ.૭ ॥

ઓઘુભિયલુલિયઘોઘુમ્ભમાળપક્ષલિયચલિયીવિલજલચક્ક-
વાલમહાનદ્વેગતુરિયઆપૂરમાળગભીરવિલઆવત્તચંચલભમમા-
ળગુપ્પમાળુચ્છલતપચ્ચોણિયતપાણિય — પહાવિયસ્વરફરુસપયંડ
વાડલિયસલિલફુટ્ટતવીચિક્કલ્લોલ સકુલ, મહામગરમચ્છકચ્છભો-
હારગાહિતિમિસુંસુમારસાવયસમાહય સમુદ્ધાયમાળયપૂઘોરપડરં॥૧॥

ટીકા—અપિ ચ પરદ્રવ્યહરણરાઃ ‘ રચનાગરસાગર ચ ’ રત્નાકરસાગર ચ= રત્નાનામાકરઃ—નિધિભૂતો ય’ માગર મમુદ્રસ્ત પ્રવિશ્ય તન્મધ્યે ગત્વા પોતાન્ ઘનન્તિ, ઇત્યગ્રેણ સમ્બન્ધ, કીદશ સાગરમ્ ? ઇત્યાહ—‘ ઉમ્મીસહસ્સમાલાકુલવિગય-પોયકલકલતકલિત ’ ઝર્મિસદસમાલાકુલવિગતપોતકલકલકલિતમ્ = ઝર્મીનાં= તરજાના સહસ્સમાલાભિ =સહસ્સસંખ્યકપક્તિશિરાકુલ્લત્વાત્ વિગતાઃ— ભગ્નાઃ યે પોતાઃ=નૌકાઃ ‘ જહાજ—‘ સ્ટીમર ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા તેપા=તત્ર સ્થિતાના વ્યાપારિ

‘ અદત્તાદાન ત્રિસ પ્રકાર ક્રિયા જાતા હૈ ? ’ અવ સૂત્રકાર હસ ઘાત કો સમજાતે હૈ—‘ રચનાગર ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—પર કે દ્રવ્ય કો હરણ કરને મેં તત્પર બને હુણ મનુષ્ય ચોર (રચનાગરસાગર ચ) રત્નો કે નિધિભૂત સમુદ્ર મેં ઘુસ કર કે-ઉસકે મધ્ય મેં જાકર કે જહાજો કો નષ્ટ કર દેતે હૈ, હસ પ્રકાર કા સબધ યહા લગા લેના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર સમુદ્ર કા વર્ણન કરતે હૈ— (ઉમ્મીસહસ્સમાલાકુલવિગયપોયકલકલતકલિત) હજારોં લહરોં કે સમૂહ સે આકુલ હોને કે કારણ જહા પર વ્યાપારી આદિ જનો કે જહાજ નષ્ટ હો જાતે હૈ, ઓર હસી કારણ ઉન જહાજોં પર બેઠે હુણ વ્યક્તિયો

‘ અદત્તાદાન—ચોરી કથી રીતે કરાય છે ” એ વાતન સૂત્રકાર હવે સમ જાવે છે—“ રચનાગર ” ઇત્યાદિ

પરધનને હુગી લેવાને આતુર બનેલો મનુષ્ય—ચોર “ રચનાગરસાગર ચ ” રત્નોના નિધિ એવા સમુદ્રની વચ્ચે જઈને જહાજોને ડૂબાવી દે છે, એવા સબધ અહીં જોડવાનો છે—હવે સૂત્રકાર સમુદ્રનું વર્ણન કરે છે—

“ ઉમ્મીસહસ્સમાલાકુલવિગયપાયકલકલતકલિત ” હજારો મોજાઓના મમૂહના આક્રમણને કારણે ત્યાં વ્યાપારી આદિ લોકોના જહાજો નાશ પામે છે, અને તે કારણે તે જહાજોમા બેઠેલા લોકોના ડકળાટથી જે યુક્ત બનેલ છે,

સઘાઃ=પદાતિરૂપચૌરસમૂહાઃ, 'સેનાવહચોરવદપાગઢિયા ય' સેનાપતિચૌરવૃન્દ
પ્રકર્ષકા=સેનાપતિચૌરસમૂહયુક્તાથ 'અડવીદેસદુર્ગવામી' અટવીદેશદુર્ગવા
સિનઃ=અટવીદેશે=અરણ્યદેશે યાનિ દુર્ગાણિ=જલસ્થલરૂપાણિ દુર્ગમમ્થાનાનિ તેષુ
નિવાસિનઃ કાલહરિયરત્તપીયમુક્ષિલ્લઅણેગસચ્ચિધપટ્ટવધા 'કાલહરિતરક્તપીત
શુક્લનેકશતચિન્હપટ્ટવન્ધાઃ = કૃષ્ણહરિતરક્તપીતશુક્લવર્ણાં અનેકશતસરયકા ચે
ચિહ્નપટ્ટાસ્તેષા વધ=મસ્તકાદૌ વન્ધન યેષા તે તથા 'ઘગસ્સ' ધનસ્ય=પર
દ્રવ્યસ્ય 'કજ્જે' કાર્યે=અર્થાય 'લુદ્ધા' લુન્ધાઃ=લોલુપાઃ સન્તઃ 'પરવિસણ'
પરવિપયાન્=અન્યભૂપદેશાન્ 'અભિહણતિ' અભિન્નન્તિ=વિનાશયન્તિ ॥ સૂ.૦૮॥

પુનરદત્તાદાન કથ કુર્વન્તિ ? તદાહ—'રયણાગર' इत्यादि—

મૂલમ્—રયણાગરસાગર ચ ઉમ્મીસહસ્સમાલાઽઽકુલવિગયપો
ચકલકલતકલિતં, પાયાલકલસસહસ્સવાયવસવેગસલિલઉદ્વ-
મ્મમાણદગરયરયધધાર, વરફેણપરધવલપુલપુલસમુદ્રિયાટ્ટહાસ,
મારુચવિક્ષુબ્ધમાણપાણિયજલમાલુપ્પલહુલિય અવિયસમત-

ચોરસઘા) પદાતિરૂપ ચૌરસમૂહ કિ જિસમેં (સેનાવહ ચોરવદપાગ
ઢિયા ય) સેનાપતિ એવ ચૌરોં કા જત્યા એકત્રિત રહતા હૈ, તથા (અડ
વીદેસદુર્ગવામી) જો જગલ કે બીચમે જિતને મી પ્રાયઃ દુર્ગમસ્થાન
હોતે હૈં—ચાહે વે જલરૂપ હો યા થલરૂપ હો—ઉનમે રહતે હૈ તથા (કાલ
હરિયરત્તપીયમુક્ષિલ્લઅણેગસચ્ચિધપટ્ટવધા) કૃષ્ણ, હરિત, રક્ત, પીત,
શુક્લ, વર્ણવાલે સૈકડોં ચિહ્નપટ્ટોં કો જો અપને મસ્તક ઉપર બાધા કરતે
હૈં એસે વે પદાતિરૂપ ચૌર સમુદાય (ઘગસ્સ કજ્જે) પર કે દ્રવ્ય મેં
(લુદ્ધા) લોલુપ હોકર (પરવિસણ) અન્ય રાજાઓ કે દેશો કો (અભિ
હણતિ) વિનાશ કરતે હૈ ॥ સૂ.૦૮॥

ચોર સમૂહ કે જેમા “સેનાવહચોરવદપાગઢિયા ય” સેનાપતિ અને ચોરાનો
સમૂહ એકત્ર રહે છે, તથા “અડવીદેસદુર્ગવામી” જે જગલની વચ્ચે જેટલા
દુર્ગમ સ્થાનો હોય છે—પછી તે જગરૂપ હોય કે સ્થળરૂપ—તેમા રહે છે, તથા
“કાલહરિયરત્તપીયમુક્ષિલ્લઅણેગસચ્ચિધપટ્ટવધા” ગાળા, લીલા, લાલ,
પીળા, સફેદ આદિ રંગની સેકડો પટ્ટીઓને જે પોતાના મસ્તક ઉપર બાધે
છે, એવો પદાતિ—પગપાળો—ચોર સમુદાય “ઘગસ્સ કજ્જે” પરધનમા ‘લુદ્ધા’
લોલુપ થઈને “પરવિસણ” અન્ય રાજાઓના દેશોનો “અભિહણતિ”
વિનાશ કરે છે ॥ સૂ.૦૮॥

પ્રસ્થલિય - ચલિય-ત્રિપુલજલચક્રવાલ-મહાનર્દવેગ-તુરિય આપૂરમાણ-ગમ્भीર-
વિપુલ-આવત્ત-ચચલ-ભ્રમમાણ-ગુપ્તમાણુ-ઞ્છલત-પન્ચોણિયત - પાણિય-પથા-
વિય-સ્વર-ફરસ-પયડ-વાડલિય-સલિલ-ફુટ્ટ-વીચિ-ફલ્લોલ-સકુલ ' સમ-
ન્તતઃ ક્ષુભિતલુલિતચોક્ષુભ્યમાણપ્રસ્થલિતચલિતત્રિપુલજલચક્રવાલમહાનર્દવેગ-
ત્વરિતાપૂર્યમાણગમ્भीરવિપુલાવર્ત્તચચ્ચલભ્રમદ્રોપ્યમાનોઞ્છલતપત્યવનિરૂત્તપાનીયપ્રધા-
વિતસ્વરપરુપપ્રચન્ડવ્યાકુલિતસલિલસ્ફુટઢીચિફલ્લોલસકુલમ્, તત્ર ' સમ-
તઓરુભિય ' સમન્તતઃ ક્ષુભિત=પગનાડપ્રાતેન સર્વતો વ્યાકુલિત ' લુલિય '
લુલિત ચ તટપ્રદેશપાપ્ત તથા ' સ્વોરુભમાણ ' ચોક્ષુભ્યમાણમ્=અતિશયેન
પુન' પુનર્વા મહામત્સ્યાદિભિર્વ્યાકુલીક્રિયમાણ ' પ્રસ્થલિય ' પ્રસ્થલિત = પર્વ
તાદીના મહાશિલાદિપ્વાઘાતેન સ્થલિત પશ્ચાત્ ' ચલિય ' ચલિત=સ્વસ્થાનાદ્
ગમન પ્રવૃત્ત ' ત્રિપુલ ' વિપુલ=વિસ્તીર્ણ ' જલચક્રવાલ ' જલચક્રવાલ=જલસમૂહઃ
યત્ર તાઃ — ક્ષુભિતલુલિતચોક્ષુભ્યમાણપ્રસ્થલિતચલિતત્રિપુલજલચક્રવાલાસ્તથા
વિધાશ્ચ યા ' મહાનર્દવેગ ' મહાનદ્યાઃ=ગદ્ગાયમુનાદ્યાસ્તાસા વેગૈઃ ' તુરિય ' ત્વરિત
=શીઘ્રમ્ ' આપૂરમાણ ' આપૂર્યમાણો યઃ સાગરઃ સ તથા । ગમ્भीરાઃ=અગાધાઃ
વિપુલાઃ=વિશાલાઃ યે ' આવત્ત ' આવર્ત્તાઃ=ચક્રાકારજલભ્રમાઃ તથા ચચ્ચલ
યથાસ્યાત્તથા ' ભ્રમમાણા ' ભ્રમન્તિ ' ગુપ્તમાણા ' ગોપ્યમાનાનિ=વ્યાકુલી ભવન્તિ

સે ચારોં તરફ ક્ષુબ્ધ હુઆ (લુલિય) તટ પ્રદેશ કો પ્રાપ્ત હુઆ-તટતક
પહુંચા હુઆ (સ્વોરુભમાણ) મહામત્સ્યાદિ જલચર જન્તુઓ સે વ્યા
કુલ કિયા ગયા (પ્રસ્થલિય) પર્વતાદિ કી મહાશિલાઓ આદિ કે
આઘાત સે સ્થલિત હુઆ ફિર (ચલિય) ચલિત-સ્વસ્થાન સે ચલિત
હુઆ (વિપુલ) વિસ્તીર્ણ (જલચક્રવાલ) જલસમૂહ જહાં હૈ એસી
(મહાનર્દવેગો) ગગા યમુના આદિ મહાનદી કે વેગો સે (તુરિય) ત્વ-
રિત-શીઘ્ર (આપૂરમાણ) જો ભરા જા રહા હૈ । તથા જો (ગમ્भीર) અગાધ
(વિપુલ) વિશાલ (આવત્ત) આવર્તો - (ચક્રાકાર જલભ્રમણો) સે
તથા (ચચલ) ચપલ (ભ્રમમાણ) ધૂમતે હુએ (ગુપ્તમાણ) વ્યાકુલ હુએ

એમર ક્ષુબ્ધ થઇને “ લુલિય ” તટપ્રદેશ સુધી પહોંચીને “ સ્વોરુભમાણ ”
મહામત્સ્યાદિ જળચર જીવો દ્વારા વ્યાકુલ કરાયેલ “ પ્રસ્થલિય ” પર્વતાદિની
મહાશિલાઓ આદિના આઘાતથી સ્થલિત થઈને પછી “ ચલિય ” ચલિત-
સ્વસ્થાનથી ચલિત થઇને “ વિપુલ ” વિસ્તીર્ણ “ જલચક્રવાલ ” જળસમૂહ
જગા છે એવી ‘ મહાનર્દવેગો ’ ગગા યમુના આદિ મહાનદીઓના વેગથી ‘ તુરિય ’
ઝડપથી ‘ આપૂરમાણ ’ જે ભરાઈ રહેલ છે તથા જે ‘ ગમ્भीર ’ અગાધ ‘ વિપુલ ’
વિશાળ “ આવત્ત ” વમળોથી તથા “ ચચલ ” ચપળ “ ભ્રમમાણ ” ધૂમતા

ગર-મચ્છ-કચ્છ-મોહારગાહ-તિમિ-સુસુમાર-સાવય-સમાહય સમુદ્ધાયમાણય-
પૂર-ધોરપઝર' મહામકરમત્સ્યકચ્છપોહારગ્રાહતિમિશિશુમારશ્વાપદસમાહતસમુદ્ધા-
વત્પૂરધોરપઝર મહાન્તો મકરાઃ, તથા મત્સ્યા' કચ્છપાશ્વ 'ઉહાર' इति जलचर-
विशेषाः ग्राह्यस्तिमयः शिशुमारा' श्वापदकाश्च सर्वे जलचरविशेषा ते च ते
समाहताः=परस्पर सङ्घर्षं प्राप्ताः समुद्घावतः=अन्यान् स्वस्मान्निर्वलान् जन्तून्
हन्तु धावन्तो ये पूराः=समुदाया ते च ते घोराः=भयङ्कराः प्रचुराः यस्मिन् स तथा
तमेवविध महासागर धनार्थं गत्वा घ्नन्ति पोतानिति च उक्ष्यमाणेन सम्बन्ध ॥९॥

પુન કીદ્દશ સાગરમિત્યાહ—'કાયર' इत्यादि ।

મૂલમ્—કાયરજળહિયયકંપણ ધોરમારસંત મહવ્ભયં ભયંકરં
પડિભય ઉત્તાસણગં અળોરપાર આગાસ ચેવ નિરવલવ ઉપ્પા-

ધૂમતે રહતે હૈં જિસસે વહ વ્યાકુલ જૈસા હોતા રહતા હૈ, આકાશ મેં
ઉછલતા રહતા હૈ, ઓર પુનઃ ડપર સે નીચે આ જાતા હૈ । તથા જો
શીઘ્ર ઉદ્ભૂત વેગાતિશય સે અતિકર્કશ, પ્રચડ, વ્યાકુલિત-મયિત કિયા
હૈ પાની જિન્હોં ને એવ પરસ્પર સઘર્ષ કો પ્રાપ્ત હોકર વિચ્છેદ કો પ્રાપ્ત
હુઈ એસી લહરોં સે સકુલિત બના રહતા હૈ, (મહામગરમચ્છકચ્છમોહા-
રગાહતિમિસુસુમારસાવયસમાહયસમુદ્ધાયમાણપૂરધોરપઝર) તથા
બડે ૨ મકર, મત્સ્ય, કચ્છપ, ઉહાર, ગ્રાહ, તિમિ, શિશુમાર, શ્વાપદ,
આદિ જલચર જાતુવિશેષ જિસમેં પરસ્પર સઘર્ષ કો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હૈં
ઓર અપને સે નિર્વલોં કો મારને કે લિયે સદા જિસમેં દોડતે રહતે હૈં
એસે મહાસાગર મેં ધન કી લાલસા સે જાકર ચોર લોગ જહાજોં કો નષ્ટ
કર ઢાલતે હૈ ॥ સૂ० ૯ ॥

થઈને વારવાર આમ તેમ ર્યા ડરે છે જેથી તે જાણે વ્યાકુળ રહે છે, આકા-
શમા ઉછળતુ રહે છે અને ફરી પાછુ નીચે આવીને પડે છે તથા જે શીઘ્ર
ઉત્પન્ન થયેલ અતિશય વેગને લીધે અતિ ડર્કશ, પ્રચડ, વ્યાકુલિત, પાણીનુ મથન
કરનાર, અને એક બીજા સાથે અથડાઈને વિચ્છેદ પામેલ મોજાઓથી વ્યાપ્ત રહે
છે “મહામગરમચ્છકચ્છમોહારગાહતિમિસુ સુમારસાવયસમાહયસમુદ્ધાયમાણપૂરધોરપ-
ઝર ” તથા મોટા મગરો, મત્સ્ય, કાચળા, ઉહાર, ગ્રાહ, તિમિ, શિશુમાર, શ્વાપદ,
આદિ જળચર પ્રાણીઓ જેમા પરસ્પર અથડામણુમા આવ્યા ડરે છે, અને પોતાના
કરતા નિર્બળને મારવાને માટે સદા દોડતા હોય છે, એવા મહાસાગરમા
જઈને ચોરલોકો ધનની લાલચથી જહાજોનો નાશ કરે છે ॥ સૂ० ૯ ॥

‘ ઉચ્છલત ’ ઉચ્છલન્તિ આકાશે ઉત્પતન્તિ પુનઃ ‘ પચોણિયત ’ મત્વનિવૃત્તાનિ= અધોગચ્છન્તિ ચ યાનિ ‘ પાણિય ’ પાનીયાનિ પ્રાણિનો ગા યત્ર સ તથા ‘ પધાવિય ’ પ્રધાવિતાઃ=શીઘ્ર ગતાઃ ‘ સ્વરફરુસ ’ સ્વરપરુષાઃ=વેગાતિશયાદ્ અતિક્રુશ્ણાઃ ‘ પયડ ’ પ્રચણ્ડાઃ=દારુણા ‘ વાઝલિયસલિલ ’ વ્યાકુલિત સલિલાઃ=વ્યાકુલી- કૃતાનિ ઉન્મથિતાનિ સલિલાનિ=જતાનિ યેસ્તે તથા ‘ ફુદ્દત ’ સ્ફુટન્ત =પરસ્પર સઘર્ષે પ્રાપ્ય વિચ્છેદ ગચ્છન્તશ્ચ યે ‘ વીચિક્લોલસકુલ ’ વીચયઃ=તરંગાઃ કલ્લોલાઃ=મહાતરંગાસ્તૈઃ સકુલો ય સ તયેતિ પૂર્વેષા કર્મધારયસ્ત તથાવિધ ‘મહાસા

(ઉચ્છલત) આકાશ મેં ઉછલતે છુપ (પચોણિયત) ફિર નીચે ગિરતે છુપ (પાણિય) પાની અથવા પ્રાણી જિન મેં હૈ ગેસી, તથા (પધાવિય) શીઘ્રતા સે ઊઠી છુદ્ (સ્વરફરુસ) અતિવેગ સે અત્યન્ત કઠોર (પયડ) દારુણ-ભયકર અતઃપચ (વાઝલિયસલિલ) જલ કો મથિત જૈસા કર દિયા ઈસી, તથા (ફુદ્દત) પરસ્પર કે સઘર્ષસે વિચ્છિન્ન-જુદી જુદી છુદ્ ઈસી (વીચિક્લોલ) છોટી ઘડી તરંગો સે (સંકુલ) વ્યાપ્ત ગેસે, સમુદ્ર કો, અર્થાત્-જો ગંગા યમુના આદિ નદિયોં કે વેગો સે કિ જિનકા વિપુલ જલ ચક્રવાલ-સમૂહ પવન કે આઘાત સે સર્વતઃ વ્યાકુલિત હોતારહતા હૈ, ઓર તટપ્રદેશ તક આતા રહતા હૈ, તથા મહામત્સ્ય આદિ જલચર જાનવર જિસે અત્યત્ત ચચલ બનાતે રહતે હૈ, ઇવ જો પર્વત આદિકોં કી મહાશિલાઓં પર આપાતયુક્ત હોકર અપને સ્થાન સે આગે કો બઢતા રહતા હૈ, તથા જો ગંભીર ઇવ વિપુલ આવર્તોં સે સદા વ્યાપ્ત બના રહતા હૈ, તથા જિસમેં ચચલ હોકર પાની અથવા પ્રાણી ઘાર ૨ ફઘર સે ઊઘર

“ ગુપ્તમાણ ” વ્યાકુળ “ ઉચ્છલત ” આકાશમા ઉછળતા “ પચોણિયત ” અને ફરી પાછા નીચે પડતા “ પાણિય ” પાણી અથવા જેમા પ્રાણી છે, એવા તથા “ પધાવિય ” ઝડપથી ઉત્પન્ન થતા, “ સ્વરફરુસ ” અતિવેગને કારણે અતિ શય કઠોર અને “ પયડ ” દારુણ હોવાને કારણે “ વાઝલિયસલિલ ” પાણીનું મન્થન કરાતું હોય એવા, તથા “ ફુદ્દત ” એક બીજા સાથે અથડાવાથી વિચ્છિન્ન થતા “ વીચિક્લોલ ” નાના મોટા મોજાઓથી “ સકુલ ” વ્યાપ્ત એવા સમુદ્રને, એટલે કે જે ગંગા યમુના આદિ નદીઓના વેગથી કે જેમનું વિપુલ જળ ચક્રવાતના આઘાતથી સર્વતઃ વ્યાકુલિત થતું રહે છે, અને તટપ્રદેશ સુધી આવતું રહે છે તથા મહામત્સ્ય આદિ જાનવર પશુઓ જેને અતિશય બનાવતા રહે છે, અને જે પર્વત આદિના જે મહાશિલાઓ સાથે અથડાઈને પોતાના સ્થાનથી આગળ વધતું રહે છે, જલદી ભરાતું રહે છે, તથા જે ગંભીર અને વિશાળ વમળોથી હમેશા વ્યાપ્ત રહે છે, તથા જેમા પાણી અને પ્રાણી ચ થળ

‘ ઉત્તાસણગ ’ ઉત્તાસનક=ચિત્તક્ષોભકારકમ્ ‘ અણોરપાર ’ અનર્વાક્રપારમ્=અલ-
બ્યાપારપર્યન્તં ‘ આગાસ ચેવ નિરવલપ ’ આકાશમિત્ર નિરવલમ્બમ્ આધાર-
રહિત તત્ર પતદ્ઘ્નિર્ન કિશ્ચિદાલમ્બનમુપલમ્બ્યતે इति भावः, ઉપ્પાહય પવણધણિય-
ણોલ્લિય ઉવરુવરિતરગદરિયઅહવેગ ’ તથા ઔત્પાતિકપવનઘનોદિતો
પર્યુપરિતરદ્ઘ્નિતિવેગમ્=ઔત્પાતિકેન = ઉત્પાતજનિતેન પવનેન=વાયુના=
‘ ધણિય ’ इति अत्यन्त नोदिताः=मेरिताः उपर्युपरि=उर्ध्वोर्ध्वं ये तरङ्गास्ते च
ते दृप्ताः=गर्विता इव अतिवेगा =महावेगाः यत्र स तथा त उत्पातजनितपवनेन
अतिवेगतरङ्गयुक्तमतएव ‘ चक्रुपहमोच्छरत ’ चक्षુष्पथમવતૃણત ચક્ષુષ્પથ=
દષ્ટિપથમ્ અવસ્તૃણન્તમ્=આચ્છાદયન્ત દ્રઘ્નમપ્યશક્ય કિં પુનસ્તર્તુમિત્યર્થઃ, તથા
‘ કત્થહ ’ कुत्रचित् क्वचित्प्रदेशे गम्भीर = અલન્ધ મધ્ય પુનઃ ‘ વિપુલ-
ગર્જિતગુજિતનિર્ગાતગુરુનિવલિયસુદીર્ઘનીહારિદૂરસુન્નચતગમીરધુગધુગતિસદ્ધ ’
विपुलगर्जितगुञ्जितनिर्घातगुरुनिपतितसुदीर्घनिर्हृदिदूरश्रूयमाणगम्भीरदुग्धुगि-
तिशब्द = તત્ર વિપુલ = વિશાલ ગર્જિત = મેગવદ્ ધ્વનિ તથા ગુજ્જિત=

ભય કા પ્રતિસ્વરૂપ ઘના રહતા હૈ (ઉત્તાસણગ) ચિત્ત મેં જિસે અવ-
લોકન કર ક્ષોભ હો જાતા હૈ, (અણોરપાર) જિસકા દૂસરા તટ અલન્ધ
હોતા હૈ (આગાસ ચેવ નિરવિલપ) આકાશ કી તરહ જિસમે પ્રાણિયો
કો પડ જાને પર કોઈ ભી આધાર પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ, (ઉપ્પાહયપવણ)
ઉત્પાત જનિત પવન સે (ધણિય ણોલ્લિય) અતિશય વેગશાલી હોકર
(ઉવરુવરિ) એક દૂસરે કે ઉપર પડતી હુઈ (તરગદરિય) ગર્વિત તરગોં
સે (અહવેગ) અત્યતવેગ હો રહા હૈ । (ચક્ષુપહમોચ્છરત) જિસકા
દેખના ભી અશક્ય હૈ તો ફિર વહા તૈરને કો તો વાત હી કયા હૈ
(કત્થહગમ્भीર) કીસી ૨ પ્રદેશ મેં જો વહુત હી અધિક ગમ્भीર

અને તેથી જ “ ભયકર ” લયની પ્રતિભૂતિ લાગે છે, “ ઉત્તાસણગ ” જેનું
અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, “ અણોરપાર ” જેનો ખીન્ને કિનારો
અપ્રાપ્ય હોય છે-જેનો પાર પામવો દુષ્કર છે, “ આગાસચેવ નિરવલપ ”
આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પડી જતા કોઈપણ આધાર મળતો નથી “ઉપ્પાહ-
ય પવણ ” ઉત્પાત જનિત પવનથી “ ધણિય ણોલ્લિય ” અતિશય વેગમા આવી
જઈને “ ઉવરુવરિ ” એક બીજાના ઉપર પડતા “ તરગદરિય ” ગર્વિત મોજા-
ઓથી “ અહવેગ ” જે અત્યત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, “ ચક્ષુપહમોચ્છરત ”
જેને જોઈ શકવો પણ અશક્ય છે તો ત્યા તરવાની તો વાત જ કયા છે ।
“ કત્થહગમ્भीર ” કોઈ કોઈ પ્રદેશમા જે ઘણો વધારે ગભીર હોય છે,

इय पवणधणियणोह्रियउवरुवरितरगदरियअइवेगच्चखुपह-
 मोच्छरंत कथइगभीरविउलगजियगुंजियनिग्घायगरुय-
 निवडियसुदीह नीहारिदूरसुच्चतगभीरधुगधुगति सइंपडिपह-
 रुभंतजम्बरक्खसकुहडपिसायरुसियतज्जायउवसग्गसहस्ससं
 कुल वहूप्पाइयभूय 'विरइयवालिहोमध्वउवयागदिणरुहिर
 उच्चणाकरणपजयजोगपययचरियं परियतजुगंतकालकप्पोवमं
 दुरंतमहानईवइमहाभीमदरिसणिज्जं दुरणुचरं विसमप्पवेस
 दुक्खुत्तारं दुरासयलवणसलिल पुण्णं असियसिय समुच्छियगेहिं
 हत्थतरगेहि वाहणेहि अइवइत्तासमुदमज्झे हणति गतूण जणस्स
 पोरा परदव्वहरा नरा निरणुकपा णिरवेक्खा ॥सू० १०॥

टीका—‘कायरजणहिययकपण’ कातरजनहृदयकम्पन=कातरजनाना = भीरुपुरु
 पाणा हृदयस्य कम्पन=कम्पकारक घोर=भयङ्कर यथास्यात्तथा आरसन्त=शब्दाय
 मान-शब्द कुर्वन्त कोलाहलसङ्कुलमित्यर्थः । ‘महब्भय’ प्रतिभय महाभय=अत्य
 न्तभयजनकम्, अत एव भयङ्कर ‘पडिभय’ प्रतिभय=प्रतिप्राणिन भयोत्पादकम्

फिर यह समुद्र कैसा है सो कहते हैं—‘ कायरजण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—जो समुद्र (कायरजणहिययकपण) कायरजनों के हृदय
 को कंपा देता है (घोर) भयकर होकर जो (आरसत) शब्दायमान
 होता है (महब्भय) देखते ही जिसे लोगों को भय का संचार होने
 लग जाता है (पडिभय) हर एक प्राणी का रोम २ जिसकी आकृति
 के समक्ष भय के मारे खड़ा हो जाता है, और इस लिये जो (भयकर)

તે અમુદ્ર કેવો હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરે છે—“ કાયરજણ ” ઇત્યાદિ
 જે સમુદ્ર “ કાયરજણહિયયકપણ ” “ ઘોર ” કાયર લોકોના હૃદયને
 કંપાવી દે છે, “ ઘોર ” ભયકર રીતે જે “ આરસત ” ધુધવાટ કરે છે, “ મહ
 બ્ભય ” જેને ભેતા જ લોકોના દિલમાં ભય ઉત્પન્ન થાય છે, “ પડિભય ”
 જેનો દેખાવ ભેતા જ ભયથી દરેક પ્રાણીઓના રુવાટા ખડા થઈ જાય છે,

‘ ઉત્તાસણગ ’ ઉત્તાસનક=ચિત્તક્ષોભકારકમ્ ‘ અણોરપાર ’ અનર્પારૂપારમ્=અલ-
ઘાપારપર્યન્તં ‘ આગામ ચેવ નિરવલય ’ આકાશમિત્ર નિરવલમ્બમ્ આધાર-
રહિત તત્ર પતદ્વિર્ન કિશ્ચિદાલમ્બનમુપલમ્બ્યતે ઇતિ ભાવઃ, ઉપ્પાદય પવણધણિય-
ળોલ્લિય ઉચ્ચરિતરગદરિયઅઙ્વેગ ’ તથા ઔત્પાતિકપવનઘનોદિતો
પર્યુપરિતરદ્વદ્વસાતિવેગમ્=ઔત્પાતિકેન = ઉત્પાતજનિતેન પવનેન=વાયુના=
‘ ધણિય ’ ઇતિ અત્યન્ત નોદિતાઃ=પ્રેરિતાઃ પર્યુપરિ=ઉર્ધ્વોર્ધ્વં યે તરજ્ઞાસ્તે ચ
તે દ્વદ્વાઃ=ગર્વિતા ઇય અતિવેગા =મહાવેગાઃ યત્ર સ તથા ત ઉત્પાતજનિતપવનેન
અતિવેગતરદ્વયુક્તમતણ્વ ‘ ચક્ષુપહમોચ્છરત ’ ચક્ષુષ્પથમવતૃણત ચક્ષુષ્પથ=
દૃષ્ટિપથમ્ અવસ્તૃણન્તમ્=આચ્છાદયન્ત દ્રષ્ટુમપ્યશક્ય કિં પુનસ્તર્તુમિત્યર્થઃ, તથા
‘ કત્થહ ’ કુત્રચિત્ ક્વચિત્પ્રદેશે ગમ્भीર = અલઘ્ધ મધ્ય પુનઃ ‘ વિપુલ-
ગર્જિયગુજિયનિગ્વાયગરુયનિવલ્લિયસુદીહનીહારિદૂરસુચ્ચતગમીરધુગધુગતિસદ્ધ ’
વિપુલગર્જિતગુજ્જિતનિર્ઘાતગુરુકનિપતિતસુદીર્ઘનિર્દાદિદૂરશ્રૂયમાણગમ્भीરદુગ્ધુગિ-
તિશબ્દ = તત્ર વિપુલ = વિશાલ ગર્જિત = મેગ્નિટ્ ધ્વનિ તથા ગુજ્જિત=

ભય કા પ્રતિસ્વરૂપ ઘના રહતા હૈ (ઉત્તાસણગ) ચિત્ત મૈં જિસે અવ-
લોકન કર ક્ષોભ હો જાતા હૈ, (અણોરપાર) જિસકા દૂસરા તટ અલઘ્ધ
હોતા હૈ (આગાસ ચેવ નિરવિલય) આકાશ કી તરહ જિસમે પ્રાણિયો
કો પડ જાને પર કોઈ મી આધાર પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ, (ઉપ્પાદયપવણ)
ઉત્પાત જનિત પવન સે (ધણિય ણોલ્લિય) અતિશય વેગશાલી હોકર
(ઉચ્ચરિ) એક દૂસરે કે ઉપર પડતી હુઈ (તરગદરિય) ગર્વિત તરગો
સે (અઙ્વેગ) અત્યતવેગ હો રહા હૈ । (ચક્ષુપહમોચ્છરત) જિસકા
દેખના મી અશક્ય હૈ તો ફિર વહા તૈરને કી તો વાત હી કયા હૈ
(કત્થહગમ્भीર) કીસી ૨ પ્રદેશ મૈં જો બહુત હી અધિક ગમ્भीર

અને તેથી જ “ ભયકર ” લયની પ્રતિભૂતિ લાગે છે, “ ઉત્તાસણગ ” જેનું
અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, “ અણોરપાર ” જેનો ખીન્ને ડિનારો
અપ્રાપ્ય હોય છે-જેનો પાર પામવો હુષ્કર છે, “ આગાસચેવ નિરવલ્લય ”
આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પડી જતા ડોઈપણ આધાર મળતો નથી “ઉપ્પાદ-
ય પવણ ” ઉત્પાત જનિત પવનથી “ ધણિય ણોલ્લિય ” અતિશય વેગમા આવી
જઈને “ ઉચ્ચરિ ” એક ખીન્નના ઉપર પડતા “ તરગદરિય ” ગર્વિત મેળા-
ઓથી “ અઙ્વેગ ” જે અત્યત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, “ ચક્ષુપહમોચ્છરત ”
જેને નોઈ રાડવો પણ અશક્ય છે તો ત્યા તરવાની તો વાત જ કયા છે !

।ભીર હોય છે,

ભ્રમરગુજિતમિત્ર ગુજિતં તથા નિર્ગન્ત વ્યન્તરક્રુતો મહાધ્વનિઃ ગુરુક્રનિ
 પતિત=ત્રિષ્ટુદ્વિશેષાદિ સપાતેન ચ જાગમાનોધ્વનિઃ સુદીર્ઘઃ=અત્યર્થ નિર્હારી=
 પ્રતિધ્વનિયુક્તો નિર્ઘોષઃ દૂરશ્રૂયમાણઃ=અતિદૂરદેશાદપિ શ્રૂયમાણઃ ગમ્भीરો ધ્રુગ્
 ધ્રુગિતિ શબ્દશ્ચ યત્ર સ તથા ત ' પડિપહરુમત-જક્ષ્વ-રક્ષ્વસ કુહડ-પિસાય-
 રુસિય - તજ્જાયઽવસગ્ગસહસ્સસકુલ ' પ્રતિપથરુન્ધાનયક્ષરાક્ષસકૃપ્માણ્ડ
 પિશાચરુષ્ટવજ્જાતોપસર્ગસહસ્સસંકુલ = તત્ર પ્રતિપથ=પ્રતિમાર્ગ રુન્ધાનાઃ=પથિ
 કાનાં માર્ગાવરોધ કુર્માણા યે યક્ષાઃ રાક્ષસાઃ કૃપ્માણ્ડાઃ પિશાચાશ્ચ સર્વે વ્યન્તર-
 વિશેષાસ્તે ચ તે રુષ્ટાઃ=રોપયુક્તા સ્તૈર્જાતાનિ યાન્યુપસર્ગસહસ્સાણિ=ઉપદ્રવસહ
 સ્સાણિ તૈઃ સકુલઃ=વ્યાપ્તો યઃ સ તથા ત ' વહૂન્પાહ્યભૂય ' વૈત્પાતિકભૂત=
 વહૂન્યૌત્પાતિકાનિ=ઉત્પાતભવાનિ દુઃખાનિ ભૂતાનિ યત્ર સ તથા ત ' વિરહ્ય

હોતા છે । તથા (વિઝલગઙ્ગિજય ગુજિય) જિસકા મેઘ કી તરહ
 વિશાલ ગજિત ણ્વ ભ્રમરોં કે જેસા વિશાલ ગુજિત, (નિઘાય)
 નિર્ઘાત-વ્યન્તરોં કી ધ્વનિ, તથા (ગરુધનિવહિય) વિજલી આદિ કા
 જો હસમેં ગિરના હોતા હૈ ઉસ સમય નિલા હુઆ જો અત્યન્ત નિર્હારી
 પ્રતિધ્વનિ યુક્ત વિશેષ નિર્ઘોષ (દૂરસુચ્ચત) દૂર સે સુનાઈ દેને વાલે
 (ગંભીર) ગમ્ભીર (ધ્રુગધ્રુગતિ) ' ધ્રુગ ધ્રુગ ' જેસા શબ્દ, યે (સહ)
 શબ્દ હૈં જિસમેં, તથા (પડિપહરુમત-જક્ષ્વ-રક્ષ્વસ-કુહડ-પિસાય-
 રુસિય-તજ્જાયઽવસગ્ગસહસ્સસકુલ) જો રુષ્ટ હોકર પથિકોં કે માર્ગ
 કા અવરોધ કરને વાલે યક્ષ, રાક્ષસ, કૃપ્માણ્ડ (વ્યન્તરવિશેષદેવ)
 ણ્વ પિશાચોં કે હજારોં ઉપસર્ગોં સે સદા વ્યાપ્ત રહતા હૈ (વહૂન્પાહ્ય
 ભૂય) તથા જિસમેં જીવોં કો અનેક ઉત્પાતજન્ય દુઃખોં કા સામ્હના

તથા " વિઝલગઙ્ગિજયગુજિય " જે મેઘના જેવી મોટી ગર્જના કરે છે
 અને ભ્રમરો જેવો વિશાળ ગુજરવ કરે છે, " નિઘાય " નિર્ઘાત—
 વ્યન્તરોનો મહાધ્વનિ તથા " ગરુધનિવહિય " વીજળી આદિ તેમા પડે ત્યારે
 તેમાથી નીકળતો નિર્હારી-પ્રતિધ્વનિ યુક્ત નિર્ઘોષ, " દૂરસુચ્ચત " દૂરથી સંભળ
 ળાતો " ગમ્ભીર " ગભીર " ધ્રુગધ્રુગતિ " " ધ્રુગ ધ્રુગ " જેવો આવાજ, આદિ
 " સહ " શબ્દો જેમા સંભળાય છે તથા " પડિપહરુમત-જક્ષ્વ-રક્ષ્વસ-કુહડ-
 -પિસાય-રુસિય-તજ્જાય ઽવસગ્ગસહસ્સસકુલ " જે રુષ્ટ થઇને મુસાફરોના
 માર્ગોનો અવરોધ કરનારા યક્ષ, રાક્ષસ, કૃપ્માણ્ડ, (વ્યન્તર વિશેષ દેવ) અને
 પિશાચોના હજારો ઉપસર્ગોથી સદા વ્યાપ્ત રહે છે, " વહૂન્પાહ્યભૂય " તથા
 જેમા જીવોને અનેક ઉત્પાત જન્ય દુઃખોનો સામનો કરવો પડે છે, " વિરહ્ય

વલિહોમધૂવઝવયારદિણ્ણરુહિરન્ચનાકરણપયયજોગપયયચરિય ' વિરચિતવલિ
હોમધૂપોપચારદત્તરુધિરાચનાકરણપ્રયતયોગપ્રયતચરિત = તત્ર વિરચિત્ = કૃત્
વલિના=દ્રવ્યોપહારેણ હોમેન=અગ્નૌ હવનેન રૂપેન-વૂપેનચોપચારો ચૈસ્તે તથા દત્ત
રુધિર=સમર્પિત શોણિત યત્ર તદેવભૂત યદર્ચનાકરણ તત્ર પ્રયતા=તત્પરા ચે તે
તથા, યોગપ્રયતાશ્ચ=ચોતાદિભિર્વ્યાપારે નિરતા ચે તે તથા તૈઃ તત્રસ્થિતૈ ચરિતઃ
સશ્રિતો યઃ સ તથા તમેતાદૃશ સાગરમ્ । પુનઃ કીદૃશ ? મિત્યાહ—‘ પરિયતજુ-
ગતકાલરૂપોવમ ’ પર્યન્તયુગાન્તમાલકલ્પોપમ=પર્યન્તયુગસ્ય=સકલેષુ યુગેષુ મધ્યે
ચરમયુગસ્ય ચોડન્તકાલઃ=પ્રલયકાલ સ એવ કલ્પસ્તેનોપમા=સાદૃશ્ય યસ્ય સ
તથા ત ‘ દુરતમહાનર્દ-નર્દવઃ-મહાભીમદરિસણિજ્જ ’ દુરતમહાનદી નદીપતિ-
મહાભીમદર્શનીય-દુરન્તાઃ=દુષ્પારા યા મહાનદ્યઃ=ગંગાયાનદ્યશ્ચ=અન્યાઃ સામાન્યા-

કરના પડતા હૈ (વિરઙ્ગ્યવલિહોમ-ધૂવ-ઝવયાર-દિણ્ણ-રુહિર-ચ્ચના-
કરણ-પયય-જોગપયયચરિય) તથા (વિરઙ્ગ્યવલિહોમધૂવઝવયાર) નૌકા-
ઓંકે અટક જાને પર જહા જહાજોં સે વ્યાપાર કરને મેં લગે હુએ મનુ-
ષ્યોં દ્વારા-સાર્થવાહો દ્વારા-વિવિધ પ્રકાર કી ભેટે દી જાતી હૈ, અગ્નિમેં
ધૂપ જલાયા જાતા હૈ- તથા (દિણ્ણ રુહિરચ્ચનાકરણપયય) રુધિર કા
સમર્પણ રૂપ પ્રજા મેં લગે હુએ એસે (જોગપયય) વ્યાપારી લોગોં સે
(ચરિય) સેવિત હૈ । તથા (પરિયત જુગતકાલરૂપોવમ) સમસ્ત યુગોં
કે મધ્ય મેં ચરમ યુગ કા પ્રલયકાલરૂપ કલ્પ કે જૈસા તુ (દુરતમહાનર્દ
નર્દવઃ-મહાભીમ દરિસણિજ્જ) (દુરત) જિનકા પાર કરના કઠિન હૈ
એસી (મહાનર્દ નર્દવઃ) ગંગા આદિ મહાનદિયોં કા તથા અન્યસાધારણ
નદિયોં કા જો પતિ હૈ, હસી કારણ યહ (મહાભીમદરિસણિજ્જ) દેખને

વલિહોમ-ધૂવ-ઝવયાર-દિણ્ણ-રુહિર-ચ્ચનાકરણ-પયય-જોગપયયચરિય ” તથા
“ વિરઙ્ગ્યવલિહોમધૂવઝવયાર ” નૌકાઓ અટકી જતા તથા વહાણો દ્વારા
વેપાર કરનાર લોકો દ્વારા (સાર્થવાહો દ્વારા) વિવિધ પ્રકારની ભેટો દેવાય છે,
અગ્નિમા ધૂપ બાળવામા આવે છે, તથા “દિણ્ણરુહિરચ્ચનાકરણપયય” રુધિરના
સમર્પણ રૂપ પૂજામા લાગેલા એવા “ જોગપયય ” વ્યાપારી લોકોથી “ ચરિય ”
જે સેવિત છે, તથા “ પરિયતજુગતકાલરૂપોવમ ” જે સધળા યુગોની વચ્ચે
છેલા યુગના પ્રલયકાળરૂપ કલ્પના જેવા છે, “ દુરતમહાનર્દનર્દવઃ-મહા
ભીમદરિસણિજ્જ ” “ દુરત ” જેને ઓળંગવી મુશ્કેલ છે એવી “ મહાનર્દ-
નર્દવઃ ” ગંગા આદિ મહા નદીઓનો તથા બીજા સામાન્ય નદીઓનો જે,
પતિ છે, અને તે કાળો જે “ મહાભીમદરિસણિજ્જ ” જે દેખાવમા ભયકર
પ્ર. ૩૯

સ્તાસા ' રહ ' પતિઃ, સ ચ મહાભીમદર્શનીયઃ સ તથા ત ' દુરણુચર ' દુઃસ્થેનાઽ
 નુચર્યતે इति दुरनुचर ' विसमप्पवेस ' विषमप्रवेश=विषमः=दुस्साध्य प्रवेशो
 यस्मिन् स तथा त ' दुक्खोत्तार ' दुःखोत्तार=दुःखेनोत्तरण यस्य स तथा त
 ' दुरासय ' दुरासद=दुष्प्राप दुराश्रय=दुःखस्थानम्प ' लवणसल्लिपुण्ण ' लवण
 सलिलपूर्ण = क्षारजलभृतम्, ' असिधसिधसमुच्छिद्यगेहि ' असितसितसमुच्छिद्
 तैः=तत्र असिताः-कृष्णाः सिताः=शुक्लाश्च पटाः समुच्छिद्यतका=उपरि रद्धा येषु
 प्रवहणेषु तानि तथा तैः ' हत्थतरगेहि ' दक्षतरैः=अन्य यानपात्राद्यपेक्षयाऽतिशय
 वेगशीलैः ' वाहणेहि ' गहनैः=स्कन्धवानैः प्रवहणीः ' अहवइत्ता ' अतिपत्य=
 आक्रम्य ' परदब्बहरा ' परद्रव्यहरा=परपनापहरणशीलाः ' निरणुकपा ' निरु
 कम्पाः=कृपारहिताः ' गिरवयक्खा ' निरपेक्षाः=अपेक्षारहिता परलोकभयरहिताः
 नराः=जना ' समुदमज्झे ' समुद्रमये ' गतूण' गत्वा जणस्स ' पोत्ते ' पोतान्=
 नौकान् ' हणति ' घ्नन्ति=विनाशयन्ति ॥ सू-१० ॥

મેં ભયકર હૈ (દુરણુચર) તથા જિસમેં અનુચરણ કરના-ફિરના ઘણુત
 હી આઘાસ સાધ્ય-કઠિન હૈ । ઇસીલિધે (વિસમપ્પવેસ) જિસમેં પ્રવેશ
 કરના ઘણુત કઠિન હોતા હૈ । (દુક્ખોત્તાર) જિસકા પાર કરના ઘડા
 મુશ્કિલ હોતા હૈ (દુરાસય) જો સદા દુઃખદસ્થાનરૂપ હૈ । (લવણમ-
 લિલપુણ્ણ) ક્ષાર જલ સે સદા ભરા રહતા હૈ એસે સમુદ્ર કો (અસિધ
 સિધ સમુચ્છિયગેહિ) કૃષ્ણ એવ શુભ્રવસ્ત્ર જિનકે ઉપર બાધા ગયા હૈ
 એસી (હત્થતરગેહિ) જો અન્ય યાન પાત્રોં કોં અપેક્ષા પાની કે ઉપર
 ઘણુત જલ્દી તૈરતી હૈ એસે (વાહણેહિ) નૌકાઓં દ્વારા (અહવહત્તા)
 આક્રમિત કરકે (પરદબ્બહરા) પરદ્રવ્ય કો હરણ કરને વાહે (નિરણુ
 કપા) નિર્દયી (ગિરવયક્ખા) જો અપને પરભવ કો સુધાર ને કી
 ભાવના સે રહિત હોતે હૈ એસે (નરા) ચોર મનુષ્ય (સમુદમજ્ઝે ગતૂણ)

છે, “ દુરણુચર ” તથા જેમા ઈશ્વર અતિશય કઠિન છે, “ વિસમપ્પવેસ ”
 જેમા પ્રવેશ કરવો ઘણો મુશ્કેલ છે, “ દુક્ખોત્તાર ” જેને ઓળંગવો અતિ
 શય મુશ્કેલ છે, “ દુરાસય ” જે સદા દુઃખદ સ્થાન ઉપ છે, “ લવણસલિલ
 પુણ્ણ ” જે ખારા પાણીથી સદા ભરપૂર રહે છે, એવા સમુદ્રને “ અસિધસિધ
 સમુચ્છિયગેહિ ” જેમના ઉપર કાળા અને સફેદ વસ્ત્ર બાંધેલા છે એવી “ હત્થ
 તરગેહિ ” જે અન્ય વાહનો ડરતા પાણી ઉપર વધારે ઝડપથી તરે છે એવી
 “ વાહણેહિ ” નૌકાઓ દ્વારા “ અહવહત્તા ” આક્રમણ કરીને “ પરદબ્બહરા ”
 પરધનનુ હરણ કરનારા, “ નિરણુકપા ” નિર્દય અને “ ગિરવયક્ખા ” પોતાના
 પરભવને સુધારવાની ભાવનાથી રહિત એવા ‘ નરા ’ ચાર લોકો “ સમુદમજ્ઝે

पुन किं कुर्वन्तीत्याह—‘गामागर०’ इत्यादि

मूलम्—गामागर-नगर-खेड-कवड-मडव-दोणमुह-पट्टणा-
समणिगस—जणवए ते य धणसमिद्धे हणाति, यिर हियय-
च्छिन्नलज्जा वदिग्गह—गोगाहा य गेणहति, दारुणमई निक्खिवा
णिय हणांति छिदति गेहसधि निक्खित्ताणि य हरंति,
धणधणणदब्बजायाणि जणवयकुलाण निग्घिणमई पर-
दब्बाहि जे अविरया, तहेव केइ अदिण्णादाणं गवेसमाण
कालाकालेसु सचरता चित्तगपज्जलिय—सरसदर—दड्ढकड्डिय-
कलेवरे रुहिरालित्तवयण—अक्खय—खादिय—पीतडाइणि-
भमतभयकरे जवुयखिक्खियते घूयकयघोरसद्दे वेयालुट्टिय
विसुद्धकहकहेत पहसियवीहणग निरभिरामे अइदुब्धिगंधे,
वीभच्छदरिसणिज्जे सुसाणे वणे सुण्णघरलेणअतरावण
गिरिकंदरेसु विसमसावय समाउलासु वसहिसु किलिस्संता
सीयायवसोसियसरीरा दड्ढच्छवीनिरय तिरिय भवसंकडदुक्ख
सभारवेयणिज्जाणि पावकम्माणि सचिणिता दुल्लभभक्खण
पाणभोयणापिवासिया झुज्झिया किलंतामसकुणिमकदमूलजं
किंचिकयाहारा उव्विगा उप्पुया असरणा अडवीवास उवेति
वालसयसकणीय ॥ सू० ११ ॥

समुद्र के बीच में जाकर (जणस्स) मनुष्यों की (पोते) नौकाओं को
(हणाति) नष्ट कर डालते हैं ॥सू० १०॥

गतूण ” समुद्रनी वर्ये जडने “ जणस्स ” भाणुमेनी “ पोते ” नौकाओने
“ हणाति ” नाश करी नाये छे ॥ सू-१० ॥

ટીકા—‘ તે ય ’ તે ચ=પૂર્વોક્તિપચારાજનાઃ ‘ ગામાગરનગરખેડકવ્વડ-
મડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમજળવણ ’ ગ્રામાગરનગરખેડકર્વટમડમ્વદોળમુખપત્ત-
નાશ્રમનિગમજનપદાન્=તત્ર ગ્રામઃ, પ્રસતિ બુદ્ધ્યાદિગુણાનિતિગ્રામઃ, આકરઃ=
સુવર્ણરજતાદિ ધાતૂના સ્થાન, નગર=અષ્ટાદશકરવર્જિત, ખેડ=ધૂલિપ્રાકારમય,
કર્વટ=અલ્પજનનિવાસસ્થાન, મડમ્વ સાંકોશદ્વયગ્રામાન્તરશૂન્યઃ, દોળમુખ=
જલસ્થલમાર્ગો યત્ર ભવેત્ તદ્દોળમુખ, પત્તન=સર્વવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનમ્, આશ્રમઃ=

પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે તસ્કરજન ફિર કયા કરતે હૈં ? સોશ્સ
સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈં—‘ ગામાગર૦ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ધણસમિદ્ધે ગામાગરનગર ખેડકવ્વડમડવદોળમુહપટ્ટ
ણાસર્મણિગમજળવણ) ધનધાન્યાદિ સે સમૃદ્ધ દુણ ગ્રામ, આકર, નગર,
ખેડ, કર્વટ, મડવ, દોળમુખ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ એવ જનપદ, इन
સય કો (તે ય) પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે ચોર આદિક (હણતિ) નષ્ટ
કર દેતે હૈં । જહા બુદ્ધ્યાદિગુણોં કા હાસ હોતા હૈ વહ ગ્રામ હૈ । સુવર્ણ
રજત આદિ ધાતુઓં કી ઉત્પત્તિ કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ
આકર હૈ । અઠારહ પ્રકાર કા રાજકર જિસમેં નહીં લિયા જાતા હૈ ઉસકા
નામ નગર હૈ । ધૂલિકા પ્રાકાર જિસમેં હોતા હૈ ઉસકા નામ ખેડ હૈ । જિસમેં
થોડેસે મનુષ્ય નિવાસ કરતે હૈ ઉસકા નામ કર્વટ હૈ । ચારો દિશાઓંમેં
અઢાઈ૨ કોસતક જિસકે આસપાસમેં ગાવ નહીં હોતે હૈ ઉસકા નામ મડવ
હૈ । જલમાર્ગ કે એવ સ્થલમાર્ગ દોનોં પ્રકારકે માર્ગસે હોકર જિસમેં જાયા
જાતા હૈ ઉસકા નામ દોળમુખ હૈ । સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો

પરદ્રવ્યનુ હરણુ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે ? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા
તે પ્રગટ કરે છે—“ ગામાગર ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ધણસમિદ્ધે ગામાગરનગરખેડકવ્વડમડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમ
જળવણ ” ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ બનેલ ગામ, આકર, નગર, ખેડ, કર્વટ,
મડવ, દોળમુખ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાનો “ તેય ”
પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે જ્યાં બુદ્ધિ આદિ ગુણોનો
હાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, આદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને
આકાર-ખાણ કહે છે અઠાર પ્રકારનો રાજકર જ્યાં લેવાતો નથી તેને નગર
કહે છે ધૂળનો કિલ્લો જ્યાં હોય છે તે સ્થાનને ખેડ કહે છે જેમા થોડા જ
ખાણસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્વટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા
ગામ હોતા નથી તેને મડવ કહે છે જ્યાં જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઈ
શકાય છે તે સ્થાનને દોળમુખ કહે છે જ્યાં બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

તાપસનિવાસઃ, નિગમઃ=વણિગ્જનનિવાસઃ જનપદોદેશસ્તાન ' ધણસમિદ્ધે ' ધન-
સમૃદ્ધાન્=ધનધાન્યસમ્પન્નાન્ ' હણતિ ' ઘ્નન્તિ=વિનાશયન્તિ તથા ' ધિરહિયયા '
સ્થિરહૃદયા=અદત્તાદાને નિશ્ચલચિત્તાઃ છિન્નલજ્જાઃ=જાતિકુળાદિલજ્જાવર્જિતાઃ
' વંદિગ્ગહગોગ્ગહા ય ' વન્દિગ્ગહગોગ્ગહાશ્ચ = વન્દિનઃ સ્તુતિપાઠોપજીવિનસ્તેષાં
ગ્રહ =ગ્રહણ ગચ્ચા ચ ગ્રહણ ચોરણમિત્યર્થ , ' ગેહ્ણતિ ' ગૃહ્ણન્તિ=કુર્વન્તિ તથા
' દારુણમર્ઘ ' દારુણમતયઃ=ઘોરકર્માચરણબુદ્ધય ' નિક્ષિ વા ' નિષ્કૃપાઃ=નિર્દયાશ્ચ
' ણિય ' નિજ = સ્વજનમપિ ' હણતિ ' ઘ્નન્તિ = નાશયન્તિ તથા ગેહ્ણસર્ધિ=
ગૃહભિત્તિ ' છિદતિ ' છિન્દન્તિ । તતથ ' જણવયકુલાણ ' જનપદકુલાનાં ' નિક્ષિ

સ્થાન હોતા હૈં ઉસકા નામ પત્તન હૈં । તાપસ લોગોં કા જો નિવાસ
સ્થાન હોતા હૈં ઉસકા નામ આશ્રમ હૈં । વણિગ્જન જિસમેં રહતે હોં
ઉસકા નામ નિગમ, એવ દેશ કા નામ જનપદ હૈં । इन स्थानों को लूटने
वाले तथा-नष्ट भ्रष्ट करने वाले ये जन (धिरहियया) अदत्तादान करने
में निश्चलचित्त रहते हैं (छिन्नलज्जा) इन्हें जाति, कुल आदिकी लज्जा
कुछ भी नही होती है । (वदिग्गहगोग्गहा य) ये स्तुति पाठकों को
लूट लिया करते हैं और गायों को भी चुरा लिया करते हैं । (दारुणमर्घ)
इनकी मति बड़ी दारुण (भयकर) होती है-भयकरसे भयकर कर्म करनेमें
भी उन्हें सकोच नहीं होता है । (निक्षिवा) ये सदा दया से रहित होते
हैं । (णिय हणति) अपने निजजन को भी ये जान से मार डालते हैं
(गेहसर्धि) घरों की भित्तियों तक को भी ये (छिदति) तोड़ डालते
हैं । (जणवयकुलाण) दूसरों की रक्खी हुई-धरोहररूप में स्थापित की

સ્થાનને પત્તન ડહે છે તાપસ લોકના નિવાસસ્થાનને આશ્રમ ડહે છે વણિક
લોકો જ્યા રહે છે તે નિગમ અને દેશને જનપદ ડહે છે તે સ્થાનોને લૂટ-
નારા તથા નષ્ટભ્રષ્ટ કરનારા તે લોકો “ ધિરહિયયા ” અદત્તાદાન-ચોરી કરવાને
માટે દૃઢ નિશ્ચયી હોય છે “ છિન્નલજ્જા ” તેમને જાતિ કુળ આદિની સહેજ
પણ લાજ હોતી નથી “ વદિગ્ગહગોગ્ગહાય ” તેઓ સ્તુતિ કરનારાને પણ
લૂટી લે છે, અને જાયોને પણ ચોરી જાય છે “ દારુણમર્ઘ ” તેમની જાતિ
અતિ દારુણ હોય છે-ભય કરમા ભય કર કૃત્ય કરતા પણ તેમને સકોચ થતો
નથી “ નિક્ષિયા ” તેઓ મદા દયાહીન હોય છે, “ ણિય હણતિ ” પોતાના
સ્વજનોને પણ તેઓ મારી નાખે છે, “ ગેહસર્ધિ ” ઘરની દિવાલોને પણ
તેઓ “ છિદતિ ” ઘરની દિવાલોને પણ તેઓ “ છિદતિ ” તોડી પાડે છે
“ જણવયકુલાણ ” બીજાઓ અનામત થાપણ તરીકે મૂકેલ “ ધણધણદઘ્વ

ટીકા—‘ તે ય ’ તે ચ=પૂર્વોક્તમયારાજનાઃ ‘ ગામાગરનગરખેડકર્વટ-
મડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમજળવણ ’ ગ્રામાકરનગરખેડકર્વટમડમ્વદોળમુહપટ્ટ-
નાશ્રમણિગમજનપદાન્=તત્ર ગ્રામઃ, ગ્રસતિ બુદ્ધ્યાદિગુણાનિતિગ્રામઃ, આકરઃ=
સુવર્ણરજતાદિ ધાતૂના સ્થાન, નગર=અષ્ટાદશકરગર્જિત, ખેડ=ધૂલિપ્રાકારમય,
કર્વટ=અલ્પજનનિવાસસ્થાન, મડમ્વ સાર્વક્રોશદ્વયગ્રામાન્તરગૂન્યઃ, દોળમુહ=
જલસ્થલમાર્ગો યત્ર ભવેત્ તદ્દોળમુહ, પત્તન=સકલવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનમ્, આશ્રમ=

પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે તસ્કરજન ફિર વ્યા કરતે હૈં ? સો હસ
સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈં—‘ ગામાગર૦ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ધણસમિદ્ધે ગામાગરનગર ખેડકર્વટમડવદોળમુહપટ્ટ
ણાસમણિગમજળવણ) ધનધાન્યાદિ સે સમૃદ્ધ હુણ ગ્રામ, આકર, નગર,
ખેડ, કર્વટ, મડવ, દોળમુહ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ એવ જનપદ, હન
સવ કો (તે ય) પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે ચોર આદિક (હણતિ) નષ્ટ
કર દેતે હૈં । જહા બુદ્ધ્યાદિગુણોં કા દ્વાસ હોતા હૈ વહ ગ્રામ હૈ । સુવર્ણ
રજત આદિ ધાતુઓં કી ઉત્પત્તિ કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ
આકર હૈ । અઠારહ પ્રકાર કા રાજકર જિસમેં નહીં લિયા જાતા હૈ ઉસકા
નામ નગર હૈ । ધૂલિકા પ્રાકાર જિસમેં હોતા હૈ ઉસકા નામ ખેડ હૈ । જિસમેં
થોડેસે મનુષ્ય નિવાસ કરતે હૈ ઉસકા નામ કર્વટ હૈ । ચારો દિશાઓંમેં
અઢાઈર કોસતક જિસકે આસપાસમેં ગાવ નહીં હોતે હૈ ઉસકા નામ મડવ
હૈ । જલમાર્ગ કે એવ સ્થલમાર્ગ દોનોં પ્રકારકે માર્ગસે હોકર જિસમેં જાયા
જાતા હૈ ઉસકા નામ દોળમુહ હૈ । સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો

પરદ્રવ્યનુ હરણ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે ? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા
તે પ્રગટ કરે છે—“ ગામાગર ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ધણસમિદ્ધે ગામાગરનગરખેડકર્વટમડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમ
જળવણ ” ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ અનેક ગામ, આકર, નગર, ખેડ, કર્વટ,
મડવ, દોળમુહ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાને “ તેય ”
પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે જ્યાં બુદ્ધિ આદિ ગુણોને
દ્વાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, ચાંદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને
આકાર—ખાણ કહે છે અઠાર પ્રકારનો રાજકર જ્યાં લેવાતો નથી તેને નગર
કહે છે ધૂળનો કિલ્લો જ્યાં હોય છે તે સ્થાનને ખેડ કહે છે જેમા થોડા જ
ખાણસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્વટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા
ગામ હોતા નથી તેને મડવ કહે છે જ્યાં જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઈ
શકાય છે તે સ્થાનને દોળમુહ કહે છે જ્યાં બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

તેપુ=પ્રદીપ્તેષુ યાનિ સરમાનિ=રુધિરમાસાદિસહિતાનિ અતएव दग्धानि=ईपङ्ग-
स्मीभूतानि तानि कृष्टानि=श्वशृगालादिभिश्चितातो निष्काशितानि कलेवराणि=
मृतशरीराणि यत्र तत्तथा तत्र श्मशाने । पुनः कीदृशे-‘ रुहिरलित्तवयणअक्खय
खादियपीयडाइणिभमतभयकरे ’ रुधिरलिप्तवदनाऽतखादितपीतढाकिनी भ्रमद्
भयङ्करे=तत्र रुधिरेण लिप्तानि वदनानि = मुखानि तथा अक्षतानि=समग्राणि
खादितानि मृतज्ञाना शरीराणि तथा पीतानि रुधिराणि याभिस्तास्तथा भ्रमन्त्यश्च
या डाकिन्यस्ताभिर्भयङ्करे, ‘जवुयखिक्खियते’ जम्बुकाना ‘खिखि’ इति शब्दयुक्ते
तथा ‘घूयकयघोरसदे’ घूकृत्त घोरशब्दे=घूकैः=उल्लूकैः कृत वोरः=भयङ्करः
शब्दस्तेन युक्ते तथा ‘वेयालुट्ठियविमुद्धकहहहतपहसिययीदणगनिगिरामे’ वे
तालोत्थितविशुद्धकहकहायमानप्रहसितभीषणरुनिरमिरामे = वेतालेभ्यः = विकृत
पिशाचेभ्यः उत्थित=समुत्पन्न विशुद्धम्=अन्यशब्दाऽमिश्रित यत् कहकहायमान=

(सरस) रस-रुधिर आदिसे लिस मुर्दे (दरदड्ड) पूरे नहीं जल सकनेके कारण
(कड्डियकलेवरे) कुत्ते एव शृगाल आदि द्वारा चिताओंसे बाहिर निकाल
लिये जाते हैं (रुहिरलित्तवयण) जिनके मुख रुधिरसे लिस हो रहे हैं,
तथा (अक्खयखादियपीय) जिन्होंने समग्ररूपसे मृतक कलेवरोंको खाया
है और उनकाखून पी लिया है ऐसी (डाइणीभमतभयकरे) घूमती हुई
ढाकिनियोंसे जो भयकर बने हुए हैं (जवुयखिक्खियते) तथा जो गीदड़ों
के ‘खि-खि’ शब्दोंसे युक्त हो रहे हैं (घूयकयघोरसदे) उल्लू जहा घोर
शब्द कर रहे हैं, तथा जहा (वेयालुट्ठिय) वेताल विकृत बनकर जोरर से
कह कहाय मार कर हँसा करते हैं । (विमुद्धकह कहेंत पहसिय) उनका
यह हँसना जहाँ अन्य और शब्दों से मिश्रित नहीं हो रहा है-केवल
“ कह कह ” ऐसी ही ध्वनि जहा उनके मुख से निकल रही है, इस-

રસ-રુધિર આદિથી ખરડાયેલા મુઠ્ઠા, “ દરદડ્ડ ” પૂરા બળી શકેલા ન હોવાથી
“કડ્ડિયકલેવરે” ફતરા શિયાળ આદિ દ્વારા ચિતાઓમાંથી બહાર ખેંચી કઢાય
છે “ રુહિરલિત્તવયણઅક્ખયખાદિયપીયડાઇણીભમતભયકરે ” “ રુહિરલિત્તવયણ ”
જેમના મુખ લોહીથી ખરડાયેલા છે તથા જેમણે સંપૂર્ણ રીતે મૃતશરીરે નુ
ભક્ષણકર્તુ છે અને તેમનું લોહી પીધું છે એવા “ ડાઇણીભમતભયકરે ” ત્યા
ભમતી ડાડણીથી જે ભયકર લાગે તે, “ જવુયખિક્ખિયતે ” તથા જે
શિયાળોના “ ખિ-ખિ ” શબ્દોથી યુક્ત છે, “ ઘૂયકયઘોરસદે ” ઘુવડો બધા ભયકર
શબ્દો કરે છે, તથા બધા “ વેચાલુટ્ઠિય ” વેતાળકૃત બનીને બેર શોરથી ખડ
ખડાટ હસી રહ્યા છે, “ વિમુદ્ધકહકહેંત પહસિય ” તેમનું તે હાસ્ય બધા બીજા
કોઈ શબ્દ સાથે મિશ્રિત થતું નથી-એવળ “ ડહ ડહ ” એવો ધ્વનિજ તેમના

તાણિ ' નિશ્ચિન્તાનિ=સ્થાપિતાનિ ' ધનધણ્ણદ્વજાયાણિ ' ધનધાન્યદ્રવ્યજાતાનિ= ધનધાન્યસુવર્ણરજતાદીનિ હરન્તિ ' કે ઇત્યાહ-યે ' પરદવ્વાહિ ' પરદ્રવ્યેઃ ' અવિરયા ' અવિરતાઃ=અનિવૃત્તાઃ=' નિગ્ધિણમર્ઘ ' નિર્ઘ્ણમતયઃ=નિર્ઘ્ણારહિતા ' 'તદેવ' તથૈવ-પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ' કેઈ ' કેઽપિ ' અદિણ્ણાદાણ ' અદત્તાદાનં=સ્વામ્યાદિ ભિરવિતીર્ણ ધન ગવેષમાણા =અન્વેષમાણાઃ કાલ્પકાલેષુ=કાલેષુ=સકલલોકવ્યવહારોચિતકાલેષુ દિનાદિલક્ષણેષુ તથા અકાલેષુ=અનુચિતકાલેષુ અર્ધરાત્રાદિલક્ષણેષુ ચ સચ્ચરન્તઃ=ભ્રમન્તોઽદત્તગ્રાહિણ , ' ચિત્તગપ્જ્જલિયમરસદરદ્ઢુકઙ્કિયકલેપરે ' ચિત્તકપ્જ્જલિતસરસદરદગ્ધકુટ્ઠકલેપરે=ચિત્તકેષુ=ચિતાસુ, કીદશેષુ ? પ્રજ્જલ્લિ

હુઈ (ધનધણ્ણદ્વજાયાણિ) ધન, ધાન્ય, સુવર્ણ રજત આદિ સપત્તિ કો (હરન્તિ) હર લિયા કરતે હૈં । (પરદવ્વાહિ અવિરયા) કયોં કિ યે લોગ પરકે દ્રવ્ય કો ચુરાને રૂપ કૃત્ય સે વિરક્ત નહોં હોતે હૈં-“ દૂસરોં કા દ્રવ્ય વિના પૂઠે નહોં લૂગા ” હસ પ્રકાર કા નિયમ હન્હેં નહોં હોતા હૈ । (નિગ્ધિણમર્ઘ) યે સર્વથા દયાભાવ સે રહિત મતિ વાલે હોતે હૈં । (તદેવ કેઈ) હસી તરહ કિતનેક વ્યક્તિ (અદિણ્ણાદાણ) સ્વામી આદિ દ્વારા વિતીર્ણ નહોં કિયે હુઈ ધન ધન્યાદિ કી (ગવેષમાણા) ગવેષણા કરતે હુઈ (કાલાકાલેસુ) સમસ્ત લોક વ્યવહાર કે ઉચિત દિન આદિ રૂપકાલ મેં તથા અર્ધરાત્રિ આદિ રૂપ અકાલ-અનુચિત કાલ મેં (સચરતા) ઇધર ઉધર ધૂમતે હુઈ શ્મશાન શૂન્યગૃહ આદિ મેં ભટકતે રહતે હૈં, યહ સમ્બન્ધ યહા જોડ લેના ચાહિયે । વહ શ્મશાન આદિ કૈસે હૈં સો વર્ણન કરતે હૈં-જહા (ચિત્તગપ્જ્જલિય) પ્રજ્વલિત ચિતાઓં મેં

જાયાણિ” ધન, ધાન્ય, સોણ, રૂપ, આદિ સપત્તિને “હરન્તિ” પણ તેઓ હરી લે છે “પરદવ્વાહિ અવિરયા” કારણ કે તે લોકો પરધનને ચોરવાના કૃત્યથી વિરક્ત હોતા નથી, “ખીલ્લનુ દ્રવ્ય તેને પૂછ્યા વિના નહીં લઉં” એવો તેમને નિયમ હોતો નથી ‘ નિગ્ધિણમર્ઘ’ તેઓ સદા દયાલાવથી રહિત મતિવાળા હોય છે “તદેવ કેઈ” એ જ પ્રમાણે ડેટલાક લોકો “અદિણ્ણાદાણ” માલિક આદિ દ્વારા અર્પણ ન કરવામા આવેલા ધન ધાન્યાદિનો “ગવેષમાણા” શોધ કરતા “કાલાકાલેસુ” બધા લોકો માથે વ્યવહાર માટેના દિવસ આદિ યોગ્ય સમય અથવા મધ્ય રાત્રિ આદિ અકાલે-અયોગ્ય સમયે “સચરતા” આમ તેમ શ્મશાન, શૂન્યગૃહ-ખાલીઘર-આદિમા ભટક્યા કરે છે તે શ્મશાન આદિ કેવા હોય છે, તેનું વર્ણન કરે છે-“ચિત્તગપ્જ્જલિય” સળગતી ચિતાઓમા “સરસ”

દગ્ધચ્છવ્ય = નષ્ટશાન્તય ' નિરયતિરિયમ્ભવસકટદુઃખસમારવેદણિજ્જાણિ પાવક-
મ્માણિ સચિણતા ' નરકતિર્યગ્ ભવસકટદુઃખસમારવેદનીયાણિ પાપકર્માણિ
સચિન્વન્તઃ = તત્ર નરકતિર્યગ્ભવેષુ સકટાણિ = વિપમાણિ દુઃખાણિ = પરમાધાર્મિક-
કૃત છેદનભેદનાદિરૂપાણિ - તેષા યઃ સમારઃ = વહુલતા તેન વેદનીયાણિ = અનુભવની-
યાણિ ' પાવકમ્માણિ ' પાપકર્માણિ = પરદ્રવ્યાપહરણાદીણિ સચિન્વન્તઃ = સમુપાર્જ-
યન્તઃ ' દુલ્ભમમ્ભક્ષણપાણમોચના ' દુર્લભમક્ષણપાનમોજનાઃ - દુર્લભ = દુષ્પ્રાપ્ય
મક્ષણ = અન્નાદિક પાન = દુગ્ધજલાદિક ચ મોજન = કલ્યાવર્ત પ્રાતરશનાદિક ' નાશતા '
' કલે વા ' इति પ્રમિદ્ધ યેષા તે તથા અતएव ' પિવાસિયા ' પિવાસિતાઃ =
તૃપિતાઃ ' શુશ્રિયા ' વુશુક્ષિતાઃ ' કિલ્તા ' કલ્લાન્તાઃ = ગ્લાનિયુક્તાઃ ' મસકુણિ-
મકદમૂલજ કિંચિકયાહારા ' માંસકળવકન્દમૂલયત્કિશ્ચિત્ કૃતાહારાઃ = તત્ર માસ =
પ્રસિદ્ધ કુણપ = મૃતકદેહઃ કન્દમૂલાણિ તેષા યત્ કિશ્ચિત્ = યથાવસર યત્કિશ્ચિ-

ચ્છવી) શરીર કી કાતિ ઇનકી નષ્ટ હો જાતી હૈ । (નિરયતિરિયમ્ભવ-
સકટદુઃખસમારવેયણિજ્જાણિ) નરક તિર્યઞ્ચ ભવોં મેં પરમાધાર્મિક
કૃત છેદન ભેદન આદિરૂપ વિપમ દુઃખો કે સમાર સે વેદનીય એસે પર-
દ્રવ્યાપહરણ આદિરૂપ (પાવકમ્માણિ) પાપકર્મોં કો (સચિણતા) ઉપા-
ર્જિત કરતે હુए (દુલ્ભમમ્ભક્ષણપાણમોચના) યે જીવ દુર્લભ અન્નાદિ
સામગ્રી વાલે, દુર્લભદુગ્ધ જલાદિ વાલે, તથા દુર્લભ મોજનાદિરૂપ કલે-
વાવાલે હોતે હૈ । (પિવાસિયા) ઇન્હેં પાની તક પીને કો નહીં મિલતા
હૈ (શુશ્રિયા) સદા યે વશુક્ષિત-ભૂલે રહા કરતે હૈ । (કિલ્તા) કલ્લાન્ત-
હરણક કોઈ ઇનસે ગ્લાનિ કિયા કરતા હૈ । (મસકુણિમ, કદમૂલ જ
કિંચિ કયાહારા) અસમય મે અથવા યથા અવસર જો કુઝ ઇન્હેં લાને
કો મિલ જાતા હૈ - ચાહે વહ માસ હો, ચાહે કુણપ-મૃતકદેહ-સુદાં હો,

ગાન્તિ નાશ પામે છે " નિરયતિરિયમ્ભવસકટદુઃખસમારવેયણિજ્જાણિ "
નરક તિર્યઞ્ચ આદિ લવેમા પરમાધાર્મિક દેવોદ્વારા કરાતા છેદન ભેદન આદિ
રૂપ વિપમ હુ જે ના સમૃદ્ધી વેદનીય (મહન ડરવા પડતા) એવા પરધન
હરણુ આદિરૂપ પાપકર્મોંનુ " સચિણતા " ઉપાર્જન તેઓ કરે છે ' દુલ્ભમ
મક્ષણપાણમોચના " તે એવાને અન્નાદિ સામગ્રી ઘણી મુશ્કેલીએ પ્રાપ્ત થાય
છે, પાણી દૂધ આદિ પીણા પણ તેમને માટે દુર્લભ હોય છે, અને નારતો
ભોજનાદિ પણ તેમના માટે દુર્લભ હોય છે " પિવાસિયા " તેમને પીવા માટે
પાણી પણ મળતુ નથી " શુશ્રિયા " તેઓ સદા ભૂખ્યા રહે છે, " કિલ્તા "
કલ્લાન્ત-દરેક વ્યક્તિ તેમણે ગ્લાની પમાડ્યા કરે છે " મસકુણિમકદમૂલ જ-
કિંચિ કદ હારા " કાળે અથવા અકાળે તેમને જે કંઈ ખાવા મળે છે - પછી તે
માસ હોય, કુણપમૃતશરીર હોય, કદમૂળ હોય - તે તેઓ ખાય છે તે થીએ

શબ્દાયમાન હસિત=હસન તેન ભીષણક=ભયાનકમતણ નિરભિરામમ્=અસુન્દર
 યત્તત્તથા તત્ર, તથા 'અહદુભિગધે' અતિદુરભિગન્ધે-શદિતપ્રતકફલેવરદુર્ગન્ધ
 યુક્તે, 'વીભચ્છદરિસણિજ્જે' વીભત્સદર્શનીયે=વીમત્સં=અસ્થિમૃતકફલેવરાદિ
 યુક્તતાજ્જુગુપ્સોત્પાદક દર્શનીય=દર્શન યસ્ય તત્ તસ્મિન્ 'સુસાણે' શ્મશાને
 'વણે' વને=અરણ્યે ચ તથા 'સુણ્ણઘરલેણઅતરાવણગિરિક્કદરેસુ' શૂન્યગૃહલય
 નાઽન્તરાઽપણગિરિકન્દરેપુ=શૂન્યાનિ ગૃહાણિ અન્તરાપણાઃ=અન્તરા=ગ્રામાદીના
 મર્દ્દપયે વિશ્રામાર્યે નિર્મિતા આપણાઃ=ગૃહાઃ=ગ્રામાદ્યાણાઃ ગિરિકન્દરાણિ ચ=
 ગિરિગહ્વરાણિ, તેપુ, તથા-'વિસમસાવયસમાઝલાસુ' વિષમૈઃ શ્વાપદૈઃ હિંસ્રપ્રાણિ
 ભિ સમાકુલાઃ=વ્યાપ્તાઃ તાસ્ત્રેવ ત્રિધાસુ 'વસહિસુ' વસતિપુ=વાસસ્થાનેપુ 'કિલિ-
 સ્સતા' કિલિશ્યન્તઃ=દુઃસ્વાનિ પ્રાપ્નુવન્તઃ, 'સીયાયવસોસિયસરીરા' શીતાતપ
 શોપિતશરીરા' = શીતૈરાતપૈશ્વ શોપિતાનિ શરીરાણિ યેપાં તે તથા 'દહ્દહ્ચ્છવી'

લિયે હસ વિશુદ્ધ કહ કહ ધ્વનિ સયુક્ત પિશાચોં કે હાસ્યસે જો (વીહ
 ણગ) ભયપ્રદ ઔર (નિરભિરામે) અસુન્દર વને હુએ હૈં (અહદુભિગધે)
 અતિદુરભિગધ-સડે હુએ મૃતકોં કે કલેવરોં કી દુર્ગન્ધ સે જો યુક્ત હો
 રહા હૈં (વીભચ્છદરિસણિજ્જે) તથા જો હાડ મૃતક કલેવર આદિ સે
 યુક્ત હોને કે કારણ ઘૃગોત્પાદક દિવ્વલાઈ પડતે હૈં જેસે (સુસાણે) ઉન
 શ્મશાનોં મે (સુણ્ણઘર) શૂન્ય ગૃહોં મેં, (લેણ) લયનોં મેં-પર્વતોં કે
 નિકટવર્તી પાષાણગૃહોં મેં, (અતરાવણ) ગ્રામ આદિકોં કે આધે માર્ગ
 મેં વિશ્રામ નિમિત્ત વને હુએ ઘરોં મેં, (ગિરિક્કદરેસુ) પર્વત કી ગુફાઓં
 મેં, તથા (વિસમસાવયસમાઝલાસુ) હિંસક પ્રાણિયોં સે યુક્ત (વસ-
 હિસુ) વસતિયોં મેં-વાસસ્થાનોં મેં, (કિલિસ્સતા) નાના પ્રકાર કે
 દુઃસ્વોં કો સહન ક્રિયા કરતે હેં । તથા (સીયા ય વસોસિયસરીરા) શીત
 ઔર આતપ સે હનકે શરીર શોષિત-સૂકે હુએ રહતે હૈં । (દહ્દહ્-
 ચ્છવી)

મુખમાથી નીકળતો હોય છે, તેથી પિશાચોના તે વિશુદ્ધ કહકહ ધ્વનિ યુક્ત
 હાસ્યથી જે "વીહણગ" લયકર અને "નિરભિરામે" અસુદર બનેલ છે,
 "અહદુભિગધે" મડેલા મૃત કલેવરોની અતિશય દુર્ગન્ધથી જે યુક્ત છે,
 'વીભચ્છદરિસણિજ્જે' તથા જે હાડકા, મુઠકા આદિથી યુક્ત હોવાને કારણે
 ઘૃણાબ્જનક દેખાય છે, એવા "સુસાણે" શ્મશાનોમા, "વણે" વનોમા,
 "સુણ્ણઘર" શૂન્યઘરોમા, "લેણ" લયનોમા પહાડની સમીપના પાષાણગૃહોમા
 "ગિરિક્કદરેસુ" પર્વતની ગુફાઓમા, તથા "વિસમસાવયસમાઝલાસુ" હિંસક
 પ્રાણીઓથી યુક્ત "વસહિસુ" નિવાસ સ્થાનોમા, "કિલિસ્સતા" વિવિધ
 પ્રકારના હુબો સહન કર્યા કરે છે તથા "સીયા ય વસોસિયસરીરા" શીત
 અને તાપથી તેમના શરીર સૂકા રહે છે "દહ્દહ્ચ્છવી" તેમના શરીરની

ટીકા—‘અયસકરા’ અયસકરાઃ=અકીર્તિમન્તઃ ભયઢ્કરાઃ ‘તક્કરા’ તસ્કરાઃ=અદત્તગ્રાહિણઃ ચોરા इत्यर्थः, ‘અજ્જ’ અઘ=અસ્મિન્ દિવસે ‘કસ્સ’ કસ્ય ધનિનઃ इति=एव विध यन्मनसि चिन्तित तत् ‘દવ્વ’ દ્રવ્ય=ધન હરામઃ=ચોરયામ इति=एव प्रसार ‘ગુજ્ઞ’ ગુણ=ગુપ્ત ‘સમામતણ’ સમામન્ત્રણ=વિચારણા ‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ । તથા ‘વહુયસ્સ જણસ્સ’ વહુકસ્ય જનસ્ય ‘કજ્જકરણેસુ’ કાર્યકારણેસુ=कर्मनुष्ठानेषु ‘વિગ્ગકરા’ વિઘ્નકરાઃ=विघ्नोत्पादकाः ‘મત્તપ્પ-મત્તપ્પસુત્તવીસત્થછિદ્ધધાઈ’ મત્તપ્પમત્તપ્પસુત્તપિશ્વસ્તછિદ્ધધાતિનઃ=तत्र मद्यपानादिना मत्तान् प्रमत्तान् प्रकर्षेण मत्तान् प्रसुप्तान् विश्वस्ताश्च छिद्रेण=छिद्र=प्राप्य घ्नन्ति

ફિર વે કૈસે હોતે હૈં સો કહતે હૈં—‘અયસકરા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(અયસ કરા) ઇનકી દુનિયા મેં અકીર્તિ ફેલ જાતી હૈ યે સવ જગહ વુગઈ સે વિખ્યાત હો જાતે હૈં, (ભયકરા) ઇનકે નામ શ્રવણ સે ખી લોગોં કે હૃદયોં મે ભય કા સચાર હો જાતા હૈ । ઇસ તરહ કે યે (તક્કરા) અદત્તગ્રાહી-ચોર (અજ્જ કસ્સ દવ્વ હરામો ત્તિ) “આજ કિસ ધની કા મન ધારા દ્રવ્ય હરણ કરના ચાહિયે” ઇસ પ્રકાર કી (ગુજ્ઞ) ગુપ્ત (સમામતણ) વિચારણા (કરેતિ) કિયા કરતે હૈં । તથા (વહુયસ્સ જણસ્સ) અનેક મનુષ્યોં કે (કજ્જકરણેસુ) કાર્યોં મેં યે (વિગ્ગકરા) વિઘ્નોત્પાદક હુઆ કરતે હૈં । (મત્ત-પ્પમત્ત-પ્પસુત્ત વીસત્થછિદ્ધધાઈ) (મત્તપ્પમત્ત) મદ્યપાનાદિક સે મત્ત તથા પ્રમત્ત બને હુએ વ્યક્તિયોં કો (પસુત્ત) સોયે હુએ મનુષ્યોં કો, એવ (વીસત્થ) અપને ઉપર વિશ્વાસ કરને વાલે પ્રાણિયોં કો યે (છિદ્ધધાઈ)

તેઓ કૈવા હોય તે નુ વધુ વર્ણન કરે છે—“અયસકરા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અયસકરા” આખી દુનિયામા તેમની અપકીર્તિ ફેલાય છે તેઓ હુબુત્યોથી હરેક સ્થળે પકાય છે, ‘ભયકરા’ તેમનુ નામ સાલણીને પંથુ લોડોના દિલમા ભય પેદા થાય છે એવા તે “તક્કરા” ચોર “અજ્જકસ્સ દવ્વ હરામો ત્તિ” “આજે કયા ધનિકનુ ધન હરી લેવુ લેઈ એ” એ પ્રકારની “ગુજ્ઞ” ગુપ્ત “સમામતણ” વિચારણા “કરેતિ” કર્યા કરે છે તથા “વહુયસ્સ જણસ્સ” અનેક માણસોના “કજ્જકરણેસુ” કાર્યોમા તેઓ વિગ્ગકરા” વિઘ્નકર્તા થયા કરે છે “મત્ત-પ્પમત્ત-પ્પસુત્તવીસત્થછિદ્ધધાઈ” “મત્તપ્પમત્ત” ઠાડ

આદિ પીને મત્ત તથા પ્રમત્ત બનેલા લોકોને “પસુત્ત” ઊઘતા લોકોને, અને “વીસત્થ” પોતાના ઉપર વિશ્વાસ મૂકનાર લોકોને તેઓ “છિદ્ધધાઈ”

ત્રાપ્ત તદપિ સ્વલ્પમાત્ર કૃત આદારો યેન્તે તથા 'ઉચ્ચિગ્ગા' ઉચ્ચિગ્ગા:=ઉચ્ચેગયુક્તા
અશાન્તચિત્તા इत्यर्थः, 'ઉપ્પુયા' ઉત્પ્લુતા:=ચાપલા: 'અસરણા' અગરણા:=
ગ્રાણરહિતા: ગૃહવર્જિતા યા 'અડવીવાસ' અટવીવાસ=અરણ્યવાસ 'વાલસય
સકળીય' વ્યાલશતશક્ળીય = વ્યાલાના=મર્પાદિદુષ્ટશ્વાપદાના શતે: શક્ળીય
શુજઙ્ગાદિભિર્ભયઙ્ગરમ્ 'ઉવતિ' ઉપયન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

પુનસ્તે કીદૃશા ભયન્તિ ? इत्याह—'अयसकरा' इत्यादि—

મૂલમ્—અયસકરાતકરા ભયકરા કસ્મહરામોત્તિ અજ્ઞદંત્ર
इति समामंतणं करेंति गुञ्ज, बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु
विग्घकरामत्तप्पमत्तपसुत्तवीसत्थछिदघाती वसणव्भुदणसु
हरणवुद्धी विगव्वरुहिरमहिયા परेंति नरवईमज्जायमतिकंता
सज्जणजणदुगछिया सकम्मेहि पावकम्मकारी असुभपरिणया
य दुक्खभागी निच्चाउलदुहमनिव्वुडमणा इहलोगે चैव
किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयमावण्णा ॥सू०१२॥

ચાહે કંદમૂલ આદિ હો સો મી વહ ભરપેટ નહી મિલતા સ્વલ્પમાત્રા મેં
હી મિલતા હૈ, ઉસે યે ચાલિયા કરતે હૈ, (ઉચ્ચિગ્ગા) ઇનકા ચિત્ત
સદા અશાન્ત રહતા હે । (ઉપ્પુયા) યે વહે ભારી ચપલ હોતે હૈ । (અસ
રણા) ઇનકા એક જગહ સ્થિર વાસ નહી હોતા ઇસલિયે યે ગ્રાણ રહિત
હોકર ઇધર સે ઉધર ભાગતે રહતે હૈ ઓર (અડવીવાસ) જગલ મે હી
વસેરા કરતે હૈ । (વાલસયસકળીય) સર્પાદિ સૈકડો દુષ્ટ જાનવરોં કે
ભય સે શકા શીલ એસે સ્થાનોં કો યે (ઉવેતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥સૂ. ૧૧॥

પણ તેમણે ધરાઈને ખાવા મળતી નથી, થોડા પ્રમાણમાં જ મળે છે “ ઉચ્ચિગ્ગા ”
તેમનું ચિત્ત સદા અશાન્ત રહે છે “ ઉપ્પુયા ” તેઓ ઘણા જ ચપલ હોય
છે “ અસરણા ” તેમનું રહેઠાણ કાયમ એક જ જગ્યાએ હોતું નથી, તેથી
તેઓ અશરણની જેમ આમતેમ ભ્રમ્યા કરે છે “ અડવીવાસ ” જગલમાં જ
“ વાલસયસકળીય ” સર્પાદિ સેકડો ભયકર જીવોના ભયથી વ્યાપ્ત સ્થાનોએ
“ ઉવેતિ ” તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

નરકનિગોદાદિદુઃખમાગિનઃ, ' નિચ્ચાઉલ્લુહમણિવ્વુહમણા ' નિત્યાકુલદુઃખાનિ-
ર્વૃત્તિકમનસ' = નિત્યમાકુલ = વ્યાકુલિત દુઃખયુક્તમ્, અનિર્વૃત્તિક = સ્વાસ્થ્યરહિત
મનો યેષા તે તથા નિરન્તરમતાપસંકુલાઃ, ઇહલોકે ચૈવ, ચાત્ પરલોકેઽપિ
' કિલિસ્સતા ' કિલિચ્યન્તઃ - કલેશમનુભવન્તઃ ' પરદવ્વહરા ' પરદ્રવ્યહરાઃ = પરધ-
નાપહરણગીલા' નરાઃ = મનુષ્યાઃ ' વસણસય ' વ્યસનશત = દુઃખપ્રચુરમ્ ' આવણ્ણા'
આપન્નાઃ = પ્રાપ્તાઃ પરિચન્તીત્યનેન સમ્યન્નયઃ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

एव ' यथाकृत ' इत्यन्तद्वारमुक्तम्, अथ ' यथाफलदेः ' इति अदत्तादान
फलप्रतिपादक चतुर्थद्वार प्राह—' तहेव केइ इ'त्यादि—

मूलम्—तहेव केइ परस्सदव्वं गवेसमाणा गहिया य हया
य वच्चा रुद्धा य तुरियं अइधाडिया पुरवर संमप्पिया
चोरग्गाह चारभडचाडुकराण, तेहि य कप्पडप्पहारनिद-
याऽऽरक्खिय खरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्ल उत्थलणाहि वि-
मणाचारगवसहि पवेसिया निरयवसहिसरिस तत्थ वि

से युक्त होते हैं । (दुःखभागी) शुभपरिणामों से रहित होने के कारण
ये परभव में नरक निगोद आदि के दुःखों को भोगा करते हैं । (निच्चा
उल्लुहमणिव्वुहमणा) इनका मन सदा व्याकुल बना रहता है, इसी
से ये निरन्तर मानसिक स्वास्थ्य से रहित होकर सताप से संकुल होते
रहते हैं । इस तरह (इहलोगे चैव) इस लोक में तथा ' च ' शब्द से
परलोक में भी (किलिस्सता) कलेशों का अनुभव करते हुए ये (पर
दव्वहरा) परद्रव्यापहारी चोर (वसणसय) अनेक दुःखों को (आवण्णा)
प्राप्त होकर (परेति) भ्रमण करते हैं अर्थात् अपने समय को दुर्गतिर्यों
के भ्रमण करने में ही व्यतीत करते रहते हैं ॥ १२ ॥

“ दुःखभागी ” शुભ પરિણામો-ભાવેથી રહિત હોવાને કારણે તેઓ પરભવમાં
નરક નિગોદ આદિના દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે “ નિચ્ચાઉલ્લુહમણિવ્વુહમણા ” તેમનું
મન સદા વ્યાકુળ રહે છે, તેથી તેઓ નિરન્તર માનસિક સ્વાસ્થ્યથી રહિત
બનીને મતાપથી યુક્ત રહે છે આ રીતે “ ઇહલોગેચેવ ” આ લોકમાં તથા
“ ચ ” શબ્દથી પરલોકમાં પણ “ કિલિસ્સતા ” દુઃખોને અનુભવતા તે “ પરદવ્વ
હરા ” પરધનનું હરણ કરનારા ચોર લોકો “ વસણસય ” અनेક દુઃખો “ આ-
વણ્ણા ” અનુભવતા “ પરેતિ ” ભ્રમણ કરે છે, એટલે કે દુર્ગતિઓમાં ભ્રમણ
કરવામાં જ પોતાનો કાળ વ્યતીત કરે છે ॥ સૂ-૧૨ ॥

एव शीलाः ' वसण्वभुदएसु ' व्यसनाभ्युदयेषु हरणबुद्धयः=ज्यमनेषु=रोगाधव
 स्थाया राजादिकृतोपद्रवेषु च अभ्युदयेषु=विवाहादिमहोत्सवेषु ' हरणबुद्धी '
 हरणबुद्धयः ' विगव्व ' वृक्षा इव=' भेडिया ' इति प्रसिद्धा नखगारिणः श्वपद
 जन्तु विशेषा इव ' रुहिरमहिया ' रुधिरमहिताः=रुधिरम्य=रुधिरपानस्य महः=
 उत्सवः रुधिरमह, स जातो येषां ते तथा-रुधिरचूषणे तत्पराः, ' परेति '
 परियन्ति=पर्यटन्ति सर्वत्र भ्रमन्ति । कथं भूतास्ते इत्याह-' नरवइमज्जा-य
 मइक्कता ' नरपति मर्यादामतिक्रान्ता=राजाज्ञावर्हिर्नर्तिनः ' सज्जनजणदुगुछिया '
 सज्जनजनजुगुप्सिताः=मत्पुरुषैर्निन्दिताः ' सक्कमेहि ' स्वकर्मभिः=अदत्तादान
 रूपैः ' पावकम्मकारी ' पापकर्मकारिणः=चौर्यादिपापकर्मकारका ' असुभपरि
 णयाय ' अशुभपरिणताश्च=शुभपरिणामवर्जिता ' दुक्खभागी ' दुःखभागिनः=

छिद्र प्राप्तकर घात की घात में मार डालते हैं (वसण्वभुदएसु) रोगा
 दिक अवस्थारूप तथा राजादिकृत उपद्रवकृत व्यसन के समय पर, अथवा
 विवाह आदि रूप महोत्सव के अवसर पर भी ये (हरणबुद्धी) अपना
 कार्य कर दिया करते हैं । (विगव्व) भेडिया की रुधिर चूषने में तत्प
 रता रहती है इसी प्रकार ये चोर जन भी (रुहिर महिया) पर के
 खून चूसने में तत्पर रहते हुए (परेति) सर्वत्र घूमते हैं । (नरवइम
 इक्कता) राजा की आज्ञा का सदा ये उल्लंघन किया करते हैं । (सज्ज
 णजणेदुगुछिया) सज्जन पुरुषों की निंदा करने में इन्हें आनंद मिलता
 है, अथवा इनके इस कर्म की सज्जन पुरुष निंदा करते हैं । (सक
 म्मेहि) अदत्तादानरूप अपने कर्मों से ये (पावकम्मकारी) पापकर्मकारी
 पापकर्म करने वाले वे चोर (असुभपरिणयाय) अशुभ आत्मा परिणति

ધનનુ રહસ્ય જાણીને જોતજોતામા મારી નાખે છે “વસણ્વભુદસુ” રોગાદિક
 અવસ્થામા, તથા રાજાદિકૃત ઉપદ્રવ રૂપ સકટને સમયે, અથવા વિવાહ આદિ
 મહોત્સવને પ્રસંગે પણ તે “હરણબુદ્ધી” પોતાનુ પરધન હરણનુ કૃત્ય કર્યા
 કરે છે “વિગવ્વ” વરુની જેમ-એટલે કે જેમ વન લોહી ચૂસવાને તત્પર
 હોય છે તેમ ચોર પણ “રુહિરમહિયા” અન્યનુ લોહી ચૂસવાને તત્પર થઈને
 “પરેતિ” સર્વત્ર ભ્રમણ કરે છે “નરવઇમજ્જાય મહક્કતા” રાજાની આજ્ઞાનુ
 સદા ઉલ્લંઘન કરે છે, “સજ્જણજણે દુગુછિયા” સજ્જનોની નિંદા કરવામા
 તેમને મજા આવે છે, અથવા તે દુષ્કૃત્યોની સજ્જનો નિંદા કરે છે “સક્કમેહિ”
 અદત્તાદાન-ચોરી રૂપ પોતાના કર્મેથી તે “પાવકમ્મકારી” પાપકૃત્યો કરનારા
 ચોરો “અસુભપરિણયાય” અશુભ આત્મપરિણતિ-લાવથી યુક્ત બને છે

ઉપસ્થાપિતાઃ, કેભ્યઃ ? इत्याह—‘ चोरग्राहचारभडचाडुकराण ’ चोरग्राहचारभट-
चाडुकरेभ्य = तत्र चोरग्राहिणः चारभटाः=गुप्तचराः, चाडुकरणाः=मुखप्रियामृदु-
भाषणेन चोरग्राहका इत्यर्थः, तेभ्यः ‘ तेहि य ’ ते च चोरग्राहादि पुरुषैः ‘ कप्प-
डप्पहारनिदया रक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्लउत्थलणाहि ’ कर्पटप्रहार
निर्दयाऽऽरक्षिकखरपरुपचनतर्जनगलत्थल्लउत्थलणाभिः=तत्र कर्पटैः=यष्ट्याकार-
वलितवस्त्रैः ‘ कोडा ’ इति भाषा प्रसिद्धैः प्रहाराः=ताडनानि तथा निर्दया ये
आरक्षिकाः=कोटपालपालास्तेषां खरपुरुषैः=अतिनिष्ठुरैर्वचनैस्तर्जनानि-गलत्थ-
ल्लोत्थलनाश्च=गलत्थल्लाः = गलहस्तदानानि उत्थलनाः=परिवर्तनाश्चेत्येताभिः
‘ विमणा ’ विमनसः=खिन्नचित्ता सन्तः ‘ निरयवसहि सरिस ’ नरकवासतिसदृशा
=नरकावासतुल्या ‘ चारगवसहि ’ चारकवसर्ति=कारागृह ‘ पवेसिया ’ प्रवेशिताः ।

(समप्पिया चोरग्राहचारभडचाडुकराण) वाद में वे राजपुरुष उन चोरों
को चोरग्राही-चोरों को पकड़ने वाले गुप्तचरो के (कि जो मधुर बोलकर
चोरोको पकड़ने में सिद्धहस्त होते हैं उनके) आधीन कर देते हैं (तेहि य)
वे चोरग्राही चारभट आदि उन चोरों को पहिले तो (कप्पडप्पहार)
कोड़ो की मार मारते हैं, तथा (निदयारक्खिय) निर्दय होकर कोटपाल
उन्हें (खरपरुपवयणतज्जिय) अतिनिष्ठुर अत्यन्त कटु वचनो से तर्जित
करते हैं, तथा (गलत्थल्ल उत्थलणाहि य) गला पकड़कर दबोच देते हैं ।
(विमणा) इस तरह की क्रियाओं से अपमान जनक व्यवहारों से-
चोरों को ये बहुत अधिक खिन्नचित्त कर डालते हैं । जब ये बहुत बुरी
तरह खिन्नचित्त हो जाते हैं तो वाद में वे उन्हें (निरयवसहि सरिस)
नरकावास तुल्य (चारगवसहि) कारागृह में (पवेसिया) बंद कर देते हैं ।

ફેરવાય છે “ સમપ્પિયા ચોરગ્રાહચારમહચાડુકરાણ ” ત્યાર બાદ તે ગાજપુરુષો
તે ચોરોને ચોરગ્રાહી-ચોરોને પકડનારા ગુપ્તચરોને બોલી દે છે તે ગુપ્તચરો
મીઠા વચનો બોલીને ચોરોને પકડવામાં નિપુણ હોય છે “ તેહિ ચ ” તે
ચોરગ્રાહી-ગુપ્તચર આદિ પહેલાં તો તે ચોરોને “ કપ્પહપ્પહાર ” કોરડાઓ
વડે કટકારે છે, તથા “ નિદયારક્ખિય ” નિર્દય થઈને કોટવાલ તેમને “ સર-
પરુસવયણતજ્જિય ” અતિશય નિષ્ઠુર તથા અનિશય કડવા વચનો સંભળાવે છે,
“ ગલત્થલ્લઉત્થલણાહિય ” ગળુ પકડીને દબાવે છે, “ વિમણા ” આ પ્રકારની
અપમાનજનક ક્રિયાઓ તથા વર્તનથી તેઓ તે ચોરના ચિત્તમાં અત્યંત
ખિન્નતા ઉત્પન્ન કરે છે ત્યારે તેઓ અત્યંત ખિન્ન થાય છે ત્યારે તેમને તે
લોકો ‘ નિરયવસહિ સરીર ’ નરકાગાર અમાન “ ચારગવસર્હિ ” કારાગૃહમાં

ગોમ્મિક પહારદુસ્મના નિઘ્મચ્છળકહુચવયળભેસળાગભયા
 મિભૂયા અમિલ્લત્તણિવસળા મલિળડંડિલ્લંડવસળા ઉક્કોડાલં-
 ચનપાસુસ્મગળપરાયળેહિં ગોમ્મિયમહેહિં વિવિહેહિં વધળેહિં
 કિંતે-હહિનિયડવાલરજ્જુયકુહડગવરત્તલોહસંકલ હત્થહુ
 ય વજ્જપટ્ટદામકણિક્કોડળેહિં અળળેહિ ય એવમાણ્ણેહિં ગો-
 મ્મિયમંહોવગરળેહિ દુલ્લસસમુદીરળેહિ સલ્લોડળમોડળેહિં
 વજ્જતિ મદપુળ્ણા ॥ સૂ. ૧૩ ॥

ટીકા—‘તહેવ’ તથેવ=પૂર્વોક્તપ્રકારે ‘કેહ’ કેચિત્ ‘પરસ્સ’ પરસ્ય
 ‘દવ્વ’ દ્રવ્ય ચોરયિતુ ‘ગવેસમાળા’ ગવેપયન્તઃ=અન્વેષણ કુર્વન્તઃ ‘ગહિયા’
 ગૃહીતાઃ=રાજપુરુષૈર્નિગૃહીતા હતાથ્થ=તાહિતાઃ દણ્ડાદિભિસ્તતોવદ્ધાઃ=રજ્જ્વાદિ
 ભિર્નન્ધન પ્રાપિતાઃ તથા-રુદ્ધાઃ=કારાગારાદો નિરુદ્ધાથ્થ ‘તુરિય’ ત્વરિત=શીઘ્રમ્
 ‘અહ્ધાહિયા’ અતિધાટિતાઃ=રાજપુરુષૈર્ભ્રામિતા. કુત્ર ? इत्याह-पुरवर=सकल
 नगरम् । नागरिकजनान् प्रतिदर्शिता इत्यर्थः पुनश्च ‘समप्पिया’ समर्पिता=

અથ સૂત્રકાર “જહા ફલ દેહ” હસ ચતુર્થ દ્વાર કા પ્રતિપાદન
 કરતે હૈ—‘તહેવકેહ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તહેવ) હસી પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (કેહ) કિતનેક વ્યક્તિ
 (પરસ્સ દવ્વ ગવેસમાળા) પર કે દ્રવ્ય કો ચુરાને કી સ્વોજમેં રહતે હુણ
 (ગાહિયા ય) રાજપુરુષો દ્વારા નિગૃહીત હોકર (હયાય) દણ્ડાદિકો
 દ્વારા તાહિત કિયે જાતે હૈ (વદ્ધા) રજ્જ્વાદિકો દ્વારા બાધ દિયે જાતે હૈ
 (રુદ્ધાય) કારાગાર આદિ મેં બદ કર દિયે જાતે હૈ । (તુરિય અહ્ધાહિયા
 પુરવર) ઓર નગર નિવાસિયો કે સમક્ષ નગરભર મેં ઘુમાયે જાતે હૈ ।

હવે સૂત્રકાર “જહા ફલ દેહ” એ એથા દારતુ પ્રતિપાદન કરે છે—
 “તહેવ કેહ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તહેવ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “કેહ” કેટલાક લોકો “પરસ્સ દવ્વ
 ગવેસમાળા” પારકાના દ્રવ્યને ચોરવાની શોધમાં રહે છે “ગોહિયાય” તેઓ
 રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈને “હયાય” હડા વગેરે દ્વારા મરાય છે “વદ્ધા”
 દોરડા આદિ વડે બધાય છે, “રુદ્ધાય” અને જેલખાના આદિમાં કેદ કરાય
 છે, “તુરિય અહ્ધાહિયા પુરવર” અને શહેરીઓની સમક્ષ આખા શહેરમાં

વસન=પત્ર યેષા તે ત ગામલિનમ્પાટિતસીવિતપ્ત્રલ્પટ મારિણ ઇત્યર્થ, 'ઉત્કોટાલ
ચનપાસુમ્મગ્ગણપરાયણેહિ' ઉત્કોટાલચનપાશ્વોન્માર્ગણપરાયણૈ=ઉત્કોટાલચને=
ઉત્કોટવિશેષે 'લાંચ-ચિત્ત' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધભેદવિશિષ્ટે પાશ્વોન્માર્ગણ ચ=
ચૌરપાશ્વસિચિત્તચોરિતદ્રવ્યા પેષણ, તેષુ પરાયણા =તત્પરાયે તે તથા તૈ 'ગોમ્મિ-
ગમહેહિ' ગોલ્મિકમ્ભટૈ કોટપાલૈ, 'વિવિહેહિ વધણેહિ' વિવિધૈ વધનૈઃ હેતુ
ભૂતૈસ્તે ચૌરપુરુષાઃ વચન્તે ઇતિ વક્ષ્યમાણેન મમ્મન્વ 'કિં તે' આર્પત્વાતૃતીયાર્થે
પ્રથમા તેન મિમ્મૂતૈસ્તૈરિત્યયઃ, તથા ચ મિમ્મૂતૈ =ચ ભૂતૈસ્તૈર્મન્યનૈરિ-
ત્યાહ—'હટિનિયડવાલરજ્જુચકુડકગવરત્તલોહસકલહત્યદુયયજ્ઞપટ્ટદામકણિ-
કોટણેહિ' હટિનિગટપાલરજ્જુચકુડકવચ્ચાલોહગૃહ્ણન્હસ્તાન્દુકવર્ત્તપટ્ટદામકનિ-
પ્પોટનૈઃ=તત્ર 'હટિ' ઇતિ કાષ્ઠનિર્મિત નિગડવચ્ચનાનિ 'લોહા' ઇતિ ભાષા-
પ્રસિદ્ધાનિ, નિગડાનિ=લોહમયવેડી' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ ચાલરજ્જુકાઃ=ગવાદિ-

ચીચ મેં સિલે હુણ પુરાને જીર્ણ ચન્ત્ર કા વાચક હૈ । (ઉત્કોટાલચણપાસુ-
મ્મગ્ગણપરાયણેહિ) ઉત્કોટ, લાચ-ચિત્ત-મેં ત ગા ચોરોં કે પાસ મેં રહે
હુણ ચુરાયે દ્રવ્યકી તપાસ કરને મેં પરાયણ એસે (ગોમ્મિયમ્ભટેહિ)
ગોલ્મિકમ્ભટ-કોટપાલ (વિવિહેહિ વધણેહિ) નાના પ્રકાર કે વધનોં સે
उन चोरो को बाध देते हैं, (किंते) वे बंधन किस प्रकार के होते सो
कहते हैं—(हटिनियडवालरज्जुचकुडकगवरत्तलोह सकलहत्यदुययज्ज्ञ-
पट्टदामकणिकोटणैहि) (हटि) काष्ठ निर्मित बाधने का वधन विशेष,
जिसमें चोर के पैर डाल दिये जाते हैं—सो वह वहीं पर खड़ा रहता है
उधर उधर चल फिर नहीं सकता । भाषामें इसे लोहा कहते हैं ।
(नियडि) निगड-लोहे की बनी हुई वेडी, चालरज्जुक गाय आदि के
वालों से बनी हुई रस्सी, कुडण्डक—जिसके अन्तभाग में काष्ठ लगे हुए

ગોડ ગોઈ મ્થણે કાટેલા હોય છે અહીં " હટિ " શબ્દ વચ્ચે વચ્ચે મીવેલા
પુગણા છુણું વચ્ચેનો મૂચક છે " ઉત્કોટાલચણપાસુમ્મગ્ગણપરાયણેહિ " ઉત્કોટ,
લાચ-ચિત્ત, તથા ચોરીની પાને ગહેલ ચોગયેલ દ્રવ્યની તપાસ કરવામા
પ્રવીણ એવા " ગોમ્મિયમ્ભટેહિ " ગોલ્મિક ભટ-કોટપાળ " વિવિહેહિ વધણેહિ '
વિવિધ પ્રકારના બધનોથી તે ચોરીને બાધે છે " કિં તે ? " તે બધનો
કયા કયા પ્રકારના હોય છે, તે કહે છે—" હટિનિયડવાલરજ્જુચકુડકગવરત્ત-
લોહમકલહત્યદુયયજ્ઞપટ્ટદામકણિકોટણેહિ " હટિ " હેડ — લાડડાનુ એક
સાધન, જેમા ચોરના પગ ગાળવામા આવે છે તેમા પગનુ હલનચલન થઈ
શકતુ નથી " નિયડિ " નિગડ લોડાની બનાવેલી બેડી, " ચાલરજ્જુક " ગાય
આદિના વાળમાથી બનાવેલ દોરડુ, " કુડક " જેને છેડે લાકડુ હોય એવો

‘તત્થ વિ’ તત્રાપિ ‘ગોમ્મિકપહારદૂમણનિન્નમચ્છણકઙ્કયવયણભેસણગમયાભિ-
 ભૂયા’ ગોલ્મિકપહારદૂમણનિર્ભર્ત્સનમદુકવચન મીપણકમયાભિભૂતાઃ=તત્ર ગોલ્મ
 કાના=કોટપાલાના યે પ્રહારાઃ=કશાઘાવાતાઃ દૂમણનિ=મૃચતાપાદૌ ઉપતાપનાનિ
 નિર્ભર્ત્સનાનિ = જાતિકુલાદિનામોચ્ચારણપૂર્વકગાલિદાનાનિ કઙ્કવચનાનિ ચ
 ‘રે નીચ ! રે દુષ્ટ !’ ઇત્યાદિ રૂપાણિ મીપણકાનિ=ભયજનકાનિ ‘જીવનપર્યન્ત
 કારાગૃહ એવ મ્રિયસ્વ’ ઇત્યેવમાદિરૂપાણિ તેર્વા ભયેન અભિભૂતા યે તે તથા
 ‘અક્ષિત્તણિવસણા’ અક્ષિત્તણિવસનાઃ = કર્પણઘર્પણાદિભિરાકુષ્ટપરિમાનવસ્ત્રા
 નમ્નીકૃતા ઇત્યર્થઃ, ‘મલિગડ્ડિલ્લવમણા’ મલિનદણ્ડિલ્લવમણા=તત્ર મલિન
 ‘લ્લવમણા’ સીવિત ‘લ્લવમણા’ ઇતિ સીવિતવસ્ત્રાચકો દેશીશબ્દઃ, લ્લવમણા=ફાટિવ ચ

(તત્થ વિ) વહા પર મી વે (ગોમ્મિકપહાર) કોટપાલોંકે કશા(કોડા)દિ-
 દ્વારા પ્રદત્ત આઘાતોં કો, (દૂમણ) દૂમણે કો-મૃચતાપ આદિ મે લે
 કરને રૂપ ઉપતાપનો કો, (નિન્નમચ્છણ) નિર્ભર્ત્સનો કો-જાતિકુલ આદિ
 કે નામોચ્ચારણપૂર્વક ગાલીગલોંજ આદિકો તથા (કઙ્કયવયણ) કઙ્ક
 વચનો કો જો કિ “અરે નીચ ! ઓ દુષ્ટ ! જીવનપર્યન્ત તૂં હસ કારા
 ગાર મે હી લડ ૨ કર મર” ઇત્યાદિરૂપ સે (ભેસણા) ભયપ્રદર્શક
 હોતે હૈં-સહતે રહતે હૈં (મયાભિભૂયા) ઉંકે ભય સે અભિભૂત હોતે
 હૈં, તથા (અક્ષિત્તણિવસણા) કર્પણ ઘર્પણ આદિ કે કરને સે ઉંકા
 પરિધાન વસ્ત્ર લુલ જાતા હૈ, અર્થાત્-યે નગ્ન હો જાતે હૈં-નગે કર દિયે
 જાતે હૈં । (મલિગડ્ડિલ્લવમણા) એસી સ્થિતિ મે હન્હેં જો વહા વસ્ત્ર
 લલ પરિરે કો મિલતા હૈ વહ લિલકુલ મલિન હોતા હૈ । લીચ ૨ મેં સિલા
 હુયા રહતા હૈ । તથા કહીં ૨ ફટા મી રહતા હૈ । યહા “લ્લવમણા” શબ્દ

“વેસિલા” પૂરી હે છે “તત્થ વિ” ત્યા પશુ તે લોકે “ગોમ્મિકપહાર”
 કોટવાલો દ્વારા કરવામા આવતા ચાબુકના પ્રહારો “દૂમણ” દૂમણ-મૃચતા
 તાપમા ઉભા રાખીને કરવામા આવતું દૂમણ, “નિન્નમચ્છણ” નિર્ભર્ત્સના—
 જાતિ કુળ આદિના ઉલ્લેખ સહિત અપાતી ગાળોને, તથા “કઙ્કયવયણ” કઙ્ક
 વચનોને, જેમ કે “હે નીચ ! હે દુષ્ટ ! તુ આપુ જીવન આ કારાગૃહમા જ
 સડીને સડીને મર !” “ભેસણા” સહન કર્યા કરે છે, “મયાભિભૂયા” તે
 પ્રકારના લયથી લયલીત રહે છે, તથા “અક્ષિત્તણિવસણા” જે આખેથી કર
 વાથી તથા ઘસડવાથી તેમના વસ્ત્રો ખમી જાય છે-તેઓ નગ્ન થઈ જાય છે
 તેમને નગ્ન કરાય છે “મલિગડ્ડિલ્લવમણા” એવી હાલતમા તેમને ત્યાં જે
 વસ્ત્રખંડો પહેરવાને મળ્યા હોય છે વચ્ચે વચ્ચે થિંગડા વાળા હોય છે, તથા

पुरतउरकडग-मोडणेहि सत्रछाय नीससता सीमावेढ ऊरु-
यालचप्पडगसधिवधण तत्तसलागसूड आकोडणाणि तच्छण
विमाणणाणि य खारकडुय तित्तनावणजायणकारण-सयाणि
वहुयाणि पाविचंता, उरघोडोदिणगगाढपेहण-अट्टिकसंभग्ग-
संपंसुलिया-गलकालक-लोहदंड-उर-उदर-वरिथ-पिट्ठि-परिपी-
लिया मत्थंतहियय-सच्चुणिणयंगुवंगा आणत्ति कि करेंहि
केडअविराहि य वेरिएहि जमपुरिससनिभेहिं पहया ते तत्थ
मदपुण्णा चडवेलावड पटपोराच्छिवा कसलत्तवरत्तवेत्तपहा-
रसयतालियंगुवगा किण्णालवतवम्मवणवेयणाविमुहिय-
मणाघणकोट्टणनियलजुचल-सकोडियमोडिया य कीरति
निरुच्चारं असचरणा एया अपणाय एवमाईओ वेयणाओ
पावा पावन्ति ॥ सू० १४ ॥

टीका-पूर्वोक्ता. मन्दपुण्याः 'सपुडकवाड-लोहपजर-भूमिपरनिरोहकृवचारग
कीलगजूवचक्कवित्तवणखभालणउद्धचलगवणविहम्मणाहिय विहेडियता'
तत्र 'सपुडकवाड'-सम्पुटकपाट = पिहितकपाट लोहपजर तथा 'भूमिपर'
भूमिगृह=भूमेरन्तर्गृह 'भोसा' इति भाषा प्रसिद्ध च तत्र यो 'निरोह' निरोधः=
प्रवेशन, तथा 'कृव' कृप.=अधकृप, 'चारग' चारक.=गन्धिगृह 'कीलग'

फिर वे क्या फल पाते हैं? सो कहते हैं-'सपुडकवाड' इत्यादि।
टीका-ये चौरजन (सपुडकवाड लोहपजर-भूमिपरनिरोह-कृव चारग
कीलग-जूवचक्कवित्तवण-खभालण-उद्धचलगवण-विहम्मणाहिय
विहेडियता) (सपुडकवाडलोहपजर) उड ह कपाट-युगल जिन्हों के ऐसे
लोह के पिजरों में तगा (भूमिपरनिरोह) तलपगों में बड कर दिये जाते
हैं, (कृव) अधकृप में पटक दिये जाते हैं, (चारगकीलग)

। श्रीगुरु उचु इण भणे ठे ते अत्रजो उडे ठे-"सपुडकवाडलोहपजर"
टीका-ते चोरने "सपुडकवाडलोहपजर" अत्र आण्णावाण्ण लोहाना
सभा, तथा "भूमिपरनिरोह" लोयगभा पूरी हेवाभा आवे ठे, "कृव"
अधारीया इवाभा पटवभा आवे ठे, "चारगकीलग" दागशुद्धभा दा

વાલમગ્યોરજ્જુકા , કુદન્ડકાનિ=કાઠમયપ્રાન્તભાગારજ્જુવાશાઃ વદ્ધાઃ=ચર્મમગ્યો
મહારજ્જવઃ લોહશૂતલાશ્વ = પ્રસિદ્ધા' હસ્તાન્દુકાઃ=હસ્તનિયત્રકમગ્યનવિશેષાઃ
'હથકડી' इति भाषाप्रसिद्धा वर्धपट्टा=वर्मपट्टिका' तामकानि=पादत्रयनरज्जु
विशेषाः निष्कोटनानि=वन्धनविशेषा एव ते: 'अण्णेहि य' अन्यैश्चानुक्तैः
'एवमाइएहि' एवमादिकैः=उक्तप्रकारैः 'गोम्मियभडोवगरणेहि' गोम्मिक-
भाण्डोपकरणैः=कोटपालाना चोरवन्धकोपकरणैः, 'दुक्खसमुदीरणेहि' दुःखसमु-
दीरणैः = दुःखदायकैः 'सकोडणमोडणेहि' सकोटनमोटनैः=सकोचनानि
हस्तपादादीना मोटनानि गलादीनि तैः 'मदपुण्णा' मन्दपुण्याः=पापिनोऽदत्त-
ग्राहिणः 'वज्झति' वध्यन्ते=वन्धनं प्राप्नुयन्ति ॥ सू० १३ ॥

પુનસ્તે કિં ફલ પ્રાપ્નુમતિ ? इत्याह— सपुड' इत्यादि—

મૂલમ્—સપુડકવાડલોહપજર-ભૂમિઘર-નિરોહકુવચારગ-
કીલગજૂવચક્ર-વિતતવધણખમાલણ-ઉદ્ધચલણ વધણ વિહ-
મણાહિ ય વિહેડિયતા અહકોડગગાઢડરસિરવદ્ધઉદ્ધપૂરિય-

હોં ऐसी दोरीकी फासी, वरत्रा-चमड़े से बनाई गई रस्सी, (लोहसकल)
लोहकी सांकल, (हत्यदुय) हस्तान्दुक-हथनकडी, (वज्झपट्ट दामकणिको
डणेहिं) वर्धपट्ट-चमड़ेकी पट्टिकाएँ और दामनक-पैरों को बांधने के बंधन
विशेष हैं, निष्कोटन-बंधनविशेष हैं, इन बंधनों से (अण्णेहि एवमा-
इहिं) तथा इन बंधनोंसे अतिरिक्त जो और भी (गोम्मिय भडोवगरणेहिं)
उनकोतवालो के चोरों को बांधनेके लिये उपकरण विशेष हैं कि जो (दुक्ख-
समुदीरणेहिं) बहुत ही अधिक दुःखप्रद होते हैं उनसे, एव (सकोडणमो-
डणेहिं) हस्त पैर आदि सकोचन से तथा गले वगैरह के मोटन से (मदपु-
ण्णा) वे अभागो चोर (वज्झति) बंधनोंको प्राप्त होते हैं ॥ सू-१३ ॥

દોરડાનો કાસો વરત્રા-ચામડાની દોરી, “લોહસકલ” લોઢાની સાકળ, “હત્ય
દુય” હાથકડી, “વજ્ઝપટ્ટદામકણિકોડણેહિં” વર્ધપટ્ટ ચામડાની પટ્ટીઓ, અને
દામનક-પગ બાધવાનુ ખાસ બધન, નિષ્કોટન-એક પ્રકારનુ બધન-આદિ
બધનોથી “અણ્ણેહિં એવમાઇએહિં” તથા તે સિવાયના બીજા બધનો કે
“ગોમ્મિયભડોવગરણેહિં” જેમનો ચોરોને બાધવાને માટે ડોટવાળો ઉપયોગ
કરે છે અને જે “દુક્ખસમુદીરણેહિં” બધનો અત્યંત દુઃખદાયક હોય છે,
અને જેનાથી “સકોડણમોડણેહિં” હાથ પગ આદિનુ સકોચન તથા ગળા
વગેરેનુ મોટન (મરોડવાની ક્રિયા) તે “મદપુણ્ણા” ઢમનસીબ ચોરો
“વજ્ઝતિ” અનુભવે છે ॥ સૂ-૧૩ ॥

ફુરતઊરકડગ-મોડળેહિ સવદ્વાય નીસસતા સીમાવેઢ ઝરુ-
ચાલચપ્પડગસધિવધળ તત્તસલાગસૂઝ આકોડળાણિ તચ્છળ
વિમાળળાણિ ચ ચારકડુચ તિત્તનાવળજાયળકારળ-સયાળિ
વહુયાળિ પાવિયંતા, ઊરઘોડીદિળગગાઢપેહ્ણ-અટ્ટિકસમગ્ગ-
સપસુલિયા ગલકાલક-લોહદડ-ઊર-ઊદર-વરિય-પિટ્ટિ-પરિપી
લિયા મત્થંતહિયય-સચ્ચુપિળયગુવંગા આળત્તિ કિ કરેહિ
કેઙ્ઠઅવિરાહિ ચ વેરિણહિ જમપુરિસસંનિભેહિ પહયા તે તત્થ
મંદપુળ્ળા ચડવેલાવઢ પટ્ટપોરાચ્છિવા કસલત્તવરત્તવેત્તપહા-
રસયતાલિયંગુવગા કિવળાલવતવમ્મવળવેયળવિસુહિય-
મળાઘળકોટ્ટળનિયલજુયલ-સંકોડિયમોડિયા ચ કીરત્તિ
નિરુચ્ચારા અસચરળા ણયા અપળાય એવમાઈઓ વેયળાઓ
પાવા પાવત્તિ ॥ સૂ ૧૪ ॥

ટીકા-પૂર્વોક્તાઃ મન્દપુળ્ળાઃ ‘સપુડકવાડ-લોહપજર-ભૂમિઘરનિરોહકૂવચારગ
કીલગજૂવચક્કવિતતત્રધળસ્વમાલળઊદ્ધચલગવધળવિહમ્મળાહિય વિહેડિયતા’
તત્ર ‘સપુડકવાડ’-સમ્પુટકપાટ = પિહિતકપાટ લોહપજર તથા ‘ભૂમિઘર’
ભૂમિગૃહ=ભૂમેરન્તગૃહ ‘મોવરા’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ ચ તત્ર યો ‘નિરોહ’ નિરોધઃ=
પ્રવેશન, તથા ‘કૂવ’ કૂપઃ=અન્વકૂપ., ‘ચારગ’ ચારકઃ=ચન્દિગૃહ ‘કીલગ’

ફિર વે કયા ફલ પાતે હૈ ? સો કહતે હૈ-‘સપુડકવાડ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-યે ચોરજન (સપુડકવાડ લોહપજર-ભૂમિઘરનિરોહ કૂવ ચારગ
કીલગ-જૂવચક્કવિતતત્રધળ-સ્વમાલળ-ઊદ્ધચલળવધળ-વિહમ્મળાહિય
વિહેડિયતા) (સપુડકવાડલોહપજર) વદ હ કપાટ-યુગલ જિન્હોં કે એસે
લોહ કે પિંજરોં મેં તથા (ભૂમિઘરનિરોહ) તલઘરોં મેં વદ કર ઢિયે જાતે
હૈ, (કૂવ) અધકૂપ મેં પટક ઢિયે જાતે હૈ, (ચારગકીલગ) વદિગૃહ મેં

૧. બીજી કથા ક્ષણ મળે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-“સપુડકવાડલોહપજર” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ-તે ચોરને “સપુડકવાડલોહપજર” બધ આરણ્યાવાળા લોઢાના પાંચ
સમા, તથા “ભૂમિઘરનિરોહ” લોયસમા પૂરી દેવામા આવે છે, “કૂવ”
અધાગીયા દવાયા પટકવામા આવે છે, “ચારગકીલગ” ડારાગૃહમા હાથડી

કીલકાઃ 'સૂટા' इति प्रसिद्धा 'जूव' यूपा. = स्तम्भविशेषाः 'चक्र' चक्राणि
 रथाङ्गानि 'पहिया' इति भाषा प्रसिद्धानि तेषु विततबन्धन = ग्राहुजहादिरिया-
 टनेन नियन्त्रण तथा 'खभालण' स्तम्भालगन = स्तम्भैः - सह रज्ज्वादिभिरावेष्टनं
 गले रज्जु बद्ध्वा स्तम्भेषु समालम्बन या तथा 'उद्धचलणबधण' ऊर्ध्वचरणबन्धन
 च = पादयोरुपरिकृत्य बन्धनमित्यादिर्या 'विहम्मणाहि' विपर्ययाः = पीडास्ताभिः
 'विहेडियता' विहेड्यमाना = पीड्यमानाः सकोटिता मोटिताः क्रियन्त इत्यग्रेण
 सम्बन्धः । तथा—'अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहि'
 अधः कोटकगाढोरः शिरोबद्धोर्ध्वपूरितस्फुरदुरः कण्डकमोटनैः, तत्र—अयः
 कोटकेन = अधो नमयनेन गाढम् = अत्यर्थमुरसि = यक्ष स्थले शिरः = मस्तकं बद्ध येषां
 ते तथा अतएव ऊर्ध्वपूरिताः = श्वासप्रश्वासाः पूरितशरीरोर्ध्वभागास्तथा स्फुरदुरः
 कण्डकाश्च = कम्पमानवक्षः स्थलपृष्ठास्थिका ये चौरास्तेषां यानि मोटनानि = पुनः पुन

હથકહી આદિ મેં વાધ દિયે જાતે હેં, સૂટોં પર લટકા દિયે જાતે હેં, (જૂવ)
 સ્તંભવિશેષોં સે જકડ કર વાધ દિયે જાતે હેં, (ચક્ર) પહિયોં સે (વિત
 તત્તબધણ) હાથ પૈર યાહર નિકાલકર રક્ષિયોં સે વહુત બુરી રતહ સે
 જકડ દિયે જાતે હેં, (ખભાલણ) વહે ૨ સભોં કે ઉપર ગલે મેં રજ્જુ
 આદિ વાધકર લટકા દિયે જાતે હેં । તથા (ઉદ્ધચલણવધણ) પૈરોં મેં
 રસી આદિ સે વાધકર મુંહ નીચા કરકે વૃક્ષાદિકો મેં લટકા દિયે જાતે
 હેં । (વિહમ્મણાહિય) ઇસ પ્રકાર કી-વિવિધ પ્રકાર કી પોડાઓં સે વે
 (વિહેડિયતા) પીડિત કિયે જાતે હેં । તથા (અહકોડગગાઢઉરસિરબદ્ધ
 ઉદ્ધપૂરિયફુરતઉરકડગમોડણેહિ) (અહકોડગગાઢઉરસિરબદ્ધપૂરિય)
 ઇનકા મસ્તક ઇતને અધિક રૂપ મેં નીચે ઝુકાયા જાતા હેં કિ જિસસે
 વહ વક્ષસ્થલ પર આકર ચિપક જાતા હેં, ઓર ઇસી કારણ શ્વાસ ઉચ્છ-
 વાસોં સે ઇનકા શરીર કા ઉર્ધ્વભાગ પૂરિત હોતા રહતા હેં, (ફુરતઉર

આદિ) વડે વાધવામા આવે છે, સૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, “જૂવ”
 સ્થભો સાથે વાધવામા આવે છે, “ચક્ર” ચક્રોથી જકડવામા આવે છે
 “વિતતત્તબધણ” હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ ખરાબ રીતે વાધવામા
 આવે છે “ખભાલણ” મોટા મોટા થાલલાઓ ઉપર ગળે દોરડા
 વાધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા “ઉદ્ધચલણવધણ” ખગે દોરડા
 વાધીને વૃક્ષાદિ ઉપર બંધે માથે લટકાવવામા આવે છે, “વિહમ્મણાહિય” આ
 પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને “વિહેડિયતા” પીડવામા આવે છે
 તથા “અહકોડગગાઢઉરસિરબદ્ધપૂરિય” તેમના મસ્તકને એટલું બધું નીચે
 નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી જાય છે, અને તે કારણે
 શ્વાસોચ્છ્વાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ પૂર્ણ રહે છે, “ફુરતઉર”

મર્દનપૂર્વકમુધ્વાધ' કરુણાદીનિ તૈર્વિદ્વેજ્યમાના ઇતિ પૂર્વેણ સમ્પન્થ । તથા 'સવદ્ધા' સવદ્ધાઃ=રજ્જ્વાદિભિદ્વદ્ધાઃ સન્તઃ ' નીસસતા ' નિઃશ્વસન્તઃ=નિશ્વાસ વિમુશ્ચત ' સીસાવેદઠરુચાલવપ્પડગસધિવધનતત્તસલાગમૂઢઆકોડણાણિ' શીર્ષાવેષ્ટનોરુદાર-વપ્પડસધિવન્ધનતત્તગલાકામૂચ્યાકુટ્તનાનિ=શીર્ષાવેષ્ટન=અર્દ્રચર્માદિભિઃ શિરોવન્ધનમૂરુદારઃ=જઘ્નાવિદારણ ચપ્પડગસન્ધિવન્ધન=' ચપ્પડગ ' ઇતિકાષ્ઠયન્ત્રવિશેષસ્તેષાં કાષ્ઠયન્ત્રવિશેષાણા સન્ધિસ્થાનેષુ જાનુકર્પરાદિષુ વન્ધન, તથા તપ્તાના શલાકાના=લોહફીલકાનાં મૂચીનાં ચ=પ્રતીતાનામાકુટ્તનાનિ=શરીરે પ્રવેશનાનિ યાનિ તાન્યેતાનિ, તથા- ' તચ્છણવિમાણણાણિ ' તક્ષણવિમાનનાનિ=વાસિભિસ્ત

કડગ) इनके वक्षस्थल की तथा पृष्ठभाग हड्डियाँ कपित होने लग जाती हैं । (मोड़णेहिं) बार २ इन चोरो का वे कोतवाल लोग मर्दन करते हैं बार २ ऊँचे नीचे उठाते बैठते हैं, इस तरह से बहुत दुःखित करते रहते हैं । (सवद्धा) रज्ज्वादिक से ईन्हें बहुत ही दृढ़ता के साथ हाथ पैर आदि अवयवों में बाध देते हैं (नीससता) इस कारण जोर २ से हाँफने लग जाते हैं । (सीसावेदठरुचाल-वप्पडसधिवधनतत्तसलाग मूड आकोडणाणि) (सीसावेद) गीले चमड़े आदि से इनका शिर बाध दिया जाता है, (उरुचाल) ऊरुदार-जधाएँ इनकी इतनी अधिक चौड़ी करवाई जाती है कि जिससे उनका विदारण (तूट जाना) हो जाता है । (चप्पडग-सधिवधणा) जानुकर्पर (कोणी) आदि सधि स्थानोंमें एक प्रकारके काष्ठयत्र बाध दिये जाते हैं तथा (लोहसलाग) शरीरमें तप्तलोहे की शलाईयों से दाग दिये जाते हैं और (सूई आकोडणाणि) गरम लोहेकी सूईया उसमें प्रविष्ट की जाती हैं, तथा (तचछणविमाणणाणि) वमूला आदिसे

તેમની છાતી તથા પીઠના હાડકા ડપવા લાગે છે, “ માડણેહિં ” તે ચોરોનુ તે કોટવાળો વારવાર મર્દન કરે છે તેમને વારવાર ઊઠ બેસ કરાવે છે, અને એ રીતે તેને બહુ જ દુખ છે “ સવદ્ધા ” તેમના હાથ પગ આદિ અવયવોને દોરડા આદિ વડે મજબૂત રીતે બાધી દેવામાં આવે છે, “ નીસસતા ” તે કારણે તે બિચારા હાફી બન્ય છે “ સીસાવેદ ” લીના ચામડા આદિથી તેમના શિર બાધી દે છે, “ ઉરુચાલ ” તેમની બાંધ એટલી બધી પડેલી ડરવામાં આવે છે કે તે કારણે તેમનુ વિદારણ થાય છે, ‘ ચપ્પડગસધિ વધના ’ બાનુ કપર (શુદ્ધા) આદિ આધાવાળી જગ્યાઓમાં એક પ્રકારના કાષ્ઠયત્ર બાધી દેવામાં આવે છે, તથા “ લોહસલાગ ” તપાવેલા લોહાના સળિયાઓ વડે શરીર પર ડામ દેવામાં આવે છે, અને “ સૂઈઆકોડણાણિ ” ગરમ કરેલી લોહાની સોયો શરીરમાં લોકવામાં આવે છે, તથા “ તચ્છણ વિમા

કોલકાઃ 'લૂટા' इति प्रसिद्धाः 'जूव' यूपा.=स्तम्भविशेषाः 'चक्र' चक्राणि
 रथाङ्गानि 'पहिया' इति भाषा प्रसिद्धानि तेषु विततबन्धन=बाहुजहादिविना-
 टनेन नियन्त्रण तथा 'खभालण' स्तम्भालनन=स्तम्भैः—सह रज्जुयादिविरावेष्टन
 गले रज्जु बद्ध्या स्तम्भेषु समालम्बन या तथा 'उद्धचलणवधण' उ उर्ध्वचरणमन्वन
 च=पादयोरुपरिकृत्य बन्धनमित्यादिर्या 'विहम्मणाहि' विवर्पणाः=पीडास्ताभिः
 'विहेडियता' विहेड्यमाना =पीड्यमानाः सकोटिता मोटिताः क्रियन्त इत्यग्रेण
 सम्बन्धः । तथा—'अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहि'
 अथः कोटकगाढोरः शिरोबद्धो उर्ध्वपूरितस्फुरदुरःकाण्डकमोटनैः, तत्र—अथः
 कोटकेन=अधो नमयनेन गाढम्=अत्यर्थमुरसि=वक्ष स्थले शिर'=मस्तकं बद्ध येषां
 ते तथा अतएव ऊर्ध्वपूरिताः=श्वासप्रधामैः पूरितगरीरोर्ध्वभागास्तथा स्फुरदुरः
 कण्डकाश्च=कम्पमानवक्ष स्थलपृष्ठास्थिका ये चौरास्तेषां यानि मोटनानि=पुनः पुन

हथकडी आदि में बाध दिये जाते हैं, लूटों पर लटका दिये जाते हैं, (जूव)
 स्तम्भविशेषों से जकड़ कर बाध दिये जाते हैं, (चक्र) पहियों से (वित-
 तबधण) हाथ पैर बाहर निकालकर रस्सियों से बहुत बुरी रतह से
 जकड़ दिये जाते हैं, (खभालण) बड़े २ खम्भों के ऊपर गले में रज्जु
 आदि बाधकर लटका दिये जाते हैं । तथा (उद्धचलणवधण) पैरों में
 रस्सी आदि से बाधकर मुँह नीचा करके वृक्षादिकों में लटका दिये जाते
 हैं । (विहम्मणाहिय) इस प्रकार की-विविध प्रकार की पीडाओं से वे
 (विहेडियता) पीड़ित किये जाते हैं । तथा (अहकोडगगाढउरसिरबद्ध
 उद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहि) (अहकोडगगाढउरसिरबद्धपूरिय)
 इनका मस्तक इतने अधिक रूप में नीचे झुकाया जाता है कि जिससे
 वह वक्षस्थल पर आकर चिपक जाता है, और इसी कारण श्वास उच्छृ-
 वासों से इनका शरीर का उर्ध्वभाग पूरित होता रहता है, (फुरतउर

આદિ વડે બાધવામા આવે છે, ખૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, “જૂવ”
 સ્થભો સાથે બાધવામા આવે છે, “ચક્ર” ચક્રોથી બંધકડવામા આવે છે
 “વિતતબધણ” હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ ખરાબ રીતે બાધવામા
 આવે છે “ખભાલણ” મોટા મોટા થાભલાઓ ઉપર ગળે દોરડા
 બાધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા “ઉદ્ધચલણવધણ” પગે દોરડા
 બાધીને વૃક્ષાદિ ઉપર બિંધે માથે લટકાવવામા આવે છે, “વિહમ્મણાહિય” આ
 પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને “વિહોડિયતા” પીડવામા આવે છે
 તથા “અહકોડગગાઢઉરસિરબદ્ધપૂરિય” તેમના મસ્તકને એટલું બધું નીચે
 નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી બાધ છે, અને તે કારણે
 શ્વાસોચ્છ્વાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ પૂર્ણ રહે છે, “ફુરતઉરકડમ”

સપશુલિકાનિ=પાર્શ્વાસ્થિસહિતાન્યસ્થોનિ યેપા તે તથા ઊરસિ મહાકાષ્ઠસ્ય-
ચાલનેન ભગ્નપાર્શ્વાસ્થિકા इत्यर्थ , 'ગલકાલકલોહદડઊરઉદરવત્થિપિટ્ટપરિપીલિયા'
ગલકાલકલોહદડઊરઉદરવસ્તિપૃષ્ઠપરિપીડિતાઃ=ગલ इव=મત્સ્યભેદકકન્ટકયત્
કાલકલોહદડઃ=શ્યામલોહદડસ્તેનોરસિ=વક્ષઃસ્થલે, ઉદરે વસ્તૌ=નાભ્યધોગુહ્ય-
પ્રદેશે પૃષ્ઠે ચ પરિપીડિતાઃ=આહતા યે તે તથા, 'મત્થતહિયયસચુણિયગુવગા '
મધ્યમાનહૃદયસઠ્ચૂર્ણિતાદ્ગોપાદ્ગાઃ=તત્ર મધ્યમાન=મહાકાષ્ઠાદિભિર્વિલોચ્યમાન
હૃદય=વક્ષઃસ્થલ યેપા તે મધ્યમાનહૃદયાઃ, તથા કઠોરભૂમ્યાદૌ ઘર્ષણાદિના સઠ્ચૂ-
ર્ણિતાન્યઙ્ગાનિ=શિર ઊર ઉદર પૃષ્ઠવાહુદ્વયચરણદ્વયલક્ષણાઙ્ગાનિ ઊગાઙ્ગાનિ ચ=
કર્ણનાસિકા કરચરણાઙ્ગુલ્યાદીનિ યેપા તે સઠ્ચૂર્ણિતાદ્ગોપાદ્ગાથ યે તે તથા, એતે પાપા
વેદનાઃ પ્રાપ્નુવન્તીત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ । 'કેઈ' કેચિત્=કેચન 'અવિરાહિય-વેરિઈ'

ગપસુલિયા) उनकी पासली सहित हड्डियां पीस जानी है तब, तथा
(गलकालकलोहदडउरउदरवत्थिपिट्ठपरीपीलिया) (गल) मत्स्य
भेदक कंटक की तरह (कालकलोहदड) काले लोहे के दण्ड से (उर
वक्षस्थल, (उदर) पेट, (वत्थि) वस्ति-नाभि के नीचे का गुह्यप्रदेश,
एव (पिट्ठ) पृष्ठ इन स्थानों पर जब वे (परिपीलिया) आहत होते हैं
तब, तथा (मत्थतहिययसचुण्णियगुवगा) (मत्थतहियय) जब उनका
हृदय महाकाष्ठ आदि से मथित किया जाता है तब, तथा (सचुण्णिय-
गुवगा) कठोर भूमि के ऊपर घर्षण आदि से जब उनके अंग और
उपांग अच्छी तरह चूर्णित हो जाते हैं तब, बहुत ही अधिक दुःखी
होते हैं । शिर, उर, उदर, पृष्ठ, बाहुद्वय और चरणद्वय, ये आठ अंग
हैं । तथा कर्ण, नासिका, कराङ्गुली एव चरणाङ्गुली आदि उपांग हैं ।
इस प्रकार ये (केइ) कितनेक अदत्तग्राही चोर (अविराहियवेरिइहिं)

તેમની છાતી ઉપર ઘણા ભારે વજનવાળી લાકડાની ઘોડી "દિણ્ણગાઢપેલ્લળ"
ખેચીને આમ તેમ દેરવવામા આવે છે, ત્યારે "અટ્ઠિક સમગ્ગાપસુલિયા"
તેમની પાસળીઓના હાડકા પીસાઈ જાય છે, તથા "ગલ" માછલીને વીધનાર
ઝાટાની જેમ "કાલકલોહદડ" લોઢાના કાળા દડા વડે "ઉર" છાતી
"ઉદર" પેટ, "વત્થિ" અસ્તિ-ગુહ્ય પ્રદેશ, અને "પિટ્ઠ" પીઠ વગેરે સ્થાનો
પર બ્યારે "પરિપીલિયા" તેમને માર પડે છે ત્યારે, તથા "મત્થત હિય
ય સચુણિયગુવગા" "મત્થત હિયય" બ્યારે તેમના હૃદયનુ મહાકાષ્ઠ આદિ
દ્વારા મથન કરવામા આવે છે ત્યારે, તથા "સચુણિયગુવગા" કઠણ જમીન
ઉપર ઘસડવાને લીધે બ્યારે તેમના અંગ ઉપાગોનો સારી રીતે ચૂરો થાય
છે ત્યારે તેઓ ઘણા જ દુ ખી થાય છે શિર, ઉર, ઉદર પૃષ્ઠ, બે હાથ અને
બે પગ એ આઠ અંગો ગણાય છે તથા કાન, નાક, હાથ પગના આગળા
વગેરે ઉપાગો કહેવાય છે એ પ્રમાણે તે "કેઈ" કેટલાક અદત્તગ્રાહી-ચોર,

ક્ષણાનિ=રાસીભિ કાષ્ટસ્યેવ ગાત્રક્ષોભનાનિ, વિમાનાનિ=ગાત્રીપ્રદાનાદિભિર્વિ-
વિધરીત્યાઽપમાનકરણાનિ તથા ' સ્વારકઙ્કુયતિત્તનાવણજાયણકારણસયાણિ ' સ્વાર
કઙ્કુયતિત્તનાવણયાતનાકારણશતાનિ = તત્ર ક્ષારાણિ=મર્જીક્ષારાદીનિ વદુકાનિ=
નિમ્બાદીનિ તિત્તાનિ ચ=મરીચાદીનિ તેષાં ' નાવણ ' इति મુલનાસિકાદૌ
પ્રક્ષેપણ, તદાદીનિ યાનિ યાતનાકારણશતાનિ=વિવિચ્છેદનાકારણશતાનિ તાનિ
' વહુયાણિ ' વહુકાનિ ' પાવિયતા ' પ્રાપ્નુન્તઃ, ' ઉરઘોડીદિણ્ણાગાઢપેલ્લ-
અટ્ટિકમભગ્ગસપસુલિયા ' ઉરઘોડીદત્તગાઢપ્રેરણસમગ્ગાસ્થિકમપથુલિકા' = તત્ર
ઉરસિ=વક્ષઃસ્થલે દત્તાઃ=સ્થાપિતાઃ યા ઘોડી ' ઘોડી ' इति પ્રસિદ્ધ મહાકાષ્ઠ
તસ્યા ગાઢમ્=અત્યર્થં યત્પ્રેરણ=ઘર્ષણપૂર્વક સચ્ચાલન તેન સમગ્ગાનિ=ગુટિકાનિ

उनके शरीर को छीलते हैं और विमानन गाली आदि से उनको अप-
मानित करते हैं । (स्वारकङ्कयतित्तनावणजायणकारणसयाणि) (स्वार)
मुख नासिका आदि में सर्जि क्षार आदि क्षार पदार्थों का (कङ्कय)
आदि कङ्क पदार्थों का एव (तित्त) मरीचि आदि तित्त पदार्थों का चूरण
(नावण) प्रक्षिप्त किया जाता है, (जायणकारणसयाणि) इत्यादि रूपसे
(कारणसयाणि) वेदना प्रदानके जितने भी सैकड़ों प्रकार हैं उन सबका
उन द्रव्य हरण करनेवाले चोरोपर प्रयोग किया जाता है । इस तरह (बहु
याणि) बहुत प्रकारकी घोरतिघोर वेदनाको (पावियता) प्राप्त हुए वे जीव
(उरघोडीदिण्ण गाढ पेल्लण अट्टिक सभग्गसपसुलिया) (उरघोडी) जब
उनके वक्षःस्थल पर बहुत अधिक बोलवाली काष्ठ की घोड़ी (दिण्णगा
ढपेल्लण) इधर से उधर खेंचकर फिराई जाती है इससे (अट्टिकसभ

ળણાણિ” વાસલા આદિથી તેમના શરીરને છોલે છે, અને ગાળેા આદિથી
તેમને અપમાનિત કરે છે “ સ્વારકઙ્કુયતિત્તનાવણજાયણકારણસયાણિ ” “ સ્વાર ”
મુખ, નાક આદિમા સાજીખાર આદિ ક્ષાર યુક્ત પદાર્થોની “ કઙ્કુય ”
લીઝાળી આદિ કડવા પદાર્થોની, અને “ તિત્ત ” મરચા આદિ તીખા પદાર્થોની
ભૂંડી “ નાવણ ” નાખવામા આવે છે, “ જાયણકારણસયાણિ ” ઇત્યાદિ
પ્રકારની પીડા પડોચાડવાની જે સેકડો પદ્ધતિયો છે, તે બધીને તે દ્રવ્ય
હરણ કરનારા ચોરો ઉપર પ્રયોગ કરવામા આવે છે, આ રીતે “ વહુયાણિ ”
અનેક પ્રકારની ભયંકરમા ભયંકર વેદનાઓ “ પાવિયતા ” તે લોકો અનુભવે
છે “ ઉરઘોડીદિણ્ણગાઢપેલ્લણઅટ્ટિકસભગ્ગસપસુલિયા ” “ ઉરઘોડી ” ન્યારે

તથા 'લપ્તત્તચમ્મવણવેયણવિમુહિયમગા' લપ્તમાનચર્મવણવેદનાવિમુશ્વિતમનસઃ=લપ્તમાનચર્માણિ=ગલ્પચર્માણિ યાનિ વ્રગાનિ=તત્તાનિ 'વાવ' ડતિ મસિદ્ધાનિ તેષા યા વેદનાઃ=પીડાઃ તામિઃ વિમુશ્વિત=વાયિકરણાદ્ વિરમ્ત મનો યેષા તે તથા, 'વગ્ગોટ્ટણનિયલ્લુયલ્લસંહોડિયમોટિયાય' વનકુટ્ટનનિગડયુગલમ્કોટિ-મોટિતાશ્ચ=તત્ર વનકુટ્ટનેન=લોહમયમુદ્રતાડનેન નિગડયુગલેન=ગૃહ્ણલાદ્યવન્ધને-નેત્યર્થઃ, સંકોટિતા=મહોચિતા મોટિતાઃ=ચક્રીકૃત્તાય યે તે તથા 'કીરતિ' 'ક્રિયન્તે=રાજપુરુષૈરિતિગ્રંથેણ સમ્પન્નઃ। તથા નિરુચ્ચારાઃ=નિરુદ્ધમૂત્રપુરિષોત્તમર્ગાઃ, યદ્વા-નિરુચ્ચારા=અપીડાપતીકારાર્થમેકશબ્દોચ્ચારણમાત્રમપિકર્તુમશક્તાઃ, અતઃ એવમચ્ચરણા=ગમનાગમનવર્જિતા. ઇત્થમાનપતિનદ્વા એવ 'પાવા' પાપાઃ=પાપ-

પત્ત વને દુષ્ણ તથા (લપ્તત્તચમ્મવણવેયણવિમુહિયમગા) (લપ્તત્તચમ્મ) કોટ્ટો આદિ કી માર સે શરીર કી ચ્વાલ વિંચ જાને કે કારણ લટકતે દુષ્ણ ચમદે સે યુક્ત (વણ) વાવોં કી (વેયણ) વેદના સે (વિમુહિય-મગા) જિનકા મન ચોંગી કરને સે વિરક્ત હો ચુકા હૈ એસે, તથા (વગ્ગોટ્ટણનિયલ્લુયલ્લસંકોટિયમોટિયાય) (વગ્ગોટ્ટણ) લોહમય મુદ્રરોં કી ચોટ સે, એવ (નિયલ્લુય) ઘો સાકલોં દ્વારા કિયે ગયે વધનોં કે (સંકોટિયમોટિયા) જિનકા શરીર સંકુચિત્ત હોકર ચક્રીભૂત હો ચુકા હૈ તથા (નિરુચ્ચારા) અપની પીડા કો પ્રકટ કરને કે લિયે જો એક શબ્દ કે ઉચ્ચારણ કરને મેં મીં અમ્મર્મ વન ચુકે હ, અપવા-વેદના માર કે કારણ મલ મુત્રકા ઉત્સર્ગ જિનકા વદ હો ચુકા હૈ ઓર' હસી કારણ જો (અમચરણા) ઇત્થ હી સ્થાન મેં પ્રતિબદ્ધ રહને કે કારણ જો ચલને ફિરને મેં અસમર્થ વન ચુકે હૈ એસે યે અવસ્થાત્રાહી (પાવા) પાપી

એવી દીનદયાઓમા મૂકાયેલા તથા 'લપ્તત્તચમ્મવણવેયણવિમુહિયમગા' 'લપ્તત્તચમ્મ' ડોરડા આદિના પ્રહારથી શરીરની આમડી ઉતરી જવાથી લટકતી આમડી વાળા "વણ" વાવોની વેદનાની 'વિમુહિયમગા' જેમના મન ઓગી ડગવાથી વિગ્ઢ થઈ ગયા છે, તથા "વગ્ગોટ્ટણ નિયલ્લુયલ્લ સંકોટિય મોટિયાય" "વગ્ગોટ્ટણ" લોહમય મુદ્રાઓની ઓટથી અને "નિયલ્લુયલ્લ" જે આડળો દ્વારા બંધાયેલા બંધનોથી 'સંકોટિયમોટિયા' જેમના શરીર મહાઆધને બળી ગયા છે તથા "નિરુચ્ચારા" પોતાની વેદનાને પ્રગટ કરવાને માટે એક શબ્દ પણ બોલવાને જે અમમય છે, અથવા બેહુદ મારને લીધે જેમની મળમુત્ર આદિના ઉત્સર્ગની ક્રિયા બંધ થઈ ગઈ છે અને "અમચરણા" એક જ સ્થાનમા પૂગાયેલ ગડેવાને ડારણે જેવો હલન ચલન ડગવાને

અવિરાધિતવૈરિકૈઃ=નિરપરાદ્વા એવ ત્રૈરિણઃ શત્રવઃ=નિષ્કારણત્રૈરિણ ઇત્યર્થઃ, તૈઃ
 ‘જમપુરિસસનિભેર્હિ’ યમપુરુષસન્નિભૈ =પરમાધાર્મિકદેવસદૃશૈઃ મયોત્પાદકત્વાત્તૈ
 રેવમ્ભૂતૈઃ ‘આણત્તિકિંકરેર્હિ’ આણત્તિકિંકરૈઃ=રાજનિદેશકારિભિ પુરુષૈઃ ‘પહ્યા’
 પ્રહતાસ્તૈ=અદત્તાઽઽદાયિનઃ ‘તત્થ’ તત્ર=કારાગારે ‘મદપુણ્ણા’ મન્દપુણ્ણાઃ=
 ભાગ્યહીનાઃ ‘ચડવેલાવદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસયતાલિયગુવગા’
 ‘ચડવેલાવદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસયતાલિયગુવગા’, તત્ર-
 ચડવેલા=ચપેટા ‘વદ્ધપટ્ટ’ વર્ધપટ્ટ ‘વદ્ધપટ્ટ’=ચર્મપટ્ટઃ ‘પોરા’ લૌહકીલકાઃ,
 દેશીશબ્દોઽયમ્ ‘ચ્છિવા’ ચિક્ષ્ણચર્મક્રુગા ‘ચાણુક’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, દેશી
 શબ્દોઽય, કસાઃ=અશ્વાદિતાડનચર્મયપ્તિ, ‘લત્તા’ લતા=ઝમ્વાદરિતવૃક્ષશાખા-
 યપ્તિ ‘છડી’ ‘કામડી’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા ‘વરત્ત’ વરત્ત=ચર્મમયીરજ્જુઃ
 ‘વેત્ત’ વેત્ર=વેત્રયપ્તિ, એતેષા ‘પહારસય’ પ્રહારશતૈ ‘તાલિયગુવગા’ તાડિ-
 તાઙ્ગોપાઙ્ગા=તાડિતાન્યઙ્ગોપાઙ્ગાનિ યેષા તે તથા, ‘કિવિણા’ કૃપણા=દીનાઃ,

વિના અપરાધ કે હી વૈરી બને હુણ-નિષ્કારણ શત્રુ ભાવ કો પ્રાપ્ત હુણ
 એસે (આણત્તિ કિંકરેર્હિ) રાજનિદેશકારી પુરુષોં કે દ્વારા કિ જો
 (જમપુરિસસનિભેર્હિ) યમપુરુષ-પરમાધાર્મિક જેસે હોતે હૈં (તત્થ) ઉસ
 કારાગાર મે (પહ્યા) આહત-દુઃગ્વિ કિયે જાતે હૈ । વહાં પર વે (મદ-
 પુણ્ણા) અભાગે (ચડવેલાવદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસ
 યતાલિયગુવગા) (ચડવેલા) વપ્પડોં કે, (વદ્ધપટ્ટ) ચર્મ પટ્ટોંકે, (પોરા) પોર-
 લોહે કે રીલોં કે, (ચ્છિવા) ચિક્ષ્ણે ચમડા કે કોડો કે (કસ) ચાણુક
 કે, (લત્તા) લતા-હરે વૃક્ષકી શાખા કી છડી કે, (વરત્ત) વરત્ત-
 ચમડે કી રસી કે, વેત્રોં કે (પહારસય) સૈકડો પ્રહારોં સે (તાલિયગુ
 વગા) અગ ઉપાગોં મેં તાડિત કિયે જાતે હૈં । (કિવિણા) દીનદશાસ

“અવિરાદિય વૈરીર્હિ” વિના વાકે હુશ્મન બનેલા-વિના કારણુ શત્રુ બની
 બેઠેલા, “જમપુરિસસનિભેર્હિ” યમ દેવ જેવા “આણત્તિ કિંકરેર્હિ” રાજ
 પુરુષો દ્વારા, તે કારાગારમા “પહ્યા” પ્રહારો વડે હુ બી કરાય છે ત્યા તે
 “મદપુણ્ણા” અભાગી લોકો “ચડવેલાવદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્ત-
 પહારસયતાલિયગુવગા” “ચડવેલા” ચપ્પડોના, “વદ્ધપટ્ટ” ચર્મપટ્ટોના
 “પોરા” લોહાના ખીલાઓના, “ચ્છિવા” ચીકણા ચામડાના કોરડાના, “કસ”
 ચાણુકના, “લત્તા” લીલા વૃક્ષની ડાળીઓની સોટીઓના “વરત્ત” વરતના
 ચામડાના કોરડાના અને નેતરની સોટીઓના, “પહારસય” સૈકડો પ્રહારો
 “તાલિયગુવગા” તેમના અગ ઉપાગો પર ભારવામા આવે છે “કિવિણા”

ટીકા—‘ અદર્તિદિયા ’ અદાન્તેન્દ્રિયાઃ=અગ્નેન્દ્રિયાઃ ‘ વસદ્વા ’ વગાર્તા શબ્દાદિવિપયા સક્તિપીડિતાઃ ‘ વહુમોહમોહિયા ’ વહુમોહમોહિતા પ્રચુરજ્ઞાનમૂર્છિતાઃ ‘ પરવણમ્મિ લુદ્ધા ’ પરવને લુદ્ધા =પરદ્રવ્યતળાવન્ત ઇત્યર્થઃ, ‘ ફાસિંદિય-વિસયતિવ્વગિદ્ધા ’ સ્પર્શેન્દ્રિયવિપયતીવ્રગદ્ધા =સ્પર્શેન્દ્રિયવિપયે સ્વ્યાદૌ ગાઢામક્તાઃ ‘ ઇત્થિગયસ્વસદ્વસગવદ્દુરતિમહિયભોગતળાદ્યા ય ’ સ્ત્રીગતરૂપગન્ધરસગન્ધેષ્ટર-તિમહિતભોગવૃણાદિતાશ્ર=તત્ર સ્ત્રીગતાઃ સ્ત્રીસમ્પન્નિનોયે રૂપગન્ધરસગન્ધાસ્તેષુ ઇષ્ટા=અમીપ્સિતા યા રતિઃ=રમણ તથા સ્ત્રી ગત એવ મહિતઃ = ગાઢિતો યો ભોગઃ= વિલાસ. તયો યા વૃણા તથા અર્દિતાઃ=પીડિતાઃ ‘ વગતોસગા ’ ધનતો-

હે ? યહ કહતે હે—‘ અદર્તિદિયા ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(અદર્તિદિયા) યે અદત્તાગ્રાહી ચોર (અદર્તિદિયા) એસે હોતે હેં કિ ઇનકી ઇન્દ્રિયા ઇનકે વગમે નહો રહતી હેં, (વસદ્વા) શબ્દાદિક વિષયોં મેં યે અધિકરૂપ મેં આસક્તિવાલે હોતે હેં, (વહુમોહ-મોહિયા) અજ્ઞાનકી સત્તા ઇનમેં અધિકસે અધિક રહતી હેં (પરવણમ્મિ-લુદ્ધા) પરકે દ્રવ્યમેં ઇન્હેં વહુત ભારી તૃણા રહતી હેં । (ફાસિ-દિયવિસયતિવ્વગિદ્ધા) સ્પર્શન ઇન્દ્રિયકે વિષયભૂત સ્ત્રી આદિ પદાર્થ મેં ઇનકી ગાઢ આસક્તિ હોતી હેં । (ઇત્થિગયસ્વસદ્વસગવદ્દુરતિમહિય-ભોગતળાદ્યા ય) (ઇત્થિગય) સ્ત્રી સવયી (સ્વસદ્વસગવદ્દુરતિ) રૂપ ગન્ધ, રસ, ગંધમેં ઇચ્છાનુસાર રમણ કરનેકી તથા (મહિય) સ્ત્રીકે ભોગનેકી વાન્છા ઇનમેં અધિક રહતી હેં । પરન્તુ (ભોગતળાદ્યા) ડન ભોગોંકી પૂર્તિ નહોં હો સકને કે કારણ યે ડનકી તૃણાસે રાતદિન

તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘ અદર્તિદિયા ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ અદર્તિદિયા ” તે અદત્તાગ્રાહી ચોર એવા હોય છે કે તેમની ઇન્દ્રિયો ઉપર તેમનો કાબૂ હોતો નથી, “ વસદ્વા ” શબ્દાદિ વિષયોમા તે વધારે પ્રમાણુમા આમ્મન હોય છે, “ વહુમોહમોહિયા ” તેમના પર અજ્ઞા-નની મત્તા વધારેમા વધારે ચાલે છે, “ પરવણમ્મિ લુદ્ધા ” પરધનની તૃણા તેમનામા બહુ વધારે હોય છે, “ ફાસિંદિયવિસયતિવ્વગિદ્ધા ” સ્પર્શેન્દ્રિયને વિષયભૂત સ્ત્રી આદિ પદાર્થોમા તેમની તીવ્ર આસક્તિ હોય છે, “ ઇત્થિગયસ્વસદ્વસગવદ્દુરતિમહિયભોગતળાદ્યા ય ” “ ઇત્થિગય ” સ્ત્રી અબધી “ સ્વસદ્વસગવદ્દુરતિ ” રૂપ, ગન્ધ, અને ગંધમા ઇચ્છાનુસાર રમણુ “ મહિય ” ડરવાની તથા સ્ત્રીઓ માથે રતિરમણુ ડરવાની વાસના તેમનામા વધારે હોય છે પણ “ ભોગતળાદ્યા ” તે ભોગો પૂરા નહી થવાને કારણે, તેમની

કારકા અદત્તહારિણો જનાઃ ‘ એવા અળા ય એવાદીઓ વેયળાઓ ’ એતા પૂર્વોક્તાઃ, અન્યાશ્ચ અન્યપ્રકારા એવાદિકા=એવ પ્રકારાનાનાવિધા વેદનાઃ = હુ સારાં ‘ પાવતિ ’ પ્રાપ્નુવન્તિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

પુનસ્તે કીદશાઃ કીદશ ફલ લભન્તે ? તદાહ—‘ અદત્તિદિયા ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—અદત્તિદિયા વસદ્વા વહુમોહમોહિયા પરધળમ્મિ
લુહા ફાસિદિયવિસયતિવ્વગિહ્વા ઇતિથગયરૂવસદ્દરસગધ-
ઇટ્ટરદ્દમહિયમોગતપ્પહાદિયા ય ધળતોસગા ગહિયા ય જે નર-
ગળા પુળરવિતેકમ્મહુવિચહ્વા ઉવિળીયા રાયકિકરાણં તેસિં
વહ સત્થગ—પાઢયાળ વિલ ઉલીકારગાળ લંચસયગેપ્પહયાણં
કૂહવહમાયાણિયહિ-આયરળ-પળિહિવચળ-વિસારયાળ વહુવિહ-
અલિયસયજપગાળ પરલોગપરમ્મુહાળ નિરયગદ્ ગામિયાળ
તેહિ ય આળત્તજીવદ્દા તુરિય ઉગ્ધાડિયા પુરવેરેહિ સિંઘાડ-
ગતિયચ્ચઉક્કચ્ચરમહાપહપહેસુ વેત્તદ્દલઉહકદ્દલેટ્ટપત્થર—પ-
ળાલિય પળોલિમુઢિલત્તપાદપળિહ્ જાણુકોપ્પરપ્પહરસમગ્ગમહિ-
યગત્તા અટ્ટારસકમ્મકારિણો પાદિયગુવ્વગા કલ્લુળા સુક્કોઢકઠ-
ગલતાલ્લુ જિવ્વમા જાયતા પાણિય વિગયજીવિયાસા તપ્પહાદિયા
વરાગા તપિ ય ન લહતિ વજ્જપુરિસેહિ ધાડિયતા ॥સૂ.૧૫॥

જીવ (એવા) હન પૂર્વોક્ત વેદનાઓં કે તથા (અળા ય એવાઈઓ)
હનસે અતિરિક્ત ઓર મો નાના પ્રકાર કી (વેયળાઓ) વેદનાઓં કે
(પાવતિ) પ્રાપ્ત હોતે હ ॥ સૂ-૧૪ ॥

અવ યે અદત્તાગ્રાહી ચોર કૈસે હોકર કિસ પ્રકારકે ફલકો મોગતે

અસમર્થ થઈ ગયા છે, એવા તે અદત્તાગ્રાહી “ પાપા ” પાપી હોવો “ એવા ”
એ પૂર્વોક્ત વેદનાઓ તથા “ અળા ય એવાઈઓ ” તે ત્રિવાચની બીજી પક્ષ
અનેક પ્રકારની “ વેયળાઓ ” વેદનાઓ “ પાવતિ ” પામે છે ॥ સૂ-૧૪ ॥

હવે અદત્તાગ્રાહી-ચોર કેવા હોય છે અને કેવા પ્રકારના મો ભોગવે છે

ગ્રાહકાણાં=નાનાવિધલઙ્ગગ્રાહકાણા ' રિશ્વત્ત્વોર ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાના તથા
' કૂડકવડમાયાણિયડિ—આયરણપણિહિવચણવિસારયાણ ' કૂટકપટમાયાનિકૃ-
ત્યાચરણપ્રણિયિવચ્ચનવિગારદાના—તત્ર કૂટ=ભ્રમોત્પાદન, કપટ=વેશભાષાનાના-
રૂપધારણ માયા=ગારાદીન્ નિગ્રહીતુ મિક્ષાટૃત્યાદિમિશ્રુત્તરણ, મોજનાદિમિરા-
દરસત્કારકરણૈર્વચ્ચન નિકૃતિઃ તથા પ્રણિયિવચ્ચન પ્રણિધિના=ઢલેન ઇકાગ્રચિત્તેન
વા વચ્ચન, યદ્વા—પ્રણિયીના=રાજગુપ્તપુરુષાણા યદ્વચ્ચન તત્ર વિશારદાઃ=પ્રાગલ્ભા યે
તે તથા તેષા ' વહુવિહઅલિયસયજપગાણ ' વહુવિધાલીકશતજલ્પકાના=ચૌરાદીનાં

આદિ કી શિક્ષા સે ચે રાજપુરુષ શિક્ષિત હોતે હે (વિલઙ્ગલીકારગાણં)
દીન-હીન આદિ વચ્ચનો કો યોલ કર ચોર આદિકો કા નિર્ણય કરાને
વાલે હોતે હે, અર્થાત્—ચે રાજપુરુષ ણેસે નિપુણ હોતે હે કિ ચોરો કા પતા
વહુ જલ્દી લગા લેતે હે, ઇસ પ્રકાર કી ઉનકી વાત ચીત કા ઢગ હોતા
હે કિ જિસસે “ યહી ચોર હે ” ઇસ વાત કા ઉન્હે જ્ઞાન હો જાતા હે ।
(લચસયગેળ્હયાણ) યે રિશ્વત્ત્વોર-ઘૂસ રવાને વાલે હોતે હે । તથા (કૂડ-
કવડમાયાણિયડિ આયરણપણિહિ-વચણવિસારયાણ)(કૂડ) કૂટ મેં-
ભ્રમોત્પાદન મેં, (કવડ) કપટ મેં-વેશ ભાષા કે નાનારૂપ ધારણ કરને
મેં, (માયા) માયા મેં ચોરોકો પકડને કે લિયે મિક્ષાવૃત્તિ આદિસે છલ
કરને મેં, (નિયડિ આયરણ) નિકૃત્યાચરણ મેં-મોજનાદિ દ્વારા આદર
સત્કાર સે પ્રતારણા કરને મેં, તથા (પણિહિવચણા) પ્રણિધિ-વચ્ચનમેં
કોઈ વહાને સે ઠગને મેં, અથવા રાજા કે ગુપ્તચર પુરુષો કા ઠગને મેં,
(વિસારયાણ) વડે વિશારદ-ચતુર હોતે હે । (વહુવિહઅલિયસયજપ-

તે જાણુઝાર હોય છે “ વિલઙ્ગલીકારગાણ ” દીન-હીન આદિ વચ્ચનો યોલી
ચોર આદિનો નિર્ણય કરનાર હોય છે, એટલે કે તે રાજપુરુષો ચોરોને જલ્દી
શોધી ઢાઢવામા નિપુણ હોય છે તેમની વાતચીતની ઢળ એવી હોય છે કે
જેથી “ આ માણસ જ ચોર છે, ” એ વાત તેમને સમજાઈ જાય છે “ લચ
સયગેળ્હયાણ ” તેવો લાચીયા હોય છે, તથા “ કૂડકવડમાયાણિયડિ-
આયરણપણિહિવચણવિસારયાણ ” “ કૂડ ” કૂડ કરવામા ભ્રમોત્પાદનમા,
“ કવડ ” કપટમા-વિવિધ વેશ લેવામા, “ માયા ” માયા ચોરોને પકડવાને
માટે લિક્ષાવૃત્તિ આદિ છળ ખેલવામા, “ નિયડિઆયરણ ” નિકૃત્યાચરણમા
ભોજનાદિ દ્વારા આદરસત્કારથી પ્રતારણા કરવામા તથા “ પણિહિવચણા ”
પ્રણિધિ વચ્ચનમા, ડોઠ પણુ બહાને ઠગવામા અથવા રાજાના ગુપ્તચરને
ઠગવામા, “ વિસારયાણ ” ભારે નિપુણ હોય છે “ વહુવિહઅલિયસયજપગાણ ”

પકા = પરધનચૌર્યેણ તુપ્યન્તિ એ તે તથા રાજપુરુષૈઃ ' ગહિયાય ' ગૃહીતાશ્ચ એ નરગણાઃ = ચૌરજનસમૂહાઃ પૂર્વ કોટ્ટપાલાદિભિઃ પ્રાપ્તદણ્ડાઃ ' પુનરપિ તે ' પુનરપિ તે ' કમ્મદુવ્વિયદ્ધા ' કર્મદુર્વિદગ્ધા = અદત્તાદાનાત્કિર્મજનિતકટુકફલજ્ઞાનરહિતા. ચૌર્યકર્માપરાધેન ' તેસિં રાયક્રિકરાણ ' તેષા પ્રસિદ્ધાના નિર્દયાના રાજક્રિકરાણા = રાજપુરુષાણામગ્રે ' ઉવળીયા ' ઉપનીતાઃ = સમીપ પ્રાપિતાઃ કથ ભૂતાનાં રાજક્રિકરાણામિત્યાહ ' વધસત્યગપાઢયાણ ' રચસાસ્ત્રકપાઠકાના = રચન્યમાર-
ણઘાતનમાત્રશિક્ષાશિક્ષિતાના ' વિલઝલીકારગાણ ' વિલઝલી = હીનદીનાદિવચનૈ શ્વૌરાદીનાં નિર્ણયઃ દેશી શબ્દોઽય, તત્ કારકાણા ' લચસયગેળ્યાણ ' લઞ્ચશત-

દુઃખી હોતે રહતે હૈ । (ધનતોસણા) યદિ ઇન્હે સતોપ પ્રાપ્ત હોતા હૈ તો વહ એક પરકે ધનકે અપહરણ કાનેસે હી હોતા હૈ । પરન્તુ યહ સતોપ ઇનકા સ્થાયી નહી રહતા હૈ કારણ જવ (જેનરગણા) એ અદત્ત ગ્રાહી ચૌર લોક (ગહિયા ય) રાજપુરુષો દ્વારા ગૃહીત પકડ લિયે જાતે હૈ, તવ (પુનરવિ તે) ફિર ભી વે વિવિધ પ્રકારકે દડોં સે ઇન્હે વિશેષ દુઃખ ભોગના પડતા હૈ । તથા (કમ્મદુવ્વિયદ્ધા) અદત્તાદાનાદિ કર્મ-જનિત કટુક ફલકે જ્ઞાનસે રહિત વને હુએ ચૌર્યકર્મરૂપ અપરાધકે કારણ (તેસિં) ડન (રાયક્રિકરાણ) નિર્દય રાજપુરુષોં કે આગે જવ (ઉવળીયા) લે જાયે જાતે હૈ તવ વે ઇન્હે પ્રાણદંડ કી આજ્ઞા દેતે હૈ, તથા ઓર ભી ઇનકે સાથ કયા ૨ વ્યવહાર કરતે હૈ યહ વાત સૂત્રકાર સ્પષ્ટ નીચેકે અવતરણોં દ્વારા કરતે હૈ - રાજપુરુષ કેસે હોતે હૈ ? પહેલે યહ વાત સૂત્રકાર કહતે હૈ - (વધસત્યગપાઢયાણ) વધ, વધ, મારણ, ઘાતન,

તુણ્ણાને કારણે તેવો રાતદિન હુ ખી થયા કરે છે ' ધનતોસણા ' તેને પરધ નનુ અપહરણ કરવા સિવાય ખીજા કોઈ કાર્યથી સતોપ થતો નથી, પણ તેનો તે સતોપ સ્થાયી હોતો નથી કારણ કે જ્યારે " તે નરગણા " તે અદત્ત ગ્રાહી ચોરો " ગહિયાય " રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈ જાય છે ત્યારે " પુનરવિ તે " ફરીથી પણ તેમને અનેક પ્રકારની શિક્ષાઓ દ્વારા વધારે હુ ખો ભોગ-વવા પડે છે, તથા " કમ્મ દુવ્વિયદ્ધા " અદત્તાદાન આદિ કર્મના કટુ પરિણામ જ્ઞાનથી અજ્ઞાનથી એવા તે ચોરોને, ચોરીના ગુનાને કારણે " તેસિં " તે " રાય ક્રિકરાણ " નિર્દય રાજપુરુષો પાસે જ્યારે " ઉવળીયા " લઈ જવામા આવે છે ત્યારે તેમને મૃત્યુદંડની સજા થાય છે, તથા તેમની સાથે ખીજા પણ કેવો વર્તાવ રાખવામા આવે છે, તે વાતને સૂત્રકાર નીચેના, વાક્યો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે - પહેલા તે રાજપુરુષો કેવા હોય છે, તે વાત સૂત્રકાર ખતાવે છે

" વધસત્યગપાઢયાણ " વધ, બધ, મારણ, ઘાતન, આદિ વિધાઓના

અનેકમાર્ગસમ્મેલનસ્થાન મહાપથઃ=રાજમાર્ગઃ પન્થાઃ=સામાન્યમાર્ગસ્તેષુ ત્વરિત=શીઘ્રમુદ્ધાટિનાઃ=જનમમક્ષે પ્રદર્શિતાઃ ' ડમે મહાચોરા : શીત્રમઘૈવગ્ન્યાઃ ' ઇતિ જનસમક્ષે પ્રદર્શિતાઃ, કય ભૂતા. ? ઇત્યાહ—' વેત્ત-દડ-લડ-કટ્ટ-લેટ્ટ-પત્થર-પણાલિય-પળોલિયમુદ્ધિઠ્ઠપાયપણ્ઠિ-જાણુકોપ્પરપ્પહારસમગ્ગમહિયગત્તા ' વેત્ત-દડ-લડ-કટ્ટ-કાપ્ઠ-પસ્તર-પણાલી-પળોદી મુપ્પિલત્તા-પાદપાર્ણિ-જાણુ-કર્પર-પ્રહારસમગ્ગમયિતગાત્રા, તત્ર ' વેત્તદડ ' વેત્તદડઃ ' લડ ' લકુટઃ=યપ્પિઃ ' કટ્ટ ' કાપ્ઠ ચ=વત્તીત ' લેટ્ટ ' લેટ્ટુ =મૃત્તિકા સ્વણ્ડ ' પત્થર ' પસ્તરથ્થ=પાપાણઃ ' પળાલિય ' પળાલીઃ=પ્રકુપ્પા, નાલી પુરુષપ્રમાણદીર્ઘયપ્પિઃ ' પળોલી ' પળોદી =તાડનદણ્ડો, ' મુદ્ધો ' મુદ્ધિ. ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ ' લત્તા ' પાદ. ' લાત ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, ' પાદપણ્ઠિ ' પાદપાર્ણિઃ=ચરણપથ્થાઢ્ઢાગઃ ' એડી ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, જાણુઃ=' ઘુટના ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ ' કોપ્પર ' કર્પરથ્થ=મુજમ યગ્ગનિયઃ ' કૃણિ ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધઃ, એતેષા પ્રહારૈ ' સમગ્ગ ' સમગ્ગાનિ=ત્રુટિતાનિ, ' મહિય ' મયિતાનિ ચ=મમ્મર્દિતાનિ ' ગત્ત ' ગાત્રાણિ=શરીરાણિ યેષા તે તથા

નામ ચતુષ્ક, જહા અનેક માર્ગ આકર મિલે હોં ઉસકા નામ ચત્વર, રાજમાર્ગ કા નામ મહાપથ એ સામાન્યમાર્ગ કા નામ પથ હૈ । (વેત્તદડ લડ-કટ્ટ-લેટ્ટ-પત્થર-પળાલિય-પળોલિય મુદ્ધિ-લત્ત-પાયૂ-પણ્ઠિ-જાણૂ કોપ્પરપ્પહારસમગ્ગમયિતગત્તા) રાજપુરુષ ડન ચોરોં કો (વેત્તદડ) વેતોં કે ડડોં કી માર સે, (લડ) લકડિયોં કી માર સે, (કટ્ટ) કાપ્ઠોં કી માર સે, (લેટ્ટ) મૃત્તિકાકે સ્વડોંકી માર સે, (પત્થર) પત્થરોં કી માર સે, (પળાલિય) પુરુષપ્રમાણદીર્ઘ યપ્પિયોં કી માર સે, (પળોલિય) પળોલી-તાડન દડોં કી માર સે, (મુદ્ધિ) મુદ્ધિયો-મુદ્ધોં કી માર સે, (લત્ત) લાતોં કી માર સે, (પાયપણ્ઠિ) એડિયોં કી માર સે, (જાણુ) ઘુટનો કી માર સે તથા કોહનિયો કી માર સે હઢી પસલી સવ એક કર દેતે હૈં-મતલબ યે કિ વે હન્નેં જો હનકે હાય મેં આ જાના હૈં ઉસી સે

છે રાજમાર્ગને મહાપથ અને સામાન્ય માર્ગને પથ હો છે “ વેત્તદડ-લડ-કટ્ટ લેટ્ટ-પત્થર-પળાલિય પળોલિય-મુદ્ધિ-લત્ત-પાયૂ-પણ્ઠિ-જાણૂ-કોપ્પર પ્પહાર-સમગ્ગમયિતગત્તા ” રાજપુરુષો ને ચોરોને નેતરની સોટીઓથી, લાડડીઓથી લાડડીથી માટીના ઢેકાથી પથ્થરોથી, “ પળાલિય ” પુરુષ માપની લાકડીથી, “ પળોલિય ” દડાઓથી, મુદ્ધાઓથી, લાતોથી, એડીથી, ઘુટણથી તથા કોણીથી આગી ગીતે મારે છે, એટલે કે તેમના હાથમા જે માધન આવે તેનાથી તે લોડો તેમને ખડુ જ ખરાબ ગીતે માર મારે છે “ અદ્ધારસકમ્મકારિણો ” તે

ભેદગ્રહણાય નાનાવિધ મિથ્યાભાષિણ, ' પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ ' પરલોક પરાદ્મુત્તાનાં= પરલોકભયરહિતાનામિત્યર્થઃ, ' નિરયગદ્ગામિયાણ ' નરકગતિગામિકાનામેવભૂ- તાના રાજપુરુષાણાં પુરત ઉપનીતાઃ ' તેહિ ય ' તેથ રાજપુરુષૈઃ ' આણત્તજીવદડા ' આજ્ઞાત્તજીવદડાઃ=આજ્ઞાત્તઃ=આજ્ઞાપિતઃ જીવદડ્ઢઃ=શૂલારોપણાદિકઃ યેમ્પસ્તે તથા આજ્ઞાત્તમૃત્યુદડા इत्यर्थः, તથા ' તુરિય ઉગ્રાડિયા પુરવરેહિ સિંઘાડગતિયચઢકચ ચ્ચરમહાપદ્મપદ્મસુ ' શ્રુગાટકત્રિકચતુષ્કચત્વરમહાપથપથેષુ=ત્ર-શ્રુગાટકઃ=ત્રિકો- નમાર્ગઃ ત્રિકઃ=યત્ર માર્ગત્રયસમ્મેલન ભવતિ, ચતુષ્કઃ=ચતુર્માર્ગમ્થાન ચત્વરઃ=

ગાળ) ચૌરાદિકોં કા ભેદ લેને કે લિયે અનેક પ્રકાર કી સેકડોં છૂટીર ચાતે વનાને મે વડે ચતુર હોતે હૈ, (પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ) પરલોકકા ભય હન્હે બિલકુલ નહીં હોતા હૈ । જો મનમેં આતા હૈ વહી અન્ડા માનકર કરતે રહતે હૈ । (નિરયગદ્ગામિયાણ) હસી કારણ મરને પર યે નરક- ગતિ મેં જાતે હૈ । અથ યે રાજપુરુષ હન્હે કયા ર દડ દેતે હૈ ? સો સૂત્ર- કાર પ્રદર્શિત કરતે હૈ (તેહિ ય) યે રાજપુરુષ (આણત્તજીવદડા) इन चोरों को शूलारोपण आदि मृत्युदंड देते हैं । (पुरवरेहि) नगर के (सिंघाडगतियचउक्कचचरमहापदपद्मसु) श्रुगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ एव पथ इन सप्त मार्गों में (तुरिय उग्राडिया) शीघ्र उन्हें दिखा र कर यह घोषित करते हैं कि “ देखो भाईयों ! ये महाचोर हैं और आज ही इनको मृत्युदंड दिया जायगा । सिंघाडे जैसा तिकानों जो मार्ग होता है उसका नाम श्रुगाटक, जहा तीन मार्गों का समेलन है उसका नाम त्रिक, जिस रास्ते में चार रास्ता आकर मिलते हैं उस का

ચોર આદિનો ભેદ બાણુવાને માટે અનેક પ્રકારની સેકડો બુઢી વાતો બનાવી ઢાઢવામા તે નિપુણ હોય છે, “ પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ ” તેમને પરલોકનો ડર બિલકુલ હોતો નથી, તેમને મનમા આવે તે જ સારુ માનીને કરે છે ‘ નિર- યગદ્ગામિયાણ ” તે કારણે મરીને તેઓ નરકગતિમા બંધ છે હરે તે રાજ- પુરુષો તેમને કેવી કેવી સજા કરે છે, તે સૂત્રકાર બતાવે છે—“ તે હિ ય ” તે રાજપુરુષો “ આણત્તજીવદડા ” તે ચોરોને શૂલારોપણ આદિ મૃત્યુદંડ દે છે “ પુરવરેહિ ” નગરના “ સિંઘાડગતિયચઢકચચ્ચરમહાપદ્મપદ્મસુ ” શ્રુગાટક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ અને પથ એ બધા માર્ગો પર “ તુરિય ઉગ્રાડિયા ” તેમને ઝડપથી બતાવીને એવું બાહર કરે છે કે ‘ ભાઈઓ ! જુવો, આ મહાન ચોર છે, અને આજે જ તેને મૃત્યુદંડ આપવાનો છે ” સિંઘાડા જેવા ત્રિકોણાકાર માર્ગને શ્રુગાટક કહે છે, બધા ત્રણ રસ્તા મળે તે ત્રિક, બધા ચાર રસ્તા મળે તે ચતુષ્ક, બધા અનેક માર્ગો મળે તેને ચત્વર કહે

भलन १, कुशल २, तज्जर्जा ३, राजभागो ४, अवलोकनम् ५ ।
 अमार्गदर्शन ६, शय्या ७, पदभङ्ग ८, स्तथैव च ॥ १ ॥
 विश्रामः ९, पादपतन १०, आसन ११, गोपन १२ तथा ।
 खण्डस्य खादन चैव १३, तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥
 पद्या १५, गन्धु १६, दक १७ रज्जुना १८, प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।
 एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥
 तत्र भलनं=‘न भेतव्य भयता तत्र पक्षेऽहमपि सम्मिलिष्यामी’त्यादि वचनैः

चोरी अटारह प्रकार की इस तरह से है—

“ भलन १ कुशल २ तज्जर्जा ३ । राजभागो ४ अवलोकनम् ५ ।
 अमार्गदर्शन ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥
 विश्राम ९ पादपतन १० । आसन ११ गोपन १२ तथा ।
 खण्डस्य खादन चैव १३ । तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥
 पद्या १५ गन्धु १६ दक १७ रज्जुना १८ । प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।
 एताः प्रसूतयो ज्ञेया । अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥

भलन १, कुशल २, तज्जर्जा ३, राजभाग ४, अवलोकन ५, अमार्ग-
 दर्शन ६, शय्या ७, पदभग ८ ॥ १ ॥ विश्राम ९, पादपतन १०, आसन ११,
 गोपन १२, खण्डखादन १३, मोहराजिक १४ ॥ २ ॥ पद्यदान १५, अग्नि-
 दान १६, उदकदान १७, रज्जुप्रदान १८ ॥ ३ ॥

“ तुम डरो मत-में भी तुम्हारे पक्षमें मिल जाऊंगा ” इत्यादि

चोरीना अटार प्रकार नीचे प्रमाणे ७—

“ भलन १, कुशल २, तज्जर्जा ३ राजभागो ४ अवलोकनम् ५ ।
 अमार्गदर्शन ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥
 विश्राम ९ पादपतन १० आसन ११ गोपन १२ तथा ।
 खण्डस्य खादन चैव १३ तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥
 पद्या १५ गन्धु १६ दक १७ रज्जुना १८ प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।
 एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥

(१) भलन, (२) कुशल, (३) तज्जर्जा (४) राजभाग (५) अवलोकन, (६)
 अमार्गदर्शन, (७) शय्या, (८) पदभग ॥ १ ॥ (९) विश्राम, (१०) पादपतन
 (११) आसन, (१२) गोपन, (१३) खण्डखादन, (१४) मोहराजिक ॥ २ ॥ (१५)
 पद्यदान, (१६) अग्निदान, (१७) उदकदान अने (१८) रज्जुप्रदान ॥ ३ ॥

(१) ‘ तमो डरशो मा-हु पणु तमारा पक्षमा मणी नयश ’ वगेरे

‘અઢારસકમ્મકારિણો’ અષ્ટાદશકર્મકારિણઃ=અષ્ટાદશચોરમમૃતિકારકાઃ અષ્ટાદશમકારૈશ્ચૌર્યં ભવતિ તત્કારકા ઇત્યર્થઃ । અથ ચોરસ્ય ચોર્યકર્મણશ્ચ લક્ષણમુક્તગ્રન્થાન્તરે—

“ચોરઃ ૧, ચૌરાપકો ૨, મન્ત્રી ૩, મેદજઃ ૪, કાળક્રક્રયી ૫ ।

અન્નદઃ ૬, સ્થાનદશ્ચૈવ ૭, ચોરઃ સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥ ૧ ॥ ”

ચોરઃ=ચોર્યકારકઃ ૧, ચૌરાપક=ચૌરાય વસ્તુસમર્પકઃ ૨, મન્ત્રી=ચૌરાય સમ્પ્રતિદાયકઃ ૩, મેદજઃ=‘કુત્ર કસ્ય ગૃહે કયા રીત્યા કસ્મિન્ સમયે ચોરી કર્તવ્યે’—ત્યાદિ ભેદજ્ઞાતાર ૪, કાળક્રક્રયી=ચોરા નીત ગુહમૂલ્યવસ્તુકાળક હીન કૃત્વા ય ક્રીગાતિ સઃ ૫, અન્નદઃ=ચૌરાય-ચોર્યમન્નદાયક, ૬, સ્થાનદઃ=ચૌરાય વિશ્રામાર્થ સ્વગૃહાદો સ્થાનદાયકઃ ૭, ઇતિ સપ્તવિધશ્ચોરઃ । અથ ચોર્યકર્મ યથા—

ધુરી તરહ મારતે હૈ । (અઢારસકમ્મકારિણો) યે ચોર અઢારહ પ્રકાર સે જો ચોર્યકર્મ કિયા જાતા હૈ ઉસમેં નિપુણ હોતે હૈ । ગ્રન્થાન્નર મેં ચોર ઓર ચોરી કે લક્ષણ ઇસ પ્રકાર કહે હુણ હૈ—

“ચોરઃ ૧ ચૌરાપકો ૨ મન્ત્રી ૩, મેદજઃ ૪, કાળક્રક્રયી ૫ ।

અન્નદઃ ૬ સ્થાનદશ્ચૈવ, ચોરઃ, સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥૧॥ ”

જો સ્વયં ચોરી કરતા હૈ ૧, ચોરી કો વસ્તુ દેતા હૈ ૨, ચોરી કો સમતિ દેતા હૈ ૩, કિસ સમય કિસકે ઘર મેં કિસ રીતિ સે કહા ચોરી કરની ચાહિયે ઇત્યાદિ રૂપ સે જો ચોરી કો ચોરી કરને કા ભેદ દેતા હૈ ૪, ચોરી કે દ્વારા લાઈ ગઈ વહુ મૂલ્ય વસ્તુ કો જો અલ્પમૂલ્ય દેકર ખરીદતા હૈ ૫, જો ચોરી કે લિયે ખાને પીને કી વ્યવસ્થા કરતા હૈ ૬, તથા ચોરી કે લિયે વિશ્રામનિમિત્ત જો અપને ઘર આદિ મેં સ્થાન દેતા હૈ ૭ યે સબ ચોર હૈ । ઇસ પ્રકાર યે સાત તરહકે ચોર કહે ગયે હૈ ॥૧॥

ચોર જે અઢાર પ્રકારે ચોરી કરવામા આવે છે તેમા નિપુણ હોય છે બીજા ગ્રન્થમા ચોર અને ચોરીના આ પ્રમાણે લક્ષણો બતાવ્યા છે

“ચોરઃ ૧ ચૌરાપકો ૨ મન્ત્રી ૩ મેદજઃ ૪ કાળક્રક્રયી ૫ ।

અન્નદ ૬ સ્થાનદશ્ચૈવ, ચોરઃ સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥ ૧ ॥ ”

(૧) જે પોતે જ ચોરી કરે છે, (૨) જે ચોરીને વસ્તુઓ આપે છે, (૩) જે ચોરીને સમતિ આપે છે, (૪) ક્યારે, કેના ઘરમા, કઈ રીતે ચોરી કરવી જોઈએ ઇત્યાદિ પ્રકારે જે ચોરીને ચોરી કરવાનું રહસ્ય બતાવે છે, (૫) ચોરી દ્વારા ચોરી લાવવામા આવેલી કીમતિ ચીજોને જે ઓછી કીમતે ખરીદે છે, (૬) જે ચોરીને માટે ખાવા પીવાની વ્યવસ્થા કરે છે તથા (૭) જે ચોરીને પોતાના ઘરમા આશ્રય આપે છે, તે બધા ચોર ગણાય છે, આ રીતે સાત પ્રકારના ચોર બતાવ્યા છે ॥ ૧ ॥

શયનીયસ્તુદાનમિત્યુભયોર્ભેદ. પાદપતન=પણામાદિના ચૌરાણા સત્કારસમ્માન-
કરણમ્ ૧૦, આસનમ્=આમનદાન ૧૧, ગોપન=નાડનેન ચૌર્ય કૃત સ્વગૃહે સ્થાપ-
યિત્વા નાસ્ત્યત્રેતિ વા કયનેન ચોરસન્નોપન ૧૨, સ્વણ્ડસ્ય સ્વાદન=ચારેભ્યો-
મિષ્ટાન્નાદિદાન ૧૩, તથાડન્યન્મોહરાજિકમ્=લોકપ્રસિદ્ધ્યા પરગણ્ટે ગત્વા વસ્તુ
વિક્રયઃ ૧૪, તથા જ્ઞાનપૂર્વકમ્='ચોરોડય' મિતિ તુલ્લિપૂર્વક પાદ્યાગ્ન્યુદકરજ્જૂના
પ્રદાન=માર્ગગમનપ્રમાપનોદાર્થ પાત્ર=પાદાય દિત્તમુષ્ણતૈલજલાદિ, તસ્ય દાન ૧૫,
પાકાગ્ન્યમગ્નિદાનમ્ ૧૬, ઉદકદાન=પાનાર્ય જલદાન ૧૭, તથા ચોરીતગોમ

ઠહરાના-વિશ્રામ દેના હસકા નામ વિશ્રામ હૈ ૯ । શય્યાદાન ઓર
વિશ્રામ મેં અન્તર કેવલ ઇતના હી હૈ કિ શય્યાદાન તો દૂસરી
જગહ ઠહરને પર ખી દિયાં જા સકતા હૈ પરન્તુ વિશ્રામ અપને ઘર મેં
હી દિયા જાતા હૈ ૯ । ચોરોં કે ચરણોં પર ગિરકર ડનકા આદર સત્કાર
કરના હસકા નામ પાદપતન હૈ ૧૦ । વૈઠને કો આસન દેના યહ આસ-
નદાન હૈ ૧૧ । “ હસને ચોરી નહીં કી હૈ, ઘર મેં હોને પર ખી ઘર મેં
ચોર નહીં હૈ ” હસ પ્રકાર કહ કર ચોર કી રક્ષા કરના હસકા નામ
ગોપન હૈ ૧૨ । ચોરોં કે લિયે સ્થાને કોં મિષ્ટાન્ન આદિ દેના હસકા નામ
સ્વણ્ડ સ્વાદન હૈ ૧૩ । નાકા ઘડી હોને પર દૂસરે સ્થાન મેં, અથવા લોક
પ્રસિદ્ધિ સે પરરાષ્ટ્ર મેં ઇકદેશસે લે જાકર દૂસરે દેશમેં વેચના હસકા
નામ મોહરાજિક હૈ ૧૪ । “ યહ ચોર હૈ ” ઇસા જાનકર ખી ડસે પદ્ય,
અગ્નિ, ઉદક, રજ્જુ દેના, પૈરોં કી ધક્કાવટ મિટાને કે લિયે ગર્મ જલ
તૈલ આદિ કા દેના પદ્ય હૈ ૧૫ । મોજન વનાને કે લિયે અગ્નિ દેના ૧૬ ।

ચોરોને પોતાના ધરમા આગ્રય આપવો તેને વિશ્રામ ડહે છે શય્યાદાન તથા
વિશ્રામમા તદ્વાવત એટલો જ છે કે શય્યાદાન તો ખીજી જગ્યાએ રહે તો
પણ આખી રાજાય છે પણ વિશ્રામ પોતાના ધરમા જ અપાય છે (૧૦)
ચોરોને ચરણે નખીને તેનો આદર સત્કાર ડરવો, તેણે પાદપતન ડહે છે, (૧૧)
બેઠવાને આસન આપવું, તેને આસનદાન ડહે છે, (૧૨) “ આ માણમે
ચોરી કી નથી, ધરમા ચોર છુપાવ્યો હોય છતાં પણ ચોર ધરમા નથી ”
એ પ્રમાણે ડહાને ચોરની રક્ષા ડરવી, તેને ગોપન ડહે છે (૧૩) ચોરોને
ખાવાને માટે મિષ્ટાન્ન દેવું, તેને સ્વણ્ડસ્વાદન ડહે છે (૧૪) નાકાળ ધી હોવા
છતાં ખીજી જગ્યાએ અથવા એક દેગમાથી લઈ જઈને ખીજા દેશમા માલ
વેચવો, તેને મોહરાજિક ડહે છે (૧૫) “ આ ચોર છે ” એવી ખબર હોવા
છતાં પણ તેને પદ્ય, અગ્નિ, ઉદક (પાણી), રજ્જુ (દોરડું) દેવું તે પણ
ચોરીના જ પ્રકારો છે, પગને થાક દૂર ડરવાને માટે ગરમ પાણી, તેલ આદિ

ચોરાણામુત્સાદદાન ૧, કુશલ=ધુલદુ ગાદિ પૃચ્છા ૨, તર્જા=ચોરમ્ય દસ્તાદિસંકેત
કરણ ૩, રાજભાગ:=રાજકરસ્યાડપદાનમ્ ૪, અવલોકન=ચાર્ય કુર્વત-ઉપેક્ષાપૂર્વક
પ્રેક્ષણ ૫, ચોર્યમવલોકયાડપિ સ્વામિનિ પ્રત્યક્ષધનમિત્યર્થઃ, અમાર્ગદર્શન=ચોરાણા
રક્ષાર્થમુન્માર્ગપ્રદર્શન, ચોરમાર્ગપ્રચ્છન્નાનામન્યમાર્ગદર્શન ચા ૬, શય્યા=ચોરાય શ
ય્યાદાન ૭, પદમજ્જ=પશુના સન્ધ્યાલનેન ચોરાણા ગમનાડગમનમાર્ગાદ્વિતચરણચિહ્ન
લક્ષ્મકરણ ૮, તથૈવ વિશ્રામઃ=સ્વગૃહે નિવાસદાન ૯, શય્યાદાનમન્યપ્રાપ્યુપવેશનાદર્થ

ઉત્સાહ વર્ધક વચનોસે ચોરોક્તા ઉત્સાહ અધિકાદાના ઇસકા નામ મલન
હૈ ૧ । ચોરોં કે સુખ-દુઃખ આદિ કે સમાચાર પૃચ્છના ઇસકા નામ કુશલ
હૈ ૨, હાથ આદિ કે સંકેત સે ચોરોં કો ઇશારા કરના ઇસકા નામ તર્જા
હૈ ૩ । નિર્ધારિત રાજદેક્ષ કા નહીં દેના ઇસકા નામ રાજભાગ હૈ ૪ ।
ચોરી કરતે હુણ ચોર કો ઉપેક્ષાપૂર્વક દેખના, ઇસકા નામ અવલોકન
હૈ, અર્થાત્ ચોર કો ચોરી કરતે હુણ દેખકર કે ભીં અપને માલિક સે
નહીં કહના-યહ ભીં ચોરી કા પ્રકાર હૈ ૫ । ચોરોં કી રક્ષા કે અભિપ્રાય
સે અન્વેષણ કરને વાલોં કો અમાર્ગ પ્રદર્શન કરના ઇસકા નામ અમાર્ગ
દર્શન હૈ ૬ । ચોરોં કે લિયે સોનેકો શય્યા દેના ઇસકા નામ શય્યા
હૈ ૭ । ચોરોં ને જહાં ચોરી કી હો વહાં અનેકે માર્ગ મેં ચરણચિહ્ન
અકિત હો ગયે હો તો અનેક ચિહ્નોં કો નષ્ટ કરને કે લિયે અને પર સે
પશુઓં કો નિકાલના કિં જિસસે વે નષ્ટ હો જાયેં ઓર પહિચાનને
મેં ન આને પાવે, ઇસકા નામ પદમજ્જ હૈ ૮ । અપને ઘર મેં ચોરોં કો

ઉત્સાહ વર્ધક વચનો દ્વારા ચોરોને ઉત્સાહ વધારવાની ક્રિયાને મલન કહે છે
(૨) ચોરોને સુખ દુખ વગેરેના સમાચાર લાવનારને કુશલ કહે છે (૩) હાથ
આદિના સંકેતથી ચોરોને ઇશારા કરવા તેનું નામ તર્જા છે (૪) નક્કી
થયેલા રાજભાગ-ગબ્તના કર ન દેવા તેનું નામ રાજભાગ છે, (૫) ચોરી
કરતા ચોરને ઉપેક્ષાપૂર્વક જોવો તેને અવલોકન કહે છે, એટલે કે ચોરને ચોરી
કરતો જોવા છતાં પણ પોતાના માલિકને નહીં કહેવું તે પણ ચોરીનો જ
પ્રકાર છે (૬) ચોરોની રક્ષા કરવાને માટે તેમની શોધ કરનારને જોટો માર્ગ
ખતાવવો તેને અમાર્ગદર્શન કહે છે (૭) ચોરોને સૂવાને માટે પથારી દેવી તેને
શય્યા કહે છે (૮) ચોરોએ જ્યાં ચોરી કરી હોય ત્યાં તેના માર્ગમાં તેના
પગલા પડ્યા હોય તો તે પગલાનો નાશ કરવાને માટે તેમના પર પશુ-
ઓને દોડાવવા કે જેથી તે પગલા ભૂસાઈ જાય અને જોળખી ન રાહાય
આ પ્રકારે પગલાના નિશાનોનો નાશ કરવાની ક્રિયાને પદમજ્જ કહે છે (૯)

ધ્રોઢ્યમાના = વચ્ચે = વચ્ચેસ્થાને = શૂળારોપણસ્થાને પુરુષૈઃ = તત્ર નિયુક્તૈઃ રાજપુરુષૈઃ
ગ્રાહ્યમાનાઃ = ખેંચમાનાઃ નીચમાના ઇત્યર્થઃ, 'તપિ ય ન લહતિ' તદપિ ચ ન
લભન્તે = જલમાત્રમપિ પાતુ ન માપ્નુવન્તિ, કિમન્ય ? દિત્યર્થ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

અપિ ચ—'તત્થ ય' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તત્થ ય સ્વરફરુસ-પટહ-ઘટ્ટિયા-કૂડગ્ગહગાઢરુટ્ટનિસિટ્ટ
પરામદ્ધા વજ્જકરકુડિજુયનિવાસિયા સુરત્તકણવીરગઢિયવિમુકુલ
કંઠે ગુણવજ્જ-દૂય આવિદ્ધમહ્લદામમરણ ભયુપ્પણ સેયઆયત્તણે-
હુત્તપ્પિયકિલિપ્પણગત્તાચુપ્પણગુડિયસરીરયરેણુભરિયકેસા કુસંભ-
ગુફ્ફિપ્પણમુદ્ધયા છિપ્પણજીવિયાસા ઘુપ્પણતા વજ્જપાણપ્પિયા તિલ
—તિલ ચેવ છિજ્જમાણાસરીરવિકત્તલોહિઓ-લિત્તકાગણિમંસા-
ણિસ્વાવિયતા પાવા સ્વરકરસપ્પહિ તાલિજ્જમાણદેહા વાતિગનર-
નારિસંપરિવુડા પિચ્છિજ્જતા ય નાગરજણેણ વજ્જનેવત્થિયા
પણિજ્જતિ ણગરમજ્જેણ કિવ્વણકલ્લુણા અત્તાણા અસરણા
અણાહા અવધવા વધુવિપ્પહીણા વિપિવલ્લંતા દિસોદિસિમર-
ણભયુવિવગ્ગા અવાયણપહિદુવારસપાવિયા અવણ્ણા સૂલગ્ગ-
વિલગ્ગભિપ્પણદેહા, તે ય તત્થ કીરતિ પરિકપ્પિયગુવંગા ॥ સૂ. ૧૬ ॥

ટીકા—'તત્થ ય' તત્ર ચ વચ્ચેસ્થાને 'સ્વરફરુસપટહઘટ્ટિયા' સ્વરફરુપપટહઘટ્ટિતાઃ—
તત્ર સ્વરપરુપ = શૂળારોપણાદિ સદ્ધેતમૂચકત્વાદત્યન્તકઠોરો ય. પટહઃ = 'ઢોલ'

પુરિસેહિં) વધ્યસ્થાન પર નિયુક્ત હુએ પુરુષ જત્ર (ઘાઢિયતા) વધ્યસ્થાન
પર લેકર ચલતે હૈ તો ડન્હેં વહા (તપિ ય) એક ત્રિંદુ જલ ભી પીને કો
(ન લહતિ) નહી મિલતા હૈ । એસી હનકી દશા વન જાતી હૈ ॥ સૂ. ૧૫ ॥

ફિર ભી કહતે હૈ—'તત્થ ય' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તત્થ ય સ્વરફરુસ પટહઘટ્ટિયા) વહા વધ્યસ્થાન પર એક ઢોલ

પર નિયુક્ત થયેલ પુરુષો ત્યારે "ઘાઢિયતા" વધ્યસ્થાન તરફ લડી જાય છે, ત્યારે
તેમને ત્યાં "તપિ ય" પીવાને પાણીનું એક ટીપું પણ "ન લહતિ" મળતું
નથી તેમની એવી દશા થાય છે ॥ સૂ. ૧૫ ॥

વળી મૂત્રકાગ્ આગળ વર્ણન કરે છે—'તત્થ ય' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'તત્થ ય સ્વરફરુસ પટહઘટ્ટિયા' ત્યાં વધ્યસ્થાને એક ઢોલ રહે છે,

હિમાદિ વન્ધનાર્થે પ્રાસાદાદિપ્યારોહુ તા રજ્જુદાનમ્ ૧૮, इत्येतान्यष्टादशविधानि प्रसूतयः चौर्यकरणाणि ।

પુનઃ કીદશાસ્તે પરદ્રવ્યાપહારિણ ? इत्याह—‘पाइयंगुवगा’ पतिताङ्गो-
पाङ्गाः=पातितानि=प्रोटितान्यङ्गानि=हस्तपादादीनि, उपाङ्गानि च=अङ्गुलिकेश-
श्मश्वादीनि येषां ते तथा, कलुणा’ कल्पाः=दीनाः-पापमलिना इत्यर्थः ‘सुको-
ट्टकठगलतालुजिह्वा’ शुष्कोष्ठकण्ठगलतालुजिह्वा =ओष्ठौ कण्ठः=अक्षरोच्चारणस्थान
गल’-तदधो भागः तालु =प्रसिद्ध एतेषा समाहारः, जल विना शुष्कमोष्ठकण्ठगल-
तालु जिह्व येषा ते तथा, ‘तण्हा इत्ता’ तण्णादिता’=पिपासाऽऽकुलिताः सन्तः
‘पाणिय जायता’ पानीय याचमानः, ‘विगयजीवियासा’ विगतजीविताशा
=जीवनाशारहिताः ‘वरागाः=मन्दपुण्याः ‘वज्झपुरिसेहि घाडियता’ वध्यपुरुषै-

पीने के लिये जल देना १७, घुराई गई भैंस आदिको बाधने के लिये
तथा मकान आदि की छत पर चढ़ाने के लिये रस्सी देना १८। ये १८
प्रकारकी की चोरिया हैं ॥ ३ ॥

(पाइયગુવગા) ये परद्रव्यापहारी चोर हाथ पैर आदि अंगों में तथा
अंगुली, केश, श्मश्रु दाढीमूछ आदि उपांगोंमें कभी भी अक्षत नहीं रहते
हैं ! (कलुणा) ये सदा पाप से मलिन बने रहते हैं । तथा (सुकोट्ट कठग
लतालुजिह्वा) पानी के बिना ओष्ठ कठ गला ताल तथा जिह्वा ये सब
इसके शुष्क होते (सूकते) रहते हैं । (तण्हाइया) पिपासा से आकु
लित होकर ये (पाणिय जायता) “ पानी लाओ पानी लाओ ” इस
प्रकार याचना करते हुए (विगयजीवियासा) कभी २ अपने जीवन
की आशा से भी रहित हो जाते हैं । (वरागा) इन अभागों को (वज्झ

દેવા તે કિયાને પદ્ય ઝડે છે, (૧૬) ભોજન ખનાવવાને અગ્નિ આપવો,
(૧૭) પીવાને માટે પાણી આપવું અને (૧૮) ચોરેલી ગાય, ભેંસ આદિને
બાધવા માટે અને મકાન આદિના છાપરા પર ચડવાને માટે દોરડું દેવું, એ
૧૮ (અઢાર) પ્રકારની ચોરી હોય છે ॥૩॥

ટીકાર્થ—“ પાઈયગુવગા ” તે પરધનનુ અપહરણ કરનારા ચોર લોકોના
હાથ પગ આદિ અંગો, તથા આંગળીઓ, કેશ, નાડ, ઝાન આદિ ઉપાંગો કદી
પણ અક્ષત (છેદાયા વિનાના) હોતા નથી “ કલુણા ” તેઓ પાપથી સદા
મલિન રહે છે, તથા “ સુકોટ્ટકઠગલતાલુજિહ્વા ” તેમના હોઠ, કંઠ ગળુ,
તાળવુ તથા જીભ પાણી વિના શુષ્ક (સૂકાયલા) રહે છે “ તણ્હાઈયા ” તર
સથી વ્યાકુળ થઇને તે લોકો “ પાણિય જાયતા ” “ પાણી લાવો, પાણી, પાણી
લાવો ” એવી યાચના કરતા કરતા “ વિગય જીવિયાસા ” ક્યારેક તે જીવવાની
આશા પણ છોડી દે છે “ વરાગા ” તે બિચારાઓને “ વજ્ઞપુરિસેહિ ” વધસ્થાન

ગુણધ્યદૂતાવિદ્વમાલ્યદામાનઃ, તત્ર સુરત્તૈ કણવીરૈઃ=પુષ્પત્રિશેપૈઃ પ્રથિત=
 ગુમ્ફિત વિમુકુલ=વિકાસિત કળ્પે ગુણ ઇવ=કળ્પસૂત્રમિત્ર તથા વત્ર મુચકત્વાત્
 વ્યદૂતઃ=વધચિન્દમ્, -આવિદ્વ=પરિહિત માલ્યદામ=પુષ્પમાલ્ય યેષા તે તથા,
 'મરણમયુષ્પણ્ણસેયઆયતળેહુત્તપ્પિય કિલિણ્ણગત્તા' મરણમયોત્પન્નસ્વેદાયતસ્ને-
 હોત્તપિતવિલગ્નગાત્રાઃ, તત્ર મરણમયાદુત્પન્નેન સ્વેદેન=પસ્વેદેન આયતઃ=સર્વાંગે
 વ્યાપ્તો યઃ સ્નેહ.= આર્દ્રતા તેનોત્તપિતાનિ=સન્તપ્તાનિ વિઝ્ઞાનિ=આર્દ્રીકૃતાનિ
 ચ ગાત્રાણિ=શરીરાણિ યેષા તે તથા, મરણમયોત્પન્નપસ્વેદાર્દ્રીભૂતશરીરા इत्यर्थः,
 'ચુણ્ણગુહિયસરીરા' ચૂર્ણગુણ્ઢિતશરીરા = 'ચૂના' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધચૂર્ણદ્રવ્યા-
 વગુણ્ઢિતસર્વાંગાઃ, 'રયરેણુમરિયકેસા' રજો રેણુમરિતકેશા =રજોરેણુભિઃ=
 ધૂલિભિર્ભરિતાઃ=સમૃતાઃ કેશા યેષા તે તથા, 'કુમ્મભગુક્કિણ્ણમુદ્ધયા' કુસમ્મ-

મહ્લદામા) (સુરત્તકણવીરગહિય) કનેર કે લાલફૂલોં સે ગૃથી હુઈ
 (વિમુકુલ) વિકાસિત કળે ગુણકળ્પસૂત્ર તથા (વજ્જદૂય) વધમૂચક
 હોને સે વ્યદૂત-વધચિહ્ન સ્વરૂપ ણેસી (આવિદ્વમહ્લદામા) ફલમાલ
 જિનકો પહિનાઈ જાતી હૈ (મરણમયુષ્પણ્ણસેયઆયતળેહુ ત્તપ્પિય કિલિ-
 ણ્ણગત્તા) (મરણમયુષ્પણ્ણસેય) મરણ કે ભય સે ઉત્પન્ન હુણ સ્વેદ-
 પસીને સે (આયતળેહ) હનકે અગ ગીલે હો જાતે હૈ હસસે હનકા
 શરીર (ઉત્તપ્પિય) જલને લગતા હૈ જિસસે (કિલિણ્ણગત્તા) હનકા
 સય શરીર પસીને સે ઝરતા રહતા હૈ (ચુણ્ણગુહિયસરીરા) હનકે શરીર
 પર ચૂના લપેટ દિયા જાતા હૈ જિસસે અધિક જલન હોતી હૈ । તથા
 (રયરેણુમરિયકેમા) હનકે કેશોં પર વાહર કી ધૂલિ ઉઢકર ભર જાતી
 હૈ । કારણ હનકે પાસ હસ સમય ણેસે સાધન નહી હોતે હૈ જિસસે

જ્ઞદૂયઆવિદ્વમહ્લદામા ” “ સુરત્તકણવીરગહિય ” ડરેણુના લાલ ફૂલોમાથી
 ગૂથેલી “ વિમુકુલ ” ડઠમા રહેલા ડઠાભરણુ જેવી, “ વજ્જદૂય ” વધ સૂચક
 હોવાથી-વધ્યદૂતવધચિહ્ન જેવી “ આવિદ્વ મહ્લદામા ” ફૂલમાળા તેમને પહેરા-
 વવામા આવે છે “ મરણમયુષ્પણ્ણસેયઆયતળેહુત્તપ્પિયકિલિણ્ણગત્તા ”
 “ મરણમયુષ્પણ્ણસેય ” મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પસીનાથી “ આયતળેહ ”
 તેમના અગ ભીના થાય છે, તે ભયથી તેમના શરીર “ ઉત્તપ્પિય ” બળવા
 લાગે છે, અને તે ડારણુ “ કિલિણ્ણગત્તા ” તેમનુ આખુ શરીર તરબોળ થાય
 છે “ ચુણ્ણગુહિય સરીરા ” તેમના શરીર પર ચૂનો ચોપડ્યો હોય છે, જેથી
 શરીરમા વધારે બળતરા થાય છે, તથા “ રયરેણુમરિયકેસા ” તેમના વાળમા
 બહારની ધૂળ ઉડીને ભરાય છે, ડારણુ કે તે સમયે વાળ ઓળવાના સાધનો
 તેમની પાસે હોતા નથી “ કુસુમગુક્કિણ્ણમુદ્ધયા ” “ કુસુમગ ” કૌસુબી

इति भाषा प्रसिद्धस्तेन राघमानेन सह राजपुरुषैर्नीयमानाः सन्तो घट्टिताः=
वेत्र यष्ट्यादिभिस्ताडिताः मार्यमाणा इत्यर्थः, 'कूडगगहगाढरुष्टनिसिद्धपरामद्धा'
कूटग्रहगाढरुष्टनिसृष्टपरामृष्टा = तत्र कूटग्रहत्वात्=कूटेन=छलप्रपञ्चेन चौरस्य
परधनप्राप्तित्वाद् गाढरुष्टैः= अतिक्रुदैः राजपुरुषैः निसृष्टाः= अपहृतयना,
निर्धना इत्यर्थः, पुनः परामृष्टाश्च=गृहीता ये ते तथा 'वज्रकरकुडिजुय निवसिया'
वध्यकरकुटीयुगनिवसिताः= वध्यानां यत् करकुटीयुग = निन्द्यरस्रमिशेषद्वय
तन्निवसित=परिग्राहित येषां ते तथा वयमग्रधारिण इत्यर्थः, 'सुरत्तकगवीरगहि
यविमुकुलकठे गुणलज्जद्वय आविद्धमल्लदामा' सुरत्तकगवीरग्रहितविमुकुलकठे

રહતા હૈ ઓર જન જિસકા શૂલારોપણ કા હોતા હૈ તન વહ યજતા હૈ
અતઃ શૂલારોપણ આદિ સકેત કા સૂચક હોને સે વહ સ્વરપરુષ-અત્યત
કઠોર માના ગયા હૈ, જૈસે હી વહ યજાતા હૈ કિ રાજપુરુષ ઉસ વધ્ય
વ્યક્તિ કો સાધમે લેકર ચલ દેતે હૈ । ઓર રાસ્તે મેં વે ઉનચોરોં કો
વેત્ર-યષ્ટ્યાદિ સે તાડિત ભી કરતે જાતે હૈ । (કૂડગગહગાઢરુષ્ટનિસિદ્ધ
પરામદ્ધા) યે રાજપુરુષ ઉન ચોરો પર(કૂડગગહ) છલપ્રપચ સે પરધન કો
અપહરણ કરને કે કારણ (ગાઢરુષ્ટ) અત્યંત રુષ્ટ હો જાતે હૈ, ઓર હસીસે
(નિસિદ્ધ) અપહત દ્રવ્ય કો છીન ભી લેતે હૈ, ઓર ઘાદ મેં ઉન્હેં (પરા-
મદ્ધા) પકડ લેતે હૈ (વજ્રકર કુડિ જુયનિવસિયા) જન વે શૂલી પર
ઉન્હેં ચઢાને કે લિયે લે જાતે હૈ તો હસકે પહિલે ઉન્હેં વે વધ્યપુરુષોં કો
(વજ્રકરકુડિજુય) પહિરાને કે યોગ્ય નિંદ્ય દો વસ્ત્ર (નિવસિયા)
પહિરા દેતે હૈ (સુરત્તકગવીરગહિય વિમુકુલકઠે ગુણવજ્ર દ્વય આવિદ્ધ-

જ્યારે કોઈને શૂળી પર ચડાવવાનો સમય થાય છે ત્યારે તે વગાડનામા આવે
છે તેથી શૂલારોપણ આદિ સકેત દર્શાવનાર હોવાથી તેને સ્વરપરુષ અત્યત
કઠોર કહેલ છે જેવો તે ઢાલ વાળો છે, એ તે રાજપુરુષો તે વધ્ય વ્યક્તિને
લઇને ઉપડે છે, અને રસ્તામા તે લોકો તે ચોરોને સોટી, લાડડી આદિથી
ફટકારે છે. “કૂડગગહગાઢરુષ્ટનિસિદ્ધપરામદ્ધા” તે રાજપુરુષો તે ચોરો પર
“કૂડગગહ” છળકપટથી પરધનનું હરણ કરવાને લીધે “ગાઢરુષ્ટ” અત્યત
ક્રોધે ભરાય છે, અને તેમની પાસેથી તે લોકો “નિસિદ્ધ” ચોરેલા દ્રવ્યને
છીનવી પણ લે છે અને પછી તેમને “પરામદ્ધા” પકડી લે છે “વજ્રકરકુ
ડિજુયનિવસિયા” જ્યારે તેઓ તેમને શૂળીએ ચડાવવા લઇ જાય છે ત્યારે
વધ્ય પુરુષોને પહેરાવવા “વજ્રકરકુડિજુય” લાયક, જે નિંદ્ય વસ્ત્રો
“નિવસિયા” તેમને પહેરાવે છે “સુરત્તકગવીરગહિયવિમુકુલકઠે ગુણવ

પાપિનઃ 'સ્વરકરમણ્ઠિં તાન્નિજ્જમાણદેહા' સ્વરકરગતૈસ્તાડ્યમાનદેહા' = અતિચિ-
ક્ષણપાપાણભૂતત્ત્વમ્કોશગતૈઃ 'કુરુરમરે ચાતુરુ' इति भाषाप्रसिद्धैः ताड्यमानदेहा
= ताड्यमानशरीराः तथा 'वातिगनरनारिसपरिवुडा' वातिक नरनारीसम्परिवृताः
तत्र-वातिकैः = उच्छ्रितैः नरैर्नारीभिश्च सपरिवृता' = युक्ताः मर्यादावर्जितनरनारी-
वृन्दवेष्टिता इत्यर्थः, 'पिच्छिज्जता य नागरजणेण' नागरजनेन दृष्टु समागतेन
प्रेक्ष्यमानाः 'वज्झनेवत्थिया' वध्यनेपथ्यिका = वययोग्य नेपथ्य येषा ते वध
नेपथ्यिकाः = परिधृतयातयस्त्रवेपाः, 'णगरमज्झेण' नगरमध्येन = पुरमभ्यभागमार्गेण
'पणिज्जति' प्रणीयन्ते = नीयन्ते 'क्खिणिक्कलुणा' कृपणकरुणा = कृपणेष्वपि
करुणा अतिदीना इत्यर्थः, 'अत्ताणा' अत्राणा = त्राणवर्जिता अनर्थनिवारका-
भावात् 'असरणा' अशरणाः = शरणहीना - योगक्षेमकारिरहितत्वात् अतएव
'अणाहा' अनाथाः = नाथवर्जिता 'अवधवा' अयान्धवा = यान्धवरहिता तथा

ये વડે અધિક પાપી હોતે હે. (સ્વરકરમણ્ઠિં) અતિચિક્ષણ પાપાણ-
સહોં સે ભરે છુત્ત એસે મૈકડો કોડો કી (તાલિજ્જમાણદેહા) ઇનકે શરીર
પર મારપડની હૈ. તથા (વાતિગનરનારિસપરિવુડા) મર્યાદા વર્જિત
નરનારિ ગણ સે યે વેષ્ટિત રહતે હે. (પિચ્છિજ્જતા ય નાગરજણેણ) ઇન્હે
દેખનેકે લિયે નાગરિકજન આતે હે. (વજ્ઝનેવત્થિયા) ઇનકી વેશ-
ભ્રષ્ટા ચ યયોગ્ય હોતી હૈ. (ણગરમજ્ઝેણ પણિજ્જતિ) રાજપુરુષ ઇન્હે નગર
કે ભીતર સે હોકર હી નિકાલતે હે. (ક્કિવિણક્કલુણા) ઉસ સમય યે
દીનોં સે ભી અતિદીન હોતે હે (અત્તાણા) અનર્થ કો નિવારણ કરને
વાલા કોઈ નહીં હોને સે ઇનકી કોઈ રક્ષા કરને ચાલા નહીં હોતા હૈ, ઇસ-
લિયે યે અત્રાણ હોતે હ, (અસરણા) યોગ, ક્ષેમકારી પુરુષ સે રહિત
હોનેકે કારણ યે અશરણ-શરણ હીન હોતે હૈ. (અણાહા) અનાથ રક્ષકકે
અભાવ સે યે અનાથ હોતે હૈ, તથા (અવધવા) વધુઓં કો અભાવ સે

ગવે "પાપા" તે ઘણા જ પાપી હોય છે "સ્વરકરમણ્ઠિં" અતિગત ચિહ્ન
પથરના ટુકડાઓથી ભરેલા સે ઠડો ઠોરડાઓનો. 'તાલિજ્જમાણદેહા' તેમના શરીર
પર માર પડે છે તથા "વાતિગનરનારિસપરિવુડા" મર્યાદા રહિત સ્ત્રી પુરુષોના
અમૃદથી તેઓ વીટણાયેલા રહે છે "પિચ્છિજ્જતા ય નાગરજણેણ" તેમને જોવાને
માટે નાગરિકો આવ્યા હરે છે "વજ્ઝનેવત્થિયા" તેનો પોપાડ વધ્યને યોગ્ય હોય છે
"ણગરમજ્ઝેણ પણિજ્જતિ" રાજપુરુષો તેમને નગરની વચ્ચે થઈને લઈ જાય છે
'ક્કિવિણક્કલુણા' ત્યારે તે લોકોને અતિગત દીનદયા અનુભવે છે "અત્તાણા" તે
યાતનામાથા તેમને યથાવનાર કોઈ ન હોવાથી તે લોકો અત્રાણ રક્ષણુવગરના હોય
છે, "અસરણા" તેમને ગરબુ આપનાર કોઈ પુરુષ ન હોવાથી તેઓ અશરણુ
હોય છે "અણાહા" રક્ષકને અભાવે તેઓ અનાથ હોય છે, "અવધવા"

ફોત્કીર્ણમૂર્ધજાઃ=કુસુમકેન=રાગપિથેપેણ ઉત્કીર્ણાઃ=વ્યાસા મૂર્ધજાઃ કેજા યેષાં તે તથા રક્તરાગરક્તિકેશધારિણ इत्यर्थः, ' છિન્નજીવિયાસા ' છિન્નજીવિતાશ્નાઃ =જીવનાશારહિતા ' ઘુળ્ણતા ' ઘૂર્ણમાનાઃ=મરણભયવ્યાકુલત્વાત્ ' વજ્રપાણપિયા વધ્યપ્રાણમિયાઃ=વધ્યાઃ=હન્તવ્યા એવ પ્રાણા પ્રિયાઃ યેષા તે તથા, ' તિલ તિલ ચેવ ઊજ્જમાણા ' તિલ તિલમિચ્છિદ્યમાનાઃ રાજપુરુષૈઃ પ્રત્યક્ષોપાદ્મ ત્રોટ્યમાના इत्यर्थः, ' સરીર વિકૃત્તલોહિઓલિત્તકાગણિમસાણિ સ્વાવિયતા ' શરીરવિકૃત્તલોહિતાવલિપ્તકાકુળી મામાનિ સ્વાદ્યમાના, તત્ર-ચૌરસ્યેવ શરીરાદ્ વિકૃત્તાનિ=શ્વણ્ડિતાનિ લોહિતાવલિપ્તાનિ યાનિ કાકુળી માસાનિ=માસલ્પણ્ડાનિ તાનિ સ્વાદ્યમાનાઃ રાજપુરુષૈઃ શસ્ત્રાદિકર્તિતસ્વમાસલ્પણ્ડાનિ સ્વાદ્યમાના इत्यर्थ, ' પાવા ' પવા

કેશ સસ્કારિત ક્રિયે જા સર્કે (કુસુમમુક્ષિણમુદ્વયા) (કુસુમમ) કુસુમમ રમ સે (ઉક્ષિણમુદ્વયા) ડનકે કેશ રજિત કર દિયે જાતે હૈં । (છિન્નજીવિયાસા) યે વિચારે અપને આપકો માનને લગતે હૈં કિ અબ હમ થોડી દેર મેં હી મરને વાલે હૈં, અતઃ ડનકે જીવન કી આગા દૂટ જાતી હૈં । (ઘુળ્ણતા) મરણભય સે વ્યાકુલ હોને કે કારણ ડનકા દિમાગ ચિકર સ્વાને ઘૂમને લગ જાતા હૈં । (વજ્રપાણપિયા) ડન્હે વધ્ય-મારે જાને વાલે અપને પ્રાણ હી વહે પ્રિય હોતે હૈં । અર્થાત્ ઉસ સમય ડન્હે કોઈ ભી વસ્તુ પ્રિય નહીં હોતી હૈં, કેવલ અપને પ્રાણ હી-જો કુઝ દેર વાદ નષ્ટ હો જાનેવાલે હૈં-સવસે અધિક પ્રિય લગતે હૈં । (તિલ તિલ ચેવ ઊજ્જમાણા) રાજપુરુષ ડનકે અર્ગોપાર્ગો કો તિલ તિલ કી તરહ કાટ ૨ કર અલગ ૨ કર ઢાલતે હૈં । (સરીરવિકૃત્તલોહિઓલિત્તકાગણિમસાણિ સ્વાવિયતા) વે રાજપુરુષ (સરીરાવિકૃત્ત) કાટે ગયે ડનકે શરીર સે નિકલે હુણ (લોહિઓવલિત્ત) લોહી સે લિપ્ત એસે (કાગણિમસાણિ) માસ કે છોટે છોટે ટુકડોં કો (સ્વાવિયતા) ડન્હ સ્વિલાતે હૈં (પાવા)

૨૪૫ી “ ઉક્ષિણમુદ્વયા ” તેમના વાળ ૨ગી નાખવામા આવે છે “ છિન્નજીવિયાસા ” તે બિચારા સમજી જાય છે કે હવે અમે થોડા સમયના મહેમાન છીએ, એટલે કે તેમની જીવવાની આશા તૂટી જાય છે ઘુળ્ણતા ” એટના બયથી વ્યાકુળ થવાથી તેમના મગજ ચક્કર ચક્કર ધ્રમવા લાગે છે “ વજ્રપાણપિયા ” તેને વધ્ય—જેનો વધ થવાનો છે તેને પોતાના પ્રાણ જ સૌથી વડાલા લાગે છે, એટલે કે તે સમયે તેને બીજી કોઈ પણ ચીજ ગમતી નથી, પણ થોડા સમય પછી જેનો નાશ થવાનો છે તે પ્રાણ જ સૌથી વધારે પ્રિય લાગે છે “ તિલતિલ ચેવ ઊજ્જમાણા ” રાજ પુરુષો તો તેમના અંગ ઉપાગોના તલ તલ જેવડા દૂડડા કરે છે “ સરીરવિકૃત્તલોહિઓલિત્તકાગણિમસાણિસ્વાવિયતા ” તે રાજપુરુષો લોહીથી ખરડાયેલા માસના નાના ટુકડાઓ તેમને ખવ

પાપિનઃ ' સ્વરકરમર્હિં તાલિજ્જમાણદેહા ' સ્વરકરગતૈસ્તાડ્યમાનદેહા = અતિચિ-
ક્ષણપાપાણમૃતચર્મકોશગતૈઃ ' કકરમરે ચાતુરુ ' इति भाषाप्रमिद्धैः ताड्यमानदेहा
= તાડ્યમાનશરીરાઃ તથા ' વાતિગનરનારિસપરિવુડા ' વાતિક નરનારીસમ્પરિવૃતાઃ
તત્ર-ગોતિકૈઃ = ઉન્નદલૈઃ નરૈર્નારીભિશ્ચ સપરિવૃતાઃ = યુક્તાઃ મર્યાદાવર્જિતનરનારી-
વૃન્દવેષ્ટિતા इत्यर्थ, ' પિન્નિઝ્જતા ય નાગરજણેણ ' નાગરજનેન દૃષ્ટુ સમાગતેન
પ્રેક્ષ્યમાનાઃ ' વજ્જનેવત્થિયા ' વધ્યનેવથિયાઃ = વયયોગ્ય નેપથ્ય યેષા તે વધ
નેપથિયાઃ = પરિવૃતઘાતવસ્ત્રવેષાઃ, ' ણગરમજ્ઞેણ ' નગરમધ્યેન = પુરમધ્યભાગમાર્ગેણ
' પણિજ્જતિ ' પ્રણીયન્તે = નીયન્તે ' કિન્નિણકલુણા ' કૃપણકરુણા = કૃપણેષ્વપિ
કરુણા અતિદીના इत्यर्थ, ' અત્તાણા ' અત્રાણા = ત્રાણવર્જિતા અનર્થનિવારકા-
ભાવાત્ ' અસરણા ' અશરણાઃ = શરણહીનાઃ - યોગક્ષેમકારિરહિતત્વાત્ અતएव
' અગાહા ' અનાથાઃ = નાથવર્જિતા ' અવધવા ' અવન્યવા = વાન્યવરહિતા તથા

ये बड़े अधिक पापी होते हैं । (स्वरकरमर्हिं) अतिचिक्षण पापाण-
खडों से भरे हुए ऐसे सैकड़ों कोड़ों की (तालिज्जमाणदेहा) इनके शरीर
पर मारपड़नी है । तथा (वातिगनरनारिसपरिवुडा) मर्यादा वर्जित
नरनारि गण से ये वेष्टित रहते हैं । (पिच्छिज्जता य नागरजणेण) इन्हें
देखनेके लिये नागरिकजन आते हैं । (वज्जनेवत्थिया) इनकी वेश-
भूषा वध्ययोग्य होती है । (णगरमज्ज्ञेण पणिज्जति) राजपुरुष इन्हें नगर
के भीतर से होकर ही निकालते हैं । (किन्निणकलुणा) उस समय ये
दीनों से भी अतिदीन होते हैं (अत्ताणा) अनर्थ को निवारण करने
वाला कोई नहीं होने से इनकी कोई रक्षा करने वाला नहीं होता है, इस-
लिये ये अत्राण होते हैं, (असरणा) योग, क्षेमकारी पुरुष से रहित
होनेके कारण ये अशरण-शरण हीन होते हैं । (अगाहा) अनाथ रक्षकके
अभाव से ये अनाथ होते हैं, तथा (अवधवा) वधुओं के अभाव से

ગવે “પાવા” તે ઘણા જ પાપી હોય છે “સ્વરકરમર્હિં” અતિશય ચિહ્ન
પરથરના ટુડડાઓથી ભરેલા સેકડો કોડોઓનો “તાલિજ્જમાણદેહા” તેમના શરીર
પર માર પડે છે તથા “વાતિગનરનારિસપરિવુડા” મર્યાદા રહિત સ્ત્રી પુરુષોના
સમૂહથી તેઓ વીટળાયેલા રહે છે “પિન્નિઝ્જતા ય નાગરજણેણ” તેમને જોવાને
માટે નાગરિકો આવ્યા ડરે છે “વજ્જનેવત્થિયા” તેનો પોષાક વધ્યને યોગ્ય હોય છે
“ણગરમજ્ઞેણ પણિજ્જતિ” રાજપુરુષો તેમને નગરની વચ્ચે થઈને લઈ જાય છે
' કિન્નિણકલુણા ' ત્યારે તે લોકોને અતિશય દીનદગ્ધા અનુભવે છે “અત્તાણા” તે
યાતનામાથા તેમને બથાવનાર ડોઈ ન હોવાથી તે લોકો અત્રાણા રક્ષણુવગરના હોય
છે, ‘ અસરણા ’ તેમને ગરુ આપનાર કોઈ પુરુષ ન હોવાથી તેઓ અસરણુ
તેઓ અનાથ હોય છે, “ અવધવા ”

‘વધુવિપ્પહીણા’ વન્ધુવિપ્પહીણાઃ=વન્ધુવિયુક્તાઃ, ‘દિસોદિસિ વિપેક્ષતા’ દિશો
 દિશ વિપેક્ષમાણાઃ=અકરયા દિશોઽન્યાં દિશુ પश्यन्तઃ ‘મરણમયુઽવિગ્મા’ મરણ-
 મયોદ્વિગ્નાઃ=મૃત્યુમયવ્યાકુલાઃ=‘આઘાયણપડિદુવાસવાવિયા’ આયાનનપ્રતિહાર
 સપાવિતા=આઘાતનપ્રતિહાર=ચ યભૂમિદ્વાર તત્ર સપાવિતાઃ=નીતા યે તે તથા,
 ‘અધળ્લા’ અધન્યાઃ=ભાગ્યહીનાઃ અદત્તાદાયિત્વાત્, ‘સૂલગ્નવિલગ્નમિણ્ણદેહા’
 શૂલાગ્નવિલગ્નમિણ્ણદેહા, તત્ર-શૂલાગ્ને વિલગ્ન=આરોપણેન સલગ્નઃ મિનશ્ચ દેહો
 યેષા તે તથા ‘તે ય’ તે ચ=અદત્તાદાયિન ‘તત્થ’ તત્ર=પ્રાતનદ્વારે યથવન્ધ
 મારણનિર્ભર્ત્સનચારોપણાદિ યાતનાસ્થાને ‘પરિકપ્પિયગુચ્ચગા’ પરિકલ્પિતા
 જ્ઞોપાજ્ઞા કર્ત્ત્રીમૃત્તિશસ્ત્રૈ કર્ત્તિતર્કુર્ણનાસિન્નાત્રયયાઃ ‘કીરતિ’ ક્રિયન્તે,
 દણ્ડવિધાયિરાજપુરુષૈરિતિ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

ચે વિના વધુ કે હોતે હૈ । (વધુવિપ્પહીણા) વાધવજન હોને પર भी वे
 इन्हें छोड़ देते हैं । इसलिये ये वन्धु हीन होते हैं (दिसोदिस विपेक्षता)
 विचारे ये एक दिशा से दूसरी दिशा का ही अवलोकन करते रहते हैं
 और (मरणमयुर्विगमा) मृत्यु के मय से व्याकुल बने रहते हैं । इस
 तरह की स्थिति संपन्न बने हुए इन अदत्तादायी जनों को वे राजपुरुष
 लाकर (आघायणपडिदुवार सपाविया) वन्धभूमि के द्वार पर उपस्थित
 कर दिये जाते हैं । क्योंकि (अधण्णा) ये अदत्तग्राही जन अभागे होते
 हैं । (सूलग्नविलग्नमिण्णदेहा) इन चौरों का शरीर रूल के अग्रभाग
 पर आरोपित कर देने के कारण छिन्न भिन्न हो जाता है । (ते य तत्थ)
 वहा उस वध, वध, मालण, निर्भर्त्सन, रूलारोपण आदि यातना के
 स्थानमें उनके (परिकप्पियगुच्यगा) अग एव उपाग अर्थात् नाक कान
 आदिको कैची आदि शस्त्रों से काट दिये जाते हैं ॥ सू-१६ ॥

અધુઓને અભાવે તેઓ અબન્ધુ હોય છે “ વધુવિપ્પહીણા ” અધુઓને હોય
 તે વધુ તેમના દ્વારા તેમને ત્યાગ કરાય છે, “ દિસોદિસ વિપેક્ષતા ” એવી
 પરિસ્થિતિમાં તે બિચારા એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જોયા કરે છે
 અને “ મરણમયુર્વિગમા ” મરણના ભયથી વ્યાકુળ બને છે આ પ્રકારની
 સ્થિતિમાં મૂકાયેલા તે ચોરોને રાજપુરુષો લાવીને “ આઘાયણપડિદુવાસવા
 વિયા ” વધસ્થાનના દરવાજે હાજર કરે છે તારણ કે “ અધળ્લા ” તે અદત્ત-
 ગ્રાહી-ચોર લોકો કમનસીમ હોય છે “ સૂલગ્નવિલગ્નમિણ્ણદેહા ” તે ચોરોના
 શરીર શૂળીના અણીદાર ભાગો પર ચડાવવાને કારણે છિન્ન ભિન્ન થઈ જાય
 છે અને “ તે ય તત્થ ” ત્યા તે વધ, બધ, મારણ, નિર્ભર્ત્સન, શૂલારોપણ
 આદિ યાતના દેવાને સ્થાને તેમના ‘ પરિકપ્પિયગુચ્ચગા ’ અગોઉપાગો, એટલે
 કે નાક, કાન આદિને કાતર આદિ શસ્ત્રો વડે કાપી નાખવામાં આવે છે ॥સૂ. ૧૬॥

पुनरप्यदत्तादायिनो यथाफल प्राप्नुवन्ति तदाह—‘ केइ ’ इत्यादि ।

मूलम्—केइ उल्ल विज्जति रुक्खसालेहि कलुणाइ विलव-
माणा । अवरे चउरंगधणि य वद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते
दूरपातवहुविसमपत्थरसहा । अपणे य गयचलणामिलण नि-
म्मदिया कीरति । पावकारी अट्टारस खंडिया य कीरंति मुंड-
परसुहि । केइ उक्कित्तकण्णोद्वनासा उप्पाडियनयण - दसण
वसणा जिब्भदिय चिया छिण्णकण्णसिरा पणिज्जति । छिज्जंति य
असिणा निब्बिसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चति । जाव जीवबंधणाय
कीरंति । केइ परदव्वहरणलुद्धा कारगलनियल—जुयलरुद्धा
चारगालये हयसारासयणाविप्पमुक्का मित्तजण निरक्किया निरासा
वहुजण धिक्कारसदलज्जाइया अलज्जा अणुवद्ध खुहापरद्धा सीउण्ह
तण्हवेयणदुघट्टघट्टिया विवण्णमुहविच्छवियाविहलमालिण
दुव्वला किलता कासता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढ
नहकेसमंसुरोमामलमुत्तम्मि पियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया
अकामना वाधिऊण पाएसु कट्टिया खाइयाए छूढा, तत्थ य
विग—सुणय—सियाल—कोलमज्जार—वद सडासतुडपक्खिगण—
विविहमुहसय—विगुत्तगत्ता कयविहगा । केई किमिजाय कुहिय
देहा अणिद्व वयणेहि सप्पमाणा सुट्ठकयं ज सओ त्ति पावो
तुट्टेण जणेण हयमाणा लज्जावणगा य हुति सयणस्स वि य
दीहकाल ॥ सू० १७ ॥

टीका—केइ ‘ केचित्=अदत्तादायिनः महाकष्टानुभवेन ’ कलुणाइ विल-
वमाणा’ करुणानि वचनानि विलपन्तः ‘ रुक्खसालेहि’ वृक्षशाखासु ‘ उल्ल विज्जति ’
उल्लम्ब्यन्ते=रज्ज्वादिभिर्गलन्यनेन वृक्षशाखासु आरोप्यन्ते इत्यर्थः । ‘ अवरे,
अपरे केचनाऽदत्तादायिनः ‘ चउरगधणियवद्धा ’ चतुरङ्गधणियवद्धा, = चतुर-

જ્ઞાનિ=હસ્તદ્વયપાદદ્વયરૂપાણિ ' ધણિય ' અલ્પથં વદ્ધાનિ ત્રેષા તે તથા શ્લેષદ્વય
સ્તપાદાઃ, ' પવ્વયકડગાપમુચ્ચતે ' પર્વતઋટ્કાત્ પ્રમુચ્ચન્તે=ગિરિશિખરાન્નિપાત્ય
ન્તેસ્ત એવ ' દૂરપાતમહુવિસમપત્થરમહા ' દૂરપાતમહુવિસમપ્રસ્થરમહાઃ=મહુવિ-
પમેષુ=અત્યન્તવિપમેષુ નિમ્નોનતેષુ પ્રસ્તરેષુ=પાપાણેષુ ગો દૂરાત્ પાતઃ નિપતન
ત સઘન્તે યે તે તથા ગચન્તિ । ' અણ્ણેય ' અન્યે ચ ' ગચચલ્લનમલગનિમ્મદિયા
કીરતિ ' ગજચરણમલનનિર્મદિતાઃ, તત્ર - ગજચરણેન=ઠમ્તિયાદેન યન્મરુનં=
મર્દન તેન નિર્મદિતાઃ=સમ્મદિતશરીરા ક્રિયન્તે । તથા ' પાપકારી ' પાપકાણિઃ

ફિર વે અદત્તગ્રાહી ચોર જિસ ફલ કો પાતે હૈ-‘ કેઢ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(કેહ) કિતનેક અદત્તગ્રાહી મનુષ્ય (કલુણાઢ ચિલ્લમાણા)
મહાકષ્ટોંકો મોગનેકે કારણ કરુણવચનો સે વિલાપ કરતે હુણ (રુઝલસા-
લેહિં) વૃક્ષોંકી શાખાઓં મેં (હલ્લ વિજ્જતિ) રસ્ટી આદિ સે વાપકર લટકા
દિયે જાતે હૈં । તથા (અવરે) કિતનેક અદત્તગ્રાહી મનુષ્ય (ચતુરગ
ધણિયવદ્ધા) દોનો હાથ પૈર લૂચ જઠઢ કર વાધકર (પવ્વયકડગા)
પર્વત કી ચોટી સે (પમુચ્ચતે) ગિરા દિયે જાતે હૈં, અતઃ વે (દૂરપાતવિ
સમપત્થરસહા) વદ્ધા સે ગિર કર નીચે ઝૂંચે પત્થરોં પર વહુત દૂરતક
ગુહકતે આને કે કારણ શરીર મે વહુત વુરી તરહ હુલ જાતે હૈં । હસ
તરહ વે મહાભયકર વેદના કો સહન કરતે હૈં । (અણ્ણેય) કિતનેક
અદત્તગ્રાહી ચોર (ગચચલ્લનમલગનિમ્મદિયા) હાથી કે પૈરોં કે તલે
હાલ કર મદિત (કીરતિ) કરવાયે જાતે હૈં । હસ તરહ ઉનકે શરીર

તે અદત્તગ્રાહી ચોર જે રૂણ પામે છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—
“ કેઢ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-“કેહ” કેટલાક અદત્તગ્રાહી માણસોને “ કલુણાઈવિલ્લમાણા ” મહા
કષ્ટો ભોગવવાને કારણે કરુણ વચનોથી વિલાપ કરતા “ રુઝલસાલેહિં ” વૃક્ષની
ડાળીઓ પર “ હલ્લ વિજ્જતિ ” દોરડા આદિથી બાંધીને લટકાવી દેવામાં આવે
છે તથા “ અવરે ” કેટલાક અદત્તગ્રાહી માણસોને “ ચતુરગધણિયવદ્ધા ”
જાંને હાથ પગને મજબૂત બાંધીને “ પવ્વયકડગા ” પર્વતની ટોચેથી “ પમુચ્ચતે ”
નીચે હડસેલી દેવામાં આવે છે, તેથી “ દૂરપાતવિસમપત્થરસહા ” ત્યાંથી ઊંચા
નીચા પથ્થર ગળાડવાને કારણે તેમના શરીર ખરાબ રીતે દોલાઈ જાય છે
અને તે રીતે તે લોકો અતિ ભયકર વેદના સહન કરે છે તથા “ અણ્ણેય ”
કેટલાક અદત્તગ્રાહી ચોરાને “ ગચચલ્લનમલગનિમ્મદિયા ” હાથીના પગ નીચે
બાંધીને “ કીરતિ ” કચડાવવામાં આવે છે એ રીતે હાથીના પગ નીચે કચ

‘ મુઢપરસુહિ ’ મુઢપરશુભિ = ભગ્નધામ્કુઠારે: ‘ અઢારસપ્પડિયા ’ અઢાદશ-
સ્થાનેષુ સ્વણ્ડિતા ક્રિયન્તે કર્ણ = નયન-નાસિકો-પૃ-કર-ચરણાના દ્વય દ્વયમિતિ
દ્વાદશ, જિહ્વા-ગ્રીવા-કઠ-પૃષ્ઠ-વક્ષ સ્થલ-ગુહ્યેન્દ્રિયમિતિ પદ્મિલિત્ત્વાઽષ્ટાદશ-
સ્થાનાનિ ભવન્તિ । તથા ‘ કેહ ’ કેચિત્ ‘ ઉક્તકર્ણોઢ્ઢનાસા ’ ઉક્તકર્ણોઢ્ઢનાસા =
ઉક્તતા: = છિન્ના કર્ણ: ઓઢ્ઢ: નાસા = નાસિકા ચ યેષા તે તથા ‘ ઉપ્પાઢિનયણ-
દસણવસણા ’ ઉત્પાઢિતનયનદશનવૃપણા:, તત્ર-ઉત્પાઢિતાનિ = ઉન્મૂલ્લિતાનિ નય-
નાનિ દશના: = દન્તા: વૃપણા: = ગ્ળઢકોશા યેષા તે તથા ‘ જિઢ્ઢિભદિયચિયા ’
જિઢ્ઢેન્દ્રિયાશ્રિતા: જિઢ્ઢેન્દ્રિય = અશ્રિત = ગમિતમ્-આઠ્ઠ યેષાં તે તથા આઠ્ઠ-
જિઢ્ઢેન્દ્રિયા: ‘ છિણ્ણકર્ણસિરા ’ છિન્નકર્ણશિરા: = છિન્નકર્ણનાડ્ય:, ‘ પ્પણિજ્જતિ ’
પ્પણીયતે = રૂલાદ્યારોપણાય વધ્યભૂમો નીયન્તે । કેચિત્ ‘ અસિણા છિજ્જતિ ’

દાથી કે પૈરો સે મર્દિત હોને કે કારણ દ્વિપસલિયા ચૂર-ચૂર હો
જાતી હૈ ઓર વે બઢે દુ:ખી હોતે હૈ । તથા કિતનેક (પાવકારી) પાપ-
કારી અદત્તાગ્રાહી જન (મુઢપરસુહિ), ભગ્ન ધાર વાલે કુઠારો સે અઢા
રહ સ્થાનો મે-કર્ણ ૨, નાસિકા ૨, નયન ૨, ઓઢ્ઢ ૨, કર ૨, ચરણ ૨,
(૧૨) જિહ્વા ૧૩, ગ્રીવા ૧૪, કઠ ૧૫, પૃષ્ઠ ૧૬, વક્ષસ્થલ ૧૭, ણ ગુહ્યે-
ન્દ્રિય ૧૮, મે-બઢી બુરી તરહ સે સ્વડિત કર દિયે જાતે હૈ । તથા (કેહ)
કિતનેક ચોરોં કે (ઉક્તકર્ણોઢ્ઢનાસા) કાન નાક ણવ ઓઢ્ઢ કાટ દિયે
જાતે હૈ તથા (ઉપ્પાઢિયનયણદસણવસણા) નેત્ર ફોઢ્ઢ દિયે જાતે હૈ
દાત ઓર અઢકોશ ઉપાઢ લિયે જાતે હૈ । (જિઢ્ઢિભદિયચિયા) જીભ
સેંચ લી જાતી હૈ । (છિણ્ણકર્ણસિરા) કાન કી તસે તોઢ દી જાતી
હૈ । ણવ હસ તરહ કી સ્થિતિ મે કરકે ચોરો કો વે રાજપુરુષ (પ્પણિજ્જતિ)

રાવાને કારણે તેમના શરીરના હાડકા અને પાસળીઓના ચૂરે ચૂરા થઈ જવાથી
તે લોકો ઘણી પીડા અનુભવે છે તથા કટલાક “ પાવકારી ” પાપી અદત્તગ્રાહી
લોકોને “ મુઢપરસુહિ ” ધાર વગરની (બુઢી) કુહાડીઓથી “ અઢારસપ્પડિયા ” અઢાર
જગ્યાએ ઘણીજ ખરાબ રીતે મારવામા આવે છે તે અઢાર અંગો આ
પ્રમાણે છે કાન ૨, નાસિકા ૨, નયન ૨, હોઠ ૨, હાથ ૨, પગ ૨, જીભ,
ગ્રીવા, ડઠ, પૃષ્ઠ, વક્ષસ્થલ, અને ગુહ્યેન્દ્રિય, તથા “ કેહ ” કટલાક ચોરોના
“ ઉક્તકર્ણોઢ્ઢનાસા ” કાન, નાક અને હોઠ કાપી નાખવામા આવે છે તથા
“ ઉપ્પાઢિયનયણદસણવસણા ” આંખો ફેાડી નાખે છે, દાત અને ગુત્ર અંગ
ઉખેડી નાખે છે, “ જિઢ્ઢિભદિયચિયા ” જીભ ખેંચી કાઢવામા આવે છે,
“ છિણ્ણકર્ણસિરા ” કાનની નસો તોડી નાખવામા આવે છે તેમની એવી
હાલત કરીને રાજપુરુષો તે ચોરોને “ પ્પણિજ્જતિ ” શૂળી પર ચડાવવાને લઈ

અસિના=સ્વદ્વેન છિન્નન્તે=સ્વઘડશ ક્રિયન્તે । તથા ‘ નિવ્વિસયા ’ નિવિષયાઃ=
 વિષયાત્ દેશાન્નિષ્કાસિતાઃ ક્રિયન્તે । કેચિત્ ‘ છિન્નહૃથપાયા ય ’ છિન્નહૃત
 પાદાથ ‘ પમુચ્ચતિ ’ પ્રમુચ્યન્તે, રાજકિઠ્ઠરૈર્દસ્તપાદ છિન્ના વ્યવન્તે इत्यर्थः ।
 કેચિત્ ‘ જાવજીવવધના ય કીરતિ ’ યાવજીવવધનાથ ક્રિયન્તે=જીવનપર્યન્ત
 કારાગારે વધ્યન્તે । ‘ કેહ પરદ્રવ્યહરણલુદ્ધા ’ કેચિત્ પરદ્રવ્યહરણલુદ્ધા-
 પાપિનઃ ‘ ચરગાલયે ’ ચરગાલયે=કારાગારે ‘ કરગમનિયલજુયલરુદ્ધા ’
 કારાગર્ભાનિગડયુગલરુદ્ધાઃ=કારાગર્ભાલયા=કારાગૃહાગર્ભા તથા નિગડયુગલેન=લાઈ
 ગૂઢ વલાદ્વયેન રુદ્ધા=નિયન્ત્રિતાઃ ભવન્તિ । કથમૂક્તાઃ ? इत्याह—‘ ह्यसारा ’
 હતસારાઃ = અપહૃતદ્રવ્યાઃ । પુનઃ કીદૃશાઃ ‘ સયણવિપ્પમુક્કા ’ સ્વજનવિ
 પ્રમુક્તાઃ = સ્વકીયજ્ઞાતિવિરહિતાઃ “ મિત્તજણનિરક્રિયા ” મિત્રજનનિરાકૃતાઃ

શૂલી પર ચઢાને કે લિયે લે જાતે હૈં । કિનનેક ચોર ડન રાજપુરુષોદ્વારા
 (અસિના છિન્નજતિ) તલવારોં સે કાઢે જાતે હૈં (નિવ્વિસયા) કિનનેક
 દેશ સે ઘાહર નિકાલ દિયે જાતે હૈં । ઓર (છિન્નહૃથપાયાય) કિતનેક
 હાથ પૈરોં કો કાટ કર યોં હી (પમુચ્ચતિ) છોડ દિયે જાતે હૈં । તથા
 કિતનેક (જાવજીવ વધના ય કીરતિ) જીવન પર્યંત કારાવાસ મેં હી
 રખ દિયે જાતે હૈં । (કેહ પરદ્રવ્યહરણલુદ્ધા) તથા પરદ્રવ્યહરણ કરને મેં
 લુબ્ધક બને હુણ કિતનેક ચોર (કરગમનિયલજુયલ રુદ્ધા) કારાગાર કી
 અર્ગલા કે સાય લોહ કી જજીરોં સે જકડકર (ચરગાલયે) કારાગાર
 મેં હી બદ કર દિયે જાતે હૈં । (હ્યસારા) ઇન્કા દ્રવ્ય સમસ્ત રૂપ સે
 અપહૃત કર લિયા જાતા હૈં । (સયણવિપ્પમુક્કા) ઇન્કે કિસી મી
 સ્વજન સે ઇન્હેં નહીં મિલને દિયા જાતા હૈં । (મિત્તજણનિરક્રિયા) ઇન્કે

બીય છે કેટલાક ચોર તે રાજસેવકો દ્વારા “ અસિના છિન્નજતિ ” તલવારોથી
 કપાઈ બીય છે, “ નિવ્વિસયા ” કેટલાક દેશમાંથી હાકી કાઢવામાં આવે છે, અને
 “ છિન્ન હૃથપાયા ય ” કેટલાકને હાથપગ કાપી નાખીને “ પમુચ્ચતિ ” છોડી
 મૂકવામાં આવે છે તથા “ જાવજીવવધનાય કીરતિ ” કેટલાક જીવે તથા
 સુધી કારાગૃહમાં પૂરી રાખે છે “ કેહ પરદ્રવ્યહરણલુદ્ધા ” તથા પરદ્રવ્યનું
 અપહરણ કરવાની લાલચ વાળા કેટલાક ચોરોને “ કરગમનિયલજુયલરુદ્ધા ”
 કારાગૃહના આગળીયા સાથે લોઢાની સાકળોથી બાંધીને “ ચરગાલયે ” કારા-
 ગારમાં જ કેદ રાખવામાં આવે છે “ હ્યસારા ” તેમનું સઘળું દ્રવ્ય જપ્ત
 કરવામાં આવે છે “ સયણવિપ્પમુક્કા ” તેમના કોઈ પણ સ્વજનની મુલાકાત
 તેમની સાથે થવા દેતા નથી, “ મિત્તજણનિરક્રિયા ” તેમના મિત્રો પણ

મિત્રેસ્ત્યક્તાઃ ' નિરાસા ' નિરાસાઃ = જીવનાયાશારહિતાઃ ' વહુજન-
ધિકારસદ્લજ્જાઙ્યા ' વહુજનધિકારશબ્દલજ્જાયિતા = વહૂનાં જનાના વિકાર-
વચનૈઃ લજ્જાયિતાઃ = લજ્જા પ્રાપિતા તથાપિ અલજ્જાઃ = નિર્લજ્જાઃ ધૃષ્ટ-
ત્વાત્ ' અણુઘ્નુહાપરદ્વા ' અણુઘ્નુહાપરદ્વાઃ = અણુઘ્નુહાપરદ્વા = સતતપ્રભુષયા
અપરાદ્વાઃ = પીડિતાઃ ' સીઝ્ઘત્ત્વેયણદુઘટ્ઘટ્ટિયા ' શીતોષ્ણતૃષ્ણાવેદનાદુર્ઘટ્ટ
ઘટ્ટિતાઃ, તત્ર શીતેન ઝાષ્ણેન તથા તૃષ્ણયા = પિપાસયા ક્ષુધયાચ ચા દુર્ઘટ્ટાઃ =
અસહ્યાઃ વેદના = પીડામ્તાભિઃ - દુર્ઘટ્ટ = અતિપ્રિકટમ્ - અતિશયેન ઘટ્ટિતાઃ = પી-
ડિતાઃ ' વિવર્ણમુહવિચ્છવિયા ' વિવર્ણમુહવિચ્છવિકાઃ = તત્ર વિવર્ણમુહ = વિ-
રૂપયુક્ત મુહ એવા તે તથા વિચ્છવિકાઃ = કાન્તિરહિતા નિસ્તેજસઃ । ' વિ-
હલમલિણદુઘ્વલા ' વિહલમલિણદુર્ઘલાઃ = તત્ર વિહલા = કારાગારે નિયન્ત્રિતત્વા-
દનિષ્ઠફલા મારિણા = મારિણાવદના દુર્ઘલાઃ = શક્તિરહિતા એ તે તથા ' કિલ્તા '

મિત્રજન મી ઇન્હે છોડ દેતે હૈ । (નિરાસા) એ ચોર વદા જીવત પર્યન્ત
રહને કે કારણ અપને જીવન કી આશા છોડ દેતે હૈ । (વહુજનધિકાર
સદ્લજ્જાઙ્યા) અનેક જનો દ્વારા ધિકાર કે શબ્દોં સે એ લજ્જિત કિયે
જાતે હૈ । ફિર મી ઇન્હે જૈસી લજ્જા આની ચાહિયે વૈસી નહી આતી
હૈ । કારણ એ વહુત અધિક ધૃષ્ટ થન જાતે હૈ । (અણુઘ્નુહાપરદ્વા)
રાતદિન એ ક્ષુધા સે પીડિત વને રહતે હૈ । (સીઝ્ઘત્ત્વેયણદુઘટ્ટઘટ્ટિયા)
શીત, ઝષ્ણ, તૃષ્ણા, ક્ષુધા જન્ય અસહ્યવેદનાઓંસે એ સદા (દુઘટ્ટઘટ્ટિયા)
અત્યન્ત દુઃખિત વને રહતે હૈ । (વિવર્ણમુહવિચ્છવિયા) ઇનકા મુહ
સદા કુમ્હલાયા હુઆ રહતા હૈ ઓર કાતિ મી ઇનકી મલિન રહતી હૈ ।
(વિહલમલિણદુઘ્વલા) કારાગાર મે વદ રહને કે કારણ એ (વિહલ)
અનિષ્ઠ ફલવાલે હોતે હૈ-અર્થાત્ જો એ ચાહતે હૈ વદ ઇન્હે નહીં મિલતા

તેમનો ત્યાગ કરે છે " નિરાસા " ને ચોરો ત્યા જીવન સુધી રહેવાના કારણે
પોતાના જીવનની આશા છોડી દે છે " વહુજનધિકારસદ્લજ્જાઙ્યા " અનેક લોકો
ધિકારના શબ્દોથી તેમને શરમિદા કરે છે, છતાં પણ તેમને એવી શરમ થતી નથી,
કારણ કે તેઓ ધૃષ્ટ વર્તન ગત્રા હોય છે, " અણુઘ્નુહાપરદ્વા " રાત દિવસ તે
ખૂખથી પીડાયા કરે છે " સીઝ્ઘત્ત્વેયણદુઘટ્ટઘટ્ટિયા " ઠંડી, ગરમી, ક્ષુધા
તૃષ્ણા આદિની અસહ્ય વેદનાથી તેઓ સદા " દુઘટ્ટઘટ્ટિયા " અત્યંત દુઃખી રહે
છે " વિવર્ણમુહવિચ્છવિયા " તેમનું મુખ સદા ગ્લાન-ઉદાસ રહે છે અને
તેમની કાતિ પણ મલિન રહે છે " વિહલમલિણદુઘ્વલા " કારાગૃહમાં કેદ
રહેવાને કારણે તેઓ " વિહલ " અનિષ્ઠ ફળવાળા હોય છે, એટલે કે તેઓ

ક્લ્લાન્તાઃ ક્લ્લાનાઃ 'કાસતા' કાશમાનાઃ કાશરોગેણ 'સ્વૃસ્વૃ' इति शब्दाय
 માનાઃ 'વાહિયાય' વ્યાધિતાશ્ર=કુષ્ઠાદિવિવિધરોગપીડોતાઃ, 'આમાભિભૂય
 ગતા' આમાભિભૂતગાત્રાઃ=આમે = દુક્તાન્નાઽપરિપાકજનિતૈરતીસારાદી નાના
 રોગૈરભિભૂતાની ગાત્રાણિ=શરીરાણિ યેષા તે તથા । 'પરુઢનહકેસમસુરોમા'
 પરુઢનહકેશશ્મશ્ચુરોમાગઃ, તત્ર પરુઢાઃ । અસન્કારાત્ પરુઢાઃ ન્ત્યાઃ કેશાઃ શ્મ
 શ્રૂણિ=મુલજાતાનિ 'દાઢી' इति भाषा प्रसिद्धानि रोमाणि च येषा ते तथा 'मल
 મુત્તમ્મિ નિયગમ્મિ સુત્તા' નિજકે મલમૂત્રે સુત્તા=સ્વર્કીયે પુરીપમૂત્રે 'સુત્તા' નિમગ્ના
 'સુત્તા' इति देशी शब्दः, कारागारे वद्धाः अ यत्र गन्तुमशक्यत्वात् म्लकुत
 મલમૂત્રપુરીપપક્કણ્ય નિમગ્નાસ્તિષ્ઠન્ત્યદત્તગ્રાહિણ इत्यर्थः । तथा 'अकामगा'
 અકામગાઃ = મરણે-હારદિતાઃ 'તત્થેવ મયા તત્થેવ કારાગૃહે મૃતાઃ સન્તઃ

हैं । (मलिण) ये मलिन चदन एव (दुब्बला) शक्तिविहीन एते रहते
 हैं । (किलता) ग्लान रहते हैं । तथा (कासता) काशरोग से "स्व-
 खू" इस प्रकार का शब्द इनके मुख से निकलने लगता है । और
 (वाहियाय) कुष्ठादि विविध रोगों से ये पीडित होते हैं (आमा
 भिभूयगता) इनका शरीर अतिमार आदि नाना प्रकार के रोगों का
 घर बन जाता है । (परुडनहकेसमसुरोमा) नख, केश, तथा इमश्रु-दाढी
 के बाल समारे नहीं जानेके कारण बहुत बढ़ जाते हैं । और (नियगम्मि
 मलमुत्तम्मि) इनकी हालत अधिक गभीर बन जाती है कि जिससे
 कारागार में बद्ध ये विचारे अन्य जगह जाने में असमर्थ होने के कारण
 अपने ही मलमूत्र में (सुत्ता) भरे हुए पड़े रहते हैं । तथा (अकामगा)
 नहीं इच्छा होने पर भी (तत्थेव) उसी में पड़े पड़े वही पर (मया)

ને વસ્તુની ઇચ્છા કરે તે વસ્તુ તેમને મળતી નથી " મલિણ " તે લોકો
 મલિન વદન વાળા તથા "દુબ્બલા" શક્તિ વિનાના થઈ જાય છે, "કિલતા"
 શ્વાનિયુક્ત રહે છે, તથા "કાસતા" ઉધરસને કારણે "ખૂ-ખૂ" કર્યા
 કરતા હોય છે અને "વાહિયાય" તે લોકો કોઠ આદિ અનેક રોગોથી
 પીડાતા હોય છે "આમાભિભૂયગતા" તેમના શરીર અતિસાર આદિ વિવિધ
 રોગોના ઘર બની જાય છે, "પરુઢનહકેસમસુરોમા" નખ, કેશ તથા દાઢીના
 વાળ નહીં ડપાતા હોવાથી ઘણાજ વધી જાય છે અને "નિયગમ્મિ મલમુ-
 ત્તમ્મિ" તેમની હાલત એવી ગંભીર થઈ જાય છે કે, કારાગૃહમાં પૂરાયેલા તે
 લોકો ખીજી જગ્યાએ જવાને અસમર્થ હોવાથી પોતાના જ મળમૂત્રમાં
 "સુત્તા" ભરાઈ રહે છે તથા "અકામગા" ઇચ્છા ન હોવા છતાં પણ
 "તત્થેવ" ત્યાજ પડ્યા પડ્યા "મયા" મરી જાય છે ત્યાર બાદ "વધિ

‘वधिऊणपाण्णु कट्टिया’ पाण्णु वदन्ता कृष्णः=रज्ज्वादिभिर्हस्तपादाभ्यन्तेन
कृष्णः=वहिर्निष्कासिता ‘ग्वाह्याण छट्टा’ साताया छट्टाः क्षिप्ताः=गते
चाण्डालादिभिः भक्षिता क्रियन्ते। ‘तत्थय’ तत्र च त्रिगुणयमियालकोलम-
ज्जारखदमडासतुडपक्खिगणविधिगुहसयविलुत्तगत्ता’ वृक-शुक्र-शृगाल-
कोल-मार्जार-वृन्द-सटासतुडपक्खिगणविधिगुहसयविलुत्तगत्ता’, तत्र ‘त्रिग’
वृक्षाः=‘वरगडा’ इति भाषा प्रसिद्धाः, ‘गुणय’ शुनकाः=कम्हराः ‘सि-
याल’ शृगालाः कोला मृका माजारा, तेषां वृन्द समूहस्तेन तथा सदश
तुण्डैः=सदशयत्तोक्षगुहवत्तुण्डैः-पक्षिगणानां=काकादीनां विविधमुख्यशतैश्च विलु-
त्तानि=निःशेषेण खादितत्वाद् अलक्षितानि गात्राणि येषां ते तथा वृककुण्ड-
शृगालादिभिः विविधपक्षिगणैश्च भक्षितशरीराः ‘कयविहगा’ क्रतुविभङ्गाः=
वृकादिभिरेव सण्डशः क्रता । तथा ‘केइ’ केचित् मृतेभ्योऽन्ये ‘क्रिमि-

मर जाते हैं । बाद में (वधिऊणपाण्णु) रज्जु आदि से पैर बांधकर
(वृहं चाण्डाल आदि जन (कट्टिया) घाटर निकाल कर (ग्वाह्याण छट्टा)
किसी गड्ढे में ले जाकर पटक देते हैं । (तत्थय) वहां फिर उनके कले
वरों को (त्रिगुणयमियालकोलमज्जारखदमडासतुडपक्खिगणविधि-
गुहसयविलुत्तगत्ता) (त्रिग) वृक-वगेरे, (गुणय) शुनक-कुत्ते,
(मियाल) शृगाल, (कोल) सुअर, (मज्जारखद) मार्जार-वन
विलाय आदि हिंसक जानवरों के (वृन्द-समूह) एवं (सटासतुडप-
क्खिगण) सटामी के जैसे तीक्ष्ण तुण्डवाले गृह आदि पक्षियों के
समूह (विविधमुख्यसय) नाना प्रकारके गैरगर्भ मुग्धों से (विलुत्तगत्ता)
तहस नहस कर डालते हैं जिससे ‘यह शरीर किस का है’ यह नहीं
जाना जाता । (कयविहगा) इस प्रकार वृकादिक जानवरों एवं विविधप-
क्षिगणों से क्रिन्नेक हन अमार्गों के शरीर खाया जाकर पट २ कर

कृष्णपाण्णु” दोरडा आदिभी पञ्च भाधाने अडाल आदि दोडे तेमने “कट्टिया”
गड्ढार काटीने “ग्वाह्याण छट्टा” काष्ठ भाडागां लई जईने डेकी दे छे
“तत्थय” त्या तेमना भूडनाने त्रिगुणयमियालकोलमज्जारखदमडासतुड-
पक्खिगणविधिगुहसयविलुत्तगत्ता” “त्रिग” वृक्ष, “गुणय” शुनक-
कुत्तरा, “सियाल” शृगाल, “कोल” सुअर, “मज्जारखद” मार्जार जगदी
जिलाडा, आदि त्रिग पञ्चगोनो समूह अने “सटासतुड पक्खिगण”
साण्णुभी जेवा तीक्ष्ण खाद्यमाणा वीध वगेरे पक्षीगोनो समूह “विविधमुख्य-
सय” विविध प्रनयना नेहडा मुणो द्वारा “विलुत्तगत्ता” ठोली भाथ छे,
तेथा “आ ठोपु जरीर उ” ते जाली जकातु नयी “कयविहगा” आ नीते
वृक्ष आदि जगदीर तथा विविध पक्षीगोनो द्वारा ते कम्हरागीगोन शरीर

જાય કુહિયદેહા ' ક્રમિજાતકુચિતદશઃ ક્રમિજાતેન = રોગાદિ કારણાત્
 સમૂત્પન્નક્રમિસમૂહેન કુચિતદશઃ=દુર્ગંધયુક્તગરીરા 'અગિટ્ટાયણેહિં' અનિષ્ટવચનૈઃ
 =અપ્રિયવચનૈઃ. 'સુદ્દુક્ય જ મમોત્તિ પાવો' 'સુદ્દુક્ય = ગોમન જાત યત્
 =યસ્માત્ મૃતોડય પાપ = પાપી इत्येव रूपः 'सप्यमाणा' शप्यमानाः=
 આક્રોશ્યમાનાઃ 'તુદ્દેણ જણેણ હણમાણા' તુદ્દેણ જનેણ હન્યમાનાઃ તેવા મારણેન
 પ્રસન્નો યો જનસ્તેન તાડયમાના સન્તઃ 'સયણસ્સ વિય' સ્વજનસ્યાપિ ચ
 કિં પુનરન્યેપામ્ 'દીહકાલ' દીર્ઘકાલ યાત્ 'લજ્જાવગાય' લજ્જાવનકા =
 લજ્જાલજ્જારહિતા इत्यर्थ 'हुति' भवन्ति ॥ સૂ. ૧૭ ॥

પરમિહ લોકે દુઃખમાપ્નુવન્તીત્યુક્તમ્, અર પરલોકે કિં ભવતી ? ત્યાહ—
 'મયાસતા' इत्यादि

મૂલમ્—મયાસતા પુણો પરલોકસમાવર્ણના નરણ ગચ્છતિ
 નિરભિરામે અંગારપલિત્તગકપ્પઅચ્ચરથસીયવેયણા અસાયણો

દિયે જાતે હૈ । તયા (કેહ) કિતનેક અદત્તગ્રાહી ચોર જો મરને સે યાકી
 બચે રહતે હૈં વે (કિમિજાયકુહિયદેહા) રોગાદિક કારણ કે વશ સે
 અપને શરીર મે ઉત્પન્ન હુણ કીઢોં સે દુર્ગંધિત શરીર વાલે હોકર (અણિ-
 ટ્ઠવયણેહિં) લોગો કે હસ પ્રકાર કે અપ્રિયવચનોં સે કિ—(સુદ્દુક્ય જ
 મમોત્તિ પાવો) મલા હુઆ જો યહ પાપી મર રહા હૈ ” અથવા મરે હુણ
 સા હો રહા હૈ ” હસ પ્રકાર (સપ્પમાણા) ગાલિયો સે અપમાનિત હોતે
 હૈં । તયા ઉનકી મૃત્યુ સે પ્રસન્ન હોને વાલે મનુષ્યોં સે તાડિત હોકર
 (સયણસ્સ વિય) સ્વજનોંસે ખી ઓર દૂસરોંસે ખી (દીહકાલ) બહુત
 સમયનક (લજ્જાવગાય) લજ્જિત (હુતિ) હોતે હૈ ॥ સૂ-૧૭ ॥

ખવાય છે અને તેના ટુકડે ટુકડા કરાય છે તથા ' કેહ ' ડેટલાક અદત્ત-
 ગ્રાહી ચોરો જે મોતમાથી બચે છે તે " કિમિજાયકુહિયદેહા " રોગાદિક
 કારણોથી તેમના શરીરમા ઉત્પન્ન થયેલા કીડાઓથી દુર્ગંધ યુક્ત શરીરવાળા
 થઈને " અણિટ્ઠવયણેહિં " લોકોના આ પ્રકારના અપ્રિય વચનોથી ' સપ્પમાણા '
 અપમાનિત થાય છે—' સુદ્દુક્ય જ મમોત્તિ પાવો ' " સારુ થયુ કે આ પાપી
 આ રીતે મરી રહ્યો છે " અથવા " મરેલાના જેવી સ્થિતિ અનુભવે છે '
 તથા તેમના મૃત્યુથી ખુશી થનારા માણસો દ્વારા માર ખાઈને "સયણસ્સવિય"
 સ્વજનો તથા બીજા લોકોથી " દીહકાલ ' લામા સમય સુધી 'લજ્જાવગાય'
 લજ્જા ' હુતિ " પામે છે ॥ સૂ-૧૭ ॥

દિણ્ણસયય દુક્ખસયસમભિભૂણ । તઓ વિઠઠ્ઠવદ્ધિયા સમાણા-
પુણો વિ પઠ્ઠજ્જનિ તિરિયજોણિ । તહિ પિ નિરઓથમ-અણુભ-
વતિ વેયણં । તે અણતકાલેણ જઙ્ઞણામ કહિ વિ મણુયભાવં
લહિંતિ ણેમેહિ ણિરયગઙ્ગમણ તિરિયભવસયસહસ્સપરિયટ્ઠણહિ
તત્થ વિ ય મવત ણારિયા નીયકુલસમુપ્પણ્ણાલોચવજ્ઞાતિરિ-
ક્ખ મૂયા ય અકુસલા કામભોગતિસિયા જહિ નિવધતિ નિર-
યવત્તણી ભવપ્પવચ્ચકરણપણોહિ પુણો વિ સંસારાવત્તણેમિમૂલે
ધમ્મસુદ્ધિ વિવિજ્ઞિયા અણજા કૂરા મિચ્છત્તસુદ્ધિ પવણા ય હુતિ ।
એગતદંડરુદ્ધણો વેદેતિ કોસિગારકીડેવ અપ્પગ અટ્ઠકમ્મ-
તલુઘણવધણેણ ॥ સૂં ૧૮ ॥

ટીકા— ‘મયાસતા’ મૃતાઃ સન્તઃ ‘પુણો’ પુનર્મરણાનન્તર ‘પરલોગ-
સમાવણ્ણા’ પરલોકસમાપન્નાઃ પરલોક પ્રાપ્તાઃ ‘નરગે ગચ્છતિ’ નરકે
ગચ્છન્તિ । કીદૃશે નરકે ? इत्याह—निरभिरामे=असुन्दरे, तथा ‘अगारपलित्त
गकप्प, अन्वत्थ सीयवेयणा आसायणो दिण्णसययदुक्खसयसमभिभूण’

અવ સૂત્રકાર યદ્ કહતે હૈં કિ યે અદત્તાગ્રાહી ચોર ઇસ લોક મે
તો ઇસ પ્રકાર કે અનેક દુઃખોં કો ભોગતે હૈં પરન્તુ પરલોક મેં બી
હનકી કૈસી દુર્દશા હોતી હૈં સો કહતે હૈં—‘મયાસતા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—યે અદત્તાગ્રાહી ચોર જવ (મયાસતા) મર જાતે હૈં તવ (પુણો)
ઊસકે અનન્તર (પરલોગસમાવણ્ણા) પરલોકમે જાકર (નરગે ગચ્છતિ)
નરક મે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । જો નરક (નિરભિરામે) સુન્દરતા સે રહિત
અર્થાત્ અસુહાવને હૈં, તથા (અગારપલિત્તગકપ્પ) અતિપ્રજ્વલિત અગાર

હવે સૂત્રકાર એ બતાવે છે કે તે ચોરલોડો આ લોકમા તો ઉપરોક્ત
પ્રકારના હુ ણો અનુભવે છે પણ પરલોકમા પણ તેમનીકેવી દુર્દશા થાય છે—
“મયાસતા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તે અદત્તાગ્રાહી ચોર “મયાસતા” મરીને “પુણો” પછી “પરલોગ
સમાવણ્ણા” પરલોકમા જઈને “નરગે ગચ્છતિ” નરકગતિમા ઉત્પન્ન થાય
છે જે નરકાગર “નિરભિરામે” સુન્દરતાથી ગહિત છે, તથા “અગારપલિત્ત

અક્ષરપદીસકરુણાઽત્યર્થશીતવેદનાઽઽપાન્મોત્તીર્ણસનાદઃપગનમપમિભૂતે, તપ
 ‘ અક્ષરપલિતગરુણ ’ પદીસકરુ = અતિપગ્નલિતો યોઽક્ષાતઃ = ધૂમ
 રહિતરહિસ્તેન રુણ તત્સદૃશમ્-ઉષ્ણ, તથા ‘ અચ્ચત્યસીયવેયણા આસાયણો ’
 અત્યર્થ શીત=અત્યર્થ હિમકાલોઽપશીત તયોર્વેદના તત્યાઃ આપાદન-પ્રાપ્ત
 તેન ‘ ઉદિષ્ણસયયપુકલસય ’ ઉદીર્ણાનિ સમુદ્વૃત્તાનિ યાનિ સતત દુઃખ
 શતાનિ=અનેકશતસંખ્યકનિરન્તરદુઃખાનિ, તૈઃ ‘ સમભિભૂણ ’ સમભિભૂત =
 યુક્તઃ યઃ સ તથા તસ્મિન્, યદ્વા-ઉષ્ણગીતવેદના, સા કીદૃશી ? ઇત્યાદ આશા
 તનેન=ચિરકાલાનુવન્ધિરુદુરુ ફલદાયકાઽદત્તાઽઽદાનજનિતાઽપાતવેદનીયકર્મણા
 ઉદીર્ણા પ્રકટિભૂતા તત્યાઃ તદ્વજનિતાનિ યાનિ સતતદુઃખશતાનિ તૈઃ સમભિભૂતઃ
 =વ્યાપ્તો યઃ સ તથા તસ્મિન્નેવ ભૂતે નરકે અદત્તાઽઽદાયિનો મૃતાઃ સન્તો ગચ્છ
 ન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ । તત્ર નરકે ગત્વા સન્તપ્તગોહવાલુકા નિકરપ્રગ્વરકઠોરમૂર્ચી

કે જેસી ઉષ્ણતા, ઔર (અચ્ચત્યસીય) હિમકાલ જેસા અત્યત શીત
 હૈ । યદ્વા નારકિયોં કો હસ ઉષ્ણતા ઔર શીત કી (વેયણા આસાયણો
 દિષ્ણ) વેદના કી પ્રાપ્તિ સે ઉદીર્ણ-ઉત્પન્ન (સયયદુઃખસય) નિરન્તર
 સૈકડોં દુઃખ પ્રાપ્ત હોકર (સમભિભૂણ) દુઃખિત કરતે હૈં । “ આસા
 દન ” યદ્ પદ જો સૂત્ર મેં આયા હૈં ઉસકા અર્થ એક તો પ્રાપ્ત હોના હૈં-
 જેસા કિ અમી લિખ દિયા ગયા હૈં । તથા દૂસરા અર્થ હસકા હસ
 પ્રકાર સે હૈં-કિ વે અદત્તાગ્રાહી ચોર જો વદ્વા મર કર નારકી કી પર્યાય
 સે ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં ચિરકાલાનુવધી-ભવ ભવ મેં કદુરુ ફલ દાયક
 અદત્તાદાન કે પ્રભાવ સે ઉત્પન્ન હુણ અશાત વેદનીય કર્મ કે દ્વારા પ્રકટી
 ભૂત વેદના સે વ્યાપ્ત ઉન નરકોં મેં નિરન્તર સૈકડો પ્રકાર કે દુઃખોં કો

ગરુણ ” અતિ પ્રગ્નલિત અગારા જેણુ ઉષ્ણ અને “ અચ્ચત્યસીય ” હિમકાળ
 જેણુ અત્યત શીતળ છે તથા નારકી જીવોને તે ઉષ્ણતા અને શીતની “ વેયણા
 આસાયણો દિષ્ણ ” વેદનાની પ્રાપ્તિથી ઉત્પન્ન થયેલ “ સયયદુઃખસય ” સેકડો
 દુઃખો નિરન્તર “ સમભિભૂણ ” દુઃખી કરે છે “ આસાદન ” આ પદનો સૂત્રમા
 ઉપયોગ થયો છે તેનો એક અર્થ તો ‘ પ્રાપ્ત થવું ’ છે, જે સૂત્રમા હમણા
 જ અપાયો છે તથા તેનો બીજો અર્થ આ પ્રમાણે છે—તે અદત્તાગ્રાહી ચોર
 કે જે મરીને નારકીની પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો છે, ચિરકાલાનુવધી-
 લવલવમા કડવા ફળ દેનાર અદત્તાદાનના પ્રભાવે ઉત્પન્ન થયેલ અશાતા વેદ-
 નીય કર્મ દ્વારા ઉત્પન્ન થયેલ વેદનાથી વ્યાપ્ત તે નરકોમા નિરન્તર સેકડો
 દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે

મુલદુસ્તરમાર્ગસચ્ચરણવિવિધવસામાસપૂરશોગિત પૂર્જનદોનિમજ્જનપરમાધાર્મિકસત-
સગલાકાશરીરપ્રવેશનવિવિધશલાસ્રભેદનચ્છેદનતાડનાપધારણાદિકાનિ ત્રિપુલાનિ
ધોરાણિ દુઃખાનિ મુન્યયા 'તઓનિ ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા, તતોઽપિ નરકાદુદ્દૃત્તાઃ
સન્તઃ=નિસ્સૃતા. મન્તઃ 'પુણો વિ' પુનરપિ 'તિરિયજોણિ પવજ્જતિ' તિર્યગ્યોનિ પ્ર-
પધન્તે 'તહિંપિ' તત્રાપિ 'નિરયોગમ અણુ ભવતિ વેયણ' નરકોપમામનુભવન્તિ વેદનાં
=નરકમદશમેયદુ મ પ્રાપ્નુવન્તિ। અ 'જહનામ' યદિનામ 'અણતકાલેન'અનન્ત-
કાલેન=નિગોદ્ધયા પેક્ષયા 'ળેમેહિં' અનેકેપુ=વહુપુ 'નિરયગતિગમનતિરિયભવસય-
સહસ્સપરિયટ્ટણહિં' નરકગતિગમનતિર્યગ્ભવશતસહસ્સપરિવર્તેપુ=નરકગતૌ યાનિ પુનઃ
પુનર્ગમનાનિ તેષા તયા તિર્યગ્ભવાના=તિર્યગ્યોનીના ચ વે શતસહસ્સપરિવર્તાઃ=અનેક-
શતસહસ્સભ્રમણાનિ તેષુ અતિક્રાન્તેષુ સત્સુ 'કહિં વિ મણુયમાવ લહિંતિ' કથ-
ભોગા કરતે હેં। ઇસ પ્રકાર ઇસ નરકો મે શીતઔર ઉષ્ણ જન્ય અનેક
પ્રકાર કી વેદનાઈ હેં જો નારકિયો કો વ્યથિત કરતી રહતી હેં। (તઓ-
વિ ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા) નરકો મેં જાકર વહા કે વિવિધ પ્રકાર કે દુઃખો
કો ભોગતે ૨ જય ઉન જીવો કી એક સાગર આદિ અનેક સાગર પ્રમાણ-
વાલી મુજ્યમાન આયુ વહા કી જય સમાપ્ત હો જાતી હૈ તય વે વહા સે
નિકલ કર પુનરપિ (તિરિયજોણિ પવજ્જતિ) તિર્યચ્યોનિ મેં જન્મ
ધારણ કરતે હેં। (તહિંપિ) વહાં પર મી વે (નિરયાવમ) નરકોપમ
(વેયણ) વેદના કો દુઃખો કો (અણુભવતિ) ભોગતે રહતે હેં। (જહ-
નામળેમેહિં ણિરયગતિગમનતિરિયભવસયસહસ્સપરિયટ્ટણહિં) યદિ અનેક
નરકગતિ તિર્યચગતિ કે લાઘોં ભવોકો ધારણ કરતે ૨ વ્યતીત હુણ
(અણતકાલેણ) નિગોદ કી અપેક્ષા અનતકાલ કે વાદ (કહિં વિ)
કિમી તરહ (મણુયમાવ) મનુષ્યયોનિ મી ઉન્હેં (લહિંતિ) પ્રાપ્ત હો ગઈ

આ પ્રમાણે તે નરકોમા શીત અને ઉષ્ણતા જન્ય અનેક પ્રકારની વેદ-
નાઓ નારકી એવોને પીડા પડોઆડ્યા કરે છે "તઓ વિ ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા"
નરકોમા જઈને ત્યાના વિવિધ પ્રકારના દુખો ભોગવતા ભોગવતા તે એવાનુ
અનેક સાગર પ્રમાણ આયુષ્ય ત્યા પૂર થાય છે ત્યારે તેઓ ત્યાથી નીકળીને
વળી પાછા "તિરિયજોણિ પવજ્જતિ" તિર્યચ્ય યોનિમા જન્મ ધારણ કરે છે
"તિહિં વિ" ત્યા પણ તેઓ "નિરયોગમ" નરક મમાન "વેયણ" વેદનાઓ
દુખો "અણુભવતિ" ભોગવે છે "જહનામળેમેહિં ણિરયગતિગમનતિરિય
ભવસયસહસ્સપરિયટ્ટણહિં" એ અનેક નરક ગતિ, તિર્યચગતિના લાખો લેવો
ધારણ કરતા કરતા નિગોદની અપેક્ષાએ પસાર થયેલ "અણતકાલેણ" અનત
કાળ પછી "કહિં વિ" કોઈ પણ રીતે "મણુયમાવ" મનુષ્યગતિમા તેમનો

મપિ મનુજભાવ=મનુષ્યોર્નિ લભન્તે=પ્રાપ્નુવન્ત્યપિ ચેત્તર્હિ 'તત્થવિ ય' તત્રાપિ ચ
 ભવન્તિ=જાયન્તે, 'અઞારિયા' અનાર્યાઃ=મ્લેચ્છાઃ શકયવનાદયઃ ક્રોદ્ધા ?
 इत्याह- 'नीचकुलसमुपपन्ना' नीचकुलममुत्पन्नाः 'आरियजणे वि लोयवज्जा'
 आर्यजनेऽपि लोकायाः=यदि कदाचिन्मगधाधार्यदेशे समुत्पन्ना अपि लोकवर्ज-
 नीयाः श्वपाकादिकुलसभूता भवन्ति जनैस्तिरस्कृता इत्यर्थः, पुनश्च 'तिरिस्स
 भूया य' तिर्यग्भूताश्च पशु तुल्या विवेकशून्यत्वात् 'अकुसला' अकुशलाः=
 वस्तुतत्त्वाऽनभिज्ञा 'कामभोगतिमिया' कामभोगवृषिताः=तत्र कामौ=शब्दरूप
 लक्षणौ भोगाः=गन्धरसस्पर्शलक्षणास्तेषु वृषिताः=आसक्ताः 'जहिं' यत्र मनुष्य
 भवेऽपि लोकमात्रकुले 'निरयवत्तणी भवप्पवचकरणणोळ्ळि पुणो त्रि ससाराव-

તો (તત્થવિ ય) વહા પર મી ચે (અઞારિયા) અનાર્યમનુષ્યો-મ્લેચ્છો
 શક યવન આદિ પર્યાયો મેં હી (ભવન્તિ) ઉત્પન્ન હોતે હે । (નીચકુલ-
 સમુપ્પન્ના) ચે અનાર્યજન નીચકુલ કે હોતે હે । (આરિયજણેવિ) યદિ
 કદાચિત્ મગધ આદિ આર્યદેશ મેં ઉત્પન્ન હુણ તો ચે વહા (લોયવજ્ઞા)
 લોકવાહ્યજનો મેં-ચાળડાલ આદિ નિંદિત નીચકુલો મેં-ઉત્પન્નહોતે હે ।
 વહાં સદા ચે તિરસ્કૃત હોતે રહતે હે । (તિરિયભૂયાય) વિવેક શૂન્ય
 હોને કે કારણ ચે તિર્યચ જૈસે હી વહા બને રહતે હે (અકુસલા) વસ્તુ
 તત્ત્વ સે અનભિજ્ઞ રહતે હે । (કામભોગતિસયા) શબ્દ, રૂપ લક્ષણ કામ
 એવ ગંધ રસ, સ્પર્શ લક્ષણ ભોગો મે આસક્ત રહતે હે, (જહિં) લોક
 વાહ્ય કુલો મે મનુષ્ય ભવ પ્રાપ્ત કર લેને પર મી (નિરિયવત્તણી) નરક-
 ગમન કે માર્ગભૂત, (ભવપ્પવચકરણણોલ્લિ) ભવ પરપરારૂપ પ્રવાહ કે

“લહિંતિ” જન્મ થાય તો પણ “તત્થવિ ય” તે લોકો “અઞારિયા” અનાર્ય
 મ્લેચ્છ, શક, યવન આદિ જાતિમા જ “ભવન્તિ” ઉત્પન્ન થાય છે “નીચકુલ
 સમુપ્પન્ના” તે અનાર્ય લોકો નીચા કુળના હોય છે “આરિયજણેવિ” જે
 તેઓ કદાચ મગધ આદિ આર્યભૂમિમા જન્મ પામે છે તો તેઓ ત્યા “લોય
 વજ્ઞા” લોકવાહ્ય જનોમા-ચાડાળ આદિ નિંદિત નીચકુળોમા ઉત્પન્ન થાય છે
 ત્યા તેઓ સદા તિરસ્કૃત થયા કરે છે “તિરિય ભૂયાય” વિવેકહીન હોવાને
 કારણે તેઓ તે મનુષ્ય યોનિમા હોવા છતા પણ તિય થ જેવા જ હોય છે,
 ‘અકુસલા’ વસ્તુ તત્ત્વથી તેઓ (અનભિજ્ઞ) અજાણ રહે છે, “કામભોગતિ
 સયા” શબ્દ, કામ, રસ, ગંધ, સ્પર્શ આદિ લાગોમા અસક્ત રહે છે “જહિં”
 લોકવાહ્ય કુળોમા મનુષ્ય ભવ પામ્યા છતા પણ ‘નિરયવત્તણી’ નરક ગમનના
 કારણભૂત “ભવપ્પવચકરણણોલ્લિ” ભવ પરપરારૂપ પ્રવાહના પ્રવર્તન, તથા

યગા હત્યર્થઃ ‘કોસિગારકીડે’ કોશિકારકીટ ઇવ ‘અટ્કમ્મતતુવળવધણેણ’
 અટ્કમ્મતતુવળવન્ધનેન=અટ્કમ્મમિ=જ્ઞાનાવરણાદિવશળૈઃ તન્તુમિઃ = સૂત્રૈ
 રિય યદ્ ઘન=દૃઢ વન્ધન તેન ‘અપ્પગ’ આત્માન ‘વેદેતિ’ વેદ્યન્તિ । યથા
 કોશીકારકીટાઃ સૂત્રાણિ મૃજન્તસ્તેરે વ વન્ધનભૂતૈ વેદિતા મયન્તિ તથૈવ
 અદત્તાદાયિન સ્વેનૈવ ક્રિયમાણૈ જ્ઞાનાવરણાદિ લક્ષણૈરટ્કમ્મમિ મૂલસ્થાનીયૈ
 વન્ધનૈર્વધ્યન્તે ઇતિ ભાવઃ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

અટ્કમ્મમિર્નિર્દ્વાઃ સન્તઃ સત્સારસાગર વસન્તીતિ તમેવ વર્ણયન્નાદ—
 ‘એવ નરગ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવ નરગતિરિયનરઅમરગમણ — પેરંતચક્કવાલ
 જમ્મજરામરણકરણગંભીરદુક્ખપક્ખુભિયપરસલિલ સજોગ
 વિજોગવીચિ-ચિતાપસગપસારિય-વહવધમહલ્લવિડલકલ્લોલ--
 કલ્લુણવિલવિય-લોભકલકલતવોલવહુલં અવમાણણફેણં તિવ્વ-
 સ્વિસણ-પુલપુલપ્પમૂય-રોગવેયણ-પરાભવવિણિવાય-ફરુસધરિસણ-

રહતી હૈ । અર્થાત્ યે સદા પરજીવોંકો સત્તાપ પહુચાને મેં હી પરાયણ બને
 રહતે હેં તથા (કોસિગારકીડેવ) કોશિકાર કીડે કી તરહ વે (અટ્ક-
 કમ્મતતુવળવધણેણ) આટકર્મ રૂપ તન્તુઓ કે ઘનિષ્ઠ વન્ધન સે (અપ્પાણ)
 અપને આપકો (વેદેતિ) વેદિત કરતે હેં અર્થાત્ જિસ પ્રકાર કોશિકાર
 કીટ સૂત્રો કા સર્જન કરતે હુણ વધનભૂત ડન્હીં સૂત્રો સે વેદિત હો જાતે
 હૈ ડસી તરહ અદત્તગ્રાહીજન અપને દ્વારા કિયે ગયે સૂત્રસ્થાનીય જ્ઞાના
 વરણ આદિ અટ્ક કર્મોં સે જો કિ આત્મા કો દૃઢરૂપ વાધનેવાલે હેં
 વધદશા કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈ ॥ સૂ-૧૮ ॥

પાપકૃત્યમા જ તેમને વધારે શ્રદ્ધા હોય છે, એટલે કે અન્ય જીવોને કષ્ટ
 પહોચાડવાને તેઓ સદા તત્પર રહે છે તથા “ કોસિગારકીડેવ ” કોશિકારની
 જેમ તેઓ “ અટ્કમ્મતતુવળવધણેણ ” આટ કર્મરૂપી તત્તુઓના મજબૂત
 બંધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની જાતને “ વેદેતિ ” લપેટી લે છે એટલે કે જેમ
 રેશમનો કીડો (કોશિકાર) તત્તુઓનું સર્જન કરીને તે તત્તુઓને પોતાના શરીર
 ફરતા તેમા લપેટીને તેમા બધાઈ જાય છે, તેમ અદત્તાદાન દેનાર માણસ પોતે
 કરેલા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે જે આત્માને મજબૂત રીતે બાધનારા છે,
 તે કર્મોંરૂપ તત્તુથી બાધનની સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ. ૧૮ ॥

समावडिय-कठिणकम्मपत्थरतरंग-रिगंतनिच्चमच्चुभयतोयपट्टं
 कसायपायालकलससकुल भवसयसहस्सजलसंचय अणंतं उठ्वेग-
 जणयं अणोरपार सहवभय भयंकरं पइभय अपरिमियमहिच्छ
 कलुसमइ वा उठ्वेग उठ्ठम्ममाणाऽऽसापिवासा पायालं कामरइ-
 रागदोसवधणवहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयारं, मोहम-
 हावत्तभोगभाममाणगुप्पमाणुच्छलंतवहुगवभवासपच्चोणियत-
 पाणियं पधावियवसण-समावण्णरुण्णचडमारुय -समाहया-
 मणुण्णवीचिवाकुलियभगफुट्टतनिट्टरुल्लोलसंकुलजल पमाय-
 वहुचडदुट्टसावयसमाहयउद्धायमाणगपूरघोरविद्धंसणत्थवहुलं
 अपणाणभमतमच्छपरिहत्थ अनिहुतिदिय-महामगरतुरियच-
 रियसोवखुवभमाणसतावनिच्चयचलतचवलचंचलअत्ताणा-स-
 रणपुव्वकम्मसचयोदिण्णवज्जवेदिज्जमाणदुहसयविवागघुणंत-
 जलसमूह, इड्डिरससायगारवोहारगहिय — कम्मपडिवद्धसत्त-
 कड्डिज्जमाण-निरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुल, अरइरइभय-
 विसाय सोगमिच्छत्तसल्लसकड अणाइसताणकम्मवधणकिलेस
 चिक्खिल्लदुट्टत्तार अमरनरतिरियनिरयगइगमणकुडिलपरिवट्टवि-
 उलवेल-हिसालियअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारभकरणकारावणा-
 णुमोयण-अट्टविहअणिट्टकम्मपिडियगुरुभाराकतदुग्गजलोघदूर-
 निव्वोलिज्जमाणउम्मग्गनिमग्गदुल्लहतल सरीरमणोमयाणिदुक्खा-
 णि उप्पियता सायासायपरितावणमय उव्वुडुनिव्वुडुयकरेताच-
 उरतमहतमणवयग्गं रुद्ध ससारसायरअट्टिय अणालवणपइट्टाणम-
 प्पमेय चुलसीइजोणिसयसहस्सगुविल अणालोगमधया अणंत-
 काल जावणिच्च उत्तत्थसुण्णभयसण्णसपउत्ता वसति उठ्वि-
 गवासवसहि ॥ सू० १९॥

ટીકા-‘અમર’ અમરના પ્રકારેણ આત્મનઃ કર્મભિર્ન્યવનેન ‘નરગતિરિયનરઅમર ગમણ પેરતચક્કવાલ’ નરકતિર્યદ્નરામરગમનપર્યન્તઃકલાલ=તત્ર ‘નરક’, તિર્યક્, નરઃ, અમર,’ ઇતિ ચતુર્ગતિપુ ગમન = તદેવ પર્યન્તઃકલાલ=વાલપરિધિમણ્ડલ યસ્ય સ તથા તમેવમ્ભૂત સમારસાગર વસન્તીતિ વદયમાણેન સમ્યન્વઃ । પુનઃ કથં ભૂતમિત્યાહ—‘જન્મજરામરણકરણગમીરદુઃખપક્ષુભિયપડરસલિલ’ જન્મ-જરામરણકરણગમીરદુઃખપક્ષુભિનપ્રચુરસલિલ=તત્ર જન્મજરામરણાદિભિઃ વર્ગૈઃ= સાધનભૂતૈર્યદ્ગમ્મીરદુઃખમ્=અતિમહાક્લેશસ્તદેવ પ્રધુભિત = અતિવેગવ્યાકુલિત પ્રચુર સલિલ=જલ યત્ર સ તથા તમ્, યથા સમુદ્રો વિપૃજલરાશિપૂર્ણો ભવતિ તથૈવ સમુદ્રરૂપ સમારોડપિ જલસ્વરૂપત્રિવિધદુઃખવ્યાપ્ત ઇત્યર્થઃ, એવમેવાગ્રેડપિ સમુદ્રધર્માન્ રૂપકાડ્ઞકારેણ સસારેડપિ પ્રદર્શયતિ પુનર્યથા—‘સન્નિગવિજોગ

યે જીવ જ્ઞાનાવરણ આદિ અષ્ટવિધ કર્મોં સે વધદશા કો પ્રાપ્ત હોકર સસાર સાગર મેં રહતે હે સૂત્રકાર એવ વર્ણન કરતે હે—

‘ એવ નરગ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવ) હસ પ્રકાર અપની આત્માકો કર્મોંકે સાથ ઇક ક્ષેત્રાવ-ગાહરૂપ વધદશા સે વાધનેકે કારણ યે અદત્તગ્રાહીજન (નરગતિરિયનર અમરગમણપેરતચક્કવાલ) નરક, તિર્યક્, મનુષ્ય એવ દેવગતિયોં મેં પરિભ્રમણ હવ વાહ્ય પરિધિમણ્ડલ વાલે, તથા (જન્મજરામરણકરણગમીર દુઃખપક્ષુભિયપડરસલિલ) જન્મ, જરા, મરણજન્ય અતિ મહાક્લેશ-રૂપ પ્રધુભિત એવ પ્રચુર જલવાલે સસાર સાગર યે હી ચક્કર કાટા કરતે હે—પરિભ્રમણ કિયા કરતે હે । સૂત્રકાર રૂપકાલકાર સે હસી સસાર

તે જીવે જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોંથી બાધનની દશા પ્રાપ્ત કરીને સસાર સાગરમા રહે છે હવે સૂત્રકાર તેતુ વર્ણન કરે છે—

“ એવ નરગ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એવ ” તે રીતે યોતાના આત્માને કર્મોંની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ બાધદશાથી બાધવાને કારણે તે અદત્તગ્રાહી માણુએ “ નરગતિરિયનરઅમર-ગમણપેરતચક્કવાલ ” નરક, તિર્યક્, મનુષ્ય અને દેવ ગતિયોંમા પરિભ્રમણરૂપ વાહ્ય પરિધિમણ્ડલવાળા, તથા “ જન્મજરામરણકરણગમીરદુઃખ પક્ષુભિયપડરસલિલ ” જન્મ, જરા, મરણ જન્ય અતિશય મોટા ક્લેશરૂપ પ્રધુભિત અને પ્રચુર જળવાળા સસાર સાગરમા જ ચક્કર લગાવના કરે છે— પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે, સૂત્રકાર રૂપક અલંકારથી આ સસારસાગરતુ વર્ણન

વીચિ-ચિંતાપસગ પસારિય - વહવધમહલ્લવિઝલકલ્લોલકલ્લુણવિલવિયલોભકલ્લ-
લતગોલગહુલ ' તત્ર=' સજોગવિજોગવીચિ ' સયોગવિયોગા એવ વીચયઃ=તરદ્વા
યત્ર સ તથા, સમુદ્રો યથા—જત્તરદ્વયુક્ત એવ સસારોઽપ્યનિષ્ઠસયોગેષ્ટવિયોગ
રૂપ-તરદ્વયુક્ત, તથા ' ચિંતાપસગપસારિય ' ચિંતાપસદ્ગપસારિતઃ=ગોકસમૂહ
વિસ્તૃતઃ ' વહવધમહલ્લવિઝલકલ્લોલ ' વધવધમહાવિપુલગહ્લોલાઃ, તત્ર વધાઃ =
ચપ્ટયાદિ તાડનાનિ, વન્ધા=રજ્જ્વાદિ વન્ધનાનિ તાન્યેવ મહાન્તઃ=સુદીર્ઘાઃ
વિપુલા=વિશાલાશ્ચ કલ્લોલાઃ=મહાતરદ્વા યત્ર સ ત તથા ' કલ્લુણવિલવિયલોહ-
કલ્લલતગોલગહુલ ' કરુણવિલ્પિતલોભકલ્લકલાયમાનગોલગહુલ.=કરુણવિલ્પિત=

સાગર કા વર્ણન કરતે દુષ્ટ કહ રહે હૈં કિ-જિસ પ્રકાર સમુદ્ર કા વાહ્ય
પરિધિમહલ્લ હોતા હૈં ડસી તરહ્ ઇસ સસાર રૂપ સમુદ્ર કા વાહ્યમહલ્લ
ચતુર્ગતિયો મૈં પરિભ્રમણ કરના રૂપ હૈં । જિસ તરહ્ સમુદ્ર અપાર જલ-
રાશિ સે ભર્યા પરિપૂર્ણ રહ્તા હૈં, ડસી તરહ્ યહ સસાર ભી જન્મ જરા
એવ મરણ જન્ય ગમ્ભીર દુઃસ્વરૂપ જલ સે પૂર્ણ ભરા દુઝા હૈં । (સજોગ
વિજોગ વીચિ-ચિંતા પસગ-પસારિય-વહ-વધ-મહલ્લ-વિઝલ-કલ્લોલ
કલ્લુણ-વિલવિય-લોભકલ્લલતગોલગહુલ) ઇસ સસાર મૈં (સજોગ
વિજોગ વીચિ) અનિષ્ઠ સયોગ એવ ઇષ્ટવિયોગ જીવોં કો પ્રતિક્ષણ પ્રાપ્ત
હોતે રહ્તે હં સો યે અનિષ્ઠસયોગ ઇષ્ટવિયોગ હી ઇસમે વીચિ-લહરોં
જૈસે હૈં । ત તથા (ચિંતાપસગપસારિય) વિવિધ પ્રકાર કે શોક સમૂહ સે
યહ વિસ્તૃત હો રહ્તા હૈં । (વહવધ) વધ-ચપ્ટયાદિ દ્વારા વાધના યે હી
જિસમે (મહલ્લ) વડી ૨ (વિઝલ) વિશાલ (કલ્લોલ) કલ્લોલેં હૈં ।

ડરતા કહે છે કે-જેમ સમુદ્રનું બાહ્ય પરિધિમહલ્લ હોય છે, એ જ પ્રમાણે
આ સસાર રૂપી સમુદ્રનું ચતુર્ગતિયોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ બાહ્યપરિધિમહલ્લ
જે જેમ સમુદ્ર અપાર જળ રાશિથી ભર્યા પરિપૂર્ણ રહે છે, તે જ પ્રમાણે
આ સસાર પણ જન્મ, જરા અને મરણ જન્ય ગમ્ભીર દુઃખરૂપી
જળથી પૂરેપૂરો ભરેલો છે “સજોગવિજોગવીચિ-ચિંતા પસગ પસારિય-
વહવધમહલ્લ વિઝલકલ્લોલકલ્લુણવિલવિયલોભકલ્લલતગોલગહુલ ” આ સસારમા
“સજોગવિજોગવીચિ” અનિષ્ઠનો વિયોગ જીવોને ક્ષણે ક્ષણે પ્રાપ્ત થયા
કરે છે તે અનિષ્ઠ સયોગ અને ઇષ્ટવિયોગ જ તેમા વીચિ-લહેરો જેવો છે
તથા “ચિંતાપસગપસારિય” વિવિધ પ્રકારના શોકસમૂહથી તે વિસ્તૃત થઈ
રહેલ છે “વહવધ” વધ-ચપ્ટી આદિ દ્વારા વાધન જ જેમા “મહલ્લ” મોટા
મોટા “વિઝલ” વિશાળ “કલ્લોલ” મોળા સમાન છે “કલ્લુણવિલવિય”

રોગદુઃસ્વાદિજનિતદીનવિલાપણ લોભમોહન કલકલાયમાનઃ=કલકલશબ્દયુક્તો
 યો વોલઃ=ધ્વનિ સ વહુલો યત્ર સ તત્તેતિ સયોગાદોનાં પદાના કર્મમારયસ્તં
 તથા 'અવમાણણફેણ' અપમાનનફેનમ્=અપમાનફેનયુક્ત 'તિવ્વર્ણિસણપુલં
 પુલપ્પભૂયરોગવેયણપરાભવવિણિવાયફરુસધરિસણસમાવડિયકઠિણકમ્મપત્થરતરગ
 રિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપટ્ટ' તત્ર 'તિવ્વર્ણિસણ' તીવ્રર્ણિસણમ્=તીવ્રનિન્દા તથા
 'પુલપુલ' નિરન્તર પ્રભૂતા=વહૂલા જાયમાના યા 'રોગવેયણ' રોગવેદનાઃ=
 નાનાવિધાઽઽવિવ્યાધિ-પીડાસ્તાઃ, તથા 'પરાભવવિણિવાય' પરાભવઃ=અના-
 દરઃ, તસ્ય વિનિપાતઃ=વિશેષેણ પ્રાણ, તથા 'ફરુસધરિસણ' પહરાધર્વગાનિ=
 કઠોરવચનૈઃ ભર્ત્સનાનિ ચ તાનિ 'સમાવડિય' સમાવૃત્તાનિ=સમાવૃત્તાનિ યેભ્ય
 સ્તાન્યેવમ્ભૂતાનિ યાનિ 'કઠિણકમ્મ' કઠિણકર્મણિ=જ્ઞાનાવરણાદીનિ ક્લિષ્ટ

(કલુણવિલચિય) રોગ સે ણ્વ દુઃસ્વાદિ સે જન્ય કરુણ વિલાપ તથા
 (લોભ) લોભ ણ્વ મોહ સે જન્ય જો (કલકલત) કલકલ શબ્દ, હન
 સે યુક્ત (વોલ) ધ્વનિયા હી જહાં (વહુલ) વહુલરૂપ મે વર્તમાન હૈ
 (અવમાણણફેણ) અપમાનરૂપ ફેન સે જો યુક્ત થના હુઆ હૈ, (તિવ્વ
 ર્ણિસણ પુલપુલ ભૂયરોગ વેયણપરાભવ વિણિવાયફરુસધરિસણ સમાવડિ
 યકઠિણકમ્મ પત્થર તરગ રિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપટ્ટ) (તિવ્વર્ણિસણ)
 તીવ્ર નિંદાઈ તથા (પ્રભૂયરોગવેયણ) નિરતર જાયમાન અનેક રોગ વેદ
 નાઈ-નાના પ્રકાર કી આધિ વ્યાધિ રૂપ પીડાઈ, (પરાભવવિણિવાય)
 અનાદર કી વિશેષ રૂપ સે પ્રાપ્તિ, તથા (ફરુસધરિસણસમાવડિય)
 કઠોર વચનો દ્વારા નિર્ભર્ત્સન-ફટકારના, યે સઘ જિનકે ઉદય સે જીવો
 કો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હૈ, એસે (કઠિણકમ્મપત્થર) જ્ઞાનાવરણ આદિ ક્લિષ્ટ

રોગ તથા દુઃસ્વાદિથી ઉત્પન્ન થયેલ કરુણ વિલાપ તથા “લોભ” લોભ અને
 મોહથી જન્ય જે “કલકલત” “કલકલ” શબ્દથી યુક્ત “વોલ” અવાજો
 જે તથા “વહુલ” વધારે પ્રમાણમાં વિદ્યમાન છે, “અવમાણણફેણ” અપ
 માનરૂપ શીણથી જે યુક્ત છે, “તિવ્વર્ણિસણપુલ પુલભૂયરોગવેયણપરાભવ
 વિણિવાયફરુસધરિસણસમાવડિયકઠિણકમ્મપત્થરતરગરિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપટ્ટ”
 “તિવ્વર્ણિસણ” તીવ્ર નિંદાઓ તથા “પ્રભૂયરોગવેયણ”
 નિરતર ઉત્પન્ન થતી અનેક રોગ વેદનાઓ-વિવિધ પ્રકારની આધિ વ્યાધિ રૂપ
 પીડાઓ “પરાભવવિણિવાય” મોટે ભાગે અનાદરની પ્રાપ્તિ, તથા “ફરુસ
 ધરિસણસમાવડિય” કઠોર વચનો દ્વારા નિર્ભર્ત્સનધિક્કાર, એ બધું જેમના
 ઉદયથી જીવોને પ્રાપ્ત થયા કરે છે, એવા “કઠિણકમ્મપત્થર” જ્ઞાનાવરણ

કર્માણિ તાન્યેવ ચે પ્રસ્તરાઃ=સાગરપાપાણરૂપાસ્તૈઃ કૃત્વા 'તરગરિંગત' તરગરિંગત
=તરંગૈ=રુલ્લોલૈઃ રિંગત=ચન્ત 'નિચ્ચમચ્ચુભયતોયપટ્ટ' નિત્યમૃત્યુભયતોયપટ્ટ=
નિત્ય=ુત્ય મૃત્યુભય=મરણભયમેવ તોયપટ્ટ=જલોપરિતનભાગો યત્ર સ તથા ત
મહાપાપાણાઘાતોત્થિતમદાતરગ્ગચ્ચલજલોપમૃત્યુભયસકુલઃ સાગરો યથા ભરતિ
તથા સમારોઽપિ મર્ત્સનાપમાનનાદિ નાનાદિ, સકલપદજ્ઞાનાવરણાદિ ક્ષિણ્ટકર્મ
પાપાણસમુત્થિત પુનઃ પુનર્જન્મજરામરણભયતરગ્ગચ્ચાપ્ત इत्यर्थ । 'કસાયપાયાલ-
કલસસકુલ' કસાયપાતાલકલસસકુલ=કપાયા =ક્રોધાદ્યશ્ચત્વારસ્તે એવ પાતા-
લકલસાસ્તૈઃ સકુલો યઃ સ તથા ત, 'ભવસયસહસ્સજલસચય' ભવસયસહસ્સજ-
લસચય=ભવસયસહસ્સાપ્યેવજલસચયઃ = જલરાશિર્ધન સ તથા તમ્, 'અણત'

કર્મરૂપ પાપાણોં સે ડઠી હુઈ, (તરગરિંગત) તરગોં સે જો ચચલ ચના
હુઆ હૈ, તથા જો (નિચ્ચમચ્ચુભય) અચઠ્યભાવી મૃત્યુ કે ભયરૂપ
(તોયપટ્ટ) જલકે ઉપરિતન ભાગ સે યુક્ત હો રહા હૈ, અર્થાત્-જિસ
પ્રકાર સમુદ્ર મહાપાપાણોં આદિ કે આઘાત સે ઉત્થિત મહાતરગોં સે
ચચલ તથા જલ સે ભરા હુઆ હોને કે કારણ મૃત્યુ કે ભય સે સકુલ
હોતા હૈ ઉસી તરહ સસાર ભી મર્ત્સના અપમાન આદિ નનાદુઃસ્વરૂપ
ફલકો દેને વાઠે ક્ષિણ્ટકર્મરૂપ પાપાણોં સે સમુત્થિત ચાર ચાર જન્મ,
જરા, મરણ, કે ભયરૂપ તરગોં સે વ્યાપ્ત હો રહા હૈ । (કસાયપાયાલ-
કલસસકુલ) તથા યહ સસાર સાગર ક્રોધાદિક ચાર કપાયરૂપ પાતાલ
કલસોં સે યુક્ત હૈ (ભવસયસહસ્સજલસચય) લાખોં ભવરૂપ જલસચય
સે યહ યુક્ત હૈ । (અણત) અનન્ત સસારી જીવોં કી અપેક્ષા યહ અન્ત

આદિ ક્ષિણ્ટ કર્મરૂપ પાપણોથી પેદા થયેલ " તરગ રિંગત " તરગોથી જે ચચળ
બનેલ છે, તથા જે " નિચ્ચમચ્ચુભય " અવશ્ય ભાવી (જરૂર થનારા)
મૃત્યુના ભયરૂપી " તોયપટ્ટ " જળના ઉપરિતન ભાગથી યુક્ત છે, એવા સસાર
સાગરમાં તે પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે- એટલે કે જેમ સમુદ્ર મહાપાપાણો
આદિના આઘાતથી ઉત્પન્ન થયેલ તરગોથી ચચળ બનેલ હોય છે તથા પાણીથી
ભરપૂર હોવાને કારણે તેમાં પડનારને મારે મોતનો ભય રહે છે તેમ સસાર
પણ ભર્ત્સના અપમાન આદિ વિવિધ દુખરૂપ ફળ દેનારા ક્ષિણ્ટ કર્મરૂપ
પાપણોથી ઉત્પન્ન થતા, વારંવાર અનુભવાતા જન્મ, જરા, મરણ આદિના
ભયરૂપ તરગોથી વ્યાપ્ત છે " કસાયપાયાલકલસસકુલ " તથા આ સસાર
સાગર ક્રોધ આદિ વ્યાપરૂપ પાતાળ ડળશોથી યુક્ત છે " ભવસયસહસ્સજલ
સચય " લાખો ભવરૂપ જળમયથી તે યુક્ત છે " અણત " અનન્ત સસારી

અનન્તમ્=સમારિ જીવાપેક્ષયા અન્તરહિતમ્ ‘ ઉન્નેગજળય ’ ઉદ્દેગજનક=આધિ-
 વ્યાધિ પ્રભૃતિદુઃસ્વશતયુક્તત્વાત્ ‘ અણોરપાર ’ અનર્વાક પારમ્=અદૃષ્ટપાર ‘ મહ
 ભય ’ મહાભય=મહાભયજનક દુસ્તરત્વાત્, મયદ્ધર=કર્મપ્રકૃતિમદ્દામત્સ્યમકસ
 દિભિઃ વ્યાપ્તત્વાત્, ‘ પદ્મય ’ પ્રતિભય=પ્રતિપ્રાણિન ભયજનક મકલપાણિમયો
 ત્પાદકત્વાત્ ‘ અપરિમિય મહિચ્છકલુસમતિ વાઝવેગ ઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ’
 અપરિમિતમદેચ્છાકલુપમતિવાયુવેગોદ્દમ્મમાનાશાપિવાસાપાતાલમ્, તત્ર અપરિમિ
 તા=અપરિમાણા મહતી=વિશાળા ચેચ્છા=વિષયાભિલાષા, ‘ કલુસ’ કલુપા=મલિના
 યા મતિ =બુદ્ધિઃ સા એવ ‘ વાયુવેગ’ વાયુવેગસ્તેન ‘ ઉદ્દમ્મમાણ ’ ઉદ્દમ્મમાના=
 =પ્રવર્દ્ધમાના યા આશાઃ=અપ્રાપ્તાર્થસ્ય પ્રાપ્તિ સમ્ભાવનાઃ, પિવાસાઃ=પ્રાપ્તાર્થસ્યોપ
 ભોગવાઙ્ઠાઃ, એતા એવ પાતાલ યત્ર સ તથા તમ્, અપરિમિતમદેચ્છામલિનબુદ્ધિ

રહિત છે । (ઉન્નેગજળય) આધિ વ્યાધિ આદિ સૈકદ્દો દુઃસ્વોં સે યુક્ત
 હોને કે કારણ યદ્ ઉદ્દેગજનક છે । તથા (અણોરપાર) યદ્ અદૃષ્ટ પાર-
 વાલા છે-હસકા પાર અદૃષ્ટ છે । (મહાભય) દુસ્તર હોને સે યદ્ જીવોં
 કો મહાભય કા જનક છે । કર્મોં કી ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ મહામત્સ્ય
 મકર આદિ જલચર જીવોં સે યદ્ વ્યાપ્ત છે । સમસ્ત પ્રાણિયોં કે લિયે
 ભય કા ઉત્પાદક હોને કે કારણ યદ્ (પદ્મય) દરેક જીવ કે લિયે
 ભય કા જનક બના હુઆ છે । (અપરિમિયમહિચ્છકલુસમતિવાઝવેગ
 ઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ) (અપરિમિય) અપરિમિત તથા (મહિચ્છ)
 મહતા વિષયાશારૂપ એવ (કલુસમતિ) મલિનબુદ્ધિરૂપ (વાઝવેગ) વાયુ
 કે વેગ સે (ઉદ્દમ્મમાણ) પ્રવર્દ્ધમાન એસી (આશા) આશા-અપ્રાપ્ત અર્થ
 કે પ્રાપ્ત કરને કી સભાવનારૂપ તથા (પિવાસા) પિવાસા-અર્થ કા ઉપ

જીવોની અપેક્ષાએ તે અન્તરહિત છે “ ઉન્નેગજળય ” આધિવ્યાધિ આદિ
 સેકડો હુ ખોથી યુક્ત હોવાથી તે ઉદ્દેગજનક છે તથા “ અણોરપાર ” તે
 અસીમ-અપાર છે “ મહાભય ” દુસ્તર હોવાથી તે જીવોને માટે મહાભય
 પેદા કરનાર છે કર્મોની ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ મહામત્સ્ય, મકર આદિ જળ
 ચર જીવોથી તે વ્યાપ્ત છે સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે ભય પેદા કરનાર
 હોવાથી તે ‘ પદ્મય ’ દરેક જીવને માટે ભયજન છે “ અપરિમિય મહિ
 ચ્છકલુસમતિવાઝવેગઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ ” “ અપરિમિય ” અપરિ
 મિત તથા ‘ મહિચ્છ ’ મોટી વિષય વાસના રૂપ અને “ કલુસમતિ ” મલિન
 મતિરૂપ, “ વાઝવેગ ” વાયુના વેગથી “ ઉદ્દમ્મમાણ ” વધતી જતી એવી
 “ આશા ” આશા-અપ્રાપ્ત વસ્તુને પ્રાપ્ત કરવાની સભાવના-તથા “ પિવાસા ”

વાયુપ્રવર્ધમાનાશાતૃષ્ણાદિરૂપાઽસ્તાપપાતાલયુક્તમિત્યર્થઃ । તથા—‘કામરહરાગદોસ
વધણવહુનિહસકપ્પવિઝલદગરયરયધયાર’ કામરતિ-રાગદ્વેષ-વધન-વહુવિધસક-
લ્પવિપુલ્લદકરજોરયાન્યમારમ્, તત્ - કામરતિઃ = શબ્દાદિપ્રભિરુચિ, રાગઃ =
અનુકૂલવિષયેષુ પ્રીતિઃ, દ્વેષઃ = તેષ્વેવપ્રતિકૂલેષ્વપ્રીતિશ્ચેત્યેતાન્યેવ વન્યનાનિ=
વન્યકારણાનિ તથા વહુવિધાશ્ચ સકલ્પાઃ=મનઃ સંકલ્પા इत्येतेषા द्वन्द्वः ते काम-
રत्यादय एव विपुलदक रजासि=विस्तीर्णजलकणिकाः तेषा यो रयः=वेगस्तद्
રૂપોઽન્યકારો યત્ર સ તથા તમ્ । કામરત્યાદિરૂપજલકણિકા વેગ સમુત્પન્નાન્યકા
રયુક્તમિત્યર્થઃ । પુન કીદૃશ ? મિત્યાહ—‘મોહમહાવત્તભોગભ્રમમાણગુપ્પમાણુચ્છ-
લત્તવહુગન્મવાસપન્ચોણિયત્તપાણિય’ મોહમહાવત્તભોગભ્રમદ્ગુપ્પદુન્નચ્છલ્લુગર્ભ
વાસપત્યવનિવૃત્તપ્રાણિકમ્, તત્—‘મોહમહાવત્ત’ મોહમહાવત્ત=મોહ એવ મહાના-

ભોગ કરને કી વાઝારૂપ (પાયાલ) પાતાલ સે યહ યુક્ત હૈ, તથા
(કામરહરાગદોસ વધણ વહુવિહસકપ્પવિઝલદગરયરયધયાર) (કામરહ)
શબ્દાદિક વિષયોં મે અભિરુચિરૂપ કામરતિ, (રાગ) અનુકૂલ વિષયોં
મે પ્રીતિ રૂપ રાગ, ણ્વ (દોસ) પ્રતિકૂલ શબ્દાદિવિષયોં મે અપ્રીતિ દ્વેષ,
જો (વધણ) વધ કે કારણ હૈ, તથા (વહુવિહ સકપ્પ) વહુત પ્રકાર કે
જો મનઃ સંકલ્પ હૈ યે હી સવ હસ સસારસમુદ્ર મેં (વિઝલ દગરય)
વીસ્તીર્ણદકરજ-જલકળ હૈ । ઇનકા (રયધયાર) વેગરૂપ અધકાર હસમેં
સદા વ્યાપ્ત હો રહા હૈ અર્થાત્-કામરત્યાદિરૂપ જલકળોં કે વેગોં સે સમુ-
ત્પન્ન અધકાર સે યહ યુક્ત ઘના હુઆ હૈ (મોહ મહાવત્ત-ભોગભ્રમમા-
ણગુપ્પમાણુચ્છલત્તવહુગન્મવાસ પન્ચોણિયપાણિય) તથા (મોહમહાવત્ત)
મોહરૂપ મહાન્ આવર્ત્ત હસમેં ઊઠ રહે હૈ । ઓર ઇન આવર્ત્તોં મે જહા

પિપાસા-પ્રાપ્ત ચીજનેા ઉપભોગ કરવાની ઇચ્છા રૂપ “ પાયાલ ” પાતાળથી તે
યુક્ત છે, તથા “ કામરહરાગદોસવધણવહુવિહસકપ્પવિઝલદગરયરયધયાર ”
“ કમરહ ” શબ્દાદિ વિષયોમા અભિરુચિરૂપ કામરતિ, “ રાગ ” અનુકૂળ
વિષયોમા પ્રીતિરૂપ રાગ, અને “ દોસ ” પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા અપ્રીતિરૂપ
દ્વેષ, જે “ વધણ ” અધનના ડારણો છે, તથા “ વહુવિહસકપ્પ ” અનેક
પ્રકારના જે મન સંકલ્પો છે એ બધા આ સસાર સાગરમા “ વિઝલદગરય ”
વિસ્તીર્ણ જળ બિન્દુઓ છે “ રયધયાર ” તેમના વેગરૂપ અધકારથી તે વ્યાપ્ત
છે એટલે કે કામરતિ આદિ રૂપ જળકણોના વેગથી ઉત્પન્ન થયેલ અધકારથી
તે યુક્ત છે “ મોહમહાવત્તભોગભ્રમમાણગુપ્પમાણુચ્છલત્તવહુગન્મવાસપન્ચો
ણિયત્તપાણિય ” તથા “ મોહમહાવત્ત ” મોહરૂપ મહા વમળો તેમા ઉત્પન્ન થયા
ઝરે છે અને તે આવર્તોમા-વમળમા તથા “ ભોગ ” વિષય-ભોગ જ “ ભ્રમ-

વર્ત:=જલભ્રમસ્ત્ર મોગા:=વિષય ઇવ ' ભ્રમમાણ ' ભ્રમન્તઃ ' ગુપ્તમાણ ' ગુપ્તન્તઃ
 =વ્યાકુલી ભ્રમન્તઃ, ઉચ્છલન્તઃ=ઉત્પાન્તઃ ' વહુગ-ભ્રમવાસ ' વહુપુ = વહુવિષેષ
 ગર્ભગણેષુ=પશુપદ્યાદિલક્ષણેષુ ' પન્નોગિયત્ત ' પ્રત્યરનિટ્ટતા:=ઉત્પત્ત્ય નિપતિતાઃ
 ' પાણિય ' પ્રાણિનો=જીવાઃ સમુદ્રપક્ષે મકરાદય, સમારપથે સમારિણો યત્ર તત્ત્વા
 ભૂત, તથા-પધાવિયસણસમાવણ્ણરુણચડમારુય સમાહયાડમણ્ણવીચિવાકુલિય
 મગફુટ્ટતનિટ્ટકલ્લોલસકુલજલ ' પ્રગાવિત્યમનમમાપન્નરુદિતચણ્ડમારુતસમાહ
 તામનોજ્ઞવીચિવ્યાકુલિતભદ્રસ્ફુટ્ટનિટ્ટકલ્લોલસકુલજલમ્, તત્ર - પધાવિય '
 પ્રધાવિતાનિ=પ્રરૂપેણેતસ્તતોગતાનિ યાનિ ' વસણ ' વ્યસનાનિ=રુષ્ટાનિ તાનિ
 ' સમાવણ્ણ ' સમાપન્નાઃ=પ્રાપ્તા યે પ્રાણિન તેષા ' રુણ ' રુદિતમેવ ' ચડમારુય '
 ચણ્ડમારુતઃ=પ્રચણ્ડવાયુસ્તેન ' સમાહય ' સમાહતાઃ=પરસ્પર સઘટ્ટિતા યાઃ ' અમ-
 ણુણ ' અમનોજ્ઞા=મયકરા વીચયઃ દુઃસ્વપરમ્પરારૂપ તરજ્ઞાસ્તૈ ' વાકુલિય ' વ્યા

(ભોગ) વિષય-ભોગ હી (ભ્રમમાણ) ભ્રમણ કર રહે છે, (ગુપ્તમાણ)
 વ્યાકુલ હો રહે છે તથા (ઉચ્છલત) ઉછલ રહે છે । ઇવ હસ સસાર
 સમુદ્ર મેં (વહુગભ્રમવાસ) મનુષ્ય, પશુ પક્ષી આદિ યોનિ રૂપ નાના
 પ્રકાર કે ગર્ભો મેં સસારી જીવ તથા સમુદ્રપક્ષ મે મગરમચ્છ આદિ
 જલચર જીવ આકર નિપતિત હો રહે હ । (પ ધાવિય-વસણ-સમાવણ
 રુણચડમારુયસમાહયાડમણ્ણવીચિ વાકુલિયમગફુટ્ટતનિટ્ટકલ્લોલસ-
 કુલજલ) તથા યહ સસાર સમુદ્ર (પધાવિય) ડહર ઉધર સે સપ્રાપ્ત
 (વસણસમાવણ) અનેક વ્યસનો-દુઃસ્વોંસે પીડિત હુણ પ્રાણિયોંકે (રુણ)
 રુદનરૂપ (ચડ મારુય) પ્રચણ્ડ વાયુ સે (સમાહય) પરસ્પર સઘર્ષ કો પ્રાપ્ત
 હુઈ (અમણુણવીચિ) અમનોજ્ઞ દુ સ્વોં કી પરપરારૂપ તરજ્ઞોં સે (વાકુલિય)

માણ ” બ્રમણ કરી રહ્યા છે, “ ગુપ્તમાણ ” વ્યાકુળ થઈ રહેલ છે, તથા
 “ ઉચ્છલત ” ઉછળી રહ્યા છે અને તે સસાર સાગરમા “ વહુગભ્રમવાસ ”
 મનુષ્ય, પશુ, પક્ષી આદિ યોનિરૂપ વિવિધ પ્રકારના ગર્ભોમા પ્રાણીઓ-સસાર
 રની અપેક્ષાએ હોવો તથા સમુદ્રની અપેક્ષાએ મગર મચ્છ આદિ જળચર
 હોવો આવી આવીને નિપતિત થઈ રહેલ છે એટલે કે તેમા જન્મ લઈ રહેલ
 છે “ પધાવિય-વસણ-રુણ-ચડ-મારુય-સમાહયાડમણ્ણવીચિ-વાકુલિય-મગ-
 ફુટ્ટ-નિટ્ટકલ્લોલ-સકુલજલ ” તથા આ સસાર સમુદ્ર “ પધાવિય ” અહીં
 તહીથી પ્રાપ્ત “ વસણસમાવણ ” અનેક (વ્યસનો) દુ ખોથી પીડાતા
 પ્રાણીઓના “ રુણ ” રુદનરૂપ “ ચડમારુય ” પ્રચંડ વાયુથી “ સમાહય ”
 પરસ્પર અથડાતા “ અમણુણવીચિ ” અમનોજ્ઞ દુ ખોની પરપરા - ગોથી

કુલિત=વિક્ષોભિત તથા મઙ્ગૈ =તરંગૈઃ સહ સપટ્ટનેન 'ફુટ્ટ' સ્ફુટન્ત=પૃથગ્
 ભવન્તો યે 'નિટ્કલ્લોલ' અનિષ્ટકલ્લોલાઃ = દારુણ દુઃસ્વમહાતરંગાસ્તૈઃ સકુલ
 =વ્યાપ્ત જલ = જન્મજરામરણરૂપ યત્ર સ તથા તમ્ । મોહમહાવર્તનિપતિતનિપ-
 યોપભોગભ્રમણનિમગ્નપ્રાણિયુક્ત પશુપક્ષિનરકનરાઽમરાદિવિપમોક્તતાવનતયોનિ
 વિભ્રમણતરંગભદ્રયુક્ત વિવિધદારુણદુઃસ્વદુઃખિત પ્રાણિરોદનાઽઽક્રન્દનરૂપવાયુ
 સમાઘાતપટ્ટદુઃસ્વતરંગયુક્ત પુન પુનર્જન્મમરણરૂપજલ યત્ર સસારસાગર વસન્તીતિ
 સમ્યગ્ન્યઃ પુન કીટશ ? મિત્યાહ — 'પમાદપ્રહુચ્છદ્દુઃસ્વાપદસમાહયઽદ્વાયમા-
 ણગપૂરધોરવિદ્વસણત્થવહુલ' 'પમાદપ્રહુચ્છદ્દુઃસ્વાપદસમાહયઽદ્વાયમાગપૂરધોરવિ-
 સ્વાપદસમાહયઽદ્વાયમાગપૂરધોરવિદ્વસણત્થવહુલ' તત્ર-પમાદપ્રહુચ્છદ્દુઃસ્વાપદાઃ=પમાદાઃ = મધવિષયકપાયનિદ્રા
 વિકથારૂપાસ્તે એવ પ્રહુચ્છદા=અતિગયરોદ્રા 'દુઃસ્વાપદ' દુઃસ્વાપદાઃ=હિસક
 ક્ષુભિત હો રહ્યા છે । એવ (મોહફુટ્ટન) તરંગોં કે સાથ સપટ્ટન સે પૃથક્
 છુટ્ટે એસી (નિટ્કલ્લોલ) અનિષ્ટકલ્લોલોં-દારુણ દુઃસ્વરૂપ મહાતરંગોં
 સે (સંકુલ) સકુલ બના હુઆ એસા (જલ) જન્મ, જરા, મરણરૂપ જલ
 હસમેં ભરા હુઆ છે । અર્થાત્ મોહરૂપ મહા આવર્ત મે જહાં વિષયોપભોગ
 કી વાગ્ગા સે ડતસ્તતઃ ભ્રમણ કરતે હુણ જીવ નિમગ્ન હો રહે હેં । તથા
 પશુ, પક્ષી, નરક, નર, અમર, આદિ ઝંવી નીચી યોનિયોં મેં પરિભ્રમણ
 રૂપ તરંગેં હમ મેં ઉઠ રહી હેં, ઓર વિવિધ દારુણ આદિ દુઃસ્વોં સે
 દુઃખિત હુણ પ્રાણિયોં કે રોદન-આક્રન્દન રૂપ વાયુ કે આઘાતોં સે જહા
 દુઃસ્વરૂપ મહા તરંગેં જન્મ જરા મરણ રૂપ જલ કો આલોડિત કર રહી
 હેં । (પમાદપ્રહુચ્છદ્દુઃસ્વાપદ સાવય સમાહયઽદ્વાયમાગપૂરધોરવિદ્વસણત્થવ-
 હુલ) તથા હસ સસારરૂપ સમુદ્ર મે (પમાદ) મધ, વિષય, કપાય, નિદ્રા,
 વિકથા, ઇતિ પાચ પ્રમાદરૂપ (ચ્છદ) મધકર (દુઃસ્વાપદ) રૌદ્ર

“વાકુલિય” ખળખળી ગ્ધો છે અને “મોહફુટ્ટન” તરંગોની સાથે અથડા
 વાથી જુદી પડેલી “નિટ્કલ્લોલ” અનિષ્ટ કલ્લોલો-દારુણ દુઃસ્વ મહાતર-
 ગોથી “સકુલ” વ્યાપ્ત એવું “જલ” જન્મ, જરા, મરણ રૂપ જળ તેમા
 ભરેલું છે એટલે કે મોહરૂપી મહાવિભ્રમમા વિષયભોગની ઈચ્છાથી આમ તેમ
 ભ્રમણ કરતા એવો ત્યા ફોળેલા છે તથા પશુ, પક્ષી નારડી, નર, દેવ આદિ
 જીવી નીચી યોનિયોમા પરિભ્રમણરૂપ તરંગોમા તેમા ઉછળી રહ્યા છે, અને
 વિવિધ દારુણ દુઃખોથી ખીડાતા એવોના આક્રન્દ રૂપ પવનના આઘાતથી
 ગ્ધા દુઃસ્વ મહાતરંગો જન્મ, જરા મરણ રૂપ જળને ખળખળાવી રહેલ
 છે “પમાદ-વહુ-ચ્છદ-દુઃસ્વાપદસમાહયઽદ્વાયમાગપૂરધોર વિદ્વસણત્થવહુલ”
 આ સસાર રૂપી સાગરમા “પમાદ” મધ, વિષય કપાય નિદ્રા અને વિકથા,
 એ પાચ પ્રમાદરૂપી “ચ્છદ” લય કર “દુઃસ્વાપદ” રૌદ્ર દેખાવના હિમ્ન

જન્તવ, તૈઃ 'સમાહય' સમાહતા = આઘાત પ્રાપ્તાઃ પૈ જીરાક્ષે 'ઉદ્ઘાયમાણગ
 પૂરગોર, ઉદ્ઘાયન્ન = ઊત્થિષ્ઠ સો પ્રિવિરવે'દ્રાણુ, સમુદ્રગો મત્સ્યાદયઃ સસારપક્ષે
 પુરુષાદયઃ તેવા પૂરઃ = સમૂહઃ તમ્ય ગે ગોરા = ગાઠના 'વિદ્ધસળત્થ' વિધ્વમા
 નર્થા = વિનાશરૂપા અનર્થાસ્તે વદુઝા યત્ર સ તવા તમ્ । 'અણ્ણાણમમતમચ્છપરિ-
 હત્થઅનિહુતિંદિયમહામગરતુરિયચરિય' સ્વોક્ષુબ્ધમાણમતાવનિચ્ચયચન્તચવચ્ચન્ત
 અત્તાણાસરણપુવ્વકમ્મસચયોદિણ્ણવજ્જવેદિજ્જમાણદુહમયવિવાગધુણતજલમમૂહ' અ
 જ્ઞાનભ્રમન્મત્સ્યપરિગ્રસ્તાનિભ્રુતેન્દ્રિયમહામકરત્વરિત્તચરિત્તચોક્ષુભ્યમાણસન્તાપનિત્ય-
 કચલચ્ચપલચચ્ચભાનાણાશરણપૂર્વર્મમશ્ચયોદીર્ણા વધવેધમાનદુઃપ્પગતનિવાસધૂર્ણ
 ડ્ઙ્ગલસમૂહમ્, તત્ર-અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્થ' અજ્ઞાનભ્રમન્મત્સ્યપરિગ્રસ્તમ્ =
 અજ્ઞાનાન્યેષ્વ ભ્રમન્તો મત્સ્યાઃ = અજ્ઞાનરૂપમહામત્સ્યાસ્તઃ પરિગ્રસ્ત = વ્યાપ્તમ્, તથા
 'અનિહુતિંદિયમહામગર' અનિભ્રુતેન્દ્રિયમહામકરઃ = અનિભ્રુતાનિ = અનુપશાન્તાનિ
 યાનિ ઇન્દ્રિયાણિ તાન્યેષ્વ મહામકરાસ્તેષા યાનિ 'તુરિયચરિય' ત્વરિત્તચરિતાનિ
 = શીઘ્રસચરણાનિ તૈઃ 'સ્વોક્ષુબ્ધમાણ' ચોક્ષુભ્યમાણઃ = અતિશયેન વ્યાકુલી

આકૃતિવાલે હિંસક જતુઓ દ્વારા (સમાહય) આઘાત કો પ્રાપ્ત કરતે
 (ઉદ્ઘાયમાણગ) વિવિધચેદ્દાઓ મેં ડહલતે હુણ સમુદ્રપક્ષ મેં મત્સ્યા
 દિક, સસારપક્ષ મેં પુરુષાદિકે (પૂર) સમૂહ સે જહા (ગોર) ભયકર
 એસે (વિદ્ધસળત્થવહુલ) વિનાશરૂપ અનેક અનર્થ ઉત્પન્ન હોતે રહતે હૈં
 (અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્થ-અનિહુતિંદિયમહામગર-તુરિય-ચરિય સ્વો-
 ક્ષુબ્ધમાણ-સતાવનિચ્ચય ચલત-ચલ-ચલ-અત્તાણાસરણપુવ્વકમ્મ
 સચયો દિણ્ણવજ્જ વેદિજ્જમાણ-દુહસયવિવાગ-ધુણત-જલસમૂહ) તથા
 યહા સસાર સમુદ્ર (અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્થ) અજ્ઞાનરૂપ ઘૂમતે હુણ
 મહામત્સ્યો સે વ્યાપ્ત હો રહા હૈં ઔર (અનિહુતિંદિયમહામગર)
 અનુપશાન્ત ઇન્દ્રિયરૂપ મહામકરો કે (તુરિયચરિય) શીઘ્ર સચરણો સે

જ તુએા દ્વારા "સમાહય" આઘાત પામીને "ઉદ્ઘાયમાણગ" વિવિધ રીતે
 ઉછળતા (સમુદ્રપક્ષે) મત્સ્યાદિક (સસારપક્ષે) પુરુષાદિના "પૂર" સમૂહથી
 બથા "ગોર" લયકર એવા "વિદ્ધસળત્થવહુલ" વિનાશરૂપ અનેક અનર્થો
 ઉત્પન્ન કરતા રહે છે "અણ્ણાણ-મમત-મચ્છ પરિહત્થ-અનિહુતિંદિય-મહામગર
 તુરિય-ચરિય-સ્વોક્ષુબ્ધમાણ-સતાવ-નિચ્ચય-ચલત-ચલચલ-અત્તાણાસરણપુવ્વક
 મ્મ-સચયો-દિણ્ણવજ્જ-વેદિજ્જમાણ-દુહમય-વિવાગ-ધુણતજલસમૂહ" તથા
 આ સસાર સાગર "અણ્ણાણમમત-મચ્છ-પરિહત્થ" અજ્ઞાનરૂપ ધૂમતા મહામ
 ત્સ્યેથી વ્યાપ્ત છે, અને "અનિહુતિંદિય મહામગર" અનુપશાન્ત (ઉપશાન્ત
 ન થયેલી) ઇન્દ્રિયો રૂપ મહામગરોના "તુરિયચરિય" ઝડપી હલનચલનથી

ક્રિયામાણો ય સઃ 'તથા 'સતાપણિચ્ચય' સન્તાપનિત્યકઃ=સન્તાપઃ=વિવિધાધિ
વ્યાધિચ્ચુવિયોગાદિ જાતઃ સાગરસ્વરૂપવાગ્નિસન્તાપરૂપો દુઃસ્વસન્તાપો નિત્ય
યત્ર સ સન્તાપનિત્યકઃ, એતદ્વ- 'ચલતચ્ચલચ્ચલ' ચલચ્ચલચ્ચલ =અત્યન્ત-
મસ્થિરઃ, સતતપરિવર્તનશીલમિત્યર્થઃ તમ્, તથા 'અત્તાણાસરણ' અત્તાણાઞ્જર
ણાના, અત્તાણાનામશરણાના 'પુવ્વકમ્મસચય' પૂર્વકર્મસચયાના પ્રાણિના ઉદીર્ણમ્
=ઉદયમાન યત્ 'વજ્જ' અવજ્જ=પાપ તસ્ય યઃ 'વેદિજ્જમાણ' વેદ્યમાનઃ=ઉપ
ભુજ્યમાન 'દુહસયવિવાગ' દુઃસ્વશતરૂપો વિવાગઃ સ એવ ઘુર્ણન્=ભ્રમન્ જલ
સમૂહો અત્ર સ તથા તમ્, ઇદ્ધિરસસાયગારવોહારગહિયકમ્મપડિવદ્ધસત્તકઠ્ઠિ-
જ્જમાણનિરયતલદુત્તસણ્ણવિસણ્ણવહુલ 'ઋદ્ધિરસસાતગૌરવોપહારગૃહીતકર્મપ્રતિ-
વદ્ધસત્ત્વકુપ્પમાણનિરયતલદુત્તસન્નવિપણ્ણવહુલ્લમ્, તત્ર 'ઇદ્ધિરસસાયગારવો-
હાર' ઋદ્ધિ રસસાતગૌરવોપહારા =ઋદ્ધિરસસાતલક્ષણાનિ ગૌરવાણ્યેવ ઉપહારા=
જલચરવિશેષામ્તૈઃ 'ગહિય' ગૃહીતાઃ 'કમ્મપડિવદ્ધ' કર્મપ્રતિવદ્ધા=જ્ઞાનાવર

(સ્વોક્ષુઘ્ભમાણ) યદ્ અત્યત્ સ્ખુભિત ચના હુઆ હૈ । (સતાવણિચ્ચય)
વિવિધ વ્યાધિ, ચ્ચુ વિયોગ આદિ જન્ય દુ સ્વરૂપ વડવાગ્નિ કા હસમે
નિત્ય સતાપ છાયા હુઆ હૈ । ઓર યહ (ચલતચ્ચલચ્ચલ) નિરન્તર
પરિવર્તન શીલ હૈ । એવ હસ સમુદ્ર મે (અત્તાણા સરણ) ત્રાણ એવ શરણ
રહિત એસે પ્રાણિયોં કે જિનકે પાસ (પુવ્વકમ્મસચય) પૂર્વકૃત કર્મો
કા સચય મૌજૂદ હૈ (ઉદિણ્ણવજ્જ) ઉદય મેં આધા હુઆ જો પાપકર્મ કા
(વેદિજ્જમાણદુહસયવિવાગ) ઉપભુજ્યમાન જો દુ'સ્વશત (સૈરુડોદુ'સ્વ)
સ્વપ ફલ હૈ વહ ફલ્લ હો વહા (ઘુણતજલસમૂહ) ચલના હુઆ જલ ભરા
હુઆ હૈ (ઇદ્ધિરસસાયગારવોહારગહિયકમ્મપડિવદ્ધસત્તકઠ્ઠિજ્જમાણનિ
રયતલદુત્તસણ્ણવિસણ્ણવહુલ) ઋદ્ધિ રસસાતરૂપ ગૌરવ હો હસ
સસાર સમુદ્ર મેં (ઉવહાર) ઉપહાર જલચર જન્તુ વિશેષ ભરે હુએ હૈ

“સ્વોક્ષુઘ્ભમાણ” અત્યત્ ખળભળી ઉઠેલ છે, “સતાવણિચ્ચય” વિવિધ વ્યાધિ
વ્યાધિ, ચ્ચુ વિયોગ આદિ જન્ય દુ ખરૂપ વડવાગ્નિનો સતાપ તેમા નિત્ય
વ્યાપેલો હોય છે, અને તે “ચલતચ્ચલચ્ચલ” નિરન્તર પરિવર્તન શીલ
છે, અને આ સસારમા “અત્તાણાસરણ” ત્રાણ અને શરણ રહિત એવા બને
છે કે જેમની પાસે “પુવ્વકમ્મસચય” પૂર્વે કરેલા કર્મોનો સમૂહ રહેલો છે,
“ઉદિણ્ણવજ્જ” અને જે પાપકર્મોનો ઉદય થયો છે તે પાપકર્મોને “વેદિજ્જમાણ
દુહસયવિવાગ” ભોગવવા રૂપ સેડો હુ ખ “સૈરુડોદુ સ” રૂપ જે રૂપ
છે, તે રૂપ જ ત્યા “ઘુણતજલસમૂહ” વહેતા જળ સમાન છે “ઇદ્ધિરસ-
સાયગારવોહાર-ગહિયકમ્મ-પડિવદ્ધ-સત્ત કઠ્ઠિજ્જમાણનિર-યતલદુત્તસણ્ણ-વિસણ્ણ

સાત રૂપ ગૌરવ જ આ સસાર સાગરમા “ઉવહાર”

નાદિલક્ષણેઃ કર્મભિર્નિહાથ ચે 'સત્ત' સત્તાઃ=પ્રાણિનસ્તથા 'કલ્પિજ્જમાણ' કૃપ્યમાણાઃ=કૃપ્યકર્મવન્ધનેન રજ્જુવદ્ધકાષ્ટમિત્ર નરકં પ્રત્યાકૃપ્યમાનાઃ 'નિરયતલ' નરકઃ તલ=પાતાલ 'દુત્ત' તદભિમુલ 'સણ્ણ' સનાઃ=નરકરૂપપાતાલગમનાભિમુલત્વાત્ સિન્નાઃ તથા 'વિસણ્ણ' વિપણ્ણાથ 'શોકાતિશય પ્રાપ્તાઃ' ચે પ્રાણિનસ્તૈ વહુલો ય સ તથા તમ્ । તથા 'અરહરહમયવિસાયમોગમિચ્છત્ત સેલસકકડ' અરતિરતિભયવિપાદશોકમિત્યાત્વશૈલસકટ =તત્ર-અરતિઃ = ધર્મેશ્વરુચિ રતિઃ=વિપયેષુ રુચિઃ ભય=ઇહલોકાદિ મત્તભયાનિ વિપાદઃ=અનિષ્ટસયોગજનિતદુઃસ્વ શોકઃ=ઇષ્ટવિયોગજનિતદૈન્ય મિત્યાત્વ ચ કુદેવકુગુરુકુધર્મશ્રદ્ધાલક્ષણમિત્યેતાન્યેષ શૈલાઃ=પર્વતાસ્તૈઃ સકકટઃ=વિપમો યઃ સ તથા તમ્, અત્યાદિ

और इन उपहारों से इसमें (गहियकम्मपडिबद्धसत्त) ज्ञानावरण आदि कर्मों से बद्ध प्राणी गृहीत बने हुए हैं । तथा (कल्लिज्जमाण) पूर्वकृत कर्मवन्धन के द्वारा रज्जु बद्ध काष्ठ की तरह यहाँ वह प्राणीवर्ग नरक की ओर खेचा जा रहा है और (निरयतलदुत्त) नरकतक की ओर गमन करने में सन्मुख होनेकी वजह से यहाँ वह प्राणीवर्ग (सण्ण विसण्णबहुल) सन्न-खिन्न, एवं विपण्ण शोकातिशय का प्राप्त-हो रहा है । तथा (अरह्रहभयविसायसोगमिच्छत्तसेलसकड) (अरह्र) अरति धर्ममें अरुचि, (रह्र) रति-विषयों में रुचि, (भय) इहलोकभय, परलोक भय आदि सात भय, (विसाय) विपाद-अनिष्ट सयोग जनित दुःख, (सोग) शोक-इष्ट वियोग जनित दैन्यभाव, (मिच्छत्त) मिथ्यात्व-कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की श्रद्धा, ये ही सब इस ससारसमुद्र में (सेल) पर्वत जैसे है सो इन पर्वतोंसे यह (सकड) विषम बना हुआ है ।

ઉપહાર જળચર જન્તુ વિશેષ ભરેલ છે અને તે ઉપહારોથી તેમા “ ગહિયકમ્મ પડિબદ્ધસત્ત ” જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મોથી બધાયેલ પ્રાણી સપડાયેલ છે તથા “ કલ્પિજ્જમાણ ” પૂર્વે કરેલા કર્મો દ્વારા, દોરડાથી બાંધેલા કાષ્ઠની જેમ તે પ્રાણીઓ નરકની તરફ ખેંચાઈ રહ્યા છે, અને “ નિરયલદુત્ત ” નરક તરફ ગમન કરવાને અભિમુખ હોવાને કારણે તે પ્રાણીઓ “ સણ્ણવિસણ્ણબહુલ ” ખિન્ન અને અતિશય શોક યુક્ત થઈ રહ્યા છે તથા “ અરહ્ર-રહ્રમય-વિસાય-સોગમિચ્છત્ત સેલસકકડ ” “ અરહ્ર ” અરતિ-ધર્મમાં અરુચિ, “ રહ્ર ” રતિ-વિષયોમાં રતિ, “ ભય ” આલોકનો ભય, પરલોકનો ભય આદિ સાત ભય, “ વિસાય ” વિપાદ-અનિષ્ટ સયોગ જનિત હોય “ સોગ ” શોક-ઈષ્ટ વિયોગ જનિત દૈન્યભાવ, “ મિચ્છત્ત ” મિથ્યાત્વ કુગુરુ, કુદેવ અને કુધર્મની શ્રદ્ધા, એ બધું આ સસારસાગરમાં “ સેલ ” પર્વત જેવું છે, એ પર્વતોથી તે “ સકકડ ” વિષમ

દુઃસ્વૈઃવ્યાપ્તિમિત્યર્થઃ। તથા 'અણાઠસંતાળકમ્મવધણકિલેસચિકિત્વલ્લદુદ્દુત્તાર' અનાદિ સન્તાનવન્ધનવલેશચિકિત્વલ્લદુદ્દુત્તારમ્, તત્ર-અનાદિઃ=આદિ રહિતઃ સન્તાનઃ= વિસ્તારો यस્ય તત્તથાભૂત યત્ કર્મવન્ધન તદ્વરૂપ એવ 'કિલેસ' વલેશઃ=દુઃસ્વ તદ્વપમેવ ચિકિત્વલ્લ=વર્દમમ્તેન દુદ્દુત્તારઃ=દુસ્તર યઃ સ તથા તમ્ । તથા-અમર નરતિરિયનિરયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્વિઝલવેલ 'અમરનરતિર્યદ્નરકગતિગમન-કુટિલપરિવર્તવિપુલવેલ=તત્ર-અમરનરતિર્યદ્નરકચતુર્ગતિપુ-યદ્ ગમન તદેવ કુટિલા વક્રા પરિવર્ત=ગોલાકારા એવ વિપુલા=વિસ્તીર્ણા વેલા=સમુદ્રજલવૃદ્ધિ-રૂપા યત્ર સ તથા ત, નરકાદિ ચતુર્ગતિચક્રભ્રમણપરમ્પરાભિઃ સમુદ્રજલવૃદ્ધિરૂપા-ભિર્યુક્તમિત્યાશય । તથા 'હિસાલિયઅદત્તાદાણમેહુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણા-ણુમોયણ-અટ્ઠપિહઅણિટ્ઠકમ્મપિંડિયગુરુભરક્કતદુગ્ગજલોવદૂરનિવોલિઙ્ગમાણઉમ્મગ્ગ-નિમ્મગ્ગદુલ્લહતલ' હિસાલીકાદત્તાદાણમૈયુનપરિગ્રહારમ્મકરણકારણાણુમોદના-ણિધાનિટ્ઠકમ્મપિંડિતગુરુભારાક્રાન્તદુર્ગજલોવદૂરનિવોલ્યમાનોન્માર્ગનિમગ્નદુર્લભ-તલમ્, તત્ર-'હિસાલિયઅદત્તાદાણમેહુણપરિગ્ગહારમ' હિસાલીકાઽદત્તાદાણ-

તથા (અણાઠસતાળકમ્મવ ણ કિલેસચિકિત્વલ્લદુદ્દુત્તાર) જિસકા વિસ્તાર આદિ સે રહિત હૈ એસે કર્મવધન જન્ય વલેશરૂપ (ચિકિત્વલ્લ) કીચહ સે યહ (દુદ્દુત્તાર) દુસ્તર બના હુઆ હૈ તથા (અમરનરતિરિય-નિરયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્વિઝલવેલ) દેવ, નર, તિર્યવ ઓર નરક, હન ચાર ગતિયો મે જો જીવોકા ગમન હૈ વહી ઇસ સમુદ્ર કો કુટિલ ગોલાકાર વિસ્તરણ વેલા હૈ, અર્થાત્ નરકાદિ ચતુર્ગતિરૂપ યહ સસાર હૈ । ઇસમેં જીવચક્ર કી તરહ પરિભ્રમણ કરતે રહતે હૈ । યહ પરિભ્રમણ કી જો પરપરા હૈ વહી ઇસ સમુદ્ર કી જલ વૃદ્ધિ રૂપ વેલા હૈ । (હિસાલિય અદત્તાદાણ મેહુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણાણુમોયણ) હિસા, ઇઠ, અદત્તાદાણ, મૈયુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કા કરના

ખનેલ છે તથા “ અણાઠ-સતાળ-કમ્મવધણ-કિલેસચિકિત્વલ્લ-દુદ્દુત્તાર ” અનાદિ ડર્મવધન જન્ય વલેશરૂપ “ ચિકિત્વલ્લ ” કીચડથી તે “ દુદ્દુત્તાર ” દુસ્તર ખનેલ છે, તથા “ અમરનરતિરિયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્વિઝલવેલ ” દેવ, નર, તિર્યવ અને નરક, એ ચાર ગતિયોમા આવેલુ જે ગમન થાય છે એ જ આ સસાર સમુદ્રની કુટિલ ગોળાકાર વિસ્તીર્ણ વેલા છે, એટલે કે નરકાદિ ચાર ગતિરૂપ આ સસાર છે તેમા ચક્રની જેમ આવે પરિભ્રમણ કરે છે આ પરિભ્રમણની જે પરપરા છે તેજ આ સમુદ્રની જળ વૃદ્ધિરૂપ વેલા છે “ હિસાલિય-અદત્તાદાણ-મેહુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણાણુમોયણ ” હિસા, ઇઠ, અદત્તાદાણ, મૈયુન, પરિગ્રહરૂપ આરભો કરવા, અને તેની અનુભોદના

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા યે આરમ્ભાઃ=વ્યાપારાસ્તેષા યાનિ કરણકારણાનુમોદનાનિ=કરણ સ્વય, કારણ=અન્યૈસ્તુ ટાપનમ્, અનુમોદન ચ=ઠ્ઠતારિતાદેઃ પ્રશસન મિત્યેતૈઃ પ્રકારૈઃ 'અટ્ટવિદ્' અષ્ટવિધ યત્ 'અનિદ્ઘામ્મપિંડિય' અનિદ્ઘર્મપિંડિત=દુઃસ્વદર્મસશ્રયઃ તદેવગુરુમારસ્તેન 'અક્રત્' અક્રાન્તા યે જીવાસ્તેષા દુર્ગાણ્યેવ=દુઃસ્વાન્યેવ યો 'જલોઘ' જલોઘ=જલપૂર તત્ર દૂર=અત્યર્થ 'નિગ્ધો લિજ્જમાણ' નિગ્ધોલ્યમાનાઃ=ચુલ્લમાનાઃ, 'ઉન્મગ્ગનિમગ્ગ' ઉન્મગ્ગનિમગ્ગાશ્ચ =દુઃસ્વરૂપજલે ઉર્ધ્વાઽધો ગમ્યમાના યે પ્રાણિનસ્તૈઃ 'દુલ્લહતલ' દુર્લભતલ=દુર્લભ=દુઃપ્રાપ્ય તલ યસ્ય સ તથા ત-હિંસાઽઘ્રીકાદિપશ્ચાસ્રવજનિતાઽષ્ટવિધકર્મ મારાક્રાન્તૈઃ નાનાવિધદુ સરૂપાગાધજલે નિમજ્જનોન્મજ્જન કુર્વદ્વિર્જીર્વદુષ્પારાઽ

કરાના અનુમોદન કરના, ઇન પૂર્વોક્ત પ્રકારોં સે જો (અટ્ટવિદ્ અણિદ્ઘ કમ્મપિંડિય) દુઃસ્વદ આઠ પ્રકારકે કર્મોંકા સચય હોતા હૈ, ઇસ કર્મ સચય રૂપ માર સે (અક્રત) આક્રાન્ત-ભારી ઘને હુણ તથા (દુર્ગજલોઘ) દુઃસ્વ રૂપ જલસનૂહ મે (દૂરનિગ્ધોલિજ્જમાણ) અત્યત દૂરવતે હુણ તથા (ઉન્મગ્ગનિમગ્ગ) ઝવ દૂર કરતે હુણ અર્થાત્ ઝંચે નીચે આતે હુણ એસે પ્રાણિયોં કે લિયે યહ સસાર સમુદ્ર (દુલ્લહતલ) અલભ્ય તલવાલા હૈ અર્થાત્ હસ સસાર સમુદ્ર કો પૂર્વોક્ત પ્રકાર કે જીવ પાર નહીં કર સકતે હૈં । અર્થાત્ હસ સસારસમુદ્ર કા તલ-યાહ એસે જીવોંસે અપ્રાપ્ત હૈ જો હિંસા, શૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કે કરના, કરાના, એવ ઇનકી અનુમોદના મે લગે હુણ હૈં, કયોં કિ ઇન પૂર્વોક્ત પ્રકારોં સે વે જીવ દુઃસ્વદ અષ્ટવિધ કર્મોં કા સચય કર લેતે હૈં ઇસ કારણ ઇન પર હસકા વહુત મારી માર હો જાતા હૈ । ઇસસે વે દબ જાતે

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ટવિદ્અણિદ્ઘકમ્મપિંડિય' આઠ પ્રકારના, હુ ખદ કમેનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અક્રત" આક્રાન્ત-ભારે ખનેલ તથા દુર્ગજલોઘ " હુ ખરૂપ જળસમૂહમાં દૂરનિગ્ધોલિજ્જમાણ " અત્યત દૂરતા, તથા "ઉન્મગ્ગનિમગ્ગ" પાણીમાં ડૂબા ડૂબ કરતા-ઝીચે નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, શૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે ડારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના હુ ખદ કમેનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ધણો ભારે ખોળે હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ જાય છે, અને વિવિધ પ્રકારના

ન્તસ્તલમિત્યર્થઃ તમેવભૂત સંસારસાગર 'સરીરમણોમયાણિ દુઃસ્વાણિ ઉપ્પિયતા' શરીરમનોમયાણિ દુઃગ્ધાણિ ઉત્પિવન્તઃ=કાયિકાણિ માનસિકાણિ ચ ત્રિવિધાણિ દુઃસ્વાણિ આસ્વાદયન્તઃ અનુભવન્ત ઇત્યર્થઃ, 'સાયાસાયપરિતાવણમય ઉબ્બુડ્ઢનિબ્બુ ડ્ઢયં કરેતા ' માતાઽસાતપરિતાપનમયમુદ્દુડ્ઢનનિન્નુડ્ઢનક કુર્વન્ત'=સુખદુઃસ્વા-તાપાત્મકમુન્મજ્જનનિમજ્જનમનુભવન્ત સાત=મુસ તદાત્મકમુન્મજ્જનમમાતપરિ-તાપન દુઃસ્વસન્તાપસ્તદાત્મક નિમજ્જનમનુભવન્ત 'ચરતમહત્ત' ચતુરન્તમહાન્ત =ચતુરન્ત=નરકાદિ ચતુર્વિભાગયુક્ત મહાન્તમ્ અનન્ત જન્મમરણાદિદુઃસ્વયુક્તત્વાત્ । તથા 'અણવયગ્ગ' અનયદગ્ગ=અનન્તમ્-અન્તરહિતમિત્યર્થઃ, 'રુદ્ધ' રુદ્ધ=સકલ

હૈં ઓર નાના પ્રકાર કે દુઃસ્વોંકો ભોગા કરતે હે. અતઃ યદ્દુઃસ્વ સમ્પદ્દ હી ઇસ સસાર સમુદ્ર મે અયાદ્દ જલ ભરા દુઢા હૈ । ઉસમેં હી યે જીવ ઘટ્ટ અધિક્ક રૂપ મે દુઢક્રિયા લેતે રહતે હૈ, ઉન્મગ્ગ, નિમગ્ગ હોતે રહતે હૈ । ફિર વે ઇસકે અન્તસ્તલ કો કૈસે પ્રાપ્ત કર સકતે હૈ ? નહીં કર સકતે । ઇસલિયે સૂત્રકાર ને એસે જીવોં કે લિયે ઇસકા પાર પાના યાદ્દ પ્રાપ્ત કરના-દુઃગ્ધ-અમભવ કહા હૈ । (સરીરમણોમયાણી) ઇમ્ સસાર સાગર મેં પડે દુઢે જીવ ગારીરિક્ક એવ માનસિક (દુઃસ્વાણિ) દુઃસ્વોંકા હી (ઉપ્પિયતા) અનુભવ કરતે હૈ । તથા (સાયાસાયપરિતાવણ-મય) સાતાસાત પરિતાપન રૂપ (ઉબ્બુડ્ઢનિબ્બુડ્ઢય) ઉન્મજ્જન નિમજ્જન અર્થાત્ સાતાત્મક ઉન્મજ્જન તથા અસાતાત્મક એવ પરિતાપાત્મક નિમ-જ્જન (કરેતા) કરને મેં તલ્લીન દુઢ યે જીવ (ચરતમહત્ત) નરકાદિ ગતિ રૂપ ચાર વિભાગોં સે યુક્ત તથા જન્મ મરણાદિ કે અનન્ત દુઃસ્વોં સે મહાન્, (અણવયગ્ગ) અન્તરહિત (રુદ્ધ) સમસ્ત પ્રાણિયોકો ભયજનક,

હુ ખો ભોગવ્યા ડરે છે તેથી આ સસારમાગરમા હુ ખ અમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલું છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડૂબકીઓ ખાવા ડરે છે તો પછી તેઓ તેના ડિનારે તો પડેલાથી કેવી રીતે ગડે ? તે ડારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનું કાર્ય અગત્ય બતાવ્યું છે “સરીરમણોમયા ણિ” આ સસાર માગરમા પડેલા જીવો શાગીગિડ માનસિક “દુઃસ્વાણિ” હુ ખોનો જ “ઉપ્પિયતા” અનુભવ ડરે છે તથા “સાયાસાયપરિતાવણમય” સાતાસાત પરિતાપન રૂપ “ઉબ્બુડ્ઢનિન્નુડ્ઢય” ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવું તે) તથા અમાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવું તે) “કરેતા” ડગ્ધામા લીન થયેલ તે જીવો “ચરતમહત્ત” નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુઢોથી મહાન્, “અણવયગ્ગ” અન્તરહિત, “રુદ્ધ” બધા પ્રાણીઓને

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા ये आरम्भाः=उपापारास्तेषा यानि करणकारणानुमोदनानि=करण स्वय, कारण=अन्यैरनुष्ठापनम्, अनुमोदन च=कृतकारितादेः प्रशसनमित्येतैः प्रकारैः 'अट्टविह' अष्टविध यत् 'अणिट्टकम्मपिंडिय' अणिट्टकर्मपिंडित=दुःखदकर्मसंश्रयः तदेवगुरुभास्तेन 'अकत' अक्रान्ता ये जीवास्तेषा दुर्गाण्येव=दुःखान्येव यो 'जलोघ' जलोघः=जलपूर तत्र दूर=अत्यर्थ 'निवोलिज्जमाण' निवोल्यमानाः=वृत्त्यमानाः, 'उम्मगगनिमग्ग' उन्मग्ननिमग्गाश्च=दुखरूपजले उर्ध्वाऽधो गम्यमाना ये प्राणिनस्तैः 'दुल्लहतल' दुर्लभतल=दुर्लभ=दुष्प्राप्य तल यस्य स तथा त-हिंसाऽग्रीकाद्रिपञ्चास्रजनिताऽष्टविधकर्मभाराक्रान्तैः नानाविधदु खरूपागाधजले निमज्जनोन्मज्जन कुर्याद्विर्जीर्णवर्दुष्पाराऽ

कराना अनुमोदन करना, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्टविह अणिट्ट कम्मपिंडिय) दुःखद आठ प्रकारके कर्मोंका संचय होता है, उस कर्म संचय रूप भार से (अकत) आक्रान्त-भारी घने हुए तथा (दुग्गजलोघ) दुःख रूप जलसमूह में (दूरनिवोलिज्जमाण) अत्यन्त डूबते हुए तथा (उम्मगगनिमग्ग) ऊन डूब करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नहीं कर सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल-याह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरम्भ के करना, कराना, एव उनकी अनुमोदना में लगे हुए हैं, क्योंकि इन पूर्वोक्त प्रकारों से वे जीव दुःखद अष्टविध कर्मों का संचय कर लेते हैं इस कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ટવિહઅણિટ્ટકમ્મપિંડિય' આઠ પ્રકારના, દુખદ ઉમેનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અકત" આક્રાન્ત-ભારે ખનેલ તથા દુગ્ગજલોઘ " દુખરૂપ જળસમૂહમાં દૂરનિવોલિજ્જમાણ " અત્યંત ડૂબતા, તથા "ઉમ્મગ્ગનિમગ્ગ" પાણીમાં ડૂબા ડૂબ કરતા-ઊંચે નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરંભ કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના દુખદ ઉમેનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ધણો ભારે બોલો હોય છે તેનાથી તેઓ દુર્બળ બને છે, અને વિવિધ પ્રકારના

ન્તસ્તલમિત્યર્થઃ તમેયભૂત સસારસાગર 'સરીરમણોમયાણિ દુઃખાણિ ઉપ્પિયતા' શરીરમનોમયાણિ દુઃખાણિ ઉત્પિવન્તઃ=કાયિકાણિ માનસિકાણિ ચ વિવિધાણિ દુઃખાણિ આસ્વાદયન્તઃ અનુભવન્ત ઇત્યર્થઃ, 'સાયાસાયપરિતાવણમય ઉવ્વુડ્ડનિવ્વુડ્ડયં કરેતા' સાતાસાતપરિતાપનમયમુદ્બુડ્ડનનિદ્વુડ્ડનક કુર્વન્ત=સુખદુઃખ-તાપાત્મકમુન્મજ્જનનિમજ્જનમનુભવન્ત સાત=ચુરત તદાત્મકમુન્મજ્જનમસાતપરિ-તાપન દુઃખસન્તાપસ્તદાત્મક નિમજ્જનમનુભવન્ત 'ચરતમહત' ચતુરન્તમહાન્ત =ચતુરન્ત=નરકાદિ ચતુર્વિભાગયુક્ત મહાન્તમ્ અનન્ત જન્મમરણાદિદુઃખયુક્તતાત્ તથા 'અણવયગ' અણવયગ=અનન્તમ્-અન્તરહિતમિત્યર્થઃ, 'રુદ્ધ' રુદ્ધ=સકલ

હૈં ઓર નાના પ્રકાર કે દુઃખોંકો ભોગા કરતે હે. અતઃ યદ્દુઃખ સમ્પદ્દ હી ઇસ સસાર સમુદ્ર મેં અયાદ્દ જલ ભરા દુઆ હૈ. ઉસમેં હી યે જીવ ઘહુત અધિક રૂપ મેં દ્વ્યક્રિયા લેતે રહતે હૈં, ઉન્મગ્ન, નિમગ્ન હોતે રહતે હૈં. ફિર વે ઇમકે અન્તસ્તલ કો કૈસે પ્રાપ્ત કર સકતે હૈં? નહીં કર સકતે. ઇસલિયે સૂત્રકાર ને એસે જીવોં કે લિયે ઇસકા પાર પાના યાદ્દ પ્રાપ્ત કરના-દુઃશક્ય-અમભવ કહા હૈ. (સરીરમણોમયાણી) ઇસ સસાર સાગર મેં પડે દુગ્ધે જીવ જારીરિક એવ માનસિક (દુઃખાણિ) દુઃખોંકા હી (ઉપ્પિયતા) અનુભવ કરતે હૈ. તથા (સાયાસાયપરિતાવણ-મય) સાતાસાત પરિતાપન રૂપ (ઉવ્વુડ્ડનિવ્વુડ્ડય) ઉન્મજ્જન નિમજ્જન અર્થાત્ સાતાત્મક ઉન્મજ્જન તથા અસાતાત્મક એવ પરિતાપાત્મક નિમ-જ્જન (કરેતા) કરને મેં તછીન દુગ્ધ યે જીવ (ચરતમહત) નરકાદિ ગતિ રૂપ ચાર વિભાગોં સે યુક્ત તથા જન્મ મરણાદિ કે અનન્ત દુઃખોં સે મહાન્, (અણવયગ) અન્તરહિત (રુદ્ધ) સમસ્ત પ્રાણિયોકો ભયજનક,

દુ ખો ભોગવ્યા કરે છે તેથી આ સસારસાગરમા દુખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલું છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડૂબકીઓ ખાધા કરે છે તો પછી તેઓ તેના ઉતારે તો પહોંચી કેવી રીતે ગડે? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનું કાર્ય અગત્ય બતાવ્યું છે “સરીરમણોમયા ણિ” આ સસાર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક “દુઃખાણિ” દુખોનો જ “ઉપ્પિયતા” અનુભવ કરે છે તથા “સાયાસાયપરિતાવણમય” સાતાસાત પરિતાપન રૂપ “ઉવ્વુડ્ડનિવ્વુડ્ડય” ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવું તે) તથા અમાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવું તે) “કરેતા” કરવામા લીન થયેલા તે જીવો “ચરતમહત” નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુખોથી મહાન, “અણવયગ” અન્તરહિત, “રુદ્ધ” બધા પ્રાણીઓને

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા યે આરમ્ભાઃ=ગ્વાપારામ્ભેપાં યાનિ કરણકાર્મણાનુમોદનાનિ=
 કરણ સ્વય, કારણ=અન્યૈસ્તુષ્ઠાપનમ્, અનુમોદન ચ=ઠતરારિતાદેઃ પ્રશસન
 મિત્યેતૈઃ પ્રકારૈઃ 'અટ્ટવિદ' અષ્ટવિધ યત્ 'અનિટ્ટામ્મપિંડિય' અનિટ્ટર્મપિ-
 ણ્ડિત=દુઃસ્વદકર્મસત્રયઃ તદેવગુરુમાસ્તેન 'અવકત' અક્રાન્તા યે જીવાસ્તેષા
 દુર્ગાણ્યેવ=દુઃસ્વાન્યેવ યો 'જલ્લોઘ' જલ્લોઘ=જલપૂર તત્ર દૂર=અત્યર્થ 'નિવો
 લિજ્જમાણ' નિવોલ્યમાના=ત્રુલ્યમાનાઃ, 'ઉમ્મગ્ગનિમગ્ગ' ઉન્મગ્ગનિમગ્ગાશ્ચ
 =દુઃસ્વરૂપજલે ઉર્ધ્વાધો ગમ્યમાના યે પ્રાણિનસ્તૈઃ 'દુલ્લહતલ' દુર્લભતલ=
 દુર્લભ=દુષ્પ્રાપ્ય તલ યસ્ય સ તથા ત-હિંસાઽગ્રીકાદિપશ્ચાત્તજનિતાઽષ્ટવિધકર્મ
 ભારાક્રાન્તૈઃ નાનાપિ યદુ સ્વરૂપાગાધજલે નિમજ્જનોન્મજ્જન કુર્વદ્વિર્જીર્વૈર્દુષ્પારાઽ

કરાના અનુમોદન કરના, ઇન પૂર્વોક્ત પ્રકારોં સે જો (અટ્ટવિદ અણિટ્ટ
 કમ્મપિંડિય) દુઃસ્વદ આઠ પ્રકારકે કર્મોંકા સચય હોતા હૈ, ડસ કર્મ
 સચય રૂપ ભાર સે (અવકત) આક્રાન્ત-ભારી ઘને હુળ તથા (દુગ્ગજલોઘ)
 દુઃસ્વ રૂપ જલસમૂહ મે (દૂરનિવોલિજ્જમાણ) અત્યન્ત દૂરતે હુલ તથા
 (ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ) ડન હૂવ કરતે હુળ અર્થાત્ ડેવે નોંચે આતે હુળ તેસે
 પ્રાણિયોં કે લિયે યહ સસાર સમુદ્ર (દુલ્લહતલ) અલભ્ય તલવાલા હૈ
 અર્થાત્ હસ સસાર સમુદ્ર કો પૂર્વોક્ત પ્રકાર કે જીવ પાર નહીં કર
 સકતે હૈં । અર્થાત્ હસ સસારસમુદ્ર કા તલ-યાહ એસે જીવોંસે અપ્રાપ્ત
 હૈ જો હિંસા, ડ્રૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કે કરના,
 કરાના, ંવ ડનકો અનુમોદના મે લગે હુલ હૈં, કયોં કિ ઇન પૂર્વોક્ત
 પ્રકારોં સે વે જીવ દુઃસ્વદ અષ્ટવિધ કર્મોં કા સચય કર લેતે હૈં હસ
 કારણ ડન પર હસકા વહુત ભારી ભાર હો જાતા હૈ । હસસે વે દબ જાતે

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ટવિદઅણિટ્ટકમ્મપિંડિય' આઠ પ્રકારના,
 હુ ખદ કર્મોંનો સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અવકત" આક્રાન્ત-
 ભારે બનેલ તથા દુગ્ગજલોઘ " હુ ખરૂપ જળસમૂહમાં દૂરનિવોલિજ્જમાણ "
 અત્યંત દુર્મતા, તથા "ઉમ્મગ્ગનિમગ્ગ" પાણીમાં ડૂબા ડૂબ કરતા-જે એ નીચે
 આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ
 વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો
 તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, ડ્રૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ
 આરમ્ભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને
 આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે
 તે જીવો આઠ પ્રકારના હુ ખદ કર્મોંનો સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો
 ઘણો ભારે બોલો હોય છે તેનાથી તેઓ દુર્બલ બન્યા છે, અને વિવિધ પ્રકારના

ન્તસ્તલમિત્યર્થ. તમેયમ્ભૂત સંસારસાગર 'સરીરમણોમયાણિ દુઃખાણિ ઉપ્પિયતા' શરીરમનોમયાણિ દુઃખાણિ ઉત્પિયન્તઃ=કાયિકાણિ માનસિકાણિ ચ વિવિધાણિ દુઃખાણિ આસ્વાદયન્તઃ અનુભવન્ત ઇત્યર્થઃ, 'સાયાસાયપરિતાવણમય ઉબ્બુહનિબ્બુહયં કરેતા' માતાઽમાતપરિતાપનમયમુદ્બુહનનિબ્બુહનક કુર્મન્ત=સુખદુઃખ-તાપાત્મકમુન્મજ્જનનિમજ્જનમનુભવન્ત સાત=સુરપ તદાત્મકમુન્મજ્જનમમાતપરિ-તાપન દુઃસસન્તાપસ્તદાત્મક નિમજ્જનમનુભવન્ત 'ચાઉરતમહત' ચતુરન્તમહાન્ત =ચતુરન્ત=નરકાદિ ચતુર્વિભાગયુક્ત મહાન્તમ્ અનન્ત જન્મમરણાદિદુઃખયુક્તતાત્ તથા 'અણવયગ્ગ' અનયદગ્ગ=અનન્તમ્-અન્તરહિતમિત્યર્થ, 'રુદ્ધ' રુદ્ધ=સકલ

હું ઓર નાના પ્રકાર કે દુઃખોંકો ભોગા કરતે હે. અતઃ યદ્દુઃખ સમૂહ હી ઇસ સસાર સમુદ્ર મેં અવાદ્ જલ મરા દુઃખા હૈ । ઉસમેં હી યે જીવ વહુત અધિક રૂપ મેં દ્રવક્રિયા લેતે રહતે હેં, ઉન્મગ્ન, નિમગ્ન હોતે રહતે હેં । ફિર વે ઇસકે અન્તસ્તલ કો કેસે પ્રાપ્ત કર સકતે હેં ? નહીં કર સકતે । ઇમલિયે સૂત્રકાર ને એસે જીવોં કે લિયે ઇમકા પાર પાના થાહ પ્રાપ્ત કરના-દુઃશમ્ય-અસમ્ભવ કહા હૈ । (સરીરમણોમયાણી) ઇસ સસાર સાગર મેં પડે દુગ્ધે જીવ શારીરિક એવ માનસિક (દુઃખાણિ) દુઃખોંકા હી (ઉપ્પિયતા) અનુભવ કરતે હેં । તથા (સાયાસાયપરિતાવણ-મય) સાતાસાત પરિતાપન રૂપ (ઉબ્બુહનિબ્બુહય) ઉન્મજ્જન નિમજ્જન અર્થાત્ સાતાત્મક ઉન્મજ્જન તથા અસાતાત્મક એવ પરિતાપાત્મક નિમ-જ્જન (કરેતા) કરને મેં તછીન દુગ્ધે યે જીવ (ચાઉરતમહત) નરકાદિ ગતિ રૂપ ચાર વિભાગોં સે યુક્ત તથા જન્મ મરણાદિ કે અનન્ત દુઃખોં સે મહાન્, (અણવયગ્ગ) અન્તરહિત (રુદ્ધ) સમસ્ત પ્રાણિયોકો ભયજનક,

હુ ખો ભોગવ્યા ડરે છે તેથી આ સસારસાગરમા હુ ખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલું છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડૂબકીઓ ખાધા ડરે છે તો પછી તેઓ તેના ડિનારે તો પડેાથી ડેવી રીતે રાકે ? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનું કાર્ય અસમ્ભવ બતાવ્યું છે “સરીરમણોમયા ણિ” આ સમાગ્ર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક “દુઃખાણિ” હુ ખોનો જ “ઉપ્પિયતા” અનુભવ ડરે છે તથા “સાયાસાયપરિતાવણમય” સાતાસાત પરિતાપન રૂપ “ઉબ્બુહનિબ્બુહય” ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવું તે) તથા અમાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવું તે) “કરેતા” ડગવામા લીન થયેલા તે જીવો “ચાઉરતમહત” નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ હુ ખોથી મહાન, “અણવયગ્ગ” અન્તરહિત, “રુદ્ધ” બધા પ્રાણીઓને

પ્રાણિભયજનક, 'સસારસાગર' સસારસાગર, યમન્તીત્યગ્રેણ સમ્યન્નઃ શ્રીદશ્નં
સંસારસાગરમિત્યાદિ—'અદ્વિય અગાલવળપટ્ટાણ' અસ્થિતાડનાલમ્બનપ્રતિષ્ઠાનમ્
=અસ્થિતાનામ્=સયમાનુષ્ઠાનરહિતાના ન રિદ્યતે આલમ્બનમ્=અવન્મ્યઃ પ્રતિષ્ઠાન=
રક્ષાકરણ યત્ર સ તથા ત અસયમિનામાધારવર્જિત વ્રાણવર્જિત ચેત્યર્થઃ, તથા
'અપ્પમેય' અપ્રમેયમ્=અમર્ષત્વેનાડપરિન્દ્રેય 'ચુલસીડજોણિનયસહસ્સગુવિલ'
ચતુરશીતિયોનિશતસહસ્સગુપિલ=ચતુરશીતિલક્ષયોનિવ્યાપ્ત યોનિનામ સગ્ન્યાતત્ત્વેડપિ
સમવર્ણગન્ધરસસ્પર્શનામેકત્વત્રિવિધગાદુક્તમહ્યામાગઙ્ગમ્ય પ્રોય તત્ર ગાયા યથા—

એસે (સસારસાગર) સસાર સાગર મેં (વસતિ) વસતે હૈ, એમા સમ્બન્ધ
કર લેના ચાહિયે । કિસ પ્રકાર કે સસારસાગર મેં વસતે હૈ મો કહતે
હેં—(અદ્વિય અગાલવળપટ્ટાણ) અસયમી જીરોં કે આલમ્બન એવ રક્ષા
કરને કે સાધનસે રહિત (અપ્પમેય) કોલ્હકા વેલ ચારોં તરફ ફિરનેસે
પાર નહી પાતા વેસે હી ચતુર્ગતિમેં જન્મમરણસે પાર નહીં પાનેસે અપ્રમેય,
(ચુલસીડજોણિનયસહસ્સગુવિલ) ચૌરાસીલક્ષ જીવ યોનીયોં સે યુક્ત,
(અગાલોગ) પ્રકાશવર્જિત, એવ (અધ્યાર) અધકાર સે યુક્ત હસ સસાર
મે (અણતકાલ જાવ) અનન્તકાલ તક (ગિન્ચ) સદા (ઉત્તથસુણ્ણમય
સણ્ણસપડત્તા) મયમીત બને હુણ તથા કિર્ત્તવ્યતા સે વિમૂઢ હુણ
મય સે એવ સજ્ઞા-આહાર, પરિગ્રહ એવ મૈથુન સજ્ઞાઓં સે સમ્બદ્ધ બને
હુણ જીવ (ઉન્નિવગ્ગવાસવસહિં) ઉદ્ધિગ્નોં કે વાસસ્વરૂપ હસ સસાર મેં
(વસતિ) વસતે હૈ । જો અદત્તગ્રાહી જીવ હૈ વે ચતુર્ગતિરૂપ તથા અનન્ત
દુઃખો સે યુક્ત હસ સસારસાગર મેં અનન્ત કાલ તક પરિભ્રમણ કરતે
રહતે હૈ । ચૌરાસી લાખ યોનિયા હસ પ્રકાર સે હૈ—

માટે ભયજનક, એવા “સસારસાગર” સસાર સાગરમા “વસતિ” વાસ
કરે છે તેઓ કેવા પ્રકારના સસાર સાગરમા વસે છે? “અદ્વિય અગાલવળ-
પટ્ટાણ” અસયમી એવોને આધાર આપવાનો તથા તેમનું રક્ષણ કરવાના
સાધનોથી રહિત, “અપ્પમેય” અમર્ષણની અપેક્ષાએ અપ્રમેય, “ચુલસીડ-
જોણિસયસહસ્સગુવિલ” ચૌરાસી લાખ એવ યોનિયોથી યુક્ત, “અગાલોગ”
પ્રકાશ રહિત, અને “અધ્યાર” અધકારથી યુક્ત આ સસારમા “અણતકાલ
જાવ” અનન્ત કાળ સુધી “ગિન્ચ” સદા “ઉત્તથસુણ્ણમયસણ્ણસપડત્તા”
ભયભીત બનેલ, તથા કિર્ત્તવ્યતાથી વિમૂઢ બનેલ, ભય સજ્ઞા, આહાર સજ્ઞા,
મૈથુન સજ્ઞા, અને પરિગ્રહ સજ્ઞાઓથી યુક્ત બનેલ એવા ઉન્નિવગ્ગવાસવસહિં”
ઉદ્ધિગ્નોના—(દુઃખીયારાના) વાસ એવા આ સસારમા “વસતિ” વસે છે અદત્તાદાન
લેનાર એવા ચાર ગતિડપ તથા અનન્ત દુઃખોથી યુક્ત આ સસાર સાગરમા અનન્ત
કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ચૌરાસી લાખ યોનિયો આ ~ છે

“पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७, एक्केक सत्तजोणि लक्खाओ ।

वणपत्तेय अणते, दसचोदस जोणिलक्खाओ ॥ १ ॥

विगलिदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ।

तिरिएसु हुति चउरो, चोदसलक्खा य मणुएसु” ॥ २ ॥

तथा ‘अणालोग’ अनालोम=प्रकाशवर्जितम् अन्धकारम्=अन्धकारयुक्तमेव-
ससारसागरम् ‘अणतकाल जाय’ अनन्तकाल यावत् ‘णिच्च’ नित्य=सदा
‘उत्तथसुण्णभयमण्णसपउत्ता’ उत्तमस्तुभयभयसज्ञासम्प्रयुक्ताः=तत्र उत्तस्ताः=
भयभीताः शून्याः=किं कर्तव्यविमूढाः, तथा भयसज्ञासम्प्रयुक्ताः=भयेन सज्ञाभिश्च
=आधारमैयुनपरिगहादिभिः सम्प्रयुक्ताः=सम्प्रदाः ‘उन्निग्गनासवसहि’ उद्वि-
ग्नवासवसर्ति=उद्विग्नाना वासो यत्र स तथा त ससार वसन्ति, अदत्तादायिनः
चतुर्गतिलक्षणमनन्तदुःख ससारसागरमनन्तकाल भ्रमन्तीत्यर्थः, इह वसेर्निरूपसर्ग
स्यापि सकर्मकत्वमार्पत्वात् ॥ सू० १९ ॥

“पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७ एक्केक सत्तजोणिलक्खाओ ।

वणपत्तेय अणते, दस चोदस जोणि लक्खाओ ॥१॥

विगलिदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु ।

तिरिएसु हुति चउरो, चोदस लक्खाय मणुएसु ॥२॥” इति ।

(१) पृथिवीकाय, (२) अप्काय, (३) तेजःकाय, (४) वायुकाय (५)
इनकी सात सात लाख, प्रत्येक वनस्पति दस लाख, अनन्त (साधारण)
वनस्पति चौदह लाख, दो इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चौ इन्द्रिय इनकी दो दो
२-२ लाख, नारकी तथा देव इनकी चार चार ४-४ लाख तथा तिर्यश्च
पञ्चेन्द्रिय की चार ४ लाख और मनुष्य की चौदह १४ लाख । इस
प्रकार ये सब मिल कर चौरासी ८४ लाख योनीया होती हैं ॥सू. १९॥

“पुढवि ७ दग ७ अगणि ७ मारुय ७ एक्केक सत्तजोणि लक्खाओ ।

वणपत्तेय अणते, दस चोदस जोणि लक्खाओ ॥ १ ॥

विगलिदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु ।

तिरिएसु हुति चउरो, चोदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ इति ।

•(१) पृथिवीकाय (२) अप्काय (३) तेजःकाय (४) वायुकाय, ये दरेकनी सात सात
लाख, प्रत्येक वनस्पतिनी दस लाख अनन्त (साधारण) वनस्पतिनी चौदह
लाख ये इन्द्रिनी ये लाख, त्रीन्द्रिनी ये लाख, चतुर्गिन्द्रिनी ये लाख,
नारकी तथा देवनी चार चार लाख तथा तिर्यश्च पञ्चेन्द्रिनी चार लाख,
अने मनुष्यनी चौदह लाख ये प्रमाणे जधी मणीने चौराशी लाख योनीये
थाय छे ॥सू० १९॥

पुनरप्यदत्तादायिनः कीदृशाः सन्तः किं फलं प्राप्नुयन्तीत्याह - 'जहि' इत्यादि

मूलम्—जहि जहिं आउयं निवंधंति पावकम्मकारी वंध-
वजणसयणमित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंति अणादेजा दु-
व्विणीया कुट्ठाणासण कुसेजा कुभोयणा असुडणो कुसघयण-
कुप्पमाणा कुसठिया कुरूवा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा-
धम्मसण्णसम्मत्तपव्वभट्ठा दारिदोवदवाभिभूया निच्चं पर-
कम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किव्विणा परपिडतक्कगा दुक्ख-
लद्धाहारा अरसविरसतुच्छकयकुविल्लपूरापरस्सपेच्छंता रि-
द्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहि निदता अप्पयंकयं त
च परिवयता । इह य पुरेकडाइं कम्माइ पावगाइ विमणसो
सोएणु उज्झमाणा परिभूया हुति सत्तपरिवज्जिया य छोव्वा
सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचि-
यत्ता निच्च नीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोह-
मणोरहा निरासवहुला आसापासपडिवद्धपाणा अत्थोप्पायण
कामसोक्खे य लोयसारेहुति अफलवतगा य सुट्ठुअवि
उज्जमता तद्विवसुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसठवियसित्थपिड-
सच्चयपराखीणदव्वसारा णिच्चं धणधण्णकोसपरिभोगविव-
ज्जिया रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा परसिरि भोगोव
भोगनिस्साणमग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणि-
यति दुक्ख, णैवसुह णेवणिव्वुइं उवलभति अच्चतविउल
दुक्खसयसपलित्ता परस्स दव्वेहि जे अविरया ॥सू० २०॥

ટીકા—‘ પાવકર્મકારી ’ પાપકર્મકારિણસ્તેઽદત્તાદાયિન ‘ જહિ—જહિ
આય નિવધતિ ’ યત્ર યત્ર આયુર્નિવધનન્તિ=યત્ર યત્ર ગ્રામકુળાદૌ આયુર્નિવધનન્તિ
તત્ર તત્ર સમુત્પદ્યન્તે इत्यर्थः । તત્ર કીદશા ભવન્તી ? ત્યાહ—‘ વધવજનસયણમિત્ત-
પરિવજ્જિયા ’ વાન્ધવજનમિત્રપરિવર્જિતા = તત્ર વાન્ધવજનૈઃ=ભ્રાત્રાદિભિઃ,
સ્વજનૈ =પુત્રાદિભિઃ, સ્નેહિજનરૂપમિત્રૈશ્ચ પરિવર્જિતાઃ=રહિતાસ્ત્યક્તા વા ભવન્તિ,
પુનઃ ‘ અણિઢ્ઠા ’ અણિઠ્ઠાઃ=સમ્પલ્લોકસ્યાઽપિયાઃ, તથા ‘ અણાદેજ્જા ’ અનાદેયાઃ
=અનાદેયચનનામગોત્રાદિમન્ત । તથા ‘ દુવ્વિણીયા ’ દુર્વિનીતાઃ = ઉદ્ધતાઃ
‘ કુઢ્ઢાણાસણકુસેજ્જા ’ કુસ્થાનાસનકુશળ્યાઃ=કુત્તિસત સ્થાન=કુગ્રામવાસાદિરૂપ-

યે અદત્તાગ્રાહી ઓર મી કયા ફલ પ્રાપ્ત કરતે હે ? હસી વિષય કો
સૂત્રકાર પુનઃ સ્પષ્ટ કરતે હે—‘ જહિ જહિ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પાવકર્મકારી) અદત્તાદાનરૂપ પાપ કર્મકારી મનુષ્ય (જહિ—
આય નિવધતિ) જિસર પર્યાય કી આયુ વાધતે હે વે ઉસર પર્યાય મેં
ઉત્પન્ન હોતે હે વહા પર ઉનકી સ્થિતિ કેસી હોતી હે ? સૂત્રકાર હસી
બાતકો આગે કે પદોં દ્વારા પ્રગટ કરતે હે, વે કહતે હે કિ (વધવજન-
સયણમિત્તપરિવજ્જિયા) વે વહા ભ્રાતૃ આદી વાધવજનોં સે, પુત્ર આદિ
રૂપ સ્વજનોં સે એવ સ્નેહીજન રૂપ મિત્રોં સે સદા પરિવર્જિત હોતે હે ।
(અણિઢ્ઠા) કોહ મી લોગ ઇનસે પ્રીતિ નહીં કરતે હે, તથા (અણાદેજ્જા)
વે એસે ગોત્રાદિ વાલે હોતે હે, કી જિનકા વચન કોહ નહીં માનતે હે
યહા તક કિ જિનકા નામ લેના મી મહે મનુષ્ય અન્ઝા નહીં સમજતે
હે । (દુવ્વિણીયા) દુર્વિનીત-ઉદ્ધત હોતે હે । (કુઢ્ઢાણાસણકુસેજ્જા)

તે અદત્તાગ્રાહી ખીણુ કયુ ફળ પ્રાપ્ત કરે છે, તે વિષયનુ સૂત્રકાર હેણ પણ
વધારે સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—“ જહિ જહિ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“પાવકર્મકારી” અદત્તાદાનરૂપ પાપકર્મ કરનાર મનુષ્ય ‘ જહિર આય-
નિવધતિ ” જે જે પર્યાયની આયુ બાધે છે તે તે પર્યાયમા ઉત્પન્ન થાય છે ત્યા
તેમની ડેવી હાલત થાય છે ? સૂત્રકાર એ જ વાતને હવેના પદો દ્વારા પ્રગટ
કરે છે તેઓ હે છે કે— “ વધવજનસયણમિત્તપરિવજ્જિયા ” તે લોકો
ત્યા ભાઈ આદિ બન્ધુજનોથી, પુત્ર આદિ સ્વજનોથી, અને સ્નેહીજનરૂપ મિત્રોથી
સદા ત્યજાયેલા રહે છે, “ અણિઢ્ઠા ” કોઈ પણ લોકો તેમના પ્રત્યે પ્રીતિ
ધરાવતા નથી, તથા “ અણાદેજ્જા ” તેઓ એવા ગોત્રાદિ વાળા હોય છે કે
તેમની વાત કોઈ માનતું નથી, એટલું જ નહીં પણ તેમનું નામ લેવું તે પણ
સારા માણસોને યોગ્ય લાગતું નથી “ દુવ્વિણીયા ” દુર્વિનીત-ઉદ્ધત હોય છે,
“ કુઢ્ઢાણાસણકુસેજ્જા ” કુઆમોમા તેમનું રહેઠાણ હોય છે, અને તેમની રહેણી

માસન=નીચાસ્થાનાદિલક્ષણ તથા કુત્સિતા શય્યા વિપમભૂમ્યાદિરૂપા યેષાં તે તથા, 'કુમ્ભોયણા' કુમ્ભોજના ક્રોધવાદિકદમ્નાગ્નિઃ 'અસુહ્ણો' અશુચયઃ=શુચિવર્જિતાઃ, 'કુમ્ભયણકુપ્પમાણા' કુમ્ભનન કુપ્પમાણાઃ=કુમ્ભનનાઃ=સેવાર્તાતિ સહનનયુક્તાઃ કુપ્પમાણાઃ=કુત્સિત શરીરસ્ય પ્રમાણ યેષાં તે તથા અતિદીર્ઘા અતિ હ્રસ્વાવેત્યર્થ, તથા 'કુસઠિયા' કુસસ્થિતાઃ=કુત્સિતા ઘુણ્ડાદિ સ્થાનયુક્તા 'કુરુવા' 'કુરુપાઃ' વહુક્રોધમાણમાયાલોભા 'વહુક્રોધમાણમાયાલોભાઃ' અતિ ક્રોધાદિયુક્તા વહુમોહાઃ=અતિકામાઃ 'ધમ્મસણ્ણાસમ્મત્તપગ્ગમ્મદ્ધા' ધર્મસંજ્ઞાસમ્યક્ત્વપરિભ્રષ્ટાઃ=ધર્મસંજ્ઞાયાઃ=શ્રુતચરિત્રત્વજ્ઞધર્મવુદ્ધેઃ સમ્યક્ત્વાન્નચ=જિનવચનરુચેઃ પરિભ્રષ્ટાઃ=સ્પર્શિતા 'દારિદ્ધોવદ્વામિભૂયા' દારિદ્ર્યોપદ્રવામિભૂતાઃ=અત્યન્તદરિદ્રાઃ, અતएव 'ણિન્ન' નિત્ય=સદા 'પરકમ્મકારિણ' = પરગૃહે

કુમારોં મેં इनका चास होता है, अवस्थान=रहन सहन इनकी नीच होती है, विपमभूमि आदि रूप इनकी शय्या होती है। (कुम्भोयणा) को द्रव आदि कदन्न (कुत्सितअन्न) इनका भोजन होता है। (असुह्णो) शुचिता-शारिरिक एव आत्मिक पवित्रता इनमें होती नहीं हैं ये लोग पवित्रतासे सदा रहित रहते हैं। (कुसवयणकुप्पमाणा) इनका सहनन खराब होता है और शरीर इनका अतिदीर्घ या अति ह्रस्व होता है। (कुसठिया) सस्थान इनका घुण्डादि होता है। (कुरुवा) रूप भी इनका असुहावना होता है। (वहुक्रोहमाणमायालोभा) बहुत ये क्रोधी होते हैं। मान, माया एव लोभ की इनमे बहुत अधिकता रहती है। (वहुमोहा) ये बहुत कामी होते हैं। (धम्मसण्णासम्मत्तपग्गमद्धा) श्रुतचारित्र रूप धर्मवुद्धि से एव जिन वचनों में श्रद्धारूप सम्यक्त्व रुचि से ये सदा रहित होते हैं। (दारिद्रो वद्वामिभूया) दादिद्रव्य इनके घरों में सदा

કરણી નીચ હોય છે, વિપમ ભૂમિ આદિ જગ્યા તેમની શય્યા બને છે "કુમ્ભોયણા" કોદરા આદિ કદન્ન (ખરાબ અન્ન) તેમનું ભોજન બને છે "અસુહ્ણો" તેમનામાં શારીરિક અને માનસિક પવિત્રતા હોતી નથી, તે લોકો હંમેશા તેનાથી રહિત હોય છે "કુસવયણ કુપ્પમાણા" તેમનું સહનન ખરાબ હોય છે, એટલે કે તેમના શરીર કાતો અતિશય ઊંચા અને કાતો અતિશય નીચા હોય છે "કુસઠિયા" તેમના અંગો અપ્રમાણસરના હોય છે, "કુરુવા" તેમનું રૂપ પણ સુંદર હોતું નથી "વહુક્રોધમાણમાયા લોભા" તેઓ ઘણા ક્રોધી હોય છે, અને માન, માયા અને લોભનું પ્રમાણ તેમનામાં વધારે હોય છે "વહુમોહા" તે ઘણા ડામી હોય છે "ધમ્મસણ્ણાસમ્મત્તપગ્ગમ્મદ્ધા" શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મવુદ્ધિથી તથા જિન વચનોમાં શ્રદ્ધારૂપ સમ્યક્ત્વ રુચિથી તે લોકો સદા રહિત હોય છે 'દારિદ્રોવદ્વામિભૂયા' તેમના ઘરોમાં અદા દારિદ્ર્ય રહે છે અને તે દરિદ્ર્ય

નીચકર્મકારકાઃ 'જીવણત્થરહિયા' જીવનાર્થરહિતા = જીવનસ્ય = મનુષ્યજન્મન
અર્થઃ = પ્રયોજન ધર્મધ્યાનાદિ સમાચરણ તદ્રહિતાઃ, જીવનયાપનહેતુદ્રવ્યહીના
વા, 'કિવિણા' કૃપણા = દીનાઃ 'પરપિંડતક્કગા' પરપિંડતર્કકા = પરદત્તભો-
જનગવેપકાઃ 'દુસ્સલદ્ધારા' દુઃસ્સલદ્ધારાઃ = દુઃસ્સાદુદરપૂરકાઃ 'અરસવિરસતુ-
ચ્છકયકુક્કિલપૂરા' અરસવિરસતુચ્છકૃતકુક્કિલપૂરા = તત્ર અરસ = નીરસ-હિંગ્વાદિ
ભિરસસ્કૃત વિરસ = પુરાણ તત્રાપિ પુચ્છ = કુલત્યાઘન યેન કનાપિ પ્રકારેણ પ્રાપ્ત
તેન કૃતઃ કુક્કિલપૂરઃ = ઉદરપૂરણ યૈસ્તૈ તથા 'પરસ્સ' પરસ્ય = અન્યસ્ય 'રિદ્ધિસકા-
રભોયણવિસેસસમુદયવિદિ' ઋદ્ધિસત્કારભોજનવિશેષસમુદયવિધિ = તત્ર ઋદ્ધિઃ =
સમ્પત્તિઃ સત્કારઃ = સમ્માન તથા ભોજન ચેત્યેતેષા યે વિશેષાઃ પ્રકારાઃ તેષા યઃ
સમુદયઃ ઉદયવર્તિત્વ તસ્ય યો વિધિઃ = વિધાન સ તથા ત 'પેચ્છતા' પ્રેક્ષમાણાઃ =

રહતા હૈ ઓર યહ દારિદ્ર્ય હનકા સદા તિરસ્કાર કરવાયા કરતા હૈ,
હસી લિયે યે (ણિચ) સર્વદા (પરકર્મકારિણો) પર કર્મકારો હોતે
હૈ-દૂસરોંકે ઘરોંમેં નીચ કાર્મોં કો કરને વાલે હોતે હૈ, (જીવણત્થરહિયા)
મનુષ્ય જન્મ કે પ્રયોજનભૂત ધર્મધ્યાનાદિ સદાચારોં સે રહિત હોતે હૈ,
(કિવિણા) દીન હોતે હૈ, (પરપિંડતક્કગા) પરપિંડ કે ડપર આશ્રિત
રહા કરતે હૈ પરદત્ત ભોજન કી ડચ્છા મેં રહતે હૈ, (દુસ્સલદ્ધારા)
વડી મુશ્કિલ સે અપને ઉદર કી પૂર્તિ કર પાતે હૈ, (અરસવિરસતુચ્છ-
કયકુક્કિલપૂરા) અરસ-હિંગ્વાદિ કે વવાર સે રહિત, વિરસ-પુરાના-
અતિ પુરાના, ઉસમેં મી તુચ્છ-કુલત્યાદિ અન્ન જો હન્હે વડી કઠિનાઈસે
પ્રાપ્ત હોતા હૈ ઉસસે હી યે અપને ઉદર કી પૂર્તિ કરતે હૈ । (પરસ્સ-
રિદ્ધિસકારભોયણવિસેસસમુદયવિદિ પેચ્છતા) દૂસરોંકી ઋદ્ધિ-

તેમનો સદા તિરસ્કાર કરાવે છે, તેથી તેઓ “ણિચ્ચ” મદા “પરકર્મકારિણો”
પારકાની નોડરી ડગનાર હોય છે, બીજાના ઘરેમા નીચ ડામ ડરનારા હોય
છે, “જીવણત્થરહિયા” મનુષ્ય જન્મના પ્રયોજન ઉપ ધર્મધ્યાન આદિ
સદાચારોથી રહિત હોય છે, “કિવિણા” દીન હોય છે, “પરપિંડતક્કગા”
પરપિંડ ઉપર મદા આધાર રાખનાર હોય છે-પરદત્ત ભોજનની ઇચ્છા રાખનાર
હોય છે, “દુસ્સલદ્ધારા” મદા મુશ્કેલીથી પોતાનુ પેટ ભરી શકે છે
“અરસવિરસતુચ્છકયકુક્કિલપૂરા” અરસ-હિંગ આદિના વધાર રહિત, વિરસ-
પુરાણ-અતિપુરાણ અને વળી તુચ્છ-કુળથી આદિ અન્ન, કે જે તેને ઘણી
મુશ્કેલીએ મળે છે, તેના વડે જ તેઓ પોતાનુ પેટ ભરે છે “પરસ્સ રિદ્ધિસકાર-
ભોયણવિસેસસમુદયવિદિ પેચ્છતા” બીજાની ઋદ્ધિ — સમ્પત્તિ, સત્કાર

ईर्ष्यानुदयापश्यन्तः, ततश्च 'अप्यय' आत्मान 'कयतं' कृतान्त=कर्तव्य च
 'निंदता' निन्दन्तः=निन्दा कुर्यन्तः, 'इह य पुरे कडाइ कम्माइ पावगाइ' इह=
 लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिव
 दन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनम.=दीनाः सन्त. 'सोएण डज्झमाणा'
 शोकेन दह्यमाना.=अभीष्टस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया
 हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःखमाप्ताश्च भवन्ति । तथा 'सत्तपरिवज्जिया य'
 सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोव्वा' क्षीम्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया,
 'सिप्प' कलासमयसत्त्वपरिवर्जिया 'शिल्प' कलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्प

સપત્તિ, સત્કાર, સન્માન, તથા ભોજન, इनके विशेष प्रकारों की समुदय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एवं
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोव्वा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી ભેવે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અમે "ઇહય" આ સસારમા "પુરે" પૂર્વભવમા "પાવગાઈ કડાઈ"
 પાપકર્મો કર્યા છે, એનું જ આ ફળ અમારે ભોગવવું પડે છે,' એ પ્રમાણે
 "પરિવયતા" બીજાને કહેતા "વિમણસો" પોતે દીન થઈને "સોણ ડજ્ઝમાણા"
 શોકથી જળતા "પરિભૂયા" હું ખી "હુતિ" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરતર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હું ખો
 ભોગવ્યા કરે છે તથા "સત્તપરિવજ્જિયા ય" મનોબળથી રહિત એવા તે
 "છોવ્વા" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા "સિપ્પ" વિની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, "કલા"

ચિત્રાદિ વિજ્ઞાન કલા=ધનુર્વેદાદિકા સમયશાસ્ત્ર=અર્હતાદિકં, તૈઃ પરિવર્જિતાઃ=રહિતા ' જહાજાયપસુભૂયા ' યથાજાતપશુભૂતા=યથા જાતા=જન્મકાલે યાદશ ગુણવિશિષ્ટાસ્તથૈવ સ્થિતા નતુ શિક્ષાદિના વિશેષતા પ્રાપ્તાઃ એવમ્ભૂતા યે પશવઃ=બલીવર્દાદયસ્તદ્ભૂતાઃ=તત્સદૃશાઃ ' અવિયત્તા ' અયં દેશીશબ્દઃ અપ્રીતિકાઃ=અપ્રીતિકારકાઃ ' નિચ્ચ નીચકર્મોવજીવિણો ' નિત્ય નીચકર્મોપજીવિનઃ = સદા હિંસાદિવૃત્ત્યુપજીવિનઃ ' લોયકુચ્છણિજ્જા ' લોકકુત્સનીયાઃ = સર્વજનૈર્નિન્દનીયાઃ ' મોહમણોરહા ' મોઘમનોરથાઃ = નિષ્ફલમનોરથાઃ,

ઉત્કીર્ણ કરને રૂપ વિજ્ઞાન સે, (કલા) ધનુર્વેદ આદિ રૂપ કલાઓ સે એવ (સમય સત્ય) અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રો કે અભ્યાસ સે, (પરિવર્જિત) રહિત હોકર (જહા જાયપસુભૂયા) યથાજાત પશુ જૈસે બને હુણ યે (અવિયત્તા) કિસી કે ભી સાથ પ્રીતિ નહીં કરતે હૈં ક્યોં કિં યે (નિચ્ચ નીચકર્મોવજીવિણો) નિત્ય હી નીચ કર્મોપજીવી હોતે હૈં । યથા જાત પશુભૂતકા વાચ્યાર્થે હસ પ્રકાર હૈં-ઉત્પન્ન હોતે સમય પશુ જિન ગુણો સે યુક્ત રહતા હૈં આગે ભી વહ વડા હોને પર ભી શિક્ષાદિક કી પ્રાપ્તિ સે અપની તરફી નહીં કર સકને કે કારણ વૈસા હી બના રહતા હૈં, હસી તરહ યે અદત્તગ્રાહી વ્યક્તિ ભી હોતે હૈં હેય ઔર ઉપાદેય કે જ્ઞાન સે વિકલ જૈસે યે જન્મતે સમય મેં યે વૈસે હી યે વડે હોને પર ભી રહતે હૈં, અતઃહન્ને યથા જાત પશુભૂત કહા ગયા હૈં । (લોય કુચ્છ-ણિજ્જા) સમસ્તજન હનકી નિંદા કિયા કરતે હૈં । (મોહમણોરહા) હનકે જિતને ભી મનોરથ હોતે હૈં વે સવ મોઘ-અસફલ હી રહતે હૈં ।

ધનુર્વેદ આદિ કલાઓથી, અને " સમયસત્ય " અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી " પરિવર્જિત " રહિત હોવાને કારણે " જહા જાય પસુભૂયા " યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ " અવિયત્તા " કોઈની પણ માથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ " નિચ્ચ નીચકર્મોવજીવિણો " હોવાથી નીચ કર્મોપજીવી હોય છે ' યથા જાત પશુભૂત ' નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે-ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટું થતા પણ રહે છે-તે મોટું થાય તો પણ શિક્ષાદિક ની પ્રાપ્તિ વડે પોતાની ઉન્નતિ કરી શકતું નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને " યથા જાત પશુભૂત " કહેલ છે " લોયકુચ્છણિજ્જા " સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, " મોહમણોરહા " તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે " નિરાસમહુલા " ધર્મિષ્ઠ વસ્તુ ન

ईर्ष्याबुद्ध्यापश्यन्तः, ततश्च 'अप्ययं' आत्मान 'कथं' कृतान्त=कर्तव्य च
 'निंदा' निन्दन्तः=निन्दा कुर्वन्तः, 'इह य पुरे कडाह कम्माड पावगाड' इह=
 लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिव
 दन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनसः=दीनाः सन्तः 'सोएण डज्झमाणा'
 शोकेन दह्यमाना.=अभीष्टस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया
 हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःसमाप्ताश्च भवन्ति । तथा 'सत्तपरिवज्जिया य'
 सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोब्भा' क्षौभ्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया,
 'सिप्पकलासमयसत्त्वपरिवज्जिया' शिल्पकलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्पं

સપત્તિ, સત્કાર, સન્માન, તથા ભોજન, इनके विशेष प्रकारों की समुदाय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाड कडाह) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोब्भा) निस्सहाय होनेके कारण हर एक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા લાવથી જોવે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અમે "ઇહય" આ સસારમા "પુરે" પૂર્વભવમા "પાવગાહ કડાહ"
 પાપકર્મો કર્યા છે, એનું જ આ ફળ અમારે ભોગવવું પડે છે,' એ પ્રમાણે
 "પરિવયતા" બીજાને કહેતા "વિમણસો" પોતે દીન થઈને "સોણડજ્ઞમાણા"
 શોકથી જળતા "પરિભૂયા" હું બી "હુતિ" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરન્તર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હું બી
 ભોગવ્યા કરે છે તથા "સત્તપરિવજ્જિયાય" મનોબળથી રહિત એવા તે
 "છોબ્બા" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા "સિપ્પ" ચિત્રાદિની રચના કરનારા નિષ્ણાંધી "સિપ્પ"

ચિત્રાદિ વિજ્ઞાન કલા=ધનુર્વેદાદિકા સમયશાસ્ત્ર=અર્હતાદિક, તૈઃ પરિવર્જિતાઃ=રહિતા 'જહાજાયપસુભૂયા' યથાજાતપશુભૂતા=યથા જાતા=જન્મકાલે યાદશ ગુણવિશિષ્ટાસ્ત્યૈવ સ્થિતા નતુ શિક્ષાદિના વિશેષતા પ્રાપ્તાઃ એવમ્ભૂતા યે પશવઃ=બલીવર્દાદયસ્તદ્વદ્ભૂતાઃ=તત્સદૃશાઃ 'અવિયત્તા' અયં દેશીશબ્દઃ અપ્રીતિકાઃ=અપ્રીતિકારકાઃ 'નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો' નિત્ય નીચકર્મોપજીવિનઃ = સદા હિંસાદિવૃત્ત્યુપજીવિનઃ 'લોયકુચ્છણિજ્જા' લોકકુત્સનીયાઃ = સર્વજનૈર્નિન્દનીયાઃ 'મોહમણોરહા' મોગ્ધમનોરથાઃ = નિષ્ફલમનોરથાઃ,

ઉત્કૌર્ણ કરને રૂપ વિજ્ઞાન સે, (કલા) ધનુર્વેદ આદિ રૂપ કલાઓ સે એવ (સમય સત્થ) અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રો કે અભ્યાસ સે, (પરિવર્જિતયા) રહિત હોકર (જહા જાયપસુભૂયા) યથાજાત પશુ જૈસે ઘને હુણ યે (અવિયત્તા) કિમી કે મી સાથ પ્રીતિ નહીં કરતે હૈં ક્યોં કિ યે (નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો) નિત્ય હી નીચ કર્મોપજીવી હોતે હૈં । યથા જાત પશુભૂતકા વાચ્યાર્થ હસ પ્રકાર હૈ—ઉત્પન્ન હોતે સમય પશુ જિન ગુણો સે યુક્ત રહતા હૈ આગે મી વહ વડા હોને પર મી શિક્ષાદિક કી પ્રાપ્તિ સે અપની તરકી નહીં કર સકને કે કારણ વૈસા હી ઘના રહતા હૈં, હસી તરહ યે અદત્તગ્રાહી વ્યક્તિ મી હોતે હૈ હેય ઓર ઉપાદેય કે જ્ઞાન સે વિકલ જૈસે યે જન્મતે સમય મેં થે વૈસે હી યે વડે હોને પર મી રહતે હૈં, અતઃહન્દે યથા જાત પશુભૂત કહા ગયા હૈ । (લોય કુચ્છ-ણિજ્જા) સમસ્તજન હનકી નિંદા કિયા કરતે હૈ । (મોહમણોરહા) હનકે જિતને મી મનોરથ હોતે હૈં વે સવ મોઘ-અસફલ હી રહતે હૈ ।

ધનુર્વેદ આદિ કલાઓથી, અને “સમયસત્થ” અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી “પરિવર્જિતયા” રહિત હોવાને કારણે “જહા જાય પસુભૂયા” યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ “અવિયત્તા” કોઈની પણ સાથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ “નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો” હોવાથી નીચ કર્મોપજીવી હોય છે ‘યથા જાત પશુભૂત’ નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે—ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટું થતા પણ રહે છે—તે મોટું થાય તો પણ શિક્ષાદિક ની પ્રાપ્તિ વડે ખોતાતી ઉન્નતિ કરી શકતું નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને “યથા જાત પશુભૂત” કહેલ છે “લોયકુચ્છણિજ્જા” સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, “મોહમણોરહા” તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે “નિરાસવહુલા” ઇચ્છિત વસ્તુ ન

ईर्ष्याद्युद्धयापश्यन्त', ततश्च 'अप्ययं' आत्मान 'कथयंतं' कृतान्त=कर्तव्य च
 'निंदता' निन्दन्तः=निन्दा कुर्वन्तः, 'इह य पुरे षडाह कम्माड पावगाडं' इह=
 लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिव
 दन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनम.=दीनाः सन्तः 'सोएण इज्झमाणा'
 शोकेन दह्यमानाः=अभीष्टस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया
 हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःखमाप्ताश्च भवन्ति । तथा 'सत्तपरिवज्जिया य'
 सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोव्वा' क्षीभ्याः=निस्सहायत्वात्परिभवनीया,
 'सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' शिल्पकलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्प

संपत्ति, सत्कार, सन्मान, तथा भोजन, इनके विशेष प्रकारों की समुदय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाड कडाह) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण इज्झमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोव्वा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

અનુમાન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી બેવે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અમે "ઇહય" આ સસારમા "પુરે" પૂર્વભવમા "પાવગાહ કડાહ"
 પાપકર્મો કર્યા છે, એનું જ આ ફળ અમારે ભોગવવું પડે છે,' એ પ્રમાણે
 "પરિવયતા" બીજાને કહેતા "વિમણસો" પોતે દીન થઈને "સોણેણ ઇજ્ઞમાણા"
 શોકથી જળતા "પરિભૂયા" હુ ખી "હુતિ" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરન્તર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હુ ખો
 ભોગવ્યા કરે છે તથા "સત્તપરિવજ્જિયા ય" મનોબળથી રહિત એવા તે
 "છોવ્વા" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા "સિપ્પ" ચિત્રાદિની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, "કલા"

કઠિનપરિશ્રમેણાપિ દિનમાત્રાહારયોગ્યમેવઋથશ્ચિત્ અન્નાદિક પ્રાપ્તુવન્તીત્યર્થઃ,
' સ્વીણદન્વસારા ' ક્ષીણદ્રવ્યસારાઃ=દરિદ્રાઃ ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞ-
યા ' નિત્ય ધનવાન્યકોસપરિભોગવિવર્જિતા =તત્ર નિત્ય=સદા ધન-ગણિમાદિક
ધાન્ય શાલ્યાદિક કોશાઃ=ભાણ્ડાગારાસ્તેષા પરિભોગેન=ઉપભોગેન વિવર્જિતાઃ, રહિ-
તાઃ, તથા 'રહિયકામભોગપરિભોગસન્વસોક્ષ્વા' રહિત કામભોગપરિભોગસર્વસૌરયાઃ
=રહિત કામયોઃ=શબ્દરૂપયોઃ ભોગાનાં=ગન્ધરૂપસ્પર્શના પરિભોગસૌર્ય-ઉપભોગ
જનિત આનન્દઃ=યેષા તે તથા કામભોગસુખવર્જિતા इत्यર્થઃ, ' પરસિરિભોગોવ-
ભોગનિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા ' પરશ્રી ભોગોપભોગનિશ્વાણમાર્ગણપરાયણાઃ, તત્ર-
પરેષામ્=અયેષા ત્રિયા =સમ્પત્તેઃ યૌ ભોગોપભોગૌ=ભોગઃ=સક્રત્ ભુજ્યતે યઃ સઃ
=આહાર પુષ્પાદિરૂપઃ, ઉપભોગશ્ચ=ટુઠ્ઠવસ્ત્રાદિલક્ષણઃ તયોર્યન્નિશ્રાણ તસ્ય માર્ગણ=

કર્ણો કે પિણ્ડ કે સચય કરને મેં હી લગે રહતે હૈ અર્થાત્ સમ્પૂર્ણ દિન
ઉદ્યોગ મેં તત્પર રહને પર ખી યે વડે કઠિન પરિશ્રમ સે કેવલ ઉસી
દિન કે યોગ્ય અન્નાદિ સામગ્રી કો જિસ કિસી પ્રકાર સે અર્જિત કર
પાતે હૈ । (સ્વીણદન્વસારા) દ્રવ્ય રૂપ સાગ સે રહિત ન હોને કે કારણ
યે દરિદ્ર હોતે હૈ । (ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞયા) સર્વદા
યે ગણિમાદિ રૂપ ધન, શાલી આદિ ધાન્ય એવ ભાણ્ડાગાર इनके परि-
ભોગ-ઉપભોગસે રહિત હોતે હ । (રહિયકામભોગપરિભોગસન્વસોક્ષ્વા)
શબ્દ એવ રૂપ સ્વરૂપ કામકે, ગન્ધ રસ ઓર સ્પર્શ સ્વરૂપ ભોગોં કે
પરિભોગ કે સુખોં સે રહિત હોતે હૈ, (પરસિરિભોગોવભોગનિસ્સાણમગ્ગ-
ણપરાયણા) (પરસિરિ) દૂસરે વ્યક્તિયોની લક્ષ્મી કે (ભોગોવભોગ)
ભોગ ઓર ઉપભોગ કે (નિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા) આશ્રય કી વાછા મેં
હી સદા લગે રહતે હૈ । જો એક વાર ભોગને મે આતે હૈ એસે આહાર,

સમૂહનો સથડ ડરવામા જ લાગ્યા રહે છે એટલે કે આખો દિવસ મહેનત
ડરવા છતાં પણ તેઓ અતિ ભારે પરિશ્રમથી ક્ષતિ એ એક દિવસ ચાલે એટલી
અન્ન સામગ્રી માડ માડ પ્રાપ્ત કરી શકે છે “સ્વીણ દન્વસારા” દ્રવ્યરૂપ સારથી
રહિત હોવાને કારણે તેઓ દરિદ્ર હોય છે “ ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞયા
સર્વદા તેઓ સોનામહોરો આદિ ધન, શાલી આદિ ધાન્ય અને વામણોના ભંડારની
તેમના ઉપભોગથી રહિત રહે છે, “ રહિયકામભોગપરિભોગસન્વસોક્ષ્વા ” શબ્દ
અને રૂપ સ્વરૂપ કામના ગન્ધ, રસ, અને સ્પર્શસ્વરૂપ પરિભોગના સુખોથી તેઓ
રહિત હોય છે “ પરસિરિભોગોવભોગનિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા ” “ પરસિરિ ” તેઓ
અન્ય વ્યક્તિઓની લક્ષ્મીના “ ભોગોવભોગ ” ભોગ તથા ઉપભોગના “ નિસ્સાણ-
મગ્ગણપરાયણા ” આશ્રયની વાસનામા જ સદા લીન રહે છે, જે

નિરાશવહુલાઃ = ઇષ્ટવસ્તુમાત્ર્યભારાદતિનિરાગાઃ, ' આગ્રાસપદ્ધિવદ-
 પાણા ' આશાપાશપતિવદ્ધમાગાઃ=આશૈવ પાગા=અન્યન તેન પ્રતિવદ્ધાઃ=નિરુદ્ધાઃ
 =પ્રાણા ચેપાતે તથા આશામાત્રજીવિન., ' લોચસારે ' લોકમારે=ચોક્ષમારભૂતે
 ' અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે ' અર્થોત્પાદનકામસૌરવ્યે=તથા અર્થોત્પાદન=દ્રવ્યોપાર્જન
 કામસૌરવ્ય=ઇન્દ્રિયજનિત સૌરવ્ય તત્ર ' સુદુઃખિ ઉજ્જમતા ' સુદુઃખિ અપિ ઉદ્યમન્તઃ
 =ઉદ્યોગ કુર્યન્તઃ ' અફલવતગા ' અફલવન્નથ=અભિલષિતવસ્તુપ્રાપ્તિરહિતા ' હુતિ '
 ભવન્તિ । પુનઃ કીદૃશા ભવન્તિ ? ત્યાહ ' તદિવ સુજ્જુત્તકમ્મકયદુઃખસઠવિધિ
 ત્યપિંડસચયપરા ' તદિવમોદ્યુક્તકર્મકૃતદુઃખમસ્થાપિતસિત્થપિંડસચયપરાઃ,
 તત્ર તદિવસેપુ=તત્તદિનેપુ ઉદ્યુક્તૈ=ઉદ્યોગવદ્ધિ સદ્ધિ. કર્મણા=વ્યાપારેણ કૃતે
 નાપિ દુઃખેન=અતિકલેશેન સસ્થાપિત = પ્રાપ્તો ય સિત્થાના=વાન્યમ્મણાના
 પિંડસ્તસ્ય સશ્ચયે પરાઃ=તત્પરા ચે તે તથા-સમ્પૂર્ણદિનમુદ્યોગપરાઃ સન્તોઽપિ-

(નિરાસ વહુલા) ઇષ્ટવસ્તુની પ્રાપ્તિ નહીં होने કે કારણ ચે મદા નિરાશ
 હી બને રહતે હૈ । (આસાપાસપદ્ધિવદ્ધપાણા) ફિર મી ચે જો જીતે હૈ
 હસકા કારણ હનકી આશા હૈ । હસી આશાકી પાશ મે હી હનકે
 પ્રાગ હી વધે હુણ રહતે હૈ । (લોચસારે) યદ્યપિ ચે લોક મેં
 સારભૂત માને ગયે (અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે) અર્થાર્જન એવ ઇન્દ્રિય
 જનિત સુખ મેં (સુદુઃખિ ઉજ્જમતા) અઢી તરહ સે ઉદ્યમ શીલ
 રહતે હૈ, પરન્તુ ફિર મી (અફલવતગા) હન્દે અભિલષિત વસ્તુકી
 પ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ । હસસે ચે રહિત (હુતિ) બને રહતે હૈ । (તદિવ
 સુજ્જુત્તકમ્મકયદુઃખસઠવિધિસિત્થપિંડસચયપરા) (તદિવસુજ્જત્ત)
 પ્રતિદિન ઉદ્યોગ કરતે રહને પર મી (કમ્મકય) કિયે ગયે કામ સે
 (દુઃખસઠવિધિ) મુશ્કિલ સે પ્રાપ્ત હુણ (સિત્થપિંડ સચયપરા) ધાન્ય

મળવાને કારણે તેઓ સદા નિરાશ જ રહે છે “ આસપાસપદ્ધિવદ્ધપાણો ”
 છતાં પણ તેઓ જીવી શકે છે તેનું કારણ તેમની આશા છે તે આશાના
 પાશમાં જ તેમના પ્રાણ બધાયેલા રહે છે “ લોચસારે ” જો કે તેઓ
 લોકોમાં સારભૂત મનાતા “ અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે ” અર્થાર્જન (ધન ઉમાવામાં)
 તથા ઇન્દ્રિય જનિત સુખમાં “ સુદુઃખિ ઉજ્જમતા ” સારી રીતે પ્રયત્નશીલ રહે
 છે, પણ “ અફલવતગા ” તેમને ઇચ્છિત વસ્તુ મળતી નથી તેનાથી તેઓ
 રહિત “ હુતિ ” રહે છે ‘ તદિવ સુજ્જુત્તકમ્મકયદુઃખસઠવિધિ સિત્થપિંડસચયપરા ’
 “ તદિવ સુજ્જુત્ત ” દરરોજ ઉદ્યોગ કરવા છતાં પણ “ કમ્મકય ” કરેલા કામથી
 “ દુઃખસઠવિધિ ” મુશ્કેલીથી મળેલા “ સિત્થપિંડસચયપરા ” ધાન્યકણોના

અદત્તાદાનસ્ય ચતુર્થે ફલદ્વારં નિરૂપિતમ્ । સામ્પ્રતમધ્યયનાર્થમુપસહરન્નાહ
—‘ एसो सो ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलो-
इयो परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महव्भओ वहरयप्प-
गाढो दारुणो ककसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न
य अवेयइत्ता अत्थिहुं मोक्खोत्ति, एवमाहसु णायकुलनदणो
महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी अदिण्णादाणस्स
फलविवागं एव त तइयपि अदिण्णादाण हर-दर-मरण-कलुस
—तासण—परसति भेज्जलोभमूलं एव जाव चिरपरिचिय-
मणुगत दुरत तिवेसि ॥ सू० २१ ॥

॥ तइय अहम्मदार सम्मत्त ॥

ટીકા—‘ एसो सो ’ एषः स=दर्शितस्वरूपः ‘ अदिण्णादानस्य ’ अदत्ता-
दानस्य ‘ फलविवागो, फलविपाकः ‘ इहलोइओ ’ ऐहलौकिकः=मनुष्यभयापेक्षया
‘ परलोइओ ’ पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया ‘ अप्पसुहो ’ अल्पसुख=आपातमात्र-

इस प्रकार यह अदत्तादान के चौथे फल द्वार का निरूपण किया गया है, अब सूत्रकार इस अ-व्ययन के अर्थका उपसहार करते हुए कहते हैं — ‘ एसो सो ’ इत्यादि० ।

टीકાર્થ—(एसोसो) जीसका इस प्रकारसे स्वरूप प्रदर्शित किया जा चुका है ऐसा (अदिण्णादाणस्स फलविवागो) अदत्तादानका यह फलरूप विपाक (इहलोइओ) मनुष्य भवकी अपेक्षा तथा (परलोइओ) नर-कादि गतियोंकी अपेक्षासे प्रदर्शित किया गया है । इससे हम यह बात भली भाँती जान सकते हैं कि यह फलरूप विपाक (अप्पसुहो)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનું નિરૂપણ કરવામા આવ્યું, હવે સૂત્રકાર આ અવ્યયનના અર્થનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ एसो सो ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ एसो सो ” જેનું ઉપરોક્ત પ્રકારે અર્થપ્રગટ કરવામા આવ્યું તે “ अदिण्णादाणस्स फलविवागो ” अदत्तादानનો તે ફલરૂપ વિपाક “ इह-लोइओ ” मनुष्यभवकी अपेक्षातथा “ परलोइओ ” नरकादि गतियोनी अपेक्षातथा अताववामा आव्यो છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે સમજી શકીએ છીએ

ગવેપણ તત્ર પરાયણા' પરસમ્પત્તિભોગાભિલાષયા ઇત્યર્થ, 'વરાગા' વરાકા.=
 દીનાઃ 'અકામિયાણ' અકામિયા=અનિન્દ્ર્યાઽપિ 'વિણિહુતિદુઃખ' વિનય-
 ન્તિ દુઃખ=દુઃખ પ્રાપ્નુવન્તિ તથા 'ઞેવ સુહ ઞેવ ણિન્નુહ ઉવલભતિ' નૈવમુખ
 નૈવ નિર્વૃત્તિ=મનઃ શાન્તિમુપલભન્તે=પ્રાપ્નુવન્તિ, તે કે ? ઇત્યાહ—'અચ્ચતવિહ
 લદુક્કસયસપલિત્તા' અત્યન્તવિપુલદુઃખાતમમ્પદીપ્તાઃ =અત્યન્તવિપુલમ્=તિ
 પ્રિસ્તીર્ણ યદ્ દુસસત્ત તેન સમ્પદીપ્તા.=સતસા. 'પરમ્મ દવ્વેહિ-જે અવિરયા'
 પરસ્ય દ્રવ્યેષુ યે અવિરતાઃ=નિવૃત્તિમાપરહિતામ્તેઽન પરમ ચ નૈવ મુખ નૈવ શાન્તિ
 ચોપલભન્તે ઇતિ સમ્પન્નઃ સૂ. ૨૦ ॥

પુષ્પ આદિ પદાર્થ ભોગ ઓર જો વાર ૨ ભોગને મે આતે હૈ એસે ગૃહ
 વસ્ત્ર આદિ પદાર્થ ઉપભોગ હૈ । (વરાગા) યે સદા દીનાવસ્થા સપન્ન
 હોતે હૈ । (અકામિયાણ) ઇનકી યદ્ અભિલાષા નહીં હોતી હૈ કી
 હમ દુઃખ ભોગે પરન્તુ ઇન્હે વિના ઇચ્છા કે ભી (વિણિહુતિ દુઃખ)
 દુઃખ સહના પડતા હૈ । ઇન્હે (ઞેવ સુહ ઞેવ ણિન્નુહ ઉવલભતિ)
 જીવનભર કભી ભી સુખ નહીં મિલતા ઓર ન કભી નિર્વૃત્તિ મનકો
 શાન્તિ હી ઇન્હે પ્રાપ્ત હોતી હૈ । કારણ કી યે (અચ્ચત વિહલદુક્ક-
 સયસપલિત્તા) અત્યત વિપુલ સૈકડો દુઃખોં સે સતસ હોતે રહતે હૈ ।
 ઇન દુઃખોં સે ભી સતસ હોને કા કારણ યદ્ હૈ કિ યે (પરમ્મ દવ્વેહિ-
 જે અવિરયા) પરકે દ્રવ્ય કો અપહરણ કરને રૂપ કુકૃત્ય સે વિરતિ-
 ભાવ ધારણ કરને સે રહિત હોતે હૈ । ઇસી કારણ ઇન વિચારોં કો ન
 સુખ મિલતા હૈ ઓર ન શાન્તિ હી મિલતી હૈ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

એક વાર ભોગવવામા આવે છે એવા આહાર પુષ્પ આદિ પદાર્થ ભોગ
 ગણાય છે, અને જે વરવાર ભોગવાય છે એવા ઘર, વસ્ત્ર આદિ પદાર્થોને
 ઉપભોગ કહે છે 'વરાગા' તેઓ હ મેંશ દીન દશામા રહે છે, "અકામિયાણ"
 તેમને હુ ખ ભોગવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, પણ તેમને ઇચ્છ્યા વિના પણ
 "વિણિહુતિ દુઃખ" હુ ખો સહન કરવા પડે છે તેમને "ઞેવ સુહ ઞેવ ણિન્નુહ ઉવલ
 ભતિ" આખુ જીવન કદી પણ સુખ મળતુ નથી, અને તેમને કદી નિર્વૃત્તિ-(મનની
 શાન્તિ) પણ પ્રાપ્ત થતી નથી, કારણ કે તે લોકો "અચ્ચતવિહલદુક્કસય
 સપલિત્તા" અત્યત વિપુલ, સેકડો હુ ખોથી હુ ખી થયા કરે છે, એ હુ ખોથી
 પણ હુ ખી થવાનુ કારણ એ છે કે તેઓ "પરમ્મ દવ્વેહિ જે અવિરયા"
 પરધનનુ અપહરણ કરવા ઉપ કુકૃત્યથી વિરકત થઈ શકતા નથી, તે કારણે
 તે ણિચારાઓને સુખ મળતુ નથી અને શાન્તિ પણ મળતી નથી ॥ સૂ. ૨૦ ॥

અમદત્તાદાનસ્ય ચતુર્થે ફલદ્વારં નિરૂપિતમ્ । સામ્પ્રતમધ્યયનાર્થમુપસહરન્નાહ
—‘ એસો સો ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એસો સો અદિણ્ણાદાણસ્સ ફલવિવાગો ઇહલો-
હયો પરલોહઓ અપ્પસુહો વહુદુક્ખો મહવ્વમઓ વહુરયપ્પ-
ગાઠો દારુણો કકસો અસાઓ વાસતહસ્સેહિ મુચ્ચહ, ન
ય અવેયહત્તા અતિથહુ મોક્ખોત્તિ, એવમાહસુ ણાયકુલનદણો
મહપ્પા જિણો ડ વીરવરનામધેજ્જો કહેસી અદિણ્ણાદાણસ્સ
ફલવિવાગ એવ ત તહયપિ અદિણ્ણાદાણ હર-દર-મરણ-કલુસ
—તાસણ—પરસંતિ મેઝ્જલોભમૂલં એવ જાત્ર ચિરપરિચિય-
મણુગત દુરત તિવેસિ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

॥ તહય અહમ્મદાર સમ્મત્ત ॥

ટીકા—‘ એસો સો ’ એપ્ : સ=દર્શિતસ્વરૂપઃ ‘ અદિણ્ણાદાનસ્ય ’ અદત્તા-
દાનસ્ય ‘ ફલવિવાગો, ફલવિપાકઃ ‘ ઇહલોહઓ ’ એહલૌકિકઃ=મનુષ્યભગ્નાપેક્ષયા
‘ પરલોહઓ ’ પારલૌકિકઃ=નરકાઘપેક્ષયા ‘ અપ્પસુહો ’ અલ્પસુખ=આપાતમાત્ર-

હસ પ્રકાર યહ અદત્તાદાન કે ચૌથે ફલ દ્વાર કા નિરૂપણ કિયા
ગયા હૈ, અવ સૂત્રકાર હસ અ યન કે અર્થકા ઉપસહાર કરતે હુએ
કહતે હૈ — ‘ એસો સો ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(એસોસો) જીસકા હસ પ્રકારસે સ્વરૂપ પ્રદર્શિત કીયા જા
ચુકા હૈ એસા (અદિણ્ણાદાણસ્સ ફલવિવાગો) અદત્તાદાનકા યહ ફલરૂપ
વિપાક (ઇહલોહઓ) મનુષ્ય ભવકી અપેક્ષા તથા (પરલોહઓ) નર-
કાદિ ગતિયોંકી અપેક્ષાસે પ્રદર્શિત કિયા ગયા હૈ । હસસે હમ યહ વાત
મલી માર્તી જાન સકતે હૈ કિ યહ ફલરૂપ વિપાક (અપ્પસુહો)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનું નિરૂપણ કરવામા આવ્યું, હવે
સૂત્રકાર આ અધ્યયનના અર્થનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એસો સો ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એસો સો ” જેનું ઉપરોક્ત પ્રકારે અર્થપ્રગટ કરવામા આવ્યું તે
“ અદિણ્ણાદાણસ્સ ફલવિવાગો ” અદત્તાદાનનો તે ફલરૂપ વિપાક “ ઇહ-
લોહઓ ” મનુષ્યભવની અપેક્ષાએ તથા “ પરલોહઓ ” નરકાદિ ગતિયોની
અપેક્ષાએ બતાવવામા આવ્યો છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે
સમજી શકીએ છીએ

સુખજનકઃ, 'બહુદુઃખો' ગદુઃખઃ=દુઃખવહુલઃ 'મહાભયો' મહાભય.=મહા
ભયજનકઃ 'બહુરયપ્પગાદો' બહુરજઃ પ્રનાદઃ=પ્રચુરકર્મરજોભિઃ સમ્મૃતઃ 'દારુણો'
દારુણઃ=ભીષણઃ 'કક્કસો' કકેશઃ=કઠોરઃ 'અસાઓ' અશાતઃ=અમુઘોઽશાત
કર્મવેદનીયસ્વરૂપઃ इत्येवविधफलविपाकः 'વાસસહસ્સેહિં' વર્ષમહસ્રૈઃ=પલ્યો
પમસાગરપમાણકાલિઃ 'મુચ્ચઈ' મુચ્યતે=શીયતે । તદય વ્યતિરેકમુખેનાદ- 'નય'
ન ચ ત ફલ-વિપાકમ્, 'અવેયહત્તા' અવેદયિત્વા = અનુપમુજ્ય ઉપભોગ
વિનેત્યર્થઃ 'હુ' નિશ્ચયેન 'મોક્ષો' મોક્ષઃ 'અત્યિ' અસ્તિ 'તિ' इति शब्द
સમાપ્તિ સૂચકઃ ।

एतस्यार्थस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रमाणयन्नाह—
'एवमाहसु' इत्यादि ।

एवम्=उत्तरीत्या 'आहसु' ऊचुः ऋषभादि तीर्थङ्करगणधरादय । तथा
केवल आपातमात्र सुख जनक है । (बहु दुःखो) जीवों के इससे
वास्तविक सुख नहीं मिलता है किंतु भयकर से भयकर दुःखो का
ही यह प्रदाता है । (बहुभयो) यह महा भयजनक है (बहुरयप-
गादो) प्रचुर कर्म रूपी रज से यह भरा हुआ है । (दारुणो) बड़ा
भीषण है । (कक्कसो) कठोर है । (असाओ) अशात कर्म वेदनीय
स्वरूप है । इस तरह का यह फलविपाक (वाससहस्सेहिं) हजारों
वर्षों में अर्थात् पल्योपम तथा सागरोपर प्रमाणकाल में (मुच्चइ)
छूटता है ॥ (नय अवेयहत्ता ह मोक्षो अत्यि त्ति) विना इसका
फल भोगे जीव इससे मुक्त नहीं होता है । इस अर्थ में प्रमाणता प्रति
पादन करने के लिये सूत्रकारइसमें साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्म के द्वारा
प्रतिपादितता प्रकट करते हैं, वे कहते हैं- (एवमाहसु) ऋषभ आदि

તે કલરૂપ વિપાક “અપ્પસુહો” કેવળ ક્ષણિક સુખજનક છે “બહુદુઃખો”
જીવોને તેનાથી વાસ્તવિક સુખ મળતુ નથી, પણ તે લયકરમા લયકર
હુ ખો દેનાર છે “બહુભયો” તે મહા લયજનક છે “બહુરયપ્પગાદો” વિપુલ
કર્મરૂપી રજથી તે પૂર્ણ છે, “દારુણો” ઘણો ભીષણ છે, “કક્કસો” કઠોર
છે, “અસાઓ,, અશાતકર્મવેદનીય સ્વરૂપ છે આ પ્રકારનો આ ક્ષણવિપાક
“વાસસહસ્સેહિં” હજારો વર્ષો એટલે કે પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ
કાળે છૂટે છે “નય અવેયહત્તા હુ મોક્ષો અત્યિ ત્તિ” તેનુ ક્ષણ ભોગ્યા
વિના જીવ તેનાથી મુક્ત થતા નથી તે અથમા પ્રમાણ ભૂતના પ્રતિપાદિત
કરવાને માટે સૂત્રકાર તેમા સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિતતા
પ્રગટ કરે છે તેઓ કહે છે-

તદનુસારેણૈવ ' જ્ઞાતકુલનદનો ' જ્ઞાતકુલનન્દનઃ=સિદ્ધાર્થકુલાનન્દકરઃ ' મહાપ્પા ' મહાત્મા=પરમાત્મરૂપઃ ' જિણો ' જિનો-રાગદ્વેષવિજેતા ' વીરવરનામધેજ્જો ' વીરવરનામધેયઃ=પ્રત્યાતનામા ભગવાન્ મહાવીર. ' અદિણ્ણાદાણસ્મ ' અદત્તાદાનસ્ય ફલવિવાગ ' ફલવિપાક ' કહેસી ' કથિતવાન્ । એવ ' ત ' તત્ પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપમ્ , ' તદ્યપિ અદિણ્ણાદાણ ' તૃતીયમપ્યદત્તાદાન- ' હર-દહ-મરણ-કલુપ-તાસણ-પરસતિગિજ્જલોભમૂલ ' હર-દહ-મરણ-કલુપ-ત્રાસનપરસત્કગ્રાહ્યલોભ મૂલમ્ , તત્ર ' હર ' ઇતિ હરણ=પરદ્રવ્યાપહરણ, ' દહ ' દહન=દાહ-હૃદયસન્તાપઃ, ' મરણ ' મૃત્યુ, ' કલુસ ' કલુપ=મનોમાલિન્ય, ' તાસણ ' ત્રાસન=ત્રાસઃ-અકસ્માદ્ભયમ્ ' પરસતિગિજ્જલોભ ' પરસત્કગ્રાહ્યલોભઃ=પરસ્તુગ્રાહકો લોભ , એતેષા મૂલ=મૂલકારણમિદમદત્તાદાનમ્ । એવ ' જાપ ' યાવત્-યાવન્ઽઘ્વેન દ્વિતીયાલીક-

તીર્થકરોં ને હસ અદત્તાદાન કા એસા હી ફલ કહા હૈ તયા ડન્હી તીર્થ-કરોં કે અનુસાર (જ્ઞાતકુલનદનો) જ્ઞાતકુલનદન-સિદ્ધાર્થ કે કુલકો આનદ કારક (મહાપ્પા) પરમાત્મરૂપ (જિણો) રાગદ્વેષ વિજેતા (વીરવરનામધેજ્જો) શ્રી ભગવાન મહાવીર ને મી (અદિણ્ણા-દાણસ્મ) હસ અદત્તાદાન કા (ફલવિવાગ) એસા હી ફલ (કહેસી) કહા હૈ । (એવ) હસ પ્રકાર (ત) પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપવાલા યહ (તદ્યપિ) તીસરા અદત્તાદાન મી (હર-દહ-મરણ-કલુસ-પરસતિગિજ્જ-લોભમૂલ) (હર) પરદ્રવ્ય કા હરણ કરના, (દહ) હૃદય મે સતાપ પહુંચાના, (મરણ) મૃત્યુ (કલુસ) મનોમાલિન્ય (તાસણ) અકસ્માત્ ભય હોના, (પરસતિગિજ્જ લોભમૂલ) દૂસરે કી વસ્તુ કા હરણ કરાને વાલા લોભ, હન સબકા મૂલ-કારણ યહ અદત્તાદાન હૈ । યહા પર

“ એવમાહસુ ” ઋષભદેવ આદિ તીર્થકરોંએ આ અદત્તાદાનનુ આણુ જ ક્ષણ ડહેલ છે તથા તે તીર્થકરોંના પ્રમાણે “ જ્ઞાતકુલનદનો ” જ્ઞાતકુલ નદન-સિદ્ધાર્થના કુળને આનદ દાયક “ મહાપ્પા ” પરમાત્મરૂપ, “ જિણો ” રાગદ્વેષ વિજેતા, “ વીરવરનામધેજ્જો ” શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ “ અદિણ્ણા-દાણસ્મ ” આ અદત્તાદાનનુ “ ફલવિવાગ ” એણુ જ ક્ષણ ડહેલ છે “ એવ ” આ પ્રમાણે “ ત ” પૂર્વોપદર્શિત અરૂપવાળુ તે “ તદ્યપિ ” ત્રીજુ અદત્તાદાન પણ “ હર-દહ-મરણ-કલુસ-તાસણ-પરસતિ ગિજ્જ લોભમૂલ ” “ હર ” પરદ્રવ્યનુ હરણ કરણુ “ દહ ” હૃદયમા સતાપ પડોયાડવો, “ મરણ ” મૃત્યુ, “ કલુસ ” મનની મલિનતા, “ તાસણ ” અકસ્માત ભય થવો, “ પરસતિગિજ્જ લોભમૂલ ”

વચનાધ્યયનોક્તવિશેષાણાનિ યથાયોગ્યાનિ સગ્રાયાણિ । ચિરપરિચિય ' ચિરપરિ
ચિતમ્=અનાદિકાલાદનુભૂયમાનમ્, ' અણુગમ્ય ' અનુગતં=પ્રાણિના પૃષ્ઠતો લગ્નમ્,
' દુરત ' દુરન્તમ્=દુઃસ્વાવસાનમ્, ' તિવેમિ ' ઇતિ ત્રવીમિ = एतद् जन्मस्वामिनि
प्रति सुधर्मस्वामिवाक्यम् ॥ सू० २१ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु
अदत्तादानारय तृतीयधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

‘ યાવત્ ’ શબ્દ સે ટિતીય અલીક વચન સયધી અધ્યયન મેં જો વિશે
ષણ કહ ગયે હેં ઉનકા યહા યથાયોગ્યરૂપ મેં સગ્રહ કર લેના ચાહિયે ।
યહ અદત્તાદાન (ચિરપરિચિય) અનાદિકાલ સે જીવોં કે અનુભવ મેં
આ રહા હૈ (અણુગમ્ય (મિથ્યાત્વ) કે કારણ યહ આત્મા કે પીછે લગા
હુઆ હૈ । (દુરત) દુઃસ્વપદ હોં હસકા પરિણામ-ફલ હૈ । (તિવેમિ)
એંસા મેં કહતા હું । હસ પ્રકાર સે યહ જન્મ સ્વામી કે પ્રતિ સુધર્મા
સ્વામી ને કહા હૈ ॥ સૂ. ૦ ૨૧ ॥

॥ ત્રીસરા આસ્રવ— ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

ખીજાની વસ્તુનુ હરણુ કરાવનાર લોભ, વગેરે મધળી બાબતોનુ મૂળ કારણ
આ અદત્તાદાન છે, અહીં “ યાવત્ ” શબ્દથી અનીક વચન વિષેના ખીજા
અધ્યયનમા જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સગ્રહ અહીં યોગ્ય
રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન “ ચિરપરિચિય ” અનાદિ કાળથી જીવોના
અનુભવમા આવી રહ્યુ છે, (અણુગમ્ય) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ
લાગેલુ છે, (દુરત) તેનુ ફળ-પરિણામ હુ બદાયી છે, (તિવેમિ) એવુ હુ જુહુ
છુ, આ પ્રમાણે સુધર્માસ્વામીએ જ ખૂસ્વામીને જુહુ, ॥ સૂ, ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસ્રવ — ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

અથ ચતુર્થમધ્યયનમ્ ।

વ્યાખ્યાત તૃતીયમધ્યયન સામ્પત્ત ચતુર્થમારમ્ભ્યતે અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્પન્ધઃ । તૃતીયાધ્યયને યાદશ નામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમદત્તાદાનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અદત્તાદાન ચ પ્રાયોઽબ્રહ્માસક્તચિત્તાઃ કુર્વન્ત્યેવેતિ હેતોઃ સૂત્રક્રમનિર્દેશાનુસારા-
ચ્ચાઽદત્તાદાનનિરૂપણાનન્તરમુચિતપ્રાપ્તમબ્રહ્મસ્વરૂપ નામાદિનિર્દેશપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે
તસ્યેદમાઘ સૂત્રમ્—‘ જન્નૂ અગ્નિ ચ ચત્તથ ’ ઇત્યાદિ—તત્ર પૂર્વેષામિવાસ્યાપિ
‘ યાદશ ૧ યન્નામ ૨ યથા ચકૃત ૩ યત્ફલ દદાતિ ૪ યે ચ કુર્વન્તિ ૫ ’ ઇતિ-
પશ્ચભિરન્તર્દ્વારૈર્નિરૂપણ ચિત્તીર્પુ રાદો ક્રમપ્રાપ્ત’ યાદશદ્વારમાશ્રિત્ય અબ્રહ્મ-
સ્વરૂપ નિરૂપ્યતે—‘ જન્નૂ અગ્નિ ’ ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ—

તૃતીય અધર્મદ્વાર સમાપ્ત હો ચુકા । અતઃ ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હસ અધર્મદ્વાર કે સાથ હમ પ્રકાર કા સન્ધ હૈ -તૃતીય-
અધર્મદ્વારમે યાદશનામાદિ નિર્દેશપૂર્વક જો અદત્તાદાનકા સ્વરૂપ કહા હૈ
સો હસ અદત્તાદાન કો જો અબ્રહ્મમે આસક્ત ચિત્તવાલે પ્રાણી હોતે હૈ
પ્રાયઃ વે કરતે હી હૈ હસ કારણ સે, તથા સૂત્રક્રમ કે નિર્દેશ કે
અનુસાર સે અદત્તાદાન કે નિરૂપણ કે વાદ અબ્રહ્મકા સ્વરૂપ નામાદિનિ-
ર્દેશક કહના યદ્ અવસર પ્રાપ્ત હૈ । અતઃ સૂત્રકાર ઉસે અધર્મદ્વાર મે
પ્રદર્શિત કરતે હૈ । જિસ તરહ પૂર્વ અધ્યયનો કા નિરૂપણ સૂત્રકાર ને
“ યાદશ, ૧ યન્નામ ૨ યથા ચકૃત, ૩ યત્ ફલ દદાતિ, ૪ યે ચ
કુર્વન્તિ ૫ ” હન પાચ અન્તર્દ્વારો સે કિયા હૈ ઉસી તરહ વે હસકા મી

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજી અધર્મદ્વાર પૂરૂ થયુ, સવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય
છે, આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે

ત્રીજા અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ
સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અબ્રહ્મમા આસક્ત પ્રાણીઓ
હોય તે સામાન્ય રીતે આચરે છે, એ કારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે
અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અબ્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવું
તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે રીતે
આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે “ યાદશ ” ૧ (જેવા પ્રકારનુ) “ યન્નામ ” ૨
(કયા કયા નામો) “ યથા ચકૃત ” ૩ (કયારે કરાય છે) “ યત્ ફલ દદાતિ ” ૪
(કયુ ફળ આપે છે) “ યે ચ કુર્વન્તિ ” ૫ (કોણુ તે આચરે છે) આ પાચ
અન્તર્દ્વારો દ્વારા કર્યુ છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ કરવા

વચનાયયનોક્તિશેષણાનિ યથાયોગ્યાનિ સગ્રાગામિ । વિરપરિચિય ’ વિરપરિ
ચિતમ્=અનાદિકાલાદનુભૂયમાનમ્, ‘ અણુગય ’ અણુગત=પ્રાણિના પૃષ્ઠતો લગ્નમ્,
‘ દુરત ’ દુરન્તમ્=દુઃસ્વાવસાનમ્, ‘ તિવેમિ ’ इति व्रवीमि = एतद् जन्मस्वामिनि
प्रति सुधर्मस्वामिवाक्यम् ॥ सू० २१ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेण
अदत्तादानाख्य तृतीयधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

‘ યાવત્ ’ શબ્દ સે ટિતીય અલીક વચન સમ્પ્રદી અધ્યયન મેં જો વિશે
ષણ કહ ગયે હેં ઉનકા યર્હા યથાયોગ્યરૂપ મેં સગ્રહ કર લેના ચાહિયે ।
યહ અદત્તાદાન (વિરપરિચિય) અનાદિકાલ સે જીવોં કે અનુભવ મેં
આ રહા હૈ (અણુગય (મિથ્યાત્વ) કે કારણ યહ આત્મા કે પીછે લગા
હુઆ હૈ । (દુરત) દુઃસ્વપદ હી હસકા પરિણામ-ફલ હૈ । (તિવેમિ)
એસા મેં કહતા હુ । હસ પ્રકાર સે યહ જન્મ સ્વામી કે પ્રતિ સુધર્મા
સ્વામી ને કહા હૈ ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

॥ તીસરા આસ્રવ— ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

ખીજની વસ્તુનુ હરણુ કરાવનાર લોભ, વગેરે મધળી ખાખતોનુ મૂળ કારણુ
આ અદત્તાદાન છે, અહીં “ યાવત્ ” શબ્દથી અનીક વચન વિષેના ખીજ
અધ્યયનમા જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સમગ્ર અહીં યોગ્ય
રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન “ વિરપરિચિય ” અનાદિ કાળથી જીવોના
અનુભવમા આવી રહ્યુ છે, (અણુગય) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ
લાગેલુ છે, (દુરત) તેનુ ફળ-પરિણામ હુ ખદાયી છે, (તિવેમિ) એવુ હુ જહું
હુ, આ પ્રમાણે સુધર્મસ્વામીએ જન્મસ્વામીને જહ્યુ, ॥ સૂ, ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસ્રવ — ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

અથ ચતુર્થમધ્યયનમ્ ।

વ્યાख्याત તૃતીયમધ્યયન સામ્પત્ત ચતુર્થમારમ્બ્યતે અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્પન્ધઃ । તૃતીયાધ્યયને યાદશ નામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમદત્તાદાનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અદત્તાદાન ચ પ્રાયોઽબ્રહ્માસક્તચિત્તાઃ કુર્વન્ત્યેતેતિ હેતોઃ સૂત્રક્રમનિર્દેશાનુસારા-
ચ્ચાઽદત્તાદાનનિરૂપણાનન્તરમુચિતપ્રાપ્તમબ્રહ્મસ્વરૂપ નામાદિનિર્દેશપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે
તસ્યેદમાઘ સૂત્રમ્—‘ જન્મ અગમ ચ ચરત્ય ’ ઇત્યાદિ—તત્ર પૂર્વેપામિવાસ્યાપિ
‘ યાદશ ૧ યન્નામ ૨ યથા ચક્રુત ૩ યત્ફલ દદાતિ ૪ યે ચ કુર્વન્તિ ૫ ઇતિ-
પશ્ચભિરન્તર્દ્વારૈર્નિરૂપણ ચિકીર્ષુ રાદો ક્રમપ્રાપ્ત ’ યાદશદ્વારમાશ્રિત્ય અબ્રહ્મ-
સ્વરૂપ નિરૂપ્યતે—‘ જન્મ અગમ ’ ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ—

તૃતીય અધર્મદ્વાર સમાપ્ત હો ચુકા । અત્ર ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હમ અધર્મદ્વાર કે સાથ હમ પ્રકાર કા સમ્બધ હૈ -તૃતીય-
અધર્મદ્વારમેં યાદશનામાદિ નિર્દેશપૂર્વક જો અદત્તાદાનકા સ્વરૂપ કહા હૈ
સો હસ અદત્તાદાન કો જો અબ્રહ્મમેં આસક્ત ચિત્તવાલે પ્રાણી હોતે હૈ
પ્રાયઃ વે કરતે હી હૈ હસ કારણ સે, તયા સૂત્રક્રમ કે નિર્દેશ કે
અનુસાર સે અદત્તાદાન કે નિરૂપણ કે વાદ અબ્રહ્મકા સ્વરૂપ નામાદિનિ-
ર્દેશક કહના યહ અવસર પ્રાપ્ત હૈ । અતઃ સૂત્રકાર ઉસે અધર્મદ્વાર મેં
પ્રદર્શિત કરતે હૈ । જિસ તરહ પૂર્વ અધ્યયનોં કા નિરૂપણ સૂત્રકાર ને
“ યાદશ, ૧ યન્નામ, ૨ યથા ચક્રુત, ૩ યત્ ફલ દદાતિ, ૪ યે ચ
કુર્વન્તિ ૫ ” હન પાચ અન્તર્દ્વારોં સે કિયા હૈ ઉસી તરહ વે હસકા બી

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજી અધર્મદ્વાર પૂર થયુ, સવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય
છે, આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સબધ છે

ત્રીજા અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ
સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અબ્રહ્મમા આસક્ત પ્રાણીઓ
હોય તે સામાન્ય ગીતે આવરે છે, એ કારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે
અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અબ્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવુ
તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે ગીતે
આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે “ યાદશ ” ૧ (કેવા પ્રકારનુ) “ યન્નામ ” ૨
(કયા કયા નામો) “ યથા ચક્રુત ” ૩ (કયારે કરાય છે) “ યત્ ફલ દદાતિ ” ૪
(કયુ ફળ આપે છે) “ યે ચ કુર્વન્તિ ” ૫ (કોણુ તે આવરે છે) આ પાચ
અતદ્વારો દ્વારા કર્યુ છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ કરવા

મૂલમ્—જન્મ । અવમ્ ચ ચતુર્થં સદેવમણ્યામુરસ્સ
 લોયસ્સ પત્થણિજ્જ પકપણગપાસજાલમૂય ડત્થીપુરિસન-
 પુંસગવેદચિહ્ન તવસજમવમચેરપિગ્ધ મેદાયયણવહુપમાદ-
 મૂલં કાયરકાપુરિસસેવિય સુયણજણવજ્જણિજ્જ ઉદ્ધ-નરય-
 તિરિય તિલોક્કપદ્દાણં જરાનરણરોગસોગવહુલ વધવંધ-
 વિધાયદુવિધાય દસણચરિત્તમોહસ્સ હેઠમૂયં ચિરપરિ-
 ચિયં મણુગયં દુરંત ચતુર્થં અહમ્મદાર ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા:—હે જન્મ । ‘ચતુર્થ’ ચતુર્થ = હિંસામૃપાદદત્તાદાનાપેક્ષયા ચતુર્થ
 માસ્રવદ્વારમ્ ‘અવમ્ ચ’ અવ્રત્ત = અકુશલ કર્મ તન્નેહ મૈયુનમ્-અધર્મહેતુત્વેન
 સકલાનર્થજનકત્વાત્ । ચકાર: પુનર્થ: કીદશ તદિત્યાહ—‘સદેવમણ્યામુરસ્સ
 લોયસ્સપત્થણિજ્જ’ સદેવમનુજામુરસ્ય લોકસ્ય પ્રાર્થનીય = દેવમનુષ્યામુરલોકસ્ય પ્રાર્થ

નિરૂપણ કરના ચાહતે હૈં । અતઃ સર્વ પ્રથમ વે ક્રમ પ્રાપ્ત “યાદશ”
 હિંસ દ્વાર કો લેકર અવ્રત્ત કે સ્વરૂપ કા નિરૂપણ કરતે હૈં—‘જન્મ-
 અવમ્’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—શ્રીસુધર્મા સ્વામી જન્મસ્વામી સે કહતે હૈં કિ હે જન્મ । (ચતુર્થ)
 હિંસા, મૃપા ણવ અદત્તાદાન હન તીન કી અપેક્ષા યહ ચતુર્થ આસ્રવ
 દ્વાર (અવમ્ ચ) અવ્રત્ત હૈં । યહ અવ્રત્ત અકુશલ કર્મ હૈં ઓર વહ
 યહા સ્વરૂપ સે ગૃહિત હુઆ હૈં । વયોંકિ યહ અધર્મ કા હેતુ હોને સે
 સકલ અનર્થો કા જનક હોતા હૈં ।

અવ સૂત્રકાર હસી અવ્રત્તકા આગેકે વિશેષણો દ્વારા વિશેષ સ્પષ્ટી
 કરણ કરતે હૈં, વે કહતે હૈં કિ—યહ અવ્રત્ત—મૈયુનસેવનરૂપ અકુશલ કર્મ

મળે છે તેથી સૌથી પહેલા તેઓ અનુક્રમે આવતા “યાદશ” એ નામના
 દ્વારને લઇને અબ્રહ્મના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે “જન્મ અવમ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી જન્મ સ્વામીને કહે છે કે હે જન્મ । “ચતુર્થ”
 હિંસા, મૃપા અને અદત્તાદાન એ ત્રણની અપેક્ષાએ ચોથું અધર્મદ્વાર
 “અવમ્ ચ” અબ્રહ્મ છે તે અબ્રહ્મ અયોગ્ય કૃત્ય છે અને તે અહીં મૈયુનરૂપે
 જે ગૃહિત થયેલ છે, કારણ કે તે અધર્મનું કારણ હોવાથી સઘળા અનર્થનું
 ઉત્પાદક છે હવે સૂત્રકાર એ જ અબ્રહ્મનું આગળ આવતા વિશેષણો દ્વારા
 વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે, તેઓ કહે છે કે—તે અબ્રહ્મ—મૈયુન સેવનરૂપ પાપકર્મ

નીયમ્=અભિલપનીયમ્ । ‘પકપણગપાસજાલભૂય’ પકપણગપાસજાલભૂત=તત્ર પક્રઃ
=કર્દમ-નિમજ્જનહેતુત્વાત્, પનક્રઃ=ગૈરાલ-ચરણન્યાસમાત્રેણ સ્તલનહેતુત્વાત્,
પાશઃ=અન્યનિશેષઃ, જાલ ચ=મતીત તદ્ભૂત=તત્સદૃશમ્ । તથા ‘ઇત્થીપુરિમનપુસગ
-વેદચિહ્ન’ સ્ત્રી પુરુષનપુસગવેદચિહ્ન=સ્ત્રીપુરુષનપુસગવેદલક્ષણ, તત્ર સ્ત્રી-વેદઃ=
પુરુષાભિલાપલક્ષણ’ પુરુષવેદઃ સ્ત્રિયોઽભિલાપલક્ષણઃ, નપુમકવેદઃ= ઉભયાભિલાપ-
લક્ષણઃ । ‘તવસજમવમચેરવિગ્ધ’ તપ સયમવ્રત્તચર્યવિગ્ધનઃ=તપઃ સયમ વ્રત્તચર્ય-
વિધાતરૂપમ્, ‘ભેદાયયણવહુપમાદમૂલ’ ભેદાયતનવહુપમાદમૂલ=ભેદઃ=ચારિત્ર-
વિનાશઃ તસ્ય આગ્રાતનાનિ=સ્થાનાનિ ચેત્તદ્વતઃ=અનેકવિધા પ્રમાદાઃ=મઘવિકથા
દય, તેષા મૂલ=કારણ યત્તત્તથા । ‘કાયરકાપુરિસસેવિય’ કાતરકાપુરુષસેવિત=
કાતરાઃ=પરીપદ્ધતીરવ, અત્રેય કાપુરુષાઃ = ધૈર્યવર્જિતાસ્તૈઃ સેવિત યત્તત્તથા ।
‘સુયણજણવજ્જણિજ્જ’ સુજનનનવર્જનીય=સુજનનનાઃ=સાધુજનાસ્તૈઃ વર્જનિય

(સદેવ મણુગાસુરસ્મ લોચસ્મ પત્યણિજ્જ) દેવ, મનુષ્ય, ણ્વ અસુર લોક
દ્વારા અભિલપનીય હૈ-ચાહે દેવ હો ચાહે મનુષ્ય હો યા અસુર હો કોઈ
મી કયોં ન હો સવ હી ડસે ચાહતે હેં । યહ કર્મ (પકપણગપાસજાલભૂય)
પકકર્દમ, પનકશૈવાલ-કાર્દ, પાશ ઓર જાલ કે જૈસા હૈ । તથા (ઇત્થી-
પુરિસનપુસગવેદચિહ્ન) પુરુષ અભિલાપ રૂપ સ્ત્રીવેદ સ્ત્રીચાહનારૂપ-
પુરુષવેદઉભયત્તી વાઙ્ઠારૂપ નપુસકવેદ, યે જિસકે ચિહ્ન હેં । યહ (તવસ-
જમવમચેરવિગ્ધ) તપ, સયમ, ઓર વ્રત્તચર્ય કા વિધાતક હૈ । (મેયા-
યયણવહુપમાદમૂલ) ચારિત્ર કો વિનાશ કરને વાલે જો મઘ વિકથાદિક
અનેક પ્રમાદ હેં ડનકા યહ મૂલ કારણ હે । (કાયરકાપુરિસસેવિય)
જો વ્યક્તિ કાતર પરીપદ્ધ સહને મેં મીરુ હોતે હેં, ઓર હસીસે જિનકા
ધૈર્ય નષ્ટ હો જાતા હૈ ણેસે વ્યક્તિ હી હસતા સેવન કરતે હેં । તથા (સુય-

“સદેવમણુયા સુરસ્મ પત્યણિજ્જ” દેવ, મનુષ્ય અને અસુર લોકો દ્વારા અભિલપણીય
છે ભયે દેવ હોય, મનુષ્ય હોય કે અસુર હોય-દરેક તેને આહિછે તે કર્મ
“પકપણગપાસલજાલભૂય” પક-કાર્દમ, પનક-ગૈવાળ, પાશ અનેજાળ જેવું છે
તથા “ઇત્થીપુરિસનપુસગવેદચિહ્ન” પુરુષ અભિલાપારૂપ સ્ત્રી વેદ સ્ત્રીચાહનારૂપ પુરુષ
વેદ, અને અન્નેની ચાહનારૂપ નપુમક વેદ જેના ચિહ્નો છે, તે “તવસજમવમચેર
વિગ્ધ” તપ, સયમ અને વ્રત્તચર્યનું વિધાતક છે ‘મેયાયયણ વહુપમાદમૂલ’ ચારિત્રનો
નાશ કરનાર જે મઘ, વિકથા આદિ અનેક પ્રમાદ છે, “કાયરકાપુરિસસેવિય”
જે વ્યક્તિ કાયર-પરીપડો સહન કરવામાં ભીરુ હોય છે, અને તેથી જ
જેમનું ધૈર્ય નષ્ટ થયું હોય છે એવી વ્યક્તિઓ જ તેનું સેવન કરે છે તથા

=ત્યાજ્યમ્, 'ઉદ્ઘનરયતિરિયતિલોકપદ્ધાણ' ઝર્મ નરકનિર્ગમ્ત્રિત્રોક્ષપતિ
 પ્ઠાનમ્=ઝર્વલોકો નરકઝોકસ્તિર્ગમ્ઝોકશ્રેત્યેતદ્દુષ્પયન્ ધૈઝોમ્ય તત્ર પ્રતિષ્ઠાનમ્
 =અવસ્થિતિ ચેન મૈથુનેન યત્તત્તથા લોકાધે યતુર્ગતિભામમિત્યર્થ, તથા 'જરા
 મરણરોગસોગમૂલ' જન્મજરામરણરોગગોકાધનન્તદ્દુઃખમમ્મુતમ્, 'વધ
 વધવિધાયદુઃખિધાય' વધવન્નાવિગ્નાદર્વિગ્નાતમ્=તત્ર વધ=ઠનન વન્ન=રજ્જ્વા-
 દિમિઃ સયમન, વિધાતઃ=મારણ ચેત્યેતૈઃ દર્વિગ્નાતઃ=દુઃસ્તાલો વિગ્નાતો=દુઃસ્તં
 યસ્મિન્ તત્તથા વધવન્નાદિવિવિધદુઃખજનમિત્યર્થ, 'દસ્યણચરિત્તમોહસ્સ-
 હેઝભૂય' દર્શનચારિત્રમોહસ્ય હેતુભૂત=દર્શનમોહમ્ય ચારિત્રમોહસ્ય ચ વન્નકાર-
 ણમ્-ઇદમત્રત્ત્વજિનવચને શઙ્ગાકાક્ષાદિદોષોદ્ધાવત્તયાદ્ દર્શનમોહમ્ય કારણ,
 ચારિત્રભેદજનકત્તચારિત્રમોહસ્યેતિ ભાવ. તથા 'ચિરપચિય' ચિરપરિચિત=

જાણવજ્જણિજ્જ) જો સાધુજન હૈં વે તો ઇસ કૃત્ય કો સદા ત્યાજ્ય હો
 માનતે હૈં (ઉદ્ઘ નરયતિરિયતિલોકપદ્ધાણ) ઇસ મૈથુન સેવન સે જીવકા
 પરિભ્રમણ ઉર્ધ્વલોક મધ્યલોક એવ પાતાલલોક રૂપ ત્રલોક્ય મેં હોતા
 હૈં । (જરામરણ રોગસોગમૂલ) યહ કર્મ જન્મ, જરા, મરણ, શોક આદિ
 અનત દુઃખોસે ભરા હુઆ હૈં । (વધવધવિધાયદુઃખિધાય) ઇસમે વધ,
 વધન એવ મરણ જન્ય દુઃ સહ દુઃખ ભરે હુળ હૈં । (દસ્યણચરિત્તમો
 હસ્સ હેઝભૂય) દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્રમોહનીય કા યહ હેતુભૂત
 હૈં । અર્થાત-યહ અબ્રહ્મ જિનવચન મે શકા કાક્ષા આદિ દોષોં કા
 જનક હોને કે કારણ દર્શન મોહકા ઓર ચારિત્રકા વિનાશક હોને સે
 ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે વધ કો કારણ માના ગયા હૈં । (ચિરપરિચિય)
 જીવોં કે સાથ ઇસકા પરિચય ચિરકાલ સે જન્મ જન્માન્તરો મેં આસે-
 વિત હોતે રહને કે કારણ ચલા આ રહા હૈં । ઇસીલિયે (અણુગય) યહ

“સુયણજણવજ્જણિજ્જ” પણ સતપુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યાજ્યવા યોગ્ય
 માને છે, ‘ઉદ્ઘનરયતિરિયતિલોકપદ્ધાણ’ એ મૈથુનના સેવનથી જીવને
 ઉર્ધ્વલોક અને પાતાળલોક, એ રીતે ત્રણલોકમા પરિભ્રમણ કરવું પડે છે,
 “જરામરણરોગસોગમૂલ” તે ઝર્મ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનત
 દુઃખથી ભરેલું છે, “વધવધવિધાયદુઃખિધાય” તેમા વધ, બધન અને
 મરણ જન્ય દુઃસહ દુઃખો ભરેલા છે, “દસ્યણચરિત્ત મોહસ્સ હેઝભૂય” તે દર્શન
 મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કારણરૂપ છે, એટલે કે તે અબ્રહ્મ જિન-
 વચનોમા શકા કાક્ષા આદિ દોષોતુ જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રતુ
 વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનુ કારણ મનાયુ છે ‘ચિરપરિ-
 ચિય’ તે જન્મ જન્માન્તરોથી મેવાતુ હોવાને કારણે તેનો જીવોની સથો

जन्मजन्मान्तरासेवितम्, 'अणुगय' अनुगतम् = अनादिकालतः समनु-
गतम्, 'दुरत' दुरन्तम्=दुःस्वप्नानम्, दुष्टकर्मित्यर्थः । 'चउत्थ अहम्म
दार' चतुर्थमधर्मद्वारम्=नास्तत्रद्वारमब्रह्मेति नामकम् ॥ १ ॥ सू० ॥

एवमब्रह्मरूपमुक्त साम्प्रत 'यन्नामे' ति द्वितीयान्तर्द्वारमाश्रित्य तस्य
नामान्याह 'तस्स य णामाणि' इत्यादि—

मूलम्—तस्स य णामाणि गोणाणि इमाणि हुंति तीसं—
अवंभ १ मेहुणं २ चरत ३ ससग्गि ४ सेवणाहिगारो ५
संकप्पो ६ वाहणापदाण ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसखोभो
१० अणिग्गहो ११ विग्गहो १२ विघाओ १३ विभंगो १४
विब्भभो १५ अहम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतत्ती १८
रत्ती १९ रागचिता २० कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्स
२३ गुज्झ २४ बहुमाणो २५ वभचेर विग्घो २६ वावत्ती २७
विराहणा २८ पसगो २९ कामगुणोत्ति ३० विय । तस्स
एयाणि एवमाइणि नामधेजाणि हुति तीस ॥ सू० २ ॥

टीका—'तस्स य' तस्य च=अब्रह्मणो मैयुनस्येत्यर्थः, 'गोणाणि'
गौणानि=गुणनिष्पन्नानि 'णामाणि' नामानि 'इमाणि इमानि=वक्ष्यमाणानि

जीवों के पीछे अनादिकाल से पडा हुआ है । (दुरत) इसका अवसान
(अत)बहुत ही अधिक कष्टप्रद होता है । (चउत्थ अहम्मदार) इस प्रकार
यह चतुर्थ अब्रह्म नामका अवर्मद्वार है ॥ सू० १ ॥

इस तरह सूत्रकार अब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन कर अब
"यन्नाम" नामक द्वितीय अन्तर्द्वार से उसका प्रतिपादन करते हैं—
'तस्स य' इत्यादि ० ।

टीकार्थ—(तस्स य) उस अब्रह्म रूप मैयुन कर्मके (गोणाणि)

विरकाण्थी परिचय आत्थे आवे छे तेथी "अणुगय" ते अनादिकाण्थी
छवेनी पाछण पडेवु छे "दुरत" तेने नाश यवे अतिराय हुण्डु छे
"चउत्थ अहम्मदार" आ प्रजानुते थोथु अब्रह्म नामनु अधर्मद्वार छे ॥ सू० १ ॥

उपरोक्त गीते अब्रह्मना स्वरूपनु प्रतिपादन करीने छे सूत्रकार "य-
न्नाम" नामना भीन्त अन्तर्द्वारयी तेनु प्रतिपादन करे छे "तस्स य" इत्यादि
टीकार्थ—"तस्स य" ते अब्रह्मरूप मैयुन कर्मना "गोणाणि" गुणानुभा ॥ "णामाणि"

=ત્યાજ્યમ્, 'ઉદ્ઘુનયતિરિયતિલોકપટ્ટાણ' ઝર્ષ નરકતિર્યગ્લોકપતિ-
 ણ્ઠાનમ્=ઝર્ષલોકો નરકલોકસ્તિર્યગ્લોકઐત્યેતદ્વય યન્ મૈલોક્ય તત્ર પ્રતિઘ્ઠાનમ્
 =અવસ્થિતિ ચેન મૈલુનેન યત્તત્તવા લોકત્રયે ચતુર્ગતિભામકમિત્યર્થ, તથા 'જરા
 મરણરોગસોગમહુલ' જન્મજરામરણરોગશોકાઘનન્તદઃખસમ્મુતમ્, 'વધ
 વધવિધાયદુઃખિધાય' વધવન્વિધાતદર્શિધાતમ્=તત્ર વધ=ઘનન વન્વ=રજ્યા-
 દિભિઃ સયમન, વિધાતઃ=મારણ ચેત્વેત્તેઃ દર્શિયાતઃ=દુઃસ્વાદ્યો વિયાતો=દુઃસ્વ
 યસ્મિન્ તત્તથા વધવન્વાદિવિધિધદુઃખજનકમિત્યર્થ, 'દસણચરિત્તમોહસ્સ-
 હેઝભૂય' દર્શનચારિત્રમોહસ્ય હેતુભૂત=દર્શનમોહસ્ય ચારિત્રમોહસ્ય ચ વન્વકા-
 ણમ્=શ્વેદમઘ્રહ્મજિનવચને શઙ્કાકાક્ષાદિદોષોદ્ઘાવત્ત્વાદ્ દર્શનમોહસ્ય કારણ,
 ચારિત્રમેદજનકત્ત્વાચ્ચારિત્રમોહસ્યેતિ ભાર. । તથા 'ચિરપચિય' ચિરપરિચિત=

જાણવજ્જણિજ્જ) જો સાધુજન હે વે તો ઇસ કૃત્ય કો સદા ત્યાજ્ય હી
 માનતે હે (ઉદ્ઘુ નરયતિરિયતિલોકપટ્ટાણ) હમ મૈલુન સેવન સે જીવકા
 પરિભ્રમણ ઉર્ધ્વલોક મન્ધલોક ણવ પાતાલલોક સ્વ ત્રલોક્ય મેં હોતા
 હૈ । (જરામરણ રોગસોગમહુલ) યહ કર્મ જન્મ, જરા, મરણ, શોક આદિ
 અનન્ત દુઃખોસે ભરા હુઆ હૈ । (વધવધવિધાયદુઃખિધાય) ઇસમે વધ,
 વધન ણવ મરણ જન્ય દુઃ સહ દુઃખ ભરે હુએ હેં । (દસણચરિત્તમો
 હસ્સ હેઝભૂય) દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્રમોહનીય કા યહ હેતુભૂત
 હૈ । અર્થાત-યહ અબ્રહ્મ જિનવચન મે શકા કાક્ષા આદિ દોષોં કા
 જનક હોને કે કારણ દર્શન મોહકા ઓર ચારિત્રકા વિનાશક હોને સે
 ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે વધ કો કારણ માના ગયા હૈ । (ચિરપરિચિય)
 જીવોં કે સાથ ઇસકા પરિચય ચિરકાલ સે જન્મ જન્માન્તરોં મેં આસે
 વિત્ત હોતે રહને કે કારણ ચલા આ રહા હૈ । ઇસીલિયે (અણુગય) યહ

“સુયણજણવજ્જણિજ્જ” પણ સતપુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યાજવા ચોગ્ય
 માને છે, ‘ઉદ્ઘુનયતિરિયતિલોકપટ્ટાણ’ એ મૈથુનના સવનથી જીવને
 ઉર્ધ્વલોક અને પાતાળલોક, એ રીતે ત્રણલોકમાં પરિભ્રમણ કરવું પડે છે,
 “જરામરણરોગસોગમૂલ” તે ઝર્ષ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનન્ત
 દુઃખોથી ભરેલું છે, “વધવધવિધાયદુઃખિધાય” તેમાં વધ, બધન અને
 મરણ જન્ય દુઃસહ દુઃખો ભરેલા છે, “દસણચરિત્ત મોહસ્સ હેઝભૂય” તે દર્શન
 મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કારણરૂપ છે, એટલે કે તે અબ્રહ્મ જિન-
 વચનોમાં શકા કાક્ષા આદિ દોષોનું જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રનું
 વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનું કારણ મનાયું છે ‘ચિરપરિ-
 ચિય’ તે જન્મ જન્માન્તરોથી સેવાતું હોવાને કારણે તેનો જીવોની સથો

કામ ? જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિઞ્ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥

‘વાઢણા પદાણ’ વાધના પદાના=પદાના=સયમસ્થાનાના વાધના વાધો-
ત્પાદકત્વાત્ ૭ । ‘દર્પો’ દર્પઃ=દસજનૈરાચરિતત્વાત્ ૮, મોહઃ=મોહજનનાત્-
વેદમોહનીયકર્મોદયસમ્પાદત્વાદ્વા મોહસ્વરૂપ ૧, ‘મણસલ્લોભો’ મનઃ સદ્લ્લોભઃ
=ચિત્તવ્યાકુલતોત્પાદકત્વાત્ ૧૦, ‘અણિગ્ગહો’ અણિગ્ગહ=વિષયેષુ પ્રવર્તમાનસ્ય-

નામ સેવનાધિકાર હૈ ૫ । સકલ્પ વિકલ્પોં સે યહ ઉત્પન્ન હોતા હૈ
હસલિયે હસકા નામ સકલ્પ હૈ ૬ । કહા મી હૈ—

“કામ ! જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિલ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥

હે કામ ! મેં તેરે સ્વરૂપકો જાનતા હુ, તુ નિશ્ચયતઃમાનસિક સકલ્પ
સે ઉદ્ભૂત હોતા હૈ । અતઃ મેં જવ તેરા સકલ્પ હી નહીં કરુંગા તો
ફિર તૂ કૈસે ઉત્પન્ન હોગા ? ॥

યહ સયમ કે સ્થાનોં મે વાધા કા ઉત્પાદક હોતા હૈ હસલિયે હસકા
નામ પદ વાધના હૈ ૭ । જો મનુષ્ય દસ-મદોન્મત્ત હોતે હૈ—અન્હોં કે
દ્વારા યહ આચરિત કિયા જાતા હૈ અતઃ હસકા નામ દર્પ હૈ । યહ
વેદરૂપ મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે ઉદ્ભૂત હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ
મોહ હૈ ૯ । હસકે નિમિત્ત સે ચિત્ત મેં ંક પ્રકાર કી વ્યાકુલતા ઉત્પન્ન
હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ મનઃસલ્લોભ હૈ ૧૦ । જિસ સમય હસકા

લાગે છે, તેથી તેનુ નામ “સેવનાધિકાર” છે, ‘૬’ સ ૩ ૫ વિકલ્પોથી તે ઉત્પન્ન
થાય છે, તેથી તેનુ નામ “સકલ્પ” છે, કહ્યુ પણ છે—

“કામ ! જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિલ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥ ”

હે કામ ! હુ તારા સ્વરૂપને ઓળખુ છુ, તુ અવશ્ય માનસિક સકલ્પોથી
જ ઉત્પન્ન થાય છે, તો હુ તારો સકલ્પ જ નહીં કરું તો તુ કયાથી
ઉત્પન્ન થઈશ ? ॥ ૨ ॥

‘૭’ તે સયમના સ્થાનોમા મુશ્કેલીઓ પેદા કરનાર છે, તેથી તેનુ નામ
“પદવાધના” છે, ‘૮’ મદોન્મત્ત મનુષ્ય દ્વારા જ તે સેવાય છે, તેથી તેનુ
“દર્પ” છે, ‘૯’ તે વેદરૂપ મોહનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી
તેનુ નામ “મોહ” છે, ‘૧૦’ તેને ડારણે ચિત્તમા એક પ્રકારની વ્યાકુળતા ઉત્પન્ન
થાય છે તેથી તેનુ નામ “મનસલ્લોભ” છે ‘૧૧’ જ્યારે શરીરમા તેનો

‘ત્રીસ હુતિ’ ત્રિશદ્ ભવન્તિ ‘તજહા’ તાનિ યથા ‘અવમ’ અવ્રહ્મ=અકુશલાનુષ્ઠાનમ્ ૧, ‘મેહુણ’ મૈથુન=મિથુનસ્ય=સ્ત્રીપુરુષયુગઢ્ય યર્મ મૈથુનમ્ ૨, ‘ચરત’ ચરત્=સસારવ્યાપકમ્ ૩, ‘સસર્ગિ’ સસર્ગિ=સ્ત્રીપુરુષમ્પ્રત્યસંજાતમ્ ૪, ‘સેવનાદિ ગારો’ સેવનાધિકારઃ=સેવનાયા=ચૌર્યાદિપ્રતિસેવનાયામધિકારઃ, મૈથુનસેવી પ્રાયશ્ચૌર્યાદિપુ પ્રવૃત્તો ભવતિ ૫, ‘સકપ્પો’ સકલ્પ = મદ્ભૂતપરિકલ્પજાતત્વાત્ સકલ્પઃ ૬, ઉક્ત ચ—

ગુણનિષ્પન્ન (ળામાણિ) નામ (હમાણિ) યે (ત્રીસ) ત્રીસ (હુતિ) હૈ । (ત જહા) વે હસ પ્રકાર હૈ—(અવમ ૧, મેહુણ ૨, ચરત ૩, સસર્ગિ ૪, સેવનાદિ ગારો ૫, સકપ્પો ૬, વાહણાપદાણ ૭, દપ્પો ૮, મોહો ૯, મળસખોમો ૧૦, અણિગહો ૧૧, વિગ્ગહો ૧૨ વિઘાઓ ૧૩, વિભગો ૧૪, વિઘ્મમો ૧૫, અહમ્મો ૧૬, અસીલયા ૧૭, ગામધમ્મતત્તી ૧૮, રત્તી ૧૯, રાગચિત્તા ૨૦, કામભોગમારો ૨૧, વેર ૨૨, રહસ્સ ૨૩, ગુજ્જ ૨૪, બહુમાણો ૨૫, વમચેરવિગ્ધો ૨૬, વાવત્તી ૨૭, વિરાહણા ૨૮, પસગો ૨૯, કામગુણો ૩૦ ત્તિ વિ ય । તસ્સ ણ્યાણિ એવમાહણિ નામધેજ્જાણિ ત્રીસ હુતિ) યદ્દ કર્મ અકુશલાનુષ્ઠાનરૂપ હૈ, હસલિયે હસકા નામ અવ્રહ્મ હૈ ૧ । સ્ત્રી ઓર પુરુષ રૂપ મિથુન પરસ્પર મિલકર હસે કરતે હૈ, હસલિયે હસકા નામ મૈથુન હૈ ૨ । યદ્દ સમસ્ત સસાર મેં વ્યાપક હૈ હસલિયે હસકા નામ ચરત હૈ ૩ । સ્ત્રી ઓર પુરુષોં કે પારસ્પરિક સસર્ગ સે યદ્દ ઉત્પન્ન હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ સસર્ગી હૈ ૪ । જો મૈથુન સેવી હોતા હૈ વદ્દ પ્રાયઃચૌર્યાદિક્કુર્મોં મે પ્રવૃત્ત હો જાતા હૈ હસલિયે હસકા

“હમાણિ” આ “ત્રીસ” ત્રીસ નામ “હુતિ” છે “તજહા” તે આ પ્રમાણે છે “અવમ ૧, મેહુણ ૨, ચરત ૩, સસર્ગિ ૪, સેવનાદિગારો ૫, સકપ્પો ૬, વાહણાપદાણ ૭ દપ્પો ૮, મોહો ૯, મળસખોમો ૧૦, અણિગહો ૧૧, વિગ્ગહો ૧૨, વિઘાઓ ૧૩, વિભગો ૧૪, વિઘ્મમો ૧૫, અહમ્મો ૧૬, અસીલયા ૧૭, ગામધમ્મતત્તી ૧૮, રત્તી ૧૯ રાગચિત્તા ૨૦, કામભોગમારો ૨૧, વેર ૨૨, રહસ્સ ૨૩ ગુજ્જ ૨૪, બહુમાણો ૨૫, વમચેરવિગ્ધો ૨૬, વાવત્તી ૨૭, વિરાહણા ૨૮, પસગો ૨૯, કામગુણો ૩૦ ત્તિ વિ ય । તસ્સ ણ્યાણિ એવમાહણિ નામધેજ્જાણિ ત્રીસ હુતિ (૧) આ ડર્મ અકુશલ અનુષ્ઠાન હોવાથી તેનું નામ “અવ્રહ્મ” છે (૨) સ્ત્રી અને પુરુષનું “મિથુન” (જોડું) પરસ્પર મળીને તેનું સેવન કરે છે, તે કારણે તેનું નામ “મૈથુન” છે (૩) તે સમસ્ત સસારમાં વ્યાપક હોવાથી તેનું નામ “ચરત” છે (૪) સ્ત્રી અને પુરુષના અસર પરસના અસર્ગથી તે ઉત્પન્ન થતું હોવાથી તેનું નામ “સસર્ગી” છે, (૫) મૈથુન સેવનાર હોય છે તે સામાન્ય રીતે ચોરી આદિ કુર્મોં પણ સેવવા

ચિન્તા-ચિન્તનમ્ ૨૦, કામભોગમારઃ=કામભોગમારૂપમ્-કામરૂપ, ભોગરૂપ, મારૂપ, ચેત્યર્થઃ ૨૧, 'વૈર' વૈર=ગતુત્પોત્પાદકત્વાત્ ૨૨, 'રહસ્ય' રહસ્યમ્ =એકાન્તસમ્પાદનીયત્વાત્ ૨૩, 'ગુહ્ય' ગુહ્ય=ગોપનીયત્વાત્ ૨૪, 'બહુમાનો' બહુમાનઃ=બહુ-અતિશયેન માનઃ=આદરો યસ્મિન્ પ્રાણિના સ ૨૫, 'વ્રહ્મચર્યવિઘ્નો' વ્રહ્મચર્યવિઘ્ન=વ્રહ્મચર્યમ્ય=વિધાતકત્વાદ્ વિન્ન=વિન્નભૂતઃ ૨૬, 'વાવત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ આત્મગુણવિનાશકત્વાત્ ૨૭, 'વિરાધના' વિરાધના=ચારિત્ર ધર્મસ્ય વિરાધકત્વાત્ ૨૮, 'પ્રસગો' પ્રસગ્ન=સ્ત્રીપુમસયોગઃ ૨૯, કામગુણઃ = શબ્દાદિવિષયભોગજનકત્વાત્ ૩૦ 'તિ પ્રિય' ઇત્યપિ ચ ત્રિશત્તમ નામ ।

કા ઉનકે રૂપ લાવણ્ય આદિકા ચિન્તવન હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ રાગચિન્તા હૈ ૨૦ । યહ કામરૂપ, ભોગરૂપ ઓર મારૂપ હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ કામભોગમાર હૈ ૨૧ । ડસકે નિમિત્ત સે જીવો મેં પરસ્પર શત્રુતા ઉસન્ન હો જાતી હૈ ફસલિયે ડસકા નામ વૈર હૈ ૨૨ । યહ કર્મ એકાન્ત મેં ક્રિયા જાતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ રહસ્ય હૈ ૨૩ । યહ સદા ગોપનીય હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ ગુહ્ય હૈ ૨૪ । ડસમેં પ્રાણીયાં કો અતિશય આદર ભાવ-સેવન કરને મે લાલસા-રહતા હૈ, ફસલિયે ડસકા નામ બહુમાન હૈ ૨૫ । યહ વ્રહ્મચર્ય વ્રતકા વિધાતક હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ વ્રહ્મચર્ય વિઘ્ન હૈ ૨૬ । આત્મગુણોં કા ડસમેં વિનાશ હો જાતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ વ્યાપત્તિ હૈ ૨૭ । ચારિત્ર ધર્મકા યહ વિરાધક હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ વિરાધના-હૈ ૨૮ । ડસમેં સ્ત્રી ઓર પુરુષ દોનોં કે શરીર કો સંયોગ હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ પ્રસગ હૈ ૨૯ । શબ્દાદિક વિષયો મેં યહ ભોગને કી રુચિકા જનક હોતા હૈ ફસલિયે ડસકા નામ કામગુણ હૈ ૩૦ । ફસ

તેનુ નામ “રાગચિન્તા” છે, ‘૨૧’ તે ઝમરૂપ, ભોગરૂપ અને મારરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “કામભોગમાર” છે ‘૨૨’ તેને ઝરણે જીવોમા પરસ્પર દુરમનાવટ પેદા થાય છે, તેથી તેનુ નામ “વૈર” છે ‘૨૩’ તે કર્મ એકાન્તમા કરાતુ હોવાથી તેનુ નામ “રહસ્ય” છે, ‘૨૪’ તે સદા ગોપનીય હોય છે, તેથી તેનુ નામ “ગુહ્ય” છે, ‘૨૫’ તેના પ્રત્યે પ્રાણીઓને અત્યંત આદરભાવ-લાલસા રહે છે, તેથી તેનુ નામ “બહુમાન” છે, ‘૨૬’ તે બ્રહ્મચર્યવ્રતનુ વિધાતક તોડાવનાર હોવાથી તેનુ નામ “વ્રહ્મચર્યવિઘ્ન” છે ‘૨૭’ તેના સેવનથી આત્મગુણોનો નાશ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “વ્યાપત્તિ” છે (૨૮) તે ચારિત્રધર્મનુ વિરાધક હોવાથી તેનુ નામ “વિરાધના” છે (૨૯) તેમા સ્ત્રી તથા પુરુષના શરીરનો સંયોગ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “પ્રસગ” છે ‘૩૦’ શબ્દાદિક વિષયોના બોધભોગની રુચિન જનક હોવાથી તેનુ નામ “કામગુણ” છે આ

મનસોઽનિપેધઃ ૧૧ । ‘ વિગ્રહો ’ વિગ્રહઃ=વિગ્રહકારિત્વાત્ ૧૨, ‘ વિઘાતો ’
 વિઘાતઃ=ચારિત્રવિનાશરૂપઃ ૧૩, ‘ વિભગો ’ વિભગઃ=વયમાદિગુણાના વિગેષેણ
 ભજ્જકત્વાત્ ૧૪, ‘ વિભ્રમો ’ વિભ્રમઃ=અનુપાદેયેષ્યપ્યુપાદયત્વેન નાનાવિષ
 ભ્રાન્તિજનકત્વાત્ ૧૫, ‘ અધર્મો ’ અધર્મઃ=શ્રુતચારિત્રવધનધર્મપ્રતિકૂલત્વાત્ ૧૬,
 ‘ અશીલયા ’ અશીલતા=ચારિત્ર વર્જિતત્વાત્ ૧૭, ‘ ગ્રામધર્મતત્ત્વી ’ ગ્રામધર્મ
 તૃપ્તિઃ=ગ્રામધર્મા=શબ્દાદયઃ કામગુણાસ્તેષા તૃપ્તિઃ=આસેવનમ્ ૧૮, ‘ રત્તી ’ રત્તિઃ
 =અશુભરાગઃ ૧૯, રાગચિન્તા=રાગઃ=રાગકારણત્વાત્ સ્ત્રીશૃંગારરૂપલાખ્યાદિઃ તસ્ય

આવેગ શરીર મેં જાગૃત હોતા હૈં ઉસ સમય ઇન્દ્રિયા અગ્યા મન બેકાબૂ
 હો જાતા હૈં અતઃ ઇસકા નામ અનિગ્રહ હૈં ૧૧। ઇસકે પીછે હી ભયકરસે
 ભયકર વિગ્રહ ઉત્પાત સડે હોતે હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ વિગ્રહ હૈં ૧૨।
 યહ ચારિત્રકા વિઘાતક હોતા હૈં । ઇસલિયે ઇસકા નામ વિઘાત હૈં ૧૩।
 સયમ આદિ ગુણોકા યહ વિશેષરૂપસે ભજક હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ
 વિભગ હૈં ૧૪। જો અનુપાદેય પદાર્થ હોતે હૈં ઉનમે ભી યહ ઉપાદેયરૂપસે
 નાનાપ્રકાર કી ભ્રાન્તિ કા જનક હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ વિભ્રમ
 હૈં ૧૫। શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સે યહ પ્રતિકૂલ હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ
 અધર્મ હૈં ૧૬। ઇસમેં ચારિત્ર નહીં હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ
 અશીલતા હૈં ૧૭। ઇસમેં ગ્રામધર્મ જો શબ્દાદિક કામ ગુણ હૈં ઉનકા
 સેવન હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ ગ્રામધર્મ હૈં ૧૮। યહ અશુભ
 રાગરૂપ હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ રત્તિ હૈં ૧૯। ઇસમેં સ્ત્રિયોં કે શૃંગાર

આવેગ જાગૃત થાય છે ત્યારે ઇન્દ્રિયો તથા મન કાળૂમા રહેતા નથી, તેથી
 તેનું નામ “અનિગ્રહ” છે ‘૧૨’ તેને કારણે જ લયઠરમા લયકર વિગ્રહ-
 ઉત્પાત ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેનું નામ “વિગ્રહ” છે, ‘૧૩’ તે ચારિત્રનું
 વિઘાતક હોવાથી તેનું નામ “વિઘાત” છે, ‘૧૪’ સયમ આદિ ગુણોનું
 ભજક ‘નાશ કરનાર’ હોવાથી તેનું નામ “વિભગ” છે, ‘૧૫’ જે અનુપા-
 દેય પદાર્થો હોય છે તેમા પણ ઉપાદેયરૂપે વિવિધ પ્રકારની ભ્રાન્તિ ‘ભ્રમ’ નું
 જનક હોવાથી તેને “વિભ્રમ” કહે છે ‘૧૬, શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની વિરૂદ્ધ
 હોવાને કારણે તેને “અધર્મ” કહે છે ‘૧૭’ તેનું સેવન કરનારમા ચારિત્ર
 હોતું નથી, તેથી તેનું નામ “અશીલતા” છે, ‘૧૮’ તેમા ગ્રામધર્મ કે જે
 શબ્દાદિક કામગુણ છે તેમનું સેવન થાય છે તેથી તેનું નામ “ગ્રામધર્મતૃપ્તિ”
 છે, ‘૧૯’ જે અશુભ રાગ રૂપ હોવાથી તેનું નામ “રત્તિ” છે ‘૨૦’ તેમા
 સ્ત્રીઓના શૃંગારનું તથા તેમના રૂપ લાવણ્ય આદિનું ચિન્તવન થાય છે, તેથી

के ? इत्याह—‘असुर-भुयग गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि-पवण थणिय
अणपनिय - पणपन्निय-इसिवाइय-भूयजाइय-कट्टिय-महाकट्टिय-कूहड- पयग
देवा’ तत्र असुराः=असुरकुमाराः, ‘भुयग’ भुजगाः=नागकुमाराः ‘गरुल’
गरुडाः=सुपर्णकुमाराः ‘विज्जु’ विद्युत् कुमाराः ‘जलण’ ज्वरनाः=अग्नि-
कुमाराः ‘दीव’ द्वीपाः=द्वीपकुमाराः ‘उदधिकुमारा’ ‘दिसि’ दिक्कुमारा
‘पवण’ वायुकुमारा ‘थणिय’ स्तनितकुमारा, दशैते भवनपतिदेवा । ‘अण
पन्निय पणपन्निय’ अणपन्निका पणपन्निकाः ‘इसिवाइय’ रुपिवादिकाः ‘भूय-
वाइय’ भूतवादिकाः ‘कट्टिय’ कन्दिताः ‘महाकट्टिय’ महाकन्दिताः ‘कूहड’
कुष्माण्डाः ‘पयग’ पतङ्गाश्च ते च ते देवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायोपरिवर्तिनः ।
व्यन्तरदेवजातिविशेषा । तथा ‘पिमाय-भूय-जम्ब-रक्खम-किण्णर-किंपुरिस
महोरग-गधव्व-तिरिय-जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा’ तत्र ‘पिसाय’ पिशाचाः
१ । ‘भूय’ भूता २ । ‘जम्ब’ यक्षाः ३, ‘रक्खस’ राक्षसा ४, ‘किण्णर’
किन्नरा ५, ‘किंपुरिस’ किम्पुम्पा ६, ‘महोरग’ महोग्गाः ७, ‘गधव्व’ गन्धर्वाश्च

अप्पाओ के माय (निसेर्विति) सेवन करते हैं । तथा (असुर भुयग-
गरुल- विज्जु - जलण - दीव-उदहि-दिसि-पवण-थणिय-अणपन्निय-
पणपन्निय-इसिवाइय-भूयवाइय-कट्टिय-महाकट्टिय-कूहड पयग देवा)
असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीप-
कुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार, ये १० दस भवन-
पति देव, तथा-अणपन्निक, पणपन्निक, रुपिवादिक, भूतवादिक, कन्दित
महाकन्दित कुष्माण्ड, पतंग, ये आठ व्यन्तर जातिके देव विशेष, (पिसाय
भूय-जम्ब रक्खस-किन्नर-किंपुरिस- महोरग-गधव्व-तिरिय- जोइस-
विमाणवासि-मणुयगणा) तथा पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर,

रा” अप्पाओ माये “ निसेर्विति ” सेवन करे छे तथा “ असुर, गरुल,
विज्जु, जलण, दीवउदहि, दिसि, पवण, थणिय, अणपन्निय, पणपन्निय, इसिवा-
इय, भूयवाइम, कट्टिय, महाकट्टिय, कूहड पयग-देवा ” असुरकुमार, नागकुमार
सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार,
वायुकुमार, अने स्तनितकुमार, ओ दस भवनपति देव, तथा अणपन्निक, पण
पन्निक रुपिवादि, भूतवादि, कट्टित, महाकट्टित, अने पतंग, ते आठ व्यन्तर
जातिना देव, “ पिसाय, भूय, जम्ब, रक्खस, किन्नर, किंपुरिस, महोरग,
गधव्व, तिरिय, जोइस, विमाणवासि, मणुयगणा ” तथा पिशाच, भूत, यक्ष,
राक्षस, किन्नर, किंपुरि, महोग्गा गधर्व ओ आठ व्यन्तर देव तथा तिर्य्य

‘પ્રયાણિ’ એતાનિ = પૂર્વોક્તાનિ ‘અપમાર્ગિણિ’ અપમાર્ગીનિ=અત્રાપેત્યાદીનિ
 ‘તસ્મૈ’ તસ્ય=અત્રાપણઃ ‘નામપ્રેક્ષાણિ’ નામપ્રેક્ષાણિ=નામાનિ ‘ત્રીસ’ ત્રિસદ્
 ‘હુતિ’ ભવન્તિ ॥ સૂ. ૨ ॥

અપમાર્ગિણઃ ‘અપમાર્ગે’ તિ દ્વિતીયમન્તર્દ્વારમુક્તમ્ । અથ તૃતીય ચતુર્થચાન્ત
 દ્વારમનુસ્તવા સામ્પ્રત યે ચ કુર્વન્તી’ इत्येतत्पञ्चममन्तर्द्वारमाह—‘त च पुन’ इत्यादि

મૂલમ્—ત ચ પુન નિસેવિંતિ સુરગણા સ અચ્છરા મોહ-
 મોહિયમર્દ - અસુર-ભુયગ-ગરુલ-વિજ્ઞુ-જલણ-દીવ-ઉદહિ-
 દિસિપવણ-થણિય અણપન્નિય-પણપન્નિય-હસિવાડય-ભૂય-
 વાદૂય-કંદિય મહાકંદિય-કૂહડ-પયંગદેવા, પિસાયમૂય-જક્ષ્વ
 રક્ષસ-કિષ્કર-કિપુરિસ-મહોરગ - ગધઘ્વા, તિરિય-
 જોહસવિમાણવાસિ - મણુયગણા જલ - ચર - થલચર
 સ્વહચરા ય મોહપડિવદ્ધચિત્તા અવિતપ્પહા કામભોગતિસિ-
 યા તપ્પહાણ વલવદ્ધ મહર્દ્ધ સમભિભૂયા ગઠિયા ય અતિ-
 મુચ્છિયા ય અવંભે ઓસપ્પાતામસેણ ભાવેણ અણુમુક્કા દસણ
 ચરિત્તમોહસ્સ પજરપિવ કરેતિ અપ્પમપ્પણ સેવમાણા ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ત ચ પુન’ તત્ત્વપુનરબ્રહ્મ ‘નિસેવિંતિ’ નિષેવન્તે । કે તે ?
 इत्याह—सुरगणाः=देवसमूहाः ‘स अचछरा’ साप्सरसः=अप्सरोग्भिः सहिताः
 ‘मोहमहिय’ मोहमोहितमतय =मोहेन-मोहिता मतिः=बुद्धिर्येषा ते तथा । पुन’

પ્રકાર યે અબ્રહ્મ આદિ પૂર્વોક્ત ત્રીસ નામ હસ ચતુર્થદ્વારકે હૈ ॥ સૂ. ૨ ॥

અથ સૂત્રકાર તૃતીય ચતુર્થ દ્વાર કો ન કહ કર પચમ અન્તર્દ્વારકો
 કહતે હૈ—‘ત ચ પુન’ इत्यादि ० ।

ટીકાર્થ—(ત ચ પુન) હસ ચતુર્થ દ્વાર અબ્રહ્મ કા(સુરગણા) સુરગણ કી
 જિનકી (મોહ મોહિયમર્દ) મતિ મોહ સે મોહિત હો રહી હૈ (સ અચ્છરા)

પ્રમાણે ચોથા અધર્મ દ્વારના અબ્રહ્મ આદિ ત્રીણ પૂર્વોક્તનામ છે ॥ સૂ. ૨ ॥
 હવે સૂત્રકાર ત્રીણ તથા ચોથા દ્વારનુ વર્ણન ન કરતા પડેલા પાંચમા
 અન્તર્દ્વારનુ વર્ણન કરે છે—“ત ચ પુન” इत्यादि

ટીકાર્થ—‘ત ચ પુન’ તે ચોથા દ્વારરૂપ અબ્રહ્મનુ “સુરગણા” સુરગણુ કે
 જેમની “મોહમોહિયમર્દ” મતિ મોહથી મોહિત થયેલા હોય છે “સઅચ્છ

ય ' ગ્રથિતાશ્ચ=વિષયગુમ્ફિતમાનસા', તથા ' અદ્મુચ્છિયાય ' અતિમૂર્ઝિતાશ્ચ= અતિમોહાતિશયગુપ્તા: 'અવમે ઓસણા' અબ્રહ્મણિ અમત્તા: =મૈથુને સમાસક્તા:, ' તામસેણ ભાવેણ અણુમુક્તા ' તામસેન ભાવેન=અણુમુક્તા:, તામસેન ભાવેન= અજ્ઞાનપ્રવર્તિતેન પરિણામેન અણુમુક્તા:=આવદ્ધા: સન્ત, અત્ર- 'અન્નોન્ન સેવ માણા' इत्यग्रेण सम्बन्ध. अन्योन्य=परस्पर पुरुषैः सह स्त्रियः, स्त्रीभिः सह पुरुषा इत्यर्थः सेवमाना:=अब्रह्मसमाचरन्तः, ' दसणचरित्तमोहस्स ' दर्शनचारित्रमोह- स्य=' अत्र कर्मणः सम्बन्धमात्रविश्लेषाया पण्ठी, दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयरूप द्विविध कर्म ' पजर पि व ' पञ्जरमिव ' करे ति ' कुर्वन्ति-अब्रह्मसेविनो देवादयः खलु दर्शनमोहनीय-चारित्रमोहनीयरूपपञ्जरे स्वात्मानं नयन्तीति भावः ॥सू० ३॥

સામ્પ્રત ચક્રવર્ત્યાદીન્ વર્ણયતિ ' ભુજ્ઞો અસુરસુર ' इत्यादि—

મૂલમ્—ભુજ્ઞો અસુર-સુર તિરિય-મણુય-ભોગરતિ-વિહાર
સપડત્તા ચ ચક્રવદ્દી-સુર-નરવાહ-સક્રયા, સુરવરઠ્ઠવ દેવલોણ

સેવન કરને કી આજ્ઞા સે ગુમ્ફિત મન હોકર (અદ્મુચ્છિયાય) ઉન વિષયાં મે અત્યત મોહકો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હે ઔર (અવમે ઓસણા) અબ્રહ્મ કે સેવન કરને કે લિયે અત્યત આસક્ત હો જાતે હે. (તામસેણ-ભાવેણ અણુમુક્તા) તામસભાવ સે-અજ્ઞાનપ્રવર્તિત પરિણામ સે-આવદ્ધ હોકર પરસ્પર મે-એક દૂસરે કે સાથ પુરુષ કે સાથ સ્ત્રી, ઔર સ્ત્રી કે સાથ પુરુષ રમણ કરને લગ જાતે હે. ઇસ તરહ (અન્નોન્ન સેવમાણા) ઇસ અબ્રહ્મરૂપ પાપકર્મકો સેવન કરને વાલે યે દેવાદિક અપની આત્મા કો (દસણચરિત્તમોહસ્સ પજર પિ વ કરેતિ) પજર કે જૈસે દર્શન મોહ-નીય એવ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ મે નિશ્ચિત કર દેતે હે. અર્થાત્ ઇન કર્મોં કા વધ કરતે હે ॥ સૂં ૩ ॥

તેઓ વ્યાકુળ થાય છે તેથી “ ગઢિયાય ” વિષયોનું સેવન કરવાની આશામાં લીન થઈને “ અદ્મુચ્છિયાય,, તેમનું મન તે વિષયો પ્રત્યે અત્યત મોહાનકત થયા કરે છે, અને “ અવમેઓસણા ” તેઓ મૈથુનનું સેવન કરવાને અત્યત આસક્ત થાય છે ભાવેણ અણુમુક્તા ” તામસ ભાવથી-અજ્ઞાન પ્રવર્તિત પારણામથી-જકડાઈને પરસ્પરમા-પુરુષની સાથે સ્ત્રી, અને સ્ત્રીની સાથે પુરુષ-રમણ કરવા લાગી જાય છે આ રીતે “ અન્નોન્ન સેવમાણ ” આ અબ્રહ્મચર્યરૂપ પાપકર્મનું સેવન કરનાર દેવાદિક પોતાના આત્માને “ દસણચરિત્તમોહસ્સ પજર પિ વ કરેતિ ”-પિજરા જેવા દર્શનમોહનીય અને ચારિત્ર મોહનીય કર્મમાં નાખી દે છે એટલે કે તે કર્મોના વધ બાધે છે ॥ સૂં ૩ ॥

૮, એતેષ્ટૌ વ્યન્તરભેદાઃ । તથા તિરિય-જોડસ-નિમાગ-ચામિ' તિર્યગ્જ્યોતિર્વિ
માનનાસિનઃ=તિરથિ=તિર્યગ્લોકે ચાનિજ્યોતિર્વિમાનાનિ તેષુ નિનાસિનોઽમર્યાતા
જ્યોતિષ્કાઃ 'મણુય' મનુજા'=મનુષ્યાય તેષા ગણાઃ=સમૂહાઃ । તથા 'જલચર
થલચર સ્વહ-ચરાય' જલચર સ્થલચર સેચરાય, તત્ર જલચરા' = મત્સ્યાદયઃ,
સ્થલચરાઃ=ગોમહિપ્યાદયઃ સેચરાય=પશિણસ્તે તથા, ણ્તે સર્વે મૈથુન નિપવન્ત
હતિ પૂર્વેણ સમ્પન્નઃ । ક્રીદ્યાસ્તે इत्याह—'મોહપલ્લિવદ્વચિત્તા' મોહપતિવદ્
ચિત્તાઃ=મોહેન=અજ્ઞાનેન પ્રતિનદ્વ=ગ્રસિત ચિત્ત યેષા તે તથા 'અવિતળ્હા'
અવિતળ્હાઃ=વિષયલોભાઃ-પ્રાપ્તકામોપભોગેનાપ્યનુપશાન્તચિત્તા इत्यर्थः, 'કામ
ભોગતિસિયા' કામભોગતુપિતાઃ-અપ્રાપ્તકામભોગેષુ તત્પ્રાપ્તિચિન્તાપરાયણાઃ,
એતાદશાસ્તે 'બલવર્ઙ્' વલવત્યા=પ્રગાઢયા 'મહર્ઙ્' મહત્યા વિશાલયા
'તળ્હા' તળ્હયા=વિષયવાઙ્ઙયા 'અભિભૂયા' અભિભૂતા=અક્રાન્તા 'ગઢિયા

કિં પુરુષ, મહોરગ, ગધર્વ, યે આઠ વ્યન્તર દેવ, તથા તિર્યગ્લોક મેં જિતને
જ્યોતિષિયોં કે વિમાન હૈં ઉન વિમાનોં મેં રહને ઘાલે અસરયાત જ્યો
તિષી દેવ, તથા મનુષ્યોં કા સમૂહ, (જલચરથલચરસ્વહચરા ય)
મત્સ્ય આદિ જલચર જીવ, ગોમહિષી આદિ સ્થલચર જીવ, એવ આકાશ
મેં ઉડને વાલે પક્ષી, સર્વ મૈથુન સેવન કરતે હૈં । ક્યોં કિ યે સર્વ
(મોહપલ્લિવદ્વચિત્તા) અજ્ઞાન સે ગ્રસિત હે ચિત્ત જિન્હોં કા એસે હોતે
હૈં । એવ (અવિતળ્હા) પ્રાપ્તકામોપભોગ મેં ભી હનકા ચિત્ત શાન્ત નહીં
હો પાતા હૈં । કારણ (કામ ભોગતિસિયા) જો કામભોગ હન્હે પ્રાપ્ત
નહીં હોતે હૈં ઉનમેં ઉનકી પ્રાપ્તિકી આજ્ઞાસે ચિન્તા સે હનકા ચિત્ત
ચલાયમાન હોતા રહતા હૈં । એસા હસલિયે હોતા હૈં કિ યે (બલવર્ઙ્)
પ્રગાઢ એવ (મહર્ઙ્) વિશાલ (તળ્હા) વિષયાભિલાષા સે (અભિ
ભૂયા) આક્રાન્ત હો જાતે હૈં । હસીલિયે યે (ગઢિયાય) વિષયોં કે

લોકમા જેટલા જ્યોતિષીઓના વિમાન છે તે વિમાનોમા રહેતા અસખ્યાત
જ્યોતિષદેવ, તથા મનુષ્યોનો સમૂહ, તથા “જલચર, થલચર, સ્વહચરાય”
મત્સ્ય આદિ જળચર જીવો, ગાય ભેડ આદિ સ્થળચર જીવ, અને આકાશમા
ઉડતા પક્ષીઓ, તે સૌ મૈથુનનુ સેવન કરે છે, કારણ કે તે સૌના ચિત્ત
“મોહપલ્લિવદ્વચિત્તા” અજ્ઞાનથી જડાયેલા હોય છે, અને „અવિતળ્હા”
કામભોગ ભોગવવા મળે તો પણ તેમના ચિત્તને શાંતિ મળતી નથી કારણ
કે “કામભોગ તિસિયા” જે કામભોગ તેમને પ્રાપ્ત થતા નથી તેની લાલસાથી
તેમના ચિત્ત ચલાયમાન રહે છે એમ થવાનુ કારણ એ છે કે “બલવર્ઙ્”
પ્રગાઢ અને “મહર્ઙ્” વિશાળ “તળ્હા” વિષયાભિલાષાથી “અભિભયા”

मनुजाः=मनुष्या-माडलिकादयश्च तेभ्यः-तत्सकाराद् ये भोगाः=शब्दादयः,
तेषु या रतिः=अनुरागस्तेन ये विहाराः=विभिन्नप्रकारचेष्टारूपाः क्रीडाः, तैः
सम्पयुक्ताः=सहिताः ये ते तथा के ते ? इत्याह—‘ चक्रवर्ती ’ चक्रवर्तिनः,
कीदृशास्तेचक्रवर्तिन ? इत्याह—‘ सुरनरपतिः सक्रया ’ सुरनरपतिसत्कृताः=
सुरैः=देवैः नरपतिभिः=नृपैश्च, यद्वा ‘ पति ’ शब्दस्य प्रत्येकं सम्प्रयात् सुरप-
तिभिर्नरपतिभिश्चेत्यर्थः, सत्कृताः=सम्मानिताः, ‘ देवलोए ’ देवल्लोके ‘ सुरवर-
व्व ’ सुरवरा इव=महर्द्धिक देवा इव । देवल्लोके यथा देवाः सुखमनुभवन्तः ‘ भर-
हनगणगर — निगमजणवयपुरवरदोणमुहसेडकव्वडमडवसवाहपट्टणसहस्समडिय ’
तत्र ‘ भरह ’ भरतस्य=भारतवर्षस्य सम्प्रन्धिनो ये नगाः=पर्वताः ‘ णगर ’ नग-
राणि=अष्टादशपरवर्जितानि, ‘ णिगम ’ निगमाः=वणिग्जननिवासाः ‘ जणवय ’
जनपदाः=देशाः, पुरवराणि=राजधानीरूपाणि, ‘ दोणमुह ’ द्रोणमुखानि=जल-
स्थलमार्गयुक्तानि ‘ खेड ’ खेटानि=धूलिमाकारमयानि ‘ कव्वड ’ कर्वटानि=

प्राणियों मनुष्यों-माडलिक राजा आदि जनों के द्वारा संपादित शब्दादिक
भोगों में अनुराग जन्य विविध प्रकारकी चेष्टारूप क्रीडाओं से युक्त
ऐसे(चक्रवर्ती)चक्रवर्ती भी इन कामभोगों से तृप्त नहीं होते हैं (सुरनर-
वहसकया) जो चक्रवर्ती सुरों से-देवताओं से, अथवा सुरपतियों-
इन्द्रों से एव नरपतियों-राजाओं से विशेषरूप में सदा सन्मानित किये
जाते हैं तथा (देवलोए सुरवरव्व) जिस प्रकार देवल्लोक में महर्द्धिक
देव सुखोंको भोगा करते हैं उसी प्रकार जो सुखोंको भोगते हैं । तथा जो
(भरहनग णगर-णिगम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेडकव्वड-मडव
सवाहपट्टण सहस्स मडिय) भारतवर्ष सम्यो हजारों १८अठारहप्रकार के
करों से रहित नगरों से, वणिग्जननिवासभूत हजारों निगमों से,
हजारों देशों से, राजधानिरूप श्रेष्ठ पुरों से, जलमार्ग स्थलमार्ग

राज आदि लोको द्वारा संपादित शब्दादिक भोगोंमें अनुराग जन्य विविध
प्रकारकी चेष्टारूप क्रीडाओंसे युक्त ऐसा “ चक्रवर्ती ” चक्रवर्ती पण
कामभोगोंसे तृप्त होता नहीं “ सुरनरवहसकया ” जो चक्रवर्तीओंनु देवताओं
वडे, सुरपतिओं धन्द्रो वडे अने नृपतिओं वडे सदा विशेषरूपे सन्मान कराय
छे, तथा “ देवलोए सुरवरव्व ” देवल्लोकमें जेस महर्द्धिक देवों सुखों भोगव्या
करे छे, ओज प्रमाणे जे सुखों भोगवे छे, ओसा चक्रवर्तीओं पण कामभोगोंसे
तृप्ति पावता नहीं, तथा जे “ भरह-नग-णगर-णिगम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-
खेडकव्वड-मडव-सवाह-पट्टण-सहस्स-मडिय ” भारतवर्षमें हजारों पर्वतोंसे,
अठार प्रजारना करेथा रहित नगरोंसे, वणिग्जन लोको रहित होय ओसा हजारों
निगमोंसे, हजारों देशोंसे, हजारों राजधानीइय श्रेष्ठ शहरोंसे, जलमार्ग

ભરહ-નગ ળગર-નિગમજળવય-પુરવળદોળમુહ સેહ કઢ્ઢડ-
 મહવસવાહપટ્ટણસહસ્ત-મહિય-યિમિય-મેયણિયં ળગચ્છત્ત
 સસાગર મુજિઝળવસુહ નરસીહા-નરવર્ડ-નરિંદા-નરવસહા
 મરુયવસમકપ્પા અઠ્ઠમહિય રાયતેયલચ્છીણ દીપ્પમાળા સોમ્મા
 રાયવંસતિલગા રવિ-સસિ-સલ્લ-ચરચ્છ તોરિયય પડાગ-જવ-
 મચ્છકુમ્મરહવર-ભગ-ભવળ-વિમાળ-તુરગ-તોરળ-ગોપુર મણિ
 રળય-નદિયાવત્ત-મુસલ-લગલ-સુરહયવરકપ્પ સ્વસ્ય મિગવહ્
 -મહાસળ-સુરુહ-થૂમ ચરમહ્મડ-સરિય-કુડલ કુજર-વરવસમ-
 દીવ-મદર-ગરુલજ્ઞય-હ્મદકેહ-દપ્પળ-અટ્ટા-વય-ચાવ-વાળ-
 નવલ્લ-મેહ-મેહલ-વીળા-જુગ-છત્ત-દામ-દામિણિ-કમહલ્લ-
 કમલ-ઘટા-નરપોત સૂચી-સાગર કુમુદાગર-મગર-હાર ગાગર-
 નેહર-ળગ-ળગર-વહ્મર-કિળ્ળાર-મયૂર-વરરાયહસ-સારસ-ચકોર
 ચક્કવાગ મિહુળ ગ્રામર-લેહગ-પઠ્ઠીસિગ-વિપચિ-વરતાલિયટ-
 સિરિયા-મિસેય-મેયણિ-લ્લગ-કુસ-વિમલ-કલસ-મિગાર-વહ્મ-
 માળગપસત્થહત્તમવિમત્તવરપુરિસલલ્લવળધરા ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘ મુજ્જો ’ મૂય =પુનરપિ ‘અસુર-સુર-તિરિય મળુય મોગરહ-વિહા
 રસપહ્ત્તાય ’ અસુરસુરતિર્યહ્મનુજમોગરતિવિહારસમયુક્તાશ્ચ તત્ર અસુરા. =વ્યન્તરાઃ
 અત્ર-અસુરશબ્દેન વ્યન્તરા ગૃહ્યન્તે, સુરા. =યક્ષા, તિર્યચ્ચઃ =અશ્વરત્નગજરત્નાદયઃ,

અત્ર સૂત્રકાર ચક્રવર્તી આદિ કો કા વર્ણન કરતે હૈં—‘ મુજ્જો
 અસુરઃ ’ હત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ —(અસુર-સુર તિરિય મળુય મોગરહ વિહારસપહ્ત્તાય)
 અસુરો - વ્યન્તરદેવો, સુરો - યક્ષો તિર્યચો-અશ્વરત્ન ગજરત્ન આદિ

હવે સૂત્રકાર ચક્રવર્તી આદિનુ વર્ણન કરે છે—“ મુજ્જો અસુર ” હત્યાદિ
 “ અસુર, સુર, તિરિય મળુય, મોગરહવિહારસપહ્ત્તાય ” અસુરો-વ્યન્તર દેવો,
 સુરો, યક્ષો, તિર્યચો-અશ્વરત્ન, ગજરત્ન, આદિ પ્રાપ્તિઓ, મનુષ્યો માહલિક

માણ્ડલિકાસ્થાપેક્ષયોક્તમ્ । અગે નુ ‘ દિમવતસાગર ત ધીરા મોત્તૂળમરહવાસ ’
 ઇત્યુક્ત તત્ ચક્રવર્તિપદપ્રાપ્ત્યનન્તર સમસ્તમરતક્ષેત્રમોક્તત્વાપેક્ષયા પ્રોક્તમિતિ
 વોધ્યત્ ચક્રવર્તિન એવ વિશિનપ્તિ, ‘ નરસીહા ’ નરસિંહાઃ=નરેષુ સિંહા ડવ શૌર્યા-
 દિમત્ત્વાત્ ‘ નરવર્દ ’ નરપતય =નરાણા સ્વામિકૃત્વાત્ ‘ નરિંદા ’ નરેન્દ્રાઃ=નરેષુ
 હન્દ્રભૂતત્વાત્ ‘ નરવસહા ’ નરવૃપમા.=રાજ્યધુરાધરણસામર્થ્યાત્ ‘ મરુવસમકૃપ્પા ’
 મરુજવૃપમકૃલ્પાઃ=મરુજા =મરુદેશોત્પન્નાઃ વૃપમાઃ=વલિવર્દાઃ, તત્કલ્પાઃ=તત્સ-
 માનાઃ યે તે તથા મરુદેશવૃપમાહિ ગરીરસમ્પત્ત્યા ગુહમારવહનસમર્થા મવન્તીતિ
 તૈઃ સહોપમાનમ્ । ‘ અવ્મહિ ય ’ અવ્મધિયમ્-અત્યધિક યથાસ્યાત્તથા ‘ રાય-
 તેયલચ્છીએ દીપ્પમાણા ’ રાજતેજોલભ્યા દીપ્પમાનાઃ=રાજપ્રતાપશ્રિયા દેદીપ્પ
 માનાઃ ‘ સોમ્મા ’ સૌમ્યાઃ=શાન્તસ્વરૂપાઃ ‘ રાયવસતિલગા ’ રાજવશતિલકાઃ=
 રાજકુલમણ્ડનભૂતાઃ, તથા ‘ રવિઃ=સૂર્યઃ ૧, ‘ સસિ ’ શશી=ચન્દ્રઃ ૨, ‘ સલ્લ ’

વિશિષ્ટ શૌર્યાદિ સપન્ન હોને કે કારણ નરો મેં સિંહ કી તરહ હોકર
 નરસિંહ (નરવર્દ) મનુષ્યો કે સ્વામી હોને કે કારણ નરો કે પતિ (નરિંદા)
 નરો મેં હન્દ્ર જૈસે હોને કે કારણ નરેન્દ્ર (નરવસહા) સમસ્ત રાજ્ય
 ધુરાકે ધારણ કરને મેં સામર્થ્યશાલી હોને કે કારણ મરુજ વૃપમ જૈસે-
 મારવાડ કે વલીવર્દ જૈસે-મારવાડ કે વૈલ અપની શરીરરૂપી સપત્તિ
 સે વહુત અધિક ભાર કો વહન કરને વાલે હોતે હૈ-ડસલિયે ડન કે
 સાથ યહ સાદૃશ્ય ઘટિત કિયા હૈ । તથા (અવ્મહિય રાયતેયલચ્છીએ
 દીપ્પમાણા) વહુત અધિકરૂપ મેં રાજલક્ષ્મી સે દેદીપ્પમાન, (સોમ્મા)
 શાન્તસ્વરૂપ ઓર (રાયવસતિલગા) રાજકુલ કે મણ્ડનભૂત હોતે હૈ એવ
 જો (રવિસસિસલ્લવરચક્ર) રવિ શશિ શલ્લ ચક્ર ઇત્યાદિ-લક્ષણો
 કે ધારણ કરનેવાલે, અર્થાત્-રવિ-સૂર્ય શશિ-ચન્દ્રમા તથા શલ્લ, શ્રેષ્ઠચક્ર

શૌર્ય આદિથી યુક્ત હોવાને કારણે નરોમા સિંહ જેવા હોવાથી નરસિંહ,
 “ નરવર્દ ” મનુષ્યોના સ્વામી હોવાને કારણે નૃપતિ, “ નરિંદા ” નરોમા હન્દ્ર
 સમાન હોવાથી નરેન્દ્ર, “ નરવસહા ” સમસ્ત રાજ્યધુરાનુ વહન કરવાને
 સમર્થ હોવાને કારણે નવૃપલ અથવા મરુજવૃપલ જેવા, -મારવાડના ળાળદ
 જેવા-“ મારવાડના ળાળદ મળ્મૃત હોવાને કારણે વધારે ભાર ઉપાડી શકે છે
 તેથી તેમની સાથે આ મરખામણી કરવામા આવી છે ’ તથા ‘ અવ્મહિય-
 રાયતેયલચ્છીએ દીપ્પમાણા ” રાજલક્ષ્મી વડે ળાળુ જ વધારે દેદીપ્પમાન,
 “ સોમ્મા ” શાન્ત સ્વરૂપ સૌમ્ય, અને “ રાયવસતિલગા ” રાજવશોની શરૂઆત
 કરનારા, અને જે “ રવિસસિસલ્લવરચક્ર ” “ સૂર્ય, ચન્દ્ર, શ ળ ચક્ર ”
 ઇત્યાદિ લક્ષણોને ધારણ કરનારા, એટલે કે સૂર્ય ચન્દ્ર, શ ળ, શ્રેષ્ઠ ચક્ર,

અલ્પજનનિવાસસ્થાનાનિ ' મઢવ ' મઢવા=સાર્થકોગદ્યગ્રામાન્તરગ્રન્યાઃ, સવાહાઃ
=ધાન્યાદિરક્ષણદુર્ગવિશેષા ' પટ્ટણ ' પત્તનાનિ=મયલવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનાનિ ચેત્યે
તેષા યાનિ સદસ્યાણિ તૈઃ ' મઢિય ' મઢિતા યા મા તથા તા ' ધિમિયમેયણિય'
સ્તિમિતમેદનીકા = નિશ્ચલપ્રજા નિરસ્તસમસ્તશત્રુજનાદિભયરહિતજનપુત્રામ્,
' એગચ્છત્ત ' એગચ્છત્રામ્=હિતરભૂપતીના તદ્વચર્ચિત્વાદેકમ્યેવ રાજઃ સ્વાતન્ત્ર્યેણ
પ્રાધાન્યાદેકમેવ છત્ર યત્ર સા તથા તા, તથા ' સસાગર ' સસાગમ=સમુદ્રસહિત
' વસુહ ' વસુધા=પૃથિવી-ભરતાદ્વાદિરૂપા ' મુજિઝ્ઞ ' મુજ્ઞતા ઇદ ચક્રવર્તિનો

વાળે હજારો દ્રોણમુખોસે સે, ધૂલિપ્રાકારમય હજારો સેટોં સે, અલ્પજન-
નિવાસભૂત હજારોં કરેટો સે, અઢાઈકોશનક ગ્રામાન્તરોં સે ગૂન્ય
હજારો મઢવોં સે, હજારોં સવાહોં સે-ધાન્યાદિકોંકી જિનકેદારા રક્ષા
કી જાતી હૈ એસે દુર્ગવિશેષોં સે ણચ સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કે સ્થાન-
ભૂત હજારોં પત્તનોં સે મઢિત (ધિમિય મેયણિય) તથા શત્રુ આદિ કે
ભય સે રહિત હોકર પ્રજાજન જિસમેં આનંદ કે સાથ નિવાસ કર રહે
હૈ (એગચ્છત્ત) ઓર જિસ મેં કિસી અન્ય રાજા કીસ્વતત્ર આજ્ઞા નહીં
ચલતી હૈ-દૂસરે રાજાઓં કે હોનેપર મીં ડસી એક કે વશવર્તી હોને કે
કારણ સ્વતત્રરૂપ સે અપની આજ્ઞા નહીં ચલા સકતે હૈ-કિન્તુ ડસી એક
કી આજ્ઞા કે અનુસાર હી અપની આજ્ઞા ચલાતે હૈ, એસી સ્થિતિ વાળા
સામ્રાજ્ય જહાં હોતા હૈ-ડસ સામ્રાજ્ય સપન્નભૂમિ કો એકચ્છત્રવાલી
ભૂમિ કહી જાતી હૈ । એસી (સસાગરા) આસમુદ્રાન્ત-(વસુહ) પૃથિવી
કો-ભરતાદ્વા રૂપ ભૂમિ કો (મુજિઝ્ઞ) ભોગકર કે (નરસીહા) જો

સ્થળમાર્ગ વાળો હજારો દ્રોણમુખોથી, ધૂળના કિલ્લાવાળા હજારો ખેટોથી, થોડી
વસ્તીવાળા હજારો કરેટોથી, જ્યાંથી અઢી ગાઉ સુધી બીજા ગામો ન હોય
તેવા હજારો મઢવોથી, હજારો સવાહોથી-(ધાન્યાદિની જેનાથી રક્ષા કરાય
છે એવા દુર્ગ વિશેષો) અને સઘળી વસ્તુના પ્રાપ્તિ સ્થાનરૂપ હજારો પત્તનોથી
યુક્ત, તથા “ ધિમિયમેયાણિય ” શત્રુ આદિ ભયથી રહિત બનીને પ્રભુજનો
જેમા આનંદપૂર્વક રહે છે, “ એગચ્છત્ત ” અને જેમા બીજા કોઈ રાજાની
સ્વતત્ર આજ્ઞા ચાલતી નથી-બીજા રાજાઓ હોવા છતાં પણ તેઓ તે એકને જ
“ ચક્રવર્તી ” રાજાને ” વશ હોવાને કારણે સ્વતત્ર રીતે ચોતાની આજ્ઞા ચલાવી
શકતા નથી પણ તે એકની આજ્ઞા પ્રમાણે તેમને વર્તવું પડે છે, એવી સ્થિતિવાળું
સામ્રાજ્ય જ્યાં હોય છે, એ પ્રકારના સામ્રાજ્યવાળી ભૂમિને એક છત્ર
નીચેની ભૂમિ કહે છે એવી “ સસાગર ” સમુદ્રના અન્ત સુધીની “ વસુહ ”
પૃથ્વીને- ભરતાદ્વારૂપ ભૂમિને “ મુજિઝ્ઞ ” ભોગવીને “ નરસીહા ” જે વિશિષ્ટ

प्रसिद्ध ४५, 'उत्त' उत्र=प्रसिद्ध ४५, दाम=माग ४७, 'दामिणि' दामनी=रज्जुः ४८, 'कमडलु' कमण्डलु=जलपात्रविशेषः, प्रतीतः ४९, कमल=प्रतीत-५०, घण्टा=प्रतीता ५१, 'वरपोय' वरपोतः=नौका ५२, 'सुई' सूची=वस्त्र-सीवनसाधन ५३, 'सागर' सागरः=समुद्र ५४, 'कुमुदागर' कुमुदाकरः=कुमुदवन ५५, 'मगर' मकरः ५६, हार=प्रतीतः ५७, 'गागर' इति स्त्रिय आभरणविशेषः, ५८, 'नेउर' नूपुर=पदभूषण ५९, 'णग' नगः=पर्वतः ६०, 'णगर' नगर=प्रसिद्ध ६१, 'वडर' वज्र ६२, 'किण्णर' किन्नर=व्यन्तरदेव विशेषः ६३, मयूर=प्रसिद्ध ६४, 'वररायहम' वरराजहसः=प्रशस्तराजहसः ६५, सारसः=प्रसिद्ध-पक्षिविशेष ६६, 'चकोर' चकोरः ६७, 'चक्रागमिहुण' चक्रवाकमिथुन=चक्रवाकयुगल ६८, चामर=प्रतीत ६९, 'खेडग' खेटक= 'ढाल' इति भाषा प्रसिद्ध ७०, 'पव्वीसग' इति वाद्यविशेषः देशी शब्दोय ७१, 'विपञ्चि' विपञ्ची=मत्ततन्त्रीवीणा ७२, 'वरतालियट' वरतालवृन्त=प्रशस्त-तालव्यजन ७३, 'सिरियाभिसेय' श्रीकाऽभिपेक=लक्ष्म्या अभिपेकः ७४, 'मेयणि' मेदिनी=पृथ्वी ७५, 'खग्ग' खड्गः ७६, 'अकुस' अकुशः=प्रसिद्धः ७७, 'विमलकलम' विमलकलश-उज्ज्वलकलशः-७८, 'भिगार' भृङ्गारः-पात्रविशेषः 'झारी' इति भाषा प्रसिद्धः ७९, 'वद्धमाणग' वर्धमानकः=शरावः ८०, चेत्ये-

कधो पर रक्खा जाता है, उत्त-उत्र, दाममाला, दामनी-रस्सी, कमडलु कमल, घटा, नौका, सुई, समुद्र, कुमुदवन, मकर, हार, गागर, -स्त्रियोका एक प्रकार का आभूषण, नूपुर-पदभूषण, पर्वत, नगर, वज्र, किन्नर जातिके व्यन्तरदेव, मयूर, प्रशस्त राजहंस, सारसपक्षी, चकोर, चक्रवाकका जोड़ा, चामर, खेटक-ढाल, पव्वीसग-इस नामका एक वाद्यविशेष, विपञ्ची-सात तार वाली वीणा, सुन्दरताडवृक्ष का पखा, लक्ष्मी का अभिषेक, पृथिवी, खड्ग-तलवार, अकुश, उज्ज्वलकलशभृङ्गार, वर्द्धमानक-शराव, इन सब के चिन्हों को कि जो प्रशस्त चक्रवर्तित्व के सूचक

धूसरी, उत्र, दाममाला, दामनी-रस्सी, उम उण, उमण, घट, नौका सोय, समुद्र, कुमुदवन, मगर, डाग, गागर-स्त्रीयोनु अेक प्रकारनु आभूषण, नूपुर-आजर, पर्वत, नगर, वज्र, किन्नर जातीना व्यतर देव, मयूर,, प्रशस्त राजहंस, सारसपक्षी, चकोर, चक्रवाकनु जोड़ु, चामर, ढाल, पव्वीसग-अेक वाद्यविशेष, विपञ्ची-सात तार वाली वीणा, सुन्दर ताडवृक्षना पजे, लक्ष्मीना अभिषेक, पृथिवी तलवार, अकुश, उज्ज्वल कलश, भृङ्गार, वर्द्धमानक-शराव, अे अथा चिन्हा के जे प्रशस्त चक्रवर्तित्वना सूचक अने अेक डोय छे तथा जे

उरताचाउराहि सेणाहि समणुजाइजमाणमग्गा तुरंगवई गय-
वई रहवई नरवई विउलकुला वीसुयजसा सारयससिसकल
सोम्मवयणा, सूरा, तिलोक निग्गयपभावा लद्धसदा समत्त
भरहाहिवा नरिदा ससेलवणकाणणं च हिमवतसागर त
धीरा भोत्तूण भरहवास जियसत्तपवररायसीहापुव्वकडतव-
प्पभावा निविट्टसच्चियसुहा अणेगवाससयमाउव्वतो भज्जाहि
य जयवयप्पहाणाहि लालियता अतुल सद्दफरिसरसरूवगधे
य अणुभवित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्म अवित्तिता
कामाणं ॥ सू० ५ ॥

टीका:—‘ वत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा ’ द्वात्रिंशद् राजवरसहस्रा
नुयातमार्गाः=द्वात्रिंशद् यानि राजवराणा=राजप्रमुखाना सहस्राणि तैरनुयातः=
अनुगतो मार्गो येषा ते तथा अनुगामि द्वात्रिंशत्सहस्रराजप्रमुखानामधिपतय
इत्यर्थः, ‘ चउसट्टिसहस्सपवरजुवतीणयणकता ’ चतुः--पण्डिसहस्रप्रवरयुवति-
नयनकान्ताः=चतुःपण्डिसहस्रप्रौढतरुणीना नयनकान्ताः=नयनप्रियाः स्वामीन
इत्यर्थः ‘ रत्ताभा ’ रक्ताभाः=रक्ता=त्रिमलशोणीतमाहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

फिर वे चक्रवर्ती कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘ वत्तीसरायवर० ’
इत्यादि०।

टीकार्थः— (वत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा) जिनके पीछे २
वत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा चला करते हैं, अर्थात्—जो अपने अनुगामी
३२ हजार नरेशों के अधिपति होते हैं। (चउसट्टिसहस्सपवरजुवतीनय
णकता) तथा ६४ चौसठ हजार सर्वश्रेष्ठ युवती स्त्रियों के नयनों को जो
आनदप्रद होते हैं अर्थात् उनके स्वामी होते हैं, तथा (रत्ताभा) जिनके

તે ચક્રવર્તીઓ કેવા હોય છે તેનું સૂત્રકાર વધુ વર્ણન કરે છે—“વત્તીસ
રાયવર” ઇત્યાદી

ટીકાર્થ—“વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા” જેમની પાછળ બત્રીસ હજાર મુગટ-
ધારી રાજાઓ ચાલે છે—એટલે કે જેવો તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપ
તિથોના અધિપતિ હોય છે “ચઉસટ્ટિસહસ્સપવરજુવતીનયણકતા” ચોસઠ
હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનંદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના
સ્વામી હોય છે, તથા “રત્તાભા” જેમના શરીરની આભા વિભળ રક્તની

તાનિ, 'પસત્ય' પ્રશસ્તાનિ=ચક્રવર્તિત્વમ્નકાનિ ઉત્તમાનિ=ઉત્કૃષ્ટાનિ 'વિભક્ત'
વિભક્તાનિ=સ્પષ્ટાનિ યાનિ 'ચરપુરિસચ્ચમણ' ચરપુરુષલક્ષણાનિ-ચરપુરુષાણા-
મહાપુરુષાણા લક્ષણાનિ=હસ્તરેखाદિરૂપાણિ માતૃચ્ચમણકાનિ તાનિ ધારયન્તિ ચે તે
તથા સૂર્યચન્દ્રશદ્ધચક્રાદિરૂપચિહ્નિષ્ટચક્રવર્તિલક્ષણયન્તઃ તેઽપિ કામભોગૈરત્રિ-
તૃપ્તા એવ મરણધર્મં પ્રાપ્નુવન્તીતિ સમ્પન્નઃ ॥ સૂ. ૪ ॥

પુનસ્તે ચક્રવર્તિનઃ કીદૃશાઃ? इत्याह—'वत्तीस' इत्यादि—

મૂલમ્—વત્તીસ—રાયવર—સહસ્સાણુજાયમગ્ગા ચત્તસદ્ધિસહસ્સ
પવરજુવતીણયણકતા રત્તાભા પડમપમ્મહકોરટગદામચપગસુ-
તવિયવરકણક—નિઘસવળ્લા સુજાય સઙ્ગમસુદરગા મહગ્ધ-
વરપદ્ધણુગ્ગયવિચિત્ત-રાગણી-પણી-નિમ્મિય-દુગુહ-વરચી-
ણપદ્ધકોસેજ્જ-સોણીસુત્તકવિભૂસિયગા-વરસુરભિગધ-વરચુળ્લા-
વાસવરકુસુમભરિય-સિરિયાકપ્પિયલ્લેયા-ચરિયસુકયરદ્ધિમાલ-
કડગંગયત્તુડિયવર-ભૂસણપિણદ્ધદેહા એગાવલિકંઠસુરદ્ધિયવ-
લ્લા પાલવ પલવમાણસુકયપડઉત્તરિજાસુદ્ધિયા પિગલંગુલિયા
ઉજ્જલ નેવત્થરદ્ધિચિલ્લગવિરાયમાણા તેણ દિવાકરોલ્લ-
દિત્તા સારયનવત્થણિય—મહુર—ગંભીર—નિદ્ધવોસા ઉપ્પણ
સમત્તરયણચક્કરયણપહાણા નવનિહિવદ્ધિણોસમિદ્ધકોસા ચા-

एव उत्कृष्ट होते हैं तथा जो रेखारूप में स्पष्ट झलकते थे—और जो
महापुरुषों के हस्त आदिकों में रेखादि रूप में पाये जाते हैं इन सब को
धारण करने वाले होते हैं । ऐसे महाभाग्य शाली चक्रवर्ती भी काम-
भोगों से अतृप्त होकर ही मृत्यु को प्राप्त करते हैं । इस प्रकार का
सबध इस सूत्र की व्याख्या करते समय लगा लेना चाहिये ॥ सू० ४ ॥

મહાપુરુષોના હાથ આદિમાં રેખાઓ રૂપે જોવા મળે છે, તે બધા ચિહ્નોને
ધારણ કરનારા હોય છે એવા મહાભાગ્યશાળી ચક્રવર્તી રાજાઓ પણ કામ
ભોગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એ પ્રકારનો સબધ આ સૂત્રની
વ્યાખ્યા કરતી વખતે સમજી લેવાનો છે ॥ સૂ. ૪ ॥

ઉરતાચાઉરાહિ સેનાહિ સમણુજાઇજ્ઞમાણમગ્ગા તુરંગવર્ડ ગય-
વર્ડ રહવર્ડ નરવર્ડ વિઝલકુલા વીસુયજસા સારયસસિસકલ
સોમ્મવયણા, સૂરા, તિલોક નિગ્ગયપભાવા લઘ્ઘસદ્દા સમત્ત
ભરહાહિવા નરિદા સસેલવળકાણણં ચ હિમવતસાગર ત્ત
ધીરા ભોત્તૂણં ભરહવાસ જિયસત્તપવરરાયસીહાપુઠ્ઠવકડતવ-
પ્પભાવા નિવિટ્ઠસચિયસુહા અણેગવાસસયમાઠઠવતો ભજ્ઞાહિ
ય જયવયપ્પહાણાહિ લાલિયતા અતુલ સદ્ધરિસરસરૂવગંધે
ય અણુભવિત્તા તેવિ ઉવળમતિ મરણધમ્મ અવિત્તિત્તા
કામાણં ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા:—‘વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા’ દ્વાત્તિશદ્ રાજવરસહસ્ત્રા-
નુયાતમાર્ગા:—દ્વાત્તિશદ્ યાનિ રાજવરાણા=રાજપ્રમુખાના સહસ્ત્રાણિ તૈરનુયાત:=
અનુગતો માર્ગો યેપા તે તથા અનુગામિ દ્વાત્તિશત્સહસ્ત્રરાજપ્રમુખાનામધિપતય
इत्यर्थः, ‘चउसद्विसहस्सपवरजुवतीणयणकता’ चतु:—पण्डिसहस्सप्रवरयुवति-
नयनकान्ता:=चतु.पण्डिसहस्सप्रौढतरुणीना नयनकान्ता:=नयनप्रियाः स्वामीन
इत्यर्थः ‘रक्ताभा’ रक्ताभा=रक्ता=विमलशोणीतनाहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

फिर वे चक्रवर्ती कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘वत्तीसरायवर०’
इत्यादि०।

ટીકાર્થ:— (વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા) જિનકે પીછે ૨
વત્તીસ હજાર મુકુટવદ્ધ રાજા ચલા કરતે હે, અર્થાત્—જો અપને અનુગામી
૩૨ હજાર નરેશોં કે અધિપતિ હોતે હૈં । (ચઉસદ્વિસહસ્સપવરજુવતીનય
-ણકતા) તથા ૬૪ ચોસઠ હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતી સ્ત્રિયોં કે નયનોં કો જો
આનદપ્રદ હોતે હૈં અર્થાત્—उनके स्वामी होते हैं, तथा (रक्ताभा) जिनके

ते चक्रवर्तिओ देवा डोय छे तेनु सूत्रकार वधु वणुन डरे छे—“वत्तीस
रायवर” इत्यादी

ટીકાર્થ—“વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા” જેમની પાછળ બત્રીસ હજાર મુકુટ-
ધારી રાજાઓ ચાલે છે—એટલે કે જેવો તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપ
તિથોના અધિપતિ હોય છે “ચઉસદ્વિસહસ્સપવરજુવતીનયણકતા” ચોસઠ
હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના
સ્વામી હોય છે, તથા “રક્તાભા” જેમના શરીરની આભા વિમળ રક્તની

શરીરમમા યેવા તે તથા વિશિષ્ટલાવણ્યમપના इत्यर्थः, 'पउमपम्हकोरंटगदाम
चपगसुतवियवरकणकनिघसवण्णा ' पद्मपक्ष्मकोरण्टकदामचम्पकसुतस-वरकनक
निकपवर्णा, तत्र पद्मपक्ष्म = कमलकेशर. कोरण्टकदाम=कोरण्टपुष्पमाला
चम्पकः = पुष्पविशेषः तथा सुतावरकनकस्य=सुतससुवर्णस्य यो निकपः=
रेखा चेत्येतेषा वर्ण इव वर्णो येषा ते तथा पद्मकेशरसुवर्णादिनद् भास्वस्का
न्तय इत्यर्थ, 'सुजायसव्वगसुदरगा' सुजातमर्वाद्भुसुन्दराङ्गाः=सुजातानि=
शोभन पुष्पानि सर्वाङ्गेण=सर्वप्रकारेण सुन्दराण्यङ्गानि=अथवा येषा ते तथा
सुपुष्टशोभनाङ्गोपाङ्गसम्पन्नाः तथा 'महग्घवरपट्टणुगयविचित्तरागणीपणी-
निम्मिय दुगुल्लवरचीणपट्टकोसेज्जसोणीसुत्तकविभूसियगा' महारवरपत्तनोद्धत-
विचित्ररागणीपैणीनिर्मितदुकूलवरचीनपट्टकोशेयथोणीधूतकविभूषिताङ्गाः = तत्र
महार्वाणि = बहुमूल्यानि वरपत्तनोद्धतानि=प्रधाननगराभूत्पन्नानि तथा विचित्र-
रागाणि=अनेकविधिरङ्गरञ्जितानि एणी पैणी निर्मितानि=ण्णी = मृगी पैणी

શરીર કી આભા વિમલ શોણિત કી વહુલતા સે રક્તવર્ણ કી સી હોતી
હૈં, અર્થાત્ જો વિશિષ્ટ લાવણ્ય સે યુક્ત હોતા હૈં । તથા (પડમપમ્હકોરટ
ગદામચપગસુતવિયવરકણકનિઘસવણ્ણા) પદ્મપક્ષ્મ-કમલકેશર, કોર-
ણ્ટકદામ-કોરટપુષ્પોં કી માલા, ચમ્પક-પુષ્પવિશેષ, એવ તાપે હુણ
સુવર્ણ કી રેખા હનકે વર્ણ કે સમાન જિનકા વર્ણ હોતા હૈં, અર્થાત્-
પદ્મકેશર તસસુવર્ણ આદિ કે સમાન ભાસ્વર કાન્તિ સે જો યુક્ત હોતે હૈં,
તથા (સુજાયસવ્વગ સુદરગા) જિનકે શારીરિક અવયવ અઢીતરહ સે
પુષ્ટ એવ સવ પ્રકાર સે સુન્દર હોતે હૈં (મહગ્ઘવરપટ્ટગયવિચિત્તરાગ
ણી પણી નિમ્મિયદુગુલ્લ વરચીણપટ્ટકોસેજ્જ સોણીસુત્તગવિભૂસિયગા)
તથા જિનકા શરીર વહુમૂલ્ય વસ્ત્રોં સે કિ જો વસ્ત્ર પ્રધાન નગરોં કે જો
બને હુણ હોતે હૈં, વિવિધ રંગો સે રંગે રહતે હૈં, એણી પૈણી-મૃગી ઓર

અધિકતાને લીધે રતાશ પડતી હોય છે, તથા જે વિશિષ્ટ લાવણ્યથી યુક્ત
હોય છે, તથા “ પડમ-પમ્હકોરટ-ગદામ-ચપગ-સુતવિયવર-કણક-નિઘસવ્વણ્ણા”
પદ્મપક્ષ્મ-કમળ કેશર, કોરટકદામ-કોરટ પુષ્પોની માલા, ચપાના ફૂલ, અને
તપાવેલ સુવર્ણની રેખા જેવો જેમનો વર્ણ હોય છે એટલે કે જે પદ્મકેશર
તથા સુવર્ણ આદિના જેવી સુદર કાતિવાળા હોય છે, તથા સુજાયસવ્વગસુદ
રગા” જેમના શરીરના અંગો સારી રીતે પુષ્ટ અને ઢરેક રીતે સુદર હોય છે,
“ મહગ્ઘવર-પટ્ટણુગય-વિચિત્તરાગ-ણી-પણી દુગુલ્લવરચીણ-પટ્ટકોસેજ્જ સોણીસુ-
ત્તગવિભૂસિયગા ” તથા જેમના શરીર ખડું કીમતિ વસ્ત્રોથી સુશોભિત રહે છે
જે મુખ્ય શહેરોમાં બનેલા હોય છે, વિવિધ રંગોથી રંગેલા હોય છે,

ચ=મૃગીવિશેષ એવ તદ્રોમનિર્મિતાનિ ચાનિ યત્તાણિ તાનિ, તથા દુઃકૂલ્લાનિ=દુઃકૂલો વૃક્ષવિશેષ, તન્નિર્મિતાનિ વસ્ત્રાણિ, વલ્કલમુલ્કવલે જલેન સહ કુટ્ટયિત્વા ચૂર્ણીકૃત્ય સૂત્રાણિ નિર્માય કૃતાનિ દુઃકૂલાનીત્યુચ્યન્તે તાનિ । તથા વરચીનાનિ=ચીનદેશોત્પન્નાનિ 'પટ્ટ' પટ્ટ સૂત્રમયાનિ-મલયદેશવિશેષપ્રાપ્તપન્નાનિ, કાશેયાનિ=કૃમિકોપસૂત્રનીર્મિતાનિ 'રેશમી' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ યત્તાણિ તથા શ્રોણીસૂત્રક=કટિસૂત્રક 'કણદોરા' ઇતિ પ્રસિદ્ધ ચેત્યૈતૈઃ વિભૂષિતાનિ=અલકૃતાનિ અદ્ધાનિ યેષાં તે તથા વહુમૂલ્યસુકોમલાઽતિસૂક્ષ્મતમરઙ્ગવિરઙ્ગવિવિધવસ્ત્રકટિસૂત્ર-સુશોભિતશરીરાં ઇત્યર્થઃ, 'વરસુરભિગધવરચુણ્ણવાસવરકુસુમભરિયસિરયા' વરસુરભિગન્ધવરચૂર્ણવાસવરકુસુમમૃતશિરસઃ=વરસુરભિગન્ધઃ=ઉત્તમ સુગન્ધયુક્તગન્ધદ્રવ્ય, તથા વરચૂર્ણવાસા=વરાઃ=શ્રેષ્ઠાઃ=ચૂર્ણવાસાઃ=ચૂર્ણરૂપાણિ ગન્ધદ્રવ્યાણિ, વરકુસુમાનિ ચ-ચમ્પક માલતી પ્રભૃતીનિ તૈર્ભૂતાનિ=વ્યાપ્તાનિ શિરાસિ=મસ્તકાની

મૃગીવિશેષ કે રોમોં સે નિર્મિત હોતે હૈં ઉનસે સુશોભિત રહતે હૈં । ચે વસ્ત્ર ધોતી કે સ્થાનાપન્ન હોતે હૈં । તથા જિમ દુઃકૂલ—દુપટ્ટ—કો ચે ઓઢતે હૈં વહ રેશમી હોતા હૈં, એવ ચીન દેશકા બના હુઆ હોતા હૈં । દુઃકૂલવૃક્ષ કે વલ્કલ કો ઓઢલી મેં જલ કે સાથ પહિલે મૂસલ સે યૂવ કૂટા જાતા હૈં, ઘાદ મેં જય વહ ચૂર્ણરૂપ મેં હો જાતા હૈં તય ઉસકે સૂત્ર તૈયાર કિયે જાતે હૈં ઓર ફિર ઉન્હે અઢ્ઢી તરહ બુનકર યહ દુઃકૂલ ઘનાયા જાતા હૈં । એસે દુઃકૂલો સે એવ કટિસૂત્ર સે જિનકા શરીર સદા અલકૃત રહા કરતા હૈં, અર્થાત્ જો વહુમૂલ્ય, સુકોમલ, અતિસૂક્ષ્મતમ-એવ રંગવિરંગે અનેકવિધવસ્ત્રો સે, તથા કટિસૂત્ર સે વિભૂષિત શરીર રહતે હૈં (વરસુરભિગધવરચુણ્ણવાસવરકુસુમભરિયસિરયા) તથા ઉત્તમ સુગન્ધ યુક્ત ગન્ધદ્રવ્યોં સે, શ્રેષ્ઠચૂર્ણ વાસો સે ચમ્પક, માલતી આદિ

એણી પ્રેણી-મૃગલી અને વિશિષ્ટ પ્રકારની મૃગલીની રૂવાટીમાથી બનાવેલા હોય છે તે વસ્ત્રો ધોતીની જગ્યાએ પહેરાય છે તથા તેમના દુપટ્ટા રેશમી હોય છે, અને તે ચીનમા બનેલા હોય છે દુઃકૂલ-વૃક્ષની છાલને પાણી નાખીને પહેલા ખાડણીયામા સાબેલાથી ખૂબ ખાડવામા આવે છે, જ્યારે તેનો ભૂડો થઈ જાય ત્યારે તેમાથી તાર ડાઢવામા આવે છે, પછી તેને સારી રીતે વણીને તે દુઃકૂલ-દુપટ્ટા બનાવવામા આવે છે એવા દુપટ્ટા અને કટિસૂત્રથી જેમના શરીર સદા આભૂષિત રહે છે, એટલે કે જેમના શરીર ખહુ મુલ્ય, સુકોમળ, અતિગંધ પ્રારીક અને રંગબેરંગી અનેક પ્રકરના વસ્ત્રોથી, તથા કટિસૂત્રથી વિભૂષિત રહે છે, “વરસુરભિ-ગધવર-ચુણ્ણવાસવર-કુસુમ-ભરિયસિરયા” તથા ઉત્તમ સુગન્ધવાળા દ્રવ્યોથી, શ્રેષ્ઠચૂર્ણની સુગન્ધથી, ચમ્પક, માલતી આદિ

येषां ते तथा परमसुगन्धिद्रव्यचन्दनचूर्णचम्पकादिहसुगन्धभारसम्भृतमस्तका
इत्यर्थः, ' कप्पियच्छेयायरियसुकयःरइयमाउरउगगयतुडियवरभूषणपिण्डदेहा ' —
कल्पितछेकाचार्यसुकुतरतिदमालाकटकाद्भुटितवरभूषणपिनद्ध देहाः = तत्र
काल्पितानि = परिधृतानि छेकाचार्येण = शिल्पियरेण सुकृतानि = सुन्दर
रचितानि रतिदानि = प्रेमजनकानि यानि माया कटकाद्भुटितवरभूषणानि=
मालाः=सुवर्णमालाःकटकाः=कङ्कणानि ' कडा ' इति प्रसिद्धानि, अङ्गदानि=
केयूराणि भुटिताः=बाहुरक्षिकाः, तथा वरभूषणानि=मुकुटकुण्डलादिनि च तैः
पिनद्धः=व्याप्तो देहो येषां ते तथा मुकुटकेयूरकङ्कणादिविविधभूषणभूषितदेहा
इत्यर्थः, ' एकावलिकठसुरइयवच्छपालवपलवमाणसुकयपडउत्तरिज्जमुद्दियापिंगलं-
गुलिया ' तत्र—' एकावलिकठसुरइयवच्छ ' एकावलीकठसुरचितवक्षस्काः=
एकावली=विविधमणिग्रथितहार कण्ठे=कण्ठपदेशे सुरचिता=परिधृता वक्षसि=वक्ष-
स्थले येषां ते तथा ' पालवपलवमाणसुकयपडउत्तरिज्ज ' प्रालम्बपलम्बमान-

के पुष्पो से जिनका मस्तक सदा शोभित रहता है, अर्थात् परमसुगन्धित द्रव्यों से चन्दन के चूर्ण से चम्पकादि कुसुमों के सभार से जिनका मस्तक निरन्तर भरा रहता है। तथा (कप्पिय छेयायरिय-सुकय-रइय माल कडग गय तुडिय वर भूषणपिणद्ध देहा) जिनकी देह अच्छी तरह से पहिरे गये आभूषणों से, सुवर्ण की मालाओं से, कटकों कड़ों से, अगदो- (भुजबधो) से, भुटितों से बाहुरक्षिकों से, एवं मुकुट कुण्डल आदि उत्तम अलकारों से, कि जो कारीगरों के द्वारा बनाये ही अच्छी तरह बनाये हुए होते हैं तथा प्रेमोत्पादक होते हैं इनसे इनकी देह व्याप्त रहती है (एकावलिकठ सुरइय वच्छपालवपलवमाणसुकयपडउत्तरिज्ज

પુષ્પોથી જેમના મસ્તક સદા સુશોભિત રહે છે, એટલે કે અતિસુગન્ધ-
યુક્ત દ્રવ્યોથી, ચન્દનના ચૂર્ણથી, ચમ્પક આદિ પુષ્પોના સભારથી જેમના
મસ્તક સદા યુક્ત રહે છે, તથા “ કપ્પિય છેયાયરિય, -સુકય, -રइय, -માલ,
કડગ-ગય, તુડિય, વર ભૂષણપિણ્દદેહા ” જેમના સારીર સાગી રીતે પહેરેલા
આભૂષણોથી, સુવર્ણની માળાઓથી કડાઓથી, “ અગદો ” “ ભૂજબધો ”
થી, ભુટિતોથી-બાહુરક્ષિકોથી, અને મુગટ કુડળા આદિ ઉત્તમ અલકારોથી
આભૂષિત રહે છે જે અલકારો સારા કારીગરોએ સારી રીતે બનાવેલા હોય
છે તથા પ્રેમોત્પાદક હોય છે “ એકાવલિ-કઠ-સુરइवच्छ-પાલવ-પલ્લવમાણ-સુકય
પડઉત્તરિજ્જ-મુદ્દિયા-પિંગલંગુલિયા ” તથા વિવિધ મણીઓ જેડેલા હાર જેમની

સુકૃતપટોત્તરીયા = ગ્રાહ્યમ્વત્ = આનાભિલમ્બિતકણ્ઠિકાવત્ પ્રલમ્બમાન, તથા
સુકૃતઃ = શોભનરચનાવિશેષયુક્ત પટઃ = શાટકઃ ઉત્તરીયમ્ = ઉત્તરીયવસ્ત્ર ચ યેષા તે
તથા રચનાવિશેષેણ પરિધૃતશાટકોત્તરીયા इत्यर्थः, 'મુદ્રિયાપિંગલગુલિયા'
મુદ્રિકાપિદ્મલાહુલિકા' = મુદ્રિકાભિઃ = અહુલીયકેઃ પિદ્મલાઃ = સ્વર્ણાદિમયત્નાત્ પીત =
કાન્તયોઽહુલ્યો યેષા તે તથા 'ઉજ્જલનેવત્થરડયચિલ્લગવિરાયમાણા' ઉજ્જ્વલ-
નેપથ્યરતિદચિલ્લગવિરાજમાનાઃ = ઉજ્જ્વલ = નિર્મલ નેપથ્ય = વેષઃ 'પોશાક'
इति प्रसिद्धः रतिद = આનન્દજનક 'ચિલ્લગ' इति वस्त्र चाकचिक्य, तेन विराज-
માનાઃ = શોભમાનાઃ, તથા 'તેણ દિવાકરોવ્વદિત્તા' તેજસા દિવાકરૈવ દીપ્તાઃ =
પ્રતાપેન સૂર્યસદૃશાઃ 'સારયનવત્યણિયમહુરગમ્भीરનિદ્ધઘોસા' શારદનવસ્તનિત-
મધુરગમ્भीરસ્નિગ્ધઘોષાઃ = શારદ = શરત્કાલિક યન્નવસ્તનિત = નૂતનમેઘધ્વનિઃ તદ્વ-
ન્મધુરો ગમ્भीર' સ્નિગ્ધશ્ચ = હૃદયાહ્વાદકરો ઘોષઃ = શબ્દો યેષા તે તથા 'ઉપ્પણ
સમત્તરયણચક્કરયણપદ્ધાણા' ઉત્પન્નસમસ્તરત્નચક્કરત્નપદ્ધાના = ઉત્પન્નાનિ = પ્રાપ્તાનિ

મુદ્રિયાપિંગલગુલિયા) તથા કઠ મેં વિવિધનળિયો સે ગ્રથિત પહિરા
હુઆ હાર જિનકે વક્ષસ્થલ પર લટકતા રહતા હૈ, તથા નાભિપ્રદેશ પર્યંત
કઠી કે સમાન લટકતે હુએ ઉત્તરીયવસ્ત્રકો એવ શોભન રચના વિશેષ
સે યુક્ત કરકે ધોતી કો જો ધારણ કરતે હૈ । સ્વર્ણ આદિકી બની હુઈ
અગૂઠિયોં સે યુક્ત હોને કે કારણ જિનકી હાથો કી અગુલિયા સદા
પીલી કાતિવાલી બની રહતી હૈં (ઉજ્જલનેવત્થરડયચિલ્લગવિરાયમાણા)
ઉજ્જ્વલ, આનન્દજનક એવ ચિલકતી હુઈ પોશાક સે જો સદા વિરાજમાન
રહતે હૈં (તેણ-દિવાકરોવ્વ દિત્તા સારય-નવત્યણિય-મહુર-ગમ્भीર—
નિદ્ધઘોસા) તથા જો અપને તેજ સે સૂર્ય કે જૈસે પ્રતાપશાલી હોતે હૈં ।
તથા જિનકા શબ્દ શરત્કાલ કે મેઘ કી નવીન ધ્વનિ કે જૈસા ગમ્भीર
ઔર હૃદયાહ્વાદક હોતા હૈ (ઉપ્પણસમત્તરયણચક્કરયણપદ્ધાણા) તથા

કોકમા પહેરેલી હોય છે અને વક્ષસ્થળ પર લટકતો હોય છે તથા નાભિ-
પ્રદેશ સુધી કઠીની જેમ લટકતા ઉત્તરીય વસ્ત્રોને તથા સુદૃઢ વિશિષ્ટ રચનાથી
યુક્ત ધોતીને જેઓ ધારણ કરે છે, સુવર્ણ આદિમાર્થી બનાવેલી વીંટીઓથી
યુક્ત હોવાને લીધે જેમના હાથની આગળીઓ સદા પીળા તેજથી યુક્ત
રહે છે, “ઉજ્જલનેવત્થરડયચિલ્લગવિરાયમાણા” ઉજ્જ્વળ, આનન્દદાયક અને
ચળકતા પોષાકથી જેઓ મહા શોભી રહ્યા હોય છે, “તેણ-દિવાકરોવ્વદિત્તા
સારય-નવત્યણિય-મહુર-ગમ્भीર-નિદ્ધઘોસા” તથા જે પોતાના તેજથી સૂર્ય
સમાન પ્રતાપશાળી હોય છે, તથા જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘના નવીન
ધ્વનિના જેવા ગમ્भीર અને હૃદયમા આનન્દ ઉત્પન્ન કરનાર હોય છે, “ઉપ્પણ

સમસ્તરત્નાનિ ચક્રરત્નાનિ ચ યસ્તેતથા, એવં યથા પ્રધાનાઃ=પ્રધાનભૂતાઃ ચતુર્દશ
રત્નાનિ યથા “સેનાપતિ ૧ ગાધાપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦, મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ રાગ ૧૩ દડો ૧૪ ॥”

છાયા-સેનાપતિ ૧ ગૃહપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦ મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ સ્વદ્વ ૧૩ દડા ૧૪ ॥”
इति चतुर्दशरत्नानि । तथा ‘नवनिहिपद्मणो’ नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वा
मिनः । नवनिधयो यथा—

“ નૈસર્પે ૧ પડુક ૨ પિંગલે ૩ સર્વરત્ન ૪ તદામહાપદ્મ ૫ ।

કાલેય ૬ મહાકાલે ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ શાખે ૯ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ,

છાયા-નૈસર્પ: ૧ પડુક ૨ પિંગલ ૩ સર્વરત્ન ૪ તથા મહાપદ્મ ૫ ।

કાલ ૬ મહાકાલ ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ શાખ ૯ ॥ ૧ ॥ ”

‘સમિદ્ધકોસા’ સમૃદ્ધકોશાઃ=પરિપૂર્ણભાણ્ડાગારાઃ, ‘ચાઉરતા’ ચતુરન્તાઃ=
ત્રિપ્પન્તેષુ સમુદ્રઃ, ચતુર્થેઽન્તે ચ હિમવાન પર્વત, એવં ચત્વારોઽન્તાઃ=ભૂવિભાગાઃ

જો પ્રાપ્ત સમસ્ત રત્નોં સે એવં ચક્રરત્ન સે પુરુષોં મેં પ્રધાનભૂત માને જાતે
હેં ચક્રવર્તી જિન ૧૪ ચૌદહ રત્નોં કે અધિપતિ માને જાતે હેં-વે રત્ન યે
હેં—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાધાપતિ, (૩) પુરોહિત (૪) તુરગ (૫) વર્ધકિ,
(૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨)
કાકિણી, (૧૩) સ્વદ્વ (૧૪) દડા । (નવનિહિપદ્મણો) તથા નવનિધિયો કે
જો ભોક્તા હોતે હેં, નવનિધિયા હસ પ્રકાર હેં—(૧) નૈસર્પ, (૨) પડુક,
(૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, (૫) મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ (૮)
માણવક ઓર (૯) શાખ । (સમિદ્ધ કોસા) ભાણ્ડાગાર સદા હરેક
વસ્તુ સે ભરપુર બના રહતા હે, તથા (ચાઉરતા) જો હિમવત્ પર્વત

સમત્તરયણચક્રરયણપદ્માણા ” તથા જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોર્થી અને
ચક્રરત્નોર્થી પુરુષોભા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તિ જે ૧૪ ‘ચૌદ’ રત્નોના
અધિપતિ મનાય છે, તે ચૌદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨)
ગાધાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮)
ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) પડુક અને
(૧૪) દડા તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ નવનિધિયોને લોગવે છે તે નવનિધિ
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્પ, (૨) પડુક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫
મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) શાખ “સમિદ્ધ
કોસા” તેમના લડાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, “ચાઉરતા”

યેષા તે તથા હિમસ્ત્વગુરુપર્યન્તપૃથિવીશામકાઃ ‘ચાઝરાહિં સેનાહિં સમણુજાઙ્ઙમા-
ણમગ્ગા’ ચતસ્રભિ સેનાભિ સમનુયાયમાનમાર્ગાઃ=હસ્ત્યશ્વરથપદાતિમ્પચતુરઙ્ગસે-
નાભિ સમનુયાયમાનઃ=અનુગમ્યમાનો માર્ગો યેષા તે તથા તદેવ દર્શયતિ ‘તુર-
ગવર્દ્ધ-ગયવર્દ્ધ-રહવર્દ્ધ-નરવર્દ્ધ’ તત્ર ‘તુરગવર્દ્ધ’ તુરઙ્ગપતયઃ ‘ગયવર્દ્ધ’ ગજપતયઃ
‘રહવર્દ્ધ’ રથપતયઃ ‘નરવર્દ્ધ’ નરપતયઃ=પદાતિ સેનાપતયઃ ‘વિઝલકુલા’
વિપુલકુલા = ઉચ્ચકુલા, વિશ્રુતયજસ = વિરયાતકીર્તય ‘સારયસસિસકલ-
સોમ્મવયણા’ શારદશગિસકલસોમ્યવયના = શારદા = શરત્કાલિકો શશી=ચન્દ્રઃ
કીદશઃ સકલઃ=સમ્પૂર્ણકઠાયુક્તઃ શરત્પર્ણિમાચન્દ્ર इत्यर्थः, તદ્વત્ સોમ્ય=સુન્દર,
વદન=મુખ યેષા તે તથા । ‘સૂરા’ સૂરાઃ=શત્રુમર્દકા ‘તિલોકનિગયપભાવા’
ત્રિલોક્યનિર્ગતપ્રભાવાઃ=ત્રિલોકવ્યાપિપ્રભાવસમ્પન્નાઃ, ‘લદ્ધસદ્ધા’ લબ્ધશબ્દાઃ=

પર્યંત તક્ર કી ભૂમિ કે શાસક હોતે હૈ, (ચાઝરાહિં સેનાહિં સમણુજાઙ્ઙ-
જ્ઞમાણમગ્ગા) હસ્તી, અશ્વ, રથ ંવ પૈદલ સૈન્ય, ઇન ચાર અર્ગો વાલી
સેના સે જો સદો અનુગમ્યમાન માર્ગવાલે હોતે હૈ, અર્થાત્ વે (તુરંગવર્દ્ધ-
ગયવર્દ્ધ રહવર્દ્ધ નરવર્દ્ધ) અશ્વપતિ, ગજપતિ રથપતિ, ઔર નરપતિ હોતે હૈ।
(વિઝલકુલા) તથા ઁનકા કૂલ વહુત્ ઁચા હોતા હૈ, (વીસુયજસા)
કીર્તિ ઁી ઁનકી ચારોં દિશાઔ મેં વ્યાપ્ત હોતી હૈ. તથા (સારયસસિ
સકલસોમ્મવયણા) ઁનકી સુગ્ધ શરત્કાલ કી પૂર્ણિમા કે ચન્દ્રમા જૈસા
સોમ્ય હોતા હૈ તથા વે (સૂરા) અપને શત્રુઔ કે મર્દક હોને સે શૂર-
વીર હોતે હૈ, તથા (તિલોકનિગયપભાવા) ઁનકા પ્રભાવ ત્રીનલોક
મેં વ્યાપ્ત રહતા હૈ, ઇસલિયે વે (લદ્ધસદ્ધા) ઁનકી પ્રસિદ્ધિ ત્રીનોં લોકો

તેઓનુ હિમાલય પર્વત મુધીના પ્રદેશ પર શાસન ચાલે છે “ચાઝરાહિ-સેનાહિં
સમણુજાઙ્ઙમાણમગ્ગા” તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ ગજદળ, અશ્વદળ,
રથદળ, અને પાયદળ, એ ચતુરંગી સેના સહિત માર્ગ પર ફરતી ડરનારા હોય
છે, એટલે કે “તુરગવર્દ્ધ ગયવર્દ્ધ રહવર્દ્ધ નરવર્દ્ધ” તેઓ અશ્વપતિ, ગજપતિ,
રથપતિ અને નરપતિ હોય છે “વિઝલકુલા” તથા તેઓ ઊંચા કુળના
હોય છે “વિસુયજસા” તેમની કીર્તિ ચારે દિશાઓમા ફેલાયેલી હોય છે
તથા “સારયસસિસકલસોમ્મવયણા” તેમના મુખ શરદ ઋતુની
પૂર્ણિમાના ચન્દ્ર સમાન સોમ્ય હોય છે, તથા તેઓ “સૂરા” પોતાના
શત્રુઓનુ મર્દન કરનાર હોવાથી શૂરવીર હોય છે, “તિલોકનિગયપભાવા”
તેમનો પ્રભાવ ત્રણે લોકમા વ્યાપેલો હોય છે તેથી “લદ્ધસદ્ધા” તેઓ ત્રણે

સમસ્તરત્નાનિ ચક્રરત્નાનિ ચ યસ્તેતથા, અન ય્ય મધાનાઃ=પ્રધાનભૂતાઃ ચતુર્દશ
રત્નાનિ યથા “સેનાપતિ ૧ ગાધાપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦, મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ રાગ ૧૩ દડો ૧૪ ॥”
છાયા-સેનાપતિ ૧ ગૃહપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦ મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ રાગ ૧૩ દડો ૧૪ ॥”
इति चतुर्दशरत्नानि । तथा ‘नवनिहिपङ्गो’ नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वा-
मिनः । नवनिधयो यथा—

“ નેસર્પે ૧ પડુક ૨ પિંગલે ૩ સર્વરત્ને ૪ તદામહાપદમે ૫ ।

કાલેય ૬ મહાકાલે ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ શાખે ૯ ॥ ૧ ॥ ” इति,

छाया-नैसर्पः १ पण्डुक २ पिङ्गलश्च ३ सर्वरत्न ४ तथा महापद्मम् ५ ।

કાલશ્ચ ૬ મહાકાલ ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ શાખ ૯ ॥ ૧ ॥ ”

‘સમિદ્ધકોસા’ સમૃદ્ધકોશાઃ=પરિપૂર્ણભાણ્ડાગારાઃ, ‘ચાઉરતા’ ચતુરન્તાઃ=
ત્રિષ્વન્તેષુ સમૃદ્ધઃ, ચતુર્વેન્તે ચ હિમવાન પર્વત, ય ચત્વારોઽન્તાઃ=ભૂવિભાગાઃ

જો પ્રાપ્ત સમસ્ત રત્નો સે એવ ચક્રરત્ન સે પુરુષોં મેં પ્રધાનભૂત માને જાતે
હેં ચક્રવર્તી જિન ૧૪ ચૌદર રત્નોં કે અધિપતિ માને જાતે હેં-વે રત્ન યે
હેં—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાધાપતિ, (૩) પુરોહિત (૪) તુરગ (૫) વર્ધકિ,
(૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨)
કાકિણી, (૧૩) રાગ (૧૪) દડ । (નવનિહિપદ્ગો) તથા નવનિધિયોં કે
જો ભોક્તા હોતે હેં, નવનિધિયા હસ પ્રકાર હેં—(૧) નૈસર્ગ, (૨) પડુક,
(૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, (૫) મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ (૮)
માણવક ઓર (૯) શાખ । (સમિદ્ધ કોસા) ભાણ્ડાગાર સદા હરેક
વસ્તુ સે મરપુર વના રહતા હૈ, તથા (ચાઉરતા) જો હિમવત્ પર્વત

સમત્તરયણચક્રરયણપદ્માણા ” તથા જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોથી અને
ચક્રરત્નથી પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તિ જે ૧૪ ‘ચોદ’ રત્નોના
અધિપતિ બનાય છે, તે ચોદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨)
ગાધાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮)
ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) અણ્ગ અને
(૧૪) દડ તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ નવનિધિઓને ભોગવે છે તે નવનિધિ
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્ગ, (૨) પડુક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫
મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) શાખ “ સમિદ્ધ
કોસા ” તેમના લકાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, “ ચાઉરતા ”

‘ જળવયપ્પહાણાદિ ’ જનપન્નવાનાભિઃ=જનપદેષુ=દેશેષુ પ્રધાનાભિઃ=સર્વોત્કૃષ્ટાભિ ‘ ભજ્જાદિ ’ ભાર્યાભિ=સ્ત્રીભિ ‘ લાલિયતા ’ લાલ્યમાના=ક્રીડ્યમાનાઃ ‘ અતુલસદ્ધરિસરસરૂપગગેય જણુભવિત્તા ’ અતુલશબ્દસ્પર્શરસરૂપગન્ધાશ્વાડ-નુભવન્તઃ=અનુપમશબ્દાદિ વિષયમુસાન્યાસ્વાદ્યન્તઃ ‘ તે વિ ’ તેઽપિ=તાદૃશા અપિ ચક્રવર્તિનઃ, ‘ કામાણ અવિતિત્તા ’ કામાનામવિતૃષ્ણા=કામભોગેષુ તસિરહિતા એવ, ‘ મરણધમ્મ ’ મરણધર્મ=મૃત્યુ ‘ ઉવ્વણમતિ ’ ઉપનમન્તિ=પ્રાન્પુનન્તિ મ્રિયન્તે इत्यर्थ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

પુનઃ કે ઇત્યાહ— ‘ ભુજ્જો ’ ઇત્યાદિ—

મૂલ્મ—ભુજ્જો વલદેવા વાસુદેવા ય પવરપુરિસા મહાવલ-પરક્કમા મહાધણુવિયટ્ટગા મહાસત્તસાગરા દુદ્ધરા ધણુધરાનર-વસહા રામકેસવા ભાયરો સપરિસા સમુદ્ધવિજયમાદ્ધયદસા-રાણં પજ્જુણ-પયિવસંવઅનિરુદ્ધા નિસદ્ધઉમ્મુચ-સારણગય સુમુહદુમ્મુહાદીણં જાયવાણ અધ્ધુટ્ટાણવિકુમારકોડીણ હિય-યદ્ધયા દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવર્ઘ્ણ ય આણંદહિયમા-

સચિત સુખ્વ કી રાશિકો ભોગતે હૈ, તથા ઉનકી (અણેગવાસસયમાડ-વ્વતો) સૈકઢોં વર્ષોં કી આયુ હોતી હૈ (જળવયપ્પહાણાદિ ભજ્જાદિ લાલિ-યતા) તથા વે સમસ્ત દેશો મે સર્વોત્કૃષ્ટ એસી ૬૪ ચૌમઠ હજાર સ્ત્રિયોં કે સાય ક્રીડા કિયા કરતે હૈ (અતુલસદ્ધરિસ રસરૂપગવ ય અણુ-ભવિત્તા) ઓર ઉનકે સાય જો અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ આદિ પાચો ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં સે જન્ય સુખો કા આસ્વાદન કરતે રહતે હૈ એસે (તે વિ) વે ચક્રવર્તી આદી મી (કામાણ અવિતિત્તા મરણ-ધમ્મ ઉવ્વણમતિ) કામસુખોં સે અતૃપ્ત હી વને રહતે હૈ ઓર અન્ત મેં મરણ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

વર્થી પ્રાપ્ત ડરેલ સુખની ગણિનો ઉપલોગ ડરે છે, તથા “ અણેગવાસસયમા-ઉવ્વતો ” તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા “ જળવયપ્પહાણાદિ-લાલિયતા ” સમસ્ત દેશોમા અનુપમ એવી ચોસઠ હજાર સ્ત્રીઓ સાથે ક્રીડા ડરે છે, અને “ અતુલસદ્ધરિસરસરૂપગગેયઅણુભવિત્તા ” તેમની સાથે અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ આદિ પાચે ઇન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો અનુભવે છે એવા તે “ તે વિ ” ચક્રવર્તિ આદિ પણ “કામાણ” અવિતિત્તા મરણ ધમ્મ ઉવ્વણમતિ ” કામલોગથી અતૃપ્ત રહે છે અને અતેમરણુ પામે છે ॥સૂ ૫॥

ત્રિજગત્પ્રસિદ્ધાઃ, ' સમત્તભરહાદિ વા ' સમસ્તભરતાધિપા = દશિગોત્તરભરતાધિ-
પતય ' નરિંદા ' નરેન્દ્રા, ધીરાઃ = સગ્રામાદિઅપ્રતિહતશક્તિગમ્પન્ના, સસેલવળ-
કાણણ ' સસેલવળકાનન = ગૈલૈ = પર્વતે, વનૈઃ = નગરદૂરમ્થે, કાનનૈઃ = નગરસમીપસ્થેઃ
સહ = સહિત યત્તત્તવાધિ ' હિમવત્સાગરત ' હિમવત્સાગરાન્ત = હિમવાન = મુદ્ધ-
હિમવત્પર્વત સાગરત્ત = સમુદ્ર તદન્ત = તાવત્પર્યન્ત ' ભરહવાસ ' ભારતવર્ષ ' ભોત્તૂળ '
ભુવત્વા = ઉપભુજ્ય ' જિયસત્તૂ ' જિતશત્રવ = પરાજિતસમસ્તશત્રવ, ' પવરરાયસીદ્ધા '
પવરરાજસિદ્ધા = પવરેપુ = મહાપરાક્રમેત્તપિ રાજસુ મયે સિદ્ધાઃ = સિદ્ધસદૃશાઃ, પ્રવ-
રાશ્વતે રાજસિદ્ધા ઇતિ વા વિગ્રહ = ' પુલ્લકડતવપ્પમાના ' પૂર્વકૃતતપ પ્રભાવાત્ =
પૂર્વજન્મકૃતતપો માહાત્મ્યાત્ ' નિવિદ્ધમચિયસુદ્ધા ' નિર્વિદ્ધ સચ્ચિતસુવાઃ =
ઉપભુક્તમચ્ચિતમુગ્ધરાશયઃ ' અણેગવાસસયમાઉચ્ચતો ' અનેકવર્ષશતાયુષ્મન્તઃ,

મેં હો જાતી હૈ, ઓર વે (સમત્તભરહાદિ વા) સમસ્ત ભરતખંડ કે
અધિપતિ હોતે હૈ, અર્થાત્-૫ મ્લેચ્છગ્ગડ ઓર ? આર્યખંડ હસ
પ્રકાર સપૂર્ણભરતક્ષેત્ર કે સ્વામી હોતે હૈ, (નરિંદા) તથા વે મનુષ્યોં કે
ઇન્દ્ર માને જાતે હૈ (ધીરા) તથા વે સગ્રામ આદિ મેં અપ્રતિહત શક્તિ
સે સપન્ન હોતે હૈ (સસેલવળકાણણ ચ હિમવત્સાગરત ભોત્તૂળ ભર-
હવાસ જિયસત્તૂ પવરરાયસીદ્ધા) તથા વે પર્વતોં, વનો-નગર સે દૂર
રહે છુગ જગલો, એવ કાનનો-નગર સમીપસ્થ જગલોં સે યુક્ત તથા
ક્ષુલ્લકહિમવાન્ પર્વત ઓર સમુદ્રપરેત પ્રસૂત એસે ભારતવર્ષ કા ઉપભોગ
કરકે સમસ્ત શત્રુઓં કો પરાજિત કરને કે કારણ મહાપરાક્રમ શાલી
રાજાઓં કે ઘીચ મેં કેશરી કે સમાન ચમકતે હૈ, ઓર (પુલ્લકડતવપ્પ
માવા નિવિદ્ધ સચિયસુદ્ધા) પૂર્વજન્મ મેં આચરિત તપ કે પ્રભાવ સે વે

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ " સમત્તભરહાદિવા " સમસ્ત ભરતખંડના
અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાચ મ્લેચ્છ ખંડ અને એક આર્યખંડ, એ રીતે
સપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે " નરિંદા " તથા તેમને મનુષ્યોના
ઇન્દ્ર ગણવામા આવે છે, " ધીરા " તેઓ સગ્રામ આદિમા અણત શક્તિ
ધરાવનાર હોય છે, " સસેલવળકાણણ ચ હિમવત્સાગરત ભોત્તૂળભરહવાસ
જિયસત્તૂ પવરરાયસીદ્ધા " તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જગલો,
કાનનો-નગરની પાસેના જગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી
વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષના ઉપભોગ કરીને સઘળા શત્રુઓને માંડત કરવાને
કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેશરી "સિંહ" સમાન ચમકે છે, અને
" પુલ્લકડતવપ્પમાના નિવિદ્ધ સચિયસુદ્ધા " પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના — જા

‘ જળવયપ્પહાણાહિ ’ જનપદપ્રધાનાભિઃ=જનપદેષુ=દેશેષુ પ્રધાનાભિઃ=સર્વોત્કૃષ્ટાભિ ‘ ભજ્જાહિ ’ ભાર્યાભિ=સ્ત્રીભિ ‘ લાલિયતા ’ લાલ્યમાનાઃ=ક્રીડયમાનાઃ ‘ અતુલસદ્ફરિસરસરૂપગગ્રેય અણુભવિત્તા ’ અતુલશબ્દસ્પર્શરસરૂપગન્ધાશ્વાડ-
નુભવન્તઃ=અનુપમશબ્દાદિ વિષયસુખાન્યાસ્વાદયન્ત ‘ તે વિ ’ તેઽપિ=તાદૃશા
અપિ ચક્રવર્તિનઃ, ‘ કામાણ અવિતિત્તા ’ કામાનામવિતૃષ્ણા =કામભોગેષુ તત્તિરહિતા
એવ, ‘ મરણધમ્મ ’ મરણધર્મ=મૃત્યુ ‘ ઉવળમતિ ’ ઉપનમન્તિ=પ્રાન્પુનન્તિ મ્રિયન્તે
इत्यर्थ ॥ सू० ५ ॥

પુનઃ કે ઇત્યાહ— ‘ ભુજ્જો ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ભુજ્જો વલદેવા વાસુદેવા ય પવરપુરિસા મહાવલ-
પરક્કમા મહાધણુવિયટ્ટગા મહાસત્તસાગરા દુદ્ધરા ધણુધરાનર-
વસહા રામકેસવા ભાયરો સપરિસા સમુદ્ધવિજયમાદ્યદસા-
રાણં પજ્જુણ-પયિવસંવઅનિરુદ્ધા નિસદ્ધઉમ્મુય-સારણગય
સુમુહદુમ્મુહાદીણં જાયવાણં અધુટ્ટાણવિકુમારકોડીણં હિય-
યદ્દયા દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવઈણ ય આણંદહિયમા-

સચિત સુખ કી રાશિકો ભોગતે હેં, તયા ઉનકી (અળેગવાસસયમાડ-
વ્વતો) સૈકડોં વર્ષોં કી આયુ હોતી હૈ (જળવયપ્પહાણાહિ ભજ્જાહિ લાલિ-
યતા) તથા વે સમસ્ત દેશો મે સર્વોત્કૃષ્ટ એસી ૬૪ ચૌમઠ હજાર સ્ત્રિયોં
કે સાથ ક્રીડા ક્રિયા કરતે હેં (અતુલસદ્ફરિસ રસરૂપગધ ય અણુ-
ભવિત્તા) ઓર ઉનકે સાથ જો અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ
આદિ પાચો ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં સે જન્ય સુખો કા આસ્વાદન કરતે રહતે
હેં એસે (તે વિ) વે ચક્રવર્તી આદી ભી (કામાણ અવિતિત્તા મરણ-
ધમ્મ ઉવળમતિ) કામસુખોં સે અતૃપ્ત હી બને રહતે હેં ઓર અન્ત મેં
મરણ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હેં ॥ સૂ૦ ૫ ॥

વથી પ્રાપ્ત ડરેલ સુખની રાશિનો ઉપલોગ ડરે છે, તથા “ અળેગવાસસયમા-
વ્વતો ” તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા “ જળવયપ્પહાણાહિ-
લાલિયતા ” સમસ્ત દેશોમા અનુપમ એવી એસઠ હજાર સ્ત્રીઓ સાથે ક્રીડા
કરે છે, અને “ અતુલસદ્ફરિસરસરૂપગગ્રેયઅણુભવિત્તા ” તેમની સાથે અનુપમ
શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ આદિ પાચે ઇન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો
અનુભવે છે એવા તે “ તે વિ ” ચક્રવર્તિ આદિ પણ “કામાણ” અવિતિત્તા મરણ
ધમ્મ ઉવળમતિ ” કામલોગથી અતૃપ્ત રહે છે અને અતેમરણ પામે છે ॥સૂ ૫॥

ત્રિજગત્પ્રસિદ્ધાઃ, ' સમત્તભરહાદિ ચા ' સમસ્તભરતાધિપા = દશિણોત્તરભરતાધિ-
 પતય ' નરિદા ' નરેન્દ્રાઃ, ધીરાઃ = સગ્રામાદિગ્વપતિહતગત્તિગમ્પન્નાઃ સસેલવળ-
 કાણળ ' સસેલવળકાનન = ગૈરિઃ = પર્વતૈઃ વનૈઃ = નગરદૂરસ્થ, કાનનૈઃ = નગરસમીપસ્થઃ
 સહ = સહિત યત્તત્તયાધિ ' હિમવત્સાગરત ' હિમવત્સાગરન્ત = હિમવાન = શુભ્ર-
 હિમવત્પર્વત સાગરત્થ = સમુદ્રઃ તદન્ત = તાવત્પર્યન્ત ' ભરહવાસ ' ભારતવર્ષ ' ભોત્તૂળ '
 ભુવત્સા = ઉપભુજ્ય ' જિયસત્તૂ ' જિતશત્રવ = પરાજિતસમસ્તશત્રવ, ' પવરરાયસીદા '
 પવરરાજસિંહા = પવરેપુ = મહાપરાક્રમેષ્વપિ રાજસુ મયે સિંહાઃ = સિંહમદ્દશાઃ, પ્રવ-
 રાશ્વતે રાજસિંહા ઇતિ ચા ત્રિગ્રહ = ' પુન્નકડતવપ્પભાવા ' પૂર્વજન્મતપ પ્રભાવાત્ =
 પૂર્વજન્મકૃતતપો માઠાત્મ્યાત્ ' નિવિદ્ધમચિયસુદા ' નિર્વિદ્ધ સચ્ચિતસુતાઃ =
 ઉપભુક્તમચ્ચિતસુવરાશયઃ ' અણેગવાસસયમાઉચ્ચતો ' અનેકવર્ષગતાયુષ્મન્તઃ,

મેં હો જાતી હૈ, ઓર વે (સમત્તભરહાદિ ચા) સમસ્ત ભરતખંડ કે
 અધિપતિ હોતે હ, અર્થાત્-૫ મ્લેચ્છખંડ ઓર ૧ આર્યખંડ હસ
 પ્રકાર સપૂર્ણભરતક્ષેત્ર કે સ્વામી હોતે હૈ, (નરિંદા) તથા વે મનુષ્યો કે
 હન્દ્ર માને જાતે હૈ (ધીરા) તથા વે સગ્રામ આદિ મેં અપ્રતિહત શક્તિ
 સે સપન્ન હોતે હૈ (સસેલવળકાણળ ચ હિમવત્સાગરત ભોત્તૂળ ભર-
 હવાસ જિયસત્તૂ પવરરાયસીદા) તથા વે પર્વતો, વનો-નગર સે દૂર
 રહે હુળ જગલો, ણવ કાનનો-નગર સમીપસ્થ જગલો સે યુક્ત તથા
 શુભ્રકહિમવાન્ પર્વત ઓર સમુદ્રપર્યંત પ્રસૂત એસે ભારતવર્ષ કા ઉપભોગ
 કરકે સમસ્ત શત્રુઓ કો પરાજિત કરને કે કારણ મહાપરાક્રમે શાલી
 રાજાઓ કે ઘીચ મેં કેશરી કે સમાન ચમકતે હૈ, ઓર (પુન્નકડતવપ્પ
 ભાવા નિવિદ્ધ સચિયસુદા) પૂર્વજન્મ મેં આચરિત તપ કે પ્રભાવ સે વે

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ “ સમત્તભરહાદિવા ” સમસ્ત ભરતખંડના
 અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાચ મ્લેચ્છ ખંડ અને એક આર્યખંડ, એ રીતે
 સપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે “ નરિંદા ” તથા તેમને મનુષ્યોના
 હન્દ્ર ગણવામા આવે છે, “ ધીરા ” તેઓ સગ્રામ આદિમા અજીત શક્તિ
 ધરાવનાર હોય છે, “ સસેલવળકાણળ ચ હિમવત્સાગરત ભોત્તૂળભરહવાસ
 જિયસત્તૂ પવરરાયસીદા ” તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જગલો,
 કાનનો-નગરની પાસેના જગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી
 વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષનો ઉપભોગ કરીને મધ્યમા શત્રુઓને માઈત કરવાને
 કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેશરી “ સિંહ ” સમાન ચમકે છે, અને
 “ પુન્નકડતવપ્પભાવા નિવિદ્ધ સચિયસુદા ” પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના પ્રભા

ધાલધણધણસચયા ' નાનામણિકનરત્નમોક્તિકપચાલધનધાન્યસશ્ચયાઃ, તત્ર નાનાપિથા મણય.=ચન્દ્રકાન્તાદય કનકાનિ=મુવર્ણાનિ રત્નાનિ=કર્કેતનાદીનિ મોક્તિકાનિ=મુક્તાફલ્યાનિ પ્રચાલાનિ=' મૂગા ' इति प्रसिद्धानि धनानि=गणिमा-
दीनि, तत्र गणिम-गणयित्वा यदीयते तद्वस्तु गणिममित्युच्यते नालिकेरपूगी-
फलादिकम्, एव धरिम-यत्तुलाया धृत्वा दीयते तत्, सुवर्णरजतादिकम्, मेयं-
कुडवेन-मानविशेषेण ' पायली ' इति प्रसिद्धेन परिमीय यदीयते तत्, शालीगो-
धूमादिकम्, परिच्छेद्य परीक्ष्य यदीयते तत्, रत्नवस्त्रादिकम्, धान्यानि शालियवा-
दीनि तेषा सश્ચया =राशयो येषा ते तथा 'रिद्धिसमिद्धकोशा' ऋद्धि समृद्धकोशाः=
विविधमपत्तिपूर्णभाण्डागारा ' हयगयरहसहस्ससामी ' हयगजरयसहस्रस्वा-
मिन.=स्पष्टम् । ' गामागरणगरखेडकवडमडवदोणमुहपट्टणाऽऽसमसवाह
सहस्स धिमियनिवुयप्पमुड्यज्जणविविह-सम्पनिप्फज्जमाणमेश्णि सरसरियतळा-

ણિકણગ-રયણ-મોત્તિય પવાલધણધણસચયા) ચન્દ્રકાન્ત આદિ નાના પ્રકારકેમણિયોંકી, સુવર્ણકી, કર્કેતનાદિ રત્નોકી, મુક્તાફલોંકી, મુગાઓંકી, તથા ધન-ગણિમાદિ, તથા ગણિમ-ગિનકર દી જાનેવાલી નાલિકેર પૂગીફલ આદિ વસ્તુઓંકી, તથા ધરિમ-તુલા સે તૌલ કર દી જાનેયોગ્ય સુવર્ણ રજત આદિ દ્રવ્યોંકી, તથા મેય-કુડવ 'પાયલી' નાપકે નામવિશેષ સે નાપકર દિયે જાનેયોગ્ય શાલિ ગોધૂમ આદિ અનાજોંકી, તથા પરિચ્છેદ્ય-પરીક્ષા કરકેદી જાનેયોગ્ય રત્ન વસ્ત્ર આદિ ચીજો કી તથા ધાન્ય શાલિ યવ આદિ વાન્યોંકી इनके यहां राशि रहा करती है । तथा—(रिद्धिसमिद्ध कोसा) विविध सपत्तिसे इनका भाण्डागार (भंडार) पूर्ण भरा रहता है । तथा (हयगयरहसहस्ससामी) हयो के घोडो के, हाथियोके एव रथों के ये स्वामी होते हैं । (गामागरणगरखेडकवडमडवदोणमुहपट्टणासम

કણગરયણમોત્તિય પવાલધણધણસચયા ” ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ મણી-
ઓનો, સુવર્ણનો, કર્કેતનાદિ રત્નોનો, સાથા મોતીનો, મુગાઓનો, તથા,
ધન-ગણિમાદિનો, (ગણિમ-ગણીને અપાતી નાણિયેર પૂગીફળ આદિ વસ્તુઓનો)
ધરિમનો (“ ધરિમ—ત્રાજવાથી ભેળીને આપવા યોગ્ય સુવર્ણ ” આદિ આદિ
દ્રવ્ય) મેય-કુડવનો (“ પાયલી ” (માણુ) આદિથી ભરીને આપવા યોગ્ય
ઓખા, ઘઉં આદિ અનાજ) પરિચ્છેદ્ય—પરીક્ષા કરીને આપવા યોગ્ય રત્ન-
વસ્ત્ર આદિ ચીજોનો, તથા ધાન્યનો (ઓખા જવ આદિ અનાજનો) તેમને
તથા ભંડાર ભરેલ હોય છે તથા “ રિદ્ધિસમિદ્ધકોસા ” વિવિધ સપત્તિથી
તેમનો ભંડાર મદા ભરપૂર રહે છે તથા “ હયગયરહસહસ્સસામી ” ઘોડા,
હાથી અને રથોના તેઓ અધિપતિ હોય છે “ ગામાગરણગરખેડકવડમડવ

પ્રશુન્ન — પ્રતિસાગાનિરુદ્ધનિપધોલ્ભુક — સારણ — ગજ — છુમ્મુગ્ધુર્મુસાદીના
 ‘ જાયગ્રાણ ’ યાદગ્રાના = યદુગ્રાસિના ‘ અદુગ્રાણ વિ ’ અર્દ્ધચતુર્થાનામપિ =
 સાર્ધતિષ્ઠાનામપિ ‘ કુમારકોટીણ ’ કુમારકોટીનાં ‘ દિયયદૃશ્યા ’ હૃદયદયિતાઃ =
 હૃદયપ્રિયાઃ ‘ દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવર્ષીણ ય આણદહિયયભાવનંદણકરા ’ દેવ્યા
 રોહિણ્યાઃ = ચલદેવમાતુઃ દેવ્યાદેવકયાઃ = કૃષ્ણમાતુઃ આનન્દરૂપો યો હૃદયભાવ
 સ્તસ્ય નન્દનકરાઃ = વૃદ્ધિકારકાઃ ‘ સોલસરાયવરસહસ્પાણુજાયમગ્ગા ’ પોઢશ
 રાજવરસહસ્પાણુયાતમાર્ગાઃ = પોઢશસદસસરયકા રાજવરા અનુમતા ભવન્તિ
 માર્ગે યેપા તે તથા । તત્પદર્શિતનીતિમાર્ગાનુવર્તિન ઇત્યર્થઃ તદ્વાત્મારિણ ઇતિ
 યાવત્ । સોલસદેવીસહસ્સવરણયણહિયયદૃશ્યા ’ પોઢશદેવીસહસ્સવરનયનહૃદય-
 દયિતા = પોઢશસદસદેવીના વરનયનાના = ચારુ લોચનાના સુન્દરીના હૃદયદયિતાઃ =
 હૃદયવલ્લભા, વિશેષણમિદં વાસુદેવાપેક્ષયા । ‘ ણાણામણિકુળગરયણમોત્તિયપ

નિપધ, ઉલ્ભુક, સારણ, ગજ, છુમ્મુગ, દુર્મુગ આદિ સાઠાતીન ૩૥ કરોડ
 યાદવકુમારો કે લિયે યે હૃદય સે અધિક પ્યારે હોતે હે । (દેવીણ રોહિ
 ણીણ દેવીણ દેવર્ષીણ ય આણદહિય ભાવનદણકરા) દેવી રોહિણી કે તથા
 દેવી દેવકી કે આનદરૂપ હૃદયભાવ કી યે વૃદ્ધિ કરનેવાલે હોતે હે, દેવી
 રોહિણી યે ચલદેવ કી માતા તથા દેવી દેવકી યે કૃષ્ણકી માતા હે ।
 (સોલસરાયવરસહસ્પાણુજાયમગ્ગા) ૧૬ સોલ હજાર રાજા જિનકે પીઢે
 માર્ગ મેં ચલા કરતે હે, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર વે ઇન્હે નીતિમાર્ગ કા પ્રદ
 ર્શન કરતે હે ઊસી નીતિમાર્ગકા યે અનુસરણ કરતે હ, અથવા ઊનકી
 આજ્ઞાનુસાર ચલતે હે । (સોલસ દેવીસહસ્સવરણયણહિયયદૃશ્યા) ૧૬ સોલ
 હજાર સ્ત્રિયોં કે નયનો કો ઓર હૃદયોંકો યે અત્યતપ્રિય હોતે હે, યહ
 વિશેષણ વાસુદેવકી અપેક્ષા સે કહા ગયા જાનના ચાહિયે । (ણાણામ

પ્રતિવસાણ, અનિરુદ્ધ, નિપધ, ઉલ્ભુક સારણ, ગજ, છુમ્મુગ, દુર્મુગ આદિ
 સાઠા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોને તે પ્રાણથી પણ અધિક વહાલા હોય છે,
 “દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવર્ષીણ ય આણદહિયભાવનહણકરા” દેવી રોહિણી
 તથા દેવી દેવકીના હૃદયના આનંદમા તેઓ વૃદ્ધિ કરનારા હોય છે દેવી
 રોહિણી બળદેવની માતા તથા દેવી દેવકી કૃષ્ણની માતા છે “સોલસરાય
 સહસ્પાણુજાયમગ્ગા” ૧૬ મોળ હજાર રાજાઓ તેમને અનુસરે છે, એટલે કે તેમના
 દ્વારા જે નીતિમાર્ગ તેઓ બતાવે છે, એ જ નીતિમાર્ગનું તેઓ અનુસરણ
 કરે છે અથવા તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે તે બધા આવે છે “સોલસ દેવીસહસ્સવર-
 ણયણહિયયદૃશ્યા” ૧૬ સોળ હજાર સ્ત્રીઓના નયનો તથા હૃદયને તેઓ અત્યત
 પ્રિય હોય છે આ વિશેષણ વાસુદેવને અનુલક્ષી અપાયેલું છે “નાણામણિ-

પવનાનિ તાનિ ચ 'મગાભિરામ' મનોઽભિરામાણિ=મનોદગાણિ તૈશ્વ 'પરિમહિયસ્સ' પરિમહિતસ્ય=શોભિતમ્ય 'દાહિણઢુવેયઢુગિરિવિભક્તસસ' દક્ષિણાર્ધ વૈતાઢ્ય ગિરિવિભક્તસ્ય=દક્ષિણાર્ધે યો વૈતાઢ્ય. = તન્નામકો ગિરિઃ = પર્વતવિશેષસ્તેન વિભક્તસ્ય=કૃતવિભાગસ્ય 'લવણજલપરિગયસ્મ' લવણજલપરિગતસ્ય=લવણ-જલેન=લવણસમુદ્રેન પરિગતસ્ય=વેષ્ટિતસ્ય 'હ્રિવિહકાલગુણકમજુત્તસસ' પઢવિધ-કાલગુણકમયુક્તસ્ય=પઢવિધસ્ય કાલસ્ય=વર્ષા શરદ્દેમન્તશિશિરવસન્તગ્રીષ્માભિધ-પઢ્કઠુતુવમયસ્ય ચે ગુગા'=કાર્યાણિ નવપલ્લવકુસુમવિવિગ્રફલમમુદયાદિ રૂપાણિ, તેપા યઃ ક્રમઃ=યથોચિતરૂપેણ ભવન તેન યુક્તસ્ય=સમુપેતસ્ય એવવિગ્રસ્ય 'અદ્ભર-હસ્સ' અર્ધભરતસ્ય-દક્ષિણભરતસ્ય 'સામિયા' સ્વામિકાઃ=અધિપતયઃ 'ધીરા', ધીરાઃ=શત્રુભિરપરિભવનીયાઃ 'કિત્તિ પુરિસા' કીર્તિપુરુપાઃકીર્તિપ્રધાનાઃપુરુપાઃ 'ઓહવલા' ઓવવલાઃ=ઓધેન=પ્રવાહેણાચ્છિન્ન વલ યેપા તે તથા અવિચ્છિન્ન વલા ઇત્યર્થઃ, 'અઢવલા' અતિવલા.=અન્યવલાન્યતિક્રાન્તાઃ । 'અનિહયા' અનિહતાઃ = શત્રુશસ્ત્રાઘાતવર્જિતા એવભૂતા'ચલદેવગાસુદેવા અપિ કામભોગવૃત્તિ રહિતા એવ મરણધર્મમુપનમન્તીતિ સમ્પન્નઃ ॥ ૬ ॥ સૂ૦ ॥

ચઢુગિરિવિભક્તસસ) દક્ષિણાર્ધ મેં વૈતાઢ્ય પર્વતસે વિભક્ત હુણ (લવણ-જલપરિગયસ્સ) લવણ સમુદ્ર સે વેષ્ટિત હુણ તથા (હ્રિવિહકાલગુણકમ-જુત્તસસ) વર્ષા, શરદ્, હેમન્ત, શિશિર, વસન્ત, ગ્રીષ્મ, ઇન છહ ઋતુ-ઓરૂપ સમય કે નવીન પત્તોં, કુસુમોં, એવ ફલોં કે આગમનરૂપ કાર્યોં કે ક્રમ સે યુક્ત ઝને હુણ એસે (અદ્ભરહસ્સ) દક્ષિણ ભરતકે ચે (સામિયા) સ્વામી હોતે હે (ધીરા) ધીર હોતે હે અર્થાત્-શત્રુઓ દ્વારા અપરિભવનીય હોતે હે । તથા (કિત્તિપુરિસા) કીર્તિ હી હે પ્રધાન જિન્હોંકી એસે ચે કીર્તિ પુરુપ હોતે હે । (ઓહવલા) ઇનકા વલ કમી નહ નહીં હોતા હે અતઃ ચે (અઢવલા) અવિચ્છિન્ન વલવાલે હોતે હે,

“દાહિણઢુવેયઢુગિરિવિભક્તસસ” દક્ષિણાર્ધમા વૈતાઢ્ય પર્વતથી વિભક્ત થયેલ
“લવણજલપરિગયસ” લવણસમુદ્રથી ઘેરાયેલા તથા “હ્રિવિહકાલગુણકમજુત્તસસ”
“વર્ષા, શરદ્, હેમન્ત શિશિર, વસન્ત અને ગ્રીષ્મ એ છએ ઋતુઓને અનુરૂપ
નવીન પાન, ફૂલો, અને ફળોના આગમનરૂપ કાર્યોથી યુક્ત ઝનેલ એવા
“અદ્ભરહસ્સ” દક્ષિણ ભારતના તેઓ ‘સામિયા’ સ્વામી હોય છે “ધીરા”
તેઓ ધીર હોય છે એટલે કે શત્રુઓ દ્વારા અપરાધિત હોય છે તથા “કિ-
ત્તિપુરિસા” કીર્તિ જ પ્રધાન છે જેમની એવા કીર્તિપુરુષ હોય છે-કીર્તિશાળી
હોય છે “ઓહવલા” તેમનું બળ કદી નાશ પામતું નથી તેથી તેઓ “અ-
ઢવલા” અવિચ્છિન્ન બળવાળા હોય છે, તથા “અનિહયા” શત્રુઓના શસ્ત્રોના

ગસેલકાગણઆરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્સ ' તત્ર ગ્રામાઽઽગરનગર
સેટકર્વટમહવટ્ટોણમુલ્લપત્તનાઽઽઅમમગાઃ = તત્ર ગ્રામઃ = ગ્રસતે બુદ્ધ્યાદિ
ગુણાનિતિ ગ્રામઃપૃથોદરાદિત્યાત્સત્કારસ્ય મકારઃ । અન્યે ગ્રામપર્વન્તા પૂર્વસ્મિન્
ચક્રચર્ચિમૂત્રે વ્યારુયાતપૂર્ણઃ, તેષાં યાનિ મહત્ત્યાણિ તૈઃ, ' ધિમિય ' સ્તિમિતાઃ=
સ્વચક્રપરચક્રમપરહિતાઃ ' નિવુય ' નિર્વૃતાઃ=ગુણાન્તરિત્તાઃ તથા ' પમુડય ' પ્રમુદિ-
તાશ્ચ=અતિપ્રમદના યે જનાસ્તૈઃ, તથા ' વિવિહસસ્સનિપ્પજ્જમાણમેહણી ' વિવિધસસ્ય
નિપ્પદમાનમેદિની વિવિરાનિ મસ્યાનિ=ચાન્યાનિ,તૈ.નિપ્પદમાના સમ્પદમાના યા
' મેહણી ' મેદિની=પૃથિવી તથા તથા ' સર ' સરાસિ=જલાગચવિશેષાઃ, ' સરિય'
સરિતઃ=નદ્યઃ ' તલાગ ' તટાકાઃ=મહાજલાશયા ' સૈલ ' શૈલાઃ=પર્વતાઃ'કાણ્ણ'
કાનનાનિ=સામાન્યવૃક્ષોપેતાનિ નગરાસઘ્નચર્ચિચનાનિ, આરામા =ઋતામણ્ડપાધુપે
તાનિ,રાજામન્તઃ પુરોધાનાનિ, ઉદ્યાનાનિ=વિવિધપાદપદ્મકુસુમમુલ્લસિતસર્વજનવિહારો

સવાહસહસ્સધિમિયનિવુયપ્પમુડયજણ-વિવિહસસ્સનિપ્પજ્જમાણમેહણિ
સર સરિયતલાગસેલકાગણ આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્સ) ગ્રામ
આકર, નગર, સેટ, કર્વટ, મહવ, ટ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, સવાહ ઇત
સવકી હજારોંકી મહાસે સ્વચક્ર એવ પરચક્રકે ભયસે રહિત એસે તથા
જિનકા ચિત્ત સદા સુશાન્ત બના હુઆ રહતા હૈ એસે અતિ પ્રમુદિત
મનુષ્યો સે તથા વિવિધ પ્રકારકી ધાન્ય રાશિ જિસમેં ઉત્પન્ન હોતી હૈ
એસી મેદનીસે, તથા મનોહર જલાગચ વિશેષોંસે, નદિયોસે, તલાવોં સે,
પર્વતો સે, સામાન્યવૃક્ષોંસે યુક્ત, એવ નગરકે પાસ રહે હુએ એસે કાનનોં(વનોં)
સે તથા લતામણ્ડપ આદિ સે યુક્ત એસે રાજાઓં કે અન્તઃપુરકે ઉદ્યાનોં
સે, તથા અનેક પ્રકાર કે વૃક્ષોંસે એવ કુસુમોં સે સમુલ્લસિત એવ સર્વ
જનોં કે વિહાર યોગ્ય એસે ઉપવનોં સે પરિમહિત હુએ, તથા (દાણિદુવે

દોણમુહપટ્ટણાસમસવાહ-સહસ્સ-ધિમિય-નિવુયપ્પમુડયજણવિવિહસસ્સ નિપ્પજ્જમાણ
મેહણિસર—સરિય—તલાગ—સેલ—કાણ્ણ-આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્સ ”
ગામ, આકર નગર, ખેટ, કર્વટ, મહવ, ટ્રોણમુખ, પત્તન, આશ્રમ, સવાહ,
વગેરે હજારોની સંખ્યામાં તેઓની સત્તા નીચે હોય છે સ્વચક્ર અને પરચક્રના
ભયથી રહિત તથા સદા શાન્ત અને અતિ આનંદિત ચિત્તવાળા મનુષ્યોથી, તથા
વિવિધ પ્રકારના ધાન્ય રાશિ (ઢગલા) જેમાં ઉત્પન્ન થાય છે એવી ભૂમિથી, તથા
મનોહર જાગરાયોથી, નદીઓથી, તળાવોથી, પર્વતોથી સામાન્ય વૃક્ષોથી
નગરની પાસે આવેલા કાનનોથી, તથા લતામણ્ડપ આદિથી યુક્ત એવા રાજાઓના
અન્તરપુરના ઉદ્યાનોથી, તથા અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી, અને વિકસિત કુસુમોથી
શોભતા અને સર્વે લોકોને ફરવાને યોગ્ય એવા ઉપવનોથી વીરળાયેલા, તથા

પરનાનિ તાનિ ચ 'મગાભિરામ' મનોઽભિરામાણિ=મનોદગાણિ તૈશ્વ 'પરિમણ્ડિયસ્સ' પરિમણ્ડિતસ્ય=શોભિતસ્ય 'દાહિણઙ્ગુવેયઙ્ગુગિરિવિભક્તસ્સ' દક્ષિણાર્ધવૈતાઢ્ય ગિરિવિભક્તસ્ય=દક્ષિણાર્ધે યો વૈતાઢ્યઃ=તન્નામકો ગિરિઃ=પર્વતવિશેષસ્તેન વિભક્તસ્ય=કૃતવિભાગસ્ય 'લવણજલપરિગયસ્સ' લવણજલપરિગતસ્ય=લવણ-જલેન=લવણસમુદ્રેન પરિગતસ્ય=વેષ્ટિતસ્ય 'છવ્વિહકાલગુણકમજુત્તસ્સ' પઢવિધ-કાલગુણકમયુક્તસ્ય=પઢવિધસ્ય કાલસ્ય=વર્ષા શરદ્દેમન્નગિશિરવસન્તગ્રીષ્માભિય-પઢવઃપ્રવૃત્તિસ્ય ચે ગુણા=કાર્યાણિ નાપહરકુસુમવિવિધફલસમુદયાદિ રૂપાણિ, તેષા યઃ ક્રમઃ=યથોચિતરૂપેણ ભવન તેન યુક્તસ્ય=સમુપેતસ્ય એવવિયસ્ય 'અદ્ધમર-હસ્સ' અર્ધમરતસ્ય-દક્ષિણમરતસ્ય 'સામિયા' સ્વામિકાઃ=અધિપતય 'ધીરા, ધીરાઃ=શત્રુભિરપરિભવનીયાઃ 'કિત્તિ પુરિસા' કીર્તિપુરુષાઃકીર્તિપ્રધાનાઃપુરુષાઃ 'ઓહવલા' ઓવવલાઃ=ઓવેન=પ્રવાહેનાન્નિઙ્ગન્ન વલ યેષા તે તથા અવિચ્છિન્ન વલા इत्यर्थः, 'અહવલા' અતિવલાઃ=અન્યવલાન્યતિક્રાન્તાઃ । 'અનિહયા' અનિહતાઃ=શત્રુશસ્ત્રાગ્રાતવર્જિતા એવભૂતા'ચલદેવગાસુદેવા અપિ કામભોગવૃત્તિ રહિતા એવ મરણધર્મમુપનમન્તીતિ સમ્પન્નઃ ॥ ૬ ॥ સૂ૦ ॥

ચઙ્ગુગિરિવિભક્તસ્સ) દક્ષિણાર્ધ મેં વૈતાઢ્ય પર્વતસે વિભક્ત હુણ (લવણ-જલપરિગયસ્સ) લવણ સમુદ્ર સે વેષ્ટિત હુણ તથા (છવ્વિહકાલગુણકમ-જુત્તસ્સ) વર્ષા, શરદ્ , હેમન્ત, શિશિર, વસન્ત, ગ્રીષ્મ, ઇન છહ ઋતુ-ઓરૂપ સમય કે નવીન પત્તોં, કુસુમોં, એવ ફલોં કે આગમનરૂપ કાર્યોં કે ક્રમ સે યુક્ત યને હુણ એસે (અદ્ધમરહસ્સ) દક્ષિણ ભરતકે યે (સામિયા) સ્વામી હોતે હૈ (ધીરા) ધીર હોતે હૈં અર્થાત્-શત્રુઓ દ્વારા અપરિભવનીય હોતે હૈ । તથા (કિત્તિપુરિસા) કીર્તિ હી હૈ પ્રધાન જિન્હોંકી એસે યે કીર્તિ પુરુષ હોતે હૈ । (ઓહવલા) ઇનકા વલ કમી નહ નહીં હોતા હૈ અનઃ યે (અહવલા) અવિચ્છિન્ન વલવાલે હોતે હૈં,

“દાહિણઙ્ગુવેયઙ્ગુગિરિવિભક્તસ્સ” દક્ષિણાર્ધમા વૈતાઢ્ય પર્વતથી વિભક્ત થયેલ
“લવણજલપરિગયસ” લવણસમુદ્રથી ઘેરાયેલા તથા “છવ્વિહકાલગુણકમજુત્તસ-
”વર્ષા, શરદ્, હેમન્ત ગિશિર, વસન્ત અને ગ્રીષ્મ એ છએ ઋતુઓને અનુરૂપ
નવીન પાન, ફૂલો, અને ફળોના આગમનરૂપ કાર્યોથી યુક્ત યનેલ એવા
“અદ્ધમરહસ્સ” દક્ષિણ ભારતના તેઓ ‘સામિયા’ સ્વામી હોય છે ‘ધીરા’
તેઓ ધીર હોય છે એમલે કે શત્રુઓ દ્વારા અપરાધિત હોય છે તથા “કિ-
ત્તિપુરિસા” કીર્તિ જે પ્રધાન છે એમની એવા કીર્તિપુરુષ હોય છે-કીર્તિશાળી
હોય છે “ઓહવલા” તેમનું બળ કદી નાશ પામતું નથી તેથી તેઓ “અ-
હવલા” અવિચ્છિન્ન બળવાળા હોય છે, તથા “અનિહયા” શત્રુઓના શસ્ત્રોના

ગસેલકાગણઆરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમલિયસ્સ ' તત્ર ગ્રામાઽઽગરનગર
સેટકર્વટમઢવદ્રોણમુલ્લપત્તનાઽઽઅમસાદાઃ = તત્ર ગ્રામઃ = ગ્રસતે બુદ્ધ્યાદિ
ગુણાનિતિ ગ્રામઃપૃથોદરાદિત્યાત્સકારમ્ય મકારઃ । અન્યે ગ્રામપર્યન્તા પૂર્વસ્મિન્
ચક્રચર્ત્તિમૂત્રે વ્યાખ્યાતપૂર્ણા, તેષાં યાનિ મહત્ત્વાણિ તૈઃ, ' યિમિય ' સ્તિમિતાઃ=
સ્વચક્રપરચક્રમપરહિતાઃ ' નિવુય ' નિર્વૃતાઃ=પ્રુગાન્તરિત્તાઃ તથા ' પમુઃય ' પ્રમુદિ
તાથ્વ=અતિપ્રમદ્વાયે જનામ્તૈઃ, તથા ' વિવિહમસ્મનિપ્પજ્જમાણમેહણી ' વિવિધમસ્ય
નિપ્પધમાનમેદિની વિરિયાનિ મસ્યાનિ=ધાન્યાનિ,તૈઃનિપ્પયમાના સમ્પધમાના યા
' મેહણી ' મેદિની=પૃથિવી તયા તયા ' સર ' સરાસિ=જલાશયવિશેષાઃ, ' સરિય'
સરિતઃ=નદ્યઃ ' તલાગ ' તડાકાઃ=મહાજલાશયા ' ' સેલ ' ઘેલાઃ=પર્વતાઃ'કાણ્ણ'
કાનનાનિ=સામાન્યવૃક્ષોપેતાનિ નગરાસમ્પચર્ત્તિયાનિ, આરામાઃ=કનામણ્ડપાણુપે
તાનિ,રાજામન્તઃ પુરોધાનાનિ, ઉદ્યાનાનિ=વિવિધપાદપદ્મકુમુદમમુહસિતસર્વજનવિહારો

સવાહસહસ્રસધિમિયનિવુયપ્પમુહયજ્ઞણ-વિવિહસસ્મનિપ્પજ્જમાણમેહણિ
સર સરિયતલાગસેલકાગણ આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમલિયસ્સ) ગ્રામ
આકર, નગર, સેટ, કર્વટ, મઢવ, દ્રોણમુલ્લ, પત્તન, આશ્રમ, સવાહ અને
સયકી હજારોંકી સંખ્યાસે સ્વચક્ર એવ પરચક્રકે ભયસે રહિત એસે તથા
જિનકા ચિત્ત સદા સુશાન્ત બના હઆ રહતા હૈ એસે અતિ પ્રમુદિત
મનુષ્યો સે તયા વિવિધ પ્રકારકી વાન્ય રાશિ જિસમેં ઉત્પન્ન હોતી હૈ
એસી મેદનીસે, તયા મનોહર જલાશય વિશેષોંસે, નદિયોસે, તલાવોં સે,
પર્વતોં સે, સામાન્યવૃક્ષોંસે યુક્ત, એવ નગરકે પાસ રહે હુએ એસે કાનનોં(વનોં)
સે તયા લતામણ્ડપ આદિ સે યુક્ત એસે રાજાઓં કે અન્તપુરકે ઉદ્યાનોં
સે, તથા અનેક પ્રકાર કે વૃક્ષોંસે એવ કુસુમોં સે સમુહસિત એવ સર્વ
જનોં કે વિહાર યોગ્ય એસે ઉપવનોં સે પરિમલિત હુએ, તથા (દાણિદૂવે

દોણમુહપટ્ટણાસમસ વાહ-સહસ્સ-ધિમિય-નિવુયપ્પમુહયજ્ઞણવિવિહસસ્સ નિપ્પજ્જમાણ
મેહણિસર—સરિય—તલાગ—સેલ—કાણ્ણ-આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમલિયસ્સ "

ગામ, આકર નગર, સેટ, કર્વટ, મઢવ, દ્રોણમુલ્લ, પત્તન, આશ્રમ, સવાહ,
વગેરે હજારોંની સંખ્યામા તેઓંની સત્તા નીચે હોય છે અથ્થક અને પરચક્રના
ભયથી રહિત તથા મહા શાન્ત અને અતિ આનંદિત ચિત્તવાળા મનુષ્યોથી, તથા
વિવિધ પ્રકારના ધાન્ય રાશિ (ઢગલા) જેમા ઉત્પન્ન થાય છે એવી ભૂમિથી, તથા
મનોહર જલાશયોથી, નદીઓથી, તળાવોથી, પર્વતોથી સામાન્ય વૃક્ષોથી
નગરની પાસે આવેલા કાનનોથી, તથા લતામણ્ડપ આદિથી યુક્ત એવા રાજાઓના
અન્ત પુરના ઉદ્યાનોથી, તથા અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી, અને વિકસિત કુસુમોથી
શોભતા અને સર્વ લોકોને ક્ષરવાને યોગ્ય એવા ઉપવનોથી વીરળાયેલા, તથા

‘રિઊસહસ્સમાણમદ્દના, રિપુસહસ્સમાનમથનાઃ=રિપુસહસ્સાણા માન=ગર્વ મન્નન્તિ ચે તે તથા શત્રુર્દર્પિત્રસકા ‘સાણુક્કોસા’ સાણુક્કોશા=આશ્રિતરક્ષકાઃ ‘અમચ્છરી’ અમત્સરિણઃ=પરશુભસ્યાઽદ્વેષિણઃ—પરસુખેન સુચિન ઇત્યર્થઃ, ‘અચવલા’ અચપલાઃ—મનોવાકાયાપલતારહિતા, અચણ્ડાઃ=અકારણક્રોધવર્જિતાઃ ‘મિયમજુલપ્પલાવા’ મિતમઠ્ઠજુલપ્પલાપાઃ=મિતઃ=પરિમિતઃ સાર્થકઃ મજુજ્ઞ=મનોહરઃ પ્રલાપ=આલાપો ચેવા તે તથા પરિમિતમત્યમપુરમાપિણઃ ‘હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા’ હસિતગમ્भीરમધુરમણિતાઃ=હસિતમ્=હાસ્યયુક્ત ગમ્भीર=સારગર્ભ મધુર ચ મણિત=માપણ ચેવા તે તથા ‘અબ્બુવગયવચ્છલા’ અભ્યુપગતવત્સલાઃ=અભ્યુપગતેષુ-સમીપમાગતેષુ વત્સલા સ્નેહયુક્તા, ‘સરણા’ શરણ્યાઃ=શરણે સાધય શરણાગત-રક્ષકાઃ ‘લક્ષણાવજ્ઞગુણોવવેયા’ લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપેતાઃ=તત્ર લક્ષણાનિ=

અપરાજિત શત્રુઓ કે માન કો ગલિત કર દેતે હૈં, અર્થાત્ પ્રવલ સે भी પ્રવલ વિરોધિયોં કે વે વિનાશક હોતે હૈં, તથા (રિઊસહસ્સમાણમદ્દના) હજારોં શત્રુઓ કે માન કો જો દેખતે ૨ ક્ષણભર મે નષ્ટ કર ઢાલતે હૈં। એવ (સાણુક્કોસા) અપને આશ્રિત વ્યક્તિયોં કી સદા રક્ષણ કરતે રહતે હૈં (અમચ્છરી) દૂસરોં કે શુભ સે જિનકે ચિત્ત મેં થોડા સા भी દ્રેષ નહોં જગતા હૈં, અર્થાત્ પરકે સુખસે સુખી હોતે હૈં (અચવલા) મન, વચન એવ કાયકી ચચલતાસે જો રહિત હોતે હૈં (અચણ્ડા) વિના કારણકે જિન્હેં ક્રોધ નહીં આતા હૈં (મિયમજુલપ્પલાવા) મિત-સાર્થક તથા મનોહર જિનકા આલાપ હોતા હૈં, અર્થાત્-જો પરિમિત સત્ય મધુરમાપી હોતે હૈં। (હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા) જો હાસ્યયુક્ત, સારગર્ભિત ઔર મધુર માપણ કરતે હૈં (અબ્બુવગયવચ્છલા) જો અપને નિકટ આયે હુણ પ્રાણિયોંકે સાથ

શત્રુઓનુ માનમર્દન કરી નાખે છે, એટલે કે પ્રબળમા પ્રબળ શત્રુનો પણ તેઓ નાશ કરનાર હોય છે, તથા “રિઊસહસ્સમાણમદ્દના” હજારો શત્રુઓને જે ભેત ભેતામા-ક્ષણવારમા મહાત ડરે છે, અને એ ગીતે તેમનુ માનમર્દન કરે છે, “સાણુક્કોસા” પોતાના આશ્રિતોનુ સદા રક્ષણ કરે છે, “અમચ્છરી” અન્યને લાલ થતો ભેદને જેમના ચિત્તમા સહેજ પણ દ્રેષ થતો નથી, એટલે કે તેઓ પરના સુખે સુખી થનાર હોય છે, “અચવલા” મન, વચન કાયાની ચચળતાથી જે રહિત હોય છે, “અચણ્ડા” વિના કાણુ જેમને ક્રોધ થતો નથી, “મિયમજુલપ્પલાવા” મિત-સાર્થક તથા મનોહર જેમના વચન હોય છે, અથવા જે પરિમિત સત્ય મધુર વાણી વાળા હોય છે, “હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા” જે હાસ્યયુક્ત સારગર્ભિત અને મધુર ભાષણ કરે છે “અબ્બુવગયવચ્છલા” જે પોતાની પાસે આવતા પ્રાણીઓ તરફ સ્નેહાળ હોય છે, “સરણા” શરણે આવેલની

પુનસ્તે કીદશાઃ ? इत्याह— ‘ अपराजिय ’ इत्यादि—

मूल्या—अपराजिय सत्तुमदणा रिउसहस्समाणमदणा साणु-
कोसा अमच्छरी अचवला अचंडामियमंजुलापलावा हसिय
गंभीरमहुरभाणिया अब्भुवगयवच्छला तरणणा लम्बवण
वजणगुणोववेया साणुम्माणपमाणपडिपुण्ण सुजायसव्वंग
सुंदरगा सत्तिसोमगारा कंता पियदसणा अमरित्तणा पयंड
दडप्पयारगभीरदरित्तिणिज्जा तालज्झया उट्ठिवज्झगरुल
केउवलवगगज्जत दरिय-दप्पियमुट्ठियचाणूरचूरगारिट्ठवसभ
घाइणो केसरिमुहविप्फाडगा दरिय नागदप्पमहणाजमल-
ज्जुणभंजगा महासउणिपूयणरिपू कसमउडमोडगा जरासध-
माणमहणा तेहिय अविरलसमसंहियचदमडलसमप्पभेहि-
सूरमरीइकवयं विणिमुयंतेहि सप्पडिदडेहि आयवत्तेहि
धरिज्जंतेहि विरायंता ॥ सू० ७ ॥

टीका:—‘ अपराजियसत्तुमदणा अपराजितशत्रुमर्दना = अपराजितान्-
अन्यैरनिर्जितान् शत्रून् मर्दयन्ति ये ते तथा प्रबलशत्रुविनाशका इत्यर्थः, अतएव

दूसरों का बल इनके समक्ष टिक नहीं सकता है, इसलिये ये अतिबल
वाले होते हैं, तथा (अनिहया) शत्रुओं के शस्त्रके आघात से ये वर्जित
रहते हैं, ऐसे ये बलदेव और वासुदेव भी कामभोगों की तृप्तिसे विहीन
बनकर ही मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू० ६ ॥

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘ अपराजिय ’ इत्यादि ।

टीकार્થ—(अपराजिय सत्तुમદણા) જો બલભદ્ર ઓર નારાયણ

આઘાતથી તેઓ રહિત હોય છે એવા એ બળદેવ અને વાસુદેવ પણ કામભો-
ગોની તૃપ્તિથી રહિત બનીને જ-અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ. ૬ ॥
તેઓ કેવા હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરતા કહે છે— “ અપરાજિય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ અપરાજિય સત્તુમદણા ” તે બળભદ્ર અને નારાયણ અપરાજિત

પ્રવણ્ડ = દારુણોદણ્ડપ્રચારઃ = દુષ્ટદમનાઽઽતાનિશેષસ્ત્ર ગમ્भीરદર્શનીયા
 = ગમ્भीર = દુષ્ટજનચિત્તક્ષોભોત્પાદક દર્શનીય = સ્વરૂપ યેષા તે તથા
 સત્પુરુષાણા કૃતે ચન્દ્રમત્ પ્રિયદર્શના, દુર્જનાનાં કૃતેષુ કાલસદૃશાં ઇતિ
 ભાવ 'તાલજ્ઞયા' તાલધ્વજાઃ=તાલઃ=તાલટુલાક્ષિતો ધ્વજો યેષા તે તથા તાલ-
 ધ્વજા વલદેવાઃ, 'વાઝાદ્ગો ગુસલીહલો' ઇત્યમર, તથા 'ઉચ્ચિજ્ઞગરુડકેઝ
 ઉચ્ચિદ્ગરુડકેતવઃ-ઉચ્ચિદ્ઃ=અત્યુચ્ચિત્તૃતો ગરુડકેતુઃ=ગરુડાક્ષિતો ધ્વજો યેષા તે
 તથા વાસુદેવાઃ 'વઝગગજ્જતદરિયદપ્પિયમુદ્વિચાણૂરચૂરગા' વલદ્ ગર્જદ્
 દ્વસદર્પિતમાષ્ટિકાચાણૂરચૂરકાઃ = તત્ર વલવત્ — મહાશક્તિમમ્પન્ન ગર્જન્ત=
 'કોઽન્યોઽસ્માદ્ગો મલ્લઃ, ઇતિ મદાવોપ કુવેન્તઃ, તથા દૃપ્તદર્પિત=દૃપ્તેષ્વપિ
 દર્પિત=અતિગર્વયુક્ત મૌષ્ટિક ચાણૂર ચ=તત્તન્નામક મલ્લ ચુરયન્તિ યે તે તથા

કર સકતે હૈં—(પયડદડપ્પયારગમ્भीરદરિસણિજ્ઞા) દારુણ દડ કે
 પ્રચાર મેં જિનકી આકૃતિ વહુતભારી ગમ્भीર બન જાતી હૈ, અર્થાત્
 દુષ્ટો કો દમન કરને રૂપ આજ્ઞા મેં જિનકી આકૃતિ દુષ્ટજનોં કે લિયે
 ચિત્તમેં કાલકી તરહ ક્ષોભોત્પાદક બનતી હૈ ઓર સજ્જનોંકે લિયે ચન્દ્ર
 કી તરહ પ્રિયદર્શન ચાલી હોતી હૈ । (તાલજ્ઞયા ઉચ્ચિજ્ઞગરુડકેઝવ-
 ગલગજ્જતદરિયદપ્પિઅમુદ્વિચાણૂરચૂરગા) તથા इनमे बलदेव की ध्वजा
 तालवृक्ष के चिह्न से अंकित होती है और वासुदेव की ध्वजा गरुड के
 चिह्न से अंकित रहती है और बहुत ऊँची होती है । बलदेव ने कृष्ण
 को मारने के लिये कस द्वारा प्रवर्तित किये हुए मलयुद्ध में 'कौन हमारे
 जैसा पहलवान है' इस अभीमान से जो मदोन्मत्त बनकर घोषणा कर
 रहे—एव अत्यन्त मद से उन्मत्त बने हुए थे—ऐसे मौष्टिक नामके मल को

નથી “ પયડ-દડપ્પયાર-ગમ્भीર-દરિસણિજ્ઞા ” દા૩૭ ૬૬ પ્રદાન ડરતી વખતે
 જેમનો દેખાવ ધણો ગભીર થઈ જાય છે એટલે કે દુષ્ટોને શિક્ષા કરવાની
 આજ્ઞા આપતી વખતે જેમનો દેખાવ હુદ્દ લોકોને માટે યમદેવના જેવો ક્ષોભ
 ઉત્પાદક બની જાય છે અને સજ્જનો માટે તેમની મુખાવૃત્તિ ચન્દ્રની જેમ
 પ્રિયદર્શનવાળી હોય છે “ તાલજ્ઞયા ઉચ્ચિજ્ઞ ગરુડ કેઝવલગગજ્જતદરિયદપ્પિય
 મુદ્વિચાણૂરચૂરગા ’ તેઓમાના બળદેવની ધ્વજા તાલવૃક્ષની નિરાની વાળી હોય
 છે અને વાસુદેવની ધ્વજા ગરુડના નિરાનવાળી હોય છે અને ધણી ઉંચી,
 હોય છે કૃષ્ણને મારવા માટે કસ દ્વારા કરવાયેલ મલયુદ્ધમા બળદેવે “મારા
 જેવો પહેલવાન કોણ છે ” એવા અભિમાનથી જે મદોન્મત્ત બનીને ઘોષણા
 ફરી રહ્યો હતો એવા મૌષ્ટિક નામના મલને મારી નાખ્યો અને વાસુદેવ

સ્તરેલાદીનિ સામુદ્રિકશાસ્ત્રોક્તાનિ, તથા વ્યજ્જનાનિ ચ=મપતિલકાદીનિ ગુણાઃ= શૌર્યાદયસ્તૈરુપેતાઃ યુક્તાઃ, ' માણુમ્માણપમાણપહિપુષ્પા મુનાયમચ્ચંગમુદરગા ' માનોન્માનપ્રમાણપ્રતિપૂર્ણસુજાતમર્ગાદ્યુન્દરાદ્વાઃ = માનોન્માનઃ પ્રમાણૈઃ = તત્ર માન-શરીરભાર, ઉન્માન=શરીરોન્મુલ્ય, પ્રમાણ=સમુચિતશરીરાવયવરત્ત્વ, તૈઃ પ્રતિપૂર્ણાનિ=સુજાતાનિ=સુપુષ્પા સામુપ્પન્નાનિ સર્વાણ્યદ્વાનિ=મયયત્તા પમ્મિન્ તદ્વિધ મુન્દરમદ્ગ=શરીર યેષાં તે તથા સકલસુલક્ષણચક્ષિતમુપ્પન્નપમાણમુન્દરશરીરા इत्यर्थः ' સસિમોમાગારા ' શશિસૌમ્યાકારા-ચન્દ્ર-વત્સૌમ્યાકૃતિસમ્પન્નાઃ, ' કતા ' ' કાન્તા = રુમનીયાઃ ' પિયદમણા ' પ્રિયદર્શના = વનોજહવા ' અમરિસણા ' અમરપણ = અત્યાચારાઽસહિષ્ણાઃ ' પયહટ્ટહપ્પયારગમીરદરિસણિજ્ઞા '

સ્નેહશીલ હોતે હૈં (સરણા) શરણાગતની રક્ષા કરતે હૈં (લક્ષણવજગુણોવવેયા) જો સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત રેખા આદિ શુભચિન્હોસે, તથા મપા તિલક આદિ શુભ વ્યજનોસે ઇવ શૌર્યાદિક સદ્ગુણોસે યુક્ત હોતે હૈં માણુમ્માણપમાણપહિપુષ્પા સુજાય મન્વગમુદરગા) શરીર ભારરૂપ માનસે, શરીરની જંચાઈ રૂપ ઉન્માનસે તથા સમુચિત શરીરાવયવરૂપ પ્રમાણસે, પ્રતિપૂર્ણ, એવ સુન્દર રૂપવાલે સમસ્ત અવયવ જિસમે હૈં એસે સુહાવને શરીર સે જો યુક્ત હોતે હૈં અર્થાત્ ઉનકા શરીર સમસ્ત સુલક્ષણોં સે યુક્ત, સુપુષ્ટ ઓર પ્રમાણોપેત હોને સે પૂર્ણ સુન્દર હોતા હૈ, (સસિ-સોમાગારા) જિનકો આકૃતિ ચન્દ્રમા કે જૈસી સૌમ્ય હોતી હૈ, (કતા) જો સબકે લિયે વડે પ્રિય લગતે હૈં (પિયદસણા) ઉનકા દર્શન મન કો બહુત અધિક આહાદ જનક હોતા હૈ (અમરિસણા) જો અત્યાચાર કો સહના બહુત હી બુરા માનતે હૈ-અર્થાત્-જો અત્યાચાર કો સહન નહીં

જે રક્ષા કરનાર હોય છે, “ લક્ષણવજગુણોવવેયા ” જેવો સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત રેખા આદિ શુભ ચિન્હોથી તથા મપા તિલક આદિ શુભ વ્યજનોથી અને શૌર્યાદિક સદ્ગુણોથી યુક્ત હોય છે, “ માણુમ્માણપમાણ પહિપુષ્પાસુજાયસન્વગ-મુદરગા ” શરીરભાર રૂપ માનથી, શરીરની ઉચાઈરૂપ ઉન્માનથી, તથા સપ્રમાણ શરીરાવયવરૂપ પ્રમાણથી, પ્રતિપૂર્ણ અને સુદર શરીરથી જે યુક્ત છે, એટલે કે તેમનું શરીર સમસ્ત સુલક્ષણો વાળું, સુપુષ્ટ અને સપ્રમાણ હોવાથી સંપૂર્ણ રીતે સુદર હોય છે, “ સસિસોમાગારા ” જેમની આકૃતિ ચન્દ્રમાના જેવી સૌમ્ય હોય છે, “ કતા ” જે સૌને ઘણા જ પ્રિય લાગે છે “ પિયદસણા ” જેમના દર્શન મનને અત્યંત આનંદદાયક હોય છે “ અમરિસણા ” જે અત્યાચારોને સહન કરવો તે બહુજ ખરાબ ગણે છે એટલે કે અત્યાચારને સહન ની જગત્તા

प्रचण्ड = दारुणोदण्डप्रचारः = दुष्टदमनाऽऽनामिशेषस्तत्र गम्भीरदर्शनीया
 = गम्भीर = दुष्टजनचित्तक्षोभोत्पादक दर्शनीय = स्वरूप येषां ते तथा
 सत्पुरुषाणां कृते चन्द्रात् प्रियदर्शना, दुर्जनानां कृतेषु कालसदृशा इति
 भावः 'तालज्जया' तादृग्ध्वजाः=तादृग्ध्वजाङ्कितो ध्वजो येषां ते तथा ताल-
 ध्वजाः चलदेवाः, 'तादृग्वो गुसलीद्वली' इत्यमरः, तथा 'उद्विज्जगरुलकेज'
 उद्विज्जगरुलकेतवः-उद्विज्जः=अत्युच्चिर्गतो गरुलकेतुः=गण्डाङ्कितो ध्वजो येषां ते
 तथा वासुदेवाः 'वज्रगगजजतदरियदप्पियमुट्टियचाणूरचूरगा' चलद् गर्जद्
 दृष्टदर्पितमाष्टिकचाणूरचूरकाः = तत्र चलत् — महागतिमम्पन्न गर्जन्तः=
 'कोऽन्योऽस्माद्वगो मल्लः', इति महाप्रोप कुर्वन्तः, तथा दृष्टदर्पित=दृष्टेऽपि
 दर्पित=अतिगर्भयुक्त मौष्टिक चाणूर च=तत्तन्नामक मल्ल चुरयन्ति ये ते तथा

कर सकते हैं— (पयडदडप्पयारगभीरदरिसणिज्जा) दारुण दड के
 प्रचार में जिनकी आकृति बहुत भारी गंभीर बन जाती है, अर्थात्
 दुष्टों को दमन करने रूप आज्ञा में जिनकी आकृति दुष्टजनों के लिये
 चित्तमें कालकी तरह क्षोभोत्पादक बनती है और सज्जनोके लिये चन्द्र
 की तरह प्रियदर्शन वाली होती है । (तालज्जया उद्विज्जगरुलकेज
 गलगज्जतदरियदप्पियमुट्टिचाणूरचूरगा) तथा इनमें चलदेव की ध्वजा
 तालवृक्ष के चिह्न से अंकित होती है और वासुदेव की ध्वजा गरुड के
 चिह्न से अंकित रहती है और बहुत ऊँची होती है । चलदेव ने कृष्ण
 को मारने के लिये कस द्वारा प्रवर्तित किये हुए मलयुद्ध में 'कौन हमारे
 जैसा पहलवान है' इस अभीमान से जो मदोन्मत्त बनकर घोषणा कर
 रहे—एव अत्यन्त मद से उन्मत्त बने हुए थे—ऐसे मौष्टिक नामके मल्ल को

नथी “ पयड-दडप्पयार-गभीर-दरिसणिज्जा ” दाक्षिण ६३ प्रधान उरती वण्णते
 जेमनो देण्णव धण्णो गल्लार थं जय छे अट्ठे दे दुष्टोने सिद्धा उप्पानी
 आज्ञा आपती वण्णते जेमनो देण्णव दुष्ट लोडोने माटे यमदेवना जेवे क्षेण
 उत्पादड णनी जय छे अने मज्जनो माटे तेमनी मुणादृति अन्द्रनी जेम
 प्रियदर्शनवाणी डोय छे “ तालज्जया उद्विज्ज गरुल केज्जलगज्जतदरियदप्पिय
 मुट्टियचाणूरचूरगा ’ तेओमाना णणदेवनी व्वल तालवृक्षनी निरानी वाणी डोय
 छे अने वासुदेवनी ध्वज गरुडना निरानवाणी डोय छे अने धण्णी उंची,
 डोय छे कृष्णने भाग्वा माटे उम द्वाग उवायेल मल्लयुद्धमा णणदेवे “भारा
 जेवे पहलवान डोण्ण छे ” ओवा अलिमानथी जे मदोन्मत्त णनीने घोषणा
 करी रह्यो डोतो ओवा मौष्टिक नामना मल्लने भारी नाण्णो अने वासुदेव

મહામલમાષ્ટિકાણૂરાદિમલ્લપિન્નમરાઃ કૃષ્ણમર્ગ્ય કસેન પ્રવર્તિતે મલ્લ-
યુદ્ધે વલ્લભેણ મોષ્ટિકામિધાના મલ્લો ગાયુદ્ધેન ચ નાણૂમિધાનો મલ્લો નિહતઃ
ઈતિ । ‘ રિદ્ધવસમઘાણો ’ રિદ્ધવસમઘાતિનઃ = રિદ્ધામિધાનકમવલીવર્દઘાતકાઃ,
‘ કેસરિમુહવિષ્કાઢગા ’ કેસરિમુહવિષ્કાઢયાઃ = ૩૬ વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠામિધમ્થમ
વાયુદ્ધેમાપેક્ષયા ગોષ્યમ્ । મ હિ નગરોપદ્રવશારિ ઘનકાનનનિગ્રામિ મહાસિંહ
મુખ વિદારિતયાન્ । ‘ દરિયનાગદપ્પમહ્ણા ’ દપ્પનાગદર્પમથના = યમુના નિવાસિ
મહાવિપકાલનાગર્ગરિનાગકાઃ, ‘ જમલજ્જુગમજ્જના ’ યમગર્જુનમજ્જના =
યમલર્જુનવૃક્ષવિનાશકાઃ તો હિ પિતૃવૈરિણો વિદ્યાધરો યમલર્જુનનામકો વૃક્ષસ્થ
વિકુર્વ્ય પથિ સ્થિતો ચુર્ગિતવન્તઃ । ‘ મહાસઙ્ગિપૂયણરિઙ્ગ ’ મહાશકુનિપૂતના-
રિપવ = મહાશકુનિઃ પૂતના ચ વિદ્યાધરપત્ન્યૌ, તયો રિપવઃ । ગાલ્યાવસ્યાણ

મારા, તથા વાસુદવ કૃષ્ણ ને ચાણૂર નામકે મલ્લ કો મારા યહી વાત
“ ચલવગ ગજ્જત ” હસ પદ દ્વારા પ્રદર્શિત કી गई है । તથા (રિદ્ધવ-
સમઘાણો) જો કસ કે રિદ્ધ નામ કે માયાવી વલીવર્દ કે ઘાતક થે
તથા (કેસરિમુહવિષ્કાઢગા) કેશરી સિંહ કે મુખ કો બી ફાડ દેતે થે,
-યહ વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠ નારાયણ કી અપેક્ષા કહા ગયા જાનના ચાહિયે,
ક્યોં કિ ઉન્હી ને નગર મેં ઉપદ્રવ મચાને વાલે જગલી સિંહ કે મુખ કો
વિદારિત ક્રિયા હૈ । (દરિયનાગદપ્પમહ્ણા) તથા જિસ નારાયણને
યમુના નિવાસી મહાવિપૈલે કાલી નામકસર્પ કા વિનાશ ક્રિયા હૈ-તથા
(જમલજ્જુગમજ્જના) નારાયણ ને પિતા કે વૈરી દો વિદ્યાધરોં કો કી
જિનકા નામ યમલ ઓર અર્જુન યા ઓર જો માર્ગ મેં વૃક્ષ કા રૂપ
અપની ચિક્રિયા સે બનાકર સહે હો ગયે યે ડનકો મારા હૈ (મહાસઙ્ગ
િ પૂયણરિઙ્ગ) તથા જો વિદ્યાધર કી મહાશકુનિ એવ પૂતના નામક દો

કૃષ્ણે ચાણૂર નામના મલ્લને માર્યો એ જ વાત “ ચલવગગજ્જત ” પદ દ્વારા
ખતાવવામા આવી છે તથા ‘ રિદ્ધવસમઘાણો ’ એ કસના રિદ્ધ નામના
માયાવી ખલીવર્દના ઘાતક હતા તથા “ કેસરીમુહવિષ્કાઢગા ” સિંહના
મુખને પણ ફાડી નાખતા હતા તે વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠ નારાયણને અનુલક્ષીને
વપરાયુ છે, કારણ કે તેમણે નગરમા ઉપદ્રવ મચાવનાર જગલી સિંહના મુખને
શીરી નાખ્યુ હતુ “ દરિયનાગદપ્પમહ્ણા ” તથા જે નારાયણે યમુનામા રહેતા
અતિરાય જેરી ઠાળીનાગને વશ કર્યો છે, તથા “ જમલજ્જુગમજ્જના ” નારા
યણે તેમના પિતા યમળ અને અર્જુન નામના બે દુરભન વિદ્યાધરો, કે જે
માર્ગમા પોતાની વૈક્રિય શક્તિથી વૃક્ષના રૂપ લઈ ઉભા થઈ ગયા હતા
તેમને માર્યા હતા. “ મહાસઙ્ગિપૂયણરિઙ્ગ ” તથા જે વિદ્યાધરની મહાશ નિ અને

कृष्णस्ते हतवानित्यर्थः 'कसमउडमोडगा' कसमुकुटमोटकाः=कसमुकुटसञ्चरकाः, कृष्णो हि चाणूरग्रानन्तर कुपित कस युयुत्स मुकुटदेश गृहीत्वा सिंहासनादाकृष्य भुविनिपात्य जग्रान । तथा 'जरासधमाणमहणा' जरासन्धमानगथनाः=जरासन्धगर्विनाशका, जरासन्धग्रानका इत्यर्थः, कसवधकुपित रानगृहनगरपति जरासन्धभिग्रान युद्धायोद्यत हतवान् । पुनः कीदृशाः ? इत्याह—'तेहि य अविरलसमसहिय चदमडलसमपभेहिं सूरमरीइ कवय विणिमुयतेहिं सप्पडि दडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता ' तत्र 'तेहिं' तैश्चातिशयपद्भिश्छत्रैर्विराजमानाः, इति सम्बन्धः कीदृशैश्छत्रैः ? इत्याह—अविरलमममहितचन्द्रमण्डलसमप्रभैः=अविरलानि=यनानि-यनशराकायत्वात्, समानि = तुल्यानि स्थूलत्वेन दीर्घत्वेन च शराका-

स्त्रियों के रिपु थे—क्यों कि बाल्यावस्था में कृष्ण ने इन दोनों को मारा था, तथा (कसमउडमोडगा) कृष्ण ने कस के मुकुट को चूर २ कर दिया था—अर्थात्—चाणूर मल्ल के वध करने के अनन्तर जब कस युद्ध करनेकी इच्छावाला हो गया तो उसे मुकुट को पकड़ कर कृष्णने सिंहासन से नीचे खेच लिया और जमीन पर पटक कर मार डाला, इसी तरह (जरासधमाणमहणा) कृष्णने—राजगृह नगर के अधिपति जरासध नाम के राजाओं को मारा हैं, कस के वध हो जाने के बाद जब जरासध कुपित होकर युद्ध करने के लिये उद्यत हो गया था तो कृष्ण ने उसे बातचीत-बात में संग्राम भूमि में नष्ट कर दिया था, तथा (तेहिय अविरल समसहियचद मडलसमपभेहिं सूरमरीइकवय विणिमुयतेहिं सप्पडिदडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता) जो अतिशय शाली छत्रों से विराजमान होते हैं अर्थात्—जिन छत्रों से बलदेव और वासुदेव सुशोभित होते हैं उन छत्रों की शलाईयां बहुत अधिक घनीभूत होती

पूतना नाम्नी जे श्रीश्रीना दुश्मन हुता अने ते डारले जाणपणुमा तेमले जे अन्नेने भागी हुती, तथा " कसमउडमोडगा " कृष्ण जे अन्ना मुगटना थूरे थूरा डरी नाप्प्या हुता आणूर भटलने कृष्ण वध डर्या पाणी न्यारे जे कृष्ण माथे लडवानी छच्छा गतावी त्यारे कृष्ण तेना मुगट पडडीने तेने मिडा सन उपगथी नीचे जेथीने जमीन उपर पछाडीने भागी नाप्प्यो, आ रीते " जरासधमाणमहणा " कृष्ण राजगृह नगरना राजा जरासधने वध डर्या हुतो कसने वध थया पछी न्यारे जरासध डोधे लगधने लडवाने तैथार थयो त्यारे कृष्ण जे धडीमा तेनो रणभेदानमा वध डर्या हुतो तथा " तेहि य अविरलसमसहियचदमडलसमपभेहिं सूरमरीइ कवय विणिमुयतेहिं दडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता " तेजो धणु सजिया वाणा छत्रोथी शोभता

ના સમત્યાત્ દ્વયોર્ઘ્વો ગત્રાકયોરન્તગલમ્યાપિ સમત્યાગ, મહિ ॥ નિ-ચ્છાકાનાં નિમ્નોન્વતરહિતત્યાત્, તાનિ તથા-ચન્દ્રમણ્ડલસમપ્રમાણિ વૃત્તમ્યેન ચન્દ્રમણ્ડલ સમા પ્રમા યેષાં તાનિ તથા તે-તથા 'ગરમરીઙકચય નિગિમ્નુયતેદિ' ધૂરમરી ચિ કચય વિનિર્મુચ્ચદિ.-ધૂરમરીચયઃ=ધૂર્યનિરણામ્તઙગરીચયઃ દેરીપ્યમાનમ્બૂત મનિરત્નેઃ સર્વતઃ સ્વચિતત્યાત્, તેષાં કચયમિત્ર કચચ=પરિકરઃમણ્ડલાકારપરિણિ તત્યાત્, ત વિનિર્મુચ્ચદિ.=વસાગ્નદ્ધિઃ, તથા 'મપ્પડિદ્દેદિ' સપતિદ્દેદિ=અતિવિ- શાલહ્યાદેકેન દ્વંદ્વેન ધારણા ગચયત્યા મતિચ્છાકામહિતઃ 'આગચ્છેદિ' જાતપત્રૈઃ=

હૈં, સ્થૂલતા ણ્વ દોર્ઘના મે સમાન હોતી હૈં તથા દો દો ચલાકાઓં કા અન્તરાલ મી સમ હોતા હૈં તથા યે સય ચલાકાઓં ઝૂંચી નીચી નહીં હોને કે કારણ, અર્થાત્-ણ્ક સી હોને કે કારણ પરસ્પર મેં સહિત- મિલી હુઈ હોતી હૈં, હસલિયે યે છત્ર અવિરલ, સમ ઓર સહિત હોતે હૈં। તથા હન સય છત્રોં કી પ્રમાવૃત્ત-ગોલ-હોને કે કારણ પૂર્ણચંદ્ર મડલ જૈસી હોતી હૈં। તથા-યે સમસ્ત ણ્વ દેરીપ્યમાન અનેક મણિયોં ઇવ રત્નોં સે જડે હુગ હોને કે કારણ જિસ કિરણ જાલ કો ડોઢતે હૈં વહ ઇસા માલૂમ પડતા હૈં કિ યહ સૂર્ય કી કિરણોં કા હી જાલ હૈં, કયોં કિ વહ આસપાસ મેં મડલાકાર સે પરિણત થના રહતા હૈં। તથા હન છત્રોં મેં વિશાલ આકારવાલે હોને કે કારણ મિત્ર ૨ દડે લગે રહતે હૈં ણ્ક હી દડે કે સહારે યે નહીં રહતે હૈં, કયોં કિ ણ્ક હી દડે સે હનકા અતિ વિશાલ હોને કે કારણ સમ્બાલના અશક્ય હોતા હૈં। ઇસે ધ્રિય

હોય છે એટલે કે જે છત્રો બળદેવ અને વાસુદેવ ઉપર ધન્વામા આવે છે તે છત્રોના સળિયાઓ ધણી જ પામે પાસે હોય છે, બડાઈ અને લબાઈમા સરખા હોય છે, તથા જે સળિયાઓ વચ્ચેનું અંતર પણ સરખું હોય છે તથા તે સળિયા લાંબા દૂકા નહીં હોવાને કારણે, એક સરખા હોવાને કારણે પર-સ્પર બેડાયેલા હોય છે, તેથી તે છત્ર અવિરલ, સમ અને સહિત હોય છે અને તે સઘળા છત્રોનો પરીધ ગોળ હોવાને કારણે તે પૂર્ણચન્દ્ર જેવા લાગે છે તથા તે છત્રો પર અનેક તેજસ્વી મણીઓ અને રત્નો જડેલા હોય છે તેથી તેમાથી જે કિરણ બાળ નિડળે છે તે સૂર્યની કિરણબાળ જેવી લાગે છે, કારણ કે તે આસપાસમા મડલાકારે પથરાયા કરે છે તે છત્રો ધણી વિશાળ હોવાથી તેને આધાર આપવાને અનેક દડા રાખ્યા હોય છે એક જ દડાને આધારે તે રહી શકતા નથી, કારણ કે તે છત્રો એટલા વિશાળ હોય છે કે એક જ દડા વડે તેને સલાખવા અશક્ય ગણાય છે તે સલાખવા છત્રોથી

महाछत्रैः ' धरिज्जतेहि ' गार्यमाणैः ' विरायता ' विराजमानाः । ये एतादृशा-
स्तेऽपि काम भोगानृप्ता एव मरणधर्ममुपनमन्तीति योगः ॥ सू० ७ ॥

पुनः कीदृशास्ते ? इत्याह— ' ताहिय ' इत्यादि—

मूलम्—ताहिय पवरगिरिकुहर-विहरण-समुल्लियाहि निरु-
वहयचमरिपच्छिमसरीरसजायाहि अमइल-मियकमल-
विमुकुलुज्जलियरययगिरि-निहरविमलसमिकिरण-सरिसक-
होयनिम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय—सललियनच्चिय-
वीइपसरिय-खीरोदगपवर-सागरुप्पूर-चवलाहि माणससर-
पसर-परिचियावास-विसय-वसाहि कणगगिरि-सिहर संसि-
याहि ओवाउप्पाय-चवल-जविय-सिग्घवेगाहि हसवधूयाहि
चेव नानामणिकणग-महारिह-तवणिज्जुज्जल-विचित्तदडाहि
सललियाहि नरवइसिरिसमुदयप्पगासणकराहि वरपट्टणु-
गयाहि समिद्धरायकुलसेवियाहि कालागुरुपवरकुदुरुक्तुरुक्क
धूववासविसिद्धगंधुदूयाभिरामाहि चिल्लियाहि उभओ पासपि
चामराहि उक्खिप्पमाणाहि सुहसीयलवायवीयियंग्गाअजिया
अजियरहा हलमुसलकणगपाणी सखचक्कगयसत्तिणं दग-
धरा पवरुज्जलसुकय-विमलकोथुभ-किरीडधारी कुडल उज्जो-
इयाणणा पुडरीयणयणाएगावलिकठराइयवच्छा सिरिवच्छ
सुलछणा वरजसा सव्वोउय सुरभि कुसुमरइयपलव-सोहत

माण छत्रों से ये विराजमान रहते हैं । ऐसे ये चलदेव और वासुदेव
भी कामभोगों से अतृप्त बने रहते हैं और इसी स्थिति में मरणधर्म
को प्राप्त करते हैं ॥ सू० ७ ॥

शैलता गणदेव अने वासुदेव पणु डामलोगोथी अतृप्त रहे छे अ स्थितिभा
भरणु पाभे छे ॥ सू-७ ॥

વિયસત વિચિત્રવળમાલ રહ્યવચ્છા અટસ્યવિભત્તલમ્સ્વળ-
પસત્થસુંદર - વિરાડ્યંગુવંગા મત્તગયવરિંદ-લલિય - વિક્રમ
વિલસિય-ગર્દકડિસુત્તકનીલ પીય-કોસેજ્જવાસસા પવરદિ-
ત્તતેયા સારયળવથળિય-મહુરગંભીર-ગિદ્ધઘોસા નરસીહા
સીહાવિક્રમગર્દ અત્થમિય પવરરાયસીહા સોમ્મા વારવર્દપુણ
ઘંદા પુઠ્ઠકયતવપ્પભાવા નિવિટ્ઠસચિયસુહા અળેગવાસ
સયમાડઠ્ઠવતો ભજ્જાહિયજળવયપ્પહાળાહિં લાલિયતા
અડલ-સદ્ધફરિસ-રસરુવગધે ય અણુભવિત્તા તે વિ ઉવળ
મંતિ મરણધમ્મં અવિતિત્તા કામાળં ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા:— ‘તાહિય’ તામિશ્ચ વક્ષ્યમાણવિશેષણવિશિષ્ટામિશ્ચામરામિશ્ચ
પ્યમાનાભિઃ સુખ શીતલવાતવીજિતાદ્વાયલદેવસામુદેવા, ઇતિ સમ્બન્ધઃ । કથ-
મ્ભૂતામિશ્ચામરાભિઃ ? इत्याह—‘पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं’ पवर-
गिरिकुहरविहरणसमुद्धृताभिः=पवरगिरिणां यानि कुहराणि=गह्वराणि तेषु यद्

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘ताहि य’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ:— (તાહિ ય ઉક્તિપ્પમાણાહિં ચામરાહિં સુહસીયલ-
વાય વીહયગા) इन वक्ष्यमाण विशेषणों से विशिष्ट ढोले गये चामरों
की सुखप्रद शीतल वायु से जिनका अंग वीजित होता रहता है ऐसे
बलदेव और वासुदेव भी काम से अतृप्त ही मरण को प्राप्त करते हैं-
ऐसा सबध यहा भी लगा लेना चाहिये । अब सूत्रकार चामरों के
विशेषणो को स्पष्ट करते हैं — (पवरगिरिकुहरविहरणसमुद्धियाहिं)
जब चमरी गाय उत्तम पर्वतों की गुफाओं मे विचरण करती हैं तब वह

હજી તેઓ કેવા હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરે છે—“તાહિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ:—“તાહિ ય ઉક્તિપ્પમાણાહિં ચામરાહિં સુહસીયલવાયવીહ યગા” આ
પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવડે ઢોળવામા આવતા આનંદદાયક શીતળવાયુ
વડે જોમના અળે વાયુનું સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવે અને વાસુ
દેવ પણ કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પથે પળે છે એવો સબધ
અહીં પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટતા કરે છે
“પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં” જ્યારે ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

વિહરણ ચમર્યાચ્યગવીના વિચરણ તસ્મિન્ કાલે સમુદ્વૃતાઃ કણ્ઠકટુક્ષ
સલગ્નભયાદ્ ઝ-ર્મીકૃતા યાસ્તાસ્તથા, તાભિઃ, ' નિરુવહ્યચમરિપચ્છિન્નમસરીર-
સજાયાર્હિ ' નિરુપહતચમરીપશ્ચિમશરીરસ-જ્ઞાતાભિઃ = નિરુપહતાના = નીરોગાણા
ચમરીણાં=ગો વિશેષાણા પશ્ચિમશરીરે=પુચ્છપદેશે સજ્ઞાતાભિઃ = સમુત્પન્નાભિઃ
' અમહલસિયકમલવિમુકુલુજ્જલિયરયયગિરિસિહરવિમલસમિકિરણસરિસ કલ્ધો
યનિમ્મલાર્હિ ' અમલિનસિતકમલવિમુકુલોજ્જ્વલિતરજતગિરિશિખર—વિમલ-
શશિકિરણસદૃશકલયૌતનિર્મલાભિઃ તત્ર ' અમહલસિયકમલ ' અમલિનસિત-
કમલમ્=અમલિન=અમ્લાન શીતાતપાદિભિઃ યત્ સિતકમલ=શ્વેતકમલ ઘુણ્ડરીક્ષ
તત્ત્વ વિમુકુલ=વિકસિત તથા ' ઉજ્જલિયરયયગિરિસિહર ' ઉજ્જ્વલિતરજતગિરિ
શિખરમ્=ઉજ્જ્વલિત=ભાસ્વર યદ્ રજતગિરિશિખર તથા વિમલશશિકિરણાઃ =
વિમલાઃ=નિર્મલા યે શશિન =ચન્દ્રસ્ય કિરણાશ્ચ તત્સદૃશાઃ કલયૌતવત્=શુદ્ધરજતત્ર-
નિર્મલાઃ=ધવલાયાસ્તાસ્તથા તાભિ -અમ્લાનવિકસિતશ્વેતકમલોજ્જ્વલરજતપર્વત-
શિખરવિમલચન્દ્રકિરણશુદ્ધરજતત્રદુજ્જ્વલાભિરિત્યર્થઃ । તથા ' પવણાહ્યચવ

ઉસ સમય કણ્ઠકમય વૃક્ષો મે લગ જાને કે ભય સે અપની પૂઠ કો ઝંચા
ઉઠા લેતી હૈ—હસલિયે યદા પ્રકટ કિયા રહા હૈ કિ જો ચામર ચમરી
ગાયકી પૂઠ મેં ઉત્પન્ન હોને કે કારણ પ્રવરગિરિ કે કુદરોં મેં ભ્રમણ કાલ
કે સમય મેં ઝંચે ઉઠાયે ગયે યે તથા (નિરુવહ્યચમરીપચ્છિન્નમસરીર-
સજાયાર્હિ) જો નિરુપહત-નિરોગ અવસ્થાવાલી ચમરી ગાયોં કી પૂઠ
મેં ઉત્પન્ન હુએ હૈં, તથા (અમહલસિયકમલવિમુકુલુજ્જલિય રયયગિરિ
સિહરવિમલસસિકિરણસરિસકલધોયનિમ્મલાર્હિ) જો શીત આતપ
આદિસે મ્લાન નહીં હુએ વિકસિત શ્વેત કમલ કે સમાન, ભાસ્વર,
રજત ગિરિ કે શિખર કે સમાન, નિર્મલચદ્ર કી કિરણોં કે સમાન, એવ
શુદ્ધ ચાદી કે સમાન નિર્મલ હોતે હૈં । તથા (પવણા હ્યચવલ ચલિય સલલિ-

શુક્ષ્મામા કરતી હોય છે ત્યારે ઝાટાળા વૃક્ષોમા ભરાઈ જવાની ખીકે તે પોતાની
પૂછડીને ઊંચી રાખે છે તે ડારણે અહીં એમ બતાવવામા આવ્યું છે કે જે
આમર ચમરી ગાયની પૂછડીમા ઉત્પન્ન થવાને ડારણે ઉત્તમ પર્વતની શુક્ષ્મા-
ઓમા ભ્રમણ કરતી વખતે ઊંચા ઉઠાવેલા હતા, તથા “ નિરુવહ્યચમરી-
પચ્છિન્નમસરીરસજાયાર્હિ ” જે નીરોગી શરીર વાળી ચમરી ગાયની પૂછડીમા
ઉત્પન્ન થયેલ છે, તથા “ અમહલ-સિયકમલ-વિમુકુલુજ્જાલિય-રયયગિરિસિહર-
વિમલસસિ-કિરણસરિસકલધોયનિમ્મલાર્હિ ” જે શીત, તાપ આદિના આખા ન
પડેલ વિકસિત શ્વેત ડમળ સમાન, ભાસ્વર, રજતગિરિના શિખર સમાન,
નિર્મળ ચન્દ્રના કિરણો સમાન, અને શુદ્ધ ચાદીના જેવા નિર્મળ હોય છે,

વિયસત વિચિત્રવળામાલ રઝયવચ્છા અટ્ટસયવિભત્તલસ્વળ-
પસત્થસુંદર - વિરાઝયંગુવળા મત્તગયવરિંદ-લલિય - વિક્રમ
વિલસિય-ગર્ઝકઢિસુત્તકનીલ પીય-કોસેઝજવાસસા પવરદિ-
ત્તતેયા સારયળવથળિય-મહુરગંભીર-ગિઢઘોસા નરસીહા
સીહવિક્રમગર્ઝ અત્થમિય પવરરાયસીહા સોમ્મા વારવર્ઝપુળ્ળ
ષંદા પુવ્વકયતવપ્પભાવા નિવિટ્ઠસંચિયસુહા અળેગવાસ
સયમાઠવ્વતો ભઙ્ગાહિયજળવયપ્પહાળાહિં લાલિયતા
અઠલ-સદ્ધારિસ-રસરુવગધે ય અણુભવિત્તા તે વિ ઉવળ
મંતિ મરણધમ્મં અવિતિત્તા કામાણં ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા:— ‘તાહિય’ તામિશ્વ વક્ષ્યમાણવિશેષણવિશિષ્ટામિશ્વામરામિરુત્તિ
પ્યમાનામિ: સુખ શીતલવાતરીજિતાદ્વાવલદેવયાસુદેવા, ઇતિ સમ્યન્ધ: । કથ-
મ્ભૂતામિશ્વામરામિ. ? ઇત્યાહ— ‘પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં’ પવર-
ગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધૃતામિ: = પવરગિરિણાં યાનિ કુહરાણિ = ગહરાણિ તેષુ યદ

ફિર વે કૈસે હોતે હૈં સો ફરતે હૈં—‘તાહિ ય’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ:— (તાહિ ય ઉક્તિવપ્પમાળાહિં ચામરાહિં સુહસીયલ-
વાય વીઝયગા) હન વક્ષ્યમાણ વિશેષણોં સે વિશિષ્ટ ઢોલે ગયે ચામરોં
કી સુખપ્રદ શીતલ વાયુ સે જિનકા અગ વીજિત હોતા રહતા હૈં એસે
ઘલદેવ ઓર વાસુદેવ મી કામ સે અતૃપ્ત હી મરણ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં-
એસા સબધ યહા મી લગા લેના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર ચામરોં કે
વિશેષણો કો સ્પષ્ટ કરતે હૈં — (પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં)
જબ ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોં કી ગુફાઓં મે વિચરણ કરતી હૈ તબ વહ

હૃત્તે એવા કેવા હોય છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“તાહિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તાહિ ય ઉક્તિવપ્પ માળાહિં ચામરાહિં સુહસીયલવાયવીઝ યગા” આ
પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવડે ઢોળવામા આવતા આનદદાયક શીતળવાયુ
વડે જોમના અગે વાયુનુ સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવે અને વાસુ
દેવ પણ કામલોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પથે પળે છે એવો સબધ
અહીં પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટકા કરે છે
“પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં” અથવા ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

પાતોત્પાત ચપલ જ્વિત શીઘ્રવેગાભિઃ=અવપાતઃ-ઉર્ધ્વીભૂયાઃપતનમ્, ઉત્પાતઃ= અધોભૂતોર્જગમન, તથો. ચપલ =ચન્દ્રલઃ જ્વિતઃ=વેગયુક્ત એતદ્વ શીઘ્ર વેગો= ગતિર્યાસાં તાસ્તથા તાભિઃ ' હસવધૂયાહિં ચેવ ' હસવધૂભિરિવ=હસીભિરિવ- હસીત્પત્તીયમાનાભિરિત્યર્થ. । પુન. કથમ્ભૂતાભિશ્ચામરાભિઃ ? ક્ત્વાહ—' નાણા- મણિક્ષણગમહરિહતરણિજ્જુજ્જવિચિત્તદહાહિં ' નાનામણિ વનક મહાર્હતપની- યોજ્જ્વલવિચિત્તદણ્ડાભિઃ-તત્ર નાનાવિધામણય = ચન્દ્રકાન્તાદયઃ કનક=પીત- વર્ણ સુવર્ણ તથા મહાર્હ=અદુમૂલ્ય યત્ તપનીય ચ=રક્તવર્ણ સુવર્ણ તૈરેતૈરુજ્જ્વલા.= ભાસ્વરાઃ વિચિત્રા = મણિસુવર્ણાદીના સમ્મિશ્રિતકાન્તિભિશ્ચિત્રઃ વિચિત્રા દણ્ડા યાસા તાસ્તથા તાભિ. ત્રિવિધમણિવચિત્તરક્તપીતસુવર્ણદણ્ડયુક્તાભિઃ, યથા સુવર્ણ- ગિરિશિખરે સ્થિતા હસ્યઃ શોભમાના સમુદ્રસતિ તથા સુવર્ણગિરિસ્થાનીય સુવર્ણ દણ્ડોપરિસ્થિતાભિ. ધવલત્વાત્ હસીભિરિતિભાવઃ । તથા ' સલલિયાહિં ' સલલિ

અવપાત-ઝંચે જાને મેં જિન કી ગતિ વહુત અધિક વેગ કો લિયે હો રહી હૈ ંસી (હસવધૂયાહિં ચેવ) હસ વધૂઓ કે સમાન જો ચામર અપની શુભ્રતા કે કારણ જ્ઞાત હો રહે હૈ । તથા (નાણામણિક્ષણગમહ- રિહ તવણિજ્જુજ્જલવિચિત્તદહાહિં) જિન ચામરોં કે દહ ચંદ્રકાન્ત આદિ નાના પ્રકાર કી મણિયો કી કાતિ સે, પીતસુવર્ણ કી પ્રભા સે, એવ વહુમૂલ્ય તપે હુણ રક્તવર્ણ વાલે સુવર્ણકી આભાસે-ઇન સવકી પરસ્પર મિશ્રિત કાન્તિ ંહટા સે-અધિક ઉજ્જલ ઔર રંગ વિરંગે માલૂમ દે રહેં હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સુમેરુપર્વત કે તટ પર સ્થિત હસ કામનિયાં સુહાવની લગતી હૈ ંસી પ્રકાર યે ચામર ઔ સુવર્ણગિરિ કે શિખર-તટ જૈસે દહોં પર સ્થિત હોને કે કારણ અપની ધવલતા કે કારણ હસનિયોં કે સમાન પ્રતીત હોતે હૈ (સલલિયાહિં) યે ચામર

વેગાહિં" ઊંચેથી નીચે આવવામા અને નીચેથી ઊંચે જવામા જેની ગતિ ઘણી ઝડપી હોય છે એની " હસવધૂયાહિં ચેવ " હસવધૂઓ (હસલીઓ) જેવા જે આમરો પોતાની શ્વેતતાને ઝારણે લાગે છે તથા " નાણામણિક્ષણગમહરિહ- તવણિજ્જુજ્જલવિચિત્તદહાહિં ' જે આમરોના દહો ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ પ્રકારના મણીઓના કાતિથી, પીતસુવર્ણની પ્રભાથી, અને તપાવેલા અદુમૂલ્ય વાન રત્નવર્ણના સુવર્ણની આભાથીએ બધાની પરસ્પર મિશ્રિત કાન્તિથી-અધિક ઉજ્જ્વળ અને રંગ એ રંગી લાગે છે, એટલે કે જેમ સુમેરુ પર્વતના શિખરો પર રહેલી હસલીઓ સુદર લાગે છે એ જ પ્રમાણે તે આમરો પણ સુવર્ણ ગિરિના શિખર જેવા દહો ઉપર આવેલ હોવાથી પોતાની શ્વેતતાને ઝારણે હસલીઓ જેવા લાગે છે " સલલિયાહિં " તે આમરો લાલિત્ય વાળા હતા,

લવલિયસઠલિયનચિપરીયપમરિય-વીરોદગપવરસાગરુપ્પૂરચત્તાર્હિ ' પવનાહત-
 ચપલચલિતસઠલિતનર્તિતગીનિમલતલીરોદકપવરસાગરોત્પૂરનપચામિ. = તપ
 પવનેન = વાયુના જાહત = ઘટિતઃ, અતપ્ત ચપલ યથાસ્યાસ્તથા
 ચલિતઃ સલલિત=સવિલમિત ચ નર્તિત:=ગતિરિશેષ પ્રાપ્ત, તથા ગીનિમિ=તરંગૈઃ
 પ્રસૂતઃ ક્ષીરોદકપવરમાગરસ્ય = ક્ષીર માગરસ્ય ચ ઉત્પૂર=જલમપ્રસ્તદ્વન્ ચપ-
 લામિ =ચન્ચલામિઃ મધુઋગ્ધવલતરંગયુક્તક્ષીરમાગરનોરપ્રવાહસ્તપ્રતીયમાનામિઃ,
 અથ હસવધુભિરુપમયન્નાહ ' માણસસરપસરપરિચિયાવાસવિસયવેગાર્હિ ' માનસ
 સરઃ પ્રસરપરિચિતાવાસવિગદ્વેગામિ.=માનસસરસઃ પ્રમરે=વિસ્તૃતપ્રદેશે પરિચિતઃ
 =અભ્યસ્ત આગ્રાસઃ=નિરન્તરનિવાસ., અતપ્ત વિગદઃ=ચલત્ર વેગો=વર્ણો યાસાં
 તાસ્તથાવિધામિઃ, ' કળગગિરિસિહરસસિયાર્હિ કલગગિરિશિવરસશ્રિતામિઃ=
 સુમેરુતટવિહારિણીમિઃ, અતપ્ત ' ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધવેગાર્હિ ' અવ
 યનચ્ચિચયહયપસરીયસ્વીરોદગપવરસાગરુપ્પૂરચત્તાર્હિ) વાયુ સે આહત
 હોને કે કારણ અત્યત ચપલ વને હુળ ઓર દસી સે જો માનો વિલાસ
 સહિત હોકર નૃત્ય કર રહા હે, તથા તરંગોને જિસે વિશેષ વિસ્તૃત કર
 દિયા હૈ એસે ક્ષીરસાગર કે પ્રવાહ કે સમાન જો ચચલ હૈ અર્થાત્
 અત્યત ધવલ તરંગો સે યુક્ત ક્ષીરસાગર કે પ્રવાહ કે જૈસે જો દિશ્વર્ગ
 દે રહે હૈં । તથા (માણસસરપસરપરિચિયાવાસવિસયવેસાર્હિ) જો
 હસવધુ કે સમાન પ્રતીત હો રહે હૈ, દસી માનમરોવર મેં રહતી હૈ હસી
 વિષય કો લેકર સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ માનસરોવર કે વિસ્તૃત પ્રદેશ મેં
 અભ્યસ્ત નિરન્તર નિવાસ કે વગ સે જિન હસવધુઓ કા વર્ણ ધવલ
 હો ગયા હૈ, ઓર (કળગગિરિસિહરસસિયાર્હિ) જો સુમેરુપર્વત કે
 તટો પર વિહાર કરતી હૈં, તથા (ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધવેગાર્હિ)

તથા “ પવનાહયચવલ-ચલિય-સલલિય-નચ્ચિયવીઢ-પસરિય-સ્વીરોદગપવર-સાગ
 રુપ્પૂરચત્તાર્હિ ” પવન આવવાને કારણે ચપલ અનેલ અને તે ડારણે બળે
 વિલાસી બનીને નૃત્ય કરતા હોય તેવા તથા તરંગોએ જેને વધારે વિસ્તૃત
 કરી નાખેલ છે એવા ક્ષીર સાગરના પૂર સમાન જે અચળ છે —એટલે કે
 સફેદ તરંગોથી યુક્ત ક્ષીરસાગરના પ્રવાહ જેવા જે ડોઈ દેખાઈ રહ્યા છે, તથા
 “ માણસસર-પસર-પરિચિયાવાસવિસય-વેસાર્હિ ” જે હસલીઓના જેવા લાગે
 છે, હસલી માનસરોવરમા રહે છે તે વિષયને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર કહે છે કે
 માનસરોવરના વિસ્તૃત પ્રદેશમા હમેશા રહેવાને ડારણે ને હસલીઓના રંગ
 શ્વેત થઈ ગયેા હોય છે, અને—“ કળગગિરિસિહરસસિયાર્હિ ” જે સુમેરુ
 પર્વતના શિખરે પર વિહાર કરે છે, તથા “ ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધ

‘ उभओ पामपि ’ उभयोरपि पार्श्वयोः, ‘ उक्खिप्पमाणाहिं ’ उत्क्षिप्यमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ‘ चामराहिं ’ चामराभिः=वालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि ‘ चामर चमराऽपि च ’ इति मेदनी कोपात्, ‘ सुहसीयलवाय ’ सुख शीतलवाताभिः मृत्रे लुप्तविभक्तिक पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ‘ वीड्यगा ’ वीजीताङ्गाः=वीजीतान्यङ्गानि येषां ते तथा ‘ अजिया ’ अजिताः=अन्यैरपराजिता ‘ अजियरहा ’ अजितरथाः=अपराजितरथाः ‘ हलमुसलकणगपाणी ’ हलमुसलकनकपाणयः= हल च मुसल च कनक=कनकाभरण वलय इत्यर्थः=हस्ते येषां ते तथा हलमुसल कनक पाणयो बलदेवाः । वासुदेवाश्च ‘ सख चक्रगयसत्तिणदगधरा ’ शङ्ख चक्रगदाशक्ति नन्दनधराः=शङ्ख=पाञ्चजन्या भिद्य=चक्र=सुदर्शनारण्य, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष, नन्दकथ=खड्ग, एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिदं, ‘ पवरुज्जलसुकयविमलकोथुभकिरीडधारी ’ प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे। ऐसे ये (चामराहिं) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आजू बाजू में-दोनों पार्श्वभागों में-ढोले जा रहे थे। (सुहसीयल वायवीड्यगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वीजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे। (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे। (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कड़े रहते थे। पाञ्चजन्य नामका शङ्ख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नन्दक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे। अत्यन्त भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

“ चिल्लियाहिं ” तेઓ તેમની કાન્તિથી ધણુ જ તેજસ્વી લાગતા હતા એવા તે “ ચામરાહિં ” આમરો કૃષ્ણ અને બળદેવની “ ઉભયો પાસપિ ” આબુખા-બુએ બન્ને પડખે ઢાળવામા આવતા હતા “ સુહસીયલવાયવીડ્યગા ” તેનાથી ઉત્પન્ન થતો શીતળ અને સુખદ વાયુ તેમના શરીરપર વીજાતો હતો “ અજિયા ” તે બળદેવ અને વાસુદેવ બીજા લોકો દ્વારા અપરાજિત હતા “ અજિયરહા ” તેમના રથોને રોકવાની તાકાત કોઈ પણ વ્યક્તિમા ન હતી તેથી તેઓ અજિતરથ હતા “ હલમુસલકણગપાણી ” બળદેવના હાથમા હળ, મુસળ અને સોનાના ડડા રહેતા હતા પાચજન્ય નામનો શંખ, સુદર્શનચક્ર, કૌમોદકી નામની ગદા, શક્તિ નામનું શસ્ત્ર અને નદક નામની તલવાર એ બધું કૃષ્ણ વાસુદેવ પાસે રહેતું હતું “ પવરુજ્જલસુકય-વિમલ-કોથુભ-કિરીટધારી ”

તામિઃ = લાલિત્યયુક્તામિઃ, 'નરવઃ સિરિમમુદયપ્પગાસણકરાહિં' નરપતિ શ્રી સમુદયમકાશકરામિ = રાજલક્ષ્મી પ્રકર્ષ મૂલિકામિઃ, 'વરપટ્ટણુગગયાહિં' વરપત્ત નોદ્ગતામિઃ = શિલિપ્રધાનનગરનિમિત્તામિ, 'સમિદ્ધરાયકુલસેવિયાહિં' સમૃદ્ધરાજકુલસેવિતામિઃ = પિતૃપિતામહાદિ પરમ્પરયા સમાગતામિ, તૈઃ પરિધૃતામિરિત્યર્થઃ, 'કાલાગુરુપવરકુદુરુકતુરુકધૂવવાસવિસિદ્ધગધુદ્ધૂયામિરામાહિં' કાલાગુરુપવરકુદુરુકતુરુકધૂવવિસિદ્ધગન્ધોદ્ધૂતામિરામામિઃ = તત્ર કાલા ગુરુઃ = કૃષ્ણાગુરુઃ પવર = પ્રધાન-સર્વોત્તમં, કુદુરુક = ચીડારયગન્ધદ્રવ્ય, તુરુક = તુરુકદેશોદ્ભવ-સિદ્ધકામિધગન્ધદ્રવ્ય 'લોવાન' इति भाषा प्रसिद्धम्, इत्येतच्च क्षणा यो धૂपाઃ = ધૂપવિશેષાસ્તેષા યો વાસઃ = વાસના તેન વિશિષ્ટઃ = વિસ્પષ્ટો ગન્ધઃ સ ઉદ્ધૂતઃ = પરિતો વિમારી તેન અમિરામાઃ = મનોહ્રા યાસ્વાસ્તથા તામિઃ, નાના વિધધૂપગધયુક્તામિરિત્યર્થઃ 'ચિલ્લિયાહિં' દેદીપ્યમાનામિ. દેગીશન્દોડ્યમ્,

લાલિત્ય સે યુક્ત થે । તથા (નરવઃસિરિસમુદયપ્પગાસણકરાહિં) જિનકે ऊपर ये ढोरे जाते हैं उनकी ये राजलक्ष्मी के प्रकर्ष के सूचक होते हैं । तथा (वरपट्टणुगगयाहिं) साधारण स्थानों में ये नहीं बनाये जाते हैं किन्तु जो शिल्पिप्रधान नगर होते हैं उन्हीं में ये निर्मित होते हैं । तथा (समिद्धरायकुलसेवियाहिं) बलदेव और वासुदेव पर जो चामर ढोरे जा रहे थे-वे उनकी वशपरपरा से चले हुए आ रहे थे । (कालागुरुपवरकुदुरुक तुरुकधूववासविसिद्धगधुद्धूयामिरामाहिं) ये चामर कालागुरु उत्तम चीडा नामकगधद्रव्य तथा लोवान को जलाकर उनकी गंध से वासित किये हुए थे, अतः इनकी चारों ओर सुगंध निकल कर फैल रही थी उससे ये बड़े मनोहर लगते थे । तथा (चिल्लियाहिं)

તથા “ નરવઃસિરિસમુદયપ્પગાસણકરાહિં ” જેમની ઉપર તે ઢોળાય છે, તેમની રાજલક્ષ્મીની વિપુલતાના તે સૂચક હોય છે તથા “ વરપટ્ટણુગગયાહિં ” સાધારણ સ્થાનોમા તે બનતા નથી પણ જે શિલ્પ પ્રધાન નગરો હોય છે, તેમા જ તે ચામરો બનાવવામા આવે છે તથા “ સમિદ્ધરાયકુલસેવિયાહિં ” બળદેવ અને વાસુદેવ પર જે ચામરો ઢોળવામા આવતા તે તેમની વશપરપરાથી ચાલ્યા આવતા હતા “ કાલાગુરુ-પવરકુદુરુક-તુરુક-ધૂવવાસ-વિસિદ્ધ-ગધુદ્ધૂયામિ રામાહિં ” તે ચામરોને ડાળા અગર, ઉત્તમ ચીડા નામનું સુગંધીદાર દ્રવ્ય, તથા ઢોળાનનો ધૂપ દહને તેમના ગંધથી સુગંધ યુક્ત બનાવ્યા હતા, તેથી તેમની સુગંધ ચામેર ફેલાઈ રહી હતી તેથી તે મનોહર લાગતા હતા તથા

‘ उभओ पासपि ’ उभयोरपि पार्श्वयोः, ‘ उक्खिप्पमाणाहिं ’ उत्क्षिप्यमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ‘ चामराहिं ’ चामराभि = बालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि ‘ चामर चमराऽपि च ’ इति मेदनी कोपात्, ‘ सुहसीयलवाय ’ सुख शीतलवाताभिः सूत्रे लुप्तविभक्तिक पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ‘ वीडयगा ’ वीजीताङ्गाः=वीजीतान्यङ्गानि येषां ते तथा ‘ अजिया ’ अजिताः=अन्यैरपराजिता ‘ अजियरहा ’ अजितरथाः=अपराजितरथाः ‘ हलमुसलकणगपाणी ’ हलमुसलकनकपाणयः= हल च मुसल च कनक=कनकाभरण वलय इत्यर्थः=हस्ते येषां ते तथा हलमुसल कनक पाणयो वलदेवाः । वासुदेवाश्च ‘ सख चक्रगयसत्तिणदगधरा ’ शङ्ख चक्रगदागति नन्दनधराः=शङ्ख =पाञ्चजन्या भिःचक्र=सुदर्शनारुख्य, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष, नन्दकश्च=खड्ग, एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिदं, ‘ पवरुज्जलसुकयविमलकोथुभकिरीडधारी ’ प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे । ऐसे ये (चामराहिं) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आजू बाजू में-दोनों पार्श्वभागों में-ढोले जा रहे थे । (सुहसीयल वायवीडयगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वीजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे । (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे । (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कड़े रहते थे । पाञ्चजन्य नामका शङ्ख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नन्दक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे । अत्यन्त भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

“ चिल्लियाहिं ” तेઓ તેમની કાન્તિથી ઘણા જ તેજસ્વી લાગતા હતા એવા તે “ ચામરાહિં ” આમરો કૃષ્ણ અને બળદેવની “ ઉભયો પાસપિ ” આબુખા-બુએ બન્ને પડખે ઢાળવામા આવતા હતા “ સુહસીયલવાયવીડયગા ” તેનાથી ઉત્પન્ન થતો શીતળ અને સુખદ વાયુ તેમના શરીરપર વીજાતો હતો “ અજિયા ” તે બળદેવ અને વાસુદેવ બીજા લોકો દ્વારા અપરાજિત હતા “ અજિયરહા ” તેમના રથોને રોકવાની તાકાત કોઈ પણ વ્યક્તિમા ન હતી તેથી તેઓ અજિતરથ હતા “ હલમુસલકણગપાણી ” બળદેવના હાથમા હળ, મુસળ અને સોનાના ડડા રહેતા હતા પાચજન્ય નામનો શંખ, સુદર્શનચક્ર, કૌમોદકી નામની ગદા, શક્તિ નામનું શસ્ત્ર અને નંદક નામની તલવાર એ બધું કૃષ્ણ વાસુદેવ પાસે રહેતું હતું “ પવરુજ્જલસુકય-વિમલ-કોથુભ-કિરીટધારી ”

અતિભાસ્વરઃ સુઘ્રતઃ=મુઘ્નુ રચિતો વિમલઃ=સ્વલો યઃ કૌસ્તુભો મણિવિશેષસ્ત તથા
 કિરીટ=મુકુટ ચ ધારયન્તિ યે તે તથા ઇદમપિ ચામુદેવ વિશેષગમ્ । 'કુડલ ઉજ્જો
 ડયાણના' કુણ્ડગ્રોદ્યોતિતાનના =ટુંડલ =કર્ણભૂષણે -ઉદ્યોતિત=પ્રકાશિત
 માનન=મુલ્લ યેવા તે તથા, 'પુઢરીયણયણા' પુણ્ડરીયનયના' =કમઝાયા 'ળગા
 વલિકઠરહયવચ્છા' ળગાવગ્રીયઠરચિતપક્ષસ =ળગાવગ્રીયઠરે રચિતા =ળગાવ-
 લમ્બિની સતોકૃતા વક્ષમિ=વક્ષ સ્થળે યેવા તે તથા 'સિરિવચ્છસુલછણા' શ્રી-
 વત્સસુચાઠઠનાઃ=શ્રીવત્સ =શ્રીવત્સઃસ્વસ્તિકવિશેષઃ સ એવ ગોમન લાઝ્યન યેવા
 તે તથા 'વરજસા' વરયગસ =વિશ્રુતકીર્તય. 'સન્વોડયસુરમિકુસુમરહય-પલવ
 સોહત-વિયસત-વિચિત્તવણમાલરહય-વચ્છા' સર્વતુરુમુરમિકુમ્મરચિત-પ્રલમ્બ
 શોભમાનવિકુસદ્વિચિત્તવનમાઝા રચિતપક્ષમ'=સર્વતુરુકૈઃ=સર્વતુરુમૈવ' સુરમિકુમ્મૈ=
 સુગન્ધિપુષ્પૈઃ રચિતાઃ=નિર્મિતા પ્રાપ્ત્યશોભમાના-પ્રલમ્બમાનત્વેન સુશોભના

શુભકિરિટધારી) અત્યંત ભાસ્વર અચ્છી તરફ સે રચિત, તથા સ્વચ્છ
 એસા કૌસ્તુભ રત્ન તથા કિરીટ-મુકુટ ઇન્હે કુણ્ડ વાસુદેવ ધારણ કરતે
 થે । તથા (કુડલ ઉજ્જોડયાણના) ઇન દોનોં ખાઈયોં કા મુલ્લ કર્ણ-
 ભૂષણોં સે સદા પ્રકાશિત રહતા થા । (પુઢરીયણયણા) ઇનકે નયન
 પુઢરિક- (શ્વેતકમલ) જૈસે શોભાયમાન થે । (ળગાવલિકઠરહયવચ્છા)
 કઠ મેં જો યે ળગાવલી હાર પહિને કુણ્ડ યે વહ છાતી તક લટકના થા ।
 (સિરિવચ્છ સુલછણા) શ્રીવત્સ નામક સ્વસ્તિક વિશેષ ચિહ્ન ઇનકે
 વક્ષસ્થલ મેં યા (વરજસા) ચારોં તરફ ઇનકી કીર્તિ ફેલી હુઈ થી,
 (સન્વોડયસુરમિકુસુમરહયપલવસોહતવિયસતવિચિત્તવણમાલરહયવચ્છા)
 ઇનકે વક્ષસ્થલ પર જો વનમાલા લટક રહી થી વહ સમસ્ત ઋતુ સર્વથી
 સુરભિતપુષ્પોં સે સુગ્રી હુઈ થી, એવ વહુત લંબી થી, ઇસલીયે બઢી

અત્યંત ભાસ્વર-સુદર રીતે તૈયાર કરેલ, સ્વચ્છ કૌસ્તુભ રત્ન તથા કિરીટમુ
 કુટ કુણ્ડવાસુદેવ ધારણ કરતા હતા તથા “ કુડલઉજ્જોડયાણના ” તે બન્ને
 ભાઈઓના મુખ કર્ણભૂષણોથી સદા પ્રકાશિત રહેતા હતા, “ પુઢરીયણયણા ”
 તેમના નયન પુઢરીક (સ્વેદ કમળ) જેવા સુદર હતા ‘ ળગાવલીકઠરહયવ
 વચ્છા ” ડાંખા જે એક સરવાળો હાર પહેર્યો હતા તે છાતી સુધી લટકતા હતા
 “ સિરિવચ્છસુલછણા ” તેમના વક્ષસ્થળ ઉપર શ્રી વત્સ નામનું સ્વસ્તિક વિશેષ
 ચિહ્ન હતું, “ વરજસા ” તેમની કીર્તિ એમરે વ્યાપી હતી, “ સન્વોડય-સુર
 મિકુસુમરહય-પલવ-સોહત-વિયસત વિચિત્તવણમાલ-રહયવચ્છા ” તેમના વક્ષ સ્થળ
 પર જે પુષ્પમાળા લટકતી હતી તે બધી ઋતુઓના મુગધિદાર ફૂલો વડે
 સુથેલી હતી, અને બહુ લાંબી હતી, તેથી તે ઘણી સુદર લાગતી હતી, તથા

વિકસન્તી-વિકસાયમાના વિચિત્રા=નાનાસ્વપ્રકૃતમગ્રથિતત્વાચ્ચિત્રરૂપા યા વન-
માલા સા રચિતા વક્ષસિ=વક્ષઃસ્થલે યેષા તે તથા, 'અદ્વસયવિભક્તલક્ષણપસત્ય
સુદરવિરાહયગુવગા' અષ્ટશતવિભક્તલક્ષણપ્રશસ્તસુન્દરવિરાજિતાદ્વોપાદ્ધા = અષ્ટ-
શતવિભક્તલક્ષણ-અષ્ટોત્તરશતપ્રકારલક્ષણૈઃ પ્રશસ્તૈઃ = શ્લાઘનીયૈઃ સુન્દરૈઃ=નય-
નાહ્વાદજનકૈઃ વિરાજિતાન્યદ્વોપાદ્ધાનિ યેષાં તે તથા અષ્ટશતશુભલક્ષણલક્ષિત
શરીરા इत्यर्थ, 'મત્તગયવરિંદલલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ' મત્તગજવરેન્દ્રલલિત
વિક્રમવિલસિતગતયઃ=મત્તગજવરેન્દ્રસ્ય=એરાવતસ્તેવ લલિત' સુવિલાસઃ યો વિક્રમ
ચક્રમણ-ગમન તદ્વત્, વિલસિતા=વિલાસયુક્તાઃ ગતિર્યેષા તે તથા 'કલિસુત્તગ-
નીલપીયકોસેજ્જવાસમા' કલિસૂત્રકનીલપીતકૌશેયવાસસ = કલિસૂત્રકાનિ =
કલિસૂત્રપ્રધાનાનિ નીલપીતાનિ કૌશેય વાસાસિ=કૌશેયવસ્ત્રાણિ 'રેશમીવસ્ત્ર' इति
भाषा प्रसिद्धानि येषा ते तथानीलाम्बरा चलदेवाः, पीताम्बरा वासुदेवाः
इति वो य 'पवरदित्ततेया' प्रवरदीप्ततेजसः = महातजस्विनः, 'सारयण

સુહાવની લગતી થી, તથા વિકસાયમાન થી, તથા વિવિધ પ્રકાર કે
પુષ્પોં સે ગ્રથિત હોને કે કારણ વહ રંગ વિરંગી થી, । (અદ્વસયવિભક્ત-
લક્ષણપસત્યસુદરવિરાહયગુવગા) પ્રશસ્ત-શ્લાઘનીય-એવ સુન્દર-નેત્રોં
કો આહ્વાદજનક એસે એક સૌ આઠ (૧૦૮) ભિન્નપ્રકાર કે લક્ષણોં સે
જિનકે અગ ઓર ઉપાગ સુશોભિત હોને યે, તથા (મત્તગયવરિંદ
લલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ) એરાવત કે વિલાસયુક્ત ગમન કે સમાન
જિનકો ગતિ વિલાસ સહિત હોતી થી, તથા (કલિસુત્તગનીલપીયકો-
સેજ્જવાસસા) જિનકે પહિરે હુએ નીલે પીલે રેશમી વસ્ત્રોં (પીત અમ્બર
ધારી વાસુદેવ એવ નીલ અમ્બર ધારી ચલદેવ હોતે હૈં) પર કલિસૂત્ર
બહુત હી અધિક સુહાવના પ્રતીત હોતા હૈં-અર્થાત્ જિન કે નીલે પીલે
રેશમી વસ્ત્ર ઓર કલિસૂત્ર પ્રધાન હોતે હૈં । તથા (પવરદિત્તતેયા) જો

વિકસિત હતી, તથા વિવિધ જાતના ફૂલોમાથી ગુલેલી હોવાથી ગજેરગી હતી
“ અદ્વસયવિભક્ત-લક્ષણપસત્ય-સુદર-વિરાહયગુવગા ” પ્રશસ્ત-વખાણવાલાયક
અને સુદર નેત્રોને આનંદદાયક એવા એક મો આઠ (૧૦૮) જુદા જુદા
પ્રકારના લક્ષણોથી જેમના અગ ઉપાગો શોભતા હતા, તથા “ મત્તગયવરિ
લલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ ” એરાવતના વિલાસયુક્ત ગમન અમાન જેમની
ગતિ વિલાસયુક્ત હતી, તથા “ કલિસુત્તગનીલપીયકોસેજ્જવાસસા ” જેમણે
પહેરેલા વાદળી અને પીળા વસ્ત્રો “ પીતામ્બર ધારી વાસુદેવ અને નીલામ્બર ધારી
અમ્બદેવ ” પર કલિસૂત્ર અત્યંત સુદર લાગતું હતું તથા “ પવરદિત્તતેયા ”
જે મહાતેજસ્વી હતા તથા “ સારયણ-વણિય-મહુર-ગમીર-ગિદ્ધ ઘોડા ”

વધળિયમદુરગમીરણિદ્વયોસા ' શારદનસ્તનિતમધુરગમ્મીરસ્નિગ્ધયોષાઃ =
 શારદ=શરત્કાલિક યન્નસ્તનિત = નૂતનો મેઘ ધ્વનિઃ તદ્વન્મધુરઃ-કર્ણસુખકરઃ
 ગમ્મીરઃ સ્નિગ્ધઃ=સ્નેહજનકઃ ધ્રોણઃ=શબ્દો યેષાં તે તથા, 'નરસીદા' નરસિંહાઃ=
 નરેષુ સિદ્ધાઈ, એતત્સાધર્મ્યમાહ—'સીદ્ધવિક્રમગર્હ' સિદ્ધવિક્રમગતયઃ=સિદ્ધ્યેવ
 વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ ગતિશ્ચ યેષાં તે તથા 'અત્થમિયપવરરાયમીદા' અસ્તમિત
 પ્રવરરાજસિદ્ધાઃ=અસ્તમિતાઃ=અસ્ત પ્રાપિતાઃ પરાજિતાઃ પ્રવરાઃ-વિશિષ્ટાઃ
 રાજસિદ્ધાઃ=શૂરરાજાનો યૈસ્તે તથા 'સોમ્મા' સૌમ્યાઃ=સૌમ્યરૂપાઃ 'વારવર્દ
 પુણ્ણચદા' દ્વારાવતી પૂર્ણચન્દ્રાઃ=દ્વારકાપુર્ણ્યાઃ આહાદયત્યાત્ પૂર્ણચન્દ્રસ્વરૂપાઃ,
 'પુન્વકયતવપ્પભાવા' પૂર્વકૃતતપ મમાગાત્ = પૂર્વભવકૃતતપો માદાત્મ્યાત્ 'નિ
 વિદ્ધસચિયસુદા' નિવિદ્ધ સચ્ચિત્સુતાઃ=નિવિદ્ધાનિ=લગ્નાનિ સચ્ચિતાનિ=પૂર્વ-
 ભગોપાર્જિતાનિ સુતાનિ યૈસ્તે તથા 'અણેગવાસસયમાઝઞ્વતો' અનેક વર્ષશતા
 યુગ્મન્તઃવર્ષસહસ્રાધાયુષ્કાઃ, 'મજ્જાહિય જાણવયપ્પહાણાદિ' માર્યામિથ જનપદ-

મહાતેજસ્વી હોતે હૈં તથા (સારયણવધળિયમદુરગમીરણિદ્વયોસા)
 જિનકા ઘોલના શરદકાલીન નવીનમેઘધ્વનિ કે જેસા કર્ણસુખકર એવ
 સ્નિગ્ધ-સ્નેહજનક હોતા હૈં, તથા (નરસીદા) જો મનુષ્યોં કે ઘોંચ મેં
 સિંહ કે જેસે હોતે હૈં તથા (સીદ્ધવિક્રમગર્હ) જિનકા પરાક્રમ ઓર ગમન
 સિંહ કે સમાન હોતા હૈં, તથા (અત્થમિયપવરરાયમીદા) જો અપને પરાક્રમ
 સે-પ્રવર રાજસિંહોં કો અસ્તમિત-પરાજિત-કર દેતે હૈં । તથા જો
 (સોમ્મા) સૌમ્યરૂપ હોતે હૈં, એવ (વારવર્દપુણ્ણચદા) દ્વારકાપુરી કે
 આહાદક હોનેકે કારણ જો પૂર્ણચન્દ્રસ્વરૂપ હોતે હૈં (પુન્વકયતવપ્પભાવા
 નિવિદ્ધસચિયસુદા) તથા-જો પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પહિલે ભવોં મેં
 ઉપાર્જિત સુખોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં, તથા (અણેગવાસસયમાઝઞ્વતા) જો
 સૈકડો વર્ષોં કી આયુવાલે હોતે હૈં, તથા (મજ્જાહિય જાણવયપ્પહાણા-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્નિગ્ધ-સ્નેહ જનક
 હતા, તેથી "નરસીદા" જે માણુઓની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા "સીદ્ધ
 વિક્રમેગર્હ" જેમની ગતિ અને જેમનું પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા
 "અત્થમિયપવરરાયસીદ્ધા" જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજામિલોને મહાત
 કરતા હતા તથા જે "સોમ્મા" સૌમ્ય હતા, અને "વારવર્દ પુણ્ણચદા"
 દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચન્દ્ર હતા, "પુન્વકય
 તવપ્પભાવા નિવિદ્ધસચિયસુદા" તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગ
 ળના ભવોમા ઉપાર્જિત સુખો પ્રાપ્ત કરે છે તથા "અણેગવાસસયમાઝઞ્વતો"
 જે સેકડો વર્ષના આયુષ્ય વાળા હોય છે, તથા "મજ્જાહિયજાણવયપ્પહાણાદિ

પ્રધાનાભિ = દેશ રત્ન રૂપાભિ. = 'લાલિયતા' લાલ્યમાનાઃ = નિલાસ્યમાનાઃ
 'અતુલસદ્ધારિસરસસ્વગધેયઅણુભવિત્તા' અતુલશબ્દરસસ્વગન્ધાશ્ચ અનુભૂય
 'તે વિ' તેઽપિ = તાદૃશાં અપિ 'અવિતિત્તા કામાણ' અવિતૃપ્તાઃ કામાના = કામભોગેષુ
 વૃત્તિરઘિતા એવ 'ઉવણમંતિ મરણધમ્મ' મરણધર્મમુપનમન્તિ ॥ સૂં ૮ ॥

પુનઃ કેઽબ્રહ્મસેવિન ૧ ઇત્યાહ 'ભુજ્જો મહલિય' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ભુજ્જો મહલિયણરવરિદા સવલા સઅંતેઊરા સપ-
 રિસા સપુરોહિયાઽમચ્ચંડંડણાયગસેણાવેદ — મતિણીદ — કુસલા
 ણાણામણિ—રચણં-વિઉલધણધણસચચ-નિહિસમિદ્ધકોસા, રજ્જ-
 સિરિવિઉલમણુભવિત્તા વિક્કોસંતા વલેણમત્તા તે વિ ઉવણ-
 મંતિ મરણધમ્મ અવિતિત્તા કામાણં ॥ સૂં ૯ ॥

ટીકા—'ભુજ્જો' ભૂય = પુનરપિ 'મહલિય ણરવરિદા' માણ્ડલિકનર
 વરેન્દ્રા. = મણ્ડલાધિપતય (સવલા) સવલાઃ = સેના સહિતાઃ 'સ અંતેઊરા'

તિ લાલિયતા) જો જનપદપ્રધાનભૂત દેશો મેં રત્નરૂપ તે માની ગઈ
 અર્થાત્-સર્વોત્કૃષ્ટ સ્ત્રિયોં કે સાથ આનંદ કરતે હેં-વૈષયિક સુખોં, કો
 ભોગતે હેં (તેવિ) એસે વે ચલદેવ ઓર વાસુદેવ મી (અતુલસદ્ધારિસ-
 રસસ્વગધે ય અણુભવિત્તા) અતુલ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ, એવ ગધ રૂપ
 વિષયોંકા અનુભવ કરકે મી (અવિતિત્તકામાણ) કામભોગોં કી વૃત્તિસે
 વિહીન હી (ઉવણમતિમરણધમ્મ) મરણધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હેં ॥ સૂં ૮ ॥

અથ સૂત્રકાર “ઔર કૌન અબ્રહ્મસેવી હોતે હે” ઇસ ઘાત કો
 કહતે હે—'ભુજ્જો મહલિયણરવરિદા' ઇત્યાદિં.

ટીકાર્થઃ—(ભુજ્જો મહલિય ણરવરિદા) ફિર જો મહલાધિપતિ

લાલિયતા” જે મુખ્ય મુખ્ય દેશોમા રત્નમમાન ગણાતી એટલે કે અનુપમ
 સ્ત્રીઓ માથે આનંદ કરે છે વૈષયિક મુખોને ભોગવે છે “તે વિ” એવા તે
 બળદેવ અને વાસુદેવ પણ “અતુલસદ્ધારિસરસસ્વગધે ય અણુભવિત્તા”
 અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ રૂપ વિષયોનો ઉપભોગ કરવા
 છતા પણ “અવિતિત્તકામાણ” કામભોગોથી અતૃપ્ત એવી હાલતમા જે “ઉવ-
 ણમતિ મરણધમ્મ” મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂં ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર બતાવે છે કે બીજા અબ્રહ્મસેવી કોણ હોય છે? “ભુજ્જો
 મહલિયણરવરિદા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ભુજ્જો મહલિયણરવરિદા” અને જે માહલિકો હોય છે, તેઓ કેવાં

વધનિયમહુરગભીરણિદ્વયોમા ' શારદનસ્તનિતમધુરગમ્भीરસ્નિગ્ધોપાઃ =
 શારદ=શરત્કાલિકં યદ્યસ્તનિત = નૂતનો મેઘધ્વનિઃ તદ્દન્મધુર-ચર્ણમુલકરઃ
 ગમ્भीર' સ્નિગ્ધઃ=સ્નેહજનકઃ ઘોષઃ=શબ્દો યેષાં તે તથા, 'નરસીહા' નરસિંહાઃ=
 નરેષુ સિંહાદય, એવત્સાધર્મ્યમાદ—'સીહવિક્રમગર્દ' સિંહવિક્રમગતયઃ=સિંહમ્યેવ
 વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ ગતિથ ચેષાં તે તથા 'અત્યમિયપવરરાયમીદા' અસ્તમિત
 પ્રવરરાજસિંહાઃ=અસ્તમિતાઃ=અસ્ત પ્રાપિતાઃ પરાજિતાઃ પ્રવરાઃ-વિશિષ્ટાઃ
 રાજસિંહાઃ=શૂરરાજાનો ચૈસ્તે તથા । 'સોમ્મા' સૌમ્યાઃ=સૌમ્યરૂપાઃ 'વારવર્દ
 પુણ્ણચંદા' દ્વારાવતી પૂર્ણચન્દ્રાઃ=દ્વારકાપુર્યાઃ આહાદકત્વાત્ પૂર્ણચન્દ્રસ્વરૂપાઃ,
 'પુન્વકયતવપ્પમાવા' પૂર્વકૃતતપ પ્રમાનાત્ = પૂર્વમવકૃતતપો માદાત્મ્યાત્ 'નિ
 વિદ્વસચિયસુહા' નિવિદ્વસચિવસુહાઃ=નિવિદ્વાનિ=લગ્નાનિ સચ્ચિતાનિ=પૂર્વ-
 ભવોપાર્જિતાનિ સુહાનિ ચૈસ્તે તથા 'અણેગવાસસયમાઝ્વતો' અનેક વર્ષશતા
 યુગ્મન્તઃવર્ષસહસ્રાધાયુષ્કાઃ, 'મજ્જાહિય જાળવયપ્પહાણાદિ' માર્યામિથ જનપદ-

મહાતેજસ્વી હોતે હૈં તથા (સારયણવધનિયમહુરગભીરણિદ્વયોમા)
 જિનકા ઘોલના શરદકાલીન નવીનમેઘધ્વનિ કે જેસા કર્ણસુરપ્રર ઘ
 સ્નિગ્ધ-સ્નેહજનક હોતા હૈ, તથા (નરસીહા) જો મનુષ્યોં કે ઘોચ મેં
 સિંહ કે જેસે હોતે હૈં તથા (સીહવિક્રમગર્દ) જિનકા પરાક્રમ ઓર ગમન
 સિંહ કે સમાન હોતા હૈ, તથા (અત્યમિયપવરરાયમીદા) જો અપને પરાક્રમ
 સે-પ્રવર રાજસિંહોં કો અસ્તમિત-પરાજિત-કર દેતે હૈ । તથા જો
 (સોમ્મા) સૌમ્યરૂપ હોતે હૈં, ઘવ (વારવર્દપુણ્ણચંદા) દ્વારકાપુરી કે
 આહાદક હોનેકે કારણ જો પૂર્ણચન્દ્રસ્વરૂપ હોતે હૈં (પુન્વકયતવપ્પમાવા
 નિવિદ્વસચિયસુહા) તથા-જો પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પહિલે ભવોં મેં
 ઉપાર્જિત સુખોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં, તથા (અણેગવાસસયમાઝ્વતો) જો
 સૈકડો વર્ષોં કી આયુવાલે હોતે હૈં, તથા (મજ્જાહિય જળવયપ્પહાણા-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્નિગ્ધ-સ્નેહ જનક
 હતા, તેથી “ નરસીહા ” જે માણુમેની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા “ સીહ
 વિક્રમેગર્દ ” જેમની ગતિ અને જેમનું પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા
 “ અત્યમિયપવરરાયસીહા ” જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજામિહોને મહાત
 કરતા હતા તથા જે “ સોમ્મા ” સૌમ્ય હતા, અને “ વારવર્દ પુણ્ણચંદા ”
 દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચન્દ્ર હતા, “ પુન્વકય
 તવપ્પમાવા નિવિદ્વસચિયસુહા ” તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગ
 ળના ભવોમા ઉપાર્જિત સુખો પ્રાપ્ત કરે છે તથા “ અણેગવાસસયમાઝ્વતો ”
 જે સેકડો વર્ષના આયુષ્ય વાળા હોય છે, તથા “ મજ્જાહિયજળવયપ્પહાણાદિ

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—‘ भुज्जो उत्तरकुरु ’ इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु—देवकुरु—व्रणविवर—पायचारिणो नर-
गणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थ सोम-
पडिपुण्णरूवदरिसणिजा सुजायसव्वगसुंदरंगा रत्तुप्पलपत्त-
कंतकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्व-
सुसहयगुलया उण्णय—तणु—तव—निद्ध—नखा सठियसुसिलि-
ट्ठगूढगोफा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिमग्गगू-
ढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्रम
विलासियगई वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुव-
लेवा पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्ठिय कडीगंगावत्तगदाहिणा—
वत्ततरगभगुररविकिरणवेहिहयविकोसायंत — पम्ह — गभीर-
वियडनाभी साहयसोणंदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगळरू
सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसंहियजच्चतणुकसिणनिद्ध
आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकु-
च्छी झसोदरा पम्ह वियडणाभी संनयपासा संगयपासा सुदर-
पासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरडुय कणगरुयग
निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसम-
तलउवइयवित्थिण्णपिहुलवच्छा जुयसणिभ — पीणरइय

(अविनत्ता कामार्ण) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म
उवणमत्ति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू०९ ॥

“ ते वि ’ ते भाउलिड आदि शब्दों। पणु “ अविनत्ताकामाण ” अभिलोकोत्थी
अतृप्त रहीने व “ मरण धम्म उवणमत्ति ” भूत्यु पाभे छे ॥ सू ९ ॥

સાન્તઃ પુરા = સસ્ત્રીકા ' સપરિસા ' સપરિપદઃ = સપરિવારાઃ ' સપુરોહિયા મચ્ચ
 હડળાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા ' સપુરોહિતામાત્ય-દણ્ડનાયકસેનાપતિ મન્ત્રિ-
 નીતિકુસલાઃ = તત્ત્વ પુરોહિતાઃ = શાન્તિકર્મકારિણઃ અમાત્યાઃ = મન્ત્રિણઃ દણ્ડ
 નાયકાઃ = કોટપાલાદયઃ સેનાપતયઃ મન્ત્રિણશ્રી કીદશાસ્ત્રે ? इत्याह-नीतिकुसलाः
 નીતૌ = સામદામાદિ રૂપાયા કુસલાઃ = નિપુણા, તૈઃ સહિતાઃ ' ણાણામણિરયણ
 વિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોમા ' નાનામણિરત્નવિપુલધનધાન્યસચ્ચય-નિધિ
 સમૃદ્ધકોશાઃ = ચક્રવર્તિર્ગણે કૃતવ્યાખ્યાનમિદમ્ । ' વિઝલ ' વિપુલ =
 મહતી ' રજ્જસિરિ ' રાજ્યશ્રિય = રાજ્યલક્ષ્મીમ્ ' અણુભવિતા ' અનુભૂય = ઉપભૂજ્ય
 ' વિક્કોસતા ' વિકોશન્તઃ = અન્યાન્ પીડયન્ત ' વલેગ મત્તા ' વલેન મત્તાઃ = વલ્ગ
 વિતાઃ, ' તે વિ ' તેડપિ-માંડલિકાદયઃ, ' અવિતત્તા કામાણ ' કામાનામવિતૃતાઃ =
 કામોપભોગેષુ વૃત્તિરહિતા एष, ' ઉચ્ચમતિ મરણધર્મમ્ ' મરણધર્મમુપનમન્તિ ॥ સુ. ૦૯ ॥

હોતે હૈં, વે કૈસે હોતે હૈં ? સો કહતે હૈ— (સવલા) સેના સહિત હોતે
 હૈં, (સઅતેઝરા) અતઃપુરસે જો યુક્ત હોતે હૈં, (સપરિસા) પરિવાર
 સહિત હોતે હૈં, (સપુરોહિયામચ્ચહડળાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા)
 જિનકે શાતિકર્મ કરાને વાલે પુરોહિત અમાત્ય, દણ્ડનાયક ઓર સેના-
 પતિ સામ દાન આદિ રૂપ રાજનીતિ મેં કુશલ હુઆ કરતે હૈં । તથા—
 (ણાણામણિરયણવિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોસા) નાનામણિ
 યોં સે, રત્નોં સે, વિપુલ ધન ધાન્ય કે સચય સે ઓર નિધિયોં સે જિન
 કા કોશ સમૃદ્ધ રહતા હૈ, તથા જો (વિઝલ) વિપુલ (રજ્જસિરિ)
 રાજ્યશ્રી કો (અણુભવિતા) ભોગ કરકે (વિક્કોસતા) દૂસરે વ્યક્તિયોં
 કો રાતદિન પીડિત કિયા કરનેવાલે તથા (વલેન મત્તા) અપને બલ સે
 ગર્વિત વને હુએ (તે વિ) ઇસ પ્રકાર કે વે ભી માંડલિક આદિ રાજા

હોય છે, તે હો છે—“ સવલા ” તેઓ સેનાયુક્ત હોય છે, “ સ અતેઝરા ”
 અત પુરથી યુક્ત હોય છે, “ સપરિવારા ” પરિવાર યુક્ત હોય છે, “ સપુરોહિયા
 મચ્ચહડળાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા ” જેમના શાંતિ કર્મ કરાવનારા પુરોહિત
 અમાત્ય દંડનાયક અને સેનાપતિ સામ, દામ, આદિ રૂપ રાજનીતિ બાણુકાર
 હોય છે તથા “ ણાણામણિરયણવિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોસા ” વિવિધ
 મણિયો, રત્નો, વિપુલ ધન-ધાન્ય આદિના સચયથી તથા નિધિયોથી
 જેમનો ખજાનો સદા સમૃદ્ધ રહે છે તથા જે “ વિઝલ ” વિપુલ “ રજ્જસિરિ ”
 રાજ્ય લક્ષ્મીનો “ અણુભવિતા ” ઉપભોગ કરે છે, “ વિક્કોસતા ” ખીબા લોકોને
 રાતદિવસ પીડનારા તથા “ વલેન મત્તા ” પોતાના બળથી ગર્વિત બનેલા એવા

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—‘ भुज्जो उत्तरकुरु ’ इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु—देवकुरु—वणविवर—पायचारिणो नर-
गणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थ सोम-
पडिपुण्णारूवदरिसणिज्जा सुजायसव्वगसुदरंगा रत्तुप्पलपत्त-
कत्तकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्व-
सुसहयगुलया उण्णय—तणु—तंव—निद्ध—नखा संठियसुसिलि-
ट्ठगूढगोफा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिमग्गगू-
ढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्रम
विलासियगई वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुव-
लेवा पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्ठिय कडीगगावत्तगदाहिणा—
वत्ततरगभगुररविकिरणवेीहियविकोसायंत — पम्ह — गभीर-
वियडनाभी साहयसोणदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगळरू
सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसंहियजच्चतणुकसिणनिद्ध
आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकु-
च्छी झसोदरा पम्ह वियडणाभी संनयपासा संगयपासा सुदर-
पासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरडुय कणगरुयग
निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसम-
तलउवइयवित्थिण्णपिहुलवच्छा जुयसणिणभ — पीणरइय

(अवितत्ता कामाणं) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म
उवणमति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू०९ ॥

“ ते वि ” ते भाउलिउ आदि राज्ञो पणु “ अवितत्ताकामाण ” कामभोगोधी
अतृप्त रहीने ॥ “ मरण धम्म उवणमति ” भूयु पासे छे ॥ सू. ९ ॥

પીવર પડદસઠિય સુસિલિટ વિસિંદુલટસુણિચિય થળથિરસુ
વિદ્ધસધીપુરવરફાલિહવટિય ભુજા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા:—‘ ભુજ્જો ’ ભૂય: = પુનરપિ ‘ ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો ’
ઉત્તરકુરુ-દેવકુરુ - પુનવિવરપાદચારિણ: = ઉત્તરકુરુનાં દેવકુરુના ચ ક્ષેત્ર
વિશેષાણાં યાનિ વનવિવરાણિ = વનસ્પતી કન્દરાદિસ્થાનાનિ તત્ર વાહનાભાવાત્
પાદૈ: = ચરણૈશ્વરન્તિ યે તે તથા, નરગણા: = યુગલિકા, ‘ ભોગુત્તમા ’ ભોગોત્તમા =
ભોગપ્રધાના: ‘ ભોગલક્ષણધરા ’ ભોગલક્ષણધરા = સ્વસ્તિકાદિ ભોગસૂચકલક્ષણ
વન્ત, ‘ ભોગસસ્સિરિયા ’ ભોગસશ્રીકા = ભોગશોભાશાલિન: ‘ પસત્યસોમ્મપડિ
પુણ્ણરૂવદરિસણિજ્જા ’ મશસ્તસૌમ્યપ્રતિપૂર્ણરૂપદર્શનીયા = મશસ્ત સૌમ્યમ્ = અતિ-
મનોહ્ર પ્રતિપૂર્ણ = સુપૂર્ણ રૂપમ્ = આકૃતિર્યેવા તે તથા ‘ સુજાયસઙ્ગસુદરગા ’

અથ સૂત્રકાર “ ભોગભૂમિયોં કે જીવોં કી ખી યરી હાલત હોતી
હે ” યહ કહતે હે—‘ ભુજ્જો ઉત્તરકુરુદેવકુરુ ’૦ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ:—(ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો) ઉત્તરકુરુ તથા
દેવકુરુ યે ભોગભૂમિયા હે । इन भोगभूमियों में वाहन-सवारी-के
अभाव से पैरों से ही वहा की वनस्थलियों में—कन्दरा आदि स्थानों में
भ्रमण किया करते हैं । (नरगणा) ये युगलिक मनुष्यगण (भोगुत्तमा)
उत्तम भोगवाले होते हैं । (भोगलक्षणधरा) स्वस्तिक आदि जो
भोगसूचक चिन्ह हैं उनसे ये विशिष्ट होते हैं । अतः वे (भोगसस्सि
रीया) भोगों को भोगना इसी में ये अपनी शोभा मानते हैं । (पस
त्थसोम्मपडिपुण्णरूवदरिસણિજ્જા) अतिमनोह्र पूर्णरूप से ये दर्शनीय

હવે સૂત્રકાર “ ભોગ ભૂમિયોના જીવોની પણ એ જ હાલત હોય છે ”
તે જતાવે છે “ ભુજ્જો ઉત્તરકુરુ દેવકુરુ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ:—“ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો” ઉત્તર કુરુ તથા દેવકુરુ, એ
ભોગ ભૂમિયો છે તે ભોગ ભૂમિયોમા વાહનને અભાવે પગપાળા જ મુસાફરી
થઈ શકે છે તે પ્રદેશમા રહેતા “ નરગણા ” યુગલિકો “ ભોગુત્તમા ” ઉત્તમ
ભોગ વિલાસ સેવનારા હોય છે “ ભોગલક્ષણધરા ” સ્વસ્તિક આદિ જે ભોગ
સૂચક ચિહ્નો હોય છે તેમનાથી તેઓ યુક્ત હોય છે તેથી તેઓ “ ભોગસ
સ્સિરીયા ” ભોગોનો ઉપભોગ કરવામા જ પોતાની શોભા માને છે “ પસત્ય
સોમ્મપડિપુણ્ણરૂવદરિસણિજ્જા ” તેઓ અતિશય મનોહર અને અર્વાંગ સુંદર
હોય છે, “ સુજાયસઙ્ગસુદરગા ” તેમના હરેક શારીરિક અંગ અદર અને

સુજાતસર્વાદ્રિસુંદરાદ્વાઃ = સુપુષ્પસુંદરાઽવયવાઃ ' રત્તપ્પલપત્તકતકરચરણકોમલ-
તલા ' રત્તોત્પલપત્રકાન્તકરચરણકોમલતલાઃ = રત્તોત્પલસ્ય પત્રમિવ કાન્તાનિ=
સુંદરાણિ કરચરણાના કોમલાનિ તલાનિ યેષા તે તથા રત્તકમલદલતુલ્ય
સુકોમલસુરક્ત હસ્તપાદતલાઃ ' સુપદ્મિયકુમ્મચારુચરણા ' સુપ્રતિષ્ઠિતકર્મ-
ચારુચરણાઃ = સુપ્રતિષ્ઠિતૌ = શોભનાકૃતિકૌ કર્મવત્=ઉન્નતત્વેન કચ્છપપીઠવત્
ચારુ=સુંદરૌ ચરણૌ યેષા તે તથા, તથા ' અણુપુવ્વસુસહયગુલિયા ' અનુપૂર્વસુસ-
હતાઙ્ગુલિકાઃ=અનુપૂર્વ=અનુક્રમેણ=ગુરુલઘુક્રમેણ સુસંહતાઃ=સુમદ્ભૂતિ અઙ્ગુલ્યઃ=
હસ્તપાદાઙ્ગુલયો યેષાં તે તથા ગુરુલઘુન્યુનાધિકદોષરહિતાઙ્ગુલિકાઃ ' ઉણ્ણય-
તણુતવનિદ્ધનસ્વા ' ઉન્નતતણુતામ્રસ્નિગ્ધનસ્વાઃ = તત્ર ઉન્નતા = મધ્યોન્નતા
તનવ = પ્રતલા સ્તામ્રાઃ=તામ્રવર્ણા સ્નિગ્ધાઃ=સુકોમલા કાન્તિયુક્તાશ્ચ નસ્વા યેષા
તે તથા, ' સંઠિયસુસિલિદ્વગૂઢગોફા ' સસ્થિત સુશ્લિષ્ટગૂઢગુલ્ફા. = સસ્થિતૌ=
સમ્યક્ સસ્થાનવન્તૌ સુશ્લિષ્ટૌ=પુષ્ટત્વાત્ સુસંહતૌ અતएव ગૂઢૌ=અલક્ષિતૌ ગુલ્ફૌ=
ઘુટિકે યેષા તે તથા ' ણીકુરુવિદવત્તાવદ્દાણુપુવ્વજવા ' ણી કુરુવિન્દવત્તા

ચહે સુંદર હોતે હૈં । (સુજાયસવ્વગસુદરગા) इनके प्रत्येक शारीरिक
अवयव सुन्दर एव पुष्ट होते हैं । (रत्तुप्पलपत्तकतकर चरणकोमलतला)
इनके हाथ और पैरों के तलिये रक्तकमल के पत्ते के समान लाल और
कोमल होते हैं । (सुपद्विद्यकुम्भचारुचरणा) इनके दोनों चरण
शोभन आकृतिवाले एव कर्म की पीठ की तरह उन्नत होने से बड़े
सुहावने होते हैं (अणुपुव्वसुसहयगुलिया) हाथ और पैरों की अंगुलिया
इनकी गुरु लघु के क्रम से सुसंगठित रहती हैं, अर्थात् इनके हाथ
पैरों की अंगुलियां गुरु, लघु-तथा न्यूनाधिक दोष से रहित होती है ।
(उण्णयतणुतवनिद्धनस्वा) नख इन्हों के मध्य में उन्नत, पतले और
ताम्रवर्ण के होते हैं । तथा कोमल और कान्ति सहित होते हैं ।
(संठियसुसिलिद्वगूढगोफा) इनके दोनों घुटने सुसंस्थान वाले, पुष्ट

પુષ્ટ હોય છે “ રતુપ્પલપત્તકતકરચરણકોમલતલા ” તેમની હથેળી તથા
પગના તળિયા લાલ કમલ પત્ર સમાન લાલ રંગના અને કોમળ હોય છે
“ સુપદ્મિયકુમ્મચારુચરણા ” તેમના બંને પગ સુદર ઘાટવાળા, તથા કાચબાની
પીઠ જેવા ઉન્નત હોવાથી ઘણા શોભિત હોય છે “ અણુપુવ્વસુસહયગુલિયા ” તેમના
હાથપગની આંગળીઓ સુસંગઠિત હોય છે એટલે કે ગુરુતા લઘુતા આદિ દોષોથી
રહિત હોય છે, સપ્રમાણ હોય છે “ ઉણ્ણયતણુતવનિદ્ધનસ્વા ” તેમના નખ
મધ્યમા ઉન્નત, પાતળા, તામ્રવર્ણા, કોમળ અને કાન્તિયુક્ત હોય છે ‘ સંઠિય
સુસિલિદ્વગૂઢગોફા ” તેમની બંને ઘુટણો સપ્રમાણ, પુષ્ટ અને સહિત તથા

વૃત્તાનુપૂર્વજઙ્ઘાઃ=તત્ર-एणी=हरिणी, तस्याभेद जङ्घा ग्राणा, ते इव, तथा कुरु
विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता'-अय-देगीशब्दः स्त्रीलिङ्गः मूत्रयन्त्रक मूत्रयन्त्र-
यन्त्रमित्यर्थः 'ताम्बा' 'तकली' इति भाषा समिद्धा, ते इव वृत्ते=रसुले
अनुपूर्वे=आनुपूर्व्येण-अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूले जङ्घे येषां ते तथा । 'समुग्ग-
निसग्गगूढजाणू' समुद्रनिमग्नगूढजानवः=समुद्रः=सपिधानःपिटवस्तद्वत् निमग्ने=
पुष्टत्वादन्तः सलीने अत एव गूढे-अलसिते जानुनी चेपा ते तथा सुपुष्टत्वाद्गु
पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयसमण सुजायसनिभोरू' गजभ्रमनसुजातसनिभो
रवः-गजभ्रमन = हस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसस्थानयुक्तः तस्यसनिभ=
सदृशे ऊरुगी=जानूपरिभागौ येषां ते तथा । 'वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासि
यगई' वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्र स चासौ मत्त =

હોને સે સહત તથા અલક્ષિત હોતે હૈ । અર્થાત્ દિગ્વિલાઈ નહીં પડતે હૈ
(एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणु पुण्यजघा) इनकी दोनों जघाएँ हरिणी की
जघाओं के समान तथा कुरुविंद तृणविशेष के समान एव वत्ता-तकली
के समान घृत्त-गोलरहती है । और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है ।
(समुग्गनिसग्गगूढजाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-महित
पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते हैं
अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं । (गय-ससण-सुजाय-
सनिभोरू) सुसस्थानयुक्त हस्तिशुण्डादण्ड के समान जिनकी दोनों ऊरु-
साथलें होती हैं, अर्थात्-जानु के उपर का भाग जिनका सुसस्थान युक्त
हाथी के शुण्डादण्ड के समान होता है (वर-वारण-मत्त-तुल्य-विक्रम-
विलासिय-गई) मदमत्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી “ एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणु
वजघा ” તેમની બંને જઘાઓ હરણીની બંને જઘાઓ સમાન તથા કુરુવિંદ
(તૃણવિશેષ) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, અને તે ઉપર
જતા ધીમે ધીમે વધારે જડી થતી જાય છે “ समुग्गनिसग्गगूढजाणू ” તેમના
બંને જાનુઓ ઠાકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અદરને
અદર છુપાયેલા રહે છે-એટલે કે ઊડા હોવાને કારણે ગૂઢ રહે છે “ गय-
ससण-सुजायस निभोरू ” જેમના બંને સાથળો સુધટિત હસ્તિશુણ્ડાદડ સમાન
હોય છે, એટલે કે જાનુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિસૂઠ જેવો હોય છે
“ वर-वारण-मत्त-तुल्य-विक्रम-विलासिय-गई ” મદોન્મત્ત ગજેન્દ્રના જેવો
જેમનું પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની નિર્ભય ગતિ

મદાન્વિતસ્તેન તુલ્યઃ=મદશો વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ, તદ્વદેવ વિલાસિતા=વિલાસ-
યુક્તા ગતિ રેખા તે તથા અત્ર ગજસ્ય પરાક્રમેણ ગત્યા ચ સાદૃશ્ય પ્રદર્શિતમ્,
તથા ' વરતુરગસુજાયગુજ્ઞદેસા ' વરતુરગસુજાતગુહ્યદેશાઃ = વરતુરગસ્યેવ =
પ્રશસ્તાઽશ્વસ્યેવ સુજાતઃ=સુસંસ્થિતઃ લઘુત્વેન ગુપ્ત इत्यर्थः, ગુહ્યદેશો યેષાં તે તથા
' આટ્ણગહ્યોઽન્વ નિરુવલેવા ' આકીર્ણદ્વયદ્વ = જાતિમાનશ્ચ ઇત્ત નિરૂપલેપાઃ=
મલલેપવિચર્જિતા ' પમુદ્વયવરતુરયસીન્વઅરેગવદ્વિયકડી ' પ્રમુદિતતુરગસિંહા-
તિરેકવર્તિતકટયઃ=પ્રમુદિતા = પ્રદૃષ્ટા વરતુરગા = જાત્યશ્વાઃ સિંહાઃ = કેસ-
રિણસ્તેભ્યોઽતિરેકેગ = આધિભ્યેન વર્તિતા = વર્તુળા કટિ = કટિપ્રદેશો
યેષાં તે તથા ' ગગાવત્તગદાહિણાવત્તરગભગુરરવિકિરણબોહિયવિકોસાયતપમ્હ-
ગમ્ભીરવિયડનામ્ભી ' ગદ્ધાઽઽવર્તકટક્ષિપાઽવર્તતરજ્ઞમ્ભુરરવિકિરણબોધિતવિકોશા-
યમાનપદ્મગમ્ભીરવિકટનામ્ભયઃ, તત્ર — ગદ્ધાવર્તકા = ગદ્ધા નયા જલભ્રમઃ,
સ ચ દક્ષિણાવર્તઃ તરજ્ઞમ્ભુર તરજ્ઞૈ મ્ભુર = વત્રચ તદ્વત્, તથા રવિકિરણૈ.=
સૂર્યકિરણૈર્બોધિતવિકાસિત વિકાસાવસ્થા પ્રાપ્નુવત્ इत्यर्थः, અત એવ-વિકોશા-

વસી અનુરૂપ હી જિનકી વિલાસયુક્ત ગતિ હોતી હૈ, તથા (વર-તુરગ-
સુજાય ગુજ્ઞદેસા) પ્રશસ્ત ઘોડેકે ગુહ્યભાગકે સમાન જિનકા ગુહ્યભાગ લઘુ
રોનેકે કારણ ગુપ્ત રહતા હૈ । (આટ્ણગહ્યોઽન્વનિરુવલેવા) તથા જાતિમાન
અશ્વકી તરહ વહ ગુહ્યભાગ જિનકા મલકે લેપસે વિચર્જિત રહતા હૈ ।
(પમુદ્વયવરતુરયસીયઅરેગવદ્વિયકડી) અત્ય ન હર્ષ સપન્ન જાત્યશ્વકી તથા
સિંહકી કટિસે મ્ભી અધિક ગોલ જિનકી કટિ હોતી હૈ, તથા (ગગાવ-
ત્તગ દાહિણાવત્ત તરગમ્ભુર રવિકિરણ બોહિયવિકોસાયતપમ્હગમ્ભીરવિય-
ડનામ્ભી) દક્ષિણાવર્ત એવ તરજ્ઞોસે મ્ભુર ગગા નદી કે જલભ્રમ-જલાવર્ત
કે સમાન, તથા—સૂર્યકિરણોં સે મુકુલિત અવસ્થા કો છોડકર વિકા-
સાવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઅ પદ્મ કે સમાન ગમ્ભીર ઓર વિકટ સુન્દર જિનકા

હોય છે, “ વરતુરગ—સુજાયગુજ્ઞદેસા ” તેમનો ગુહ્ય ભાગ પ્રશસ્ત ઘોડાના
ગુહ્યભાગ સમાન લઘુ હોવાને કારણે ગુપ્ત રહે છે, “ આટ્ણગહ્યોઽન્વ નિરુવ
લેવા ” જાતવાન ઘોડાના ગુહ્યભાગની જેમ તેમનો ગુહ્ય ભાગ પણ મળના
લેપથી ગુહિત હોય છે “ પમુદ્વયવરતુરયસીયઅરેગવદ્વિયકડી ” અતિશય
હર્ષસપન્ન જાતવાન ઘોડા તથા સિંહની કટિ કટા પણ જેમની કટિ વધારે
ગોળ હોય છે, તથા “ ગગાવત્તગ-દાહિણાવત્ત તરગ-મ્ભુર-રવિકિરણ-બોહિય
વિકોસાયતપમ્હગમ્ભીરવિયડનામ્ભી ” દક્ષિણના પવનોથી તથા તરગોથી ભગુર
ગગા નદીના જલભ્રમ-જળ વમળ સમાન, તથા ધીડાયેલી અવસ્થાનો ત્યાગ
કરીને સૂર્યના કિરણોને કારણે વિકાસાવસ્થાને પામેલ કમળા સમાન ગમ્ભીર

વૃત્તાનુપૂર્વજઘ્નાઃ=તત્ર-एणी=हरिणी, तस्याभेद जघ्ना ग्राणा, ते इव, तथा कुरु-
विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता'-अप-देशीशब्दः स्त्रीलिङ्गः मृत्ररत्नक मृत्रवेष्टन-
यन्त्रमित्यर्थः 'तामला' 'तकली,' इति भाषा मसिद्धा, ते इव वृत्ते=वस्तुछे
अनुपूर्वे=आनुपूर्व्येण-अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूछे जङ्घे येषां ते तथा । 'समुग्ग-
निसग्गगूढजाणू' समुद्रनिमग्नगूढजानवः=समुद्रः=सपिधानःपिटारस्तद्वत् निमग्ने=
पुष्टत्वादन्तः सलीने अत एव गूढे अलक्षिते जानुनी येषां ते तथा सुपुष्टत्वाद्गु-
पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयससण सुजायसनिभोरू' गजश्वमनसुजातमनिभो-
रयः-गजश्वमन = हस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसम्भानयुक्त. तस्यसनिभे=
सदृशे ऊरुणी=जानूपरिभागी येषां ते तथा । 'वरवारणमत्ततुल्लविक्रमविलासि-
यगई' वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्रः स चासा मत्त =

हોને સે સદૃશ તથા અલક્ષિત હોતે હૈ । અર્થાત્ દિગ્વલાઈ નહીં પડતે હૈ
(एणीकुरुविन्दवत्तावट्टाणु पुन्रजघ्ना) इनकी दोनों जघाएँ हरिणी की
जघाओं के समान तथा कुरुविन्द तृणविशेष के समान एव वत्ता-तकली
के समान वृत्त-गोलरहती है । और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है ।
(समुग्गनिसग्गगूढजाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-महित
पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते हैं
अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं । (गय-ससण-सुजाय-
सनिभोरू) सुसम्भानयुक्त हस्तिशुण्डादण्ड के समान जिनकी दोनों ऊरु-
साथलें होती हैं, अर्थात्-जानु के उपर का भाग जिनका सुसम्भान युक्त
हाथी के शुण्डादण्ड के समान होता है (वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्रम-
विलासिय-गई) मदमत्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી “ एणीकुरुविन्दवत्तावट्टाणु पु-
न्रजघ्ना ” તેમની બંને જઘાઓ હરણીની બંને જઘાઓ સમાન તથા કુરુવિંદ
(તૃણવિશેષ) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, અને તે ઉપર
જતા ધીમે ધીમે વધારે જાડી થતી જાય છે “ समुग्गनिसग्गगूढजाणू ” તેમના
બંને જાનુઓ ઠાકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અદરને
અદર છુપાયેલા રહે છે-એટલે કે જીડા હોવાને કારણે ગૂઢ રહે છે “ गय-
ससण-सुजायस निभोरू ” જેમના બંને સાથળો સુધટિત હસ્તિશુણ્ડાદણ સમાન
હોય છે, એટલે કે જાનુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિસૂઠ જેવો હોય છે
“ वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्रम-विलासिय-गई ” મદોન્મત્ત ગજેન્દ્રના જેવું
જેમનું પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની વિલાસયુક્ત ગતિ

સુજાતઃ=સુન્દરઃ પીનઃ=પુષ્ટશ્ચ કુક્ષિઃ=ઉદરૈકદેશો યેપા તે તથા । તથા 'ઘ્ણપોયરા' ઘ્ણપોદરાઃ-ઘ્ણપસ્યોદરપદુદર=યેપા તે તથા કૃશોદરા इत्यर्थ, 'પમ્હવિયડળામ્બી' પદ્મવિમ્બટનામયઃ=પદ્મપત્ત=કમલકોપપત્ત વિકટા=સુન્દરા નામિ યેપા તે તથા, 'સનયપાસા' સન્નતપાર્શ્વા =પુષ્ટત્વાદધો નમત્પાર્શ્વમાગાઃ 'સગયપાસા' સજ્જત-પાર્શ્વા.=સુમિલ્લિતપાર્શ્વમાગાઃ, અતएव 'સુદરપાસા' સુન્દરપાર્શ્વાઃ 'સુજાયપાસા' સુજાતપાર્શ્વા = સુમસ્થિતપાર્શ્વાઃ 'મિયમાયપીણરઙ્ગપાસા' મિતમાત્રિકૃપીત-રતિદપાર્શ્વાઃ=મિતૌ=માનોપેતૌ, માત્રિકો = માત્રાયુક્તૌ-પરિમાણસપન્નો પીનો=સુપુષ્ટૌ રતિદૌ = રમણીયૌ પાર્શ્વભાગૌ યેપા તે તથા 'અકરદુયકણગરુયગ-નિમ્મલસુજાયનિરુવહયદેહધારી' અકરદુકનકરુચકનિર્મલસુજાતનિરુપ — હતદેહધારિણઃ = તત્ર અકરદુક = પુષ્ટત્વાદનુપલક્ષ્યપૃષ્ઠપાર્શ્વાદિસ્થિક તથા કનકરુચકનિર્મલ, વનરુચક=સુવર્ણાભરણ તદ્વત્ નિર્મલ સુજાત શોભન નિરુપહત ચ=નીરોગ દેહ=શરીર ધારયન્તિ યે તે તથા । તથા 'કણગસિલાતલ્પસત્થસમ

કી કુક્ષિ કે સમાન સુન્દર ઓર પુષ્ટ હોતી હૈ । તથા (ઘ્ણસોયરા) જિનકા ઉદર મત્સ્ય કે ઉદર કે સમાન કૃશ હોતા હૈ । તથા (પમ્હવિ-યડળામ્બી) જિનકી નામિ કમલ કે કોપ કી તરહ ગમ્બીર હોતી હૈ । ત । (સનયપાસા) પુષ્ટ હોને કે કારણ જિનકે દોનો પાર્શ્વભાગ નીચે કી ઓર છૂકે રહતે હૈં હસીલિયે (સગયપાસા) જો પરસ્પરમેં મિલે હુઅ જૈસે પ્રતીત હોતે હૈં ઓર ઘડે સુહાવને લગતે, હૈં તથા (સુજાયપાસા) જિનકે દોનો પોઢવ ભાગોંકા આકાર મ્બી વડા સુહાવના લગતા હૈ, તથા (મિયમાય પીણરઙ્ગ પાસા) વે દોનો પાર્શ્વભાગ માન ઓર પ્રમાણસે યુક્ત ઓર પીન પુષ્ટ હોતે હૈં તથા રમણી હોતે હૈં । તથા (અકરદુ-કણ-ગરુયગ નિમ્મલ સુજાય-નિરુવહય-દેહધારી) પુષ્ટ હોને કે કારણ જિનકી રીઢકી ઓર પાર્શ્વ-ભાગ કી અસ્થિયા દિલ્લાઈ નહીં દેતી હૈં, તથા જો સુવર્ણાભરણ કે

ભાગ) મત્સ્ય તથા પક્ષીની કુક્ષિ સમાન સુદર અને પુષ્ટ હોય છે તથા "ઘ્ણસોયરા" જેમનું ઉદર મત્સ્યના ઉદર સમાન કૃશ હોય છે તથા "પમ્હ વિયડળામ્બી" જેમની નાલિ કમળના જેવી ગમ્બીર હોય છે, તથા "સનય-પાસા" પુષ્ટ હોવાને જેમના બન્ને પાર્શ્વ ભાગો નીચેની બાજુએ ઝુકેલા રહે છે, અને તેથી "સગયપાસા" આપસમા મળી ગયા હોય એવા લાગે છે તથા ઘણા સુદર લાગે છે તથા "સુજાયપાસા" તેમના બન્ને પાર્શ્વ ભાગો પડખાને આકાર પણ ઘણા સુદર લાગે છે, તથા "મિયમાયપીણરઙ્ગપાસા" તે બન્ને પાર્શ્વભાગો પ્રમાણ અને માનથી યુક્ત-પ્રમાણુમરના, અને પીન-પુષ્ટ અને રમણીય હોય છે "અકરદુ-કણ ગરુયગ નિમ્મલ સુજાય નિરુવહય દેહધારી" શરીરે પુષ્ટ હોવાને કારણે જેમના ડોડા તથા પાસળીના હાડકા દેખાતા નથી

યમાન મુકુલાસ્થાં વિમુશ્ચત્ પથ તદ્વદ્ ગમ્ભીરા વિકટા = મુન્દરા ચ નાભિ
 ચેપાં તે તથા, ' સાહય સોળંદ મુમલ્દપ્પણનિગરિયવરકળગત્તમરિસવરકર
 વલિયમજ્ઞા ' સદ્દતસાનન્દમુસલ્દર્પણનિગરિતવરકનત્તમરુવદ્દયવરવજ્ઞ વન્નિ
 મધ્યાઃ = તત્ર સદ્દત = સકોચિત સૌનન્દ = ત્રિકાષ્ઠિયા ' તિપાઈ ' ઇતિમસિદ્ધ
 મુસલ્=મસિદ્ધ. દર્પણ = દર્પણગણ્ડઃ-દર્પણદણ્ડઃ નિગરિતવરકનત્તમરુઃ=નિગરિત=
 સર્વથા શોધિતમ્, અનવ-વરકનત્તમ=જાત્યગુર્ણ તસ્ય તમરુઃ = મ્મદ્મુષ્ટિચેત્યતૈ
 સદ્દશો વરવજ્ઞવન્નવલિતઃ = વક્રઃ કુશથ મધ્યઃ=તત્તુમધ્યમાગો ચેપા તે તથા
 પ્રતલ વદય ઇત્યર્થઃ, ' ઉજ્જગસમમહિયજન્નતણુરુસિણણિદ્વઆદિજ્જલહ
 સુકુમાલમઝયરોમરાઈ ' ઋજુરસમસદ્દિતજાત્યતત્તુરુપ્પાસ્તિગ્ગાઽઽદેયલહ
 સુકુમાલ્લપ્પદરુરોમરાજય = તત્ર ઋજુતાઃ=અકુટિલા સમા=મમુચિત-પમાનાઃ
 સદ્દિતા=સુવના જાત્યતત્તવઃ = સ્વભાવતોઽતિમૂક્ષ્મા કૃપ્પાઃ = કૃપ્પાવર્ણાઃ
 સ્તિગ્ગાઃ=ચિકગઃઆદેયા=પ્રશસ્તાઃલહ્લાઃ=સુન્દરા મુકુમાલા મમદ્દત્તકોમલાઃ
 મૃદ્ધુતાઃ= અતિ કોમલા. રોમરાજય=રોમ્મા શ્રેણયો ચેપા તે તથા, ' ઇસવિહગમુ
 જાયપીણકુચ્છી ' ઇસવિહગમુજાતપીનકુક્ષય = ઇસવિહગમ્-મત્સ્યમ્ પક્ષિવચ્ચ

નાભિપ્રદેશ હોતા હૈ । તથા-(સાહય સોળંદમુસલ્દપ્પણનિગરિયવરકળગ
 છરુ સરિસ વરવઢર વલિયમજ્ઞા) જિનકા મધ્યભાગ સકોચિત તિપાઈ
 કે સમાન, દર્પણદણ્ડ કે સમાન, વ્વ શોધિત જાત્યસ્વર્ણ કી ગ્વદ્મુષ્ટિ
 કે સમાન, તથા ઉત્તમ વજ્ઞ કે સમાન વક્ર ઓર કુશ હોતા હૈ । તથા
 (ઉજ્જગ-સમ-સહિય-જન્ન-તણુ-રુસિણ-ણિદ્વ-આદિજ્જ-લહ્-સુકુ
 માલ-મઝય-રોમરાઈ) જિનની રોમરાજિ અકુટિલ, સમુચિતપ્રમાણોપેત,
 ઘનીભૂત, સ્વભાવત'અતિસૂક્ષ્મ, કાલી, ચિકની, આદેય, સુન્દર, રુમલ
 કે સમાન કોમલ ઓર અત્યત કોમલ હોતી હૈ । (ઇસવિહગમુજાયપી
 ણકુચ્છી) તથા-જિનકી કુક્ષિ-ઉદર કા એક દેશ મત્સ્ય કી ઓર પક્ષી

અને વિકટ-સુદર જેમનો નાભિ પ્રદેશ હોય છે, તથા “ સાહયસોળંદમુસલ
 દપ્પણનિગરિયવરકળગલ્લરુસરિસવરવઢરવલિયમજ્ઞા ” જેમનો મધ્ય ભાગ
 સકોચિત તિપાઈ સમાન, દર્પણ દડ સમાન, તાવેલા મુવણુની તલવારની મૂઠ
 સમાન, તથા ઉત્તમ વજ્ઞ સમાન વક્ર અને પાતળો હોય છે “ ઉજ્જગ-સમ-
 સહિય-જન્ન-તણુ-રુસિણ-ણિદ્વ-આદિજ્જ-લહ્-સુકુમાલ-મઝય રોમરાઈ ” તથા
 જેમની રોમરાજિ અકુટિલ, સમપ્રમાણ, ઘનીભૂત કુદરતી રીતે જ અતિ સૂક્ષ્મ,
 કાળી, સુવાળી, આદેય, સુદર, કમળ સમાન કમળ અને અત્યત કમળ
 હોય છે “ ઇસવિહગમુજાયપીણકુચ્છી ” તથા જેમની કુક્ષિ (ઉદરનો એક

पुनस्ते कीदृशा ? इत्याह—‘भुयगीसर’ इत्यादि ।

मूलम्—भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-फलिह-उच्छूढदी-
हवाहू-रत्ततलोवइय-मउय-मसल-सुजाय लक्खणपसत्थ-अच्छि-
इजालपाणी पीवर सुजाय-कोमल-वरगुली तवतलिणसुइरुइल
निछणखा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा सख-
पाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसा सोवत्थियपाणिलेहा रवि
ससि-सख-वरचक्कदिसा सोवत्थिय-विभत्त-सुरइय--पाणिलेहा
वरमहिसवराहसीह-सइलरिसह नागवर-पडिपुण्ण-विउल-खधा
चउरगुलप्पमाणकवुवरसरिसगीवा अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त
समंसुउवचियमंसल -पसत्थ -सइल-विउल -हणुया ओयचिय
सिलप्पवालविवफलसनिभाऽधरोट्टा पंडुर-ससि-सकल-विमल
संखगोखीर-फेणकुंददगरयमुणालिया घवल-दत्तसेढी अखड
दंता अफुडियदत्ता अविरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता
एगदंतसेढिठ्ठ अणेगदंता हुयवहनिद्धत्त-धोयतत्ततवणिज्जर-
त्ततलतालुजिहा गरुलायय उज्जुत्तुगनासा अवदालियपुडरीय
णयणा विकोसियधवलपत्तलच्छा आणामिय — चावरुइल
किण्हवभराइ- सठिय-सगचाययं-सुजाय-भूमगा--अल्लीणपमाण-
जुत्तसवणा सुस्सवणा पीयमंसलकवोलदेसभागा अविरुग्गय
वालचदसठियमहानिलाडा उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणा
छत्तागारुत्तमगदेसा घणनिचिय सुवद्धलक्खणुण्णय-कूडागार
निभापिडियग्ग-सिराहुयवहनिद्धत्त - धोयतत्ततवणिज्जरत्तकेसत्त-

परिधा (भोगल) के समान गोलरहोते हैं । ऐसे ये भोगभूमिके मनुष्य
भी कामभोगोंसे अतृप्त होकर ही मरण धर्मको प्राप्त करते हैं ॥सू० १०॥

ते भोगभूमिना बोधे । पणु काम भोगोथी अतृप्त रह्हीने न अत्यु पाभे ॥सू० १०॥

તત્ત્વત્વયદિવિત્થિણ્ણ પિહુલ્લવચ્છા 'કનકશિલાતલ-પ્રશસ્ત મમતલોપચિત વિસ્તીર્ણ
 પૃથુલવક્ષસઃ=કનકશિલાતલ = સુવર્ણશિલાપટ્ટકમિત્ત પ્રશસ્ત સમતલમ્=અવિષમ
 ઉપચિત=પુષ્ટ-વિસ્તીર્ણ=વિશાળ તથા પૃથુલ=સ્થૂલ વક્ષસઃ=વક્ષસઃ સ્થાન યેવા તે તથા
 'જુયસણિમપીણરહ્ય-પીર-પઞ્ચ સઠિય-સુસિલિટ્ઠ વિસિટ્ઠલટ્ઠ-સુણિચિય-ઘણ થિર
 સુવધ, સધી ' તત્ર ' જુયસણિમ ' યુગસન્નિમો=યુગકાષ્ઠન્યો ' પીણ ' પીનો=સ્થૂલો
 ' રહ્ય ' રતિદો=રમણીયો પીરો=પુષ્ટો ' પઞ્ચ ' પ્રકોષ્ઠો=દસ્તમણિવન્યપ્રદેશો-
 તથા ' સઠિય ' સસ્થિતાઃ=મસ્થાનવિશેષયુક્તા ' સુસિલિટ્ઠ ' સુશિષ્ટાઃ=સુમિલિતાઃ
 ' વિસિટ્ઠલટ્ઠ ' વિસિષ્ટાઃ=સુમનોદરાઃ ' સુણિચિય ' સુનિચિતાઃ = સુમગઠિતાઃ
 ઘના ' થિર ' સ્થિરા=સુદઢા સુવન્યાઃ =શોભનાવયવસન્નિવેશયુક્તાઃ મન્ધયઃ =
 અસ્થિ સન્ધાનાનિ યેવા તે તથા, ' પુરવરફલિહ-વટ્ટિયમુયા ' પુરવરપરિવર્તિત
 મુજાઃ=પુરવરપરિવરત્=નગરદ્વારકપાટરોધનકાષ્ટચ્ચ વર્તિતો=વર્તુલો મુજો=વાહુ
 યેવા તે તથા । એતાદશાસ્તેઽપિ કામમોગૈરતૃપ્તા એવ મરણધર્મમુપનમન્તીતિ-
 સમ્પન્ધઃ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સમાન નિર્મલ, સુન્દર રોગરહિત શરીર કે ધારી હોતે હે (કનકશિલા-
 તલપસત્યમમતલત્વયદિવિત્થિણ્ણપિહુલવચ્છા) તથા જિનકા વક્ષ
 સ્થલ સુવર્ણશિલા કે પટ્ટક સમાન પ્રશસ્ત એવ સમતલ વાલા હોતા હે
 ઉપચિત-પુષ્ટ હોતા હે, વિસ્તીર્ણ હોતા હે તથા પૃથુલ-સ્થૂલ-મોટા-
 હોતા હે (જુયસણિમપીણ-રહ્યપીવરપઞ્ચસઠિયસુસિલિટ્ઠવિસિટ્ઠલટ્ઠસુણિ-
 ચિયઘણથિરસુવધસધી) ઇનકા મણિવધ પ્રદેશ જુઆ કે સમાન સ્થૂલ,
 રમણીય ઓર પુષ્ટ હોતા હે । તથા ઇનકે હાઠોં કી સધિયા સસ્થાન
 વિશેષ સે યુક્ત, પરસ્પર અચ્છી તરહ મિલી હુઈ, મનોદર, સુસગઠિત,
 ઘનીભૂત, સુદઢ એવ અચ્છી અવયવોં કી રચના સે યુક્ત હોતી હે ।
 (પુરવરફલિહવટ્ટિયમુયા) ઇનકે દોનો વાહુ નગર કે દ્વાર કે ઉત્તમ

“ જોઓ સૂવર્ણના આભૂષણો જેવું નિર્મળ, સુદર અને નીરોગી શરીર ધરાવે
 છે, “ કનકશિલાતલપસત્યસમતલત્વયદિવિત્થિણ્ણપિહુલવચ્છા ” તથા જેમની
 છાતીનો ભાગ સુવર્ણશિલા જેવો પ્રશસ્ત સમતલ, ઉપચિત-પુષ્ટ, વિસ્તીર્ણ
 વિશાળ તથા પૃથુલ-મોટો હોય છે, “ જુયસણિમ-પીણ-રહ્ય-પીવર-પઞ્ચ-સઠિય
 સુસિલિટ્ઠ-વિસિટ્ઠ-લટ્ઠ-સુણિચિય-ઘણથિર-સુવધસધી ” તેમના ખભા ધૂસરી જેવા
 સ્થૂળ, રમણીય અને પુષ્ટ હોય છે તથા તેમના અસ્થિઓના સાધા સુવ્યવસ્થિત
 અરસ્પરમ સારી રીતે જોડાયેલ, મનોદર, સુસગઠિત, ઘનીભૂત, સુદઢ, અને
 અવયવોની સુદર રચના વાળા હોય છે “ પુરવરફલિહવટ્ટિયમુયા ” તેમની
 બંને બુજા નગરના દરવાજાના ઉત્તમ ભાગો જેવી ગોળાકાર હોય છે એવા

મુજાડત્યર્થઃ, ' રત્તતલોવડયમડયમસલ્સુજાયલક્ષણપસત્યઅન્નિઠ્ઠજાલપાળી ' તત્ર- ' રત્તતલ ' રત્તતલો=લોહિતરતલો ' ઉવડય ' ઉપચિતો=પુષ્ટો ' મડય ' મૃદુકો=કોમલો ' મસલ ' માસલો=અદૃષ્ટ નાડી જાલો ' સુજાય ' સુજાતો= સુનિષ્પન્નો ' લક્ષણપસત્ય ' લક્ષણ પ્રશસ્તો=અનેક શુભલક્ષણેઃ પ્રકૃષ્ટો ' અન્નિઠ્ઠજાલા- અન્નિઠ્ઠજાલો = પરસ્પર મિલિતત્વાત્ ઝિદ્રરહિતાદગુલિસમુદાયવન્તો પાળી = હસ્તો યેષા તે તથા ' પીવરસુજાયકોમલવરગુલિ ' પીવરસુજાતકોમલવરાદ્ગુ- લયઃ = સુપુષ્ટસુન્દરકોમલાદ્ગુલિવન્ત ' તતલિણમુરુઢલનિદ્વનચા ' તામ્રત- લિનશુચિરુચિરસ્નિગ્ધ નચાઃ=તામ્રાઃ = રક્તાઃ તલિનાઃ=મતલાઃ શુચયઃ=નિર્મલાઃ રુચિરા = કાન્તિમન્તઃ સ્નિગ્ધાશ્ચ=ચિક્ષ્ણા નચા યેષા તે તથા, ' નિદ્વપાણિલેહા ' સ્નિગ્ધપાણિરેચાઃ = ચિક્ષ્ણહસ્તરેચાવન્તઃ ' ચદપાણિલેહા ' ચન્દ્રપાણિરેચા = ચન્દ્ર = ચન્દ્રાકારા પાળો રેચા યેષા તે તથા ' સૂરપાણિલેહા ' સૂરપાણિરેચા =

હોતી હૈં તથા—(રત્તતલોવ ડયમડયમસલ્સુજાયલક્ષણપસત્ય અન્નિઠ્ઠ જાલપાળી) જિનકે દોનોં હાય લોહિત તલિયો વાલે, પુષ્ટ ભરે હુણ- કોમલતાસે યુક્ત, મામલ-પુષ્ટઅદૃષ્ટનાડીજાલવાલે, અન્નિઠ્ઠે રૂપમે નિષ્પન્ન હુણ, અનેક શુભલક્ષણોં સે પ્રશસ્ત ણય ઝિદ્રરહિત અ ગુલિયોં વાઢે હોતે હૈં તથા—(પીવરસુજાયકોમલવરગુળી) હનકી જો અગુલિયા હોતી હૈં વે સુપુષ્ટ, સુન્દર ણય કોમલ હોતી હૈં ! (તતલિણમુરુઢલનિદ્વનચા) હન અગુલિયોં કે જો નચ હોતે હૈં વે તામ્ર વર્ણવાલે હોતે હે તલિન- પતલે હોતે હૈં, નિર્મલ હોતે હૈં, કાન્તિમાન્ હોતે હૈં તથા સ્નિગ્ધ-ચિક્ષ્ણે હોતે હૈં । (નિદ્વપાણિલેહા) હાયોં મેં જો રેચાઈ હોતી હૈં વે મી ચિક્ષ્ણી હોતી હૈં । (ચદપાણિલેહા) તથા હનકે હાયો કી યે રેચાઈ કિતનીક નો ચન્દ્રાકાર હોતી હૈં (સૂરપાણિલેહા) કિતનીક મૂર્ય કે આકાર કી હોતી

પરિધા (ભોગણો) સમાન દીર્ઘ-લામી હોય છે, તથા “ રત્તતલોવડયમડયમસલ્ સુજાય-લક્ષણ-પસત્ય-અન્નિઠ્ઠ-જાલપાળી ” તેમના બે હાથ લાલ હોયેલીવાળા, પુષ્ટ કોમળ મામલ-નસો તથા ડેગવાહિનીઓની જાળ ન દેખી ગડાય તેવા સુધટિત, અનેક ગુલ લક્ષણોથી પ્રશસ્ત, અને ઝિદ્ર રહિત આગળીયો વાળા હોય છે, તથા “ પીવર-સુજાય-કોમલ-વરગુલી ” તેમના હાથની આગળીયો સુપુષ્ટ, સુદર અને કોમળ હોય છે “ તતલિણમુરુઢલનિદ્વનચો ” તે આગ- લીયોના નળ તામ્રવર્ણી હોય છે ‘ તલિન-પાતળા હોય છે નિર્મળ હોય છે સુવાળા અને કાન્તિ યુક્ત હોય છે “ નિદ્વપાણિલેહો ” તેમના હાથમા જે રેખાઓ હોય છે તે પણ સ્નિગ્ધ, સુવાળી હોય છે “ ચદપાણિલેહા ” તેમના ઉપરની કેટલીક રેખાઓ ચન્દ્રાકાર, “ સૂરપાણિલેહા ” કેટલીક સૂર્યાકાર, કેટલીક

કેસભૂમી સામલિ-પોંડવણ નિચિયચ્છોડિય-મિડાવિસય પસ
 ત્થસુહુમલપ્રલણસુગંધિસુદરભુયમોયગર્ભિગ-નીલકજ્જલપહિદ્ધ
 ભમરગણ-નિદ્ધનિરવ-નિચિયકુચિય — પયાહિણાવત્તમુદ્ધસિ
 રયા સુજાય-સુવિભત્ત-સગયગા-લપ્પણવજણગુણોવવેયા પસ-
 ત્થવત્તીસલપ્પણધરા હસસ્સરા કોચસ્સરા ટંદુહિસ્સરા સીહસ્સરા
 મેહસ્સરા ઓઘસ્સરા સુસ્સરા સુસ્સરનિઘોસા વજ્જરિસહ
 નારાયસઘયણા સમચરંમસઠાણસઠિયા ઘાયઝ્ઝો
 વિયગમગાપસત્થલ્લી નિરાયકા કકગહણી કવોયપરિણામા
 સઝણિવોસાપિદ્ધતરોરુપરિણયા પઝમુપ્પલ-સારસગધ-સાસસુર-
 ભિવયણા અણુલોમવાઝવેગા અવદાયનિદ્ધકોસા વિગ્ગાહિય-
 ઝણ્ણાય કુચ્છીઅમયરસફલાહારી તિગાઝય સમુચ્છિયાતિપ
 લિઓવમઢિતિયા તિણિય પલિઓવમાઙ્ગ પરમાઝ પાલઙ્ગત્તા
 તેવિ ઝવણમતિ મરણધમ્મ અવિત્તિતા કામાણ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

ટીકા:-‘ભુયગી-સર-વિઝલ-ભોગ-આયાણ-ફલિદ્ધ-ઝચ્છદ્ધદીહવાહ’ તત્ર-
 ‘ભુયગીસર’ ભુજગેશ્વર = સર્પરાજસ્તસ્ય યો વિપુલો ભોગ. = મહાન્ કાય. તદ્વત્
 તથા ‘આયાણ’ આન = આદીયત્ત ઇત્યાદાનમ્ = આદેયઃ = સુન્દરો ય’ ‘ફલિદ્ધ’
 પરિધ. = રૂપાટરોધનકાઠ, સ ચ ‘ઝચ્છદ્ધ’ ઝત્તિસ્ત. = સ્વસ્થાનાદ્ વહિર્નિઃકાસિતઃ,
 તદ્વત્ ‘દીહ’ દોર્ધો વાહ યેષા તે તથા ભુજગતુલ્યપરિધતુલ્યલમ્બમાન

ફિર ચે ભોગભૂમિ કે જીવ કૈસે હોતે હૈ ? હસો વિષયકો સૂત્રકાર
 પુનઃસ્પષ્ટ કરતે હૈ—‘ભુયગીસર ૦’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ.— (ભુયગીસર-વિઝલભોગ-આયાણ-ફલિદ્ધ-ઝચ્છદ્ધદીહ
 વાહ) સર્પરાજ કે વિપુલ શરીર કે સમાન તથા અપને સ્થાન સે વહાર
 કિયે હુણ સુન્દર પરિધા કે સમાન, જિનકી દોનો ભુજાયે દોર્ધ-લબી

તે ભોગભૂમિના જીવો કેવા હોય છે, તેનું સૂત્રકાર હજી વધુ સ્પષ્ટીકરણ
 કરે છે “ભુયગીસર” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ભુયગીસર-વિઝલ-ભોગ-આયાણફલિદ્ધ-ઝચ્છદ્ધદીહ-વાહ’ જેમની બન્ને
 ભુજાઓ સર્પરાજના વિશાળ શરીર જેવી, તથા તેના સ્થાનેથી બહાર વાહવામા

સૂર્યાકારદસ્તરેલાવન્તઃ 'સપ્તપાણિલેહા' ગ્રહપાણિરેલાઃ=ચક્રાકારદસ્તરેલાવન્ત 'ચક્રપાણિલેહા' ચક્રપાણિરેલા=ચક્રાકારદસ્તરેલાવન્ત 'દિસાસોત્થિયપાણિલેહા' દિશ્વસ્થિયપાણિરેલાઃ=દિશ્વસ્થિયકઃ=દક્ષિણાર્તસ્થિયકઃ=દક્ષિણસ્થિયકઃ તદાકારા પાણિરેલા યેપાં તે તથા 'રવિસસિમ્બવચ્ચક્રદિસાસોત્થિયવિભક્તચુરદિયપાણિલેહા' રવિશશિશ્વચ્ચક્રદિશ્વસ્થિયવિભક્તચુરચિત્તપાણિરેલા=સૂર્યચન્દ્રશક્ચક્રદક્ષિણાર્તસ્થિયલક્ષણાઃ વિભક્તા=સ્પષ્ટાઃ સુરતિદાઃ સુખદાઃ પાણિરેલાઃ=દસ્તરેલા યેપાં તે તથા 'વરમહિસવરાહસીહસદ્ધુરિસહનાગવરપડિપુણ-વિઝલ-લઘા' વરમહિપવરાહસિંહશાર્દૂલક્રપમનાગવરપ્રતિપૂર્ણા પુલ્લસ્કન્ધાઃ=તત્ર વરમહિપાઃ=પુષ્ટશરીરમહિપાઃ વરાહાઃ શૂકરાઃ સિંહા=પ્રસિદ્ધાઃ શાર્દૂલા=વ્યાઘ્રવિશેષાઃ ક્રપમાઃ=ચલીવર્દાઃ નાગરાઃ=પ્રધાનદસ્થિનઃ તેપામિવ પ્રતિપૂર્ણ = પરિણદ્વો વિપુલ=વિશાલઃ સ્કન્ધો યેપા તે તથા 'ચતુરગુલ્પમાણકચુવરસરિસગીવા' ચતુરગુલિપ્રમાણકચુવરસમદશગ્રીવા - ચતુરગુલિપ્રમાણકચુવરેણ=પ્રધાનગદ્ધુલેન સદશી=તુલ્યા ચ ગ્રીવા=યેપા તે તથા, 'અવદ્વિય મુવિભ

હૈ, તથા (સપ્તપાણિલેહા) કિતનિક શાખ કે આકાર જેસી હોતી હૈ । (ચક્રપાણિલેહા) કિતનીક એસી હોતી હૈ કિ જિનકા આકાર ચક્ર કે જેસા હોતો હૈ । તથા (દિસાસોત્થિયપાણિલેહા) કિતનીક એસી હોતી હૈ જો દક્ષિણાવર્ત સ્વતિક કે આકાર મેં રહતી હૈ । ઇસ તરહ ઇનકે હાથોં કી સૂર્ય, ચન્દ્ર, શાખ, ચક્ર તથા દક્ષિણાવર્તસ્વતિક કે આકાર કી યે રેલાઈ સ્પષ્ટ હોતો હૈ ઓર સુખ દેનેવાલી હોતી હૈ । તથા-(વરમહિસ વરાહ - સીહસદ્ધુરિસહનાગવરપડિપુણવિઝલલઘા) ઇનકે જો સ્કન્ધ હોતે હૈ વે પુષ્ટશરીરવાલે મહિપ, વરાહ, સિંહ, બૈલ, પ્રધાન હાથી ઇનકે સ્કન્ધો કે સમાન પરિણદ્વ-પુષ્ટ ઓર વિશાલ હોતે હૈ । તથા (ચતુરગુલ્પમાણકચુવરસરિસગીવા) ચાર અગુલ પ્રમાણવાલે ઉત્તમ શાખ કે સમાન ઇનકી ગ્રીવા હોતી હૈ । (અવદ્વિમુવિભક્તચિત્તસમસૂ) તથા

“ સપ્તપાણિલેહા ” એ આકાર, “ ચક્રપાણિલેહા ” કેટલીક ચક્રાકાર અને “ દિસાસોત્થિયપાણિલેહા ” કેટલીક દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્થિકના આકારની હોય છે તેમના હાથની તે ચન્દ્રાકાર આદિ રેખાઓ સ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે તથા “ વરમહિસ-વરાહ-સીહ-સદ્ધુરિસહ-નાગવર-પડિપુણ-વિઝલલઘા ” તેમના ખભા પુષ્ટ શરીર વાળા પાડા, વરાહ, સિંહ, બળદ અને ગજેન્દ્રના સ્કન્ધો જેવા પુષ્ટ અને વિશાળ હોય છે તથા “ ચતુરગુલ્પમાણકચુવરસરિસગીવા ” તેમની ગ્રીવા ચાર અગુલ પ્રમાણ વાળા ઉત્તમ શાખ જેવી હોય છે “ અવદ્વિય

તત્ત્વસમસૂ ' અમ્ભિનમુવિ રતઃચિત્તશ્રૂતિ - આમ્ભિતાનિ=સમ્પત્તયા યથા-
સ્થાન જાતાનિ તુવિભક્તાનિ=ગોમત્તયા વિભાગેન સ્થિતાનિ ચિત્રાણિ=શોભયા
વિસ્મયજનકાનિ શ્મશ્રૂણિ યેષા તે તથા । 'ઉવચિયમમલપસત્થ મદૂત્તિહણુયા'
ઉપચિતમાસલપ્રશસ્તાગાર્દૂત્તિપુલહનુકા.=ઉપચિત=પુષ્ટઃ ખતણ માસલ=માંસ-
યુક્તઃ પ્રશસ્તઃ તથા ગાર્દૂત્તિસ્યેવ ત્તિપુલ્ક શ્વ દનુ'='ઓષ્ટાઽધોભાગો યેષા તે તથા
'ઓયવિયમિલ્પ્પવાલવિવિવલસનિભાવગોદ્ધા ' ઓયવિયગિલાપ્રવાલવિમ્વફલસ-
નિભાવરોદ્ધા='ઓયવિય' ઈતિ વિવિષ્ટપરિકર્મિત સમસ્કૃત યન્તિહલાપ્રવાલ=
વિદ્રુમ', તથા વિમ્વફલ ચ તામ્યા મતિભ.=સદૃશો રક્તોઽચીઞ્ઠો યેષા તે તથા
'પદુરસસિસકલ-વિમલસલ્લગોશીર - ફેણકુદ્દગરયમુણાલિયા - ધવલદત્તસેદી '
પાણ્ડુરશિશરલવિમલરદ્ગોશીરફેણકુદ્દગરયમુણાલિયા ધવલદન્તાશ્રેણયઃ=તત્ર-
પાણ્ડુર=શ્વેત યત્ શિશરલ=ચન્દ્રચ્છંડ તથા વિમલશબ્દ પ્રતીત' ગોશીર=ગોદુગ્ધ
ફેણ=નદીજલાત્તિફેણ કુદ્દ=શ્વેતપુષ્પવિશેષ દગરજ'=જલવિન્દુ' મુણાલિકા=

ઢનકી દાઢી કે જો વાલ હોતે હ વે અચ્છી તરહ સે જટા જિન્હે ઉત્પન્ન
હોના ચાહિયે વહા ઉત્પન્ન હોતે હે, અચ્છી તરહ વિભાગરૂપ સે સ્થિત
રહતે હે, ઓર અપની શોભા સે વિસ્મયજનક હોતે હે । તથા (ઉવચિય-
મસપસત્થસદૂલવિહલહણુયા) ઢનકે હોઠોં કે નીચે કા જો ભાગ હોતા
હે વહ પુષ્ટ હોતા હે, મામલ હોતા હે, પ્રશસ્ત-સુહાવના હોતા હે ઓર
સિંહ કી દાઢી કે સમાન વિપુલ-વિસ્તૃત હોતા હે । (ઓયવિયસિલ્પ્પ-
વાલવિવિવલસનિભાવગોદ્ધા) તથા ઢનકે જો અધરોષ્ટ હોતે હે વે અચ્છી
તરહ પરિકર્મિત કિયે હુએ મૂગે કે સમાન ઓર વિમ્વફલ-કુદ્દગ કે
સમાન રક્ત હોતે હે (પદુરસસિસકલવિમલ સલ્લગોશીરફેણકુદ્દગર-
યમુણાલિયા ધવલદન્તાસેદી) તથા-ઢનકા જો દાંતો કી પક્તિ હોતી હે
વહ શુભ્રચંદ્રમા કે ચંદ્ર જૈસી, નિર્મલ શન્વ જૈસી, ગાય કે દૂધ જૈસી,

સુવિભત્તચિત્તસમસૂ ” તથા તેમની દાઢીના વાળ લ્યા જેમને ઉગવુ બેઠે એ
ત્યા જ ઉગેલા હોય છે, સાગી રીતે વિભાજિત હોય છે, અને તેમની શોભા
અદ્ભુત હોય છે, તથા “ ઉવચિયમસલ પસત્થસદૂલવિહલ હણુયા ” તેમના
હોઠની નીચેનો ભાગ પુષ્ટ, મામલ, શોભિતો, અને મિહની દાઢીના જેવો
વિપુલવિસ્તૃત હોય છે “ ઓયવિયસિલ્પ્પવાલવિવિવલસનિભાવગોદ્ધા ” તેમના
અધર-રો. આગી રીતે તૈયાર હોયેલ પગવાળા જેવા તથા ગિમ્બકળ-કુદ્દગ જેવા
લાલ હોય છે ‘ પદુરસસિ-સકલ-વિમલ-સલ્લ-ગોશીર-ફેણ કુદ્દગરયમુણાલિયા
ધવલદન્તાસેદી ’ તેમના દંત પક્તિઓ શુભ્ર ચંદ્ર ખડ જેવી, નિર્મળ રાખ જેવી
ગાયના દૂધ જેવી, નદી જળ આદિના શીણ જેવી, શ્વેત પુષ્પ જેવી, જળના

કમલનાલતન્તુઃ તદ્વદ્ધરગ દન્તશ્રેણી=દન્તપ્રત્યક્તિર્યેવાં ને તથા અસ્યડદન્તાઃ= પરિપૂર્ણદન્તા 'અફુલ્લિયદતા' અફુલ્લિયદન્તા=અનુપાતદન્તાઃ અવિરલદન્તાઃ= અચ્છિદ્રદન્તાઃ સુખનદન્તા इत्यर्थः 'સુણિદ્વદતા' સુખ્નિઃપદન્તા 'અરુનદન્તવન્તઃ સુજાયદન્તા' સુજાતદન્તાઃ = સુનસ્થિતદન્તા 'અગદતસેદિવ્યઅણેગદતા' એકદન્તશ્રેણિરિય અનેકદન્તા યેવા દ્વાશ્રિગદમ્ન અપિ સુશ્રિષ્ટતાદેકદન્તવદ્ દશ્યન્તે इत्यर्थः । 'દુયવહનિદ્વતથોયતત્તવણિજ્જરત્તલતાલુજીહા' દુતવહ નિર્ધર્માવધાતત્તપ્તપનીયસ્વતત્તગાત્તજિહ્વા = દુતવહેન = રક્તિના નિર્માત = તાપિત ધૌત=વિગોચિત તપ્તનયત્તપનીય=સુવર્ણ તેન તુલ્ય રક્તવલ=રક્તયુગ્મ તાલુ-

નદી જલ આદિ કે ફેન જેમી, શ્વેતપુષ્પવિશેષ જેમી, જલ કી બિન્દુ જેમી, તથા મૃણાલિકા-કમલ નાલ કે તન્તુ જેમી થવલ હોતી હૈ (અસ્યડદન્તા) તથા ઠનકે દાંત પરિપૂર્ણ હોતે હૈ-(અફુલ્લિયદન્તા) તથા યે અસ્ફુટિત દાંતોગાલે હોતે હૈ-ડબડ ગ્રાવડ ઠનકે દાંત નહોં હોતે હૈ । ઓર ન દૂટે ફૂટે હી હોતે હૈ (અવિરલદન્તા) તથા ઇનકે દાંત અચ્છિદ્ર હોતે હૈ-દૂર ર નહોં હોતે હૈ । અર્થાત્-પરસ્પર મેં ઇક દૂસરે દાંત કે સાથ મિલે નુર રહતે હૈ । તથા (સુણિદ્વદન્તા) યે દાંત ઇનકે રક્ષના સે વિહીન હોતે હૈ અર્થાત્ ચિરકને હોતે હૈ (સુજાયદન્તા) વહુત અઠ્ઠી તરહસે યે સસ્થિત-મમૂડોં મેં ગઢે જુગ રહતે હૈ (અગદતસેદિવ્યઅણેગદતા) યદ્યપિ યે દાંત ઇનકે વત્તીસ હી હોતે હૈ ફિર મી પરસ્પર મેં સુશ્રિષ્ટ હોને કે કારણ એક દાંત કી તરહ હી દિશ્વતે હૈ તથા- (દુયવહનિદ્વતથોયતત્ત- તવણિજ્જરત્તલતાલુજીહા) જિનકી તાલુ અવ જિહ્વા તહિ સે તપાવે ગયે

બિન્દુ જેવી, તથા કમળનાલના તત્તુ જેવી, ધવલ હોય છે “અસ્યડદન્તા” તેમના દાંત પરિપૂર્ણ હોય છે ઓછા કે વધારે હોતા નથી ‘અફુલ્લિયદન્તા’ તેમના દાંત અસ્ફુટિત હોય છે—પોલાણુ વાળા હોતા નથી અને તૂટેલા પણ હોતા નથી “અવિરલદન્તા” તથા તે દાંત પાસે પાસે હોય છે દૂર દૂર હોતા નથી એટલે કે પરસ્પર એક બીજા સાથે અડકીને રહેવા હોય છે, તથા “સુણિદ્વદન્તા” તેમના બે દાંત રક્ષતાથી રહિત એટલે કે સુવાળા હોય છે “સુજાયદન્તા” તે ઘણી સાગી રીતે પેઢામા રહેલા હોય છે “અગદતસેદિવ્ય અણેગદતા” બે કે તેમને બત્રીસ દાંત હોય છે, છતાં પણ પરસ્પર એવી રીતે અડોઅડ આવેલા હોય છે કે તે એક દાંત હોય તેવા દેખાય છે તથા “દુયવહનિદ્વતથોયતત્તવણિજ્જરત્તલતાલુજીહા” જેમનું તાળવું અને જીભ આગમા તથાવેલ શુદ્ધ સુવર્ણના જેવા લાલ સપાટી વાળા હોય છે તથા

જિહ્વ યેપા તે તથા 'ગરુલાયયઞ્જતુગનાસા' ગરુડાયતઞ્જતુગનાસાઃ=ગરુડસ્યેવ
આયતા=દીર્ઘા ઁજ્ઞી=સરલા તુદ્ગા=સમુન્નતા નાસા યેપા તે તથા અવદાલિયપુડરીય
ળયણા ' અવદાલિતપુડરીકનયનાઃ=વિકસિતસિતમ્લતુલ્યનેત્રાઃ ' વિકોસિય
ધવલપત્તલચ્છા ' વિકોગિતયત્પત્તલાક્ષાઃ=વિકોસિતે=વિકસિતે પ્રસન્ને સદા
પ્રમુદિતત્ત્રાક્ષેપા, ધત્તલે=ચેતે પત્તલે=પદ્મવતી ચ અક્ષીણિ=નેત્રે યેપા તે તથા ।
' આણામિય ચાવરુદ્ધલકિન્હવ્ભરાઈસઠિયસગયાયયસુજાયભૂમગા ' આનામિત
ચાપરુચિરકૃષ્ણાભ્રમરાજિસસ્થિતસદ્ગતાયતસુજાતભ્રુવ = આનામિતૌ = વક્રીકૃતૌ
ચાપૌ = ધનુષી તદ્વત્રુચિરે કૃષ્ણાભ્રરાજિસસ્થિતે=કૃષ્ણમેઘરેખાસદૃશે સદ્ગતે=
સમુચિતે આયતે=દીર્ઘ સુજાતે=સ્વભાવતઃસુન્દરાકારે ચ ભ્રુવૌ યેપાં તે તથા ।
' અલીણપમાણજુત્તસવળા ' આલીનપમાણયુક્તશ્રવળાઃ = આલીનો=સ્તબ્ધો પ્રમાણ-
યુક્તૌ=સમુચિતપ્રમાણો શ્રવળો=કર્ણો યેપા તે તથા એતાવદેવ ન કિન્તુ ' સુસ્સવળા'
સુશ્રવળાઃ = શબ્દગ્રહણશક્તિસમ્પન્નર્ણયુક્તા', ' પીળમસલકુગોલદેસભાગા ' પીન

શુદ્ધ તપ્ત સુવર્ણ કે સમાનરક્ત તલવાલી होती है । तथा (गरुलायग
ञ्जतुगनासा) जिनकी नासिका गरुड़ की नासिका के समान दीर्घ,
सरलऔर समुन्नत होती है । तथा (अवदालियपुडरीयणयणा) जिनके
नेत्र विकसित शुभ्र कमल के समान होते हैं । तथा-(विकोसियधवल-
पत्तलच्छा) जिनकी दोनों आखें विकसित धवलवर्णीयेत, एव पद्मवाली
होती है । (आणामियचावरुद्लकिण्हव्भराइ सठियसगयायसुजायभूमगा)
तथा जिनकी भोहें वक्रीकृत धनुष्य के समान रुचिर, कृष्णमेघपक्वित के
जैसी अत्यतकाली, सगत-लघी २ एव स्वभावतःआकार में सुन्दर होती
है (अलीणयमाणजुत्तसवणा) तथा-जिनके दोनों कान स्तब्ध और
समुचित प्रमाणवाले होते हैं (सुस्सवणा) तथा-शब्दग्रहण करने की
शक्तिसे सपन्न होनेके कारण जिनके दोनों कान सच्चे अर्थमें सुश्रवण

“ गरुलायगञ्जतुगनासा ” જેમની નાસિકા ગરુડની ચાચ જેવી લાખી, સરલ
અને ઉન્નત હોય છે તથા “ અવદાલિયપુડરીયણયણા ” જેમના નયન વિકસિત
શ્વેત કમળ જેવા હોય છે, તથા “ વિકોસિયધવલપત્તલચ્છા ” જેમની બંને
આંખો વિકસિત, શ્વેતવર્ણની અને પદ્મવાળી હોય છે “ આણામિય ચાવરુદ્ધલ
કિન્હવ્ભરાઈસઠિયસગયા યય સુજાયભૂમગા ” તથા તેમની ભ્રમરો વક્ર ધનુષ્યના
જેવી મનોહર, કાળા વાદળોની પદ્ધિ સમાન અત્યંત ડાળી, સગત-લાખી
અને સ્વભાવિક રીતે જ દેખાવામાં સુદર હોય છે “ અલીણપમાણજુત્તસવળા ”
તથા જેમના બંને કાન સ્તબ્ધ અને પ્રમાણુપરના હોય છે “ સુસ્સવળા ”
શબ્દ સાંભળવાની શક્તિવાળા હોવાને કારણે જે ખરા અર્થમાં સુશ્રવણ છે.

માસલકપોલદેશભાગાઃ=પીની = પીરો-માંગલો= ગુટી ચ કપોલદેશભાગો =
 કપોલો યેષાં તે તથા ' અચિરગય-ચાલચદ-સઠિયમહાનિગાડા ' અચિરોદ્ભવ
 ચાલચન્દ્રસંસ્થિતમહાલગટા = અચિરોદ્ભવ = અદ્યપિયમગાત્રોદિતઃ = અદ્યમીતિયિસ
 સ્વન્ધીત્યર્થઃ, અતપ્ચ ઘાલચન્દ્રઃ અર્ધચન્દ્રઃ અર્ધચન્દ્ર ઇત્યર્થઃ, તત્સંસ્થિત =
 તત્સંસ્થાનયુક્ત તદાકારક મહન્ = વિભાગ્યુ તદાદગલપમાગ લલાટ યેષાં
 તે તથા અર્ધચન્દ્રાકારલગટા ઇત્યર્થઃ । ' ઉદુવહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા ' ઉદુવ
 તિમતિપૂર્ણસોમ્મવદના = પૂર્ણચન્દ્રાદાહારકમુલ્યાઃ ' છત્તાગારુત્તમમદેસા ' છત્રા
 કારોત્તમાદ્દેશાઃ = છત્રચ્છત્રોત્તમમસ્તકાઃ ' ઘણનિચિયસુવદ્ધલકવ્વણુકૂડા
 ગારનિભવિંડિયગસિરા ' ઘનનિચિત્તવુદ્ધકલ્લગોત્તમકૂડાકાનિભવિંડિકાપ્રશિરસ'
 = ઘનચત્ત = લોહમુદ્ધરવનિચિત્ત = સમ્મૃત સુવદ્ધ = સ્નાયુભિ લક્ષગોત્તમ = વિશિષ્ટન્ન
 ણયુક્ત તથાકૂડાકારનિભ = પ્રાસાદશિખરમદ્ય ચતુરુચાત્ પિણ્ડિકેર અપ્રશિરઃ =
 મસ્તકાગ્રભાગો યેષાં તે તથા સુન્દરલક્ષણયુક્તવુવિશાલચતુરુચાત્તકાગ્રભાગા

હૈ તેસે કાનો સે જો યુક્ત હોતે હૈ । તથા-પીળમસલકપોલદેસભાગા)
 જિનકે દોનો કપોલ પીર, ઓર માસલ હોતે હૈ (અચિરગયચાલચદ
 સઠિયમહાનિલા) તથા-જિનકા મહાલલાટ અદ્યમી કે અર્ધચન્દ્ર કે
 સમાન આકાર કા હોના હૈ અર્થાન્ આઠ અગુલ પ્રમાણ આકાર વાલા
 હોતા હૈ । (ઉદુવહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા) તથા જિનકા મુલ, પૂર્ણચન્દ્ર
 કે સમાન આલ્હાદકારક હોના હૈ । (છત્તાગારુત્તમમદેસા) તથા-
 મસ્તક છત્ર કી તરહ વૃત્ત-ગોલ ઓર ઉન્નત હોતા હૈ (ઘણનિચિયસુવ
 દ્ધલકવ્વણુકૂડાગારનિભવિંડિયગસિરા) તથા મસ્તક કા અગ્રભાગ
 લોહમુદ્ધર કી તરહ નિચિત-ગાઢ-ભરા હુઆ-તથા સ્નાયુઓ સે અઠ્ઠી
 તરહ જકડા હુઆ, તથા અનેક વિધ વિશિષ્ટ લક્ષણો સે યુક્ત તથા
 પ્રાસાદ કે શિખર કે સમાન ઉન્નત તથા પિણ્ડિકા-પિંડી કે જૈસા-ગોલ

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે “ પીળમસલકપોલદેસભાગા ” જેમના
 બેને ગાલ પીર, અને માસલ હોય છે “ અચિરગયચાલચદસઠિયમહાનિ
 લાહા ” તથા જેમના વિશાળ લલાટ આઠમના ચંદ્રના જેવા આકારના હોય છે
 એટલે કે આઠ આગળ પહોળા હોય છે ‘ ઉદુવહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા ’
 તથા જેમનું મુખ પૂર્ણચન્દ્રના જેવું આલ્હાદ કારક હોય છે “ છત્તાગારુત્ત
 મમદેસા ” તેમનું માથું છત્રના જેવું ગોળ અને ઉન્નત હોય છે “ ઘણનિચિ
 સુવદ્ધલકવ્વણુકૂડાગાર વિંડિયગસિરા ” તથા તેમના મસ્તકનો અથ લાગ મગઠ
 ણના જેવો નિચિત-ગાઢ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બધાયેલો, તથા
 અનેક પ્રકારના આસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉન્નત તથા પિંડીના

द्वयर्थः, ' हुतवहनिद्वयोयततत्रणिज्जरत्तकेसः केशभूमी ' हुतवहनिधर्मा त
 धौततप्तपनीयरक्तकेशान्तकेशभूमयः=तत्र हुतवहेन=वह्निना नि-र्मात=तापि-
 तम् अतएव-धात=विशोषित तप्त च यत्तपनीय=सुवर्गं तद्वद् रक्ताः=रक्तवर्णाः
 केशान्ताः=केशसमीपस्था केशभूमीः मस्तकत्वचा येषां ते तथा तप्तसुवर्णसदृश-
 रक्तवर्ण शिरस्त्वक् सन्पन्नाः। 'सामलिपोडवगनिचियच्छोडियमिउविसयपसत्य-
 सुहुमलक्खणसुगधसुदरभुयमोयगभिगनीळकज्जलपहिट्टभमरगणनिद्वनिउरवनिचिय
 कुचियपयाहिणावत्तमुद्धमुद्धसिरया ' शाल्मलीपोडवननिचितघोटितमृदुविशदप्रशस्त
 सूक्ष्मलक्षणसुगन्धसुन्दरभुवमोचकभृङ्गनीलकज्जलप्रहाटभ्रमरगणस्निग्धनिकुरुम्बनि
 चितकुञ्चितप्रदक्षिगावर्त्तमूर्धशिरोजा, तत्र-'सामलि' शाल्मलि=वृक्षविशेषस्तस्य यत्
 'पोड' फल तच्च 'घणनिचिय' घगनिचितम् = आभ्यन्तरभागसम्भृततयाऽति
 कठिन तत् 'छोडिय' छोटित=विदारित तद्वत् 'मिउ' मृदवः=कोमलः 'विसय'
 विशदाः=सुस्पष्टता 'पसत्य' प्रशस्ताः=श्रेष्ठा 'सुहुम' सूक्ष्माः=प्रतला
 'लक्खण' लक्षणा=शुभ लक्षणयुक्ताः सगन्धय=सुरभिगन्धविशिष्टाः=मनोहराः

२ होता है। (हुयवहनिद्वतधोयततत्रणिज्जरत्तकेसतकेसभूमी)
 तथा जिनकी केशान्तभूमि-मस्तक की त्वचा-अग्नि से तपाये हुए शुद्ध
 तप्त सुवर्ण जैसी रक्तवर्णवाली होती है (सामलिपोडवगनिचियच्छोडिय-
 मिउविसयपसत्यसुहुमलक्खणसुगधसुदरभुयमोयगभिगनीलकज्जलपहिट्ट-
 भमरगणनिद्वनिउरव निचियकुचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया) तथा जिनके
 केश, शाल्मलिवृक्ष के-रुआ से भीतर से भरे हुए तथा कठिन बने हुए
 विदारित फल के समान मृदु होते हैं, शाल्मली वृक्ष का फल जब पक
 जाता है तो वह कठिन हो जाता है, और उसकी भीतर की भरी हुई
 रुई बहुत अधिक चिकनी हो जाती है। यह बड़ी नरम और चिकनी
 रहती है। इमलिये सूत्रकार ने उसके साथ वालों को उपमित किया है।

જેવો ગોળ ગોળ હોય છે “હુયવહનિદ્વતધોયતતત્રણિજ્જરત્તકેસતકેસભૂમિ” તથા
 જેમની કેશાન્તભૂમિ-માથાની ત્વચા-અગ્નિથી તપાવેલા શુદ્ધ સુવર્ણ જેવા લાલ
 વર્ણની હોય છે “સામલિપોડવગનિચયચ્છોડિયમિઉવિસયપસત્યસુહુમલક્કણસુગધસુ
 દરભુમોયગભિગનીલકજ્જલપહિટ્ટભમરગણનિદ્વનિરવનિચિયકુચિયપયાહિણાવત્તમુદ્ધસિરયા”
 તથા જેમના કેશ ગાદમલિ વૃક્ષના, (શીમળો) અદરથી રૂવાટીથી ભરેલા
 તથા કઠણ બનેલ ઢાપેલા ફળ સમાન મૃદુ હોય છે શીમળાના ફળ બ્યારે
 પાકે છે ત્યારે કઠણ થઈ જાય છે, અને તેની અદર રહેલ રૂવાટી ઘણી મુલા-
 યમ થઈ જાય છે તે ઘણી નરમ અને સુવાળી રહે છે તેથી સૂત્રકાર તે
 રૂવાટી સાથે કેસની સરખામણી કરે છે તેમના કેશ વિશદ-સુસ્પષ્ટ, પ્રશસ્ત-

માંસલકપોલદેસભાગા. = પીની = પીરો-મામલો = પુટી ન વપોરદેસભાગો =
 કપોલો યેપા તે તથા ' અચિરગય-ચાલચદ-ચઠિયમહાનિગટા ' અચિરોદ્ધ
 ચાલચન્દ્રસથિતમહાલગટા = અચિરોદ્ધ = અદિચિયમાત્રોદિતઃ = અષ્ટમીતિયિસ
 મ્યન્ધીત્યર્થઃ, અતएव ચાલચન્દ્રઃ અર્ધચન્દ્રઃ અર્ધચન્દ્ર ઇત્યર્થઃ, તત્સથિતં =
 તત્સસ્થાનયુક્ત તદાકારક મહત્ = વિગાગ્ અષ્ટાદશગુલપમાણ ગ્લાટ યાં
 તે તથા અર્ધચન્દ્રાકારલગટા ઇત્યર્થઃ । ' ઉદ્ધવહપડિપુણ્ણસોમ્મવયગા ' ઉદ્ધવ
 તિપ્રતિપૂર્ણસોમ્મવદનાઃ = પૂર્ણચન્દ્રચદાહાદકમુલ્યાઃ ' છત્તાગારુત્તમગદેમા ' છત્તા
 કારોત્તમાદ્દેશાઃ = છત્તચત્તગોત્તમસ્તકા ' ઘણનિચિયસુવદ્ધલક્ષણુગ્ગકૂડા
 ગારનિભપિંડિયગ્ગસિરા ' ઘણનિચિત્તગુરુદ્ધરુખ્ણોન્નતકૂડાકારનિભપિંડિયાપ્રશિરસ.
 = ઘણચત્ત = લોહમુદ્ધરવનિચિત્ત = સમ્ભૂત સુવદ્ધ = સ્નાયુભિ લક્ષણોન્નત = વિશિષ્ટલક્ષ
 ણયુક્ત તથાકૂડાકારનિભ = પ્રાસાદશિખરમહત્ ચતુરંગાત્ પિંડિકેર અપ્રશિરઃ =
 મસ્તકાગ્રભાગો યેવા તે તથા સુન્દરલક્ષણયુક્તપુવિશાઠચતુરંગમસ્તકાગ્રભાગા

હૈ ऐसे कानो से जो युक्त होते हैं । तथा-पीणममलकपोलदेसभागा)
 जिनके दोनों कपोल पीर, और मांसल होते हैं (अचिरगयचालचद
 सठियमहानिला) तथा-जिनका महाललाट अष्टमी के अर्धचन्द्र के
 समान आकार का होता है अर्थात् आठ अगुल प्रमाण आकार वाला
 होता है । (उद्धवहपडिपुण्णसोम्मवयणा) तथा जिनका मुख, पूर्णचन्द्र
 के समान आल्लादकारक होता है । (छत्तागारुत्तमगदेमा) तथा-
 मस्तक छत्र की तरह वृत्त-गोल और उन्नत होता है (घणनिचियसुव
 द्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिंडियगसिरा) तथा मस्तक का अग्रभाग
 लोहमुद्गर की तरह निचित-गाढ़-भरा हुआ-तथा स्नायुओं से अच्छी
 तरह जकड़ा हुआ, तथा अनेक विध विशिष्ट लक्षणों से युक्त तथा
 प्रोसाद के शिखर के समान उन्नत तथा पिण्डिका-पिंडी के जैसा-गोल

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે “ પીણમમલકપોલદેસભાગા ” જેમના
 બંને ગાલ પીર, અને માંસલ હોય છે “ અચિરગયચાલચદસઠિયમહોનિ
 લાહા ” તથા જેમના વિરાળ લલાટ આઠમના ચદ્રના જેવા આકારના હોય છે
 એટલે કે આઠ આગળ પહોળા હોય છે ‘ ઉદ્ધવહપડિપુણ્ણસોમ્મવયગા ’
 તથા જેમનું મુખ પૂર્ણચન્દ્રના જેવું આલ્લાદ કારક હોય છે “ છત્તાગારુત્ત
 મગદેમા ” તેમનું માથું છત્રના જેવું ગોળ અને ઉન્નત હોય છે “ ઘણનિચય
 સુવદ્ધલક્ષણુણયકૂડાગાર પિંડિયગ્ગસિરા ” તથા તેમના મસ્તકનો અથ્ર ભાગ મગદ
 ણના જેવો નિચિત-ગાઢ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બધાયેલો, તથા
 અંનેક પ્રકારના ખાસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉન્નત તથા પિંડીના

“ છત્ર ૧ તામરસ ૨ ધનૂ ૩ રથપરોઠ દમ્મોલિ ૫ કર્મા ૬ ૭ કુશાઃ ૭ ।

વાપી ૮ સ્વસ્તિક ૯ તોરણાનિ ૧૦ ચ મરઃ ૧૧ પચ્ચાનનઃ ૧૨ પાદપઃ ૧૩ ॥

ચક્ર ૧૪ શઙ્ગ ૧૫ ગજા ૧૬ સમુદ્ર ૧૭ કલશૌ ૧૮ પ્રામાદ ૧૯ મત્સ્યૌ ૨૦ ચવૌ ૨૧

યૂપ ૨૨ સ્તૂપ ૨૩ કમળડલૂ ૨૪ અવનિભૂત ૨૫ મચ્ચામરો ૨૬ દર્પણમ્ ૨૭ ॥૧॥

ઉક્ષા ૨૮ પતાકા ૨૯ કર્મલાભિપેક ૩૦ સુદામ ૩૧ કેકી ૩૨ ઘનપુષ્પભાજામ્ ॥

‘ હસસ્સરા ’ હમસ્વરાઃ=હમવત્સ્વગ-સ્નિગ્ધતાત્ ‘ કોચસ્સરા ’ ક્રૌઞ્ચમ્વરાઃ=કૌઞ્ચપક્ષિવત્સ્વરાઃ-મૃક્ષમમૃદુતાન્, ‘ દુદુહિમ્મગ ’ દુન્દુભિવત્સ્વરાઃ-ગમ્भीરતાત્

ધારણ કરને વાલે હોતે હૈ । પ્રશસ્ત વત્તીસ લક્ષણો કે નામ હસ પ્રકારહૈ—
(૧) છત્ર, (૨) કર્મલ, (૩) ધનુષ, (૪) ઉત્તમરથ, (૫) દમ્મોલિ-વજ્ર, (૬) કર્મ-કચ્છપ, (૭) કુશ, (૮) વાપી, (૯) સ્વસ્તિક, (૧૦) તોરણ, (૧૧) તાલાવ, (૧૨) પચ્ચાનન-સિંહ, (૧૩) પાદપ, (૧૪) ચક્ર, (૧૫) શઙ્ગ, (૧૬) ગજ, (૧૭) સમુદ્ર, (૧૮) પ્રામાદ, (૧૯) મત્સ્ય, (૨૦) ચવ, (૨૧) યૂપ-સ્તૂપ (૨૨) સ્તૂપ, (૨૩) કમળડલ, (૨૪) અવનિભૂત-પહાડ-પર્વત, (૨૫) સુદર ચામર, (૨૬) દર્પણ, (૨૭) ઉક્ષા-વૈલ, (૨૮) પતાકા, (૨૯) અભિપેકયુક્ત લક્ષ્મી (૩૦) સુદામ-સુન્દરમાલા (૩૧) કેકી-મયૂર ઓર (૩૨) પુષ્પ (હસસ્સરા) હનકા સ્વર સ્નિગ્ધ હોને સે હસ કે સ્વર કે સમાન હોતા હૈ । (કોચસ્સરા) મૃક્ષમ ઓર મૃદુ હોને કે કારણ ક્રૌચપક્ષી કે

શ્રેષ્ઠ ધત્રીમ લક્ષણો ધારણ કરનાર હોય છે શ્રેષ્ઠ ધત્રીમ લક્ષણોના નામ આ પ્રમાણે દે—

(૧) છત્ર (૨) કર્મલ (૩) ધનુષ (૪) ઉત્તમરથ (૫) દમ્મોલિ-વજ્ર (૬) કર્મ કાચળો (૭) અકુશ (૮) વાપી (૯) સ્વસ્તિક (૧૦) તોરણ (૧૧) તાલાવ (૧૨) પચ્ચાનનમિહ (૧૩) પાદપ (વૃક્ષ) (૧૪) ચક્ર (૧૫) શઙ્ગ (૧૬) ગજ (૧૭) સમુદ્ર (૧૮) પ્રામાદ (૧૯) મત્સ્ય (૨૦) ચવ (૨૧) યૂપ-સ્તૂપ (૨૨) સ્તૂપ (૨૩) કર્મડલ (૨૪) અવનિભૂતપહાડ (૨૫) સુદર ચામર (૨૬) દર્પણ (૨૭) ઉક્ષા-વૈલ (૨૮) પતાકા (૨૯) અભિપેક યુક્ત લક્ષ્મી (૩૦) સુદામ-સુદર માળા (૩૧) કેકી મયૂર (૩૨) પુષ્પ ‘ હસસ્સરા ’ તેમનો સ્વર મૃદુ હોવાથી હનકા જેવો હોય છે, “ કોચસ્સરા ” સૂક્ષ્મ અને મૃદુ હોવાથી ક્રૌચ પક્ષીના સ્વર જેવો હોય છે, “ દુદુહિમ્મગ ” ગભીર હોવાથી દુદુહિના અવાજ

૧, તામરસ=કર્મલમ્ ૨ । ૨ દમ્મોલિ=વજ્રમ્ ૨ । ૩ પચ્ચાનન=સિંહ ૧૨ । ૪ યૂપ=સ્તૂપમ્ ૨૨ । ૫ સ્તૂપ=‘ ચોતરા ’ इति भाषा प्रसिद्धा ૨૩ । ૬ અવનિભૂત=પર્વત ૨૫ । ૭ ઉક્ષા=વલીર્વદ ૨૮ । ૮ કર્મલાભિપેક-અભિપેકયુક્તા લક્ષ્મી ૩૦ । ૯ સુદામ=માલા ૩૧ । ૧૦ કેકી=મયૂર ૩૨ ।

તથા ' ધ્રુવમોયગ ' ધ્રુવમોચક્રઃ=કૃષ્ણવર્ણો રત્નવિશેષઃ મિંગ ' મૃદ્ધાઃ=ચૂર્ણિતાદ્રાર
 ' કોલસા ' इति भाषा प्रसिद्धः, नील=नीलमणिः, ' નીલમ ' इति प्रसिद्धः,
 कज्जलम्=अञ्जन ' पहिद्वभमरगण ' प्रदृष्टभ्रमरगण=प्रमुदित भ्रमरगमृदश्च, इत्येतैः
 सदृशाः स्निग्धाः=कृष्णकान्तयः ' निउरय ' निगुरम्याणि=गमृदरूपा. निचिता.=
 समद्धाः ' कुचिय ' कुञ्चिताः=कुटिला ' पयाहिणायत्त ' मदक्षिणावर्त्ताथ=दक्षि
 णावर्त्तयुक्ता ' मुद्धसिरया ' मूर्धगिरोजा.=मस्तककेशा येषा ते तथा । ' सुजा
 यसुविभक्तसगयगा ' सुजातसुविभक्तमगताङ्गा : = सुनिष्पन्नसुरूपममुचितशरी
 रावयवाः, ' लखगवजणगुणोववेया ' लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता = लक्षणानि =
 स्वस्तिकादीनि न्यञ्जनानि=मण्डितलगादीनि गुणानि-सौभाग्यादीनि तैरूपेताः
 ' पसत्थवत्तीसलखणधरा ' प्रशस्तद्वानिशलक्षणधरा ? =प्रशस्तानि यानि द्वानि
 शलक्षणानि उत्र कमलादिरूपाणि येषा ते तथा, द्वानिशलक्षणानि यथा—

તથા હનકે કેશ વિશદ-સુસ્પષ્ટ, પ્રશસ્ત-શ્રેષ્ઠ, સૂક્ષ્મ પતલે, શુભલક્ષણો
 સે યુક્ત, અચ્છી ગધવાલે ઓર મનોહર હોતે હે । તથા હનકા વર્ણ કૃષ્ણ
 વર્ણ નામક રત્નાવશેષ કે જૈસા, મૃગ-ચૂર્ણિત કોલસા કે જૈસે, નીલ-
 નીલમણિ જૈસે, કજ્જલ-અજન કે જૈસે ઓર પ્રમુદિત ભ્રમરો કે સમૂહ
 જૈસે, કાલે હોતે હે । યે કેશ મસ્તક મેં વિરલે નહીં હોતે હે-કિન્તુ
 સમુદાય રૂપ મેં સઘન રહતે હે । એક દૂસરે સે સવદ્ધ હોતે હે, કુટિલ-
 ઘુઘરાલે હોતે હે ઓર દક્ષિણાવર્ત્ત વાલે હોતે હ । (સુજાયસુવિભક્તસગ
 યગા) હનકે શારીરિક અવયવ સુનિષ્પન્ન, સુસ્પષ્ટ એવ સમુચિત સનિવે
 શવાલે હોતે હે (લક્ષણવજનગુણોવવેયા) સ્વસ્તિક આદિ લક્ષણો સે
 મણા, તિલક આદિ વ્યજનો સે એવ સૌભાગ્ય આદિ સદ્ગુણો સે યે યુક્ત
 હોતે હે । (પસત્યવત્તીસલક્ષણધરા) પ્રશસ્ત વત્તીસ લક્ષણો કો યે

શ્રેષ્ઠ, સૂક્ષ્મ-પાતળા, શુભલક્ષણો વાળા, સુદર ગધવાળા અને મનોહર હોય
 છે. તથા તેમનો રંગ કૃષ્ણવર્ણ નામના રત્ન જેવો કોલસાની રજ જેવો, નીલ
 મણી જેવો, કાજળ જેવો, અને પ્રમુદિત ભ્રમરવૃન્દ જેવો કાળો હોય છે તે કેશ
 મસ્તક ઉપર વિખરાયેલા હોતા નથી પણ સમુદાય કેપે સઘન હોય છે, એક
 બીજા સાથે મળેલા હોય છે, સુચળા વાળા હોય છે, અને દક્ષિણાવર્ત વાળા
 (જમણી તરફ વળેલા) હોય છે ' સુજાયસુવિભક્તસગયગા ' તેમના શરી-
 રના અંગો સુહોળ, સુસ્પષ્ટ અને પ્રમાણસરના હોય છે " લક્ષણવજન-
 ગુણોવવેયા " સ્વસ્તિક આદિ લક્ષણોથી, મણ, તિલક આદિ વ્યજનોથી અને
 સૌભાગ્ય આદિ સદ્ગુણોથી તેઓ યુક્ત હોય છે, " પસત્યવત્તીસલક્ષણધરા "

“ छत्र १ तामरस २ धनु ३ रथपरोष्ठ दम्भोलि ५ कूर्मा ६ ५ कुशाः ७ ।

वापी ८ स्वस्तिक ९ तोरणानि १० यमरः ११ पञ्चाननः १२ पादपः १३ ॥

चक्र १४ शङ्ख १५ गजा १६ समुद्र १७ कलशौ १८ प्रासाद १९ मत्स्यौ २० यवौ २१

यूप २२ स्तूप २३ कमण्डलु २४ अवनिभृत् २५ मञ्चामरो २६ दर्पणम् २७ ॥१॥

उक्षा २८ पताका २९ कमलाभिषेक ३० सुदाम ३१ केकी ३२ घनपुष्पभाजाम् ॥

‘हसस्सरा’ ह्रस्वस्वराः=ह्रस्वत्वत्स्वरा-स्निग्धत्वात् ‘कोचस्मरा’ कौञ्चस्वराः=कौञ्चपक्षितस्वराः-सूक्ष्ममृदुत्वात्, ‘दुदुहिस्सरा’ दुन्दुभित्स्वराः-गम्भीरत्वात्

धारण करने वाले होते हैं। प्रशस्त वस्तीस लक्षणों के नाम इस प्रकार हैं—
(१) छत्र, (२) कमल, (३) धनुष, (४) उत्तमरथ, (५) दम्भोलि-वज्र, (६) कूर्म-कच्छप, (७) कुश, (८) वापी, (९) स्वस्तिक, (१०) तोरण, (११) तालाव, (१२) पञ्चानन-सिंह, (१३) पादप, (१४) चक्र, (१५) शङ्ख, (१६) गज, (१७) समुद्र, (१८) प्रासाद, (१९) मत्स्य, (२०) यव, (२१) यूप-स्तम्भ (२२) स्तूप, (२३) कमण्डलु, (२४) अवनिभृत्-पहाड़-पर्वत, (२५) सुन्दर चामर, (२६) दर्पण, (२७) उक्षा-बैल, (२८) पताका, (२९) अभिषेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-सुन्दरमाला (३१) केकी-मयूर और (३२) पुष्प (हसस्सरा) इनका स्वर स्निग्ध होने से हस के स्वर के समान होता है। (कोचस्मरा) सूक्ष्म और मृदु होने के कारण कौचपक्षी के

श्रेष्ठ अत्रास लक्षणों धारण करनेवाले होय छे श्रेष्ठ अत्रास लक्षणोंना नाम आ प्रमाणे छे—

(१) छत्र (२) कमल (३) धनुष (४) उत्तमरथ (५) दम्भोलि-वज्र (६) कूर्म कायण (७) अकुश (८) वापी (९) स्वस्तिक (१०) तोरण (११) तालाव (१२) पञ्चाननसिंह (१३) पादप (वृक्ष) (१४) चक्र (१५) शङ्ख (१६) गज (१७) समुद्र (१८) प्रासाद (१९) मत्स्य (२०) यव (२१) यूप-स्तम्भ (२२) स्तूप (२३) कमण्डलु (२४) अवनिभृत्पहाड़ (२५) सुन्दर चामर (२६) दर्पण (२७) उक्षा-जण्ड (२८) पताका (२९) अभिषेक युक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-सुन्दर माला (३१) केकी मयूर (३२) पुष्प ‘हसस्सरा’ तेमनो स्वर मृदु होवाथी हुमना जेवो होय छे, “कोचस्मरा” सूक्ष्म अने मृदु होवाथी कौच पक्षीना स्वर जेवो होय छे, “दुदुहिस्सरा” गभीर होवाथी दुदुलिना अवाज

१, तामरस=कमलमूर । २ दम्भोलि=वज्रमूर । ३ पञ्चानन=सिंह १२ । ४ यूप=स्तम्भ २२ । ५ स्तूप=‘चोतरा’ इति भाषा प्रसिद्धा २३ । ६ अवनिभृत्=पर्वत २५ । ७ उक्षा=जलीवर्द २८ । ८ कमलाभिषेक-अभिषेकयुक्ता लक्ष्मी ३० । ९ सुदाम=माला ३१ । १० केकी=मयूर ३२ ।

‘ સીહસ્સરા , સિહસ્સરા:-મિહસ્સરા:-અગ્યાદત્તવર્ધમાનત્વાન્ , ન તુ સ્વરદ્ ,
 હીનસ્સરા: , ‘ મેઘસ્સરા ’ મેઘસ્સરા =મેઘસ્સરા -દૂરદગ્ધાપિત્વાત્ ‘ ઓઘ
 સ્સરા ’ ઓઘસ્સરા.-, અતુટિતસ્સરા: , ‘ સુમ્પરા ’ સુસ્સરા-કર્ણમુગ્ધજનકત્વાત્
 ‘ સુસ્મરનિગ્ધોસા ’ સુસ્મરનિર્ગોષા -સુસ્મર: =પ્રિય: નિર્ગોષ: =ગુઢો યેષા તે
 તથા મધુરભાષિણ इत्यर्थ , ‘ વજ્જરિસહનારાયસત્રયણા ’ વજ્ર - ઋષભ-નારા
 ચસહનના., તત્ર નારાયમ્ =ઉભયતો મર્કટવન્ધ , ઋષભ: =તદુપરિ વેષ્ટનપટ્ટ , વજ્ર =
 કીલિકા-ઉભયસ્યાપિ મેદકમસ્થિ ॥ ઉક્તઞ્ચ—

“ રિસહો ડ હોઈ પટ્ટો, વજ્જ પુળ કીલિયા પ્રિયાણાદિ ।

ઉમમ્મો મઝ્ઝવયો નારાય ત પ્રિયાણાદિ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ,

સ્વર કે જેના હોતા હૈ । (દુદ્દુહિસ્મરા) ગભિર ટોને સે દુદ્દુમિ કે સ્વર
 જેસા હોતા હૈ, (સીહસ્સરા) અગ્યાદત્તરૂપ સે વર્ધમાન ટોને કે કારણ
 મિહ કે સ્વર જેમા, (મેહમ્મરા) દૂર દેગ નક મેં મી વ્યાસ ટોને કે
 કારણ મેઘકી ધ્વનિ જેસા હોતા હૈ । (ઓઘસ્સરા) વહ સ્વર ઘીચ મેં
 દૂટતા નહીં હૈ, (સુસ્મરા) તથા કાનોં કો સુખકારી હોતા હૈ । તથા-
 (સુસ્મરનિગ્ધોસા) વે જો મી શબ્દ વોલ્તે હૈ વે મી વહે પ્રિય હોતે હૈ,
 અર્થાત્ યે મધુરભાષી હોતે હૈ (વજ્જરિસહનારાયસત્રયણા) इनका वज्र
 ऋषभ नाराच सहनन होता है और (समचउरमसठाणसठिया) सम-
 चतुरस्र सस्थान होता है । जो सहनन उभयतः मर्कटवधसे, ऋषभ-उसके
 उपर वेष्टनपट्ट से एव वज्र-कीलीका से युक्त होता है उसका नाम वज्र
 ऋषभनाराच सहनन है । यही बात गाथा द्वारा प्रदर्शित की गई है ।

જેવો હોય છે, “ સીહસ્સરા ” અવિરત વર્ધમાન હોવાને કારણે સિહના
 સ્વર જેવો, અને “ મેહસ્સરા ” દૂર દૂર સુધી ફેલાતો હોવાથી મેઘના ધ્વનિ
 જેવો લાગે છે “ ઓઘસ્સરા ” તે સ્વર વચ્ચે તૂટતો નથી અને “ સુસ્સરા ”
 કણ્ઠને સુખદ લાગે છે તથા ‘ સુસ્સરનિગ્ધોસા ’ તેઓ જે શબ્દો બોલે છે
 તે પણ ઘણા મધુર હોય છે એટલે કે મીઠા બોલા હોય છે “ વજ્જરિસહ
 નારાયસત્રયણા ” તેમનું વજ્ર ઋષભ નારાય સહનન હોય છે અને “ સમચઉ
 રસસઠાણ સઠિયા ” સમચો સ સ્થાન હોય છે જે સહનન બને તરફ
 મર્કટ બધથી, ઋષભ-તેના ઉપર લપટાયેલા પટ્ટથી અને વજ્ર-કીલિકાથી યુક્ત
 હોય છે તેનું નામ વજ્રઋષભનારાચસહનન છે એ જ વાત ગાથા દ્વારા
 દર્શાવવામા આવી છે—

एव रूप सदनम्—अस्तिरचनाविशेषो चेपा ते तथा । ‘समचतुरस्रसंस्थान सठिया’ समचतुरस्रसंस्थानमस्तिताः = तत्र समा = अन्यूनारिकाः चतस्रः अक्षयः चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवा यत्र तत्, समचतुरस्रस्रव च पर्यङ्कासनोपविष्टस्य दक्षिणस्कन्धाद् वामजानुपर्यन्त, तथा वामस्कन्धाद् दक्षिण जानुपर्यन्त समत्व, तदेव संस्थान = शरीररचनाविशेष, तेन सस्थिताः = युक्ता स्ते तथा ‘छायउज्जोवियगमगा’ छायोद्योतिताद्भोपाङ्गाः - छाया = शरीर कान्त्या उद्योतिनानि देदीप्यमानानि अद्भोपाङ्गानि चेपा ते तथा देदीप्यमानशरीराः, ‘पसत्थच्छवी’ प्रसत्तुवय = सुन्दराकृतयः ‘निरायका’ निरातङ्काः = रोगरहिताः ‘ककगहणी’ कङ्कग्रहणा = कङ्कस्य = पक्षिविशेषेण ग्रहण-गुदाशयो चेपा ते तथा-नीरोगवर्चस्का ‘कवोयपरिणामा’ कपोतपरिणामाः = कपोततुल्या

जैसे—“रिन्हो उ होइ दोप, वज्ज पुण कीलिया वियाणाहि ।

उभओ मक्खडवधो, नाराय त वियाणाहि” ॥ १ ॥

जिस संस्थान में चतुर्दिग्विभागोपलक्षित शारीरिक अवयव न्यूनाधिकतारूप दोष से वर्जित होते हैं—अर्थात्—पर्यङ्कासन से उपविष्ट पुरुष के दक्षिणस्कंध से लेकर वामजानुपर्यन्त और वामस्कंध से लेकर दक्षिण जानु पर्यन्त जो समोन्नता रूप से शारीरिक अवयवों की रचना है उसका नाम समचतुरस्रसंस्थान है । (छायउज्जोवियगमगा) इनके शारीरिक अवयव अपने शरीर की कांतिरूप छाया से सदा देदीप्यमान बने रहते हैं (पसत्थच्छवी) इनकी आकृति बड़ी मनोज्ञ सुन्दर होती है । (निरायका) इन्हें कोई भी रोग नहीं होता है । (ककगहणी) इनका गुदाशय-गुह्यप्रदेश पक्षी के गुह्यभाग की तरह लेपरहित मलवाला होता है । (कवोयपरिणामा) इनका आहार कवृतर के आहार के परिपाक जैसा

“रिन्हो उ होइ पटो वज्ज पुण कीलिया वियाणाहि ।

उभओ मक्खडवधो, नाराय त वियाणाहि” ॥ १ ॥

જે વ્યવસ્થામાં ચારે દિશાને અનુલક્ષીને શારીરિક અવયવો ન્યૂનતા અથવા અધિકતાના દોષથી રહિત હોય છે, એટલે કે પર્યંકાસને બેઠેલા પુરૂષના જમણા ખભાથી લઈને ડાબા ઢીચણ સુધી અને ડાબા ખભાથી લઈને જમણા ઢીચણ સુધી નમાન રૂપે શારીરિક અવયવો ની જે રચના હોય છે તેને સમચતુરસ્રસંસ્થાન કહે છે “છાયઉજ્જોવિયગમગા” તેમના શરીરના અંગો તેમના ગતીરની ક્રાંતિરૂપ છાયાથી સદા દેદીપ્યમાન બની રહે છે “પસત્થચ્છવી” તેમની આકૃતિ ઘણી મનોહર-સુદર હોય છે “નિરાયકા” તેમને કોઈ રોગ થતો નથી “કકગહણી” તેમનો ગુદાશય-ગુહ્યભાગ પક્ષીના ગુહ્યભાગની જેમ ભરહિત મળવાળો હોય છે “કવોયપરિણામા” તેમનો આહાર કવૃતરાના

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે “ સત્ત્વિવોસા ” પક્ષીની જેમ તેમનો ગુપ્તલાગ મળથી ખરડાયા વિનાનો હોય છે “ પિટૃતરોન્નપરિણયો ” તેમની પીઠ અને ઉદરની અદરનો તથા પાસેનો લાગ અને જઘાઓ મજબૂત હોય છે “ વસન્મુષ્પલસરિસ ગધસાસ સુરમિવચના ” પદ્મ-ડમળ, અને ઉત્પલ-તોલકમળ જેવી ગધવાળો તેમનો શ્વામ હોય છે તે શ્વામથી તેમનું મુખ સુગંધયુક્ત થાય છે છે “ અણુલોમવાઝવેગા ” તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અનુકૂળ જ રહે છે-પ્રતિકૂળ રહેતો નથી “ અવદાયનિહ્નકોષા ” તેમના રોમ અવદાત-કાન્તિ યુક્ત અને મુલાયમ હોય છે “ નિર્ગાહિયત્તણય કુત્ત્લી ” તેમના પેટની આંત્રુ બાંધુના બને લાગ શરીરને અનુકૂળ જ પુષ્ટ રહે “ અમયસ્સફલાહારી ”

યુક્તાનિ યાનિ ફલાનિ તેપામાહારિણઃ, 'તિગઉય સમુચ્છિયા' ત્રિ ગવ્યૂત સમુચ્છિતાઃ=ત્રિ ગવ્યૂતિપરિમાણોન્નતશરીરાઃ, તિપલિઓવમાહ પરમાઉ પાલ-
સ્થિતિકાઃ=ત્રિપલ્યોપમકાલસ્થિતિમન્તઃ 'તિન્નિ ય પલિ ઓવમાહ પરમાઉ પાલ-
હત્તા' ત્રીણિ ચ પલ્યોપમાનિ પરમાયૂપિ પરમાયુષ્યકાલ પાલયિત્વા-ઉપશુડય 'તે
વિ' તેડપિ=ઉત્તરકુરુદેવકુરુનિવાસિનો યુગલિકા મનુષ્યા અપિ, 'કામાણ અવિ-
તિત્તા' કામાનામવિતૃષ્ણાઃ - અવિતૃષ્ણકામમોગા એવ, 'ઉવણમતિ મરણધમ્મ'
મરણધર્મમુપનમન્તિ-ઇતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂં ૧૧ ॥

સામ્પ્રતં તેપા સ્ત્રી ત્રિપયેષ્યાહ—'પમયા વિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પમયાવિય તેસિ હુતિ સોમ્મા સુજાયસઠ્ઠવગ-
સુદરીઓ પહાણમહિલાગુણેહિ જુત્તા અઙ્કંત-વિસપ્પમાણ
મડયસુકુમાલ-કુમ્મસઠિય સિલિટ્ઠચલણા ઉઙ્ગુમડયપીવર
સુસહતગુલીઓ અઠ્ઠમુણાય । રઙ્ગયતલિણ-તંવસુહ-નિહ્ધ-
નસા રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહણ-પસત્થલક્ખણ-અકોપ્પ

વાલે ફલોં કા આહાર કરતે હે । (તિગાઉયસમુચ્છિયા) ત્રીન કોશકા
ઇનકા શરીર હોતા હૈ । (તિપલિઓવમાહ પરમાઉ પાલહત્તા) ત્રીન
પલ્લ્ય કી ઇનકી ઉત્કૃષ્ટ આયુ હોતી હૈ । ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત
બને હુએ યે ઉત્તરકુરુ ઓર દેવકુરુ કે નિવાસી મનુષ્ય મી ત્રીન પલ્લ્ય કી
ઉત્કૃષ્ટ અપની આયુ કા ભોગ કરકે મી (કામાણ અવિતત્તા) કામ-
સુખો મેં અતૃપ્ત બને રહતે હૈ । અર્થાત્-ત્રીન પલ્લ્ય કાલતરુ કામસુખોં
કો ભોગતે રહતે હૈ ફિર મી ઇનકી કામસુખોં કો ભોગને કી લાલસા
શાત નહીં હો પાતી હૈ । અન્ત મેં (તે વિ) વે મી કામ સે અતૃપ્ત હી
મરણ ધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂં ૧૧ ॥

તેઓ અમૃત જેવા રસવાળા કુળોનો આહાર કરે છે “તિગાઉયસમુચ્છિયા”
ત્રણ ગાવનુ તેમનુ શરીર હોય છે “તિપલિઓવમાહ પરમાઉ પાલહત્તા” ત્રણ
પદ્યનુ તેમનુ ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર
કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી હોડે પણ ત્રણ પદ્યનુ પોતાનુ આયુષ્ય ભોગવવા
છતાં પણ “કામાણા અવિતત્તા” કામ ભોગોવાં અતૃપ્ત રહે છે એટલે કે
ત્રણ પદ્ય કાળ સુધી કામ ભોગે ભોગવ્યા છતાં પણ કામભોગે ભોગવવાની
તેમની લાલસા શાત થઇ શકતી નથી એવડે “તે વિ” તેઓ પણ કામભો
ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

ડહારપરિવાસાઃ 'સડગિપોસા' ગદુનિપોમાઃ-ગદુનેરિય=વક્ષિણ ઇપોસઃ= અપાનસ્થાન નિરુપલેપતયા યેષા તે તથા, નિરુપલેપગુપાગયાઃ, 'પિટ્ટતરોરુપરિણયા' પૃષ્ઠાન્તરોરુપરિણતાઃ = પૃષ્ઠ = પૃષ્ઠદેશઃ, અન્તરે = શુદ્ધોદરયો-રન્તરાલે પાર્શ્વમિત્યર્થઃ ઉરુ = જલ્દે ચ, ઇત્યેતે પરિણતાઃ = શુદ્ધા યેષાં તે તથા 'પડમુપ્પલસરિસર્ગધસાસસુરમિવયગા' પડમોન્નપ્પલસર્ગમ્મવાસસુરમિવદનાઃ-તત્ર - પદ્મ = કમલમ્ ઉત્પલે = નીલકમલં ચ તત્પદ્મશો મન્વો यस્ય સ તથાભૂતો યઃ શ્વાસ તેન સુરમિ=સુગન્ધયુક્ત વદન=મુખ યેષા તે તથા 'અણુલોભવાઽવેગા' અણુલોભવાયુવેગા = અણુકુલશરીરોદ્ગમવાયુવેગાન્તઃ 'અવદાયનિદ્ધકોસા' અવદાતસ્નિગ્ધકેશાઃ = અવદાતા કાન્તિયુક્તા નિગ્ધાઃ=ચિક્ષ્ણાઃ કેશાઃ=રોમાણિ યેષા તે તથા, 'વિગ્ગહિયઽણ્ણયકુચ્છી' વૈગ્રહિકોન્નતકુક્ષયઃ=વૈગ્રહિકો=શરીરાનુરૂપો ઉન્નતો=પુષ્ટો કુક્ષી=ઉદરદેશો યેષા તે તથા શરીરાનુરૂપપુષ્ટોદરાઃ 'અમયરસફલાહારી' અમૃતરસફલાહારિણઃ = અમૃતતુલ્યરસ

હોતા હૈ । (સડગિપોસા) પક્ષી કી તરફ ઇનકા અપાનસ્થાન મલ કે ઉપલેપ સે રહિત હોતા હૈ । (પિટ્ટતરોરુપરિણયા) ઇનકે પૃષ્ઠ ઓર ઉદર કે અતરાલ-પાર્શ્વભાગ ણવ જગાઈ સુદૃઢ હોતી હૈ, (પડમુપ્પલસરિસર્ગધસાસસુરમિવયગા) પાર્શ્વ-કમલ, ઉત્પલ-નીલ કમલ, ઇનકે જૈસે ગંધવાળા ઇનકા શ્વાસ હોતા હૈ । ડસ શ્વાસ સે સુગંધ યુક્ત ઇનકા મુખ હોતા હૈ । (અણુલોભવાઽવેગા) ઇનકી શારીરિક વાયુ કા વેગ ઇનકે અણુકુલ હી રહતા હૈ-પ્રતિકુલ નહીં । (અવદાયનિદ્ધકોસા) ઇનકે કૈશ-રોમ અવદાત કાન્તિયુક્ત ણવ ચિક્ષ્ણે હોતે હૈ (વિગ્ગહિય-ઽણ્ણયકુચ્છી) ઇનકે પેટ કે ડોનો આજુ વાજુ કે ભાગ શરીર કે અનુરૂપ હી પુષ્ટ રહતે હૈ । (અમયરસફલાહારી) યે અમૃત કે જૈસે રસ-

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે “સડગિપોસા” પક્ષીની જેમ તેમનો ગુપ્તભાગ મળથી ખરડાયા વિનાનો હોય છે “પિટ્ટતરોરુપરિણયા” તેમની પીઠ અને ઉદરની અદરનો તથા પાસેનો ભાગ અને જઘાઓ મજબૂત હોય છે “પડમુપ્પલસરિસ ગંધસાસ સુરમિવયગા” પદ્મ-કમળ, અને ઉત્પલ-નીલકમળ જેવી ગંધવાળો તેમનો શ્વાસ હોય છે તે શ્વાસથી તેમનું મુખ સુગંધયુક્ત થાય છે છે “અણુલોભવાઽવેગા” તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અણુકુલ જ રહે છે-પ્રતિકુલ રહેતો નથી “અવદાયનિદ્ધકોસા” તેમના રોમ અવદાત-કાન્તિયુક્ત અને સુલાયમ હોય છે “વિગ્ગહિયઽણ્ણય કુચ્છી” તેમના પેટની આજુ આજુના બંને ભાગ શરીરને અનુરૂપ જ પુષ્ટ રહે “અમયરસફલાહારી”

યુક્તાનિ યાનિ ફલાનિ તેષામાહારિણઃ, 'તિગઉય સમુચ્છિયા' ત્રિ ગવ્યૂત સમુચ્છિતાઃ=ત્રિ ગવ્યૂતિપરિમાણોન્નતશરીરાઃ, તિપલિઓવમદ્વિડ્યા 'ત્રિપલ્યોપમ સ્થિતિકાઃ=ત્રિપલ્યોપમકાલસ્થિતિમન્તઃ 'તિન્નિ ચ પલિ ઓરમાહ પરમાહ પાલ-
હત્તા' ત્રીણિ ચ પલ્યોપમાનિ પરમાયૂપિ પરમાયુષ્યકાલ પાલયિત્વા-ઉપશુડ્ય 'તે
ત્રિ' તેડપિ=ઉત્તરકુરુદેવકુરુનિવાસિનો યુગલિકા મનુષ્યા અપિ, 'કામાણ અવિ-
તિત્તા' કામાનામવિત્તાઃ - અવિત્તકામભોગા એવ, 'ઉવ્વણમતિ મરણધમ્મ' મરણધર્મમુપનમન્તિ-ઇતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

સામ્પ્રત તેષા સ્ત્રી ત્રિપયેષ્યાહ—'પમયા ત્રિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પમયાત્રિય તેસિ હુતિ સોમ્મા સુજાયસઠ્ઠગ-
સુદરીઓ પહાણમહિલાગુણેહિ જુત્તા અડકંત-વિસપ્પમાણ
મડયસુકુમાલ-કુમ્મસઠિય-સિલિટ્ઠચલણા ઉડ્ડુમડયપીવર
સુસહતગુલીઓ અવ્વુણ્ણાય । રડ્ડયતલિણ-તંવસુડ્ડ-નિહ્દ-
નલા રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહણ્ણ-પસત્થલક્કણ-અકોપ્પ

વાલે ફલોં કા આહાર કરતે હ । (તિગાઉયસમુચ્છિયા) ત્રીન કોશકા
હનકા શરીર હોતા હૈ । (તિપલિઓવમાહ પરમાહ પાલહત્તા) ત્રીન
પલ્ય કી હનકી ઉત્કૃષ્ટ આયુ હોતી હૈ । હસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત
બને હુએ યે ઉત્તરકુરુ ઓર દેવકુરુ કે નિવાસી મનુષ્ય બી ત્રીન પલ્ય કી
ઉત્કૃષ્ટ અપની આયુ કા ભોગ કરકે બી (કામાણ અવિતિત્તા) કામ-
સુખો મેં અતૃપ્ત બને રહતે હૈ । અર્થાત્-ત્રીન પલ્ય કાલતરુ કામસુખોં
કો ભોગતે રહતે હૈ ફિર બી હનકી કામસુખોં કો ભોગને કી લાલસા
જ્ઞાત નહીં હો પાતી હૈ । અન્ત મેં (તે વિ) વે બી કામ સે અતૃપ્ત હી
મરણ ધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

તેઓ અમૃત જેવા રમવાળા કુળોનો આહાર કરે છે “તિગાઉયસમુચ્છિયા”
ત્રણ ગાવનુ તેમનુ ગરીર હોય છે “તિપલિઓવમાહ પરમાહ પાલહત્તા” ત્રણ
પલ્યનુ તેમનુ ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર
કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી હોડે પણ ત્રણ પલ્યનુ પોતાનુ આયુષ્ય ભોગવવા
છતાં પણ “કામાણા અવિતિત્તા” કામ ભોગોથી અતૃપ્ત રહે છે એટલે કે
ત્રણ પલ્ય કાળ સુધી કામ ભોગો ભોગવ્યા છતાં પણ કામભોગો ભોગવવાની
તેમની લાલસા જ્ઞાત થઈ જતી નથી એવડે “તે વિ” તેઓ પણ કામભો-
ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

મનોજાઃ તલિનાઃ=પતલા. તામા =તામરણાઃ શુચય=સ્વચ્છાઃસ્નિગ્ધાઃ=ચિક્ષા
 નવા યાસા તાસ્તથા । ‘ રોમરહિયવટ્ટસઠિયઅજહણ્ણપમત્થલકરણઅકોપ્પજઘજુ
 યલા ’ રોમરહિતટ્ટસઠિયઅજઘન્યપમત્તલક્ષણાકોપ્પજહાયુગલાઃ = રોમર
 રહિત=નિર્લોભક વૃત્તસંસ્થિત=વર્તુલાકારમ્ અજઘન્યમ્=ઉત્તમ પ્રમત્તલક્ષણ=સૌભા
 ગ્યચિહ્નયુક્તમ્, અકોપ્પ=સર્વપ્રિય ન જહાયુગલ યાસા તાસ્તથા, ‘ સુણિમ્મિય-
 સુણિગૂઢજાણુમસલપસત્થસુવદ્ધસધી ’ સુનિર્મિતસુનિગૂઢજાણુમામલપસત્થસુવ
 દ્ધસન્ધયઃ=તત્ર સુનિર્મિતૌ=શોભનસંસ્થાનવિશિષ્ટૌ સુનિગૂઢૌ = દુર્લભ્યૌ જાણુનોઃ
 જાણુદ્વયસ્ય માંમત્તૌ=પુષ્ટૌ પ્રશસ્તૌ=સુન્દરાકારૌ સુદર્ઢૌ=સુદૃઢૌ સન્ધી=સંસ્થાન
 સ્થાને યાસા તાસ્તથા ‘કયલી-લભાડરેગ-સઠિય-નિઘ્વણ-સુકુમાલ-મઝય કોમલ
 અવિરલ - સમસહિયવટ્ટપીવરનિરતરોરુ ’ કદલીસ્તમ્માતિરેપસસિયતનિર્વણસુકુમા
 મ્દુરુકોમલાવિરલસમસહિતટ્ટપીવરનિરતરોરયઃ = તત્ર કદલી સ્તમ્માદ
 તિરેકેણ = અતિશયેન શોભનાઽઽરોહાઽરોહમુપેશલસુકોમલત્વાદિગુણપ્રકર્પરૂપેણ
 સસિયતૌ-સુન્દરસંસ્થાનવન્તૌ નિર્વણો = નિરુપદતૌ સુકુમાસ્મદુરુકોમલૌ-અત્યન્ત

મનોજા, તલિન-પતલે, તામ્ર-લાલ, શુચિ-સ્વચ્છ એવ સ્નિગ્ધ-ચિક્ષને હોતે
 હે । (રોમરહિવટ્ટસઠિય-અજહણ્ણપમત્થલકરણ-અકોપ્પજઘજુયલા)
 इनका जघा युगल रोगरहित, वर्तुलाकार वाला अजघन्य-उत्तम सौ-
 भाग्यचिह्नो से युक्त एवं अकोप्यसर्वप्रिय होता है (सुणिम्मियसु
 णिगूढजाणु मसलपसत्थसुवद्धसधी) इनकी दोनों जानु की सधियां
 शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती है । पुष्ट और सुदराकार
 से युक्त होती है । मजबूत होती है । (कयलीलभआडरेगसठियनिघ्वण
 सुकुमाल मउय कोमल अविरल समसहियवट्टपीवरनिरतरोरु) इनकी
 दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तम्भ से भी अधिक सुन्दर
 संस्थानवाला होता है । निर्वण-घाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે “ રોમરહિયવટ્ટસઠિય-અજહણ્ણ-પમત્થ-લકરણ-અકોપ્પ-જઘ
 જુયલા ” તેમની બન્ને જઘાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજઘન્ય-ઉત્તમ, સૌભાગ્ય
 ચિહ્નોથી યુક્ત અને અકોપ્પ સર્વપ્રિય હોય છે, “ સુણિમ્મિય-સુણિગૂઢ
 જાણુમસલપસત્થ સુવદ્ધસધી ” તેમની બન્ને જઘાઓના સાધાનો ભાગ સુડોળ,
 વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જઘાઓ પુષ્ટ અને સુદર આકારની
 હોય છે અને મજબૂત હોય છે “ કયલી લભાડ રેગસઠિય-નિઘ્વણ-સુકુમાલમ
 ઝય-કોમલ-અવિરલ-સમસહિયવટ્ટપીવરનિરતરોરુ ” તેમની બન્ને જઘાઓની
 ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુદર આકારનો હોય છે, “ નિર્વણ ”
 ઘાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, અવિરલ

કૌમલા અવિરલો=પરસ્પરમિલિતો સમસહિતો=ઉચિતપ્રમાણયુક્તો વૃત્તો=વર્તુલો પીવ
રો=પીનો નિરન્તરા=પરસ્પરસમ્બદ્ધો ઝરુ=જાનૂપરિતનભાગો યાસા તાસ્તથા
'અદ્વાવયવીઢ-પટ્ટ-સઠિયપસત્ય વિત્થિણ્ણપિહુલસોળી' અષ્ટાપદત્રીચિષ્ટસસિયત-
પ્રગસ્તવિસ્તીર્ણપૃથુલશ્રોણ્યઃ=અષ્ટાપદસ્ય=દૂતવિશેષસ્ય ત્રીચય इव वीचयः=તર
જ્ઞાકૃતિરેગ્યા તદ્યુક્ત યત્ પટ્ટ-ફલકઃ, તદ્વત્ સસિયતા = તત્સસ્થાનયુક્તા તદાકૃ-
તિકા પ્રશસ્તા વિસ્તીર્ણા પૃથુલા=વિશાલા શ્રોણિઃ=કટિભાગા યાસા તાસ્તથા
'વયણાયમપ્પમાણદુગુણિયવિસાલમસલસુવદ્ધજઘ્ણવરધારિણીઓ' વદનાયમપ-
માણાદિગુણિતવિશાલમામલસુવદ્ધજઘ્ણવરધારિણ્યઃ = વદનસ્ય = મુખસ્ય યઃ
આયામઃ વિસ્તારસ્તમ્ય યત્ પ્રમાણ તસ્માદિગુણિત ચતુર્વિંશત્યઙ્ગુલમિત્યર્થઃ,
વિશાલ=તથા મામલ=પુષ્ટ સુવદ્ધ=શૈથિલ્યવર્જિત જઘ્ણવર=વરજઘ્ણ=કટચાઃ
પુરોભાગ ધારયતિ યાસ્તાસ્તથા 'વજ્જવિરાડયપસત્યલચ્છણનિરોદરીઓ' વજ્જ

હોના હૈ । અત્યન કૌમલ હોતા હૈ । અવિરલ-પરસ્પર મિલા હુઆ હોતા
હૈ । સમસહિત-ઉચિતપ્રમાણ સે યુક્ત હોતા હૈ । વૃત-વર્તુલ-ગોલ હોતા
હૈ । પીવર-પીન-પુષ્ટ હોતા હૈ । નિરન્તર પરસ્પર સમ્બદ્ધ હોતા હૈ ।
(અદ્વાવયવીઢપટ્ટસઠિયપસત્યવિત્થિણ્ણપિહુલસોળી) इनका कटिभाग
दूतविशेष की वीचियों के समान तरङ्गाकृति रेखाओं से युक्त फलक
के जैसे आकार वाला होता है, प्रगस्त होता है, विस्तीर्ण होता है तथा
पृथुल विशाल होता है । (वयणायामप्पमाणदुगुणियविमालमसलसुव-
द्ध जघ्णवरधारिणीओ) इनकी कटिका पुरोभाग-जघ्न प्रदेश-मुख के
विस्तार के प्रमाण से द्विगुणित होता है-अर्थात्-चौबीस अंगुलका
होता है, विशाल-पृथुल, एव मांसल-पुष्ट होता है । सुवद्ध-शैथिल्य
विहीन- होता है । (वज्जविराडयपसत्थलच्छणनिरोदरिओ) इनका

પરસ્પર ભેડાયેલ હોય છે, સમસહિત-યોગ્ય પ્રમાણવાળો-પ્રમાણમરનો હોય છે,
ગોળ હોય છે, પીવર-પુષ્ટ હોય છે, અને નિરન્તર-પરસ્પર સમ્બદ્ધ હોય છે
“ અદ્વાવયવીઢપટ્ટ-સઠિય-પસત્ય-વિત્થિણ્ણ-પિહુલસોળી ” તેમનો કટિભાગ દૂત
વિશેષની વીચિયોના સમાન તરંગાકૃતિ રેખાઓથી યુક્ત ફલકના જેવા આકાર-
વાળો હોય છે, પ્રશસ્ત હોય છે, વિસ્તીર્ણ હોય છે તથા પૃથુલ-વિશાળ
હોય છે “ વયણાયમપ્પમાણદુગુણિય વિસાલમસલસુવદ્ધજઘ્ણવરધારિણીઓ ”
તેમની કટિનો આગળનો ભાગ જઘ્ણ પ્રદેશ-મુખના વિસ્તાર કરતા જે
ગણા માપનો હોય છે, એટલે કે ચોવીસ આગળનો હોય છે, વિશાળ અને
માસલ પુષ્ટ હોય છે, સુવદ્ધ શૈથિલ્ય વિહીન હોય છે, “ વજ્જવિરાડય પસત્ય-
લચ્છણનિરોદરીઓ ” તેમના ઉદરનો ભાગ વજ્જ જેવો સુદર, એટલે કે

મનોહા: તલિના: = મતલા: તામા = તામરળા: શુનય: = સ્વન્ત્રા: સ્નિગ્ધા: = ચિક્ષ્ણા:
 નવા યાસા તામ્તથા । ‘ રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહળ્ણપસત્થલકવળ-અકોપ્પજઘજુયલા
 યલા ’ રોમરહિતવૃત્તસમ્મિતઅનવન્યમગસ્તલક્ષણાઽકોપ્પજહાયુગલા: = રોમર
 રહિત = નિર્લોભક વૃત્તસમ્મિત = વર્તુલાકારમ્ અજવન્યમ્ = ઉત્તમ પ્રાપ્તલક્ષણ = મૌમા
 ગ્યચિદ્વયુક્તમ્, અકોપ્પ = સર્વપ્રિય ન જહાયુગલ યાસા તામ્તથા, ‘ સુણિમ્મિય-
 સુણિગૂઢજાણુમસલપસત્થસુવદ્ધસંધી ’ સુનિર્મિતસુનિગૂઢજાણુમાસલપસત્થસુવ
 દ્ધસન્ધય: = તત્ર સુનિર્મિતૌ = શોભનસંસ્થાનવિશિષ્ટૌ સુનિગૂઢૌ = દુર્લભૌ જાણુનો =
 જાણુદ્વયસ્ય માંસત્તૌ = પુષ્ટૌ પ્રશસ્તૌ = સુન્દરાકારૌ સુવદ્ધૌ = સુદૃઢૌ સન્ધી = સંસ્થાન
 સ્થાને યાસા તામ્તથા ‘ કયલી-સ્વભાડરેગ-સઠિય-નિઘ્વણ-સુકુમાલ-મડય કોમલ
 અવિરલ - સમસહિયવટ્ઠપીવરનિરતરોરુ ’ કદલીસ્તમ્ભાતિરેક્ષસસ્થિતનિર્વળસુકુમાર
 મૃદુકકોમલાઽવિરલસમસહિતવૃત્તપીવરનિરતરોરય: = તત્ર કદલી સ્તમ્ભાદ
 તિરેકેણ = અતિશયેન શોભનાઽસોઢાઽવરોહમુપેગલસુકોમલત્વાદિગુણપ્રકર્પરૂપેણ
 સસ્થિતૌ-સુન્દરસંસ્થાનવન્તૌ નિર્વળૌ = નિરુપદૌ સુકુમારમૃદુકકોમલૌ-અત્યન્ત

મનોહર, તલિન-પતલે, તામ્ર-લાલ, શુચિ-સ્વન્ત્ર એવ સ્નિગ્ધ-ચિક્ષ્ણે હોતે
 હૈ । (રોમરહિવટ્ઠસઠિય-અજહળ્ણપસત્થલકવળ-અકોપ્પજઘજુયલા)
 इनका जघा युगल रोगरहित, वर्तुलाकार वाला अजवन्त्य-उत्तम सौ-
 भाग्यचिह्नों से युक्त एवं अकोप्यसर्वप्रिय होता है (सुणिम्मियसु
 णिगूढजाणु मसलपसत्थसुवद्वसंधी) इनकी दोनों जानु की संधिया
 शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती है । पुष्ट और सुंदराकार
 से युक्त होती हैं । मजबूत होती हैं । (कयलीस्वभाडरेगसठियनिघ्वण
 सुकुमाल मडय कोमल अविरल समसहियवट्ठपीवरनिरतरोरु) इनकी
 दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तम्भ से भी अधिक सुन्दर
 संस्थानवाला होता है । निर्वण-घाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે “ રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહળ્ણ-પસત્થ-લકવળ-અકોપ્પ-જઘ
 જુયલા ” તેમની બન્ને જઘાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજવન્ય-ઉત્તમ,
 સૌભાગ્ય ચિહ્નોથી યુક્ત અને અકોપ્પ સર્વપ્રિય હોય છે, “ સુણિમ્મિય-સુણિગૂઢ
 જાણુમસલપસત્થ સુવદ્ધસંધી ” તેમની બન્ને જઘાઓના સાધાને ભાગ સુડોળ,
 વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જઘાઓ પુષ્ટ અને સુદૃઢ આકારની
 હોય છે અને મજબૂત હોય છે “ કયલી સ્વભાડ રેગસઠિય-નિઘ્વણ-સુકુમાલમ
 ડય-કોમલ-અવિરલ-સમસહિયવટ્ઠપીવરનિરતરોરુ ” તેમની બન્ને જઘાઓની
 ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુદૃઢ આકારનો હોય છે, “ નિર્વળ ”
 ઘાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, અવિરલ

અકોસાયતપડમગમીરવિગટનામીઓ ' ગદ્ગાવર્તકદક્ષિણાવર્તતરદ્વમહુર - રવિ -
 કરણતરુગનોવિતવિકોશાયમાનપદ્મગમ્भीરવિકટનામિકાઃ, તત્ર ગદ્ગાવર્તકઃ
 =ગદ્ગાનદ્યાનલભ્રમઃ, સ ચ દક્ષિણાવર્ત તરદ્વમહુર- તરદ્વૈઃ મહુરઃ વક્રશ્ચ,
 તદ્વત્, તથા રવિકિરણૈઃ=સૂર્યકિરણૈ રોધિત વિગ્ધાસિત=વિગ્ધાસાનસ્થાપ્રાપ્તુવદિ-
 ત્યર્થઃ, અતएય વિકોશાયમાન મુકુટાનસ્થા વિમુચ્ચત્ યત્ પદ્મ તદ્વદ્ ગમ્भीરા
 વિગ્ધા-સુન્દરા ચ નાભિર્યાસા તાસ્તયા । 'અણુઽમહપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી'
 અનુદ્વટપ્રગસાસુનાતપીનકુક્ષ્ય.=અનુદ્વટ=ઉદ્વટરહિતો સમો, પ્રશસ્તા સુજાતો
 સુસસ્થિતો પીનો સુપુષ્ટા કુક્ષી=ઉદરોભયભાગો યાસા તાસ્તયા 'સનયપાસા'
 સનતપાર્શ્વા. = પુષ્ટત્વાદયોનમત્પાર્શ્વભાગાઃ, 'સગયપાસા' સન્નતપાર્શ્વાઃ=સુમિ-
 લિતપાર્શ્વભાગાઃ, અતएય 'સુદરપાસા' સુન્દરપાર્શ્વાઃ = મનોહરપાર્શ્વભાગાઃ,
 'સુજાયપાસા' સુજાતપાર્શ્વાઃ=સુસસ્થિતપાર્શ્વા, 'મિયમાઇયપીણરઙ્ગપાસા' મિત-

કિરણ તરુગનોદિય અકોનાયતપડમગમીરવિગટનામીઓ) ઇનકી નાભિ
 તરંગો સે વક્ર ગને હુણ એસે દક્ષિણાવર્તવાલે ગગાનદી કે જલભ્રમ-
 ભંવર કે સમાન હોતી હૈ । તથા સૂર્ય કી કિરણોં કે સપર્ક સે અપની
 મુકુલિત અવસ્થા કા પરિત્યાગ કરૂ વિકૃતિત અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુણ પદ્મ
 કે સપ્તાન ગમ્भीર હોતી હૈ ઓર વિકટ ઘડી સુન્દર હોતી હૈ । (અણુ-
 ંમહપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી) ઇનકે ઉદર કે દોનોં પાર્શ્વભાગ અનુદ્વટ-
 અનુલ્વણ-વરાધર-એક સે હોતે હૈ । પ્રશસ્ત-સુદાવને હોતે હૈ । સુજાત-
 અચ્છે સમ્થાનવાલે હોતે હૈ । પીન-પુષ્ટ હોતે હૈ । (સનયપાસા) તથા
 પુષ્ટ હોને કે કારણ ઇનકે દોનોં તરફ કે વે પાર્શ્વભાગ નીચે કી ઓર
 છુકે હુણ રહતે હૈ । (સગયપાસા) વે દોનોં ઇનકે પાર્શ્વભાગ પરસ્પર મેં
 સગત-મિલે રહતે હૈ । અતएય વે (સુદરપાસા) ઝડે સુન્દર હોતે હૈ ।
 તથા (સુજાયપાસા) અચ્છે સસ્થાન સે યુક્ત કહે જાતે હૈ । (મિયમા

મીરવિગટનામીઓ" તેમની નાભિ તરંગોથી વક્ર બનેલા દક્ષિણાવર્ત વાળા
 ગગા નદીના જલભ્રમ-વમળ જેવી હોય છે, અને સૂર્યના કિરણોના સપર્કથી
 પોતાની ખીડાયેલી અવસ્થા છોડીને વિકૃતિત થયેલા કમળના જેવી ગભીર
 અને વિકટા અત્યંત સુદૃઢ હોય છે "અણુંમહપ સત્યસુજાયપાણકુચ્છી"
 તેમના ઉદરની બાબુના બન્ને ભાગો (કુક્ષીઓ) એક સરખા હોય છે,
 પ્રશસ્ત, પુષ્ટ અને સુડોળ હોય છે "સનયપાસા" તે બન્ને કુક્ષી પુષ્ટ
 હોવાને કારણે નીચેની બાબુ ઝુકેલા રહે છે 'સગયપાસા' તેમની તે
 બન્ને કુક્ષીઓ પરસ્પરમા અગત- મળેલી હોય છે, તેથી તે "સુદરપાસા"
 ઘણી સુદર હોય છે તથા "સુજાયપાસા" સુધટિત હોય છે "મિયમાઇયપીણ-

વિરાજિતપ્રગ્લભલક્ષણ નિરોદ્યઃ = વજ્રમ્ વિરાજિતં = મધ્યપતલ પ્રગ્લભલક્ષણ =
 શુભલક્ષણવિશિષ્ટમ્ અતિ પ્રતલપ્રાપ્તિર્ગતમિરોદર યામા તાસ્તથા કુશોદર્ય ઇત્યર્યઃ
 તિવલિવલિયતણુનમિયમઙ્ગિયાઓ ' તિવલિવલિતતનુનમિતમધ્યકાઃ = ત્રિવ
 લિખીઃ = ઉદરસ્થરેવાત્રયરૂપામિઃ પ્રતિ૧૧ = પ્રત્યુક્ત૨ઃ = તનુનમિત૪ઃ =
 કિશ્કિદવનતા ૪, મધ્ય = મધ્યમાગઃ = કટિપ્રદેશો યામા તાસ્તથા ' ઉજ્જુયમમ
 સહિય જન્વતણુકમિણનિદ્રાદેજ્જલહહસુકુમાલ્મમઝયમુવિમત્તરોમરાઈઓ ' તત્ર
 ' ઉજ્જુય ' ઋજુકાનિ ' સપમહિય ' સમાનિ-તુલ્યાનિ સહિતાનિ = પનાનિ
 ' જન્વ ' જાત્યાનિ-સ્વાભાવિકાનિ ' તણુ ' તનૂનિ = છદ્માણિ ' કસિણ ' કૃણ્ણાનિ
 ' નિદ્ધ ' સ્નિગ્ધાનિ = અસ્થાણિ ' આદેજ્જ ' આદેયાનિ = શ્લાઘનીયાનિ ' લ્હહ
 ઇતિ સુન્દારાણિ ' સુકુમાલ્મઝય ' સકુમારમૃદુકાનિ = અત્યન્ત કોમલાનિ ' સુવિ
 ભત્ત ' સુવિભક્તાનિ = યથાસ્થાનશોભિતાનિ ચ યાનિ રોમાણિ તેષા રાજયઃ =
 પક્કયો યાસા તાસ્તથા ' ગંગાવત્તગદાહિણાવત્તતરગમ્ભુરરવિકિરણતરુગવોદિત

ઉદરભાગ વજ્ર કે જેમા સુંદર, અર્થાત્-મધ્ય મેં પતલા હોના છે । શુભ
 લક્ષણોં સે વિશિષ્ટ હોના છે । તથા અતિપતલા કુશ-હોને કે કારણ
 અનુદર-નિર્ગત ઉદર જેસા હોના છે — અર્થાત્ યે કુશોદરી હોતી
 હે । (તિવલિવલિયતણુનમિયમઙ્ગિયાઓ) હન કા મધ્યભાગ
 ઉદરપ્રદેશ ત્રિવલિયોં સે વલિત-યુક્ત - હોના છે । ઔર તનુનમિત -
 કુઠ ઝુકા દુઆ સા રહતા હે । (ઉજ્જુયસમમહિય જન્વતણુ કસિ-
 ણનિદ્રાદેજ્જલહહસુકુમાલ્મઝયમુવિમત્તરોમરાઈઓ) હન કી
 રોમરાજિ ઋજુ-સરલ, સમ એકસી સહિત ઘનીભૂત, જાત્ય સ્વાભાવિક,
 તનુ-પતલી, કૃણ્ણ-કાલી, નિદ્ધ-સ્નિગ્ધ, ચિકની-સ્પર્શતારહિત, આદેય-
 શ્લાઘનીય, લહહ-સુંદર સુકુમારમૃદુક-અત્યન્ત કોમલ તથા સુવિભક્ત
 યથાસ્થાન શોભિત હોતી હે । (ગંગાવત્તગ-દાહિણાવત્ત-તરગ-મ્ભુર-રવિ

મધ્યમા પાતળો હોય છે અને શુભ લક્ષણોવાળો હોય છે, તથા અતિશય -
 પાતળો હોવાથી અનુદર-પેટ જ ન હોય તેવો હોય છે એટલે કે તે સ્ત્રીઓ
 કુશોદરી હોય છે “ તિવલિવલિયતણુનમિયમઙ્ગિયાઓ ” તેમનો મધ્યભાગ-
 ઉદર પ્રદેશ ત્રિવલિયો વાળો હોય છે, અને સહેજ ઝુકેલો રહે છે “ ઉજ્જુય
 સમસહિય-જન્વ-તણુ-કસિણ નિદ્ધ-આદેજ્જ-લહહ-સુકુમાલ-મઝય-સુવિમત્તરોમ-
 રાઈઓ ” તેમની રોમરાજિ ઋજુ-સરલ, સમ-એક સરખી, સહિત-ઘનીભૂત,
 જાત્ય-સ્વાભાવિક, તનુ-પાતળી, કાળી, સુવાળી, આદેય-વખાણુવા યોગ્ય, લહહ
 સુંદર સુકુમાર, મૃદુક-અતિ કોમળ તથા સુવિભક્ત-યથાસ્થાન શોભિત હોય
 છે, (“ ગંગાવત્તગદાહિણાવત્ત તરગમ્ભુર રવિ ”)

અક્રોસાયતપડમગમીરવિગડનામીઓ ' ગદ્ગાવર્તન-ત્રિણાવર્તન-તરંગમધુર - રવિ -
કરણતરુગનોપિતરિકોશાયમાનપદગમ્મીરવિગડનામિકાઃ, તત્ર ગદ્ગાવર્તનઃ
ન્નાદ્વાનયાનલભ્રમઃ, સ ચ દક્ષિણાવર્ત. તરંગમધુર - તરંગૈઃ મધુરઃ વક્રશ્ચ,
તદ્વત્, તથા રવિકિરણૈઃ=સૂર્યકિરણૈ ગોપિત વિગમિત=વિગમિતસ્થાપાપ્તુવદિ-
ત્યયઃ, અતઃપ્ર વિગોશાયમાન મુકુટામ્યા વિમુચ્ચત્ યત્ પશ્ચ તદ્વદ્ ગમ્મીરા
વિગડ-સુન્દરા ચ નામિર્યાસા તાસ્તથા । 'અણુઘ્મહ્મપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી'
અનુદ્વટપગમ્માસુજાતપીનકુચ્ચ =અનુદ્વટ=અદ્વટરહિતો સમો, પ્રશસ્તો સુજાતો
સુસથિતા પીનો સુપુષ્ટા કુલી=ઉત્તરોક્ત્યર્થમાર્ગો યાસા તાસ્તથા 'સનયપાસા'
સનયપાર્શ્વોઃ = પુષ્ટત્વાદગોનમત્પાર્શ્વભાગાઃ, 'સગયપાસા' સગતપાર્શ્વોઃ=સુમિ-
લિતપાર્શ્વભાગાઃ, અતઃપ્ર 'સુદરપાસા' સુન્દરપાર્શ્વોઃ = મનોહરપાર્શ્વભાગોઃ,
'સુજાયપાસા' સુજાતપાર્શ્વોઃ=સુસથિતપાર્શ્વો, 'મિયમાદ્યપીણરડ્યપાસા' મિત-

કિરણ તરુગનોપિત અક્રોસાયતપડમગમીરવિગડનામીઓ) દ્વનકી નામિ
તરંગો સે વક્ર ગને નુગ ગેસે દક્ષિણાવર્તવાલે ગગાનદી કે જલભ્રમ-
મંચર કે સમાન હોતી હૈ । તથા સૂર્ય કી કિરણો કે સપર્ક સે અપની
મુકુલિત અવસ્થા કા પરિત્યાગ કરૂ વિકૃન્નિત અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઈ પશ્ચ
કે સપ્રાપ્ત ગમ્મીર હોતી હૈ ઓર વિકટ વડી સુન્દર હોતી હૈ । (અણુ-
ઘ્મહ્મપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી) દ્વનકે ઉદર કે દોનો પાર્શ્વભાગ અનુદ્વટ-
અનુલ્વણ-ચરાચર-પ્રકર સે હોતે હૈ । પ્રશસ્ત-સુદાયને હોતે હૈ । સુજાત-
અચ્છે સમ્માનવાલે હોતે હૈ । પીન-પુષ્ટ હોતે હૈ । (સનયપાસા) તથા
પુષ્ટ હોને કે કારણ ઉનકે દોનો તરફ કે વે પાર્શ્વભાગ નીચે કી ઓર
જુકે હુઈ રહતે હૈ । (સગયપાસા) વે દોનો ઉનકે પાર્શ્વભાગ પરસ્પર મેં
સગત-મિલે રહતે હૈ । અતઃપ્ર વે (સુદરપાસા) ગ્હે સુન્દર હોતે હૈ ।
તથા (સુજાયપાસા) અચ્છે સસ્થાન સે યુક્ત કહે જાતે હૈ । (મિયમા

મીરવિગડનામીઓ" તેમની નાભિ તરંગોથી વક્ર બનેલા દક્ષિણાવર્તવાળા
ગગા નદીના જલભ્રમ-વમળ જેવી હોય છે, અને સૂર્યના કિરણોના સપર્કથી
પોતાની બીડાયેલી અવસ્થા છોડીને વિકૃન્નિત થયેલા કમળના જેવી ગમ્મીર
અને વિકટા અત્યંત સુદર હોય છે "અણુઘ્મહ્મપસત્યસુજાયપાણકુચ્છી"
તેમના ઉચ્ચની બાજુના બન્ને ભાગો (કુલીઓ) એક સરખા હોય છે,
પ્રશસ્ત, પુષ્ટ અને સુહોળ હોય છે "સનયપાસા" તે બન્ને કુલી પુષ્ટ
હોવાને કારણે નીચેની બાજુ જુકેલા ગ્હે છે 'સગયપાસા' તેમની તે
બન્ને કુલીઓ પરસ્પરમા અગત-મળેલી હોય છે, તેથી તે "સુદરપાસા"
ધણી સુદર હોય છે તથા "સુજાયપાસા" સુધૃષ્ટિત હોય છે "મિયમાદ્યપીણ-

માત્રિક પીનરતિદર્શી:-મિતૌ-માનોપતૌ માત્રિકૌ પરિમાણમમ્પન્નૌ પીનૌ=સુપુ-
 ણ્ટૌ રતિદૌ - રમણીયૌ પાર્શ્વભાગા યાસા તાસ્તથા ' અરરડ્યકળગરુયગનિ
 મ્મલ સુજાયનિરુવહ્યગાયલટ્ટી ' અકરણ્ટુકાનકરુચકનિર્મલસુજાતનિરુપઠત
 ગાત્રયષ્ટયઃ તત્ર અકરણ્ટુકા = પુષ્ટત્વાદનુપદ્યપુષ્ટપાર્શ્વોન્વસ્થિતાઃ, તથા
 કનકરુચકનિર્મલા = સુવર્ણ સમાનકાન્તિમતીયુજાતા નિરુપઠતા = રોગરહિતા
 ચ ગાત્રયષ્ટિ યાસાં તાસ્તથા ' કચળકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુય આમેલગ
 જમલ જુયલ રદ્વિયપબોહરાઓ ' કાશ્ચનકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચકાડમેલક
 યમલયુગલવર્તિતપયોધરાઃ=તા કાશ્ચનકલસપ્પમાણૌ=ઉન્નતત્વેન વર્તુલત્વેન ચ સુવર્ણ
 ઘટાકરૌ સમૌ=તુલ્યૌ સહિતૌ=અનિપતિત્વેનાડશિથિલૌ લટ્ટચૂચકામેલકૌ=મનોહ-
 રકૃષ્ણસ્તનમુગ્ધશિલ્પરે યમલૌ=સહોત્પન્નૌ યુગલૌ=યુગ્મૌ વર્તિતૌ=વર્તુલ, પયોધરૌ=
 સ્તનૌ યાસા તાસ્તથા ' મુયગઅણુપુવ્વતણુયગોપુન્નડપટ્ટમસહિયનામિય આદે-

હ્યપીળરડ્યપાસા) इसीलिये उनके ये दोनों पार्श्वभाग मित-मान से
 युक्त, मात्रिक-प्रमाणसपन्न, पीन-सुपुष्ट एव रतिद-रमणीय लगते हैं।
 (अकरण्ड्यकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवह्यगायलट्टी) पुष्ट होने के
 कारण उनकी न लों पीठकी रद्विया दिखती है और न दोनों पार्श्वभागों
 की। इनका शरीर सुवर्ण के समान कान्तिवाला एव रोगरहित होता
 है। (कचणकलसपपमाण समसहितलट्टचूचुय आमलग जमलजुयलवद्विय
 पयोहराओ) इनके दोनों स्तन उन्नत और गोल होने के कारण सुवर्ण-
 निर्मित घट के आकार जैसे होते हैं-कमती बढ़ती नहीं। सहित अशि-
 थिल होते हैं। नीचे की ओर झुके हुए नहीं रहते साम्हने उठे हुए
 रहते हैं। इनके दोनों चूचुक मनोहर एव अत्यंत काले सुखवाले होते
 हैं। ये साथ २ उत्पन्न होते हैं। गोल रहते हैं, (म्रुयग अणुपुव्वतणुय-

રહ્યપાસા ” તે કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિતમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ
 અને રતિદ-રમણીય લાગે છે “અક હુયકળગરુયગનિમ્મલ સુજાય નિરુવહ્યગાયલટ્ટી”
 તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના
 હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી કાન્તિવાળા અને નીરોગી
 હોય છે “ કચળ કલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુયઆમેલગજમલજુયલવદ્વિય
 પયોહરાઓ ” તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, સોનાના
 ઘડા જેવા લાગે છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા
 નથી,, સહિત-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ
 ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને ડીટીઓ મનોહર અને અત્યંત શ્યામ મુખવાળી
 હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના ૨ છે

જ્જલઝડવાહા ' ભુજદ્વાનુપ્રવૃત્તનુક ગોપુચ્છવૃત્તસમસહિતનમિતાદેયલઙ્કરવાહવઃ =
 ભુજદ્વાનુ = સર્પવત્ પાનુપૂર્વેણ તનુકા = ક્રમશઃ કૃશો તથા ગોપુચ્છવૃદ્ વૃત્તો =
 વર્તુલો સમસહિતા = સમત્વયુક્તા સુગુઠિતા ચ નમિતો = સુદીર્ઘલમ્બમાનો આદેયો =
 શ્લાઘનીયો ' લઙ્કર ' इति सुन्दरा नाह-भुजौ यासा तास्तथा ' तवनहा ' ताम्र-
 नखाः-रक्तवर्णनखसम्पन्नाः ' मसलग्गहत्वा ' मासलग्गहस्ता-मासलौ-पुण्टौ
 अग्रहस्तौ-हस्ताग्रभागौ ' पोंचा ' इति प्रमिद्धो यासा तास्तथा, तथा ' कोमल
 पीवरवरगुलीया ' कोमल पीवरवराङ्गुलिकाः, तेऽपि मरणधर्ममुपनमन्तीतिव-
 क्ष्यमाणेन सम्बन्धः ॥ सू-१२ ॥

પુનસ્તાઃ કીદૃશ્યઃ ? इत्याह—' निद्धपाणि लेहा ' इत्यादि—

મૂલમ્—નિદ્ધપાણિલેહા મસિ-સૂરસલ્લચક્કવર સોતિથય
 વિભત્ત — સુરદય-પાણિલેહા પીણુણય કલ્લવતિથપ્પણ્ણ

ગોપુચ્છવૃત્તસમસહિયનામિય આદેજ્જલઙ્કરવાહા) इनकी दोनों भुजाएँ
 सर्प की तरह क्रमशः कृशहुई होती है । तथा गाय की पूछ की तरह
 वर्तुल होती है । सम-एकसी तथा सहित-संगठित होती है । नमित-
 घुटनों तक लगी रहती है । आदेय-देखने में प्रशंसनीय एववही सुहा-
 वनी लगती हैं । (तवनहा) इनकी अंगुलियों के नख लाल वर्ण वाले
 होते हैं । तथा (मसलग्गहत्वा) इनका पोंचा मासल-पुण्ट होता है ।
 तथा (कोमलपीवरवरगुलीया) इनकी हाथों की अंगुलिया कोमल
 पीवर-पुण्ट एव वर-उत्तम होती है । ऐसी ये स्त्रिया भी कामभोग से
 अतृप्त ही मरणधर्म को प्राप्त करती हैं । ऐसा संबध आगे के वाक्य से
 जोड लेना चाहिये ॥ सू० १२ ॥

“ भुयग-अणुपुव्व-तलुय गोपुचछवट्ट-समसहिय-नामिय-आदेज्जल-उडवाहा ”
 તેમની બન્ને બુદ્ધઓ સર્પની જેમ ક્રમશઃ કૃશ થતી જાય છે, તે બુદ્ધઓ
 ગાયની પૂછડી જેવી વર્તુળ સમ-એક સરખી, તથા સહિત-સુગઠિત, ઘુટણો
 સુધી લાખી, અને આદેય-પ્રશન્ત, અને શોભિતી લાગે એ “ તવનહા ” તેમની
 આંગળીઓના નખ લાલ રંગના હોય છે, તથા “ મસલગ્ગહત્વા ” તેમના
 પોંચા માસલ-પુણ્ટ હોય છે, તથા “ કોમલપીવરવરગુલિયા ” તેમના હાથની
 આંગળિયો પીવર-પુણ્ટ અને ઉત્તમ હોય છે એવી તે યુગલિક સ્ત્રીઓ પણ
 કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એવો સંબધ આગળના વાક્યો
 સાથે સમજી લેવો ॥ સૂ. ૧૨ ॥

માત્રિક પીનરતિદર્શિ:-મિતો-માનોપતો માત્રિકો પરિમાણસમ્પન્નો પીનો-સુપુ-
 ણ્ટો રતિદો - રમણીયો પાર્શ્વભાગો યાસાં તાસ્તથા ' અકરહ્યકળગરુયગનિ
 મ્મલ સુજાયનિરુદ્ધયગાયલટ્ટી ' અકરહ્યકળગરુચકનિર્મલસુજાતનિરુપદ્ધત
 ગાત્રયદ્ય: તત્ર અકરહ્યકળ = પુષ્ટત્વાદનુપદ્યપુષ્ટપાર્શ્વપરિથિકા, તથા
 કનકરુચકનિર્મલા = સુવર્ણ સમાનકાન્તિમતીયુજાતા નિરુપદ્ધતા = રોગરહિતા
 ચ ગાત્રયદ્યિ યસાં તાસ્તથા ' કચળકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચુચુચ આમેલગ
 જમલ જુયલ વદિયપબોદરાઓ ' કાશ્ચનકલગમમાણસમસહિતલટ્ટચુચકાડમેલક
 યમલયુગલર્તિતપયોધરા:=તા કાશ્ચનકલગમમાણો=ઉત્તત્ત્વેન વર્તુચ્ચત્ત્વેન ચ સુવર્ણ
 ઘટાકરો સમો=તુલ્યા સહિતો=અનિપતિતત્ત્વેનાડશિથિલા લટ્ટચુચકામેલકો=મનોહ-
 રકૃષ્ણસ્તનમુખશિખરે યમઠો=સહોત્પન્નો યુગલો=યુગ્મો ર્તિતો=ચુચો, પયોધરો=
 સ્તનો યાસાં તાસ્તથા ' શુચગઅણુપુવ્વતણુયગોપુન્નપદ્ધસમસહિયનામિય આદે-

હ્યપીળરહ્યપાસા) હસીલિયે ઉનહે ઘે દોનોં પાર્શ્વભાગ મિત-માન સે
 યુક્ત, માત્રિક-પ્રમાણસપન્ન, પીન-સુપુષ્ટ એવ રતિદ-રમણીય લગતે હૈં ।
 (અકરહ્યકળગરુયગનિમ્મલસુજાયનિરુદ્ધયગાયલટ્ટી) પુષ્ટ હોને કે
 કારણ ઉનકી ન તોં પીઠકી દૃષ્ટિયા દિગ્વતી હૈં ઓર ન દોનોં પાર્શ્વભાગો
 કી । इनका शरीर सुवर्ण के समान कान्तिवाला एव रोगरहित होता
 है । (कचणकलसप्पमाण समसहितलट्टचुचुचआमेलगजमलजुयलवदिय
 पयोहराओ) इनके दोनों स्तन उन्नत और गोल होने के कारण सुवर्ण-
 निर्मित घट के आकार जैसे होते हैं-कमती बढ़ती नहीं । सहित अशि-
 थिल होते हैं । नीचे की ओर झुके हुए नहीं रहते साम्हने उठे हुए
 रहते हैं । इनके दोनों चूचुक मनोहर एव अत्यंत काले मुखवाले होते
 हैं । ये साथ २ उत्पन्न होते हैं । गोल रहते हैं, (शुचग अणुपुव्वतणुय-

રહ્યપાસા ” તે કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિતમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ
 અને રતિદ-રમણીય હોય છે “અક હ્યકળગરુયગનિમ્મલ સુજાય નિરુદ્ધયગાયલટ્ટી”
 તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના
 હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી ઝાંતિવાળા અને નીરોગી
 હોય છે “ કચળ કલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચુચુચઆમેલગજમલજુયલવદિય
 પયોદરાઓ ” તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, મોનાના
 ઘડા જેવા હોય છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા
 નથી,, સહિત-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ
 ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને ડીઠીઓ મનોહર અને અત્યંત શ્યામ મુખવાળી
 હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના હોય છે

વેયા, પંદળવળવિવરચારિણીઓ ઓઢવઅછરાઓ ઉત્તર-
કુરમાણુસચ્છરાઓ આચ્છેર ગયેચ્છણિજાઓ તિણિપલિ
ઓવમાઈ પરમાડં પાલડત્તા તાઓ વિ ઉવળનંતિ મરણધમ્મં
અતિત્તા કામાણં ॥ સૂ૦૧૩ ॥

ટીકા—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ સ્નિગ્ધપાણિરેખાઃ = સુસ્પષ્ટસ્તરેખાઃ ‘ સસિ-
સૂરસત્ત્વચક્કવરસોત્થિયવિભક્તસુવિરહયપાણિલેહા ’ શશિ—સૂર્ય—શદ—ચક્ર-
વર સ્વસ્તિરવિભક્તસુરતિદપાણિરેખાઃ = ચન્દ્રસૂર્યશદ્વચત્તદક્ષિણાવર્તસ્વસ્તિક-
લક્ષણાઃ વિભક્તાઃ=સુસ્પષ્ટા, રતિદા=સુખદાઃ પાણિરેખાઃ=હસ્તરેખા યાસા
તાસ્તથા । ‘ પીણુણયકક્કવત્થિપ્પદેસપહિપુણ્ણગલ્લકવોલા ’ પીનોન્નતકક્કવસ્તિ-
પદેશપ્રતિપૂર્ણગલ્લકવોલાઃ = પીનાવુન્નતો ચ કક્કો = ગાહુમૂલો વસ્તિઃ = નાભ્ય-
ધોભાગ સ્તથા પ્રતિપૂર્ણા ગલ્લકવોલો યાસા તાસ્તથા ‘ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકવૂવર
સરિસગીવા ’ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકમ્મુવરસદ્દશગ્રીવા, = ચત્તરગુલપ્રમાણા કમ્મુવર-

ફિર વે કૈસી હોતી હૈ સો કહતે હૈ—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થઃ—(નિદ્ધપાણિલેહા) इनके दोनो हाथों की रेखाएँ स्निग्ध-
सुस्पष्ट होती हैं । (ससिसूरसत्तवचक्कवरसोत्थियविभक्तसुविरहयपाणिलेहा)
उनके हाथों में शशि—चंद्र रवि, शत, चक्र और दक्षिणावर्त स्वस्तिक,
इन आकार की रेखाएँ होती हैं । और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं,
सुखद होती हैं । (पीणुण्णयकक्कवत्थिप्पदेसपह्निपुण्णगल्लकवोला)
इनकी दोनों कक्षाएँ—गाहूमूल—पीन—पुष्ट और उन्नत होता है । वस्ती
नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है । तथा गला और कपोल ये
दोनों इनके प्रतिपूर्ण—भरे हुए रहते हैं । (चत्तरगुलसुप्पमाणकवूवर—

તે યુગલિક શ્રીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“ નિદ્ધપાણિલેહા ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“નિદ્ધપાણિલેહા” તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ—સુસ્પષ્ટ
હોય છે “ સસિસૂરસત્ત્વચક્કવરસોત્થિયવિભક્તસુવિરહયપાણિલેહા ” તેમના હાથોમા
ચક્ર, સૂર્ય, શદ, ચક્ર, દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોય છે
તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે “ પીણુણયકક્કવત્થિપ્પ
દેસપહિપુણ્ણગલ્લકવોલા ” તેમની બન્ને કાંઠો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ-
નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનું ગળું અને ગાલ પ્રતિ-
પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે “ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકમ્મુવરસરિસગીવા ” તેમની શ્રીધા

पडिपुण्णगल्लकवोल-चउरंगुल सुप्पमाण-रुवुरसरिस-गीवा
 मंसल - संठिय - पसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-
 पलंवकोचियवराधरा सुंदरोतरुट्ठा दहिदगरय कुट्ठचदवासंति
 मउल-अछिह - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल
 तालुजीहा कणवीरमउलकुडिल अञ्जुणयउज्जुतुंगनासा
 सारयनवकमल -कुमुय--कुवलयदल--निगर--सरिस- लक्खण
 पसत्थ-निम्मल--कतनयणा--आनामिय-चावरुट्ठ कण्हव्भ-
 राइसठिय--सगयायय--सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धमूगगा
 अल्लीण- पमाण - जुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ट-गडलेहा
 चउरगुल - विसाल - समनिडाला कोसुईरयणियर - विमल
 पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमगा अविकल सुसि
 णिद्ध दीह-सिरया छत्त २ उज्जय २ जुव ३ थूभ ४ दामाणि ५
 कमडल्ल ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११
 मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अक १६ थाल
 १७ अकुस १८ अट्टावय १९ सुपइठ २० अमर २१ सिरिया-
 भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण
 २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३०
 सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ वत्तीसलक्खणधराओ हसस-
 रिच्छगईओ कोइलमहुरगिराओ कता सब्वस्स अणुमयाओ,
 ववगयवली-पलिय-वगदुवण - वाहि देभग्ग- सोयमुक्काओ-
 उच्चत्तेण्य नरथोवूणमूसियाओ सिगारागारचारुवेसा सुदर-
 थणजहणवयणकरचलणणयणा

વેયા, ણંદળવળવિવરચારિણીઓ ઓવ્વઅચ્છરાઓ ઉત્તર-
કુરુમાણુસચ્છરાઓ આચ્છેર—ગયેચ્છણિજ્ઞાઓ તિણિણપલિ
ઓવમાઈં પરમાડે પાલડત્તા તાઓ વિ ઉવળનંતિ મરણધમ્મં
અતિત્તા કામાણં ॥ સૂ.૧૩ ॥

ટીકા—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ સ્નિગ્ધપાણિરેખાઃ = સુસ્પષ્ટસ્તરેખાઃ ‘ સસિ-
સૂરસાવચક્રવરસોત્થિયવિમત્તસુવિરઙ્ગપાણિલેહા ’ શશિ—સૂર્ય—ગદ્ગ—ચક્ર-
વર સ્વસ્તિકવિમત્તસુરતિગ્ધપાણિરેખાઃ = ચન્દ્રમૂર્યગદ્ગચક્રદક્ષિણાવર્તસ્વસ્તિક-
લક્ષણાઃ વિમત્તાઃ=સુસ્પષ્ટા રતિદાઃ=સુખદાઃ પાણિરેખાઃ=દસ્તરેખા યાસા
તાસ્તથા । ‘ પીણુણ્ણયકકસવત્થિપ્પદેસપહિપુણ્ણગલ્લકપોલા ’ પીનોન્નતકક્ષવસ્તિ-
પ્રદેશપ્રતિપૂર્ણગલ્લકપોલાઃ = પીનાનુન્નતો ચ કક્ષો = ગાદ્ગમૂલો વસ્તિઃ = નાભ્ય-
ધોભાગ સ્તથા પ્રતિપૂર્ણા ગલ્લકપોલો યાસા તાસ્તથા ‘ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકવૂવર-
સરિસગીયા ’ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકમ્પુરસદ્દશગ્રીયાઃ = ચત્તરગુલ્લપ્રમાણા કમ્પુવર-

ફિર વે કૈસી હોતી હૈ સો કહતે હૈ—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થઃ—(નિદ્ધપાણિલેહા) इनके दोनों हाथों की रेखाएँ स्निग्ध-
सुस्पष्ट होती हैं। (ससिसूरसावचक्रवरसोत्थियविमत्तसुविरङ्गपाणिलेहा)
उनके हाथों में शशि—चंद्र रवि, शङ्ख, चक्र और दक्षिणावर्त स्वस्तिक,
इन आकार की रेखाएँ होती हैं। और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं,
सुखद होती हैं। (पीणुण्णयककसवत्थिप्पदेसपह्निपुण्णगल्लकपोला)
इनकी दोनों कक्षाएँ—गादृमूल—पीन—पुष्ट और उन्नत होता है। वस्ती
नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है। तथा गला और कपोल ये
दोनों इनके प्रतिपूर्ण—भरे हुए रहते हैं। (चत्तरगुल्लसुप्पमाणकवूवर-

તે યુગલિક શ્રીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“ નિદ્ધપાણિલેહા ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“નિદ્ધપાણિલેહા” તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ—સુસ્પષ્ટ
હોય છે “ સસિસૂરસાવચક્રવરસોત્થિયવિમત્તસુવિરઙ્ગપાણિલેહા ” તેમના હાથોમા
ચક્ર, સૂર્ય, શંખ, ચક્ર, દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોય છે
તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે “ પીણુણ્ણયકકસવત્થિપ્પ
દેસપહિપુણ્ણગલ્લકપોલા ” તેમની બન્ને ફોખો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ-
નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનું ગણુ અને ગાલ પ્રતિ-
પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે “ ચત્તરગુલ્લસુપ્પમાણકવૂવરસરિસગીયા ” તેમની શ્રીધા

पडिपुण्णगह्लकवोल-चउरंगुल-सुप्पमाण-अंघुवरसरिस-गीवा
 मसल --संठिय - पसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-
 पलंव कौचियवरा धरा सुंदरोतरुट्टा दहिदगरय कुदन्नदवासति
 मउल-अछिद - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल
 तालुजीहा कणवीरमउलकुटिल अन्धुण्णयउज्जुतुगनासा
 सारयनवकमल कुमुय--कुवल्लयदल-निगर--सरिस- लक्खण
 पसत्थ-निम्मल--कतनयणा--आनामिय-चावरुदत्त कण्हव्भ-
 राइसठिय--सगयायय--सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धभूमगा
 अल्लीण--पमाण - जुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्टु-गंडलेहा
 चउरगुल - विसाल - समनिडाला कोमुईरयणियर - विमल
 पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमगा अविकल सुसि
 णिद्ध-दीह-सिरया छत्त २ उज्झय २ जुव ३ थूभ ४ दामाणि ५
 कमडल्लु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११
 मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अंक १६ थाल
 १७ अंकुस १८ अट्टावय १९ सुपइट्ट २० अमर २१ सिरिया-
 भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण
 २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३०
 सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ वत्तीसलक्खणधराओ हसस-
 रिच्छगईओ कोइलमहुरगिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ,
 ववगयवली-पलिय-वगदुवण - वाहि दोभग्ग सोयमुक्काओ-
 उच्चत्तेण्य नरथोवूणमूसियाओ सिगारागारचारुवेसा सुदर-
 थणजहणवयणकरचलणयणा लावणरूवजोव्वणगुणोव-

=તત્ રક્તોત્પલ = રક્ત કમલ તદ્વત્ રક્તપદ્મપત્રય ચ સુકુમાર તાલુજિહ્વા યાસા
તાસ્તથા, ' કણવીરમઝલકુડિલ અઞ્ચુળય ડજ્જુતુગનાસા ' કરવીરમુકુટાઽ
કુટિલાઞ્ચુન્નતઞ્જુતુગનાસાઃ = કરવીરમુકુટ = કર્ણિકાકલિકા તદ્વત્ અકુ
ટિલા=અરકા અઞ્ચુન્નતા=અભિતઃઉન્નતા ઋજ્વી=સરલા તુઙ્ગા-મધ્યોન્નતા ચ નાસા=
નાસિકા યાસા તાસ્તથા ' સારયનવકમલકુમુદકુવલયદલનિગરમરિસલક્ષણપ
સત્થ નિમ્મલકતનયણા ' શારદનવકમલ કુમુદકુવલયદલનિકરસદ્દશલક્ષણપ્રશ-
સ્તનિર્મલકાન્તનયના = શારદ = શરત્કાલિકા યત્ કમલ = સૂર્યવિકાસિપદ્મ,
કુમુદ=ચન્દ્રવિકાસિપદ્મ કુવલયદલ=નીલકમલપત્ર ચ તેષા નિકરઃ=સમૂહઃ તેન
સદ્દશે લક્ષણપ્રશસ્તે=પ્રશસ્તલક્ષણોપેતે નિર્મલે=ઉજ્જ્વલે કાન્તે=મનોહરે ચ નયને
યાસા તાસ્તથા ' આનામિય ચાવરુહલ કિણ્હવ્ભરાઈ સઠિય સગયા યય સુજાય-
તણુકસિણનિદ્ધભૂમગા ' આનામિતવાપરુચિરકૃષ્ણાભ્રરાજિસસ્થિતસગતસુજાતતત્તુ
કૃષ્ણસ્તિગ્ધભ્રુવઃ-આનામિતૌ=વક્રીકૃતૌ ચાપૌ = ધનુષી તદ્વત્ રુચિરે કૃષ્ણા
ભ્રરાજિસસ્થિતે=કૃષ્ણોઘરેલાસદ્દશે સગતે=સમુચિતે આયતે=દીર્ઘે સુનાતે સ્વપા-

તાલુ ઓર જિહ્વા જિનકા રક્ત કમલ કે સમાન, તથા રક્તપદ્મપત્ર કે
સમાન સુકુમાર હોતી છે । (કણવીરમઝલકુડિલ અઞ્ચુળયડજ્જુતુગ-
નાસા નાસિકાકર્ણિકાર કનેર-કી કલિકા-કલી-કે સમાન અકુટિલ
તથા અઞ્ચુન્નત, ઋજ્વી-સરલ, ઓર તુઙ્ગ-મધ્ય મે ઉન્નત હોતી છે ।
(સારયનવકમલ કુમુદકુવલયદલનિગરસરિસલક્ષણપસત્થનિમ્મલક-
તનયણા । જિનકે દોનો નયન શરદકાલસંબધિ સૂર્યવિકાસી કમલ કે
તથા ચન્દ્ર વિકાસી પદ્મ કે, કુવલય દલ કે, નીલ કમલ કે પત્રકે
સમૂહ જૈસે હોતે છે । પ્રશસ્ત લક્ષણો સે યુક્ત, નિર્મલ-ઉજ્જ્વલ, એવ
કાન્ત-મનોહર હોતે છે । (આનામિયચાવરુહલ કિણ્હવ્ભરાઈસઠિયસગ-
યાયયસુજાયતણુકસિણનિદ્ધભૂમગા) જિનકી દોનો મોઢે વક્રીકૃત ધનુષ

કમળ જેવી તથા લાલ કમળ પત્ર જેવી સુકુમાર હોય છે, “ કણવીરમઝલ-
કુડિલઅઞ્ચુળયડજ્જુતુગનાસા ” તેમની નાસિકા ડરેણુની કળી જેવી અકુ-
ટિલ તથા ઉન્નત, ઋજ્વી-સરળ અને તુઙ્ગ-મધ્યમા બાંધી હોય છે, “ સારય
નવકમલકુમુદકુવલય - દલનિગર-સરિમ - લક્ષણપસત્થ-નિમ્મલ-કતનયણા ”
જેમના બન્ને નયન શરદઋતુના સૂર્ય વિકસિત કમળ તથા ચન્દ્ર વિકસિત
પદ્મની પાખડીઓ જેવા તથા નીલકમલના પત્રસમૂહ જેવા, પ્રશસ્ત લક્ષણો-
વાળા, નિર્મળ-ઉજ્જ્વળ, અને મનોહર હોય છે “ આનામિયચાવરુહલ-
કિણ્હવ્ભરાઈસઠિયસગયાયયસુજાયતણુકસિણનિદ્ધભૂમગા ” જેમની બન્ને ભ્રમરો
વક્રીકૃત અને ધનુષ જેવી અને હાથે સુજાયતણુકસિણનિદ્ધભૂમગા જેવી અસ્થિત

સદૃશી=મધાનશત્રુતુલ્યા ચ ગ્રીયા યાસા તાસ્તથા ' મસલસઠિયપસત્યહણુયા ' માસલસસ્થિતમશસ્તહનુકાઃ = મામલઃ-પુષ્ટઃ સસ્થિતઃ = સુસમ્યાનયુક્તઃ આમ્ર ફલાકાર પ્રશસ્તઃ=સુન્દરો હનુઃ=ઓષ્ઠાધોભાગો યાસા તાસ્તથા । ' દાલિમપુષ્પગાસપીવરપલયકોચિય વરાધરા = દાલિમપુષ્પમકાશપીવરમાલમ્બવરા ધરાઃ=તત્ર-દાલિમપુષ્પમકાશઃ = દાલિમપુષ્પતમમમો રક્ત દ્વિવર્ણઃ, પીવરઃ = પુષ્ટ માલમ્બઃ = રૂપહૃદયમાનઃકુચિતઃ = વલિત. યરઃ = મશસ્તોડયરો યાસ તાસ્તથા ' સુદરોત્તરુદ્ધા ' સુન્દરોત્તરોષ્ઠા=સન્દરુત્તરોષ્ઠપરિતન ઓષ્ઠો યાસા તાસ્તથા ' દધિદગરયકુદચદવાસતિમઝલઅચ્છિદ્ધિમલ્લદસણા ' દધિદકરજઃ કુન્દચન્દ્ર વાસન્તીમુકુલાછિદ્રવિમલ્લદશના ન્તર-દધિદકરજઃ = જલવિન્દુઃ કુન્દઃ= પુષ્પવિશેષઃ ચન્દ્ર = પ્રતીત વાસન્તીમુકુલઃ=વાસન્તીનામક પુષ્પ કુદ્મલથ્ય इत्येतैઃ સદૃશાઃ શુક્લાઃ અઙિદ્રાઃ=અવિરલા સુમિલિતા દશના = દન્તાઃ યાસા તાસ્તથા ' રત્તુપ્પલરત્તપઝમપત્તસુકુમાલતાલુજીહા ' રત્તોત્પલરત્તપઝપત્તસુકુમારતાલુજીહાઃ

સરિસગીવા) હનકી ગર્દન ચાર અંગુલ કી તથા પ્રધાન-ઉત્તમ શાલ્વ કે જૈસી હોતી હૈ । (મસલસઠિયપસત્યહણુયા) હનકે ઓષ્ઠ કા અધોભાગ રૂપ દાઢી માસલ-મજબૂત પુષ્ટ, સસ્થિત-આમ્ર ફલ કે જૈસી સુન્દર આકાર ઘાલી ઓર પ્રશસ્ત-સુહાવની હોતી હૈ । (દાલિમપુષ્પગાસપીવર-પલયકોચિયવરાધરા) હનકા અધરોષ્ઠ દાલિમ-અનાર કે પુષ્પ કે સમાન લાલ વર્ણ વાલા હોતા હૈ । પીવર-માસાદિ સે ભરા દુઆ હોને કે કારણ પુષ્ટ હોતા હૈ । તથા માલમ્બ-કુદ ૨ લમ્બાસા રહતા હૈ । કુચિત-વલિત એવ પ્રશસ્ત હોતા હૈ । (સુદરોત્તરુદ્ધા) જિનકે ઝપર કા ઓષ્ઠ સુન્દર હોતા હૈ । (દધિદગરયકુદચદવાસતિમઝલઅચ્છિદ્ધિવિમલ્લદસણા) હનકે નિર્મલ દાત-દહી, જલવિન્દુ, કુદપુષ્પ, ચન્દ્ર, વાસન્તી પુષ્પકી ફલી, હનકે જૈસે શુભ્ર હોતે હૈ । ચિરલે નહીં હોતે હૈ કિન્તુ અવિરલ-પરસ્પર મેં મિલે હુણ રહતે હૈ । (રત્તુપ્પલરત્તપઝમપત્તસુકુમાલતાલુજીહા)

ચાર આગળની તથા ઉત્તમ શબ્દ જેવી હોય છે “ મસલસઠિયપસત્યહણુયા ” તેમના હોઠના નીચેના ભાગપ્ર દાઢી માસલ મજબૂત, સસ્થિત-આમ્રફળના જેવા સુદર આકારવાળી અને પ્રશસ્ત સુદર હોય છે “ દાલિમપુષ્પગાસ પીવરપલયકોચિયવરાધરા ” જેમનો અધરોષ્ઠ દાઢમના ફૂલ જેવો લાલ રંગનો, પુષ્ટ, તથા મહેજ લખાયેલો રહે છે તે અધરોષ્ઠ કુચિત-વળેલો અને ઉત્તમ હોય છે “ સુદરોત્તરુદ્ધા ” તેમનો ઉપરનો હોઠ સુદર હોય છે “ દધિ દગરયકુદચદવાસ તિમઝલઅચ્છિદ્ધિવિમલ્લદસણા ” તેમના નિર્મળ દાત દહી, જળવિન્દુ, કુદપુષ્પ, ચન્દ્ર અને વાસન્તી પુષ્પની ફળી, જેવા સદેહ હોય છે તે દાત છૂટા છૂટા હોતા નથી પણ પરસ્પરમા મળીને આવેલા હોય છે “ રત્તુપ્પલરત્તપઝમપત્ત સુકુમાલતાલુજીહા ” તેમનું તાલુ અને જીભ લાલ

શબ્દાઃ કૃષ્ણા इत्यर्थः सुस्निग्धाः=सुकोमलाः दीर्घाश्च शिरोजा=केशा यामां तास्तथा ' छत्त १ ज्ञय २ जूव ३ धूम ४ दामणि ५ कमण्डलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्भ १३ रहवर १४ मगर १५ अक १६ चाल १७ अकुस १८ अट्टावय १९ सुपट्ट २० अमर २१ गिरियामि सेय २२ तोरण २३ मेडणि २४ उद्विवर २५ पवरभयण २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुल्लियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चागर ३२ पसत्थ वत्तीस-लक्षणधरा १० ' छत्र १ ध्वज २ यूप ३ स्तूप ४ दामनी ५ कमण्डलु ६ कलस ७ वापी ८ स्वरितक ९ पताका १० यव ११ महस्य १२ कूर्म १३ रथवर १४ मकरा १५ डङ्क १६ स्याल १७ डङ्कुशा १८ डण्डापद १९ सुप्रतिष्ठा २० अमर २१ श्रीलाभिषेक २२ तोरण २३ मेदिन्यु २४ दगिर २५ पवरभवन २६ गिरिवर २७ वराद्वर्ग २८ सुल्लितगज २९ ट्टभ ३० सिंह ३१ चागर ३२ प्रशस्त द्वात्रिंशलक्षणधरा', तत्र—' छत्त ' छत्रं १ ' ज्ञय ' ध्वजः २ ' जूव ' यूपः=नारस्तम्भाभिषेकः ३ ' धूम ' स्तूपः= ' चोतरा ' इति भाषा प्रसिद्धः ४, ' दामिणि ' दामनी = रज्जुः-तदाकाररेखेत्यर्थः ५ कमण्डलुः = प्रसिद्धः ६,

दीર્घમિરયા) इनके मतक के केश विलङ्गल काले होते हैं । सुस्निग्ध-सुकोमल एवं दीर्घ-लंबे होते हैं । (छत्त १ ज्ञय २ जूव ३ धूम ४ दाम-णि ५ कमण्डलु ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्भ १३ रहवर १४ मगर १५ अक १६ चाल १७ अकुस १८ अट्टा-वय १९ सुपट्ट २० अमर २१ सिरियाभिसे य २२ तोरण २३ मेडणि २४ उद्विवर २५ पवरभयण २६ गिरि वर २७ वरायस २८ सुल्लिय-गय २९ वसभ ३० सीह ३१ चागर पसत्थ वत्तीसलक्षणधराओ) ये इन प्रशस्त वत्तीस ३२ लक्षणों को धारण करती हैं—छत्र १-ध्वजा २, यूप-स्तम्भ २, स्तूप-चोतरा ४, दामनी-रस्सी ५, कमण्डलु

વાળ તદ્દન કાળા, સુકોમળ અને લાળા હોય છે “ છત્ત ૧ જ્ઞય ૨ જૂવ ૩ ધૂમ ૪ દામણિ ૫ કમણ્ડલુ ૬ કલસ ૭ વાવિ ૮ સોત્થિય ૯ પડાગ ૧૦ જવ ૧૧ મચ્છ ૧૨ કુમ્ભ ૧૩ રહવર ૧૪ મગર ૧૫ અક ૧૬ ચાલ ૧૭ અકુસ ૧૮ અટ્ટાવય ૧૯-સુપટ્ટ ૨૦ અમર ૨૧ સિરિયાભિસેય ૨૨ તોરણ ૨૩ મેડણિ ૨૪ ઉદવિવર ૨૫-પવરભવણ ૨૬ ગિરિવર ૨૭ વરાયસ ૨૮ સુલ્લિયગય ૨૯ વસભ ૩૦ સીહ ૩૧ ચામર ૩૨ પસત્થવત્તીસલક્ષણધરાઓ ” તે યુગલિક લલનાઓ આ પ્રમાણે ૩૨ (બત્રીસ) ઉત્તમ લક્ષણો ધારણ કરે છે—

(૧) છત્ર (૨) ધ્વજ (૩) યૂપ-સ્તંભ (૪) સ્તૂપ-ચતુરસ્ર (૫) દામની
દોરડું. (૬) પ્રથમ રાજા (૭) દ્વિતીય રાજા (૮) ત્રીજી રાજા (૯) સ્વસ્તિક (૧૦) પતાકા

ઘટઃ સુન્દરે તનૂ=પ્રતલે કૃષ્ણે=કૃષ્ણવર્ણે સ્નિગ્ધે=ચિવ્રણે શુભે યાસા તાસ્તથા ।
 ‘અલ્લીળપમાણજુત્તમવર્ણા’ આલીનપમાણયુક્તશ્રવણાઃ = આલીનો=સ્તવ્યો
 પ્રમાણયુક્તો=સમુચિતપમાણો શ્રવણો=શ્રવણો યાસા તાસ્તથા પતાવદેવ ન ? કિન્તુ
 ‘સુસ્સવણા’ સુશ્રવણાઃ = શબ્દગ્રહણશક્તિસમ્પન્નયુક્તાઃ, ‘પીળમદ્ગંડલેહા’
 પીનમૃદ્ ગંડરેવાઃ=પીના=પુષ્ટામૃષ્ટા=મમૃણા સુકુમારા ગંડરેવા=કપોલ પાલી
 યાસા તાસ્તથા ‘ચતુરગુલવિશાલસમનિડાલા’ ચતુરગુલવિશાલસમલ્લાટા =
 ચતુરગુલ=ચતુરગુલપ્રમાણ વિશાલ=વિસ્તીર્ણ સમ=સમતલ લલાટ યાસા તાસ્તથા
 ‘કોમુર્દ રયનિયરવિમલપહિપુણસોમ્મવર્ણા’ કૌમુદી રજનીકર વિમલપ્રતિપૂર્ણ
 સૌમ્યવદનાઃ=કૌમુદી=કાર્તિકી પૂર્ણિમા તસ્યા યો રજનીકર =ચન્દ્ર તદ્વત્
 વિમલ=નિર્મલ પ્રતિપૂર્ણ મામ્ય=સુભગ વદન યાસા તાસ્તથા કાર્તિકીપૂર્ણચન્દ્રવ-
 દનાઃ, ‘છત્તુણ્ણયુત્તમગા’ છત્રોન્નતોત્તમાક્ષા છત્રયત્મમુદ્ધિતમસ્તકાઃ ‘અકવિ-
 લસુમિણિદ્વદીહસિરિયા’ અકપિલસુસ્નિગ્ધદીર્ઘશિરોજાઃ = અકપિલા = અપિ
 કેસમાન રુચિર, કૃષ્ણમેઘરાજિ કે સમાન, સસ્થિત, સગત-ઉચિત
 આકારયુક્ત, આયત-દીર્ઘ, સુજાત-સ્વભાવતઃ સુન્દર, તનુ-પતલી,
 કૃષ્ણ-કૃષ્ણવર્ણોવેત, ઔર સ્નિગ્ધ-ચિકની હોતી હૈ । (અલ્લીળપમાણ-
 જુત્તમવર્ણા) આલીળ-સ્તવ્ય ણ્વ સમુચિત પ્રમાણ સે યુક્ત ઇન્કે
 દોનો કાન હોતે હૈ । (સુસ્મવર્ણા) તથા ચે દોનો હી કાન શબ્દગ્રહણ
 કરને કી શક્તિ સે યુક્ત હોતે હૈ । (પીળમદ્ગંડલેહા) ઇન્કી કપોલ-
 પાલી પીન-પુષ્ટ ઔર મૃષ્ટ—સકુમાર હોતી હૈ । (ચતુરગુલવિશાલ સમ-
 નિડાલા) ઇન્કા વિસ્તીર્ણ લલાટ ચાર અગુલ પ્રમાણવાલા હોતા હૈ તથા
 સમ-સમતલ હોતા હૈ । (કોમુર્દરયનિયર વિમલ પહિપુણ સોમ્મવર્ણા)
 ઇન્કા મુખ કાર્તિકી પૂર્ણિમા કે ચંદ્રમંડલ કે સમાન નિર્મલ તથા પૂર્ણ
 હોતા હૈ । સુભગ હોતા હૈ । (છત્તુણ્ણયુત્તમગા) સમુચ્છિત વિસ્તારિત
 છત્ર કે સમાન ઇન્કા મસ્તક ઉન્નત હોતા હૈ ! (અકવિલ સુસિણિદ્વ-

સગત-સુહાળ, આયત-લાળી, સુજાત-કુદરતી રીતે જ સુદર, તનુ-પતળી,
 કાળા રંગની અને સ્નિગ્ધ-મુલાયમ હોય છે “અલ્લીળપમાણજુત્તમવર્ણા”
 તેમના બંને કાન સ્તવ્ય અને સપ્રમાણ હોય છે “સુસ્મવર્ણા” તે બંને
 કાનની શ્રવણશક્તિ ઘણી સરસ હોય છે “પીળમદ્ગંડલેહા” તેમના ગાલ
 પુષ્ટ અને સુકુમાર હોય છે “ચતુરગુલવિશાલસમનિડાલા” તેમનું વિશાળ
 લલાટ ચાર આગળ પહોળું અને સમતલ હોય છે “કોમુર્દ-રય-નિયરવિમલ
 પહિપુણસોમ્મવર્ણા” તેમનું મુખ કાર્તિકી પૂર્ણિમા ચન્દ્રમંડળ જેવું નિર્મળ
 તથા પૂર્ણ હોય છે “છત્તુણ્ણયુત્તમગા” વિસ્તીર્ણ છત્ર સમાન ઉન્નત
 તેમનું મસ્તક હોય છે “અકવિલસુસિણિદ્વદીહસિરિયા” તેમના માથા પરના

વગદુઘ્નગવાહિદોભગમોયમુક્તાઓ ' વ્યવગતવલીપલિત વ્યદ્ગદુર્વર્ણવ્યાધિ-
 દોર્ભાગ્યશોકપુક્તાઃ=વ્યવગતા=નટા વલી=ચર્મશિથિલતા તથા પલિત=કેશશુક્રત્વ
 વ્યદ્ગ=અદ્ગમિલતા દુર્વર્ણ=વૈરુપ્ય વ્યાધિઃ શરીરવ્યથા, દોર્ભાગ્ય=વૈધન્ય શોક =
 લેદશ્વ એતૈર્મુક્તાઃ = રતિદા યાસ્તાસ્તથા ' ઉચ્ચત્તેણ ય નરયોવૃણમૂસિયાઓ '
 ઉચ્ચત્તેણ ચ નરસ્તોકેનોચ્છિન્નતાઃ=ઉચ્ચત્તેણ શરીરોચ્ચત્તેણ ચ નરેભ્યઃ=પુરુષેભ્યઃ
 સ્તોકોન=કિચ્ચિન્ન્યૂન યથાસ્યાત્તથા ઉચ્છિન્નતાઃ=ઉચ્ચાયાસ્તાઃ તથા-પુરુષપ્રમા-
 નાત્ કિચ્ચિદલ્પપ્રમાણોક્તતા', ' સિંગારાઽઽગારચારુવેસા ' શૃંગારાઽઽગારચારુ-
 વેસા, શૃંગારસ્ય=શૃંગારરસસ્ય આગારમિવ=ગૃહમિવ ચારુ =સુન્દરઃ વેષઃ=વસ્ત્રાદિ-
 વિભૂષા યાસા તાસ્તથા ' સુન્દર થજહણત્રયણકરચલણનયણા ' સુન્દરસ્તન-
 જઘનવદનકરચરણનયનાઃ = સુન્દરાણિ સ્તન-જઘન-વદન-કર-ચરણ - નયના
 નિ યામાં તાસ્તથા ' લાવણ્ણરૂવજોઘ્ણગુણોવવેયા ' લાવણ્યરૂપયૌવનગુણોપેતાઃ=
 લાવણ્ય = શરીરમૌન્દર્યવૈશિષ્ટ્ય નિલિલાવયવાતિરેકિસ્વરૂપશોભાવિશેષઃ રૂપ

(વગદુઘ્નગવાહિદોભગમોયમુક્તાઓ) इनकी चमड़ीमें
 शिथिलता कहीं नहीं आती है । वालों में सफेदी नहीं आती है । इनका
 कोई भी अंग विकल नहीं होता है । विरूपता इनमें बिल्कुल नहीं होती
 है । व्याधि का इनमें अभाव होता है । वैधन्य रूप दौर्भाग्य से रहित
 होती हैं । शोक और खेद से वर्जित होती हैं । (उच्चत्तेण य नर योवृण-
 मूसियाओ) ऊँचाई में ये मनुष्यों से कुछ ही कम होती हैं । (सिंगारा
 गारचारुवेसा) शृंगाररस के घर जैसा इनका सुन्दर वेष-वस्त्रादि वेष-
 भूषा होता है । (सुन्दर थजहणत्रयणकरचलणनयणा) इनके स्तन,
 जघन, वदन, कर, चरण, और नयन सुन्दर होते हैं । (लावण्णरूवजो-
 घ्णगुणोववेया) इनमें लावण्य, रूप, यौवन एवं गुण अस्सारण होते हैं ।

દુઘ્નગવાહિદોભગમોયમુક્તાઓ " તેમની ચામડીમા શિથિલતા આવતી
 નથી, વાળ સફેદ થતા નથી, તેમને કોઈ પણ અંગે ખોડ હોતી નથી,
 તેમનામા વિરૂપતા બિલકુલ હોતી નથી, વ્યાધિ તેમને ખીડતી નથી કારણ કે
 તેઓ નીચીગી હોય છે, તેઓ વૈધન્ય રૂપ હુલ્લીગ્યથી રહિત હોય છે અને
 શોક અને ખેદથી રહિત હોય છે " ઉચ્ચત્તેણ ય નરયોવૃણ મૂસિયાઓ "
 મનુષ્યો કરતા તેમની ઊંચાઈ થોડી હોય છે " સિંગારાગારચારુવેસા " તેમની
 વેષભૂષા શૃંગાર રમના ઘર જેવી હોય છે " સુન્દરથજહણત્રયણકરચલણ-
 નયણા " તેમના સ્તન, જઘા, વદન, કર, ચરણ, અને નયન સુન્દર હોય છે.
 " લાવણ્ણરૂવજોઘ્ણગુણોવવેયા " તેમનામા લાવણ્ય, રૂપ, યૌવન અને ગુણ

‘ કલસ ’ કલશઃ= ઘટઃ ૭ ‘ ગાત્રિ ’ ગાત્રી ૮ ‘ સોત્થિય ’ સ્વસ્તીકા ૯ ‘ પટાગ ’
પતાકા ૧૦ ‘ યવ ’ યવઃ ૧૧ ‘ મત્સ્ય ’ મત્સ્યઃ ૧૨ ‘ કૂર્મ ’ કૂર્મઃ=કચ્છપઃ
૧૩, રથવરઃ પ્રધાનરથ ૧૪ ‘ મગર ’ મકરઃ ૧૫, અક્રઃ=રત્નાકરચિહ્નવિશેષ
૧૬, ‘ થાલ ’ સ્થાલઃ=પાત્રવિશેષ ૧૭ અકુશઃ ૧૮ ‘ અષ્ટાવય ’ અષ્ટાપદ=
ઘૂતફલક ૧૯ ‘ સુપટ્ટ ’ સુપ્રતિષ્ઠક=સ્થાપનક પાત્રવિશેષઃ ૨૦ અમરઃ=દેવ—
વિશેષઃ ૨૧ ‘ સિરિયામિસેય ’ શ્રીકામિષેકઃ ૨૨ તોરણ ૨૩ ‘ મેદિની ’
મેદિની=પૃથ્વી ૨૪ ઉદધિવરઃ ૨૫ ‘ વરભવણ ’ વરભવન ૨૬ ગિરિવરઃ ૨૭
‘ વરાયસ ’ વરાદર્શઃ=મશસ્તદર્પણ ૨૮ સુલલિયગય ’ સુલલિતગજ ૨૯ ‘ વસમ ’
વૃષભ ૩૦, ‘ સીહ ’ સિંહ ૩૧ ચામર ૩૨ ચ ક્ષત્રેતાનિ પ્રશસ્તાનિ દ્વાત્રિંગલ
ક્ષણાનિ તેવા ધરા વાસ્તાન્તથાઃ, ‘ હસસરિચ્છગર્દો ’ હસમદશગતયઃ, ‘ કોઈલ-
મહુરગિરાઓ ’ કોકિલમધુરગિરઃ=કોકિલમધુરસ્વરાઃ, ‘ કતા ’ કાન્તાઃ=મનોજ્ઞાઃ,
‘ સવ્વસ્સ અણુમયાઓ ’ સર્વસ્યાઽણુમતા — સર્વજનપ્રિયાઃ ‘ વગયવલીપલિય-

૬, કલશ ૭, ગાત્રી ૮, સ્વસ્તિક ૯, પતાકા, ૧૦, યવ, ૧૧, મત્સ્ય ૧૨,
‘કૂર્મ-કચ્છપ ૧૩, રથવર-પ્રધાનરથ ૧૪, મકર ૧૫, અક-રત્ન કે આકાર
જેસા ચિહ્ન ૧૬, સ્થાલ-થાલ ૧૭, અકુશ ૧૮, અષ્ટાપદ-ઘૂતફલક ૧૯,
સુપ્રતિષ્ઠક-ઠોળા ૨૦, અમરદેવવિશેષ ૨૧, અભિષેક કરતી હુઈ લક્ષ્મી
૨૨, તોરણ ૨૩, મેદિની-પૃથ્વી ૨૪, ઉદધિવર-સમુદ્ર ૨૫, ઉત્તમભવન
૨૬, ઉત્તમપર્વત ૨૭, સુન્દર દર્પણ ૨૮, સુલલિતગજ ૨૯, વૃષભ-બૈલ
૩૦, સિંહ ૩૧, ઓર ચામર ૩૨ । (હસસરિચ્છગર્દ) इनकी गति-
चाल-हँस की गति जैसी होती है । (कौइलमहुरगिराओ) उनकी
वाणी-कोयल की वाणी जैसी मधुर होती है । (कता) ये अत्यंत मनोज्ञ
होती हैं । (सव्वस्स अणुमयाओ) समस्त जनों को प्रिय लगती है ।

(૧૧) યવ (૧૨) મત્સ્ય, (૧૩) કૂર્મ-કચ્છપ, (૧૪) ઉત્તમ રથ (૧૫) મગર
(૧૬) અક-રત્નના આકારનું ચિહ્ન (૧૭) થાળ (૧૮) અકુશ (૧૯) અષ્ટાપદ-
ઘૂતફલક, (૨૦) સુપ્રતિષ્ઠ-ઠોળા (૨૧) અમર-દેવવિશેષ (૨૨) અભિષેક કરતી
લક્ષ્મી (૨૩) તોરણ (૨૪) મેદિની-પૃથ્વી, (૨૫) ઉદધિવર-સમુદ્ર (૨૬)
ઉત્તમ ભવન (૨૭) ઉત્તમ પર્વત (૨૮) સુન્દર દર્પણ (૨૯) સુન્દર ગજ
(૩૦) વૃષભ (૩૧) સિંહ અને (૩૨) ચામર “હસસરિચ્છગર્દ” તેમની ચાલ
હેસની ચાલ જેવી હોય છે, “કોઈલમહુરગિરાઓ” તેમની વાણી કોયલની
વાણી જેવી મીઠી હોય છે, “કતા” તે અત્યંત મનોહર હોય છે, અને
“સવ્વસ્સ અણુમયાઓ” સધળા લોકોને પ્રિય લાગે છે “વગયવલો પલિયવગ

अपि, 'अत्रितित्ता कामाण' अतृप्ता कामानाम्=कामोपभोगेऽतृप्ता एव 'उपनमति-
मरणम्' उपनमन्ति मरणमै-म्रियन्त इत्यर्थः ॥ सू० १३ ॥

एतावताऽग्रहारायचतुर्थाधर्मद्वारस्य 'ये च कुर्वन्ति' इति पञ्चममन्तद्वार-
निरूपितम् । साम्प्रत पूर्वमनुक्त 'यथाकृतम्' इति तृतीयमन्तद्वार 'यत्फल
ददाति' इति चतुर्थमन्तद्वार च चर्णयन्नाह—'मेहुण' इत्यादि—

मूलम्—मेहुणसन्नास पगिद्धाय मोहभरिया सत्येहि
हणंति एकमेक विसय-विस-उदीरणहि अवरे परदारेहि
हम्मति विसुणिया धमनासं सयणविप्पणासं च पाउणति
परस्स दाराओ जे अविरया । मेहुणसण्णा सपगिद्धाय
मोहभरिया अस्साहत्थी गवाय महिसा मिगाय मारिति
एकमेक । मणुयगणा वानरा य पक्खी य विस्ज्झति मि-
त्ताणि खिप्प भवति सत्तु । समयधम्मस गणे य भिदति
पारदारी धम्मगुणरयाय वभयारी खणेग उल्लोटति चरि-
त्ताओ । जसमता सुव्वया य पावति अजसकित्ति । रोगत्ता
वाहिया वड्ढति रोयवाही, दुव्वेय लोए दुराराहगा भवति
इहलोए चेव परलोए परस्स दाराओ जे अविरया । तहेव
केइ परस्स दार गवेसमाणा गहिया य हयायवद्धारुद्धा य
एव जावगच्छति विउल मोहाभिभूयसण्णा । मेहुण मूला
य सव्वति तत्थ तत्थ वत्तपुट्ठा सगामा जणक्खयकरा

निवासिनी स्त्रिया कामसुखों को भोगती रहनी हैं । परन्तु फिर भी
उनसे ये तृप्त नहीं होती हैं । इस तरह कामभोगों में अतृप्त बनकर ही ये
अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं ॥ सू० १३ ॥

निवासिनी लक्ष्मणाओ कामलोगो लोगव्या करे छे, छता यण तेमनाथी तेओ
तृप्ति अनुभवति नथी आ प्रभाओ कामलोगथी अतृप्त रहिने न तेओ मृत्यु
पामे छे ॥ सू० १३ ॥

= નાસિકા નયનાયાકારઃ યૌવન = તરુણાવસ્થા, ગુણાઃ=ઔદાર્યમાધુર્યસૌકુમાર્યાદયસ્તૈરુપેનાઃ = યુગ્મતા યા સ્તાસ્તથા, ' ણદગવગવિવરચારિણીઓવ્વઅચ્છરાઓ ' નન્દનવનવિવરચારિણ્યશ્યાપ્સરસઃ = નન્દનવનપદેશતચ્છરણશીલ્યા અપ્સરસ ઇવ, ઉત્તરકુરુમાણસચ્છરાઓ ' ઉત્તરકુરુમાણસચ્છરાઓ = ઉત્તરકુરુમાણ માનુષ સ્વરૂપા અપ્સરસઃ 'અચ્છરગવેચ્છણિજ્ઞાઓ' આશ્ચર્ય પ્રેક્ષણીયાઃ=અદ્ભુતરૂપત્વાદાશ્ચર્યેણ પ્રેક્ષણીયાઃ, તિણિ પલિઓવમાઙ પરમાઙ પાઞ્હત્તા ' ત્રીણિ પલ્યોપમાનિ પરમાયુ પાલયિત્વા ' તા અપિ - ઉત્તરકુરુદેવકુરુવનવિવરનિવાસી નરગણપ્રમદા

શારીરિક વિશિષ્ટ સૌન્દર્ય કા નામ લાવણ્ય છે । યદ લાવણ્ય સમસ્ત અવયવોં કે સૌન્દર્ય સે મી પરે સ્વરૂપ કી શોભા વિશેષ રૂપ હોતા છે । નાસિકા, નયન, આદિ કી સમુચિત જો આકાર રચના છે વદ રૂપ છે । તરુણ અવસ્થા કા નામ યૌવન છે । ઔદાર્ય, માધુર્ય સૌકુમાર્ય આદિ કા નામ ગુણ છે । (ણદગવગવિવરચારિણીઓવ્વઅચ્છરાઓ ઉત્તરકુરુમાણ સચ્છરાઓ) નદનવન મેં વિચરનેવાલી અપ્સરાઓં કે સમાન યે ઉત્તરકુરુ કી ભૂમિ મેં મનુષ્ય રૂપિણી અપ્સરાઈ છે । (અચ્છરગવેચ્છણિજ્ઞાઓ) અદ્ભુતરૂપ શાલિની હોને કે કારણ યે આશ્ચર્ય સે દેખને યોગ્ય હોતી છે, અર્થાત્—ઇનકો દેખને સે મનુષ્ય કો વહુન અધિક આશ્ચર્ય હોતા છે । કારણ ઇનકી રૂપ સપત્તિ ઈસી અદ્ભુત હોતી છે જો મનુષ્યો મેં ઓર જગહ નહોં પાઈ જાતી છે । (તિણિપલિઓવમાઙ પરમાઙ પાઞ્હત્તા તાઓ વિ અવિતિત્તા કામાણ ઉવણમતિ મરણધમ્મ) ઇનકી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રીણ પલ્ય કી હોતી છે । ઇતને કાલનક યે દેવકુરુ ઉત્તરકુરુ

અસાધારણ હોય છે શારિરિક વિશિષ્ટ સૌન્દર્યને લાવણ્ય કહે છે તે લાવણ્ય સમસ્ત અવયવોના સૌન્દર્ય ઉપરાત સ્વરૂપની વિશિષ્ટ શોભારૂપ હોય છે નાસિકા, નયન આદિની મુકોળ આકાર વાળી રચનાને રૂપ કહે છે તરુણ અવસ્થાને યૌવન કહે છે ઉદારતા, માધુર્ય, ડોમળતા આદિ ગુણ ગણાય છે “ ણદગવગવિવરચારિણીઓવ્વઅચ્છરાઓ ઉત્તરકુરુમાણસચ્છરાઓ ” નદન વનમા વિચરતી અપ્સરાઓ જેવી તે ઉત્તરકુરુની ભૂમિમા મનુષ્યરૂપિણી અપ્સરાઓ છે “ અચ્છરગવેચ્છણિજ્ઞાઓ ” અદ્ભુત સૌન્દર્યવાળી હોવાને કારણે તે સ્ત્રીઓ આશ્ચર્યથી ભેવા જેવી હોય છે, એટલે કે તેમને ભેધને મનુષ્યોને અત્યંત આશ્ચર્ય થાય છે કારણ કે તેનુ રૂપ એટલુ બધુ અપૂર્વ હોય છે કે તે રૂપ મનુષ્યોમા કોઈ પણ જગ્યાએ ભેવા મળતુ નથી “ તિણિપલિ-ઓવમાઙ પરમાઙ પાલયિત્વા તાઓ વિ અવિતિત્તા કામાણ ઉવણમતિ મરણધમ્મ ” તેમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યની હોય છે એટલા સમય સુધી તે દેવકુરુ

શબ્દાદિ વિષયવિષયસ્ય પ્રવર્તકૈઃ 'સત્થેહિ' શસ્ત્રૈઃ 'एकमेवक' एकैक = પ્રત્યેક 'હણતિ' ઘનન્તિ । 'अवरे' अपरे=કેચિત્ 'परदारेहि' परदारै=પરસ્ત્રીભિઃ 'हम्मति' हन्यन्ते=માર્યન્તે, 'परदारै'—રિત્યત્ર કર્ત્તરિ તૃતીયા । यद्वा हेतो ततीया-परदारा-निमित्तीकृत्य अन्यैर्बलशालि पारदारिकैर्हन्यन्ते । 'विशुणिया' विश्रुताः=पार-दारिकत्वेन प्रसिद्धाः सन्तः केचित् 'धणणास' धननाश = 'सयणविष्णणास' स्वजनविष्णणाश=स्वजनवियोगं 'पाउणति' प्राप्नुवन्ति, अय भाव राजपुरुषा स्तत्रागत्य परदारिकाणां धनं गृह्णन्ति, परदारिकं यद्वा दण्डनार्थं दण्डस्थानं नयन्ति च । यद्वा-परदारप्रसादनार्थं स्वकीयं पित्राद्युपार्जितं धनं परदारैभ्यः प्रय-

(મોહભરિયા) उस मैथुनरूप कर्म के मोहसे भरे हुए होने के कारण, अथवा-विवेक से विकल बने रहने के कारण (विमयविस उदीरएहि-सत्थेहि एकमेक हणति) शब्दादि विषयरूप विषय के प्रवर्तक शस्त्रों से आपस में एक दूसरे को मार डालते हैं । (अवरे) कितनेक प्राणी (परदारेहि हम्मति) परस्त्रियो द्वारा मार दिये जाते हैं । अथवा परस्त्री को निमित्त करके अन्य बलशाली पारदारिक पुरुषों द्वारा मैथुनसज्ञा में आसक्त मतिवाले व्यक्ति मार दिये जाते हैं । (विशुणिया) पारदारिक परस्त्री-लम्पट रूप से प्रसिद्ध हुए कितनेक मनुष्य (धणणास) अपने धनके विनाश को और (सयणविष्णणास) आत्मीयजनो के विनाशको (पाउणति) प्राप्त करते हैं । तात्पर्य इसका यह है की परस्त्रीलपट व्यक्ति के पास राजपुरुष आकर उसके धन को छीन लेते हैं । और बाधकर उसे दंड देने के निमित्त कारागार में ले जाते हैं । अथवा-परस्त्री को प्रसन्न करने के लिये पारदारिक मनुष्य अपने पिता आदि द्वारा उपार्जित

હોવાને કારણે અથવા વિવેક રહિત બની જવાને કારણે 'વિમયવિસઉદીર-
एहि सत्थेहि एकमेक हणति' "શબ્દાદિ વિષયરૂપ વિષયના પ્રચારક શસ્ત્રો વડે
અદરે અદર લડીને એક બીજાને મારી નાખે" "अवरे" डेटलाड डोजे
"परदारेहि हम्मति" परस्त्रीઓ દ્વારા હણાય છે અથવા પરસ્ત્રીને કારણે
બીજા બળવાન પરસ્ત્રીગમન કરનારા પુરુષો દ્વારા મૈથુન સેવનમાં આસક્ત
પુરુષોને મારી નાખવામાં આવે છે "विशुणिया" परस्त्री लपट गणुता
डेटलाड पुरुषो "धणणास" चोताना धननो नाश अने "सयण विष्णणास"
आत्मीय जनोनो नाश "पाउणति" मोतरे छे तेनो लावार्थ" એ છે કે
પરસ્ત્રીગામી પુરુષની પાસેથી રાજપુરુષો તેમનું ધન જપ્ત કરે છે, અને તેને
ગાંધાને શિક્ષા કરવાને માટે કેદખાનામાં લઈ જાય છે અથવા પરસ્ત્રીને ગીઝ
વવા માટે પરસ્ત્રીગામી પુરુષ ચોતાના પિતા આદિ દ્વારા ઉપાર્જિત ધન તે

- સીયાણ દોવર્ડેણ્યકણ, રૂપિણીણ પડમાવર્ડેણ તારાણ
કંચનાણ રત્તસુભદ્રાણ અહિન્નિવાણ સુવર્ણગુલિયાણ
કિન્નરીણ ચ સુરૂવ વિજ્જુમર્ડેણ રોહિણીણ ચ, અણ્ણે ચ
એવમાદ્યા વહવો મહિલાકણ સુઠ્ઠતિ અદ્ધકંતાસંગામા ગામ
ધમ્મમૂલા । અવંભસેવિણો ઇહલોણ તાવનટ્ટા પરલોણ
ચ નટ્ટા મહયા મોહતિમિરધયારે ઘોરે તસથાવરસુહુમ
વાયરેસુ પજ્જત્તમપજ્જત્તસાહારણસરીરપત્તેય સરીરેસુ ચ અડય
પોયય જરાડય રસય સસેદ્ધમ સમુચ્છિમ ઉભિમ્મજ્જ ઉવવાદ્ધણસુ,
ચ નરગ તિરિયદેવમાણસેસુ જરામરણરોગસોગવહુલેસુ
પલિઓવમસાગરોવમાદ્ અણાદીય અણવદગ્ગં દીહમદ્ધ ચાડ-
રંતસસારકંતારં અણુપરિયદંતિ જીવા મહામોહવસસનિવિટ્ટા ॥૧૪

ટીકા—‘ મેદુણસણ્ણાસપગિદ્ધાય ’ મૈથુનસજ્ઞાસમ્પટ્ટદ્ધાથ=મૈથુનાડડસક્તાઃ
‘ મોહભરિયા ’ મોહમૃતા.=અજ્ઞાનપૂર્ણા, ‘ નિસયપિસડ્ડીરણ્ણિ વપયપિપોદીરકૈ =

इम तरह यहा तक सूत्रकार ने अब्रह्म नामके चतुर्थ द्वार का यह
पाचवा अन्तर्द्वार कहा, अब वे पूर्व में अनुक्त “ यथा कृतम् ” इस तृतीय
अन्तर्द्वार को और “ यत्फल ददाति ” इस चतुर्थ अन्तर्द्वार को प्ररूपित
करते हैं—‘ मेहुणे सण्णा सपगिद्धाय ’ इत्यादि० ।

टीકાર્થ:—(મેદુણસણ્ણા સપગિદ્ધાય) જો પ્રાણી મૈથુન સજ્ઞા મેં
આસક્તિ સે યુક્ત હોતે હેં અર્થાત્ મૈથુન મેં અત્યત આસક્ત રહતે હેં વે

આ રીતે અહીં સુધી સૂત્રકારે અબ્રહ્મ નામના ચોથા અધર્મદ્વારનું
પાચમું અન્તર્દ્વાર વર્ણવ્યું હોયે જેનું વર્ણન કરવાનું બાકી રાખ્યું હતું તે
“ યથા કૃતમ્ ” નામના ત્રીજા અન્તર્દ્વારનું તથા “ યત્ફલ દદાતિ ” તે ચોથા
અન્તર્દ્વારનું પ્રશ્નણ કરે છે—“ મેદુણસજ્ઞા સપગિદ્ધાય ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ:—“ મેદુણસણ્ણા સપગિદ્ધાય ” જે જીવો મૈથુનમાં અત્યત
આસક્ત રહે છે તેઓ “ મોહભરિયા ” તે મૈથુનરૂપ કર્મના મોહથી ભરપૂર

મિન્દન્તિ=સમયાન = મિદ્ધાન્તાન ધર્માન્=શ્રુતચારિત્રભણાન્-ગગાન્-સમમામા-
 ચારિજનસમૂહાન્ વિનાશયન્તિ 'પરદારી' પરદારિણિ:=પરસ્ત્રીસક્તાઃ । તથા 'ધમ્મ-
 ગુણરયાય' 'ધર્મગુણરતાથ = સદાચારપરાયણાઃ 'વમયારી' બ્રહ્મચારિણ
 'સ્વળેણ' ક્ષળેનૈવ = અલ્પમાલેનૈવ - વહુત્ત્વસુરક્ષિતાદપિ 'ચરિત્તાઓ'
 ચારિત્રાત્ 'ઉલ્લોટ્ટિ' ઉલ્લોટ્ટયન્તિ=નિપતતિ । 'જસમન્તો' યશસ્વિનઃ
 'સુવ્વયાય' સુત્રાથ = વ્રતપરિપાલકાઃ અપિ 'અજસકિત્તિ' અવશઃકીર્તિ=
 'પાવેતિ' પ્રાપ્નુવન્તિ । 'રોગતા' રોગાનાં=શ્વ્યાદિરોગગ્રસ્તાઃ 'વાહિયા'
 વ્યાપિતાઃ=કુષ્ઠાદિરીડિતાઃ 'રોયરાહી' રોગન્યાધીન 'વહૂતિ' વર્ધયન્તિ તેન
 'દુવેયલોણ દુરાસાહ્યા ભવન્તિ' દ્વયોથ લોકયોર્દુગરાધકા' = આત્મવિરાધકા

અપને સિદ્ધાન્તો કો, (ધમ્મે) શ્રુ-ચારિત્ર રૂપ ધર્મકો, એવ (ગળે ય)
 સમાન સામાચારી થાલે ગળ કો (મિદતિ) નષ્ટ કર ઢાલતે હૈં । તથા-
 (ધમ્મગુણરયા ય) જો ધર્મગુણ રત-સદાચારપરાયણ (વમયારી)
 બ્રહ્મચારી હોતે હૈં વે ખી (સ્વળે ણ) ક્ષળ ખર મેં (ચરિત્તાઓ) વહનકાલ
 કે સુરક્ષિત અપને ચરિત્ર સે હમી ણક દર્શુણ કે વશ સે (ઉલ્લોટ્ટિ)
 નિપતિત હો જાતે હૈં । ત ગ (જસમતો) જો યશસ્વી ણવ (સુવ્વયા ય)
 વ્રતોં કે આરાધક હોતે હૈં વે ખી હસી કારણ (અજસકિત્તિ) અપકીર્તિ
 કો (પાવેતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈં (પરમ્મ દારાઓ જે અવિરયા) હસ પરદાર
 સેવન સે જો પ્રાણી અવિરત હોતે હૈં વે (રોગતા) ક્ષયાદિ રોગોં સે
 ગ્રસ્ત હો જાતે હૈં ઓર (વાહિયા) કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિઓ સે પીડિત હોતે
 રહતે હૈં, હતના હી નહીં ફિર આગે કે લિયે વે રોગોં કો ઓર વ્યાધિ-
 યોં કો વઢા ખી લેતે હૈં । હસ તરહ (દુવે ય લોણ હહલોણ પરલોણ ચેવ)

“ધમ્મે” શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અને “ગળે ય” સમાન સામાચારીવાળા
 સમૂહોનો “મિદતિ” નાશ કરી નાખે છે તથા “ધમ્મગુણરયા ય” જે લોકો
 ધર્મગુણ રતસદાચાર પરાયણ, “વમયારી” બ્રહ્મચારી હોય છે તેઓ પણ
 “સ્વળેણ” ક્ષણવારમા “ચરિત્તાઓ” લાખા સમયથી સુરક્ષિત રાખેલા પોતાના
 ચારિત્રથી એ એક જ દુર્ગુણને અધીન થઈને “ઉલ્લોટ્ટિ” બ્રહ્મ થઈ જાય
 છે, તથા “જસમતો” જે યશસ્વી અને “સુવ્વયા ય” વ્રતોના આરાધક
 હોય છે, તેઓ પણ એજ કારણે “અજસકિત્તિ” અપકીર્તિ “પાવેતિ”
 પ્રાપ્ત કરે છે “પરમ્મદારાઓ જે અવિરયા” એ પરસ્ત્રીગમનમા જે જીવો
 સતત આમક્રા રહે છે તેઓ “રોગતા” ક્ષયાદિ રોગોના પાતમા અપડાય
 છે અને “વાહિયા” કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિઓથી પીડાયા કરે છે એટલું જ નહીં
 પણ અવિધ્યમા તેમના તે રોગો અને વ્યાધિઓ વધતા જાય છે આ રીતે
 તેઓ “દુવેય લોણ-પરલોણ ચેવ” બન્ને લોકમા આલોકમા અને પરલોકમા

જાણે, તત્ર પ્રતિવચ્ચકાન્ સ્વજનાનપિ પારદારિયા નિન્નન્તીતિ । કે દર્યાદ-
 ' પરસ્સદારાઓ જે અવિરયા ' પરમ્ય દારેભ્યો યેઽવિરતાઃ=પરસ્ત્રી પરદ્વાઘ વિરતાઃ
 પરસ્ત્રીસદ્ગપરાયણાદિત્યર્થઃ । તથા ' મેદુણસળ્લાસપગિદ્વાય ' મૈથુનસજ્જાસમ
 મૃદ્ધાથ ' મોહભરિયા ' મોહમૃતાઃ = મોહગ્રતાઃ ' અસ્માદત્યોગયાય ' અશ્વાઃ
 હસ્તિનો ગાયથ ' મહિસા ' મહિષા ' મિગાય ' મૃગાય ' એકમેક ' એક =
 પ્રત્યેકં પરસ્પરમિત્યર્થઃ ' મારેતિ ' મારયન્તિ । ' મણુયગણા ' મનુજગણા ' વા-
 નરાય ' વાનરાય ' પક્ષીય ' પરિણથ ' વિરુદ્ધતિ ' વિરુદ્ધઃતે=પરસ્પર વિરોધ
 પ્રાપ્નુવન્તિ । તથા મૈથુનસેવનાત્ ' મિત્તાણિ ' મિત્રાણિ ' સ્વિપ્પ ' ક્ષિપ્પ=શીઘ્ર
 ' સત્તૂ ' શત્રુો ભવન્તિ, પુનથ ' સમયધમ્મગણેયમિદંતિ ' સમયધર્મગણાંથ

ક્રિયે હુવ દ્રવ્ય કો ઉસકે લિયે દે દેતે હે, ઓર જો હમ વિષય મેં ઉનકે
 લિયે કોઈ આત્મીય યથ પ્રતિવચક હોના હૈ ઉસે વે માર ઢાલતે હૈ ।
 (પરસ્મદારાઓ જે અવિરયા) યદ મત્ર કુકુત્ય વે હી વ્યક્તિન મરતે હૈ ।
 જો પર કી સ્ત્રીઓ કે સેવન કરને રૂપ અકૃત્ય સે વિરત નહીં હોતે હૈ ।
 તથા-હસી તરહ (મેદુણસળ્લાસપગિદ્વાય) મૈથુનસજ્જા મેં આસક્ત
 (મોહભરિયા) મૈથુનસજ્જા સે વિમોહિત મતિવાલે અજાની પ્રાણી
 (અસ્માદત્યો ગવા ય મહિસા મિગા ય) અશ્વ, હસ્તી, ગાય, મહિષ,
 મૃગ હૈં વે મી (એકમેક મારેતિ) આપસ મેં એક દુસરે કો માર ઢાલતે
 હૈ । હસી તરહ (મણુયગણા) મનુષ્યગણ (વાનરાય) ઘદર એવ (પક્ષીય)
 પક્ષી મી (વિરુદ્ધતિ) એક દુસરે કા વિરોધ કરતે હૈ તથા (મિત્તાણિ
 સ્વિપ્પ ભવતિ સત્તૂ) હસી કર્મ કે સેવન સે મિત્રજન મી શીઘ્ર શત્રુ
 બન જાતે હૈ । ફિર જો પારદારિક પરસ્ત્રી મેં આસક્ત-હોતે હૈ વે (સમય)

સીને આપી દે છે, અને તેના એ પરસ્ત્રીગમનના કૃત્યમા જે કોઈ સબધીઓ
 આડખીલી રૂપ થાય છે તેમને મારી નાખે છે “ પરસ્સદારાઓ જે અવિરયા ”
 જે લોકો પરસ્ત્રીગમન રૂપ કુકૃત્યથી વિરક્ત થઈ શકતા નથી તે લોકો જ આ
 બધા કુકૃત્યો કરે છે તથા એ જ પ્રમાણે “ મેદુણસળ્લા સપગિદ્વાય ” મૈથુન
 સજ્જામા આસક્ત, “ મોહભરિયા ” મૈથુન સજ્જામા વિમોહિત મનવાળા અજાની
 “ અસ્માદત્યો ગવા ય મહિસા મિગા ય ” અશ્વ, હાથી, ગાય, હેસ મૃગ,
 આદિ પ્રાણીઓ પણ “ એકમેક મારેતિ ” આપસમા લડીને એક બીજાને
 મારી નાખે છે એ જ રીતે “ મણુયગણા ” મનુષ્યો, “ વાનરા ય ” વાનરો,
 “ પક્ષીય ય ” અને પક્ષીઓ પણ એક બીજાને વિરોધ કરે છે “ મિત્તાણિ
 સ્વિપ્પ ભવતિ સત્તૂ ” એ કર્મના સેવનથી મિત્રો પણ જલદી તેમના શત્રુ બની
 જાય છે વળી પરસ્ત્રીમા આસક્ત લોકો “ સમય ” પોતાના સિદ્ધાંતોને,

વેપાતે તપા । તથા 'મેહુણમૂલા ય' મૈથુનમૂળાશ્ચ સ્ત્રી હેતવ એત્યર્થ 'તત્ત્વ તત્ત્વ' તત્ર તત્ર લોકે શાસ્ત્રે ચ 'વત્તપુગ્ગા' વત્તપૂર્વા=મૃતપૂર્વા 'જગલ્લયકરા' જન ક્ષયકરાઃ=જનસહારકારકા.-રામરાવગાદીના 'સગામા' મગ્રામાઃ 'સુવ્વતિ' શ્રવન્તે । કસ્યા. કસ્યા ત્રિયો-નિમિત્ત સગ્રામા જાતાઃ ? ઇત્યાદિ—

‘સીયાણ દોવર્ડેણ કણ’ સીતાયાઃ દ્રૌપદ્યાશ્ચક્રુતે-સીતાદ્રૌપદીનિમિત્તમિત્યર્થઃ એવ ‘રુષિણીણ પડમાવર્ડે-તારાણ કચણાણ રત્તસુમદાણ અહિન્નિયાણ સુવર્ણગુલિયાણ કિન્નરીણ ય સુરુવવિજ્જુમર્ડેણ રોદ્ધિણીણ ય’ રુક્મિણ્યા, પદ્માવત્યા, તારાયા, કાશ્વનાયા, રક્તસુમદ્રાયા, અહર્નિશયા. સુવર્ણગુટિકાયા, કિન્નરીશ્ચ

જાતા હૈ । ત યા (મેટુણમૂલા ય તત્ત્વ તત્ત્વ વત્તપુગ્ગા 'જગલ્લયકરા સગામા સુવ્વતિ) લોક ઔર શાસ્ત્ર મૈં જિતને મી પહિલે રામ રાવણ આદિ કે જનક્ષય કારક મગ્રામ હુણ સુને જાતે હૈ વૈ મગ મૈથુનમૂલક હી હુણ હૈ । ડન સવ લોક ઔર શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ યત્ર તત્ર હુણ સગ્રામોં કા મૂઢ કારણ એક સ્ત્રી હુર્ડે હૈ ॥

અવ સૂત્રકાર ઇસી વાત કો વિશેષ સ્ફુટ કરતે હૈ તિસ ૨ સ્ત્રી કે નિમિત્ત સગ્રામ હુણ હૈ ઇસ વિષય કો કહતે હૈ-‘સીયાણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થઃ-(સીયાણ, દોવર્ડેણ ય કણ) સીતા ઔર દ્રૌપદી કે નિમિત્ત (રુષિણીણ, પડમાવર્ડેણ, તારાણ, કચણાણ, રત્તસુમદાણે અહિન્નિયાણ સુવર્ણગુલિયાણ, કિન્નરીણ, સુરુવવિજ્જુમર્ડેણ, રોદ્ધિણીણ ય) રુક્મિણી કે નિમિત્ત, પદ્માવતી કે નિમિત્ત, તારા કે નિમિત્ત, કાશ્વના કે નિમિત્ત, રક્ત સુમદ્રા કે નિમિત્ત, સુવર્ણ ગુટિકા કે નિમિત્ત, કિન્નરી કે નિમિત્ત,

નાશ પામ્યો હોય છે તથા “મેહુણમૂલા ય તત્ત્વ તત્ત્વ વત્તપુગ્ગા જનક્ષયકરા સગામા સુવ્વતિ” આ સુવ્વિમા રામ રાવણ આદિ વચ્ચેના માણસોના ક્ષય કરનારા જે મથામો થયા છે તથા સાઓમા જે સથામો વર્ણવવામા આવે છે તે બધાનુ મૂળ વાળુ મૈથુન જ છે તે બધા હોડપ્રસિદ્ધ તથા સામ્યપ્રસિદ્ધ સ્થળે સ્થળે થયેલા મથામોનુ મૂળ કારણુ ડોર્ડ ને ડોર્ડ સ્ત્રી જ હતી

હવે સૂત્રકાર એ બાબતનુ વધુ સ્પષ્ટિકરણુ કરે છે-કયી કયા સ્ત્રીઓને કારણુ મથામો થયા તે બતાવે છે—“સીયાણ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“સીયાણ, દોવર્ડેણ ય કણ” મીતા અને દ્રૌપદીને કારણુ “રુષિણીણ, પડમાવર્ડેણ તારાણ, કચણાણ, રત્તસુમદાણ, અહિન્નિયાણ સુવર્ણગુલિયાણ, -કિન્નરીણ, સુરુવવિજ્જુમર્ડેણ, રોદ્ધિણીણ ય” અકમળીને નિમિત્તે, પદ્માવતીને નિમિત્તે, તારામતીને નિમિત્તે કાશ્વનાને નિમિત્તે, રક્તસુમદ્રાને નિમિત્તે, અહર્નિકાને નિમિત્તે, સુવર્ણ ગુટીકાને નિમિત્તે, કિન્નરીને નિમિત્તે, સૌદર્થવતી

ભવન્તિ । કયોર્દ્વયોર્લોકયોઃ इत्याह इहलोप चेत् परलोके ' इहलोके च=इह-
जन्मनि परलोके च परजन्मनि । के ते? इत्याह—'परस्स दाराओ जे अनिरया'
परस्स दारेओ ते वेऽविरताः=परस्त्रीपरायणाः । 'तहेव' तत्रैव 'केड' केचित्
'परस्स दार गवेसमाणा' परस्स दारान गवेरमाणा = परस्त्रियमन्वेपयन्त,
'गहिया य' गृहीताश्च जनैः 'हयाय' हताश्च=ताडिताः 'बद्धरुद्धा य' बद्ध
रुद्धाश्च=गज्ज्यादिभिर्बद्धाः स तः पञ्जरादी निरुद्धाश्च एव 'जाव गउन्ति'
यावत्-अधोगतिं प्राप्नुवन्ति 'अत्र यावत्पदग्रहणेन तृतीयाध्ययनस्थित' 'गहि
याय बद्धरुद्धा य' इत्यारभ्य 'नरए गच्छति गिरभिरामे' इत्येतदन्तः पाठोत्र
बोध्य इति सूचितम् । के ते इत्याह—ये 'मोहाभिभूयसणा' मोहाभिभूतसन्नाः=
मोहेन=अज्ञानेन तामान्यतया या अभिभूता-परीभूता नष्टा मना=सदमद्विवेकप्रज्ञा

दोनों लोकों में—इस लोक और परलोक (दुराराहगा) आत्म विरोधक
(भवति) बनते हैं । तथा (तहेव) इसी प्रकार (वेड परस्सदार गवे-
समाणा) जो परस्त्री की गवेपणा करने में रत रहते हैं वे यदि उस
कार्य को करते समय (गहिया य) पकड़ लिये जाते हैं तो (हयाय)
बहुत बुरी तरह ताड़िन किये जाते हैं । और) (बद्ध रुद्धा य) रस्सी
आदि से बांधे जाकर पजर आदि में बंध कर दिये जाते हैं । (एव)
इस तरह (जाव) यावत् यहां यावत् शब्द से तृतीय अध्ययन में
कथित "गहिया य बद्धरुद्धाय" इस पाठ से लगाकर "नरए गच्छति
गिरभिरामे) गह्रांतक का पाठ लिया गया है । जिससे यह समझाया
गया है कि अन्त में ऐसे जीवोंकी बड़ी दुर्दशा होती है और वे मर कर
नरक में जाते हैं । क्योंकि (विउलमोहाभूयसणा) ऐसे मनुष्यों का
विपुल अज्ञान से अथवा कामान्धता से मदमद्विवेक विलकूल नष्ट होना

‘दुराराहगा’ આત્મવિરોધક “ભવતિ” બને છે “તહેવ” એ જ પ્રમાણે
“વેડ પરસ્સદાર ગવેસમાણા” જે પરસ્ત્રીની શોધમાં લીન રહે છે, તેઓ
જો તે કાર્ય કરતી વખતે “ગહિયા ય” પકડાઈ જાય તો “હયાય” ઘણી
જ ખરાબ રીતે તેમને મારવામાં આવે છે, અને “વદ્ધરુદ્ધાય” દોરડા
આદિથી બંધીને પાજરા આદિમાં પૂરી દેવામાં આવે છે “એવ” આ રીતે
“જાવ” યાવત્-અહીં યાવત્ શબ્દ વડે ત્રીજા અધ્યયનમાં કહેલ “ગહિયા-
ય વદ્ધરુદ્ધાય” થી લઈને “નરણ ગચ્છતિ ગિરભિરામે” સુધીનો પાઠ લેવામાં
આવેલ છે તેમાં એ સમજાવવામાં આવ્યું છે કે છેવટે તે જીવોની દશા ખૂબી
થાય છે અને તેઓ મરીને નરકમાં જાય છે, કારણ કે “વિઝલમોહા ભૂયસણા”
એવા મનુષ્યોમાં મદસદ્વિવેક, અજ્ઞાનથી અથવા કામાન્ધતા ને લીધે બિલકૂલ

સાહારણસરીરપત્તેયમરીરેસુ ' પર્યાપ્તાઽપર્યાપ્તકસાધારણશરીરપત્તેયકશરીરેપુ ચ જન્મમરણ કુર્વન્તિ । તતોઽપિ નિઃસૃત્ય ' અહ ય પોયય જરાઉય રસ ય-સસેશ્મ સમુચ્છિમ ઉચ્છિમજ્જ ઉત્તવાહણસુ ય ' તત્ર અણ્ડજાઃ=પક્ષિ મત્સ્યાદયઃ ' પોયજ ' પોતજા =હસ્ત્યાદય ' જરાઉય ' જરાયુજાઃ=મનુષ્યાદયઃ, ' રસ ય ' રમજાઃ=વિકૃતરસેપુ સમુત્પન્નાઃ ' સસેશ્મ ' સમ્વેદિમા=સસ્વેદાત્ જાતા યુક્તા મત્કુળાદયઃ ' સમુચ્છિમ ' સમુચ્છિમાઃ=સમૂર્જિતન જાતાઃ દર્દુરાદયઃ ' ઉચ્છિમજ્જ ' ઉચ્છિમજ્જાઃ=પૃથિવ્યોમુદ્ગિધ જાતાઃ=શલભાદયઃ ' ઉત્તવાહય ' ઔપપાતિમા=દેવ નારકાદયશ્ચ, ક્ત્યેતેપુ ચ ' નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ ' નરકતિર્યગ્દેવમાણુગેપુ કીદૃશેપુ ? ક્ત્યાહ—' જરામરણરોગસોગચક્રુલેસુ ' જરામરણરોગશોકચક્રુલેપુ-

(તસયાચરમુદ્ગમાચાયરેસુ) ઘસ, સ્થાવર, સૂક્ષ્મ, ચાદર કન કાયોમે, તથા (પજ્જત્તમપજ્જત્તસાહારણપત્તેય મરીરેસુ ય) પર્યાપ્તક અપર્યાપ્તક, સાધારણ-શરીર, પ્રત્યેક શરીર કન પર્યાપ્તોમે જન્મ મરણ કરતે હૈ । બહા સે મી નિકલ કર વે (અહ ય પોયય જરાઉય રસ ય સસેશ્મ સમુચ્છિયઉચ્છિમ-જ્જઉત્તવાહણસુ ય) અહજ જીવોમે-પક્ષી મત્સ્ય આદિકોમે, પોતજજીવોમે-હસ્તી આદિકોમે, જરાયુજ મે-જરા સે પેદા હોને વાલે મનુષ્ય આદિકોમે, રસજ જીવોમે-વિકૃત રસોમે ઉત્પન્ન હોને વાલે કૃમિ આદિ જીવોમે, સસ્વેદિમામે પમીનેસે હોનેવાલે યુક્તા, મત્કુળ આદિ જીવોમે, સમૂર્જિતમ જન્મવાલે દર્દુર (મેઢક) આદિ જીવોમે, ઉચ્છિમજ્જ જીવોમે-પૃથિવિ કો મેઢકા ઉત્પન્ન હોને વાલે શલભ આદિ જીવોમે ઔપપાતિક જન્મ ધારી દેવ ઔર નારકીયોમે ઉત્પન્ન હોતે હૈ । તયા વે (જરામરણરોગસોગ ચક્રુલેસુ નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ) જરા, મરણ, રોગ, શોક ચક્રુલ, નરક,

“ તસયાચરમુદ્ગમાચાયરેસુ ” ઘસકાય, સ્થાવરકાય, સૂક્ષ્મકાય અને બાહ્યકાયોમા તથા “ પજ્જત્તમપજ્જત્તસાહારણસરીરપત્તેયસરીરેસુ ય ” પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, સાધારણ શરીર, પ્રત્યેક શરીર આદિ પર્યાપ્તોમા જન્મ મરણ અનુભવે છે તથાથી પણ નીકળાને તેઓ “ અહય-પોયય-જરાઉય-રસય સસેશ્મ-સમુચ્છિય ઉચ્છિમજ્જઉત્તવાહણસુ ય ” અહજ જીવોમા-પક્ષી મત્સ્ય આદિમા, પોતજ જીવોમા હાથી આદિમા જરાયુજમા મનુષ્ય આદિમા રસજ જીવોમા વિકૃત રસોમા ઉત્પન્ન થનાર કૃમિ આદિ જીવોમા, સસ્વેદિમા મા પરસેવાથી ઉત્પન્ન થનાર જૂ, માડક આદિ જીવોમા, સમૂર્જિતમ જન્મવાળા દેહકા આદિ જીવોમા, ઉચ્છિમજ્જજીવોમા-પૃથ્વીને ભેદીને ઉત્પન્ન થનાર તીડ આદિ જીવોમા, ઔપપાતિક દેવ અને નારકીઓમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા તેઓ “ જરામરણ-રોગસોગચક્રુલેસુ નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ ” જરા, મરણ, રોગ અને વિપુલ

સુરપરિવૃન્મત્યાઃ, રોહિણ્યાન, તત્તત્સ્થાનમગિદ્વાયાઃ કૃતે સગ્રામા અમૃત્વન ।
 આસા ચરિત તુ તત્તદ્ગ્રંથમ્યાઽવતેષમ્ । ‘ અળ્ળે ય ઇવમાહ્યા વહનો મહિલ્લ-
 કણ’ અન્યે ચૈવમાદિકાઃ = એવ પ્રકારાઃ=ચઢયઃ-અનેકે મહિલાકૃતે=છીનિમિત્ત
 ‘ અતિવતા ’ અતિક્રાન્તાઃ=ભૂતપૂર્વાઃ ‘ ગામધર્મમૂલા ’ ગ્રામધર્મમૂલાઃ= મૈથુન
 મૂલકાઃ ‘ સગામા ’ સગ્રામા જાતા ઇતિ, ‘ સુવ્વતિ ’ સુવન્તે=ગોકે શાસ્ત્રે ચ ।
 તે ચાવ્રહ્મસેવિનઃ ‘ ઇહલોએ તાવનઢ્ઢા ’ ઇહલોકે તાવનઢ્ઢાઃ = પરસ્ત્રીગમનેનાઽઽ-
 ત્મવિરાધકા જાતાઃ, ‘ પરલોએ ય નઢ્ઢા ’ પરલોકે ચ નઢ્ઢાઃ અમઢ્ઢવિ પ્રાપ્તાઃ
 કેન કેન પ્રકારેણ પરલોકો નઢ્ઢામચ્ચતીત્પાઢ્ઢ—ઇતો મૃત્યા ‘ મહ્યામોહતિમિર-
 ધયારે ’ મહામોહતિમિરાન્ધકારે-મહામોહ એવ તિમિરાન્ધકાર=ગાઢાન્ધકારો
 યત્ર સ તયા તસ્મિન્ ઘોરે=ભયઢ્ઢકારે એતાદૃશે નરકે ગચ્છન્તિ । તતો નિઃસૃત્ય
 ‘ તસયાવરમુહુમચાયરેસુ ’ તસયાવરમુહુમચાયરેસુ ’ તયા ‘ પઞ્ચતમપઞ્ચતમ

સરૂપ વિદ્યુન્મતી કે નિમિત્ત ઓર રોહિણી કે નિમિત્ત સગ્રામ હુગ હૈં
 (અળ્ળે ય એવમાહ્યા વહવો) તયા હસી તરહ કે ઓર ઢી અનેક
 (અહકતા) ભૂતપૂર્વ સગ્રામ (મહિલાકણ) ઢસો મૈથુન સેવન નિમિત્તક
 હુગ (સુવ્વતિ) લોક ઓર શાસ્ત્ર મે સુને ગયે હૈં । (અવમસેવિણો ઇહ-
 લોએ તાવનઢ્ઢા પરલોએ ય નઢ્ઢા) યે અવ્રહ્મસેવીજન ડસલોક મે તો નઢ્ઢ
 હોતે હી હૈ, સાથ ૨ મેં પરલોક મેં ઢી નઢ્ઢ હોતે હૈ, અર્થાત્ પરસ્ત્રી
 સેવન સે જીવ હસલોક મેં આત્મવિરાધક હોકર પરલોક મે ઢી અસ
 જ્ઞતિ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં । જય વે યહા સે મરતે હૈ તય (મહ્યા મોહ
 તિમિરવયારે) મહામોહરૂપ ગાઢ અધકાર સે આચ્છાદિત હુગ (ઘોરે)
 ભયકર નરક મેં જાકર ઉત્પન્ન હોતે હૈ । વહા સે જય વે નિકલતે હૈ તય

વિદ્યુન્મતીને નિમિત્તે, અને રોહિણીને નિમિત્તે સગ્રામો થયા હતા, “ અળ્ળેય
 એવમાહ્યા વહવો ” તથા તે પ્રકારના બીજા પણ અનેક “ અહકતા ” ભૂત
 કાળના સગ્રામો “ મહિલાકણ ” એ જ મૈથુન સેવનને નિમિત્તે થયાનું
 “ સુવ્વતિ ” લોકોમાં તથા શાસ્ત્રોમાં સાલગવામાં આવે છે

“ અવ્રહ્મસેવિણો ઇહલોએ તાવનઢ્ઢા પરલોએ ય નઢ્ઢા ” તે મૈથુન
 સેવી લોકો આ લોકમાં તો નાશ હુદ્દશા પામે જ છે પણ પરલોકમાં
 પણ નઢ્ઢ થાય છે, એટલે કે પરસ્ત્રીસેવનથી લોકો આ લોકમાં આત્મવિરાધક
 થઈને પરલોકમાં પણ હુર્ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે, જ્યારે તેઓ અહીંથી મરણ પામે
 છે ત્યારે “ મહ્યા મોહતિમિરવયારે ” મહામોહરૂપ ગાઢ અધકારથી છવાયેલા
 “ ઘોરે ” ભયકર નરકમાં જઈને ઉત્પન્ન થાય છે તથા નીકળીને તેઓ

एय त अवभपि चउत्थ सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स
पत्थणिज्ज एव चिरपरिचियमणुगय दुरतं तिवेमि ॥सू० १५॥

॥ चउत्थ अहम्मदार समत्तं ॥

ટીકા—‘ एमो सो ’ एप सः पूर्वोक्तः ‘ अवभस्स फलविवागो ’ अवभगः
फलविपाक ‘ इह लोडओ ’ ऐहलोकिक -मनुष्यभयापेक्षया, ‘ परलोडओ य ’
पारलौकिकश्च नरकाद्यपेक्षया ‘ अप्पसुहो ’ अल्पसुखा - क्षणमात्रसुखजनकत्वात्-
‘ बहुदुक्खो ’ बहुदुःखः-प्रचुरदुःखहेतुत्वात् ‘ महम्मओ ’ महाभय -वधवन्धन
जन्ममरणादिभयोत्पादकत्वात् ‘ वहरयप्पगाढो ’ वहरजः प्रगाढः-कर्मदलिकवहु-
त्वान् ‘ दारुणो ’ दारुणः-चतुर्गतिससारभ्रामकत्वात् ‘ क्कमो ’ कर्मशः दशविध-

અવ હસ પ્રવૃત્ત અવ્રહ વિષય કા ઉપસહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર
કહતે હૈ—‘ एमो सो ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(एमो सो) यह पूर्वोक्त (अवभस्स) अव्रह-कुशील
सेवन का (फलविवागो) फलरूपविपाक (इहलोडयपरलोडओ य)
मनुष्य भव की अपेक्षा तथा नरकादि गति की अपेक्षा (अप्पसुहो)
क्षणमात्र सुख का जनक होने से अल्पसुखरूप है तथा (बहुदुक्खो)
प्रचुर दुःख का हेतु होने से महादुःखप्रद है, (महम्मओ) वध, वधन,
जन्म, मरणादि के भय का उत्पादक होने से महाभय स्वरूप है ।
(वहरयप्पगाढो) ऐसे कर्म करने वालों को कर्मों की स्थिति और अनु-
भाग बहुत अधिक मात्रामें वधाता है कमलिये वह वहरजःप्रगाढरूप है।
(दारुणो) चतुर्गति रूप ससारमें ऐसे जीवोंका ही भ्रमण होता है-अतः

હવે આ પૂર્વોક્ત અવ્રહ વિષયનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—

“ एमो सो ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ एमो सो ” આ પૂર્વોક્ત “ अवभस्स ” અવ્રહ-કુચારિત્ર
સેવનનો “ फलविवागो ” ફલવિપાક “ इहलोडयपरलोडओ य ” મનુષ્ય ભવની
અપેક્ષાએ “ अप्पसुहो ” ક્ષણમાત્ર સુખનો જનક હોવાને કારણે અપ્પસુખ
રૂપ છે, તથા “ बहुदुक्खो ” અત્યંત દુઃખનો હેતુ હોવાથી મહાદુઃખપ્રદ છે
“ महम्मओ ” વધ, બંધન, જન્મ, મરણ આદિ ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી
મહાભય સ્વરૂપ છે, “ वहरयप्पगाढो ” એવા કર્મો કરનારને કર્મોની સ્થિતિ
અને અનુભાગ બહુ જ વધારે પ્રમાણમાં બધાય છે તેથી તે બહુ રજ પ્રગાઢ-
રૂપ છે “ दारुणो ” એવા જીવોને જ ચાર ગતિ રૂપ સસારમાં ભ્રમણ કરવું

ચોત્પન્તે, તત્ર ' પલિઓવમસાગરોવમાહ ' પર્યોપસાગરોપમાનિ = પર્યોપમ
સાગરોપમકાલ યાત્રત્ કેચિત્પરિભ્રમન્તિ । યે તુ ' અણાદિય ' અનાદિય =
આદિવર્તિત ' અણવદગ્ગ ' અનવદગ્ગમ્ = અનન્ત ' દીહમદ્ધ ' દીર્ઘાઽન્તાન = દીર્ઘ
માર્ગ ' ચાઉરતસસારકતાર ' ચતુરન્તસમારકાન્તાર = દેવમનુષ્યનારકતિર્ય
ગ્લસગચતુર્ગતિરુપસારમદારણ્ય, ' મહામોહવસસનિવિટ્ઠા જના ' મહામોહવશ-
સનિવિટ્ઠાજનાઃ = મહામોહવશગતા અત્રાપ્તસેવિના જનાઃ ' અણુપરિયટ્ઠત્તિ ' અણુ-
પર્યટન્તિ = અનન્તકાલપર્યન્તપરિભ્રમન્તિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

પૂર્વોક્ત નિગમયન્નાહ—' एसो सो ' इत्यादि—

મૂલ્મ—एसो सो अवभस्स फलविवागो इहलोइओ पर-
लोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ वhurयप्पगाढो
दारुणो कक्खसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, नय अवेद-
इत्ता अत्थिहु मोक्खो त्ति । एवमाहसु नायकुलनदणो नहप्पा
जिणो उ वीरवरनाम धेज्जा कहेमि य अवभस्स-फलविवागं ।

તિયંચ દેવ એવ મનુષ્યોં મેં જન્મતેહૈં । इनमें (पलिओवमसागरोवमाह)
કિતનેક જીવ પર્યોપમપ્રમાણ કાલતક ઓર કિતનેક સાગરોપમ પ્રમાણ
કાલ તક ઘૂમતે રહતે હૈં । और कितनेक ऐसे भी होते है जो (महा-
મોહવસસનિવિટ્ઠા) મહામોહ કે વશવર્તી હોકર (અણાદિય અણવદગ્ગ)
અનાદિ અનન્ત (દીહમદ્ધ) ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીરૂપ દીર્ઘમાર્ગ યુક્ત
(ચાઉરતસસારકતાર) દેવ-મનુષ્ય નરક એવ તિર્યશ્ચગતિરૂપ ચારગતિ-
વાલે સમાર કાતાર મેં અનન્તકાલતક (અણુપરિયટ્ઠતિ), પરિભ્રમણ કરતે
રહતે હૈં ॥ સૂ. ૧૪ ॥

શોડમય નરક, તિર્યચ, દેવ અને મનુષ્ય યોનિમા જન્મ પામે છે, તેમાના
“ पलिओवमसागरोवमाह ” કેટલાક જીવો પર્યોપમ પ્રમાણકાલ સુધી અને
કેટલાક સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી તે યોનિયોમા ભ્રમણ કર્યા કરે છે અને
કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે “ महामोहवससनिविट्ठा ” મહામોહને
અધીન થઈને “ अणादिय अणवदग्ग ” અનાદિ અનન્ત “ दीहमद्ध ” ઉત્સર્પિણી
અવસર્પિણી રૂપ દીર્ઘમાર્ગ યુક્ત “ चाउरतससारकतार ” દેવ મનુષ્ય, નરક
અને તિર્યચ એ ચાર ગતિવાળા સસાર કાતારમા અનન્તકાળ સુધી “ अणुपरि
यट्ठति ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે. ॥ સૂ. ૧૪ ॥

जिनः वीरवरनामधेयः—प्रख्यातनामा भगवान् श्रीमहावीरोऽपि 'अवभस्स' अवप्रह्मणः 'फलविवाग' फलविपाक 'कहेसिय' कथितमाश्र 'एय त' एतत्तत्=उपदर्शित स्वरूपम् 'अवभ' अवप्रह्म—अवप्रह्मनामक 'चउत्थ' चतुर्थमधर्मद्वार 'सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स' सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य 'पत्थणिज्ज' प्रार्थनीयम्। एव 'चिरपरिचिय' चिरपरिचितम्, अनादि कालादनुभूयमानम् 'अणुगय' अनुगत=प्राणिना पृष्ठतोऽग्न, दुरन्त—दुःस्वप्नसान च । 'त्ति वेमि' इति त्रीणि, एतद् जम्भूस्वामिनि प्रति सुधर्मस्वामि वाक्यम् ॥ सू० १५ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चास्रवद्वारेषु
अदत्तादानाग्न्य चतुर्थमधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

(एव) इस प्रकार का कथन (आहसु) भूतपूर्व तीर्थकर गणधरादिक देवों का है। और इसी प्रकार से अवप्रह्म के फलविपाक उन्हीं तीर्थकरों के कहे अनुमार (नायकुलनदणो) सिद्धार्थकुलको आनंद देनेवाले (महप्पा जिणो उ) महात्मा जिनेन्द्र (वीरवरनामधेज्जा) वीरवरने—श्री वर्धमानस्वामी ने भी (अवभस्स) अवप्रह्म के (फलविवाग) फलविपाक को (कहेसिय) कहा है (एय तं) यह वह (अवभ) अवप्रह्म नाम का (चउत्थ) चतुर्थ अधर्मद्वार (देवमणुयासुरस्स लोगस्स) देव मनुष्य और असुर लोक इन सब के यह (पत्थणिज्ज) प्रार्थनीय है, अर्थात् इस अवप्रह्म का ये देवादि सेवन करते हैं। (एव) इस प्रकार यह (चिरपरिचिय) जीवों के पीछे अनादिकाल से लगा हुआ चला आने के कारण (अणुगय) अनुभूयमान है और (दुरन्त) इसका अवसान (अन्त)से दुरन्त

आ प्रकारानु उथन “आहसु” भूतपूर्व तीर्थकर गणधरादिक देवानु छे अने ते रीतेन अवप्रह्मना फलविपाकानु उथन ते तीर्थ करेना उडेवा प्रमाणे “नायकुल नदणो” सिद्धार्थना कुणने आनंद देनेनर “महप्पाजिणो उ” महात्मा जिनेन्द्र “वीरवरनामधेज्जा” वीरेवर श्री वर्धमान स्वामीओ पणु “अवभस्स” अवप्रह्मने। “फलविवाग” फलविपाक “कहेसिय” उडेल छे “एयत” आ ते “अवभ” अवप्रह्म नामनु “चउत्थ” योथु अधर्मद्वार “देवमणुयासुरस्स लोगस्स” देव मनुष्य, अने असुर ते अधाने ते “पत्थणिज्ज” प्रार्थनीय छे, ओटले के देवादि ते अवप्रह्मनु सेवन करे छे “एव” आ रीते ते “चिरपरिचिय” जीवोनी पाछण अनादि कालथी आद्यु आवे छे तेथी “अणुगय” अनुभूय-

ક્ષેત્રવેદનાજનકત્વાત્ 'અસામો' અસાતઃ=અસાતવેદનીયઃ-અમૌત્પાદકત્વાત્
 'વાસસહસ્રેહિ' વર્ષસહસ્રૈઃ = અનેકપલ્યોપમસાગરોપમાદિકાઝોરુપભોગેન
 'મુચ્ચહ' મુચ્યતે । તદેવ વ્યતિરેમ્મુસેનાહ—નયઅવેદહતા 'નયાઽવેદયિત્વા=
 ઉપભોગ વિના ન 'યોક્ત્વોત્તિ' મોક્ષોઽસ્તિ । 'એવં' ઉક્તરીત્યા 'આત્મ્યુ' ઋતુઃ=
 કથિતનન્ત ભૂતપૂર્વાસ્તીર્થઙ્કરગણધરાદયઃ । તથા-તદનુમારેણૈવ 'નાયકુચનદગો'
 જ્ઞાતકુલનન્દનઃ—મિદ્ધાર્થકુઠાનન્દકર' 'મહાપ્પા' મહાત્મા=પરમાત્મરૂપઃ 'જિણો'

ચતુર્ગતિરૂપ સંસારમેં ભ્રમગ કરવાનેકા કારણ હોનેસે યહ દારુણ હૈ ।
 (કર્કસો) દશ પ્રકાર નો ક્ષેત્રવેદના કા જનક હોને સે યહ ફલવિપાક
 કર્કશ હૈ । (અસામો) અસાતવેદનીયરૂપ હોને સે યહ અસાત હૈ—અર્થાત્
 અસાતા વેદનીય કર્મ કે ઉદય સે યહ ઉત્પન્ન હોના હૈ ઇસલિયે અસાતા-
 વેદનીયકર્મ કે દ્વારા ઉત્પાદ્ય હોને કે કારણ યહ સ્વય અસાતસ્વરૂપ હૈ ।
 અથવા ઇસ પ્રકાર કે કર્મ કરને વાલે જીવ જો ફલવિપાક ભોગતે હૈ ।
 ઉસ સમય વે અસાતાવેદનીય કર્મ કા વધ કરતે હૈ,—કારણ ફલવિપાક
 ભોગતે સમય ઉનકી આત્મા મે દુઃખ શોક-તાપ આદિ ભાવ હોતે હૈ
 ઇન ભાવોં સે જીવ અસાતાવેદનીય કર્મ કા આસ્ત્રવ કરતા હૈ । ઇસ
 અપેક્ષા સે અસાતાવેદનીય કર્મ કા ઉત્પાદક હોને સે યહ ફલવિપાક
 અસાતરૂપ મોના ગયા હૈ । (વાસસહસ્રેહિ) યહ ફલવિપાક જીવ પલ્યો
 પમકાલતક ભોગને સે (મુચ્ચહ) છૂટતા હૈ । (નયઅવેદહતા અત્યિ હુ
 મોક્ષોત્તિ) ઇસ ફલવિપાક કા ઉપભોગ કિયે વિના યહ નહીં છૂટના હૈ ।

પડે છે, તેથી ચાર ગતિવાળા સંસારમા ભ્રમણ કરાવનાર હોવાથી તે દારુણ છે
 “કર્કસો” ઇસ પ્રકારની ક્ષેત્ર વેદનાનો જનક હોવાથી તે ફલવિપાક કર્કશ-
 કઠોર છે “અસામો” અસાત વેદનીય રૂપ હોવાથી તે અસાત છે—એટલે કે
 અસાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી તે ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી અસાતા વેદનીય
 કર્મદ્વારા ઉત્પાદ્ય હોવાને કારણે તે પોતે અસાતસ્વરૂપ છે અથવા આ પ્રકારના
 કર્મ કરનારા જીવો જે ફલવિપાક ભોગવે છે, તે ભોગવતી વખતે અસાતા-
 વેદનીય કર્મનો અધ બાધે છે, કારણ કે ફલવિપાક ભોગવતી વખતે તેમના
 આત્મામા હુ બ શોક તાપ આદિ ભાવ હોય છે, તે ભાવોથી જીવ અસાતા
 વેદનીય કર્મનો આસ્ત્રવ કરે છે આ અપેક્ષાએ અસાતાવેદનીય કર્મનો ઉત્પાદક
 હોવાથી આ ફલવિપાક અસાતરૂપ માન્યો છે “વાસસહસ્રેહિ” આ ફલવિપાક
 પલ્યોપમ કાળ સુધી અથવા સાગરોપમ કાળ સુધી ભોગવ્યા પછી જ જીવ
 “મુચ્ચહ” તેનાથી મુક્ત થાય છે ‘નય અવેદહતા અત્યિ હુ મોક્ષોત્તિ’
 આ ફલવિપાકનો ઉપભોગ કર્યા વિના તે મુક્ત થઈ શકતો નથી “—એવં”

अथ पञ्चमाध्ययनम् ।

अथ चतुर्थास्त्रद्वारसमाप्त्यनन्तर पञ्चममास्त्रद्वार प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायमभिसन्ध्यः । अनन्तराध्ययनेऽब्रह्मस्वरूपं प्रोक्त, तच्च परिग्रहे सत्येव भवतीति परिग्रहस्वरूप निरूप्यते—‘जम्बू’ इत्यादि ।

मूलम्—जम्बू । एतौ परिग्रहो पंचमो उ नियमा णाणाम-
णिकणगरयण महरिह परिमल-सुपुत्तदार-परिजण-दासीदास-
भयग-पेस्त-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर अय-गवेलग-सीया-
सगड-रह-जाण-जुग-सदण-सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धन्न-
पाणभोयणाच्छायण-गधमल्ल-भायण-भवणविहि चेव बहुविहियं
भरह णगणगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-
मंडव-संवाह-पट्टण-सहस्सपरिमंडिय थिमियमेणीय एगच्छत्तं
ससागर भुंजिऊण वसुह अपरिमियमेणंततण्हमणुगयमहिच्छ-
सारनिरयमूलो, लोभकलिकसायमहक्खंधो, चितासयनिचिय
विउलसालो, गारवपविरल्लियग्गविडवो, नियडितया पत्तपल्लवधरो,
पुप्फफल जस्स कामभोगा आयासविसूरणाकलहपकंपियग्ग-
सिहरो नरवइसपूजिओ, बहुजणस्स हिययदइओ, इमस्स
मोक्खवरसुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ चरिम अहम्मदार ॥सू०१॥

पाचवा आस्त्रद्वार प्रारभ—

चतुर्थ आस्त्रद्वार की समाप्ति के बाद अब पाचवा आस्त्रद्वार प्रारभ होता है । इसका पूर्व आस्त्रद्वार के साथ इस प्रकार से संबध है—चतुर्थ द्वार में जो अब्रह्म का स्वरूप कहा है वह अब्रह्म, परिग्रह के होने पर ही होता है इसलिये सूत्रकार इस द्वार में परिग्रह का स्वरूप

पायभा आस्त्रव-दारनो प्रारभ

ચોથુ આવસ્ર દાર પૂરૂ કર્યા પછી હવે પાચમા આસ્ત્રવ દારનુ વર્ણન શરૂ થાય છે તેનો આગળના આસ્ત્રવદાર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે—

ચોથા દારમા અબ્રહ્મનુ જે સ્વરૂપ કહ્યું છે તે અબ્રહ્મ, પરિગ્રહ હોય તો જ થાય છે તેથી સૂત્રકાર આ દારમા પરિગ્રહના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરે છે—



હે નાના પ્રકાર કે દુઃખો કા દાતા હે । (તિ વેમિ) જેસા હે જન્મ । મેં કહતા હુ । ઇસ પ્રકાર સુધર્માસ્વામીને જન્મસ્વામી કો ઇસકે વિષય મેં સમજાયા હે ॥ સૂ.૧૫ ॥

॥ ચતુર્થ અધર્મદ્વાર સમાપ્ત ॥

માન છે, અને “ દુસ્ત ” તેનુ અવસાન હુત છે—નાના પ્રકારના હુ ખો દેના3 છે “ તિવેમિ ” એવું છે જન્મ । હું કહું છું આ જન્મસ્વામીને સુધર્મસ્વામીએ અપ્રજ્ઞના વિષે સમજાવ્યું છે. ॥ સૂ. ૧૫ ॥

ચોથું આશ્રવ (અધર્મ)દ્વાર સમાપ્ત થયું.

अय-गवेलग-सीयासगड-रह-जाण-जुग-सदण-सयणा-सण-वाहण-कुविय-
 धण-धन्न-पाण-भोयण-च्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवणविहिं ' नानामणि—
 कनक-रत्न-महार्ह-परिमल-सपुत्रदार-परिजन-दासी-दास-भृतक-प्रेष्य-हय-
 गज-गो-महिषो-उट्ट-खर-अज-गवेलक - शिविका - शकट-रथ-यान-युग्य-
 स्यन्दन-शयनाऽऽसन-वाहन-कुप्य-धन-धान्य-पान-भोजना-ऽऽच्छादन-गन्ध-
 माल्य-भाजन-भवनविधिम् । तत्र- ' णाणामणि ' नानामणयः-नाना=अनेक
 प्रकारा ये मणय =चन्द्रकान्तादयः, ' कणग ' कनक=सुवर्ण ' रयण ' रत्नानि=
 कर्केतनादीनि, ' महरिह परिमल ' महार्ह परिमलाः - बहुमूल्यसुगन्धिपदार्थाः,
 तथा ' सपुत्रदार ' सपुत्रदाराः-पुत्रसहिताः स्त्रियः, तथा ' परिण ' परिजन-
 परिवारः=पौत्रादिरूप, ' दासीदास ' दासीदास=दास्यो दास्यश्च ' भयग '
 भृतकाः=कर्मकराः, ' पेस ' प्रेष्या -प्रयोजनेषु प्रेषणीयाः, ' हय ' हया-अश्वाः
 ' गय ' गजाः ' गी ' गावः ' महिस ' महिषाः ' उट्ट ' उट्टाः, ' खर ' खराः
 गर्दभाः ' अय ' अजाः ' गवेलग ' गवेलका =मेपा, ' सीया ' शिविकाः, ' सगड ' शक-
 टानि=गन्धः, ' रह ' रथाः ' जाण ' यानानि यानपात्राणि ' जुग ' युग्यानि गोल-
 देश प्रसिद्ध जम्पानविशेषाः ' सदण ' स्यन्दनाः-रथविशेषा, ' सयणासण '
 शयनासनानि=शय्या आसनानि च ' वाहण ' वाहनानि-' तामजाम ' इति देशी

-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड रह-जाण-जुग-सदण-
 सयणा-ऽऽसन-वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण-च्छायण-गध-
 मल्ल-भायण-भवण-विहिं) चन्द्र कान्त आदि विविध प्रकार के मणि,
 कनक-सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, बहुमूल्य परिमल-सुगन्धित पदार्थ,
 पुत्रसहित स्त्रीजन, पौत्रादिरूप परिजन, दामी दास, भृतक-कर्मकर,
 प्रयोजन के अवसर पर भेजने योग्य प्रेष्य, हय-अश्व, गज-हाथी, गाय,
 महिष, उट्ट, खर-गधा, अज-बकरावकरी, गवेलक-मेप-मेढा, शिविका-
 पालखी, शकट-गाड़ी, रथ, यानपात्र, युग्य-गोलदेश प्रसिद्ध जम्पाविशेष
 स्यन्दन-रथ, शय्या, आसन, वाहन-तामजान, कुप्य-गृह के उपकरण

महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड रह-जाण-जुग-सदण-सयणा-ऽऽसन-
 वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण-च्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवण-विहिं ”
 चन्द्रकान्त आदि विविध प्रकारना मणि, कनक-सुवर्ण कर्केतन आदि रत्न,
 बहुमूल्य परिमल-सुगन्धित पदार्थ, सपुत्र स्त्रीजन, पौत्रादिरूप परिजन, दास-
 दासी, भृतक-कर्मकर, प्रयोजनने भाटे भेजलवाभा आवनार प्रेष्य (हय)
 हय-अश्व, गज-हाथी, गाय, लेश उट्ट, अज-बकरी, अज-भकण भकरी,
 गवेलक मेढा, शिविका-पालखी, शकट-गाड़ी, रथ, यानपात्र, युग्य, स्यन्दन-रथ

ટીકા—‘ જન્મુ ’ ઇત્યાદિ—

સુધર્મા સ્વામી પશ્ચમાશ્રવદ્વારસ્વરૂપ જિજ્ઞાસમાન જન્મુસ્વામિન પ્રતિ પ્રાઠ—
‘ જન્મુ ’ હે જન્મુઃ । ‘ એત્તો ’ ઇત્યતુર્થાશ્રવદ્વારાદનન્તરં ‘ પરિગ્રહો ’ પરિગ્રહ—
પરિગ્રહણ પરિગ્રહ્યતે મૂર્ચ્ઝારૂપેણ મૂર્ચ્ઝાપરિગ્રહોત્તો ઇતિ રચનાત્ ધર્મોપકરણ
વિનેત્યર્થે ઇતિ વા પરિગ્રહઃ = પરિગ્રહતરુર્નામ રક્ષ્યમાણવિશેષણાનુરોધાત્
પરિગ્રહશબ્દોડત પરિગ્રહતરુપરકો દ્રષ્ટવ્યઃ । ‘ પચમો ’ પશ્ચમઆશ્રવો ‘ નિયમા ’
નિયમાત્ નિશ્ચયેન ભવતિ, નાન્યઃકથનાતઃ પરઃ આશ્રવ । અય પરિગ્રહઃકથમ્ભૂતઃ?
ઇત્યાહ—‘ ણાણામણિ ’ ઇત્યાદિ । ‘ ણાણામણિ-કળગ-રયણ-મહરિહ-પરિમલ-
સપુત્તદાર-પરિજળ-દાસી-દાસ-ભયગ-પેસ્સ-હય-ગય-ગો-મહિસ-ઉટ્ટ-લ્લ-
નિરૂપિત કરતે હૈ—‘ જન્મુ એત્તો ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી પાંચવે આશ્રવ દ્વાર કે સ્વરૂપ કો
જાનને કી હચ્છવાલે શ્રી જન્મુસ્વામી સે કહતે હૈ—(જન્મુ) હે જન્મુ !
(એત્તો) ચતુર્થ આશ્રવ દ્વાર કે ઘાદ (પરિગ્રહો પચમો આશ્રવો નિયમા)
પરિગ્રહ પાચવા આશ્રવ દ્વાર નિયમ સે હૈ । હસકે ઘાદ ઓર કોઈ-
આશ્રવ દ્વાર નહી હૈ યહ વાત “ નિયમ ” શબ્દ સે સૂત્રકાર ને પ્રદર્શિત
કી હૈ ‘ ગ્રહણ કરના ’ અથવા ‘ જો મૂર્ચ્ઝાબુદ્ધિ સે ગ્રહણ કિયા
જાવે ’ વહ પરિગ્રહ હૈ ક્યોં કિ શાસ્ત્ર મેં મૂર્ચ્ઝાકો પરિગ્રહ કહા હૈ
એસી હસ પરિગ્રહ શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ । હસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર યહ
પરિગ્રહ શબ્દ યહાં પરિગ્રહ રૂપ વૃક્ષ કે અર્થ વાલા જાનના ચાહિયે ક્યોં
કિ હસે સ્પષ્ટ કરને કે લિયે જો સૂત્રકાર વિશેષણ હસી સૂત્ર મેં કહ
રહે હૈ વે હસી વાત કી પુષ્ટિ કરતે હૈ । (ણાણામણિ-કળગ-રયણ-
મહરિય-પરિમલ-સપુત્તદાર-પરિજળ-દાસી-દાસ-ભયગ-પેસ્સ-હય ગો

“ જન્મુ એત્તો ” ઇત્યાદિ

પાથમા આશ્રવતુ સ્વરૂપ જાણવાની ઇચ્છાવાળા જન્મુસ્વામીને શ્રી સુધર્મા
સ્વામી ડહે છે—“ જન્મુ ” હે જન્મુ ! “ એત્તો ” એથા આશ્રવ દ્વાર પછી “ પરિ-
ગ્રહો પચમો આશ્રવો નિયમા ” નિયમ પ્રમાણે જ પાથમુ આશ્રવ દ્વાર પરિ-
ગ્રહ આવે છે ત્યાર પછી બીજુ કોઈ પણ આશ્રવદ્વાર નથી તે જાણત
“ નિયમ ” શબ્દથી સૂત્રકારે બતાવેલ છે “ ગ્રહણ કરવુ ” અથવા ‘ જે
ગ્રહણ કરાય તે પરિગ્રહ છે, એવી આ પરિગ્રહ ગણનાની વ્યુત્પત્તિ છે તે
વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આ પરિગ્રહ શબ્દ અહી પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના અર્થવાળો
સમજવાનો છે કારણ કે તે વાતને સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૂત્રકાર જે વિશેષણો
આ સૂત્રમા કહી રહ્યા છે તે જ એ વાતને ટેકો આપે છે “ ણાણામણિ-
કળગ-રયણ-મહરિહ-પરિમલ-સપુત્તદાર-પરિજળ-દાસી-દાસ-ભયગ-પેસ્સ-હય-ગો —

द्रोणमुखानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार युक्तानि, 'कर्मड' कर्मटानि=कुत्तिसतनगराणि 'मडन' मडम्बानि-दूर दूर वसति युक्ता प्रदेशाः, 'सवाह' सवाहाः=यत्र कृयका धान्यादिक्रमानीय स्थापयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि, एतेषां द्वन्द्वः, एषा यत्सदस्य तेन मण्डित-शोभित यत्तत्तादृश, तथा 'थिमियमेयणीय' म्तिमितमेदिनीक-म्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रभयवर्जिता, मेदिनी-भूमि र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्त' एकच्छत्रम्-एकराजकमित्यर्थः, चक्रवर्त्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृशं भरतक्षेत्रं परिभुज्येत्यर्थः, तथा 'ससागर' सागरसहिताम् 'वसुह' वसुधा-समग्रा पृथ्वी च चक्रवर्त्तिपदप्राप्त्यनन्तरं भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

धेष्टनगर, जलपथ, स्थलपथ इन दोनों से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली प्राकार से युक्त खेड, कुत्तिसतनगररूप कर्मट, दूर दूर वसति से युक्त प्रदेशरूप मडन, सवाह-जहाँ पर रूपकजन धान्यादि लाकर रखते हैं ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों में किसी एक पथ से युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की संख्या से मण्डित, तथा (थिमिय-मेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा (एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्तिपद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिक-पनेमें नगनगरादि सहित (भरह) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा (ससागर वसुह भुजि ऊण) चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्र-सहित ममस्त पृथ्वीको पटखड मण्डित भरतक्षेत्र को भी भोग करके (अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिसारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

आदि श्रेष्ठ नगर, जलमार्ग तथा जमीनमार्ग प्रवेश करी राजा येवु गडेर धूना जिला वाणु जेड, कुत्तित नगर इप कर्मट जेनी आसपास धने दूर सुधी गाँवो न डोय येवु मडन, मण्ड-ज्या जेडूतो धान्यादि लावीने राजे येवा प्रदेशो, जलमार्ग तथा स्थलमार्ग ये जन्नेमाथी जेड मार्ग वाणु पत्तन, ये जधानी हुन्तरेनी मज्याथी युक्त, तथा " थिमिय मेयणीय " स्वयंके अने परयकेना लयथी रहित भूमिवाणा तथा " एगच्छत्त " जेड राजवाणा, चक्रवर्त्ति पद प्राप्त उर्या पडेला माडलिक गलत तरीके पर्वतो तथा नगरो सहित " भरह " भरतक्षेत्र पड सत्ता लोगवीने, तथा " ससागर वसुह भुजिऊण " चक्रवर्त्ति पद प्राप्त उर्या पछी समुद्र सहित आभी पृथ्वीने-छ जड वाणा भरत क्षेत्रने पछु लोगवीने " अपरि-मियमणत-तण्ह-मणुगय-महिसार-निरयमूलो " अपरि-

ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ, 'કુપિય' કુપ્યાનિ-ગૃહોપકરણાનિ આસન્દીપત્યદ્વાદીનિ 'ધન' ધનાનિ-ગણિમાદીનિ 'ધન' ધાન્યાનિ-શાલ્યાદીનિ, 'પાણ' પાનાનિ=દુગ્ધાદીનિ, 'ભોગ' ભોજનાનિ - અશ્નાદીનિ 'આન્ઝાયગ' આન્ઝાટનાનિ-વસ્ત્રકમ્વલાદીનિ, 'ગધ' ગન્ધા - કોષ્ઠપુટાદિ સુગન્ધિદ્રવ્યવિશેષાઃ, 'મલ્લ' માલ્યાનિ = પુષ્પાદીનિ 'ગધ' ગન્ધા - કોષ્ઠપુટાદિ સુગન્ધિદ્રવ્યવિશેષાઃ, 'મલ્લ' માલ્યાનિ=પુષ્પાદીનિ, 'ભાયણ' ભાજનાનિ-મ્થલીકટોરાદીનિ, 'ભવણ' ભવનાનિ-પ્રાસાદગૃહાદીનિ, एतेषा द्वन्द्वः, તેષાં યો 'વિહિ' વિધિ - વિધાનમ્-ઉપાર્જનાદિ લક્ષણ, ત 'ચેવ' એવ=અપિ, એવ શબ્દોઽપ્પર્યકઃ, તમપિ 'વહુવિહિય' વહુવિધિકમ્-અનેકપ્રકારમ્ 'શુજિઝ્ઞ' શુક્તતા=ઉપશુજ્ય હત્યગ્રેણ સમ્યગ્, તથા 'ભરહ' ભરત = ભરતક્ષેત્ર ચ શુક્તતા = કોદશ ભરતક્ષેત્રમિત્યાહ ? — 'નગ નગર' इत्यादि । 'નગનગરનિગમજણવયપુરવરદોળમુહસ્વેડકબ્બડમડવસવાહપટ્ટણસહસ્સપરિમહિય' નગ-નગર-નિગમ-જનપદ-પુરવર-દોળમુહસ્વેડ-કર્બટ-મડવ-સવાહ-પટ્ટણ સહસ્સપરિમહિતમ્, તત્ર-'નગ' નગાઃ-પર્વતા. 'નગર' નગરાણિ કર્વર્જિતપુરાણિ, 'નિગમ' નિગમાઃ=વણિગ્નિવાસસ્થાનાનિ, 'જણવય' જનપદા = દેશા 'પુરવર' પુરવરાણિ=નગરથ્રેષ્ઠાણિ રાજધાન્યાદીનિ, 'દોળમુહ'

કુરસી પલગ આદિ, ગણિમાદિક ધન, શાલ્યાદિક ધાન્ય, દુગ્ધાદિરૂપ પાન, ભોજન, વસ્ત્ર, કમ્વલ આદિ આચ્છાદન, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગંધિત દ્રવ્યવિશેષ, પુષ્પ, સ્વાલી કટોરા આદિ ભાજન, પ્રાસાદ ગૃહ આદિ ભવન, इन सब पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (वहुविहिय चेव) અનેક પ્રનારની વિધિની કોંઘી (શુજિઝ્ઞ) ભોગ કરકે, તથા (નગનગર-નિગમજણવય પુરવર-દોળમુહ-સ્વેડ-કર્બટ-મડવ-સવાહ પટ્ટણસહસ્સ પરિમહિય) નગ-પર્વત, નગર-અષ્ટાદશ પ્રકાર કે કર સે રહિત પુર, 'વણિજનો' કે નિવાસ સ્થાનરૂપ નિગમ, જનપદ-દેશ, રાજધાની આદિ

શય્યા, આસન, વાહન, કુપ્ય-પુરસી પલગ આદિ ધરતુ રાગ રચીતુ, સેના મહોર આદિ ધન, શોખા આદિ ધાન્ય, દૂધ આદિ પેય દ્રવ્યો, ભોજન, વસ્ત્ર, કામળ આદિ ઓઢવાના સાધનો, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગંધિત દ્રવ્યો, પુષ્પ, થાળી વાટકા આદિવાસણો, પ્રાસાદ ગૃહ અને ભવન, એ સઘળા પદાર્થોનું ઉપાર્જન કરવારૂપ "વહુવિહિય ચેવ" અનેક પ્રકારે તેનો "શુજિઝ્ઞ" ઉપલોગ કરીને, તથા "નગનગરનિગમજણવય - પુરવર - દોળમુહ - સ્વેડ - કર્બટ-મડવ-સવાહ-પટ્ટણ-સહસ્સ-પરિમહિય" નગ-પર્વત, નગર અઠાર પ્રકારના કુંથી રહિત શહેર, વેપારીઓના નિવાસસ્થાનરૂપ નિગમ, જનપદ-દેશ રાજધાની

द्रोणमुत्त्वानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार
युक्तानि, 'कर्वड' कर्वटानि=कुत्तिसतनगराणि 'मडन' मडम्बानि-दूर दूर
वसति युक्ता प्रदेशाः, 'सवाह' सवाहाः=यत्र कृपका धान्यादिक्रमानीय स्था-
पयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि,
एतेषां द्रव्यः, एषा यत्सहस्र तेन मण्डित-शोभित यत्तत्तादृश, तथा 'थिमियमेय-
णीय' स्तिमितमेदिनीक-स्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रभयवर्जिता, मेदिनी-भूमि
र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्त' एकच्छत्रम्-एकराजकमित्यर्थः, चक्र-
वर्त्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृशं भरतक्षेत्र परिभुज्येत्यर्थः, तथा
'ससागर' सागरसहिताम् 'वसुह' वसुधा-समग्रा पृथ्वीं च चक्रवर्त्तिपदप्राप्त्य-
नन्तरं भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

श्रेष्ठनगर, जलपथ, स्थलपथ इन दोनों से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली
प्राकार से युक्त खेड, कुत्तिसतनगररूप कर्वट, दूर दूर वसति से युक्त
प्रदेशरूप मडन, सवाह-जहां पर कृपकजन धान्यादि लाकर रखते हैं
ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों में किसी एक पथ से
युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की संख्या से मण्डित, तथा (थिमिय-
मेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा
(एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्तिपद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिक-
पनेमें नगनगरादि सहित (भरह) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा
(ससागर वसुह भुजि ऊण) चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्र-
सहित समस्त पृथ्वीको पटखड मण्डित भरतक्षेत्र को भी भोग करके
(अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिसारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

आदि श्रेष्ठ नगर, जलमार्ग तथा जमीनमार्ग प्रवेश करी शक्य ऐसे शहर
धूना जिला वाणु जेड, कुत्तित नगर रूप कर्वट जेनी आसपास धरे हुए
सुधी गांवो न होय ऐसे मडन, सवाह-ज्या जेदूतो धान्यादि लावीने राखे
ऐसा प्रदेशो, जलमार्ग तथा स्थलमार्ग ऐ जन्नेमाथी ऐक मार्ग वाणु पत्तन,
ऐ जधानी हुन्तरेनी मज्याथी युक्त, तथा " थिमिय मेयणीय " स्वयंके अने
परयंकेना लयथी रहित भूमिवाणा तथा " एगच्छत्त " ऐक राजवाणा, चक्रवर्त्ति
पद प्राप्त कर्या पडेला मांडलिक गन्त तरीडे पर्वतो तथा नगरो सहित " भरह "
भरतक्षेत्र पर सत्ता लोगवीने, तथा " ससागर वसुह भुजिऊण " चक्रवर्त्ति पद
प्राप्त कर्या पछी समुद्र सहित आभी पृथ्वीने-छ भंड वाणा भरत क्षेत्रने
पणु लोगवीने " अपरि-मियमणत-तण्ह-मणुगय-महिसार-निरयमूलो " अपरि-

भाषा प्रसिद्धानि, 'कुत्रिय' कुप्यानि-गृहोपकरणानि आसन्दीपल्यद्कादीनि 'घण'
 धनानि-गणिमादीनि 'धन्न' धान्यानि-शाल्यादीनि, 'पाण'पानानि=दुग्धादीनि,
 'भोग' भोजनानि-अशनादीनि 'आच्छादण' आच्छादनानि-वस्त्रक
 म्बलादीनि, 'गघ' गन्धा-कोष्ठपुट्टादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल'
 माल्यानि=पुष्पादीनि 'गघ' गन्धा-कोष्ठपुट्टादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः,
 'मल्ल' माल्यानि=पुष्पादीनि, 'भायण' भाजनानि-स्थलीकटोरादीनि, 'भवन'
 भवनानि-प्रासादगृहादीनि, एतेषा द्वन्द्वः, तेषां यो 'विहि' विधि-विधानम्-
 उपार्जनं लक्षण, त 'चेव' एव=अपि, एव शब्दोऽप्यर्थकः, तमपि 'बहुविहिय'
 बहुविधिकम्-अनेकप्रकारम् 'भुजिऊण' भुज्या=उपभुज्य इत्यग्रेण सन्त्यः, तथा
 'भरह' भरत = भरतक्षेत्र च भुज्या = कोट्य भरतक्षेत्रमित्याह ? — 'नग
 नगर' इत्यादि । 'नगनगरनिगमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकब्बडमडसवाहण
 पट्टणसहस्सपरिमडिय' नग-नगर-निगम-जनपद-पुरवर-दोणमुहखेड-कर्वट
 मडम्भ-सवाह-पत्तन सहस्सपरिमण्डितम्, तत्र- 'णग' नगाः-पर्वताः 'गगर'
 नगराणि करवर्जितपुराणि, 'निगम' निगमाः=गणित्यासस्थानानि, 'जणवय'
 जनपदा = देशा 'पुरवर' पुरवराणि=नगरश्रेष्ठानि राजधान्यादीनि, 'दोणमुह'

कुरसी पल्लग आदि, गणिमादिक धन, शाल्यादिक धान्य, दुग्धादिरूप
 पान, भोजन, वस्त्र, कम्बल आदि आच्छादन, कोष्ठपुट्ट आदि सुगन्धित
 द्रव्यविशेष, पुष्प, स्थाली कटोरा आदि भाजन, प्रासाद गृह आदि भवन,
 इन सब पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (बहुविहिय चेव) अनेक
 प्रकार की विधि को भी (भुजिऊण) भोग करके, तथा (नगनगर-
 निगमजणवय पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडव-सवाह पट्टणसहस्स
 परिमडिय) नग-पर्वत, नगर-अष्टादश प्रकार के कर से रहित पुर,
 घणित्जनो'के निवास स्थानरूप निगम, जनपद-देश, राजधानी आदि

शय्या, आसन, वाहन, कुम्भ-भुरसी पल्लग आदि धरतु रात्रि रथीयु, सेना
 भंडार आदि धन, शाल्या आदि धान्य, दूध आदि पेय द्रव्यो, लोह, वस्त्र,
 कामण आदि आढवाना साधनो, कोष्ठपुट्ट आदि सुगन्धित द्रव्यो, पुष्प, थाणी
 वाटका आदिवासणो, प्रासाद गृह अने भवन, ओ सधणा पदार्थोनु उपार्जन
 करवाइय " बहुविहिय चेव " अनेक प्रकारे तेनो " भुजिऊण " उपलोग
 करीने, तथा " नगनगरनिगमजणवय - पुरवर - दोणमुह - खेड - कब्बडमडव-
 सवाह-पट्टण-सहस्स-परिमडिय " नग-पर्वत, नगर अठार प्रकारना करथी
 रहित शहर, वेपारीआना निवासस्थानइय निगम, जनपद = नी

ત્વક્પત્રપલ્લવાઃ, તેવા ધર-પારમ્ । તન્ના 'જસ્સ' યન્ન પરિગ્રહતરોઃ 'કામ-
ભોગા' કામાભોગા એવ 'પુષ્પફલ્લ' પુષ્પફલાનિ । તન્ના-આયાસવિસૂરણા-
કલહપ્રકપિયગ્ગસિહરો ' આયાસવિસૂરણાકલહપ્રકમ્પિતાગ્રશિખરઃ-આયાસઃ=
શરીરશ્રમઃ, વિસૂરણા=માનસી પીડા, કલ્હઃ=ચનમ્બનમ્, એત્ત એવ પ્રકમ્પિત-
મગ્રશિખરમ્=અગ્રભાગો યસ્થ સઃ, તથા 'નરવહસપૂજિઓ' નરપતિસપૂજિતઃ=
ભૂતિપરિસેવિતઃ, તથા -'વહુજણસ્સ હિયયદ્દઓ' વહુજનસ્ય હૃદયદયિતઃ-
અનેકજનપલ્લભઃ इत्यर्थः, તન્ના-અય પરિગ્રહ તરુઃ-'ઇમસ્સ' અસ્ય-પ્રત્યક્ષસ્ય
'મોક્ષવરમુક્તિમગ્ગસ્સ' મોક્ષવરમુક્તિમાર્ગસ્ય-મોક્ષસ્ય રુ-શ્રેષ્ઠો યો મુક્તિરૂપો
નિર્લોભતારૂપો માર્ગ=ઉપાયસ્તસ્ય 'ફલિહભૂઓ' અર્ગલાભૂતઃ-મોક્ષસ્યાવરોધક-
ફાષ્ટભૂતો વર્ત્તને, इत्येव स्वरूप 'चरम अहम्मद्वार' चरममधर्मद्वारम्=अन्तिम-
मधर्मद्वारम् । एतत्कवनेन यादृशेति प्रथममन्तरद्वारमुक्तम् ॥ सू. १ ॥

માયાચારી હી જિસકી ઝાલ है, पत्र हैं और पल्लव हैं । (जस्स पुष्पफल
कामभोगा) कामभोग ही जिसके पुष्प और फल हैं । (आयासविसूर-
णाकलहपकपियगसिहरी) आयास शारीरिकश्रम विसूरणा-मानसिक
पीडा, और कलह, ये ही जिस के प्रकपित अग्रभाग हैं (नरवहसपूजिओ)
तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष भूपतियों द्वारा परिसेवित है, -और (वहुजण-
स्सहिययदइओ) अनेक जनों को अत्यंत प्यारा है, (इमस्स मोक्खवर
मुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ) तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष मोक्ष के श्रेष्ठ
मुत्तिरूप-निर्लोभतारूप-मार्ग का अर्गला रूप है । (चरिम अहम्मद्वार)
ऐसा यह पांचवा अन्तिम अधर्मद्वार है ।

भावार्थ—परिग्रह नाम ममत्वभाव का है । इसकी दूसरी सजा
मूर्च्छा भी है । इस मूर्च्छारूप तृष्णा का अन्त नहीं है । परिग्रह के

मायाचारी જ તેની છાલ પાન અને પલ્લવ છે “ જસ્સ પુષ્પફલ કામભોગા ”
કામભોગ જ તેના પુષ્પ અને ફળ છે “ આયાસ વિસૂરણાકલહપકપિયગ્ગ
સિહરો ” આયાસ-શારીરિકશ્રમ, વિસૂરણા-માનસિક પીડા અને કલહ, એ જ
તેના ડોલાયમાન અગ્રભાગો છે “ નરવહ સપૂજિઓ ” તથા આ પરિગ્રહરૂપ
વૃક્ષનું નૃપો એવન કરે છે અને “ વહુજણસ્સ હિયયદ્દઓ ” તે અનેક લોકોને
અત્યંત પ્રિય લાગે છે, “ ઇમસ્સ મોક્ષવરમુક્તિમગ્ગસ્સ ફલિહભૂઓ ” તથા આ
પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષ મોક્ષના શ્રેષ્ઠ મુક્તિરૂપ-નિર્લોભતારૂપ માર્ગના આડે આવ-
ળીયા જેવું છે “ ચરિમ અહમ્મદ્વાર ” એવું આ પાંચમું અધર્મ દ્વાર છે

ભાવાર્થ—મમત્વ લાવને પરિગ્રહ કહે છે તેનું નામ મૂર્છા પણ છે આ
મૂર્છારૂપ તૃષ્ણાનો પાર જ હોતો નથી પરિગ્રહના પાંચમા કાવ્યેલ એવ

રમૂલો ' અપરિમિતાનન્તતૃણાનુગતમહેચ્છાસારનિરમૂલઃ, અપરિમિતા=પ્રમાણ-
રહિતા યાઽનન્તતૃણા તયાઽનુગતા યા મહેચ્છા = અપ્રાપ્તાર્થામિતાપરૂપા તસ્યાઃ
સાર=સ્થિરાંશરૂપો યો નિરમો દુર્ગતિ સ ણ્વ મૂલ યમ્ય પરિગ્રહતરો ર્યઃ સઃ
તથોક્ત, પુનઃ કીદશ પરિગ્રહતરુરિત્યાહ—' લોભકલિક્ષમાયમદ્વચ્ચધો ' લોભ-
કલિક્ષમાયમદ્વચ્ચધો=લોભઃ, કલિઃ=યુદ્ધમ્, ક્ષમાય - ક્રોધમાનમાયારૂપશ્ચ
મહાન્ સ્કન્ધો યસ્ય સ, યદ્યપિ ક્ષમાય ગ્રહણેનૈવ લોભો ગતાર્ય, તથાપિ તસ્ય પ્રાધા-
ન્ય રૂપાપનાર્થે પૃથગુપાદાનમ્ । તથા ચિંતામયનિચિય વિઝલસાલો ' ચિન્તાશત
નિચિતવિપુલશાલઃ—ચિન્તાગતાનિ નિચિતાનિ-એકત્રીકૃતાન્યેવ ત્રિપુટા—વિશાલા
શાલાઃ—શાખા યસ્ય સ ' ચિન્તાશતરૂપવિપુલશાખાસમન્વિતઃ । તથા—' ગારવ
પવિરલ્લિયગ્ગ વિડવો ' ગૌરવપવિરલ્લિયાગ્રવિટપ - ' ગારવ ' ગૌરવાણિ=
ઋદ્ધિરસસસાતરૂપાણ્યેવ ' પવિરલ્લિય ' વિસ્તારનન્ત, અગ્ર દેશીશબ્દઃ ' અગ્ર-
વિડવ ' અગ્ર વિટપાઃ=શાખામધ્યભાગાગ્રાણિ યસ્ય સઃ, તથા ' નિયદિતયા પત્ત
પલ્લવધરો ' નિકૃતિત્વરૂપપલ્લવધરઃ—નિકૃતિ—માયા, સૈવ ' તયાપત્તપરચ્ચ '

રહિત—એસી અનન્તતૃણા સે અનુગત અપ્રાપ્ત અર્થ કી અભિલાષ રૂપ
મહેચ્છા કા સાર—સ્થિરાંશરૂપ જો નિરમ—દુર્ગતિ હૈ વહ દુર્ગતિ હી જિસ
પરિગ્રહરૂપ તરુ કા મૂલ હૈ (લોભકલિક્ષમાયમદ્વચ્ચધો) તથા જિસકે
મહાન્ સ્કન્ધ, લોભ—લાલચ, કલિ—યુદ્ધ એવ ક્રોધ, માન, માયા, કષાય
યે હૈ । યદ્યપિ ક્ષમાય કે ગ્રહણ સે લોભ કા ગ્રહણ હો જાતા હૈ ફિર બી
ઉસકા જો યહા પૃથક્ રૂપ સે ગ્રહણ ક્રિયા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય ઉસકી
પ્રધાનતા દિશ્વલને કા હૈ । તથા (ચિંતામયનિચિય વિઝલ સાલો) જિસકી
વિશાલ શાખાઈ એકત્રીભૂત સેકડો ચિન્તઈ હૈ । તથા (ગારવપવિરલ્લિયગ-
વિડવો) ઋદ્ધિ રસસાતરૂપ ગૌરવ હી જિસકે વિસ્તાર યુક્ત અગ્રવિટપ હૈ—
શાખા કે મધ્યભાગ એવ અગ્રભાગ હૈ । (નિયદિતયાપત્તપલ્લવધરો) નિકૃતિ—

મિત—પ્રમાણ રહિત તૃણાથી અપ્રાપ્ત વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા રૂપ મહે-
ચ્છાનો સાર—સ્થિરાંશરૂપ જે દુર્ગતિ છે તે દુર્ગતિ જ તે પરિગ્રહરૂપી વૃક્ષનું
મૂળ છે, “ લોભકલિક્ષમાયમદ્વચ્ચધો ” લોભ, —લાલચ, કલિ—યુદ્ધ અને ક્રોધ,
માન, માયા, કષાય આદિ તે વૃક્ષના મહાન્ સ્કન્ધો છે જે કે કષાયના લોભનો
સમાવેશ થઈ જાય છે છતાં પણ તેને અહીં અલગ રીતે ગ્રહણ કરવામાં
આવેલ છે તેનો હેતુ તેની પ્રધાનતા બતાવવાનો તથા “ ચિંતામય નિચિય વિઝલ
સાલો ” સેકડો એકત્રિત ચિંતાઓ તેની શાખાઓ છે તથા “ ગારવ પવિરલ્લિ-
યગ્ગવિડવો ” ઋદ્ધિરસ સાતરૂપ ગૌરવ જ તેના વિસ્તાર યુક્ત અગ્રવિટપ છે—
શાખાના મધ્ય ભાગ અને અગ્રભાગ છે “ નિયદિતયાપત્તપલ્લવધરો ” નિકૃતિ—

અધુના યન્નામેતિ દ્વિતિયમન્તરદ્વારમાહ—

મૂલમ્—તસ્સ નામાણિ ગોણાણિ હંતિ તીસ, ત જહા—
પરિગ્રહો ૧, સચયો ૨, ચયો ૩, ઉવચયો ૪, નિહાણં ૫,
સંભારો ૬, સંકરો ૭ એવં આચારો ૮, પિહો ૯ દવ્વસારો
૧૦, તહા મહિચ્છા ૧૧, પહિવંધો ૧૨, લોહપ્પા ૧૩, મહટ્ટી
૧૪, ઉવગરણ ૧૫, સરક્કલણાય ૧૬, ભારો ૧૭, સંપાયુપાયકો
૧૮, કલિકરડી ૧૯, પવિત્થરો ૨૦, અણત્થો ૨૧, સથવો ૨૨
અગુત્તી ૨૩, આયાસો ૨૪, અવિઓગો ૨૫, અમુત્તી ૨૬, તળહા
૨૭, અણત્થગો ૨૮, અસત્થી ૨૯ અસતોસે ૩૦, તિવિય,
તસ્સ ણ્યાણિ એવમાદી નામધેજાણિ હંતિતીસં ॥ સૂ૦ ૨॥

ટીકા—‘ તસ્ય ચ ’ ઇત્યાદિ—

‘ તસ્સ ’ તસ્ય—પરિગ્રહ નામક પન્ચમાધર્મદ્વારસ્ય ચ ‘ નામાણિ ’ નામાનિ
‘ ઇમાનિ—અનુપદ વક્ષ્યમાણાનિ ‘ ગોણાણિ ’ ગોણાનિ—ગુણનિષ્પન્નાનિ ‘ હુતિ ’
ભવન્તિ, કિયત્સરયકાનિ ભવન્તિ ? ઇત્યાહ—‘ તીસ ’ ત્રિશત્સગ્ન્યક્રાનીતિ,
‘ તજહા ’ તથયા—‘ પરિગ્રહો ’ પરિગ્રહઃ—પરિગ્રહ્યતે ઇતિ પરિગ્રહઃ—હિરણ્ય
સુવર્ણ ધનધાન્યાદિ, ૧ ‘ સચયો ’ સચયઃ—ગ્રનધાન્યાદિ રાશીના સમૂહી કરણમ્ ૨
‘ ચયો ’ ચય—એકૈકમિતિકૃત્વાઽઽદાનમ્ ૩, ‘ ઉવચયો ’ ઉવચયઃ—એકૈકમિતિ-
કૃત્વાઽઽદત્તાના ધનગ્રાન્યાદિના રાશિકરણમ્ ૪, ‘ નિહાણ ’ નિગ્રાન મુમ્યાદૌ

અથ “ યન્નામ ” ઇસ દ્વિતીય અન્તર્દ્વાર કો સૂત્રકાર કહતે હૈ—
‘ તસ્સ નામાણિ ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) ઇમ્ પરિગ્રહ કે (ગોણાણિ નામાણિ તીસ હુતિ)
ગુણ નિષ્પન્ન તીસ નામ હ । (તજહા) વે ઇમ્ પ્રકાર હૈ—(પરિગ્રહો ૧,
સચયો ૨, ચયો ૩, ઉવચયો ૪, નિહાણ ૫, સંભારો ૬, સંકરો ૭, એવ

હવે “ યન્નામ ” એ ખીન્ત અન્તર્દ્વારનું સૂત્રકાર વર્ણન કરે છે—

“ તસ્સ નામાણિ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તસ્સ ” આ પરિગ્રહના “ ગોણાણિ નામાણિ તીસ હુતિ ” ગુણ-
નુમાર ત્રીસ નામો છે “ ત જહા ” તે ત્રીસ નામો આ પ્રમાણે છે—“ પરિ-
ગ્રહો ૧ સચયો ૨ ચયો ૩ ઉવચયો ૪ નિહાણ ૫ સંભારો ૬ સંકરો ૭ એવઆચારો ૮

ફદે મેં ફાંસા જુઆ પ્રાણી અપની અનન તૃણામૃતોં કી પૂર્તિ કરને મેં હી લગા રહના હૈ । ઉસકી કોઈ મી તૃણા જ્ઞાન નહીં હોતી હૈ । યદિ કદા-
ચિત્ કોઈ તૃણા શાંત મી હો જાવે તો દૂમરી તૃણા ઉમરે સમક્ષ
મુંહ ફાઢકર આ જાતી હૈ, ઓર ઉસકી પૂર્તિ કરને મેં યહ લગ
જાતે હૈ । હમ તરહ કરતે ૨ યહ પ્રાણી ઉનકી પૂર્તિ કરને મેં આસ-
ક્તિ સે વધ હોતા જાતા હૈ ઓર અપના વિવેક તો ઘટતા હૈ ।
વિવેક કા સો વૈઠના પરિગ્રહ હૈ । યજ્ઞ પર સૂત્રકાર ને ઢગ પરિગ્રહરૂપ
પંચમ આસ્રવ દ્વાર કા વર્ણન વૃક્ષ કે રૂપક સે કિયા હૈ । પરિગ્રહી જીવ
છોટી, વડી, જહ, ચેતન, બાહ્ય યા આન્તરિક્ષ ચાહે જો વસ્તુ હો, ઓર
કદાચિત્ ન મી હો તો મી ઉસમેં વધ જાતા હૈ । નાના પ્રકાર કે મણિ
આદિ પદાર્થોં કો ભરતણ્ડ કી પૂર્ણ ત્રિભૂતિ કો ભોગ કરકે મી પરિગ્રહી
જીવ કી તૃણા અનવરત અશાંત હી રહતી હૈ । હમ વૃક્ષ કી જહ,
સ્કંધ, વિશાલ શાખાં, અગ્રવિટપ, છાલ પત્ર, પલ્લવ, પુષ્પ, ફલ, આદિ
કયા ૨ હૈં યહ સવ વિષય હી હસ સૂત્ર મેં વિવેચિત્ કિયા ગયા હૈ ।
હસ તરહ કે કથન સે સૂત્રકાર ને પરિગ્રહ કા યાદશ નામના જો પ્રથમ
અન્તર્દાર હૈ ઉસકા વર્ણન કિયા હૈં, કયો કિ હસ દ્વાર મેં સ્વરૂપ કા કથન
હોતા હૈ, વહ યહા પર અચ્છી તરહ સે દિગલા દિયા ગયા હૈ ॥સૂ. ૧॥

પોતાની અનન તૃણામૃતો પૂરી ડરવામા જ મડ્યા રહે છે તેની કેમ પણ તૃણા
શાંત પડતી નથી જો કેમ તૃણા શાંત પડી તો તેની જગ્યાએ બીજી તૃણા
મોઢુ ફાડીને તૈયાર થઈ જાય છે, અને તે સતોષવાને તે જીવ પ્રવૃત્ત થાય
છે આમ કરતા કરતા તેની પૂર્તિ કરવામા આસક્તિથી બધાઈ જાય છે અને
પોતાની વિવેક બુદ્ધિ શુભાવી દે છે વિવેકને ખોઈ નાખવો તે પરિગ્રહ છે
અહીં સૂત્રકારે પરિગ્રહ નામના પાચમા આસ્રવ દ્વારનું વર્ણન પરિગ્રહને વૃક્ષનું
રૂપક દર્શને કર્યું છે પરિગ્રહી જીવ, નાની, મોટી, જડ, ચેતન, બાહ્ય કે
આંતરિક્ષ ગમે તે પ્રકારની ચીજમા આસક્ત બની જાય છે વિવિધ પ્રકારના
મણિ આદિ પદાર્થોના તથા ભરતણ્ડની સંપૂર્ણ સમૃદ્ધિનો ઉપભોગ કરીને
પણ પરિગ્રહી જીવની તૃણા સતત અશાંત જ રહે છે આ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના
મૂળ, થડ, વિશાળ શાખાઓ, અગ્રવિટપ, છાલ, પાન, પલ્લવ, પુષ્પ, ફળ
વગેરે શુ શુ છે, તે બધાનું વિવેચન આ સૂત્રમા ડરવામા આવ્યું છે આ
પ્રમાણેના ઉચ્ચત વડે સૂત્રકારે પરિગ્રહના યાદશ (ડેવા પ્રકારનું) નામના પડેલા
અંતર્દારનું વર્ણન કર્યું છે, કારણ કે આ દ્વારમા સ્વરૂપનું કથન થાય છે તે
સ્વરૂપનું વર્ણન અહીં સુદર રીતે ડરવામા આવ્યું છે ॥ સૂ-૧ ॥

एवम्-यथा धनप्राप्तिर्भवेदयम्, आचारः-आचरणम् ८, ' पिण्डो ' पिण्ड = धन-
धान्यादीना समुदायः ९, ' द्रव्यसरो ' द्रव्यसार.-द्रव्याणामेव सर्वोत्कृष्टपदार्थ
त्वेन परिज्ञानम् १०, ' तदा ' तथा ' महिच्छा ' महेच्छा-अपरिमितमाञ्छा ११,
' पटिवधो ' प्रतिबन्धः-आसक्तिकारकः १२, ' लोहप्पा ' लोभात्मा-लोभ-

અતઃ હસકા નામ સભાર હૈ । પરિગ્રહી જીવ ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કો
કોષ્ટ આદિ મેં ભરકર રાખ દેતા હૈ-તાકિ આવશ્યકતા પડને પર વે કામ
મેં લાવે જા સકે-હસલિયે હસકા છઠા નામ સભાર હૈ ૬ । પરિગ્રહી
જીવ સુવર્ણ આદિ દ્રવ્યકે અધિક હો જાને પર ઉનકા અગ્નિ મેં ગલવા-
કર પાશા કરવા લેતા હૈ, હસલિયે હસકા સાતવા નામ સકર હૈ ૭ । ધન
કમાને કી લાલસા સે પરિગ્રહી જીવ ઁસા આચરણ કરતા હૈ કિ જિસસે ધન
કા લાભ અધિક માત્રા મેં હોતા રહે, હસલિયે હસકા આઠવા નામ એવમાચાર
હૈ ૮ । પિણ્ડ હસકા નામ હસલિયે હૈ કિ હસ મેં ધન ધાન્યાદિ પદાર્થોં કા
સમુદાય પિણ્ડરૂપ સે ઘર મેં રહા કરતા હૈ ૯ । પરિગ્રહી જીવ ધનાદિ
પદાર્થોં કો હી સર્વોત્તમ માનતા હૈ હસલિયે હનકા નૌવા નામ દ્રવ્યસાર
હૈ ૧૦ । પરિગ્રહી જીવ કી હચ્છાઈ આકાશ કી તરહ અનત હુઆ
કરતી હૈ હસલિયે હસ કા નામ મહેચ્છા હૈ ૧૧ । મણુપ્યોં મેં હસ પરિ-
ગ્રહ સે હી પર કે દ્રવ્યોં મેં આસક્તિ જગતી હૈ હસલિયે હસકા નામ
પ્રતિવધ હૈ ૧૨ । પરિગ્રહી જીવ મેં લોભ કી માત્રા વહુત અધિક હોતી

ધાન્ય આદિ પદાર્થોં ભરીને રાખી મૂકાય છે, તેથી તેનું નામ ' સભાર ' છે
પરિગ્રહી જીવ ધાન્યાદિ પદાર્થોંને કોઈ આદિમા ભરી રાખે છે કે જેથી જરૂર
પડે ત્યારે તેનો ઉપયોગ કરી શકાય, તેથી તેનું છઠું નામ ' સકર ' છે
(૭) પરિગ્રહી જીવ સુવર્ણ આદિ દ્રવ્ય વધી જાય છે ત્યારે તેને અગ્નિમા
ગળાવીને તેના પાશા પડાવી દે છે, તેથી તેનું સાતમું નામ ' સકર ' છે
(૮) ધન કમાવાની લાલસાથી પરિગ્રહી જીવ એવું આચરણ કરે છે કે જે
આચરણથી ધન પ્રાપ્તિ વધુ પ્રમાણમાં થતી રહે, તેથી તેનું આઠમું નામ એ-
વમાચાર છે (૯) તેનું નવમું નામ ' પિંડ ' એ કારણે છે કે પરિગ્રહી જીવ
ધન ધાન્યાદિ પદાર્થોંના જથ્થો પિંડરૂપે ઘરમાં રાખ્યા કરે છે (૧૦) પરિ-
ગ્રહી જીવ ધનાદિ પદાર્થોંને જ સર્વોત્તમ માને છે, તેથી તેનું દસમું નામ
' દ્રવ્યસાર ' છે (૧૧) પરિગ્રહી જીવોની ઈચ્છાઓ આકાશની જેમ અનંત
હોય છે, તેથી તેનું નામ " મહેચ્છા " છે (૧૨) આ પરિગ્રહને કારણે જ
પર દ્રવ્યમાં માણ્યોને આસક્તિ પેદા થાય છે તેથી તેનું નામ ' પ્રતિવધ ' છે
(૧૩) પરિગ્રહી જીવમાં લોભની માત્રા વધી જ વધારે હોય છે, તેથી તે

નિધાનરૂપેણ સ્થાપનમ્ ૫, 'સમારો' સમાર:-સમ્રિયતે સમરણ યા સંમાર.-કોષ્ટાગ્રી
ભરણમિત્યર્થઃ ૬, 'સંકરો' સકર-સકીર્યતે=સપિન્ડઘને ઇતિ, સક્રુર:-સુવર્ણ
રજતાદીન્ યત્તૌ પશ્ચિગ્ય પાશકાદિમ્વપરણમ્ ૭, 'એવ આચારો' એવમાચાર:-

આચારો ૮, પિંડો ૯, દંવસારો ૧૦, તદા મહિચ્છા ૧૧, પહિચ્છો ૧૨,
લોહપ્પા ૧૩, મહટ્ટી ૧૪, ઉચગરણ ૧૫, સરક્ષણા ૧૬, મારો ૧૭,
સપાયુપાયકો, ૧૮, કલિકરહી ૧૯, પવિત્રરો ૨૦, અણત્યો ૨૧, સથવો
૨૨, અમુત્તી ૨૩, આચાસો ૨૪, અવિઓગો ૨૫, અમુત્તી ૨૬, તળા ૨૭,
અણત્યગો ૨૮, આસત્યી ૨૯, અસતોસે ૩૦, ત્તિ વિય, તસ્સ ઇયાણિ
એવમાઈ નામધેજ્જાણિ હૂતિ તીસ) હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન, ધાન્ય આદિ,
પદાર્થ ગ્રહણ કિયે જાતે હેં હમલિયે ચે પરિગ્રહ હેં અતઃ હસકા પ્રથમ
નામ પરિગ્રહ હે ૧ । ધન ધાન્ય આદિકી રાગિયા હમમેં એકત્રિત કી
જાતી હે અતઃ હસ અપેક્ષા હસકા દૂસરા નામ સચય હે ૨ । પરીગ્રહી
જીવ એક એક કરકે વસ્તુઓં કા સગ્રહ યા ગ્રહણ કરતા હે, હસ અપેક્ષા
હસકા તીસરા નામ ચય હે ૩ । ઉપચય શબ્દ કા અર્થ વૃદ્ધિ હે, ક્રમ ક્રમ
કરકે કમાયે ગયે ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કા હસ ઉપચય મેં વર્ધન
હોતા હે હસલિયે હસકા ચૌથા નામ ઉપચય હે ૪ । જમીન આદિ મેં
ધનાદિદ્રવ્ય કો પરિગ્રહિ જીવ ગાઢ દિયા કરતે હે, તાકિ ચૌર આદિ
સે હસકી રક્ષા હોતી રહે, હસલિયે હસકા પાંચવા નામ નિધાન હે ૫,
કોષ્ટ આદિ મેં જો વર્દિત ધાન્ય આદિ પદાર્થ ભરકર રાખ દિયે જાતે હેં,

પિંડો ૯ દંવસારો ૧૦ તદા-મહિચ્છા ૧૧ પહિચ્છો ૧૨ લોહપ્પા ૧૩ મહટ્ટી ૧૪
ઉચગરણ ૧૫ સરક્ષણાય ૧૬ મારો ૧૭ સપાયુપાયકો ૧૮ કલિકરહી ૧૯
પવિત્રરો ૨૦ અણત્યો ૨૧ સથવો ૨૨ અમુત્તી ૨૩ આચાસો ૨૪ અવિઓગો ૨૫
અમુત્તી ૨૬ તળા ૨૭ અણત્યગો ૨૮ આસત્યી ૨૯ અસતોસે ૩૦ ત્તિ વિય
તસ્સ ઇયાણિ એવમાઈ નામધેજ્જાણિ હૂતિ તીસ ” (૧) હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન,
ધાન્ય આદિ પદાર્થોં ગ્રહણ કરવામા આવે છે તેથી તે પરિગ્રહ છે તેથી તેનું
નામ ‘પરિગ્રહ’ છે (૨) ધન ધાન્ય આદિના ઢગલા તેમા એકત્ર કરાતા
હોવાથી તેનું બીજું નામ ‘સચય’ છે (૩) પરિગ્રહી જીવ એકે એકે વસ્તુ
ઓનો સગ્રહ કરે છે અથવા તેને ગ્રહણ કરે છે તેથી તેનું ત્રીજું નામ ‘ચય’
છે (૪) ઉપચય શબ્દનો અર્થ વૃદ્ધિ થાય છે ક્રમે ક્રમે કમાયેલ ધન ધાન્ય
આદિ પદાર્થોં આ ઉપચયમા વર્ધન થાય છે, તેથી તેનું ચોથું નામ ‘ઉપ
ચય’ (૫) ચૌર આદિથી રક્ષણ કરવા માટે ધન આદિ દ્રવ્યને પરિગ્રહી લોકો
હાટી દે છે તેથી તેનું પાંચમું નામ ‘નિધાન’ છે (૬) કોષ્ટી આદિમા...વધેલ

સસ્તવઃ=પરિચયઃ-પરિચયકારણત્વાત્ ૨૨, 'અગુત્તી' અગુપ્તિઃ=તૃષ્ણાયા અગોપનમ્ ૨૩, 'આયામો' આયાસઃ=દુઃખમ્, આયામહેતુત્વાત્પરિગ્રહોઽ પ્યાયાસઃ—
ઉક્ત' ૨૪, 'અવિઓગો' અવિયોગઃ-વનાદરપરિત્યાગઃ ૨૫ 'અમુત્તી' અમુક્તિઃ-
અનિર્લોભતા ૨૬, 'તૃષ્ઠા' તૃષ્ણા-ધનાદેરાકાંક્ષા ૨૭, 'અણત્યગો' અનર્થકઃ-
અનર્થકારણત્વાત્ ૨૮, 'આસત્થી' આસક્તિઃ-મૂર્છા, તત્કારણત્વાત્ ૨૯,

મે લગા રહતા હૈં इसलिये इसका नाम प्रविस्तर है २० । परिग्रह अनेक
अनर्थों का कारण रहता है इसलिये इसका नाम अनर्थ है २१ । परिग्रही
जीवको अनेक जीवों के साथ सस्तवपरिचय रहता है । इसलिये परिचय
का कारण होने से इसका नाम सस्तव है २२ । उसमें तृष्णा का गोपन
नहीं होता है-अतः इसका नाम अगुप्ति है २३ । परिग्रह की ज्वाला में
जलते हुए जीव को बहुत अधिक आयासों दुःखों को भोगना पड़ता
है इसलिये उनका हेतु होने से परिग्रह का नाम भी आयास है २४ ।
परिग्रही जीव में लोभ की अधिक से अधिक मात्रा होने के कारण वह
धनादिक का परित्याग दान आदि सत्कृत्यों में भी नहीं कर सकता
है इसलिये इसका नाम अवियोग है २५ । इस परिग्रही जीव में निर्लो-
भता नहीं होती है इसलिये इसका नाम अमुक्ति है २६ । धनादिक के
आगमन-आय की आकांक्षा परिग्रही जीव के सदाकाल रहती है इस
लिये इसका नाम तृष्णा है २७ । परिग्रह अनेक अनर्थों का कारण है
इसलिये इसका नाम अनर्थक है २८ । मूर्च्छा का कारण होने से इसका

વિસ્તાર કરવામાં લાગ્યો રહે છે, છેથી તેનું નામ 'પ્રવિસ્તાર' છે (૨૧) પરિ
ગ્રહ અનેક અર્થોનું કારણ બને છે, તેથી તેનું નામ 'અનર્થ' છે (૨૨)
પરિગ્રહી જીવને અનેક જીવો સાથે 'સસ્તવ' પરિચય થતો રહે છે, તેથી
પરિચયનું કારણ હોવાથી તેનું નામ 'સસ્તવ' છે (૨૩) તેમાં તૃષ્ણાનું ગોપન
થતું નથી, તેથી તેનું નામ 'અગુપ્તિ' છે (૨૪) પરિગ્રહની જ્વાલામાં જળતા
જીવને ઘણા વધારે આયાસો-દુઃખો ભોગવવા પડે છે તેથી તે આયાસોના
કારણરૂપ હોવાથી પરિગ્રહનું નામ પણ "આયાસ" છે (૨૫) પરિગ્રહી
જીવમાં લોભની માત્રા વધારેમાં વધારે હોવાને કારણે તેઓ દાન આદિ
સત્કૃત્યોમાં ધનનો પરિત્યાગ કરી શકતા નથી તેથી તેનું નામ 'અવિયોગ' છે
(૨૬) તે પરિગ્રહી જીવમાં નિર્લોભતા હોતી નથી, તેથી તેનું નામ 'અમુક્તિ'
છે (૨૭) ધનાદિ પદાર્થો મેળવવાની આકાંક્ષા પરિગ્રહી જીવને સદાકાળ રહે છે,
તેથી તેનું નામ 'તૃષ્ણા' છે (૨૮) પરિગ્રહ અનેક અનર્થોને માટે કારણરૂપ
હોય છે, તેથી તેનું નામ 'અનર્થક' છે (૨૯) મૂર્છા 'આસક્તિ' નું કારણ

સ્વભાવઃ ૧૩, 'મહટ્ટી' મહાર્તિઃ, મહાર્તિઃકારણત્વાત્ ૧૪, 'ઉપકાળ' ઉપકરણ= સામગ્રી ૧૫, 'સરખવળય' સરક્ષણા ચ-શરીરાદીના મરક્ષણમિત્યર્થઃ ૧૬, 'ભારો' ભાર-અષ્ટ કર્મભારકારણમ્ ૧૭, 'મપાયુપાયગો' સંપાતોપાયકઃ-સંપાતાનાં-દુર્ગતી પ્રસ્થિતાનામ્ ઉપાયકો માર્ગભૂતઃ ૧૮, 'કલિકરણ્ડો' કલિકરણ્ડ-કર્મીનાં= કલહાનાં કરણ્ડ ઇત્યાદિવિશેષ ઇત્થ કલિકરણ્ડ ૧૯, 'પરિન્યરો' પરિસ્તરઃ-ધનધાન્યાદિવિસ્તારઃ ૨૦, 'અણત્યો' અનર્થ-અનર્થકારણત્વાત્ ૨૧, 'સયવો'

હૈ, હસલિયે યહ પરિગ્રહ લોભાત્મા લોભ સ્વભાવ છે ૧૩। ઇસ પરિગ્રહ સે જીવ કો વઢી સે વઢી આર્તિયોં કા સામના કરના પઢતા હૈ અતઃ ડન આર્તિયોં કા કરણ લાને સે યહ પરિગ્રહ મહાર્તિરૂપ હૈ ૧૪। ઇસ પરિગ્રહ કે પ્રભાવ સે હી વિવિધ પ્રકાર કી સામગ્રી જીવ ઇકત્રિત કરતા હૈ અતઃ હસકા નામ ઉપકરણ હૈ ૧૫। પરિગ્રહી જીવ અપને શરીર આદિ પદાર્થોં કી રક્ષા કરને મેં વિશેષ સાધન રહતા હૈ। ઇસલિયે હસકા નામ સરક્ષણ હૈ ૧૬। પરિગ્રહી જીવ કે પરિણામોં કી સમ્મલેશ-તા કે કારણ અષ્ટવિધ કર્મોં કા વધ ઘટતુ તીવ્ર હોતા હૈ ઇસલિયે હસકા નામ ભાર હૈ ૧૭। પરિગ્રહી જીવ કા પતન દુર્ગતિ મેં હોતા હૈ અતઃ દુર્ગતિ મેં પતન હોને કા યહ માર્ગભૂત હૈ ઇસલિયે હસકા નામ સંપાતોપાયક હૈ ૧૮। પરિગ્રહી જીવ કે અનેક શત્રુ ઉત્પન્ન હો જાતે હૈ હર એક કે સાથ કલહ આદિ હોને લગતે હે ઇસલિયે યહ પરિગ્રહ કલહોં કા એક પ્રકાર કા કરણ્ડપિટારા હૈ-હસલિયે હસકા નામ કલહકરણ્ડ હૈ ૧૯। પરિગ્રહી જીવ અપને ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કા વિસ્તાર કરને

પરિગ્રહ લોભાત્મા લોભ સ્વભાવ છે (૧૪) આ પરિગ્રહને લીધે જીવેને મોટામા મોટી આશ્તોનો સામનો કરવો પડે છે, તેથી એ આર્તિયો (આશ્તો) નું કારણ હોવાથી તેપરિગ્રહ મહાર્તિરૂપ છે (૧૫) તે પરિગ્રહના પ્રભાવથી જ વિવિધ પ્રકારની સામગ્રી જીવ એકત્રિત કરે છે, તેથી તેનું નામ 'ઉપકરણ' છે (૧૬) પરિગ્રહી જીવ પોતાના શરીર આદિ પદાર્થોના રક્ષણને માટે વધારે સાવચેત રહે છે, તેથી તેનું નામ 'સરક્ષણ' છે (૧૭) પરિગ્રહી જીવની વૃત્તિઓની સંકુચિત તાને કારણે અષ્ટવિધ કર્મોનો બધ ઘણો જ તીવ્ર હોય છે, તેથી તેનું નામ 'ભાર' છે પરિગ્રહી જીવ દુર્ગતિમા પડે છે દુર્ગતિમા પતન કરાવવાના શહરૂપ હોવાને કારણે તેનું નામ 'સંપાતોપાયક' છે (૧૮) પરિગ્રહી જીવના અનેક શત્રુઓ પેદા થાય છે દરેકની સાથે તેને કલહ આદિ થયા કરે છે તે કારણે ને પરિગ્રહ કલહોના એક પ્રકારના ઝરડિયા જેવો હોવાથી તેનું નામ 'કલહકરણ્ડ' છે (૧૯) પરિગ્રહ જીવ પોતાના ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોના

विहा जोइसिया ये देवा वहस्तेइ चदसर सुकसणिक्करा
गुहधूसकेउ गुहा य अगाइका य तत्तवणिजकणगवपुष्क
जेयमहा जोइसियम्मि चारं चरंति, केऊयागइरइया अट्टावी
सति विहा य नक्खत्त देवगणा णाणां सत्ताणं सत्थियाओ
तारगाओ, ठियल्लेसां चारिणो य आविस्साममडलगइ ।
अत्तरिचरा अट्टलोगवासी दुविहा वेसाणिया ये देवा सोहस्मी
दिस्साणं सणकुमार-साहिद-वभलोगलंतकं-संहासुक्केसहस्रारं
आणयपाणिय आणुच्चुया कप्पवरविंसाणवांसिणी
सुरगणा ये वेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विस्मय-
वासी महिद्धिया उत्तमा सुखरा एव चेतो चिउविहासपरिसर
ये देवा संभारंति । भवणं वाहणजाणविंसाणं सयणासणाणि
ये णाणां विहवत्थभूसणाणि ये पवरं पहरणाणि ये णाणा-
मणि पत्ताणो दिव्व ये भायुणा विहि नाणां विहकामरुववउ-
द्विवय अचलरगणसंघाए हीनसमुद्वे दिसाओ विदिस्साओ
अल्लेइअणि य तवासडे पठक्कं गामनयसणि य आसमुज्जाण-
मं काणणाणि य कूवसरत्तले यवाविद्धोहि ये देवकुलसंभेपेववि-
सहिमाइयाडं कित्तेणाणि य पणिहिंता परिग्रह विउलदव्व-
सार देवा वि सइदगा न तित्ति न लुट्टि उवल्लभंति, अच्चत्त
विउललोभाभिभूयसन्ना ।

वासहर इक्खुगारवट्टपठवयकुडलरुयणवरमाणसुत्तरं कौ-
लीदहिलवणसलिलदहपतिरतिकस्सअजणकसेलदेहिभुह ओवो-
युप्पायकचणकविहत्तिजसकवरसिद्धिरिकूडवासी । सू० ३१ ।
टीका- ते च पुन परिग्रहं ते च पुन परिग्रहं पुनं शब्दोऽत्र

‘ અસતોસેતિ યિ ય ’ અસતોપઃ ૩૦, ઇત્યપિ ચ ‘ તસ્મ ’ તસ્ય-પરિગ્રહસ્ય
 ‘ ય્યાણિ ’ એતાનિ ‘ યમાદિ ’ યમાદીનિ-ઉક્તપ્રકારાણિ ‘ નામરેઙ્ગાણિ ’
 નામધેયાનિ=નામાનિ ‘ હ્રુતિ , ભવન્તિ ‘ ત્રીસ ’ ત્રિંશત્ । પરિગ્રહસ્ય પરિગ્રહાય-
 સતોપાન્તાનિ ત્રિંશન્નામધેયાનિ ભવન્તીત્યર્થઃ । અનેન ‘ યન્નામેતી ’ દ્વિતીયમન્તર-
 દ્વારસુક્તમ્ ॥સૂ.૨॥

અથ યથા યે પરિગ્રહં કુર્વન્તિ તાનાદ—‘ ત ચપુણે ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ત ચં પુણ પરિગ્રહં મમાયતિ લોભઘટથા ભવણવર
 વિમાળવાસિણો પરિગ્રહ રૂઢ્યી પરિગ્રહે વિવિહકરણબુદ્ધી
 દેવનિકાયા ય અસુરભુયગસુવન્નવિજ્જુજલણ-દીવ-ઉદહિ
 દિસિ-પવણ-થણિય-અણપન્નિયપણપન્નિય ઇસિવાડય ભૂયવા-
 ઇય કંદિય મહાકદિયકુહળ્લ પતગ દેવાપિસાય-ભૂય-જક્લ-
 રક્લ્લર-કિનર કિપુરિસ મહોરગગધ્વવાય તિરિયવાસી । પચ-

નામ આસક્તિ હૈ ૨૯ । પરિગ્રહી જીવ કો જીવનભર સુખપ્રદ સતોષ
 નહીં હોતા હૈ અતઃ અસતોષકા હેતુ હોને સે ઇસકા નામ બી અસતોષ
 હૈ ૩૦ । ઇસ પ્રકાર ઇસ પરિગ્રહ કે યે પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે ત્રીસ નામ હૈ ।
 ઇસ તરહ ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને “ યન્નામ ” ઘહ દ્વિતીય અન્તર-
 દ્વાર કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—પરિગ્રહ નામકે પચમ આસ્રવ દ્વાર કે કિતને નામ ગુણ
 નિષ્પન્ન હો સકતે હૈં યહ વાત સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રદર્શિત કી
 હૈ । પરિગ્રહ સે લેકર અસતોષ પર્યન્ત જો યે ત્રીસ નામ પ્રકટ કિયે હૈં
 વે કહીં તો કારણ મેં કાર્ય કે ઉપચાર સે ઓર કહીં કાર્ય મેં ૨ કારણ
 કે ઉપચાર સે ઘનાયે ગયે હૈં, એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ. ૨ ॥

હોવાથી તેનું નામ ‘ આસક્તિ ’ છે (૩૦) પરીગ્રહી જીવને જીવનભર સુખપ્રદ
 સતોષ થતો નથી, તેથી અસતોષના કારણરૂપ હોવાથી તેનું નામ ‘ અસતોષ ’
 છે આ પ્રમાણે પરિગ્રહના પૂર્વોક્ત ત્રીસ નામ છે આ રીતે આ સૂત્રદ્વારા
 સૂત્રકારે ‘ યન્નામ ’ નામના બીજા અન્તર દ્વારનું કથન કર્યું છે

ભાવાર્થ—પરિગ્રહ નામના પાચમા આસ્રવ દ્વારના ગુણ પ્રમાણે કેટલા
 નામ હોઈ શકે છે તે બાબત સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં દર્શાવી છે પરિગ્રહથી લઈને
 અસતોષ સુધીના જે ત્રીસ નામો પ્રગટ કર્યા છે તેમાના કેટલાક કારણમા
 કાર્યના ઉપચારથી અને કેટલાક કાર્યમા કારણના ઉપચારથી બનાવવામા
 આવેલા છે, એમ સમજવાનું છે ॥ સૂ-૧ ॥

પરિગ્રહરુચયઃ-પરિગ્રહે રુચિ-આસક્તિર્યપાં તે તથોક્તાઃ, તથા 'પરિગ્રહો' પરિગ્રહે-પરિગ્રહનિપયે 'વિવિહકરણબુદ્ધી' વિવિધકરણબુદ્ધયઃ-વિવિધાનિ કરણાનિ ક્રિયા' બુદ્ધિશ્ચ ચેપાં તે તથોક્તાઃ, પરિગ્રહોપાર્જનમતય इत्यर्थः, एतादृशा इन्द्रसहिता देवा परिग्रह परिगृह्य न तृप्ति, न तृप्तिमुपलभन्ते, इत्यत्रेण सम्बन्ध, तत्र 'देवनिकाया य देवनिकायाश्च प्रक्ष्यमाणा ता नेत्र भवनपत्यादीन् नामनिर्देशपुरस्सर माह- 'असुर' असुराः=असुरकुमारा, 'भुयग' भुजगाः=नागकुमाराः 'सुवन्न' सुपर्णाः-सुपर्णकुमाराः, 'विज्जु' विद्युतः-विद्युत्कुमाराः 'जलण' ज्वलना-अग्निकुमारा, 'दीव' द्वीपा-द्वीपकुमाराः 'उदहि' उदधिकुमाराः 'दिसि' दिशाकुमाराः 'पवण' पयनाः=वायुकुमाराः 'थणिय' स्तनितकुमाराः, एते भवनपतयः, तत्रा- 'अणपन्निय' अनपन्निकाः 'अणपन्निय' 'अणपन्निय' 'अणपन्निय' (अणपन्निय) 'इमिवाइय' ऋषिवाटिका 'भूयवाइय' भूत वाटिकाः 'कदिय' क्रन्दिताः 'महाकदिय' महाक्रन्दिता 'कुहण्ड' कुष्माण्डाः 'पतगदेव' पतङ्गदेवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायदेवा २, असुराद्यारभ्य पतङ्ग-देवपर्यन्तानामितरेतरयोगद्वन्द्वः । तथा 'पिसाय' पिशाचाः 'भूय' भूताः 'जक्ख' यक्षा 'रक्खस' राक्षसाः 'किन्नर' किन्नरा 'किप्पुरिस' किम्पुरुषाः

નિકાયોં કા વોધ સ્વય હો જાતા હૈ । હસલિયે યહા ચારો પ્રકાર કે દેવ ગૃહીત હુવ હૈ । કયોં કિ ચે દેવ (પરિગ્રહે વિવિહ કરણબુદ્ધી) પરિગ્રહ કે વિષય મેં હનકી વિવિધ પ્રકાર કી ક્રિયાઈ હોતી હૈ, તથા ઉસમેં હનકી બુદ્ધિ બી સદા સચેષ્ટ રહતી હૈ । અર્થાત્ પરિગ્રહ કે ઉપાર્જન કરને મેં હનકી મતિ ખૂબ નિપુણ હોતી હૈ । હસ તરહ ઇન્દ્રસહિત ચે ચારો પ્રકાર કે દેવનિકાય પરિગ્રહ કો પ્રાપ્ત કરકે બી ઉસમેં તૃપ્તિ સે વિહુને હી વને રહતે હૈ । (દેવનિકાયા ય-અસુર-ભુયગ-સુવન્ન-વિજ્જુ-જલણ-દીવ-ઉદહિ-દિસિ-પવણ-થણિય-અણપન્નિય-પણપન્નિય-ઈસિવાહ્ય-ભૂયવાહ્ય-કદિય-મહાકદિય-કુહણ્ડ-પયગ-દેવા પિસાયભૂય-જક્ખ-

નો બોધ આપો આપ થઈ જાય છે તે કારણે અહીં ચારે પ્રકારના દેવો ગ્રહણ કરેલ છે, ઠાણુ કે તે દેવો "પરિગ્રહરુચિ" પરિગ્રહમા રુચિ-આસક્તિ વાળા હોય છે, અને "પરિગ્રહે વિવિહકરણ બુદ્ધી" પરિગ્રહના વિષયમા તેમની વિવિધ પ્રકારની ક્રિયાઓ થાય છે, અને તેમા તેમની બુદ્ધિ પણ સદા સચેષ્ટ રહે છે એટલે તે પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કરવામા તેમની બુદ્ધિ ઘણી જ નિપુણ હોય છે આ રીતે ઇન્દ્ર સહિત તે ચારે પ્રકારના દેવનિકાય પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કરીને પણ તેનાથી અતૃપ્ત રહે છે "દેવનિકાયા ય-અસુર-ભુયગ-સુવન્ન-વિજ્જુ-જલણ-દીવ-ઉદહિ-દિસિ-પવણ-થણિય-અણપન્નિય-પણપન્નિય-ઈસિવાહ્ય-ભૂયવાહ્ય-કદિય-

વાક્યાલક્ષ્યારે, ઉપર્યુક્ત ત્રિગ્વિધ પરિગ્રહ 'મમાયતિ' મમાયન્તે=પરિગ્રહમમત્વં કુર્વન્તિ, મમત્વ કુર્વન્તીત્યાહ — 'લોભયત્યા' લોભયન્તાઃ, કે કે ચ તે ? इत्याह—'भयणवरविमाणवासिणो' भयनवरविमानवासिनः='भयन' इत्यत्र 'वामिनः' इत्यस्य सम्बन्धाद् भयनवासिनः=भयनपतयः, अत आरभ्य यावद् वरविमानवासिनः=अनुत्तरविमानवासिनः, भयनपतिमानन्यन्तर - ज्योतिष्क-वैमानिकाश्चतुर्विधा अपि देवा इत्यर्थः, कीदृशास्ते ? इत्याह—'परिग्राहकैर्'।

अथ सूत्रकार जिस प्रकार से जो जीव इस परिग्रह को करते हैं उनका कथन करते हैं—'त च पुन' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तच पुन परिग्राह लोभयत्या ममायति) इम उपर्युक्त तीस प्रकार के नाम वाले परिग्रह में लोभ से ग्रस्त हुए जीव ममत्व करते हैं । वे जीव कौन २ से हैं ? सूत्रकार अब इस बात को प्रदर्शित करते हैं—(भयणवरविमाणवासिणो) भयनवासी देव, वानन्यन्तरदेव, ज्योतिष्कदेव और वैमानिक देव ये चारों प्रकार के देव परिग्रह में ममत्व करते हैं—अर्थात्—परिग्रह प्राप्त करके भी इन्हें सतोष नहीं होता है । (भयणवरविमाणवासिणो) यहा पर इस पद से भयनवासी और वरविमानवासी ऐसा शाब्दबोध होता है । भयनवासी शब्द से असुरकुमार आदि देव तथा वरविमानवासी शब्द से अनुत्तरविमानवासी देव अभिहित हुए हैं । इस तरह देवों के इन दो निकायों का वर्णन-कथन-आने से इनके बीच के वानन्यन्तर और ज्योतिष्क इन दो

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે કયા જીવ કયું ગીતે પરિગ્રહ કરે છે—“ ત ચ પુન ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ત ચ પુન પરિગ્રાહલોભયત્યા મમાયતિ” ઉપર ડહેલ ત્રીસ નામ વાળા પરિગ્રહમા લોભને વશ થયેલ જીવો મમત્વ કરે છે તે જીવો કયા કયા છે ? હવે સૂત્રકાર તે દર્શાવે છે “ ભયણવરવિમાણવાસિણો ” ભવનવાસી દેવ, વાનન્યન્તર દેવ, જ્યોતિષ્ક દેવ, અને વૈમાનિક દેવ, એ ચારે પ્રકારના દેવ પરિગ્રહમા મમત્વ કરે છે—એટલે કે પરિગ્રહમા પ્રાપ્ત કરવા છતાં પણ તેમને સતોષ થતો નથી “ ભયણવરવિમાણવાસિણો ” અહીં આ પદથી ભવનવાસી અને ઉત્તમવિમાનવાસી એવો અર્થ સમજાય છે ભવનવાસી શબ્દથી અસુરકુમાર દેવ આદિ તથા ‘ ઉત્તમવિમાનવાસી ’ શબ્દથી અનુત્તર વિમાનવાસી દેવ ગ્રહણ થાય છે આ પ્રમાણે દેવોના તે બે નિકાયોનું (પ્રકારનું) વર્ણન આવવાથી તેમની વચ્ચેના વાનન્યન્તર અને જ્યોતિષ્ક એ બે નિકાયો (જાતો)

पत्नीयतेऽर्णः=तर्प यत्तपनीयकमस्तपनीयमुर्णं तस्य चर्णः=चर्णोऽर्णस्य=गन्त
 तयोक्तः=अर्णो परितापनेन सुवर्णस्य यादृशो वर्णो भवति, तादृश-चर्ण-युक्त इत्यर्थः
 आर्षत्वात्सूत्रे बहुवचनम्= तथा गृह्य-ग्रन्थे 'जे गदा' ये ग्रहाः, सम्यक्तिकाल-
 मसिद्धा ज्ञेयसुलभान्मादयः, जोइसस्मि-ज्यातिपि-ज्योतिश्चरे, चार-चरति-
 -परिभ्रमन्ति, ते ग्रहाः, तथा 'केजु य' केतवश्च-ज्योतिश्चरिण्या न-जगत्-
 भुमाभूमतिमिहितमयस्स्योदय, मास्युरति-पूछडियातास 'चोटीवाल-तास-
 इत्यादि ज्ञान्ना भाषामिडा, कीदृशा एने-इत्यादि 'गडरहया' गतिरति-
 गमनशील-कराशितोऽन्यराशो, समनस्वभावाः एते चन्द्रसूर्यग्रहास्त्रिविधाऽप्ये-
 तिक्तदेवा उक्ताः । तथा 'अट्टावीमडेविहा य' अट्टाविगतिविधाश्च 'नखत्तदेव-
 गणा' नखत्तदेवगणाः-कीदृशाः-इत्यादि-तथा 'नाणामठाणसठियाओ' नाणा-

और जगत् के मंगल ये भेद हैं । यहाँ गौर के तित्ततवणिज्जकणगवर्णों के
 तत्ततपनीय-तर्पाने 'हुं सुवर्ण' के चर्ण के जैसा चर्ण वाला है । अर्थात्-
 अग्नि में तपाने से सुवर्ण का जैसा रंग होता है वैसा ही इसको रंग
 है तैसा (जै यं गदा जोइसियस्मि चार चरति) इससे अतिरिक्त जो
 इस समय में प्रसिद्ध नेपच्युल हर्षल आदि ग्रह हैं कि जो ज्योतिश्चक्र में
 परिभ्रमण करते हैं वे ग्रह तथा-(केजु यं) केतु ग्रह जो जगत् के शुभ के
 अशुभ निमित्त को लेकर उदित होता है और जिसे 'पूछडिया' या
 तारो 'चोटीवाल तारो' इत्यादि नाम से लोग कहा करते हैं ये सब
 ही (गडरहया) गमनशील हैं-एक राशि से अन्यराशि पर गमन
 करने के स्वभाववाले हैं । ये उक्त (निविहा) तीन प्रकार के
 चद्र, सूर्य ग्रह रूप ज्योतिषी देव तथा (अट्टावीमडे विही) अट्टाईसे
 प्रकार के (नखत्तदेवगणा) नक्षत्र (नाणामठाणसठियाओ) नाना

राशय 'राहु, धूमकेतु, बुध-शुक्र-मंगल' ये ग्रहाः ये प्रवेश्ये, ते ग्रहा-
 रक-मंगल 'तत्ततवणिज्जकणगवर्णा' तत्तावेला सुवर्णना रंग जैसा वर्ण-
 वाला है, तथा 'जे य, गदा जोइसियस्मि चार चरति' ते विवायता-इत्यादि
 समयमा प्रसिद्ध नेपच्युन, हर्षल आदि ग्रहो उ जे ज्योतिश्चक्रमा पुग्निभूष-
 करे छे ते ग्रहो तथा 'केजु य' केतुग्रहो जे जगत्ता शुभ अशुभ निमित्त
 द्वाविहानि उगे छे अने जेने पूछडिया तारोने नामे ओणो छे, ओ अधा-
 'गडरहया' गमनशील छे-ओ राशिमाथी अन्य राशिमा 'गमन' करवाना-
 स्वभाववाला छे ते उगरेछा 'तिविहा' अशु प्रवेश्यता चन्द्र, सूर्य अने
 ग्रह रूप ज्योतिषी देव, तथा 'अट्टावीमडेविहा' अट्टावीमडेविहा अने नखत्तदेव
 देवगणा 'नक्षत्र' 'नाणामठाणसठियाओ', विविध ग्रहाणां-अशुभ-अने

‘महोरगः’ महोरगाः, ‘गध्र्या’ गन्धर्वाश्च, एतेषां द्वन्द्वः । एतेऽष्टौ व्यन्तराः ।
एते हि ‘विरिष्यासी’ तिर्यग्वाप्तिनः—मनुष्यलोकवासिनः, तथा ‘पञ्चविहा’
पञ्चविधाः=चन्द्रसूर्य-ग्रह-नक्षत्र-तारारूपाः, ‘जोहसियाय’ ज्योतिषिकाश्च देवाः,
ते के ? इत्याह—‘बृहस्पतिचन्द्रसुरशुक्रशनिञ्चरा’—बृहस्पतिचन्द्रसुरशुक्रशनिश्चरम्
तथा ‘राहुधूमकेतुबुधाय’ राहुधूमकेतुबुधाश्च तथा—‘अगारकाय’ अङ्गारकश्च ‘मंगलतः’
मङ्गो गृहविशेषः । अदृशः ? इत्याह—‘तत्तत्तद्विज्जकणमण्ण’—तत्तत्तद्विज्जकणमण्णः ।

મહાકલિય-કુહળ-પયગ-દેવા પિસાયમૂય-જક્ષ-રક્ષસ-કિન્નર-કિંપુરિસ-મહોરગ-
ગધવ્યાસ તિરિયવાસી.” હવે સૂત્રકાર તે દેવ નિકાયોને નામના નિર્દેશ સહિત
પ્રગટ કરે છે તેમનામાંથી સૌથી પહેલા ભવનપતિયોના ભેદોના નામો બતાવે
છે—અસુરકુમાર, નાગકુમાર, સુપર્ણકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર જવલનઅગ્નિકુમાર,
દ્વીપકુમાર, ઉદધિકુમાર, દિશાકુમાર, વાયુકુમાર અને સ્તનિતકુમાર, એ દસ
પ્રકારના ભવનપતિ છે તથા અપ્રજ્ઞસિક, પ્રથ્વપ્રજ્ઞસિક, કૃષિવાદિક, ભૂતવાદિક,
કદિત, મહાકદિત, જ્ઞમોહ, અને મતંગદેવ, એ આઠ પ્રકારના વ્યન્તર નિકાય
દેવો છે, તથા પિશુચ, ભૂત, પ્રક્ષ, સ્ફક્ષ, કિન્નર, કિંપુરુષ, મહોરગ, અને
ગધર્વ, એ આઠ વ્યન્તરદેવ તિર્યગ્લોક-મનુષ્યલોક વાસી છે તથા “પત્રવિહા-
જોહસિયાય દેવા વહસ્તઃ ચર સૂર સુક્ષ્મજિચ્છરા.” ચન્દ્ર, સૂર્ય, અંક, નક્ષત્ર
અને તારા એ પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષિક દેવો છે, તેમા અહિ જ્ઞતિના જે દેવો
છે તેમના પૃથ્વપતિ, ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, શનિ તથા નિ

નાનાસથાનસસ્થિતાથ ' તારાઓ ' તારકાઃ, કથં ભૂતાસ્તારકાઃ ? કથમિદં—
' ઠિયલેસ્સા ' સ્થિતલેશ્યાઃ-સ્થિતાઃ સ્થિરાઃ લેશ્યાઃ-દીપ્તયઃ યાસાં તાઃ, નક્ષત્ર-
તારકાણામેકસ્થાનસ્થિતિમત્ત્યાત્, યદ્વા — મનુષ્યક્ષેત્રાદ્ રહિર્વ્યવસ્થિતત્વાત્
સ્થિતલેશ્યાત્ત્વ તાસામ્, ' ચારિણો ય ' ચારિશ્ચ યઃ=સચરણશીલાઃચન્દ્રસૂર્યગ્ર-
હાશ્ચ, ' અવિસ્સતમડલગઈ ' અવિશ્રાન્તમણ્ડલગતયઃ-અવિશ્રાન્તા-વિશ્રામવર્જિતા
મણ્ડલેન-ચક્રવાલેન ગતિર્યેવાં તે તથા=સતતપરિભ્રમણશીલાઃ સન્તીત્યર્થઃ, એતે

પ્રકાર કે સ્થાન સે સસ્થિત એસે તારાગણ કિ જિનકી (ઠિયલેસ્સા)
લેશ્યા-દાસિ-સ્થિર હૈ । યે નક્ષત્ર ઔર તારાગણ એક સ્થાન મેં સ્થિત હૈં,
અથવા મનુષ્યલોક સે બાહર યે અવસ્થિત હૈં-ગતિ રહિત હૈં-કસલિયે
યહાં ઈન્હેં સ્થિર દીપ્તિ ચાલા કહા ગયા હૈ । તથા (ચારિણો ય અવિ-
સ્સામમડલગઈ) સચરણશીલ ચંદ્ર, સૂર્ય, ગ્રહ યે સત સતત પરિભ્રમણ
શીલ હૈ । તાત્પર્ય કસકા યહ હૈ કિ યે પાંચ પ્રકાર કે જ્યોતિષી દેવ
માનુષોત્તર નામક પર્વત રૂપ જો મનુષ્ય લોક હૈ ઉસ મનુષ્યલોક મે
સદા ભ્રમણ કીયા કરતે હૈ । ઉનકા ભ્રમણ મેરુપર્વત કે ચારો ઔર
હોતા હૈ । મેરુ કે સમતલભૂભાગ સે સાતસો નવે યોજન ની ઊંચાઈ પર
જ્યોતિશ્વક્ર ક્ષેત્ર કા આરંભ હોતા હૈ । જો વહા સે ઊંચાઈ મેં એક સો
દશ યોજન પરિમાણ હૈ ઔર તિરછા અસખ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર પરિમાણ
હૈ । ઉસ મે દશ યોજન કી ઊંચાઈ પર અર્થાત્ ઉક્ત સમતલ સે આઠ
સો યોજન કી ઊંચાઈ પર સૂર્ય કે વિમાન હૈ, વહા સે અસી યોજન કી
ઊંચાઈ પર અર્થાત્ સમતલ સે આઠ સો અસી યોજન કી ઊંચાઈ પર

રહેલા " ઠિયલેસ્સા " સ્થિર તેજવાળા તારાગણો છે, તે નક્ષત્રો અને તારા-
ગણ એક જ સ્થાને રહેલા છે, અથવા તેઓ મનુષ્યલોકની બહાર
આવેલા છે-ગતિરહિત છે તે કારણે અહીં તેમને સ્થિર દીપ્તિ (તેજ) વાળા
ખતાવ્યા છે તથા " ચારિણો ય અવિસ્સામમડલગઈ " સચરણશીલ ચંદ્ર સૂર્ય
ગ્રહ એ બધા સતત પરિભ્રમણશીલ છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે એ પાંચ ગ્રહ
રત્ના જ્યોતિષીદેવ માનુષોત્તર નામના પર્વતરૂપ જે મનુષ્યલોક છે, તે મનુષ્ય
લોકમાં સદા પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે તેમનું ભ્રમણ મેરુ પર્વતની ચારે તરફ
થાય છે મેરુના સમતલ ભૂભાગથી સાતસો નેવું જોજનની ઊંચાઈ પર જ્યો-
તિશ્વક્રના ક્ષેત્રનો આરંભ થાય છે જે ત્યાંથી ઊંચાઈમાં એકસો દસ યોજન
પરિમાણ છે અને તિરકસ ઊંચાઈ અસખ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર પરિમાણ છે તેમાં
દસ યોજનની ઊંચાઈએ એટલે કે ઉપરોક્ત સમતલ ભૂમિથી આઠમો યોજનની
ઊંચાઈ પર સૂર્યના વિમાન છે, ત્યાંથી એસો યોજનની ઊંચાઈ પર અથવા
સમતલથી આઠસો એસી યોજનની ઊંચાઈ પર ચન્દ્રના વિમાન થી

ચંદ્ર કે વિમાન હૈં । વર્ષા સે વીસ યોજન પર કી ઊંચાઈ તક મેં અર્થાત્
સમતલ સે નવસો યોજન કી ઊંચાઈ તક મેં ગ્રહ, નક્ષત્ર ઓર તારે હૈં ।
ચંદ્ર કે ઉપર વીસ યોજન કી ઊંચાઈ મેં પહિલે ચાર યોજન
કી ઊંચાઈ પર નક્ષત્ર હૈં, ઇસકે બાદ ચાર ચાર યોજન કી
ઊંચાઈ પર ધુન્ગ્રહ, ધુન્ગ્રહ સે ત્રીન યોજન કી ઊંચાઈ પર શુક્ર, શુક્ર
સે ત્રીન યોજન ઊંચે ગુરુ, ગુરુ સે ત્રીન યોજન ઊંચે મંગલ ઓર મંગલ
સે ત્રીન યોજન ઊંચે શનૈશ્વર હૈં । ઇસ પ્રકાર યહ ચંદ્ર કે ઉપર કા
વીસ યોજન કા ક્ષેત્ર નક્ષત્ર આદિકોં દ્વારા ઘિરા હુઆ રહતા હૈં ।
ઇસ તરહ ઇસસે હમેં યહ વાત જાનને મેં દેરી નહીં લગતી હૈં કિ મનુષ્ય
ક્ષેત્ર મેં જો કાલ કા-મુહૂર્ત-અહોરાત્ર-પક્ષ, માસ આદિ કા જિતના મી
વ્યવહાર હોતા હૈં વહ સમઘસ જ્યોતિશ્ચક્ર કી ચાલ સે હી હોતા
હૈં । યહ જ્યોતિશ્ચક્ર કી ચાલ ડાઁદ્વીપરૂપ મનુષ્યક્ષેત્ર મેં અવિશ્રાન્ત
રૂપ સે હી હોતી રહતી હૈં । મનુષ્ય ક્ષેત્ર કે બાહર કે જ્યોતિષ્ક વિમા
નસ્થિર હૈં । ચે વહા સ્વભાવતઃ ઢધર ઉધર ભ્રમણ નહો કરતે । ઇસી
કારણ સે ડનકી લેશ્યા ઓર ડનકા પ્રકાશ મી ઁક રૂપ-સ્થિર હૈં ।
અર્થાત્ વર્ષા રાહુ આદિ કી, છાયા પડને સે જ્યોતિષ્કોં કા સ્વાભાવિક
પીતલ્વર્ણ જ્યો કા ત્યોં ઘના રહતા હૈં । ઓર ઉદય અસ્તન હોને કે કારણ

વીસ યોજનની ઊંચાઈ પર એટલે કે સમતલથી નવસો યોજનની ઊંચાઈ
મુધીમા ગ્રહો, નક્ષત્રો અને તારા છે ચંદ્રથી ઉપરની વીસ યોજનની ઊંચા-
ઈમા પહેલા ચાર યોજનની ઊંચાઈ પર નક્ષત્રો છે, ત્યાર બાદ ચાર યોજનની
ઊંચાઈ પર ધુન્ધ નામનો ગ્રહ છે ધુન્ધ ગ્રહથી ત્રણ યોજનની ઊંચાઈ પર
શુક્ર છે શુક્રથી ત્રણ યોજન બચે ગુરુ છે ગુરુથી ત્રણ યોજન બચે મંગળ
છે, મંગળથી ત્રણ યોજન બચે શનિ છે આ પ્રમાણે ચંદ્રની ઉપરની વીસ
યોજનનું ક્ષેત્ર નક્ષત્ર આદિ દ્વારા ઘેરાયેલું રહે છે આ રીતે આપણને એ
વાત સમજતા વાગ લાગે તેમ નથી કે મનુષ્યક્ષેત્રમા જે કાળનો મુહૂર્ત,
દિવસ રાત, પળવાડિયા, માસ આદિનો-જે વ્યવહાર થાય છે તે સઘળો આ
જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલથી જ થાય છે તે જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલ આ અઢીઢીપરૂપ મનુ-
ષ્ય ક્ષેત્રમા અવિગ્ત ચાલ્યા ડરે છે મનુષ્ય ક્ષેત્રની બહારના જ્યોતિષ્ક વિમાન
સ્થિર છે તેઓ ત્યા સ્વભાવિક રીતે જ આમ તેમ ભ્રમણ કરતા નથી એ
જ કારણે તેમની લેશ્યા અને તેમનો પ્રકાશ પણ સ્થિર છે એટલે કે ત્યા
રાહુ આદિની છાયા પડવાથી જ્યોતિષ્કોનો સાધારણ પીળો રંગ એવોને એવો
રહે છે અને ઉદય અસ્ત ન થવાને કારણે તેમનો પ્રકાશ પણ એક સરખો

અથ ત્રિધા જ્યોતિષિક દેવોઃ સ્થિરા અથ વૈમાનિકાનાદન- 'ઉચ્ચિરા' ઉચ્ચિરા:-
 તિર્યગ્લોકસ્યોપરિવર્તિનઃ, ઉદ્ભુલોગવાસિનોઃ કર્પવરવિમાનવાસિનઃ વૈમાનિકાં ય
 દેવાં વૈમાનિકાં દિવા દુવિહા 'દિવિધાઃ' દિવિધાઃ=દિવ્યકારાઃ, કલ્પોપપન્ન કલ્પાતીત
 ભેદાત્ તિ-કલ્પોપપન્ના દ્વાદશધા, તાનાદ- 'સોહમ્મી-સાણ-સણકુમાર-માહિદ-
 વમલોગ-લતંગ-મહાશુક્ર-સહસ્સાર-આણય-પાણય-આરણ-અચુયા' સૌધર્મશાન
 સત્તત્કુમારેમાહેન્દ્ર-બ્રહ્મલોક-લાન્તક-મહાશુક્ર-સહસ્સારોનતપ્રાગતારણાન્ન્યુતાઃ, રૂતે
 કલ્પવરવિમાનવાસિની 'સુરગણા' કલ્પવરવિમાનવાસિનઃ-કલ્પોપપન્ના 'સુરગણા'
 'સુરગણા' અથ 'કલ્પાતીતાનાદ' ગેવેજ્ઞા 'ગેવેજ્ઞા' 'અણુત્તરા' 'અણુત્તરા-
 યદુવિહા

મહેન્દ્રકોપિકોશં મી-એકસાં સ્થિર હી રહેતો હે । 'ઇસ પ્રકારે' 'યહ' પાંચ
 પ્રકાર કે જ્યોતિષિક દેવો કે વિષય મં ભાવાર્થ રૂપ સે યત્ કિશ્ચિત્ કથન
 કિયા હે । અતઃ સૂત્રકાર વૈમાનિક દેવો કે વિષય મં કહેતે હે- (ઉચ્ચિ-
 ચિરા ઉદ્ભુલોગવાસી વૈમાનિયા દેવા દુવિહા) તિર્યગ્લોક હે । એ વૈમાનિક
 કે જગર જો જર્વલોક હે ઉસમેં એ દેવ રહેતે હે । इनका नाम वैमानिक
 देव, कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं । इनमें
 कल्पोपपन्न बाह्य प्रकार के हैं, वे ये हैं- (सोहम्मी-साण-सणकुमार-
 माहिद-वमलोग-लतंग-महाशुक्र-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-5
 अचुया) सौधर्म, ईशान, सतत्कुमुरि, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महा
 शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणुत, आरण और अच्युत । इन (कल्पवरवि
 विमाणवासिणी सुरगणा) कल्पवरविमानों में रहनेवाले सुरगण कल्पो-
 पपन्न कहलाते हैं । (गेवेज्जा अणुत्तरा यदुविहा कल्पातीया विमाण-

સ્થિર રહે છે આ પ્રમાણે પાંચ પ્રકારના જ્યોતિષિક દેવોને વિષે ભાવિય
 કૃષિ થાડું ઓળખી શકવામાં આવ્યું છે, ઉચ્ચ સૂત્રકાર વૈમાનિક દેવો વિષે કહે છે-
 'ઉચ્ચિચરા, ઉદ્ભુલોગવાસી' વૈમાનિયાદેવા દુવિહા' તિર્યગ્લોકની ઉપર જે ઉચ્ચ
 લોક છે તેમાં તે દેવો રહે છે, અને તેમને વૈમાનિક કહે છે, તે વૈમાનિક
 દેવોના જે ભેદ છે-કલ્પાતીત અને કલ્પોપપન્ન તેમના કલ્પોપપન્ન નીચે પ્રમાણે આર
 પ્રકારના છે- 'સોહમ્મી-સાણ-સણકુમાર-માહિદ-વમલોગ-લતંગ-મહાશુક્ર-સહસ્સાર
 -આણય-પાણય-આરણ-અચુયા' સૌધર્મ, ઈશાન, સતત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક
 લાન્તક, મહાશુક્ર, સહસ્રાર, આનત, પ્રાણુત, આરણ અચ્યુત એ 'કલ્પવર
 વિમાનવાસિણી' 'સુરગણા' કલ્પવર વિમાનોમાં રહેનાર સુરગણને કલ્પોપપન્ન
 કહે છે 'ગેવેજ્ઞા અણુત્તરા' યદુવિહા-કલ્પાતીયા વિમાનવાસી મહદ્દિવ્યા અંતમા

થેતિ ' હુન્વિહા ' દ્વિવિગાઃ ' કલ્પાતીયા ' કરાતીતા, ' વિમાણવાસી ' વિમાણવાસીનઃ—અનુત્તરવિમાણવાસીન ' મહદ્વિયા ' મહદ્વિક્ત ' ઉત્તમા ' ઉત્તમાઃ શ્રેષ્ઠાઃ સુવરાઃ=સર્વદેવેષુ પ્રધાનાઃ, ' एव च ' इत्युक्तप्रकारेण ' चउन्विहा ' ચતુર્વિગાઃ—ભવનપતિવાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કૃતૈર્માનિકરૂપા, સપરિસાવિ ' સપરિ પદોઽપિ—ન કેવલમેતે તિન્તુ ણ્યા પરિપદોઽપીત્યર્થ, દેવાઃ ' મમાયતિ ' મમાયન્તે=મમત્વ કુર્વન્તિ । કસ્મિન્ વિષયે મમત્વ કુર્વન્તીતિ તાન્વાહ—' ભવણવાહન-જાણવિમાણસયણાસણાણિ ચ ' ભવનવાહનયાનવિમાણગયનાસનાનિ ચ, તથા ' નાગાવિદિ રથ્યભૂષણાણિ ચ ' નાનાવિવરત્તભૂષણાણિ ચ ' પરપદરણાણિ ચ '

વાસીમહદ્વિયા ઉત્તમા સુરવરા એવ ચેતે ચઉન્વિહા સપરિસા વિ દેવા મમાયતિ) કલ્પાતીત કે દો ભેદ હૈ (૧) ગ્રૈવેયક વિમાણવાસી ઓર (૨) અનુત્તર વિમાણવાસી ઇનમેં જો પાચ અનુત્તર વિમાણાં મેં—વિજય, વૈજ-યન્ત, અપરાજિત ઓર સર્વાર્થ મિદ્ધ ઇનમેં—રહેનેવાલે દેવ હૈ વે મહદ્વિક્ત કહલાતે હૈ ઓર સવ દેવોં મેં ઉત્તમ—શ્રેષ્ઠ—એવ પ્રધાન માને જાતે હૈ । કલ્પોપપન્ન દેવોં મેં સ્વામિસેવક ભાવ હોતા હૈ । કલ્પાતીત મેં નહીં । યે તો સર્મી ઇન્દ્રવત્ હોને સે અહમિન્દ્ર કહલાતે હૈ । મનુષ્યલોક મેં કિસી નિમિત્ત પર કલ્પોપપન્ન દેવ હી આતે હૈ—કલ્પાતીત નહીં । ઇસ પ્રકાર ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક ઓર વૈમાનિકરૂપ ચારોં પ્રકાર કે દેવ અપની ૨ પરિપદાસહિત ઇન ભવન આદિ પદાર્થોં મેં મમત્વ કરતે હૈ । સૂત્રકાર અવ ઇન્દ્રી મમત્વ કે વિષયભૂત પદાર્થોં કો કહતે હૈ — (ભવણ—વાહન—જાણવિમાણ—સયણાસણાણિ) ભવન, વાહન, યાન, વિમાણ, જયન, આસન તયા—(નાગાવિદિ રથ્યભૂષણાણિ ચ)

સુરવરા એવ ચઉન્વિહા સપરિસા વિ દેવા મમાયતિ ” કલ્પાતીતના જે ભેદ છે (૧) ગ્રૈવેયક વિમાણવાસી અને (૨) અનુત્તર વિમાણવાસી તેમાના વિજય, વૈજયન્ત જયન્ત અપરાજિત અને સર્વાર્થ મિદ્ધ એ પાચ અનુત્તર વિમાણોમા રહેનાર જે દેવો છે તેમને મહદ્વિક્ત કહે છે, તે દેવો બધા દેવોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે મનુષ્યલોકમા કોઈ પણ નિમિત્તે કલ્પોપપન્ન દેવો જ આવે છે, કલ્પાતીત આવતા નથી આ રીતે ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક, એ ચાર પ્રધાન દેવો પોત પોતાની પરિવ્રજ સાથે તે ભવન આદિ પદાર્થોમા મમત્વ રાખે છે સૂત્રકાર હવે તે મમત્વના વિષય રૂપ પદાર્થો દર્શાવે છે— ' ભવણ—વાહન—જાણ-વિમાણ—સયણા—સણાણિ ’ ભવન વાહન, યાન, વિમાણ, જયન, આસન, તથા “ નાગાવિદિ રથ્યભૂષણાણિ ચ ” વિવિધ વસ્ત્રો, આભૂષણો

वसत्यादिकानि, तत्र-रूप-प्रमिद्ध, सरः-प्रमिद्धम्, तडागः-सपद्माऽगाध-
जलाशयः, चापी - आयतजलाशयविशेष - दीर्घिका-चतुष्कोणजलाशयस्था-
'देवकुलानि' देवगृहा-नमाप्रसिद्धा, मराः-पानीयशालाः, वसतय = सामान्य
गृहाणि, एतान्वाङ्गो येषां तानि तथोक्तानि, 'बहुयाड' बहुशानि यद्वानि 'कित्त-
णानि च' कीर्तनानि च "अयं देवो दिव्यदेवऋद्धि सम्पन्नः" इत्येव प्रशसा
वाक्यानि च परिग्रहत्वेन ममावन्ते। ततश्च प्रकृत 'परिग्रह' परिग्रह, कीदृश
परिग्रहम्? 'विउलद्व्यसार' विपुलद्रव्यसार=विपुलानि द्रव्याण्येव सारो
यस्मिन् तथोक्त, 'परिगिण्हित्ता' परिगृह्य 'सडदगा' सेन्द्रकाः-इन्द्रमहिताः
'देवा वि' देवा अपि 'न तित्ति' न तृप्ति-नैवेच्छाविनिवृत्ति 'न तुट्ठि' न
तुष्टिम्=नापि सन्तोषम् 'उवलभति' उपलभन्ते=प्राप्नुवन्ति, आकाशताया निरा-
वाधत्वात्। अयं भावः-देवा हि महर्द्धो वाञ्छितार्थलाभे समर्थाः दीर्घायुषश्च
भवन्ति परन्तु तेऽपि परिग्रहविषये न सतोष प्राप्नुवन्ति इतरेषां पुनः का कथा? ॥

माह्याइ) कृत्वा मर, तडाग-पद्मसहित अगाध जलाशय, चापी,
दीर्घिका-चतुष्कोणवाली वावडी, देवकुल-देवगृह, सभा, प्रपा-प्याज,
वसति-सामान्यघर, इत्यादि और भी बहुत सी वस्तुएँ हैं जिनमें इन
देवों का ममत्व होता है। तथा (बहुयाड कित्तणाणि य) अनेक विध
कीर्तनों में "यह देव दिव्य ऋद्धि सम्पन्न है" इत्यादि रूप प्रशसा वाक्यों
में इनका परिग्रहरूप से ममत्व होता है। (विउलद्व्यसारपरिग्रह परिग-
ण्हित्ता सडदगा देवा वि न तित्ति न तुट्ठि अच्चत विउललोभाभिभूयसन्ना
उवलभति) इस प्रकार विपुल सार वाले परिग्रह को ग्रहण करके इन्द्र-
सहित देव भी इच्छाविनिवृत्तिरूप तृप्ति को तथा सतोष रूप तुष्टि को
आकाक्षा की निराशावता के कारण प्राप्त नहीं कर पाते हैं। तात्पर्य इसका
यह है कि महर्द्धिक देव यद्यपि इच्छित अर्थ के लाभ करने में समर्थ

योग्य वावडी, देवकुल-देवगृह, सभा, प्रपा-डवाडा, वसति-सामान्य घर,
वगेरे वस्तुओंमा तथा ओ सिवायनी भीष्ण पण्य अनेक वस्तुओंमा देवो मम
त्व राखे छे तथा "बहुयाइ कित्तणाणि य" अनेक प्रकारनी प्रशसामा "आ
देव दिव्य ऋद्धि वाणा छे" इत्यादिइय प्रशमाना राख्छोमा तेमनु परिग्रहइये
ममत्व छोय छे 'विउलद्व्यसार परिग्रह परिगिण्हित्ता सडदगा देवा वि न
तित्ति न तुट्ठि अच्चतविउललोभाभिभूयसन्ना उवलभति" आ. प्रमाणे विपुल
सारवाणा परिग्रहने अडणु उरवा छता पण्य इन्द्र सडित देवो पण्य इच्छामाथी
निवृत्ति इय तृप्तिने तथा सतोष इय तुष्टिने आकाक्षानी अपरिमितताने कारण्ये
प्राप्त करी राउता नथी उडेवानु तात्पर्य ओ छे डे महर्द्धिक देवो ओ डे इच्छित
वस्तु प्राप्त उरवाने समर्थ तथा लाभ आयुष्य वाणा छोय छे तो पण्य तेओ

પવરપહરણાનિ ચ=પવરાણિ-શ્રેષ્ઠાનિ યાનિ પવરણાનિ-આયુરાનિ તાનિ ચ, તથા-
 ‘નાનામણિપચવર્ણદિવ્ય ચ માયણત્રિદિ’ નાનામણિપચાર્ણદિવ્ય ચ માજન-
 વિધિમ્-નાનામણીના-ચન્દ્રકાન્તમૂર્યકાન્તાદિમણીના ચે પચવર્ણા સ્તૈ દિવ્ય શ્રેષ્ઠ
 વિવિધમાજનસમૂહમ્, તથા-‘નાનાવિદ્કામરૂપવેડવિવ્ય અચ્છરગગસધાણ ચ’
 નાનાવિદ્કામરૂપવિકુર્ચિતાપ્સરોગમધાર્તાથ - નાનાવિધાનિ-અનેકપ્રકારાણિ
 યાનિ કામરૂપાણિ સ્વેચ્છારૂપાણિ તાનિ વિકુર્ચિતાનિ યૈસ્તે તથામૂતા વેડપ્સરો-
 ગણાસ્તેષા સધાઠાસ્તાન=અપ્સરઃ સમૂહાનિત્યર્થઃ, તથા ‘દીવસમુદે’ દ્વીપસમુદ્રાન,
 ‘દિસાઓ વિદિસાઓ’ દિશાવિદિશા ‘ચેદ્યાણિ’ ચૈત્યાનિ=વૃક્ષાન્ કલ્પતરુ
 રૂપાન્ ‘વનસઢે’ વનવણ્ડાનિ-અનેકવિધવૃક્ષસમૂહાન્ ‘પવ્વતે’ પર્વતાન્ ‘ગામ-
 નગરાણિ ચ’ ગ્રામનગરાણિ ચ, તથા ‘આરામુજ્જાણકાણણાણિ ચ’ આરામો-
 ઘાનકાનનાનિ ચ-આરામાઃ-ઉપવનાનિ, ઉગ્રાનાનિ=પુષ્પપ્રધાનવનાનિ, કાનનાનિ
 અરણ્યાનિ, એતેષામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ, તથા — ‘કૂવસરતલાગવાવીદીહિય
 દેવકુલસમપ્પવાવસહિમાહ્યાઙ’ કૂવસરસ્તલાગવાવીદીર્ઘિકાદેવકુલસમાપ્પવા

નાનાવિધ ચક્ષુ, આભૂષણ, (પવરપહરણાણિ ચ) શ્રેષ્ઠ આયુધ, (નાના-
 મણિ પચવર્ણદિવ્ય ચ) ચન્દ્રકાન્ત, સૂર્યકાન્ત આદિ નાનામણિયોં કે
 પચવર્ણવાલે શ્રેષ્ઠ માજન, તથા (નાનાવિદ્કામરૂપવેડવિવ્યઅચ્છરગ
 ગસધાણ ચ) નાના પ્રકાર કે સ્વેચ્છાનુસાર જિન્હોં ને રૂપોં કો વનાયા હૈ
 એસી અપ્સરાઓ કા સમૂહ (દીવસમુદે) દ્વીપ, સમુદ્ર (દિસાઓ-
 વિદિસાઓ) દિશા, વિદિશા, (ચેદ્યાણિ) કલ્પવૃક્ષરૂપ ચૈત્યવૃક્ષ, (વન
 સઢે) અનેક વિધ વૃક્ષસમૂહ (પવ્વણ) પર્વત (ગામનગરાણિ ચ) ગ્રામ,
 નગર, (આરામુજ્જાણકાણણાણિ ચ) આરામ-ઉપવન, ઉદ્યાન-પુષ્પપ્રધાન
 વન, કાનન-અરણ્ય, (કૂવસરતલાગવાવીદીહિયદેવકુલસમપ્પવાવસહિ

“ પવરપહરણાણિ ચ ” શ્રેષ્ઠ આયુધો, “ નાનામણિ પચવર્ણદિવ્ય ચ ” ચન્દ્રકાન્ત,
 સૂર્યકાન્ત આદિ વિવિધ મણિયોના પાચ વર્ણવાળા પાત્રો, તથા “ નાનાવિદ્
 કામરૂપ-વેડવિવ્ય-અચ્છરગગસધાણ ચ ” જેમને ઇચ્છાનુસાર વિવિધ રૂપો ધારણ
 કર્યા છે એવી અપ્સરાઓનો સમૂહ, “ દીવસમુદે ” દ્વીપ સમુદ્ર દિસાઓ
 વિદિસાઓ ” દિશાઓ વિદિશાઓ, “ ચેદ્યાણિ ” કલ્પવૃક્ષરૂપ ચૈત્યવૃક્ષ, “ વન
 સઢે ” અનેક વિધ વૃક્ષ સમૂહ, “ પવ્વણ ” પર્વતો, “ ગામનગરાણિ ચ ” ગામો
 નગરો, “ આરામુજ્જાણકાણણાણિ ચ ” આરામ સ્થાનો-ઉપવન, ઉદ્યાન, પુષ્પ,
 પ્રધાન વન, કાનન-અરણ્ય, “ કૂવસરતલાગવાવીદીહિયદેવકુલસમપ્પવાવસહિ
 માહ્યાઙ ” રૂવા, સરોવર, તળાવો, -કમળયુક્ત અગાવ જળાશય, નાવ, દીર્ઘિકા

કાદશકુण्डलनामकद्वीपान्तर्भवतिः कुण्डलाकाराः पर्वताः, रुचकवर = जम्बु-
द्वीपात्त्रयोदश रुचक वर नामक द्वीपान्तर्गत मण्डलाकारा पर्वताः, मानुषोत्तराः =
मनुष्यक्षेत्रमीमाकारणोमण्डलाकारिपर्वताः, कालोदधिः = द्वितीयः समुद्रः, लवणः =
सवणसमुद्रः, सलिला = सलिलानि सन्त्यासु सलिलाः, गङ्गादिमहानद्यः, इदपतयः =
नदप्रधानाः पद्ममहापद्मादि महाप्रदाः, रतिररा = नन्दीश्वरनाम आष्टमद्वीपचक्रवाल
विदिग्चतुष्टयव्यवस्थिताः सहस्रयोजनोच्छ्रिताः दशशतगव्यूतभूमिगतमूलभागाः,
सर्वत्र समाश्रित्वारो झट्टरी मस्थानवन्तः पर्वताः, अञ्जनक शैलाः = अञ्जन-
पर्वताः = नन्दीश्वरचक्रवालम यभागवर्त्तिनो दिग् चतुष्टयसस्थिता अञ्जनरत्नमया-
श्रित्वारः पर्वताः, सर्वे कृष्णवर्णाः सन्ति । तथा-दधिमुखः = अञ्जनकचतुष्टय पार्श्व-
वर्ति पुष्करिणीपोडगमध्यभागवर्त्तिन पोडशश्चेतपर्वताः, तथा-जवपातोत्पाताः =

દીપ સે વે કુણ્ડલનામક દ્વીપ કે અન્તર્વર્તી કુણ્ડલાકારવાલે પર્વ-
તોં મેં, રુચકવરપર્વતોં મેં-જમ્બુદ્વીપ સે તેરહવા રુચકવર નામકા જો-
દ્વીપ હે ઉસકે અન્તર્ગત મણ્ડલાકાર પર્વતોં મેં, માનુષોત્તર પર્વતોં મેં-
મનુષ્ય ક્ષેત્ર કી સીમા કરને વાલે મણ્ડલાકાર પર્વતોં મેં, કાલોદધિ
નામકે દ્વીતીયસમુદ્ર મેં, લવણસમુદ્ર, મેં ગંગા આદિ મહાનદિયોં મેં, નદ
પ્રધાનોં મેં પદ્મ, મહાપદ્મ આદિ મહા પ્રદોં મેં, રતિકરોં મેં-જો નદીશ્વર
નામ કે આઠવેં દ્વીપ કી ચાર વિદિગાઓં મેં સ્થિત હૈં એક હજાર યોજન
ઉંચે હૈં તથા એક હજાર કોશતક જિનકા મૂલભાગ પૃથ્વી મેં હૈં-અદૃશ્ય
હૈં, ઓર જો સર્વત્ર સમા હૈં એસે ઝટ્ટરી કે આકારવાલે ચાર પર્વતોં મેં,
અજનક ગિરિયોં મેં નદીશ્વર દ્વીપ કે મધ્યભાગ મેં રહે હુએ, ચાર પર્વતોં
મેં કિ જો અજન રત્નમય હોને સે કાલે હૈં ઓર ચારોં દિશાઓં મેં સ્થિત
હૈં દધિમૂલોં મેં-ચારોં અજનગિરિયોં કે પાસમેં રહી હુઈ સોલહ પુષ્કરિ-

કાર પર્વતોમા, રુચકવર પર્વતોમા-જમ્બુદ્વીપથી તેરમે જે રુચકવર નામનો
દ્વીપ છે તેની અદર મણ્ડલાકાર પર્વતોમા, માનુષોત્તર પર્વતોમા, મનુષ્ય ક્ષેત્રની
સીમા કરનારા મણ્ડલાકાર પર્વતોમા, કાલોદધિ નામના બીજા સમુદ્રમા, લવણ
સમુદ્રમા, ગંગા આદિ મહા નદીયોમા, નદ પ્રધાનોમા-પદ્મ, મહાપદ્મ આદિ
મહા પ્રદોમા, રતિકરોમા-નદીશ્વર નામના આઠમા દ્વીપની ચાર વિદિગાઓમા
રહેલ, એક હજાર યોજન ઊંચા તથા એક હજાર એક સુધીનો જેનો મૂળ
ભાગ પૃથ્વીમા છે-અદૃશ્ય છે, અને જે સર્વત્ર સમાન છે, એવા ઓલરના
આકારના ચાર પર્વતોમા, અજનગિરિયોમા-નદીશ્વર દ્વીપના મધ્ય ભાગમા
આવેલ ચાર પર્વતોમા જે જે અજન રત્નમય હોવાથી કાળા છે અને ચારે
દિશાઓમા ઉભેલા છે, દધિમુખોમા-ચારે અજનગિરિયોની પાસે આવેલ

પુર્વોક્તા દેવાઃ કથમ્ભૂતા ? इत्याह- 'अन्वतत्रिउलत्रोभाभिभूयमणा' अत्यन्तत्रिपुललोभाभिभूतसज्ञाः - अत्यन्तः-अतिशय त्रिपुत्रो यो लोभस्तेन अभिभूता सज्ञा=सज्ञान=मनो चेपा ते तथोक्ताः=संग्रहैकशीला इत्यर्थ, के ते देवा ? इत्याह-'वासहरइखुगार वट पव्वयकुडल-रुचग वरमाणुसोत्तर-कालो दधि लवण-सलिल-दहपति-रतिकर अजणक-सल-दहिमुह-वपातुप्पाय-कचण क-चित्तविचित्त-जमक-वरगिहरकूडवासी' वर्षधरेपुकारट्टपर्वतकण्डल रुचक वरमानुपोत्तरकालोदधिलवणमलिलदपतिरतिकर अतर्कशब्दधिसुखायपा-तोत्पात - काञ्चनक - चित्रविचित्र - यमकवरशिखरकूटवासिनः=तत्र - वर्ष धरा-हिमवदादि पर्वताः, इपुकाराः=घातकीखण्डपुष्करवरद्वीपार्धयोः पूर्वाप रार्द्धयो र्मर्यादाकारिणो दक्षिणोत्तरायताः पर्यतविशेषाः, वृत्तपर्वताः=गन्दापाति विकटापातिगन्धापातिमाल्ययन्नामका वर्तुलवैताढ्यपर्वताः, कुण्डला-जम्बूद्वीपादे

एव दीर्घायुष्क होते हैं, परन्तु वे भी परिग्रह के विषय में सतोष से रहित ही रहते हैं। अतः जब इन देवों की यह दशा है तो फिर अन्य देवों की बात ही क्या कही जा सकती है। ये सब देव अत्यंत बहुत बड़े लोभ से अभिभूत-युक्त सज्ञा-मनोवृत्ति वाले होते हैं, अर्थात्-संग्रहशील होते हैं। (वासहरइखुगार वट पव्वयकुडलरुचगवरमाणुसुत्तरकालोदहीलवणसलिलदहपतिरतिकर अजणकसेलदहिमुह-ओवा युप्पायकचणकविचित्तजमकवरसिहरिकूडवासी) तथा हिमवत् आदि वर्षधरों में, इपुकारों में-घातकीखण्ड तथा आधे पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध रूप दो भागों की मर्यादाकारी तथा दक्षिणोत्तर तक लंबे ऐसे पर्वतों में, वृत्तपर्वतों में शब्दापाति, विकटापाति, गन्धापाति तथा माल्यवान् इन नामके वर्तुल वैताढ्य पर्वतों में, कुण्डलों में ग्यारह जम्बू

પરિગ્રહના વિષયમાં સતોષ રહિત જ રહે છે તો બીજારે એ દેવોની એવી હાલત છે તો બીજા દેવોની તો વાત જ શી કરવી ! એ બધા દેવો અત્યંત લોભી વૃત્તિના હોય છે, એટલે કે તેઓ સંગ્રહશીલ હોય છે “વાસહર-इखुगारवट-पव्वय-कुडल-रुचगवर-माणुसुत्तर-कालोदहि-लवणसलिल-दहपति रतिकर-अजणकसेलदहिमुहओवायुप्पायकचणकविचित्त जमकवरसिहरि कूडवासी” तथा हिमवत् आदि वर्षधरोभा इपुकारोभा, घातकी अउ तथा अर्धा पुष्करवर द्वीपना पूर्वार्ध अने पश्चिमार्धइप ओ लागोनी मर्यादा दर्शावता तथा दक्षिणोत्तरी उत्तर सुधी लाग्ता ओवा पर्वतोभा, वृत्तपर्वतोभा-शब्दापाति, विकटापाति, गन्धापाति, तथा माल्यवान् ओ नामना वर्तुल वैताढ्य पर्वतोभा कुण्डलोभा-अगियार जम्बूद्वीपथी कुण्डला नामना द्वीपनी अहर आवेल कुण्डला-

तथा चन्दनवनकूट आदिकों में इनके बसने का स्वभाव होता है । ऐसे ये चारों प्रकार के देव परिग्रह में तृप्ति धारण नहीं करते हैं ।

भावार्थ—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी एवं कल्पवासी, इस प्रकार से ये दोनों के मूल चार भेद हैं इनमें भवनपति देवों के असुर-कुमार आदि दश भेद, व्यन्तरनिकाय के-पिशाच, भूत आदि सोलह भेद, ज्योतिष्क निकाय के सूर्य, चन्द्र आदि पाचभेद, तथा कल्पवासियों के कल्पोपपन्न और कल्पातीत ऐसे दो भेद हैं । सौधर्म ईशान आदि चारह कल्पों में रहने वाले कल्पोपपन्न, और नवग्रैवेयक तथा पच अनुत्तर विमानों में रहने वाले कल्पातीत हैं । मनुष्यक्षेत्र में रहने वाले ज्योतिषी देव भ्रमणशील हैं तथा मनुष्यक्षेत्र से बाहिर के ज्योतिषी देव अवस्थित हैं । इन सब देवों के भवन, वाहन आदि विशिष्ट प्रकार का परिग्रह रहता है । उसके रहने पर भी इनकी भावना फिर अधिक परिग्रह की ओर सग्रहशील रहती है । इन सब देवों का हिमवन् आदि पर्वतों में रहने का होता है । सब प्रकार की इन्हें सुख-सामग्री प्राप्त रहती है फिर भी इनकी बाञ्छा परिग्रह की ओर से तृप्त नहीं होती है । सतोषवृत्ति इनके चित्त में नहीं जगती है ॥ सू० ३ ॥

पर्वतोभा चन्दनवनकूट आदिमा वसवानो जेमनो स्वभाव छे ओ यारे प्रकारना देवो पणु परिग्रहथी तृप्त यता नथी

भावार्थ—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी अने कल्पवासी, ओ गीते देवोना भूण यार लेह छे तेमा भवनपति देवोना असुरकुमार आदि दश लेह, व्यन्तर देवोना पिशाच, भूत आदि सोलह लेह, ज्योतिषी देवोना सूर्य, चन्द्र आदि पाच लेह, तथा कल्पवासीओना कल्पोपपन्न, अने कल्पातीत ओवा ओ लेह, सौधर्म, ईशान आदि चार कल्पोमा रहैनार कल्पोपपन्न, अने नवग्रैवेयक तथा पाच अनुत्तर विमानोमा रहैनार कल्पातीत देवो छे मनुष्य क्षेत्रमा रहैनार ज्योतिषीदेवो भ्रमणशील छे तथा मनुष्य क्षेत्रनी ञ्छारना ज्योतिषी देवो स्थिर छे ओ ञ्छा देवोना भवन, वाहन आदि विशिष्ट प्रकारनो परिग्रह रहै छे ते ञ्छी वस्तुओ छोवा छता पणु तेमनी वृत्ति अधिक परिग्रहने भाटे सग्रहशील रह्या करे छे, ते ञ्छा देवोनु निवासस्थान हिमवान आदि पर्वतो छे तेमने ञ्छा प्रकारनी सुखसामग्रीओ भणे छे छता पणु परिग्रह भाटेनी तेमनी वासना तृप्त यती नथी तेमना चित्तमा सतोष वृत्ति जगती नथी ॥ सू ३ ॥

અવપતન્તિ વૈમાનિકા દેવા યેષુ તેઽવપાતાઃ, યત્રાવપત્ય વૈમાનિકા દેવા મનુષ્ય-
ક્ષેત્રેષુ સમાગચ્છન્તિ, ઉત્પતન્તિ ચેભ્યસ્તે ઉત્પાતાઃ, ચેભ્ય ઉત્પત્ય મનપતયો
મનુષ્યક્ષેત્રે સમાગચ્છન્તિ, અવપાતાથોત્પાતાથેતિ ડન્ઢ', તિગિ-ઠ્ઠાદય
પર્વતા इत्यर्थः, तथा-काञ्चनका = उत्तरकुरुम ये देवकुरुम ये च प्रत्येक पञ्चाना
महाह्रदादीना प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोः दशदश काञ्चनकपर्वता सन्ति, इति सर्व
संकलनया द्विशतसंख्यकाः काञ्चनकपर्वता भवन्ति । तथा चित्रविचित्रो = निपध
नामक वर्षधर समीपवर्तिनो शीतोदाभिधानमहानद्युभयतटवर्तिनो चित्रविचित्रकू
टाभिधानपर्वतो, यमकवरो = नीलवद वर्षधर प्रयासन्नो शीताभिधानमहानद्युभयत-
टवर्तिनो यमकवरनामको पर्वतो, शिखरिणः = समुद्रमध्यवर्तिनो गोस्तूभादि-
पर्वताः, कूटा = चन्दनवनकूटादय, एतेषा द्वन्द्वः, एषु रस्तु शील येषा ते तथोक्ताः,
देवाः परिग्रहे तृप्तिं न लभन्ते ॥ सू० ३ ॥

ળિયો કે મધ્યભાગ મેં જો સોલહ સોલહ શ્વેત પર્વત હેં, અવપાત-
પર્વતો મેં-જહાં ઉત્તરકર વૈમાનિક દેવ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મેં આતે હેં, એ સ્થાનો
મેં (એ સ્થાનો તિગિચ્છકૂટ આદિ નામ વાલે પર્વત કહલાતે હેં) કાચ-
નપર્વતો મેં-એ પર્વત ઉત્તરકુરુ તથા દેવકુરુ કે વીચ મેં દર એક પાંચ
મહાહ્રદોં કે પ્રત્યેક કે દોનોં કોનોં પર દશ દશ હેં । હસ તરહ સેં એ
દોનોં દોસોં કી સંખ્યા મેં હેં, એ પર્વતોં મેં, ચિત્રવિચિત્ર કૂટ નામ કે
પર્વતોં મેં-એ દોનો પર્વત નિપધ નામકે વર્ષધર કે સમીપ મેં હેં, તથા
શીતોદા નામકી મહાનદી કે દાનોં તટ પર વર્તમાન નીલ વર્ષધર કે
પાસ રહે હુણ તથા શીતા મહા નદી કે દોનોં તટ પરવર્તમાન એસેં યમ
કવર નામ કે પર્વતોં મેં, શિખરી-સમુદ્રમધ્યવર્તી ગોસ્તૂભ આદિ પર્વતોં મેં,

સોળ પુષ્કરણિયોના મધ્ય ભાગમા જે સોળ સોળ શ્વેત પર્વત છે તેમા, અવ
પાત પર્વતોમા-જ્યા ઉતરીને વૈમાનિક દેવો મનુષ્ય ક્ષેત્રમા આવે છે એ સ્થા
નોમા, ઉત્પાત પર્વતોમા-જ્યા ઉતરીને ભવનપતિ મનુષ્યક્ષેત્રમા આવે છે તે
સ્થાનેમા (તે સ્થાનો તિગિચ્છકૂટ આદિ નામના પર્વતો ડહેવાય છે) કાચનક
પર્વતોમા-તે પર્વતો ઉત્તરકુરુ તથા દેવકુરુની વચમા દરેક પાંચ મહાહ્રદોમાના
પ્રત્યેકના બને ખૂણા પરુ દશ દશ છે, અને એ ગીતે તે બને બસોની સંખ્યામા
છે, તે પર્વતોમા, ચિત્રવિચિત્રકૂટ નામના પર્વતોમા-એ બને પર્વતો નિપધ
નામના વર્ષધરની પાસે છે, તથા શીતોદા નામની મોટી નદીના બને કિનારા
પર આવેલા છે, નીલ વર્ષધરની પાસે આવેલ તથા શીતા મહાનદીના કિનારા
પર આવેલ યમકવર નામના પર્વતોમા ઝિખરી-સમુદ્રની વચ્ચેના ગોસ્તૂભ આદિ

हुति, नियमा सल्ला दडा य गारवा य कमाया य सन्ना य-
कामगुणअणहगा य इदियलेसाओ, सयणसपओगा सचि-
त्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणंतगाइ इच्छति परिघेतु ।
सदेवमणुयासुरम्मि लोए । लोभपरिग्गहो जिणवरेहि
भणिओ, नत्थि एरिसो पासो पडिवधो अत्थि सव्वे जीवाण
सव्वलोए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ वक्खार अकम्मभूमीसु’ वक्षस्काराकर्मभूमितु वक्षस्कारा = चित्रकू-
टादयो विजयविभागकारिणश्च, अकर्मभूमय = हैमवतिका भोगभूमयश्च तासु तथो-
क्तासु ये वर्तन्ते, तथा ‘ सुविभक्तभागदेशासु ’ सुविभक्तभागदेशासु सुविभक्ता
भागदेशा ननपदा यासु ताम्तथोक्तासु ‘ कम्मभूमिसु ’ कर्मभूमीसु—कृष्यादि
कर्मस्थानभूतेषु भारतादिषु ‘ जे वि य ’ येषां च नराः ‘ चाउरतचक्कवट्ठी ’ चा-
तुरन्तचक्रवर्तिनो वासुदेवाः पलदेवा ‘ मडलिया ’ माण्डलिका ‘ इस्सरा ’ ईश्वराः
‘ तलवरा ’ तलवराः, ‘ सेणावई ’ सेनापतय, ‘ इब्भा ’ इभ्याः ‘ सेट्ठी ’ श्रेष्ठिनः

अथ सूत्रकार मनुष्य के परिग्रह का वर्णन करते हैं—‘ वक्खार-’
इत्यादि (वक्खार अकम्मभूमीसु) विजय विभागकारी चित्रकूट आदि,
वक्षस्कारों में, अकर्मभूमियो में—हैमवतिक आदि युगलिक धर्मवाले
क्षेत्रों में, तथा (सुविभक्तभागदेशासु कम्मभूमीसु) सुविभक्त भाग
देशवाली कर्म भूमियों में—कृष्यादि कर्म के स्थानभूत भरत आदि क्षेत्रों
में (जे वि य नरा चाउरत चक्कवट्ठी वासुदेवापलदेवा मडलिया इस्सरा
तलवरा सेणानईइब्भा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहियाकुमारा दडणायगा
गणणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुविया अमच्चा एए अण्णे य एव-
मादी परिग्ग सचिणत्ति) जो भी मनुष्य हैं, चातुरन्तचक्रवर्ती हैं,

इवे सूत्रज्ज मनुष्येना परिग्रहणं वर्णनं करे छे—“ वक्खार ” इत्यादि

“ वक्खार—अकम्म भूमीसु ” विजय विभागकारी चित्रकूट आदि वक्षस्का-
राभा, अकर्मभूमियोभा—हैमवति- आदि युगलिक धर्मवाणा क्षेत्रभा, तथा
“ सुविभक्तभागदेशासु कम्मभूमीसु ” सुविलस्य भाग देशवाणी कर्मभूमियोभा—
पेती आदि कर्मना स्थानेषु भरत आदि क्षेत्रभा “ जेविय नरा चाउरतचक्कवट्ठी
वासुदेवापलदेवा मडलिया इस्सरा तलवरा सेणावई इब्भा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहिया
कुमारा दडणायगा गणणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुविया अमच्चा ए ए
अण्णे य एवमादी परिग्रह सचिणत्ति ” २ मनुष्ये छे, चातुरन्त चक्रवर्ति छे

अथ मनुष्यपरिग्रह वर्णयति—‘ वस्त्रार ’ इत्यादि—

मूलम्—वस्त्रार अकम्मभूमीसु सुविभक्तभागदेसासु क-
म्मभूमीसु । जे त्रि य नरा चाउरंतचक्रवट्टी वासुदेवा बल-
देवा मंडलिया इस्सरा तलवरा मेणावई इवभा सेट्टिया
रट्टिया पुरोहिया कुमारा दडणायगा गणणायगा माडंविया
सत्थवाहा कोडुविया असच्चा एए अण्णे य एवमादी
परिग्रह संचिणंति—अणत्तमसरणं दुरतं अधुवमणिच्च
असासय पावकम्मनेम अवकिरियव्व विणासमूल वहवध
परिकिलेसबहुलमणंतसकिलेसकरणं । ते त धणकणगरय-
णानिचियपडिया चेव लोभघत्था ससार अतिवयंति सव्व-
दुक्खसन्निलयण । परिग्रहस्सेव य अट्टाएसिप्पसय सिक्खए
वहुजणो कलाओ य वावत्तरिसुनिउणाओ लेहादियाओ
सउणारुआवसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महि-
लागुणे रइजणणे सिप्पसेव असिमसि किसिवाणिज्ज ववहार
अत्थसत्थ इसुसत्थ च्छरुप्पगय विविहाओ य जोगजुज-
णाओ । अन्नेसु य एवमाइएसु बहुकारणसएसु जावजीव
नडिज्जए सचिणंति मदबुद्धी परिग्रहस्सेव य अट्टाए करेति
पाणाणवहकरण, अलियनियडि साइसपओगे परदव्व
अभिज्झ सपरदार-गमणासेवणाए आयासविसूरण कलह-
भडणवेराणि य अवमाणविमाणणाओ । इच्छमहिच्छपिवा-
ससतत तिसिया तण्हगेहिलोभघत्था अत्ताण अनिग्रहिया
करेति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे । परिग्रहे चवे

પાપકર્મણાં=ત્રિનિવૃત્તાનાવરણીયાદિકર્મણાં મૂલમિત્યર્થઃ, તથા 'અવકિરિયન્વ' અવકરિતવ્યમ્, -ત્યાજ્યમ્, 'વિનાસમૂલમ્' વિનાશમૂલમ્=જ્ઞાનાદિગુણનાશકારકમ્, 'વહ્નધપરિકિલેસવહુલ' વધન્યપરિકલેશવહુલમ્=વધો-હિંસન, વન્ધો-વન્ધનમ્, તઙ્ગનિતા પરિકલેશાસ્તાપા વહુલા =મત્તુરા યસ્મિન્નસ્ત તથોક્તમ્, તથા -'અણતસકિલેસકારણ' અનન્તમલેશકારણમ્-અનન્તા યે સવલેશાઃ=દુઃસ્વાનિ-તેષા કારણમ્ । એનાદશ પરિગ્રહ ચક્રવર્ત્યાદયસ્તદ્વિન્નાશ્ચ નરાઃ સચિન્વન્તિ । તે-પૂર્વોક્તાઃ 'લોભવત્યા' લોભવસ્તાઃ 'ત ધનકળગ રચણનિચય' ત ધનકનક રત્નનિચય 'પડિયાચેવ' પિણ્ડયન્તથૈવ સસાર=ચતુર્ગતિલક્ષણમ્, 'અતિવચતિ'

ભાવ વાલા હોને કે કારણ યહ અશાશ્વત હૈ । (પાવકમ્મનેમ) જ્ઞાનાવર-
ણીય આદિ કર્મો કા કારણ મૂલ હોને સે યહ પાપકર્મ કા નેમભૂત હૈ ।
(અવકિરિયન્વ) મુમુક્ષુઓ કો છોદને યોગ્ય હોને કે કારણ યહ અવ-
કરિતવ્ય-ત્યાજ્ય હૈ । (વિનાસમૂલ) જ્ઞાનાદિગુણો કે નાશ કા હેતુ
હોને સે યહ વિનાશમૂલ હૈ । (વહ્નધપરિકિલેસવહુલ) હસકે ખીતર
વધ-હિંસા, વધ-વધન, ઓર પરિકલેશ-સતાપ યે સઘ વહુત અધિકરૂપ
મેં હુએ હૈ । (અણતકિલેસકારણ) હસીલિયે યહ જીવો કો અનતસ-
વલેશ કારણ હોતા હૈ । એસે હસ પરિગ્રહ કો ચક્રવર્તી જન આદિ તથા
હનસે ભિન્ન જો ઓર મનુષ્ય હૈ વે સચિત કરતે રહતે હૈ । કયોં કિ યે
સમસ્ત હી જન (લોભવત્યા) લોભરૂપ કપાઘ સે ગ્રસિત હોતે હૈ । (તં
ધનકળગરચણનિચય) હસી કારણ હસ ધન, કનક એવ રત્ન કે નિચય
કો (પડિયાચેવ) સગ્રહ કરને મેં હી લગા રહા કરતે હૈ । હસી કારણ

“ પાવકમ્મનેમ ” જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોનુ મૂળ કારણ હોવાથી તે પાપકર્મોના
નિમિત્ત રૂપ છે, “ અવકિરિયન્વ ” મુમુક્ષુને તે છોડવા યોગ્ય હોવાથી તે
“ અવકરિતવ્ય ” ત્યાજ્ય છે, “ વિનાસમૂલ ” જ્ઞાનાદિ ગુણોના નાશ ને માટે
કારણ રૂપ હોવાથી તે વિનાશમૂળ છે “ વહ્નધપરિકિલેસકારણ ” તેની
અદર વધ-હિંસા, વધ-વધન, અને પરિકલેશ-સતાપ એ વધુ વધારે
પ્રમાણમા રહેલ છે “ લોભવત્યા ” તે કારણે તે જીવોને અનત સકલેશ-
સતાપનુ કારણ બને છે એવા તે પરિગ્રહનો ચક્રવર્તિ આદિ તથા તે સિવા-
યના બીજા જે માણસો હોય છે, તેઓ સચય ડરતા રહે છે, કારણ કે તે
સધના લોકો “ ત ધનકળગરચણનિચય ” તે કારણે તેઓ ધન, કનક, અને
રત્નના સમૂહના “ પડિયાચેવ ” સગ્રહ કરવામા જ લીન રહે છે એ જ

‘રઘ્વિયા’ રાષ્ટ્રિયા: ‘પુરોહિયા’ પુરોહિતા ‘કુમારા’ કુમારા: દડનાયકા ‘
 દણ્ડનાયકા: ‘ગણનાયકા’ ગણનાયકા: ‘માઙ્ગિયા’ માઙ્ગિકા: ‘સત્યવાહા’
 સાર્થવાહા: ‘કુઙ્ગિયા’ કૌઙ્ગિકા:, ‘અમચા’ અમાત્યા, ‘અ’ એતે ચાતુ
 રન્તચક્રવર્ત્યાધિમાત્યાન્તા: તથા ‘અન્ને ય એવાઈ’ અન્યે ચ એવાદય: = પૂર્વો-
 ક્તેભ્ય: હતરે ચ તત્સદશા યે નરા: ‘પરિગ્રહ’ પરિગ્રહ ‘સચિણતિ’ સચિન્વન્તિ
 -પરિગ્રહસ્ય સચય કુર્વન્તીત્યર્થ કીદશ પરિગ્રહમ્ ? इत्याह-‘અણત’ અનન્તમ્-
 અપરિમાણત્વાત્, ‘અસરણ’ અસરણ-રક્ષણસમર્થત્વાત્, ‘દુરત’ દુરન્ત = પર્યવ-
 સાનદારુણમ્ ‘અધુવ’ અધુવ-વિનશ્વરમ્, ‘અનિચ્ચ’ અનિત્યમ્, = અસ્થિરમ્,
 ‘અસાસય’ અશાશ્વત = પ્રતિક્ષણ વિશરણશીલમ્, ‘પાવકર્મણેમ’ પાપકર્મણેમ-

વાસુદેવ હૈં, વલદેવ હૈં, માણ્ડલિક હૈં, ઈશ્વર હૈં, તલવર હૈં, સેનાપતિ હૈં,
 રઘ્વિય હૈં, શ્રેષ્ઠી હૈં, રાષ્ટ્રિય હૈં, પુરોહિત હૈં, કુમાર હૈં, દડનાયક હૈં, ગણ-
 નાયક હૈં, માઙ્ગિક હૈં, સાર્થવાહ હૈં, કૌઙ્ગિક હૈં, અમાત્ય હૈં, તથા
 इनसे भिन्न जो और भी इन्ही जैसे मनुष्य हैं वे सब परिग्रह का सचय
 करते हैं । अब सूत्रकार विशेषणों द्वारा परिग्रह में विशेषता प्रकट करते
 हैं वे कहते हैं कि यह परिग्रह (अणत) अपरिमित होने से अनन्त है ।
 (असरण) रक्षा करने में असमर्थ होने से अशरणरूप है । (दुरत)
 अन्त में इसका विपाक जीवों को बहुत ही भयकर रूप में भोगना पड़ता
 है-इसलिये दुरन्तविपाक वाला होने के कारण यह दुरन्त है । (अधुव)
 विनश्वर स्वभाव वाला होने के कारण यह अधुव है । (अनिच्च)
 अस्थिर होने से यह अनित्य है । (असासय) प्रतिक्षण खिरने का स्व

વાસુદેવ છે, વળદેવ છે, માણ્ડલિક છે, ઈશ્વર છે, તલવર છે, સેનાપતિ છે, રઘ્વિ
 છે, શ્રેષ્ઠી છે, રાષ્ટ્રિય છે, પુરોહિત છે, કુમાર છે, દડનાયક છે, ગણનાયક છે,
 માઙ્ગિક છે, સાર્થવાહ છે, કૌઙ્ગિક છે, અમાત્ય છે, તથા તે
 સિવાયના બીજા પણ તેમના જેવા જે લોકો છે તે બધા પરિગ્રહનો સચય
 કરે છે હવે સૂત્રકાર વિશેષણો દ્વારા પરિગ્રહમાં વિશેષતા પ્રગટ કરવાને માટે
 કહે છે કે-આ પરિગ્રહ “અણત” બેહદ હોવાથી અનન્ત છે “અસરણ”
 રક્ષા કરવાને અસમર્થ હોવાથી અશરણરૂપ છે, “દુરત” જીવોને તેનો
 વિપાક (ફળ) બહુ જ ભયકર રીતે ભોગવવું પડે છે-તેથી દુરન્ત વિપાક
 વાળો હોવાને કારણે તે દુરન્ત છે “અધુવ” નાશવત સ્વભાવનો હોવાથી
 તે અધુવ છે, “અનિચ્ચ” અસ્થિર હોવાથી તે અનિત્ય છે, “અસાસય”
 પ્રતિક્ષણ હાથમાથી ખરી પડવાના સ્વભાવવાળો હોવાથી તે અશાશ્વત છે,

‘અવસરો લભ્યતે તત્ શિલ્પ’ શિલ્પસેવા’ इत्युच्यते, तथा ‘असिमसिकिसिवा-
णिज्ज’ असिमपीकृपियाणिज्यम्=असिःखड्गाभ्यासः, मसि.=ममिकृत्यमक्षरलेख-
नादि, कृपिः=कृपणम्, ‘वाणिज्ज’ वाणिज्यम्=वणिक्कर्म, एतेषा समाहारद्वन्द्वः,
तत् ‘ववहार’ व्यवहार=व्यवहारशास्त्रम्, तथा ‘अत्यसत्य’ अर्थशास्त्रम्, अर्थो-
पायप्रतिपादक कौटिल्यबृहस्पत्याद्यशास्त्रम्, ‘इसुसत्य’ इषुगास्त्रम्-धनुर्वेद
‘छरुप्पगय’ त्सरुप्पगत=खड्गमुष्टिग्रहणोपाय, तथा ‘विविहाओ’ विविधाः
‘जोगजुजणाओ य’ योगयोजनाश्च=वशीकरणदिप्रयोगाश्च शिक्षते । तथा

हुए हैं सीखते हैं । तथा (सिप्पसेव) ऐसी शिल्प विद्या को सीखते हैं
कि जिसके बल पर उन्हें राजा की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो जाता
है । तथा असि, मपी, कृपि एवं वाणिज्यव्यापार, (ववहार) व्यवहार
शास्त्र इन कर्मों को सीखते हैं । तलवार वगैरह अस्त्र शस्त्रादि से
आजीविका चलाना इसका नाम असिकर्म है । लेखन आदि करके जीवन
निर्वाह करना इसका नाम मपीकर्म है । खेती किसानी करके जीविका
चलाना इसका नाम कृपिकर्म है । व्यापार धड़ा करना इसका नाम वाणि-
ज्य कर्म है । जिससे लोक व्यवहार चलता है वह व्यवहारशास्त्र है ।
परिग्रही जीव (अत्यसत्य) अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करते हैं । इस
अर्थ शास्त्र के प्रणेता कौटिल्य, बृहस्पति आदि हुए हैं । इसके अध्ययन
से व्यापारिक क्षेत्र में व्यापारियों को पैसेकी आयके साधन कैसेर क्या
होते हैं इस सब विषय का बोध हो जाता है । इसी परिग्रह की ममता
से जीव (इसुसत्य) धनवेद को (छरुप्पगय) तलवार आदि के चलाने
की कला को तथा (विविहाओ जोगजुजणाओ) वशीकरण आदि

તેમને રાજાની સેવા કરવાની તક મળે તથા અસિ, મપી, કૃપિ અને વાણિજ્ય
વ્યાપાર, ‘વવહાર’ ” વ્યવહાર શાસ્ત્ર વગેરે કાર્યો શીખે છે તલવાર આદિ
અસ્ત્ર શસ્ત્રાદિથી નિર્વાહ ચલાવવો તેનું નામ અસિકર્મ છે, લેખન આદિ
કરીને જીવન નિર્વાહ ચલાવવો તેનું નામ મપીકર્મ છે ખેતી કરીને નિર્વાહ
ચલાવવો તેનું નામ કૃપિકર્મ છે વ્યાપાર રોજગાર કરવો તેનું નામ વાણિજ્ય
કર્મ છે જેનાથી લોકવ્યવહાર ચાલે છે તે વ્યવહારશાસ્ત્ર છે પદ્ધિથી જીવ
“ અત્યસત્ય ” અર્થશાસ્ત્રનું પણ અધ્યયન કરે છે તે અર્થશાસ્ત્રના પ્રણેતા
કૌટિલ્ય, બૃહસ્પતિ આદિ થયા છે તેનો અભ્યાસ કરવાથી વ્યાપારના ક્ષેત્રમાં
પૈસા કમાવવાના સાધનો કેવા કેવા હોય છે, અને કયા કયા હોય છે એ
બધી બાબત વેપારીઓને જાણવા મળે છે એ જ પરિગ્રહની મમતાથી જીવ
“ इसुसत्य ” धनवेद, “ छरुप्पगय ” तलवार आदि वापरवानी कला, तथा

‘અતિવ્રજન્તિ-પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થ, કીટશ સસારમ્ ? इत्याह—‘सर्वदुःखसन्निलयण’
 सर्वदुःखसन्निलयनम्=सर्वदुःखाना संनिलयनम्=आश्रयभूतम् । तथा—‘परिग्रहस्त
 य अट्टाए’ परिग्रहस्य च अर्थाय=परिग्रह लक्षिकृत्येत्यर्थः,, ‘बहुजगो’ बहुजनः=
 जनसमुदायः ‘सिप्पसय’ शिल्पगत=आचार्योपदेशगम्यमनेकविध शिल्प ‘सि
 वस्वते’ शिक्षते । तथा ‘सुनिउणहओ’ सुनिपुणाः=शिक्षार्थिना मुनैपुण्याधायकाः
 ‘लेहाइयाओ’ लेखादिकाः=लेख आदौ यासां तास्तथोक्ता, ‘सउणरुयावसा
 णाओ’ शकुनरुतावसाना.=शकुनाना=पक्षिणा स्त जल्पितमयसानेऽन्ते यासां
 तास्तथोक्ताः, ‘गणियप्पहाणाओ’ गणितप्रधानः=गणित प्रधान यासु तास्तथोक्ताः,
 ‘वावत्तरि’ द्विसप्तति ‘कलाओय’ कलाश्च शिक्षते । तथा—‘रत्तिजणणे’
 रतिजननान्=रति=राग जनयन्ति ये ते रतिजननास्तास्तथोक्तान् ‘चउसट्ठि च
 महिला गुणे’ चतुः पट्ठि च महिलागुणान्=वात्स्यायन प्रोक्तान् नृत्यगीतादीन्,
 तथा ‘सिप्पसेव’ शिल्पसेवा=शिल्पेन सेवा ता तथोक्ताम्, येन शिल्पेन राजसेवा

1 પરિગ્રહી જીવ (સર્વદુઃખસન્નિલયણ) સમસ્ત દુઃખો કે આશ્રયભૂત હસ
 ૨ (સસાર) ચતુર્ગતિરૂપ સસાર મેં (અતિવ્રતિ) ભટકતે રહતે હૈં । તથા
 ૩ (પરિગ્રહસ્તય અટ્ટાણ બહુ જગો સિપ્પસય સિક્કણ) હસ પરિગ્રહ કે
 ૪ નિમિત્ત કો લેકર હી બહુત સે લીગ કલાચાર્ય કે ઉપદેશ સે પ્રાપ્ત હોને
 ૫ વાલે અનેક શિલ્પો કો સીખતે હૈં તથા (સુનિઉણાઓ લેહાઇયાઓ સડ
 ૬ ણરુયાવસાયાઓ ગણિયપ્પહાણાઓ વાવત્તરિકલાઓ) અપને મેં અઠ્ઠી
 ૭ તરહ સે નિપુણતા વઢાને વાલી લેખકલા સે લેકર શકુનરુત પર્યં ૭૨ બહતર
 ૮ કલાઓ કો જિને કિમે ગણિતપ્રધાન હોતા હૈં સીખતે હૈં તથા (રજ્જણે
 ૯ ચ્ચસટ્ઠિ ચ મહિલાગુણે) રાગજનક નૃત્ય, ગીત આદિ સ્ત્રીયો સે સબધ
 ૧૦ રાખને વાલી ચૌસઠ કલાઓ કો કિ જિનકે પ્રદર્શક વાત્સ્યાયન ઋષિ

કારણે પરિગ્રહી જીવ “ સર્વદુઃખસન્નિલયણ ” સમસ્ત દુઃખોના આશ્રયભૂત આ
 “ સસાર ” ચાર ગતિવાળા સસારમાં “ અતિવ્રતિ ” ભટકતા કરે છે, તથા
 “ પરિગ્રહસ્તય અટ્ટાણ બહુ જગો સિપ્પસય સિક્કણ ” આ પરિગ્રહને નિમિત્તે જ
 ઘણા લોકો ડલાચાર્યના ઉપદેશથી પ્રાપ્ત થતી અનેક કલાઓ શીખે છે, તથા
 “ સુનિઉણાઓ લેહાઇયાઓ સ ડુણરુયાવસાયાઓ ગણિયપ્પહાણાઓ વાવત્તરિકલાઓ ”
 ખોતાની નિપુણતા સારી રીતે વધારનારી લેખન કળાથી લઈને શકુનરુત સુધીની
 ૭૨ ખોતેર કલાઓ કે જેમાં ગણિત મુખ્ય હોય છે તે બધી કલાઓ શીખે છે,
 તથા “ રજ્જણે ચ્ચસટ્ઠિય મહિલાગુણે ” રાગ જનક નૃત્ય, ગીત આદિ સ્ત્રીઓ સાથે
 સબધ રાખનારી ચૌસઠ કલાઓ શીખે છે એ કલાઓના પ્રદર્શક વાત્સ્યાયન
 ઋષિ હતા તથા “ સિપ્પસેવ ” એવી શિલ્પ વિદ્યાઓ શીખે છે કે જેને પ્રભાવે

‘ અભિજ્ઞા ’ અભિધ્યા-આસક્તિસ્તાં તથોક્તામ્, તથા ‘ સપરદારગમણાસેવનાય ’
સ્વદારગમનસેવનાયામ્ ‘ આયાસવિસૂરણ ’ આયાસચેદ, સ્વદારગમને આયાસ-
શારીર માનસ ચ શ્રમમ્, પરદારાસેવને ચેદમ્=પરદારાપ્રાપ્તૌ મનઃ ચેદ ચ કુપ-
ન્તીત્યર્થઃ, તથા ‘ કલહમહળવેરાણિ ચ ’ કલહમહળવૈરાણિ ચ તત્ર-કલહો-
વાચિક યુદ્ધમ્, મહળમ્-પરદોષોદ્ઘાટન ગાલીપ્રદાન વા, વૈર=ચિત્તેડમર્ષાનુવન્ધઃ,
તથા ‘ અવમાણવિમાણણાઓ ’ અપમાનવિમાનને, અપમાન વિનયધ્વસઃ, વિમાનના=
તિરસ્કરણમ્, એતાનિ સર્વાણિ પરિગ્રહસ્યેવાર્થાય કુર્વન્તિ । તથા ‘ ઇચ્છમહિચ્છ
પિવાસસયયતિસિયા ’ ઇચ્છામહેચ્છાપિપાસાસતતતૃપિતા., તત્ર ઇચ્છા=અભિલાષમા-
ત્રમ્, મહેચ્છા=મહાભિલાષશ્ચક્રવર્ત્યાદિપદાના પિપાસા=વિષયસુખપાનેચ્છા, તામ્યઃ
તૃપિતા ઇત્ય તૃપિતાઃ તથા ‘ તળ્હાગેહિલોભઘત્થા ’ તૃષ્ણાગૃહ્ણિલોભઘન્તાઃ, તૃષ્ણા=
અપ્રાપ્તદ્રવ્યસ્ય લાભેચ્છા ’ ગૃહ્ણિઃ=પ્રાપ્તદ્રવ્યાસક્તિ, લોભઃ=ચિત્તમોહનમ્, તૈર્ગ્ર-

કરતે હૈ । (પરદન્વઅભિજ્ઞ) દૂસરોં કે દ્રવ્ય મેં આસક્તિ ભાવ કરતે હૈ ।
(સપરદારગમણા સેવૈનાય આયાસ વિસૂરણ) અપની સ્ત્રી કે સેવન મેં
શારીરિક એવ માનસિક પરિશ્રમ કરતે હૈ, પરસ્ત્રી કે અપ્રાપ્તિ મેં મનચેદ
કિયા કરતે હૈ । તથા (કલહમહળવેરાણિય) કલહ-વાચિક યુદ્ધ, મહળ
-અસમ્ય શબ્દો કા પ્રયોગ-ગાલી દેના આદિ, વૈર-ચિત્ત મેં ક્રોધ કરના
તથા (અવમાણવિમાણણાઓ) દૂસરોં કા અપમાન દરના, તિરસ્કાર કરના
એ સવ ઘાતેં હમ એક પરિગ્રહ કે નિમિત્ત હી પાપિયો દ્વારા કી જાતી હૈ ।
તથા (ઇચ્છમહિચ્છપિવાસસયયતિસિયા) પરિગ્રહી જીવ ઇચ્છાઓ સે,
બઢી ૨ અભિલાષાઓં સે, એવ વિષય સુખપાન કી કામનાઓંસે સદા
તૃપિત વ્યક્તિ કી તરહ તૃપિત હી વને રહતે હૈ । તથા (તળ્હાગેહિ લોભ-
ઘત્થા) તૃષ્ણા-અપ્રાપ્ત-દ્રવ્ય કો પ્રાપ્ત કરને કી ભાવના, ગૃહ્ણિ-પ્રાપ્તદ્રવ્ય મેં

અભિજ્ઞ ” ખીજના દ્રવ્યમા આસક્તિ રાખે છે “ સપરદારગમણાસેવનાય
આયાસવિસૂરણ ” પોતાની સ્ત્રીને સેવવાનો શારીરિક અને માનસિક પરિશ્રમ
કરે છે, એને પરસ્ત્રીની અપ્રાપ્તિથી મનમા એદ અનુભવે છે તથા “ કલહ
મહળવેરાણિય ” કલહ-વાચ્યુદ્ધ, મહળ-ગાળો આદિ અસમ્ય શબ્દોનો ઉપયોગ
વૈર-મનમા ક્રોધ કરવો તથા “ અવમાણવિમાણણાઓ ” ખીજાનુ અપમાન,
તિરસ્કાર વગેરે બધી બાબતો એક પરિગ્રહને કારણે જ લોકો દ્વારા કરાય છે,
તથા “ ઇચ્છમહિચ્છપિવાસસયયતિસિયા ” પરિગ્રહી જીવ ઇચ્છાઓથી, મોટી
મોટી અભિલાષાઓથી, અને વિષય સુખપાનની કામનાઓથી સદા તૃપિત માણ
સની જેમ તૃપિત જ રહ્યા કરે છે તથા “ તળ્હાગેહિ લોભઘત્થા ” તૃષ્ણા-અપ્રાપ્ત
દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના, ગૃહ્ણિ-પ્રાપ્ત દ્રવ્યમા વધારે પડતી આસક્તિ અને

‘ અન્નેસુ એવમાઇસુ ’ વહુસુકારણસામુ ‘ અન્યેસુ એવમાદિકેષુ વહુસુ
કારણશ તેષુ=શિલ્પાદિભિન્નેષુ પરિગ્રહોપાદાનશતેષુ ‘ જાવજીવ ’ યાવજ્જીવં
‘ નહિજ્જણ ’ નિમજ્જતે=નિમગ્ની ભવતિ । તથા ‘ સચિણતિ મદ્ધુદ્ધી ’ સચિ-
ન્વન્તિ મન્દ્ધુદ્ધય પરિગ્રહમ્ । તથા ‘ પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્દાણ કરેતિ ’ પરિગ્રહસ્યેવ
ચ અર્થાય કુર્વન્તિ, ‘ પાણાણવહકરણ ’ પ્રાણાના વધકરમ્=પરિગ્રહ કર્તુ પ્રાણિના
વધ કુર્વન્તીત્યર્થઃ, તથા—‘ અલિયનિયદિસાહસપઓગે ’ અલીકનિકૃતિસાતિ
સપ્રયોગાન્, અધિકમ્-અસત્યમ્, નિકૃતિઃ-મધુરવચનાદિભિરાશ્વાસ્ય વચ્ચનમ્,
સાતિસપ્રયોગઃ-ત્રિગુણદ્રવ્યેષુ દ્રવ્યાન્તર સયોજ્ય પ્રશસ્તગુણભ્રમોત્પાદનમ્, -એતેષા
દ્વન્દ્વ, તાસ્તથોક્તાન્, ‘ પરદન્વ અમિજ્ઞ ’ પરદ્રવ્યાભિધ્યામ્-પરદ્રવ્યેષુ=પરધનેષુ

અનેકવિધ પ્રયોગોં કોં ભી (સિદ્ધાણ) સીખતે હૈ । (અન્નેસુ ય એવ-
માઇસુ) તથા ઇસી તરહ કે ઓર ભી હન શિલ્પાદિકોં સે ભિન્ન અનેક
(વહુકારણસામુ) પરિગ્રહ કે સંકરોં કારણોં મેં પરિગ્રહ કોં ! અર્જન કરને
કી લાલસાવાલા પ્રાણી (જાવજીવ) જીવન પર્યંત (નહિજ્જણ) મગ્ન હોતા
રહતા હૈ । (સચિણતિ મદ્ધુદ્ધી) ઇસલિયે ઇસ કથન સે યહી નિષ્કર્ષ
નિકલતા હૈ કિ જો મદ્ધુદ્ધિ હોતે હૈં વે હી ઉત્કટ પરિગ્રહ કા સચય
કરતે હૈં । તથા (પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્દાણ પાણાણવહકરણ કરેતિ) પરિ-
ગ્રહ કે નિમિત્ત હી પ્રાણી પ્રાણિયોં કે પ્રાણોંકોં વધ કરતે હૈં તથા (અલિ-
યનિયદિ-સાહ સપઓગે) ઇસ પરિગ્રહ કોં લક્ષ્ય કરકે, હી વે (અલિય)
અસત્યભાષણ કરતે હૈં (નિયદિ) મધુર ૨ ભાષણોં સે દુસરોં કોં વિશ્વાસ
દિલાકર ફિર ઉન્હે ઠગતે હૈં, (સાહસપઓગે) ઓછી કીમત કી વસ્તુ
મેં વહુમૂલ્યવાલી વસ્તુ કોં મિલાકર ઉસે અધિક મૂલ્યવાલી બનાદિયા

“ વિવિદ્ધાઓ જોગજુજનાઓ ” વશીકરણ આદિ અનેક વિધ પ્રયોગો પશુ શીખે
“ અન્નેસુ ય એવમાઇસુ ” તથા તે કળાઓ સિવાયના એ જ પ્રકારના બીજા
અનેક “ વહુકારણસામુ ” પરિગ્રહોના સેકડો કારણોમા પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કર
વાની લાલસા વાળા હોવે. “ જાવજીવ ” આખુ હોવન “ નહિજ્જણ ” લીન રહે
છે “ સચિણતિ મદ્ધુદ્ધી ” તેથી આ કથનથી એ જ કલિત થાય છે તથા
કે જે લોકો મદ્ધુદ્ધિવાળા હોય છે તેઓ જ ઉત્કટ પરિગ્રહનો સચય કરે છે
તથા “ પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્દાણ પાણાણવહકરણ કરેતિ ” પરિગ્રહને નિમિત્તે જ
પ્રાણી અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ કરે છે, તથા “ અલિય-નિયદિ-સાહ
સપઓગે ” આ પરિગ્રહને લક્ષ્ય કરીને જ તેઓ “ અલિય ” અસત્ય બોલે
છે, “ નિયદિ ” મીઠા મીઠા વચનોથી બીજામા પોતાના પ્રત્યે વિશ્વાસ જમા
વીને પાછળથી તેને ઠગે છે “ સાહસપઓગે ” ઓછી કીમતની વસ્તુને લાંબે
કીમતની વસ્તુ સાથે મિશ્રણ કરીને તેનો વધારે લાભ ઉપજાવે છે, “ પરદન્વ

લેશ્યાશ્ચ ભવન્તિ । તથા - ' સયણસપઓગા ' સ્વજનસપયોગાઃ=સ્વજનૈઃ=પુત્રદા
રાદિભિઃ સહ સપયોગ=સપોગાશ્ચ ભવન્તિ । તે ચક્રવર્ત્યાદયઃ ' અણતગાઢ '
અનન્તકાનિ=પર્યગ્માનરહિતાનિ ' સચિત્તાચિત્તમીસગાઢ ' સચિત્તાચિત્તમિશ્રકાણિ
=તચ સચિત્તાનિ સજીવાનિ=પુત્રાદીનિ અચિત્તાનિ=અજીવાનિ=હિરણ્યસુવર્ણરત્ના-
દીનિ, મિશ્રકાણિ=સચિત્તાચિત્તરૂપાણિ હિરણ્યસુવર્ણાધામરણસહિતાનિ પુત્રકલત્રા-
શબ્દાદિ વિષયરૂપ આશ્રય, ઇન્દ્રિયો કી અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયા, કૃષ્ણ, નીલ
આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઈ રહતી હૈં । અર્થાત્ પરિગ્રહ પાપ કે સદ્ભાવ મેં
હી નિયમતઃ માયાદિ શલ્યોં કા સદ્ભાવ જીવોં મેં પાયા જાતા હૈ । મન
વચન આદિ યોગોં કી પ્રવૃત્તિ ઇતી કે હોને પર અશુભ રૂપ મે રહતી હૈં ।
ગૌરવોં કા અસ્તિત્વ તથા કપાયોં કી સત્તા ણ્વ આહાર આદિ ચાર
પ્રકાર કી સજ્ઞાઓ કા સદ્ભાવ ઇસ ઈક પરિગ્રહ કી મૌજૂદગી મે હી જીવો
મેં પાચે જાતે હ । ઇન્દ્રિયો કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ ણ્વ કૃષ્ણ આદિ અશુભ
લેશ્યાઓં કા સ્વયં ઇસી પરિગ્રહ સે જીવોં મે પાયા જાતા હૈ । તથા સ્વજન
આદિ કે સાથ કા સમય મી ઇસી પરિગ્રહ કે ડપર નિર્ભર હૈ । ચક્તવર્તી
આદિ સમી મનુષ્ય યહી ચાહતે હૈં કિ હમારે પાસ અનત સચિત્ત, અચિત્ત
ઔર મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય વના રહે । પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ, હિર-
ણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ, ણ્વ હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ
કે આમરણ સહિત પુત્રાદિ મિશ્ર પરિગ્રહ હૈ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ
કિ ચક્તવર્તી સે લેકર છોટે સે છોટા પ્રાણી યહી ચાહતા રહતા હૈ કિ

ઇન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓ
રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ રાજ્યોનો મદ
ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો
અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા કપાયોની સત્તા, તથા આહાર
આદિ ચાર પ્રકારની સજ્ઞાઓ આદિનો સદ્ભાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય
તો જ જીવોમા જોવા મળે છે ઇન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ
અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા
સ્વજન આદિ સાથેનો સમય પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્ર-
વર્તિ આદિ અધના લોકો એ જ આહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત,
અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ
છે હિરણ્ય, સુવર્ણ રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના
આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્ર-

સ્તાઃ=વ્યાપ્તાઃ, તથા 'અત્તાણ અણિગ્ગહિયા' આત્મનાઽનિગૃહીતાઃ=અચીકૃતા-
ત્માનઃ 'કરેતિ' કુર્મતિ । કિં કુર્મન્તિ ? इत्याह—'કોહમાણમાયાલોભે'
ક્રોધમાનમાયાલોભાન, ક્રોદશાન ? 'અકિત્તણિજ્જે' અકીર્તનિયાન્-અચાચ્યાન્ ।
તથા 'પરિગ્ગહે ચેવ' પરિગ્રહે એવ 'હુતિ' ભવન્તિ, 'નિયમા' નિયમાત્-
નિશ્ચયતઃ, કાનિ કાનિ ભવન્તિ ? ત્યાહ 'સહ્યા' શલ્યાનિ = માયાનિદાનમિત્યા-
દર્શનરૂપાણિ ત્રીણિ, 'દણ્ડા ય' દણ્ડાશ્ચ-દુષ્પણિદિતમનોગ્રાધાયરૂપાઃ, 'ગાર-
વાય' ગૌરવાણિ ચ=ઋદ્ધિરમસાતરૂપાણિ ચ 'કસાયસણ્ણા ય' કપાયસજ્ઞાશ્ચ,
કપાયાઃ=પતિતાઃ, સજ્ઞાઃ=આહાર મૈથુનમયપરિગ્રહાદયઃ, તથા—'કામગુણ-
અણ્હગા ય' કામગુણાશ્ચ કામગુણાઃ=શબ્દાદયસ્ત ય આશ્રવાઃ=આશ્રવદ્વારાણિ
'ઇદિય' ઇન્દ્રિયાણિ=અમૃત્તાનિ ઇન્દ્રિયાણિ, 'લેસાઓ' લેશ્યાઃ=અપ્રશસ્તા

અધિક આસક્તિ, લોભ-લાલચ, ઠન સવ સે ઘિરે રહ્તે હૈ (અત્તાણા
અણિગ્ગહિયા) ઇન કી આત્મા ઇનકે વશ મેં નહીં હો પાતી હૈ । ઓર ઇસ
તરહ યે પરિગ્રહ કી મમતા મેં ફેસકર (કોહમાણમાયાલોભે) ક્રોધ, માન
માયા ઓર લોભ જૈસી કપાયો કો કિ જો (અકિત્તણિજ્જે) શબ્દો સે
પ્રકટ નહીં કી જા સકતી હૈ (કરેતિ) કરતે રહ્તે હૈ । (પરિગ્ગહે ચેવ
હુતિ નિયમા સહ્યા, દણ્ડા ય ગાર વા ય કસાયસણ્ણા ય કામગુણઅણ્હગા
ય ઇદિય લેસાઓ સયણસપઓગા સચિત્તાચિત્તમીસગાહ દવ્વાહ અણત
ગાહ પરિઘેતુ ઇચ્છતિ) ઇસ પરિગ્રહ મેં હી નિયમ સે માયા, મિથ્યાદર્શન
ઓર નિદાન, યે ત્રીન શલ્ય રહ્તે હૈ । મન, વચન ઓર કાય કી દુષ્ટ-
તારૂપે વ્યાપાર રહ્તા હૈ । ઋદ્ધિ રસ સાતરૂપ ગૌરવ રહ્તા હૈ । અનૈતા-
નુબંધી આદિ કપાયે, આહાર, મય, મૈથુન, ઓર પરિગ્રહ યે ચાર સજ્ઞાએ,

લોભ, એ બધાથી ઘેરાયેલ રહે છે "અત્તાણ અણિગ્ગહિયા" તેમનુ મન તેમના
કાંખૂમા હોતુ નથી, અને આ રીતે પરિશ્રુતી મમતામા કસાધને "કોહમાણ
માયાલોભે" ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ જેવા કપાયો કે જે "અકિત્તણિજ્જે"
શબ્દો દ્વારા પ્રગટ કરી શકાતા નથી "કરેતિ" તેમનુ સેવન કરે છે "પરિ
ગ્ગહે ચેવ હુતિ નિયમા સહ્યા, દણ્ડાય ગારવા ય કસાય સણ્ણાય કામગુણઅણ્હ
ગાય ઇદિયલેસાઓ સયણસપઓગા સચિત્તાચિત્તમીસગાહ દવ્વાહ અણતગાહ
પરિઘેતુ ઇચ્છતિ" આ પરિશ્રુતમા જ નિયમથી જ માયા, મિથ્યાદર્શન અને
નિદાન, એ ત્રણ શલ્ય રહે છે મન, વચન અને કાયની દુષ્ટતારૂપ પ્રવૃત્તિ
રહે છે ઋદ્ધિ રસ સાતરૂપ ગૌરવ રહે છે અનતાનુબંધી આદિકપાયો, આહાર
ભય, મૈથુન અને પરિશ્રુત એ ચાર સજ્ઞાઓ, શબ્દાદિ વિષયરૂપ આશ્રવ,

લેશ્યાશ્ચ ભવન્તિ । તથા - ' સયણસપઓગા ' સ્વજનસપયોગાઃ=સ્વજનૈ=પુત્રદા
રાદિભિઃ સહ મપયોગઃ=સયોગાશ્ચ ભવન્તિ । તે ચક્રવર્ત્યાદયઃ ' અણતગાઢ '
અનન્તતાનિ=પર્યવમાનરહિતાનિ ' સચિત્તાચિત્તમીસગાઢ ' સચિત્તાચિત્તમિશ્રકાણિ
=તચ સચિત્તાનિ સજીવાનિ=પુત્રાદીનિ અચિત્તાનિ=અજીવાનિ=હિરણ્યસુવર્ણરત્ના-
દીનિ, મિશ્રકાણિ=સચિત્તાચિત્તરૂપાણિ હિરણ્યસુવર્ણાઘાભરણસહિતાનિ પુત્રકલત્રા
શબ્દાદિ વિષયરૂપ આમ્રવ, ઇન્દ્રિયો કી અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયાં, કૃષ્ણ, નીલ
આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઈ રહતી હેં । અર્થાત પરિગ્રહ પાપ કે સદ્ભાવ મેં
હી નિયમતઃ માયાદિ કાલ્યોં કા સદ્ભાવ જોવોં મેં પાયા જાતા હૈ । મન
વચન આદિ યોગોં કી પ્રવૃત્તિ ઇતી કે હોને પર અશુભ રૂપ મે રહતી હેં ।
ગૌરવોં કા અસ્તિત્વ તથા કપાયોં કી સત્તા ઇવ આહાર આદિ ચાર
પ્રકાર કી સજ્જાઓ કા સદ્ભાવ ઇસ ઇક પરિગ્રહ કી મૌજૂદગી મે હી જીવો
મેં પાચે જાતે હે । ઇન્દ્રિયો કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ ઇવ કૃષ્ણ આદિ અશુભ
લેશ્યાઓં કા સ્વધ ઇતી પરિગ્રહ સે જીવોં મે પાયા જાતા ટ્રે । તથા સ્વજન
આદિ કે સાથ કા સંબંધ મી ઇતી પરિગ્રહ કે ડપર નિર્ભર હૈ । ચક્રવર્તી
આદિ સમી મનુષ્ય યહી ચાહતે હેં કિ હમારે પાસ અનત સચિત્ત, અચિત્ત
ઔર મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય વના રહે । પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ, હિર-
ણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ, ઇવ હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ
કે આભરણ સહિત પુત્રાદિ મિશ્ર પરિગ્રહ હૈ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ
કિ ચક્રવર્તી સે લેકર છોટે સે છોટા પ્રાણી યહી ચાહતા રહતા હૈ કિ

ઇન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓ
રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ રા-યોનો અદ્-
ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો
અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા કપાયોની સત્તા, તથા આહાર
આદિ ચાર પ્રકારની સજ્જાઓ આદિનો સદ્ભાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય
તો જ જીવોમા લેવા મળે છે ઇન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ
અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા
સ્વજન આદિ સાથેનો સંબંધ પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્ર-
વર્તી આદિ મધળા લોકો એ જ ચાહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત,
અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ
છે હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના
આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્ર-

દોનિ, 'દવ્યાહ' દ્રવ્યાણિ 'પરિઘેતુ' પરિગ્રહીતુમ્ ઇચ્છન્તિ । 'સદેવમણુયા-
સુરમ્મિ લોગે' સદેવમનુજાગુરે લોકે 'લોભપરિગ્રહો' લોભપરિગ્રહઃ=લોભાત્પરિ-
ગ્રહો લોભરૂપો વા પરિગ્રહી ભવતિ, 'જિણવરેહિ' જિનવરં 'મણિઓ' મણિતઃ=
પ્રોક્તઃ 'નત્થિ' નાસ્તિ 'एरिसो' ईदृशः=પરિગ્રહસદૃશોऽન્યઃ કથિદપિ 'પાસો'
પાશઃ=વન્ધનમ્, 'પહિવધો' પ્રતિવન્ધઃ=પ્રતિરોધ' । અય પરિગ્રહઃ 'સન્વલોપ'
સર્વલોકે=ત્રિણુ લોકેણુ 'સન્વ જીવાણ' સર્વજીવાનામ્=સર્વપ્રાણિનામ્ 'અત્થિ'
'અસ્તિ=વિદ્યતે । સૂક્ષ્મજીવાનામપિ પરિગ્રહસજ્ઞા ભવતીતિ સર્વગદગ્રહણમ્ ॥મૂ ૪॥

જો મી પરિગ્રહરૂપવસ્તુ જિતની મી માત્રા મેં હમારે પાસ હૈ વહ જ્યોં કિ
લ્યો વની રહે-નષ્ટ ન હો, ઓર ઉતની માત્રા સે મી ફિર અધિક માત્રા
મેં વૃદ્ધિગત હીતી રહે તો અઞ્છી વાત હૈ (સદેવમનુયાસુરમ્મિ લોગે)
દેવલોક મેં, મનુષ્યલોક મેં, તથા અસુર લોક મેં (લોભપરિગ્રહો)
લોભ પરિગ્રહ-લોભ સે પરિગ્રહ અથવા લોભરૂપ પરિગ્રહ-હોતા હૈ ।
(જિણવરેહિ મણિઓ) ઈસા જિનેન્દ્ર દેવોંને કહા હૈ । (નત્થિ ઈરિસોપાસો
-પહિવધો સન્વલોપ સન્વજીવાણ અત્થિ) હસ પરિગ્રહ કે જૈસા દૂસરા
ઓર કોઈ મી પાસ-વધન, તથા પ્રતિવધ-પ્રતિરોધ-આત્મકલ્યાણ રોધક
પદાર્થ નહી હૈ । યહ પરિગ્રહ તીનોં લોકોં મેં સમસ્ત જીવોં કે હૈ । પ્રશ્ન-
સૂક્ષ્મ જીવોં કે યહ પરિગ્રહ કિસ રૂપ મેં હૈ ? ઉત્તર-યહ પરિગ્રહ ઉનમે
પરિગ્રહ સજ્ઞા રૂપ મેં હૈ । હસી વાત કો કહને કે લિયે સૂત્ર મે 'સર્વ'
શબ્દ કા ગ્રહણ કિયા હૈ ।

વર્તિથી લઈને નાનામા નાનો જીવ એ જ ચાહે છે કે જે કોઈ પરિગ્રહરૂપ
જેટલા પ્રમાણમા અમારી પાસે છે તે તેમને તેમ રહે-નાશ ન પામે, અને
છે તે કરતા પણ તેમા વધારો થતો રહે તો બહુ જ સાફ “સદેવમનુયા
સુરમ્મિલોગે” દેવલોકમા, મનુષ્યલોકમા તથા અસુરલોકમા “લોભ પરિગ્રહો”
લોભ પરિગ્રહ-લોભથી પરિગ્રહ અથવા લોભરૂપ પરિગ્રહ હોય છે, “જિણવરેહિ
મણિઓ” એણે જિનેન્દ્ર દેવોએ કહેલ છે “નત્થિ ઈરિસો પાસો પહિવધો સન્વ
લોપ સન્વજીવાણ અત્થિ” આ પરિગ્રહ જેણે બીજું કોઈ પણ બધન નથી,
તથા પ્રતિરોધક-આત્મકલ્યાણ રોધક પદાર્થ નથી આ પરિગ્રહ નહીં લોકમા
સધના જીવોને હોય છે

પ્રશ્ન—સૂક્ષ્મ જીવોમા આ પરિગ્રહ કેવી રીતે છે ?

ઉત્તર—આ પરિગ્રહ તેમનામા પરિગ્રહ સજ્ઞારૂપે છે એ વાત દર્શાવવાને
માટે સૂત્રમા ‘સર્વ’ શબ્દનો પ્રયોગ કર્યો છે

भावार्थ—अढ़ाई छीप के भीतर ही मनुष्यो का निवास है, अतः सभी मनुष्य चाहे वे चक्रवर्ती आदी विजिष्ट व्यक्ति भी क्यो न हों इस परिग्रह सचय की तृष्णा से रहित नहीं है। सभी अपनी र योग्यता और पद के अनुसार इसके सचय में लगे रहते हैं। कोई भी जीव इस घात का विचार नहीं करता कि इस परिग्रह के सचय का अंतिम परिणाम कैसा होता है। जीव जीतने भी कष्टों को भोगता है वह इस परिग्रह के सचय निमित्त ही भोगता है, क्यो कि यह परिग्रह स्वयं अनंतक्लेशो का घर है। इस परिग्रह को लोभरूपाय के आवेश में ही जीव संचित कीया करते हैं। यह महान् से महान् अनर्थों की जड़ कही गई है। पुरुष सत्रधी ७२ बहत्तर कलाएँ तथा स्त्री सत्रधी ६४ चौसठ कलाओं को प्राणी इसी परिग्रह के निमित्त सीखता है। असि, मपी, कृपि, आदि कर्म इसी के लिये मनुष्यों को करने पड़ते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को इसी की लालसा से बद्ध होकर हडपना चाहता है। मनुष्यों में दानवता का रूप इसी की कृपा से आता है। आदनीयनको भुलानेवाली यही एक चीज है। माया मिथ्या आदि शब्दों का घर यही एक परिग्रह है। इसकी ज्वाला में झलना हुआ प्राणी सदा हेय और उपादेय के विवेकसे विहीन बना रहता है। मन वचन और काय

भावार्थ—अढी छीपनी अदर ५ भाषुमोनो वगवाट छे, सधगा मनुष्ये। लखे चक्रवर्ति आदि विशिष्ट व्यक्ति होय तो पशु तेनो परिग्रह सचयनी तृष्णा विनाना होता नथी। जधा पोत पोतानी योग्यता अने पद प्रमाणे तेना सयम, प्रयत्नगील रहै छे। केछ पशु एव अे वातनो विचार करतो नथी। उ आ परिग्रहना सचयनु आभरी परिणाम उवु होय छे। एव नेटला कष्टो लोगवे छे। ते आ परिग्रहना सचयने भाटे ५ लोगवे छे, कारण के आ परिग्रह पोते ५ अनंत क्लेशोनु धाम छे। आ परिग्रहना दोल (उपाय) ना आवेगभा ५ एव सचय उर्या उरे छे। ते मोटाभा मोटा अनर्थोनु भूण गशाय छे। पुरुष सत्रधी ७२ ओतेरकलाओ तथा स्त्री विषयक ६४योसठ कलाओ भाषुसो आ परिग्रहने निमित्तो शीजे छे। असि, मपी, कृपि आदि कर्मो पशु तेने ५ भाटे होउने करवा पडे छे। तेनी लालसाओ ५ ओक राष्ट्र जीत राष्ट्रने गजी ५वा भागे छे। मनुष्यभा दानवता ते परिग्रहने कारणे ५ आवे छे। मानवताने भुलावनारी ते ओउ थी ५ ते परिग्रह ५ माया मिथ्या आदि शब्दोनु धाम छे। तेनी न्वाणामा इसायेल एवो सदा हेय अने उपादेयना विवेकधी रहित जनी जाय छे। आ परिग्रहने कारणे ५ मन, वचन अने कायानी दुटिल

‘યે યથા કુર્વન્તીતિ દ્વાર મુક્તમ્’ અથ પરિગ્રહો યાદશ ફલ દદાતિ તદુચ્યતે—
‘પરલોગમ્મિ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પરલોગમ્મિ ય નદ્દા તમપવિદ્વા મહયામોહમોહિય
મર્દૈ તમોસંધયોર તસથાવર સુહુમવાયેરેસુ પજ્જત્તમપજ્જત્તગ એવ
જાવ પરિયદંતિ જીવા લોભવસસનિવિદ્દા । એતો સો પરિગ્ગ-
હસસ ફલવિવાગો ઇહલોઙ્ગો પરલોઙ્ગો અપ્પસુહો વહુદુક્ખો

કી કુટિલ પ્રવૃત્તિ ઇસી પરીગ્રહ કે પ્રભાવ સે જીવન કો તદ્દસ નદ્દસ
કરતી રહતી હૈ । રૂપાંશુ કી ઉત્કટતા ઇસીકે કારણ જીવન મેં
ઉતરતી હૈ । આહાર આદિ સજ્ઞાઈ ઇસી કે પ્રભાવ સે જીવન કે પીચે
પડી રહતી હૈ । ગારવ ઓર ઇન્દ્રિયોં કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ કા કારણ
ઇસી પરિગ્રહ કી કામના હૈ । કર્મોં કા અધિકરૂપ મેં આસ્રવ ઓર
કૃષ્ણાદિ અશુભલેશ્યાઓં કા સબધ ઇસી પરિગ્રહ કે વલ પર હોતા હૈ ।
સસારકા કોઈં બી પ્રાણી યદ્દ નહીં જાનતા હૈ કિ મેરે પાસ જિતના બી
પરિગ્રહ હૈ ઉસકા વિયોગ હો । બહે હી મુનિજન ઇસકી કામના ન કરે-
ફિર બી પ્રત્યેક સચેતન વ્યક્તિ સચિત્ત આદિ પરીગ્રહ કી પોટ સે બધા
હી રહતા હૈ । સમસ્તલોક મેં ઇસ પરિગ્રહ કા અલ્પાધિકરૂપ મેં સામ્રાજ્ય
છાયા હુઆ હૈ । યહી આત્મકલ્યાણ કા નિરોધક હૈ । ઇસીલિયે શ્રાવક
જન ઇસકા પ્રમાણ ઓર મુનિજનસકલ સયમી જીવ-ઇસકા સર્વથા
પરિહાર કર દેતે હૈ ॥ સૂ. ૪ ॥

પ્રવૃત્તિયો જીવનને ધરખાદ કરે છે તેને જ કારણે જીવનમાં કષાયોની ઉત્પત્તિ
ઉતરે છે તેના જ પ્રભાવથી આહાર આદિ સજ્ઞાઓ જીવનમાં પીડા પકડ્યા
કરે છે ગારવ (અભિમાન) અને ઇન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિયોનું કારણ આ
પરિગ્રહની કામના જ છે આ પરિગ્રહને કારણેજ કર્મોના અધિક પ્રમાણમાં
આસ્રવ અને કૃષ્ણાદિ અશુભ લેશ્યાઓનો સબધ થાય છે સસારમાં કોઈ
પણ જીવ એ નથી આવડતો કે તેની પાસે જેટલો પરિગ્રહ હોય તેનો વિયોગ
થાય કદાચ મુનિજન તેની કામના ન કરે, તો પણ પ્રત્યેક સચેતન વ્યક્તિ
સચિત્ત આદિ પરિગ્રહના અચયથી બધાયેલ રહે છે સમગ્ર લોકમાં આ પરિ-
ગ્રહનું થોડા કે વધુ પ્રમાણમાં સામ્રાજ્ય બનેલું છે તે જ આત્મકલ્યાણનું
નિરોધક છે તેથી શ્રાવકોએ તેની મર્યાદા બાધવી જોઈએ અને મુનિજનોએ-
સકલ સયમી જીવે-તેનો તદ્દન ત્યાગ કરવો જોઈએ ॥ સૂ. ૪ ॥

महव्भओ वधुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो, असाओ वासस-
हस्सेहि मुच्चइ, न य अवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमा-
हसु नायकुलनदणो महप्पा जिणो वीरवरनामधेज्जो कहेसि
य परिग्गहस्स फलविवागं। एसो सो परिग्गहो पंचमो नियसा
नाणामणिकणगरयणमहरिह० जीव इमस्स मोक्खवरमु-
त्तिमग्गस्स फलिहभूओ ॥ सू० ५ ॥

॥ चरिम अहम्मदार समत्त ॥

‘टीका—‘परलोगम्मि’ इत्यादि—

जीवाः=प्राणिनः लोभवससनिविट्ठा’ लोभवशसनिविट्ठाः=लोभवशेन परिग्रहे
सनिविट्ठा=अभिनिविट्ठाः=लोभवशपरिग्रहग्रहिलाः ‘परलोगम्मि’ परलोके=जन्मा-
न्तरविषये चकारात् इहलोके च ‘नट्ठा’ नट्ठाः-विनिट्ठाः सुगतिनाशात् मत्पथ-
भ्रशाच्च, तथा ‘तम’ तम=अज्ञानान्तरकार ‘पविट्ठा’ प्रविट्ठा ‘महया मोहमोहि-

पूर्व में ‘ये यथा कुर्वन्ति’ यह द्वार कहा अब सूत्रकार परिग्रह
जिस प्रकार का फल देता है इस विषय को कहते हैं—‘परलोगम्मि
य’ इत्यादि ० ।

टीकार्थ—(लोभवससनिविट्ठा जीवा) लोभ के वश से परिग्रह
के वशवर्ती बने हुए जीव (परलोगम्मि य नट्ठा) अपने परभव को भी
नष्ट कर डालते हैं । अर्थात् उनका यह लोक तो नष्ट हो ही जाता है,
साथ में परभव भी उनका बीगड़ जाता है । क्यो कि ऐसे जीवों को
सुगति की प्राप्ति नहीं होती है, तथा इसभव में वे मत्पथ से विहीन
घने रहते हैं । तथा (तमपविट्ठा) अज्ञानरूप अधकार में प्रविष्ट होकर

आगण “ये यथा कुर्वन्ति” ते अन्तर्द्वार वरुण्यु डवे सूत्रकार परिग्रह
डेवु इण आपे छे, ते णतावे छे—“परलोगम्मिय” इत्यादि

टीकार्थ—“लोभवससनिविट्ठा जाया” लोभने अधीन थछने पग्ग्रिडने
ताजे थयेला छेवे। “परलोगम्मि य नट्ठा” पोताना परलवने पणु नष्ट करी
नाजे छे, अटवे छे तेभने। आ लोड णरणाड थाय छे न, पणु माथे माये
तेभने। परलव पणु णगडे छे कारणु छे अवा छेवेने सुगति प्राप्त थती नथी,
अने आ लवमा तेओ मन्भार्गथा हू न गडे तथा “तमपविट्ठा” अज्ञान

યમર્ઘ' મહામોહમોહિતમતયઃ-મહામોહેન-પ્રકૃષ્ટોદયચારિત્રમોહનીયન મોહિતા મતિર્યેષા તે તથોક્તા', 'તમોસધયારે' તમિસ્રાન્ધકારે, તમિસ્રાન્ધકારી તદ્વદ્ યોડન્ધકારી આજ્ઞાનાન્ધકારસ્તસ્મિન્ 'તસ થાવરસુદૃમવાયરેસુ' તસસ્થાવરસૂક્ષ્મ-વાદરેષુ તથા 'પજ્જત્તમપજ્જત્તગ એવ જાવ' પર્યાપ્તાપર્યાપ્તિક એવ જાવત્ અત્ર-યાવન્નુદ્દાદિદ્ સગ્રાહ્યમ્-પર્યાપ્તાપર્યાપ્તિકસાધારણપ્રત્યેકશરીરેષુ તથા અહજ પોતજ-રસજ-જરાયુજ-સસ્વેદજોદ્ધિજોપપાતિકેષુ નારકતિર્યગ્દેવમનુષ્યેષુ યથાસમ્ભવ જરામરણરોગગ્રહલેષુ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ યાવત્ આનાદિકમનપદગ્ર દીર્ઘમ-ધ્વાન ચાતુરન્તસસારકાન્તાર 'પરિચદ્ધતિ' પર્યટન્તિ । 'એસો સો' એવ સઃ

(મહ્યામોહમોહિયમર્ઘ) ઉનકો મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે મોહિત બની રહતી હૈ । હમસે વે ન તો ંકદેશરૂપ ચારિત્ર અગીકાર કર સકતે હૈં ંર ન સકલરૂપ ચારિત્ર હી । અતઃ, એસે પ્રાણી (તમોસધયારે) રાત્રિ કે ગાઢ અધકાર જૈસે અજ્ઞાનાન્ધકાર મેં હી પડે રહતે હે । (તસથાવરસુદૃમવાયરેસુ) ંર ત્રસ, સ્થાવર, સૂક્ષ્મ, વાદર ડનમેં તથા (પજ્જત્તમપજ્જત્તગ) પર્યાપ્તિક અપર્યાપ્તિક (એવજાવ) ડસી પ્રકાર યાવત્ શબ્દ સે સાધારણ પ્રત્યેક શરીર ડન જીવોં મેં તથા અહજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ જીવોં મેં એવ ંપ પાતિક દેવ ંર નારકિયોં મેં (પરિચદ્ધતિ) જન્મ મરણ કરતે હૈં । સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ ંર કર્ણ ંે પાચ ડન્દ્રિયા જિન જીવોં મેં હોતી હૈ વે ત્રસ હૈં । ત્રસ નામકર્મ કે ઉદય સે ંહ પર્યાપ્ત જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતી હૈ । સિર્ફ ંક સ્પર્શન ડન્દ્રિય જિન જીવોં મેં હોતી હૈ વે

ઇપી અધકારમા પ્રવેશ કરીને “મહ્યા મોહમોહિયમર્ઘ” તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અશક્ત ચારિત્ર અગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સપૂર્ણ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા એવો “તમોસધયારે” રાત્રિના ગાઢ અધકાર જેવા અજ્ઞાનાન્ધકારમા જ પડ્યા રહે છે, “તસથાવરસુદૃમવાયરેસુ” અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અરે બાદરમા, તથા ‘પજ્જત્તમપજ્જત્તગ’ પર્યાપ્તિક, અપર્યાપ્તિક, “એવજાવ” એ જ પ્રમાણે યાવત્ શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર એવામા, તથા અહજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ એવામા અને ઔપપતિક દેવ અને નારકીઓમા “પરિચદ્ધતિ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે એવાને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને કર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

સ્થાવર છે । સ્થાવર નામ કર્મ કે ઉદય સે હિ યહ પર્યાય જીવો કો પ્રાપ્ત
 હોતી છે । દીન્દ્રિય સે લેકર પચેન્દ્રિયતરુ કે જીવ હી ગ્રસ માને ગયે છે ।
 સૂક્ષ્મ નામ કર્મ કે ઉદય સે જીવ સૂક્ષ્મ હોતા છે । સૂક્ષ્મ ઓર વાદર યે
 દો ભેદ ણકેન્દ્રિય જીવો કે હોતે છે । વાદર નામકર્મ કે ઉદય સે જીવ
 વાદર પર્યાયવાલા હોતા છે । વાદર નામકર્મ કે ઉદય સે જીવો કો એસે
 શરીર કી પ્રાપ્તિ હોતી છે કિ જો શરીરચર્મ ચક્ષુઓં કા વિષયભૂત
 બનતા છે । હસકે વિપરીત સૂક્ષ્મ નામ કર્મ હોતા છે । જિન જીવોં કી
 અપની યોગ્ય પર્યાસિયા પૂર્ણ હો ગઈ હોતી છે વે પર્યાસક જીવ છે । તથા
 જિનકી યે પર્યાસિયા પૂર્ણ જત તક નહીં હોતી છે વે અપર્યાસક જીવ છે ।
 જિન બનત જીવો કા એક હી સાધારણ શરીર હોતા છે વે સાધારણ જીવ
 છે ઓર જિન જીવોં કા ભિન્ન ૨ શરીર હોતા છે વે વે પ્રત્યેક જીવ છે ।
 સાધારણ નામકર્મકે ઉદયસે જીવ સાધારણ ઓર પ્રત્યેક નામકર્મકે ઉદય
 સે જીવ પ્રત્યેક શરીર હોતા છે । અહેસે જો જીવ ઉત્પન્ન હોતે છે વે અહજ
 કહલાતે છે । જૈસે મનુષ્ય, કનૂતર, આદિ જીવ । જો કિમી પ્રકારકે આચરણ
 સે વેદિત ન હોતર હી પૈદા હોતે છે વે પોતજ છે જૈસે દાઢી શશક, નેવલા,
 ચૂંટા ઓર વગેરહ જીવ । આસવ અરિષ્ટ તથા વિગડે હુણ આચાર, મુરબા

ઉદયથી જીવોને તે પર્યાય (યોનિ) પ્રાપ્ત થાય છે જે જીવોને ક્રમ્પત એક
 સ્થાવર ઈન્દ્રિય ન હોય છે, તેમને સ્થાવર કહે છે સ્થાવર નામ કર્મના
 ઉદયથી ન તે પર્યાય જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે દીન્દ્રિયથી લઈને પચેન્દ્રિય
 સુધીના જીવોને ન 'ગ્રસ' માનવામા આવે છે સૂક્ષ્મ નામ કર્મના ઉદયથી
 જીવ સૂક્ષ્મ થાય છે સૂક્ષ્મ અને બાદર એ બે ભેદ એકેન્દ્રિય જીવોના હોય છે
 બાદર નામકર્મના ઉદયથી જીવ બાદર પર્યાયવાળા થાય છે બાદર નામ કર્મના
 ઉદયથી જીવોને એવા શરીરની પ્રાપ્તિ થાય છે કે તે શરીરો ચર્મચક્ષુઓ વડે
 બોધગાય છે તેનાથી ઉદ્ભુ સૂક્ષ્મ નામકર્મ કે જે જીવોની યોગ્ય પર્યાસિયો પૂરી
 થઈ ગઈ હોય છે તે જીવો પર્યાસક કહેવાય છે તથા તેમની તે પર્યાસિયો બ્યાસુધી
 પૂરી થતી નથી ત્યાસુધી તેઓ અપર્યાસક જીવો છે જે અનંત જીવોનું એકજ
 સાધારણ શરીર હોય છે, તે સાધારણ જીવો છે, અને જે જીવોના ભિન્ન ભિન્ન
 શરીર હોય છે, તે પ્રત્યેક જીવ કહેવાય છે સાધારણ નામ કર્મના ઉદયથી
 જીવ સાધારણ શરીર થાય છે અને પ્રત્યેક નામકર્મના ઉદયથી જીવ પ્રત્યેક
 શરીર થાય છે હઠામાથી ઉત્પન્ન થતા જીવોને અહજ કહે છે, જેવા કે મોર
 કનૂતર આદિ જીવ જે જીવો કોઈ પણ પ્રકારના આવરણથી ઢાંકાયા વિના ન
 જન્મે છે-એટલે કે બચ્ચા રૂપે જન્મે છે તેમને પોત જ કહે છે, જેમકે
 હાથી, સસલુ, નાળિયો, ઉદર, સિંહ વગેરે જીવો આસવો, અરિષ્ટો, બગડેલા

યમર્હ' મહામોહમોહિતમતયઃ-મહામોહેન-મઠ્ઠોદયચારિત્રમોહનીયન મોહિતા મતિર્યેષા તે તયોક્તાઃ, 'તમોસધયારે' તમિસ્રાન્યકારે, તમિસ્રાન્યગની તદ્દદ યોજ્ઞ્યકારો આજ્ઞાનાન્યકારસ્તસ્મિન્ 'તસ થાવરસુદ્દમવાયરેસુ' તસમ્થાવરસૂક્ષ્મ વાદરેપુ તયા 'પજ્જત્તમપજ્જત્તગ એજાવ' પર્યાપ્તપર્યાપ્તક એવ યાવત્ અત્ર- યાવન્નુદાદિદ સગ્રાહ્યમ્-પર્યાપ્તપર્યાપ્તસાધારણપ્રત્યેકશરીરેષુ તયા અણ્ડજ પોતજ -રસજ-જરાયુજ-સસ્વેદજોદ્ધિજ્જોપપાતિકેષુ નારકતિર્યગ્દેવમનુષ્યેષુ યાસમ્ભવ જરામરણરોગગ્રહુલેષુ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ યાવત્ આનાદિકમનમદત્ર દીર્ઘમ ધ્યાન ચાતુરન્તસસારકાન્તાર 'પરિયટ્ટિ' પર્યટન્તિ । 'એસો સો' એવ સઃ

(મહ્યામોહમોહિયમર્હ) ઉનકો મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે મોહિત બની રહતી હૈ । ઇસસે વે ન તો ંકદેશરૂપ ચારિત્ર અગીકાર કર સકતે હૈં ંર ં સકલરૂપ ચારિત્ર હી । અત એસે પ્રાણી (તમોસધયારે) રાત્રિ કે ગાઠ અધકાર જૈસે અજ્ઞાનાન્ધકાર મેં હી પડે રહતે હે । (તસથાવરસુદ્દમવાયરેસુ) ંર ત્રસ, સ્થાવર, સૂક્ષ્મ, વાદર ઇનમેં તયા (પજ્જત્તમપજ્જત્તગ) પર્યાપ્તક અપર્યાપ્તક (એવજાવ) ઇસી પ્રકાર યાવત્ શબ્દ સે સાધારણ પ્રત્યેક શરીર ઇન જીવોં મેં તયા અણ્ડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ જીવોં મેં એવ ંપ પાતિક દેવ ંર નારકિયોં મેં (પરિયટ્ટિ) જન્મ મરણ કરતે હૈ । સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ ંર કૂર્ણ ં પાચ ઇન્દ્રિયા જિન જીવોં મેં હોતી હૈં વે ત્રસ હૈં । ત્રસ નામકર્મ કે ઉદય સે ગ્રહ પર્યાવ જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતી હૈ । સિર્ફ ંક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય જિન જીવોં મેં હોતી હૈ વે

ઇપી અધકારમા પ્રવેશ કરીને “મહ્યા મોહમોહિયમર્હ” તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અશક્ત ચારિત્ર અગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સપૂર્ણ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા બોલે “તમોસધયારે” રાત્રિના ગાઠ અધકાર બેવા અજ્ઞાનાન્ધકારમા જ પડ્યા રહે છે, “તસથાવરસુદ્દમવાયરેસુ” અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અરે બાહરમા, તથા ‘પજ્જત્તમપજ્જત્તગ’ પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, “એવજાવ” એ જ પ્રમાણે યાવત્ શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર બોલાય, તથા અણ્ડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ બોલાય અને ઔપપતિક દેવ અને નારકીઓમા “પરિયટ્ટિ” પગિભ્રમણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે બોલાને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને કૂર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

‘ પરિગ્રહસ્ત ’ પરિગ્રહસ્ત ‘ ફલવિવાગો ’ ફલવિપાક ‘ ઇહલોહઓ ’ ઇહલૌકિકઃ, મનુષ્યભવાપેક્ષયા, ‘ પરલોહઓ ’ પારલૌકિક, નરકતિર્યગ્ગત્યાધપેક્ષયા ‘ અપ્પ-સુહો ’ અલ્પસુખઃ-અલ્પમુગ્ધ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, ‘ બહુદુઃખો ’ બહુદુઃખઃ-બહુનિ દુઃખાનિ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, ‘ મહવ્મઓ ’ મહાભયઃ ‘ બહુરયપ્પગાઢો ’ બહુ-રજઃ પ્રગાઢઃ=બહુરજઃ-પ્રભૂતકર્મ પ્રગાઢ=દુર્મોચ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, દારુણો=રૌદ્રઃ, ‘ કક્કસો ’ કર્કશ=કટિન, ‘ અસાઓ ’ અશાત-અશાતવેદનીયરૂપ અસ્તિ, યપ્ પરિગ્રહ ‘ વાસમહસ્સેહિ ’ વર્પસહસ્રૈઃ = અનેકપલ્લયોપમસાગરોપમ-કાલૈરૂપભોગેન ‘ મુચ્છઈ ’ મુચ્ચતે । ‘ ન અવેયહત્તા અત્થિહુ મોક્કલોત્તિ ’ ન અવે દાયિત્વા ઽસ્તિ ચલ્લ મોક્ષઃ=પરિગ્રહફળમનુષ્યભુજ્ય નાસ્તિ મોક્ષઃ ‘ તિ એવમાહસુ ’

સાગરોપમ પ્રમાણકાલતક ધૂમતા રહતા હૈ । (એસો સો પરિગ્રહસ્ત-ફલવિવાગો) પરિગ્રહ ક્ષા યત્ ફલવિપાક (ઇહલોહઓ) મનુષ્યભવની અપેક્ષા તથા (પરલોહઓ) પરલોક-નરક-તિર્યચ ગતિની અપેક્ષા (અપ્પસુહો) અલ્પસુખ વાળા તથા (બહુદુઃખો) બહુ દુઃખવાળા હૈ । (મહવ્મઓ) મહાભયકર હૈ । (બહુરયપ્પગાઢો) ઇસમેં જો પ્રભૂત કર્મરૂપ રજ કા વધ હોતા હૈ વત્ પ્રગાઢ-બઢી મુઢિકલ સે દૂર ક્રિયા જાય, એસે હોતા હૈ । તથા (દારુણો) યત્ ફલરૂપ વિપાક દારુણ ભયાનક (કક્કસો) કર્કશ કટિન યવ(અસાઓ)અશાત અશાતવેદનીયરૂપ હોતા હૈ । (વાસસ-હસ્સેહિ) ઇસી પરિગ્રહ રૂપ પાપ કા ફલ અનેક પલ્લયોપમ યવ સાગરોપમ પ્રમા-ણ કાલતક ભોગને સે (મુચ્છઈ) છડતા હૈ । (અવેહત્તા) વિના ઇસકા ફલ ભોગે ઉન જીવોં કો (ન અત્થિ મોક્કલો) મોક્ષની પ્રાપ્તિ નહીં હોતી

અર્થા કહે છે “ એસો સો પરિગ્રહસ્ત ફલવિવાગો ” પરિગ્રહનો આ ફલવિ-
પાક “ ઇહલોહઓ ” મનુષ્ય ભવની અવેક્ષાએ તથા “ પરલોહઓ ” પરલોક
નરગતિ અને તિર્યચગતિની અવેક્ષાએ “ અપ્પસુહો ” અલ્પસુખ વાળો તથા
“ બહુદુઃખો ” વધારે દુઃખવાળો છે, “ મહવ્મઓ ” મહા ભયકર છે, “ બહુ-
રયપ્પગાઢો ” તેમા જે વિપુલ કર્મરૂપ રજનો વધ હોય છે તે પ્રગાઢ-મહા
મુશ્કેલીએ નિવારી શકાય તેવો-હોય છે, તથા “ દારુણો ” તે ફલરૂપ વિપાક
દારુણ-ભયકર “ કક્કસો ” કર્કશ-કટિન, અને “ અસાઓ ” અશાત-અશાત
વેદનીયરૂપ હોય છે “ વાસસહસ્સેહિ ” તે પરિગ્રહરૂપ પાપનું ફળ અનેક પલ્લયો-
પમ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી ભોગવવાથી જે “ મુચ્છઈ ” જીવો
તેમાથી છટી શકે છે “ અવેહત્તા ” તેનું ફળ ભોગવ્યા વિના જીવોને “ ન
અત્થિ મોક્કલો ” મોક્ષની પ્રાપ્તિ થતી નથી “ તિ એવમાહસુ ” તે પ્રકારનું કથન

આદિમેં જો જીવ ફુલ ન આદિ ઉત્પન્ન હોતે રહતે હેં વે રમ્મજ જીવ હેં । જો જીવ જરાયુસે વેટિન હોકર ઉત્પન્ન હોતે હેં વે જરાયુજ હ જેસે મનુષ્ય ચંદ્ર આદિ જીવ । જરાયુ એક પ્રકારકા જાલ જેસા આવરણ હોતા હેં, જો રક્ત ઓર માંસ સે ભરા રહતા હેં । ઇસમેં પેદા હોને ચાલા ઘચ્ચા લિપટા રહતા હેં । જરાયુજ, અડજ ઓર પોતજ ઇન જીવોં કે ગર્ભ જન્મ હોતા હેં । જો જીવ પમ્મીનેસે ઉત્પન્ન હોતે હેં વે સસ્વેદજ હ જેસે જૂ આદિ જીવ । જો જમીનકો ફોડકર ઉત્પન્ન હોતે હેં વે ઉદ્ધિજજીવ હેં । જેસે શલભ (પતંગી યા તીડ) આદિ જીવ । દેવ ઓર નારકી વે ઉપપાત જન્મસે ઉત્પન્ન હોતે હેં । ઇસ કથનસે તિર્યચગતિ, મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ ઓર નરક ગતિ ઇન ચારો ગતિયોં કે જીવોંકા ગ્રહણ હો જાતા હેં । ઇન ગતિયોં કે જીવોં મેં યથા સભવ જરા, મરણ ઓર રોગ કી બહુલતા રહતી હેં । ઇન ગતિયોં મેં જીવ પલ્યોપમ પ્રમાણ ણવ સાગરોપમ પ્રમાણ કાલ તક પરિભ્રમણ ક્રિયા કરતે હેં । પરિભ્રમણકા નામ હી સસાર હેં । યહ સસાર કાન્તાર (અટવી) અનાદિ અનત સ્વભાવવાળા હેં । ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીરૂપકાલ હી ઇસમેં બહે લમ્બે ચૌડે માર્ગ હેં । તથા યહ ચતુર્ગતિરૂપ હેં । જેસે ઇસ સસારરૂપ ગહન વન મેં યહ જીવ પરિગ્રહ કે ઉપાર્જન જનિત પાપસે પલ્યોપમ તથા

અથાણા મુરખા આદિમા જે કુગ આદિ ઉત્પન્ન થાય છે તે રમજ જીવો કહે વાય છે જે જીવો જરાયુથી વીટળાઈને પેદા થાય તે તેમને જરાયુજ કહે છે, જેમકે મનુષ્ય વાદર આદિ જીવો જરાયુ એક પ્રકારનું જાળ જેવું આવ રણ હોય છે, જે રક્ત અને માંસથી ભરેલા રહે છે, તેમા જન્મનાર બાલક વીટળાઈ રહે છે જરાયુજ, અને પોતજ જીવોનો જન્મ ગર્ભમા થાય છે, જે જીવો પરસેવાથી પેદા થાય છે તેમને સસ્વેદજ કહે છે, જેમકે જૂ આદિ જીવો જે જીવો જમીનને ખોદીને ઉત્પન્ન થાય છે તેમને ઉદ્ધિજ જીવો કહે છે જેમ કે તીડ આદિ જીવો દેવ અને નારકી એ બંને ઉપપાત જન્મથી ઉત્પન્ન થાય છે આ કથનથી તિર્યચગતિ, મનુષ્યગતિ દેવગતિ, અને નરકગતિ એ ચારે ગતિયોના જીવો ગ્રહણ થઈ જાય છે, તે ગતિયોના જીવોમા યથા સભવ જરા, રોગ અને મરણની અધિકતા રહે છે, તે ગતિયોમા જીવ પલ્યોપમ પ્રમાણ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે પરિભ્રમણ એટલે જ સસાર, તે સસારકાન્તાર અનાદિ અનત સ્વભાવવાળો છે ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીરૂપ કાળ જ જેમા ઘણા લાંબા પહોળા માર્ગો છે તથા તે ચારગતિરૂપ છે એવા આ સસાર રૂપ ગહન વનમા આ જીવ પરિ ગ્રહને કારણે ઉપાર્જિત પાપથી પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી

उक्तोत्तरपञ्चक निगमनाय गाथापञ्चकमाह ' एएहि ' इत्यादि—

मूलम्—एएहि पंचहि आसवेहि रयमाचिणित्तु अणुसमयं ।

चउविहगइ पेरत, अणुपरियट्ठंति ससारं ॥ १ ॥

सव्वगइ पक्खदे, काहिति अणतगे अकयपुण्णा ।

जेय न सुणाति धम्म, सोऊण य जे पमार्यंति ॥२॥

अणुसिट्ठंपि बहुविह, मिच्छदिट्ठी य जे नरा अबुद्धीया ।

वद्धनिकाडयकम्मा, सुणाति धम्म न य करेति ॥३॥

कि सक्का काउ जे, ज नेच्छइ ओसह मुहा पाउं ।

जिणवयण गुणमहुर, विरेयण सव्वदुक्खाणं ॥ ४ ॥

पंचेव य उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेणं ।

कम्मरयविप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तर जंति ॥५॥सू०६॥

॥ इय पच आसवदारा समत्ता ॥

छाया—एतैः पञ्चभिरास्रवै रज आचित्यानुसमयम् ।

चतुर्विंशतिपर्यन्तमनुपर्यटन्ति ससारम् ॥ १ ॥

सर्वगतिमस्कन्दात्, करिष्यन्ति अनन्तकान् अकृतपुण्याः ।

ये च न शृण्वन्ति धर्मं, श्रुत्वा च ये प्रमाद्यन्ति ॥ २ ॥

अनुशिष्टमपि बहुविधं, मिच्छादृष्टिका ये च नरा अबुद्धिकाः ।

वृद्धनिकाचितकर्माणः, शृण्वन्ति धर्मं न च कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

किं शक्ताः कर्तुं ये, यन्नेच्छन्ति औपध मुधा पातुम् ।

जिनवचनं गुणमहुर, विरेचनं सर्वदुःखानाम् मे ४ ॥

पञ्चैव च उज्झित्वा, पञ्चैव च रक्षित्वा भावेन ।

कर्मरजो विप्रमुक्ताः, सिद्धिवरामनुत्तरा यान्ति ॥ ५ ॥

टीका—एतैः = अनन्तरोपर्यणितस्वरूपैः पञ्चभिः = पञ्चसग्न्यकैरास्रवैः = प्राणातिपातदिरूपैः ' रय ' रजः = ज्ञानावरणीयादि कर्ममलम्, आत्मनो मलिन-कारकत्वात् ' अणुसमय ' अनुसमय = प्रतिक्षणम् ' आचिणित्तु ' आचित्य-

अत्र सूत्रकार उक्त इन पाच आस्रवो के विषय में पाच गाथाओं द्वारा सक्षिप्तस्वरूप से उपसंहार करते हुए अपने विचार प्रदर्शित करते हैं

इये सूत्रकार उपरोक्त पाच आस्रवो विषे पाच गाथाओ द्वारा सक्षिप्त

ત્યેવમૂચુસ્તીર્થકુલગગધરાદયઃ, તથા ' કહેસિય ' કથિતયાથ્ર ' નાયકુલનંદણો ' જ્ઞાતકુલનન્દનઃ ' મહાપ્પા ' મહાત્મા ' જિણો ' જિનઃ ' ચીરવરનામધેજ્જો ' ચીર-
વરનામધેયઃ । ' પરિગ્ગહસ્સ ' પરિગ્રહસ્ય ' ફલવિવાગ ' ફલવિપાકમ્ । ' एसो
सो परिगहो पचमो ' एष सः पूर्वोक्तप्रकारः परिग्रहः पञ्चमः ' नियमा ' नियमाद्
विज्ञेयः, कथभूतो विज्ञेयः ' इत्याह—' नाणामणिकणगरयणमहरिह० ' नानामणि-
कनकरत्नमहार्ह०, ' जाव ' यावत्, अत्र यावच्छब्दादभ्ययनप्रारम्भपाठः, ' हियय-
दइओ ' इत्यन्त यावत्सग्राह्य, ' इमस्स ' अस्य प्रत्यक्षीभूतस्य ' मोक्खवरमुत्तिम-
ग्गस्स ' मोक्षवरमुक्तिमार्गस्य ' फलिहभूओ ' परिग्रहभूतोऽर्गलासदृशोऽस्ति ॥ सू१॥

॥ चरमम् अग्रमद्वार समाप्तम् ॥

હૈ । (તિ एवमाहसु) ऐसा इस प्रकार का कथन तीर्थकर एव गणध-
रादिक देवों का है । तथा उन्हीं के कथनानुसार (नायकुलनदणो)
ज्ञातकुलनदन (महप्पा) महापुरुष (जिणो वीर वर नामधेज्जो) प्रभु
जिनेन्द्र देवने भी (परिगहस्स) परिग्रह का (फलविवाग) ऐसा ही
फलरूप विपाक (कहेसिय) कहा है । (एसो सो) इस तरह यह (परि-
गहपचमो) पचम परिग्रह (नियमा) नियम से (नाणामणिकणग
रयणमहरिह० जाव) नानामणि कनक रत्न आदिरूप है । यहां पर यावत्
शब्द से इस द्वार को प्रारम्भ करते समय जो पाठ ' हिययदइओ ' तक
इस परिग्रहरूप वृक्ष के विषय में कहा है वह सब गृहीत किया गया है ।
यह परिग्रह (इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स) इस मोक्ष का जो निर्लो-
भतारूप श्रेष्ठ मार्ग है उसका (फलिहभूओ) अर्गला रूप है ॥ सू०५॥

॥ परिग्रह नामका यह अन्तिमद्वार समाप्त हुआ ॥

તીર્થ કરો અને ગણધર આદિ દેવોનું છે તથા તેમના કથન પ્રમાણે જ “નાય
કુલનદણો ” જ્ઞાતકુલ નદન “મહાપ્પા ” મહાપુરુષ, “જીણો-વીરવરનામધેજ્જો”
પ્રભુ જિનેન્દ્ર દેવે પણ “ પરિગ્ગહસ્સ ” પરિગ્રહને “ ફલવિવાગ ” એવો જ
ફળવિપાક “ કેહસિય ” કહેલ છે “ एसो सो ” આ રીતે તે “ परिगहो
पचमो ” पाचमो परिग्रह आक्षेप “ नियमा ” नियमથી “ नाणामणिकणग-
रयण महरिह० जाव ” विविध भण्डि, कनक, रत्न आदि रूप છે અહીં યાવત્
શબ્દથી આ દ્વારના પ્રારંભે “ હિયયદइओ ” સુધીનો જે પાઠ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના
વિષયમાં કહેવામાં આવેલ છે તે આખો પાઠ શ્રવણ કરાયેલ છે આ પરિગ્રહ
“ इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स ” मोक्षનો જે નિર્લોભતા શ્રેષ્ઠ માર્ગ છે તેના
“ फलिह भूओ ” आगणिया समान છે ॥ સૂ-૫ ॥

॥ परिग्रह नामनु आ छेवटनु द्वार स पूरुं थयु ॥

વદ્ધ=સ્વાત્મપ્રદેશેષુ સંલેપિત, નિકાચિત=દૃઢત્વ રદ્ધમ્=ઉપશમનાદિકરણાનામ-
પ્રિયીકૃત કર્મ ચૈસ્તે તયોક્તાઃ, નરા. ગુરુણા વદ્ધુવિયમ્=અનેકપ્રકારમ્=વિવિધ-
હેતુદૃષ્ટાન્તપૂર્વકમ્ અનુશિષ્ટમપિ=ઉપદિષ્ટમપિધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુન્વન્તિ
કિન્તુ ન ચ કુર્વન્તિ=ન ચ સમાચરન્તિ ॥ ૩ ॥

‘ જે ’ એ મનુષ્યા સર્વદુઃખાના=જન્મજરામરણાદિરૂપાણા ‘ વિરેચણ ’ વિરે-
ચન=કોષ્ઠશુદ્ધિરૂપવિરેચનમિત્રવિરેચન નિગારક ‘ ગુણમહુર ’ ગુણમધુર ગુણે.=
આત્મવિકાસિગુણૈર્મધુર=મિષ્ટમ્, એતાદૃશ ‘ જિણવચણ ’ જિનવચન=વચન=જિન-
વચનરૂપમ્ ‘ ઓસહ ’ ઔપધ ‘ મુઠા ’ મુઠા=ઉપકારબુદ્ધિયા ‘ જ ’ યત્ ‘ નેચ્છડ ’
નેચ્છન્તિ=નપિવન્તિ તે ‘ કિં કાઝ ’ કિં કર્તુ ‘ સકા ’ શક્તા=સમર્થા ભવન્તિ

અર્થમિથ્યાદૃષ્ટિ હોતે હૈં વિવેક બુદ્ધિસે વિહીન હોતે હૈં તથા (વદ્ધનિકાઢ્ય
કર્મમા) નિકાચિત કર્મોં કા વચ ફિર હુળ હોતે હૈં, એસે મનુષ્ય વદ્ધુવિદ્
(અણુદિદૃષ્ટિ) ગુરુઓં દ્વારા વિવિધહેતુ તથા દૃષ્ટાન્ત આદિસે મહુત પ્રકારસે
સામઘ્યાયે ગયે મી શ્રુત ચારિત્રરૂપ (ધર્મ) ધર્મકો (સુણતિ) સુન તો લેતે હૈં
પરન્તુ (ન ચ કરેતિ) ઉસે અપને આચરણ મેં નહીં લાતે હૈં ॥૩॥ રોગી
હોતર મી જો રોગ નિવારણાર્થ ઔપધિ કા પાન નહીં કરતે હૈં તો જૈસે
વે અપને રોગ કો દૂર કરને મેં સમર્થ નહીં હો સકતે હૈં ઇસો તરહ (યે)
જો સસારી પ્રાણી (સર્વ દુઃખવાળ વિરેચણ (જરા, મરણ આદિ સમસ્ત
દુઃખો કો જડમૂલ સે ઉઘાડ દેને વાલે તથા (ગુણમહુર) આત્મવિકાસી
ગુણો સે મીઠે ઈસે (જિણવચણ) જિનેન્દ્ર પ્રભુ કે વચન રૂપ (ઓસહ)
ઔપધિ કો (મુઠા) ઉપકાર બુદ્ધિ સે (પાઝ નેચ્છડ) નહીં પાતે હૈં વે
(કિં કાઝ સકા) કુઝ મી કરને કે લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હૈં ।

“ જે નરા મિચ્છાદિદૃષ્ટિ અનુદીયા ” એ મનુષ્યો મિથ્યાદૃષ્ટિ વાળા
હોય છે, વિરેચબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા “ વદ્ધનિકાઢ્યકર્મમા ” નિકાચિત
કર્મોના બધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો “ વદ્ધુવિદ્ અણુદિદૃષ્ટિ ” ગુરુઓ
દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાન્તો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે
છતા પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ “ ધર્મ ” ધર્મનું “ સુણતિ ” શ્રવણ તો કરે છે, પણ
“ ન ચ કરેતિ ” પણ તેને ખોતાના આચરણમા ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔપધિ ન પીવે તો તેનો
રોગ દૂર ડરવાને સક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે “ જે ” એ સસારી
“ સર્વદુઃખવાળવિરેચણ ” જરા, મરણ આદિ સગળા દુખોને નિર્મૂળે ડરનાર
તથા “ ગુણમહુર ” આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા “ જિણવચણ ” જિનેન્દ્ર
ભગવાનના વચનરૂપ “ ઓસહ ” ઔપધિને “ મુઠા ” ઉપકાર બુદ્ધિથી “ પાઝ
નેચ્છડ ” પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ “ કિં કાઝસકા ” કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

આત્મપ્રદેશે સહોપચિત્ય 'ચત્તવિહગઈપેરત' ચતુર્વિધગતિપર્યન્તમ્, ચતુર્વિધા=ચતુઃપ્રકારા ગતિ =નરકાદિરૂપા પર્યન્તો=વિભાગો यस્ય સ ત તથોક્ત સંસારમ્ 'અણુપરિયટ્ટતિ' અનુપર્યટન્તિ=પરિભ્રમન્તિ ॥ ૧ ॥

યે ચ પ્રાણિનોધર્મ ન શ્રુણ્વન્તિ, તથા યે ચ શ્રુત્યાપિ પ્રમાદ્યન્તિ=પ્રમાદ કુર્વન્તિ તે ઉભયેઽપિ 'અકયપુણ્ણા' અકુતપુણ્યાઃ=પ્રાણાતિપાતાદિપાપપરાયણત્વાત્ હીન પુણ્યા 'અનતણ' અનન્તકાન્=અનન્તાન્ 'સવ્વગઈપક્કલદે' સર્વગતિપ્રસ્ફુન્દાન્=નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગતિભ્રમણાનિ 'કાહિંતિ' કરિપ્યન્તિ ॥ ૨ ॥

યે ચ મિચ્છાદિદ્ધાઃઅબુદ્ધિઃ=વિવેકબુદ્ધિવિમલા વદ્ધનિકાચિત્કર્માણઃ

હૈ- 'એઈ', ઇત્યાદિ ।

(એઈ) ઇન હિંસા આદિરૂપ (પચઈ)પાચ (આસવેઈ) આસ્ર વોં કે આચરણ કરને સે જીવ (અણુસમય) પ્રતિક્ષણ (ચ આચિણિત્તુ) જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલ કા વદ કરકે-આત્મપ્રદેશોં કે સાથ એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધ કરકે (ચત્તવિહગઈપેરત) નરકાદિરૂપ ચાર પ્રકારકી ગતિવાલે (સસાર) સસાર મેં (અણુપરિયટ્ટતિ) પરિભ્રમણ કિયા કરતે હૈ ॥ ૧ ॥ (જે ય ન સુણતિ ધમ્મ) જો પ્રાણી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ કા શ્રવણ નહીં કરતે હૈ તથા (સોઝ્ઞ ય જે પમાદ્યતિ) જો સુનકર કે ભી પ્રમાદ પતિત હોતે રહતે હૈ, યે દોનોં (અકયપુણ્ણા) પ્રાણાતિપાત આદિકો મે પરાયણ રહને કે કારણ હીન પુણ્યવાલે હૈ । (અનતણ સવ્વ ગઈપક્કલદે કાહિંતિ) અતઃ અનતરૂપ મેં નરકનિગોદ આદિ ચારોગતિયોં મેં પરિભ્રમણ કરતે રહેંગે ॥ ૨ ॥ (જે નરા મિચ્છાદિદ્ધી અબુદ્ધીયા મનુ-

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારે દર્શાવે છે—“એઈ” ઇત્યાદિ—

“એઈ” હિંસા આદિ રૂપ “પચઈ” તે પાચ “આસવેઈ” આસ્ર વોને આચરવાથી જીવો “અણુસમય” પ્રત્યેક ક્ષણે “ચ આચિણિત્તુ” જ્ઞાના વરણીય આદિ કર્મમલને બધ બાધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સ બધ કરીને “ચત્તવિહગઈપેર” નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા “સસાર” સસારમાં “અણુપરિયટ્ટતિ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

“જે ય ન સુણતિ ધમ્મ” જે જીવો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરતા નથી, તથા “સોઝ્ઞ ય જે પમાદ્યતિ” સાલણીને પણ જે પ્રમાદમાં રૂબેલા રહે છે, તે બંને “અકયપુણ્ણા” પ્રાણાતિપાત આદિમાં લીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, “અનતણ સવ્વગઈ પક્કલદેકાહિંતિ” તેથી અનન્તરૂપે નરકનિગોદ આદિ ચારે ગતિયોમાં પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

वद्ध=स्वात्मप्रदेशेषु मलेपित, निष्काचित=दृष्टर वद्धम्=उपगमनादिकरणानाम-
पिपयीकृत र्म येस्ते तयोक्ताः, नग. गुणणा बहुविधम्=अनेकप्रकारम्=विविध-
हेतुदृष्टान्तपूर्वकम् अनुशिष्टमपि=उपदिष्टमपि धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण शृण्वन्ति
किन्तु न च कुर्वन्ति=न च समाचरन्ति ॥ ३ ॥

‘ जे ’ ये मनुष्या सर्वदुःखानां=जन्मजरामरणादिरूपाणां ‘ विरेयण ’ विरे-
चन=कोष्ठशुद्धिरूपविरेचनमिव विरेचन निवारक ‘ गुणमहुर ’ गुणमधुर गुणैः=
आत्मविकासिगुणैर्मधुर=मिष्टम्, एतादृश ‘ जिणवयण ’ जिनवचन=वचन=जिन-
वचनरूपम् ‘ ओसह ’ औषध ‘ मुहा ’ मुधा=उपकारबुद्ध्या ‘ ज ’ यत् ‘ नेच्छइ ’
नेच्छन्ति=नपिबन्ति ते ‘ किं काउ ’ किं कर्तुं ‘ सका ’ शक्ताः=समर्था भवन्ति

अयमिच्छादृष्टि होते हैं विवेक बुद्धिसे विहीन होते हैं तथा (वद्धनिकाइय
कम्मा) निष्काचित कर्मों का बर किए हुए होते हैं, ऐसे मनुष्य बहुविह
(अणुदिष्टपि) गुरुओं द्वारा विविधहेतु तथा दृष्टान्त आदिसे बहुत प्रकारसे
सामझाये गये भी श्रुत चारित्ररूप (धम्म) धर्मको (सुणति) सुन तो लेते हैं
परन्तु (न य करेति) उसे अपने आचरण में नहीं लाते हैं ॥३॥ रोगी
होकर भी जो रोग निवारणार्थ औषधि का पान नहीं करते हैं तो जैसे
वे अपने रोग को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं इसी तरह (ये)
जो ससारी प्राणी (सर्वदुःखाण विरेयण (जरा, मरण आदि समस्त
दुःखों को जड़मूल से उखाड़ देने वाले तथा (गुणमहुर) आत्मविकासी
गुणों से मीठे ऐसे (जिणवयण) जिनेन्द्र प्रभु के वचन रूप (ओसह)
औषध को (मुहा) उपकार बुद्धि से (पाउ नेच्छइ) नहीं पाते हैं वे
(किं काउ सका) कुछ भी करने के लिये समर्थ नहीं हो सकते हैं ।

“ जे नरा मिच्छादिद्वी अनुदीया ” जे मनुष्यो मिच्छादृष्टि वाणा
डोय छे, विरेयुद्धि विनाना डोय छे तथा “ वद्धनिकाइयकम्मा ” निष्काचित
उर्माणा अथ वाणा डोय छे, अथा मनुष्यो “ बहुविह अणुदिष्टपि ” गुरुओ
द्वारा विविध हेतु तथा दृष्टान्त आदि द्वारा अहुं अमनाववाभा आवे छे
छता पणु श्रुतचारित्ररूप “ धम्म ” धर्मनु “ सुणति ” श्रवणु तो करे छे, पणु
“ न य करेति ” पणु तेने पोताना आचरणमा उतरता नयी ॥३॥

जेम रोगी भाणुस रोगना निवारणु भाटे औषधि न पीवे तो तेनो
रोग दूर उरवाने शक्तिमान थतो नथी, अज प्रमाणे “ ये ” जे ससारी
“ सर्वदुःखाणविरेयण ” जरा, मरण आदि सगणा दुःखोने निर्भूण करनार
तथा “ गुणमहुर ” आत्मविकासी गुणोथी मधुर अथा “ जिणवयण ” जिनेन्द्र
लगवानता वचनरूप “ ओसह ” औषधने “ मुहा ” उपकार बुद्धिथी “ पाउ
नेच्छइ ” प्राप्त उरता नथी, तेओ “ किं काउसका ” कछ पणु उरवाने समर्थ

આત્મપ્રદેશે સહોપચિત્ય ' ચત્તરિહગર્હપેરત ' ચતુર્વિધગતિપર્યન્તમ્, ચતુર્વિધા= ચતુઃપ્રકારા ગતિ =નરકાદિરૂપા પર્યન્તો=ત્રિમાગો यस્ય સ ત તથોક્ત સંસારમ્ ' અણુપરિયટ્ટતિ ' અનુપર્યટન્તિ=પરિભ્રમન્તિ ॥ ૧ ॥

યે ચ પ્રાણિનોધર્મ ન શ્રુણ્વન્તિ, તથા યે ચ શ્રુત્યાપિ પ્રમાયન્તિ=પ્રમાદં કુર્વન્તિ તે ઉભયેઽપિ ' અકયપુણ્ણા ' અકૃતપુણ્યાઃ=પ્રાણાતિપાતાદિપાપપરાયણત્વાત્ હીન-પુણ્યા ' અનતપ્ ' અનન્તકાન્=અનન્તાન્ ' સઞ્જગઈપક્કલ્લદે ' સર્વગતિપ્રસ્ફુન્દાન્= નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગતિભ્રમણાનિ ' કાહિંતિ ' કરિપ્યન્તિ ॥ ૨ ॥

યે ચ મિત્થાદન્ટિકાઃઅબુદ્ધિકાઃ=વિવેકબુદ્ધિવિમ્ભા વદ્ધનિકાચિત્કર્માણઃ હૈ- ' એઈહિં , ઇત્યાદિ ।

(એઈહિં) હિંસા આદિરૂપ (પચહિં) પાચ (આસવેહિં) આસ્ર વોં કે આચરણ કરને સે જીવ (અણુસમય) પ્રતિક્ષણ (રય આચિણિત્તુ) જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલ્લ કા વદ્ કરકે-આત્મપ્રદેશોં કે સાથ એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધ કરકે (ચત્તરિહગર્હપેરત) નરકાદિરૂપ ચાર પ્રકારકી ગતિવાલે (સસાર) સસાર મેં (અણુપરિયટ્ટતિ) પરિભ્રમણ કિયા કરતે હૈ ॥ ૧ ॥ (જે ય ન સુણતિ ધમ્મ) જો પ્રાણી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ કા શ્રવણ નહીં કરતે હૈ તથા (સોઝ્ઞ ય જે પમાયતિ) જો સુનકર કે મો પ્રમાદ પતિત હોતે રહતે હૈ, યે દોનોં (અકયપુણ્ણા) પ્રાણાતિપાત આદિકો મેં પરાયણ રહને કે કારણ હીન પુણ્યવાલે હૈ । (અનતપ્ સઞ્જ ગર્હપક્કલ્લદે કાહિંતિ) અતઃ, અનતરૂપ મેં નરકનિગોદ આદિ ચારોગતિયોં મેં પરિભ્રમણ કરતે રહેંગે ॥ ૨ ॥ (જે નરા મિત્થાદિટ્ટી અબુદ્ધીયા મનુ-

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારે દર્શાવે છે—“ એ એ હિં ” ઇત્યાદિ—

“ એઈહિં ” હિંસા આદિ રૂપ “ પચહિં ” તે પાચ “ આસવેહિં ” આસ્ર વોંને આચરવાથી જીવો “ અણુસમય ” પ્રત્યેક ક્ષણે “ રય આચિણિત્તુ ” જ્ઞાના વરણીય આદિ કર્મમલ્લને બધ બાધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબધ કરીને “ ચત્તરિહગર્હપેર ” નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા “ સસાર ” સસારમા “ અણુપરિયટ્ટતિ ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

“ જે ય ન સુણતિ ધમ્મ ” જે જીવો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરતા નથી, તથા “ સોઝ્ઞ ય જે પમાયતિ ” સાલગીને પણ જે પ્રમાદમા દુબેલા રહે છે, તે બંને “ અકયપુણ્ણા ” પ્રાણાતિપાત આદિમા હીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, “ અનતપ્ સઞ્જગર્હ પક્કલ્લદેકાહિંતિ ” તેથી અનન્તરૂપે નર-કનિગોદ આદિ ચારે ગતિયોમા પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

વદ્ધ=સ્વાત્મપ્રદેશેષુ સંલેપિત, નિકાચિત=દૃઢત્વ વદ્ધમ્=ઉપગમનાદિકરણાનામ-
પિપીકૃત ર્મ ચૈસ્તે તયોક્તાઃ, નગ. ગુણા વદ્ધવિગ્મ્=અનેકપ્રકારમ્=વિવિધ-
હેતુદૃષ્ટાન્તપૂર્વકમ્ અનુગિષ્ટમપિ=ઉપદિષ્ટમપિધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુન્વન્તિ
ક્લિન્તુ ન ચ કુર્વન્તિ=ન ચ સમાચરન્તિ ॥ ૩ ॥

‘ જે ’ યે મનુષ્યા સર્વદુઃખાના=નન્મજરામરણાદિરૂપાણા ‘ વિરેયણ ’ વિરે-
ચન=કોષ્ઠગુદ્ધિરૂપવિરેચનમિત્રવિરેચન નિવારક ‘ ગુણમહુર ’ ગુણમધુર ગુણે.=
આત્મવિકાસિગુણૈર્મધુર=મિષ્ટમ્, એતાદૃશ ‘ જિણવયણ ’ જિનવચન=વચન=જિન-
વચનરૂપમ્ ‘ આમહ ’ ઔપધ ‘ મુઠા ’ મુઠા=ઉપકારબુદ્ધિયા ‘ જ ’ યત્ ‘ નેચ્છઃ’
નેચ્છન્તિ=નપિવન્તિ તે ‘ કિં કાઝ ’ કિં કર્તુ ‘ સક્કા ’ શક્તાઃ=સમર્થા ભવન્તિ

અર્થમિતિ પાટ્ટિ હોતે હેં વિવેક બુદ્ધિસે વિહીન હોતે હેં તથા (વદ્ધનિકાઢ્ય-
કમ્મા) નિકાચિત કર્મોં કા વચ કિં હુણ હોતે હેં, એસે મનુષ્ય વદ્ધવિદ્
(અણુદિદ્ધપિ) ગુરુઓં દ્વારા વિવિધહેતુ તથા દૃષ્ટાન્ત આદિસે વદ્ધત પ્રકારસે
સામઘાવે ગયેં ખી શ્રુત ચારિત્રરૂપ (ધમ્મ) ધર્મકો (સુણતિ) સુન તો લેતે હેં
પરન્તુ (ન ચ કરેતિ) ઉસેં અપને આચરણ મેં નહીં લાતે હેં ॥૩॥ રોગી
હોરુ ખી જો રોગ નિવારણાર્થ ઔપધિ કા પાન નહીં કરતે હેં તો જૈસે
વેં અપને રોગ કો દૂર કરને મેં સમર્થ નહીં હો સકતે હેં ઇસી તરહ (યે)
જો સસારી પ્રાણી (સવ્વ દુઃખાણ વિરેયણ (જરા, મરણ આદિ સમસ્ત
દુઃખોં કો જડમૂલ સે ઉઘાડ દેને વાલે તથા (ગુણમહુર) આત્મવિકાસી
ગુણો સે મીઠે એસે (જિણવયણ) જિનેન્દ્ર પ્રભુ કે વચન રૂપ (ઓસહ)
ઔપધિ કો (મુઠા) ઉપકાર બુદ્ધિ સે (પાઝ નેચ્છઃ) નહીં પાતે હેં વે
(કિં કાઝ સક્કા) કુછ ખી કરને કે લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હેં ।

“ જે નરા મિચ્છાદિદ્ધી અગુદ્ધીયા ” એ મનુષ્યો મિચ્છાદિદ્ધિ વાળા
હોય છે, વિરેચબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા “ વદ્ધનિકાઢ્યકમ્મા ” નિકાચિત
ધર્મોના અધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો “ વદ્ધવિદ્ અણુદિદ્ધપિ ” ગુરુઓ
દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાન્તો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામાં આવે છે
છતાં પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ ‘ ધમ્મ ’ ધર્મનું “ સુણતિ ” શ્રવણ તો કરે છે, પણ
“ ન ચ કરેતિ ” પણ તેને પોતાના આચરણમાં ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔપધિ ન પીવે તો તેનો
રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે “ જે ” એ સસારી
“ સવ્વદુઃખાણવિરેયણ ” જરા, મરણ આદિ સગળા હોયને નિમૂળે કરનાર
તથા “ ગુણમહુર ” આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા “ જિણવયણ ” જિનેન્દ્ર
ભગવાનના વચનરૂપ “ ઓસહ ” ઔપધિને “ મુઠા ” ઉપકાર બુદ્ધિથી “ પાઝ
નેચ્છઃ ” માત્ર કરતા નથી, તેઓ “ કિં કાઝસક્કા ” કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

અપિ તુ નૈવ કિમપિ । યે ઔપધ ન પિગન્તિ તે રોગનિવારણે કથમપિ સમર્થા ન ભવન્તીતિ ભાવઃ । સૂત્રે ‘ નેચ્છડ્ ’ इत्यत्रैकवचनमापत्त्वात् ॥ ૪ ॥

ભાવેન=અન્તઃકરણેન પચ્ચૈવ ચ પ્રાણાતિપાતાદ્યાસ્રવદ્વારાણિ ‘ ઉજ્જિઝ્ઞઞ ’ ઉજ્જિત્વા=ત્યક્ત્વા તથા પચ્ચૈવ ચ પ્રાણાતિપાતાદિનિરમણલભણાનિ સવરદ્વારાણિ ‘ રક્ષિત્વા ’ રક્ષિત્વા=પાલયિત્વા=કર્મરજોવિપ્રમુક્તાઃ સન્ત સિદ્ધિવરા=સિદ્ધીના મધ્યે વરા શ્રેષ્ઠા સકલકર્મક્ષયલભ્યા ભાવસિદ્ધિસ્તા તથોક્તામ્, અતएव अनुत्तरा सर्वोत्तमा ‘ જતિ ’ યાન્તિ-અપુનરાવૃત્તિ સિદ્ધિગતિ ગન્ઝન્તીત્યર્થઃ ॥ ૫ ॥

इति श्रीविश्वप्रख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचस्पत्यदशभापाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यगद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीगाह्वरपतिकोल्हापुर राजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-गालगद्गचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-गालीलाल - प्रतिप्रिचितया दशमाङ्गस्य श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिमाद्रिपञ्चास्रद्वाररूप प्रथमो विभागः समाप्तः ॥ १ ॥

વિરેચન ઔપધિ જિસ પ્રકાર કોષ્ઠ કી શુદ્ધિ કર દેતા હૈ ઉસી પ્રકાર પ્રભુ કે વચનરૂપ ઔપધિ મી કોષ્ઠરૂપ આત્મા કી શુદ્ધિ વિધાયક હોતી હૈ, ઇસલિયે ઇન્હે વિરેચક ચૂર્ણ કે જૈસા કહા હૈ ॥ ૪ ॥ જી મન્ય જીવ (ભાવેણ પચ્ચૈવ ઉજ્જિઝ્ઞઞ) ભાવપૂર્વક ઇન પૂર્વોક્ત પ્રાણાતિપાત આદિ પાચ આસ્રવ દ્વારો કો છોડ કરકે ઔર (પચ્ચૈવ રક્ષિત્વા) પ્રાણાતિપાતાદિવિરમણરૂપ પાચ સવરદ્વારો પાલ કરકે (કમ્મરયવિપ્પમુક્કા) કર્મરૂપ રજ સે સર્વથા રહિત હો જાતે હૈ, વે (અનુત્તર સિદ્ધિવર જતિ) અપુનરાવૃત્તિરૂપ સર્વોત્તમ ભાવસિદ્ધિ સિદ્ધિગતિ-કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥૫॥

॥ યે પાચ આસ્રવ- ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત હુએ ॥

॥ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્ર કા પ્રથમ વિભાગ સમાપ્ત ॥

થઈ શકતા નથી જેમ વિરેચન ઔપધિ કોઠો સાફ કરી નાખે છે તેમ પ્રભુના વચનરૂપી ઔપધિ પણ આત્મ રૂપી કોઠાની શુદ્ધિ કરનાર છે, તેથી તેને વિરેચન ચૂર્ણ સમાન કહેલ છે ॥ ૪ ॥

જે લખ્ય હોયો “ ભાવેણ પચ્ચૈવ ઉજ્જિઝ્ઞઞ ” ભાવ પૂર્વક તે પૂર્વોક્ત પ્રાણાતિપાત આદિ પાચ આસ્રવ દ્વારોને છોડીને, “ પચ્ચૈવ રક્ષિત્વા ” પ્રાણાતિપાતાદિ વિરમણરૂપ પાચ સવરદ્વારોનું પાલન કરીને “ કમ્મરયવિપ્પમુક્કા ” કર્મરૂપ રજથી તદ્દન રહિત થઈ જાય છે તેઓ “ અનુત્તર સિદ્ધિવર જતિ ” જાયથી આ સંસારમાં પાછા આવવું પડતું નથી એવું સર્વોત્તમ ભાવસિદ્ધિ-સિદ્ધિગતિ-મોક્ષ-પ્રાપ્ત કરે છે, ॥૫॥

॥ પાચ આસ્રવદ્વાર સમાપ્ત ॥

॥ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્રનો પહેલો વિભાગ સમાપ્ત ॥

—द्वितीयो भागः—

अत्र प्रथमभागे पञ्चास्रवा वर्णिताः, द्वितीयभागे तु तत्प्रतिपक्षभूतान् पञ्च सवरानभिधितुः । श्रीसुधर्मास्वामी तेषु प्रथममहिंसालक्षणसवरद्वारं विवृण्वन् शिष्यमामन्त्र्येदमाह—‘जम्बू’ इत्यादि—

मूलम्—जम्बू । एतो सवरद्वाराडं पंच वोच्छामि आणुपुर्वीए ।

जह भणियाणि भगवया, सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठाए ॥१॥

पढम होड अहिंमा १, वितिय सच्चवयणं इति पण्णत्त ।

दत्तमणुन्नाय ३ संवरो य वभचेर ५ मपरिग्गहत्तं ५ च ॥२॥

तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी ।

तीसे सभावणाए कच्चिवोच्छ गुणुदेसं ॥ ३ ॥

ताणि उइमाणि सुव्वय । महव्वयाइ लोगहियसव्वयाइ
सुयसागरदेसियाइं तवसजममहव्वयाइ सीलगुणवरव्वयाइ
सच्चज्जवव्वयाइ नरगतिरियमणुयदेवगइविवज्जगाइं सव्व
जणसासणगाइ कम्मसयविदारगाइ भवसयविणासगाइ
दुहसयविमोयगाइं सुहसयपव्वत्तगाइ कापुरिसदुरुत्तराइ
सप्पुरिसनिसेवियाइ निव्वाणगमणमग्गसग्गप्पणायगाइ सव-
रद्वाराइ पंच कहियाणि भगवया ॥ सू० १ ॥

द्वितीय विभाग प्रारभ—

प्रथम विभाग में पांच आस्रवों का वर्णन किया गया है । अब इस द्वितीय विभाग में इन पांच आस्रवों के प्रतिपक्षभूत पांच सवरों को कहने की कामनावाले श्री सुधर्मास्वामी सब से पहिले उनमें से अहिंसालक्षण सवरद्वार का विवेचन करने के निमित्त जम्बूस्वामी को

शीलेभागे—

पडेला विभागमा पाच आस्रवोनु वर्णुन उरायु छे डवे आ शील
विभागमा ते पाच आस्रवोथी विद्धता पाच सवरो विषे वर्णुन उरवानी
धियावाणा श्री सुधर्मास्वामी सौथी पडेला तेओमाना अडि सादक्षणु सवरद्वारनु

ટીકા—‘જન્મ’ ઇત્યાદિ—

હે જન્મ । — ઇતઃ સવરદ્વારાણિ પચ્ચ વક્ષ્યામિ આનુપૂર્વ્યાં યથા મણિતાનિ મગવતા સર્વદુઃસ્વપિમોક્ષણાર્થાય ॥ ૧ ॥

પ્રથમ મત્યહિંસા, દ્વિતીય સત્યરચનમિતિ પ્રક્ષપ્તમ્ ।

દત્તાનુજ્ઞાતસપરશ્ચ, વ્રહ્મચર્યપરિગ્રહત્વં ચ ॥ ૨ ॥

તત્ર પ્રથમમહિંસા, તસસ્થાપરસર્વભૂતક્ષેમકરી ।

તસ્યા સમાયનાયાઃ, કિંચિદ્ વક્ષ્યામિ ગુણોદ્દેશમ્ ॥ ૩ ॥ ઇતિ ઝાયા ।

તત્ર હે જન્મઃ । ઇતઃ=આસ્રવદ્વારકથનાનન્તર ‘આણુપુર્વીય’ આનુપૂર્વ્યા-અનુક્રમેણ પચ્ચ ‘સંવરદારાઈ’ સવરદ્વારાણિ, મઘિયતે=નિરુચ્યતે ર્મ કારણ પ્રાણાતિપાતાદિક યેનાત્મપરિણામેન સ સવરસ્તસ્ય દ્વારાણિ = ઉપાયભૂતાનિ = અહિંસાદીનિ ‘વોચ્છામિ’ વક્ષ્યામિ=કથયિષ્યામિ । નાહ સ્વપુદ્ગલા વક્ષ્યામિ, કિન્તુ મગવતા મહાવીરેણ સર્વપ્રાણિના ‘સર્વદુઃસ્વપિમોક્ષણટ્ટાણ’ સર્વદુઃસ્વ-

સચોધન કરકે પ્રથમસૂત્ર કહતે હે—‘જન્મ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(જન્મ) હે જન્મ ! (જન્મ) આસ્રવદ્વાર કહને કે ગાદ મેં અચ (આણુપુર્વીય) અનુક્રમ સે (પચ સવરદારાઈ) પાચ સવરદારોં કો (વોચ્છામિ) કહૂંગા । જિસ આત્મપરિણામ સે કર્મોં કે આસ્રવ કે કારણભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક પરિણામ રોક દિયે જાતે હેં ઉસકા નામ સવર હે । ઉસકે ઉપાયભૂત દ્વાર અહિંસાદિક પરિણામ હે । ઇન્હી પરિણામોં કા નામ સવર દ્વાર હે । મેં ઇન સવરદારોં કા કથન અપની બુદ્ધિ કે અનુસાર નહીં કરૂંંગા—કિન્તુ (મગવયા) મગવાન્ મહાવીર ને (સર્વદુઃસ્વપિમોક્ષણટ્ટાણ) સમસ્ત પ્રાણિયોં કે દુઃસ્વો કો દૂર કરને કે

વિવેચન ડરવાને માટે જખૂસ્વામીને સબોધીને પહેલુ સૂત્ર ડહે છે—

‘જન્મ’ ઇત્યાદિ

•

“જન્મ” હે જખૂ ! “જન્મ” આસ્રવદ્વાર વિષે વર્ણન કર્યા પછી હવે હું “આણુપુર્વીય” અનુક્રમે ‘પચસવરદારાઈ’ પાચસવર દ્વારોં “વોચ્છામિ” કહીશ જે આત્મપરિણામથી કર્મોના આસ્રવના કારણભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક પરિણામને રોકવામા આવે છે તેનું નામ સવર છે તેના ઉપાયરૂપ દ્વારોં અહિંસા વગેરે પરિણામ છે જે જે પરિણામોને સવરદ્વાર કહે છે હું તે સવરદ્વારોનું વર્ણન મારી બુદ્ધિ પ્રમાણે કરીશ નહીં—પણ “મગવયા” ભગવાન મહાવીરે “સર્વ દુઃસ્વપિમોક્ષણટ્ટાણ” સમસ્ત પ્રાણીઓના હું ખો દૂર ડરવાને

વિમોક્ષણાર્થાય 'જહ' યથા-યદ્વાપિ ભણિતાનિ, તથૈવ વક્ષ્યામિ ॥ ૧ ॥
પચ સવર દ્વારાણિ વક્ષ્યામીતિ પ્રતિજ્ઞાય તન્નામાન્યાહ-‘પદમ હોઢ અહિંસા’ ઇત્યાદિ ।
પञ्चसवर द्वारेषु ‘पदम’ प्रथममहिंसा सवरद्वार भवति, द्वितीय सत्यवचननामक,
तृतीय दत्तानुज्ञातग्रहणलक्षण, चतुर्थ ब्रह्मचर्यं, च=पुनः पञ्चममपरिग्रहत्व सवर-
द्वारम् ॥२॥ पञ्च सवरद्वारनामान्युक्तानि, सप्रति प्रथममहिंसासवरद्वार वर्णयितु-
माह-‘तत्थ पदम अहिंसा’ इत्यादि-

‘તત્થ’ તત્ર સવરપञ्चक्रमध्ये प्रथम सवरद्वारमहिंसा भवति, सा हि
‘तसथावरसन्वभूयखेमन्त्री’ तसस्यावरसर्वभूतक्षेभन्त्री=तसस्थावरादि सर्व
लिये (जह) जिस रूप से इनका (भाणियाणी) प्ररूपण किया है उसी
तरह से मैं इनका प्ररूपण-वर्णन करूंगा ॥ १ ॥

अव वे पाच सवर द्वार कौन २ से है ? सूत्रकार उनका क्रमशः
नामनिर्देश करने के लिये कहते हैं-‘पदम होड अहिंसा’ इत्यादि ।

उन पांच सवर द्वारों में से (पदम) सब से पहिला सवर
द्वार (अहिंसा होड) अहिंसा है । (चित्ति) दूसरा सवर द्वार
(सच्चवयण) सत्यवचन है (दत्तमणुजाय) तीसरा सवर द्वार दत्तानु
ज्ञातग्रहण है । चौथा सवर द्वार (बभचेर) ब्रह्मचर्य है । और पांचवा
सवर द्वार (अपरिग्रहत्त) अपरिग्रहत्व है ॥ २ ॥ इस प्रकार पाच
सवर द्वारों के नाम कह कर अव सूत्रकार सर्वप्रथम अहिंसा रूप सवर
द्वार का वर्णन करने के लिये तीसरी गाथा कहते हैं-(तत्थ) इन पाच
सवर द्वारों के बीच में (पदम) पहिला सवरद्वार (अहिंसा) अहिंसा

भाટે “જહ” જે રીતે તેનું “ભાણિયાણિ” પ્રરૂપણ કર્યું છે એજ રીતે હું
તેનું પ્રરૂપણ-વર્ણન કરીશ ॥ ૧ ॥

હવે તે પાચ સવરદ્વાર કયા કયા છે ? તેનો અનુક્રમે નામ નિર્દેશ
કરવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે-“પદમ હોડ અહિંસા” ઇત્યાદિ

તે પાચ સવરદ્વારોમાં “પદમ” સૌથી પહેલું સવરદ્વાર “અહિંસા
હોડ અહિંસા” છે, “ચિત્તિ” બીજું સવરદ્વાર “સચ્ચવયણ” સત્ય વચન
“દત્તમણુજાય” ત્રીજું સવરદ્વાર દત્તાનુજ્ઞાત છે, ચોથું સવરદ્વાર “બભચેર”
બ્રહ્મચર્ય છે, અને પાચમું સવરદ્વાર “અપરિગ્રહત્ત” અપરિગ્રહત્વ છે ॥ ૨ ॥

આ પ્રમાણે પાચ સવરદ્વારોના નામ કહીને હવે સૂત્રકાર સૌથી પહેલા
સવરદ્વાર અહિંસાનું વર્ણન કરવાને માટે ત્રીજી ગાથા કહે છે “તત્થ” એ
પાચ સવરદ્વારોમાં “પદમ” પહેલું સવરદ્વાર “અહિંસા” અહિંસા છે

દારકાણિ=કર્મ=જ્ઞાનાવરણાદ્યપ્રકારક, તદેવ જીવસ્ય ગુણ્ઠનેન માલિન્યાપાદ-
કચ્ચેન રજઃ=ધૂલિ, તદ્ વિદારયન્તિ=નિવારયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ,
તથા-ભવસયવિનાસગાઢ ' ભવશતવિનાશકાનિ = ભવશતાનિ=જન્મગતાનિ
વિનાશયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ, ભવપરમ્પરાવિચ્છેદકાનીત્યર્થઃ, અત એવ
' દુઃખસયવિમોચગાઢ ' દુઃખશતવિમોચકાનિ=દુઃખશતાનિ વિમોચયન્તિ યાનિ
તાનિ તથોક્તાનિ, તથા - ' સુદસયપવત્તગાઢ ' સુખગતવર્તકાનિ=સુખગતાનિ
પ્રવર્તયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ, તથા-' કાપુરિસદુરુત્તરાઢ ' કાપુરુપ

ચુકે હૈં ઉનમવને દીયા હૈં। (કમ્મરયવિદારગાઢ) યે સવરદ્વારકર્મરજ કે
વિદારક હૈં-જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકાર કી કર્મરૂપ ધૂલિ કો યે ઉડાને
નષ્ટ કરને વાલે હૈં। જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મો કો ધૂલિ કી ઉપમા ઇસ-
લિયે દી હૈં કિ ધૂલિ જિસ પ્રકાર મલિનતા આદિ કરતી હૈં ઉસી પ્રકાર
યે કર્મ ભી જીવ મેં વ્યવહાર નય કી અપેક્ષા સે મલિનતા કરતે હૈં,
અર્થાત્ જ્ઞાનાદિક ગુણોં કા આવરણ આદિ કર દેને સે જીવ મેં અજ્ઞાન
આદિ વિભાવ ભાવોં કે વર્ધક હોતે હૈં। (ભવસયવિનાસગાઢ) યે
સવરદ્વાર ભવશતવિનાશક હૈં-અર્થાત્-ઇનકી આરાધના કરને મેં આરા
ધક, જીવોં કે જો ઇનકી આરાધના કે વિના સૈકડોં ભવ-જન્મ-હોને
વાલે થે વેસવ નષ્ટ હો જાતે હૈં। (દુઃખસયવિમોચગાઢ) ભવપર-
પરા ઇનકે પ્રભાવ સે વિચ્છિન્ન હો જાતી હૈં, ઇસીલિયે ઇન્હેં દુઃખશત
વિમોચક કહા હૈં। (સુદસયપવત્તગાઢ) જવ સૈકડોં દુઃખ ઇનકી

“ સવ્વ જિણસાસણગાઢ ” આજ સુધીમા જેટલા ત્રિનેશ્વરો વડે ગયા
તે બધાએ તે સવરદ્વારોનો ઉપદેશ આપ્યો છે “ કમ્મરયવિદારગાઢ ” તે
સવરદ્વાર કર્મજનોના નાશ કરનાર છે-જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મરૂપી
જનોના નાશ કરે છે જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મોને ધૂળ-રજની ઉપમા દેવાનું કાણુ
એ છે કે ધૂળ જેમ મલિનતા આદિ કરે છે તેમ એ કર્મો પણ જીવમા
વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ મલિનતા કરે છે, એટલે કે જ્ઞાનાદિક આદિ ગુણોનું
આવરણ કરી નાખવાથી જીવમા અજ્ઞાન આદિ ઉલટા ભાવોના વર્ધક થાય છે
“ ભવસયવિનાસગાઢ ” તે સવરદ્વાર સવગત વિનાશક છે-એટલે કે તેમની
આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોના તેમની આરાધના કર્યા વિના જે એકડો
સવ થવાના હતા તે બધા નષ્ટ થઈ જાય છે “ દુઃખસયવિમોચગાઢ ” તેમના
પ્રભાવથી જીવોની પરપરા છેલડી જાય છે, તે કારણે તેમને દુઃખગત વિભા-
વક દર્શાવ્યા છે “ સુદસયપવત્તગાઢ ” જે તેમના આરાધનાથી એકડો

દુરુત્તરાણિ=કાપુરુપૈઃ=કાતરૈઃ દુઃસ્થેન ઉત્તીર્યન્તે યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ=કાપુરુપૈઃ પ્રતિપ તુમશશ્ચાનોત્યર્થઃ, તથા-‘સપ્પુરિમનિસેવિયાઃ’ સત્પુરુપૈર્નિષેવિતાનિ=આશ્રિતાનિ, તથા-‘નિવ્યાણગમણમગ્ગસગ્ગપ્પણાયાગાઈ’ નિર્વાણગમન માર્ગસ્વર્ગપ્રણાયકાનિ=નિર્વાણ=મોક્ષસ્તસ્ય ગમને માર્ગેત્ત માર્ગા યાનિ તાનિ નિર્વાણગમનમાર્ગાણિ, તથા-સ્વર્ગે પ્રકર્ષેણ નયન્તિ જીવાન્ યાનિ તાનિ સ્વર્ગપ્રણાયકાનિ, ઉભયોઃ કર્મધારયસ્તાનિ તથોક્તાનિ, પચ્ચસવરદ્વારાણિ ‘ભગવયા’ ભગવતા મહાવીરેણ ‘ઉ’ તુ-નિશ્ચયેન ‘કહિયાણિ’ કથિતાનિ=પ્રોક્તાનિ, અત્તેશ્માન્યવશ્ય શ્રદ્ધેયાનીતિ ભાવઃ ॥ સૂ. ૧ ॥

इति प्रथमसारद्वार प्रस्तावना ।

આરાધના સે વિનષ્ટ હો જાતે હૈ તોં યહ વાત બી નિશ્ચિત હો જાતી હૈ કિ યે સૈકઢોં સુઘ્વોં કે પ્રવર્તક હોતે હૈ । જવ હનકા હતના વિશિષ્ટ પ્રભાવ હૈ તો ફિર કયા હૈ હરણક પ્રાણી હનકી આરાધના કરને લગેગા । હસકે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ યે સવરદ્વાર (કાપુરિસદુરુત્તરાઈ) કા પુરુષ દુરુત્તર હૈ-જો કાચરપુરુષ હૈ-અનકે દ્વારા તો ધારણ કરને કે લિયે અશક્ય હૈ । પરન્તુ (સપ્પુરિસનિસેવિયાઈ) સત્પુરુષોં સે યે સેવિત-આચરિત હોતે હૈ, અર્થાત્ જો સત્પુરુષ હૈ-અન્તરાત્મા જીવ હૈ-વે હી અન્હે ધારણ કરતે હૈ । અધિક કયા કહા જાય યે સવરદ્વાર (નિવ્યાણગમણમગ્ગ-મગ્ગપ્પણાયાગાઈ) મોક્ષ કે ગમન મેં માર્ગરૂપ હૈ, અગર જીવ મેં હતની યોગ્યતા નહીં હોં તો સ્વર્ગ મેં પ્રયાણ કરાને વાલા જરૂર હોતા હૈ । હમ પ્રકાર કે (યેપચ સવરદારાઈ કહિયાણિ) પાંચ સવર દ્વાર ભગવાન મહાવીર ને કહે હૈ । હસલિયે પ્રત્યેક ભવ્ય જીવ કો અન્હે અપનોં શ્રદ્ધા કા વિષય અવશ્ય બનાના ચાહિયે । ॥સૂ. ૧॥

હુ ખ નષ્ટ થઈ જાય છે તો એ વાત પણ નક્કી થઈ જાય છે કે તે સેકડો સુખના પ્રવર્તક થાય છે જ્યારે તેમનો આટલો બધો વધારે પ્રભાવ છે તો દરેક પ્રાણી તેની આરાધના કરવા માડશે તેથી સૂત્રકાર બતાવે છે તે તે સવરદ્વાર “ કા પુરિસદુરુત્તરાઈ ” કાપુરુષદુરુત્તર છે-જે કાચર પુરુષ છે-બહિરાત્મા જીવ છે, તેમના દ્વારા તે ધારણ કરવાને માટે અશક્ય છે પણ “ સપ્પુરિસનિસેવિયાઈ ” પણ સત્પુરુષો વડે તેનું સેવન-આચરણ કરાય છે વધુ થુંકડું । તે સવરદ્વાર “ નિવ્યાણગમણમગ્ગ સગ્ગપ્પણાયાગાઈ ” મોક્ષગમનના માર્ગેત્ત છે, જે જીવમા એટલી યોગ્યતા હોય તો તે તેને માટે અવશ્ય સ્વર્ગ પ્રાપ્તિ કરાવનારા નિવડે છે આ પ્રકારના તે “ પચસવરદારાઈ કહિયાણિ ” પાંચ સવરદ્વાર ભગવાન મહાવીરે ડહેલ છે તો દરેક ભવ્યજીવે તેમને અવશ્ય પોતાની શ્રદ્ધાનો વિષય બનાવવો જોઈએ ॥સૂ. ૧॥

અથ પ્રથમસંવરનિરૂપણાયાહ—‘તત્થ પદમ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તત્થ પદમં અહિસા જા સા સદેવ મણુયાસુરસ્સ
લોગસ્સ ભવઈ દીવો તાણં સરણં ગઈ પડટ્ટા, નિઠ્ઠાણં ૧,
નિઠ્ઠુઈ ૨, સમાહી ૩, સંતી ૪, કિત્તી ૫, કંતી ૬, રઙ્ગ ૭, વિરઙ્ગ ૮,
સુયંગ ૯, તિત્તી ૧૦, દયા ૧૧, વિમુત્તી ૧૨, સ્વંતી ૧૩, સમ્મત્તારાહણા ૧૪,
મહત્તી ૧૫, વોહી ૧૬, વુદ્ધો ૧૭, ધિત્તીય ૧૮, સમિદ્ધી ૧૯, રિદ્ધી ૨૦,
વિદ્ધી ૨૧, ઠિઈ ૨૨, પુટ્ટી ૨૩, નદા ૨૪, ભદ્દા ૨૫, વિસુદ્ધી ૨૬,
લદ્ધી ૨૭, વિસિદ્ધિદિદ્ધી ૨૮, કલ્લાણં ૨૯, મગલ ૩૦, પમાઓ ૩૧,
વિભૂઈ ૩૨, રક્ષા ૩૩, સિદ્ધવાસો ૩૪, અણાસવો ૩૫, કેવલીણ-
ઠાણ ૩૬, સિવ ૩૭, સમિઈ ૩૮, સીલ ૩૯, સજમો ૪૦, તિ ય,
સીલઘરો ૪૧, સવરોય ૪૨, ગુત્તી ૪૩, વવસાઓ ૪૪, ઉસ્સઓ ૪૫,
જન્નો ૪૬, આયતણ ૪૭, જતણ ૪૮, મપ્પમાઓ ૪૯, અસ્સાઓ ૫૦,
વીસાસો ૫૧, અમઓ ૫૨ સઠ્ઠસ્સ ૫૩, વિ અમઘાઓ ચોક્કસ
૫૪, પવિત્તો ૫૫, સુઈ ૫૬ પૂયા ૫૭, વિમલ ૫૮, પમાસા ૫૯,
ય, નિમ્મલ ૬૦ તરત્તિ। એવમાદીણિ નિયગુણનિમ્મિયાઈ પજ્જવ-
નામાણિ હોંતિ અહિસાણ ભગવઈણ ॥ સૂ ૨ ॥

ટીકા—‘ તત્થ ’ ઇત્યાદિ—

‘ તત્થ ’ તત્થ=તેષુ પચ્ચસુ સંવરદ્વારેષુ મધ્યે ‘ પદમ ’ પ્રથમમ્=આદ્યમ્
‘ અહિસા ’ અહિસાલક્ષણ સંવરદ્વાર ભવતિ । અહિસા ક્રીદશી ? ઇત્યાહ—‘ જા મા ’
યા સા સુપસિદ્ધા-અહિસા ‘ સદેવમણુયાસુરસ્સ લોગસ્સ ’ સદેવમણુયાસુરસ્ય

इस प्रकार यह प्रथम संवर द्वार की प्रस्तावना है । अब सूत्रकार

આ પ્રમાણે આ પ્રથમ સંવરદ્વારની પ્રસ્તાવના છે હવે સૂત્રકાર પ્રથમ

લોકસ્ય 'દીવો' દ્વીપો ભવતિ, અય ભાવ-સયોગવિયોગચિન્તાસન્તાનવિતાન
તરજ્ઞાયમાણમોહમહાવર્તપર્ત કપાયથાપદકદર્થિતમધ્યમાનગાત્રાણામત્રાણાના પ્રાણા-
નામિયમર્હિસાઽઽશ્વાસસ્થાનરૂપો દ્વીપો ભવતિ, તથા- 'તાણ' ત્રાણમ્, આપદમ્યો
રક્ષણાત્રાણસ્વરૂપાઽસ્તિ । તથા- 'સરણ' શરણમ્-વિવિદવિપદવ્યાકુલ્પાનામાશ્રય

પ્રથમ સવરદ્વાર કે નિરૂપણ કે લિયે સૂત્ર કહતે હે- 'તત્થ પદમ' ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ- (તત્થ) ઉન પાચ સવરદ્વારોં મેં સે (પદમ અર્હિમા) પહિલા સવરદ્વાર અર્હિમા હૈ । (જા સા સદેવમણુયામુરસ્મ લોગસ્સ-દીવો ભવઙ) યહ સુપ્રસિદ્ધ અર્હિસા દેવલોક, મનુષ્યલોક ઓર અસુર-લોક કે લિયે ંક દ્વીપ જેસી હૈ । ઇસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ સયોગ ઓર વિયોગ કી સન્તાનપરપરારૂપ તરજ્ઞો સે યહ મોહમહાવર્તરૂપ ગર્ત કિ જિસમે સમસ્ત સસારી જીવ સર્વથા મગ્ન હો રહે હેં, વ્યાસ હો રહા હૈ ઉસમે પડે હુઅ ઙન સસારી જીવોં કો કપાયરૂપ શ્વાપદ-ર્હિસક જાનવર રાતદિન દુઃસ્થિત કરતે રહતે હૈ ઓર ઉનકે શરીર કો મથતે રહતે હૈ । વહા ઉનકી રક્ષા કરને વાલા કોઈ નહી હૈ । ઇસ તરહ અશરણભૂત હુઅ ઇન પ્રાણીયોં કી રક્ષા કરને વાલી યહ ંક અર્હિસા હી હૈ । અતઃ યહ અર્હિસા ઉનકે લિયે આશ્વાસન કે સ્થાનરૂપ ંક દ્વીપ કે જેસી હૈ । તથા (તાણ) જીવોં કી યહ આપત્તિ વિપત્તિ સે રક્ષા કરતી હૈ ઇસલિયે યહ ત્રાણરૂપ હૈ । તથા (સરણ) ંનેક વિપદાઓ સે ઘિરે હુઅ જીવોં

સવરદ્વારના નિરૂપણુને માટે સૂત્ર કહે છે- "તત્થ પદમ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ- "તત્થ" તે પાચ સવરદ્વારોમાંથી પદમ અર્હિસા " પહેલું સવરદ્વાર અર્હિસા છે " જા સા સદેવમણુયામુરસ્સ લોગસ્સ દીવો ભવઙ " તે સુપ્રસિદ્ધ અર્હિસા દેવલોક, મનુષ્યલોક, અને અસુરલોકને માટે એક દ્વીપ જેવી છે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે સયોગ અને વિયોગરૂપ સન્તાન પરપરા રૂપ મોહનો વડે આ મોહ મહાવર્તરૂપ બાઈ કે જેમા સર્વે સસારી જીવો સંપૂર્ણ રીતે મગ્ન થઈ ગયેલા છે, ડૂબી ગયા છે, તે સસારી જીવોને કપાયરૂપ શ્વાપદ હિંસક પશુ નિશદિન હુબી કરે છે અને તેમના શરીરને વલોવ્યા કરે છે ત્યા તેમનું રક્ષણ કરનાર કોઈ નથી આ રીતે નિરાધાર એવા તે પ્રાણીઓની રક્ષા કરનાર આ એક અર્હિસા જ છે તેથી આ અર્હિસા તેમને માટે આશ્રય સ્થાનરૂપ એક દ્વીપ સમાન છે તથા "તાણ" તે જીવોનું આપત્તિ-વિપત્તિ સામે રક્ષણ કરે છે તેથી તે ત્રાણરૂપ છે તથા "સરણ" ંનેક વિપદોથી ઘેરાયેલા જીવોને

સ્થાનમ્, ' ગઈ ' ગતિઃ=ગમ્યતે=મોક્ષાર્થિભિરાશ્રીયતે ઇતિ ગતિઃ=પ્રાપ્યમ્થાન
તથા- ' પડદા ' પ્રતિષ્ઠા પ્રતિષ્ઠન્તે-આસતે યસ્યા સર્વે ગુણા સા પ્રતિષ્ઠા=સર્વગુણા
નામાધારસ્વરૂપા । સામ્પ્રતમર્હિસાયાઃ ગુણનિષ્પન્નાનિ પદ્ધિનામાન્યાહ ' નિવ્વાણ '
इत्यादि- ' નિવ્વાણ ' નિર્વાણ=મોક્ષઃ, તદ્દેતુત્વાત્ ૧, ' નિવ્વુઈ ' નિવૃત્તિ=સ્વાસ્થ્ય-
મ્-કર્મવ્યાધિનર્જિતત્વાત્ ૨, ' સમાદી ' સમાધિ=સમતા, સમભાવદેતુત્વાત્ ૩,
' સતી ' શાન્તિઃ=દ્રોહવર્જિતત્વાત્ ૪, ' કિત્તી ' કીર્ત્તિઃ=યશઃ તદ્દેતુત્વાત્ ૫,

કો યદ્દ એક ઉત્તમ આશ્રય સ્થાન રૂપ છે । તથા (ગઈ) જો મોક્ષ કે
અભિલાષી જીવ છે તે હમકા આશ્રય કરતે છે ઇસલિયે તેની અપેક્ષા
યદ્દ ગતિરૂપ છે । તથા (પડદા) સમાર મેં જિતને મો સદ્ગુણ છે તેન
સપ્ત કી પ્રતિષ્ઠા-આધારભૂત યદ્દી એક અર્હિસા છે, ઇસકે અભાવ મેં અન્ય
વિદ્યમાન સદ્ગુણો કી પ્રતિષ્ઠા-ક્રીમત-નહીં હોતી છે । અવ સૂત્રકાર
ઇસ અર્હિસા મગવતી કે ગુણ-નિષ્પન્ન સાઠ નામો કો કહતે છે ।
તેમ્ પહિલા નામ (નિવ્વાણ) નિર્વાણ-મોક્ષ છે । ક્યોં કિ યદ્દ તેમ્કી
દેતુભૂત હોતી છે ૧ । દૂસરા નામ ઇસકા (નિવ્વુઈ) નિવૃત્તિ છે, નિવૃત્તિ
શબ્દ કા અર્થ સ્વાસ્થ્ય છે- કર્મો કે આત્યતિક અભાવ હોને સે હી
જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતા છે ૨ । અર્હિસા કા ત્રીસરા નામ (સમાદી) સમાધિ છે,
સમાધિ કા અર્થ સમતા છે, યદ્દ અર્હિસા સમભાવ કી કારણ હોતી છે
ઇસલિયે કારણ મેં કાર્ય કે ઉપચાર સે ઇસે સ્વય સમાધિરૂપ કહ દિયા
છે ૩ । અર્હિસા કા ચોથા નામ (સતિ) શાન્તિ છે, -ક્યોં કિ જદ્દા દ્રોહ

માટે તે એક આશ્રયસ્થાનરૂપ છે તથા " ગઈ " મોક્ષના અભિલાષી જે
જીવો છે તેઓ તેનો આશ્રય લે છે, તેથી તેમની અપેક્ષાએ તે ગતિરૂપ છે,
તથા " પડદા " સમારમા જેટલા સદ્ગુણ છે તે બધાના આધાર રૂપ આ એક
અર્હિસા જ છે, તેના અભાવે બીજા વિદ્યમાન સદ્ગુણોની કોઈ પ્રતિષ્ઠા-ક્રિમત
થતી નથી હવે સૂત્રકાર આ અર્હિમા ભગવતીના ગુણ પ્રતિપાદિત સાઠ નામો
બતાવે છે તેમા પહેલુ નામ " નિવ્વાણ " નિર્વાણ-મોક્ષ છે કારણ કે તે તેના
કારણરૂપ હોય છે (૧) તેનુ બીજુ નામ " નિવ્વુઈ " નિવૃત્તિ છે, નિવૃત્તિ
શબ્દનો અર્થ સ્વાસ્થ્ય થાય છે-કર્મોનો અત્યંત અભાવ હોવાથી તે જીવોને
થાય છે (૨) અર્હિસાનુ ત્રીજુ નામ " સમાદી " સમાધિ છે, સમાધિનો અર્થ
સમતા છે, આ અર્હિસા સમભાવનુ કારણ હોય છે તેથી કારણમા કાર્યના ઉપચારથી
તેને સ્વય સમાધિરૂપ કહેવામા આવેલ છે (૩) અર્હિસાનુ ચોથુ નામ " સતી "
શાન્તિ છે, કારણ કે જ્યાં દ્રોહનો અભાવ હોય છે ત્યાં શાંત હોય છે અર્હિ

‘કંતી’ કાન્તિઃ=પ્રસન્નતા તદ્દેતુત્વાત્ ૬, ‘રઈ ય’ રતિઃ=આનન્દસ્તજનવત્વાત્ ૭,
 ‘વિરઈ ય’ વિરતિઃ=વિરાગઃ સાવચકર્મવર્જિતત્વાત્,=‘સુયગ’ શ્રુતાગ્ના=શ્રુત=
 શ્રુતજ્ઞાનાગ્ન કારણ યસ્યાઃ સા તથોક્તા, ઉક્તમપિ-“પઢમ નાળ તઓ દયા”
 इति ९, ‘તિત્તી’ તૃપ્તિઃ=સતોષઃ સર્વપ્રાણિસતોષજનવત્વાત્ ૧૦, દયા=પ્રાણિરક્ષા-
 ઉપમર્દનવર્જિતત્વાત્ ૧૧, ‘ત્રિમુત્તી’ ત્રિમુક્તિ-વિરુદ્ધ્યન્તે પ્રાણિનઃ સવલ્પવધ-

કા અભાવ હોતા હે વહીં શાતિ હોતી હે, અહિંસા મેં દ્રોહ કા લેશ
 મી નહીં હોતા હે, હસલિયે હસે શાતિ શબ્દ સે વ્યવહૃત કિયા ગયા
 હે ૪ । (કિત્તી) યશકી હેતુભૂત હોને સે હસકા પાંચવાં નામ કીર્તિ હે ।
 અહિંસક જીવ કી કીર્તિ કા સર્વત્ર વિસ્તાર હોતા હે યદ યાત સુપ્રસિદ્ધ
 હી હે ૫ । (કતી) પ્રસન્નતા કી હેતુભૂત હોને સે હસકા નામ કાન્તિ
 મી હે ૬ । (રઈ ય) આનન્દ કી ઉત્પાદક હોને સે હસકા નામ રતિ
 હે ૭ । (વિરઈ ય) સાવચકર્મો સે વર્જિત હોને કે કારણ હસકા નામ
 વિરતિ મી હે ૮ । (સુયગ) હસ અહિંસા કા કારણ શ્રુતજ્ઞાન હોતા હે
 હસલિયે હસકા નામ શ્રુતાગ્ન હે । ક્યોઠિ એસા કહા હે કિ પહિલે જ્ઞાન
 હોતા હે વાદ મેં દયા ૯ । (તિત્તી) સમસ્ત પ્રાણિયોં કે લિયે યદ સતોષ
 જનક હોતી હે હસલિયે હસકા નામ તૃપ્તિ હે ૧૦ । હસ અહિંસા મેં
 પ્રાણિયોં કી રક્ષા હોતી હે હસલિયે પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કે ઉપમર્દન
 કૃત્ય સે રહિત હોને કે કારણ યદ (દયા) દયારૂપ હે ૧૧ । હસકે
 પ્રભાવ સે પ્રાણી સમસ્ત પ્રકાર કે વધ એવ વધનો સે છૂટ જાતા હે

સામા દ્રોહનુ નામ માત્ર પણ હોતુ નથી તેથી તેને શાન્તિ શબ્દથી વર્ણવેલ છે
 (૪) “કિત્તી” યશના ઝારણુ રૂપ હોવાથી તેનુ પાચમુ નામ કીર્તિ છે અહિંસક
 જીવની કીર્તિ સર્વત્ર ફેલાય છે તે વાત સુપ્રસિદ્ધ છે (૫) “કતી” પ્રસન્નતાના
 કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ કાન્તિ પણ છે (૬) “રઈય” આનન્દ ઉત્પન્ન કરનાર
 હોવાથી તેનુ નામ રતિ છે (૭) “વિરઈય” સાવચકર્મથી રહિત હોવાથી તેનુ નામ
 વિરતિ પણ છે (૮) “સુયગ” આ હિંસાને કારણે શ્રુતજ્ઞાન થાય છે, તેથી તેનુ
 નામ શ્રુતાગ્ન છે, કારણ કે પહેલા જ્ઞાન થાય છે, અને ત્યાર પછી દયા એવું
 લાખેલ છે (૯) “તિત્તી” સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે સતોષ જનક હોય
 છે તેથી તેનુ નામ તૃપ્તિ છે (૧૦) આ અહિંસાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થાય છે,
 તેથી પ્રાણીઓના પ્રાણસંહારના કૃત્યથી તે રહિત હોવાથી તે “દયા” દયારૂપ
 છે (૧૧) તેના પ્રભાવથી પ્રાણીઓ સમસ્ત પ્રકારના વધ અને બધનોમાથી
 મુક્ત થાય છે, તેથી સકળ વધબધનોથી પ્રાણીઓને મુક્ત કરાવનાર હોવાથી

વન્ધનેભ્યો યયા સા તથોક્તા, -સકલવધવન્ધનવિમોચકૃત્વાત્ ૧૨, 'સ્વત્તી' ક્ષાન્તિઃ=ક્રોધાદિનિગ્રહકારકૃત્વાત્ ૧૩, 'સમ્મત્તારાહણા' સમ્યક્ત્વારાધના=સમ્યક્-સમ્યગ્બોધરૂપમારાધ્યતે યયા સા તથોક્તા, જિનશાસનારાધનકારણત્વાત્ ૧૪, 'મહત્તી' મહત્તી=સર્વધર્માનુષ્ઠાનશ્રેષ્ઠત્વાત્ ૧૫, 'બોહી' બોધિઃ=સર્વજ્ઞી-ક્તધર્મપ્રાપ્તિરૂપત્વાત્ ૧૬, 'બુદ્ધી' બુદ્ધિઃ, પરદુઃસ્વાગ્બોધકૃત્વાત્ ૧૭, 'ધિર્હી' ધૃતિઃ, મ્રિયમાણજીવસ્યાભયપ્રદાયકૃત્વાત્, યદ્વા-ધૃતિશ્ચિત્તદાઢ્યમ્, અહિંસયા ચિત્તે દાઢ્યસ્ય સમુત્પન્નમાનત્વાત્ ૧૮, 'સમિદ્ધી' સમૃદ્ધિઃ, આનન્દજનકૃત્વાત્

હસલિયે પ્રાણીયો કી સકલ વધ વન્ધનોં સે વિમોંચ કા હોને કે કારણ હસકા નામ (વિમુક્તી) વિમુક્તી હૈ ૧૨ । યહ સમસ્ત ક્રોધાદિ કષાયોં કી નિગ્રહ કારિકા હૈ હસલિયે હસકા નામ (સ્વત્તી) ક્ષાન્તિ હૈ ૧૩ । સમ્યક્ બોધરૂપ સમ્યક્ત્વ હસકે હોને પર હી આરાધિત હોતા હૈ, અર્થાત્ યહ જિનશાસન કી કારણ હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (સમ્મત્તારાહણા) સમ્યક્ત્વારાધના હૈ ૧૪ । ધર્મકે સમસ્ત અનુષ્ઠાનોં મેં યહ શ્રેષ્ઠ હૈ હસલિયે હસકા નામ (મહત્તી) મહત્તી હૈ ૧૫ । સર્વજ્ઞપ્રતિપાદિત ધર્મકી પ્રાપ્તિરૂપ હોને સે હસકા નામ (બોહી) બોધિ હૈ ૧૬ । પરદુઃસ્વો કી અવબોધિકા હોને સે, અર્થાત્ પરકીય દુઃસ્વો કો વતલારે વાલી હોને સે હસકા નામ (બુદ્ધી) બુદ્ધિ હૈ ૧૭ । મરતે હુણ જીવોં કો હસકે પ્રભાવ સે અભય કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (ધિર્હી) ધૃતિ હૈ । અથવા-ધૃતિ શબ્દ કા અર્થ ચિત્ત કી દૃઢતા હૈ, સો અહિંસા સે ચિત્ત મે દૃઢતા ઉત્પન્ન હોતી હૈ યહ વાત નિર્વિવાદ હૈ ૧૮ । આનન્દ

તેનુ નામ “વિમુક્તી” વિમુક્તિ છે, (૧૨) તે સમસ્ત ક્રોધાદિક કષાયોનો નિગ્રહ કરનારી છે, તથા તેનુ નામ ‘સ્વત્તી’ ક્ષાન્તિ છે (૧૩) સમ્યક્બોધ રૂપ સમ્યક્ત્વ તે વિદ્યમાન હોય તો જ આરાધાય છે, એટલે કે તે જિનશાસનની આરાધનાના કારણરૂપ હોય છે તેથી તેનુ નામ “સમ્મત્તારાહણા” સમ્યક્ત્વારાધના છે (૧૪) ધર્મના સમસ્ત અનુષ્ઠાનોમા તે શ્રેષ્ઠ છે તેથી તેનુ નામ “મહત્તી” મહત્તી છે (૧૫) સર્વજ્ઞ પ્રતિપાદિત ધર્મની પ્રાપ્તિરૂપ હોવાથી તેનુ નામ “બોહી” બોધિ છે (૧૬) પરદુઃખોની અવબોધિકા હોવાથી એટલે કે પારકાના દુઃખો ખતાવનારી હોવાથી તેનુ નામ “બુદ્ધી” બુદ્ધિ છે (૧૭) મરતા જીવોને તેના પ્રભાવથી અભયની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ધિર્હી” ધૃતિ છે અથવા ધૃતિ શબ્દનો અર્થ ચિત્તની દૃઢતા છે તો અહિંસાથી ચિત્તમા દૃઢતા ઉત્પન્ન થાય છે તે વાત નિર્વિવાદ છે (૧૮) આનન્દની જનક હોવાથી

૧૯, 'રિદ્ધી' ઋદ્ધિ, ઋદ્ધીહેતુત્પાત્ ૨૦, 'વિદ્ધી' વૃદ્ધિ, વીર્યદ્ધસાદિપુણ્યપ્રકૃતિપુણ્યસપાદકત્વાત્ ૨૧, 'ઠિર્ઠ' સ્થિતિ - સાધપર્યપ્રસિતમોક્ષસ્થિતિસમ્પાદકત્વાત્ ૨૨, 'પુઢી' પુઢિઃ-પુણ્યપુઢિકારકત્વાત્ ૨૩, 'નદા' નન્દા=નન્દયતિ આનન્દયતીતિ નન્દા, સ્વર્ગાપર્ગસુખપ્રાપકત્વાત્ ૨૪, 'ભદા' ભદ્રા=ભન્દતે=કલ્યાણકરોતીતિ ભદ્રા ૨૫, 'વિમુદ્ધી' વિમુદ્ધિઃ-પાપમલવિશોધકત્વાત્ ૨૬, 'લદ્ધી' લઙ્ઘિ=કેવલજ્ઞાનકેવલદર્શનાદિ લઙ્ઘ્યહેતુત્પાત્ ૨૭, 'વિમિદ્ધિદ્ધી' વિસિદ્ધિદ્ધિઃ=પ્રધાનદર્શનમતમિત્યર્થઃ, ઉક્ત ચ—

કી જનક હોને સે ઇસકા નામ (સમિદ્ધી) સમૃદ્ધિ હૈ ૧૯ । લક્ષ્મી કી હેતુભૂત હોને સે ઇસકા નામ (રિદ્ધી) ઋદ્ધિ હૈ ૨૦ । ઇસકે પ્રભાવ સે તીર્થંકર આદિ પુણ્ય પ્રકૃતિયોં કા જીવોં કો વધ હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (વિદ્ધિ) વૃદ્ધિ હૈ ૨૧ । ઇસકે આચરણ કરને સે મોક્ષ મેં પ્રાપ્ત હુળ જીવોં કી સ્થિતિ આદિ અનન્ત હોતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ઠિર્ઠ) સ્થિતિ હૈ ૨૨ । પુણ્ય કી પુઢિ કા કારણ હોને સે ઇસકા નામ (પુઢી) પુઢિ હૈ ૨૩ । સ્વર્ગ ઓર મોક્ષકે સુખ જીવોં કો ઇસકી કૃપા સે પ્રાપ્ત હોતે હૈ અત વે ઉન સુખોં કી પ્રાપ્તિ સે વહા આનન્દ કરતે હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (નદા) નન્દા હૈ ૨૪ । યહ જીવોં કા કલ્યાણ કરાતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ભદા) હૈ ૨૫ । પાપમલ કા ઇસસે વિશોધન હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (વિમુદ્ધી) વિશુદ્ધિ હૈ ૨૬ । કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન, આદિ લઙ્ઘિયા ઇસકે હી પ્રભાવ સે હોતી હૈ, ઇસલિયે ઇસકા નામ (લદ્ધી) લઙ્ઘિ હૈ ૨૭ । (વિસિદ્ધિદ્ધી) અહિંસા

તેનુ નામ “ સમિદ્ધી ” સમૃદ્ધિ છે (૧૯) લક્ષ્મીના ડારણુરૂપ હોવાથી તેનુ નામ “ રિદ્ધી ” ઋદ્ધિ છે (૨૦) તેના પ્રભાવથી તીર્થંકર આદિ પુણ્યપ્રકૃતિ થોનેા જીવોને બધ થાય છે તેથી તેનુ નામ “ વિદ્ધી ” (૨૧) તેના આચરણથી મોક્ષ પ્રાપ્ત કરેલ જીવોની સ્થિતિ આદિ અનન્ત થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ ઠિર્ઠ ” સ્થિતિ છે (૨૨) પુણ્યની પુઢિનુ તે ડારણુ હોવાથી તેનુ નામ “ પુઢી ” પુઢિ છે (૨૩) તેની કૃપાથી જીવોને સ્વર્ગ અને મોક્ષના સુખો પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તે સુખોની પ્રાપ્તિથી તેઓ ત્યા આનન્દ કરે છે તે ડારણુ તેનુ નામ “ નદા ” છે (૨૪) તે જીવોનુ કલ્યાણ કરાવે છે તેથી તેનુ નામ “ ભદા ” ભદ્રા છે (૨૫) પાપમળની તેનાથી વિશુદ્ધિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ વિમુદ્ધી ” વિશુદ્ધિ છે (૨૬) કેવળજ્ઞાન, કેવલદર્શન આદિ લઙ્ઘિઓ તેના પ્રભાવથી જ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ લદ્ધી ” લઙ્ઘિ છે (૨૭) “ વિસિદ્ધિ દિદ્ધી ” અહિંસા જ પ્રધાન દર્શન છે તેથી તેનુ નામ

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીડા ન કર્તવ્યા ” ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥

પદકોટિમિત્તાનેકશાસ્ત્રાભ્યયનૈં કિમ્ ? યત્ર દયા ન વર્તતે । દયાવર્જિતાનિ સકલોન્યપિ શાસ્ત્રાણિ પલ્લભૂતાનીત્યર્થઃ ૨૮, ‘ કલ્લાણ ’ કલ્યાણમ્, કલ્ય મોક્ષસ્તત્પ્રાપકત્વાત્ ૨૯, મગલમ્ દુરિતોપશમનકારકત્વાત્ ૩૦, ‘ પમોઓ ’ પ્રમોદઃ=હર્ષજનકત્વાત્ ૩૧, ‘ વિભૂઈ વિભૂતિઃ-સકલસપત્તિહેતુત્વાત્ ૩૨, ‘ રક્ષા ’ રક્ષા જીવરક્ષણસ્વભાવાત્ ૩૩, ‘ સિદ્ધાવાસો ’ સિદ્ધાવાસઃ=સાધ્યપર્યં

હી પ્રધાન દર્શન હૈ इसलिये इसका नाम विशिष्ट दृष्टि है २८ ।

કહા મી હૈ—

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીડા ન કર્તવ્યા ॥ ૧ ॥

“ પદ કોટિ પરિમિત અનેક શાસ્ત્રો કે અધ્યયન સે ત્રયા લાભ હો સકતા હૈ જવ કિ જીવ કો ઇતના હી જ્ઞાન ન હો પાવેકિ પર પ્રાણી કો પીડા નહી કરના ચાહિયે ॥ ૧ ॥

દયોપદેશ વિહીન શાસ્ત્ર પલ્લભૂત જૈસે નિઃસાર હૈ ૨૮ । મોક્ષ-પ્રદાન કરાને ચાલી હોને સે इसका नाम (कल्लाण) कल्याण है २९ । પાપોં કા-इससे उपशमन होता है इसलिये यह (मगल) मगलरूप है ३० । હર્ષ કી જનક હોનેસે यह (पमाओ) प्रमादरूप है ३१ । સકલ સપત્તિયોં કી હેતુભૂત હોનેસે इसका नाम (विभूई) विभूति है ३२ । (रक्खा) जीवों

विशिष्ट दृष्टि है उल्लू पणु ७—

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીડા ન કર્તવ્યા ॥ ૧ ॥

‘ કોટિ પદો વાળા અનેક શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરવા છતાં પણ જો જીવને એટલું પણ જ્ઞાન ન પ્રાપ્ત થાય કે બીજા પ્રાણીઓને પીડવા જોઈએ નહીં, તો તેના અધ્યયનથી શો લાભ ? ॥ ૧ ॥

દયાના ઉપદેશ વિનાના શાસ્ત્રો પલ્લભૂત જેવા નિઃસાર છે (૨૮) મોક્ષ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી તેનું નામ “ કલ્લાણ ” કલ્યાણ છે (૨૯) તેના વડે પાપોનો ક્ષય થાય છે તેથી તે “ મગલ ” મગલરૂપ છે (૩૦) હર્ષની જનક હોવાથી તે “ પમોઓ ” પ્રમોદરૂપ છે (૩૧) સકલ સપત્તિઓના કારણરૂપ હોવાથી તેનું નામ “ વિભૂઈ ” વિભૂતિ છે (૩૨) “ રક્ષા ” જીવોની રક્ષા કરવાનો તેનો સ્વભાવ હોવાથી તેનું નામ રક્ષા છે (૩૩) તેની આરાધના

વસિતમોક્ષગતિનિવાસદેતુત્વાત્ ૩૪, 'અણાસવો' અનાસ્રવઃ-કર્માગમનનિરાધક-
ત્વાત્ ૩૫, 'કેવલીણ ઠાણ' કેવલિના સ્થાનમ્-તેપામાશ્રયભૂતત્વાત્, અહિંસકસ્ય
વકેવલજ્ઞાન સમુત્પદ્યતે इत्यर्थः ૩૬, 'સિવ' શિવમ્-ઉપદ્રવવર્જિતત્વાત્ ૩૭,
'સમિર્દ' સમિતિઃ-સમ્યવપ્રવૃત્તિઃ, તદ્દૂપત્વાત્ ૩૮, 'સીલ' શીલ=સમાધિઃ,
તદ્દેતુત્વાત્ ૩૯, 'સજમોત્તિ ય' મયમર્હતિ ચ-સયમ-હિંસા નિવૃત્તિસ્તદ્દેતુત્વાત્
૪૦, 'સીલવરો' શીલવૃદ્ધમ્-શીલ=સદાચારો, યદ્વા બ્રહ્મચર્યં, તમ્ય ગૃહ=

કી રક્ષા કરને કા હી ઇસકા સ્વભાવ છે ઇસલિયે ઇસકા નામ રક્ષા છે
૩૩ । ઇસકી આરાધના કરતેર હી જીવસિદ્ધોં કે આવાસ મેં સિદ્ધિગતિ
નામક સ્થાન વિશેષ મેં નિવાસ કરને લગ જાતા છે ઇસલિયે ઇસકા
નામ (સિદ્ધાવાસો) સિદ્ધાવાસ છે ૩૪ । (અણાસવો) કર્મોં કે
આગમન દ્વાર કી યહ નિરોધિકા છે ઇસલિયે ઇસકા નામ અનાસ્રવ છે
૩૫ । (કેવલીણ ઠાણ) કેવલજ્ઞાની-ઇસકા આશ્રય કરતે છે ઇસલિયે
ઇસકા નામ કેવલિ સ્થાન છે । અર્થાત્ જો અહિંસક હોતા છે ઉસે હી કેવલ
જ્ઞાન ઉત્પન્ન હોતા છે ૩૬ । અહિંસક જીવ કો કદાપિ સે બી કિસી બી
પ્રકાર કે ઉપદ્રવ પ્રાપ્ત નહીં હો સકતે છે ઇસલિયે ઉપદ્રવવર્જિત હોને સે
ઇમકા નામ (સીવ) શિવ છે ૩૭ । સમ્યક્ પ્રવૃત્તિ કા નામ સમિતિ છે,
યહ અહિંસા સમિનિરૂપ હોતી છે ઇસલિયે ઇસકા નામ (સમિર્દ)
સમિતિ છે ૩૮ । શીલ-સમાધિ-કા યહ કારણ હોતી છે ઇસલિયે ઇસકા
નામ (સીલ) શીલ છે ૩૯ । (સજમોત્તિ ય) સયમ-હિંસા કી નિવૃત્તિ
હોનારૂપ સયમ કી યહ સાધક છે ઇસલિયે ઇસકા નામ સયમ છે ।
૪૦ । શીલ-સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્યકી યહ સ્થાન છે ઇસલિયે ઇસકા નામ

કરતા કરતા જ જીવ સિદ્ધોના આવાસમા સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનમા નિવાસ
કરવા લાગે છે તેથી તેનું નામ “ સિદ્ધાવાસો ” સિદ્ધાવાસ છે (૩૪) “ અણા
સવો ” કર્મોના આગમન દ્વારની તે નિરોધક છે, તેથી તેનું નામ અનાસ્રવ છે
(૩૫) “ કેવલીણ ઠાણ ” કેવલજ્ઞાની તેનો આશ્રય છે તેથી તેનું નામ કેવલી
સ્થાન છે એટલે કે જે અહિંસક હોય છે તેને જ કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે
(૩૬) અહિંસક જીવને કોઈ પણ સ્થળેથી કોઈ પણ પ્રકારના ઉપદ્રવ થઈ
શકતા નથી તેથી ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તેનું નામ “ સિવ ” શિવ છે (૩૭)
સમ્યક્ પ્રવૃત્તિને સમિતિ કહે છે આ અહિંસા સમિતિરૂપ હોય છે તેથી તેને
“ સમિર્દ ” સમિતિ કહે છે (૩૮) શીલ-સમાધિના તે કારણરૂપ હોય છે
તેથી તેનું નામ “ સીલ ” શીલ છે (૩૯) “ સજમોત્તિય ” સયમ-હિંસાથી
નિવૃત્ત થવા રૂપ સયમની તે સાધક છે, તેથી તેનું નામ સયમ છે (૪૦)
શીલ સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્યનું તે સ્થાન છે તેથી તેનું નામ “ સીલવરો ”

સ્થાનમ્ ૪૧, ' સવરો ય ' સંવરથ=કર્માગમકારણસંવરણાત્ ૪૨, ' ગુત્તી ' ગુપ્તિઃ
=જીવસ્યાશુભપ્રવૃત્તિનિરોધકત્વાત્ ૪૩, ' વવસાઓ ' વ્યવસાયઃ-વિ=વિશિષ્ટો-
વસાયઃ=અવ્યવસાયઃ-આત્મપરિણામઃ ૪૪, ' ઉસ્સઓય ' ઉચ્ચક્ષયથ-દ્રવ્યભાવો-
ઘતિહેતુત્વાત્ ૪૫, ' જણ્ણો ' યજ્ઞઃ-સ્વર્ગાદિસદ્ગતિદાયકત્વાત્ ૪૬, ' આયત્તણ '
આયતનમ્-ગુણાનામાશ્રયઃ ૪૭, ' જયણ ' યત્નઃ-નિરવધાનુષ્ઠાનત્વાત્ ૪૮,
' અપ્પમાઓ ' અપ્રમાદઃ=પ્રમાદવર્જનમ્ ૪૯, ' અસ્સાઓ ' આશ્વાસઃ-પરત્સિદ્ધેતુ-

(સીલધરો) શીલગૃહ હૈ ૪૧ । કર્મોંકે આગમન ભૂત કારણોં કા વદ્ નિરોધ
કર દેતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા કામ (સવરો) સવર હૈ ૪૨ । ઇસકે આચરણ
કરને સે જીવોં કી અશુભ પ્રવૃત્તિ રુક જાતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ગુત્તિ)
ગુપ્તિ હૈ ૪૩ । યદ્ આત્મા કા વિશિષ્ટ પ્રકાર કા ઇક પરિણામ હૈ ઇસ-
લિયે ઇસકા નામ (વવસાઓ) વ્યવસાય વિ-અવસાય અધ્યવસાય હૈ
૪૪ । યદ્ દ્રવ્ય ઓર ભાવ ઇન દોનો કી ઉન્નતિ કરાને ચાલી હોતી હૈ
ઇસલિયે ઇસકા નામ (ઉસ્સઓ ય) ઉચ્ચક્ષય હૈ ૪૫ । સ્વર્ગ આદિ સદ્ગતિ
કી પ્રાપ્તિ જીવોં કો ઇસકે સેવન કરને સે હોતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા
નામ (જણ્ણો) યજ્ઞ હૈ ૪૬ । સમી સદ્ગુણોં કા યહી ઇક આશ્રયસ્થાન-
ભૂત હૈ ઇમ્લિયે ઇસકા નામ (આયત્તણ) આયતન હૈ ૪૭ । યદ્ નિરવધ
અનુષ્ઠાનરૂપ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (જયણ) યત્ન હૈ ૪૮ । ઇસ પ્રમાદ
અસાવધાનતાકા પરિત્યાગ હો જાતાહૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ(અપ્પમાઓ)અ

શીલગૃહ ૮ (૪૧) કર્મના આગમન રૂપ ડારણોનો તે નિરોધ કરી નાખે છે
તેથી તેનું નામ “ સવરો ” સંવર છે (૪૨) તેને આચરવાથી જીવોની અશુભ
પ્રવૃત્તિ અટકી જાય છે તેથી તેનું નામ “ ગુપ્તિ ” ગુપ્તિ છે (૪૩) તે આત્માનું
વિશિષ્ટ પ્રકારનું એક પરિણામ છે, તેથી તેનું નામ “ વવસાઓ ” વ્યવસાય-
વિ અવસાય-અધ્યવસાય છે (૪૪) તે દ્રવ્ય અને ભાવ, એ બંનેની ઉન્નતિ
કરનારી છે તેથી તેનું નામ “ ઉસ્સઓય ” ઉચ્ચક્ષય છે (૪૫) તેના સેવનથી
જીવોને સ્વર્ગ આદિ સદ્ગતિની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનું નામ “ જણ્ણો ”
યજ્ઞ છે (૪૬) સવળા સદ્ગુણોનું તેજ એક આશ્રયસ્થાન છે, તેથી તેનું નામ
“ આયત્તણ ” આયતન છે (૪૭) તે નિરવધ અનુષ્ઠાનરૂપ છે તેથી તેનું નામ
“ જયણ ” યત્ન છે (૪૮) તેમા પ્રમાદ-અસાવધાનતાનો પરિત્યાગ થઈ જાય
છે, તેથી તેનું નામ “ અપ્પમાઓ ” અપ્રમાદ છે (૪૯) પર પ્રાણીઓને તે
વૃત્તિના કારણરૂપ હોય છે, તેથી તેનું નામ “ અસ્સાઓ ” આશ્વાસ છે (૫૦)

ત્વાત્ ૫૦, 'વીસાઓ' વિશ્વાસઃપ્રાણિના પ્રતીતિજનકત્વાત્, યદ્વા-પ્રાણિપ્રાણ
 સ્યાવિરુદ્ધસમાચરણલક્ષણઃ ૫૧, 'અમઓ' અમયઃ-નિર્ભયહેતુત્વાત્ ૫૨, 'મન્વસ્મવિ-
 અમાઘાઓ' સર્વસ્યાપિ સકલપ્રાણિગણસ્ય અમાઘાતઃ-મા=ઝ.મીઃ, સા ચ દ્વેધા
 ધનલક્ષ્મીઃ પ્રાણલક્ષ્મીશ્ચ, તસ્યા ઘાતો હનન માઘાતો, ન માઘાત અમાઘાતઃ-
 અમારિઃ સ્વપદદ્વારા પ્રાણિના પ્રાણત્રાણકરણાત્ ૫૩, 'ચોક્ષ્વ' ચોક્ષા=પવિત્રાદપિ
 પવિત્રા-કર્મમલાપહારકત્વાત્ ૫૪, 'પવિત્તા' પવિત્રા=આત્મનેર્મહેતુત્વાત્ ૫૫,

પ્રમાદ હૈ ૪૯। પર પ્રાણિયો કો યદ્ વૃત્તિ કા કારણ હોતી હૈ ઇમલિયે ઇસકા નામ
 (અસ્સાઓ) આશ્વાસ હૈ ૫૦ । પ્રાણિયોં મે યદ્ પ્રતીતિ ઉત્પન્ન કરા દેતી
 હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (વીમાઓ) વિશ્વાસ હૈ । અથવા પ્રાણિયો કે
 પ્રાણોં કે વિરુદ્ધ આચરણ ઇસમે નહોં હોતા હૈ ઇસલિયે ખી ઇસકા નામ
 વિશ્વાસ હૈ ૫૧ । પ્રાણિયો કો યદ્ ભયરહિત બના દેતી હૈ । ઇસલિયે
 નિર્ભય કી હેતુ હોને સે ઇસકા નામ અમય હૈ ૫૨ । દૂસરે જીવો કી
 મા-ધન-લક્ષ્મી ઓર પ્રાણરૂપલક્ષ્મી કા ઇસમેં ઘાત નહોં હોતા હૈ ઇસ
 લિયે ઇસકા નામ (અમાઘાય) અમાઘાત હૈ । મા શબ્દ કા અર્થ લક્ષ્મી
 હોના હૈ-ધન રૂપ લક્ષ્મી ઓર પ્રાણરૂપ લક્ષ્મી કે ભેદ સે યદ્ લક્ષ્મી દો
 પ્રકાર કી હોતી હૈ । અર્હિમા સે ઇન દોનોં કા સરક્ષણ હોતા હૈ યદ્
 વાત પ્રત્યક્ષ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અમાઘાત હૈ ૫૩ । યદ્ અર્હિસા પવિત્ર
 વસ્તુઓં સે ખી હૈ અતિપવિત્ર હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ચોક્ષ્વા) ચોક્ષા
 હૈ ૫૪ । ઇસસે આત્મા કે ઉપર જમા છુઆ અનાદિકાલ કા મેલ-વિભાવ
 પરિણતિ દૂર હો જાતી હૈ । અતઃઆત્મા નિર્મલ-અપને સ્વરૂપ મેં મગ્ન-હો

પ્રાણીઓમા તે પ્રતીતિ ઉત્પન્ન કરે છે તેથી તેનું નામ “વીસાઓ” વિશ્વાસ
 છે અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોના વિરુદ્ધનું આચરણ તેમા થતું નથી, તેથી પણ
 તેનું નામ વિશ્વાસ છે (૫૧) પ્રાણીઓને તે ભય રહિત કરે તેથી નિર્ભય
 થતાને માટે કારણભૂત હોવાથી તેનું નામ “અમય” છે (૫૨) બીજા જીવોની
 મા-ધન-લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મીનો તેમા ઘાત થતો નથી, તેથી તેનું નામ
 “અમાઘાય” અમાઘાત છે ‘મા’ શબ્દનો અર્થ લક્ષ્મી થાય છે-ધનરૂપ
 લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મી, એ રીતે તેના બે પ્રકાર પડે છે અર્હિસાને એ
 બંનેનું સરક્ષણ થાય છે તે વાત પ્રત્યક્ષ છે (૫૩) તે અર્હિસા પવિત્ર વસ્તુઓ
 કરતા પણ વધારે પવિત્ર છે, તેથી તેનું નામ “ચોક્ષ્વા” ચોક્ષા છે (૫૪)
 તેનાથી આત્મા ઉપર જામેલો અનાદિકાળનો મેલ-વિભાવ પરિણતિ-દૂર થઈ
 જાય છે, તેથી આત્મા પોતાના નિર્મળ સ્વરૂપમા મગ્ન થઈ જાય છે તે કારણે

‘ સુદૃ ’ શુચિ =ભાવરોચહેતુત્વાન્ ૫૬, ‘ પૂયા ’ પૂજા=ભાવાર્ચના-પ્રાણ્યુપમર્દન-
રહિતત્વાત્ ૫૭ ‘ વિમલ ’ વિમલા-મિથ્યાત્વાવિરત્યાદિમલવર્જિતત્વાત્, ૫૮,
‘ પ્રભાસા ય ’ પ્રભાસા ચ-પ્રકાશરૂપા કેવલજ્ઞાનજ્યોતીરૂપત્વાત્, સર્વપ્રાણિના
સુખપ્રકાશકત્વાચ ૫૯, ‘ નિમ્મલત્તરા ’ નિર્મલત્તરા-સકલકર્મમલવર્જિતત્વાત્
૬૦, ‘ તિ એવમાદીણિ ’ इत्येवमादीनि ‘ નિયગુણનિમ્મિયાઈ ’ निजगुणनिर्मितानि=
ગુણલક્ષિતાનિ ‘ પજ્જવનામાણિ ’ पर्यायनामानि=તત્તત્તદ્વર્માશ્રિતાભિધાનાનિ,
‘ હુતિ ’ भवन्ति ‘ અહિંસાએ ભગવર્દેએ ’ अहिंसाया भगवत्या ॥ સૂ૦ ૨ ॥

જાતી હૈ-इसलिये इस आत्मा की निर्मलता का कारण होने से इस अहिंसा
का नाम (पवित्रता) पवित्र है ५५। भाव शुचिता का कारण होने से इसका नाम
(सुई) शुचि है ५६। इस अहिंसा में प्राणियों के प्राणों का उपमर्दन नहीं
होता है अतः यह भाव पूजारूप होने से इसका नाम (पूया) पूजा-
भाव पूजा है ॥ ५७ इसकी जो आराधना करते हैं वे मिथ्यात्व अविरति
आदि मलों से वर्जित हो जाते हैं इसलिये इसका नाम (विमल)
विमला है ५८। यह अहिंसा केवलज्ञानरूप ज्योति स्वरूप होने से
(प्रभासा य) एक प्रकाशरूपा है। इसलिये इसका नाम प्रभास है ५९।
इसकी प्रादुर्भूत होते ही आत्मा से सकल कर्मों का अभाव हो
जाता है अतः इसका नाम (निम्ललतरा) निर्मलतरा है ६०। (एव-
मादीणि नियगुणनिमिम्याइ पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवईए)
इस प्रकार इस अहिंसा भगवती के ये साठ नाम गुणानुसार हैं। ये
नाम इस अहिंसा भगवती के पर्यायवाची-तत्तद्वर्म की अपेक्षा को
लेकर-शब्द हैं ॥ सू० २ ॥

આત્માની નિર્મળતા માટે કારણભૂત હોવાથી તે અહિંસાનું નામ “ પવિત્રતા ”
પવિત્રતા છે (૫૫) ભાવ શુચિતાના કારણરૂપ હોવાથી તેનું “ સુદૃ ” શુચિ
છે (૫૬) આ અહિંસામાં પ્રાણીઓના પ્રાણોનું ઉપમર્દન થતું નથી તેથી તે
ભાવપૂજારૂપ હોવાથી તેનું નામ “ પૂયા ” પૂજા ભાવપૂજા છે (૫૭) જે તેની
આરાધના કરે છે તેઓ મિથ્યાત્વ, અવિરતિ આદિ મળેથી ગરહિત થઈ જાય
છે, તેથી તેનું નામ “ વિમલ ” વિમલા છે (૫૮) આ અહિંસા કેવળ જ્ઞાન
રૂપ જ્યોતિર્નિસ્વરૂપ હોવાથી “ પ્રભાસાય ” એક પ્રકાશરૂપ છે, તેથી તેનું નામ
પ્રભાસ ૩, (૫૯) તેનો પ્રાદુર્ભાવ થતા જ આત્મામાર્થી ધીરે ધીરે સધળા
કર્મોનો અભાવ થઈ જાય છે, તેથી તેનું નામ “ નિમ્મલત્તરા ” નિર્મલત્તરા છે
(૬૦) ‘ એવમાદીણિ નિયગુણનિમ્મિયાઈ પજ્જવનામાણિ હોતિ અહિંસાએ ભગવર્દેએ ’
આ પ્રમાણે આ અહિંસા ભગવતીના ગુણ પ્રમાણે સાઠ નામ છે તે નામો
આ અહિંસા ભગવતીના પર્યાયવાચી-તે તે ધર્મની અપેક્ષાએ શબ્દ છે ॥ સૂ. ૨ ॥

સમતિ અહિંસામાહાત્મ્યમાદ—

મૂલમ્—એસા ભગવર્ડ અહિંસા, જા સા ભીયાણ પિવ સરણં
પક્ષીણ પિવ ગયણં, તિસિયાણ પિવ સલિલં, છુહિયાણં
પિવ અસણં, સમુદ્દમજ્ઞેવ પોપવહણ, ચુપ્પયાણ ચ આસ-
મપય, દુહટ્ટિયાણં ચ ઓસહિવલ, અડર્વીમજ્ઞે ચ સત્થ-
ગમણ, એત્તો વિસિટ્ટુતરિયા અહિંસા જા સા પુઢવીજલ
અગણિ મારુયવણસ્સઙ્ગ - વીય -- હરિય -- જલચર--
થલચર--સ્વહયર તસ-થાવર--સઘ્વભૂયસ્સેમકરી ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવર્ડ ’ ઇત્યાદિ—

એવા=જિનશાસનપ્રસિદ્ધા-અહિંસા ભગવતી યા સા ‘ ભીયાણ પિવ સરણ ’
ભીતાનામિવ શરણમ્=ભય ભીતાના પ્રાણિના ત્રાણાથ ગૃહમિત્યાસ્તિ, ‘ પક્ષીણ-
પિવ ગયણ ’ પક્ષિણામિત્ર ગમનમ્=પક્ષિણા ગમનમિત્ર, યથા પક્ષિણા ગમને ગગન-
માધારો ભવતિ, તથૈવ સર્વધર્માણામિયમહિંસાઽધાર । ‘ તિસિયાણ પિવ સલિલમ્=

અવ સૂત્રકાર હસ અહિંસા કે માહાત્મ્ય કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—
‘ એસા ભગવર્ડ ’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ—(એસા) જિનશાસન મે પ્રસિદ્ધ યહ (અહિંસા ભગવર્ડ)
અહિંસા ભગવતી (જા સા) જો વહ અહિંસા (ભીયાણ પિવ સરણ)
ભયભીત હુએ પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કે લિયે ઘર જૈસી હૈ । (પક્ષીણ
પિવ ગયણ) તથા જિસ પ્રકાર પક્ષિયો કો ગમન કરને મે આધારભૂત
આકાશ હોતા હૈ ડસી તરહ સમસ્ત ધર્મોં કી આધારભૂત યહ અહિંસા
હી હૈ । (તિસિયાણ પિવ સલિલ) જિસ પ્રકાર તૃષિત વ્યક્તિયોં કી

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનુ મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—“ એસા ભગવર્ડ ” ઇત્યાદિ

“ એસા ” જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે “ અહિંસા ભગવર્ડ ” અહિંસા ભગવતી,
“ જા સા ” જે “ ભીયાણ પિવ સરણ ” ભયભીત બનેલ પ્રાણીઓની રક્ષા કર
વાને માટે ઘર સમાન છે, “ પક્ષીણ પિવ ગયણ ” તથા જેમ પક્ષીઓને
ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને
માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, “ તિસિયાણ પિવ સલિલ ” જેમ તર

તૃપિતામિવ સલિલમ્=જલમ્, પ્રાણરક્ષકત્વાત્, ‘સ્વહિયાણ પિવ અમણ’ ક્ષુધિત
નામિત્રાશનમ્=ક્ષુધાર્તપ્રાણિના કૃતેઽશન ભોજનમિવ, અન્નગ્રાણાઃ ઇતિ વચનાત્
તથા-‘સમુદ્રમજ્જે વ પોયવહ્ણ’ સમુદ્રમધ્યે ડૂબ પોતવહનમ્-યથા સમુદ્રમધ્યે ન
પ્રાણિના ત્રાણાય ભવતિ, તથૈવ સસારસમુદ્રમધ્યે ડૂબમહિંસા પ્રાણિના ત્રાણ
પોતાયતે ઇતિ ભાવઃ । તથા-‘ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય’ ચતુષ્પદાનાં ચ આશ્ર
પદમ્-યથા ચતુષ્પદપ્રાણિના કૃતે ગોષ્ઠ વિશ્રામસ્થાન તથૈવાહિંસાપિ સર્વપ્રાણિ

પ્રાણરક્ષા કા સાધનભૂત જલ હોતા હૈં ઉમ્મી પ્રકાર યદ્ અહિંસા પ્રાણિયોં કૈ પ્રાણોં કી રક્ષા કા ઇક સાધન હૈં । (સ્વહિયાણ પિવ અસપ
“અન્ન હી પ્રાણ હૈ” ડસ ઉક્તિ કૈ અનુસાર જિસ પ્રકાર ભૂખ પીડિત હુણ પ્રાણિયોં કૈ લિયૈ ભોજન ઇક માત્ર આચારભૂત હોતા
ઉસી પ્રકાર યદ્ અહિંસા ભી જીવો કી રક્ષા કરને કા ઇક સર્વોત્તમ
સાધન હૈં । (સમુદ્રમજ્જેવ પોયવહ્ણ) સમુદ્ર કૈ વીજ મૈં નૌકા જિવ
પ્રકાર પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને વાલી હોતી હૈં ઉસી પ્રકાર સસાર સમુદ્ર
કૈ વીચ મૈં પતિત હુણ પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કૈ લિયૈ યદ્ અહિંસા
હી ઇક સર્વોત્તમ દ્રઢ નૌકા જેસી હૈં । (ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય
ચતુષ્પદ-જાનવરોં કૈ લિયૈ જિસ પ્રકાર વિશ્રામસ્થલ ગોષ્ઠ હોતા હૈં ઉસ
પ્રકાર યદ્ ભગવતી અહિંસા ભી સર્વપ્રાણિયોં કૈ લિયૈ સર્વોત્તમ વિશ્રામસ્થાન
હૈં । (દુહટ્ઠિયાણ ચ ઓસહિવલ) રોગગ્રસ્ત વ્યક્તિયોં કો જિસ પ્રકાર
ઔષધિ કા સહારા હોતા હૈં ઉસી પ્રકાર કર્મરોગગ્રસ્ત ભવ્ય જીવોં કૈ

મ્યાઓની પ્રાણરક્ષા માટે પ્રાણી સાધનરૂપ બને છે, એ જ પ્રમાણે આ અહિંસા
પણ પ્રાણીઓના પ્રાણ બચાવવાનું એક સાધન છે “સ્વહિયાણ પિવ અસપ”
“અન્ન જ પ્રાણ છે” તે કથન પ્રમાણે જેમ ક્ષુધાર્થી પીડાતા પ્રાણીઓ માટે
ભોજન જ એક માત્ર આધાર હોય છે એ જ પ્રમાણે આ અહિંસા પણ
જીવોનું રક્ષણ કરવાનું એક સર્વોત્તમ સાધન છે “સમુદ્રમજ્જેવ પોય વહ્ણ”
સમુદ્રની વચ્ચે જેમ નૌકા પ્રાણીઓનું રક્ષણ કરે છે તેમ અસાર આગરમા
ડૂબેલા પ્રાણીઓની રક્ષા કરવાને માટે આ અહિંસા જ મજબૂત નૌકા જેવી
છે “ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય” ચતુષ્પદ-જાનવરોને માટે જેમ ગોઠ (વાડો)
વિશ્રામસ્થાન હોય છે એ જ પ્રમાણે આ ભગવતી અહિંસા પણ અમસ્ત
પ્રાણીઓને માટે સર્વોત્તમ વિશ્રામસ્થાન છે “દુહટ્ઠિયાણ ચ ઓસહિ વલ”
રોગીને જેમ ઔષધિનો સહારો હોય છે તેમ કર્મરોગગ્રસ્ત ભવ્ય જીવોને

સંપત્તિ અહિંસામાહાત્મ્યમાદ—

મૂલમ્—એસા ભગવર્ડ અહિંસા, જા સા ભીયાણં પિવ સરણં
પક્ષીણં પિવ ગયણ, તિસિયાણં પિવ સલિલ, સુહિયાણં
પિવ અસણં, સમુદમઝ્ઝેવ પોપવહણ, ચડપ્પયાણ ચ આસ-
મપય, દુહટ્ટિયાણ ચ ઓસહિવલ, અડવીમઝ્ઝે ચ સત્થ-
ગમણ, એત્તો વિસિટ્ટુતરિયા અહિંસા જા સા પુઢવીજલ
અગણિ મારુયવણસ્સડ્ઢ - વીય - હરિય -— જલચર—
થલચર—સહયર તસ—થાવર—સવ્વભૂયસેમકરી ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવર્ડ ’ इत्यादि—

एषा=जिनशासनप्रसिद्धा-अहिंसा भगवती या सा ‘ भीयाण पिव सरण ’
भीतानामिव शरणम्=भय भीताना प्राणिना त्राणाथ गृहमिवास्ति, ‘ पक्षीण-
पिव गयण ’ पक्षिणामिव गगनम्=पक्षिणा गगनमिव, यथा पक्षिणा गमने गगन-
माधारो भवति, तथैव सर्वधर्माणामियमहिंसाऽऽधार । ‘ तिसियाण पिव सलिलम्=

अब सूत्रकार इस अहिंसा के माहात्म्य को प्रदर्शित करते हैं—
‘ एसा भगवर्ड ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एसा) जिनशासन मे प्रसिद्ध यह (अहिंसा भगवर्ड)
अहिंसा भगवती (जा सा) जो वह अहिंसा (भीयाण पिव सरण)
भयभीत हुए प्राणियों की रक्षा करने के लिये घर जैसी है । (पक्षीण
पिव गगण) तथा जिस प्रकार पक्षियों को गमन करने मे आधारभूत
आकाश होता है उसी तरह समस्त धर्मों की आधारभूत यह अहिंसा
ही है । (तिसियाण पिव सलिल) जिस प्रकार तृप्ति व्यक्तियों की

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનું મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—“ એસા ભગવર્ડ ” इत्यादि

“ એસા ” જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે “ અહિંસા ભગવર્ડ ” અહિંસા ભગવતી,
“ જા સા ” જે “ મિયાણ પિવ સરણ ” ભયભીત બનેલા પ્રાણીઓની રક્ષા કર
વાને માટે ઘર સમાન છે, “ પક્ષીણ પિવ ગગણ ” તથા જેમ પક્ષીઓને
ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને
માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, “ તિમિયાણ પિવ સલિલ ” જેમ તર

अथ ये महापुरुषैरियमहिंसोपलब्धा सेविता च तानाह—‘ एसा भगवई ’
इत्यादि—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा जा सा अपरिमिय नाण
दसणधरोहि सीलगुण—विणय—तव—संजम नायगेहि तित्थक-
रेहि सव्वजगजीववच्छल्लेहिं तिलोगमहिणहि जिणचदेहि
सुट्टु दिट्ठा, ओहि जिणेहि विण्णाया, उज्जुमईहि विदिट्ठा
विउलमईहि विदिता, पुव्वधरोहि अधीया, वेउव्वीहि पइ-
पणा, आभिणिवोहियनाणीहि सुयनाणीहि मणपज्जवनाणी-
हि केवलणाणीहि आमोसहिपत्तेहि खेलोसहिपत्तेहि विप्पो-
सहिपत्तेहि जल्लोसहिपत्तेहि सव्वोसहिपत्तेहि वीयवुद्धिणहि
कोट्टवुद्धीहि पयाणुसारीहि सभिण्णसोएहि सुयधरेहि मण-
वल्लिणहि वयवल्लिणहि कायवल्लिणहि नाणवल्लिणहि दंसण-
वल्लिणहि चरित्तवल्लिणहि खीरासवेहि महुआसवेहि सप्पि-
यासवेहि अखीण महाणसिणहि चारणेहि विज्जाहरेहि च-
उत्थभत्तिणहि छट्ठभत्तिणहि दसमभत्तिणहि एव दुवालस-
चउदससोलस--अद्धमास-मास-दोमास तिमास-चउमास-
पचमास छम्मासभत्तिणहि उक्खित्तचरणहि एवं निक्खित्त-
चरणहि अतचरणहि पतचरणहि लूहचरणहि समुदाणि-

होती है । यदि यथार्थरूप मे जीवो की रक्षा करने वाली—अभयप्रदान
करने वाली यदि कोई सर्वोत्तम वस्तु है तो वह एक अहिंसा ही है ॥सू० ३॥

अत्र सूत्रकार जिन महा पुरुषो ने इस भगवती अहिंसा की प्राप्ति

यथार्थ गीते लुवेनी रक्षा करने वाली—अभयप्रदान करने वाली कोछ पणु सर्वोत्तम
वस्तु कोछ तो ते कोछ मात्र अहिंसा न छे ॥ सू-३ ॥

लुवे सूत्रकार ने महापुरुषोने आ भगवती अहिंसानी प्राप्ति तथा सेवा

ભાવાર્થ—આ ભગવતી અહિંસાની આગળ અસારના સઘળા વિશિષ્ટ જડ પદાર્થો તુચ્છ છે કારણ કે તેમનાથી યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા થતી નથી એ

मूलम्—एसा भगवई अहिसा जा सा अपरिमिय नाण
दसणधरेहि सीलगुण—विणय—तव—सजम नायगेहिं तित्थक-
रेहि सव्वजगजीववच्छल्लेहि तिलोगमहिणहि जिणचदेहि
सुट्ठु दिट्ठा, ओहि जिणेहि विण्णाया, उज्जुमईहि विदिट्ठा
विउलमईहि विदिता, पुव्वधरेहि अधीया, वेउव्वीहि पइ-
ण्णा, आभिणिवोहियनाणीहि सुयनाणीहि मणपज्जवनाणी-
हि केवलणाणीहि आमोसहिपत्तेहि खेलोसहिपत्तेहि विप्पो-
सहिपत्तेहि जल्लोसहिपत्तेहि सव्वोसहिपत्तेहि वीयवुद्धिणहि
कोट्टवुद्धीहि पयाणुसारीहि सभिण्णसोएहि सुयधरेहि मण-
वल्लिणहि वयवल्लिणहि कायवल्लिणहि नाणवल्लिणहि दंसण-
वल्लिणहि चरित्तवल्लिणहि खीरासवेहि महुआसवेहि सप्पि-
यासवेहि अखीण महाणसिणहि चारणेहि विज्जाहरेहि च-
उत्थभत्तिणहि छट्ठभत्तिणहि दसमभत्तिणहि एव दुवालस-
चउदससोलस--अद्धमास- मास -दोमास तिमास-चउमास-
पचमास छम्मासभत्तिणहि उक्खित्तचरणहि एवं निक्खित्त-
चरणहि अतचरणहि पतचरणहि लूहचरणहि समुदाणि-

अब सूत्रकार जिन महा पुरुषों ने इस भगवती अहिंसा की प्राप्ति

હવે સૂત્રકાર જે મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિસાની પ્રાપ્તિ તથા સેવા

ચરણહિ અણગિલાઈણહિ માંણચરણહિ સંમટ્ટકાપ્પિણહિ
 તજ્ઞાયસંસટ્ટકપ્પિણહિ ઉવનિહિણહિ સુઢ્ઢેસણિણહિ સસાદ-
 ત્તિણહિ દિટ્ટલાભિણહિ અદિટ્ટલાભિણહિ આયવિલિણહિ
 પુટ્ટલાભિણહિ આયવિલિણહિ પુરિમઢ્ઢિણહિ એકાસણિણહિ
 નિઘ્ઢિણહિ ભિન્નપિઢવાઈણહિ પરિમિયપિઢવાઈણહિ અંતહા-
 રેહિ પતાહારેહિ અરસાહારેહિ વિરસાહારેહિ લૂહાહારેહિ તુચ્છા-
 હારેહિ અતજીવિહિ પતજીવિણહિ લૂહજીવિહિ ઉવસતજી-
 વિણહિ પસતજીવિહિ વિવિત્તજીવિહિ અસીરમહુસપ્પિણહિ
 અમજ્ઞમસાસિણહિ પઢિમટ્ટાઈણહિ ઠાણુઘાઈણહિ વીરાસણિ-
 ણહિ ણેસજ્ઞિણહિ ડહાયઈણહિ લગડસાઈહિ ઇગપસિણહિ
 આયાવણહિ અવાઉહણહિ અણિટ્ટુયણહિ અકહુયણહિ ધુય-
 કેસમસુલોમનહેહિ સઠ્ઠવગાયપઢિકમ્મવિપ્પમુકેહિ સમણ-
 ચિન્ના, સુયધરવિદિયત્થકાયવુદ્ધિણો ધીરમહુવુદ્ધિણો ય જે
 તે આસીવિસઉગ્ગતેયકપ્પા નિચ્છયવવસાય પજ્જત્તકયમદયા
 ણિચ્ચ સજ્ઞાયજ્ઞાણા અણુવદ્ધધમ્મજ્ઞાણપચ્ચમહવ્વયઘ.
 રિત્તજુત્તા, સમિયા સમિર્ડસુ, સમિયપાવા, છઠ્ઠિવહ જગવચ્છલા,
 નિચ્ચમપ્પમત્તા, ણહિ અન્નેહિ ય જા સા અણુપાલિયા
 ભગવર્ડે ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવર્ડે ’ इत्यादि—

‘ એસા ભગવર્ડે અહિંસા ’ એવા ભગવતી અહિંસા=એવા પૂર્વોક્તા ભગવતી=
 પૂજનીયા સર્વજ્ઞપ્રરૂપિતાઽહિંસૈવ સમ્યગહિંસાઽસ્તિ, ન તુ સર્વજ્ઞેતરકલ્પિતા । ‘ જા’
 કી હૈ, તથા સેવા કી હૈ ઉન મહાપુરુષોં કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘ એસા ભગ
 વર્ડે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(એસા ભગવર્ડે અહિંસા) યત્ પૂર્વોક્ત ભગવતિ અહિંસા
 સર્વજ્ઞ દ્વારા પ્રરૂપિત અહિંસા—હી સત્ત્વી અહિંમાહૈ, સર્વજ્ઞ સે ભિન્ન હતર

કરી છે તે મહાપુરુષોના નામ પ્રગટ કરે છે—“ એસા ભગવર્ડે ” इत्यादि

ટીકાર્થ—‘ એસા ભગવર્ડે અહિંસા ’ આ પૂર્વોક્ત ભગવતી અહિંસા—સર્વજ્ઞ દ્વારા
 પ્રરૂપિત અહિંસા જ સાચી અહિંસા છે, સર્વજ્ઞ વિવાચના બીજા છદ્મસ્થ

या=जिनसिद्धान्तोक्ता अहिंसा 'सा' सा ' अपरिमियनाणदसणधरेहि ' अपरिमि-
तज्ञानदर्शनधारकैः ' सीलगुणविणयतवसजमनायगेहि ' शीलगुणविनयतपः
सयमनायकैः, शील=चित्तसमाधान तदेवगुणस्त, तथा विनयतप सयमाश्च स्वस्य
परेषा च नयन्ति=प्रापयन्ति ये ते तैस्तयोक्तैः ' तित्थकरेहि ' तीर्थङ्करै =
चतुर्विधसधनायकैः ' सव्वजगजीववच्छलेहि ' सर्वजगज्जीवत्सलैः-सकलप्राणि
कारुण्योपेतैः,=योगक्षेमकारिकत्वात्, ' तिलोगमहिएहि ' त्रिलोकमहितै =त्रिलो-
कपूजितैः=तीर्थकरनामकर्मणो जगत्पूजनीयत्वात्, ' जिणचदेहि ' जिनचन्द्रैः=
जिनाना सामान्यजिनाना म'ये चन्द्रा इव तैः, कारुणिकनिशाकरैरित्यर्थ, ' सुट्ठु-
दिट्ठा' सुष्ठु दृष्टा=केवलालोकैः कारणतः स्वरूपतः कार्यतश्च सम्यग विनिश्चिता,

छद्मस्य प्राणियों द्वारा कथित अहिंसा सची अहिंसा नहीं है- इस तरह
(जा ४ जिन सिद्धान्तोक्तजो अहिंसा है (सा) वह (अपरिमियनाण-
दसणधरेहि) अपरिमित-अनत-ज्ञान और दर्शन के धारण करने
वाले (सीलगुणविणयतवसजमनायगेहि) शील रूपगुण विनय एव
तप, इनका स्वय आचरण करने वाले और परको आचरण कराने वाले
(तित्थकरेहि) तीर्थकर-चतुर्विध सध का नेतृत्व करनेवाले (सव्वजगजी-
ववच्छलेहि) समस्त जगत के जीवों के प्रतिवात्सल्यभाव रखने वाले
और (तिलोगमहिएहि) तीर्थकर नामकर्म जगत्पूज्य होने के कारण
तीनों लोको द्वारा पूजे जाने वाले, ऐसे (जिणचदेहि) जिन चद्रोने
सामान्य जिनो की बीच में चन्द्रमा के तुल्य तीर्थकर महाप्रभुओ ने यह
अहिंसा भगवती को पूर्वोक्त प्रकार से (सुट्ठुदिट्ठा) अपने केवला-
लोक से कारण स्वरूप को, एव कार्य की अपेक्षा को लेकर अच्छी

उपो द्वारा कथित अहिंसा माथी अहिंसा नहीं आ रीते " जा " जिन-
सिद्धातोक्त ने अहिंसा छे " सा " ते " अपरिमियनाणदसणधरेहि " अप-
रिमित-अनत-ज्ञान अने दर्शनना धारउ " सीलगुणविणयतवसजमनायगेहि "
शीलरूपगुण, विनय अने तपनु जते आचरणु करनारा अने भीजने तेनु
आचरणु करावनारा " तित्थकरेहि " तीर्थकर-चतुर्विध सधनु नेतृत्व करनारा
" सव्वजगजीववच्छले हि " जगतना समस्त उपो प्रत्ये वात्सल्यभाव राख
नारा अने " तिलोगमहिएहि " तीर्थकर नामकर्म जगत्पूज्य होवाने कारणे
त्रेणु लोक द्वारा पूजनारा, अवा ' जिणचदेहि " जिनचन्द्रो-सामान्य जिनोनी
अहर अद्रमा समान तीर्थकर महाप्रभुओअे आ भगवती अहिंसाने पूर्वोक्त
रीते " सुट्ठु दिट्ठा " पोताना केवलालोकथी कारण स्वरूपे, अने कार्यनी अपे
क्षाअे सारी गीते देणी छे-निश्चित करी छे तेभणु तेना आद्य अने अन्त्य

તત્ર ગુરુપદેશઃ, કર્મક્ષયોપશમાદિ ગાહ્યાભ્યન્તર કારણમસ્યાઃ પ્રમત્તઑગાત્પ્રાણવ્યપરોપગલક્ષણહિંસાપતિપક્ષરૂપ સ્વરૂપમ્, સ્વર્ગાપવર્ગપ્રાપ્તિતિલ્કાણ ચ કાર્યમ્, ડતિ । તથા—‘ઓહિજિનેહિ’ અવધિજિનૈઃ=વિશિષ્ટાવધિજ્ઞાનિમિઃ ‘વિણ્ણાયા’ વિજ્ઞાતા=ભેદપ્રભેદૈર્વિદિતા, તથા ‘ઉજ્જુમર્હિં’ ઋજુમતિભિરપિ=મનન મતિઃ—સવેદન મિત્યર્થઃ, ઋજ્વીસામાન્યગ્રાહિણી મતિર્નુદ્ધિર્યેષા તે ઋજુમતયઃ=અર્ધતૃતીયાઢગુલ ન્યૂનમનુષ્યક્ષેત્રમર્તિ સજ્ઞિ પત્રેન્દ્રિયમનોદ્રવ્યપ્રત્યક્ષીકરણહેતુમનઃપર્યાયજ્ઞાનભેદ વન્તસ્તૈરપિ, ‘વિદિદ્વા’ દૃષ્ટા, તથા—‘વિપુલમર્હિં’ વિપુલમતિમિઃ=પર્યાયજ્ઞાતોપેતા ચિન્તનીય ઘટાદિવસ્તુવિશેષગ્રાહિણી મતિર્નુદ્ધિર્યેષા તે વિપુલમતયસ્તૈઃ વિદિતા=

તરહ દેખી હૈ—નિશ્ચિન કી હૈ । ડન્હો ને ઢમકે ચાલ્પ ઓગ આભ્યન્તર કારણ ગુરુપદેશ, કર્મક્ષયોપશમ આદિ કહે હૈ । ઢસકા સ્વરૂપ—પ્રમત્તયોગ સે જો પ્રાણવ્યપરોપગરૂપ હિંસા કા સ્વરૂપ હૈ ડસસે વિપરીત સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ । તથા સ્વર્ગ ઓર અપવર્ગ કી પ્રાપ્તિ હોના ઢસકા કાર્ય કહા હૈ । (ઓહિજિનેહિ વિણ્ણાયા) વિશિષ્ટ અવધિ જ્ઞાનિયો દ્વારા યહ અહિંસા ભગવતી ભેદ પ્રભેદો સહિત વિદિત હુઈ હૈ । તથા (ઉજ્જુમર્હિં વિદિદ્વા) ઋજુમતિ મન. પર્યાય જ્ઞાનિયો દ્વારા યહ પ્રત્યક્ષ રૂપ મે દેખી ગઈ હૈ । જો વિષય કો સામાન્યરૂપ સે જાનતા હૈ વહ ઋજુમતિમન. પર્યાય હૈ । યહા પર ંસી આશકા નહો કરના ચાહિયે કિ “જય ઋજુમતિ સામાન્યગ્રાહી હૈ તય તો વહ દર્શન હી જુઆ ડસે જાન કયો કહા કયો કિ યહ સામાન્યગ્રાહી હૈ” ઢસકા તાત્પર્ય ઢતના હી હૈ કિ વહ વિશેષોકો જાનતા હૈ પર વિપુલમતિ જિતને વિશેષો કો નહો જાનતા । અર્ધતૃતીયઢઢગુલ ન્યૂન—અર્થાત્ ઢાઈ અંગુલ કમ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મે રહે

ન્તર કારણુ ગુરુપદેશ, કર્મક્ષયોપશમ આદિ જતાવેલ છે તેનુ સ્વરૂપ—પ્રમત્ત યોગથી જે પ્રાણુ ઢરનાર હિંસાનુ સ્વરૂપ છે તેના કરતા ઢલટુ સ્વરૂપ પ્રગટ કરેલ છે તથા સ્વર્ગ અને અપવર્ગની પ્રાપ્તિ થવી તે તેનુ કાર્ય કહેલ છે “ઓહિજિનેહિ વિણ્ણાયા” વિશિષ્ટ અવધિજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે ભગવતી અહિંસા ભેદ, પ્રભેદો સહિત સમજવામા આવેલ છે તથા “ઉજ્જુમર્હિં વિદિદ્વા” ઋજુમતિ મન પર્યાયજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે પ્રત્યક્ષ રૂપે જોવામા આવેલ છે જે વિષયને સામાન્ય રીતે જાણે છે તે ઋજુમતિ મન પર્યાય છે અહીં એવી શકા ન કરવી જોઈ એ કે “જે ઋજુમતિ સામાન્યગ્રાહી છે તો તે “દર્શન” જ ગણાય તેને જાન કેમ કહ્યુ ? કારણુ કે તે સામાન્યગ્રાહી છે” તેનો ભાવાર્થ એટલો જ છે કે તે વિશેષોને જાણે છે પણ વિપુલમતિ જેટલા વિશેષોને જાણતો નથી “અર્ધતૃતીયઢઢગુલન્યૂન” એટલે કે અહીં આગળ

विशेषतो दृष्टा, एते उभयेऽपि मनः पर्ययज्ञानिनः । तथा—‘ पुञ्चधरेहि ’
पूर्वधरैः=उत्पादाग्रायणीयवीर्यादि चतुर्दश पूर्वधरैः (अग्नीया) अधीता=श्रुतनिवद्धा
पठिता, तथा ‘ वेडव्यीहि ’ वैकुर्विकैः=वैक्रियलब्धधारिभिः, ‘ पडण्णा ’ प्रतीर्णा=
निस्तीर्णा-आजन्मपरिपालितेत्यर्थः, तथा—‘ आभिणित्रोहियनाणीहि ’ आभि-
नित्रोधिकज्ञानिभिः, अभि=अर्थाभिमुख-अविपर्ययरूपत्वात्, नि=नियतोऽसंशय-
रूपत्वात्, मोय=मवेदनम्=अभिनिमोघ, स एव आभिनिमोधिकम्, ज्ञायतेऽ-
नेनेति ज्ञानम्, आभिनिमोधिकं च तज्ज्ञानम्-आभिनिमोधिकज्ञानम्-इन्द्रिय नो-
इन्द्रिय निमित्तो बोध इत्यर्थः, मोऽस्ति येषां तेस्तथोक्तेः, मतिज्ञानवद्भिरित्यर्थः,

हृणसज्जी पचेन्द्रिय जीवों के मनोद्रव्यों को यह ऋजुमति साक्षात् जानता
है । यह ज्ञान क मनःपर्ययणक भेद है । (विडलमहिं विदिया) मनः
पर्यय ज्ञानका दूसरा भेदविपुलमति है । इस विपुलमति मनः पर्य-
यज्ञानवाला पदार्थों को ऋजुमति की अपेक्षा विशुद्धतर आदि
रूप से जानता है । क्योंकि यह मति पर्यायशानोपेत होती है, तथा
चिन्तनीय घटादि वस्तुओं में सूक्ष्मतर आदि रूप से वर्तमानधर्मों को
जानती है । उन ऐसे विपुलमति मन पर्यय ज्ञानियों द्वारा यह भगवती
अहिंसा ऋजुमति की अपेक्षा अधिक और विशेषरूप से विदित-ज्ञात-
दृष्ट हुई है । तथा (पुञ्चधरेहि अधीया) उत्पदपूर्व, अग्रायणीपूर्व,
वीर्यप्रवाद आदि चतुर्दशधर्म के धारी महात्माओं ने-श्रुतज्ञानियों ने-
श्रुत में निबद्ध हुई इस अहिंसा भगवती को पढा है । (वेडव्यीहि-
वेडण्णा) वैक्रियलब्धधारो मुनिजनों ने इसे आजन्म पाला है ।
(आभिणित्रोहियनाणीहि, सुयनाणीहि, मणपज्जवनाणीहि केवलनाणीहि)

આજી મનુષ્યક્ષેત્રમાં રહેલ મની પચેન્દ્રિય જીવોના મનોદ્રવ્યોને તે ઋજુમતિ
માલાત જાણે છે મન પર્યાયજ્ઞાનનો આ એ-ભેદ છે “ વિડલમહિં વિદિઆ”
મન પર્યાય જ્ઞાનનો બીજો ભેદ વિપુલમતિ છે આ વિપુલમતિ મન પર્યાય
જ્ઞાનવાળો પદાર્થોને ઋજુમતિના કરતા વધારે વિશુદ્ધ રૂપે જાણે છે કારણ કે
મતિપર્યાય શાનોપેત હોય છે, તથા કલ્પનીય ઘટાદિ વસ્તુઓમાં સૂક્ષ્મતર આદિ
રૂપે વર્તમાન ધર્મોને જાણે છે એવા તે વિપુલમતિ મન પર્યાયજ્ઞાનીઓ
દ્વારા આ ભગવતી અહિંસા ઋજુમતિના કરતા અધિક અને વિશેષ રૂપે વિદિત-
જ્ઞાત-દૃષ્ટ થઈ છે તથા “ પુવ્વધરેહિ અધીયા ” ઉત્પાદપૂર્વ, અગ્રાયણીપૂર્વ,
વીર્યપ્રવાદ આદિ ચૌદ પૂર્વના વારડ મહાત્માઓએ-શ્રુતજ્ઞાનીઓએ-શ્રુતમાં
ગૂંથાયેલ આ ભગવતી અહિંસાનું અવ્યયન કર્યું છે, “ વેડવ્યીહિ વેડણ્ણા ”
વૈક્રિયલબ્ધધારી મુનિજનોએ તેનું આજન્મ પાલન કર્યું છે ‘ આભિણિત્રો-
હિયનાણીહિ સુયનાણીહિ, મણપજ્જવનાણીહિ કેવલનાણીહિ ’ ઈન્દ્રિય અને નોઈ

તથા-‘ સુચનાણીહિ ’ શ્રુતાનિમિ‘=શ્રુતમ્-આચારાદિ, તદ્દેદિમિરિત્યર્થ, તથા-‘ મણપઞ્જવનાણીહિ ’ મન પર્યવનાનિમિઃ-મનસો મન્યમાનમનોદ્રવ્યાણા પર્યવઃ=પરિન્દ્રેદો મન-પર્યવઃ, સ ણ્વ જ્ઞાનમ્, મનઃપર્યવજ્ઞાનમ્, તદસ્તિ યેષાં તે તથોક્તાસ્તૈઃ, તથા-‘ કેવલજ્ઞાણીહિ ’ કેવલજ્ઞાનિમિઃ=કેવલમેકમસાદાયમનન્ત પરિપૂર્ણ યદ્ જ્ઞાન તત્કેવલજ્ઞાન, તદસ્યાસ્તિ યેષાં તે તથોક્તાઃ, તથા-‘ આમોસ-હિપત્તેહિ ’ આમર્શોપધિપાત્તૈઃ,-આમર્શ=શરીરમર્પ્ગઃ, સ ણ્વોપધિઃ-સર્વરોગાપ-હારિત્યાત્-તપશ્ચરણમભાગો લઙ્કિયવિશેષસ્તા પ્રાપ્તા યે તે તથોક્તાસ્તૈઃ, તથા-‘ સ્વેલોસહિપત્તેહિ ’ શ્લેષ્મોપધિપાત્તૈઃ-શ્લેષ્મા ણ્વ ઓપધિર્મયતિ યત્ર લઙ્કી સા

इन्द्रिय और नो इन्द्रिय इनसे उत्पन्न जो ज्ञान होता है उसका नाम आभिनिबोधक ज्ञान है । ‘ अभि ’ और ‘ नि ’ ये दो उपसर्ग यह प्रकट करते हैं कि यह ज्ञान सन्मुख रखे हुए नियमिन क्षेत्रवर्ती पदार्थ को ही जान सकता है । इस आभिनिबोधिक ज्ञानियों द्वारा मतिज्ञान-धारियों द्वारा, तथा आचाराग आदि श्रुत के जानने वालों द्वारा, तथा मनःपर्यवज्ञानियों द्वारा,-मनवाले-सज्ञि प्राणी-किसी भी वस्तु का चिन्तवन मनसे करते हैं । चिन्तवन के समय चिन्तनीय वस्तु के भेद के अनुसार चिन्तवनकार्य में प्रवृत्तमन भिन्न २ आकृतियों को धारण करता रहता है वे आकृतिया ही मन की पर्याये हैं, और उन मानसिक आकृतियों को साक्षात् जानने वाला ज्ञान मन पर्यव ज्ञान हैं, इस मनःपर्यव ज्ञान को धारण करने वाले मुनिजनों द्वारा, तथा केवल ज्ञानियों द्वारा-असहाय, एक, अनन्त, परिपूर्ण यह केवल शब्द का अर्थ है, ऐसा जो ज्ञान होता है वह केवल ज्ञान है, यह ज्ञान जिस आत्मा में होता है उसका नाम केवलज्ञानि है ऐसे केवल ज्ञानि आत्माओं द्वारा

ન્દ્રિય વડે ઉત્પન્ન થયેલ જે જ્ઞાન છે તેનું નામ આભિનિબોધક જ્ઞાન છે “અભિ” અને “ નિ (” એ બંને ઉપસર્ગો એ પ્રગટ કરે છે કે તે જ્ઞાન સન્મુખ રાખેલ નિયમિત ક્ષેત્રવર્તી પદાર્થને જ જાણી શકે છે તે અભિનિબોધિક જ્ઞાનીઓ દ્વારા, મતિજ્ઞાનધારીઓ દ્વારા તથા આચારાગ આદિ સૂત્રોના જાણકાર દ્વારા તથા મન પર્યવ જ્ઞાનીઓ દ્વારા-મનવાળા-સજ્ઞિ પ્રાણી-કોઈ પણ વસ્તુનું મન વડે ચિન્તવન કરે છે ચિન્તવનને વળતે જેનું ચિન્તવન કરવામાં આવે છે તે વસ્તુના ભેદ પ્રમાણે ચિન્તનકાર્યમાં પ્રવૃત્ત થયેલ મન બુદ્ધી બુદ્ધી આકૃતિઓને ધારણ કરતું રહે છે, તે આકૃતિઓ જ મનની પર્યાયો છે અને તે માનસિક આકૃતિઓને પ્રત્યક્ષ જાણનાર જ્ઞાન મન પર્યવ જ્ઞાન છે, તે મન પર્યવ જ્ઞાનને ધારણ કરનાર મુનિઓ દ્વારા, તથા કેવળજ્ઞાનીઓ દ્વારા-અસહાય, એક અનન્ત, પરિપૂર્ણ તે “ કેવલ ” શબ્દના અર્થો છે, એવું જે જ્ઞાન છે તેને કેવળ

શ્લેષ્મોપધિસ્તા પ્રાપ્તા અધિગતા યે તે તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ' જલ્હોસહિપત્તેહિ ' જલ્હોપધિપ્રાપ્તૈ જલ્હ' = શરીરસમુદ્ભવશ્ચમઞ્, સ એવાપધિસ્તા પ્રાપ્તા યે તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ' વિપ્પોસહિપત્તેહિ ' વિપ્પુડોપધિપ્રાપ્તૈઃ, વિપ્પુપઃ = મુલવિન્દ્ર, ત એવ ઓપધિવિપ્પુડોપધિસ્તા પ્રાપ્તાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા- ' સવ્વોસહિપત્તેહિ ' સર્વમ્ = કર્ણવદ-નનાસિકાનયનજિહ્વાસમુદ્ભવ મલ તદેવ ઓપધિસ્તાપ્રાપ્તાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા- ' વીય-બુદ્ધિણ્હિ ' વીજબુદ્ધિઃ, વીજમિત્ર વિવિધાર્થોધિગમરૂપમહાતરુજનનાદ્ બુદ્ધિર્યેષા તે વીજબુદ્ધયસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, અય ભાવઃ-ઉત્પાદવ્યયધ્રોવ્યયુક્ત સદિત્યાદિવદ્યપ્રધાન પદમર્થપદ, તેનૈકેનાપિ વીજભૂતેનાધિગતેન યેઽન્ય પ્રભૂતમપ્યર્થમનુસરન્તિ તે વીજબુદ્ધય ઉચ્યન્તે, તથા ' કોઢ્ઠુબુદ્ધિણ્હિ ' કોઠ્ઠુબુદ્ધિઃ-કોઠ્ઠપ્રક્ષિપ્તધાન્યમિત્ર યેષા સૂત્રાર્થો સુચિરમપિ તિષ્ઠતસ્તે કોઠ્ઠ બુદ્ધયસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, ' પયાણુસારીહિ ' પદાનુસારિભિઃ = પદેન સૂત્રાવયવેન એકેનોપલબ્ધેન તદનુકૂલાનિ પદશતાન્યનુસર-ન્તિ યે તે પદાનુસારિણસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ' સમિન્નસોણ્હિ ' સમિન્નશ્રોતોભિઃ-સમિન્નાનિ સમાનાર્થગ્રાહીણિ શ્રોતાસિ = ઇન્દ્રિયાણિ યેષા તે સમિન્નશ્રોતસસ્તૈસ્ત-થોક્તૈઃ, ' યે એકતરેણાપીન્દ્રિયેણ સર્વેન્દ્રિય ગમ્યાન્ વિપયાન્ અવગચ્છન્તિ તે સમિ

(સમણુચિન્ના) સેવિત હુઈ હૈ, તેસા સમન્ધ આગે સે જોડ લેના ચાહિયે । તથા (આમોસહિપત્તેહિ, ચેલોસહિપત્તેહિ, જલ્હોસહિપત્તેહિ, વિપ્પોસહિપત્તેહિ, સવ્વોસહિપત્તેહિ, વીયબુદ્ધિણ્હિ, કોઢ્ઠુબુદ્ધિણ્હિ, પયાણુસારીહિ, સમિન્નસોણ્હિ) આમશૌપધિલબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, શ્લેષ્મૌપધિ લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, જલ્હૌપધિ લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, વિપ્પુડોપધિ લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, સર્વોપધિ લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, તથા વીજબુદ્ધિ લબ્ધિ-વીજ સમાન બુદ્ધિ વાલી લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, કોઠ્ઠુબુદ્ધિલબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, પદાનુસારી લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, સમિન્ન-શ્રોતસ લબ્ધિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, ઉનકે દ્વારા સેવિત હુઈ હૈ, તથા

જ્ઞાની કહે છે એવા ઉપજ્ઞાની આત્માઓ દ્વારા " સમણુચિન્ના " સેવાયેલી છે એવો મળધ આગળના વાક્ય માથે જોડી લેવાનો છે તથા ' આમોસહિ પત્તેહિ, ચેલોસહિપત્તેહિ, જલ્હોસહિપત્તેહિ વિપ્પોસહિપત્તેહિ, સવ્વોસહિપત્તેહિ, વીય-બુદ્ધિણ્હિ, કોઢ્ઠુબુદ્ધિણ્હિ, પયાણુસારીહિ, સમિન્નસોણ્હિ " આમશૌપધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે જલ્હૌપધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, વિપ્પુડો પધિલબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, તથા વીજબુદ્ધિ લબ્ધિ-વીજના સમાન બુદ્ધિવાળી લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે કોઠ્ઠુબુદ્ધિ લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે પદાનુસારી લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, સમિન્નશ્રોતસ લબ્ધિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ચુકી છે, તેઓ વડે (અહિંસા સેવાયેલ છે તથા

અશ્રોતસ ઉચ્યન્તે, તથા- સુયધરેહિં' શ્રુતરે = જાચારાદિગ્રન્થધારકૈઃ, તથા-
 'મળવલિણિ' મનોવલિકૈઃ-દૃઢમનસ્કૈઃ-નાનાવિષ્ણુપરીપત્તોપગર્ગમવાતેઽપિ યેષા
 મનો ધર્માત્મિકશ્ચિમાનમપિ ન ચલતિ તૈરિત્યર્થઃ, 'વયવલિણિ' વચોવલિકૈઃ=
 વાગ્મલયુક્તૈઃ દુર્ગાદિમાર્થાપદાર્થનિરાકરણસમર્થગામીવગ્રોપેતૈરિત્યર્થે, 'કાયવલિ
 ણિ' કાયવલિકૈઃ=પરીપત્તોપગર્ગમનસમર્થકાયવલયુક્તૈરિત્યર્થે, 'નાળવલિણિ'
 જ્ઞાનવલિકૈઃ-જ્ઞાનેન મત્યાદિના વલિનસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ-દૃઢજ્ઞાનયુક્તૈરિત્યર્થે, 'દસ
 ણવલિણિ' દર્શનવલિકૈઃ-દર્શન-નિગદ્ધિતાદિતત્ત્વશ્રદ્ધાનરૂપ, તેન વચ્ચત્તૈસ્ત
 થોક્તૈ, 'ચરિત્તવલિણિ' ચારિત્રવલિકૈઃ, ચારિત્ર=ચત્રકાયમયમ, તદ્રૂપ ચત્ર
 લમ્, તદ્વદ્ધિરિત્યર્થઃ, તથા 'સ્ત્રીરાસવેહિં' સ્ત્રીરાસવૈઃ=સ્ત્રીરાસવલલ્લિધારૈઃ, યેષા
 વચનમાકર્ણ્યમાન મનઃ શરીરમુલ્લોત્પાદનાય મમવતિ તે સ્ત્રીરાસવા ઉચ્યન્તે, તથા
 'મહુઆસવેહિં' મન્વાસવૈઃ=શર્કરાઘપેક્ષ્યાપિ મધુર દ્રવ્ય મધુ 'શઢદ' ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધ,
 તદિવ વચનમ્ આસ્રવન્તિ=નિસ્સરયન્તિ યે તે મધ્યાસ્રવાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'સપ્પિ
 આસવેહિં' સર્પિરાસવૈઃ=સર્પિઃ=અન્યન્તસુરભિયુક્ત સ્નેહયુક્ત ચ ઘૃતમિવ વચનમાસ્ર
 વન્તિ=નિસ્સારયન્તિ યે સર્પિરાસ્રવાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'અક્ષીણમહાણસિણિ' અ
 ક્ષીણમહાણસિકૈઃ=મહાનસમ્=અન્નપાકસ્થાન, તદાશ્રિતત્ત્વાદન્નમપિ મહાનસમુચ્યતે
 અક્ષીણ મહાનસ યેષા તે અક્ષીણમહાણસિકાસ્તૈન્તથોક્તૈઃ, યેષામસાધારણાન્તરાયક્ષયો
 પશમાદલ્પમાત્રમપિ પાત્રપતિતમન્ન ગીતમાદીનામિવ લક્ષસરુપકેભ્યોઽપિ દીયમાન

(સુયધરેહિં) જો આચરાગ આદિ શ્રુત કે ધારક હૈં અનેક દ્વારા સેવિત
 હુઈ હૈં તથા (મળવલિણિ, વયવલિણિ, કાયવલિણિ) જો મનબલ
 સે યુક્ત હૈં, વાગ્મલ સે યુક્ત હૈં, કાયવલ સે યુક્ત હૈં અનેક દ્વારા સેવિત
 હુઈ હૈં । તથા (નાળવલિણિ, દસણવલિણિ, ચરિત્તવલિણિ) મત્યા-
 દિક જ્ઞાન સે જો વલિષ્ઠ હૈં, દર્શનવલિક હૈં, ચારિત્રવલિક હૈં અનેક દ્વારા
 સેવિત હુઈ હૈં, તથા (સ્ત્રીરાસવેહિં, મહુઆસવેહિં, સપ્પિઆસવેહિં, અ
 ક્ષીણમહાણસિણિ) સ્ત્રીરાસવલલ્લિધારી હૈં, મન્વાસવલલ્લિધારી હૈં
 અક્ષીણમહાણસ ઋદ્ધિધારી હૈં, અનેક દ્વારા સેવિત હુઈ હૈં, તથા (ચાર-

“ સુયધરેહિં ” આચારાગ આદિ સૂત્રના જેઓ ધારક છે તેમના દ્વારા તે સેવા
 થેલ છે, તથા “ મળવલિણિ, વયવલિણિ, કાયવલિણિ ” જે મનોબળવાળા
 છે, વાગ્મળ વાળા છે, અને કાયમળવાળા છે તેમના દ્વારા તે સેવાથેલ છે, તથા
 “ નાળવલિણિ, દસણવલિણિ, ચરિત્તવલિણિ ” મત્યાદિક જ્ઞાન વડે જે બલિષ્ઠ
 છે, જે દર્શનબળયુક્ત તથા ચારિત્રબળયુક્ત છે તેમના વડે તે સેવાથેલ છે,
 તથા “ સ્ત્રીરાસવેહિં, મહુઆસવેહિં, સપ્પિઆસવેહિં, અક્ષીણમહાણસિણિ ” સ્ત્રીરાસવ
 લલ્લિધારી, મન્વાસવલલ્લિધારી, સર્પિરાસવલલ્લિધારી અક્ષીણમહાણસઋદ્ધિ
 ધારી દ્વારા જે સેવાથેલ છે, તથા “ ચારણેહિં વિજ્ઞાહરેહિં ” ચરણઋદ્ધિ ધારી

સ્વયમેવાશુક્ત ન ક્ષીયતે તે અક્ષીણમદાનસા ઉચ્યન્તે । તથા ‘ચારણેર્હિ’ ચારણૈઃ= ચરણ-ગમન તદ્વિચરેતે યેષા તે ચારણાઃ ચરણમિહવિશિષ્ટમાકાશગમનાગમન-ગૃહ્યતે, તે દ્વિવિધાઃ વિદ્યાચારણા જહ્વાચારણાશ્ચ, તત્ર-વિદ્યાપત્તેન સમુપ્તનાકાશ ગમનાગમનલ્લિધિમન્તો વિદ્યાચારણા । ઇય લલ્લિધિર્નિરન્તરપટ્ટપટ્ટતપશ્ચરણ કર્તુર્જાયતે । તથા યે મુનયશ્ચારિત્રતપોવિશેષમભાવેણ જહ્વોપરિ હસ્તસ્થાપનમાત્રેણ ગગનગમ-નાગમનલલ્લિધિસપન્ના ભવન્તિ તે જહ્વાચારણા ઉચ્યન્તે । ઇય લલ્લિધિર્નિરન્તરાષ્ટમાષ્ટ-મતપશ્ચરણકર્તુર્જાયતે । તત્ર-વિદ્યાચારણા જમ્બૂદ્વીપાપેક્ષ્યાઽષ્ટમ નન્દીશ્વરનામ-દ્વીપ જહ્વાચારણાશ્ચ ત્રયોદશ રુચકવરદ્વીપ ગન્તુ સમર્થાઃ । વિદ્યાચારણા પ્રથમો-પ્તાતેન માનુષોત્તર પર્વત ગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેનોત્પાતેન નન્દીશ્વરમ્, પ્રતિનિવર્તમાન એકેનોત્પાતેન સ્વસ્થાનમાગચ્છન્તિ । તથા-મેરુ ગચ્છન્તઃ પ્રથમેનોત્પાતેન નન્દન-વન ગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેનોત્પાતેન પન્ડકવનમ્, તતઃ પ્રતિનિવર્તમાના એકેનોત્પાતેન સ્વસ્થાનમાગચ્છન્તિ । જહ્વાચારણા હિ એકેનોત્પાતેન જમ્બૂદ્વીપાપેક્ષ્યા ત્રયોદશ-રુચકવરદ્વીપ ગચ્છન્તિ । પ્રતિનિવર્તમાના એકેનોત્પાતેન નન્દીશ્વરમાયાન્તિ દ્વિતી-યેન સ્વસ્થાનમ્ । યદિ પુનર્મેરુશિખર જિગમિપયસ્તદા પ્રથમેનોત્પાતેન પન્ડકવ-નમધિરોહન્તિ । પ્રતિનિવર્તમાનાશ્ચ એકેનોત્પાતેન નન્દનવનમાગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેન સ્વસ્થાનમ્ । તથા ‘વિજ્ઞાહરેર્હિ’ વિદ્યાધરૈ, રોહિણીપ્રજ્ઞપ્ત્યાદિવિદ્યાધારકૈઃ= તથા ‘ચતુર્થભક્તિર્હિ’ ચતુર્થભક્તિકૈઃ=એકોપવાસકારકૈ, ‘છટ્ઠભક્તિર્હિ’ પષ્ટભક્તિકૈઃ, ઉપવાસદ્વયકારકૈઃ, ‘અઢમભક્તિર્હિ’ અષ્ટમભક્તિકૈઃ=ઉપવાસત્રય-કારકૈ, તથા-‘દસમભક્તિર્હિ’ દશમભક્તિકૈઃ=ઉપવાસચતુષ્ટયકારકૈ, ‘એવં

નેર્હિવિજ્ઞાહરેર્હિ) ચારણકુલધારી હૈં, રોહિણીપ્રજ્ઞસ આદિ વિદ્યા કેધારી હૈં અનેકે દ્વારા સેવિત હુઈ હૈ । તથા (ચતુર્થભક્તિર્હિ, છટ્ઠભક્તિર્હિ, અઢ-મભક્તિર્હિ, દસમભક્તિર્હિ એવં હુવાલસ ચતુદસ સોલસ-અઢમાસ માસ-દોમાસ તિમાસ-ચતમાસ-પચમાસ-છમ્માસ ભક્તિર્હિ) ચતુર્થભક્તિક-જો એક ઉપવાસ કરને વાલે હૈ, પષ્ટિભક્તિક-દો ઉપવાસ કે કરને વાલે હૈ, અઢમભક્તિક-ત્રીન ઉપવાસ કરને વાલે હૈં, દસમભક્તિક-ચાર ઉપવાસ

રોહિણીપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાના વારડ દ્વારા જે સેવાયેલ છે, તથા “ચતુર્થભ-ક્તિર્હિ, છટ્ઠભક્તિર્હિ, અઢમભક્તિર્હિ, દસમભક્તિર્હિ એવં હુવાલસ-ચતુદસ-સોલસ-અઢમાસ-માસ-દોમાસ-તિમાસ-ચતમાસ-પચમાસ-છમ્માસ ભક્તિર્હિ” ચતુર્થ-ભક્તિ-જે એક ઉપવાસ કરનાર છે, પષ્ટભક્તિ-જે બે ઉપવાસ કરનાર છે, અઢમભક્તિક-ત્રણ ઉપવાસ કરનારા, દસમભક્તિક-ચાર ઉપવાસ કરનારા, એજ પ્રમાણે દ્વાદશ-પાચ ઉપવાસ, ચતુર્દશ-છ ઉપવાસ, પોરશ-સાત ઉપવાસ, અને

દુગ્ધાલસ-ચઉદસ-સોલસ-અર્ધમાસ-માસ-દોમાસ-ત્રિમાસ-ચતુર્માસ - પચમાસ
 છમાસભક્તિર્ણિ' એ દ્વાદશચતુર્દશ પોડશા-માસ માસઠિમાસત્રિમાસચતુર્માસપચ્ચ
 માસપણ્માસભક્તિકૈઃ= દ્વાદશાદિ પળ્માસાન્તભક્તતપશ્ચરણયુક્તૈ, તથા- 'ઉક્ષિ
 ત્તચરણિ' ઉક્ષિત્તચરકૈઃ=ઉક્ષિત્ત=ગૃહસ્થેન સ્વપ્રયોજનાય પાકપાત્રાદુદ્ધૃતમન્ય
 પાત્રાસ્થાપિતમેષાદિક ચરન્તિ+અભિગ્રહવિશેષાત્તદ્વેષણાય ગન્ઠન્તીતિ ઉક્ષિ
 ત્તચરકાસ્તૈઃ=દાયકેન પૂર્વમેષપાકભાજનાદુદ્ધૃતસ્ય ગવેષકૈરિત્યર્થ, તથા 'નિક્ષી
 ત્તચરણિ' નિક્ષિત્તચરકૈઃ-નિક્ષિપ્ત=ગૃહસ્થેન સ્વાર્થે પાકપાત્રાદુદ્ધૃત્યાન્યપાત્રે
 સ્થાપિતમન્નાદિક ચરન્તિ=તથાવિધાભિગ્રહવિશેષાત્તદ્વેષણાય ગન્ઠન્તીતિ નિક્ષિત્ત
 ચરકાસ્તૈ =પાકપાત્રોદ્ધૃતાન્યપાત્રસ્થાપિતાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થ. । તથા-
 'અતચરણિ' અન્તચરકૈ =અન્ત=નીરમ તક્રમિશ્રિત પર્યુપિત ચ ચલ્લચળકાઘન્ન
 ચરન્તિ=ગવેષયન્તિ, એ તે તથા તૈસ્તથોક્તૈઃ અન્તાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થ ।
 તથા- 'પતચરણિ' પ્રાન્તચરકૈઃ=પ્રાન્ત=પુરાણકુલત્વચલ્લચળકાઘન્ન ચરન્તિ=
 ગવેષયન્તિ એ તે તથા તૈસ્તથોક્તૈઃ=પ્રાન્તાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થઃ । તથા-
 'લૂહચરણિ' રૂક્ષચરકૈઃ= રૂક્ષભોજનગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિઃ, તથા- 'સમુદાણચરણિ'
 સમુદાનચરકૈઃ=ઉચ્ચાવચકુલેષુ સામાન્યરૂપેણ ભિક્ષાગ્રહણશીલૈઃ, તથા- 'અળ્ળગિ
 લાઈણિ' અન્નગ્લાયકૈઃ-અન્નેન=અભિ યહ વિશેષાત્ પર્યુપિતાન્નભોજનેન ગ્વાય
 ક=ગ્લાનિમાપન્ન કૃશાં ઇત્યર્થસ્તૈઃ । તથા- 'મોળચરણિ' મૌનચરકૈઃ=મૌન-
 મૌનવ્રત તેન ચરન્તિ એ તે મૌનવ્રતકા, તથાવિધાભિગ્રહવિશેષાદ્ ભિક્ષાવિશુદ્ધિપ્રશ્ના-

કે કરને વાળે હૈં, હસી તરહ દ્વાદશ-પાચ ઉપવાસ, ચતુર્દશ-છહ ઉપ
 વાસ, પોડશ-સાત ઉપવાસ, એવ અર્ધમાસ, માસ, ઢિમાસ, ત્રિમાસ,
 ચતુર્માસ, પચ્ચમાસ, પળ્માસ ભક્તિક-છ મહીને કે ઉપવાસ કરનેવાળે હૈં
 અનેકે દ્વારા યહ સેવિત હુઈ હૈ, તથા (ઉક્ષિત્તચરણિ, એવ નિક્ષિત્તચર-
 ણિ, અતચરણિ, પતચરણિ, લૂહચરણિ, સમુદાણિચરણિ, અળ્ળગિ
 લાઈણિ, મોળચરણિ) ઉક્ષિત્તચરક હૈ, નિક્ષિત્તચરક, અતચરક હૈ, પ્રાન્ત
 ચરક હૈ, રૂક્ષચરક હૈ, સમુદાનચરક હૈ, અન્નગ્લાયક હૈ, મૌનચરક હૈ.

અર્ધમાસ, માસ, બે માસ, ત્રણ માસ, ચાર માસ, પાચ માસ, અને પળ્મા
 સભક્તિક-છ માસના ઉપવાસ કરનારા દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા 'ઉક્ષિત્ત
 ચરણિ, એવ નિક્ષિત્તચરણિ, અતચરણિ, પતચરણિ, લૂહચરણિ, સમુદાયચર
 ણિ, અળ્ળગિલાઈણિ, મોળચરણિ" જે ઉક્ષિત્તચરક છે, જે નિક્ષિપ્તચરક છે,
 જે અતચરક છે, જે પ્રાન્તચરક છે, જે રૂક્ષચરક છે, જે સમુદાનચરક છે, જે
 અન્નગ્લાયક છે, જે મૌનચરક છે તેઓના દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા "સસ-

તિરિક્ત મૌનમામ્યાય સચરણશીલા., તથા—‘ સસટ્કપ્પિણ્હિ ’ સસૃષ્ટકલ્પિકૈઃ—
‘ સમૃષ્ટેન હસ્તેન ભાજનેન ચ દીયમાનમન્નાદિ ગ્રાહ્ય ’ મિત્યેવરૂપઃ કલ્પ આચારો
યેષા તે સસૃષ્ટકલ્પિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા—‘ તજ્જાયસસટ્કપ્પિણ્હિ ’ તજ્જાતસસૃ
ષ્ટકલ્પિકૈઃ=યત્પ્રકાર દેયદ્રવ્ય તજ્જાતેન—તત્પ્રકારેણ દ્રવ્યેણ સસૃષ્ટે હસ્તભાજને
તાભ્યા દીયમાન ગ્રાહ્યમિત્યેવરૂપઃકલ્પઃ=સમાચારો યેષા તે તજ્જાતસસૃષ્ટકલ્પિ-
કાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ ઉવનિહિયણ્હિ ’ ઉપનિહિતકૈઃ=ઉપનિહિત=દાયકેન સ્વય
ભોક્તુ સમીપે સ્થાપિતમ્, તેન ચરન્તિ યે તે ઉપનિહિતકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ તથા=
‘ સુદ્દેસણિણ્હિ ’ શુદ્ધૈષણિકૈઃ—શઙ્કાદિદોષપરિહારતઃ પિણ્ડગ્રહણ શુદ્ધૈષણા તદ્વન્તઃ
શુદ્ધૈષણિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ સઘ્વાદત્તિણ્હિ ’ સઘ્યાદત્તિકૈઃ=સઘ્યાપધાનાભિઃ
પચ્ચપાદિપરિણામવતીભિઃ દત્તિભિઃ સકૃદ્ભક્તાદિપાત્રપાતલક્ષણાભિશ્ચરન્તિ યે તે
સઘ્યાદત્તિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા=‘ દિટ્ઠલામિણ્હિ ’ દૃષ્ટિલામિકૈઃ=દૃષ્ટસ્ય=દૃષ્ટિ-
ગોચરીભૂતસ્યૈવાન્નપાનાદે. લાભો યેષા તે દૃષ્ટિલામિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા—
‘ અદિટ્ઠલામિણ્હિ ’ અદૃષ્ટલામિકૈઃ=અદૃષ્ટસ્યાપિ પાકુગૃહમ-યાન્નિર્ગતસ્ય કર્ણાત્
શ્રુતસ્ય ભક્તાદેરદૃષ્ટાદ્વા પૂર્વમનુપલબ્ધાદ્ દાયકાદ્ લાભો યેષામસ્તિ તેઽદૃષ્ટલા-
મિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા=‘ પુટ્ટલામિણ્હિ ’ પૃષ્ટલામિકૈઃ=પૃષ્ટસ્ય=હે સાધો ! કિં
તે દીયતે इत्यादि रूपेण प्रश्नविषयी कृतस्य यो भिक्षाप्राप्तिरूपी लाभस्तदाग्रह-
ग्रहिलैः, तथा—‘ आयविलिण्हं ’ आचामाम्लिकैः=आचामाम्लव्रतयुक्तैः, तथा—
‘ पुरिमट्ठिण्हं ’ पूर्वार्द्धिकैः=पारणायामपि पूर्वार्द्धदिनेऽशनपानादि प्रत्याख्यान-
शीलैः, तथा—‘ एक्कासणिण्हं ’ एकाशनिकैः, पारणायामपि एकाशनव्रतधारिभिः,

उनके द्वारा सेवित हैं । तथा (ससट्कपिण्हं, तज्जायससट्कपिण्हं, उवनिहिण्हं, सुद्धेसणणिण्हं, सघ्वादत्तिण्हं, दिट्ठलाभिण्हं, अदिट्ठला-
भिण्हं, पुट्टलाभिण्हं, आयविलिण्हं, पुरिमट्ठिण्हं) ससृष्टकल्पिक हैं,
तज्जातससृष्टकल्पिक है, उपनिहितक है, शुद्धैषणिक है, सघ्यादत्तिक
हैं, दृष्टिलाभिक हैं, अदृष्टिलाभिक है, पृष्ठलाभिक हैं, आचामाम्लव्रत-
युक्त हैं, पूर्वार्द्धिक है, उनके द्वारा यह अहिंसा पाली गई है । तथा
(एक्कासणिण्हं, निव्विडण्हं, भिन्नपिंडवाइण्हं, परिमियपिंडवाइण्हं—

ટુકથિણ્હિ, તજ્જાયસસટ્ઠ કપ્પિણ્હિ, ઉવનિહિણ્હિ, સુદ્દેસણણિણ્હિ, સઘ્યાદત્તિણ્હિ
દિટ્ઠલામિણ્હિ, અદિટ્ઠલામિણ્હિ, પુટ્ટલામિણ્હિ, આયવિલિણ્હિ પુરિમટ્ઠિણ્હિ ” એ
સ સૃષ્ટ કલ્પિક છે તજ્જાત સ સૃષ્ટ કલ્પિક છે, ઉપનિહિત છે, શુદ્ધૈષણિક
સ ઘ્યાદત્તિક છે દૃષ્ટિલામિક છે, અદૃષ્ટલામિક છે, પૃષ્ટલા-મિક છે, આચામામ્લ
વ્રત યુક્ત છે પૂર્વાર્દ્ધિક છે, તેમના દ્વારા આ અહિંસા પાળવામાં આવે છે તથા
“ એક્કાસણિણ્હિ, નિવ્વિડણ્હિ, ભિન્નપિંડવાઈણ્હિ, પરિમિયપિંડવાઈણ્હિ, અતાહારેહિ,

તથા-‘ નિવિઙ્ણપિંડપાતિકૈઃ ’ નિવિઙ્ણપિંડપાતિકૈઃ=વિકૃતિભ્યો ઘૃતાદિપદાર્થેભ્યો નિર્ગતા યે તે નિર્વૃત્તિકારસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ-વિકૃતિપ્રત્યાખ્યાનશીલૈરિત્યર્થઃ, તથા ‘ મિન્નપિંડવાડપિંડપાતિકૈઃ ’ મિન્નપિંડપાતિકૈઃ-મિન્નસ્ય=ત્રુટિતસ્ય પિંડસ્ય=સક્તુકાદિરુપસ્ય મોદકસ્ય સ્વતો મિન્નાત પિંડાત યઃ પાતઃ-પાત્રે પતન યેષા તે મિન્નપિંડપાતિકા સ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ પરિમિતપિંડવાડપિંડપાતિકૈઃ ’ પરિમિતપિંડપાતિકૈઃ-પરિમિતો દ્રવ્યાદિઃ પિંડપાતો મરુતાદિલાભો યેષામસ્તિ, તે પરિમિતપિંડપાતિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા-‘ અન્તાહારેહિં ’ અન્તાહારૈઃ=અન્ત=નીરસ તદ્વિમિતપર્યુપિત ચ વહ્નચળકાઘનમાહરન્તિ યે તે તૈઃ, તથા-‘ પતાહારેહિં ’ પ્રાન્તાહારૈઃ=પ્રાન્ત=પુરાતન કુલ્પસ્યગ્લચગ્નકાઘનમ્ આહરન્તિ યે તે તૈઃ, તથા-‘ અરસાહારેહિં ’ અરસાહારૈઃ=અરસો રસવર્જિત આહારો યેષા તેડરસાહારાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ-દિગ્માદિ સસ્કારવર્જિતાહારગ્રહણવદ્ધિઃ, તથા-‘ વિરસાહારેહિં ’ વિરસાહારૈઃ-વિરસ=વિગતરસ પુરાણધાન્યોદનાદિ આહરન્તીતિ વિરસાહારાસ્તૈઃ, ‘ લૂહાહારેહિં ’ રૂક્ષાહારૈઃ=રૂક્ષ ઘૃતાદિવર્જિતમાહરન્તીતિ રૂક્ષાહારાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ તુચ્છાહારેહિં ’ તુચ્છાહારૈઃ=તુચ્છ=ચૂર્ણાદિકુ કુલ્પસ્યકોદ્રવાદિકુ ચ આહરન્તિ યે તે તુચ્છાહારાસ્તૈઃ, તથા-‘ અતજીવિહિં ’ અન્તજીવિભિઃ-અન્તેન જીવન્તિ યે તેડન્તજીવિનસ્તૈઃ, ‘ પતજીવિહિં ’ પ્રાન્તજીવિભિઃ, ‘ લૂહજીવિહિં ’ રૂક્ષજીવિભીઃ=‘ તુચ્છજીવિહિં ’ તુચ્છજીવિભિઃ, તથા ‘ ઉપશન્તજીવિહિં ’ ઉપશન્તજીવિભિઃ-અશનાદીના પ્રાપ્તાવ

અન્તાહારેહિં, પતાહારેહિં, અરસાહારેહિં, વિરસાહારેહિં, લૂહાહારેહિં, તુચ્છાહારેહિં, અતજીવિહિં, પતજીવિહિં, લૂહજીવિહિં, તુચ્છજીવિહિં, ઉપશન્તજીવિહિં, પશન્તજીવિહિં, વિવિક્તજીવિહિં, અક્ષીરમધુસપ્િહિં, અમઙ્ગમસાસિહિં) ઇકાશનિક હૈં, વિકૃતિપ્રત્યાખ્યાનશીલ હૈં, મિન્નપિંડપાતિક હૈં, પરિમિતપિંડપાતિક હૈં, અન્તાહાર વાલે હૈં, પ્રાન્તાહાર વાલે હૈં, અરસાહાર વાલે હૈં, વિરસાહાર વાલે હૈં, રૂક્ષ આહાર કરને વાલે હૈં તુચ્છાહાર વાલે હૈં, અતજીવી હૈં, પ્રાન્તજીવી હૈં, રૂક્ષજીવી હૈં, તુચ્છ જીવી હૈં, ઉપશન્ત જીવી હૈં પ્રશન્ત જીવી હૈં, વિવિક્ત જીવી હૈં, અક્ષીર મધુસ-

પતાહારેહિં અરસાહારેહિં, વિરસાહારેહિં, લૂહાહારેહિં, તુચ્છાહારેહિં, અતજીવિહિં, પતજીવિહિં, લૂહજીવિહિં, તુચ્છજીવિહિં, ઉપશન્તજીવિહિં પશન્તજીવિહિં વિવિક્તજીવિહિં, અક્ષીરમધુસપ્િહિં, અમઙ્ગમસાસિહિં ” એ એકાશનિક છે, વિકૃતિ પ્રત્યાખ્યાનશીલ છે, મિન્નપિંડ પાતિક છે, પરિમિતપિંડ પાતિક છે, અન્તાહાર વાળા છે, પ્રાન્તાહાર વાળા છે, અરસાહારવાળા છે વિરસાહાર વાળા છે, રૂક્ષ આહાર કરનારા છે, તુચ્છ આહાર કરવા વાળા છે, અન્તજીવી છે, પ્રાન્તજીવી છે, રૂક્ષજીવી છે, તુચ્છજીવી છે, ઉપશન્તજીવી છે, પ્રશન્તજીવી છે.

પ્રાપ્તૌ ચ સત્યાપુપશા તતયા જીવન્તિ ચે તે ઉપગાન્તજીવિનસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ મહિ-
ર્ધૃત્યાપદનચસુરુગાત્રીનામપ્રાપ્તનત્તમુપશાન્તનમ્ । તથા ' પમતજીવિર્હિ ' પ્રશાન્ત-
જીવિભિઃ-અન્તર્હૃત્યા ક્રોધાદીનામુપગમન પ્રશાન્તત્તમ્ । તથા-' વિવિત્તજીવિર્હિ'
વિવિત્તજીવિભિઃ=વિવિત્તે દોષરર્પિતૈસ્તદિભિર્નિર્ગમન્તિ ચે તે વિવિત્તજીવિનસ્તૈ-
સ્તથોક્તૈઃ, તથા-' અક્ષીરમધુસર્પિર્હિ ' અક્ષીરમધુસર્પિકૈઃ-ક્ષીર=દુગ્ધ, મધુ-
ર્ગદ્ગદાદિમધુરદ્રવ્યમ્, સર્પિઃ=ઘૃતમ્, एतानि ન સન્તિ અશનતયા ચેપા તેઽક્ષીરમધુસ
ર્પિષ્માન્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા-' અમઙ્ગમસાસિર્હિ ' અમઘમાસાસિકૈઃ-મઘમાસ ચ
ચેપા માહારો નાસીતિ ભાવ, મામાહારર્પિકૈનયા 'ઠાણાઙ્ગર્હિ' સ્થાનાતિગૈઃ=સ્થાન=
કાયોત્સર્ગાદિરમતિશયેન ગચ્છન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ ચે તે સ્થાનાતિગાઃ કાયોત્સર્ગકા
રિણસ્તૈ, ' પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્હિ ' પ્રતિમાસ્થાયિકૈઃ-પ્રતિમયા = એકરાત્રિક્રયાદિકયા
કાયોત્સર્ગવિશેષેણ તિષ્ઠન્તીત્યેવ શીલ્યા ચે તે પ્રતિમાસ્થાયિનસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ,
તથા ' ઠાણુકકુઙ્કર્હિ ' સ્થાનુત્કુટિકૈઃ=સ્થાનમુત્કુટુક ચેપા તે સ્થાનોત્કુટુકાસ્તૈસ્ત
થોક્તૈઃ, તથા-' વીરામણિર્હિ ' વીરાસનિકૈઃ=સિંહારાસનોપવિષ્ટસ્ય મુવિન્યસ્તપા
દસ્ય અપતીતવિહાસનસ્યેવ યદવસ્થાન તદ્ વીરાસન, તદસ્તિ ચેપા તે વીરાસ-
નિકાસ્તૈ, તથા-' નેસઙ્ગિર્હિ ' નૈપથિકૈઃ, નૈપથ્યા=સમપુતતયાઽવસ્થાન, તયા
ચરન્તિ ચે તે નૈપથ્યાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ તથા-' હઙ્કાઙ્કર્હિ ' હઙ્કાયતિકૈઃ=હઙ્કા ઇવ
મૂયસ્તતયા આયત શરીર હઙ્કાયત તદસ્તિ ચેપા તે હઙ્કાયતિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ,
હઙ્કાસનકારિભિસ્તિથ્યર્થ, તથા-' લગ્ગણ્ડસાઙ્કર્હિ ' લગ્ગણ્ડશાયિકૈઃ=લગ્ગણ્ડ=વક્ર
માણ્ડ, તદ્ગત્ મસ્તકસ્ય પાપર્ગીના ' એટી ' ઇતિ લોકપ્રસિદ્ધાના ચ મુનિલગ્ગનેન

પિંક હૈ અમઘમામાશિક (મઘમાસાદિક કા સેવન નહી કરનેવાલે)
હૈ ઉન્હોને ઉનકા સેવન ક્રિયા હૈ । તથા જો (ઠાણાઙ્ગર્હિ, પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્હિ,
ઠાણુકકુઙ્કર્હિ વીરામણિર્હિ, નેસઙ્ગિર્હિ હઙ્કાઙ્કર્હિ, લગ્ગણ્ડસાઙ્કર્હિ,
ગ્ગપાસગેર્હિ, આયાવર્હિ, અપ્પાવહેર્હિ, અણિઢમર્હિ અકુહુયર્હિ, ધુય
કેસમંસલોમનહેર્હિ, મઘગાયપઙ્કિકમ્મવિપ્પમુક્કેર્હિ સમણુચિન્ના) સ્થાના
તિગ હૈ, પ્રતિમાસ્થાયિક હૈ, સ્થાનોત્કુટિક હૈ, વીરાસનિક હૈ, નૈપથિક
હૈ, હઙ્કાયતિક હૈ, લગ્ગણ્ડશાયિક હૈ, એપાર્શ્વિક હૈ, આતાપિક હૈ, અપ્રાવૃત

જીવી છે, અક્ષીર મધુ સર્પિંડ છે અમઘમામાશિક છે, તેમણે તેનું સેવન કર્યું
છે તથા જે 'ઠાણાઙ્ગર્હિ, પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્હિ ઠાણુકકુઙ્કર્હિ, વીરામણિર્હિ, નેસઙ્ગિર્હિ,
હઙ્કાઙ્કર્હિ, લગ્ગણ્ડસાઙ્કર્હિ ગ્ગપાસગેર્હિ આયાવર્હિ, અપ્પાવહેર્હિ અણિઢમર્હિ અકુહુ
યર્હિ, ધુયકેસમંસલોમનહેર્હિ, મઘગાયપઙ્કિકમ્મવિપ્પમુક્કેર્હિ સમણુચિન્ના" સ્થાના-
તિગ છે, પ્રતિમાસ્થાયિક છે સ્થાનોત્કુટિક છે, વીરામનિક છે, નૈપથિક છે,
છે, હઙ્કાયતિક છે, લગ્ગણ્ડશાયિક છે, એપાર્શ્વિક છે, આતાપિક છે, અપ્રાવૃત

પ્રકાર કોષ્ઠ-ચોટી મેં પ્રશ્નિત અનાજ ઘટત સમયતક મુરશ્ચિત રજા કરતા હૈં ઉમી પ્રકાર પ્રાપ્ત ઉમ લઙ્ગિય કે પ્રભાવ સે અવગત મુદ્રા ઓર અર્થ યે દોનોં વહુત સમય તક મુનિજનોં કો યારણાહર મેં મ્થિર રહતે હૈં-વે ઉન્હેં વિસ્મૃત નહીં હોતે । યહ બુદ્ધિ જિન મુનિજનોં કો પ્રાપ્ત હો જાતી હૈં વે કોષ્ઠબુદ્ધિ કે ગામી મુનિજન હૈં । સુત્રાવયવ રૂપ ણક હી પદ કે ઉપલબ્ધ હોને પર જો સૈકઢોં પદોં કા અનુનરણ કર લેતે હૈં વે મુનિ જન પદાનુસારી લબ્ધિ કે ધારી કહે જાતે હૈં । જિસ લઙ્ગિય સે ણક હી કિસી ઇન્દ્રિય સે મુનિજન સર્વેન્દ્રિયગમ્ય વિષયો કો જાન હેતે હૈં ઉસ લબ્ધિ કા નામ સમિન્નશ્રોતસ્ હૈં । યહ લઙ્ગિય જિન મુનિજનોં કો પ્રાપ્ત હોતી હૈં વે મુનિજન સમિન્નશ્રોતા હૈં । આચારાંગ આદિ સુત્રોં કે પાઠી જો મુનિજન હોતે હૈં વે શ્રુતધર કહે જાતે હૈં । અનેક પ્રકાર કે પરીપહ્ અને ઉપસર્ગોં કે આને પર મી જિન મુનિજનોં કા મન ધર્મ સે યોડા સા મી વિચલિત નહીં હોતા હૈં ઉનકા નામ મનોવલ્લિક હૈં । જો મુનિ જન અપની વાણી કે દ્વારા દુર્વાદિયોં દ્વારા પ્રરૂપિત મિથ્યાપ્રરૂપણાઓં કો ધ્વસ્ત કરને મેં સમર્થ બનતે હૈં ઉન મુનિયો કો વચોવલ્લિક કહા જાતા હૈં । જો મુનિજન કઠિન સે કઠિન પરીપહ્ અને ઉપસર્ગોં કો સહન કર-નેમેં શક્તિ શાલી હોતે હૈં વે કાયવલ્લિક હૈં । મત્યાદિ જ્ઞાન સે જિનકા

મુરશ્ચિત રહે છે તેમ પ્રાપ્ત થયેલી આ લબ્ધિના પ્રભાવથી અવગતસૂત્ર અને અર્થ તે બંને ઘણા સમય સુધી મુનિજનોને ધારણા રૂપે મ્થિર રહે છે-તેમને તે ભૂલતો નથી આ બુદ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ કોષ્ઠબુદ્ધિના ધારક મુનિવરો છે સૂત્રના અવયવરૂપ એક જ પદ ઉપલબ્ધ થતા જેઓ સેકડો પદોનુ અનુસરણ કરી લે છે, તેવા મુનિજનોને પદાનુસારીલબ્ધિના ધારક કહેવાય છે જે લબ્ધિના પ્રભાવથી કોઈ એક જ ઇન્દ્રિય વડે મુનિજન સર્વેન્દ્રિયગમ્ય વિષયોને જાણી લે છે તે લબ્ધિનુ નામ સમિન્નશ્રોતસ છે આ લબ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તે મુનિજન સમિન્નશ્રોતા કહેવાય છે, આચારાંગ આદિ સૂત્રોનુ પઠન કરનારા જે મુનિજન હોય છે તેમને શ્રુતધર કહે છે અનેક પ્રકારના પરીપહ્ અને ઉપસર્ગોં નડવા છતાં પણ જે મુનિજ નોનુ મન ધર્મમાથી તલભાર પણ વિચલિત થતુ નથી તેમને મનોવલ્લિક કહે જે મુનિજનો દુર્વાદીઓ દ્વારા પ્રરૂપિત મિથ્યા પ્રરૂપણાઓનુ ખડન કરવાને સમર્થ થાય છે તે મુનિવરોને વચોવલ્લિક કહે છે જે મુનિજનો આક્રમમા આક્રમ પરીપહ્ને ઉપસર્ગોને સહન કરવાને શક્તિમાન હોય છે તેઓ

आत्मवल चढ़ाया होता है वे ज्ञानवलिक है । निःशक्ति आदि अपने अर्गों से युक्त जिनका तत्त्वश्रद्धानरूप दर्शन होता है और इस दर्शन से जिनकी आत्मा बलिष्ठ बनी रहती है वे दर्शनवलिक है । पट्टमाय के जीवों का संरक्षण करना इसका नाम सयम है, इस सयमरूपचारित्र के बल से जिनकी आत्मा बलशाली होती है वे चारित्रवलिक है । जिनके मुख से निकला हुआ वचन सुनते ही मन और शरीर को सुखोत्पादक होता है वे क्षीरास्रवलब्धि के धारी मुनिजन हैं । मिसरी आदि मिष्ट द्रव्य से भी अधिक मिष्ट-मधु शब्द होता है, शब्द जैसा मीठा जो वचन निकालते हैं बोलते हैं वे मध्वास्रवलब्धि के धारी मुनिजन कहलाते हैं । सर्पिरास्रवलब्धि के प्रभाव से मुनिजनों का वचन अत्यंत सुरभि-युक्त एवं स्नेहयुक्त घृत के जैसा बोलने पर सुनने वाले को लगता है । महानस शब्द का अर्थ भोजन बनाने का स्थान है, उसके आश्रित होने से भोजन को भी महानस कहते हैं । जिनमुनिजनों को यह अक्षीण-महानस नामकी लब्धि उत्पन्न हो जाती है उनके असाधारण, अन्तराय के क्षयोपशम से अल्पमात्र भी पात्रपतित अन्न गौतमादिक ऋषियों की तरह एक लाख व्यक्तियों को दे देने पर भी जब तक वह स्थिर न खालेवे

कायवलिक उड़ेवाय छे भत्यादि ज्ञानथी जेनु आत्मगण वृद्धि पाभ्यु डोय छे तेभने ज्ञानवलिक उड़े छे, नि शक्ति आदि अर्गो वडे युक्त जेभनु तत्त्व श्रद्धानरूप दर्शन डोय छे अने ओ दर्शनथी जेभनो आत्मा गणवान अनेला डोय छे तेवा मुनिवरने दर्शनवलिक उड़े छे छडायना ओवेनु रक्षण करवु ते सयम उड़ेवाय छे ते सयमरूप चारित्रना गणथी जेभनो आत्मा गणवान डोय छे तेभने चारित्रवलिक उड़े छे जेभना मुणमाथी नीकणेल वचन साल-गता न मन अने शरीरने सुभ थाय छे तेभने क्षीरास्रवलब्धि धारी मुनि उड़ेवाय छे आकर वगेरे मिष्ट द्रव्यो करता पणु वधारे मिष्ट मध डोय छे मध जेवा मीठा वचन जे ओले छे तेवा मुनिजनने मध्वास्रवलब्धि धारक उड़ेवाय छे सर्पिरास्रवलब्धिना प्रभावथी मुनिजनोना वचन अत्यंत सुरभि वाणा तथा स्निग्ध घीना जेवा श्रोताजनने लागे छे महानस शब्दने अर्थ भोजन बनाववानु स्थान छे, तेनु आश्रित डोवाथी भोजनने पणु महानस उड़े छे जे मुनिजनने आ अक्षीणमहानस नामनी लब्धि उत्पन्न थाय छे तेभना असाधारण अन्तरायना क्षयोपशमथी सडेन पणु पात्रमा पडेनु अन्न गौतमादि ऋषियोनी जेभ ओक लाग व्यक्तिओने आपी देवा छता पणु न्या सुधी तेओ पोते पाछ देता नथी त्या सुधी पूरु थतु नथी तेनो भावार्थ

—તત્કાલ સમાપ્ત નહીં હોતા છે । તાત્પર્યે ઉસકા યદ્દ છે કિ હમ લઙ્ઘિ ધારી મુનિજનોં કે પાત્ર મેં દિયા થોડા મી અન્ન લાગ્યોં મુનિજન મી ઉસસે આહાર કર લે વેં પરન્તુ વદ્ તત્કાલ સમાપ્ત નહીં હોતા છે કિ જયતક વદ્ લઙ્ઘિ ધારી ઉસે રવય નહીં ચા છેતા છે । હમી પ્રકાર હસકે દાતા કે વિષય મેં મી સમક્ષ લેના ધાતિયે । યદ્દ લઙ્ઘિ ગૌતમાદિ ઋષિ જનોં કો ધી । ચારણલઙ્ઘિ કા યદ્દ મતલબ છે કિ જિસ લઙ્ઘિ કે પ્રભાવ સે આકાશ મેં મુનિજનોં કા આના જાના હોતા છે । ચરણ-ગમન-યદ્દ ગમન જિનકે હોતા છે ઉનકા નામ ચારણ છે । હમ લઙ્ઘિ કે ધારી મુનિ-જન દો પ્રકાર કે હોતે હેં—(૧) વિગ્રાચારણ (૨) જગાચરણ । જિનેં વિદ્યા કે ચલ સે યદ્દ આકાશ મેં ગમનાગમનરૂપલઙ્ઘિ ઉત્પન્ન હોતી છે વે વિદ્યાચારણ મુનિજન છે । યદ્દ લઙ્ઘિ ઉન મુનિરાજોં કો ઉત્પન્ન હોતી છે જો નિરન્તર પઠ્ઠ પઠ્ઠ કી તપશ્ચર્યા કરતે રહતે હેં । તથા જો મુનિ ચારિત્રરૂપ તપવિશેષ કે પ્રભાવ સે એમી લઙ્ઘિ સપન્ન થન જાતે હેં કિ વે જગા કે ઉપર હાથ રખતે હી આકાશ મેં ઉડ જાતે હેં, હસી લઙ્ઘિ કા નામ જગા ચારણ છે । યદ્દ લઙ્ઘિ ઉન મુનિરાજોં કો પ્રાપ્ત હોતી હેં જો નિરન્તર અષ્ટમ અષ્ટમ કી તપસ્યા કરતે હેં । હનમેં જો વિદ્યાચારણ મુનિજન હોતે હેં વે હસકે ચલ પર જમૂદ્રીપ કી અપેક્ષા સે આઠવાં

એ છે કે આ લઙ્ઘિધારી મુનિવરોના પાત્રમા પડેલ અન્ન, તેમાથી લાખો મુનિજનો આહાર લે તો પણ જ્યાં સુધી તે લઙ્ઘિધારી મુનિ પોતે જ તે ખાઈ જતા નથી ત્યાં સુધી તે સમાપ્ત થતું નથી આ પ્રમાણે તેના દાતાને વિષે પણ સમજી લેવું આ લઙ્ઘિ ગૌતમાદિ ઋષિજનોને પ્રાપ્ત થયેલ હતી “ચરણલઙ્ઘિ” એવા પ્રકારની લઙ્ઘિ છે કે જેના પ્રભાવથી મુનિજનો આકાશમા અવર જવર કરી શકે છે, ચરણ-ગમન-તે ગમન- તે જેમનું હોય છે તેમને ચારણ કહે છે આ લઙ્ઘિધારી જે પ્રકારના મુનિજન છે (૧) વિદ્યાચરણ (૨) જગાચરણ જેમને વિદ્યાના પ્રભાવથી આકાશમા ગમનાગમતરૂપ લઙ્ઘિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ “વિગ્રાચારણ” મુનિજન કહેવાય છે આ લઙ્ઘિ નિરન્તર છઠ, છઠની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તથા જે મુનિઓ ચારિત્રરૂપ તપ વિશેષના પ્રભાવથી એવી લઙ્ઘિચુક્ત થઈ જાય છે કે તેઓ જગા પર હાથ મૂકતા જ આકાશમા ઉડી જાય છે, એ લઙ્ઘિનું નામ જગા ચારણ છે નિરન્તર આઠમ અઠમની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને આ લઙ્ઘિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓમા જેઓ વિગ્રાચારણ મુનિજન છે તેઓ તેના પ્રભાવથી જમૂદ્રીપની અપેક્ષાએ આઠમે જે નદીશ્વર નામનો દ્વીપ છે ત્યાં સુધી જઈ

જો નદીશ્વર નામ કી દ્વીપ હૈ વહા તક આ જા સકતે હૈ । તથા જો-
જઘાચારણ મુનિજન હૈ વે તેરહવા દ્વીપ જો રુચકવર દ્વીપ હૈ વહા તક
આ જા સકતે હૈ । વિદ્યાચરણ પ્રથમ ઉડાન મૈ માનુષોત્તર પર્વત તક ચલે
જાતે હૈ, ઓર દૂસરી ઉડાન મે નદીશ્વર દ્વીપ તક, ફિર વે જત્ર વહા સે
હોતે હૈ તો ઇક હી ઉડાન મૈ અપને સ્થાન પર વાપિસ આ જાતે હૈ । તથા
મેરુ પર જાતે હુણ વે પ્રથમ ઉત્પાત સે નદનવન તક જાતે હૈ ઓર દ્વિતીય
ઉત્પાત સે પંડરુ વનતક જાતે હૈ, ફિર વે જત્ર વહાં સે વાપિસ હોતે હૈ
તો ઇક હી ઉત્પાત મે અપને સ્થાન પર આ જાતે હૈ । જઘાચારણ જો મુનિ-
જન હોતે હૈ વૈ જઘૂદ્વીપ કી અપેક્ષા ઇક હી ઉડાન મૈ તેરહવૈ રુચકવર
દ્વીપ મૈ પહુંચ જાતે હૈ, ઓર વહા સે વાપિસ હોતે સમય ઇક હી ઉડાન
મૈ નદીશ્વરદ્વીપ મૈ આ જાતે હૈ । ઓર દૂસરી ઉડાન મૈ અપને સ્થાન પર
આ પહુંચતે હૈ । યદિ વે સુમેરુપર્વત પર જાને કે અભિલાષી હોતે હૈ તથ
પ્રથમ ઉત્પાતમે પડરુવન મૈ જાતે હૈ । ફિર વાપિસ હોતે સમય ઇક હી
ઉત્પાત સે નદનવન મૈ ઓર દ્વિતીય ઉત્પાતમે અપને સ્થાન પર આ જાતે
હૈ । રોહિણી પ્રજ્ઞસિ આદિ વિદ્યાઓં કે જો ધારણ કરને વાલે હોતે હૈ વે
વિદ્યાધારક હૈ । ઇક ઉપવાસ કા નામ ચતુર્યમ્ભક્ત, દો ઉપવાસ કા નામ
પઞ્ચમ્ભક્ત, ત્રીન ઉપવાસકા નામ અષ્ટમ્ભક્ત, ચાર ઉપવાસ કા નામ દશ-

આવી શકે છે, તથા જે જઘાચરણ મુનિજનો છે તેઓ તેરમો રુચકવર નામનો
દ્વીપ છે તથા સુધી જઈ ગાવે શકે છે વિદ્યાચારણ પહેલા ઉડ્યનમા માનુષોત્તર પર્વત
સુધી ચાલ્યા જાય છે, બીજા ઉડ્યનમા નદીશ્વર દ્વીપ સુધી જાય છે પછી જ્યારે
તેઓ ત્યાંથી પાછા ફરે છે ત્યારે એક જ ઉડ્યનમા પોતાના સ્થાને આવી જાય
કરે તથા મેરુ જતા તેઓ પહેલા ઉડ્યનમા નદનવન સુધી જાય છે અને
બીજા ઉડ્યને પડક વન સુધી જાય છે પછી જ્યારે તેઓ ત્યાંથી પાછા આવે
છે ત્યારે એક જ ઉડ્યનમા પોતાના સ્થાને આવી જાય છે જઘા
ચરણ મુનિજન જઘૂદ્વીપની અપેક્ષાએ એક જ ઉડ્યનમા તેરમો રુચકવર
દ્વીપમા પહોંચી જાય છે, અને ત્યાંથી પાછા ફરતા એક જ ઉડ્યને તેઓ
નદીશ્વર દ્વીપમા આવી જાય છે અને બીજા ઉડ્યને પોતાને સ્થાને પહોંચી
જાય છે જે તેઓ સુમેરુ પર્વત પર જવાની ઇચ્છા કરે તો પહેલા ઉત્પાતથી
પડક વનમા જાય છે, પછી પાછા ફરતી વખતે એક જ ઉત્પાતે નદનવનમા
અને બીજે ઉત્પાતે પોતાના સ્થાનમા આવી જાય છે રોહિણી પ્રજ્ઞસિ આદિ
વિદ્યાઓ ધારણ કરનારને વિદ્યાધારક કહે છે એક ઉપવાસને ચતુર્યમ્ભક્ત, જે
ઉપવાસને પંચમ્ભક્ત, ત્રણ ઉપવાસને અષ્ટમ્ભક્ત, ચાર ઉપવાસને દશમ્ભક્ત,

મમક્ત, પાંચઉપવાસ કા નામ દ્વાદશ મક્ત, ૪૨ ઉપવાસ કા નામ ચતુર્દશ મક્ત, સાત ઉપવાસ કા નામ પોઠગ મક્ત, છે। હન ઉપવાસોં કો જો મુનિજન કરતે હ વે ચતુર્થ મક્તિક આદિ મુનિજન હે । ટસી તરહ જો અર્ધમાસ આદિકે ઉપવાસોં કો કરતે હે વે અર્ધમાસ આદિ મક્તિક હે । જો મુનિજન હમ પ્રકાર કા અભિગ્રહ વિશેષ ધારણ કર લેતે હેં કિ હમ ઉસી આહાર કો લેયેગે કિ જો આહાર ગૃહસ્થને અપને પ્રયોજન કે લિયે પાકપાત્ર સે ઉઠાકર દુસરે પાત્ર મેં નહીં રગ્યા હોગા । હમ પ્રકાર કા અભિગ્રહ વદ્ધ હોકર જો આહાર કી મવેપણા કરને કે લિયે અપને સ્થાન સે ઘટિ ગમન કરતે હે વે ઉત્ક્ષિપ્ત ચરક મુનિરાજ હેં । તથા જો હસ પ્રકાર કા અભિગ્રહ કરકે આહાર લેને કે લિયે અપને સ્થાન સે જાતે હેં કિ મેં ઘટી આહાર ગ્રહણ કરુંગા જો ગૃહસ્થને અપને લિયે પાક પાત્ર સે નિકાલ કર દુસરે પાત્ર મેં રચા હોગા । હમ પ્રકાર કે અભિ-ગ્રહ કો ધારણ કર જો આહાર કી મવેપણા કરને કે લિયે અપને સ્થાન સે બાહર ંમણ કરતે હ વે નિક્ષિપ્તચરક હે । તથા જો મુનિજન અન્ત-નીરસ, તન્નકઝાઝમિશ્રિત ઔર પર્યુપિત (વાસી) વદ્ધ, ચળક-ચના ઔદિ

પાથ ઉપવાસને દ્વાદશભક્ત, છ ઉપવાસને ચતુર્દશભક્ત, સાત ઉપવાસને પોઠ પભક્ત, કહે છે એ ઉપવાસો કરનાર જે મુનિજનો છે તે ચતુર્ભક્તિક આદિ મુનિજનો કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે જે અર્ધમાસ આદિ સમયના ઉપવાસો કરે છે તેમને અર્ધમાસમક્તિક આદિ કહે છે જે મુનિજન એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરે છે કે અમે એવો જ આહાર લઈશું કે જે ગૃહસ્થે પોતાના ઉપયોગને માટે રાધવાના વાસણુમાથી લઈ ને બીજા પાત્રમા નહીં રાખ્યો હોય આ પ્રમાણે અભિગ્રહ બાધીને જે આહારની શોધમા પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તેમને ઉત્ક્ષિપ્તચરક મુનિરાજ કહે છે તથા જે મુનિ રાજ એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરીને પોતાને સ્થાનેથી આહાર લેવા નીકળે છે કે “ હુ એવો જ આહાર વહોરીશ કે જે ગૃહસ્થે રાધવાના પાત્ર માથી પોતાના ઉપયોગ માટે બીજા પાત્રમા કાઢી રાખ્યો હોય આ પ્રકારનો અભિગ્રહ કરીને જે આહારની શોધ કરવાને માટે પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તે મુનિજન નિક્ષિપ્તચરક કહેવાય છે તથા જે મુનિરાજ અન્ત-નીરસ છાશમિશ્રિત અ-સી વ-લ, ચણાડ-ચણા આદિ આહાર

आहार लेने का अभिग्रह धारण कर उनकी गवेषणा करते हैं वे अन्त-
चरक हैं । तथा प्रान्तचरक वे मुनिराज हैं जो पुराने बल्ल, चणक एवं
कुलत्थी आदि अन्न को लेने का अभिग्रह बद्ध होकर गोचरी करते हैं ।
तथा जो रुक्ष भोजन ही में लूंगा, इस प्रकार की प्रतिष्ठा धारण करते
हैं । जो ऊँचे नीचे कुलों में सामान्य रूप से भिक्षा ग्रहण करने के
स्वभाववाले होते हैं वे समुदानचरक हैं अन्नग्लायक-अन्नसे, अर्थात्
अभिग्रह विशेष के कारण वासी अन्न खाने से ग्लान अर्थात् कृश-
दुग्धे जो हैं वे अन्नग्लायक हैं । भिक्षा विशुद्धि के सिवाय जो मौन
व्रत को धारण कर आहार के लिये जाते हैं वे मौनचरक साधु हैं । तथा
जिनका ऐसा कल्प होता है कि जो आहार हमें ससृष्ट-भरे हुए हाथ
और भाजन-पात्र से दिया जावेगा वही मैं लूंगा वे ससृष्ट कल्पिक हैं ।
तथा-तज्ज्ञातससृष्ट कल्पिक वे मुनिजन हैं जो इसप्रकार का नियम लेते हैं
कि जिस प्रकार का देयद्रव्य देने योग्य है वह उसी प्रकार के द्रव्य से ससृष्ट
हस्त भाजन से दिया जावेगा तो ही लेंगे । जो इस प्रकार का नियम
धारण करते हैं कि दाता ने जिस आहार को अपने आप अपने पास
खाने के लिये रखा होगा वही हम लेंगे । इस प्रकार के अभिग्रह वाले

प्रान्तचरक मुनिगण तेमने કહે છે કે જેઓ જૂના વાલ, ચણા, કળથી આદિ
અન્ન લેવાને અભિગ્રહ કરીને ગોચરી કરે છે તથા જે એવી પ્રતિષ્ઠા ધારણ
કરે છે કે હું કલ (લૂણુ) ભોજન જ લઈશ તેમને રુક્ષચરક કહે છે જે
એક સરળી રીતે ઉંચા તથા નીચા કુળમાં ભિક્ષા મહણ કરવાના સ્વભાવવાળા
છે તેઓ સમુદાનચરક છે અન્નગ્લાયક-ખાસ અભિગ્રહને કારણે વાસી અન્ન
ખાવાથી ગ્લાન એટલે કે કૃશ-હજળા પડી ગયેલા હોય તેમને અન્નગ્લાયક
કહે છે ભિક્ષા વિશુદ્ધિના સિવાય, જે સાધુ મૌનવ્રત ધારણ કરીને આહારને
માટે જાય છે તેમને મૌનચરક કહે છે તથા જેમનો એવો નિશ્ચય-ધારણા
હોય છે કે “ જે આહાર અમને સસૃષ્ટ-ભરેલા હાથ તથા ભાજન પાત્રમાંથી
વહેરાવાશે તેજ અમે લઈશું ” એવા મુનિઓને સસૃષ્ટકલ્પિક કહે છે તથા
જે મુનિજનો એવા પ્રકારનો નિયમ કરે છે કે વહેરાવવાનું જે દ્રવ્ય હોય તે
એજ પ્રકારના દ્રવ્યથી ભરેલ પાત્રમાંથી વહેરાવવામાં આવશે તો જ લઈશ,
તે મુનિજનોને તજ્ઞાતસસૃષ્ટકલ્પિક કહે છે જે મુનિજનો એવો નિયમ ધારણ
કરે છે કે દાતાએ પોતે જ પોતાને ખાવા માટે જે આહાર પોતાની પાસે
રાખ્યો હોય તે જ હું લઈશ આ પ્રકારના અભિગ્રહ ધારી મુનિઓ વપનિ-

ઉપનિર્હિતક છે । ઝાંકા આદિ દોષોં કે પરિહાર સે શુદ્ધ આહાર કા ગ્રહણ કરના હસકા નામ શુદ્ધેષણા છે । ઇમ શુદ્ધેષણા સે જો સંપન્ન હોતે હેં વે શુદ્ધેષણિક છે । અર્થાત ઝાંકા આદિ દોષોં સે રહિત શુદ્ધ આહાર કો ગ્રહણ કરને કા જિનકા અભિગ્રહ હોતા છે વે શુદ્ધેષણિક છે । સહ્યાપ્રવાનવાલી દત્તિયોં સે જો ગોચરી કે લિયે જાતે હેં અર્થાત્ દાતા કે હાથ સે દેતે સમય સાધુ કે પાત્ર મેં મત્તપાન આદિ કા જો ઁક બાર અવિચ્છિન્નરૂપ સે ગિરના ઉસે દત્તિ કરતે હેં, ઇમ પ્રકાર કો પાંચ છ આદિદત્તિયોં કે લેને કા અભિગ્રહ જિન્હેં હોતા છે વે સગ્યાદત્તિક છે । જિન સાધુઓ કો ઁસા નિયમ હોતા છે કિ હમ ઉસી આહાર કો લેગે જો હમારે દૃષ્ટિ ગોચર હોગા । ઇસ પ્રકાર કે નિયમવાલે સાધુ દૃષ્ટિલાભિક કહે જાતે હેં । તથા અદૃષ્ટિલાભિક વે સાધુજન હેં જો પાકગૃહ કે ખીતર સે નિકલે છુપ્પ ઁસે ભોજન કો કિ જો દૃષ્ટિ મેં તો આયા નહીં છે કેવલ કાન સે હી ઉસકા નામ સુન લિયા છે ઉસે લેનેકા નિયમ ધારણ કરતે હેં । અથવા—‘ પૂર્વ મેં અનુપલબ્ધ દાતા સે હી મેં ભિક્ષા લૂગા ’ ઇસ પ્રકાર કા જો નિયમવિશેષ રખતે હેં વે અદૃષ્ટિલાભિક મુનિ હેં । ‘ હે-સાધો ! મેં આપ કે લિયે ક્ષમા દૂ અર્થાત્ આપકે લિયે કિસ વસ્તુ કી ઇસ સમય ઞાહના છે ’ ઇસ પ્રકાર દાતા કે દ્વારા વ્રત્તવિષયીકૃત વસ્તુ

હિતક કહેવાય છે શુદ્ધેષણા એટલે શકા આદિ દોષો રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો તે આ શુદ્ધેષણાયુક્ત મુનિજનોને શુદ્ધેષણિક કહે છે એટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધેષણિક છે, સખ્યા પ્રવાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે એટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમાં ભક્ત પાન આદિનું ધારાવળી તૂટ્યા વિના એક વખતમાં જેટલું પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાત્ર, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને સહ્યાદત્તિક કહે છે જે સાધુઓને એવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડશે તે જ આહાર અમે લઈશું, એવા નિયમ વાળા સાધુઓને દૃષ્ટિલાભિક કહે છે તથા અદૃષ્ટિલાભિક મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાંથી બહારઝાઠવામાં આવેલ એવું ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડ્યું હોતું નથી પણ તેનું નામ જ કહ્યું પડ્યું હોય છે અથવા “અગાઉ જેની પાસેથી દાન ગ્રહણ ન કર્યું હોય એવા દાતા પાસેથી જ દાન ગ્રહણ કરીશ” એવા મુનિને અદૃષ્ટિલાભિક કહે છે “ હે મુનિરાજ ! હું આપને માટે શું આપુ “ એટલે કે ” આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માંગો છો ” આ

કો લેને કા જિનકે અભિગ્રહ હોતા હૈ વે પૃષ્ઠલામિક મુનિ હૈ જો આચામા મ્લવ્રત (આયધિલ) સે યુક્ત હોતે હૈ વે આચામ્લિક મુનિ હૈ । પારણા કે દિવસ મી જો પૂર્વાદ્ધિ કે સમય खाने पीने का त्याग कर देते हॆ वे पुरिमड्ड-પૂર્વાદ્ધિક મુનિ હૈ । તથા જો પારણા કે દિન મી ઇકાશનવ્રત કે વારી હોતે હૈ વે ઇકાશનિક હૈ । જો ઘૃત આદિ પદાર્થરૂપ વિકૃતિયોં સે વિહીન હી મોજન લેતે હૈ વે નિર્વિકૃતિક મુનિ હૈ । ‘પાત્ર મેં ગિરને પહિલે જો મિશ્તા કી વસ્તુ સક્તુકાદિ રૂપ મોદક આદિ પિણ્ડ અર્પિત કરતે સમય ઘીચ મેં હી ફટકર પાત્ર મે પડેગી ડસે હી મૈ લગા ’ ડસ પ્રકાર જો નિયમ ધારણ કરતે હૈ વે મિત્રપિંડપાતિક મુનિ હૈ । ‘ ડતની હી વસ્તુ -મદ્યપદાર્થ-खाने योग्य हम भोजन में खावेंगे ’ ઇસા નિયમ જિન સાધુઓં કે હોતા હૈ વે પરિમિતપિંડપાતિક મુનિ હૈ । નીરસ, તક્ર (ઝાઝ)-મિશ્રિત ઓર પર્યુપિત ઘણ ચળક આદિ અન્ન કા જો આહાર કરતે હૈ વે અન્તાહારી મુનિ હૈ । પુરાનીં કુલથી, ઘણ, ચના આદિ અન્ન કા જો આહાર કરતે હૈ વે પ્રાન્તાહારી મુનિ હૈ । જો રસવર્જિત આહાર લેતે હૈ-અર્થાત્ જો મુનિ હિંગ આદિ કે વધાર સે વર્જિત આહાર કો લેને કે નિયમવાલે હોતે હૈ વે અરસાહારી હૈ । જિનમેં રસ નહી હોતા ઇસે

પ્રમાણે દાતા દ્વારા પ્રશ્નવિપચીકૃત વસ્તુ લેવાનો જેમને અલિગ્રહ હોય છે તેમને પૃષ્ઠલામિક મુનિ કહે છે જે મુનિ આચામામ્લવ્રત યુક્ત હોય છે તેમને આચામામ્લિક મુનિ કહે છે પારણાને દિવસે પણ જે પૂર્વાદ્ધિ મધ્યાહ્ન પહેલા ખાવાપીવાનો ત્યાગ કરે છે તેમને પરિમદ્-પૂર્વાદ્ધિક મુનિ કહે છે તથા જે પારણાને દિવસે પણ એકાશન વ્રત ધારી હોય છે તેમને ઇકાશનિક કહે છે જે ઘી આદિ પદાર્થરૂપ વિકૃતિયોથી રહિત ભોજન લે છે તેમને નિર્વિકૃતિક મુનિ કહે છે “ પાત્રમા પડયા પહેલા જે લિક્ષાની વસ્તુ-સક્તુ ડાદિરૂપ મોદક આદિ પિંડ અર્પણ કરતી વખતે વચ્ચેજ લાગી જઈને પાત્રમા પડશે તેને જ હુ લઈશ ” આ પ્રકારનો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિને મિત્રપિંડપાતિક મુનિ કહે છે “ આટલી જ વસ્તુ ખાધ પદાર્થ-હુ ભોજનમા ખાઈશ ” એવો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિજનોને પરિમિતપિંડપાતિક કહે છે નીરસ, છાશ-મિશ્રિત, અને પર્યુષિત વાસી વાલ, ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિજનોને અન્તાહારી કહે છે જૂની ડળથી, વાલ ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિએને પ્રાન્તાહારી કહે છે જે રસરહિત આહાર લે છે એટલે કે જે મુનિ હિંગ આદિના વધારથી રહિત આહાર લેવાના નિયમવાળા હોય છે

ઉપનિરિત્ક હૈં । ઝંકા આદિ દોષોં કે પરિહાર સે શુદ્ધ આહાર કા ગ્રહણ કરના હસકા નામ શુદ્ધેષણા છે । હમ શુદ્ધેષણા સે જો સંપન્ન હોતે હૈં વે શુદ્ધેષણિક હૈં । અર્થાત્ ઝંકા આદિ દોષોં સે રહિત શુદ્ધ આહાર કો ગ્રહણ કરને કા જિનકા અભિગ્રહ હોતા હૈં વે શુદ્ધેષણિક હૈં । સરખાપ્રવાનવાલી દત્તિયોં સે જો ગોચરી કે લિયે જાતે હૈં અર્થાત્ દાતા કે હાથ સે દેતે સમય સાધુ કે પાત્ર મેં મત્તપાન આદિ કા જો ણક વાર અવિચ્છિન્નરૂપ સે ગિરના ઉસે દત્તિ કહતે હૈં, હમ પ્રકાર કો પાંચ છ આદિ દત્તિયોં કે લેને કા અભિગ્રહ જિન્હેં હોતા હૈં વે સમ્યાદત્તિક હૈં । જિન સાધુઓ કો એસા નિયમ હોતા હૈં કિ હમ ઉસી આહાર કો લેમે જો હમારે દૃષ્ટિ ગોચર હોગા । હમ પ્રકાર કે નિયમવાલે સાધુ દૃષ્ટિલાભિક કહે જાતે હૈં । તથા અદૃષ્ટિલાભિક વે સાધુજન હૈં જો પાકગૃહ કે મીતર સે નિકાલે છુપ્પ એસે ભોજન કો કિ જો દૃષ્ટિ મેં તોં આયા નહીં હૈં કેવલ કાન સે હી ઉસકા નામ સુન લિયા હૈં ઉસે લેનેકા નિયમ ધારણ કરતે હૈં । અથવા—‘ પૂર્વ મેં અનુપલબ્ધ દાતા સે હી મેં મિક્ષા લૂગા ’ હસ પ્રકાર કા જો નિયમવિશેષ રખતે હૈં વે અદૃષ્ટિલાભિક સુનિ હૈં । ‘ હે-સાધો ! મેં આપ કે લિયે કયા દૂ અર્થાત્ આપકે લિયે કિસ વસ્તુ કી હસ સમય ચાહના હૈં ’ હસ પ્રકાર દાતા કે દ્વારા પ્રશ્નવિષયીકૃત વસ્તુ

હિત્તક કહેવાય છે શુદ્ધેષણા એટલે શકા આદિ દોષો રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો તે આ શુદ્ધેષણાયુક્ત મુનિજનોને શુદ્ધેષણિક કહે છે એટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધેષણિક છે, સખ્યા પ્રધાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે એટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમાં ભક્ત પાન આદિનું ધારાવળી તૂટ્યા વિના એક વખતમાં જેટલું પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાત્ર, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને સમ્યાદત્તિક કહે છે જે સાધુઓને એવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડશે તે જ આહાર અમે લઈશું, એવા નિયમ વાળા સાધુઓને દૃષ્ટિલાભિક કહે છે તથા અદૃષ્ટિલાભિક મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાંથી બહારડાઢવામાં આવેલ એવું ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડ્યું હોતું નથી પણ તેનું નામ જ કહ્યું પડ્યું હોય છે અથવા “અગાઉ જેની પાસેથી દાન ગ્રહણ ન કર્યું હોય એવા દાતા પાસેથી જ દાન ગ્રહણ કરીશ” એવા મુનિને અદૃષ્ટિલાભિક કહે છે “ હે મુનિરાજ ! હું આપને માટે શું આપુ “ એટલે કે ” આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માંગો છો ” આ

મેં કાયોત્સર્ગ આદિ તપશ્ચરણ કરતે હેં વે સ્થાનાતિગ મુનિ હૈ । એક રાત્રિકી આદિ પ્રતિમાધારણ કર કાર્યોત્સર્ગ વિશેષરૂપ મેં હી રહતે હૈં વે પ્રતિમા સ્થાયી મુનિ હૈં । જિનકા સ્થાન ઉત્કુટુક હોતા હૈ, અર્થાત્ જો ઉત્કુટ આસન સે વૈઠતે હૈ વે સ્થાનોત્કુટુક હૈં । સિંહાસન પર વૈઠે હુએ વ્યક્તિ કા કિ જિસકે દોનોં પૈર નીચે ટિકે હુએ હોં જવ વે સિંહાસન નીચે સે હટા લિયા જાતા હૈ તો વહ ઉસ સમય ઉસી સ્થિતિ મેં-અર્થાત્-અપની પૂર્વ કી સ્થિતિ મેં હી રહે તો ઉસ આસન કા નામ વીરાસન હૈ । ઇસ આસન કો જો આચરિત કરતે હૈં વે વીરાસનિક મુનિ હૈ । જિસ આસન મેં દોનોં પુત સમાનરૂપ સે જમે રહતે હૈ ઉસ આસન કા નામ નિષદ્યા હૈ । ઇસ નિષદ્યા સે જો વૈઠતે હૈ વે નૈપથિક હૈ । દહ કી તરહ જિનકા શરીર ભૂમિપર આયત-લગા-જિસ આસન મેં રહતા હૈ-ઉસકા નામ દહાયત આસન હૈ । ઇસ આસન કો જો આચરિત કરતે હૈં વે દણ્ડાયતિક હૈ । અર્થાત્-જિસ મેં જમીન પર દહ કી તરહ લગા હોકર સોયા જાતા હૈ ઉસ આસન કો જો મુનિ કરતે હૈં વે દણ્ડાયતિક મુનિ કહલાતે હૈં । જિસ આસન મેં દોનોં પૈરો કી ણડી ઓર મસ્તક કા પૃષ્ઠભાગ જમીન પર લગા રહતા હૈ, તથા પીઠ કા ભાગ જમીન સે ઉઠા

કહે છે જે અતિશય પ્રમાણુમા કાયોત્સર્ગ આદિ તપશ્ચરણ કરે છે તેમને સ્થાનાતિગ મુનિ કહે છે જે એક રાત્રિની આદિ પ્રતિમા ધારણ કરીને કાયોત્સર્ગના વિશેષરૂપમા રહે છે તેમને પ્રતિમાસ્થાયી મુનિ કહે છે જેમનુ સ્થાન ઉત્કુટુક હોય છે, એટલે કે જે ઉત્કુટુક આસને બેસે છે તેમને સ્થાનોત્કુટુક મુનિ કહે છે સિંહાસન પર બેઠેલ વ્યક્તિ કે જેના બન્ને પગ નીચે ટેકવેલા હોય, તેની નીચેથી સિંહાસન બસેડી લેવામા આવે છતાં પણ તે બે પોતાની એજ સ્થિતિમા-એટલે કે પોતાની અગાઉની સ્થિતિમા રહે તો તે આસનને વીરાસન કહે છે આ આસનનુ સેવન કરનાર મુનિને વીરાસનિક કહે છે જે આસનમા બને પુત સમાન રીતે દહ રહે છે તે આસનનુ નાથ નિષદ્યા છે આ નિષદ્યાથી જે બેસે છે તેને નૈપથિક કહે છે દહની જેમ જેમનુ શરીર જમીન પર આયત-લગાયેલ સ્થિતિમા જે આસનમા રહે છે તે આસનને દહાયત આસન કહે છે આ આસન કરનારને દણ્ડાયતિક મુનિ કહે છે એટલે કે જેમા જમીન પર દહની જેમ લાખા થઈને સૂઈ જવાય છે, તે આસન જે મુનિ કરે છે તેમને દણ્ડાયતિક મુનિ કહે છે જે આસનમા બન્ને પગની એડી તથા મસ્તકનો પાછળનો ભાગ જમીન પર લાગી રહે છે તથા પીઠનો

પુરાને ધાન્ય ઓદન આદિ અન્ન સે નિષ્પન્ન છુપ્પ આહાર કો લેનેકા જિનકા નિયમ હોતા હૈ વે વિરન્નાહારી મુનિ હૈ । વૃતાદિ કે સ્વધ સે વર્જિત છુપ્પ રુચે લૂચે આહાર કો લેનેકા જિનકા નિયમ હોતા હૈ વે રુક્ષાહારી મુનિ હૈ । વદરી ફલ ઘોર કે પિસે છુપ્પ ચૂર્ણ આદિ કા, તથા કુલ્છી કોદ્રવ આદિ સે ઘને છુપ્પ આહાર કા જો સેવન કરતે હૈ વે તુચ્છાહારી મુનિ હૈ । હસી તરહ અન્ત આહાર સે જો જીતે હૈ વે અન્તજીવી, પ્રાન્ત આહાર સે જો જીતે હૈ વે પ્રાન્તજીવી, રુક્ષાહાર સે જો જીતે હૈ વે રુક્ષજીવી, તુચ્છાહાર સે જો જીતે હૈ વે તુચ્છજીવી મુનિ હૈ । અઝન આદિ કી પ્રાપ્તિ હોને પર અથવા નહીં હોને પર જિનકી ઘાતિરી ચેષ્ટા મેં-મુખ મેં ચક્ષુરાદિ ઇન્દ્રિયોં મેં સ્થાનતા નહીં આતી હૈ વે ઉપશાન્તજીવી મુનિ હૈ । તથા અન્તરગ મેં જિન સાધુઓં કે આહાર આદિ કી અપ્રાપ્તિ મેં ક્રોધાદિ કપાયો કા ઉપશમન રહતા હૈ વે પ્રશાન્તજીવી મુનિ હૈ । દોષવર્જિત અન્નાદિ કે खानે સે હી જો અપના જીવન નિર્વાહ કરતે હૈ વે વિવિક્તજીવી મુનિ હૈ । ક્ષીર-દુગ્ધ, મધુ શર્કરા આદિ મધુરદ્રવ્ય ઔર સર્પિ ધૃત, ઢનપદાર્થોંકા જો આહાર નહીં કરતે હૈ વે અક્ષીરમધુસર્પિષ્ક મુનિ હૈ । મધ ઔર માસ કા આહાર નહીં કરને અમઘર્માસાશિક મુનિ કહલાતે હૈ । જો અતિશયરૂપ

તેમને અરણાહારી કહે છે જેમા રસ હોતો નથી એવા જૂના ધાન્ય, ચોખા આદિ અન્નમાથી તૈયાર થયેલ આહાર લેવાના નિયમવાળા મુનિઓને વિરસાહારી કહે છે ધી વિનાનો લૂખો આહાર લેવાનો જેમને નિયમ છે તેમને રુક્ષાહારી મુનિ કહે છે ઔર આદિ કુળોતુ ચૂર્ણ આદિ તથા કળથી, કૌદરા વગેરેમાથી બનેલા આહારનુ જે સેવન કરે છે તેમને તુચ્છાહારી કહે છે, એજ પ્રમાણે અન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને અન્તજીવી, પ્રાન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને પ્રાન્તજીવી, રુક્ષ આહારથી જે જીવે છે તેમને રુક્ષજીવી અને તુચ્છ આહારથી જે જીવે છે તેમને તુચ્છજીવી મુનિ કહે છે ભોજન આદિ પ્રાપ્ત થાય કે ન થાય છતાં પણ જેમની મુખમુદ્રામા, ચક્ષુરાદિ ઇન્દ્રિયોમા સ્થાનતા દેખાતી નથી તેમને ઉપશાન્તજીવી મુનિ કહે છે તથા અન્તરગમા જે સાધુઓને આહારાદિની અપ્રાપ્તિમા ક્રોધાદિ કપાયોનુ ઉપશમન રહે છે તેઓ પ્રશાન્તજીવી મુનિ છે, દોષારહિત અન્નાદિ ખાઈને જ જે પોતાનો જીવન નિર્વાહ ચલાવે છે તેમને વિવિક્તજીવી મુનિ કહે છે ક્ષીર-દૂધ, મધુ-સાકર આદિ મધુર દ્રવ્ય તથા સર્પિ-ત એ પદાર્થોનો જે આહાર નથી કરતા તેમને અક્ષીરમધુસર્પિષ્ક મુનિ કહે છે મધ અને માસનો જે આહાર કરતા નથી તેમને અમઘર્માસાશિક

ય ' ધીરમતિબુદ્ધ્યશ્ચ=ધીરા-સ્થિરામતિઃ અવગ્રહાદિકા, બુદ્ધિઃ=ઓત્પત્તિક્વ્યા-
યેપા તે તથોક્તાઃ, તથા ' જે તે ' એ તે, ' આસીવિસઉગ્ગતેયકપ્પા ' આશીવિપો-
ગ્રતેજઃ કલ્પા =આશીવિપાઃ=સર્પાસ્તે ચ તે ઉગ્રતેજસ ધીરવિપવરાશ્ચ આશીવિ
પોગ્રતેજસસ્તત્તલ્પાઃ એ તે-આશીવિપોગ્રતેજઃ કલ્પા । તથા ' નિચ્છયવવસાયપ જ્ઞ
ત્તકયમઈયા ' નિશ્ચયવ્યવસાયપર્યાપ્તકૃતમતયઃ=નિશ્ચયઃ=વસ્તુનિર્ણયો, વ્યવસાયઃ=
ઉદ્યમઃ પુરુષકારકતિ યાવત્ તદ્વિપયે પર્યાપ્તા=પરિપૂર્ણા કૃતા=વિદિતા મતિર્બુદ્ધિર્યે-
સ્તે તથોક્તાઃ=સકલવસ્તુનિર્ણાયકા इत्यर्थः તથા- ' નિચ્ચ સજ્ઞાયજ્ઞાણા ' નિત્ય
સ્વાધ્યાયધ્યાનાઃ-નિત્ય-સર્વદા સ્વાધ્યાયો-વાચનાદિકમ્, ધ્યાન=દુર્ધ્યાનતત્ત્વિ-
ત્તનિરોદ્ધરૂપ એપા તથોક્તાઃ, અતएव ' અણુવદ્ધધમ્મજ્ઞાણા ' અણુવદ્ધધર્મધ્યાનાઃ=
અણુવદ્ધ-ધારાપ્રવાહન્યાયેન નિરન્તર ધૃત ધર્મધ્યાનમ્-આજ્ઞાવિચયાપાયવિચયવિપા-
કવિચયસમ્પ્રાપ્તિવિચયરૂપ યૈસ્તે, તથા- ' પચમહવ્વયચરિત્તજુત્તા ' પચ્ચમહાવ્રતચારિત્ર-
યુક્તા =પચ્ચમહાવ્રતાનિ=પ્રાણાતિપાતાદિવિરમણલક્ષણાનિ તદ્રૂપ યચ્ચારિત્ર તેન

एव औत्पत्तिकी आदि बुद्धि जिनकी धीर-स्थिर है, तथा (जे ते आसी
विसउगगतेयकप्पा) जो सर्प के समान उग्रतेज वाले है, (निच्छयवव-
सायपज्जत्तकयमइया) निश्चयवस्तुनिर्णय करने में एव उद्यम-पुरुषार्थ
करनेमें जिन्होंने अपनी बुद्धि को परिपूर्ण बना लिया है, अर्थात् जो अच्छी
तरह से समस्त वस्तुओं का निर्णय करने वाले है तथा (निच्च सज्झा
यज्झाणा) जो नित्य ही वाचनादिरूप स्वाध्याय में एव आर्त्तरौद्ररूप
दुर्ध्यान से चित्त निरोधरूप ध्यान में मग्न रहते हैं, इसीलिये (अणुवद-
धम्मज्झाणा) द्वारा प्रवाह न्याय से जिनका निरन्तर आज्ञाविचय,
अपायविचय, सस्थानविचय रूप धर्मध्यान होता रहता है, तथा (पच-
महव्वय चरित्तजुत्ता) जो प्राणातिपातादि विरमणरूप पचमहाव्रतों से

અવગ્રહાદિરૂપ મતિ અને ઔત્પત્તિકી આદિ બુદ્ધિ ધીર-સ્થિર છે, તથા “ જે
તે આસી વિસઉગ્ગતેયકપ્પા ” જે સર્પના સમાન ઉગ્ર તેજવાળા છે, “ નિચ્છય
વવસાય પજ્જત્તકયમઈયા ” નિશ્ચયવસ્તુ નિર્ણય કરવામાં અને ઉદ્યમ-પુરુષાર્થ
કરવામાં જેમણે પોતાની બુદ્ધિને પરિપૂર્ણ બનાવી લીધી છે, એટલે કે જે
સારી રીતે સમસ્ત વસ્તુઓનો નિર્ણય કરનાર છે, તથા “ નિચ્ચ સજ્ઞાય-
જ્ઞાણા ” જે નિત્યવાચનાદિરૂપ સ્વાધ્યાયમાં અને આર્ત્તરૌદ્રરૂપ દુર્ધ્યાનમાંથી
ચિત્તનિરોધરૂપ જ્ઞાનમાં લીન રહે છે, તેથી ‘ અણુવદ્ધધમ્મજ્ઞાણા ’ ધારા પ્રવાહ
ન્યાયથી જેમણે નિરન્તર આજ્ઞાવિચય, અપાય વિચય, સસ્થાન વિચયરૂપ ધર્મ
ધ્યાન રહ્યા કરે છે, તથા “ પચમહવ્વયચરિત્તજુત્તા ” જે પ્રાણાતિપાતાદિ વિર-

તથા-‘ સુયધરવિદિતત્થકાયબુદ્ધિણો ’ શ્રુતધરવિદિતાર્થકાયબુદ્ધય. = શ્રુતધરા:-
શ્રુતજ્ઞાનિનસ્તંવિદિતો જ્ઞાતોઽર્થકઃ યઃ = તત્ત્વજ્ઞાનરાશિઃ શ્રુતસમૂહો યથા સા
શ્રુતધરવિદિતાર્થકાયા, તાદૃશી બુદ્ધિયેષા તે તથોક્તા, તથા-‘ ધીરમહુદ્ધિણો

રહતા હૈ-ઉસ આસન કો લગઢાસન કહતે હૈ । ઇસ આમન સે જો મુનિ
શયન કરતે હૈ વે લગઢશાયી મુનિ હૈ । સોતે સમય જો ણક હી કરચટ
સે સોતે હૈ-કરચટ નહીં ઘદલતે હૈ-એસે મુનિ ણક પાર્શ્વિક હૈ । જો
સાધુજન, શીત, ઉષ્ણ આદિ કી આતાપના લેતે હૈ વે આતાપક મુનિ હૈ ।
હેમન્ત ઋતુ મેં જો પ્રાવરણ સે રહિત હોતે હૈ વે અપ્રાવૃત મુનિ હૈ । જો મુનિ
અપને મુલ્ક કે શ્લેષ્મા કે અપરિણ્ઠાપક હોતે હૈ વે અનિળ્ઠીવક મુનિ હૈ ।
જો મુનિ શરીર મેં ખુજલી ચલને પર ખી ઉસે નહીં ખુજાતે હૈ વે મુનિ અકણ્ઠ-
યક હૈ । તથા જો અપને કેશોંકા મૂછ દાઢી આદિ કે થાલોંકા-તથા નખોં
કા સસ્કાર નહીં કરતે હૈ-જેસે હૈ વૈસા હી ડન્હેં રખે રહતે હૈ એસે મુનિ ધૃત-
કેશશ્મશ્રુલોમનખવાલે કહલાતે હૈ યહ જિન કલ્પિક મુનિયોંકા તથા
જો મુનિ અપને સમસ્ત શરીર કા સસ્કાર નહીં કરતે હૈ વે મુનિ સર્વ,
ગાત્રપ્રતિકર્મવિમુક્ત હૈ । તથા (સુયધરવિદિતત્થકાયબુદ્ધિણો) શ્રુતજ્ઞા-
નિયોં દ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનરાશિરૂપ શ્રુતસમૂહ જિસકે પ્રભાવ સે વિદિત હોતા
હૈ એસા જિન્હી કી બુદ્ધિ હૈ તથા (ધીરમહુદ્ધિણો) અવગ્રહાદિરૂપમતિ

ભાગ જમીનથી અદ્ધર રહે છે, તે આસનને લગઢાસન કહે છે તે આસને
જે મુનિ શયન કરે છે તેમને લગઢશાયી મુનિ કહે કહે છે સૂતી વખતે જે
એકજ પડખે શયન કરે છે-પડખુ ફેરવતા નથી-તેવા મુનિઓ એકપાર્શ્વિક કહે
વાય છે જે મુનિજનો શીત, ગરમી આદિની આતાપના લે છે તેમને આતા
પક મુનિ કહે છે, હેમન્ત ઋતુમાં જે પ્રાવરણથી રહિત હોય છે તેમને
અપ્રાવૃત મુનિ કહે છે જે મુનિ પોતાના મુખના શ્લેષ્માના
અપરિણ્ઠાપક હોય છે તેમને અનિળ્ઠીવક કહે છે જે મુનિ શરીરમાં ખુજલી
ચળા આધવા છતાં પણ તેને ખજવાળતા નથી તેમને અકણ્ઠયક મુનિ કહે છે
જે મુનિ પોતાના કેશના-મૂછ, દાઢી આદિના વાળના તથા નખના સસ્કાર
(છેદન) કરતા નથી, જેવા હોય તેવાજ તેને રહેવા દે છે, એવા મુનિઓને
ધૃતકેશશ્મશ્રુલોમનખા કહે છે તથા જે મુનિ પોતાના સમસ્ત શરીરના સસ્કાર
કરતા નથી તે મુનિઓને સર્વગાત્રપ્રતિકર્મવિમુક્ત ” કહે છે તથા “ સુયધર
વિદિતત્થકાયબુદ્ધિણો ” શ્રુતજ્ઞાનીઓ દ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનરાશિ શ્રુતસમૂહ જેના પ્રભા
વથી વિદિત થાય છે એવી જેમની બુદ્ધિ છે તથા ‘ ધીરમહુ

में नहीं आया। इसका कारण केवल यही हुआ कि उनकी अन्तरंग दृष्टि इस महनीय तत्त्व तक गहराई के साथ नहीं पहुँच पाई। इसके वास्तविक अन्तरंग स्वरूप का विवेचन यदि हमें कहीं मिलता है तो वह एक वीतराग परपरा में ही मिलता है। इसका कारण यहाँ यह हुआ कि जिन तीर्थंकर गगन आदिकों ने इस तत्त्व का विवेचन किया वे बहुत ही बड़ी सूक्ष्मदृष्टिवाले थे। ज्ञान के पूर्ण विकास से वे इतने अधिक विज्ञानी बन चुके थे कि प्रत्येक पदार्थ अपनी समस्त अवस्थाओं के साथ उनके उस विशिष्ट ज्ञान में दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित झलकता रहता था। अतः इस प्रकार के ज्ञान से उन्होंने अहिंसा भगवती के वास्तविक स्वरूप का दर्शन किया है तभी जाकर उन्होंने अपने सिद्धान्तों में इसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया है। यह विवेचन ऋषयों से नहीं हो सका। यही बात सूत्रकारने अपने इस सूत्र द्वारा प्रदर्शित की है वे कहते हैं कि इस अहिंसा भगवती के दर्शन उन महापुरुषों ने किये हैं कि जो अपरिमित केवल ज्ञान और दर्शन के अधिपति थे। शील, विनय, तप और सयम से जिन्होंने अपनी आत्मा को धिलकुल 'सौटची के' सोने जैसा बना लिया था। जिनके पास राग द्वेष जैसे विशाल बोधा पछाड़ खाकर सर्वथा विनष्ट हो चुके

शुभ केवल ओ न आन्धु डे तेमनी अन्तरंग दृष्टि आ महान तत्त्वमा
उदात्तधी प्रेमी नथी तेना वान्तविड अन्तरंग स्वरूपनु विवेचन आपणुने
वीतराग परपरा मिवाय अन्य सिद्धांतोमा गणतु नथी तेनु उरणु ओ छे
डे न तीर्थंकर, गणधर आदिये आ तत्त्वनु विवेचन उरु छे तेओ भहु न
दीर्घदृष्टिवाणा हुता ज्ञानना पूर्ण विकासथी तेओ ओटला भधा विज्ञानी
भनी गया हुता डे प्रत्येक पदार्थ तेनी समस्त अवस्थाओ महित
तेमना ओ विशिष्ट ज्ञानथी नम दर्पणुमा प्रतिबिम्ब देभाय तेम अपष्टपे देभाता
हुता, तेथी ओ प्रकारना ज्ञानथी तेमणे लगवती अहिंसाना वान्तविड स्वरूपनु
दर्शन उरु हुतु, तेथी न तेओओ पोताना सिद्धान्तोमा तेनु सूक्ष्ममा सूक्ष्म
विवेचन उरु छे, आ विवेचन छद्मस्यो वडे वर शब्दु नही ओ न वात सूत्रकारे
पोताना आ सूत्र द्वारा प्रदर्शित उरी छे तेओ उडे छे डे आ लगवती अहिंसाना
दर्शन ते महापुरुषोओ कर्था छे तेओ अनन्त ज्ञान अने दर्शनना अधिपति
हुता, तेमणे शील, विनय, तप अने सयम द्वारा पोताना आत्माने "सौ
टचना" मोना तेओ विगुद्ध भनाव्यो हुतो तेमनी पामे रागद्वेषधी समर्थ
योद्धा लो लेगा थर्ने तदन नष्ट थया हुता त्रल्लोड तेमनी

યુક્તા ચેતે તથા—‘ સમિયાસમિર્દિષુ ’ સમિતાઃ સમિતિષુ=ઈર્ષ્યાદિપાપસમિતિર્મિયુક્તા
 इत्यर्थः, तथा—‘ समिपपावा ’ गमितपापाः=गमित=गान्तं पाप=प्राणातिपातादि-
 रूप येपा ते तथोक्ताः, तथा ‘ छविहजगवच्छला ’ पञ्चिजगद्वत्सलाः=यह
 जीविकायहिता इत्यर्थः, तथा—येते ‘ निचमप्पमत्ता ’ नित्यमपमत्ताः=सर्वदा
 प्रमादरहिता सन्ति, ‘ एण्हिय ’ एतैश्च पूर्वोक्तगुणविशिष्टैः, तथा—‘ अण्णेहि य’
 अन्यैश्च अनुकूललक्षणैर्गुणवद्भिर्या सा=जगत्प्रसिद्धा एषा भगवती अहिंसा
 ‘ अणुपालिया ’ अनुपालिता— राहमनःकाययोगैरागधितेत्यर्थः ॥ सू-४ ॥

યુક્ત ઘને હુવુ છે, તથા (સમિહસુસમિયા (જો ઈર્ષ્યા આદિ પાપ સમિ-
 તિયોં સે યુક્ત છે ઓર ઠસી કારણ સે (સમિહપાવા) જિન્હોં કે
 પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ પાપ જ્ઞાત હો ચુકે છે, તથા (છવિહજગવચ્છલા)
 જો સદા છહકાય કે જીવોં કી રક્ષા કરને મેં વત્સલ ભાવવાલે હોતે છે
 તથા (નિચમપ્પમત્તા) જો પાંચ પ્રમાદોંસે નિત્ય રહિત હોતે છે (એણિ)
 એસે ઇન પૂર્વોક્ત ગુણોં સે વિશિષ્ટ મહાત્માજનોં દ્વારા તથા (અણ્ણેહિય)
 હસ પ્રકાર કે લક્ષણોં સે યુક્ત અન્ય ગુણવાલોં દ્વારા (જા સા ભગવઈ)
 યહ જગત્પ્રસિદ્ધ ભગવતી અહિંસા (અણુપાલિયા) મન, વચન, ઓર
 કાય, ઇન ત્રીન યોગોં કી એકાગ્રતા સે અચ્છીતરહ આરાધિત કી ગઈ છે ।

ભાવાર્થ—અહિંસા તત્ત્વ કો યદ્યપિ પ્રત્યેક સિદ્ધાન્તકારોંને અપને ૨
 સિદ્ધાન્તાનુસાર અપનાયા છે । પરન્તુ હસ તત્ત્વ કા બાહિરી સ્વરૂપ
 વિવેચન કરતે હી વે રહ ગયે છે । અન્તરગ સ્વરૂપ વિવેચન ઉનકી દૃષ્ટિ

મણુપ પાપ મહાવતોથી યુક્ત થયેલ છે, તથા “ સમિહ સુસમિયા ” જે ઈર્ષ્યા
 આદિ પાપ સમિતિયોથી યુક્ત છે અને એ જ કારણથી “ સમિહપાવા ”
 જેમના પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ પાપ શાન્ત થઈ ગયા છે, તથા “ છવિહજગવ
 ચ્છલા ” જે સદા છહકાયના જીવોની રક્ષા કરવામા વત્સલ ભાવ વાળા હોય
 છે, તથા “ નિચમપ્પમત્તા ” જે સદા પાપ પ્રમાદોથી રહિત હોય છે “ એણિ ”
 એવા એ પૂર્વોક્ત ગુણોથી યુક્ત મહાત્માજનો દ્વારા તથા “ અણ્ણેહિય ” આ
 પ્રકારના ગુણોથી યુક્ત અન્ય ગુણવાનો દ્વારા “ જા સા ભગવઈ ” આ જગત્પ્ર-
 સિદ્ધ ભગવતી અહિંસા “ અણુપાલિયા ” મન, વચન, અને કાય, એ ત્રણે
 યોગોની એકાગ્રતાથી સારી રીતે આરાધવામા આવી છે

ભાવાર્થ—અહિંસા તત્ત્વને જે કે દરેક સિદ્ધાન્તકારોએ પોત પોતાના
 સિદ્ધાન્તાનુસાર અપનાવેલ છે, પણ આ તત્ત્વના બાહ્ય સ્વરૂપનું જ વિવેચન
 તેમણે કર્યું છે અન્તરગ સ્વરૂપ વિવેચન તેમની નજરે ન પડ્યું તેનું પરિ

न वि गरिहणाए न वि हलिणानिदणा गरिहणाए भिक्खं
गवेसियव्व, न वि भेसणाए न वि तज्जणाए न वि ताल-
णाए न वि भेसणतज्जणतालणाए भिक्खं गवेसियव्वं, न
वि गारवेणं न वि कुहणाए न वि वणीमगयाए न वि
गारवकुहणवणीमगयाए भिक्खं गवेसियव्व, न वि मित्तयाए
न वि पत्थणाए न वि सेवणाए न वि मित्तयपत्थणसेवणाए
भिक्खं गवेसियव्व, अण्णाए अगड्डिए अदुट्ठे अदीणे-
अविमणे अकलुणे अविसाई अपरिततजोगी जयणघडण-
करणचरियविनयगुणजोगसपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए
णिरए । इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठणाए पावयणं
भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चा भविय आगमेसिभद सुद्धं
नेयाउय अकुडिलं अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विउसमणं ॥५॥

टीका—‘ इमं च पुढी ’ इत्यादि—

‘ पुढीदगअगणिमारुयतरुगणतसथावरसव्वभूयसजमदयट्ठयाए ’ पृथ्वीद-
काग्निमारुततरुगणत्रसस्थावरसर्वभूतसयमदयार्थ, तत्र—पृथिवी—प्रसिद्धा, दक=
पानीयम्, अग्निः, मारुतो—वायुः, तरुगणः=वनस्पतिसमूहः, त्रमाः=द्वीन्द्रियादयः,
स्थावराः=पृथिव्यादिपञ्चकम्, एतेषा सर्वभूतानां=सर्वप्राणिनां सयमो रक्षण

जो इस अहिंसारूपप्रथमसवरद्वार को पालन करने के लिये उद्यत
हैं उन्हें क्या करना चाहिये सो कहते हैं—‘ इमं च ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(पुढी—दग—अगणि—मारुय—तरुगण—तस—थावर—सव्वभूय
सजम दयट्ठाए) पृथिवी, दक—जल, अग्नि, वायु, वनस्पति समूह,
द्वीन्द्रियादिक पाच स्थावर, इन सब प्राणियों की रक्षा निमित्त दयारूप

જેઓ આ અહિંસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વારનું પાલન કરવાને માટે તૈયાર
થયા છે તેમણે શું કરવું જોઈએ તે કહે છે— “ इमं च ” इत्यादि

टीकार्थ—(पुढी, दग, अगणि, मारुय, तरुगण, तस, थावर, सव्वभूय, सजमदयट्ठाए)
पृथिवी, दक, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति समूह, द्वीन्द्रियादिक त्रस, पृथि-
व्यादिक पाच स्थावर, ये पचा प्राणीઓની रक्षा निमित्त दयारूप प्रयोजनने

અથ યે-અહિંસારપ્રવચનસાગર પાત્થયિતુમ્મયતામ્તપા યદિત્રેયં તદાહ—

મૂલ્મ્-ઇમચ પુઢ્વી-ઢગ-અગણિ-મારુચ-તરુગણ-તસથાવર-
સઠ્ઠભૂયસંજયદયદૃયાણ સુદ્ધ ઉદ્ધંગત્રેસિયઠ્ઠ અકયમકારિય-
મણાહુયમણુદિદ્ધ અકીયકઢ નવકોડિદિં પરિસુદ્ધ દસહિ યદો-
સેહિ વિપમુદ્ધ ઉગ્ગમ ઉપ્પાયગોસણાસુદ્ધવવગયચુચ ચડયચત્ત-
દેહ ચ ફાસુયં ચ ન નિસિજ્જકહાપયોયણપ્રસાસુ ઓવણિયં ન
તિગિચ્છામતમૂલભેસજ્જકજ્જહેઉં ન લક્ખવણુપ્પાય સુમિણજોડ-
સનિમિત્ત કહકુહકપ્પઉત્ત ન વિડભણાણ ન વિરક્ખણાણ ન
વિ સાસણાણ ન વિડભણરક્ખણસાસણાણ ભિક્ખવગવેસિયઠ્ઠં,
ન વિ વદણાણ ન વિમાણણાણ ન વિ પૂયણાણ ન વિ વદણમાણ
ણપૂયણાણ ભિક્ખવ ગવેસિયઠ્ઠ, ન વિ હીલણાણ ન વિ નિંદણાણ

થે । ત્રીન લોક જિનકી ચરણ સેવા કર અપને આપકો ધન્ય માનતા
થા । ઉન્હી કે આદેશાનુસાર ઉનકી શિષ્યપ્રશિષ્ય પરપરા મેં હુણ મનઃ
પર્યય ઔર અવિધિજ્ઞાનધારિયોં ને ઇસ અહિંસા ભગવતી કો ભેદ
પ્રભેદો સે જાના, ઔર ઉસે વિશેષરૂપ સે દેખા । પૂર્વધરોં ને હસે શ્રુત-
નિષદ્ધ કિયા । વૈક્રિયલબ્ધિધારિયોં ને ઇસ ભગવતી કા આજન્મ પાલન
કિયા । એવ આભિનિબોધિક જ્ઞાનિયોં સે લેકર સર્વગાત્રપ્રતિકર્મ વિમુ-
ક્તાદિ અનેક મહાપુરુષોં ને ઇસ અહિંસા ભગવતી કો અપનોં ૨ શક્તિ
કે અનુસાર વહુતરી અચ્છી તરહ સે પાલા હૈ ॥ સૂ. ૪

સેવા કરીને પોતાની જાતને ધન્ય માનતા હતા એમના જ આદેશ પ્રમાણે
તેમની શિષ્ય-પ્રશિષ્ય પરપરા થઈ ગયેલા મન પર્યયઅને અવધિજ્ઞાનીઓએ
આ ભગવતી અહિંસાને ભેદ-પ્રભેદો સહિત જાણી અને તેનું વિશેષરૂપે દર્શન
કર્યું વૈક્રિય લબ્ધિધારીઓએ આ ભગવતીનું જીવનપર્યંત પાલન કર્યું અને
આભિનિબોધિક જ્ઞાનીઓથી લઈને સર્વગાત્ર પ્રતિકર્મ વિમુક્તા આદિ અનેક
મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિંસાનું પોત પોતાની શક્તિ પ્રમાણે ઘણી જ
સારી રીતે પાલન કર્યું છે ॥ સૂ. ૪ ॥

નાનુજાનાતિ ૩, ન પચતિ ૪, ન પાચયતિ ૫, પચન્ત નાનુજાનાતિ ૬, ન ક્રીણાતિ ૭, ન ક્રાપયતિ ૮, ક્રીણન્ત નાનુજાનાતિ ૯, इत्येता नवमोटयः. આભિઃ 'પરિશુદ્ધ' પરિશુદ્ધ, તથા—'દસહિં ય દોસેહિં' દશમિશ્વ દોષેઃ—શક્તિતાદિદશ-દોષેઃ 'વિપ્પમુક્ક' વિપ્પમુક્તમ્, 'ઉગ્ગમઉપ્પાયણેસણાસુદ્ધ' ઉદ્ગમોત્પાદન-પણાશુદ્ધ=આધાર્કર્મદયઃ પોઢપ ઉદ્ગમદોષાઃ, ધાત્ર્યાદયશ્ચ પોઢશ ઉત્પાદના-દોષાઃ, તદ્દૂપાયા એપણા=ગવેષણા, તથા શુદ્ધમ્, તથા—'વવગયચુયચઙ્ગચત્તદેહ ચ' વ્યપગતચ્યુતત્યાજિતત્યક્તદેહ ચ=તત્ર વ્યપગતાઃ=સ્વય પૃથગ્ભૂતા આગન્તુકા પિયીલિકાદયઃ, ચ્યુતાઃ=મૃતાઃ સ્વત પરતોગા ઢાતવ્યમસ્ત્વાશ્રિતા

उसने साधु के निमित्त दूसरों से हिंसा कराई हो २, और न साधु के निमित्त हिंसा करने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। तथा साधु के निमित्त जो स्वयं न पकाया हो १, दूसरों से नहीं पकाया गया हो २ और न जिसमें पकाने वाले की अनुमोदना की गई हो ३, तथा साधु के निमित्त जो पैसा देकर न खरीदा गया हो १, न दूसरों से खरीदवाया गया हो २ और न जिसमें खरीदने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। इस प्रकार की इन नव कोटियों से विशुद्ध आहार आदि की गवेषणा साधु को करनी चाहिये। (दसहिय दोसेहिं विप्पमुक्क) जो आहार शंकिन आदि दश दोषों से परि वर्जित हो (उगम उपायणेमणासुद्ध) उद्गम, उत्पादनरूप एषणा-गवेषणा से शुद्ध हो-आधार्कर्म आदि सोलह उद्गमदोष हैं, धात्री आदि सोलह उत्पादना दोषो हे। इन वत्तीस दोषों से जो रहित हो तथा (ववगयचुयचङ्गचत्तदेह) (व्यपगत) जिस

કરાવી ન હોય, કે સાધુને નિમિત્તે હિંસા કરવાની અનુમોદના થઈ ન હોય, તથા સાધુને નિમિત્તે જે તેણે બંતે બનાવ્યું ન હોય, બીજા પાસે બનાવરાવ્યું ન હોય, કે જેને પકવવાની અનુમોદના અપાઈ ન હોય તથા સાધુને નિમિત્તે જે પેસા આપીને ખરીદ કર્યું ન હોય, કે બીજા પાસે ખરીદ કરાવાયું ન હોય, કે ખરીદનારને ખરીદવાની અનુમોદના કરાઈ ન હોય, એ રીતે નવ પ્રકારે વિશુદ્ધ આહાર આદિની સાધુએ ગવેષણા કરવી જોઈએ (દસહિય દોસેહિં વિપ્પમુક્ક) જે આહાર શક્તિ આદિ દસ દોષોથી રહિત હોય, (ઉગમઉપ્પાયણે સણા સુદ્ધ) ઉદ્ગમ, ઉત્પાદનારૂપ એપણા-ગવેષણાથી શુદ્ધ હોય,—આધાર્કર્મ આદિ સોળ ઉદ્ગમ દોષ છે, ધાત્રી આદિ સોળ ઉત્પાદના દોષ છે—એ બન્નીસ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા (વવગયચુયચઙ્ગચત્તદેહ) (વ્યપગત) જે આહારમાથી કીડી આદિ જીવા બંતે જે અલગ થઈ ગયા હોય, તથા (ચુય) જીવો સ્વયં ચલે ગયા

તિનિમિત્તા યા દસ્યા તસ્યા અર્થ=પ્રયોજન તર્ક, ' ઇમ ચ ' ઇદ ચ-વક્ષ્યમાણ
 ' સુદ્ધ ' શુદ્ધ=નિર્દોષ ' ઉઝ ' ઉઝ્ઝ=સ્તોક સ્તોક ગ્રહણપ્રગણાદિક ' ગવેસ્ય
 વ્વ ' ગવેપિતવ્યમ્, યથા-ત્વનાનક્ષેત્રાદકળાદાન તથેવ સાધુનાડપિ ગૃહસ્થાર્થ
 નિષ્પાદિતમન્નાદિકસ્તોક સ્તોક ગવેષણીયમિતિ ભાવ । ક્ષીદ્ગમ્-ઉઝ્ઝ ગવેપિ
 તવ્યમ્ ? इत्याह—' अक्य ' अकृत=साधु निमित्तमनिष्पादितम्, ' अकारिय '
 अकारितम्=अन्यद्वारा न कारितम्, तथा-' अगाह्य ' अनाहृतम्=गृहस्थेन साधो
 रनिमन्त्रणपूर्वक दीयमानम्, ' अणुद्दिष्ट ' अनुद्दिष्टम्=औद्देशिकादि दोषवर्जितम्,
 तथा-' अकीयकड ' अकीतकृत=साधूना कृते मूत्त्रेनाजिप्पादितम् । एतदेव
 वर्णयन्नाह—' नवकोडोहि ' नवकोटिभिः, न दन्ति १, न घातयति २, घ्नन्त

પ્રયોજન કે લિધે (ઇમ ચ) ઇસ વક્ષ્યમાણ (સુદ્ધ ઉઝ ગવેસિયવ્વ)
 શુદ્ધ-નિર્દોષ, આહાર આદિ કી ઉઝ મોઢે ૨ રૂપ મેં ગવેષણા કરના
 चाहिये, अर्थात् जिस प्रकार काटे गये खेत से कणों का आदान किया
 जाता है उसी प्रकार साधु को गृहस्थ ने अपने लिये बनाये हुए
 भोजन आदि में से थोड़ी थोड़ी मात्रा में उसके यहा से आहार आदि
 लेना चाहिये । आहारादि (अक्य) साधु के निमित्त उसने नहीं बनाया
 हो और (अकारिय) न दूसरों से उसने बनवाया हो (अगाह्य)
 बुलाकर-अर्थात्-निमन्त्रण करके जो न दिया जाय, (अणुद्दिष्ट) औद्दे-
 शिक आदि दोषों से जो वर्जित हो, तथा (अकीयकड) साधुओं के
 निमित्त मूल्य देकर जो नहीं खरीदा गया हो तथा (नव कोडिहिं-
 परिशुद्ध) नवकोटियों से अर्थात् नौ प्रकार से जो परिशुद्ध हो, अर्थात्
 जिस आहार में साधु के निमित्त जीवों की हिंसा नहीं हुई हो, न

માટે (ઇમ ચ) ઇસવક્ષ્યમાણ, (સુદ્ધ ઉઝ ગવેસિયવ્વ) શુદ્ધ, નિર્દોષ આહાર
 આદિની થોડા થોડા પ્રમાણમા ગવેષણા કરવી જોઈએ, એટલે કે જેમ લણાયેલ
 ખેતરરમાથી કણોનુ આદાન કરાય છે, એ જ પ્રમાણે સાધુએ, ગૃહસ્થ દ્વારા
 પોતાને માટે બનાવાયેલ ભોજન આદિમાથી થોડા થોડા પ્રમાણમા આહાર
 આદિ લેવો જોઈએ તેણે તે આહારાદિ (અક્ય) સાધુને માટે બનાવ્યા હોવા
 જોઈએ નહીં, અને (અકારિય) બીજાની પાસે બનાવરાવ્યા હોવા જોઈએ નહીં
 (અગાહ્ય) બોલાવીને એટલે તે નિમન્ત્રીને જે ન અપાય, (અણુદ્દિષ્ટ)
 ઔદ્દેશિક આદિ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા (અકીયકડ) સાધુને માટે
 મૂલ્ય આપીને તે ખરીદાયેલ ન હોય, તથા (નવકોડિહિ પરિશુદ્ધ) નવ કેટીઓ
 વડે-નવ પ્રકારે જે પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે તેણે સાધુને નિમિત્તે બીજા પાસે હિંસા

भूतादिनिग्रहलक्षणः, मूलम् वृक्षरल्लयादीनां, भैषज्य=द्रव्यसंयोगरूपम्, एतच्च-
तुष्टयरूप कार्यमेव हेतु र्थे तत्तथो भैष न गणेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः ।
तथा-‘ न लङ्खणुप्पायसुमिण जोडस निमित्तकहकुहकप्पउत्त ’ न लक्षणोत्पात
स्वप्नज्योतिष निमित्तकयाकुहक प्रयुक्त=तत्र लक्षण=स्त्रीपुरुषादि लक्षण, उत्पाताः
=भूकम्पादिशास्त्राणि, स्वप्नः-स्वप्नशास्त्रम्, ज्योतिष-नक्षत्रादि शुभाशुभसूचक
शास्त्रम् निमित्त=भूतभविष्यदादि सूचक शास्त्रम्, कथा=कामकथा सूचक शास्त्रम्,
कुहक=परेषा विस्मयोत्पादकप्रयोगः, एभि प्रयोगैर्विस्मितेन दायकेन प्रयुक्त

इलाज, मन्त्र-भूतादि ग्रह के निग्रह निमित्त उपायभूत मन्त्र का प्रयोग,
मूल-वनौषधि, एव भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, ऐसी भिक्षा
मुनिजनों को कल्प्य नहीं होती है । तथा न लङ्खणुप्पायसुमिणजो-
डसनिमित्तकहकुहकप्पउत्त) जिस भिक्षा की प्राप्ति मुनि को लक्षणो
के स्त्री पुरुष आदि के चिह्नादिको के-दिखाने का प्रदर्शन करना पड़े,
भूकम्पादि के शास्त्र का कथन करना पड़े, स्वप्नशास्त्र का, ज्योतिष-
शास्त्र का, निमित्त शास्त्र का, काम कथा सूचक शास्त्र का, तथा दूसरों
के लिये आश्चर्योत्पादक प्रयोगों का सहारा लेना पड़े, ऐसी भिक्षा
मुनिजन के लिये कल्प्य नहीं है । तात्पर्य इसका यह है कि दाता को
उनके हस्त आदि की रेखाओं से प्रसन्न करके, भूकम्पादि का शुभा-
शुभफल कथन करके, काम वर्द्धक कथाओं को कह करके, स्वप्न शास्त्र
का प्ररूपण करके, ज्योतिषशास्त्र में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके
तथा आश्चर्यकारी प्रयोगों को दिखा करके यह कहना कि मैं बहुत

भूतादिग्रहना निग्रहने भाटे उपायभूत मन्त्रने प्रयोग, मूल-वनौषधि, अने
भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, आदिजतावपु पडे ओवे आहार मुनि-
जनोने उदये नही तथा (नलङ्खणुप्पाय सुमिणजोडसनिमित्त कह कुहकप्पउत्त)
जे भिक्षानी प्राप्तिने भाटे मुनिने स्त्री-पुरुष आदिना चिह्नादिकोने जताववानु
प्रदर्शन करवु पडे भूकम्पादि आदिना शास्त्रोनु कथन करवु पडे, स्वप्न शास्त्र,
ज्योतिषशास्त्र, निमित्त शास्त्र, कामकथा सूचक शास्त्र, तथा जीतने भाटे
आश्चर्योत्पादक प्रयोगो वगेरेनी मदद लेवी पडे ओवी भिक्षा मुनिजनोने उदये
नही तेनु तात्पर्य ओ छे के दाताने तेमना हस्त आदिनि रेखाओ वडे प्रसन्न
करीने, भूकम्पादि शुभाशुभ इण कहीने, कामवर्द्धन कथाओ कहीने, स्वप्न
शास्त्रनु प्ररूपण करीने, ज्योतिषशास्त्रमा जेतानी विद्वत्ता जतावीने, तथा
आश्चर्यकारक प्रयोगो जतावीने जेतने जहु न मडान विद्वान छे ओवी छाप

પૃથિવીકાયિકાદયઃ 'ચદ્ય' ત્યાજિતાઃ=શતવ્યપદાર્થાન્ દાયકેન ભૃત્યાદિ દ્વારા પૃથ્વારિતા, અથવા 'ચત્તા' સ્વયમેવ દાયકેન ત્યક્તાઃ=પૃથક્કૃતા દેહાઃ=જીવશરીરાણિ યસ્માદાહારાત્તત્ તથોક્તમ્, અતઃપ્વ 'કામુય ચ' પ્રામુક ચ=વ્યયગતજીવ ચ, एतादृशम्-માહામશનાદિક ગવેપિતવ્યમ્ । તથા ક્રીદ્ય મર્થ ન ગવેપિતવ્યમ્ ? इत्याह—'न निसिज्जकहापभोयणखवासु ओवणीय' न निषद्य कथाप्रयोजनाख्याश्रुतोपनीत, तत्र-निषद्य आसने उपविश्य यत् कथा-प्रयोजन=धर्मकथानिमित्तम् आख्या=श्रुतम्=ब्राह्मणान प्रतिब्रूयात्, तेन तथा-विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्त्रे दायकेन दातुमानीतमशनादिक, तन्न गवेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः । तथा—'न तिगिच्छामतमूलभेसज्जकज्जहेउ' न चिकित्सामन्त्रमूलभेसज्जकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्रः=

આહાર સે પિપીલિકાદિક જીવ સ્વય અલગ હો ગયે હો તથા (ચુય) જીવ સ્વય ચવ ગયે હો અથવા અગ્ન્યાદિ કે સયોગ સે ચવગયે હો, (ચદ્ય) દાતા ને ભૃત્યાદિ દ્વારા પૃથક્ કરા દિયે હો, (ચત્તા) સ્વય દાતા ને પૃથક્ કરદિયે હો, (કામુય ચ) પ્રામુક જેવા અશન આદિ મુનિજનોં કો કલ્પ્ય હૈ ઓર એસે હી આહાર કો ઉન્હેં ગવેષણા કરની ચાહિયે । તથા જો એસા ન હો ઉસકી ઉન્હેં ગવેષણા નહીં કરની ચાહિયે, ઇસી વિષયકો અવ સૂત્રકાર "ન નિસિજ્જ" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રકટ કરતે હૈ, વે કહતે હૈ કિ (ન નિસિજ્જક કહાપભોયણખવાસુ ઓવણીય) આસન પર બેઠ કર ધર્મ કથા સુનાતે સમય યદિ કોઈ દાતા ઉન મુનિજન કે પાસ દેને કે લિયે અશનાદિ દેય દ્રવ્ય લાયા હો તો વહ ઉન મુનિજનોં કો કલ્પતા નહી લેના હૈ । તથા—(ન તિગિચ્છામતમૂલભેસજ્જકજ્જહેઉ) જિસ મૈદ્ય કી પ્રાપ્તિ મેં મુનિ કો ચિકિત્સા-રોગનિવારણ કે નિમિત્ત

હોય અથવા અગ્નિ આદિના સયોગથી નાશ પામ્યા હોય, (ચદ્ય) દાતાએ નોકરાદિ દ્વારા અલગ કરાવ્યા હોય, (ચત્તા) દાતાએ જાતે તેમને અલગ કર્યા હોય, (કામુયચ) પ્રામુક એવો આહાર આદિ મુનિઓને હલ્કે છે અને એવા જ આહારની તેમણે ગવેષણા કરવી જોઈએ, તથા જે આહાર એવો ન હોય તેની ગવેષણા તેમણે કરવી જોઈએ નહીં એ જ વિષયને હવે સૂત્રકાર "ન નિસિજ્જ" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ બતાવે છે કે (ન નિસિજ્જ કહાયોયણખવાસુઓવણીય) આસને બેસીને ધર્મકથા સંભળાવતા વખતે જે કોઈ દાતા તે મુનિને આપવાને માટે અશનાદિ દેયદ્રવ્ય લાવ્યો હોય તો તે નિજનોને કલ્પતા નથી, તથા (નતિગિચ્છામતમૂલભેસજ્જકજ્જહેઉ) જે આહારની પ્રાપ્તિ માટે મુનિને ચિકિત્સા-રોગ નિવારણને માટે ધલાવ, મન્ત્ર

भूतादिनिग्रहलक्षण', मूलम् वृक्षरल्लयादीनां, भैषज्य=द्रव्यसंयोगरूपम्, एतच्च-
तुष्ट्यरूप कार्यमेव हेतु र्ग्रह तत्तथो भैक्ष न गत्रेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः ।
तथा—' न लङ्खणुप्पायसुमिण जोडस निमित्तकहकुहकप्पउत्त ' न लक्षणोत्पात
स्वप्न ज्योतिष निमित्तकथाकुहक प्रयुक्त = तत्र लक्षण=स्त्रीपुरुषादि लक्षण, उत्पाताः
=भूकम्पादिशास्त्राणि, स्वप्नः=स्वप्नशास्त्रम्, ज्योतिष=नक्षत्रादि शुभाशुभसूचक
शास्त्रम् निमित्त=भूतभविष्यदादि सूचक शास्त्रम्, कथा=कामकथा सूचक शास्त्रम्,
कुहक=परेषा विस्मयोत्पादकप्रयोगः, एभि प्रयोगैर्विस्मितेन दायकेन प्रयुक्त

इलाज, मत्र-भूतादि ग्रह के निग्रह निमित्त उपायभूत मत्र का प्रयोग,
मूल-वनौषधि, एव भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, ऐसी भिक्षा
मुनिजनों को कल्प्य नहीं होती है । तथा न लङ्खणुप्पायसुमिणजो-
इसनिमित्तकहकुहकप्पउत्त) जिस भिक्षा की प्राप्ति मुनि को लक्षणो
के स्त्री पुरुष आदि के चिह्नादिको के-दिखाने का प्रदर्शन करना पड़े,
भूकम्प आदि के शास्त्र का कथन करना पड़े, स्वप्नशास्त्र का, ज्योतिष-
शास्त्र का, निमित्त शास्त्र का, काम कथा सूचक शास्त्र का, तथा दूसरों
के लिये आश्चर्योत्पादक प्रयोगों का सहारा लेना पड़े, ऐसी भिक्षा
मुनिजन के लिये कल्प्य नहीं है । तात्पर्य इसका यह है कि दाता को
उनके हस्त आदि की रेखाओं से प्रसन्न करके, भूकम्प आदि का शुभा-
शुभफल कथन करके, काम वर्द्धक कथाओं को कह करके, स्वप्न शास्त्र
का प्ररूपण करके, ज्योतिषशास्त्र में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके
तथा आश्चर्यकारी प्रयोगों को दिखा करके यह कहना कि मैं बहुत

भूतादिग्रहना निग्रहने भाटे उपायभूत मत्रने प्रयोग, मूल-वनौषधि, अने
भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, आदि भताववु पडे अवे। आधार मुनि-
जनोने उत्ते नही तथा (नलङ्खणुप्पाय सुमिणजोइसनिमित्त कह कुहकप्पउत्त)
जे भिक्षानी प्राप्तिने भाटे मुनिने स्त्री-पुरुष आदिना चिह्नादिकोने भताववानु
प्रदर्शन करवु पडे भूकम्प आदिना शास्त्रोनु कथन करवु पडे, स्वप्न शास्त्र,
ज्योतिषशास्त्र, निमित्त शास्त्र, कामकथा सूचक शास्त्र, तथा भीजने भाटे
आश्चर्योत्पादक प्रयोगो वगेरेनी मदद लेवी पडे अवे। भिक्षा मुनिजनोने उत्ते
नही तेनु तात्पर्य अे छे डे दाताने तेमना हस्त आदिनि रेखाओ वडे शुभ
उरीने, भूकम्प आदिनु शुभाशुभ क्षण उहीने, कामवर्धन कथाओ उहीने, स्वप्न
शास्त्रनु प्ररूपण उरीने, ज्योतिषशास्त्रमा पोतानी विद्वत्ता भतावीने, तथा
अहिंसा प्रयोगो भतावीने पोते अहु न मडान विद्वान छे अवे। छाप

પૃથિવીકાયિકાદય. 'ચદ્ય' ત્યાગિતા:=શતવ્યપદાર્થાત્ દાયકેન ભૃત્યાદિ દ્વારા પૃથ્વારિતા., અથવા 'ચત્તા' સ્વયમેવ દાયકેન ત્યક્તા:=પૃથ્વકૃતા દેહા:= જીવશરીરાણિ યસ્માદાઘરાત્તત્ તથોક્તમ્, અતઃપ્ર 'ફાસુય ચ' પ્રાસુક ચ= વ્યપગતજીવ ચ, એતાદશમ્-માઘામશનાદિક ગવેપિતવ્યમ્ । તથા કીટગ મૈષ્ઠ ન ગવેપિતવ્યમ્ ? इत्याह—'न निसिज्जक कदापयोयणरूखासु ओवणीय' न निषद्य कथाप्रयोजनारग्याश्रुतोपनीत, तत्र-निषद्य आसने उपविश्य यत् कथा-प्रयोजन=धर्मकथानिमित्तम् आख्या=श्रुतम्=आख्यान प्रतिपदशान्त्र, तेन तथा-विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्त्रे दायकेन दातुमानीतमशनादिक, तन्न गवेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः । तथा—'न तिगिच्छामनमूलभेसज्जकज्जहेउ' न चिकित्सामन्त्रमूलभेसज्जकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्र:=

આહાર સે પિપીલિકાદિક જીવ સ્વય અલગ હો ગયે હો તથા (ચુય) જીવ સ્વય ચવ ગયે હો અથવા અગ્ન્યાદિ કે સયોગ સે ચવગયે હો, (ચદ્ય) દાતા ને ભૃત્યાદિ દ્વારા પૃથ્વ કરા દિયે હો, (ચત્તા) સ્વયદાતા ને પૃથ્વ કરા દિયે હો, (ફાસુય ચ) પ્રાસુક જેસા અશન આદિ મુનિજનોં કો કલ્પ્ય હૈ ઓર એસે હી આહાર કો ઉન્હેં ગવેપણા કરનીં ચાહિયે । તથા જો એસા ન હો ઉસકો ઉન્હેં ગવેપણા નહીં કરનીં ચાહિયે, ડસી વિષયકો અવ સૂત્રકાર “ન નિસિજ્જ” इत्यादि पदो द्वारा प्रकट करते हैं, वे कहते हैं कि (न निसिज्जक कदापयोयणरूखासु ओवणीय) आसन पर बैठ कर धर्म कथा सुनाते समय यदि कोई दाता उन मुनिजन के पास देने के लिये अशनादि देय द्रव्य लाया हो तो वह उन मुनिजनों को कल्पता नहीं लेना है । तथा—(न तिगिच्छामनमूलभेसज्जकज्जहेउ) जिस भैद्य की प्राप्ति में मुनि को चिकित्सा-रोगनिवारण के निमित्त

હોય અથવા અગ્નિ આદિના સયોગથી નાશ પામ્યા હોય, (ચદ્ય) દાતાએ નોકરાદિ દ્વારા અલગ કરાવ્યા હોય, (ચત્તા) દાતાએ જાતે તેમને અલગ કર્યા હોય, (ફાસુયચ) પ્રાસુક એવો આહાર આદિ મુનિઓને કહ્યે છે અને એવા જ આહારની તેમણે ગવેષણા કરવી જોઈએ, તથા જે આહાર એવો ન હોય તેની ગવેષણા તેમણે કરવી જોઈએ નહીં એ જ વિષયને હવે સૂત્રકાર “ન નિસિજ્જ” इत्यादि पदो द्वारा प्रकट करे છે તેઓ બતાવે છે કે (ન નિસિજ્જ કદાપયોયણરૂખાસુઓવણીય) આસને બેસીને ધર્મકથા સભળાવતી વખતે જો કોઈ દાતા તે મુનિને આપવાને માટે અશનાદિ દેયદ્રવ્ય લાવ્યો હોય તો તે નિજનોને કલ્પતા નથી, તથા (નતિગિચ્છામનમૂલભેસજ્જકજ્જહેઉ) જે આહારની પ્રાપ્તિ માટે મુનિને ચિકિત્સા-રોગ નિવારણને માટે ઇલાજ, મન્ત્ર-

रक्षणशासनेन ' भित्त्स्व ' भैक्ष ' गवेसियव्व ' गवेपितव्वम् । तथा- ' न वि वदणाए ' नापि वन्दनया=नापि प्रशसया " दिग्व्यापिनो भवद्गुणाः पूर्वश्रुताः, परमद्यभवानस्माभिः प्रत्यक्षीकृतः ' इत्येव रूपया, वन्दनशब्दोऽत्र प्रशसावाचकः, ' न वि माणणाए ' नापि माननया आसनादि प्रदानेन ' न वि पूयणाए ' नापि पूजनया-दायकाय किंचिद्वस्तुप्रदानरूपया एतदेव समुदायेनाह- ' न वि वदण-माणणपूयणाए ' नापि वन्दनमाननपूजनया ' भित्त्स्व गवेसियव्व ' भैक्ष गवेपित-

आदि को पढ़ा दूंगा तो मुझे इसके घटों से भिक्षा मिलती रहेगी " ऐसे विचार से जो भिक्षा प्राप्त हो तो वह भिक्षा भी मुनि को नहीं लेनी चाहिये । इसी तरह जिस भिक्षा की प्राप्ति में युगपत् दम्भन, रक्षण और शासन इनका प्रयोग करना पड़ता हो उस तरह से भी मुनि को भिक्षा की गवेपा नहीं करनी चाहिये । तथा (न वि वदणाए, न विमाणणाए, न वि पूयणाए, न वि वदणमाणणपूयणाए, न वि हीलणाए, न वि निंदणाए, न वि गरिहणाए, न वि हीलणा निंदणा गरिहणाए भित्त्स्व गवेसियव्व) जिस भिक्षा की गवेपणा करने में साधु को दाता की " आप की गुणराशि दिगन्तक फैली हुई है- आपकी प्रशंसा मैं ने पहिले से ही सुन रखी है परन्तु साक्षात्कार आप का आज ही हुआ है " इस प्रकार से वदना-प्रशंसा करनी पड़े ऐसी भिक्षा साधु को कल्प्य नहीं है । यहा वदन शब्द प्रशंसार्थक है । जिस भिक्षा की प्राप्ति में दाता को आमन आदि का प्रदान पूर्वक सन्मान करके अर्थात् आसनादि प्रदान द्वारा दाता को प्रसन्न करके भिक्षा की प्राप्ति करनी पड़े-ऐसी भिक्षा भी साधु को लेना उचित नहीं है । इसी तरह दाता

तेने त्याથી लिक्षा भज्या करशे," એવા વિચારથી જે લિક્ષા પ્રાપ્તથાય તે લિક્ષા પણ સાધુને કદપે નહી વળી જે લિક્ષાની પ્રાપ્તિમા યુગપત્,દલ,રક્ષણ અને શાસનનો પ્રયોગ કરવો પડે એ પ્રકારની લિક્ષાની પ્રાપ્તિ મુનિને કદપે નહી તથા (ન વિ વદ નાએ, ન વિમાણનાએ, ન વિ પૂયનાએ, ન વદણમાણણપૂયનાએ, ન વિ હીલનાએ ન વિ નિંદનાએ, ન વિ ગરિહનાએ ન વિ હિલના નિંદના ગરિહનાએ ભિક્ષ્વ ગવે સિયવ્વ) જે લિક્ષાની પ્રાપ્તિ માટે સાધુને દાતાની ' આપની ગુણરાશિ દિગન્ત સુધી વ્યાપેલ છે, મે આપની પ્રશંસા પહેલેથી જ સાંભળી હતી પણ આપનો સાક્ષાત્કાર તો આજે જ થયો " એ રીતે વદણા-પ્રશંસા કરવી પડે એવી લિક્ષા સાધુને કદપે નહી અહી વદન શબ્દ પ્રશંસાના અર્થમા વપરાયો છે આસ-નાદિ આપીને દાતાનું મન્માન કરવું પડે અથવા તે રીતે તેમને પ્રમત્ત કરવા પડે તે પ્રકારની લિક્ષા પણ સાધુને કદપે નહી વળી દાતાને પોતાની તરફથી

भैक्ष न गवेपितव्यम् । तथा-‘ न वि ढमणाए ’ नापि दम्भनया=मायाप्रयोगेण
 भैक्ष गवेपितव्यम्, एव ‘ न वि रक्खणाए ’ नापि रक्षणया=दायकवस्तुरक्षणेन,
 ‘ न वि सासणाए ’ नापि शासनया=शिक्षणेन=तत्र पुत्रपौत्रादिक शिक्षयिष्या-
 भीति कथनेन समुदायेनाह—‘ न वि ढमणरक्खणसासणाए ’ नापि दम्भन-

वडा भारी विद्वान् ह अतः मुझे यह अच्छी तरह अच्छी भिक्षा देगा,
 इस प्रकार के उपायों का जिस भिक्षा की प्राप्ति में सहारा लेना पड़े
 वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं कहें गई है, अर्थात् इस प्रकार की
 क्रिया से मुनि को भिक्षा छेने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये । तथा
 (न वि ढमणाए) मायाचारी का सहारा लेकर भी भिक्षा वृत्ति मुनि
 को नहीं करनी चाहिये, अर्थात् जिस भिक्षा की गवेपणा करने में
 माया का प्रयोग करना पड़े ऐसी भिक्षा भी मुनिजन को कल्प्य नहीं
 है । (न वि रक्खणाए, न वि सासणाए, न वि ढमणरक्खणसासणाए
 भिक्ख गवेसियव्व) इसी तरह जिस भिक्षा की गवेपणा करने में-प्राप्ति
 करने में-दायक की वस्तु के संरक्षण का भार अपने ऊपर आया हो,
 अर्थात्-दाता यद कहे कि “ महाराज ! आप इस वस्तु को देखे रहना
 मैं अभी आकर आपको भिक्षा देता हूँ-इस प्रकार दाता अपनी वस्तु के
 संरक्षण करने का भार मुनि को सौंपता हो और पीछे आकर भिक्षा
 देता हो तो वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं है । इसी तरह जिस भिक्षा
 की प्राप्ति में मुनि को यह भाव जगे कि “ मैं इस दाता के पुत्र पौत्र

पाडीने दाता पासैथी सारा प्रमाणुमा सारी लिक्षानी आशा राअवी, वगेरे
 उपायेना जे लिक्षामा सडारे लेवे पडे तेवी लिक्षा साधुओने उट्ठे नडी
 ओट्ठे के ओ प्रकारना उपायेथी साधुओओ लिक्षा लेवाना प्रयत्न करवा
 ओओ नडी तथा (न वि ढमणाए) मायाचारीनी भदद लधने पणु मुनिओ
 लिक्षावृत्ति करवी ओओ नडी ओट्ठे के जे लिक्षानी प्राप्ति भाटे मायाने
 प्रयोग करवे पडे ओवी लिक्षा मुनिओने उट्ठे नडी (न वि रक्खणाए,
 न वि सासणाए, न वि ढमणरक्खण सासणाए भिक्ख गवेसियव्व) ओ ज प्रमाणु
 जे लिक्षानी प्राप्तिमा, दातानी वस्तुना संरक्षणुने लार पोताना पर आव्यो
 डोय, ओट्ठे के दाता ओम उडे के “ महाराज ! आप आ वस्तुनु ध्यान
 राअजे हु आपने भिक्षा आपु छु ” आ रीते दाता पोतानी वस्तुना
 संरक्षणुनी जवाअहारी मुनिने ओपे अने पछी आवीने लिक्षा अपणु करे
 तो ते लिक्षा मुनिने उट्ठे नडी ओ ज प्रमाणु जे लिक्षानी प्राप्तिमा मुनिना मनमा
 ओवे लाव ओगे के “ हु आ दाताना पुत्र, पौत्र आदिने

गवेसियच्च ' भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा ' न वि भेसणाए ' नापि भीषणया=
दायकभयोत्पादनया, ' न वि तज्जणाए ' नापि तर्जनया—" ज्ञास्यसि रे दुष्ट !
इत्यादि तिरस्काररूपया ' न वि तालणाए ' नापि ताडनया=वपेटादिदान-
रूपया, समुदायेनोन्यते—' न वि भेसणतज्जणतालणाए ' नापि भीषणतर्जन
ताडनया भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा ' न वि गारवेण ' नापि गौरवेण ' अह क्षत्रि-
योऽस्मीत्याद्यभिमानेन, ' न वि कुहणाए ' नापि कुहनया क्रोधेन, ' न वि व
णिमगयाए ' नापि वनीपकृतया-याचकवृत्त्या, समुदायेनाह—' न वि गारव-
कुहणवणिमगयाए ' नापि गौरवक्रोधवनीपकृतया भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा-
' न वि मित्तयाए ' नापि मित्रतया=दायकेन सह मैत्रीभावोत्पादनेन, ' न वि प-
त्थणाए ' नापि प्रार्थनया, " यूय दायका, याचकरक्षकाः वय याचका,

करना साधु को योग्य नहीं है । इसी तरह (न वि भेसणाए, न वि-
तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्षु गवे-
सियच्च) दायक (दाता) को भय का उत्पादन करके, " रे दुष्ट मैं
तुझे चतलाऊँगा " इस प्रकार दाता का तिरस्कार करके, दायक (दाता)
को मोरपीट करके, तथा एक ही साथ एक ही दायक (दाता) के
साथ भीषण, तर्जना और ताडना करके भिक्षा की गवेपणा नहीं
करनी चाहिये । तथा-(न वि गारवेण न वि कुहणाए, न वि वणीमग-
याए न वि गारवकुहणवणीमगयाए भिक्षु गवेसियच्च) ' मैं क्षत्रिय
हूँ " इत्यादि अभिमान रूप गौरव से, क्रोध से, एव याचक वृत्ति से,
तथा एक ही साथ गौरव क्रोध एव याचक वृत्ति से भी भिक्षा की
गवेपणा नहीं करनी चाहिये । (न वि मित्तयाए न वि पत्थणाए न वि
सेवणाए न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्षु गवेसियच्च) तथा

न वि तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्षु
गवेसियच्च " दाताने लय अतापीने " रे दुष्ट तु तने अतापी दृष्टि " अ
रीते दाताने तिरस्कार करीने, दाताने भार भागीने तथा अके साथे दाता
प्रत्ये भीषण तर्जना अने ताडना करीने भिक्षानी गवेपणा करवी न्हये नही
तथा " न वि गारवेण, न वि कुहणाए, न वि वणीमगयाए न वि गारवकुहण-
वणीमगयाए भिक्षु गवेसियच्च " " हु क्षत्रीय धु " आदि अभिमानरूप
गौरवधी, क्रोधधी, अने याचक वृत्तिधी तथा अके साथे गौरव, क्रोध अने
याचक वृत्तिधी पणु भिक्षानी गवेपणा करवी न्हये नही " न वि मित्तयाए,
न वि पत्थणाए, न वि सेवणाए, न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्षु गवे
सियच्च " तथा दातानी साथे मित्रता करीने, " आप दाता छे, याचकेना

ધ્યમ્ । તથા-‘ નવિ હીઠ્ઠાણ ’ નાપિ હીલનયા=“ ત્વ જાત્યા નીનોડસિ કર્વ
સ્વયા ભિક્ષાદીયતે ” ઇત્યાદિ દાયક જાત્યુદ્ધાટનરૂપાવમાનનયા ‘ નવિ નિંદણાપ ’
નાપિ નિન્દનયા=“ ત્વ કૃપણોડસિ, વનીપકોડસિ ” ઇતિ દાયકદોષોદ્ધાટનયા,
‘ ન વિ ગરિહણાપ ’ નાપિ ગર્હણયા= જનતમન્ન દાયકનિન્દયા, સમુદાયેનાદ-
‘ ન વિ હીલગર્નિધનગરિહણાપ ’ નાપિ હીલનનિન્દનગર્હણયા ‘ મિત્તલ-

કો અપની ઓર સે કુઝ વસ્તુ દેઠર ઝનસે ભિક્ષા કી યાતના રાગ્વ ભિક્ષા
કી ગવેષણા કરને કા તરીકા ડચિત નહીં હૈ । અર્થાત્ હસ તરીકે સે
ભિક્ષા કી યાહના કરના યોગ્ય નહીં હૈ । ઇમી તરહ યુગપત્-એક હી
દાતા કે પ્રતિ વન્દન, માનન ઓર પૂજન કા પ્રયોગ કર કે સાધુ કો ભિક્ષા
કી ગવેષણા કરના યોગ્ય નહીં હૈ । ત યા દાતા કી જાતિકા ડદ્ધાટનરૂપ
અવમાનના કરકે કિ “ તુમ તો જાતિ મેં નીચ હો ભિક્ષા કેસે દોગે ”
હસ પ્રકાર સે કહકર કે ડસે ભિક્ષા દેને કે લિયે કજુ કરના ઓર
ફિર ભિક્ષા કિ ગવેષણા નિમિત્ત ડસકે યદા જાના યદ્દ હી સાધુ કા
ભિક્ષા પ્રાપ્તિ કા તરીકા સાધુ સમાચારી કે યોગ્ય નહીં હૈ । હસી તરહ
“ તુમ કૃપણ હો વનીપક હો ” હસ પ્રકાર સે દાતા કે દોષોં કો ડદ્ધાટન
કરના ઓર ફિર ડસે ભિક્ષા દેને કે લિયે કજુ કરના યદ્દ હી સાધુ કે
લિયે ભિક્ષા કી ગવેષણા કરને કા તરીકા કલ્પ્ય નહીં હૈ । જનતા કે
સમક્ષ દાયકકી નિન્દા કરકે, તથા એક હી સાથ, એક હી (દાતા)
દાયક કે પ્રતિ હીલના, નિન્દના તથા ગર્હણા કરકે ભિક્ષા કી ગવેષણા

કોઈ વસ્તુ આપીને તેની પાસેથી ભિક્ષા મેળવવાની આશા રાખીને ભિક્ષાની
ગવેષણા કરવી તે યુક્તિ પણ સાધુને માટે યોગ્ય નથી એટલે કે આ યુક્તિથી
ભિક્ષા મેળવવાની ઇચ્છા રાખવી તે યોગ્ય નથી વળી યુગપત્-એક જ દાતા
પ્રતિ વન્દન, માનન, પૂજન, આદિનો પ્રયોગ કરીને ભિક્ષાની ગવેષણા કરવી તે
સાધુને માટે ઉચિત નથી તથા દાતાની જાતિના ઉલ્લેખરૂપ તિરસ્કાર કરીને
દાતા “ તુ તો નીચ છે, ભિક્ષા કેવી રીતે દઈશ ” આ રીતે કહીને તેને
ભિક્ષા અર્પણ કરવાને માટે કજુ કરવો અને પછી ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ માટે તેને
ત્યા જવું, એ ભિક્ષા પ્રાપ્તિનો ઉપાય સારા આચાર વાળા સાધુને માટે ઉચિત
નથી એ જ પ્રમાણે “ તમે કજુસ છો વનીપક છો ” એ રીતે દાતાના દોષો
જાહેર કરીને પછી તેને ભિક્ષા દેવા માટે કજુ કરવો એ ઉપાય પણ સાધુને
ભિક્ષાપ્રાપ્તિ માટે કલ્પતો નથી, લોકોની સમક્ષ દાતાની નિન્દા કરીને તથા
એક સાથે દાતાની હિલના (તિરસ્કાર) નિન્દા, તથા ગર્હણા કરીને ભિક્ષાની
ગવેષણા કરવી તે સાધુને

‘भिक्षालाभो भविष्याति न वे’ त्यादि विपादरहितः, तथा—‘अपरिततजोगी’ अपरितान्तयोगी=भलाभादिषु तन्तनाटादि शब्दवर्जितः, तथा—‘जयण-घडणकरणचरियविणयगुणजोगसपउत्ते’ यतनघटनकरणचरितविनयगुणयोग-सप्रयुक्तः, तत्र-यतन प्राप्तेषु सयमयोगेषु उद्यमः, घटनम्=अप्राप्तसयमयोगप्राप्ति चेष्टनम्, एतद् द्वय कुरुते यः स यतनघटनकरणः, तथा—‘चरितविनयः=सेवितो येन स चरितविनयः, तथा-गुणयोगेन=समाधिगुणयोगेन सप्रयुक्तो यः स-गुण योगसप्रयुक्ताः, एतेषा कर्मधारयः, एतादृशो ‘भिक्षू’ भिक्षुः=साधु भिक्षु-सणानिरए’ भिक्षौपणानिरतः=भिक्षागवेपणाया निरतो भवेदिति सम्बन्ध, एवम्भूतेन भिक्षुणा भैक्ष गवेपितव्यमिति भावः । अथोपसहरन्नाह—‘इम च’ इत्यादि—‘इम च ण सव्वजगज्जीवरक्खणदयद्वयाए पावयण’ इदं च खलु ‘पावयण’ प्रवचन ‘सव्वजगज्जीवरक्खणदयद्वयाए’ सर्वे ये जगज्जीवाः=पट्ट-जीवनिकायाः, तेषा रक्षणरूपा या दया=अनुकम्पा तदर्थ-सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थम् ‘भगवया’ भगवता महारीरेण ‘सुकहिय’ सुकथितं न्यायाग्राधितत्वात्,

रहित होकर, अकरुण-अपने दुःख को किसी के पास किसी भी रूप में प्रकट नहीं करके, अविपादी—“भिक्षा का लाभ मुझे होगा या नहीं होगा” इस प्रकार के विपाद भाव को छोड़ करके अपरिततजोगी-भिक्षावृत्ति नहीं मिलने पर तनतनाने की वृत्ति का परित्याग करके, तथा-यतनघटनकरण-प्राप्त सयम में उद्यमशील तथा अप्राप्त सयम की प्राप्ति करने में निरन्तर चेष्टाशील, ऐसा साधु कि जो चरित विनय-विनय से युक्त बना हुआ है, तथा गुणयोगसप्रयुक्त-समाधिगुण के योग से जो युक्त हो रहा है ऐसा होकर भिक्षु-मुनि भिक्षौपणा में-भिक्षा की गवेपणा करने में निरत होवे । (इम च ण पावयण) यह प्रवचन (सव्वजगज्जीवरक्खणदयद्वयाए) पट्ट निकायरूप जगत के जीवों की रक्षणरूप दया के निमित्त (भगवया सुकहिय) भगवान्

अविपादी—“मने भिक्षानो लाभ भण्णे के नहीं भण्णे” ये प्रकारना विपाद भावने छोड़ने, अपरिततजोगी-भिक्षा नहीं भण्णता तनतनाव नी वृत्तिने परि त्याग करीने, तथा यतनघटनकरण-प्राप्त सयममा उद्यमशील तथा अप्राप्त सयमनी प्राप्ति करवामा निरन्तर प्रयत्नशील, ऐसे साधु के चरितविनय विनयथी युक्त थयेले छे, तथा गुणयोगसप्रयुक्त-समाधि गुणना योगथी के युक्त थयेले छे, ऐसे थईने भिक्षु-मुनि भिक्षानी गवेपणा करवाने प्रयत्नशील थाय “इमच ण पावयण” आ प्रवचन “सव्वजगज्जीव रक्खणदयद्वयाए” जगतना छकायना जीवोनी रक्षाइए द्याने निमित्ते “भगवया सुकहिय”

दीयतामस्मभ्य ” मित्यादिरूपया, ' नपि सेवणया ' नापि सेवनया=नापि सेवावृत्त्या, समुदायेनाह—' न पि मितयपत्तण सेवणाए ' नापि मित्रता प्रार्थना सेवनया भक्ष गवेपितव्यम् । तर्हि यच्च गवेपितव्यम् ? इत्याह—' अण्णाए ' अज्ञातः= ' धनिकोऽय प्रजितः ' इति दायकजनैरज्ञातः, ' अगद्धिण ' अगृद्धाः= आहारादिषु गृद्धभाववर्जितः, ' अदुट्ठे ' अद्विष्टः—आहारेषु दायकेषु वा द्वेषभाववर्जितः, ' अदीणे ' अदीन = दीनतावर्जितः, ' अविमणे ' ' अविमनाः=अश्रमादिप्रयुक्तमान-सिकविकाररहितः, ' अकलुणे ' अक्लृण = मरुदुःस्वामर्दशक ' अविसाई ' अविषादी=

दायक-दाता के साथ मित्रता करके, " आप दाता हैं—याचकों के सरक्षक हैं, हम याचक हैं अतः आप हमें भिक्षा दीजिये ऐसी दाता से प्रार्थना करके, तथा दाता की सेवा वृत्ति करके भिक्षा की गवेपणा नहीं करनी चाहिये । इसी तरह इन तीनों बातों को एक साथ किसी दाता के साथ प्रयुक्त करके भिक्षा की गवेपणा साधु को नहीं करनी चाहिये । किन्तु (अण्णाए अगद्धिण अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाई अपरिततजोगी-जयण घटण करणचरिय विनय गुणजोग सपउत्ते भिक्षु भिक्षुसणाए णिरए) अज्ञात-दयिक (दाता) जनों से " यह साधु धनिक थे और धनिक अवस्था से दीक्षित हुए हैं " इस रूप से अज्ञात बनकर अगृद्ध-आहार आदि में गृद्धभाव से वर्जित होकर, अद्विष्ट-आहार अथवा दाता में द्वेषभाव से विहीन होकर, अदीन-दीनता के भाव से रहित होकर, अविमना-भिक्षा के नहीं मिलने पर मानसिक विकार से

सरक्षक छौ, अमे याचक छीअे, तो आप अभने लिखा आपो " अेवी दाताने प्रार्थना करीने तथा दातानी सेवावृत्ति करीने लिखा प्राप्त करवी जेधअे नही अे न रीते अे त्रल्ले जाणतोना दाता पासे अेक साथे प्रयोग करीने साधुअे लिखानी गवेपणा करवी जेधअे नही पणु " अण्णाए अगद्धिण अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाई अपरिततजोगी जयणघटणकरणचरियविनयगुण जोगसपउत्ते भिक्षु-भिक्षुसणाए णिरए " अज्ञात—" आ साधु धनिक उता अट्ठे के धनिक स्थितिमाथी दीक्षित थयेल छे " अे विषे दाताअेथी अज्ञात रहीने अगृद्ध-आहार आदिमा गृद्ध भावथी रहित जनीने, अद्विष्ट-आहार अथवा दाता प्रत्ये द्वेष भाव रहित थधने, अदीन-दीनताना भावथी रहित थधने, अविमना-भिक्षा न भजना छता पणु मानसिक विकारथी रहित थधने अक्लृण-कोध पणु प्रकारे पोताना हु जने कोध पणु रीते प्रगट करीने,

કર્તવ્ય છે કે છદ્ધકાય કે જીવો કી રક્ષા કરે । ક્યો કે યહ લોક
 હન્નો જીવો સે ભરા દુઆ છે અતઃ અપની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ સયમિત રગ્વને
 સે છદ્ધકાય કે જીવો કી રક્ષા હોતી છે । મુનિજન ડસ અહિંસા મહા-
 વ્રત કે પાલક હોતે હેં અતઃ અનેકે લિયે પ્રમુ કા આદેશ છે કે વે
 એસે ઉઠઠ આહાર આદિ કી ગવેષણા કરને મેં નિરત રહેં કે જો શુદ્ધ
 હો, અકૃત, અકારિત, અનનુમોદિત, અનાદૃત, અનુદિષ્ટ, અક્રીતકૃત,
 કયકોટિવિશુદ્ધ, શક્તિાદિદોષવર્જિત, આધ્યાકર્માદિ દોષો સે વિહીન
 એવ જીવજન્તુ રહિત હો । એના હી આહારાદિ અનેકે અનેકી સામાચારી કે
 અનુસાર કલ્પિત કહા ગયા છે । ડસસે વિપરીત અનેકે અહિંસામહાવ્રત
 કે પ્રતિકૂલ કહા ગયા છે । ડમલિયે અનેકે ઉપાશ્રય મે દાતા દ્વારા
 દેને કે લિયે લાયે ગયે આહાર કો કમી નહીં હેના ચાહિયે । ચિકિત્સા
 આદિ કરકે જિસમિશ્ના કી પ્રાપ્તિ હો વહ મી અનેક વર્જનીય કહી
 ગઈ છે । કારણ મુનિજન સિદ્ધવૃત્તિ કે વારક હોતે હેં ઓર અચાચક-
 વૃત્તિ વાલે હોતે હેં, ડસ પ્રકાર કે વ્યવહાર સે પ્રાપ્ત મિશ્ના મેં સિદ્ધવૃત્તિ
 કા સરક્ષણ નહીં હોતા છે । મિશ્ના કી ગવેષણા મે દમ કા આચરણ નહીં
 હોના ચાહિયે, દાયક (દાતા) કી વરતુ કે રક્ષણ કા પ્રશ્ન નહીં હોના
 ચાહિયે ઓર ન કોઈ ંસી વાત હી હોના ચાહિયે કે જિમસે મુનિ કે

જીવોની રક્ષા કરે કાણુ કે આ લોક એ જ જીવોથી ભરેલ છે, તેથી પોતાની
 દરેક પ્રવૃત્તિ સયમિત રાખવાથી છઞાયના જીવોની રક્ષા થાય છે મુનિજન
 આ અહિંસા મહાવ્રતના પાલક હોય છે, તેથી તેમને માટે ભગવાનનો આદેશ
 છે કે તેઓ એવા ઉચ્છ આહાર આદિની ગવેષણા કરે કે જે શુદ્ધ હોય,
 અકૃત, અકારિત, અનનુમોદિત,, અનાદૃત, અનુદિષ્ટ, અક્રીતકૃત, નવકોટિ વિશુદ્ધ
 શક્તિ આદિ દોષ રહિત, આવાકર્માદિ દોષોથી રહિત અને જીવજન્તુ રહિત
 હોય એવો આહાર જ તેમની સામાચારી અનુસાર તેમને માટે ઉલ્પે તેવો
 ઉદેલ છે તેનાથી ઉલટો આહાર અહિંસા મહાવ્રતને પ્રતિકૂળ ગણાયો છે
 તેથી તેમણે ઉપાશ્રયમા દાતા દ્વારા અર્પણ કરવા માટે લેવાયેલ આહાર ડહી
 લેવો ભેધએ નહી ચિકિત્સા આદિ ડગીને જે લિદ્ધાની પ્રાપ્તિ થાય તે પણ
 તેમને માટે ત્યાગ્ય ગણેલ છે, કારણ કે મુનિજન સિદ્ધવૃત્તિના ધારક હોય
 છે તથા અચાચક વૃત્તિ વાળા હોય છે આ રીતે મેળવેલ આહારમા મિહવૃત્તિ
 તથા અચાચકવૃત્તિનુ મગ્ધણ થતુ નથી લિદ્ધાની ગવેષણામા દલનુ આચરણ
 થવુ ભેધએ નહી, દાતાની વન્તુના ન્દણનો પ્રશ્ન ભલો થવો ભેધએ નહી
 કે કોઈ વાત ન બનવી ભેધએ કે જેથી મુનિના આચારવિચારમા અન્તર પડે

‘ અત્તહિય ’ આત્મહિતમ્=આત્મના જીવાના હિત-હિતકારણાત્, ‘ પેચ્ચામાવિય ’
 પ્રેત્યમાવિક-પ્રેત્ય = જન્માન્તરે ભવતિ=શુભફલતયા પરિણમતીત્યેવ શીલમ્,
 તથા-‘ આગમેસિ ભદ્ર ’ આગમિત્યદ્ ભદ્રમ્=માવિસ્ત્યાણજનકમ્ ‘ સુદ્ર ’
 શુદ્ધ=નિર્દોષમ્ ‘ નેયાઉય ’ ન્યાયિક=ન્યાયયુક્તમ્ ‘ અકુટિલં ’ અકુટિલમ્
 ઋજુમોક્ષપ્રાપકત્વાત્, ‘ અણુત્તર ’ અનુત્તરમ્-સર્વપ્રધાનત્વાત્, તથા-‘ સન્વ-
 દુક્લપાવાણ ’ સર્વદુઃસ્વપાપાના ‘ વિડસમણ ’ વ્યુપશનમ્=ઉપશમકારકમિદ
 પ્રવચનમિદ પ્રવચનમિતિ પૂર્વેણ સમ્યન્થ ॥ મુ.૫ ॥

મહાવીર ને કહ્યા છે-હવે કથન મે કિસી મી તરહ સે યુક્તિ ઓર શાસ્ત્ર
 સે ઘાધા નહીં આતી હૈ । (અત્તહિય) યહ જીવોં કા હિતકારક હૈ
 ઓર (પેચ્ચામાવિય) પરમત્ત મેં શુભ ફલરૂપ સે યહ પરિણમતા હૈ ।
 હસીલિયે (આગમેસિભદ્ર) ભવિષ્યકાલ મેં યહ કલ્યાણજનક હૈ ।
 (સુધ્ધ) ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત હોને કે કારણ હસમેં કિસી મી
 તરહ સે કોઈ પૂર્વાપરવિરોધરૂપ દોષ નહીં આતા હૈ-હસલિયે શુદ્ધ-
 નિર્દોષ હૈ, તથા (નેયાઉય) ન્યાયયુક્ત હૈ । (અકુટિલ) હસકી આરા-
 ધના કરને સે જીવ મોક્ષ કો પ્રાપ્ત કરલેતે હૈ હસલિયે યહ અકુટિલ-
 ઋજુ હૈ । (અણુત્તર) સમસ્ત સિદ્ધા તોં મેં હસકી પ્રધાનતા હોને સે યહ
 અનુત્તર હૈ । તથા (સન્વદુક્લપાવાણવિડસમણ) સમસ્ત દુઃખોં કા
 ઓર પાપોં કા યહ ઉપશમકારક હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા યહ પ્રકટ કર રહે હૈં કિ જો
 અહિંસારૂપ સવરદ્વાર કો પાલન કરને કે લિયે ઉચત હૈં ઉનકા યહ

ભગવાન મહાવીરે કહેલ છે-આ કથનમા કોઈ પણ પ્રકારે-યુક્તિ અને શાસ્ત્રથી
 વાધો આવતો નથી “ અત્તહિય ” તે જીવોનું હિતકર્તા છે અને “ પેચ્ચામાવિય ”
 પરભવમા શુભ ફળરૂપે તે પરિણમે છે તેથી “ આગમેસિભદ્ર ” ભવિષ્યકાળમા
 તે કલ્યાણજનક છે “ સુદ્ર ” ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાથી તેમા કોઈ
 પણ પ્રકારે કોઈ પૂર્વાપર વિરોધરૂપ દોષ આવતો નથી તેથી શુદ્ધ-નિર્દોષ છે,
 તથા “ નેયાઉય ” ન્યાયયુક્ત છે “ અકુટિલ ” તેની આરાધના કરવાથી જીવ
 મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે તે કારણે તે અકુટિલ-ઋજુ છે, (અણુત્તર) સમસ્ત
 સિદ્ધાન્તોમા તે મુખ્ય હોવાથી તે અણુત્તર-સર્વોત્તમ છે તથા “ સન્વદુક્લપાવાણ
 વિડસમણ ” સમસ્ત દુઃખો તથા પાપોનું તે ઉપશમન કરનાર છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રકટ કરે છે કે જેઓ અહિંસા
 રૂપ સવરદ્વારનું પાલન કરવાને તરફ છે, તેમનું એ કર્તવ્ય છે કે—છકાયાના

अहिंसाया पञ्च भावना भवन्तीति ताः प्रतिपादयन् प्रथमामीर्यासमिति रूपां भावनामाह—‘तस्त इमा’ इत्यादि—

मूलम्—तस्मा इमा पञ्च भावणाओ पढमस्स वयस्स हुंति, पाणाइवायवेरमाणं परिरक्खणद्वयाए । पढमं-ठाण-गमण गुणजोगजुंजणजुगतर-निवइयाए दिट्ठीए इरियव्व कीड-पयंगतसथावरदयावेरेण निच्च पुप्फफलतयपवालकदमूल-दगमद्वियवीयहरिय परिवज्जणए सम्म, एव खु सव्वे पाणा ण हीलियव्वा न निदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिसियव्वा न छिदियव्वा न भिदियव्वा न वहेयव्वा न भय दुक्खं च किंचिलव्वा पावेउ’जे एव इरियासमियजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥ सू० ६ ॥

पञ्चाकर उससे मुनिजन मात्रा में भिक्षा लेते हैं। इसी तरह और भी कौन २ सी प्रवृत्तिया भिक्षा की गवेपणा करने में बाधक होती हैं— वे सब इस सूत्र में प्रदर्शित की गई हैं,। मुनि को भिक्षा की गवेपणा करते समय अज्ञात, अगृह्य, अद्विष्ट, अदीन, अविमन, अकरुण, अविषादी और अपरितानयोगी आदि स्थिति वाला रहना चाहिये। तभी जाकर पूर्णरूप से अहिंसा महाव्रतरूप सवरद्वारपलता है ॥—॥ सू० ५ ॥

पासेथी मुनिजन परिमित प्रमाणमा भिक्षा अडणु उरे ठे अे ४ प्रकारे भीणु उध उध प्रवृत्तियो भिक्षानी गवेपणा उग्गामा बाधउ थाय ठे ते अधु आ सूत्रमा गताव्यु ठे, भिक्षानी गवेपणा उरती वण्णते मुनिअे अज्ञात, अगृह्य, अद्विष्ट, अदीन, अविमन, अकरुण, अविषादी, अने अपरितानयोगी आदि स्थिति वाणा रडेवु जेधअे त्यागे ४ पूर्ण रीते अहिमा महाव्रतरूप सवरद्वारनु पालन थाय ठे ॥ सू-५ ॥

આચાર વિચાર મેં અન્તર પઢતા હો । મેં તુમ્હારે પુત્ર કો પઢાડુંગા, આપ
કે ગુણ દિગન્તતક વ્યાપક હો રહે હેં આપ ઘડે દાની હેં, મેં ને આપ કો
આજ હી દેગ્યા હેં તૈસે તો આપકી કીર્તિ કઠં ધાર સુન ચુકાજ, યે મન
ઘાતે એસી હેં જો મુનિ કી આત્મા કો હીન ઘનાતી હેં ઉસે અપને
કર્તવ્ય સે ગિરાતા હેં । ઇન સવ ઘાતોં સે જો આત્મા કા પતન હોતા હે
વહ સઘસે ઘડી હિંમા હે । ઇમીલિયે મુનિ કો ઇમ પ્રકાર કે વ્યવહાર
સે પ્રાપ્ત હોને ચાલી ભિક્ષા કી ગવેષણા કરને કા નિષેધ કિયા ગયા હે ।
તથા દાતા કે પ્રતિ મુનિ કો એસા બી વ્યવહાર નહીં કરના ચાહિયે કિ
જિસસે ઉસકી આત્મા મેં સ્ફેશ ભાવ જમે, જૈસે—‘તૂ કૃપણ હે, વનીપક-
યાચક હે તૂ કયા ભિક્ષા દેગા, નીચ વ્યક્તિ જો હોતે હેં વે ભિક્ષા નહીં
દેતે હેં’” ઇત્યાદિ અપમાન જનક શબ્દોં મેં એક તો ભાષા સમિતિ નહીં
પલતી હે, તથા એસે વ્યક્તિયો મેં જિસ કિસી પ્રકાર સે ભિક્ષા દેને કા જોગ
જાગતા હે જો ઉસ ભિક્ષા મેં શુદ્ધિ કા વાધક હોતા હે, ભિક્ષા દેતે
સમય જિસ આત્મા મેં સ્ફેશ જમે વહ ભિક્ષા મુનિજનોં કો અગ્રાણ
કહી ગઈ હે । જિસ પ્રકાર ફૂલ કો યાધા ન પહુંચાકર ઉસસે અમર
રસ પી લેતા હે ઉસી પ્રકાર દાતા કો કિસી બી પ્રકાર કા સ્ફેશન ન

“હુ તમારા પુત્રને લાણાવીરા આપના ગુણો દિગન્ત મુખી ફેલાયેલ છે, આપ
મોટા દાતા છો, આપની કીર્તિ તો મેં ઘણીવાર માલણી છે પણ આપને
જોવાનો લાભ તો આજ જ મળ્યો” આ બધી વાતો એવી છે કે જે મુનિના
આત્માને હીન બનાવે છે તેને પોતાની ફરજ ચૂકાવે છે આ બધી વાતોથી
આત્માનુ જે પતન થાય છે તે સૌથી મોટી હિંસા છે, તે કારણે એવા પ્રકાર
ના વ્યવહારની પ્રાપ્ત થતી ભિક્ષા અહણુ કરવાનો મુનિને મોટે નિષેધ છે—
તથા મુનિએ દાતા પ્રત્યે એવો વ્યવહાર પણ ન કરવો જોઈએ કે જેથી તેના
આત્મામા ક્લેશ થાય, હા ત ‘તુ કૃપણ છે, વનીપક યાચક છે, તુ શુ
ભિક્ષા આપી શકવાનો છે, જે નીચ વ્યક્તિ હોય છે તે ભિક્ષા દેતી નથી” ઇત્યાદિ
અપમાન જનક શબ્દોમા એક તો ભાષા સમિતિનુ પાલન થતુ નથી, તથા
એવી વ્યક્તિઓમા ગમે તે રીતે ભિક્ષા આપવાનો બુદ્ધિસો પેદા થાય છે, જે
તે ભિક્ષાની શુદ્ધિમા બાધક થાય છે ભિક્ષા દેતી વખતે દાતાના આત્માને
ક્લેશ થતો હોય તો એવી ભિક્ષા મુનિજનોને મોટે અગ્રાહ્ય—(ન સ્વિકારવાને
યોગ્ય) દર્શાયેલ છે જેમ ફૂલને તુકરાન પહોચાડ્યા વિના ભમરા તેમાથી
રસપાન કરે છે તેમ દાતાને કોઈ પણ પ્રકારનો ક્લેશ પહોચાડ્યા વિના તેમની

‘પદમ’ પ્રથમમ્=ઈર્યાસમિતિ ભાવનામાહ—‘ઠાણગમણગુણજોગજુજણજુગતરનિ-
ચઢ્યાણ’ સ્થાનગમનગુણયોગયોજનયુગાન્તર-નિપાતિકયા—‘ઠાણ’ સ્થાનમ્ =
ઉપવેશનમિત્યર્થઃ, ‘ગમણ’ ગમન=ચલનમ્, તત્ર ગુણઃ=ત્રસસ્થાવરોપધાતવર્જન-
રૂપઃ, તસ્ય યોગઃ=સમ્યન્વત્ત યોજયતિ=કરોતિ યા સા સ્થાનગમનગુણયોગયો-
જના, તથા-યુગાન્તરે=યુગપ્રમાણભૂભાગે નિપતતિ યા સા યુગાન્તરનિપાતિકા,

અનુકૂલ પડેનેવાલી થોડી વટુત પ્રવૃત્તિયા સ્થૂલ દૃષ્ટિ સે વિશેષ રૂપ મેં
ગિનાઈ ગઈ હૈ । જો ભાવના કે નામ સે પ્રસિદ્ધ હૈ । યદિ હન ભાવ-
નાઓં કે અનુસાર ચરાચર વર્તાવ કિયા જાય તો ગૃહીત વ્રત ઉત્તમ
ઔષધિ કે સમાન પ્રયત્નશીલ કે લિયે સુદર પરિણામ કારક સિદ્ધ
હોતે હૈ । યહી વાત “પરિરક્ષણદ્વાણ” હસ પદ દ્વારા યહાં ધ્વનિત કી
ગઈ હૈ । હન પાંચ ભાવનાઓં મેં જો (પદમ) પહિલી ઈર્યાસમિતિ
નામકી જો ભાવના હૈ વહ હસ પ્રકાર હૈ (ઠાણગમણગુણજોગજુજણ-
જુગતર નિચઢ્યાણ) સ્વ પર કો કલેશ ન હો હસ પ્રકાર યત્ન પૂર્વક
ગમન કરના હસકા નામ ઈર્યાસમિતિ હૈ । હસી કા વિશેષ સુલાશા
સૂત્રકાર હસપદ દ્વારા કર રહે હ-સ્થાન-વૈઠના ઓર ગમન-ચલના
હનમેં જિસકે દ્વારા હસ પ્રકાર કો પ્રવૃત્તિ હોની વાલિયે કિ જિસસે
ત્રસ ઓર સ્થાવર જીવોંકા ઉપગ્રાન્તક ન હો, હસ ગુણરૂપ સબધ કો જો
જોડેને ને વાલી હો તયા જિસસે યુગપ્રમાણ ભૂમિભાગ કા અવલોકન
હો રહા હો, અર્થાત્ ચલતે ૨ સાધુ અપને ભાગે કી યુગપ્રમાણ ભૂમિ કા

આવનારી થોડી ઘણી પ્રવૃત્તિયો સ્થૂલ દૃષ્ટિથી વિશેષ રૂપે ગણાવવામા આવેલ
છે, જે ભાવનાને નામે પ્રસિદ્ધ છે જે તે ભાવનાઓ પ્રમાણે બરાબર વર્તન
કરાય તો શ્રદ્ધા કરાયેન યત પ્રયત્નશીલ વ્યક્તિને માટે ઉત્તમ ઔષધિ સમાન
કાર્ય સાધક સિદ્ધ થાય છે એ જ વાત “પરિરક્ષણદ્વાણ” પદ દ્વારા અહીં
દર્શાવવામા આવી છે એ પાંચ ભાવન ઓમા જે “પદમ” પહેલી ઈર્યાસમિતિ
નામની જે ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે “ઠાણગમણજોગજુજણજુગતરનિચઢ-
્યાણ” પોતાને કે પરને કલેશ ન થાય તે પ્રમાણે જતન પૂર્વક ગમન કરવું
તેનું નામ ઈર્યાસમિતિ છે તેનું વધારે સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર આ પદ દ્વારા કરે
છે-સ્થાન-બેસવું અને ગમન-ચાલવાની ક્રિયામા તેમના દ્વારા એ રીતની પ્રવૃત્તિ
થવી જોઈએ કે જેથી ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની હત્યા ન થાય, આ ગુણ
રૂપ સબધને જે જોડનારી હોય તયા જેવી યુગ પ્રમાણ ભૂમિભાગનું અવલો-
કન થવું હોય એટલે કે ચાલતી વખતે પોતાની આગળથી યુગ પ્રમાણ ભૂમિનું

ટીકા--‘તસ્સ’ ઇત્યાદિ ।

‘તસ્સ’ તસ્ય પ્રમિદ્ધસ્ય ‘પદમસ્સ વયમ્ય’ પ્રથમમ્ય વ્રતસ્ય = અહિંસા વ્રતસ્ય ‘ઇમા પચ’ ઇમાઃ પચ ‘ભાવનાઓ’ ભાવનાઃ=માન્યતે ગમ્યતે આત્મા યામિસ્તાઃ ઈર્યાસમિત્યાદયઃ ‘હૃતિ’ મવન્તિ । કિમર્થે પચ ભાવના મવન્તી ? -ત્યાહ - ‘પાણાઢવાયવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાદ્’ પ્રાણાતિપાત-વિરમણપરિરક્ષણાર્થય = પ્રાણાતિપાતવિરમણલક્ષણસ્ય પ્રથમમહાવ્રતમ્ય પરિરક્ષણાર્થય । તથા

इन व्रतों को स्थिर रखने के लिये प्रत्येक व्रत की पांच २ भावनाएँ हैं सो अब सूत्रकार अहिंसाव्रत की जो पांच भावनाएँ होती हैं उनमें सब से पहिली ईर्ष्या समितिरूप पहिली भावना को प्रकट करते हैं—
‘तस्स इमा’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) વસ પ્રમિદ્ધ (પદમસ્સ વયસ્સ) પ્રથમવ્રત કી (ઇમા પચ ભાવનાઓ હૃતિ) યે ઈર્ષ્યાસમિતિ આદિ પાંચ ભાવનાઈ હોતી હૈ । કયોં કિ इन भावनाओं से (पाणाड्वायवेरमणपरिरक्षणद्वयाद्) प्राणातिपातविरमण रूप जो अहिंसा व्रत है उसकी अच्छी तरह रक्षा होती है । तात्पर्य कहने का यह है कि अत्यन्त सावधानी के साथ विशेष २ प्रकार की अनुकूल प्रवृत्तियों का सेवन न किया जाय तो स्वीकार करने मात्र से ही व्रत आत्माको अपने रूप नहीं बना सकते हैं, अर्थात् वे आत्मा में चिरस्थायी नहीं रह सकते हैं, निर्दोषरूप से सावधानी के साथ उनका पालन नहीं हो सकता है—वे यथार्थरूप में आत्मा में नहीं उतर सकते । ग्रहण किये हुए व्रत जीवन को यथार्थरूप से अपने रूप में रग सके—अपनी अटल छाप आत्मा पर जमा सके इसलिये प्रत्येक व्रत के

એ પાચ વ્રતોને સ્થિર રાખવા માટે પ્રત્યેક વ્રતની પાચ પાચ ભાવના છે હવે સૂત્રકાર અહિંસાવ્રતની જે પાચ ભાવના છે તેમાની સૌથી પહેલી ઈર્ષ્યા સમિતિ આદિ આ પાચ ભાવના પ્રગટ કરે છે—“તસ્સ ઇમા” ઇત્યાદિ

“તસ્સ” તે પ્રસિદ્ધ “પદમસ્સ વયસ્સ” પ્રથમ વ્રતની “ઇમા પચ ભાવના હૃતિ” ઈર્ષ્યાસમિતિ આદિ આ પાચ ભાવનાઓ હોય છે કારણ કે તે ભાવનાઓથી “પાણાઢવાયવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાદ્” પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ જે અહિંસાવ્રત છે તેની સારી રીતે રક્ષા થાય છે કહેવાનો ભાવ એ છે કે અત્યંત સાવધાનીથી ખાસ ખાસ પ્રકારની અનુકૂળ પ્રવૃત્તિઓનું સેવન ન કરાય તો સ્વીકાર કરવા માત્રથી જ વ્રત આત્મામાં ચિરસ્થાયી રહી શકતું નથી—નિર્દોષ રીતે સાવધાનીથી તેનું પાલન થઈ શકતું નથી તે યથાર્થ રૂપે આત્મામાં ઉતરી શકતા નથી અહીં કમચેલ વ્રતો જીવનને યથાર્થ રીતે પોતાના રંગે રંગી શકી—પોતાની અટલ છાપ આત્મા પર જમાવી શકે—આત્મામાં ઉઠાણથી પ્રવેશી શકે, તે માટે પ્રત્યેક ન

नानावज्ञातव्या भवन्ति, मुनिः प्राणि प्राणसरक्षणपरत्वात्तान्नायज्ञा विषयीकरो-
तीति भावः, एवमग्रेऽपि सर्वत्र वाक्यरचना कार्या । ' न निन्दियव्वा ' न निन्दि-
तव्या भवन्ति-परपीडावर्जनपरत्वात्, ' न गरहियव्वा ' न गर्हितव्याः भवन्ति-
लोभसमक्ष दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाविषयभूता न भवन्तीत्यर्थः, तथा- ' न हिंसि-
यव्वा ' न हिंसितव्या-पादाक्रमणादिना न हन्तव्या, भवन्ति, एव ' न छिदि-
यव्वा ' न छेत्तव्याः ग्वह्नादिना, ' न भिन्दियव्वा ' न भेत्तव्याः - कुन्दादिना,
' न वहेयव्वा ' न व्यधनीया पीडोत्पादनादिना भवन्ति । तथा - ' न भय
दुक्ख च लब्भा पावेउ ' न भय दुःख च लभ्या प्रापयितुम्, दुःख भय च प्राप
यितु योग्या न भवन्तीति भावः । एवम्-अनेन प्रकारेण ' इरिया समिजोगेण '
ईर्यासमितियोगेन ' भाविओ ' भावितो-वासितो भवति ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा
=जीव', स भावितात्मा-भवतीत्यर्थः, कीदृशो भवति ? इत्याह-'असवलमसकिलि-
ट्टनिव्वणचरित्तभावणाए ' अश्वलासकिट्ट निर्मगचारित्रभावनायाः, अश्वला=

यव्या) निंदा के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न गरहियव्वा) लोगों के
समक्ष दोषोद्घाटन पूर्वक गर्हा के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न हिंसियव्वा)
पादादि द्वारा आक्रमिक होकर हिंसा के विषयभूत नहीं बनते हैं, (न
छिदियव्वा) छेदन करने के विषयभूत नहीं बनते हैं, (न भिन्दिय
व्वा) भेदन करने के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न-वहेयव्वा)
पीडोत्पादनादि द्वारा व्यथा कष्ट पहुँचाने के योग्य नहीं बनते हैं । (न
भय दुक्ख च किञ्चि लब्भा पावेउ) और न किसी भी तरह से
भय और दुःख को प्राप्त कराने के योग्य बनते हैं । (एव) इस प्रकार
(ईरियासमितियोगेण) ईर्यासमिति के योग से (भाविओ अतरप्पा)
वासित हुआ अन्तरात्मा-जीव-भावित्वात्मा कहलाता है और यह—
(असवलमसकिलिट्टनिव्वण चरित्त भावणाए) अश्वल-मलिनता रहित

सम्भूत प्राणी " न हीलयव्वा " अवज्ञाना विषयभूत बनता नहीं ' न निन्दि-
यव्वा ' निन्दाना विषयभूत बनता नहीं, " न गरहियव्वा " लोभेनी सम्भूत
दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाना विषयभूत बनता नहीं " न हिंसियव्वा " पादादि वडे
आक्रमित धर्मने छिमाना विषयभूत बनता नहीं, " न छिदियव्वा " छेदन
करवाना विषयभूत बनता नहीं, " न भिन्दियव्वा " भेदन करवाना विषयभूत
बनता नहीं, " न वहेयव्वा " पीडा उत्पादन आदि द्वारा व्यथा पहुँचावने
योग्य बनता नहीं " न भय दुक्ख च किञ्चिलब्भा पावेउ " अने डोष पण
प्रकारे लभ्य अने दुःख प्राप्त करवाने योग्य बनता नहीं ' एव " आ प्रकारे
" ईरियासमितियोगेण " ईर्यासमितिना योग्यी " भाविओ अतरप्पा " युक्त
आत्मा-जीव-भावित्वात्मा उल्लेख्य छे अने ते "असवलमसकिलिट्टनिव्वणचरित्त

અનયો ધર્મધામ્ય, તથા, 'દિદ્દીષ' દૃષ્ટ્વા, 'કીડપયગતસથાવરદયાવરેણ' કીટપતગતસથાવરદયાવરેણ, તત્ર-કીટાઃ=ચુદ્રજન્તવો નીલદ્ધુ 'લટ' ગજાદયઃ, પતંગાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ, ઇત્યાદયઃ, ગ્રસસ્થાવરાંથેકેન્દ્રિયાઃ, તેષુ દયાવરસ્તેન, તથા- 'પુષ્પફલતયપવાલકદમૂલદગમદ્વિયયીયહરિયપરિવર્જિત્વજ્ઞ' પુષ્પફલત્વજ્ઞ-પવાલ કદમૂલદકમૃત્તિકાવીજહરિતપરિવર્જિતેન-તત્ર-પુષ્પ ફલ ચ પ્રસિદ્ધમ્, ત્વજ્ઞ=પુષ્પફલાદીના ત્વચા, પ્રવાજ્ઞ=પત્રાહુરઃ, કન્દઃ, સૂરણાદિકઃ, મૂલમ્ = મૂલક 'દગ' દક=જલમ્, મૃત્તિકા, વીજમ્, હરિતઃ=હરિતકાયઃ, એતે પરિવર્જિતા યેન સ તેન, મુનિના 'નિચ્ચ' નિત્ય 'સમ્મ' સમ્યક્=યતનાપૂર્વકમ્, ઈરિયવ્ચ 'ઈરિતવ્ય-માર્ગે ગન્તવ્યમ્ । 'એવ-સુ' એવ=અમુના મમારેણ પ્રવર્ત્તનેન સ્વલુ તસ્ય મુનેઃ 'સવ્વે' સર્વે 'પાણા' પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, 'ન હીલિયવ્વા ન હીલિયિતવ્યાઃ

જિસસે અચ્છી તરહ અવલોકન કર ચલ રહા હો ણેસી (દિદ્દીષ) દૃષ્ટિ સે (કીડપયગતસથાવરદયાવરેણ પુષ્પફલતયપવાલકદમૂલદગમ-દ્વિયયીયહરિયપરિવર્જિત્વજ્ઞ નિચ્ચ સમ્મ ઈરિયવ્ચ) લટ ગજ આદિ કુદ્ર જન્તુરૂપ કીટોં કે ઉપર તથા પતંગોં આદિ જાનવરોં કે ઉપર, એવ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં કે ઉપર ઢયા રચને મેં તત્પર બને જુળ, તથા પુષ્પ, ફલ' ત્વજ્ઞ-છાલ, પ્રવાલ, -કોપલ-પત્રાહુર, સૂરણ આદિ કદ મૂલ દક-સચિત્ત જલ, મૃત્તિકા-સચિત્તમિટ્ટી, વીજ ઓર હરિતકાય, इन सब सचित्तपदार्थों को अपने और पर के उपयोग में लाने का जीवनपर्यंत परित्याग कर चुकने वाले ऐसे मुनिजनों को देख २ कर सदा यतना पूर्वक मार्ग में गमन करना चाहिये । (एव सु) इस तरह यतनापूर्वक दृष्टि से देख देख कर चलने वाले मुनिजन के (सव्वेपाणा) समस्त प्राणी (न हीलियव्वा) अवज्ञा के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न निदि-

લેથી સારી રીતે અવલોક કરીને સાધુ ચાલતા હોય એવી "દિદ્દીષ" દૃષ્ટિથી "કીડપયગતસથાવરદયાવરેણ પુષ્પફલતયપવાલકદમૂલદગમદ્વિયયીયહરિયપરિવર્જિત્વજ્ઞ નિચ્ચ સમ્મ ઈરિયવ્ચ" લટ શબ્દ આદિ કુદ્ર જન્તુરૂપ કીટાઓ ઉપર તથા પતંગિયા આદિ જન્તુઓ ઉપર, અને એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની ઉપર ઢયા રાખવાને તત્પર બનેલ, તથા પુષ્પ, ફળ, ત્વજ્ઞ-છાલ, પ્રવાલ-કોપળ-પત્રાહુર, સૂરણ આદિ કદમૂળ, આ બધા સચેત પદાર્થોને પોતાના જ બીજના ઉપયોગમાં લેવાનો આજીવન પરિત્યાગ કરી નાખ્યો હોય એવા મુનિજનોને હમેશા જોઈ જોઈને યતના પૂર્વક રસ્તા પર ચાલવું જોઈએ "એવ સુ" આ રીતે યતનાપૂર્વક નજર વડે જોઈ જોઈને ચાલનાર મુનિજનને "

=નાવજ્ઞાતવ્યા ભવન્તિ, મુનિઃ પ્રાણિ પ્રાણસરક્ષણપરત્વાત્તાનાવજ્ઞા વિષયીકરો-
તીતિ ભાવઃ, અગ્રમગ્રેઽપિ સર્વત્ર વાક્યરચના કાર્યા । ‘ ન નિંદિયન્વા ’ ન નિન્દિ-
તવ્યા ભવન્તિ-પરપીડાવર્જનપરત્વાત્, ‘ ન ગરહિયન્વા ’ ન ગર્હિતવ્યાઃ ભવન્તિ-
લોકસમક્ષ દોષોદ્ઘાટનપૂર્વક ગર્હાવિષયભૂતા ન ભવન્તીત્યર્થઃ, તથા-‘ ન હિંસિ-
યન્વા ’ ન હિંસિતવ્યાઃ-પાદાક્રમણાદિના ન હન્તવ્યાઃ, ભવન્તિ, એવ ‘ ન ઊંદિ-
યન્વા ’ ન ઊંદિતવ્યાઃ-સ્વપ્નાદિના, ‘ ન મિંદિયન્વા ’ ન મેદિતવ્યાઃ-કુન્તાદિના,
‘ ન વહેયન્વા ’ ન વ્યથનીયાઃ પીડોત્પાદનાદિના ભવન્તિ । તથા - ‘ ન ભય-
દુઃખ ચ લઙ્ઘ્યા પાવેડ ’ ન ભય દુઃખ ચ લઙ્ઘ્યાઃ પ્રાપયિતુમ્, દુઃખ ભય ચ પ્રાપ-
યિતુ યોગ્યા ન ભવન્તીતિ ભાવઃ । એવમ્=અનેન પ્રકારેણ ‘ ઈરિયા સમિજોગેણ ’
ઈર્યાસમિતિયોગેન ‘ ભાવિઓ ’ ભાવિતો=વાસિતો ભવતિ ‘ અતરપ્પા ’ અન્તરાત્મા
=જીવ, સ ભાવિતાત્મા-ભવતીત્યર્થ, કીદ્દગો ભવતિ ? इत्याह-‘असवलमसकिलि-
ट्टनिव्वणचरित्तभावणाण ’ अश्वलासनि-ट्ट निर्गणचारित्रभावनयाः, अश्वला=

વ્યા) નિંદા કે વિષયભૂતનહીં બનતે હૈ । (ન ગરહિયન્વા) લોગોં કે
સમક્ષ દોષોદ્ઘાટન પૂર્વક ગર્હાં કે વિષયભૂત નહીં બનતે હ । (ન હિંસિયન્વા)
પાદાદિ દ્વારા આક્રમિક હોકર હિંસા કે વિષયભૂત નહીં બનતે હૈ, (ન
ઊંદિયન્વા) છેદન કરને કે વિષયભૂત નહીં બનતે હૈ, (ન મિંદિય-
ન્વા) મેદન કરને કે વિષયભૂત નહીં બનતે હ । (ન-વહેયન્વા)
પીડો ત્પાદનાદિ દ્વારા વ્યથા કષ્ટ પહુંચાને કે યોગ્ય નહીં બનતે હૈ । (ન
ભય દુઃખ ચ કિંચિ લઙ્ઘ્યા પાવેડ) ઓર ન કિસી મી તરહ સે
ભય ઓર દુઃખ કો પ્રાપ્ત કરાને કે યોગ્ય બનતે હૈ । (એ) હસ પ્રકાર
(ઈરિયાસમિયજોગેણ) ઈર્યા સમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા)
વાસિત હુઆ અન્તરાત્મા-જીવ-ભાવિતાત્મા કહલાતા હૈ ઓર ચહ—
(અસવલમસકિલિટ્ટનિવ્વણ ચરિત્ત ભાવણાણ) અશ્વલ-મલિનતા રહિત

સમન્ત પ્રાણી “ ન હીલયન્વા ” અવજ્ઞાના વિષયભૂત બનતા નથી ‘ ન નિંદિ-
યન્વા ’ નિંદાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન ગરહિયન્વા ” લોડોની સમક્ષ
દોષોદ્ઘાટનપૂર્વક ગર્હાના વિષયભૂત બનતા નથી “ ન હિંસિયન્વા ” પાદાદિ વડે
આક્રમિત થઈને હિંસાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન ઊંદિયન્વા ” છેદન
કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન મિંદિયન્વા ” ભેદન કરવાના વિષયભૂત
બનતા નથી, “ ન વહેયન્વા ” પીડા ઉત્પાદન આદિ દ્વારા વ્યથા પહોચાડવાને
યોગ્ય બનતા નથી “ ન ભય દુઃખ ચ કિંચિલઙ્ઘ્યા પાવેડ ” અને ડોષ પણ
પ્રકારે ભય અને દુઃખ પ્રાપ્ત કરવાને યોગ્ય બનતા નથી ‘ એ ” આ પ્રકારે
“ ઈરિયાસમિચજોગેણ ” ઈર્યાસમિતિના યોગથી “ ભાવિઓ અતરપ્પા ” યુક્ત
આત્મા-જીવ-ભાવિતાત્મા કહેવાય છે અને તે “અસવલમસકિલિટ્ટનિવ્વણચરિત્ત

માલિન્યરહિતા, અસવિલપ્તા=વિશુદ્ધચિત્તમાનમન. પરિણામયુક્તા, નિર્ગ્રંથા=અક્ષતા યા
 ચારિત્રભાવના તથા હેતુભૂતયા 'અહિંસા' અહિંસકઃ - સમાધનાયા અહિંસાયાઃ
 પરિપાલકત્વાત્, 'સજળ' સયતઃ=અમ્યગ્જીવરક્ષાયતનોઘતત્વાત્, 'સુસાહ'
 સુસાધુ=મોક્ષસાધકો મુનિર્ભવતિ ॥ મૂ. ૬ ॥

તથા વિશુદ્ધચિત્તમાન મનઃપરિણામ સંયુક્ત એવી હેતુભૂત અગ્વદ ચારિત્ર
 ભાવના કે પ્રભાવ સે (અહિંસા, અહિંસક હોતા હૈ, અર્થાત્ ભાવના-
 મહિત અહિંસા કા પરિપાલક હોને કે કારણ વહ હિંમાવૃત્તિ સે રહિત
 હોતા હૈ । તથા (સજળ) અન્યી તરફ સે જીવ રક્ષા કી યતના મેં ઉચિત
 હોને કે કારણ સજત હોતા હૈ । જૌર (સુમાહ) એવા હોને કે કારણ
 હી વહ સાધુ-સચ્ચા સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ-હોતા હૈ ।

ભાવાર્થ—હમ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને અહિંસાવ્રત કી રક્ષા ઓર
 સ્થિરતા કે નિમિત્ત પાંચ ભાવનાઓ મેં સે ઈર્થા સમિતિ નામકી પ્રથમ
 ભાવના કહી હૈ, । હમ ભાવના મેં ઉન્હોં ને વહ પ્રકટ ક્રિયા હૈ કિ
 અહિંસાવ્રત કા આરાધક પ્રાણી યદિ ભાવના કા નિમિત્ત નહીં મિલતા હૈ
 તો ઉસ વ્રત કા ગહરાઈ કે સાથ પરિપાલન નહીં હો સકતા હૈ । અહિંસા
 આદિ વ્રતોં કે રગ મેં આત્મા કો રગ દેનેવાલી યે ભાવના હી હૈ ।
 હસલિયે સચ્ચે અર્થ મેં અહિંસક બનને કે લિયે મુનિ કો સવસે પહિલે, ઈર્થા
 સમિતિ કા પાલન કરના ચાહિયે । હસ સમિતિ કે પાલન કરને સે

ભાવના હ "અગ્વદ-મલિતા રહિત તથા વિશુદ્ધ મન પરિણામથી યુક્ત એવી
 હેતુભૂત અક્ષત-ચારિત્રભાવનાના પ્રભાવથી "અહિંસા" અહિંસક થાય છે,
 એટલે કે ભાવનાપૂર્વક અહિંસાના પરિપાલક હોવાથી તે હિંસાવૃત્તિથી રહિત
 બને છે તથા "સજળ" સારી રીતે જીવ રક્ષાની યતનામાં તત્પર હોવાને
 કારણે સયત થાય છે અને "સુસાહ" એવા થવાને કારણે તે સુસાધુ-સાચા
 સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ-થાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે અહિંસા વ્રતની રક્ષા અને સ્થિરતાને
 માટે જે પાંચ ભાવના છે તેમાની ઈર્થાસમિતિ નામની પહેલી ભાવના બતાવી
 છે આ ભાવનામાં તેમણે એ પ્રગટ કયું છે કે અહિંસા વ્રતના આરાધક
 પ્રાણીને જે ભાવનાનું નિમિત્ત ન બળે તે તે વ્રતનું સૂક્ષ્મ રીતે પાલન થઈ
 શકતું નથી અહિંસા આદિ વ્રતોના રગમાં આત્માને રગી દેનારી આ ભાવ
 નાઓ જ છે તેથી આ આ અર્થમાં અહિંસક બનવાને માટે મુનિએ સૌથી
 પહેલા ઈર્થાસમિતિનું પાલન કરવું જોઈએ, આ સમિતિનું પાલન કરવાથી ત્રસ

द्वितीयां मनोभावनामाह—

मूलम्—वीयं च मणेण पावणं पावगं आहम्मियं दारुणं
निसंस वहवधपरिकिलेसवहुल जरामरणपरिकिलेससंकि-
लिट्ठ, न कयावि मणेण पावणं पावगं किंचि विज्जायव्व
एव मणसमिद्धजोगेण भाविओ भवड अतरप्पा असवलमस-
किलिट्ठनिव्वणचरित्त भावणाए अहिसएसैजए सुसाहु ॥सू०७॥

टीका—‘ वीय च ’ इत्यादि ।

‘ वीय च ’ द्वितीया च पुनर्भावेना मनः समितिरूपमाह—‘ पावण ’

चम और स्थावर जीवों की रक्षा होती रहती है । उठने बैठने में गमन करने में साधु ‘ जीवों की विराधना न हो ’ इस बात की विशेष सावधानी रखता है । युगप्रमाण भूमिका अवलोकन करता हुआ आगे २ के मार्ग में बढ़ता रहता है । इस तरह उसके द्वारा न कोई प्राणी हील्यितव्य होता है न निन्दितव्य होता है न गर्हितव्य होता है, और न हिंसितव्य होता है । न छेत्तव्य होता है, न व्यथितव्य होता है और न दुःख को प्राप्त कराने के योग्य ही होता है । इस प्रकार ईर्यासमिति के योग से भावितात्मा बना हुआ मुनिजन अपने अहिंसाव्रत को निर्दोष रीति से पालन करता हुआ सन्ना अहिंसक बन जाता है । तथा इस प्रकार की प्रवृत्तिशाली होने के कारण वह सुसाधु-मोक्ष को साधन करने वाला मुनि इस अर्थ को चरितार्थ करता है ॥ सू०६ ॥

अथ सूत्रकार इसव्रत की दूसरी भावना जो मनोगुप्ति है उसे प्रकट

अने स्थावर जिवेनु रक्षणु थाय छे उठवा जेमवाभा तथा गमन उरवाभा
‘ वधारे जिवेनी विराधना न थाय ’ तेनु मुनि वधारे व्यान राणे छे युग
प्रमाण लूमिनु अवलोउन उरता उरता साधु मार्गे आगण वधे छे आभ
थवाथी तेना द्वारा केर प्राणी हील्यितव्य, निन्दितव्य, गर्हितव्य, अने हिंसि
तव्य थतु नथी तेनु छेदन थतु नथी छे तेने व्यथा पछोयती नथी, तथा
हु जने पाभतु नथी आ रीते ईर्यासमितिना योगथी भावितात्मा जनेल मुनि
जन पोताना अहिंसाव्रतनु निर्दोष रीते पालन उरता उरता माया अहिंसक
थछ जय छे तथा आ रीते प्रयत्नशील होवाने जण्णे ते सुसाधु-मोक्षने
साधनारा मुनि, अर्थने चरितार्थ करे छे ॥ सू-६ ॥

इये सूत्रकार आ व्रतना मनोगुप्ति नामनी भीष्म भावना छे तेनु अथ

પાપકેન=અશુભેન 'મળયા' મનયા 'પારગ' પાપકમ્=અશુભ મતિ, 'અહમિય' અધાર્મિક દુર્ગતિજનકત્વાત્, દારુણ=ત્રિપમ, તીવ્રદુઃખજનકત્વાત્, 'નિસસ' નૃશસમ્ આત્મહિતવાતકત્વાત્, તથા—'વહ્યવધપરિકિલેસવહુલ' વધ વધપરિકિલેસવહુલમ્, તત્ર=વધો-મારણમ્, વધ્યઃ=નિગટાદિવધ્યઃ, તજ્જનિત પરિકલેશઃ=પરિતાપસ્તેન વહુલ=પાપ-સમ્ભૂતમ્, પ્રતિસમયમસત્તાપજનકત્વાત્, તથા—'મરણભયપરિકિલેસસકિલિટ્ટ' મરણભયપરિકિલેસસકિલિટ્ટમ્-મરણ=માણવિયોગસ્તમ્ય યદ્ ભય તજ્જનિતો ય પરિકલેશઃ=પરમમન્તાપસ્તેન મંચિલ્લપ્ટ=સગ્યાપ્તમ્, નરકનિગોદાધનન્તદુઃખજનકત્વાત્, પતાટશ-વિશેષણવિશિષ્ટ

કરતે હું—'ધીય ચ' इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ધીય) દસરી મનોગુણ નામકી ભાવના ઇમ પ્રકાર સે હૈ (પાવણ મણેણ) અશુભ મન સે અશુભ હોના હૈ—અર્થાત્—અશુભ મન સે જીવ પાપ કા ઉપાર્જન કરતા હૈ । યદ્ પાપ (અહમિય) દુર્ગતિ કા જનક હોને સે અધર્મ મ્પ હૈ । (દારુણ) તીવ્ર દુઃખો કા ઉત્પદક હોને સે દારુણ—ત્રિપમ અર્થાત્—કષ્ટકારક—હોતા હૈ । તથા (નિસસ) હસમે આત્મા કે હિતકા ઘાત હોના હૈ હસલિયે નૃશસ હૈ । (વહ્યવધ-પરિકિલેસવહુલ) વધ, વધન ઓર ઇનસે ઉત્પન્ન પરિકિલેશ—પરિતાપ—સે યદ્ સદા ભરા રહતા હૈ । અર્થાત્ પ્રતિ સમય યદ્ અસહ્ય સતાપ કા જનક હોતા હૈ । (મરણભયપરિકિલેસસકિલિટ્ટ) મરણ કે ભય સે જનિત પરમ સતાપ સે યદ્ વ્યાપ્ત રહા કરતા હૈ । અર્થાત્—પાપ સે જીવ નરક નિગોદ આદિ કે અનન્ત દુઃખો કો ભોગા કરતા હૈ । હસલિયે યદ્

છીડરણુ કરે છે—“ધીય ચ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ધીય” ધીણ મનોગુણ નામની ભાવના આ પ્રકારની છે—“પાવણ મણેણ” અશુભ મનથી અશુભ થાય છે—એટલું કે અશુભ મનથી જીવ પાપનું ઉપાર્જન કરે છે આ પાપ “અહમિય” દુર્ગતિનું જનક હોવાથી અધર્મમ્પ છે “દારુણ” તીવ્ર દુખોનું ઉત્પાદક હોવાથી દારુણ-ત્રિપમ એટલે કે કષ્ટકારક હોય છે તથા “નિસસ” તેમા આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશસ છે “વહ્યવધપરિકિલેસવહુલ” વધ, વધન અને તેમના કારણે ઉદ્ભવેલ પરિકલેશ-પરિતાપથી તે સદા ભરેલ રહે છે, એટલે કે પ્રતિસમય તે અસહ્ય સતાપ પેદા કરનાર હોય છે “મરણભયપરિકિલેસસકિલિટ્ટ” મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પરમ સતાપથી તે વ્યાપ્ત રહ્યા કરે છે એટલે કે પાપથી જીવ નરક નિગોદ આદિનાં અનન્ત દુખને ભોગ્યા કરે છે તે

पाप-पापेन मनसा भवति, अतएव-तत् 'कयावि' कदापि=कस्मिन्नपि काले
'किंचि वि' किंचिदपि=स्वल्पमपि 'पावग' पापम्=अशुभ न 'झायव्वं'
ध्यातव्य=न चिन्तनीयमित्यर्थः । एवम्=अमुना प्रकारेण 'अतरप्पा' अन्तरात्मा
जीवः 'मणसमिडजोगेण' मनः समितियोगेन भावितो भवति । भावितात्मा
कीदृशो भवति ? इत्याह — अशालसक्लिष्टनिर्गणचारित्रभावनाया हेतुभूतया
अहिंसकः सयतः सुसाधुर्भवति । एवमर्थो द्वितीयभाषना व्याख्याया द्रष्टव्यः ॥ सू० ॥

पाप नरक निगोद आदि दुर्गतियों के अनन्त दुःखों का जनक होने से
उनसे मत्ता भरा रहता है ऐसा कहा गया है । इस प्रकार के विशेषणों
से चिञ्चिष्ट पाप यह जीव पापयुक्त मन से करता है । ऐसा समझ कर
(कयावि किंचि वि) किसी भी काल में कुछ भी थोड़ा सा भी
(पावण मणेण) पापकारी मन से (पावग) पाप-अशुभ (न झायव्व)
नहीं विचरना चाहिये । (एव मणसमिडजोगेण अतरप्पा भाविओ
भवइ) इस प्रकार से अन्तरात्मा-जीव मन-समिति के योग से भावित
होता है । (असबलमसक्लिष्टनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए-
सुसाह) यह भावित आत्मा मलिनता से रहित तथा विशुद्धमान
मन-परिणाम से युक्त ऐसी हेतुभूत चारित्र भावना के प्रभाव से
अहिंसक होता है । और सयत होता है । और ऐसा होने के कारण
ही वह सच्चा साधु-मोक्ष साधक मुनि-कहलाता है ॥—

भावार्थ—मन को अशुभ ध्यान से बचाकर शुभ ध्यान में लगाना

કારણે તે પાપ નરક નિગોદ આદિ દુર્ગતિયોના અનન્ત દુખોનું જનક હોવાથી
તેનાથી સદા ભરેલ રહે છે એમ કહેવામાં આવ્યું છે આ પ્રકારના વિશેષ-
ણોથી યુક્ત પાપ આ જીવ પાપયુક્ત મનથી કરે છે એવું સમજીને “ કયાવિ
કિંચિ વિ ” કેઈ પણ કાળે મહેજ પણ “ પાવણ મણેણ ” પાપકારી મનથી
“ પાવગ ” પાપ-અશુભ “ ન જાયવ્વ ” વિચારવું જોઈએ નહીં “ એવ મણ
સમિડજોગેણ અતરપ્પા ભાવિઓ ભવઈ ” આ પ્રકારે અતરાત્મા-જીવ મન સમિ-
તિના યોગથી ભાવિત થાય છે “ અસબલમસક્લિષ્ટનિવ્વણચરિત્તભાવણાએ
અહિંસા સજા સુસાહ ” તે ભાવિત આત્મા મલિનતાથી રહિત તથા વિશુદ્ધ
મન પરિણામથી યુક્ત એવી હેતુભૂત ચારિત્ર ભાવનાના પ્રભાવથી અહિંસક
થાય છે અને સયત બને છે અને એવું થવાથી જ તે સાચો સાધુ-મોક્ષ
સાધક મુનિ કહેવાય છે

ભાવાર્થ—મનને અશુભ ધ્યાનથી બચાવીને શુભ ધ્યાનમાં લગાડવું તેને

તૃતીયાં વચનસમિતિમ્પાં ભાવનામાદ—'તદ્ય ચ ' ઇ વાદિ ।

મૂલમ્—તદ્યં ચ—વર્ડેષ પાવિયાસાણ પાવગં અહમ્મિયં દારુણં
નિસંસં વહવધપરિકિલેસવહુલ જરામગ્ગપરિકિલેસસંકિલિટ્ઠં
ન કયાત્તિ વર્ડેષ પાવિયાણ પાવગં કિત્તિ ત્તિ ભાસિયવ્વં,
એવં વહસમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવડ અતરપ્પા અસવલમસં
કિલિટ્ઠનિવ્વણચરિત્તભાવણાણ અહિસઓ સજઓ સુસાદ્દુ ॥૮॥

મનોગુપ્તિ છે । શુભ ધ્યાન મેં લગાને કા ઉપદેશ હમ લિયે દિયા જાતા છે
અથવા મન કો શુભ ધ્યાન મેં હમલિયે લગાયા જાતા છે કિ મન સ્વયં
અશુભ બનને ન પાવે । અશુભ ધ્યાન કે સપર્કસમય સે મન અશુભ બન
જાતા છે । ઓર અશુભ મન સે પાપ કા હી ઉપાર્જન હોતા છે । પાપ સે જીવો
કો નાના પ્રકાર કે કષ્ટો કો ભોગના પડતા છે । ક્યોં કિ પાપ સ્વયં
એક અધર્મ છે । અધર્મ હોને સે હી વહ આત્મા કે હિન કા ઘાતક
બનતા છે । ઓર હસી કારણ સે જીવો કો નાના પ્રકાર કે દુઃખો કો
દેતા છે । હસ પ્રકાર વિચાર કર જો મુનિજન અપને મન કો અશુભ
ધ્યાન મેં કિસી મી સમય નહોં લગતા છે ઉસસે વચતા રહતા છે
એસા વહ મુનિ ઉસ મન સમિતિ સે ભાવિત બનકર અપને અહિંસા
વ્રત કો નિર્દોષ રૂપ સે પાલન કરતા હુઆ આદર્શ અહિંસક બન જાતા
છે । ઓર હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ કરને કે રગ મેં રગા હુઆ વહ-
સચ્ચે અર્થ મેં સાધુપદ કો સાર્થક કરતા છે ॥ સૂ ૭ ॥

મનોગુપ્તિ હલે છે શુભ ધ્યાનમા લગાડવાનો ઉપદેશ એ માટે અપાય છે
અથવા મનને શુભ ધ્યાનમા તે કારણે લગાડાય છે કે મન પોતે જ અશુભ
બનવા પામે નહીં અશુભ ધ્યાનના સપર્કથી મન અશુભ બની જાય છે, અને
અશુભ મનથી પાપનું જ ઉપાર્જન થાય છે પાપથી જીવોને વિવિધ પ્રકારના
કષ્ટો ભોગવવા પડે છે કારણ કે પાપ પોતે જ એક અધર્મ છે અધર્મ
હોવાથી જ તે આત્માના હિતનું ઘાતક બને છે, એને એજ કારણથી જીવોને
વિવિધ પ્રકારના દુઃખો દે છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જે મુનિજન પોતાના
મનને કદી પણ અશુભ ધ્યાનમા લગાડતા નથી, તેનાથી બચતા રહે છે, એવા
તે મુનિ તે મન સમિતિથી ભાવિત બનીને પોતામા અહિંસાવ્રતનું નિર્દોષ
પાલન કરીને અહિંસક બની જાય છે, અને તે યોગ્ય પ્રવૃત્તિ કરવાના રંગે
રંગાયેલ તે મુનિ આત્મા અર્થમા સાધુના પદને સાર્થક કરે છે ॥ સૂ ૭ ॥

ટીકા—‘ તદ્ય ચ ’ ઇત્યાદિ ।

‘ તદ્ય ચ ’ તૃતીયા ચ ભાવના વચનસમિતિરૂપામાહ—‘ વર્ઙ્ણ પાવિયાણ ’
વાચા પાપિક્યા=પાપ્યભાષણરૂપયેત્યર્થઃ પાપક્રમાધાર્મિક દારુણ નૃશસ વધ

અવ સૂત્રકાર ડસ અહિંસાત્રત કી તીસરી વચન સમિતિરૂપ ભાવના
કા પ્રતિપાદન કરને કે લિયે સૂત્ર કહતે હે—‘ તદ્ય ચ ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) વચનસમિતિરૂપ તૃતીય ભાવના ડસ પ્રકાર સે હે—
(પાવિયાણ વર્ઙ્ણ) સાવચ્ચભાષણરૂપ વાણી સે (પાવગ) જીવ પાપ કા વધ
કરતા હે । યદ પાપ (અહમ્મિય દારુણ નિસસવદ વધપરિકિલેસવહુલ
જરામરણપરિકિલેસસકિલિદ્ધ મગ્ગ) અર્થમરૂપ હે વ્યોં કિ ડસસે જીવોં કો
દુર્ગતિ કી પ્રાપ્તિ તેતી હે તથા ડસસે તીવ્રદુઃખો કો જીવ ભોગતે હે ડસલિયે
યદ દારુણ-વિપમ હે । આત્માકે હિતકા ડસસે ઘાત હોતા હે ડસલિયે
યદ નૃશસ હે । વય, વચન ઓર ડનસે જન્ય પરિકલેશ-પરિતાપ સે યદ
પાપ સદા ભરા રહતા હે । જરા ઓર મરણ કે ભય સે જનિત સતાપ સે
યદ સદા વ્યાપ્ત રહતા હે । એસા વિચાર કર જો મુનિ (ન કયાવિ
વર્ઙ્ણ પાવિયાણ કિંચિવિ પાવગભાસિયવ્વ) ડસ પાપ વાણી કો સાવચ્ચ-
ભાષણરૂપ વચન કો-કિસી ભી મમય યોડા સા ભી નહીં વોલતે હે વે
ડસ વચનસમિતિ કે યોગ સે ભાવિતાત્મા વન જાતે હે । (એવ વય-

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાત્રતની વચન સમિતિ નામની ત્રીજી ભાવનાનું
પ્રતિપાદન કરવાને માટે સૂત્ર કહે છે—“ તદ્ય ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” વચનસમિતિરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે—
“ પાવિયાણ વર્ઙ્ણ ” સાવચ્ચ ભાષણરૂપ વાણીથી “ પાવગ ” જીવ પાપનો બંધ
ખાવે છે તે પાપ “ અહમ્મિય દારુણ નિસસ વહનપરિકિલેસવહુલ જરામરણ
પરિકિલેસસકિલિદ્ધ મગ્ગ ” અર્થમરૂપ છે તેનાથી જીવોને દુર્ગતિની પ્રાપ્તિ
થાય છે તથા તેનાથી જીવ તીવ્ર દુઃખો ભોગવે છે તેથી તે દારુણ-વિપમ છે
તેનાથી આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશસ છે વધ, બંધન અને
તેના વડે ઉત્પન્ન થયેલ પરિકલેશ-પરિતાપથી તે પાપ સદા ભરેલ ગ્રંથે છે
જરા અને મરણના ભયથી જનિત સતાપ વડે તે સદા વ્યાપ્ત રહે છે એવો
વિચાર કરીને જે મુનિ “ ન કયાવિ વર્ઙ્ણ પાવિયાણ કિંચિવિ પાવગ ભાસિયવ્વ ”
આ પાપવાણીને સાવચ્ચ ભાષણરૂપ વચનને—કોઈ પણ કાળે થોડું પણ બોલતા
નથી, તેઓ આ વચનસમિતિના યોગથી ભાવિતાત્મા બની જાય છે, “ એવ

વન્ધપરિવ્લેશમદુલ જરામરણપરિવ્લેશ સમિલ્પ્ત મયતિ, અતઃપ્ર ન વદાપિ
 યાચા પાપિક્યા પાપક કિંચિદપિ ભાવિત્યમ્ । પર યાસમિતિયોગેન ભાવિતો
 મયતિ અન્તરાત્મા । ભાવિતાત્મા કીદૃશો મયતિ ? ઇત્યાહ—અગ્નિવલામકિન્નૃ
 નિર્વણચરિત્રભાવનયા હેતુભૂતયા-અહિંસકઃ સંયતઃ સુમાધુર્ભયતિ । ણ્યામયો
 દ્વિતીયભાવનાવ્યાખ્યાયા દ્રષ્ટવ્યઃ ॥ સૂ. ૮ ॥

સમિદ્વિજોગેન ભાવિઓઅતરપ્પા અસચલમસકિલિદૃનિચ્ચણચરિત્ત-
 ભાવણાણ અહિંસઓ સજઓ સુમાહુ મવદ્) હમ પ્રકાર વચન સમિતિ
 કે યોગ સે ભાવિતાત્મા યના હુઆ અતરાત્મા-જીવ-અગ્નિવલ, અસચ્ચિલ્પ
 એવ નિર્વણ નિરતિચાર ચારિત્ર કી ભાવના સે અહિંસક ઓર સયતચન
 જાતા હૈ । ઓર સચ્ચે રૂપ મેં સાધુ-મોક્ષ કો સાધન કરને વાલે-
 હમ નામ કો ચરિતાર્ય કર લેના હૈ ।

ભાવાર્થ—સાવધ ભાષણ નહીં કરના હમકા નામ વચન સમિતિ હૈ ।
 સાવધ ભાષણ કરને સે પાપ કા વધ હોતા હૈ । પાપ અધર્મ હોને સે
 વિવિધ પ્રકાર કે દુઃખોં કા દાતા હોતા હૈ । વધ વચન આદિ વિવિધકષ્ટ
 જીવ કો હસી કે ઉદય સે ભોગને પડતે હ । હસલિણ સાધુ કા કર્તવ્ય
 હૈ કિ વહ કમી મી કહી પર મી કિશ્ચિત્ રૂપ મેં મી અસત્યભાષણ નહીં
 કરે । એસા વિચાર કર જો મુનિ હસ પાપવાળી સે નિવૃત્ત હો જાતે હૈ
 વે હી અપને અહિંસાવ્રત કો નિર્દોષ રૂપ મેં પાલતે હૈ । હસ પ્રકાર અપને
 અહિંસાવ્રત કો પાલન કરને વાલે સાધુ હી મચ્ચે સાધુ-મોક્ષકો સાધન
 કરને વાલે કહલાતે હૈ ॥ સૂ. ૮ ॥

વચસમિદ્વિજોગેન ભાવિઓ અતરપ્પા અસચલમસકિલિદૃનિચ્ચણચરિત્તભાવણાણ અહિંસઓ
 સજઓ સુમાહુ મવદ્ ” આ પ્રકારે વચન સમિતિના યોગથી ભવિ-
 તાત્મા બનેલ અતરાત્મા-જીવ-અગ્નિવલ, અસચ્ચિલ્પ અને નિર્વણચારિત્રની
 ભાવનાથી અહિંસક અને સયત બની જાય છે અને સાચા અર્થમાં સાધુ-
 મોક્ષને સાધનારા-એ નામને ચરિતાર્ય ડરી લે છે

ભાવાર્થ—સાવધભાષણ ન કરવું તેનું નામ વચન સમિતિ છે સાવધ
 ભાષણ કરવાથી પાપનો બધ બધાય છે પાપ અધર્મ હોવાથી વિવિધ પ્રકારના
 દુઃખનું જનક છે તેના ઉદયથી વધ બધન આદિ વિવિધ કષ્ટ જીવને લોગ
 વધ પડે છે તેથી સાધુનું કર્તવ્ય છે કે તે કંઈ પણ, કયાય પણ, થોડા પ્રમા
 ણમાં પણ અસત્ય ભાષણ ન કરે એવો વિચાર કરીને જે મુનિ આ પાપવા
 ળીથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તેઓ જે પોતાના અહિંસાવ્રતનું નિર્દોષ રીતે
 પાલન કરે છે આ પ્રમાણે પોતાના અહિંસાવ્રતનું પાલન કરનાર સાધુ જે
 સાચા સાધુ-મોક્ષને સાધન કરનાર સાધુ-કહેવાય છે ॥ સૂ. ૮ ॥

चतुर्थीमेव भावनामाह—' चउत्थ ' इत्यादि ।

मूलम्—चउत्थ आहारएसणाए सुछ उछ गवेसियव्व
अण्णाए अकहिए आसिठ्ठे अदीणे अकल्लुणे अविसाई
अपरिततजोगी ' जयणघडणकरणचरियविनयगुणजोगसप-
उत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खायरिय
उछ घेतूण आगए गुरुजणस्स पास गमणागमणाइ चार-
पडिक्कमणपडिक्कते आलोयण दायण च दाऊण गुरुजणस्स
गुरुसदिट्ठस्स वा जहोवएस निरइयार च अप्पमत्ते पुण-
रवि अणेसणाए पयते पडिक्कमित्ता पसते । आसीणसुह
निसण्णे मुहुत्तमेत्त च ज्ञाणसुहजोगनाणसज्झायगोवियमणे
धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहियमणे
सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण
य पहट्ठे तुट्ठे जहराइणिचं निसतइत्ता य साहवे भावओ य
विइण्णे गुरुजणेण उवविट्ठे सपमज्जिऊण ससीस काय तहा
करयल अमुच्छिए अगिद्धे अगरहिए अणज्झोववण्णे अणा-
इले अलुद्धे अणत्तट्ठिए असुरसुर अचवचव अटुयसविल-
वियमपरिसाडिय आलोयभायणे जयमप्पमत्तेण ववगयस-
जोगमणिगाल विगयधूम अक्खोवजणवणाणुलेवणभूयस-
जमजायामायानिमित्त सजमभारवहणट्ठयाए भुजेज्जा पाण-
धारणाट्ठयाए सजएणं समिय । एवमाहारसमिइ जोगेण
भाविओ अतरप्पा असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभाव-
णाए अहिसए सजए सुसाहू ॥ सू०९ ॥

ટીકા — ‘ચત્વ’ ચતુર્મ માત્રનામેષણામ્વાપાદ — ‘આહારમ્ણા’
 આહારેષણયા ‘શુદ્ધ’ શુદ્ધ=નિર્દોષ ‘ઉચ્છ’ ઉચ્છ=ભેદ ‘ગવેસિચન્વ’ ગવેષિત
 વ્યમ્ । યવા-લૂનાન્નક્ષેપાત્પાદાન, તથેવ સાયુનાપિ ગૃહસ્થાવં નિષ્પાદિતમન્ન
 સ્તોક સ્તોક એવેષણીયમિતિ માત્ર. । રીટગઃ સન ગવેષયેત્ ? ઇત્યાદ-‘અણ્ણા’
 અજ્ઞાતઃ-‘ધનિકોડય પ્રવ્રજિત’ ઇત્યાદિરુપેણ દાયકૈરજ્ઞાતઃ, ‘અકહિ’ અક
 થિતઃ=‘ધનિકોડહ પ્રવ્રજિત’ ઇત્યાપ્રવ્રજિતઃ, ‘અસિદ્ધ’ અશિષ્ટા.=‘ઉગ્રવ
 શીયોડય મોગવશીયોડય’ મિતિ દાયકાયાપ્રતિબોધિત, તથા-‘અશીળે’ અટીનઃ

અત્ર સૂત્રકાર ચોથી ણ્ણના સમિતિરુપ માત્રના કો કરતે છે -
 ‘ચત્વ’ ઇત્યાદિં ।

ટીકાર્થ—(આહારમ્ણામ્ શુદ્ધ ઉચ્છ ગવેસિચન્વ) સાધુ આહાર
 ણ્ણા સે શુદ્ધ-નિર્દોષ ઉચ્છ-બોડા મોડા લેને રુપ ભિક્ષા કી ગવેષણા
 કરે । તાત્પર્ય ઇત્તમા યત્ છે કિ જેસે-લૂને ગયે લેવ્ર સે કળો કા આદાન
 હોતા હૈ ઉસી તરહ સાધુ કો બી ગૃહસ્થ કે લિધે નિષ્પાદિત અન્ન કી સ્તોક
 ૨ અલ્પ ૨ રુપ મેં ગવેષણા કરની, ચાહિયે । જયવ હ ભિક્ષા કી ગવેષણા
 કરે તત્ર ઉસે (અણ્ણા) અજ્ઞાત હોના ચાહિયે-દાતા ઉસે યો ન સમજે
 કિ યત્ ધનિક હોકર પ્રવ્રજિત હુઆ હૈ, ઇત્યાદિરુપ સે દાતા સે ઉન્હે
 અપરિચિત રહના ચાહિયે । (અકહિ) અકથિત હોના ચાહિયે-મેં
 ધનિક યા ગરીબ નહી યા ફિર બી દીક્ષિત હુઆ હૈ, ઇત્ત પ્રકાર કા અપના
 પરિચય ઉસે દાતા કો નહીં દેના ચાહિયે । (અસિદ્ધ) અશિષ્ટ રહના
 ચાહિયે-યત્ સાધુ ઉગ્રવશીય હૈ, મોગવશીય હૈ, ઇત્ત રુપ સે દાતા કે

હવે સૂત્રકાર એવણા સમિતિ નામની ચોથી ભાવના બતાવે છે “ચત્વ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ આહારમ્ણામ્ શુદ્ધ ઉચ્છ ગવેસિચન્વ ” સાધુ આહારેષણાથી
 શુદ્ધ-નિર્દોષ ઉચ્છ થોડી થોડી માત્રામા ભિક્ષાની ગવેષણા કરે તેનો ભાવ
 એ છે કે જેમ લણાયેલ ખેતરમાથી ઝણેતુ આદાન થાય છે, એ જ રીતે
 સાધુએ પણ ગૃહસ્થને માટે તૈયાર કરેલ અગ્નિ થોડી થોડી માત્રામા ગવેષણા
 કરવી જોઈએ જ્યારે તે ભિક્ષાની ગવેષણા કરે ત્યારે તેણે “ અણ્ણા ”
 અજ્ઞાત રહેલું જોઈએ દાતાને તે વાતની ખબર ન પડવી જોઈએ કે તે ધનિક
 સ્થિતિમાથી દીક્ષિત થયેલ છે આ પ્રકારે તેણે દાતાથી અપરિચિત રહેલું
 જોઈએ “ અકહિ ” અકથિત રહેલું જોઈએ—“ હું ધનિક હતો, ગરીબ ન
 હતો છતાં પણ મેં દીક્ષા લીધેલ છે ” એ પ્રકારનો ખોતાનો પરિચય તેણે
 દાતાને દેવો જોઈએ નહીં “ અસિદ્ધ ” અશિષ્ટ રહેલું જોઈએ “ આ સાધુ
 ઉગ્રવશીય છે, મોગવશીય છે, ” તે પ્રકારે દાતા આગળ તેણે પ્રગટ થવું

=દીનતાવર્જિતઃ 'અકલુષે' અકલુષ =ન્યગૃત્તિરહિતઃ, 'અવિસાઈ' અવિપાદી =
'ભિક્ષાગ્રામો ભવિષ્યતિ ન વે'ત્યાદિ વિપાદવર્જિત, તથા-'અપરિતતજોગી'
અપરિતાન્તયોગી-અલાભાદિષુ તન્તનાદિ ગઢવર્જિત, તથા-'જયણઘડણ કરણ
ચરિય વિનયગુણજોગસપડત્તે'યતન ઘટનકરણચરિતવિનયગુણયોગસપ્રયુક્તઃ, તત્ર
યતન-પ્રાપ્તેષુ સયમયોગેષુ ઉદયમઃ, ઘટન અપ્રાપ્તિ સજમ-યોગપ્રાપ્તિચેષ્ટનમ્,
एतद्द्वयं कुरुते यः स यतनघटनकरणः, તથા-ચરિત =મેવિતો વિનયો યેન સ
ચરિતવિનયઃ, તથા ગુણયોગેન=સમાધિગુણયોગેન સપ્રયુક્તો ય સઃ-ગુણયોગ
સપ્રયુક્તઃ, एतेषां कर्मधारयः, एतादृशो 'भिक्षु' भिक्षु =साधु 'भिक्षुसंघाए'

પ્રતિ ઉસે પ્રકટિત નહીં હોનાં ચાહિયે । (અદીણે) અદીન હોનાં ચાહિયે
દીનતા કે ભાવ સે રહિત રહનાં ચાહિયે અપને વ્યવહાર સે દાતા કે
પ્રતિ ઉસે દીનતા કા ભાવ પ્રકટ નહીં કરનાં ચાહિયે । (અકલુષે)
અકલુષ-ઓઝીવૃત્તિ સે રહિત હોનાં ચાહિયે । ઉમકી વૃત્તિ એસી
ન હો કે જિસ સે વહ દાતા કે દૃષ્ટિ મે ઓઝી પ્રતીત હો ।
(અવિસાઈ) વિપાદ સે ઉસે રહિત હોનાં ચાહિયે-ભિક્ષા કા લાભ હોગા
યા નહીં હોગા ઇસ પ્રકાર કા વિપાદ ઉસે નહીં કરનાં ચાહિયે । (અપ
રિતતજોગી) અપરિતાન્તયોગી-અલાભ આદિ કી અવસ્થા મે ઉસે તન-
તનાટ નહીં કરનાં ચાહિયે । (જયણ-ઘડણ-કરણ-ચરિય વિનયગુણ-
જોગસપડત્તે) પ્રાપ્ત સયમયોગ મેં ઉદયમ કરનાં ઇસકા નામ યતન હૈ
ઇસ યતન કો તથા અપ્રાપ્ત સયમયોગ કો પ્રાપ્તિ મે ચેષ્ટા કરનાં ઇસકા
નામ ઘટન હૈ, ઇસ ઘટન કો જો કરને વાલા હૈ વહ યતન ઘટન કરણ
હૈ તથા વિનયગુણ કો પહિલે સે જિસ્ને આચરિત કિયા હૈ એવ સમાધિ

જોડે નહીં "અદીણે" અદીન રહેવું જોડે-દીનતાના ભાવથી રહિત રહેવું
જોડે-પોતાના વ્યવહારથી દાતા આગળ તેણે દીનતાનો ભાવ પ્રગટ કરવો
જોડે નહીં "અકલુષે" અકલુષ-ઓઝી વૃત્તિથી રહિત થવું જોડે, તેની
વૃત્તિ એવી ન હોવી જોડે કે તે દાતાની દૃષ્ટિએ ઓઝી જણાય, 'અવિસાઈ'
તેણે વિપાદ રહિત રહેવું જોડે ભિક્ષાલાભ મળશે કે નહીં એવો વિપાદ
તેણે કરવો જોડે નહીં "અપરિતતજોગી" અપરિતતયોગી-અલાભ આદિ
અવસ્થામાં પણ તેણે તનતનાટ ન કરવો જોડે "જયણ, ઘડણ-કરણ-ચરિય
-વિનયજોગસપડત્તે" પ્રાપ્ત સયમ યોગમાં ઉદયમ કરવો તેને 'યતન' કહે
છે આ યતનને તથા અપ્રાપ્ત અયમ યોગની પ્રાપ્તિની ચેષ્ટા કરવી તેને ઘટન
કહે છે આ ઘટનને જે કારણ છે તે યતનઘટનકરણ છે તથા વિનયગુણને
પહેલેથી જ જેમણે આચર્યો છે તથા સમાધિગુણના યોગથી જે યુક્ત બનેલ

ભિક્ષેપણાર્યા 'જુત્તે' યુક્ત = મંત્રાનઃ 'સમુદાણેઝ્ઞ' સમુદાનોય = ભિક્ષાર્યમનેઃ
 ગૃહેષુ ભ્રમિત્યા 'ભિક્ષાચરિય ડંઢ' ભિક્ષાચર્યામુચ્છામ્ = અન્વાલ્પગ્રહનરૂપા ભિક્ષા
 'ધેતૂણ' ગૃહીત્વા ગુરુજનસ્ય 'પાસ' પાર્થ-મમીપ 'આગણ' સમાગતઃ 'ગમ
 ણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતે' ગમનાગમનાતિચારપતિક્રમણપતિક્રન્તઃ =
 ગમનાગમનાતિચારાણા પતિક્રમણેન = ઈર્થાપિચિકીપાયથિત્તેન પ્રતિક્રાન્તઃ = નિવર્તિ-
 તપાપઃ, 'ગુરુજણસ્સ' ગુરુજનસ્ય 'ગુરુસદિટ્ઠસ્મ' ગુરુસન્દિષ્ટસ્મ = ગુરુણા નિ-
 ર્દિષ્ટસ્ય રત્નાધિક્કમ્યાન્યમુનેરન્તિકે વા 'જહોવણ્ણ' યયોપદેશમ્ = ઉપદેશાનતિ
 ક્રમેણ 'નિરહ્યારં' નિરતિચાર ચ 'આગેયણા દાયણ ચ દાઙ્ગ' આલોચના
 દાન ચ દત્ત્યા = યથા યથા ભિક્ષા ગૃહીતા તથા તથા સર્વ સમાઝોન્ય 'અપ્પમત્તે'
 અપમત્તઃ - પ્રમાદવર્જિતઃ 'પુણરપિ' પુનરપિ ચાગામિકાલે 'અણેસણાણ' અણેષ

ગુણ કે યોગ સે જો યુક્ત બના હુઆ હૈ વહ વિનયગુણ સપ્રયુક્ત કહ-
 લાતા હૈ તેસા (ભિક્ષુ) સાધુ (ભિક્ષુલેસણાણ જુત્તે) ભિક્ષેપણા મેં
 સલગ્ન હોકર વહ (સમુદાણેઝ્ઞ) ભિક્ષાર્ય અનેક ઘરોં મેં ઘૂમેં, ઓર
 વહા સે (ભિક્ષાચરિય ડંઢ) અલ્પ અલ્પ રૂપ મેં ભિક્ષા (ધેતૂણ)
 ગ્રહણ કરકે ફિર વહ (ગુરુજણસ્સ પાસ આગણ) અપને ગુરુજન કે
 પાસ મેં આવે। (ગમણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતે આલોચણ દાયણ
 ચ દાઙ્ગ) ઓર વહ ગમનાગમન કે અતિચારોં કે પ્રતિક્રમણ સે ઈર્થા-
 પથિકી પ્રાયશ્ચિત્ત સે પ્રતિક્રાન્ત બને ઇસ તરહ નિવર્તિતપાપ હોકર વહ
 (ગુરુજણસ્સ) ગુરુજન કે (વા) અથવા (ગુરુસદિટ્ઠસ્સ) ગુરુ સે સદિષ્ટ
 અન્ય રત્ન ત્રયાધિક મુનિ કે (જહોવણ્ણ) ઉપદેશ કે અનુસાર જહા ૨ સે
 ભિક્ષા ઉસને લી હૈ ઉસ ઉસ પ્રકાર સે સવકી (નિરહ્યાર) નિરતિચાર
 આલોચના કરે આલોચના કરકે (અપ્પમત્તે) પ્રમાદ વર્જિત, બના હુઆ તથા

છે તે 'વિનયગુણ સપ્રયુક્ત' ડહેવાય છે એવા "ભિક્ષુ" સાધુ "ભિક્ષુ
 સણાણ જુત્તે" ભિક્ષાની એપણામા "સમુદાણેઝ્ઞ" ભિક્ષાને માટે અનેક ઘરે
 ફરે, અને ત્યાથી "ભિક્ષાચરિય ડંઢ" અલ્પ અલ્પ માત્રામા ભિક્ષા 'ધેતૂણ'
 ગ્રહણ કરીને તે "ગુરુજણસ્સ પાસ આગણ" પોતાના ગુરુજનની પાસે આવે,
 "ગમણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતઆલોચણદાયણ ચ દાઙ્ગ" અને તે
 ગમનાગમનના અતિચારોના પ્રતિક્રમણ વડે ઈર્થાપિચિકી પ્રાયશ્ચિત્તથી પ્રતિક્રાન્ત
 થાય અને એ રીતે પાપની નિવૃત્ત થઈને તે "ગુરુજણસ્સ" ગુરુજનને "વા"
 અથવા "ગુરુસદિટ્ઠસ્મ" ગુરુથી નિર્દિષ્ટ અન્ય રત્નત્રયધારી મુનિની "જહોવણ્ણ"
 ઉપદેશ પ્રમાણે જ્યાં જ્યાં તેણે ભિક્ષા મેળવીહોય તે તે પ્રકારે તે સૌની
 "નિરહ્યાર" નિરતિચાર આલોચના કરે આલોચના કરીને "

ણાયाम્=ઉદ્ગમાદિદોષરૂપાયाम્, 'પયણ' પ્રયત્ન=પ્રયત્નવાન્-તદ્ગતદોષપરિહારે
 ઉદયમવાનિત્યર્થ, પટિક્કમિત્તા' પ્રતિક્રમ્ય=કાયોત્તર્ગ કૃત્વા 'પસતે' પ્રશાન્ત:=
 આહારેડનાતુરઃ તથા-'જામીણસુદ્ધનિસણ્ણે' આસીનસુખનિપણ્ણઃ, તત્ર-આસીન=
 ઉપવિષ્ટઃ, સુખનિપણ્ણઃ=ગમનાગમનજનિતપરિશ્રમમવેદયન્ સુખપૂર્વક સ્થિતઃ, પુનઃ
 કીદ્દશઃ ? 'સુદ્ધત્તમેત્ત ચ' સુદ્ધર્તમાત્ર ચ, 'જ્ઞાણસુખજોગનાણસઙ્ગાયગોવિયમણે'
 ધ્યાનશુભયોગ જ્ઞાનસ્યાધ્યાયગોપિતમનાઃ, તત્ર યાન=યર્મધ્યાનાદિલક્ષણમ્, શુભ-
 યોગઃ=સયમવ્યાપાર, જ્ઞાનમ્=ભગવદુપદિષ્ટમોક્ષહેતુનિરવયસાપુત્રત્તિપરિચિન્તનમ્,
 તથા-મ્વાધ્યાયઃ=મૂલસૂત્રપરિગુણનમ્, એતૈર્ગોપિત = વિષયાન્તરગમનેન નિરુદ્ધ
 મનો યેન સઃ, અતએવ 'ધમ્મમણે' ધર્મમના=શ્રુતચારિત્રલક્ષણધર્મયુક્તાઃ, તથા-
 'અવિમણે' અવિમના=અરમચિરસાત્તિભેડપિ ત્રિપાદવર્જિતચિત્ત, તથા 'સુદ્ધ

(પુનરવિ અણેસણાણ પયણ) આગામી કાલ મે ઉદ્ગમાદિ દોષ રૂપ અને-
 પણા મે પ્રયત્નશીલ બના હુઆ-અર્થાત્-પણાગત દોષોં કે પરિહાર મેં
 મદા સાવધાન બના હુઆ વહ મુનિ (પટિક્કમિત્તા) કાયોત્તર્ગ કરકે
 (પસતે) પ્રશાન્ત બને-આહાર મેં આતુર ન બને (આસીણસુદ્ધનિસણ્ણે)
 બેઠ જાવે ઔર ભિક્ષા કે નિમિત્ત ગમનાગમન મેં હોને વાલે પરિશ્રમ
 કા કુઝ મી રહ્યાલ ન કરે પ્રત્યુત સુખપૂર્વક-અચ્છી તરહ સે બેઠે ।
 (સુદ્ધત્તમેત્ત ચ જ્ઞાણસુખજોગનાણસઙ્ગાયગોવિયમણે) હસ સમય વહ
 ણક સુદ્ધર્તતક ધર્મ યાનાદિરૂપ ધ્યાન સે, શુભયોગ સે, ભગવાન કે દ્વારા
 કથિત મોક્ષ કી હેતુભૂત નિરવય સાધુવૃત્તિ કે વિચાર સે, તથા મૂલ-
 સૂત્ર કે પરિગુણન સે વિષયાન્તર મેં જાતે હુએ અપને મન કો રોકે ઔર
 શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ સે યુક્ત અપને મન કો રહે । હસ તરહ (ધમ્મમણે)
 ધર્મ માર્ગ વાલા તથા (અવિમણે) અવિમન-અરમ ચિરસ આદિ આહાર

પ્રમાદ રહિત બનેલ તથા “પુનરવિ અણેસણાણ પયણ” ભવિંચકાણમા ઉદ્ગમાદિ
 દોષરૂપ અનેપણામા પ્રયત્નશીલ બનીને-એટલે કે એપણાગત દોષોના ત્યાગમા
 સાવધાન બનીને તે મુનિ “પટિક્કમિત્તા” કાયોત્તર્ગ કરીને ‘પસત’ પ્રશાન્ત
 બને-આહારને માટે આતુર ન બને “આસીણસુદ્ધનિસણ્ણે” બેસી બીથ અને
 ભિક્ષાને નિમિત્તે ગમનાગમનમા થતા પરિશ્રમનો નહીં પણ વિચાર ન કરે
 પ્રત્યુત સુખ પૂર્વક-બગબગ રીતે બેને ‘સુદ્ધત્તમેત્ત ચ જ્ઞાણ સુખજોગનાણસઙ્ગાય
 ગોવિયમણે” તે અમથે તે એક સુદ્ધર્ત સુત્રી વમધ્યાનાદિરૂપ ધ્યાનથા, શુભ
 યોગથી ભગવાન દ્વારા કથિત મોક્ષની હેતુભૂત નિરવય સાધુ વૃત્તિના વિચા-
 રથી, તથા મૂળસૂત્રના પરિગુણનની બહાનના વિષયમા પોતાના મનને જતા
 રોકે અને પોતાના મનને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મમા પસાવે આ રીતે ‘ધમ્મમણે’
 ધર્મ મનવાળા તથા “અવિમણે” અવિમન-અરમ, નીરમ આદિ આહાર પ્રાપ્તિમા

મણે ' સુખમનાઃ=સયમાનુરક્તચિત્તઃ, તથા—' અવિગ્ગદમણે ' અવિગ્રહમનાઃ—મલ્લિ-
 પ્લમનોભાવવર્જિતચિત્ત, તથા—' સમાહિયમણે ' સમાહિતમનાઃ=સમાહિત=રાગદ્વેષ
 રાહિત્યેન આત્મનિ સમ્યગુપનોત મનો યેન સઃ, ઉપશાન્તચિત્ત ઇત્યર્થ, તથા—
 ' સદ્ધાસવેગનિઙ્ગરમણે ' શ્રદ્ધાસંવેગનિર્જરામના, તથા—શ્રદ્ધા=જિનમતાભિરુચિઃ,
 સવેગ=મોક્ષાભિલાષઃ, નિર્જરા=કર્મક્ષયણ ચ મનસિ યત્ય મ, તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનામો-
 સરુચિસ્તતો નિર્જરા, તદ્દાનિત્યર્થઃ, તથા—' પવયણવચ્છદ્ધમાવિયમણે ' પ્રવચનવા
 ત્સલ્પભાવિતમનાઃ=પ્રવચનાનુરાગરજિતચિત્તઃ, ' ઉદ્દેઙ્ગ ય ' ઉત્થા ય ચ ' પહદ્દે'
 પ્રહૃષ્ટઃ—અતિશયપ્રમુદિતઃ, અતઃપ્ર—' તુદ્દે ' તુષ્ટઃ ' જહારાણિય' યથારાત્નિક=
 યથાપર્યાય લઘુ પર્યાયાનુસારેણ ' સાહવે ' સાધૂન્=સમાનસમાચારિકાન્ મુનીન્
 ' ભાવગો ' ભાવતઃ—અન્ત કર્ણેન નનૃપર્યુપરિતયા ' નિમત્તહત્તા ય ' નિમન્ત્ય=
 આહારગ્રહણાર્થ સમાધ્યં અનન્તર ' ગુરુજ્ઞેણ ' ગુરુજ્ઞેન ' વિઙ્ગે ય ' વિતીર્ણેચ=

કે લાભ મેં ખી વિપાદ સે વિહીન ચિત્ત વાલા, (સુહમણે) સુખમન-
 સયમ મેં અનુરક્ત ચિત્ત વાલા, તથા (અવિગ્ગદમણે) સલ્લિપ્ત મનોભાવ
 સે વર્જિત હૃદયવાલા, ઓર (સમાહિયમણે) રાગદ્વેષ સે રહિત હોને કે
 કારણ ઉપશાન્ત મનવાલા તથા (સદ્ધા સવેગનિઙ્ગરમણે) શ્રદ્ધા-
 તત્ત્વાર્થ—શ્રદ્ધાન, સવેગ—મોક્ષ મે રુચિ ઓર નિર્જરાકર્મક્ષયણ હનમેં મન
 રાખનેવાલા, (પવયણવચ્છદ્ધમાવિયમણે) પ્રવચનાનુરાગ સે જિસકા
 ચિત્ત અનુરજિત બના હુઆ હૈ એસા વદ સાધુ (ઉદ્દેઙ્ગ ય) અપને
 સ્થાન સે ઉઠકર (પહદ્દે) અતિશય પ્રમુદિત એવ (તુદ્દિ) સતુષ્ટ હોતા
 હુઆ (જહારાણિય સાહવે) યથાપર્યાય—બડે છોટે કે ક્રમાનુસાર
 સાધુઓ સે ભાવપૂર્વક (નિમત્તહત્તા ય) આહાર ગ્રહણ કરને કે લિયે
 પ્રાર્થના કરે। હસકે બાદ (ગુરુજ્ઞેણ વિઙ્ગે ય) ગુરુજનો બડો કા

પણુ વિપાદ રહિત ચિત્તવાળા, “ સુહમણે ” સુખમન—સયમમા અનુરક્ત ચિત્ત
 વાળા, તથા “ અવિગ્ગદમણે ” સલ્લિપ્ત મનોભાવ રહિત હૃદયવાળા, અને
 “ સમાહિયમણે ” રાગદ્વેષ રહિત હોવાને લીધે ઉપશાન્ત મનવાળા, તથા “ સદ્ધા
 સવેગનિઙ્ગરમણે ” શ્રદ્ધા—તત્ત્વાર્થમા શ્રદ્ધા, સવેગ—મોક્ષની રુચિ અને નિર્જરા
 કર્મક્ષયણમા મન રાખનાર “ પવયણવચ્છદ્ધમાવિયમણે ” પ્રવચનાનુરાગથી જેતુ
 ચિત્ત અનુરજિત બન્યુ છે એવા તે સાધુ ‘ ઉદ્દેઙ્ગય ’ પોતાના સ્થાનેથી ઊઠીને
 “ પહદ્દે ” અતિશય આનંદિત અને “ તુદ્દિ ” સતુષ્ટ થઈને “ જહારાણિય
 સાહવે ” યથા પર્યાય—નાના મોટાના ક્રમ પ્રમાણે સાધુઓને ભાવપૂર્વક “ નિમ
 ત્તહત્તાય ” આહાર ગ્રહણ કરવાને માટે વિનંતિ કરે ત્યાર બાદ “ ગુરુજ્ઞેણ
 વિઙ્ગેય ” ગુરુજનો વડે અપાયેલ આહાર “ તમે ભોજન કરો ”

दत्ते सति ' भुङ्क्ष्व त्वमशनादिक ' मित्यनुज्ञाते ना सति, ' उवविष्टे ' उचितासने उपविष्टः सन् ' ससीस काय ' सशीर्षं काय=सपूर्णं शरीर, तथा='करयल ' कर तल च ' सपमज्जिऊण ' सप्रमाज्य ' अमुच्छिष्टे ' अमूर्च्छितः=आहारविषये मूर्च्छा-रहितः ' अगिधे ' अगृह्यः-अप्राप्तसेऽप्याङ्गारहितः, ' अगद्विष्टे ' अग्रथितः=रसानुगताकाङ्क्षारूपतन्तुजालैरनायद्धः, तथा-' अगरहिष्टे ' अगर्हितः=आहारविषये अकृताहारगर्ह, अकृतदातृगर्हश्चेत्यर्थः, तथा-' अणज्झोववण्णे ' अनध्युपपन्नः=रसविषये लोलुपतायर्जितः, तथा-' अणाइले ' अनाविल=अकलुषः ' अलुद्धे ' अलुब्धो-लोभरहितः, तथा ' अणतद्विष्टे ' अनात्मार्थिकः=न केवलमात्मस्वार्थी-परमार्थकारीत्यर्थः, असुरसुर ' सुरसुरशब्दरहितम्, ' अचवचवम् ' चपड चपड

दिया हुआ आहार " तुम भोजन करो " इस प्रकार आज्ञा मिलने पर वह साधु (उवविष्टे) उचित आसन पर बैठ कर (ससीस काय कर-यल सपमज्जिऊण) मस्तक से लेकर अपने समस्त शरीर को और करतल को अच्छी तरह प्रमाजित करे । प्रमाजित करके (अमु-च्छिष्टे) आहार के विषय में अमूर्च्छित बना हुआ वह साधु (अगिधे) अप्राप्त रस में आकाक्षा से रहित, तथा (अगद्विष्टे) रसानुगत आका-क्षा रूप तन्तुजाल से, अनायद्ध तथा (अगरहिष्टे)-आहार के विषय में अथवा दाता के विषय में गर्हा करने से रहित और (अणज्झोववण्णे) रस के विषय में लोलुपता से विहीन बन कर आहार करे । उस समय वह (अणाइले) अनाविल-अकलुष और (अलुद्धे) अलुब्ध-लोभरहित होकर (अणतद्विष्टे) अनात्मार्थिक-केवल आत्म-स्वार्थी न बनता हुआ आहार करते समय वह (असुरसुर) सुर सुर

भणता ते साधु " उवविष्टे " योग्य आसन पर बैसीने " ससीस कायकरयल सपमज्जिऊण " शिरीषी लघने पोताना आणा शरीरने तथा हथेलीने सागी रीते प्रमाजित करीने " अमुच्छिष्टे " आहारना विषयमा अमूर्च्छित बनीने ते साधु " अगिधे " अप्राप्त रसनी आकाक्षाथी रहित तथा " अगद्विष्टे " रसानुगत आकाक्षाइपी तन्तुजालथी अनायद्ध-मुक्त तथा " अगरहिष्टे " आहारना विषयमा के दाताना विषयमा गर्हा करवानी क्रियाथी रहित तथा " अणज्झोववण्णे " रसनी आणतमा लोलुपता रहित बनीने आहार करवे। लोभये ते समये ते " अणाइले " अनाविल-कलुष रहित अने " अलुद्धे " अलुब्ध-लोभरहित थाने " अणतद्विष्टे " अनात्मार्थिक-केवल आत्मस्वार्थी न बने आहार करती वधते ते " असुरसुर " " सुर सुर " शब्द न करे " अचवचव "

श-रहितम्, 'अहुय' अहुतम्-नाति तीव्रम् 'अवित्रिय' अवित्रम्वितम्=ना-
तिमन्दम् 'अपरिसाडिय' अपरिसाडितम्-परिसाटापरितम्, सिन्हावातयमित्यर्थः,
तथा-'आलोयगायणे' आलोकमाजने=प्रकाशयुक्तपात्रे 'जय' यत=यतनापूर्व-
कम् 'अप्पमत्तेण' अपमत्तेन-सावधानेन 'ववगयसजोग' व्यवगतमयोगम्=
सयोजनादोपरहितम् अधिकव्यवगादियुक्तवस्तुनोऽल्पव्यवगादियुक्तवस्तुनि समञ्जन
सयोगस्तद्रहितमित्यर्थः, 'अणिगालम्' अतद्गारम्=अगारदोषरहितं रागरहित
मित्यर्थः, तथा-'विगयधूम' विगतधूम-धूमदोषरहितं दोषरहितमित्यर्थः, तदुक्तम्
'रागेण सङ्गाल दोसेण सधूमग वियाणादि' इति, तथा-'अक्खोवजणवणाणुलेवण
भूय' अक्षोपाञ्जनवणानुलेपनभूतम्=तत्र अशस्य=शरुटधुरः, उपाञ्जनम्=तेलाभ्यञ्ज-
नम् तथा-'वणाणुलेवण' वणानुलेपन=वणस्य=स्फोटकस्य अनुलेपनम्=भौषधलेप-
नम्, तयोर्भूत=मदश यत्तत्, तथा-सजमजायामायानिमित्त=तययाना माया निमित्त

शब्द न करे (अचवचल) चपड चपट शब्द न करे । (अदुहुय) न
बहुत जल्दी जल्दी (अविलविय) न बहुत धीरातथा (अपरिसाडिय)
राते समय आहार के साथ को जमीन पर नहीं गिराता हुआ (आलो-
यभायणे) प्रकाशयुक्त पात्र में (जय) यतना पूर्वक (अप्पमत्तेण) बड़ी
सावधानी के साथ (ववगयसजोग) सयोजनादि दोषरहित-अर्थात्-
अधिक लवण आदि से युक्त वस्तु को अल्प लवण आदि से युक्त वस्तु
के साथ न मिलाकर (अणिगाल च) अगार दोषरहित आहारसामग्री
में राग रहित तथा (विगयधूम) धूमदोषरहित-दोषरहित (अक्खोव-
जणवणाणु लेवणभूय) जिस प्रकार शरुट की धुरा में तैल का लगाना
भारवहन के निमित्त ही किया जाता है और दूसरे किसी प्रयोजन के
लिये नहीं किया जाता है तथा वण-घाव-पर सरहमपट्टी आदि का

“चपड चपड” चपड न करे “अहुय” वधारे अहुयथी आय नही, “अवि-
लविय” वधारे धीमेथी आय नही तथा “अपरिसाडिय” आती वधारे
आहारना पदार्थने जमीन पर पडवा दीधा विना “आलोयभायणे” प्रकाश
वाणा पात्रमा “जय” यतना पूर्वक “अप्पमत्तेण” धणी सावधानीथी “वव-
गयसजोग” सयोजनादि दोष रहित-अदोषे के वधारे भीला आदि वाणी
वस्तुने योडा भीला आदि वाणी वस्तु साथे अकेल कर्था विना “अणिगाल च”
अगार दोष रहित आहार सामग्रीमा राग रहित तथा “विगयधूम” धूम
दोष रहित दोष रहित “अक्खोवजणवणाणुलेवणभूय” जेम गाडानी धरीमा
तेलनु सिथन लारवडनने भाटे न कराय छे पणु धीला डोर्ध डाल्हे करायु

સયમયાત્રા-સયમપરિપાલન સૈવ માત્રા-આલમ્બન તદ્વિમિત્ત=તદ્વેતોઃ સયમયા-
ત્રાનિર્વાહાર્થમેવેત્યર્થ, તથા-‘ સજમભારવહણદ્વયા’ સયમભારવહનાર્થતયા=મય-
મભારવહનાર્થમ્, તથા-‘ પાણચારણદ્વયા’ પ્રાણધારણાર્થતયા=પ્રાણધારણાર્થ ચ
‘ સજણ ણ ’ સયતઃ સહુ ‘ સમિય ’ સમ્યક્-યતનાપૂર્વક-સમિક્ક વા=સમભા-
વેન, ‘ મુજેજ્જા ’ મુજ્જીત । યથા અક્ષસ્યોપાઙ્ગન ભારવહનાર્થમેવ ત્રિશીયતે, નાન્ય-
પ્રયોજનાર્થમ્, યથા ચ ત્રણાનુલેપન તન્નિટ્ત્યર્થમેવ ત્રિશીયતે, તથૈવ-સયમયાત્રાનિ
ર્વાહાર્થ-સયમભારવહનાર્થ પ્રાણધારણાર્થ ચ સાધુર્મુજ્જીત, ન તુ શરીરવલવૃદ્ધ્યર્થ
રૂપલાવણ્યવૃદ્ધ્યર્થ ચેત્યાશયઃ । એવમ્=અમુના પ્રકારેણ આહારસમિતિયોગેન ભાવિતો
ભવતિ અન્તરાત્મા । ભાવિતાત્મા કીદૃશો ભવતિ ? इत्याह-अशबलसकृष्टनिर्व्रण-
चरित्रभावनया हेतुभूतया अहिंसकःसयतःसुसाधुर्भवति । एषा पदानामर्थो द्वितीय-
भावनाया व्याख्यातस्ततोऽवगन्तव्यः ॥ सू० ९ ॥

પ્રયોગ उसकी निवृत्ति के लिये किया जाता है उसी तरह (सजमजा-
यामाया निमित्त) सयमयात्रा के निर्वाह के लिये (सजमभार वहण-
द्वया) सयम रूप भार को ढोने के लिये और (पाणचारणद्वया) प्राण
धारण के लिये (सजण) सयत-मुनि (समिय) यतना पूर्वक सम-
भाव से (मुजेज्जा) आहार करे । किन्तु शारीरिक वलवृद्धि के लिये
तथा रूपलावण्य की वृद्धि के लिये नहीं करे । (एवमाहारसमिहजोगेण
भाविओअतरप्पा असबलमसकिलिठ निव्वणचरित्त भावणाए अहिंसए
सजए सुसाह) इस प्रकार का आहार समिति के योग से अन्तरात्मा
भावित हो जाता है । भावित हुआ वह अन्तरात्मा अशबल, असकृष्ट
एव निर्व्रण (निरतिचार)चरित्रकी भावना के कारण अहिंसक और सयन
बन जाता है, और मच्चे रूप मे साधु-मोक्ष को साधन करने वाले-इस
नाम को चरितार्थ कर लेता है ।

નથા એજ પ્રમાણે “ સજમજાયામાયાનિમિત્ત ” અયમયાત્રાના નિર્વાહને માટે
“ સજમભારવહણદ્વયા ” સયમરૂપી ભારતુ વહન કરવાને માટે અને “પ્રાણધા-
રણદ્વયા” પ્રાણધારણને માટે “ સજણ ” સત-મુનિ “ સમિય ” યતના
પૂર્વક સમભાવથી “ મુજેજ્જા ” આહાર કરે પણ શારીરિક ણ વધારવાને
માટે તથા રૂપલાવણ્યની વૃદ્ધિને માટે ન કરે “ એવમાહારસમિહજોગેણ ભાવેણ
અતરપ્પા અસબલમસકિલિટ્ઠનિવ્વણચરિત્તભાવણાણ અહિંસણ સજણ સુસાહ ”
આ રીતે આહાર અમિતિના યોગથી અતરાત્મા ભાવિત થયે જાય છે ભાવિત
થયેલ તે અન્તરાત્મા અશબલ અસક્રિષ્ટ અને નિર્વ્રણ ચારિત્રની ભાવનાને
કારણે અહિંસક તથા સયત બની જાય છે, અને સાથા અર્થમા સાધુ મોક્ષને
સાધન કરનાર-તે નામને ચરિતાર્થ કરે છે.

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર યાગ સૂત્રકાર ને ઇષ્ણા સમિતિ નામ કી ચતુર્થ ભાવના કા સ્પષ્ટીકરણ કિયા હૈ । હસમેં વસ્તુ કા ગવેષણ, ઉસકા ગ્રહણ તથા ઉપયોગ, હત ત્રીન યાત્રોં કા વિચાર કિયા જાતા હૈ । ઉછ આહાર કી ગવેષણા કરતે સમય સાધુ કો અજ્ઞાત, અકથિત આદિ રૂપ મેં રહ કર હી વિચરના ચાહિયે । આહાર પ્રાપ્ત હોગા યા નહીં હોગા ' હસ પ્રકાર કે સદેહયુક્ત વિચાર સે ઉસે વિપાદ માયમપત્ર નહીં હોના ચાહિયે । અપને દ્વારા ગૃહીત સયમ કી જિમ પ્રકાર રક્ષા હો યેસા હી પ્રયત્ન ઉસકો કરતે રહના ચાહિયે તથા જો સંયમ ભાવ પ્રાપ્ત નહીં હુઆ હૈ ઉસકી પ્રાપ્તિ મેં ઉસકા સતત ઉયોગી રહના ચાહિયે । ભિક્ષા કા લાભ ન હોને પર ઉસકે ચિત્ત મેં ગ્લાનિ કા ભાવ નહીં જગના ચાહિયે । ઓર ન ક્રોધાદિ કે આવેશ મેં આકર તનતનાટ કરના ચાહિયે । ભિક્ષા પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત ઉસે અનેક ગૃહસ્થોં કે ઘર પર જાના અનિવાર્ય હૈ । વહા સે વહ અલ્પરૂપ મેં પ્રત્યેક ઘર સે ભિક્ષા લે । જય દેસે કી ભિક્ષા કી વૃત્તિ હો ગઈ હૈ તો વહ વાપિસ ઉપાશ્રય મેં આવે ઓર ગુરુ કે સમક્ષ માગ્ન ભિક્ષા કો રાલ્લકર ગમનાગમનજન્ય અતિયારોં કી પ્રતિક્રમણ કરકે શુદ્ધિ કરે । ફિર ગુરુ કે પાસ અથવા ગુરુનિર્દિષ્ટ અન્ય ઓર રત્નાધિક મુનિ કે સમીપ જિસ ૨ પ્રકાર સે ઉસને ગોચરી-

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે ઇષ્ણાસમિતિ નામની સાથે ચોથી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમા વસ્તુના ગવેષણ, તેનું ગ્રહણ, તથા ઉપ-યોગ, એ ત્રણ યાત્રાનો વિચાર કરાયો છે ઉછ આહારની ગવેષણા કરતી વખતે સાધુએ અજ્ઞાત, અકથિત, આદિ રૂપમા રહીને જે વિચરવું જોઈએ “આહાર પ્રાપ્ત થશે કે નહીં થાય” એવા સદ્વિધ વિચારથી તેણે વિપાદ કરવો જોઈએ નહીં પોતે ગ્રહણ કરેલ સયમની જે પ્રકારે રક્ષા થાય એવો જે પ્રયત્ન તેણે કરતા રહેવું જોઈએ તથા જે સયમ ભાવ પ્રાપ્ત થયો નથી તેની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયત્નશીલ રહેવું જોઈએ, ભિક્ષા પ્રાપ્ત ન થતા તેના મનમા ગ્લાનિનો ભાવ ઉત્પન્ન થવો જોઈએ નહીં અને ક્રોધાદિના આવેશમા આવીને તનતનાટ કરવો જોઈએ નહીં ભિક્ષા પ્રાપ્તિને માટે અનેક ગૃહસ્થોને ઘેર જવું તે તેને માટે અનિવાર્ય ગણાય છે ત્યાથી-પ્રત્યેક ઘરેથી તે થોડી થોડી ભિક્ષા ગ્રહણ કરે જ્યારે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ પૂર્ણ થઈ ગયેલી લાગે ત્યારે તે ઉપાશ્રયમા આવીને ગુરુની સમક્ષ પ્રાપ્ત થયેલ ભિક્ષાને મૂકીને ગમનાગમન જન્ય અતિ યારોની પ્રતિક્રમણ કરીને શુદ્ધિ કરે પછી ગુરુની પાસે અથવા ગુરુનિર્દિષ્ટ બીજા કોઈ ત્રિસ્તનધારી સાધુની પાસે તેણે જે જે પ્રકારે ગોચરી પ્રાપ્ત કરી

भिक्षा प्राप्त की है उसकी आलोचना करें। इस तरह प्रमाद वर्जित बनकर वह आगामी काल में इस बातकी विशेष सावधानी रखे की जिससे उद्दमादि दोषों का आहार में परिहार (निवारण) होता रहे। कायोत्सर्गकरके वह आहार में अनातुर बनकर शांति-सुखपूर्वक बैठ जावे। और जबतक आहार करने का समय न आवे इसके पहिले अपने मन को ध्यान, शुभयोग, ज्ञान, और स्वाध्याय में लगावे। किसी भी प्रकार का सक्रिष्ट भाव अपने मन में न आने देवे। बाद में-जब आहार का समय आ जावे तब उठकर यथापर्याय अर्थात् बड़े छोटी के क्रम से समस्त साधुजनों को योग की अवकृतापूर्वक आहार के लिये आमन्त्रित करे। गुरुजन जब भोजन करने की आज्ञा प्रदान करे तब अपने सशीर्ष शरीर आदिका प्रमार्जन कर, अमूर्च्छित आदि भाव सपन्न बनकर यतनापूर्वक आगमोक्त विधि के अनुसार आहार करे। आहार करते समय इस बात का वह ध्यान रखे कि यह आहार में शरीर में बलवृद्धि के निमित्त अथवा काति आदि बढ़ाने के निमित्त नहीं कर रहा है किन्तु सयमयात्रा के निर्वाह के निमित्त सयमभार वहन करने के निमित्त, और प्राणधारण के निमित्त ही कर रहा है। इस प्रकार आहारसमितिके योग से यह जीव वासित हो जाता है-तो वह अपने गृहीन व्रत के अहिंसा अतिचार आदि दोषों से रक्षित करता हुआ सच्चा अहिंसक सयत

छोय तेनी आदोयना उरे आ रीते प्रमाद गड़ित जनीने ते लविप्यभा ते वातनी वधारे जणल राणे के जेथी उद्दमादि दोषोनो आडाग्भा त्याग थतो रहे कायोत्सर्ग करीने आहार भाटे आतुर अन्या विना ते शांतिथी जेसी जय अने आहार करवानो समय न थाय त्या सुधी पोताना मनने ध्यान, शुभयोग, ज्ञान अने स्वाध्यायभा लीन करे, केछ पणु प्रकारनो सक्रिष्टभाव पोताना मनभा थवा हे नही पछी ज्यारे आहार करवानो समय थाय त्यारे उठीने पर्याय प्रमाणे ओटले के मोटा-नानाना कमभा समस्त साधुजोने विनय पूर्वक आहारने भाटे आमत्रे, गुरुजन ज्यारे लोजन लेवानी आज्ञा आये त्यारे पोताना शिर शरीर आदिनु प्रमार्जन करीने, अमूर्च्छित आदि लावयुक्त जनीने यतना पूर्वक आगमोक्त विधि प्रमाणे आहार उरे आहार करती वज्रते तेले ते वातनु ध्यान राखणु के हु आ आहार शरीरभा जण वधारवा भाटे के इय वधारवा भाटे करतो नथी पणु सयमयात्राना निर्वाहने भाटे सयमभार वडेवाने भाटे, अने प्राणधारणने भाटे न कइ छु आ प्रमाणे आहार समितिना योगथी ते जव वासित थई जय छे तो ते पोते

અથ પચ્ચમી નિક્ષેપમારનામાદ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પંચમ પીઠફલગ સેઝા સંથારગવત્થપત્તકંચલદંડગરય-
હરણ ચોલપટ્ટગમુહપત્તિગપાયપુઝળાદિ, યયપિ સંજમસ્સ
ઉવવૂહળાદ્યાણ વાયાતવદસમસગસીયપરિસ્સળાદ્યાણ ઉવ-
ગરણ રાગદોસરાહિય પરિહરિયઠ્ઠં, સજળણં નિચ્ચ પઢિલેહળ
પપ્પોઢળાપમઙ્ગળાણ અહો ચ રાઓ ચ અપ્પમત્તેળ હોંહ સયયં
નિવિસ્યઠ્ઠં ચ ગિણિહ્યઠ્ઠં ચ માયળ મહોવહિ ઉવગરણં ।
એવં આયળમંડળિસ્સેવળાસમિદ્ધજોગેળ માવિઓ મવ્વહિ
અતરપ્પા અસવલમસંકિલિટ્ટનિવ્વળચરિત્ત માવળાણ અહિં—
સણ સજણ સુસાહુ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

‘ પચમ ’ પચ્ચમીમાદાનનિક્ષેપસમિતિરૂપાં મારનામાદ—‘ પીઠફલગસેઝા
સંથારગવત્થપત્તકંચલદંડગરયહરણચોલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાયપુઝળાદિ ’ પીઠફલક
શ્યાસસ્તારકચ્છપાત્રકચ્છલદંડ કરજોઢરણચોલપટ્ટકમુગ્ધપોતિસાપાદપોઙ્ગનાદિ,
તત્ર—પીઠ=કાણ્ઠમય ‘ પાટ ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધમાસનમ્—‘ ફલક = ‘ ગજોટ ’

બન જાતા છે । ઓર સુસાધુ નામને સફલ કરતા છે । ॥ સૂ. ૧ ॥

અવ સૂત્રકાર પાચવી જો નિક્ષેપમાવના છે ઉસે પ્રકટ કરને કે લિયે
સૂત્ર કહતે હૈ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(પચમ) પાચવી માવના આદાન નિક્ષેપસમિતિરૂપ છે વહ
હસ પ્રકાર છે (પીઠફલગસેઝાસંથારગવત્થપત્તકચ્છલદંડગરયહરણચોલ-

અહુણ્ણ ડરેલ અહિંસામતનુ અતિચાર આદિ દોષોથી રક્ષણ ડરતો થજો
સાથો અહિંસક સત યની જાય છે અને સુસાધુ નામને સક્ષળ ડરે છે ॥ સૂ. ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર પાચમી જે નિક્ષેપ ભાવના છે તેનુ વર્ણન કરવાને માટે
કહે છે—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ પચમ ’ પાચમી ભાવના આદાનનિક્ષેપસમિતિ નામની છે તે
આ પ્રમાણે છે—પીઠફલગ સેઝાસંથારગવત્થપત્તકચ્છલ દંડગરયહરણચોલપટ્ટગમુહપત્તિગ

इति प्रसिद्धः, शय्या=शरीरप्रमाणलक्षणा, मस्तारकः=सार्द्धद्वस्तद्वयप्रमाणआसन-
विशेषः, वस्त्र, पात्र, कम्बलश्च प्रसिद्धाः, दण्डकः=रोगिभिर्वृद्धैश्च गमनागमानर्थं
रक्षिता यष्टिः, रजोहरण, चोलपट्टकः, तथा-मुखपोतिका=मदोरमुखवस्त्रिका,
पादप्रोच्छन्न=प्रमार्जिका, एतान्यादौ यस्य तत्, इत्यादिकम्, 'उवगरण' उपकरण
साधोरस्ति । 'एयपि' आहारवदेतदपि पीठफलकादिक 'सजमस्स' सयम-
स्य-सप्तदशविधस्य 'उववृहणट्टयाए' उपवृहणार्थम्-पोषणार्थम्-भवति । अतः
'वायातवदसमसगसीयपरिरक्खणट्टयाए' वायातपदशमशकगीतपरिरक्षणार्थं 'स-
जएण' सयतेन=मुनिना 'रागदोसरहिय' रागद्वेषपरहितं यथा स्यात्तथेदम् उपक-
रणं 'परिहरियव्व' परिधर्तव्यम् धारणीयमित्यर्थः । तथा 'निच्च' नित्यं तेषां
यथायोग्यं 'पडिलेहणा पप्फोडणापमज्जणाए' प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जनासु-
तत्र-प्रतिलेखना-उभयकाल प्रत्युपेक्षणा, प्रस्फोटना=यतनया विध्वननम्, प्रमार्जना

पट्टगमुत्पत्तिगपायपुच्छणाड) पीठ पाट, फलक-वाजोट शय्या शरीरप्रमाण-
विष्टौना, सस्तारक-अढाईहायप्रमाणआसनविशेष, वस्त्र, पात्र, कम्बल,
दण्ड-रोगी अथवा वृद्ध साधुओ द्वारा अपने पास गमनागमनार्थं रखी
हुई लकड़ी, रजो हरण, चोलपट्टक, मुखपोतिका-सदोरकमुखवस्त्रिका
और पादप्रोच्छन्न-प्रमार्जिका इत्यादि उपकरण साधु के हैं । (एयपि-
सजमस्स उववृहणट्टयाए) आहार की तरह ये भी सत्तर प्रकार के
सयम का पोषण के लिये हैं । इसलिये इनका (वायातवदसमसग सीय-
परिरक्खणट्टयाए सजएण रागदोसरहिय परिहरियव्व) वात-(पवन)
आतप-धूप, दश, मशक एवं शीत से रक्षित होने के लिये मुनि को
रागद्वेषपरहित होकर धारण करना चाहिये । तथा (निच्च) नित्य ही
(पडिलेहणा पप्फोडणा पमज्जणाए) इन उपकरणों में से भाजन भाण्ड

पायपुच्छणाइ " पीठ-पाट, फलक-आलेठ, शय्या-शरीरना प्रमाणुनु पाथरण
सस्तारक-अढी हाथना भापनु आसनविशेष, वस्त्र, पात्र, उणल, दण्ड-रोगी
अथवा वृद्ध साधुओ द्वारा पोतानी पाने आववा ववा (टेडा भाटे) राखेली
लाकड़ी, रजोहरण, चोलपट्टक, मुखपोतिका द्वारा संहितमुत्पत्ति, अने पादप्रोच्छन्न
प्रमार्जिका इत्यादि साधुना उपकरणो छे 'एयपि सजमस्स उववृहणट्टयाए'
आहारनी जेम ओ पणु सत्तर प्रकारना सयमना पोषणु भाटे छे तेवी तेमने
"वायातवदसमसगसीयपरिरक्खणट्टयाए सजएण रागदोसरहिय परिहरियव्व"
वात-पवन, आतप, तडके, दश, मशक अने शीतथी व्वणु पामवाने भाटे
मुनिओ रागद्वेष रहित थधने तेमने धारेणु उरवा लेछओ तथा "निच्च" उ भेगा
"पडिलेहणापमज्जणाए" ओ उपकरणोभाथी भाजन लाड अने उपविनी प्रति

=રજોહરણાદિભિઃ સમાર્જના, તામુ પ્રતામુ-પ્રતિલેખનાદિકરણાનન્તરમિત્યર્થ-
 ' અહો ય રાઓ ય ' અહથ રોત્રા ચ ' ભાયણમંડોવહિરગરણ ' ભાજનમાળ્હો
 પધ્યુપકરણં-તા-ભાજન=પાત્રમ્, માળ્હમ્=ઉન્દકમ્, ઉપધિઃ=વસ્ત્રમ્, ણતસ્થિત
 યરૂપ યદુપકરણ તત્, ' અપ્પમત્તેણ ' અપ્રમત્તેન સતા ' સયય ' સતત=નિરન્તર
 ' નિક્કિલ્લયવ્વ ' નિક્ષેપ્પવ્ય-સ્થાપનીય ' ગિણ્હિયવ્વ ' ગણિતવ્ય ચ ' દોહ ' ભવતિ
 ઇવમાદાનમાળ્હનિક્ષેપણાસમિતિયોગેન ભારિતો ભરતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ । ભારિ-
 તાન્તરત્મા કીદશો ભવતિ ? इत्याह-अश्रयद्रामर्हिण्डनिर्त्रणचारित्र भावनया हेतु-
 भूतया अर्हिसकः सयतः मुताधुर्भवति एतेषामर्थः पूर्वमुक्तः, तत एवावगन्तव्यः॥सू१०

और उपधि की प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जना कर लेने पर-प्रतिलेखना
 दोनों समय प्रत्युपेक्षणा प्रस्फोटना, प्रमार्जना-रजोहरणादि से पुजना
 करके (अहोय राओय) दिन में और रात्रि में (भायण मंडोवही-
 ऊवगरण) भाजन-पात्र, भाण्ड उन्दक, और उपधि-वस्त्र । इन उप-
 करणों को जमीन पर रखना पडता है, उठाना पडता है । सो ऐसी
 स्थिति में साधु का यह कर्तव्य है कि वह इन सबको धरते उठाते
 (सयय) निरन्तर (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त रहे । (निक्खियव्व गिण्हि-
 यव्व होइ) इन उपकरणों को जब भूमि पर धरे तब उसकी प्रमार्जना
 करे फिर धरे, उठावे तब उन उपकरणों की प्रमार्जना करके उठावे । इस
 तरह करने से जीवों की विराधना नहीं हो सकती है । यही साधु की
 अप्रमत्त अवस्था है । (एव) इस तरह (आयाण भडनिक्खवणासमिड-
 जोगेण) आदान भाण्डनिक्खेपणासमिति के योग से (अतरप्पा) जीव

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-બન્ને સમય પ્રત્યુપે
 ક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-ચતના આચરણુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણુ આદિથી પૂજણુ વગેરે
 કર્યા પછી “ અહોય રાઓય ” દિવસે તથા રાત્રે “ ભાયણ મંડોવહિરગરણ ”
 ભાજન-પાત્ર, માળ્હ-ઉન્દક અને ઉપધિ-વસ્ત્ર, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર
 રાખવા પડે છે, તથા ઉંપાડવા પડે છે તો એવી પરિસ્થિતિમાં સાધુનું એ
 કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા “ સયય ” નિરતર “ અપ્પમ ણ ”
 અપ્રમાદી રહે “ નિક્કિલ્લયવ્વ ગિણ્હિયવ્વ હોઈ ” એ ઉપકરણોને જ્યારે જમીન
 પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાંથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપ-
 કરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ
 શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે “ એવ ” આ ગીતે “ આયાણા
 મહ નિક્કલેવણાસમિદ્જોગેણ ” આદાન ભાડ નિક્ષેપણા સમિતિના યોગથી “ અ

સમ્પત સૂત્રકારઃ પ્રથમસરદારમુપસહરનાહ—‘ એવ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—એવમિણં સવરદાર સમ્મ સંવરિય હોઈ, સુપ્પણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મળવયળકાયપરિરવિલ્લખહિં, ણિચ્ચં આમરણત ચ એસ જોગો ણેયઠ્ઠો ધિહમયા મહમયા અણાસવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસાહ અસકિલિદ્ધો સુદ્ધો સઠ્ઠજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ પઠમ સઠ્ઠરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં તીરિય કિટ્ઠિય આરાહિય આણાણ અણુપાલિયં ભવહ । એવ ણાયમુંણિણા ભગવયા પળ્લવિયં પરુવિયં પસિદ્ધ સિદ્ધ સિદ્ધ-વરસાસણમિણ આઘવિયં સુદેસિય પસત્થ પઠમ સવરદારં સમત્તં ત્તિ વેમિ ॥ સૂ-૧૧ ॥

ટીકા—‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ—

‘ એવમિણ ’ એવમ્—ઉક્તરૂપેણ હદમ્—અહિંસાલક્ષણ ‘સવરદાર’ સમરદારમ્=સવરરય=અનાથ્રવસ્ય દ્વારમ્=ઉપાયઃ ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સંવરિય ’ સઘટતમ્—સંસે-

(ભાવિઓ ભવહ) લાવિત બના હુઆ વહ જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિ-ષ્ટ, નિર્વળ (નિરતિચાર) ચારીત્ર કી ભાવના સે અહિંસક સયત બન જાતા હૈ । ઓર સચ્ચેરૂપ મેં અપને સાધુપદ કો સાર્થક કર લેતા હૈ । નિર્જન્તુ ભૂમિ પર ઉપકરણો કા ધરના ઓર ઉઠાના હસકા નામ આદાનભાણ્ડ-નિક્ષેપણા સમિતિ હૈ । હસસમિતિ કે યોગ સે આત્મા-મુનિ અપને અહિંસા મહાવ્રત કી રક્ષા ઓર સ્થિરતા કરતા રહતા હૈ ॥ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

અવ સૂત્રકાર પ્રથમ સવર દ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હે—

તરણા ” એવ “ ભાવિઓ ભવહ ” લાવિત બની બય છે લાવિત બનેલ તે એવ હેતુભૂત અગણલ, અસક્લિષ્ટ, નિર્વળ ચારિત્રની લાવનાથી અહિંસક સયત બની બય છે અને સાચા અર્થમા પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનું નામ આદાન ભાડ નિક્ષે-પણ સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ—પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ-૧૦ ॥

હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સવરદારનો ઉપસહાર કરતા હો છે—“એવમિણ” ઇત્યાદિ

રજોહરણાદિભિઃ સમાર્જના, તામુ જ્ઞતામુ-પ્રતિલેખનાદિકરણાનન્તરમિત્યર્થ-
 'અહો ય રાઓ ય' અદ્ય રોત્રી ચ 'ભાગળમઢોવહિઝગરણ' ભાજનમાળ્હો
 પધ્યુપકરણ-તા-ભાજન=પાત્રમ્, માળ્હમ્=ઉન્દકમ્, ઉપધિઃ=ચમ્, ણ્તસ્થિત
 યરૂપ યદુપકરણ તત્, 'અપ્પમત્તેણ' અપ્રમત્તેન સતા 'સયય' સતત=નિરન્તર
 'નિક્કિલ્લયવ્વ' નિક્કેલ્લવ્વ-સ્થાપનીય 'ગિણ્ઠિયવ્વ' ગઠીતવ્વ ચ 'હોઠ' મત્તિ
 ણ્વમાદાનમાળ્હનિક્ષેપણાસમિતિયોગેન મારિતો મરતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ । માત્રિ-
 ત્વાન્તરત્મા કીદ્દશો મત્તિ ? ઉત્થાહ-અશવ્લામત્તિનિર્વણચારિત્ર ભાવનયા હેતુ-
 ભૂતયા અર્હિસકઃ સયત' મુસાધુર્ભવતિ, એતેપામર્ત્તઃ પૂર્વમુક્તઃ, તત્ત ણ્વાયગન્તવ્વઃ ॥૨૧॥

ઔર ઉપધિ કી પ્રતિલેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કર લેને પર-પ્રતિલેખના
 દોનોં સમય પ્રત્યુપેક્ષણા પ્રસ્ફોટના, પ્રમાર્જના-રજોહરણાદિ સે પુજના
 કરકે (અહોય રાઓય) દિન મેં ઔર રાત્રિ મેં (ભાગળ મંડોવહી-
 ઝગરણ) ભાજન-પાત્ર, માળ્હ ઉન્દક, ઔર ઉપધિ-ચમ્ । ઇન ઉપ-
 કર્ણોં કો જમીન પર રગ્ગના પડતા હૈ, ઉટાના પડતા હૈ । સો ંેસી
 સ્થિતિ મેં સાધુ કા યહ કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ઇન સયકો ધરતે ઉઠાતે
 (સયય) નિરન્તર (અપ્પમત્તેણ) અપ્રમત્ત રહે । (નિક્કિલ્લયવ્વ ગિણ્ઠિ-
 યવ્વ હોહ) ઇન ઉપકરણોં કો જમ્મ ભૂમિ પર ધરે તથ્ ઉસકી પ્રમાર્જના
 કરે ફિર ધરે, ઉઠાવે તથ્ ઇન ઉપકરણોં કી પ્રમાર્જના કરકે ઉઠાવે । ઇસ
 તરહ કરને સે જીવોં કી વિરાધના નહી હો સકતી હૈ । યહી સાધુ કી
 અપ્રમત્ત અવસ્થા હૈ । (એવ) ઇસ તરહ (આયાણ મહનિક્કલ્લવ્વણાસમિહ-
 જોગેણ) આદાન માળ્હનિક્ષેપણાસમિતિ કે યોગ સે (અત્તરણા) જીવ

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના ડરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-ખન્ને સમય પ્રત્યુપે
 ક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-ચતના આચેરણુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણુ આદિથી પૂજણુ વગેરે
 કર્યા પછી “અહોય રાઓય” દિવસે તથા રાત્રે “ભાગળ મંડોવહિઝગરણ”
 ભાજન-પાત્ર, માળ્હ-ઉન્દક અને ઉપધિ-ચમ્, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર
 રાખવા પડે છે, તથા ઉંપાડવા પડે છે તો એવી પગિથિતિમા સાધુનુ એ
 કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા “સયય” નિરતર “અપ્પમ ણ”
 અપ્રમાદી રહે “નિક્કિલ્લયવ્વ ગિણ્ઠિયવ્વ હોહ” એ ઉપકરણોને જ્યારે જમીન
 પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપ-
 કરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ
 શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે “એવ” આ ગીતે “આયાણા
 મહનિક્કલ્લવ્વણાસમિહજોગેણ” આદાન લાડ નિક્ષેપણા સમિતિના યોગથી “અ

સમ્પત સૂત્રકાર, પ્રથમસવરદ્વારમુપસહરનાહ—‘ એવ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—એવમિણં સંવરદારં સમ્મ સંવરિય હોઠ, સુપ્પણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મળવયળકાયપરિરવિલ્લપ્પહિ, ણિચ્ચં આમરણત ચ એસ જોગો ણેયવ્વો ધિદ્મયા મહમયા અણાસવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસાદ્ અસકિલિદ્ધો સુદ્ધો સઠ્ઠજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ પઠમ સઠ્ઠવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં તીરિયં કિટ્ઠિય આરાહિય આણાણ અણુપાલિયં ભવડ । એવં ણાયમુંણિણા ભગવયા પળ્લવિયં પરુવિયં પસિદ્ધ સિદ્ધ સિદ્ધ-વરસાસણમિણ આઘવિય સુદેસિય પસત્થ પઠમં સંવરદારં સમત્તં ત્તિ વેમિ ॥ સૂ-૧૧ ॥

ટીકા—‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ—

‘ એવમિણ ’ એવમ્—ઉક્તક્રમેણ ઉદમ્—અહિંસાલક્ષણ ‘ સવરદાર ’ સવરદ્વારમ્= સવરરય=અનાશ્રવસ્ય દ્વારમ્=ઉપાયઃ ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સંવરિય ’ સવૃતમ્—સંસે-

(ભાવિઓ ભવડ) લાવિત બના હુઆ વહ જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિ-પ્પ, નિર્વળ (નિરતિચાર) ચારીત્ર કી ભાવના સે અહિંસક સચત બન જાતા હૈ । ઓર સચ્ચેરૂપ મેં અપને સાધુપદ કો સાર્થક કર લેતા હૈ । નિર્જન્તુ ભૂમિ પર ઉપકરણો કા ધરના ઓર ઉઠાના હસકા નામ આદાનભાણ્ડ— નિક્ષેપણા સમિતિ હૈ । હસ સમિતિ કે યોગ સે આત્મા-મુનિ અપને અહિંસા મહાવ્રત કી રક્ષા ઓર સ્થિરતા કરતા રહતા હૈ ॥ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

અવ સૂત્રકાર પ્રથમ સવર દ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હ—

તરણા ” એવ “ ભાવિઓ ભવડ ” લાવિત ળની બય છે લાવિત બનેલ તે એવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિપ્પ, નિર્વળ ચારિત્રની લાવનાથી અહિંસક સચત ળની બય છે અને સાચા અર્થમા પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનુ નામ આદાન લાડ નિક્ષે પણા સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ—પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ-૧૦ ॥

— હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સવરદ્વારને ઉપસહાર કરતા હો છે—“ એવમિણ ” ઇત્યાદિ

રિત મત્ 'સુપણિહિય' સુપણિહિત=સુરક્ષિત 'હોઈ' ભવતિ । 'મળવયળકાયપરિક્ષિત્વે' મનોવચનકાયપરિક્ષિતૈ-યોગત્રયપરિક્ષિતૈઃ 'इमेहिं पचहिं वि कारणेहिं' एभिः पञ्चभिरपि कारणैः=पूर्वोक्ताभि पञ्चभिर्मायनाभिः 'निच्च' नित्यम् 'आमरणत्' आमरणान्तं=मरणपर्यन्त च 'एसजोगो' एष योगः=अहिंसारूप णसत्वरूपव्यापारः 'धिइमया' धृतिमता=स्वस्थचित्तेन 'मइमया' मतिमता= हेयोपादेयमेधायुक्तेन 'नेयवो' नेतव्यः=शौढव्य.परिपालनोय इत्यर्थः । कीदृ शोऽय योगः ? इत्याह-अय योगः- 'अणासवो' अनाश्रवः-नूतनकर्मागमनरहित-त्वात् 'अकलुसो' अकलुषः=अशुभाध्यवसायरहितत्वात्, 'अच्छिदो' अच्छिदः- छिन्नपापस्रोतत्वात्, अपरिस्साई' अपरिस्वारीनिन्दुरूपेणापि कर्मजलमवेशरहि-
'एवमिण' इत्यादि

टीકાર્થ । (एवमिण सवरदार सम्म सवरिय सुपणिहिय होइ)
उक्त क्रमसे यह अहिंसारूप प्रथम सवरद्वार सेवित किये जाने पर सुरक्षित हो जाता है । (मणवयणकायपरिक्षिप्तएहिं) इग्नलिधे मन वचन और काय इन तीनों योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये (इमेहिं पचहिं वि कारणेहिं) इन पूर्वोक्त पांच भावनारूप कारणों से (निच्च) नित्य (आमरणत्) मरणपर्यंत-जीवन भर तक (एस जोगो) इस अहिंसारूप सवरद्वार का (धिइमया) स्वस्थचित्त से युक्त एव (मइमया) हेयोपादेय की बुद्धि से सपन्न होकर मुनि को (नेयवो) परिपालन करना चाहिये । क्योंकि यह अहिंसारूप सवर योग (अणा सवो) नूतन कर्मागमन को रोकने का कारण होने से अनाश्रवरूप है । (अकलुसो) अशुभ अव्यवसाय से रहित होने के कारण अकलुष रूप है । (अच्छिदो) इससे पापका स्रोत नष्ट हो जाता है इस कारण से यह

टीકાર્થ-“एवमिण सवरदार सम्म सवरिय सुपणिहिय होइ” कहा प्रमाणेना
કેમથી આ અહિંસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વારનું સેવન કરવાથી તે સુરક્ષિત થઈ બચ
છે “મળવયળકાયપરિક્ષિત્વે” તેથી મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી
સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ “इमेहिं पचहिं वि कारणेहिं” એ પૂર્વોક્ત પાંચ
ભાવનારૂપ કારણોથી “निच्च” હમેશા “आमरणत्” મરણપર્યંત-આજીવન,
“एसजोगो” આ અહિંસારૂપ સવરદ્વારનું “धिइमया” સ્વસ્થ ચિત્તથી અને
“मइमया” હેયોપાદેયની બુદ્ધિથી યુક્ત થઈને મુનિએ “नेयवो” પરિપા
લન કરવું જોઈએ કારણ કે આ અહિંસારૂપ સવરયોગ “अणासवो” નવા
કર્માગમનને રોકવાને કારણભૂત હોવાથી તે અનાશ્રવ રૂપ છે “अकलुसो”
અશુભ અવ્યવસાયથી રહિત હોવાને કારણે અકલુષરૂપ છે “अच्छिदो” તેનાથી
પાપનો પ્રવાહ નાશ પામે છે તે કારણે તે અચ્છિદરૂપ છે “ज”

તત્વાત્, 'અસકિલિટ્થો' અસલિટ્થ -અનમાધિભાવનિતત્વાત્ 'સુદ્ધો' શુદ્ધઃ=
કર્મમલવર્જિતત્વાત્ 'સન્નજિણમણુણાઓ' સર્વજિનાનુજ્ઞાત -સકલપ્રાણિહિતકાર-
કત્વાત્ સર્વેપામર્હતામનુમતશ્વાસ્તિ । એવમ્-ઉક્તપ્રકારેણ 'પદમ સવરદાર'
પ્રથમ સવરદાર, , ફાસિય' સ્પૃષ્ટ કાયેન, 'પાલિય પાલિત સતતપ્રયોગેન સે-
વિતમ્, 'સોહિય' ગોધિતમ્-અતિચારવર્જનેન, 'તીરિય' તીરિત=તીર પ્રાપિત
પૂર્ણરૂપેણ સેવિતમ્, 'કિટ્થિય' કીર્તિતમ્=અન્યેપામુપદિષ્ટમ્, તથા 'આરાહિય'
આરાધિત-ત્રિફરણત્રિયોગે સમ્યગાચરિતમ્, 'આણાણ' આજ્ઞયા=સર્વજનવચનેન,
'અણુપાલિય' અણુપાલિત ચ ભવતિ । એવમ્=ઉક્તરૂપ સવરદાર કેન કથિતમ્ ?

અન્નિહ્દરૂપ છે । (અપરિસ્સાર્ઠ) એક ચિન્દુ માત્ર મી કર્મરૂપ જલ કા
ઢસ મેં પ્રવેશ નહીં હો સકતા છે અતઃ. ડસસે રહિત હોને કે કારણ યહ
અપરિસ્સાર્ઠી છે । (અસકિલિટ્થો) અસમાધિરૂપ ભાવ સે યહ વર્જિત હોતા
છે ડસલિયે અસલિટ્થ છે । તથા (સુદ્ધો) કર્મમલ સે સર્વથા વિહીન
હોને કે કારણ યહ શુદ્ધ છે । ડસીલિયે યહ (સન્નજિણમણુણાઓ)
સમસ્ત અર્હત ભગવતોં કો અનુમત-માન્ય હુઆ છે કયોં કિ ડસીસે
સકલ પ્રાણિયોં કા હિત હુઆ છે । (એવ પદમ સવરદાર) ઉક્ત પ્રકાર
સે પ્રથમ સવરદાર કો (ફાસિય) જો અપને કાય સે સ્પર્શ કરતે હે
(પાલિય) નિરન્તર ધ્યાન પૂર્વક ડસકા સેવન કરતે હે (સોહિય)
અતિચારોં સે ડસે રહિત વનાતે હે (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે ડસે અપને
જીવન મેં ડતારતે હે (કિટ્થિય) દૂસરોં કો ડસે વારણ કરને કા ઉપદેશ
દેતે હે તથા (આરાહિય) તીન કરણ તીન યોગોં સે જો ડસે અચ્છી
તરહ આચરિત કરતે હ (આણાણઅણુપાલિય ભવઢ) સર્વજન કે વચન

એડ ચિન્દુ નેટલા પણ ડણુડપી જળનો તેમા પ્રવેશ યડ નહી, તેથી
તેનાથી ગ્રહિત હોવાને કારણે તે અપરિસ્સાર્ઠી છે, "અસકિલિટ્થો" અનમાધિ-
રૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસલિટ્થ છે તથા "સુદ્ધો" કર્મ-
મળથી અર્વથા રહિત હોવાને કારણે તે શુદ્ધ છે તેથી તે "સન્નજણમણુ-
ણાઓ" સમસ્ત અર્હત લગવાનોને માન્ય થયેલ છે, ડાણુ કે તેનાથી
અધણા પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે "એવ પદમ સવરદાર" ઉક્ત પ્રકારે પ્રથમ
અવરદારનો "ફાસિય" ને પોતાના ગરીથી સ્પર્શ કરે છે 'પાલિય'
નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનુ પાલન કરે છે "સોહિય" અતિચારથી તેને ગ્રહિત
ખનાવે છે "તીરિય" પૂર્ણ રીતે તેને પોતાના જીવનમા ઉતારે છે, 'કિટ્થિય'
ખીજને તે પાળવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા 'આરાહિય' ત્રણ કારણ ત્રણ
યોગોથી ને તેને સારી રીતે આચરે છે "આણાણ અણુપાલિય ભવઢ" સર્વજના

इत्याह—‘ णायमुणिगा ’ ज्ञातमुनिना-प्रसिद्धक्षत्रियवशोद्भवेन मुनिना भगवता
महावीरेण ‘ पणविय ’ प्रज्ञापितम्=ज्ञाप्येभ्यः सामान्यतया कथितम्, ‘ परुविय
प्ररूपित=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथितम्, ‘ पसिद्ध ’ प्रसिद्धम्-प्रख्यातम्, सिद्ध
-प्रमाणप्रतिष्ठितम्, ‘ सिद्धवरसासण ’ सिद्धवरसासनम्-सिद्धाना-निष्ठितार्थानां
वरशासन=प्रधानाज्ञानात्पम्, ‘ इण ’ इदम् ‘ आघविय ’ आघ्यात=पर्यंतो भावेन
कथितम्, ‘ सुदेसिय ’ सुदेशितम्=सदेवमनुजापुराया परिपदि सुष्टादिष्ट ‘ पसत्थं

के अनुसार ही पालते हैं । (एव) इस प्रकार उक्त रूप यह स्वर द्वार
(णायमुणिगा) प्रसिद्ध क्षत्रिय वश में उत्पन्न हुए मुनि (भगवया
भगवान् महावीर ने (पणविय) प्रज्ञापित किया है-ज्ञाप्यों के लिये
सामान्यरूप से कहा है । (परुविय) प्ररूपित किया है-भेदानुभेद
प्रदर्शन पूर्वक कथित किया है । इसलिये यह (पसिद्ध) प्रसिद्ध है-आचा
र्यादिकी परपरा से इसका पालन करना इसीरूप में चला आ रहा है ।
तथा (सिद्ध) सिद्ध है-इसमें किसी भी प्रमाण से बाधा नहीं आती है
अतः प्रमाणप्रतिष्ठित है । तथा (सिद्धवरसासनमिण) जो सिद्ध हो चुके
हैं-कृतकृत्य बन चुके हैं-उनका यह वर शासन रूप है सो इसी को
(आघविय) प्रभु महावीर ने कहा है । और (सुदेसिय) इसका उप-
देश उन्होंने ने देव, मनुज एवं असुरों सहित परिपदा में अच्छी तरह
दिया है । (पसत्थ) यह प्रथम स्वर द्वार समस्त प्राणियों का हित-
कारक होने से मंगलमय है । (पढम स्वरदार समस्त) इस तरह का

વચન પ્રમાણે જ પાળે છે, “ એવ ” આ પ્રમાણે કહ્યા પ્રમાણેના સ્વરૂપનું તે
સવરદ્વાર “ ણાયમુણિગા ” પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ “ ભગવયા ”
ભગવાન મહાવીરે “ પણવિય ” પ્રજ્ઞાપિત કરેલ છે-જિણ્યોને માટે સામાન્ય
રૂપે કહ્યું છે “ પરુવિય ” પ્રરૂપિત કરેલ છે-ભેદાનુભેદ બતાવીને કહેવ છે તેથી
તે “ પસિદ્ધ ” પ્રસિદ્ધ છે-આચાર્યાદિની પરપરા દ્વારા આ જ રીતે તેનું પાલન
કરવાનું આવ્યું આવે છે એવું “ સિદ્ધ ” સિદ્ધ થયેલ છે-તેમાં કંઈ પણ
પ્રમાણથી બાધા (અશ્કેલી) આવતી નથી તેથી તે પ્રમાણપ્રતિષ્ઠિત છે તથા
“ સિદ્ધવરસાસનમિણ ” જે સિદ્ધ થઈ ગયા છે, કૃતકૃત્ય બની ગયા છે-તેમનું
તે શ્રેષ્ઠ શાસન રૂપ છે કારણ કે તે “ આઘવિય ” મહાવીર પ્રભુએ કહેવ છે
“ સુદેસિય ” તેનો ઉપદેશ તેમણે દેવ, માનવ અને અસુરો સહિતની પરિપ-
દામાં સાચી રીતે આપેલ છે “ પસત્થ ” આ પ્રથમ સવરદ્વાર સમસ્ત પ્રાણી
ઓને માટે હિતસાધક હોવાથી મંગલમય છે “ પઢમ સવરદાર ” આ

‘પ્રસસ્ત’ પ્રશસ્ત—સર્વપ્રાણિહિતકર્ત્વાન્મદ્ગુલ્મયમ્, પદ્મ સવરદાર’ પ્રથમસવરદાર
‘સમત્ત’ સમાપ્તમ્, ‘ત્તિવેમિ’ ઇતિ વ્રગીમિ—અસ્યાર્થઃપૂર્વમુક્તઃ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ ઇતિ પ્રથમ સવરદાર સમાપ્તમ્ ॥

॥ ઇતિ શ્રી ત્રિવિદ્યાત-જગદ્ગુહ્ય - પ્રસિદ્ધવાચરૂપશ્ચદશભાષાકલિ-
તલલિતકળાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનેકગ્રન્થનિર્માપક- વાદિમાનમર્દક-
શ્રીશાહ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ‘જનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-પાલવ્રહ્મચારિજૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિગ્ગજપૂજ્યશ્રી
ધાસીલાલપ્રતિવિરચિતા શ્રી પ્રશ્નવ્યાકરણમુત્રસુદર્શન્યા
ગ્યાયા વ્યાખ્યાયા સવરાત્માકે દ્વીતીયે-ભાગેઽઘિસાનામક
પ્રથમ સવરદાર સમાપ્તમ્ ॥ ૧ ॥

યહ પ્રથમ સવર દ્વાર સમાપ્ત હુઆ! (ત્તિ વેમિ) હે જબૂ! જૈસા મેં ને
ભગવાન્ મહાવીર કે મુખ સે ડસે સુના હૈ વૈસા હી યહ મૈને તુમ સે
કહા હૈ—અપના કલ્પના સે ડસમેં કુઝ બી નહી કહા હૈ ॥

ભાવાર્થ—પ્રથમ સવરદ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હૂણ સૂત્રકાર કહતે
હૈ કિ હમ સવરદ્વાર કો પ્રત્યેક મુનિજન કે લિયે અછ્છી તરહ ઉપયોગ
પૂર્વક પાનભાવનાઓ સહિત પાવજીવ પાલન કરના ચાહિયે । હસકે
પાલન કરને મે ચદિ કોઈ પરીપહ્ત ઓર ઉપસર્ગ આવે તો ઉન્હે ધૈર્યપૂર્વક
સહલેના ચાહિયે, ક્યોં કિ યહ સવર દ્વાર નવીન કર્મો કે આસ્રવ
કો રોકતા હૈ । હસકે પાલન કરને સે અશુભ અગ્ચવસાય ઉત્પન્ન નહીં
હોને પાતે હૈ । પાપોં કા સ્રોત હસકે પ્રભાવ સે બધ્ત હો જાતા હૈ । યહ

પ્રકારનુ આ પ્રથમ સવરદ્વાર સ પૂર્ણ થયુ “ત્તિવેમિ” હે જબૂ! જેવું મે
લગવાન મહાવીરના મુખેથી સાલજ્યુ છે એવું જ તે મે તમને કહ્યું છે—
માગી કલ્પનાથી તેમા મે કંઈ પણ કહ્યું નથી

ભાવાર્થ—પ્રથમ સવરદ્વારનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે આ
સવરદ્વારનું પ્રત્યેક મુનિએ મારી રીતે ઉપયોગ પૂર્વક પાત્ર ભાવનાઓ સહિત
જીવનપર્યંત પાલન કરવું જોઈએ તેનું પાલન કરતા જો કોઈ પરીપહ્ત તથા
ઉપસર્ગ નહોતો તો ધૈર્યથી તેને મહન કરી લેવા જોઈએ, કારણ કે આ સવરદ્વાર
નવીન કર્મોનો આશ્રવ થતો રહે છે તેનું પાલન કરવાથી અશુભ અગ્ચવસાય
ઉત્પન્ન થવા પામતો નથી તેના પ્રભાવથી પાપોના પ્રવાહથી બધ્ત થઈ જાય છે

અપરિચ્છાત્રી આદિ ત્રિજોષ્ણો ચાલ્યા છે । અર્હત મગધનો ને હસે અપને જીવન મે ઉતાર કર હી સમસ્ત જીવો કો હમે ધારણ-સેવન કરને કા આદેશ દિયા છે । ભગવાન્ મહાવીર ને ખી જેણી હી હસ પ્રથમ સર-દ્વાર કી પ્રજ્ઞાસા કી છે । ઓર તીર્થંકર પરપરા કે અનુસાર હી અન્હોં ને હસે પાલન કરને આદિ કા આદેશ દિયા છે । તથા હમકા દેવમનુષાદિ સહિત પરિપદા મે ઉપદેશ દિયા છે, અતઃ ચત્ પ્રમાણપ્રતિષ્ઠિત છે । જોર મગલમય છે ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ હસ પ્રકારચત્ પ્રથમ સરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ ॥

તે અપરિચ્છાત્રી આદિ ત્રિજોષ્ણો વાણુ છે અર્હત ભગવાને તેને પોતાના જીવનમા ઉતારીને જ સમસ્ત જીવોને તેને ધારણ કરવાનો-તેનું સેવન કરવાનો આદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ આ પ્રથમ સરદ્વારની જોયી જ પ્રજ્ઞામા કી છે અને તીર્થંકર પરપરા અનુસાર જ તેમણે તેનું પાલન કરવા આદિનો આદેશ દીધો છે તથા તેનો દેવ, મનુષ્યાદિ સહિતની પરિપદામા ઉપદેશ આપ્યો છે, તેથી તે પ્રમાણભૂત છે અને મગલમય છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

આ રીતે આ પ્રથમ સરદ્વાર સમાપ્ત થાય છે

॥ सत्यवचन नाम द्वितीय सवरद्वारम् ॥

गत प्राणातिपातविरमण, सम्प्रति सत्यवचन प्रारम्भ्यते । अस्य पूर्वाध्ययनेन सहाय सम्बन्ध—पूर्व प्राणातिपातविरतिरभिहिता, सा तु अलीकवचनविरत्यैव सम्भवति, इत्येनेन सयन्वेनायात सत्यवचनाख्य द्वितीयमध्ययन प्रारम्भ्यते, तस्येदमादिम सूत्रम्—‘ जवू एत्तो वितिय च ’ इत्यादि—

मूलम्—जवू । एत्तो विइय च सच्चवयणं सुद्ध सुइयं सिवं सुजाय सुभासिय सुकहिय सुव्वयं सुदिट्ठ सुपडट्ठियं सुपडट्ठियजस सुसजमियवयणदुइय सुरवरनरवसभपवर—वलवग सुविहिय-जण वहुमय परमसाहुधम्मचरणतवनियम—परिगहिय सुगइ-पहदेसग च लोगुत्तम च वयमिण विज्जाहरगगणगमणविज्जाणसाहग सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग अवितहं तं सच्च उच्चुय अकुडिल मूयत्थ अत्थओ विसुद्ध उज्जोयग पभासग भवइ, सव्वभावाण-जीवलोगे अविसंवाइजहत्थमहुर पच्चक्खं

सत्यवचन नामक द्वितीय सवरद्वार प्रारम्भ—

प्राणातिपातविरमण नाम का सवरद्वार कहा जो चुका है । अब सत्यवचन नामका द्वितीय सवरद्वार प्रारम्भ होता है । इसका पूर्व अध्ययन के साथ संबध इस प्रकार से है—जबतक अलीकवचनों से जीव की विरति नहीं होगी—तबतक प्राणातिपात का विरमण सम्भव नहीं हो सकता । इसी संबध को लेकर सूत्रकार ने इस द्वितीय सत्यवचन नामक अध्ययन को प्रारम्भ करते हैं । इसका यह प्रथमसूत्र है—

सत्य वचन नामनु णीण सवरद्वारनो प्रारम्भ

प्राणातिपात विरमणु नामनु पडेला सवरद्वारनु वणुन पूर्ण थयु डवे सत्यवचन नामना णीण सवरद्वारना वणुननी शइआत थाय छे तेनो आ प्रकारे आगणना अध्ययन साथे सणध छे त्या सुधी अमत्य वचनोथी छवनी विरति थती नथी त्या सुधी प्राणातिपातनु विरमणु सखी शकतु नयी अ सणधने द्दरावीने सूत्रद्वारे आ द्वितीय सत्यवचन नामना अध्ययननो प्रारम्भ करे छे तेनु पडेलु सूत्र आ प्रमाणे छे—‘जवू ! एत्तो विइय च’ ४०

દેવય ચ જંત અચ્છેરકારણં અવતંથતરેસુ વહુણસુ માણુસાણં
 સચ્ચેણં મહાસમુદ્દમજ્ઞે વિ ચિદ્દતિ, ન નિમજ્જતિ મૂઢાણિયા
 વિ પોયા સચ્ચેણ ય ઉદગસંભમમિ વિ ન વુદ્ધંતિ, ન ય મરતિ
 યાહં ચ તે લઘ્ભતિ, સચ્ચેણ ય અગણિ સભમમિ વિ ન ઉજ્જાંતિ
 ઉજ્જુગા મણુસ્સા । સચ્ચેણ ય તત્તતેદ્દત્તઉલોહસીસકાઙ્ક
 છિવ્વતિ, ધરેંતિ ન ઉજ્જાંતિ મણુસ્સા । પવ્વયકડગાહિં મુચ્ચંતે
 ન ય મરતિ સચ્ચેણ ય પરિગ્ગહિયા અસિપજરગયા સમરાઓ
 વિ ણિદ્દતિ અણહાય સચ્ચવાઈ, વહવધાભિઓગવેરધોરેહિં
 પમુચ્ચતિ ય, અમિત્તમજ્ઞાહિં નિદ્દતિ અણહાય સચ્ચવાઈ ।
 સા દેવ્વાણિ ય દેવયાઓ કરેંતિ સચ્ચવયણે રયાણં ॥સૂ.૦૧॥

ટીકા—‘ જન્નુ ’ इत्यादि—

સુધર્મા સ્વામી જન્નુ સ્વામિન પ્રત્યાહ—હે જન્નુ ! ‘ ઇત્તો ’ इत—પ્રથમસવર-
 દ્વારાનન્તરમ્ ‘ વિદ્ધય ચ ’ द्वितीय खलु सवरद्वार ‘ सच्चवयण ’ सत्यवचनम्=
 सद्भ्यो-मुनिभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो वा हितम्=उपकारक सत्यम्, उक्तव—

‘ જન્નુ ! ઇત્તો વિદ્ધય ચ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી જન્નુસ્વામી સે વર્તે છે (જન્નુ !) હે
 જન્નુ ! (ઇત્તો) इस प्रथमसवरद्वार के बाद यह (विद्ध्य च) दूसरा सवर
 द्वार सत्य नामका है सो मैं इसे कहता हूँ, तुम सुनो—(सच्च वयण)
 “ सद्भ्यो हित ” सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणो का या
 पदार्थों का जो वचन हित-उपकारक होता है वह सत्य वचन है ।
 कहा भी है—

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્માસ્વામી જન્નુ સ્વામીને કહે છે ‘ જન્નુ ! ’ હે જન્નુ ! “ ઇત્તો ”
 આ પહેલા સવરદ્વાર પછી ‘ વિદ્ધય ચ ’ બીજું સત્ય નામનું જે સવરદ્વાર
 છે તેનું હું વર્ણન કરું છું તે તમે સાંભળો “ સચ્ચવયણ ” “ સદ્ભ્યો હિત ”
 સત્ય એટલે કે સત્ નું મુનિજનનું અથવા ગુણોનું અથવા પદાર્થોનું જે [વચન]
 હિત-ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યું પણ છે—

“ સત્ત્વ દિય સયામિહ સતો મુગડ ગુણા પયત્વા વા ” ડાયા—સત્ય હિત સતા-
મિહ, સન્તો મુનયો ગુણાઃ પદાર્થો વા ” ઇતિ, સત્સુ તિષ્ઠતીતિ વા, સત્યમ્,
સત્યચ તદ્વચન ચ સત્યવચનમ્, પરમાણનાગપરાયણ હિતકર સુવાવહમનુદ્વેગજનક
સુધાવત્સ્વાદીય વચન સત્યવચનમિત્યર્થઃ । કીદૃશ સત્યવચનમ્ ? તદાહ—‘ સુદ્ધ ’
શુદ્ધ-નિર્દોષત્વાત્, ‘ સુચિત્ર ’ શુચિત્ત્વપતિત્વાત્, ‘ સિવ ’ શિવ=મોક્ષજનક
ત્વામ્, ‘ સુજાય ’ સુજાત-શુભવિવક્ષયા સમુત્પન્નત્વાત્, ‘ સુમાસિય ’ સુમાપિતમ્—

“ સત્ત્વ દિય સયામિહ, સતો મુગડ ગુણા પયત્વા વા ” ।

સતોં કા હિત જિસસે હોતા હૈ વહ સત્ય મુનિ હોતે હૈં યા ગુણ
અથવા પદાર્થ હોતે હૈં । સત્ય કી દૂમરી વ્યુત્પત્તિ હસ પ્રકાર સે મી હૈ
“ સત્સુ તિષ્ઠતીતિ સત્ય, સત્ય ચ તદ્વચન ચ સત્યવચન ” જો વચન
સજ્જન પુરુષોં મેં રહતા હૈં વહ સત્યવચન હૈ । યહ સત્યવચન પર કે
પ્રાણો કે ત્રાણ કરને મેં પરાયણ હોતા હૈ, સત્ય કે હિતકારી હોતા હૈ,
સુખદાયક હોતા હૈ, ઉદ્વેગજનક નહીં હોતા હૈ, ઓર સુધા કે જૈસે
સ્વાદીય-અત્યંત મધુર હોતા હૈ । (સુદ્ધ) સત્યવચન મે કિસી મી
પ્રકાર કા દોષ નહીં હોતા હૈ—અતઃ નિર્દોષ હોને સે યહ શુદ્ધ હૈ (સુદૃશ)
હસમેં કિસી મી પ્રકાર કી અપવિત્રતા નહીં હોતી હૈ અતઃ યહ પવિત્ર
હોને સે શુચિત્ત્વ હૈ । (સિવ) હસ વચન સે જીવોં કો મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ
હોતી હૈ—હસલિયે મોક્ષજનક હોને સે યહ શિવરૂપ હૈ । (સુજાય)
હાર્દિક શુભ ભાવના સે પ્રેરિત હોકર હી એસા વચન બોલા જાતા હૈ

“ સત્ત્વ દિ ય સયામિહ, સતો મુગડ ગુણા પયત્વા વા ”

મતોનુ હિત જેનાથી થાય છે તે સત્ય છે, મુનિ અથવા ગુણ અથવા પદાર્થ
એ પ્રકારના સત્ય છે સત્યની ખીણ વ્યુત્પત્તિ આ પ્રમાણે પણ છે—“ સત્સુ
તિષ્ઠતીતિ સત્ય, સત્ય ચ તદ્વચન ચ સત્યવચન ” સજ્જન પુરુષોમા જે વચન
રહે છે તે સત્યવચન છે તે સત્યવચન અન્યના પ્રાણોનુ રક્ષણ કરવાને સમર્થ
હોય છે, બધાને માટે હિતકારી હોય છે, સુખદાયક હોય છે, ઉદ્વેગજનક
હોતુ નથી, અમૃત જેવુ અતિશય મીઠુ હોય છે “ સુદ્ધ ” સત્યવચનમા ડોષ
પણ પ્રકારનો દોષ હોતો નથી, તેથી નિર્દોષ હોવાથી તે શુદ્ધ છે “ સુદૃશ ”
તેમા ડોષપણ પ્રકારની અપવિત્રતા હોતી નથી તેથી તે પવિત્ર હોવાથી શુચિત્ત્વ
છે “ સિવ ” તે વચનથી જીવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી મોક્ષજનક
હોવાથી તે શિવરૂપ છે “ સુજાય ” હાર્દિક શુભ ભાવનાથી પ્રેરાઈને જે વચન
વચન બોલાય છે તેથી શુભ ભાવનાથી ઉદ્ભવેલ હોવાથી તે સુજાત છે.

દેવય ચ જંતં અચ્છેરકારગં અવતંતરેસુ વહુપસુ માણુસાણં
 સચ્ચેણં મહાસમુદ્ધમજ્ઞે વિ ચિટ્તિ, ન નિમજ્જાતિ મૂઢાણિયા
 વિ પોયા સચ્ચેણ ચ ઉદગસમમમિ વિ ન વુટ્તિ, ન ચ મરતિ
 યાહં ચ તે લઘ્ભંતિ, સચ્ચેણ ચ અગાણિ સંભમમિ વિ ન ઉજ્જંતિ
 ઉજ્જુગા મણુસ્સા । સચ્ચેણ ચ તત્તતેહ્યતત્તલોહસીસકાઈ
 છિવ્વતિ, ધરેંતિ ન ઉજ્જતિ મણુસ્સા । પવ્વયકડગાહિં મુચ્ચંતે
 ન ચ મરતિ સચ્ચેણ ચ પરિગ્ગાહિયા અસિપંજરગયા સમરાઓ
 વિ ણિઈતિ અણહાય સચ્ચવાઈ, વહવધાભિઓગવેરધોરેહિં
 પમુચ્ચતિ ચ, અમિત્તમજ્ઞાહિં નિઈતિ અણહાય સચ્ચવાઈ ।
 સા દેવ્વાણિ ચ દેવયાઓ કરેંતિ સચ્ચવયણે રયાણં ॥સૂ.૦૧॥

ટીકા—‘ જવૂ ’ इत्यादि—

સુધર્મા સ્વામી જવૂ સ્વામિન પ્રત્યાહ—હે જમ્વૂ ! ‘ એત્તો ’ इतः—પ્રથમસવર-
 દ્વારાનન્તરમ્ ‘ વિહય ચ ’ દ્વિતીય સ્વર સ્વરદ્વાર ‘ સન્ચવયણ ’ સત્યવચનમ્=
 સદ્ભ્યો—મુનિભ્યો ગુણેભ્યઃ પદાર્થેભ્યો વા હિતમ્=ઉપકારક સત્યમ્, ઉક્તવ—

‘ જવૂ ! એત્તો વિહય ચ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી જવૂ સ્વામી સે વરતે હૈ (જવૂ !) હૈ
 જવૂ ! (એત્તો) इस प्रथमसवरद्वार के बाद यह (विहय च) दूसरा सवर
 द्वार सत्य नामका है सो मैं इसे कहता हूँ, तुम सुनो—(सच्च वयण)
 “ सद्भ्यो हित ” सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणों का या
 पदार्थों का जो वचन हित-उपकारक होता है वह सत्य वचन है ।
 कहा भी है—

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્માસ્વામી જવૂ સ્વામીને કહે છે ‘ જવૂ ! ’ હે જવૂ ! “ એત્તો ”
 આ પહેલા સવરદ્વાર પછી ‘ વિહય ચ ’ બીજું સત્ય નામનું જે સવરદ્વાર
 છે તેનું હું વર્ણન કરું છું તે તમે સંભળો “ સચ્ચવયણ ” “ સદ્ભ્યો હિત ”
 સત્ય એટલે કે સત્ નું મુનિજનનું અથવા ગુણોનું અથવા પદાર્થોનું જે “ વચન ”
 હિત-ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યું પણ છે—

દોના, પ્રપરવલ્લવતામ્-વાસુદેવમતિવાસુદેવાદિ યોદ્ધપુરુષાણા, તથા-મુવિહિતજ-
નાના=મહાપુરુષાણા ચ ગ્રહુમત સમત યત્તત્, તથા-‘ પરમસાદુધમ્મચરણ ’ પરમ-
સાધુધર્મચરણમ્=પરમસાધૂના = ઉત્કૃષ્ટક્રિયાવર્તા મુનીના ધમચરણ=ધર્માનુષ્ઠાન
યત્તત્, તથા-‘ તવનિયમપરિગ્ગહિય ’ તપો નિયમપરિગૃહીતમ્=તપો નિયમાભ્યા
પરિગૃહીતમ્=અદ્વીકૃત યત્તત્તથા, તપોનિયમૌ દિ સત્યવાદિનામેવ ભવતો નેતરેપામ્,
તથા-‘ સુગઇપ પદેસગ ’ સુગતિપથદેશક=સુગતેઃ પન્થા. સુગતિપથ, તસ્ય દેશ-
કમ્, પ્રજાપકમ્, ચ=પુન. ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ લોગુત્તમ ’ લોકોત્તમ=લોકેષુ=લોક-
ત્રયેષુ ઉત્તમ=શ્રેષ્ઠમ્ ‘ વય ’ વ્રતમ્ અસ્તિ । તથા-ઇદ સત્યવચન ‘ વિજ્ઞાહરગગ
ણગમણવિજ્ઞાણ ’ વિદ્યાધરગગનગમનવિદ્યાના=વિદ્યાધરાણા યા ગગનગમનવિદ્યા-
સ્તાસા ‘ સાહગ ’ સાધક-સત્યવાદિનામેવ ! વિદ્યાઃ સિધ્યન્તીત્યાશય, તથા—
‘ સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપહ્દેસગ ’ સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપથદેશક=સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપથયોર્દેશક=
નિર્દેશક યત્તત્તથા, તથા-‘ અવિતઠ ’ અવિતથ=મિથ્યાભાવરહિત યત્ ‘ ત ’ તત્

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોં કો, વલદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુભટ-
યોદ્ધાઓ કો ઓર મહાપુરુષરૂપ મુવિહિતજનોં કો વહુમાન્ય હુઆ હૈ ।
(, પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિગ્ગહિયસુગઇપહ્દેસગ ચ ઇણ લોગુ-
ત્તમ ચ વય) ઉત્કૃષ્ટ ક્રિયા શાલી મુનિજનો કા યહ ધર્માચરણ-ધર્મા-
નુષ્ઠાન હૈ । તથા-તપ ઓર નિયમોં સે યે પરિગૃહીત હોના હૈ-અર્થાત્-
તપ ઓર નિયમ સત્યવાદી કે હી હોતે હૈ । ટતર જીવોં કે નહીં । સુગતિ
કે પથ કા યહ પ્રજાપક-નિર્દેશક હોતા હૈ । ઓર તીનોં લોકોં મેં યહ
સત્યવચન શ્રેષ્ઠ વ્રત હૈ । તથા-યહ સત્યવચન (વિજ્ઞાહરગગણ-ગમણ-
વિજ્ઞાણસાહગ) વિદ્યાધરોં કી ગગન મેં ગમન કરને વાલી જો વિદ્યાઈ
હૈ ઉનકા સાધક હૈ । (સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપહ્દેસગ) સ્વર્ગ કે માર્ગ કા
ઓર સિદ્ધિ કે પથ કા પ્રદર્શક હૈ । (અવિતઠ) અવિતથ-મિથ્યાભાવ

અઢવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ મુભટોને અને મહા-
પુરુષ મુવિહિત જનોને બહુ જ માન્ય છે “ પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિ-
ગ્ગહિયસુગઇપહ્દેસગ ચ ઇણ લોગુત્તમ ચ વય ” શ્રેષ્ઠ વિદ્યાગાળી મુનિજનોનુ
તે ધર્માચરણ-ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગૃહીત થાય
છે-એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને
માટે નહીં સુગતિના માર્ગનુ તે પ્રજાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકમા
આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન “ વિજ્ઞાહરગગણગમણ
વિજ્ઞાણસાહગ ” વિદ્યાધરોની આકાશમા ગમન કરવાની જે વિધા છે,
તેમનુ સાધક છે “ સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપહ્દેસગ ” સ્વર્ગના માર્ગનુ પ્રદર્શક છે.

પ્રમોદજનકતાત્, તથા ' સુકલ્પિય ' સુકલ્પિતમ્-વીતરાગપ્રતિપાદિતતાત્, ' સુઘ્વય ' સુઘ્વત-સર્વવ્રતપ્રધાનતાત્, તથા- ' સુદિદ્ધ ' સુદૃષ્ટમ્-અતીન્દ્રિયાર્થદર્શિભિરપવર્ગાદિહેતુતયા દૃષ્ટ્વાત્, ' સુપરિદ્ધિય ' સુપ્રતિષ્ઠિતમ્-સમસ્તપ્રમાણેરુપવાદિતતાત્, ' સુપરિદ્ધિયજસ ' સુપ્રતિષ્ઠિતયશઃ-સુપ્રતિષ્ઠિત યશો યસ્ય તત્, લોકત્રયપ્રસિદ્ધતાત્, તથા- ' સુસજમિયવચનગુહ્ય ' સુસંયમિતવચનોદિત-સુસંયમિત=સમ્યગ્નિયત્રિતયદ્વચન તેનોદિત=રુચિતમ્, નિર્દોષવચનૈઃ વચિતમિત્યર્થ, તથા ' સુરવર નરવસમપવરવલ્લવગસુવિદિય જણવહુમય ' ' સુરવરનરવૃષભપવરવલ્લવસુવિદિ-તજનવહુમતમ્ -- સુરવરાણામ્ -- ઇન્દ્રાદીનાં, નરપ્રમાણાં = ચક્રવર્ત્યાં

અતઃ શુભ વિવક્ષા સે સમુત્પન્ન હોને કે કારણ યદ્ સુજાત છે । (સુભાસિય) યદ્ પ્રમોદ કા જનક હોતા હૈં ઇસલિયે યદ્ સુભાષિત હૈં (સુકલ્પિય) ઇસકા પ્રતિપાદન વીતરાગ આત્માઓં ને કિયા હૈં ઇસલિયે યદ્ સુકલ્પિત હૈં (સુઘ્વય) સર્વવ્રતોં મેં ઇસકી પ્રધાનતા માની ગઈ હૈં ઇસલિયે યદ્ સુઘ્વતરૂપ હૈં । (સુદિદ્ધ) અતીન્દ્રિય અર્થોં કો જાનને વાલે સર્વેશ પ્રભુઓં ને ઇસે અપવર્ગ (મોક્ષ) આદિ કે હેતુ રૂપ સે દગ્વા હૈં ઇસલિયે યદ્ સુદૃષ્ટ હૈં । (સુપરિદ્ધિય) સમસ્ત પ્રમાણો દ્વારા ઉપપાદિત હોને સે યદ્ સુપ્રતિષ્ઠિત હૈં । (સુપરિદ્ધિયજસ) ત્રીનોં લોકોં મેં ઇસ વચન કા યશ સુપ્રસિદ્ધ હૈં ઇસલિયે યદ્ સુપ્રતિષ્ઠિત યશવાલા હૈં । (સુસજમિયવચનગુહ્ય) ઇસે સત્ય વચન કો વે હી મનુષ્ય ઘોલ સકતે હૈં કિ જિનકા વચન સુસંયમિત હોતા હૈં અઠ્ઠી તરહ સે નિયત્રિત હોતા હૈં । (સુરવરનરવસમપવરવલ્લવગસુવિદિયજણવહુમય) ' યદ્ વચન ઇન્દ્રાદિક ઉત્તમ દેવોં કો,

“ સુભાસિય ” તે પ્રમોદ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી સુભાષિત છે “ સુકલ્પિય ” વીતરાગ આત્માઓએ તેનું પ્રતિપાદન કર્યું છે, તેથી તે સુકલ્પિત છે “ સુઘ્વય ” સર્વે વ્રતોમા તે સુખ્ય મનાયુ છે તેથી તે સુઘ્વત છે “ સુદિદ્ધ ” અતીન્દ્રિય અર્થોને જાણનારા સર્વેશ પ્રભુઓએ તે અપવર્ગ આદિના હેતુરૂપથી જોયું છે, તેથી તે સુદૃષ્ટ છે “ સુપરિદ્ધિય ” સમસ્ત પ્રમાણો દ્વારા તેનું પ્રતિપાદન થયેલું હોવાથી તે પ્રમાણભૂત-સુપ્રતિષ્ઠિત છે “ સુપરિદ્ધિયજસ ” ત્રણે લોકમા આ વચનનો યશ સુપ્રસિદ્ધ છે તેથી તે સુપ્રતિષ્ઠિત યશવાળું છે “ સુસજમિયવચનગુહ્ય ” આ સત્ય વચન એ જ માણસો બોલી શકે છે કે જોમના વચન સુસંયમિત હોય છે-સારી રીતે નિયત્રિત હોય છે “ સુરવર નરવસમપવરવલ્લવગસુવિદિયજણવહુમય ” આ વચન ઇન્દ્ર આદિ ઉત્તમ દેવોને

દોના, પ્રતરવલવતામ્-વાસુદેવપ્રતિવાસુદેવાદિ યોદ્ધપુરુષાણા, તથા-સુવિહિતજ-
નાના=મહાપુરુષાણા ચ વ્રહ્મત મમત યત્તત્, તથા-‘ પરમસાદુધમ્મચરણ ’ પરમ-
સાધુધર્મચરણમ્=પરમસાધૂના = ઉત્કૃષ્ટક્રિયાવર્તા મુનીના ધર્મચરણ=ધર્માનુષ્ઠાન
યત્તત્, તથા-‘તવનિયમપરિગ્રહિય ’ તપો નિયમપરિગૃહીતમ્=તપો નિયમાભ્યા
પરિગૃહીતમ્=અદ્વીકૃત યત્તત્તથા, તપોનિયમો દિ સત્યવાદિનામેવ ભવતો નેતરેપામ્,
તથા-‘ મુગદ્વપદેસગ ’ મુગતિપદ્ધેશક=મુગતે. પન્થાઃ મુગતિપદ્ધ, તસ્ય દેશ-
કમ્, પ્રજાપકમ્, ચ=પુનઃ ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ લોગુત્તમ ’ લોકોત્તમ=લોકેષુ=લોક-
ત્રયેષુ ઉત્તમ=શ્રેષ્ઠમ્ ‘ વય ’ વ્રતમ્ અસ્તિ । તથા-ઉદ સત્યવચન ‘ વિજ્ઞાહરગગ-
ણગમણવિજ્ઞાણ ’ વિદ્યાધરગગનગમનવિદ્યાના=વિદ્યાધરાણા યા ગગનગમનવિદ્યા-
સ્તાસા ‘ સાહગ ’ સાધક-સત્યવાદિનામેવ ; વિદ્યા’ સિધ્યન્તીત્યાશયઃ, તથા—
‘ મગમગસિદ્ધિપદ્ધેસગ ’ સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપદ્ધેશક=સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપદ્ધયોર્દેશક=
નિર્દેશક યત્તત્તથા, તથા-‘ અવિતહ ’ અવિતથ=મિથ્યાભાવરહિત યત્ ‘ ત ’ તત્

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષો કો, વલદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુભટ-
યોદ્ધાઓ મો ઓર મહાપુરુષરૂપ સુવિહિતજનો કો વહુમાન્ય હુઆ હૈ ।
(, પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિગ્રહિયમુગદ્વપદેસગ ચ ઇણ લોગુ-
ત્તમ ચ વય) ઉત્કૃષ્ટ ક્રિયા શાલી મુનિજનો કા યહ ધર્મચરણ-ધર્મા-
નુષ્ઠાન હૈ । તથા-તપ ઓર નિયમો સે યે પરિગૃહીત હોના હૈ-અર્થાત્-
તપ ઓર નિયમ સત્યવાદી કે હી હોતે હૈ । ઇતર જીવો કે નહીં । મુગતિ
કે પદ્ધતિ કા યહ પ્રજાપક-નિર્દેશક હોતા હૈ । ઓર ત્રીનો લોકો મે યહ
સત્યવચન શ્રેષ્ઠ વ્રત હૈ । તથા-યહ સત્યવચન (વિજ્ઞાહરગગણ-ગમણ
વિજ્ઞાણસાહગ) વિદ્યાધરો કી ગગન મેં ગમન કરને ચાલી જો વિદ્યાઈ
હૈ ઉનકા સાધક હૈ । (મગમગસિદ્ધિપદ્ધેસગ) સ્વર્ગ કે માર્ગ કા
ઓર સિદ્ધિ કે પદ્ધતિ કા પ્રદર્શક હૈ । (અવિતહ) અવિતથ-મિથ્યાભાવ

અકવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ મુલટોને અને મહા-
પુરુષ સુવિહિત જનોને બહુ જ માન્ય છે “ પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિ-
ગ્રહિયમુગદ્વપદેસગ ચ ઇણ લોગુત્તમ ચ વય ” શ્રેષ્ઠ જિયારાણી મુનિજનોનુ
તે ધર્માચરણ-ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગૃહીત થાય
છે-એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને
માટે નહીં મુગતિના માર્ગનુ તે પ્રજાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકમાં
આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન “ વિજ્ઞાહરગગણગમણ
વિજ્ઞાણસાહગ ” વિદ્યાધરોની આઠારામાં ગમન કરવાની જે વિધિઓ છે,
તેમનુ સાધક છે “ મગમગસિદ્ધિપદ્ધેસગ ” સ્વર્ગના માર્ગનુ પ્રદર્શક છે.

‘ સચ્ચ ’ સત્યમ્=સત્યવચનનામક દ્વિતીય સરદારમ્ । પુનઃ કીદશમ્ ? ઇત્યાદિ-
 ‘ ઉજ્જુય ’ ઋજુકમ્-સરલભાવપ્રવર્તકત્વાત્, તથા ‘ અકુટિલ ’ અકુટિલ=કુટિ-
 લભાવવર્જિતત્વાત્, તથા-‘ ભૂયત્ય ’ ભૂતાર્થમ્=વાસ્તવિકમ્, તથા ‘ અત્યઓ ’
 અર્થતઃ-પરમાર્થતઃ વિશુદ્ધમ્, તથા-જીવગોકે ‘ સર્વભાવાણ ’ સર્વભાવાનાં-
 જીવાદિસમૂહપદાર્થાનામ્ ‘ ઉજ્જોયગ ’ ઉદ્યોતક=પ્રકાશકમ્, અનન્તર ‘ પમાસગ ’
 પ્રમાણક=પ્રતિપાદક ભવતિ, પુનઃ ‘ અવિસવાઈ ’ અવિસવાદિ=અવિરુદ્ધાદિ, તથા
 ‘ જહત્યમહુર ’ યથાર્થમધુરમ્, યથાર્થમિતિ કૃત્વા મધુર યથાર્થમધુર વાસ્તવિકમ-
 ધુરમિત્યર્થઃ, તથા-‘ પચ્ચક્ષ્વ દેવય ચ ’ પ્રત્યક્ષ દેવત ચ, સત્ય પ્રત્યક્ષો દેવ ઇત્યર્થઃ ।
 एतादृशं ‘ ज ’ यत् सत्यम्, ‘ त ’ तत् ‘ अच्छेरकारग ’ आश्चर्यकारक भवति,

સે રહિત છે । (ત સચ્ચ) એસા સત્યવચન નામકા દ્વિતીય સરદાર
 (ઉજ્જુય) સરલ ભાવ કા પ્રવર્તક લેને સે ઋજુક છે । તથા (અકુટિલ)
 હસમેં ભાવોં કી કુટિલતા નહીં હોતી છે ઇસલિયે કુટિલભાવોં સે વર્જિત
 હોને કે કારણ યહ અકુટિલ છે (ભૂયત્ય) યથાર્થ અર્થ કા હસકે દ્વારા
 પ્રતિપાદન હોતા છે ઇસલિયે યહ ભૂતાર્થ છે । (અત્યઓ વિશુદ્ધ) પરમાર્થ
 દષ્ટિ સે યહ વિશુદ્ધ છે ઇસલિયે યહ અર્થનો વિશુદ્ધ છે । તથા- (સર્વભા
 વાણ ઉજ્જોયગ) જીવલોકમેં યહ સમસ્ત જીવાદિપદાર્થોં કા પ્રકાશક છે
 ઇસલિયે યહ (પમાસગ ભવઈ) ડનકા પ્રતિપાદક (પ્રભાવક) મી છે । યહ
 સત્યવચન (અવિસવાઈ) અવિરુદ્ધ રૂપસે, અપને સ્વરૂપકો કહને વાલા છે
 ઇસલિયે (જહત્યમહુર) વાસ્તવોકરૂપ મેં મધુર છે । ઓર (પચ્ચક્ષ્વ દેવ
 ય ચ) પ્રત્યક્ષદેવ છે-સાક્ષાત્ દેવ જૈસા છે (જ ત) જો યહ સત્યવચન

“ અવિતહ ” અવિતથ-મિથ્યાભાવથી રહિત છે “ ત સચ્ચ ” આપુ સત્ય
 નામનુ બીજુ સરદાર “ ઉજ્જુય ” સરલ ભાવનુ પ્રવર્તક હોવાથી ઋજુક
 છે તથા “ અકુટિલ ” તેમા ભાવોની કુટિલતા હોતી નથી તેથી કુટિલ ભાવોથી
 રહિત હોવાને કારણે તે અકુટિલ છે “ ભૂયત્ય ” યથાર્થ અર્થનુ તેના દ્વારા
 પ્રતિપાદન થાય છે તેથી તે ભૂતાર્થ છે “ અત્યઓ વિશુદ્ધ ” પરમાર્થ દષ્ટિથી તે
 વિશુદ્ધ છે તેથી તે “ અર્થતોવિશુદ્ધ ” છે તથા “ સર્વભાવાણ ઉજ્જોયગ ”
 જીવલોકમા તે સમસ્ત જીવાદિ પદાર્થોનુ તે પ્રકાશક છે તેથી તે “ પમાસગ
 ભવઈ ” તેમનુ પ્રતિપાદક પણ છે આ સત્યવચન “ અવિસવાઈ ”
 અવિરુદ્ધરૂપે પોતાના સ્વરૂપને કહેનાર છે તેથી “ જહત્યમહુર ” વાસ્તવિક
 રીતે મધુર છે, અને “ પચ્ચક્ષ્વદેવય ચ ” પ્રત્યક્ષ દેવ છે-સાક્ષાત્
 દેવ જેવુ છે “ જ ત ” આ’ જે સત્યવચન છે તે “ અચ્છેરકારગ અવત્ય

‘ માણુસ્સાણ ’ મનુષ્યાણા કુત્ર ? ‘ વહુણ્ણુ ’ વહુકેપુ-અનેકેપુ ‘ અવત્થંતરેસુ ’ અવસ્થાન્તરેપુ = અવસ્થાવિશેષેપુ । તદેવાશ્ચર્યકારિત્વમાહ—‘ સચ્ચેણ ’ સત્યેન ‘ મહાસમુદ્ધમજ્ઞે વિ ’ મહાસમુદ્રમધ્યેઽપિ ‘ ચિદ્ધતિ ’ તિષ્ઠન્તિ, ન નિમ—જ્જન્તિ=ન ઘુડન્તિ, ‘ મૂઢાણિયા વિ ’ મૂઢાનીકા અપિ=મૂઢા=નિયતદિગ્ગમન પ્રતિ મૂઢતા પ્રાપ્તા-ગતીકા:=નાવિકા: યેપાં તે તથોક્તા: અપિ ‘ પોયા’ પોતા = નાવ. ‘ સચ્ચેણ ય ’ સત્યેન ચ ‘ ઉદગસમમમ્મિ ’ વિ ‘ ઉદકસમ્મિ’=આ-વર્તેઽપિ ‘ ન ઘુડ્ધતિ ’ ચ ઘુડન્તિ, તથા-તત્રસ્થા જના અપિ ‘ નય મરતિ ’ ન ચ મ્રિયતે, ‘ યાહ ’ સ્તાગ્ગ=તલ ચ તે ‘ લમ્મતિ ’ લભન્તે । તથા—‘સચ્ચેણ ય સત્યેન ચ ‘ અગણિસમમમ્મિ વિ અગ્નિસમ્મિ’=જ્વાલામાઝાસકુલેઽપ્યનરે ‘ ઉ-જ્જુગા ’ ઋજુકા:=સત્યવાદિનો ‘ મણુસ્સા ’ મનુષ્યા ‘ ન હજ્જતિ ’ ન દહન્તે= ન દગ્ધા ભવન્તિ । તથા—‘ મણુસ્મા ’ સત્યવાદિનો મનુષ્યા: ‘ સચ્ચેણ ય ’

હૈ વહ (અચ્છેરકારગ અવત્થતરેસુ વહુણ્ણુ માણુમાણ) અનેક અવસ્થાઓ મેં મનુષ્યોં કે લિયે આશ્ચર્ય પૈદા કરને ચાલા હૈ, જૈસે-(સચ્ચેણ મહા-સમુદ્ધમજ્ઞે વિ ચિદ્ધતિ ન નિમજ્જતિ મૂઢા ણિયાવિપોયા) જિનનૌકાઓં કે નાં ક જન જન નિયત દિશાઓ મેં જાને કે જ્ઞાન સે વિકલ હો જાતે હૈં તથા ઉનકી વે નૌકાઈ મહાસમુદ્ર કે વીચ મેં ભીં ઇસ સત્ય કે વલ પર હીં તૈર જાતી હૈં ઢૂંચતી નહીં હૈં । (સચ્ચેણ ય ઉદગસમમમિ વિ ન ઘુડતિ ન ય મરતિ, યાહ ચ તે લમ્મતિ) સત્ય કે પ્રભાવ સે, જલ કીં ભમર મેં ફંસે હુઈ ભીં મનુષ્ય ન ઢૂંચતે હૈંં ઓર ન મરતે હૈંં પ્રત્યુત ઉન્હેંં વહાં ભીં યાહ મિલ જાતી હૈં । (સચ્ચેણ ય અગણિ સમમમિ વિ ન હજ્જતિ ઉજ્જુગા મણુસ્સા) સત્ય કાં હીંં એસા પ્રભાવ હૈંં કિં જિસસેં જ્વાલાઓં સે ધધકતીં હુઈં અગ્નિ મેંં ભીં ઋજુક સત્યવાદો-મનુષ્ય જલતા

તરેસુ વહુણ્ણુ માણુસાણ ” અનેક અવસ્થામા મનુષ્યોને માટે આશ્ચર્ય પૈદા કરનાર છે, જેમકે “ સચ્ચેણ મહાસમુદ્ધમજ્ઞે વિ ચિદ્ધતિ ન નિમજ્જતિ મૂઢા ણિયાવિ પોયા ” જે નૌકાઓના નાવિકો ત્યારે નિયત દિશામા જવાના જ્ઞાનથી રહિત થાય છે ત્યારે તેમની તે નૌકાઓ મહાસમુદ્રની વચ્ચે પણ આ સત્યના પ્રભાવથી ઢૂંચતી જ અટકે છે “ સચ્ચેણ ય ઉદગસમમમિ વિ ન ઘુડતિ ન ય મરતિ, યાહ ચ તે લમ્મતિ ” સત્યના પ્રભાવથી પાણીના વમળમા ફસાયેલ મનુષ્ય પણ ઢૂંચતા નથી કે મરતા નથી એટલે કે ત્યાં પણ તેને રક્ષણ મળી જાય છે “ સચ્ચેણ ય અગણિસમમમિ વિ ન હજ્જતિ ઉજ્જુગા મણુસ્સા ” સત્યનો જ એવો પ્રભાવ છે કે જ્વાળાઓ વડે પ્રજ્વલિત અગ્નિમા ઋજુક-સત્યવાદી

સત્યેન ચ 'તત્તત્તેલ્લતલ્લોહસીસગાઢ' તત્તત્તેલ્લપુલ્લોહશીશકાનિ, તત્ત પ્રસિદ્ધમ્
 પ્રપુ=રૂઢમ્, લોહમ્=અય, શીશક પ્રસિદ્ધમ્, તત્તાનિ=ઉત્કલ્પિતાનિ યાનિ તૈલ-
 અપુલ્લોહશીશકાનિ તાનિ તથોક્તાનિ 'ઢિયતિ' સ્પૃશન્તિ, 'ધરેતિ' ધારયન્તિ હન્ત
 કિન્તુ તેન 'ન ડઙ્ગતિ' ન દગ્ધન્તે । તથા- 'સન્ચેણ પરિગ્ગહિયા' મત્યન પરિ-
 ઘૃહિતા મનુષ્યાઃ, 'પવ્વયકઢગાઢિ' પર્વતકટકેભ્ય =પર્વતપદેશેભ્ય 'મુન્ચત'
 મુચ્યન્તે=પાત્યન્તે, તથાપિ 'ન ય મરતિ' ન ચ મ્રિયન્તે । તથા- 'સન્ચવાઈ'
 સત્યવાદિન 'અસિપજરગયા િ' અસિપજરગતા અપિ=ચતુર્દિશુ સગ્ગદસ્તશત્રુ-
 પુરુષપરિવેષ્ટિતા અપિ સર્વતઃ સ્વજ્ઞેષુ પતત્સ્વપીત્યર્થઃ, 'અણહાય ય' અનથા એવ=
 અક્ષતશરીરાણ્વ 'સમરાઓ' સમરાત્, 'ણિયતિ' નિર્પાન્તિ=નિર્ગચ્છન્તિ । તથા
 'સન્ચવાઈ' સત્યવાદિનઃ પુરુષાઃ 'વહનધાભિઓગવેરઘોરેઈ' યથાધાભિઓગ

નહીં હૈ । (સન્ચેણ ય મણુસ્મા તત્તતેલ્લતલ્લોહસીસગાઢ) સત્ય સે મનુષ્ય
 તસ ડલલતે હુણ તૈલકો, પિપ્પલે હુણ રોગે કો, લાલ હુણ લોહે કો ગલે હુણ
 શીશે કો (ઢિયતિ) ઢ લેતે હૈ, અર્થાત્-શીતલ કરતા હૈ(ધરેતિ) ડન્હે હાથમે
 લે લેતા હૈ, પરન્તુ (ન ડઙ્ગતિ) યે ડનસે જલતે નહીં હૈ । (પવ્વયકઢ
 ગાઢિ મુન્ચતે ન ય મરતિ સન્ચેણ પરિગ્ગહિયા) સત્યવાદી મનુષ્ય કો
 યદિ પર્વત કે ડપર સે ઓ નીચે ધકેલ દિયા જાવે તો ઓ વહ
 સત્ય કે પ્રભાવ સે મરતા નહીં હૈ-સર્વથા વચ જાતા હૈ । ડસી તરહ જો
 (સન્ચવાઈ) સત્યવાદી મનુષ્ય હોતે હૈ વે (અસિપજરગયા) ચારો ઓર
 સે યુદ્ધ મેં તલવારોં કો લિયે હુણ અપને શત્રુઓં ઢારા ઘેર ઓ લિયે
 જાવે તો ઓ ઓ (અણહાય) અક્ષત શરીર હી (ણિયતિ) ચાહે કિતની
 હી તલવારોં કે ઘાર ડન પર પડ રહે હોં, ઓર વે ડસ યુદ્ધભૂમિ મે સુર
 ક્ષિત નિકલ આતે હૈ । ઓર (વહનધાભિઓગવેરઘોરેઈ પમુચતિ ય)

માણુસ બળતો નથી "સન્ચેણ ય મણુસ્મા તત્તતેલ્લતલ્લોહસીસગાઢ" મત્યથી
 માણુસ ડડળના તેલને, લાલચોળ લોઢાને અને ઓગાળેલ ઓસાને પણ નર્પી
 કી શકે છે "ધરેતિ" તેમને હાથમા લઈ લે છે પણ "ન ડઙ્ગતિ" તેઓ
 તેનાથી ઢાઝતા નથી "પવ્વયકઢગાઢિ મુન્ચતે ન ય મરતિ સન્ચેણ પરિગ્ગહિયા"
 સત્યવાદી મનુષ્યને ઓ પર્વતના ડપરથા નીચે ધડેલી દેવામા આવે તો પણ
 સત્યના પ્રભાવથી મરતો નથી-તેનો વાળ પણ વાકો થઈ શકતો નથી
 આ રીતે ઓ "સન્ચવાઈ" સત્યવાદી મનુષ્યો હોય છે "અસિપજરગયા" યુદ્ધમા
 ઓમેરથી હાથમા તલવાર ધારણ કરેલ શત્રુઓ વડે ઘેરાઈ જાય તો પણ
 'અણહાય' અક્ષત શરીરે જ 'ણિયતિ' ગમે તેટલી તલવારોના ઘા તેના
 પર પડવા છતા પણ તે રણમેદાનમાથી સુરક્ષિત બહાર આવે છે આને તે

वैरघोर — वधो=घात वन्धः=निगडादि बन्धः, 'अभिओगो' अभियोगः—अप-
राधारोपः, वैरघोरः=घोरशत्रुता, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, एभ्यः 'पमुच्चति'
प्रमुच्यन्ते, च=पुनः 'अमित्तमज्झाहि' अमित्तमध्यात्=शत्रुमध्यात्='अणहा य'
अनघाश्च=अक्षतशरीराश्च, 'निडति' निर्यान्ति=निर्गच्छन्ति । उक्तमपि—

“सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम् ।

नासिच्छिनत्ति सत्येन सत्यान्न दशते फणी ॥ इति ।

तथा 'देवयाओय' देवताश्च 'सच्चत्रयणे रयाण' सत्यलचने रतानां=
सत्यवादिना मनुष्याणां 'सादेव्याणि' सादिव्यानि=मानिव्यानि 'करेति' कुर्वन्ति ।

वध घात, वध निगड़ (वेडी)आदि वधन अभियोग अपराधारोप, एव घोर
शत्रुता इनसे भी वच जाते हैं । (अमित्तमज्झाहिणिइति अणहा य
सच्चवार्ह) यदि कदाचित् ये शत्रुओ के बीच में आ भी जावें तो भी
शत्रु उनका कुछ भी बिगाड नहीं कर पाते हैं—उनके बीच से वे अन-
अक्षत शरीर ही निकल आते हैं । कता भी है—

“सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम् ।

नासिच्छिनत्ति सत्येन, सत्यान्न दशते फणी ॥”

सत्यवादी पुरुषों के समक्ष अग्नि शीतल हो जाती है, अगाध—
समुद्र भी स्थल जैसा हो जाता है, तलवार की धार भोयरी हो जाती
है और फणी-सर्प उसे डस नहीं पाता है ।

अधिक क्या कहा जाय (सच्चत्रयणे रयाण) जो सत्यवचन में
रत होते हैं उन सत्यवादी मनुष्यों का (देवयाओ य) देवता (सादि—

‘वह वधाभिओगवैरघोरेहि पमुचति य’ वध—घात, वध—निगड आदि वधन,
अभियोग—अपराधारोप, अने घोर शत्रुता से वधायी पण वशी नथ छे
“अमित्तमज्झाहिणिइति अणहाय सच्चवार्ह” जे कहाय ते शत्रुओनी वन्धे आनी
नथ तो पण शत्रु तेने काँ छल करी शकता नथी—तेभनी वन्धेथी ते अक्षत
शरीरे व वडार नीकणी नथ छे उछु पण छे—

“सत्येनाग्निर्भवेच्छीतोऽगाधाम्बुधिरपि स्थलम् ।

नासिच्छिनत्ति सत्येन सत्यान्न दशते फणी ॥”

सत्यवादी पुरुषों को अग्नि शीतल थई नथ छे, अगाध समुद्र पण
स्थल समान थई नथ छे, तलवारनी धार भूही थई नथ छे अने अर्ध तेने
उभ दध शकतो नथी

वधु शु उछु “सच्चत्रयणे रयाण” अत्य वचनमा जे दीन रहे छे ते
सत्यवादी मनुष्यों “देवयाओय” देवता “सादिव्याणि करेति” सानिध्य

સત્યવાદિના વચનમનન્યથાકર્તુ દેવાસ્તત્સાચિર્થો વિષ્ટીતીતિ ભાવ । ઉક્તમપિ—
પ્રિય સત્ય વાક્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને ।

ગિર સત્યા લોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ॥

સુરા સત્યાદ્ વાક્યાદ્ દદતિ મુદિતા કામિતફલમ્ ।

અતઃ સત્યાદ્ વાક્યાદ્ વ્રતમભિમત નાસ્તિ ભુવને ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ॥ મૂ૦૧ ॥

જ્વાળિ કરેતિ) સાગ્રિધ્ય કરતે છે, અર્થાત્ સત્યવાદી કે વચનોં કો અનન્યથા સત્ય કરને કે લિયે દેવ અનેકે નિકટ રહતે હે । કહાં મી હે—

“ પ્રિય સત્ય વાક્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને,

ગિર સત્યા લોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ।

સુરાઃસત્યાદ્ વાક્યાદ્ દદતિ મુદિતાઃકામિતફલમ્,

અતઃસત્યાદ્ વાક્યાદ્ વ્રતમભિમત નાસ્તિ ભુવને ॥ ૧ ॥

પ્રિય સત્ય વચન કિમ સહૃદય વ્યક્તિ કે હૃદય કો હરણ નહીં કર લેતા હે । અર્થાત્ સવકે હૃદય કો હરણ કર લેતા હે । લોક દર એક સમય દર એક વાત મેં હસ સત્ય વચન કે હી અભિલાષી હોતે હે । સત્યવચન સે દેવતા મી પ્રસન્ન રહતે હે, ઓર વે સત્યવાદી કે ઇચ્છિત મનોરથ કી પૂર્તિ કરતે રહતે હે । ઇસલિયે સત્યવચન કે સમાન અભિમતવ્રત લોક મે ઓર કોઈ નહીં હે ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ ઈતિથી સવર દ્વાર મેં સત્યવચન રૂપ મહાવ્રત કે સ્વરૂપ કા કથન કિયા હે । ક્યો કિ પ્રથમ સવરદ્વાર કે સાથ

શેવે છે, એટલે કે સત્યવાદીના વચનોને અનન્યથા—માથા પાડવાને માટે દેવે તેમની પાસે રહે છે ઓ પણ છે—

“ પ્રિય સત્ય વાક્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને,

ગિર સત્યાલોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ।

સુરા સત્યાદ્ વાક્યાદ્ દદતિ મુદિતા કામિતફલમ્,

અતઃ સત્યાદ્ વાક્યાદ્ વ્રતમભિમત નાસ્તિ ભુવને ॥ ૧ ॥ ”

પ્રિય સત્યવચન કઈ મહદયી વ્યક્તિનું મન હરતું નથી । એટલે કે સૌના મનને હરી લે છે લોહો દરેક વખતે દરેક વાતમા આ સત્ય વચનના જ અભિલાષી હોય છે સત્ય વચનથી દેવતા પણ પ્રસન્ન રહે છે અને તેઓ સત્યવાદીના ઇચ્છિત મનોરથો પૂરા કરે છે તે કારણે સત્ય વચન જેવું શ્રેષ્ઠ વચન જગતમા ખીજું કોઈ પણ નથી

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ બીજા સવરદ્વારમા સત્ય વચન નામના મહાવ્રતનો સ્વરૂપનું વર્ણન કર્યું છે કારણ કે પ્રથમ સવરદ્વાર સાથે તેનો ઘાડ

इसका धनिष्ट सच है आर वह इस प्रकार से है कि जब तक जीव अलीक (अमत्य) वचनों से निवृत्त नहीं होता तब तक वह प्राणातिपात विरमण रूप प्रथमस्वरद्वार का आराधक नहीं बन सकता है। यह सत्यवचन शुद्ध, शुचिक, शिव, सुजात आदि अनेक विशेषणों से संपन्न होता है। सत्यवादी की सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। इन्द्रादिक देवों को, तथा चक्रवर्ती आदि श्रेष्ठ पुरुषों को सत्यवचन बहुमान्य होते हैं। समस्त विद्याओं की सिद्धि इन्हीं सत्यवचनों से होती है। स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि के यह पथ प्रदर्शक होता है। सत्य होकर भी जो अप्रिय होते हैं वे वचन सत्यवादि को बोलने योग्य नहीं होते हैं। किन्तु प्रिय सत्यवचन ही सत्यवादी बोलते हैं। सत्यवादियों के समक्ष ससार की समस्त शक्तियां नतमस्तक हो जाया करती हैं अर्थात्-गिरिजुकाता है। मनसा वाचा कर्मणा जो इस सत्य की आराधना में लीन होते हैं वे इस भव में तो सुखी होते ही हैं परन्तु परभव में भी उन्हें सुखों की प्राप्ति होती है। तप नियम से सब सत्यवचन से ही शोभित और फलप्रद होते हैं। परिणामों में जिनके जितनी अधिक सरलता होगी उनके वचनों में उतनी अधिक सत्यता होगी। सत्यवादियों के देवता तक सेवक होते हैं। सत्य में सावधभाषण का सर्वथा परित्याग ही जाता है। इन वचनों

મળધ છે તે આ પ્રકારે છે ત્યાં સુધી જીવ અમત્ય વચનોથી મુક્ત થતો નથી ત્યાં સુધી તે પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ પ્રથમ સ્વરદ્વારનો આરાધક બની શકતો નથી આ સત્ય વચન શુદ્ધ, શુચિ, શિવ, સુજાત આદિ અनेક વિશેષણોથી મુક્ત હોય છે સત્યવાદીની હમેશા પ્રતિષ્ઠા થાય છે ઇન્દ્રાદિક દેવોને તથા ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને સત્યવચન ખુબ માનને યોગ્ય લાગે છે એ સત્ય વચનથી જ સઘળી વિદ્યાઓ મિદ્ધ થાય છે સ્વર્ગ, મોક્ષની પ્રાપ્તિમાં તે માર્ગદર્શક હોય છે સત્ય હોવા છતાં પણ અપ્રિય લાગે તેવા વચનો સત્યવાદીઓએ બોલવા બેઠાં નહીં, પણ સત્યવાદી પ્રિય સત્ય વચન જ બોલે છે સત્યવાદીઓ આગળ સસારની સમસ્ત શક્તિઓ માથુ નમાવે છે મન, વચન અને ક્રિયાથી જે આ સત્યની આરાધનામાં લીન રહે છે તેઓ આ ભવમાં તો સુખી થાય છે પણ પરભવમાં પણ તેમને સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે તપ નિયમ એ સૌ સત્ય વચનથી જ શોભે છે અને ફળદાયી નિવડે છે પરિણામોમાં જેમની જેટલી વધારે સરળતા હશે તેટલી તેમના વચનોમાં વધારે સત્યતા હશે દેવતા પણ સત્યવાદીઓની સેવા કરે છે સત્યમાં સાવધ ભાષણનો સર્વથા પરિત્યાગ થઈ જાય છે આ વચનોથી જીવને સૌથી મોટો આધ્યાત્મિક

શતમ્, વિન્દુત્રયસ્થાપનેન સહસ્ર મતિ ॥ ૩ ॥ ઇતિ સ્થાપનામત્યમ્ ॥ નામસત્યમ્
 યથા-કુલમવર્ધયન્નપિ કુલવર્ધન ઇત્યાદિ ॥ ૪ ॥ રૂપસત્યમ્-યથા-સાગુરૂપ-
 ધારણેન સાધુરિતિ ॥ ૫ ॥ પ્રતીત્યસત્યમ્-યથા મત્યમા પ્રતીત્ય=આશ્રિત્ય અના-
 મિકા ઇત્યા, કનિષ્ઠિકામાશ્રિત્ય તુ લીર્ણા ॥ ઇતિ પ્રતીત્યસત્યમ્ ॥ ૬ ॥ વ્યવહાર

સત્યહં ૨। મિત્ર વસ્તુમેં મિત્ર વસ્તુકે આરોપ કરનેવાલે વચનકો સ્થાપના
 સત્ય કહતે હેં, જૈસે ણક કે આગે દો વિન્દુઓ કી સ્થાપના કરકે ઉસે
 ૧૦૦ કહના, તથા વિન્દુત્રય કી સ્થાપના કરકે ઉસે ણક હજાર કહના ૩।
 દૂસરીકોઈ અપેક્ષા ન રખકર કેવલ વ્યવહાર કે લિયે કિસી કા સજાકર્મ
 કરના હસકા નામ નામસત્યહેં-જૈસે કિસી લઢકે કો કુલવર્ધન રલ્લેના।
 કુલ વર્ધન કા તાત્પર્યહોત્તા હેં-કુલ કો વઢાને વાલા, પરન્તુ વ્યવહાર
 ચલાને કેં લિયે જો સજાકર્મ કિયા જાતા હેં-નામ રખા જાતા હેં-ઉસમેં
 હસકી અપેક્ષા સાપેક્ષ નહીં હુઆ કરતી હેં, ડમી કા નામ નામસત્ય હેં
 ૪। પુદ્ગલ કે રૂપાદિક અનેક ગુણો મે સે રૂપ કી પ્રધાનતા કો લેકર જો
 વચન કહા જાતા હેં ઉસે રૂપ સત્ય કહતે હેં-જૈસે કેશોંકો કાલા કહના,
 અથવા રૂપ સ્વરૂપ ધારણ કી મુખ્યતા કો લેકર જો વચન કહા જાતા
 હેં વહ ભી રૂપસત્ય હેં- જૈસે-સાધુ કે સ્વરૂપ કો ધારણ કરને વાલે
 વ્યક્તિ કો સાધુ કહના ૫। કિસી વિવક્ષિત પદાર્થ કી અપેક્ષા સે દૂસરે
 પદાર્થ કે સ્વરૂપ કા રચન કરના। હસે પ્રતીત્યસત્ય યા આપેક્ષિકસત્ય

પૃથ્વ્ય માનવુ તે સમત સત્ય છે (૩) લિન્ન વન્તુમા લિન્ન વન્તુને। આરોપ
 કરનાર વચનને સ્થાપના સત્ય કહે છે જેમકે એકની સામે બે બિન્દુઓની સ્થા-
 પના કરીને તેને સો (૧૦૦) કહેવા તથા ત્રણ બિન્દુઓની સ્થાપના કરીને હજાર
 (૧૦૦૦) કહેવા (૪) બીજી કોઈ પણ અપેક્ષા રાખ્યા વિના ફક્ત વ્યવહારને
 માટે જ કોઈને કોઈ સજા આપવી તેને નામ સત્ય કહે છે જેમકે કુળને
 વધારે નહીં છતાં પણ કોઈનું નામ કુળવર્ધન રાખવું કુળવર્ધનનો અર્થ થાય
 છે કુળને વધારનાર, પણ વ્યવહાર ચલાવવાને માટે જે નામ રાખવામા આવે
 છે તેમા કોઈ અપેક્ષા સાપેક્ષ થતી નથી, તેનું જ નામ નામસત્ય છે (૫)
 પુદ્ગલના રૂપાદિક અનેક ગુણોમાથી રૂપની પ્રધાનતાને લીધે જે વચન કહેવાય
 તેને રૂપસત્ય કહે છે જેમકે વાળને કાળા કહેવા, અથવા રૂપ-સ્વરૂપ ધારણની
 મુખ્યતાને લઈને જે વચન કહેવામા આવે છે તે પણ રૂપસત્ય છે જેમ કે
 સાધુના સ્વરૂપને ધારણ કરનાર વ્યક્તિને સાધુ કહેવા તે રૂપસત્ય છે
 (૬) કોઈ વિવક્ષિત પદાર્થની અપેક્ષાએ બીજા પદાર્થના સ્વરૂપનું રચન કરવું તેને
 પ્રતીત્ય સત્ય અથવા આપેક્ષિક સત્ય કહે છે જેમકે વચલી

સત્યમ્ — યથા ગિરિગતત્ત્વાદેર્દહનેऽપિ ઘટગત — જલસ્ય ગલનેऽપિ ગિરિર્દહ્યતે
ઘટો ગલતીતિ વ્યવહારો ભવતિ ॥ ૭ ॥ ભાવસત્યમ્—યસ્મિન્ વસ્તુનિ યસ્ય
ધર્મસ્યાધિક્યમ્, તદપેક્ષયા સત્યમ્=ભાવસત્યમ્, યથા અવહાર-પञ्चवर्णसमवेऽपि
रक्तः शुभ्रः शुक्लो हरित इत्यादि॥૮॥ યોગમત્યમ્=યોગેન=વસ્તુસયોગેન સત્ય-યોગ-
સત્યમ્ યથા—ઉત્રયોગાચ્છત્રી દણ્ડયોગાદ્ દણ્ડીતિ ॥ ૯ ॥ ઔપમ્યસત્યમ્=ઉપમા
સત્યમ્—યથા—ચન્દ્રમનુષ્યમ્, સમુદ્રતટ્ટાગ इत्यादि ॥ ૧૦ ॥ इति । तथा ‘चोद-

કહતે હૈં જૈસે મધ્યમા કી અપેક્ષા અનામિકા અગુલી કો ફસ્વકહના ઔર
કનિષ્ઠિકા અગુલી કી અપેક્ષા દીર્ઘ કહના ૬ । નૈગમ આદિ નયો કી
પ્રધાનતા સે જો વચન બોલા જાતા હૈં ઉસે વ્યવહાર સત્ય કહતે હૈં, જૈસે
પર્વત કે ઝપર કી ઘાસ આદિ કે જલને પર એમા કહના કિ પર્વતજલ રહા હૈં,
ઘટસે જલ કે નિકલને પર એમા કહના કિ ઘડા ગલ રહા હૈં, યહ સવ
વ્યવહાર સત્ય હૈં, ક્યોં કિ વ્યવહાર મે એસે વચનોં કો સત્ય માના ગયા,
હૈં ૭ । જિસ વસ્તુ મેં જિસ ધર્મ કી અધિકતા હો ઉસકો લેકર જો
વચન કહા જાય વહ ભાવસત્ય હૈં, જૈસે પાંચો વર્ણોં કી સમ્ભવતા
હોને પર મી વગલે કો શુક્લ કહના, તોતે કો હરા કહના । વસ્તુ કે
સયોગ સે જો વચન બોલા જાતા હૈં વહ યોગસત્ય હૈં, જૈસે છત્તા કે
સબધ સે પુરુષ કો છત્રી કહના, દણ્ડ કે સબધ સે દણ્ડી કહના ૯ ।
દૂસરે પ્રસિદ્ધ સદૃશ પદાર્થ કો ઉપમા કહતે હૈં, હસકે આશ્રય સે જો
વચન બોલા જાતા હૈં વહ ઉપમાસત્ય હૈં, જૈસે ચન્દ્ર કે સમાન મુખ,
સમુદ્ર કે સમાન તટાગ હોતા હૈં, એમા વચન કહના । (ચોદસ પુર્વવીર્હિ

અનામિકા આગળીને નાની કહેવી અને ટચલી આગળીની અપેક્ષાએ તેને મોટી
કહેવી (૭) નૈગમ આદિ નયોની પ્રધાનતાથી જે વચન બોલાવામા આવે છે
તે વચનને વ્યવહાર સત્ય કહે છે જેમ કે પર્વત ઉપરના ઘાસ આદિને આગ
લાગે તો પર્વત મળગી રહ્યો છે તેમ કહેવું, ઘડામાથી પાણી ટપડતું હોય તો
ઘડો ટપડે છે તેમ કહેવું, એ બધા વ્યવહાર સત્ય ઉદાહરણ છે, કારણ કે
વ્યવહારમા એવા વચનોને સત્ય માનવામા આવે છે (૮) જે વસ્તુમા જે
ધર્મની વિશેષતા હોય તેને લઈને જે વચન કહેવાય તે ભાવ સત્ય છે જેમ
કે પાંચે વર્ણોની સંભવિતતા હોવા છતાં પણ બગલાને સંદેહ કહેવા, પોપટને
લીલા કહેવા તે ભાવસત્ય છે (૯) વસ્તુના સયોગથી જે વચન બોલાય છે તે
યોગસત્ય છે જેમકે છત્રીના સબધથી પુરુષને છત્રી કહેવું, દડના સબધથી
દડી કહેવું (૧૦) બીજા પ્રસિદ્ધ સદૃશ પદાર્થને ઉપમા કહે છે, તેનો આશ્રય
લઈને જે વચન બોલાય છે તે ઉપમા સત્ય છે જેમ કે ચન્દ્રમાના સમાન મુખ,
સમુદ્રના જેવું તળાવ હોય છે, એવા વચન કહેવા તે ઉપમા સત્ય છે “ચોદસ

સપુત્રીર્હિ' ચતુર્દશર્શિભિઃ ' પાહુડત્યચિડય ' પ્રાભુતાર્થવિદિતમ્-પૂર્વગતાંશવિ-
 શેષાભિધેયતયા સત્યવાદપૂર્વનામ્ના ગ્રાતમ્, તથા-' મહરિસીણ ચ ' મહર્ષિણાં
 ચ ' સમયપરૂણ ' સમપ્રદત્ત સમયેન-મિદ્ધાન્તેન પ્રદત્ત=વિતીર્ણ, મહર્ષિભિ સિદ્ધા
 ન્તરૂપતયા ટૂઠીતમિત્યર્થ, તથા ' દેવિન્દ્રનરિન્ધામિયત્ય ' દેવનરેન્દ્રમાધિતાર્થમ્ દેવા
 નામ્=ઇન્દ્રાદીના નરેન્દ્રાણા=ચક્રવર્તિપ્રભુતીના માપિતઃ=પ્રતિમાપિતોઽર્થઃ=પ્રયોજન
 યસ્ય તત્, તથા-' વૈમાણિયસાહિય ' વૈમાનિકમાધિત વૈમાનિકે=વૈમાનિકઢવૈઃ
 સાધિત=માયનાવિપયીકૃત, સેવિતમિત્યર્થઃ, તથા-' મહત્ય ' મહાર્થમ્=મહાન્ અર્થઃ
 =પ્રયોજન યસ્ય તત્, તથા ' મતોનહિવિજ્ઞાસાહણત્ય ' મન્ત્રોપધિવિદ્યાસાધનાર્થમ્=
 મન્ત્રોપધિવિદ્યાના સાધનમર્થ =પ્રયોજન યસ્ય તત્, તેન વિના તત્સિદ્ધયાગાત્,
 તથા-' ચારણગણસમગસિદ્ધિવિજ્ઞ ' ચારણગણશ્રમણસિદ્ધિવિધમ્=ચારણગણાના=

પાહુડત્યચિડય) એ સત્ય કો ચતુર્દશ પૂર્વધારિયો ને પ્રાભુતા રૂપ સે
 વિદિત કિયા હૈ અર્થાત્ પૂર્વગત અઞ્ચવિશેષ કી અભિધેયતા સે સત્ય-
 વાદપૂર્વ હસ નામ સે જાના હૈ, (મહરિસીણ ચ સમપ્રવરૂણ) મહર્ષિયો
 ને હસે સિદ્ધાન્તરૂપ સે સ્વીકાર કિયા હૈ, (દેવનરિન્દ માસિયત્ય)
 ઇન્દ્રાદિકો કે લિયે તથા ચક્રવર્તી આદિ (રાજાઓ) કે લિયે હસકા
 પ્રયોજન ઉપાદેયરૂપ સે કહા ગયા હૈ, (વૈમાણિય સાહિય) વૈમાનિક
 દેવો ને હમ સત્ય કો અપની સાધના કા વિષયમ્નત બનાયા હૈ અર્થાત્
 હસકા સેવન કિયા હૈ (મહત્ય) ગ્રહ મહાન્ અર્થ-પ્રયોજન વાગા હૈ
 (મતોસહિવિજ્ઞાસાહણત્ય) મન્ત્રઔપધિ યેવ વિદ્યાઓ કા સાધન હસકા
 પ્રયોજન હૈ કયોં કિ સત્ય કે વિનામત્રાદિ સિદ્ધ નહીં હોતેહૈ, (ચારણગણ-
 સમગસિદ્ધિવિજ્ઞ) ઇતી કે પ્રભાવ સે હસી ચારણગણો કો આકાશગા-

પુત્રીર્હિ પાહુડત્યચિડય " આ સત્યને ચૌદ પૂર્વધારીઓએ પ્રાભુતાર્થરૂપે વિદિત
 ડ્યું છે એટલે કે પૂર્વગત અઞ્ચવિશેષની અભિધેયતાથી સત્યવાદ પૂર્વ એ
 નામથી જાણ્યું છે " મહરિસીણ ચ સમયપરૂણ " મહર્ષિઓએ તેને સિદ્ધાન્ત
 રૂપે સ્વીકાર્યું છે " દેવનરિન્દ માસિયત્ય " ઇન્દ્રાદિઓને તથા ચક્રવર્તી આદિ
 નરેન્દ્રોને માટે તેનું પ્રયોજન ઉપાદેયરૂપે કહેવાયું છે, " વૈમાણિયસાહિય "
 વૈમાનિક દેવોએ આ સત્યને પોતાની સાધનાનો વિષય બનાવ્યો છે એટલે કે
 તેનું સેવન ડ્યું છે, " મહત્ય " તે મહાન અર્થ-પ્રયોજનવાળું છે " મતો
 સહિવિજ્ઞાસાહણત્ય " તે મન્ત્ર-ઔપધિ અને વિદ્યાઓનું સાધન તેનું પ્રયોજન
 છે કારણ કે સત્ય વિના મત્રાદિ સિદ્ધ થતા નથી, " ચારણગણસમગસિદ્ધિ
 વિજ્ઞ " તેના પ્રભાવથી ચારણ ગણોને આકાશગામિનો વિજાની તબક્કોને

વિદ્યાચારણાદીના શ્રમણાના ચ સિદ્ધિવિદ્યા=આકાશગામિની વૈક્રિયાદિ રૂપા ચ
યસ્માત્તત્તથોક્તમ્, તથા-‘મણુયગણાણ’ મનુજગણાના ‘વદણિજ્જ’ વન્દનીય=
સ્તવનીયમ્, તથા-‘અમરગણાણ’ અમરગણાના=દેવાનામ્ ‘અચ્ચણિજ્જ’
અર્ચનીયમ્=સત્કારયોગ્યમ્, તથા-‘અસુરગણાણ ચ’ અસુરગણાના ચ ‘પૂયણીય’
પૂજનીય=પ્રશસનીયમ્, તથા ‘અણેગપાલ્લવિપરિગ્ગહિય’ અનેકપાલ્લવિ-
પરિગૃહીતમ્=અનેકધર્માનુયાયીભિરપિ સ્વીકૃત ‘જ’ યત્સત્ય ‘ત’ તત્ ‘લોક-
મ્મિ’ લોકે ‘સારભૂય’ સારભૂત=સારભૂત=સર્વપ્રધાનત્વાત્ પુનસ્તત્સત્ય કીદ-
શમ્? ઇત્યાહ-‘ગમ્भीરયર મહાસમુદ્દાઓ’ ગમ્भीરતર મહાસમુદ્રાત્, અક્ષોભ્યત્વાત્,
તથા-‘ધિરયરગ મેરુપવ્વયાઓ’ સ્થિરતરક મેરુપર્વતાત્=નિશ્ચલત્વાત્, તથા-
‘સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ’ સૌમ્યતરક ચન્દ્રમણ્ડલાત્-સતાપશમનહેતુત્વાત્,
તથા-‘દિત્તયર સૂરમહલાઓ’ દીપ્તતર સૂરમણ્ડલાત્=યથાવદ્વસ્તુ પ્રકાશકત્વાત્,

મિની વિદ્યા કી તથા શ્રમણો કો વૈક્રિયાદિરૂપ વિદ્યાઓ-લબ્ધિયો કી સિદ્ધિ
હોતી હૈ । (મણુયગણાણ વદણિજ્જ) મનુષ્યોં કૈ લિયે યહ સત્ત્વ વદનીય
હૈ, (અમરગણાણ અચ્ચણિજ્જ) અમરગણોં કૈ લિયે યહ અર્ચનીય હૈ,
તથા (અસુરગણાણ પૂયણિજ્જ) અસુરગણોં કૈ લિયે યહ પૂજનીય પ્રશ-
સનીય હૈ (અણેગપાલ્લવિપરિગ્ગહિય) અનેક ધર્માનુયાયિયોં ને મ્હી
હસકો સ્વીકાર કિયા હૈ । (જ ત લોકમ્મિ સારભૂય) ણેસા યહ મત્યત્રત
લોકમ્હે સર્વપ્રધાન હોને સે સારભૂત હૈ । (ગમ્भीરયર મહાસમુદ્દાઓ)
યહ સત્ય અક્ષોભ્ય હોને સે મહાસમુદ્ર કી અપેક્ષા અત્યત્ત ગમ્भीર હૈ ।
(ધિરયર મેરુપવ્વયાઓ) નિશ્ચલ હોનેસે મેરુપર્વત કી અપેક્ષા અત્યત્ત
સ્થિર હૈ (સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ) સતાપ કૈ શમન કા હેતુ હોને સે
ચદ્રમહલ કી અપેક્ષા અત્યત્ત સૌમ્ય હૈ । (દિત્તયર સૂરમહલાઓ) યથા-
વત્ વસ્તુ કા પ્રકાશક હોને સે યહ સત્ય સૂર્ય મહલ કી અપેક્ષા અધિક

વૈક્રિયાદિરૂપ વિદ્યાઓ-લબ્ધિઓની પ્રાપ્તિ થાય છે “મણુયગણાણ વદણિજ્જ”
મનુષ્યોને માટે આ સત્ય વદનીય છે તથા “અસુરગણાણ પૂયણિજ્જ” અસુર
ગણોને માટે તે પૂજનીય-પ્રશસનીય છે “અણેગપાલ્લવિ પરિગ્ગહિય” અનેક
ધર્મોના અનુયાયીઓએ પણ તેનો સ્વીકાર કર્યો છે, ‘જ ત લોકમ્મિ સારભૂય’
એવું આ સત્યત્રત લોકમા સર્વ પ્રધાન હોવાથી સારભૂત છે “ગમ્भीરયર
મહાસમુદ્દાઓ” આ સત્ય અક્ષોભ્ય હોવાથી સમુદ્ર કરતા પણ વધારે ગમ્भीર
છે “ધિરયર મેરુપવ્વયાઓ” નિશ્ચલ હોવાથી તે મેરુપર્વત કરતા પણ વધારે
સ્થિર છે “સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ” સતાપનું શમન કરનાર હોવાથી ચન્દ્ર
મહલ કરતા પણ વધારે સૌમ્ય છે “દિત્તયર સૂરમહલાઓ” વસ્તુના સાચા
સ્વરૂપનું પ્રકાશક હોવાથી આ સત્ય સૂર્યમહલ કરતા પણ વધારે સ્થિર છે

તથા-‘વિમલચરં સરયનહયલાઓ’ વિમલતરં શરદમસ્તલાત્=શરત્કાલિક ગગન-
તલાદપ્યધિક નિર્મલ, માલિન્યરહિતત્વાત્, તથા-‘સુરભિચર ગધમાયણાઓ’
સુરભિતર ગન્ધમાદનાત્=ગન્ધમાદનપર્વતાત્ અપ દિ-નીલવદ્ વર્ષપરપર્વતમ્ય
‘દક્ષિણદિશિ, મેરોર્વાયવ્યકોણે, શીતોદાનદ્યુત્તરફલ્યર્તિનો ગન્ધિલાવતીનામ્નોઽ-
ષ્ટમવિજયસ્ય પૂર્વદિશિ, તથા-ઉત્તરવૃક્ષ્ણા સર્વોત્કૃષ્ટભોગભૂમિક્ષેત્રાત્ પશ્ચિમ-
દિશિ મહાવિદેહક્ષેત્રસ્થો ગજદન્તમસ્થાનસમ્મિતો ગન્ધમાદનનામા વક્ષસ્કાર-
પર્વતોઽસ્તિ । ગન્ધેન સ્વય માધતિ મદયતિ યા સ્વનિયાસિદેવદેવીના મનામીતિ
ગન્ધમાદન* । યથા પિષ્યમાણાના સચ્ચૂર્ણમાનાનામ્-ઉત્કોર્યમાણાના પિકીર્યમા-

દીસ છે । (વિમલચર સરયનહયલાઓ) મલિનતા સે વિહીન રોને કે
કારણ શરત્કાલિક આકાશતલ કી અપેક્ષા અધિક નિર્મલ છે । તથા
(સુરભિચર ગધમાયણાઓ) જનોં કે હૃદયોં કો આરુર્પણ કરને વાલા
હોનેકે કારણ યહ સત્ત્વ ગન્ધમાદન નામક પર્વત કી અપેક્ષા અત્યન્ત સુગ
ન્ધિત છે । યહ ગધમાદન નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત નીલવર્ષધર પર્વત કી
દક્ષિણદિશા મેં, મેરુ કે વાયવ્યકોણ મેં, શીતોદાનદી, કે ઉત્તર તટ પર
રહે હુએ ગન્ધિલાવતી નામક અષ્ટમવિજય કી પૂર્વદિશા મેં, તથા ઉત્તર
કુરુ કે સર્વોત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિક્ષેત્ર રો પશ્ચિમદિશા મેં મહાવિદેહક્ષેત્ર મેં
છે । ઉસકા સ્થાન આકાર-ગજદન્ત જૈસા છે અર્થાત્—ગજદન્ત
કે આકાર મેં યહ સ્થિત છે । અપની ગંધ સે સ્વય કો સુગન્ધિત
કરતા છે તથા અપને ઉપર રહને વાલે દેવદેવિયોં કે મન કો મદો-
ન્મત્ત વના દેતા છે ઉસકા નામ ગધમાદક છે એસા યહ પર્વત છે ।
જૈસે પિસતે હુએ, ફેલે હુએ, અથવા એક વર્તન સે દુસરે વર્તન

“ વિમલચર સરયનહયલાઓ ” મલિનતાથી રહિત હોવાથી તે શરદઋતુના
આકાશતળ કરતા પણ વધારે નિર્મળ છે “ સુરભિચર ગધમાયણાઓ ” માણ
સોના ચિત્તતુ આરુર્પણ કરનાર હોવાથી આ સત્ય ગધમાદન નામના પર્વત
કરતા પણ અધિક સુગન્ધિત છે તે ગન્ધમાદન નામનો વક્ષસ્કાર પર્વત નીલ
વર્ષધર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં, મેરુ, વાયવ્ય કોણમાં, શીતોદા નદીના ઉત્તર
કિનારે રહેલ ગન્ધિલાવતી નામના અષ્ટમવિજયની પૂર્વ દિશામાં, તથા ઉત્તર
કુરુના સર્વોત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિક્ષેત્રની પશ્ચિમ દિશામાં મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં છે
તેનો આકાર ગજદન્ત જેવો છે એટલે કે તે ગજદન્તના આકારે ઉભો છે
પોતાની ગધવડે જે પોતે વાસયુક્ત બને છે અને પોતાની ઉપર વાસ કરતા
દેવદેવીઓના મનને જે મદોન્મત્ત કરી નાખે છે, તેનું નામ ગધમાદન છે

પાના માળાદ્ માળાન્તર વા સત્રિયમાણાના કોસ્ટપુટાના યાત્રત્તગરપુટાદીનાં મનોજ્ઞા ઉદારા ગન્ધા અભિનિઃસ્રવન્તિ, તદપેક્ષયાઽપ્યુદારગન્ધયુક્તોઽય પર્વતઃ । તતોઽપ્યધિક્તરસુરભિમત્મત્યમિતિ ભાવઃ, જનાના હૃદયાવર્જકત્વાત્ । તથા— ‘જે વિ ય’ એઽપિ ચ ‘લોગમ્મિ’ લોકે ‘અપરિસેસા’ અપરિશેષાઃ=સકલાઃ ‘મત્તજોગ,’ મન્ત્રયોગા—મન્ત્રાઃ—હરિણૈગમેપિદેવાદિ મન્ત્રા.—યોગા વશીકરણાદિ-પ્રયોજના દ્રવ્યસયોગા, ‘જવા ય’ જપાશ્ર-મન્ત્રવિદ્યાજપનાનિ ‘વિજ્ઞા ય’ વિદ્યાશ્ર=રોહિણીપ્રત્યાપ્ત્યાદય., ‘જમ્મા ય’ જૃમ્મકાશ્ર=તિર્યગ્લોકવાસિનોઽન્ન જૃમ્મકાદિ ભેદેન દશવિદ્યા દેવવિશેષા. ‘અત્યાણિય’ અસ્ત્રાણિ ચ—વાણાદીનિ ‘સત્યાણિય’ શસ્ત્રાણિ ચ શસ્ત્રાણિ ‘સિમ્ભાઓ ય’ શિક્ષાશ્ર-કલ્યાગ્રહણાદીનિ ‘આગમા ય’ આગમાશ્ર મન્તિ । ‘સવ્વાહ વિ તાહ’ સર્વાણ્યપિ તાનિ ‘સચ્ચે’ સત્યે ‘પઢદ્વિયાહ’ પ્રતિષ્ઠિતાનિ, મત્યમાશ્રિત્યૈવ સર્વાણિ તિષ્ઠન્તીતિ ભાવ. ॥૨॥

મે રસે જાતે દુગ્ધ સુગંધિત તગર આદિ દ્રવ્યોં ની મનોજ્ઞ ઉદાર ગંધ ચારોં ઓર ફેલાતિ હૈં ઉમસે ની અધિક ઉદાર ગંધ સે યુક્ત યહ પર્વત હૈં । હસ પર્વત સે ની અધિક્તર સુગંધિ નપન્ન યહ મત્ય હૈં । (જે વિ ય લો-ગમ્મિ અપરિસેસા મત્તજોગા જવા ય વિજ્ઞા ય જમ્મા ય અત્યાણિ ય સત્યાણિ ય સિમ્ભાઓ આગમા ય સવ્વાહ વિતાહ સચ્ચે પઢદ્વિયાહ) તથા લોક મેં જો ની સમસ્ત મન્ત્ર-હરિણૈગમેપિદેવાદિમત્ર, ઓર યોગ વશીકરણ આદિ પ્રયોજનવાલે દ્રવ્યસયોગ હૈં, મન્ત્રવિદ્યા કે જાપ હૈં, રોહિણીપ્રજ્ઞાસિ આદિ વિદ્યાઈ હૈં, તિર્યગ્લોકવાસી અન્નજૃમ્મક પાનજૃમ્મક આદિ દશપ્રકાર કે દેવવિશેષ હેં, વાણાદિક અસ્ત્ર, શસ્ત્ર આદિ શસ્ત્ર, કલ્યાગ્રહણ આદિ શિક્ષાઈ ઓર આગમ હૈં વે સત્ર હસ સત્ય કે હી આશ્રય સે હૈં ।

એવો તે પર્વત છે જેમ ધમાતા ફેલાતા અથવા એક પાત્રમાથી બીજા પાત્રમા ફેલાતા સુગંધિત તગર આદિ દ્રવ્યોની મનોજ્ઞ ઉદાર ગંધ આપે તરફ ફેલાય છે, તે ડરતા પણ વધારે ઉદાર ગંધવાળો આ પર્વત છે તે પર્વત કંઈ પણ ધણુ જ વધારે સુગંધિયુક્ત આ મત્ય છે “જે વિય લોગમ્મિ અપરિસેસા મત્ત-જોગા જવાય વિજ્ઞા ય જમ્માય અત્યાણિય સત્યાણિય સિમ્ભાઓ આગમા ય સવ્વાહ વિતાહ સચ્ચે પઢદ્વિયાહ” તથા લોકમા જે જોઈ મન્ત્ર-હરિણૈગમેપિ-દેવાદિ મત્ર, અને યોગ-વશીકરણ આદિ પ્રયોજનવાળા દ્રવ્યસયોગ છે, મન્ત્ર વિદ્યાના જાપ છે, રોહિણીપ્રજ્ઞાસિ આદિ વિદ્યાઓ છે, તિર્યગ્લોકવાસી અન્નજૃમ્મક, પાનજૃમ્મક, આદિ દશ પ્રકારના દેવવિશેષ છે, વાણાદિ અસ્ત્ર, તલવાર આદિ શસ્ત્ર, કલ્યાગ્રહણ આદિ શિક્ષાઓ અને આગમ છે, તે બધુ આ સત્યને જ આશ્રયે છે

સત્યમપિ કીદશ ન વક્તવ્ય, કીદશ વક્તવ્ય ? મિત્યાદ—‘ સન્વપિય ’
 इत्यादि—

મૂલમ્—સચ્ચ પિય સજમસ્સ ઉવરોહકારગ કિંવિ ન
 વત્તવ્વ, હિસાસાવજ્જસપ્પઉત્ત, મેયવિકહકારગ, અણત્થવાય
 કલહકારગ, અણજ્જં, અવવાયવિવાયસંપપ્પઉત્તં વેલવ,
 ઓજધેજ્જવહુલં નિહ્લજ્જ, લોચગરહણિજ્જં, દુદ્ધિટ્ઠ, દુસ્સુય,

ભાગ્યર્થ—યહ સત્ય તીર્થકરો કા સુભાપિત હૈ । ઇસે વ્યવહાર દૃષ્ટિ
 સે જનપદ સત્ય આદિ કે ભેદ સે યહ દશ પ્રકાર કા કહા હૈ ।
 પૂર્વધરોં ને હસ સત્ય કો સત્યપ્રવાદપૂર્વ કે નામ સે અભિહિત કિયા હૈ ।
 કપિયો ને ઇસે સિદ્ધાન્ત કા રૂપ દિયા હૈ । દેવેન્દ્ર નરેન્દ્ર આદિ કોં કે
 ભાષણ કા મહત્ત્વ ઇસી મત્ય કે સહારે માના ગયા હૈ । મત્ર ઔપધિ
 આદિ વિદ્યાઓં કી સાધના સત્ય કે પ્રભાવ સે સફલિત હોતી હૈ ।
 આકાશગોમિની વિદ્યા ચારણઋદ્ધિ-एव वैक्रियलब्धि ये, सब इसी सत्य
 કે પ્રભાવ સે જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતી હૈ । મનુષ્ય, દેવ एव असुर, सब के
 लिये यह बढनीय है । अनेकधर्मानुयायियों ने भी इसे मान्य किया है ।
 સમસ્ત વસ્તુઓં મે યહ એક સારભૂત-श्रेष्ठ-वस्तु હૈ । ઇસકા પ્રભાવ અનિ-
 र्वचनीय है । महासमुद्र आदि की अपेक्षा भी यह गभीरतर आदि
 ધર્મોં વાલા હૈ । લોક મેં જિતને બી મત્ર યોગ આદિ હૈં વે સબ હસી
 સત્ય કે સહારે ટિકે હુએ હૈં ॥ સૂ. ૨ ॥

ભાગ્યર્થ—આ સત્ય તીર્થકરોનુ સુભાપિત છે વ્યવહાર દૃષ્ટિએ જન
 પદ સત્ય આદિના ભેદથી તે દશ પ્રકારનુ બતાવ્યુ છે, પૂર્વધરોએ આ સત્યને
 સત્યપ્રવાહ પૂર્વના નામથી ઓળખાવ્યુ છે ઋષિઓએ તેને સિદ્ધાન્તનુ રૂપ
 આપ્યુ છે દેવેન્દ્ર નરેન્દ્ર વગેરેના ભાષણની મહત્તા આ સત્યની મહદથી જ
 મનાયેલ છે મત્ર ઔપધિ આદિ વિદ્યાઓની સાધના આ સત્યના પ્રભાવથીજ
 સફળ થાય છે આકાશગામિની વિદ્યા-ચારણઋદ્ધિ અને વૈક્રિયલબ્ધિ એ બધુ
 આ સત્યના પ્રભાવથી જ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે માનવ, દેવ અને અસુર ચોને
 માટે તે વધનીય છે અનેક ધર્મના અનુયાયીઓએ પણ તેને માન્ય ડ્યું છે
 સમસ્ત વસ્તુઓમા તે એક સારભૂત-श्रेष्ठ वस्तु છે તેનો પ્રભાવ અવર્ણનીય
 છે મહાસાગર આદિના કરતા પણ તે વધારે ગભીરતા આદિ ગુણોવાળુ છે
 જગતમા જેટલા મત્ર યોગ આદિ છે તે બધા આ સત્યને આધારે જ ટકેલા છે ॥૨॥

असुणिय । अप्पणो थवणा परोसि निदा—न तंसि मेहावी,
 ण तमि धण्णो न तसि पियधम्मो, न तंसि कुलीणो, न
 तसि दाणवई, न तंसि सूरु, न तसि पडिरूवो, न तसि
 लट्ठो, न पडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तसि तवस्सी,
 ण यावि परलोगणिच्छियमईऽसि, सब्बकाल जाइकुलरूव-
 वाहिरोगेण वावि ज होइ वज्जणिज्ज दुहओ उवयारमइक्कत
 एवविह सच्चपि न वत्तव्वं । अह केरिसय पुणाइ सच्चं तु
 भासियव्व ? ज त दव्वेहि पज्जवेहि य गुणेहि कम्मेहि
 वट्ठुविहेहि सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय निवाय उवसग्ग-
 तद्वियसमाससधिपयहेउ—जोगिय—उणाइ—किरिया—विहाण
 धाउसरविभत्तिवन्नजुत्त तिकल्ल दसविहपि सच्चं जह भणिय
 तह य कम्मुणा होइ । दुवालसविहा होइ, भासा वयणं
 पि य होइ सोलसविह । एव अरहतमणुन्नायं समिक्खिय
 सजएण य कालम्मि वत्तव्वं । इमं च अलिय—पिसुण—
 फरुस-कडुय-चवल-वयणपरिरिक्खणट्टयाए पावयण भगवय
 सुकहिय, अत्तहिय, पेच्च भावियं, आगमेसिभद, सुद्ध नेयाउय,
 अकुडिल, अणुत्तर, सब्बदुक्खपावाणविउ समणं ॥सू० ३॥

टीका—‘सच्च पि य’ सत्यमपि च तत् ‘सजमस्स’ सयमस्य ‘उवरोह-
 कारग’ उपरोधकारक-बाधक भवेत्, तत् ‘किं वि’ किमपि ‘न वत्तव्व’ न
 वक्तव्यम् । किं भूत तत्—सत्य यन्न वक्तव्यम् ? इत्याह—‘हिंसा सावज्जसपउत्त’

किस प्रकार का सत्य नहीं बोलना चाहिये और किस प्रकार का

देवा प्रकारनु सत्य बोलवु न लोभये अने देवा प्रकारनु बोलवु लोभये ?

બોલના ધારિયે ? હસ ધાત કો સુત્રકાર કહતે હે—‘ સન્નપિ ય ’
 હત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(સન્ન પિ ય સજમસ્મ ઉત્તરોત્તરકારગ કિંચિ ન વત્તન્વ)
 સત્ય હોને પર મી જો વચન સયમ કા વાધક હો વર મુનિજન કો થોડા
 સા મી નહીં બોલના ધારિયે । સત્ય હોને પર મી જો વચન સયમ કે
 વાધક હોતે હે વે હસ પ્રકાર સે હે—(હિંસાસાવજ્જસપઉત્ત) હિંસા ઓર
 સાવધ જો વચન હે વે સત્ય હોને પર મી સયમ કે વાધક હોને કે કારણ
 નહીં બોલના ધારિયે । હિંસા કા તાત્પર્ય યદા પ્રાણિચર સે ઓર સાવધ
 કા તાત્પર્ય પાપયુક્ત મલાપ સે હે । ઠન સહિત જો વચન હોતે હે વે
 હિંસાસાવધ સપ્રયુક્ત વચન હે । જિન સત્યવચનો સે પ્રાણિયો કે પ્રાણો કા
 વધ હોતા હો, તથા જિનસે પાપ મેં જીવોં કી પ્રવૃત્તિ હોની હો તેસે વચન
 સત્યમહાત્રની કે લિયે કમી મી માપણ કરને યોગ્ય નહીં હે । (મેયવિ-
 કહકારગ) હસી તરહ જો સત્યવચન ચારિત્ર કે ધ્વન્નક હો, રાજકથા
 આદિ સે સયવ રલ્લતે હો, તથા (અણત્યવાયકલહકારગ) જિન સત્ય
 વચનો કા કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ નહીં હોતા હો અર્થાત્ જો નિર્થક હો,
 જિન સત્ય વચનો સે પરસ્પર મેં વાદ વિવાદ ઓર કલહ વઢતા હો, તથા

તે વાત સત્રકાર બતાવે છે—“ સન્ન પિ ય ” હત્યાદિ

“ સન્ન પિ ય સજમસ્મ ઉત્તરોત્તરકારગ કિંચિ ન વત્તન્વ ” સત્ય હોવા
 છતાં પણ જે વચન સયમમા વાધક હોય તે મુનિજને જરા પણ બોલવું
 બેઠએ નહીં સત્ય હોવા છતાં પણ જે વચન સયમમા વાધક હોય છે તે
 આ પ્રમાણે છે—“ હિંસા સાવજ્જસપઉત્ત ” હિંસા અને સાવધ જે વચન છે
 તે સત્ય હોવા છતાં પણ સયમના વાધક હોવાથી બોલવા બેઠએ નહીં
 હિંસા એટલે આ જગ્યાએ પ્રાણિવધ સમજવો અને સાવધનો અર્થ પાપયુક્ત
 મલાપ છે હિંસા અને સાવધયુક્ત જે વચનો છે તે હિંસાસાવધ સપ્રયુક્ત
 વચન કહેવાય છે જે સત્ય વચનોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ થતો હોય
 તથા જે વચનોથી પાપમા જીવોની પ્રવૃત્તિ થતી હોય એવા વચન સત્યમહા
 ત્રતીને માટે કહી પણ બોલવાને યોગ્ય હોતા નથી, “ મેયવિકહકારગ ”
 એ જ પ્રમાણે જે સત્ય વચન ચારિત્રના ધાતક હોય, રાજકથા આદિ સાથે
 સંબધ રાખતા હોય, તથા “ અણત્યવાયકલહકારગ ” જે સત્ય વચનોનું
 કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ થતું ન હોય એટલે કે જે નિર્થક હોય, જે સત્ય
 વચનોથી પરસ્પરમા વાદવિવાદ અને કલહ વધતો હોય તથા “ અણજ્ઞ ” જે

हिंसासारथ्य सप्रयुक्त, तत्र-हिंसा=पाणिग्रह, सारथ्यम्=पापयुक्तसलापादि, ताभ्या
सप्रयुक्त=सद्वित यत्तत्, पुनः किंभूतम् ? ' भेदविग्रहकारक ' भेदविक्रयाकारकम्,
भेदः = चाग्निभेद', विग्रहा = राजकयादि', तत्कारक यत् तत्, तथा-
' अणत्ययायकलकारक ' अनर्थवादकलकारकम् = तत्र - अनर्थो = निरर्थको
यो वादः सोऽनर्थवादः=निष्प्रयोजनो जल्प, कलहो=विग्रहः, तत्कारक यत्तत्,
तथा-' अणज्ज ' अन्यायम्=न्यायवर्जितम्, तथा ' अववायविवायसपउत्त '
अपवाद विवादप्रयुक्तम्, अपवाद = परदूषणकथन, विवाद=वाक्कलह', ताभ्या
सप्रयुक्त यत्तत्, तथा ' वेलव ' विडम्बक=परविडम्बनाकारकम्, तथा-' ओज-
धेज्ज बहुल ' ओजो धैर्यबहुलम्-ओजः=अहंकार', आवेशो वा, धैर्य=वृष्टता, ताभ्यां
बहुल=व्याप्तम्, अत एव ' निहज्ज ' निर्लज्ज=लज्जा रहितम्, पुनः ' लो-
गरहणिज्ज ' लोकरगर्दणीयम्=साधुजननिन्दितम्, येन सत्येन परस्य हिंसा मर्मो-
द्धाटनादिना वा भवेत्तत् ' दुद्धि ' दुर्दृष्टम्=असम्यग्दृष्टम्, ' दुस्सुय ' दुःश्रुतम्=

(अणज्ज) जो न्यायानुकूल न हो, (अववायविवाय सपउत्त) अपवाद,
विवाद से युक्त हो वे भी नहीं बोलना चाहिये। पर के दूषणों का
कहना वह अपवाद है, वाक्कलह का नाम विवाद है। इसी तरह (वेलव)
जो पर की विडम्बना के कारक हों तथा (ओजधेज्जबहुल) जिन सत्य
वचनों के बोलने से बोलने वाले का अहंकार भावजान होता हो अथवा
आवेश प्रकट होता हो, वृष्टता जात होती हो ऐसे वचन भी नहीं
बोलना चाहिये। तथा (निहज्ज) जिन सत्यवचनों के बोलने में लज्जा
जाती हो और (लोकरगर्दणिज्ज) साधुजन जिन वचनों की निंदा
करते हो ऐसे वचन सत्य होने पर भी नहीं बोलना चाहिये। तथा
(दुद्धि) जिन सत्य वचनों से परप्राणी की हिंसा अथवा मर्मका उद्धा

न्यायानुगुण न होय, " अववायविवायसपउत्त " अपवाद, विवादથી युक्त होय
ते પણ બોલવા જોઈએ નહિ પારડા દૂષણોને હોવા તે અપવાદ છે અને
વાણીના ઉલ્લહને વિવાદ કહે છે, એ જ પ્રમાણે " વેલવ " જે પગની વિડબના
કરનાર હોય તથા " ઓજધેજ્જબહુલ " જે સત્ય વચનો બોલવાથી બોલનારનો
આહાર ભાવ જણાતો હોય અથવા આવેશ પ્રગટ થતો હોય, ધૂષ્ટતા જણાતી
હોય, એવા વચન પણ ન બોલવા જોઈએ તથા " નિહજ્જ " જે સત્ય વચન
બોલવામાં લજ્જા જતી હોય અને " લોચગરહણિજ્જ " સાધુજન જે વચનોની
નિંદા કરતા હોય એવા વચન સત્ય હોય તો પણ બોલવા જોઈએ નહીં,
તથા " દુદ્ધિ " જે સત્ય વચનથી પર પ્રાણીની હિંસા થતી હોય, અથવા

અસમ્યક્ શ્રુતમ્, તથા-‘ અમુણિય ’ અજ્ઞાતમ્=અસમ્યક્જ્ઞાતમ્, एतादृश सत्यम्
 पि न वक्तव्यमिति भावः । पुनः क्रीदश सत्यं न वक्तव्यम् ? इत्याह—‘ अप्पणो
 थवणा ’ आत्मनः स्तयना=प्रशंसा यत्र भवेत्तत्, स्वस्तुतिरूपं यत्सत्यं तत्र वक्तव्य-
 मित्यर्थः । तथा-‘ परेसि निंदा ’ परेषा निन्दा- अन्येषां त्रिषये सत्याऽपि नि-
 न्दा यस्मिन् भवेत्तत्र वक्तव्यमिति भावः, कथम् ? इत्याह-‘ न तमि मेहावि ’
 न त्वमसि मेधावी=अपूर्वश्रुतदृष्टग्रहणशक्तियुक्तः प्राप्तो मेधावीत्युच्यते, एतादृश
 स्तय नासि तथा-‘ ण तसि धणो ’ न त्वमसि धन्यः=धनवान्, धन्यवादपात्रं
 वा, ‘ ण तसि पियधम्मो ’ न त्वमसि प्रियधर्मा=धर्मपरायणाः, तथा-‘ न तसि
 कुलीनो ’ न त्वमसि कुलीनः=उच्चकुलीनः=उच्चकृत्तमातः, ‘ न तमि दाणवई ’

દન છોતા હો વે દુર્દૃષ્ટ વચન હૈં ઓર (દુસ્સુય) જો અચ્છી તરહ સે સુને
 ગયે હો વે દુઃશ્રુત વચન હૈં, તથા (અમુણિય) જો અચ્છી તરહ સે જાનને
 મેં નહીં આયે હો વે અસમ્યક્ જ્ઞાત વચન હૈં, इन दुर्दृष्टादि वचनों को
 चाहे ये वचन सत्य भी हों तो भी नहीं बोलना चाहिये । (अप्पणो
 थवणा परेसि निंदा) इसी तरह जिन सत्यवचनों में आत्मप्रशंसा-
 आत्मश्लाघा भरी होवे, और जिन सत्यवचनों में पर की निंदा होती
 हो वे सत्यवचन भी नहीं बोलना चाहिये, किस प्रकार नहीं बोलना
 चाहिये सो कहते हैं-(न तसी मेहावी) तुम मेधावी नहीं हो, अर्थात्
 जो व्यक्ति अपूर्व, अश्रुत एवं अदृष्ट पदार्थ को ग्रहण करने की शक्ति
 से युक्त होता है उसका नाम मेधावी है ऐसे मेधावी तुम नहीं हो,
 तथा (ण तसि धणो) तुम धनवान् या धन्यवाद के पात्र नहीं हो,
 (न तसि पियधम्मो) तुम प्रियधर्माधर्मपरायण-नहीं हो, (न तसि-

મર્મ ખૂલ્લો પડતો હોય તેવા વચનો દુર્દૃષ્ટ વચન છે અને “ દુસ્સુય ” જે
 ખરાબર સંભળાયુ ન હોય તે દુઃશ્રુતવચન ડહેવાય છે, તથા “ અમુણિય ”
 જે ખરાબર જાણવામા આવ્યુ ન હોય તેના વિષે વચન બોલવા તે અસમ્યક્
 જ્ઞાત વચન છે, એ દુર્દૃષ્ટ આદિ વચનો સત્ય હોય તો પણ બોલવા જોઈએ
 નહીં “ અપ્પણો થવણા પરસેનિંદા ” એ જ પ્રમાણે સત્ય વચનોમા આત્મપ્રશંસા
 આત્મશ્લાઘા-ભરી હોય તથા જે સત્ય વચનોમા બીજાની નિંદા થતી હોય તે
 સત્ય વચન પણ બોલવા જોઈએ નહીં કઈ રીતે બોલવા ન જોઈએ તે હવે
 કહે છે-“ ન તસિ મેહાવી ” તમે મેધાવી નથી જે વ્યક્તિ અપૂર્વ, અશ્રુત અને
 અદૃષ્ટ પદાર્થને ગ્રહણ કરવાની શક્તિવાળી હોય છે તેને મેધાવી કહે છે તથા
 “ ણ ત સિ ધણો ” તમે ધનવાન યા ધન્યવાદને પાત્ર નથી “ ન ત સિ
 વિયધમ્મો ” તમે ધર્મપરાયણ નથી, “ ન ત સિ કુલીનો ” તમે “ ન ત સિ

न त्वमसि दानपति = दाता, 'न तसि सरो' न त्वमसि शूर = पराक्रमशाली,
'न तसि पण्डितो' न त्वमसि प्रतिरूप = सुन्दरः, 'न तसि लट्ठो' न त्वमसि
लट्ठः = सौभाग्यवान्, 'न पण्डितो' न पण्डितः = विद्वान् त्वमसि, न च त्व 'बहु-
सुओ' बहुश्रुतः = बहुविधोऽसि, 'न वि य तसि तवस्सी' नापी च त्वमसि तपस्वी
'न यावि परलोगणिच्छिद्यमईसि' परलोके निश्चिता सशयरहिता मतिर्यस्य सः =
परलोकनिश्चितमतिश्चापि त्व नामि । मेधादिर्जितान् प्रत्यपि एवरूपा निन्दा न
कर्तव्येति गायः । किं बहुना, 'जाडकुलरूववाहिरोगेण वा वि' जातिकुलरूप व्या-
धिरोगेण वाऽपि-वा = अथवा जातिः = मातृवशः, कुल = पितृवशः, रूप = सौन्दर्य,
व्याधि = चिरस्थायी कुष्ठादि, रोग = शीघ्रघातो ज्वरादि, एतेषामितरेतरयोग-
द्वन्द्वः, तेन कारणेनापि जात्यापि कारणमवलम्ब्यापि 'ज' तत् 'सर्वकाल'

कुलीणो) तुम कुलिन नहीं हो, (न तसि दाणवई) तुम दानपति-दाता
नहीं हो, (न तसि सरो) तुम पराक्रमशाली नहीं हो, (न तसि-
पण्डितो) तुम प्रतिरूप-सुन्दर-नहीं हो, (न तसि लट्ठो) तुम लट्ठ-
सौभाग्यसपन्न नहीं हो, (न पण्डितो) तुम पण्डित नहीं हो (न बहुसुओ)
तुम बहुश्रुत-अनेक विद्याओं के वेत्ता नहीं हो, और (न वि य तसि
तवस्सी) न तुम तपस्वी हो । और (न यावि परलोगणिच्छिद्यमई सि)
न तुम परलोक में सशय रहित मतिवाले ही हो, " इस प्रकार के वचन
अचिवेकी व्यक्तियों से नहीं कहना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार
के वचनों से उनकी निन्दा होती है । (सर्व काल जाडकुलरूववाहिरोगेण
ज होइ वज्जणिज्ज) इसी तरह जाति-मातृवश, कुल-पितृवश, रूप-
सौन्दर्य, व्याधि-चिरस्थायी कुष्ठादि, तथा शीघ्रघातक ज्वरादि रोग, इन

'न तसि दाणवई' तमे दाता नहीं, 'न तसि सरो' तमे पराक्रमी
नहीं 'न तसि पण्डितो' तमे सुन्दर नहीं 'न तसि लट्ठो' तमे लट्ठ
सौभाग्यशाली नहीं, 'न पण्डितो' तमे पण्डित नहीं, 'न बहुसुओ' तमे
बहुश्रुत-अनेक विद्याओं का ज्ञाता नहीं, अनेक "न वि य तसि तवस्सी"
तमे तपस्वी नहीं, अनेक "न यावि परलोगणिच्छिद्यमईसि" तमे परलोक में
विषे सशयरहित मतिमाना नहीं " अने प्रजाग्ना वयने भाणुसो अने जालवा
जोधने नही जारणु के ते प्रकारना वयनेमा तेमनी " श्रोतानी निहा थाय
थाय ठे " सर्व काल जाडकुल रूववाहिरोगेण ज होइ वज्जणिज्ज " अने ज
प्रकारे जाति मातृवश, कुल-पितृवश रूप-सौन्दर्य, व्याधि-स्थायी कुष्ठ
तथा शीघ्रघातक ज्वरादि रोग अने जथा जारणुने लईने पणु उही अनेवा

સર્વકાલ=સર્વદા 'વજ્રનિજ્ઞ' વર્જનીય=ત્યાજ્ય ચોકે 'હોઈ' ભવતિ, 'એવં વિહ' એવાંવિધ 'દુહઓ' ઉભયાઃ=લોકતઃ નામ્યતથ્ર, 'ઉચારમહકત' ઉપચાર મતિકાન્ત=વ્યવહારવિરુદ્ધ 'અચપિ' સત્યમપિ 'ન વત્તવ્ય' ન વક્તવ્યમ્ ।

'અહ' અથ 'કેરિસય' કીદશ તુ 'પુણાહ' પુનઃ 'સન્ન ભાસિયવ્વ' સત્ય ભાષિતવ્યમ્ ? આહ—'જ ત' યત્તત્ 'દવ્વેહિ' દ્રવ્યેઃ=ત્રિકાલવર્તિભિઃ પુદ્ગલાદિભિઃ 'પજ્જવેહિ' પર્યયેઃ નવપુરાણાદિભિઃ ક્રમવર્તિભિર્મમઃ, ચ=પુનઃ 'ગુણેહિ' ગુણેઃ=મહભૂતૈવર્ગાદિભિઃ, 'કમ્મેહિ' કર્મભિઃ=કૃત્યાદિ વ્યાપારૈઃ,

સઘ કારણોં કો લેકર મી કમી એસે વચન નહીં કહના ચાહિયે કિ તુમ્હારા માતૃવશ અઞ્ઞા નહીં હૈ, પિતૃવશ તુમ્હારા શુદ્ધ નહીં હૈ, તુમમે સૌદર્ય નહીં હૈ, તુમ વ્યાધિ સપન્ન હો-કુષ્ઠી આદિ હો । તાત્પર્ય-ઇસકા યહી હૈં કિ માતૃવશાદિ સે વિહીન તથા કુષ્ઠાદિ સપન્ન વ્યક્તિયોં સે એસે વચન નહીં કહના ચાહિયે । યથો કિ ઇમ પ્રકાર કે વચનોં સે ઉન્હેં દુઃખ હોતા હૈ । (દુહઓ ઉચારમહકત) ઇસી તરહ જો વચન લોક તથા આગમ, એસે દોનોં કી અપેક્ષા વ્યવહાર વિરુદ્ધ હો (અચપિ સચ્ચ પિ-ન વત્તવ્વ) એસે વચન સત્ય હોને પર મી નહીં ચોલના ચાહિયે । (અહ-કેરિસય પુણાહ સચ્ચ તુ ભાસિયવ્વ) અત્ર સૂત્રકાર ગ્રહ કહતે હૈ કિ સાધુજનોં કો-મહાવ્રતારા પ્રક સઘમી જનોં કો-કિસ પ્રકાર કે સત્ય-વચન ચોલના ચાહિયે-(જ ત) જો વચન (દવ્વેહિ) ત્રિકાલવર્તી પુદ્ગ-લાદિ દ્રવ્યોં સે (પજ્જવેહિ) નવીન પુરાની આદિ ક્રમવર્તી પર્યાયોં સે (ગુણેહિ) દ્રવ્ય કે સાથ અવિનાશાત્ સઘ રચને વાલે વર્ણાદિ ગુણોં

વચન ન-કહેવા બોધએ કે “ તમારો માતૃવશ સારો નથી, તમારો પિતૃવશ શુદ્ધ નથી, તમારામા સૌદર્ય નથી, તમે વ્યાધિયુક્ત કોઈ વગેરે રોગયુક્ત-છો ” તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જેનો માતૃવશ આદિ હીન હોય, કોઈ આદિ રોગોથી જે યુક્ત હોય તેને તેવા વચનો કહેવા બોધએ નહી, કારણ કે તેવા વચનોથી તેને દુઃખ થાય છે—“ દુહઓ અવચારમહકત ” એ જ પ્રમાણે જે વચન લોક તથા આગમ, બંનેની અપેક્ષાએ વ્યવહાર વિરુદ્ધ હોય “ એવં વિહ સચ્ચપિ ન વત્તવ્ય ” એના વચન સત્ય હોય તો પણ બોલના બોધએ નહી “ અહકેરિસય પુણાહ સચ્ચતુ ભાસિયવ્વ ” હવે સૂત્રકાર એ બતાવે છે કે સાધુજનોએ-મહાવ્રતાગ્રધક સઘમીજનોએ કેવા પ્રકારના સત્યવચન બોલવા બોધએ “ જ ત ” જે વચન “ દવ્વેહિ ” ત્રિકાલવર્તી પુદ્ગલાદિ દ્રવ્યોથી “ પજ્જવેહિ ” નવી જુની આદિ ક્રમવર્તી પર્યાયોથી “ ગુણેહિ ” દ્રવ્યની સાથે અવિનાશાવસ્થા-સઘ રચનાર વર્ણાદિ ગુણોથી “ કમ્મેહિ ” કૃત્યાદિ વ્યાપાર રૂપ

તથા—‘વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં’ વહુવિધૈઃ શિલ્પૈઃ=આચાર્યાધિગતૈઃ ચિત્રકર્માદિભિઃ ક્રિયાતિશેષૈ, ‘આગમેર્હિં’ આગમૈઃ=સિદ્ધાન્તૈશ્ચ યુક્ત સત્ય વક્તવ્યમ્ । પુનઃ કીદૃશ સત્ય વક્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘नामकषाय निवाय उपसर्गतद्धियसमामसधि पयहेउजोगियउणाडकिरियाविहाणधाउसरविभत्तजुत्त’ नामारयातनिपातो—पसर्गतद्धितसमाससन्धिपदहेतुयोगिकोणादिक्रियाविधानधातुवरविभक्तियुक्त—तत्र-नाम-व्युत्पन्नमव्युत्पन्न च द्विविध, तत्र-व्युत्पन्न-जिनदत्तजिनदासादि, अव्युत्पन्न-डित्यडवित्यादि, आख्यातम्=क्रियापद भूतभविष्यद्वर्तमानरूपम्,

સે (કર્મેર્હિં) કૃપ્યાદિ વ્યાપારરૂપ કર્મો સે (વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં) આચાર્યાધિગત ચિત્રકર્માદિરૂપ ક્રિયા વિશેષો સે, તથા (આગમેર્હિં) આગમ-સિદ્ધાન્તો-સે યુક્ત હાં તેસે સત્યવચન ચોલના ચાહિયે । (નામકષાયનિવાયઉપસર્ગતદ્ધિયસમમાસધિયહેઉજીગિયઉણાડકિરિયા વિહાણધાઉસરવિભત્તિન્નજુત્ત) इसी तरह, नाम, आख्यात, निपात, उपसर्ग, तद्धित, समास, सन्धि, पद, हेतु, योग, उणादिप्रत्यय, क्रिया-विधान, धातु, स्वर, विभक्ति और वर्ण इनसे युक्त हो (तिकल दसविह पिसच्च) त्रिकाल विषयवाला जनपद सत्य आदि दस प्रकार का भी सत्यवचन चोलना चाहिये । व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न के भेद से नाम दो प्रकार का होता है । जिनदत्त, जिनदास आदि नाम व्युत्पन्न नाम हैं, और डित्य, डवित्य आदि नाम अव्युत्पन्न नाम हैं । आख्यात नाम क्रियापद का ह । यह भूत भविष्यत् और वर्तमान के भेद से तीन प्रकार का होता है, जैसे-अभवत्, भविष्यति और भवति । अर्थ में

કર્મેર્થી, ‘વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં’ આચાર્યાધિગત ચિત્રકર્માદિરૂપ ક્રિયાવિશેષોર્થી, તથા “આગમેર્હિં” આગમ-સિદ્ધાન્તોર્થી યુક્ત હોય એવા સત્યવચન બોલવા બેઠે એ “નામકષાયનિવાય—ઉપસર્ગતદ્ધિય—સમાસસધિપયહેઉજીગિય—ઉણાડ કિરિયાવિહાણધાઉસર્ગવિભત્તિવન્નજુત્ત” એ જ પ્રમાણે નામ, આખ્યાત, નિપાત, ઉપસર્ગ, તદ્ધિત, સમાસ, સન્ધિ, પદ, હેતુ, યોગ, ઉણાદિ, પ્રત્યય, ક્રિયાવિધાન, ધાતુ, સ્વર, વિભક્તિ, અને વર્ણ એ બધાથી યુક્ત હોય “તિકલ દસ વિહ પિ સચ્ચ” ત્રિકાળ વિષયવાળા જનપદ સત્ય આદિ દશ પ્રકારના પણ સત્યવચન બોલવા બેઠે એ વ્યુત્પન્ન અને અવ્યુત્પન્ન ભેદથી નામ બે પ્રકારના હોય છે જિનદત્ત, જિનદાસ આદિ વ્યુત્પન્ન નામ છે, અને ડિત્ય, ડવિત્ય આદિ અવ્યુત્પન્ન નામ છે આખ્યાત નામ ક્રિયાપદનું છે તે ભૂત ભવિષ્ય અને વર્તમાનના ભેદથી ત્રણ પ્રકારના છે, જેમકે અભવત્ (થયો) ભવિષ્યતિ (થશે)

નિપાતાઃ=અર્થઘોતકાઃ સ્વલુ ઇયાદગ , ઉપસર્ગાઃ=પ્રપરાદયઃ, તદ્વિતાઃ=અપત્યાઘ
ર્થાભિધાયકપ્રત્યયાન્તાઃ ગ-દાઃ, યથા-નાભેરપત્યનામેયઃ વ્રુપમઃ, સિદ્ધાર્થસ્યા
પત્ય સૈદ્ધાર્થો મહાવીરઃ ' ઇતિ । સમાસઃ=અનેકપદનામેકીકરણમ્ , સ ચાવ્યયી
માનાદિભેદાદનેકવિધા, સન્ધિઃ=વર્ણાન્ત સર્ગાં નામ્ , યથા 'શ્રાવકોડત્રે'-ત્યાદિ,

વિશેષતા કે ઘોતક જો હોતે તોં વે નિપાત હે જૈસે સ્વલુ ઇવ આદિ શબ્દ,
પ્ર, પરા આદિ ઉપસર્ગ કહલાતે હે । ઇન્કે સર્વ સે એક હી ધાતુકે અર્થ
મેં ભિન્નતા આ જાતી હે, જૈસે 'હ' ધાતુ કે સાથ જય 'પ્ર' ઉપસર્ગ કા
સંબંધ હોતા હે-તપ્પ ઉસકા અર્થ પ્રહાર હો જાતા હે, ઓર જય 'આ'
કા સંબંધ હોતા હે તપ્પ આહાર હો જાતા હે, ઇત્યાદિ । અપત્ય આદિ
અર્થ કે અભિધાયક જો પ્રત્યય હે વે પ્રત્યય ચાલે શબ્દ યહાં તદ્વિત શબ્દ
સે ગૃહીત હુણ હે જૈસે-"નામે અપત્ય પુમાન્ નામેયઃ" યહા નાભિ
શબ્દ સે તદ્વિત પ્રત્યય હોને પર નામેય વનતા હે તથા સિદ્ધાર્થ શબ્દસે
અણ્ પ્રત્યય હોને પર 'સૈદ્ધાર્થ' વનતા હે, વે તદ્વિત શબ્દ હે । ઇસી પ્રકાર
ઓર ભી તદ્વિત શબ્દ જાન લેના ચાહિયે । પરસ્પર સંબંધ રાખને વાલેં દો વા
દો સે અધિક પદોંકી વીચ કી વિભક્તિ કા લોપ કરકેમિલે હુણ અનેક
પદોં કા નામ સમાસ હે । સમાસ અવ્યયી ભાવ આદિ કે ભેદ સે અનેક
પ્રકાર કા હોતા હે । સધિ શબ્દ કા અર્થ મેલ હોતા હે-અર્થાત્-વર્ણોં કી

અને ભવતિ (છે) જે શબ્દો અર્થમા વિશેષતાને દર્શાવે છે તેમને નિપાત
કહે છે જેમ કે " સ્વલુ " " ઇવ " આદિ શબ્દ " પ્ર " " પરા " આદિ
ઉપસર્ગો છે. તેમના ઉપયોગથી એક જ ધાતુના અર્થમા ફેર પડી જાય છે,
જેમકે " હ " ધાતુ સાથે જ્યારે " પ્ર " ઉપસર્ગ મૂકવામા આવે છે ત્યારે
તેનો અર્થ " પ્રહાર " થઈ જાય છે, અને જ્યારે તેની આગળ " આ " ઉપ
સર્ગ મૂકવામા આવે ત્યારે તેનો અર્થ " આહાર " થઈ જાય છે, અપત્ય આદિ
અર્થને દર્શાવનાર જે પ્રત્યયો છે તે પ્રત્યયવાળા શબ્દોને અહીં " તદ્વિત "
શબ્દથી કહેલ છે, જેમ કે-" નામે અપત્ય પુમાન્ નામેય " " નાભિ " શબ્દને
તદ્વિત પ્રત્યય લાગવાથી " નામેય " શબ્દ બન્યો છે, તથા ' સિદ્ધાર્થ '
શબ્દને ' અણ્ ' પ્રત્યય લાગતા ' સૈદ્ધાર્થ ' બને છે, તે તદ્વિત શબ્દો છે
આ પ્રકારે જ બીજા તદ્વિત શબ્દો પણ સમજી લેવા પરસ્પર સંબંધ રાખ
નાર એ કે બેથી વધારે પદોની વચ્ચેની વિભક્તિનો લોપ કરીને જોડાયેલા
અનેક પદોને સમાસ કહે છે અવ્યયી ભાવ આદિ લેઈથી સમાસ અનેક પ્રકાર
રના છે ' સધિ ' શબ્દનો અર્થ ' જોડાણ ' થાય છે-એટલે કે વર્ણોની અતિ

પદં=સુગ્રન્ત તિદ્ગ્રન્ત ચ-યથા-‘ જિનઃ ભવતિ ’ ઇત્યાદિ, હેતુઃ=સાધ્યઽવિનાશ્ચૂત-
ત્વલક્ષણ, યથા-‘ પર્વતોઽય વહ્નિમાન વૃમા ’ ઇત્યાદિ, યૌગિક=યોગનિષ્પન્ન
પદ ‘ પદ્મનાભો નીલકાન્તઃ ’ ઇત્યાદિ-ઉણાદિઃ ઉણાદિપ્રત્યયનિષ્પન્ન પદમ્,
‘ કરોતિ ચિત્રકાર્યમિતિ કારુઃ ’ સાધ્નોતિસ્ત્રપર-કાર્યમિતિ સાધુ ’ ઇત્યાદિ.
ક્રિયાવિગ્રાહન = કૃદન્તપ્રત્યયનિષ્પન્ન ‘ પાઠકઃ, પાચકઃ, પાકઃ ’ ઇત્યાદિ-
રૂપ પદમ્, ધાતુઃ=ક્રિયાવાચિનો શ્વાદયઃ, સ્વરાઃ= અકારાદયઃ પદ્મનાદયઃ,

અતિસમીપતા હોને પર અનેક મેલ સે જો ધ્વનિ મેં ચિકાર હોતા હૈં ઉસકા
નામ સન્ધિ હૈં-જૈસે ‘ શ્રાવકઃ અત્ર ’ એસી સ્થિતિ મેં ‘ શ્રાવકોઽત્ર ’ એસી
સન્ધિ હોતી હૈં, ઇસ સન્ધિ કા નામ પૂર્વરૂપ સન્ધિ હૈં । સુગ્રન્ત ઓર તિદ્ગ્રન્ત
કો પદ કહતે હૈં, જૈસે-‘ જિનઃ ’ યહ સુગ્રન્ત પદ હૈં ઓર ‘ ભવતિ ’
યહ તિદ્ગ્રન્ત પદ હૈં । જો સાધ્ય કે સાધ્ય અવિનાશાવ સવધ સે વધા
હોતા હૈં ઉસકા નામ હેતુ હૈં, જૈસે ધૂમવાલા હોને સે યહ પર્વત અગ્નિ-
વાલા હૈં, યહા પર સાધ્ય-અગ્નિ હૈં ઓર ઉમકે વિના નહીં હોને વાલા
ધૂમ હૈં । યોગ સે જો શબ્દ નિષ્પન્ન હોતે હૈં વે યૌગિક શબ્દ હૈં, જૈસે
પદ્મનાભ, નીલકાન્ત આદિ શબ્દ । ઉણાદિ પ્રત્યય સે જો શબ્દ વનતે હૈં વે
ઉણાદિ હૈં, જૈસે-કારુ (શિલ્પી) સાધુ આદિ શબ્દ । ધાતુ કે અન્ત મેં
પ્રત્યય લગાકર જો શબ્દ વનતે હૈં વે કૃદન્ત હૈં, જૈસે-પાઠક, પાચક, પાક
આદિ શબ્દ । ક્રિયા કે વાચક જો શૂ આદિ શબ્દ હૈં વે ધાતુ કહલાતે
હૈં । દૂસરે વર્ણો કી સહાયતા કે વિના જિનકા ઉચ્ચારણ હોતા હૈં એસે

અમીપતા હોય ત્યારે તેમના બેડાણથી ધ્વનિમા બે વિહાર ઉત્પન્ન થાય છે
તેને સન્ધિ કહે છે. જેમ કે “ શ્રાવક અત્ર ” ની “ શ્રાવકોઽત્ર ” એ પ્રકા
રની સન્ધિ થાય છે, આ સન્ધિને પૂર્વરૂપ સન્ધિ કહે છે સુગ્રન્ત અને તિદ્ગ્રન્ત
ને પદ કહે છે, જેમ કે-‘ જિન ’ તે સુગ્રન્ત પદ છે અને “ ભવતિ ” તે
તિદ્ગ્રન્ત પદ છે, જે સાધ્યની માયે અવિનાશાવ અબધથી બધાયેલ હોય છે
તેને હેતુ કહે છે જેમ કે ધૂમવાળો હોવાથી આ પર્વત અગ્નિવાળો છે,
અહીં સાધ્ય અગ્નિ છે, અને તેના વિના ન પેદા થનાર ધુમાડો છે યોગની
જે રાખદો બને છે તેમને યૌગિક રાખ કહે છે જેમ કે પદ્મનાભ, નીલકા
ન્ત, આદિ યૌગિક શબ્દો છે “ ઉણાદિ ” પ્રત્યયથી જે શબ્દો બને છે તે
“ ઉણાદિ ” કહેવાય છે, જેમ કે કારુ (શિલ્પી) સાધુ આદિ શબ્દ ધાતુને
અન્તે પ્રત્યય લગાડીને જે શબ્દ બને છે તેને કૃદન્ત કહે છે, જેમકે પાઠક,
પાચક પાક આદિ શબ્દ ક્રિયાના વાચક “ શૂ ” આદિ જે શબ્દો છે તેમને
ધાતુ કહે છે બીજા વર્ણોની મદદ વિના જેનું ઉચ્ચારણ થાય છે એવા ‘ અ ’

વા, વિભક્તયઃ=સ્યાદયસ્તિરાદયશ્ચ, વર્ણાઃ = કરગદિયઃ, ણિર્યુક્ત 'તિકલ્લ' ત્રૈકાલ્ય=ત્રિકાલવિપય 'દસન્નિદિ પિ' દશવિધમપિ જનપદાદિરૂપ 'સચ્ચં' સત્ય=વક્તવ્યમ્ । તથા યત્સત્ય 'જહ' તથા=યેન પ્રકારેણ 'મણિય' મણિતમ્ ઉચ્ચારિત 'તહ ય' તથા ચ=તેનૈવ પ્રકારેણ 'કમ્મુણા' કર્મણાપિ-કાર્યેણાપિ પરિણત 'હોહ' ભવતિ, તત્સત્ય વક્તવ્યમિતિ માયઃ, તથા-'દુવાલસવિહા' દ્વાદશવિધા=પ્રાકૃત સસ્કૃતમાગધપિશાચસૌરસેનોપભ્રગમેદાત્ પદ્ધતિયા, સા પુનઃ ગદ્યપદ્યભેદાદ્ દિવિત્રેતિ દ્વાદશવિધા 'ભાસા' ભાષા 'હોહ' ભવતિ, તથા— 'વચ્ચણ પિ ય' વચનમપિ ચ 'હોહ' ભવતિ 'સોલસવિહ' પોડગવિચિત્વમેવ વિજ્ઞેયમ્—

અકાર આદિ શબ્દ, અથવા પહજ આદિ સ્વર સ્વર કહલાતે હૈં । 'સુ, ઓ, જસૂ, આદિ વિભક્તિયા તથા 'તિપૂ, તમ્, છી' આદિ પ્રત્યય યે સઘ વિભક્તિયા કહલાતી હૈં, ઔર કર્ગ આદિ વર્ગ કહલાતે હૈં । (જહ મણિય તહ ય કમ્મુણા હોહ) તથા જો સત્ય જિસ પ્રકાર સે કહા ગયા હૈ વહ સત્ય ડસી પ્રકાર સે કાર્ય સે મી પરિણત હો જાતા હૈ એસા સત્ય ચોલના ચાહિયે । તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ જિસ સત્ય કો, ચોલને વાલા વ્યક્તિ કાર્ય રૂપ મે પરિણત કર સકે એસા સત્ય ચોલના ચાહિયે । (દુવાલસવિહા હોહ ભાસા) ભાષા વારહ પ્રકાર કી હોતા હૈ—વહ હસ પ્રકાર સે—પ્રાકૃત, સસ્કૃત, માગધી, પૈશાચી, સૌરસેની ઔર અપભ્રશ । યહ છહોં પ્રકાર કી ભાષા ગદ્ય ઔર પદ્ય કે ભેદ સે વારહ પ્રકાર કી હો જાતી હૈ । (વચ્ચણ પિય હોહ સોલસવિહ) વચન કે સોલસ પ્રકાર હોતે હૈં, વે હસ પ્રકાર સે હૈ—

કાર આદિ શબ્દ અથવા પહજ આદિ સ્વરને સ્વર ડહે છે, “સુ, ઓ, જસૂ” આદિ વિભક્તિયો તથા “તિપૂ તમ્ છી” આદિ પ્રત્યય એ સૌને વિભક્તિયો ડહે છે, (ગુજરાતીમા એ, ને, થી, નો, ની, તુ, ના, મા આદિ વિભક્તિના પ્રત્યયો છે) અને ‘ક સ્વ’ આદિ વર્ણો ડહેવાય છે “જહમણિય તહય કમ્મુણા હોહ” તથા જે સત્ય જે પ્રકારે ડહેવાયુ હોય તે સત્ય તે જ પ્રકારે કાર્યમા પણ પરિણમતુ હોય તેવુ સત્ય બોલવુ જોઈએ, તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે જે સત્યને બોલનાર વ્યક્તિ કાર્ય રૂપે અમલમા મૂકી રાકે તેવુ સત્ય બોલવુ જોઈએ, “દુવાલસુવિહા હોહ ભાસા” ભાષા બાર પ્રકારની હોય છે તે આ પ્રમાણે છે—પ્રાકૃત, સસ્કૃત, માગધી, પૈશાચી, સૌરસેની, અને અપભ્રશ આ છ પ્રકારની ભાષા ગદ્ય અને પદ્યના ભેદથી બાર પ્રકારની થઈ જાય છે, “વચ્ચણ પિય હોહ સોલસવિહ” વચનના સોળ પ્રકાર હોય છે તે નીચે પ્રમાણે છે

“ વયણતિય^૩ લિંગતિય^૬ કાલતિય^૯ તદ્ પરોક્ષ^{૧૦} પચ્ચક્ષ^{૧૧} । ઉવણીયાઈ-
ચઠ્ઠક^{૧૫} અજ્ઞત્ય^{૧૬} ચેવ સોલસમ મે ”

છાયા-વચનત્રિક લિંગત્રિક કાલત્રિક તથા પરોક્ષ-પ્રત્યક્ષમ્ । ઉપનીતાદિ
ચતુષ્કમધ્યાત્મ ચૈવ પોડગમ્ ॥ ૬ ॥ ૨ ॥ ૩ ॥ ૪ ॥ ૫ ॥ ૬ ॥ ૭ ॥ ૮ ॥ ૯ ॥ ૧૦ ॥ ૧૧ ॥
ચ, યથા-‘ ઘટ ઘટો ઘટાઃ ’ ‘ ભવતિ, ભવતઃ ભવન્તી ’ ત્યાદિ । ત્રિલિંગમ્=
સ્ત્રીપુનરૂપસકરૂપમ્, યથા-‘ પ્રકૃતિઃ આત્મા મનઃ ’ ઇત્યાદિ । કાલત્રિક ભૂતભવિષ્યદ્
વર્તમાનરૂપમ્, યથા ‘ અભૂત, ભવિષ્યતિ, ભવતિ ઇતિ । તથા-પરોક્ષમ્=ભૂતા-
નવતનકાલિકમિન્દ્રિયાગોચરમ્-યથા-રૂપભો વભૂવે ’ ત્યાદિ । પ્રત્યક્ષમ્-વર્તમા-

“ વયણતિય૩ લિંગતિય૬ કાલતિય૯ તદ્ પરોક્ષ૧૦ પચ્ચક્ષ૧૧ ।

ઉવણીયાઈ ચઠ્ઠક ૧૫, અજ્ઞત્ય ચેવ સોલસમ ॥ ૧ ॥ ”

एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ३ । पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपु-
सकलिङ्ग ६ । भूतकाल, भविष्यत्काल और वर्तमानकाल ९ इस प्रकार
ये सब वचन के वचन लिङ्ग और काल तीन तीन होते हैं, इस तरह
वचन के ये नौ भेद हो जाते हैं ९ । ‘ घटः, घटौ, घटाः ’ ये घट शब्द
के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन हैं ३ । इसी तरह “ भवति भवतः
भवन्ति ” इनमें भी जानना चाहिये ३ । ‘ प्रकृतिः, आत्मा, मनः ’ ये
शब्द के तीन लिङ्ग हैं, प्रकृतिः स्त्रीलिङ्ग, और मनः, यह नपुंसकलिङ्ग है
६ । अभूत्, भविष्यति भवति ये तीन काल हैं ‘ अभूत् ’ यह भूत काल है,
‘ भविष्यति ’ यह भविष्यत् काल है और ‘ भवति ’ यह वर्तमान काल
है ९ । भूतकालीन एव अनद्यतनकालीन वचन इन्द्रिय के अगोचर होता

“ वयणतिय ३ लिंगतिय ६ कालतिय ९ तद् परोक्ख १० पच्चक्ख ११ ।

उवाणीयाइचठ्ठक १५ अज्झत्य चैव सोलसम ॥ १ ॥ ”

એકવચન, દ્વિવચન અને બહુવચન ૩, પુલિંગ, સ્ત્રીલિંગ અને નપુસ-
કલિંગ ૬, ભૂતકાળ, ભવિષ્યકાળ અને વર્તમાનકાળ ૯, આ રીતે તે બધા
વચનના પ્રકારો, લિંગ (જાતિ) અને કાળ ત્રણ ત્રણ હોય છે આ રીતે વચ-
નના તે નવ ભેદ થાય છે, “ ઘટ, ઘટૌ, ઘટા ” તે ‘ ઘટ ’ શબ્દના એક વચન,
દ્વિવચન અને બહુવચન છે ૩ એજ પ્રમાણે “ ભવતિ ભવતઃ ભવન્તિ ” એ
રૂપોમા પણ સમજવાનું છે ૩, “ પ્રકૃતિ આત્મા મન ” તે ત્રણ જુદી જુદી
જાતિ(લિંગ) ના શબ્દો છે પ્રકૃતિ સ્ત્રીલિંગ છે આત્મા પુલિંગ છે અને
મન નપુસકલિંગ છે ૬, વર્તમાન, ભૂત અને ભવિષ્ય એ ત્રણ કાળ છે ‘ અ-
ભૂત ” તે ભૂતકાળ છે, “ ભવિષ્યતિ ” તે ભવિષ્યકાળ છે અને “ ભવતિ ” તે
વર્તમાનકાળ છે ૯, ભૂતકાલીન અને ભવિષ્યકાલીન વચનો ઇન્દ્રિયને અગોચર

નકાલિકમિન્દ્રિયગોચરમ્-યથા-‘મુનિરય શાસ્ત્ર પઠતીત્યાદિ । તથા-ઉપનીતાદિ
 ચતુષ્ક વચનમ્, તત્ર-ઉપનીતવચનમ્=ગુણારોપણવચનમ્, યથા-‘રૂપવાનય મન
 સ્વી’ ત્યાદિ । અપનીતવચન=ગુણાપનયનવચનમ્, યથા-‘દુઃશીલોઽય દુઃચનો
 ઽય’ મિત્યાદિ । ઉપનીતાપનીતવચનમ્=કચિદ્ ગુણમારોપ્ય કોઽપિ ગુણોઽપની
 યતે યેન વચનેન તદુપનીતાપનીતવચનમ્, યથા-‘રૂપવાનય કિન્તુ દુઃશીલઃ’
 इत्यादि । एतद्विपर्ययेण अपनीतोपनीतवचनमपि भवति । येन वचनेन पूर्वं कमपि
 गुणमपनीय पश्चादपर कोऽपि गुण उपनीयते तदपनीतोपनीतवचनम्, यथा-
 ‘दुःशीलोऽय कित्तरूपवा’ नित्यादि । तथा-षोडश वचनम्-‘अञ्जल्य’ अध्या

है, जैसे “ऋषभो बभूव” यह वाक्य परोक्ष अर्थ को विपर्यय करनेवाला होने से परोक्ष माना जाता है १० । जो वाक्य वर्तमान काल को विषय करता है वह प्रत्यक्ष वाक्य माना जाता है जैसे “मुनिरय शास्त्र पठति” यह प्रत्यक्ष वाक्य है ११ । उपनीतवचन १२, अपनीतवचन १३, उपनीतापनीतवचन १४ और अपनीतोपनीतवचन १५, इस प्रकार ये उपनीतादि चार हैं । इनमें जो वचन गुणों का आरोपण करता है वह उपनीत वचन है-जैसे “यह मनस्वी अच्छे रूप वाला है १ । जो वचन गुणों का अपनयन करता है वह अपनीत वचन है-जैसे यह दुःशील है २ । जो वचन किसीगुणको आरोपित करके किसी गुण का अपनयन करता है वह उपनीतापनीतवचन है, जैसे यह रूपवाला तो है परन्तु दुःशील है ३ । इसी तरह जो किसी गुण का अपनयन करके गुण का आरोपक होता है वह वह अपनीतोपनीतवचन है, जैसे यह दुःशील

હોય છે, જેમકે “ઋષભા બભૂવ” “ઋષભ થઈ ગયો” આ વાક્ય પરોક્ષ અર્થને વિષય કરનાર હોવાથી પરોક્ષ મનાય છે ૧૦ જે વાક્ય વર્તમાન કાળને વિષય કરે છે તે પ્રત્યક્ષ મનાય છે “મુનિ આ શાસ્ત્ર વાચે છે ૧૧ (૧૨) ઉપનીતવચન, (૧૩) અપનીતવચન, (૧૪) ઉપનીતાપનીતવચન અને (૧૫) અપનીતોપનીતવચન એ રીતે ઉપનીતાદિ ચાર વચન છે (૧) તેમા ગુણોનુ આરોપણ કરનાર વચનને ઉપનીત વચન કહે છે જેમ કે “આ મનસ્વી સારા રૂપવાળો છે ” (૨) જે વચન ગુણોનુ અપનયન કરે છે તે અપનીત વચન છે, જેમ કે “આ દુશીલ છે ” (૩) જે વચન કોઈ ગુણનુ આરોપણ કરીને કોઈ ગુણનુ અપનયન કરે છે તે ઉપનીતાપનીત વચન છે, જેમકે “તે રૂપાળો છે પણ દુશીલ છે ” એ જ રીતે જે વાક્ય કોઈ ગુણનુ અપનયન કરીને કોઈ ગુણનુ આરોપણ કરતુ હોય તે અપનીતોપનીત વચન છે

ત્મમ્=આત્માનમધિકૃત્ય ચત્રવચન તદધ્યાત્મવચનમ્ ચવા - જ્ઞાનસ્વરૂપોઽયમાત્મે
ત્યાદિ । ઇતિ પોહગચિથ વચનમ્ । એમ્=ઉક્તત્પ સત્યમ્ ‘ અરહન્તમણુણાય ’
અર્હન્નુજ્ઞાતમ્=તીર્થદ્વરોપદિષ્ટ ‘ સમિશ્ચિત્વ ’ સમીક્ષિત=પર્યાલોચિત સદેવ
‘ સજણ ’ સયતેન=સાધુના ‘ કાલે ચ, કાલે ચ અવસરે સમાગતે એવ ‘ વત્તવ્વ ’
વત્તવ્યમ્ । ભગવદાત્માવિર્ભૂત સ્વયમપર્યાલોચિત વચન સાધુનાઽવસર વિના ન
વત્તવ્યમિતિ ભાવઃ । યવોપસહારમાદ=‘ ઇમં ચ ’ ઇત્યાદિ—

‘ ઇમં ચ ’ ઇદં ચ=પૂર્વગ્નન્તતીર્થકરણધરેઃ પ્રોક્તમિદં=પ્રત્યક્ષ ‘ પાવયણ ’
પ્રવચનમ્, ‘ અલિય-પિસુણ-ફરુસ-કહુય-ચવલવયણપરિરક્ષણદ્વયાણ ’ અલીકપિ-
શુન-પરુપ-કહુય-ચવલવચનપરિરક્ષણાર્થ-તત્ર અલીકમ્ અસદ્ભૂતાર્થ પિશુન=પર-
તો હૈ પરન્તુ અચ્છે રૂપ વાલા હૈ ૪ । વચન કા સોલહર્વા ભેદ વહ હૈ,
જો અધ્યાત્મ હોના હૈ, જો આત્મા કો અધિકૃત કરકે વોલા જાતા હૈ
જૈસે “ યહ આત્મા જ્ઞાન સ્વરૂપ હૈ ” ઇત્યાદિ ૧૬ । (એવ અરહત મણુણાય)
ઇમ પ્રકાર ઇન સોલહ તરહ કે વચનોં કો વોલને મેં તીર્થકર પ્રશુ કી
આજ્ઞા હૈ । ઑર જો વચન (સમિશ્ચિત્વ) પર્યાલોચિત હૈ અર્થાત્ અચ્છી
તરહ સે વિચાર કરકે નિકાલે ગયેહો એસે વચન (સજણ) સાધુ કો
(કાલમ્મિ) અવસર આને પર (વત્તવ્વ) વોલને ચાહિયે, પરન્તુ જિન
વચનોં કો વોલને કી પ્રશુ કી આજ્ઞા નહી હૈ ઑર જો અપર્યાલોચિત
હો એસે વચન સાધુ કો નહીં વોલના ચાહિયે । અવ ઇસકા ઉપસહાર
કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હે—(ઇમચ પાવયણ) પૂર્વાકાલિક અનત તીર્થ-
કરોં કે દ્વારા કહા હુઆ યહ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન (અલિય-પિસુણ-
ફરુસ-કહુય-ચવલવચનપરિરક્ષણદ્વયાણ) અલીક, પિશુન, પરુપ,

જેમ કે ‘ આ હુ શીલ તો છે પણ મુદ્-રૂપવાળો છે ’ (૧૬) વચનનો
સોળમો ભેદ તે છે કે જે આત્મા હોય છે, જે આત્માને ઉદ્દેશીને બોલાય
છે જેમ કે “ આ આત્મા જ્ઞાનસ્વરૂપ છે ” ઇત્યાદિ, “ એવ અરહત મણુણાય ”
આ રીતે તે સોળ પ્રકારના વચનો બોલવાની તીર્થકર પ્રશુની આજ્ઞા છે અને
જે વચન ‘ સમિશ્ચિત્વ ’ પર્યાલોચિત છે—માગી રીતે વિચાર કરીને ઉચ્ચા-
રાયા હોય, એવા વચન “ સજણ ” સાધુએ “ કાલમ્મિ ” અવસર આવતા
“ વત્તવ્વ ” બોલવા જોઈએ, પણ જે વચનો બોલવાની લગવાનની આજ્ઞા
નથી અને જે અપર્યાલોચિત હોય તેવા વચનો સાધુએ બોલવા જોઈએ નહીં
હવે તેનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે — ‘ ઇમચ પાવયણ ’ પૂર્વાકાલીન
અનત તીર્થકરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન, “ અલિય-પિસુણ-
ફરુસ-કહુય-ચવલ-વચન-પરિરક્ષણદ્વયાણ ” અલીક-અસત્ય, પિશુન, પરુપ-

દોષસૂચક, પરુપ=પરમર્ષોદ્ઘાટક, કદુરુપ્=ઉદ્વેગજનકમ્, ચપલમ્=અમમીક્ષ્ય પ્રોક્ત
 ચદ્ વચન તસ્માત્-મુનીના પરિરક્ષણા મ્, અર્થાત્-મુનિભિરીદ્ય 'વચન ન વાચ્ય
 મિતિ હેતોઃ ' ભગવયા ' ભગવતા ' સુક્રત્વિયં ' સુકવિતમ્ । વચમ્ભૂત પ્રવચનં
 સુકવિતમ્ ? इत्याह—' अत्तहिय ' आत्महितम्-आत्मनो हितकारकम्, ' पेच्चा-
 भाविय ' प्रेत्य भाविक=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्, अताएव ' आगमेसिभद'
 आगमिष्यद् भद्रम्=भविष्यत्कल्याणकारकम्, तथा—' सुद्ध ' शुद्ध=निर्दोषत्वात्,
 पुनः ' नेयाउय ' नैयायिक=न्याययुक्तम्, वीतरागभापितत्वात्, तथा—' अकु-
 ङिल ' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात्, ' अणुत्तर ' अनुत्तरम्=सर्वश्रेष्ठत्वात्,
 तथा-सर्वदुःखपाशान ' सर्वदुःखपापानां=सकृद्दुःखजनकज्ञानारणीयाद्यष्टविध
 कर्मणा ' विउसमण' व्युपशमनम्=सर्वथाप्रशमनकारकम् । एतादृश प्रवचन भगवता
 कथितमित्यर्थः ॥ सू-३ ॥

કદુરુ, ચપલ, વચનો સે મુનિજનો કો રક્ષા હોતી રહે ઇસ અભિપ્રાય સે
 (ભગવયા) ભગવાન ને (સુક્રત્વિય) અચ્છત્રી તરહ સે પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ।
 અસદ્ભૂત અર્થ કો કહને ચાલા વચન અલીક, પર દોષ સૂચકવચન-
 વિશુન. પર કે મર્મકા ઉદ્ઘાટક વચન પરુપ, ઉદ્વેગ કો પેદા કરને
 ચાલા વચન કદુરુ, ઓર વિના વિચારે બોલા ગયા વચન ચપલ કહ-
 લાતા હૈ । યહ પ્રવચન (અત્તહિય) આત્મા કા હિતકારક હૈ તથા (પેચ્ચા
 ભાવિય) જન્માન્તર મે ભી શુભફલ કા દેનેવાલા હૈ । (આગમેસિભદ)
 હસીલિયે હસે ભવિષ્યત્ મે કલ્યાણકારક કહા ગયા હૈ । (સુદ્ધ)
 હસ પ્રવચન મે કિસી ભી પ્રકાર કા પૂર્વાપરવિરોધરૂપ દોષ નહી હોને
 સે યે શુદ્ધ હૈ । (નેયાઉય) યહ વીતરાગ દ્વારા ભાપિત હોને કે કારણ
 ન્યાયયુક્ત હૈ । તથા (અકુટિલ) હસસે ઋજુભાવ ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ
 હસલિયે યહ અકુટિલ હૈ । (અણુત્તર) હસ કે જૈસા ઉત્તમ ઓર કોઈ

કઠોર, કડવા, ચપલ વચનોથી મુનિજનોની રક્ષા થયા કરે તે ઉદ્દેશથી
 ' ભગવયા ' લગવાને " સુક્રત્વિય " સારી રીતે પ્રતિપાદન કર્યું છે અસદ્ભૂત
 અર્થને કહેનાર વચન અલીક, પરદોષ સૂચક વચન વિશુન, બીજાના મર્મને
 ખુલ્લો પાડતું વચન પરુપ, ઉદ્વેગ પેદા કરનાર વચન કદુરુ અને વિચાર્યા વિના
 બોલાયેલ વચન ચપલ કહેવાય છે આ પ્રવચન " અત્તહિય " આત્માને માટે
 હિતકારક છે તથા " પેચ્ચાભાવિય " જન્માન્તરમા પણ શુભ ફળ દેનાર છે
 " આગમેસિભદ " તે કારણે તેને ભવિષ્યમા કલ્યાણકારક નિર્ણય છે " સુદ્ધ "
 આ પ્રવચનમા કોઈ પણ પ્રકારે પૂર્વાપરવિરોધરૂપ દોષ નહી હોવાથી તે
 શુદ્ધ જે " નેયાઉય " તે વીતરાગ દ્વારા કહેવાયેલ હોવાથી ન્યાયયુક્ત છે
 તથા " અકુટિલ " તેનાથી ઋજુભાવ સરળતા ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તે અકુટિલ
 છે, " અણુત્તર " તેનાજેવું શ્રેષ્ઠ બીજું કંઈ પણ નથી તેથી તે અનુત્તર છે

નहीं है इसलिये यह अनुत्तर है। और यह (सर्वदुःखपापाण विउस-
मण) अनेक विध दुःखां के देने वाले ज्ञानावरणीयादि अष्टप्रकार के
कर्मों का सर्वथा उपशम करने वाला है। ऐसे विशेषणों से विशिष्ट
इस प्रवचन को भगवान् ने कहा है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा यह प्रकट किया है कि सत्य
होने पर भी किस प्रकार के वचन नहीं बोलना चाहिये और किस
प्रकार के वचन बोलना चाहिये। उन्होंने कहा है कि जिन सत्यवचनों
से समय में राग आवेंवे वचन कभी नहीं कहना चाहिये, क्योंकि ऐसे
वचन सत्य होने पर भी असत्य के जैसे होने से हेय त्याज्य हैं। जिन
सत्य वचनों से हिंसा हो जावे, पाप में जीवों की प्रवृत्ति हो जावे,
चारित्र्य से भ्रष्ट हो जावे, अथवा अपने चारित्र्य में किसी प्रकार की
बाधा उपस्थित हो जावे, राजकथा आदिका प्रसंग जिनमें होवे, जो
प्रयोजन शून्य हो, जिनसे कलह उत्पन्न हो जावे, न्यायानुकूल जो न हो,
अपवाद विवाद से जो युक्त हो, पर की विडम्बनाकारक हो, जिनके
बोलने में अपनी आत्मप्रशंसा भरी हो, अथवा किसी प्रकार का आवेश
भाव झलकता हो, सुनने वालों को जिनमें अपनी घृष्टता प्रकाशित

અને તે “સર્વદુઃખપાપાણ વિઉસમણ” અનેક પ્રકારના દુખો દેનાર
જ્ઞાનાવરણી આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનો સર્વથા ઉપશમ કરનાર છે, એવા
વિશેષણોથી યુક્ત આ પ્રવચન લગવાન મહાવીર દ્વારા ડથિત છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કર્યું છે કે સત્ય હોય તો
પણ એવા પ્રકારના વચન બોલવા નોંધ્યે, તેમણે એ બતાવ્યું છે કે જે સત્ય-
વચનોથી અયમમા બાધા નડે, તેવા વચનો કદી પણ ન બોલવા નોંધ્યે,
કારણ કે તેવા વચનો સત્ય હોય તો પણ અસત્ય જેવા હોવાથી હેય છે
જે સત્યવચનોથી હિંસા વધે નય, જીવોની પાપમા પ્રવૃત્તિ થાય, ચારિત્રમા
ભ્રષ્ટતા આવે, અથવા પોતાના ચારિત્રમા ડોડ પ્રકારની બાધા ઉપસ્થિત થાય,
જેમા રાજકથા આદિનું વર્ણન આવે, જે પ્રયોજન વિનાનું હોય, જેનાથી કલહ
પેદા થાય, જે ન્યાયાનુકૂળ ન હોય, જે અપવાદ વિવાદથી યુક્ત, પારકાની
વિડબના કરનાર હોય, જે બોલવામા આત્મશ્લોધા થતી હોય, અથવા ડોષ
પ્રકારનો આવેશ ભાવ જણાતો હોય, જેમા સાલજનાર આગળ પોતાની

હોતી હો, જિનકે ચોલને મે લજ્ઞા કી મી લાજ જાતી હો, લોક મેં જો નિન્દિત માને જાતે હો, પર કં મર્મ કો જો છેદતે હો, દુર્ઘટ, દુઃશ્રુત એવ જો અજ્ઞાત હો એસે સત્યવચન મી નહીં ચોલના ચાહિયે । તથા ભાષાસમિતિ કે વિરોધી હોને સે એસે વચન મી નહીં કરના ચાહિયે કિ જો દૂસરોં કી નિંદા કારક હો, કર્ણકટુ તથા દુઃશ્રવણ હો, જેસે-તૂ મહામૂર્ખ હૈ, મેઘાવી નહીં હૈ, ધર્મપ્રિય નહીં હૈ ઇત્યાદિ । તથા જો દ્રવ્ય જેસા હૈ, જેસે આકાર કા હૈ, જિસ ક્ષેત્ર કાલ આદિ સે સબધ રહતા હૈ, એસા હી ઉમકા પ્રતિપાદન કરનેવાલા અવિસવાદી વચન જો હોતા હૈ વહ વચન દ્રવ્ય સે યુક્ત કહલાતા હૈ, ઇસી પ્રકાર ઉસ દ્રવ્ય મેં જો પર્યાયે હો રહી હો, અથવા- જિસ પર્યાય સે વહ યુક્ત હો-ઉસ પર્યાય કા પ્રદર્શક વચન પર્યાય સે યુક્ત વચન કહલાતા હૈ । ગુણોં કી અપેક્ષા કો લેકર જો વચન બોલા જાતા હૈ વહ ગુણ સે યુક્ત વચન કહલાતા હૈ । કૃપ્યાદિ વ્યાપારોં કો લેકર જો વચન કહે જાતે હૈ વે કર્મયુક્ત વચન કહલાતે હૈ । “ યે શિલ્પી હૈ યે ચિત્રકાર હૈ ” ઇત્યાદિ જો ક્રિયાવિશેષોં કો લેકર જો વચન કહે જાતે હૈ વે બહુવિધશિલ્પયુક્ત વચન કહલાતે હૈ । તથા સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર જો વચન કહે જાતે હૈ વે સિદ્ધાન્તયુક્ત વચન કહલાતે હૈ । ઇસી તરહ નામ આદિ સે યુક્ત જો

ધૃષ્ટતાનુ પ્રદર્શન થતુ હોય, જે બોલવામા લાજ લોખાતી હોય, જગનમા જે નિન્દાપાત્ર મનાતા હોય, બીજાના મર્મને જે છેદતા હોય, દુર્ઘટ, દુઃશ્રુત, અને જે અજ્ઞાત હોય એવા સત્યવચન પણ બોલવા ભેઈએ નહીં તથા ભાષાસમિતિના વિરોધી હોવાથી એવા વચનો પણ ન બોલવા ભેઈએ કે જે બીજાની નિન્દાકારક હોય, કર્ણકટુ તથા દુઃશ્રવણ હોય જેમ કે “ તુ મહા-મૂર્ખ છે, મેઘાવી નથી, ધર્મપ્રિય નથી ” ઇત્યાદિ, તથા જે દ્રવ્ય જેવું છે જેવા આકારનું છે, ક્ષેત્ર કાળ આદિ સાથે સબધ રાખે છે, એવું જ તેનું પ્રતિપાદન કરનારા અવિસવાદી જે વચનો હોય છે તે વચનો દ્રવ્યયુક્ત કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે તે દ્રવ્યમા જે પર્યાયો થઈ રહી છે, અથવા જે પર્યાયથી તે યુક્ત હોય, તે પર્યાયને દર્શાવનારું વચન પર્યાયયુક્ત વચન કહેવાય છે ગુણોની અપેક્ષાએ જે વચન બોલાય છે તે ગુણયુક્ત વચન કહેવાય છે કૃપ્યાદિ વ્યાપારોની અપેક્ષાએ જે વચન બોલાય છે તે કર્મયુક્ત વચન કહેવાય છે “ તેઓ શિલ્પી છે, તેઓ ચિત્રકાર છે ” ઇત્યાદિ ક્રિયા-વિશેષોની અપેક્ષાએ જે વચન કહેવાય છે તે બહુવિધ શિલ્પયુક્ત વચન કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે નામ આદિથી યુક્ત જે વચન કહેવાય છે તે

સમતિ સત્યવચનસ્ય પચ્ચ ભાવના. પ્રતિપાત્યન્ પૂર્વ સમિતિયોગલક્ષણાં
પ્રથમા ભાવનામાહ—‘ તસ્મ ઇમા ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તસ્મ ઇમા પચ્ચ ભાવનાઓ વીયસ્સ વયસ્સ
અલિયવચન—વેરમણ—પરિરક્ષણદ્વયાણ । પઢમ સોઠ્ઠણ
સંવરટ્ટ પરમટ્ટ સુટ્ટુ જાણિઠ્ઠણ ન વેગિય, ન તુરિય, ન ચવલં
ન કહુયં, ન ફરુસ, ન સાહસ, ન ય પરસ્સ પીલાકર
સાવજ્જ સચ્ચ ચ મિય ચ ગાહગ ચ સુઠ્ઠ સગયમકાહલં
ચ સમીક્ષિય સજણ કાલમ્મિય વત્તઠ્ઠવ । એવ અણુવ્વિદ્ધિ-
સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવદ્ધ અતરપ્પાસજયકરચરણનયણ-
વચ્છો સૂરો સચ્ચજ્જવસંપણ્ણો ॥ સૂ૦૪ ॥

ટીકા— તસ્મ ’ તસ્ય પ્રસિદ્ધસ્ય ‘ વીયસ્સ વયસ્સ ’ દ્વિતીયસ્ય વ્રતસ્ય
ઈમાઃ=વક્ષ્યમાણાઃ પ્રથ્વ ‘ ભાવનાઓ ’ ભાવનાઃ ‘ અલિયવચનવેરમણપરિરક્ષણ-

વચન કહેજાતે હૈં વે નામાદિયુક્ત વચન કહલાતે હૈં । હસ પ્રકાર કે યે
સત્યવચન સયમ આદિ કે વાવક નહીં હોતે હૈં । એસે વચન સવ્યવ્રતી
બોલ સકના હૈં । તથા વહ પ્રાકૃત આદિ ભેદ સે બારહ પ્રકાર કી ભાષા
ઔર એકવચન આદિ કે ભેદ સે સોલહ પ્રકાર કા વચન ભી બોલ
સકતા હૈં । હસ પ્રકાર કે વચન બોલને મેં પ્રભુ કી આજ્ઞા હૈં । એસે
વચન બોલને મેં કિસી ભી જીવ કો વાધા નહીં પહુંચતી હૈં ॥ સૂ૦૩ ॥

અવ સૂત્રકાર સત્યવચન કી પાચ ભાવનાઓ કો કહને કે
અભિપ્રાય સે સર્વપ્રથમ વે અનુવિચિન્ત્ય સમિતિ નામ કી પ્રથમ ભાવના

નામાદિયુક્ત વચન કહેવાય છે, આ પ્રકારના તે સત્યવચનો સયમ આદિમા
બાધક થતા નથી એવા વચન સત્યવ્રતી બોલી શકે છે તથા તે પ્રાકૃત આદિ
ભેદથી બાર પ્રકારની ભાષા અને એક વચન આદિ ભેદથી મોળ પ્રકારના વચન
પણ બોલી શકે છે, આ પ્રકારના વચન બોલવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે એવા
વચનો બોલવાથી કોઈપણ જીવને બાધા પડેલ્યતી નથી ॥ સૂ ૩ ॥

હવે સૂત્રકાર સત્યવચનની પાચ ભાવનાઓ દર્શાવવાને માટે સૌથી
પહેલા તેઓ અનુવિચિન્ત્ય સમિતિ નામની પહેલી ભાવનાનું વર્ણન કરે છે—

દુયાણ ' અલીકવચનવિરમણપરિરક્ષણાર્થમ્-મૃપાવાદવિરમણત્રતપરિરક્ષણાર્થે સન્તિ ।
તાસુ ' પઢમં ' પ્રથમા સમિતિયોગલક્ષણાં ભાવનામાદ- ' સોઝણ ' શ્રુત્વા=સુગુરુ
સમીપે સમાકર્ણ્ય, તથા- ' પરમટ્ટ ' પરમાર્થ-પરમતત્ત્વ પ્રથમભાવનારહસ્ય ' સંવ-
રદ્વ ' સવરાર્થ-સવરસ્ય-મૃપાવાદવિરતિલક્ષણમ્પ અર્થે=પ્રયોજન-મોક્ષલક્ષણમ્,
અથવા સવરઃ=કર્મનિરોધણ્ય અર્થઃ પ્રયોજન યસ્ય સ ત તથોક્તમ્, યદ્વા-સવરસ્ય=
પ્રસ્તુતસંવરાધ્યયનસ્ય અર્થે=યાન્ય ' સુદૃઢુ ' સુદૃઢુ-સમ્યક્ ' જાણિઝણ ' જ્ઞાત્વા
ન=નૈવ ' વેગિય ' વેગિત=નદીપ્રવાહ રદ્વેગયુક્ત વચન વક્તવ્યમિત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ,
તથા-ન નૈવ ' તુરિય ' ત્વરિત-વાત્યાયત્ ત્વરાયુક્ત વચનચાશ્ચલ્પાત્, ન=નૈવ

કરતે હૈં- ' તસ્સ ઇમા ' હત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ- (તસ્સ ત્રીયસ્સ વચસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ) ઉસ પ્રસિદ્ધ
દ્વિતીય મહાવ્રત કી યે વક્ષ્યમાણ પાંચ ભાવનાઓ (અલિયવચણવેરમણ
પરિરક્ષણદુયાણ) ઉસ અલીકવચન વિરમણરૂપ સત્યવ્રત કી રક્ષા
કે લિયે હૈં । ઉનમૈં (પઢમ) પ્રથમ ભાવના ઢસ પ્રકાર હૈં- (પરમટ્ટ સવરદ્વ
સોઝણ) સુગુરુ કે સમીપ પ્રથમ ભાવના કે રહસ્ય કો કિ જો રહસ્ય
મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજન ગાલા હૈં, અથવા કર્મનિરોધરૂપ સવર હી
જિસકા પ્રયોજન હૈં, અથવા ઢસ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયન કે વાચ્યાર્થ કો
સુનકરકે (સુદૃઢુ જાણિઝણ) અચ્છી તરહ જાન કરકે (ન વેગિય) નદી
કે પ્રવાહ કી તરહ વેગયુક્ત વચન સાધુ કો નહીં વોલના ચાહિયે ઢસ
પ્રકાર "વક્તવ્ય" શબ્દ કા સબ્ધ સવ કે સાથ લગા લેના ચાહિયે ।
(ન તુરિય) વાત્યા-વધૂરે-કી તરહ ત્વરાયુક્ત વચન ચલતા સે યુક્ત

" તસ્સ ઇમા " હત્યાદિ-

ટીકાર્થ- " તસ્સ ત્રીયસ્સ વચસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ " તે પ્રસિદ્ધ ખીજી
મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાંચ ભાવનાઓ " અલિયવચણવેરમણપરિરક્ષ-
ણદુયાણ " તે અલીક-અસત્ય-વિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમા
" પઢમ " પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે- " પરમટ્ટ સવરદ્વ સોઝણ " સદ્ગુરુ
પાસે પહેલી ભાવનાનુ રહસ્ય કે જે મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળુ છે,
અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સવર જે પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત
સવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સાંભળીને " સુદૃઢુજાણિઝણ " સારી રીતે જાણીને
" ન વેગિય " નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા
જોઈએ નહીં આ રીતે " વક્તવ્ય " શબ્દનો સબ્ધ બધા સાથે જોડી લેવો
" ન તુરિય " વાત્યા-વધૂરા-ની જેવું ત્વરાયુક્ત " ન ચલ " ઘોડાની ગતિ

‘चपल’ चपल=हयगमनवच्चपलभावमन्वितम्, न=नैव ‘कडुय’ निम्नवत्
कडुकम् अर्थतः, न=नैव ‘फरुस’ परुष-कठोर-पापाण्यत्कठोरभावयुक्त, तथा
न=नैव ‘साहसम्’-उन्मत्तवत् अविचारित, तथा-‘न य’ न च ‘परस्स’
परस्य पीडाकर=दुःखजनक ‘सावज्ज’ सावध=सपाप वचन वक्तव्यम् । उक्त-
दोषदुष्ट वचन न वक्तव्यमित्यर्थः । तर्हि कीदृश वचन वक्तव्यम् ? इत्याह-‘सच्च
च=सद्भूतार्थत्वात् ‘हिय च-परिणामसुखजनकत्वात्, ‘मिय’ मितं च, परि-
मिताक्षरत्वात्, तथा-‘गाहग’ ग्राह्य=श्रोतुरर्थप्रतीतिजनकत्वात्, प्रीतिजनक-
त्वाच्च, ‘सुद्ध’ शुद्ध-वेगितत्वादिदोषरहितत्वात्, तथा-‘सगय’ सगतम्=
युक्तियुक्तत्वात्, ‘अकाहल’ अकाहल=मन्मनाक्षररहितत्वात्, च=पुनः ‘समि-
क्खय’ समीक्षित=पूर्व बुद्ध्या पर्यालोचितत्वात्, एतादृश वचन ‘सजएण’

(न चवले) धोडे के गमन की तरह चपलभाव से युक्त (न कडुय)
नीम की तरह अर्थतः कडुक, इसी तरह (फरुस) पापाण की तरह
कठोर (न साहस) उन्मत्त के वचन की तरह अविचारित, और
(न य परस्स पीलाकर) पर को पीडाजनक (सावज्जा) सावध-
पापयुक्त ऐसे वचन नहीं बोलना चाहिये । किन्तु जो वचन (सच्च च)
सद्भूत अर्थ को विषय करने वाले होने से मत्त हो, (हिय च)
परिणाम में सुखजनक होने से हितकारक हों, (मिय च) परिमित
अक्षरों से युक्त होने से जो मित हों, (गाहग च) श्रोता को अर्थ की
प्रतीति एवं प्रीति के कराने वाले होने से ग्राहक हों, (सुद्ध) वेगित्वादि
दोषों से रहित होने से शुद्ध हों, तथा (सगय) सगतयुक्ति युक्त हों,
(अकाहल) अकाहल हो मन्मन अक्षर से रहित हों, (समिक्खय)
समीक्षित हों-बुद्धि से पहिले जिनका विचार अच्छी तरह कर लिया

जेषु अपाभाव युक्त वचन, “न कडुय” नीमना जेषु ओटले के कडुक,
जे न रीते “फरुस” पथर जेषु कठोर “न साहस,” उन्मत्तना वचन
जेषु अविचारी, अने “न य परस्स पीलाकर” पीलने पीडाजनक “सावज्जा”
सावध-पापयुक्त वचन बोलवा जेहजे नही पणु जे वचन “सच्च च”
यथार्थ अर्थने विषय बनार होवाथी मत्त होय, “हिय च” परिणामे
सुखजनक होवाथी हितकारक होय “मिय च” परिमित अक्षरवाणु होवाथी
जे मित होय, “गाहग च” श्रोताने अर्थनी प्रतीति अने प्रीति करानार
होवाथी ग्राह्य होय, “सुद्ध” वेगित्व आदि दोषरहित होवाथी शुद्ध होय,
तथा “सगय” सगत-युक्तियुक्त होय, “अकाहल” अकाहल होय-मन्मन
अक्षरों विनाजु होय, “समिक्खय” समीक्षित होय-बुद्धिथी जेने पड़ेवा

• દ્રુયાણ ' અલીકવચનવિરમણપરિરક્ષણાર્થમ્-મૃપાવાદવિરમણતતપરિરક્ષણાર્થ સન્તિ ।
તાસુ ' પદ્મં ' પ્રથમા સમિતિયોગલક્ષણાં ભાવનામાહ-' સોઝણ ' શ્રુત્વા=સુગુરુ
સમીપે સમાકર્ણ્ય, તથા-' પરમટ્ટ ' પરમાર્થ-પરમતત્ત્વ પ્રથમભાવનારહસ્ય ' સવ-
રહ ' સવરાર્થ-સવરસ્ય-મૃપાવાદવિરતિલક્ષણસ્ય અર્થ=પ્રયોજન-મોક્ષલક્ષણમ્,
અથવા સવરઃ=કર્મનિરોધણ અર્થઃ પ્રયોજન યસ્ય સ ત તથોક્તમ્, યદ્વા-સવરસ્ય=
પ્રસ્તુતસવરાધ્યયનસ્ય અર્થ=વાચ્ય ' સુદૃઢ ' સુદૃઢ-સમ્યક્ ' જાણિઝણ ' જ્ઞાત્વા
ન=નૈવ ' વેગિય ' વેગિત=નદીપ્રવાહ રૂઢવેગયુક્ત વચન વક્તવ્યમિત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ,
તથા-ન નૈવ ' તુરિય ' તરિત-વાત્યાવત્ ત્વરાયુક્ત વચનચાશ્ચલ્યાત્, ન=નૈવ

કહતે હે-' તસ્સ ઇમા ' ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ વીયસ્સ વયસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ) ઉસ પ્રસિદ્ધ
દ્વિતીય મહાવ્રત કી યે વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઈ (અલિયવચણવેરમણ
પરિરક્ષણદ્રુયાણ) ઉસ અલીકવચન વિરમણરૂપ સત્યવ્રત કી રક્ષા
કે લિયે હૈં । ઉનમેં (પદ્મ) પ્રથમ ભાવના ઇમ પ્રકાર હૈ—(પરમટ્ટ સવરહ
સોઝણ) સુગુરુ કે સમીપ પ્રથમ ભાવના કે રહસ્ય કો કિ જો રહસ્ય
મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજન ગાલા હૈ, અથવા કર્મનિરોધરૂપ સવર હી
જિસકા પ્રયોજન હૈ, અથવા ઇસ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયન કે વાચ્યાર્થ કો
સુનકરકે (સુદૃઢ જાણિઝણ) અઢી તરહ જાન કરકે (ન વેગિય) નદી
કે પ્રવાહ કી તરહ વેગયુક્ત વચન સાધુ કો નહી ચોલના ચાહિયે ઇસ
પ્રકાર “વક્તવ્ય” શબ્દ કા સબધ સવ કે સાથ લગા લેના ચાહિયે ।
(ન તુરિય) વાત્યા-વધૂરે-કી તરહ ત્વરાયુક્ત વચન ચલતા સે યુક્ત

“ તસ્સ ઇમા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ તસ્સ વીયસ્સ વયસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ ” તે પ્રસિદ્ધ બીજા
મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઓ “ અલિયવચણવેરમણપરિરક્ષ-
ણદ્રુયાણ ” તે અલીક-અસત્ય-વિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમા
“ પદ્મ ” પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે—“ પરમટ્ટ સવરહ સોઝણ ” સફળ
પાસે પહેલી ભાવનાનું રહસ્ય કે જે મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળું છે,
અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સવર જેનું પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત
સવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સાંભળીને “ સુદૃઢજાણિઝણ ” સારી રીતે જાણીને
“ ન વેગિય ” નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા
જોઈએ નહીં આ રીતે “ વક્તવ્ય ” શબ્દનો સબધ બધા માથે જોડી લેવો
“ ન તુરિય ” વાત્યા-વધુરા-ની જેમ ત્વરાયુક્ત “ ન ચલ ” ઘોડાની ગતિ

अथ क्रोधनिग्रहरणं द्वितीया भाषनामाह—‘वीर्य कोहो’ इत्यादि

मूलम्—वीर्य कोहो ण सेवियव्वो, कुद्धो चडिक्खिओ माणुसो
अलिय भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुस भणेज्ज, अलिय पिसुणं
फरुसं भणेज्ज, कलह करेज्ज, वेर करेज्ज, विगह करेज्ज, कलह
वेर विगह करेज्ज, सच्चं हणेज्ज, सील हणेज्ज, विणय हणेज्ज
सच्च सील विणय हणेज्ज, वेनो भवेज्ज, वत्थुं भवेज्ज, गम्मो
भवेज्ज, वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज, एव अणं च एवमाइयं

पूर्वक बोलना इसका नाम जणुविचिन्त्य भाषण है। यह भाषा समिति-
रूप है। सत्य में और भाषा समिति में कुछ भेद कहा गया है वह
यह है कि हर एक के साथ सभाषण व्यवहार में विवेक रखना तो भाषा
समिति है। आर अपने समशील साधु पुरुषों के साथ सभाषण
व्यवहार में हित मित और यथार्थवचन का उपयोग करना सत्यव्रतरूप
यतिवर्म है। उस भाषना से इस सत्यव्रत की स्थिरता होती है। बोलते
समय साधु को वेग से, त्वग से और चपलता से नहीं बोलना चाहिये।
और न बिना विचारे ही बोलना चाहिये। बोलने का जब समय आवे
तब ही सत्य, हित, मित वचन बोलना चाहिये। अविचारित और
अस्पष्ट वचन नहीं बोलना चाहिये। उस तरह की वचन प्रवृत्ति में
सावधान बना हुआ साधु सत्यव्रत को सुशोभित करता हुआ प्रत्येक
अपनी कर चरण आदि की प्रवृत्ति को यतना पूर्वक करता रहता है ॥सू० ४॥

विचिन्त्य भाषण उहे छे ते भाषासमितिउप छे सत्यमा अने भाषासमितिमा
केटलाउ लेह अताववामा आव्या छे ते अेवा प्रकारना छे उे हरेउनी आथे
वातथीतमा विवेक राखवे। अे तो भाषासमिति छे अने पोताना अमशील
साधुअने। आथे वातथीतमा हित, मित अने यथार्थ वचनने उपयोग करवे।
ते सत्यव्रतउप यतिवर्म छे आ भाषनाधी ते सत्यव्रत दृढ वाय छे ओलती
वअते साधुअे वेगथी त्वगथी अने चपलताथी ओलवु ओहअे नही बिना
विचार्ये पणु ओलवु ओहअे नही न्याये ओलवाने। अवसर आवे त्यारे
अ सत्य, हित, मित वचन ओलवा ओहअे अविचारित अने अस्पष्ट वचन
ओलवा ओहअे नही आ प्रकारनी वचन प्रवृत्तिमा सावधान अनेल साधु
सत्य मतने सुशोभित करता, पोतानी उणु अणु आग्नि प्रत्येउ प्रवृत्तिने
यतनापूर्वक करता रहे छे । सू० ४ ॥

સયત્તેન=સાધુના 'કાલ્મશિ ય' કાલે ચ=અવસરે 'વન-૩' વક્ત-યમ્ । ઇવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'અણુવીડ સમિદ્જોગેણ' અનુવિચિત્યમમિતિયોગેન અનુવિચિત્ય=ન્યાં લોચ્ય યા સમિતિયોગેન=ભાષાસ્વાસમિતિઃ, તમ્યા યોગેન 'ભાવિઓ' ભાવિતઃ=અતરપ્પા 'અન્તરાત્મા=જીવઃ—' સજયકરચરણનયણવયણો 'સયત્તકરચરણનયનવદન સયત્ત = સમ્યગ્ગતનાયુક્ત કરચરણનયનવદન યસ્ય સ તથોક્ત-સન્ સમાહિતેન્દ્રિયઃ સન્નિત્યર્થઃ, 'સૂરો' સૂરઃ=પરાક્રમશાત્રી, 'સચ્ચજ્જવસપન્નો' સત્યા-ર્જવસપન્ન-સત્યમ્=અમૃતા અર્જવમ્=ઋજુતા, તામ્યા સપન્નો-યુક્તો ભવતિ ।

इत्येषामथमा भावना ॥ सू-४ ॥

गया हो ऐसे हों, ऐसे ही वचन साधु को अवसर आने पर—जब तब नहीं किन्तु बोलने का जब समय उपस्थित हो तब बोलना चाहिये । (एव) इस प्रकार (अणुवीडममिद जोगेण) अनुविचिन्त्य भाषासमिति के योग से—विचार कर बोलने रूप भाषासमिति के समय से (भाविओ अतरप्पा) भावित हुआ जीव (सजयकरचरणनयणवयणो) अच्छी तरह यतना से युक्त कर-हाथ, चरण-पैर, नयन-नेत्र एव वदन-मुख वाला बनकर, अर्थात् समाहित इन्द्रियों वाला होकर (सूरौ) पराक्रम-शाली बन जाता है, अर्थात् सत्यमहाव्रत की आराधना में आये हुए उपसर्गों और परीपहों को जीतने में शक्तिशाली हो जाता है । तथा (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और ऋजुता से सपन्न बन जाता है ।

भावार्थ—अहिंसा व्रत की तरह सत्यव्रत की भी पाँच भावनाएँ हैं । उनमें पहिली भावना अनुविचिन्त्य भाषा समिति है । विचार-

સારી રીતે વિચાર કરી લીધો હોય, એવા વચનો જ સાધુએ અવસરે-ગમે ત્યારે નહીં, પણ બોલવાનો સમય ઉપસ્થિત થાય ત્યારે બોલવા જોઈએ " એવ " આ પ્રકારે " અણુવીડ સમિદ્ જોગેણ " અનુવિચિન્ત્ય ભાષા સમિતિના યોગથી - વિચાર કરીને બોલવારૂપ ભાષા સમિતિના સમયથી " ભાવિઓ અતરપ્પા " ભાવિત બનેલ જીવ " સજયકરચરણનયણવયણો " સારી રીતે યતનાયુક્ત હોય, પગ, નેત્ર અને મુખવાળા થઈને, અથવા સમાહિત ઈન્દ્રિયોવાળા થઈને " સૂરો " પરાક્રમશાળી બની જાય છે એટલે કે સત્ય મહા વ્રતની આરાધનામાં નડેલ ઉપસર્ગો અને પરીપહોને જીતવાને સમર્થ બની જાય છે, તથા " સચ્ચજ્જવસપન્નો ભવઈ " સત્ય અને ઋજુતાથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—અહિંસાવ્રતની જેમ સત્યવ્રતની પણ પાંચ ભાવનાઓ છે તેમાં પહેલી ભાવના અનુવિચિન્ત્ય ભાષાસમિતિ છે વિચારપૂર્વક . તેને અનુ

શાસ્ત્રવિરુદ્ધા કથા=વાર્તા કુર્યાત્, 'કલહ વૈર વિગ્રહ' કલ્હ વૈર વિકથા ચ કુર્યાત્, તથા-'સચ્ચ' સત્ય=સદ્ભૂતાર્થ 'હ્ણેજ્જ' હન્યાત્=નાશયેત્, 'સીલ' શીલ=સદાચાર હન્યાત્, 'વિણય' વિનય-વિનીતભાવ હન્યાત્ । તથા-ક્રોધ-યુક્તો માનવઃ 'વેસો' દ્વેષ્યઃ-સર્વેષામપ્રિયો 'ભવેજ્જ' ભવેત્, તથા-'વત્થુ' વાસ્તુ=ગૃહ, દોષગૃહ=દોષપાત્ર 'ભવેજ્જ' ભવેત્, તથા-'ગમ્મો' ગમ્યઃ=અનાદરસ્થાન ભવેત્, તથા-'વેસો વત્થુ ગમ્મો' દ્વેષ્યો વાસ્તુગમ્ય એતત્ત્રિતયોઽપિ ભવેત્ । 'એય' એતત્=પૂર્વોક્તમ્, 'અન્ન' અન્યચ્ચ 'એવમાઇય' એવમાદિકમ્=

भी ठान देता है, (वेर करेज्जा) दूसरो से शत्रुता भी कर लेता है, तथा (विग्रह करेज्जा) जो कथा शास्त्र से विरुद्ध होती है उसे भी कह देता है । तथा (कलह वॆर विग्रह करेज्ज) कलह वॆर और विकथा, इन तीनों को भी करता है । तथा (सच्च ह्णॆज्ज) सत्य-सद्भूत अर्थ का अपलाप कर देता है । तथा (सील ह्णॆज्ज) शील-सदाचार को नष्टकर देता है, (विणय ह्णॆज्ज) विनीत भाव को धिक्कार देता है । तथा (सच्च सील विणय ह्णॆज्ज) सत्य शील और विनय, इन तीनों को नष्ट कर देता है । तथा (वेसो भवेज्ज) जो मानव क्रोध से युक्त होता है वह दूसरो को अप्रिय बन जाता है, (वत्थु भवेज्ज) द्वेष पात्र बन जाता है और (गम्मो भवेज्ज) सब के अनादरणीय होता है । (वेसो वत्थु गम्मो भवेज्ज) वह दूसरो को अप्रिय द्वेषपात्र और अनादर इन तीनों का स्थान बन जाता है । इन पूर्वोक्त वचनो को तथा (एव अन्न च एवमाइय) इसी प्रकार के और भी दूसरी तरह के असत्य-

करेज्ज " પરમ્પરમા વાગ્ધુદ્ધ પણ વહોરે છે ' વૈર કરેજ્જા " ખીલ્લ લોકો સાથે શત્રુતા પણ કરે છે, તથા " વિગ્રહ કરેજ્જા " તથા જે કથા શાસ્ત્રની વિરુદ્ધ હોય છે તે પણ કરે છે તથા " કલહ, વૈર વિગ્રહ કરેજ્જ " કલહ, વૈર અને વિકથા એ ત્રણે કરે છે તથા " સચ્ચ હ્ણેજ્જ " સત્ય-યથાર્થ અર્થનો અપલાપ કરી નાખે છે, " સીલ હ્ણેજ્જ " શીલ-સદાચારનો નાશ કરી નાખે છે, " વિણય હ્ણેજ્જ " વિનીત ભાવને ધિક્કારે છે, તથા " સચ્ચ સીલ વિણય હ્ણેજ્જ " સત્ય, શીલ અને વિનય એ ત્રણેને નષ્ટ કરી નાખે છે તથા " વેસો ભવેજ્જ " જે માનવ ક્રોધયુક્ત અને છે તે ખીલ્લને અપ્રિય થાય છે, " વત્થુ ભવેજ્જ " દ્વેષપાત્ર અને છે અને " ગમ્મો ભવેજ્જ " બધાને માટે અનાદરપાત્ર અને છે " વેસો વત્થુ ગમ્મો ભવેજ્જ " તે ખીલ્લને અપ્રિય દ્વેષપાત્ર અને અનાદરપાત્ર એ ત્રણેનું સ્થાન અને છે એ પૂર્વોક્ત વચ્ચનો તથા " એવ અન્ન ચ

મળેજ્ઞ, કોહગ્ગિસપલિત્તો, તમ્હા કોહો ન સેવિયવ્વો ।
 એવ સંતીદ્ધ માવિઓ મવ્વદ્ધ અંતરપ્પા સજયકરચરણનયણ-
 વયણો સૂરો સચ્ચજ્ઞવસંપન્નો ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘વીય’ દ્વિતીયા ભાવનામદ—‘કોહો’ ક્રોધ=અમાદિઅસાન્તિ=
 અસાન્તિપરિણતિરૂપો ‘ન સેવિયવ્વો’ ન સેવિતવ્ય । કથં ન સેવિતવ્યઃ? ઇત્યાદિ
 —‘કુદ્ધો’ કુદ્ધઃ=ક્રોધયુક્તઃ, ‘ચડ્ધિઓ’ ચાણ્ડિયિયત=ચાણ્ડિય=રૌદ્રરૂપત્વં
 સજાતમસ્ય ચાણ્ડિયિયત=રૌદ્રરૂપયુક્ત ‘માણુસો માણુપ’ અલિય ‘અલીકમ્’
 અસત્ય ‘મળેજ્ઞ’ મળેત્=ભાષેત, તથા—‘પિણ્ણ’ પિણ્ણ=પરદોષસૂચક વચન
 મળેત્, ‘ફરુસ’ પરુપ=પરમમોહાટક મળેત્, તથા—‘અલિય પિણ્ણ ફરુસ’
 અલીક પિણ્ણ પરુપમેતત્તિતયમપિ મળેત્ । તથા—‘કરેજ્ઞ’ વાગ્યુદ્ધ ‘કરેજ્ઞ’
 કુર્યાત્, ‘વેર’ વૈર=શત્રુતા ‘કરેજ્ઞ’ કુર્યાત્, ‘વિગત્’ વિગતા=વિગતાર્થા

અવ સૂત્રકાર ક્રોધનિગ્રહરૂપ દ્વિતીયભાવના કો પ્રકટ કરતે હૈ—
 ‘વીય કોહો’ ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ—ક્રોધ નિગ્રહરૂપ જો દ્વિતીય ભાવના હૈ ઉસમે (કોહો ન
 સેવિયવ્વો) ક્રોધ કા સેવન નહીં કિયા જાતા હૈ । ક્યોં કિ જો (કુદ્ધો
 મણુસો) ક્રોધયુક્ત પુરુષ હોતા હૈ તહ (ચડ્ધિઓ) રૌદ્રરૂપ સે યુક્ત
 બન જાતા હૈ । એસા મનુષ્ય (અલિય મળેજ્ઞ) છૂઠ પોલ દેતા હૈ (પિ
 ણ્ણ મળેજ્ઞ) પર કે દોષો કે સૂચકવચન પોલ દેતા હૈ (ફરુસ મળેજ્ઞ)
 દૂસરોં કે મર્મકો હેદને વાલે વચનોં કો કહ દેતા હૈ, તથા (અલિય
 પિણ્ણ ફરુસ મળેજ્ઞ) અલીક, પિણ્ણ ઓર પરુપ, ઇન ત્રીનોં તરહ કે
 વચનોં કા ભી પ્રયોગ કર દેતા હૈ । (કરેજ્ઞ કરેજ્ઞ) પરસ્પરમે વાગ્યુદ્ધ

હે સૂત્રકાર ક્રોધનિગ્રહરૂપ બીજી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે
 “વીય કોહો” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—ક્રોધનિગ્રહરૂપ જે બીજી ભાવના છે તેમા “કોહો ન સેવિય
 વ્વો” ક્રોધનું સેવન ન કરવું બોધ્યું કારણ કે જે “કુદ્ધો મણુસો” ક્રોધી પુરુષો
 હોય છે તેઓ “ચડ્ધિઓ” રૌદ્રરૂપવાળા બની જાય છે એવો મનુષ્ય
 “અલિય મળેજ્ઞ” જૂઠું બોલી નાખે કે “પિણ્ણ મળેજ્ઞ” બીજાના દોષ
 દર્શાવચનો બોલી નાખે છે “ફરુસ મળેજ્ઞ” બીજા લોકોના મર્મને છેદ
 નારા વચનો બોલી જાય છે, તથા “અલિય પિણ્ણ ફરુસ મળેજ્ઞ” અસત્ય
 પિણ્ણ અને પરુપ, એ ત્રણે પ્રકારના વચનોનો પ્રયોગ કરી નાખે કે “કરેજ્ઞ

अथ तृतीया लीगनिग्रहरूपा भावनामाह—'तइय लोहो' इत्यादि ।

मूलम्—तइयं लोहो न सेवियव्वो, लुछो लोलो भणेज्ज
अलियं । खेत्तस्स वेत्थुस्स वा कएण लुछो लोलो भणेज्ज

भान नहीं रहता है कि इन हमारे वचनों से दूसरे प्राणियों के प्राणों पर क्या बीतेगी । झूठ बोलने में उसे योडा सा भी सकोच नहीं होता । दूसरे की चुगली करने से वह नहीं चुकता-पर के ऊपर असत्यदोषा-रोप करने से वह पीछे नहीं हठता । हर किसी के साथ कलह करता रहता है । शत्रुता करने में वह बड़ा निपुण होता है । शास्त्र विरुद्ध बोलने की इसे योडी भी चिन्ता नहीं आती । जो पदार्थ जिस रूप में होता है उसे उस रूप में कहने में इसे शर्म आती है । विनीतभाव की इसकी दृष्टि में कोई कीमत नहीं होती है । जब यह क्रोधरूपी अग्नि से सतस हो उठता है-तब इसकी परीस्थिति पूर्वोक्त प्रकार से तो होती है परन्तु इससे अधिक भी कभी बन जाती है । ऐसी स्थिति में इसका कोई हितैषी नहीं रहता है । सब ही इसका अनादर करने लगते हैं । इसलिये इस क्रोध का परिहार करना चाहिये । इस प्रकार विचार कर जो मुनिजन क्षान्ति परिणति से इस क्रोध को जीतते हैं अर्थात् क्रोध नहीं करते हैं वे ही इस द्वितीयभावना से अपने अन्तःकरण को वासित कर सत्यव्रत को स्थिर बना लेते हैं ॥ सू० ५ ॥

બોલવા લાગે છે તેને તે વાતનુ પણ ભાન રહેતુ નથી કે મારા વચનોથી ખીજા પ્રાણીઓના જીવને કેટલુ દુઃખ થાય છે અસત્ય બોલવામા તેને જરા પણ સંકોચ થતો નથી ખીજાની નિંદા કરતા પણ તે અટકતો નથી-અન્યની ઉપર અસત્ય દોષારોપ કરતા તે પાછો હઠતો નથી હરકોઈ સાથે તે કલહ કરતો રહે છે દુરમનાવટ કરવામા તે નિપુણ હોય છે શાસ્ત્રવિરુદ્ધ બોલવામા તેને જરા પણ દુઃખ થતુ નથી જે પદાર્થ જે રૂપે હોય છે તે રૂપે તેને કહેવામા તેને શરમ લાગે છે તેની દૃષ્ટિએ વિનીત ભાવની કોઈ કીમત હોતી નથી જ્યારે ક્રોધરૂપી અગ્નિથી સતસ થઈ જાય છે ત્યારે તેની હાલત પૂર્વોક્ત પ્રકારની તો થાય જ છે પણ તેનાથી અધિક પણ કોઈ કોઈ વાર બને છે એવી સ્થિતિમા તેનો કોઈ હિતેષી રહેતો નથી સૌ તેનો અનાદર કરવા માડે છે તેથી તે ક્રોધનો ત્યાગ કરવો એમએ આ ગીતે વિચારીને જે મુનિજન ક્ષાન્તિ પરિણતિથી એ ક્રોધને જીતે છે, એટલે કે ક્રોધ કરતા નથી, તેઓ જ આ ખીજા ભાવનાથી પોતાના અંતઃકરણને ભાવિત કરીને સત્યવ્રતને સ્થિર કરી લે છે ॥ સૂ. ૫ ॥

एव जातीय वचन ' कोहगिसपलित्तो ' क्रोधाग्निमग्दीप्तो नरो ' भवेज्ज ' भवेत्=कथयेत्, ' तम्हा ' तम्हात् शरणात् ' कोहो न सेवियव्वो ' क्रोधो न सेवितव्यः। एवम्=अनेन प्रकारेण ' खतीइ ' क्षान्त्या=उपशमनेन ' भाविओ ' भावितः ' अतरप्पा ' अतरात्मा=जीव सयतकरचरणनयनवदन. सूरः सत्या जवसंपन्नो भवति ॥ ५ ॥ इति द्वितीया भावना ॥ २ ॥

वचनों को (कोहगिसपलित्तो भवेज्ज) क्रोधाग्नि से सतप्त हुआ मनुष्य कह दिया करता है। (तम्हा कोहो न सेवियव्वो) इसलिये क्रोध का कभी भी सयमीजन को सेवन नहीं करना चाहिये। (एव-खतीइ भाविओ अतरप्पा) इस प्रकार क्षान्तिपरिणति से वासित हुआ जीव (सजयकरचरणनयणवयणो) सयत कर, चरण, नयन वदन वाला हो जाता है और (सूर) अपने सत्यव्रत की आराधना में परा-क्रमशाली होता हुआ (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और आर्जव इन दोनों से संपन्न बन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की दूसरी भावना का वर्णन किया है। वह भावना क्रोध निग्रह रूप है। क्षान्तिपरिणति क्रोध की होती है। मनुष्य पर जब इसका आवेश आ जाता है तो उसकी आकृति बदलजाती है उसका रूप रौद्र हो जाता है। इस स्थिति में उस का वचन व्यवहार सत्यधर्म से प्रतिकूल हो जाता है। वह इसके आवेश में घटा तद्वा बोलने लग जाता है। उसको इस बात का

एवमाइय ” એજ પ્રકારના બીજા પણ અસત્ય વચનો “ કોહગિસપલિત્તો ભવેજ્જ ” ક્રોધાગ્નિયુક્ત મનુષ્ય બોલી જાય છે “ તમ્હા કોહો ન સેવિયવ્વો ” તે કારણે સયમી લોકોએ કદી પણ ક્રોધ કરવો જોઈએ નહીં “ એવ સતીઈ ભાવિઓ અતરપ્પા ” આ રીતે ક્ષાન્તિપરિણુતિથી ભાવિત થયેલ જીવ “ સજય કરચરણનયણવયણો ” સયત, હાથ, પગ, નયન, વદનવાળો થઈ જાય છે અને “ સૂરો ” પોતાના સત્યવ્રતની આરાધનામાં પ્રાક્રમ “ સચ્ચજ્જવસપન્નો ભવઈ ” સત્ય અને આર્જવ, એ બંનેથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા સત્યવ્રતની બીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું છે તે ભાવના ક્રોધનિગ્રહરૂપ છે ક્ષાન્તિપરિણુતિથી ઉદ્ભવી પરિણુતિ ક્રોધની હોય છે, મનુષ્ય પર જ્યારે તેનો આવેશ આવે છે ત્યારે તેની આકૃતિ બદલાઈ જાય છે, તે રૌદ્રરૂપ ધારણ કરે છે, આ પરિસ્થિતિમાં તેના વચનો તથા વ્યવહાર સત્ય ધર્મથી પ્રતિકૂળ થઈ જાય છે તે તેના આવેશમાં ગમે તેટલું

‘ વત્યુસ્સ ’ વાસ્તુનઃ=વાસભૂમે વર્ષા ‘ કણ ’ કૃતેન-કૃતે इत्यर्थः, અત્ર હેત્વર્થે તૃતીયા, એવ સર્વત્ર જ્ઞેયમ્ । લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥ ૧॥ તથા-‘ કિત્તીય ’ કીર્ત્તેઃ ‘ લાભસ્સ ’ લાભસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥ ૨ ॥ ‘ ડ્ઙ્ઘીય ’ ઋદ્ધેઃ સપત્તેઃ ‘ સૌખ્યસ્સ ’ સૌખ્યસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥ ૩ ॥ મક્તસ્ય પાનસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥ ૪ ॥ ‘ પીઢસ્સ ’ પીઠસ્ય ‘ ફલગસ્સ ’ ફલકસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥ ૫ ॥ તથા— ‘ સેજ્જાણ ’ શય્યાયાઃ ‘ સયારગસ્સ ’ સસ્તારકસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ । ૬ ॥ ‘ વત્યસ્સ ’ વસ્ત્રસ્ય=ચોલપટ્ટાદે ‘ પત્તસ્ય ’ પાત્રસ્ય વા કૃતે લુઘ્વો

કૃટ વચન ઘોલ સકતા હૈ (ચેત્તસ્સ વત્યુસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) કૃટવચન-ઘ્રૂઠવચન ઘોલને કે નિમિત્ત યે ઉસે હોતે હૈં-વહ લોભી મનુષ્ય ચચ્ચલચિત્ત હોતા હુઆ ચેત અથવા નિવામભૂમિ-ગૃહ કે નિમિત્ત ઘ્રૂઠવચન કહ સદતા હૈ (કિત્તીય લાભસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) અપની કીર્તિ અથવા લાભ કે નિમિત્ત અસત્ય-ભાષણ કર સકતા હૈ (ડ્ઙ્ઘીય સૌખ્યસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) ઋદ્ધિ-સપત્તિ અથવા સૌખ્યકે નિમિત્ત અસત્યવચન ઘોલ સકતા હૈ । (મક્તસ્સ પાણસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) આહાર અથવા પાની કે નિમિત્ત અસત્યવચન કહ સકતા હૈ (પીઢસ્સ ફલગસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) પાટ અથવા વાજોઠ કે નિમિત્ત અસત્યવચન કહ સકતા હૈ, (સેજ્જાણ સયારગસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ) શય્યા અથવા સસ્તારક કે લિયે વહ લોભ ચચ્ચલચિત્ત હોકર અસત્ય ઘોલ સકતા હૈ (વત્યસ્સ પત્તસ્સ વા કણ

વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” તેને કૃટ વચન-અસત્ય વચન ઘોલવાના નિમિત્ત આવા હોય છે-તે લોભી મનુષ્ય ચચ્ચલ ચિત્ત થતા ખેતર અથવા નિવામભૂમિ-ઘરને નિમિત્તે અસત્ય વચન કહી શકે છે “ કિત્તીય લાભસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” તે પોતાની કીર્તિ અથવા લાભને માટે અસત્ય ઘોલી શકે છે “ ડ્ઙ્ઘીય સૌખ્યસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” દ્વિ સપત્તિ અથવા સુખને માટે તે અસત્ય વચન ઘોલી શકે છે “ મક્તસ્સ પાણસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” આહાર અથવા પાણીને માટે તે અસત્ય વચન કહી શકે છે ‘ પીઢસ્સ ફલગસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” પાટ અથવા ફલડને નિમિત્તે તે અસત્ય વચન ઘોલી શકે છે “ સેજ્જાણ સયારગસ્સ વા કણ લુઘ્વો લોલો અલિય મણેજ્જ ” શય્યા અથવા સસ્તાર માટે તે લોભી ચચ્ચલ ચિત્ત થતા અસત્ય ઘોલી શકે છે “ વત્યસ્સ

અલિય ૧, કિત્તીય લાભસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ
 અલિય ૨, ઇહીય સોક્કસ્સ વા કણ્ણ, લુદ્ધો લોલો મ-
 ણેજ્જ અલિયં ૩, મત્તસ્સ પાગસ્સ વા કણ્ણ, લુદ્ધો લોલો
 મળેજ્જ અલિયં ૪, પીઠસ્સ ફલગસ્સ વા કણ્ણ, લુદ્ધો
 લોલો મળેજ્જ અલિય ૫, સેઙ્ગાણ સધારગસ્સ વા કણ્ણ,
 લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ અલિયં ૬, વત્થસ્સ પત્તસ્સ વા કણ્ણ,
 લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ અલિયં ૭, કવલસ્સ પાયપુંહુણસ્સ
 વા કણ્ણ, લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ અલિય ૮, સોસસ્સ સોસ-
 ણીય વા કણ્ણ, લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ અલિયં ૯, અન્નેસુ
 એવમાઇસુ વહુસુ કારણસણ્ણેસુ લુદ્ધો લોલો મળેજ્જ અલિયં ૧૦
 તમ્હા લોહો ન સેવિયન્વો, એવ મુત્તીય માવિઓ મવ્વિ અ-
 તરપ્પા સંજયકરચરણનયણવયણો સૂરો સચ્ચજ્જવસંપન્નો ॥૬॥

ટાકા—‘ તદ્દય ’ તૃતીયા ભાવનામાહ—‘ લોહો ન સેવિયન્વો ’ લોભો ન
 સેવિતવ્ય । લોભસેવનેન કિં મહેત્ ? ઇત્યાહ—‘ લુદ્ધો ’ લુધો=લોભયુક્તો નરો
 ‘ લોલો ’ લોલ=વચ્ચલ=પન્ ‘ અલિય ’ અલીક=કૂટવન ‘ મળેજ્જ ’ મળેત્=
 કથયેત્ । કેન નિમિત્તેન લુબ્ધોઽલીક મળેત્ ? ઇત્યાહ—‘ સેત્તસ્સ ’ ક્ષેત્રસ્ય

અથ સૂત્રકાર તૃતીય ભાવના જો લોભનિગ્રહ રૂપ છે તે પ્રકટ
 કરતે છે—‘ તદ્દય લોહો ’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(તદ્દય) લોભ નિગ્રહરૂપ તૃતીય ભાવના હસ પ્રકાર સે છે—
 (લોહો ન સેવિયન્વો) લોભ સેવન કરને યોગ્ય નહીં છે । કયો કિ
 (લુદ્ધો લોલો અલિય મળેજ્જ) લોભ કે સેવન કરને સે પ્રાણી લુબ્ધ
 કહલાતા છે, ઓર વહ લોભ યુક્ત વના હુઆ મનુષ્ય ચચ્ચલ ચિત્ત હોકર

હવે સૂત્રકાર લોભનિગ્રહ નામની ત્રીજી ભાવનાનું વર્ણન કરે છે “તદ્દય લોહો” ઈ

ટીકાર્થ—“ તદ્દય ” લોભનિગ્રહરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે—“ લોહો
 ન સેવિયન્વો ” લોભ સેવન કરવાને યોગ્ય નથી કારણ કે “ લુદ્ધો લોલો અલિય
 મળેજ્જ ” લોભનું સેવન કરવાથી પ્રાણી લુબ્ધ કહેવાય છે, અને તે લોભયુક્ત
 મનુષ્ય અથવા ચિત્તવાળો થઈને કૂટ વન બોલી રહે છે, “ સેત્તસ્સ વત્થુસ્સ

અથ ચતુર્થી ધૈર્યભાવનામહ-‘ ચતુર્થ ’ ઇત્યાદિ--

મૂલમ્—ચતુર્થ ન મીડયઠ્ઠ, મીય છુ મયા અઈતિ લહુઅ,
મીઓ અવિતિજ્જઓ મણ્ણસો, મીઓ મૂણ્ણહિ ઘિપ્પઙ્ગ, મીઓ
અન્ન પિ હુ મેસેજ્જા, મીઓ તવસજ્જમ પિ હુ મુણ્ણજ્જા, મીઓ ય

કર લેતા હૈં ઓર (સુરો) અપને સત્યવ્રત કે પાલન મેં પરાક્રમશાલી
બન કર (સત્ત્વજ્જવસપન્નો મવઙ્ગ) સત્ય ઓર આર્જવ વર્મ સે સપન્ન
હો જાતા હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા સત્યવ્રત કી તૃતીય ભાવના
કો કહા હૈં । હસ તૃતીય ભાવના કા નામ લોભનિગ્રહ હૈં । લોભ
કે નિગ્રહ કરને કે લિયે વિચારધારા હસમે પ્રકટ કી હૈં । ‘ લોભ હી
પાપ કા વાપ હૈં ’ એસા જ્ઞાલ કર લોભ કે ફદે મેં નહીં ફેસના ચાહિયે ।
જો લોભી હોતા હૈં વહ લુબ્ધક કહલાતા હૈં । લોભી કા ચિત્ત હરેક
વસ્તુ કી પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત ચલ હો ઉઠતા હૈં । લોભી વ્યક્તિ અપની
સ્વાર્થસિદ્ધિ કે નિમિત્ત જૂઠ વોલ સકતા હૈં । જ્ઞેત, મકાન, ઋદ્ધિ, સુખ,
મક્ત, પાન આદિ કો નિમિત્ત લેકર અસત્ય ભાષણ કરતા હૈં ।
અતઃલોભ કા નિગ્રહ કરના હી ઉચિત હૈં હસ પ્રકાર ભાવના ભા કર
જો હસ લોભ કો પરિત્યાગ સે અપની આત્મા કો વાસિત બનાતા હૈં
વહ અપને સત્યમહાવ્રત કો સ્થિર કર લેતા હૈં । હસકી પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ
સયમિત હોતી હૈં ॥ સૂ ૦ ૬ ॥

પરાક્રમગાળી ળનીને ‘ સત્ત્વજ્જવસપન્નો મવઙ્ગ ’ સત્ય અને આર્જવ ધર્મથી
યુક્ત થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમા સત્યવ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું
છે આ ત્રીજી ભાવનાનું નામ લોભનિગ્રહ છે લોભનો નિગ્રહ કરવાને માટે
વિચારધારા આમા પ્રગટ કરી છે “ લોભ જ પાપનો વાપ છે ” આવો
વિચાર કરીને લોભની જાળમા ફસાવું જોઈએ નહીં, જે લોભી હોય છે તે
લુબ્ધક કહેવાય છે લોભીનું ચિત્ત હરેક વસ્તુની પ્રાપ્તિ માટે ચચલ થઈ જાય
છે લોભી વ્યક્તિ પોતાનો સ્વાર્થ માધવાને માટે અસત્ય બોલી શકે છે ખેતર,
મકાન, સપત્તિ સુખ આહાર પાણી આદિને નિમિત્તે પણ તે અસત્યવચનો
બોલે છે તેથી લોભનો નિગ્રહ કરવો તે જ યોગ્ય છે એવા પ્રકારની ભાવના
સેવાને જે આ લોભના પરિત્યાગથી પોતાના આત્માને વાસિત બનાવે છે,
તેઓ પોતાના સત્ય મહાવ્રતને સ્થિર કરી લે છે તેમની હરેક પ્રવૃત્તિ
સયમિત હોય છે ॥ સૂ૦ ૬ ॥

લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૭॥ 'કવલસ્મ' કમ્વલસ્મ ' પાયપુટ્તગસ્ત ' પાદપ્રોઠ્ઠનસ્ય
વા કૃતે લુબ્ધો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૮॥ તવા 'સીસમ્મ' ગિ'યમ્ય ' સીમણી'
શિષ્યાયા વા કૃતે લુબ્ધો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૯॥ 'અન્નેસુ' અન્યેતુ 'એવમાઇણ્ણુ'
એવમાદિકેપુ=એવ પ્રકારેપુ વહુપુ કારણગતેપુ માણેપુ લુબ્ધો લોલોડ્લીક મણેત્
॥ ૧૦ ॥ ' તમ્હા ' તમ્માત્ કારણાત્ લોભો ન સેવિતવ્વો : । એવ્-અમુના પ્રકા-
રેણ ' મુત્તી' મુત્તયા=નિર્લોભતારૂપયા ભાવિત ' અતરપ્પા ' અન્તરાત્મા=જીવઃ
સયતકરચરણનયનવદનઃ શૂરઃ મત્યાર્જવસપન્નો મવતિ ॥ ૧૦૬ ॥

॥ ઇતિ તૃતીયા ભાવના ॥

લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ) દસી તરહ વન્ન અથવા પાત્ર કે લિયે
ચચલ ચિત્ત ઘના હુઆ વહ લોભી છૂટ વચન ચોલ મઝના હૈ (કવલસ્મ
પાયપુછ્છણસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ) કમ્વલ અથવા
પાદપ્રોઠ્ઠન કે નિમિત્ત કો હેરુર વહ ચચલ ચિત્ત ઘના હુઆ લોભી મૃષા-
વાદિ કહ સકના હૈ (સીસમ્મ સીસણી' વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય
મણેજ્જ) શિષ્ય અથવા શિષ્યાકે નિમિત્ત લુબ્ધ વહ ચચલચિત્ત હોકર
મૃષાભાષણ કરતા હૈ (અન્નેસુ એવમાઇણ્ણુ વહુસુ કારણસણ્ણુ લુદ્ધો
લોલો અલિય મણેજ્જ) ડસી તરહ ઓર મી ઇનસે સૈકડો કારણો કો
નિમિત્ત કરકે વહ લોભી ચચલ ચિત્ત હોકર છૂટ ચોલ સકતા હૈ
(તમ્હા લોહો ન સેવિયવ્વો) હસલિયે લોભ સેવન કરને યોગ્ય નહીં હૈ ।
(એવ મુત્તી' ભાવિઓ અતરપ્પા) હસ પ્રકાર નિર્લોભતારૂપ તૃતીય
ભાવના સે વાસિત હુઆ અતરાત્મા-જીવ (સજયકરચરણનયનવચ્ચણો)
અપને કર, ચરણ, નયન ઓર મુખકી પ્રવૃત્તિ કો યત્નાવાર સે સયમિત

પત્તસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” એ જ પ્રમાણે વક્ષ કે પાત્રને
માટે ચચલ ચિત્ત થયેલ તે લોભી અમત્ય વચન બોલી શકે છે “ કવલસ્સ
પાયપુછ્છણસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” કમ્વલ કે પગલૂશણીયા
માટે તે ચચલ ચિત્ત બનેલ લોભી મૃષાવાદ કહી શકે છે “ સીસસ્સ સીસણી'
વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” શિષ્ય અથવા શિષ્યાને નિમિત્તે લુબ્ધ
તે ચચલ ચિત્ત મૃષાભાષણ કરી શકે તે “ અન્નેસુ એવમાઇણ્ણુ વહુસુ કારણ
સણ્ણુ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” આ રીતે આ સિવાયના સેકડો કારણોને
નિમિત્તે તે લોભી ચચલચિત્ત થઈને અમત્ય બોલી શકે છે “ તમ્હા લોહો ન
સેવિયવ્વો ” તેથી લોભ સેવન ડરવાયોગ્ય નથી “ એવ મુત્તી' ભાવિઓ અત
રપ્પા ” આ રીતે નિર્લોભતારૂપ ત્રીજી ભાવનાથી ભાવિત બનેલ અતરાત્મા-જીવ
“ સજયકરચરણનયનવચ્ચણો ” પોતાના હાથ, પગ, નયન અને મુખની પ્રવૃત્તિને
યત્નાપૂર્વક સયમિત કરી લે છે અને “ સૂરો ” પોતાના સત્યવ્રતના પાલનમાં

તપઃ સયમ ચાપિ ' મુણ્ડજા ' મુશ્વતિ=પરિત્યજતિ । તથા-ભીતઃ ' ભર ' ભારમ્ =કાર્યભાર ' ન નિત્યરેજ્જા ' ન નિસ્તારયતિ=ન નિર્ગાહયતિ । તથા-'સપ્પુરિસ-નિસેવિય ' સત્પુરુપનિપેવિત ચ ' મગ્ગ ' માર્ગ ભીતો ન ' સમત્યો ' સમર્થઃ=પર્યાપ્તઃ ' અણુચરિત્ત ' અનુચરિતુમ્, સત્પુરુપાસેવિત માર્ગ ભયત્રસ્તો ન ગન્તુ શક્નોતીતિ ભાવ । ' તમ્હા ' તસ્માદ્ હેતોઃ ' ભયસ્સ વા ' ભયસ્ય=ભીતે વા ' વાહિસ્સ ' વ્યાધેઃ=ક્રમેણ પ્રાણાપહારિણઃ કુષ્ઠાદે વા, ' રોગસ્સ ' રોગસ્ય=શીઘ્રતયા પ્રાણાપહારિણો જ્વરાદે વા ' જરાણ્ ' જરાયાઃ વા મચ્ચુસ્સ ' મૃત્યો વા ' અન્નસ્સ ' અન્યસ્ય=અભ્ય ઇતરસ્ય વા ' એવમાણ્ણસ્સ ' એવમાદિકસ્ય-એવ

વના દેતા હૈ, તથા (ભીઓ તવસજમ પિહુમુણ્ડજા) વહ તપ સયમ કા ભી પરિત્યાગ કર દેતા હૈ । (ભીઓ ય ભર ન તિત્યરેજ્જા) ભીત મનુષ્ય શક્તિ સે ઇતના અધિક વિહીન વન જાતા હૈ, અર્થાત્ત ઉસમેં ઇતની અધિક માનસિક દુર્વલતા આ જાતી હૈ કિ જિસકી વજહ સે વહ કિસી ભી કાર્યભાર કો વહન નહી કર સકતા, અર્થાત્ત કિમી ભી કામ કો વહ પૂરા નહો કર સકતા । (સપ્પુરિમનિસેવિય ચ મગ્ગ ભીઓ ન સમત્યો અણુચરિત્ત) સત્પુરુપ જિસ માર્ગ કા સેવન કરતે આયે હૈં ઉસ માર્ગ પર ચલને કે લિયે ભી વહ વિચારા સમર્થ નહી હો સકતા હૈં । (તમ્હા ન ભીહ્યવ્વ ભયસ્સ વા વાહિસ્સ વા રોગસ્સ વા જરાણ્ વા મચ્ચુસ્સ વા અન્નસ્સ વા એવમાણ્ણસ્સ) ઇસલિયે કીસી ભી પ્રકાર કે ભય કે, ક્રમ ૨ સે પ્રાણોં કો અપહરણ કરનેવાલી વ્યાધિ કે, અથવા કુષ્ઠાદિકે, શીઘ્રતા સે પ્રાણો કા અપહરણ કરનેવાલે જ્વર આદિ રોગ કે, વૃદ્ધાવસ્થા કે, તથા મૃત્યુ કે અથવા ઇન્હી જૈસી અન્ય ઔર કોઈ

તવસજમ પિહુમુણ્ડજા” તે તપ સયમનો પણ પરિત્યાગ કરી દે છે “ભીઓ ય ભર ન તિત્યરેજ્જા” ભયભીત માણુનો એટલા બધા શક્તિહીન થઈ જાય છે, એટલે કે તેનામા એટલી બધી માનસિક દુર્બળતા આવી જાય છે કે જેના કારણે તે ડોઈ પણ કાર્યનો બોલે ઉઠાવી શકતો નથી એટલે કે ડોઈ પણ કામને તે પૂરું કરી શકતો નથી “સપ્પુરિસનિસેવિય ચ મગ્ગ ભીઓ ન સમત્યો અણુચરિત્ત” સત્પુરુષો જે માર્ગનું સેવન કરતા આવ્યા છે, તે માર્ગ ચાલવાને પણ તે સમર્થ બની શકતો નથી “તમ્હા ન ભીહ્યવ્વ ભયસ્સ વા વાહિસ્સવા રોગસ્સ વા જરાણ્ વા મચ્ચુસ્સ વા અન્નસ્સ વા એવમાણ્ણસ્સ” તેથી ડોઈ પણ પ્રકારના ભયથી, ક્રમે ક્રમે પ્રાણોને હરી લેનાર વ્યાધિના, અથવા કુષ્ઠાદિના, શીઘ્રતાથી પ્રાણ હરી લેનાર જ્વર આદિ રોગના, વૃદ્ધાવસ્થાના તથા મૃત્યુના અથવા તેમના જેવી કોઈ પણ પ્રકાર

ભરં ન નિત્થરેજ્જા, સપ્પુરિસનિસેવિય ચ મગ્ગં મીઓ ન સમત્થો
અણુચરિડં । તમ્હા ન મીઢ્યવ્વ મયસ્સ વા વાહિસ્સ વા
રોગસ્સ વા જરાણ વા મચ્છુસ્સ વા અન્નસ્સ વા એવમાઢ્યસ્સ ।
એવ ધિજ્જેણ માવિઓ અતરપ્પા સજયકરચરણનયણવયણો સૂરો
સચ્ચહજવસપન્નો ॥ સૂ. ૭ ॥

ટીકા—‘ચત્થ’ ચતુર્થો ભાવનામા—‘ન મીઢ્યવ્વ’ ન મેતવ્ય=ભય
ન કર્તવ્યમ્ । કથ મય ન કર્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘મીય’ મીત મયયુક્ત પ્રાણિન
સ્વલુ ‘મયા’ મયાનિ ‘લહુય’ લઘુક=શીઘ્રમ્ ‘અહિતિ’ આયન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ,
તથા ‘મીઓ’ મીતઃ ‘મણુસો’ મનુષ્યઃ ‘અવિતિજ્જઓ’ અદ્વિતીય=અસ-
હાયો ભવતિ, અય માયઃ—મીતો મનુષ્યો ન કમ્યાપિ સહાયકો ભવતિ, ન કોઽપિ
તસ્ય સહાયકો વા ભવતિ । તથા—‘મીઓ’ મીતો મનુષ્યઃ ‘મૂઈ’ મૂતૈઃ
પ્રેતૈઃ ‘ધિપ્પહ’ ગૃહ્યતે, મૂતાપિષ્ઠો ભવતીત્યર્થઃ । તથા—મીતઃ ‘અન્ન પિ’
અન્યમપિ ‘મેસેજ્જા’ મીપયતે । તથા—મીતઃ ‘તવસજમ પિ’ તપઃ સયમમપિ=

અવ સૂત્રકાર ચોથી ભાવના જો ધૈર્ય ભાવના છે વસે કહતે છે—
‘ચત્થ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ચત્થ) વહ ચોથી ધૈર્ય ભાવના ઠસ પ્રકાર સે છે (ન
મીઢ્યવ્વ) મય નહી કરના ચાહિયે । ક્યો કિ (મીયલુ મયા અહિતિ
લહુઅ) જો મયયુક્ત હોતા છે વસ પ્રાણી કે પાસ નિશ્ચય સે મય શીઘ્ર
આતે છે । (મીઓ અવિતિજ્જઓ મણુસો) તથા જો મય સે ડરતા છે
એસા મનુષ્ય અદ્વિતીય હોતા છે—વહ ન કિસી કી સહાયતા કર સકતા
છે ઓર ન કોઈ દૂસરા મનુષ્ય વસકા હી સહાયક હોતા છે । (મીઓ
મૂઈ ધિપ્પહ) મીત મનુષ્ય કો મૂત પકડ લેતે છે । (મીઓ અન્ન
પિ હુ મેસેજ્જા) મય સે મીત હુઆ મનુષ્ય દૂસરો કો મી મયયુક્ત

હવે સૂત્રકાર ચોથી ધૈર્યભાવના નામની ભાવના વિષે કહે છે—“ચત્થ” इत्यादि

ટીકાર્થ—‘ચત્થ’ તે ચોથી ધૈર્યભાવના આ પ્રમાણે છે—“ન મીઢ્યવ્વ” ભય
પામવો નેહએ નહી કારણ કે “મીયલુ મયા અહિતિ લહુઅ” જે બીકણુ હોય
છે તે વ્યક્તિ પાસે ચોક્કસ ભય શીઘ્ર આવે છે “મીઓ અવિતિજ્જઓ
મણુસો” તથા જે ભયથી ડરે છે એવો મનુષ્ય અદ્વિતીય હોય છે—તે કોઈને
મદદ કરી શકતો નથી અને કોઈ બીજો મનુષ્ય તેનો સહાયક થતો નથી
“મીઓ મૂઈ ધિપ્પહ” ભયભીત મનુષ્યને મૂત પકડી લે છે “મીઓ અન્ન
પિ હુ મેસેજ્જા” ભયભીત મનુષ્ય બીજા લોકોને પણ ભયભીત કરે છે, તથા “મીઓ

હાસં, અળ્લાળજણિય ચ હોજ્જ હાસં, અળ્લોળગમણં ચ
હોજ્જ મમ્મ, અળ્લોળગમણં ચ હોજ્જ કમ્મ કદપ્પભિઓગ-
ગમણ ચ હોજ્જ હાસં, આસુરિય કિલ્લિસત્તળ ચ જળેજ્જ
હાસ, તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ । એવ મોળેળ ય ભાવિઓ
ભવઙ્, અતરપ્પા સજયકરેચરણનયળવયળો સૂરો
સચ્ચજ્જવસપન્નો ॥ સૂ ૮ ॥

ટીકા—‘ પચમ ’ પચ્ચમી ભાવનામાહ—‘ હાસ ’ હાસ્ય નોકપાયમોહોદયા-
ત્સનિમિત્તમનિમિત્ત યા વિવૃતવર્ણપુરસ્સર મુલ્લવ્યાદાન હામ્પમ્, ન ‘ સેવિયવ્વ ’ સેવિ-
તવ્યમ્ । કિમર્થ ન સેવિતવ્યમ્ ? ઇત્યાહ—‘ હાસહત્તા ’ હાસયિતાર.—પરિહાસકારિણ
‘ અલિયાઙ્ ’ અલિકાનિ=સદ્ભૂતાર્થગોપનરૂપાણિ ‘ અસતગાઙ્ ’ અસત્કાનિ=

અથ સૂત્રકાર પચમી મૌન ભાવના કો કહતે હે—‘ પચમ ,
ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(પચમ) પાચવી મૌન ભાવના ઇસ પ્રકાર હૈ । (હાસ
ન સેવિયવ્વ) ઇસ ભાવના મેં હાસ્ય કે સેવન કા પરિત્યાગ કર દિયા
જાતા હૈ । જવ જીવ કો હાસ્યનો કષાક મોહ કા ઉદય હોતા હૈ તવ
વહ હાસ્ય કા નિમિત્ત મિલે અથવા ન મી મિલે તો મી વહ હી-
હી વરતા હુઆ હસને લગ જાતા હૈ । હસતે સમય ઉસકા મુલ્લ ખુલ
જાતા હૈં દાત સ્પષ્ટ દિલ્લઝાઙ્ દેને લગતે હૈ । સયમી જન કો ઇસ હાસ્ય
કા સેવન નહી કરના ચાહિયે । કયો કિ (હાસહત્તા) જો પરિહાસ
કરને વાલે વ્યક્તિ હોતે હૈં વે (અલિઅઙ્ અસતગાઙ્ જપતિ) સદ્મૂત

હવે સૂત્રકાર પાચમી મૌનભાવના બતાવે છે—“ પચમ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ પચમ ” પાચમી મૌનભાવના આ પ્રમાણે છે—“ હાસ ન
સેવિયવ્વ ” આ ભાવનામા હાસ્યનો પરિત્યાગ ડરાય છે બ્યારે જીવને ‘ હાસ્ય
નોકપાય ’ મોહનો ઉદય થાય છે ત્યારે તે હાસ્યનુ નિમિત્ત મળે કે ન મળે
છતા પણ તે ‘ હી-હી ’ કરતો હમવા મડી બાય છે હમતી વખતે તેનુ મુખ
ઉઘડી બાય છે અને દાત સ્પષ્ટ રીતે દેખાય છે સયમી જને આ હાસ્યનુ
સેવન ડરવુ જોઈએ નહીં કારણ કે “ હાસહત્તા ” જે પરિહાસ કરનાર વ્યક્તિ
હોય છે તે “ અલિઅઙ્ અસતગાઙ્ જપતિ ” યવાર્થ અર્થને છપાવનાર અને

વિધસ્ય ભયજનકસ્ય વસ્તુનો વશાત ન ' ભીડયન્વ ' મેતલ્લમ્ પત્રમ્=અનેન પ્રકારે
 રેણ ' ધિજ્જેણ ' ધૈર્યેણ ' ભાવિઓ ' ભાવિતઃ ' અતરપ્પા ' અન્તરાત્મા=જીવઃ
 સયત્તકરચરણનયવદનઃ ઝટ્ટરઃ સત્યાર્જવસપત્નો ભવતિ ॥ ૭ ॥

॥ इति चतुर्थी भावना ॥

अथ पञ्चमी मौनभाषनामाह—‘ पचम ’ इत्यादि—

मूलम्—पचमं हासं न सेवियन्व । अलियाइ असंतगाइं
 जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हास, परपरिवाय-
 प्पियं च हासं, परपीलाकारणं च हासं, भेयविमुक्तिकारणं

ભયજનક વસ્તુ કે વશ સે નહીં ડરના ચાલિયે । (અથ ધેજ્જેણ ભાવિઓ અતરપ્પા સજય કરચરણનયવયવો મૂરો સચ્ચજ્જવસપત્નો ભવહ) હસ પ્રકાર ધૈર્ય સે ભાવિત હુઆ જીવ અપને કર, ચરણ, નયન એવ વદન કી પ્રવૃત્તિ કો સયમિત રાખતા હુઆ સત્યવ્રત કે પાલનમેં પરાક્રમશાલી બન જાતા હૈ ઓર સત્ય એવ આર્જવ ભાવ સે સપત્ન હો જાતા હૈ ।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की चौथी भावना कहा है । इस भावना का नाम धैर्यभावना है । इस भावना में धैर्य के अभाव में क्या २ हानि होती है और धैर्य रखने से क्या २ लाभ होते हैं, इन सब बातोंका विचार किया जाता है । इन विचारों से आत्मा जब धैर्य शाली बन जाती है तो वह अपने द्वारा गृहीत सत्यव्रत को पूर्णरूप से सुरक्षित रखति हुई स्थिर बना लेती है ॥ सू० ७ ॥

રની ભયજનક વસ્તુના ભયથી ડરવું બેઈએ નહીં, “ એવ ધેજ્જેણ ભાવિઓ અતરપ્પા સજયકરચરણનયવયવો મૂરો સચ્ચજ્જવસપત્નો ભવહ ” આ પ્રકારે ધૈર્યથી ભાવિત થયેલ જીવ પોતાના ડર, ચરણ, નયન, અને વદનની પ્રવૃત્તિને સયમિત રાખીને સત્યવ્રતના પાલનમા પરાક્રમશાળી બની જાય છે અને સત્ય તથા આર્જવના ભાવયુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ વ્રતદ્વારા સત્યવ્રતની ચોથી ભાવના બતાવી છે તે ભાવનાનું નામ ધૈર્યભાવના છે આ ભાવનાનું વર્ણન કરતા ધૈર્યના અભાવે કયી કયી હાનિ થાય છે અને ધૈર્ય રાખવાથી કયા કયા લાભ થાય છે તે બધાનો વિચાર કરાયો છે આ વિચારોથી આત્મા જ્યારે ધૈર્યવાન બને છે ત્યારે તે પોતે શ્રદ્ધા ડરેલ સત્યવ્રતને સંપૂર્ણ રીતે સુરક્ષિત અને સ્થિર બનાવી દે છે ॥ સૂ. ૭ ॥

जनित=परस्परकृत च भवति हास्यम्, तथा हास्ये 'अण्णोण्णगमण' अन्योन्य-
गमन=परस्पराधिगमनीय च 'मम्म' मर्म=प्रच्छन्नपारदार्यादिदुश्चेष्टित् भवति ।
तथा-'अण्णोण्णगमण' 'अन्योन्यगमन=परस्परविज्ञेय च 'कम्म' कर्म=लोक-
निन्दादिरूप 'होज्ज' भवति । हास्येन प्रच्छन्नमपि कर्म प्रकाशित भवतीति भावः।
तथा-'कदप्पाभिओगगमण' कन्दर्पाभियोगगमनम्=कन्दर्पाः=कान्दर्पिका देव-
विशेषा हास्यकारिणो भण्डप्राया, अभियोगा.=आज्ञाकारिणो देवाः, तेषु गमन=
गमनकारणम्=तत्तद्देवविशेषेपूतपत्तिकारण च भवति हास्यम् । हास्यकारी साधुश्चा-
रित्रलेशाद्देवत्वं प्राप्तोऽपि तत्र कान्दर्पिकेषु आभियोगिकेषु देवेषूपपद्यते न तु
महर्द्धिकेषु इत्यर्थः । तथा-'आसुरिय' असुरत्वं 'किन्विसत्तण' किल्बिषत्व=
चाण्डालप्रायदेवविशेषत्व च 'जणेज्ज' जनयेत् 'हास' हास्यम् । यतो हास्या
दीदृशो गतिर्भवति जीवस्य, 'तम्हा' तस्मात् 'हास' हास्यं न सेवितव्यम् ।

आपस में दो आदि जन मिलने से होता है । (अण्णोण्णगमण च होज्ज
मम्म) इस हसी में परदाररमण आदि दुश्चेष्टाये प्रच्छन्न रहा करती
हैं । तथा (अण्णोण्ण गमण च होज्ज कम्म) इसी हसी में परस्पर में
होनेवाले दुष्कृत्यों से उनकी लोक में निन्दा होती है उसे चाट्टर वे अपने
मुख यद्यपि नहीं कहा करते हैं फिर भी आपस की हँसी से ही उनका
दुष्कृत्य लोकों के समक्ष प्रकाशित हो जाता है । (कदप्पाभिओग-
गमण) तथा हास्यकारी साधु चारित्र के लेश से यदि देवगति में उत्पन्न
होवे तो भी वह भांड जैसे कान्दर्पिक तथा आज्ञाकारी आभियोगिक
देवों में उत्पन्न होता है महर्द्धिक देवों में नहीं । (आसुरिय किन्विसत्तणं
चजणेज्ज हाम) यह हास्य चाण्डालप्राय असुरदेवों में किल्बिषजाति के
देवों में उत्पत्ति का कारण होता है । (तम्हा हास न सेवियव्व) इस-

વાર્થી થાય છે “અણ્ણોણ્ણગમણ ચ હોજ્જ મમ્મ” એ હાન્યમા પરદારરમણ
આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા “અણ્ણોણ્ણગમણ ચ હોજ્જ
કમ્મ” આ હાન્યમા અન્યોન્ય થતા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની બેઠકમાં નિંદા થાય
છે, તેને તેઓ પોતાના મુખથી બહાર કહ્યા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની
હસી-મજાકથી જ તેમનું દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ બહાર થઈ જાય છે “કદપ્પાભિ
ઓગગમણ” તથા હાસ્યકારી સાધુ ને દેવગતિમાં ઉત્પન્ન થાય તો પણ
ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ જેવા કાંદર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિ
યોગિક દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દ્ધિક દેવોમાં નહીં “આસુરિય કિન્વિ
સત્તણ ચ જણેજ્જ હાસ” તે હાન્ય ચાણ્ડાલ આદિ જાતિમાં અસુરદેવોમાં કિલ્બિ
ષજાતિના દેવોમાં ઉત્પત્તિનું કારણ બને છે “તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ” તે

અસદ્ભૂતાર્થાનિ વચનાનિ 'જપંતિ' જત્પન્નિ=નુરતે । દાસ્યકાગ્નિઃ દ્વિતીયમહા
વ્રતનાશકા મરન્તીત્યર્થઃ । કીદશ દામ્યમ્ ? ક્ત્યાદ- 'પરપરિભવકારણં=પરાપ-
માનહેતુક ચ દાસ્ય ભવતિ । તથા- 'પરપરિવાયપ્પિય' પરપરિવાદમિય=પરપરિવાદઃ
=અન્યદૂષણાવિધાન પ્રિય ક્ષ્ટો યસ્મિન્સ્તત્તાદશ ચ દાસ્ય ભવતિ । તથા- 'પરપી-
લાકારગ' પરપીલાકારક ચ દાસ્ય ભવતિ । તથા- 'ભેયવિમુત્તિકારગ' ભેદ-
વિમૂર્ત્તિકારક=ભેદઃ=ચારિત્રભદ્રઃઃ । વિમૂર્ત્તિ=ચિત્રતનયનવદનાદિત્વેન વિકૃતશ-
રીરાકૃતિસ્તયોઃ કારક ચ દાસ્યમ્ । 'અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ દાસ' અન્યોન્ય

અર્થકો ગોપન કરને વાલે ણ્વ અસદ્ભૂત અર્થ કો પ્રકટ કરને વાલે
વચનોં કો બોલા કરતે હં । સત્યમહાવ્રત મેં સદ્ભૂત અર્થકા પ્રકાશન
ઔર અસદ્ભૂત અર્થ કા પ્રકટ કરના હેય કહા હૈ, અતઃદાસ્ય
મે જવ ઇસ પ્રકાર કી પરિસ્થિતિ રહતી હૈ કિ ઉમમેં અસદ્ભૂત અર્થ
કા પ્રકટન ઔર સદ્ભૂત અર્થ કા ગોપન હોતા હૈ, તો દ્વિતીય મહાવ્રત
કા સરક્ષણ ઇસ અવસ્થા મેં કેસે હો સકના હૈ નહોં હો સકના, ઇસલિયે
દાસ્ય કા ત્યાગ કહા ગયા હૈ । (પરપરિભવકારણ ચ દાસ) દાસ્ય
પર કે અપમાન કા કારણ હોતા હૈ । (પરપરિવાયપ્પિય ચ દાસ) દાસ્ય
મેં પર કે દૂષણ કા કથન કરના પ્રીય લગતા હૈ । (પરપીલાકારગ ચ
દાસ) દાસ્ય મે ઇસ વાતકા મી ધ્યાન નહી રહતા હૈ કિ ઇસ દાસ્ય સે
અન્ય કો કષ્ટ હો રહા હૈ । (ભેયવિમુત્તિકારગ ચ દાસ) દાસ્ય
ચારિત્ર કે ભગ કા હેતુ હો જાતા હૈ । ઇસમેં નયન વદન આદિ શારીરિક
અવયવ વિકૃત બન જાતે હૈ । (અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ દાસ) દાસ્ય

અસદ્ભૂત અર્થને પ્રગટ કરનારા વચનો બોલ્યા કરે છે સત્યમહાવ્રતમા સદ્ભૂત
અર્થનુ ગોપન તથા અસદ્ભૂત અર્થનુ પ્રકારાન હેય ગણાવેલ છે તો દાસ્યમા
બ્યારે એવા પ્રકારની પરિસ્થિતિ રહે છે કે તેમા અસદ્ભૂત અર્થ પ્રગટ કરાય
છે અને સદ્ભૂત અર્થનુ ગોપન કરાય છે, તો એ પરિસ્થિતિમા દ્વિતીય મહા
વ્રતનુ રક્ષણ કેવી રીતે થઈ શકે ? થઈ શકે જ નહીં માટે દાસ્યનો પરિત્યાગ
કરવો જોઈએ એમ સૂત્રકારે બતાવ્યું છે “ પરપરિભવકારણ ચ દાસ ” દાસ્ય
અન્યના અપમાનનુ કારણ બને છે “ પરપરિવાયપ્પિય ચ દાસ ” દાસ્યમા
અન્યના દૂષણોનુ કથન કરવું પ્રિય લાગે છે “ પરપીલાકારગ ચ દાસ ”
દાસ્યમા તે વાતનુ પણ ભાન રહેતું નથી કે તે દાસ્યથી કેઈ બીજાને કષ્ટ
થઈ રહ્યું છે “ ભેયવિમુત્તિકારગ ચ દાસ ” દાસ્યને લીધે ચારિત્રનો લોપ
થાય છે તેમા નયન, વદન આદિ શરીરના અવયવો વિકૃત થઈ જાય છે
“ અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ દાસ ” દાસ્ય એ કે વધારે માણસ અન્યોન્ય મળ

જનિત=પરસ્પરકૃત ચ ભવતિ હાસ્યમ્, તથા હાસ્યે ‘અળ્લોળગમણ’ અન્યોન્ય-
ગમન=પરસ્પરાગ્રિગમનીય ચ ‘મમ્મ’ મર્મ=પ્રચ્છન્નપારદાર્યાદિદુશ્ચેષ્ટિત ભવતિ ।
તથા-‘અળ્લોળગમણ’ અન્યોન્યગમન=પરસ્પરત્રિજ્ઞેય ચ ‘કમ્મ’ કર્મ=લોક-
નિન્દાદિરૂપ ‘હોજ્જ’ ભવતિ । હાસ્યેન પ્રચ્છન્નમપિ કર્મ પ્રકાશિત ભવતીતિ ભાવઃ ।
તથા-‘કદપ્પાભિઓગગમણ’ કન્દર્પાભિયોગગમનમ્=કન્દર્પાઃ=કાન્દર્પિકા દેવ-
વિશેષા હાસ્યકારિણો મળ્લપ્રાયા, અભિયોગાઃ=આજ્ઞાકારિણો દેવાઃ, તેષુ ગમન=
ગમનકારણમ્=તત્તદ્દેવવિશેષેષૂત્પત્તિકારણ ચ ભવતિ હાસ્યમ્ । હાસ્યકારી સાધુશ્ચા-
રિત્રલેશાદ્દેવત્વ પ્રાપ્તોઽપિ તત્ર કાન્દર્પિકેષુ આભિયોગિકેષુ દેવેષૂત્પદ્યતે ન તુ
મહર્દિકેષુ ઇત્યર્થઃ । તથા-‘આસુરિય’ અસુરત્વ ‘કિલ્લિસત્તણ’ કિલ્લિપત્ત્વ=
ચાળ્ડાલપ્રાયદેવવિશેષત્વ ચ ‘જળેજ્જ’ જનયેત્ ‘હાસ’ હાસ્યમ્ । યતો હાસ્યા
દીદૃશો ગતિર્ગતિ જીવસ્ય, ‘તમ્હા’ તસ્માત્ ‘હાસ’ હાસ્ય ન સેવિત્તવ્યમ્ ।

આપસ મેં દો આદિ જન મિલને સે હોતા હૈ । (અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ
મમ્મ) ઇસ હસી મે પરદારમણ આદિ દુશ્ચેષ્ટાચે પ્રચ્છન્ન રહા કરતી
હેં । તથા (અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ કમ્મ) ઇસી હસી મે પરસ્પર મેં
હોનેવાલે દુષ્કૃત્યો સે ડનકી લોક મે નિંદા હોતી હૈ ડસે વાહર વે અપને
મુલ્લ યદ્યપિ નહીં કહા કરતે હૈ ફિર બી આપસ કી હસી સે હી ડનકા
દુષ્કૃત્ય લોકોં કે સમક્ષ પ્રકાશિત હો જાતા હૈ । (કદપ્પાભિઓગ-
ગમણ) તથા હાસ્યકારી સાધુ ચારિત્ર કે લેશ સે યદિ દેવગતિ મેં ઉત્પન્ન
હોવે તો બી વહ ભાંડ જૈસે કાન્દર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિયોગિક
દેવોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ મહર્દિક દેવો મે નહીં । (આસુરિય કિલ્લિસત્તણ
ચજળેજ્જ હાસ) યહ હાસ્ય ચાળ્ડાલપ્રાય અસુરદેવો મેં કિલ્લિપજાતિ કે
દેવોં મેં ઉત્પત્તિ કા કારણ હોતા હૈ । (તમ્હા હાસ ન સેવિત્તવ્વ) ઇસ-

વાર્થી થાય છે “અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ મમ્મ” એ હાસ્યમા પરદારમણ
આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા “અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ
કમ્મ” આ હાસ્યમા અન્યોન્ય થતા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની બેઠકમા નિંદા થાય
છે, તેને તેઓ પોતાના મુખથી બહાર કહ્યા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની
હસી-મજાકથી જ તેમનું દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ બહાર થઈ જાય છે “કદપ્પાભિ
ઓગગમણ” તથા હાસ્યકારી સાધુ બે દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય તો પણ
ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ જેવા કાન્દર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિ
યોગિક દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દિક દેવોમા નહીં “આસુરિય કિલ્લિ
સત્તણ ચ જળેજ્જ હાસ” તે હાસ્ય ચાળ્ડાલ આદિ જાતિમા અસુરદેવોમા કિલ્લિ
પજાતિના દેવોમા ઉત્પત્તિનું કારણ બને છે “તમ્હા હાસ ન સેવિત્તવ્વ” તે

एवम्=अनेन प्रकारेण हास्यवर्जनरूपेण, 'मोणेण' मौनेन=वचनसमयेन 'भाविओ' भावितः 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीव रायतकरचरणनयनवदनः गूर सत्यार्ज वसपन्नो भवति ॥ सू. ०. ८ ॥

લિયે જણ હાસ્ય સે જીવ કી ગેમી ગતી પોતી હૈ કિ વહ હમ હાસ્ય કા સેવન નહી કરે । (एव) હમ પ્રકાર (मोणेण य भाविओ अतरप्पा सजय करचरणनयणवदणो गूरो सच्चज्जवसपन्नो भवह) હાસ્યવર્જનરૂપ મૌન સે-વચન સયમ સે-ભાવિત દુઆ જાવ અપને કર, ચરણ, નયણ ઓર વદન-મુગ્ધ કી પ્રવૃત્તિ કો સયમિત ઘનાતા દુઆ સત્યવ્રત કે પાલન મેં પરાક્રમશાલી બન જાતા હૈ ઓર સત્ય एव આર્જવભાવ સે સપન્ન હો જાતા હૈ ।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा पांचवी मौन भावना का स्वरूप कहा है । मौन भावना का तात्पर्य हास्य का परित्याग करना है । हांसी करने वाला प्राणी झूठ वचन का प्रयोग भी प्रसंगवश करता है । तथा इस कृत्य से दूसरों का अपमान भी होता है । हास्य मनो-विनोद का कारण होता है सही परन्तु सयमी के लिये हास्य से मनो-विनोद करने की क्या आवश्यकता है । हास्य से दूसरों के मनो में चोट पहुँचे इससे और अधिक अशोभनीय बात क्या हो सकती है । अध्यात्म के मार्ग में हँसी मजा करने का सर्वथा परित्याग कहा है । हास्य में पर के दोषों का कथन प्रिय लगता है । यह हास्य नो

કારણે-હાસ્યથી જીવની એવી ગતિ થાય છે તેથી જીવનુ તે કર્તવ્ય છે કે તે હાસ્યનુ સેવન ન કરે “ एव ” આ પ્રકારે “ मोणेण य भाविओ अतरप्पा सजयकरचरणनयणवदणो गूरो सच्चज्जवसपन्नो भवह ” હાસ્ય ત્યાગરૂપ મૌનથી વચન સયમથી ભાવિત થયેલ જીવ પોતાના કર, ચરણ, નયન અને વદનની પ્રવૃત્તિને સયમિત કરીને સત્યવ્રતના પાલનમા પરાક્રમશાળી બની જાય છે અને સત્ય તથા આર્જવ ભાવથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પાંચમી મૌન ભાવનાનું સ્વરૂપ બતાવ્યું છે મૌન ભાવનાનું તાત્પર્ય હાસ્યનો પરિત્યાગ છે હાંસી કરનાર માણસ પ્રસંગ વશાત્ અસત્ય વચનનો પ્રયોગ પણ કરે છે, તથા તે કૃત્યથી બીજાનું અપમાન પણ થાય છે હાસ્ય-મનોવિનોદને માટે કારણ જરૂર હોય છે પણ સયમીને હાસ્યની મદદથી મનોવિનોદ કરવાની શી આવશ્યકતા છે ? હાસ્યને કારણે અન્યના દિલમા ચોટ લાગે તેનાથી વધારે ખરાબ વાત બીજી કંઈ હોઈ શકે ? અધ્યાત્મ માર્ગમા હાંસી મજાકનો સર્વથા ત્યાગ બતાવ્યો છે હાસ્યમા બીજાના

દ્વિતીય સરદારમુપસહરનાઠ-‘ એવમિણ ’ इत्यादि—

મૂલ્-એવમિણ સવરસ દાર સમ્મ સચરિય હોઝ સુપ્પ-
ણિહિય ઇમેહિ પંચહિ વિ કારણેહિ મળવયણકાયપરિરક્ખિ-
ણહિ નિચ્ચ આમરણંત ચ એસ જોગો ણેયવ્વો ધિહમયા મહમયા
અણામવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસ્સાવી અસંકિલિદ્ધો સવ્વ-
જિણમણુત્તાઓ । એવ વીય સંવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિય
તીરિય કિદ્દિય અણુપાલિય આણાણ આરાહિય ભવઝ, એવ

રૂપાય કે ઉદય સે હોતા હૈ ! જિસસે ચારિત્ર કા ભગ હોતા હૈ । દૂસરે
વ્યક્તિયો ની ગુણ ચેષ્ટાઈં ભી ટસ હાસ્ય કે દ્વારા પ્રકટ હો જાયા કરતી
હૈ । યદ્યપિ ચારિત્ર કા ડસસે પૂર્ણરૂપ સે ભગ નહીં ભી હોતા હૈ-તો ભી
સાધુ ડસકે પ્રભાવ સે મહર્ષિક દેવો મેં ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ । કાન્દર્પિક
આભિયોગિક આદિ દેવો મેં હી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અતઃ હાસ્ય કા સેવન
કરના સત્યવ્રતી કે લિયે સર્વથા ત્યાજ્ય હૈ, એસા સમજ કર જાં ડસકા
પરિત્યાગ કર દેતા હૈ વત સત્યવ્રતી અપને વ્રત કો પૂર્ણરૂપ સે સ્થિર કર
પાલન કરતા હૈ । ડસ પ્રકાર હાસ્ય જન્ય દોષોં કા વિચાર કર હાસ્યવ-
ર્જનરૂપ વચનસમય સે અપની આત્મા કો ભાવિત કરકે સાધુ અપને
વ્રતારાધન મેં પરાક્રમશાલી બન જાતા હૈ ઓર ગૃહીત સત્યવ્રત કો પૂર્ણ-
રૂપ સે સુરક્ષિત કર સ્થિર બના લેતા હૈ ॥ સૂ ૮ ॥

દ્રુપણો બાહ્ય કરવા તે પ્રિય લાગે છે તે હાસ્ય નોકપ યના ઉદયથી થાય છે,
જેના કારણે ચારિત્રનો ભગ થાય છે, બીજી વ્યક્તિઓની ગુણ ચેષ્ટાઓ પણ
તે હાસ્ય દ્વારા પ્રગટ થયા કરે છે ભલે તેનાથી ચારિત્રનો પૂર્ણ ભગ થતો
ન હોય, તે છતાં પણ સાધુ તેના કારણે મહર્ષિદેવોમાં ઉત્પન્ન થતો નથી
કાન્દર્પિક, અભિયોગિક આદિ દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે તેથી હાન્યનું સેવન
કરવું તે સત્યવ્રતીને માટે અર્થથા ત્યાજ્ય છે, એવું સમજીને જે તેનો પરિ-
ત્યાગ કરે છે, તે સત્યવ્રતી પોતાના વ્રતને સંપૂર્ણ રીતે સ્થિર કરે છે અને
તેનું પાલન કરે છે આ રીતે હાન્યમાથી ઉદ્ભવતા દોષોનો વિચાર કરી હાસ્ય
વર્જનરૂપ વચનસમયથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરીને સાધુ પોતાના વ્રતની
આરાધનામાં સમર્થ બની જાય છે અને અહુણું કરેલા સત્યવ્રતનું સંપૂર્ણ રીતે
સુરક્ષિત કરીને સ્થિર બનાવી લે છે ॥ સૂ ૮ ॥

નાયમુણિના ભગવયા પદ્મવિય પરુવિયં પસિન્હ સિદ્ધવરસાસુણમિણં
આઘવિય સુદેસિય પસત્થ । વીય સવરદારસમત્તંતિ વેમિ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ इय पणहावागरणे वीयं संवरदार समत्त ॥

ટીકા—‘ એવ ’ પૂર્વોક્તપ્રકારે ‘ ઇણ ’ ઇદ્ ‘ સવરસ્સ ’ સવસ્સ ‘ દાર ’
દાર=સત્યવચન નામ દ્વિતીય દારમિત્યર્થ , ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સચરિય ’ સચ
રિત સત્ ‘ હોદ ’ ભવતિ, ‘ સુપ્પણિહિય ’ ‘ સુપ્પણિદિત=સમારાપિતમ્ । તથા—‘ ઇમેહિં
એમિઃ ‘ પચહિં વિ ’ પન્નમિરપિ ‘ કારણેહિં ’ કારણૈઃ=ભાવનામિ, કીદ્દશૈઃ કા
રણૈઃ ? इत्याह—‘ मणवयणकायपरिरक्खिण्हिं ’ मनोवचनकायपरिरक्षितैः=मनोवा
कायपरिरक्षितपञ्चभावनाभिरित्यर्थ , ‘ નિચ્ચ ’ નિત્યમ્ ‘ આમરણત ચ ’ આમર
ણાન્ત=મરણપર્યન્ત ચ ‘ એસ જોગો ’ એપ યોગઃ=સત્યવચનરૂપો યોગ ‘ જેયઠ્ઠો’

इस प्रकार सत्यव्रत की स्थिरता के निमित्त पांच भावनाओं को
कहकर अब सूत्रकार इस द्वितीय सवरदार का उपसहार करते हुए
कहते हैं—‘ एवमिण , इत्यादि ।

टीका—(एव) पूर्वोक्त प्रकार से (इण) यह (सवरदार) सत्यवचन
नामक द्वितीय सवरदार (सम्म-सचरियं) अच्छी तरह से पाले जाने
पर (सुप्पणिहिय) सुरक्षित (होइ) हो जाता है । (इमेहिं पचहिं वि
कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिण्हिं) इसलिये मन वचन और काय
इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये इन पांचभावनारूप
कारणों से (निच्च) सदा (आमरणत च) जीवनभरतक (एसजोगो)
यह सत्यवचनरूप योग (धिइमया मइमया) स्वस्थचित्त से एव हेयो

આ રીતે સત્યવ્રતની સ્થિરતાને માટેની પાંચ ભાવનાઓ વર્ણવીને હવે
સૂત્રકાર આ બીજા સવરદારનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ” ઇત્યાદિ

ટીકા—“ એવ ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ “ ઇણ ” આ “ સવરસ્સદાર ” સત્ય
વચન નામનું બીજું સવરદાર “ સમ્મ-સચરિય ” સારી રીતે પળાય તે
“ સુપ્પણિહિય ” સુરક્ષિત “ હોઈ ” થઈ જાય છે “ ઇમેહિં પચહિં વિ કારણેહિં
મણવયણકાયપરિરક્ષિણ્ણહિં ” તે ડારણે મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી
સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ આ પાંચ ભાવનારૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ” મદા
“ આમરણ ત ચ ” જીવન પર્યન્ત “ એસજોગો ” આ સત્યવચનરૂપ યોગ
“ ધિઈમયા મઈમયા ” સ્વસ્થ ચિત્તે અને હેયોપાદેયના વિવેકથી સુકૃત થયેલ
મુનિજનોએ “ જેયઠ્ઠો ” પાલન કરવા યોગ્ય છે ડારણુ કે આ સત્યમહાવ્રત

નેતવ્યઃ=પાલનીયઃ ' ધિઃમયા ' ધૃતિમતા ' મઃમયા' મતિમતા-મેધાવિના કય
ભૂતોઽય યોગ ? ઇત્યાહ- ' અણાસવો ' અનાસ્રવઃ ' અકલુસો ' અકલુપ ' અ-
ચ્છિદ્ધો ' અચ્છિદ્રઃ ' અપરિસ્સાવી ' અપરિસ્વાવી ' અસકિલિદ્ધો ' અસક્લિષ્ટઃ ' સ-
વ્વજિણમણુણાઓ ' સર્વજિનાનુજ્ઞાતશ્ચ । એવમ્=એતાદશમિદ ' વીય ' દ્વિતીય
' સવરદાર ' સવરદ્વાર ' ફામિય ' સ્પૃષ્ટ ' પાલિય ' પાલિત ' ' સોહિય ' શોધિત
' તીરિય ' તીરિત ' કિદ્ધિય ' કીર્તિતમ્ ' આરાહિય ' આરાધિતમ્ ' આણાણ' આ-
જ્ઞયા યથાવત્ ' અણુપાલિય ' અનુપાલિત ' ભવતિ । એવમ્=અમુના પ્રકારેણ ' ણા-

પાદેય કે વિવેક સે યુક્ત હુવ મુનિજન કો (ણેયવ્વો) પાલન કરને
યોગ્ય હૈ, ક્યોં કિ યહ સત્ય મહાવ્રતરૂપ યોગ (અણાસવોં) નૂતનકર્મો
કે આસ્રવ કો રોકને વાલા હોને સે અનાસ્રવ રૂપ હૈ, (અકલુસો)
અશુભ અધ્યવસાય સે રહિત હોને કે કારણ અકલુપરૂપ હૈ (અચ્છિદ્ધો)
પાપ કા સ્રોત હસસે વદ હો જાતા હૈ હસલિયે અચ્છિદ્રરૂપ હૈ, (અપરિ-
સ્સાવી) એક ત્રિન્દુમાત્ર મી કર્મરૂપ જલ હસમે પ્રવિષ્ટ નરી હો સકતા
હૈ હસલિયે યહ અપરિસ્વાવી હૈ, (અસકિલિદ્ધો) અસમાધિરૂપ ભાવસે યહ
વર્જિત હોતા હૈ હસલિયે અસક્લિષ્ટ હૈ । (સવ્વજિણમણુણાઓ)
હસીલિયે યહ સમસ્ત ભૂત, ભવિષ્યત્, ઓર વર્તમાન કાલ કે તીર્થકરોં
કો માન્ય હુઆ હૈ । (એવ) હસ ઉક્ત પ્રકાર સે (વીય) દ્વિતીય સવર
દ્વાર કો જો મુનિજન (ફાસિય) અપને શરીર સે સ્પર્શ કરતે હૈ, (પા-
લિય) નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક હસકા સેવન કરતે હૈ, (સોહિય) અતિચારોં
સે હસે રહિત બનાતે હૈ, (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસે અપને જીવન મેં ઉ-
તારતે હૈ, (કિદ્ધિય) દૂસરોં કો હસે ધારણ કરને કા ઉપદેશ દેતે

૩૫ યોગ “ અણાસવો ” નવા કર્મોના આસ્રવને રોડનાર હોવાથી અનાસ્રવરૂપ
“ અકલુસો ” અશુભ અધ્યવસાયરહિત હોવાથી અકલુપરૂપ “ અચ્છિદ્ધો ” પાપને
સ્રોત તેનાથી બંધ થઈ જાય છે તેથી અચ્છિદ્રરૂપ છે, “ અપરિસ્સાવી ” એક
ત્રિન્દુ પણ કર્મરૂપી જળ તેમા પ્રવેશી શકતુ નથી, તેથી તે અપરિસ્વાવી છે,
“ અસકિલિદ્ધો ” અસમાધિરૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસક્લિષ્ટ
છે “ સવ્વજિણમણુણાઓ ” તેથી તે સમસ્ત ભૂત, ભવિષ્ય અને વર્તમાન-
કાળના તીર્થકરોએ માન્ય કરેલ છે “ એવ ” આ ઉછું દેતે પ્રકારે “ વીય ”
બીજા સવરદ્વારને જે મુનિજન “ ફાસિય ” પોતાના શરીરથી સ્પર્શે છે,
“ પાલિય ” નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, “ સોહિય ” અતિચારથી
રહિત બનાવે છે, “ તીરિય ” પૂર્ણ રીતે તેને પોતાના જીવનમા ઉતારે છે
“ કિદ્ધિય ” અન્યને તેનુ સેવન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા “ અણા

યમુણિણા ' જ્ઞાતમુનિના મનગતા મહાવીરણ ' પળ્લવિય ' પ્રજાપિત ' પરુવિય ' પ્રરુપિત ' પસિદ્ધ ' પ્રસિદ્ધમ્ ' મિદ્ધવરસાસણમિણ ' સિદ્ધવરસામનમિદમ્ ' આયવિય ' આગ્વ્યાત ' સુદેસિય ' સુદેશિત ' પસત્થ ' પ્રગમ્ત ' વીય સવરદાર ' દ્વિતીય સવરદાર ' સમત્ત ' સમાપ્તમ્ । એવા સર્વેવા પદાના વ્યાખ્યા પ્રથમસવર દારોપસહારે દ્રષ્ટવ્યા । ' તિત્તેમિ ' ઇતિ ત્રીમિ-અસ્યાર્થઃ પૂર્વમુક્તઃ ॥મૂ-૯॥

॥ ઇતિ શ્રી વિશ્વવિરયાત-જગદ્વલ્લભ - પ્રસિદ્ધચારુપચ્ચદશભાષાકલિ-
તલલિતકલાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનેકપ્રન્યનિર્માપક-સાદિમાનમર્દક-
શ્રીશાહુ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ' જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદભૂપિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાલત્રાત્મચારિ જૈનાચાર્ય જનધર્મદિનાકરપૂજ્યશ્રી
યાસીલાલત્રતિરિચિતાયા શ્રી પ્રશ્નવ્યાકરણમુત્રસ્ય સુદર્શન્યા
રૂપાયા વ્યાખ્યાયા સત્ત્વાત્માકે દ્વિતીયે-ભાગે સત્યરચનનામક
દ્વિતીય સવરદાર સમાપ્તમ્ ॥ ૨ ॥

હૈં તથા (અણુપાલિય) ત્રિકરણ ત્રિયોગોં સે જો હસકા અચ્છી તરહ સે આચરણ કરતે હૈં વે (અણાણ આરાહિય ભવહ) હમકી આરાધના સર્વજ્ઞ ભગવાન્ કે વચનોં સે હી કરતે હૈં એસા જાનના ચાહિયે । (એવ) હસ પ્રકાર સે યહ ઉક્તરૂપ સવરદાર (ણાયમુણિણા) પ્રસિદ્ધક્ષત્રિયવશ મેં ઉત્પન્ન હુણ મુનિ ભગવાન્ મહાવીર ને (પળ્લવિય) પ્રજાપિત કિયા હૈં શિષ્યો કે લિયે સામાન્ય રૂપ સે કહા હૈં । (પરુવિય) પ્રરુપિત કિયા હૈં-ભેદાનુભેદપ્રદર્શન પૂર્વક કથિત કિયા હૈં । હસલિયે યહ (પસિદ્ધ) પ્રસિદ્ધ હૈં-આચાર્યાદિપરપરા સે હમકા પાલન હસી રૂપ સે ચલા આ રહા હૈં અતઃ નિર્દોષ હૈં । તથા (સિદ્ધવરસાસણમિણ) ભૂતકાલ મેં જિતને મી સિદ્ધ હો ચુકે હૈં ડનકા યહ ઉત્કૃષ્ટ શાસનરૂપ હૈં સો (આયવિય)

લિય ” ત્રિઠરણ યોગોથી જેઓ તેમનુ સારી રીતે આચરણ કરે છે તેઓ “ અણાણ આરાહિય ભવહ ” તેની આરાધના સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચનોથીજ કરે છે એમ સમજવુ, “ એવ ” આ પ્રકારે આ (વર્ણુવ્યા પ્રમાણેતુ) સવર દ્વાર “ ણાયમુણિણા ” પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમા જન્મેલા મહાવીર ભગવાને “ પળ્લવિય ” પ્રજાપિત કર્યું છે શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે કહ્યું છે ‘ પરુ પવિય ” પ્રરૂપિત કર્યું છે ભેદાનુભેદ દર્શાવીને વર્ણુવ્યુ છે તેથી તે “ સિદ્ધ ” પ્રસિદ્ધ છે આચાર્યાદિ પરપરાથી તેનુ આ રૂપેજ પાલન થતુ આવ્યુ છે, તેથી તે નિર્દોષ છે તથા “ સિદ્ધવરસાસણમિય ” ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમના ઉત્કૃષ્ટ શાસનરૂપ વળી “ આયવિય ” તેનુ -

ઠસી કા કથન ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુને ક્રિયા હૈ ઓર (સુદેસિય) એસા હી ઉપદેશ ઇસકા ઉન્હોને દેવ, મનુજ એવ અસુરોં સહિત પરિપદા મેં દિયા હૈ । (પસત્ય) યહ દ્વિતીય સવરદ્વાર સમસ્ત પ્રાણિયોં કા હિતકારક હોને સે પ્રશસ્ત-મગલમય હૈ । (ત્રીય સવરદાર સમત્ત) ઇસ તરહ કા યહ દ્વિતીય સવરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ । (તિવેમિ) હે જબૂ મેંને જૈસા યહ શ્રી મહાવીર પ્રભુ કે મુખ સે સુના હૈ ઉસી તરહ કા યહ તુમસે કહા હૈ । અપની તરફ સે ઇસમેં કુઝ બી કલ્પિત કરકે નહી કહા હૈ ॥

ભાવાર્થ—દૂસરે સવર દ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હુએ સૂત્રકાર કહ રહે હૈ કિ ઇસ દ્વિતીય સવરદ્વાર કો કિ જિસકા નામ સત્યમહાવ્રત હૈ જો મુનિજન ઇન કથિત પચ ભાવનાઓં કી દૃઢતા પૂર્વક પાલતે હૈ—જીવન ભરતક—ઇસકે અનુસાર અપની કર, ચરણ આદિ કી પ્રવૃત્તિ કો કરતે રહતે હૈ ઉનકે અશુભ અધ્યવસાય રુક જાતે હૈ, નવીન કર્મોં કા વધ હોતા નહી હૈ । પાપોં કા સ્રોત ઇસકે પ્રભાવ સે, ઉનકા રુક જાતા હૈ યહ અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ । ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહત ભગવતોં ને ઇસકા સ્વય પાલન ક્રિયા હૈ, ઓર જીવો કો ઇસકે પાલને કા ઉપદેશ આદેશ ઉન્હો ને પરિપદા મેં દિયા હૈ । ભગવાન્ મહાવીર ને

મહાવીરે કહેલ છે અને “ સુદેસિય ” તેમણે તેનો આ પ્રમાણે જ ઉપદેશ દેવ, મનુષ્ય અને અસુરો સહિતની પરિપદોમા આપ્યો છે “ પસત્ય ” આ દ્વિતીય સવરદ્વાર સધળા પ્રાણીઓનું હિત કરનાર હોવાથી પ્રશસ્ત-મગલમય છે “ ત્રીય સવરદાર સમત્ત ” આ ત્રીજો સવરદ્વાર સમાપ્ત થયું “ તિવેમિ ” હે જબૂ ! મેં જેવું મહાવીર પ્રભુના મુખથી સાંભળ્યું છે, મારી તરફથી તેમા ઉલ્પિત કંઈ પણ ઉમેરીને તે કહેવાયું નથી

ભાવાર્થ—ત્રીજા સવરદ્વારનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—સત્ય મહાવ્રત નામના ત્રીજા સવરદ્વારનું જે મુનિજન ઉપદેશિત પાંચ ભાવનાઓનું જીવન પર્યંત દૃઢતાપૂર્વક પાલન કરે છે, તેના પ્રમાણે પોતાની કર ચરણ આદિની પ્રવૃત્તિ ડર્યા કરે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોનો બધ બધાતો નથી, તેના પ્રભાવથી તેમનો પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે, તેથી તે અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણોવાળું છે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેનું પોતે પાલન કર્યું છે, અને તેના પાલનનો પરિપદોમા જીવોને ઉપદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ તેમના પ્રમાણે જ

भी उन्हीं के अनुसार इस द्वितीय सवरद्वार की प्रशसा की है स्वामी भी इसका पालन किया है । अतः यह मंगलमय है । निर्दोष है । बाधा वर्जित है । इसे धारण कर प्रत्येक सज्ञी पर्याप्ति पचेन्द्रिय मनुष्य के अपना जीवन सफल बनाना चाहिये । इस प्रकार जब स्वामी से श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा ॥ सू-९ ।

॥ द्वितीय सवरद्वार समाप्त ॥

આ બીજા સવરદ્વારની પ્રશસા કરી છે અને જાતે પણ તેનું પાલન કર્યું છે તેથી તે મંગલમય છે, નિર્દોષ છે, બાધાવર્જિત છે, તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક સજ્ઞી પર્યાપ્તિ પચેન્દ્રિય મનુષ્યે પોતાનું જીવન સફળ બનાવવું જોઈએ આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્માસ્વામીએ જ બૂન્વામીને કહ્યું ॥ સૂ. ૯ ॥

॥ બીજું સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

अथ तृतीय संवरद्वारं प्रारभ्यते

पूर्वस्मिन्नाध्ययरे मृषावादविरमण नामक द्वितीय संवरद्वार प्रोक्तम्, तच्चाद-
त्तादानविरमणं विना न सभवतीत्यतः क्रमप्राप्ते तृतीयेऽध्ययनेऽदत्तादानविरम-
णनामक तृतीय संवरद्वारमभिधीयते—‘जबू’ इत्यादि—

मूलम्—जबू । दत्तमणुन्नायसंवरो नाम होइ तइयं सुव्वय ।
महव्वय गुणव्वय परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमिय-
मणंततण्हाणुगय—महिच्छमणवयणकल्लुस—आयाणसुनिग्गहिय,
सुसंजमियमणहत्थयायनिहुयं निहुयं निग्गथ, णोट्टियं, निरुत्तं,
निरासव, निव्वभयं, विमुत्त उत्तमनरवसभ—पवर—वलवग—
सुविहियजणसंमयं—परमसाहुधम्मचरणं, जत्थ य गाभागर—
नगर—निगम—खेड—कव्वड—मडव—दोणमुह—सवाह—पट्टणा
समगय च किञ्चि दव्व मणि—मुत्त—सिलप्पवाल कस दूस—रयय
वरकणग—रयणमाइं पडियं पम्हट्ट विप्पणट्ठं न कप्पइ कस्सइ
कहेउ वा गेणहेउ वा अहिग्गन्न सुवण्णाएणं समलेट्टु कचणेणं
अपरिग्गहसबुडेणं लोगम्मि विहरियव्व ॥ सू० १ ॥

टीका—‘सुव्वय’ सु=शोभन व्रत=चारित्र्यपालनरूप यस्य तत्सबुद्धौ हे
सुव्रत ! =शोभनव्रतशालिन् ! ‘जबू’ हे जम्बू ! इदं प्रारभ्यमाण ‘तइय’ तृती-

तृतीय संवरद्वार प्रारम्भ

पूर्व अ चयनमें मृषावाद विरमण नाम का जो दूसरा संवरद्वार
कहा गया है, अदत्तादानविरमण के विना नहीं हो सकता है, इसलिये
सूत्रकार क्रमप्राप्त इस तृतीय अध्यय में अदत्तादानविरमण नाम का

त्रीण संवरद्वारानां प्रारम्भ

आगणना अध्ययनमा मृषावाद विरमणु नामना त्रीण संवरद्वार विषे
ने ढडेवामा आण्यु तेनु पालन अदत्तादान विरमणु विना थर्ह शकतु नथी
तेथी सूत्रकार अनुक्रमे आवता आ तृतीय अध्ययनमा अदत्तादान विरमणु

યમધ્યયનં ' દત્તમણુનાયસવરો ' દત્તાનુજાતસવર.=દત્ત=દાયકૈવિતીર્ણમ્ અન્નપાના
 દિકમ્, અનુજાત=પ્રાતિદારકપીઠફલકાદિકં ચ ગ્રામિત્યેયરૂપઃ સવરો-દત્તા
 નુજાતસવરો નામ ' દોઢ ભરતિ । ' મહવ્યય ' મહાવ્રતમિદમ્, તથા-'ગુણવ્યય'
 ગુણવ્રતં=ગુણાનામ્ એહિરૂપારલૌકિકોપકારાણા કારણભૂત વ્રત-ગુણવ્રતમ્ । કો
 શમિદમ્ ? ઇત્યાહ-' પરદ્વ્યહરણપઢિવિરઢકરણજુત્ત ' પરદ્વ્યહરણપ્રતિગ્રીતિકર
 ણયુક્ત=પરેવાં યદ્ દ્રવ્ય=ધન તસ્ય યદ્ દરણમ્=આદાન, તત્પતિ યા વિરતિ'=વિર-
 મણ તસ્યા કારણમ્=આચરણ, તેન યુક્ત=સહિતમ્, પરદ્વ્યાદાનપિમુલ્લકારકમિ
 ત્યર્થઃ, તથા—' અપરિમિયમણતતળ્હાણુગયમહિન્નમણવયણકલુસ-આયાણસુનિગ્ગ
 હિય ' અપરિમિતાનન્તરળ્હાણુગયમહિન્નમણવયણકલુસ-આયાણસુનિગ્ગહિય=અપરિ
 તીસરા સવરદ્વાર વ્રતે છે-' જવૂ ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(સુવ્યય) હે શોભન વ્રત શાલિન જવૂ ! (તદ્વ્ય) યહ
 પ્રારમ્ભમાણ તૃતીય અધ્યયન (દત્તમણુનાયસવરો) દત્તાનુજાત સવર
 નામકા છે । હમ દત્તાનુજાત (દિયા જુઆ) મેં દાતા કે દ્વારા વિતીર્ણ
 અન્નપાન કા તથા અનુજાત પીઠફલક આદિ કે લેને કા વિધાન કિયા
 ગયા છે । યહ (મહવ્યય) દત્તાનુજાતસવર મહાવ્રત છે । (ગુણવ્યય)
 તથા ગુણવ્રત—હહ લોક સધવી તથા પરલોકસધવી ગુણો કા યહ કાર-
 ણભૂત વ્રત છે । અથવા સમસ્તવ્રતોં કા યહ ઉપકારક છે હસલિયે ગુણ-
 વ્રત છે (પરદ્વ્યહરણપઢિવિરઢકરણજુત્ત) હસ વ્રત કે આરાધન સે જીવ
 કા આચરણ દૂમરોં કે દ્રવ્ય કો ગ્રહણ કેરને કી પ્રવૃત્તિ સે સર્વથા
 વિરક્ત હોતા છે (અપરિમિયમણતતળ્હાણુગયમહિન્નમણવયણકલુસ-
 આયાણસુનિગ્ગહિય) તથા હસ મહાવ્રત કી આરાધના સે, વિદ્યમાન-

નામના ત્રીજા સવરદ્વારનું વર્ણન કરે છે—“ જવૂ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ સુવ્યય ” હે શોભનવ્રતશાળી જવૂ ! “ તદ્વ્ય ” આ શરૂ કરેલ
 ત્રીજું અધ્યયન “ દત્તમણુનાયસવરો ” દત્તાનુજાત સવર નામનું છે દત્તાનુજાત
 (દીધેલું) આ દાતાદ્વારા વિતીર્ણ અન્નપાન તથા અનુજાત પીઠફલક આદિલેવાનું
 વિધાન કરેલ છે તે “ મહવ્યય ” દત્તાનુજાત સવર મહાવ્રત કહેવાય છે
 “ ગુણવ્યય ” તથા ગુણવ્રત છે—આલોક અને પરલોક સધવી ગુણોનું કારણ
 ભૂત આ વ્રત છે, અથવા સમસ્ત વ્રતોને માટે તે ઉપકારક હોવાથી તેને
 ગુણવ્રત કહ્યું છે “ પરદ્વ્યહરણપઢિવિરઢકરણજુત્ત ” આ વ્રતની આરાધના
 કરવાથી અન્યનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવાની પ્રવૃત્તિથી ભ્રમે સર્વથા વિરક્ત રહે છે
 “ અપરિમિયમણત તળ્હાણુગયમહિન્ન મણવયણકલુસ-આયાણસુનિગ્ગહિય ” નજરે
 અડતા દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની જે અસીમ તથા અક્ષય અપૂર્યા-લાલસા થાય છે

મિતા=પરિમાણરહિતા, અનન્તા=અત્યાયા તૃપ્તિ=સ્પૃહા=પ્રિયમાનદ્રવ્યાવ્યયેન્છા,
તયાऽનુગતે ચે મહેચ્છે=અપ્રિયમાનદ્રવ્યલાભનિષયે મહેચ્છાચુક્તે મનોવચને=મનોવા
ણી ચ, તાભ્યા ચત્ કલુપં=પરધનનિષયત્વેન પાપરૂપમ્ ખાદાન=ગ્રહણ તત્સુનિગૃહીત
=સુનિયન્ત્રિત ચત્ર તમ્, તયા-‘સુસજમિયમણહત્યપાયનિદુય’ સુસયમિતમનોઠ
સ્તપાદનિભૃત-સુસયમિતેન સમ્યક્સુનિયન્ત્રિતેન મનમા હસ્તો પાદો ચ પરદ્રવ્યાદા-
નવ્યાપારાગત્ નિઠૃતો=ઉપરતો યત્ર તત્ । ઉક્તવિશેષણદ્વયેન પરદ્રવ્યાદાને મનોવા-
કાયનિગેધઃ પ્રદર્શિત । પુનઃ કથમ્ભૂતગિત્ ? इत्याह-‘નિર્ગમ્ય’ નિર્ગમ્ય=નિ-
ર્ગમો ગ્રાહ્યાભ્યન્તરો ગ્રન્થો યસ્માત્તત્, ગ્રાહ્યાભ્યન્તરગ્રન્થિરહિતમિત્યર્થઃ, તયા-‘નેદ્વિગં’

દ્રવ્ય કે અવ્યય હોને કી જો અપરિમિત ણ્વ અક્ષય સ્પૃહાલાલસા હોતી
હે વહ, તયા રસ સ્પૃહા-લાલસા-સે જો વહી ૨ ઓર અવિદ્યમાન દ્રવ્ય
કે લાભ વિષયક ઇન્છાઓં કી પરપરા ચલતી હૈ કિ જિસસે મનવચન
કી પર ધન કો લેને-ગ્રહણ કરને કી જો કલુપિત પ્રવૃત્તિ હોતી રહતી
હે વહ સુનિયન્ત્રિત હો જાતી હૈ । તયા જય મન કી પરધન કો ગ્રહણ
કરને કી કલુપિત વિચારધારા સુનિયન્ત્રિત હો જાતી હૈ ફિર (સુસ-
જમિયમણહત્યપાયનિદુય) ડમ મન કે નિયન્ત્રિત હોતે હી પરદ્રવ્ય કે
ગ્રહણ કરને કે નિમિત્ત જો હાથ પેરોં કા વ્યાપાર હોતા હૈ વહ બી ઉપ-
રત-વદ હો જાતા હૈ । ઇસ તરહ હન ઢોનોં વિશેષણોં સે યહ કહા
હે કિ ઇસ મહાવ્રત કે સેવન કરને સે, પરદ્રવ્યગ્રહણ કરને કે લિયે
જો મનવચન ઓર કાય કા વ્યાપાર પહિલે હોતા યા વહ સર્વગા વદ હો
જાતા હૈ । (અદત્તાદાનવિરમણસવર) ૪૦ દત્તાનુજ્ઞાત સવર કૈસા હૈ
સી કહતે હે-(નિર્ગમ્ય) ડમ મહાવ્રત કી આરાધના સે ગ્રાહ્ય ઓર

તથા તે લાલસાથી બીજા અવિદ્યમાન દ્રવ્યની પ્રાપ્તિ માટેની મોટી મોટી
ઈચ્છાઓની જે પરપરા આવે છે તે જેવી મન વચનની પાગડાનુ ધન લેવાની
જે દોષપૂર્ણ પ્રવૃત્તિ ચાલુ રહે છે તેનું આ મહાવ્રતની આરાધનાથી નિયન્ત્રણ
થાય છે, તથા જ્યારે પાગડાનુ ધન હરી લેવાની મનની કલુપિત વિચારધારા
સુનિયન્ત્રિત થઈ જાય છે ત્યારે ‘સુસજમિયમણહત્યપાયનિદુય’ તે મનનું
નિયમન થતા જ પાગડાનુ દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવા માટે હાથ-પગની જે પ્રવૃત્તિ ચાલે
છે તે પણ બંધ પડી જાય છે આ રીતે એ બંને વિશેષણોથી એ દર્શાવવામાં
આવ્યું છે કે આ મહાવ્રતનું સેવન કરવાથી પરદ્રવ્ય લેવાને માટે મન, વચન
અને કાયની જે પ્રવૃત્તિ પહેલાં ચાલતી હતી તે તદ્દન બંધ પડી જાય છે
“અદત્તાદાનવિરમણસવર” આ દત્તાનુજ્ઞાત સવર કેવું છે તે હવે જણાવે છે—
“નિર્ગમ્ય” આ મહાવ્રતની આરાધનાથી ગ્રાહ્ય અને આશ્યન્તર પરિગ્રહ દૂર

નૈષ્ઠિક=સર્વધર્મપ્રકર્ષપર્યન્તરતિ, ' નિરુત્ત ' નિરુક્ત-નર્વજપ્રભુને ઉપાદેયરૂપેન નિરુક્તમ્,
અન્યભિચરિત તા તથા-નિરાસવ ' નિરાસવ=કર્માદાનગતિમ્, ' નિભય ' નિ
ર્ભય=નૃપાદિભયરહિત ' વિમુત્ત ' વિમુક્ત=લોભદોષાદિરહિતમ્, તથા- ' ઉત્તમન-
રવસમ-પવરવલગ-સુવિદિયજણસમય ' ઉત્તમનરવૃષભ-પવરવલગત્સુવિદિતજનમ-
મ્મતમ-ઉત્તમા=ઉત્કૃષ્ટા યે નરવૃષભાઃ-નરથ્રેષ્ઠાઃ=જિના તથા-પવરવલગન્તઃ=
ચક્રવર્તિરાસુદેવાદયઃ, સુવિદિતજનાઃ=સાધુલોકાસ્તેષા સમતમ્=અભિમત યત્તત્થા
તથા- ' પરમસાહુધમ્મચરણ ' પરમસાધુધર્મચરણં=પરમસાધુનામ્=ઉત્કૃષ્ટતપસ્વીના
ધર્મચરણ=ધર્મપાલનમ્ યત્તત્થા, ણતાદ્દગમિદ્ દત્તાનુજાતસચરદ્વારમ્ । અત્ર તૃતીયે

આભ્યન્તર પરિગ્રહ દૂર હો જાતા હૈ, અર્થાત્ યદ્ વ્રત યાત્ય ઓર આભ્ય
ન્તર કી ગ્રન્થિ સે રહિત હોતા હૈ તથા (જેદ્રિય) સમસ્તધર્મોં કૈ પ્રકર્ષ
પર્યન્ત ગ્રહ રહતા હૈ, ણવ (નિરુત્ત) નર્વજ પ્રભુને ડસે ઉપાદેયરૂપ સે
કહાહૈ, અથવા યદ્ અન્યભિચરિત હૈ, અર્થાત્ જિતના મી સકલ
સઘમી કા ધર્મ હૈ ઉમકે સાવ યદ્ અતિનામાવી હૈ । (નીરાસવ) ડસમેં
નવીન કર્મોં કા આદાન નહીં હોતા હૈ । (નિભય) નૃપાદિ કા ભય
ડસકે આચરણ મેં સાધુ કો નહીં રહતા હૈ ડસલિયે યદ્ નિર્ભય હૈ ।
(વિમુત્ત) લોભ દોષ આદિ સે યદ્ રહિત હોતા હૈ । (ઉત્તમનરવસમ,
પવરવલગ-સુવિદિયજણસમય) ઉત્કૃષ્ટ જો નરવૃષભ-જિનદેવ હૈ
તથા વલદેવ વાસુદેવ આદિ જો પવરવલગત વ્યક્તિ હૈ, તથા સુવિદિત-
જન જો સાધુ લોક હૈ, ડન સત્ર કૈ લિયે યદ્ માન્ય હૈ । તથા (પરમસા
હુધમ્મચરણ) પરમસાધુજનો-ઉત્કૃષ્ટતપસ્વીજનોં કા યદ્ ધર્મચરણરૂપ
હૈ । (અદત્તાદાનવિરમણ) ણેસા યદ્ દત્તાનુજાતસચરદ્વાર હૈ । ડસ

થઈ બાય છે એટલે કે આ વાત બાહ્ય અને આભ્યન્તરની ગ્રન્થિથી રહિત
હોય છે, તથા “ જેદ્રિય ” તે સમસ્ત ધર્મોંનું પ્રકર્ષપર્યન્ત છે, અને “ નિરુત્ત ”
સર્વજ પ્રભુએ તેને ઉપાદેયરૂપે બતાવ્યું છે, અથવા તે અન્યભિચરિત છે, એટલે
કે સયમીના જેટલા ઈર્ષ્યો છે તેની સાથે તે સુચિત છે ‘ નિરાસવ ’
તેનાથી નવીન કર્મોં બધાતા નથી “ નિભય ” તેને આચરવામા સાધુને નૃપા
દિનો ભય રહેતો નથી તેથી તે નિર્ભય છે “ વિમુત્ત ” લોભ, દોષ આદિથી
તે રહિત હોય છે “ ઉત્તમનરવસમ, પવરવલગ-સુવિદિય જણસમય ” જે શ્રેષ્ઠ
નરવૃષભ-જિનદેવ છે, તથા બળદેવ વાસુદેવ આદિ જે પ્રબળ બળવાન પુરુષો
છે, તથા સુવિદિત જન જે સાધુલોક છે, તે સૌને માટે તે માન્ય છે તથા
“ પરમસાહુધમ્મચરણ ” જે પરમ સાધુજનો ઉત્કૃષ્ટ તપસ્વીજનોને માટે તે
ધર્મચરણરૂપ છે, એવું આ અદત્તાદાન વિરમણ-દત્તાનુજાત સચરદ્વાર છે આ

सवरे साधुभि किं कर्तव्यम् ? इत्याह—‘ जत्थ य ’ यत्र च—तृतीयसवरद्वारे
 ‘ गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-सवाह-पट्टणासमगय च
 =ग्रामाकर-नगरनिगम-खेट-कर्पट-मडम्ब-द्रोणमुख-सवाय-पत्तनाश्रमगत च—
 ग्रामाकरनगरनिगमखेटकर्पटमडम्बद्रोणमुखमवायपट्टनाश्रमाणा व्याख्या पूर्वमुक्ताः,
 तद् गत च ‘ किंचिदव्व ’ किंचिद्द्रव्य - किमपिद्रव्यम्, तदेवाह—‘ मणिमुत्त-
 सिलप्पवालकस - दूम-रयक - वरकणग - रयणमाइ ’ मणिमुक्ताशिला-प्रवाल
 कास्य-दूष्य-रजत-वरकनक-रत्नादि- मणिः-पद्मरागादिः, मुक्ता=मुक्ताफल,
 ‘ शिला ’ बहुमूल्यपाषाणपण्डम्, प्रवाल=विद्रुमः ‘ मूगा ’ इति भाषाप्रसिद्ध,
 ‘ कस ’ कास्य-‘ कामा ’ इति प्रसिद्धम् ‘ दूष्य ’ वस्त्रविशेषः, रजत=‘ चान्दी’
 इतिभाषाप्रसिद्धावरकनक = यावन्तरापेक्षया श्रेष्ठ सुवर्ण, रत्न=कर्कतनादिकम्
 आदि यस्य तत्तथाभूत द्रव्य ‘ पडिय’ पतित-वस्त्राश्चलादेः, ‘ पम्हट्ट’ प्रस्मृत=कुत्रापि
 विस्मृत ‘ विप्पणट्ट’ विप्रणष्ट=गवेषकद्विरपि न प्राप्तम्, तथाभूत मणिमुक्तादिक

तृतीय सवरद्वार में साधुजनो को क्या करना चाहिये इसके लिये सूत्र
 कार कहते हैं—(जत्थ य) इस तृतीय सवरद्वार में (गामागरनगर-
 निगमखेडकव्वड मडव दोणमुहसवाहपट्टणासमगय च) साधुजनों को
 ग्राम, आकर, नगर, निगम, खेट, कर्पट, मडम्ब, द्रोणमुख, सवाह,
 पट्टन, आश्रम, इन स्थानों में, रही हुई (किंचि दव्व) कुछ भी वस्तु
 (मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवरकणगरयणमाइ) मणि, मुक्ता,
 शिला, प्रवाल, कास्य, दूष्य-वस्त्रविशेष, रजत-चादी, सुवर्ण, रत्न आदि
 वस्तु (पडिय) किसी की गिर गई हो, (पम्हट्ट) भूली हुई हो, (वि-
 प्पणट्ट) दूढ़ने पर भी नहीं मिली हो, (न कप्पइ कस्सइ कहेउ वा गे-

तृतीय सवरद्वारमा साधुजनोअये शु उरवु जेधअये ते जताववाने भाटे सूत्रकार
 उडे छे—“ जत्थ य ” आ त्रीण सवरद्वारमा ‘ गामागरनगरनिगम खेडकव्वड
 मडवदोणामुहसवाहपट्टणसमगय च ” साधुजनोअये ग्राम, नगर, आकर
 निगम, खेट, कर्पट, मडम्ब, द्रोणमुख, सवाह, पट्टन, आश्रम, अये स्थानोमा
 रहेयी ‘ किंचि दव्व ” कोउ पणु वस्तु “ मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवर
 कणगरयणमाइ ” मणि, मुक्ता, शिला, प्रवाल, कास्य, दूष्य अउ प्रकारनु
 वस्त्र, रजत-आदि, सुवर्ण रत्न आदि वस्तुअये “ पडिय ” कोउनी पडी गधि
 डोय, “ पम्हट्ट ” कोउ भूली गयु डोय, “ विप्पणट्ट ” शोधवा छता पणु जडी
 न डोय, “ न कप्पइ कस्सइ कहेउवा गेण्हेउवा ” तेने लेवानु सयत डे अस्-

દ્રવ્ય ન ' કસ્યઈ ' કસ્યપિ મયામ્પાઽવયતમ્ય તા ' કહેડ ' કથયિતુ તા, ' મે
 જેડ ' સ્વય ગ્રહીતુ પરેણ ગ્રાહયિતુ તા ' ન કપ્યઈ ' ન કન્વતે, સાયોર્નિવૃત્તિસ્વાત્ ।
 પરદ્રવ્ય દૃષ્ટ્વા સાધુના કિં કર્તવ્યમ્, ? ડત્વાદ—' અહિરણ્યસુવર્ણગણ ' અહિરણ્ય
 સુવર્ણકેન=હિરણ્યસુવર્ણવર્ગકેન ' સમલેટ્ટુકાવણે ' સમલેટ્ટુકાવણેન=મમ.=
 તુલ્યઃ લેટ્ટુ =મૃત્યવ્ણં કાશ્ચન=સુવર્ણ ચ ઉપેક્ષણીયતયા યમ્ય તેન તથોક્તેન=
 મૃત્સ્વણે સુવર્ણે ચ સમભાવતેત્યર્થઃ, ' અપરિગ્રહસવુડેણ ' અપરિગ્રહસવુડેન=
 નાસ્તિ પરગ્રહો યસ્ય સોઽપરિગ્રહઃ, અત એવ સવુડ =મમત્વભાવવર્જિતસ્તેન તથો-
 ક્તેન સાધુના ' લોગમ્મિ ' લોકે મર્ત્યલોકે ' વિહરિયવ્વ ' વિહર્તવ્યમ્, સાધુ-
 મિરુક્તરીત્થા વિહરણીયમિતિ ગાયઃ ॥ ૪૦ ૧ ॥

જેડ વા)ઔર ન સ્વય લેના ચાહિયે उसको सयत अथवा असयत से लेने
 के लिये नहीं कहना चाहिये । क्योंकि इस प्रकार की प्रवृत्ति सुनिर्माण में
 कल्पित नहीं की है । कारण कि साधु (अहिरण्यसुवर्णगण) हिरण्य और
 सुवर्ण इन सब से निवृत्तिवाला होता है साधु को न हिरण्य की चाहना
 होती है और न सुवर्ण की । (समलेट्टुकवणेण) उसकी दृष्टि में तो
 उपेक्षणीय होने के कारण मृत्स्वड मिट्टी का ढेला और काचन दोनों
 बराबर होते ह । अर्थात् वह इन दोनों में समभाव वाला होता है ।
 (अपरिग्रहसवुडेण) इस तरह ममत्वभाव से वर्जित होने के कारण
 अपरिग्रह से युक्त होते हैं साधु को इस प्रकार का होकर इस लोक
 में विचरना चाहिये ।

भावार्थ—ससार में निर्भय होकर विचरण करने के लिये सब से
 उत्कृष्ट साधन यदि कोई है कि जिससे लोगों की दृष्टि का आकर्षण हो

યતને કહેણુ ન જોઈએ, અને પોતે લેવી જોઈએ નહીં કારણ કે એવા
 પ્રકારની પ્રવૃત્તિ સુનીર્માર્ગમાં ઉચિત ગણાવી નથી કારણ કે સાધુ “ અહિરણ્ય
 સુવર્ણગણ ” હિરણ્ય અને સુવર્ણ એ બંધાની નિવૃત્તિ હોય છે સાધુને હિર
 ણ્યની ઇચ્છા હોતી નથી કે સુવર્ણની ઇચ્છા હોતી નથી “ સમલેટ્ટુકવણેણ ”
 તેની દૃષ્ટિએ ઉપેક્ષા પાત્ર હોવાથી માટીનું ઢેકું અને કાચન બંને સમાન
 છે એટલે કે બંનેમાં તે સમભાવવાળો હોય છે “ અપરિગ્રહસવુડેણ ” આ
 રીતે મમત્વભાવથી રહિત હોવાથી તે અપરિગ્રહી હોય છે સાધુએ એ પ્રકારે
 અપરિગ્રહવ્રત યુક્ત બનીને આ લોકમાં વિચરવું જોઈએ

ભાવાર્થ—સ સારમાં નિર્ભય થઈને ફરવાને માટે જો કોઈ સર્વશ્રેષ્ઠ સાધન
 હોય કે જેનાથી લોકોની દૃષ્ટિ આકર્ષાય અને સાધુત્વ પર વિશ્વાસ જામે તે

और साधुत्व पर वि वाम-श्रद्धा जमे-तो वह एक अपरिग्रहत्व का ही सिद्धान्त है । इसमें अन्तरंग और बहिरंग, इन दोनों प्रकार के परिग्रह का सैधान्तिक दृष्टि से परित्याग होता है । साधु के पास निर्ग्रन्थ मुनि के पास इन दोनों प्रकार के परिग्रह का अभाव होता है । बाहिरी दृष्टि में जो कुछ उसके पास में है वह सब सयमधर्मोपकरण है, परिग्रह नहीं है । सूत्रकार ने यही बात साधु के लिये इस तृतीय सवरद्वार में समझाई है । पूर्व अध्ययन में-छितीय अध्ययन में मृषावाद का नौकोटियों से साधु को जो त्याग करना कहा है वह तबतक पूर्णरूप से पालित नहीं हो सकता कि जबतक अन्तरंग और बहिरंग का त्याग नहीं हो जाता । अपरिमित अनन्त तृष्णाओं पर अक्रुश करने वाली यही एक अपरिग्रहता है । मन, वचन और काय की परके द्रव्य को आदान (गृहण) करने की प्रवृत्ति पर रोक लगा देने वाली यही अपरिग्रहता है । इस अपरिग्रहता की छत्रच्छाया में पलने वाला साधु नवीन कर्मों के बंध से रहित हो जाता है, तथा सबका विश्वासपात्र बन जाता है । उसे किसी भी प्रकार का किसी का भय नहीं रहता है । ग्राम आकर आदि किसी भी स्थान में भूली हुई, पड़ी हुई, रखी हुई, किसी भी तरह की वस्तु वह न स्वयं लेना है और न दूसरों से उसे लेने को कहता है ।

તે એક માત્ર અપરિગ્રહત્વનો મિદ્ધાત જ છે તેમા આતરિક તથા બાહ્ય એ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો સૈદ્ધાન્તિક દૃષ્ટિએ પરિત્યાગ થાય છે સાધુની પાસે નિર્ગ્રન્થ મુનિની પાસે આ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો અભાવ હોય છે બાહ્ય રીતે જોતા તેમની પાસે જે કંઈ હોય છે તે બધું સયમ ધર્મોપકરણ છે, પરિગ્રહ નથી, સૂત્રકારે એ જ વાત સાધુને માટે આ ત્રીજા સવરદ્વારમા સમજાવી છે આગળના અધ્યયનમા બીજા અધ્યયનમા મૃષાવાદનો નવ પ્રકારે ત્યાગ કરવાનું સાધુઓને જે કહેવામા આવ્યું છે તેનું અતરંગ તથા બહિરંગ પરિગ્રહનો ત્યાગ ન થાય ત્યાં મુખી પાલન થઈ શકતું નથી અપરિમિત-અનન્ત તૃષ્ણાઓ પર અક્રુશ રાખનાર આ એક અપરિગ્રહતા જ છે આ અપરિગ્રહતા જ, મન, વચન અને કાયાથી અન્યનું દ્રવ્ય પકાવી લેવાની પ્રવૃત્તિ પર એક (અક્રુશ) નું કામ કરે છે આ અપરિગ્રહતાની છત્રછાયામા રહેતો સાધુ નવા કર્મોના બંધથી રહિત બની જાય છે તથા સૌને માટે વિશ્વાસપાત્ર બની જાય છે તેને કોઈનો પણ કોઈ પણ પ્રકારનો ભય રહેતો નથી ગ્રામ, આડર આદિ કોઈ પણ સ્થાનમા ભૂલથી રહેલી, પડી રહેલી, મૂડી રાખેલી કોઈ પણ પ્રકારની વસ્તુ તે પોતે લેતો નથી કે લેવાનું બીજાને કહેતો નથી. આ મતને લીધે

પુનર્નુનિકર્તવ્યમાદ—‘ જપિય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—જં પિ ય હોજા હિ દઘ્વજાયં સલગયં સ્વેત્તગયં રન્ન-
મતરગય વા કિંચિ પુષ્પફલતયપ્પવાલકદંદમૂલતણકદ્દસક-
રાઈ અપ્પ વા વહં વા અણુ વા થૂલ વા ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે
અદિપ્પણમ્મિ ગેપ્પહેઉ । જે હણિ હણિ ઉગ્ગહે અણુપ્પણાવિય
ગેપ્પિહયઠ્ઠ વજ્જેયઠ્ઠો ય સઠ્ઠકાલ અચિયત્તઘરપ્પવેસો
અચિયત્તભત્તપાણં અચિયત્તપીઠફલગસેજ્ઞાસથારગવત્થપા-
યકવલ દંડગ-રયહરણ--નિસેજ્જ ચોલપટ્ટગ મુહમોત્તિયપાય-
પુછ્છણાઈમાયણમંડોવહિઉવગરણ । પરપરિવાઓ પરસ્સ દોસો
પરવવપ્પેસેણ જ ચ ગેપ્પહેતિ, પરસ્સ નાસેઈ જ ચ સુકય દાણસ્સ
ય અત્તરાઈય, દાણવિપ્પણાસો પેસુપ્પણ ચેવ મચ્છરિય ચ ॥૨॥

ટીકા—‘ જ પિ ય ’ યદપિ ચ ‘ હોજા ’ ભવેત્, દિ=નિશ્ચિત ‘ દઘ્વજાય ’
દ્રવ્યજાત, તદેવાદ= ‘ સ્વલગય ’ સ્વલગતં=સ્વલ ધાન્યરાશીકરણભૂમિસ્તત્ર ગત=
સ્થિત, તથા—‘ સ્વેત્તગય ’ ક્ષેત્રગતમ્=ક્ષેત્રસ્થિત ‘ રન્નમતરગય ’ અરણ્યાન્તર્ગત=
વનાન્તઃ સ્થિત વા ‘ કિંચિ ’ કિંચિત્=કિમપિ ‘ પુષ્પફલતયપ્પવાલકદમૂલ-

ઈસ વ્રત સે સાધુ કી આત્મા સમસ્ત વસ્તુઓં મેં અસારતા કે દર્શન કર
લેને સે ઢેલા ઓર કાચન મેં સમાન બુદ્ધિ વાલા બન જાતા હૈ ॥ સૂ-૧ ॥

સૂત્રકાર પુનઃ મુનિજન કે હી કર્તવ્ય કો કહતે હૈ—‘ જપિ ય ’ ઇં

ટીકાર્થ—(જપિ ય હોજા હિ દઘ્વજાય) જો કુછ મી દ્રવ્ય હો
ચાહે વ (સ્વલગય) સ્વલિહોન મે પડા હો ચાહે (સ્વેત્તગય) સ્વેત મેં
પડા હો, યા (રન્નમતરગય વા) જલગ મેં પડા હો (કિંચિ)

સાધુનો આત્મા સમસ્ત વસ્તુઓમા અસારતાનુ દર્શન કરી લેવાથી સોનુ અને
માટીના ઢેકાને સમાન ભાવે જોનાર બની જાય છે ॥ સૂં ૧ ॥

સૂત્રકાર ક્રીથી મુનિજનના કર્તવ્યો જ દર્શાવે છે—“ જપિ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ જપિ ય હોજા હિ દઘ્વજાય ” જે કોઈ પણ દ્રવ્ય હોય, ભલે
તે “ સ્વલગય ” બળામા પડ્યું હોય ભલે “ સ્વેત્તગય ” તે એતરમા પડ્યું
હોય, “ રન્નમતરગય વા ” જગલની અંદર પડ્યું હોય “ કિંચિ ” ગમે તે

તળકઢસકરાઙ ' પુષ્પફલત્પક્ પ્રવાલકન્દમૂલતળકાષ્ઠશર્કરાદિ, તત્ર-પુષ્પ-
ફલે પ્રતીતે, ત્પક્=ત્પચા, પ્રવાલોઽકુરઃ, કન્દઃ=મૂરણાદિઃ, મૂલમ્=મૂલકાદિ,
તળ કાષ્ઠં ચ પ્રતીતમ્, શર્કરાઃ='કકર' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, એતાન્યાદૌ યસ્ય
તત્તથોક્ત દ્રવ્યમ્ અપ્પ ' અલ્પ=સ્તોક યા ' વહુ ' વહુ=પ્રચુર વા ' અણુ ' અણુ=
આકારેણ સૂક્ષ્મ વા ' થૂલ ' થૂલમ્-આકારેણ વૃહદ્ વા, તત્ ' ન કપ્પઈ ' ન
કલ્પતે ' ઉગ્ગહે ' અવગ્રહે ' અદિણ્ણે ' અદત્તે તત્તદ્વસ્તુસ્વામિનિદેશમપ્રાપ્યેત્યર્થઃ,
' ગેળ્હેઽ ' ગ્રહીતુમ્, કિન્તુ ' જે ' યદ્ ગ્રાહ્ય ભવેત્, તત્ ' હ્ણિ હ્ણિ ' અહન્ય-
હ્ણિ=પ્રતિદિનમ્ ' ઉગ્ગહ ' અવગ્રહ-તત્સ્વામિનિદેશમ્, ' અણુણ્ણિ ય ' અનુ-
જ્ઞાપ્ય=પ્રાપ્ય ' ગેળ્હિયવ્વ ' ગ્રહીતવ્યમ્ । તથા ' સવ્વકાલ ' સર્વકાલ=સર્વદા
' અચિયત્તઘરપ્પવેસો ' અપ્રીતિકારકગૃહપ્રવેશ ' વજ્જેયવ્વો ' વર્જિતવ્ય' તથા-

કુછ મી હો જૈસે (પુષ્પફલતયપ્પવાલકદમૂલતળકઢસકરાઙ) ચાહે વહ
વસ્તુ પુષ્પરૂપ મેં હો, ફલરૂપ મેં હો, છાલરૂપ મેં હો, પ્રવાલ-કોંપલ રૂપ
મેં હો, સૂરણ આદિ કદ રૂપ મેં હો, મૂલક આદિ રૂપ મેં હો, તળ કાષ્ઠ
આદિ કે રૂપ હો ચાહે કકર આદિ કે રૂપ મેં મી ક્યોં ન હો । યે સબ
વસ્તુએં વહા (અપ્પ વા) થોડી હો યા (વહુ વા) વહુત હો (અણુ વા)
આકાર સે છોટી હો યા (થૂલ વા) વડી હો, કિસી મી તરહ સે વહ
इन वस्तुओ को (न कप्पइ उगगहे अदिण्णम्मि गेण्हेउ) विना उनके
मालिक की आज्ञाप्राप्त किये किसी भी रूप में लेना नहीं कल्पता है ।
तथा (जे) जो वस्तुएँ साधु के लिये ग्राह्य हैं वे भी (ह्णि ह्णि)
प्रतिदिन (उगगहे अणुणावि य) उनके स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर ही
(गेण्हियव्व) ग्रहण करने योग्य हैं । तथा (वज्जेयव्वो य सव्वकाल

દ્રવ્ય હોય, “ પુષ્પફલતયપ્પવાલકદમૂલતળકઢસકરાઙ ” ભલે તે વસ્તુ પુષ્પરૂપે
હોય, ફલરૂપે હોય, છાલરૂપે હોય, પ્રવાલ-કોંપળના રૂપમા હોય, સૂરણ આદિ
કદરૂપે હોય, મૂળ આદિ રૂપમા હોય, તળ કાષ્ઠ આદિરૂપે હોય, ભલે કાકરા
આદિરૂપે હોય, તે બધી વસ્તુઓ ત્યાં “ અપ્પ વા ” થોડી હોય કે “ વહુ વા ”
વધારે હોય, “ અણુ વા ” ઓમના નાની હોય કે “ થૂલ વા ” મોટી હોય,
કોઈ પણ રીતે એ વસ્તુઓને “ ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેળ્હેઽ ” તેના
માલિકની આજ્ઞા લીધા વિના કોઈ પણ રીતે તેને ગ્રહણ કરવાનું મુનિને
કલ્પતું નથી તથા “ જે ” વસ્તુઓ સાધુઓને ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તે પણ
“ હ્ણિહ્ણિ ” પ્રતિદિન “ ઉગ્ગહે અણુણા વિ ય ” તેમના માલિકની આજ્ઞા
લઈને જ “ ગેળ્હિયવ્વ ” ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તથા “ વજ્જેયવ્વો ય સવ્વ

‘अचियत्तभत्तपाण’ अप्रतीतिकारकभक्तपान वर्जितव्यम्, अविश्वासभाजनस्य भक्तपान न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा-‘अचियत्तपीठफलङ्गसेज्जासधारगवत्थपायक-
कंबलदडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुछणाड्भायणभडोवहिउवगरण’
अप्रतीतिकारकपीठफलङ्गशय्यासस्तारकयस्त्रपात्रपट्टकजरजोहरणनिपद्याचोल्प
दडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुछणाड्भायणभडोवहिउवगरण वर्जितव्यम्,
अविश्वासभाजनस्य पीठफलङ्गादिक न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा ‘परपरि-
वाओ’ परपरियादः-काका परदोषप्रकटनम्, वर्जितव्य, ‘परस्स’ परस्य
‘दोसो’ दोषश्च वर्जनीय, परोक्षे निन्दा, प्रत्यक्षे दोषकथनम्, इत्युभय च

अचियत्तघरप्पवेसो) जो अपनी प्रतीति-विश्राम-नहीं करता हो
उसके घर पर साधु को सर्वदा नहीं जाना चाहिये, तथा (अचियत्त-
भत्तपाण) जो अपनी प्रतीति नहीं करता हो उसके गृह से साधु को
भक्तपान नहीं लेना चाहिये । इसी तरह (अचियत्तपीठफलङ्गसेज्जास-
धारगवत्थपायककंबल दडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपु-
छणाह) जो व्यक्ति अपने ऊपर विश्वास नहीं रखता हो उसके द्वारा
प्रदत्त-(दिया हुआ) पीठ, फलङ्ग, शय्या, सस्तारक, वस्त्र, पात्र, कम्बल,
दण्डक,, रजोहरण, निपद्या, चोल्पट्टक, सदोरकमुज्जवस्त्रिका, पादप्रो-
ज्जन आदि, तथा (भायणभडोवहिउवगरण) भाजन, भाड, उपधि,
ये सब उपकरण नहीं लेना चाहिये । (परपरियाओ) तथा काकुरूप से
साधु को पर के दोषों को प्रकट नहीं करना चाहिये । तथा (परस्स-
दोसो) परोक्ष में निन्दा करना और साम्हने दोषों को कहना ये दोनों

काल अचियत्तघरप्पवेसो ” ने पोतानो विश्राम न करते होय, तेना धरे
साधुओ कही जेबु नेधओ नही, तथा “ अचियत्तभत्तपाण ” ने पोताना पर
विश्वास न भूकतो होय तेने त्याथी साधुओ आधार पाणी स्वीकारवा
नेधओ नही ओ जे रीते “ अचियत्तपीठफलङ्गसेज्जासधारगवत्थपायककंबलदडगरओ-
हरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुछणाह ” ने व्यक्ति पोताना पर विश्वास
न राखती होय तेना द्वारा अपायेल पीठ, डलक, शय्या, सस्तारक, वस्त्र, पात्र
उभण, दडक, रजोहरण निपद्या, चोल्पट्टक, होराभडित मुहुपत्ति, पाद प्रोज्जन
आदि तथा “ भायणभडोवहिउवगरण ” भाजन, (पात्रा भाड, उपधि, ओ
पद्या साधने लेवा नेधओ नही “ परपरियाओ ” तथा कागडानी जेम साधु
ओओ भीजना दोषो प्रकट करवा नेधओ नही तथा “ परस्सदोसो ” परोक्ष
रीते निन्दा करवानी तथा सामे जे दोषो कहेवानी प्रवृत्ति साधुओ छोडवी

वर्जनीयम् । तथा—‘ परवचणसेण ’ परव्यपदेशेन बालग्लानादीना निमित्तेन ‘ ज च ’ यच्च=अशनादिक, ‘ गेण्हेइ ’ गृह्णाति=वैयावृत्यकारक, तदन्येर्नोपभोक्तव्यम् । बालग्लानादिनिमित्तमानीत वस्तु यथाशिष्ट भवेत्, तथा तद् वस्तु स्वामिनि-देशेन सभोक्तव्यमित्यर्थः, ‘ परस्स ’ परस्य तथा ‘ ज च ’ यच्च ‘ सुकय ’ सुकृत=पुण्यादिक ‘ नासेइ ’ नाशयति, अपह्नुते, येन वचनादिना परकृतपुण्यादेरपह्नुति-र्भवति, तद् वर्जितव्यमित्यर्थः, तथा—‘ दाणस्स य ’ दानस्य च ‘ अतराइय ’ अन्तरायिकम्=येन वचनादिना दानान्तर्गतो भवेत्तद् वर्जनीयम्, तथा—‘ दाण-विप्पणासो ’ दानविप्पणाशः=येन वचनादिना दानस्य विनाशो भवति, तद् वर्जनीयम्, तथा—‘ पेसुन्न चेव ’ पैशुन्य=परोक्षे परदोषाविष्करण ‘ चुगली ’ इति भाषा प्रमिद्ध चेव ‘ मत्तुत्ति च ’ मात्सर्यम्=ईर्ष्या च वर्जनीयम् ॥ सू० २ ॥

घातें भी साधु को उड़ देने चाहिये । तथा—(परवचणसेण ज च गेण्हति) बाल ग्लान आदि के निमित्त से जो अशन आदि वैयावृत्यकारक साधु लाया होवे वह दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में नहीं लेना चाहिये । तात्पर्य इसका यह है कि बाल ग्लान आदि अवस्थापन्न साधुजन के लिये जो वस्तु लाई गई हो वह उनके उपयोग से यदि बच जाय तो वह उस वस्तु के स्वामी की आज्ञा लेकर ही दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में लानी चाहिये । तथा (परस्म ज च सुकय) जिस वचन से दूसरे के सुकृत आदि पुण्यकर्मा का अपह्नुव होता हो ऐसा वचन साधु को त्याग कर देना चाहिये । तथा (दाणस्स अतराइय) जिस वचन से दान में अतराय हो जावे तो ऐसा वचन भी नहीं कहना चाहिये । तथा (दाणविप्पणासो) जिस वचन से दान का विनाश होता हो ऐसा वचन भी नहीं बोलना चाहिये । तथा (पेसुण्ण) साधु को

लोभ्ये तथा “ परवचणसेण ज च गेण्हति ” बालग्लान आदिने निमित्ते जे आहार आदि वैयावृत्यकारक साधु लाव्या होय ते भील साधुओओ पोताना उपयोगमा लेवो लोभ्ये नही तेनु तात्पर्य ओ छे के बाल ग्लान आदि अवस्थापन्न साधुजनने भाटे जे वस्तु लाववामा आवी होय ते तेओओ वापर्या पछी ववे तो ते वस्तुना भालिउनी आज्ञा लधने ज भील साधुओओ तेने पोताना उपयोगमा लेवी लोभ्ये तथा “ परस्स ज च सुकय ” जे वचनोथी भीलना सुकृत आदि पुन्य-भेनिना ना यतो होय तेवा वचनो साधुओ ओलवा लोभ्ये नही, ओटले उ तेवा वचनो ओलवानु साधुओ प ध करवु लओओ तथा “ दाणस्स अतराइय ” जे वचनथी दानमा अतराक नडे ओवा वचनो पणु उडेवा लोभ्ये नही तथा “ दाणविप्पणासो ” जे वचनोथी दाननो विनाश यतो होय ते वचनो पणु ओलवा लोभ्ये नही तथा “ पेसु

કીદશો મુનિરિદ વ્રત નારાધયતી ? ત્યાદ—‘ જે વિ ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—જે વિ ય પીઠફલગસેનામંથારગવ્રતથપાયકંવલ
દડગરયહરણનિસેજ ચોલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાય પુંઝનાઈ ભાયણ
મહોવહિઉવગરણં અસવિભાગી અસગહરુડં, તત્તેણે ચ વડતેણે
ચ રૂવતેણે ચ આચારતેણે ચ ભાવતેણે ચ સદકરે ઝંઝકરે
કલહકરે વેરકરે વિકહવરે અસમાહિકરે તયા અપ્પમાણમોઈ
સયય અણુવહ્વેરે ચ નિચ્ચરોસી સે તારિસણ નારાહણ
વયમિણ ॥ સૂ૦ ૩ ॥

ટીકા—‘ જે વિ ય ’ યોડપિ ચ મુનિઃ ‘ પીઠફલગનેજ્ઞાસથારગવ્રતથપાય-
કંવલચોલપટ્ટગરયહરણમુહપોત્તિયપાયપૂઝનાઈભાયણમહોવહિઉવગરણ ’ પીઠ-
ફલકશય્યાસસ્તારકવસ્ત્રપાત્રકમલચોલપટ્ટરજોહરણમૂલવસ્ત્રિકાપાદપ્રોઝનાદિ-
ભાજનમાણ્ડોપધ્યુપકરણમ્=વપ્પનાગુણવેશુદ્ધિલઘ્વ પીઠફલકાદિક લઘ્વેતિ
ગમ્યતે, તસ્ય અસવિભાગી=અવિભાગકારી-આચાર્યગ્લાનાદિભ્ય પીઠફલકાદીન્
અવિભજ્યૈવ સ્વાર્થગુદ્ધયા સ્વપ્પમુરમોક્તા ભવતિ સ ઇદ વ્રત નારાધયતીત્યગ્રેણ

કિસીકી યુગલી નહીં કરના ચારિયે । તથા (મચ્છરિય) સાધુ કો ઇર્ષ્યા-
ભાવ કા ભી પરિત્યાગ કર દેના ચારિયે ॥ સૂ-૨ ॥

કિસ પ્રકાર કા મુનિ હસ વ્રત કી આરાધના નહીં કર સકતા હૈ
હસ વ્રત કો કહતે હૈ—‘ જે વિ ય ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(જે વિ ય) જો મુનિ વપ્પનાગુણ કી વિશુદ્ધિ સે
પ્રાપ્ત પીઠ, ફલક, શય્યા, સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાત્ર, કમલ, દડ, રજોહરણ,
નિષદ્યા, ચોલપટ્ટક, સદોરકમુલવસ્ત્રિકા, પાદપ્રોઝન આદિ, તથા
ભાજન, માણ્ડ, ઉપધિ, ઇન સર્વ ઉપકરણોં કો પ્રાપ્ત કરકે ઉનકા વિભાગ

ણ ” સાધુએ કોઈની યાદી કરવી જોઈએ નહીં તથા “મચ્છરિય ” સાધુએ
ઈર્ષ્યાભાવનો પણ પરિત્યાગ કરવો જોઈએ ॥ સૂ-૨ ॥

કેવા મુનિ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતા નથી તે વાત હવે સૂત્ર
કાર કહે છે—“ જે વિ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“જે વિ ય” જે મુનિ એવજ્ઞા ગુણની વિશુદ્ધિથી પ્રાપ્ત થયેલ પીઠ ફલક,
શય્યા સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાત્ર, કમલ, દડ રજોહરણ, નિષદ્યા, ચોલપટ્ટ, દોરા
સહિતની મુહપત્તિ, પાદપ્રોઝન આદિ તથા ભાજન, માણ્ડ, ઉપધિ એ બધા

સમ્બન્ધઃ । તથા-‘અસગદ્દર્શ’ અસંગદ્દર્શિઃ-ન સગ્રહે રુચિર્યસ્ય સ તથોક્તઃ-
ગચ્છોપગ્રહકરસ્ય ઇપ્પણાદોપરહિતસ્ય લભ્યમાનસ્ય વસ્ત્રપાતાદિકસ્ય સ્વાર્થ-
પરાયણત્વેન-‘મમ પ્રચુર વસ્ત્રપાતાદિક વિધતે કિમન્યેષા ચિન્તયા’ ઇતિ વિ-
ચિન્ત્ય સગ્રહબુદ્ધિર્જિત इत्यर्थः । અત્ર મૂર્છયા સગ્રહકરણ નિપિઢમ્ । તથા ‘તવ-
તેણે’ તપઃ સ્તેનઃ=તપશ્ચૌરઃ-યથા સ્વમાત્રતઃ કૃશશરીરકશ્ચિદનગાર દષ્ટ્વા
કથિત્પૂચ્છતિ-‘ભો મુને ! યો માસક્ષપણકો મુનિઃ શ્રૂયતે સ મયાનેવ’ તદા સ
સ્વમાનાઘર્થમાહ-‘સાધવઃ ક્ષપકા એવ મયન્તિ’ અયમ તૂળીમાસ્તે, સ તપઃ-

નહીં કરતા હૈ-અર્થાત્ આચાર્ય, ગ્લાન આદિ મુનિજનોં કો ઇન પીઠ,
ફલક આદિ કા વિભાગ ન કરકે સ્વાર્થબુદ્ધિ સે જો સ્વયં ઇનકા ઉપ-
ભોક્તા હોતા હૈ, વહ સાધુ ઇમ વ્રત કી આરતના નહીં કર સકતા હૈ ।
તથા (અસગદ્દર્શ) જિસકી સગ્રહ મેં રુચિ નહીં હોતી હૈ, અર્થાત્ જો
સાધુ સ્વાર્થ મેં પરાયણ હોને કે કારણ ઇન પીઠ ફલક, વસ્ત્ર, પાત્ર
આદિ ઉપકરણોં કો કિ જો અપને ગચ્છ કે ઉપકારક ઓર ઇપ્પણાદોપ
સે વિશુદ્ધ હૈ મિલતે હુગ મી ઠસ ભાવના સે કિ મેરે પામ તો યે વસ્ત્ર
પાત્રાદિ ઉપકરણ હૈ મુજે દૂસરો કી ચિન્તા સે કયા કામ હૈ ” ઇસ
વિચાર સે સગ્રહ કરને કી બુદ્ધિ સે વર્જિત હોતા હૈ વહ સાધુ ઇસ વ્રત
કા આરાધક નહીં હો સકતા હૈ । મૂર્છા ભાવ સે હી સગ્રહ કરને કા
નિષેધ હૈ । તથા જો સાધુ (તવતેણે ય) ઇસી તરહ જો તપઃ સ્તેન હૈ,
અર્થાત્ જૈસે કોઈ સાધુ સ્વમાત્રતઃ કૃશ શરીર હો ઓર કોઈ દૂસરા ઇસ
પ્રકાર પૂછે કિ હે મુને ! જો માસ ક્ષપણ આદિ કરને વાલે તપસ્વી મુનિ-

ઉપદરણોને પ્રાપ્ત કરીને તેના વિભાગ કરતા નથી એટલે કે આચાર્ય, ગ્લાન
આદિ મુનિજનોને માટે એ પીઠ, ફલક આદિના વિભાગ થયા વિના સ્વાર્થ
બુદ્ધિથી પોતે જ તેનો ઉપભોગ કર્યા કરે છે, તે સાધુ આ વ્રતની આરાધના
કરી શકતો નથી તથા ‘અસગદ્દર્શ’ જેની અગ્રહમા રુચિ હોતી નથી,
એટલે કે જે સાધુ સ્વાર્થ પરાયણ હોવાથી એ વસ્ત્ર, ફલક, પાત્ર, વસ્ત્ર, આદિ
ઉપદરણો, કે જે પોતાના ગચ્છના ઉપકારક અને ઇપ્પણાદોપથી રહિત છે
તેની પ્રાપ્તિ થવા છતાં પણ “મારી પામે તો આ વસ્ત્ર પાત્રાદિ ઉપદરણ છે
મારે બીજાની ચિન્તા શા માટે કરવી જોઈએ ?” એવી ભાવનાથી અગ્રહ
કરવાની બુદ્ધિથી રહિત થઈ જાય છે, તેવો સાધુ પણ આ વ્રતનો આરાધક
થઈ શકતો નથી મૂર્છાભાવથી જ અગ્રહ કરવાનો નિષેધ છે તથા જે સાધુ
“તવતેણેય” એ જ રીતે તપશ્ચૌર છે, કાબલા તરીકે કોઈ સાધુ સ્વાભાવિક
રીતે જ હુણા શરીર વાળો હોય અને તેને જોઈને બીજા કોઈ એમ પૂછે
કે-“હે મુનિ ! માસખમણ આદિ કરનાર મુનિજન વિષે સાલળવામા આવ્યું

સ્તેનઃ પ્રાચ્યતે, 'વહતેણે' ત્રય સ્તેનઃ=ચાર્ચોરઃ-યવા-કરિત્ વ્યાખ્યાવાર સાધુમવલોક્ય કથિત્ પુચ્છતિ—'વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ ર્ય શ્રુતઃ સ ભવાતેવ' इति पृष्टः स हूते—'मुनयस्तादृशा भवन्त्येव' यद्वा मौनमास्ते, इत्येव यः परस्य ख्यातिं स्वात्मनि स्थापयति स वाचस्तेनः, 'रुवतेणे य' रूपस्तेनश्च=एतद्विषयेऽपि पूर्वप्रयोजना कर्तव्या । तथा 'आयारे चैव' आयारे=साधुममावायादि

રાજ સુને જાતે હું વે આપ હી હું ત્યા ? હસ પ્રકાર સુનકર વહ અપને માન કે નિમિત્ત પેમા કહે કિ સાધુ તો તપસ્વી હી હોતે હું, અથવા સુનકર ચુપ રહે, હમ પ્રકાર સે વર્તન કરને ચાલા વા મુનિ તપચૌર- (તપ કા ચોર) કહા જાતો હે । (તપ કા ચોર) તપચૌર-મુનિ હસ વ્રત કી આરાધના કરનેચાલા નહીં હોતા હું । હસી તરહ (વહતેણે) વ્યાખ્યાન કરતે છુદ કિમી મુનિરાજ કો દેખકર કોઈ ઉમસે હસ પ્રકાર પૂછે કિ જો વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ મુનિરાજ સુને જાતે હું વે આપ હી હું ત્યા ? હસ પ્રકાર સુનકર વહ મુનિરાજ ઉસકે સમાધાન નિમિત્ત ઘહ કહ દે કિ મહાતુભાવ ! મુનિજન તો વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ હી હોતે હું, અથવા કુઝ ન કહ કર ચુપ રહે હસ પ્રકાર કા વ્યવહાર કરનેસે વહ મુનિ વચન કા ચોર વચસ્તેન માના જાતા હે, ત્યો કિ ઉસને પર કી રૂપાતિકો અપનેમ્ સ્થાપિત કિયા હે, હસ તરહસે પદ કિ રૂપાતિકો અપનેમ્ સ્થાપિત કરને ચાલા સાધુ વાકુ ચૌર કહા જાતા હે । હસી તરહ (રુવતેણે) રૂપસ્તેન કી મી વ્યાખ્યા જાન લેની ચાહિયે, અર્થાત્-વિશિષ્ટ રૂપ

છે તે શુ આપ જ છે ?” આ પ્રકારનો પ્રશ્ન સાલજીને તે પોતાના માનને માટે એવુ કહે કે “સાધુ તો તપસ્વી હોય જ છે” અથવા તે વાત સાલજીને મૌન રહે, એ પ્રકારનુ વર્તન કરનાર મુનિને તપચૌર કહે છે તપચૌર મુનિ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ રીતે “વહતેણે” વ્યાખ્યાન કરતા કોઈ મુનિરાજને બેધને કોઈ તેમને આ પ્રમાણે પૂછે કે વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જે મુનિરાજ ગણાય છે તે શુ આપ જ છે ? આ પ્રમાણે સાલજીના તેના સમાધાનને માટે એમ કહે છે કે “હે મહાતુભાવ ! મુનિજન તો વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જ હોય છે” અથવા તેને કઈ પણ જવાબ ન આપતા ચૂપ રહે, એવા પ્રકારના મુનિને વચસ્તેન-વચનચૌર કહેવાય છે, કારણ કે તેણે બીજાની ખ્યાતિનુ પોતાનામા આરોપણ કર્યું છે- આ રીતે પારકાની ખ્યાતિનુ પોતાનામા આરોપણ કરનાર સાધુને વચનચૌર કહેવાય છે, એ જ પ્રમાણે “રુવતેણે” રૂપસ્તેન-રૂપચૌરની વ્યાખ્યા પણ સમજવી એટલે કે વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત કોઈ સાધુની ખ્યાતિ સાલજીને કોઈ

વિષયે સ્તેનઃ=ચૌર.,યથા=સ યઃ ‘ ઉત્કૃષ્ટાચારવાન્ સાધુઃ શ્રૂયતે, સ ભવાનેવ ?’ તદા વક્તિ ‘ સાધુસ્તુ-ઉત્કૃષ્ટાચારવાન્ ભવન્ત્યેવ ’ મૌન યા સમાલમ્બતે इत्येव स्वात्मनि अविद्यमाना मुत्कृष्टाचारवता स्थापयन्साधुराचारस्तेनो भवति, तथा- ‘ भावतेणे य ’ भावस्तेनश्च=भावस्य=श्रुतज्ञानादि विशेषस्य स्तेनः=चौरो भाव-

સપન્ન કિસી સાધુ કી રૂયાતિ સુનકર કોઈ રૂપવાન્ મુનિ સે એસા પૂછે કિ મહારાજ ! જિનકી રૂપ મેં રૂયાતિ હમ સુન રહે હૈં વે આપ હી હૈ કયા ? તો હસ પ્રકાર કી ઘાત સુનકર વહ એસા કહે કિ સાધુજન તો વિશિષ્ટરૂપ શાલી હોતે હી હૈં, અથવા કુછ ન કહે-ચુપચાપ રહ જાવે, તો “ મૌન સમ્મતિલક્ષણ ” કે હિસાબ સે પર કે વિશિષ્ટ રૂપશાલિત્વ કા અપને મેં આરોપ કરને કી ભાવના સે વહ રૂપસ્તેન કહલાવેગા । હમ તરહ જો સાધુ રૂપસ્તેન હોતા હૈ વહ હસ વ્રત કો નહીં પાલ સકતા હૈ । ડસી તરહ (આચારતેણે) જો સાધુ સમાચારી આદિકે વિષયમેં સ્તેન હોતા હૈ વહ આચારસ્તેન કહા જાતા હૈ, જૈસે કિસી સાધુકી આચાર વિષય મેં ઉત્કૃષ્ટ રૂયાતિ સુનકર દૂમરા કોઈ એસા પૂછે કિ મો મુને ! જિન સાધુ-રાજકી આચાર મેં વિશેષ રૂયાતિ સુની જાતી હૈ કયા વે આપહી હૈ ?, હસ પ્રકાર સુનકર વહ સાધુ પ્રત્યુત્તર રૂપ મેં એસા કહે કિ મહાનુભાવ ! સાધુ તો ઉત્કૃષ્ટ આચાર વાલે હોતે હી હૈં, હસ પ્રકાર કહને વાલા સાધુ આચારસ્તેન કહલાતા હૈ, ક્યોં કિ હસ તરહ કી સ્થિતિ સે ડસને

માણસ ડોઈ રૂપવાન મુનિને એવુ પૂછે કે “ મહારાજ ! અમે ડપને વિષે જેની ખ્યાતિ સાલજી છે તે મુનિ શુ આપ જ છો ? ” આ પ્રકારની વાત સાલજીને તે એવુ કહે છે કે સાધુજન તો વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત હોય જ છે ” અથવા કંઈ પણ જવાબ ન આપે તો “ મૌનને સમતિનુ લક્ષણ ’ માનીને ખીબના વિશિષ્ટ રૂપનુ પોતાની અદર આરોપણ કરવાની ભાવનાથી તે રૂપચોર કહેવાય છે આ રીતે જે સાધુ રૂપચોર હોય છે તે આ વ્રતને પાળી શકતો નથી આ રીતે “ આચારતેણે ” જે સાધુ સમાચારી આદિ બાબતમા ચોર હોય છે તે આચાર ચોર કહેવાય છે જેમ કે ડોઈ સાધુની આચારની બાબતમા ઉત્કૃષ્ટ ખ્યાતિ સાલજીને ખીબ કોઈ વ્યક્તિ તેને એવુ પૂછે કે “ હુ મુનિ ! જે મુનિરાજની આચારમા ખાસ ખ્યાતિ સાલજાય છે, તે શુ આપ પોતે જ છો ? ” આ પ્રમાણે સાલજીને જે મુનિ એવો પ્રત્યુત્તર વાળે કે મહાનુભાવ ! સાધુઓ તો ઉત્કૃષ્ટ આચારવાળા જ હોય છે ” આમ કહેનાર સાધુને આચારચોર કહેવાય છે કારણ કે આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમા તેણે પોતાનામા જે

સ્તેનઃ, કસ્યાપિ શ્રુતવિશેષસ્યાર્પ્ય વ્યાખ્યાન કસ્યાપિ મુખ્યાદુપશ્રુત્ય જનસમક્ષે
સ્વક્રીયત્વેન ત ચ્યાપયત સાધુર્ભવિસ્તેન ઉચ્યતે । તથા યઃ સાધુ ' સદ્કરે '
શબ્દકરઃ=પ્રહરરાત્રિગમનાનન્તર યો મદતા મદતા શબ્દેન માપતે સ શબ્દકર
ઉચ્યતે । ' દ્વક્ષકરે ' દ્વક્ષાકરઃ=યેન કાર્યેણ ગણસ્ય મદો મયતિ તત્કાર્યકારી
' કલહકરે ' કલહકરઃ=વાચિકમખ્ડનકારી ' વૈરકરે ' વૈરકર=પરસ્પરશત્રુભાવો
ત્પાદક , તથા-' વિકલ્પકરે ' વિકલ્પાકરઃ=સ્ત્યાદિકથાકારી, ' અસમાધિકારકો '
અસમાધિકારકઃ=સ્વપરચિત્તોદ્વેગકારકઃ, તથા-' સયા ' સદા ' અપ્પમાણમોર્ષઃ'

અપને મેં અવિધમાન ઉત્કૃષ્ટ આચારવત્તા સ્થાપિત કી હૈ અતઃ જો
એસે આચારસ્તેન હોતે હૈ અનેસે હસ મહાવ્રત કી આરાધના નહીં હો
સક્તી હૈ, (ભાવતેણે) જો શ્રુતજ્ઞાન આદિ માત્ર કી ચોરી કરતા હૈ વહ
ભાવસ્તેન કરલાતા હૈ, જૈસે કિસી કે મુલ્લ સે કિસી સાધુ કા શ્રુત
વિશેષસંબધી અપૂર્વ વ્યાખ્યાન સુનકર કહતા હૈ કિ યહ વ્યાખ્યાન તો
મેરા હી દિયા હુઆ હૈ, હસ પ્રકાર કા માત્રસ્તેન સાધુ બી હસ મહા-
વ્રતકી આરાધના નહીં કર સક્તા હૈ । હસી તરહ (સદ્કરે) જો સાધુ એક
પ્રહર રાત્રિ કે ચલે જાને કે વાદ ઘડે જોર ૨ સે ચોલના હૈં ઉસકા નામ
શબ્દકર હૈ । (દ્વક્ષકરે) જિસ કાર્ય સે ગણ મેં ભેદ હો જાય ઉસ
કામ કો કરને વાલા સાધુ દ્વક્ષાકર હૈ । (કલહકરે) આપસ મેં જો
વાક્કલહ કર થૈઠતા હૈ ઉસકા નામ કલહકર હૈ, (વૈરકરે) પરસ્પર મેં
જો શત્રુતા કા ઉત્પાદક હોતા હૈ ઘર વૈરકર હૈ, (વિકલ્પકરે) સ્ત્રી
આદિ વિકથાઓં કો કરનેવાલા સાધુ વિકલ્પાકર હૈ, (અસમાધિકરે)

અવિધમાન છે તે ઉત્કૃષ્ટ આચારવત્તાનુ આરોપણ કર્યું છે તેથી જે સાધુઓ
એવા આચાર ચોર હોય છે તેમનાથી આ મહાવ્રતની આરાધના થઈ શકતી
નથી “ભાવતેણે” જે શ્રુતજ્ઞાન આદિ ભાવની ચોરી કરે છે તે ભાવચોર કહેવાય
છે જેમ કે કોઈના મોઢે કોઈ સાધુનું કોઈ શાસ્ત્ર સંબધી અપૂર્વ વ્યાખ્યાન સાંભળીને
જે સાધુ એમકહે કે આ વ્યાખ્યાન તો મેં જ આપેલું છે ” આ પ્રકારનો ભાવચોર
સાધુ પણ આનંદની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ પ્રમાણે “સદ્કરે” શબ્દકર-
જે સાધુ એક પ્રહર રાત્રિ પ્રસાર થયા પછી ઘણા બેરથી બોલે છે તેને શબ્દકર
કહે છે, “દ્વક્ષકરે” જે કાર્યથી સમૂહમાં ભેદભાવ થાય તે કાર્ય કરનાર સાધુ
અઝકર કહેવાય છે, “કલહકરે” આપસમાં જે વાકકલહ કરી બેસે છે તેને
કલહકર કહે છે, “વૈરકરે” આપસમાં જે વેર પેદા કરાવનાર હોય તે વેર
કર કહે છે, “વિકલ્પકરે” સ્ત્રી આદિ વિકથાઓ કરનાર સાધુને વિકલ્પાકર કહે

અપ્રમાણભોજી=દ્વાનિશત્કવલાધિકાદારી, 'સયય' સતત=નિરન્તરમ્ 'અણુવદ્ધ-
વૈરે' અણુવદ્ધવૈર=અવ્યાચ્છિન્નવૈરભાવ, ચ=પુનઃ 'નિચ્ચરોસી' નીત્યરોપી=
સદાકોપણીલઃ, 'સે તારિસણ' સ તાદૃશઃ સાધુઃ 'નારાહણ' નારાધયતિ 'ઈણ'
ઇદમ્=પૂર્વોક્ત, યતગ્=તદ્ગત્તાદાનવિરતિસ્વરૂપમ્ ॥ સૂ. ૩ ॥

ક પુનરિદ વ્રતમારાધયિતુ સમર્થઃ ? इत्याह—'अह केरिसण' इत्यादि-

મૂલમ્—અહ કેરિસણ પુનાઈ આરાહણ વયામિણં ? જે સે
ઉવહિ ભત્તપાણસગહણદાણકુસલે અચ્ચંત વાલ દુવ્વલ
ગિલાણ બુદ્ધુલ્લવગપવત્તયઆયરિય ઉવજ્ઞાણ સેહે સાહમ્મિણ
તવસિસકુલગણસઘે ય ચેદ્ધયદ્ધે નિજ્જરઠ્ઠી વેયાવચ્ચ અણિ-
સિસય દસવિહ વહુવિહં કરેહ, નય અવિયત્તસ્સ ઘરં પવિ-
સહ, ન ય અચિયત્તસ્સ ભત્તપાણ ગિણહહ, ન ય અચિયત્તસ્સ
સેવહ પાઠિફલગ--સેજ્જા- સથારગ- વત્થપાય-કલ્લ--દડગર-
ઓહરણ-નિસજ્જન્નેલપદ્ધગમુહપોત્તિયપાયપુલ્લણાહ -- ભાયણ

अपने और पर के चित्त में उद्वेगभाव पैदा कर देने वाला साधु अस-
माधिकारक है, (सया अप्पमाणभोई) सदा यत्तीसग्रास से अधिक
भोजन करने वाला साधु अप्रमाणभोजी कहलाता है (सयय अणुवद्व-
वैरे य) जिसका वैर भाव कभी भी शान्त न हो वह साधु सततानु-
वद्व वैर कहलाता है, (निचचरोसी) जो नित्य ही कुपित स्थिति में
रहता है वह नित्यरोपी कहलाता है । (से तारिसण) इस प्रकार तप-
स्तेन आदि विशेषणवाला साधु (इण वयनाराहण) इस महाव्रत की
आराधना नहीं कर सकता है ॥ ३ ॥

છે, “અસમાધિકરે” પોતાના તથા અન્યના ચિત્તમા ઉદ્વેગ પેદા કરનાર સાધુને
અસમાધિકારક કહે છે, “સયા અપ્પમાણભોઈ” સદા બત્તીસ કોળિયા કરતા
વધારે આહાર લેનાર સાધુને અપ્રમાણ ભોજી કહે છે, “સયય અણુવદ્ધવૈરેય”
જેની વૈર ભાવના કદી પણ શાન્ત ન થાય તે સાધુને સતતાનુવદ્ધ વૈર કહે-
વાય છે, “નિચ્ચરોસી” જે હંમેશા ક્રોધમા જ રહે છે તેને નિત્યરોપી કહે
છે, “સે તારિસણ” આ રીતે તપચોર આદિ વિશેષણો વાળો સાધુ “ઈણવય
નારાહણ” આ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી ॥ ૩ ॥

અંડોવહિઉવગરણ, નય પરિવાય પરસ્ત જંપઢ, ન ચાવિ ડોસે
પરસ્ત ગેળહઢ, પર વવણસેળ વિ ન કિર્ચિ ગેળહઢ, ણ ય વિ
પરિમાણઢ કંચિજળ, ણ ચાવિ ણાસેઢ દિષ્ણસુનય, ડાઊળ
ય કાઊળ ય ણ હોઢ, પચ્છાતાવિણ, સવિભાગ-મીલે, સગહો
વગ્ગહકુસલે, સે તારિસણ આરાહેઢ વયમિણં ॥ સૂ.૪ ॥

ટીકા—‘ અહ ’ અવેતિ પ્રશ્ને, ‘ કેરિણ ’ કીદ્દા: સાધુ: ‘ પુણાહ ’
‘ વયમિણ ’ તતમિદમ્=અદત્તાદાનવિરમણરૂપમિદ તતમ્, ‘ આરાહણ ’ આરાધ
યતિ ? इति પ્રશ્ને સતિ પ્રાહ—‘ જે સે ’ ય:સ: ‘ ઉવહિભત્તપાણસગહણદાણકુસલે ’
ઉપધિભક્તપાનસગ્રહણદાનકુશલ:==તત્ર ઉપધિ.=ચત્રપાત્રાદિ:, ભક્તપાને પ્રમિદે તેષા
સગ્રહણે=આદાને સાધર્મિકે-યો દાને ચ કુશલો વિધિજ્ઞો મુનિ: । ‘ અન્નતલાલ
દુબ્બલગિલાળબુદ્ધુ સ્વગવવત્તય આયરિય ઉવજ્જાણ સેહે સાહમ્મિણ તવસ્સિ કુલ
ગણ સધે ય ’ અત્યન્ત તાલદુર્બલગાનગૃહ્ણમામક્ષપકપ્રવર્તતાચાર્યોપાન્યાયે શેક્ષે-

અય સૂત્રકાર હસ મહાવ્રત કી આરાધના કરને કે લિયે કેસા
સાધુ સમર્થ હો સકતા હૈ ? યહ કહતે હૈ—‘ અહ કેરિસણ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ (અહ કેરિસણ પુણાઈ વયમિણ આરાહણ ?) કેસા સાધુ
હમ અદત્તાદાનવિરમણરૂપ મહાવ્રત કી આરાધના કર સકતા હૈ ? હમકે
ઉત્તર મેં કહતે હૈ (જે સે) જો સાધુ (ઉવહિભત્તપાણ સગહણદાણ
કુસલે) ઉપધિ ચત્ર પાત્ર આદિ, એવ ભક્તપાન, હનકો અપને સાધર્મિક
સાધુઓં કે લિયે લેને મેં ઓર ઉન્હેં હન વસ્તુઓં કે દેને મેં કુશલ-
વિધિજ્ઞ-હોતા હૈ, તથા (અન્નતલાલદુબ્બલગિલાળબુદ્ધુસ્વગવવત્તય
આયરિયઉવજ્જાણ) જો મત્ર મેં અ યત ઘાલ હૈ—આઠ વર્ષ કે

હવે આ મહાવ્રતની આરાધના કરવાને માટે કેવો સાધુ સમર્થ હોઈ
શકે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે “ અહ કેરિસણ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ અહ કેરિસણ પુણાઈવયમિણ આરાહણ ? ” કેવો સાધુ આ અદત્તાદાન
વિરમણરૂપ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકે છે ? તેના જવાબમાં સૂત્રકાર કહે
છે—“ જે સે ” જે સાધુ “ ઉવહિભત્તપાણસગહણદાણકુસલે ” ઉપધિ, વસ્ત્ર,
પાત્ર આદિ અને આહાર પાણી, પોતાના સાધર્મિક સાધુઓને માટે લેવામાં
અને નેમને તે વસ્તુઓ દેવામાં કુશળ-વિધિજ્ઞ-હોય છે, તથા “ અન્નતલાલ
દુબ્બલગિલાળબુદ્ધુસ્વગવવત્તયઆયરિયઉવજ્જાણ ” જે જે સધમાં અત્યંત
બાળ છે—આઠ વર્ષના બાળ સાધુ છે, તથા જે દુર્બલ છે—કમજોર હોવાથી

સાધર્મિકે તપસ્વિકુઠગણસદ્ધે, તત્ર અન્યન્ત્રાલઃ=ચપ્તપીયોગાલઃ, અત્યન્ત
 દુર્બલઃ=કુશાગ્રત્વેન સ્વકાર્યરરણાક્ષમઃ, 'ગિઝાન' ગ્ઝાન=વ્યાયાદિના મિક્ષા
 ટનાદાવસમર્થ, 'વુદ્ધ' વૃદ્ધઃ=સ્થવિર જ્ઞાનવૃદ્ધઃ, પર્યાયવૃદ્ધ, વયોવૃદ્ધશ્ચ, 'સ્વગ'
 ક્ષપકઃ=માસક્ષપણાનુગ્રનપ.જારિત્વેન પ્રવચનપ્રભાવકઃ, 'પવત્તય' પ્રવર્તકઃ-
 પ્રશસ્તયોગેષુ યથાગોગ્યતયા સાધુન્ પ્રવર્તયતીતિ પ્રવર્તક, આચાર્યઃ=ગણનેતા-
 યો ઠિ શાન્દાનુસારેણ સ્વયમાચરતિ, અન્યાશ્ચાચારયતિ સ આચાર્ય, તદુક્તમ્-

“આચિનોતિ ચ ગાસ્ત્રાણિ, આચાર ગ્રાહયત્યપિ ।

સ્વયમાચરતે યસ્માત્તસ્માદાચાર્યુચ્યતે ” ઇતિ ।

ઉપાધ્યાય'-ઉપ-સમીપે આગતાન્=શિષ્યાન્ સૂત્રાર્ધમધ્યાપયતિ યઃ સ
 ઉપાધ્યાય', એતેશ સમાહારવૃન્દઃ, તસ્મિન્. તથોક્તે, તયા 'સેહે' શૈક્ષે=નવ-
 દીક્ષિતે સાધુ, તયા-'સાહમ્મિ' સાધર્મિકે=શ્રુતલિઙ્ગપ્રવચનૈઃ સમાનશ્રદ્ધાવાન્
 વાલક સાધુ હૈં તયા જો દુર્બલ હૈં-કમ જોર હોને સે જો અપને કાર્ય
 કરને મેં અક્ષમ હૈ, જો ગ્ઝાન હૈં-વ્યાધિ આદિ કે નિમિત્ત કો ઢેકર જો
 મિક્ષાવૃત્તિ આદિ કરને મેં અસમર્થ હૈં, જો વૃદ્ધ હૈં-સ્થવિર-જરા સે
 જર્જરિત શરીર વાલે હ જ્ઞાન કી અપેક્ષા દીક્ષાપર્યાય કી અપેક્ષા ઓર
 આયુ કી અપેક્ષા જો વૃદ્ધ-ઘડે હૈં, જો ક્ષપક હૈં માસક્ષપક આદિ ઉગ્ર
 તપસ્યા કરનેવાલે હૈં, જો પ્રવર્તક હૈં-પ્રશસ્ત-યોગોમેં સાધુજનો કો
 ડનકી યોગ્યતા કે અનુસાર પ્રવૃત્તિ કરાને વાલે હૈં,-જો આચાર્ય હૈં-
 ગણ કે નેતા હૈં-અર્થાત્-સાધુ સઘવી આચાર કો જો સ્વય પાલતે હૈં,
 ઓર દસરે સાધુઓ સે પાલતે હૈં, જો ઉપાધ્યાય હૈં-અપને પાસમેં આવે
 હુણ સાધુઓ કો-શિષ્યજનો કો જો સૂત્ર પઢાતે હૈં, જો (સે હૈં)
 શિષ્ય હૈં-નવ દીક્ષિત સાધુજન હૈં, જો (સાહમ્મિ) સાધર્મિક હૈં-શ્રુત
 લિઙ્ગ ઓર પ્રવચન-પ્રરૂપણા ડનકો ઢેકર જિનકીશ્રદ્ધા સમાન હૈં જો

જે પોતાના કામ કરવાને અસમર્થ છે, જે ગ્ઝાન છે વ્યાધિ આદિ ને કારણે
 જે મિક્ષાવૃત્તિ આદિ કરવાને અસમર્થ છે, જે વૃદ્ધ છે-સ્થવિર-જરાને કારણે
 જર્જરિત શરીરવાળા છે, જ્ઞાનની અપેક્ષાએ, દીક્ષા પર્યાયની અપેક્ષાએ અને
 આયુની અપેક્ષાએ જે વૃદ્ધ મોટા છે, જે ક્ષપક છે માસખનણુ આદિ ઉગ્ર
 તપસ્યા કરનાર છે, જે પ્રવર્તક છે-ગણ ત યોગોમા સાધુજનોને તેમની
 યોગ્યતા અનુસાર પ્રવૃત્તિ કરાવનાર છે, જે આચાર્ય છે-ગણના નેતા છે એટલે
 કે સાધુના આચારોને જે જાતે પાળે છે અને બીજા સાધુઓ પાસે પળાવે
 છે, જે ઉપાધ્યાય છે-પોતાની પાસે આવેલા સાધુઓ-શિષ્યજનોને જેઓ
 સૂત્રો ભણાવે છે, જે “સેહે” શિષ્યો છે-નવદીક્ષિત સાધુઓ છે, જે “સા-

સાધર્મિક ઉચ્યતે, તસ્મિન્. ત ગા-‘તવસ્મિ કુલગણસઘે ય’ તપસ્વિકુલગણસઘે ચ, તત્ર-તપસ્વી=વિકૃતિ વર્જક, ચતુર્થભક્તાદિકારી યા, કુલ્ = પરગુરુશિષ્ય-સમુદાયરૂપમ્, ગણ=કુલસમુદાય, સઘઃ=ગણગણાયમ્, એતેના સમાહારદ્વાર, તસ્મિન્સ્તથોક્તે ચ, અત્ર સર્વત્ર વિષયાર્થે સપ્તમી, તેન તત્તદ્વિષયક મિત્યર્થ, ‘ચેદ્યદ્વે’ ચૈત્યાર્થ-ચૈત્ય=જ્ઞાન ‘વિતીમજ્ઞાને’ इत्यस्मात् સપદાદિત્વાદ્ ભાવે કિપિ ‘ચિત્’ સજ્ઞાન સમ્યગ્જ્ઞાન, ચિદેત ચૈત્ય, સ્વાર્થ વ્યઙ્, તદ્વે અર્થઃ-પ્રયોજન યસ્ય સ તથોક્ત. સમ્યગ્ જ્ઞાનાભિ પ્રાપ્તિર્થઃ તથા-‘નિઝ્જરદ્વી’ નિર્જરાર્થો-

(તવસ્મિકુલગણસઘે ય) તપસ્વી છે-વિકૃતિ (વિગય) કે ત્યાગી છે અથવા ચતુર્થ ભક્ત આદિ તપસ્યાઓ કે કાને રાહે છે, તથા જો એક હી ગુરુ કે શિષ્યોં કા સમુદાય છે વત્ કુલ છે, કુલ કે સમુદાય કા નામ ગણ છે, ગણસમુદાય કો સઘ કહતે છે સો ઇન સઘકી (ચેદ્યદ્વે) સમ્યક્ જ્ઞાન કી પ્રાપ્તિ કા અભિલાષી તથા (નિઝ્જરદ્વી) કર્મોં કી નિર્જરા કા ઇચ્છુક મુનિ (અણિસ્મિય) ઇલ્લોક ઓર પરલોક સબધી આકાશ્વા રહિત હોકર (દસવિદ્) દશ પ્રકાર કી (બહુવિદ્) ભક્ત-પાન આદિ વિવિધ પ્રકાર સે (વેયાવચ્ચ કરેદ્) વૈયાવૃત્ત્ય કરતા છે-ઉનકી સહાયતા કરતા છે વત્ ઇસ મહોવ્રતકો પાલ સકના છે ।

યહા જો ‘ચેદ્યદ્વે’ પદ આયા છે ડસકી છાયા ‘ચૈત્યાર્થ’ એસી છે । સજ્ઞાનાર્થક ચિત્ ધાતુ સે “સપદાદિત્વાત્” ડસ સૂત્ર ડારા ભાવ મેં કિવપ્’ પ્રત્યય હોને પર ચિત્ એસા શબ્દ ઘન જાતા છે, ઇસ કા અર્થ સજ્ઞાન-સમ્યગ્જ્ઞાન-હોતા છે । ફિર સ્વાર્થ મેં ‘વ્યઙ્’ પ્રત્યય હોને પર

હમ્મિ” સાધર્મિક છે, જે “તવસ્મિ કુલગણસઘેય” તપસ્વી છે, વિકૃતિ-“વિગય” ના ત્યાગી છે, અથવા ચતુર્થભક્ત આદિ તપસ્યા કરનાર છે, તથા જે એક જે ગુરુનો શિષ્ય સમુદાય “કુલ” છે, કુલના સમુદાયને ગણ કહે છે, ગણના સમુદાયને સઘ કહે છે તો એ મીની “ચેદ્યદ્વે” સમ્યક્જ્ઞાનની પ્રાપ્તિના અભિલાષી તથા “નિઝ્જરદ્વી” કર્મોની નિર્જરા માટે ઉત્સુક મુનિ ‘અણિ સ્મિય’ આલોક અને પરલોક સબધી આકાશ્વા રહિત થઈને “દસવિદ્” દસ પ્રકારની “બહુવિદ્” આહાર પાણી આદિ વિવિધ પ્રકારે “વેયાવચ્ચ કરેદ્” વૈયાવૃત્ત્ય કરે છે-તેમની જે સાધુ સહાયતા કરે છે તે આ મહાવ્રત પાળી શકે છે અહીં જે “ચેદ્યદ્વે” પદ આવ્યું છે તેની છાયા “ચૈત્યાર્થ” છે સજ્ઞાનાર્થક ‘ચિત્’ ધાતુથી “કિવપ્” પ્રત્યય લાગતા ‘ચિત્’ એવો શબ્દ બની જાય છે, તેનો અર્થ સજ્ઞાન-સમ્યગ્ જ્ઞાન-ધાય છે છતાં સ્વાર્થમાં ‘વ્યઙ્’ પ્રત્યય લાગતા ચૈત્ય શબ્દ બિદ્ધ થઈ જાય છે તો ચિત્ જે ચૈત્ય છે એવો

ननु अत्यन्तमालदुर्भलादि सङ्खान्तानां चतुर्दशानां वेद्यादृत्त्यस्थानतया प्रथम-

शका—इस “अच्यतबाल” आदि पद में तो अत्यतबाल से

શકા—આ “અચ્ચત્રાલ” આદિ પદ્મા અત્યંત બાળથી લઈને સઘ

મુક્તત્વાદ્ દશવિધ વૈયાવૃત્યમિતિ કથન કથન વિરુદ્ધતે ? અત્રોચ્ય વૈયાવૃત્યસ્ય સ્થાન દશવિધ વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ (શ. ૨૫, ઉ. ૭) વ્યવહારસૂત્ર, ઉ. ૧૦) આગમેષુ સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ, તત્રૈવ તદ્વદિર્ભૂતાનામન્તર્માત્ર, તથાદિ-અત્યન્તવાદ દુર્બલયોગ્ધાનેસમાવેશઃ, તયોસ્તત્સંનિદિતત્વેનોક્તત્વાદ્ ભક્તપાનાનપનાદાયક્ષમત્ત્વેન તત્સાદૃશ્યાન્વ. ક્ષપક-પ્રવર્ત્તકયોરાનાયે સનિવેશ, તયોસ્તત્સંનિદિતત્વેનોક્તત્વાદ્ છેકર સઘ તક ધૌદદ વૈયાવૃત્ય કે સ્થાન હોતે હે અતઃ વૈયાવૃત્ય કે સ્થાન હોને સે વૈયાવૃત્ય મી ધૌદદ પ્રકાર કા હી હોના વાહિયે ફિર ઘહાં જો ડસમેં દશ વિવતા પ્રકટ કી હે સો યદ કથન પરસ્પર મેં કયા વિરુદ્ધ નહોં હે ? અવશ્ય વિરુદ્ધ હે ।

ઉત્તર—શોકા ઠીક હૈ, પરન્તુ વિચાર કરને પર હસકા સમાધાન અચ્છી તરહ સે હો જાતા હૈ—વૈયાવૃત્ય કે યે દશપ્રકાર કે હી સ્થાન વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ (શ. ૨૫ ઉ. ૭) વ્યવહારસૂત્ર (ઉ. ૧૦) આદિ આગમોં મેં સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ હૈ । હનમેં હી હનસે વદિર્ભૂત મેદોં કા અન્તર્ભાવ હો જાતા હૈ । જીસે જો સાધુ અત્યન્તઘાલ ણવ દુર્બલ હૈં હન દોનોં કા સમાવેશ ગ્લાન સાધુઓ મેં હો જાતા હૈં ત્યોં કિ યે ડન્હીં જીસે હોતે હૈં હસીલિયે ડનકા પાઠ ડનકે સાથ રખા હૈ । જિસ પ્રકાર ગ્લાન સાધુ ભક્તપાન આદિ કે લાને મેં અસમર્થ હોના હૈ ડસો પ્રકાર સે યે મી હૈં । હસ તરહ હનમેં પરસ્પર મેં મદ્દશતા આને સે ડન દોનોં કા સમાવેશ ગ્લાન મેં હો જાતા હૈ । હસી તરહ સે જો ક્ષપક ઓર પ્રવર્ત્તક હૈં ડનકા

સુધી વૈયાવૃત્યના ચૌદ સ્થાનો થાય છે, તો તે બધા વૈયાવૃત્યના સ્થાન હોવાથી વૈયાવૃત્ય પણ ચૌદ પ્રકારના થવા જોઈએ છતાં અહીં તેના દસ પ્રકાર બતાવ્યા છે તો તે કથન શું પરસ્પરમાં વિરોધાભાસ દર્શાવતું નથી ? અવશ્ય વિરોધાભાસ દર્શાવે છે

ઉત્તર—શબ્દ બરાબર છે પણ વિચાર કરતાં તેનું સારી રીતે સમાધાન થઈ જાય છે વૈયાવૃત્યના એ દશ પ્રકારના જ સ્થાન વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ (શ. ૨૫ ઉ-૭) વ્યવહારસૂત્ર (ઉ-૧૦) આદિ આગમોમાં સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે તેમનામાં જ તેમનાથી બાહ્ય લેદોનો સમાવેશ થઈ જાય છે જેમ કે જે સાધુ અત્યંત બાલ અને દુર્બલ છે તે બનેનો સમાવેશ ગ્લાન સાધુઓમાં થઈ જાય છે, કારણ કે તેઓ તેમના જેવા જ હોય છે તેથી તેમનો પાઠ તેમની સાથે રાખ્યો છે જેમ ગ્લાન સાધુ આહાર પાણી આદિ લાવવાને અસમર્થ હોય છે તેમ તેઓ પણ અસમર્થ છે એજ રીતે તેઓની વચ્ચે પરસ્પરમાં અમાનતા આવવાથી તે બનેનો સમાવેશ ‘ગ્લાન’ માં થઈ જાય છે, એ જ રીતે જે

પ્રવચનપ્રભાવકરત્વેન તત્સાદૃશ્યાન્વ । એવ ચવૈયાવૃત્ત્યસ્ય-આચાર્યાદિ સ્થાનભેદેન દશવિધત્વકથનમવિરુદ્ધમ્ ।

યતુ-‘ ચેદ્યદ્દે ’ ઇત્યસ્ય વ્યાખ્યાનમ્-“ ચૈત્યાનિ=જિનપ્રતિમા, એતાસાં યોડ્યઃ=પ્રયોજન યસ્ય સ તથા, તત્ર ” ઇતિ ટીકાન્તરે લભ્યતે તદ્બ્રાન્તિમૂલ-
પ્તમ્, વૈયાવૃત્ત્યસ્ય જિન પ્રતિમા પ્રતિ વિધાનાભાગાત્ । જિનપ્રતિમાયા અપિ વૈયા-
વૃત્ત્ય સ્વીકારે વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્ત્યાધ્યાગમેષુ વૈયા વૃત્ત્યસ્ય દશવિધત્વપ્રરૂપણ વિરુદ્ધ્યતે-
તદ્ગ્રહણેન વૈયાવૃત્ત્યસ્યૈકાદશસંખ્યાડિતિ પ્રસન્નાત્ ।

અન્તર્ભાવ આચાર્ય મેં કર દિયા જાતા હૈ । જિસ પ્રકાર આચાર્ય પ્રવચન
કે પ્રભાવક હોતે હૈ ઉસી પ્રકાર સે યે દોનો ભી હોતે હૈ, અતઃ ઉન્કે
જૈસે ઇન્હે પ્રભાવક હોને સે પરસ્પર મેં ઇનમે સદગતા આ જાતી હૈ
યહી વાત પ્રકટ કરને કે લિયે સૂત્રકાર ને ઇન દોનોં કા પાઠ આચાર્ય
કે પાસ રખા હૈ । ઇસ તરહ સે વિચાર કરને સે વૈયાવૃત્ત્ય કે સ્થાન દસ
હી પ્રકાર કે સિદ્ધ હોતે હૈ, ઇસલિયે ઇન્કે ભેદ સે વૈયાવૃત્ત્ય મેં દશ-
વિધત્વ કથન વિરુદ્ધ નહીં હૈ એસા જાનના ચાહિયે ।

તથા-જો “ ચેદ્યદ્દે ” ઇસ પદકા વ્યાખ્યાન-“ ચૈત્યાના અર્થઃ પ્રયો-
જનમ્ યસ્ય સઃ ચૈત્યાર્થઃ ” ચૈત્ય જિન પ્રતિમા હૈ પ્રયોજન જિસકો એસા
સાધુ ” એસા કહતે હૈ-ઉન્કા યહ વ્યાખ્યાન બ્રાન્તિ મૂલક હૈ । કારણ
જિન પ્રતિમા કે પ્રતિ વૈયાવૃત્ત્ય કરને કા વિધાન નહીં હૈ । યદિ યહ
વિધાન માના જાવે તો ફિર વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ આદિ આગમો મેં જો વૈયા-
વૃત્ત્ય કે યે પૂર્વોક્ત દશ ભેદ માને ગયે હૈ ઉન્મેં વિરોધ આતા હૈ, કયોં

ક્ષપડ અને પ્રવર્તક છે તેમનો સમાવેશ આચાર્યમા ડરી દેવાય છે જેમ
આચાર્ય પ્રવચનના પ્રભાવક હોય છે તેમ તેઓ બને પણ હોય છે, તથા
તેમના જેવા તેઓ પ્રભાવક હોવાથી પરસ્પરમા તે બાબતની સમાનતા આવી
જાય છે એ જ વાત પ્રગટ કરવાને માટે સૂત્રકારે તે બનેનો પાઠ આચાર્ય
સાથે કર્યા છે આ ગીતે વિચાર કરતા વૈયાવૃત્ત્યના દસ પ્રકારના જ સ્થાન મિદ્ધ
થાય છે, તેથી તેમના ભેદને કરણે વૈયાવૃત્ત્યમા દગા વિધતાનુ કથન વિરુદ્ધ
પડતુ નથી એમ સમજવુ જોઈએ

તથા- જે “ ચેદ્યદ્દે ” આ પદનુ વ્યાખ્યાન “ ચૈત્યાના અર્થઃ પ્રયોજનમ્
યસ્ય સ ચૈત્યાર્થઃ ” ચૈત્ય જિન પ્રતિમા છે તેનુ પ્રયોજન જેને છે એવો સાધુ”
એવુ જે કહે છે તેમનુ તે કથન બ્રાન્તિમૂલક છે કારણ કે જિન પ્રતિમાનુ
વૈયાવૃત્ત્ય કરવાનુ વિધાન નથી જો આ વિધાન માની લેવામા આવે તો વ્યા-
ખ્યાપ્રજ્ઞસિ આદિ આગમોમા વૈયાવૃત્ત્યના જે પૂર્વોક્ત દસ ભેદ બતાવ્યા છે

ફિત્ર—જ્ઞાનાદિગુણરહિતાયા જડાત્મિકાયા જિનપ્રતિમાયામક્તપાનાદિ સાધ્યાગ્યાનપેક્ષણાનાસ્તિ વૈયાવૃત્યસ્થાનપ્રાપ્તિયોગ્યતા, અતઃ પર-વૈયાવૃત્યદશવિધત્વપ્રતિપાદકાગમવિરોધનારણાર્થમાચાર્યે જિનપ્રતિમાયા સમાવેશનમપિ ભ્રાન્તિ-મૂલકમેવ ।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थकत्वमागमानुक्तम्, वैयावृत्येन श्रुतादिज्ञान जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थकरनामगोत्रकर्मोपार्जित भवति । तीर्थकर्त्तृ च केवलज्ञानानान्तरीयकम्, अतः ज्ञानार्थी वैयावृत्य करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

किं जिन प्रतिमा वैयावृत्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है । दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयावृत्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्योंकि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई है ही नहीं यह तो जड़ पत्थरकी बनी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयावृत्य की क्या आवश्यकता है ? । तथा जो वैयावृत्य में दशविधत्व का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य में जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है । चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्योंकि कि वैयावृत्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है । तीर्थकर नामगोत्र कर्मका उपार्जन होता है तीर्थकर प्रकृति का वध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा । क्योंकि कि यह प्रकृति केवल

તેમા વિરોધ આવી જાય છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાવૃત્ય નામનો એક અગ્યારમો ભેદ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાવૃત્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ શુભ તો છે જ નહીં-તેતો જડ પથ્થરની બનેલી છે, તો આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોંચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાવૃત્યમા દશવિધાતાનુ પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિરોધાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરણાને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિ માનો સમાવેશ કરે છે, તેમનુ તે પ્રમાણે કરવુ તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે ચૈત્ય શબ્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમ(નુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાવૃત્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થ- કર નામગોત્ર કર્મનુ ઉપાર્જન થાય છે તીર્થ કર પ્રકૃતિનો બધ જે બંધને બંધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનનો-અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞ

શ્રોત્તરાધ્યયનમૂત્રે—“ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયર નામગોય કમ્મ નિવંધઈ ॥ ” (ઉત્તરોધ્ય, ૨૯)

ટીકાર્થ—‘ ન ય ’ ન ચ ‘ અચિયત્તસ્ય ’ અપ્રીતિરસ્સ=પ્રીતિરહિતસ્ય પ્રતીતિ રહિતસ્ય યા સાધ્વાગમનમનિચ્છત इत्यर्थः, ‘ ઘર ’ ગૃહ ‘ પવિસઈ ’ પ્રવિશતિ, ન ચ અપ્રતીતિકસ્ય ‘ ભક્તપાણ ’ ભક્તપાન ‘ ગિણ્હઈ ’ ગૃહ્ણતિ, ન ચ અપ્રીતિકસ્ય અપ્રતીતિકસ્ય યા પીઠફલકગચ્ચાસસ્તારકવસ્ત્રપાદકમ્પલદણ્ડકમ્પલરજોહરણ— નિપઘાચોલપટ્ટકમદોરકમુગ્ધવલ્લિકા પાદપ્રોઞ્ઞનાદિ ભાજનભાણ્ડોપધ્યુપકરણ,

જ્ઞાન કી અવિનાભાવિની હૈ। તીર્થકર પ્રકૃતિ નિયમતઃ કેવલજ્ઞાન કો ઉત્પન્ન કરનેવાલી હોતી હૈ, ઇસલિયે જ્ઞાનાર્થી હોકર વૈયાવૃત્ય કરતા હૈ એસા અર્થ હમારા નિર્દોષ હી હૈ। ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર મેં યહી વાત કહી હૈ —“ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયર નામગોય કમ્મ નિવંધઈ ” (ઉત્તરાધ્ય અ ૨૯ ઘોલ ૪૩)

તથા જો સાધુ (ન ય અચિયત્તસ્ય ઘર પવિસઈ) સાધુ કે અપને ઘર પર આને સે અપ્રીતિ અથવા અપ્રતીતિ-અવિશ્વાસ વાલા હોતા હૈ વહ અચિયત્ત કહલાતા હૈ—એસે વ્યક્તિ કે ઘર મેં સાધુ પ્રવેશ નહીં કરતા હૈ, તથા (ન ય અચિયત્તસ્મ ભક્તપાણ ગિણ્હઈ) ડસ અપ્રીતિ ઓર અપ્રતીતિ-અવિશ્વાસ વાલે કે ઘર સે ભક્ત પાન નહીં લેતા હૈ, ઓર (ન ય અચિયત્તસ્ય પીઠ ફલગસેજ્જાસથારગવત્થપાયકથલ દ્ડગ રઓ- હરણ નિસેજ્જ ચોલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાયપુછ્ણાઈ ભાયણ ભડીવહિ ઉવગ- રણ સેવઈ) ન ડસ અપ્રીતિ ઓર અપ્રતીતિ વાલે કે પીઠ, ફલક, શય્યા,

નની અવિનાભાવિની પ્રકૃતિ છે તીર્થકર પ્રકૃતિ સ્વાભાવિક રીતે જ કેવળજ્ઞા નને ઉત્પન્ન કરનારી હોય છે, તેથી જ્ઞાનાર્થી થઈને વૈયાવૃત્ય કરે છે એવો અમે દર્શાવેલો અર્થ નિર્દોષ જ છે ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત કહી છે—‘ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયરમગોય કમ્મ નિવંધઈ ” (ઉત્તરાધ્ય અ ૨૯ ઘોલ ૪૩) તથા જે સાધુ “ ન ય અચિયત્ત- સ્સ પર પવિસઈ ” સાધુ પોતાને ઘેર આવવાથી જે વ્યક્તિ અપ્રીતિ અથવા અવિશ્વાસ વાળો થાય છે તે અચિયત્ત કહેવાય છે—એવી વ્યક્તિના ઘરમા સાધુ પ્રવેશ કરતા નથી, તથા “ ન ય અચિયત્તસ્મ ભક્તપાણ ગિણ્હઈ ” તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસવાળાના ઘરેથી આહારપાણી લેતા નથી, અને “ ન ય અચિયત્તસ્ય પીઠફલગ સેજ્જાસથારગવત્થપાયકત્તલદ્ડગરજોહરણ નિસેજ્જ ચોલપટ્ટગમુહપોત્તિય પાયપુ- છ્ણાઈ ભાયણ ભડોહિ ઉવગરણ સેવઈ ” તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસ-વાળાના

કિંચ—જ્ઞાનાદિગુણરહિતાયા જડાત્મિકાયા જિનપ્રતિમાયામક્તપાનાદિ સાધાર્યાનપેક્ષણાન્નાસ્તિ વૈયાટ્યસ્થાનપ્રાપ્તિયોગ્યતા, અતઃ—વૈયાટ્યદશવિધ ત્વપ્રતિપાદકાગમવિરોધવારણાર્થમાચાર્યે જિનપ્રતિમાયા સમાવેશનમપિ ભ્રાન્તિ-મૂલકમેવ ।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थकत्वमागमानुकूलम्, वैयावृत्येन श्रुतादिज्ञान जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थकरनामगोत्रकर्मोपार्जित भवति । तीर्थकस्त्वं च केवलज्ञानानान्तरीयकम्, अतः ज्ञानार्थी वैयावृत्य करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

किं जिन प्रतिमा वैयावृत्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है । दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयावृत्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्योंकि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई है ही नहीं वह तो जड़ पत्थरकी बनी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयावृत्य की क्या आवश्यकता है ? । तथा जो वैयावृत्य में दशविधत्व का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य ने जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है । चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्योंकि वैयावृत्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है । तीर्थकर नामगोत्र कर्मका उपार्जन होता है तीर्थकर प्रकृति का बंध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा । क्यों कि यह प्रकृति केवल

તેમા વિરોધ આવી જાય છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાવૃત્ય નામનો એક અગ્યારમો ભેદ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાવૃત્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ ગુણ તો છે જ નહીં—તેતો જડ પથ્થરની બનેલી છે, તો આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોંચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાવૃત્યમા દશવિધતાનું પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિરોધાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરાઈને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિ માનો સમાવેશ કરે છે, તેમનું તે પ્રમાણે કરવું તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે ચૈત્ય શબ્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમનુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાવૃત્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થ કર નામગોત્ર કર્મનું ઉપાર્જન થાય છે તીર્થ કર પ્રકૃતિનો બંધ જે હવેને બંધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનનો અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞ

વૈયાવૃત્યાદિકાર્ય, ' ણ હોઃ ' ન ભવતિ ' પન્નાતાવિગ ' પશ્ચાત્તાપિકઃ=પશ્ચાત્તાપકારી । તથા- ' સવિભાગસીલે ' સવિભાગસીલ -લઘ્વભક્તાદે. સવિભાગકારી ' સગ્રહોવગ્ગહકુસલે ' સગ્રહોવગ્ગહકુસલ, તત્ર-સગ્રહઃ=શિષ્યાદિપરિવર્દનમ્, ઉપગ્રહઃ=તેષામેવ ભક્તશ્રુતાદિદાનપૂર્વમ્પ્રુપટ્મનમ્, તત્ર કુશલો દક્ષો ભવતિ, ' સે તારિસે ' સ તાદગ સાધુ. ' ણ ' इदम् = અદત્તાદાનવિરમણરૂપ ' વય ' વ્રતમ્ ' આગ્રહેઃ ' આરાધયતિ. નાન્યઃ ॥ સુ ૪ ॥

વિગ હોઃ) દેવવન્તુ કો દેવર ણ વૈયાવૃત્ય આદિ કાર્ય કો કરકે જો પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતા હૈ, (સવિભાગસીલે) લઘ્વ ભક્તાદિક કા જો સવિભાગકારી હોતા હૈ, ઓર (સગ્રહોવગ્ગહકુસલે) શિષ્યાદિ કે પરિવર્દન ને ઓર ડનકે ભક્ત શ્રુત આદિ દાનપૂર્વક ઉપટ્મન મે દક્ષ હોતા હૈ, (સે તારિસે) ણેસા વ્રત સાધુ (ણ વય આગ્રહેઃ) ઇસ અદ-ત્તાદાનવિરમણરૂપ વ્રત કો આરાધિત કરતા હૈ, દૂસરા નહીં ॥

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર ઢારા યહ સમઘાયા હૈ કિ કિસ પ્રકાર કા કાર્ય કરને વાલા સાધુ ઇસ મહાવ્રત કા આરાધક હોતા હૈ । ડનકા કહના હૈ કિ જો સાધુ પીલે કે દૂસરે સૂત્ર મેં કહી ગઈ યાતોં કે અનુસાર આચરણ કરતા હૈ વહી સાધુ ઇસ મહાવ્રત કા આરાધક બનતા હૈ, વે યાતે ઇસ પ્રકાર સે હૈ—જો સાધુ ઉપધિ ઓર ભક્તપાન કે સગ્રહણ ણ વ દાન કરને મેં દક્ષ હોતા હૈ, અત્યત વાલ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ, ક્ષયક, પ્રવર્તક, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય આદિ કા વૈયાવૃત્ય કરતા હૈ ।

વયાવૃત્ય આદિ કાર્ય કીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, “ સવિભાગસીલે ” પ્રાપ્ત આહારાદિના જે સવિભાગકારી હોય છે, અને “ સગ્રહોવગ્ગહકુસલે ” શિષ્યાદિના પરિવર્દનમા અને તેમના ભક્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપટ્મનમા દક્ષ હોય છે “ સે તારિસે ” એવો તે સાધુ “ ઇણ વય આગ્રહેઃ ” આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ વ્રતનું આરાધન કરી શકે છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર ઢારા સમજાવ્યું છે કે કેવું કાર્ય કરનાર સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનું એવું કથન છે કે જે સાધુ આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક બને છે તે વાતો આ પ્રમાણે છે—જે સાધુ ઉપધિ અને ભક્તપાન (આહારપાણી) નો સગ્રહ અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે, અત્યત બાળ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ ક્ષયક, પ્રવર્તક, અર્થાત્ ઉપાધ્યાય આદિની વૈયાવય—વૈયાવૃત્ય કરે છે, અપ્રીતિજનને ત્યાં ગોચરીને માટે જતો નથી, તેના ઢારા

‘સેવહ’ સેવતે, ન ચ ‘પરસ્સ’ પરસ્ય ‘પરિચાય’ પરિચાદ=નિન્દા ‘જપડ’ જલ્પતિ, ‘ન યાવિ’ ન ચાપિ પરસ્ય ‘દોસે’ દોપાન્ ‘ગેળ્હહ’ ગૃહ્ણતિ, પરદોષદર્શી ન ભવતીત્યર્થઃ, તથા—‘પરવચ્ચસેણ વિ’ પરવચ્ચપદેણનાપિ=ચાલગ્ચાનાદિનિમિત્તે નાપિ સ્વાર્થમન્યાર્થ ચા ‘ન કિંચિ’ ન કિંચિદ્ ઔષધમૈષજ્યાઘપિ, ‘ગેળ્હહ’ ગૃહ્ણતિ, તથા ‘ળ ય’ ન ચ ‘વિપરિણામેહ’ વિપરિણમયતિ=ધર્માદ્ ગુર્યાદિ-ભ્યશ્ચ વિમુચી કરોતી ‘કચિ જળ’ કચ્ચિદપિ જન શિષ્યાદિકમ્ । ‘ન યાવિ’ ન ચાપિ ‘ળાસેહ નાશયતિ’ દિણ્ણસુકય ‘દત્તસુકૃતમ્’, દત્તમ્=અભયદાનાદિક, સુકૃત=વ્રતપ્રત્યાખ્યાનાદિક અપિ તુ તદનુમોદયતીત્યર્થઃ, પરકૃત શુભકૃત્ય ન પ્રચ્છાદયન્તિ, તથા—‘દાઝળ ય’ દત્તયા ચ દેય વસ્તુ, ‘કાઝળ ય’ કૃતયા ચ

સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાદકવલ, દડક, રજોહરણ, નિપગ્યા, ચોલપટ્ટક, સદો રકમુખવસ્ત્રિકા, પાદપ્રોઞ્ઞન આદિ તથા ભાજન, ભાણડ, ઉપધિ, ઉપ-કરણ, इनका सेवन करता है, (न य परिचायपरस्स जपड) दूसरों की निंदा नहीं करता है, (न यावि परस्स दोसे गेण्हह) दूसरों के दोषों को नहीं देखता है, (पर चवचसेणवि न किंचि गेण्हह) बाल, ग्लान आदि के निमित्त से लाये हुए औषध, भैषज्य आदि कुछ भी वस्तु अपने अथवा दूसरे के काम में नहीं लेता है, (ण य विपरि-णामेह कचि जण) धर्म से तथा अपने गुरुजनों से जो शिष्यादिकों को विमुख नहीं करता है, (ण यावि णासेह दिण्ण सुकय) दत्त-अभय दानादिक का, सुकृत-व्रत प्रत्याख्यान आदि का जो नाश नहीं करता है किन्तु उनकी अनुमोदना ही करता है, अर्थात् परकृत शुभकृत्यों को जो आच्छादित नहीं करता है (दाऊण य काऊण य ण य पच्छात्ता

પીઠ, ફવડ, શય્યા સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાદકવલ, દડક, રજોહરણ, ચોલપટ્ટક, દોરા સાથેની મુહપત્તિ, પાદપ્રોઞ્ઞન આદિ તથા ભાજન, ભાંડ, ઉપધિ આદિ ઉપકરણનું સેવન કરતો નથી, “ન ય વિ પરિચાયપરસ્સ જપડ” બીજાની નિંદા કરતો નથી, “ન યા વિ પરસ્સ દોસે ગેળ્હહ” બીજાના દોષોને જોતો નથી, “પરવચ્ચસેણ વિ ન કિંચિ ગેળ્હહ” બાળ, ગ્લાન આદિને નિમિત્તે લાવેલા ઔષધ, ભૈષજ્ય, આદિ કોઈ પણ વસ્તુ પોતાના અથવા બીજાના ઉપયોગમાં લેતો નથી “ળ ય વિપરિણામેહ કિંચિ જળ” જે શિષ્યાદિને ધર્મથી કે ગુરુજનોથી વિમુખ કરતો નથી, ‘ળ યાવિ ણાસેહ દિણ્ણ સુકય’ દત્ત-અભયદાનાદિકનું સુકૃત-વ્રત પ્રત્યાખ્યાન આદિને જે નાશ કરતો નથી-પણ તેની અનુમોદના જ કરે છે, એટલે કે અન્ય વડે કરાયેલ શુભકૃત્યોને જે ઢાકતો નથી “દાઝળય કાઝળય ણ ય પચ્છાત્તાવિપ હાહ’ હેય વસ્તુને હાથ

વૈયાઘ્રત્યાદિકાર્યં, 'ળ દોડ' ન ભરતિ 'પન્ડાતાવિળ' પશ્ચાત્તાપિકા: = પશ્ચાત્તા-
પકારી । તથા—'સવિભાગસીલે' સવિભાગશીલ—સ્વમક્તાદે. સવિભાગકારી
'સગદોવગ્ગદકુસલે' સગ્રહોપગદકુશલ, તન્ન-સગ્રહ: = શિષ્યાદિપરિવર્દનમ્,
ઉપગ્રહ: = તેપામેવ ભક્તશ્રુતાદિદાનપૂર્વકમુપપ્લબ્ધનમ્, તન્ન કુશલો દક્ષો ભવતિ,
'સે તારિસે' સ તાદય: સાધુ: 'ઇળ' इदम् = અદત્તાદાનવિરમણરૂપ 'વય'
વ્રતમ્ 'આરાહેડ' આરાધયતિ, નાન્ય: ॥ મૃ૦ ૪ ॥

વિળ દોડ) દેવવસ્તુ કો દેત્તર ણ્ન વૈયાઘ્રત્ય આદિ કાર્ય કો કરકે જો
પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતા હૈ, (સવિભાગસીલે) લબ્ધ મક્તાદિક કા જો
સવિભાગકારી હોતા હૈ, ઓર (સગદોવગ્ગદકુસલે) શિષ્યાદિ કે
પરિવર્દન મેં ઓર उनके भक्त श्रुत आदि दानपूर्वक उपप्लब्धन મેં દક્ષ
હોતા હૈ, (સે તારિસે) જેસા રહ સાધુ (ઇળ વય આરાહેડ) હસ અદ-
ત્તાદાનવિરમણરૂપ વ્રત કો આરાધિત કરતા હૈ, દૂસરા નહીં ॥

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા ચહ સમજાયા હૈ કિ કિસ
મકાર કા કાર્ય કરને વાલા સાધુ હસ મહાવ્રત કા આરાધક હોતા હૈ ।
उनका कहना है कि जो साधु पीछे के दूसरे सूत्र में कही गई बातों
के अनुसार आचरण करता है वही साधु इस महाव्रत का आराधक
बनता है, वे बातें इस प्रकार से हैं—जो साधु उपधि और भक्तपान के
संग्रहण एवं दान करने में दक्ष होता है, अत्यंत बाल, दुर्बल, ग्लान,
वृद्ध, क्षपक, प्रवर्तक, आचार्य, उपाध्याय आदि का वैयावृत्य करता है ।

વૈયાઘ્રત્ય આદિ કાર્ય કરીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, “સવિભાગસીલે” ગ્રાહ
આહારાદિના જે સવિભાગકારી હોય છે, અને “સગદોવગ્ગદકુસલે” શિષ્યાદિના
પરિવર્દનમા અને તેમના ભક્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપપ્લબ્ધનમા દક્ષ
હોય છે “સે તારિસે” એવો તે સાધુ “ઇળ વય આરાહેડ” આ અદત્તાદાન
વિરમણરૂપ વ્રતનુ આરાધન કરી રાહે છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સમજાવ્યું છે કે કેવું કાર્ય કરનાર
સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનું એવું કથન છે કે જે સાધુ
આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ
આ મહાવ્રતનો આરાધક બને છે તે વાતો આ પ્રમાણે છે—જે સાધુ ઉપધિ
અને ભક્તપાન (આહારપાણી) નો સંગ્રહ અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે,
અત્યંત બાળ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ ક્ષપક, પ્રવર્તક, આચાર્ય ઉપાધ્યાય આદિની
વૈયાવચ-વૈયાવૃત્ય કરે છે, અપ્રીતિકર્મને ત્યાગોચરીને માટે જતો નથી, તેના દ્વારા

અપ્રીતીકર્જન કે ઘર પર ગોચરી કે લિયે નહીં જાતા હૈ, ઉનકે ઢારા પ્રદત્ત પીઠ ફલક આદિ કા ઉપયોગ નહીં કરતા હૈ' દૂસરોં કિ નિંદા નહીં કરતા હ, પર કે દોષોં કી તરફ દ્રષ્ટિપાત નહીં કરતા હૈ, પર કે વ્યપદેશ સે અપને લિયે તથા દૂસરોં કે લિયે કુછ મી વસ્તુ નહીં લેતા હૈ, ગુર્વાદિક સે ઉનકે શિષ્યાદિકોં કા મેદ નહીં કરાતા હૈ, અભયદાના દિક કો દે કરકે, વૈયાવૃત્ય કો ફરકે જો પીછે સે પછતાતા નહીં હૈ, સગ્રહશીલ હોના હૈ-સવિભાગઝારી હોતા હૈ, શિષ્યાદિ સપત્તિ વધાને મેં કુશલ હોતા હૈ એસા સાધુ હી મહાવ્રત કા આરાધક હોતા હૈ । વૈયા-વૃત્ય જો આચાર્ય આદિ કી કરતા હૈ-ઉસમેં ઉસકા અભિપ્રાય અપને મેં જ્ઞાનવૃદ્ધિ ઓર કર્મોં કી નિર્જરા હોનેકા હોતા હૈ । વૈયાવૃત્ય આચાર્ય આદિ દસ પ્રકાર કે સ્થાન સેવ્ય હોને કે કારણ દસ પ્રકાર કા હૈ । સૂત્ર મેં યદ્યપિ ચૌદહ પ્રકાર કે વૈયાવૃત્ય કે સ્થાન પ્રકટ કિયે હૈ પર અત્યત ઘાલ ઓર દુર્બલ હન સાધુઓં કા અન્તર્ભાવ ગ્લાન મેં એવ ક્ષપક ઓર પ્રભાવક સાધુઓં કા અન્તર્ભાવ આચાર્ય મેં કર દિયા જાતા હૈ, હસલિયે હસ પ્રકાર સે યે દસ હી હોતે હૈ । મુખ્ય રૂપ સે જિસકા કાર્ય આચાર ઓર વ્રત ગ્રહણ કરાને કા હોતા હૈ વહ આચાર્ય હૈ, મુખ્યરૂપ સે જિમકા કાર્ય મૂલ સૂત્ર કા અભ્યાસ કરાને કા હોતા

અપાયેલ પીઠ, ફલક આદિનો ઉપયોગ કરતો નથી અન્યની નિંદા કરતો નથી અન્ય ના દોષો તરફ નજર નાખતો નથી બીજાનું નિમિત્ત બતાવીને પોતાને માટે તથા અન્યને માટે હોઈ પણ વસ્તુ લેતો નથી, ગુર્વાદિક સાથે તેમના શિષ્યાદિકોમા ભેદભાવ પડાવતો નથી, અભયદાન આદિ દધને, વૈયાવૃત્ય કરીને જે પાછળથી પસ્તાતો નથી, મગ્રહશીલ હોય છે-સવિભાગઝારી હોય છે, શિષ્યાદિરૂપ સપત્તિ વધારવામા કુશળ હોય છે, એવો સાધુ જે આ મહાવ્રતોનો આરાધક થઈ શકે છે તે આચાર્ય આદિની જે વૈયાવૃત્ય કરે છે તેમા તેનો હેતુ પોતાના જ્ઞાનની વૃદ્ધિ તથા કર્મોની નિર્જરા કરવાનો જે હોય છે વૈયાવૃત્ય આચાર્ય આદિ દસ પ્રકારના સેવાને પાત્ર સ્થાન હોવાથી દસ પ્રકારનું છે સૂત્રમા જે કે ચૌદ પ્રકારના વૈયાવૃત્યના સ્થાન બતાવ્યા છે પણ અત્યત બળ અને દુર્બળ સાધુઓનો સમાવેશ ગ્લાનમા અને ક્ષપક અને પ્રભાવક સાધુ ઓનો સમાવેશ આચાર્યમા કરી દેવામા આવેલ છે, તેથી આ ગીતે તેના દસ પ્રકાર જે થાય છે મુખ્યત્વે જેનું કાર્ય આચાર અને વ્રત ગ્રહણ કરાવવાનું હોય છે તે આચાર્ય કહેવાય છે મુખ્યત્વે જેનું કાર્ય મૂળ સૂત્રનો અભ્યાસ

અધોપસહારમાહ—‘ હમ ચ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂળ—હમં ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણં
ભગવયા સુકહિયં અત્તહિય પેચ્ચાભાવિયં આગમેસિભદં સુદ્ધં
નેયાઉયં અકુહિલ અણુત્તર મઘ્યદુક્ષ્વ પાવાણ વિઉસમણં ॥ સૂ ૫ ॥

ટીકા—‘ હમ ચ ’ દ્વ ય-પૂર્વેનન્તતીર્થકરગણધરૈઃ પ્રોક્તમિદ પ્રત્યક્ષ
‘ પાવયણં ’ પ્રવચન ‘ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં ’ પરદ્રવ્યહરણવિર-
મણપરિરક્ષણાર્થ=પરદ્રવ્યહરણવિરમણસ્ય=અદત્તાદાનવિરમણત્રતસ્ય પરિરક્ષણાર્થ =

હૈ વહ ઉપા યાય હૈ, જો વિગય આદિ કે ત્યાગરૂપ તપોં કો તપતા હૈ
વહ તપસ્વી હૈ, જો નવદીક્ષિત હોકર શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરને કા ઉમ્મીદવાર
હોતા હૈ વહ શૈક્ષ હૈ, રોગ આદિ સે જિસકા શરીર ક્ષીણ હો ગયા હો
વહ ગ્લાન હૈ, એક હી દીક્ષાચાર્ય કા શિષ્યપરિવાર કુલ હૈ, જુદે ૨
આચાર્યોં કે શિષ્યરૂપ સાધુ યદિ પરસ્પર સહાધ્યાયી હોને સે સમાન-
વાચના થાલે હો તો ઉનકા સમુદાય ગણ હૈ, ગણ કા સમુદાય સઘ
કહલાતા હૈ । જો પ્રવ્રજ્યાધારી હોતા હૈ વહ સાધુ હૈ । શ્રુતલિંગ ઓર
પ્રવચન મેં જો સમાન હોં વે સાધર્મિક હૈ ॥ સૂ ૪ ॥

અતઃ સૂત્રકાર ઈસ પ્રકરણ કા ઉપસહાર કરતે હુએ કહતે હૈ—
‘ હમ ચ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(હમ ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણ
ભગવયા સુકહિય) પૂર્વ મેં અનન્ત તીર્થકરોં એવ ગણધર દેવોં દ્વારા કહા

કરાવવાનુ હોય છે તે ઉપાધ્યાય કહેવાય છે જે વિગય આદિના ત્યાગરૂપ તપો
કરે છે તે તપસ્વી કહેવાય છે, જે નવદીક્ષિત થઈને શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરવાને
માટે ઉમેદવાર હોય છે તેને શૈક્ષ કહે છે રોગ આદિથી જેનુ શરીર ક્ષીણ થઈ
ગયુ હોય તેને ગ્લાન કહે છે એક જ દીક્ષાચાર્યના શિષ્ય પરિવારને કુલ કહે
છે, જુદા જુદા આચાર્યોના શિષ્યરૂપ સાધુ જે પરસ્પર સહાધ્યાયી હોવાથી
સમાન વાચનાવાળા હોય તો તેમના સમુદાયને ગણ કહે છે ગણના સમુદાયને
સઘ કહે છે જે પ્રવ્રજ્યા (દીક્ષા) ધારી હોય તે સાધુ કહેવાય છે શ્રુતલિંગ
અને પ્રવચનમા જે સમાન હોય તે સાધર્મિક કહેવાય છે ॥ સૂ ૪ ॥

હવે સૂત્રકાર આ પ્રકરણનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ હમ ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ હમ ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણ ભગવયા
સુકહિય ” પૂર્વે અનન્ત તીર્થકરો અને ગણધરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષી

રક્ષણનિમિત્ત ' ભગવતા ' ભગવતા ' સુકૃદિય ' સુકૃદિય=મવિસ્તાર પ્રરૂપિતમ્ ।
 કથં ભૂતં પ્રવચન ભગવતા સુકૃદિયમ્ ? इत्याह—' अत्तद्विय ' आत्मद्वितम्=आत्मनो
 हितकारकम्, तथा—' पेच्चाभाविद्य ' प्रेत्यभाविक्त=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्,
 अत एव—' आगमेसिभद् ' आगमिष्यद् भद्र=भविष्यत्काले-कल्याणकारकम्,
 तथा ' सुद्ध ' शुद्ध=निर्दोषत्वात्, पुनः—' नेयाउय ' नैयायिकम्, नीतरागभाषि
 तत्वात्-तथा—' अकुडिल ' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात् ' अणुत्तर ' अनुत्तरम्-सर्व
 श्रेष्ठत्वात्, तथा ' सव्वदुक्खपावाण ' सर्वदुःखपापाना=सकलदुःखजनकज्ञानावर-
 णीयाद्यष्टविधकर्मणा ' विउसमण ' व्युपशमन=सर्वथा प्रशमनकारकम् । एतादृशं
 प्रवचनं भगवता सुकृतमित्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

अस्य तृतीयव्रतस्य पञ्चभावनाः प्रतिपादयन् सम्प्रति विप्रोक्तयसतिवासभिर्भा
 प्रथमा भावनामाह—' तस्स इमा ' इत्यादि ।

मूलम्—तस्स इमा पचभावणाओ तइयस्स वयस्स हुंति,
 परदच्चहरणवेरमणपरिरक्खणट्टयाए । पढम देवकुलसभा-प्पवा-

गया यह प्रत्यक्षीभूत प्रवचन, परद्रव्यविरमणरूप महाव्रत की परिरक्षा
 के निमित्त भगवान् ने विस्तारपूर्वक प्ररूपित किया है । यह प्रवचन
 (अत्तद्विय) आत्मा का हितकारक है, (पेच्चाभाविद्य) जन्मान्तर में
 भी शुभफल का प्रदाता है, इसीलिये यह (आगमेसिभद्) भविष्यत्
 काल में कल्याण कारक कहा गया है । (सुद्ध) यह निर्दोष होने से
 शुद्ध है, (नेयाउय) वीतराग प्रभु द्वारा भाषित होने से न्यायसंपन्न है,
 (अकुडिल) ऋजुभावका जनक होनेसे अकुटिल है, (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ठ
 होनेसे अनुत्तर है तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) सकल दुःखजनक
 ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का सर्वथा प्रशमनकारक है ॥ सू० ५ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે લગવાને
 વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કરેલ છે આ પ્રવચન “ અત્તદ્વિય ” આત્માનું હિતકારક
 છે, “ પેચ્ચાભાવિય ” જન્માન્તરમાં પણ શુભ ફળનું દેનાર છે, તેથી તે
 “ આગમેસિભદ્ ” ભવિષ્યકાળમાં કલ્યાણકારક બતાવવામાં આવ્યું છે “ સુદ્ધ ”,
 તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, “ નેયાઉય ” વીતરાગ પ્રભુદ્વારા કથિત હોવાથી
 ન્યાયયુક્ત છે, “ અકુડિલ ” ઋજુભાવનું જનક હોવાથી અકુટિલ છે, “ અણુત્તર ”
 સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અનુત્તર છે તથા “ સવ્વદુક્ખપાવાણ વિસમણ ” સકળ
 દુઃખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનું સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ ૫

વસહસ્ત્રમૂલ-આરામ-કંદરાઽઽગર-ગિરિગુહા-કમ્મતુજ્ઞાણ જાણ-
સાલા-કુવિયસાલા-મહવ-સુન્નઘર-સુસાણલેણ આવળે અન્નમ્મિ
ય એવમાદ્ધ્યમ્મિ દગ-મદ્ધિય--ત્રીય-હરિય-તસપાણ અસંસત્તે
અહાકડે ફાસુણ વિવિત્તે પસત્થે ઉવસ્સણ હોદ્ધ વિહરિયવ્વ ।
આહાકમ્મવહુલે ય જેસે આસિ ય સંમજ્ઞિઓસિત્તસોહિય છાણ
દુમણલિપણ અણુલિપણ જલણભડચાલણં અંતોવાહિ મજ્ઞે ય
અસજમો જત્થ વટ્ઠદ્ધ, સજયાણં અટ્ટા વજ્જેયવ્વે હુ ઉવસ્સણ
સે તારિસે સુત્તપરિકુટ્ટે । એવ વિવિક્ત વાસવસહિ સમિદ્ધ જોગેણ
ભાવિઓ ભવદ્ધ અંતરપ્પા, નિચ્ચ અહિગરણકરણકારાવણ પાવ-
કમ્મ વિરણ દત્તમણુપ્પણાય ઉગ્ગહરુદ્ધ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

ટીકા—‘તસ્સ’ તસ્ય=પ્રસિદ્ધસ્ય ‘તદ્વયસ્સ વયસ્સ’ તૃતીયસ્ય ત્રતસ્ય=
અદત્તાદાનવિરમણનામકતૃતીયવ્રતસ્ય ‘ઇમા’ ઇમાઃ—વક્ષ્યમાણાઃ ‘પચ ભાવ-
ણાઓ’ પચ્ચભાવનાઃ ‘પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ’ પરદ્રવ્યહરણવિરમણ-
પરિરક્ષણાર્થાય અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય રક્ષાનિમિત્ત ‘હુંતિ’ ભવન્તિ । તાસુ
‘પઠમ’ પ્રથમા=વિવિક્તવસતિવાસલક્ષણા ભાવનામાહ—સાધુભિઃ ક્વચિદર્તવ્યમિત્તિ,

અથ સૂત્રકાર ડસ તૃતીય વ્રત કી પાચ ભાવનાઓં કો સમજ્ઞાને કી
ઈચ્છાસે સવ સે પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામ કી પહિલી ભાવના
કો પ્રકટ કરતે હે—‘તસ્સ ઇમા’ इत्यादि ० ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) ડસ પ્રસિદ્ધ (તદ્વયસ્સ વયસ્સ) તૃતીય અદત્તા-
દાન વિરમણ વ્રત કી (ઇમા) યે વક્ષ્યમાણ (પચ ભાવણાઓ હુંતિ) પાંચ
ભાવનાઈ હે । યે ભાવનાઈ (પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ) ઇસ

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી
પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—“તસ્સ ઇમા” ઇ

ટીકાર્થ—“તસ્સ” તે પ્રસિદ્ધ “તદ્વયસ્સ વયસ્સ” ત્રીજા અદત્તાદાન
વિરમણ વ્રતની “ઇમા” આ પ્રમાણે “પચ ભાવણાઓ તિ” પાચ ભાવ
નાઓ છે એ ભાવનાઓ “પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ” આ અદત્તા

રસનિમિત્ત ' મગરતા ' મગરતા ' યુરદિયં ' યુરદિયં=મરિચ્ચર પ્રસ્થિતમ્ ।
 વય મૂતં મગરતા મગરતા યુરદિયમ્ ? ક્વચિત્—' અત્તદિય ' આત્મરિતમ્=આત્મનો
 દિત્તકારસ્મ, તથા—' પે-તમાવિય ' પે-તમાવિય=તન્માન્તરેડવિ શુભફલદાયકમ્,
 અત એવ—' આગમેસિમદ ' આગમેસિમદ મદ=મરિચ્ચર-કન્માનકારકમ્,
 તથા ' સુદ્ર ' સુદ્ર=નિર્દોષવાન્, પુનઃ—' નેયાડય ' નેયાગિયમ્, વીતરાગમાય
 તત્વાત્-તથા—' અકુદિલ ' અકુદિયમ્=વત્સુભાવજનકવાન્ ' અણુતર ' અણુતરમ્-સર્વ
 શ્રેષ્ઠત્વાત્, તથા ' સન્વદુઃખવાવાળ ' સન્વદુઃખવાવાળાં=મરુદ્ધુઃલનનકજ્ઞાનાવર
 ણીયાયપ્તવિધકર્મણા ' વિડસમળ ' અપ્રમનન=મર્યાદા પ્રમનનકારકમ્ । ઇત્યર્થ
 પ્રવચન મગરતા યુરદિયમિત્યર્થે ॥ સૂ. ૬ ॥

અસ્ય તૃતીયમ્ તસ્ય પદ્યમાવનાઃ પ્રતિપાદયન્ સમ્પ્રતિ નિષિત્તવત્તિવાસામિષાં
 પ્રથમા ભાવનામાદ—' તસ્મ ઇમા ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તસ્મ ઇમા પચ્ચભાવનાશ્રો તદ્વચસસ વચસસ હુતિ,
 પરદઽવહરણવેરમણપરિરમ્ભણદુયાપ્ । પદ્મસ દેવકુલસભા પ્પવા

મયા યદ્ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન, પરદ્રવ્યવિરમણરૂપ મહાવ્રત કી પરિરક્ષા
 કે નિમિત્ત ભગવાન્ ને વિસ્તારપૂર્વક પ્રસ્થિત કિયા હૈ । યદ્ પ્રવચન
 (અત્તદિય) આત્મા કા દિત્તકારક હૈ, (પેચ્ચામાવિય) જન્માન્તર મેં
 મી શુભફલ કા પ્રદાતા હૈ, હસીન્ધિયે યદ્ (આગમેસિમદ) ભવિષ્યત્
 કાલ મેં કલ્યાણ કારક કહા ગયા હૈ । (સુદ્ર) યદ્ નિર્દોષ હોને સે
 શુદ્ધ હૈ, (નેયાડય) વીતરાગ પ્રભુ દ્વારા ભાધિત હોને સે ન્યાયસપક્ષ હૈ,
 (અકુદિલ) મજ્જુભાવકા જનક હોનેસે અકુદિલ હૈ, (અણુતર) સર્વશ્રેષ્ઠ
 હોનેસે અણુતર હૈ તથા (સન્વદુઃખવાવાળ વિડસમળ) સકલ દુઃખજનક
 જ્ઞાનાવરણીય આદિ અષ્ટવિધ કર્મો કા સર્વથા પ્રશમનકારક હૈ ॥ સૂ. ૫ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે ભગવાને
 વિસ્તારપૂર્વક પ્રસ્થિત કરેલ છે આ પ્રવચન “ અત્તદિય ” આત્માનું દિત્તકારક
 છે, “ પેચ્ચામાવિય ” જન્માન્તરમા પણ શુભ ફળનું દેતારૂ છે તેથી તે
 “ આગમેસિમદ ” ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણકારક બતાવવામા આવ્યું છે “ સુદ્ર ”
 તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, “ નેયાડય ” વીતરાગ પ્રભુદ્વારા ડચિત હોવાથી
 ન્યાયયુક્ત છે, “ અકુદિલ ” મજ્જુભાવનું જનક હોવાથી અકુદિલ છે, “ અણુતર ”
 સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અણુતર છે તથા “ સન્વદુઃખવાવાળ વિસમળ ” સકળ
 દુઃખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનું સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ. ૫

વસહરુમ્મલ-આરામ-કંદરાઽઽગર-ગિરિગુહા-કમ્મલુજાણ જાણ-
સાલા-કુવિયસાલા-મડવ-સુન્નવર-સુસાણલેણ આવળે અન્નમ્મિ
ય એવમાઙ્ગમ્મિ દગ-મદ્દિય-ત્રીય-હરિય-તત્તપાણ અસંસત્તે
અહાકુડે પાસુણ વિવિત્તે પસત્યે ઉવસ્સણ હોઢ વિહરિયવ્વં ।
આહાકમ્મવહુલે ચ જેસે આસિ ચ સમજિઓસિત્તસોહિય છાણ
દુમણલિપણ અણુલિપણ જલણભડચાલણં અતોવાહિ મજ્ઞે ચ
અસજમો જત્ય વહ્ઠ, સજયાણ અટ્ટા વજ્જેયવ્વે હુ ઉવસ્સણ
સે તારિસે સુત્તપરિકુટ્ટે । એવ વિવિક્ત વાસવસહિ સમિઙ્ગ જોગેણ
ભાવિઓ ભવઙ્ગ અંતરપ્પા, નિચ્ચ અહિગરણકરણકારાવણ પાવ-
કમ્મ વિરણ દત્તમણુપ્પણાય ઉગ્ગહરુઙ્ગ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

ટીકા—‘તસ્સ’ તસ્ય=પ્રસિદ્ધસ્ય ‘તદ્વયસ્સ વયસ્સ’ તૃતીયસ્ય ત્રતસ્ય=
અદત્તાદાનવિરમણનામકતૃતીયવ્રતસ્ય ‘ઇમા’ ઇમાઃ—વક્ષ્યમાણા ‘પચ ભાવ-
નાઓ’ પચ્ચભાવનાઃ ‘પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ’ પરદવ્વહરણવિરમણ-
પરિરક્ષણાર્થાય અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય રક્ષાનિમિત્ત ‘હુંતિ’ ભવન્તિ । તાસુ
‘પઠમ’ પ્રથમા=વિવિક્તવસતિવાસલક્ષણા ભાવનામાહ—સાધુભિઃ ક્વચિદ્વિહર્તવ્યમિતિ,

અથ સૂત્રકાર ડસ તૃતીય વ્રત કી પાંચ ભાવનાઓ કો સમજ્ઞાને કી
હચ્છાસે સચ સે પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામ કી પહિલી ભાવના
કો પ્રકટ કરતે હે—‘તસ્સ ઇમા’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) ડસ પ્રસિદ્ધ (તદ્વયસ્સ વયસ્સ) તૃતીય અદત્તા-
દાન વિરમણ વ્રત કી (ઇમા) યે વક્ષ્યમાણ (પચ ભાવનાઓ હુંતિ) પાંચ
ભાવનાઈ હે । યે ભાવનાઈ (પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ) ઇસ

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી
પ્રથમ વિવિક્તવસિતવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—‘તસ્સ ઇમા’ ઈ
ટીકાર્થ—‘તસ્સ’ તે પ્રસિદ્ધ ‘તદ્વયસ્સ વયસ્સ’ ત્રીજા અદત્તાદાન
વિરમણ વ્રતની ‘ઇમા’ આ પ્રમાણે “પચ ભાવનાઓ તિ” પાચ ભાવ
નાઓ છે એ ભાવનાઓ “પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ” આ અદત્તા

તદેવ સ્પૃયતિ-‘ દેવકુલ-સમા-પ્પવા-વસહ-રુક્ષમૂલ-આરામકદરાઽઽગર-
ગિરિગુહા-કમ્મતુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નઘર--સુસાણ-લેણ
આવણે ’ દેવકુલસમાપ્પવાઽઽવવૃક્ષમૂલારામકન્દરાઽઽકરગિરિગુહાકર્માન્તોઘા-
નયાનશાલા કુપ્પયશાલામણ્ડપરૂન્યવૃદ્ધમશાનલયનાપણે-તત્ર-દેવકુલમ્=વ્યન્તરાદિ
દેવગૃહમ્, સમા=સમાગૃહ યત્ર સમયે સમયે મન્ત્રણાર્થે જના આગત્ય સમિન્નન્તિ
તત્, પ્રવા=પાનીયશાલા, આવસથઃ=પરિવ્રાજકગૃહમ્, વૃક્ષમૂલ-મસિદ્ધમ્, આરામઃ
માધવીલતાદિપરિમણ્ડિતોરમણીયો યનવિશેષઃ, કન્દરા=ઢરી, આકરો=ઝોહાધુ
ત્પત્તિસ્થાનમ્, ગિરિગુહા-પ્રતીતા, કર્માન્તઃ=લાહાકારાદિશાલા ‘ કારખાના ’
‘ મીલ ’ ‘ જીણ ’ इत्यादि नाम्ना प्रसिद्ध स्थानम् । उद्यानम्=उपवनम्, यान

અદત્તાદાન વિરમણ વ્રત કી પરિરક્ષા કે નિમિત્ત કહી ગઈ હૈં (પઢમ)
ઉનમૈં પ્રથમ ભાવનો હસ પ્રકાર હૈ-હસ પ્રથમ ભાવના કા નામ વિવિક્ત-
વસતિવાસ હૈ ! હસમૈં સાધુઓં કો કહા નિવાસ કરના ચાહિયે યહ પ્રકટ
કિયા ગયા હૈ, (દેવકુલસમા-પ્પવા-વસહ-રુક્ષમૂલ-આરામ-કદરાગાર-
ગિરિગુહા-કમ્મતુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નઘર-સુસા
ણ-લેણ-આવણે) દેવકુલ મે-વ્યન્તર આદિ દેવોં કે સ્થાન મૈં, સમા
મૈં-જહા પર મન્ત્રણા કે લિયે આકર સમય ૨ પર મનુષ્ય એકત્રિત હોતે
હૈં એસે સ્થાન મે, પ્રવા મે-પાનીયશાલા મૈં, આવસથ મૈં-પરિવ્રાજકોં કે
ઘરોં મૈં, વૃક્ષમૂલ મે-તરુ કે નીચે મૈં, આરામ મૈં-માધવીલતા આદિ સે
પરિમણ્ડિત રમ્યવન મૈં, કન્દરા મૈં-ગુફા મૈં, આકર મૈં-લોહાદિક ધાતુ-
ઓં કે ઉત્પત્તિ સ્થાન મૈં, ગિરિગુહા મૈં-પર્વત કી ગુફા મૈં, કર્માન્ત મૈં-
લોહકાર આદિ કી શાલા મૈં, કારખાના-મીલ-इत्यादि नाम से प्रसिद्ध

દાન વિરમણ વ્રતની પરિરક્ષાને માટે બતાવવામા આપી છે “ પઢમ ” તેમાની
પહેલી ભાવનાનુ નામ ‘ વિવિક્તવસતિવાસ ’ તેમા સાધુઓએ ડયા વાસ કરવો
તે બતાવ્યું છે “ દેવકુલ સમા-પ્પવા-વસહ-રુક્ષમૂલ-આરામ-કદરાગાર-ગિરિ-
ગુહા-કમ્મ તુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નઘર-સુસાણ-લેણ-આવણે ”
દેવકુલમા-વ્યન્તર આદિ દેવોના સ્થાનમા, સભામા જ્યા મન્ત્રણાને માટે આવીને
વખતોવખત માણસો એકઠા થાય છે એવા સ્થાનમા, પ્રવામા-પાનીયશાળમા
આવસથમા-પરિવ્રાજકોના ઘરોમા, વૃક્ષમૂળમા-ઝાડની નીચે, આરામમા-માધવી
લતા આદિથી આચ્છાદિત રમ્યવનમા, કન્દરામા-ગુફામા, આકરમા-લોહ આદિ
ધાતુઓની ખાણમા, ગિરિગુહામા-પર્વતની ગુફામા કર્માન્તમા-લુહાર આદિની
શાલામા, કારખાના-મીલ આદિ નામે પ્રસિદ્ધ સ્થાનોમા, ઉદ્યાનમા-બાગમા,

શાલા=રથાદિગૃહમ્, કુપ્યશાલા=ગૃહોપકરણશાલા, મण्डपः=विश्रामस्थानम्, शून्य-
 गृह=प्रसिद्ध, श्मशानम्=प्रसिद्धम्, लयन=गृहम्, आपणः=पण्यस्थानम्, 'हाट'
 इति भाषा प्रसिद्धम्, एषा समाहार द्वन्द्वस्तस्मिन्तथोक्ते, अर्थात्-देवकुलादिरूपे-
 ऽष्टादशविधे, तथा-'अन्नमिय' अन्यस्मिन् 'एवमाइयमि' एवमादिके=एव
 विधे कथं भूते ? इत्याह-'दग्मद्विय-वीय-हरिय-तस पाण अससत्ते' दक-
 मृत्तिका बीजहरितप्रसपाणसमक्ते-दकम्=जलम्, मृत्तिका=प्रतीता, बीजानि=
 शाल्यादीनि, हरितानि=दूर्वादीनि त्रसपाणाः=द्वीन्द्रियादयः, तैरससक्ते=रहिते,
 पुनः कीदृशे ? 'आहाकडे' यथाकृते=गृहस्थेन स्वार्थं निर्मिते 'फासुए' फासुके
 =निर्दोषे 'विविक्ते=स्त्रीपशुपण्डकरहिते, अत एव-'पसत्ये' प्रशस्ते=श्रेष्ठे
 साधुनिवासयोग्ये 'उवस्सए' उपाश्रये-साधुभिः 'विहरियव्व' विहर्त्तव्य=
 आश्रयितव्य 'होइ' भवति । एतादृशे उपाश्रये साधुभिर्निवासः कर्तव्य इत्यर्थः ।

સ્થાન મેં, ઉદ્યાન મેં-ઉપવન મેં, ધાનશાલા મેં-રથાદિ ગૃહ મેં, કુપ્યશાલા
 મેં-ગૃહોપકરણ રાખને કે સ્થાન મેં, મઢપ મેં-વિશ્રામ સ્થાન મેં-શૂન્ય ગૃહ
 મેં-સૂને ઘર મેં, શ્મશાન મેં-મરઘટ મેં, લવન મેં-પર્વત કી તલહટી મેં
 નિર્મિત પાપણ ઘર મેં, આપણ મેં-હાટ મેં (અન્નમિ ય એવમાઈયમ્મિ) તથા
 હસી તરહ કે દૂસરે સ્થાન મેં કિ જો (દગમદ્વિય-વીય-હરિય-તસપાણ
 અસસત્તે) જલ, મૃત્તિકા, વીજ, દૂર્વા, દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ, ઇન સે રહિત
 હો, તથા (અહાકડે) જિસ ગૃહસ્થ ને અપને નિમિત્ત બનવાયા હો, એવ
 જો (ફાસુએ) નિર્દોષ હો, તથા (વિવિક્ત) સ્ત્રી, પશુ, પંડક સે રહિત
 હો ઓર (પસત્યે) પ્રશસ્ત-સાધુજનોં કે નિવાસ યોગ્ય હો (ઉવસ્સએ)
 એસે ઉપાશ્રય મે (હોઈવિહરિયવ્વ) સાધુઓ કો રહના ચાહિયે । (અહા

ધાનશાલામા-રથાદિ ગૃહમા, કુપ્યશાલામા-ગૃહોપકરણ રાખવાની જગ્યામા,
 મઢપમા-વિશ્રામ સ્થાનમા, શૂન્યગૃહમા-સૂના ઘરમા, શ્મશાનમા (મરઘરમા),
 લવનમા-પર્વતની તળેટીમા રચેલ પાપાણુધરમા, આપણમા-હાટમા, "અન્નમ્મિ
 ય એવમાઈયમ્મિ" તથા એજ પ્રકારના અન્ય સ્થાનોમા કે જે "દગમદ્વિય-વીય
 -હરિય-તસપાણઅસસત્તે" જળ, માટી, ખીજ દૂર્વા, દ્વિન્દ્રીયાદિક ત્રસ એ
 બધાથી રહિત હોય, તથા "અહાકડ" જે ગૃહસ્થે પોતાને માટે બનાવ
 રાખ્યું હોય, અને જે "ફાસુએ" નિર્દોષ હોય, તથા "વિવિક્ત" સ્ત્રી, પશુ,
 પંડકથી રહિત હોય, અને "પસત્યે" પ્રશસ્ત-સાધુજનોના નિવાસને માટે
 યોગ્ય હોય "ઉવસ્સએ" એવા ઉપાશ્રયમા "હોઈ વિહરિયવ્વ" સાધુઓએ
 રહેવું જોઈએ "અહાકમ્મગહુલે ય જેસે" અને જે ઉપાશ્રય આધાકર્મ બહુલ હોય

અથ કથમ્ભૂતે ઉપાશ્રયે સાધુભિર્ન વસ્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘ आदाकम्मवहुले ’ आधा कर्मवहुलः=आधोनम्-आधातया, अर्थात् साध्वं यत्पट्टकायोपमर्दनरूप कर्म, तेन बहुलो व्याप्तो ‘ जे ’ यः एव विध उपाश्रयो ‘ से ’ स र्जयितव्य । अनेन अदत्तादानविरमणलक्षणमूलगुणाशुद्धेः परिहारः उक्तः । स दोषवसत्युपभोगेन मूलगुणहानिर्भवतीति भावः । तथा ‘ जत्थ ’ यत्र—‘ अतो ’ अन्तर्भागे ‘ वहि ’ बहिर्भागे, ‘ मज्झे य ’ मध्ये च ‘ आसियसम्मज्जि ओसित्त सोहियछाणदुमण लिपण अणुलिपण जलगभडचालण ’ आसक्ति समार्जितोत्तिसक्तगोधितछाण-धवलनलेपनानुलेपनज्वलनभाण्डचालनम्-तत्र-आसिक्तम्=आसेचनम्=उदकादि-च्छोटनमित्यर्थः, सम्मार्जितम्=शलाका हस्तेन-मार्जन्येत्यर्थः, कचरसशोधनम्, शोधित=भित्त्यादि सलग्नजालाद्यपनयनेन शुद्धीकृत ‘ उग ’ छाण=उगणन-गोमयेन, सस्करणम्, दुमण ’ धवलन-सेटिकादिना भित्त्यादेरुज्ज्वलीकरणम्,

કમ્મવહુલેય જે સે) ઓર જો ઉપાશ્રય આધાકર્મ વહુલ હો-સાધુ કે નિમિત્ત પટ્ટકાયમર્દનરૂપ કર્મ સે ન્યાસ હો-ઉત્તમે સાધુ કો નહીં વસના ચાહિયે । ક્યોં કિ એસે ઉપાશ્રય મેં રહેને સે સાધુ કે હસ અદત્તાદાન-વિરમણરૂપમૂલગુણ કી શુદ્ધિ નહીં રહતી હૈ । ઓર નહી રહને સે હસ મૂલગુણ કી શુદ્ધિ રહતી હૈં । તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ સદોષવસતિ કે ઉપભોગ સે સાધુ કે મૂલગુણોં કી હાનિ હોતી હૈ યહી યાત “અહાકમ્મ-વહુલેય જે સે” હસ સૂત્રાશ દ્વારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ । તથા (જત્થ અતો વહિં મજ્જેય) જો ઉપાશ્રય ખીતર મેં બાહિર મે ઓર મધ્યભાગ મેં (આસિયસમ્મજ્જિ ઓસિત્તસોહિય-છાણ-દુમણલિપણ અણુલિપણ-જલ-ગભડચાલણ) પાની સે છિડકા દુઆ હો, બુહારુ સમાર્જની સે જહા કા કૂડા કચરા સાફ કર દિયા ગયા હો, ખીત આદિ પર લગે હુણ-જાલે-જહાં ઉતાર દિયે ગયે હો, જો ગાય કે ગોવર સે લીપા ગયા હો, ચુને આદિ સે

સાધુને નિમિત્તે છકાય મર્દનરૂપ કર્મથી વ્યાસ હોય, તેમા સાધુએ રહેવું જોઈએ નહીં કારણ કે એવા ઉપાશ્રયમા રહેવાથી સાધુના આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ મૂળ ગુણોને હાનિ થાય છે, એ જ વાત “અહાકમ્મ-વહુલેય જે સે” આ સૂત્રાશ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે તથા “જત્થ અતો વહિં મજ્જેય” જે ઉપાશ્રય અદર, બહાર અને મધ્ય ભાગમા “આસિયસમ્મજ્જિઓસિત્તસોહિયછાણ દુમણલિપણઅણુલિપણજલણમ્મહચાલણ” પાણી છાટેલ હોય, સાવરણીથી જ્યાનો કચરો સાફ કર્યો હોય, દીવાલ આદિ પર લાગેલા જાળા જ્યાથી ઉતારી લીધા હોય, જે ગાયના છાણથી લીપેલ હોય, ચુના વગેરેથી જેની દીવાલો

‘લિપણ’ લેપનમ્=મૃત્તિકામિશ્રિતગોમયાદિના રત્નાદિપૂરણેન સકલ્લેપનમ્,
 ‘અણુલિપણ’ અણુલેપનમ્=શોભા ૨ પુનઃ પુનર્લેપનમ્, જ્વલન=શીતાપનોદનાય વહે:
 પ્રજ્વલીકરણમ્, માણડચાલનમ્=ગૃહસ્થિતમાણડાનામપરત્ર સ્થાપનમ્, ઉપલક્ષણમેત-
 દન્યવસ્તુનામપિ, એતેષા સમાહારદ્વન્દ્વઃ, એતદ્રૂપ-‘અસજમો’ અસજમ=જીવ
 વિરાધનારૂપ સાધુનિમિત્ત ‘વટ્ટ’ વર્તતે ‘સે તારિસે’ ચ તાદૃશઃ ‘સુત્તપરિ-
 કુટ્ટે’ સુત્તપરિકુટ્ટઃ-આગમનિપિદ્ધ, ‘હુ’ નિશ્ચયેન ‘ઉવસ્સણ’ ઉપાશ્રયઃ
 ‘સજયાણ સયતાનામ્’ અટ્ટા’ અર્થાત્ ‘વજ્જેયવ્વો’ વર્જિતવ્યઃ । સયમિ
 મિરેતાદૃશે જીવવિરાધનાયુક્તે ઉપાશ્રયે ન કદાપિ વસ્તવ્યગિતિ ભાવઃ । પ્રથમભા-
 વનાનુપસહરનાદ-‘એવ’ એવમ્-ઉક્તરૂપેણ ‘વિવિક્તવાસવસહિસમિહજોગેણ’
 વિવિક્તવાસવસતિસમિતિયાગેન-વિવિક્તા=સ્ત્રીપશુપણ્ડકરહિતા જનરહિતા વા યા

જિસકી ખીંતે પોતકર ઉજ્જવલ કર દી गई हों, जिन्में छेद वगैरह
 गोबरमिश्रित मिट्टी से पर दिये गये हों, तथा जो चार २ सुन्दर दिखाने
 के निमित्त गोमयादि मिश्रित मृत्तिका से लीपा गया हो, जहा शीत को
 दूर करने के लिये अग्नि जल रही हो और जहा से रखे हुए गृहस्थ-
 जनों के वर्तन उठा २ कर दूसरी जगह रखे जा रहे हो इस प्रकार का
 (असजमो वट्ट) जीवविराधना रूप असयम जहा साधु के निमित्त
 हो रहा हो (से तारिसे) इस प्रकार का जो (सुत्तपरिकुट्टे) आगम से
 निपिद्ध है (उवस्सण) वह उपाश्रय (सजयाण अट्टा) साधुओं के लिये
 (वज्जेयव्वो) वर्जनीय है, अर्थात् इस प्रकार के उपाश्रय में साधु को
 नहीं बसना चाहिये । अब सूत्रकार प्रथम भावना का उपसहार करते
 हुए कहते हैं—(एव) उक्तरूप से इस (विविक्तवासवसहिसमिह-
 जोगेण) विविक्तवासवसतिसमिति के योग से - स्त्री पशु पण्डक से

ઉત્ત્વળ બનાવવામા આવી હોય, જેમાના છિદ્રો આદિ છાણુમિશ્રિત માટીથી
 પૂરી દીધા હોય, તથા જે સુદર દેખાય તે માટે વારવાર છાણુ આદિ મિશ્રિત
 માટીથી લીપવામા આવેલ હોય, ત્યાં શીત દૂર કરવાને માટે અગ્નિ બળતો
 હોય, અને ત્યાંથી ગૃહસ્થોના વાસણુ ઉપાડી ઉપાડીને બીજી જગ્યાએ મૂકવામા
 આવતા હોય, આ પ્રકારનો “અસજમોવટ્ટ” એવ વિરાધનારૂપ અસયમ
 ત્યાં સાધુને નિમિત્તે થઈ રહ્યો હોય, ‘સે તારિસે’ આ પ્રકારનું જે “સુત્ત
 પરિકુટ્ટે” આગમદ્વારા નિપિદ્ધ છે, ‘ઉવસ્સણ’ તે ઉપાશ્રય “સજયાણ અટ્ટા”
 સાધુઓને માટે ‘વજ્જેયવ્વો’ વર્જનીય છે એટલે કે તે પ્રકારના ઉપાશ્રયમા
 સાધુએ રહેવું જોઈએ નહીં હવે સૂત્રકાર પહેલી ભાનાનો ઉપસહાર કરતા
 કહે છે—“એવ” ઉપર કહ્યા પ્રમાણે આ “વિવિક્તવાસવસહિસમિહજોગેણ”

વાસવસતિ = નિવાસસ્થાન તદ્વિપયા યા સમિતિઃ = મમ્યકુ પ્રવૃત્તિસ્તયા યો યોગઃ = સમ્બન્ધસ્તેન 'ભાવિઓ' ભાવિતઃ - વાસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરામા = જીવઃ 'નિચ્ચં' નિત્ય = સદા 'અદિગરણકરણકારાવણપાવક્રમ્મવિરણ' અધિકરણકરણ કારણપાવક્રમ્મવિરણ - અધિક્રિયતે = અધિકારી ક્રિયતે દુર્ગતામાત્મા યેન તદવિકર-
ણમ્ = આસિચ્ચનાદિરૂપ સાવધાનુષ્ઠાનમ્, તસ્ય ચત્સયકરણમન્યતો ના કારણમ્ -
ઉપલક્ષણાદનુમોદન ચ તદેવ પાપકર્મ = તસ્માદ્ વિરતો = નિવૃત્તો યઃ સઃ ત ગોક્તઃ,
તથા - 'દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ' દત્તાનુજ્ઞાતોદગ્રહરુચિઃ 'તત્ર - દત્તસ્ય = દાત્રા
વિતીર્ણસ્ય એવળીયસ્ય અનુજ્ઞાતસ્ય = તીર્થકરણધર્મદત્તાણસ્ય દેવકુળાદેઃ ઉદગ્રહે =
ગ્રહણે રુચિઃ = પ્રીતિર્યસ્ય સ તયોક્ત અદત્તાનનુજ્ઞાતયમતેરપરિમોક્તેત્યર્થ,
'ભવઈ' મતિ ॥ સૂ. ૬ ॥

રહિત એસે ઇકાન્ત નિવાસ સ્થાન મેં વસને રૂપ સમિતિ કે સબધ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા) મવિત જીવ (નિચ્ચ) સદા (અદિગરણકરણ કારાવણપાવક્રમ્મવિરણ) આસિચ્ચનાદિ સાવધાનુષ્ઠાન કે કરને, કરાને ઓર ડસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત બના રહતા હૈં । તથા (દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ) દાતા સે વિતીર્ણ, એવ તીર્થકર ગણ પર આદિ દેવોં દ્વારા વસને કે લિયે અનુજ્ઞાત રૂપ તેસે દેવકુલ આદિ સ્થાન કે ગ્રહણ મેં પ્રીતિવાલા હોને સે વહ દત્તાનુજ્ઞાત વસતિ કે ગ્રહણ કી રુચિ વાલા અર્થાત્ અદત્ત અનનુજ્ઞાત વસતિ કા અપરિમોક્તા હોતા હૈં ।

ભાવાર્થ—અદત્તાદાનવિરમણવ્રત કી રક્ષા ઓર સુસ્થિરતા કે નિમિત્ત સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા હસકી પાચ ભાવનાઓં મેં સે વિવિક્તવાસ-
વસતિ નામ કી પ્રથમ ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રકટ કરતે હુએ કહતે હૈં

વિવિક્તવાસવસતિ સમિતિના યોગથી સ્ત્રી, પશુ, પડકથી રહિત એવા એકાન્ત નિવાસ સ્થાનમા વસવારૂપ સમિતિના સબધથી “ભાવિઓ અતરપ્પા” ભાવિત એવ “નિચ્ચ” સદા “અદિગરણકરણકારાવણપાવક્રમ્મવિરણ” આસિચ્ચનાદિ સાવધ અનુષ્ઠાન કરવાથી, ડરાવવાથી અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તથા “દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ” દાતાની વિતીર્ણ, અને તીર્થકર ગણધર આદિ દેવોદ્વારા વસવાને માટે અનુજ્ઞા મળેલ એવા દેવકુલ આદિ સ્થાન ગ્રહણ કરવામા પ્રીતિયુક્ત હોવાથી તે દત્તાનુજ્ઞાત વસતિને ગ્રહણ કરવાની રુચિવાળો એટલે અદત્ત અનનુજ્ઞાત વસતિનો ઉપભોગ કરનાર બને છે

ભાવાર્થ—અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની રક્ષા અને સુસ્થિરતાને નિમિત્તે સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા તેની પાચ ભાવનાઓમાથી “વિવિક્તવાસવસતિ” નામની પહેલી ભાવનાનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરતા બતાવે છેડે સાધુઓએ દેવકુલ આદિ

કિ સાધુ કો દેવકુલ આદિ સ્થાનો મે જો કિ ઉસકે નિમિત્ત કો લેકર નહીં મને હુળ હોતે હે ઠહરના ચાહિયે યા કિસી ઉપાશ્રય મેં। યહ ઉપાશ્રય સાધુ કે નિમિત્ત બના નહીં હોના ચાહિયે, ગૃહસ્થ ને હસે અપને નિમિત્ત બનાયા હો એસા હોના ચાહિયે। સાધુ કે નિમિત્ત બનાને મેં સાધુ કો સાવગ્યાનુષ્ઠાન કરાને રૂપ અસયમ કા દોષ લગતા હૈ। સ્ત્રી પશુ પઠક સે હસ સ્થાન કો વર્જિત હોના ચાહિયે। તથા 'સાધુ મહારાજ આ રહે હૈં' હસ રવાલ સે સાધુ કા નિમિત્ત લેકર વહ પાની સે ઝિઢકા હુઆ નહીં હોના ચાહિયે, વહા કે જાલે વગેરહ ઉતારે હુળ નહીં હોના ચાહિયે। ગોવર આદિ સે લીપ પોત કર ઉસે સાફ સુવરા કિયા ગયા નહીં હોના ચાહિયે। ઉસમેં કો શીત કો દૂર કરને કે લિયે વહા અગ્નિ વગેરહ જલાકર ઝસે ગરમ કિયા હુઆ નહીં હોના ચાહિયે, હત્યાદિ જિસ રૂપ સે આગમ મેં સાધુ કે લિયે નિવાસ યોગ્ય વમતિ રહને કે લાયક કહી ગઈ હૈ વહ ઉસ રૂપ કા હોના ચાહિયે। તમી જાકર યહ પ્રથમ ભાવના પલ સકતી હૈ। ઓર હસ તરહ કી પ્રવૃત્તિ કરને વાલા સાધુ અપને અદત્તાદાનવિરમણવ્રત કી રક્ષા ઓર સુસ્થિરતા કર સકતા હૈ। સૂત્ર મેં જો અધિકરણ શબ્દ આયા હૈ ઉસકા વ્યુત્પત્તિ-લભ્ય અર્થ “દુર્ગતિ મેં જાને યોગ્ય આત્મા જિસકે વલ પર બનતા હૈ”

સ્થાનો, ડે જે તેમને નિમિત્તે બનાવ્યા હોતા નથી, તેમા વસવુ જોઈએ અથવા તે કોઈ ઉપાશ્રયમા વસવુ જોઈએ તે ઉપાશ્રય સાધુને નિમિત્તે બનાવેલ હોવા જોઈએ નહીં, પણ ગૃહસ્થે પોતાને નિમિત્તે જે તે બનાવેલા હોવા જોઈએ સાધુને નિમિત્તે બનાવવામા સાધુને સાવધ અનુષ્ઠાન કરાવવા ઉપ અસયમને દોષ લાગે છે સ્ત્રી, પશુ પઠકથી તે સ્થાન રહિત હોવુ જોઈએ તથા “સાધુ મહારાજ પધારવાના છે” એવા ખ્યાલથી સાધુને નિમિત્તે તેના પર પાણી છટાવુ હોવુ જોઈએ નહીં, ત્યાના જાળા વગેરે ઉતારેલ હોવા જોઈએ નહીં છાણુ આદિથી લીપીને તેને સ્વચ્છ અને સુધડ બનાવ્યો હોવો જોઈએ નહીં ત્યાની રીતને દૂર કરવા માટે ત્યા અગ્નિ વગેરે સળગાવીને તેને ગરમ કરેલ હોવો જોઈએ નહીં, હત્યાદિ પ્રકારે જે રીતે આગમમા સાધુને માટે યોગ્ય નિવાસ બતાવવામા આવેલ છે તે પ્રકારનુ તે નિવાસસ્થાન હોવુ જોઈએ ત્યારે આ પહેલી ભાવના સફળ થાય છે અને તે પ્રકારની આ પ્રવૃત્તિ કરનાર સાધુ પોતાના અદત્તાદાન વિરમણવ્રતની રક્ષા અને સુસ્થિરતા રાખી શકે છે સૂત્રમા જે અધિકરણ રાખ્દ આવ્યો છે તેનો વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે મળતો અર્થ “જેના પાયાવશી બનાવ્યા હર્ગતિયા બનાવે ગાન મને જે” જે ગાનને ગાય છે આ

દ્વિતીયાં ભાવનામાહ—‘ વીય ’ ઇત્યાદિ .

મૂલ્મ—વીયં આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે જં કિંચિ
 ઇક્કડ વા કઠિણગ વા જતુગ વા પરમેરકુચ્ચકુસડઢમપ્પલ્લલ-
 ભૂયગવહ્લયપુપ્ફફલતયપ્પવાલકંદમૂલતણકટ્ટસકરાઈ ગેળહઈ
 સેજ્જોવહિસ્સ અદ્દા, ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેળિહં,
 જે હણિ હણિ ઉગ્ગહં અણુપ્પાવિય ગેળિહયઠ્ઠં । एवं ઉગ્ગહસ-
 મિહજોગેણ ભાવિઓ ભવઈ અતરપ્પા ણિચ્ચ અહિકરણકરણ-
 કારાવણપાવકમ્મવિરે દત્તમણુપ્પાય ઉગ્ગહરૂઠ્ઠં ॥ સૂ. ૭ ॥

ટીકા—વીય દ્વિતીયામ્ અનુજ્ઞાતસસ્તારકગ્રહણરૂપા ભાવનામાહ તત્ર—‘ આરા-
 મુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે ’ આરામોશાનકાનનપ્રવેશભાગે—તત્ર—આરામઃ =

હસ પ્રકાર છે । આસિચ્ચનાદિકર્મ એસે હી છે, ત્યો કી યે સાવધાનુષ્ઠાન
 હૈં । કરના, કરાના ઓર અનુમોદના કરના ઇનકા વ્રતાદિ કે વિચાર મેં
 સમાનકોટિ કા સ્થાન કહા ગયા છે, અતઃ સાધુ કે લિયે આસિચ્ચ-
 નાદિ કર્મ યદિ સાધુ કે નિમિત્ત કો લેકર ક્રિયે જા રહે હે તો વહ ભી
 સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમ કા ભાગી થનતા છે । અતઃ સાધુ કો એસે
 સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમભાવસે દૂર રહનેકા પ્રમુકા આદેશ છે ॥ સૂ. ૬ ॥

અથ સૂત્રકાર દ્વિતીયભાવના કો પ્રકટ કરતે હૈં—‘ વીય આરામુ-
 જ્જાણ૦ ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(વીય) હસ વ્રત કી દૂસરી ભાવના અનુજ્ઞાતસસ્તારક-
 ગ્રહણ રૂપ છે । વહ હસ પ્રકાર છે—(આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે)

સિચ્ચનાદિ કર્મ એવા જ છે ડારણ કે તે સાવધ અનુષ્ઠાન છે કરવુ, કરાવવુ
 અને અનુમોદના આપવી એ ત્રણેનુ વ્રતાદિકના વિચારમા સમાન કોટિનુ સ્થાન
 આપ્યુ છે, આસિચ્ચનાદિ કર્મ ને સાધુને નિમિત્તે કરવામા આવતા હોય તો
 તે સાધુને માટે પણ સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમના ભાગીદાર બને છે તેથી
 પ્રભુને એવો આદેશ છે કે સાધુઓએ તેવા સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમ ભાવથી
 દૂર રહેવુ નેઈએ ॥ સૂ. ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર બીજી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—‘ વીય આરામુજ્જાણ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ વીય ’ આ વ્રતની બીજી ભાવના ‘ અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ
 રૂપ છે, તે આ પ્રમાણે છે—‘ આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે ’ આરામ—

माधवीलतादिपरिमण्डितवनविशेषः, उद्यानम्=उपवनम्, कानन=सामान्यवृक्षोपेत
वनम्, वनम्=नगरदूरवर्तिनम्, एतेषां यः प्रदेशः=स्थानं तस्य यो भागः=एक
देशस्तत्र स्थित 'इक्कड' 'ढाट्टण' इति भाषा प्रसिद्धतृणविशेषवा=अथवा 'क-
ठिणग' कठिनम्='रोडस' इति भाषा प्रसिद्धतृणविशेषः वा, यद्वा-'जतुग'
जन्तुक=जलाशयोत्पन्नतृणविशेषम्, वा=अथवा 'परमेरकुचकुसडम्भप्पलालमूयग
वल्लयपुष्पफलत्वक्प्रवालकन्दमूलतणकट्टसक्कराड' परमेरकुचकुशदर्भपलालमूयकव-
ल्वजपुष्पफलत्वक्प्रवालकन्दमूलतणकाष्ठशर्करादि, तत्र-पराः=तृणविशेषः, मेराः=
मुञ्जसरिका. कूर्चानि येस्तृणविशेषैः भित्तौ सेटिकावलेपनार्थं कूर्चा (कूची)
निर्मियन्ते ते तृणविशेषाः कुशाः=इस्वाकारास्तृणविशेषाः, दर्भाः=दीर्घाकाराः
कुशाएव दर्भा उच्यन्ते, पलालः='पुआल' इति भाषा प्रसिद्धः, मूयकः='मोति-
गा' इति भाषा प्रसिद्धस्तृणविशेषः, वल्वजः=दर्भजातीयतृणविशेषः, पुष्पफल
त्वक्प्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्कराः प्रतीताः, एता आदौ यस्य तत्तथोक्त 'ज

आराम-माधवीलता आदि से परिमण्डित वनविशेष में, उद्यान-उपवन
में, कानन-सामान्य वृक्षों से युक्त वन में, वन-नगर से दूरवर्ती
जगल में, अर्थात् इन स्थानों के प्रदेशों के एकदेश में, स्थित (ज किंचि)
जो कुछ (इक्कड वा) ढाट्टण-तृणविशेष, अथवा (कठिणग वा) कठि-
नम्-रोडस नामक तृणविशेष, अथवा (जतुग वा) जतुक-जलाशय में-
उत्पन्न हुए जतुक नाम के तृणविशेष, (पर-मेर-कुच-कुस-डम्भ-
प्पलाल-मूयग-वल्लय-पुष्प-फल-तय-प्पवाल-कद-मूल-तण-कट्ट-
सक्कराड) पर नाम के तृणविशेष, कुश नामक तृणविशेष, दर्भ नामक
तृणविशेष, पलाल नामक तृणविशेष, मोर्तिग नामक तृणविशेष,
वल्वज-दर्भ-जाति का तृणविशेष, पुष्प, फल, त्वक्-डाल, प्रवाल-

माधवीलता आदिथी आच्छादित वनमा, उद्यान-आगमा, कानन-सामान्य वृक्षोथी
युक्त वनमा, वन-नगरथी दूर आवेला जगलमा, ओटले के ते स्थानाना
प्रदेशोमाना ओड देशमा, स्थित "ज किंचि" जे कोड "इक्कड वा" ढाट्टण-
ओड प्रकारनु धास, अथवा "कठिणग वा" कठिनम्-रोडस नामनु ओड प्रकारनु
धाम अथवा "जतुग वा" जतुक-जलाशयमा पेदा थयेल जतुक नामनु धास
"पर, मेर, कुच, कुस, डम्भ, प्पलाल, मूयग, वल्लय, पुष्प, फल, तय,
प्पवाल, कद, मूल, तण, कट्ट सक्कराड" पर नामनु धास, मेर-मुञ्ज नामनु
धास, कुश नामनु धास, दर्भ नामनु धास पलाल नामनु धास, मोर्तिग नामनु
धास, वल्वज-दर्भ-जाति नामनु धास, पुष्प, फल, त्वक्-डाल, प्रवाल-कुपण,

કિંચિ 'યત્કિંચિત્' 'સેજ્જોવહિસ્સ' 'શય્યોપધેઃ=શય્યોપકરણસ્ય' 'અદ્વા' અર્થા
 ય=હેતવે 'ગેણ્હ' ગૃહ્ણતિ, તત્ 'ઉગ્ગહે' અવગ્રહે=આજ્ઞાયામ્ 'અદિણ્ણે' અ
 દત્તે=અદત્તાયામ્, અર્થાત્ તત્તદ્વસ્તુ સ્વામિન આજ્ઞાયામપાત્રયા સત્યા 'ગેણ્હિહ'
 ગ્રહીતુ સાધુના 'ન કપ્પહ' ન કલ્પતે, 'જે' યત્=યસ્માત્ કારણાત્ 'હણિહણિ'
 અહન્યહનિ પ્રતિદિનમ્ 'ઉગ્ગહે' અવગ્રહમ્ 'અણુણવિય' અનુણાપ્ય=પ્રાપ્ય તત્તદ્વ-
 સ્તુ સાધુભિઃ 'ગેણ્હિયન્વ' ગ્રહીતવ્ય ભવતિ । ઉપસદ્દેરન્નાહ-પચમ્=અનેન પ્રકારેણ
 'ઉગ્ગહસમિહજોગેણ' અવગ્રહસમિતિયોગેન-અવગ્રહઃ=શય્યોપધ્યય તૃણાદિ
 નસ્ય તત્તત્સ્વામિન આજ્ઞા તત્ર યા સમિતિઃ=સમ્યક્પ્રવૃત્તિસ્તયા યો યોગ=સર્વ-
 ન્ધસ્તેન ભાવિતો=વાસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીવો નિત્યમ્, 'અહિકર

કોપલ, કન્દ, મૂલ, તૃણ-સામાન્ય તૃણવિશેષ, કાષ્ઠ-લકડી, શર્કરા-
 કકડ, इनमें से जिस किसी पदार्थ को जो (सेज्जोवहिस्स अद्वाण
 गेण्ह) शय्योपकरण के निमित्त लेता है, परन्तु (उगगहे अदिण्णम्मि
 गेण्हिहउ न कप्पह) इन २ वस्तुओं के स्वामी यदि उन २ वस्तुओंको लेने
 की आज्ञा नहीं देते हैं तो साधुको इन वस्तुओंका लेना नहीं कल्पता है
 (जे) इसलिये जो (हणि हणि उगगह अणुणविय गेण्हियन्व) प्रतिदिन उन
 २ वस्तुओं को लेनेके लिये उन २ वस्तुओंके स्वामी की आज्ञा साधु को
 लेनी चाहिये, और आज्ञा प्राप्त हो जाने पर ही उन २ वस्तुओं को लेना
 चाहिये । (एव उगगहसमिहजोगेण भाविओ अतरप्पा निच्च अहिकरण,
 करण कारावणपावकम्मविरण दत्तमणुणाय उगगहरुई भवइ) इस प्रकार
 से अवग्रहसमितिके योग से-शय्योपधिके निमित्त तत्तद्वस्तुओं के स्वामी
 की आज्ञा प्राप्तकर तृणादि को के लेने में सम्यक् प्रवृत्ति के साथ सबध

કદ, મૂળ, તૃણ-સામાન્ય ધાસ, કાષ્ઠ-લાકડા, શર્કરા-કકડ, તે બધામાંથી કેઈ
 પણ પદાર્થને જે “સેજ્જોવહિસ્સ અદ્વાણ ગેણ્હ” શબ્દના બનાવવાના સાધન
 તરીકે લે છે, પણ “ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેણ્હિહઉ ન કપ્પહ” તે તે વસ્તુઓના
 માલિક જો તે તે વસ્તુઓ લેવાની રજા ન આપે તો સાધુઓને તે વસ્તુઓ
 લેવી કલ્પતી નથી “જે” તેથી જે “હણિ હણિ ઉગ્ગહ અણુણવિય ગેણ્હિયન્વ” પ્રતિ
 દિન તે તે વસ્તુઓ લેવાને માટે તે તે વસ્તુઓના માલિકની મજૂરી સાધુએ
 લેવી જોઈએ, અને મજૂરી મળ્યા પછી જ તે તે વસ્તુઓ લેવી જોઈએ “એવ
 ઉગ્ગહ સમિહજોગેણ ભાવિઓ અતરપ્પા નિચ્ચ અહિકરણ, કરણકારાવરણપાવકમ્મ
 વિરણ દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ ભવઈ” આ પ્રમાણે અવગ્રહ સમિતિના યોગથી-
 શય્યોપધિને નિમિત્તે તે તે વસ્તુઓના માલિકની આજ્ઞા મેળવીને તૃણાદિકોને

સુદર્શિની ટોકા અંક ૩ સૂં ૭ 'અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ' નામ ૨ ભાવના નિરૂપણમ્ ૭૫૧

ળકરણકારાવળપાવકર્મવિરણ ' અધિકરણકરણકારણપાવકર્મવિરતઃ=તત્ર અધિ-
કરણમ્=અનનુજ્ઞાતેકકડાદીનામાદાનરૂપ સાધ્યકર્મ તસ્ય યત્સય કરણમ્ અન્યતશ્ચ
કારણમ્ ઉપલક્ષણાદનુમોદન ચ, એતદ્દૂપ યત્પાપકર્મતસ્માદ્ વિરતો=નિવૃત્તો યઃ સ
તથોક્તઃ, તથા—' દત્તમણુણાયુગ્ગહરુઢ ' દત્તાનુજ્ઞાતાવગ્રહરુચિઃ=દત્તસ્ય=વસ્તુ
સ્વામિના વિતીર્ણસ્ય, અનુજ્ઞાતસ્ય=ગ્રહણાયં કથિતસ્ય તીર્થકરણધરૈરાજ્ઞપ્તસ્ય વા
તૃણાદિવસ્તુનઃ ઉદગ્રહઃ=ગ્રહણ, તસ્મિન્ રુચિઃ અભિપ્રાયો, યસ્ય સ તથોક્તઃ,
' મગ્ધ ' મવતિ ॥ સૂં ૭ ॥

સે, ભાવિત છુઆ જીવ સદા સાવચાલુછાન કે કરને, કરાને ઓર ઉસકી
અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મ સે નિવૃત્ત વના રહતા હૈ । તથા દાતા સે વિતી-
ર્ણ એવ તીર્થકર ગણધર આદિ દેવોં દ્વારા ગ્રહણ કરને કે લિયે કથિત
હક્કડ આદિ વસ્તુ કે ગ્રહણ કરને કે અભિપ્રાય વાલા હોતા હૈ । ડમ તરહ
ઉસકી અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણરૂપ દ્વિતીય ભાવના લઘ જાતી હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસસૂત્ર દ્વારા હસ વ્રત કી અનુજ્ઞાત સસ્તારક
ગ્રહણ નામક દૂસરી ભાવના કા ઉલ્લેખ કિયા હૈ । હસમેં યહ સ્પષ્ટ કિયા
ગયા હૈ કિ સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ શય્યોપકરણ કે નિમિત્ત આરામ
આદિ સ્થાનોં કે કિસી ખી ભાગ સે જો હક્કડ આદિ વસ્તુ લેવે વહ
ઉનકે સ્વામિયોં કી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર હી લેવે । અન્યથા ઉસે અદત્તાદાન
ગ્રહણ કરને કા દોષ લગેગા જો હસ મૂલગુણ કી અશુદ્ધિ કા કારણ
વનેગા । અતઃ જો શય્યા સસ્તારક કે નિમિત્ત હક્કડ આદિ તૃણવિશેષો

લેવાની સમ્યક્ પ્રવૃત્તિના યોગથી, ભાવિત થયેલ જીવ સદા ભાવધાનુષ્ઠાન કરા-
વવાના અને તેની અનુમોદના કરવાના પાપકર્મથી નિવૃત્ત રહ્યા કરે છે તથા
દાતા વડે વિતીર્ણ અને તીર્થકર ગણધર આદિ દેવો દ્વારા ગ્રહણ કરવાને
યોગ્ય કહેલ ઇક્કડ આદિ વસ્તુ ગ્રહણ કરવાના અભિપ્રાયવાળા થાય છે, આ
રીતે તેની અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણરૂપ ખીજી ભાવના સાધ્ય બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા આ વ્રતની 'અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ'
નામની ખીજી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યું
છે કે સાધુનું તે કર્તવ્ય છે કે તે શય્યાના સાધન નિમિત્તે આરામ આદિ
સ્થાનોના ડોઈ પણ ભાગમાથી ઇક્કડ આદિ જે વસ્તુઓ લે તે તેના માલિકની
રજા મેળવીને જ લે નહીં તેા તેમને અદત્તાદાન ગ્રહણ કરવાનો દોષ લાગે
છે, જે આ મૂલગુણની અશુદ્ધિનું કારણ બનશે તેથી શય્યા સસ્તારકને નિમિત્તે
ઇક્કડ આદિ પ્રકારના તૃણ વિશેષને પ્રાપ્ત કરવાને માટે જે સાધુઓ તેના માલિકની

અથ તૃતીયા ભાવનામાહ—‘ તદ્ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તદ્ય પીઠફલગસેજાસથારગદ્વ્યાપ રુક્ષા ન છિદિ-
યન્વા, ન ચ હેયણ ભેયણેણ ચ સેજા કારિયન્વા જસેવ ઉવ-
સપ્પ વસેજ્જા, સેજ્જ તત્થેવ ગવેસેજ્જા, ન ચ વિસમ સમ
કરેજ્જા, ન ચ નિવાયપવાયઉસ્સુગત્ત, ન હસમસગેસુ સુભિયન્વં,
અગ્ગીધૂમો ચ ન કાયન્વો । એવં સજમવહુલે સવરવહુલે સંબુદ-
વહુલે સમાહિવહુલે ધીરે કાણ્ણ ફાસયતે સયયં અઙ્ગાણજુત્તે
સમિપ્પ એગે ચરેજ્જ ધમ્મ, એવ સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવદ્ધ
અંતરપ્પા નિચ્ચ અહિકરણકરણકારાવણપાવકમ્મવિરપ્પ દત્ત-
મણુન્નાય ઉગ્ગહરુદ્ધ ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા શર્યાપરિકર્મવર્જનરૂપા ભાવનામાહ—તત્ર—‘ પીઠફલગ
સેજ્જાસથારગદ્વ્યાપ ’ પીઠફલગશર્યાસસ્તારકાર્યતાયે—તત્ર—પીઠ=‘ વાજોટ ’

કો પ્રાપ્ત કરને કે લિયે અનેકે સ્વામીયો કી આજ્ઞા પ્રાપ્તકર અને ૨ વસ્તુ
ઓં કો લેતા હૈ વહુ હસ ઢિતીય ભાવના કા પાલક હોતા હૈ । હસ
તરહ કે વિચાર સે જો સાધુ અપની પ્રવૃત્તિ કરતા હૈ વહુ અધિકરણ
કરણ કારણ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત બનકર હસ વ્રત કો હસ ભાવના દ્વારા
સ્થિર કરને ચાલા હો જાતા હૈ ॥ સૂ. ૭ ॥

અથ સૂત્રકાર હસ વ્રત કી તૃતીય ભાવના કો કહતે હૈ—‘ તદ્ય
પીઠફલગ ’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) હસ વ્રત કી ત્રીસરી ભાવના શર્યાપરિકર્મ-
વર્જનરૂપ હૈ । વહુ હસ પ્રકાર સે હૈ—(પીઠફલગસેજ્જા સથારગદ્વ્યાપ)

આજ્ઞા લઈને તે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરે છે તેઓ આ બીજી ભાવનાના પાલક
હોય છે આ પ્રકારના વિચારથી જે સાધુ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરે છે તે અધિકરણ
કરણકારણ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈને આ વ્રતને આ ભાવના દ્વારા સ્થિર
કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ. ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે—“તદ્ય પીઠફલગ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના “ શર્યાપરિકર્મવર્જન ”
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“ પીઠફલગસેજ્જાસથારગદ્વ્યાપ ” પીઠ—માજોડ,

इति भाषा प्रसिद्ध, फलक-पाट, शर्या-शरीरप्रमाण, सस्तारक-ढाई हाथ-प्रमाण आसननिशेष, साधु सश्रद्धी इन वस्तुओं को बनवाने के निमित्त (रुक्खा न छिदियव्वा) वृक्षां को नहीं काटना चाहिये। और (न य छेयण-भेयणेण सेज्जा कारियव्वा) न उनके छेदन, भेदन से शर्या करवानी चाहिये। वृक्षों का कटवाना इसका नाम छेदन है और उनका फडवाना इसका नाम भेदन है। तथा (जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज-तथेव गवेसेज्जा) जिस गृहपति के (उवस्सए) उपाश्रय में-वसति-स्थान में साधु (वसेज्जा) वसे-रहे, (तत्थेव) वही पर अर्थात्-उसी मकान मालिक से अथवा उसी वस्ती से (सेज्ज गवेसेज्जा) शर्या की गवेपणा करे न य विसम सम करेज्जा) वहा की भूमि को यदि वह विषम-ऊँची नीची होवे तो उसे सम-एकसी न करे, और (न य निवाय पवाय उस्सुगत्त) न वह निर्वाण स्थान की तथा प्रवात स्थान की

पीठ-चाजोट, फलक-पाट, शर्या-शरीरप्रमाण, सस्तारक-ढाई हाथ-प्रमाण आसननिशेष, साधु सश्रद्धी इन वस्तुओं को बनवाने के निमित्त (रुक्खा न छिदियव्वा) वृक्षां को नहीं काटना चाहिये। और (न य छेयण-भेयणेण सेज्जा कारियव्वा) न उनके छेदन, भेदन से शर्या करवानी चाहिये। वृक्षों का कटवाना इसका नाम छेदन है और उनका फडवाना इसका नाम भेदन है। तथा (जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज-तथेव गवेसेज्जा) जिस गृहपति के (उवस्सए) उपाश्रय में-वसति-स्थान में साधु (वसेज्जा) वसे-रहे, (तत्थेव) वही पर अर्थात्-उसी मकान मालिक से अथवा उसी वस्ती से (सेज्ज गवेसेज्जा) शर्या की गवेपणा करे न य विसम सम करेज्जा) वहा की भूमि को यदि वह विषम-ऊँची नीची होवे तो उसे सम-एकसी न करे, और (न य निवाय पवाय उस्सुगत्त) न वह निर्वाण स्थान की तथा प्रवात स्थान की

ફલક-પાટ, શર્યા-શરીરપ્રમાણ, સસ્તારક-ઢાઈ હાથના માપનુ એક આસન, આદિ સાધુને ઉપયોગી થીજે બનાવવાને માટે “રુક્ખા ન છિદિયવ્વા” વૃક્ષોને કાપવા જોઈએ નહીં, અને “ન ય છેયણ ભેયણેણ સેજ્જા કારિયવ્વા” તેમને છેદાવી ભેદાવીને શર્યા કરાવવી જોઈએ નહીં વૃક્ષોને કપાવવા એટલે તેમનું છેદન અને તેમને વેરાવવા તેનું નામ ભેદન છે, તથા “જસ્સેવ ઉવસ્સપ્પ વસેજ્જા સેજ્જ તથેવ ગવેસેજ્જા” જે ગૃહપતિના “ઉવસ્સપ્પ” ઉપાશ્રયમાં વસતિસ્થાનમાં સાધુ “વસેજ્જા” વસે રહે, “તથેવ” ત્યા જ એટલે કે તે જ મકાનમાલિક પાસેથી અથવા તે જ વસ્તીમાંથી “સેજ્જ ગવેસેજ્જા” શર્યાની ગવેપણા કરે ‘ન ય વિસમ સમ કરેજ્જા’ જે ત્યાની જમીન વિષમ-ઊંચી નીચી હોય તો તેને એકસરખી ન કરે અને “ન ય નિવાય પવાય ઉસ્સુગત્ત”

ન કુર્યાત્ । અય ભાવ - શીતર્ત્તો નિર્વાતસ્થાનસ્ય ગ્રીષ્મર્ત્તો મગ્નાતમ્યાનસ્ય પાન્થ્યો
 ન કુર્યાત્ । इति । ‘ न य ’ न च ‘ दसमसगेषु ’ दशमशકાદીનામુપદ્રવે સત્યપિ શ્વોભો ન કર્તવ્ય इति भावः । तथा-
 ‘ अग्नीधूमो य ’ अग्निर्धूमश्च=दशमशकादीना निवारणार्थमग्निर्धूमो वा ‘ न का-
 यव्वो ’ न कर्तव्यः । एवम्=उक्तस्त्वेण ‘ सजमबहुले ’ सयमबहुलः=सयमः=पद्र
 कायरक्षणलक्षण, स बहुल=प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, तथा-‘ सवरबहुले ’ सवर
 बहुल=सवरः=प्राणातिपाताद्यास्रवद्वारनिरोधः, स बहुल=प्रचुरो यस्य स त
 थोक्तः, तथा-‘ संबुडबहुले ’ सवृतबहुल=सवृत=कपायेन्द्रियजयः, तद् बहुल
 प्रचुर यस्य स तथोक्तः, तथा-‘ समाधिबहुले ’ समाधिबहुलः=ममायिः=चित्त
 स्वास्थ्य, स बहुल=प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, एतादृशो ‘ धीरे ’ धीरः=अक्षोभ्य
 ‘ काएण ’ कायेन ‘ फासयते ’ स्पृशन्=परीपद्मान् गहमानइत्यर्थः, तथा-‘ सयय’

ઉત્સુકતા-ભાવના રાખે અર્થાત્ શીતઋતુ મેં નિર્વાતસ્થાન કી ઔર
 ગ્રીષ્મ ઋતુમેં હવાદાર સ્થાન કી ઇચ્છા ન કરે । તથા-(ન દસમસગેસુ-
 શુભિયવ્વ) ઠહરે દુષ્ઠ સ્થાન મેં દશમશક આદિ કા ઉપદ્રવ હોવે તો
 ઉસસે ઉસકો ક્ષુભિત નહીં હોના ચાહિયે । ઔર (અગ્ની ધૂમો ન
 કાયવ્વો) ન ઉત્ત સ્થાન પર ઉન દશમશક આદિ કો ભગાને કે નિમિત્ત
 અગ્નિ વા ધૂઓં કરવાના ચાહિયે । (એવ) હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ
 રાખને સે (સજમબહુલે) ઘટકાય રક્ષણરૂપ સયમ કી પ્રચુર માત્રા સે
 યુક્ત સયમ બહુલ, તથા (સવરબહુલે) પ્રાણાત્તિપાત આદિ આસ્રવ
 દ્વાર કે નિરોધ રૂપ સવર કી પ્રચુર માત્રા સે સહિત હોને કે કારણ
 સવર બહુલ, તથા (સબુડબહુલે) કપાય ઔર ઇન્દ્રિયોં કે જીતને રૂપ
 સવૃત કી પ્રચુર માત્રા સે રહિત હોને કે કારણ સવૃતબહુલે, તથા

તે નિર્વાત સ્થાનની કે પ્રગ્નાતસ્થાનની ઉત્સુકતા રાખે નહીં, એટલે કે શિયાળામાં
 પવન બિનાના સ્થાનની અને ઉનાળામાં હવા આવે તેવા સ્થાનની તેણે ઈચ્છા
 કરવી નહીં તથા “ ન દસમસગેસુ શુભિયવ્વ ” તેમને ચોલવાના સ્થાનમાં ડાસ,
 મચ્છર આદિનો ઉપદ્રવ હોય તો તેથી તેણે કોલ પામવો નહીં અને “ અગ્ની
 ધૂમો ન કાયવ્વો ” તેમણે તે ડાસ, મચ્છર આદિને નસાડવા માટે તે સ્થાનમાં
 અગ્નિ કે ધુમાડો કરાવવો જોઈ એ નહીં “ એવ ” આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ
 રાખવાથી “ સજમ બહુલે ” છકાય રક્ષણરૂપ સયમની અત્યંત માત્રાથી યુક્ત
 સયમબહુલ તથા “ સવરબહુલે ” પ્રાણાત્તિપાત આદિ આસ્રવદ્વારના નિરોધરૂપ
 સવરની ઘણી માત્રાથી યુક્ત હોવાને કારણે સવરબહુલ, તથા “ સબુડબહુલે ”
 કપાય અને ઇન્દ્રિયોને જીતનાર સવૃતની અતિ અધિક માત્રાથી યુક્ત હોવાને

સતતમ્=નિરન્તરમ્, 'અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે' અધ્યાત્મધ્યાનયુક્તઃ=આત્માનમધિકૃત્ય
અધ્યાત્મમ્=આત્માલમ્બનરૂપ યદ્ધ્યાન તેન યુક્ત =સમન્વિતઃ, તથા-'સમિણ'
સમિતઃ=સમિતિભિર્યુક્ત 'એમે' એક.= એકાકી રાગદ્વેષરહિત, 'ધમ્મ' ધર્મ=
શ્રુતચારિત્રલક્ષણ 'ચરેજ્જ' ચરેત્=આચરેત્ । ઉપસહરન્નાદ-'એમ્' પ્રકારેણ
'સિજ્જાસમિહજોગેણ' શય્યાસમિતિયોગેન ભાવિતોઽન્તરાત્માનિત્યમ્, 'અહિક
રણ કરણકરાગ્ણપાવકમ્મવિરણ' અધિકરણકરણકારણપાવકમ્મવિરત -અધિકરણ=
શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદીના છેદનભેદનરૂપ યત્પાવદ્ય કર્મ, તસ્ય ચત્સ્વય કર-
ણમ્, અન્યતથ્ કારણ ઉપલક્ષણત્વાદનુમોદન ચ તદ્દૃષ્ટ યત્પાપકર્મ તતો વિરતો=
નિવૃત્તો યઃ સ તથોક્ત, તથા-દત્તાનુજ્ઞાતાનગ્રહરુચિઃ=દત્તાનુજ્ઞાતૈષ્ણીયપીઠફલ-
કાદેરુપભોગકારી ભવતિ ॥ છૂ-૮ ॥

(સમાહિનહુલે) ચિત્તની સ્વસ્થતારૂપ સમાધિની પ્રચુર માત્રા સે
સહિત હોને કે કારણ સમાધિ વહુલ, બનાહુઆ વહ સાધુ (ફાસયતે-
કાણ્ણધીરે) પરીપતો કો મહતે હુણ શરીર સે ધીર-અક્ષોભ્ય બના
રહતા હૈ । તથા (સયય અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે) નિરન્તર આત્માવલમ્બન
રૂપ ધ્યાન સે યુક્ત બના હુઆ વહ સાધુ (સમિણ) પાચ સમિતિ કે
પાલન સે (એમે) અકેલા રાગદ્વેષ રહિત હોકર (ધમ્મ ચરેજ્જ) શ્રુત-
ચારિત્રરૂપ ધર્મ કા આચરણ કરતા રહતા હૈ (એવ) ઇસ પ્રકાર સે
(સેજ્જાસમિહજોગેણ) શય્યાસમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા)
ભાવિત હુઆ જીવ (નિચ્ચ) નિત્ય (અહિકરણકરણકારણપાવકમ્મ-
વિરણ) શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિકોં કે છેદન ભેદન રૂપ સાવદ્ય અનુ-
ઘાન કે કરને દૂસરોં દ્વારા કરાને તથા અનુમોદના રૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત

કારણે સવૃતબહુલ, તથા “સમાહિનહુલે” ચિત્તની સ્વસ્થતારૂપ સમાધિથી
અત્યંત પ્રમાણુમા યુક્ત હોવાને કારણે સમાધિબહુલ, બનેલ તે સાધુ “ફાસયતે
કાણ્ણધીરે” પરીપતોને મહત ડરતા ડરતા શરીરથી ધીર-ક્ષોભરહિત રહે છે તથા
“સયય અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે” નિરન્તર આત્માવલમ્બનરૂપ ધ્યાનથી યુક્ત બનેલ
તે સાધુ “સમિણ” પાચ સમિતિના પાલનથી “એમે” એકલો રાગદ્વેષ રહિત
થઈને “ધમ્મ ચરેજ્જ” શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું આચરણ કર્યા કરે છે “એવ”
આ રીતે “સેજ્જા સમિહ જોગેણ” શય્યાસમિતિના યોગથી “ભાવિઓ અતરપ્પા”
ભાવિત થયેલ છૂ “નિચ્ચ” નિત્ય “અહિકરણકરણકારણપાવકમ્મવિરણ” શય્યા
પરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિના છેદન ભેદનરૂપ સાવદ્ય અનુઘાન કરતા, બીજા પાસે
કરાવતા તથા અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ બચે છે તથા “દત્તમ”

ન કુર્યાત્ । અય માર-શીતર્ત્તો નિર્વાતસ્થાનસ્ય ગ્રીષ્મર્ત્તો મરાતસ્થાનસ્ય રાઝ્ઞાં
 ન કુર્યાત્ । ઇતિ । ‘ ન ય ’ ન ચ ‘ હસમગેસુ ’ દશમગકેષુ મત્સુ ‘ શુભિયન્વ ’
 ક્ષોભિતવ્યમ્, દશમશકાદીનામુપદ્રવે સત્યપિ ક્ષોભો ન કર્તવ્ય ઇતિ મારઃ । તથા-
 ‘ અગ્નીધૂમો ય ’ અગ્નિધૂમશ્ચ=દશમશકાદીના નિવારણાર્થમગ્નિધૂમો વા ‘ ન કા
 યવ્વો ’ ન કર્તવ્યઃ । એમ્=ઉક્તરૂપેણ ‘ મજમબહુલે ’ સયમબહુલઃ=સયમઃ=પદ
 કાયરક્ષણલક્ષણ, સ બહુલ=પચુરો યસ્ય મતયોક્તઃ, તથા-‘ સવરબહુલે ’ સવર
 બહુલ=સવરઃ=પ્રાણાતિપાતાદાસ્રવદ્વારનિરોધઃ, સ બહુલ=પચુરો યસ્ય સત
 થોક્તઃ, તથા-‘ સંબુડબહુલે ’ સવૃતબહુલ=સવૃત=રૂપાયેન્દ્રિયજયઃ, તદ્ બહુલ
 મચુર યસ્ય સ તથોક્તઃ, તથા-‘ સમાદિબહુલે ’ સમાપિબહુલઃ=મમાપિઃ=ચિત્ત
 સ્વાસ્થ્ય, સ બહુલ=પચુરો યસ્ય સ તથોક્તઃ, એતાદૃશો ‘ ધીરે ’ ધીરઃ=નક્ષોભ્યઃ
 ‘ કાણ ’ કાયેન ‘ ફાસયતે ’ સ્પૃશન્=પરીપદાન્ તદમાનદત્યર્થઃ, તથા-‘ સયય’

ઉત્સુકતા-ભાવના રાખે અર્થાત્ શીતક્રતુ મેં નિર્વાતસ્થાન કી ઓર
 ગ્રીષ્મ ક્રતુમેં હવાદાર સ્થાન કી ઇચ્છા ન કરે । તથા-(ન હસમમગેસુ-
 શુભિયન્વ) ઠહરે હુળ સ્થાન મેં દશમશક આદિ કા ઉપદ્રવ હોવે તો
 ઉસસે ઉસકો ક્ષુભિત નહીં હોના ચાહિયે । ઓર (અગ્ની ધૂમો ન
 કાયવ્વો) ન ઉચ્ચ સ્થાન પર ઉન દશમશક આદિ કો મગાને કે નિમિત્ત
 અગ્નિ વા ધૂઆં કરવાના ચાહિયે । (એવ) હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ
 રાખને સે (સજમબહુલે) ઘટકાય રક્ષણરૂપ સયમ કી પ્રચુર માત્રા સે
 યુક્ત સયમ બહુલ, તથા (સવરબહુલે) પ્રાણાતિપાત આદિ આસ્રવ
 દ્વાર કે નિરોધ રૂપ સવર કી પ્રચુર માત્રા સે રહિત હોને કે કારણ
 સવર બહુલ, તથા (સંબુડબહુલે) કપાય ઓર ઇન્દ્રિયોં કે જીતને રૂપ
 સવૃત કી પ્રચુર માત્રા સે રહિત હોને કે કારણ સવૃતબહુલે, તથા

તે નિર્વાત સ્થાનની કે પ્રમાતસ્થાનની ઉત્સુકતા રાખે નહીં, એટલે કે શિયાળામા
 પવન વિનાના સ્થાનની અને ઉનાળામા હવા આવે તેવા સ્થાનની તેણે ઈચ્છા
 કરવી નહીં તથા “ ન હસમમગેસુ શુભિયન્વ ” તેમને થોભવાના સ્થાનમા ડાસ,
 મચ્છર આદિનો ઉપદ્રવ હોય તો તેથી તેણે ક્ષોભ પામવો નહીં અને “ અગ્ની
 ધૂમો ન કાયવ્વો ” તેમણે તે ડાસ, મચ્છર આદિને નસાડવા માટે તે સ્થાનમા
 અગ્નિ કે ધુમાડો કરાવવો જોઈ એ નહીં “ એવ ” આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિ
 રાખવાથી “ સજમ બહુલે ” છકાય રક્ષણરૂપ સયમની અત્યંત માત્રાથી યુક્ત
 સયમબહુલ તથા “ સવરબહુલે ” પ્રાણાતિપાત આદિ આસ્રવદ્વારના નિરોધરૂપ
 સવરની ઘણી માત્રાથી યુક્ત હોવાને કારણે સવરબહુલ, તથા “ સંબુડબહુલે ”
 કપાય અને ઇન્દ્રિયોને જીતનાર સવૃતની અતિ અધિક માત્રાથી યુક્ત હોવાને

ચતુર્થો ભાવનામાહ—' ચતુર્થ ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ચતુર્થ સાહારણપિંડવાયલાભે સદ્ ભોક્તવ્ય, સંજયણ સમિય, ન સાગસૂત્રાહિય, ન સ્વદ્ધ, ન વેગિય, ન તુરિયં, ન પ્વલ, ન સાહસ, ન ય પરસ્ત પીલાકરં સાવજ્જં । તહ ભોક્તવ્યં જદ્ધસે તદ્ધય વય ન સીયદ્ સાહારણપિંડવાયલાભે સુદુમં અદિષ્ણાદાણવિરમણવયનિયમણ, એવ સાહારણપિંડવાયલાભે સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવદ્ અતરપ્પા ણિચ્ચં અહિકરણકર-
ણકારાવણપાવકમ્માવિરેદ્ દત્તમણુન્નાય ઉગ્ગહરુદ્ ॥સૂ૦૧॥

ટીકા—' ચતુર્થ ' ચતુર્થીમ્ અનુજ્ઞાતભક્તાદિમોજનલક્ષણા ભાવનામાહ—
તત્ર—' સાહારણપિંડવાયલાભે ' સાધારણપિંડવાતલાભે સાધારણઃ=કલ્પનીય ઉ-
સાધુ સયન વહુલ આદિ હોકર પરીપદ્ધત્ત ઓર ઉપસર્ગો સે અડોલ વનતા
હુઆ શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ કો આરાધના મેં સાવધાન વન જાતા હૈ ।
હસ તરદ્ શય્યાપરિકર્મવર્જન રૂપ શય્યાસમિતિ કે યોગ સે ભાવિત
આત્મા શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિકોં કે જ્ઞેદન ભેદન આદિ રૂપ સાવધ
કર્મ કે કરને કરાને ઓર અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મ સે વચ જાતા હૈ ।
ઓર હસ તૃતીયભાવના કા પાલક હો જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

અવ સૂત્રકાર ચૌથી ભાવના કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—' ચતુર્થ સાહાર-
ણ૦' ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(ચતુર્થ) ચૌથી ભાવના અનુજ્ઞાતભક્તાદિ ભોજનરૂપ હૈ
જો હસ પ્રકાર હૈ—(સાહારણપિંડવાયલાભે સદ્) ઉચ્ચ નીચ કુલ સે

નહી આ ગીતે તે સાધુ સયમણુલ, મવરણુલ આદિ થઈને પરીપદ્ધત્ત તથા
ઉપસર્ગો સામે અચળ બનીને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની આરાધનામા સાવધાન બની
જાય છે આ ગીતે શય્યાપરિકર્મવર્જનરૂપ શય્યાસમિતિના યોગથી ભાવિત
આત્મા શય્યા પરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિના જ્ઞેદન ભેદન આદિરૂપ સાવધ કર્મ કરા
વવાથી અને અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મથી બચી જાય છે અને આ ભાવનાનો
પાલક થઈ જાય છે ॥ સૂ૦ ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર ચૌથી ભાવના બતાવે છે—“ ચતુર્થ સાહારણ ” ઇત્યાદિ
“ચતુર્થ” ચૌથી ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન રૂપ છે તે આ પ્રમાણે
છે “ સાહારણપિંડવાયલાભે સદ્ ” ઉચ્ચ નીચ કુળમાથી કલ્પે તેવી ભિક્ષા તથા

હો જાતા હૈં । તથા (દક્ષમણુણાય ઉગ્ગટ્ઠ મવઢ) દક્ષાનુજ્ઞાતાવગ્રહ
રુચિવાલા-દક્ષાનુજ્ઞાતૈષણીય પીઠ ફલક આદિકા ઉપભોગકારી હોતા હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઠસ સૂત્ર દ્વારા શય્યાપરિકર્મવર્જન નામક
ત્રીસરી ભાવના કા સ્પષ્ટી કરણ ક્રિયા હૈં । ઉન્હોં ને ઠસ મેં યહ મમ-
જ્ઞાયા હૈં કિ જો સાધુ ઠસ માવના કો માતા હૈં-સેવન કરતા હૈં-ઁસકા
કર્તવ્ય હૈં કિ વહ અપને નિમિત્ત કાઢે ગયે ઘૃક્ષ સે ઘને હુણ પીઠ ફલક
આદિ કે ઉપભોગ કરને કા પરિત્યાગ કર દેવે । તથા જિસ ગૃહપતિ કે
ઘહા વહ ઠહરે વહી પર અર્થાત્ ઁસી મકાન માલિક સે અથવા વસ્તી
સે વહ અપની શય્યા કી ગવેષણા કરે । યદિ ઘહા કી મૃમિ નીચી ઁચી
હોવે તો વહ ઁસે સમ ન કરે । યદિ ગર્મી કે સમય મેં કિસી ગૃહપતિ
કી વસતી મેં ઠહરને કા અવસર પ્રાપ્ત હુઆ હો ઁર ઘહા હવા આને
કા સાધન ન હો તો વહ સવાત સ્થાન કી ઁાહના ન કરે તથા યદિ
શીતઋતુ મેં કિસી ગૃહપતિ કે ઘહા યા કિસી ઉપાશ્રય આદિ મેં ઠહરને
કા મૌકા આ ગયા હોવે ઁર વહ સ્થાન સવાત હો તો ઁસે નિર્વાત-
સ્થાન કી કામના નહીં કરની ઁાહિયે । દશમશક પીઢિત કરે મો-
તો મો ઁસે ક્ષુભિતચિત્ત નહીં હોના ઁાહિયે-ઁર ન ઉન્હેં મગાને કા
ઁસે કોઈ ઉપાય હી વિઁારના યા કરના ઁાહિયે । ઠસ તરહ સે વહ

પુણાયુગ્ગટ્ઠ મવઢ ” દક્ષાનુજ્ઞાતાવગ્રહ રુચિવાળો-દક્ષાનુજ્ઞાતૈષણીય પીઠ,
ફલક આદિનો ઉપભોગ કરતા બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા શય્યાપરિકર્મવર્જન નામની ત્રીણ ભાવ
નાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમણે તેમા એ સમજાવ્યું છે કે જે સાધુ આ
ભાવનાનુ સેવન કરે છે, તેનુ કર્તવ્ય એ છે કે તે પોતાને નિમિત્ત કપાયેલ
ઘૃક્ષમાથી બનાવેલ પીઠ, ફલક આદિનો ઉપભોગ કરવાનો પરિત્યાગ કરે તથા
જે ગૃહપતિને ત્યા તે ઉતરે ત્યા જ એટલે કે એ જ મકાનમાલિક પાસેથી
અથવા વસ્તીમાથી તે પોતાની શય્યાની ગવેષણા કરે જો ત્યાની જમીન ઊંચી
નીચી હોય તો તેને સમતલ ન કરે જો ઉનાળાની ઋતુમા કોઈ ગૃહપતિના
આવાસમા થોભવાની જરૂર પડી હોય અને ત્યા હવા આવવાની વ્યવસ્થા ન
હોય તો તે હવા આવે તેવા સ્થાનની ઇચ્છા ન કરે તથા જો શિયાળામા કોઈ
ગૃહપતિને ત્યા અથવા કોઈ ઉપાશ્રય આદિમા ઉતરવાનો અવસર આવે અને તે
સ્થાનમા પવન આવતો હોય તો તેણે પવન ન આવે એવા સ્થળની ઇચ્છા
જોઈએ નહીં ડાસ, મચ્છર આદિ સતાવે તો પણ તેણે ચિત્તમા ક્ષોભ પામવો
જોઈએ નહીં અને તેને નસાડવાનો તેણે વિચાર કે ઉપાય કરવો જોઈએ

चालनरूपचापल्ययुक्त भोक्तव्यम् । न साहसम्-अप्रतिलेखित भोक्तव्यम् , तथा-
'न य' न च 'परस्स' परस्य एकेन्द्रियादेः 'पीडाकर' पीडाकर 'सावज्ज'
सावध=सचित्त भोक्तव्यम्, एतमुपलक्षणादुत्सृजपात्रादिपरिभोगोऽपि ग्राह्यः । तर्हि-
कथं भोक्तव्यम् ? इत्याह । 'तह भोक्तव्व' तथा भोक्तव्य 'जह' यथा 'से'
तस्य=सयतस्य 'तइय' तृतीय 'वय' व्रत अदत्तादानविरमणरूप 'नसीयइ'
न सीदति=न नश्यति यथा-अदत्तादानविरमणरूप व्रत न विनश्येत्तथा भोक्तव्य-
मित्यर्थः, 'साहारणपिंडवायलाभे' साधारणपिंडपातलामे सति 'सुहुम' सूक्ष्म=
दुर्निरीक्षम्,-पूर्णरूपेणेत्यर्थ, 'अदिण्णादाणविरमणवयनियमण' अदत्तादानविर

शीघ्रता करके भोजन नहीं करना चाहिये । तथा (न चवल) हाथ,
गर्दन आदि अवयवों को चलाते हुए भोजन नहीं करना चाहिये ।
तथा (न साहस) अप्रतिलेखित भोजन नहीं करना चाहिये । और
(न य परस्स पीलाकर सावज्ज एकेन्द्रियादिक जीवों को पीडा कारक
सावध-सचित्त-भोजन न करना चाहिये । इसी तरहसे वस्त्र पात्रादिकके
परिभोग में भी यहों बात समझ लेनी चाहिये । तो फिर कैसे भोजन
करना चाहिये ? इस बात को अब सूत्रकार प्रकट करते हैं, वे कहते हैं
कि (से) उस सयत को (तह भोक्तव्व) इस प्रकार से भोजन करना
चाहिये कि (जह) जिससे (तइय वय) अनत्तादानविरमणरूप तीसरा
व्रत (न सीयइ) नष्ट न होवे (साहारणपिंडवायलाभे) इस तरह पूर्वोक्त
साधारण कल्पनीय-पिंडपात-भिक्षा की प्राप्ति होने पर (सुहुम) सूक्ष्म
रूप से अर्थात्-पूर्णरूप से (अदिण्णादाणविरमणवयनियमण) इस

लेखे तथा "नचवल" हाथ, डोके आदि अवयवोंने डोलावता डोलावता पण
भोजन करवु लेखे नहीं तथा "नसाहस" अप्रति लेखित भोजन न करवु
लेखे नहीं अने "न य परस्स पीलाकर सावज्ज" ऐकेन्द्रिय आदि लुवेने
पीडा कारक सावध-सचित्त-भोजन न करवु लेखे ऐ न रीते वस्त्र, पात्र
आदिना परिभोगमा पणु ऐ न वात भमलु लेवी तो पछी डेवु भोजन
करवु लेखे ? ते वातने प्रकट करता सूत्रकार कहे छे छे ' से ' ते सयते
"तह भोक्तव्व " आ प्रमाणे भोजन करवु लेखे " जह " लेथी " तइय
वय " अदत्तादान विरमणु इय त्रीणु व्रत " न सीयइ " नष्ट न
थाय " साहारणपिंडवायलाभे " आ रीते पूर्वोक्त साधारण कल्पनीय
पिंडपात-भिक्षा की प्राप्ति थता " सुहुम " सूक्ष्मरूपे ऐटले डे पूर्णरूपे " अदि-
ण्णादाणविरमणवयनियमण " अदत्तादान विरमण व्रत पर नियमण-अधिकार

આવચક્કુલગ્રાહ્યો ય પિન્ડપાતઃ મિક્ષા, ઉપલક્ષણાદુ રસપાત્રાદ્યન્યાપધિરપિગૃહ્યતે,
 તસ્ય લાભઃ = દાયકાત્પ્રાપ્તિસ્તસ્મિન્ ' સદ્ ' સતિ ' સજ્જણ ' સયતેન=
 સાધુના ' મોક્તવ્ય મોક્તવ્યમ્ = પરિમોક્તવ્ય । ' મોક્તવ્યમ્ ' इत्यग्रेऽपि सर्वत्र
 યોજ્યમ્, કથ મોક્તવ્યમ્ ? इत्याह- ' समिप ' सम्यक् = अदत्तादान यथा न
 ભવતિ તથેત્યર્થઃ । सम्यक्તमेवाह- ' न 'सागसूत्रद्विय ' न शाकसूपाधिक=भोक्त
 વ્યમ્ । शाकसूपाधिके भोजने कृते सति प्रमाणादधिकाहारो भवति, तेनादत्तादा
 નદોષાપત્તિર્ભવતિ, તથા ' સ્વદ્ધ ' પ્રચુર મોક્તવ્યમ્ । ' ન વેગિય ' ન વેગિત=
 વેગયુક્ત વેગેન ગ્રાસ મુસે પ્રક્ષિપ્ય મોક્તવ્યમ્, ' ન તુરિય ' ત્વરિત=ત્વરાયુક્ત ગ્રાસસ્ય
 ગિલને શીઘ્રતા કૃત્વા મોક્તવ્યમ્ । તથા-ન ' ચપલ ' ચપલ=હસ્તગ્રીવાદિકાય,

કલ્પનીય મિક્ષા તથા ત્રતપાત્ર આદિ ઉપધિ કા લાભ હોને પર (સજ-
 જ્ઞ મોક્તવ્ય) મુનિ કો ઉસે અપને ખાને આદિ કે ઉપયોગ મેં લેના
 ચાહિયે । સાધુ કો આહાર કિસ પ્રકાર સે કેસા લેના ચાહિયે સૂત્રકાર
 અત્ર ઇસ વાત કો કહતે હેં-(સમિપ) અદત્તાદાન કા દોષ ન લગે
 ઇસ પ્રકાર સે યતના રખતે હુએ ન સાગ સૂવાહિય) શાક ઓર દાલ
 કો અધિકતા કે સાથ ભોજન નહી કરના ચાહિયે-અર્થાત્-શાક ઓર
 દાલ કી અધિકતા વાલા ભોજન પ્રમાણ સે અધિક ખા લિયા જાતા હૈ,
 ઇસલિયે ચત્તીસ ગ્રાસ લેને કી અપેક્ષા ભોજન મેં અધિકતા આને સે
 સાધુ કો અદત્તાદાન દોષ કી આપત્તિ આતી હૈ । (ન સ્વદ્ધ) ઉચિત
 માત્રા મેં ભી દાલ શાક કે સાથ પ્રચુર માત્રા મેં આહાર નહી કરના
 ચાહિયે । તથા (ન વેગિય) જલ્દીર ઉતાવલી કે સાથ ભી ભોજન નહીં
 કરના ચાહિયે । તથા (ન તુરિય) ત્વગયુક્ત હોકર ગ્રાસ કે ગિલને મેં

વસ્ત્ર પાત્ર આદિ ઉપધિનો લાભ થતા “સજ્જણ મોક્તવ્ય” મુનિએ તે પોતાને
 માટે ખાવા આદિના ઉપયોગમાં લેવું જોઈએ હવે સૂત્રકાર એ વાત બતાવે
 છે કે મુનિએ ભોજન કેવી રીતે ખાવું જોઈએ અને કેવું ન ખાવું જોઈએ
 “સમિપ” અદત્તાદાનનો દોષ ન લાગે તે પ્રમાણે યતના પૂર્વક “ન સાગસૂત્રદ્વિય”
 શાક અને દાળની અધિકતા વાળું ભોજન કરવું નહીં, એટલે કે શાક અને
 દાળની અધિકતા વાળું ભોજન પ્રમાણમાં વધારે ખવાય છે, તે કારણે બત્રીશ
 ગ્રાસ કરતા ભોજન વધારે લેવાથી સાધુને અદત્તાદાન દોષ નડે છે “ન સ્વદ્ધ”
 પ્રમાણમાં દાળ શાકની સાથે વધારે પ્રમાણમાં પણ આહાર લેવો જોઈએ નહીં, તથા
 “ન વેગિયવ્ય” જલ્દી જલ્દી અડપથી પણ ભોજન કરવું જોઈએ નહીં, તથા “ન તુ
 રિય” ત્વરા સહિત કોળિયો ગળે ઉતારવામાં અડપ કરીને પણ ભોજન નહીં કરવું

પાંચમી મારનાગાદ—‘ પાંચમ ’ રૂપાદિ

મૂલમ્—પાંચમ સાહમ્નિણસુ વિણઓ પડજિયઠ્ઠો । ઉવગરણ
પારણાસુ વિણઓ પડજિયઠ્ઠો, વાયળપરિચટ્ટણાસુ વિણઓ
પડજિયઠ્ઠો । દાળગ્ગહણપુચ્છણાસુ વિણઓ પડજિયઠ્ઠો ।
નિકલ્લમણપવેસણાસુ વિણઓ પડજિયઠ્ઠો । અળ્લેસુ ય ઇવ-
માહણસુ વહુસુ કાળ્લણસણસુ વિણઓ પડજિયઠ્ઠો । વિણઓ
વિ તવો, તવો વિ વમ્મો, તન્હા વિણઓ પડજિયઠ્ઠો ગુરુસુ
સાહુસુ તવલ્લિસુ ય । ઇવ વિણણ ભાવિઓ ભવહ અંતરપ્પા
નિચ્ચં અહિકલ્લણકરણકારાવળપાપકમ્મવિરણ દત્તમણ્ણના ય
ઉગ્ગહરુદ્ધ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

હૈ, ક્યોં કિ એમા આહાર પ્રમાણ સે અધિક કર લિયા જાતા હૈ, જિસસે
અદત્તાદાન કા દોષ આતા હૈ । આહાર કરતે સમય ઢસ યાત કા વિશેષ
ધ્યાન રખના યોગ્ય હૈ કિ હાથ, પૈર, ગર્દન આદિ અવયવ અનાવશ્યક
રૂપ સે ન ચલે । આહાર કરતે સમય આહાર જલ્દી ૨ સે ન કિયા જાવે ।
ગ્રાસ જલ્દી ૨ સે ન મિલા જાવે । એકેન્દ્રિયાદિકુ જીવોં કો વાવાકારી
આહાર—અચિત્ત આહાર ન લિયા જાવે । તાત્પર્ય કરને કા યહ હૈ કિ
અદત્તાદાનવિરમણત્ત નષ્ટ ન હો ઢસ પ્રકાર સે સાધુ કો આહાર કરના
ચાહિયે । ઢસ તરફ કો પ્રવૃત્તિ સે ઢસ વ્રત પર પૂર્ણ રૂપ સે નિયંત્રણ—
કાબૂ હો જાતા હૈ । વહ મ્માહુ અનનુજ્ઞાત મક્તાદિ ભોજન રૂપ સાવધકર્મ
કે કરને, કરાન ઓગ અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે વિરત થન જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ત્યાગ કરવુ જોઈએ એવુ તેમા દર્શાવ્યુ છે, કરણુ કે તેવો આહાર વધારે
પ્રમાણમા લેવાય છે તેથી સાધુને અદત્તાદાનનો દોષ લાગે છે આહાર કરતી
વખતે એ વાતનુ ખાસ વ્ય ન રાખવુ જોઈએ કે હાથ, પગ ડોડ આદિ અવયવો
ખીન જરૂરી રીતે હાલે ચાલે નહી આહાર કરતી વખતે અડપથી આહાર લેવો
જોઈએ નહી, ડોળિયો જલ્દી ગળાની નીચે ઉતરવો નહી એકેન્દ્રિયાદિજીવોને
પીડાકારી આહાર—અચિત્ત આહાર લેવો જોઈએ નહી એ કહેવાનુ તાત્પર્ય
એ છે કે અદત્તાદાન વિરમણ રૂપ નષ્ટ ન થાય તે પ્રકારે સાધુએ આહાર
કરવો જોઈએ આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિથી આ વ્રત પર સંપૂર્ણ રીતે અકુશ
આવી જાય છે તે સાધુ અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજનરૂપ સાવધ કર્મ કરતા,
કરાવતા અને અનુમોદના થતા પાપકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે ॥ સૂ ૬ ॥

મળવ્રતનિયમનમ્=અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય યદ્નિયમન=નિયંત્રણ તદ્ ભવતિ ।
 એવમ્=અનેન પ્રકારેણ ' સાહારણપિંડવાયલાભમમિદ્જોગેણ ' સાધારણપિંડપાત
 લાભસમિતિયોગેન=સાધારણપિંડપાતલાભે યા મમિતિ.=સમ્યક્પ્રવૃત્તિઃ તસ્યા
 યોગેન=સમ્યન્ધેન ભાવિતોઽન્તરાત્માનિત્ય=સદા અધિકરણકરણકારણવાપકર્મવિરનઃ
 =અધિકરણસ્ય=અનનુજ્ઞાતભક્તાદિભોજનરૂપસાવધકર્મણોયત્કરણ કારણમુત્પન્ન
 ણત્વાદનુમોદન ચ તદેવ યત્પાપકર્મ તતો વિરતો=નિવૃત્તઃ, દત્તાનુજ્ઞાતાવગ્રહરુચિ
 ભવતિ । એતદ્ વ્યાર્યા પૂર્વમ્દિજ્ઞેયા ॥ સૂ ૯ ॥

અદત્તાદાનવિરમણ વ્રત પર નિયંત્રણ-અધિકાર હો જાતા હૈ । (એવ)
 હસ પ્રકાર સે (સાહારણપિંડવાયલાભે) સાધારણપિંડપાતલાભ મેં
 (સમિદ્જોગેણ) સમ્યક્ પ્રવૃત્તિ કે સવધ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા)
 ભાવિત અન્તરાત્મા (નિચ્ચ) નિત્ય-સદા (અધિકરણ કરણકારણ-
 વાવકર્મવિરણ) અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજનરૂપ સાવધકર્મકે કરને, કરાને
 ઓર ડસકી અનુમોદનારૂપ વાવકર્મસે વિરત હો જાતા હૈ । ઓર (દત્તમ
 ણુણાય ડગ્ગહરુદ્ ભવદ્) દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહ મેં રુચિશાકી હો જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રત કી
 ચોથી ભાવના કો કહતે હૈ । હસ કા નામ અનુજ્ઞાતભક્તાદિ ભોજન
 હૈ । સાધુ કે લિયે દાતા દ્વારા કલ્પનીય ભિક્ષા અથવા ઉપધિ કી પ્રાપ્તિ
 હો જાને પર ડસે કિસ તરહ સે અપને ઉપયોગ મેં લાનાચાહિયે હસકા
 હસમેં વિચાર કિયા ગયા હૈ । આહાર કે વિચાર મેં સાધુ કો દાલ
 શાક કી અધિકતા કે સાથ મેં આહાર કરને કા ત્યાગ કહા ગયા

થઈ જાય છે “ એવ ” આ પ્રકારે “ સાહારણ પિંડવાયલાભે ” સાધારણ ભિક્ષાની
 પ્રાપ્તિ થતા “ સમિદ્જોગેણ ” સમ્યક્ પ્રવૃત્તિના યોગથી, “ ભાવિઓ અ
 તરપ્પા ” ભાવિત અન્તરાત્મા “ નિચ્ચ ” નિત્ય “ અધિકરણકરણકારણવાવ
 કર્મવિરણ ” અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન રૂપ સાવધકર્મ કરવાથી, કરાવવાથી,
 અને તેની અનુમોદના રૂપ વાવકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે અને “ દત્તમણુણાય
 ડગ્ગહરુદ્ ભવદ્ ” દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની ચોથી
 ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન નામની છે
 દાતા દ્વારા સાધુને કટપે તેવી ભિક્ષા અથવા ઉપધિની પ્રાપ્તિ થઈ જાય ત્યારે
 તેણે કેવી રીતે તે પોતાના ઉપયોગમાં લેવી જોઈએ તે જાણતો આ ભાવનામાં
 વિચાર કરવામાં આવ્યો છે વધારે દાળ શાક સાથેનો આહાર લેવાનો સાધુએ

क्षण प्रयोक्तव्यः । तथा—' दाणग्गहणपुच्छणासु ' दानग्रहणमच्छनासु=दान=व्य-
स्थानादे ग्लानादिभ्यो वितरणत्, ग्रहणम्-परेण दीयमानस्यैवान्नादेर्ग्रहणम्,
मच्छना=विस्मृतसूत्रार्थविषये प्रक्षः, एतासु ' विणओ ' विनय =दानग्रहणयोगुर्वा
शालक्षण, मच्चनाया वन्दनादिरूप प्रयोक्तव्यः ।

तथा—' निक्खमणपवेसणासु ' निष्क्रमणप्रवेशनयोः = गमनागमनयोः
विनयः = गमने आवश्यकीरूपः, आगमने नैपेधिकीरूपः प्रयोक्तव्यः, किं
बहुना ' अण्णेषु य ' अन्येषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु=एवविधेषु
बहुषु ' कारणसएसु ' कारणशतेषु विनयः प्रयोक्तव्यः । कस्मात्कारणाद् विनय
प्रयोक्तव्यः ? इत्याह—' विणओपि ' विनयोऽपि तपः=न केवलमनशनादिकमेव

करने में साधु को (विणओ पउजियव्वो) वन्दनादिरूप विनय करना
चाहिये । तथा (दाणग्गहणपुच्छणासु विणओ पउजियव्वो) दान मे-
दाता द्वारा दिये हुए अन्नादि को का ग्लान आदि साधुओ के लिये
वितरण करने में-दाता द्वारा दिये गये अन्नादिक के लेने में गुरु की
आज्ञा प्राप्त करना रूप विनय, प्रच्छना मे-विस्मृत हुए सूत्रार्थ को
गुर्वादिकों से पूछने मे-वन्दनादि रूप विनय भाव रखना चाहिये । तथा
(निक्खमणपवेसणासु) निष्क्रमण और प्रवेशन में-गमन और आग-
मन में-(विणओ पउजियव्वो) आवश्यकी रूप और नैपेधिकी रूप
विनय करना चाहिये अर्थात्-गमन में आवश्यकीरूप और आगमन
मे नैपेधिकीरूप विनय भाव साधु को रखना चाहिये । (अण्णेषु एव-
माइएसु सुवहसु कारणेषु इसी तरह के और भी बहुत से सैकड़ों
कारणों में (विणओ पउजियव्वो) विनय भाव का आचरण करते

आदि उरीने विनय दशाववे। जेधंओ तथा “ दाणग्गहणपुच्छणासु विणओ
पउजियव्वो ” दानभा-दाता द्वारा अपायेल अन्नादिनु ग्लान आदि साधुओभा
वितरणु करवाभा विनय राखवे। जेधंओ ग्रहणु करवाभा-दाता द्वारा अपायेल
अन्न आदि लेवा भाटे गुरुनी आज्ञा प्राप्त करवा इय विनय पाणवे। जेधंओ
प्रच्छनाभा-बुलाध गयेल सूत्रार्थ गुरु आदिने पूछती वणते वदणु आदि इय
विनय लाव राखवे। जेधंओ तथा “ निक्खमणपवेसणासु ” निष्क्रमणु अने
प्रवेशना-गमन अने आगमनभा “ विणओ पउजियव्वो ” आवश्यकी इय
नैपेधिकी इय विनय लाव साधुओ राखवे। जेधंओ, ओटले के गमनभा आवश्यकी
इय अने आगमनभा नैपेधिकी इय विनय लाव साधुओ राखवे। जेधंओ
“ अण्णेषु एवमाइएसु बहुसु कारणेषु ” आ प्रक्षानी अन्य सेकडे पाणतोभा
पणु “ विणओ पउजियव्वो ” विनय लाव आचरवे। जेधंओ जरणु के “ विणओ

ટીકા—‘ પચમ ’ પચમી વિનયભાવનામાદ—‘ સાહમ્મિણ્ણુ ’ સાધર્મિકેષુ પર્યાયજ્ઞેષ્ઠ ‘ વિણઑ ’ વિનયઃ ‘ પઞ્જિયવ્વો ’ પ્રયોક્તવ્યઃ=કરણીયઃ । તથા—‘ ઉવગારણપારણાસુ ’ ઉપકારણપારણયોત્ર-ઉપકારણ=સ્વપરયોરુપકારકરણ, તત્ર-સ્વસ્ય સયમપાલનેન, પરસ્ય ગ્લાનાધવસ માયા વૈયાટ્થાદિ કરણેન, પારણા= તપસઃ પારણા શ્રુતસ્ય પારગમન વા પારણા, તયોઃવિનયઃ પ્રયોક્તવ્યઃ=દ્વયોરપિ મૃદુસ્વાભાવતયા સ્થાતવ્યમિત્યર્થઃ, તથા—‘ વાયળપરિયટ્ઠણાસુ ’ વાચનાપરિવર્તનયોઃ=વાચના સૂત્રગ્રહણમ્, પરિવર્તના=તસ્યૈવગુણનમ્, તયો વિનયઃ=ચન્દનાદિષ્ઠ-

અથ સૂત્રકાર પાચવી ભાવના કો કલ્પે છે—‘ પચમ સાહમ્મિણ્ણુ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પચમ) હસ વ્રત કી પાચવી ભાવના વિનય હૈ-જિમકા સ્વરૂપ હસ પ્રકાર સે હૈ-(સાહમ્મિણ્ણુ વિણઑ પઞ્જિયવ્વો) અપને સમાન ધર્મવાલો મે જો દીક્ષા પર્યાય કી અપેક્ષા જ્યેષ્ઠ હૈ ઉનમે વિનય વૃત્તિ રચની ચાહિયે। તથા (ઉવગારણપારણાસુ વિણઑ પઞ્જિયવ્વો) સ્વ ઓર પર કે ઉપકાર કરને મે ઓર પારણા કરને મે વિનય રચના ચાહિયે, સયમ કી આરાધના કરના યહ નિજ કા ઉપકાર કરના હૈ ઓર ગ્લાન આદિ અવસ્થા મે અન્ય સાધુ કા વૈયાટ્થ આદિ કરના યહ પર કા ઉપકાર કરના હૈ, તપસ્યા કા પારણા કરના અથવા શ્રુત કે પાર પહ્લ્વના યહ પારણા હૈ इन दोनों स्थितियों में मृदुस्वभाव से रहना यही उपकारण पारणा का विनय करना है । इसी तरह (वायणपरियट्ठणासु) सूत्र की वाचना में और उसके परिवर्तन करने में-स्वाध्याय

હવે સૂત્રકાર પાચવી ભાવના બતાવે છે—“ પચમ સાહમ્મિણ્ણુ ” इत्यादि-

ટીકા—“ પચમ ” આ વ્રતની પાચવી ભાવના વિનય છે, જેનું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે —“ સાહમ્મિણ્ણુ વિણઑ પઞ્જિયવ્વો ” પોતાના સાધર્મીઓમાં જે દીક્ષા પર્યાયની અપેક્ષા એ મોટા હોય તેમના પર વિનયવૃત્તિ રાખવી જોઈએ તથા “ ઉવગારણપારણાસુ વિણઑ ઉપ જિયવ્વો ” સ્વ અને પરને ઉપકાર કરવામાં અને પારણા કરવામાં વિનય રાખવો જોઈએ સયમની આરાધના કરવી તે પોતાના ઉપર ઉપકાર કર્યો ગણાય છે અને ગ્લાન આદિ અવસ્થામાં અન્ય સાધુઓનું વૈયાટ્થ-વૈયાવચ્ચ-કરવી તે પરના ઉપરને ઉપકાર છે તપનું પારણું કરવું અથવા શ્રુતને પાર પહોંચવું તે પણ પારણું છે એ બંને સ્થિતિમાં મૃદુ સ્વભાવથી રહેવું તે જ પારણાનો વિનય કરવાની રીત છે એ જ રીતે “ વાયળપરિયટ્ઠણાસુ ” સૂત્રની વાચનામાં અને તેનું પરિવર્તન કરવામાં-સ્વાધ્યાય કરવામાં આધુએ “ વિણઑ પઞ્જિયવ્વો ” વડળું

अध्ययनमुपसहरति—' एवमिण ' इत्यादि ।

मूलम्—एवमिणं सवरस्सदारं सम्म चरियं होइ सुपणिहिय,
इमेहि पचहिं वि कारणेहि मणवयणकायपरिरक्खिएहि निच्च
आमरणंतच्च एसो जोगो नेयव्वो धिइमया मइमया अणासवो
अकल्लसो अच्छिद्दो अपरिरत्तावी असकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिण-
मणुण्णाओ । एव तइयं सवरदार फासिय पालिय सोहिय
तीरिय किट्ठिय सम्मं आराहिय आणाए अणुपालिय भवइ ।
एव नायसुणिणा भगवया पणविय परूविय पसिद्धं सिद्धि

भावना हैं । अपने से जो दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ हैं, उन साधुओं में
विनय धर्म का पालन करना तथा स्वयं समय के पालन करने में और
पारणा में मृदु स्वभाव रखना, इत्यादि विनय सबधी जितनी भी
क्रियाएँ हैं उन्हें मोक्षमार्ग के साधनों में यथायोग्यरूप से पालन करते
रहना उनके प्रति अविनयरूपता का भाव चित्त में नहीं आने देना
यह विनय भावना है । तात्पर्य यह है कि ज्ञानादि मोक्षमार्ग और
उसके साधनों के प्रति योग्यरीति से वदुमान रखना यह विनयधर्म
है । इस धर्म से आवित हुआ अन्तरात्मा अविनय रूप आवद्य कर्म के
करने कराने, और उसकी अनुमोदना जन्य पापक्रिया से विरक्त हो
जाता है और इस भावना का पालक बन जाता है ॥ सू० १० ॥

पर्यायभा જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા
નિજ સમયનું પાલન કરવામાં તથા પારણામાં મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ
વિનય સબધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમાં યોગ્ય રીતે
પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય ભાવને ચિત્તમાં પ્રવેશવા ન દેવો
તે વિનય ભાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને
તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી
ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ આવદ્ય ધર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની
અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાનો
પાલક બની જાય છે, ॥ સૂ. ૧૦ ॥

તપઃ અપિ તુ વિનયોઽપિ આશ્વાન્તરતપોભેદેષુ પઠિતઃ, તથા— તવો વિ ' તપોઽપિ ' ધમ્મો ' ધર્મઃ=ન કેવલ સમયમ્ ધર્મઃ, કિન્તુ તપોઽપિ ધર્મઃ, તસ્ય ચારિત્રાશત્વાત્, ' તમ્હા ' તસ્માત્ ' ગુરુષુ ' ગુરુષુ ' સાદુસુ ' તવસ્મિંસુ ય ' તપસ્વિષુ ચ વિનયઃ પ્રયોક્તવ્યઃ. । એવ વિનયેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા નિત્ય મધિકરણકરણકારણપાપકર્મવિરતોઽધિકરણસ્ય = અવિનયરૂપસાવધકર્મણો યત્કરણ કારણમુપલક્ષણત્વાદનુમોદન ચ, એતદ્વેપ યત્યાપકર્મ, તતોવિરતો=નિવૃત્તો દત્તાનુજ્ઞાતાવગ્રહરુચિ ભવતિ । એતદ્ વ્યાખ્યાપ્તમુક્તા ॥ સૂ.૧૦ ॥

રહના ચાહિયે । કયોં કિ (વિણઝો વિ તવો) ઘટ વિનય મી આશ્વતર તપ હૈ—કેવલ અનશન આદિ હી તપ નહી હૈ । તથા (તવો વિ ધમ્મો) ચારિત્ર કા અશ હોને સે તપ મી ધર્મ હૈ, કેવલ સમય હી ધર્મ નહોં હૈ । (તમ્હો વિણઝો પઝજિયવ્વો ગુરુસુ સાદુસુ તવસ્મિંસુ ય) હસલિયે ગુરુજનો કે વિષય મેં, સાધુજનોં કે વિષય મેં આગ તપસ્વી જનોં કે વિષય મેં વિનય ધર્મ કા વ્યવહાર અવશ્ય હી કરના ચાહિયે । (એવ-વિણણ ભાવિઝો અન્તરપ્પા નિચ્ચ અધિકરણકરણકારાવણપાવ-કમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુદ્ધ ભવહ) હસ પ્રકાર વિનય ધર્મ સે ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવધકર્મ કે કરને, કરાને ઓર ડસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત હો જાના હૈ ઓર દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહ મે રુચિવાલા વન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ કી પાચવી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રદર્શિત કિયા હૈ હસ ભાવના કા નામ વિનય

વિ તવો ” આ વિનય પણ અશ્વતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી “ તવો વિ ધમ્મો ” ચારિત્રનો અશ હોવાથી તપ પણ ધર્મ છે, ફક્ત સમય જ ધર્મ નથી “ તમ્હા વિણઝો પઝજિયવ્વો ગુરુસુ તવસ્મિંસુ ય ” તે ડારણે ગુરુ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ “ એવ વિણણ ભાવિઝો અન્તરપ્પા નિચ્ચ અધિકરણ કરણકારાવણપાવકમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુદ્ધ ભવહ ” આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવધ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ પ્રતી પાચવી ભાવનાનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે તે ભાવનાનું નામ “ વિનય ભાવના ” છે દીક્ષા

અધ્યયનમુપસદરતિ-‘ એમિણ ’ इत्यादि ।

મૂલમ્-એવમિણ સંવરસ્સદારં સમ્મ ચરિયં હોઇ સુપણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મણવયણકાયપરિરિલ્લિણહિ નિચ્ચં આમરણતચ્ચ એસો જોગો નેયઠ્ઠો ધિદ્મયા મદ્મયા અણાસવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિરિસાવી અસંકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ તદ્દયં સવરદાર ફાલિય પાલિય સોહિય તીરિય કિદ્દિય સમ્મં આરાહિય આણાણ અણુપાલિય ભવઇ । એવ નાયમુણિણા ભગવયા પપ્પણવિયં પરુવિયં પસિદ્ધં સિદ્ધિ

ભાવના હ । અપને સે જો દીક્ષા પર્યાય મેં જ્યેષ્ઠ હે, ડન સાધુઓં મેં વિનય ધર્મ કા પાલન કરના તથા સ્વય મયમ કે પાલન કરને મેં ઓર પારણા મેં મૃદુ સ્વભાવ રલ્લના, ઇત્યાદિ વિનય સઘધી જિતની ખી ક્રિયાએ હ ડન્હેં મોક્ષમાર્ગ કે સા ડનોં મે યથાયોગ્યરૂપ સે પાલન કરતે રહના ડનકે પ્રતિ અવિનયરૂપતા કા ભાવ ચિત્ત મેં નહીં આને દેના યહ વિનય ભાવના હે । તાત્પર્ય યહ હે કિ જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ ઓર ડસકે સાવનોં કે પ્રતિ યોગ્યરીતિ સે વડુમાન રલ્લના યહ વિનયધર્મ હે । ઇસ ધર્મ સે ભાવિત હુઆ અતરાત્મા અવિનય રૂપ સાવધ કર્મ કે કરને કરાને, ઓર ડમકી અનુમોદના જન્ય પાપક્રિયા સે વિરક્ત હો જાતા હે ઓર ઇસ ભાવના કા પાલક વન જાતા હે ॥ સૂ ૧૦ ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા નિજ મયમનું પાલન ડગ્વામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ વિનય સઘધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય લાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો તે વિનય લાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી લાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવધ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી બચ છે, અને આ લાવનાનો પાલક બની બચ છે, ॥ સૂ ૧૦ ॥

તપઃ અપિ તુ વિનયોઽપિ આભ્યાન્તરતપોભેદેષુ પઠિતઃ, તથા— તવો વિ ' તપોઽપિ ' ધમ્મો ' ધર્મઃ=ન કેવલ સયમદય ધર્મઃ, કિન્તુ તપોઽપિ ધર્મઃ, તસ્ય ચારિત્રાશત્વાત્, ' તમ્હા ' તસ્માત્ ' ગુરુષુ ' ગુરુષુ ' સાદુષુ ' સાધુષુ ' તવસ્મિ સુ ય ' તપસ્વિષુ ચ વિનયઃ પ્રયોક્તવ્યઃ । એવ વિનયેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા નિત્ય મધિકરણકરણકારણપાપકર્મવિરતોઽધિકરણસ્ય = અવિનયરૂપસાવચકર્મણો યત્કરણ કારણમુપલક્ષણત્વાદનુમોદન ચ, એતરૂપ યત્પાપકર્મ, તતોવિરતો=નિવૃત્તો દત્તાનુજ્ઞાતાવગ્રહરુચિ ભવતિ । એતદ્ વ્યાર્યાપૂરમુક્તા ॥ સૂ.૧૦ ॥

રહના ચાહિયે । કયોં કિ (વિળઓ વિ તવો) યહ વિનય મી આભ્યતર તપ હૈ—કેવલ અનશન આદિ હી તપ નહીં હૈ । તથા (તવો વિ ધમ્મો) ચારિત્ર કા અશ હોને સે તપ મી ધર્મ હૈ, કેવલ સયમ હી ધર્મ નહીં હૈ । (તમ્હો વિળઓ પડજિયવ્વો ગુરુસુ સાદુસુ તવસ્મિસુ ય) ફસલિયે ગુરુજનોં કે વિષય મેં, સાધુજનોં કે વિષય મેં ઓર તપસ્વી જનોં કે વિષય મેં વિનય ધર્મ કા વ્યવહાર અવશ્ય હી કરના ચાહિયે । (એવ-વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અદિકરણકરણકારાવળપાવ-કમ્મવિરણ દત્તમણુળ્ળાય ડગ્ગહરુદ્ધ ભવદ્) ફસ પ્રકાર વિનય ધર્મ સે ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવચકર્મ કે કરને, કરાને ઓર ડસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત હો જાતા હૈ ઓર દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહ મેં રુચિવાલા બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ફસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ કી પાંચવી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રદર્શિત કિયા હૈ ફસ ભાવના કા નામ વિનય

વિ તવો ” આ વિનય પણ અભ્યતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી “ તવો વિ ધમ્મો ” ચારિત્રનો અર્થ હોવાથી તપ પણ ધર્મ છે, ફક્ત સયમ જ ધર્મ નથી “ તમ્હા વિળઓ પડજિયવ્વો ગુરુસુ તવસ્મિસુ ય ” તે કારણે ગુરુ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ “ એવ વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અદિકરણ કરણકારાવળપાવકમ્મવિરણ દત્તમણુળ્ળાય ડગ્ગહરુદ્ધ ભવદ્ ” આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવચકર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રતની પાંચમી ભાવનાનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે તે ભાવનાનું નામ “ વિનય ભાવના ” છે ટીકા

અધ્યયનમુપસદરતિ-‘ એમિણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવમિણ સવરસ્સદારં સમ્મ ચરિયં હોઠ્ઠ સુપણિહિયં,
 ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મણવયણકાયપરિરક્ખિણ્ણહિ નિચ્ચ
 આમરણતચ્ચ एसो જોગો નેયઠ્ઠો ધિટ્ઠમયા મટ્ઠમયા અણાસવો
 અકલુસો અંચ્છિદ્ધો અપરિરસાવી અસંકિલિદ્ધો સુદ્ધો સઠ્ઠજિણ-
 મણુણ્ણાઓ । એવ તદ્દયં સવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં
 તીરિય કિટ્ઠિય સમ્મ આરાહિય આણાણ અણુપાલિય ભવઠ્ઠ ।
 એવ નાયમુણિણા ભગવયા પપ્પણવિય પરુવિયં પસિદ્ધં સિદ્ધિ

ભાવના હે । અપને સે જો દીક્ષા પર્યાય મેં જ્યેષ્ઠ હે, ડન સાધુઓં મેં
 વિનય ધર્મ કા પાલન કરના તથા સ્વય ભયમ કે પાલન કરને મેં ઓર
 પારણા મે મૃદુ સ્વભાવ રખના, ઇત્યાદિ વિનય સવધી જિતની મી
 ક્રિયાણ હેં ડન્હે મોક્ષમાર્ગ કે સાધનોં મેં યથાયોગ્યરૂપ સે પાલન કરતે
 રહના ડનકે પ્રતિ અવિનયરૂપતા કા ભાવ ચિત્ત મેં નહીં આને દેના
 યહ વિનય ભાવના હે । તાત્પર્ય યહ હે કિ જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ ઓર
 ડસકે સાધનો કે પ્રતિ યોગ્યરીતિ સે વટુમાન રખના યહ વિનયધર્મ
 હે । ઇસ ધર્મ સે ભાવિત હુઆ અતરાત્મા અવિનય રૂપ સાવધ કર્મ કે
 કરને કરાને, ઓર ડમકી અનુમોદના જન્ય પાપક્રિયા સે વિરક્ત હો
 જાતા હે ઓર ઇસ ભાવના કા પાલક ઘન જાતા હે ॥ સુ ૧૦ ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા
 નિજ સયમનું પાલન કરવામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ
 વિનય સવધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે
 પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય લાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો
 તે વિનય લાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને
 તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી
 ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવધ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની
 અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાનો
 પાલક બની જાય છે, ॥ સુ ૧૦ ॥

વરસાસણમિણં આઘવિય સુદેસિયપસત્થ તદ્વય સવરદારં
સમત્ત તિવેમિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ઇય પપ્પહાવાગરણે તદ્વયં સંવરદાર સમત્ત॥

ટીકા—એવ પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ‘ઇણ’ इद ‘સવરસ્સ’ સવરસ્ય ‘દાર’
દારમ્ અદત્તાદાનવિરમણનામક તૃતીય દ્વારમિત્યર્થઃ, ‘સમ્મ’ સમ્પક્ ‘ચરિય’
ચરિત સત્ ‘હોઈ’ ભવતિ ‘સુપ્પણિહિય’ સુપ્પણિહિત્ત=સમારાધિતમ્ । તથા—‘ઈ-
મેહિં’ एभि ‘પચહિં’ वि=પચ્ચભિરપિ ‘કારણેહિં’ कारणैः=ભાવનાભિઃ, કી
દશૈઃ कारणैः ? इत्याह—‘મળવયણકાયપરિરક્ખિણ્ણહિં’ मनोवचनकायपरिरक्षितैः=
મનોવાક્યાયૈઃ પરિરક્ષિતૈઃ, મનોવાક્યાયયોગયુક્તાભિઃ પચ્ચભાવનાભિરિત્યર્થઃ, ‘નિચ્ચ’
નિત્યમ્ ‘આમરણત્ત ચ’ आमरणान्त=મરણપર્યન્ત ચ ‘એસ જોગો’ एष योगः=
અદત્તાદાનવિરમણરૂપો યોગ ‘ઘેયમ્મો’ नेतव्यः=પાલનીય, ‘ધિહ્મયા’ धृति-
મતા ‘મહ્મયા’ मतिमता । कथं भूतोऽयं योगः ? इत्याह—‘અણાસવો’ अना-

અવ સૂત્રકાર હસ અધ્યયન કા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હૈ—
‘એવમિણ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(એવ) પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઇણ) યહ (સવરસ્સ દાર
અદત્તાદાનવિરમણ નામ કા તૃતીય સવરદાર (સમ્મ ચરિય) અચ્છી તરહ
સે પાલે જાને પર (સુપ્પણિહિય) સુરક્ષિત (હોઈ) હો જાતા હૈ । ઇસ-
લિયે (મળવયણકાયપરિ રક્ખિણ્ણહિં) મન, વચન, કાય હન ત્રીન
યોગોં સે અચ્છી તરહ સુરક્ષિત કીયે ગયે (ઈમેહિં) હન (પચહિં વિ-
કારણેહિં) પાચ ભાવના રૂપ કારણોં સે (નિચ્ચ) સદા (આમરણત્ત ચ)
જીવન ભર તક (એસ જોગો) યહ અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ યોગ (ધિ
હમયા મહમયા) ચિત્ત સ્વસ્થતા સે તથા હેયોપાદેય કી વિવેકતા સે

હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ”
इत्यादि—

ટીકાર્થ—“ એવ ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઇણ ” આ “ સવરસ્સદાર ” અદત્તા
દાન વિરમણ નામનુ ત્રીણુ સવરદાર “ સમ ચારિય ” સાગી રીતે પાળવામા
આવે તો “ સુપ્પણિહિય ” સુરક્ષિત થઈ જાય છે તેથી “ મળવયણકાય
પરિરક્ખિણ્ણહિં ” મન, વચન અને કાયાના યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ
“ ઈમેહિં ” આ “ પચહિં વિ કારણેહિં ” પાચ ભાવનારૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ”
સદા “ આમરણ ત્ત ચ ” જીવન પર્યંત “ એસજોગો ” આ અદત્તાદાન વિરમ
ણરૂપ યોગ “ ધિહમયા મહમયા ” ચિત્તની સ્વસ્થતા તથા હેયોપાદેયના વિવેકથી

स्रवः=नूतनकर्मगमनरहितत्वात्, 'अकलुसो' अकलुषः = अशुभान्यवसायरहितत्वाद्, 'अच्छिदो' अच्छिद्र = छिन्नपापस्रोतस्त्वात् 'अपरिस्मावी' अपरिस्मावी=विन्दुरूपेणापि कर्मजलप्रवेशरहितत्वात्, 'असक्लिष्टो' असक्लिष्टा = असमाधिभाववर्जितत्वात्, 'सुद्धो' शुद्धः=कर्ममलवर्जितत्वात्, 'सर्वजिणमणुण्णाओ' सर्वजिणानुज्ञातः=सकलप्राणिहितकारकत्वात्सर्वेषामर्हतामनुमतश्चास्ति । एवम्=एतादृशमिदं 'तइय' तृतीय सवरद्वारम् 'फासिय' स्पृष्ट कायेनाचरित, 'पालिय' पालित-सततमुपयोगेनसेवित 'सोहिय' शोधित=अतीचारवर्जनेन शुद्धी

युक्तं ह्येष मुनिजन को (नेयवो) पालन करने योग्य है । क्यों कि यह अदत्तादानविरमण रूप योग (अणासवो) नूतनकर्मों के आगमन से रहित होने के कारण अनासवरूप है, (अकलुसो) अशुभ अध्यवसाय से वर्जित होने के कारण अकलुष है, (अच्छिदो) पाप का स्रोत इससे छिन्न हो जाता है अतः अच्छिद्र है (अपरिस्मावी) विन्दुरूप से भी कर्मरूपजल इसमें प्रवेश नहीं कर सकता है हमलिये यह अपरिस्मावी है । (असक्लिष्टो) असमाधिभाव से वर्जित होने के कारण यह असक्लिष्ट है । (सुद्धो) कर्ममल से रहित होने के कारण शुद्ध है (सर्वजिणमणुण्णाओ) समस्त प्राणियों का इससे हित होता है इसलिये समस्त अरहत भगवतो को यह मान्य हुआ है । (एव) ऐसा यह (तइय) तृतीय सवर द्वार है । इस सवरद्वार को जो (फासिय) अपने शरीर से आचरित करते हैं, (पालिय) निरन्तर उपयोग पूर्वक इसे सेवित करते हैं (सोहिय) अतिचारों से इसे रहित करते हैं

युक्त मुनिजनोने "नेयवो" पालन करवा योग्य छे आ अदत्तादान विरमण रूप योग "अणासवो" नवा कर्मोना आगमनथी रहित होवाने कारणे अनासवरूप छे, "अकलुसो" अशुभ अध्यवसायथी रहित होवाने कारणे अकलुष छे, "अच्छिदो" पापनो स्रोततेनाथी छिन्न थछ जय छे तेथी अच्छिद्र छे, "अपरिस्मावी" कर्म रूप जल पणु तेमा प्रवेशी शक्तु नथी तेथी ते अपरिस्मावी छे, "असक्लिष्टो" असमाधि भाव रहित होवाने कारणे ते असक्लिष्ट छे, "सुद्धो" कर्म मलथी रहित होवाने कारणे ते शुद्ध छे, "सर्वजिणमणुण्णाओ" समस्त प्राणीओनु तेनाथी कथाणु थाय छे, ते कारणे समस्त अरहत भगवानोने ते मान्य थयेल छे, "एव" एवु "तइय" आ तृतीय सवरद्वार छे आ सवरद्वारे ने "फासिय" पोताना शरीरथी आचरे छे, "पालिय" निरन्तर उपयोग पूर्वक नेनु सेवन करे छे, "सोहिय" अतिचारोथी छे "किट्टिय" तेनु

વરસાસળમિણં આઘવિય સુદેસિયપસત્ય તદ્વ્ય સવરદારં
સમત્ત ત્તિવેમિ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ઈય પળહાવાગરણે તદ્વ્યં સંવરદારં સમત્ત॥

ટીકા—અવ પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ સવરસ્સ ’ સવરસ્ય ‘ દાર ’
દ્વારમ્ અદત્તાદાનવિરમણનામક તૃતીય દ્વારમિત્યર્થઃ, ‘ સમ્મ ’ સમ્પર્ક ‘ ચરિય ’
ચરિત્ત સત્ ‘ હોઢ ’ ભવતિ ‘ સુપ્પણિહિય ’ સુપ્પણિહિત=સમારાધિતમ્ । તથા—‘ ઇ-
મેહિ ’ એમિ ‘ પચહિ ’ વિ=પચ્ચમિરપિ ‘ કારણેહિ ’ વારણેઃ=ભાવનામિઃ, કી
દ્દશૈઃ કારણેઃ ? इत्याह—‘ મળવચ્છળકાયપરિરક્ખિવર્હિ ’ મનોવચ્છનકાયપરિરક્ષિતૈઃ=
મનોવાક્ષાયૈઃ પરિરક્ષિતૈઃ, મનોરાક્ષાયયોગયુક્તામિઃ પચ્ચભાવનામિરિત્યર્થઃ, ‘ નિચ્ચ ’
નિત્યમ્ ‘ આમરણત્ત ચ ’ આમરણાન્ત=મરણપર્યન્ત ચ ‘ એસ જોગો ’ એપ યોગ.=
અદત્તાદાનવિરમણરૂપો યોગ ‘ ણેયવ્વો ’ નેતવ્યઃ=પાલનીયઃ ‘ ધિઢમયા ’ ધૃતિ
મતા ‘ મહમયા ’ મતિમતા । કય ભૂતોઽય યોગ. ? इत्याह—‘ અણાસવો ’ અના-

અવ સૂત્રકાર હસ અધ્યયન કા ઉપસહાર કરતે હુણ કહતે હૈ—
‘ એવમિણ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(એવ) પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઇણ) યહ (સવરસ્સ દાર
અદત્તાદાનવિરમણ નામ કા તૃતીય સવરદ્વાર (સમ્મ ચરિય) અચ્છી તરહ
સે પાલે જાને પર (સુપ્પણિહિય) સુરક્ષિત (હોઢ) હો જાતા હૈ । હસ-
લિયે (મળવચ્છળકાયપરિ રક્ખિવર્હિ) મન, વચ્છન, કાય હન તોન
યોગોં સે અચ્છી તરહ સુરક્ષિત કીયે ગયે (હમેહિ) હન (પચહિ વિ-
કારણેહિ) પાચ ભાવના રૂપ કારણોં સે (નિચ્ચ) સદા (આમરણત્ત ચ)
જીવન ભર તક (એસ જોગો) યહ અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ યોગ (ધિ
હમયા મહમયા) ચિત્ત સ્વસ્થતા સે તથા હેયોપાદેય કી વિવેકતા સે

હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ”
इत्यादि—

ટીકાર્થ—“ એવ ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઇણ ” આ “ સવરસ્સદાર ” અદત્તા
દાન વિરમણ નામનુ ત્રીજી સવરદ્વાર “ સમ ચારિય ” સારી રીતે પાળવામા
આવે તો “ સુપ્પણિહિય ” સુરક્ષિત થઈ જાય છે તેથી “ મળવચ્છળકાય
પરિરક્ખિવર્હિ ” મન, વચ્છન અને કાયાના યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ
“ હમેહિ ” આ “ પચહિ વિ કારણેહિ ” પાચ ભાવનારૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ”
સદા “ આમરણ ત્ત ચ ’ જીવન પર્યંત એસજોગો ” આ અદત્તાદાન વિરમ
ણરૂપ યોગ “ ધિહમયા મહમયા ” ચિત્તની સ્વસ્થતા તથા હેયોપાદેયના વિવેકથી

‘ सुदेसिय ’ सुदेगित=सदेवमनुनामुराया पर्पदि मुट्टपदिष्टम् ‘ पसत्थ ’ पसस्त= सर्वप्राणिहितकरत्वान्मङ्गलमय ‘ तइय सवरदार ’ तृतीय सवरदार ‘ समत्त ’ समाप्तम् । ‘ त्तिवेमि ’ इति व्रवीमि । अम्यार्थ पूर्वमुक्त ॥ सू० ११ ॥

इति श्रीविश्वमित्रात्-जगद्गुरु-प्रसिद्धावकपञ्चदशभाषाकलितललितकला
पायापरु-प्रविशुद्धगगनग्रनैकग्रन्थनिर्मापरु-वादिमानमर्दर-श्रीशाहूडप
तिहोल्हापुरगगपदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-होल्हापुरराज-
गुरु-मालयप्रचारि-जैनाचार्य-जैगर्मदिवाकरपूज्यश्री-वासीलाश-
प्रतिविरचिताया दगमाज्ञस्य श्री प्रश्नव्याकरणसूत्राय सुदर्शन्या
रदाया व्याख्याया सगरात्माके द्वितीयेभागेऽदत्तादान-
प्रिमणनामक तृतीय सवरदार समाप्तम् ॥

सर्व भाव से इसके विषय में कहा है और (सुदेसिय) देवो, मनुजों तथा असुरों से युक्त परिपदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) सर्वप्राणीयो का हितकारक होने से मंगलमय है (तइय सवरदार समत्त) यह तृतीय सवर द्वार समाप्त हुआ (त्ति वेमि) ऐसा मैं कहता हूँ । अर्थात् हे जगृ ! इस तृतीय सवर द्वार का जैसा कथन मैंने साक्षात् भगवान् महावीर के मुख से सुना है वैसा ही मैंने तुम से कहा है— अपनी तरफ से इसमें मैंने कुछ भी मिश्रित नहीं किया है ।

भावार्थ—इस तृतीय सवर द्वार का उपसहार करते हुए सूत्रकार समझा रहे हैं कि इस तृतीय सवर द्वार का जो मुनिजन तीन करण तीनयोग से सुरक्षित की गई पांच भावनाओं से जीवन भर पालते हैं—

निपे कहु छे अने ‘ सुदेसिय ’ देवो, मनु जो अने असुरोया युक्त परिपदाभा तेनो उपदेश दीयो छे “ पसत्थ ” मने प्राणीओनु हितकरनार होवाथी ते भगवमय छे, “ तइय सवरदारसमत्त ” आ तृतीय सवरदार समाप्त थयु, त्तिवेमि ” ओपु छु उहु छु ओटये दे छे जगृ ! आ तृतीयसवरदारनु उथन जे प्रमाणे आदात लगान मरानीना मुजे मालज्यु छु ते ज प्रमाणे तमने कहु छु—भाग तरक्षथी तमा कर्ष पणु उमेरवा आब्यु नथी

भावार्थ —आ त्रीन्त सवरदारनो उपसहार उगता सूत्रकार समझवे छे के आ त्रीन्त सवरदारनु जे मुनिजन त्रण उरण त्रण योगथी सुरक्षित करवाभा आपेल पाच भावनाओ महित पालन करे छे—ते प्रमाणे पोतानी करेक

કૃત ' ' તીરિય ' તીરિત=તીર પ્રાપિત પૂર્ણરૂપેણ સેવિત, ' તિટ્ઠિય ' કીર્તિતમ્-
અન્યેષામુપદિષ્ટમ્, ' આરાહિય ' આરાધિતમ્ ત્રિકરણત્રિગોર્ગ-સમ્યગાચરિતમ્,
' આણાણ ' આજ્ઞયા=સર્વજ્ઞચનાનુમારેણ ' અણુપાલિય ' અનુપાલિત ભવતિ ।
एवम्=અમુના પ્રકારેણ ' નાયમુણિણા ' જ્ઞાતમુનિના=જ્ઞાતાચ્યપ્રસિદ્ધક્ષત્રિયવશોદ્ધ-
વેન મુનિના ભગવતા મહાવીરેણ ' પણ્ણવિય ' પ્રજ્ઞાપિત=શિષ્યેભ્યઃ સામાન્યતયા
કથિત, ' પરુવિય ' પ્રરૂપિત-ભેદાનુભેદપ્રદર્શનપૂર્વક કથિત, ' પસિદ્ધ ' પ્રસિદ્ધ=
જિનવચને પ્રરૂપાત, ' સિદ્ધવરસાસનમિણ ' સિદ્ધવરશાસનમિદ, સિદ્ધાના=નિષ્ઠિ-
તાર્થાના વરશાસન-પ્રધાનાજ્ઞારૂપમ્, ' આઘવિય ' આર્યાત=પર્યતોમાવેન કથિત,

(તીરિય) પૂર્ણરૂપ સેવે આનું સેવન કરતે હું (તિટ્ઠિય) દુસરો કો
હસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ દેતે હું, (સમ્મ) ત્રીન કાળ ત્રીન યોગો
સે હસ કી ખલી પ્રકાર સે (આરાહિય) અનુપાલના કરતે હું (આણાણ
અણુપાલિય ભવહ) ઉન કે દ્વારા યહ યોગ તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞાનુ-
સાર હી પાલિત હોતા માના જાતા હૈ । (एव) હસ પ્રકાર સે (નાય-
મુણિણા ભગવયા) જ્ઞાતનામક પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિયવશ મેં ઉત્પન્ન હુણ મુનિ-
રાજ ભગવાન મહાવીર ને (પણ્ણવિય) શિષ્યોં કે લિયે હસ વિષય કા
સામાન્યરૂપ સે સમજાયા હૈ । (પરુવિય) વાદ મેં ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક
ઉસકા કથન કિયા હૈ । હસીલિયે (પસિદ્ધે) જિનવચન મેં યહ પ્રરૂપાત
હુવા હૈ અર્થાત્ જિનવચન કે અનુસાર હી આચાર્ય પરપરા સે હસકા
પાલન કરના હસી રૂપ સે ચલા આ રહ્યા હૈ । તથા (સિદ્ધવરસાસન-
મિણ) ભૂતકાલ મેં જિતને ખી સિદ્ધ હો ચુકે હૈં ઉનકા યહ પ્રધાન
આજ્ઞારૂપ શાસન હૈ । (આઘવિય) એસા ભગવાન મહાવીર પ્રભુ ને

પાલન કરવાનો અન્યને ઉપદેશ આપે છે “ સમ્મ ” ત્રણ કરણ ત્રણ યોગોર્થી
તેનું સારી રીતે “ આરાહિય ” અનુપાલન કરે છે, “ આણાણ અણુપાલિય ભવહ ”
તેમના દ્વારા આ યોગનું, તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞા અનુસાર પાલન થાય છે
એમ માનવામાં આવે છે ” “ एव ” આ પ્રકારે “ નાયમુણિણા ભગવયા ”
જ્ઞાત નામના પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન મહાવીરે
“ પણ્ણવિય ” શિષ્યોને ભાટે આ વિષય સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યો છે, “ પરુવિય ”
ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ સહિત તેનું કથન કર્યું છે તેથી “ પસિદ્ધે ” જિનવ-
ચનમાં તે પ્રખ્યાત થયેલ છે એટલે કે જિનવચન અનુસાર જે આચાર્ય પર-
પરાથી તેનું આ રીતે પાલન કરવાનું ચાલ્યું આવે છે તેથી “ સિદ્ધવરસા-
સનમિણ ” ભૂતકાળમાં જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમનું આ મુખ્ય આજ્ઞા
રૂપ શાસન છે “ આઘવિય ” એવું ભગવાન મહાવીરે સર્વ બાબથી તેને

॥ अथ चतुर्थ सवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात तृतीयमदत्तादानविरमणनामक सवरद्वारम् । अथ ब्रह्मचर्यं नामक क्रमप्राप्त चतुर्थं सवरद्वारमभिधीयते । अस्य पूर्वेण सहायमभिसम्बन्ध - पूर्वत्रादत्ता दानविरमणमुक्तं तच्च मैथुनविरमणमन्तरेण न सम्भवतीत्यनेन सम्बन्धेनायातमिदं चतुर्थं सवरद्वारम् । तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जवू ’ इत्यादि ।

मूलम्—जवू । एत्तो य वभचेर उत्तमतवनियमनाणदसण-
चरित्तसमंतविणयमूल जम नियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवतमह-
त्तेयमत पसत्थगभीरयिमियमज्झं अजवसाहुजणाचरिय मो-
क्खग्ग विसुद्धसिद्धगइनिलय सासयमव्वावाहमपुणवभवं पसत्थं
सोम्मं सुह सिवमचलमक्खयकर जइवरसारक्खिय सुचरियं
सुभासिय नवरि सुणिवरेहि महापुरिसधीरसूरधम्मियधिइमताण
य सया विसुद्ध भव्व भव्वजणाणुचरिय निस्सकियं निवभय
नित्तुसं निरायास निरुवलेव निव्वुइघर नियमनिप्पकंप तव-

चतुर्थ सवर द्वार प्रारभ—

तृतीय अदत्तादान विरमण नामक सवरद्वार का व्याख्यान हो चुका, अब क्रम प्राप्त चतुर्थ ब्रह्मचर्य नामका सवरद्वार का व्याख्यान प्रारभ किया जाता है । इसका पूर्व सवरद्वार के साथ इस प्रकार से संबध है—जबतक मैथुन विरमण नहीं होगा तब तक तृतीय सवरद्वार की सम्भवता नहीं हो सकती, इसलिये उसके अनन्तर सूत्रकार अब इस चतुर्थ सवरद्वार को प्रारभ कर रहे हैं । उसका यह सर्व प्रथम सूत्र है—‘ जवू ’ इत्यादि ० ।

એથા સ વરદ્વારનો પ્રારભ

ત્રીજા અદત્તાદાનનો વિરમણ નામના સવરદ્વારનું વર્ણન પૂરું થયું, હવે અનુક્રમે આવતા એથા બ્રહ્મચર્ય નામના સવરદ્વારનું વર્ણન શરૂ કરવામાં આવે છે તેનો આગળના સવરદ્વાર સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે—જ્યાં સુધી મૈથુન વિરમણ થાય નહીં ત્યાં સુધી ત્રીજું સવરદ્વાર સંભવિત થઈ શકતું નથી, તેથી તેનું ક્ષયન કર્યા પછી હવે સૂત્રકાર આ એથા સવરદ્વારની શરૂઆત કરે છે તેનું સૌથી પહેલું સૂત્ર આ પ્રમાણે છે—“ જવૂ ” ઇત્યાદિ—

इसके अनुसार अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति पर अकृश रखते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं, नवीन कर्मों का उनको बध नहीं होता है और सचित्त कर्मों की निर्जरा होती रहती है। पापों का स्रोत इसके प्रभावसे बध हो जाता है। यह अपरिस्त्री आदि विशेषणोंवाला है। त्रिकालवर्ती समस्त अरिहत भगवन्तोंने इसका पालन किया है। उन्हीं के अनुसार भगवान् महावीर प्रभु ने भी इसका उन्हीं की मान्यतानुसार स्वरूपादि प्रदर्शन द्वारा कथन किया है। अपनी परिपदा में आये हुए समस्त जीवों को इसी प्रकार से इसका विवेचन किया है, अतः यह मंगलमय है इसे धारण कर प्रत्येक जीव को-समस्त सत्त्व पचेन्द्रिय पर्याप्त मनुष्यों को-अपना जन्म सफल बना लेना चाहिये। इस प्रकार जब स्वामी को इस तृतीय सवर द्वार के विषय में सुधर्मास्वामी ने समझाया है ॥ सू० ११ ॥

॥ तृतीय सवरद्वार समाप्त ॥

પ્રવૃત્તિ પર અક્રશ મૂકે છે, તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોનો બધ બધાતો નથી, અને સચિત્ત કર્મોની નિર્જરા થતી રહે છે તેના પ્રભાવથી પાપોનો સ્રોત બધ પડી જાય છે તે અપરિસ્ત્રી આદિ વિશેષણોથી યુક્ત છે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહતોએ તેનું પાલન 'કરેલ' છે તેમના પ્રમાણે જ ભગવાન મહાવીરે તેનું તેમની માન્યતા અનુસાર સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન દ્વારા કથન કર્યું છે પોતાની પરિપદામાં આવેલ સમસ્ત જીવો સમીપ એ જ પ્રકારે તેનું વિવેચન કર્યું છે, તેથી તે મંગલમય છે તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક જીવે-સમસ્ત પચેન્દ્રિય પ્ર્યાપ્ત મનુષ્યોએ-પોતાનો જન્મ સફળ કરવો જોઈએ આ પ્રમાણે સુધર્મા સ્વામીએ જ બૂસ્વામીને આ ત્રીજા સવર દ્વાર વિષે સમજાવ્યું છે ॥ સૂ ૧૧ ॥

॥ તૃતીય સવરદ્વાર સમાપ્ત

તથા—‘ જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત ’ યમનિયમગુણપ્રવાનયુક્તમ્=તત્ર-યમાઃ=પ્રાણાતિ
પાતવિરમણાદય, નિયમાઃ=અભિગ્રહાદયસ્તે ચ તે ગુણપ્રવાના. = ગુણમુખ્યાઃ—
ગુણાના મધ્યે યમા નિયમાથ ચર્વત શ્રેષ્ઠ इत्यर्थ, તૈયુક્તમ્, તથા—‘ હિમવતમહતતેય-
મત ’ હિમવન્મહત્તેજસ્વિ=હિમવાનિય=ચર્વતવિશેષ इव महद्=વિશાલ તેજસ્વિ ચ
યત્તત્તથોક્ત, અય મ વ.-યયા હિમવાન્ સકલપર્વતાપેક્ષયા મહાન્ તેજસ્વી ચ
વર્તતે, તયેવેદ વ્રત્તચ સકલવ્રતાપેક્ષયા વિશાલ તેજસ્વિત્વેતિ । ઉક્ત ચ—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યં હિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્યપુણ્યસમાર, સયોગાદ્ ગુરુ રુચ્યતે ॥ ૧ ॥” इति ।

તથા—‘ પસત્યગભીરથિમિયમજ્ઞ ’ પ્રશસ્તગભીરસ્તિમિતમન્ય પ્રશસ્ત=શુભ
ગમ્ભીરમ્=અગાધમ્, સ્તિમિતં=સ્થિર ચ મન્યમ્=અન્તઃ કરણ યસ્મિન્ સતિ તત્તથો

(જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત) યદ્ પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ યમોં સે
એવ અભિગ્રહ આદિ નિયમોં સે કિ જો સમસ્તગુણો મેં શ્રેષ્ઠ માને ગયે
હેં યુક્ત હે, તથા (હિમવતમહતતેયમત) જો હિમવાન્ પર્વત કી તરહ
વિશાલ ઓર તેજસ્વી હે, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર હિમવાન્ પર્વત સકલ
પર્વતોં કી અપેક્ષા મહાન્ ઓર તેજસ્વી માના જાતા હે, ડસી પ્રકાર યદ્
વ્રહ્મચર્ય વ્રત મી સકલવ્રતોં કી અપેક્ષા વિશાલ તેજસ્વી વ્રત માના ગયા
હે । કહા મી હે—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યં હિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્ય પુણ્યસમાર, —સયોગાદ્ ગુરુરુચ્યતે ॥ ૧ ॥

વ્રતાં મે સઘ સે વહા વ્રત વ્રહ્મચર્ય હે । કયોં કિ વ્રહ્મચર્ય કે પાલન
કરને સે જો પુણ્યસમૂહ પ્રાપ્ત હોતા હે—ડસી કે સવધ સે ગુરુ માના જાતા
હે । અર્થાત્— ડસી વ્રહ્મચર્ય કા પાલક હી સચ્ચા ગુરુ કહલાતા હે ।
તથા—(પસત્યગભીરથિમિયમજ્ઞ) ડસ વ્રહ્મચર્ય કે સદ્વાચ સે પાલન

“ જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત ” પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ યમોથી અને અભિ-
ગ્રહ આદિ નિયમોમાથી, ડે જે સવે ગુણોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે યુક્ત છે તથા
“ હિમવતમહતતેયમત ” જે હિમાલય પર્વતની જેમ વિશાળ અને તેજસ્વી
છે, એટલે ડે જેમ હિમાલય પર્વત સઘળા પર્વતો કરતા મહાન અને તેજસ્વી
મનાય છે તેમ આ વ્રહ્મચર્ય વ્રતને પણ સઘળા વ્રતોના કરતા વિશાળ તેજસ્વી
વ્રત માનવામા આવે છે ડહુ પણ છે—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યં હિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્યપુણ્યસમાર, —સયોગાદ્ ગુરુરુચ્યતે ॥ ૧ ॥

વ્રતોમા સૌથી મોટુ વ્રત વ્રહ્મચર્ય છે કારણ ડે વ્રહ્મચર્યના પાલનથી
જે પુણ્ય સમૂહ પ્રાપ્ત થાય છે—તેના કારણે તેને ગુરુ મનાય છે એટલે ડે
આ વ્રહ્મચર્યનો પાલક જ સાચો ગુરુ ડહેવાય છે તથા “ પસત્યગભીરથિ

સંજમમૂલદલિયણિમ પંચમહવ્યયમુરવિલય સમિદગુત્તિગુત્ત
જ્ઞાણવરકવાડસુકયરવલ્લભમઙ્ગપદિષ્ણફલિહ સન્નદ્વવઢોચ્છદ્ય
દુગ્ગદ્વપહં સુગદ્વપહદેસગ ચ લોગુત્તમ ચ વ્યમિણ પડમસરતલા-
ગપાલિભૂય મહાસગડઅરગતુવમૂયં મહાવિદિમન્નસ્વસ્વધમૂયં
મહાનગરપાગારકવાડફલિહમૂયં રજ્જુપિણઢોવ્વદ્વકેઠ વિસુ-
ળેગગુણસંપિણદ્ધં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—‘ જન્નુ ’ હે જન્નુ । ‘ एत्तो य ’ इतश्च=अदत्तादानविरमणसवरद्वार-
समाप्त्यनन्तर च ‘ वभचेर ’ ब्रह्मचर्यं नाम चतुर्थे सवरद्वारमभिधीयते । तत्किं
स्वरूपमित्याह—‘ उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल ’, उत्तमतपोनियमज्ञानदर्शन-
चारित्रविनयमूलम्=तत्र उत्तमा=प्रधानाः ये तपो नियमज्ञानदर्शनचारित्रविनया
तत्र-तपः=अनशनादिक द्वादशविधम्, नियमा=अभिग्रहादय, ज्ञान=पदार्थानां
विशिष्टबोधः, दर्शनम्=तत्त्वश्रद्धानरूपम्, चारित्र=सावधयोगविरतिलक्षणम्, वि-
नयः=अभ्युत्थानादिलक्षणः, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां मूलमिवमूल कारण यत्तत्तथोक्तम्,

ટીકાર્થ—(જન્નુ) હે જન્નુ ! (एत्तो य) अदत्तादानविरमण नामक
सवरद्वार की समाप्ति के अनन्तर अब मैं (वभचेर) ब्रह्मचर्य नामक
चतुर्थ सवर द्वार को कहता हू । उसका स्वरूप इस प्रकार है—(उत्तम-
तवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल) अनशन आदि बारह प्रकार के
उत्तमतपों का, उत्तम अभिग्रह आदि रूप नियमों का, पदार्थों का
विशिष्टबोध रूप उत्तमज्ञान का, पदार्थों का श्रद्धानरूप उत्तमदर्शन का
सावधयोग विरतिरूप उत्तम चारित्र का, और अभ्युत्थान आदि रूप
उत्तम विनय का, मूल की तरह यह ब्रह्मचर्य मूल कारण है, तथा—

ટીકાર્થ—“ જન્નુ ” હે જન્નુ ! “ एत्तो य ” अदत्तादानविरमण नामना
सवरद्वारની समाप्ति पછी હવે હું “ वभचेर ” ब्रह्मचर्य नामना बोधा सवर
द्वारतु वर्णन કરે તેતુ સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે “ उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्त
विणयमूल ” अनशन आदि बार प्रदर्शना उत्तम तपतु, उत्तम अभिग्रह आदि
इय नियमोतु, पदार्थोना विशिष्ट बोधइय उत्तम ज्ञानतु, पदार्थोना श्रद्धान
इय उत्तम दर्शनतु सावधयोग विरतिइय उत्तम चारित्रतु, अने अभ्युत्थान
आदि इय उत्तम विनयतु, मूलनी जेम आ ब्रह्मचर्य मूलकारणु છે तथा

તથા-‘ સુહ ’ સુખ-સુખસ્વરૂપત્વાત્, ‘ સિવ ’ શિવમ્=નિરુપદ્રવત્વાત્, તથા-
‘ અચલ ’ અચલમ્-સ્પન્દનાદિવર્જિતત્વાત્, તથા ‘ અક્ષયકર ’ અક્ષયકરમ્=અક્ષ-
યો મોક્ષસ્તત્કરમ્=ભવગ્રીજાહ્નુરાજનનાત્, તથા-‘ જઙ્ગરમારવિશ્વય ’ યતિવરસં-
રક્ષિતમ્=યતિવરૈઃ= મુનિપ્રધાનૈઃ તીર્થઙ્કરગણધરાદિભિઃ સરક્ષિત=પરિપાલિતમ્,
તથા ‘ સુચરિય ’ સુચરિતમ્=શોભનાનુષ્ઠાનમ્, તથા-‘ મુનિવરેહિં ’ મુનિવરૈઃ=
તીર્થંકરાદિભિઃ ‘ નવરિં ’ કેવલ ‘ સુભાસિય ’ સુભાપિત=મૃષ્ટુ પ્રતિપાદિતમ્, ચ
=પુનઃ-ઇદં બ્રહ્મચર્યં ‘ મહાપુરિસવીરસુરધર્મિયધિઙ્મતાણ ’ મહાપુરુષધીર શૂરા-
ર્મિકધૃતિમતામ્=મહાપુરુષાઃ=પુરુષથ્રેષ્ઠા, ધીરશૂરાઃ=ધીગણાં મધ્યે શૂરા =અત્ય
ન્તસાદસસપન્નાઃ, ધાર્મિકા =ધર્મપરાયણાઃ, ધૃતિમન્તો=ધૈર્યવન્તઃ, એવા કર્મધાર-
યઃ, તેવા તયોક્તાનામ્ ‘ સયા ’ સદા=કુમારાદિસર્વાવસ્થાસુ ‘ સુવિસુદ્ધ ’ સુ-

હોને સે યહ પ્રશસ્ત હૈ । (સોમ્મ) સમસ્ત મનુષ્યોં કે મન કો પ્રફુલ્લિત
કરને ચાલા હોને સે યહ સૌમ્ય હૈ । (સુહ) સુખસ્વરૂપ હોને સે યહ
એક સુખ હૈ । (સિવમચલમક્ષયકર) ઉપદ્રવ રહિત હોને સે યહ
શિવરૂપ હૈ । સ્પન્દનાદિ ક્રિયા સે વર્જિત હોને કે કારણ યહ અચલ હૈ ।
ભવરૂપ વીજ કે અકુરકા ઉત્પાદક નહીં હોને સે અક્ષય-મોક્ષ વા કારક
હૈ અતઃ યહ અક્ષયકર હૈ-। (જઙ્ગરમારવિશ્વય) મુનિપ્રધાન-તીર્થંકર
એવ ગણધર આદિ દેવોં દ્વારા પાલા ગયા હોને સે યહ યતિવર સરક્ષિત
હૈ । (સુચરિય) શોભન આચાર રૂપ હોને સે યહ સુચરિત હૈ । (નવરિં
મુનિવરેહિં સુભાસિય કેવલ મુનિવરોં-તીર્થંકરોં દ્વારા હી યહ અચ્છી
તરહ સે પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । તથા યહ બ્રહ્મચર્ય મહાપુરિસ-
ધીર-સૂર-ધર્મિય-ધિઙ્મતાણ ય સયા વિસુદ્ધ) મહાપુરુષોં કા, ધીરોં કે

“ પસત્થ ” નિર્ભળ હોવાથી તે પ્રશસ્ત છે “ સોમ્મ ” સમસ્ત મનુષ્યોમા
મનને પ્રફુલ્લિત કરનાર હોવાથી તે સૌમ્ય છે “ સુહ ” સુખસ્વરૂપ હોવાથી તે
એક સુખ છે “ સિવમચલમક્ષયકર ” ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તે શિવ-
રૂપ છે સ્પન્દનાદિ ક્રિયાથી રહિત હોવાથી તે અચળ છે ભવરૂપ બીજના
અકુરતુ ઉત્પાદક નહીં હોવાથી તે અક્ષય-મોક્ષકારક છે, તેથી તે અક્ષયકર
“ જઙ્ગરમારવિશ્વય ” મુનિપ્રધાન-તીર્થંકર અને ગણધરો આદિ દેવો દ્વારા
પાળાયેલા હોવાથી તે યતિવર સરક્ષિત છે “ સુચરિય ” સુદર આચારરૂપ
તે સુચરિત છે “ નવરિં મુનિવરેહિં સુભાસિય ” એવા મુનિવરો-તીર્થંકરો
દ્વારા જ તેનું સારી રીતે પ્રતિપાદન કરાયું છે તથા “ મહાપુરિસ-ધીર-સૂર-
ધર્મિય-ધિઙ્મતાણ ય સયા વિસુદ્ધ ” મહાપુરુષો, ધીરોની વચ્ચે પણ ધીર

ક્તમ્, બ્રહ્મચારિણોઽન્તઃકરણ પ્રશસ્તતાગામ્ભીર્યસ્થૈર્યયુક્ત મયતીતિ માનઃ । તથા - ‘ અજ્ઞવસાહુજનાચરિય ’ આર્જવમાપુજનાચરિતમ્=આર્જવે=સરલભાવે સલગ્ના યે સાધુજનાસ્તૈરાચરિતમ્ । તથા ‘ મોક્ષમગ્ગે ’ મોક્ષમાર્ગઃ=મોક્ષમ્થાનપ્રાપક ઇત્યર્થ તથા ‘ વિસુદ્ધસિદ્ધિગઢનિલયે ’ વિશુદ્ધસિદ્ધિગતિનિલય =વિશુદ્ધા=રાગાદિદોષવર્જિતત્વાનિર્મલાયા સિદ્ધિઃ=કૃતકૃત્યતા, સૈવ ગમ્યમાનત્વાદ્ ગતિમ્તસ્યા નિલયો-ગૃહમ્=સિદ્ધિગતિપ્રાપકત્વાત્સિદ્ધિસ્થાનમિત્યર્થ, તથા ‘ સાસય ’ શાશ્વત=માધ્ય-પર્યવસિતશિવસુખજનકત્વાત્, ‘ અવ્યાવાહ ’ અવ્યાવાધ=શારીરિકમાનસિકદુઃખઃ સ્વર્જિતત્વાત્ ‘ અપુણઞ્મય ’ અપુનર્ભવમ્=પુનર્જન્મપ્રતિરોધકત્વાત્, ‘ પસત્થ ’ પ્રશસ્તમ્-નિર્મલત્વાત્, તથા-‘ સૌમ્મ ’ સૌમ્યમ્--સમગ્રજનમનોમોહજનકત્વાત્,

કર્તા કા અતઃકરણ શુભ, ગમ્ભીર-અગાધ, ંવ સ્થિર હો જાતા હૈ । તથા (અજ્ઞવસાહુજનાચરિય) યહ બ્રહ્મચર્ય, આર્જવ મેં-સરલભાવ મેં-સલગ્ન બને દુષ સાધુજનોં કૈ દ્વારા આચરિત ક્રિયા જાતા હૈ । તથા-(મોક્ષમગ્ગે) યહ બ્રહ્મચર્ય અપને પાલનકર્તા કો મોક્ષ સ્થાન કી પ્રાપ્તિ કરાને વાલા હોતા હૈ તથા (વિસુદ્ધસિદ્ધિગઢનિલયે) યહ બ્રહ્મચર્ય વિશુદ્ધ-રાગાદિ દોષો સે વર્જિત હોને કૈ કારણ નિર્મલ-જો કૃતકૃત્યતા રૂપ ગતિ હૈ ડસકા ઘર હૈ-સિદ્ધિ ગતિ કા પ્રાપક હોને સે સિદ્ધિ કા સ્થાન હૈ તથા (સાસય) સાધ્યપર્યવસિત શિવ સુખ કા જનક હોને સે યહ બ્રહ્મચર્ય શાશ્વત હૈ (અવ્યાવાહ) શારીરિક ંવ માનસિક દુઃખોં સે રહિત હોને કૈ કારણ યહ બ્રહ્મચર્ય અવ્યાવાધ-વાધા સે રહિત હૈ । (અપુણઞ્મય) ઇસકૈ પ્રભાવ સે સસાર મે જીવ કા પુનર્જન્મ નહીં હોતા, ડસકા યહ પ્રતિરોધક હૈ ઇસલિયે યહ અપુનર્ભવરૂપ હૈ । (પસત્થ) નિર્મલ

મિયમજ્ઞ ” તે બ્રહ્મચર્યના પાલનથી તેનું પાલન કરનારનું અતઃકરણ શુભ, ગમ્ભીર, અગાધ, અને સ્થિર થઈ જાય છે તથા “ અજ્ઞવસાહુજનાચરિય ” આ બ્રહ્મચર્ય, આર્જવ, સરલ ભાવમા લીન થયેલ સાધુજનો દ્વારા આચરવામા આવે છે તથા “ મોક્ષમગ્ગે ” આ બ્રહ્મચર્ય, તેનું પાલન કરનારને મોક્ષની પ્રાપ્તિ કરાવનાર હોય છે તથા “ વિસુદ્ધસિદ્ધિગઢનિલયે ” આ બ્રહ્મચર્ય વિશુદ્ધ રાગાદિ દોષોથી રહિત હોવાને લીધે નિર્મળ-કે કૃતકૃત્યતા રૂપ ગતિ છે તેનું ઘર છે-સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી સિદ્ધિનું સ્થાન છે, તથા “ સાસય ” કાયમી શિવ સુખનું જનક હોવાથી આ બ્રહ્મચર્ય શાશ્વત છે “ અવ્યાવાહ ” શારીરિક અને માનસિક દુઃખોથી રહિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવ્યા-વાધ-આધાથી રહિત છે, “ અપુણઞ્મય ” તેના પ્રભાવથી સસારમા જીવને પુનર્જન્મ લેવો પડતો નથી તેનું તે પ્રતિરોધક છે તેથી તે અપુનર્ભવરૂપ છે .

તયવેદ બ્રહ્મચર્યમપિ શુભ્રમિતિ ભાવ., તથા-‘ નિરાયાસ ’ નિરાયાસ=તેરાજન
કમ્, ‘ નિસ્વલેવ ’ નિરુપલેપમ્-વિપયસ્નેહવર્જિતમ્, તથા-‘ નિવ્વુઘર ’ નિ
વૃત્તિગૃહમ્=નિવૃત્તેઃ=ચિત્તસમાયેઃ ગૃહ=સ્થાનમ્, ‘ નિયમનિષ્પકપ ’ નિયમનિષ્પ
કમ્પ=નિયમેન=નિશ્ચયેન, નિષ્પકમ્પ=અવિચલમ્-નિરતિચારત્વાત્, તથા-‘ તવ

રૂપ તુપ સે વિહીન હોને કે કારણ તિલકુલ શુભ્ર-પવિત્ર છે । (નિરાયાસ)
હમ્મકે પાલન કરને સે કિસી મી પ્રકાર કા પાલનકર્તા કો આયાસ-
અર્થાત્-કષ્ટ નહીં ઉઠાના પડતા હૈં ઉસલિયે શ્વેદ કા અજનક હોને સે
યહ નિરાયામરૂપ હૈં । (નિસ્વલેવ) વૈપયિક પદાર્થો કો ઓર બ્રહ્મ-
ચારી કે ચિત્ત મે થોડા સા મી સ્નેહ-રાગભાવ નહીં હોતા હૈં, અતઃ
વિપય સ્નેહવર્જિત હોને સે યહ બ્રહ્મચર્ય નિરુપલેપ હૈં । (નિવ્વુઘર)
બ્રહ્મચારી કે હિં ચિત્ત કી સ્વસ્થતા રહતી હૈં, ક્યોં કિ વિપયોં કી ઓર
ઉસકી લાલસા નહીં જાતી હૈં, અતઃ ઉસ સબધ કો લેકર ઉસકે ચિત્ત
મેં અસમાધિરૂપ આકુલ વ્યાકુલ પરિણતિ નહીં રહતી હૈં ઇસલિયે યહ
બ્રહ્મચર્ય ચિત્ત સમાધિ કા ઇક ઘર હૈં । (નિયમનિષ્પકપ) અતિચારોં સે
વિહીન હોને કે કારણ યહ બ્રહ્મચર્ય નિયમ સે-નિશ્ચય સે નિષ્પ્રકમ્પ-
અવિચલિત હોતા હૈં । તાત્પર્ય યહ હૈં કિ ગૃહસ્થોં કે બ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં
અતિચાર લગ સકને કે કારણ ઉનકા વહ બ્રહ્મચર્ય વિચલિત નહીં
હોતા હૈં પરંતુ સગલ સયમી જનોં કા બ્રહ્મચર્ય અતિચારોં સે વિહીન
હોતા હૈં, ઇમલિયે યહ યહા અવિચલિત કહા ગયા હૈં । (તવસજમ-

હોવાથી ત'ન શુભ્ર પવિત્ર છે “ નિરાયાસ ” તેનુ પાલન કરવાથી પાલન
કર્તાને કોઈ પણ પ્રકારને આયાસ-ખેદ એટલે કે કષ્ટ ઉઠાવવો પડતુ નથી
તેથી ખેદનુ જનક ન હોવાને કારણે તે નિરાયાસરૂપ છે “ નિસ્વલેવ ” વૈપયિક
પદાર્થોની તરફ બ્રહ્મચારીના ચિત્તમા જરી પણ સ્નેહ-રાગભાવ થતો નથી,
તેથી વિષયસ્નેહ રહિત હોવાથી બ્રહ્મચર્યને નિરુપલેપ છે “ નિવ્વુઘર ”
બ્રહ્મચારીના ચિત્તની સ્વ-સ્થતા ગ્રહે છે, કારણ વિષયોની પ્રત્યે તેને લાલસા
થતી નથી તે અબધને લીધે તેના ચિત્તમા અસમાધિરૂપ આકુળ વ્યાકુળતાના
રૂપ પરિણતિ રહેતી નથી તેથી આ બ્રહ્મચર્ય ચિત્ત સમાધિનુ એક ઘર છે
“ નિયમનિષ્પકપ ” અતિચારોથી કિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવશ્ય
નિષ્પ્રકમ્પ-અવિચલિત હોય છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ગૃહસ્થોના બ્રહ્મચર્ય
વ્રતમા અતિચાર લાગી શકે છે તે કારણે તેમનુ બ્રહ્મચર્ય અવિચલિત હોતુ
નથી, પણ મકુળ મયમીજનોનુ બ્રહ્મચર્ય અતિચારોથી રહિત હોય છે, તે

વિશુદ્ધ=નિર્દોષ, એવામેવ વ્રતચર્ય તિર્દોષ મયતીતિ માત્ર, તથા—‘ મન્વ
 મન્વ=કલ્યાણરૂપ, ‘ મન્વજનાણુચરિય ’ મન્વજનાણુચરિત્તમ્=મન્વજનસમારો
 ધિતમ્, તથા—‘ નિમ્મકિય ’ નિ ગદ્ધિત, વ્રતચારી હિ વિષયમ્પદાગ્રન્યત્વાઞ્જ
 નાના મધ્યે તિઃશક્તીયો મયતીતિ વ્રતચર્યમપિ નિશ્શક્તિતમ્, તથા ‘ નિમ્મય ’
 નિર્ભય, વ્રતચારિણો હિ નિર્ભયા મયન્તિ, નિર્ભયતાકારણત્વાત્ વ્રતચર્યમપિ નિર્ભ
 યમ્ તથા—‘ નિતુમ ’ નિસ્તુપ-વિશુદ્ધમિત્યર્થ, યથા—તુપનિર્ગતં તણ્ડુલં શુભ્ર મયતિ

भी बीच में धीरे ऊँचे जाने वाले शूरों का अत्यंत साहससंपन्न व्यक्तियों
 के, धार्मिक पुरुषों के, और धैर्यशाली पुरुषों को यह सदा-कुमार आदि
 अवस्थाओं में भी सुविशुद्ध-निर्दोष रहना है । (मन्व) यह ब्रह्मचर्य
 कल्याणरूप है । (मन्वजनाणुचरिय) मन्वपुरुषों द्वारा यह आराधित
 किया हुआ है । (निस्सकिय) यह ब्रह्मचर्य निशक्ति होता है । क्यों
 कि ब्रह्मचारी विषयलालसा से रून्ध होने के कारण मनुष्यों के भीतर
 किसी भी तरह से शकास्पद नहीं होता है अतः यह प्रभाव उसके
 ब्रह्मचर्य का ही है इसीलिये यहाँ पर सूत्रकार ने निशक्ति वृत्ति का
 कारण होने से ब्रह्मचर्य को भी निशक्ति कहा है । इसी तरह यह
 ब्रह्मचर्य (निम्वय) निर्भय होता है । क्यों कि ब्रह्मचर्य को पालन
 करने वाले पुरुष रत्न सर्वत्र निर्भय रहा करते हैं, अतः निर्भयता का
 कारण होने से ब्रह्मचर्य को निर्भय विशेषण से सूत्रकार ने विशिष्ट
 किया है । तथा यह ब्रह्मचर्य (नितुम) निस्तुप है—तुपविहीन तण्डुल
 जिस प्रकार शुभ्र होता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी विषय लालसा

તરીકે ઓળખાતા શૂરો, અત્યંત સાહસયુક્ત વ્યક્તિઓ, ધાર્મિક પુરુષો, અને
 ધૈર્યશાળી પુરુષોને તે સદા કુમાર આદિ અવસ્થાઓમાં પણ સુવિશુદ્ધ નિર્દોષ
 રહે છે “ મન્વ ” આ બ્રહ્મચર્ય ઉત્પાણરૂપ છે “ મન્વજનાણુચરિય ” લબ્ધ
 પુરુષો દ્વારા તેનું અરાધન થાય છે “ નિસ્સકિય ” આ બ્રહ્મચર્ય નિશક્તિ
 હોય છે, કારણ કે બ્રહ્મચારી વિષય લાલસા રહિત હોવાથી મનુષ્યોમાં કોઈ
 પણ પ્રકારે શકાને પાત્ર થતો નથી આ તેના બ્રહ્મચર્યનો જ પ્રભાવ હોવાથી
 અહીં સૂત્રકારે નિશક્તિ વૃત્તિનું કારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને પણ નિશક્તિ
 કહ્યું છે એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય “ નિમ્મય ” નિર્ભય હોય છે કારણ કે
 બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર પુરુષો સર્વત્ર નિર્ભય રહી શકે છે તેથી નિર્ભ-
 યતાનું કારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને સૂત્રકારે નિર્ભય વિશેષણ લગાડ્યું છે તથા
 આ બ્રહ્મચર્ય “ નિતુમ ” નિસ્તુપ-તુપ વિહીન (ક્ષેતરા વિનાના) ઓળખા
 જેમ શુભ્ર હોય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય પણ વિષય લાલસા રૂપી તુપ વિહીન

હદેસગ ચ ' સુગતિપથદેશક ચ=સુગતે =સ્વર્ગાપવર્ગમ્ પન્થા-સુગતિપથસ્તસ્ય
દેશક=દર્શક યત્તત્ તથા-લોગુત્તમ ચ ' લોકોત્તમ ચ=લોકત્રયશ્રેષ્ઠથ 'વયમિણ'
ત્રતમિદમ્-ઇદં વ્રત્તચર્યરૂપ ત્રત 'પદમસરતલાગપાલિભૂય' પદ્મસરસ્વત્તાગપાલિભૂતમ્
-પદ્મપ્રધાનઃ સરસ્વતઃ-પદ્મસરસ્વતઃ, પદ્મસરસ્વતઃગત્ત્વેન પ્રમોદકત્ત્વેન
હરત્ત્વેન ચ સમુપાદેયત્વાદ યર્મોડપિ પદ્મસરસ્વતઃ, તસ્ય પાલિભૂત=રક્ષકત્ત્વેન
પાલિકલ્પ યત્તત્, તથા ' મહાસગડઅગર તુમ્બૂય' મહાશકટારકુતુમ્બૂતમ્-મહા-
શકટસ્ય=અરકા ડમ્=અરાડા અરકા. ક્ષાન્તાદયોગુણાસ્તેપાતુમ્બૂતમ્, આવાર ભૂતમ્
તથા 'મહાવિલિમરુવસ્થાભૂય' મહાવિલિપદ્મસ્થાભૂતમ્-મહાન્તો વિલિપાઃ શાખા

પદેસગ ચ) ઓર ઉસે સ્વર્ગ ઓર અપવર્ગરૂપ સુગતિ કે માર્ગ કો દિશ્વ-
લાતા રહતા હૈ । ઠસીલિયે (વયમિણ) યદ ત્રત (લોગુત્તમ ચ) લોક-
ત્રય મેં શ્રેષ્ઠ હૈ । તથા તદ વ્રત (પદમસરતલાગ પાલિભૂય) પદ્મપ્રધાન
સરોવર ઓર તઢાગ કી પાલિ જૈસા હૈ, અર્થાત્ સુખદ હોને કે કારણ,
પ્રમોદ કારક હોને કે કારણ, ઓર મન કો હરણ કરને ચાલા હોને કે
કારણ જૈસે પદ્મપ્રધાન સરોવર ઓર તઢાગ સમુપાદય હોતે હૈં ઉસી
પ્રકાર સુખદાતા પ્રમોદક ઓર મનોહર હોને કે નાતે ધર્મ કી સમુપાદેય
હોતા હૈ-અતઃ ધર્મ કી પદ્મપ્રધાન સરોવર ઓર તઢાગ જૈસા હૈ । ઉસ
ધર્મ રૂપ સરોવર ઓર તઢાગ કા યદ રક્ષક હોને કે કારણ પાલિ-પાલ
જૈસા હૈ । તથા (મહાસગડઅગરતુમ્બૂય) મહાશકટ કે આરોં કે
સમાન ક્ષાન્ત્યાદિક ગુણો કા યદ તુમ્બૂત-આધારભૂત હૈ । તથા (મ-
હાવિલિમરુવસ્થાભૂય) મહાશાખા શાલી વૃક્ષ કે સમાન આશ્રિતોં

સદ તર રોડી દે છે "સુગતિપથદેશક" અને તેને સ્વર્ગ અને અપવર્ગો રૂપ સુગતિનો
માર્ગ દર્શાવતું રહે છે તેથી "વયમિણ" આ ત્રત "લોગુત્તમચ" ત્રણે લોકમાં
શ્રેષ્ઠ છે તથા આ ત્રત "પદમસરતલાગપાલિભૂય" કમળોથી યુક્ત સરોવર
અને તળાવની પાળ જેવું છે એટલે કે સુખદ હોવાને કારણે, પ્રમોદકારક
હોવાને કારણે, અને મનોહર હોવાને કારણે જેમ પદ્મપ્રધાન સરોવર અને
તળાવ સમુપાદેય હોય તે જ પ્રકાર સુખદાતા, પ્રમોદક અને મનોહર
હોવાને કારણે ધર્મ પણ સમુપાદેય હોય છે તેથી ધર્મ પદ્મયુક્ત સરોવર
અને તળાવ જેવો છે તે ધર્મરૂપ સરોવર અને તળાવનું તે (પદ્મચર્ય રક્ષક
હોવાથી પાળ જેવું છે તથા "મહાસગડઅગરતુમ્બૂય" મહા શકટ-ગાડા-ની
ધરીના સમાન ક્ષાન્ત્યાદિ ગુણોનું તે તુમ્બૂત છે તથા "મહાવિલિમરુવસ્થા-
ભૂય" મહા શાખાવાળા વૃક્ષની જેમ આશ્રિતોનું પરમ સુખકારી હોવાથી

મજમમૂલદલિયણિમ ' તપ:-સયમમૂલદલિકનિમમ=તપ: સયમયો મૂલદલિક=મૂલદ્રવ્યમ્=મૂલધનમિત્યર્થ:, તસ્ય નિમ=પટ્ટણ ચત્તતથા, તથા-‘ પચમહવ્યયસુર-કિલ્લય ’ પચમહાવ્રતસુરક્ષિત=પચમહાવ્રતાનાં મધ્યસ્થિતત્વેન સુપ્રતુરક્ષિતમિવ ચત્ત સયોક્તમ્, તથા ‘ સમિદ્ગુત્તિગુત્ત ’ સમિતિગુત્તિગુપ્તમ્-મમિતિમિ:==ઈર્યાસમિત્યાદિમિ:, ગુપ્તિમિ:==મનોગુપ્ત્યાદિમિથ ગુપ્તમ્=રક્ષિતમ્, તથા-‘ જ્ઞાણવરકવાડસુકય-રક્ષણ ’ જ્ઞાણવરમેવ=ધર્મ યાનમેવ રૂપાટમ્-તેન સુપ્રતુ=શોભનતયા કૃત રક્ષણ યસ્ય તત્, તથા-‘ અઙ્ગપ્પદિણ્ણફલિહ ’ અ યાત્મદત્તપરિવમ્=અધ્યાત્મમેવ=સદ્ગાવેવ રૂપાટદહીકરણાર્થ દત્ત: પરિવ-અર્ગલા રક્ષાર્થે યસ્ય તત્, તથા-‘ સન્નદ્વદ્દોચ્છદ્દયદુગ્ગહપહ ’ સન્નદ્વદ્વાવચ્છાદિતદર્ગતિપથમ્—સન્નદ્વોચ્છદ્દાચ્છાદિતમ્ અર્થાત્ સર્વતો નિરુદ્ધો દુર્ગતિપથો=દુર્ગતિમાર્ગો યેન તત્ત ચોક્તમ્, તથા-‘ સુગહ-

મૂલદલિયણિમ) તપ ઓર સયમ કા યહ વ્રતચર્ય મૂલ ધન જૈસા હૈ । (પચમહવ્યયસુરકિલ્લય) જિસ પ્રકાર પાન પુરુષો કે ધીચ મેં રહા હુઆ પુરુષ સુરક્ષિત રહતા હૈ ડસી પ્રકાર યહ બ્રહ્મચર્ય મી પાચ મહાવ્રતોં કે યાચ મેં સ્થિત હોને કે કારણ સુરક્ષિત કે જૈસા હૈ । (સમિદ્ગુત્તિગુત્ત) ઈર્યાસમિતિ આદિ પાંચ સમિતિયોં સે એવ મનોગુપ્તિ આદિત્રીન ગુપ્તિયોં સે મી ડસકી મદા રક્ષા હોતી રહતી હૈ ડસલિયે યહ સમિતિ ઓર ગુપ્તિયોં સે મી ગુપ્ત-સુરક્ષિત કહા ગયા હૈ । તથા (જ્ઞાણવરકવાડ સુકયરક્ષણ) ડસકી રક્ષા સદા ધર્મ યાન રૂપ મજબૂત કિવાડોં સે મી બહુત અચ્છી તરહ હોતી રહતી હૈ (અઙ્ગપ્પદિણ્ણફલિહ ડસકી રક્ષા કે નિમિત્ત ડન કિવાડોં મેં મજબૂતી લાને ચાલા અર્ગલા જૈસા અધ્યાત્મ-સદ્ગાવેવ હા કામ કરતા હૈ । (સન્નદ્વદ્દોચ્છદ્દયદુગ્ગહપહ) યહ બ્રહ્મચર્ય અપને પાલક કે દુર્ગતિમાર્ગ કો સર્વથા રોક દેતા હૈ, (સુગહ-

કારણુ તેને અહી અવિચલિત દર્શાવ્યુ છે ‘ તપસજમમૂલદલિયણિમ ’ તપ અને સયમનુ આ બ્રહ્મચર્ય મૂળધન સમાન છે “ પચમહવ્યયસુરકિલ્લય ” ને રીતે પાચ પુરુષોની વચ્ચે રહેતો પુરુષ સુરક્ષિત રહે છે, તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય પણ પાચ મહાવ્રતોની વચ્ચે રહેલ હોવાથી સુરક્ષિત છે “ સમિદ્ગુત્તિગુત્ત ” જ્ઞા ઈર્યા સમિતિ આદિ પાચ સમિતિઓથી અને મનોગુપ્તિ આદિ-ત્રણ ગુપ્તિથી પણ તેનુ સદા રક્ષણ થતુ રહે છે, તે કારણે તે સમિતિ અને ગુપ્તિયોથી પણ ગુપ્ત-સુરક્ષિત કહેવાયુ છે તથા “ જ્ઞાણવરકવાડસુકય રક્ષણ ” તેનુ રક્ષણ હુશા ધર્મ ધ્યાનરૂપે મજબૂત કમાડોથી પણ ઘણુ સારી રીતે રીતે થયા કરે છે “ અઙ્ગપ્પદિણ્ણફલિહ ” તેની રક્ષાને નિમિત્તે ત કમાડોમા મજબૂતી લાવનાર આગળીયા જેવુ અધ્યાત્મ-સદ્ગાવેવ ત્યા કામ આપે છે “ સન્નદ્વદ્દોચ્છદ્દયદુગ્ગહપહ ” આ બ્રહ્મચર્ય તેનુ એવન ડરનારના દુર્ગતિમાર્ગને

पुनरपि ब्रह्मचर्यमाहात्म्यमाह—‘ जम्मिय भग्गे ’ इत्यादि ।

मूलम्—जम्मि य भग्गे होइ सहसा सठव सेभग्गमहियचु-
 णियकुसल्लियपल्लट्टपडिय-खडियपरिसडियविणासिय विणयसील-
 तवनियमगुणसमूहं त वंभ भगवत गहगणणक्खत्ततारगाणं
 च जहा उडुवई मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागरणं च जहा
 समुद्धो, वेरुलिओ चेव जहा मणीणं, जह मउडो चेव भूसणाणं
 वत्थाणं चेव क्खोमजुयल अरविद चेव पुप्फजेट्ट गोसीस चेव
 चदणाणं हिमवतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं
 उदहीसु जहा सयभूरमणोरुयगवरो चेव मडलिंगपठवयाणपवरे

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार चतुर्थ सवरद्वार का विवेचन कर रहे हैं । इसमें नौ कोटि से अब्रह्म का पूर्ण त्याग हो जाता है, इस-
 लिये यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है । व्रत का तात्पर्य यही है कि
 दोषों को समझ कर उनके त्याग का नियम करने के बाद फिर से
 उनका सेवन नहीं करना । ब्रह्मचर्य व्रत को परिपालन करने के लिये
 अतिशय उपकारक कितने ही गुण हैं, जैसे आकर्षक स्पर्श, रस, गंध,
 रूप, शब्द और शरीरसंस्कार आदि में न फँसना, भुक्तियों को हटाने
 के लिये ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करना, एव गुरुकी आधीनता के
 लिये गुरुकुल में वास करना । इस सूत्र में इसी ब्रह्मचर्य महाव्रत के
 गुण गौरव का व्याख्यान सूत्रकार ने किया है ॥ सू० १ ॥

भावार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकार योथा सवरद्वारनु विवेचन करेछे
 तेभा नव प्रकारे अब्रह्मने। स पूरुं त्याग थछ ज्ञाय छे तेथी ते अब्रह्मचर्य भडा
 नत उडेवाय छे नतनु तात्पर्य ओ छे के दोषोने समझने तेमना त्यागने। नियम
 कर्था पछी इरीथी तेनु सेवन न करवु अब्रह्मचर्य व्रतनु परिपालन करवाने भाटे
 अतिशय उपकारक केटलाक गुणो छे, जेभा के आकर्षक स्पर्श, रस, गंध, रूप
 शब्द अने शरीर संस्कार आदिमा इसावु नही, भुक्तियोने हट करवा भाटे
 ज्ञानादि सद्गुणोने। अभ्यास करवो, अने गुरुनी आधीनताना सेवनने भाटे
 गुरुकुलमा वास करवो। आ सूत्रमा ओ न अब्रह्मचर्य भडाव्रतना गुण गौरवनु
 पणुन सूत्रकारे कथुं छे ॥ १ ॥

યસ્ય સ મહાવિટપઃ, સ ચાસૌ વૃક્ષશ્ચ આશ્રિતાના પરમોપકારસ્ત્યસા યમ્યાદૂ ધર્મસ્તસ્ય
સ્કન્ધભૂત યત્તત્તથોક્તમ્, અય મારઃ-યથા સ્કન્ધોટ્તગાઘાઽધારભૂતસ્તથૈવબ્રહ્મ
ચર્ય ધર્મશાખાઽધારભૂતમ્ । તથા-‘ મહાનગરપાગારકવાડફલિહ્મૂય ’ મહાનગર-
પ્રાકારરૂપાટપરિઘભૂતમ્-મહાનગરમિત્ર મહાનગર વિવિધસુખહેતુ સાધમ્યાદૂ ધર્મઃ,
તસ્ય રક્ષકત્વાત્ પ્રાકારરૂપ, કપાટરૂપ પર્ણિભૂતમ્ = અર્ગળરૂપમ્, યત્તત્તથો
ક્તમ્ તથા-‘ રજ્જુપિણદ્વોવ્વહ્લકેઝ ’ રજ્જુપિણદ્વઙ્ગ ઇન્દ્રકેતુઃ-યથા-રજ્જુવદ્ધ
ન્દ્રધ્વજો મહોત્સવે સર્વોપરિ વર્તમાનઃ પરમશોભા જનયતિ, તથૈવેદં સર્વવ્રતશ્રેષ્ઠ
બ્રહ્મચર્યમ્ । તથા-‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ = વિશુદ્ધાનેકગુણસપિણદ્ધ વિશુદ્ધા
યેઽ નેકગુણાસ્તૈઃ સપિણદ્ધ સગ્રથિતમિદં બ્રહ્મચર્યમસ્તિ ॥ સૂ૦૧ ॥

કા પરમ ઉપકારી હોને સે ધર્મ કા યહ સ્કન્ધ જૈસા હૈ । અર્થાત્ જિસ
પ્રકાર સ્કન્ધ વૃક્ષ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હોતા હૈ ડસી પ્રકાર
યહ બ્રહ્મચર્ય મી ધર્મ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હૈ । તથા (મહા-
નગરપાગારકવાડફલિહ્મૂય) મહાનગર કે સમાન વિવિધ સુખો કા
હેતુભૂત હોને કે કારણ ધર્મરૂપ નગર કા યહ રક્ષક હોને સે પ્રાકાર
જૈસા, કપાટ જૈસા ઓર અર્ગળા જૈસા હૈ । તથા (રજ્જુપિણદ્વોવ્વહ્લકેઝ)
જિસ પ્રકાર રજ્જુ વદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવ મેં સર્વોપરિ વર્તમાન
હોતા હુઆ પરમ શોભા કો વિસ્તારતા હૈ ડસી તરહ યહ બ્રહ્મચર્યવ્રત
મી સર્વવ્રતોં મેં શ્રેષ્ઠ હૈ ઓર પરમ શોભા કા જનક હોતા હૈ । તથા
(વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ) વિશુદ્ધ અનેક ગુણોં સે યહ બ્રહ્મચર્ય અઙ્ગી
રીતિ સે (સપિણદ્ધ) ગ્રથિત-યુક્ત હૈ ।

તે ધર્મના સ્કન્ધ જેવું છે એટલે કે જેમ થડ વૃક્ષની શાખાઓને માટે
આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર
રૂપ છે તથા “ મહાનગર પાગાર કવાડ ફલિહ્મૂય ” મહાનગરના સમાન વિવિધ
સુખોનું હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનું તે રક્ષક હોવાના પ્રાકાર જેવું,
કપાટ જેવું અને અર્ગળા જેવું છે તથા “ રજ્જુપિણદ્વોવ્વહ્લકેઝ ” જેમ રજ્જુ
(દોરડું) બદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવમાં સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે
છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ
શોભાનું જનક હોય છે તથા ‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ ’ વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી
આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે “ સપિણદ્ધ ” ગ્રથિત-યુક્ત છે

पुनरपि ब्रह्मचर्यमाहात्म्यमाह—‘जम्मिय भग्गे’ इत्यादि ।

मूलम्—जम्मि य भग्गे होइ सहसा सठ्व सेभग्गमहियचु-
 णियकुसल्लियपल्लट्टपडिय-खडियपरिसडियविणासिय विणयसील-
 तवनियमगुणसमूहं तं वंभ भगवंत गहगणणक्खत्ततारगाणं
 च जहा उडुवई मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागरण च जहा
 समुद्धो, वेरुलिओ चेव जहा मणीण, जह मउडो चेव भूसणाणं
 वत्थाणं चेव कखोमजुयल अरविद चेव पुप्फजेट्ट गोसीसं चेव
 चंदणाण हिमवतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं
 उदहीसु जहा सयभूरमणोरुयगवरो चेव मडलिंगपठवयाणपवरे

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार चतुर्थ सवरद्वार का विवेचन कर रहे हैं । इसमें नौ कोटि से अब्रह्म का पूर्ण त्याग हो जाता है, इस-
 लिये यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है । व्रत का तात्पर्य यही है कि
 दोषों को समझ कर उनके त्याग का नियम करने के बाद फिर से
 उनका सेवन नहीं करना । ब्रह्मचर्य व्रत को परिपालन करने के लिये
 अतिशय उपकारक कितने ही गुण हैं, जैसे आकर्षक स्पर्श, रस, गंध,
 रूप, शब्द और शरीरसंस्कार आदि में न फँसना, वृद्धियों को हटाने
 के लिये ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करना, एव गुरुकी आधीनता के
 लिये गुरुकुल में वास करना । इस सूत्र में इसी ब्रह्मचर्य महाव्रत के
 गुण गौरव का व्याख्यान सूत्रकार ने किया है ॥ सू० १ ॥

भावार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकार बोधा मवरद्वारनु विवेचन करेछे
 तेभा नव प्रदारे अब्रह्मने सपूर्ण त्याग थछ जय छे तेथी ते अब्रह्मचर्य भडा
 व्रत उडेवाय छे व्रतनु तात्पर्य ओ छे डे दोषोने समझने तेभना त्यागने नियम
 ज्या पछी करीथी तेनु सेवन न करवु अब्रह्मचर्य व्रतनु परिपालन करवाने भाटे
 अतिशय उपकारक डेटलाक गुणो छे, जेभा डे आकर्षक स्पर्श, रस, गंध, रूप
 शब्द अने शरीर संस्कार आदिमा इभावु नछी, वृद्धियोने दूर करवा भाटे
 ज्ञानादि सद्गुणोने अभ्यास करवो, अने गुरुनी आधीनताना सेवनने भाटे
 गुरुकुलमा वास करवो आ सूत्रमा ओ न अब्रह्मचर्य भडाव्रतना गुण गौरवनु
 पणुन सूत्रकारे कर्यु छे ॥ १ ॥

સ્ય સમહાવિટપઃ, સચાસૌ વૃક્ષશ્ચ આશ્રિતાના પરમોપકારકત્વાસાચ્ચમ્યાદ્ ધર્મસ્તસ્ય
સ્કન્ધભૂત યત્તત્તથોક્તમ્, અય માયઃ-યથા સ્કન્ધોવૃક્ષગાસ્ત્વાઽધારભૂતસ્તથૈવબ્રહ્મ
ચર્ય ધર્મશાસ્ત્રાઽધારભૂતમ્ । તથા-‘ મહાનગરપાગારકવાડફલિદ્ભૂય ’ મહાનગર-
પાકારરૂપાટપરિઘભૂતમ્-મહાનગરમિય મહાનગર વિવિધસુખહેતુ સાધમ્યાદ્ ધર્મઃ,
તસ્ય રક્ષકત્વાત્ પ્રાકારરૂપ, કપાટરૂપ પરિઘભૂતમ્ = અર્ગશરૂપમ્, યત્તત્તથો
ક્તમ્ તથા-‘ રજ્જુપિણદ્વોઽવ્વદ્ધકેઙ્ક ’ રજ્જુપિણદ્વઙ્કવ ઇન્દ્રકેતુઃ=યથા-રજ્જુવદ્ધઃ
ન્દ્રધ્વજો મહોત્સવે સર્વોપરિ વર્તમાનઃ પરમશોભા જનયતિ, તથૈવેદ સર્વવ્રતશ્રેષ્ઠ
બ્રહ્મચર્યમ્ । તથા-‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ = વિશુદ્ધાનેકગુણસપિણદ્ધ વિશુદ્ધા
યેઽ નેકગુણાસ્તૈઃ સપિણદ્ધ સગ્રથિતમિદં બ્રહ્મચર્યમસ્તિ ॥ મૂ૦૧ ॥

કા પરમ ઉપકારી હોને સે ધર્મ કા યહ સ્કન્ધ જૈસા હૈ । અર્થાત્ જિસ
પ્રકાર સ્કન્ધ વૃક્ષ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હોતા હૈ उसी प्रकार
यह ब्रह्मचर्य भी धर्म की शाखाओं का आधारभूत है । तथा (महा-
नगरपागारकवाडफलिदभूय) महानगर के समान विविध सुखों का
हेतुभूत होने के कारण धर्मरूप नगर का यह रक्षक होने से प्राकार
जैसा, कपाट जैसा और अर्गला जैसा है । तथा (रज्जुपिणद्वोव्वद-
केङ्क) जिस प्रकार रज्जु वद्ध इन्द्रध्वज महोत्सव में सर्वोपरि वर्तमान
होता हुआ परम शोभा को विस्तारता है उसी तरह यह ब्रह्मचर्यव्रत
भी सर्वव्रतों में श्रेष्ठ है और परम शोभा का जनक होता है । तथा
(विसुद्धणैगगुणसपिणद्व) विशुद्ध अनेक गुणों से यह ब्रह्मचर्य अच्छी
रीति से (सपिणद्व) ग्रथित-युक्त है ।

તે ધર્મના સ્કન્ધ જેવું છે એટલે કે જેમ થડ વૃક્ષની શાખાઓને માટે
આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર
રૂપ છે તથા “ મહાનગર પાગાર કવાડ ફલિદ્ભૂય ” મહાનગરના સમાન વિવિધ
સુખોનું હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનું તે રક્ષક હોવાના પ્રાકાર જેવું,
કપાટ જેવું અને અર્ગલા જેવું છે તથા “ રજ્જુપિણદ્વોવ્વદ્ધકેઙ્ક ” જેમ રજ્જુ
(દોરડું) બદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવમાં સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે
છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ
શોભાનું જનક હોય છે તથા ‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ ’ વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી
આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે “ સપિણદ્ધ ” ગ્રથિત-યુક્ત છે

ગ્નમથિતચૂર્ણિતકુશલિયતપર્યસ્તપતિતઘ્વણ્ડિત-પરિશટિતવિનાશિતમ્=તન્ન 'સમગ્ન' સમગ્ન=પટ ડગ, 'મઢિય' મથિત=દગીવ વિલોડિત 'ચુણિય' ચૂર્ણિત=ચળક-વત્ પિપ્પ્તમ્ 'કુસલિય' કુશલિયતમ્=કુ=કુતિસતમ્-અન્તઃ પ્રવિષ્ટતોમરાદિ શલ્ય-મિવ શલ્ય, યત્ પ્રવિષ્ટ સત્, કેનાપ્યુપાયેન ન નિઃસરતિ તત્કુશલ્યં, તત્સજાત યસ્યેતિ કુશલિયત દુષ્ટગલ્ગયુક્ત, યથા વક્તૃતયા પ્રવિષ્ટેન શલ્યેન શરીર વિદારિત ભવતિ, તથૈવ પ્રિનયાદિક પ્રિદારિત ભવતિ, 'પહ્લટ્ટ' પર્યસ્ત=પર્વતશિખરાદ્ સ્થૂલપાપાણઘ્વણ્ડ ઇવ સ્વસ્થાનાચ્ચલિતમ્, 'પહિય' પતિતમ્=પ્રામાદગિશ્વરાત્કલશ ઇપ્રાધોનિપતિતમ્ 'સહિય' ઘ્વણ્ડિતમ્=દણ્ડ ઇવ પ્રિમાગેન ન્ચિન્નમ્, 'પરિસહિય' પરિશટિત = કુપ્પ્તાનુપહતાન્નમિરપિગલિતમ્, 'વિનાસિય' વિનાશિત=વિનષ્ટમ્, 'હોડ' ભવતિ । અયોપગયા બ્રહ્મચર્યસ્ય માહાત્મ્ય ધર્ણયે- 'ત વમ ભગવત' ઇત્યાદિ । 'ત' =તત્-પ્રસિદ્ધ 'ભગવત' ભગવદ્=સર્વોત્કૃષ્ટૈશ્વર્યશાલિ 'વમ' બ્રહ્મ=બ્રહ્મચર્ય 'ગહગણનસ્વત્તતારગાણ ચ' ગ્રહગણનક્ષત્રતારકાણા ચ, ગ્રહગણઃ =મંદ્રલાદિ, નક્ષત્રાણિ=અશ્વિન્યાદયઃ, તારકા =પ્રસિદ્ધાઃ, આમા મધ્યે 'જહા'

હિય વિનાસિય હોડ) ઘટકી તરફ સમગ્ન ટુકડે ૨ હો જાતે હૈં- નષ્ટ હો જાતે હૈં, દધિ કી તરફ વિલોડિત-અસ્તવ્યસ્ત હો જાતે હૈં, ચના આદિ કી તરફ-ચૂર્ણિત-પિસે જાતે હૈં, કુશલ્ય-ટેઢે-વક્ક બાળ સે વિદારિત હુણ શરીર કી તરફ વિદારિત હો જાતે હૈં, 'પર્વત કી ચોટી સે પતિત પાપાણઘ્વણ્ડ કી તરફ અપને સ્થાન સે ચ્યુત હો જાતે હૈં, પતિત પ્રાસાદ કી છત સે ગિરે હુણ કલશ કી તરફ અધોનિપતિત હો જાતે હૈં, ફાઢે ગયે દડ કી તરફ ઘ્વણ્ડિત હોતે જાતે હૈં, પરિશટિત-કુપ્પાદિ સે ઉપહત અગ કી તરફ ગલિત હો જાતે હૈં, ઓર વિનાશિત-વિનષ્ટ-હો જાતે હૈં । (ત વમ ભગવત) સર્વોત્કૃષ્ટ ઐશ્વર્યશાલી પ્રસિદ્ધ યહ બ્રહ્મચર્ય (ગહગણનસ્વત્તતારગાણ ચ જહા ઉડુવર્દ) મગલ આદિ

જેમ ટુકડે ટુકડા થઈ જાય છે, -નષ્ટ થઈ જાય છે, દહીની જેમ વિલોડિત-અસ્તવ્યસ્ત થઈ જાય છે, ચણા આદિની જેમ ચૂરે ચૂરા થઈ જાય છે, કુશલ્ય-વક્કબાણથી વીધાયેલ શરીરની જેમ વિદારિત થઈ જાય છે પર્વતના શિખર પરથી પાપાણખંડની જેમ પોતાને સ્થાનેથી બ્રષ્ટ થઈ જાય છે, પતિત-મહેલની છત ઉપરથી પડેલા ડલશની જેમ અધોનિપતિત થઈ જાય છે ચીરાયેલ લાકડીની જેમ ળડિત થઈ જાય છે, પરિશટિત-કોઠ આદિથી ઉપહત અગની જેમ ગલિત થઈ જાય છે અને વિનષ્ટ થઈ જાય છે " ત વમ ભગવત " સર્વોત્કૃષ્ટ ઐશ્વર્યશાળી પ્રસિદ્ધ છે બ્રહ્મચર્ય " ગહગણનસ્વત્તતારગાણ ચ જહા ઉડુવર્દ "

પરાવણાં ઇવકુજરાણાં સીહો જહા મિગાણ પવરો સુપન્નગાણાં ચ
 વેણુદેવ ધરેણ જહા પપ્પગાં ઇદરાયા કપ્પાણ ચેવ વંભલોષ,
 સમાસુ ચ જહા ભવે સુહમ્મા ઠિર્ઠિસુ લવસત્તમઽપવરા દાણાણાં
 ચેવ અમઓ દાણાં કિમિરાઓ ચેવ કંવલાણ સઘયણે ચેવ
 વજ્જરિસમે સઠાણે ચેવ સમચત્તરસે જ્ઞાણેસુ ચ પર સુક્કજ્ઞાણ
 નાણેસુ ચ પરમકેવલ તુ સિદ્ધ લેસાસુ ચ પરમસુક્કલેસા તિત્થ-
 કરો ચેવ જહા મુણીણ વાસેસુ જહા વિદેહે ગિરિરાયા ચેવ
 મદરવરે વણેસુ જહા પાંદણવણ પવરંદુમેસુ જહા જવૂ સુદસણા
 વીસુચયજસા જીયાનામેણ અય દીવો, તુરગવર્ઘ ગયવર્ઘ રહ-
 વર્ઘ નરવર્ઘ જહ વીસુણ ચેવ રાયા રહિણ ચેવ જહા મહારહગણ
 એવમણેગગુણા અહીણા ભવતિ એગમ્મિ વમચેરે ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘જમ્મિય’ ઇત્યાદિ । ‘જમ્મિય’ યમ્મિથ બ્રહ્મચર્યે ‘મગ્ગે’
 મગ્ગે=વિરાધિતે સતિ ‘સવ્વ’ સર્વ ‘વિનયસીલતવનિયમગુણસમૂહ’ વિનયશીલ-
 તપોનિયમગુણસમૂહ:-વિનયો=ગુરુપ્રતિપત્તિલક્ષણ, શીલ=સદાચાર, તપઃ=અન-
 શનાદિક દ્વાદશવિધ, નિયમઃ=અભિગ્રહ, ગુણસમૂહઃ=ત્રાણાદિગુણસમુદાય, એવા
 સમાહારે વિનયશીલતપોનિયમગુણસમૂહ ક્રિયાજ્ઞાન ચેતિદ્વયમપીત્યર્થઃ, સહસા=
 શ્રુતિતિ ‘સમગ્ગમહિયચુણિયકુસલ્લિયપલ્લટ્ટપડિય સ્વડિયપરિસડિયવિનાસિય’સંમ-

ફિર બ્રહ્મચર્ય કા માહત્મ્ય કહતે હૈ—‘જમ્મિય મગ્ગે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જમ્મિય મગ્ગે) જિસ બ્રહ્મચર્ય કે વિરાધિત હોને પર-
 (સવ્વ વિનયસીલતવનિયમગુણસમૂહ) સમસ્ત વિનય, શીલ, તપ,
 નિયમ-ઔર ગુણ સમૂહ-અર્થાત્-ક્રિયા ઔર જ્ઞાન એ દોનો હી (સહસા)
 હકદમ (સમગ્ગમહિય-ચુણિય-કુસલ્લિય-પલ્લટ્ટ-પડિય-સ્વડિય-પરિસ

હવે સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્યનું મહાત્મ્ય કહે છે— “ જમ્મિય મગ્ગે ” ઇતિ ।

ટીકાર્થ—“જમ્મિય મગ્ગે” એ બ્રહ્મચર્ય વિરાધના થતા “સવ્વ વિનય
 સીલતવનિયમગુણસમૂહ” સમસ્ત વિનય, શીલ, તપ, નિયમ અને ગુણસમૂહ
 એટલે કે ક્રિયા અને જ્ઞાન એ બંને “સહસા” અર્થાત્ “સમગ્ગમહિયચુ
 ણિયકુસલિય-પલ્લટ્ટ-પડિય સ્વડિય-પરિસડિય-વિનાસિય હોઈ” કહેલા ધડાની

હિણ ' ઓપધીનામ્=ઓપ યુત્પત્તિસ્થાનાના મ યે હિમવાન પર્વત इव । ' સીતોદા
 ચેવ ' સીતોદેવ=ગરનામરયાતા મદાનદીવ ' નિન્નગાના ' નિમ્નગાનામ્=નદીના
 મધ્યે । ' ઉદહીસુ ' ઉદધિપુ=સમુદ્રેષુ ' સયભૂરમણો ' સ્વયભૂરમણ સમુદ્રઃ ' રુચ
 ગવરો ચેવ ' રુચકવર इव-यथा रुचकवरः=રુચકાભિધાનસ્વયોદશઘ્નોપવર્તીપર્વત-
 વિશેષઃ, ' મહલિકપન્વયાણ ' માહલિકપર્વતાના માનુષોત્તરકુણ્ડલચરચક્રવરા
 મિયાના મ યે ' પવરે ' પ્રવર શ્રેષ્ઠ । ' ઇરાવણ इव ' ઇરાવણ इव ' કુજરાણ '
 કુજરાણા મ ય, યથા હસ્તિના મધ્ય ઇરાવત પ્રવર इत्यर्थः । ' જહા ' વથા
 ' સીહો ' સિંહ ' મિગાણ ' મૃગાણામ્=અરણ્યપરુના મધ્યે ' પવરો ' પ્રવરઃ યથા-
 ' સુપન્નગાણ ચ ' સુપર્ણકાના=સુપર્ણકુમારાણા મધ્યે ' વેણુદેવે ' વેણુદેવઃ પ્રવરઃ
 યથા ચ ' પન્નગ इदराया ' પન્નગેન્દ્રરાજ, ' ધરણે ' ધરણો=ધરણેન્દ્રો નાગકુમા-
 રાણા મધ્યે પ્રવરઃ, તથૈવેદ બ્રહ્મચર્ય વ્રતાના મધ્યે પ્રવરમ્ । તથા- ' કૃપ્પાણ '
 વલ્પાના=ઢેરલોકાના મધ્યે ' વમલોએ ચેવ ' વ્રહ્મલોક इव=પશ્ચમો દેવલોકઃ
 પર્વત, (નિન્નગાણ સીતોદા ચેવ) નદિયોં મેં જૈસે સીતોદા નદી, (ઉદ-
 હીસુ જહા સ્વયભૂરમણો) સમુદ્રોં મેં જૈસે સ્વયભૂરમણમસુદ્ર, (મહલિક-
 પન્વયાણ રુચગવરો ચેવ) માહલિક પર્વતોં મેં જૈસે રુચક વરપર્વત,
 (પવરે) શ્રેષ્ઠ માના જાતોં હૈ, ઉસી પ્રકાર સમસ્તવતોં મેં યહ વત શ્રેષ્ઠ
 માના ગયા હૈ । તથા (કુજરાણ ઇરાવણ इव) હાથીઓ મેં જૈસે ઇરાવત
 હાથી શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ (મિગાણ જહા સીહો પવરો) ટગોં કે વીચ મેં-
 જગલી જાનવરોં મેં-જૈસે સિંહ શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ (સુપન્નગાણ ચ વેણુદેવે
 સુપર્ણકુમારોં મેં જૈસે વેણુદેવ શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ, (જહા પન્નગ इदराया-
 ધરણે) પન્નગોં કા હન્દ્રરાજ ધરણેન્દ્ર જૈસે નાગકુમારોં મેં શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ,
 (કૃપ્પાણ ચેવ વમલોએ) કટપોં મેં જૈસે પાંચવા બ્રહ્મલોક પ્રવર હોતા હૈ,

“ ઓસહીણ હિમવ તો ચેવ ” ઓપધિઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનોમા જેમ હિમાલય
 પર્વત, “ નિન્નગાણ સીતોદા ચેવ ” નદીઓમા જેમ સીતોદા નદી “ ઉદહી સુજહા
 સયભૂરમણો ” સમુદ્રોમા જેમ સ્વયભૂરમણ સમુદ્ર “ મહલિકપન્વયાણરુચગવરો
 ચેવ ” માહલિક પર્વતોમા જેમ રુચકવર પર્વત, “ પવરે ” શ્રેષ્ઠ મનાય છે,
 તે જ પ્રકારે સધળા વ્રતોમા આ બ્રહ્મચર્યવ્રત શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા “ કુજ-
 રાણ ઇરાવણ इव ” હાથીઓમા જેમ ઐરાવત હાથી શ્રેષ્ઠ હોય છે, “ મિગાણ
 જહા સીહા પવરો ” મગોના વચ્ચે-જગલી જાનવરોની વચ્ચે-જેમ સિંહ શ્રેષ્ઠ
 હોય તે, “ સુપન્નગાણ ચ વેણુદેવે ” સુપર્ણ કુમારોમા જેમ વેણુદેવ શ્રેષ્ઠ હોય
 છે, “ જહા પન્નગ इदराया ધરણે ” પન્નગોનો હન્દ્રરાજ ધરણેન્દ્ર જેમ નાગકુ
 મારોમા શ્રેષ્ઠ હોય છે, “ કૃપ્પાણ ચેવ વમલોએ ” કટપોમા જેમ પાંચમા

યથા 'ઉદ્ઘર્ષ' ઉદ્ઘપતિઃ=ચન્દ્રઃ સર્વશ્રેષ્ઠસ્તથૈવત્રતાના મધ્યે સર્વશ્રેષ્ઠમસ્તિ । તથા-
 'મણિમુત્તસિલ્પવાલરત્તરયણાગરાણ' મણિમુક્તાશિલામવાલરત્તરત્નાકરાણા=મણય
 =ચન્દ્રકાન્તાદ્યાઃ, મુક્તાફલાનિ=શિલામવાલાનિ ત્રિદુષાણિ, રત્તરત્નાનિ=પદ્મરાગા
 દીનિ તેષામાકરા ઉત્પત્તિભૂમયઃ, યે તે તથા, તેષા મધ્યે 'જહા' યથા 'સમુદ્ધો' મમુદ્ઃ,
 શ્રેષ્ઠસ્તથૈવેદ ત્રતાના મધ્યે શ્રેષ્ઠમ્, એવ સર્વત્ર સયોજ્યમ્ । તથા- 'જહ ચેવ' યથા
 ચૈવ 'મળીણ' મળીના મધ્યે 'વેરુલિઓ' વૈરૂર્ય=વૈરૂર્યમણિઃ । 'જહ ચેવ' યથા
 ચૈવ 'આભૂષણાણ' આભૂષણાના મધ્યે 'મઝહો' મુકુટ । 'વત્થાણ' વત્થાણા
 મધ્યે 'લોમજુયલ ચેવ' લોમયુગમિત્ર । 'અરવિંદ ચેવ' અરવિન્દમિત્ર=કમલમિત્ર
 'પુષ્પજેટ્ટ' પુષ્પજ્યેષ્ઠમ્-પુષ્પેષુ અરવિન્દ શ્રેષ્ઠમિત્યર્થઃ । 'ગોસીસ ચેવ' ગોશીર્ષ
 હરિચન્દનમિત્ર 'ચદણાણ' ચન્દનાના મધ્યે 'હિમવતો ચેવ' હિમવાનિત્ર 'ઓસ

ગ્રહો મેં, અશ્વિની આદિ નક્ષત્રોં મેં, ઓર તારાઓં મેં જૈસે ચદ્રમા સર્વ
 શ્રેષ્ઠ માના જાતા હૈ ડસી તરહ સર્વ વતોં મેં શ્રેષ્ઠ માના ગય. હૈ । તથા
 (મણિમુત્તસિલ્પવાલરત્તરયણાગરાણ ચ જહા સમુદ્ધો) ચન્દ્રકાન્ત
 આદિ મણિયો કી, મુક્તાફલોં કી, મૂર્ગોં કી ઓર પદ્મરાગ આદિ રત્ત-
 રત્નોં કી ઉત્પત્તિ સ્થાનો મેં જૈસે સમુદ્ર શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ ડસી તરહ યહ
 વત ભી સર્વવતો મેં શ્રેષ્ઠ માના ગયા હૈ । તથા-(જહ ચેવ મળીણ વેરુ-
 લિઓ) જૈસે મણિયોં મેં વૈરૂર્યમણિ, (જહ ચેવ આભૂષણાણ મઝહો)
 આભૂષણો મેં જૈસે મુકુટ, (વત્થાણ લોમજુયલ ચેવ) વત્થોં મેં જૈસે
 લોમ યુગલ, (અરવિંદચેવ પુષ્પજેટ્ટ) પુષ્પોં મેં જૈસે અરવિંદ
 (કમલ) (ચદણાણ ગોસીસ ચેવ) ચદનો મેં જૈસે હરિચદન, (ઓસ
 હીર્ણ હિમવતો ચેવ) ઔષધિયોં કી ઉત્પત્તિ કે સ્થાનો મેં જૈસે હિમવાન

મળણ આદિ ગ્રહોમા, અશ્વિની આદિ નક્ષત્રોમા, અને તારાઓમા જેમ ચ
 ન્દ્રમા સર્વશ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે સર્વવતોમા શ્રેષ્ઠ માનવામા આવ્યુ છે
 તથા “ મણિમુત્તસિલ્પવાલરત્તરયણાગરાણ ચ જહા સમુદ્ધો ” ચન્દ્રકાન્ત આદિ
 મણિઓની, મોતીની, મૂળોની અને પદ્મરાગ આદિ રત્તરત્નોની ઉત્પત્તિ
 કરવાના સ્થાનોમા જેમ સમુદ્ર શ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે આ ત્રત
 પણ સર્વ વતોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા “ જહચેવ મળીણ વેરુલિઓ ” જેમ
 મણિઓમા વૈરૂર્યમણી, “ જહ ચેવ આભૂષણાણ મઝહો ” આભૂષણોમા જેમ મુકુટ
 “ વત્થાણ લોમજુયલ ચેવ ” વત્થોમા જેમ લોમયુગલ “અરવિંદ ચેવ પુષ્પજેટ્ટ ”
 પુષ્પોમા જેમ અરવિંદ, “ ચદણાણ ગોસીસ ચેવ ” ચદનોમા જેમ હરિચદન

પ્રવર તથૈવ વ્રતાના મધ્યે ઇદં વ્રહ્મચર્યં પ્રવરમ્ । તથા—‘ જ્ઞાણેસુ ય ’ ધ્યાનેષુ ચ—
ધ્યાનમધ્યે યથા ‘ પરમસુક્ષ્મજ્ઞાણ ’ પરમશુદ્ધધ્યાન—શુદ્ધધ્યાનસ્ય ચતુર્થપાદરૂપં
પ્રવરમ્, તથા—નાણેસુ ય ’ જ્ઞાનેષુ ચ યથા પરમકેવલ તુ પરિપૂર્ણવિશુદ્ધકેવલ-
જ્ઞાન અર્થાત્—ક્ષાયિકજ્ઞાન સિદ્ધ=પ્રવરત્વેન પ્રસિદ્ધમ્, તથૈવેદં વ્રહ્મચર્યં વ્રતાના-
મધ્યે પ્રસિદ્ધમ્—તથા—‘ લેસાસુ ય ’ લેશ્યાસુ=કૃષ્ણાધ્યાસુ ચ યથા, ‘ પરમસુક્ક
લેસ્સા ’ પરમશુક્લલેશ્યા—શુક્લધ્યાનસ્ય તૃતીયભેદવર્તિની પ્રવરા । ‘ તિત્થકરો
ચેવ ’ તીર્થકરશ્ચૈવ ‘ જહા ’ યથા ‘ મુણીણ ’ મુનીના મધ્યે પ્રવર ‘ વાસેસુ ’ વર્ષેષુ
ક્ષેત્રેષુ ‘ જહા ’ યથા ‘ વિદેહે ’ વિદેહ—મહાવિદેહક્ષેત્ર પ્રવરમ્, તથૈવેદં વ્રત=
વ્રતાના મધ્યે પ્રવરમ્ । યથા જમ્બૂદ્વીપે ‘ મદરવરે ’ મન્દરવરો ‘ ગિરિરાયા ’
ગિરિરાજો=મેરુપર્વતશ્ચૈવ પર્વતાના મધ્યે પ્રવરઃ, ‘ વણેસુ ’ વનેષુ ‘ જહા ’ યથા—

સ્વસ્થાન પ્રવર માના જાતા હૈ—ઁસી પ્રકાર યદ વ્રહ્મચર્યં વ્રતો મે પ્રધાન
વ્રત માના જાતા હૈ । ઇસી તરહ (જ્ઞાણેસુ વર સુક્ષ્મજ્ઞાણ) ચાર ધ્યાનોં
મેં જૈસે પરમ શુક્લ યાન શુદ્ધધ્યાનકા ચોયા ભેદ, ઉત્તમ હોતા હૈ ઔર
(નાણેસુ ય પરમકેવલ સિદ્ધ) આભિનિવોધિક આદિ પાંચ જ્ઞાનોં મે જૈસા
કેવલજ્ઞાન ઉત્તમ હોતા હૈ (લેસાસુ ય પરમસુક્કલેસા) કૃષ્ણ આદિ છદ્
લેશ્યાઓં મેં જૈસે પરમશુક્લલેશ્યા—શુદ્ધધ્યાન કે તૈસરે (પાચે) પાદમેં
હોનેવાલી લેશ્યા—ઉત્તમ હોતી હૈ (જહા મુણીણ તિત્થકરો) મુનિયો કે
બીચ મેં જૈસે તીર્થકર સર્વોત્તમ હોતે હૈ, તથા (વાસેસુ જહા વિદેહે)
ક્ષેત્રોં મેં જૈસે વિદેહક્ષેત્ર સર્વ સે ઉત્તમ ક્ષેત્ર હોતા હૈ, ઁસી તરહ વ્રતોં
મેં યદ વ્રહ્મચર્યં વ્રત સર્વસે પ્રધાન વ્રત હૈ । તથા—(મદરવરે ગિરિ-
રાયા) જૈસે જમ્બૂદ્વીપ મે પર્વતોં કે મધ્ય મેં મદર વર ગિરિરાજ શ્રેષ્ઠ હૈ,

સ્વસ્થાન જેમ શ્રેષ્ઠ મનાય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્યં વ્રત પણ સધળા વ્રતોમા
મુખ્ય મનાય છે એ જ પ્રમાણે “ જ્ઞાણેસુ વર સુક્ષ્મજ્ઞાણ ” ચાર ધ્યાનોમા
જેમ પરમ શુદ્ધધ્યાનનો ચોથો ભેદ ઉત્તમ હોય છે, અને “ નાણેસુ ય પરમ
કેવલ સિદ્ધ ” આભિનિવોધિક આદિ પાંચ જ્ઞાનોમા જેમ કેવળજ્ઞાન ઉત્તમ
હોય છે, “ લેસાસુ ય પરમસુક્કલેસા ” કૃષ્ણ આદિ છ લેશ્યાઓમા જેમ શુદ્ધ
લેશ્યા—શુદ્ધધ્યાનના ત્રીજા પદમા—પાયામા થનારી લેશ્યા—ઉત્તમ હોય છે “ જહા
મુણીણ તિત્થકરો ” મુનિયોની વચ્ચે જેમ તીર્થકર સર્વોત્તમ હોય છે, “ વાસેસુ
જહા વિદેહે ” ક્ષેત્રોમા જેમ વિદેહ ક્ષેત્ર સર્વોત્તમ છે, એ જ પ્રમાણે આ
બ્રહ્મચર્યં વ્રત સધળા વ્રતોમા પ્રધાન વ્રત છે તથા “ મદરવરે ગિરિરાયા ”
જેમ જમ્બૂદ્વીપમા પર્વતોમા ગિરિરાજ મદરવર શ્રેષ્ઠ છે, “ વણેસુ જહા વણ

ક્ષેત્રસ્ય મહત્વાદિન્દ્રિયસ્યાતિ શુભપરિણામત્વાન્ન પ્રવરઃ । ‘ સમાસુય ’ સમાસુ= પ્રતિભવનપ્રિમાન માનિનીપુ સુધર્મસમોત્પાતમમાઽમિપરસમાઽન્કારમમાવ્યવ સાયસમાસુ ચ મધ્યે ‘ જહા ’ યથા ‘ સુહમ્મા ’ સુધર્મા સમા પ્રવરા ‘ ભવે ’ ભવતિ તથૈવેદ વ્રહ્મચર્ય વ્રતેષુ પ્રવર ભવતિ । તથા-‘ ઠિહસુ ’ સ્થિતિપુ=આયુષ્કેષુ મધ્યે ‘ લવસત્તમવ્વ ’ લવસત્તમેવ=અનુત્તરદેવભવરિથિતિર્યયા પ્રવરા । ‘ દાણાણ ચેવ અભઓદાણ ’ દાનાના મધ્યે અભયદાનમિવેદ વ્રહ્મચર્ય પ્રવરમ્ । ‘ કવલાણ ’ કમ્બલાના મધ્યે ‘ કિમિરાઓ ચેવ ’ કમિરાગ ઇવ-કમિરાગકમ્બલ ઇવ ક્રમેઃ= રક્તકીટ વિશેષસ્ય રાગ ઇવ રાગો यस્ય કમ્બલસ્ય ભવતિ મ કમ્બલઃ કમિ રાગ કમ્બલ પ્રોચ્યતે, રક્તકમ્બલ इत्यर्थः, તથા-‘ સઘયણે ’ સહનને=મહનનમધ્યે વજ્ર-ક્રુપભાદીના પળ્લા સહનનાના મધ્યે ‘ વજ્જરિસમે ’ વજ્રક્રુપમ સહનન પ્રવરમ્ ‘ સઠાણે ’ સસ્થાને=પદ્ધિવિધસસ્થાનમધ્યે યથા ‘ સમચરસ ’ સમચતુરસ સસ્થાન

(સમાસુ જહા સુહમ્મા ભવે સમાઓ મેં જૈસે સુધર્મા સમા શ્રેષ્ઠ હોતી હૈં, અર્થાત્ સુધર્મા સમા ઉત્પાત સમા, અભિપેક્ષસમા, અલકાર-સમા, વ્યવસાયસમા, इन सभाओं में जैसे सुधर्मा सभा सब से श्रेष्ठ मानी जाती है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्यव्रत भी समस्त व्रतों में श्रेष्ठ माना जाता है । तथा (ठिहसु जहा लवसत्तमव्वपवरा) आयुओं में अनुत्तरविमानवासी देवों की जैसे आयु उत्तम मानी जाती है और (दाणाण चेव अभयो दाण) दानों के बीच में जैसे अभयदान श्रेष्ठ माना जाता है उसी तरह यह ब्रह्मचर्यव्रत भी समस्तव्रतों में प्रधान व्रत माना जाता है । तथा (कवलाण किमिराओ चेव) कवलों में जैसे रक्त कम्बल, (सघयणे चेव वज्जरिसमे) छह सहननों में जैसे वज्रकृपम सहनन, (सઠાણે ચેવ સમચરસે) છહ સસ્થાનો મેં જૈસે સમચતુર-

બ્રહ્મલોક શ્રેષ્ઠ હોય છે, “ સમાસુ જહા સુહમ્મા ભવે ” સભાઓમાં જેમ સુધર્મા સભા શ્રેષ્ઠ હોય છે, એટલે કે સુધર્માસભા, ઉત્પાદસભા, અભિપેક્ષસભા, અલકારસભા વ્યવસાયસભા, એ સભાઓમાં જેમ સુધર્માસભાને શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવે છે, એ જ પ્રકારે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને પણ સર્વે વ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ માનવામાં આવે છે તથા “ ઠિહસુ જહા લવસત્તમવ્વપવરા ” આયુષ્યોમાં જેમ અનુત્તર વિમાનવાસી દેવોનું આયુષ્ય જેમ ઉત્તમ મનાય છે, અને “ દાણાણ ચેવઅભ ઓદાણ ” દાનોમાં જેમ અભયદાન શ્રેષ્ઠ મનાય છે, એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સમસ્ત વ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા “ કવલાણ કિમિરાઓ ચેવ ” કમળોમાં જેમ રક્ત કમળ સઘયણે ચેવ વજ્જરિસમે ” છ સહનનોમાં જેમ વજ્રક્રુપમ સહનન, “સઠાણે ચેવ સમચરસે” છ સસ્થાનોમાં જેમ સમચતુરસ

શન્તીત્વર્થઃ । અયમાશયઃ-ત્રતાના મધ્યે બ્રહ્મચર્યં વ્રત સર્વત શ્રેષ્ઠમ્ । અતસ્ત-
દારાધકાઃ સર્વત શ્રેષ્ઠા ભવન્તીતિ ॥ સૂ ૨ ॥

મૂલમ્-જમ્મિ ય આહિય વયમિણ સચ્ચ સીલં તવો ય
વિણયો ય સજમો ય સ્વત્તી ગુત્તી મુત્તી, તહેવ ઇહલોઙ્ગય
પરલોઙ્ગયજસો ય કિત્તી ય પચ્ચાઓ ય, તમ્હા નિદ્ધુણં વમ-
ચ્ચેરં ચરિયવ્વં સવ્વઓ વિસુદ્ધ જાવજ્જીવાણ જાવસેયઠ્ઠી
સંજઓત્તિ, એવ ભણિયં વય ભગવયા । તં ચ ઇમ-“પચમ-
હવ્વયસુવ્વયમૂલ સમણમણાહલસાહુસુચ્ચિણ્ણ । વેરવિરામ-
ણપજ્જવસાણ સવ્વસમુદ્દમહોદહિતિત્થં ॥ ૧ ॥ તિત્થગરેહિં
સુદેસિયમગ્ગં નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગં । સવ્વપવિત્તસુનિ-
મ્મિયસારં સિદ્ધિવિમાણઅવગુયદારા ॥ ૨ ॥ દેવનરિદનમસિ-
યપુજ્જ સવ્વજગુત્તમમગલમગ્ગ । દુદ્ધરિસ ગુણનાયગમેક્કં
મોક્ખપહસ્સ વહિસગભૂયં” ॥ ૩ ॥ જેણ સુદ્ધચરિણં ભવઙ્ગ
સુવમણો સુસમણો સુસાહુ સુહસી સુમુણી સુસજણ સ એવ
ભિક્ખૂ, જો સુદ્ધ ચરઙ્ગ વમચ્ચેર ॥ ૩ ॥

જાતે છે । ફસલિયે વ્રતોં કે વીચ મેં યહ બ્રહ્મચર્યવ્રત સર્વ શ્રેષ્ઠ વ્રત છે,
અતઃ ફસકે આરાધકજન મી સર્વતઃશ્રેષ્ઠ હોતે છે ।

ભાવાર્થ—ફસ એક બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કે આરાધિત હોને પર સમસ્ત
સદ્ગુણ સ્વય આરાધિતહો જાતે હેં ઓર ફસકે વિનષ્ટ હોનેપર વે સમસ્ત
સદ્ગુણ નષ્ટ હો જાતે હેં । અતઃ સમસ્ત વ્રતોમે યહ વ્રત સર્વશ્રેષ્ઠ છે । સૂ ૨ ॥

વ્રતને આચરવાથી સમસ્ત ગુણ તે પુરુષમા આવી જાય છે તે કારણે વ્રતો મધ્યે આ
બ્રહ્મચર્યવ્રત સર્વ શ્રેષ્ઠ વ્રત છે, તેથી તેની આરાધના કરનાર વ્યક્તિ સર્વ શ્રેષ્ઠ હોય છે

ભાવાર્થ—આ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતની આરાધના કરવામા આવે તો સમસ્ત
સદ્ગુણ તેની જાતે જ આરાધિત થઈ જાય છે અને તેનો નાશ થતા તે સમસ્ત
સદ્ગુણોનો નાશ થઈ જાય છે તેથી સઘળા વ્રતોમા આ વ્રત સર્વશ્રેષ્ઠ છે ॥ સૂ ૨ ॥

‘ળદળવળ’ નન્દનવન ‘પવર’ પવર ‘દુમેસુ’ દુમેસુ-વૃક્ષેષુ ‘જહા’ યથા-
 ‘સુદસળા’ સુદર્શના-સુદર્શનાશ્યા ‘જવૂ’ જમ્બૂઃ=શ્લીવિત્તઃ વૃક્ષવિશેષઃ, મા
 ‘વિસ્સુયજસા’ વિશ્રુતયશઃ-યશસા પ્રિચ્યાતા । જમ્બુ કિં નામ યશઃ ? ઇત્યાહ
 —‘જીય યસ્યાઃ’ નામેળ નામ્ના અય ‘દીવે’ દ્વીપો=જસ્યુદ્વીપોઽસ્તિ,
 તથૈવેદ વ્રહ્મચર્ય વ્રતાનાં મધ્યે પ્રિચ્યાતમ્ । તથા-‘જહા ચેવ’ યથા ચૈવ ‘તુર
 ગવર્દ’ તુરગપતિઃ=અશ્વસેનાયુક્ત, ‘ગયવર્દ’ ગજપતિઃ=ગજસેનાયુક્ત ‘રહવર્દ’
 રથપતિઃ-રથસેનાયુક્તઃ ‘નરવર્દ’ નરપતિઃ=નરસેનાયુક્તો ‘રાયા’ રાજા વિશ્રુતઃ,
 ‘જહા ચેવ’ યથા ચૈવ ‘રહિણ’ રથિકે=રથારોહિમધ્યે ‘મહારહગણ’ મહાર
 થગત =મહારથારોહી વિશ્રુત । તથૈવ વ્રતાના મધ્યે ઇદ વ્રત વિશ્રુતમ્=પ્રસિદ્ધમ્
 એવમ્=એવમ્પ્રકારાઃ ‘અળેગગુળા’ અનેકગુણાઃ=પ્રવરત્વવિશ્રુતત્વાદયોઽનેકેગુણા
 ‘એગમ્મિ વમચેરે’ એકસ્મિન્ વ્રહ્મચર્યે ‘અહીળા’ અધીના=સ્વાધીના. ભવન્તિ,
 એકસ્મિન્ વ્રહ્મચર્યે સમારાધિતે સતિ સર્વે ગુણાઃ સમાગત્ય તસ્મિન્ પુરુષે સમાવિ

(વળેસુ જહા ળદળવળ પવર) વનો મેં જૈસે નદનવન શ્રેષ્ઠ હૈ, (દુમે
 સુ જહા સુદસળા જવૂવિસ્સુયજસા) વૃક્ષો મેં જૈસે જવૂ વૃક્ષ પ્રસિદ્ધયશ
 સપન્ન હૈ કિ (જીયનામેળ અય દીવો) જિસકે નામ સે યહ દ્વીપ જબુ
 દ્વીપ કહલાતા હૈ, ડસી પ્રકાર વ્રતો મેં વ્રહ્મચર્ય વ્રતશ્રેષ્ઠ હૈ । તથા (તુર-
 ગવર્દ, ગયવર્દ, રહવર્દ, નરવર્દ, રાયા જહાચેવ રહિણ મહારહગણ, એવ-
 મળેગગુળા એગમ્મિ વમચેરે અહીળા ભવન્તિ) જૈસે અશ્વસેનાયુક્ત, ગજ
 સેનાયુક્ત, રથસેનાયુક્ત, નરસેનાયુક્ત, રાજા પ્રસિદ્ધ હોતા હૈ, તથા
 રથારોહિયોં કે બીચ મે મહારથારોહી પ્રચ્યાત હોતા હૈ, ડસી તરહ
 વ્રતા મેં યહ વ્રહ્મચર્યવ્રત પ્રચ્યાત હૈ । ડમ તરહ પ્રવરત્વ, વિશ્રુતત્વ આદિ
 અનેક ગુણ એક ઇસ વ્રહ્મચર્ય મેં અધીન હોતે હૈં, અર્થાત્ એક વ્રહ્મચર્ય
 કે આરાધિત કર લેને પર સમસ્તગુણ આકાર ડસ પુરુષ મેં આશ્રિત હો

વળ પવર ” વનોમા જેમ નદનવન શ્રેષ્ઠ છે, “ દુમેસુ જહા સુદસળા જવૂ વિ
 સ્સુયજસા ” વૃક્ષોમા જેમ જ ખૂવૃક્ષ પ્રસિદ્ધ યશ સપન્ન છે, કે “ જિય નામેળ
 અય દીવો ” જેના નામથી આ દ્વીપ જ ખૂદ્વીપ કહેવાય છે, એ જ પ્રમાણે
 મતોમા બ્રહ્મચર્ય વ્રત શ્રેષ્ઠ છે તથા “ તુરગવર્દ, ગયવર્દ, રહગર્દ, નરવર્દ રાયા,
 જહા ચેવ રહિણ મહારહગણ, એવમળેગગુળા એગમ્મિ વમચેરે અહીળા ભવન્તિ ” જેમ
 હુયદળવાળો, ગજદળવાળો, રથદળવાળો અને પાંચદળવાળો રાજા પ્રસિદ્ધ હોય
 છે તથા રથારોહિયોની વચ્ચે મહારથારોહી પ્રચ્યાત હોય છે, એ જ પ્રમાણે
 વ્રતોમા પણ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પ્રચ્યાત છે આ પ્રમાણે શ્રેષ્ઠતા, વિશ્રુતત્વ, આદિ
 અનેક ગુણ આ એક બ્રહ્મચર્યને આધીન હોય છે, એટલે કે એક બ્રહ્મચર્ય

યન્વ ' ચરિતવ્યમ્=આસેવિતવ્યમ્ ક્ષીદશ વ્રહ્મચર્યમાસેવિતવ્યમ્ ? ઇત્યાહ—
' સન્વઓ નિસુદ્ધ ' સર્વતો વિશુદ્ધમ્ ? મનઃ પ્રભૃતિ ત્રિકરણત્રિયોગનિર્મલ, ક્રિય-
ત્કાલમાસેવિતવ્યમ્ ? ઇત્યાહ—'જાવજ્જીવાણ' યાવજ્જીવયા પ્રતિજ્ઞયા યાવજ્જી-
વતયા વા જીવનપર્યન્તમિત્યર્થઃ, તથા—'જાવસેયદ્વિ સજઓત્તિ ' યાવત્ શ્વેતાસ્થિ
સયત, દત્તિ, શ્વેતાનિ=દુષ્કર તપ' કરણાદુષિરાભાવેન શુક્લાનિ અસ્થીનિ
યર્સ્મિન્નત્-શ્વેતાસ્થિ=અસ્થિપદ્મરપ્રાય શરીર તત્ર સયતઃ પ્રતિવદ્ધો જીવો યાવદ્
ભવેત્, મરણપર્યન્તમિત્યર્થઃ । અય ભાવઃ—સાધુના દુશ્વર તપશ્ચરણાદિના સ્વશરીર
રુધિર નિશોષ્ય મરણાગ્નિ વ્રહ્મચર્ય પાલનીયમિતિ । અથવા યાવન્ત્રેયોઽર્થિ સયત '
ઈતિચ્છાયા, ત્રેયો મોક્ષસ્તદર્શયિતુ શીલ યસ્ય સ ત્રેયોઽર્થી, સ ચાસૌ સયતશ્ચેતિ
કર્મધારયઃ અય ભાવ—સાધુર્યાવત્કાલ મોક્ષ ન પ્રાપ્નોતિ, તાવત્કાલ તેન વ્રહ્મચર્ય
પાલનીયમિતિ । ' એવ ' ઇત્યેવ ' ભણિય ' ભણિત ' ભગવયા ' ભગવતા મહા-

વ્રત) નિશ્ચલભાવ સે (વ્રમચેર) હસ વ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કા (જાવજ્જી-
વાણ) જીવનપર્યન્ત (ચરિયન્વ) પાલન કરના ચાહિયે । (જાવ સેયદ્વિ-
સજઓ ત્તિ) યાવત્ શ્વેતાસ્થિ સયતઃ અર્થાત્ ચાહે ભલે હીદુશ્વર તપશ્ચરણ
આદિ દ્વારા અપને શરીર કા સ્વૂન સુક જાને સે શ્વેત હૃદિયા હી ડસમેં
અવશેષ રહ ગઈ હો તથતક । અથવા યાવત્ ત્રેયોઽર્થિ સયત—અર્થાત્—
સાધુ કો જવતક મુક્તિ કી પ્રાપ્તિ ન હો જાવે, તથતક હસ મહાવ્રત કા
અવશ્ય પાલન કરતે રહના ચાહિયે । “ જાવ સેયદ્વિ સજઓ ” હસકી
અર્થ તો શ્વેતાસ્થિસયતઃ ” એસી સસ્કૃત છાયા હોતી હૈ ઓર દૂસરી—
“ ત્રેયોઽર્થિસયત. ” એસી બી હોતી હૈ । (એવ ભણિય વય ભગવયા)
હસ પ્રકાર સે હસ વ્રત કા ભગવાન મહાવીર ને જો કિ અન્તિમ તીર્થ-

નિશ્ચલ ભાવથી “ વ્રમચેર ” આ વ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતનું “ જાવજ્જીવાણ ” જીવન
પર્યન્ત ચરિયન્વ ” પાલન કરવું જોઈએ જાવ સેયદ્વિસજઓત્તિ ” “ યાવત્
શ્વેતાસ્થિસયત ” એટલે કે કઠોર તપશ્ચરણ આદિ દ્વારા પોતાના શરીરનું લોહી
સૂકાઈ જવાથી સફેદ હાડકા જ તેમા બાકી રહ્યા હોય એવી સ્થિતિમા પણ
આ વ્રતનું પાલન કરવું જોઈએ અથવા યાવત્ ત્રેયોઽર્થિ સયત—એટલે કે જ્યા
સુધી સાધુને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ન થાય ત્યા સુધી આ મહાવ્રતનું પાલન કરતા
રહેવું જોઈએ “ જાવ સેયદ્વિસજઓ ” તેની એક સસ્કૃત છાયા “ શ્વેતાસ્થિસયત ”
થાય છે, અને બીજી “ ત્રેયોઽર્થિસયત ” એવી પણ છાયા થાય છે “ એવ
ભણિય વય ભગવયા ” આ પ્રમાણે અન્તિમ તીર્થ કરે ભગવાન મહાવીરે આ વ્રતનું

ટીકા—‘ જમ્મિય ’ ઇત્યાદિ—

‘ જમ્મિય ’ યસ્મિન્નથ=બ્રહ્મચર્યે આરાધિતે ‘ ઇણ ’ ઇદ પ્રવ્રજ્યા—લક્ષણ ‘ વય ’ વ્રતમ્ ‘ આરાહિય ’ આરાધિત ભવતિ । તથા પુનરપિ યદારાધિત ભવતિ, તદાહ—‘ સચ્ચ ’ સત્ય ‘ સીલ ’ શીલ=સાધ્યાચારઃ—‘ તવો ય ’ તપથ ‘ વિણઓ ય ’ વિનયથ ‘ સજમો ય ’ સયમથ, તવા—‘ સ્વત્તી ’ ક્ષાન્તિઃ ‘ ગુત્તી ’ ગુપ્તિઃ—મનોગુપ્ત્યાદિકા, ‘ મુત્તી ’ મુક્તિઃ—નિર્લોભતા ‘ તહેવ ’ તથૈવ ‘ ઇહલોહ્ય પરલોહ્ય ’ એહલૌકિકપારલૌકિક ‘ જસો ય ’ યશ્ચ—યશઃ=અકદિગ્ગામિનીરયાતિઃ ‘ કિત્તીય ’ કીર્તિશ્ચ=સર્વદિગ્ગામિનીપ્રસિદ્ધિ, ‘ પચ્ચઓ ય ’ પ્રત્યયથ=‘ સાધુર-યમ્ ’ એવ રૂપો વિશ્વાસઃ, એતત્સર્વ બ્રહ્મચર્યે સમારાધિતે ભવતીતિ ભાવઃ । ‘ તમ્હા ’ તસ્માદ્ હેતોઃ ‘ નિહુણ ’ નિમૃત્તેન=નિશ્ચલભાવેન ‘ વમ્મચેર ’ બ્રહ્મચર્ય ‘ ચરિ-

‘ જમ્મિય ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(જમ્મિય આરાહિય) જિસ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કે આરાધિત કર લેને પર (ઇણ વય આરાહિય) યહ પ્રવ્રજ્યારૂપવ્રત આરાધિત હો જાતા હૈ તથા—(સચ્ચ સીલતવો ય વિણયો ય સજમો ય સ્વત્તિ, ગુત્તી, મુત્તી, તહેવ ઇહલોહ્ય, પરલોહ્ય, જસો ય કિત્તી ય પચ્ચઓ ય) સત્ય, શીલ—સદાચાર, (મુનિ કા આચાર) તપ, વિનય, સયમ, ક્ષાન્તિ મનો-ગુપ્તિ આદિ ત્રીન ગુપ્તિયા, નિર્લોભતારૂપ મુક્તિ, તથા ઇહલોક સબધી, ઓર પરલોક સબધી યશ—અક દિશામે ફેલાનેવાલી પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ—સબ દિશા મેં ફેલાને વાલી પ્રસિદ્ધિ, તથા—પ્રત્યય—“ યહ સાધુ હૈ ” હસ રૂપ વિશ્વાસ, યે સબ આરાધિત હો જાતે હૈ । (તમ્હા) હસલિયે (સવ્વઓ વિસુદ્ધ) નૌ કોટિ—ત્રિકરણ ત્રિયોગ સે નિર્મલ બનાકર (નિહુ

“ જમ્મિય ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ જમ્મિય આરાહિય ” એ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ સેવન કરવાથી “ ઇણ વય આરાહિય ” આ પ્રજ્ઞાપ્રકરણ નત આરાધિત થઈ જાય છે, તથા “ સચ્ચ સીલ તવો ય વિણયો ય સજમો ય સ્વત્તી, ગુત્તી, મુત્તી ઇહલોહ્ય પરલોહ્ય જસો ય કિત્તી ય પચ્ચઓ ય ” સત્ય, શીલ, સદાચાર, (મુનિનો આચાર) તપ, વિનય, સયમ, ક્ષાન્તિ, મનોગુપ્તિ અદિ ત્રણ ગુપ્તિ, નિર્લોભતારૂપ મુક્તિ, તથા આલોક સબધી તથા પરલોક સબધી યશ—એક દિશામા ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ—સબધી દિશાઓમા ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, તથા પ્રત્યય—“ આ સાધુ છે ” એ પ્રકારનો વિશ્વાસ, એ બધા આરાધિત થઈ જાય છે ‘ તમ્હા ’ તેથી “ સવ્વઓ વિસુદ્ધ ” નવ પ્રકારે—ત્રિકરણ ત્રિયોગથી નિર્મળ બનાવીને “ નિહુણ ”

તથા—‘ સન્વસમુદ્રમહોદહિતિત્થ ’ સર્વસમુદ્રમહોદધિતીર્થમ્-સર્વે ચ તે સમુદ્રાઃ સર્વ સમુદ્રાસ્તેષુ મહાન ઉદધિઃ=સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્રસાત્તુલ્ય વિશાલત્વાત્સ-સારોઽપિ મહોદધિસ્તસ્ય તીર્થમિત્થ=પારગમનાય નૌકેય ચત્તત્થાઽતિ ॥ ૧ ॥

‘ તિત્થગરેહિ ’ इत्यादि—‘ તિત્થગરેહિ ’ તીર્થકરૈ=જિનૈ ‘ સુદેસિયમગ્ગ ’ સુદેશિતમાર્ગમ્=સુદેશિતઃ=સુદર્શિતઃ માર્ગઃ=ગુપ્ત્યાદિ તત્પાલનોપાયો યસ્મિન્સ્ત-તથા, તથા—‘ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ’ નરકતિર્યગ્વિવર્જિતમાર્ગ નરકસ્ય=નરકગતે, તિરથઃ=તિર્યગ્ગતેશ્ચ વિવર્જિત =પ્રતિરોધિતો માર્ગો ગતિર્યેન તાદૃશમ્ । તથા—‘ સન્વપવિત્તસુનિમ્મિયસાર ’ સર્વપવિત્તસુનિર્મિતસાર=પર્વપવિત્રાણિ=સર્વાણિ પાવનાનિ સુનિર્મિતાનિ=સુવિહિતાનિ સારાણિ=પ્રધાનાનિ યેન તત્તથા, સકલવ્રત-

મર્ષા ઉસકે લિયે દાર જેમા વન જાતા હૈ ઓર વિષ મી સુસાધુ જૈસા હો જાતા હૈ—જો નૌ કોટિ સે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કા પાલક હોતા હૈ । યહ બ્રહ્મચર્ય કા હી પ્રભાવ હૈ જો શત્રુ મી મિત્ર વન જાતા હૈ ।

(સન્વસમુદ્રમહોદહિતિત્થ) સમસ્ત સમુદ્રોં મેં અતિમ સ્વયમ્ભૂર-મણસમુદ્ર એક વહુત વિશાલ સમુદ્ર હૈ—હસકે જૈસે વિશાલ હોને સે સસાર મી એક મહોદધિ જૈમા હૈ, ઉસસે પાર હોને કે લિયે યહ બ્રહ્મ-ચર્ય એક નૌકા કે સમાન હૈ ॥ ૧ ॥ (તિત્થગરેહિ સુદેસિયમગ્ગ) તીર્થકર ભગવતો ને હસકે પાલને કા ગુપ્તિ આદિ રૂપ ઉપાય કહા હૈ । (નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ) હસકે પ્રભાવ સે નરકગતિ ઓર તિર્યગ્ગતિ કા માર્ગ રુક જાતા હૈ (સન્વપવિત્તસુનિમ્મિયસાર) તથા

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને આરાધક હોય છે તેને માટે માપ હાર જેવો બની જાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવું થઈ જાય છે બ્રહ્મચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની જાય છે, “ સન્વસમુદ્ર-મહોદહિતિત્થ ” સધળા સમુદ્રોમા અતિમ સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર એક ઘણો વિશાળ સમુદ્ર છે—નેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો છે, તેને પાર જવાને માટે આ બ્રહ્મચર્ય એ એક નૌકા જેવું છે ॥ ૧ ॥ “ તિત્થગરેહિ સુદેસિયમગ્ગ ” તીર્થકર ભગવાનોએ તેના પાલન માટે ગુપ્તિ આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે “ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ” તેના પ્રભાવથી નરકગતિ અને તિર્યગ્ગતિનો માર્ગ અટકી જાય છે “ સન્વપવિત્ત સુનિ-મ્મિયસાર ” અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પ્રવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે, એટલે કે આ વ્રત સધળા વ્રતોને પ્રવિત્ર દૃઢ કરનાર છે “ સિદ્ધિવિમાણઅવગુણદાર ” તથા મોક્ષ ગતિનું અને અનુત્તર વિમાનોનું દ્વાર તેનાથી ઉઘડી જાય

વીરેણ ચરમતીર્થદ્વરેણ । ‘ ત ચ ’ તદ્વત્તમ્ ‘ ઇમ ’ ઇદમ્=અગ્રે-વક્તવ્યમાણસ્વરૂ-
પમસ્તિ । તદાદૃતિસુભિર્ગાથામિઃ—

‘ પચમહવ્યય૦ ’ ઇત્યાદિ ।

‘ પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ ’ પચ્ચમહાવ્રતસુવ્રતમૂલમ્=પચ્ચ=પચ્ચસરયકાનિ યાનિ
મહાવ્રતાનિ=પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિ લક્ષણાનિ, તાન્યેવ સુવ્રતાનિ તેષા મૂલમ્=
કારણમ્ ઇદં બ્રહ્મચર્યવ્રતમસ્તિ । તથા—ઇદં બ્રહ્મચર્યવ્રત, ‘ સમણ ’ શમન=ચિત્ત
સમાધિજનક, તથા—‘ અનાગિલમાધુસુચીર્ણમ્=અનાગિલા. =અરુણાઃ—નિર્મલ
ચારિત્રા યે સાધવસ્તૈઃ સુચીર્ણ=સમારાધિતમ્, તથા—‘ વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ ’
વૈરવિરમણપર્યવસાનમ્=વૈર=શત્રુભાવસ્તસ્ય વિરમણ=નિવૃત્તિઃ પર્યવસાનેઽન્તે યસ્ય
તત્, બ્રહ્મચર્યં હિ વૈર વિનિર્ગયં પરમપ્રીતિમુપજનયતીતિ માત્રઃ ।

ઉક્ત ચ—

સપ્પો હારાયણ તસ્સ, વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બચેરપ્પભાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

છાયા —સર્પો હારાયતે તસ્ય ત્રિપ ચાપિ સુધાયતે ।

બ્રહ્મચર્યપ્રભાવેણ રિપુર્મિત્રાયતે સદા ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

કર હુણે હૈ કથન કિયા હૈ । (ત ચ ઇમ) હસ મહાવ્રત કા સ્વરૂપ ત્રીન
ગાથાઓ સે કહતે હૈ—

(પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ) યહ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતરૂપ સુવ્રતો કા મૂલ-
કારણ હૈ, (સમણ) ચિત્તસમાધિ કા જનક હૈ, (અનાગિલસાહુસુચિણ)
નિર્મલ ચારિત્રધારી સાધુઓ દ્વારા અચ્છી તરહ આરાધિત કિયા હુઆ
હૈ (વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ) વૈરવિરોધ કા યહ અંત કરકે પરમ પ્રીતી
કા જનક હોતા હૈ । કહા બી હૈ—

“ સપ્પો હરાયણ તસ્સ, વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બચેરપ્પભાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

કથન કર્યું છે “તચ્ચ ઇમ” આ મહા વ્રતનું સ્વરૂપ ત્રણ ગાથાઓ દ્વારા કહે છે

“ પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ ” આ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત પ્રાણાતિપાત
વિરમણ આદિ પાંચ મહાવ્રતરૂપ સુવ્રતોનું મૂળકારણ છે “ સમણ ” ચિત્ત
સમાધિનું જનક છે, “ અનાગિલ સાહુ સુચિણ ” નિર્મળ ચારિત્રધારી સાધુઓ
દ્વારા સારી રીતે આરાધિત થયેલ છે, “ વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ ” વૈર વિરોધનો
અંત લાવીને તે પરમ પ્રીતિનું જનક થાય છે કહ્યું પણ છે—

“ સપ્પો હારાયણ તસ્સ વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બચેરપ્પભાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

તથા—‘ સન્નમમુદમહોદહિતિત્થ ’ સર્વમુદ્ગમહોદપ્રિતીર્યમ્-સર્વે ચ તે સમુદ્રાઃ સર્વ સમુદ્રાસ્તેષુ મહાન ઉદધિઃ=સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્રસાત્તુલ્ય વિશાલત્વાત્સ-સારોઽપિ મહોદધિસ્તસ્ય તીર્થમિત્ર=પારગમનાય નોક્તેવ યત્તત્તથાઽતિ ॥ ૧ ॥

‘ તિત્થગરેહિં ’ इत्यादि-‘ તિત્થગરેહિં ’ તીર્થકરૈઃ=જિને ‘ સુદેસિયમગ્ગ ’ સુદેગિતમાર્ગમ્=સુદેગિતઃ=સુદર્શિત માર્ગઃ=ગુપ્ત્યાદિ તત્પાલનોપાયો યસ્મિન્સ્ત-તથા, તથા-‘ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ’ નરકતિર્યગ્વિવર્જિતમાર્ગ નરકસ્ય=નરકગતે, તિરથ=તિર્યગ્ગતેશ્ચ વિવર્જિત =પ્રતિરોધિતો માર્ગો ગતિર્યેન તાદૃશમ્ । તથા-‘ સઽવપવિત્તસુનિમ્મિયસારં ’ સર્વપવિત્રસુનિર્મિતસાર=પર્વપવિત્રાણિ=સર્વાણિ પાવનાનિ સુનિર્મિતાનિ=સુવિદિતાનિ સારાણિ=પ્રધાનાનિ યેન તત્તથા, સકલવ્રત-

સર્વ ઉસકે લિયે દાર જૈમા વન જાતા હૈ ઓર વિષ મી સુસાધુ જૈમા હો જાતા હૈ-જો નૌ કોટિ સે શુદ્ધ વ્રત્તચર્ય વ્રત કા પાલક હોતા હૈ । યહ વ્રત્તચર્ય કા હી પ્રભાવ હૈ જો શત્રુ મી મિથ્ર વન જાતા હૈ ।

(સઽવસમુદ્ગમહોદહિતિત્થ) સમસ્ત સમુદ્રોં મેં અતિમ સ્વયમ્ભૂર-મણમમુદ્ગ એક વહુત વિશાલ સમુદ્ર હૈ-હસકે જૈસે વિશાલ હોને સે સસાર મી એક મહોદધિ જૈમા હૈ, ઉસસે પાર હોને કે લિયે યહ વ્રત્ત-ચર્ય એક નૌકા કે સમાન હૈ ॥ ૧ ॥ (તિત્થગરેહિં સુદેસિયમગ્ગ) તીર્થકર ભગવતો ને હસકે પાલને કા ગુપ્તિ આદિ રૂપ ઉપાય કહા હૈ । (નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ) હસકે પ્રભાવ સે નરકગતિ ઓર તિર્યગ્ગતિ કા માર્ગ રુક જાતા હૈ (સઽવપવિત્તસુનિમ્મિયસાર) તથા

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ વ્રત્તચર્ય વ્રતને આગધડ હોય છે તેને માટે સાપ હાર જેવો બની જાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવો થઈ જાય છે વ્રત્તચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની જાય છે, “ સઽવસમુદ્ગ-મહોદહિતિત્થ ” સધળા મમુદ્રોમા અતિમ સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર એક ઘણો વિશાળ સમુદ્ર છે-તેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો છે, તેને પાર જવાને માટે આ વ્રત્તચર્ય એ એક નૌકા જેવું છે ॥ ૧ ॥ “ તિત્થગરેહિં સુદેસિયમગ્ગ ” તીર્થકર ભગવાનોએ તેના પાલન માટે ગુપ્તિ આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે “ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ” તેના પ્રભાવથી નરકગતિ અને તિર્યગ્ગ ગતિનો માર્ગ અટકી જાય છે “ સઽવપવિત્ત સુનિ-મ્મિયસાર ” અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પ્રવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે, એટલે કે આ વ્રત સધળા વ્રતોને પવિત્ર દેહ કરનાર છે “ સિદ્ધિવિમાણઅ-વગુચદાર ” તથા મોક્ષ ગતિનું અને અનુત્તર વિમાનોનું દ્વાર તેનાથી ઉઘડી જાય

પવિત્રદૃઢકારીત્યર્થઃ, તથા-‘ સિદ્ધિવિમાણઅંગુચદારં ’ સિદ્ધિવિમાણાપાટ્ટતટ્ઠા
 રમ્=સિદ્ધેઃ-મોક્ષગતે, વિમાણોનામ્=અનુત્તરવિમાણાનામ્ ચ, અપાટ્ટતમ્=ઉદ્ઘાટિત
 દ્વાર=પ્રવેશમુખ યેન તત્તથા, સ્વર્ગાપવર્ગદ્વારોદ્ઘાટકમિત્યર્થઃ ॥ ૨ ॥ પુનઃ ક્ષીદશ
 બ્રહ્મચર્યમ્ ? इत्याह-‘ देवनरिन्द ’ इत्यादि । ‘देवनरिन्दनमसिय पुज्ज’ देवनरेन्द्र
 नमस्वितपूज्यम्-देवाः=भवनपत्यादयः, नरेन्द्रा =चक्रवर्त्यादयस्तेः नमस्वितता =
 नमस्कृता ये महापुरुषास्तेषा पूज्यम्=आदरणीयम् । तथा-‘ सव्वजगुत्तममगल-
 मग्ग ’ सर्वजगद्गुत्तममगलमार्गः=सर्वजगत्सु=त्रिषु लोकेषु उत्तमो मङ्गलश्च यो मार्गः
 उपाय, सोऽस्ति । तथा-‘ दुद्धरिस ’ दुर्द्धर्मम्=देवदानवैरप्यपरिभयनीयम्, ‘गुण
 नायग ’ गुणनायक=गुणान्=ज्ञानादिरूपान नयति=प्रापयति यत्तत्तादृशम्=गुणधा-
 यकमિત્યર્થ, तथा-‘ एक्क ’ एक-प्रधानम्=निरूपमम् इत्यर्थ, तथा ‘ मोक्ख
 पहस्स ’ मोक्षपथस्य=मोक्षमार्गस्य ‘ वडिसगभूय ’ जयतमकभूतम्=शिरोभूषण-
 सदृशमिदं ब्रह्मચર્યમસ્તિ ॥ ૩ ॥

इसका ही प्रभाव सब को पवित्र और सारभूत बना देता है । अर्थात्
 यह व्रत समस्त व्रतों को पवित्र और दृढ़ करने वाला है । (सिद्धिवि-
 माणअवगुचदार) तथा मोक्षगति का और अनुत्तर विमानो का द्वार
 इससे खुल जाता है, अर्थात् स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) के द्वारका यह
 उद्घाटक है-खोलनेवाला है ॥ २ ॥ (देवनरिन्दनमसियपुज्ज) भवनपति
 आदि देवों द्वारा चक्रवर्ती आदि नरेन्द्रों द्वारा, नमस्कृत हुए ऐसे महा-
 पुरुषों के यह पूजनीय-आदरणीय है । तथा-(सव्वजगुत्तममगलमग्ग)
 यह तीनों लोकों में उत्तम और मंगलकारी मार्ग है । तथा (दुद्धरिस)
 देव और दानवोंसे भी यह पराजित होनेवाला नहीं है (गुणनायग)ज्ञानादि
 सद्गुणों को यह प्राप्त कराने वाला है । (एक्क) यह प्रधाननिरूपम है
 (मोक्खपहस्स वडिसगभूय) और मोक्ष मार्गका यह शिरोभूषणरूप है ॥ ३ ॥

છે એટલે સ્વર્ગ અને અપવર્ગના દ્વારનું તે ઉદ્ઘાટન કરનાર છે-ઉઘાડનાર છે ॥૨॥
 “ દેવનરિન્દનમ સિયપુજ્જ ” ભવનપતિ આદિ દેવો અને ચક્રવર્તી આદિ નરેન્દ્રો પણ
 જેમને નમન કરે છે એવા મહાપુરુષોને તે પૂજનીય અને આદરણીય છે તથા
 “ સવ્વ જગુત્તમમગલમગ્ગ ” તે ત્રણે લોકમાં ઉત્તમ અને મંગલકારી માર્ગ છે,
 તથા “ દુદ્ધરિસ ” દેવો અને દાનવો દ્વારા પણ તે પરાજિત થાય એવું નથી
 “ ગુણનાયગ ” જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોને તે પ્રાપ્ત કરાવનાર છે “ એક્ક ” તે પ્રધાન
 -શ્રેષ્ઠ-અનુપમ છે “ મોક્ખપહસ્સ વડિસગભૂય ” અને મોક્ષમાર્ગનું તે શિરો
 ભૂષણ રૂપ છે ॥ ૩ ॥

તથા—‘ સુદ્ધચરિણ ’ શુદ્ધચરિતેન=સમ્યગાચરિતેન ‘ જેણ ’ યેન=બ્રહ્મ
ચર્યેણ, ‘ ભવઈ ’ ભવતિ ‘ સુવ્રમણો ’ સુવ્રાહ્મણઃ=આત્મજ્ઞાનતત્પરઃ, ‘ સુસમણો ’
સુશ્રમણ=સુતપસ્વી ‘ સુસાહુ ’ સુસાધુઃ=નિર્વાણસાધકઃ ‘ સુર્દસી ’ સુઋપિઃ,
યથાદૃશ્ટુર્દર્શકઃ, ‘ સુમુણી ’ સુમુનિઃ=જિનાજ્ઞાધારકઃ, ‘ સુસજ્જણ ’ સુસયતઃ=
પરમયતનાપરાયણઃ । તથા સ એવ ‘ ભિક્ષુ ’ ભિક્ષુઃ=સર્વત્યાગી પરમપુરુષાર્થ-
સાધકો વા, ‘ જો ’ યઃ ‘ સુદ્ધ ’ શુદ્ધ ‘ વ્રમચેર ’ બ્રહ્મચર્ય ‘ ચરઈ ’ ચરતિ=પાલયતિ ॥મૂ૩॥

(સુદ્ધચરિણ જેણ સુવ્રમણો ભવઈ) અચ્છત્રી તરહ આચરિત હુણ
હસ બ્રહ્મચર્ય સે હી મનુષ્ય સુવ્રાહ્મણ-આત્મ જ્ઞાન મેં તત્પર-હોતા હૈ,
(સુસમણો) સુશ્રમણ-સુતપસ્વી, (સુસાહુ) સુસાધુ-નિર્વાણ સાધક,
(સુર્દસી) સુઋપિ-યથાવત્ વસ્તુદર્શક (સુમુણી) સુમુનિ-જિનાજ્ઞા કા
આરાધક, આર (સુસજ્જણ) સુસયત પરમ યતના મેં પરાયણ હોતા હૈ ।
તથા (સ એવ ભિક્ષુ) વહી સચ્ચા ભિક્ષુ હૈ-સર્વ ત્યાગી-અથવા-
પરમ પુરુષાર્થ સાધક હૈ, (જો સુદ્ધ વ્રમચેર ચરઈ) જો હસ બ્રહ્મચર્ય કો
શુદ્ધ રીતિ સે પાલના હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા હસ બ્રહ્મચર્ય કી ગુણગરિમા
(મહિમા) કા હી કથન કિયા હૈ । વે કહતે હૈ કિ હસ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતકે
પૂર્ણરૂપસે આરાધિક હોનેપર સત્ય, શીલ આદિ જિતને ભી સદ્ગુણ હૈં વે
સબ આરાધિત હો જાતે હૈ । યહ બ્રહ્મચર્ય પચમહાવ્રતોં કા મૂલકારણ
હૈ । અતઃયાવજ્જીવ સાધુ કો હમમા સેવન કરતે રહના ચાહિયે । જિસ

“ સુદ્ધચરિણ જેણ સુવ્રમણો ભવઈ ” સારી રીતે આચરવામા આવેલ
આ બ્રહ્મચર્યથીજ મનુષ્ય સુવ્રાહ્મણ-આત્મ જ્ઞાનમા તત્પર થાય છે, “સુસમણો”
સુશ્રમણ-સુતપસ્વી—“ સુસાહુ ” સુસાધુ-નિર્વાણ સાધક, “સુર્દસી”સુઋપિ-યથાવત્
વસ્તુ દર્શક, “ સુમુણી ” જિન આજ્ઞાનો આરાધક, અને “સુસજ્જણ” સુસયત-
પરમ યતનામા પરાયણ થાય છે, તથા “સ એવ ભિક્ષુ ” તે જ સાચો ભિક્ષુ
છે-સર્વત્યાગી અથવા પરમ પુરુષાર્થ સાધક છે, “જો સુદ્ધ વ્રમચેર ચરઈ ” જે
આ બ્રહ્મચર્યને શુદ્ધ રીતે પાળે છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા બ્રહ્મચર્યના ગુણ ગૌરવનું જ વર્ણન કર્યું
છે તેઓ કહે છે કે આ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પૂર્ણ સ્વરૂપે આરાધના કરવામા
આવે તો સત્ય, શીલ આદિ જેટલા સદ્ગુણો છે તેમનું આરાધન આપોઆપ થઈ
જાય છે આ બ્રહ્મચર્ય પાત્ર મહાવ્રતોનું મૂળ કારણ છે તેથી સાધુએ જીવન-
પર્યંત તેનું સેવન કરવું જોઈએ જે રીતે મૂળ વિના કોઈ પણ વસ્તુની

ब्रह्मचारिणां किं निमनाचरणीयम् ? किं किं चाचरणीयम् ? इति दर्शयति—
' इमं च ' इत्यादि ।

मूलम्—इमं च रश्मिगदोसमोहपवड्डुणकरं किं मज्झिम्पमाय
दोसपासत्थसीलकरण अवभंगणाणि य तेहमज्झणाणि य
अभिवक्खणं कक्खसीसकरचरणवयणधोवणसंवाहणगायकम्मप-
रिमद्वणाणुलेवणचुण्णवासधूवणसरीरपरिमडणवाउसि य हसिय-
भणिय-नट्ट-गीय-वाइयनडनट्टग-जल्लमल्ल—पेच्छणवेलवगजाणिय
सिगारागाणि अण्णाणि य एवमाइयाणि तवसंजमवभचेर-
घाओवघाइयाइ अणुचरमाणेण वभचेर वज्जेयव्वाइ सव्वकालं।
भावेयव्वो भवइ अतरप्पा इमेहि तवनियमसीलजोगेहि णिच्च-
काल, किं ते, अण्हाणक अदंतधोवणसेयमल्लधारणमूणवयकेस-
लोयखमदमअचेलगखुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्टसेज्जाभूमिनि-
सेज्जपरघरप्पवेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिदण—दसमसकफास-
नियमतवगुणविणयमाइएहि जहा से थिरतरग होइ वभचेर॥सू ४॥

टीका—‘ इमं च ’ इत्यादि । ‘ इमं च ’ इदं च १५५मागम्—अवसन्नपार्श्व
स्थादीनामाचरणीयमाचारजातम्, ‘ रश्मिगदोसमोहपवड्डुणकर ’ रश्मिगद्वेषमो

प्रकार मूल के बिना किसी भी वस्तु की स्थिरता नहीं होती है—उसी
प्रकार इम एक व्रत के अभाव में किसी भी व्रत की किसी भी सद्गुण
की स्थिरता और शोभा नहीं होती है । इत्यादि रूप से इस सूत्र में
इसकी महत्ता का प्रदर्शन किया गया है ॥ सू० ३ ॥

अथ सूत्रकार ब्रह्मचारी को किस किस बात का आचरण करना

स्थिरता સભવી શકતી નથી, એ જ રીતે આ એક વ્રતનો અભાવ હોય તો
બીજા કોઈ વ્રત કે સદ્ગુણની સ્થિરતા અને શોભા સભવતી નથી । ઇત્યાદિ
રીતે આ સૂત્રમાં બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું મહત્ત્વ બતાવવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ. ૩ ॥

હવે બ્રહ્મચારીએ કેવા પ્રકારનું આચરણ કરવું જોઈએ અને કેવા

हमवर्द्धनकर, तत्र-रति' = विषयानुरागः, रागः = स्वजनेषु स्नेहः, द्वेषः = शत्रुभावः, मोहः = अज्ञानम्, एषा यत्प्रवर्द्धन = प्रवृद्धिस्तस्य कर = कारकम्, पुनः 'किमज्ज्ञ-पमायदोस-पासत्यशील-करण' किमध्यप्रमाददोषपार्श्वस्थशीलकरणम्-तत्र-किमध्य = किं = कुतिसित म ये यस्य तत्तथोक्तम्-असारमित्यर्थः, तथा-प्रमाददोषः, प्रमादोऽसावधानता, सएव दोषः = प्रमाददोषः, पार्श्वस्थशील = पार्श्वस्थाना = ज्ञानाचारादि बहिर्वर्तिना साध्याभामाना शीलम् = अनुष्ठान निष्कारणनित्यपिण्डपरिभोगादि, एतेषां करणम् = कारक भवति । सम्प्रति तदेव विशदयति- 'अवभगणाणि य' अभ्यञ्जनानि च = घृतनवनीतादिना शरीरमर्दनानि 'तेलमज्जणाणि य' तेलमज्जनानि च = तैलाभ्यङ्गपूर्वकस्नानानि, तथा-तथा- 'अभिमन्त्रण' अभीक्षणम्

चाहिये और किस किस का नहीं ? इस बात को प्रदर्शित करते हैं—
'इम च इत्यादि० ।

टीकार्थ—(इम च) यह वक्ष्यमाण अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील, ससक्त, यथाछद् साधुओं का आचार (रङ्गरागदोसमोहपवर्द्धनकर) रति-विषयों में अनुराग, राग-स्वजनों में स्नेह, द्वेष-शत्रुता, और मोह-अज्ञान, इनकी वृद्धिकरने वाला होता है और (किमज्ज्ञ-पमाय-दोस-पासत्य-शील-करण) किं मध्य-असार प्रमाददोषअसावधानता-रूप दोष का, पार्श्वस्थ शील-ज्ञानाचारादि से बहिर्भूत शिथिलाचारियों के अनुष्ठान का-निष्कारण नित्य पिण्डपरिभोगादिरूप स्वभाव का, जनक होता है । अब सूत्रकार इसी पार्श्वस्थ आदि के आचार को विशदरूप से समझाते हैं—(अवभगणाणि य) अभ्यग्न-घृत नवनीत आदिसे शरीर का मर्दन करना (तेलमज्जणाणि य) तेलका मालीस करना तथा

प्रकारनु न करवु लेई ओ ते सूत्रकार जतावे छे— 'इम च' इत्यादि—

टीकार्थ—“इम च” आ प्रमाणे जेवामा आवता अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील, ससक्त, स्वच्छ ही साधुओं का आचार “रङ्गरागदोसमोहपवर्द्धनकर” रति-विषयोमा आसक्ति, राग-स्वजनों पर स्नेह, द्वेष-शत्रुता अने मोह-अज्ञान, ओ सौनी वृद्धि करनार होय छे अने ‘किमज्ज्ञ-पमायदोस-पासत्य-शीलकरण’ किमध्य-असार, प्रमाददोष, -असावधानताउप दोषनु पार्श्वस्थशील-ज्ञानाचारादिथी जाह्य शिथिलता चारीओना अनुष्ठाननु, निष्कारण नित्य परि भोगादि रूप स्वभावनु जनक थाय छे हुवे सूत्रकार आ पार्श्वस्थ आदिना आचारने विस्तारपूर्वक समझावे छे—“अवभगणाणि य” अभ्यग्न-घी, माषण आदिथी शरीरने मालीस करवु, “तेलमज्जणाणि य” तेलनु मालीस करीने

=વારવારમ્, 'કમ્પ્લેક્ષસીસ કરચરણવયણધોવણસવાહણગાયકમ્પરિમદ્ગાણુલેવણ
 ચુણ્ણવાસધૂવણસરીરપરિમડણવાઝસિયહસિયભણિય નટ્ટગીયવાઙ્મનડ નટ્ટગજહ્રમ
 છપેચ્છણવેલગમ' કક્ષાશીર્ષકરચરણવદનવાચનમવાહનગાત્રકર્મપરિમર્દનાનુલેપનચૂ
 ણ્ણવાસધૂપનશરીરપરિમંડનવાકુશિત્ત્વસિત્તભણિતનાટ્યગીતવાદિતનટનર્તકજહ્રમહ્ર-
 મેક્ષણત્રિહમ્પક તત્ર-કક્ષા=વાહુદયમૂળાધોવર્તિસ્થાનમ્, શીર્ષ=શિરઃ, કરચરણ=
 પ્રસિદ્ધમ્, વદન=મુખ, તેષાંયદ્ધવાચનં=વક્તાવન, સવાધન=દસ્તામ્યાં પાદપીડન
 ગાત્રકર્મ=શરીરપરિકર્મ=સમર્દનાદિ કર્મપરિમર્દન=સર્વતઃ શરીરમર્દનમ્, તથા અનુલે-
 પનચૂર્ણવાસધૂપનશરીરપરિમંડનમ્, તત્ર અનુલેપનમ્=શરીરે ચન્દનાનુલેપનમ્, ચૂર્ણવાસ
 =સુગન્ધિદ્રવ્યચૂર્ણમ્, ધૂપનમ્=અગુરુધૂપાદિકરણમ્, શરીરપરિમંડનમ્=ચત્વાદિભિઃ
 શરીરશ્રુદ્ધારકરણમ્, તથા-વાકુશિક નલ્પાસ્ત્રકેશસમારચનમ્=ચકુશ=ચર્ચુરચારિત્ર
 તદેવપ્રયોજનસ્ય તદ્ વાકુશિક શ્રુદ્ધારપ્રયોજનક નલ્પકેશપલ્પસમારચનાદિક,
 હસિત=હાસઃ, ભણિત-સ્ત્રીણા વિકૃતભણનમ્, નાટ્ય=નટકર્મ, ગીત=ગાનમ્, વાદિ

(અભિક્ષણ કમ્પ્લેક્ષસીસ કર-ચરણ વયણ-ધોવણ સવાહણ ગાયકમ્પરિ
 મદ્ગાણુલેવેણ ચુણ્ણવાસધૂવણસરીરપરિમડણવાઝસિયહસિયભણિય ન
 ટ્ટ-ગીય વાઙ્મનડ નટ્ટગ જહ્રમ છપેચ્છણ વેલગમ) વારવાર કાલ મસ્તક-
 હાથ-પૈર ઓર મુહકા યોના, દોનો હાથોંસે શરીરકા દાવના, ગાત્રકર્મ-
 શરીર કી સફાઈ પર વિશેષ ધ્યાન રલ્પના પરિમર્દક-દૂસરો સે શરીર કો
 રાતદિન દવવાના, અનુલેપન શરીર પર ચન્દન કા વાર ૨ લેપ કરના, ચૂર્ણવાસ
 સુગન્ધિત દ્રવ્યો કે ચૂર્ણસે, ધૂપન અગુરુ આદિ કે ધૂપ સે શરીર કો અલકૃત
 કરના, તથા વાકુશિક-શ્રુગાર કે પ્રયોજન કો લેકર નલ્પ, વસ્ત્ર ઓર-
 કેશોં કો સમારના તથા હસિત-હાસકા હંસી મજાક-મશ્કરી આદિ
 કા કરના, ભણિત-સ્ત્રિયોં કે જૈસા ગાલી આદિ ભાણ્ડવચનોં કા બોલના

સ્નાન કરવુ, તથા “અભિક્ષણ કમ્પ્લેક્ષસીસ, કર, ચરણવયણ-ધોવણ-સવાહણ
 ગાયકમ્પરિમદ્ગાણુલેવણ-ચુણ્ણ-વાસધૂવણ-સરીર-પરિમડણવાઝસિયહસિય-ભણિય-
 નટ્ટ-ગીય-વાઙ્મનડ-નટ્ટગ-જહ્રમ-છપેચ્છણ-વેલગમ” વારવાર બગલ, માથુ,
 હાથ-પગ અને ઓને ધોવુ, અને હાથથી શરીરને દબાવવુ, ગાત્રકર્મ-શરીરની
 સ્વચ્છતા પર વધારે ધ્યાન આપવુ, પરિમર્દન-બીજા પાસે શરીરને રાતદિવસ
 દબાવવુ, અનુલેપન-વારવાર શરીરે ચન્દનનો લેપ કરવો, ચૂર્ણવાસ-સુગન્ધિત
 દ્રવ્યોના ચૂર્ણથી, ધૂપન અગુરુ આદિના ધૂપથી શરીરને અલકૃત કરવુ, તથા
 વાકુશિક-શ્રુગારને માટે નખ, વસ્ત્ર અને ડેશને સમારવા તથા હસિત-હંસી
 મશ્કરી આદિ કરવુ, ભણિત-સ્ત્રીઓના જેવી ગાળો આદિ અશિષ્ટ વચનો

तम्=पटहादिवादनम् तथा-नटाः-नाटयितार, नर्तकाः=नृत्यकारिणः, जल्ला =
चर्ममयरज्जुपरिन्त्यकारकाः, मल्ला.=मल्लयुद्धकारिणः, तेषां प्रेक्षणम्=अवलोकनम्
तथा-विडम्बकाः=विदूषकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, वर्जयितव्या इति योगः ।
तथा-‘जाणि य सिंगारागाराणि य’ यानि च शृङ्गारागाराणि च=शृङ्गारागारभूतानि
अङ्गचेष्टादीनि तानि तथा-‘अण्णाणि य’ अन्यानि च=एभ्य इतराणि च ‘एवमाड-
याणि’ एवमादिकानि=एव प्रकाराणि यानि ‘तव सजमवभचेरघाओवघाइयाइ’
तपः सयमब्रह्मचर्यं प्रातोपप्रातिकानि, तत्र तपः सयमब्रह्मचर्याणां घातो देशतः,
उपघातं सर्वतो जायते यद्वशात् तानि तथोक्तानि ‘वभचेर’ ब्रह्मचर्यम्, ‘अणु-
चरमाणेण’ अनुचरता=पालयता ‘सर्वकाल’ सर्वकाल-सदा ‘वज्जेयव्वाइ’
वर्जितव्यानि=त्याज्यानि भवन्ति, वर्जितव्यानीत्यस्यैकवचनविपरिणामेनान्यत्राऽ-
प्यन्वयो बोध्यः । तथा-‘भावेयव्वो य’ भावितव्यश्च भवति ‘अतरप्पा’ अन्त-
रात्मा=जीवः । कैर्भावितव्यो भवति ? इत्याह-‘इमेहि’ एभिः ‘तवणियमसील-

नाट्य-नाटक का देखना, गीत-गान का, वादित-पटह आदि बजते
हुए वाजों का सुनना, नट-नटों का, नर्तक-नृत्यकारी जनों का जल्ल-
जल्लों का-चर्ममयरज्जु के ऊपर नाचने वाले का, मल्ल-मल्लों के-बाहु
युद्ध का प्रेक्षण-रुचिपूर्वक अवलोकन करना, तथा-विडम्बकों-विदूषकों
को देखना यह सब वर्जना चाहिये तथा ‘जाणिय’ जो भी (सिंगारा-
गाराणि) शृंगार के आधारभूत ऐसे, तथा (एवमाडयाणि अण्णाणि य)
इसी तरह के और भी जो (तव सजमवभचेरघाओवघाइयाइ) तप,
सयम एवं ब्रह्मचर्य में एक देश से दूषण लगाने वाले हो अथवा सर्व-
देश से उनका घात करने वाले हों, इन सब को (वभचेर अणुचरमा-
णेण) जो इस ब्रह्मचर्य महाव्रत के पालन करने वाले सयमी जन
हैं उन्हें (सर्वकाल वज्जेयव्वाइ) सदा के लिये छोड़ देना चाहिये ।

जोखवा, नाटको जेवा, गीत तथा पटह आदि वाजि त्राने। अवाज
साधणवे, नटोना, नृत्य करनारना, यर्मभय होरडाओ। य० नाथनाराओना,
मल्लोना द्वयुद्धनु निरीक्षणु करवानु तथा विदूषडाने जेवानु ओ अधानो
त्याग करवे। जेधओ तथा “जाणिय” जे डोध “सिंगारागाराणि” शृंगारना साध-
नइप जेवा तथा “एवमाडयाणि अण्णाणिय” जेवा प्रकारनु भीलु पणु जे
उध “तवसजमवभचेरघाओवघाइयाइ” तप सयम अने ब्रह्मचर्यमा ओक
देशथी हूणु लगाउनार डोय अथवा सर्व देशनी तेभनो घात करनार
डोय, ते अधानो “वभचेरअणुचरमाणेण” जे आ ब्रह्मचर्य महाव्रतनु पालन
करनार सयमी जनो छे तेभले “सर्वकाल वज्जेयव्वाइ” मढाने भाटे त्याग करवे।

जोगेहि ' तपोनियमशीलयोगै = तपः प्रभृतिव्यापारैः ' निचकाल ' नित्यकाल = सर्वदाऽन्तरात्मा भावितव्य' । ' किं ते ' के ते = कथम्भूतास्ते तपोनियमशीलयोगाः ? इत्याह—' अण्हाणग अदतधोवणसेयमलजलधारणमूणवयकेसलोयखमदम अचेलग खुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ट-सेज्जाभूमिनिसेज्जापरघरप्पेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिदणदसमसगफासनियमतवगुणविणयमाइएहि ' अस्नानकादन्तधावनस्वेदमलजलधारणमौनव्रतकेशलोच क्षमादमाचेलकमुत्तिपासालाघवसीतोष्णकाष्ठशय्याभूमिनिपद्यापरगृहप्रवेशलधापलब्धमानापमाननिन्दनदशमशकस्पर्शनियमतवगुणविनयादिकैः—तत्र—अस्नानक=स्नानवर्जनम्, अदन्तधावन=दन्तधावनवर्जनम्, तथा—स्वेदमलजलधारण, तत्र—स्वेद = प्रस्वेद, मल=स्वेदरजः ससर्गात्समुत्पन्न प्रनीभूतम्

तथा (इमेहिं तवणियमसीलजोगे हिं) इन तप, नियम और शील-सदाचार, इन सबसे उस ब्रह्मचर्य महाव्रतधारी को (अतरप्पा) अपनी अन्तरात्मा (निचकाल) सर्वदा (भावियव्वो भवइ) भावित करना चाहिये । (किं ते) वे तप नियम-शील योग कौन हैं ? उन्हें दिखलाते हैं— अण्हाणग-अदतधोवणसेय-मल-जल-धारण-मूणवय-केसलोय-खमदम-अचेलग-खुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ट सेज्जा भूमिनिसेज्जा परघरप्पवेस-लद्धावलद्ध-माणावमाण-निदणदसमसगफासनियमतव गुणविणयमाइएहि) उस साधुके तप, नियम और शील इस प्रकारके होना चाहिये—वह साधु यावज्जीव स्नान न करे, अर्थात् उस महाव्रती को जीवन भर तक स्नान करने का त्याग कर देना चाहिये, कभी भी देतौन नहीं करना चाहिये, शरीर में प्रस्वेद—पसीना आता हो, तो उसे वायु आदि करके नहीं सुखाना चाहिये । इसपसीने में आकर

लेईये तथा 'इमेहिं तवणियम सीलजोगेहिं' ये तप, नियम, अने शील-सदाचार ये अधाधी ते ब्रह्मचर्य महाव्रतधारीये " अतरप्पा " पोताने अन्तरात्मा " निचकाल " सदा " भावियव्वो भवइ " भावित करवे। लेईये " किं ते " ते तप नियम-शीलयोग केवे। होय छे ते बतावे छे—" अण्हाणग-अदतधोवण-सेय-मल-जल-धारण-मूणवय-केसलोय-खमदम-अचेलग - खुप्पिवास - लाघव सीतोसिणकट्टसेज्जाभूमि-निसेज्जा -परघरप्पवेसलद्धावलद्धमाणावमाण निदणदसम सगफासनियमतवगुणविणयमाइएहि " ते साधननु तप, नियम अने शील आ प्रकारनु होवु लेईये—ते साधु जवन पर्यन्त स्नान न करे जेठले के आ महाव्रतधारीये। जे तया सुधी स्नान करवाने त्याग करवे। लेईये, कही पणु होतणु करणु लेईये नही, शरीर परसेवे। वणतो होय तो पवन नाभीने तेने सूखवे। लेईये नही, ते परसेवाभा रज्जु हो। चोटी गया होय तो तेने शरीर परथी दूर करवा लेईये नही जान, नाक आदि ध्रियेभा

जल्ल=कर्णनासिकादि मधुत्य मलम्, तेषा धारणम्, तथा-मानवतम्, केश-
लोचः, एतौ प्रसिद्धौ, क्षमा=कोपनिग्रह, दम.=इन्द्रियनिग्रह., अचेलकम्=धर्मोप-
करणातिरिक्तवस्त्राभाव, क्षुत्पिपासे प्रसिद्धे, लाघवम्=अल्पोपायित्वम्, शीतोष्णे
प्रसिद्धे, काष्ठशय्या=काष्ठफलकशयनम्, भूमिनिपट्टा=भूमाशुश्रूषणम्, तथा-पर
गृहप्रवेशल-वाप-व्यमानापमाननिन्दनानि, भिक्षार्थ परगृहप्रवेशः, तत्रापि लब्धा-
पलब्धौ=लाभालाभो, मानः=सम्मानः, अपमानः=अवमानना, निन्दन=कुत्सितव-
चन च, तथा-‘ दशमशकस्पर्शः=दशमशकगन्धनम्, तथा-नियमः=द्रव्याद्यभिग्रहः,

यदि रजःकण ससक्त हो गये हों तो उन्हें शरीर से नहीं छुड़ाना
चाहिये । कर्ण, नासिका आदि इन्द्रियो में लगे हुए मैल को भी दूर नहीं
करना चाहिये । मौनव्रत रखना चाहिये तथा अपने केशों का लौच
करना चाहिये । क्षमा-कोप का निग्रह करना दम-इन्द्रियों का निग्रह
करना चाहिये । अचेलक-धर्मोपकरणों के सिवाय अतिरिक्त वस्त्र नहीं
रखना चाहिये धुधा और पिपासा कि बाधा को सहना चाहिये । अल्प
उपधिरखना चाहिये, शीत और उष्ण जन्य परीपह को सहन करना
चाहिये । काष्ठ के फलक पर शयन करना चाहिये । जमीन पर बैठना
चाहिये । भिक्षा के निमित्त पर घर जाना चाहिये । भिक्षा का लाभ
हो अथवा न हो दोनों अवस्थाओं में समताभाव रखना चाहिये । मान
और अपमान में समवृत्ति रहना चाहिये । कीर्त अपनी निंदा करता
हो तो उसमें अक्षमता नहीं आनी चाहिये । दशमशकों को दशन-
रूपबाधा से उद्विग्न नहीं होना चाहिये । द्रव्यादि का अभिग्रह रूप
नियम का, अनशन आदि तपस्याओं का मूलगुणों का और अभ्युत्था

लागेला भेलने ठपेडवे। न लेधये मौनव्रत राखवु लेधये तथा पोताना
केशनो दोय डवे। लेधये क्षमा-कोपनो निग्रह करवे। लेधये, दम-इन्द्रि-
योनो निग्रह करवे। लेधये अचेलक-धर्मोपकरणो सिवाय वधाराना वस्त्रादि
राखवा लेधये नही, लूण अते तरसनी मुश्केली महन करवी लेधये,
थोडा न उपधि राखवा लेधये, शीत अने उष्णता जन्य परिपहो सहन
करवा लेधये लाड्डानी पाट पर सूवु लेधये, जमीन पर भेसवु लेधये
भिक्षाने निमित्ते पर घर जवु लेधये भिक्षानो लाभ भणे डे न भणे छता
पणु आ भन्ने परिस्थितिमा समभाव राखवे। लेधये मान अने अपमानमा
समवृत्तिथी रहेवु लेधये डोड पोतानी निंदा करतु होय तो तेथी अक्षमता
थवी लेधये नही। डस, भग्नरता डसडप मुश्केलीथी उद्विग्न थवु लेधये
नही। द्रव्यादिना अलिग्रह रूप नियमनु अनशन आदि तपस्याओंना भूण

अस्नानाऽदन्तधावनादीना सहनेन नियमाग्नीनामाचरणेन च सदात्मा सयो
जितव्य इत्यर्थः । किमर्थमित्याह—‘जहा’ यथा—येन कृत्वा ‘यमचेर’ ब्रह्मचर्यं
‘थिस्तरग’ स्थिस्तरकृत=सुम्हिर ‘होड’ भवति ॥ सू० ४ ॥

भावार्थ—ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी सकल सयमी जन अपने आचार विचार को इस प्रकार का स्पष्ट और निर्मल बनावे कि जिससे उनमें अवसन्न पार्श्वस्थ कुशील आदिपना लेशमात्र भी न आने पावे । साधु पर प्राप्त करके भी विषयों में अनुराग बना रखना स्वजनों में स्नेह रखना तथा द्वेषी के प्रति द्वेषभावन रखना, आदि परिणति अवसन्न पार्श्वस्थ साधुओं की है । शारीरिक सस्कार में ही विशेष ध्यान रखना, गीत नृत्य, वादित्र आदि में वित्त की प्रवृत्ति करना, तप सयम आदि की आराधना सिर्फ लक्ष्य न होना, ये सब ब्रह्मचर्य

ભાવાર્થ — પ્રહાર્ય મહાવ્રત ધારી સકલ સયમી જન પોતાના આચાર વિચારને એવા સ્વચ્છ અને નિમર્જ બનાવે કે જેથી તેમનામાં અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ આદિ સાધુઓના આચાર વિચારની ઝલક લેશમાત્ર પણ ન આવી શકે સાધુનું પદ પ્રાપ્ત કરીને પણ વિષયોમાં અનુરાગ ચાલુ રાખવો, સ્વજનો પ્રત્યે સ્નેહ અને દુશ્મનો પ્રત્યે દ્વેષ રાખવો આદિ પરિણતિ અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ સાધુઓની છે શારીરિક મસ્કારોનું જ વધારે ધ્યાન રાખવું, ગીત, નૃત્ય, વાજિત્ર આદિમાં ચિત્તને રોકવું, તપ, સયમ આદિની આરાધનાને જ લક્ષ્ય

મૂલમ્—ઇમ ચ અવભચેરવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ પાવયણં
ભગવયા સુકહિય અત્તહિય પેચ્ચાભાવિય આગમેસિમદ્ સુદ્ધનેયા-
ઉય અકુઢિલ અણુત્તર સર્વદુઃખપાપાણ વિઉસમણ ॥સૂ૦૫॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ—

‘ ઇમ ચ ’ ઇત્થ ચ ‘ પાવયણ ’ પ્રવચનમ્ ‘ અવભચેરવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ’
અવ્રહ્મચર્યવિરમણપરિરક્ષણાર્થે=ચતુર્યમદ્વાત્રતરક્ષણનિમિત્ત ભગવતા સુરુથિતમ્ આત્મ-
હિત, આત્મહિતકારકમ્ , આગમિષ્યદ્ મદ્ શુદ્ધ નેયાયિકમ્ અકુટિલમ્ અણુત્તર
સર્વદુઃખપાપાના વ્યુપશમનમ્ । એપામર્ય પૂર્વ તૃતીયસવરદ્વારે પ્રોક્તઃ ॥સૂ૦ ૫ ॥

કે ઘાતક હૈ, અતઃ સાધુ કો અપને મૂલ ગુણોં કી રક્ષા કરતે હુએ તપ
સયમ એવ બ્રહ્મચર્ય સે અપની આત્મા કો ભાવિત કરતે રહના ચાહિયે ।
હસ તરહ સે ડસકા બ્રહ્મચર્ય વ્રત દૃઢતમ્ હો જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૪ ॥

ફિર કહતે હૈ—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ પાવયણ) યહ પ્રવચન (અવભચેર વેરમણપરિ
રક્ષણદ્વયાણ ભગવયા સુકહિય) અવ્રહ્મચર્ય વિરમણ કી પરિરક્ષા કે
નિમિત્ત ભગવાન્ ને કહા હૈ । (અત્તહિય) યહ આત્મા કા હિતકારક હૈ,
(પેચ્ચાભાવિય) પરલોક મેં ભી શુભફલ કા દાતા હૈ । (આગમેસિ-
મદ્) હસી કારણ યહ ભવિષ્યત્ કાલ મે કલ્યાણપ્રદ કહા ગયા હૈ ।
(સુદ્ધ) નિર્દોષ હોને સે યહ શુદ્ધ હૈ । (નેયાઉય) વીતરાગ, સર્વજ્ઞ ઓર
હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા ભાપિત હોને સે ન્યાયસપત્ન હૈ । (અકુઢિલ)

ન ગણુવુ, એ ણધુ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ ધાતક થાય છે તો સાધુએ પોતાના મૂળ ગુણોની
રક્ષા કરતા કરતા તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યવ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતા રહેવું
જોઈ એ આ પ્રમાણે કરવાથી તેનું બ્રહ્મચર્યવ્રત વધારે દૃઢ થતું જાય છે ॥સૂ ૪ ॥

વળી સૂત્રકાર કહે છે— “ ઇમ ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ પાવયણ ” આ પ્રવચન “ અવભચેરવિરમણપરિ-
રક્ષણદ્વયાણ ભગવયા સુકહિય ” આ બ્રહ્મચર્ય વિગ્રમણની પરિરક્ષાને નિમિત્તે
ભગવાને કહેલ છે “ અત્તહિય ” તે આત્માને માટે હિતકારક છે, “ પેચ્ચાભા
વિય ” પરલોકમા પણ શુભ ફળ દેનાર છે “ આગમેસિમદ્ ” તે કારણે તે
ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણ કાયક બતાવવામા આવ્યું છે “ સુદ્ધ ” નિર્દોષ હોવાથી
તે શુદ્ધ છે “ નેયાઉય ” વીતરાગ, સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત
હોવાથી ન્યાય યુક્ત છે, ‘ અકુઢિલ ’ ઝગ્ગુભાવનું જનક હોવાથી અકુટિલ છે,

અથ ચતુર્થવ્રતસ્ય પञ्चभावनाः प्रतिपादयन् तत्र पूर्वमसक्तवासवसति नाम्नी
प्रथमा भावनामाह—‘ एयस्म ’ इत्यादि—

મૂલમ્—એયસ્સ इमा पञ्चभावणा चउत्थवयस्स हुति
अवभचेरवेरमणपरिव्रखणट्टयाए । पढम सयणासणघरदुवार
अंगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुकपसाहण
गणहाणिकावगासा अधगासा जे य वेसियाण अत्थतिट्ठति य
जत्थ इत्थियाओ अभिक्खण मोहदोसरइरागवद्वुणाओ कहिति
य कहाओ बहुविहाओ ते हु वज्जणिजा इत्थिससत्तसकिलिट्ठा ।
अण्णे वि य एवमाई य अवगासा ते हु वज्जणिजा, जत्थ
मणोविब्भमो वा भंगो वा भंसणा वा अट्ठ रुद्ध च होजा झाणं
त त च वज्जेज्जवजाभीरू अणायतणअतपत्तवासी । एवमसंस-
त्तवासवसहीसमिइजगेण भाविओ भवइ अतरप्पा आरयमणा
विरयगामधम्ममे जिइदिए वभचेरगुत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘ एयस्स ’ एतस्य ‘ चउत्थवयस्स ’ चतुર્थव્રतस्य ब्रह्मचर्याभिप्रेयस्य

ऋजुभाव का जनक होने से अकुटिल है । (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ठ होनेसे
अनुत्तर है । तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) समस्त दुःखोंके जनक
ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का यह उपशमकारक है ॥सू० ५ ॥

अब सूत्रकार इस चतुर्थ महाव्रत की पाँच भावनाओं को प्रति-
पादन करने के अभिप्राय से सर्वप्रथम अससक्तवासवसति नाम की

पहिली भावना को प्रकट करते हैं—‘ एयस्स ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एयस्स चउत्थवयस्स इमा पञ्च भावणा हुति) इस

“अणुत्तर” सर्व શ્રુત હોવાથી અનુત્તર છે, તથા ‘સવ્વદુક્ખપાવાણ વિઉસમણ’સમસ્ત
દુ ખોના જનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનું તેઉપશમ કરનાર છે સૂ ૫

હવે સૂત્રકાર આ ચોથા મહા વ્રતની પાંચ ભાવનાઓનું પ્રતિપાદન કર
વાને માટે સૌથી પહેલા “ અસસક્તવાસવસતિ ” નામની પહેલી ભાવનાનું
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે— “ એયસ્સ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ એયસ્સ ચઉત્થવયસ્સ इमा पञ्च भावणा हुति ” આ પ્રશ્નાર્થ

इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्चभावनाः, 'अवभचेरवेरमणपरिरक्खणद्वयाए' अवब्रह्मचर्य-
विरमणपरिरक्षणार्थ=चतुर्थव्रतरक्षणनिमित्त, 'हुति' भवन्ति । तत्र-'पढम'
प्रथमा=स्त्रीपशुपण्डकससक्ताश्रयवर्जनलक्षणा भावनामाह-'सयणासणघरदुवारअगण
आगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुगपसाहणगण्ढाणिकावगासा' शयनासन-
गृहद्वाराङ्गनाकाशगवाक्षशालाऽभिलोकनपश्चाद् वास्तुकप्रसाधनकस्नानिकावकाशाः
तत्र-शयन=शय्या, आसन=प्रसिद्धम्, गृह=गृहम्, द्वारम्=गृहद्वारम्, अङ्गणम्=
गृहाङ्गणम्, आकाशः=अनावृत स्थानम्, गवाक्षो=वातायनम्, शालाः=भाण्ड-
शालादयः, अभिलोकनम्=अभिलोक्यते दूरस्थित वस्तु यदास्थाय तद् अभिलोक
नम्=उन्नत स्थानम्, तथा-पश्चाद्-वास्तुक=पृष्ठभागवर्तिगृह, तथा-प्रसाधनकस्य
मण्डनस्य स्नानिकायाः=स्नानक्रियायाश्च येऽवकाशाः=गृहाः, एषा द्वन्द्वः, एते
स्त्रीससक्तेन सक्लिष्टा वर्जनीयाः । तथा-'जे य' ये च 'अवकासा' अवकाशा

ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थव्रत की ये वक्ष्यमाण पांच भावनाएँ हैं । इनसे
(अवभचेरविरमणपरिरक्खणद्वयाए) अब्रह्मचर्य विरमण रूप ब्रह्मचर्य-
व्रत की अच्छी तरह से रक्षा होती है । (पढम) इनमें स्त्री, पशु पण्डक
से ससक्त वसति का वर्जने करने रूप प्रथम भावना है । वह इस
प्रकार है— (सयणासणघरदुवारअगणआगासगवक्खसाला अहि-
लोयणपच्छवत्थुग) शयन-शय्या, आसन, गृह द्वार, आगन, खुला,
हुआ स्थान, झरोखा, शाला, अभिलोकन-वह स्थान कि जिसके
सहारे से दूर की वस्तु देखी जा सके ऐसी ऊँची जगह पश्चाद् वास्तुक-
पीछे के भाग में रहा हुआ घर, तथा (पसाहणग-ण्ढाणीकावासा)
मंडन घर और नहाने के घर, ये सब यदि स्त्रियों से ससक्त हों तो
साधु का कर्त्तव्य है कि वह इनका परित्याग करे । तथा-(जे य अव-

નામના ચોથા વ્રતની આ પ્રમાણે પાંચ ભાવનાઓ છે તેમનાથી “ અવભચેર
વિરમણપરિરક્કણદ્વયાએ ” આ બ્રહ્મચર્ય વિરમણ રૂપ બ્રહ્મચર્ય વ્રતની સારી
રીતે રક્ષા થાય છે “ પઢમ ” તેમા સ્ત્રી, પશુ, પંડકના સસર્ગથી યુક્ત
વસવાટનો ત્યાગ કરવા રૂપ પહેલી ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે-“ સયના
સણઘરદુવારઅગણઆગાસગવક્કસાલા અહિલોયણપચ્છવત્થુગ ” શયન--શય્યા,
આસન, ગૃહ, દ્વાર, આગણ, ખુલ્લી જગ્યા, ઝરુખે, શાલા, અભિલોકન-એવી
ઉચી જગ્યા છે જ્યાંથી દૂરની વસ્તુઓ દેખી શકાય, પશ્ચાદ્વાસ્તુક-પાછળના
ભાગમા આવેલું ઘર, તથા “ પસાહણગ-ણ્ઠાણિકાવાસા ” મંડન ઘર અને
નહાવાના ઘર, એ બધા સ્થાનો જે સ્ત્રીઓથી યુક્ત હોય તો તેમનો પરિ-
ત્યાગ કરવો તે સાધુનું કર્તવ્ય છે તથા “ જે ય અવગાસા ” જે સ્થાન

गृहा = स्थानानीत्यर्थ, 'वेसियाणं' वेश्यानाम् 'अट्ट' अर्थ = निमित्त 'तिट्ठन्ति' तिष्ठन्ति = सन्ति, तथा—'जत्थ' यत्र 'इत्थियाओ' स्त्रियो हि 'अभिकखण' अभीक्षण = मुहुर्मुहु 'मोहदोसरइरागवड्डणाओ' मोहदोषरतिरागवर्धनाः = मोहदोषरहरागान् वर्द्धयन्ति यास्ताः = मोहाद्विद्विद्धिकारिण्य इत्यर्थः, 'बहुविहाओ' बहुविधाः—जातिकुलरूपनेपथ्यविपयाः 'कहाओ' कथाः 'कहेंति' कथयन्ति, 'ते खलु' इत्थी ससत्तसकिलिद्धा' स्त्रीससत्तसकिलिद्धाः = स्त्रीससर्गयुक्ता गृहाः, 'वज्जणिज्जा' वर्जनीया भवन्ति । तथा—'अण्णे वि' अयेऽपि च 'एवमाई' एवमादय—एव प्रकारा येऽवगाशा भवन्ति, 'ते हु' ते खलु 'वज्जणिज्जा' वर्जनीया भवन्ति । किं बहुना—'जत्थ' यत्र यत्र—उत्तरत्र 'त त' इति वीप्सा—प्रयोगादत्रापि वीप्सा बोद्धव्या, ज्ञायते, 'मणो विव्वमो वा' मनो विभ्रमो वा = श्रृङ्गाररससमुत्पन्न चित्तस्याऽस्थिरत्वम्, 'भगो वा' ब्रह्मचर्यस्य सर्वभङ्गः,

गासा) जो स्थान (वेसियाण अट्ट—तिट्ठन्ति) बैठ्याओ के निमित्त बने हुए हों तथा (जत्थ) जिन स्थानों पर बैठ कर (इत्थियाओ) स्त्रिया (अभिकखण) बार बार (मोहदोसरइराग वड्डणाओ) मोह दोषरति और रागको बढ़ानेवाली (बहुविहाओ) विविध प्रकारकी (कहाओ) कथाओंको (कहेंति) कहती हों, (ते हु) वे स्थान (इत्थी ससत्त सकिलिद्धा) स्त्रीयोंसे ससत्त होनेके कारण साधुको उनका परित्याग कर देना चाहिये । तथा (अण्णे वि) और भी कोई (एवमाई य अवगासा) ऐसे स्थान हों तो (ते हु) उनका भी साधु को (वज्जणिज्जा) परित्याग कर देना चाहिये । अधिक और क्या कहा जाय (जत्थ जत्थ) जिस २ स्थान पर साधु का (मणोविव्वमो) मन विभ्रम युक्त बन जावे (वा) अथवा (भगो) उसके ब्रह्मचर्य व्रत का भंग होने की संभावना (वा) अथवा

“ वेसियाणअट्ट—तिट्ठन्ति ” वेश्याओंने निमित्त बनेवा डोय, तथा “ जत्थ ” ने स्थानों पर जेसीने “ इत्थियाओ ” स्त्रीओ “ अभिकखण ” बार बार “ मोहदोसरइरागवड्डणाओ ” मोह, दोष, रति अने रागरे बढ़ावनारी “ बहुविहाओ ” विविध प्रकारनी “ कहाओ ” कथाओ “ कहेंति ” कहेती डोय “ ते हु ” ते स्थान “ इत्थी ससत्त सकिलिद्धा ” स्त्रीओथी युक्त होवाने कारणे साधुओओ तेमने परित्याग करवे जेधओ तथा “ अण्णे वि ” ओवा भीअ पणु केध “ एव माईय अवगासा ” स्थान डोय तो “ ते हु ” तेमने पणु साधुओ “ वज्जणिज्जा ” परित्याग करी देवे जेधओ पधु शु डहु । “ जत्थ जत्थ ” ने ने स्थान पर साधुनु “ मणोविव्वमो ” मन विभ्रमयुक्त जनी जय “ वा ” अथवा “ भगो ” तेना ब्रह्मचर्य व्रतना भङ्गनी शक्यता

‘ भसणा वा ’ भ्रशना वा = प्रह्वचर्यस्य देशतो भद्रो वा, तथा—‘ अट्ट ’ आर्त्तम् = इष्ट सयोगाभिलाषरूपम्, ‘ रुद्ध ’ रौद्र तदुपायभूतहिंसाऽनृतादत्तादानग्रहणानु-
बन्धरूपम्, ‘ ज्ञाण ’ ध्यान ‘ होज्जा ’ भवेत् ‘ त त च ’ ततच्च ‘ वज्जेज्ज ’
वर्जयेत्, कः ? इत्याह—य ‘ वज्जभीरुः ’ अवयभीरुः = सावयवमतिवासजन्य-
पापभीरुः, अत एव—‘ अणायतणअतपतवासी ’ अनायतनान्तप्रान्तवासी न आय-
तन स्त्रीपशुपण्डकानामित्यनायतनम्, स्त्रीपशुपण्डकरहितमित्यर्थः, अन्तम् = इन्द्रिया
ननुकूल, पर्णकुट्यादि, प्रान्त = तदेव प्रकृष्ट श्मशान-शून्यगृहवृक्षमूलादिक वा स्थान
तत्र वस्तु शील यस्यासौ—निर्दोष वसतिवासीत्यर्थः, स तादृश स्थान वर्जयेदिति
भाव । उपसहरन्नाह—‘ एव ’ एवम् = अनेन प्रकारेण ‘ अससत्तवामवसइसमिइ-
जोगेण ’ अससक्तवासवसतिसमितियोगेन = अससक्तः = स्त्रीपशुपण्डकसंसर्गरहितो यो

(भसणा) एक देश से वह भग होने की संभावना हो तथा (अट्ट
रुद्ध च ज्ञाण होज्जा) इष्ट सयोगाभिलाषरूप आर्त्तध्यान, हिंसा, झूठ,
चोरी आदि में आनंद मानने रूप रौद्रध्यान, उसके चित्त में जग जाने
की संभावना हो, तो साधु को (त त च) उस स्थान का (वज्जेज्ज)
परित्याग कर देना चाहिये । क्यों कि साधु (अवज्जभीरु) सावय-
वसति वास जन्य पाप से सदा भीरु-डरने वाला होता है । (अणाय-
तणअंतपतवासी) आर वह ऐसे ही निर्दोष स्थान में ठहरता है कि
जहां स्त्री, पशु, पण्डक नहीं रहते हो, तथा जो अपनी इन्द्रियों के अनु-
कूल न हो, किन्तु श्मशान, शून्यगृह, वृक्षमूल आदिरूप हो । इसलिये
जब सिद्धांत में निर्दोष वसति में ठहरने की आज्ञा प्रभु की है तो यह
वातनिश्चित है कि वह सदोषवसति में न ठहरे । (एव अससत्तवाम-

“ वा ” अथवा “ भसणा ” એક દેશથી તેમાં ભગ થવાની સંભવિતતા હોય
તથા “ અટ્ટ રુદ્ધ ચ જ્ઞાણ હોજ્જા ” ઇષ્ટ મયોગાભિલાષા રૂપ આર્તધ્યાન,
હિંસા, જૂઠું, ચોરી આદિમાં આનંદ માનવારૂપ રૌદ્રધ્યાન, તેના ચિત્તમાં ઉત્પન્ન
થવાની શક્યતા હોય તો સાધુએ “ ત ત ચ ” તે તે સ્થાનનો “ વજ્જેજ્જ ”
પરિત્યાગ કરી દેવો. જોઈએ કારણ કે સાધુ “ અવજ્જ-भीरु ” સાવય વસતિ
વાસ જન્ય પાપોથી મદા ડરનાર હોય છે “ અણાયતણ અતપતવાસી ” અને
તે એવા નિર્દોષ સ્થાનમાં રહે છે કે જ્યાં સ્ત્રી, પશુ, પંડક ગહેતા હોય નહીં
તથા જે પોતાની ઇન્દ્રિયોને અનુકૂળ ન હોય, પણ શ્મશાન, ખાલી મકાન,
વૃક્ષમૂળ આદિ રૂપે હોય તેથી નિર્દોષ વસતિ (વસવાટ) માં રહેવાની
સિદ્ધાંતમાં પ્રભુએ આજ્ઞા આપેલી છે તો એ વાત નિશ્ચય જ છે કે તેમણે
સદોષ વસતિમાં રહેવું જોઈએ નહીં “ એવ અસસત્તવાસવસતિસમિજ્જોગેણ ”

વાસ.=સ્થાનમ્ તત્ર યા વસતિ:=નિવાસસ્તદ્રૂપો યઃ સમિતિયોગસ્તેન 'ભાવિઓ' ભાવિત:=વાસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીવઃ 'આરયમણા' આરતમના-આ=સમન્તાત્ રત=વ્રત્તચર્યે સમક્ત મનો યસ્ય સ તથા, પુનઃ-વિરયગામધમ્મે 'વિરતગ્રામધર્મઃ'=નિવૃત્તો ગ્રામધર્માત્=મૈથુનાદ્ ય સ તથા, અત એવ- 'જિહ્દિષ' જિતેન્દ્રિય =વશીકૃતેન્દ્રિયઃ, 'વમચેરગુત્તે' વ્રત્તચર્યગુપ્તઃ=નવરિપ વ્રત્તચર્યમહિતઃ દશવિધવ્રત્તચર્ય-સમાધિસ્થાનયુક્તો યા 'ભવઈ' ભવતિ ॥મૂં ૬ ॥

વસતિ સમિહજોગેણ) હસ પ્રકાર સ્ત્રી, પશુ, પડક્ર કે સમર્ગ સે રહિત સ્થાન મેં ઠહરને રૂપ સમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા) ભાવિત અતરાત્મા-મુનિ (આરયમણા) સર્વ પ્રકાર સે વ્રત્તચર્ય વ્રત મેં સસક્ત મન વાલા હો જાતા હેં ઓર—(વિરયગામધમ્મો) ગ્રામધર્મ-મૈથુન સે વિરત હો જાતા હેં । અતએવ-વહ (જિહ્દિષ વમચેરગુત્તેભવઈ) જિતેન્દ્રિય વનકર નવવિધવ્રત્તચર્ય કી ગુપ્તિ સે અથવા દશવિધ વ્રત્તચર્ય સમાધી સ્થાન સે યુક્ત વન જાતા હેં ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને વ્રત્તચર્ય વ્રત કો સ્થિર રલ્લને વાલી પાચ ભાવનાઓ મેં સે પ્રથમ સ્ત્રીપશુ પડક્ર સેવિત શયનાસન વર્જન રૂપ ભાવના યા સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કિયા હેં । સાધુજન કો એસી હી વસતિ-સ્થાન મેં નિવાસ કરને કો પ્રભુ કી આજ્ઞા હેં કિ જો નિર્દોષ હો । સ્ત્રી પશુ પડક્ર આદિ કે સમર્ગ સે રહિત હો । વધો કિ એસે સ્થાન મેં નિવાસ કરને સે સાધુ કે વ્રત્તચર્ય વ્રત કા દેશ સે ભગ અથવા સર્વથા ભગ હો સકતા હેં । તથા જિસ સ્થાન પર બેઠકર સ્ત્રિયા વિવિધ

આ રીતે સ્ત્રી, પશુ, અને પડક્રના સસર્ગથી રહિત સ્થાનમા રહેવા રૂપ સમિતિના યોગથી “ભાવિઓ અતરપ્પા” ભાવિત અતરાત્મા-મુનિ “આરયમણા” દરેક પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા દૃઢ મનવાળા થઈ જાય છે અને “વિરયગામધમ્મો” ગ્રામધર્મ-મૈથુનથી મુક્ત થઈ જાય છે તેથી તે “જિહ્દિયવમચેરગુત્તે ભવઈ” જિતેન્દ્રિય થઈને નવ વિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યસમાધિ સ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતને સ્થિર રાખવાની પાચ ભાવનાઓમાથી સૌથી પહેલી સ્ત્રી, પશુ, પડક્ર સેવિત શયનાસન વર્જનરૂપ ભાવનાનું સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કર્યું છે સાધુજનોને એવા સ્થાનમા વસવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે કે જે નિર્દોષ હોય, સ્ત્રી, પશુ, પડક્ર આદિના સસર્ગથી રહિત હોય કારણ કે એવા સ્થાનમા વસવાથી સાધુના બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો અશત ભગ થાય છે અથવા સર્વથા ભગ થઈ શકે છે, તથા જે સ્થાને બેસીને

द्वितीया स्त्रीकथाविरतिनाम्नी भावनामाह—'वीय' इत्यादि—

मूलम्—वीय नारीजणरस मज्जे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विव्वोकविलाससपउत्ता हास सिगार लोइयकहव्व मोहजणणी न आवाहवरकहाविय इत्थीणं वा सुभगदुब्भ-
गकहाचउसट्ठि महिलागुणाणं च न देसजातिकुलरूवणाम-
नेवत्थपरिजणकहाओ इत्थियाण अण्णावि य एवमाइयाओ
कहाओ सिगारकलुणाओ तवसंजमवभचेरघाओ वघाइयाओ
अणुचरसाणेण वंभचेर न कहंयव्वा न सुणेयव्वा न चित्ति-
यव्वा । एवं इत्थीकहा विरइजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा
आरयमणा विरयगामधम्मं जितिदि ए वभचेरगुत्ते ॥सू०७॥

प्रकार की शृंगार आदि वर्धक कथाएँ किया करती हों, जो स्थान
वेश्याओं के लिये निर्मित हुए हों, जो मन-क्षोभ कारक हों, आर्त्त-रौ-
द्रध्यान के प्रवर्तक हों, ऐसे भी स्थानों में साधु को नहीं टहरना
चाहिये, किन्तु जो स्त्री आदि के ससर्ग से रहित हों, इन्द्रियों में क्षोभ
कारक न हों ऐसे उमशान, गृह्य गृह आदि स्थानों में ही साधु को
निवास करना चाहिये । इस प्रकार इस अससक्तवासवसति नामक
प्रथम भावना से भावित हुआ जीव ब्रह्मचर्य व्रत की सर्वप्रकार से
रक्षा करता हुआ मैथुन से विरक्त होकर उसकी नौ कोटि से पूर्ण-
पालना करने में सावधान रहना है ॥ सू०६ ॥

श्रीश्री विविध प्रकारनी शृंगार आदि वर्धक उथाश्री कडेती डोय, ले स्थान
वेश्याश्री माटेले जनाव्या डोय, ले मनमा क्षोभ करना डोय, आर्त्त रौद्र
ध्यान तरङ्ग होरनार डोय, जेवा स्थानोमा पणु माधुश्री वसवु जेधजे
नडी, पणु ले स्थान श्री आदिना न ससर्गथी रहित डोय, इन्द्रियोमा क्षोभ
करनार न डोय जेवा उमशान, जाली घर आदि स्थानोमा माधुश्री निवास
करवा जेधजे आ प्रकारे आ “अससक्त वाम वसती” नामनी लावनाथी
भावित थयेले जेव ब्रह्मचर्य व्रतनी दरेक गीते रक्षा कर्तो मैथुनथी रहित
जनीने तेनु नव प्रकारे पालन करवामा सावधान रहे छे ॥ सू ६ ॥

ટીકા—‘વીય’ દ્વિતીયા સ્ત્રીકથાવિરતિલક્ષણા માત્રનામાહ—

‘નારીજણસ્સ’ નારીજનસ્ય=સ્ત્રીપરિવદો ‘મજ્ઞે’ મધ્યેઽન્તરાલે ન=નૈવ
‘કહેયવ્વા’ કથયિતવ્વા ‘કહા’ કથા=પ્રાચ્યપ્રગ્નધરૂપા । કથામેવ વિશિનટિ-
‘વિચિત્તા’ વિચિત્રા=વિચિત્રવૃત્તાન્તસમન્વિતા, તથા—‘વિવ્વોકવિલાસસપડત્તા’
‘વિવ્વોકવિલાસસપ્રયુક્તા’—‘વિવ્વોકઃ=અત્યભિમાનપ્રશાદિષ્ટેઽપિ વસ્તુન્યનાદર-
કરણમ્, તદુક્તમ્—‘વિવ્વોકસ્ત્વતિર્ગર્વેણ વસ્તુનીષ્ટેઽપ્યનાદરઃ, ઇતિ । વિલાસઃ=
સ્થાનાસનગમનાનાં હસ્તભ્રૂનેત્રકર્મણા ચૈવ યો વિશેષઃ સઃ, તદુક્તમ્—‘સ્થાનાસન-
ગમનાના હસ્તભ્રૂનેત્રકર્મણા ચૈવ ।

ઉત્પદ્યતે વિશેષો યઃ શ્રુષ્ટઃ સ તુ વિલાસ’ સ્યાત્ ॥ ” ઇતિ । વિવ્વોકવિ-

અવ સૂત્રકાર સ્ત્રીકથાવિરતિ નામકી દ્વિતીય ભાવના કો પ્રદર્શિત કરતે હૈં—‘વીય નારીજણસ્સ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ--(વીય દૂસરી સ્ત્રીકથાવિરતિ નામકી ભાવના હસ પ્રકાર સે હૈં- (નારીજણસ્સ મજ્ઞે) સ્ત્રીયોં કૈ બીચ મેં બેઠકર સાધુ કો (કહા) કથાઈ કિ જો (વિચિત્તા) વિચિત્ર વૃત્તાન્તો સે યુક્ત હોં (વિવ્વોકવિલાસસપડત્તા) ઇષ્ટ વસ્તુ મેં ભી અનાદર કરાને વાલી હોં તથા વિલાસભાવ વઢાનેવાલી હોં (ન કહેયવ્વા) નહીં કરના ચાહિયે । અતિ અભિમાન કૈ વશ સે ઇષ્ટ વસ્તુ મેં ભી અનાદર કરના હસકા નામ વિવ્વોક હૈ, તથા સ્થાન, આસન, ગમન મેં ઇય હસ્ત, શ્રૂ, નેત્ર હન કી ક્રિયાઓં મે વિશેષતા આના હસકા નામ વિલાસ હૈ । યે દોનોં પ્રકાર કી વિશેષ ચેષ્ટાઈ સ્ત્રીયોં મે શૃંગારભાવજનિત હુઆ કરતી હૈં । વિવ્વોક ઔર વિલાસ હન દોનોં સે જો કથાઈ યુક્ત હો વે સાધુ કો

હવે સૂત્રકાર “સ્ત્રીકથાવિરતિ” નામની બીજી ભાવના બતાવે છે—
“વીય નારી જણસ્સ” ઇત્યદિ—

ટીકાર્થ—‘વીય’ સ્ત્રી કથા નામની ભાવના આ પ્રમાણે છે—“નારીજણસ્સ મજ્ઞે” સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને સાધુએ એવી “કહા” કથાઓ કે જે “વિચિત્તા” વિચિત્ર વર્ણનો વાળી હોય “વિવ્વોકવિલાસસપડત્તા” ઇષ્ટવસ્તુમાં પણ અનાદર કરાવનારી હોય તથા વિલાસભાવ વધાવનારી હોય “ન કહેયવ્વા” તે કહેવી બેઠકે નહીં અતિ અભિમાનને વશ થઈને ઇષ્ટ વસ્તુનો પણ અનાદર કરવો તેને વિવ્વોક કહે છે, તથા સ્થાન, આસન, ગમનમાં અને, હાથ, શ્રૂ નેત્ર વગેરેની ક્રિયામાં વિશેષતા આવે તે વિલાસ ગણાય છે એ બંને પ્રકારની વિશેષ ચેષ્ટાઓથી સ્ત્રીઓમાં શૃંગાર ભાવ પેદા થાય છે વિવ્વોક અને વિલાસ એ બંનેથી

લાસી=સ્ત્રીના શ્રુત્તારભાવજનિતાં ચેષ્ટાવિશેષો, તામ્યા સમયુક્તાઃ, તથા—'હાસસિંગારલોહ્યકહા' તત્ર હાસશ્રુત્તારલૌકિકકથા=હાસ્યઃ=હાસ્યસ્થાયિભાસો રસવિશેષઃ, શ્રુત્તારઃ=રતિસ્થાયિભાસોરસવિશેષ, એતત્પ્રધાના યા લૌકિકીકથા સા તથા, 'મોહજળણી' મોહજનની=મોહોદીરિકા કથા ન વક્તવ્યા । તથા—'આવાહવિવાહવરકહાવિય' આવાહવિહારવરકથાપિ ચ=આવાહઃ=અભિનયપરિણીતસ્ય વધૂવરસ્ય આનયનમ્, વિવાહઃ=પાણિગ્રહણમ્, તત્પ્રધાના યા વરકથા=પરિણેતૃકથા સાઽપિ ચ ન વક્તવ્યા । તથા—'ઇત્થીળ' સ્ત્રીના 'સુભગદુઃભગકહા' સુભગદુઃભગકથા="ઇદ-ગ્નેત્રનાસિકાકપાલાદિયુક્તા ચ સ્ત્રી દુઃભગા ભવતિ" ઇત્યાદિરૂપા કથા વા ન

સ્ત્રિયોં કે વીચ વેઠકર કમી નહીં કહના ચાહિયે, કયોં કિ એસી કથાઓં કે કહને મેં રાગભાવ કી સયુક્તતા સાધુ કે જાની જાતી હૈ । ડસસે ઉસકે વ્રહ્મચર્યવ્રત મેં દોષ આના હૈ । ડસી તરહ (હાસસિંગારલોહ્યકહા) જો લૌકિક કથા હાસ્ય ઔર શ્રુગારરસ પ્રધાન હો, તથા (મોહજળણી) મોહ કી જનક હો વહ બી નહીં કહના ચાહિયે । તથા (આવાહવિવાહ-વરકહાવિય) જો કથા નવ દપતિયોં કે આગમન સે સવધ રલ્લતી હોં, અર્થાત્—જિસ કથા કા વિષય નવ પરિણિત વધૂ ઔર વર કે સવધ કો લિયે હુણ તથા જિસ કથા મેં વિવાહ સવધી ચર્ચા હો, એસી આવાહ ઔર વિવાહ પ્રધાન વાલી વરકથા બી સાધુ કો નહીં કહની ચાહિયે । ડસી તરહ (ઇત્થીળ વા સુભગદુઃભગકહા) સ્ત્રિયોં સવધી સુભગ દુઃભગ કથા બી નહીં કહના ચાહિયે, અર્થાત્—'ડસ પ્રકારકે નેત્ર, નાસિકા ઔર કપાલ આદિવાલી સ્ત્રી સુભગ હોતી હૈ ઔર ડસ પ્રકારકે નેત્ર નાસિકા,

યુક્ત હોય તેવી ડથાઓ સાધુએ સ્ત્રીઓની વચ્ચે જોસીને કહી પણ કહેવી જોઈએ નહી, કારણ કે એવી ડથાઓ કહેવામા રાગ ભાવની સયુક્તતા આવી જાય છે તેથી બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા દોષ આવી જાય છે એ જ રીતે "હાસ સિંગારલોહ્યકહા" જે લૌકિક કથા હાસ્ય અને શ્રુગાર રસ પ્રધાન હોય, તથા "મોહજળણી" મોહ પેદા કરનાર હોય, તે પણ કહેવી જોઈએ નહી તથો "આવાહવિવાહવરકહાવિય" જે ડથા નવ દપતિઓના આગમન સાથે સવધ ધરાવતી હોય, એટલે કે જે ડથાનો વિષય નવ પરિણિત વધૂ અને વરના સવધમા હોય, તથા જે ડથામા વિવાહ સવધી ચર્ચા આવતી હોય, એવી આવાહ અને વિવાહ પ્રધાન વર કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહી એ જ પ્રમાણે "ઇત્થીળ વા સુભગદુઃભગકહા" સ્ત્રીઓ સવધી સુભગ, વિરળ કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ નહી, એટલે કે "આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને કપાળવાળી સ્ત્રી સુભગ હોય છે અને આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને

વક્તવ્યા । તથા-‘ચતુસદ્વિમહિલાગુણા’ ચતુષ્પદ્વિમહિલાગુણા = શાલિન્દ્રનાદીનામદ્વાનાં
પ્રત્યેકસ્યાષ્ટત્રિધત્વેન ચે ચતુષ્પદ્વિસરપકા મહિલાગુણાસ્તેઽપિ ચ ન વક્તવ્યાઃ ।
તથા-‘દેસજાતિકુલરૂપનામનેવત્યપરિજનકહાઓ’ દેશજાતિકુલરૂપનામનેવત્ય
પરિજનકથાઃ તત્ર-દેશકથા=આદિદેશમમ્પન્નિસ્ત્રીણા વર્ણનમ્, યથા-‘લાટયઃ

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, ठन्न प्रकार के स्त्रियों की
सुभगता और दुर्भगता से मय प्र रखने वाली कथा भी साधु को नहीं
कहना चाहिये । तथा (चतुसद्वि महिलागुणाण च) जिस कथा में
स्त्रियों के चौसठ गुणों से संबंध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को
लेकर जो कथा चलती हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये । आलि-
ङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, उस तरह
 $8 \times 8 = 64$ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये हैं । सो ये चौसठ
६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये ।
तथा (देसजाति कुलरूपनामनेवत्यपरिजणकहाओ इत्थियाग अण्णावि य
एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ सजमवभचेर वाओवघाड्याओ बभचेर
अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चित्थियव्वा) देश, जाति, कुल,
रूप, नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे संबंध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी
नहीं कहनी चाहिये-लाटादि-देश सम्बंधी स्त्रियों का वर्णन जिस कथामें
होता है वह देश कथा है, जैसे-लाट देश की स्त्रिया बहुत ही कोमल-

કપાળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે ” આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા
સાથે સબંધ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં “ચતુસદ્વિ
મહિલા ગુણાણ ચ ” જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણો સાથે સબંધ હોય
એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતા હોય તે પણ
સાધુએ કહેવી જોઈએ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાનો પ્રત્યેક ગુણ
આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે $8 \times 8 = 64$ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ
ખતાવ્યા છે તે તે ચોસઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામાં ચર્ચવાને
યોગ્ય નથી તથા “દેસજાતિકુલરૂપનામ-નેવત્ય-પરિજન-કહાઓ” આલિંગન અણ્ણા
વિ ચ એવમાઈયાઓ કહાઓ સિંગારકલુણાઓ સજમવમચેરવાઓવઘાડ્યાઓ બમચેરઅણુ
ચરમાણેણ ન કહેયવ્વા ન સુણેયવ્વા ન ચિત્થિયવ્વા” દેશ, જાતિ કુળ, રૂપ, નામ, નેપથ્ય,
પરિજન, વગેરે સાથે સબંધ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી જોઈએ
નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના વર્ણન જે કથામાં હોય તે દેશ કથા છે,
જેમકે “લાટ દેશની સ્ત્રીઓ ખડુ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

કોમલવચનાઃ इति निपुणा या भवन्ती ” त्यादि । जातिक्रया=ब्राह्मणादिजाति
समन्धिक्रया, यथा-“ विग्नान्नगीर्धराभावे या जीवन्तिमृता इव । धन्यामन्ये
रूढीः पतिलक्षेऽप्यनिन्दिताः ॥

કુલક્રયા, યથા-અહો ચૌલુક્યપુત્રીના સાહસ જગતોડધિકમ્ ।

પત્યા મૃતે વિગ્નત્યગ્નિ યાઃ પ્રેમરહિતા અપિ” इति । रूपक्रया-

યથા-ચન્દ્રવન્દ્યા સરોજાક્ષી, સહીઃ પીનધનસ્તની ।

કિંચાદીનો મતા સા સ્યા, દેવાનામપિ દુર્લભા ॥ ૧ ॥ ” इति ।

વચનવાળી ઔર નિપુણતા યુક્ત હુઆ કરતી હે બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સે
સવધ રખતેવાલી સ્ત્રિયો કી કથા કહના ઇસકા નામ જાતિ કયા હૈ ।
જૈસે પતિ કે અભાવ મે જીવન વ્યતીત કરને વાલી બ્રાહ્મણિયોં કો
ધિકાર હે-કયોં કિ યે જીતી હુઈં બી એક તરહ સે મરી હુઈં જૈસી હેં ।
ઔર વે શૂદ્ર જાતિ કી સ્ત્રિયા ધન્ય હે જો લાલ પતિવાલી હોને પર બી
નિન્દિત નહીં હોતી હ । કુલ સે સવધ રખતેવાળી સ્ત્રી સવધી કથા કુલ
કયા હૈ-જૈસે-અહો ! ચૌલુક્યવંશ કી સ્ત્રિયો વા સાહસ જગત મે સવસે
અધિક હોતા હૈ-કયોં કિ યે પતિ કે મર જાને પર પ્રેમ સે વિહીન હોતી
હુઈં જીતી ૨ અગ્નિ મેં જલ જાતી હેં । સ્ત્રિયોં કે રૂપ સે સવધ રખતે વાલી
કથા રૂપ કયા હૈ-જૈસે લાટદેશ કી સ્ત્રિયા ચન્દ્રમા કે જૈસી મુખવાલી હોતી
હેં કમલ જૈસી આંખો વાલી હોતી હેં વાળી મેં ઇન્કે મિઠાસ રહતા
હૈ, ડન્કે દોનો કૂચ પુટ્ર ઔર સ્થૂલ હોતે હેં । ખલા ણેસી સુન્દર સ્ત્રી
કિસકો નહીં અઢીલગેગી ? ણેસી સ્ત્રીતો દેવો કો બી દુર્લભ હુઆ કરતી

છે ” બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સાથે સવધ રાખનાર સ્ત્રિઓની કથા કહેવી તે
જાતિ કથા કહેવાય છે ‘ જેમ કે ’ પતિ વિના જીવન વ્યતીત કરનાર બ્રાહ્મ
ણીઓને ધિક્કાર છે, કાળુ કે તેઓ જીવતી હોવા છતાં પણ એક રીતે તો
મૃત જેવીજ છે ” “ તે શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રિઓને ધન્ય છે કે જે લાખપતિ
હોવા છતાં પણ નિન્દિત થતાં નથી ” આ બીજી જાતિ કથાના દષ્ટાંતો છે
જે કુળ સાથે સવધ રાખનારી સ્ત્રી વિષેની કથાને કુળ કથા કહે છે જેમ કે
“ અહો ! ચૌલુક્ય વંશની સ્ત્રીઓના સાહસ જગતમા મૌથી વધારે હોય છે,
કરણ કે પતિનું મૃત્યુ તથા તે પ્રેમભગ્ન થવાથી જીવતી અગ્નિમા પ્રવેશ કરી
બળી મરે છે ” સ્ત્રીઓના રૂપ સાથે સવધ રાખનારી કથાઓને રૂપકથા
કહે છે જેમ કે લાટ દેશની સ્ત્રીઓ ચન્દ્રમુખી હોય છે, કમળનયની
હોય છે, તેમની વાણીમા મીઠાશ હોય છે, તેમના બન્ને કુચ પુટ્ર અને
સ્થૂળ હોય છે એવી સુન્દર સ્ત્રી કોને ન ગમે ? એવી સ્ત્રીઓ તો દેવોને પણ

વક્તવ્યા । તથા-‘ચતુસ્ટીમહિલાગુણા’ ચતુષ્પદિમહિલાગુણા = આલિંગનાદીનામઘ્તાનાં
પ્રત્યેકસ્યાષ્ટવિધત્વેન યે ચતુષ્પદિસરપકા મહિલાગુણાસ્તેऽપિ ચ ન વક્તવ્યાઃ ।
તથા-‘ દેસજાતિકુલરૂપનામનેવત્યપરિજનકહાઓ ’ દેશજાતિકુલરૂપનામનેપત્ય
પરિજનકથાઃ તત્ર-દેશકથા=આદિદેશસમ્યન્વિસ્ત્રીણા વર્ણનમ્, યથા-‘ લાટઘઃ

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, इस प्रकार ये स्त्रियों की
सुभगता और दुर्भगता से सबध रखने वाली कथा भी साधु को नहीं
कहना चाहिये । तथा (चउसट्टि महिलागुणाण च) जिस कथा में
स्त्रियों के चौसठ गुणों से सबध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को
लेकरजो कथा चलनी हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये । आलि
ङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, इस तरह
 $८ \times ८ = ६४$ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये हैं । सो ये चौसठ
६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये ।
तथा (देसजाति कुलरूपनामनेवत्यपरिजणकहाओ इत्थियाग अण्णावि य
एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ सजमवभचेर वाओवघाडयाओ वभचेर
अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चित्थियव्वा) देश,जाति, कुल,
रूप, नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे सबध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी
नहीं कहनी चाहिये-लाटादि-देश सबधी स्त्रियों का वर्णन जिस कथामें
होता है वह देश कथा है, जैसे-लाट देश की स्त्रिया बहुत ही कौमल-

કપાળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે ” આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા
સાથે સબધ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી જોઈ એ નહીં “ ચઉસટ્ટિ
મહિલા ગુણાણ ચ ” જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોમઠ ગુણો સાથે સબધ હોય
એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતી હોય તે પણ
સાધુએ કહેવી જોઈ એ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાનો પ્રત્યેક ગુણ
આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે $૮ \times ૮ = ૬૪$ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ
બતાવ્યા છે તો તે ચોમઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામા ચર્ચવાને
યોગ્ય નથી તથા “દેસજાતિકુલરૂપનામ-નેવત્ય-પરિજન-કહાઓ ઇત્થિયાણ અણ્ણા
વિ ય એવમાઈયાઓ કહાઓ સિંગારકલુણાઓ સજમવમ્મચેરવાઓવઘાડયાઓ વમ્મચેરમણુ
ચરમાણેણ ન કહેયવ્વા ન સુણેયવ્વા ન ચિત્થિયવ્વા” દેશ, જાતિ કુળ, રૂપ, નામ, નેપથ્ય,
પરિજન, વગેરે સાથે સબધ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી જોઈ એ
નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના વર્ણન જે કથામા હોય તે દેશ કથા છે,
જેમકે “ લાટ દેશની સ્ત્રીઓ ખુબ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

कोमलवचनाः इति निपुणा वा भवन्ती ” त्यादि । जातिकथा=ब्राह्मणादिजाति
सम्बन्धिका, यथा-“ विगृह्णात्तणीर्धवाभावे वा जीवन्तिमृता इव । धन्यामन्ये
रुद्रीः पतिलक्षेऽप्यनिन्दिताः ॥

कुलकथा, यथा-अहो चौलुक्यपुत्रीणा साहस जगतोऽविक्रम् ।

पत्या मृते विगन्त्यग्निं याः प्रेमरहिता अपि” इति । रूपकथा-

यथा-चन्द्रवन्त्रा सरोजाक्षी, सङ्गीः पीनधनस्ननी ।

किंवादीनो मता सा स्या, देवानामपि दुर्लभा ॥ १ ॥ ” इति ।

वचनवाली और निपुणता युक्त हुआ करती है ब्राह्मण आदि जाति से
सम्बन्ध रखनेवाली स्त्रियों की कथा कहना इसका नाम जाति कथा है ।
जैसे पति के अभाव में जीवन व्यतीत करने वाली ब्राह्मणियों को
धिकार है-क्यों कि ये जीती हुई भी एक तरह से मरी हुई जैसी है ।
और वे रूद्र जाति की स्त्रिया धन्य हैं जो लाख पतिवाली होने पर भी
निन्दित नहीं होती हैं । कुल से सम्बन्ध रखनेवाली स्त्री सवधी कथा कुल
कथा है-जैसे-अहो ! चौलुक्यवन्त्र की स्त्रियों का साहस जगत में सबसे
अधिक होता है-क्यों कि ये पति के मर जाने पर प्रेम से विहीन होती
हुई जीती २ अग्नि में जल जाती हैं । स्त्रियों के रूप से सम्बन्ध रखने वाली
कथारूप कथा है-जैसे लाटदेश की स्त्रिया चन्द्रमा के जैसी सुखवाली होती
हैं कमल जैसी आँखों वाली होती हैं वाणी में इनके मिठास रहता
है, उनके दोनों कूच पुष्ट और स्थूल होते हैं । भला ऐसी सुन्दर स्त्री
किसको नहीं अच्छी लगेगी ? ऐसी स्त्री तो देवों को भी दुर्लभ हुआ करती

है ” ब्राह्मण आदि जाति साथे सम्बन्ध रखनेवाली स्त्रियों की कथा कहेवी ते
जाति कथा कहेवाय है ‘ जेम डे ’ पति विना जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्रियों ने
बिछार है, काण्ड के तेजो ज्वलती होना छता पण अक रीते तो
मृत जेवीज है ” “ ते शूद्र जातिनी स्त्रियों ने धन्य है डे जे लाभपति
होवा छता पण निन्दित यती नथी ” आ भीज जाति कथाना दृष्टातो है
जे कुण साथे सम्बन्ध रखनेवाली स्त्री विधेनी कथाने कुण कथ कहे है जेम डे
“ अहो ! चौलुक्य वन्त्रा स्त्रियों का साहस जगत में मौथी वधारे होय है,
करण डे पतिन मृत्यु तथा ते प्रेमलग्न थवाथी ज्वलती अग्नि में प्रवेश करी
जाणी भरे है ” स्त्रियों का रूप साथे सम्बन्ध रखनेवाली कथाओं ने रूपकथा
कहे है जेम डे लाट देश की स्त्रिया चन्द्रमुखी होय है, कमलनयनी
होय है, तेमनी वाणी में मीठास होय है, तेमना जन्मे कुच पुष्ट अने
स्थूल होय है ऐवी सुन्दर स्त्री केने न गमे ? ऐवी स्त्रिया तो देवों ने पण

નામકથા-યથા-ઇય યથા નામ્ના સુદરી, તથા-સ્વગુણામ્યામપિ । નેપથ્ય
કથા, યથા-“ ધિરનારીસૌદીન્યા વહુસનાન્ઠાદિતાન્નલતિકત્ત્યાત્ । યત્રોત્તન ન
યૂનાં ચધુર્મેદાય સમવતિ ॥ ” ઇતિ ।

પરિજનકથા—યથા—“ ચેદિમાપરિચારોઽપિ તસ્યાઃ કાન્તો વિચક્ષણઃ ।
ભાગ્યાઃ સ્નેહયાન્ દક્ષો વિનીતઃ સુકુઠસ્તયા ॥ ” ઇતિ ।

એતાઃ કથા ન કર્તવ્યાઃ । તથા-‘ ઇતિયાણ’ સ્ત્રીનામ્ ‘અગ્નાવિ ય’ અયા
અચિ ચ ‘એવમાશ્યાઓ કહાઓ’ એમાદિકા કથાઃ યા હિ ‘વિગારકલુ
ણાઓ’ શૃંગારકરુણાઃ=શૃંગારરસકરુણરસયુક્તાઃ, તથા ‘સજમયમચેરઘાઓવ-

હેં । નામ કોલેકર જિસ કથા મેં સ્ત્રી સવધી સૌન્દર્ય કા વર્ણન કિયા જાતા હૈ
વહ નામ કયા હૈ, જૈસે-યહ, સ્ત્રી જૈસે નામ સે સુન્દર હૈ વૈસે હી યહ રૂપ
ઔર ગુણો સે બી સુન્દર હૈ, સ્ત્રી સવધી વેશભૂષા આદી કી ચર્ચા-
જિસ કથા મેં રહતી હૈ વહ નેપથ્યકથા હૈ, જૈસે-ઉત્તરદિશા કી સ્ત્રિયો
કો ધિક્કાર હૈ-જો અનેક વસ્ત્રો સે આચ્છાદિત રહા કરતી હૈ, કયોં કિ
ઇસતરહ રહને સે ઇનકા યૌવન યુવાપુરુષો કી આંખો કો આનંદપ્રદાન
નહી કરતા હૈ । સ્ત્રિયોં કે પરિજનોં કો લેકર જો કયાં કરી જાતી હૈ
વે પરિજન કથાં હૈ, જૈસે-ઉસ સ્ત્રિ કા ચેદિકા જન-દાસી જન રૂપ
પરિવાર-બી વડા સુન્દર, નિપુણ, ભાવજ, સ્નેહયુક્ત, દક્ષ-વ્યવહાર-
કુશલ, વિનીત એવ કુલીન હૈ । સાધુ કો એમી સ્ત્રી સવધી દેશાદિ
કથાં રાગભાવ સે યુક્ત હોકર નહીં કરનાં चाहिये । તથા ઇસીતરહ કી
ઔર બી સ્ત્રિયોં સે સવધ રાખને વાલી શૃંગાર રસ એવ કરુણ રસ

હુલ્લ છે નામને અનુલક્ષીને જે ડયામા સ્ત્રી સવધી સૌન્દર્યનું વર્ણન કરાયું
હોય છે તે નામ ડયા કહેવાય છે કે “ આ સ્ત્રીનું નામ જેટલું સુદર છે
એટલી જ તે રૂપ અને ગુણમા પણ સુદર છે સ્ત્રીની વેશભૂષા આદિની ચર્ચા
જે ડયામા હોય છે તે નેપથ્ય કથા કહેવાય છે જેમ કે “ ઉત્તરની સ્ત્રી
ઓને ધિક્કાર છે, જે અનેક વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત રહે છે, કારણ કે તે પ્રમાણે
રહેવાથી તેમનું યૌવન યુવાનોની આંખોને આનંદ પ્રદાન કરતું નથી ” સ્ત્રિ
ઓના પરિજનોને અનુલક્ષીને જે કથા કહેવાય છે તે પરિજન કથાઓ છે
જેમ કે તે સ્ત્રીનો દાસિજન રૂપ પરિવાર પણ ધણો સુદર, નિપુણ, ભાવજ,
સ્નેહાળ, દક્ષ-વ્યવહાર કુશળ, વિનીત અને કુલીન છે ” સાધુઓ એવી સ્ત્રી
સવધી દેશાદિ કથાઓ રાગ ભાવથી યુક્ત થઈને કહેતી જોઈએ નહીં તથા
એ જ પ્રકારની સ્ત્રિઓ સાથે સવધ રાખનારી શૃંગાર રસ અને કરુણ રસ

घाड्याओ ' सयमब्रह्मचर्यघातोपपातिश्चास्ताः कथाः, ' वभचेर ' ब्रह्मचर्यम्, 'अणुचरमाणेण' अनुचरता न कहेयन्वा ' स्वय कथितव्याः, न=नापि च ' सुणे यन्वा ' अन्यस्य कथयतः श्रोतव्या न ' चित्तियन्वा' चिन्तितव्या, न चिन्ता-विषयीकर्तव्या । एवम् ' इत्थीकहाविरइसमिइजोगेण ' स्त्रीकथाविरतिसमितियो-गेन=स्त्रीणां या कथास्ततो या विरतिस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन भावितोऽन्त-रात्मा आरतमना ब्रह्मचर्यासक्तमना, विरतग्रामधर्म =निवृत्तमैयुनभावः । जिते-न्द्रियः=वगीकृतेन्द्रिय, ब्रह्मचर्यगुप्तः=नवविधब्रह्मचर्यगुप्तिसहितः, उत्तराध्ययनसू-त्रपोडशाध्ययनोक्त दशविधब्रह्मचर्य समाधिस्थानयुक्तो वा भवति ॥ मू० ७ ॥

प्रधानकथाओं को नहीं कहना चाहिये। तथा जिन कथाओं से सयम और ब्रह्मचर्य का घात और उपघात होता हो ऐसी कथाएँ भी ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले साधु को न स्वय कहना चाहिये, न सुनना चाहिये और न ऐसी कथाओं का विचार ही करना चाहिये। (एव इत्थी कथावि-रइ समिइजोगेण भाविओं अतरप्पा विरयगामधम्मे जिइदिए वभचेर गुत्ते भवइ) इस प्रकार से स्त्रीकथाविरतिरूप समिति के सन्ध से भावि त हुआ जीव ब्रह्मचर्य में आसक्त मनवाला हो जाता है और ग्रामधर्म-मैयुन क्रिया से निवृत्त हो जाता है, अतएव वह जीव जितेन्द्रिय बनकर नवविध ब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा उत्तराध्ययन सूत्र के मोलहवे अ-ध्ययन में कहे हुए दशविध ब्रह्मचर्यसमाधिस्थान से युक्त बन जाता है।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने ब्रह्मचर्य व्रत की द्वितीय-भावना का स्वरूप प्रकट किया है। इसमें उन्हो ने रागभाव से स्त्रीमात्र

प्रधान कथाओं पणु उडेवी जेधये नही तथा ने उथायेथी सयम अने अह्मचर्यनो घात अने उपघात थतो डोय येवी उथाये। पणु अह्मचर्यनु पालन कन्नार साधुये उडेवा न जेधये, साधणवी न जेधये अने येवी कथायेनो विचार पणु उरये। जेधये नहि “ एव इ यीकहाविरइसमिइजोगेण भाविओ अतरप्पा विरयगामधम्मे जि दिए वभचेरगुत्ते भवइ ” आ प्रमाणे स्त्री कथा विरतिइय समितिना योगथी लावित थयेल एव अह्मचर्यमा आसक्त मनवाणो जनी जय छे अने ग्रामधर्म-मैयुनक्रियाथी निवृत्त थध जय छे तेथी ते एव जितेन्द्रिय जनीने नवविध अह्मचर्यनी गुप्तिथी अथवा उत्तराध्ययन सूत्रना सोणमा अव्ययनमा उडेल दशविध अह्मचर्यसमाधि स्थानथी युक्त जनी जय छे

भावार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकारे अह्मचर्य व्रतनी जीउ लावनानु-स्वरूप प्रकट कयुं छे तेमा तेमणे रागलावथी स्त्री मात्रनी उथाये उडेवाने।

તૃતીયા ભાવનામાહ—‘ તદ્ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તદ્યં નારીણં હસિય- ભાણિય ચિદ્વિય વિપ્પેત્તિલ્લય
ગદ્વિલાસકીલિયં વિઠ્ઠોદ્ ય નટ્ટગીયવાદ્ય સરીર સઠાણ
વપ્પકરચરણનયણલાવણગરુવજોવણપયોધરાધરવત્થાલકાર-
ભૂસણાણિ ય ગુજ્ઞોવકાસિયાઢ અણ્ણાણિ ય એવમાદ્યાણિ
તવ સંજમવમચ્ચેરવાઓવધાદ્યાઢ અણુચરમાણેણં વમચ્ચેર
ન ચક્કલુસા ન મણસા ન વયસા પત્થેયઠ્ઠવાઢ પાવકમ્માઢં
એવ દ્વિત્થીરુવ વિરઢ સમિદ્દજોગેણ ભાવિઓ ભવઢ અતરપ્પા
આરયમણા વિરયગામધમ્મે જિદ્દંદિએ વમચ્ચેરગુત્તે ॥ સૂ ૮ ॥

ટીકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા સ્ત્રીરૂપનિરીક્ષણવર્જનરૂપા ભાવનામાહ—‘નારીણ’ નારીણાં
‘ હસિયભાણિયચિદ્વિયવિપ્પેત્તિલ્લયગદ્વિલાસકીલિય ’ હસિતભણિતચેષ્ટિતત્રિપ્રેક્ષિત

કો કયા કહને કા નિષેવ ક્રિયા હે, ત્યોં કિ એસી વાતે કામવર્ધક
હુઆ કરતી હે, અતઃ બ્રહ્મચારી કો અપને બ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં એકદેશ
અથવા સર્વદેશ સે વાવક એસી કોઈ બી વાત સ્ત્રિયો કે વીચ મેં વેઠકર
નહીં કરતી વાહિયે । હસ પ્રકાસ ઉસ બ્રહ્મચારી કા વ્રત હર સમય
સુરક્ષિત બના રહતા હૈ ॥ સૂ ૭ ॥

અવ સૂત્રકાર હસ વ્રત કી તૃતીય ભાવના કો કહતે હૈ—‘ તદ્ય
નારીણ ’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તદ્ય) હસ વ્રત કી રક્ષા કરને વાલી તૃતીય ભાવના
સ્ત્રી રૂપ નિરીક્ષણવર્જન કરને રૂપ હૈ । હસ મેં (નારીણ) સ્ત્રિયોં કે

નિષેધ કર્યો છે, ડારણુ છે એવી વાત કામ વર્ધક હોય છે, તેથી બ્રહ્મચારીએ
પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા એક દેશથી અથવા સર્વદેશથી બાધક એવી કોઈ
પણ વાત સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેઠીને કહેવી બેઠીને નહીં આમ કરવાથી તે
બ્રહ્મચારીનું વ્રત સદાકાળ સુરક્ષિત બની જાય છે ॥ સૂ ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે “ તદ્ય નારીણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” આ વ્રતનું રક્ષણ કરનારી ત્રીજી ભાવના સ્ત્રીના
અથવા નિરીક્ષણ કરવાનો પરિત્યાગ કરવાની છે તેમા “ નારીણ ” સ્ત્રીઓના

गतिविलासक्रीडितम्, तत्र हसित=हास्यम्, भणित=जल्पितम्, चेष्टितम्=हस्तपा-
दन्यासादि, विप्रेक्षितम्=निरीक्षितम्, गतिः=गमनम्, विलास=नेत्रजनितचेष्टा-
विशेषः, क्रीडित=स्वसम्प्रीतिः सह खेलनम्, एषा समाहरद्वन्द्वः, तथा—
'विष्योऽयनदृगीयवाड्यसरीरसठाणवणकरचरणनयणलावण्यरूपजोवणपयोधराधर-
वत्थालंकारभूषणाणि य' विष्णोक्तिनाट्यगीतवादित्रशरीरसस्थानवर्णकरचरण-
नयनलावण्यरूपयोवनपयोधराधरवत्थालङ्कारभूषणानि च, तत्र-विष्णोक्ति=पूर्वो-
क्तलक्षणोविष्णोक्तः, नृत्य=नर्तनम्, गीत=गानम्, वादित=वीणादिवादनम्, श-
रीरसस्थान=ह्रस्वदीर्घादिशरीराकृतिः, वर्ण=गौरत्वादिलक्षण, तथा-करचरणनय-
नलावण्यम्=करचरणनयनानां लावण्य=सौन्दर्यम्, रूप=स्वरूपम्, यौवन=तारुण्यम्
पयोधरौ=स्तनौ, अधरः=अधरोष्ठः, वस्त्राणि=प्रसिद्धानि, अलङ्कारः=हारादयः,
भूषणानि=मण्डनानि, एतेषा द्वन्द्व, तानि । तथा-गुञ्जोवकासियाड' गुह्यावका-
शिकानि=गुह्यभूतालज्जनीयत्वात् स्मरणीया अवकाशा=शरीरानयना इत्यर्थः, त

(हसियभणियचिट्टियविप्पेक्खियगड्विलासकीलिय) हास्य का, भणित
बोलने का, उनकी चेष्टाओं का, चितवन का, चाल का, नेत्र जनितचे-
ष्टाविशेषरूप विलास का, अपनीसखियों के साथ उनके खेल खेलने
का, तथा उनके (विष्णोइ य नटगीइ वाड्य सरीर-सठाणवणकरचरण-
नयण लावण्यरूपजोवणपयोधराधरवत्थालकारभूषणाणि य) विष्णोक्त
का, नृत्य का, उनके द्वारा गाये गये गीतों का उनके वीणादिवादन का,
उनके ह्रस्व, दीर्घ आदि शारीरिक सस्थान का उनके गौर आदि वर्ण
का, कर-हाथ, चरण-पैर, नयन-नेत्र इनके लावण्य-सौंदर्य का, रूप
का, यौवन का, उनके स्तनों का, उनके अधरो का, उनके द्वारा पहरे
हुए वस्त्रों का हार आदि अलंकारों का, भूषणों का तथा (गुञ्जोव-
कासियाड) उनके कामोदीपक गुप्त अंगों का, तथा (एवमाइयाणि

“ हसियभणियचिट्टियविप्पेक्खियगड्विलासकीलिय ” हास्यनु, ललित-बोलीनु,
तेमना आवलावनु, चितवननु थालनु, आप्पेना धराराउप विलासनु, पोतानी
सण्णियो साथेनी तेनी डोडानु, तथा तेमना “ विष्णोइय नटगीइवाड्य
सरीर-सठाणवणकरचरणनयणलावण्यरूपजोवणपयोधराधरवत्थालकारभूषणाणि य ”
विष्णोउनु, नृत्यनु तेमना द्वारा गवाता गीतोनु, तेमना वीणादि
वादननु, तेमना ह्रस्व, दीर्घ आदि शरीर आधारणु, तेमना गौर आदि
वर्णनु, उ-हाथ, अणु नेत्र, आदिना सौंदर्यनु, रूपनु, यौवननु तेमना
स्तनोनु, तेमने पडेरल वस्त्रनु, हार आदि अलंकारोनु, आभूषणोनु तथा
“ गुञ्जोवकासियाड ” तेमना कामोत्तेज्यु गुप्त अंगोनु, तथा “ एवमाइयाणि

અવ ગુહ્યાવકાશિકાનિ સ્ત્રીણા ગુપ્તાદ્વાનીત્યર્થઃ । તથા-‘અણ્ગાણિ ચ ણ્વમાદ્યાણિ’ અન્યાનિ ચ ણ્વમાદિકાનિ હમિતાદિસટ્શાન્યન્યાન્યપિ, ‘ તવસયમવ્રમ્ભચેરઘાઓવઘાડ્યાઈ ’ તપઃ સયમવ્રહ્મચર્યઘાતોપગ્રાતકાનિ, ‘ પાવકમ્માઢ ’ પાવકર્માણિ ‘ વ-ભચેર ’ વ્રહ્મચર્યમ્ ‘ અણુચરમાણેણ ’ અણુચરતા ‘ ન ચક્ષુસા ’ ન ચક્ષુષા ‘ ન મણસા ’ ન મનસા ‘ ન વચસા ’ ન વચસા ‘ પત્યેયગ્વાઢ ’ પ્રાર્થયિતવ્યાનિ=ન ચક્ષુષા દ્રષ્ટવ્યાનિ, ન મનસા ચિન્તયિતવ્યાનિ, ન વચસા પ્રાર્થયિતવ્યાનીત્યર્થઃ । એવમ્=અનેન પ્રકારેણ ‘ ઇત્ત્વીરૂપવિરઢસમિઢજોગેણ ’ સ્ત્રીરૂપવિરતિમમિત્તિયોગેન=સ્ત્રીણા યદ્ રૂપ તતો યા વિરતિસ્તદ્ભૂવો યઃ સમિતિયોગસ્તેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા=જીવઃ ‘ આરયમણા ’ આરતમનાઃ=વ્રહ્મચર્યાસત્તચિત્તો વિરતગ્રામધર્મો જિતેન્દ્રિયો વ્રહ્મચર્યગુપ્તશ્ચ ભવતિ ॥સૂ૦૮ ॥

પાવકમ્માઢ તવસજમવ્રમ્ભચેરઘાઓવઘાડ્યાઈ) ઢસી પ્રકાર કી ઔર ઢી પાવ કર્મરૂપ ઘાતોં કા કિ જો તપ, સજમ ણ્વ વ્રહ્મચર્ય વ્રત કો ંકદેશ સે અથવા સર્વદેશ સે ઘાત કરને ઘાલી હોં (વમ્ભચેર અણુચર-માણેણ) વ્રહ્મચર્ય વ્રત કી આરાધના કરને ઘાલે સાધુ કો (ન ચક્ષુસા) રાગ સંયુક્ત હોકર ન આલોં સે નિરીક્ષણ કરના ઘાહિયે, (ન મણસા) ન મન સે વિચાર કરના ઘાહિયે, ઔર (ન વચસા) ન વચન સે (પત્યેયગ્વાઢ) પ્રાર્થના કરના ઘાહિયે । (એવ ઢત્ત્વીરૂપવિરઢસમિઢ જોગેણ ભાવિઓ અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધર્મે જિઢદિં વમ્ભચેર-ગુપ્તે ભવઢ) ઢસ તરહ સે સ્ત્રીરૂપ નિરીક્ષણ વિરતિરૂપ સમિતિ કે યોગ સે સબધિત જીવ વ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં આસક્ત મનઘાલા હોં જાતા હૈ ઔર ગ્રામધર્મ-મૈથુન સેવન સે નિવૃત્ત હો જાતા હૈ । અત એવ વહ જીવ-જિતેન્દ્રિય બનકર નવ વિધ વ્રહ્મચર્ય કી ગુપ્તિ સે અથવા દશવિધ વ્રહ્મ-

પાવકમ્માઢ તવસજમવ્રમ્ભચેરઘાઓવઘાડ્યાઈ ” ં પ્રકારની ળીઁ પણ પાવ કર્મરૂપ ઘાતો કે ં તપ, સયમ અને વ્રહ્મચર્યવ્રતનો ંક દેશથી અથવા સર્વદેશથી ઘાત કરનારી હોય “વમ્ભચેરઅણુચરમાણેણ” વ્રહ્મચર્યવ્રતનુ પાલન કરનાર સાધું “ ન ચક્ષુસા ” રાગ યુક્ત થઈને તેમનુ નિરીક્ષણ કરવુ ંધ ં નહીં, “ ન મણસા ” મનથી વિચાર કરવો ંધ ં નહીં અને “ન વચસા ” વચનથી ન “ પત્યેયગ્વાઢ ” પ્રાર્થના કરવી ંધ ં “ એવ ઢત્ત્વીરૂપ વિરઢસમિઢજોગેણ ભાવિઓ અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધર્મે જિઢદિં વમ્ભચેરગુપ્તે ભવઢ ” આ પ્રમાણે સ્ત્રીરૂપ નિરીક્ષણ વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત ંવ વ્રહ્મચર્યવ્રતમા આસક્ત મનઘાલો થઈ ંય છે, અને ગામધર્મ મૈથુનના સેવનથી નિવૃત્ત થઈ ંય છે તેથી તે ંવ જિતેન્દ્રિય ળનીને નવવિધ વ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ

ચતુર્થભાવનામાહ—'ચતુર્થ' રૂપાદિ ।

મૂલમ્—ચતુર્થ પુઞ્વરય—પુઞ્વકીલિયપુઞ્વસગથસથુયા જે તે આવાહવિવાહચોલકેસુ ય તિહિસુ જણેસુ ઉસ્સવેસુ ય સિગારાગારચારુવેસાહિ હાવભાવલલિયવિવલેવવિલાસ સાલિણીહિ અણુકૂલપેમિયાહિ સદ્ધિ અણુભૂયા સયણસંપ-
ઓગા ઉ ઉ મુહવરકુસુમસુરભિચદણસુગધવરવાસધૂવસુહફ-
રિસવત્થમૂસણગુણોવવેયા રમણિજ્ઞા ઉજ્જગેજ્જપટ્ટરણહણદ્વગ-
જહ્મહ્મમુદ્ધિયવેલવગકહગપવગલાસગઆહ્વલલલખમંલલતૂ-
ણહલ્લતુંવવીણિયતાલાયરપકરણાણિ ય વહૂણિ મહુર—સર-
ગીય—સુસ્સરાહ્ અણ્ણાણિ ય એવમાહ્વાણિ તવ—સંજમવંભ-
ચેરઘાઓવઘાહ્વાહ્ અણુચરમાણેણ વંભચેર ન તાહ્ સંમણેણ
લભા દટ્ટ ન કહેઉ ન વિ ય સુમરેઉં જે, એવં પુઞ્વરય પુઞ્વ-
કીલિય વિરહસમિહજોગેણ ભાવિઓ ભવહ્ અંતરપ્પા આર-
યમણા વિરયગામધમ્મે જિહંદિએ વમચેરગુત્તે ॥ સૂ૦ ૯ ॥

ટીકા—'ચતુર્થ' ચતુર્થી—પૂર્વરતપૂર્વક્રીડિતસ્મરણવિરતિરૂપાં ભાવનામાહ—'પુઞ્વ-
રયપુઞ્વકીલિયપુઞ્વસગથસથુયા' પૂર્વરતપૂર્વક્રીડિતપૂર્વસગ્રન્થસસ્તુતાઃ, તત્ર—પૂર્વ તમ્-

ચર્ય સમાધિ સ્થાન સે યુક્ત વન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી તૃતીય ભાવના કા કથન કિયા હૈ । હસ મે રાગભાવ સે યુક્ત વનકર સાધુ કો સ્ત્રી કે રૂપાદિ નિરીક્ષણ કરને કા સર્વથા ત્યાગ કરના કહાગયા હૈ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

સમાધિસ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ નતદ્રાગ સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું છે તેમા ગગ ભાવથી યુક્ત થઈને સ્ત્રીના રૂપાદિનું નિરીક્ષણ કરવાનો સાધુએ પરિત્યાગ કરવો જોઈએ તે બતાવ્યું છે ॥ સૂ ૮ ॥

=ગૃહસ્થાવસ્થાકાલિકી કામગતિ, પૂર્વક્રીડિતમ્=ગૃહસ્થાવસ્થાશ્રિતં સ્ત્રીભિઃ સદ્
ક્રોડનમ્, પૂર્વસગ્રન્યસસ્તુતા.=પૂર્વ=ગૃહસ્થાવસ્થાયા યે સગ્રન્યા =શ્વસુરકુટમન્ય
સવદ્ધા શ્યાલકશ્યાલિકાદયઃ શ્યાલકભાર્યાદયશ્ચ, તથા-સસ્તુતા દર્શનભાષ-
ણાદિભિઃ પરિચિતાઃ, એવા દ્વન્દ્વ, એતે શ્રમણેન ન દ્રષ્ટુ ન કથયિતુ ન યાસ્મર્તુ લઘ્યાઃ
इति परेण समन्धः । तथा-‘ जे ते ’ ये ते ‘ आवाहविवाहचोत्रकेषु’ आवाहवि
वाहचूलकेषु, तत्र-आवाहो-यत्रावरगृहानयनम्, विवाहः=यागिग्रहण, चूलक

અવ હસ વ્રત કી ચૌથી ભાવના કો કરતે હૈ—‘ ચત્ત્ય પુવ્વરચ’
इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ચત્ત્ય) બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી પૂર્વરત પૂર્વક્રીડિત સ્મરણ-
વિરતિનામ કી ચૌથી ભાવના હસ પ્રકાર હૈ—(જે તે) જો વે (પુવ્વરચ
પુવ્વકીલિયપુવ્વસગયસથુરા) પૂર્વરત ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જો કામકેલિ
કી ગઈ હો વહ પૂર્વરત હૈ । ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જો સ્ત્રિયોં કે માથક્રીડા કી
ગઈ હો વહ પૂર્વક્રીડિત હૈ । તથા-ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જિનકે સાથ શ્વસુર,
સાહે, સાલી, આદિ કા સવધ રહા હો, વે પૂર્વ સગ્રન્ય હૈ ઓર જિનકે
સાથ દર્શન ભાષણ આદિ સે અધિક પરિચય રહા હો વે પૂર્વસસ્તુત હૈ ।
इन सब का ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करने बाद साधु को न स्मरण
करना चाहिये, न उनका कथन करना चाहिये और न सवधी आदि
जनों को देखने की लालसा ही रखनी चाहिये । तथा (आवाहविवाह

હવે આ નતની ચોથી ભાવનાનુ કથન કરે છે “ ચત્ત્ય પુવ્વરચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ચત્ત્ય ” બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ચોથી ભાવના “ પૂર્વરતપૂર્વક્રીડિત
સ્મરણવિરતિ ’ નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“ જે તે પુવ્વરચપુવ્વકીલિય
પુવ્વસગયસથુરા ” પૂર્વરત-ગૃહસ્થાવસ્થામાં જે કામક્રીડા કરાડ હોય તે પૂર્વરત
કહેવાય છે ગૃહસ્થાવસ્થામાં સ્ત્રીઓની માથે જે ક્રીડા કરાઈ હોય તે પૂર્વક્રીડિત
કહેવાય છે તથા ગૃહસ્થાવસ્થામાં જેમની સાથે સસગ, સાળા, સાળી આદિનો
સબધ રહ્યો હોય તે પૂર્વ સગ્રન્ય કહેવાય છે અને જેમની સાથે દર્શન,
ભાષણ આદિથી વધારે પરિચય રહ્યો હોય તેઓ પૂર્વ સસ્તુત કહેવાય છે
બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારણ કર્યા પછી માધુએ એ બધાનું સ્મરણ કરવું જોઈએ
નહી, તેમની વાત કરવી જોઈએ નહીં અને સબધી આદિ જનોને જોવાની
લાલસા રાખવી જોઈએ નહી તથા આવાહવિવાહચોત્રકેષુ ’ આવાહ—નધૂને વરના
ઘેર લાવતા વખતે, વિવાહ પ્રસંગે, તથા બાળકોના ચૂડાકર્મ સંસ્કારના

=चूडारुम=बालानां शिखागारणम्, एषा द्वन्द्व, तेषु तथोक्तेषु च=पुनः 'तिहिंसु'
तिथिषु=मदनत्रयोदशीप्रभृतिषु, तथा—'जण्णेषु' यज्ञेषु = नागादिपूजाप्रकरणेषु,
तथा 'उत्सवेषु' उत्सवेषु=इन्द्रोत्सवादिषु च 'सिंगारागारचारुवेसाहि' शृङ्गा
रागारचारुवेसाभिः=शृङ्गारस्य = शृङ्गाररसस्य आगारभूता याश्चारुवेसाः=शोभन
नेपथ्यसपन्नास्ताभिः, तथा—'हावभावललितविक्षेपविलासमालिनीहि' हावभावञ्च
लितविक्षेपविलासमालिनीभिः—तत्र हाव = कामजनितो मुखविकारः, भावः=काम-
जनिताःचित्तसमुन्नाति', तदुक्तम् 'हावो मुखविकारः स्याद् भावश्चित्तसमुन्नाति.' इति।
ललितम्=चेष्टाविशेषः, तदुक्तम्—

“ हस्तपादाङ्गविन्यासो अनेत्रौष्ठप्रयोजितः ।

सुकुमारो विधानेन ललित तत्प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥ ” इति ।

विक्षेपः—चेष्टाविशेषः, तल्लक्षणं त्विदम्—

अप्रयत्नेन रचितो, धम्मिल्लः श्लथयन्त्यनः ।

एकाशदेशधरणैस्ताम्नूलाललाञ्छनम् ॥ १ ॥

ललाटैकान्तलिखिता, विपमा पालेखिकाम् ।

असमञ्जसविन्यस्त मज्जन नयनावजयो ॥ २ ॥

तथा—अनादरमद्धत्वाद् ग्रन्थेर्जघनवासस ।

वसुमालम्बित' प्रान्तः, स्कन्धात्सस्तस्तथाऽशुक ॥ ३ ॥

जघने हारविन्यासो रशनायास्तथोरसि ।

इत्यवज्ञाकृत यत्स्यादज्ञानादिमण्डनम् ॥ ४ ॥

वितनोति परा शोभा स विक्षेप इति स्मृतः ॥ ”

विलासः—चेष्टाविशेषः, सतु—“ स्थानासनगमनानां हस्तअनेत्रकर्मणा चैव ।

उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥ १ ॥ ” इति ।

चोलकेसु ३) आवाह—बधू को घर के घर पर लाने के समय में, विवाह
के अवसर में, बालकों के चूडा (चोटी) वर्म संस्कार के प्रसंग में, तथा
(तिहिंसु) मदनत्रयोदशी आदि तिथियों में, तथा (जण्णेषु) नागा
दिकों की पूजा के अवसर रूप यज्ञों में, तथा (उत्सवेषु य) इन्द्रोत्सव आदि
उत्सवों में, (सिंगारागारचारुवेसाहि) शृङ्गाररस की घरभूतयनी
हुई तथा सुन्दर वेषभूषा से सज्जित हुई ऐसी तथा (हावभावललित-

प्रसंगमा तथा “तिहिंसु” मदन त्रयोदशी आदि तिथिओंमा, तथा “जण्णेषु”
नागादि केनी पूजना अवसररूप यज्ञोमा तथा “उत्सवेषु य” इन्द्रोत्सव आदि
उत्सवोमा, “सिंगारागारचारुवेसाहि” शृङ्गार रसना आगाररूप अनेत्री तथा
सुन्दर वेषभूषाथी सुसज्जित यथेक्षी तथा “हावभावललितविक्षेपविलाससा

અભિઃ શાલન્તે શોભન્તે યાસ્તાભિઃ, તથા—‘અણુકૂલપેમિયાહિં’ અણુકૂલ
પ્રેમિકાભિઃ=અણુકૂલ=મનોહમિરુચિકર પ્રેમ=પ્રીતિર્યામા તાભિઃ, પ્તાદ્દશીભિઃ
‘સદ્ધિં’ સાર્ધમ્, ‘અણુભૂષા’ અણુભૂતાઃ=અણુભવત્રિપયીકૃતા ‘સયનમ્પજોગા’
શયનસપ્રયોગાઃ=શયનાનિ ચ સપ્રયોગા =સમ્પર્કથેતિ દ્વરેતરયોગદ્વન્દ્વ, શયન
સપ્રયોગા ? इत्याह—‘उ उ मुहवरकुसुमसुरभिचदणसुगधवरसाधूव मुहफरिस-
वत्थभूसणगुणोववेया’ ऋतुमुखवरकुसुमसुरभिचन्दनसुगन्धवरसामधूप सुगमर्षवस्त्रभू-
षणगुणोपपेताः, तत्र-रुतुमुत्पानि=कालोचितानि यानि वरकुसुमानि, तथा-सुगभि
चन्दनस्य सुगन्धो शोभनामोदयुक्तो वरः=श्रेष्ठो यो वासः=गन्धः स, तथा-धूपः,
तथा-सुखस्पर्शानि यानि वस्त्राणि, तथा-भूषणानि च, तेषां ये गुणास्तैरुपपेता
स्ते श्रमणेन द्रष्टुं कथयितुं स्मर्तुं वा न योग्याः । तथा—‘रमणिज्जा उज्ज गेज्जप

વિરુલ્લેવવિલાસસાલિનીહિં) હાવ, ભાવ, લલિત, વિદ્વેષ ઓર વિલાસ
સે સુહાવના સ્ત્રિયોં કે સાથ તથા (અણુકૂલપેમિયાહિં) જિનકી પ્રીતિ
મન કો મુદિત કરને વાલી હોતી હૈ ણેસી (ઉત્તરીહિંસદ્ધિં) સ્ત્રીયોં કે સાર્થ
ભોગે ગયે શયન સબધી ઓર સપર્ક સબધો પૂર્વકાલિક ભોગોં કા કિ
જો (उ उ मुहवरकुसुमसुरभि चदण सुगध-वर-वासधूव-मुहफरिस-
वत्थभूसण-गुणोववेया) કાલોચિત કુસુમોં કી સુગધિ આદિ રૂપ ગુણોં
સે વિશેષ રૂપ મેં આકર્ષક હોતે યે, સુરભિચદન કી શ્રેષ્ઠ ગધ સે જો
મનોમોહક બને રહતે થે, કૃષ્ણાગરુ આદિ સુગધિત દ્રવ્યોં કી ધૂપ કે
સસર્ગ સે જિનમે સે મહક ઉડા કરતી થી તથા વસ્ત્ર ઓર આભૂષણોં
કે આહમ્બર કી છટા સે જિન્હે ભોગને લિએ ચિત્ત પરવસ લાલાયિત
બન જાયા કરતા થા, उन सब साधु को कभी भी स्मरण नहीं करना
चाहिये, किसी से ऐसे भोगों की बातें नहीं करना चाहिये और न ऐसे

લિનીહિં ” હાવ, ભાવ, વિદ્વેષ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા
“ અણુકૂલપેમિયાહિ ” જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી
“ સ્ત્રીહિ સદ્ધિ ” સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સબધી કે સસર્ગ સબધી
પૂર્વ કાલિક ભોગોતુ કે જે ‘ उ उ मुहवर-कुसुमसुरभि-चदण-सुगध-वरसाधूवमुह
फरिसवत्थ-भूसण-गुणोववेया ” કાલોચિત પુષ્પોના સુગધી આદિરૂપ ગુણોથી
વિશેષ આકર્ષક થતુ હતુ, સુગંધિ ચદનની શ્રેષ્ઠ ગધથી જે મનોહર બનતુ
હતુ, કૃષ્ણાગરુ આદિ સુગધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉઠ્યા
કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આહમ્બરની છટાથી જેને ભોગવવાને
માટે મન લલચાઈ ગયા કરતુ હતુ, એ બધી વાતનુ સાધુએ કદીપણ સ્મરણ
કરવુ જોઈએ નહીં, કોઈની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી જોઈએ નહીં,

ભાગોં કી ઓર લક્ષ્ય હી રલ્લના ચાલિયે। કામ સે જો મુલ્ક પર ઇક પ્રકાર
કી વિકૃતિ આ જાતી હૈ ડસકા નામ હાવ હૈ। કામ સે ઉદ્ભૂત જો ચિત્ત
મેં ઇક પ્રકાર કી ઉન્નતિ આ જાતી હૈ ડસકા નામ ભાવ હૈ। ઇક વિશેષ
પ્રકાર કી ચેષ્ટા કા નામ લલિત હૈ। યહ ચેષ્ટા સ્ત્રિયોં કે હસ્ત, પાદ, શરીર,
શ્રુ, નેત્ર ઓર ઓઠ આદિ મેં હોતી હૈ। વિલેપ નામ ચિત્ત કી અસાવધાની
કા હૈ। જલ્લ લલના જનોં કા ચિત્ત ડસ વિલેપનામ કી ચેષ્ટાવિશેષ સે
યુક્ત હો જાતા હૈ તો ડનમે વિશેષ પ્રકાર કી ચેષ્ટાઁ જાગ્રત હોને
લગતી હૈં જૈસે લે અગ્ની ચોટી કો ઢીલી વાંધ લેતી હૈ। નીચી ડનકી
શિથિલ યથ વાલી હો જાતી હૈ। મસ્તક પર સિન્દુર ચિન્દુ કી જગહ
કજ્જલ કી રેલા ઓર આલો મેં સિન્દુર કી રેલા લગાલી જાતી હૈ।
અયમ આલો મેં જો અજન લગાની હ વહ ભી અસ્ત વ્યસ્ત રૂપ મેં લગા
લેતી હૈ। ઇત્યાદિ સલ્ પ્રકાર કી ડનકી મળ્ડન વિધિ અવજ્ઞાકૃત હોતી
હૈ। ફિર ભી ઇસ સ્થિતિ મેં ડનકી શોભા મેં ન્યૂનતા નહીં આતી હૈ।
સ્થાન, આસન, ગમન આદિ મેં જો ઇક પ્રકાર કી વિશેષતા આ જાતી
હૈ વહ વિલાસ હૈ। ડસી તરહ (રમણિજ્ઞા ઉજ્જગેજ્જપડરણડણટ્ટગ
જલ્લમલ્લમુલ્લિકલેલવગ-કહગપનગ-લામગ-આડમ્વગ-લલ્લમલ્લ-તૂળહલ્લ

અને એવા ભોગોની તન્ન લક્ષ્ય પણ ગળવુ નેઈએ નહી કામ ભાવથી મૂળ
પર જે એક પ્રકારની વિકૃતિ આવી જાય છે તેને 'હાવ' કહે છે કામાતુર
ચિત્તમા જે એક પ્રકારની ઉન્નતિ આવી જાય છે તેને 'ભાવ' કહે છે એક
વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાનુ નામ લલિત છે તે ચેષ્ટા સ્ત્રિઓના હાથ, પગ, શરીર
શ્રુ, નેત્ર અને ઓઠ આદિમા થાય છે ચિત્તની અસાવધાનીને વિલેપ કહે છે
જ્યારે સ્ત્રિઓનુ ચિત્ત આ વિલેપ નામની વિગિષ્ટ ચેષ્ટાથી યુક્ત થઈ જાય છે
ત્યારે તેમનામા વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાઓ જાગ્રત થવા માડે છે જેમ કે તેઓ
પોતાના ચોટલાને ઢીલો બાધી લે છે તેની નાડીનુ બધન શિથિલ થઈ જાય
છે મસ્તક પર સિન્દૂરના ચિન્દુની જગ્યાએ કાજળની રેખા અને આખોમા
કાજળને બદલે સિન્દૂરની રેખા લાગી જાય છે અથવા આખોમા જે આજણુ
આજવામા આવે છે તે પણ અસ્તવ્યસ્ત રીતે અજાઈ જાય છે ઇત્યાદિ બધા
પ્રકારની તેમની મળ્ડનવિધિ અવગણવાને પાત્ર છે છતા પણ એવી પરિસ્થિતિમા
પણ તેમના રૂપમા ન્યૂનતા આવતી નથી સ્થાન, આસન, ગમન આદિમા જે
એક પ્રકારની વિશિષ્ટતા આવી જાય છે તેનુ નામ વિલાસ છે એ જ રીતે
“ રમણિજ્ઞા — ઉજ્જગેજ્જ — પડરણડણટ્ટગજન્મલ્લ — મુલ્લિકલેલવગ — કહગપનગ લાસગ
આડમ્વગ લલ્લમલ્લ — તૂળહલ્લ — તુમ વીણિય તાલાયર — પકરણાણિય ” સુદર વાદ્ય અને

અભિઃ શાલન્તે શોભન્તે યાસ્તામિ', તથા—' અણુકૂલપેમિયાહિ ' અનુકૂલ
પ્રેમિકામિઃ=અનુકૂલ=મનોહરચિત્ર પ્રેમ=પ્રીતિર્યામા તામિઃ, ણતાદૃશીમિઃ
' સદ્ધિ ' સાર્ધમ્, 'અણુભૂષા' અનુભૂતાઃ=અનુભવપિપરીકૃતા 'સયનસપજોગા'
શયનસપ્રયોગા'=શયનાનિ ચ મપ્રયોગા =સમ્પર્કશ્રેતિ દતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, શયન
સપ્રયોગા ? ક્ત્વાહ—' ઓ ઓ મુહુરકુસુમસુરભિચદનસુગધવરસાધૂત મુહુરકરિમવ
ત્યભૂસણગુણોવવેયા' કતુમુસવસ્કુમસુરભિચન્દનસુગન્ધવરસાધૂત મુહુરકરિમવ
પણગુણોવવેતા', તત્ર-રતુમુલ્લાનિ=હાલોચિતાનિ યાનિ વરકુસુમાનિ, તથા-સુરભિ
ચન્દનસ્ય સુગન્ધો શોભનામોદયુક્તો વરઃ=શ્રેષ્ઠો યો વાસ=ગન્ધઃ સઃ, તથા-ધૂપ',
તથા-સુલક્ષણાનિ યાનિ વસ્ત્રાણિ, તથા-ભૂષણાનિ ચ, તેવાં ચે ગુણાસ્તૈરુપવેતા
સ્તે શ્રમણેન દ્રવ્યં કથયિતુ સ્મર્તુ વા ન યોગ્યા । તથા—'રમણિજ્ઞા ઉજ્જ-ગેજ્જપ

ચિત્તેવવિલાસસાલિનીર્હિ) હાવ, ભાવ, લલિત, વિદેષ ઓર વિલાસ
સે સુહાવના સ્ત્રીયોં કે સાથ તથા (અણુકૂલપેમિયાહિ) જિનની પ્રીતિ
મન કો મુદિત કરને વાલી હોતી હૈ એવી (હતીર્હિસદ્ધિ) સ્ત્રીયોં કે સાથ
ભોગે ગયે શયન સબધી ઓર સપર્ક સંબધો પૂર્વકાલિક ભોગોં કા કિ
જો (ઓ ઓમુહુરકુસુમસુરભિ ચદન સુગધ-વર-વાસધૂત-મુહુરકરિસ-
વત્યભૂસણ-ગુણોવવેયા) કાલોચિત કુસુમોં કી સુગધ આદિ રૂપ ગુણોં
સે વિશેષ રૂપ મેં આકર્ષક હોતે થે, સુરભિચદન કી શ્રેષ્ઠ ગધ સે જો
મનોમોહક બને રહતે થે, કૃષ્ણાગર આદિ સુગધિત દ્રવ્યોં કી ધૂપ કે
સસર્ગ સે જિનમે સે મહક ઉઢા કરતી થી તથા વસ્ત્ર ઓર આભૂષણોં
કે આહમ્બર કી છટા સે જિન્હે ભોગને લિખ ચિત્ત પરવસ લાલાયિત
બન જાયા કરતા થા, ઓન સવ સાધુ કો કમી મી સ્મરણ નહી કરના
ચાહિયે, કિસી સે એસે ભોગોં કી વાતે નહી કરના ચાહિયે ઓર ન એસે

લિનીર્હિ " હાવ, ભાવ, વિદેષ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા
" અણુકૂલપેમિયાહિ " જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી
" હતીર્હિસદ્ધિ " સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સબધી કે સસર્ગ સબધી
પૂર્વ કાલિક ભોગોતુ કે જે ' ઓ ઓમુહુર-કુસુમસુરભિ-ચદન-સુગધ-વરસાધૂતમુહુ
રકરિસવત્ય-ભૂસણ-ગુણોવવેયા " કાલોચિત પુષ્પોના સુગધી આદિરૂપ ગુણોથી
વિશેષ આકર્ષક થતુ હતુ, સુરભિ ચદનની શ્રેષ્ઠ ગધથી જે મનોહર બનતુ
હતુ, કૃષ્ણાગર આદિ સુગધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉઠ્યા
કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આહમ્બરની છટાથી જેને ભોગવવાને
માટે મન લલચાઈ ગયા કરતુ હતુ, એ બધી વાતતુ સાધુએ કદીપણ સ્મરણ
કરવુ નોંધએ નહી, કોઈની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી નોંધએ નહી,

भवइ अंतरप्पा आरयमणा विरयगामवम्मे जिइदिए
वंभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ पचम ’ पञ्चमीं प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह—‘ आहारप-
णीयनिद्धभोयणविवज्जए ’ आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविवर्जनः—आहारः = अश-
नादिः, स च प्रणीतः=प्रगल्भस्नेहविन्दुश्च, तथा—स्निग्ध=चिक्वण च तद् भोजन
च=स्निग्धभोजनम्, अनयो द्वन्द्वः, तस्य विवर्जकः=परित्यक्ता, तथा ‘ सजए ’
सयतः=सयमवान् ‘ सुसाहू ’ सुसाधु =निर्वाणसाधक योगसाधनतत्परः, तथा—
‘ ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखण्डमच्छडियखज्जगविगइपरिचित्तकयाहारो’
व्यपगतक्षीरदधिसर्पिर्नवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिकमधुखाद्यकविकृतिपरित्यक्तकृता
हारः—तत्र—व्यपगताः=परिहृताः क्षीर=दुग्ध, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पिः=घृतम्,
नवनीत=‘मक्खन’ इति भाषाप्रसिद्धम्, तैल प्रसिद्धम्, गुडः=पसिद्धं खण्ड =शर्करा,

अथ सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते हैं—‘ पचम-
आहारपणीय ’ इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन
वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है—(आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए)
जो आहार प्रणीत—जिसमें से घृत की बिन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे
कामोदीपक तथा स्निग्ध—रसयुक्त हो साधु को वह नहीं खाना चाहिये।
क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण
साधक मनोवाक्य योग के साधन करने में तत्पर रहता है,
इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखण्डमच्छडिय
महुखज्जगविगइपरिचित्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मक्खन, तैल, गुड,

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—“પચમ આહારપણીય”ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ પચમ ” આ વ્રતની પાચમી ભાવના “ પ્રણીતભોજન ” ત્યાગ
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“આહારપણીયનિદ્ધભોયણવિવજ્જણ” જે પ્રણીત, એટલે
કે જેમાથી ધીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કામોદીપક તથા સ્નિગ્ધગમ
યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈ એ નહીં કારણ કે તે ‘ સજણ ’ સયમી હોય
છે અને “સુસાહુ” નિવાણુનામાધક મનો વાકાયા યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે
તેથી તેમણે “ વવગય સીર દહિસપ્પિ-નવણીયતેલગુડસડમચ્છડિયમહુસજ્જગવિગઈ
પરચિત્તકયાહારો ” દૂધ, દહીં, ધી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાડ વગેરેથી

અથ પશ્ચમી ભાવનામાહ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પચમ આહારપણીયણિદ્ધભોયણવિવજ્જણ સંજણ
સુસાહૂ વવગયલ્લીરદહિસપ્પિનવણીયતેલગુડલ્લડમચ્છંડિય-
મહુલ્લજ્જગવિગ્ગપરિચત્તકયાહારો ન દપ્પણં નવહુસો
ન નિદ્ધગં ન સાયસૂવાધિયં ન લલ્લ તહા ભોત્તલ્લ
જહા સે જાયામાયાણ ભવ્વહ, ન ય ભવ્વહ વિલ્લભમો ય ભંસણા
ય ધમ્મસ્સ, ઇવ પણીયાહારવિરહ્સમિદ્ધજોગેણં ભાવિઓ

વિરયગામધમ્મે જિહ્વદિણ ઘભચેરગુત્તે ભવહ) હસ પ્રકાર સે પૂર્વરત, પૂર્વક્રીડીતોં મેં વિરતિરૂપ સમિતિ કે યોગ સે ભાવિત અતરાત્મા-જીવ-બ્રહ્મચર્ય મેં સ્થિર મન વાલા બન જાતા હૈ ઓર ગ્રામધર્મ સે મૈથુન-કૃત્ય સે-વિરક્ત હો જાતા હૈ । ણેસા વહ મહાત્મા અપની ઇન્દ્રિયોં કો જીત કર નવવિધ બ્રહ્મચર્ય કી ગુપ્તિ સે અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્ય કે સમાધિસ્થાન સે યુક્ત બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર ને બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી ચૌથી ભાવના પ્રકટ કી હૈ । હસ મેં યહ કહા ગયા હૈ કિ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કા પાલન કરને વાલે સાધુ કો પ્રવ્રજ્યા લેને કે પહિલે ગૃહસ્થાશ્રમ મેં ભોગે ગયે વિવિધ પ્રકાર કે ભોગોં કી યાદ નહીં કરની ચાહિયે । હમ ભાવના કા નામ પૂર્વરત પૂર્વક્રીડીત સ્મરણવિરતિ હૈ । હસી વિષય કા વિશેષ વર્ણન હસ સૂત્ર મેં કિયા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૯ ॥

યમણા વિરયગામધમ્મે જિહ્વદિણ ઘભચેરગુત્તે ભવહ ” આ પ્રકારે પૂર્વરત, પૂર્વ-ક્રીડીતોમા વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત થયેલ અતરાત્મા-જીવ બ્રહ્મચર્યમા આસક્ત મનવાળો બની જાય છે અને ગ્રામધર્મથી-મૈથુન ક્રિયાથી વિરક્ત થઈ જાય છે એવો તે મહાત્મા પોતાની ઇન્દ્રિયોને જીતીને બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યના સમાધિસ્થાનથી યુક્ત થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ચોથી ભાવના પ્રગટ કરી છે તેમા એ બતાવવામા આવ્યું છે કે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન કરનાર સાધુએ દ્વીક્ષા લીધા પછી પહેલા ગૃહસ્થાશ્રમમા ભોગવેલ વિવિધ પ્રકારના ભોગોને યાદ કરવા જોઈએ નહીં આ ભાવનાનું નામ “ પૂર્વરત પૂર્વક્રીડીત સ્મરણ વિરતિ ” છે આ જ વિષયનું વધુ વર્ણન આ મંત્રમા કર્યું છે ॥ સૂ. ૯ ॥

भवइ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए
वभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ पचम ’ पश्चमी प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह—‘ आहारप-
णीयनिद्धभोयणविवज्जए ’ आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविवर्जनः—आहार’ = अश-
नादिः, स च प्रणीतः=मगलत्स्नेहविन्दुश्च, तथा—स्निग्ध=चिक्ण च तद् भोजन
च=स्निग्धभोजनम्, अनयो द्वन्द्व’, तस्य विवर्जकः=परित्यक्ता, तथा ‘ सजए ’
सयतः=सयमवान् ‘ सुसाहू ’ सुसाधु =निर्वाणमावक योगसाधनतत्परः, तथा—
‘ ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो’
व्यपगतक्षीरदधिसर्पिर्नवनीततैलगुडगण्डमत्स्यण्डिकमधुखाद्यकृमिकृतिपरित्यक्तकृता
हारः—तत्र—व्यपगताः=परिहृताः क्षीर=दुग्ध, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पिः=घृतम्,
नवनीत=‘मन्खन’ इति भाषाप्रसिद्धम्, तैल प्रसिद्धम्, गुडः=प्रसिद्धः खण्ड =शर्करा,

अब सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते हैं—‘ पचम-
आहारपणीय ’ इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन
वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है—(आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए)
जो आहार प्रणीत—जिसमें से घृत की विन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे
कामोदीपक तथा स्निग्ध—रसयुक्त हो साधु को वह नहीं खाना चाहिये।
क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण
साधक मनोवाक्य योग के साधन करने में तत्पर रहता है,
इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडिय
महुखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मन्खन, तैल, गुड,

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—“પચમ આહારપણીય”ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ પચમ ” આ વ્રતની પાચમી ભાવના “ પ્રણીતભોજન ” ત્યાગ
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“આહારપણીયનિદ્ધભોયણવિવજ્જણ ” જે પ્રણીત, એટલે
કે જેમાથી ધીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કામોદીપક તથા સ્નિગ્ધગ્ન
યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈ એ નહીં કાણુ કે તે ‘ સજણ ’ સયમી હોય
છે અને “સુસાહુ” નિવાણુનાસાધક મનો વાકાનય યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે
તેથી તેમણે “ વવગય સ્ત્રીર દહિસપ્પિ-નવણીયતેલગુડસડમચ્છડિયમહુસજ્જગવિગઈ
પરચિત્તકયાહારો ” દૂધ, દહી, ધી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાડ વગેરેથી

મત્સ્યપિન્ડકા='મિત્રી'તિ પ્રસિદ્ધા ચ યસ્માત્સઃ, તથા-મધુપમિદ્ધમ્, ત્યાગ્રક='સાજા'
 इति प्रसिद्धम्, इत्यादि लक्षणाभि विवृतिभिः परित्यक्तो यः सः, अनयोः
 कर्मधारयः, एतद्भूषो यः आहारः स क्रतो येन स तथोक्तः, अन्त=प्रान्तमोजीत्यर्थः
 निष्ठान्तस्य पूर्वनिघातः, एतादृशः साधु 'न' नैव 'दप्पण' दर्पण=दर्पकारक
 भोजन भुञ्जीत । तथा-न 'बहुसो' बहुशः=दिनमध्येऽनेकवार भोजन कुर्वीत ।
 तथा-'न निडग' नैत्यिक-नित्यपिण्ड भुञ्जीत, तथा-न 'सायसूपायिग'
 शाकसूपाधिकभोजन भुञ्जीत । तथा-'खद्व' प्रचुर भुञ्जीत । कथं तर्हि भो-
 क्तव्यम्? इत्याह-'तदा' तथा भोक्तव्य' भोक्तव्यम्, 'जहा' यथा—तद्
 भोजन 'से' तस्य ब्रह्मचारिणः, 'जायमायाए' यात्रामात्राय, यात्रायै=मय-
 मयात्रानिर्वाहार्थं या मात्रा=आहारपरिमाणरूपा भगवन्निर्दिष्टा ना यात्रामात्रा तस्यै,

શર્કરા, મિશ્રી, ફનસે રહિત તથા મધુ સ્વાજા, ઇત્યાદિરૂપ વિવૃત્તિયોસે
 રહિત આહાર કરના ચાહિયે । અર્થાત્ સાધુકો અન્ત પ્રાન્તભોજી હોના
 ચાહિયે । જો સાધુ હસ પ્રકાર કા આહાર લેતા હે વહ યુક્ત નહીં હૈ—ઉસે
 (ન દપ્પણ) દર્પકારક ભોજન નહી કરના ચાહિયે (ન વહુસો) ન દિન
 મેં અનેક વાર ભોજન કરના ચાહિયે (ન નિડગં) ન ઉસે નિત્ય પિંડ
 ભોજી હી હોના ચાહિયે ઓર (ન સાયસૂવાહિય) ન ઉસે શાક ઓર
 દાલ કી અધિકતાવાલા ભોજન હી કરના ચાહિયે (ન ખદ્વ) ન ઉસકો
 પ્રચુરમાત્રા મેં ભોજન કરના ચાહિયે । કિન્તુ હસ પ્રકાર સે ભોજન
 કરના ચાહિયે કિ (જહા) જિસસે વહ ભોજન (સે) ઉસ બ્રહ્મચારી કી
 (જાયમાયાએ ભવહ) યાત્રા માત્રા કે લિયે હો અર્થાત્ સયમ કે નિર્વાહ
 કે લિયે હો । યાત્રામાત્રા કો તાત્પર્ય હે કિ સયમનિર્વાહ રૂપ યાત્રા કે
 લિયે આહાર કા પરિમાણ જિતના પ્રભુ ને નિર્દિષ્ટ કિયા હે વહ આહાર

રહિત તથા મધ, ખાલ ઈત્યાદિ વિવૃત્તિઓથી રહિત આહાર કરવો. ભેઈ એ
 એટલે કે સાધુએ અન્ત પ્રાન્તભોજી થવું ભેઈ એ જે માધુ આ પ્રકારનો આહાર
 લે છે તેણે “ ન દપ્પણ ” દર્પકારક ભોજન લેવું ભેઈ એ નહીં “ ન વહુસો ”
 દિવસમાં અનેક વાર ભોજન લેવું ભેઈ એ નહીં “ ન નિડગ ” તેણે નિત્ય પિંડ
 ભોજી થવું ભેઈ એ નહીં, અને “ ન સાયસૂવાહિય ” તેણે વધારે દાળશાક
 યુક્ત ભોજન લેવું નહીં “ ન ખદ્વ ” તેણે વધારે પ્રમાણમાં ભોજન કરવું
 ભેઈ એ નહીં પણ એવી રીતે ભોજન કરવું ભેઈ એ કે “ જહા ” જેથી તે
 ભોજન “ સે ” તે બ્રહ્મચારીની “ જાયમાયાએ ભવહ ” યાત્રામાત્રાને માટે જ
 હોય, એટલે કે સયમના નિર્વાહને માટે જ હોય યાત્રામાત્રાનું તાત્પર્ય એવું
 છે કે સયમનિર્વાહરૂપ યાત્રાને માટે લગવાને આહારનું જેટલું પ્રમાણ દર્શાવ્યું

સયમયાત્રાર્થમિત્યર્થઃ, 'ભગ્ન' ભવતિ । એવમસ્તિ 'વર્મમસ' વર્મસ્ય વિપયે, 'વિવ્રમમો વા' વિવ્રમો=ધાતુપચયેન મનસોઽસ્થિરત્વાદ્ ભ્રતન્તિથ્વ ન ભવતિ, તથા—ધર્મસ્ય 'ભગ્ના' ભ્રાના નાગથ્વ ન ભવતિ । એવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'પ-
ળીયાહારવિરહસમિદ્જોગેણ' પ્રણીતાહારવિરતિસમિતિયોગેન=પ્રણીતો ય આહાર-
સ્તસ્માદ્ યા વિરતિસ્તદ્વૂપો યઃ સમિતિયોગસ્તેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા આરતમના
વિરતગ્રામધર્મો જિતેન્દ્રિયો વ્રત્તચર્યગુપ્તથ્વ ભવતિ ॥ સૂ.૧૦ ॥

હતના હી હોના ચાહિયે । જેસા હોને પર (ધર્મમસ વિવ્રમમો વા ભસણા
ય ન ય ભવહ) ધર્મ કે વિપય મે, ધાતુ કે ઉપચય સે માનસિક અસ્થિ
રતા હોને કે કારણ જો આન્તિ હોતી હૈ વહ નહી હો સક્તી હૈ, ઓર
ન ઉસકે વર્મ કા દુસ (નાશ) હી હો સક્તા હૈ । (એવ પળીયાહાર-
વિરહસમિદ્જોગેણ ભાવિથ્વો અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધર્મમે
જિદ્દિદ્દિ વ્રમચેરગુત્તે ભવહ) હસ પ્રકાર પ્રણીતાહારવિરતિરૂપ સમિતિ
કે યોગ સે ભાવિત વના હુઆ મુનિ અપને દ્વારા ગ્રહીત વ્રત્તચર્ય મે
સલગ્ન મનવાલા વન જાતા હૈ ઓર ગ્રામધર્મ-મૈથુન સે-વિરત હો જાતા
હૈ । હસ પ્રકાર અપની હન્દ્રિયોંકો જીત કર વહ મહાત્મા નવવિધ વ્રત્તચર્ય
કી ગુપ્તિસે અથવા દશવિધ વ્રત્તચર્યકે સમાવિસ્થાનસે યુક્ત વન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર ને વ્રત્તચર્ય વ્રત કી પાચવી ભાવના
પ્રકટ કી હૈ । હસ ભાવના કા નામ પ્રણીતાહાર વર્જન હૈ । વ્રત્તચર્ય
વ્રત ધારણ કરને વાલે સાધુ કો એસા ભોજન નહી કરના ચાહિયે જો

છે તેટલા પ્રમાણમા જ તે આહાર હોવો જોઈએ એવુ થતા “વર્મમસ વિવ્ર
મો વા ભસણા ય ન ય ભવહ” ધર્મના વિપયમા, ધાતુનો સત્રહ થવાને
કારણે માનસિક અસ્થિરતા થતી જો આન્તિ થાય છે, તે થઈ શક્તી નથી,
“એવે પળીયાહારવિરહસમિદ્જોગેણ ભાવિથ્વો અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધર્મમે જિદ્દિ
દિદ્દિ વ્રમચેરગુત્તે ભવહ” આ પ્રકારે પ્રણીતાહાર વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી
ભાવિત વયેલ મુનિ પોતે ગ્રહણ કરેલ વ્રત્તચર્ય વ્રતમા આસક્ત મનવાળો થઈ
જાય છે અને ગ્રામધર્મ-મૈથુનથી વિરક્ત થઈ જાય છે આ ગીતે પોતાની
ઈન્દ્રિયોને જીતીને તે મહાત્મા નવવિધ વ્રત્તચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ
વ્રત્તચર્યના સમાવિસ્થાનથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકારે વ્રત્તચર્યવ્રતથી પાચમી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ
કર્યું છે આ ભાવનાનું નામ “પ્રણીતાહાર વર્જન” છે વ્રત્તચર્યવ્રત ધારણ
કરનાર સાધુએ એવું ભોજન લેવું ન જોઈએ કે જે કામોદીયક રસ યુક્ત

अयोपमदरनाह—‘ एवमिण ’ इत्यादि ।

मूलम्—एवमिण सवरस्स दार सम्मं सचरिय होइ सुप्प-
णिहिय डमेहि पंचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरम्भि-
एहि णिच्चं आसरणंत एसो जोगो जेयव्वो धिइमया
मइमया अणासव्वो अकल्लुसो अच्छिद्धो अपरिस्साई असकि-
लिद्धो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ । एव चउत्थ सवरदार
फासिय पालियं सोहिय तीरिय किट्टिय सम्म आराहिय
आणाए अणुपालियं भवइ । एव नायमुणिणा भगवया
पणवियं परूविय पसिच्चं सिद्धवरसासणमिण आघविय
सुदेसियं पसत्थ चउत्थं संवरदार समत्त त्तिवेमि ॥सू०११॥

॥ इय पणहावागरणाणं चउत्थ सवरदार समत्त ॥

टीका—‘ एव ’ एवम्=प्रोक्तप्रकारेण ‘ इण ’ इदम् ‘ सवरस्स ’ सवर-
स्य=चतुर्थस्य ब्रह्मचर्यनामकस्य सवरस्य ‘ दार ’ द्वार ‘ सम्म ’ सम्मक्र ‘ सचरिय ’

कामोदीपक रसयुक्त हो । साधु तो अन्त प्रान्त भोजी होता है अतः
उसको दर्पकारक भोजन का परित्याग करते हुए दिन में अनेक बार
भी भोजन नहीं करना चाहिये और न उसे नित्यपिंड भोजी ही होना
चाहिये । अधिक भोजन सयमाचार में प्रमाद और प्रणीत रसवाला
भोजन मानसिक अस्थिरताका कारण बनता है इसलिये उसे नित्य इस
प्रणीताहार विरतिरूप समितिके योगसे अवश्य भावित रहना चाहिये ॥१०॥

अब सूत्रकार इस विषय का उपसंहार करते हुए कहते हैं—‘ एव

डाय भाधु तो अन्तप्रान्त लोए डाय छे तेथी तेले दर्पकारक भोजनने
परित्याग करवे। नेऽओ द्विसभा अनेक बार भोजन लेवु नेधओ नडी अने
तेले नित्य पिंड लोए पणु थवु नेऽओ नडी अधिक भोजन सयमाचारमा
प्रमाद अने प्रणीत रसवाणु भोजन मानसिक अस्थिरतानु कारणु बने छे
तेथी तेले डमेशा आ प्रणीताहार विरतिरूप समितिना योगथी अवश्य
भावित रहवु नेधओ ॥ सू १० ॥

संचरित=सम्यगाचरित, ' सुप्पणिहिय ' सुप्पणिहितम्— एकाग्रतया समारापित
' होइ ' भवति । ' इमेहि पचहिं वि ' एभिः=अनुपद प्रोक्तैर्पञ्चभिरपि ' कारणेहिं'
कारणैः=भावनारूपे, कीदृशं कारणैरित्याह— ' मणवयणकायपरिरक्खिएहिं '
मनोवचनकायपरिरक्षितैः मनोवाक्यैः सम्यक् समारापितैः । कियत्कालम् ?
इत्याह— ' निच्च ' नित्य=सर्वदा ' आमरणत्तं ' आमरणान्त=मरणपर्यन्तम् ' एसो'
एष=पूर्वोक्तो ' जोगो ' योग=ब्रह्मचर्यरूपो ' णेयव्वो ' नेतव्य=पालनीय,
केन ? इत्याह— ' तिमया मइमया ' धृतिमता मतिमता, कीदृजोऽयं योगः ?
इत्याह— ' अणासवो ' अनाश्रयः ' अकलुसो ' अकलुषः ' अच्छिदो ' अच्छिद्रः
' अपरिस्सई ' अपरिस्सामी ' असक्किद्धो ' अमक्लिष्ट, ' सुद्धो ' शुद्धः ' सव्व-

मिण ' इत्यादि० ।

टीका—(एवमिण) इस प्रकार से यह (सवरस्स दार) चौथा
ब्रह्मचर्य नामका सवरद्वार (सम्म सचरिय) अच्छी तरह से पाले जाने
पर (सुप्पणिहिय भवइ) स्थिर हो जाता है । इसलिये (इमेहि
पचहिं वि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं) मन, वचन और
काय, उन तीनों योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये उन पाँच—
भावनारूप कारणों से (निच्च) सदा (आमरणत्तं) जीवनभरतक
(एसोजोगो) यह ब्रह्मचर्यरूप योग (णेयव्वो) चित्त की स्वस्थता एवं
हेयोपादेय की विवेकता से युक्त हुए मुनिजन को पालन करना चाहिये ।
क्यों कि यह ब्रह्मचर्यरूप योग (अणासवो) नूतनकर्मों के आगमन
से रहित होने के कारण अनाश्रवरूप है, (अकलुसो) अशुभ अव्यव-
साय से वर्जित होनेके कारण अकलुष है, (अच्छिदो) पाप का स्रोत

इसे सूत्रकार आ विषयने। उपसंहार करता ऊँचे छे—“ एवमिण ” इत्यादि
टीका—“ एवमिण ” आ प्रकारे आ “ सवरस्स दार ” चोयु ब्रह्मचर्य नामनु
सवरद्वार “ सम्म सचरिय ” सांगी रीते पाणवामा आवे तो “ सुप्पणिहिय
भवइ ” स्थिर थव जय छे “ इमेहि पचहिं वि कारणेहिं मणवयणकाय प
रिरक्खिएहिं ” मन, वचन अने काय, ओ त्रले योगथी सारी रीते सुरक्षित
उरायेत ओ पाय भावना रूप कारणेथी “ निच्च ” महा आमरणत्तं ” जवन
पर्यन्तना “ एसो जोगो ” आ ब्रह्मचर्यरूप योग “ णेयव्वो ” चित्तनी स्वस्थता अने
हेयोपादेयनी विवेकतापूर्वक मुनि जेनेओ पाणनो नेधओ जण्यु छे आ ब्रह्म-
चर्यरूप योग “ अणासवो ” नूतन कर्मोना आगमन रहित होवाने उरले
अनाश्रव छे “ अकलुसो ” अशुभ अव्यवसायथी रहित होवाथी अकलुष छे,
“ अच्छिदो ” पापनो स्रोत तेनाथी छित्त थवाने उरले अच्छिद्र छे “ अपरिस्सई ”

‘જેણમણુણાઓ’ સર્વજિનાનુગતઃ । એવમ્-એનેન પ્રકારેણ ‘ચતુર્થ’ ચતુર્થ ‘સવરદાર’ સવરદાર ‘સવરદાર’ ‘ફાસિય’ સ્પૃષ્ટ ‘પાલિય’ પાલિત ‘સોહિય’ સોહિત ‘તીરિય’ તીરિત ‘કિટ્ઠિય’ કીર્તિતમ્, ‘સમ્મ’ સમ્મરુ ‘આરાહિય’ આરાધિતમ્ આણાણ ‘આજ્ઞયા’ અનુપાલિય ‘અનુપાલિત’ ભવડ ‘ભવતિ’ । એવમ્=એનેન પ્રકારેણ ‘નાયમુણિણા’ જ્ઞાતમુનિના=જ્ઞાતવશોદ્ધવેન મુનિના ‘ભગવયા’ ‘ભગવતા મહાવીરેણ’ ‘પણ્ણપિય’ પ્રજ્ઞાપિત ‘પરુપિય’ પ્રરૂપિત ‘પસિદ્ધ’

હસસે છિન્ન તો જાને કે કારણ અચ્છિદ્ર છે । (અપરિમ્મિદ્ધ) ચિન્દુરૂપ સે ખી કર્મરૂપ જલ હસમેં પ્રવેશ નહીં કર સવતા છે હસલિયે યદ અપ રિસાવી છે (અસકિલિદ્ધો) અસમાધિમાત્ર સે વર્જિન હોને સે યદ અસક્ષિપ્ત છે, (સુદ્ધો) કર્મમલ સે રહિત હોને કે કારણ શુદ્ધ છે, (સવ્વજિણમણુણાઓ) સમસ્ત પ્રાણિયો કા હસસે રિત હોને કે કારણ સમસ્ત અરહત ભગવતોં કા યદ માન્ય હુઆ છે, (એવ) હસ પ્રકાર સે જો હસ (ચતુર્થ સવરદાર) ચતુર્થ સવર દ્વાર કો (ફાસિય) અપને શરીર સે સ્પૃષ્ટ કરતે હૈં, (પાલિય) નિરન્તર ઉપયોગપૂર્વક હસ કા સેવન કરતે હૈં (સોહિય) અતિચારોં સે હસકો રહિત કરતે હૈં, (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસકા સેવન કરતે હૈં, (કિટ્ઠિય) દૂસરોં કો હસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ દેતે હૈં (સમ્મ) ત્રીન કરણ ત્રીન યોગોં સે હસકી ખલીપ્રકાર સે (આરાહિય) અનુપાલના કરતે હૈં સો અનેકે દ્વારા યદ યોગ (આણાણ અણુપાલિય ભવડ)) તીર્થંકર પ્રમુક્કી આજ્ઞાનુસાર હી પાલિત હોતા હૈં । (એવ) હસ પ્રકાર સે (નાયમુણિણા ભગવયા મહા

કર્મરૂપ જળનુ બિદુ પણ તેમા પ્રવેશ કરી શકતુ નથી તેથી તે અપરિમિત છે “ અસકિલિદ્ધો ” અસમાધિ ભાવથી રહિત હોવાથી તે અસક્ષિપ્ત છે, “ સુદ્ધો ” કર્મભળથી રહિત હોવાને કારણે શુદ્ધ છે ‘ સવ્વજિણમણુણાઓ ’ સમસ્ત જીવોનુ તેનાથી હિત થવાને કારણે સમસ્ત અર્હત ભગવાનો દ્વારા તે માન્ય થયેલ છે, “ એવ ” આ પ્રકારે જે આ “ ચતુર્થ સવરદાર ” એવા સવરદારનો “ ફાસિય ” પોતાના શરીરથી સ્પર્શ કરે છે, “ પાલિય ” નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, “ સોહિય ” અતિચારથી તેનુ રક્ષણ કરે છે, “ તીરિય ” પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે, “ કિટ્ઠિય ” બીજાને તેનુ પાલન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, “ સમ્મ ” ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી તેનુ સારી રીતે “ આરાહિય ” અનુપાલન કરે છે, તેમના દ્વારા આ યોગનુ “ આણાણ અણુપાલિય ભવડ ” તીર્થંકર ભગવાનની આજ્ઞાનુસાર પાલન થાય છે “ એવ ” આ પ્રકારે “ નાય મુણિણા ભગવયા મહાવીરેણ ” જ્ઞાત વરમા ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ ભગવાન મહા

પ્રસિદ્ધ ' ' સિદ્ધવરસાસનમિગ ' સિદ્ધવરસાસનમિદમ્, ' આવવિય ' આખ્યાત
' સુદેસિય ' સુદેગિત ' પસત્ય ' પ્રગસ્ત ' ચતુર્થ સવરદાર ' ચતુર્થ સવરદાર
' સમત્ત ' સમાપ્તમ્ । ' તિવેમિ ' ઇતિ વ્રવીમિ । અસ્મ સ્ત્રાસ્ય વ્યારયાઽ
પૂર્વવદ્ મોયા ॥ સુ ૧૧ ॥

॥ ઇતિ શ્રી ત્રિશ્વવિરયાત-જગદ્ગુહ - પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિ-
તલલિતકઠાપાલપદ્મ-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપદ્મ- વાદિમાનમર્દક-
શ્રીગાહ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ' જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદભૂષિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાઙ્મત્તવાચારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિગ્ગામપૂજ્યશ્રી
ઘાસીલાલત્રિવિરચિતાયા શ્રી પ્રશ્નવ્યાકરણમુત્રસ્ય સુદર્શન્યા
રયાયા વ્યારયાયા સવરાત્માકે દ્વીતીયે-ભાગે વ્રહ્મચર્યનામક
ચતુર્થ સવરદાર સમાપ્તમ્ ॥ ૪ ॥

વીરેજ) જ્ઞાતવશ મેં ઉત્પન્ન હુર મુનિ મગવાન્ મહાવીર ને (પણવિય)
હસ ચતુર્થ સવરદાર કો જિપ્યોં કેલિયે મામાન્યરૂપ સે સમજાયા હૈ ।
(પરુવિય) વાગ્ મેં ભેદ-પ્રભેદ પૂર્વક ઉત્તકા કથન કિયા હૈ । (પ્રસિદ્ધ)
હમીલિયે જિનવચન મેં યહ પ્રસિદ્ધ હુઆ હૈ । તયા (સિદ્ધવરસાસન-
મિગ) ભૂતકાલ મેં જિતને મો સિદ્ધ હો ચુકે હે , ડનકા યહ પ્રધાન
આજ્ઞારૂપ શાસન હૈ । (આવવિય) જેમા મગવાન મહાવીર પ્રભુને
દસકે વિષય મેં સર્વનાવ સે કહા હૈ ઓર (સુદેસિય) દર્વો મનુજોં
તયા અસુરોં સે યુક્ત પરિપદા મેં દસકા ઉપદેશ દિયા હૈ । (પસત્ય)
સમસ્ત પ્રાણિયોં કા હિતકારક હોને સે પ્રગસ્ત-મગલમય હૈ (ચતુર્થ
સવરદાર સમત્ત) યહ ચતુર્થ સવરદાર સમાપ્ત હુઆ (તિવેમિ) હે
જન્મ ! જેસા મેંને મગવાન સે સુના હૈ વૈસા હી મેં કહતા હુ ।

વીરે “ પણવિય ” આ ચોથા દારને શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યું
છે “ પરુવિય ” ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનું કથન કર્યું છે “ પ્રસિદ્ધ ”
તે દારણે જિનવચનમા તે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે તથા “ સિદ્ધવરસાસનમિગ ”
ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધ થઈ ગયા છે તેમનું આ મુખ્ય આજ્ઞા રૂપ શાસન
છે “ આવવિય ” એવું ભગવાન મહાવીરે તેને વિષે મર્વે ભાવથી કહ્યું છે
અને “ સુદેસિય ” દેવો, માણસો તથા અસુરોથી યુક્ત પરિપદામા તેનો
ઉપદેશ આપ્યો છે “ પસત્ય ” સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે હિતકારક હોવાથી પ્રગસ્ત
મગલમય છે “ ચતુર્થ સવરદાર સમત્ત ” આ ચોથું સવરદાર સમાપ્ત થયું “ તિવેમિ ”
હૈ જન્મ ! જેવું ભગવાનને મુખે સાંભળ્યું હતું તેવું જ તેનું કથન કરે છે

ભાવાર્થ—ઇસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કા ઉપમદ્વાર કરતે હુળ સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ જો મુનિજન ઇસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કો મન વચન ઓર કાય, ઇન ત્રીન યોગોં સે શુદ્ધિપૂર્વક પાંચ ભાવનાઓં સહિત મરણપર્યંત પાલતે હૈં ઉનકે અશુભ અધ્યવસાય રુક જાતે હૈં । નવીન કર્મોં કા વધ વદ હો જાતા હૈ । સચિત કર્મોં કી નિર્જરા હોને લગતી હૈ । પાપોં કા સ્રોત રુક જાતા હૈ । યહ અપરિસ્થાવી આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ ત્રિકાલ-સમસ્ત અરહત ભગવતોં ને ઇસકા પાલન ક્રિયા હૈ । ઉન્હોંં કે કથનાનુ-સાર ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ભી ઇસકા સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન પૂર્વક કથન ક્રિયા હૈ । ઇસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી ને અપને શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જવૂ સ્વામી કો સમક્ષાયા હૈ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ ચતુર્થ સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ—આ ચોથા સવરદ્વારનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાંચ ભાવનાઓ સહિત મરણ સુધી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય બધ વધ જાય છે નવીન કર્મોનો બધ પણ અટકી જાય છે અચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માટે છે, પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે તે અપરિસ્થાવી આદિ વિશેષણો વાળું છે ત્રિકાળવર્તી સમસ્ત અર્હત ભગવાનોએ તેનું પાલન કરેલ છે તેમના કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વ-રૂપ આદિ દર્શાવીને તેનું કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ પોતાના શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જબૂસ્વામીને સમજાવ્યું છે ॥ સૂ ૧૧ ॥

॥ ચોથું સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वार प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थं संवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत
स्यैव समपतीति क्रमप्राप्तं परिग्रहविरमणनामकं पञ्चमं संवरद्वारमभिधीयते ।
तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जवू ’ इत्यादि ।

मूलम्—जंवू । अपरिग्रहसंबुद्धे यं समणं आरभपरिग्रह-
हाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव
रागदोसा, तिणिणं यं दंडा, गारवाय गुत्तीओ तिणिणं,
तिणिणं यं विराहणाओ, चत्तारि कसाया, ज्ञाणसण्णा,
विगहा तथा यं हुति चउरो, पच—किरियाओ, समिइ, इदिय,
महव्वयाइं यं ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया,
अट्टमया, नवचेव यं वभचेरगुत्ती, दसप्पकारे यं समणधम्ममे
एक्कारस उवासगाणं, चारस यं भिक्खूणं पडिमा, तेरस
किरियाट्ठाणाइ, चउदस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया,
सोलस गाहा सोलस यं, असजम १७, अवम १८, णाय १९,
असमाहिट्ठाणा २०, सव्वला २१, यं पेरीसहा २२ यं, सूयगड-
ज्जयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८,
पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाइगुणा ३१, यं जोगसंगह
३२, सुरिणा ३३, तित्तीसासायणा । आदि एक्काइयं करेत्ता
एगुत्तरियाए बुद्धीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव यं भवेतिगाहिया ।
विरइपणिहिसु अविरईसु यं अण्णेसु यं एवमाइसु वहुसु ट्ठा-
णेसु जिणप्पसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु सकं
कंख निराकरित्ता सदहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

ભાવાર્થ—હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કા ઉપસદ્ધાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ જો મુનિજન હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કો મન વચન ઓર કાય, इन तीन योगों से शुद्धिपूर्वक पांच भावनाओं सहित मरणपर्यंत पालते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं । नवीन कर्मों का बंध बंद हो जाता है । संचित कर्मों की निर्जरा होने लगती है । पापों का स्रोत रुक जाता है । यह अपरिस्त्रावी आदि विशेषणों वाला है त्रिकाल समस्त अरहत भगवतों ने इसका पालन किया है । उन्हीं के कथनानुसार भगवान महावीर प्रभुने भी इसका स्वरूपादि प्रदर्शन पूर्वक कथन किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी ने अपने शिष्य अतिम केवली श्री जंबू स्वामी को समझाया है ॥ मृ० ११ ॥

॥ चतुर्थ सवरद्वार समाप्त ॥ ४ ॥

ભાવાર્થ—આ ચોથા સવરદ્વારનો ઉપસદ્ધાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાંચ ભાવનાઓ સહિત મરણ મુધી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય બંધ થઈ જાય છે નવીન કર્મોનો બંધ પણ અટકી જાય છે સચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માટે છે, પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે તે અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણો વાળું છે ત્રિગણવતી સમસ્ત અર્હત ભગવાનોએ તેનું પાલન કરેલ છે તેમના કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વરૂપ આદિ દર્શાવીને તેનું કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ ચોતાના શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જંબૂસ્વામીને સમજાવ્યું છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચોથું સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थं संवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत
स्यैव सभवतीति क्रमप्राप्तं परिग्रहविरमणनामकं पञ्चमं संवरद्वारमभिधीयते ।
तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जवू ’ इत्यादि ।

मूलम्—जंवू । अपरिग्रहसंबुद्धे यं समणे आरभपरिग्रह-
हाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव
रागदोसा, तिणिणं यं दडा, गारवाय गुत्तीओ तिणिणं,
तिणिणं यं विराहणाओ, चत्तारि कसाया, झाणसण्णा,
विगहा तथा यं हुंति चउरो, पंच—किरियाओ, समिइ, इदिय,
महव्वयाइ यं ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया,
अट्टमया, नवचेव यं वभचेरगुत्ती, दसप्पकारे यं समणधम्ममे
एक्कारस उवासगाणं, वारस यं भिक्खूणं पडिमा, तेरस
किरियाट्ठाणाइ, चउदस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया,
सोलस गाहा सोलस यं, असजम १७, अवभ १८, णाय १९,
असमाहिट्ठाणा २०, सवला २१, यं पेरीसहा २२ यं, सूयगड-
ज्जयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८,
पावसुय २९, मोहणिज्जं ३०, सिद्धाइगुणा ३१, यं जोगसंगह
३२, सुरिणा ३३, तित्तीसासायणा । आदि एक्काइयं करेत्ता
एगुत्तरियाए बुद्धीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव यं भवेतिगाहिया ।
विरइपणिहिसु अविरईसु यं अण्णेसु यं एवमाइसु बहुसु ट्ठा-
णैसु जिणप्पसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवड्ढिएसु संकं
कंख निराकरित्ता सदहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

અલુષ્ઠે અમૂઢે મળવયળકાયગુત્તે જો સો વીર-વરવયળ-વિરઙ્ગ
પવિત્થર વહુવિહપગારો સમત્તવિસુદ્ધવદ્ધમૂલો ધિદ્ધકદો વિળય
વેદ્ધઓ નિગ્ગયતેલોદ્ધ વિઝલજસનિચિયપીળપીવર-સુજાય-
સ્વંધો પચમહવ્વયવિસાલસાલો ભાવળાતયંતજ્ઞાણસુભગ
જોગનાળપહ્લવવરકુરધરો વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો સીલસુગંધો
અળળહયફલો પુળો ય મોઝ્ઝારવીયસારો મંદરગિરિસિહર-
ચૂલિયા ઇવ ઇમસ્સ મોઝ્ઝવરસુત્તિમગ્ગસ્સ સિહરભૂઓ સવર-
પાયવો ચરિમ સવરદાર ॥ ૧ ॥

ટીકા—‘જઞૂ’ હે જઞ્ઞુ ! ‘અપરિગ્ગહસવુદ્ધે’ અપરિગ્ગહસવૃત્તઃ=પરિગ્રહઃ=
ધર્મોપકરણાતિરિક્ત વસ્તુગ્રહણમ્, ધર્મોપકરણે મૂર્છાં ચ, તદ્વિદ્ધોઽપરિગ્રહાઃ,
તત્ર-સવૃત્ત =સલગ્નો યઃ સ ચકારાદ્ બ્રહ્મચર્યંદિ ગુણયુક્તથ યઃ સ, ‘સમણે’

પાચવા સવરદાર પ્રારભ

બ્રહ્મચર્ય નામ કા ચતુર્થ સવરદાર સમાપ્ત હો ચુકા । યહ બ્રહ્મચર્ય
નામકા ચતુર્થ સવર ઉસી વ્યક્તિ કે હોતા હૈ જો પરિગ્રહ સે સર્વથા
વિરત્ત હોતા હૈ । ઇસલિયે ક્રમ પ્રાપ્ત પરિગ્રહ વિરમણ નામ કા પાચવા
સવર દાર કહા જાતા હૈ, ઉસકા યહ પ્રથમ સૂત્ર હૈ—‘જઞૂ’ ઇત્યાદિ ।

ધર્મોપકરણો સે અતિરિક્ત વસ્તુઓ કા ગ્રહણ કરના ઓર ધર્મોપકરણો
મેં મૂર્છાભાવ કા રાખના ઇસકા નામ પરિગ્રહ હૈ । ઇસ પરિગ્રહ સે જો
ભિન્ન હૈ વહ અપરિગ્રહ હૈ । (જઞૂ) હે જઞ્ઞુ ! (અપરિગ્ગહસવુદ્ધે ય
સમણે) જો ઇસ અપરિગ્રહ મે સલગ્નચિત્ત હોતા હૈ એવ બ્રહ્મચર્ય આદિ

પાચમા સવરદારનો પ્રારભ

બ્રહ્મચર્ય નામનુ ચોથુ સવરદાર સમાપ્ત થયુ તે બ્રહ્મચર્ય નામનો
ચતુર્થ સવર એ જ વ્યક્તિને થાય છે કે જે પરિગ્રહથી સર્વથા વિરક્ત બને
છે તે કારણે અનુક્રમે આવતા પરિગ્રહ વિરમણ નામના પાચમા સવરદારનુ
વર્ણન કરવામા આવે છે, તેનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે—“જઞૂ” ઇત્યાદિ—

ધર્મોપકરણો કરતા વધારે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરવી અને ધર્મોપકરણોમા
મૂર્છાભાવ રાખવો તેને પરિગ્રહ કહે છે આ પરિગ્રહથી જે ઉદ્ધટ છે તે
અપરિગ્રહ કહેવાય છે “જઞૂ” । ‘અપરિગ્ગહસવુદ્ધેય સમણે’ જે આ અપરિ-
ગ્રહમા આસક્ત ચિત્તવાળા હોય છે અને બ્રહ્મચર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય

શ્રમણો ભવતિ । એતદેવ વર્ગ્યતે-‘ આરમ્ભ પરિગ્રહાઓ ’ આરમ્ભપરિગ્રહાત્-આરમ્ભઃ
=પૃથિવ્યાદ્યુપમર્દઃ, પરિગ્રહઃ=ગાઘ્યાભ્યન્તરભેદાદ્ દ્વિવિયઃ, તત્ર-ગાઘ્ય પરિગ્રહઃ
ધર્મોપકરણાતિરિક્તભિન્નવસ્તુગ્રહણ, ધર્મોપકરણેષુ મૂર્છા ચ । આન્તર’ પરિગ્રહ
સ્તુ-મિથ્યાદિરતિક્રિપાયપ્રમાદાશુભયોગસ્વ’, અનયોઃ સમાગરહન્દ્, તસ્માદ્
‘ વિરણ ’ વિરતો યઃ સ શ્રમણો ભવતિ । તથા યઃ ‘ ક્રોધમાણમાયાલોભા ’ ક્રોધ-
માનમાયાલોભાત્, અત્ર-સમાગરત્યાદેસ્ત્વમ્ ‘ વિરણ ’ વિરતઃ સ શ્રમણો ભવતિ ।
અયેનાદિ સરયયા મિથ્યાત્વાદિ લક્ષણાઽઽભ્યન્તરપરિગ્રહવિગતિ વિગદયન્નાહ—
‘ એમે ’ દ્વિત્યાદિ, ‘ એમે અસજમે ’ એમેઽસયમઃ-અવિરતિલક્ષણઃ, ‘ દો ચેવ રાગ-
દોસા ’ ડો ચૈવ રાગદ્વેષો । તથા-‘ તિણિ ય ’ નયથ ‘ દડા ’ ઢણ્ડા, તથા-ત્રીણિ
‘ ગારવા ય ’ ગૌરવાણિ ચ, ‘ ગુત્તીઓ ’ ગુપ્તયઃ, ‘ તિણિ ય ’ તિણ્ણથ । તથા-

ગુણો સે યુક્ત હોતા હૈ વહી શ્રમણ હૈ । યહ શ્રમણ (આરમ્ભપરિગ્રહા
ઓ વિરણ) આરમ્ભ ઓર પરિગ્રહ સે સર્વથા વિરત હોના હૈ । પૃથિવી
આદિ જીવોં કા ઉપમર્દન જિન ક્રિયાઓં સે હોતા હૈ વે સવ આરમ્ભ હૈ ।
પરિગ્રહ ગાઘ્ય ઓર આભ્યન્તર કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા હોતા હૈ । ધર્મો
પકરણો સે ભિન્ન વસ્તુઓં કા અપનાના-પાસ મે રખના-તથા ધર્મોપક-
રણોં પર મૂર્છાભાવ-મમત્વભાવ રખના યહ ગાઘ્યપરિગ્રહ હૈ । મિથ્યાત્વ,
અવિરતિ, કપાય, પ્રમાદ ઓર અશુભયોગ, વે સવ અભ્યન્તર પરિગ્રહ હૈ ।
શ્રમણ વહી હો સકતા હૈ જો આરમ્ભ ઓર ગાઘ્યાભ્યન્તર પરિગ્રહ સે
સર્વથા વિરત હોતા હૈ । (વિરણ ક્રોધમાણલોભા) હસી તરહ જો ક્રોધ,
માન, માયા ઓર લોભ, હનસે વિરત હોતા હૈ વહી શ્રમણ કહલાતા હૈ ।
(એમે અસજમે, દો ચેવ રાગદોસા, તિણિ ય દડા-ગારવાય, ગુત્તીઓ
તિણિ, તિણિ ય વિરાહનાઓ, ચત્તારિકસાયા, જ્ઞાણસળ્ળા, વિગદા તદા

છે એ જ શ્રમણ છે તે શ્રમણ “ આરમ્ભપરિગ્રહાઓ વિરણ ” આરમ્ભ અને
પરિગ્રહથી તદ્દન વિરત હોય છે પૃથિવી આદિ જીવોના ઉપમર્દન જે ક્રિયા
ઓથી થાય છે તે સધળાને આરમ્ભ કહે છે પરિગ્રહના જે ભેદ છે-ગાઘ્ય પરિ-
ગ્રહ અને અભ્યાન્તર પરિગ્રહ ધર્મોપકરણો મિવાયની વસ્તુઓ પામે રાખવી
તથા ધર્મોપકરણો ઉપર મૂર્છાભાવ મમત્વભાવ ગળવો તે ગાઘ્યપરિગ્રહ છે
મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, કપાય, પ્રમાદ અને અશુભ યોગ એ બધા અભ્યાન્તર
પરિગ્રહ છે જે ગાઘ્ય અને અભ્યાન્તર પરિગ્રહથી સર્વથા વિરત હોય છે તે
શ્રમણ થઈ શકે છે “વિરણ ક્રોધમાણમાયાલોભા” એ જ પ્રમાણે જ ક્રોધ, માન,
માયા અને લોભથી ગ્રહિત હોય છે તે જ શ્રમણ કહેવાય છે “ એમે અસજમે,
દોચેવ રાગદોસા, તિણિયદડા-ગારવાય, ગુત્તીઓ તિણિ, તિણિ ય વિરાહનાઓ,

‘તિણિ ય’ તિસ્રથ ‘વિરાઢ્ણાઞો’ વિરાધનાઃ । તથા-‘ચત્તારિ’ ચત્વારઃ
 ‘કસાયા’ કપાયા । તથા-ચત્વારિ ‘ઘાણા’ ધ્યાનાનિ, ‘તદ્દા ય’ તથા ચ
 ‘ચત્તરો’ ચત્તસઃ ‘ત્રિગદ્દા’ ત્રિગદ્ધા, ‘હુતિ’ ભવન્તિ । તથા-‘પચ’ પચ્ચ
 ‘કિરિયાઞો’ ક્રિયાઃ, તથા-પચ્ચ ‘સમિહ્દિયમહ્વયાઢ ય’ સમિતીન્દ્રિયમદ્વા
 વ્રતાનિ ચ । પચ્ચ સમિતયઃ, પચ્ચેન્દ્રિયાણિ, પચ્ચ મદ્વાવ્રતાનિ ચ । તથા-‘છજ્જી-
 યનિકાયા’ પહ્જીવનિકાયા । છન્નલેસાઞો’ પદ્ધ ચ લેશ્યાઃ । તથા-‘સત્ત
 ભયા’ સત્ત ભયાનિ । તથા-‘અટ્ઠમયા’ અટ્ઠમદા’ । ‘નવ ચેવ ય’ નવ ચેવ ચ
 ‘વભચેરગુત્તીઞો’ વ્રહ્મચર્યગુપ્તયઃ । ‘દસપ્પકારે ય’ દશપકારશ્ચ = દશવિધઃ,
 ‘સમણધમ્મે’ શ્રમણ ધર્મઃ । તથા-‘એકારસ’ એકાદશ ‘ઉવાસગાણ’ ઉવાસ
 કાના ‘વારસ ય’ દ્વાદશ ચ ‘મિક્કરૂણ’ મિક્કુણા ‘પહિમા’ પ્રતિમાઃ । ‘તેરસ’
 ત્રયોદશ ‘કિરિયાઢ્ઢાણાઢ’ ક્રિયાસ્થાનાનિ । ‘ચત્તદસ’ ચત્તુર્દશ ‘ભૂયગામા’
 ભૂતગ્રામાઃ । ‘પન્નરસ’ પરમાહમ્મિયા’ પચ્ચદશ પરમાધાર્મિકા’ । ‘સોલસગાહા

ય હુતિ ચત્તરો) તથા યે જો અસયમાદિક એક સે લેકર તેત્રીસ થોલ
 હૈ, જૈસે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ, દો રાગ ઓર દ્વેષ ત્રીન દણ્ડ, ત્રીન
 ગૌરવ, ત્રીન શુભિ, ત્રીન વિરાધના, ચાર કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્જો,
 ચાર વિકથા, (પચ્ચકિરિયાઞો) પાચ ક્રિયા, (સમિહ્દિયમહ્વયાઢ)
 પાચ સમિતિ, પાચ હન્દ્રિય પાચ મદ્વાવ્રત, (છજ્જીવનિકાયાછન્નલેસા-
 ઞો સત્તભયાઅટ્ઠમયા નવ ચેવ ય વભચેરગુત્તી, દસપ્પકારે ય સમણ
 ધમ્મે, એકારસ ઉવાસગાણ વારસય મિક્કરૂણ પહિમા) છજ્જીવનિકાયા
 છહ લેશ્યા, સાત ભય, આઠ મદ, નૌ વ્રહ્મચર્ય શુભિ, દશ પ્રકાર કા
 શ્રમણધર્મ, ગ્યારહશ્રાવકો કી, વારહ મિક્કુઓ કી પ્રતિમાઈ, (તેરસ
 કિરિયાઢ્ઢાણાઢ, ચત્તદસભૂયગામા, પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા

ચત્તારિ કસાયા, ઘાણસણ્ણા ત્રિગદ્દાતદ્દા ય હુતિ ચત્તરો ” તથા આ જે અન્ય
 માદિક એકથી લઈને તેત્રીસ થોલ છે, જેવા કે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ,
 જે રાગ અને દ્વેષ, ત્રણ દંડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ શુભિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર
 કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્જા, ચાર વિકથા, “પચ્ચ કિરિયાઞો” પાચ ક્રિયા
 “સમિહ્દિયમહ્વયાઢ” પાચ સમિતિ પાચ હન્દ્રિય, પાચ મદ્વાવ્રત,
 છજ્જીવનિકાયા છન્નલેસાઞો સત્તભયા અટ્ઠમયા નવચેવ ય વભચેરગુત્તી, દસપ્પકારે
 ય સમણધમ્મે, એકારસ, ઉવાસગાણ વારસયમિક્કરૂણ પહિમા ” છ જીવનિકાયા,
 છ લેશ્યા, સાત ભય આઠ મદ, નવ વ્રહ્મચર્ય શુભિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ
 ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, ચાર મિક્કુઓની પ્રતિમાઓ, “તેરસ કિરિયાઢ્ઢાણાઢ,
 ચત્તદસ-ભૂયગામા પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા સોલસા ય અસજમ ૧૭,

य' पोटशगागा पोटशकानि च=गायेति पोटशमध्ययन येषा तानि गाथापोड
शकानि सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धाभ्ययनानि, तानि च पोटशमरयकानि । तथा
-सप्तदशविधः ' असजमे ' असयम' । अष्टादशविधम्, ' अवभ ' अव्रह्मचर्यम् ।
तथा-एकोनविंशति सरयकानि, ' णाय ' ज्ञानानि=ज्ञाताभ्ययनानि । विंशति
' असमाहिट्टाणा ' असमाधिस्थानानि, एकविंशतिः ' सत्रला य ' सत्रलाथ ।
द्वाविंशति ' परीसहा य ' परीपहाथ । तथा-त्रयोविंशति सरयकानि, ' मयग-
डज्जयणा ' सूत्रकृताभ्ययनानि । चतुर्विंशतिः ' देवा ' देवाः । पञ्चविंशति
' भावणा ' भावनाः षट्त्रिंशतिः ' उद्देस ' उद्देशाः । सप्तविंशति ' गुण '
गुणाः=अनगारगुणा । अष्टविंशति ' कप्पा ' कल्पाः-आचारप्रकल्पा ।
एकोनविंशतिः ' पावसुय ' पापश्रुतानि । त्रिंशत्-' मोहणिज्ज ' मोहनीयानि=
मोहनीयस्थानानि । एकविंशत्-' सिद्धाङ्गुणा य ' सिद्धाङ्गुणाथ सिद्धसहभा-
विगुणाः । द्वाविंशत्-' जोगसग्रह ' योगसग्रहाः, तथा-द्वाविंशत्-' सुरिंदा '

सोलसा य असजम १७, अवभ १८, णाय १९, असमाहिट्टाणा २०,
सत्रला २१, य परीसहा २२ य, सूयगडज्जयणा २३) १३ क्रियास्थान,
१४ भूतग्राम, १५ परमाधार्मिक, १६ सूत्रकृताङ्गके प्रथम श्रुतस्कन्धके अ ययन,
१७ प्रकारका असयम, १८ प्रकारका अव्रह्मचर्य, १९ ज्ञाताके अभ्ययन,
२० प्रकारके असमाधिस्थान, २१ प्रकारके शवल, २२ परीपह, २३ सूत्र-
कृताङ्गके अभ्ययन (देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प
२८ पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाङ्गुणा ३१, य जोगसग्रह ३२,
सुरिंदा ३३, तित्तीसासायणा) २४ देव, २५ भावना, २६ उद्देश, २७
अनगार गुण, २८ आचारप्रकल्प, २९ पापश्रुत, ३० मोहनीयस्थान, ३१
सिद्धसहभाविगुण, ३२ योगसग्रह, ३३ सुरेन्द्र-भवनपतियोंमे २०,

अवभ १८, णाय १९, असमाहिट्टाणा २०, सत्रला २१, य परीसहा २२ य,
सूयगडज्जयणा २३ " क्रियास्थान, १४ भूतग्राम, १५ परमाधार्मिक, १६
सूत्रकृताङ्गना प्रथम श्रुतस्कन्धना अभ्ययन, १७ प्रकारका असयम, १८ प्रकारका
अव्रह्मचर्य, १९ ज्ञाताना अभ्ययन, २० प्रकारका असमाधि स्थान, २१ प्रका-
रका शवल, २२ परीपह, २३ सूत्रकृताङ्गना अभ्ययन, " देव २४, भावणा
२५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८, पाव सुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धा-
ङ्गुणा ३१, य जोगसग्रह ३२, सुरिंदा ३३ तित्तीसासायणा " २४ देव, २५
भावना, २६ उद्देश, २७ अनगार गुण, २८ आचार प्रकल्प, २९ पापश्रुत,
३० मोहनीय स्थान, ३१ सिद्ध सहभावि गुण ३२ योग सग्रह, ३३ सुरेन्द्र,

‘તિણિ ય’ તિસ્રથ ‘વિરાઢ્ણાન્નો’ વિરાધનાઃ । તથા-‘ચત્તારિ’ ચત્તારઃ
 ‘કસાયા’ કપાયા । તથા-ચત્તારિ ‘ઘ્રાણા’ ધ્યાનાનિ, ‘તદ્વા ય’ તથા ચ
 ‘ચત્તરો’ ચતસ્રઃ ‘વિગહા’ વિક્રયા, ‘હુતિ’ યજન્તિ । તથા-‘પચ’ પચ્ચ
 ‘કિરિયાઓ’ ક્રિયાઃ, તથા-પચ્ચ ‘સમિહદિયમહવ્વયાઈ’ સમિતીન્દ્રિયમહા
 વ્રતાનિ ચ । પચ્ચ સમિતયઃ, પચ્ચેન્દ્રિયાણિ, પચ્ચ મહાવ્રતાનિ ચ । તથા-‘છજ્જી-
 યનિકાયા’ પદ્મજીવનિકાયા । છન્નલેસાજો’ પદ્મ ચ લેશ્યાઃ । તથા-‘સત્ત
 ભયા’ સત્ત ભયાનિ । તથા-‘અટ્ઠમયા’ અટ્ઠમદાઃ । ‘નવ ચેવ ય’ નવ ચૈવ ચ
 ‘વમ્ભચેરગુત્તીઓ’ વ્રહ્મચર્યગુણયઃ । ‘દસપ્પકારે ય’ દશપ્રકારશ્ચ = દશવિધઃ,
 ‘સમણધમ્મે’ શ્રમણ ધર્મઃ । તથા-‘એકારસ’ એકાદશ ‘ઉવાસગાળ’ ઉપાસ
 કાના ‘વારસ ય’ દ્વાદશ ચ ‘મિલ્લૂણ’ મિલ્લુણા ‘પહિમા’ પ્રતિમા । ‘તેરસ’
 ત્રયોદશ ‘કિરિયાઢ્ઢાણાઈ’ ક્રિયાસ્થાનાનિ । ‘ચત્તદસ’ ચત્તુર્દશ ‘ભૂયગામા’
 ભૂતગ્રામાઃ । ‘પન્નરસ’ પરમાહમ્મિયા’ પચ્ચદશ પરમાધાર્મિકાઃ । ‘સોલસગાહા

ય હુતિ ચત્તરો) તથા યે જો અસયમાદિક એક સે લેકર તેતીસ થોલ
 હૈ, જૈસે-અચિરતિરૂપ એક અસયમ, દો રાગ ઓર દેષ ત્રીન દણ્ડ, ત્રીન
 ગૌરવ, ત્રીન ગુણિ, ત્રીન વિરાધના, ચાર કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજો,
 ચાર વિક્રયા, (પચકિરિયાઓ) પાચ ક્રિયા, (સમિહદિયમહવ્વયાઈ)
 પાંચ સમિતિ, પાચ ઇન્દ્રિય પાચ મહાવ્રત, (છજ્જીવનિકાયાછન્નલેસા
 ઓ સત્તભયાઅટ્ઠમયા નવ ચૈવ ય વમ્ભચેરગુત્તી, દસપ્પકારે ય સમણ
 ધમ્મે, એકારસ ઉવાસગાળ વારસય મિલ્લૂણ પહિમા) છજ્જીવનિકાયા
 છહ લેશ્યા, સાત ભય, આઠ મદ, નૌ વ્રહ્મચર્ય ગુણિ, દશ પ્રકાર કા
 શ્રમણધર્મ, ગ્યારહશ્રાવકો કી, વારહ ભિક્ષુઓ કી પ્રતિમાઈ, (તેરસ
 કિરિયાઢ્ઢાણાઈ, ચત્તદસભૂયગામા, પન્નરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા

ચત્તારિ કસાયા, ઘ્રાણસણ્ણા વિગહાતહા ય હુતિ ચત્તરો ” તથા આ જે અસય
 માહિત એકથી લઈને તેત્રીસ થોલ છે, જેવા કે-અચિરતિરૂપ એક અસયમ,
 બે રાગ અને દેષ, ત્રણ દડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ ગુણિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર
 કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજા, ચાર વિક્રયા, “પચ કિરિયાઓ” પાચ ક્રિયા
 “સમિહદિયમહવ્વયાઈ” પાચ સમિતિ પાચ ઇન્દ્રિય, પાચ મહાવ્રત,
 છજ્જીવનિકાયા છન્નલેસાઓ સત્તભયા અટ્ઠમયા નવચૈવ ય વમ્ભચેરગુત્તી, દસપ્પકારે
 ય સમણધમ્મે, એકારસ, ઉવાસગાળ વારસયમિલ્લૂણ પહિમા ” છ જીવનિકાયા,
 છ લેશ્યા, સાત ભય આઠ મદ, નવ વ્રહ્મચર્ય ગુણિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ
 ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, બાર ભિક્ષુઓની પ્રતિમાઓ, “તેરસ કિરિયાઢ્ઢાણાઈ,
 ચત્તદસ-ભૂયગામા પન્નરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા સોલસા ય અસજમ ૧૭,

अविरतिपु=अविरतिरूपेण भगवता कथितेषु प्राणातिपातादिषु च, तथा—‘अण्णेषु य’ अन्येषु च ‘एवमाइणसु’ एवमादिकेषु=एव विरेषु ‘बहुसु द्वाणेषु’ बहुषु स्थानेषु=अनेकविधेषु पदार्थेषु सग्यास्थानेषु वा चतुस्त्रिंशदादिषु, कीदृशेष्वेषु? ‘जिणपसत्थेषु’ जिनप्रशस्तेषु=जिनकथितेषु, अतएव—‘अवितहेसु’ अवित-
थेषु=सत्थेषु, पुनः—‘सासयभावेसु’ शाश्वतभावेषु=ओघतोऽक्षयस्वभावेषु, अत-
एव—‘अवट्ठिणसु’ आसितेषु=सर्वदा भाविषु ‘सक’ शङ्का=सन्देह, ‘कख’
काङ्क्षा=परमतवाञ्छा ‘निराकरित्ता’ निराकृत्य=दूरीकृत्य श्रमणः, ‘सद्धति’
श्रद्धधाति ‘भगवओ’ भगवतो जिनस्य ‘सासण’ शासनम् कीदृशं
सन् श्रमणो जिनस्य शासन श्रद्धधातीत्याह — ‘अणियाणे’ अनिदान
=देवद्वर्षादिवाञ्छारहितः, ‘अगारवे’ अगोरव=ऋद्ध्यादिगौरववर्जितः,
‘अलुद्धे’ अलुब्ध=विषयेष्वलपट ‘अमूढे’ अमूढः, तथा—‘मणोवयणकाय

एकाग्रतारूप प्रणिधानो में (अद्विरइसु) भगवान् के द्वारा अविरतरूपसे कथित प्राणातिपात आदिको में तथा (अण्णेषु य एवमाइणसु) और भी उसी तरहके दूसरे (बहुसु द्वाणेषु) अनेक पदार्थों में अवयवा (जिणपसत्थेषु) चौंतीस आदि मर्यादागानो में जो कि जिनकथित हैं और उन्हीं कारण (अवितहेसु) जिन में असत्प्रता का थोड़ा साभी स्थान नहीं, अर्थात् सर्वथा सत्य है, तथा (सासयभावेसु) सामान्यकी अपेक्षा जिनका अक्षय स्वभाव है, और इसीसे (अवट्ठिणसु) जिनकी मत्ता सदा रहती है उनमें (सक) शङ्का-सन्देह, (कख) काङ्क्षा-परमतवाञ्छा को (निराकरित्ता) दूर करके जो श्रमण (अणियाणे) निदान-देव-द्वर्षादि प्राप्तिकी इच्छा से विहीन बन कर (अगारवे) ऋद्ध्यादि गौरव से रहित हो कर (अलुद्धे) विषयों में लपटतासे रिक्त होकर और

“अविरइसु” भगवान् द्वारा अविरतउपे उचित प्राणातिपात आदि तथा “अण्णेषु य एवमाइणसु” भीन्त पणु ओ न प्रशरना ‘बहुसु द्वाणेषु’ अनेक पदार्थोमा अथवा “जिणपसत्थेषु” श्रोत्रीम आदि मण्णा स्थानोमा डे ने जिन उचित डे अने ओ न डगळे “अवितहेसु” नेमनामा असत्य-
तानु नरा पणु स्थान नथी ओटले डे ने सर्वथा सत्य डे, तथा “सासय भावेसु” सामान्यनी अपेक्षाओ जिननो अक्षय स्वभाव डे, अने तेथी न “अवट्ठिणसु” नेनी मत्ता सदा रहे छे, तेमनामा “सक” शङ्का-सन्देहने “कख” काङ्क्षा-परमत वाचनाने ‘निराकरित्ता’ हर उगीने ने श्रमण “अणियाणे” निदान-देवद्वर्षादि प्राप्तिनी उचित नीने “अगारवे” ऋद्ध्यादि गौरवथी रहित थईने “अलुद्धे” विषयोनी लालमाथी उचित

સુરેન્દ્રાઃ, ત્રિશતિર્ભવનપતિષુ, દ્વાદશસુ કલ્પેષુ દશ, તત્ર-અષ્ટસુ રત્નપેષ્વરો, નવમ
 દશમયોરેક, એકાદશ દ્વાદશયોરેક ઇતિ, ઠી જ્યોતિષેષુ, ચન્દ્રસૂર્યાણામમળ્યા
 તત્ત્વેડપિ જાતિગહ્ણાદ્ દાત્રેઃ, અથ દ્વાત્રિશદિન્દ્રાઃ । ‘તિત્તીમાપાયણા’ ત્રય
 ત્વિશદાશાતનાઃ, અસયમાઘાશાતનાન્તાનામેષા વ્યાખ્યાડઅદ્યકસૂત્રસ્યાસમ્ભૂત
 મુનિતોષ્ણાન્યાયા વ્યારયાયા દ્રષ્ટ્યા । એતે ણિ ‘આદિ પદ્માડય’ આદ્રેકા
 દિક્કમ્=આદેઃ=પ્રથમતઃ એકાદિક્કમ્=અદિક્કમ્=અદિક્કમ્ ‘કરેત્તા’ કૃત્તા=આશ્રિત્ય
 ‘એકુત્તરિયાણ’ એકોત્તરિક્કયા=અથ ઉત્તરે યમ્યાઃ સા તયા ‘બુદ્ધિણ’ બુદ્ધિયા
 ક્રમશઃ એકેક બુદ્ધિયેત્યર્થ, ‘બુદ્ધિણસુ’ વૃદ્ધિતેષુ=વૃદ્ધિપ્રાપ્તેષુ સત્સુ ‘જાવ ય’
 યાવચ્ચ ‘તિગાહિયા’ ત્રિકાવિશ્વાઃ=ત્રયધિકાઃ ‘તીસ’ ત્રિશ્વ=ત્રયત્રિશ્વ ‘ભવે’
 ભવતિ । અથ ‘એણસુ’ ઇતિ ગમ્યમ્, એતેણુપદમુખતેષુ અસયમાદિષુ, તથા—
 ‘વિરહપણિહિસુ’ વિરતિપ્રણિધિષુ=વિસ્તયઃ=પ્રાણાતિપાતવિરમણાનિ, પ્રણિધય=
 પ્રણિધાનાનિ ચિત્તેકાગ્રતાસ્થાણિ, આયોર્દ્વન્દ્વઃ, તેષુ તથોક્તેષુ, તથા ‘અવિરહસુ’

વારહકલ્પો મેં ૧૦=૮ આઠ કલ્પો મેં ૮, નવમેં દસવે રત્નપમેં ૧ ગ્યારહવે
 વારહવે ૧) જ્યોતિષિયોં મેં જાતિ કી અપેક્ષા ચંદ્ર ઓર સૂર્ય ૨ દશ ૫કાર
 ૩૨ । ઓર આશાતના ૩૩ । इन सत्रकी व्याख्या आवश्यक सूत्र की
 पूज्यश्री घासीलालजी महाराजद्वारा की गई मुनि-तोषणी नामकी टीका
 में की गई है—अतः जिज्ञासुजन इस विषयको बहा से देखलें । (आदि
 एकादय करेत्ता) इस प्रकार ये प्रथम एकादि सरयाको लेकर के क्रमशः
 (एगुत्तरियाण बुद्धिण बुद्धिणसु) एकर की वृद्धिसे वद्धित होते २ (ती
 साओ जाव य भवे तिगाहिया) तीन अधिक तीस अर्थात् तेतीस हो
 जाते हैं । इन असयमादि तेतीस प्रकार तक के सरया स्थानों में तथा
 (विरहपणिहिसु) प्राणातिपात विरमणरूप विरतियों में, चित्त की

ભવનપતિઓમા ૨૦, બાર કલ્પોમા ૧૦ (આઠ કલ્પોમા ૮, નવમા અને દશમા ૮૫મા
 ૧ અને અગિયાર તથા બારમા ૮૫મા એક) જ્યોતિષિયોમા જાતિની અપેક્ષાએ
 સૂર્ય અને ચંદ્ર એમ બે સુરેન્દ્ર એ રીતે કુલ ૩૨ સુરેન્દ્રો થયા અને
 અશાતના ૩૩ આ બધાની વ્યાખ્યા આવશ્યક સૂત્રની પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી
 મહારાજ દ્વારા કરાયેલ મુનિતોષણી નામની ટીકામા આપેલ છે તે જિજ્ઞાસુ
 જન તે વિષયને તેમાથી જોડ લે “આદિ એકાદય કરેત્તા” આ રીતે પહેલેથી
 એકાદિ સખ્યાને લઈને ક્રમશઃ “એગુત્તરિયાણ બુદ્ધિણ બુદ્ધિણસુ” એક એક
 વધારતા જતા “તીસાઓ જાવ ય ભવેતિગાહિયા” તેત્રીસ થઈ જાય છે એ
 અસયમાદિ તેત્રીસમા પ્રકારમુધીના સખ્યા સ્થાનોમા તથા “વિરહ પણિહિસુ”
 પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ વિરતિઓમા, ચિત્તની એકાગ્રતારૂપ પ્રણિધાનોમા

સઃ, તથા-‘ ધિઙ્કદો ’ ધૃતિકન્દ. = ધૃતિઃ = ચિત્તસ્વાસ્થ્ય સૈવ કન્દો મૂલાધોભાગ
રૂપો यस્ય સઃ, તથા-વિણયવેદઓ ’ વિનયવેદિકાઃ = વિનય એવ વેદિકા = વેદિ-
ર્યસ્ય સઃ, તથા-‘ નિગ્ગયતેલોકકવિપુલ્લજસનિચિયપીણપીવરસુજાયસ્વધો ’ નિર્ગત-
ત્રૈલોક્યવિપુલયશોનિચિત્તપીનપીવરસુજાતસ્કન્ધઃ = નત્ર નિર્ગત = વ્યાપ્ત ત્રૈલોક્યે યત્ત-
નિર્ગતત્રૈલોક્ય લોકત્રયવ્યાપ્તમિત્યર્થઃ, એતાદૃશ યદ્ વિપુલ = વિશાલ યશઃ = રુચા-
તિસ્તદેવ નિચિત્તો = નિવિઙ્ પીનો = મહાન્ પીવર = પુષ્ટઃ સુજાત = સુનિષ્પન્નઃ સ્કન્ધો
યસ્ય સઃ, તથા-‘ પચમહઽવ્યવિસાલસાલો ’ પચ્ચમદાત્રતવિશાલશાલઃ = પચ્ચમહા-
ત્રતાન્યેવ વિશાલાઃ = વિસ્તૃતાઃ શાલાઃ = શાખા યસ્ય સઃ, તથા-‘ ભાવણાતયતઽજ્ઞા-
ણસુભગજોગનાણપલ્લવવરકુરધરો ’ ભાવનાત્વગન્ત યાનસુભગયોગજ્ઞાનપલ્લવવરાહુ-
રધર, તત્ર-ભાવનૈવ = અનિત્યત્વાદિચિન્નનલક્ષણૈવ ત્વગન્ત = ત્વગ્રૂપોઽવયવો યસ્ય
સ, ભાવનારૂપત્વચાસપન્નઇત્યર્થ, તથા-યાનમ્ = ધર્મ યાનાદિ, શુભયોગા = શુભ-
મનોવાક્યાવ્યાપારાઃ, જ્ઞાન = ગોઘ્ય તાન્યેવ પલ્લવાવરાહુરાશ્વઃ તેષા ધરો યઃ સઃ,
અનયો કર્મવારય, તથા-‘ વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો ’ વહુગુણકુસુમસમૃદ્ધઃ = વહવો યે

વિશુદ્ધ મૂલ સમ્યગ્દર્શન છે । (ધિઙ્કદો) ચિત્તસ્વાસ્થ્યરૂપ ધૈર્ય હી ઇસ
કા કદ છે, (વિણયવેદઓ) વિનય હી ઇસકી વેદિકા-ઉત્પત્તિ ભૂમિ
છે । (નિગ્ગય-તેલોકકવિપુલ્લજસનિચિયપીણપીવરસુજાયસ્વધો) ત્રૈલોક્ય
મેં વ્યાપ્ત યશ હી ઇસકા નિવિઙ્, પીન-બડા-પીવર-પુષ્ટ ઓર સુજાત-
સુહાવના-સ્કન્ધ છે । (પચમહઽવ્યવિસાલસાલો) પાંચ મહાવ્રત હી ઇસકી
વિશાલ શાખાઈ છે । (ભાવણાતયતઽજ્ઞાણસુભગજોગનાણપલ્લવવરકુર-
ધરો) અનિત્ય આદિ ભાવનાઈ હી ઇસકી ત્વચા-છાલ છે, ધર્મ-ધ્યાન
આદિ ધ્યાન, મન, વચન ઓર કાય કી શુભ પ્રવૃત્તિરૂપ, વ્યાપાર એવ
સમ્યક્જ્ઞાન, યે સર્વ હી ઇસકે પત્તે ઓર ઉત્તમ પલ્લવાહુર છે, (વહુગુણ
કુસુમસમિદ્ધો) ક્ષાન્ત્યાદિ અનેક ગુણોરૂપી પુષ્પ સે યહ સદા સમૃદ્ધ

ભૂણ છે “ ધિઙ્કદો ” ચિત્ત સ્વસ્થતારૂપ ધૈર્ય જ તેનું કદ છે “ વિણય વેદઓ ”
વિનય જ તેની વેદિકા ઉત્પત્તિની ભૂમિકા છે “ નિગ્ગયતેલોકકવિપુલ્લજસ
નિચિયપીવરસુજાયસ્વધો ” ત્રિલોકમા વ્યાપ્ત યશ જ તેનું નિવિઙ્, પીન-મોટું-
પીવર-મજબૂત અને સુજાત-સુદર થક છે “ પચમહઽવ્યવિસાલસાલો ” પાંચ
મહાવ્રત જ તેની વિશાળ શાખાઓ છે “ ભાવણાતયતઽજ્ઞાણસુભગજોગનાણ
પલ્લવવરકુરધરો ” અનિત્ય આદિ ભાવના જ તેની છાલ છે, ધર્મ-ધ્યાન આદિ
ધ્યાન, મન, વચન અને કાયની શુભ પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યાપાર, અને જ્ઞાન, એ મૌ
તેના પત્તા, અને ઉત્તમ પલ્લવાહુર છે “ વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો ” ક્ષાન્ત્યાદિ

ગુણે' મનોવચનકાયગુણશ્ચ શ્રમણો ભવતિ । અપરિગ્રહમવર વૃક્ષોપમયા વર્ણયન્નાહ
 —' જો સો ' યઃ સઃ=સવરપાદપો યઃ સઃ સ ચરમ સવરદ્વારમિતિ યોગ કીદશઃ
 સવરપાદપઃ ઇત્યાહ—' વીરવરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહવ્પગારો ' વીરવરવચન
 વિરતિપ્રવિસ્તરવહુવિધપમારઃ=વીરવરસ્ય=ભગવતો મહાવીરસ્ય ચત્રવચનમ્=આજ્ઞા,
 તત્ સક્ષાગાદ્ યા વિરતિ'=પરિગ્રહાન્નિવૃત્તિ સૈવ પ્રવિસ્તરો વિસ્તરયુક્તો વહુ-
 વિધ'=અનેકવિધઃ—વિચિત્રવિષયાપેક્ષયા ક્ષાયોપગમાદ્યપેક્ષયા ચ પાદપપક્ષે મૂલક-
 ન્દાદ્યપેક્ષયાઽનેકવિધ પ્રકારઃ ભેદો યસ્ય સ', તથા—' સમત્તવિસુદ્ધવદ્મૂલો '
 સમ્યક્તવવિશુદ્ધવદ્મૂલઃ=સમ્યક્તવમેવ=સમ્યગ્દર્શનમેવ વિશુદ્ધ = વદ્મ મૂલ યસ્ય

(અમૂઢે) મૂઢતા સે વર્જિત હોકર તથા (મળવચનકાયગુણે) મન,
 વચન ઔર કાય કી સરલતા સે સપન્ન વનકર (ભગવઓ) ભગવાન્
 જિનેન્દ્ર કે (સાસણ) શાસન કા (સદ્દહ) શ્રદ્ધાન કરતા હૈ વહી
 શ્રમણ સચ્ચા શ્રમણ હૈ । અથ સૂત્રકાર હસ અપરિગ્રહસવર કા વૃક્ષ
 કી ઉપમા ઢેકર વર્ણન કરતે હૈ—(જો સો) જો યહ અન્તિમ સવરદ્વાર
 રૂપ સવરવૃક્ષ હૈ વહ (વીરવરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહવ્પગારો)
 અન્તિમ તીર્થકર ભગવાન્ મહાવીર કી આજ્ઞા સે જો પરિગ્રહ સે જીવ
 કી નિવૃત્તિ હોતી હૈ ઉમ રૂપ હૈ । યહ પરિગ્રહ સે નિવૃત્તિ હી હસ વૃક્ષ
 કે વિસ્તૃત અનેક પ્રકાર-ભેદ હૈ । તાત્પર્ય હસ કા યહ હૈ કિ જિસ પ્રકાર
 મૂલ કન્દ આદિ કી અપેક્ષા કો લેકર ંક હી વૃક્ષ વિવિધ પ્રકારો
 વાલા માના જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર યહ પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહ મી વિચિત્ર
 વિષયો કે ત્યાગ કી અપેક્ષા ઔર કર્મો કે ક્ષયોપગમ આદિ કી અપેક્ષા
 સે અનેક પ્રકાર કા હોતા હૈ । (સમત્તવિસુદ્ધવદ્મૂલો) હસ વૃક્ષ કા-

બનીને અને “ અમૂઢે ” મૂઢતાથી રહિત થઈને તથા “ મળવચનકાયગુણે ”
 મન, વચન અને કાયની સરળતાથી યુક્ત બનીને ‘ ભગવઓ ’ ભગવાન જિને
 ન્દ્રના “ સામણ ” શાસનનું “ સદ્દહ ” શ્રદ્ધાન કરે છે તે શ્રમણ જ સાચો શ્રમણ છે

હવે સૂત્રકાર આ અપરિગ્રહ સવરને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનું વર્ણન
 કરે છે—“ જો સો ” જે આ દેવના પરિગ્રહદ્વાર રૂપ અપરિગ્રહ સવર વૃક્ષ
 છે તે “ વીરવરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહવ્પગારો ” અતિમ તીર્થકર ભગવાન
 મહાવીરની આજ્ઞાથી જે પરિગ્રહથી જીવની નિવૃત્તિ થાય છે તે રૂપ છે તે
 પરિગ્રહથી નિવૃત્તિ લેવી એ જ આ વૃક્ષના વિસ્તૃત અનેક પ્રકાર-ભેદ છે તેનું
 તાત્પર્ય એ છે કે જેમ મૂળ, કન્દ આદિની અપેક્ષાએ એક જ વૃક્ષ જેમ અનેક
 પ્રકારના વાળુ મનાય છે તેમ આ પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહ પણ વિચિત્ર વિષ
 યોના ત્યાગની અપેક્ષાએ તથા કર્મોના ક્ષયોપગમ આદિની અપેક્ષાએ અનેક
 પ્રકારનું હોય છે “ સમત્તવિસુદ્ધવદ્મૂલો ” સમ્યગ્દર્શન આ વૃક્ષનું વિશુદ્ધ

ભાવાર્થ—ચતુર્થ સવર દ્વાર કે પ્રરૂપણ કે વાદ અવ સ્વરૂપકાર પચમ સવર દ્વારકા વર્ણન કર રહે છે । ઇસકે વર્ણન કરને ના પ્રયોજન ઉન્હો ને ઇસ પ્રકાર કહા છે કે જવ તક જીવ કી વાત્યામ્વન્તર રૂપ પરિગ્રહસે નિવૃત્તિ નહીં હોતી તવ તક વહ ચતુર્થ સવરદ્વારકા પૂર્ણ રૂપ સે આરાધક નહીં વનતા હે । ધર્મોપકરણો કે સિવાય અન્ય પદાર્થો કા ગ્રહણ કરના અથવા ધર્મોપકરણો મેં મૂર્છાભાવ રખવા ઇસકા નામ પરિગ્રહ છે । મૂર્છા કા નામ આસક્તિ છે । વસ્તુ છોટી હો, મોટી હો, ચેતન હો, અચેતન હો વાત્ય હો યા આન્તરિક્ત હો કૈસી હી હો, ચાહે ન હી હો, તો મી ઇમમે આસક્તિસે વધે રહના—ઊસકી લગન મેં વિવેક રો વૈઠના પરિગ્રહ છે । ઇસ પરિગ્રહસે યુક્ત હુઆ પ્રાણી ક્રોધ, માન, માયા ઓર લોભ કપાયો સે વધારહતા છે । રાગ દ્વેષ ઊસકી આત્મામે દિલોરે લેતે રહતે છે । સયમકે મહત્ત્વ કી ગણના ઊસકે ચિત્ત મેં નહીં હોતી છે । પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત અપરિગ્રહ કે સિદ્ધાન્ત કી પ્રતિષ્ઠા વહ વિચારા નહીં કર સરતા હે, અતઃ સન્ને અર્થ મેં શ્રમણ વહી છે જો ઇસ પરિગ્રહ સે દૂર છે—વિરક્ત છે । અપરિગ્રહી જીવકે લિયે પ્રભુકા આદેશ છે કે વહ પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત શાસન મેં ન શકા કરે ન કાક્ષા કરે—

ભાવાર્થ—ગ્રોથા મવગ્દ્વાગ્નુ વર્ણુન કર્યા પડી હવે સૂત્રગાર પાત્રમા સવરદ્વાગ્નુ વર્ણુન કરે છે તેનુ વર્ણુન કરવાનો હેતુ તેમણે એવો બતાવ્યો છે કે જ્યાં સુધી બાહ્ય અને આભ્યન્તર પગ્મિહથી જીવ નિવૃત્ત થતો નથી ત્યાં સુધી તે ચોથા મવગ્દ્વાગ્નુ પૂર્ણ ગીતે આગધડળની રાહતો નથી ધર્મોપકરણો સિવાયના અન્ય પદાર્થોને અપનાવવા અથવા ધર્મોપકરણોમા (મૂર્છાભાવ) મમત્વભાવ ગણવો તેનુ નામ પરિગ્રહ છે મૂર્છા એટલે આમક્ષિત વસ્તુ નાની હોય કે મોટી હોય, જડ હોય કે ચેતન હોય, બાહ્ય હોય કે આન્તરિક્ત હોય, ભલે ગમે તેવી હોય, ભલે ન પણ હોય, તો પણ તેમા અસંજિતથી બધાઈ રહેલુ—તેની લગનમા વિવેકને શુભાવી યેમવો તે પરિગ્રહ ગણાય છે આ પરિગ્રહ વાળો માણુમ ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ ડાપાયો વડે બધાયેલો રહે છે રાગદ્વેષ તેના આત્મામા તોક્ષાન મચાવે છે સયમનુ મહત્ત્વ તેના ચિત્તમા નહીં જેલુ હોય છે પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત અપરિગ્રહના સિદ્ધાન્તની પ્રતિષ્ઠાનો તે વિચાર કરી શકતો નથી, તેથી માયો શ્રમણ તો એ જ છે કે જે આ પગ્મિહથી વિરક્ત છે અપગ્મિહથી જીવને માટે પ્રભુનો આદેશ છે કે તે પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત શાસનમા રાકા ન કરે કે કાક્ષા ન

ગુણાઃ ક્ષાન્ત્યાદિરુપાસ્ત એવ કુસુમાનિ=પુષ્પાણિ તઃ સમૃદ્ધઃ, તથા 'સીલસુગધો' શીલસુગન્ધઃ, શીલ સદાચારો વ્રતચર્ય વા, તદેવ જોમનો ગન્ધો યસ્મિન્ સઃ, તથા—'અગણ્ઢવફલો' અનાશ્રવફલ = આશ્રવો=નવકર્મોદયઃ, ન આશ્રવોઽનાશ્રવ, સ એવ ફલ યસ્ય સઃ, આશ્રવનિરોધરુપફલસમ્પન્ન इत्यર્થઃ, 'પુણો ય' પુનશ્ચ 'મોક્ષવરવીયસારો' મોક્ષવરવીજમારઃ=મોક્ષાર=વરમોક્ષઃ—અવ્યાપાધ સુખ રુપઃ, તસ્ય વીજસારઃ—શ્રેષ્ઠ વીજરુપઃ, તથા—'મન્દરગિરિસિંહચૂલિયા ઇવ' મન્દરગિરિશિખરચૂલિકેવ મન્દગિરિઃ=મેરુપર્વતસ્ય ચત્તુર્ગિવર તસ્ય યા ચૂલિકા=ચૂડા સેવ, તથા 'ઇમસ્સ' અમ્ય-પ્રમિદસ્ય 'મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ્સ' મોક્ષવર મુક્તિમાર્ગસ્ય=મોક્ષઃ=સકલકર્મક્ષયલક્ષણ, તદર્થો વરઃ=શ્રેષ્ઠો મુક્તિરુપો=નિર્લોભતા રુપેવ માર્ગઃ=પન્થામ્તસ્ય 'સિંહરમ્ભૂઓ' શિખરમ્ભૂતઃ એતાદૃશ 'સવરવરપાયવો' સવરવરપાદપ=સવરઃ=આશ્રવનિરોધઃ, સ એવ વરપાદપ=શ્રેષ્ઠદૃક્ષોઽસ્તિ । એતા દશમિદ 'ચરિમ' ચરમમ્ = પચ્ચમુ સપરદારેષ્વન્તિમમ્, 'સવરદાર' સપરદારમ્, અસ્તિ ॥ યુ ૦ ૧ ॥

બના રહતા હૈ । (સીલસુગધો) સદાચાર અથવા વ્રતચર્ય ઇસકી સુતાવની ગધ હૈ, અગણ્ઢવફલો) આશ્રવ-નવીન કર્મોં કે આગમન કા જો રુકના હોતા હૈ વહી ઇસકા ફલ હૈ—ઇન ફલો સે હી યહ યુક્ત બના હુઆ હૈ । (પુણો ય) ફિર (મોક્ષવરવીયસારો) અવ્યાપાધ સુખવાલે મોક્ષ કા યહ એક શ્રેષ્ઠ વીજ હૈ । (મન્દરગિરિસિંહ ચૂલિયા ઇવ) સુમેરુ પર્વત કે શિખર કી ચૂલિકા કે સમાન હૈ (ઇમસ્સ મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ્સ સિંહ રમ્ભૂઓ) ઇસ પ્રસિદ્ધ સકલ કર્મક્ષય મોક્ષ કા જો નિર્લોભતારુપ માર્ગ હૈ ઇસકા શિખરમ્ભૂત હૈ । (સવરપાયવો) ઇસ તરહ કા યહ સવરરુપ શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હૈ । ઇસ પ્રકાર (ચરિમ સવરદાર) પાંચ સવર દારોમેં યહ અન્તિમ સવર દાર કહા ગયા હૈ ।

અનેક ગુણો રૂપી પુષ્પોથા તે સદા સમૃદ્ધ રહે છે “ સીલસુગધો ” સદાચાર અથવા વ્રતચર્ય જે તેની સુદર ગધ છે, “ અગણ્ઢવફલો ” આશ્રવ-નવા કર્મોના આગમનનું અટકવું-એ જે તેના રૂળ છે એ રૂળોથી જે તે યુક્ત હોય છે “ પુણોય ” વળી “ મોક્ષવરવીયસારો ” અવ્યાપાધ સુખવાળા મોક્ષનું તે એક શ્રેષ્ઠ વીજ છે “ મન્દરગિરિસિંહચૂલિયાઇવ ” સુમેરુ પર્વતના શિખરની ટોચ સમાન છે, “ ઇમસ્સ મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ્સ સિંહરમ્ભૂઓ ” એ પ્રસિદ્ધ સકલ કર્મક્ષય મોક્ષનો જે નિર્લોભતા, રૂપ માર્ગ છે તે તેના શિખર સમાન છે “ સવરપાયવો ” આ પ્રકારનું આ સવરરૂપ રૂપ વૃક્ષ છે આ પ્રકારે “ ચરિમ સવરદાર ” થાય સવરદારમાનું આ અન્તિમ સવરદાર કહેવાયું છે

સજમનાયગેહિ તિત્થંકરેહિ સઠ્ઠજગજીવવચ્છલેહિ તિલોય-
મહિણહિ જિણવરિદંહિ ઇમ જોણી જગાણં દિટ્ઠા, ન કપ્પઙ્ગ
જોણી સમુચ્છિદોત્તિ । તેણ હિ વજ્જેતિ સમણસીહા ॥સૂ૦૨॥

ટીકા—‘ જત્ય ’ યત્ત=પરિગ્રહવિરમણલક્ષણે ચરમસવરદ્વારે ‘ ગામાગરણગ
રશેડકવ્વડમડવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ’ ગ્રામાકરનગરશેડકર્પટમડમ્વદ્રોણમુખપ-
ત્તનાશ્રમગત ચ, ગ્રામાગીના વ્યારયા પૂર્વવદ્ વો યા, તેપુ ગત=સ્થિત ચ ‘ કિંચિ’
કિંચિત્=નિમિપિ વસ્તુ ‘ અપ્પ વા ’ અલ્પ વા=સ્વલ્પમૂલ્યકર્પદિકાદિક વા ‘ વહુ
વા ’ વહુ ચ=વહુમૂલ્ય રત્નાદિક વા ‘ અણુ વા ’ અણુ વા=પ્રમાણતો લઘુ મુક્તા
ફલાદિક વા, ‘ થૂલ વા ’ સ્થૂલ વા=પ્રમાણત સ્થૂલ કાણ્ડાદિક વા, અત્ર સર્વત્ર
ચ શબ્દો વાડ્યકઃ, ‘ તસથાવરકાયદવ્વજાય ’ ત્રસસ્થાવરકાયદ્રવ્યજાત=ત્ર-
સકાય=શિષ્યાદિક સ્થાવરકાય=રત્નાદિક, તદ્વપ દ્રવ્યજાત ‘ મણસા પિ ’ મન

અવ સૂત્રકાર ત્રસ સ્થાવરવિષયક અપરિગ્રહ કા વર્ણન કરતે હૈ—
‘ જત્ય ન કપ્પઙ્ગ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જત્ય) જિમ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અન્તિમચરમસવરદ્વાર મે સ્થિત
સાધુ કો (ગામાગરનગરશેડકવ્વડમડવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ચ) ગ્રામ,
આકર, નગર, શેડ, કર્પટ, મડવ, દ્રોણમુખ, પત્તન ઓર આશ્રમ, ઇનમે
રવણી હુઈ, ભૂલી હુઈ, પહી હુઈ (કિંચિ વિ) કુલ્લ મી ચીજ (અપ્પ વા)
ચાહે વહ કોડી આદિ જૈસી અલ્પમૂલ્યવાલી હો (વહુ વા) ચાહે રત્ના-
દિક જૈસી વહુમૂલ્યવાલી હો (અણુ વા) ચાહે છોટી હો (થૂલ વા)
ચાહે વહી હો, (તસથાવરકાયદવ્વજાય) ચાહે ત્રસ, સ્થાવરકાયરૂપ
દ્રવ્ય જાત હો—શિષ્યાદિક ત્રસકાય હૈ, રત્નાદિક સ્થાવરકાય હૈ’ ઉન્હે

હવે સૂત્રકાર ત્રસ સ્થાવર સંબંધી અપરિગ્રહનું વર્ણન કરે છે—

‘ જત્ય ન કપ્પઙ્ગ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ જત્ય ’ જે પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અન્તિમ સવરદ્વારનું આરાધન
કરતા સાધુને “ ગામાગરનગરશેડકવ્વડમડવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ચ ” ગ્રામ,
આકર નગર, શેડ, કપ્પટ, મડવ, દ્રોણમુખ, પત્તન અને આશ્રમ, તેમા
રાખેલી, ભૂલથી પડી રહેલી, પડી રહેલી “ કિંચિ વિ ” કોઈ પણ ચીજ
“ અપ્પ વા ” ભલે તે કોડી આદિ જેવી નણની કીમતની હોય, “ વહુવા ”
ભલે તે રત્નાદિ બહુ મૂલ્યવાન હોય, “ અણુ વા ” ભલે નાની હોય,
“ થૂલ વા ” કે મોટી હોય, ‘ તસથાવરકાયદવ્વજાય ” ભલે ત્રસ, સ્થાવરકાય
રૂપ દ્રવ્ય જાત હોય—શિષ્યાદિક ત્રસકાય ગણાય છે, રત્નાદિક સ્થાવરકાય ગણાય

તસસ્થાવરાદિ વિષયકાપરિગ્રહ યર્જયતિ—‘હત્ય ન’ इत्यादि ।

મૂલ્ય—જત્ય ન કપ્પડ ગામાગરણગર—સેડકઢ્વડમડવ-
દોળમુહપટ્ટણાસમગય ચ કિંચિ અપ્પ વા વહુ વા અણુ વા
થૂલ વા તસથાવરકાયદઢ્વજાયં મણસા વિ પરિઘેત્તુ ન
ધનહિરણ્ણસુવણ્ણસેત્તવત્થુ, ન ઢાસીદાસ—ભયક — પેસહય
ગયગવેલગ વા, ન જાણજુગસયણાસણાડ, ન હુત્તક,
ન કોડિક, નોવાળહ, ન પેહુળવીચળતાલિયટગા, ણ યાવિ
અયતત્તયતવસીસગકસરયય—જાયરુવમણિમુત્તાહારિપુડગ-
સહદતમણિસિગસેલકાયવરચેલચમ્મપત્તાડ મહારિહાડ પર-
સ્મ અજ્ઞોવવાયલોભજળળાડ પરિકઢ્ઠિટ ગુણવઓ, ન યાવિ
પુપ્ફફલકદમૂલાદિકાડ સળસત્તરસાડ સઠ્ઠધળળાડ તીહિં
વિ જોગેહિ પરિઘેત્તુ ઓસહમેસજ્જભોયળઢ્ઠયાણ સજયાળં
કિ કારણ અપરિમિયળાળદસળધરેહિ સીલગુણવિગયતવ-

केवल इनसे विहीन होकर वह उनके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वों में अपनी पूर्ण अडिग श्रद्धा रखे । प्रभुने जो यहा पर एक आदिसे लेकर तेतीस तक के सख्यास्थान कहे हैं, उनमें तथा अविरति आदि जो और भी स्थान कहे हैं उनमें नि शक्ति भावसे श्रद्धा करनी चाहिए, तभी जा कर वह सच्चा श्रमण कहला सकता है । इत्यादि विषय को प्रतिपादन करते हुए सूत्रकारने हम अपरिग्रहस्व सवर द्वारकी विवेचना वृक्षकी उपमा समता लेकर की है ॥ सू० १ ॥

કરે કહત તેનાથી રહિત થઈ ને તે તેમના દ્વારા પ્રતિપ્રાદિત તત્ત્વોમા પોતાની પૂર્ણ તથા અડગ શ્રદ્ધા રાખે પ્રભુએ અહીં જે એક આદિથી લઈને તેત્રીસ સુધીના સખ્યાસ્થાન બતાવ્યા છે તેમનામા, તથા અવિરતિ આદિ જે બીજા પણુ સ્થાન બતાવ્યા છે તેમા નિ શક્તિ ભાવથી શ્રદ્ધા રાખવી જોઈએ, ત્યારેજ તેને સાચો શ્રમણ કહી શકાય છે ઇત્યાદિ વિષયનુ પ્રતિપાદન કરતા સૂત્ર-કારે આ અપરિગ્રહ રૂપ સવરદ્વારને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનુ વિવેચન કર્યું છે સૂ૦ ૧

साऽपि परिग्रहीतु कल्पते । तथा न 'उवाणह' उपानदम्-उपलक्षणत्वात्पादुका-
मोजादिक चाऽपि परिग्रहीतु न कल्पते, तथा-न 'पेहुणवीयणतालियटगा' पेहुण
व्यजनतालवृन्तकानि, पेहुण=मयूरपिच्छम्, व्यजन=वशादि निर्मितम्, ताल
वृन्तक=तालपत्रनिर्मित व्यजनम्, एतानि 'पया' इति भाषाप्रसिद्धानि, एषामि
तरेतरयोगद्वन्द्वः तानि मनसापि परिग्रहीतु न कल्पन्ते, तथा-'ण यावि' न
चापि 'अयतउयतयसीसससरययजायरुमणिमुक्ताहारपुटगसखदतमणिसिंगसेल-
कायवरचेलचम्मपत्ताड' अयत्तपुताम्रसीसकास्यरजतजातरूपमणिमुक्ताहारपुटक-
शङ्खदतमणिशृङ्गशैलपाचरचेलचर्मपात्राणि, तत्र = अयो = लोहः, त्रपु=त्रयम्,
'कथीर' 'रागा' प्रति प्रसिद्धम्, ताम्र=प्रसिद्धम्, सीस='सीसा' इति प्र-
सिद्धम्, कास्यम्=त्रपुताम्रसयोगज द्रव्यम्, रजतम्='चान्दी' प्रसिद्धम्, जात-
रूपम्=सुवर्णम्, मणयः=इन्द्रनीलाद्याः, मुक्ताः=मुक्ताफलानि, हारपुटक=लोह-
विशेषः, शङ्ख=प्रसिद्धः, दन्तमणिः=गजमस्तकसमुत्पन्नोमणि, शृङ्ग=हरिणप्रभृतीना

कमण्डलु भी वह नही रखता है । (नोवाणह) जते, खडाँ आदि भी
वह रखने की इच्छातक नहीं करता है । (न पेहुण वीयण तालियटगा)
पेहुणमयूरपिच्छ, वशा शलाकादिनिर्मित बीजना, तालपत्र निर्मित व्यजन
-पखा, उन्हें भी वह रखने की मन से भी चाहन नहीं करता है । (ण
यावि अय-तउय-तवसीस-कस-रयय-जायरुव-मणि-मुक्ता-हार-पु-
टग-सख-दत-मणि-सिंग-सेल-कायवर-चेल-चम्म-पत्ताड गुणवओ
परिकड्डिउ) लोहे का पात्र, त्रपु-रागा या पात्र, तावे का पात्र, सीसा
का पात्र, कासे का पात्र, चादी का पात्र, सुवर्ण का पात्र, इन्द्रनील आदि
मणि का पात्र, मुक्ताफल-मोती का पात्र, हारपुटक-लोहविशेष का
पात्र, शख का पात्र, गजमोती का पात्र, हरिण आदि पशुओं के शृंग

पाणी आदि गणवा भाटे कम उणने पणु ते राणी राउता नथी "नो वाणह"
जडा, आदि राभवानी ते धउठा पणु उरता नथी "न पेहुणवीयणतालि
यटगा" पेहुण-मयूरपिच्छ, वशा शलाकादि निर्मित विजणो, तालपत्र निर्मित
पणो, तेमने राभवानी ते मनयी पणु ते धउठा उरता नथी "ण यावि अय-
तउय-तव-सीस-कस-रयय-जायरुव-मणि-मुक्ता-हार पुडग-सख दत-मणि-सिंग-
सेल-कायवर-चेलचम्म-पत्ताड गुणवओ परिकड्डिउ" लोठानु पात्र, त्रपु-रागानु
पात्र, ताणानु पात्र, भीमानु पात्र, ज्ञानानु पात्र आदीनु पात्र, मोनानु पात्र,
इन्द्रनील आदि मण्डिनु पात्र, मोतीनु पात्र, हारपुटक-लोहविशेषनु पात्र,
गजमोतीनु पात्र, शखनु पात्र, हरण आदि पशुओना शिगडानु पात्र,

સાડપિ પરિવેત્તુ ' પરિગ્રહીતુ ' ન કપ્પઃ ' ન કલ્પતે ડમમેવાર્થે વિગદયતિ, ' હિર
ણ્યસુવર્ણચેત્તવત્થુ ' હિરણ્યગુરુર્ણક્ષેત્રવસ્તુ મનસાડપિ પરિગ્રહીતુ ન કલ્પતે, તથા-
' દાસીદાસભયરૂપેસહયગયગવેલગ ગા ' દાસીદાસમૃતરૂપૈગ્યયગજગવેલક ગા,
દાસીદાસ=પસિદ્ધમ્, મૃતકાઃ=વેતન ટહીત્વા કાર્યરૂપાઃ, પ્રૈગ્યા-કાર્યે સમુપ
સ્થિતે ગ્રામાત્તરે પ્રેષણીય મૃત્યા, હયાઃ=અશ્વઃ, ગજાઃ પસિદ્ધાઃ, ગવેલકાઃ=
મેષાઃ પણ સમાહાર ડન્દ, મનસાડપિ પરિગ્રહીતુ ન કલ્પતે, તથા- ' જાણજુગ
સયણાસણાડ ' યાન યુગ્યશયનાસનાનિ, યાન=રથાદિકમ્, યુગ્ય=વાહનમાત્રમ્,
શયન=શય્યા, આસન=પસિદ્ધમ્, ણતાનિ મનસાપિ પરિગ્રહીતુ ન કલ્પતે । તથા-
' ન છત્તક ' ન છત્રમ્=ન ડત્રમ્, ' ન કોઢિકા ' ન કુણ્ડિકા=રમણ્ડલ. મન

(યજ્ઞસા વિ પરિવેત્તુ ન કપ્પઃ) સાધુ કો મન સે ખી ગ્રહણ કરના
યોગ્ય નથી છે । અવ ડમ્મી વિષય કો સૂત્રકાર વિષદર્શન સે મમજ્ઞાતે હ-
જો અપરિગ્રહી સાધુ છે ડસકો (ન ધનહિરણ્યસુવર્ણચેત્તવત્થુ) હિર
ણ્ય, સુવર્ણ, ક્ષેત્ર, વાસ્તુ તથા (ન દાસીદાસ ભયરૂ-પેસ-હય-ગય-ગ
વેલગગા) દાસી, દાસ, મૃતક, પ્રૈગ્ય, હય, ગજ, ગવેલક તથા-(ન જાણ
જુગસયણામણાડ) યાન, યુગ્ય, શયન, આસન, ચે સવ વસ્તુએ મન
સે ખી ચાહને યોગ્ય નથી હોતી છે । ગ્રામાદિક શબ્દો ખી વ્યાખ્યા
પહિલે સવર દ્વારો મેં કી જા છુકી છે । વેતન લેકર જો કામ કરતે હે
વે મૃતક કહલાતે છે । તથા કાર્ય આને પર જો ડસકે નિમિત્ત વાહર
ગાંવ મેજે જાતે તે વે પ્રેષ્ય કહલાતે છે । ગવેલક નામ મેષ કા છે । રથ
આદિ યાન ઓર વાહનમાત્ર યુગ્ય હે । હસી તરહ (ન છત્તક) વૃષ્ટિવા
રણ કરને કે લિયે છત્ર કો, (ન કોઢિક) પાની આદિ રાખને કે લિયે

છે, તેમને “મણસા વિ પરિવેત્તુ ન કપ્પઃ” મનથી ગ્રહણ કરવાનુ સાધુને માટે
યોગ્ય નથી હવે એજ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારથી સમજાવે છે-જે સાધુ અપ
રિગ્રહી છે તેણે “ ન ધનહિરણ્યસુવર્ણચેત્તવત્થુ ” હિરણ્ય, સુવર્ણ, ક્ષેત્ર, વસ્તુ
તથા “ ન દાસીદાસ ભયરૂ-પેસ-હય-ગય-ગવેલગગા ” દાસ, દાસી, મૃતક, પ્રૈય
હય, ગજ, ગવેલક તથા “ ન જાણજુગસયણાસણાડ ” યાન, યુગ્ય શયન,
આસન, એ બધી વસ્તુઓ મનથી પણ ગ્રહણ યોગ્ય હોતી નથી ગ્રામાદિક
શબ્દોની વ્યાખ્યા આગળના સવરદ્વારોમા આપવામા આવી છે પગાર લઈને
કામ કરનારને “મૃતક” નોકર કહે છે તથા કામ પડતા જેમને કાર્યને
નિમિત્ત બહાર ગામ મોકલાય છે તેમને ‘ પ્રૈષ્ય ’ (હત) કહે છે દેવાને
ગવેલક કહે છે રથ આદિ યાન અથવા દરેક વાહનને “યુગ્ય” કહે છે એ
જ પ્રકારે “ ન છત્તક ” તડકાથી અથવા માટે છત્રને તથા “ = કોઢિક ”

पुनरप्यक्षरणीयानि प्रदर्शयति—‘ जपि य ’ इत्यादि ।

मूलम्—जपि य ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-
पलल-सूपसकुलि वेढिम वरिसोलग-चुण्णकोसग-पिड सिंह-
रिणीवट्ठग-मोयक-खीर-दहि-सप्पि नवणीय-तिष्ठ-गुड-खड-
मच्छंडिय--मधु--खज्जक--वज्जण--विहिमाडय पणीय उवस्सए
परघरे रण्णे वा न कप्पइ तपि सनिहीकाउ सुवि-
हियाण, ज पिय उद्धिट्ठुविय रडयग पज्जवजायपकिण्णपा-

अपने मूलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों में पड़ी
हुई, भूली हुई, रस्सी हुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोड़ी हो, बहुत
हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नहीं
करे । इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी
इच्छा न करे । दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह
रखने का विचार तक भी न करे । न वह औषध भैषज्य और आहार
आदि के निमित्त फल पुष्पादिकों को अपने उपयोग में लावे । समस्त
प्रकार के सच्चित्तपदार्थों का उसको तीनकरण तीनयोगों से परित्याग
कर देना चाहिये । क्योंकि ऐसे पदार्थ ज्ञानियों ने जीवों की उत्पत्ति
के योनि भूत कहे हैं । मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का
आदेश नहीं है । लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधु-
चर्या में कल्पित नहीं है ॥ सू-२ ॥

छोटी रक्षा करवा भागतो होय तो ग्राम आदि स्थानोंमा पड़ेगी, भूलधी रही
गयेगी, भूडेगी जाय पण वस्तुने-लक्षे ते नानी होय डे मोटी होय, कीमती
होय डे कीमती पण न होय, उपाडी देवानो विचार पण उरवो लेछे नही
छे न प्रमाणे तेछे धातुनी डोछे पण वस्तुने अडण्ड करवानी पण धिछा
करवी लेछे नही दामदासी आदि डोछे पण प्रकाशो पण्डित गणवानो तेछे
विचार पण उरवो लेछे नही तेछे औषध, भैषज्य अने आधार आदिने
निमित्ते रण, पुष्प आदिने पोताना उपयोगमा देवा लेछे नही समस्त
प्रकारना सच्चित्त पदार्थाने तेछे त्रण योगथी परित्याग उरवो लेछे नही उरवो
डे देवा पदार्थानो ज्ञानीओछे छेपानी उत्पत्तिना स्थानरूप-योनीउप यताव्या
छे मयूरपिच्छ आदि राखवानो पण प्रभुनो आदेश नथी होहु, -वस्त्र आदिना
पात्र राखवा ते पात्र साधुने उच्यते नथी ॥ सू २ ॥

માન્યૈઃ, એતાદૃશૈઃ ' જિનવરિંદેહિં ' જિનવરેન્દ્રે = જિનાઃ = અવધિજ્ઞાનમનઃ પર્યય-
જ્ઞાનધરાશ્ચક્રસ્યજિનાઃ, તેષુ ધરાઃ = શ્રેષ્ઠાઃ કેવલિનસ્તેષામિન્દ્રાપ્તીર્થકર નામ
કર્મેદિયવર્તિત્વાદ્યેતે સૈ ' એસ ' ણ્ણા = પુષ્પફલકન્દમૂળાદિસર્વધાન્યરૂપા ' જોળી '
યોનિરૂપત્તિસ્થાનમ્, ' જણાણ ' જગતામ્ = પ્રાણિના ' દિટ્ઠા ' દૃષ્ટા કેવલજ્ઞા-
નેન, તસ્માત્-કારણત્તેષાં પ્રાણિના ' ન કપ્પઈ ' ન કલ્પતે ' જોળીસમુચ્છિદોત્તિ '
યોનિસમુન્દ્રેદઃ ઇતિ = યોનિમ્મય વર્તુલમિતિ, ' હિ ' યત્ - ' તેણ ' ન હેતુના
એતાનિ પુષ્પફલાદિ સર્વધાન્યાનિ ' સમણસોઘા ' શ્રમણસિંહા શ્રમણેષુ સિંહાઃ
મુનિશ્રેષ્ઠાઃ ' વજ્જેતિ ' વર્જયન્તિ-ન સઘટ્ટયન્તિ ॥ મુ. ૨ ॥

લોયમહિણિં) ત્રીનો લોકોં મેં માન્ય મેસે (જિનવરેહિં જિનવરેન્દ્રોને-
અવધિજ્ઞાની ઓર મન. પર્યયજ્ઞાનીરૂપ ડ્રવ્યસ્યજિનોં મેં શ્રેષ્ઠ જો કેવલી
ભગવાંન હૈ, ડનકે મી તીર્થકર નામકર્મ કે ઉદય સે યુક્ત હોને કે કારણ જો
હન્દ્ર વને હુણ હૈ એસે જિનવરેન્દ્રોં ને (ણ્ણ) યે પુષ્પ, ફલ, કન્દ, મુલ, આદિ
સર્વધાન્ય (જણાણ જોળીદિટ્ઠા) જીવો કી ઉત્પત્તિસ્થાન હોને સે યોનિ
રૂપ દેસે હ. ડસલિયે સકલ સયમી જન કો (ન કપ્પઈ જોળી સમુચ્છિ
દોત્તિ) જીવો કી યોનિરૂપ પુષ્પફલાદિકો કા ધ્વસ કરના કલ્પિત નહીં
હૈ. (તેણ હિ) ડસલિયે યે પુષ્પફલાદિ સમસ્ત ધાન્ય (સમણસિંહા)
મુનિસિંહોં કે લિયે (વજ્જેતિ) વર્જનીય હૈ અતઃ ડસી કારણ વે ડનકી
સઘટ્ટના નહીં કરતે હૈ.

ભાવર્થ—ઇસ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અન્તિમ સ્વરદ્વાર મે સૂત્રકાર ને
સકલ સયમી અપરિગ્રહી શ્રમણ કે લિયે યહ કહા હૈ કિ વહ યદિ

દેહિં ” જિનવરેન્દ્રોએ-અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાનીરૂપ છન્દસ્ય જિનોમા
શ્રેષ્ઠ જે કેવલી ભગવાન છે, તેમના પણ તીર્થકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત
હોવાને કારણે જેઓ ઇન્દ્ર ધન્યા છે એવા જિનવરેન્દ્રોએ “ એસ ” તે પુષ્પ,
ફળ, કન્દ, મૂળ આદિ સર્વ ધાન્યને “ જણાણ જોળી દિટ્ઠા ” એવાનું ઉત્પત્તિ
સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે સકલ સયમી જને “ ન કપ્પઈ
જોળીસમુચ્છિદોત્તિ ” એવાની યોની રૂપ પુષ્પ, ફળ / આદિનો ધ્વસ કરવો
હવેપતો નથી “ તેણ હિ ” તેજ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ સમસ્ત ધાન્ય
“ સમણ સિંહા ” મિહ સમાન મુનિઓને માટે “ વજ્જેતિ ” ત્યાગ કરવાને
ચોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તેજ કારણે તેઓ તેમને શ્રહણ કરતા નથી

ભાવાર્થ—આ પરિશુદ્ધ વિરમણરૂપ અતિમ સવતદ્વારમા સૂત્રકારે સકલ
સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યું છે કે જો તે પોતાના મૂળથી

पुनरप्यकल्पनीयानि प्रदर्शयति—‘ जपि य ’ इत्यादि ।

मूलम्—जपि च ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-
पलल-सूपसकुलि वेढिम-वरिसोलग-चुण्णकोसग-पिड सिह-
रिणीवट्ठग-सोयक-खीर-दहि-सप्पि नवणीय-तिह-गुड-खड-
मच्छडिय--मधु--खज्जक--वज्जण--विहिमाडय पणीय उवस्सए
परघरे रण्णे वा न कप्पड तपि सनिहीकाउ सुवि-
हियाणं, ज पिय उद्धिट्ठविय रइयग पज्जवजायपकिण्णपा-

अपने मलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों में पड़ी
टुई, भूली टुई, रस्सी टुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोड़ी हो, बहुत
हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नहीं
करे । इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी
इच्छा न करे । दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह
रखने का विचार तक भी न करे । न वह औषध भैषज्य और आहार
आदि के निमित्त फल पुष्पादिकों को अपने उपयोग में लावे । समस्त
प्रकार के सचित्तपदार्थों का उसको तीनकरण तीनयोगों से परित्याग
कर देना चाहिये । क्यों कि ऐसे पदार्थ जानियो ने जीवों की उत्पत्ति
के योनि भूत कहे हैं । मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का
आदेश नहीं है । लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधु
चर्या में कल्पित नहीं है ॥ सू-२ ॥

छोनी रक्षा करवा भागतो छाय तो ग्राम आदि स्थानोंमा पडेनी, भूलथी रडी
गयेली, भूडेली डेढ पणु वस्तुने-लले ते नानी छाय डे भोटी छाय, डीमती
छाय डे डीमती पणु न छाय, उपाडी लेवानो विचार पणु करवो जेधजे नही
जे न प्रभाणे तेणे धातुनी डेढ पणु वस्तुने अडणु करवानी पणु धिछा
करवी जेधजे नही दामदानी आदि डेढ पणु प्रकारो परिग्रह राखवानो तेणे
विचार पणु करवो जेधजे नही तेणे औषध, भैषज्य अने आहार आदिने
निमित्ते इण, पुष्प आदिने पोताना उपयोगमा लेवा जेधजे नही समस्त
प्रकारना सचित्त पदार्थोने तेणे त्रणे योगथी परित्याग करवो जेधजे तारणु
डे जेवा पदार्थोना ज्ञानीओजे ओपानी उत्पत्तिना स्थानइय-थोनीउप णताव्या
छे मयूरपिच्छ आदि राखवानो पण प्रभुनो आदेश नथी दोहु, -वस्त्र आदिना
पात्र राखवा ते पणु साधुने उदयतु नथी ॥ सू २ ॥

માન્યૈઃ, એતાદૃશે ' જિણવરિંદેહિ ' જિનવરેન્દ્રે = જિનાઃ = અવધિજ્ઞાનમનઃ પર્યય-
જ્ઞાનધરાશ્ચન્નસ્થજિનાઃ, તેપુ રસા = શ્રેષ્ઠાઃ કેવલિનસ્તેપામિન્દ્રામ્તીર્થકર નામ
કર્મોદયવર્તિત્વાદેતે તૈ ' ણસ ' ણ્ણા = પુષ્પફલકન્દમૂળાદિમર્વ ધાન્યરૂપા ' જોણી '
યોનિરૂપત્તિસ્થાનમ્, ' જણાણ ' જગતામ્ = પ્રાણિના ' દિટ્ઠા ' દૃષ્ટા કેવલજ્ઞા
નેન, તસ્માત્-કારણત્તેર્ણ પ્રાણિના ' ન કણ્ણઈ ' ન કલ્પતે ' જોણીસમુન્નિહોત્તિ '
યોનિસમુન્નેદ' ઇતિ = યોનિશ્ચ રક્તુમિતિ, ' હિ ' ગત' - ' તેણ ' ન હેતુના
એતાનિ પુષ્પફલાદિ સર્વધાન્યાનિ ' સમણસીહા ' શ્રમણમિદ્ધા શ્રમણેપુ સિદ્ધાઃ
મુનિશ્રેષ્ઠાઃ ' વજ્જેતિ ' વર્જયન્તિ-ન સઘટ્ટયન્તિ ॥ મ્. ૦ ૨ ॥

લોયમહિર્ણિ) ત્રીનો લોકોં મેં માન્ય જેસે (જિણવરેહિ જિનવરેન્દ્રોને-
અવધિજ્ઞાની ઓર મન. પર્યયજ્ઞાનીરૂપ ડગ્ગસ્થજિનોં મેં શ્રેષ્ઠ જો કેવલી
ભગવાનહે, ડનકે મીતીર્થકર નામકર્મ કે ઉદય સે યુક્ત હોને કે કારણ જો
હન્દ્ર વને હુગ હે જેસે જિનવરેન્દ્રોં ને (ણસ) યે પુષ્પ, ફલ, કન્દ, મુલ, આદિ
સર્વધાન્ય (જણાણ જોણીદિટ્ઠા) જીવો કી ઉત્પત્તિસ્થાન હોને સે યોનિ
રૂપ દેસે હે । ઇસલિયે સકલ સયમી જન કો (ન કણ્ણઈ જોણી સમુન્નિહ
હોત્તિ) જીવો કી યોનિરૂપ પુષ્પફલાદિકો કા ધ્વસ કરના કલ્પિત નહીં
હે । (તેણ હિ) ઇસલિયે યે પુષ્પફલાદિ સમસ્ત ધાન્ય (સમણસિદ્ધા)
મુનિસિદ્ધો કે લિયે (વજ્જેતિ) વર્જનીય હ અત ઇસી કારણ વે ડનકી
સઘટ્ટના નહીં કરતે હે ।

ભાવર્થ—ઇસ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અન્તિમ સઘરદ્વાર મે સૂત્રકાર ને
સકલ સયમી અપરિગ્રહી શ્રમણ કે લિયે યહ કહા હે કિ વહ યદિ

દેહિં ” જિનવરેન્દ્રોએ-અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યવજ્ઞાનીરૂપ છન્નસ્થ જિનોમા
શ્રેષ્ઠ જે ઉવલી ભગવાન છે, તેમના પણ તીર્થકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત
હોવાને કારણે જેઓ ઇન્દ્ર ધન્યા છે એવા જિનવરેન્દ્રોએ “ એસ ” તે પુષ્પ,
ફળ, કન્દ, મૂળ આદિ મર્વ ધાન્યને “ જણાણ જોણી દિટ્ઠા ” એવાનું ઉત્પત્તિ
સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે મકલ સયમી જને “ ન કણ્ણઈ
જોણીસમુન્નિહોત્તિ ” એવાની યોની રૂપ પુષ્પ, ફળ / આદિનો ધ્વસ કરવો
ઉદ્દેશ્ય નથી “ તેણ હિ ” તેજ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ અમસ્ત ધાન્ય
“ સમણ સિદ્ધા ” મિહ સમાન મુનિઓને માટે “ વજ્જેતિ ” ત્યાગ કરવાને
ચોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તેજ કારણે તેઓ તેમને શ્રહણ કરતા નથી

ભાવાર્થ—આ પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અન્તિમ સઘરદ્વારમા સૂત્રકારે સકલ
સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યું છે કે જે તે પોતાના મૂળથી

શણ્કુલી=' પુહી ' इति प्रसिद्धा, वेष्टिमा = ' वेष्टिमी ' इति प्रसिद्धा, वर्षोलका =
खाद्यविशेषा, चूर्णकोशकानि=चूर्णभृताः कोपमाकृतिका भक्ष्यभेदाः ' गूजा '
' कचौरी ' इति भाषा प्रसिद्धा, पिण्ड = गुडादिपिण्ड, शिखरिणी = ' श्रीखण्ड '
इति प्रसिद्धा, वर्तक=' बडा ' इति भाषा प्रसिद्धम्, मोदका = ममिद्धाः, क्षीर=
दुग्धम्, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पि = धृतम्, नवनीतम्=' मखन ' इति प्रसिद्धम्,
तैलगुड प्रसिद्धम्, खण्डम्=' खाड ' इति प्रसिद्धम्, मत्स्यण्डिका=' मिथ्री ' इति
प्रसिद्धा, मधु=प्रसिद्धम्, एते पदार्था आचार्यमादि दोषदूषिता साधुभिर्बर्जनीया ।
तथा—ग्वायकाः='खाजा' इति भाषा प्रसिद्धा, व्यञ्जनानि=तक्रादीनि-रसयुक्त-
शास्त्रपदार्था या कढी' आदि भाषा प्रसिद्धाः, तेषां ये विधय =प्रकाराः, एतेऽपि
सदोषा बर्जनीया । एषा द्वन्द्व, एते आदौ यस्य तत्तथोक्तम्, एव प्रिव 'पणीय'
प्रणीत=स्निग्धमग्न च कारण विना बर्जनीयम् । एतत्सर्वं निर्दोषमापि-'उपस्सण'

भर्जित—अग्नि में भुजेहुए जो गेहू आदि धान्य—तिलपिष्ट, सूप-
मूग आदि की दाल, शण्कुली-पुहरी, वेष्टिम-वेडमी, वर्षोलक-एक प्र-
कार का ग्वायविशेष, चूर्णकोशक-कचौड़ी, गूजा, पिण्ड-गुड आदि,
शिखरणी-श्रीखण्ड, वर्तक बडा, मोदक लड्डू, क्षीर-दूध, सर्पि-धृत, नव-
नीत-मखन, तिल, गुड, खण्ड-खाड, मत्स्यण्डिका-मिथ्री, मधु-शहद
ये पदार्थ यदि आचार्य आदि दोषसे दूषित हों तो साधुपुरुषोंद्वारा सदा
बर्जनीयहों। ग्वाजा, तक्र आदि व्यजन, अथवा रसयुक्त माक पदार्थ जैसे
कढीआदि, तथा इन भक्ष्य पदार्थोंके जो और भी भेद होतेहे वे सब भी
यदि सदोष हों तो साधु को बर्जनीय हे । तथा भोज्य ये ओदनादि रूप
स्निग्ध पदार्थ निर्दोष भी हों तो भी साधु बिना कारण के अपने उप-
योग में इन्हें नहीं लेना चाहिये और इन सब निर्दोष भोज्यपदार्थों का

શેડેલ જવ, ઘઉં આદિ ધાન્ય, પલ્લ-ખાડેલ તલ, સૂપ-મગ આદિની દાળ,
શણ્કુલી-પુઠી, વેષ્ટિમ-વેડમી, વર્ષોલક-એક પ્રકારનું ખાદ્ય, ચૂર્ણકોશક-કચૌડી
ગૂજા, પિણ્ડ-ગોળ આદિ શિખરિણી=શિખર, વર્તક-બડા, મોદક લાડૂ ક્ષીર-
દૂધ, દહીં સાંપ-ધાં નવનીત-માખણ, તલ, ગોળ, રાહ-ખાડ, મત્સ્યણ્ડિકા-
મિથ્રી, સાઠર મધુ-મધ એ પદાર્થો ને અધાત્મ આદિ દોષથી દૂષિત હોય તો
સાધુઓએ તેમનો ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે તથા દાઝ અને માસતો સર્વથા
ત્યાગ્ય છે ખાત્ર, તક્ર આદિ વ્યજન, અથવા રસયુક્ત માક, કઢી વગેરે
પદાર્થ, તથા એ ભક્ષ્યપદાર્થોના ખીત્ર પણ ને ભેદ હોય છે, તે બધાનો પણ
ને તે મદોષ હોય તો સાધુએ ત્યાગ કરવો જોઈએ તથા ભોજનને યોગ્ય તે
ઓદનાદિ સ્નિગ્ધ પદાર્થ નિર્દોષ હોય તો પણ સાધુએ કારણ વિના તેમનો

ઓકરણપામિત્વ મીસગકોયગડ પાહુડ વા ઢાળટ પુળળટપ-
ગડ સમળવળીમગટ્યાણ વા વચ પચ્છાકમ્મ પુરેકમ્મ
નિતિગમુદગમત્તિથયં અરિત્ત મોહર સયગાહ આહડ મદિ
ઓવલિત્તં અચ્છેજ્જ ચેવ અણિસિટ્ટુ, જ ત તિહિસુ જળ્લેસુ
ઉસ્સવેસુ ય અતો વા વહિં વા હોજ સમળટ્યાણ ઠવિય
ઠવિય હિંસામાવજ્જસપડત્તે ન કપ્પહ તપિ ય પરિવેત્તં ॥સૂ.૦૩॥

ટીકા—‘ જપિ ય ’ ઇત્યાદિ ।

‘ જ પિ ય ’ યદપિ ચ ‘ ઓદ્દણકુમ્માસગજતપ્પણમથુભજ્જિયપલ્લસૂવસ
કુલિવેદિમવરિસોલ્લગચુળ્લકોસગપિંડસિહરિણીવટ્ટગમોયગલીરદહિસપ્પિનવળીય
તિલગુડસ્વડમચ્છડિયમધુગ્ગજ્જકવજ્જણવિહિમાહ્ય ’ ઓદ્દનકુલ્માપગગ્ગતર્પણમન્થુ-
-ભર્જિતપલ્લમૂપશક્કુલિવેદિમવરિસોલ્લગચૂર્ણકોસગપિંડશિસરિણીવર્ત્તમોદ્દક્ષીર-
દધિસર્પિર્નવનીતતિલગુડસ્વડમત્સ્યણ્ડિકામધુસ્વાદ્યકચ્ચજ્જનવિધ્યાદિકમ્, તત્ત -
ઓદ્દના.-પ્રસિદ્ધા, કુલ્માપાઃ = માપાઈપત્તિસ્વના મુદ્દાદયો વા, ગજ્જઃ =
ભોજ્યવિશેષઃ, તર્પણાઃ = સક્તવ્ર, મન્થુ = વટરાદિચૂર્ણમ્, ભર્જિત=કેવળા-
ગ્નિપક્વયયગોધૂમધાનાદિકમ્, પલ્લમ્ = તિલપિષ્ટમ્, સૂવ = મુદ્દાદિદાલિ,

ફિર મો અકલ્પનીય વસ્તુઓ કો કહતે હૈ—‘ જપિય ’ ઇ.

ટીકાર્થ—(જપિ ય-ઓદ્દણ-કુમ્માસ-ગજ-તપ્પણ-મથુ-ભજ્જિય-
પલ્લ-સૂવ-સકુલિ-વેદિમ-વરિસોલ્લગ-ચુળ્લકોસગ-પિંડ-સિહરિણી
વટ્ટગ-મોયગ-લીર-દહિ-સપ્પિ-નવળીય-તિલ-ગુડ-સ્વડ-મચ્છડિય—
મધુ--સ્વજ્જક--વજ્જણ— વિહિમાહ્ય—વળીય) જો મી ઓદ્દન—
માત, કુલ્માપ-માપ-ચડદ અથવા કુછ ૨ પકે હુણ મૂગ આદિ અન્ન
ગજ્જ-ભોજ્યવિશેષ તર્પણ-સત્ત્, મથુ-વટર (વેર) આદિ કા ચૂર્ણ,

વળી બીજી પણ અડત્તનીય વસ્તુઓ સૂત્રકાર બતાવે છે—‘ જપિય ’ ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ—‘ જપિય-ઓદ્દણ-કુમ્માસ-ગજ-તપ્પણ-મથુ-ભજ્જિય-પલ્લ-સૂવ-સ
કુલિવેદિમ-વરિસોલ્લગ-પિંડ-સિહરિણી વટ્ટગ-મોયગ-લીર દહિ-સપ્પિ-નવળીય-તિલ
-ગુડ-મચ્છડિય--મસ-સ્વજ્જક-વજ્જણ-વિહિમાહ્ય વળીય ’ જે ઓદ્દન-ભાત,
કુલ્માપ-માપ-અડદ અથવા થોડું થોડું પડાવેલું મગ આદિ અન્ન, ગજ્જ-
એક પ્રકારનું ભોજન, તપ્પણ-સત્ત્, મથુ-બેર આદિનું ચૂણું, ભર્જિત અગ્નિમા-

स्वहस्तेनाशनादेर्ग्रहणमित्यर्थः, अयमपरिणताभिधानदोषोक्तः । दायकस्यदानेऽपरिणतत्वात् । तथा-आहड ' आहृतम्=स्वपरग्रामादेः साध्वर्थमानीतमशनादिकमाहृतमुच्यते । तदुक्तम्—'सगामपरगामा आणिय आहट होड ' उाया—स्वग्रामपरग्रामादानीतमाहृत भवति । इति । तथा—' मट्टिओवलित्त ' मृत्तिकोपलिप्तम्=मृत्तिकया, उपलक्षणत्वाज्जतुगोमयादिना चोपलिप्त सद्यद्भृष्टोद्यते तत्, उद्धिन्नमित्यर्थः । तथा ' अच्छेज्ज ' आच्छेद्य, यदशनादिक स्वामी भृत्यादिभ्य आच्चिन्न साधुभ्यो ददाति तदशनादिकमान्छेद्यम् । ' चेव ' चैव-चकार' पुनरर्थक. एवकारो निश्चयार्थः । ' अणिसिद्ध ' अनुसृष्टम्=अनेकस्वामिक यदशनादिकम् एक एव ददाति तदनिष्टम्, तथा—' ज त ' यत्तदशनादिकम्, ' तिहिसु ' तिथिषु=शरत्पूर्णिमादि तिथिषु ' जण्णेषु ' यज्ञेषु=नागपूजादिषु ' उत्सवेसु य ' उत्सवेषु च=इन्द्रोत्सवेषु च ' अतो व ' अन्तर्वा=उपाश्रयस्याभ्यन्तरे वा, ' वहि

गाह) स्वयग्राह हो-दाता ने जिसे न दिया हो किन्तु अपने ही हाथ से जो उठाकर ले लिया गया हो, (आहड) आहृत हो-स्व और पर के ग्राम आदि से जो साधु के निमित्त लाया गया हो, (मट्टिओवलित्त) मृत्तिकोपलिप्त हो जो आहार किसी कुम्भ आदि में रखकर मिट्टी से, गोबर से, तथा लाख आदि से बंद किया हुआ हो और देते समय उस मिट्टी आदि को हटाकर बाहर किया गया हो, (अच्छेज्ज चेव) अच्छेद्य हो-भृत्यादिकों से छीनकर दाता जिसे साधु के लिये दे रहा हो-जिस आहार के अनेक स्वामी हो परन्तु एक ही व्यक्ति उसको साधु के लिये दे रहा हो, ऐसा आहार भी साधु को लेना कल्पता नहीं है । तथा (ज त) जो वह आहार (तिहिसु) शरत्पूर्णिमा आदि तिथियों के समय में (जण्णेषु) नागपूजादिक यज्ञों के समय में और

दीधो डोय पणु पोताने न डोये ने ठावी दीधो डोय, " आहड " आहृत डोय-स्व अने पाण्डे आभ आदिभाथी ने साधुने निमित्त लाववामा आये डोय, " मट्टिओवलित्त " मृत्तिकोपलिप्त डोय,-ने आहार डोय पात्र आदिमा भूझने भाटीथी, गोमयथी तथा लाख आदिथी ण ध ढरेल डोय अने आपती वणते ते भाटी अदिने उणेशी णहार ढाढेल डोय, " अच्छेज्ज चेव " आच्छेद्य डोय-नोडर आदिडो पासैथी छीनवीने दाता ने साधुने भाटे आपतो डोय ने आहारना भादिक अनेड डोय पणु ओक न व्यक्ति ते साधुने भाटे आपी रही डोय, ओरो आहार पणु लेवानु साधुने जणतु नथी तथा " जत " ने ते आहार " तिहिसु " शरदपूर्णिमा आदि तिथिओना समये तथा " जण्णेषु "

પ્પાદિતમિત્યર્થ ' પચ્છાકમ્મ ' પશ્ચાત્કર્મ, પશ્ચાત્-દાનાન્તર કર્મ=ભાજનપ્રમા
 લનાદિ યત્રાશનાદૌ તત્, તથા ' પુરેકમ્મ ' પુરાકર્મ = પુરા = દાનાત્પૂર્વ કર્મ=
 હસ્તલાઘ્યાદિ યત્ર તથા-' નિતિગ ' નૈત્યિકમ્ = નિત્યપિંડ, દાતૃપોષણપ્રમા
 ણ વાડવસ્થિતમ્, ' ઉદગમક્ષિય ' ઉદકમ્પ્રસિતમ્=ઉદકાદિના, આદિગઙ્ગાત્-
 સચિત્તપૃથિવીકાયાદિભિરવગુઠિતમ્, ઉક્તઞ્ચ " મક્ષિતયમુદગાઙ્ગાઉજ જુન્ન "
 इति । ' अइरित्त ' अतिरिक्तम्=द्वित्रिंशत्, कल आहारः पुरुषस्य कुक्षिपूरको
 भवति, स्त्रियश्चाष्टात्रिंशति कयत्र, नपुंसकस्य चतुर्विंशति कयत्र आहारः । ततो
 ऽधिक आहारोऽतिरिक्तमुच्यते । तथा-' मोहर ' मौखरम्=पूर्वसस्तवमातापितादि
 पश्चात्संस्तवश्चश्वशुरश्यादिकादिना सह मौखर्येण=बहुभाषित्वेन यल्लभ्यते, नदशना-
 दिक मौखरमुच्यते । तथा ' सयगाह ' स्वय ग्राहम्=दायकेनादत्त यद्गृह्यते तत्

યાચક જનો કો દેને કે પ્રયોજન સે વનાયા ગયા હો, જેસા આહાર સાધુ
 કો લેના નહીં કલ્પતા હૈ । इसी प्रकार जो आहार (पच्छाकम्म) पश्चात्
 कर्म से युक्त हो, और (पुरेकम्म) पराकर्म से युक्त हो, तथा (निति
 गमुदगमक्खिय) नैतिक-नित्यपिंड हो, अथवा-दाता ने जिसे अपने
 खाने के जितना ही बनाया हो, उदक मुक्षित हो-सचित्त उदक से
 सचिन्त पृथिवीकाय आदि से अवगुठित हो (अइरित्त) अतिरिक्त हो-
 पुरुषों की अपेक्षा से बत्तीस ग्रास से, स्त्रियों की अपेक्षा अष्टाईस ग्रास
 से और नपुंसक की अपेक्षा चोईस ग्रास से जो अधिक हो, वह आहार
 भी मुनिगों के लिये कल्पित नहीं है । इसी तरह (मोहर) जो आहार
 मौखर हो-पूर्वसस्तव मातापिता आदि के साथ तथा पश्चात्सस्तव श्वशुर
 श्यालक आदि के साथ अधिक वातचीत करने से प्राप्त होता हो, (सय

અથવા યાચકજનોને દેવાને માટે બનાવાયો હોય, એવો આહાર લેવો સાધુને
 કલ્પતો નથી એ જ પ્રમાણે જે આહાર " પચ્છાકમ્મ " પશ્ચાત્કર્મથી યુક્ત
 હોય અને " પુરેકમ્મ " પુરા કર્મથી યુક્ત હોય તથા ' નિતિગમુદગમક્ષિય "
 નૈતિક નિત્ય પિંડ હોય, અથવા દાતાએ જે પોતાને ખાતા જેટલો જ બના
 વ્યો હોય, ઉદક મુક્ષિત હોય-સચિત્ત પાણીથી, સચિત્ત પૃથ્વીકાય આદિથી
 અવગુઠિત હોય, " અइरित्त " અતિરિક્ત હોય-પુરુષોની અપેક્ષાએ બત્તીસ
 ગ્રાસથી, સ્ત્રીઓની અપેક્ષાએ અઠ્ઠાવીસ ગ્રાસથી, અને નપુસકની અપેક્ષાએ
 ચોવીસ ગ્રાસથી જે વધારે હોય તો તે આહાર પણ મુનિઓને કલ્પતો નથી
 એ જ પ્રમાણે " મોહર " જે આહાર મૌખર હોય પૂર્વસસ્તવ માતા પિતા
 આદિની સાથે તથા પશ્ચાત્સસ્તવ સસરા, સાળા આદિની સાથે અધિક વાત
 ચીત કરવાથી પ્રાપ્ત થતો હોય, " સયગાહ " સ્વયગ્રાહ હોય-દાતાએ જે ન

વ ઓસહભેસજ્જભત્તપાણ ચ, ત પિ સપિણ્ણહિકય । જં પિ
ય સ્સમણસ્સ સુવિહિયસ્સ તુ પાડિગ્ગહધારિસ્સ ભવ્વહ, માયણ
ભડોવહિ — ઉવગરણ-પરિગ્ગહો-પાયવધણ — પાયકેસરિયા
પાયદ્ધવણ ચ પડલાહિ તિપિણિ વરયત્તાણ ગોચ્છાઓ તિન્નિ ચ
પચ્છાગા રઓહરણચોલેપટ્ટક સુલ્લણતગમાદીય ઇય પિ ચ
સજમસ્સ ઉવવૂહણદ્ધયાણ વાયાચવદસમસગસીયપરિરક્ખણદ્ધ-
યાણ ઉવગરણ રાગદોસરહિય પરિવહિયવ્વ સજણ ણિચ્ચ
પહિલેહણપપ્ફોહણપમજ્જણાણ અહો ય રાઓ ય અપ્પમત્તેણ
હોહિ સયયં નિવિલ્લવિયવ્વ ચ ગિપિહિયવ્વં ચ માયણભડોવહિ
ઉવકરણં ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા-સપ્રતિ કીદ્દશમશનાદિક કલ્પતે ? इत्याह-‘ अह केरिसय ’ इत्यादि ।

‘ અહ ’ અથેતિ પ્રફરણાન્તરઘોતકઃ, અથ અકલ્પનીયાહારકથનાનન્તર
‘ કેરિસય ’ કીદ્દશ ‘ ત ’ તત્=અશનાદિક ‘ કપ્પહ ’ કલ્પતે પરિગ્રહીતુમ્ ? इत्याह
‘ જ ત ’ ચત્તત્ ‘ ઇગારસપિંડવાયસુદ્ધ ’ એકાદશપિંડપાતશુદ્ધમ્, એકાદશભિ
પિંડપાતૈઃ = આચારાગ્નિદ્વિતીયશ્રુતસ્કન્ધસ્થિતપિંડૈષણાનામકપ્રથમાભ્યયનસ્ય
વિધિપ્રતિપાદકૈરેકાદશભિરુદ્દેશૈઃ તત્રોક્તવિધાનૈરિત્યથ શુદ્ધ તત્રોક્તદોષવર્જિતમિ-

અથ સૂત્રકાર સાધુ કો કેસા અશનાદિ કલ્પતા હૈ ? સો કહતે
હૈ—‘ અહ કેરિસય ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અહ) પૂર્વોક્ત આહાર અકલ્પનીય હૈ તો (કેરિસય)
કિમ પ્રકાર કા આહાર સાધુ કો (કપ્પહ) કલ્પતા હૈ ઇસ પર કહતે
હૈ (ઇગારસપિંડવાયસુદ્ધ જ ત) જો અશન ગ્યારહ પિંડપાતોં સે શુદ્ધ
હો-અર્થાત્ આચારાગ્નિ કે દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધ કે પિંડૈષણા નામક પ્રથમ
અભ્યયન મેં વિધિપ્રતિપાદક જો ગ્યારહ ઉદ્દેશ હૈ ઉન સે જો આહાર

હવે સાધુને કેવા અનશનાદિ કલ્પે છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“અહ કેરિસય” इत्यादि—

ટીકાર્થ—“અહ” પૂર્વોક્ત આહાર અકલ્પનીય હૈ તો “કેરિસય” કયા
પ્રકારનો આહાર સાધુને “કપ્પહ” કલ્પે છે ? તો તે વિષે સૂત્રકાર કહે છે કે—
“ઇગારસપિંડવાયસુદ્ધ જ ત” ને આહાર અગિયાર પિંડપાતોથી શુદ્ધ હોય
એટલે કે આચારાગ્નિના દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધના પિંડૈષણા નામના પહેલા અભ્ય
યનમાં વિધિ પ્રતિપાદક ને અગિયાર ઉદ્દેશ છે તેમના વડે ને આહાર શુદ્ધ

વા ' બહિર્ગા=ઉપાશ્રયાદ્ બહિર્ગા ' સમણદ્વયાણ ' શ્રમણાર્થતયા = શ્રમણનિમિત્ત
મિત્યર્થઃ, ' ઠવિય ' સ્થાપિત ' દોઝજ ' ભવેત્, " હિંસા સાવજ્જસપપ્પત્ત ' હિંસા-
સાવધસપ્પયુક્તમ્=હિંસયા=પટ્ટકાઘોપમર્દનૈન સાવધેત્=સદોષેણ કર્મણા ચ સપ્પયુક્ત
'તપિ ય' તદપિ ચ અશનાદિક 'પરિવેત્તુ' પરિમહીતું 'ન કપ્પહ' ન કલ્પતે॥સૂ.૦૩॥

કોદશમશનાદિ કલ્પતે ? इत्याह—' अहं केरिसय ' इत्यादि ।

મૂલમ્—અહ કેરિસય પુણો ત કપ્પહ ? જં ત ઇગારસપિં-
હવાયસુહ કિણ્ણણહણ્ણ-પયણ-કયકારિયાણુમોયણ--નવ-
કોહીહિ સુપરિસુહ દસહિ ય દોસેહિ વિપ્પસુક્ક ઉગ્ગમ
ઉપ્પાયણેસણાહિ સુહ વવગયચુચચવિયચત્તદેહ ચ ફાસુયં ચ
વવગયસજોગમણિગાલં વિગયધૂમ છટ્ટાણાનિમિત્ત છક્કાયપરિ-
રક્ખણટ્ટ હણિ હણિ ફાસુણ્ણ મિત્ત્રેણ વટ્ટિયઠ્ઠં । જ પિ
ય સમણસ્સ સુવિહિયસ્સ રોગાયકે વહુપ્પગારમ્મિ સમુપન્ને
વાયાહિગ - પિત્તસિંભાદરિત્તકુવિયત્તહસણિવાણ જાણ તહ
ઉદયપ્પત્તે ઉઝ્જલવલ વિઉલકક્કલ્લ પગાહ્લુલ્લે અસુમ્મહુય
ફરુસલ્લપ્પલવિવાગમહલ્લભણ જીવિયત્તકરણે સવ્વસરીર
પરિતાવણકરણે ન કપ્પહ । તારિસે વિ તહ અપ્પણો પરસ્સ

(ઉસ્સવેસુ) ઇન્દ્રોત્સવોં કે સમય મે તથા (અતો વા બહિં વા) ઉપાશ્રય
કે મીતર અથવા ઉપાશ્રય સે વાહિર (દોઝજસમણદ્વયાણ ઠવિય) મુ-
નિયો કે નિમિત્ત સ્થાપિત કર રખા હો એસા વહ (હિંસાસાવજ્જસપપ્પત્ત)
પટ્ટકાઘોપમર્દનરૂપ હિંસા સે એવ સદોષ કર્મ સે સપ્પયુક્ત અશનાદિ (ન
કપ્પહ તપિ ય પરિવેત્તુ) વહ મી આહાર સાધુકો લેના નહી કલ્પતા હૈ॥સૂ.૩॥

નાગપૂજાદિક યજ્ઞોના સમયે અને " ઉસ્સવેસુ " ઇન્દ્રોત્સવોને સમયે તથા " અતો
વા બહિવા " ઉપાશ્રયની અદર અથવા ઉપાશ્રયની બહાર " દોઝજ સમણદ્વયાણ
ઠવિય " મુનિયોને માટે રાખી મૂકેલો હોય એવો તે " હિંસાસાવજ્જસપપ્પત્ત "
છક્કાય ઉપમર્દનરૂપ હિંસાથી તથા સદોષ કર્મથી યુક્ત અશનાદિ " ન કપ્પહ ત
પિ ય પરિવેત્તુ " તે આહાર પણ સાધુને લેવો ઉત્પત્તો નથી ॥ સૂ. ૩ ॥

દિપોડશવિધા, ઇપણા=દશવિધા, ઇપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ તામિઃ, 'શુદ્ધ' શુદ્ધમ્, તથા—'વવગયચુચચવિચચત્તદેહ ચ' વ્યપગતન્યુતન્યાવિતત્યક્તદેહ ચ, તત્ર -વ્યપગતમ્=ઓષતશ્ચેતનાપર્યાયાદચેતનતત્ત્વ પ્રાપ્તમ્, ન્યુતમ્=જીવનાદિક્રિયાભ્યો વિનિર્ગતમ્, ચ્યાવિતમ્ = ચેતનાપર્યાયેભ્યો પૃથક્કારિતમ્, તથા—ત્યક્તદેહમ્=ત્યક્તઃ=પરિત્યક્તો જીવેન દેહો यस્ય તત્ જીવસમ્બન્ધરહિતમિત્યર્થઃ, ઇપા સમાહાર દ્વન્દ્વઃ, તદ્, ઉક્તાર્થ સ્પષ્ટયતિ—'ફાસુચ ચ' પ્રાસુક ચ=પ્રગતા અસવઃ પ્રાણા યસ્માત્તત્તથોક્તમ્, તથા 'વવગયસજોગ' વ્યપગત-સયોગમ્=સયોજનાદોષવર્જિતમ્, 'અર્ણિગાલ' અનદ્ધારમ્=અદ્ધારદોષવર્જિતમ્, તથા—'વિગયમ્' વિગત ઉત્પાદન દોષો સે, તથા દગવિધ ઇપણા દોષો સે જો શુદ્ધ હો, તથા—(વવગય ચુચચવિચચત્તદેહ ચ) જો આહાર વ્યપગત હો, ચ્યુત હો, ચ્યાવિત હો ઓર ત્યક્ત દેહ હો, અર્થાત્ વ્યપગત-સામાન્યરૂપ મેં જો ચેતના પર્યાય સે રહિત હોકર અચેતનત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઆ હો—સચિત્ત ન હો કિન્તુ અચિત્ત હો, ચ્યુત-જીવનાદિ ક્રિયાઓં સે જો સર્વથા રહિત હો, ચ્યાવિત-ભૂત્યાદિ દ્વારા ચેતના પર્યાયોંસે પૃથક્કરાયા ગયા હો ઓર ત્યક્તદેહ-જીવ કે સમ્બન્ધ સે વિત્તીન હો । ડસી તાત કો સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હૈ—(ફાસુચ) જિસ આહાર કો માધુ અપને ઉપયોગ મેં લેવે વહ પ્રાસુક હોના ચાહિયે । પ્રાસુક મેં "પ્ર" રહિત અર્થ ના બોધક હૈ, અસુ પ્રાણ ના વાચક હૈ—અર્થાત્—જો આહાર પ્રાણોં સે—જીવોં સે રહિત હોતા હૈ વહ પ્રાસુક હૈ । તથા (વવગયસજોગ) સયોજનાદોષ સે વહ આહાર રહિત હોના ચાહિયે । (અર્ણિગાલ) અગાર

સોળ પ્રકારના ઉત્પાદન દોષોથી, તથા દસ પ્રકારના એપણા દોષોથી જે શુદ્ધ હોય, તથા "વવગયચુચ-ચવિચચત્તદેહ ચ" જે આહાર વ્યપગત હોય, ન્યુત હોય, ચ્યાવિત હોય, અને ત્યક્ત દેહ હોય, વ્યપગત એટલે સામાન્ય રીતે જે ચેતના પર્યાયથી રહિત થઈને અચેતનત્વ અવસ્થા પામ્યો હોય—સચિત્ત ન હોય, ન્યુત એટલે જીવનાદિ ક્રિયાઓથી સર્વથા ગહિત હોય તેવો, ચ્યાવિત એટલે નોડર આદિ દ્વારા ચેતના પર્યાયથી અલગ કરાવેલ હોય, ત્યક્ત દેહ—જીવના સમ્બન્ધથી ગહિત હોય, એવો આહાર માધુએ લેવો જોઈએ એ જ વાતને સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે—"ફાસુચ" જે આહાર માધુ પોતાના ઉપયોગમાં લે તે પ્રાસુક હોવો જોઈએ પ્રાસુકમાં "પ્ર" ગહિત અર્થનો બોધક છે, "અસુ" પ્રાણનો બોધક છે, એટલે કે જે આહાર પ્રાણથી—જીવોથી રહિત હોય છે તે પ્રાસુક આહાર કહેવાય છે તથા "વવગયસજોગ" સયોજના દોષથી તે આહાર રહિત હોવો જોઈએ "અર્ણિગાલ" અગાર દોષથી રહિત

त्यर्थः, यत्तत्तथा, तथा=किण्ण हण्णपयणकयकारियाणुमोयणानवकोडीहि 'क्रयण
हननपचनकृतकारितानुमोदननरकोटिभिः, तत्र-त्रयण=मूत्वेन ग्रहणम्, हनन=
प्राणवियोजनम्, पचनम्=अग्निना, एषा यानि कृतकारितानुमोदनानि=स्वय
करण परेण कारण कुर्वतोऽनुमोदनम्, तान्येव नरकोट्य = नरविभागास्ताभिः
' सुपरिशुद्ध ' सुपरिशुद्ध=निर्दोषम्, तथा-' दसहिं य दोसेहि ' दशभिश्च दोषै
शङ्कितादिभिः, 'विष्पमुक्क' विममुक्त=रहितम्, तथा-'उग्गम-उप्पायणेमणाहिं '
उद्गमोत्पादनैषणाभिः तत्र-उद्गम =आधाकर्मादिः-षोडशविधः, उत्पादना=वाज्या-

शुद्ध हो, उन उद्देशों में जो आहार के दोष कहे गये हैं उनसे वर्जित
हो, तथा (किण्ण-हण्णपयणकय-कारियाणुमोयण-नवकोडीहि सुप-
रिशुद्ध) जो आहार क्रयण, हनन और पचन, की कृत, कारित और
अनुमोदनरूप नवकोटियों से परिशुद्ध हो, अर्थात् जो आहार स्वय मूल्य
देकर न खरीदा गया हो, दूसरों से मूल्य देकर न खरीदवाया गया हो
और न उसकी अनुमोदना की गई हो, २ इसी प्रकार जिस आहार के
निमित्त हनन-प्राणियों के प्राणों का वियोजन स्वय न किया हो, दूसरों
से न कराया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ३, इसी तरह
जो आहार अग्नि से स्वय न पकाया गया हो, दूसरों से न पकवाया
गया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ४, इन नव कोटियों
से निर्दोष हो, तथा (दसहिं दोसेहि विष्पमुक्क) शक्ति आदि दश
दोषों से जो रहित हो, तथा-(उग्गम-उप्पायणेमणाहिं शुद्ध) आधा
कर्म आदि सोलह प्रकार के उद्गम दोषों से-वाज्यादि सोलह प्रकार के

डोय, ते ઉદ્દેશોભા આહારના જે દોષો મતાવ્યા છે તેમનાથી રહિત હોય,
તથા “ કિણ્ણ-હણ્ણપયણ-કયકારિયાણુમોયણનવકોડીહિં સુપરિશુદ્ધ ” જે
આહાર ક્રયણ, હનન અને પચનની કૃત, કારિત અને અનુમોદનરૂપ નવ પ્રકારે
પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે જે આહાર જાતે કીમત આપીને ખરીદ્યો ન હોય,
બીજાઓ મારફત મૂલ્ય આપીને ખરીદ કરાવાયો ન હોય, અને તેની અનુમોદના
પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહારને નિમિત્તે હનન-પ્રાણીઓના
પ્રાણોની હત્યા પોતે ન કરી હોય, બીજાની પાસે કરાવી ન હોય, અને તેની
અનુમોદના પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહાર અગ્નિ વડે પોતે
રાંધ્યો ન હોય, બીજા પાસે રંધાવ્યો ન હોય અને તેની અનુમોદના પણ ન
કરાઈ હોય, એ નવ પ્રકારે જે આહાર નિર્દોષ હોય, તથા “ દસહિં દોસેહિં
વિષ્પમુક્ક ” શક્તિ આદિ દસ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા “ ઉગ્ગમ-ઉપ્પા
યણેમણાહિં સુદ્ધ ” આધાકર્મ આદિ મોળ પ્રકારના ઉદ્ગમ દોષોથી, વાજ્યાદિ

च औषधादि तदपि सनिधीकृत न कल्पते इत्येवमन्वयः कर्तव्यः, कस्य न कल्पते? इत्याह—‘समणस्स’ श्रमणस्य=साधोः, कीदृशस्य तु श्रमणस्य न कल्पते इत्याह—‘सुविहियस्स’ सुविहितस्य तु = शोभनानुष्ठानसम्पन्नस्य, कस्मिन् सति? इत्याह—‘बहुपगारम्मि’ बहुप्रकारे=अनेकप्रकारे ‘रोगायके’ रोगातङ्के=रोगो ज्वरादिः, आतङ्कः = सद्योघातीहृदयशूल्लादिः, अनयोः कर्मधारयः, तस्मिन् समुत्पन्ने’ समुत्पन्ने, रोगातङ्कानां बहुप्रकारत्वमेव स्पष्टयति—‘वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए’ वाताधिक्यं पित्तश्लेष्मातिरिक्तकुपिततयासन्निपाते तत्र—वातधिक्यं=वातस्याधिक्यं=प्राचुर्यम्, तथा—पित्तश्लेष्मातिरिक्त—पित्तश्लेष्मणोरतिरेकः=आधिक्यं, तत् कुपितम्=कोपावस्था प्राप्तम्—कुपितवातपित्तकफानामाधिक्यमित्यर्थः, तथेति तत्राभूतः=एतन्नितयरूपः सन्निपातस्तस्मिन्, जाते=समुत्पन्ने सति ‘तह’ तथा—‘उदयपत्ते’ उदयप्राप्ते=उदयावस्था प्राप्ते सति,

इन पूर्वोक्त छह स्थानरूप कारणों के ध्यान से पट्टकायके जीवों की रक्षा करते हुए साधु को भिक्षा वृत्ति करना चाहिये । तथा—(जपि य) जो औषध आदि है उनका भी सनिधि-संग्रह नहीं करना चाहिये सो कहते हैं—(समणस्स सुविहियस्स) सुविहित श्रमण के (बहुपगारम्मि रोगायके समुत्पन्ने) बहुत प्रकार के रोगातङ्क उत्पन्न होने पर, जैसे—(वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए) कुपितवात की अधिकता, कुपितपित्त और कुपितकफ की अधिकता हो तथा इन दोषों से अन्य उसे सन्निपात भी (जाए) हो गया हो, तथा ऐसा दुःख कि जो (उज्जलवलविउल कक्खड पगाढदुक्खे) उज्ज्वल-सुख के लेशसे वर्जित हो, बल-बलवान् महाकष्टकारक हो, विपुल-आत्मा के प्रतिप्रदेश में नदी वेग की तरह प्रवर्द्धमान हो कर्कश-कठोर हो और प्रगाढ-प्रतिक्षण असमाधिजनक हो (तह) तथा ऐसे रोगातङ्क (उदयपत्ते)

आधुअे भिक्षावृत्ति उरवी नेधे अे तथा “जपिय” अे औषध आदि गणुय छे तेने। पणु सअड न उरवे नेअे ते णाणतभा सूत्रार उडे छे डे—
“समणस्स सुविहियस्स” सुविहित श्रमणेने “बहुपगारम्मि रोगायके समुत्पन्ने” अनेक प्रकारना रोगो उत्पन्न थता, नेवा डे “वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए” कुपित वायुनी अधिकता कुपित पित्त अने कुपित कफनी अधिकता डोय तथा अे दोषोथी तेने सन्निपात पणु “जाए” थध गये। डोय, तथा अेषु दुण डे अे “उज्जलवलविउलकक्खडपगाढदुक्खे” उज्ज्वल-वल-लेश पणु सुअ विनातु डोय, अतिशय उण्टारक डोय, विपुल-आत्माना प्रति प्रदेशमा नदीना वेगनी नेभ वधतु नतु डोय, कर्कश-कठोर डोय अने प्रगाढ-प्रतिक्षण असमाधि जनक डोय “तह” तथा अेवा रोगातङ्क “उद

ધૂમ=ધૂમદોષપર્જિતમ્, એતાદૃશમ્ ઝડનાદિક ગ્રહીતુ વલ્પતે । સાધુભિઃ-કય વર્તિ
તવ્યમ્ ? इत्याह—‘ उद्धाणनिमित्त ’ पट्स्थाननिमित्तम्=पट्स्थानानि=आहार
कारणस्य पट्कारणानि, तेषा निमित्त=पट्कारणार्थमित्यर्थः । पट्कारणानि-वेदन
=क्षुब्धवेदन वयावृत्त्य=शुश्रूषा, ईर्या=गमनम्, सयमरक्षा, प्राणधारण, धर्मचिन्तन
च उक्तञ्च—

“ वेयण वेयावच्चे, इरियट्ठाए य सजमट्ठाए ।

तह पाणवत्तियाए, छट्ठ पुण धम्मचिन्ताए ॥ ” ॥ इति ॥

तथा—‘ उक्तायपरिरक्षणगट्ट पट्स्थायपरिरक्षणार्थम्, ‘ हणि हणि ’ अहन्य
हनि=प्रतिदिनम् ‘ फासुएण ’ प्रासुकेन ‘ भिररेण ’ भिक्षेण=मामुदानिकभिक्षया,
‘ वट्ठियच्च ’ वर्तितव्यम्, प्राणधारण वर्तव्यमित्यर्थः । तथा—‘ जपि य ’ यदपि

દોષોં સે રહિત હોનાં ચાહિયે ઓર (વિગયધૂમ) ધૂમદોષ સે મી રહિત
હોનાં ચાહિયે । તમી જાકર વત્ત માધુઓં કે લિયે કરિપન હો સકતા
હૈ । (ઉદ્ઘાણનિમિત્ત) ઉહ કારણોં સે સાધુ આહાર ગ્રહણ કરતે હૈ—વે
છહ સ્થાનરૂપ કારણ યહ હૈ—ક્ષુ ગાવેદના ૧, વૈયાવૃત્ત્ય ૨, ઈર્યા-ગમન ૩,
સયમરક્ષા ૪, પ્રાણધારણા ૫, ઓર ધર્મચિન્તન ૬ । કટા મી હૈ—

“ वेयण १, वेयावच्चे २, इरियट्ठाए ३ य सजमट्ठाए ४ ।

तह पाणवत्तियाए ५, छट्ठ पुणधम्मचिन्ताए ६ ॥ १ ॥ ”

તથા (ઉક્તાયપરિરક્ષણગટ્ટ) આહારગ્રહણ કરને સે ઉક્તાય જીવો કી
રક્ષા હોતી હૈ । ઇસલિયે સાધુ કો (હણિહણિ) પ્રતિદિન (ફાસુણ્ણ મિ
ક્ષેણ) પ્રાસુક ભિક્ષા સે (વટ્ઠિયચ્ચ) પ્રાણધારણ કરના ચાહિયે—અર્થાત્

હોવો ભેજીએ અને “ વિગયધૂમ ” ધૂમ દોષથી રહિત હોવો ભેઈએ ત્યારે જ
તે સાધુઓને કલ્પે તેવો બને છે “ ઉદ્ઘાણનિમિત્ત ” છ કારણોથી સાધુ
આહાર ગ્રહણ કરે છે—તે છ સ્થાનરૂપ કારણ આ પ્રમાણે છે—(૧) ક્ષુધા વેદના
(૨) વૈયાવૃત્ત્ય, (૩) ઇર્યા-ગમન, (૪) સયમ રક્ષા (૫) પ્રાણધારણ અને (૬)
ધર્મ ચિન્તન ઉદ્ધુ પણ છે—

“ वेयण १ वेयावच्चे २ इरियट्ठाए ३ य सजमट्ठाए ४ ।

तह पाणवत्तियाए ५, छट्ठ पुणधम्मचिन्ताए ६ ॥ १ ॥ ”

તથા “ ઉક્તાયપરિરક્ષણગટ્ટા ” આહાર ગ્રહણ કરવાથી છઠાયના જીવોની પણ
રક્ષા થાય છે તેથી સાધુને “ હણિ હણિ ” પ્રતિદિન “ ફાસુણ્ણ મિક્ષેણ ”
પ્રાસુક ભિક્ષાથી “ વટ્ઠિયચ્ચ ” પ્રાણધારણ કરવો ભેઈએ એટલે કે તે પૂર્વેકિત
છ સ્થાનરૂપ કારણોને ધ્યાનમાં લઈને છઠાયના જીવોની રક્ષા કરતા થકા

‘सुनिहितस्य’ सनिहीकृत ‘न कप्पड’ न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य। अथ यत्कल्पते तदाह-‘जपि य’ यदपि च किञ्चित् ‘समणस्स’ श्रमणस्य ‘सुविहियस्स तु’ सुनिहितस्य=शोभनाचारयतस्तु, ‘पडिग्गहयारिस्स’ पतद्ग्रहधारिणः=पात्रधारकस्य ‘भायणभडोवहि उवगरण पडिग्गहो’ भाजनभाण्डोपध्युपकरण पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधिःवस्त्रादिः, तद्रूप यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-‘पडिग्गहो’ पतद्ग्रहः=भोजनपात्र ‘भवइ’ भवति। तथा-‘पायवधणपायकेसरियापायट्टवण च’ पात्रवन्धनपात्रकेसरिका पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रवन्धन=‘झोली’ इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका=पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापन=यत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषा समाहार द्वन्द्व, ‘तिण्णि य’ त्रीणि च ‘पडलाइ’ पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणममये पात्र-परिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-‘रयत्ताण’ रजस्ताण=

परिग्रह विरत साधु को (सुनिहितस्य) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पड) नहीं कल्पता है। उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुविहित शोभनाचारसंपन्नश्रमण-साधुके पास (जपि य) जो भी (भायणभडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ) भाजनउन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा- (पायवधणपायकेसरिया पायट्टवण च) पात्रवधन—झोली, पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनपटल-ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खंड, (रयत्ताण) जलपात्र ढकने

संश्लेषना इयमा पोतानी पासे राखवा “न कप्पड” कल्पता नहीं ते परिग्रह विरत साधुने भाटे पोतानी पासे उथी कथी थीले राखवी कटपे छे? तो ते सूत्रकार उहे छे के—“समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स” पात्रधारी ते सुनिहित सहाचारयुक्त साधुनी पासे “जपि य” जे जेह “भायण भडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ” भाजन-उन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह-भोजन पात्र होय ते तथा “पायवधण पायकेसरिया पायट्टवण च” पात्रवधन-झोली, पात्रकेसरिका पात्र प्रमार्जिका, पात्रस्थापन वस्त्र तथा “तिण्णियपडलाइ” त्रयुपटल-पात्रोने ओठ थीलानी उपर भूझवने वञ्छते ते पात्रोनी रक्षाने भाटे पात्रोनी वञ्छे राखेल त्रयु वस्त्रखंड, “रयत्ताण”

कस्मिन् ? इत्याह—‘ उज्ज्वलवलिउलकमखडपगाढदुःखे ’ उज्ज्वलवलिउल-
 कर्कशपगाढदुःखे, तत्र-उज्ज्वल=मुखलेशवर्जितम्, वल=वलवत्=महाकाटजनकम्
 विपुलम्=आत्मप्रतिप्रदेशे नदीवेगवत्प्रवर्द्धमानम्, कर्कश=कठोरम्, दुःसहत्वात्,
 पगाढ=प्रकृष्ट प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात् यद्गुण तस्मिन्, कथम्भूते दुःखे ?
 ‘ असुभकडुयफरुसचडफलविवागे ’ अशुभकडुयपरुपचण्डफलविपाके, अशुभः=
 अशुभरूपः, कडुकनिम्बरस इवानिष्टः, परुपः=परुपस्पर्शद्रव्यमिवानिष्टः, तथा-
 चण्डो=दारुणो यः फलविपाकस्तादृशे, पुनः—‘ महभये ’ महाभये = महद्भय
 यस्मात्तस्मिन्, महाभयजनके इत्यर्थः, पुनः—‘ जीवियतकरणे ’ जीवितान्तकरणे=
 जीवितस्य=जीवनस्य अन्तकरण=नाशो यस्मात्तस्मिन्, प्राणनाशसमर्थे इत्यर्थः,
 पुनः कीदृशे ? ‘ सव्वमरीरपरितावणकरणे ’ सर्वशरीरपरितापनकरणे=अङ्गप्रत्यङ्ग
 सन्तापजनके, ‘ तह ’ तथा ‘ तारिसेवि ’ तादृशेऽपि=यादृशः सोढु न शक्यते
 तादृशेऽपि रोगातङ्कादौ ‘ अप्पणो परस्स व ’ आत्मनः परस्य वा निमित्त यदपि
 ‘ ओसहमेसज्जभत्तपाण ’ औषधभैषज्यभक्तपानम् ‘ त पि य ’ तदपि च

उदय प्राप्त हो रहे हो (असुभकडुयफरुसचडफलविवागे) कि जिसका
 फलरूपविपाक अशुभरूप ही हो, निम्बरस के जैसा कडुक अनिष्ट हो,
 परुस-परुप स्पर्श द्रव्य की तरह जो अरुचिकारक हो, और चड-दारुण
 हो तथा (महभये) महाभयकर हो (जीवियतकरे) जिसमें जीवन के
 नाश होने की भी समावना हो रही हो, (सव्वमरीरपरितावणकरे)
 अग, प्रत्यग मे जिसके कारण असह्य सन्ताप बढ रहा हो (तह तारिसे
 वि) ऐसे पूर्वोक्त प्रकार के रोगातको के समय में भी (अण्णोपरस्सव)
 चाहे ये रोगातक अपने लिये हो रहे हों चाहे दूसरे साधु के लिये हो
 रहे हों उस समय अपने और पर के निमित्त जो (ओसहमेसज्ज-
 भत्तपाण) औषध, भैषज्य एवं भक्तपान हो (तपि य) वह भी उस

यपत्ते” उदय पाभ्या डोय ‘ असुभकडुयफरुसचडफलविवागे ” डे जेना इण
 इय विपाक अशुभ इय न डोय, वीणु जेवे डुड अनिष्ट डोय, परुप-डोर
 स्पर्शद्रव्यता जेवे जे अरुचि डारक डोय, अने चड-दारुण डोय तथा
 “ महभये ” अति लयकर डोय, “ जीवियतकरे ” जेभा जवनने अत आव
 वानी पणु शक्यता डोय “ सव्वमरीर-परितावणकरे ” अग, प्रत्यगमा जेने
 कारण असह्य सन्ताप वधतो जतो डोय “ तह तारिसे वि ” लवे ते रोगातक
 पोताने भाटे थता डोय डे लवे जीण साधुने भाटे थर्ह रखा डोय, ते भभये
 पोताने डे अन्यने निमित्त जे “ ओसहमेसज्जभत्तपाण ” औषध, भैषज्य
 अने भक्तपान डोय “ तपि य ” ते पणु ते पण्डित विरक्त साधुने “ मनिहिक्य ”

‘सनिहिकय’ सनिधीकृत ‘न कप्पइ’ न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य। अथ यत्कल्पते तदाह-‘जपि य’ यदपि च किञ्चित् ‘समणस्स’ श्रमणस्य ‘सुविहियस्स तु’ सुविहितस्य=शोभनाचारवत्तस्य, ‘पडिग्गहधारिस्स’ पतद्ग्रहधारिणः=पात्रधारकस्य ‘भायणभडोवहि उवगरण पडिग्गहो’ भाजनभाण्डोपध्युपकरण पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधिःवस्त्रादिः, तद्रूप यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-‘पडिग्गहो’ पतद्ग्रहः=भोजनपात्र ‘भवइ’ भवति। तथा-‘पायवधणपायकेसरिया पायट्ठवण च’ पात्रवधनपात्रकेसरिका पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रवधनं=‘झोली’ इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका=पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनं=यत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषा समाहार द्वन्द्वः, ‘तिण्णि य’ त्रीणि च ‘पडलाइ’ पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणममये पात्र-परिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-‘रत्तयाण’ रजस्त्याण=

परिग्रह विरत साधु को (सनिहिकय) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पइ) नहीं कल्पता है। उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है ? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुविहित शोभनाचारसंपन्नश्रमण-साधुके पास (जपि य) जो भी (भायणभडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ) भाजनउन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा- (पायवधणपायकेसरिया पायट्ठवण च) पात्रवधन—झोली, पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनपटल-ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खंड, (रत्तयाण) जलपात्र ढकने

भथडना इयमा पोतानी पामे राणवा “न कप्पइ” कल्पता नहीं ते परिग्रह विरत साधुने भाटे पोतानी पामे डयी डयी थिल्ले गणवी कट्ठे छे ? तो ते सूत्रकार उडे छे डे—“समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स” पात्रधारी ते सुविहित सदाचारयुक्त साधुनी पामे “जपिय” जे डोव “भायण भडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ” भाजन-उन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह-भोजन पात्र डोव ते तथा “पायवधण पायकेसरिया पायट्ठवण च” पात्रवधन-झोली, पात्रकेसरिका पात्र प्रमार्जिका, पात्रस्थापन वस्त्र तथा “तिण्णियपडलाइ” त्रयुपटल-पात्रोने ओड थिल्लानी उपर भूडवाने वण्ठते ते पात्रोनी रक्षाने भाटे पात्रोनी वरये गणव त्रयु वस्त्रखंड, “रत्तयाण”

જલાદિપાત્રાચ્છાદનપદ્મવણ્ડમ્, 'ગોચ્છઝો' ગોચ્છકઃ=પ્રમાર્જિકા, તથા—'તિષ્ઠિ
ય પચ્છાગા' ત્રયશ્ચ પ્રચ્છાદકાઃ, 'ચાદર' પ્રસિદ્ધાઃ, તત્ર-ઘૌ સૂત્રનિર્મિતા, એક
ઝર્ણનિર્મિતઃ, તથા—'રઝોહરણચોલપટ્ટકમુહણતકમાર્ઝય' રઝોહરણચોલપટ્ટકમુખાન
ન્તકાદિકમ્, તત્ર-રઝોહરણ પ્રસિદ્ધમ્, ચોલપટ્ટક પરિધાનપદ્મમ્, મુખાનન્તક=
સદોરકમુખવસ્ત્રિકા, એતાન્યાદો યસ્ય તત્તથા, 'એયપિ ય એતદપિ ચ' ઉવગરણ
ઉપકરણમ્ 'સજમસ્સ' સયમસ્ય=સાધ્યયોગપરિતિલક્ષણસપ્તદશત્રિધસ્ય 'ઉવઘૂહ
હણઢ્યાએ' ઉપઘૂહણાર્થતાયે, ઘૂહ્યર્થમિત્યર્થઃ, અત્ર સ્માર્થે તત્પ્રત્યયઃ । તથા—
'વાયાયવદસમસગસીયપરિવક્ષણઢ્યાએ' વાતાતપદશમશકશીતપરિરક્ષણાર્થતાયે,
તત્ર વાતાતપાદિ સરક્ષણાર્થ, રાગદોસરહિય 'રાગદ્વેપરહિત યથા ભવતિ તથા 'ણિચ્ચ'
નિત્ય 'પરિવહિયન્ત' પરિવોહ્યમ્=પરિવર્તન્ય, 'સજણ' સયતેન । 'પઢિલેહ-
ણપ્ફોહણપમજ્જણાએ' પ્રતિલેખનપ્રસ્ફોટનપ્રમાર્જનાયામ્, તત્ર-પ્રતિલેખન=

કા વસ્ત્ર, (ગોચ્છઝો) ગોચ્છક-પ્રમાર્જિકા, તથા (તિષ્ઠિ ય પચ્છાગા)
ત્રીન પ્રચ્છાદક-ચાદર (ઇનમેં ૨ સૂતકે ચાદર ઓર ૧ ઝનકા કબલ
રહતા હૈ) (રઝોહરણચોલપટ્ટક-મુહણતકમાર્ઝય) રઝોહરણ, ચોલપટ્ટક,
મુખાનન્તક, -સદોરકમુખવસ્ત્રિકા આદિ યે ઉપકરણ રહતે હૈં સો
(એયપિ ય) યે ઉપકરણ ભી (સજમસ્સ ઉવઘૂહણઢ્યાએ) ડસ સાધુ કે
સગ્રહ પ્રકાર કે સયમ કી રક્ષા કે નિમિત્ત એવ ઘૂહિકે નિમિત્ત હી
હોતે હૈં તથા— (વાયાયવદસમસગસીયપરિવક્ષણઢ્યાએ) વાત, આતપ
-ધૂપ દશમશક, ઓર શીત સે રક્ષા કરને કે લિયે હૈં । ઇસલિયે (સજ
ણ) સયત કો (રાગદોસરહિય) રાગદ્વેષ સે વિહીન હોકર (ણિચ્ચ)
મર્વદા યે ધર્મેપકરણ (પરિવહિયન્ત) ધારગ કરના ચાહિયે અર્થાત્
અપને પાસ રખના ચાહિયે । ઓર ઇનકી (પઢિલેહણપ્ફોહણપમજ્જ

જળપાત્ર ઢાકવાનુ વસ્ત્ર, “ ગોચ્છઝો ” ગોચ્છક-પ્રમાર્જિકા તથા “ તિષ્ઠિ ય
પચ્છાગા ” ત્રણ પ્રચ્છાદક-ચાદર (તેમા બે સૂતરાઉ અને એક ઊંઠની ડામલ
હોય છે) ‘ રઝોહરણ-ચોલપટ્ટક-મુહણ-તકમાર્ઝય ’ રઝોહરણ, ચોલપટ્ટક,
મુખાનન્તક-દોરા સહિતની મુહપત્તા, આદિ ઉપકરણો-રહે છે, વળી “ એયપિય ”
તે ઉપકરણ પણ “ સજમસ્સ ઉવઘૂહણઢ્યાએ ” તે સાધુના સત્તર પ્રકારના સયમ
ભની રક્ષાને માટે અને ઘૂહિકે માટે જ હોય છે તથા “ વાયાયવદસમસગ
સીયપરિવક્ષણઢ્યાએ ” વાત, તડકો, દશ મશક અને શીતથી રક્ષણ કરવાને
માટે છે તેથી “ સજણ ” સયતને “ રાગદોસરહિય ” રાગદ્વેષથી રહિત
થઈને “ ણિચ્ચ ” સર્વદા તે ધર્મેપકરણ “ પરિવહિયન્ત ” ધારણ કરવા
લેઈએ, એટલે કે પોતાની પાસે રાખવા લેઈએ અને તેમની “ પઢિલેહણ

પ્રત્યુપેક્ષણમ્=ચક્ષુષા નિરીક્ષણમિત્યર્થ , પ્રસ્ફોટનમ્=યતનાપૂર્વકમાસ્કાલનમ્, આભ્યાસહિતા યા પ્રમાર્જના તસ્યા કૃતાયા સત્યામ્ 'સયય' સતત 'અહો ય રાઓ ય' અદ્વિ ચ રાત્રો ચ, 'ભાયણમહોવહિ ઉવગરણ' ભાજનભાણ્ડોપયુપકરણમ્, 'અપ્પમત્તેણ' અપ્રમત્તેન=પ્રમાદવર્જિતેન સયતેન 'નિસ્સિયવ્વ' નિક્ષેપ્તવ્ય=યતનયા સ્થાપયિતવ્ય ચ, 'ગિણ્હિયવ્વ ચ' યતનયા ગ્રહોતન્ય ચ 'હોઈ' ભવતિ । એવા-ચતુર્થસમિત્યારાધના વિજ્ઞેયા ॥ સુ૦ ૪ ॥

ળાણ) પ્રતિલેખનાચક્ષુ દ્વારા અચ્છી તરત અવલોકન ક્રિયા ઓર પ્રસ્ફોટન-યતના પૂર્વક ઇટકારના રૂપ ક્રિયા તથા પ્રમાર્જના કર લેને પર (અહો ય રાઓ ય) દિન મેં તથા રાત્રિ મેં જવ કમી રલ્લને ઓર લેને કામ પહે તો ઇન (ભાયણમહોવહિઉવગરણ) ભાજન, ભાડ ઓર વસ્ત્રાદિ રૂપ ઉપધિ કો (અપ્પમત્તેણ) અપ્રમત્ત હોકર સાધુ કો (સયય) નિત્ય (નિસ્સિયવ્વ) યતનાસે ધરના ચાહિયે ઓર (ગિણ્હિયવ્વ ચ હોઈ) યતના સે ઉઠાના ચાહિયે ।

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને કૈસા આહાર મુનિ કો લેના ચાહિયે ઓર કયા ૨ સામગ્રી અપને પાસ રલ્લના ચાહિયે—યહ સવ પ્રકટ ક્રિયા હૈ । આચોરાદ્ધ કે ઈતીય શ્રુતમ્કવ મેં જો પિંડૈષણા નામકા પ્રથમ અધ્યયન હૈ ઇસમે ગ્યારહ ઉદ્દેશોં મેં આહાર કે જો દોષ પ્રતિપાદિત ક્રિયે ગયે હૈં ઇન દોષોં સે જો આહાર વર્જિત હો, ક્રયણ આદિ કો કૃત આદિ રૂપ નૌકોટિયોં સે જો શુદ્ધ હો, ઉદ્ગમ, ઉત્પાદના ઓર ઇષણા સે જો શુદ્ધ હો, ન્યપગત આદિ વિશેષણોં વાલા હો, પ્રાસુક હો, સયોજનાદોષ

પ્રસ્ફોટનપ્રમજ્જણાણ ” પ્રતિલેખના - આળ વડે સાગી રીતે અવલોકન અને પ્રસ્ફોટન-યતનાપૂર્વક ઇટકારવારૂપ ક્રિયા તથા પ્રમાર્જન કર્યા પછી “ અહોય રાઓય ” દિવસે કે રાત્રે જ્યારે ખણુ લેવા કે મૂકવાની જરૂર પડે ત્યારે તે “ ભાયણમહોવહિઉવગરણ ” ભાજન ભાડ અને વસ્ત્રાદિરૂપ ઉપધિને “ અપ્પમત્તેણ ” અપ્રમત્ત થઈને સાધુએ “ સયય ” સદા “ નિસ્સિયવ્વ ” યતના પૂર્વક મૂકવા જોઈએ અને “ ગિણ્હિયવ્વ ચ હોઈ ” યતનાપૂર્વક ઉઠાવવા જોઈએ

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે કેવો આહાર મુનિએ લેવો જોઈએ અને કયી કયી સામગ્રી પોતાની પાસે રાખવી જોઈએ તે બધું બતાવ્યું છે આચારાગના બીજા શ્રુતમ્કથમા જે પિંડૈષણા નામનું પહેલું અધ્યયન છે તેના અગિયાર ઉદ્દેશોમા આહારના જે દોષોનું પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું છે તે દોષોથી જે આહાર ગ્રહિત હોય, કયણુ આદિના કૃત આદિરૂપ નવ પ્રકારે જે શુદ્ધ હોય, ઉદ્ગમ, ઉત્પાદના અને ઇષણાથી જે શુદ્ધ હોય, ન્યપગત આદિ વિશેષણો વાળો હોય, પ્રાસુક હોય, સયોજના દોષ વિનાનો હોય, અગાર

સે હીન હો, અગાર ઓર ધૂમ દોષ સે વિગત હો ગેસા હી આહાર મુનિ
 કો ક્ષુધા વેદના આદિ ડહ કારણો કે નિમિત્ત કો લેકર છટકાય કે
 જીવોં કી રક્ષા કે અભિપ્રાય સે લેના ચાહિયે । તથા ઇમ પરિગ્રહ વિરત
 સાધુ કે લિયે કમી મી ચાહે કિસી મી પ્રકાર કા કેમ્પા હી રોગાતક
 ઉદય મે આ રહા હો અપને નિમિત્ત ણવ પર કે નિમિત્ત ઔષધિ આદિ
 કા સગ્રહ નહી કરના ચાહિયે । મુનિ કે લિયે આગમ મેં જિન ૨ ધર્મો
 પકરણોં કો રખને કા વિધાન હૈ-વે ૨ ધર્મોપકરણ ઉસે શીત આતપ
 આદિ જન્ય વાધા કો નિવૃત્તિ કે લિયે ઓર સાવન્યયોગવિરતિરૂપ સત્રહ
 પ્રકાર કે સયમ મી રક્ષા કરને કે લિયે વિના કિસી રાગદ્વેષપરિણતિ કે
 અપને પાસ રખના ચાહિયે । ઉનકી પ્રતિદિનયતના પૂર્વક પ્રમાર્જના આદિ
 કરકે દિન યા રાત્રિ મેં ઉન્હેં યતનાપૂર્વક વરનો ઓર ઉઠાના ચાહિયે ।
 સૂત્ર મેં જો “વવગયચુય ચવિત્રચત્તદેહ” યહ પદ આયા હૈ ઉસકા
 શબ્દાર્થ હસ પ્રકાર હૈ-સામાન્યરૂપ મેં જો આહાર ચેતન પર્યાય સે
 રહિત હોકર અચેતન બન જાતા હૈ । વહ વ્યપગત કહલાતા હૈ । વિશેષ
 રૂપ મેં જીવન આદિ ક્રિયા સે જો વિનિર્ગત હોતા હૈ વહ ચ્યુત કહલાતા
 હૈ । ચેતના પર્યાય સે જો મૃત્યાદિ દ્વારા રહિત કરાયા જાના હૈ વહ
 વ્યાવિત કહા જાતા હૈ । એવ જો જીવોં કે સબધ સે રહિત હોતા હૈ વહ

અને ધૂમ દોષથી રહિત હોય, એવો જ આહાર મુનિએ ક્ષુધાવેદના આદિ છ
 કારણોને નિમિત્તે છટકાવના જીવોની રક્ષાના અભિપ્રાયથી લેવો જોઈએ તથા
 એ પરિગ્રહ વિરત સાધુએ ગમે તે પ્રકારનો રોગાતકનો ઉદય થયો હોય તે
 પણ પોતાને માટે કે અન્યને માટે કદી પણ ઔષધિ આદિનો સંગ્રહ કરવો
 જોઈએ નહીં મુનિને માટે જે જે ઉપકરણો રાખવાનું આગમમાં વિધાન છે,
 તે તે ઉપકરણ તેણે શીત, તડકો આદિથી નહીં મુશ્કેલીઓથી બચવા માટે અને
 સાવધયોગ વિરતિરૂપ સત્રહ પ્રકારના સયમની રક્ષાને માટે કેવડે રાગદ્વેષ પરિણતિ
 વિના પોતાની પાસે રાખવા જોઈએ તેની દરરોજ યતનાપૂર્વક પ્રમાર્જના
 આદિ કરીને રાત્રે કે દિવસે તેમને યતનાપૂર્વક મૂકવા તથા લેવા જોઈએ સૂત્રમાં
 જે “વવગયચુયચવિત્રચત્તદેહ” આ પદ આવે છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય
 છે-સામાન્ય રીતે જે આહાર ચેતન પર્યાયથી રહિત થઈને અચેતન બની જાય
 છે તેને વ્યપગત આહાર કહે છે વિશેષ રૂપે જીવન આદિ ક્રિયાથી જે વિનિ
 ર્ગત થાય છે તે ચ્યુત આહાર કહેવાય છે મૃત્યાદિ દ્વારા જે ચેતના પર્યા
 યથી રહિય થાય છે તે વ્યાવિત કહેવાય છે અને જે જીવોના સબધથી

મૂલમ્—એવં સે સજણ વિમુક્તે નિસ્સંગો નિપ્પરિગ્ગહરુડં
 નિમ્મમે નિસ્સિણેહવધણે સઠ્ઠપાવવિરણ વાસીચદણસમા-
 ણકપ્પે સમતિણમણિમુત્તલેટ્ટકચણસમે સમે ય માણાવમા-
 ણણાણ સમિયરણ સમિયરાગદોસે સમિણ સમિહસુ સમ્મ-
 દિટ્ઠી સમે ય જે સઠ્ઠપાણમૂણસુ સે હુ સમણે સુયધારણ
 ઉજ્જુણ સજણ સુમાહુ સરણ સઠ્ઠમૂયાણ સઠ્ઠજગવચ્છલે
 સચ્ચભાસણ સંસારતે ઠિણ્યસસારસમુચ્છિન્ને સયયં સરણાણ
 પારણ પારણ ય સઠ્ઠવેસિ સમયાણ પવયણમયાહિ અટ્ટહિ
 અટ્ટકમ્મગંઠી વિમોચગે અટ્ટમયમહણે સસમયકુસલે ય ભવડ,
 સુહદુહાનિવિસેસે અવિભતરવાહિરમ્મિ સયા તવોવહાણમ્મિ
 ય સુટ્ટજ્જુણ સ્વંતે દત્તે ય હિયનિરણ ઇરિયાસમિણ ભાસા-
 સમિણ ઇસણાસમિણ આયાણભડમત્તનિવસેવણાસમિણ ઉચ્ચા-
 રપાસવણસેલ -જહ્લસિધાણપરિટ્ટાવણાસમિણ મણગુત્તે વહ્ગુત્તે
 કાયગુત્તે ગુત્તિદિણ ગુત્તવભયારી ચાર્દ લજ્જુધણ્ણો તવસ્સી
 સ્વંતીસમે જિહંદિણ સોહિણ અણિયાણે અવહિલેસ્સે અમમે
 અકિચણે છિન્નગથે નિરુવલેવે સુવિમલવરકસમાયણ ચેવ
 મુક્કતોણ સસે વિવ નિરજણે વિગયરાગદોસમોહે કુમ્મોહવ
 ઇદિયસુગુત્તે, અચ્ચકણગ વ જાયરૂવે, પુવ્વરપત્ત વ નિરુવ-

ત્યક્ત કહા જાતા હૈ । ઇસ તરહ ઇસ સૂત્ર દ્વારા ચૌથી સમિતિ કી આરા-
 ધના પ્રકટ કી ગઈ હૈ એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ-૪ ॥

રહિત થાય છે તે ત્યક્ત આહાર ડહેવાય છે, આ ગીતે આ સૂત્ર દ્વારા ચૌથી
 સમિતિની આરાધના પ્રગટ કરવામા આવી છે તેમ સમજવુ જોઈએ ॥ સૂ ૪ ॥

लेवे, चदो इव सोमयाए सूरौव्व दित्ततेये, अचले जहमदरे
 गिरिवरे, अक्खोभो सागरेव्व थिमिय पुढवी विय सव्व-
 फासविसहे तवसावि य भासरासिच्छन्नेव जायतेए जलि-
 यहुयासणो विव तेयसा जलते गोसीसचंदणं पिव सीयले
 सुगंधीय हरओ विव, समियभावे उग्घोसियसुनिम्मलं आय-
 समडलतल व पागडभावेण सुद्धभावे, सौंढीरो कुजरो व,
 वसभो व जायथामे, सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्प-
 धरिसे, सारयसलिल व सुद्धहियए भारडे चेव अप्पमत्ते
 खग्गिविसाणं एगजाए खाणू व उड्डकाए सुण्णागारेव्व अप्प-
 डिकम्मे सुण्णागारा वणस्सतो निवायसरणप्पडवज्झामणमिव
 निप्पकपे जहा खुरोचेव एगधारे जहा अहीचेव एगदिट्ठी
 आगास चेव निरालवे विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के कय-
 परनिलए जहा चेव उरए, अप्पडिवद्धो अनिलोव्व, जीवोव्व
 अप्पडिहयगई, गामे गामे य एगराय णगरे णगरे पच्चराय
 दूइज्जते य जितिदिए जियपरिसहे य निब्भए विऊसचि
 ताचित्तमीसएहि दव्वेहि विरागयगए सच्चयओ विरए मुत्ते
 लहुगे निरवक्खे जीवियमरणासविप्पमुक्के निस्सध निव्वण
 चरित्त धीरे काएण फासयते सयय अज्झप्पज्झाणजुत्ते
 निहुए एगे चरेज्ज धम्म ॥ सू० ५ ॥

‘ एव ’ इत्यादि—

टीका—‘ एव ’ एवम् = उक्तप्रकारेण साधुधर्मनिरत ‘ से सजए ’ स स
 यतः=सयमी ‘ विमुत्ते ’ विमुक्त ‘ सग्रहकरणाद् विमुक्त ‘ निस्सगो ’ नि सङ्ग =

આસક્તિવર્જિતઃ ‘ નિપ્પરિગ્ગહરુઈ ’ નિપ્પરિગ્ગહરુચિઃ-પરિગ્ગહરુચિરહિત ઇત્યર્થઃ,
‘ નિમ્મમે ’ નિર્મમ =મમત્વભાવવર્જિતઃ ‘ નિસ્સિનેહવધણે ’ નિ સ્નેહવન્ધન.=
નિર્ગત સ્નેહવન્ધન યસ્માત્સઃ-સ્નેહવન્ધનરહિત ઇત્યર્થઃ, ‘ સન્વપાવવિરણ ’ સર્વ-
પાપવિરતઃ-કાયિકવાચિકમાનસિકસર્વવિધપાપવર્જિત ઇત્યર્થ, તથા-‘ વાસીચ-
દણસમાણકણ્ણે ’ વાસીચન્દનસમાનકલ્પઃ, વાસી=‘ વસુલા ’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધા,
સેવ-વાસી=તક્ષકત્વેન અપકારી, તસ્મિન્ તથા ચન્દનમિવોપકારકત્વેન ચન્દનમ્=
ઉપકારી, તસ્મિન્નપકારકે ઉપકારકે દ્વયોરપિ સમાનઃ=સદૃશઃ કલ્પઃ=આચારો
યસ્ય સ તથોક્તઃ । યથોક્તમ્—

“ યોમામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥ ૧ ॥ ”

‘ એવ સે ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(૧૧૮) હસ પ્રકાર સાધુ ધર્મ મેં લવલીન બના હુઆ (સે
સજણ) વહ સયમીસાધુ (વિમુક્તે) સગ્રહ કરને સે વિમુક્ત બન જાતા
હે (નિસ્સગો) આસક્તિ સે વર્જિત હો જાતા હે (નિપ્પરિગ્ગહરુઈ)
પરિગ્રહ કી રુચિ સે રહિત હો જાતા હે (નિમ્મમે) મમત્વભાવ સે વિ-
હીન હો જાતા હે (નિસ્સિનેહવધણે) સ્નેહરૂપધન સે મુક્ત બન જાતા
હે (સન્વપાવવિરણ) કાયિક, વાચિક એવ માનસિક સર્વપ્રકાર કે પાપો
સે વિરત હો જાતા હે (વાસીચદણસમાણકણ્ણે) તથા વાસી (વસુલા)
કે જૈસે અપકારક મેં ઓર ચદન કે જૈસે ઉપકારક મેં એકસા આચાર
વાલા બન જાતા હે । જૈસે કહા હે—

“ યો મામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥૧॥ ”

ટીકાર્થ—આ પ્રકારે સાધુ ધર્મમાં લીન બનેલા “ સે સજણ ” તે સયમી
સાધુ “ વિમુક્તે ” સગ્રહ ડરવાના કાર્યથી વિમુક્ત થઈ બચે છે, “ નિસ્સગો ”
આસક્તિથી રહિત બની બચે છે, “ નિપ્પરિગ્ગહરુઈ ” પરિગ્રહની રુચિથી રહિત
થઈ બચે છે, “ નિમ્મમે ” મમત્વ ભાવ વિનાનો બની બચે છે, “ નિસ્સિનેહ
વધણે ” સ્નેહરૂપ બધનથી મુક્ત થઈ બચે છે, “ સન્વપાવવિરણ ” કાયિક,
વાચિક અને માનસિક એ સર્વ પ્રકારના પાપોથી વિરત થઈ બચે છે “ વાસી
ચદણસમાણકણ્ણે ” તથા વાસલા “ વસુલા ” ના જેવા અપકારક પ્રત્યે તથા
ચદનના જેવા ઉપકારક પ્રત્યે એક સરખા બની બચે છે જેમકે કહ્યું છે—

“ યો મામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥ ૧ ॥

‘સરણ’ શરણમ્ ‘સવ્વજગવચ્છલે’ સર્વજગદ્ગત્મલ - સર્વજીવયોનિપુ કરુણાભા-
વયુક્તઃ, ‘સચ્ચભાસણ ય’ સત્યભાષકશ્ચ, સત્યભાષાપરિવેશતત્પર તથા- ‘સસારતે
ઠિયે ય’ સસારાન્તે સ્થિતાશ્ચ-ભાવિજન્મરહિતત્વાત્, શ્મમેવાર્થ શબ્દાયેન્તરેણાઠ
‘સસારસમુચ્છિન્ને’ સસારસમુચ્છિન્નઃ=સસાર=ચતુર્ગતિલક્ષણઃ સમુચ્છિન્નો યેન
સઃ, અતઃપ્ર ‘સયય’ સતતમ્ ‘મરણાણ’ મરણાના ‘પારણ’ પારગઃ=મુક્તસ્યો
ત્પત્યભાવેન મરણાભાવાન્મરણપારગત્ય પ્રોખ્યમ્ । તથા- ‘પારમે ય’ પારગશ્ચ
‘સવ્વેસિં સસયાણ’ સર્વેષા સશયાનામ્=સર્વસશયોન્હેદકાંક ઇત્યર્થ, તથા ‘પવવણ
માયાહિં અટ્ટહિં પ્રવચનમાતૃભિરપ્તાભિ =પશ્ચસમિતિત્રિણિ સ્વ્યાભિઃ=સાધનભૂતાભિઃ

કરનેમેં તત્પર-બન જાતા હૈ । તથા(સરણ સવ્વભૂયાણ) સમસ્ત ભૂતો કા
રક્ષક બના હુઆ વહ સાધુ (સવ્વજગવચ્છલે) સર્વ પ્રકારની જીવ યોનિયો
કે ऊपर अपार करुणाभाव से सहित हो जाता है । (सच्चभासण)
उसकी भाषा में सत्यवादिता की छाप लग जाती है और वह
(ससारते ठिए) आगामी जन्मसे रहित होनेके कारण ससार के अंत
में स्थित हो जाता है । इसी बातको सूत्रकार शब्दान्तरसे समझाते हैं-
(ससारसमुच्छिन्ने) उस साधुका चतुर्गतिरूप ससार समुच्छिन्न हो
जाता है । अत एव (सयय मरणाणपारण) वह सतत् मरण का पार-
गामी बन जाता है । क्योंकि मुक्त जीव की फिर ससार में उत्पत्ति
नहीं होती है, इसलिये उसका मरण भी नहीं होता है, अत इसी भाव
को लेकर ‘वह मरण का पारगामी बन जाता है’ ऐसा कहा गया है ।
(सव्वेसिं ससयाण पारण) वह समस्त प्रकारके संशयो का उच्छेदक

નિર્વાણુ સાધવાને તત્પર બની જાય છે તથા “સરણ સવ્વભૂયાણ” સમસ્ત
જીવોનો રક્ષક બનેલ તે સાધુ “સવ્વજગવચ્છલે” સર્વ પ્રકારની જીવ યોનિયો
પર અપાર કરુણાભાવથી યુક્ત બની જાય છે “સચ્ચ ભાસણ” તેની વાણીમાં
સત્યવાદિતાની છાપ લાગી જાય છે અને તે “સસારતે ઠિયે” આવતા જન્મથી
રહિત હોવાને કારણે સસારના અન્તમાં સ્થિત થઈ જાય છે એ જ વાતને સૂત્રકાર
બીજી રીતે શબ્દાદિક દેરફારથી સમજાવે છે-“સસારસમુચ્છિન્ને” તે સાધુનો
ચારગતિરૂપ સસાર સમુચ્છિન્ન થઈ જાય છે તેથી “સયય મરણાણપારણ”
તે કાયમને માટે મરણનો પારગામી બની જાય છે, કારણ કે મુક્ત જીવની
સસારમાં ફરીથી ઉત્પત્તિ થતી નથી, તેથી તેનું મરણ પણ થતું નથી તેથી એ
ભાવને કારણે “તે મરણનો પારગામી બની જાય છે” એવું કહ્યું છે “સવ્વેસિં
સસયાણ પારણ” તે સમસ્ત પ્રકારના સંશયોનો ઉચ્છેદક-નિવારક થઈ જાય છે

‘ અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચને ’ અટ્ટકર્મગ્રન્થિવિમોચક = અટ્ટો = અટ્ટસંખ્યકા યે કર્મગ્રન્થયસ્તેષા વિમોચકઃ, તથા- ‘ અટ્ટમયમહણે ’ અટ્ટમદમયનઃ = અટ્ટમદસ્થાનનાશકઃ ‘ સસમયકુસલેય ’ સ્વસમયકુશલથ = સ્વસિદ્ધાન્તનિપુણથ, ચકારાત્ પરસમયકુશલ ‘ ભવદ્ ’ ભવતિ । તથા- ‘ સુહદુક્ખનિવિવેસેસે ’ સુખદુઃખનિર્વિશેષઃ = સુખદુઃખયોર્દર્પશોકાદિરહિત ઇત્યર્થઃ, ‘ અર્વિંભતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ ’ આભ્યન્તરવાહ્યે તપઉપધાને, તત્ર-ચિત્તનિરોધપ્રાધાન્યેન કર્મક્ષયણહેતુત્વાત્પ્રાયશ્ચિત્તાદિપટ્ટકમ્-આભ્યન્તરમ્ । વાહ્યશરીરસ્ય પરિશોષણેન કર્મક્ષયણહેતુત્વાદનશનાદિપટ્ટક વાહ્યમ્, અનયોર્દ્વિન્દ્વઃ, તસ્મિન્, તપ ઉપધાને = તપેવ મોક્ષમાર્ગસ્યોપપ્લવ્વમ્ભુત્વાદુપધાનતસ્મિન્, ‘ સયા ’ સદા ‘ સુદ્ધુજ્જણે ’ સુદ્ધુચિત્ત = સમ્યક્તયા તદારાધને તત્પર

હો જાતા હૈ । તથા (પાવયણમાયાહિ અટ્ટહિ) પાચસમિતિ, ત્રીન ગુણિ રૂપ અટ્ટ પ્રવચન માતાઓ કે વલ પર વહ (અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચણે) આઠ પ્રકારકે કર્મોની કી ગ્રન્થિયો કો છોડાનેવાલા બન જાતા હૈ । (અટ્ટમયમહણે) શુદ્ધ સમ્યગ્દર્શન કા પાલનકર્તા હોનેકે કારણ વહ આઠ મદો કા વિનાશક હોતા હૈ । (સસમયકુસલેય) સ્વસમયમેં પૂર્ણ નિષ્ણાત બન જાતા હૈ તથા ચકારસે પરસમયકા જાતા ભી બન જાતા હૈ । (સુહદુક્ખ નિવિવેસેસે) સુખ ઓર દુઃખ ઉસે એકસે પ્રતીત હોને લગજાતે હે । વહ ઉનમેં દર્પ ઓર વિષાદ નહી કરતા હૈ । (અર્વિંભતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ) ચિત્તનિરોધકી પ્રધાનતાસે કર્મક્ષયણ કે હેતુભૂત હોને કે કારણ પ્રાય શ્ચિત્ત આદિ છહ પ્રકાર કે આભ્યન્તર તપ રૂપ ઉપધાન મેં તથા વાહ્ય મેં શરીર કે પરિશોષણ સે કર્મક્ષયણ કે હેતુ હોને સે અનશન આદિ ચારહ પ્રકાર કે વાહ્ય તપરૂપ ઉપધાન મે સદા (સુદ્ધુજ્જણે) અછી તરહ

“ પવયણમાયાહિ અટ્ટહિ ” પાચ સમિતિ ત્રણગુણિથી આઠ પ્રવચન માતાઓના બળથી તે “ અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચણે ” આઠ પ્રકારના કર્મોની ગાઠિને છોડાવનાર બની જાય છે “ અટ્ટમયમહણે ” શુદ્ધ સમ્યગ્દર્શનનો પાલનકર્તા હોવાને કારણે તે આઠ મદનો વિનાશક હોય છે “ સસમયકુસલેય ” સ્વસમયમાં પૂર્ણ નિષ્ણાત બની જાય છે તથા ચકારથી પર સમયનો બળકાર બની જાય છે “ સુહદુક્ખનિવિવેસેસે ” સુખ અને દુઃખ તેને સરખા લાગવા માટે છે તે તેમાં હર્ષ કે વિશાદ કરતો નથી “ અર્વિંભતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ ” ચિત્તનિરોધની પ્રધાનતાથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે પ્રાયશ્ચિત્ત આદિ છ પ્રકારના આભ્યન્તર તપરૂપ હોવાને ઉપધાનમાં તથા વાહ્યમાં શરીરના પરિશોષણથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે અનશન આદિ બાર પ્રકારના વાહ્ય તપરૂપ ઉપધાનમાં સદા “ સુદ્ધુજ્જણે ” સારી રીતે તે તત્પર થઈ જાય છે, એટલે

इत्यर्थः, तथा 'स्वते' क्षान्तः=समाप्तान् 'दत्ते य' दान्तश्च=इन्द्रियदमनकारी च, तथा-'हियनिरए' हितनिरतः=आत्मकल्याणपरायण इत्यर्थः, तथा-'इरियासमिए' ईर्यासमितः, 'भासासमिए' भाषासमित 'एसणासमिए' एषणासमितः 'आयाणभडमत्तनिक्खेयणासमिए' आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः 'उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिष्ठावणियासमिए' 'उच्चारपासवणखेल सिंघाणसमिए' उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनिकाममित, 'मणगुत्ते' मनोगुप्त - 'वयगुत्ते' वचोगुप्तः, 'कायगुत्ते' कायगुप्तः 'गुत्तिदिए' गुप्तेन्द्रियः, 'गुप्तवभयारी' गुप्तब्रह्मचारी, एषामर्थाः पूर्वं व्याख्याताः । तथा

वह तत्पर हो जाता है अर्थात् वाला और आभ्यन्तर तपो की आराधना वह बहुत अच्छी तरह से किया करता है। (स्वते) सब जीवों पर वह क्षमाभाव रखता हुआ (दत्ते) और अपनी इन्द्रियों का दमन करता हुआ (हियनिरए) आत्मकल्याण करने में परायण बन जाता है। तथा (इरियासमिए) ईर्यासमिति से युक्त (भासासमिए) भाषासमिति से युक्त, (एसणासमिए) एषणासमिति से युक्त (आयाणभडमत्तनिक्खेयणासमिए) आदानभाण्डमत्रनिक्षेपणासमिति से युक्त तथा (उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठावणियासमिए) उच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठापनिकासमिति से युक्त (मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति कायगुप्ति इन तीन गुप्तियों से गुप्त-रक्षित आत्मप्रवृत्ति वाला बना हुआ (गुत्तिदिए) अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण अकुश रखने वाला बन जाता है (गुप्तवभयारी) ब्रह्मचर्यव्रत की नौ कोटि से सदा रक्षा करने वाला होता है। तथा फिर

કે બાહ્ય અને અભ્યંતર તપોની આરાધના તે બહુ સારી રીતે કર્યા કરે છે "સ્વતે" દરેક જીવો પર તે સમાનભાવ રાખતો "દત્તે" અને પોતાની ઇન્દ્રિયોનું દમન કરતો "હિયનિરએ" આત્મકલ્યાણ કરવામાં પરાયણ બની જાય છે તથા "ઈરિયાસમિએ" ઈર્યા સમિતિથી યુક્ત "ભાસાસમિએ" ભાષા સમિતિથી યુક્ત, "એસણાસમિએ" એષણા સમિતિથી યુક્ત, "આયાણ-મહમત્તનિક્ખેયણાસમિએ" આદાન ભાડ મત્ર નિક્ષેપણા સમિતિથી યુક્ત તથા ઉચ્ચારપાસવણખેલજલ્લસિંઘાણપરિઘાવણિયાસમિએ "ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલજલ્લસિંઘાણ પરિઘાપનિકા સમિતિથી યુક્ત મણગુત્તે વચગુત્તે કાયગુત્તે" મનોગુપ્તિ વચન-ગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, એ ત્રણે ગુપ્તિઓથી ગુપ્ત-રક્ષિત આત્મ પ્રવૃત્તિ ધાળો બનીને "ગુપ્તિદિએ" પોતાની ઇન્દ્રિયોપર પૂર્ણ અકુશ રાખનાર બની જાય છે "ગુપ્તવમ્બયારી" બ્રહ્મચર્ય વ્રતની નવ કોટીએ સદા રક્ષા કરનાર

‘ ચાઈ ’ ત્યાગી સર્વસદ્ગત્યાગાત્, ‘ લજ્જૂ ’ લજ્જાવાન=મયમી ‘ ધણ્ણો ’ ધન્યઃ — સમ્યગ્જ્ઞાન સમ્યગ્દર્શનસમ્યક્ચારિત્રરૂપધનશ્રામયોગ્યત્વાત્, ‘ તવસ્સી ’ તપસ્વી=પ્રશસ્તતપોયુક્તત્વાત્, ‘ સતિમ્મમે ’ શાન્તિધમ =ઋગ્વ્યાદિ સામર્થ્યે સત્યપિ શાન્ત્યા-ક્ષમાગુણેન ક્ષમતે=સહતે યઃ સ તથોક્તઃ, તથા-‘ જિહ્દિણ્ણ ’ જિતેન્દ્રિયઃ, ‘ સોદ્દિણ્ણ ’ શોધિત =શુદ્ધઃ — ક્ષાલિતમિથ્યાત્વાદિકર્મમલ-ત્વાત્, ‘ અણિયાણે ’ અનિદાનઃ-નિદાનવર્જિતઃ, ‘ અવહિલેસ્સે ’ અવહિલેશ્ય-‘ અ ’ અવિદ્યમાના વદિઃ=સયમાદ્ વહિ હેશ્યા=અન્તઃ કરણવૃત્તિઃ, યમ્ય સોડ્વ-હિલેશ્યઃ, સયમાન્ત કરણ इत्यर्थः, તથા ‘ અમમે ’ અમમ-મમત્વવર્જિત, ‘ અર્કિ-

(ચાઈ) સર્વ સગ કા પરિત્યાગ કર દેને સે વહ ત્યાગી કહલોને લગતા હૈ । (લજ્જૂ) લજ્જાવાન્ વન જાતા હૈ-વહ સદા ઇસ વાન કા ધ્યાન રખતા હૈ કિ કહીં ણેસી પ્રવૃત્તિ મુઝસે ન વન જાવે જો સયમ માર્ગ કે વિરુદ્ધ હોકર મુઝે લજાને વાલી હો । ણેસા વહ સયમી (ધણ્ણો) સમ્યક્ જ્ઞાન, સમ્યક્ દર્શન ઓર સમ્યક્ ચારિત્ર રૂપ વન લાભ કે યોગ્ય હો જાને કે કારણ ધન્ય માના જાતા હૈ । તથા (તવસ્સી) પ્રશસ્ત-તપોં કો આચરિત કરને વાલા હોને સે તપસ્વી કહલોને લગતા હૈ, તથા (સતિમ્મમે) લબ્ધિ આદિ રૂપ સામર્થ્યસપન્ન હોને પર ભી વડ્ઢ ક્ષમાગુણ સે સવ કુઝ સહને વાલા સ્વભાવ વન જાતા હૈ । ઇસ તરહ (જિહ્દિણ્ણ) જિતેન્દ્રિય, (સુદ્ધ) મિથ્યાત્વાદિ કર્મમલક્ષાલિત હોને સે શુદ્ધ (અણિયાણે) નિદાન સે રહિત, (અવહિલેસ્સો) અવહિલેશ્ય-સયમયુક્ત અન્તઃ કરણ વાલા (અમમે) મમતા સે રહિત (અર્કિચણે)

થાય છે તથા ‘ ચાઈ ’ સર્વ સગનો ત્યાગ ડગી દેવાથી તે ત્યાગી કહેવાવા લાગે છે ‘ લજ્જૂ ’ તે અદરથી તથા બહારથી દોષીના જેવો સરળ થઈ બીય છે અથવા લલ્લતવાન બની બીય છે તે હમેશા તે વાતની ડાળણ રાખે છે કે મારાથી ડઢાય એવી પ્રવૃત્તિ થઈ ન બીય કે જે અયમ માર્ગની વિરુદ્ધ હોવાને કારણે મારે લભણ પડે એવા તે સયમી ‘ ધણ્ણો ’ સમ્યક્જ્ઞાન, સમ્યક્ દર્શન, અને સમ્યક્ ચારિત્રરૂપ ધનલાભને યોગ્ય થઈ જવાને કારણે ધન્ય મનાય છે તથા ‘ તવસ્સી ’ પ્રશસ્ત તપો ડરનાર હોવાથી તપસ્વી કહેવાવા લાગે છે, તથા ‘ સતિમ્મમે ’ લબ્ધિ આદિરૂપ સામર્થ્ય યુક્ત હોવા છતાં પણ તે ક્ષમાગુણથી બધું મહન ડરવાની વૃત્તિવાળો થઈ બીય છે આ રીતે ‘ જિહ્દિણ્ણ ’ જિતેન્દ્રિય, ‘ સુદ્ધ ’ મિથ્યાત્વાદિ કર્મમળનો લય થવાને કારણે શુદ્ધ, ‘ અણિયાણે ’ નિદાનથી રહિત, ‘ અવહિલેસ્સો ’ અબહિલેશ્ય-સયમી અત ડરણવાળો ‘ અમમે ’ મમતાથી રહિત, ‘ અર્કિચણે ’ અર્કિચન

ચળે 'અકિચ્ચન:-નિર્દ્રવ્ય:', 'છિન્નગયે' છિન્નગ્રન્થ:-પાત્તાઅંતરપરિગ્રહરહિતઃ,
 તથા-'નિરુપલેવે' નિરુપલેપ:=રાગદ્વેષવર્જિતઃ, તથા-'સુવિમલવરકસમાયણ
 ચેવ' સુવિમલવરકાંસ્યમાજનમિત્ત=સુવિમલ=નિર્મલ યદ્વરકાસ્યમાજન તદિવ
 'વિમુક્તતો' વિમુક્તતોય:=જલલેપરહિત, શ્રમણપક્ષે સમ્યન્ધહેતુસ્નેહવર્જિત इत्यर्थः
 તથા-'સચ્ચે વિવ નિરજળે' શાલ્વ इव નિરજનઃ, અય માત્ર.-યથા શાલ્વો નિર-
 જનનોઽર્થાન્નુલ્લો ભવતિ, તથા સાધુરપિ નિરજનઃ=રાગાદિકૃષ્ણતારહિતો ભવતિ।
 અત એવ 'વિગયરાગદોસમોહે' વિગતરાગદ્વેષમોહ, વિગતાનષ્ટા રાગદ્વેષ મોહઃ
 યસ્માત્ સઃ તથા 'કુમ્મો इव' કુર્મ इव इदिए सुगुप्ते' इन्द्रियेषु गुप्त -યથા કચ્છપો
 ગ્રીવાદિ સ્વાદ્ધાનિ સગોપ્ય ગુપ્તો ભવતિ તથૈવ સાધુરપિ વિષયેભ્ય इन्द्रियाणि
 સગોપ્ય ગુપ્તો ભવતિ। તથા-'જન્નકણગ વ' જાત્યકનકમિત્ત=શુદ્ધકાન્નમિત્ત 'જાય
 રુવે' જાતરૂપ.=રાગાદિક્ષારરહિતત્વાત્, સ્વસ્વરૂપસમ્પન્નઃ, તથા 'પુન્નવરપત્ત વ'

અર્કિચ્ચન ભાવ સે યુક્ત, (છિન્નગયે) વાહ્ય ઓર આમ્યતર પરિગ્રહ સે
 વર્જિત, ચના હુઆ વહ સાધુ (નિરુપલેવે) રાગ ઓર દ્વેષ સે નિર્લિપ્ત
 બન જાના હૈ ઓર (સુવિમલવરકસમાયણ ચેવ વિમુક્તતો) નિર્મલ
 કાંસ્યપાત્ર કી તરહ જલ સે સુનિપક્ષ મેં સમ્યન્ધ કે હેતુભૂત સ્નેહ સે
 રહિત હોતા હુઆ (સચ્ચેવિવ નિરજળે) શાલ્વ કી તરહ નિરજન-શુક્લ
 અર્થાત રાગાદિક કી કૃષ્ણતા સે રહિત હો જાતા હૈ। હસિલિયે વહ
 (વિગયરાગદોસમોહે) રાગ દ્વેષ એવ મોહ સે રહિત હો જાતા હૈ તથા
 (કુમો इव इदिय सुगुप्ते) કુર્મ-કચ્છપ કી તરહ इन्द्रियगुप्त कहलाता
 હૈ અર્થાત્ જિસ પ્રકાર કચ્છપગ્રીવાદિક અપને અવયવો કો છુપાકર
 શરીર મેં ગુપ્ત હો જાતા હૈ ડસી પ્રકાર વહ સાધુ મી વિષયો સે इन्द्रियो
 કો હટાકર સુરક્ષિત બન જાતા હૈ। તથા (जन्मकणग व जायरुवे)

ભાવથી યુક્ત, "છિન્નગયે" બાહ્ય અને આમ્યન્તર પરિગ્રહથી રહિત બનેલ તે
 સાધુ "નિરુપલેવે" રાગ અને દ્વેષથી અલિપ્ત બની જાય છે, અને "સુવિમલવર-
 -કસમાયણ ચેવ વિમુક્તતો" નિર્મળ ડાસાના પાત્રથી જેમ જળથી રહિત-સુનિપક્ષે
 બસ ધના હેતુભૂત સ્નેહથી રહિત-થઈને "સચ્ચેવિવ નિરજળે" શ બના જેવો
 નિરજન-સંકેદ એટલે કે "વિગયરાગદોસમોહે" રાગાદિકની કાળાશથી રહિત
 થઈ જાય છે, તથા "કુમો इव इदिय सुगुप्ते" કાચબાના જેવો ઈન્દ્રિયગુપ્ત
 કહેવાય છે એટલે કે જેમ કાચબો પ્રાતાના ગ્રીવાદિક અવયવોને શરીરમાં
 છુપાવીને ગુપ્ત થઈ જાય છે તેમ સાધુ પણ વિષયોમાંથી ઈન્દ્રિયોને હટાવીને
 સુરક્ષિત બની જાય છે તથા "जन्मकणग व जायरुवे" શુદ્ધ સુવર્ણની જેમ

पुष्करपत्रमिव-कमलपत्रमिव 'निरुपलेवे' निरुपलेप-भोगगृद्धिलेपापेक्षया, तथ
'सोमायाए' सौम्यतया=सौम्यपरिणामेन 'चदो इव' चन्द्र इव, तथा-'सूरोव्व'
सूर इव 'दित्ततेए', दीप्ततेजाः = दीप्त तेजो यस्य स, तथा-'गिरिवरे
मदरे' गिरिवरो मन्दरः 'जह' यथा - इव सकलपर्वतश्रेष्ठमेसरिव 'अचले'
अचल=परीपहादी सत्यपि निश्चलः, तथा-'अक्खोभे' अक्षोभः=क्षोभवर्जितः-
निस्तरङ्ग, 'सागरोव्व' सागर इव 'यिमिए' स्तिमितः=कषायतरङ्गवर्जितः,
तथा-'पुढ्वी विव' पृथिवीय 'सव्वफामविसहे' सर्वस्पर्शविपहः-शुभाशुभस्पर्शेषु
समचित्त इत्यर्थः? तथा-'तवसा वि य' तपसाऽपि च हेतुभूतेन 'भासरासिच्छ-
न्नेव' जाततेए' भस्मराशिच्छन्न इव जाततेजा, यथा-भस्माच्छन्नो वह्निरुपरि-

शुद्ध मृचर्ण की तरह वह रागादिकरूप क्षार से रहित होने के कारण
अपने निजरूप से सम्पन्न हो जाता है। (पुष्करपत्र व निरुपलेवे) कमल
पत्र की तरह भोगों में गृद्धिरूप लेप से वह रहित बन जाता है। (सो-
मायाए चदोइव) सौम्यता से वह चद्र की तरह (सूरोव्वदित्ततेए)
सूर्य की तरह वह दीप्त तेज चमकने वाला हो जाता है। तथा (गिरि-
वरे मदरे जह अचले) गिरि वर सुमेरु पर्वत की तरह वह परिपह
आदि के आने पर अचल सुस्थिर बना रहता है। और (अक्खोभो
सागरोव्व) निस्तरंग सागर की तरह अक्षोभ-क्षोभ से रहित बन
जाता है (यिमिए) स्तिमित-कषायरूपतरङ्गों से रहित बन जाता है।
तथा (पुढ्वीविय सव्वफामविसहे) जिस प्रकार पृथ्वी समस्त प्रकार
के स्पर्शों को सहन करती है उसी प्रकार वह भी शुभ और अशुभ
स्पर्शों में समचित्त हो जाता है। (तवसा वि य भासरासिच्छन्नेव

ते रागादिक इय क्षारयी रहित होवाने कारणे पोताना निरुपलेवे स पत्र थय
नय छे 'पुष्करपत्रव निरुपलेवे' कमल पत्र जेम पाणीथी अलिप्त रहे छे
तेम ते लोकोथी अलिप्त थय नय छे "सोमायाए चदो इव" सौम्यताभा
ते चन्दना जेवो "सूरोव्व दित्ततेए" सूर्यनी जेम ते दीप्त तेज-तेजस्वी थय
नय छे तथा 'गिरिवरे मदरे जह अचले' गिरिवर सुमेरुनी जेम ते परी-
पह आदि नडे तो पणु अचल, सुस्थिर रहे छे अने "अक्खोभो सागरोव्व"
तरंगइथी सागरना जेवो ते अक्षोल-क्षोल रहित जनी नय छे "यिमिए"
स्तिमित-कषायइय तरंगोथी रहित जनी नय छे तथा "पुढ्वीविय सव्व
फामविसहे" जेम पृथ्वी जधा प्रकारना अशोनि सहन करे छे तेम ते पणु
शुल अने अशुल अशोभा समलाववाणो थय नय छे "तवसा वि य भास-

દાહકત્વમપ્રકાશયન્નપ્યન્તર્જાજ્વલ્યમાનો ભવતિ, તથેવ ધ્રમણો વહ્નિઃ શુષ્કો રુક્ષઃ
 કાન્તિરહિતોઽપ્યન્તઃ સ્તપોજનિતદીપ્ત્યાદેદીપ્યમાનો ભવતીતિ ભાવ । તથા-
 જલિયહુયાસણો વિવ ' જ્વલિતહુતાશનઃ=પ્રદીપ્તાનિવ ' તેયસા ' તેજસા=
 જ્ઞાનરૂપતેજસા ' જલતે ' જ્વલન્=દીપ્યમાનઃ, ભાવતમોવિનાશકત્વાત્ ' ગોમીસ
 ચદણપિવ ' ગોમીસર્પચન્દનમિવ ' સીયલે ' શીતલઃ=મનસ્તાપોપશમનાત્ ' સુગંધી
 ' સુગન્ધિના, સુરભિગન્ધેન શીલમોગન્ધ્યાત્ ' હરઓ વિવ ' ઈદમ્ ઇવ=જલા-
 શય ઇવ ' સમિયભાવે ' સમિકભાવઃ=સમ એવ સમિકઃ, સ ભાવો यस્ય સઃ, અય
 ભાવ -યથા ઈદો વાતાભાવે તરદ્વાભાવેન નિમ્નોન્નતરાહિત્યેન સમાકારતયા પરિ

જાયતેઈ) ભસ્મ રાશિ સે છન્ન અગ્નિ જિસ પ્રકાર ડપર સે અપને દાહ-
 કત્વ પરિણામકો પ્રકાશિત નહીં કરતી હુઈં બીં બીંતરમેં જાજ્વલ્યમાન
 રહા કરતી હૈં ડસીં તરહસે વહ સાધુ બીં વાહિરસે શુષ્કકાય, રુક્ષ ઓર
 કાન્તિરહિત હોતા હુઆ બીં બીંતરમેં તપજનિત દીપ્તિસે દેદીપ્યમાન હોતા
 હૈં । તથા-(જલિય હુયાસણોવિવતેયસા જલતે) પ્રદીપ્તિવહ્નિ જિસ પ્રકાર
 અપની પ્રભા સે ચમકતી રહતી હૈં ડસીં પ્રકાર વહ બીં ભાવતમ કા
 વિનાશક હોને સે જ્ઞાનરૂપ તેજ સે ચમકતા રહતા હૈં । (ગોમીસચદણ-
 પિવ સીયલે) ગોમીસર્પ ચદન જિસ પ્રકાર શીતલ ઓર સુગંધિત હોતા
 હૈં ડસીં પ્રકાર વહ સાધુ બીં મનસ્તાપ કે ડપશમન સે શીતલ હોતો હૈં
 ઓર (સુગંધીય હરઓવિવ સમિયભાવે) શીલ કી સુગંધી સે ઈદ કી
 તરહ સમભાવવાલા અર્થાત્ જિસ પ્રકાર જલાશય વાયુ કે 'અભાવ સે
 તરંગો કે ઉત્થાન પતન સે રહિત હોને કે કારણ ડંચા નીચા નહીં

રાશિચ્છન્નેવ જાયતેઈ' રાખના ઢગલા નીચે ગહેલી અગ્નિ જેમ ઉપરથી પોતાની
 ઢાહકતા પ્રગટ કરતી નથી છતાં અદર સળગતી પ્રકાશિત રહે છે, તેમ તે
 સાધુ પણ ખડારથી શુષ્ક શરીર વાળો, રુક્ષ અને કાન્તિ રહિત હોવા છતાં
 પણ અદરથી તપ જનિત તેજથી દેદીપ્યમાન હોય છે “ જલિય હુયાસણોવિવ
 તેયસા જલતે ” પ્રદીપ્ત અગ્નિ જેમ પોતાના તેજથી ચળકતી રહે છે તેમ તે
 પણ ભાવતમનો વિનાશક હોવાથી જ્ઞાન રૂપ તેજથી ચમકતો રહે છે “ ગો
 મીસચદણપિવ સીયલે ” જેમ ગોમીસર્પ ચદન શીતલ અને સુગંધિત હોય છે
 તેજ પ્રકારે મનના તાપનુ ઉપશમન થવાને કારણે શીતલ હોય છે અને “ સુગ
 ધિયહરઓવિવ સમિયભાવે ” શીલની સુગંધથી સરોવરના સમાન સમભાવ
 વાળો હોય છે, એટલે કે જેમ વાયુના અભાવે તરંગોના ઉત્થાન તથા પતન
 નથી રહિત હોવાને કારણે સરોવરની અપાટી ઊંચીનીચી લાગતી નથી પણ

લક્ષ્યતે, તથૈવ શ્રમણોઽપિ માનાપમાનયોરનનુભવાત્ હર્ષગ્લાન્યોરભાનાત્મર્વદૈકરૂપ
 एव भवतीति । तथा-उग्घोसियसुनिम्मल ' मार्जितसुनिर्मलम्-मार्जित=तलोपरि-
 स्थितमलापनयनेन, अतएव-सुनिर्मल=सुपसन्नम् , ' आयसमडलतल व ' आद-
 र्शमण्डलतलमित्र=आदर्शः=दर्पणस्तस्य यन्मण्डलतल=मण्डलाकार तल तदिव ' पाग-
 ढभावेण ' प्रकटभावेन=अमायित्वादनિगूहितभावेन ' सुद्धभावे ' शुद्धभावः=शुद्धः
 भावः स्वरूपो यस्य स , तथा-' कुजरो व ' कुञ्जर इव ' सोडीरो ' शौण्डीरः=
 परीपहसैन्यनिर्दलनसमर्थः, ' वसभो व ' वृषभ इव ' जायथामे ' जातस्थामा=
 यथा वृषभो भारोद्धहने सामर्थ्ययुक्तो भवति, तर्ध्व स्वीकृतमहाव्रतभारोद्धहने साम-
 र्थ्यसपन्न इत्यर्थः । तथा-' सीहो व ' सिंह इव श्रमणः, अमुमेवार्थं स्पष्टयति—
 ' जहा ' यथा सिंह ' मिगाहिवे , मृगाधिप -अथ च तैः ' दुप्पधरिसे ' दुष्पधृ-

दिखता है किन्तु एकसा आकार वाला परिलक्षित होता है उसी प्रकार
 यह साधु भी मान और अपमान के अनुभव से रहित होने के कारण
 हर्ष और ग्लानि, इन दोनों प्रकार के भावों से रहित बन जाता है,
 अतः वह सर्वदा एक रूप में ही रहा करता है । (उग्घोसिय मण्डल
 आयसमडलतल व पागडभावेण सुद्धभावे) माजने से-ऊपर के मैल
 के हटा देने से-निर्मल बने हुए दर्पणमण्डल की तरह इस का स्वरूप
 अमायी होने के कारण प्रकट रूप से शुद्ध रहता है । (सोडीरो कुजरो
 व) कुजर के जैसा यह शौ डीर-परीपहरूपी सैन्य के निर्दलन करने में
 समर्थ-होता है । (वसभोव जायथामे) वृषभ की तरह जातस्थाम-
 स्वीकृत महाव्रतरूप भार के वहन करने में शक्तिशाली होता है ।
 (सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्पधरिसे) सिंह जैसे मृगों का अधि-
 पति और उनके द्वारा अपराभयनीय होता है उसी तरह वह साधु भी

એક સરખી લાગે છે એ જ પ્રમાણે સાધુ પણ માન અને અપમાનના
 અનુભવથી રહિત હોવાને કારણે હર્ષ અને શોક એ બંને પ્રકારના લાવોથી
 રહિર બની બીજા છે તેથી તે હંમેશા સમભાવથી જ રહે છે “ ઉગ્ગોસિયમણ્ડલ
 આયસમ ડલતલવ પાગડભાવેણ સુદ્ધભાવે ” માનવાથી - ઉપરનો મેલ દૂર કરી
 નાખવાથી નિર્મળ બનેલ દર્પણની જેમ તેનું સ્વરૂપ અમાયી હોવાને કારણે પ્રગટ
 રૂપે શુદ્ધ રહે છે “સોડીરો કુજરોવ” હાથીની જેમ તે શૌ ડીર-પરીપહરૂપી સૈન્યનો
 હૃદયરધાણુ કાઢી નાખવાને સમર્થ હોય છે “વસમોવ જાયથામે” વૃષભની જેમ
 તે સ્વીકૃત મહાવ્રતરૂપ બોળાનું વહન કરવાને શક્તિશાળી હોય છે “ સીહોવ
 જહા મિગાહિવે હોઈ દુપ્પધરિસે ” જેમ સિંહ મૃગોનો અધિપતિ તથા તેમનાથી

વ્યય:-અપરિભવનીયો ' હોડ ' ભવતિ, તથૈવ સાધુઃ પરીપદૈરપગજિતો ભવતિ । તથા 'સારયસલિલ વ' શારદસલિલમિત્ત=શરદ્ઋતુમમ્બન્નિવ્રજતમિત્ત 'સુદ્ધહિયણ' શુદ્ધહૃદયઃ=સ્વચ્છાન્તઃ કરણ इत्यर्थः, તથા 'ભારડે ચેવ' ભારણ્ડ ઇત્ત=ભારણ્ડપક્ષીત્ત 'અપ્પ-મત્તે' અપ્રમત્તઃ=પ્રમાદવર્જિત 'સ્વગ્ગિવિસાણ વ' સદ્ગિવિસાણમિત્ત ગ્ગદ્દી= 'ગેડો' इतिप्रसिद्धो अन्यश्चतुष्पदविशेषः, તસ્ય વિસાણ=શ્રુદ્ધમિત્ત 'ઘગ જાણ' ઇકઋજાતઃ-યથા-સ્વદ્ગિનઃ શ્રુદ્ધામેક ભવતિ, તથૈવ સાધુરપિ રાગદ્વેષરહિત ઇકાકી ભવતિ । તથા-'સ્વાણૂવ' સ્થાણુરિત્ત 'ઉડ્ડુકાણ' ઊર્ધ્વકાયઃ કાયોત્સર્ગકાલે, તથા 'સુણ્ણાગારેવ્વ' શૂન્યાગારમિત્ત અપતિત્તર્મા=શરીરસસ્કારવર્જિત इत्यर्थः, તથા 'સુણ્ણાગારાવણસ્સતો' શૂન્યાગારાવણસ્યાન્તઃ=શૂન્યસ્યાગારસ્યાવણસ્ય ચ અન્તઃ=મન્યે 'નિવાયસરણપ્પદીવજ્ઞામણમિત્ત' નિર્વાતિશરણપ્રદીપધ્યાપનમિત્ત-નિર્વાતો=વાતર-હિતો યઃ શરણપ્રદીપઃ=ગૃહપ્રદીપસ્તસ્ય ધ્યાપનમિત્ત=પઞ્ચગ્ઞિતશિલ્પેત્ત 'નિપ્પકપ્પે'

દેશવિરતિ શ્રાવકો કી અપેક્ષા સકલસયમ કા અધિપતિ ઔર પરિ-પહોં સે અપરાજિત હોતા હૈ । (સારયસલિલ વ સુદ્ધહિયણ) વહ શરદ્ ઋતુ સવધી જલ કે સમાન સ્વચ્છ અન્તઃ કરણ વાલા હોતા હૈ, (ભારડે ચેવ અપ્પમત્તે) ભારણ્ડપક્ષી કે સમાન વહ પ્રમાદ સે વર્જિત હોતા હૈ, (સ્વગ્ગિવિસાણ વ ઇકઋજાત) ગેડો કે સીંગ કે સમાન વહ ઇક જાત હોતા હૈ-અર્થાત્ જૈસે ગેડો કા શ્રુગ ઇક હી હોતા હૈ ઊસી તરહ સાધુ ભી રાગદ્વેષ રહિત હોને સે ઇકાકી હી હોતા હૈ । (સ્વાણૂવ ઉડ્ડુકાણ) સ્થાણુ જિસ પ્રકાર ઉર્ધ્વકાય હોના હૈ ઊસી પ્રકાર સાધુ ભી કાયોત્સર્ગ કે સમય ઉર્ધ્વકાય હોતા હૈ । (સુણ્ણાગારેવ્વ અપહિકમ્મે) શૂન્ય ગૃહ જૈસે સસ્કાર વિહીન હોતા હૈ ઊસી પ્રકાર સાધુ ભી શારીરિક સસ્કાર સે વર્જિત હોતા હૈ । (સુણ્ણાગારાવણસ્સતો નિવાયસરણપ્પદીવજ્ઞામણમિત્ત

અજેય હોય છે તેમ સાધુ પણ દેશ વિરતિ શ્રાવકોની અપેક્ષાએ સજ્ઞ સય મનો અધિપતિ અને પરીપહોથી અપરાજિત હોય છે “સારયસલિલ વ સુદ્ધહિયણ” તે શરદ ઋતુના જળની સમાન સ્વચ્છ અન્તઃકરણવાળો હોય છે “ભારણ્ડે ચેવ અપ્પમત્તે” ભારણ્ડ પક્ષીના જેવો તે પ્રમાદ રહિત હોય છે “સ્વગ્ગિવિસાણ વ ઇકઋજાત” ગેડોના શિંગડાની જેમ તે એકાકી હોય છે એટલે કે જેમ ગેડોને એક જ શિંગડો હોય છે તે પ્રમાણે સાધુ પણ રાગદ્વેષ રહિત હોવાથી એકાકી જ હોય છે “સ્વાણૂવઉડ્ડુકાણ” સ્થાણુ જેમ ઉર્ધ્વકાય છે તેમ સાધુ પણ કાયોત્સર્ગના સમયે ઉર્ધ્વકાય હોય છે “સુણ્ણાગારેવ્વ અપહિકમ્મે” ખાલી મકાન જેમ સસ્કાર વિહીન હોય છે તેમ સાધુ પણ શારીરિક સસ્કાર રહિત હોય છે, “સુણ્ણાગારાવણસ્સતો નિવાયસરણપ્પદી

નિષ્પ્રકમ્પઃ=દિવ્યાનુપસર્ગસર્ગેઽપિ વર્મવ્યાનાદાં નિશ્ચલ इत्यर्थ , जहा सुरो ' यथा धुर'=धुर इव ' एगधारे चेव ' एगधारश्चैव, यथा धुरण्कधारस्तथैव साधुत्सर्ग-
रूपैकधारो भवति, वर्द्धमानपरिणामधारइत्यर्थ , जहा अही' यथाऽहिः=अहिरि-
सर्प इव ' एगदिही चेव ' एगदृष्टिश्चैव=मोक्षे वद्धलक्ष्य इत्यर्थः, तथा—' आगास
चेव निरालवे ' आकाशमिव निरालम्ब' । यथाऽकाशआलम्बनवर्जितस्तथैव श्रम-
णोऽपि ग्रामदेशकुलाधालम्बनरहित इत्यर्थ , तथा—' विहगे विव' विहग इव पक्षीव
' सव्वओ ' सर्वतः ' विप्पमुक्के विप्रमुक्तः निष्परिग्रह इत्यर्थः, तथा—' उरण

નિષ્પ્રકમે) શૂન્ય ઘર ઓર શૂન્ય આપણ-દુકાનકે મીતર નિર્વાન (વાયુરહિત)
પ્રદેશ મેં રહે હુણ દીપક કી પ્રજ્વલિત લૌ જેસે નિષ્પ્રકપ હોતી હૈ
ઉસી પ્રકાર સાધુ મી દેવાદિકૃત ઉપમગોં કે આને પર મી ધર્મધ્યાન
આદિ મેં નિષ્પ્રકપ નિશ્ચલ બના રહતા હૈ । (જહાસુરો ચેવ એગધારે)
જેસે ધુરા કસ્તરા-એક ધાર વાલા હોતા હૈ ઉસી પ્રકાર સાધુ મી
ઉત્સર્ગરૂપ એક ધાર વાલા હોતા હૈ । અર્થાત્-સાધુ કે પરિણામ પ્રકૃષ્ટ
વિશુદ્ધિ કો લિયે વઢતે હી રહતે હૈ, વે પ્રતિપાતી પરિણામોં વાલે
નહોં હોતે હૈ । (જહા અહી ચેવ એગદિહોં) સર્પ જિસ પ્રકાર એક દૃષ્ટિ-
વાલા હોતા હૈ ઉસી પ્રકાર સાધુ મી અપને લક્ષ્યરૂપ એક મોક્ષ મેં
નિશ્ચલ દૃષ્ટિવાલા હોતા હૈ । (આગાસ ચે વ નિરાલવે) આકાશકી તરહ
વહ આલબન-સહારા સે રહિત હોતા હૈ અર્થાત્ સાધુ કો ગ્રામ
દેશ, કુલ આદી કા આલબન નહોં હોતા હૈ । વહ ઇન સવ ગ્રામાદિ સે
સર્વથા રહિત હી હોતા હૈ । (વિહગે વિવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે) વિહગ-
પક્ષી કી તરહ વહ સર્વતઃ વિપ્રમુક્ત હોતા હૈ પરિગ્રહ સે વર્જિત હોતા

વ જ્ઞામણમિવ નિષ્પ્રકમે ” ખાલી ઘર અને ખાલી દુકાનની અદર વાયુની અસર
રહિત ધ્યાનમાં રાખેલ દીવાની મળગતી જ્વાળા જેમ નિષ્પ્રકપ (સ્થિર)
હોય છે તેમ સાધુ પણ દેવાદિકૃત ઉપસર્ગો નડતા છતા પણ ધર્મધ્યાન આદિમાં
અચલ રહે છે “ જહા સુરો ચેવ એગધારે ” જેમ ધુરા-અસ્રો એક ધારવાળો
હોય છે તેમ સાધુ પણ ઉત્સર્ગરૂપી એક ધારવાળો હોય છે-એટલે કે સાધુની
મનોવૃત્તિ પ્રકૃષ્ટ વિશુદ્ધિઓને માટે વધતી જ રહે છે, તે પ્રતિપાતિ પરિણા-
મોવાળો હોતો નથી “ જહા અહીચેવ એગદિહી ” જેમ માપ એક દૃષ્ટિવાળો
હોય છે તેમ સાધુ પણ પોતાના લક્ષ્યરૂપ એક મોક્ષમાં લીન દૃષ્ટિવાળો હોય
છે “ આગાસ ચેવ નિરાલવે ” આકાશની જેમ તે નિરાવલખી હોય છે એટલે
કે સાધુને ગામ, દેશ, કુળ આદિનું અવલબન હોતું નથી તે ગ્રામાદિ સમસ્ત
અવલબનોથી રહિત હોય છે “ વિહગે વિવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે ” વિહગ-
પક્ષીની જેમ તે સર્વ પ્રકારે મુક્ત હોય છે-પરિગ્રહ રહિત હોય છે “ કય

જહા ' ઉરગો યથા-સર્પ ઇવ ' કયપરનિલ્પ ચેવ' કૃતપરનિલયઐવ=કૃત=આશ્ર
 યીકૃતઃ પરનિલયો યેન સઃ, અય ભારઃ-યથા સર્પોઽન્યકૃતનિલે તિષ્ઠતિ, તથૈવ
 શ્રમણઃ પરકૃતગૃહે તિષ્ઠતિ । તથા-' અનિલોન્વ ' અનિલ ઇવ=પવન ઇવ 'અપ્પઙ્કિ-
 વદ્ધો ' અપ્રતિવદ્ધઃ-અપ્રતિવન્ધવિહારીત્યર્થઃ, તથા ' જીવોન્વ ' જીવ ઇવ ' અપ્પ
 ઙ્કિહયગર્હ ' અપ્રતિહતગતિઃ= સર્વદેશવિહારીત્યર્થઃ । યત્ર સર્વત્ર ' ચૈવ ' શબ્દઃ
 સમુચ્ચયાર્થઃ, ' ગામે ગામે ય ' ગ્રામે ગ્રામે ચ ' એગરાય' એકરાત્ર 'ળગરે ળગરે'
 નગરે નગરે ' પચરાય' પચ્ચરાત્રમ્, ' દૂઙ્ગજતો ' દ્રવન્=ઠિહરન્, નિવાસ કુર્વન્નિ-
 ત્યર્થઃ, તથા ' જિહ્દિય ' જિતેન્દ્રિયઃ, ' જિયપરીસહે ' જિતપરિપહ, અતએવ
 ' નિબ્ભણ ' નિર્ભયઃ ' વિઙ્ક ' વિદ્વાન=તત્ત્વજ્ઞ ઇત્યર્થઃ, ' સચિત્તાવિત્તમીસર્પહિ '

હૈ (કયપરનિલ્પ જહા ચેવ ઉરગ) સર્પ કી તરહ વહ દૂસરે ને અપને
 નિમિત્ત બનાયે હુણ ઘર મે રહતા હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સર્પ અન્ય
 ચૂહે આદિ સે બનાયે ગયે બિલ મેં રહતા હૈ उसी प्रकार साधु भी गृहस्थ
 के बनाये हुए घर में रहता है । (अप्पङ्किवद્ધો अनिलोन्व) अनिल
 पवन-की तरह वह अप्रतिवद्ध -प्रतिबन्ध से रहित होता है अर्थात्
 वह साधु अप्रतिबन्ध विहारी होता है । तथा (जीवोन्व अप्पङ्किहय-
 गर्ह) जीव की तरह वह अप्रतिहत गतिवाला होता है-उसका विचरण
 सर्वत्र होता है-उसे किसी भी देश में विचरण करने का निषेध नहीं
 होता है । (गामे गामे य एगराय) वह हर एक ग्राम में एक रात्री
 तथा (णगरे णगरे य पचराय) तथा प्रत्येक नगर में पाच रात्रि तक
 (दूङ्गजते) ठहरता है । तथा (जिह्दिय) जितेन्द्रिय (जियपरिसहे य)
 जितपरीषह अत एव (निब्भण) निर्भय (विङ्क) विद्वान्-तत्त्वज्ञ, वह

પરનિલ્પ જહા ચેવ ઉરગ " સર્પની જેમ તે ખીજાયે પોતાના માટે બનાવેલા
 ઘરમા રહે છે, એટલે કે જેમ સર્પ ઉદર આદિએ બનાવેલા ઘરમા રહે છે
 તેમ સાધુ પણ ગૃહસ્થે બનાવેલા ઘરમા રહે છે " અપ્પઙ્કિવદ્ધો અનિલોન્વ"
 અનિલ-પવનની જેમ તે અપ્રતિબદ્ધ-પ્રતિબંધથી રહિત હોય છે-એટલે કે તે
 અપ્રતિબંધવિહારી હોય છે " જીવોન્વ અપ્પઙ્કિહયગર્હ" જીવની જેમ તે અપ્ર
 તિહત ગતિવાળો હોય છે તેનું વિચરણ સર્વત્ર હોય છે તેને કોઈ પેણ પ્રદે
 શમા વિચરવાનો વિષેધ હોતો નથી " ગામે ગામે ય એગરાય " તે દરેક ગામમા
 એક રાત્રી તથા " ળગરે ળગરે ચ પચરાય " તથા પ્રત્યેક નગરમા પાચ
 રાત્રિ સુધી " દૂઙ્ગજતે " રોકાય છે તથા " જિહ્દિય " જિતેન્દ્રિય " જિયપરિ
 સહેય " પરીપહોને છતનાર હોવાથી " નિબ્ભણ " નિર્ભય " વિઙ્ક " વિદ્વાન-

સચિત્તાચિત્તમિશ્રકેષુ 'દબ્ધેર્હિ' દ્રવ્યેષુ 'વિરાગયગ' વિરાગતાં ગતઃ=મૂર્છા-
રાહિત્યં પ્રાપ્ત, 'સચયઓ' સચયતઃ-સચયકરણાત્ 'વિરણ' વિરતઃ 'મુત્તે'
મુક્તઃ=આશ્વાભ્યન્તરપરિગ્રહરહિતઃ, 'લહુણ' લઘુકઃ-ગૌરવત્રયત્યાગાત્, 'નિરવકલે'
નિરવકાલ્પઃ=આકાશ્વાર્જિતત્વાત્, 'જીવિયમરણાસવિપ્પમુત્તે' જીવિતમરણાગા-
વિપ્પમુક્તઃ=જીવિતાશામરણાગાભ્યા રહિતઃ, 'ધીરે' ધીરઃ=બુદ્ધિમાન્, 'નિસ્સધ' 'નિસ્સધ'
સન્ધિરહિત=ચારિત્રપરિણામ-યવચ્છેદાભાગાત્, 'નિવ્વણ' નિર્વણ=નિરતિચારમ્
'ચરિત્ત' ચારિત્ર=સયમ 'કાણેણ' કાણેણ=કાયવ્યાપારેણ ન તુ મનોરથમાત્રેણ
'ફાસયતે' સ્પૃશન્, તથા--'સચય' સતતમ્ 'અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે' અધ્યાત્મધ્યા-
નયુક્ત 'નિહુણ' નિમૃત્ત=ઉપગાન્તઃ 'એગે' એકઃ=રાગાદિસદાયર્જિતઃ 'ધમ્મ'
ધર્મ=શ્રુતચારિત્રરક્ષણ 'ચરેજ્જ' ચરેત્=અનુપાલયેત્ ॥સુ૦૫॥

સાધુ (સચિત્તાચિત્તમીસર્વદિ દબ્ધેર્હિ વિરાગયગ) સચિત્ત, અચિત્ત
ઔર મિશ્ર દ્રવ્યોં મેં મૂર્છા રહિતપને કો પ્રાપ્ત તો કર (સચયઓ વિરણ)
સચય કરને સે વિરક્ત હો જાતા હૈ ઔર (મુત્તે) ગાદ્ય ઔર આશ્વતર
પરિગ્રહ સે રહિત હો જાતા હૈ । ઇસ તરહ (લહુણ) ગૌરવ ત્રય કે ત્યાગ
સે લઘુ બના હુઆ શ્રમણ (નિરવકલે) આકાશ્વા સે વર્જિત હોને કે
કારણ (જીવિયમરણાસવિપ્પમુત્તે) જીવન કી આશા ઔર મરણ કી
ભયસે રહિત હો જાતા હૈ । ઇમ પ્રકાર (ધીરે) ઇન સમસ્ત પૂર્વોક્ત
વિશેષણોં સે વિશિષ્ટ બના હુઆ તત્ત્વજ્ઞ શ્રમણ (નિસ્સધ) ચારિત્ર-
પરિણામ કી સચિ-વ્યવચ્છેદ કે અભાવ સે (નિવ્વણ) નિરતિચાર
(ચરિત્ત) ચારિત્રસયમ કો (કાણેણ) કાય કે વ્યાપાર સે, નહીં કી
મનોરથ માત્ર સે (ફાસયતે) ધારણ કર (અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે) અધ્યા-
ત્મધ્યાન મેં લવલીન બનતા હુઆ (નિહુણ) ઉપગાન્ત ભાવ સે સપન્ન

તત્ત્વજ્ઞ એવો તે સાધુ “સચિત્તાચિત્તમીસર્વદિ દબ્ધેર્હિ વિરાગયગ” સચિત્ત,
અચિત્ત અને મિશ્ર દ્રવ્યોમા મમત્વ રહિતતાને પ્રાપ્ત કરીને “સચયઓ વિરણ”
સચય કરવાથી વિરક્ત થઈ જાય છે અને “મુક્ત” ગાદ્ય અને આશ્વતર
પરિગ્રહથી રહિત થઈ જાય છે આ રીતે “લહુણ” ગૌરવત્રયના ત્યાગથી લઘુ
બનેલા શ્રમણ ‘નિરવકલે’ આકાશ્વાથી રહિત હોવાને કારણે “જીવિયમરણા
સવિપ્પમુત્તે” જીવનની આશા અને મરણની આશાથી રહિત થઈ જાય છે આ
રીતે “ધીરે” તે સધણા વિશેષણોથી યુક્ત બનેવ તત્ત્વજ્ઞ શ્રમણ “નિસ્સધ”
ચારિત્ર પરિણામની સચિ-વ્યવચ્છેદને અભાવે “નિવ્વણ” નિરતિચાર “ચરિત્ત”
ચારિત્ર-સયમને ‘કાણેણ’ કાયના વ્યાપારથી-મનોરથથી જ નહીં-“ફાસયતે”
ધારણ કરીને “અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે” અધ્યાત્મધ્યાન લીન બનીને “નિહુણ”

મૂલમ્—ઇમં પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ પાવયણં
ભગવયા સુકહિયં અત્તહિય પેચ્ચાભાવિયં આગમેસિભદ્ધ સુદ્ધ
નેયાઉય અકુડિલં અણુત્તરં સઘ્વદુક્ખપાવાણં વિઉસમણં,
તસ્સ ઇમા પંચભાવણાઓ ચરિમસ્સ વચસ્સ હુતિ, પરિગ્ર-
હવેરમણરક્ષણદ્વયાણ ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ इत्यादि—

‘ ઇમ ચ ’ इदं चापरिग्रहनामक पञ्चम सवरद्वार ‘परिग्राहवेरमणपरिरक्खण
દ્વયાણ’ પરિગ્રહવિરમણપરિરક્ષણગાર્થતયા પરિગ્રહવિરમણસ્ય પરિરક્ષણમેવ અર્થઃ પ્રયો-
જન યસ્ય તત્ , તદેવ તત્તા, તયા અત્ર સ્વાર્થે તલ્ , પરિગ્રહવિરતિપરિત્રાણાયેત્યર્થઃ,

હોકર (ઇમે) રાગાદિક્ક આગ્રોસે વર્જિત હોનેસે ઇમ્, એસા જો હોતા હૈ
વહી (ધમ્મ) ચારિત્રરૂપ ધર્મકો (ચરેજ્જ) પાલન કરનેવાલા હો સકતા હૈ ।

માવાર્થ—સૂત્રકારને ઇમ સૂત્ર દ્વારા યહ સ્પષ્ટ ક્રિયા હૈ કિ પરિગ્રહ-
વિરત રૂપ સાધુ ધર્મ મેં લવલીન બને હુમ મનુષ્ય કી સ્થિતિ કેસી હો
જાતી હૈ । તથા જય વહ ઇસ સ્થિતિ સે સપત્ર બનેગા તવ હી પૂર્ણરૂપ સે
વહ શ્રમણ ધર્મ કે પાલન કરને કા અધિકારી બન સકતા હૈ અન્યથા
નહી । સૂત્ર મેં યહી વિષય શબ્દાન્તરો સે સમજાયા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૫ ॥

ફિર બી કહતે હૈ— ‘ ઇમ ચ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ) યહ અપરિગ્રહ નામ કા પાંચવાં સવર દ્વારરૂપ
(પાવયણ) પ્રવચન (પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ) પરિગ્રહવિરમણ

ઉપશાન્ત ભાવથી યુક્ત થઈ ને ‘ ઇમે ’ રાગાદિક્ક ભાવોથી રહિત હોવાથી એક,
એવો જે થાય છે તે જ “ ધમ્મ ” ચારિત્રરૂપ ધર્મનું “ચરેજ્જ” પાલન કરનાર
થઈ શકે છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમા એ સ્પષ્ટ કયું છે કે પરિગ્રહથી વિરક્ત
થવા રૂપ ધર્મમા લીન બનેલ મનુષ્યની સ્થિતિ કેવી થઈ જાય છે તથા જ્યારે
તે આ સ્થિતિએ પહોંચે ત્યારે જ તે સંપૂર્ણ રીતે શ્રમણ ધર્મનું પાલન કરવાને
પાત્ર બની શકે છે બીજી કોઈ પણ રીતે નહીં સૂત્રમા એ જ વિષય જુદા જુદા
શબ્દો દ્વારા સમજાવવામા આવ્યો છે ॥ સૂ. ૫

બીજી કહે છે—“ ઇમ ચ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ ” આ પરિગ્રહ નામના પાંચમા સવરદ્વારનું “પાવયણ” પ્રવચન
“ પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ ” પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષાને માટે “ ભગ

‘ પાપયણ ’ પ્રવચન ‘ ભગવયા ’ ભગવતા ‘ સુકહિય ’ સુકથિતમ્, ‘ અત્તહિય ’ આત્મહિતમ્, ‘ પેચ્ચામાવિય ’ પ્રેત્યમાવિકમ્ ‘ આગમેસિભદ્ ’ આગમિષ્યદ્ભદ્રં ‘ સુદ્ધ ’ શુદ્ધ ‘ નેયાઉય ’ નેયાયિમ્ ‘ અકુટિલ ’ અકુટિલમ્ ‘ અણુત્તર ’ અનુત્તર ‘ સઘ્વદુક્ખપાપાણ ’ સર્વદુઃસ્વપાપાના ‘ વિઉસમણ ’ વ્યુપશમનમ્ । एषा व्याख्या पूर्णं गता । ‘ तस्स ’ तस्य—अपरिग्रहनामकस्य ‘ चरिमस्स ’ चरमस्य=अन्तिमस्य ‘ सवरदारस्स ’ सवरद्वारस्य ‘ इमा पच भावणाओ ’ इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्च भावना ‘ हुति ’ भवन्ति । किमर्थं भवन्ति ? इत्याह—‘ परिग्गह्वेरमणरक्खणट्ठयाए ’ परिग्रहविरमणरक्षणार्थतायै—अपरिग्रहपरिरक्षणार्थमित्यर्थः ॥ सू. ६ ॥

વ્રત કી રક્ષા કે લિયે (ભગવયા સુકહિય) ભગવાન્ ને કહા હૈ । यह (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है । (पेच्चाभाविय) परलोक में भी शुभ फल का दाता है । इसी निमित्त से यह (आगमेसि भद्) भविष्यत् काल में कल्याण प्रद है यह (सुद्ध) सर्वथा निर्दोष है । (नेयाउय) वीतराग सर्वज्ञ एव हितोपदेशक प्रभु द्वारा भाषित होने से न्याय संपन्न है । (अकुटिल) ऋजुभाव का जनक होने से अकुटिल है । (अणुत्तर) सर्व श्रेष्ठ होने से अनुत्तर है । तथा (सव्वदुक्खपावाण) समस्त प्रकार के दुःख जनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का (विउसमण) उपशमक है । (तस्स चरिमस्स सवरदारस्स) उस अन्तिम सवरद्वार की (इमा पचभावणाओ) ये वक्ष्यमाण पाच भावनाएँ हैं जो (परिग्गह्वेरमणरक्खणट्ठयाए हुति) परिग्रह विरमण व्रत की रक्षा करने वाली होती है ॥ सू. ६ ॥

વયા સુકહિય” લગવાને કહેલ છે “ અત્તહિય” આત્માનુ હિતકારક છે “ પેચ્ચામાવિય” પરલોકમા પણ શુભ ફળ દેનાર છે એ જ કારણે તે “ આગમેસિભદ્” ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણદાયી છે, તે “ સુદ્ધ” તદ્દન નિર્દોષ છે “ નેયાઉય” વીતરાગ સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત હોવાથી તે ન્યાયયુક્ત છે “ અકુટિલ” ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી તે અકુટિલ છે “ અણુત્તર” સર્વ-શ્રેષ્ઠ હોવાથી તે અનુત્તર છે તથા “ સઘ્વદુક્ખપાપાણ” સમસ્ત પ્રકારના દુઃખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આ. પ્રકારના કર્મોનુ “ વિઉસમણ” ઉપશમન કરનાર છે “ તસ્સ ચરિમસ્સ સવરદારસ્સ” તે અન્તિમ સવરદ્વારની “ ઇમા પચભાવણાઓ” આ પ્રમાણે પાંચ ભાવનાઓ છે જે “ પરિગ્ગહવેરમણરક્ખણટ્ઠયાએ હુતિ” પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષા કરનારી હોય છે ॥ સૂ. ૬ ॥

सम्प्रति पञ्च भावना अभिधातुकामः प्रथमा भावनामाह—‘ पचम ’ इत्यादि—

मूलम्—पढम सोइदिएण सोच्चा सदाइं मणुण्णभइगाइं,
 किंते, वरमुरेयमुइंगपणवददुरकच्छभीवीणं—विपंशिवछइवद्धी
 सक सुघोस-णंदि-सूअर-परिवादिणि वसतूणग पव्वय तती-
 तलंताल-तुडिय-निग्घोस- गीयवाइयाइ णडणट्टगजल्लमल्लमु-
 ट्ठिगवेलवंग-कहगपवगलासग-आइक्खग- लंख- मख--तुणइल्ल
 तुवंवीणिय-तालायर-पकरणाणि य वहुणि मेहुरंसगीयसुस्स-
 राइ कची मेहलाकलावगपतरक- पतरेकपाय — जालकघटिय
 खिखिणि रयणोरुजालय लुद्धियनेउरचलणमालियकणगनिग
 डंजालकभूसणसंदाणि लीलचकम्ममाणानुदीरियाइ तरुणीज
 णहसिय भणिय कलरिभियमजुलाइ गुणवयणाणि य वहुणि
 मेहुरजणभासियाइ अण्णेसु य एवमाइएसु सद्देसु मणुण्णभइ-
 एसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्झियव्वं
 न मुज्झियव्व न विनिघाय आवज्जियव्व न लुभियव्वं न
 तुसियव्व न हसियव्व न सइ च मइ च तत्थ कुजा । पुण-
 रंवि य सोइदिएण सोच्चा सदाइ अमणुण्णपावगाइ किंते,
 अक्कोसफरुसखिसण अवमाणण तज्जणनिव्वभच्छण दित्तवयण
 तासण उक्कूजिय रुण्णरडियकदिय विग्घुट्टरसियकलुणविल-
 वियाइ अण्णेसु य एवमाइएसु सद्देसु अमणुण्णपावएसु-
 न तेसु समणेण रुसियव्व न हीलियव्व न निदियव्व, न
 खिसियव्व, न छिदियव्व न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दु
 गुल्लावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ । एव सोइदियभावणाभाविओ

ભવઈ અંતરપ્પા મણુણામણુણા સુવિમિદુવિમરાગદોસે
પણિહિયપ્પા સાહૂ મણવયણકાયગુત્તે સવુડે પણિહિંદિણ
ચરેજ્જ ધમ્મ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

ટીકા-‘પદમ’ પ્રથમા નિઃસ્પૃહતાભિધેયા ભાવનામાહ-‘સોડિદિણ’ શ્રોત્રેન્દ્રિ-
યેણ=કર્ણેન ‘સોચા’ શ્રુત્વા ‘સદાઈ’ શબ્દાન્, કીદશાન્ ? ‘મણુણમદ્દગાઈ’ મનો-
જ્ઞમદ્રકાન્=મનોજ્ઞાઃ=મનોહરા અતएव મદ્રકાઃ=કર્ણેન્દ્રિય સુખજનકાસ્તાન્ ‘કિં’ તે’
કાસ્તાન્=કથમ્ભૂતાસ્તાન્ ? इत्याह-‘વરસુરયમુયગપણવદ્દુરકચ્છમી વીણવિપચિવ-
લ્લહ્વદ્દીસકસુયોસણદિસુસરપરિવાદિણિ વસત્તૂણમપન્નયતતીતલતાલતુડિયનિગ્ધોસ

અવ સૂત્રકાર હમ વ્રત કી પાંચ ભાવનાઓં કો પ્રકટ કરને કે
અભિપ્રાય સે સર્વ પ્રથમ उसकी प्रथम भावना को कहते हैं-‘पदम’
इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પદમ) હસ વ્રત કી પહિલી ભાવના કા નામ નિસ્પૃહતા
હૈ, વહ ભાવના હસ પ્રકાર સે હૈ-(સોડિદિણ) શ્રોત્રેન્દ્રિય સે, (મણુ-
ણમદ્દગાઈ) મનોજ્ઞ અતएव મધુર એસે (સદાઈ) શબ્દોં કો (સોચા)
સુન કરકે સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ કમી મી ઉનમ્ આસક્તિ ન
કરે રાગભાવ સે ઉનમ્ ન વધે, ઉનમ્ વહ ગૃહ્ણિભાવ ન કરે ઓર
મોહિત ન હો તયા જો દ્વેષ પૈદા કરને વાલે હોં ઉનમ્ વહ રુષ્ટ ન હો ।
હસી વિષય કો સૂત્રકાર હન નીચે કી પઢ્ઢિયોં દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈં-(કિં
તે) વે કૌન ૨ સે હૈં-હસ પ્રકાર કી શકા કરને વાલે કે પ્રતિ વે કહતે
‘હૈં કિ સુનો વે હસ પ્રકાર સે હૈં (વરસુરયમુયગપણવદ્દુરકચ્છમી વીણ
વિપચિ-વલ્લહ્-વદ્દીસક-સુયોસ-ણદિ-સુસર-પરિવાદિણિવસત્તૂણક-

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચ ભાવનાઓ પ્રગટ કરવાના ઉદ્દેશથી સૌથી
પહેલા તેની પ્રથમ ભાવના વિષે કહે છે-“પદમ” इत्यादि-

ટીકાર્થ-“પદમ” આ વ્રતની પહેલી ભાવનાનું નામ નિસ્પૃહતા છે, તે ભાવના
આ પ્રમાણે છે-“સોડિદિણ” શ્રોત્રેન્દ્રિયથી, “મણુણમદ્દગાઈ” મનોજ્ઞ હોવાથી
મધુર લાગે છે “સદાઈ” શબ્દો “સોચા” સાંભળીને તેમા આસક્તિ થવું
જોઈએ નહીં એ સાધુનું કર્તવ્ય છે, તેમા રાગભાવ ન રાખે, તેમનામા તેણે
ગૃહ્ણિભાવ ડરવો જોઈએ નહીં, મોહિત થવું જોઈએ નહીં એ જ વિષયને
સૂત્રકાર નિચેની લીટીઓ દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-“કિં તે” તે શબ્દો કયા કયા
કયા છે એ પ્રકારની શકા કરનાર તે કહે છે કે સાંભળો તે આ પ્રમાણે છે-“વર
-સુરય-મુયગ-પાણવ-વદ્દુરકચ્છમી-વીણ-વિપચિ-વલ્લહ્વદ્દીસક-સુયોસ-ણદિસુસર

ગીયવાદ્યાઢ ' વરમુરજમૃદગપણવદર્દુરકચ્છપી ત્રીણાવિપશ્ચીવલ્લકી વદ્વીશકસુગ્રો
પનન્દીસુસ્વરપરિવાદીનોવશતૂળકર્પવજતન્ત્રીતલતાલતુલિનનિર્ધોષગોતરાદિતાનિ,
તન્ન-વરમુરજાઃ=ત્રેષુમૃદગ્નાઃ, મૃદગ્નાઃ=પસિદ્ધા, પણવાઃ=ઋષુપટઢા, દર્દુરાઃ=વર્મા
વનદ્વમુખા કલશાઃ કચ્છપી=કચ્છપાકારી વાદ્યવિશેષઃ, ત્રીણાવિપશ્ચીવલ્લકય એ
તાસ્તિસ્રો વીણાભેદાઃ, વદ્વીશક વાદ્યવિશેષ, સુગ્રોષા ઋષ્ટાવિશેષઃ, નન્દિઃ=દ્વાદ
શતૂર્યસમુદાયઃ, દ્વાદશવિધતૂર્યાણિ યવા—

“ ભમા ૧ મુકુદ ૨ મદલ ૩ કડવ ૪ જ્ઞાલર ૫ હુઢુક ૬ કસાલા ૭ ।

કલહ ૮ તલિમા ૯ વસો ૧૦ સલો ૧૧ પણવો ૧૨ વચારસમો ॥૧॥” ઇતિ ।

સુસ્વરપરિવાદિની=ત્રીણાવિશેષઃ, વશ=વેણુઃ, તૂળકો વાદ્યવિશેષઃ, પર્વજો-
વશપર્વનિર્મિતો વાદ્યવિશેષઃ, તન્ત્રી=વીણાવિશેષઃ, તાલહસ્તા, તાલા=કાસિકાઃ,

પન્વયતતીતલ તાલ-તુલિય નિર્ઘોસગીયવાદ્યાઢ) વરમુરજઉત્તમ એક
જાત કા મૃદગ, મૃદગ-સામાન્ય મૃદગ, પણવ-ઝોટાઢોલ, દર્દુરચમડે સે
મડે હુગ મુલ્લવાલે કલશ, કચ્છપી-કચ્છપાકાર વાદ્યવિશેષ, વીણા,
વિપશ્ચી, વલ્લકી-ચે ત્રીનો વીણા કે હી ભેદ હૈં, વદ્વીશક-વાદ્યવિશેષ,
સુગ્રોષા-એક પ્રકાર કા વાદ્યવિશેષ ઘટ, નન્દિ-ચારહ પ્રકાર કે વાજોં કા
સમૂહ વે હસ પ્રકાર હૈ-ભમા ૧, મુકુદ ૨, મદલ ૩, કડવ ૪, જ્ઞાલર ૫,
હુઢુક ૬, કસાલ ૭, કલહ ૮, તલિમા ૯, વસ ૧૦, શલ ૧૧, પણવ
૧૨, સુસ્વરપરિવાદિનિ એક વિશેષ પ્રકાર કી વીણા વશ-વાંસુરી,
તૂળક-એક પ્રકાર કા વાદ્યવિશેષ જિસે હિન્દી ભાષા મૈં રમતૂલા કહતે
હૈં, પર્વજ-વશ કે પર્વોં સે નિર્મિત કિયા હુઆ એક પ્રકાર કા વિશેષ
વાદ્ય, તન્ત્રી-વીણા વિશેષ-જિસે હિન્દી મૈં સારગી કહતે હૈં, તલ-

-પરિવાદિણ-વસતૂળક-પન્વય-તતીતલતાલ-તુલિય-નિર્ઘોસ-ગીય વાદ્યાઢ ” વર
મુરજ-એક જાતનો ઉત્તમ મૃદગ, મૃદગ-સામાન્ય મૃદગ, પણવ-નાનો ઢોલ,
દર્દુર-ચામડાથી મઢેવ મુખવાળો કલશ, કચ્છપી-કાચખાના આઢારતુ એક
વાજિત્ર, વીણા, વિપશ્ચી, વલ્લકી-એ ત્રણે વીણાના પ્રકારો છે, વદ્વીશક-એક
પ્રકારતુ વાદ્ય, સુગ્રોષા-એક પ્રકારનો ખાસ ઘટ, નન્દિ-ચાર પ્રકારના વાજિ
ત્રોનો સમૂહ તે આ પ્રમાણે છે-(૧) લલા (૨) મુકુદ, (૩) મદલ, (૪)
કડવ, (૫) જ્ઞાલર, (૬) હુઢુક, (૭) કસાલ (૮) કલહ, (૯) તલિમા,
(૧૦) વસ (૧૧) શલ, અને (૧૨) પણવ સુસ્વર પરિવાદિની-એક પ્રકારની
વીણા, વશ-વાંસરી, તૂળક-એક પ્રકારતુ ખાસ વાદ્ય જેને હિંદી ભાષામાં
રમતૂલા કહે છે, પર્વજ-વાસમાથી ખનાવેલ એક પ્રકારતુ ખાસ વાદ્ય, તન્ત્રી-
સારગી, તલ-હાથ, તાલ-મજરા, અથવા તલતાલ-હાથોથી પડાતી તાલી,

अथवा-तलतालः=हस्ततालः, त्रुटित=वाद्यविशेष, एषा यो निर्घोषो निनादः,
तथा-गीत=गानम्, त्रुटित=सामान्यवाद्यम्, एषा द्वन्द्वः, तानि तयोक्तानि, तथा
' नडनटगजल्लमल्लमुट्टिगवेलवग-कहगपवगलासग-आइक्खगलखमख तूणइल्ल-
तुवगीणियतालायरपकरणाणि य ' नटनर्तकजल्लमल्लमोण्टिकविडम्पक-कथक
प्लवकलासकाख्यायक-कथमङ्गलूणिकतुम्पगीणिक तालाचरपकरणाणि च, नट-नटाः
=नाट्यकारिणः, नर्तकाः=नृत्यकारिणः, जल्लः=चर्मरज्जूपलम्ब्य क्रीडाकार-
काः, मल्लः=मल्लयुद्धकारिणः, मोण्टिकाः=मुष्टियुद्धकारकाः, विडम्पकाः=विदू-
पकाः, कथका = ' कथक ' इतिप्रसिद्धा गान्धर्वविद्याविशारदा, प्लवकाः=कूदन-
कारिणः, लासकाः='लास्य' इति नाटक विशेषकारिण, अख्यायकाःकथाकारकाः,
लङ्काः=महावशाग्रभागमधिरुह्य क्रीडाकारिण, मङ्गाः=चित्रफलकहस्ताः क्रीडकाः,

हाथ, ताल-कसिका-झाजे, अथवा तलताल-हाथो की ताल, त्रुटित-
वाद्यविशेष, इन सब के निर्घोषों-शब्दों को तथा गीतों को एव सामा-
न्य वाजों की आवाजों को तथा (नड-नटगजल्लमल्ल-मुट्टिग-वेलवग-
कहगपवगलासग-आइक्खग-लखमखतूणइल्लतुवगीणियतालायर पकर-
णाणि) नट-नाटक करने वाले नटों के, नर्तकों-नृत्य करने वालों के,
जल्ल चर्म रज्जू का अवलम्बन कर के क्रीडा करने वालों के, मल्ल-
मल्ल युद्ध करने वालों के, मोष्टिक-मुष्टि से युद्ध करने वालों के, विड-
म्पक-विदूषकों के, कथन-गाधर्वविद्या विशारदों के, प्लवक-उछल-
कूद करने वाले मनुष्या के, लासक-लास्य नामकनाटक विशेष को करने
वालों के, आख्यायक-कथा कहने वालों के, लङ्का-बड़े २ वश के अग्र-
भाग पर चढ़कर विविध प्रकार के खेल करने वालों के, मख चित्र
फलकों को हाथ में लेकर खेल तमासा करने वालों के तूणिक-तूण

त्रुटित-ऐड नतनु वाद्य, ऐ नधाना अवाजने तथा गीताने तथा सामान्य
वाजि त्राना अवाजने तथा " नडनटगजल्लमल्लमुट्टिगवेलवगकहगपवगलासग
आइक्खग-लखमखतूण-इल्लतुवगीणिय-तालायरपकरणाणि " नट-नाटक करने
नटाना, नर्तको-नृत्यकरनारना, जल्ल-आमडानी होरी पर डीडा करनारना, मल्ल-
मल्लयुद्ध करनारना, मोण्टिक-मुष्टियुद्ध करनारना, विडम्पक-विदूषकोना, उथक-
गाधर्वविद्या विशारदोना, प्लवक-कूडका करनार भाणसोना, लासक-लास्यनामना
ऐड भास प्रडारना नाटक करनारना, आख्यायक कथा करनारना लख
उथा उथा वासनी दोये यडीने विविध प्रडारना ऐल करनारना, मख-चित्रना
कुलको डायमा लरने ऐल तमासा करनारना, तूणिक-तूणनामनु वाजित्र वगा

તૂળિકા:=તૂળાભિધાનવાદ્યવિશેષવાદકાઃ, તુમ્બરીણિકા:=તુમ્બરીણાવાદકા, તાલા
 ચરા:=તાલ=હસ્તાધાતરૂપમાચરન્તિ ચે તે તથોક્તાઃ-તાલવાદિન इत्यर्थः, एषा
 द्वन्द्व, तेषा यानि प्रकरणानि=प्रकर्षेण करणानि तानि तथोक्तानि, कानि तानी?
 त्याह— बहूणि ' बहूनि=अनेकप्रकाराणि, ' महुरसरगीयसुस्तराणि ' मधुरस्व
 राणि=मधुरस्वराणा गायमाना गीतानि=गानानि च तानि सुस्तराणि । तथा-
 ' कचीमेहलाकलावगपतरकपयरेकपायजालकघटियसिखिणिरयणोरुजालयछुदिय
 नेउयचलणमालियकणगनिगडजालकभूषणसदाणि ' काञ्चीमेखलाकलापकपतरक
 पतरेकपादजालकघण्टिकाकिङ्किणी-रत्नोरु-जालक-धुद्रिका-नूपुर-चरणमालिका
 कनकनिगड-जालकभूषणशब्दान् । तत्र-काञ्ची=रटिभूषणम्, मेखलाऽपि कटिभू
 षणभेदः, कलापको ग्रीवाऽभरणम्, पतरकाणि प्रतरेकाश्च आभरणविशेषाः, पाद-
 जालक=चरणाभरणम्, घण्टिका = प्रसिद्धा, किङ्किण्यः = क्षुद्रघण्टिकाः, रत्नोरु
 जालकम् रत्ननिर्मित जङ्घाभरणम्, धुद्रिका आभरणविशेषाः, नूपुर=पादभूषणम्,
 चरणमालिका-पादाभरणविशेषाः, कनकनिगडास्वर्णभूषणविशेषाः, जालक चाप्या

નામક વાદ્યવિશેષ કો વજાને ચાલોં કે, તુમ્બરીણિક-તુમ્બરીણા કો
 વજાને ચાલોં કે, તાલાચર-તાલી વજાને ચાલોં કે દ્વારા અઠ્ઠી તરહ
 સે કિયે ગયે (વહૂણિ) અનેક પ્રકાર કે (મહુરસરગીયસુ-
 સ્તરાઈ) મધુર સ્વરગર્ભિત ગીતરૂપ સ્વરોં કો, તથા- (કચી
 મેહલાકલાવગ-પતર-કપય-—રેક-પાય-જાલક-—ઘટિય-સિંચિણિ —
 રયણોરુજાલયછુદિય-નેઉયચલણમાલિયકણગનિગડ-જાલક-ભૂષણસ-
 દાણિ) કાચી-કટિભૂષણ, મેખલા, કલાપક-ગ્રીવાભરણ-પ્રતરક, પ્રતે-
 રક ચે દોનો એક પ્રકાર કે આભરણ વિશેષ હોતે હૈ, પાદજાલક-ચરણા
 ભરણ, ઘણ્ટિકા, કિંકિણી-છોટી ૨ ઘટિકાઈ, રત્નોરુજાલક-રત્નનિર્મિત
 જઘાભરણ, ધુદ્રિકા-આભરણવિશેષ, નૂપુર-પાદભૂષણ-વિછિયા, ચરણ-
 માલિકા-પાદાભરણવિશેષ, કનકનિગડ-સ્વર્ણનિર્મિતભૂષણવિશેષ, ઓર

-કનાર દ્વારા સારી રીતે કરવામા આવેલ “ વહૂણિ ” અનેક પ્રકારના “ મહુર
 -સરગીયસુસ્તરાઈ ” મધુર સ્વરયુક્ત ગીતરૂપ સ્વરોને તથા “ કચી મેહલાક
 -લાવગ-પતરક-પયરેક-—પાયજાલક-ઘટિય-—સિંચિણિરયણોરુજાલય-—છુદિયનેઉય
 યચલણ-માલિય-કણગ-નિગડ-જાલક-ભૂષણસદાણિ ” કાચી-કટિભૂષણ, મેખલા-
 -પતર, કલાપક-કોકનુ ધરેણુ-પ્રતરક, પ્રતેરક એ બને એક પ્રકારના ખાસ આભૂ
 ાષણો છે, પાદજાલક-પગનુ આભૂષણ, ઘટિકા, -ધૂધરી, કિંકિણી-નાની નાની
 ધૂધરીઓ, નૂપુર-ઝાઝર, વિછિયા, ચરણમાલિકા, એ બધા આભૂષણોના અવાજને

भूषणविशेषः, एवामितरेतयोगद्वन्द्वः, एतान्येव भूषणानि, तेषां शब्दास्तौ स्वधो-
क्तान्, तथा—'लीलचक्रममाणुदीरियाड' लीलाचक्रममाणुदीरितान्=लीलया
चक्रममाणानां=मलील गच्छन्तीनाम्, उदीरितान्=भूषणजनितान् शब्दान्,
तथा—'तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ' तरुणीजनहसितभणितकलरिभि-
तमज्जुलानि=तरुणीजनस्य यानि हसितानि भणितानि, कलरिभितानि=मधुररण-
नानि=मज्जुलानि=मनोहराणि च तानि तयोक्तानि, तथा—'गुणवयणाणि य'
गुणवचनानि च=कामगुणवर्धकवचनानि च 'वहूणि' वहूनि=अनेकविधानि तथा
'महूरजणभासियाड' मधुरजनभाषितानि=मधुराणि यानि जनभाषितानि=ताल
स्वरत्युक्तानि गायकजनगानानि तानि श्रुत्वा, 'समणेण' श्रमणेन—साधुना
'तेसु' तेषु मणुणमहाएसु' मनोज्ञमहाकेषु 'सहेसु' शब्देषु तथा 'अण्णेषु
य' अन्येषु च 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु शब्देषु न 'सज्जियव्व' न
सक्तव्यम्—आसक्तिर्न कर्तव्येत्यर्थः, तथा—'न रज्जियव्व' न रक्तव्य—रागो न
कर्तव्यः, 'न गिज्जियव्व' न गर्हितव्यम्=गृद्धिभावो न कर्तव्यः, तथा—'न मुज्झि-

जालक—एक प्रकार का आभूषण विशेष, इन सब शब्दों को तथा
(लीलचक्रममाणु दीरियाड) लीलासहित जाती हुई स्त्रीयों के भूषणों
के शब्दों को, तथा (तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ) तरु-
णियों के हसित, भणित, कलरिभिक और मनोहर, ऐसे (वहूणि गु-
णवयणाणि) अनेक प्रकार के कामगुणवर्धक वचनों को तथा (महूरजण
भासियाड तालस्वरयुक्त गायकजनों के गानों को सुनकर के साधुको
(तेसु मणुणमहाएसु) उन मनोज्ञ एव मधुर (सहेसु) शब्दों में तथा
(अण्णेषु य एवमाइएसु) इसी प्रकार के और भी दूसरे शब्दों में (न
सज्जियव्व) आसक्ति नहीं करना चाहिये, (न रज्जियव्व) राग नहीं
करना चाहिये, (न गिज्जियव्व) गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये, अर्थात्

तथा "लीलचक्रममाणुदीरियाड" लीलासहित जाती स्त्रीयोंना आभूषणोंना
अवाजने तथा "तरुणीजण-हसिय-भणिय-कलरिभिय-मजुलाइ" तरुणीयोंना
हसित, भणित, कलरिभित अने मनोहर, अथवा "वहूणि गुणवयणाणि"
अनेक प्रकारना काम वर्धक शब्दोंने तथा "महूरजणभासियाड" गायकोंना
ताल स्वरयुक्त गीतोंने साधुजीने साधुअ "तेसु मणुणमहाएसु" ते मनोज्ञ
अने मधुर "सहेसु" शब्दोंमा तथा "अण्णेषु य एवमाइएसु" अथवा
प्रकारना भीन शब्दोंमा यथु "न सज्जियव्व" आसक्ति करवी लेध अ नही
"न रज्जियव्व" राग करवी लेधअ नही, "न गिज्जियव्व" गृद्धिभाव न

યવ્વ ' ન મોહિતવ્યમ્—તત્ર મોહો ન કર્તવ્ય ઇત્યર્થઃ, તથા—'વિણિવાય' વિનિષાતઃ
 =તદર્થ ચારિત્રશઃ, આવજ્જિયન્વ 'આપત્તવ્યઃ=કર્તવ્યઃ=કર્તવ્યઃ, તથા—' ન લુભિ-
 યવ્વ ' ન લોભવ્યમ્=લોભો ન કર્તવ્ય ઇત્યર્થઃ, ' ન તુસિયન્વ ' ન તોષ્ટવ્યમ્—
 મનોહસશબ્દાદિપુ પ્રસન્નમનસા ન ભાવ્યમિત્યર્થઃ, તથા—' ન હસિયન્વ ' ન હસિ-
 તવ્યમ્=પિસ્મયેન હાસો ન કર્તવ્યઃ, તથા—શ્રમણઃ 'તત્ય' તત્ર—મનોહ્રમદ્રકશબ્દ
 વિષયે ' સહ ' સ્મૃતિ—સ્મરણ ચ ' મહ ' મર્તિ=બુદ્ધિનિવેશ ચ ' ન કુઝ્જા ' ન
 કુર્યાત્ । ' પુનરવિ ય ' પુનરપિ ચામનોનાદિ શબ્દવિષયે પ્રોચ્યતે—' સોહદિણ '
 શ્રોત્રેન્દ્રિયેણ ' સોચ્ચા ' શ્રુત્વા ' સદ્દાહ ' શબ્દાન્ કીદશાન્ ? ' અમણુણપાવગાહ '
 અમનોહપાપકાન્=અમનોજ્ઞા=અમનોહરા અતए-પાપકા =અશુભાસ્તાન્ ' કિં તે '

લલચાના નહીં ચાહિયે, (ન મુઝ્જિયન્વ) ઉનમે મોહ નહીં કરના
 ચાહિયે, (ન વિણિવાય આવજ્જિયન્વ) ઉનકે નિમિત્ત અપને ચારિત્ર
 કો શ્રદ્ધ નહીં કરના ચાહિયે, (ન લુભિયન્વ) ઉનમે લુભાના નહીં
 ચાહિયે, (ન તુસિયન્વ) ઉનસે પ્રસન્નમન નહીં બનાના ચાહિયે, (ન હ
 સિયન્વ) હસના નહીં ચાહિયે, ઓર (ન સહ ચ તત્યકુઝ્જા) ન ઉન
 મનોહ્રશબ્દાદિકોં કી યાદ કરના ચાહિયે ઓર ન ઉનમે અપની બુદ્ધિ
 કો હી લગાના ચાહિયે ।

હસી પ્રકાર (પુનરવિ ય) ફિર (સોહદિણ) શ્રોત્ર ઇન્દ્રિય સે
 (અમણુણપાવગાહ) અમનોજ્ઞ અતए અરુચિ કારક અશુભ (સદ્દાહ)
 શબ્દોં કો (સોચ્ચા) સુનકર સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ઉન પર દ્વેષ
 મી ન કરે—નાક મુંહ ન સિકોડે, હસી વિષય કો અવ સૂત્રકાર હન
 પત્તિયો દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈ—વે કૌન સે હૈ હસ શંકા કે સમાધાન

કરવો જોઈએ એટલે કે લલચાવું જોઈએ નહીં “ ન મુઝ્જિયન્વ ” તેમનામાં
 મોહ કરવો જોઈએ નહીં “ ન વિણિવાય આવજ્જિયન્વ ” તેમના નિમિત્તે પોતાના
 ચારિત્રને બ્રૂટ કરવું જોઈએ નહીં, “ ન લુભિયન્વ ” તેમાં લલચાવું જોઈએ
 નહીં “ ન તુસિયન્વ ” તેમાં મનને પ્રસન્ન રાખવું જોઈએ નહીં “ ન હસિ
 યન્વ ” હસવું જોઈએ નહીં, અને “ ન સહ ચ મહ જ તત્ય કુઝ્જા ” તે
 મનોહ્ર શબ્દાદિને યાદ કરવા જોઈએ નહીં અને તેમાં પોતાના મનને
 ખેંચાવા દેવું નહીં’ એજ પ્રમાણે ‘પુનરવિ ય’ વળી ‘સોહદિણ’ શ્રોત્રે
 ન્દ્રિયથી “ અમણુણપાવગાહ ” અમનોહ્ર અને તે કારણે અરુચિકારક અશુભ
 “ સદ્દાહ ” શબ્દોને “ સોચ્ચા ” સાંભળીને તેના પ્રત્યે દ્વેષ પણ ન કરવો
 જોઈએ તે સાધુનું કર્તવ્ય છે—તેના તરફના તિરસ્કારથી નાક ડે મોહ સંકેતવું
 બગાડવું જોઈએ નહીં, એજ વિષયને સૂત્રકાર આ પત્તિઓ દ્વારા સ્પષ્ટ
 કરે છે—તે કયા કયા પ્રકારના છે તે શકના નિવારણના માટે તેઓ તે અમ

કાંસ્તાન્=કથમ્ભૂતાંસ્તાન્ શબ્દાન્ इत्याह— 'અક્રોશપરુષસ્વિસણઅવમાણ-
તજ્જણનિવ્મચ્છણદિત્તવયણતાસણઉક્કજિયરુણરહિયકદિયણિગ્ધુદ્ધરસિયકલુણવિ-
લવિયાહ ' આક્રોશપરુષસ્વિસનાવમાનનતર્જનનિર્ભર્ત્સનદીપ્તવચનત્રાસનોત્કૂજિતરુ-
દિતરટિતકન્દિતનિર્ધુષ્ટરસિતકરુણવિલપિતાનિ-તત્ર—આક્રોશ = ' રે દુષ્ટ !
મ્રિયસ્વે ' ત્યાદિવચનમ્ , પરુષ-રે મૂર્ખ ! રે ચૌર ! इत्यादि, સ્વિસનમ્=નિન્દાવ-
ચન 'કુશીલોઽસિ, નિર્લજ્જોઽમી' ત્યાદિરૂપમ્ , અવમાનનમ્=અપમાનજનકવચન,
ત્વદ્ધારાદિરૂપમ્ , તર્જનમ્=' જ્ઞાસ્યસિ રે દુષ્ટ ! મમાવવાયાઃ ફલમ્ ' इत्यादિરૂપમ્=
નિર્ભર્ત્સનમ્='અસર રે નિર્દય ? મમ દૃષ્ટિપથાદિત્યાદિરૂપમ્ , દીપ્તવચનમ્=કુપિ-
તવચનમ્=ત્રાસનમ્=અન્યકારાદૌ ફેલ્કારાદિરૂપઃ શ્રુગાલાદિશબ્દઃ, ઉત્કૂજિતમ્=

નિમિત્ત વે ઉન અમનોજ પાપક શબ્દોં કો કહતે હૈ—(અક્રોશ-
પરુષ-સ્વિસણ-અવમાણ-તજ્જણ-નિવ્મચ્છણ-દિત્તવયણ-તાસણ-
ઉક્કજિય-રુણ-રહિય-કદિય--ણિગ્ધુદ્ધ-રસિય-કલુણ-વિલવિયાહ)
' રે દુષ્ટ ! મર જા ' इत्यादि પ્રકાર કે જો શબ્દ હોતે હૈ-વે આક્રોશ
શબ્દ હૈ, કઠોર શબ્દોં કા નામ પરુષ હૈ-જૈસે-' ઓ મૂર્ખ ! અરે
ઓ ચૌર ! ' આદિ । નિંદાત્મક શબ્દોં કા નામ સ્વિસન હૈ, જૈસે-' તુ
બડે ઓટ્ટે સ્વભાવ કા હૈ, તુ બડા વે શરમ હૈ ' इत्यादि । ' તુ '
આદિ શબ્દ અપમાન જનક શબ્દ હૈ । જિન શબ્દોં સે દૂસરોં કો
હાટના હોતા હૈ વે તર્જના શબ્દ હૈ, જૈસે-' ઓ દુષ્ટ ! અવજ્ઞા કરને કા
ફલ મૈં તુજે વતાઝંગા । તથા ' ઓ નિર્દય । મેરે સામને સે હટ જા '
इत्यादि પ્રકાર કે વાક્ય નિર્ભર્ત્સન વાક્ય કહલાતે હૈ । કુપિત વચનોં
કા નામ દીપ્તવચન હૈ । અધકાર આદિ મે ફુલ્કાર આદિ રૂપ શબ્દોં કા

નોજ પાપક શબ્દોંને ખતાવે છે " અક્રોશ-પરુષ-સ્વિસણ-અવમાણ-તજ્જણ-
નિવ્મચ્છણ-દિત્તવયણ-તાસણ-ઉક્કજિય-રુણ-રહિય-કદિય-ણિગ્ધુદ્ધ-રસિય-કલુણ
-વિલવિયાહ " " હે દુષ્ટ ! મરી જા " इत्यादि પ્રકારના શબ્દોંને આક્રોશ શબ્દ
કહે છે, કઠોર શબ્દોંને પરુષ શબ્દોં કહે છે, જેવા કે " ઓ મૂર્ખ ! અરે ઓ
ચૌર " આદિ પરુષ શબ્દોં છે ' તુ ઘણા ખરાબ સ્વભાવવાળો છે, તુ ઘણો
બેશરમ છે " આદિ નિંદાત્મક શબ્દોંને સ્વિસન કહે છે " તુ " આદિ અપ-
માનજનક શબ્દોં છે જે શબ્દોં દ્વારા ખીતને ધમકી અપાય છે તે શબ્દોંને
તર્જના શબ્દોં કહે છે, જેવા કે " રે દુષ્ટ મારી અવજ્ઞા કરવાનું ફળ હું તને
અપાડીશ " તથા ' અરે નિર્દય ! મારી નજરથી હું જા " इत्यादि પ્રકારના
વાક્યોંને નિર્ભર્ત્સના વાક્ય કહે છે ક્રોધયુક્ત વચનોંને દીપ્ત વચન કહે છે

અવ્યક્તમહાધ્વનિકરણમ્, રુદિતમ્=સાશુરોગ્નમ્, રટિત=કલહાધિત-કલહવાક્ય
 મિત્યર્થઃ ક્રન્દિતમ્=ઇષ્ટવિયોગાદો ક્રન્દમ્, નિર્ઘુષ્ટમ્=ઉચ્ચૈર્નાદકરણમ્, રસિતમ્
 =સૂકરાદિવત્ શબ્દકરણમ્, કરુણવિલપિતમ્=પુત્રાદિમૃત્યા સકરુણવિગ્રાપકરણમ્,
 एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तानि श्रुत्वा श्रमणेन 'तेषु' तेषु 'अमणुण्णपावणसु'
 अमनोज्ञपापकेषु=अमनोज्ञाशुभेषु, 'सद्देशु' शब्देषु तथा-'अण्णेषु य एवमाइणसु'
 अन्येषु च एवमादिकेषु समुपस्थितेषु शब्देषु 'न रुसियच्च' न रोपितव्यम्-रोषो
 न कर्तव्य, 'न हीलियच्च' न हीलितव्यम्=अप्रज्ञा न कर्तव्येत्यर्थ, 'न निदि
 यच्च' न निन्दितव्यम्=निन्दा न कर्तव्या, 'न विमियच्च' न विंसितव्यम्=

નામ વ્રાસન છે । જિસ પ્રકાર શ્ત્રગાલ આદિ કે શબ્દ હોતે છે । અસ્પષ્ટ
 જોર ૨ સે ઘોલને કા નામ ઉત્કૃજિત છે । આન્દ નિકાલ ૨ કર રોને કા
 નામ રુદિત છે । કલહવર્ધક વાક્યો કા નામ રટિત છે । ઇષ્ટ કે વિયોગ
 આદિ હોને પર જો ન્દન કરતે સમય વચન નિકલતે છે વે રુદિત વચન
 હૈ । ઉચ્ચે સ્વર સે જો ઘોલને મે આતે હૈ વે નિર્ઘુષ્ટ શબ્દ હૈ । સૂઅર
 આદિ કે જૈસે શબ્દો કા ઘોલના ઇસકા નામ રસિત છે । પુત્ર આદિ કે
 મર જાને પર જો કરુણ વિલાપ ક્રિયા જાતા છે । ઓર ઉસ સમય-જો
 શબ્દ મુઠ્ઠ સે નિકલતે હૈ વે કરુણ વિલપિત છે । જેસે શબ્દો મે તથા
 (અણ્ણેસુ ય એવમાઈણસુ સદેસુ) ઇસી પ્રકાર કે ઓર મી શબ્દ જો
 (અમણુણપાવણસુ) અમનોજ્ઞ અશુભ હૈ ઉન શબ્દો મે (સમણેણ)
 શ્રમણ કા કર્તવ્ય છે કિ વહ ઉનમે (ન રુસિયચ્ચ) રોષ ન કરે ।

અધકાર આદિમા કુટકાર આદિઉપ શબ્દોનુ નામ વ્રાસન છે, શિયાળ આદિના
 અવાજ તે પ્રકારનો હોય છે જેર જેરથી અસ્પષ્ટ બોલવુ તેને ઉત્ક્રજિત શબ્દો
 કહે છે આસુ પાડી પાડીને રડવાના અવાજને રુદિત શબ્દ કહે છે ડલહ
 વર્ધક વાક્યોને રટિત વાક્ય કહે છે ઇષ્ટનો વિયોગ આદિ થતા રુદનની સાથે
 જે વચન નીકળે છે તેને ક્રુદિતવચન કહે છે જિ આ અવાજથી બોલતા વચનને
 નિર્ઘુષ્ટ શબ્દ કહે છે સૂઅર આદિ જેવા શબ્દો બોલવા તે રસિત શબ્દ
 કહેવાય છે પુત્ર આદિનુ મત્યુ થતા જે કરુણ વિલાપ ડરાય છે અને ત્યારે
 જે શબ્દો મોઢામાથી નીકળે છે તે કરુણ વિલપિત કહેવાય છે એવા શબ્દો
 પ્રત્યે તથા “ અણ્ણેસુય એવમાઈણસુ સદેસુ ” એવા જ પ્રકારના બીજા શબ્દો કે
 જે “ અમણુણપાવણસુ ” અમનોજ્ઞ અને અશુભ હોય તે શબ્દોથી “ ન
 રુસિયચ્ચ ” રોષ ન કરવો “ સમણેણ ” તે શ્રમણનુ કર્તવ્ય છે “ ન હીલિય
 ચ્ચ ” તેમની અવજ્ઞા કરવી નહી, “ ન નિદિયચ્ચ ” નિંદા ન કરવી, “ ન

परसमक्ष च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियव्व' न छेत्तव्यम्=अमनोज्ञ शब्दकर्तु-
र्द्रव्यस्य छेदो न कार्यः, तथा—'न भिदियव्व' न भेत्तव्यम्, तस्यैव न भेदः
कर्तव्यः, 'न वहेयव्व' न हन्तव्यम्=तस्यानिष्ट शब्दकर्तृत्वो न कर्तव्य, तथा—
'दुगुछावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिरपि शब्दविषये स्वस्य परस्य वा घृणावृत्ति-
रपि, 'उप्पाएउ' उत्पादयितु 'न लब्भा' न लभ्या—नोचिता, यथा—स्वस्य परस्य
वा हृदि शब्दविषया जुगुप्सा प्रादुर्भवेन्न तथा कर्तव्यमिति भावः । अथ प्रथमभा-
वनानिगमनार्थमाह—एवम्=उत्तरीत्या 'सोइदियभावणाभाविओ' श्रोत्रेन्द्रिय-
भावनाभावित श्रोत्रेन्द्रिय निरोद्धव्यम्, अन्यथा—महदनर्थमभवः, इत्येव रूपया
भावनया भावित, 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवो 'भयड' भवति, ततश्च 'मणु-
ण्णामणुण्णसुब्बिदुब्बिरागदोसे' मनोशामनोज्ञसुरभिदुरभिरागद्वेषो=मनोशामनोज्ञा

(न हीलियव्व) उनकी अवज्ञा न करे, (न निदियव्व) निंदा
न करे (न खिसियव्व) उन पर खिसियावे नहीं—दूसरो के समक्ष
उनकी निंदा न करे (न छिदियव्व) जो अमनोज्ञ शब्दों करने
वाला विषादि द्रव्य है उसका वह न छेदन करे और (न भिदियव्व)
न भेदन करे (न वहेयव्व) अनिष्ट शब्द करने वाले मनुष्य आदि का
वध न करे । और (न दुगुछा वत्तिया विलब्भा उप्पाए उ) न उन
अनिष्ट शब्दों के विषय में अपने एव पर के घृणावृत्ति उत्पन्न करने की
कोशिश ही करे । अब सूत्रकार इस प्रथम भावना का उपसंहार करने
के लिये कहते हैं—(एव) इस प्रकार (सोइदियभावणाभाविओ)
श्रोत्रेन्द्रिय की भावना से भावित हुआ 'मुझे श्रोत्रेन्द्रिय का निरोध
करना चाहिये नहीं तो बड़ा भारी अनर्थ होगा' इस प्रकार की विचा-
रधारा से वासित हुआ (अतरप्पा) अन्तरात्मा मुनि (मणुण्णामणुण्ण-
सुब्बिदुब्बिरागदोसे पणिहिप्पा) मनोज्ञ रूप शुभ और अमनोज्ञ—

खिसियव्व " तेना पर खिसियाओ नही—भील पासे तेनी निंदा उरवी लेधओ
नही, "न छिदियव्व" अमनोन अवाज उरनार वीणादि जे वस्तु होथ तेनु
ते छेदन न उरे, "न भिदियव्व" तेनु लेहन न उरे "न वहेयव्व" अनिष्ट
शब्द उरनार मनुष्य आदिनो ते वध न उरे, अने " न दुगुछावत्तिया वि लब्भा
उप्पाएउ " ते अनिष्ट शब्द प्रत्ये पोते तृष्णा न उरे ने भीलओभा तृष्णा
वृत्ति पेदा उरवानी डेरिश न उरे हुवे सूत्रकार आ पड़ेली लावनानो उप-
संहार करता उहे छे—“ एव ” आ रीते “ सोइदियभावणाभाविओ ” श्रोत्रे
न्द्रियनी लावनाथी लावित थयेल “ भारे श्रोत्रेन्द्रिय पर अदृश राखेवो
लेधओ नही तो धणो लारे अनर्थ थशे ” ओ प्रकारनी विचारधाराथी प्रभावित
थयेल “ अतरप्पा ” अन्तरात्मा—मुनि “ मणुण्णामणुण्णसुब्बिदुब्बिरागदोसे पणिहि

ये सुरभिदुरभयः=शुभा शुभाः शब्दास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र, 'पणिहिष्यप्पा' पणिहि
तात्मा=सवृतात्मा 'साहू' साधु 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः, 'सबुडे'
सवृतः-सवरान् 'पणिहिइदिए' पणिहितेन्द्रियः-पणिहितः=वशीकृतः इन्द्रियो
येन तथाभूतः सन् 'धम्म' धर्म 'चरेज्ज' चरेत् ॥ सू० ७ ॥

द्वितीयां भाष्यनामाह—'वीय' इत्यादि—

मूलम्—वीय चक्खु इदिएण पासिय रुवाणि मणुण्णभइ-
गाइं सचित्ताचित्तमोसगाइं कट्टे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे

रूप अशुभ शब्दों में रागद्वेष करने की परिणति से रहित हो जाता है ।
इस प्रकार की स्थिति से सपन्न हुआ (साहू) साधु (मणवयणकायगुत्ते)
अपने मन, वचन और काय को शुभाशुभ के व्यापार से सुरक्षित कर
लेता है । और (सबुडे) सवर से युक्त बनकर (पणिहिइदिए) अपनी
श्रोत इन्द्रिय को वश में करके (धम्म) चारित्ररूप धर्म को (चरेज्ज)
पालन करने वाला बन जाता है ।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने परिग्रह विरमणव्रत की प्रथम
भावना का विवेचन किया है । इसमें उन्होंने यह कहा है कि साधुको इष्ट
श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में ललचाना नहीं चाहिये और अनिष्ट विषय में
द्वेष नहीं करना चाहिये । इस प्रकार से इस भाष्यनासे भावितमुनि अपने
व्रत की रक्षा और उसकी सुस्थिरता करता हुआ सवर से युक्त बन जाता है
और चारित्ररूप धर्म की परिपालना अच्छी तरह से कर सकता है ॥ सू० ७ ॥

यप्पा ” मनोસરૂપ શુભ અને અશુભ શબ્દોમા રાગદ્વેષની પરિણતિથી રહિત થઈ
જાય છે આ પ્રકારની સ્થિતિથી યુક્ત બનેલ “ સાહુ ” સાધુ “ મણવયકાયગુત્તે ”
પોતાના મન, વચન અને કાયને શુભાશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત કરી નાખે છે
અને “ સબુડે ” સવરથી યુક્ત બનીને “ પણિહિંદિએ ” પોતાની શ્રોત્રેન્દ્રિયને વશ
કરીને “ ધમ્મ ” ચારિત્રરૂપ ધર્મનું “ ચરેજ્જ ” પાલન કરનાર થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પહેલી ભાવનાનું વિવેચન
કયું છે તેમા તેમણે એ બતાવ્યું છે કે સાધુએ શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઇષ્ટ વિષયમા
લલચાવું જોઈ એ નહીં અને અનિષ્ટ વિષય પ્રત્યે દ્વેષ કરવો જોઈ એ નહીં
આ રીતે આ ભાવનાથી ભાવિત થયેલ મુનિ પોતાના વ્રતની રક્ષા તથા સુસ્થિ
રતા કરતો કરતો સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે, અને ચારિત્રરૂપ ધર્મનું સારી
રીતે પાલન કરી શકે છે ॥ સૂ० ૭ ॥

सेले य दत्तकम्मे य, पचहि वण्णेहि अणेगसठाणसठियाइ
गंथिमवेढिमपूरिमसधाइमणि य मल्लाइ बहुविहाणि य नय-
णमणसुहकराइ वणसडे पव्वए य गामागरनगराणि य
खुड्डियपुक्खरिणी वावीदीहिय-गुजालिय सरसरपतिय सागर-
विलपतिय खाइय-नई-सर-तलाग-वप्पिणो फुल्लुप्पलपउम-
परिमंडियाभिरामे, अणेगसउणगणमिहुणवियरिए, वरमडव-
विविह भवण-तोरण-चेइय-देवकुल-सभप्पवावसह-सुकय-
सयणासण-सीयरह-सगडजाणजुग्गय-सदणे नरनारिगणे य
सोमपडिरूवदरिसणिजे, अलंकिय विभूसिय, पुव्वकय तवप्प-
भावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-चेलंवग-
कहग-पवग-लासग-आइक्खग लख मख तूणइल्ल तुंववी-
णिय-तालायर पकरणाणि य वहूणि सुकरणाणि अण्णेसु य
एवमाइएसु रूवेसु मणुन्नभइएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं,
न रज्जियव्व, जाव न सइ च मड च तत्थ कुज्जा, पुणरवि
चक्खुइदिएण पासिय रूवाइ अमणुन्नपावगाइ, कि ते ? गडि-
कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पगुल-वामण-
अधिल्लग-एगचक्खु विणिहय सप्पिसल्लगवाहिरोगपीलिय
विगयाणि य मयककलेवराणि सकिमिणकुहिय च दव्वरासि
अन्नेसु य एवमाइएसु अमणुन्नपावगेसु न तेसु समणेण
रूसियव्व, जाव न दुगुल्लावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ, एवं
चक्खुइंदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुण्णामणुण्ण-

સુભિદુભિભરાગદોસે પણિહિયપ્પા સાહૂમળવચળકાયગુત્તે સંવુડે
પણિહિંદિણ ચરેજ્જ ધમ્મં ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘વીય’ ઇત્યાદિ—

‘વીય’ દ્વિતીયા ચક્ષુરિન્દ્રિયસવરાભિપ્રેયા ભાવનામાદ—‘ચક્ષુહિદિણ’
ચક્ષુરિન્દ્રિયેણ ‘પાસિય’ દાઢ્ટા ‘રૂપાણિ’ રૂપાણિ=આકારાન્ કીદશાણિ ?
‘મણુણભદ્દગાઈ’ મનોજ્ઞભદ્રકાણિ-મનોજ્ઞાણિ=મનોહરાણિ ચ તાણિ ભદ્રકાણિ=
સુન્દરાણિ ચેતિ કર્મધારયઃ, તથા—‘સચિત્તાચિત્તમીસગાઈ’ સચિત્તાચિત્તમિશ્રકા-
ણિ, તત્ર-સચિત્તાણિ=નરયુગ્માદીણિ, અચિત્તાણિ=તત્પ્રતિકૃતિરૂપાણિ, મિશ્રકાણિ
=વસ્ત્રાભરણભૂષિતાણિ તાન્યેય, કાઠપાપાણાદીણિ યા દૃષ્ટ્વા તેષુ શ્રમણેન ન
સક્તવ્યમિત્યાદ્યગ્રેણ સમ્પન્ન ॥ કસ્મિન્ સ્થાને દૃષ્ટ્વા ‘ઇત્યાદિ’-‘કટ્ટે’ કાઠ્ઠે=કાઠ-
ફલકે ‘પોત્યે ય’ પુસ્તે ચ=પુસ્તકે ચ ‘ચિત્તકમ્મે’ ચિત્તકર્મણિ ‘લેપ્પક

ઇસ વ્રત કી દ્વિતીય ભાવના કો કર્તે હૈ—‘વીય’ ઇત્યાદિ. ॥

ટીકાર્થ—(વીય) દ્વિતીય ચક્ષુરિન્દ્રિય સવર નામ કી ભાવના હૈ
વહ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—(ચક્ષુહિદિણ) ચક્ષુરિન્દ્રિય સે (મણુણભદ્દગાઈ)
મનોજ્ઞ અતએવ સુન્દર એસે (રૂપાઈ) રૂપો કો કિ જો (સચિત્તાચિત્ત
મીસગાઈ) સચિત્ત, અચિત્ત ઓર મિશ્રદ્રવ્ય સે આશ્રિત હો ઊન્હે (પાસિય)
દેખ કરકે સાધુ કો ચાહિયે કિ વહ ઊનમે આસક્તચિત્ત ન વન, યહ
આગે સે સબન્ધ હૈ ॥ નર નારી આદિ સચિત્ત દ્રવ્ય હૈ, ઇન કે પ્રતિકૃતિ-
ફોટો અચિત્તદ્રવ્ય હૈ ॥ વસ્ત્ર આભૂષણ આદિ સે વિભૂષિત
નર નારી આદિ મિશ્રદ્રવ્ય હૈ ॥ ઇનકે આશ્રિત જો મનોહર આકાર
હોતા હૈ વહ મનોજ્ઞ ભદ્રકરૂપ હૈ ॥ ઇન સચ કા આકાર (કટ્ટે) કાઠ કે

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની બીજી ભાવના બતાવે છે—“વીય” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“વીય” બીજી ચક્ષુરિન્દ્રિય સવર નામની ભાવના છે તે આ
પ્રમાણે છે—“ચક્ષુહિદિણ” ચક્ષુ ઇન્દ્રિયથી “મણુણભદ્દગાઈ” મનોજ્ઞ અને
સુન્દર એવા “રૂપાઈ” રૂપોને કે જે “સચિત્તાચિત્તમીસગાઈ” સચિત્ત,
અચિત્ત અને મિશ્ર દ્રવ્યને આશ્રિત હોય, તેમને “પાસિય” જોઈને તેમા
સાધુએ આમંજ્ઞ થવું જોઈએ નહીં નર, નારી આદિ સચિત્ત દ્રવ્ય છે તેમની
પ્રતિકૃતિ-ફોટો અચિત્ત દ્રવ્ય છે વસ્ત્ર, આભૂષણ આદિથી વિભૂષિત નર-નારી
આદિ મિશ્ર દ્રવ્ય છે તેમના પર આધાર રાખનાર જે મનોહર આકાર હોય
છે તે મનોજ્ઞ ભદ્રરૂપ છે તે બધાનો આકાર “કટ્ટે” લાકડાના પાટીયા પર

મ્મે 'લેપ્યકર્મણિ મિત્યાદૌ, 'સેલે ય શૈલે=પાપાણે ચ 'દત્તકર્મ્મે 'દન્તકર્મણિ=હસ્તિદન્તાદિપુ યન્નરયુગાદીનામાકૃતિરદ્દૃષ્ટતે તદ્દન્તકર્મ તસ્મિન્નથ 'પચહિ વર્ણોર્હિ' પચ્ચભિર્વર્ણેર્યુક્તાનિ, 'અળેગસઠાળસઠિયાઈ' અનેક સસ્થાનસસ્થિતાનિ' અનેકાનિ=અનેકપ્રકારાણિ યાનિ સસ્થાનાનિ=આકૃતયસ્તૈ સસ્થિતાનિ=યુક્તાનિ, તથા—'ગથિમવેદિમપૂરિમસઘાઈમાણિ ય' ગ્રન્થિમવેદિમપૂરિમસઘાતિમાણિ ચ, તત્ર-ગ્રન્થિમ=ગ્રન્થસ્તેન નિર્વૃત્ત માલાવત્, વેદિમમ્=વેદિનેન નિર્વૃત્તમ્ પુષ્પગેન્દુ-રુવત્, પૂરિમ=પૂરણેન નિર્વૃત્ત, યન્ત્રે પિત્તલાદિ રગપૂરણેન નિષ્પાદિત પુત્તલિકા-દિકમ્, સઘાતિમમ્=સઘાતેન નિર્વૃત્તમ્, રુપર્દિકાદિસઘાતેન નિષ્પાદિત કુવકુટા-

પટ્ટિર્ણો પર ઉકેરા જાતા હૈ (પોત્થે ય) પુસ્તકો સે છાપા જાતા હૈ, (ચિત્ત-કર્મ્મે ય) કાગજ આદિ પર ચિત્રિત ક્રિયા જાતા હૈ મૃત્તિકા આદિ મેં બનાયા જાતા હૈ (લેપ્પકર્મ્મે) રંગ આદિ સે ભિત્તિ આદિ પર લિખા જાતા હૈ (સેલે ય) પાપણ કે ઉપર અક્તિ ક્રિયા જાતા હૈ (દત્તકર્મ્મે ય) હાથી દાત પર સોદા જાતા હૈ । ઇન સઽ પદાર્થો કે ઉપર ઉકેરે ગયે ડન ૨ આકારો કો (પચહિ વર્ણોર્હિ) પાંચ વર્ણો સે ભરા જાકર વહુત્ત હો સુન્દર રૂપ સે આકર્ષક બનાયા જાતા હૈ । (અળેગસઠાળસઠિયાઈ) ભિન્ન ૨ રૂપ મેં ડન ચિત્રો કો સજાયા જાતા હૈ । ઇસી પ્રકાર (ગથિમ વેદિમપૂરિમસઘાઈમાણિ ય) માલા કી તરહ ગૂંચ ૨ કર જો ચિત્ર બનાયે જાતે હેં વે ગ્રન્થિમ, પુષ્પગેદ કી તરહ જો વેદિત કરકે ચિત્ર બનાયે જાતે હેં વે વેદિમ, કિસી પદાર્થ પર જો પુત્તલિકાદિ કી તરહ રગ સે ભરકર ચિત્ર બન જાતે હેં વે પૂરિમ, તથા કૌડી આદિ કે પરસ્પર જોડને સે કુવકુટ આદિ કે જૈના જો રૂપ બનાયા જાતા હૈ વહ સઘાતિમ હૈ । ઇન સઽ

ચિતરાય છે, “ પોત્થેય ” પુસ્તકોમા છપાય છે ચિત્તકર્મ્મેય ” કાગળ આદિ પર ચિતરવામા આવે છે, માટી આદિથી બનાવવામા આવે છે, “ લેપ્પકર્મ્મે ” રંગ આદિથી દિવાલ આદિ પર આલેખાય છે, “ સેલેય ” પથ્થર પર કોતરાય છે, “ દત્તકર્મ્મેય ” હાથીદાત પર કોતરવામા આવે છે, તે સઘળા પદાર્થો ઉપર અક્તિ કરેલ તે આકારોને “ પચહિ વર્ણોર્હિ ” પાંચ રંગો લગાડીને બહુજ સુદૃઢ અને આકર્ષક બનાવાય છે “ અળેગસઠાળસઠિયાઈ ” ભિન્ન ભિન્ન રીતે તેની સજાવટ કરાય છે એ જ રીતે “ ગથિમવેદિમપૂરિમસઘાઈમાણિ ય ” માળાની જેમ ગૂંથી ગૂંથીને જે ચિત્રો બનાવવામા આવે છે તે ગ્રથિમ, પુષ્પના દડાની જેમ જે ચિત્ર વેદિત કરીને બનાવાય છે વેદિમ, કોઈ પદાર્થ પર પુતળી આદિની જેમ રંગથી ભરીને જે ચિત્ર બનાવાય છે તે પૂરિમ, તથા કોડી આદિને એક બીજામા પરોવીને ફૂકડા આદિ જેવો જે આકાર બનાવાય છે તે

દિસ્યરૂપમ્, એવાં દ્વ-દ્વઃ, તાનિ તથોક્તાનિ દૃષ્ટ્વા, તથા-‘ વહુવિધાનિ=અનેકપ્રકારાણિ ચ=પુનઃ ‘ અહિય ’ અધિકમ્-અત્યર્થં યથા સ્યાત્તથા ‘ નયનમણસુહકરાઈ ’ નયનમન સુહકરાણિ = નયનયોર્મનસથ સુહકરાણિ=સુગોત્પાદકાનિ ‘ મલ્લાઈ ’ માલ્યાનિ ‘ માલા ’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ તથા-‘ વળસડે ’ વનપણ્ડાન્=એકજાતીયાનામનેકજાતીયાના ચ વૃક્ષાણા સમૂહાન્, ‘ પચ્ચય ય ’ પર્વતોશ્ચ ‘ ગામા-ગરનગરાણિ ય ’ ગ્રામાકરનગરાણિ ચ દૃષ્ટ્વા, તથા-‘ સુહિયપુક્કરિણી-વાવી-દીહિય=ગુજાલિય-સરસરપતિય-સાગર-વિલપતિય-લાઈય-નર્દ-સર-તલાગ-વિલ્પિણો ’ ક્ષુદ્રિકા પુક્કરિણી વાપી દીર્ઘિકા ગુજ્જાલિકા સરઃ સર. પટ્ટિક્કા સાગર-વિલપટ્ટિક્કા-લાતિકા-નદી-સરસ્વટાગમપાન્, તત્ર-સુદ્રિકા=લઘુજલાશયવિશેષઃ, પુક્કરિણી=કમલવતી તર્તુલાકારા વાપી=ચતુષ્કોણા, દીર્ઘિકા=ઝમ્માકાર-વાપી, ગુજ્જાલિકા=વક્રાકારવાપી, સરઃ સર પટ્ટિક્કા=યેવા મયે એકસ્માત્તદાગાદપરસ્મિંસ્તદાગે જલ સમાયાતિ, એતાદશજઞાશયસમૂહઃ સરસર. પટ્ટિક્કે-

ધો નિહાર કર, (દેખકર) તથા (વહુવિહાણિ) અનેક પ્રકાર કી (મલ્લાઈ) માલાઓં કો કિ જો (અહિય નયનમણસુહકરાઈ) અધિક સે અધિક રૂપ મેં નેત્ર એવ મન કો આહાદકારક હોતી હોં દેખકર (વળસડે) એક જાતીય ઔર અનેક જાતીય વૃક્ષાં કે સમૂહોં કો (પચ્ચય ય) પર્વતોં કો ગામાગરનગરાણિ) ગ્રામ, આકર, નગરોં કો (સુહિય પુક્કરિણી-વાવી-દીહિય-ગુજાલિય-સરસર-પતિ ય-સાગર-વિલપતિ ય-લાઈય-નર્દ-સર-તલાગ-વિલ્પિણો) ક્ષુદ્રિકા-લઘુ-જલાશય, પુક્કરિણી-કમલોં સે યુક્ત ગોલ આકારવાલી વાવડી, વાપી-ચાર કોનો વાલી વાવડી, દીર્ઘિકા-લમ્બે આકાર વાલી વાવડી, ગુજ્જાલિકા-વક્ર આકારવાલી વાવડી, સરઃ સરઃ પત્તિ-એક તાલાય સે દૂસરે તાલાવોં મે જલ જાને વાલે તાલાવ કે સમૂહ, સાગર-સમુદ્ર વિલપત્તિ-વિલોંકે જૈસે આકાર વાલે કૂઓં કી,

સ ધાતિમ કહેવાય છે તે બધાને બોધને તથા “વહુવિહાણિ” અનેક પ્રકારની “મલ્લાઈ” માળાઓ છે જે “ અહિય નયનમણસુહકરાઈ ” આખ અને મનને વધારેમા વધારે આનંદદાયક હોય છે, તેમને બોધને “વળસડે” એક જાતના છે અનેક જાતના વૃક્ષના સમૂહોને “પચ્ચય” પર્વતોને, “ગામાગરનગરાણિ” ગામ, આકર, નગરોને “સુહિય પુક્કરિણી વાવી-દીહિય ગુજાલિય સરસર પતિય-સાગર વિલપતિય લાઈય નર્દ-સર-તલાગ-વિલ્પિણો” ક્ષુદ્રિકા-નાનું જળારાય, પુક્કરિણી-કમળોથી યુક્ત ગોળાકારની વાવ, વાપી-ચાર ખૂણાવાળી વાવ સર સર પત્તિ-એક તળાવમાથી બીજા તળાવોમા પાણી જતું હોય તેવા તળાવોનો સમૂહ, સાગર, વિલપત્તિ-દરના

ત્યુચ્યતે, સાગર:=સમુદ્રઃ, ત્રિલપલ્લિકા.=ત્રિલાનીવવિલાનિ=કૂપાસ્તેપા તલ્લિકા
=કૂપશ્રેણિરિત્યર્થઃ, સ્વાતિકા=પરિસ્વાઃ, નદી=પ્રસિદ્ધા, સરઃ=સ્વાભાવિકસ્તડાગઃ,
તડાગઃ=કૃત્રિમઃ સરોવરઃ, વપ્રાઃ=ધાન્યક્ષેત્રાણિ, ઇપામિત્તરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, તાંસ્ત-
થોક્તાન્, દૃષ્ટ્વા, ક્તીદૃશાનેતાન્ ? ઇત્યાહ-‘ફુલ્લુપ્પલ્પડમપરિમલ્લિયાભિરામે’ ફુલ્લો
ત્પલ્પડમપરિમલ્લિયાભિરામાન્ તત્ર ફુલ્લાનિ=વિકાસિતાનિ યાનિ ઉત્પલાનિ=ચન્દ્ર
વિકાશિકમલાનિ, પદ્માનિ=સૂર્યવિકાશિકમલાનિ ચ તૈઃ પરિતઃ=સમન્તાન્મલ્લિતા
અતઃપ્ર-અભિરામાઃ=મનોહરાસ્તાંસ્તથોક્તાન્, પુનઃ કથમ્ભૂતાન્ ? ‘અણેગસડગ-
ગણમિદ્ગણવિચરિણે’ અનેકશકુનગણમિથુનવિચરિતાન્=અનેકાનિ-વહુવિધાનિ યાનિ
શકુનગણમિથુનાનિ-પક્ષિગણયુગલાનિ, વિચરિતાનિ-સચરિતાનિ યત્ર તાન્, ફુલ્લો-
ત્પલાદિપદાનિ શુદ્ધિકાદિવપ્રાન્તવિશેષણાનિ । તથા-‘વરમલ્લ-વિવિદ્-ભવણ-
તોરણ-ચેદ્ય-દેવકુલ-સમપ્પવા-વસહ-સુકયમયણાસણ-સીયરહ-સગલ-જાણ-
જુગ્ગ-સદણે’ વરમલ્લપરિવિધભવનતોરણચૈત્ય દેવકુલસમાપવાવસથસુકૃતશયના-
સનશિવિકારથશકૃત્યાનયુગ્યસ્યન્દનાન્, તત્ર-વરમલ્લપાઃ=શ્રેષ્ઠમલ્લપાઃ, વિવિધ
ભવનાનિ, તોરણાનિ પ્રસિદ્ધાનિ, ચૈત્યાનિ=ઉદ્યાનાનિ, દેવકુલાનિ પ્રસિદ્ધાનિ,

શ્રેણિ, સ્વાતિકા-પરિસ્વાઃ નદી-નદિયાં, સર-સામાન્યતાલાઽત્ર તડાગ-
કૃત્રિમ સરોવર, વપ્ર-ધાન્ય કે જેત જો (ફુલ્લુપ્પલ્પડમપરિમલ્લિયાભિ-
રામે) વિકાશિત-ઉત્પલોં સે, ચન્દ્રવિકાશિકમલોં સે સર્વ ઓર મલિત
હો રહે હો, ઓર હસી કારણ જિનસે મન મેં વિશેષ પ્રફુલ્લિતા આતી,
હો, તથા જો (અણેગસડગગણમિદ્ગણવિચરિણે) અનેક પક્ષિયોં કે યુગલ
જહા વિચરણ કર રહે હોં હન સર્વ કોં દેવકુલ સાધુ હનમેં આસક્તિ ન
કરે । તથા (વરમલ્લવિવિદ્ભવણતોરણચેદ્યદેવકુલસમપ્પવાવસહસુ-
કયસયણાસણસીયરહસગલજાણજુગ્ગસદણે) વરમલ્લ-શ્રેષ્ઠમલ્લ, વિ-
વિધભવન, તોરણ, ચૈત્ય-ઉદ્યાન, દેવકુલ, સમા, વપ્રા-પાનીયશાલા,

જેવા આગરના જવાઓની હાર, આતિકા-ફરતી આવેની ખાઈઓ, નદીઓ,
સર-સામાન્ય તળાવો, તડાગ-કૃત્રિમ સરોવર, વપ્ર-ધાન્યના જેતરે જે “ફુલ્લુ
ત્પલ્પડમપરિમલ્લિયાભિરામે” વિલિખિત ઉત્પલોથી ચન્દ્રવિકાસી કમળોથી બધી
તરફ ઘેરાયેલા હોય, અને એ જ કારણે મનને વધારે પ્રકૃતિલત બનાવતા
હોય, તથા “અણેગસડગગણમિદ્ગણવિચરિણે” અનેક પક્ષીઓના યુગલ બધા
વિચરતા હોય, તે બધું જોઈને માધુએ તેથી આસક્તિ કરવી જોઈએ નહીં તથા
‘વરમલ્લ-વિવિદ્ભવણ-તોરણ-ચેદ્ય-દેવકુલ-સમપ્પ-વાવસહ-સયણાસણ-સીયરહ
સગલજાણજુગ્ગસદણે’ વરમલ્લ શ્રેષ્ઠમલ્લ, વિવિધભવન, તોરણ, ચૈત્ય, -ઉદ્યાન,
દેવકુલ, સમા, વપ્રા પરબ, આવસથ પગિનાજડોના સ્થાન, સારી રીતે સજાવ-

સમા=પ્રસિદ્ધા, પ્રપા=પાનીયશાઠા, આવસથઃ=પરિવ્રાજકવસતિ, ગુહ્યતશયનાસનાનિ
 =સુકૃતાનિ=ગુપ્તકૃતાનિ=પ્રિથિતાનિ યાનિ શયનાનિ=શય્યાઃ, આમનાનિ=સિંહાસ-
 નાનિ ચ તાનિ તથોક્તાનિ, શિવિકા=' પાઠકી ' તિ પ્રસિદ્ધા, રથઃ=પ્રસિદ્ધઃ,
 શકટમ્=' ગાડા ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધમ્, યાનમ્=ગમનસાધન રથાદિકમ્, યુ-
 ગ્યમ્=અશ્વાદિવાહનમ્, સ્યન્દનો=રથવિશેષઃ, ણ્યામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ, તાસ્તથો-
 ક્તમ્, તથા ' નરનારિગણેય ' નરનારિગણાથ=સ્ત્રીપુરુષમમુદાયાથ, દૃષ્ટ્વા, કયમ્ભૂ-
 તાનેતાન્ ? इत्याह—' सोमपण्डिरुदरिसणिज्जे ' सोमપ્રતિરૂપદર્શનોયાન્-સોમ
 વત્ સૌમ્યતયા ચન્દ્રવત્ પ્રતિરૂપા =સુન્દરાઃ, અતર-દર્શનીયાઃ=દ્રષ્ટુ યોગ્યસ્તાન્
 પુનઃ કથમ્ભૂતાન્ ? ' અલક્રિયવિભૂસિણ ' અલકૃતવિભૂષિતાન્=અલકૃતાઃ=મુકુટાધ-
 વૈદ્યારૈ વિભૂષિતાઃ વસ્ત્રાદિભિઃ સજ્જિતાઃ યે તાન્, પુનઃ કથમ્ભૂતાન્ ? ' પુલ્વક-
 યેતવપ્પભાવસોહગસપ્પત્તે ' પૂર્વકૃતતપઃ પ્રભાવસૌભાગ્યસપ્રયુક્તાન્ પૂર્વકૃતતપઃ પ્ર-
 ભાવેણ પ્રાપ્ત યત્સૌભાગ્ય તેન સપ્રયુક્તા યે તે તથા તાન્ દૃષ્ટ્વા, તથા—' નડ-નટ્ટ-
 જલ્લ મલ્લમુદ્વિપવેલવગકહગ-પવગ-લાસગ-આઈક્ષ્વગ-લલ્લ-મલ્લ-તૂળ-ઇલ્લ-તુલ-
 વીણિય-તાલાયર-પકરણાણિ ' નટ નર્તક જલ્લમલ્લમોદ્વિક્ષિત્વિડમ્બક-કથક-

આવસથ-પરિવ્રાજકોં કે સ્થાન, સુકૃત-અચ્છી તરહ સે સજાયે ગયે
 શયન, આસન, પાલકી, રથ, ગાડા, યાન-ગમન કે સાધનમૂત વાહન,
 યુગ્ય-અશ્વાદિકવાહન, સ્યદન-રથવિશેષ, હન સવકો, તથા (નરનારિ-
 ગણેય) નર ઓર નારી કે વૃન્દ કો કિં જો (સોમપણ્ડિરુદરિસણિજ્જે)
 ચન્દ્રમા કે જૈસા સુન્દર આકાર વાલા હૈ ઓર હસી સે જો દર્શનીય બના
 હુઆ હૈ (અલક્રિયવિભૂસિણ) મુકુટ ઓદિ વિવધ અલકારોં સે એવે
 વસ્ત્રાદિકો સે સુસજ્જિત હૈ, (પુલ્વકય તવપ્પભાવસોહગ સપ્પત્તે)
 પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પ્રાપ્ત સૌભાગ્ય સે જો યુક્ત હૈ હન સૈવ કો
 દેવેકર કે તથા (નડ-નટ્ટ-જલ્લ-મુદ્વિપ-વેલવગ-કહગ-પવગ-લાસ-
 ગ-આઈક્ષ્વગ-લલ્લ-મલ્લ-તૂળ-ઇલ્લ-તુલવીણિય-તાલાયર-પકરણાણિ)

ટવાળા શયનસ્થાન, આસન, પાલખી, રથ ગાડા, યાન મુસાફરીના સાધનરૂપ
 વાહન, યુગ્ય અશ્વાદિ વાહન, સ્યદન ખાસ પ્રકારના રથ, એ બધાને તથા
 “ નરનારિગણેય ” નર અને નારીના સમૂહને કે જે “ સોમપણ્ડિરુદરિમ્ણિજ્જે ”
 ચન્દ્રમા જેવા સુદર આકારવાળા છે અને તેથી જ જે જેવા ગમે તેવા છે,
 “ અલક્રિયવિભૂસિણ ” મુકુટ આદિ વિવિધ અલકારો તથા વસ્ત્રોથી વિભૂષિત
 છે, “ પુલ્વકયતવપ્પભાવસોહગસપ્પત્તે ” પૂર્વકૃત તપના પ્રભાવથી પ્રાપ્ત થયેલ
 સૌભાગ્યથી જેઓ યુક્ત છે, એ સૌને જોઈને તથા “ નડ-નટ્ટ-જલ્લ-મલ્લ-
 મુદ્વિપ-વેલવગ-કહગ-પવગ-લાસગ આઈક્ષ્વગ-લલ્લ-મલ્લ-તૂળ-ઇલ્લ-તુલ-વીણિય-તાલાયર-પકરણાણિ ”

પ્લવક-લાસકારયાયક-લહ-મહ તૂણિક તુમ્પવીણિક તાલાચર પ્રકરણાણિ ત્વ,
નટનર્તકાદિપદાના વ્યાખ્યાઽસ્યેવપ્રથમભાગનાતોઽવગન્તવ્યાઃ, 'વહૂણિ' વહૂનિ-
અનેકવિધાનિ 'સુકરણાણિ' સુકરણાણિ=શોભનક્રિયાયુક્તાનિ દૃષ્ટ્વા, નટનર્તકા-
દીનાં વહુવિધાન્ મનોહરવ્યાપારાન્ દૃષ્ટ્વેત્યર્થઃ, તેષુ તથા 'અણેસુ ય' અન્યેષુ
ચૈતદ્વિન્નેષુ 'એવમાદૃષુ' એવમાદિકેષુ=એવમિધેષુ 'મણુન્નભદ્રેસુ' મનોજ્ઞભદ્રકેષુ
'રૂવેસુ' રૂપેષુ=ચક્ષુર્ગ્રાધિવિષયેષુ 'સમણેણ' શ્રમણેન=સાધુના 'ન સજ્જિયન્ત્વ' ન
સક્તવ્યમ્, ન રજ્જિયન્ત્વ' ન રક્તવ્યમ્ 'જાત્ત' યાવત્=યાત્કરણાત્ 'ન ગિજ્જિયન્ત્વ'
ન ગર્થિતવ્યમ્ 'ન મુજ્જિયન્ત્વ ન મોહિતવ્યમ્, 'ન વિણિઘાયમાવજ્જિયન્ત્વ' ન વિનિ-
ઘાતઆપત્તવ્ય. તથા-'ન લુભિયન્ત્વ ન લોબ્યવ્યમ્, 'ન તુસિયન્ત્વ' ન તોષ્યવ્યમ્,

નટ,-નર્તક, જહ્લ, મહ, મૌષ્ટિક, વેલવક, કથક, પૂલવક, લાસક,
આખ્યાયિક, લલ, મલ, તૂણિક, તુમ્પવીણિક, તાલાચાર, ઇન્સબ કે
મનોહર વ્યાપારોં કો જોં (વહૂણિ) અનેક પ્રકાર કે હોતે હૈં, ઓર
(સુકરણિ) શોભન ક્રિયા સપન્ન રહા કરતે હૈં, ઊનકો દેખ કરકે, તથા
(અણેસુ એવમાદૃષુ રૂવેસુ મણુન્નભદ્રેસુ) ઓર મી જો હસી પ્રકાર
કે મનોજ્ઞભદ્રક રૂપ હોં ઊન્હેં દેખ કરકે (સમણેણ) સાધુ કો (તેસુ)
ઊનમેં (ન સજ્જિયન્ત્વ) આસક્ત નહીં યનનાં ચાહિયે. (ન રજ્જિયન્ત્વ)
રાગ નહીં કરનાં ચાહિયે. યહા યાવત્ શબ્દ સે (ન ગિજ્જિયન્ત્વ)
ગૃહ્થિભાવ નહીં કરનાં ચાહિયે-અર્થાત્-ઊનમેં લલચાનાં નહીં ચાહિયે.
(ન મુજ્જિયન્ત્વ) ન મોહ કરનાં ચાહિયે, (ન વિણિઘાય આવજ્જિ-
યન્ત્વ) ઊનકે લિયે ચારિત્ર કા ભગ ન કરે, (ન લુભિયન્ત્વ) લોભ ન
કરે, (ન તુમિયન્ત્વ) પ્રસન્ન મન નહીં હોનાં ચાહિયે, (ન હસિયન્ત્વ)

હાચર-પ્રકરણાણિ" નટ, નર્તક, જહ્લ, મૌષ્ટિક, વેલવક, કથક, પૂલવક, લાસક
આખ્યાયિક, લલ, મલ, તૂણિક, તુમ્પવીણિક, તાલાચાર, એ બધાના મનોહર
વ્યાપારોં કે જે 'વહૂણિ' અનેક પ્રકારના હોય છે, અને "સુકરણિ" સુદર
ક્રિયા યુક્ત હોય છે, તેમને જોઈને તથા "અણેસુ એવમાદૃષુ રૂવેસુ મણુન્ન
ભદ્રેસુ" એ જ પ્રકારના બીજા પણ જે મનોજ્ઞ ભદ્રરૂપ હોય તેમને જોઈને
"સમણેણ" સાધુએ "તેસુ" તેમનામાં "ન સજ્જિયન્ત્વ" આસક્ત થવું જોઈએ
નહીં, "ન રજ્જિયન્ત્વ" રાગ કરવો જોઈએ નહીં, "ન ગિજ્જિયન્ત્વ" તેમાં
લલચાવું જોઈએ નહીં, "ન મુજ્જિયન્ત્વ" તેને માટે મોહ કરવો
જોઈએ નહીં, "ન વિણિઘાય આવજ્જિયન્ત્વ" તેને માટે ચારિત્રને ભગ ન
કરવો જોઈએ "ન લુભિયન્ત્વ" લોભ કરવો જોઈએ નહીં, "ન તુસિયન્ત્વ"

‘ન હસિયવ્વ’ ન હસિતવ્યમ્, તથા-અમણસ્તત્ર ‘ન સહ ચ મઢ ચ’ ન સ્મૃતિ ચ મતિ
 ચ ‘કુજ્જા’ કુર્યાત્ । એતત્સર્વમસ્યૈવ પ્રથમમાત્નાયા વ્યાખ્યાતમ્ । ‘પુનરવિ’
 પુનરપ્યુચ્યતેઅમણઃ ‘ચક્ષુહદિણ્ણ’ ચક્ષુરિન્દ્રિયેણ ‘અમણુણપાવગાહ’ અમ-
 નોજ્જપાપકાનિ ‘રુવાણિ’ રૂપાણિ ‘પાસિય’ દૃષ્ટ્વા ‘કિં તે’ કાનિ તાનિ-
 કથમ્ભૂતાનિ તાનિ રૂપાણિ ? इत्याह-‘गडि-कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-
 -कुज्ज-पगुल-वामण-अधिहग-एगचक्खु-विणिहय सपिसल्लग-वाहिरोगपीलिय’
 गण्डिकुष्ठिकुण्युदरिकच्छुल्लश्लीपदकुज पगुलवामनान्निगल्कैकचक्षुर्निहत सपिशा
 चक्षुष्याधिरोगपीडित-तत्र-गण्डी=गण्डो=हि कण्ठरोगविशेषः, स च वातपित्त श्ले
 ष्मसन्निपातैर्जायमानत्वाच्चतुर्विधः, स यस्यास्ति स गण्डी, गण्डमालावानित्यर्थः,
 कुण्ठी=कुष्ठमस्यास्तीति कुण्ठी-कुष्ठरोगवान्, कुष्ठमष्टादशविधम्, तत्र महाकु

આશ્ચર્ય સે હસના નહીં ચાહિયે, તથા (ન સહ ચ મઢ ચ તત્થકુજ્જા)
 ઔર ન ડનકી યાદ કરના ચાહિયે ઔર ન ડનમેં અપની બુદ્ધિ કો હી
 લગાના ચાહિયે । (પુનરવિ) હસી તરહ (અમણુણપાવગાહ) અમ-
 નોજ્જ અશુભ (રુવાહ) રૂપોં કો (ચક્ષુહદિણ્ણ) ચક્ષુ હદ્રિય સે
 (પાસિય) દેલ્લકર સાધુ કો ડનમેં રોપ-દ્વેપ નહીં કરના ચાહિયે ।
 (કિં તે !) લે અમનોજ્જ અશુભ રૂપ કોન ૨ સે હૈં હસ પ્રકાર કી શકા
 કા સમાધાન કરતે હુએ સૂત્રકાર અલ્લ ડન્હે ડન નિમ્નલિલ્લિત પદો
 દ્વારા પ્રેકાશિત કરતે હૈં-(ગડિ-કોઢિ-કુણિ-ડદરિ કચ્છુલ્લ-પઇલ્લ-
 કુજ્જ-પંગુલ-વામણ-અધિહગ-એગચક્કુ-વિણિહય સપિસલ્લગ-વાહી-
 રોગ-પીલિય) ગંડી-ગડમાલ-રોગવાલે, કુણ્ઠી-કુષ્ઠરોગવાલે, કુણિ-
 કુષ્ઠરોગી, ડદરરોગી, કચ્છુલ્લરોગી, શ્લીપદરોગી, કુજ્જ-કુવડા, પગુલ,

તેનાથી મનમા આનંદ પામવો નહીં, “ ન હસિયવ્વ ” તેને જોઈને આશ્ચ
 ર્યથી હસવું ન જોઈએ, તથા “ ન સહ ચ મઢ ચ તત્થકુજ્જા ” તેને યાદ
 કરવું જોઈએ નહીં કે તેમા ધ્યાન પરોવવું જોઈએ નહીં

“ પુનરવિ ” એ જ પ્રમાણે “ અમણુણપાવગાહ ” અમનોજ્જ અશુભ
 “ રુવાહ ” રૂપોને ‘ ચક્ષુહદિણ્ણ ’ ચક્ષુરિન્દ્રિયથી “ પાસિય ” જોઈને તેના
 પ્રત્યે રોપ-દ્વેપ કરવો જોઈએ નહીં, “ કિં તે ? ” તે અનુભવ કેપ કયા કયા
 છે તે શકાનું સમાધાન કરવાને માટે સૂત્રકરે નીચેના પદો દ્વારા તેમને જાહેર
 કરે છે—“ ગડિ-કોઢિ-કુણિ-ડદરિ-કચ્છુલ્લ- પઇલ્લ-કુજ્જ-પગુલ-વામણ-અધિહ
 ગ-એગચક્કુ-વિવિહય-સપિસલ્લગ-વાહિરોગ-પીલિય ” ગંડી-ગડમાળના રોગવાળા,
 કુષ્ઠરોગી, કુણિ-કુષ્ઠરોગવાળા, ડદરરોગી, કચ્છુલ્લરોગી, શ્લીપદરોગી, કુખડા,

પ્થસ્ય સપ્તભેદાઃ । તથા અરુગ-^૧દુમ્બર-^૨સ્પર્શજિહ્વ-^૩કરકપાલ-^૪કાકન-^૫પૌંડરીક
દદ્રુણિ । ઇતિ, મહત્ત્વ ચૈવામસાધ્યત્વાત્ । સામાન્યકુઠસ્યૈકાદશ ભેદાઃ, સ્થૂલામા-
રુક્ ૧ મહાકુપ્ઠૈ ૨ ઋકુપ્ઠ ૩ ચર્મદલ ૪ વિસર્પ ૫ પરીમર્પ ૬ વિચર્ચિકા ૭
સિધ્મ ૮ કટિમ ૯ પામા ૧૦ શતારુપ્ક ૧૧ સજ્જકાઃ । એવ સર્ગાણિ કુપ્ઠાન્યપ્ઠા
દશ । યદ્યપિ સર્વ કુપ્ઠ સન્નિપાતજમેવ જાયતે, તથાપિ-વાતાદિદોષોત્કટતયા

વામન, અધિહ્ન-જન્માન્ધ, અકચક્ષુ-કાના, ચિનિહતચક્ષુ-જન્મ કે
યાદ હોને વાલા અધા, સપિસલ્લક-સપિશાચ-ભૂતાદિ આવેશ વાલા,
અથવા સર્પિશલ્પક-ઘસીતે છુપ્ત ચલને વાલા હૃદયરોગી, વ્યાધિ-
પીડિત, ઇન સવ કો દેખકર ઇનમેં દ્વેષ તથા ઘૃણા નહીં કરનીં ચાહિયે ।

પૂર્વોક્ત પદોં કા અલગ-અલગ અર્થ ઇસ પ્રકાર હૈ-ગહી-વાતપિત્ત
ઔર સન્નિપાત-વાતાદિ ત્રિદોષ મિશ્રિત વિકાર સે ઉત્પન્ન હોને કે કારણ
ચાર પ્રકાર કે કઠ રોગવાલા, કુપ્ઠી-કુપ્ઠ અઠારહ પ્રકાર કા હોતા હૈ,
જિસમે સાત પ્રકાર કે મહાકુપ્ઠ હોતે હૈ ઔર ગ્યારહ પ્રકાર કે સામા-
ન્યકુપ્ઠ હોતે હૈ । (૧) અરુગ ૨ દુમ્બર ૩ સ્પર્શજિહ્વ ૪ કરકપાલ ૫
કાકન ૬ પૌંડરિક ઔર ૭ દદ્રુ । યે અસાધ્ય હોને સે મહાકુપ્ઠ માને
ગયે હૈ । સામાન્ય કુપ્ઠ ગ્યારહ પ્રકારકે યે હૈ-૧સ્થૂલામારુક્ ૨ મહાકુપ્ઠ
૩ એકકુપ્ઠ ૪ ચર્મદલ ૫ વિસર્પ ૬ પરીસર્પ ૭ વિચર્ચિકા ૮ સિ મ ૯ કિટિમ
૧૦ પામા શતારુપ્ક ૧૧ । યદ્યપિ સર્વ હી કુપ્ઠ સન્નિપાત સે હી ઉત્પન્ન
હોતે હૈ તથાપિ વાતાદિક દોષોં કી ઉત્કટતા સે ઇસમે ભેદ માના ગયા

લૂલા, વામન, જન્માન્ધ, ડાણીયા જન્મ પછી આધળા બનેલા, સપિસલ્લક-
સપિશાચ-ભૂતાદિ વળગાડવાળા, અથવા સપિશલ્પક-ઢસડાતા ચાલના હૃદયરોગી,
વ્યાધિપીડિત અને રોગ પીડિત એ બધાને જોઇને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ અથવા
ઘૃણા કરવી જોઇએ નહીં પૂર્વોક્ત પદોનો અલગ અલગ અર્થ આ પ્રમાણે
છે—“ગહી”—વાત પિત્ત અને સન્નિપાત-વાતાદિ ત્રિદોષ મિશ્રિત વિકારથી
ઉત્પન્ન થવાને કારણે ચાર પ્રકારના કઠરોગવાળા, “કુપ્ઠી”—કુપ્ઠ અઠાર પ્રકારના
હોય છે, જેમા સાત પ્રકારના મહાકુપ્ઠ હોય છે અને અગિયાર પ્રકારના
સામાન્ય કુપ્ઠ હોય છે (૧) અરુણ, (૨) દુમ્બર, (૩) સ્પર્શજિહ્વ, (૪) કર
કપાલ, (૫) કાકન, (૬) પૌંડરીક અને (૭) દદ્રુ એ સાતે અસાધ્ય હોવાથી
મહાકુપ્ઠ ગણાય છે અગિયાર પ્રકારના સામાન્ય કુપ્ઠ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્થૂલા-
મારુક્, (૨) મહાકુપ્ઠ, (૩) એક કુપ્ઠ (૪) ચર્મદલ, (૫) વિસર્પ (૬) પરીસર્પ (૭)
વિચર્ચિકા, (૮) મિધ્મ (૯) કિટિમ (૧૦) પામા, (૧૧) શતારુપ્ક જે કે અધા જ
કુપ્ઠ સન્નિપાતથી જ ઉત્પન્ન થાય છે છતાં પણ વાતાદિક દોષોની પ્રબળતાને

ભેદભાગ્ભવતીતિ વિજ્ઞેયમ્ । તથા-કુણિઃ=કુણ્ટ., અય ઠિ ગર્ભાધાનાદિ દોષાદ્ દસ્તૈ
કપાદો ન્યૂનૈરુપાણિર્ગામ્યતિ । તથા - ઉદરી=ઉદરરોગવાન, ઉદરરોગા અષ્ટ-
પ્રકારા તદુક્તમ્—

પૃથક્ સમસ્તૈરપિચાનિલૌઘૈઃ પ્લીહોદરં વદ્વગુદં તથૈવ ।

આગન્તુક વેસરમષ્ટમ તુ જલોદરં ચેતિ ભવન્તિ તાનિ ” ॥ ૧ ॥

एतेषु जलोदरमसाध्य शेषाणि तु साध्यानि । तथा-कच्छुल्लं=कण्डूतिमान् ,
श्लीषदः=श्लीषदरोगयुक्तः, श्लीषदलक्षणमेवमुक्तम्—“ प्रकुपिता वातपित्तश्लेष्मा
णोऽधोऽधः प्रपन्ना वक्षस्थलोरुजङ्घा-स्ववतिष्ठमाना कालान्तरे पादमाश्रित्य शनैः
शनैः शोथमुपजनयन्ति ” तदेवश्लीषदमुच्यते । अन्यदप्युक्तम्—

है इन अठारह प्रकार के कुण्ठरोगवाला, कुणी-कुण्ठरोगी (२) यह
रोग गर्भाधानादि के दोष से होता है । इसमें एक पैर छोटा हो जाता
है या एक हाथ छोटा हो जाता है । उदररोगी-उदररोग आठ प्रकार
का होता है, कहा भी है—

“ पृथक् १ समस्तै २ रपि चानिलौघैः ३, प्लीहोदर ४ वद्वगुद ५
तथैव । आगन्तुक ६ वेसर ७-मष्टम तુ जलोदर ८ चेति भवन्ति
तानि ॥ १ ॥ ”

पृथक् १, समस्त २, अनिलौघ ३ प्लीहोदर ४ वद्वगुद ५ आगन्तुक
६ वेसर ७ जलोदर ८ उदररोग के ये ८ प्रकार हैं । इनमें जलोदर रोग
असाध्य है, बाकी सब साध्य हैं । कच्छुल्ल-खुजली रोगवाला, श्लीष-
दरोगी-इस रोग के लक्षण इस प्रकार कहे हैं—

“ कुपि तावातपित्तश्लेष्माणोऽधोऽधः प्रपन्ना वक्षस्थलोरुजङ्घा
स्ववतिष्ठमाना कालान्तरे पादमाश्रित्य शनैः शनैः शोथमुपजनयन्ति ॥ ”

કારણે તેમાં ભેદ માનવામાં આવ્યા છે આ રીતે અઠાર પ્રકારના કુણ્ઠરોગી,
કુણિ-કુણ્ઠરોગી-આ રોગ ગર્ભાધાનાદિ દોષથી થાય છે તે રોગમાં એક હાથ
કે એક પગ ટૂંકો થઈ જાય છે ઉદરરોગી-ઉદરરોગ આઠ પ્રકારના હોય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ પૃથક્ ૧ સમસ્તૈ ૨ રપિ ચાનિલૌઘૈઃ ૩ પ્લીહોદર ૪ વદ્વગુદ ૫ તથૈવ ।
આગન્તુક ૬ વેસર ૭ મષ્ટમ તુ જલોદર ૮ ચેતિ ભવન્તિ તાનિ ॥ ૧ ॥ ”

(૧) પૃથક્, (૨) સમસ્ત, (૩) અનિલૌઘ, (૪) પ્લીહોદર (૫) વદ્વગુદ
(૬) આગન્તુક, (૭) વેસર અને (૮) જલોદર, એ આઠ પ્રકારના ઉદરરોગ
હોય છે તેમાં જલોદર અસાધ્ય રોગ છે, બાકીના બધા સાધ્ય છે “ કચ્છુલ્લ ”
રોગ, ખરજીવુ, ખસ, વગેરે ખુજલીરોગો, શ્લીષદરોગી-(હાથીપગાનો રોગી)
આ રોગના લક્ષણો નીચે પ્રમાણે કહેલા છે—

“ કુપિતા વાતપિત્તશ્લેષ્માણોઽધોઽધઃ પ્રપન્ના વક્ષસ્થલોરુજઙ્ઘાસ્વવતિષ્ઠ
માના કાલાન્તરે પાદમાશ્રિત્ય શનૈઃ શનૈઃ શોથમુપજનયન્તિ ”

‘પુરાણોદકભૂયિષ્ઠાઃ સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ ।

યે દેશાસ્તેષુ જાયન્તે શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥’

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ જાયતે શ્લીપદ નૃણામ્ ।

કર્ણોષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ, ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥ ઇતિ ।

હવે ચ ‘ફીલ પૉર’ હાથી પગા ’ ઇત્યાદિ નામભિર્લોકે પ્રસિદ્ધમ્ । તથા—
કુબ્જઃ=ગડુલઃ કુવડા’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધઃ । પદ્મુલઃ=પદ્મુલઃ=ગમનાસમર્થઃ, વામન =
સ્વર્વઃ—હસ્તગરીર ઇત્યર્થઃ । એતે કુબ્જશામનાદયો માતાપિતૃશુક્રશોણિતદોષેણ
ભવન્તિ । તદુક્તમ્—

યહ રોગ પ્રક્રુપિત હોકર જવ વાત પિત્ત ઓર કફ નીચે નીચે
શારીરિક ભાગોં મેં પહુંચ જાતે હૈ ઓર વક્ષસ્થલ, ઉરુ, જઘા, હનમેં
પ્રવેશ કર જાતે હૈં તથ વે કાલાન્તર મેં પૈર મે પહુંચ કર ધીરે ૨ ઉસમેં
શોથ-સૂજન કો ઉત્પન્ન કર દેતે હૈં ઇસી કા નામ શ્લીપદ રોગ હૈ, ઇસ
રોગ કા નામ ફિલપાવ હાથીપગા આદિ બી હૈ । ઇસકે ઓર બી
લક્ષણ કહે હૈં—

“પુરાણોદકભૂયિષ્ઠા’, સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ ।

યેદેશાસ્તેષુ જાયન્તે, શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ, જાયતેશ્લીપદનૃણામ્ ।

કર્ણોષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ, ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥

યહ રોગ ઉન દેશો મેં વિશેષ કર હોતા હૈ જિનદેશોં મેં પુરાના
પાનિ અધિક રૂપ મેં ભરા રહતા હૈ તથા જો સર્વ ઋતુઓં મેં શીતલ રહા
કરતે હૈ, કિતનેક યહ બી કહતે હૈ કિ યહ રોગ હાથ, પૈર, કાન,

ન્યારે વાત, પિત્ત અને ઝડ પ્રક્રુપિત થઈ ને શરીરના નીચેના ભાગોમા
પહોચી નીચ છે અને વક્ષસ્થળ, ઉરુ જઘા આદિમા પ્રવેશ કરે છે ત્યારે
સમય જતા પગમા પહોચીને ધીમે ધીમે તેમા સોળે ઉત્પન્ન કરે છે તે રોગનુ
નામ શ્લીપદરોગ છે આ રોગના બીજા નામે ફિલપગા હાથીપગા આદિ
પણુ છે તેના બીજા લક્ષણો પણ કહેલ છે—

“પુરાણોદકભૂયિષ્ઠાઃ, સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ

યેદેશાસ્તેષુ જાયન્તે, શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ જાયતે શ્લીપદ નૃણામ્ ।

કર્ણોષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥

જે દેશોમા પ્રાચીન પાણી વિશેષ પ્રમાણમા ભરાઈ રહે છે તે દેશોમા
આ રોગ વધુ પ્રમાણમા થાય છે વળી જે પ્રદેશ બધી ઋતુઓમા શીતળ
રહે છે ત્યાં પણ આ રોગ વધારે પડ્યાલગા જાય છે કેટલાક એમ પણ કહે

ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુવ્જઃ કુણિઃ પશુર્મૂકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તથા—અન્ધિલ્લકઃ=જાત્યન્ધઃ, એકચક્ષુઃ=કાણઃ, એતદ્ દોષદ્વય ચ ગર્ભગતસ્ય જાતસ્ય ચાપિ ભવતિ । ગર્ભગતો યયૈતદોષદ્વયભાગભવતિ, તદેવ વિજ્ઞાતયમ્—યદા હિ ગર્ભસ્થજીવસ્ય નેત્રદ્વય તેજો ન પ્રતિપદ્યતે તદા સ ગર્ભસ્થો જાત્યન્ધો ભવતિ । યદા ચૈક નેત્ર પ્રતિપદ્યતે નાપર, તદા સ કાણો ભવતિ । તદેવ ઓઠ ઓર નાસિકા મે ખી હોતા હૈ । કુવ્જ પશુ ઓર ચામન, યે માતા પિતા કે શુક્ર શોણિત કે દોષ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં, કહા ખી હૈ—

“ ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુવ્જઃ કુણિઃ પશુર્મૂકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥

અર્થાત્—ગર્ભ મે વાત કે પ્રકોપ હોને સે તથા દોહદ—ગર્ભિણી મનો-રથ કી તર્ફ ધ્યાન નહોં દેને સે અર્થાત્ ઉસકા અપમાન કરને સે કુવ્જક, કુણિ—કુણ્ઠ—પશુ ઓર લૂલે તથા લુતલોને વાલે વાલક ઉત્પન્ન હોતે હૈ । અધિલ જન્માન્ધ, કાના યે દોનો પ્રકાર કે વ્યક્તિ જવ ગર્ભ અવસ્થા સપન્ન હોતે હૈં તવ ઉસ સમય યદિ દોનોં નેત્ર ઇનમેં સે કિસી એક કે તેજ કો પ્રાપ્ત નહી કર પાતે હૈં તો વહ ગર્ભ જન્માન્ધ હોકર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—યદિ એક હી નેત્ર તેજ કો પ્રાપ્ત કર લેતા હૈ દૂસરા નહોં કર પાતા તો વહ ઉસ સમય કાના ઉત્પન્ન હોતા હૈ । વહી તેજ યદિ રક્તાનુગત હો જાતા હૈ તો શિશુ રક્તાક્ષ ઉત્પન્ન હોતા હૈ, પિત્તાનુગત હોના હૈ તો શિશુ પિત્તાક્ષ હોતા હૈ ઓર યદિ શ્લેષ્માનુગત હોતા

છે કે આ રોગ હાથ, પશુ, કાન, હોઠ અને નાકમા પશુ થાય છે કુવ્જ-પાગળાપશુ અને વામનતા માતાપિતાના શુક્ર તથા રક્તનાદોષથી થાય છે ડહુ પશુ છે

“ ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુવ્જ કુણિઃ પશુર્મૂકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥ ”

એટલે કે ગર્ભમા વાયુનો પ્રકોપ થવાથી તથા ગર્ભિણીનો દોહદ—મનોરથ પૂરો નહી કરવાથી, તેના દોહદની અવગણના કરવાથી કુણ્ઠો કુણિ—કુણ્ઠ, લૂલો, મૂગો અથવા તોતડો બાળક જન્મે છે અધિલ—જન્માન્ધ, કાણો, એ એ બન્ને પ્રકારના બાળકો જ્યારે ગર્ભમા હોય ત્યારે જો બન્ને આખો તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે બાળક જન્મથી જ અધ પેદા થાય છે જો એક જ આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લે છે પણ બીજી આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે જન્મથી જ કાણો હોય છે એ જ તેજ જો રક્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક રક્તાક્ષ—લાલ નેત્રવાળુ થાય છે, પિત્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક પિત્તાક્ષ પીળી આખવાળો જન્મે તે, અને જો શ્લેષ્માનુગત થાય તો તે શુક્રાક્ષ પેદા

તેજો યદિ રક્તાનુગત પિત્તાનુગત શ્લેષ્માનુગત ચ ભવતિ, તદા જાતકઃ ક્રમેણ રક્તાક્ષઃ પિત્તાક્ષઃ શ્લેષ્માક્ષઃ ભવતિ । તથા—ગિનિહતઃ=વિનિહતચક્ષુષ્ક ઇત્યર્થઃ, ઉત્પત્ત્યનન્તર યસ્ય નેત્રદ્વય નષ્ટ સ વિનિહત ઉચ્યતે । તથા 'સપિસલ્લગ' સપિશાચકઃ = પિશાચગૃહીત ઇત્યર્થઃ । અગ્રા—સર્પિશલ્યકઃ, ઇતિચ્છાયા । તત્ર—સર્પી—સર્પતીતિ સર્પી, સર્પણગીલ ઇત્યર્થઃ । અયં હિ પીઠે સમુગતિશ્ચ તત્ જહ્વાયોઃ કટપ્થા ચ દૃઢ વદ્ધ્યા હસ્તયોઃ પાદુકે આદાય, તદાશ્રયણેન સર્પતિ=સરતિ, અતઃ પ્રાય સર્પીત્યુચ્યતે । અયં કિલ ગર્ભદોષાત્કર્મદોષાન્ચ ભવતિ । શલ્યકઃ=હૃદયશલ્યાદિ રોગવાન્ । ઉભયો કર્મધારય । તથા—વ્યાધિરોગપીડિતઃ=વ્યાધિના—ચિરસ્થાયિપીડયા, રોગેણ—સંયોઘાતિપીડયા ચ પીડિતો યઃ સતથોક્ત ઇવા સમાહારદ્વન્દ્વસ્તત્તથોક્તમ્, તથા—'વિગયાણિ ય મયકલેવરાણિ' વિકૃતાનિ ચ મૃતકલેવરાણિ તથા—'સકિમિણકુહિય ચ' સક્રુમિકુચિત ચ—સહ કૃમિભિઃ, હૈ તો વદ શુક્લાક્ષ ઉત્પન્ન હોતા હૈ । વિનિહત—વિનિહતચક્ષુઉત્પત્તિ કે વાદ જિસકે નેત્ર ફૂટ જાતે હૈં વદ વિનિહતચક્ષુક કહલાતા હૈં એસે પ્રાણી સપિસલ્લગ—પિશાચગૃહીત અથવા સર્પિશલ્યક—સર્પી—પીઠ પર બેઠ કર જો ઉસે દોનોં જઘાઓં સે કટિ પર મજબૂતી કે સાથ વાંધકર ઓર દોનોં મેં દો કાષ્ઠ આદિ કી પાદુકાઓં કો લેકર ઉસકે સહારે સે સરકના હૈં ઉસકા નામ સર્પી હૈં એસે મરકને વાલે વ્યક્તિ કો કિ જો ગર્ભદોષ સે ઓર અપને કર્મકે દોષ સે—અશુભ કર્મ કે ઉદય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈં, એસા શલ્યક—હૃદય શલ્યાદિ રોગવાલા, વ્યાધિરોગ પીડિત—વ્યાધિરોગ સે પીડિત પ્રાણી, અર્થાત્—ચિરસ્થાયી પીડારૂપ વ્યાધિસે તથા સંયોઘાતિ રોગરૂપ પીડા સે જો કષ્ઠ પા રહા હૈં એસે દુઃખિત જીવ, ઇન સબ કો દેખ કર ઇનમે દ્વેષ ત યા ઘૃણા નહીં કરની ચાહિયે । (વિગયાણિય મયકલેવરાણિ) વિકૃત હુએ મૃતક કલેવરોં કો, (સકિમિણ

થાય છે વિનિહત-વિનિહતચક્ષુ-જન્મ પછી જેની આંખો ફૂટી જાય છે તે વિનિહતચક્ષુ કહેવાય છે સપિસલ્લગ-પિશાચગૃહીત અથવા સર્પિશલ્યક-સર્પી-પીઠ પર જેમાને અથવા બન્ને બાંધને કટિ પર મજબૂત રીતે બાંધીને અને બંને હાથમા બે લાડડા આદિની ઘોડી લઈને તેની મદદથી જે જમીનપર સરકે છે તેને સર્પી કહે છે એ રીતે સરકનાર વ્યક્તિ કે જે ગર્ભદોષથી અશુભ કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, "શલ્યક"—હૃદયશલ્ય આદિ રોગવાળા, વ્યાધિ રોગપીડિત વ્યાધિ રોગથી પીડાતા પ્રાણી એટલે કે દીર્ઘકાળતી ચાલ્યા આવતા પીડારૂપ વ્યાધિથી તથા હમેશા રોગરૂપ પીડાથી પીડાતા હુખી જીવો એ બાંધાને જોઈને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ કે ઘૃણા કરની જોઈએ નહીં "વિગયાણિય મયકલેવરાણિ" વિકૃત થયેલ મૃત શરી-

कुथितो दुर्गन्धयुक्तो यः स तथोक्तस्तै 'दब्बरारसि' द्रव्यराशि-पुरीपादिद्रव्यसमूहं च दृष्ट्वा 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एव प्रकारेषु 'अमणुण्णपावणसु' अमनोत्तपाप-केषु, तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु च 'तेसु' तेषु अमनोत्तपापकेषु समुपस्थितेषु 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'न रुसियव्व' न रोष्टव्यम्, 'जाव' यावत्पदात् 'न हीलियव्व', न निन्दितव्यम्, न रिसितव्यम्, न ट्रेत्तव्यम्, न भेत्तव्यम् न हन्तव्यम्, इति । पट्पदानि सग्राह्याणि । तथा-श्रमणेन, दुग्गुत्तावत्तियावि 'जुग्गुप्सावृत्तिरूपि' न 'लम्भा' लभ्या 'उप्पाणउ' उत्पादयितुम् । एवम्=अ-

कुहिय च दब्बरारसि) कृमिसहित सड़े दृष्ट दुर्गन्धित पदार्थ को और पुरीष आदि द्रव्य समूह को देख कर के इनमें तथा (अन्नेसु य एव-माइएसु) इनसे भिन्न और जो इसी तरह के (अमणुण्णपावणसु तेसु) अमनोत्त अशुभ पदार्थ समक्ष उपस्थित हो उनके ऊपर (समणेण) साधुको (न रुसियव्व) रोष नहीं करना चाहिये । यावत् पद से (न हीलियव्व) अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, उनकी (न निन्दियव्व) निंदा नहीं करना चाहिये, (न रिसियव्व) उनकी दूसरे के सामने निंदा नहीं करनी चाहिये । इसी तरह (न ट्टिन्दियव्व) अमनोत्तरूप आकृति का छेदन नहीं करना चाहिये । (न भिन्दियव्व) न भेदन करना चाहिये । (न वहेयव्व) न अनिष्ट रूपवाले व्यक्तिका वध करना चाहिये । इसी प्रकार से इन पदार्थों के ऊपर साधु को (न दुग्गुत्ता वत्तियावि लम्भा उप्पाणउ) जुगुप्सावृत्ति भी उत्पन्न करना उचित नहीं है । (एव) इस

शेने "सकिमिणकुहिय च दब्बरारसि" कृमिसहित सड़ता दुर्गन्ध युक्त पदार्थोंने अने पुरीष आदि द्रव्य समूहने लोभने तेभा तथा "अन्नेसुय एवमाइएसु" ये उपरात ये ४ प्रकारना भील "अमणुण्णपावणसु तेसु" अभनोत्त, अशुभ पदार्थ भासे भोणूह डोय तेमना पर "समणेण" साधुये "न रुसियव्व" रोष न करवो लोभये, "न हीलियव्व" तेनी अवज्ञा न करवी लोभये, "न निन्दियव्व" तेमनी निंदा न करवी लोभये, "न रिसियव्व" भीलनी आगण निंदा न करवी लोभये, ये ४ प्रभाये "न ट्टिन्दियव्व" अभनोत्त देभावनी वस्तुतु छेदन करायवु नही, "न भिन्दियव्व" लेहन करायवु नही, "न वहेयव्व" अनिष्ट रूपवाणी व्यक्तिने वध करायवो लोभये नही ये ४ प्रभाये ये पदार्थों प्रत्ये साधुये "न दुग्गुत्ता--वत्तिया वि लम्भा उप्पाणउ" जुगुप्सा वृत्ति पणु राभववी ते योग्य नथी "एव" आ गीते "चस्सुइदिय

સુદર્શિની ટીકા અ૦૫ સૂ૦૮ 'ચક્ષુરિન્દ્રિયસવર'નામકદ્વિતીયભાવનાનિરૂપણમ્૨૧૫

નેન પ્રકારેણ ' ચક્ષુઃક્રિયમાવણાભાવિઓ ' ચક્ષુરિન્દ્રિયભાવનાભાવિતો ' ભવઈ ' ભવતિ ' અતરપ્પા ' અન્તરાત્મા=જીવઃ। તતશ્ચ 'મણુણામણુણસુન્નિમદુન્નિમરાગદોસે' મનોજ્ઞામનોજ્ઞસુરમિદુરભિગગદ્દેપે, ' પણિહિયપ્પા ' પ્રણિહિતાત્મા ' સાહુ ' સાધુઃ ' મણવચણકાયગુત્તે ' મનોવચનકાયગુત્ત., ' સવુડે ' સવૃત. 'પણિહિડ્દિણ' પ્રણિ- હિતેન્દ્રિયો ' ધમ્મ ' ધર્મ ' ચરેજ્જ ' ચરેત્ । ણ્ણા પદાનાં વ્યાગ્ન્યાઽસ્યૈવ પ્રથમ ભાવનાયા દ્રષ્ટવ્યા।।। સૂ૦ ૮ ॥

પ્રકાર સે (ચક્ષુ ઇન્દ્રિય માવણાભાવિઓ અતરપ્પા) જવ ચક્ષુ ઇન્દ્રિય કી ભાવના સે ભાવિત અતરાત્મા હોતા હે તવ વહ (મણુણામણુણ- સુન્નિમદુન્નિમરાગદોસે પણિહિયપ્પા) મનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુઃક્રિય કે અશુભ વિ- પયમે રાગદ્વેષ સે રહિત હોને સે વ્યવસ્થિત આત્માવાલા (સાહુ) સાધુ(મ- ણવચણકાયગુત્તે) અપને મન, વચન ઓર કાયરૂપ યોગોકો શુભ અશુભકે વ્યાપાર સે સુરક્ષિત કર લેતા હે ઓર (સવુડે) સવર સે યુક્ત વન કર (પણિહિડ્દિણ) અપની ચક્ષુઃક્રિય કો વશમેં કર કે (ધમ્મ) ચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા (ચરેજ્જ) પાલક વન જાતા હે ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતકી દ્વિતીય ભાવના જો ચક્ષુ ઇન્દ્રિય સવર નામકી હે વહ કહી હે । હસ ભાવનામેં સાધુ કો એસા વિચાર કરના સરજાયા ગયા હે કિ વહ હસ પ્રકાર સે અપની ચક્ષુરિન્દ્રિય કી પરિણતિ કો એસી વિચારધારા સે સુદ્ધરૂપ મેં વાધ કર રહે કિ જિસસે વહ ચક્ષુરિન્દ્રિય કે વિષયભૂત મનોજ્ઞ રૂપમે

ભાવણા ભાવિઓ અન્તરપ્પા ” ત્યારે અતરાત્મા ચક્ષુ ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થાય છે ત્યારે તે “ મણુણામણુણસુન્નિમદુન્નિમરાગદોસેપણહિયપ્પા ” મનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના શુભ વિષયમા અને અમનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના અશુભ વિષયમા રાગદ્વેષથી રહિત થવાથી વ્યવસ્થિત આત્માવાળો “સાહુ” સાધુ “ મણવચણકા યગુત્તે ” પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ યોગોને શુભ અશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત બનાવી લે છે અને “ સવુડે ” સવરથી યુક્ત બનીને “ પણિહિડ્દિણ ” પોતાની ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને ડાળુમા રાખીને “ ધમ્મ ” ચારિત્રયરૂપ ધર્મ નો “ ચરેજ્જ ” પાલક બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની ચક્ષુઇન્દ્રિય સવર નામની બીજી ભાવના બતાવી છે આ ભાવના દ્વારા સાધુને એ વિષય સમજાવવામા આવ્યો છે કે તે એવી પોતાની ચક્ષુઇન્દ્રિયની પ્રવૃત્તિને એવા પ્રકારની વિચાર ધારાથી બાધી રાખે કે જેથી ચક્ષુઇન્દ્રિય વડે દ્રષ્ટિગત થતા

તૃતીયાં ભાવનામાહ—‘ તડય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તડયં ઘાણિદિણ અઘ્ઘાઙય ગધાઙ મણુન્નભદ્-
ગાઙ, કિં તે ? જલચર-થલચર-સરસ-પુષ્પલ-પાણભોયણ-
કુટ્ટ--તગર--પત્ત--ચોય-દમણગ--મરુચ-પ્પલારસ-પક્કમસિ-
ગોસીસ-સરસચંદણ--કપ્પૂરલવગ-અગુરુકુકુમકકોલ-ઉસીર-
સેસચંદણ-સુગંધસારગજુત્તિવરધૂવવાસે-ઉડયપિડિમણિહારિ-
મગંધિણસુ-અન્નેસુ-ય-એવમાઙ્ગણસુ-ગધેસુ-મણુન્નભદ્દણસુ-ન-
તેસુ-સમણેન-સજ્જિયવ્વ-જાવ-ન-સઙ્ગં-ચ-મઙ્ગ-ચ-તરથ-કુજ્જા,
પુણરવિ-ઘાણિદિણ અઘ્ઘાઙય ગંધાણિ અમણુન્નપાવગાઙ,
કિં તે ? અહિમહ--અસ્સમહ--હરિથિમહ--ગોમહ--વિગ--સુણગ-
સિયાલ--મણુય-મજ્જાર--સીહ--દીવિય-મય-કુહિય-વિણઢ-

તથા અમનોજ્ઞરૂપમેં રાગદ્વેષ ન કર સકે । મનોજ્ઞરૂપ સમક્ષ ઉપસ્થિત હો
તો ઉસે દેશ્વ કર ઉસમે રાગાદિ પરિણતિસે ઉસે ઘથ નહીં જાનાં ચાહિયે
ઔર અશુભ રૂપ હો તો ઉસમે દ્વેષ પરિણતિ સે અપને આપકો દુઃખિત
નહીં કરનાં ચાહિયે । દોનો પ્રકારકી વિષય સનિધાનતા મેં ઉસકો સમ-
ભાવી રહનાં ચાહિયે । જો એસા નહીં કરતાં હૈ વહ મહાન્ અનર્થકા ભાગી
બનતા હૈ । હસ પ્રકાર ચક્ષુરિન્દ્રિય કી ભાવના સે ભાવિત હુઆ વહ
સાધુ અપને ત્રિયોગોં કો શુભાશુભ રૂપ વ્યાપાર સે સુરક્ષિત રખતા હુઆ
ચક્ષુ ઇન્દ્રિય કો વશમેં કર લેતા હૈ ઔર ચારિત્રરૂપ ધર્મકા પાલક બન
કર અપને પરિગ્રહ વિરમણરૂપ વ્રતકો સુસ્થિર બના લેતા હૈ ॥ સૂ.૦૮ ॥

મનોજ્ઞ તથા અમનોજ્ઞ રૂપમા તેને રાગદ્વેષ ન થાય જો તેની સમક્ષ મનોજ્ઞ
પદાર્થ હાજર થાય તો તેમનામા રાગાદિ પરિણતિથી બધાવુ જોઈએ નહીં
અને જો અશુભ રૂપ હોય તો તેના પ્રત્યે દ્વેષ વૃત્તિ હાજરીને યોતાની બાતને
હુ ખી કરવી જોઈએ નહીં બન્ને પ્રકારના વિષયો સમક્ષ તેને તો સમભાવ
યુક્ત રહેવુ જોઈએ જે તે પ્રમાણે કરતો નથી તે મહા અનર્થને પાત્ર થાય છે
આ પ્રમાણે ચક્ષુરિન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિતબનેલા તે સાધુ યોતાના ત્રણે યોગને
શુભાશુભ પ્રવૃત્તિઓથી સુરક્ષિત રાખીને ચક્ષુ ઇન્દ્રિય પર ગ્રાણી જમાવે છે અનેચારિ-
ત્રરૂપ ધર્મનુ પાલન કરીને યોતાના પરિગ્રહ વિરમણવ્રતને સુસ્થિર બતાવે છે ॥સૂ. ૮॥

કિમિળ વહુદુરભિગંધાઈ, અન્નેસુ ય એવમાડણસુ ગધેસુ અમ-
ણુન્નપાવણસુ ન તેસુ સમગેણ રૂસિયઠ્ઠં ન હીલિયઠ્ઠ જાવ
પણિહિંદિણ ચરેજ્ઞ ધમ્મ ॥ સૂ. ૯ ॥

ટીકા—‘ તદ્ય ’ તૃતીયા ધ્રાણેન્દ્રિયસવરણાભિવેયાં ભાવનામાદ—
‘ ધાણિદિણ ’ ધ્રાણેન્દ્રિય ‘ મણુન્નભદગાઈ ’ મનોજ્ઞ ભદ્રકાન્ ‘ ગમાઈ ’ ગન્ધાન્
‘ અગ્વાઈય ’ અત્રાય ‘ કિંતે ’ કાન્ તાન્=કથમ્ભૂતાંસ્તાન્ ગન્ધાન્ ? ઇત્યાહ—
‘ જલચર-થલચર-સરસ-પુષ્પફલભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય દમણગ-મરુય
-એલારસ પક્કમસિ - ગોસીસ-સરસ-ચદણ-કપ્પૂર-લવગ- અગર-કુકુમ-કકોલ-
-ઉસીર-સેસ-ચદણ-સુગધસારગ-જુત્તિવરધૂવવાસે ’ જલચર-સ્વલચર-સરસ-પુષ્પ-
ફલ-પાનભોજન-કુણ્ઠ-તગરપત્ત-ત્વચા દમનક-મરુકૈલારસ-પક્કમાંસી-ગોશીર્પ-

અત્ર સૂત્રકાર પરિગ્રહ વિરમણ વ્રત કી તીસરી ભાવના કો સમઘાતે
હે—‘ તદ્ય ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) હસ વ્રતકી તીસરી ભાવનાકા નામ ધ્રાણેન્દ્રિય સંવરણ
હે । હસ ભાવનાવાલે સાધુ કો ધ્રાણેન્દ્રિયકે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધ કો સૂઘ
કરકે રાગ નહીં કરના ચાહિયે ઓર અમનોજ્ઞ પાપક અશુભગધો કો
સુઘકર દેષ નહીં કરના ચાહિયે । હસ સૂત્રમેં હસી વિષય કો સૂત્રકાર
વિશેષરૂપ સે સ્પષ્ટ કરતે હે (કિંતે) વહ મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધ કૌન હે
હસ પ્રકાર કી આજ્ઞા કા ઉત્તર દેતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હે—(જલચર-
થલચર-સરસ-પુષ્પફલ-પાણભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય - દમણક-
મરુય-એલારસ-પક્કવમભિગોસીસ-સરસચદણ - કપ્પૂર-લવગ - અગુરુ
કુકુમ-કકોલ-ઉસીર-સેસચદણ-સુગધ-સારગ-જુત્તિવર-ધૂવવાસે)

હવે સૂત્રકાર પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની ત્રીજી ભાવના સમજાવે
છે—“ તદ્ય ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” આ વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું નામ ધ્રાણેન્દ્રિય
સવરણ છે આ ભાવનાવાળા સાધુએ ધ્રાણેન્દ્રિયને માટે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધને
સૂઘીને તેમા રાગ ડગ્વો નોંધીને નહીં અને અમનોજ્ઞ પાપક અશુભ ગંધને
સૂઘીને તેમના પ્રત્યે દેષ ડગ્વો નોંધીને નહીં એ જ વિષયનું સૂત્રકાર વિસ્તારથી
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે “ કિંતે ” તે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધ શેની શેની હોય છે તે
પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે—“ જલચર-થલચર-સરસ-પુષ્પફલ-
પાણભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય-દમણક-મરુય-એલારસપક્કમસિ-ગોસીસ-સરસચદ
ણ-કપ્પૂર-લવગ-અગુરુ-કુકુમ-કકોલ-ઉસીર-સેસચદણ-સુગધ સારગ જુત્તિવર

सरसचन्दन-कर्पूर-लवङ्गागरुकुशुमफलोलीरश्वेतचन्दनयुगन्सारद्रव्युक्तिवरधूप-
 वासान्-तत्र-जलचराणि=जले समुत्पन्नानि पुष्पादीनि, स्थलचराणि=स्थले समु-
 त्पन्नानि सुगन्धिपुष्पादीनि, सरसानि-रसयुक्तानि पुष्पफलपानभोजनानि, कुष्ठ=
 सुगन्धिद्रव्यविशेषः, तगरः, धूपविशेषः, पत्रम्=तमालपत्रम्, 'चोय' त्वचा=
 सुगन्धिवृक्षत्वचा, दमनकः=पुष्पजातिविशेषः, मरुकः='मरुआ' इति भाषाप्रसिद्धो
 वनस्पतिविशेषः, एलारसः=एलायाः 'इलायची' इति प्रसिद्धाया रसः, 'पिक्वमसी'
 पक्वमासी-परिपक्वगन्धद्रव्यविशेषः, गोशीर्षम्=एतन्नामक चन्दनम्=सरसचन्दनम्
 =श्रीखण्डचन्दनम्, कर्पूर-प्रसिद्धः, लवङ्गानि-प्रसिद्धानि, अगुरु=धूपविशेषः,
 कुङ्कुमम्='केशर' इति प्रसिद्धम्, ककोलः=फलविशेषः, उशीरम्=गौरगमूल 'खश'
 इतिप्रसिद्धम्, श्वेतचन्दन प्रसिद्धम्, सुगन्धसारद्रव्युक्तिवरधूपयामः=सुगन्धानां=शो-
 भनगन्धवता सारङ्गाणां=कमलपत्राणां युक्तिर्योजन यत्रैतादृशो यो वरधूपयामः=
 धूपद्रव्यविशेषः, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तांस्तयोक्तानां प्रायः 'समणेण' श्रम-
 णेन-साधुना 'उडयपिण्डिमणिहारिमगधिणसु' ऋतुनपिण्डिमनिर्हारिमगन्धिकेषु=

जलचर-जल में उत्पन्न हुए सुगन्धित पुष्पों की, स्थलचर-स्थल में उत्पन्न
 हुए खुशबूदार फूलों की, सरस-रस युक्त पुष्प, फल, पान, भोजनों की,
 कुष्ठ-सुगन्धित द्रव्य की, तगर-धूपविशेष की, पत्र-तमालपत्र की, चोय-
 सुगन्धित वृक्ष की छाल की, दमनक-पुष्पजाति विशेष की, मरुक-मरुआ
 की, इलायची के रस की, पक्वमसी-परिपक्वगन्धद्रव्य विशेष की, गोशीर्ष
 चन्दन की, श्रीखण्डचन्दन की, कर्पूर की, लवङ्ग-लोगो की, अगुरुधूप की,
 कुङ्कुम-केशर की, ककोल नामक फलविशेष की, उशीर-खश की,
 श्वेतचन्दन की, तथा जिसमें शोभन गन्धवाले कमल पत्रों का योजन-
 समिश्रण-हुआ हो ऐसे उत्तम धूपविशेष की, सुगन्ध को सूघ करके,
 तथा (उडयपिण्डिमणिहारिमगधिणसु) ऐसी सुगन्ध से युक्त द्रव्यों के

धूपवासे " जलचर-जलमा उत्पन्न थयेला सुगन्धित पुष्पोनी, स्थलचर-जमीन
 पर उत्पन्न थयेला सुगन्धित फूलोनी, सरस-रसदात्र कुव, इण, पान, भोजनोनी
 कुष्ठ-सुगन्धित द्रव्यनी, तगर-ऐक जातना धूपनी, पत्र-तमालपत्रनी, चोय-
 सुगन्धित वृक्षनी छालनी, दमनक-ऐक जातना फूलनी, मरुक-डमरानी, इलाय-
 चीना रसनी, पक्वमसी-ऐक जातनु सुगन्धि द्रव्यना, गोशीर्ष चन्दनी, श्री
 खण्ड चन्दनी, कर्पूरनी, लवङ्गनी, अगुरु धूपनी, कुङ्कुम-केशरनी, ककोल
 नामना ऐक जातना फूलनी, उशीर-सुगन्धिवाणानी श्वेतचन्दनी, तथा जेमा
 सुंदर गन्धवाणा डमण पत्रोनु मिश्रण थयु होय जेवा उत्तम प्रभारना धूपनी
 सुगन्ध सूधीने तथा " उडय पिण्डिमणिहारिमगधिणसु " जे द्रव्योमा ऋतुने

ઋતુજઃ=કાલોચિતઃ પિણ્ડમઃ=પિણ્ડભૂતો=ચહુલો નિર્હાસિમો દૂરતરપ્રદેશગામી યો
ગન્ધઃ, સ ત્રિધતે યેષુ તેષુ દ્રવ્યેષુ, તથા—' અણેસુ ય એવમાહણસુ ગન્ધેસુ 'અન્યેષુ
ચૈવમાદિકેષુ ગન્ધેષુ, કપમ્ભૃતેષુ ? इत्याह ' मणुण्णभद्रएसु' मनोज्ञभद्रकेषु 'तेसु'
તેષુ ગન્ધેષુ ' ન સજ્જિયવ્વ ' ન સક્તવ્યમ્ 'જાવ ' યાવત્-યાવત્કરુણાત્-ન રક્ત-
વ્યમ્, ન ગદ્ધિતવ્યમ્, ન મોહિતવ્યમ્, ન વિનિવાતઆપત્તવ્યઃ, ન લોબ્ધમ્, ન
તોષ્ટવ્યમ્, ન હસિતવ્યમ્, इतिसग्राह्यम् । तथा-श्रमणः ' तन्थ ' तत्र गन्धविषये
'सइ च मइ च' स्मृतिं च मतिं च 'न कुज्जा' न कुर्यात् । ' पुणरवि ' पुनरप्यु-
च्यते—' घाणिदिण्ण ' घ्राणेन्द्रियेण ' अमणुण्णपापगाइ ' अमनोज्ञपापकान्,

કિ જિનમેં સુગન્ધ ઋતુ કે અનુકૂલ પિણ્ડીભૂત હોરુર રહ રહી હો ઓર
દૂર પ્રદેશતક જિન કી વહ સુગન્ધ ફેલ રહી હો ઉપસ્થિત હોને પર ઉન
મેં તથા (અણેસુ એવમાહણસુ મણુગ્ગભદ્રણસુ) ઇન સે મિત્ત ડસી પ્રકાર
કે ઓર બી જો મનોજ્ઞ ભદ્રક ગન્ધયુક્ત પદાર્થ હોં ઉનકે સમક્ષ મે આને
પર (સમણેણ) સાધુ કો ઉનકી (તેસુ) ઉન મનોજ્ઞ ભદ્રક ગન્ધો મે
(ન સજ્જિયવ્વ જાવ ન સઈ ચ મઈ ચ તત્થ કુજ્જા) આમક્ત નહી હોના
ચાહિયે-યાવત્ ઉનમેં સ્મૃતિ કો ઓર અપની મતિ કો નહી લગાના
ચાહિયે । યહા યાવત્ શબ્દ સે " ન રજ્જિયવ્વ ન મિજ્જિયવ્વ, ન સુજ્જિ-
યવ્વ, ન વિણિધાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન લુસિયવ્વ ન હસિ-
યવ્વ " ઇન પદોં કા સગ્રહ ક્રિયા ગયા હૈ । ઇનકા અર્થ પહેલે કર દિયા
ગયા હૈ વહા સે સમજ્ઞ લેના ચાહિયે ।

इसी तरह अमनोज पाप गत्र में रोप आदि न करना चाहिये इसी
घात को कहते हैं—(पुणरवि) इसी तरह से (घाणिदिण्ण) घ्राणेन्द्रिय

અનુકૂળ સુગન્ધ ભરેલી હોય અને તેમની તે સુગન્ધ દૂર દૂરના પ્રદેશ સુધી ફેલાતી
હોય, એવા સુગન્ધિત દ્રવ્યો મોજૂદ હોય તો તેમા તથા " અણેસુ એવમાહણસુ
મણુગ્ગભદ્રણસુ " ઉપરાત તેમના જેવા જ મનોજ્ઞ ભદ્રક ગન્ધવાળા જે પદાર્થો
હોય તે પાસે હોય તો પણ " સમણેણ " સાધુએ તેમની " તેસુ " તે તે
મનોજ્ઞ ગન્ધોમા " ન સજ્જિયવ્વ જાવ ન સઈ ચ મઈ ચ તત્થકુજ્જા " આમક્ત
થવુ જોઈએ નહી ત્યાથી શરૂ કરીને તેને યાદ કરવી નહી કે તેનો વિચાર
પણ કરવો નહી ત્યા સુધી સમજી લેવાનુ છે અહી યાવત્ શબ્દથી " ન
રજ્જિયવ્વ, ન મિજ્જિયવ્વ, ન સુજ્જિયવ્વ, ન વિણિધાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિ-
યવ્વ, ન લુસિયવ્વ, ન હસિયવ્વ " એ પહેનો અર્થ ગ્રહણ કરવાનો, છે તેમના
અર્થ આગળ આવી ગયા છે તો ત્યાથી સમજી લેવા

એ જ પ્રમાણે અમનોજ પાપક ગન્ધ પ્રત્યે રોપ આદિ કરવા જોઈએ
નહી એ વાત સૂત્રકાર કહે છે—“પુણરવિ” આ રીતે ‘ઘ્રાણિદિણ’ ઘ્રાણે

ગુપ્તઃ સદૃતઃ, ' इत्येतेषां सग्रहः, तथा—' पणिहिइदिण्' पणिहितपञ्चेन्द्रियः—पणि-
हितानि=वशीकृतानि इन्द्रियाणि येन स तथोक्तः सन् ' धम्म ' धर्म ' चरेज्ज '
चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ९ ॥

રૂપ ઘ્રાણેન્દ્રિય કે શુભ ઓર અમનોજ્ઞ કે અશુભ વિષય મેં રાગદ્વેષ કરને સે રહિત હો જાના હૈ । ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત બના હુઆ સાધુ અપને મન વચન ઓર કાયરૂપ યોગોં કો શુભ અશુભ વ્યાપાર સે સુરક્ષિત કર લેતા હૈ ઓર ઘ્રાણેન્દ્રિય કે શુભાશુભ વિષય મેં શુભાશુભ પરિણતિ જન્ય કર્મવધન કી નિવૃત્તિરૂપ સવર સે યુક્ત હો જાતા હૈ ઓર (પણિહિદિણ ચરેજ્ઞ ધમ્મ) વશીકૃત ઇન્દ્રિયોં વાલા હોકર ચારિત્રરૂપ ધર્મ કા પાલક બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પરિગ્રહ-વિરમણ વ્રત કી ત્રીસરી ભાવના કા ઉલ્લેખ કિયા હૈ । ઇસ ભાવનાકા નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય સંવરણ હૈ । ઇસમેં સાધુ અપની ઘ્રાણેન્દ્રિયકો સુગંધ ઓર દુર્ગંધકે સંબંધ હોને પર પક્ષપાતિની નહીં બનતા હૈ । યદિ વહ એસા કરતા હૈ તો મહાન અનર્થ કા પાત્ર હોતા હૈ । ડસે નવીન કર્મોં કા વધક માના જાતા હૈ । સુગંધ ઓર દુર્ગંધ કે વિષયભૂત કિતનેક પદાર્થોં કો સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા સમજાયા હૈ । અતઃ ચરિત્રધર્મ કો પૂર્ણરૂપ સે પાલન કરને કે લિયે સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ઇસ પ્રકાર કી જવર સ્થિતિ ડસકે સમક્ષ હો તો વહ સમભાવી બના રહે ॥ સૂ० ૯ ॥

યના શુભ અને અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ વિષયોમા રાગ અને દ્વેષથી રહિત થઈ જાય છે આ પ્રકારની સ્થિતિથી યુક્ત થયેલ સાધુ પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ યોગોને શુભ અશુભ વ્યાપારથી સુરક્ષિત કરી નાખે છે, અને ઘ્રાણેન્દ્રિયના શુભાશુભ વિષયમા શુભાશુભ પરિણતિજન્ય કર્મવધનની નિવૃત્તિરૂપ સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે અને “ પણિહિદિણ ચરેજ્ઞ ધમ્મ ” સયમી ઇન્દ્રિયવાળો થઈને ચારિત્રરૂપ ધર્મનું પાલન કરનાર બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણવ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે ભાવનાનું નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય સંવરણ છે તેમા એ બતાવ્યું છે કે સુગંધ અને દુર્ગંધનો સંબંધ થતા સાધુ પોતાની ઘ્રાણેન્દ્રિયને પક્ષપાતી બનાવતો નથી જો તે એણે કરે તો મહાન અનર્થને પાત્ર થાય છે, તેને નવીન કર્મોના વાધનાર માનવામા આવે છે સુગંધ અને દુર્ગંધયુક્ત કેટલાક પદાર્થો સૂત્રકારે આ સૂત્રમા દર્શાવ્યા છે તેથી ચારિત્રધર્મનું સંપૂર્ણ રીતે પાલન કરવાને માટે સાધુનું કર્તવ્ય છે કે તેણે ઘ્રાણેન્દ્રિયના વિષયભૂત સુગંધ તથા દુર્ગંધયુક્ત પદાર્થો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો જોઈએ ॥ સૂ० ૯ ॥

ચતુર્થી ભાવનામાહ—‘ ચત્થ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ચત્થં જિઠ્ઠિમદિણ સાહય રસાણિડ મણુણ
 મદગાઈ, કિ તે ? ઉગ્ગાહિસ વિવિહપાણ મોયણ ગુલકય સ્વડ-
 કય તેલ્લવયકય મક્કલેસુ વહુવિહેસુ લવણરસસંજુત્તેસુ, વહુ-
 પ્પકારમજ્જિયનિટ્ટાણગદાલિયવ સેહંવ દુદ્ધદહિ--સરયમજ્જ-
 વરવારુણી સીહુકાવિસાયણ સાગદ્ધારસવહુપ્પગારેસુ ય મોયણેસુ
 ય મણુણવણગન્ધરસપ્પાસવહુદઠ્ઠસંમિણેસુ અણેસુ ય
 એવમાહિણેસુ રસેસુ મણુણમદણેસુ ન તેસુ સમણેણ સજ્જિ-
 યઠ્ઠં જાવ ન સહ ચ મહ ચ તત્થ કુજ્ઞા । પુણરવિ જિઠ્ઠિમ-
 દિણ સાહયરસાઈ અમણુણપાવગાઈ, કિ તે ? અરસવિ-
 વિરસસીયલુલ્લખણિજ્જપ્પમાણમોયણાઈ દોસી વાવણાકુહિય
 પૂહય અમણુણવિણટ્ટપ્પસૂય વહુદુઠ્ઠિમગધિયાઈ તિત્તકહુય-
 કસાય અવિલરસલિદનરિસાઈ અણેસુ ય એવમાહિણેસુ રસેસુ
 અમણુણપાવણેસુ ન તેસુ સમણેણં રુચિયવઠ્ઠં જાવ ચરેજ્જ
 ધમ્મ ॥ સૂ૦૧૦॥

ટીકા—‘ ચત્થ ’ ચતુર્થી જિહ્વેન્દ્રિય સવરણલક્ષણા ભાવનામાહ—‘જિઠ્ઠિમ
 દિણ ’ જિહ્વેન્દ્રિયેણ ‘ મણુણમદગાઈ ’ મનોજભદ્રકાન્ ‘ રસાણિ ડ ’ રસાંસ્તુ

અવ સૂત્રકાર હસ વ્રત કી ચૌથી ભાવના કો કહતે હૈ—

‘ ચત્થ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ચત્થ) ચૌથી ભાવના કા નામ જિહ્વેન્દ્રિયસવરણ હૈ । હસ
 ભાવનાકે વશવર્તી હુણ સાધુકો જિહ્વા ઇન્દ્રિયકે મનોજભદ્રક વિષયમે ઓર
 અમનોજ અભદ્રક વિષય મેં રાગદ્વેષ નહીં કરના ચાહિયે—પ્રત્યુત સમભાવ

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ચૌથી ભાવના બતાવે છે—“ ચત્થ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ચત્થ ” ચૌથી ભાવનાનું નામ જિહ્વેન્દ્રિય સવરણ છે
 આ ભાવનાનું પાલન કરનાર સાધુએ જિહ્વા ઇન્દ્રિયના મનોજભદ્રક વિષયોમા
 અને અમનોજ અભદ્રક વિષયોમા રાગ દ્વેષ રાખવો જોઈએ નહીં, પણ સમ

ભાવ જ રાખવો જોઈએ એ જ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારપૂર્વક આ સૂત્રદ્વારા સમજાવે છે “ જિત્તિમદિણ ” સાધુએ જીલથી “ મણુણમદ્દગાઈ રસાણિડ ” મનોર-ભદ્રક રસનો “ સાદ્ય ” આસ્વાદ ડગીને તેમા રાગ આદિ કરવા જોઈએ નહીં “ કિં તે ” એ મનોર રસ કયા કયા પદાર્થોમા હોય છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર અહીં એવા કેટલાક પદાર્થોના નામનો ઉલ્લેખ કરે છે “ લગ્નાદિમ-વિવિદ્ધપાણ-મોચન-ગુલકય-સડકય-તેલ-ઘચકય-મચ્ચેસુ ” ધી, તેલ આદિનુ જેમા પહેલા જેમા મોણુ દેવાય છે અને પછી તેમા જ તળીને પકવવામા આવે છે એવા ખાન આદિ પકવાનને અવગાહિમ કહે છે તથા અનેક પ્રકારના જે પાન (પી શકાય તેના) લોજન હોય છે તેમને વિવિધ પાન લોજન કહે છે, ગોળ નાખીને બનાવેલા લોજનને ગુડકૃત અને ખાડ નાખીને બનાવેલા લોજનને ખાડકૃત લોજન કહે છે તેલ અને ધીમા બનાવેલ લાડુ

निष्पादितानि यानि भक्ष्याणि=मोदकादीनि तानि, एषा द्वन्द्वस्तेषु त गोक्तेषु तथा 'बहुविहेसु' बहुविधेषु-विनिष्प्रकारेषु 'लवणरससजुक्तेषु' लवणरससयुक्तेषु भक्ष्येषु=शाकपटाकादिषु तथा-'बहुप्पगारमज्जिय-निट्ठाणगदालियंसेहवदुद्धदहि सरय-मज्जवरवारुणी सीधुकापिमायणमागट्टारसबहुप्पगारेसु' बहुप्रकारमज्जिका निष्ठानक दालिकाम्लसेयाम्लदुग्धधिसरकमयपरारुणी सीधुकापिशायनशाकाष्टादशबहुप्रकारेषु-तत्र-एतदास्यादन गृहस्थानस्यासु बोध्यम्, सयमास्यासु सर्वथा तद्वर्जनात्, बहुप्रकारा=बहुविधा, मार्जिता=रसाला=दधिशर्करादिनिष्पादितसुगन्धद्रव्यवासित खाद्यविशेष, श्रीखण्डेतिभाषाप्रसिद्ध, निष्ठानक=प्रकृष्टमूल्यनिष्पादितो भक्ष्यविशेषः तदुक्तम्-'निट्ठाणति जा सयसहस्म' इति, जय भावः-यत्तस्मिन्मुद्राभिर्निष्पाद्यते तद् भक्ष्यविशेषो निष्ठानमुच्यते । यद्वा-भक्ताद्यन्नोपसेचनेन सपादिते दध्यादिव्यञ्जने 'करमा' इतिभाषाप्रसिद्धे, तथा दालिकाम्लम्=मरीचराजिकादि संस्कृतोद्विदलनि-

और घृतमें बनाया गया मोदकादि भोजनीय पदार्थ तैलकृत और घृतकृत भोजन कहलाता है । इन खाद्य पदार्थों में तथा और भी (बहुविहेसु) अनेक प्रकारके (लवणरससजुक्तेसु) लवणरसमिश्रित शाक, वड़ा आदि खाद्यपदार्थ विशेष है उनमें तथा (बहुप्पगार-मज्जिय-निट्ठाणग-दालियव-सेहव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीधु-का विसा यण-सागट्टारस बहुप्पगारेसु भोग्येसु य) पहिले गृहस्थावस्था में उपयो गमें लाये गये बहुविध भोजनीयपदार्थ जैसा मार्जिता रसाला-दधि शर्करा आदिसे निष्पादित तथा सुगन्धित द्रव्यसे वासित खाद्यविशेष कि जिसे श्रीखण्ड कहते हैं, उनमें निष्ठानक-एक लाख रुपये लगा कर निष्पादित किये गये भक्ष्य विशेषमें अथवा मेहरी-रावडी में, दालिकाम्लमें-मरीच राई में संस्कृत हुए तथा द्विदल चना आदि के आटे-वेसन आदिसे

आदि आद्य पदार्थों में तैलकृत अने घृतकृत भोजन उड़े छे अे आद्य पदार्थोंमा तथा भीत पणु अे " बहुविहेसु " अनेक प्रकारना " लवणरससजुक्तेसु " लवणरस मिश्रित शाक, वडा आदि आद्य पदार्थों छे तेमा तथा " बहुप्पगार-मज्जिय-निट्ठाणग-दालियव-सेहव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीधु-कावि-सायण-सागट्टारसबहुप्पगारेसु भोग्येसु य " पड़ेया गृहस्थावस्थाभा उपयोगमा लीधेल अनेक प्रकारना आद्यो जेवा के दडी, आड आदिमाथी तैयार उड़ेल तथा सुगन्धित द्रव्यथीयुक्त अेक आसलोजन जेने शिथल उड़े छे तेमा निष्ठानक-अेक लाख रुपीया भरथीने तैयार करावेल आसलोजनमा अथवा मेहरी-दूधपाकमा, दालिकाम्लमा-भरथा, राई, मेथी, अेइ आदिनो वधार करेल तथा अणु अदिना

एषादितोव्यञ्जनविशेषः 'कठ' इतिभाषाप्रसिद्धो, सेधाम्लम्=स्वादविशेषः, पक्व सद्
 यदम्लेन सस्क्रियते तत्स्वादय सेधाम्लमुच्यते । दुग्धदधि च मयिद्रम्, सरकः=गुड
 धातकीपुष्पादिना सिद्धः 'सरकाः' इति भाषाप्रसिद्धाः, मद्य-पैष्ट गो घृमादिचूर्ण-
 निष्पन्नम्, वरवारणी=श्रेष्ठमदिरा, सीधुः=आसवः-इक्ष्वादिजनितमद्यम्, कापिशा-
 यनम्=कापिशी नाम नगरी तस्या जात द्राक्षानिर्मित विशिष्टमद्यम्, एतान्यपि
 मद्यानि गृहवस्थावस्थासु समास्वादितानि न तु सयमास्वायामिति योग्यम्, तथा
 शाका अष्टादश-अष्टादशसख्यकाः शाका, एषा बहुव्रीहिसमासे तानि तथो-
 क्तानि, तानि च बहुप्रकाराणीतिकर्मधारयः, तेषु तथोक्तेषु 'मणुन्नवन्नगधरसफा
 सवहुदव्वसभिणसु' मनोज्ञवर्णगन्धरसस्पर्शबहुद्रव्यसमृतेषु=मनोहरवर्णगन्धरसस्पर्श-
 वद् बहुविधद्रव्यसंस्कृतेषु 'भोयणेषु' भोजनेषु च स्थितान् रसां गृहस्थावस्था

बनाये गये " कठी " रूप व्यञ्जनमे, सेंधाम्लमें पका कर के जो खटाई से
 संस्कृत किया गया हो, ऐसे स्वादविशेष में, दुग्ध, दधिमें गुड, धातकी
 पुष्प-महुआ-इन दोनों के मेल से बनाये गये सरका में, गोघूम-गेहूँके
 आटेसे निष्पन्न किये गये मद्य-पैष्ट मद्य में, वरवारणो-उत्तम मदिरा
 में सुनि अवस्था में नहीं, किन्तु गृहस्थावस्थामें उपयोग में लाई गई श्रेष्ठ
 मदिरा वराण्डी में, सीधु-आसव इक्षु आदिके रससे बनाये गये मद्यमें;
 कापिशायन-कापिशी नामकी नगरी में द्राक्षाओ से बनाये विशिष्ट
 मद्यमें तथा अठारह प्रकार के शाकों में, इत्यादि अनेक प्रकार के भक्ष्य
 पदार्थों में तथा (मणुन्नवन्नगधरसफासबहुदव्वसभिणसु भोयणेषु य)
 मनोज्ञ वर्ण गंध, रस और स्पर्शवाले अनेकविध द्रव्यों से निष्पन्न हुए
 भोजनों में स्थित रसों को गृहस्थावस्थामें आस्वादित करके उनमें, तथा

लोहमाथी बनावेल ' कठी ' नामना व्यञ्जनमा, सेधाम्लमा-पडावीने अष्टाश
 उमेरवामा आवी डोय जेवा भाद्योमा, हृध, हडीमा गोण, धातडी पुष्प-महुडा
 जे अन्नेना मिश्रणुथी बनावेल सरकामा, गोघूम-घडना लोहमाथी तैयार करेल
 मद्य-पैष्टमद्यमा, वरवारणी उत्तम मदिरामा, सुनि अवस्थाभा नडी पणु गृह-
 स्थावस्थाभा उपयोगमा लीधेल श्रेष्ठ मदिरा-वराडीमा, सीधु-आसव-शेरडी
 आदिना रसमाथी बनावेल मदिरामा, कापिशायन-कापिशी नामनी नगरीमा
 द्राक्षमाथी बनावेल श्रेष्ठ विशिष्ट मद्यमा, तथा अठार प्रकारना शाकमा
 इत्यादि अनेक प्रकारना भाद्य पदार्थोमा तथा " मणुन्नवन्नगधरसफासबहुदव्व
 संभिणसु भोयणेषु य " मनोहर वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवाला अनेक प्रकारना
 द्रव्योमाथी तैयार करावेल लोचनोमा रडेल रसोना गृहस्थावस्थाभा स्वाद

યામાસ્વાદ્ય તેષુ તથા—‘ અન્નેસુ ય ’ અયેષુ ચ = એતદ્વિન્નેષુ ‘ એવમાહણસુ ’
 એવમાદિકેષુ = પૂર્વોક્તસદૃશેષુ—‘ મણુણમદ્દણસુ ’ મનોજભદ્રકેષુ રસેષુ કથ
 મ્ભૂતેષુ રસેષુ ? તેષુ=યે રસા અવિરતગૃહસ્થાવસ્થાયામાસ્વાદિતાસ્તેષુ ‘ સમણેણ ’
 શ્રમણેન=શ્રમણાવસ્થામ્વિતેન મુનિના ‘ ન સજ્જિયવ્વ ’ ન સક્તવ્યમ્ ‘ જાવ ’ યાવત્=
 યાવત્કરણાત્-ન રક્તવ્યમ્, ન ગદ્ધિતવ્યમ્, ન મોહિતવ્યમ્, ન વિનિયાત આપ-
 ત્તવ્યઃ, ન લોબ્ધવ્યમ્, ન તોષ્ટવ્યમ્, ન હમિતવ્યમ્, એપામર્થ પ્રથમભાવનાયા-
 મુક્તઃ । ન ચ શ્રમણઃ ‘ તત્થ ’ તા-ગૃહસ્થાવસ્થોપશુક્તરસેષુ ‘ સદ્ ચ ’ સ્મૃતિ
 ચ=સ્મરણમપિ, ‘ મદ્ ચ ’ મર્તિ ચ=શ્રમણાવસ્થાયા તદુપભોગવુદ્ધિમપિ ‘ કુજ્જા ’
 કુર્યાત્ । ‘ પુણરવિ ’ પુણરપ્યુચ્યતે—‘ જિઞ્ઞિમદિણ ’ જિહ્વેન્દ્રિયેણ ‘ અમણુન્નપા

(અન્નેસુ એવમાહણસુ મણુણમદ્દણસુ) દૂસરે ઔર ડસી પ્રકારકે મનોજ
 ભદ્રક રસોં મેં કિ જો અવિરત નિત્ય ગૃહસ્થાવસ્થામે આસ્વાદિત કિયે
 હુએ થે (સમણેણ) શ્રમણ અવસ્થામેં સ્થિત હુએ મુનિ કો (ન સજ્જિ-
 યવ્વ જાવ ન સદ્ ચ મદ્ ચ તત્થ કુજ્જા) ઓસક્તચિત્ત નહીં વનના
 ચાહિયે યાવત્ ઉસે ઉનકી સ્મૃતિ નહીં કરના ચાહિયે ઔર ઉનમેં અપની
 કિ મેં શ્રમણાવસ્થામેં ઇનકા ભોગ કરુ ડસ પ્રકાર વુદ્ધિ કો ની નહીં
 લગાના ચાહિયે । યહા યાવત્ શબ્દ સે “ ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ,
 ન મુજ્જિયવ્વ, ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ,
 ન હસિયવ્વ ” ઇન પૂર્વોક્ત પદો કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । ઇન સવકા
 અર્થ પ્રથમ ભાવના મે લિખા જા ચુકા હૈ । (પુણરવિ) ડસી તરહ ફિર
 (જિઞ્ઞિમદિણ) જિહ્વા ઇન્દ્રિય સે (અમણુન્નપાવગાડ રસાડ) અરુચિકા-

લઈને તેમનામા તથા “ અન્નેસુ એવમાહણસુ મણુણમદ્દણસુ ” એ જ પ્રકારના
 ખીજા ભદ્રક મનોજ રસોમા કે જેનો ગૃહસ્થાવસ્થામા સદા સ્વાદ લેવાતો હતો
 તેમા “ સમણેણ ” સાધુ અવસ્થામા રહેલ મુનિએ “ ન સજ્જિયવ્વ જાવ ન
 સદ્ ચ મદ્ ચ તત્થ કુજ્જા ” “ આમકત થવુ જોઈએ નહીં ” ત્યાથી શરૂ
 કરીને “ તેણે તેમને યાદ કરવા જોઈએ નહીં અને હું શ્રમણ - અવસ્થામા
 તેમનો ઉપભોગ કરે એવો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહીં ” ત્યાં સુધીનો
 અર્થ ગ્રહણ કરવાનો છે

અહીં ‘ યાવત્ ’ શબ્દથી “ ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ, ન મુજ્જિયવ્વ,
 ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ ન હસિયવ્વ ” એ પૂર્વોક્ત
 પદો ગ્રહણ કરાયેલ છે એ બધાનો અર્થ પહેલી ભાવનામા અપાઈ ગયો છે
 “ પુણરાપ ” એ રીતે “ જિઞ્ઞિમદિણ ” એલથા “ અમણુન્નપાવગાડ રસાડ ”

वगाइ” अमनोज्ञपायकान्=अरुचिकरान्, ‘रगाइ’ रसान् ‘साइय’ स्वादयित्वा,
 ‘किं ते’ कांस्तान्=कथभूतांस्तान् रसान् । इत्याह—‘अरसविरससीयलुक्ख
 णिज्जप्पपाणभोयणाइ’ अरसविरसशीतलरुक्षनिर्याप्यपानगोजनानि, तत्र-अरसानि
 =रसरहितानि=हिङ्ग्यादिसंस्कारवर्जितानि, विरसानि=विगतरसानि=पर्युषितानि,
 शीतानि=शीतलानि रुक्षाणि=घृतादिलेशवर्जितानि, निर्याप्याणि=चलवर्द्धनशक्ति
 रहितानि यानि पानगोजनानि तानि तथोक्तानि, तथा—‘दोसीणवावन्नकुट्टिय-
 पूइय-अमणुन्नविणट्ट-पसुय-बहुदुब्भगवियाइ’ दोषन्नग्यापन्नकुथितपूतिममनोत्र
 विनष्टप्रसूतबहुदुरभिगन्धितानि, तत्र—‘दोसीण’ ति-दोषान्न=दोषा-रात्रिस्तत्र
 पक्व यदन्न, रात्रिपर्युषितमित्यर्थः, व्यापन्न=विनिष्टवर्णम्, कुथित=सोथयुक्तम्,
 शठितमित्यर्थः, पूतिकम्=गन्धयुक्तम्, अत एव-अमनोज्ञम्=असुन्दरम्, विनष्टम्=
 अत्यन्तविकृतावस्थाप्राप्तम्, ततः प्रसूतः=प्रादुर्भूतो यो बहु दुरभिगन्धः=अतिदुर्गन्धः
 स जातो येषु तानि तथोक्तानि, तथा—‘तित्तरुडुयकसायअविलरसलिंदनीरसाइ’

रस रसों का (साइय) आस्वादन करके उनमें साधु को राग द्वेषभाव
 वारण नहीं करना चाहिये । (किं ते ?) अरुचिकारक रस कौन २ से
 हैं इस प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं—(अर-
 सविरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइ) अरस-हिङ्गु आदिके वधारे से
 वर्जित, विरस—रस से विहीन-पर्युषित, शीत-शीतल-ठंडे, रुक्ष-
 घृतादि के लेश से रहित, निर्याप्य-चल बढ़ाने की शक्ति से रहित, तथा
 (दोसीणवावन्नकुट्टिय पूइय अमणुन्नविणट्टपसूयबहुदुब्भगवियाइ) दोसी
 णरात्रिमें पकाये गये व्यापन्न-विनष्ट वर्णवाले, कुथित-सड़े हुए पूतिक
 दुर्गन्धयुक्त, अतएव मनोज्ञ-असुन्दर तथा विनष्ट-अत्यंत विकृत अवस्था
 वाले और इसी कारण जिनमें से अत्यंत दुर्गन्ध निकल रही हो ऐसे तथा
 जो (तित्तरुडुयकसायअविलरसलिंदनीरसाइ) मरीच-मिर्च के जैसा

अरुचिउर रसेनु “साइय” आम्वादन करीने तेमनामा साधुअे द्वेषभाव राअवे।
 लेधअे नडी “ किं ते ? ” अरुचिउरउ रस कथा कथा ठे अे प्रश्ननु समा
 धान उरवाने माटे सूत्रकार उडे छे—“ अरसविरससीयलक्खणिज्जप्पपाणभोय
 णाइ ” अरस-हिङ्ग आदिना वधारथी रहित, विरस-रसरहित-पर्युषित, शीत
 -शीतल-ठंडा, रुक्ष-धी विनानु, निर्याप्य-अण वधारवानी शक्तिथी रहित,
 तथा “ दोसिणवावन्नकुट्टियपूइयअमणुन्नविणट्टपसूयबहुदुब्भगवियाइ ” दोसीण
 -रात्रे राधेल, व्यापन्न-विनष्ट वर्णवाणु-कुथित-सड़े, पूतिक-दुर्गन्धवाणा, तेथी
 अभनोज्ञ-असुंदर तथा विनष्ट-अत्यंत विकृत अवस्थावाणा अने अे उरअे
 लेमाथी अत्यंत दुर्गन्ध नीकणती डाय तेवा, तथा अे “ तित्तरुडुयकसायअविल

तिक्तकटुककपायाम्लरसलिङ्गनीरमानि = तत्र तिक्त-मरीचवत्, कटुक-निम्बवत्, कपायम्=आमलफलवत्, आम्लरसम्=अम्लि 'इमली' कावत्, लिङ्ग=सशैवाल-पुराणजलवत्, नीरस=विगतरसम् एषा द्वन्द्वस्तानि तथोक्तानि' आस्वाद्य-उपर्युक्तारसगिरसादि पानभोजनस्थितानमनोज्ञपापकान् रमानास्वाद्येत्यर्थः, 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'तेसु' तेषु=उक्तेषु 'अमणुन्नपावणसु' अमनोज्ञपापकेषु 'रसेसु' रसेषु तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एव प्रकारेषु च-अमनोज्ञपापकेषु रसेषु 'न रसियव्व' न रोष्टव्यम्, 'जाव' यावत्करणात्-न हीलितव्यम्, 'न निदियव्व, न खिसियव्व, न छेतियव्व, न

तिक्त हो-चरपरा हो, कटुक-नीम के जैसा कटुवा हो, आमले के जैसा कपाय रसवाला हो, कूचची पैरी-अमिया के जैसा जो खटा हो, लिङ्ग-शैवालसहित पुराने जलके समान हो, विगतरस हो ऐसे इन उपर्युक्त अरस गिरस आदि पान भोजनमे स्थित अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक रसों को आस्वादित करके (समणेण) मुनि को (तेसु) उन (अमणु-न्नपावणसु) अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक-रसोंमे तथा (अण्णेषु एवमाइ एसु रसेसु) इसी प्रकार के और भी इनसे भिन्न रसों मे (न रसियव्व जाव चरेज्ज धम्म) रोष नहीं करना चाहिये। "न हीलियव्व, न निदियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्व, न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दुग्गुठावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" उनकी अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, उन्हें देखकर उनपर न्विसयाना-परोक्ष में निंदा नहीं करनी चाहिये। तथा अमनोज्ञ रसस्थित द्रव्यका छेदन नहीं करना चाहिये, भेदन एव

रसलिङ्गनीरसाइ 'भगीय-भक्ष्या जेवा तीणा डोय, चरपरा डोय, कटुक-लीमडा जेवा कडवा डोय, आमणा जेवा लुरा डोय, काथी केरी जेवा पाटा डोय, लिङ्ग-जे शैवालशुद्ध पुराणा पाणी जेवा डोय, विगत रस डोय, जेवा उपर कडेला अरस गिरस आदि लोअनोभा रडेला अमनोज्ञ पापक-अरुचिकर रसोनु आस्वादन उगीने 'समणेण' मुनिजे "तेसु" ते "अमणुन्नपावणसु" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकर रसोभा तथा "अण्णेषु एवमाइएसु रसेसु" जे ज प्रकारना भीत्त रसोभा पासु "न रसियव्व जाव चरेज्जधम्म" रोष उरवे। जेधजे नही "न हीलियव्व", न निदियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्व, न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दुग्गुठावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" तेमनी अवज्ञा न करवी जेधजे, तेमने जेधने तेमनी परोक्ष गीते निंदा न करवी जेधजे, तथा अरुचिकर रसवाणा द्रव्यनु छेदन न उरवु जेधजे, जेदन अने नाश न करवे।

ભેદવ્યમ્ ન હન્તવ્યમ્ ન જુગુપ્સાવૃત્તિઃપિ લભ્યા ઉત્પાદયિતુમ્ । ણ્વ જિહ્વેન્દ્રિયભાવનાભારિતો ભવતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ મુનિઃ । તતશ્ચ-મનોજ્ઞામનોઘ્નસુરભિદુરભિરાગદ્વેપે પ્રણિહિતાત્મા સાધુર્મનોવચનકાયગુપ્તઃ સંવૃતઃ પ્રણિહિતેન્દ્રિયઃ-૯માં સંગ્રહો યોગ્ય ' ધમ્મ ' ધર્મ 'ચરેજ્જ ' ચરેત્=અનુતિષ્ઠેત્ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

નાશ નહીં કરનાં चाहिये । और न अपने मनमें भी उस पर जुगुप्सा वृत्ति जगे ऐसी चेष्टा ही करनी चाहिये । इस प्रकार से 'जिह्वाइन्द्रिय मुझे वशमें करनी चाहिये अन्यथा महान् अनर्थ का भागी मुझे होना पड़ेगा ' इस प्रकारकी जिह्वा इन्द्रियही भावना से भारित जब मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञरूप एव अमनोज्ञरूप सुरभिदुरभि इस में राग द्वेष करने से रहित बन जाता है । इस प्रकारकी स्थिति से सपन्न बना हुआ साधु अपने मन, वचन, और कायरूप तीन योगों को शुभ और अशुभ के व्यापार से रहित कर लेता है और इस इन्द्रिय के सवरणसे युक्त बन जाता है । इस तरह रसनेन्द्रिय के सवरणसे युक्त होकर वह चारित्ररूप धर्मका पालन करने में सर्व प्रकारसे दृढ हो जाता है ।

भावार्थ—इस सूत्रद्वारा सूत्रकारने इस व्रत की चौथी भावना का स्वरूप प्रदर्शित किया है । उसमें उन्होंने यह समझाया है कि साधुको अपनी रसना इन्द्रिय को रुचिकारक एव अरुचिकारक रसों के आस्वादजन्य रागद्वेषके पक्षपात से रहित कर लेनी चाहिये, तभी जाकर वह रसनेन्द्रिय विजयी हो सकता है । ऐसा नहीं होना चाहिये कि

જોઈએ પોતાના મનમાં કે પારના મનમાં તેના પ્રત્યે જુગુપ્સાવૃત્તિ થાય તેવું વર્તન કરવું જોઈએ નહીં, આ રીતે “ મારે જિહ્વા ઇન્દ્રિયને વશ રાખવી જોઈએ નહીં તો મારે મહાન અનર્થને પાત્ર બનવું પડશે ” આ પ્રકારની જિહ્વા ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી બ્યારે મુનિ ભાવિત થાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ અને અમનોજ્ઞરૂપ, સુદર અને અસુદર દ્રવ્યો પ્રત્યે રાગ દ્વેષથી રહિત બની જાય છે આ પ્રકારની ભાવનાથી યુક્ત બનેલ સાધુ મન, વચન અને કાય, એ ત્રણે યોગોને શુભ અને અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે અને આ ઇન્દ્રિયના સવરણથી યુક્ત બની જાય છે આ રીતે રસના ઇન્દ્રિયના સવરણથી યુક્ત થઈને તે ચારિત્રરૂપ ધર્મનું પાલન કરવામાં બધી રીતે દૃઢ બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે આ વ્રતની ચોથી ભાવનાનું સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું છે તેમાં તેમણે સમજાવ્યું છે કે સાધુએ પોતાની રસના ઇન્દ્રિયને રુચિકર અને અરુચિકર રસોના આસ્વાદનને ડારણે ઉત્પન્ન થતા રાગદ્વેષને પક્ષ પાતથી રહિત કરવી જોઈએ, ત્યારે જ તે રસનેન્દ્રિય પર વિજય મેળવી શકે

પચ્ચમીં ભાવનામાહ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પંચમં પુણ ફાસિદિષ્ણ ફાસિય ફાસાઙં મણુન્નમ-
દકાઙં, ફિ તે ? દગ મંડવ-હાર-સેચચદણ-સીયલ-વિમલ-જલ-
વિવિહ-કુસુમસત્થર-ઓસીરસુત્તિય-મુણાલદોસિણા પેહુણ
ઉવ્વેવગ-તાલિયટવીયણમ-જણિય-સુહસીયલે ય પવણે
ગિમ્હકાલે, સુહફાસાણિ ય વહૂણિ સયણાણિ ય આસ
ણાણિ ણે ય પાઉરણાણે ય સિસિરકાલે, અગારપ્પવાત્રણા

રુચિકારક રસ મિલ જાવે તો ચિત્તમે ઉસકે પ્રતિ રાગમાત્ર ઉદ્ભૂત હો
જાવે ઔર અરુચિકારક રસ મિલ જાવે તો ઉસમેં દ્વેષભાવ ઉત્પન્ન હો
જાવે । દોનોં પ્રકારકે રસોં મેં સમતામાત્ર ધારણ કરના સાધુ કા સર્વ
પ્રથમ કર્તવ્ય હે । હસી વિષયકો લેકર હસ સૂત્રમે રુચિકારક રસકે
આશ્રયભૂત ઉગાદિમ આદિ કિતનેક પદાર્થોં કો તથા અરુચિકારક રસ
કે આશ્રયભૂત અરસવિરસ આદિ પદાર્થોં કો કહા ગયા હે । તથા સાથર
મેં યહ સમજાયા ગયા હે કિ ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જિન રુચિકારક રસોં કા
આસ્વાદ લિયા યા વે રસ સાધુ અવસ્થા મે સ્મરણ કરને યોગ્ય નહીં હે ।
કારણ કિ ઉનકી સ્મૃતિ સે જિહ્વા ઇન્દ્રિય મે રસકે પ્રતિ લોલુપતા વઢતી
હે । હસ પ્રકાર સે રસના ઇન્દ્રિય કે વિષય મે સમભાવ રચનેવાલા સાધુ
ચારિત્ર ધર્મકા નિર્વાહ અચ્છી તરહ સે કરનેવાલા હો જાતા હે ॥ સુ. ૧૦ ॥

છે એવુ ન બનવુ જોએ કે ઇચ્છિત રસ મળે તો તેના પ્રત્યે ચિત્તમા રાગભાવ
પેદા થઈ જાય છે, અને અચ્છિકર રસ મળે તો દ્વેષભાવ પેદા થાય બન્ને
પ્રકારના રસો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો તે સાધુનું પહેલું કર્તવ્ય છે એ વિષયનું
વર્ણન કરતા આ સૂત્રમા ઇચ્છિકર રસયુક્ત ઉગાદિમ આદિ કેટલાક પદાર્થોને
તથા અચ્છિકર રસયુક્ત અરસવિરસ આદિ પદાર્થોને બતાવ્યા છે તથા સાથે
સાથે એ સમજાવ્યું છે કે ગૃહસ્થાવસ્થામા જે ઇચ્છિકારક રસોનો સ્વાદ લીધો
હોતો તે રસોનું સાધુ અવસ્થામા અમરણ કરવું તે પણ યોગ્ય નથી કારણ કે
તેને યાદ કરવાની જિહ્વા ઇન્દ્રિયમા રસના પ્રત્યે લાલસા વધે છે આ રીતે
રસના ઇન્દ્રિયની બાબતમા સમભાવ રાખનાર સાધુ ચારિત્ર ધર્મનું સારી રીતે
પાલન કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ. ૧૦ ॥

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा
 अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-
 भदएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जि-
 यव्वं, न मुज्जियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभि-
 यव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तूसियव्वं, न हसियव्व, न
 सइं च मइ च तत्थकुज्जा । पुणरवि फासिदिएण फासिय
 फासाइ अमणुन्नपावगाइ, किं ते ? अणेगवहवंध-तालणं-
 कण-अइभारारोवण-अंगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-
 लक्खारसखारतेल्लकलकलत- -तउसीसककाललोह- -सिंचण-
 हडिचधण रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुयकुभिपाकदहण सीह-
 पुच्छण सूलभेय- -गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोदुसीसछे-
 यण-जिठभच्छेयण वसणनयण हिययदत्तभजण जोत्तलयकस-
 प्पहारपादपणिहजाणुपत्थरनिवायपीलणक -- विकच्छुअगणि
 विच्छुयडक्कवायायवदसमसगनिवाए दुट्ठुणिसज्जदुन्निहिया
 कक्खड-गुरुसीयउसिणल्लक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु
 फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्व, न हीलि-
 यव्व, न निदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्वं,
 न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं
 एव फासिदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणु-
 न्नसुब्भिभदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मयवयणकायगुत्ते
 संवुडे पणिहिइदिए चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ११ ॥

ટીકા—‘ પુણ ’ પુનઃ ‘ પચમ ’ પચ્ચમી સ્પર્શેન્દ્રિયસવરણાભિપ્રેયા ભાવના-
માહ—‘ ફાસિદિણ ’ સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ‘ મણુણમદ્દગાઈ ’ મનોજ્ઞમદ્રકાન્ ‘ ફાસાઈ ’
સ્પર્શાન્ ‘ ફાસિય ’ સ્પૃષ્ટા ‘ કિં તે ’ કાંસ્તન્—રુચમ્ભૂતાંસ્તાન્? इत्याह—‘ दगमडव
-हार-सेय चदणसीयलविमलजलविमिहकुसुमसत्थर उमीर मुत्तियमुणालदोसिणा ’
दकमण्डपहारश्चेतचन्दनशीतलविमलजलविमिधकुसुमसस्त्वरोशीरमौक्तिकमृणालज्यो-
त्स्नाः, तत्र-दकमण्डपा = उदकमण्डपाः, जल यन्त्रस्थानानीत्यर्थः, हाराः प्रतीताः,
श्चेतचन्दनानि=श्रीखण्डचन्दनानि, शीतलविमलजलानि = शीतलानि = विमलानि

अथ सूत्रकार इति व्रतकी पाचवी भावना कहते हैं—‘पचम पुण’ इ०

ટીકાર્થ—(પચમ પુણ) પાંચવીં ભાવના સ્પર્શનેન્દ્રિય સવર નામ કી
હૈ । वह इस प्रकार से है—(फासिदिण) स्पर्शन इन्द्रिय से (मणुण-
मदगाइ फासाइ) मनोज्ञ मद्रक-स्पर्शन इन्द्रिय को सुखकारक-स्पर्श
को (फासिय) स्पर्श कर के साधु को उन में रुचिभाव-रागपरिणति
नहीं करना चाहिये, इस प्रकार से यहा सबध लगा लेना चाहिये—
(किं ते ?) रुचिकारक स्पर्श के विषयभूत कौन २ से पदार्थ हैं, इस
प्रकार के प्रश्नका उत्तर देते हुए सूत्रकार उन कितनेक पदार्थों को नाम
निर्देशपूर्वक कहते हैं—(गिम्हकाले दगमडव-हार-सेयचदण-सीयल
विमल-जलविविहकुसुमसत्थ-ओसीर-मुत्तिय-मुणाल-दोसिणा-पेहुण-
उक्खेवग-तलियट-वीयणग-जणिय सुहसीयले य पवणे) ग्रीष्मकालमें
दकमण्डप-जल के फुआरे जहा जल बरसाकर स्थान को ठंडा रखते
हों,—ऐसा जल यत्र स्थान, हार श्वेतचन्दन-श्रीखण्डचन्दन, शीतल, निर्मल

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—

“ પચમ પુણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ પચમ પુણ ’ પાચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે
તે આ પ્રમાણે છે “ ફાસિદિણ ” સ્પર્શેન્દ્રિયથી “ મણુણમદ્દગાઈ ફાસાઈ ”
મનોજ્ઞમદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય સુખકારક સ્પર્શેને “ ફાસિય ” સ્પર્શ કરીને સાધુએ
તેમના પ્રત્યે રુચિભાવ-રાગપરિણતિ કરવી જોઈએ નહીં

“ કિં તે ? ” રુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નના
ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા ઉદાહરણ પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

“ ગિમ્હકાલે દગમડવ-હાર સેયચદણ સીયલવિમલજલ વિવિહકુસુમસત્થર -
ઓસીર મુત્તિય મુણાલ-દોસિણા-પેહુણ-ઉક્ખેવગ તાલિયટ વીયણગ-જણિય સુહસી
યલે ચ પવણે ” ગ્રીષ્મ ઋતુમાં દકમડપ ન્યા પાણીના કુવારા પાણીને ઉડાડીને

ય આયવનિદ્ધમઝય-સીય ડસિણલહુયા ય જે ડડસુહફાસા
 અંગસુહનિવ્વુદ્ધકરા તે, અન્નેસુ ય એવમાદ્દણ્ણસુ ફાસેસુ મણુન્ન-
 ભદ્દણ્ણસુ ન તેસુ સમણેણ સજ્જિયવ્વં, ન રજ્જિયવ્વં, ન ગિજ્જિ-
 યવ્વં, ન મુજ્જિયવ્વં, ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વ, ન છુભિ
 યવ્વ, ન અજ્જોવવજ્જિયવ્વં, ન તૂસિયવ્વ, ન હસિયવ્વ, ન
 સદ્દં ચ મદ્દં ચ તત્થકુજ્જા । પુણરવિ ફાસિદિણ્ણ ફાસિય
 ફાસાદ્દ અમણુન્નપાવગાદ્દં, કિં તે ? અણેગવહવધ-તાલણં-
 કણ-અદ્ધભારારોવણ-અગમજણ-સુદ્દંનચપ્પવેસ-ગાયપચ્છણ-
 લક્કારસચ્ચારતેલ્લકલકલત-- -તડસીસકકાલલોહ- -સિંચણ-
 હઢિવધણ રજ્જુનિગલ-સંકલન હત્થંડુયકુભિપાકદહણ સીહ-
 પુચ્છણ-સૂલભેય--ગયચલણમલણ-કરચરણકન્નનાસોટ્ઠસીસછે-
 યણ-જિભ્ભચ્છેયણ વસણનયણ હિયયદત્તમજ્જણ જોત્તલયકસ-
 પ્પહારપાદપણિહજાણુપત્થરનિવાયપીલણક -- વિકચ્છુઅગણિ
 વિચ્છુયડક્રવાયાયવદસમસગનિવાણ દુટ્ઠણિસજ્જદુન્નિહિયા
 કલ્લકલ ગુરુસીયડસિણલુલ્લકલેસુ વહુવિહેસુ અન્નેસુ ય એવમાદ્દણ્ણસુ
 ફાસેસુ અમણુન્ન પાવગેસુ ન તેસુ સમણેણ રૂસિયવ્વ, ન હીલિ-
 યવ્વ, ન નિદિયવ્વ, ન ગરહિયવ્વં, ન ચિંસિયવ્વ, ન છિદિયવ્વ,
 ન મિદિયવ્વ, ન વહેયવ્વં, ન દુગુંઠાવત્તિયાવિલલ્લભા ઉપ્પાણ્ણં
 એવ ફાસિદિયભાવણાભાવિઓ ભવદ્દ અતરપ્પા મણુન્નામણુ-
 ન્નસુભિભદ્ધુભિભરાગદોસપણિહિયપ્પા સાહૂ મયવયણકાયગુત્તે
 સંવુદ્ધે પણિહિદ્દંદિણ્ણ ચરેજ્જ ધમ્મ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા—‘ પુણ ’ પુનઃ ‘ પચમ ’ પञ्चમી સ્પર્શેન્દ્રિયમવરણાભિપ્રેયા ભાવના-
માહ—‘ ફાસિદિણ ’ સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ‘ મણુણભદ્ગાઢ ’ મનોજ્ઞભદ્રકાન્ ‘ ફાસાઈ ’
સ્પર્શાન્ ‘ ફાસિય ’ સ્પૃષ્ટા ‘ કિં તે ’ કાંસ્તન્-કથમ્ભૂતાંસ્તાન્? ઇત્યાદ-‘ દગમડવ
-દાર-સેય ચદણસીયલ્લવિમલજલવિવિદ્કુસુમસત્થર ઉસીર મુત્તિયમુણાલદોસિણા ’
દકમણ્ડપહારશ્વેતચન્દનગીતલવિમલ્લજલવિવિધકુસુમસસ્તરોશીરમોક્તિકમૃણાલજ્યો-
ત્સનાઃ, તત્ર-દકમણ્ડપા = ઉદકમણ્ડપાઃ, જલ યન્ત્રસ્થાનાનીત્યર્થઃ, દારા. પ્રતીતાઃ,
શ્વેતચન્દનાનિ = શ્રીલ્લખચન્દનાનિ, શીતલવિમલજલાનિ = શીતલાનિ = વિમલાનિ

અત્ર સૂત્રકાર ઇસ વ્રતની પાંચવી ભાવના કહતે હૈ—‘ પચમ પુણ ’ ઇ૦
ટીકાર્થ—(પચમ પુણ) પાંચવી ભાવના સ્પર્શનેન્દ્રિય સવર નામની
હૈ । વહ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—(ફાસિદિણ) સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સે (મણુણ-
ભદ્ગાઢ ફાસાઈ) મનોજ્ઞ ભદ્રક-સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કો સુખકારક-સ્પર્શ
કો (ફાસિય) સ્પર્શ કર કે સાધુ કો ઉન મેં રુચિભાવ-રાગપરિણતિ
નહી કરના ચાહિયે, ઇસ પ્રકાર સે યહા સવધ લગા લેના ચાહિયે—
(કિં તે ?) રુચિકારક સ્પર્શ કે વિષયભૂત કૌન ૨ સે પદાર્થ હૈ, ઇસ
પ્રકાર કે પ્રશ્નકા ઉત્તર દેતે હુણ સૂત્રકાર ઉન કિતનેક પદાર્થો કો નામ
નિર્દેશપૂર્વક કહતે હૈ—(ગિમ્હકાલે દગમડવ-દાર-સેયચદણ-સીયલ
વિમલ-જલવિવિદ્કુસુમસત્થ-ઓસીર-મુત્તિય-મુણાલ-દોસિણા-પેહુણ-
ઉક્ષેવગ-તલિયટ-વીયણગ-જણિય સુહસીયલે ય પવણે) ગ્રીષ્મકાલમેં
દકમણ્ડપ-જલ કે ફુઆરે જહા જલ વરસાકર સ્થાન કો ઠંડા રખતે
હૈ,—એસા જલ યત્ર સ્થાન, દાર શ્વેતચદન-શ્રીલ્લખચદન, શીતલ, નિર્મલ

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાંચમી ભાવના બતાવે છે—

“ પચમ પુણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ પચમ પુણ ’ પાંચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે
તે આ પ્રમાણે છે “ ફાસિદિણ ” સ્પર્શેન્દ્રિયથી “ મણુણભદ્ગાઢ ફાસાઈ ”
મનોજ્ઞભદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય સુખકારક સ્પર્શનો “ ફાસિય ” સ્પર્શ કરીને સાધુએ
તેમના પ્રત્યે રુચિભાવ-રાગપરિણતિ કરવી બેધએ નહી

“ કિં તે ? ” રુચિકારક સ્પર્શવાળા ડયા ડયા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નનો
ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા ડેટલાડ પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

“ ગિમ્હકાલે દગમડવ-દાર સેયચદણ સીયલવિમલ્લજલ વિવિદ્કુસુમસત્થર -
ઓસીર મુત્તિય મુણાલ દોસિણા-પેહુણ-ઉક્ષેવગ તલિયટ વીયણગ-જણિય સુહસી
યલે ય પવણે ” ગ્રીષ્મ ઋતુમા દગમડવ ન્યા પાણીના કુવારા પાણીને ઉડાડીને

ય આયવનિદ્ધમત્તય-સીય ઉસિણલહુયા ય જે ઉત્તસુહફાસા
 અંગસુહનિવ્વુદ્ધકરા તે, અન્નેસુ ય એવમાદ્દસુ ફાસેસુ મણુન્ન-
 ભદ્દસુ ન તેસુ સમણેણ સજ્જિયવ્વં, ન રઙ્ગિયવ્વં, ન ગિજ્જિ-
 યવ્વં, ન મુજ્જિયવ્વં, ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વં, ન લુભિ-
 યવ્વં, ન અઙ્ગોવ્વજ્જિયવ્વં, ન તૂસિયવ્વં, ન હસિયવ્વં, ન
 સદ્દં ચ મદ્દં ચ તત્થકુજ્ઞા । પુણરત્તિ ફાસિદિદ્દેણ ફાસિય
 ફાસાદ્દં અમણુન્નપાવગાદ્દં, કિં તે ? અણેગવહવધ-તાલણં-
 કણ-અદ્ધમારારોવણ-અગમજણ-સુદ્ધનિવ્વપ્પવેસ-ગાયપચ્છણ-
 લક્ખારસઘારતેલ્લકલકલંત-- -તત્તસીસકકાલલોહ- -સિંચણ-
 હઢિવધણ રઙ્ગુનિગલ-સંકલન હત્થંડુયકુભિપાકદહણ સીહ-
 પુચ્છણ સૂલભેય--ગયચ્છલણમલણ-કરચરણકન્નનાસોદ્ધસીસછે-
 યણ-જિભ્ભચ્છેયણ વસણનયણ હિયયદત્તમજ્જણ-જોત્તલયકસ-
 પ્પહારપાદપણિહજાણુપત્થરનિવાયપીલણક -- વિક્કલ્લુઅગણિ
 વિચ્છુયલ્લક્ખવાયાયવદસમસગનિવાય દુટ્ઠુણિસજ્જદુન્નિહિયા
 કલ્લલ્લ ગુરુસીયઉસિણલુલ્લલ્લેસુ વહુવિહેસુ અન્નેસુ ય એવમાદ્દસુ
 ફાસેસુ અમણુન્ન પાવગેસુ ન તેસુ સમણેણ રૂસિયવ્વં, ન હીલિ-
 યવ્વં, ન નિદિયવ્વં, ન ગરહિયવ્વં, ન સિસિયવ્વં, ન છિદિયવ્વં,
 ન મિદિયવ્વં, ન વહેયવ્વં, ન દુગુલ્લાવત્તિયાવિલ્લભા ઉપ્પાણં
 એવ ફાસિદિયભાવણાભાવિઓ ભવદ્દ અત્તરપ્પા મણુન્નામણુ-
 ન્નસુભિદુભિમરાગદોસપણિહિયપ્પા સાહુ મયવયણકાયગુત્તે
 સંવુદ્ધે પણિહિદ્દિદ્દે ચરેજ્જ ધમ્મ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

યાગ્ના ય ' શરીરસ્ય અદ્વારમતાપનાશ્ચ=રક્તિનિપેશાનિ ચ, ' આયત્નિદ્વમડયમી-
યડસિણલહુયા ય ' આતપસ્નિગ્ધમૃદુકશીતોષ્ણલઘુકાંશ્ચ, તત્ર-આતપઃ=સૂર્યતાપઃ,
સ્નિગ્ધાઃ=ચિક્ષણા, મૃદુકાઃ=કોમલાઃ, ઉષ્ણા ઝપ્મયુક્તાઃ, લઘુકાઃ=મનોજ્ઞાઃ,
એપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, ' જે ' એ ' ઉડસુહફામા ' ઋતુસુખસ્પર્શાઃ-ઋતુપુ=દેશ-
ન્તાદિપુ મુલ્લઃ=મુલ્લકરઃ સ્પર્શો એપા તે તથોક્તાઃ, ' અગસુહનિવ્વુઙ્કરા ' ઝદ્ધ-
સુલ્લનિર્વૃત્તિકરા.=ઝદ્ધસુલ્લ=શરીરમુલ્લ, નિર્વૃત્તિઃ=મનઃ સ્વાસ્થ્ય ચ કુર્વન્તિ એ તે
તથોક્તાઃ, ' તે ' તાન્ સ્પૃદ્ધા, ' સમણેણ ' ઝમણેન=સાધુના ' તેસુ ' તેપુ-પૂર્વો-
ક્તેપુ ' મણુન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ ' મનોજ્ઞમદ્દ્રકેપુ સ્પર્શેપુ, તથા-એમ્મયઃ ' અન્નેસુ ય '
અન્નેપુ ચ ' એવમાદ્દણ્ણુ ' એવમાદિકેપુ ' ફાસેસુ ' સ્પર્શેપુ ' ન સઙ્ગિયવ્વ ' ન
સક્કવ્વમ્=આસક્તિનૈય કર્તવ્વા, તથા--' ન રઙ્ગિયવ્વ ' ન રક્કવ્વમ્-રાગો
ન કર્તવ્વ', ' ન ગિઙ્ગિયવ્વ ' ન ગલ્લિતવ્વમ્-મલ્લિભાવો ન કર્તવ્વઃ, ' ન મુઙ્ગિયવ્વ
યવ્વ ' ન મોહિતવ્વમ્-તા મોહો ન કર્તવ્વ, તથા-ન ' વિણિધાય ' વિનિર્ધાત =
તદર્થ ચારિત્રમ્મશઃ, ' આપઙ્ગિયવ્વ ' આપત્તવ્વઃ-કર્તવ્વ ઇત્યર્થઃ, ' ન લુમિયવ્વ '
ન લોલ્લવ્વમ્-લોભો ન કર્તવ્વ', ' અઙ્ગોલ્લવ્વિયવ્વ ' ન અધ્ધુપપત્તવ્વમ્=તત્પ્રા-

(આયત્નિદ્વમડયસીય ડસિણલહુયા ય) સૂર્ય કે તાપ નો, ચિક્ષણપદાર્થ
કો, કોમલપદાર્થ કો ડષ્ણ પદાર્થ કો, હલ્કે પદાર્થ કો, ક્રિ (જે) જો ડ
ડ સુહફાસા) ઋતુ કે અનુસાર જિનકા સ્પર્શ મુલ્લજનક હોતા હૈ ઓર
(અગસુહનિવ્વુઙ્કરા) શરીર કો એવ મન કો આનદ પ્રદાન કરતા હૈ,
ડનકો શરીર સે સ્પર્શ કરકે (સમણેણ) સાધુ કો (તેસુ) ડન ૨ (મણુ
ન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ) મનોજ્ઞમદ્દ્રક-રુચિકારક-સ્પર્શો મે તથા (અણ્ણે-
સુ ય એવમાદ્દણ્ણુ ફાસેસુ) ઇન સે અતિરિક્ત ઓર મી સ્પર્શો મેં (ન
સઙ્ગિયવ્વ, ન રઙ્ગિયવ્વ, ન ગિઙ્ગિયવ્વ, ન મુઙ્ગિયવ્વ, ન વિણિધાય
આવઙ્ગિયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અઙ્ગોલ્લવ્વિયવ્વ, ન લુસિયવ્વ, ન

યસીય-ડસિણ-લહુયા ય " સૂર્યના તાપનો, મુલાયમ પદાર્થનો, કોમળ પદાર્થ-
નો, ડષ્ણ પદાર્થનો, હલકા પદાર્થનો, કે " જે " જે " ઉડસુહફાસા " જે
ઋતુ પ્રમાણે જેનો જેનો સ્પર્શ સુખદાયક લાગે છે અને " અગસુહનિવ્વુ
ઙ્કરા " શરીરને તથા મનને આનદ આપે છે, તેમનો શરીરથી સ્પર્શ કરીને
" સમણેણ " સાધુએ " તેસુ " તે દરેક " મણુન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ " તેનોજ્ઞભદ્ર-
રુચિકારક સ્પર્શોમા તથા " અણ્ણેસુ એવમાદ્દણ્ણુ ફાસેસુ " તે સિવાય ૧૧ બીજા
પણ સ્પર્શોમા " ન સઙ્ગિયવ્વ, ન રઙ્ગિયવ્વ, ન ગિઙ્ગિયવ્વ, ન મુઙ્ગિયવ્વ,
ન વિણિધાય આવઙ્ગિયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અઙ્ગોલ્લવ્વિયવ્વ, ન લુસિયવ્વ,

=નિર્મલાનિ ચ યાનિ જલાનિ તાનિ, તથા-વિવિધકુમ્ભસમ્પન્ના = વિવિધા-
 નામ્=અનેકપ્રકારાણા કુસુમાના=પુષ્પાણા યે સસ્તરા:=શય્યામ્તે, તથા-ઉશીરાગિ
 =સુગન્ધિત્થાનિ, 'સ્વશ' ઇતિ પ્રમિદ્ધાનિ, માત્તિકાનિ=મૃક્તાફળાનિ, મૃણા-
 લાનિ=પદ્મનાલાનિ, ડ્યોત્સ્ના:=ચન્દ્રિકાઃ, ઇવામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ, તાઃ, તથા-
 'પેદુણઠકલેયગતાલિયટ્ટીયગગજણિયમુહસીયલે' પિન્ડોત્ક્ષેપકતાલટ્નતવ્યજન
 ધજનિતમુલશીતલાન્, તત્ર-પિન્ડોત્ક્ષેપકાઃ=પિન્ડાના=મયૂરપિન્ડાના યે ઉત્ક્ષે
 પકાઃ=વ્યજનાનિ, તાટ્ટન્તાનિ=તાટ્પત્રવ્યજનાનિ, વ્યજનકાનિ=વર્ગદલનિર્મિત
 વ્યજનાનિ તજ્જનિતાઃ સુખાઃ=સુખકરાઃ શીતલાસ્તાંસ્તથોક્તાન્ 'પવ્વણે ય' પવ-
 નાંશ્ર 'ગિમ્હકાલે' ગ્રીષ્મકાલે । તથા-'સુહકાસાણિ ય' સુલસાણિ ચ સુલઃ
 =સુલકરઃ સ્પર્શો યેષા તાનિ-સ્પર્શસુખાનહાનીત્યર્થ, 'વહ્નિ-અનેકપ્રકારાણિ
 'સપ્પણાણિ આસણાણિ ય' શયનાન્યાસનાનિ ચ, પ્રાવરણગુણાંશ્ર=મૃદુસ્પર્શાન શીર્વા
 પહારકાનુત્તરીયાંશ્ર 'સિસિરકાલે' શિશિરકાલે=શીતકાલે, તથા-'અગારપ્પ

જલ, વિવિધ પ્રકાર કે પુષ્પો સે રચિત શય્યા, ઉશીર-ઠાલ, મુક્તાફલ, મૃણાલ-કમલનાલ, ઓર દોસિણાચદ્રિકા-ચાદની કો, તથા પેદુણઠકલે
 વગ-મયૂર કે પિન્ડો કે વને હુણ પર્વો કી, તાટપત્ર કે વને હુણ પર્વો
 કી ઓર વાસ કી શલાકાઓં સે વને હુણ પર્વો કી, સુખદાયક શીતલ
 વાયુ કો તથા-સુખપ્રદ સ્પર્શવાલે અનેક પ્રકાર કે શયન ઓર આસ-
 નો કો, (સિસિરકાલે) શીતલકાલ મેં તથા (સુહકાસાણિ ય) નરમ
 સ્પર્શવાલે શીતાપહારક (વહ્નિ સપ્પણાણિ આસણાણિ ય) અનેક
 પ્રકાર કે શયન ઓર આસનો કો, તથા (પ્રાવરણગુણે ય) ઓઢને કે
 ચદર આદિ વસ્ત્રોં કો (અગારપ્પયાવણા ય) અગ્નિ કે ઉષ્ણસ્પર્શ કો,

જગ્યાને ઠડી રાખના હેય, એવા જલયત્રવાળા સ્થાન, હાર, શ્વેત ચદન,
 શીતલ નિર્મળ જળ, વિવિધ પ્રકારના પુષ્પો વડે બનાવેલી શય્યા, ઉશીર
 ખશ, મુક્તાફળ, મૃણાલ કમળનાળ, અને દોસિણા-ચદ્રિકા-ચાદનીની, તથા
 પેદુણ્ઠ ઉકળેવગ-મોરના પીછાના બનાવેલ પખાના, તાટપત્રમાથી બનાવેલ
 પખાના અને વાસની સળીઓમાથી બનાવેલ પખાના, સુખદાયક શીતળ વાયુનો
 તથા સુખપ્રદ સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના શયન અને આસનોનો સ્પર્શ કરવો
 જોઈએ નહીં તથા " સિસિરકાલે " શિયાળાના " સુહકાસાણિ ય " નરમ
 સ્પર્શવાળા શીત દૂર કરનારા " વહ્નિ સપ્પણાણિ આસણાણિ ય " અનેક પ્રકારના
 શયનો અને આસનોનો, તથા " પ્રાવરણગુણે ય " ઓઢવાના ચાદર આદિ
 વસ્ત્રોનો, " અગારપ્પયાવણા ય " અગ્નિના ઉષ્ણ સ્પર્શનો, " આવશનિદ્રમ-

યાવના ય ' શરીરસ્ય અદ્વારમતાપનાશ્ચ=ચક્ષુરિપેક્ષાણાનિ ચ, ' આયવનિદ્વમડયમી-
યડસિણલહુયા ય ' આતપસ્નિગ્ધમૃદુરુગીતોષ્ણલઘુઠાંશ્ચ, તત્ર-જાતપઃ=સૂર્યતાપઃ,
સ્નિગ્ધાઃ=ચિક્ષણા, મૃદુઠાઃ=કોમલાઃ, ઉષ્ણા અપ્મયુક્તાઃ, લઘુઠાઃ=મનોજ્ઞાઃ,
પ્રપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, ' જે ' ચે ' ઉડસુહફાસા ' ઋતુસુખસ્પર્શાઃ-ઋતુપુ=દેગ-
ન્તાદિપુ સુસઃ=સુખકરઃ સ્પર્શો ચેષા તે તથોક્તાઃ, ' અગસુહનિવ્વુઙ્કરા ' અગ્ન-
સુસનિર્વૃત્તિકરા'=અગ્નસુખ=શરીરસુખ, નિર્વૃત્તિઃ=મનઃ સ્વાસ્થ્ય ચ કુર્વન્તિ ચે તે
તથોક્તાઃ, ' તે ' તાન્ સ્પૃષ્ટ્વા, ' સમણેણ ' શ્રમણેન=સાધુના ' તેસુ ' તેપુ-પૂર્વો-
ક્તેષુ ' મણુન્નમદ્દેસુ ફાસેસુ ' મનોજ્ઞમદ્રકેષુ સ્પર્શેષુ, તથા-અન્યઃ ' અન્નેસુ ય '
અન્યેષુ ચ ' એવમાદ્દેસુ ' એવમાદિકેષુ ' ફાસેસુ ' સ્પર્શેષુ ' ન સજ્જિયવ્વ ' ન
સક્તવ્યમ્=આસક્તિનૈવ કર્તવ્યા, તથા--' ન રજ્જિયવ્વ ' ન રક્તવ્યમ્-રાગો
ન કર્તવ્યઃ, ' ન ગિજ્જિયવ્વ ' ન ગદ્ધિતવ્યમ્-ગદ્ધિભાવો ન કર્તવ્યઃ, ' ન મુજ્જિ-
યવ્વ ' ન મોહિતવ્યમ્-તા મોહો ન કર્તવ્ય, તથા-ન ' વિણિયાય ' વિનિર્ધાત =
તદર્થ ચારિત્રશ્ચ, ' આવજ્જિયવ્વ ' આપત્તવ્ય-કર્તવ્ય इत्यर्थः, ' ન લુમિયવ્વ '
ન લોભવ્યમ્-લોભો ન કર્તવ્ય, ' અજ્જોવવજ્જિયવ્વ ' ન અધ્યુપપત્તવ્યમ્=તત્પ્રા-

(આયવનિદ્વમડયસીય ડસિણલહુયા ય) સૂર્ય કે તાપ વો, ચિક્ષણપદાર્થ
વો, કોમલપદાર્થ વો ઉષ્ણ પદાર્થ વો, હલ્કે પદાર્થ વો, કિ (જે) જો , ઉ
ડ સુહફાસા) ઋતુ કે અનુસાર જિનકા સ્પર્શ સુખજનક હોતા હૈ ઓર
(અગસુહનિવ્વુઙ્કરા) શરીર વો એવ મન વો આનદ પ્રદાન કરના હૈ,
ઉનવો શરીર સે સ્પર્શ કરવે (સમણેણ) સાધુ વો (તેસુ) ઉન ૨ (મણુ
નમદ્દેસુ ફાસેસુ) મનોજમદ્રક-રુચિકારક-સ્પર્શો મે તથા (અણે-
સુ ય એવમાદ્દેસુ ફાસેસુ) ઇન સે અતિરિક્ત ઓર મી સ્પર્શો મેં (ન
સજ્જિયવ્વ, ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ, ન મુજ્જિયવ્વ, ન વિણિયાય
આવજ્જિયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અજ્જોવવજ્જિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ, ન

યસીય-ડસિણ-લહુયા ય " સૂર્યના તાપનો, મુલાયમ પદાર્થનો, કોમળ પદાર્થ-
નો, ઉષ્ણ પદાર્થનો, હલકા પદાર્થનો, ડે " જે " જે " ઉડસુહફાસા " જે
ઋતુ પ્રમાણે જેનો જેનો સ્પર્શ સુખદાયક લાગે છે અને " અગસુહનિવ્વુ
ઙ્કરા " શરીરને તથા મનને આનદ આપે છે, તેમનો શરીરથી સ્પર્શ કરીને
" સમણેણ " સાધુએ " તેસુ " તે દરેક " મણુન્નમદ્દેસુ ફાસેસુ " તનોજભદ્રક-
રુચિકારક સ્પર્શોમા તથા " અણેસુ એવમાદ્દેસુ ફાસેસુ " તે સિવાય ॥ બીજા
પણ સ્પર્શોમા " ન સજ્જિયવ્વ, ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ, ન મુજ્જિયવ્વ,
ન વિણિયાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અજ્જોવવજ્જિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ,

=નિર્મલાનિ ચ યાનિ જલ્લાનિ તાનિ, તથા-વિવિધકુમ્ભસમ્પન્ના = વિવિધા-
 નામ્=અનેકપ્રકારાણાં હુસુમાના=પુષ્પાણાં યે સસ્તરાઃ=શય્યામ્તે, તથા-ઉર્ણીરાગિ
 =સુગન્ધિતૃણાનિ, 'સ્વશ' ઇતિ પ્રમિદ્ધાનિ, માત્તિકાનિ=મૃક્તાફળાનિ, મૃણા-
 લાનિ=પદ્મનાલાનિ, ડ્યોત્સ્નાઃ=ચન્દ્રિકાઃ, એવામિતરેતરયોગદન્ડઃ, તાઃ, તથા-
 'પેહુણઠકલેયગતાલિયટવીયગગજણિયમુહસીયલે' પિન્ડોત્ક્ષેપકતાઠટન્તવ્યજન
 રુજનિતમુખશીતલાન્, તત્ર-પિન્ડોત્ક્ષેપકાઃ=પિન્ડાના=મયૂરપિન્ડકાના યે ઉત્ક્ષે
 પકાઃ=વ્યજનાનિ, તાલટન્તાનિ=તાલપત્રવ્યજનાનિ, વ્યજનકાનિ=વશદલનિર્મિત
 વ્યજનાનિ તજ્જનિતાઃ સુખાઃ=સુખકરાઃ શીતલાસ્તાંસ્તથોક્તાન્ 'પવ્વણે ય' પવ-
 નાંશ્ચ 'ગિમ્હકાલે' ગ્રીષ્મકાલે । તથા-'સુહકાસાણિ ય' સુખપ્રદાણિ ચ સુખઃ
 =સુખકરઃ સ્પર્શો યેવા તાનિ-સ્પર્શસુખાપહાનીત્યર્થઃ, 'વહૂનિ-અનેકપ્રકારાણિ
 'સયણાણિ આસણાણિ ય' શયનાન્યામનાનિ ચ, પાવરણગુણાંશ્ચ=મૃદુસ્પર્શાનિ શીતા
 પહારકાનુત્તરીયાંશ્ચ 'સિસિરકાલે' શિશિરકાલે=શીતકાલે, તથા-'અગારપ્પ

જલ, વિવિધ પ્રકાર કે પુષ્પો સે રચિત શય્યા, ઉર્ણી-ઠાલ, મુક્તાફલ, મૃણાલ-કમલનાલ, ઓર દોસિણાચન્દ્રિકા-ચાદની કો, તથા પેહુણઠકલે
 ઘગ-મયૂર કે પિન્ડોં કે વને હુણ પર્વોં કી, તાલપત્ર કે વને હુણ પર્વોં
 કી ઓર વાસ કી શલાકાઓં સે વને હુણ પર્વોં કી, સુખદાયક શીતલ
 વાયુ કો તથા-સુખપ્રદ સ્પર્શવાલે અનેક પ્રકાર કે શયન ઓર આસ
 નોં કો, (સિસિરકાલે) શીતલકાલ મેં તથા (સુહકાસાણિ ય) નરમ
 સ્પર્શવાલે શીતાપહારક (વહૂનિ સયણાણિ આસણાણિ ય) અનેક
 પ્રકાર કે શયન ઓર આસનો કો, તથા (પાવરણગુણે ય) ઓઢને કે
 ઘઢર આદિ વસ્ત્રોં કો (અગારપ્પયાવણા ય) અગ્નિ કે ઉષ્ણસ્પર્શ કો,

જગ્ગાને ઠડી રાખના હેય, એવા જલયત્રવાળા સ્થાન, હાર, શ્વેત ચંદન,
 શીતલ નિર્મળ જળ, વિવિધ પ્રકારના પુષ્પો વડે બનાવેલી શય્યા, ઉર્ણી
 ખશ, મુક્તાફળ, મૃણાલ કમળનાળ, અને દોસિણા-ચન્દ્રિકા-ચાદનીની, તથા
 પેહુણ ઠકલેયગ-મોરના પીછાના બનાવેલ પખાના, તાલપત્રમાથી બનાવેલ
 પખાના અને વાસની સળીઓમાથી બનાવેલ પખાના, સુખદાયક શીતળ વાયુનો
 તથા સુખપ્રદ સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના શયન અને આસનોનો સ્પર્શ કરવો
 જોઈએ નહીં તથા "સિસિરકાલે" શિયાળાના "સુહકાસાણિ ય" નરમ
 સ્પર્શવાળા શીત દૂર કરનારા "વહૂનિ સયણાણિ આસણાણિ ય" અનેક પ્રકારના
 શયનો અને આસનોનો, તથા "પાવરણગુણે ય" ઓઢવાના ચાદર આદિ
 વસ્ત્રોનો, "અગારપ્પયાવણા ય" અગ્નિના ઉષ્ણ સ્પર્શનો, "આયવતિદ્ધમચ્ચ-

યાવળા ય ' શરીરસ્ય અદ્ધારપતાપનાશ્ચ=રહિનિપેશણાનિ ચ, ' આયવનિદ્વમડયસી-
યડસિળલહુયા ય ' આતપસ્નિગ્ધમૃદુકશીતોષ્ણલઘુકાંશ્ચ, તત્ર-જાતપઃ=સૂર્યતાપઃ,
સ્નિગ્ધાઃ=ચિક્ષણા, મૃદુકાઃ=કોમલાઃ, ઉષ્ણા ઝમ્મયુક્તાઃ, લઘુકાઃ=મનોજ્ઞાઃ,
પ્રપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, ' જે ' યે ' ઉડસુહફાસા ' ઋતુસુખસ્પર્શાઃ-ઋતુપુ=દેગ-
ન્તાદિપુ સુગ્ધઃ=સુખકરઃ સ્પર્શો યેષા તે તથોક્તા, ' અગસુહનિન્દુઝકરા ' અદ્ધ-
સુખનિર્વૃત્તિકરા=અદ્ધસુસ=શરીરસુસ, નિર્વૃત્તિઃ=મનઃ સ્વાસ્થ્ય ચ કુર્વન્તિ યે તે
તથોક્તાઃ, ' તે ' તાન્ સ્પૃષ્ઠા, ' સમણેણ ' શ્રમણેન=સાધુના ' તેસુ ' તેપુ-પૂર્વો-
ક્તેપુ ' મણુન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ ' મનોજ્ઞમદ્દકેપુ સ્પર્શેપુ, તથા-અન્યઃ ' અન્નેસુ ય '
અન્યેપુ ચ ' એવમાદ્દણ્ણુ ' એવમાદિકેપુ ' ફાસેસુ ' સ્પર્શેપુ ' ન સઙ્ગિજ્ઞયવ્વ ' ન
સક્તવ્યમ્=શ્રાસક્તિનૈવ કર્તવ્યા, તથા--' ન રઙ્ગિજ્ઞયવ્વ ' ન રક્તવ્યમ્-રાગો
ન કર્તવ્યઃ, ' ન ગિઙ્ગિજ્ઞયવ્વ ' ન ગદ્ધિતવ્યમ્-ગદ્ધિભાવો ન કર્તવ્યઃ, ' ન મુઙ્ગિજ્ઞ
યવ્વ ' ન મોહિતવ્યમ્-તા મોહો ન કર્તવ્ય, તથા-ન ' વિણિપાય' વિનિર્ધાત =
તદર્થ ચારિત્રશ્ચ, ' આપઙ્ગિજ્ઞયવ્વ ' આપત્તવ્યઃ-કર્તવ્ય ઇત્યર્થઃ, ' ન લુમિયવ્વ '
ન લોભવ્યમ્-લોભો ન કર્તવ્યઃ, ' અઙ્ગોવવઙ્ગિજ્ઞયવ્વ ' ન અધ્યુપપત્તવ્યમ્=તત્પ્રા-

(આયવનિદ્વમડયસીય ડસિળલહુયા ય) સૂર્ય કે તાપ વો, ચિક્ષણપદાર્થ
કો, કોમલપદાર્થ કો ઉષ્ણ પદાર્થ કો, હલ્કે પદાર્થ કો, ક્રિ (જે) જો ઉ
ડ સુહફાસા) ઋતુ કે અનુસાર જિનકા સ્પર્શ સુખજનક હોતા હૈ ઓર
(અગસુહનિન્દુઝકરા) શરીર કો એવ મન કો આનદ પ્રદાન કરતા હૈ,
ઉનકો શરીર સે સ્પર્શ કરકે (સમણેણ) સાધુ કો (તેસુ) ઉન ૨ (મણુ
ન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ) મનોજ્ઞમદ્દક-રુચિકારક-સ્પર્શો મે તથા (અણ્ણે
સુ ય એવમાદ્દણ્ણુ ફાસેસુ) ઇન સે અતિરિક્ત ઓર મી સ્પર્શો મે (ન
સઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન રઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન ગિઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન મુઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન વિણિપાય
આવઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અઙ્ગોવવઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન તુસિયવ્વ, ન

યસીય-ડસિળ-લહુયા ય " સૂર્યના તાપનો, સુલાયમ પદાર્થનો, ડેમળ પદાર્થ-
નો, ઉષ્ણ પદાર્થનો, હલકા પદાર્થનો, ડે " જે " જે " ઉડસુહફાસા " જે
ઋતુ પ્રમાણે જેનો જેનો સ્પર્શ સુખદાયક લાગે છે અને " અગસુહનિન્દુ
ઝકરા " શરીરને તથા મનને આનદ આપે છે, તેમનો શરીરથી સ્પર્શ કરીને
" સમણેણ " સાધુએ " તેસુ " તે દરેક " મણુન્નમદ્દણ્ણુ ફાસેસુ " તેનોશબદ્રક-
રુચિકારક સ્પર્શોમા તથા " અણ્ણેસુ એવમાદ્દણ્ણુ ફાસેસુ " તે સિવાય ॥ બીજા
પણ સ્પર્શોમા " ન સઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન રઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન ગિઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન મુઙ્ગિજ્ઞયવ્વ,
ન વિણિપાય આવઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન લુમિયવ્વ, ન અઙ્ગોવવઙ્ગિજ્ઞયવ્વ, ન તુસિયવ્વ,

त्यर्थं नैवाधिको यत्नो विरेयः, 'न हसियव्व' न तोष्टव्य-तत्प्राप्ती परितोषो
न कर्तव्य, 'न हसियव्व न हसितव्वम्-प्राप्ती विस्मयेन दासो न कर्तव्यः। तथा
श्रमण 'तत्थ' तत्र=पूर्वोक्तमुक्ततद्विषये 'सइ च' स्मृति=स्मरण च 'मत्ति=
बुद्धिनिवेश च 'न कुज्जा' न कुर्यात्। 'पुणरपि' पुनरपि उच्यते-'फासि-
दिण्ण' स्पर्शेन्द्रियेण 'अमणुण्णपावगाइ' अमनोज्ञपापमान्=अरुचिकरानित्यर्थः,
'फासाइ' स्पर्शान् 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'किंते' कौस्तान=स्थम्भतांस्तान् ?
इत्याह—'अणेगव्ह-वध-तालण-कण-अइभारारोवण-अग-भजण-मृट्ठनवप्पवेस

हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने
चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नहीं करना चाहिये।
गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उन में मुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके
निमित्त अपने चारित्र्य का परित्याग नहीं कर देना चाहिये। उनमें
लुभाना नहीं चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना
चाहिये। यदि ये अनायास प्राप्त हो भी जावें तो उनकी प्राप्ति में परि-
तोष नहीं मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नहीं
करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शों में अपनी
स्मृति को एवं बुद्धि को भी नहीं लगाना चाहिये। (पुणरपि)
इसी तरह फिर (फासिदिण्ण) स्पर्शान् इन्द्रिय से (अमणुण्णपावगाइ)
अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शों को स्पर्श करके उनमें साधु को
द्वेष नहीं करना चाहिये। (किंते ?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २
पदार्थों में रहते हैं, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये
सूत्रकार कहते हैं कि (अणेगव्हवध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा" कही પણ आसक्तिथी पोताना
चित्तने बाधवु नही, तेमनामा रागभाव करवो नही तेनी लालसा रागवी
नही तेमा मुग्ध थवु नही, -तेने भातर पोताना चारित्र्येनो परित्याग न
करवो जेधये तेमा दोलावु न जेधये अने तेनी प्राप्तिने भाटे वधु प्रयत्न
पण करवो जेधये नही जे ते अनायासे भणी जाय तो तेनी प्राप्तिथी परितोष
मानवो जेधये नही तेनी प्राप्तिमा विस्मय पण अतावपु जेधये नही
अने साधुये जे पूर्वोक्त अनुलवेदा स्पर्शानु स्मरणु करवु जेधये नही अने
तेमनो विचार पण करवो जेधये नही "पुणरपि" जे ४ रीते 'फासि-
दिण्ण' स्पर्शेन्द्रियथी "अमणुण्णपावगाइ" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक
स्पर्शानो स्पर्श करीने तेमना प्रत्ये साधुये द्वेष करवो जेधये नही "किं-
ते ?" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शवाणा कया कया पदार्थो २, ते प्रश्ननो
उत्तर आपता सूत्रकार कहे छे के "अणेगव्हवध तालणकण-अइभारारोवण

-गायपच्छण लक्खारस-गारतेह कल्ललत तउअसीसककाललोहसिंचण हडिवधण
रज्जुनिगल-सकलहत्थदुय-कुम्भीपाकदहन-सीहपुच्छण- उव्वधण- मूलभेय-गय
चलणमलण-करचणकन्ननामोद्धसीसत्थेयण-जिम्भछेयणवसणनयणहिययदतभजण-
जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविकच्छुअगणि-विच्छुय
डक्खायायव-दसमसग-निवाए 'अनेकप्रवन्धताडनाड्ढनातिभारारोपणाद्गभञ्जन-
मूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लाधारस खारतैलकलक आयमानत्रपुक सीसककाललो-
हसेचनहडिवन्धनरज्जुनिगडसकलहस्तान्दुक कुम्भीपाकदहनसिंहपुच्छोद्धन्धन शूल
भेद-गजचरणमर्दन-करचरणवर्णनासाष्ट शीर्षच्छेदनवृषणनयन हृदयदन्तभञ्जनयो-
त्रलत्ताग्नाप्रहारपादपर्णिजानुप्रस्तरनिपातपीडनकपिकच्छवग्नि-वृश्चिक- दशवाता-
तपदशमशकनिपातान् , तन-अनेको बहुविधो यो वधः=यष्टयाद्याघातः, रज्ज्वा-
दिभिर्वन्धः, ताडनम्=चपेटादिताडनम्, अङ्कनम्=तप्ताय* शलाकादिना गात्रे चिह्नक-
रणम् , अतिभारारोपणम्=प्रमाणाधिरभारारामारोपणम्, अद्गभञ्जनम्=शरीरावयव-
त्रोटनम् , ' मूर्ध्निनखप्रवेस ' मूचीनखप्रवेश'=मूचीना नखेषु प्रवेश =प्रवेशकरणम्,

अगभजणसूर्ध्निनखप्रवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतैलकलकलत-तउ
सीसककाललोहसिंचण-हडिवधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्थदुय कुम्भी-
पाकदहन- सीहपुच्छण-उव्वधण-मूलभेय-गयचलणमलण- करचरणकन्न
नासोद्धसीसत्थेयणजिम्भछेयण-वसण- नयणहियय-दतभजण- जोत्तल-
यकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविकच्छुअगणिविच्छु-
यडक्खायायवदसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्ट्यादि द्वारा
आघात करने रूप वध, वधण-रज्ज्वादि द्वारा बाधनेरूप वधन, तालण-
चपेटा-वप्पड आदि मारने रूप ताडन, अकण-तपी हुई लोहे की सलाई
से शरीर में चिह्न करने रूप अकन, (अर्द्धभारारोपण) प्रमाण से अधिक
भार का लाटना, (अगभजण) शारीरिक अवयव को तोड़ना (सूर्ध्नि-

अगभजण-सूर्ध्निनखप्रवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतैलकलकलत-तउसीसककाल
लोहसिंचण-हडिवधण रज्जुनिगल सकलन हत्थदुयकुम्भीपाकदहनसीहपुच्छण उव्व-
धण-मूलभेय गयचलणमलण करचरणकन्ननासोद्ध सीसत्थेयण जिम्भछेयण-वसण
नयण हिययदतभजण-जोत्तलयकसप्पहार पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पालणकवि
कच्छु-अगणिविच्छुय-डक्खायायवदसमसगनिवाए " ते अनेक प्रकारनी लाङ्की
आदिना प्रकारइय वध, वधण-दोरेडा आदि बाधनाइय वधन तालण-थप्पड
आदिना भार इय ताडन, अकण-तपावेला लाटना सणीया वडे शरीर पर
डाम देनाइय निशान, अर्द्धभारारोपण-वधारे प्रमाणभा भार लादवो, अगभजण-
शरीरना अगनु छेदन सूर्ध्निनखप्रवेस-नोयने नथभा लाङ्की देवी, गायपच्छण-

પ્રત્યર્થ નૈરાધિકો યત્નો વિરેયઃ, ' ન હસિયન્વ ' ન તોષ્ટ્ર્યં-તત્પ્રાપ્તૌ પરિતોષો ન કર્તવ્ય, ' ન હસિયન્વ ન હસિતવ્યમ્-પ્રાપ્તૌ વિસ્મયેન હાસો ન કર્તવ્યઃ । તથા શ્રમણ ' તત્થ ' તત્ર=પૂર્વોક્તધુક્તતદ્વિપયે ' સઙ્ગ ચ ' સ્મૃતિ=સ્મરણ ચ ' મર્તિ=બુદ્ધિનિવેશ ચ ' ન કુજ્જા ' ન કુર્યાત્ । ' પુનરવિ ' પુનરપિ ઉચ્યતે- ' ફાસિ-દિણ ' સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ' અમણુણપાવગાહ ' અમનોજ્ઞપાપકાન્=અરુચિકરાનિત્યર્થઃ, ' ફાસાહ ' સ્પર્શાન્ ' ફાસિય ' સ્પૃષ્ટ્વા ' કિંતે ' કાંસ્તાન્=ચથમ્ભૂતાંસ્તાન્ ? ઇત્યાહ—'અણેગચ્છ-વધ-તાલણ-કણ-અહ્મારારોવણ-અગ-મજ્જણ-મુટ્ટનમ્બવ્વેસ

હસિયન્વ, ન સઙ્ગ ચ મઙ્ગ ચ તત્થ કુજ્જા) કમ્મી મી આસક્તિ સે અપને ચિત્ત કો નહીં વાધના ચાહિયે, ઉનમેં રાગભાવ નહીં કરના ચાહિયે । મુદ્ધિભાવ નહીં કરના ચાહિયે । ઉન મેં મુગ્ધ નહીં હોના ચાહિયે-ઉનકે નિમિત્ત અપને ચારિત્ર કા પરિત્યાગ નહીં કર દેના ચાહિયે । ઉનમેં લુભાના નહીં ચાહિયે । ઓર ન ઉનકી પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત પ્રયત્ન હી કરના ચાહિયે । યદિ ચે અનાયાસ પ્રાપ્ત હો મી જાવે તો ઉનકી પ્રાપ્તિ મે પરિ-તોષ નહીં માનના ચાહિયે । ઓર પ્રાપ્તિ મેં કોઈ વિસ્મય આશ્ચર્ય હી નહીં કરના ચાહિયે । તથા અજ્ઞણ કો ઇન પ્રવૃત્તિ અનુભવિત સ્પર્શો મેં અપની સ્મૃતિ કો એવ બુદ્ધિ કો મી નહીં લગાના ચાહિયે । (પુનરવિ) હસી તરહ ફિર (ફાસિદિણ) સ્પર્શાન્ ઇન્દ્રિય સે (અમણુણપાવગાહ) અમનોજ્ઞપાપક-અરુચિકારક-સ્પર્શો કો સ્પર્શ કરકે ઉનમે સાધુ કો દ્વેષ નહીં કરના ચાહિયે । (કિંતે ?) ચે અમનોજ્ઞ પાપક સ્પર્શ કિન ૨ પદાર્થો મે રહતે હૈ, ઇસ પ્રકાર કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ (અણેગચ્છ-વધ-તાલણકણ-અહ્મારારોવણ-

ન હસિયન્વ, ન સઙ્ગ ચ મઙ્ગ ચ તત્થ કુજ્જા ” કહી પણ આસક્તિથી પોતાના ચિત્તને બાધવું નહીં, તેમનામાં રાગભાવ કરવો નહીં તેની લાલસા રાખવી નહીં તેમાં મુગ્ધ થવું નહીં, -તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન કરવો જોઈએ તેમાં લોભાવું ન જોઈએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન પણ કરવો જોઈએ નહીં જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ માનવો જોઈએ નહીં તેની પ્રાપ્તિમાં વિસ્મય પણ બતાવવું જોઈએ નહીં અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલા સ્પર્શોનું સ્મરણ કરવું જોઈએ નહીં અને તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહીં “ પુનરવિ ” એ જ રીતે “ ફાસિ-દિણ ” સ્પર્શેન્દ્રિયથી “ અમણુણપાવગાહ ” અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં “ કિંતે ? ” અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે “ અણેગચ્છ-વધ-તાલણકણ-અહ્મારારોવણ-

-गायपच्छण लक्खारस-गारतेह कलकलत तउअसीसककाललोहसिंचण हडिवधण
रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुय-कुम्भीपाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गय
चलणमलण-करचणकन्ननामोदुमीसछेयण-जिम्भछेयणवसणनयणहिययदतभजण-
जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविकच्छुअगणि-विच्छुय
डक्कवायायव-दसमसग-निवाए 'अनेकप्रधन्यताडनाङ्गनातिभारारोपणाङ्गभञ्जन-
सूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लक्खारस खारतैलकलकलायमानत्रपुक सीसककाललो-
हसेचनहडिवधनरज्जुनिगलसकलहस्तान्दुक कुम्भीपाकदहनसिंहपुच्छोद्धन्यन शूल
भेद-गजचरणमर्दन-करचरणवर्णनासोष्ट शीर्षच्छेदनवृषणनयन हृदयदन्तभञ्जनयो-
त्रलक्ष्मशाप्रहारपादपण्हिजानुप्रस्तरनिपातपीडनकविकच्छुअग्नि वृश्चिक-दशवाता-
तपदशमशकनिपातान्, तत्र-अनेको बहुविधो यो प्रधः=यष्टयाद्याघातः, रज्ज्वा-
दिभिर्वन्धः, ताडनम्=चपेटादिताडनम्, अङ्कनम्=तप्तायः शलाकादिना गात्रे चिह्नक-
रणम्, अतिभारारोपणम्=प्रमाणापि न गारामारोपणम्, अङ्गभञ्जनम्=शरीरावयव-
त्रोटनम्, 'सूर्ध्वनखप्रवेस' सूचीनखप्रवेशः=सूचीना नखेषु प्रवेश =प्रवेशकरणम्,

अगभजणसूर्ध्वनखप्रवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतैलकलकलत-तउ
सीसककाललोहसिंचण-हडिवधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुय कुम्भी-
पाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गयचलणमलण-करचरणकन्न
नासोष्टसीसछेयणजिम्भछेयण-वसण-नयणहियय-दतभजण-जोत्तल-
यकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविकच्छुअगणिविच्छु-
यडक्कवायायवदसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्ट्यादि द्वारा
आघात करने रूप वध, वधण-रज्ज्वादि द्वारा बाधनेरूप वधन, तालण-
चपेटा-थप्पड आदि मारने रूप ताडन, अकण-तपी हुई लोहे की सलाई
से शरीर में चिह्न करने रूप अकन, (अईभारारोवण) प्रमाण से अधिक
भार का लाटना, (अगभजण) शारीरिक अवयव को तोड़ना (सूर्ध्वन-

अगभजण-सूर्ध्वनखप्रवेस-गायपच्छण-लक्खारस खारतैलकलकलत-तउसीसककाल
लोहसिंचण-हडिवधण रज्जुनिगल सकलन हत्थडुयकुम्भीपाकदहनसीहपुच्छण उच्च-
धण-सूलभेय गयचलणमलण करचरणकन्ननासोष्ट सीसछेयण जिम्भछेयण-वसण
नयण हिययदतभजण-जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पीलणकवि
कच्छु-अगणिविच्छुय-डक्कवायायवदसमसगनिवाए " ते अनेक प्रकारनी लाङ्डी
आदिना प्रहारइय वध, वधण-दारडा आदि बाधवाइय वधन, तालण-थप्पड
आदिना मार इय ताडन, अकण-तपावेला तोड़ना सणीया वडे रागीर भर
डाम देवाइय निशान, अईभारारोवण-व्यारे प्रमाणभा भार लादवो, अगभजण-
शरीरना अगनु छेदन सूर्ध्वनखप्रवेस-नखने नखभा तोड़ी देवी, गायपच्छण-

પ્રત્યે નૈઘાધિકો યત્નો વિરેયઃ, ' ન તુસિયવ્ય ' ન તોષ્ટવ્ય-તત્પ્રાપ્તો પરિતોષો
 ન કર્તવ્ય, ' ન હસિયવ્ય ન હસિતવ્યમ્-પ્રાપ્તો વિસ્મયેન દાસો ન કર્તવ્યઃ । તથા
 શ્રમણ ' તત્થ ' તત્ર=પૂર્વોક્તશુક્તતદ્વિપયે ' સહ ચ ' સ્મૃતિ=સ્મરણ ચ ' મતિ=
 બુદ્ધિનિવેશ ચ ' ન કુઝ્જા ' ન કુર્યાત્ । ' પુનરવિ ' પુનરપિ ઉચ્યતે- ' ફાસિ-
 દિણ ' સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ' અમણુણપાવગાહ ' અમનોજપાપકાન્=અરુચિકરાનિત્યર્થઃ,
 ' ફાસાહ ' સ્પર્ગાન ' ફાસિય ' સ્પૃષ્ટ્વા ' કિંતે ' કાંસ્તાન્=ચમ્ભૂતાંસ્તાન્ ?
 ઇત્યાહ—'અણેગવહ-વધ-તાલળ-કળ-અહમારારોવળ-અગ-મજ્જણ-મૃદનસ્વપ્પવેસ

હસિયવ્ય, ન સહ ચ મહ ચ તત્થ કુઝ્જા) કમી મી આસક્તિ સે અપને
 ચિત્ત કો નહીં બાધના ચાહિયે, ઉનમેં રાગભાવ નહીં કરના ચાહિયે ।
 મુદ્ધિભાવ નહીં કરના ચાહિયે । ઉન મેં મુગ્ધ નહીં હોના ચાહિયે-ઉનકે
 નિમિત્ત અપને ચારિત્ર કા પરિત્યાગ નહીં કર દેના ચાહિયે । ઉનમેં
 લુભાના નહીં ચાહિયે । ઓર ન ઉનકી પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત પ્રયત્ન હી કરના
 ચાહિયે । યદિ યે અનાયાસ પ્રાપ્ત હો મી જાવે તો ઉનકી પ્રાપ્તિ મેં પરિ-
 તોષ નહીં માનના ચાહિયે । ઓર પ્રાપ્તિ મેં કોઈ વિસ્મય આશ્ચર્ય હી નહીં
 કરના ચાહિયે । તથા શ્રમણ કો ઇન પ્રવોક્ત અનુભવિત સ્પર્શો મેં અપની
 સ્મૃતિ કો એવ બુદ્ધિ કો મી નહીં લગાના ચાહિયે । (પુનરવિ)
 ઇસી તરહ ફિર (ફાસિદિણ) સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સે (અમણુણપાવગાહ)
 અમનોજપાપક-અરુચિકારક-સ્પર્શો કો સ્પર્શ કરકે ઉનમે સાધુ કો
 દ્વેષ નહીં કરના ચાહિયે । (કિંતે ?) યે અમનોજ પાપક સ્પર્શ કિન ૨
 પદાર્થો મે રહતે હૈ, ઇસ પ્રકાર કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે
 સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ (અણેગવહ-વધ-તાલળ-કળ-અહમારારોવળ-

ન હસિયવ્ય, ન સહ ચ મહ ચ તત્થ કુઝ્જા " કહી પણ આસક્તિથી પોતાના
 ચિત્તને બાધવું નહીં, તેમનામાં રાગભાવ કરવો નહીં તેની લાલસા રાખવી
 નહીં તેમાં મુગ્ધ થવું નહીં, -તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન
 કરવો જોઈએ તેમાં લોભાવું ન જોઈએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન
 પણ કરવો જોઈએ નહીં જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ
 માનવો જોઈએ નહીં તેની પ્રાપ્તિમાં વિસ્મય પણ બતાવવું જોઈએ નહીં
 અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલા સ્પર્શોનું સ્મરણ કરવું જોઈએ નહીં અને
 તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહીં " પુનરવિ " એ જ રીતે ' ફાસિ
 દિણ " સ્પર્શેન્દ્રિયથી " અમણુણપાવગાહ " અમનોજ પાપક-અરુચિકારક
 સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં " કિં
 તે ? " અમનોજ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો
 ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે " અણેગવહ-વધ-તાલળ-કળ-અહમારારોવળ

पृथीर्षच्छेदनम्='जिह्वच्छेयण' जिह्वच्छेदनम्, 'वसननयणहिययदतभजण'
 वृषणनयनहृदयदन्तभञ्जनम्=वृषणम्य=अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्ताना
 च भञ्जनम्=प्रिनागनम्, 'जोत्तलयकसप्पहार' योत्तलताकशाप्रहारः-योवत्रेण
 =रज्जुप्रियेपेण, लतया=वेगादिलतया कशया च यः प्रहार, प्रहारः, 'पादपण्हि-
 जाणुपत्थरनिवाय' पादपार्णिजानुप्रस्तरनिपात'=पादयोः=चरणयोः, पाण्योः=
 पादपश्चाद्भागयो, जानुनोः='घुटना' इतिभाषा प्रसिद्धोश्च प्रस्तरनिपातः=
 पाषाणपातः, 'पीलण' पीडन=यन्त्रे पीडनम्, 'कविकच्छु' कविकच्छु.=तीव्रक-
 ण्टितिकारकवनस्पतिविशेषः, 'अगणि' अग्निः, 'विच्छुयडक' वृश्चिकदंश 'वायायव-
 दसमसगनिवाए' वातातपदशमशकनिपातः=वातस्य आतपस्य दशाना मशकाना
 च निपतेनम्, एतेषा द्वन्द्व, तौस्थोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा-दुट्टणिसिज्ज दुन्निसी-
 हिया' दुष्टनिपद्यादुनैपेधिकपः=दुष्टनिपद्या' क्षुद्रामनानि, दुनैपेधिकस्य=रुष्टकर
 स्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, 'तेसु तेषु-उक्तेषु 'अमणुत्तपावगेषु' अमनोत्तपापकेषु

नासिका, होठ और मस्तक का छेदन करना, 'जिह्वच्छेयण' जीभ का
 छेदन करना 'वसन-नयण-हियय-दत-भजण' अण्डकोष, नेत्र, हृदय
 और दातोंका भागना, 'जोत्त लय कस प्पहार' चमड़े की रस्सी से, वेत्रा-
 दिलता से, तथा चातुक से प्रहार करना, 'पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय'
 पाच, एडी, घुटना, इन पर पत्थर का गिरना, 'पीलण' यत्र में पीलना, 'कवि
 कच्छु-अगणि-विच्छुय-डक' करेंच की फली, अग्नि और विच्छू का डक
 -स्पर्श, 'वायायवदसमसगनिवाए' गीतकाल में ठंडे पवन का लगाना
 उष्णकाल में धूप का लगाना, तथा डांस और मच्छरों का शरीर पर
 गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके (दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया) कष्ट
 कारकआसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

वसु, "जिह्वच्छेयण" जिह्वु छेदन करवु, "वसन-नयण-हियय-दत-भजण"
 अण्डकोष, नेत्र, हृदय अने दात तोडवा, "जोत्त-लय-कस प्पहार" आभडानी
 होगीथी नेतर-आदि लताथी तथा आणुडथी इटकावु, "पादपण्हिजाणुपत्थर-
 निवाय" पग, ओडी अने घूटणु पर पत्थरनु पडवु, "पीलण"-यत्रमा
 पीलवु, "कविकच्छु-अगणि-विच्छुय डक"-उरेअनी इणी, अग्नि अने विछीने
 डण, "वायायवदसमसगनिवाए" शियाणाभा ठंडा पवन लागवो, उनाणाभा
 तडंडा लागवो, तथा डांस अने मच्छरोनु शरीर पर पडवु, ओ णधा स्पर्शने
 शरीर पर अनुभव करीने "दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया" उण्टडाइड आसन
 अने स्वाध्यायनी भूमिना स्पर्शने अनुभवीने "तेसु अमणुत्तपावगेषु" ते

‘ ગાયપન્ડળ ’ ગાયપતક્ષણ=ગાસ્યાદિના શરીરન્ડોલનમ્ , ‘ લક્ષ્મ્યારસપારતેલ્લ ’
 ફલ્લતતતઉથ-સીસકકાલ્લોહસિંચણ’ લાક્ષારસધારતૈલચક્રકલ્પાયમાનત્રપુકસી
 સકાલલોહસેચનમ્ , લાક્ષારસેન=લાક્ષા=ઋતુ તસ્યા રસેન=તપ્તેન દ્રવેણ ક્ષાર
 તૈલેન=ક્ષારપદાર્થમિશ્રિતતૈલેન, વલકલ્પાયમાનેન=અતિતપ્તતયા શબ્દાયમાનેન ત્રપુ
 કેણ=રક્તેણ સીસકેન=‘ સીસા ’ ઇતિપસિદ્ધદ્રવ્યેણ, કાલ્લોહેન=કૃષ્ણલોહેન ચ
 યત્સેચનમ્ ‘ હૃદિવધણ ’ હૃદિવન્ધનમ્=ગ્વોહચક્ષેપ’, ‘ રજ્જુનિગલ્પકલન’ રજ્જુ-
 નિગલ્પકલનમ્=રજ્જવા નિગલ્પેન ચ સકન્ન=વન્ધનમ્ ‘ હૃથદુય ’ હસ્તાન્દુકમ્=
 કાષ્ઠાદિનિર્મિતહસ્તવન્ધનસાધનેન યદ્વન્ધન તદ્વસ્તાન્દુકમુચ્યતે, ‘ કુમ્ભીપાક ’
 કુમ્ભીપાકઃ=કુમ્ભ્યા=પાત્રપિશેપે પાકઃ=પચનમ્ ‘ દહણ ’ દહનમ્=અગ્નિના દાહક-
 રણમ્ , ‘ સીહપુચ્છણ ’ સિંહપુચ્છન=લિઙ્ગતોટનમ્ , ‘ ઉબ્બવણ ’ ઉબ્બવન=પાશો-
 લ્લમ્પનમ્ , ‘ સૂલભેય ’ સૂલભેદઃ, સૂલેનભેદઃ=ભેદનમ્ , ‘ ગયચલ્લણમલ્લણ ’ ગજ
 ચરણમર્દનમ્=ગજચરણૈર્મર્દનમ્ , ‘ કરચણકન્નનાસોટ્ઠસીસછેયણ ’ કરચરણકર્ણનાસો

સ્વપ્પવેસ) સૂઈયોં કો નસ્વો મે ભોક્કના, (ગાયપન્ડળ) વસૂલો આદિ સે
 શરીર કે અવયવો કો ઓલના, ‘ લક્ષ્મ્યારસ ’ તપે હુણ લાગ્વકે રસસે,
 (પારતેલ્લ) ક્ષારપદાર્થ મિશ્રિત તપે હુણ તૈલ સે તવા (કલકલન) અત્યત
 ઉકલને સે પિઘલે હુણ (તડ) ત્રપુ-કથીર સે, (સીસક) સીસે સે (કાલ-
 લોહ) કાલે લોહે સે, (સિંચણ) શરીર કો સીંચના-શરીર પર છિડકના
 (હૃદિવધણ) રોડે મે હાલના, ‘ રજ્જુનિગલ્પકલન ’ રસ્સી ઓર બેડી
 વાધના, ‘ હૃથદુય ’ હથકડી મેં વાધના ‘ કુમ્ભીપાક ’ કુમ્ભી મેં પકાના,
 ‘ દહણ ’ અગ્નિ મેં જલાના, ‘ સીહપુચ્છણ ’ લિઙ્ગ કો તોડના, ‘ ઉબ્બવણ ’
 પાસી મેં લટકાના, ‘ સૂલભેય ’ સૂલીપર ચઢાના, ‘ ગયચલ્લણ ’-હાથી કે
 પૈરો સે કુચલના, ‘ કરચરણકન્નનાસોટ્ઠસીસછેયણ ’ હાથ-પૈર, કાન,

વાસલા આદિથી શરીરના અવયવોને ઓલવાની ક્રિયા, લક્ષ્મ્યારસ-ગરમ લાખના
 રસથી પારતેલ્લ-ક્ષારચુપ્ત પદાર્થથી તપાવેલા તેલથી, તવા કલકલત-અત્યત
 ગરમ કરવાથી ઓગળેલા “ તડ ” કથીરથી, “ સીસક ”-સીસાથી “ કાલલોહ ”-
 કાળા લોહાથી, “ સિંચણ ”-શરીર પર રેડવાની ક્રિયા, “ હૃદિવધણ ”-હોડમા
 પૂરવું, “ રજ્જુનિગલ્પકલન ”-દોરડા અને બેડી વડે વાધવું, “ હૃથદુય ”-
 હાથકડીમા વાધવું, “ કુમ્ભીપાક ” કુમ્ભીમા પકાવવું, “ દહણ ”-અગ્નિમા બાળવું
 “ સીહપુચ્છણ ”-લિંગને તોડવું, “ ઉબ્બવણ ” કામીએ લટકાવવું, “ સૂલભેય ”-
 સૂળી પર ચડાવવું, “ ગયચલ્લણ ”-હાથીના પગ તળે ચગાવવું “ કરચરણ-
 કન્નનાસોટ્ઠસીસછેયણ ” હાથ, પગ, કાન, નાક, ટોઠ અને મસ્તકનું છેદન કરી

पृथीर्षन्नेदनम्=' जिह्मच्छेयण ' जिह्वान्नेदनम् , ' वसणनयणहिययदतभजण ' वृषणनयनहृदयदन्तभञ्जनम्=वृषणम्य=अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्ताना च भञ्जनम्=प्रिनाशनम् , ' जोत्तलयकसप्पहार ' योक्त्रलताकशाप्रहारः-योक्त्रेण =रज्जुविशेषेण, लतया=वेगादिलतया, कशया च यः प्रहार, प्रहारः, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पादपार्णिजानुमस्तरनिपात'=पादयोः=चरणयोः, पाण्योः=पादपश्चाद्भागयो, जानुनो.= ' घुटना ' इतिभाषा प्रसिद्धोश्च प्रस्तरनिपातः=पाषाणपातः, ' पीण ' पीडन=पन्ने पीडनम् , ' कविकच्छु ' कविकच्छु.=तीव्रकण्टकितकारकवनस्पतिविशेषः, ' अगणि ' अग्निः, ' विच्छुयडक ' वृश्चिकदंश ' वायायवदसमसगनिवाए ' वातातपदगमशकनिपातः=वातस्य आतस्य दशाना मशकाना च निपतेनम्, एतेषा द्वन्द्व, तौस्तथोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा-' दुट्टणिसिज्ज दुन्निसीहिया ' दुष्टनिपद्यादुनैपेधिकपः=दुष्टनिपद्या धुद्रामनानि, दुनैपेधिकस्य=रुष्टकर स्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, ' तेसु ' तेषु-उक्तेषु ' अमणुन्नपावगेषु ' अमनोत्पापकेषु

नासिका, होठ ओर मस्तरु का छेदन करना, ' जिह्मच्छेयण ' जीभ का छेदन करना ' वसण-नयण-हियय-दत-भजण ' अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दातोंका भागना, ' जोत्त लय कस प्पहार ' चमड़े की रस्सी से, वेत्रा दिलता से, तथा चातुक से प्रहार करना, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पाव, एडी, घुटना, इन पर पत्थर का गिरना, ' पीलण ' यत्र में पीलना, ' कविकच्छु-अगणि-विच्छुय-डक ' करेंच की फली, अग्नि और विच्छू का डक-स्पर्श, ' वायायवदसमसगनिवाए ' शीतकाल में ठंडे पवन का लगाना उष्णकाल में धूप का लगाना, तथा डांस और मच्छरों का शरीर पर गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके (दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया) कष्टकारक आसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

वसु, " जिह्मच्छेयण " छेदनु छेदन करवु, " वसण-नयण-हियय-दत-भजण " अण्डकोष, नेत्र, हृदय अने दात तोडना, " जोत्त-लय-कस प्पहार " आभडानी होरीथी नेतर-आदि लताथा तथा आणुकथी इटकारवु, " पादपण्हिजाणुपत्थर-निवाय " पग, एडी अने घुटणु पर पत्थरनु पडवु, " पीलण " -यत्रमा पीलवु, " कविकच्छु-अगणि-विच्छुय डक " -उरैयनी इणी, अग्नि अने विछीने उण, " वायायवदसमसगनिवाए " शियाणाभा ठडे पवन लागवो, उनाणाभा तडडे लागवो, तथा डांस अने मच्छरौनु शरीर पर पडवु, ओ णधा स्पर्शने शरीर पर अनुभव उरीने " दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया " उण्टकारक आसन अने स्वाध्यायनी भूमिना स्पर्शने अनुभवने " तेसु अमणुन्नपावगेषु " ते

अरुचिकरेणित्यर्थः, 'फामेसु' 'स्पर्शेषु' 'अन्नेसु' अन्येषु च 'बहुविहेसु' बहुविधेषु 'एवमाइसु' एवमादिकेषु—एष मकारेषु 'कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु' कर्कशगुरुगीतोष्णरक्षेसु कर्कशाः=रुठिनाः, गुरुः=भाराः, शीताः=शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रुक्षाः=परुषाः एषा उन्धस्तेषु तयोक्तेषु स्पर्शेषु च 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'न रुसियव्व' न रोष्टव्यम्=रोषो न कर्तव्य इत्यर्थः, 'न हीलियव्व' न हीलितव्यम्=भयना न कर्तव्या, 'न निदियव्व' न निन्दितव्यम्, स्वमनसि निन्दा न कर्तव्या, 'न खिसियव्व' न खिसितव्यम्=परममक्षे च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियव्व' न छेत्तव्यम्=छेदन न कर्तव्यम् । 'न भिदियव्वं' न भेत्तव्यम्-भेदन न कर्तव्यम्, 'न वहेयव्व' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा-तद्विषये 'जुगुत्तावत्तियावि' जुगुप्मावृत्तिकाऽपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउ' उत्पादयि तु 'न लम्मा' न लम्बा-नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्शा-श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्मा प्रादुर्भवेत् तथा कर्तव्यमिति भावः ।

अमणुत्तपावगेसु) उन अमनोजपापक-अरुचिकारक-स्पर्शा में, तथा (एवमाइसु बहुविहेसु कक्खडगुरुसीय उसिणलुक्खेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रुक्ष स्पर्श हैं उनमें (समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व, न निदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्व, न भिदियव्व, न वहेयव्व, न जुगुत्तावत्तियावि लम्माउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये । निन्दा नहीं करनी चाहिये । गर्हा नहीं करनी चाहिये । उन पर खिसयाना नहीं चाहिये । उस अमनोज स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये । भेदन नहीं करना चाहिये । नाश नहीं करना चाहिये । और न अपने तथा परके मन में उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

अमनोज पापक-अरुचिकारक स्पर्शाभा, तथा ' एवमाइसु बहुविहेसु कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु " ते उपगत भीत पणु ने उर्दश, गुरु, शीत, उष्ण, स्पर्श छे तेभना प्रत्ये " समणेण न रुसियव्व, न हीलियव्व न निदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्व, न भिदियव्व, न, वहेयव्व, न जुगुत्तावत्तिया वि लम्मा उप्पाएउ " साधुअे रुष्ट थणु-लेधअे नही, तेभनी अेवहेलना न उरवी लेधअे निदा न उरवी लेधअे गर्हा न उरवी लेधअे तेभना पर भिजियावु लेधअे नही ते अमनोज स्पर्शावाणा द्रव्यउ छेदन करवु लेधअे नही, छेदन करवु लेधअे नही नाश उरवे लेधअे नही अने पोताना के अन्याना भनभा तेभना प्रत्ये ग्लानि उत्पन्न उरवानी प्रवृत्ति न

सम्प्रति पञ्चमीं भावनामुपसहरन्नाह—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिदियभावणा-
भाविओ' स्पर्शेन्द्रियभावनाभावित, 'अतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ'
भवति । ततश्च 'मणुन्नामणुन्नसुन्निभदुन्निभरागद्वेषपणिहितात्मा=मनोवाऽमनोज्ञा ये
सुरभिदुरभय.=शुभाशुभम्पर्शास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र पणिहितात्मा=सवृतात्मा, 'साहू'
साधु, 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'सवुडे' सवृत.=सवरवान् 'पणि
हिइदिण' पणिहितेन्द्रियः, पणिहित=प्रगीकृत इन्द्रियो येन तथाभूतः सन् 'धम्म'
धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

की चेष्टा ही करना चाहिये । अब सूत्रकार इस पांचवीं भावना का उप-
सहार करते हुए कहते हैं (एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पाभ
वइ मणुन्नामणुन्नसुन्निभदुन्निभरागोदोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते सवुडे
पणिहिइदिण धम्म चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से
भावित जय मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और
अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श में रागद्वेष करने से रहित बन जाता है । इस
तरह उनमें रागद्वेष करने से सवृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन,
वचन और कायरूप त्रियोंगों को स्पर्श सबी शुभ अशुभ के व्यापार
से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के सवरण से युक्त बन
जाता है । इस प्रकार इस इन्द्रिय के सवरण से युक्त बना हुआ वह साधु
चारित्ररूप धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है ।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस परिग्रह विरमणव्रत की
पाचवीं भावना का स्वरूप प्रगट किया है । इस पाचवीं भावना का

उरवी जेष्ठजे हुये सूत्रकार आ पाचमी भावनाने उपसहार कर्ता कहे छे
“ एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुन्निभदुन्निभ राग-
दोसे पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते सवुडे पणिहिइदिण धम्म चरेज्ज ” आ
गीते व्याख्ये मुनि स्पर्शेन्द्रियनी भावनाथी भावित थई जय छे त्यारे ते मनो-
ज्ञइय शुभ स्पर्श प्रत्ये तथा अमनोज्ञइय अशुभ स्पर्श प्रत्ये रागद्वेषथी रहित
जनी जय छे आ गीते तेमना प्रत्ये रागद्वेष करवाथी निवृत्त थयेल साधु
पोताना मन, वचन अने कायइय त्रये योगेने स्पर्श मणधी शुभ अशुभ
व्यापारथी रहित उगी ले छे, अने आ स्पर्शेन्द्रिय सवरथी युक्त थई जय
छे आ गीते आ इन्द्रियना सवरथी युक्त जनेल ते साधु चारित्रइय धर्मनी
सारी गीते आराधना उवा लागी जय छे

भावार्थ—सूत्रकारे आ सूत्र द्वारा आ परिग्रह विरमण व्रतनी पाचमी
भावनानु स्पष्टीकरण कर्तुं छे ते पाचमी भावनानु नाम स्पर्शेन्द्रिय सवरण

अरुचिकरेष्वित्यर्थः, 'फामेषु' 'स्पर्शेषु' 'अन्नेषु' अन्येषु च 'बहुविहेषु' बहुविधेषु 'एवमाइएषु' एवमादिकेषु—पर प्रकारेषु 'कक्कडगुरुसीय उसिणलुक्खेषु' कर्कशगुरुशीतोष्णरुक्षेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः=शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रुक्षाः=परुषाः, एषा ढन्ढस्तेषु तयोक्तेषु स्पर्शेषु च 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'न रुसियञ्च' न रोष्टव्यम्=रोपो न कर्तव्य इत्यर्थः, 'न हीलियञ्च' न हीलितव्यम्=अपत्ता न कर्तव्या, 'न निदियञ्च' न निन्दितव्यम्, समनसि निन्दा न कर्तव्या, 'न गिरियञ्च' न खिसितव्यम्=परसमक्षे च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियञ्च' न छेत्तव्यम्=छेदन न कर्तव्यम् । 'न भिदियञ्च' न भेत्तव्यम्-भेदन न कर्तव्यम्, 'न वहेयञ्च' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा-तद्विषये 'जुगुत्तावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिकाऽपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउं' उत्पादयि तु 'न लभा' न लभ्या-नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्शा-श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेत्तथा कर्तव्यमिति भावः ।

अमणुजपावगेषु) उन अमनोजपापक-अरुचिकारक-स्पर्शा में, तथा (एवमाइएषु बहुविहेषु कक्कडगुरुसीय उसिणलुक्खेषु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रुक्ष स्पर्श है उनमें (समणेण न रुसियञ्च, न हीलियञ्च, न निदियञ्च, न गरहियञ्च, न खिसियञ्च, न छिदियञ्च, न भिदियञ्च, न वहेयञ्च, न जुगुत्तावत्तियावि लब्भाउप्पाएउं साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये । निन्दा नहीं करनी चाहिये । गद्गर् नहीं करनी चाहिये । उन पर खिस जाना नहीं चाहिये । उस अमनोज्ञ स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये । भेदन नहीं करना चाहिये । नाश नहीं करना चाहिये । और न अपने तथा परके मन में उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शोंमें, तथा 'एवमाइएषु बहुविहेषु कक्कड-गुरुसीयउसिणलुक्खेषु' से उपरान्त भीज पणु ने उर्करा, गुरु, शीत, उष्ण, स्पर्श' छे तेभना प्रत्ये "समणेण न रुसियञ्च, न हीलियञ्च न निदियञ्च, न गरहियञ्च, न खिसियञ्च, न छिदियञ्च, न भिदियञ्च, न, वहेयञ्च, न जुगुत्तावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउं" साधुओं को रुष्ट धनु-लोभ्ये नही, तेभनी ओवहेलना न उरवी लोभ्ये निन्दा न उरवी लोभ्ये गद्गर् न उरवी लोभ्ये तेभना पर खिसियाधु लोभ्ये नही ते अमनोज्ञ स्पर्शवाणा द्रव्यउ छेदन करधु लोभ्ये नही, छेदन करधु लोभ्ये नही नाश उरवी लोभ्ये नही अने पोताना के अन्यना मनमा तेभना प्रत्ये ग्लानि उत्पन्न उरवानी प्रवृत्ति न

સમ્પ્રતિ પञ્ચમી ભાવનામુપસહરન્નાહ—એવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'ફાસિદિયભાવના-
ભાવિઓ' સ્પર્શેન્દ્રિયભાવનામાચિત. 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા-જીવો જીવઃ 'ભવઈ'
ભવતિ. તતથ્ર 'મણુન્નામણુન્નમુન્નિમદુન્નિમરાગદ્વેષપણિહિતાત્મા=મનોનાડમનોજ્ઞા યે
સુરમિદુરમયઃ=શુભાશુભમ્પર્ગાસ્તેપુ યદ્રાગદ્વેષ તત્રપણિહિતાત્મા=સવૃતાત્મા, 'સાહુ'
સાધુ. 'મણવયણકાયગુત્તે' મનોવચનકાયગુપ્તઃ 'સવુડે' સવૃત્ત.=સવરગાન્ 'પણિ
હિડિદિ' પણિહિતેન્દ્રિયઃ, પણિહિત.=વશીકૃત્ત્વ ઇન્દ્રિયો યેન તથાભૂત. સન્ 'ધમ્મ'
ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ 'ચરેજ્જ' ચરેત્=અનુતિઠેન્ ॥ સુ૦ ૧૧ ॥

કી ચેષ્ટા હી કરના ચાહિયે. અત્ર સૂત્રકાર ડસ પાચવીં ભાવના કા ઉપ-
સહાર કરતે હુવ કહતે હે (અત્ર ફાસિદિયભાવનાભાવિઓ અતરપ્પામ
વદ્મણુન્નમુન્નિમદુન્નિમરાગોદોસે પણિહિયપ્પા સાહુ મણવયણકાયગુત્તે સવુડે
પણિહિડિદિ ધમ્મ ચરેજ્જ) હસ પ્રકાર સે સ્પર્શ ઇન્દ્રિય કી ભાવના સે
ભાવિત જવ મુનિ હો જાતા હે તત્ર વદ્મ મનોજ રૂપ શુભ સ્પર્શ મેં ઓર
અમનોજરૂપ અશુભ સ્પર્શ મે રાગદ્વેષ કરને સે રહિત વન જાતા હે. હસ
તરહ ઉનમેં રાગદ્વેષ કરને સે સવૃતાત્મા વના હુઆ સાધુ અપને મન,
વચન ઓર કાયરૂપ ત્રિયોગોં કો સ્પર્શ સવવી શુભ અશુભ કે વ્યાપાર
સે રહિત કર લેતા હે તથા હસ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત વન
જાતા હે. હસ પ્રકાર ડસ ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત વના હુઆ વદ્મ સાધુ
ચારિત્રમ્પ ધર્મ કી આરાધના અચ્છી તરહ સે કરને લગતા હે.

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ડસ સૂત્ર દ્વારા હસ પરિગ્રહ વિરમણવ્રત કી
પાચવીં ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રગટ કિયા હે. હસ પાચવીં ભાવના કા

કરવી ભેદએ હુવે સૂત્રમાર આ પાચમી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા કહે છે
“ એવ ફાસિદિયભાવનાભાવિઓ અતરપ્પા ભવઈ મણુન્નામણુન્નમુન્નિમદુન્નિમ રાગ-
દોસે પણિહિયપ્પા સાહુ મણવયણકાયગુત્તે સવુડે પણિહિડિદિ ધમ્મ ચરેજ્જ ” આ
રીતે બ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ જાય છે ત્યારે તે મનો-
જરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત
બની જાય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ
પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ મળાથી શુભ અશુભ
વ્યાપારથી રહિત ડગી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ જાય
છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની
સારી રીતે આરાધના કરવા લાગી જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાચમી
ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

અરુચિકરેણિત્યર્થઃ, 'કામેષુ' 'સ્પર્શણ્ય', 'જ્ઞાનેષુ' અન્યેષુ ચ 'બહુવિ
 હેષુ' 'બહુવિધેષુ' 'એવમાદૃષ્ટુ' 'એવમાદિકેષુ'—પર પ્રકારેષુ 'કચ્ચડગુરુમીય
 ઉસિણલુચ્ચેષુ' કર્કશગુરુશીતોષ્ણરુક્ષેષુ કર્કશઃ=કરુણાઃ, ગુરવઃ=મારાઃ, શીતાઃ
 =શીતલાઃ, ઉષ્ણાઃ=તાપનાઃ, રુક્ષાઃ=પરુષાઃ, એવા દ્વન્દ્વસ્તેષુ તથોક્તેષુ સ્પર્શેષુ ચ
 'સમણેણ' શ્રમણેન-સાધુના 'ન રુસિયન્વ' ન રોષ્ટવ્યમ્=રોષો ન કર્તવ્યમ્, 'ન
 હીલિયન્વ' ન હીલિતવ્યમ્=અવજ્ઞા ન કર્તવ્યમ્, 'ન નિદિયન્વ' ન નિન્દિ
 તવ્યમ્, સ્વમનસિ નિન્દા ન કર્તવ્યમ્, 'ન ત્વિસિયન્વ' ન ત્વિસિતવ્યમ્=પરસમક્ષે
 ચ નિન્દા ન કર્તવ્યમ્, 'ન છિદિયન્વ' ન છેદતવ્યમ્=છેદન ન કર્તવ્યમ્, 'ન મિદિયન્વ' ન મેદ
 તવ્યમ્-મેદન ન કર્તવ્યમ્, 'ન વહેયન્વ' ન વહન્તવ્યમ્=વિનાશો ન કર્તવ્યમ્, તથા-તદ્વિષયે 'જુગુઝાવત્તિયાવિ' જુગુપ્સાટ્તિકાઽપિ સ્વસ્ય પરસ્ય
 વા હૃદિ 'ઉપ્પાણ' ઉત્પાદયિતુ 'ન લભા' ન લભ્યા-નોચિતા યથા પૂર્વોક્તસ્પર્શ
 -શ્રવણિષયે સ્વસ્ય પરસ્ય વા હૃદિ જુગુપ્સા પ્રાદુર્ભવેન્ન તથા કર્તવ્યમિતિ ભાવઃ ।

અમણુન્નપાવગેષુ) એ અમનોજપાપક-અરુચિકારક-સ્પર્શો મેં, તથા
 (એવમાદૃષ્ટુ બહુવિધેષુ કચ્ચડગુરુમીય ઉસિણલુચ્ચેષુ) એનું સે મિત્ર
 ઓર જો કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ, રુક્ષ સ્પર્શો હૈં એનમેં (સમણેણ ન
 રુસિયન્વ, ન હીલિયન્વ, ન નિદિયન્વ, ન ગરહિયન્વ, ન ત્વિસિયન્વ, ન
 છિદિયન્વ, ન મિદિયન્વ, ન વહેયન્વ, ન જુગુઝાવત્તિયાવિ લભ્યાઉપ્પાણ
 સાધુ કો રુષ્ટ નહીં હોનાં ચાહિયે, એનકી અવહેલના નહીં કરની ચાહિયે ।
 નિંદા નહીં કરની ચાહિયે । ગર્હા નહીં કરની ચાહિયે । એન પર ત્વિસ
 યાના નહીં ચાહિયે । એવ અમનોજ સ્પર્શો કે આશ્રયભૂત દ્રવ્ય કા છેદન
 નહીં કરના ચાહિયે । મેદન નહીં કરના ચાહિયે । નાશ નહીં કરના
 ચાહિયે । ઓર ન એવને તથા પરકે મન મેં એનપર ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરને

અમનોજ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોમા, તથા ' એવમાદૃષ્ટુ બહુવિધેષુ કચ્ચડ-
 ગુરુમીયઉસિણલુચ્ચેષુ ' તે ઉપરાંત બીજા પાણી જે કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ,
 સ્પર્શો છે તેમના પ્રત્યે " સમણેણ ન રુસિયન્વ, ન હીલિયન્વ ન નિદિયન્વ,
 ન ગરહિયન્વ, ન ત્વિસિયન્વ, ન છિદિયન્વ, ન મિદિયન્વ, ન, વહેયન્વ, ન
 જુગુઝાવત્તિયા વિ લભ્યા ઉપ્પાણ " સાધુએ રુષ્ટ થવું-ભેદએ નહીં, તેમની
 એવહેલના ન કરવી ભેદએ નિંદા ન કરવી ભેદએ ગર્હા ન કરવી ભેદએ
 તેમના પર ત્વિસિયાવું ભેદએ નહીં તે અમનોજ સ્પર્શવાળા દ્રવ્યનું છેદન
 કરવું ભેદએ નહીં, ભેદન કરવું ભેદએ નહીં નાશ કરવો ભેદએ નહીં અને
 ઘોતાના કે અન્યના મનમા તેમના પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરવાની પ્રવૃત્તિ ન

સમ્પતિ પञ્ચમીં ભાવનાપ્રપસદ્દનાહ—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिदियभावणा-
भाविवो' स्पर्शेन्द्रियभावनाभावित. 'अतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ'
भवति । ततश्च 'मणुन्नामणुन्नसुद्धिभदुन्मिरागद्वेषप्रणिहितात्मा=मनोनाऽमनोज्ञा ये
सुरमिदुरभय =शुभाशुभस्पर्शास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र प्रणिहितात्मा=सवृतात्मा, 'साहु'
साधु. 'मणवयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'सवुडे' सवृत.=सवरवान् 'पणि
हिडिदिण्' प्रणिहितेन्द्रियः, प्रणिहित.=वशीकृत इन्द्रियो येन तदाभूत. सन् 'धम्म'
धर्म=श्रुतचारित्र्यलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

કી ચેષ્ટા હી કરના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર ઇસ પાંચવીં ભાવના કા ઉપ-
સહાર કરતે હુવ કહતે હે (एव फासिदियभावणाभाविवो अतरप्पाभ
वइ मणुन्नामणुन्नसुद्धिभदुन्मिरागदोसे पणिहियप्पा साहु मणवयणकायगुत्ते सवुडे
पणिहिडिदिण धम्म चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से
भावित जव मुनि हो जाना है तव वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और
अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श में रागद्वेष करने से रहित बन जाता है । इस
तरह उनमें रागद्वेष करने से सवृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन,
वचन और कायरूप त्रियोंगों को स्पर्श सबी शुभ अशुभ के व्यापार
से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के सवरण से युक्त बन
जाता है । इस प्रकार इस इन्द्रिय के सवरण से युक्त बना हुआ वह साधु
चारित्र्य धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है ।

भाचार्य—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा इस परिग्रह विरमणव्रत की
पांचवीं भावना का स्वरूप प्रगट किया है । इस पांचवीं भावना का

કરવી જોઈએ હવે સૂત્રકાર આ પાંચમી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા કહે છે
“ एव फासिदियभावणाभाविवो अतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुद्धिभदुन्मिराग
दोसे पणिहियप्पा साहु मणवयणकायगुत्ते सवुडे पणिहिडिदिण धम्म चरेज्ज ” આ
રીતે બ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ જાય છે ત્યારે તે મનો-
જ્ઞરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત
બની જાય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ ડરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ
પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ મળેથી શુભ અશુભ
વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ જાય
છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે માધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની
સારી રીતે આગધના કરવા લાગી જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાંચમી
ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાંચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

અપરિસ્વાવી=કર્મજલપ્રવેશરહિતત્વાત્, 'અસકિલિટ્થો' અસંકિલ્પઃ=અવમાધિમા
 વર્જિતત્વાત્ 'સુદ્ધો' શુદ્ધઃ-કર્મમલવર્જિતત્વાત્, 'સઘ્વજિણમણુણાઓ' સર્વ
 જિનાનુશાતઃ-સકલપ્રાણિહિતકારકત્વાત્સર્વે રહદ્ધિરક્ષીકૃતશ્રાસ્તિ । એવમ્=ઉક્તપ્ર-
 કારેણ 'પચમે સવરદાર' પચમે સવરદ્વાર 'ફાસિય' સ્પૃષ્ટ કાયેન, 'પાલિય'
 પાલિત-સતતપ્રયોગેન સેવિતમ્ 'સોદિય' શોધિતમ્-અતિચારવર્જનેન 'તીરિય'
 તીર્ણ-તીર પ્રાપિત સમ્યક્પાલનાત્, 'કિદ્દિય' કીર્તિતમ્-સ્તુતમ્=અન્યાણકા
 રમ્ત્વાત્, 'આરાદિય' આરાધિતમ્-ત્રિકરણત્રિયોગે, સમ્યગાચરિતત્વાત્,
 'આણાણ' આનયા-સર્વજ્ઞવચનેન 'અણુપાલિય' અનુપાલિત=દૃઢમનસ્કત્વાચ્ચ

હૈ, (અપરિસ્વાઈ) વિન્દુમાત્ર મી કર્મજલ ઢસમે પ્રવિષ્ટ નહીં હો પાતા હૈ
 હસલિયે યહ અપરિસ્વાવી હૈ । (અસકિલિટ્થો) અસમાધિભાવ સે રહિત
 હોને કે કારણ યહ અસંકિલ્પ્ટ હૈ, ઓર (સુદ્ધો) કર્મમલ સે વર્જિત
 હોને કે કારણ યહ શુદ્ધ હૈ । (સઘ્વજિણમણુણાઓ) ટસસે સમસ્ત
 પ્રાણિયો કા હિત હુઆ હૈ ઓર આગે મી હિત હોગા જેસા જાનકર હી
 સમસ્ત અરિહતભગવતોં ને હસે અગીકૃત ક્રિયા હૈ । (અથ પચમ સવર-
 દાર) હસ ઉક્ત પ્રકાર સે જો હસ સવરદ્વાર કો (ફાસિય) અપને
 શરીર સે આચરિત કરતે હૈ (પાલિય) નિરન્તર ઉપયોગપૂર્વક
 હસકા સેવન કરતે હૈ, (સોદિય) અતિચારોં સે હસે રહિત કરતે
 હૈ, (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસકા સેવન કરતે હૈ, (કિદ્દિય) દૂસરો
 કો 'હસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ દેતે હૈ (આરાદિય) ત્રીનકરણ ત્રીન
 યોગ સે હસકી મલી પ્રકાર સે અનુપાલના કરતે હૈ, (આણાણ અણુપાલિય
 મવહ) ડનકે દ્વારા યહ યોગ તીર્થકર પ્રભુ કી આજ્ઞા અનુસાર હી પાલિત

તેનાથી પાપનો સ્રોત છિન્ન થઈ જાય છે તેથી તે અચ્છિદ્ર છે, “અપરિસ્વાઈ”
 બિન્દુ જેટલું પણ કર્મજળ તેમાં પ્રવેશ પામી શકતું નથી, તે અપરિસ્વાવી
 છે, “અસકિલિટ્થો” અસમાધિભાવથી રહિત હોવાને કારણે તે અસંકિલ્પ્ટ છે
 અને “સુદ્ધો” કર્મમળ વિનાનું હોવાથી તે શુદ્ધ છે “સઘ્વજિણમણુણાઓ”
 તેનાથી સમસ્ત પ્રાણીઓનું હિત થયું છે અને ભવિષ્યમાં પણ હિત થશે
 એવું જાણીને જ સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેને માન્ય કરેલ છે “પચ
 પચમ સવરદાર” આ સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે જે આ પાત્રમાં સવરદ્વારનું “ફા
 સિય” પોતાના શરીરથી આચરણ કરે છે, “પાલિય” નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક
 તેનું સેવન કરે છે, “સોદિય” અતિચારથી તેને રહિત કરે છે, “તીરિય”
 પૂર્ણ રીતે તેનું સેવન કરે છે “કિદ્દિય” અન્યને તેના પાલનનો ઉપદેશ આપે
 છે “આરાદિય” ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગથી સારી રીતે તેની આરાધના કરે
 છે, “આણાણ અણુપાલિય મવહ” તેમના દ્વારા તે યોગનું તીર્થકર પ્રભુની

भवति । एवम्=उत्तरूप पचम सवरद्वार, 'णायमुणिणा' ज्ञातमुनिना-प्रसिद्धक्ष-
त्रियवंशोद्भवेन मुनिना भगवता महावीरेण 'पण्णविय' प्रज्ञापितम्=शिष्येभ्य
सामान्यतया कथितम् 'परुविय' प्ररूपितम्=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथितम्,
'पसिद्ध' प्रसिद्धम्=प्रख्यातम्, प्रमाणप्रतिष्ठितत्वात् 'सिद्धवरसासण' सिद्धवर-
शासनम्=सिद्धाना-निष्ठितार्थाना=कृतकृत्यानामितियात् वरशासन=प्रधानाज्ञारू-
पम्, 'इण' इदम् 'आघविय' आख्यात=सर्वतोभावेन कथितम्, 'सुदेसिय'
सुदेशितम्=सदेवमनुजामुराया सभाया सुवृत्तपदिष्ट 'पसत्थ' प्रशस्त 'पचम
सवरदार' पचम सवरद्वार 'समत्त' समाप्तम् 'त्तिवेमि' इति ब्रवीमि, अस्या
र्थः पूर्वमुक्तः ॥ सू-१२ ॥

हुआ माना जाता है । (एव) इस प्रकार से (नायमुणिणा भगवया)
ज्ञात नामक क्षत्रियवश में उत्पन्न हुए मुनिराज भगवान् महावीर ने
(पण्णविय) शिष्यों के लिये इस पचम सवर द्वार को सामान्यरूप से
समझाया, (परुविय) भेद प्रभेदपूर्वक उसका कथन किया है । (पसिद्ध)
प्रमाणप्रतिष्ठित होने से जिन वचन में यह प्रख्यात हुआ है, अर्थात्
जिनवचन के अनुसार ही आचार्यपरपरा से इसका पालन करना इसी
रूप से चला आ रहा है । तथा (सिद्धवरसासणमिण) भूतकाल में
जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह प्रधान आज्ञारूपशासन है ।
(आघविय) ऐसा भगवान् महावीर प्रभुने सर्वभाव से इसके विषय
में कहा है और (सुदेसिय) देवों, मनुजों तथा असुरों से युक्त परि-
पदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) सर्व प्राणियों का हितका-
रक होने से मंगलमय है, इस प्रकार यह (पचम सवरदार समत्त)
पचमसवरद्वार समाप्त हुआ, (त्तिवेमि) ऐसा मैं कहता हूँ । अर्थात्

આજ્ઞા પ્રમાણે જ પાલન થયું ગણાય છે “ એવ ” આ રીતે “ નાયમુણિણા
ભગવયા ” જ્ઞાતૃ કૃણ નામના ક્ષત્રિય વશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન
મહાવીરે “ પણ્ણવિય ” શિષ્યોને માટે આ પાઠ્યમાં સવરદ્વારને સામાન્યરૂપે
સમજાવ્યું છે, “ પરુવિય ” ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનું વિવેચન કર્યું છે, “ પસિદ્ધ ”
પ્રમાણ પ્રતિષ્ઠિત હોવાથી જિનવચનમાં તે પ્રખ્યાત થયું છે, એટલે કે જિન
વચન પ્રમાણે જ આચાર્ય પરપરાથી તેનું આ રીતે પાલન થતું આવ્યું છે,
તથા “ સિદ્ધવરસાસણમિણ ” ભૂતકાળમાં જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા તેમનું આ
પ્રધાન આજ્ઞારૂપ શાસન છે, “ અઘવિય ” એવું ભગવાન મહાવીરે સર્વ
ભાવથી તેને વિષે કહ્યું છે, અને “ સુદેસિય ” દેવો મનુષ્યો અને અસુરોની
પરિપક્ષમાં તેનો ઉપદેશ દીધો છે “ પસત્થ ” તે સર્વે પ્રાણીઓનું હિત કર-
નાર હોવાથી મંગળમય છે, આ રીતે આ “ પચમ ” પાઠ્યમાં “ સવરદાર
સમત્ત ” સવરદ્વાર સમાપ્ત થયું “ ત્તિવેમિ ” એમ હું કહું છું. એટલે કે

અપરિસ્નાવી=કર્મજલપ્રવેશરહિતત્વાત્, 'અસકિલિટ્થો' અસંચિલ્પઃ=અસમાધિમા
વર્જિતત્વાત્ 'શુદ્ધો' શુદ્ધઃ=કર્મમલવર્જિતત્વાત્, 'સર્વજિણમણુગાઓ' સર્વ
જિનાનુશ્ચાતઃ- સકલપ્રાણિહિતકાર્મકત્વાત્સર્વે રહદ્ધિરદ્વીકૃતશ્ચાસ્તિ । ણ્યમ્=ઉક્તપ-
ચારેણ 'પચમે સવરદાર' પચમ સવરદ્વાર 'ફાસિય' સ્પૃષ્ટ ક્રાયેન, 'પાલિયં'
પાલિત-સતતમુપયોગેન સેવિતમ્ 'સોદિય' શોધિતમ્-અતીચારવર્જનેન 'તીરિય'
તીર્ણ-તીર પ્રાપિત સમ્યક્પાલનાત્, 'કિટ્ટિય' કીર્તિતમ્-સ્તુતમ્=કલ્યાણકા
રમ્ત્વાત્, 'આરાહિય' આરાધિતમ્-ત્રિકરણત્રિયોગે, સમ્યગ્ચારિતત્વાત્,
'આણાણ' આજ્ઞયા-સર્વજ્ઞવચનેન 'અણુપાલિય' અણુપાલિત=દૃઢમનસ્કત્વાન્ચ

હૈ, (અપરિસ્નાઈ) વિન્દુમાત્ર મી કર્મજલ હસમે પ્રવિષ્ટ નહીં હો પાતા હૈ
હસલિયે યદ અપરિસ્નાવી હૈ । (અસકિલિટ્થો) અસમાધિમાત્ર સે રહિત
હોને કે કારણ યદ અસચિલ્પઃ હૈ, ઓર (શુદ્ધો) કર્મમલ સે વર્જિત
હોને કે કારણ યદ શુદ્ધ હૈ । (સર્વજિણમણુગાઓ) ટસસે સમસ્ત
પ્રાણિયો કા રિત દુઆ હૈ ઓર આગે મી રિત હોગા ણેસા જાનકર હી
સમસ્ત અરિહતભગવતો ને હસે અગીકૃત ક્રિયા હૈ । (ણ્ય પચમ સવર-
દાર) હસ ઉક્ત પ્રકાર સે જો હસ સવરદ્વાર કો (ફાસિય) અપને
શરીર સે આચરિત કરતે હૈ (પાલિય) નિરન્તર ઉપયોગપૂર્વક
હસકા સેવન કરતે હૈ, (સોદિય) અતિચારો સે હસે રહિત કરતે
હૈ, (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસકા સેવન કરતે હૈ, (કિટ્ટિય) દૂસરો
કો હસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ દેતે હૈ (આરાહિય) ત્રીનકરણ ત્રીન
યોગ સે હસકી મલી પ્રકાર સે અણુપાલના કરતે હૈ, (અણાણ અણુપાલિય
ભવઈ) ડનકે દ્વારા યદ યોગ તીર્થકર પ્રભુ કી આજ્ઞા અનુસાર હી પાલિત

તેનાથો પાપનો ઓત છિન્ન થઈ જાય છે તેથી તે અચિલ્પ છે, “અપરિસ્નાઈ”
જિન્દુ જેટલુ પણ કર્મજળ તેમા પ્રવેશ પામી ગકતુ નથી, તે અપરિસ્નાવી
છે, “અસકિલિટ્થો” અસમાધિલાવથી રહિત હોવાને કારણે તે અસચિલ્પ છે
અને ‘શુદ્ધો’ કર્મમળ વિનાનુ હોવાથી તે શુદ્ધ છે “સર્વજિણમણુગાઓ”
તેનાથી સમસ્ત પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે અને ભવિષ્યમા પણ હિત થશે
એવુ જાણીને જ સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેને માન્ય કરેલ છે ‘પચ
પચમ સવરદાર’ આ સૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે જે આ પાપમા સવરદ્વારનુ ‘ફા
સિય’ પોતાના શરીરથી આચરણુ કરે છે, “પાલિય” નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક
તેનુ સેવન કરે છે, ‘સોદિય’ અતિચારોથી તેને રહિત કરે છે, ‘તીરિય’
પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે “કિટ્ટિય” અન્યને તેના પાલનનો ઉપદેશ આપે
છે “આરાહિય” ત્રણ કરણુ અને ત્રણ યોગથી સાગી રીતે તેની આરાધના કરે
છે, “આણાણ અણુપાલિય ભવઈ” તેમના દ્વારા તે યોગનુ તાર્થકર પ્રભુની

અપિ ' વયાઈ ' ત્રનાનિ-અર્હિમાદીનિ ' મહવ્યાઢ ' મહાત્રતાનિ ' હેઝસયવિવિત્ત-
પુષ્લાઈ ' હેતુશતવિવિત્તપુષ્કલાનિ=હેતુશતૈઃ= ઉપવત્તિશતૈઃ વિવિત્તૈઃ=નિર્દોષૈઃ
કૃત્યા પુષ્કલાનિ=ત્રિતીર્ણાનિ ' કહિયાઢ ' કથિતાનિ 'અરિહતસામણે' અર્હચ્છા-
સને-જિનપ્રવચને । તે ચ ' સવરા. ' સમાસેણ ' સમાસેન સક્ષેપેણ ' પચ' પચ્ચ-
પચ્ચસરયકાઃ, ' વિત્થરેણ ડ ' વિસ્તરેણ તુ ' પળ્લવીસઢ ' પચ્ચવિંશતિઃ-પ્રતિસવ-
રદ્વાર પચ્ચપચ્ચભાવનામત્તેન પચ્ચવિંશતિમરયકાઃ ભવન્તિ । અથ સવરધારિણા
માત્રિની દશા વર્ણયેતે--' સજણ ' સયત -સાપુ' ' સમિણ ' સમિતઃ-ઈર્યાસમિત્યા-
દિભિઃ પ્રચ્ચવિંશતિભાવનાભિર્યુક્ત , ' સહિણ ' સહિતઃ-જ્ઞાનાદર્શનાભ્યા યુક્ત ,
' સવુઢે ' સટ્ટતઃ=રૂપાયેન્દ્રિયસવરણયુક્તઃ ' સયા ' સદા ' જયણઘડણસુવિસુદ્ધ-

અથ સૂત્રકાર પાચો સવરોં કા ઉપસંહાર કરતે હુણ કરતે હૈ—
' ણ્યાઈ ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(સુવચ !) શોભનવ્રત સપન્ન હે જન્મૂ ! (ણ્યાઢ પચ્ચ મહ
વ્યાઢ) એ પાચોં હી અર્હિસા આદિક મહાવ્રત (અરિહતસાસણે હેઝસયવિ-
વિત્તપુષ્કલાઈ કહિયાઢ) અર્હત પ્રભુ કે શાસન મેં સૈકડો નિર્દોષ યુક્તિયોં
સે વિસ્તૃત કરકે કહે ગયે હૈં । (સવરા સમાસેણ પચ) એ સવર સક્ષેપ
સે પાચ હૈં પરન્તુ (વિત્થરેણ ડ પળવીસઢ) વિસ્તાર સે પાચ ૨ અપની ૨
ભાવનાઓ સે સહિત હોને કે કારણ એ પચીસ હો જાતે હૈં । (સજણ)
इन सवरदारों का पालन करने वाला सयत (समिण) ईर्यासमिति
आदि पच्चीस भावनाओं से युक्त (सहिण) ज्ञानदर्शन से सहित और
(सवुडे) कपाय एव इन्द्रियो के सवरण से युक्त होता हुआ (सया)
सदा (जयणघडण सुविसुद्धदसणे) अपने तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप दर्शन को

હવે સૂત્રકાર પાચે સવરોનેા ઉપસંહાર કરતા ડહે છે “ ણ્યાઈ ’ ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—‘ સુવચ ! ” શોભનવ્રત યુક્ત હે જન્મૂ ! “ ણ્યાઈ પચ્ચ મહ
વ્યાઢ ” અર્હિમા આદિ તે પાચે મહાવ્રત “અરિહત સાસણે હેઝસયવિવિત્ત
પુષ્કલાઈ કહિયાઈ ” અર્હત પ્રભુના શાસનના સેકડો નિર્દોષ યુક્તિયોથી વિસ્તાર
થી ડહેવામા આવ્યા છે “ સવરા સમાસેણ પચ ” તે સવર સક્ષિપ્તમા પાચ
છે પણ “ વિત્થરેણ ડ પળવીસઢ ” વિસ્તારથી પોત પોતાની પાચ પાચ ભાવ
નાઓ સહિત હોવાને કારણે પચીસ થાય છે “સજણ” એ સવરદારનું પાલન
કરનાર સયત “સમિણ” ઈર્યામિતિ આદિ પચીસ ભાવનાઓથી યુક્ત “સહિણ”
જ્ઞાનદર્શનથી યુક્ત અને “ સવુઢે ” કપાય અને ઇન્દ્રિયોના સવરણથી યુક્ત
થઈને “ સયા ’ સદા “ જયણઘડણસુવિસુદ્ધદસણે ” પોતાના તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાન

અથ સમરપશ્ચરુપસદરનાહ—‘ ઇયાઢ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—ઇયાઢં વયાઢ પંચવિ સુવ્વય મહાવ્વયાઢ હેઊસય વિવિત્તપુવ્વલાઢ કહિયાઢં અરિહંતમાસળે પચ સમાસેળ સવરા ત્રિત્થરેળ ઊ પળવીસઢં સમિઇ સહિઇ સંવુઢે સયા જયળ ઘડળ સુવિસુદ્ધદસળે ઇઇ અણુચરિય સજઇ ચરમસરીરધરે મવિસ્સ તીતિ ॥ સૂ૦ ॥ ૧૩ ॥

॥ ઇય પંચમ સવરદાર સમત્ત ॥

ટીકા—‘ ઇયાઢ ’ ઇત્યાદિ—

‘ સુવ્વય ’ સુત્રત—હે શોમનત્રત જમ્મૂઃ । ‘ ઇયાઢ ’ ઇતાનિ ‘ પચવિ ’ પ—

હે જન્મુ ! ઇસ પચમ સવરદ્વાર કા જૈસા કવન મે ને સાક્ષાત્ ભગવાન્ મહાવીર કે મુખ સે સુના હે વૈસા હી યહ મેં ને તુમસે કહા હૈ । અપની તરફ સે ઇસમે મેંને કુછ મી મિશ્રિત કર નહીં કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—ઇન પૂર્વોક્ત પાચ ભાવનાઓ સે અચ્છી તરહ સેવિત રોને પર યહ અપરિગ્રહ નામક પાચવા સવરદ્વાર સ્થિર હો જાતા હૈ । ઇસ-લિયે મુનિજન કો ઇસકા પાલન ઇસ રૂપ સે કરના અવશ્ય હૈ । સમસ્ત તીર્થકરોં ને ઇસે સર્વપ્રાણિયોં કા હિતકારક જાનકર પાલિત કિયા હૈ । યહ અનાશ્રવ આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ । ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ ને મી ઇસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ પરિપદા મેં જીવોં કો દિયા હૈ । ઇસા મગલમય યહ પાચવા સવરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

“ હે જન્મુ ! આ પાચમા સવરદ્વારતુ કથન જે પ્રમાણે મે સાક્ષાત્ મહાવીર પ્રભુને મુખે સાંભળ્યું હતું, એ જ પ્રમાણે તે હું તમને કહું છું મારી તરફથી તેમા કંઈ પણ ઉમેરવામા આવ્યું નથી

ભાવાર્થ—પૂર્વોક્ત પાચ ભાવનાઓનું સારી રીતે સેવન કરવામા આવે તો અપરિગ્રહ નામનું પાચમું સવરદ્વાર સ્થિર થઈ જાય છે તેથી મુનિજને તેનું તે રીતે પાલન કરવું અતિ આવશ્યક છે બધા તીર્થકરોએ તેને સઘળા પ્રાણીઓનું હિતકારક સમજીને તેનું પાલન કરેલ છે તે અનાશ્રવ આદિ વિશેષણો વાળું છે ભગવાન મહાવીરે પણ પરિપદાઓમા તેનું પાલન કરવાનો ઉપદેશ જીવોને આપ્યો છે એવું મગલમય આ પાચવા સવરદ્વાર સમાપ્ત થયું ॥ સૂ૦ ૧૨

વિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ અગ જહા આચારસ્સ ॥સૂ૦૧૪॥

॥ ઇય પપ્પહાવાગરણં સંમત્તં ॥

ટીકા—‘પપ્પહાવાગરણેણ’ ઇત્યાદિ—

પ્રશ્નવ્યાકરણે સ્વલુ એકઃ શ્રુતસ્કંધઃ દશ અધ્યયનાનિ, એતાનિ કીદશાનિ ?
એક્કસરકાણિ=ઉદ્દેશવિભાગાદિરહિતાનિ । એતાન્યધ્યયનાનિ દશસ્વેવ દિવસેષુદ્ધિ-
શ્યન્તે । તથા—એકાન્તરેષુ આચામ્લેષુ નિરુદ્ધેષુ=સ્વીકૃતેષુ સત્સુ આયુક્તમત્તપા-
નેન=મત્તપાને આયુક્ત —આયુક્તમત્તપાનસ્તેન તથા, અશનાદી દત્તોપયોગેનેત્યર્થ ,
ઇદમગ્નસુન્દિયતે । અસ્યાવશિષ્ટ સર્વં યથા આચારસ્ય=આચારાગ્નસ્ય તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ ૧૪
॥ ઇતિપ્રશ્નવ્યાકરણ નામ દશમાઠ્ઠ સંપૂર્ણમ્ ॥

અવ સૂત્રકાર ઇસ દશવે અગ મે કિતને શ્રુતસ્કંધ આદિ હૈ યહ દિ-
ખલાતે હૈ—‘પપ્પહાવાગરણેણ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(પપ્પહાવાગરણેણ) ઇન પ્રશ્નવ્યાકરણ મેં (એગો સુયસ્સવધો)
એક શ્રુતસ્કંધ હૈ । (દસ અજ્ઞયણા) દશ અધ્યયન હૈ । યે દર્શો હી
અધ્યયન (એક્ક સરગા) ઉદ્દેશ વિભાગ આદિ સે રહિત હૈ । (દસસુ ચેવ
દિવસેસુ ઉદ્ધિસિજ્જતિ) ઓર દશ હી દિનોં મેં ઇનકી વાચના કી જાતી
હૈ । (એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ) સભા મેં ઇસકી
વાચના કરને વાલે સાધુ કો દશદિન તક એકાન્તર સે આયવિલ કરના
વાહિયે । આચામ્લવ્રત કરને મે અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિ
કા વિશેષ ધ્યાન રાખના વાહિયે । ઇસ સૂત્ર કા અવશિષ્ટ અશ જૈસા
આચારાગ સૂત્ર કા હૈ વૈસા હી જાનના વાહિયે ॥ સૂ-૧૫ ॥

॥ ઇસ તરહ પ્રશ્નવ્યાકરણ નામકા યહ દશવાં અગ સમાપ્ત હુઆ ॥

હુવે આ દશમા અગમા કેટલા શ્રુતસ્કંધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે—“પપ્પહાવાગરણેણ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“પપ્પહાવાગરણેણ” આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા “એગો સુયસ્સવધો” એક
શ્રુતસ્કંધ છે “દસ અજ્ઞયણા” દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન ‘એક્કસરગા’
ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે “દસસુ ચેવ દિવસેસુ ઉદ્ધિસિજ્જતિ” અને દસ
દિવસમા જ તેનું વાચક કરી શકાય છે “એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્ત મત્તપા
ણણ” સભામા તેનું વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ સુધી એકાન્તરે આય બિલ
કરવા બેઠ્યો આય બિલવ્રત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિનું
ધ્યાન રાખવું બેઠ્યો આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અગ જેવો આચારાગ
સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો બેઠ્યો ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામનું આ દશમું અગ સમાપ્ત થયું ॥

દંસળે ' યતનઘટનસુત્રિશુદ્ધદર્શનઃ, યતનેન=પ્રાપ્તસયમસયોગેણ પ્રયત્નેન, ઘટનેન=અપ્રાપ્તસયમસયોગપ્રાપ્ત્યર્થઘટનયા ચ સુત્રિશુદ્ધ દર્શન=શ્રદ્ધાનરૂપ યસ્ય, સ તથા, 'એ' એતાન્ ઉક્તરૂપાન્ સવરાન્ અણુચરિય ' અનુચર્ય આસેવ્ય 'ચરમસરીરધરે' ચરમશરીરધરઃ=અન્તિમશરીરધારી ભવિસ્સતીતિ-ભવિષ્યતીતિવિન્નેયમ્ ॥સૂ૦ ૧૩॥

ઇતિ પચ્ચમ સવરદ્વાર સમાપ્તમ્ ॥

સામ્પ્રતં દશમાઙ્ગેઽસ્મિન્ કિયન્નૃતસ્કન્ધાદિ તદ્દર્શયતિ ' પળ્હાવાગર-
ણેણ ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પળ્હાવાગરણેણં એગો સુયત્ત્વંધો દસ અઙ્ગયણા
એકસરગા દસસુ ચેવ દિવસેસુ અદિસિજ્જતિ, એગંતરેસુ આયં-

યતન સે-પ્રાપ્તસયમ કે સરક્ષણરૂપ પ્રયત્ન સે તથા ઘટન સે-અપ્રાપ્તસયમ
કી પ્રાપ્તિ કરને કી ઘટના સે સુવિશુદ્ધ રલ્લતા હૈ । (એ અણુચરિએ)
ઇન પૂર્વેક્તિરૂપ સવરોં કો પાલન કરકે (ચરિમસરીરધરે) અન્તિમશરી
રધારી (ભવિસ્સઈ) હોવેગા । ઁસા જાન લેના ચાહિયે ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા સમક્ષાયા હૈ કિ જોં મુનિ ઇન
પાંચોં સવરદ્વારોં કા શાસ્ત્રમર્યાદા કે અનુસાર પાલન કરેગા ઓર
પચ્ચીસ ભાવનાઓસે ઇન્હે સ્થિર રલ્લેગા, વહ ચરમશરીરી હોગા, અર્થાત્
લસકા પુનઃ જન્મ સસાર મે નહી હોગા, વહ અવશ્ય હી મોક્ષ પ્રાપ્ત
કરને વાલા હોગા । યે સક્ષેપતઃ સવરદ્વાર પાચ હી હૈ—પરન્તુ વિસ્તાર કી
અપેક્ષા અપની ૨ પાચ ભાવનાઓં સે સહિત હોને કે કારણ યે પચ્ચીસ
ભી હો જાતે હૈ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

॥ પાચર્વાં સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

ઇપ દર્શનને પ્રયત્નપૂર્વક-પ્રાપ્ત સયમના સરક્ષણરૂપ પ્રયત્નથી તથા ઘટનથી
અપ્રાપ્ત સયમની પ્રાપ્તિ કરવાની ઘટનાથી અત્યંત વિશુદ્ધ રાખે છે “ એ એ
અણુચરિએ ” એ પૂર્વેક્ત સવરોનુ પાલન કરીને “ ચરિમસરીરધરે ” અન્તિમ
શરીરધારી “ ભવિસ્સઈ ” થશે એ પ્રમાણે સમજી લેવુ

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સમજાવ્યું છે કે જે મુનિ આ
પાચે સવરદ્વારોનુ શાસ્ત્રમર્યાદા અનુસાર પાલન કરશે અને પચ્ચીસ ભાવનાઓ
વડે તેમને સ્થિર રાખશે, તે ચરમ શરીરી થશે, એટલે કે તેને સસારમાં
ફરી જન્મ લેવો પડશે નહીં, તે અવશ્ય મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે સક્ષિપ્તમાં પાચ
જ સવરદ્વાર છે, પણ વિસ્તારની અપેક્ષાએ પોત પોતાની પાચ પાચ ભાવ
નાઓ સહિત હોવાને કારણે તે પચ્ચીસ પણ ડહી શકાય છે ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

॥ પાચમ્ સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

વિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણં અંગ જહા આયારસ્સ ॥ સૂં ૧૪ ॥

॥ ઇય પપ્પહાવાગરણં સંમત્ત ॥

ટીકા—‘પપ્પહાવાગરણેણ’ ઇત્યાદિ—

પ્રશ્નવ્યાકરણે સ્વલુ એકઃ શ્રુતસ્કંધ. દશ અધ્યયનાનિ, એતાનિ કીદશાનિ ?
એકસરકાણિ=ઉદ્દેશવિભાગાદિરહિતાનિ । એતાન્યધ્યયનાનિ દશસ્વેવ દિવસેષુદિ-
શ્યન્તે । તથા—એકાન્તરેષુ આચામ્લેષુ નિરુદ્ધેષુ=સ્વીકૃતેષુ સત્સુ આયુક્તમત્તપા-
નેન=મત્તપાને આયુક્ત —આયુક્તમત્તપાનસ્તેન તથા, અશનાદી દત્તોપયોગેનેત્યર્થ ,
ઇદમદ્ગમુદ્દિશ્યતે । અસ્યાવશિષ્ટ સર્વે યથા આચારસ્ય=આચારાઙ્ગસ્ય તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ ૧૪
॥ ઇતિપ્રશ્નવ્યાકરણ નામ દશમાઙ્ગ સંપૂર્ણમ્ ॥

અવ સૂત્રકાર ઇસ દશવે અગ મે કિતને શ્રુતસ્કંધ આદિ હૈ યહ દિ-
સ્વલાતે હૈ—‘પપ્પહાવાગરણેણ’ ઇત્યાદિં ।

ટીકાર્થ—(પપ્પહાવાગરણેણ) ઇન પ્રશ્નવ્યાકરણ મેં (એગો સુયક્કવધો)
એક શ્રુતસ્કંધ હૈ । (દમ્મ અઙ્ગયણા) દશ અધ્યયન હૈ । યે દશોં હી
અધ્યયન (એક સરગા) ઉદ્દેશ વિભાગ આદિ સે રહિત હૈ । (દસસુ ચેવ
દિવસેસુ ઉદ્દિસિજ્જતિ) ઓર દશ હી દિનોં મેં ઇનકી વાચના કી જાતી
હૈ । (એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ) સભા મેં ઇસકી
વાચના કરને વાલે સાધુ કો દશદિન તક એકાન્તર સે આયવિલ કરના
વાહિયે । આચામ્લવ્રત કરને મેં અશનાદિ સામગ્રી પર એવણાદિ શુદ્ધિ
કા વિશેષ ધ્યાન રાખના વાહિયે । ઇસ સૂત્ર કા અવશિષ્ટ અશ જૈસા
આચારાઙ્ગ સૂત્ર કા હૈ વૈસા હી જાનના વાહિયે ॥ સૂ-૧૫ ॥

॥ ઇસ તરહ પ્રશ્નવ્યાકરણ નામકા યહ દશવા અગ સમાપ્ત હુઆ ॥

હવે આ દશમા અગમા કેટલા શ્રુતસ્કંધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે—“પપ્પહાવાગરણેણ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“પપ્પહાવાગરણેણ” આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા “એગો સુયક્કવધો” એક
શ્રુતસ્કંધ છે “દમ્મ અઙ્ગયણા” દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન ‘એકસરગા’
ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે “દસસુ ચેવ દિવસેસુ ઉદ્દિસિજ્જતિ” અને દસ
દિવસમા જ તેનું વાચક કરી શકાય છે “એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપા
ણણ” સભામા તેનું વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ મુધી એકાન્તરે આયવિલ
કરવા જોઈએ આયવિલવ્રત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એવણાદિ શુદ્ધિનું
ખાસ ધ્યાન રાખવું જોઈએ આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અગ જેવો આચારાઙ્ગ
સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો જોઈએ ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામનું આ દશમું અગ સમાપ્ત થયું ॥

॥ અથ શાસ્ત્રમગ્નસ્તિઃ ॥

સૌરાષ્ટ્રે મુનિભિ સાઠ, વિહાર કર્વતા મયા ।
 ચાતુર્માસ્ય, છુદેનૈવ, નીતં જેતપુરે પુરે ॥ ૧ ॥
 તતો વિહરમાણોઽહ, ધોરાજીનામ ત્રિશ્રુતે ।
 પુરે સમાગતઃ શેષ, -કાલે તૈર્મુનિભિઃ સહ ॥ ૨ ॥
 સપ્તાધિકે વૈવ્રમાન્દે, સહસ્રદ્વયસંરચકે ।
 પોષે પુણ્યે પૌર્ણમાસ્યા, શુભદ મૌમાસરે ॥ ૩ ॥
 પ્રશ્નવ્યાકરણસ્યેય, વૃત્તિર્નામ્ના સુર્દશનો ।
 રચિતા ઘાસિલાલેન, શ્રોસઘેન સમાદતા ॥ ૪ ॥

લિમડી સઘસ્થાપિત-પૌષધશાલા ચ વિદ્યતે તત્ર ।

પ્રવચનરહસ્યપૂર્ણા, સેય શિવસૌરયદા પૂર્ણા ॥ ૫ ॥

ટીકાકાર કી પ્રશસ્તિ

સૌરાષ્ટ્રદેશ મે મુનિજનો કે સાથ વિહાર કરતે હુણ મેં ને જેતપુર મેં આનંદપૂર્વક ચૌમાસા કિયા । વહા સે વિહાર કર મેં उन મુનિજનોં કે સાથ ધોરાજી નામ સે પ્રસિદ્ધ શહર મેં આયા । શેષ કાલ વહાં રહકર વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૭ કે પૌષ માસ, પૌર્ણમાસી નિધિ મગલવાર ઔર પુણ્યનક્ષત્રકે દિન પ્રશ્નવ્યાકરણકી યદ વૃત્તિ જિસકા નામ સુદર્શિની હૈ મેં ને-ઘાસીલાલ ને-રચી હૈ । વહા કે શ્રોસઘ ને હસકા અઠઠા આદર કિયા । उस शहर में लिमड़ी सव के द्वारा स्थापित की हुई एक पौषध शाला है । उसमें ठहर कर प्रवचन के रहस्य से परिपूर्ण और शिव के सुख की दाता यह वृत्ति पूर्ण हुई है ॥

॥ ટીકાકારની પ્રશસ્તિ ॥

સૌરાષ્ટ્રમા મુનિજનોની સાથે વિહાર કરતા મે જેતપુરમા, આનંદપૂર્વક ચૌમાસુ વ્યતીત કર્યું, ત્યાથી વિહાર કરીને હું મુનિઓ સાથે ધોરાજી નામના પ્રસિદ્ધ શહેરમા આવ્યો । શેષ ડાળમા ત્યા રહીને વિક્રમ સવત ૨૦૦૭ના પૌષ માસની પૂર્ણિમાની તિથિને મગળવાર અને પુણ્ય નક્ષત્રના દિવસે પ્રશ્નવ્યાકરણની આ વૃત્તિ જેતુ નામ સુદર્શિની છે, તે મે-ઘાસીલાલે રચી છે ત્યાના શ્રી સઘે તેનો ઘણો આદર કર્યો । તે શહેરમા લિમડી સઘ દ્વારા સ્થપાયેલ એક પૌષધશાળા છે ત્યા રહીને પ્રવચનના રહસ્યથી પરિપૂર્ણ અને મોક્ષના સુખની દાતા આ વૃત્તિ મે પૂરી કરી છે ॥ ૫ ॥

सचमहिमा-

धोराजी नगरस्य एष परमोदारो महाधार्मिकः,
 शुद्धस्थानकवासिधर्मनिरतः सम्यक्त्वभागान्वितः ।
 तच्चातन्त्रपयोविवेचनविधौ हसायमानः सदा,
 सर्वेषामुपकारको विजयते श्री जैनसंगमहान् ॥ ६ ॥
 देवे गुरौ धर्मपथे च भक्ति र्येषा सदाचाररचिश्च नित्यम् ।
 ते श्रावका धर्मस्ता उदारा , सुश्राविकाः सन्ति गृहे गृहेऽत्र ॥ ७ ॥
 मङ्गल भगवान् वीरो मङ्गल गौतमः प्रभुः ।
 सुधर्मा मङ्गल जम्बू-जैनधर्मश्च मङ्गलम् ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्गुरु - प्रसिद्धाचकपञ्चदशभाषाकलि-
 तललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक- वादिमानमर्दक-
 श्रीशाह छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-
 कोल्हापुरराजगुरु-पालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
 घासीलालप्रतिविरचिता दशमाङ्गस्य श्री ग्रन्थव्याकरणसूत्रस्य
 सुदर्शन्याख्या व्याख्या समाप्ताः

॥ शुभ भूयात् ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

સધમહિમા—

ધોરાજી શહેર કા યહ મહાન્ શ્રી જૈનસધ અત્યન્ત ઉદાર હૈ, પર-
મધાર્મિક હૈ, શુદ્ધસ્થાનકવાસી ધર્મ મેં લવલીન હૈ, સમ્યક્ત્વ ભાવ સે
યુક્ત હૈ, તત્ત્વ અતત્ત્વ કા ક્ષીર નીર કી તરહ વિવેક કરને મેં હસ
કે જૈસા હૈ । સમસ્ત પ્રાણિયોં કા ઉપકારક હૈ, અતઃ યહ સદા જયવતા
વર્તો ॥ ૬ ॥ જિનકી દેવ ગુરુ ઔર ધર્મ મેં નિત્ય મક્તિ હૈ । તથા સદા-
ચાર મેં જિનકી રુચિ હૈ એસે ધર્મરત્ન ઉદાર શ્રાવક ઔર સુશ્રાવિકાઈ
યહાં ઘર ૨ મેં હૈ ॥ ૭ ॥

અતિમ મગલાચરણ

અતિમ તીર્થંકર ભગવાન્ મહાવીર મગલરૂપ હૈ, ગૌતમપ્રભુ મગલ
રૂપ હૈ, સુધર્માસ્વામી મગલરૂપ હૈ અન્તિમ કેવલી જંબૂસ્વામી મગલરૂપ
હૈ ઔર યહ જૈનધર્મ મગલરૂપ હૈ ॥ ૮ ॥

॥ શ્રીરસ્તુ-શુભ ભૂયાત્ ॥

સધમહિમા

ધોરાજી શહેરનો તે મહાન શ્રીસધ અત્યન્ત ઉદાર છે, ઘણો જ ધાર્મિક
છે, શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમા દઢ રીતે માનનાર છે, સમ્યક્ત્વ ભાવથી યુક્ત
છે, તત્ત્વ અતત્ત્વનો દૂધ અને પાણીની જેમ વિવેક કરવામા હસ સમાન છે
સધના પ્રાણીઓનો ઉપકાર કરનાર છે, તેથી તેનો મદદ જય જયકાર હો ॥૬॥

જેમનો દેવ, ગુરુ અને ધર્મ પ્રત્યે નિત્ય ભક્તિભાવ છે, તથા સદાચાર
પ્રત્યે જેમની અભિરૂચિ છે એવા ધર્મરત ઉદાર શ્રાવક અને સુશ્રાવિકાઓ
અહીં દરેક ઘરમા છે ॥ ૭ ॥

અતિમ મગલાચરણ

અન્તિમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર મગલરૂપ છે, ગૌતમપ્રભુ મગલરૂપ
છે સુધર્માસ્વામી મગલરૂપ છે અન્તિમ કેવળી જંબૂસ્વામી મગલરૂપ છે, અને
આ જૈન ધર્મ મગલરૂપ છે ॥ ૮ ॥

॥ શ્રીરસ્તુ-શુભ ભૂયાત્ ॥

